शब्द-संख्या—२१०८२

मानक हिन्दी कोश

[हिन्दी भाषा का अद्यतन, अर्थ-प्रधान और सर्वांगपूर्ण शब्द-कोश]

चौथा खंड

[फ से ल]

प्रधान सम्पादक

रामचन्द्र वर्म्मा

सहायक सम्पादक

बदरीनाथ कपूर, एम ए, पी-एच डी

हिन्दी साहित्य सम्मेलन • प्रयाग

प्रथम संस्करण
शकाब्द १८८७ : सन् १९६५

मूल्य
पचीस रुपया

मुद्रक
रामप्रताप त्रिपाठी, सम्मेलन मुद्रणालय, प्रयाग

प्रकाशकीय

हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने कुछ वर्ष पूर्व 'मानक हिन्दी कोश' को पाँच खडो मे प्रकाशित करने की योजना कार्यान्वित की थी। तीन खड प्रकाशित हो चुके हैं। यह चौथा खड हिन्दी भाषा तथा साहित्य के अध्येताओ के हाथ मे प्रस्तुत करते हमे स्वभावत हर्ष हो रहा है। पाँचवे खड के प्रकाशन मे भी हम यथासम्भव शीघ्रता कर रहे है। हमे आशा है कि इस कोश के सभी खडो के प्रकाशन के बाद इसके दूसरे सस्करण के प्रकाशन का काम भी शुरू करने की तुरत आवश्यकता पडेगी, क्योकि हिन्दी मे नये शब्दो की सख्या निरन्तर बढ रही है और हिन्दी की नयी आवश्यकताओ के कारण कोश की माँग भी देश के विभिन्न क्षेत्रो मे और विदेशो मे भी खूब बढ रही है।

पाँचवे खड के अत मे हम दो परिशिष्ट भी देगे। इनमे से पहला परिशिष्ट ऐसे छूटे हुए शब्दो और अर्थो का होगा जो इस कोश के मुद्रण काल के उपरान्त सपादको के ध्यान मे आये है अथवा भिन्न-भिन्न क्षेत्रो मे प्रयुक्त होते हुए देखे गये है। दूसरे परिशिष्ट मे अगरेजी हिन्दी शब्दावली होगी जिसमे अनुमानत ७, ८ हजार ऐसे अँगरेजी शब्द होगे जो भिन्न-भिन्न राजकीय, वैज्ञानिक, सामाजिक और साहित्यिक क्षेत्रो मे प्रचलित है और जिनके हिन्दी पर्याय प्राय लोग ढूँढा और पूछा करते है। इनमे से अधिकतर अँगरेजी शब्दो के हिन्दी पर्याय भारत सरकार की नयी वैज्ञानिक शब्दावली के अनुरूप ही होगे। साराश यह कि इस कोश को अद्यतन और परम उपयोगी बनाने मे हम अपनी ओर से कोई बात उठा नही रखेगे। हमे आशा है कि इस कार्य मे हमे हिन्दी जगत् से उत्तरोत्तर और भी अधिक प्रोत्साहन तथा सहायता मिलती रहेगी।

पिछले प्रकाशित तीन खडो को मनीषियो, शब्द तत्त्ववेत्ताओं, साहित्यिको और हिन्दी प्रेमियो ने हिन्दी का प्रतिनिधि कोश मानकर उसका जो स्वागत किया है, उससे हमे यह विश्वास है कि यह खड भी उन्ही पूर्व विशेषताओ के कारण ग्राह्य और स्वागतार्ह होगा।

चिन्तनशील समालोचको, कोशकारो तथा जागरूक पाठको से हमारा अनुरोध है कि इस खड की विशेषताओ और न्यूनताओ की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट कर हमे अनुगृहीत करे जिससे हम इस कोश के द्वारा हिन्दी के संवर्द्धन के प्रति अपना कर्तव्य पालन करने मे और अधिक समर्थ हो सके।

हम इस 'मानक हिन्दी कोश' के रचना सिद्धान्त तथा प्रकाशन के उद्देश्य से सबद्ध अपने सकल्प को यहाँ दोहराना चाहते है कि हिन्दी साहित्य सम्मेलन अपने गुरुतर कर्तव्य के प्रति निष्ठावान् बनकर सतत जागरूक रहेगा।

'मानक हिन्दी कोश' के प्रधान संपादक तथा उनके सहयोगियो एव उन सभी लोगो के प्रति हम कृतज्ञ हैं जिन्होने इसके सम्पादन, मुद्रण तथा प्रकाशन मे पूर्ण सहयोग प्रदान किया है।

मोहनलाल भट्ट
सचिव
प्रथम शासन-निकाय
हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग

संकेताक्षरों का स्पष्टीकरण

अं०—अंगरेजी भाषा
अ०—(कोष्ठक मे) अरबी भाषा
अ०—(कोष्ठक से पहले) अकर्मक क्रिया
अज्ञेय—स० ह० वात्स्यायन
अनु०—अनुकरणवाचक शब्द
अप०—अपभ्रंश
अर्द्ध० मा०—अर्द्ध-मागधी
अल्पा०—अल्पार्थक
अव्य०—अव्यय
आस्ट्रे०—आस्ट्रेलिया के मूल निवासियो की बोली
इब०—इबरानी भाषा
उग्र०—पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'
उदा०—उदाहरण
उप०—उपसर्ग
उभय०—उभयलिंग
कबीर०—कबीरदास
कश०—कश्मीरी भाषा
केशव०—केशवदास
कोंक०—कोंकणी भाषा
कौ०—कौटिलीय अर्थशास्त्र
क्रि०—क्रिया
क्रि०प्र०—क्रिया प्रयोग
क्रि० वि०—क्रिया विशेषण
क्व०—क्वचित्
गुज०—गुजराती भाषा
चन्द्र०—चन्द्रबरदाई
जायसी—मलिक मुहम्मद जायसी
जावा०—जावाद्वीप की भाषा
ज्यो०—ज्योतिष
डिं०—डिंगल भाषा
ढो० मा०—ढोला मारू रा दूहा
त०—तमिल भाषा
ति०—तिब्बती
तु०—तुरकी भाषा
तुलसी०—गोस्वामी तुलसीदास
ते०—तेलगु भाषा
दादू—दादूदयाल
दिनकर—रामधारी सिंह 'दिनकर'
दीनदयालु—कवि दीनदयालु गिरि
दे०—देखें
देव—देव कवि
देश०—देशज
द्विवेदी—महावीर प्रसाद द्विवेदी
नपुं०—नपुंसकलिंग
नागरी—नागरीदास
निराला—पं० सूर्यकान्त त्रिपाठी
ने०—नेपाली भाषा
पं०—पंजाबी भाषा
पद्माकर—पद्माकर कवि
पन्त—सुमित्रानन्दन पन्त
पर्या०—पर्याय
पा०—पाली भाषा
पुं०—पुंलिंग
पु० हिं०—पुरानी हिन्दी
पुर्त०—पुर्तगाली भाषा
पू० हिं०—पूर्वी हिंदी
पैशा०—पैशाची भाषा
प्रत्य०—प्रत्यय
प्रसाद—जयशंकर 'प्रसाद'
प्रा०—प्राकृत भाषा
प्रे०—प्रेरणार्थक क्रिया
फा०—फारसी भाषा
फ्रा०—फ्रांसीसी भाषा
बंग०—बंगाली भाषा
बर०—बरमी भाषा
बहु०—बहुवचन
बिहारी—कवि बिहारीलाल
बु० खं०—बुन्देलखण्डी बोली
भारतेन्दु—'भारतेन्दु' हरिश्चन्द्र
भाव०—भाववाचक संज्ञा

भू० कृ०—भूत कृदन्त
भूषण—कवि भूषण त्रिपाठी
मतिराम—कवि मतिराम त्रिपाठी
मल०—मलयालम भाषा
मि०—मिलावे
मुहा०—मुहावरा
यहू०—यहूदी भाषा
यू०—यूनानी भाषा
यौ०—यौगिक पद
रघुराज—महाराज रघुराज सिंह, रीवाँ-नरेश
रसखान—सैयद इब्राहीम 'रसखान'
रहीम—अब्दुर्रहीम खानखानाँ
राज० त०—राजतरंगिणी
लश०—लशकरी बोली अर्थात् हिन्दुस्तानी जहाजियों की बोली
लैं०—लैटिन भाषा
व० वि०—वर्ण-विपर्यय
वि०—विशेषण
वि० दे०—विशेष रूप से देखें
विश्राम—विश्रामसागर
व्या०—व्याकरण
शृं०—शृंगार सतसई
सं०—संस्कृत भाषा
संयो०—संयोजक अव्यय
संयो० क्रि०—संयोज्य क्रिया
स०—सकर्मक क्रिया
सर्व०—सर्वनाम
सिं०—सिंधी भाषा
सिंह०—सिंहली भाषा
सूर—सूरदास
स्त्री०—स्त्रीलिंग
स्पे०—स्पेनी भाषा
हरिऔध—पं० अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'
हिं०—हिन्दी भाषा

* यह चिह्न इस बात का सूचक है कि यह शब्द केवल पद्य में प्रयुक्त होता है।

† यह चिह्न इस बात का सूचक है कि इस शब्द का प्रयोग स्थानिक है।

संस्कृत शब्दों की व्युत्पत्ति के संकेत

अत्या० स०—अत्यादि तत्पुरुष समास (प्रा० स० के अन्तर्गत)
अव्य स०—अव्ययीभाव समास
उप० स०—उपपद समास
उपमि० स०—उपमित कर्मधारय समास
कर्म० स०—कर्मधारय समास
च० त०—चतुर्थी तत्पुरुष समास
तृ० त०—तृतीया तत्पुरुष समास
द्व० स०—द्वन्द्व समास
द्विगु० स०—द्विगु समास
द्वि० त०—द्वितीया तत्पुरुष समास
न० त०—नञ्तत्पुरुष समास
न० ब०—नञ्बहुव्रीहि समास
नि०—निपातनात् सिद्धि
पं० त०—पंचमी तत्पुरुष समास
पृषो०—पृषोदरादित्वात् सिद्धि
प्रा० ब० स०—प्रादि बहुव्रीहि समास
प्रा० स०—प्रादि तत्पुरुष समास
ब० स०—बहुव्रीहि समास
बा०—बाहुलकात्
मयू० स०—मयूरव्यंसकादित्वात् समास
शक०—शकन्ध्वादित्वात् पररूप
ष० त०—षष्ठी तत्पुरुष समास
स० त०—सप्तमी तत्पुरुष समास
√—यह धातु चिह्न है।

विशेष—पृषो०, नि० और बा० ये तीनों पाणिनीय व्याकरण के संकेत हैं। इनके अर्थ है, 'पृषोदर' आदि शब्दों की भाँति, 'निपातन' (बिना किसी सूत्र-सिद्धान्त) से और 'बाहुलक' (जहाँ जैसी प्रवृत्ति देखी जाय वहाँ उस प्रकार) से शब्दों की सिद्धि। जिन शब्दों की सिद्धि पाणिनीय सूत्रों से सम्भव नहीं होती उनकी सिद्धि के लिए उपर्युक्त विधियों का प्रयोग किया जाता है। इन विधियों में किसी शब्द को सिद्ध करने के लिए वर्णों के आगम, व्यत्यय, लोप आदि आवश्यकतानुसार किये जाते हैं।

मानक हिन्दी कोश

चतुर्थ खण्ड

फ

फ—देवनागरी वर्णमाला का बाइसवाँ व्यंजन जो पवर्ग के अन्तर्गत दूसरा वर्ण है तथा जो भाषा-विज्ञान और व्याकरण की दृष्टि से ओष्ठ्य, अघोष, महाप्राण तथा स्पृष्ट वर्ण है।

फंक—स्त्री०=१. फाँक। २. =फंकी।

फंकनी†—स्त्री०=फंकी।

फंका—पु० [हि० फाँकना] [स्त्री० अल्पा० फंकी] १. अंजुलि या हथेली में लिया हुआ खाद्य पदार्थ (विशेषत दाने या बुकनी) फाँकने या झटके से मुँह में डालने की क्रिया। २ खाद्य-पदार्थ की उतनी मात्रा जितनी एक बार उक्त ढंग से मुँह में डाली जाती हो।

क्रि० प्र०—मारना।—लगाना।

मुहा०—(किसी चीज का) फंका करना=नाश करना। नष्ट करना। **फंका मारना या लगाना**=मुँह में रखकर फाँकना।

३ किसी चीज का छोटा खंड या टुकड़ा।

फंकी—स्त्री० [हि० फंका] १ कोई चीज फाँकने की क्रिया या भाव। २ वह चीज जो फाँककर खाई जाय। ३ किसी चीज की उतनी मात्रा जितनी एक बार फाँकी जाय। (मुहा० के लिए दे० 'फंका' के मुहा०) ४ किसी चीज का बहुत छोटा टुकड़ा।

फंग—पु० [सं० बंध] १ बंधन। २ फंदा। ३ अधीनता। ४. अनुराग या प्रेम का बन्धन।

फंटा†—पु०=फणि।

फंड—पु० [अं०] वह धन-राशि जो किसी विशिष्ट उद्देश्य से इकट्ठी की गई अथवा अलग या सुरक्षित रखी गई हो। कोश। जैसे—चेरिटी फंड, प्राविडेंट फंड।

पु० [सं०] उदर। जठर।

फंद—पु० [हिं० फंदा] १ फंदा। २ जाल। पाश। ३. किसी को फँसाने के लिए उसके साथ किया जानेवाला छल या धोखा। ४ फंदे में फँसने पर होनेवाला कष्ट। ५ कष्ट। दुख। ६ मर्म। रहस्य। ७ नथ की काँटी को फँसाने का फंदा। गूँज।

फंदना—अ० [हिं० फंदा] १ फंदे अर्थात् जाल में फँसना। २ किसी के धोखे में आना। ३ मुग्ध होना।

स० १. फंदा या जाल बिछाना। २ फंदे में फँसाना।

†स०=फाँदना।

फंदरा †—पु०=फंदा।

फंदवार—वि० [हि० फंदा+वार (प्रत्य०)] १. फाँदने अर्थात् फँदे या जाल में दूसरो को फँसानेवाला। २. फंदा बिछानेवाला।

फंदा—पु० [सं० पाश या बंधन] १. रस्सी आदि में एक विशेष प्रकार की गाँठ लगाकर बनाया जानेवाला घेरा जो किसी चीज को फँसाकर रखने या बाँधने के काम आता है। जैसे—(क) कूएँ से पानी निकालने के समय घड़े के गले में लगाया जानेवाला फंदा। (ख) फाँसी पर लटकाने के लिए अभियुक्त के गले में डाला जानेवाला उक्त प्रकार का घेरा।

क्रि० प्र०—देना।—बनाना।—लगाना।

पद—फंदेवार। (दे०)

२ कोई ऐसी कपटपूर्ण बात या योजना जिसका मुख्य प्रयोजन किसी को फँसाना होता है। ३ रस्सियों आदि का बुना हुआ जाल।

मुहा०— फंदा लगाना=किसी को फँसाने के लिए छलपूर्ण आयोजन या युक्ति करना। **(किसी के) फंदे में पड़ना या फँसना**=किसी के जाल या धोखे में फँसना।

४ कोई ऐसी बात जिसमें पड़कर मनुष्य विवश हो जाता और कष्ट भोगता हो। ५ कुछ खाने या पीने के समय, अचानक हँसने आदि के कारण खाद्य या पेय पदार्थ का गले में इस प्रकार अटक या रुक जाना कि आदमी बोल न सके। उदा०—किसी ने रूमाल में हँसी रोकी तो किसी के गले में चाय का फंदा पड़ गया—अजीम बेग चगताई।

फँदाना—स० [हिं० फंदना] ऐसा काम करना जिससे कोई फंदे में जा फँसे।

†स० [हि० फाँदना] किसी को फाँदने में प्रवृत्त करना।

फँदावना† —स०=फँदाना।

फंदेवार—वि० [हिं० +फा०] जिसमें फंदा लगा या बना हो।

पु० अंकन, सीयन आदि में ऐसी रचना, जिसमें एक कड़ी या लड़ के अन्तिम सिरे से कुछ पहले ही दूसरी कड़ी या लड़ का पहला सिरा आरम्भ होता है।

फंदैत† —पु० [हिं० फंदा+ऐत (प्रत्य०)] १ वह जो फंदा डालकर या जाल बिछाकर पशु-पक्षियों को फँसाता हो। बहेलिया। व्याध। २ वह पालतू तथा सिखाया हुआ पशु जो अपनी जाति के अन्य पशुओं को जाल में फँसाता है।

फँफाना—अ० [अनु०] १ बोलने में हकलाना। २ दूध में उबाल आना।

फंसना—अ० [सं० पाश, हिं० फांस] १ पाश अर्थात् फंदे में पडना और फलत कसा जाना। २ किसी प्रकार के जाल में इस प्रकार अटकना कि उसमें छुटकारा या मुक्ति न हो सके। ३ किसी चीज में किसी दूसरी चीज का इस प्रकार अन्दर चले जाना, अटकना या उलझना कि सहज में वह बाहर न निकल सकती हो। जैसे—बोतल में काग फँसना। ४ एक चीज में दूसरी चीज का उलझकर अटक जाना। जैसे—काँटा में पल्ला फँसना। ५ लाक्षणिक अर्थ में, अधिक अथवा विकट कामों में इस प्रकार व्यस्त रहना कि उनसे अवकाश या छुटकारा मिलने की जल्दी आशा न हो। जैसे—झझट या मुकदमे में फँसना। ६ किसी की चिकनी-चुपडी या छलपूर्ण बातों में आना और छला जाना। ७ पर-पुरुष या पर-स्त्री के प्रेम में पडने के कारण उससे ऐसा अनुचित सबध स्थिर होना जो जल्दी छूट न सके।

फंसनी—स्त्री० [हिं० फँसना] एक प्रकार की हथौड़ी जिससे कसेरे लोटे, गगरे आदि का गला बनाते है।

फंसरी† —स्त्री० १ =फाँसी। २ =फँसौरी।

फंसवार† —पु०=फदा।

फंसाना—स० [हिं० फँसना] १ ऐसा काम करना जिससे कोई चीज फँसती हो। बधन, फदे या जाल में लाना और जकडकर रखना। २ कोई चीज इस प्रकार अटकाना या किसी दूसरी चीज में उलझाना कि वह जल्दी छूट न सके। जैसे—बोतल में काग फँसाना। ३ धन आदि किसी ऐसे व्यक्ति को देना या ऐसी स्थिति में लगा रखना कि उससे या वहाँ से जल्दी वह लौटकर प्राप्त न हो सकता हो। ४ किसी चाल, युक्ति आदि के द्वारा किसी को इस प्रकार अपने अधिकार में लाना कि उसे ठगा या धोखा देकर अपना स्वार्थ साधा जा सके। जैसे—असामी फँसाना। ५ पर-पुरुष या पर-स्त्री को अपने प्रेम-पाश में आबद्ध करके उससे अनुचित सबध स्थापित करना।

फंसाव—पु० [हिं० फँसना+आव (प्रत्य०)] १ फँसने की क्रिया या भाव। २ ऐसी चीज या बात जो दूसरा को फँसाने के लिए हो।

फंसिहारा† —वि० [हिं० फाँस+हारा (प्रत्य०)] [स्त्री० फँसिहारिन] फँसानेवाला।

फंसौरी† —स्त्री० [हिं० फाँसना+औरी (प्रत्य०)] १ फदा। पाश। २ वह रस्सी जिसके फदे में अभियुक्त का गला फँसाकर उसे फाँसी दी जाती है।

फ—पु० [सं०√फक्क् (नीचे जाना)+ड] १ कटु वाक्य। रूखी बात। २ दुत्कार। ३ व्यर्थ की बातें। ४ यज्ञ करना। ५ अधड। आँधी। ६ जँभाई। ७ फल की प्राप्ति।

फक—वि० [सं० स्फटिक] १ स्वच्छ। साफ। २ खूब सफेद। वि० [फा० फक] १ (व्यक्ति) भय, लज्जा आदि के कारण जिसके चेहरे का रग उड गया हो।

क्रि० प्र०—होना।—पडना।

पद—**फक रेहन** रेहन रखी हुई चीज का बधक से मुक्त होना।

मुहा०—**फक कराना** =रेहन रखी हुई चीज धन देकर छुडाना।

फकड़ा† —पु० [हिं० फक्कड] बहुत ही निम्न कोटि और व्यर्थ की कविता या तुक-बदी।

फकड़ी—स्त्री० [हिं० फक्कड] १ फक्कडपन। २ दुर्दशा। दुर्गति।

फकत—अ० य० [अ० फकत] १ बस इतना ही। २ केवल। सिर्फ।

फकर*—पु०=फखर (गर्व)।

फका†—पु०=१ फका। २. =फाँक।

फकीर—पु० [अ० फकीर] [स्त्री० फकीरन, फकीरनी, भाव० फकीरी] १. भीख अथवा भीख के रूप में कोई चीज माँगनेवाला व्यक्ति। २ त्यागी। महात्मा। ३ सत। साधु। ४ बहुत ही निर्धन व्यक्ति। कगाल।

फकीरी—स्त्री० [हिं० फकीर+ई (प्रत्य०)] १ ऐसी अवस्था जिसमें कोई भीख माँगकर निर्वाह करता हो। फकीर होने की अवस्था या भाव। २ कगालपन। निर्धनता।

वि० फकीर-सम्बन्धी। फकीर का। जैसे—फकीरी दवा।

पु० एक प्रकार का अगूर।

फक्कड़—पु० [हिं० फाका=उपवास] [भाव० फक्कडपन] १ ऐसा निर्धन व्यक्ति जो फाका या उपवासों के बावजूद भी खुश और मस्त रहता हो। २ ऐसा व्यक्ति जो बहुत ही बुरी तरह से या लापरवाह होकर धन उडाता हो और अपने भविष्य का कुछ भी ध्यान न रखता हो। ३ बहुत बडा उच्छृखल और उद्धत व्यक्ति। ४ फकीर। भिखमगा।

पु०[सं० फक्किका] अश्लील बात और गाली-गलौज। कुवाच्य। क्रि० प्र०—बकना।

मुहा०—**फक्कड़ तौलना** =गाली-गुफ्ता बकना। कुवाच्य कहना।

फक्कड़बाज—पु० [हिं०+फा०] [भाव० फक्कडबाजी] वह जो बहुत फक्कड अर्थात् गाली-गुफ्ता बकता या प्राय अश्लील बातें करता हो।

फक्कड़ाना—वि० [हिं० फक्कड+आना (प्रत्य०)] १ फक्कडों का। २ फक्कडों की तरह का।

फक्किका—स्त्री० [सं०√फक्क्+ण्वुल् (भाव में)—अक,+टाप, इत्व] १ वह बात जो शास्त्रार्थ में दुरूह स्थल को स्पष्ट करने के लिए पूर्व-पक्ष के रूप में कही जाय। कूट-प्रश्न। २ अनुचित व्यवहार। ३ धोखे-बाजी।

फक्कुलरेहन—पु० [अ०] बधक या रेहन रखी हुई चीज छुडाना।

फखर—पु० [फा० फख्र] सात्त्विक अभिमान। गौरवजन्य गर्व। जैसे—अपनी कौम या मुल्क का फखर।

फख़—पु०=फखर।

फग†—पु०=फग (बधन)।

फगवा—पु०=फगुआ (फाग)।

फगुआ—पु० [हिं० फागुन] १ होलिकोत्सव का दिन। होली। २ उक्त अवसर पर होनेवाला आमोद-प्रमोद। ३ उक्त अवसर पर गाये जानेवाले एक तरह के अश्लील गीत। फाग। ४ उक्त अवसर पर दिया जानेवाला उपहार, भेंट या त्योहारी।

फगुआना—स० [हिं० फगुआ] फागुन के महीने में किसी के ऊपर रग छोडना या उसे सुनाकर अश्लील गीत गाना।

अ० फागुन के महीने में इतना अधिक उच्छृखल तथा मस्त होना कि सभ्यता का ध्यान न रह जाय।

फगुनहट—स्त्री० [हिं० फागुन+हट (प्रत्य०)] १ फागुन मास की तेज हवा।

क्रि० प्र०—चलना।

२. फागुन मे होनेवाली वर्षा।

फगुनिया—पु० [हिं० फागुन+इया (प्रत्य०)] त्रिसधि नामक फूल। वि० १ फागुन-सबधी। फागुन का। २ फागुन मास मे होनेवाला।

फगुहरा†—पु०=फगुहारा।

फगुहारा—पु० [हिं० फगुआ+हारा (प्रत्य०)] १ वह जो फाग खेलता हो। विशेषत ऐसा व्यक्ति जो दूसरो के यहाँ फाग खेलने के लिए जाय। २ फाग नामक गीत गानेवाला व्यक्ति।

फजर—स्त्री० [अ० फज्र] १ प्रात काल। सवेरा। २ प्रात काल के समय पढ़ी जानेवाली नमाज।

फजल—पु० [अ० फज्ल] अनुग्रह। कृपा। मेहरबानी।

फजा—स्त्री० [अ० फज़ा] [वि० फजाई] १ खुला हुआ मैदान। विस्तृत क्षेत्र। २ शोभा। ३ मनोरजक और सुन्दर वातावरण। ४ वातावरण।

फजिअत†—स्त्री०=फजीहत।

फजिर†—स्त्री०=फजर।

फजिल†—पु०=फजल।

फजिहतिताई*—स्त्री० [अ० फजीहत] १ फजीहत। २. फजीहत करानेवाली बात।

फजीता†—पु०=फजीहत।

फजीती†—स्त्री० =फजीहत।

फजीलत—स्त्री० [अ० फज़ीलत] १ उत्कृष्टता। श्रेष्ठता। २ प्रधानता।

पद—**फजीलत की पगडी**=(क) विद्वता-सूचक पगडी। (ख) विद्वत्ता सूचक कोई चिह्न। (मुसलमानो मे एक प्रथा है जिसमे वे गुणी और विद्वान् व्यक्ति को सम्मानित करने के लिए उसके सिर पर पगडी बाँधते है।)

फजीहत—स्त्री० [अ० फजीहत] १ पूरी या बहुत अधिक दुर्दशा। कलककारी तथा घृणित रूप मे होनेवाली खराबी। २ बहुत ही घृणित और हेय रूप मे होनेवाला झगडा या तकरार।

पद—**थुक्का-फजीहत**। (दे०)

फजीहती†—स्त्री०=फजीहत।

फजूल—वि० [अ० फुज़ूल] जो किसी काम का न हो। निरर्थक। अव्य० व्यर्थ। बे-फायदा।

फजूलखर्च—वि० [अ+फा०] अधिक खर्च करनेवाला। अपव्ययी। पु० व्यर्थ का व्यय। अपव्यय।

फजूलखर्ची—स्त्री० [अ+फा०] व्यर्थ बहुत अधिक व्यय करना। अपव्यय। फजूलखर्च।

फज्ल—पु०=फजल।

फट—स्त्री० [अनु०] १ फटने की क्रिया या भाव। २ किसी चीज के फटने से होनेवाला शब्द। ३ मोटर, मशीन आदि के चलने अथवा चिपटी हलकी चीज के आघात से होनेवाला शब्द।

पद—**फट से या फटाफट**=बहुत जल्दी। तुरन्त।

†स्त्री०=फटकार।

फटक—स्त्री० [हिं० फटकना] १ फटकने की क्रिया या भाव। २. अन्न को फटकने पर उसमे से निकलनेवाला रद्दी अश। फटकन।

†पु०=स्फटिक।

†पु०=फाटक।

†अव्य० [हिं० फट] फट से। तत्काल। तुरन्त।

फटकन—स्त्री० [हिं० फटकना] १. फटकने की क्रिया या भाव। २ फटकने, झाडने आदि पर निकलनेवाली धूल, मिट्टी आदि। ३ अनाज फटकने पर निकलनेवाला निरर्थक या रद्दी अश।

फटकना—स० [अनु० फट] १ फट-फट शब्द करना। २ कपडे को इस प्रकार झटके से झाड़ना कि उसमे लगी हुई धूल तथा पड़ी हुई सिलवटें निकल जायँ। ३ पटकना। ४ अस्त्र आदि चलाना या फेंकना। ५ सूप मे अनाज रखकर उसे इस प्रकार बार बार उछालना कि उसमे मिला हुआ कूड़ा-करकट छँटकर अलग हो जाय।

मुहा०—**फटकना-पछोड़ना**=(क) सूप या छाज पर रखा हुआ अन्न हिलाकर साफ करना। (ख) अच्छी तरह देख-भालकर पता लगाना कि कही कोई त्रुटि या दोष तो नही है।

६ रूई आदि फटके या धुनकी से धुनना।

अ० १ किसी का इस प्रकार कही जा या पहुँचकर उपस्थित होना कि लोग उसकी उपस्थिति का अनुभव करने लगे।

विशेष—इस अर्थ मे इसका प्रयोग अधिकतर नहिक रूप मे होता है। जैसे—वहाँ कोई फटक नही सकता (या फटकने नही पाता)। पर कुछ उर्दू कवियो ने इसका प्रयोग सहिक रूप मे भी किया है। जैसे—अक्सर औकात आ फटकते है।

२ अलग या दूर होना। न रह जाना। ३ विवशता की दशा मे हाथ-पैर पटकना। फटफटाना। ४ कुछ करने के लिए हाथ-पैर हिलाना। प्रयत्नशील होना।

पु० गुलेल का फीता जिसमे गुल्ला रखकर फेकते है।

फटकनी—स्त्री० [हिं० फटकना] १ फटकने की क्रिया या भाव। २ अनाज फटकने का सूप।

फटकरना—अ० [हिं० फटकारना का अ०] फटकारा जाना।

†स०=फटकना।

फटकरी—स्त्री०= फिटकरी।

फटकवाना—स० [हिं० फटकना का प्रे०] फटकने मे प्रवृत्त करना। फटकने का काम किसी से कराना।

फटका—पु० [अनु०] १ फटफटाने अर्थात् विवश होकर हाथ-पैर पटकने की क्रिया या भाव। २ धुनिये की धुनकी जिससे वह रूई आदि धुनता है।

क्रि० प्र०—खाना।

३ फले हुए पेडो मे बँधी हुई वह लकडी जिसके साथ बँधी हुई रस्सी हिलाने से उससे फट-फट शब्द होता है। (इसमे फल खानेवाली चिड़ियाँ वहाँ से उड़ जाती या पास नही आती।) ४ काव्य के रस आदि गुणो से हीन ऐसी कविता जिसमे बहुत सी साधारण तुकबन्दी के सिवाय कुछ भी न हो।

क्रि० प्र०—जोडना।

पु० [हिं० फटकन] एक प्रकार की बलुई भूमि जिसमे पत्थर के टुकड़े अधिक होते हैं। इसी कारण यह उपजाऊ नही होती।

†पु०=फाटक।

फटकाना—स० [हिं० फटकना] १ किसी को कुछ फटकने मे प्रवृत्त करना। फटकवाना। २. अलग करना। ३ फेंकना।

फटकार—स्त्री० [हिं० फटकारना] १ फटकारने की क्रिया या भाव। २ ऐसी कठोर बात जिससे किसी की भर्त्सना की जाय। फटकार कर कही हुई बात। झिडकी। दुत्कार।

क्रि० प्र०—पडना।—बताना।—सुनना।—सुनाना।

३ शाप। (क्व०) ४ वह कोडा या चाबुक जो घोडो को सधाने-सिखाने के समय जोर की आवाज करने के लिए चलाते या फटकारते है।

फटकारना—स० [अनु०] १ कोई चीज इस प्रकार वेगपूर्वक और झटके से हिलाना कि उसमे से फट शब्द हो। जैसे—कोडा या चाबुक फटकारना। २ एक मे मिली हुई बहुत सी चीजे इस प्रकार हिलाना या झटका मारना जिसमे वे छितरा जायँ। जैसे—जटा या दाढी फटकारना। ३ इस प्रकार झटके से हिलाना कि कोई चीज दूर जा पडे। झटकारना। ४ शस्त्र आदि का प्रहार करने के लिए इधर-उधर हिलाना। जैसे—गदा फटकारना। ५ कपडे को पत्थर आदि पर पटक कर धोना। ६ क्रुद्ध होकर किसी से ऐसी कडी बातें कहना जिससे वह चुप हो जाय या लज्जित होकर दूर हट जाय। खरी और कडी बाते कहकर चुप कराना। जैसे—आप जब तक उन्हे फटकारेगे नही, तब तक वे नही मानेंगे।

सयो० क्रि०—देना।

७ बहुत शान से या ऐंठ दिखाते हुए धन अर्जित या प्राप्त करना। जैसे—दस-पाँच रुपए रोज तो वह बात की बात मे फटकार लेता है।

सयो०क्रि०—लेना।

फटकिया—पु० [देश०] मीठा नामक विष का एक भेद जो गोबरिया से कम विषैला होता है।

फटकी—स्त्री० [हिं० फटक] १ वह झाबा जिसमे बहेलिया पकडी हुई चिडियाँ रखते है। २ दे० 'फटका'।

फटकेबाज—पु० [हिं० फटका+फा० बाज़] [भाव० फटकेबाजी] वह जो बहुत ही निम्न कोटि और बाजारू कविताएं करता हो।

फटन—स्त्री० [हिं० फटना] १ फटने की क्रिया या भाव। फटने के कारण किसी चीज मे पडनेवाली दरार या बननेवाला रेखाकार चिह्न। ३ भूगोल में, चट्टानो आदि पर दबाव पडने के कारण होनेवाली दरार। (क्लीवेज)

फटना—अ० [हिं० फाड़ना का अ० रूप] १ आघात लगने के कारण या यो ही किसी चीज का बीच मे से इस प्रकार खडित होना या उसमे दरार पड जाना कि अन्दर की चीजें बाहर निकल पड़े या बाहर से दिखाई देने लगे। जैसे—जमीन या दीवार फटना।

मुहा०—फट पडना=अचानक बहुत अधिक मात्रा मे आ पहुँचना। सहसा आ पड़ना। जैसे—(क) दौलत तो उनके घर मानो फट पडी है। (ख) आफत तो उनके सिर मानो फट पडी है। **फटा पड़ना**=इतनी अधिकता होना कि अपने आधार या आधान मे समा न सकें। जैसे—उसका रूप तो मानो फटा पड़ता था।

२. किसी पदार्थ का बीच से कटकर अलग या दो टुकडे हो जाना। जैसे—कपडा फटना। ३ बीच या सीध में से निकलकर किसी ओर असगत रूप से बढना या अलग होकर दूर निकल जाना।

मुहा०—फट जाना या पड़ना—बीच या सीध में से अचानक निकलकर इधर या उधर हो जाना। जैसे—यह घोड़ा चलते चलते रास्ते मे फट पडता है, अर्थात् अचानक सीधा रास्ता छोडकर दाहिनी या बाईं ओर बढ जाता है।

४. किसी गाढे द्रव पदार्थ मे ऐसा विकार होना जिससे उसका पानी अलग और सार भाग अलग हो जाय। जैसे—खून फटना, दूध फटना। ५ रोग, विकार आदि के कारण शरीर के किसी अग मे ऐसी पीडा या वेदना होना कि मानो वह अग फट जायगा। जैसे—दरद के मारे आँख या सिर फटना, बहुत अधिक थकावट के कारण पैर फटना, हो-हल्ले से कान फटना। ६ लाक्षणिक रूप मे, मन या हृदय पर ऐसा आघात लगना कि उसकी पहलेवाली साधारण अवस्था न रह जाय। जैसे—किसी के दुर्व्यवहार से चित्त (मन या हृदय) फटना, शोक से छाती फटना। ७ किसी चीज या बात का अपनी साधारण या प्रसम अवस्था म न रहकर विकृत अवस्था मे आना या होना। जैसे—चिल्लाते-चिल्लाते आवाज (या गला) फटना। ८ किसी पर विपत्ति के रूप मे आकर गिरना। उदा०—सीता असगुन कों कटाई नाक बार, सोई अब कृपा करि राधिका पै फेर फाटी है।—रत्ना०।

फट-फट—स्त्री० [अनु०] १ फट-फट शब्द। जैसे—(क) चप्पल या जूते की फट-फट। (ख) मोटर की फट-फट। २ व्यर्थ की बकवाद। ३ कहा-सुनी। तकरार।

फटफटाना—स० [अनु०] फट-फट शब्द उत्पन्न करना।

अ० १. फट-फट शब्द करते हुए इधर-उधर व्यर्थ घूमना। मारा-मारा फिरना। २ विवश होने पर कुछ चिन्तित या विकल होना। ३ व्यर्थ का प्रलाप या बकवाद करना।

फटहा†—वि० [हिं० फटना] १ फटा हुआ। २ अड-बड और अश्लील बाते बकनेवाला।

फटा—वि० [हिं० फटना] १ जो फट गया हो। जैसे—फटा कपडा।

मुहा०—किसी के फटे में पैर देना=दूसरे की विपत्ति अपने सिर लेना।

२ जो बहुत ही बुरी या हीन अवस्था मे आ गया हो।

पद—फटे हाल (या हालो)—बहुत ही दुर्दशाग्रस्त रूप मे। जैसे—महीने भर मे ही भागा हुआ लडका फटेहाल (या हालो) घर आ पहुँचा।

३ जो बहुत ही विकृत अवस्था मे हो। जैसे—फटी आवाज।

पु० किसी चीज के फटने से बना हुआ गड्ढा या दरार।

स्त्री० [स० फट+टाप्] १ साँप का फन। २ अभिमान। घमड। ३ छल। धोखा। ४ छिद्र। छेद।

फटाका—पु० [अनु०] फट की तरह होनेवाला जोर का शब्द।

फटाटोप—पु० [स० ष० त०] साँप का फैला हुआ फन।

फटान†—स्त्री० [हिं० फटना] १ फटन। २ वृक्ष का खोडर।

फटिक—पु० [स० स्फटिक, पा० फटिक] १ स्फटिक। बिल्लौर। २. सग-मरमर।

फटिका—स्त्री० [स० स्फटिक] १ एक प्रकार की शराब जो

जौ आदि से खमीर उठाकर बिना चुवाए बनाई जाती है। २. गुलेल की डोरी के बीचो-बीच रस्सी से बुनकर बनाया हुआ वह चौकोर हिस्सा जिसमे मिट्टी की गोली रखकर चलाई जाती है। उदा०—बीच परे भौंर फटिका से सुघरत है।—सेनापति।

फटीचर—वि०[हिं० फटा+चीर ?] १ (व्यक्ति) जो फटे-पुराने कपडे पहनता हो या पहने रहता हो। २ बहुत ही तुच्छ या हेय।

फटेहाल—क्रि० वि०[हिं०+अ०] बहुत ही दीन या बुरी अवस्था मे। दुर्दशाग्रस्त रूप मे।

फट्टा—पु० [हिं० फटना] [स्त्री० अल्पा० फट्टी] १ लकडी आदि को चीरकर निकाला हुआ छोटा तख्ता। २ बाँस आदि को चीरकर निकाला हुआ पतला खड या छड।

पु०[स० पट] टाट।

मुहा०—फट्टा उलटना=टाट उलटना। दिवाला निकालना।

फट्टी—स्त्री०[हिं० फट्टा] १ छोटा तख्ता। २ बाँस की चिरी हुई पतली छडी। ३ बच्चो के लिखने की पटिया। पट्टी। (पश्चिम)

फड़—पु०[स० पण] १ वह कपडा जो छोटे दुकानदार जमीन पर बिक्री की चीजें सजाकर रखने के लिए बिछाते है। २ कोठी, दूकान आदि का वह भाग जहाँ बैठकर चीजें खरीदी और बेची जाती है।

पद—फड पर=मुकाबले मे। सामने। उदा०—भगे बलीमुख महाबली लखि फिरै न फट (फड) पर झेरे।—रघुराज।

३ बिछावन। बिछौना। उदा०—सूल से फूलन के फर (फड) पैतिय फूल-छरी सी परी मुरझानी। ४ जूएखाने मे, वह स्थान जहाँ जुआरी बैठकर जूआ खेलते है। ५ दल। समूह।

क्रि० प्र०—बाँधना।

पु० [स० पटल या फल] १ गाडी का हरसा। २ वह गाडी जिस पर तोप रखकर ले चलते हैं। चरख।

† पु० =फल।

फड़क—स्त्री० [हिं० फड़कना] फडकने की क्रिया या भाव। फडकन।

फड़कन—स्त्री० [हिं० फडकना] १ फडकने की क्रिया या भाव। फडक। फड़फडाहट। २ धडकन। ३ उत्सुकता।

वि० १ भडकनेवाला। जैसे—फडकन बैल। २ चचल। ३ तेज।

फड़कना—अ० [अनु०] १ इस प्रकार बार बार नीचे-ऊपर या इधर-उधर हिलना कि फड़-फड शब्द हो। २. शरीर के किसी अग मे स्फुरण होना। अग का वायु-विकार आदि के कारण रह-रहकर थोडा उभरना और दबना। जैसे—आँख या कँधा फडकना।

मुहा०—(किसी की) बोटी-बोटी फड़कना=(किसी का) बहुत अधिक चचल होना।

३. कोई बहुत बढ़िया या विलक्षण चीज देखकर या बात सुनकर मन मे उक्त प्रकार का स्फुरण होना जो उस चीज या बात के विशेष प्रशसक होने का सूचक होता है।

सयो० क्रि०—उठना।—जाना।

४. पक्षियो के पर हिलना। फड़फडाना।

† अ०=फटकना।

फड़काना—स० [हिं० फड़कना का प्रे०] १ किसी को फड़कने मे प्रवृत्त करना। २ उत्तेजित करना। भड़काना। ३. विचलित करना। ४ हिलाना-डुलाना।

फड़का-पेलन—पु० [देश०] एक प्रकार का बैल जिसका एक सीग सीधा ऊपर को उठा और दूसरा नीचे को झुका होता है।

फड़नबीस—पु० [फा० फर्दनवीस] मराठो के राजत्वकाल का एक राजपद।

विशेष—मूलत यह पद राजसभा के साधारण लेखको को दिया जाता था। पर बाद मे यह दीवानी या माल विभाग के ऐसे कर्मचारियों को भी दिया जाने लगा था जो बडे-बडे इनाम या जागीरें देने की व्यवस्था करते थे।

फड़फड़ाना—अ० [अनु०] १. फड-फड शब्द होना। २ पक्षियो आदि का पकडे जाने पर बधन से निकल भागने के लिए जोरो से पर मारते हुए फड-फड शब्द करना। ३ लाक्षणिक अर्थ मे घोर कष्ट, विपत्ति, सकट आदि से अत्यधिक सतप्त होना और उससे छुटकारा पाने के लिए प्रयत्न करना। ४ विशेष उत्सुकता के कारण चचल होना।

स० १ कोई चीज बार-बार हिलाकर फड-फड शब्द उत्पन्न करना। जैसे—पर फडफडाना। २ दे० 'फटफटाना'।

फड़बाज—पु० [हिं० फड+फा० बाज (प्रत्य०)] [भाव० फडबाजी] वह जो अपने यहाँ जूआ खेलने के लिए बुलाता हो। अपने यहाँ लोगो को जूआ खेलानेवाला व्यक्ति।

फड़िया—पु० [हिं० फड=दुकान+इया (प्रत्य०)] १ वह बनिया जो फुटकर अन्न बेचता हो। २ वह जो अपने यहाँ जूए का फड रखकर लोगो को जूआ खेलाता हो। फडबाज।

फड़ी—स्त्री० [हिं० फड] ईंटो, पत्थरों आदि का परिमाण स्थिर करने के लिए लगाया जानेवाला वह ढेर जो तीस गज लम्बा, एक गज चौडा और एक गज ऊँचा हो।

फडुआ†—पु० [स्त्री० फडुही] =फावडा।

फड़ई, फड़ुही—स्त्री० १ फरुही। २ छोटा फावडा।

फड़ोलना†—स० [स० स्फुरण] किसी चीज को उलटना-पलटना। इधर-उधर या ऊपर-नीचे करना।

फण—पु० [स०√फण् (विस्तृत होना)+अच्] १ साँप के सिर का वह रूप जब वह अपनी गर्दन के दोनो ओर की नलियों मे वायु भरकर उसे फुलाकर छत्राकार बना लेता है। फन। २ रस्सी का गाँठदार फदा। मुद्धी। ३ नाव का ऊपरी अगला भाग।

फणकर—पु० [स० ब० स०]=फणधर।

फणधर—पु० [स० ष० त०] साँप।

फणा—स्त्री० [स० फण+टाप्]=फण।

फणाकृति—वि० [स० फणा-आकृति, ब० स०] साँप के फन के आकार का। गोलाकार छितराया या फैला हुआ।

फणि-कन्या—स्त्री० [सं० ष० त०] नागकन्या।

फणि-केसर—पु० [ब० स०] नागकेसर।

फणि-चक्र—पु०[स० मध्य० स०] फलित ज्योतिष मे नाडीचक्र जो सर्पाकार होता है और जिससे विवाह मे वर-कन्या का नाड़ी मिलान किया जाता है। नाड़ीनक्षत्र। (दे०)

फणिजिह्वा, फणिजिह्विका—स्त्री० [स० ष० त०] १ महाशतावरी। बड़ी सतावर। २ कंघी नाम का पौधा।

फणित—भू० कृ० [स०√फण्+क्त] १ गया हुआ। गत। २ तरल किया हुआ।

फणि-तल्पग—पु० [स० फणि-तल्प, उपमि० स०, √गम+ड] विष्णु।

फणि-नायक—पु० [स० ष० त०] वासुकि।

फणि-पति—पु० [स० ष० त०] १ वासुकि। २ पतंजलि।

फणि-प्रिय—पु० [स० ष० त०] वायु। हवा।

फणि-फेन—पु० [स० ष० त०] अफीम।

फणि-भाष्य—पु० [स० मध्य० स०] पाणिनी के सूत्रों पर लिखा हुआ पतंजलि कृत महाभाष्य नामक व्याकरण ग्रंथ।

फणि-भुज्—पु० [स० फणिन्√भुज (खाना)+क्विप्] वह जो साँपों का भक्षण करता हो। जैसे—गरुड़, मोर आदि।

फणि-मुक्ता—स्त्री० [स० ष० त०] साँप की मणि।

फणि-मुख—पु० [स० ब० स०] साँप के मुख के आकार का एक तरह का पुरानी चाल का औजार जिससे चोर मकानों में सेंध लगाते थे।

फणि-लता—स्त्री० [उपमि० स०] नागवल्ली। पान की लता।

फणि-वल्ली—स्त्री० =फणिलता।

फणींद्र—पु० [स० फणिन्-इंद्र, ष० त०] १ शेषनाग। २ वासुकि। ३ फनवाला साँप।

फणी (णिन्)—पु० [स० फण+इनि] १ साँप। २ केतुग्रह। ३ सीसा। ४ मरुआ नामक पौधा। ५ सर्पिणी नामक ओषधि।

फणीश—पु० [स० फणिन्-ईश ष० त०] १ शेषनाग। २ वासुकि। ३ पतंजलि।

फणीश्वर—पु० [स० फणिन्-ईश्वर, ष० त०] =फणीश।

फणीश्वर-चक्र—पु० [स० मध्य० स०] शनि की नक्षत्र-स्थिति के आधार पर जंबु, प्लक्ष आदि सात द्वीपों का शुभाशुभ फल जानने का एक चक्र। (ज्यो०)

फतवा—पु० [अ० फत्वा] धर्म गुरु विशेषतः किसी मुसलमान धर्म-गुरु द्वारा धर्म-संबंधी किसी विवादास्पद बात के संबंध में दिया हुआ शास्त्रीय लिखित आदेश। व्यवस्था।

फतह—स्त्री० [अ० फत्ह] १ युद्ध में होनेवाली विजय। जीत। २ किसी काम में होनेवाली महत्त्वपूर्ण सफलता। कामयाबी।

फतह-पेंच—पु० [अ० फत्ह+हिं० पेंच] १ पगड़ी बाँधने का एक विशिष्ट ढंग या प्रकार। २ स्त्रियों के बाल गूँथने और चोटी बाँधने का एक विशिष्ट ढंग या प्रकार। ३ हुक्के का एक प्रकार का नैचा।

फतहमंद—वि० [अ०+फा०] [भाव० फतहमंदी] १ विजयी। २ सफल।

फतहयाब—वि० [अ०+फा०] [भाव० फतहयाबी]=फतहमंद।

फतिंगा—पु० [स० पतंग] [स्त्री० फतिंगी] १ पंखोंवाला कोई छोटा कीड़ा। २ पंखोंवाला वह छोटा कीड़ा जो आग की लपट या दीए की लौ के चारों ओर घूमता रहता है और अंत में जल मरता है।

फतीर—पु० [अ० फतीर] चपातियाँ आदि पकाने के लिए गूँधा तथा सँवारा हुआ ताजा आटा। ('खमीर' इसी का विपर्याय है।)

फतील—पु० [अ० फतील] १ दीए की बत्ती। २ वह बत्ती जो भूत-प्रेत आदि की बाधा दूर करने के लिए जलाई तथा प्रेत-बाधा से ग्रस्त व्यक्ति को दिखलाई जाती है। पलीता।

फतीलसोज—पु० [फा० फतीलसोज] १ धातु की वह चौ-मुखी दीअट जिसमें नीचे-ऊपर कई दीये जलाये जाते हैं। २ दीअट।

फतीला—पु० [अ० फतील] १ दीये की बत्ती। २ बत्ती। ३ जरदोजी का काम करनेवालों की लकड़ी की वह तीली जिस पर बेलबूटे और फूलों की डालियाँ बनाने के लिए कारीगर तार को लपेटते हैं। दे० 'पलीता'।

†पु० =पतीला (बरतन)।

फतुही†—स्त्री०=फतूही।

फतूर—पु० [अ० फुतूर] १ दोष। विकार। २ उत्पात। उपद्रव। ३ बाधा। विघ्न। ४ शरारत।

फतूरिया—वि० [हिं० फतूर+इया (प्रत्य०)] १ उपद्रवी। २ शरारती।

फतूह—स्त्री० [अ० फत्ह के बहुवचन रूप फुतूह से] १ विजय। २ विजय के उपरांत लूट-पाट में मिला हुआ धन या सम्पत्ति। ३ प्राप्ति। लाभ। ४ समृद्धि। ५ ऊपर से होनेवाली आय।

फतूही—स्त्री० [अ० फतूही] बिना बाँहों की एक तरह की कुरती या बंडी। स्त्री० [अ० फुतूह] लूट-पाट में प्राप्त किया हुआ धन।

फते†—स्त्री० =फतह।

फतेह—स्त्री० =फतह।

फदकना—अ० [अनु०] १ फद-फद शब्द होना। २ भात, रस आदि का पकते समय फद-फद शब्द करके उछलना। खद-बद करना।
†अ०=फुदकना।

फदका†—पु० [हिं० फदकना] गुड़ का वह पाग जो बहुत अधिक गाढ़ा न हुआ हो।

फदफदाना—अ० [अनु०] १ फदफद शब्द होना। २ वृक्षों में नई कोपलें या पत्तियाँ निकलना। ३ शरीर में बहुत सी फुंसियाँ या गरमी के दाने निकल आना। ४ फदकना।
स० फद-फद शब्द उत्पन्न करना।

फदिया†—स्त्री० =फरिया (एक तरह का लहँगा)।

फदुक्का†—पु० [हिं० फुदकना] टिड्डी का छोटा बच्चा।

फन—पु० [स० फण] साँप के सिर के आसपास का वह भाग जिसे साँप आवेश अथवा मस्ती में हवा भरकर फुला और फैला लेता है।
मुहा०—फन मारना=आवेश में आकर विशेष प्रयत्न करना।
पु० [फा० फन] १ गुण। खूबी। २ विद्या। ३ कला। ४ दस्तकारी। ५ चालबाजी। धूर्तता। ६ कौशल।
पद—हरफन मौला=बहुत ही कुशल व्यक्ति। हर काम में होशियार।

फनकना—अ० [अनु०] १ फनफन शब्द करना। जैसे—बैल या साँप का फनकना। २ इस प्रकार तेजी से चलना कि हवा से वस्त्र फनफन करने लगे।

फनकार†—स्त्री० [अनु०] १ फन-फन होनेवाला शब्द। २ वह फन-फन शब्द जो साँप के फूँकने या बैल आदि के साँस लेने में होता है।

फनगना—अ० [हिं० फुनगा] १. वृक्षों आदि का फुनगियों अर्थात् अंकुरों से युक्त होना। २ अच्छी तरह उन्नति करना।

फनगा—पु० [स० पतंग] फतिंगा।

†पु०=फुनगा।

फनना—अ० [हिं० फाँदना] १ फदा बनना या लगना। २ काम का आरम्भ होना। ठनना।

फनफनाना—अ० [अनु०] १ मुँह से हवा छोड़कर फन फन शब्द उत्पन्न करना। जैसे—साँप का फनफनाना। २ चचलतापूर्वक इधर-उधर हिलना।

फनस—पुं० [स० पनस, प्रा० फनस] कटहल।

फना—स्त्री० [अ० फना] १ पूरा विनाश। बरबादी। २ मृत्यु। मौत। ३ सूफी मत मे, भक्त का परमात्मा मे लीन होना।

वि० नष्ट। बरबाद।

फनाना—स० [हिं० फाँदना] १ फदा बनाना। २ काम शुरू करना। ठानना।

फनिंग†—पु०=फणींद्र (साँप)।

फनिंद†—पु०=फणींद्र (साँप)।

फनि†—पु० १ =फणी। २ =फन।

फनिक†—पु०=फणिक।

फनिग—पु० [हिं० फतिगा] फतिगा।

†पु० [स० फणिक] साँप।

फनिधर†—पु० [स० फणिधर] साँप।

फनिपति†—पु०=फणिपति।

फनियर†—पु० [स० फणिधर] १ फनवाला। २ अजगर।

फनियाला—पु० दे० 'तूर'।

पु०=फनियर (साप)।

फनिराज—पु०=फणींद्र (साँप)।

फनी—पु०=फणी।

स्त्री०=फन (साँप का)।

पु०=फनियर।

वि० [फा० फन्नी] १ फन-सबधी। २ फन या हुनर जाननेवाला। ३ चालाक। धूर्त्त।

फनूस†—पु०=फानूस।

फन्नी—स्त्री० [स० फण] १ लकड़ी का वह टुकडा जो छेद आदि बद करने के लिए किसी चीज मे ठोका जाता है। पच्चर। २ वास्तुकला मे, लोहे का वह मोटा पत्तर या कोनिया जो बाहर निकले हुए बोझ को सँभालने के लिए उसके नीचे लगाई जाती है। ३ कघी की तरह का जुलाहो का एक ओजार जो बाँस की तीलियों का बना होता है और जिसमे बुना हुआ बाना दबाकर ठीक किया जाता है।

फफका†—पु०=फफोला।

फफ्फस—वि० [अनु०] स्थूल किंतु बलहीन या शिथिल काया वाला।

फफकना—अ० [अनु०] रुक-रुक कर और फफ-फफ शब्द करते हुए रोना।

फफका†—पु० [अनु०] फफोला। छाला।

फफदना—अ० [?] अधिक विस्तृत होना। इधर-उधर फैलना।

फफसा—पु० [स० फुप्फुस] फेफडा।

वि० १. फूला हुआ और पोला। २ जिसमे रस या स्वाद न हो। फीका। ३ (फल) जिसका स्वाद बिगड गया हो।

फफूंदी—स्त्री० [हिं० फुबती] स्त्रियों के पेड़ू पर धोती, लहँगा आदि मे लगाई जानेवाली गाँठ। विशेष दे० 'नीवी'।

स्त्री० [?] बरसात के दिनो मे वनस्पतियो आदि पर जमनेवाली एक तरह की सफेद रग की काई। भुकडी।

फफोर†—पु० [स०] एक प्रकार का जगली प्याज।

†पु०=फफोला।

फफोला—पु० [स० प्रस्फोट] १ त्वचा के जलने पर पडनेवाला वह छाला जिसमे पानी भरा होता है और जो सफेद झिल्ली से युक्त होता है। (ब्लिस्टर) २ शारीरिक विकार के कारण होनेवाला उक्त प्रकार का छाला।

क्रि० प्र०—डालना। —पडना।

मुहा०—दिल के फफोले फोड़ना=अपने दिल की जलन या रोष प्रकट करना। दिल का बुखार निकालना।

३ पानी का बुलबुला।

फबकना†—अ०=फफदना।

फबती—स्त्री० [हिं० फबना] ऐसी व्यग्यात्मक तथा हास्यपूर्ण बात जो किसी व्यक्ति की तात्कालिक स्थिति के अनुसार बहुत ही उपयुक्त रूप से फबती अर्थात् ठीक बैठती हो। (रलरी)

क्रि० प्र०—उडाना।—कसना।

फबन—स्त्री० [हिं० फबना] १ फबने अथवा फबे हुए होने की अवस्था या भाव। उदा०—अगोछे की अब तुम फबन देखना।—बालमुकुद गुप्त। २ सुदरता।

फबना—अ० [स० प्रभवन] १ उपयुक्त प्रकार से अथवा उपयुक्त स्थान पर रखे जाने पर किसी चीज का शोभन तथा सुदर लगना। जैसे—लाल साडी पर काली गोट का फबना। २. बात आदि का ठीक मौके पर उपयुक्त और शोभन लगना। जैसे—तुम्हारे मुँह पर गाली नही फबती। ३ व्यक्ति का बढ़िया कपडे आदि पहन होने पर सुदर लगना।

फबाना—स० [हिं० फबना] १ इस प्रकार किसी चीज को उपयुक्त स्थान पर रखना कि वह शोभन या सुदर जान पडने लगे। २ अच्छे वस्त्र आदि पहनाकर किसी को सुदर बनाना।

फबि†—स्त्री०=फबन।

फबीला—वि० [हिं० फबि+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० फबीली] जो फब रहा हो। फबता हुआ।

फरंगिस्तान—पु० [फा०] इग्लैड।

फरंगी—वि० [फा०] अग्रेजी का।

पु० अग्रेज जाति का व्यक्ति। फिरगी।

फरऊन—पु० [अ० फिरऔन] १ मिस्र के प्राचीन राजाओ की उपाधि। (फरो, फराओ) २ लोक-व्यवहार मे ऐसा व्यक्ति जो बहुत ही अत्याचारी, अभिमानी तथा उद्दड हो।

फरक—पु० [अ० फर्क] १ अलगाव। पार्थक्य। २ ऐसा भेद जो पार्थक्य के कारण हो अथवा पार्थक्य का सूचक हो। ३ दो विभिन्न वस्तुओ, व्यक्तियो आदि मे होनेवाली विषमता। ४ हिसाब-किताब आदि मे भूल-त्रुटि आदि के कारण पडनेवाला अतर। ५ एक रकम या सख्या को दूसरी रकम या सख्या मे से घटाने पर निकलनेवाला

शेषांश। बाकी। ६ दो बिंदुओं या स्थानों में होनेवाली दूरी या फासला। ७ भेद-भाव। दुराव।
†क्रि० वि० अलग। पृथक्।
†स्त्री०=फड़क।
फरकन—स्त्री० [हिं० फरकना] फड़कने की क्रिया या भाव। फड़क।
फरकना—अ० [अ० फर्क=अंतर] १ अलग या दूर होना। २ कटकर निकल जाना।
†अ०=फड़कना।
फरका—पु० [सं० फलक] १ ऐसा छप्पर जो अलग से बनाकर बँडेर पर चढ़ाया या रखा जाता है। २ बँडेर में एक ओर की छाजन। पल्ला। ३ झोपड़िया, दरवाजों आदि के आगे लगाया जानेवाला टट्टर।
†पु० दे० 'फिरका'।
फरकाना†—स० [हिं० फरक=अलग] १ अलग या दूर करना। २. फरक या अन्तर निकालना या स्थिर करना।
†स० फड़काना।
फरकिल्ला—पु० [हिं० फार+कील] गाड़ी आदि में लगाया जानेवाला वह खूँटा जिसके सहारे ऊपर का ढाँचा खड़ा रहता है।
फरकी†—स्त्री० [हिं० फरक] १ चिड़ीमारों की लासे से युक्त वह लकड़ी जिस पर चिड़ियों के बैठने पर उनके पैर, पंख आदि चिपक जाते हैं। २ दीवार की चुनाई में खड़े बल में लगाया जानेवाला पत्थर।
फरकौहाँ—वि० [हिं० फरकना+औहाँ (प्रत्य०)] १. फड़कनेवाला। २ फड़कता हुआ।
फरक्क—पु०=फरक।
फरगान—पु० [तु० फर्गाना] तुर्की के फरगाना नामक प्रदेश का निवासी।
फरगाना—पु० तुर्की के अन्तर्गत एक प्रदेश, जहाँ बाबर का पैतृक राज्य था।
फरचा—वि० [सं० स्पृश्य, प्रा० फरस्स] [भाव० फरचाई] १ (खाद्य पदार्थ) जो किसी ने जूठा न किया हो। २ शुद्ध, साफ या स्वच्छ।
फरचाई—स्त्री० [हिं०फरचा+ई (प्रत्य०)] 'फरचा' होने की अवस्था या भाव। शुद्धता।
फरचाना—स० [हिं० फरचा] १ बरतन आदि धोकर साफ करना। फरचा करना। २ पवित्र या शुद्ध करना।
फरजंद—पु० [फा० फर्जंद] पुत्र। बेटा।
फरजंदी—स्त्री० [फा० फर्जंदी] पुत्र-भाव। बाप-बेटे का नाता।
मुहा०—(किसी को) फरजंदी में लेना=(क) पुत्र या बेटा बनाना। (ख) दामाद अर्थात् पुत्र-तुल्य बनाना।
फरजिंद—पु०=फरजंद (बेटा)।
फरज—पु०=फर्ज (कर्तव्य)।
स्त्री०=फर्ज (भग)।
फरजाना—वि० [फा० फरजान] [भाव० फरजानगी] बुद्धिमान्।
फरजाम—पु० [फा० फर्जाम] १ अंत। समाप्ति। २ परिणाम। फल।
फरजी—पु० [फा० फर्जी] शतरज का एक मोहरा जिसे रानी या वजीर भी कहते हैं।
वि० [फा० फर्जी] १ कल्पना में होनेवाला। काल्पनिक। २. जो फर्ज किया या मान लिया गया हो। ३ नकली।
फरजीबंद—पु० [फा०] शतरज के खेल में वह स्थिति जिसमें फरजी अर्थात् वजीर किसी प्यादे के जोर पर बादशाह को ऐसी शह देता है कि विपक्षी की हार हो जाती है।
फरतूत—वि० [फा० फर्तूत] अति वृद्ध। बहुत बूढ़ा।
फरद—स्त्री० [अ० फर्द] १ वह बही जिसमें हिसाब-किताब लिखा होता है। २ सूची। तालिका।
पु० [अ० फर्द] १ एक या अकेला आदमी। एक व्यक्ति। २ एक ही तरह की और एक साथ बननेवाली अथवा एक साथ काम में आनेवाली चीजों के जोड़े में से हर एक। जैसे—एक फरद धोती, एक फरद चादर आदि। ३. दुलाई, रजाई आदि का वह ऊपरी पल्ला जिसके नीचे अस्तर लगाया जाता है। ४ दो चरणों या पदों की कविता।
विशेष—यह शब्द उक्त अर्थों में लोक में प्राय स्त्री रूप में प्रयुक्त होता है।
५. वह पशु या पक्षी जो जोड़े के साथ नहीं, बल्कि अकेला और अलग रहता हो। ६ एक प्रकार का पक्षी जो बरफीले पहाड़ों पर होता है, और जिसके विषय में वैसी ही बातें प्रसिद्ध हैं, जैसी चकवा और चकई के विषय में हैं। ७ एक प्रकार का लक्का कबूतर जिसके सिर पर टीका होता है।
वि० १ अकेला। २ बेजोड़।
फरना†—अ०=फलना।
फरफंद—पु० [हिं० फर+अनु० फंद (जाल)] १ दाँव-पेंच। छल-कपट। २ केवल दूसरों को दिखाने और धोखे में डालने के लिए किया जानेवाला झूठा आचरण। ३ नखरा। चोचला।
क्रि० प्र०—खेलना।—दिखाना।—रचना।
फरफंदी—वि० [हिं० फरफंद] १ फरफंद करनेवाला। छल-कपट या दाँव-पेंच करनेवाला। धूर्त। चालबाज। फरेबी। २ नखरे-बाज। नखरीला।
फरफर—पु० [अनु०] किसी पदार्थ के उड़ने, फड़कने या हिलने से उत्पन्न होनेवाला फरफर शब्द।
क्रि० वि० फरफर शब्द करते हुए।
फरफराना—स० [अनु०] फरफर, शब्द उत्पन्न करना।
अ० फरफर शब्द करते हुए हिलना। जैसे—झंडा फरफराना।
†अ०, स०=फड़फड़ाना।
फरफुंदा—पु०=फतिंगा।
फरमाँबरदार—वि० [फा० फर्माबरदार] [भाव० फरमाबरदारी] आज्ञाकारी।
फरमा—पु० [अ० फ्रेम] १ वह ढाँचा जिसमें रखकर उसी के अनुरूप कोई दूसरी चीज ढाली या बनाई जाती हो। डौल। साँचा। २. लकड़ी आदि का बना हुआ वह ढाँचा या साँचा जिसपर रखकर चमार जूता बनाते हैं। कालबूत।
पु० [अ० फार्म] १ कागज का पूरा तखता या ताव जो एक बार में प्रेस में जाता है। जुज। २ पुस्तकों आदि का उतना अंश जितना उक्त प्रकार के कागज पर एक साथ छपता है। जैसे—इस पुस्तक के

१० फरमे छप गये हैं, अभी पाँच फरमे और बाकी हैं। ३ छापेखाने मे, ढाँचे मे कसी हुई छपनेवाली सामग्री।

फरमाइश—स्त्री० [फा० फ़र्माइश] १ वह चीज जिसके लिए किसी ने अनुरोध किया हो। २ किसी काम या बात के लिए दी जानेवाली आज्ञा विशेषत प्रेमपूर्वक दिया हुआ आदेश।

फरमाइशी—वि० [फा०] १ जो फरमाइश करके बनवाया या मंगाया गया हो। जैसे—फरमाइशी जूता। २ फरमाइश के रूप मे होनेवाला।

फरमान—पु० [फा० फर्मान] १. कोई आधिकारिक विशेषत राजकीय आदेश। २. वह पत्र जिसमे उक्त आदेश लिखा हो।

फरमाना—स० [फा० फर्मान] कोई बात कहना। (बडो के सबध मे सम्मान-सूचक रूप मे प्रयुक्त) जैसे—आपका फरमाना बिलकुल दुरुस्त है।

फरयाद†—स्त्री० =फरियाद।

फरयारी†—स्त्री० [हि० फाल] हल मे की वह लकडी जिसमे फाल (फल) लगा रहता है। खापी।

फरराना†—अ०, स० =फहराना।

फरलांग—पु० [अ० फरलाग] भूमि की दूरी नापने का एक मान जो २२० गज के बराबर होता है।

फरलो—स्त्री० [अ० फरलाग] सरकारी नौकरो को आधे वेतन पर मिलनेवाली लबी छुट्टी।

फरवरी—पु० [अ० फ़ेब्रुअरी] अँगरेजी सन् का दूसरा महीना जो अट्ठाइस दिनो का, परन्तु लौद के वर्ष, उन्तीस दिनों का होता है।

फरवार†—पु० =खलिहान।

फरवारी†—स्त्री० [हि० फरवार+ई (प्रत्य०)] उपजे हुए अन्न या फसल का वह भाग जो किसान खलिहान मे से राशि उठाने के समय ब्राह्मण, बढई, नाई आदि को देते है।

फरवी—स्त्री० [स० स्फुरण] १. एक प्रकार का भूना हुआ चावल जो भुनने पर अन्दर से पोला हो जाता है। मुरमुरा। २ दे० 'लाई'। 'फरुही'।

फरश—पु० [अ० फर्श] १ बैठने के लिए बिछाने का कपड़ा। बिछावन। २ कमर आदि की पक्की और समतल भूमि जिस पर लोग बैठते है। ३ समतल प्रसार या फैलाव। जैसे—फूलों का फरश।

फरशबद—पु० [फा०] वह ऊँचा और समतल स्थान जहाँ गच का फरश बना हो।

फरशी—वि० [अ० फ़र्शी] १ फरश-सबधी। फरश का।

पद—फरशी सलाम=बादशाहो आदि को किया जानेवाला वह सलाम जिसमे आदमी को इस प्रकार झुकना पड़ता था कि उसका सिर लगभग फरश तक पहुँच जाता था।

२. जो फर्श पर रखा जाता या काम मे लाया जाता हो। जैसे—फरशी जूता, फरशी झाड, फरशी हुक्का आदि।

पद—फरशी गोला=आतिशबाजी मे वह गोला जो फरश पर पटकने पर आवाज देता है।

स्त्री० १ कुछ खुले मुँह का धातु का वह आधान या पात्र जिस पर नैचा और सटक लगाकर तमाकू पीते है। २ उक्त पात्र और नैचे, सटक आदि से युक्त हुक्का। गुड़गुडी। ३. पुरानी चाल की बदूक का वह अग जिसमे गज रखा जाता था।

फरसग—पु० [फा० फर्संग] ४००० गज या सवा दो मील की दूरी का एक नाप।

फरस—पु० १ दे० 'फरसा'। २ दे० 'फरश'।

फरसा—पु० [स० परशु] १ पैनी और चौडी धार की एक प्रकार की कुल्हाडी, जो प्राचीन काल मे युद्ध के काम आती थी। २. फावडा।

फरसी—वि०, स्त्री० =फरशी।

फरहंग—स्त्री० [फा० फरहग] शब्द-कोश।

फरहटा†—पु० [हि० फाल] [स्त्री० अल्पा० फरहटी] बाँस, लकडी आदि की पतली, लबी पट्टी।

फरहत—स्त्री० [अ० फर्हत] १ आनद। प्रसन्नता। २. मन की प्रफुल्लता।

फरहद—पु० [स० पारिभद्र, पा० परिमद्द; प्रा० पारिहद्द] एक प्रकार का वृक्ष जो बगाल मे समुद्र के किनारे बहुत होता है। वहाँ के लोग इसे पालितेमदार कहते हैं।

फरहर†—वि० [स० स्फार; प्रा० फार=अलग-अलग, अथवा फरहरा] १ जो एक मे लिपटा या मिला हुआ न हो, अलग-अलग हो। जैसे—फरहर भात। २ साफ। स्पष्ट। ३ निर्मल। शुद्ध। ४ (मन) जिसमे उदासीनता, खेद आदि न हो। प्रफुल्लित। प्रसन्न। ५. चालाक। होशियार।

फरहरना—अ०, स०, [अनु० फरफर] १.=फरफराना। २. =फहराना।

फरहरा—पु० [हि० फहराना] १ कपडे आदि का वह तिकोना या चौकोना टुकडा जिसे छड के सिरे पर लगाकर झडी बनाते है और जो हवा के झोके से उडता रहता है। २ झडा। पताका।

†वि० =फरहर। (देखें)

फरहराना—अ०, स० =फरहरना।

फरहरी†—स्त्री० [हि० फल+हरा (प्रत्य०)] वृक्षो के फल या उन्हीं के वर्ग की और चीजे जो खाई जाती हो। फलहरी।

†वि०, स्त्री० फलाहारी। उदा०—सुख करिआर फरहरी खाना। —जायसी।

फरहा†—पु० [हि० फल] धुनियो की कमान का वह चौडा भाग जिस पर से होकर तांत दोनो सिरो तक जाती है।

फरहाद—पु० [फा० फर्हाद] इतिहास-प्रसिद्ध एक प्रेमी जिसने अपनी प्रेमिका शीरी के आदेश पर पहाड काटकर नहर बनाई थी। कहते है कि किसी कुटनी के धोखा देने पर वह अपना सिर फोडकर मर गया।

फरही†—स्त्री० [हि० फरहा] लकडी का वह चौडा टुकडा जिस पर ठठेरे बरतन रखकर रेती से रेतते हैं।

फरा†—पु० [देश०] एक प्रकार का व्यजन जो चावल के आटे को गरम पानी मे गूँथकर और पतली बत्तियाँ बनाकर पानी की भाप मे उबालने से बनता है।

फराक†—पु० [फा० फराख] १ मैदान। २. आयताकार स्थान।

वि० लबा-चौडा। विस्तृत।

पु० [अ० फ्राक] छोटी लडकियो के पहिनने का अँगरेजी ढग का एक तरह का लबा पहनावा।

फराकत—नि० =फराख।

स्त्री० फरागत।

फराख—वि० [फा० फराख] लम्बा-चौडा। विस्तृत।

फराखदिल—वि० [फा० फराख दिल] [भाव० फराखदिली] उदार हृदयवाला।

फराखी—स्त्री० [फा० फराखी] १ फराख अर्थात् विस्तृत होने की अवस्था या भाव। विस्तार। २ धन-धान्य आदि की उचित सपन्नता। ३ वह तस्मा या चौडा फीता जो घोडे की पीठ पर बाँधकर कसा जाता है। तग।

फरागत—स्त्री० [अ० फरागत] १ छुटकारा। मुक्ति।

क्रि० प्र०—पाना।—मिलना।

२ कार्य आदि की समाप्ति पर होनेवाली निश्चितता। ३ मल-त्याग, शौच आदि की क्रिया। जैसे—आप भी फरागत हो आवें।

क्रि० प्र०—जाना।

३ दौलतमदी। धन-सपन्नता। ४ सुख।

वि० जिस किसी काम, बधन आदि से छुटकारा मिल गया हो।

फराज—वि० [फा० फराज] ऊँचा।

पद—न शेब व फराज=किसी बात का ऊँच-नीच या भला-बुरा (पक्ष)।

पु० ऊँचाई।

फरामुश†—वि०=फरामोश।

फरामोश—वि० [फा० फरामोश] [भाव० फरामोशी] १ भूलनेवाला। २ (व्यक्ति) जो किसी काम या बात का वादा करके भी उसे भूल जाय और फलत वादे के अनुसार काम न करे।

पु० लडको का एक खेल जिसमे वे आपस मे एक-दूसरे को कोई चीज देते है, और यदि पानेवाला तुरन्त 'फरामोश' कह देता है तो उसकी जीत समझी जाती है नही तो वह हार जाता है।

क्रि० प्र०—बदना।

फरामोशी—स्त्री० [फा० फरामोशी] भूलने की अवस्था या भाव। विस्मृति।

फरार—वि० [अ० फरार] (अपराधी) जो शासन की हिरासत मे आने से बचने के लिए कहीं भाग अथवा छिप गया हो। पलायित।

†पु० दे० 'फैलाव' (विस्तार)।

फरारी—स्त्री० [फा० फरार] फरार होने की अवस्था, क्रिया या भाव।

†वि० फरार।

फरालना—स०=फैलाना।

फराश—पु० [?] झाऊ की जाति का एक प्रकार का बडा वृक्ष जो पजाब, सिंध और फारस मे अधिकता से होता है।

†पु० १ फर्राश। २ =पलाश।

फरास—पु०=फर्राश।

फरासीस—पु० [अ० फ्रास] १. फ्रास देश। २ उक्त देश का निवासी।

स्त्री० पुरानी चाल की एक प्रकार की लाल छीट।

फरासीसी—वि० [हि० फरासीस] फ्रास देश का।

स्त्री० फ्रास देश की भाषा।

पु० फ्रास देश का निवासी।

फराहम—वि० [फा०] [भाव० फराहमी] इकट्ठा किया हुआ।

फरिका†—पु०=फरका।

फरिया—स्त्री० [हि० फेरना] १ वह लहँगा जो सामने की ओर सिला नही रहता। २ वह ओढनी जो स्त्रियाँ लहँगा पहनने पर ऊपर से ओढती है।

पु० [हि० फिरना] रहट के चरखे के चक्कर मे लगी हुई वे लकडियाँ जिन पर मिट्टी की हँडिया की माला लटकती है।

पु० [हि० परी=मिट्टी का कटोरा] मिट्टी की नाँद जो चीनी के कारखानो मे पाग छोडकर चीनी बनाने के लिए रखी जाती है। हौद।

फरियाद—स्त्री० [फा० फर्याद] १ विपत्ति, सकट आदि मे पडने पर सहायतार्थ की जानेवाली पुकार। २ विशेषत दूसरो द्वारा सताये जाने आदि पर प्रमुख अधिकारी या शासक के समक्ष न्याय पाने के लिए की जानेवाली प्रार्थना। ३ न्याय की याचना के लिए न्यायालय मे दिया जानेवाला प्रार्थना-पत्र।

फरियादी—वि० [फा० फर्यादी] १ फरियाद-सबधी। २. फरियाद के रूप मे होनेवाला। ३ फरियाद करनेवाला। ४ अभियोग उपस्थित करनेवाला। अभियोक्ता।

फरियाना—स० [स० फलन या फलीकरण] १ साफ या स्वच्छ करना। २ अनाज फटककर उसकी भूसी आदि अलग करके उसे साफ करना। ३ विवाद का इस प्रकार अन्त करना कि दोनो पक्षो की भूले स्पष्ट हो जायँ और दोनो का न्याय से सतोष हो जाय। निपटाना।

†अ० १ साफ या स्वच्छ होना। २ अनाज का भूसा आदि से अलग होना। ३ विवाद का निर्णय होना।

फरिश्ता—पु० [फा० फरिश्त] १ मुसलमानी धर्मग्रन्थो के अनुसार ईश्वर का वह दूत जो उसकी आज्ञानुसार काम करता हो। जैसे—मौत का फरिश्ता। २ देव-दूत। ३ देवता। ४ परोपकारी तथा सात्त्विक वृत्तिवाला व्यक्ति।

फरिश्तानी—स्त्री० फारसी फरिश्ता का स्त्री०। (परिहास और व्यग्य)

फरी—स्त्री० [स० फल] १ हल की फाल। कुसी। २ गाडी का हरसा। फड। ३ गतके का वार रोकने की चमडे की ढाल।

फरीक—पु० [अ० फरीक] १ दो परस्पर विरोधी पक्षो या व्यक्तियो मे से हर एक पक्ष या व्यक्ति।

पद—फरीके सानी=विरुद्ध पक्ष। मुखालिफ दल।

२ वादी अथवा प्रतिवादी। ३ शत्रु। वैरी।

फरीकैन—पु० [अ० फरीकैन] परस्पर विरोधी दोनो पक्षो की सामूहिक सज्ञा। उभयपक्ष।

फरीजा—पु० [अ० फरीज] खुदा का हुक्म जिसका पालन करना बन्दो के लिए कर्तव्य होता है। जैसे—नमाज, रोजा, हज, आदि। २. पुनीत कर्तव्य।

फरीद-बूटी—स्त्री० [अ० फरीद+हि० बूटी] एक प्रकार की वनस्पति जिसकी पत्तियाँ बरियारे की तरह होती है।

फरुआ†—पु० [?] लकडी का वह बरतन जिसमे भिक्षुक भीख लेते है।

फरुई†—स्त्री० १ =फरुवी। २ =फरुही।

फरुहरी†—स्त्री०=फरहरी।

फरुहा†—पु०=फावडा।

फवही†—स्त्री० [हिं० फावडा] १ छोटा फावड़ा। २ फावडे के आकार का लकडी का बना हुआ एक औजार जिससे खेत मे क्यारी बनाने के लिए मिट्टी हटाई जाती है। ३ मथानी।
†स्त्री० =फरवी (भुने हुए चावल)।

फरेंद, फरेंदा—पु० [स० फलेन्द्र, प्रा० फलेंद] जामुन की एक जाति जिसके फल बडे और गूदेदार होते है। फलेंदा।

फरेफ्ता—वि० [फा० फिरेफ्त] १ लुभाया हुआ। आसक्त। मुग्ध। २ धोखा खाया हुआ।

फरेब—पु० [फा० फिरेब] १ प्राय सत्य बात को छिपाने तथा अपने को दोष-मुक्त सिद्ध करने अथवा दूसरे को धोखा देने तथा अपना काम निकालने के लिए कही जानेवाली झूठी या बनावटी बात। २ छल-कपट।

फरेबिया†—वि० =फरेबी।

फरेबी—वि० [फा० फिरेब] १ फरेब-सबधी। २ फरेब या छल-कपट करनेवाला। धोखेबाज। कपटी।

फरेरा†—पु० =फरहरा।

फरेरी—स्त्री० =फरहरी (फल)।

फरेंदा—पु० [फा० फरिंद] एक प्रकार का तोता।
†पु० =फलेंदा।

फरो†—वि० [?] १ दबा हुआ। २ जिसका अस्तित्व न रह गया हो। ३ जो दूर हो गया हो।

फरोख्त—स्त्री० [फा० फिरोख्त] बेचने या बिकने की क्रिया या भाव। विक्रय। बिक्री। जैसे—खरीद-फरोख्त।
वि० [फा० फिरोख्त] बिका या बेचा हुआ।

फरोख्तगी—स्त्री० [फा० फिरोख्तगी] फरोख्त करने अर्थात् बेचने का काम। विक्रय।

फरोग—पु० [फा० फुरोग] १ रोशनी। २ रौनक। ३ ख्याति। ४ उत्कर्ष। उन्नति।

फरोदस्त—पु० [फा० फरोदस्त] १ सगीत मे एक प्रकार का सकर राग जो गौरी, कान्हडा और पूरबी के मेल से बना होता है। २ १४ मात्राओ का एक ताल जिसमे ५ आघात २ खाली होते है। (सगीत)

फरोश—वि० [फा० फरोश] [भाव० फरोशी] समस्त पदो के अन्त में, बिक्री करने या बेचनेवाला। जैसे—दिलफरोश, मेवाफरोश।

फरोशी—स्त्री० [फा० फरोशी] १ बेचने की क्रिया या भाव। २ वह माल जो बिक चुका हो। ३ बिके हुए माल से प्राप्त हुआ धन। बिक्री।

फर्क—पु० =फरक।

फर्च—वि० =फरच।

फर्चा—वि० =फरचा।

फर्जंद—पु० =फरजद। (बेटा)।

फर्ज—पु० [अ० फर्ज] १ मुसलमानी धर्मानुसार वे आवश्यक कर्म जिन्हे न करने से मनुष्य धार्मिक दृष्टि से दोषी और पतित होता है। आवश्यक धार्मिक कृत्य। जैसे—नमाज, रोजा आदि कर्म हर मुसलमान के लिए फर्ज हैं। २ आवश्यक और कर्तव्य कर्म। जैसे—मालिक की खिदमत करना नौकर का फर्ज है।
क्रि० प्र०—अदा करना।
३ तर्क-वितर्क के प्रसग मे, वह तथ्य या बात जो वास्तविक न होने पर कुछ समय के लिए यो ही कल्पित कर ली या मान ली जाय। अनुमानित बात। जैसे—फर्ज कीजिए कि आप वहाँ चले गये, तो क्या होगा।

फर्जी—वि० [फा० फर्ज़ी] १ जो फर्ज कर लिया अर्थात् तर्क-वितर्क के लिए मान लिया गया हो। २ कल्पना के आधार पर प्रस्तुत किया हुआ। कल्पित। ३ जिसकी कोई वास्तविक या विशिष्ट सत्ता न हो।
पु० [फा० फर्ज़ी] शतरज की फरजी नाम की गोटी।

फर्द—स्त्री० [फा० फर्द] १ कागज, कपडे आदि का वह टुकडा जो किसी के साथ जुडा या लगा न हो। २ वह कागज जिस पर कोई लेखा, विवरण या वस्तुओ की सूची लिखी हो। फरद।
पद—**फर्द-जुर्म**=किसी के अपराधो या अभियोगो की सूचीवाला पत्र। **फर्दसजा**=अपराधी को दिये हुए दडो आदि का लेखा या विवरण।
पु० [अ०] १ वह जो अकेला हो या अकेला रहता हो। २ दे० 'फरद'।

फर्दन्‌फर्दन्—अव्य० [अ० फर्दन फर्दन] १ एक एक करके। २ हर एक को। ३ अलग-अलग।

फर्म—पु० [अं० फ़र्म] कोई व्यापारिक बडी सस्था।

फर्माना—स० =फरमाना।

फर्याद—स्त्री० =फरियाद।

फर्रा—पु० [अनु०] १ गेहूँ और धान की फसल का एक रोग जो उसके फूलने के समय तेज हवा चलने पर पैदा होता है। २ मोटी ईंट।

फर्राटा—पु० [अनु०] वेग। तेजी। क्षिप्रता। जैसे—फर्राटे से सबक सुनाना।
मुहा०—**फर्राटा भरना या मारना**=बहुत तेजी से दौडना।
अव्य० खूब तेजी से। वेगपूर्वक।
†पु० =खर्राटा।

फर्राश—पु० [अ० फर्राश] [भाव० फर्राशी] १ प्राचीन काल मे वह नौकर जिसका मुख्य काम जमीन पर दरी, चाँदनी आदि बिछाना होता था। २ खिदमतगार। सेवक।

फर्राशी—वि० [फा० फर्राशी] १ फर्श-सबधी। जैसे—**फर्राशी पखा**=छत मे लगाया जानेवाला पखा। २ फर्श पर बिछाया जानेवाला। ३ दे० 'फर्शी'।
स्त्री० फर्राश का काम और पद।

फर्श—पु० [अ० फर्श] १ कमरे, घर आदि की पक्की तथा समतल जमीन जिस पर बैठते हैं। फरश। २ उक्त पर बिछाने की कोई चीज।

फर्शी—वि०, स्त्री० दे० 'फरशी'।

फलंक—पुं० =फलक (आकाश)।
†स्त्री० =फलाँग।

फलंग†—स्त्री० =फलाँग।

फलंगना†—अ० =फलाँगना।

फलंत—स्त्री० [हिं० फलना+अत (प्रत्य०)] पौधो, वृक्षो आदि के फलने की क्रिया या भाव।

फल—पुं० [सं०√फल्+अच्] १ वनस्पतियो, वृक्षो आदि मे विशिष्ट ऋतुओ मे लगनेवाला वह प्रसिद्ध अग जो उनमे फूल आने के बाद लगता है, जो प्राय खाया जाता है तथा जिसके अदर प्राय उस वनस्पति या वृक्ष के बीज और कुछ अवस्थाओ मे गूदा और रस भी होता है।

विशेष—वनस्पति विज्ञान मे अनाज के दानो (गेहूँ, चावल, दाल आदि) और वृक्षो के फलो (अनार, आम, नारगी, सेब आदि) मे कोई अन्तर नही माना जाता पर लोक-व्यवहार मे ये दोनों अलग-अलग चीजें मानी जाती हैं।

२. किसी प्रकार की क्रिया, घटना, प्रयत्न आदि के परिणाम के रूप मे होनेवाली कोई बात। नतीजा। जैसे—परीक्षा-फल। ३ धार्मिक क्षेत्र मे, किये हुए कर्मों का वह परिणाम जो दु ख-सुख आदि के रूप मे मिलता है। ४ जीवन मे किये जानेवाले कार्यों के वे चार शुभ परिणाम, जो मनुष्य के लिए अभीष्ट या उद्दिष्ट कहे गये हैं। यथा—धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। ५. किये हुए कामो का प्रतिफल। बदला। उदा०—सबकी न कहे, तुलसी के मते इतनो जग जीवन को फलु है। —तुलसी। ६ किसी प्रकार की प्राप्ति या लाभ। ७ अको आदि के रूप मे वह परिणाम जिसकी प्राप्ति के लिए गणित की कोई क्रिया की जाती है। जैसे—क्षेत्र-फल, गुणन-फल, योग-फल। ८ गणित मे त्रैराशिक की तीसरी राशि या निष्पत्ति मे का दूसरा पद। ९ फलित ज्योतिष मे, ग्रहो की स्थिति और योग के परिणाम के रूप मे होनेवाले दु ख, सुख आदि। १० न्याय-शास्त्र मे, दोष या प्रवृत्ति के कारण उत्पन्न होने या निकलनेवाला अर्थ जिसे गौतम ने प्रमेय के अन्तर्गत माना है। ११ किसी प्रकार के विस्तार का क्षेत्र-फल। १२ छुरी, तलवार, तीर, भाले आदि की वह तेज धारवाला या नुकीला अग जिससे उक्त चीजें आघात या काट करती है। १३ फलक। १४ ढाल। १५ पासे पर का चिह्न या बिंदी। १६ ब्याज। सूद। १७ जायफल। १८ ककोल। १९ कोरैया वृक्ष।

फल-कटक—पुं० [सं० ब० स०] १ कटहल। २ श्वेत-पापड़ा।

फल-कंटकी—स्त्री० [सं० फलकटक+ङीप्] इदीवरा।

फलक—पुं० [सं० फल+कन्] १ तखता। पट्टी। पटल। २ वह लबा-चौडा कागज जिस पर कोई कोष्ठक, मान-चित्र या विवरण अकित हो। फरद। (शीट) जैसे—दुर्वृत्त फलक। (देखें) ३ चादर। ४ तबक। वरक। ५ पुस्तक का पन्ना। पृष्ठ। ६ हथेली। ७ चौकी। ८ खाट या चारपाई का बुनावटवाला वह अंश जिस पर लोग लेटते हैं।

पुं० [अ० फलक] १ आकाश। आसमान। २ ऊपरवाला लोक जो मुसलमानो मे भाग्य का विधाता और सुख-दु ख का दाता माना जाता है।

स्त्री० [अ० फलक] सबेरे का उजाला। उषा।

फलकना—अ० [अनु०] १ छलकना। २ उमगना। ३ दे० 'फड़कना'।

फलक-यंत्र—पुं० [सं० मध्य० स०] ज्योतिष मे एक प्रकार का यत्र जिसकी सहायता से ज्या आदि का निर्णय किया जाता है।

फल-कर—पुं० [सं० ष० त०] वृक्षो के फलो पर लगनेवाला कर।

फलका—पुं० [अ० फलक] १. दो या अधिक खंडोवाली नाव में का वह दरवाजा जिसमे से होकर लोग ऊपर नीचे आते-जाते है। २ मुलायम मिट्टी। ३ अखाड़ा (पहलवानों का)।

†पुं० फफोला।

फल-काम—वि० [सं० फल√कम्+णिङ्+अण्, उपपद स०] किसी विशिष्ट फल की प्राप्ति के लिए किया जानेवाला काम।

फल-काल—पुं० [सं० ष० त०] वह ऋतु या मौसिम जिसमे कुछ विशिष्ट वृक्ष फल देते हों। जैसे—आमो का फल-काल गरमी और बरसात है।

फल-कृच्छ्र—पुं० [सं० मध्य० स०] एक प्रकार का कृच्छ्र व्रत जिसमे फलो का क्वाथ मात्र पीकर एक मास बिताया जाता है।

फल-कृष्ण—पुं० [सं० स० त०] १ जल आँवला। २ करज।

फल-केसर—पुं० [सं० ब० स०] नारियल का वृक्ष।

फल-कोष—पुं० [सं० ष० त०] १ पुरुष की इद्रिय। लिंग। २ अड-कोश।

फल-ग्रह—वि०=फलग्राही।

फलग्राही (हिन्)—पुं० [सं० फल√ग्रह्+णिनि] वृक्ष। पेड।

वि० फल ग्रहण करनेवाला।

फल-चमस—पुं० [सं०] एक प्रकार का पुराना व्यजन जो बड की छाल को कूटकर दही मे मिलाकर बनाया जाता था।

फलचारक—पुं० [सं०] १ प्राचीन काल का एक राजकीय अधिकारी। २ बौद्ध विहार का एक अधिकारी।

फलचोरक—पुं० [सं० ब० स०,] चोरक या चोर नाम का गधद्रव्य।

फलड़ा†—पुं०=फल (हथियारों का)।

फलत—अव्य० [सं० फल+तस्] उक्त बात के फल के रूप मे। परिणामत। इसलिए। जैसे—लोगो ने धन देना बद कर दिया, फलत चिकित्सालय बद हो गया।

फलत—स्त्री० [हिं० फलना] १. वृक्षो के फलने की क्रिया या भाव। २ वह जो कुछ फला हो। बीजों, फलो आदि के रूप मे होनेवाली उपज। ३ कुल उपज।

फलत्रय—पुं० [सं० ष० त०] १ वैद्यक मे, द्राक्षा, परुष और काश्मीरी इन तीनो फलो का समाहार। २ त्रिफला।

फल-त्रिक—पुं० [सं० ष० त०] १ भाव प्रकाश के अनुसार सोंठ, पीपल और काली मिर्च। २ त्रिफला।

फलद—वि० [सं० फल√दा+क] १ फलनेवाला (वृक्ष)। २. फल देनेवाला।

पुं० पेड। वृक्ष।

फलदाता (तृ)—वि० [सं० ष० त०] फल देनेवाला।

फल-दान—पुं० [सं० ष० त०] १ हिंदुओ की एक रीति जो विवाह के पहले वरवरण के रूप मे होती है। इसे वरक्षा भी कहते है। २. विवाह के पूर्व होनेवाली टीके की रसम।

फलदार—वि० [हिं० फल+फा० दार (प्रत्य०)] १ (वृक्ष) जिसमे फल लगे हो। २. (अस्त्र) जिसके आगे धारदार फल लगा हो।

फलद्रु—पुं० [सं० फलद्रुम] एक प्रकार का वृक्ष जिसे धौली भी कहते हैं।

वि० दे० 'धौली'।

फलन—पुं० [सं०√फल्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० फलित] १. वृक्षों

में फल उत्पन्न होना या लगना। २. किसी काम या बात का परिणाम निकलना।

फलना—अ० [स० फलन] १. वृक्ष का फलो से युक्त होना। फल लगाना। २. स्त्रियो का उत्पत्ति, प्रसव आदि करना। ३. गृहस्थो का सतान आदि से युक्त होना। जैसे—सदाचारी गृहस्थ का फलना-फूलना। ४ किसी काम या बात का शुभ फल या परिणाम प्रकट होना। उपयोगी और लाभदायक सिद्ध होना। जैसे—नया मकान उन्हे खूब फला है। उदा०—इतने पर भी किंतु न उनका भाग्य फला।—मैथिली शरण। ५. इच्छा या कामना का पूर्ण होना। मफल मनोरथ होना। **पद—फलना-फूलना**=(क) धन-धान्य, सतान आदि मे अच्छी तरह युक्त और सुखी होना। (ख) उपदश या गरमी नामक रोग के कारण सारे शरीर में छोटे-छोटे घाव होना। (परिहास और व्यग्य) ६ शरीर के किसी भाग पर बहुत से छोटे-छोटे दानो का एक साथ निकल आना जिसमे पीडा होती है। जैसे—गरमी से सारी कमर (या जीभ) फल गई है।

†पु० [हि० फाल] सगतराशो की एक तरह की छेनी।

फल-परिरक्षण—पुं० [स० ष० त०] फलो को इस प्रकार रखना कि वे सडने-गलने न पावें। फलो को क्षतिग्रस्त होने से बचाना। (प्रिजर्वेशन आफ फ्रूट्स)

फल-पाक—पु० [स० ब० स०] १ करौंदा। २ जल-आँवला।

फल-पुच्छ—पु० [स० ब० स०] वह वनस्पति जिसकी जड म गाँठ पडती हो। जैसे—प्याज, शलजम आदि।

फल-पुष्प—पु० [सं० ब० स०] [स्त्री० फल-पुष्पा] वह पौधा या वृक्ष जिसमे फल और फूल दोनो हो।

फल-पूर—पु० [स० फल√पूर्+क] दाडिम। अनार।

फल-प्रिय—पु० [स० ब० स०] द्रोण काक। डोम कौवा।

वि० जिसे खाने मे फल अच्छे लगते हो।

फलफंद—पु०=फरफद।

फल-फूल—पु० [हि०] १ फल और फूल। २ भेंट के रूप मे दी जाने-वाली वस्तु।

फल-भरता—स्त्री० [स० फल+हि० भरना] फलो से भरे अर्थात् लदे होने की अवस्था या भाव। उदा०—झुक जाती है मन की डाली अपनी फल-भरता के डर मे। —प्रसाद।

फल-भूमि—स्त्री० [स० च० त०] स्थान जहाँ कर्मों के फल भोगने पडते हों। जैसे—पृथ्वी, नरक, स्वर्ग आदि।

फल-भोजी (जिन्)—वि० [स० फल√भुज् (खाना)+णिनि] १ फल खानेवाला। २ केवल फलो पर निर्वाह करनेवाला।

फल-मंजरी—स्त्री० [स० ष० त०] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

फल-मुख्या—स्त्री० [सं० तृ० त०] अजमोदा।

फल-मुद्‌रिका—स्त्री० [स० स० त०] पिंड खजूर।

फल-योग—पु० [स० ष० त०] नाटक मे वह स्थिति जिसमे फल की प्राप्ति या नायक के उद्देश्य की सिद्धि होती है। फलागम।

फल-राज—पु० [सं० ष० त०] १ फलो का राजा। श्रेष्ठ फल। २. तरबूज। ३ खरबूजा। ४. आम।

फल-लक्षणा—स्त्री० [स० मध्य० स०] साहित्य मे एक प्रकार की लक्षणा।

फलवर्ति—स्त्री० [स०] घाव मे भरी जानेवाली बत्ती।

फल-वस्ति—स्त्री० [सं०] वैद्यक मे एक प्रकार का वस्ति कर्म जिसमे अँगूठे के बराबर मोटी और बारह अगुल लम्बी पिचकारी गुदा मे दी जाती है।

फलवान्—वि० [स० फल+मतुप्, म+व, फलवत्] [स्त्री० फलवती] (वृक्ष आदि) जिसमे फल लगे हो।

पु० फलदार वृक्ष।

फलविष—पु० [स० ष० त०] वह वृक्ष जिसके फल विषैले होते है। जैसे—करभ।

फलश—पु०=फल-शाक।

फल-शर्करा—स्त्री० [स० ष० त० या मध्य० स०] फलो मे रहनेवाली शर्करा या चीनी जो ओषधि आदि के कार्यों के लिए विशिष्ट प्रक्रिया से निकाली या बनाई जाती है। (फ्रूट-शूगर)

फल-शाक—पु० [स० मयू० स०] तरकारी बनाकर खाया जानेवाला फल।

फल-श्रुति—स्त्री० [स० ष० त०] १ ऐसा कथन जिसमे किसी कर्म के फल का वर्णन होता है और जिसे सुनकर लोगो की वह कर्म करने की प्रवृत्ति होती है। जैसे—दान करने से अक्षय पुण्य होता है। २ उक्त प्रकार का वर्णन सुनना।

फल-श्रेष्ठ—पु० [स० ष० त० वा स० त०] आम।

फल-सस्कार—पु० [स० ष० त०] ज्योतिष मे, आकाश के किसी ग्रह के केंद्र का समीकरण या मद-फल-निरूपण।

फलसफा—पु० [अ० फलसफ] १ ज्ञान। २ विद्या ३ दर्शन-शास्त्र। ४ तर्क-शास्त्र। ५ तर्क। दलील।

फलसा†—पु० [स० पाली] १ मुहल्ला। २ दरवाजा।

†पु०=फालसा।

फल-स्थापन—पु० [स० ब० स०] फलीकरण या सीमन्तोन्नयन सस्कार।

फलहरी—स्त्री० [हि० फल+हरी (प्रत्य०)] १ वन के वृक्षो के फल। वन-फल। २ सब प्रकार के फल।

†वि०=फलहारी।

फलहार—पु० [स० फलाहार] १ फलो का भक्षण। २ व्रत आदि के दिन खाये जानेवाले फल अथवा कुछ विशिष्ट फलो का बनाया जाने वाला व्यजन।

फलहारी—स्त्री० [स० फल√हृ+अण्, फलहार+ङीप्, ब० स०] कालिका देवी।

वि० [हि० फलहार] १ फलहार-सबधी। २ फलहार के रूप मे होनेवाला।

फलाँ—वि० [फा० फलाँ] कोई अनिश्चित। अमुक।

फलांग—स्त्री० [?] १ एक स्थान से उछलकर दूसरे स्थान पर जाने की क्रिया या भाव। कुदान। चौकडी। छलाँग। कि० प्र०—भरना।—मारना।

२. उतनी दूरी जो फलांग से पार की जाय। ३ मालखभ की एक कसरत।

फलाँगना—अ० [हिं० फलाँग+ना (प्रत्य०)] एक स्थान से उछलकर दूसरे स्थान पर जाना या गिरना। फलाँग भरना। फाँदना।

फलांश—पु० [सं० फल-अंश, मयू० स०] १ तात्पर्य। १ सारांश।

फला—स्त्री० [सं०√फल्+अच्+टाप्] १ शमी। २ प्रियंगु। ३ झिंझिरीट।

फलाकना†—स०=फलाँगना।

फलाकांक्षा—स्त्री० [सं० फल-आकांक्षा, ष० त०] फल-प्राप्ति की आकांक्षा या कामना।

फलागम—पु० [सं०फल-आगम, ष० त०] १ वृक्षों में फलों के आने का काल। फल लगने की ऋतु या मौसिम। २ वृक्षों में फल आना या लगना। ३ शरद्-ऋतु। ४ साहित्य में, रूपक की पाँच अवस्थाओं में से पाँचवीं और अंतिम अवस्था, जिसमें नायक आदि के अभीष्ट की सिद्धि होती है।

फलाढ्य—वि० [सं० फल-आढ्य] फलों से लदा या भरा हुआ।

फलादन—पु० [सं० फल-अदन, ब० स०] १ वह जो फल खाता हो। २ तोता।

फलादेश—पु० [सं० फल-आदेश, ष० त०] १ किसी बात का फल या परिणाम बतलाना। फल कहना। २ ज्योतिष में, वे बातें जो ग्रहों के प्रभाव या फल के रूप में बतलाई जाती है।

फलाध्यक्ष—पु० [सं० फल-अध्यक्ष, ष० त०] १ फलों का मालिक या स्वामी। २ ईश्वर जो सब प्रकार के फल देता है। ३ खिरनी का पेड़।

फलाना†—स्त्री० [अ० फर्ज] स्त्री की भग। योनि। (बाजारू)

फलाना—स० [हिं० फलना का प्रे०] १ किसी को फलने में प्रवृत्त करना। फलने का काम कराना। २ फलों से युक्त करना।
वि० [अ० फर्लां] [स्त्री० फलानी] (वह) जिसका नाम न लिया गया हो। अमुक।

फलानुमेय—वि० [सं० फल-अनुमेय, तृ०त०] जिसका अनुमान फल या परिणाम देखने से ही किया जाय।

फलापेक्षा—स्त्री० [सं० फल-अपेक्षा, ष० त०] फल की अपेक्षा या कामना।

फलाफल—पु० [सं० फल-अफल, द्व० स०] किसी कर्म या कार्य के शुभ-अशुभ या इष्ट-अनिष्ट फल। फल और अफल।

फलाम्ल—पु० [सं० फल-अम्ल, ब० स०] १ खट्टे रसवाला या खट्टा फल। २ अम्लबेंत। ३ विषावली। विषाविल।

फलाम्ल-पंचक—पु० [सं० ष० त०] बेर, अनार, विषाविल, अम्लबेत और बिजौरा ये पाँच खट्टे फल।

फलार†—पु०=फलाहार।

फलाराम—पु० [सं० फल-आराम, ष० त०] फलदार वृक्षों का बाग।

फलारी†—वि०=फलाहारी।

फलार्थी (र्थिन्)—पु० [सं० फल√अर्थ्+णिनि] वह जो फल की कामना करे। फलकामी।

फलालीन†—स्त्री०=फलालेन।

फलालेन—स्त्री० [अ० फ्लानेल] एक प्रकार का ऊनी वस्त्र जो बहुत कोमल और ढीली-ढाली बुनावट का होता है।

फलावरण—पु० [सं० फल-आवरण, ष० त०] फलनेवाले पेड़-पौधों के फलों का वह ऊपरी आवरण जिसके अंदर बीज रहते है। (पेरिकार्प)

फलाशन—पु० [सं० फल-अशन, ब० स०] १ वह जो फल खाता हो। फल खानेवाला। २ तोता।

फलाशी (शिन्)—पु० [सं०√फल अश्+णिनि] वह जो फल खाता हो। फल खानेवाला।

फलासंग—पु० [फल-आसंग, स० त०] किसी कर्म के फल के प्रति होनेवाला आसंग या आसक्ति।

फलासव—पु० [सं० फल-आसव, ष०त०] चरक के अनुसार दाख, खजूर आदि फलों के आसव जो २६ प्रकार के होते है।

फलाहत—स्त्री० [हिं० फलाना=फलों से युक्त करना] १ वृक्षों, आदि में फल उत्पन्न करने की क्रिया, भाव या व्यवसाय। २ कृषि-कर्म। खेती-बारी। (पश्चिम)

फलाहार—पु० [सं० फल-आहार, ष० त०] फलों का आहार।
स्त्री०[सं०फलाहार] अन्न-वर्ग के खाद्यान्नों से भिन्न, कुछ विशिष्ट फलों से बनाये जानेवाले व्यंजन जो हिंदुओं में व्रत के दिन खाये जाते है। जैसे—**एकादशी** को स्त्रियाँ फलाहार करती है।

फलाहारी (रिन्)—पु० [सं० फलाहार+इनि] [स्त्री० फलाहारिणी] वह जो फल खाकर निर्वाह करता हो।
वि० १ फलाहार-संबंधी। २ (खाद्य पदार्थ) जिसकी गिनती फलाहार में होती हो। (फलाहारी चीज में अन्न का मेल नहीं होता।) जैसे—फलाहारी मिठाई।

फलि—पु० [सं०√फल्+इन्] १ एक प्रकार की मछली। २ प्याला।

फलिक—वि० [सं०फल+ठञ्—इक] १ फल का उपभोग करनेवाला। २ किसी कार्य, घटना या बात के उपरांत उसके फल या परिणाम के रूप में होनेवाला। (रिजल्टेंट)
पु० पर्वत। पहाड़।

फलिका—स्त्री० [सं० फलिक+टाप्] १ एक प्रकार का बोड़ा जो हरे रंग का होता है। २ किसी चीज के आगे का नुकीला भाग।

फलित—भू० कृ० [सं० फल+इतच्] १ फला हुआ। २ पूरा या संपन्न किया हुआ। ३ जिसमें कुछ विशिष्ट स्थितियाँ आदि के परिणामों के संबंध में विचार हुआ हो। जैसे—फलित ज्योतिष। (दे०)
पु० १ पेड़। वृक्ष। २ पत्थर-फोड़। छरीला।

फलित ज्योतिष—पु० [सं० कर्म० स० वा ष० त०] ज्योतिष की दो शाखाओं में से एक जिसमें ग्रह, नक्षत्रों आदि के मनुष्य जाति तथा सृष्टि के अन्य अंगों पर पड़नेवाले शुभाशुभ फलों का विचार होता है। (एस्ट्रालोजी) ज्योतिष की दूसरी शाखा गणित ज्योतिष है।

फलितव्य—वि० [सं०√फल्+तव्य] जो फलने को हो अथवा फलने के योग्य हो।

फलिता—स्त्री० [सं० फलित+टाप्] रजस्वला स्त्री।

फलितार्थ—पु०[सं० फलित-अर्थ कर्म० स०] १ तात्पर्य। २. सारांश। निचोड़।

फलिन—वि० [सं० फल+इनच्] (वृक्ष) जिसमें फल लगते हो।
पु० १ कटहल। २ श्योनाक। ३ रीठा।

फलिनी—स्त्री० [सं० फल+इनि+ङीप्] १ प्रियंगु। २ अग्नि-शिखा

नामक वृक्ष। ३ मूसली। ४ इलायची। ५ मेहदी। ६ सोना-पाढा। ७ भायमाणा लता। ८ जल-पीपल। ९ दुद्धी घास। १० दाख से बनाया हुआ आसव या मद्य।

फली—पु० [स० फल+अच् । ङीष्] १. सोनापाढा। २ कटहल। ३ प्रियगु। ४ मूसली। ५ आमडा।

वि० [स० फल+इनि] १ फलो से युक्त। फलवाला। २ जिसमे फल लगते हो। ३ लाभदायक।

स्त्री० [हि० फल+ई (प्रत्य०)] १ पेड-पौधो का फल के रूप मे होनेवाला वह लबोतरा अग जिसके अदर केवल बीज रहते है। गूदा या रस नही रहता। (पॉड) २ उक्त प्रकार का कोई चिपटा, छोटा, लबोतरा तथा हरा फल जो तरकारी आदि के रूप मे खाया जाता हो। छीबी। (बीन) जैसे—सेम की फली।

फलीकरण—पु० [स० फल+च्वि, इत्व, दीर्घ,√कृ+ल्युट्—अन] [भू० कृ० फलीकृत] १ अनाज को भूसे या भूसी से अलग करना। ओसाना। फटकना। २ भूसी।

फलीता—पु० [अ० फतील] १ पलीता।

क्रि० प्र०—दिखाना।

२ बत्ती। ३ कपडा मे शोभा के लिए गोट के साथ टाकी जाने-वाली डोरी। ४ तावीज।

मुहा०—फलीता सुघाना=तावीज या यत्र की धूनी देना।

फलीदार—वि० [हि०+फा०] (पौधा या फसल) जिसमे फलियाँ लगती हो। (लग्यूमिनस)

फलीभूत—भू० कृ० [स० फल+च्वि, इत्व, दीर्घ,√भू+क्त] जिसका फल या परिणाम प्रत्यक्ष हो चुका या निकल चुका हो।

फलेंदा—पु० [स० फलेंद्र] एक प्रकार का जामुन जिसका फल बडा, गदेदार और मीठा होता है। फरेंद।

फलेंद्र—पु० [स० फल-इद्र, सुसुपा स०] फलेदा या बडा जामुन।

फलोत्तमा—स्त्री० [स० फल-उत्तमा, स० त०] १ काकलीदाख। २ दुद्धी या दूधिया घास। ३ त्रिफला।

फलोत्पत्ति—स्त्री० [स० फल-उत्पत्ति, ष० त०] १ फल की उत्पत्ति। फल का प्रकट या प्रत्यक्ष होना। २ व्यापार आदि मे होनेवाला आर्थिक लाभ।

पु० आम (वृक्ष)।

फलोदय—पु० [स० फल-उदय, ष० त०] १ फल का प्रत्यक्ष होना। २ हर्ष। ३ दड। ४ स्वर्ग।

फलोद्देश—पु० [स० फल-उद्देश, ष० त०] दे० 'फलापेक्षा'।

फलोद्भव—वि० [स० फल-उद्भव, ब० स०] फल मे से उपजने या जनमने वाला।

पु० फल का उद्भव या उत्पत्ति।

फलोपजीवी (विन्)—वि० [स० फल-उप√जी+णिनि] जिसकी जीविका फलो के व्यवसाय से चलती हो।

फल्क—वि० [स०√फल+क] जो फैला हुआ हो अथवा जिसने अपने अग फैलाये हो।

फल्गु—वि० [स० √फल्+उ, गुणागम] १ जिसमें कुछ तत्त्व न हो। निस्सार। २ निरर्थक। व्यर्थ। ३ छोटा। ४ क्षुद्र। तुच्छ। ५ साधारण। सामान्य।

स्त्री० [स०] बिहार की एक छोटी नदी जिसके तट पर गया नगरी बसी हुई है। २ बसत काल। ३ मिथ्या वचन। ४ कठगूलर।

फल्गुन—पु० [स० √फल्+उनन्, गुणागम] १ अर्जुन। २ फागुन का महीना।

वि० १ फाल्गुनी नक्षत्र-सबधी। २ जिसका जन्म फाल्गुनी नक्षत्र मे हुआ हो। ३ लाल।

फल्गुनाल—पु० [स० फल्गुन√अल्+अच्] फाल्गुन मास।

फल्गुनी—स्त्री०=फाल्गुनी।

फल्गुनीभव—पु० [स० फल्गुनी√भू+अप्] बृहस्पति।

फल्गुवाटिका—स्त्री० [स० फल्गु+वाटी, ष० त०, +कन्, टाप्, ह्रस्व] कठगूलर।

फल्य—वि० [स० फल+यत] १ फूल। २ कली।

फल्ला—पु० [देश०] एक प्रकार का रेशम जो बगाल मे आता है।

फसकड़ा—पु० [अनु०] टाँगे फैलाकर तथा चूतड के बल बैठने का ढग या मुद्रा।

क्रि० प्र०—मारना।

फसकना—अ० [अनु०] १ घिसने, खिंचने, दबने आदि के फलस्वरूप कपडे का कही से कुछ फट जाना। मसकना। २ नीचे बैठना। धँसना। ३ तडकना। फटना। ४ स्त्री या मादा पशु का गर्भवती होना।

†वि० १ (पदार्थ) जो जल्दी फसक या मसक जाता हो। २ जो जल्दी धँस या बैठ जाय।

फसकाना—स० [हि० फसकना का स०] १ कपडे को मसकना या दबाकर कुछ फाडना। २ धँसाना। ३ गर्भवती करना।

फसद—स्त्री० [अ० फस्द] यूनानी या हकीमी चिकित्सा शास्त्र मे, नसो या रगो मे से विकारग्रस्त रक्त निकालने की क्रिया या भाव।

मुहा०—फसद खुलवाना या लेना—(क) शरीर का दूषित रक्त निकल-वाना। (ख) मूर्खता या पागलपन का इलाज करना। (व्यग्य)

फसल—स्त्री० [अ० फस्ल] १ ऋतु। मौसम। २ उपयुक्त काल या समय। जैसे—गेहूँ या चना बोने की फसल। ३ खेत मे बोये हुए अनाजो आदि की पैदावार। (साधारणत वर्ष मे दो फसले होती हैं—रबी और खरीफ।) ४ खेत मे खडे हुए अनाजो आदि के पौधे। (क्राप) ५ दाने आदि निकालने के लिए उक्त के काटे हुए अश या बाले। (हार्वेस्ट) ६ अध्याय। प्रकरण।

फसली—वि० [हि० फसल] १ फसल-सम्बन्धी। फसल का। २ किसी विशिष्ट फसल या ऋतु मे होनेवाला। जैसे—फसली बीमारी, फसली बुखार।

स्त्री० हैजा नामक रोग।

फसली कौआ—पु० [अ० फस्ल+हि० कौआ] १ पहाडी कौआ जो शीत ऋतु मे पहाड से उतरकर मैदान मे चला आता है। २ वह जो केवल अच्छे समय मे अपना स्वार्थ साधन करने के लिए किसी के साथ लगा रहे और उसकी विपत्ति के समय काम न आवे। स्वार्थी। मतलबी।

फसली बीमारी—स्त्री० [हि०] हैजा नामक रोग।

फसली बुखार—पु०[अ० फस्ल+बुखार] १ दो ऋतुओ के सधिकाल के समय होनेवाला ज्वर। २ वर्षा ऋतु मे, जाड़ा देकर आनेवाला बुखार। जूडी। (मलेरिया)

फसली सन्—पु०[?] एक प्रकार का सन् या संवत्। सम्राट् अकबर द्वारा चलाया गया एक सन् जिसका उपयोग आजकल जमीन, लगान, मालगुजारी आदि का हिसाब रखने के कामो मे होता है। इसका आरम्भ भाद्रपद कृष्ण प्रतिपदा से होता है।

फसाद—पु०[अ० फसाद] [वि० फसादी] १ बिगाड। विकार। खराबी। २ उत्पात। उपद्रव। ३ दंगा। बलवा। ४ लडाई। झगडा।

फसादी—वि०[फा० फसादी] १ फसाद खडा करनेवाला। २ विकार उत्पन्न करनेवाला। ३ उपद्रवी। पाजी।

फसाना—पु० [फा० फ़सान] १ कोई कल्पित तथा साहित्यिक रचना। २ उपन्यास।

पद—फसानानवीस या फसानानिगार=कहानियाँ लिखनेवाला या उपन्यासकार।

फसाहत—स्त्री०[अ० फसाहत] १ कहने, लिखने आदि की वह शैली जिसमे दैनिक बोलचाल के शब्दो तथा प्रयोगो की बहुलता हो और इसी लिए जिसमे स्वाभाविकता तथा प्रसाद गुण हो। २ भाषण या साहित्यिक रचना मे होनेवाले उक्त गुण।

फसिल—स्त्री०=फसल।

फसील—स्त्री०[अ० फसील] चहारदीवारी। परकोटा।

फसीह—वि०[अ० फसीह] [भाव० फसाहत] (रचना) जिसमे फसाहत अर्थात् बोलचाल के शब्दों और प्रयोगो की बहुलता हो और फलत जिसमे स्वाभाविकता, प्रसाद गुण तथा प्रवाहशीलता हो।

फस्त†—स्त्री० =फस्द।

फस्द—स्त्री०=फसद।

फस्ल—स्त्री० [अ०] =फसल।

फस्ली—वि०, पु०[अ०] =फसली।

फहम—स्त्री०[अ० फह्म] १ ज्ञान। २ बुद्धि। समझ। ३ तमीज।

फहमाइश—स्त्री०[फा० फह्माइश] १ शिक्षा। सीख। २ आज्ञा। हुकुम। ३ चेतावनी।

फहरन—स्त्री०[हिं० फहरना] फहरने की अवस्था, क्रिया या भाव।

फहरना—अ०[स० प्रसरण] खुले या फैले हुए वस्त्र आदि का हवा मे फरफर शब्द करते हुए उडना।

फहरान—स्त्री० [हिं० फहराना] १ फहराने की क्रिया या भाव। २. दे० 'फहरन'।

फहराना—स०[हिं० फहरना] वस्त्र आदि को इस प्रकार एक तरफ से खुला छोडना कि वह हवा मे फर-फर शब्द करते हुए उड़ने, लहराने या हिलने लगे। जैसे—झडा या दुपट्टा लहराना।

अ० हवा के कारण इधर-उधर हिलना।

फहरिस्त—स्त्री०=फेहरिस्त (सूची)।

फहश—वि०[अ० फुह्श] फूहड। अश्लील।

फाँक—स्त्री०[स० फलक] १ फल आदि का कटा हुआ लबोतरा टुकडा। (विशेषत लबाई के बल कटा हुआ टुकडा।) जैसे—आम या सेब की फाँक। २ नारगी, मुसम्मी आदि फलो के अन्दर उक्त प्रकार का होनेवाला अग जो ऐसे ही अन्य अगों से जुडा रहता है। ३ खरबूजे आदि फलो पर बने हुए उन प्रकृति चिह्नो मे से हर एक जहाँ पर से काटकर फाँकें बनाई जाती है।

फाँकड़ा—वि० [देश०] १ बाँका। तिरछा। २ हृष्ट-पुष्ट। तगडा।

फाँकना—स०[हिं० फकी] १ चूर्ण के रूप मे कोई ओषधि या अन्य पदार्थ अजलि मे लेकर झटके से मुँह मे डालना। जैसे—सत्तू फाँकना, सुर्ती फाँकना। २ भुने हुए दाने खाना। जैसे—चने फाँकना।

मुहा०—धूल फाँकना=व्यर्थ मे चारो ओर घूमना तथा मारा-मारा फिरना।

फाँका†—पु० =फका।

फाँकी—स्त्री०[स० फक्किया] १. धोखा देते हुए किसी को किसी काम या बात से अलग रखना। वचित रखना। २ छल। धोखा।

क्रि० प्र०—देना।

†स्त्री० =फाँक।

फाँग†—स्त्री० [?] एक प्रकार का साग।

फाँगी—स्त्री० =फाँग।

फाँट—स्त्री०[हिं० फाटना, फटना] १ यथा-क्रम कई भागों में बाँटने की क्रिया या भाव।

क्रि० प्र०—बाधना।—लगाना।

पद—फाँट बंदी=वह कागज जिसमे जमीदारी के हिस्सो का ब्योरा लिखा रहता है।

२ उक्त प्रकार से किये हुए विभाग। ३ किसी चीज की दर आदि का बैठाया जानेवाला पडता।

वि० जो आसानी से तैयार किया गया हो।

पु० [?] ओषधियो को उबालकर निकाला जानेवाला रस। काढ़ा। क्वाथ।

फाँटना—स०[हिं० बाँटना] १ किसी वस्तु को कई भागो मे बाँटना। विभाग करना। २ ओषधियो का रस निकालने के लिए उन्हे उबालना।

फाँटा—पु०[हिं० फाटना] १ लोहे या लकड़ी का वह झुका हुआ या कोणाकार टुकडा जो दो वस्तुओ को परस्पर जकडे रखने के लिए जोड पर जडा जाता है। कोनिया।

†पु०=फट्टा।

फाँड—पु०=फाँडा।

फाँड़ा—पु०[स० फाड=पेट] धोती के लबाई के बल का उतना अश जितना कमर मे लपेटा जाता है। फेंटा।

क्रि० प्र०—कसना।—बाँधना।

मुहा०—(किसी का) फाँड़ा पकड़ना=किसी से कुछ पाने या लेने के लिए इस प्रकार उसे पकडना कि वह भागने न पावे।

फाँद—स्त्री०[हिं० फाँदना] फाँदने की क्रिया, ढग या भाव।

†पु०=फदा।

फाँदना—अ०[स० फणन, हिं० फानना] झोंक से शरीर को ऊपर उठाकर एक स्थान से दूसरे स्थान पर जा पडना। कूदना। उछलना।

स० १ कोई स्थान कूदकर लाँघना। जैसे—नाला फाँदना। २ नर-पशु का मादा-पशु से सभोग करना।

स० [हि० फदा] १ किसी को फदे या जाल मे फँसाना। २ कोई कार्य आरम्भ करना। ठानना।

फाँदा|—पु०=फदा।

फाँदी—स्त्री० [हि० फदा] १ वह रस्सी जिससे कई वस्तुओ को एक साथ रखकर बाँधते है। गट्ठा बाँधने की रस्सी। २ उक्त प्रकार से बाँधी हुई चीज। गट्ठा।

फाँफ|—स्त्री० [देश०] दरज। सधि।

फाँफी—स्त्री० [स० पर्पटी] १ बहुत महीन झिल्ली। बारीक तह। २ दूध के ऊपर की मलाई की हलकी तह या परत। ३ आँख के ढेले पर पडनेवाला जाला। माडा।

फाँस—स्त्री० [स० पाश] १ रस्सी मे बनाया हुआ वह फदा जिसमे पशु-पक्षियो को फँसाया जाता है। २ वह रस्सी जिसमे उक्त दृष्टि से फदा डाला या बनाया गया हो। फाँसा।

स्त्री० [स० पनस] १ बाँस, सूखी लकडी आदि का सूक्ष्म किन्तु कडा ततु जो त्वचा मे चुभ जाता है। उदा०—जैसे मिसिरिहु मे मिली निरस बाँस की फाँस।—रहीम।

क्रि० प्र०—गडना।—चुभना।—निकलना।—लगना।

२ लाक्षणिक रूप मे, कोई ऐसी अप्रिय बात जो मन मे बहुत अधिक खटकती रहे। गाँस। ३ बाँस, बेत आदि को चीरकर बनाई हुई पतली तीली। पतली कमाची।

मुहा०—फाँस निकलना=मन मे होनेवाली खटक दूर होना।

फाँसना—स० [स० पाश, प्रा० फास] १ फाँस अर्थात् फदे मे किसी पशु या पक्षी को फँसाना। २ छल, ढग, युक्ति आदि से किसी को इस प्रकार अपने अधिकार या वश मे करना कि उससे लाभ उठाया या स्वार्थ सिद्ध किया जा सके। ३ बोलचाल मे, किसी को फुसलाकर उससे अनुचित सबध स्थापित करना।

फाँसा—पु० [हि० फाँसना] वह लम्बा रस्सा (या रस्सी) जिसके एक सिरे पर फदा बना होता है, और जिसकी सहायता से पशुओ का गला या पैर फँसाकर उन्हे पकडा अथवा शत्रु के गले मे फँसाकर उन्हे पकडा या मारा जाता है। (लैस्सो)

फाँसी—स्त्री० [स० पाशी] १ फँसाने का फदा। पाश। २ रस्सी आदि का वह फदा जिसे लोग अपने गले मे फँसाकर आत्म-हत्या करने के लिए झूल या लटक जाते है।

क्रि० प्र०—लगाना।

३. आज-कल देश-द्रोहियो, हत्यारो आदि को दड देने का एक प्रकार जिसमे दो खम्भो के बीच मे एक लबा रस्सा बँधा रहता है और रस्से के दूसरे निचले सिरे के फदे मे अपराधी का गला फँसाकर इस प्रकार झटके से उसे नीचे गिरा दिया जाता है कि गला घुटने से वह मर जाता है।

मुहा०—(किसी के लिए) फाँसी खड़ी होना=(क) किसी को फाँसी दिये जाने के लिए उसकी तैयारी होना। (ख) प्राणो का सकट उपस्थित होना। जान-जोखिम होना। **फाँसी चढ़ाना, लटकाना या देना**=उक्त प्रकार का दड देकर मार डालना।

४ अपराधियो को उक्त प्रकार से दिया जानेवाला प्राण-दड। ५ कोई ऐसा सकटपूर्ण बधन जिसमे प्राण जाने का भय हो अथवा प्राण निकलने का सा कष्ट हो। जैसे—प्रेम की फाँसी।

फाइल—स्त्री० [अ० फाइल] १ कार्यालयो आदि मे एक ही प्रकार या विषय के आवश्यक कागज-पत्रो की नत्थी। मिसिल। २ मोटे कागज, दफ्ती आदि का एक तरह का खोल जिसमे उक्त कागज रखे जाते है। ३ तार, दफ्ती आदि का बना हुआ वह उपकरण जिसमे उक्त प्रकार के कागज-पत्र एक साथ रखे जाते है। नत्थी। ४ पत्र, पत्रिका आदि के प्रतो का समूह।

फाका—पु० [अ० फाक] निराहार रहने की अवस्था या भाव। उपवास।

पद—फाका कशी, फाकामस्त।

मुहा०—फाको मरना=उपवास का कष्ट भोगते हुए दिन बिताना। कई कई दिन तक भूखे रहकर कष्ट भोगना।

फाकाकश—वि० [अ० +फा०] [भाव० फाकाकशी] भोजन न मिलने के कारण फाके या उपवास करनेवाला।

फाकामस्त—वि० [फा०] [भाव० फाकामस्ती] जो भूखा रहकर भी आनदित तथा प्रसन्न रहता हो।

फाका-मस्ती—स्त्री० [अ० +फा०] १ बुरे दिनो मे भी प्रसन्न रहने की वृत्ति।

फाके-मस्त—वि०=फाका-मस्त।

फाके-मस्ती—स्त्री०=फाका-मस्ती।

फाख्तई—वि० [हि० फाख्ता] पडुक के रग का। भूरापन लिये हुए लाल।

पु० उक्त प्रकार का रग।

फाख्ता—स्त्री० [अ० फाख्त] [वि० फाख्तई] पडुक नाम का पक्षी।

फाग—पु० [हि० फागुन] १ फागुन के महीने मे होनेवाला उत्सव जिसमे लोग एक दूसरे पर रग या गुलाल डालते और वसत ऋतु के गीत गाते है।

क्रि० प्र०—खेलना।

२ उक्त अवसर पर गाये जानेवाले गीत जो प्राय अश्लील होते है।

फागुन—पु० [स० फाल्गुन] शिशिर ऋतु का दूसरा महीना। माघ के बाद का मास। फाल्गुन। विक्रमी सवत् का बारहवाँ महीना।

फागुनी—वि० [हि० फागुन] फागुन-सबधी। फागुन का।

फाजिल—वि० [अ० फाजिल] १ आवश्यकता से अधिक। जरूरत से ज्यादा। २ बचा हुआ। अवशिष्ट। ३. किसी विषय का बहुत बडा ज्ञाता या विद्वान्। स्नातक।

फाजिल बाकी—स्त्री० [अ०] लेने-देन का हिसाब निकालने पर बची हुई वह रकम जो दी या ली जाने को हो।

क्रि० प्र०—निकलना।—निकालना।

फाटक—पु० [स० कपाटक] १ कारखाना, बाडो, बडे मकानो, महलो आदि का बडा और मुख्य द्वार। बडा दरवाजा। तोरण।

मुहा०—(किसी व्यक्ति को) फाटक में देना=कारागार या जेल मे बद करना। **(किसी पशु को) फाटक में देना**=काजीहौस या मवेशीखाने मे बद करना।

२ मकान की चहारदीवारी मे लगा हुआ दरवाजा।

पु० [हि० फटकन] अनाज फटकने पर निकलनेवाला फालतू या रद्दी अश। पछोडन। फटकन।

फाटका—पु० [हि० फाटक] चीजो की दर की केवल तेजी-मदी के विचार

से किया जानेवाला वह क्रय-विक्रय का निश्चय जिसकी गिनती एक प्रकार के जूए मे होती है। खेला। सट्टा। (स्पेक्युलेशन)

विशेष—सम्भवत यह पहले बडे-बडे बाडो मे फाटक के अन्दर होता था, इसी से इसका यह नाम पडा होगा।

फाटकी—स्त्री० [स०√स्फुट्+ण्वुल्, पृषो० सिद्धि, ङीप्,] फिटकरी।

फाटना†—अ० =फटना।

फाड़-खाऊ—वि०[हि० फाड+खाना] १. फाड खानेवाला। कट-खना। २ बहुत बडा क्रोधी। ३ भीषण।

फाड़न—स्त्री० [हि० फाड़ना] १ फाडने की क्रिया या भाव। २ कागज, कपडे आदि का टुकडा जो फाडने से निकले। ३ मक्खन को तपाकर घी बनाने के समय उसमे से निकलनेवाली छाँछ।

फाड़ना—स०[स० स्फाटन, हि० फाटना] १ कागज, वस्त्र आदि विस्तार-वाले किसी पदार्थ का कोई अश बलपूर्वक इस प्रकार खीचना या तानना कि वह बीच मे दूर तक अपने मूल से अलग हो जाय। जैसे—(क) कपडा या कागज फाडना। (ख) गुबारा फाडना।

सयो० क्रि०—डालना।—देना।—लेना।

२ तेज अस्त्र से किसी चीज पर आघात करके उसे कई अगो मे विभक्त करना। जैसे—कुल्हाडी से लकडी फाडना। ३ किसी नुकीली या पैनी चीज से किसी वस्तु का कोई अग काटकर अलग करना या निकालना। जैसे—शेर का अपने पजा से किसी का पेट फाडना।

विशेष—'तोडना' और 'फाडना' मे मुख्य अन्तर यह है कि 'तोडना' मे तो किसी वस्तु का कोई खड बलपूर्वक अलग कर लेने का भाव प्रधान है परतु 'फाडना' मे किसी विस्तार मे दूर तक वस्तु को बीच से अलग करने का भाव मुख्य है। इसके अतिरिक्त कोई चीज पटककर तोडी तो जा सकती है परतु फाडी नही जा सकती।

४ किसी गोलाकार वस्तु का मुँह साधारण से अधिक और दूर तक फैलाना या बढ़ाना। जैसे—आँखे फाडकर देखना, मुँह फाडकर उसमे कोई चीज डालना। ५ किसी गाढे द्रव पदार्थ के सबध मे ऐसी क्रिया करना कि उसका जलीय अश अलग तथा ठोस अश अलग हो जाय। जैसे—खटाई डालकर दूध फाडना।

फातिहा—पु० [अ० फातिह] १ आरभ। २ प्रार्थना। ३ कुरान की पहली आयत, जो प्राय मृत व्यक्तियो की आत्मा की शाति और सद्गति की कामना से उनकी कब्र या मजार पर पढ़ी जाती है।

क्रि० प्र०—पढना।

फानना†—स०[स० फारण] रूई या धुनना।

†स० [हि० फाँदना] १ कार्य आरभ करना। ठानना। २ दे० 'फाँदना'।

फानी—वि० [अ० फानी] नष्ट हो जानेवाला। नश्वर।

फानूस—पु० [अ० फानूस] १. शीशे की चिमनी जिसमे से रोशनी छन कर चारो ओर फैलती है। २ उक्त आकार-प्रकार का शीशे का वह आधान जो प्राय छतो मे लटकाया जाता है और जिसमे लगे हुए गिलासो आदि मे अनेक मोमबत्तियाँ जलाई जाती है। ३ एक प्रकार का दीपाधार जिसके चारो ओर महीन कपडे या कागज का घेरा बना होता है। कपडे या कागज से मढी हुई पिजरे की शकल की एक प्रकार की बडी कदील। ४ समुद्र के किनारे का वह ऊँचा स्थान जहाँ रात को प्रकाश होता है और उसे देखकर जहाज बदरगाह पर पहुँचता है। कदीलिया।

पु० [अ० फरनेस] ईंटो आदि की भट्ठी जिसमे लोहा आदि गलाते हैं।

फाफर—पु०[स० पर्पट]। दे० 'कूट'।

फाफा—स्त्री० [अनु०] दाँत गिर जाने से फा फा करके बोलनेवाली बुढ़िया। पोपली बुढ़िया।

पद—फाफे कुटनी—वह बुढिया (या स्त्री) जो इधर की बाते उधर लगाकर दो पक्षो मे झगडा कराती हो।

फाफूंदा—पु०=फतिगा।

फाब—स्त्री० [स० प्रभा] फबने की क्रिया या भाव। फबन।

फाबना†—अ०=फबना।

फायदा—पु० [अ० फ़ायद] १ किसी काम या बात मे होनेवाला किसी प्रकार का लाभ। जैसे—यह दवा बुखार मे बहुत फायदा करती है। २ आर्थिक क्षेत्र मे होनेवाली किसी प्रकार की प्राप्ति। जैसे—इस साल उन्हे रोजगार मे दस हजार रुपयो का फायदा हुआ है। ३ किसी काम या बात से होनेवाला वह इष्ट या शुभ परिणाम जो किसी रूप मे लाभदायक या हितकर हो। किसी तरह का अच्छा असर या प्रभाव। जैसे—व्यर्थ झगडा बढाने से कोई फायदा नही होगा।

फायदेमद—वि०[फा०] लाभदायक। उपकारक।

फायर—पु०[अ० फायर] १ आग। २ तोप, बदूक आदि दागने की क्रिया या भाव। फैर।

फायर ब्रिगेड—पु०[अ०] पुलिस विभाग के अतर्गत वह दल या वर्ग जिसका काम आग बुझाना, अकस्मात् जमीन के नीचे दब जानेवाले लोगो को निकालना तथा इसी प्रकार के दूसरे काम करना होता है।

फाया†—पु०=फाहा।

फार—पु०[स० स्फार] १ खड। टुकडा। २ किसी प्रकार का चौडा, पतला अग का विस्तार। ३ वृक्षो के पत्तो का वह मुख्य, पतला और चौडा अग जो डठल के आगे निकला रहता है। (लैमिना)

†पु०=फाल।

फारखती—स्त्री०[अ० फारिग+फा० खती] १ रुपया अदा होने की रसीद। ऋण-मुक्ति का सूचक पत्र। २ वह कागज या लेख्य जिस पर यह लिखा हो कि अमुक व्यक्ति अपने अधिकार या उत्तरदायित्व आदि से पूर्णत मुक्त हो गया है और प्रस्तुत विषय से उसका कोई सबध नही रह गया है। जैसे—बाप ने बेटे से फारखती लिखा ली है, अर्थात् यह लिखा लिया है कि हमारी सम्पत्ति पर उसका कोई अधिकार नही है।

क्रि० प्र०—लिखना।—लिखाना।

फारना—स०=फाड़ना।

फारम—पु० [अ० फार्म] १ प्रार्थना, विवरण आदि से सबध रखनेवाले पत्रो आदि का वह निश्चित और विहित रूप जिनमे भिन्न-भिन्न ज्ञातव्य बातो का उल्लेख करने के लिए अलग अलग कोष्ठक, स्तभ या स्थान बने होते है। रूपक। २ इस प्रकार का बना अथवा छपा हुआ कोई कागज। ३ खेलो आदि मे, खिलाड़ी की वह शारीरिक और मानसिक

स्वस्थ स्थिति जो उन्हें अच्छी तरह से खेलने मे समर्थ करती है। जैसे—क्रिकेट का अमुक खिलाडी फारम मे नही है।

पु० [अं० फार्म] खेती-बारी की जमीन का वह बड़ा खड या टुकडा जिसमें कुछ विशिष्ट रीतियो से अधिक मात्रा मे चीजें बोई जाती हो अथवा पशु-पक्षी आदि पालन और वर्धन के लिए रखे जाते हो। (फार्म)

फारस—पु०[स० पारस्य; फा० फ़ार्स] अफगानिस्तान के पश्चिम का एक प्रसिद्ध देश जिसे आज-कल ईरान कहते हैं तथा जिसमे वैदिक युग मे आर्य लोग रहते थे, जहाँ कुछ दिनो बाद फारसी धर्म और अत मे इस्लाम का प्रचार हुआ था।

फारसी—वि०[फा० फार्सी] फारस या ईरान देश मे होने अथवा उससे सबध रखनेवाला। फारस का।

स्त्री० फारसी अर्थात् आधुनिक ईरान की भाषा जो वस्तुत आर्य-परिवार की ही है।

फारा—पु० १ =फार (फाल)। २.=फरा (व्यजन)।

फारिग—वि०[अ० फारिग] १ जो अपना कोई काम करके निश्चिन्त हो गया हो। जिसने किसी काम से छुट्टी पा ली हो। बे-फिक्र। २ जिसे किसी प्रकार के बधन से छुटकारा मिल गया हो। मुक्त। स्वतत्र। आजाद। ३ काम से फुरसत पाया हुआ। सावकाश। अवकाश-प्राप्त।

फारिग-खती— स्त्री० दे० 'फारखती'।

फारिगुलबाल—वि० [अ० फारिग-उल्बाल] [भाव० फारिगुलबाली] १. जिस पर बाल बराबर भी भार न रह गया हो। फलत सब प्रकार से बेफिक्र या निश्चिन्त। २ जो सब प्रकार से सपन्न और सुखी हो।

फारी—स्त्री०=फरिया (ओढनी)। उदा०—चनौटा खीरोद फारी। —जायसी।

फार्म—पु० दे० 'फारम'।

फाल—पु०[स० फल्+अण् वा√फल्+घञ्] १ महादेव। २ बलदेव। ३ कुछ विशिष्ट पौधों या फलो के रेशों से बुना हुआ कपडा।

विशेष—मध्य युग मे रूई से बुना हुआ कपडा भी इसी के अन्तर्गत माना जाता था।

४ रूई का पौधा। ५ फरसा। फावडा।

पु० नौ प्रकार की दैवी परीक्षाओ या दिव्यो मे से एक जिसमे लोहे की तपाई हुई फाल अपराधी को चटाते थे और जीभ के जलने पर उसे दोषी और न जलने पर निर्दोष समझते थे।

स्त्री० लोहे का लबा, चौकोर छड जिसका सिरा नुकीला और पैना होता है और जो हल की लकडी के नीचे लगा रहता है। कुस। कुसी।

पु०[स० प्लव] १ चलने मे एक स्थान से उठाकर आगे के स्थान मे पैर डालना। डग। २ कूदने मे उक्त प्रकार से एक के बाद रखा जानेवाला दूसरा पैर। फलाँग। ३ उतनी दूरी जितनी उक्त क्रियाओ के समय एक के बाद दूसरा पैर रखने मे पार की जाती है।

क्रि० प्र०—भरना।—रखना।

मुहा०—फाल बाँधना=फलाँग मारना। कूदकर एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना। उछलकर लाँघना।

स्त्री०[स० फलक या हिं० फाडना] १ किसी ठोस चीज का काटा या कतरा हुआ पतले दल का टुकड़ा। जैसे—सुपारी की फाल। २ सुपारी के कटे हुए टुकडे। छालिया।

स्त्री०[अ० फ़ाल] रमल मे, पाँसा आदि फेंककर शुभ-अशुभ बतलाने की क्रिया।

क्रि० प्र०—देखना।—निकालना।

फाल-कृष्ट—भू० कृ०[सं० तृ० त०] १ (खेत) जो जोता जा चुका हो। २ (अन्न) जो हल से जोते हुए खेत मे उपजा हो। ३ कृषि या खेती से प्राप्त होनेवाला।

फालतू—वि०[?] १. (पदार्थ) जो उपयोग मे न आ रहा हो और यों-ही पड़ा या रखा हुआ हो। २ जो किसी काम का न हो। जिससे किसी प्रकार का काम न सरता हो। निरर्थक। रद्दी। जैसे—फालतू आदमी।

फाल-नामा—पु०[अ० +फा०] वह ग्रथ जिसे देखकर फाल की सहायता से शकुनो या शुभा-शुभ का विचार किया जाता है।

फालसई—वि० [हिं०फालसा+ई (प्रत्य०)] फालसे के रंग का। ललाई लिये हुए कुछ कुछ नीला।

पु० उक्त प्रकार का रग।

फालसा—पु०[स० परुषक, पुरुष, प्रा० फरूस] १ एक प्रकार का छोटा पेड़ जिसमे छडी के आकार की सीधी डालियाँ चारो ओर निकलती हैं और उनमे दोनो ओर सात-आठ अगुल भर के गोल खुरदरे पत्ते तथा मटर के आकार के फल लगते हैं। २ उक्त वृक्ष का छोटा गोलाकार फल जो वैद्यक मे, ज्वर, क्षय तथा वात को नष्ट करनेवाला माना गया है।

पुं०[?] मैदानो में भागकर आया हुआ जगली पशु।

फालिज—पु० [अ० फालिज] अर्धांग या पक्षाघात नामक रोग। लकवा।

क्रि० प्र०—गिरना।—मरना।

फालूदा—पु० [फा० फालूद] १ गेहूँ के सत्त से बननेवाला एक प्रकार का पेय पदार्थ। २ निशास्ते, मैदे आदि का बना हुआ एक प्रकार का व्यजन जो सेवई की तरह का होता है और जो शरबत, कुलफी आदि के साथ खाया जाता है।

फाल्गुन—पुं० [सं०√फल्+उनन्, गुक्,+अण्] १. चांद्र वर्ष का अतिम महीना जो माघ के बाद और चैत के पहले पडता है। फागुन। २. दूर्वा नामक सोम लता। ३ अर्जुन का एक नाम। ४. अर्जुन वृक्ष। ५ एक प्राचीन तीर्थ। ६ वृहस्पति का एक वर्ष जिसमे उसका उदय फाल्गुनी नक्षत्र मे होता है।

फाल्गुनिक—वि० [स० फल्गुनी या फाल्गुनी+ठक्—इक] १. फल्गुनी नक्षत्र-सबधी। २ फाल्गुनी की पूर्णिमा से सबध रखनेवाला।

पु० फाल्गुन मास।

फाल्गुनी—स्त्री० [स० फाल्गुन+ङीप] १ फाल्गुन मास की पूर्णिमा। २ पूर्वाफाल्गुनी और उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र।

फावडा—पु०[स० फाल; प्रा० फाड] [स्त्री० अल्पा० फावड़ी] मिट्टी खोदने का प्रसिद्ध उपकरण। फरसा।

क्रि० प्र०—चलाना।

मुहा०—फावड़ा बजना=खुदाई का काम आरभ होना।

फावड़ी—स्त्री० [हिं० फावडा] १. छोटा फावडा। २. फावडे के आकार का काठ का एक उपकरण जिससे घास, लीद, मैला आदि हटाया जाता है।

फाश—वि० [फा० फाश] १ खुला हुआ। प्रकट। स्पष्ट।
मुहा०—परदा फाश होना- भेद या रहस्य खुलना। (प्राय बुरे प्रसगो मे)
२ जिसके आगे या ऊपर का आवरण हट गया हो। अनावृत।

फासला—पु० [अ० फासिल] अवकाश सबधी दूरी। अतर। जैसे—दो मील का फासला।

फासिज्म—पु० =फैसिज्म।

फासिस्ट—पु०=फैसिस्ट

फासिद—वि० [अ० फासिद] १ फसाद या उपद्रव खडा करनेवाला। २ खराबी या विकार पैदा करनेवाला। ३ बुरा। खोटा।

फासिला—पु०=फासला।

फास्फोरस—पु० [यूना०, अ०] एक ज्वलनशील अधातविक तत्त्व जो अपने विशुद्ध रूप मे नही परन्तु आक्सीजन, कैलसियम और मगनेशियम के साथ मिला हुआ पाया जाता है।

फाहा—पु० [स० फाल- रूई, या स० पोत--कपडा, प्रा० पोथ, हि० फोया] १ तेल, घी आदि मे तर की हुई कपडे की पट्टी या रूई का लच्छा। जैसे—अतर का फाहा। २ घाव, फोडे आदि पर चिपकाया जानेवाला कपडे का वह टुकडा जिसमे मरहम लगी रहती है।

फाहिश—वि० [अ० फाहिश] १ अत्यन्त दूषित। बहुत बुरा। २ हेय।

फाहिशा—स्त्री० [अ० फाहिशा] कुलटा। पुश्चली।

फाहुरा†—पु० फावडा।

फिकरना†—अ०—फेकरना।

फिकवाना†—स०=फेकवाना।

फिगक—पु० [स० कलिग+पृषो०] —फिगा।

फिगा—पु० [स० फिगक] लाल पजो, भूरे परो तथा पीली चोचवाला एक तरह का पक्षी। फेगा।

फिकई—स्त्री० [?] चने की तरह का एक मोटा अन्न। (बुदेल खड)

फिकर—स्त्री० - फिक्र।

फिकरा—पु० [अ० फिक्र] १ वाक्य। २ दूसरो को धोखा देने के लिए कही जानेवाली बात।
पद—फिकरेबाज।
क्रि० प्र०—देना।—बताना।
मुहा०—(किसी का) फिकरा चलना धोखा देने के लिए किसी की कही हुई बात का अभीष्ट परिणाम या फल होना। **फिकरा बनाना या तराशना** धोखा देने के लिए कोई बात गढकर कहना।
३ व्यग्यपूर्ण बात।
मुहा०—फिकरे ढालना या सुनाना=व्यग्यपूर्ण बातें कहना। आवाजा कसना। **(किसी को) फिकरा देना या बताना**-किसी को झूठी आशा मे रखने या टालने के लिए इधर-उधर की बातें बनाना या बहानेबाजी करना।

फिकरेबाज—पु० [अ० फिक्र+फा० बाज] [भाव० फिकरेबाजी] १ वह जो लोगो को धोखा देने के लिए बातें गढ-गढकर कहता हो। झाँसा-पट्टी देनेवाला। २. वह जो व्यग्यपूर्ण बातें कहने अथवा फबतियाँ कसने मे अग्रणी या दक्ष हो।

फिकवाना†—स०=फेकवाना।

फिकार†—पु० —फिकई (कदन्न)।

फिकिर†—स्त्री०=फिक्र।

फिकैत—पु० [हि० फेकना] [भाव० फिकैती] १ गतका-फरी, पटा-बनेठी आदि का खिलाडी। पटेबाज। २ बरछा या भाला फेककर चलानेवाला योद्धा।

फिकैती—स्त्री० [हि० फिकैत+ई (प्रत्य०)] १ पटा-बनेठी चलाने का काम या विद्या। पटेबाजी। २ भाला आदि फेककर चलाने की कला या विद्या।

फिक्र—स्त्री० [अ० फिक्र] १ वह मानसिक अवस्था जिसमे मन विक्षुब्ध होकर किसी होनेवाली अथवा बीती हुई बात या उसके परिणाम के सबंध मे विकल भाव से बार बार विचार करता रहता है और साथ ही भयभीत होता तथा दुखी रहता है। चिंता।
क्रि० प्र०—लगना।
२ किसी बात के निर्वाह, पालन आदि के सबध मे होनेवाला ध्यान। जैसे—उस रोगी को अपने बच्चो की चिंता थी।
क्रि० प्र०—होना।
३ कोई काम करने के लिए मन मे किया जाने या होनेवाला विचार। ध्यान। उदा०—अब मौत नकारा आन बजा चलने की फिक्र करो बाबा।—नजीर। ४ उपाय की उद्भावना या विचार। यत्न। तदबीर। जैसे—अब तुम हमे छोड दो और अपनी फिक्र करो। ५ साहित्य मे, काव्य-रचना के लिए किया जानेवाला चिंतन या विचार।

फिक्रमद—वि० [फा० फिक्रमद] जिसे फिक्र या चिंता लगी हुई हो।

फिचकुर—पु० [स० पिछ—लार] मूर्च्छा के समय मुँह मे से निकलनेवाली झाग या फेन।
क्रि० प्र०—निकलना।—बहना।

फिट—वि० [अ० फिट] १ उपयुक्त। ठीक। मुनासिब। २ जिसके सब अग-उपाग या कल-पुरजे बिलकुल ठीक या दुरुस्त हो। हर तरह से तैयार।
मुहा०—(कल या मशीन) फिट करना =यत्र के पुर्जे आदि यथा-स्थान बैठाकर उसे ठीक तरह से काम करने के योग्य बनाना।
३ जो नाप आदि के विचार से ठीक या पूरा हो। अपने स्थान पर ठीक बैठनेवाला। उपयुक्त। जैसे—उन्हे यह जूता फिट आयेगा।
पु० मिरगी आदि रोगो का वह दौरा जिसमे आदमी बेहोश हो जाता है और उसके मुँह से झाग आदि निकलने लगती है।
स्त्री० -फिटकार।

फिटकार—स्त्री० [हि० फिट (अनु०)+कार (प्रत्य०)] १ धिक्कार। लानत।
क्रि० प्र०—खाना।—देना।—पडना।—सुनना।
मुहा०—मुँह पर फिटकार बरसना=चेहरा बहुत ही फीका या उतरा हुआ होना। मुख की काति न रहना। श्रीहत होना। **(किसी की) फिटकार लगना** -किसी के फिटकारने का परिणाम दिखाई देना।
२ हलकी मिलावट।

फिटकिरी—स्त्री० [स० स्फटिका] सफेद रग का एक प्रसिद्ध खनिज पदार्थ जो पत्थर के डले की तरह होता और प्राय औषध के काम आता है। (एलम)

फिटकी—स्त्री० [अनु०] १ सूत के छोटे-छोटे फुचरे जो कपडे की बुनावट मे निकले रहते हैं। २. छीटा। ३. फटकी।
†स्त्री०=फिटकिरी।

फिटन—स्त्री० [अ०] पुरानी चाल की एक तरह की चार पहियोंवाली बडी घोडा-गाडी जिसमे एक या दो घोडे जोते जाते थे।

फिटर—पु० [अ०] १. कलो के पुरजे दुरुस्त करने और यत्रो मे उन्हे यथास्थान बैठानेवाला मिस्त्री। २ वह दरजी जो सिले हुए कपडो को किसी की नाप-जोख के बराबर करता हो।

फिटसन—पु० [देश०] कठसेमल का छोटा वृक्ष जिसकी पत्तियाँ चारे के काम मे आती है।

फिट्टा—वि० [हि० फिट] जो फटकार खा-खा कर निर्लज्ज हो गया हो। फटकार खाने का अभ्यस्त। जैसे—फिट्टे मुँह।
पद—फिट्टे मुँह -तुम्हारे मुँह पर फिटकार पडे। तुम्हे धिक्कार है।

फितना—पु० [अ० फित्न] १ अकस्मात् होनेवाला उपद्रव। २ उत्पात। उपद्रव। ३ दगा-फसाद। लडाई-झगडा। ४ बगावत। विद्रोह।
क्रि० प्र०—उठना।—उठाना।—खडा करना।
५ ऐसा व्यक्ति जो बहुत ही दुष्ट प्रकृति का हो तथा दूसरो मे लडाई-झगडा करता रहता हो। ६ एक प्रकार का पौधा और उसका फूल। ७ एक प्रकार का इत्र।

फितरत—स्त्री० [अ० फित्रत] १ स्वभाव। प्रकृति। २ सृष्टि। ३ चालाकी। चालबाजी। ४ शरारत।

फितरती—वि० [अ० फित्ती] १ चतुर। होशियार। २ चालाक। धूर्त। ३ शरारत करनेवाला।

फितरी—वि० [अ० फित्री] १ प्राकृतिक। २ जन्म-जात। सहज।

फितुर—पु० =फतूर।

फितुरिया—वि०=फतूरिया।

फिदवी—वि० [अ० फिद्वी] १ स्वामी-भक्त। आज्ञाकारी। २ किसी के लिए जान तक निछावर करनेवाला। ३ निवेदक।
पु० दास। सेवक। (स्वय अपने सम्बन्ध मे, नम्रतासूचक)

फिदा—पु० [अ० फिदा] १ किसी पर कुछ न्यौछावर या बलिदान करना। २ किसी के लिए आत्म-बलिदान करना। ३ आसक्त होने की अवस्था या भाव।
वि० १ दूसरे के लिए आत्म-बलिदान करनेवाला। २ अपने आप को किसी पर निछावर करनेवाला। ३ पूर्णरूप से आसक्त।

फिदाई—वि० [अ० फिदाई] १ प्राण निछावर करनेवाला। आत्म-बलिदान करनेवाला। २ जो किसी के प्रेम मे पूर्ण तरह से पागल हो रहा हो।
पु० १ भक्त। २ आशिक।

फिद्दा†—पु०=पिद्दा।

फिनगा†—पु०=भुनगा।

फिनिया—स्त्री० [देश०] कानो मे पहनने का एक आभूषण।

फिनीज—स्त्री० [स्पे० पिनज] एक प्रकार की छोटी नाव जिस पर दो मस्तूल होते है।

फिफरी†—स्त्री०=पपडी।

फिफक—पु०=फेफड़ा। (राज०)

फिया—स्त्री० [स० प्लीहा] प्लीहा। तिल्ली।

फिरंग—पु० [अ० फ्राक] १ यूरोप का देश। गोरो का मुल्क। फिरगिस्तान। २ आतशक या गरमी नामक रोग।

फिरंगिस्तान—पु० [अ० फ्राक+फा० स्तान] फिरगियो के रहने का देश। गोरो का देश, यूरोप।

फिरंगी—वि० [हि० फिरग] १ फिरग देश मे उत्पन्न। २ फिरग देश से सबध रखनेवाला। ३. फिरग रोग से सबध रखनेवाला।
पु० फिरंग देश अर्थात यूरोप का निवासी। (उपेक्षा सूचक)
स्त्री० विलायती तलवार।

फिरंट—वि० [अ० फ्रन्ट] प्रतिकूल। विरुद्ध। (केवल व्यक्तियों के सबंध मे प्रयुक्त) जैसे—आज-कल वह हमसे फिरट हो गया है।

फिरदर—वि० [हि० फिरना+घूमना] १ बराबर इधर-उधर घूमता-फिरता रहनेवाला। २ बराबर इधर-उधर घूमते-फिरते रहने या उससे सबध रखनेवाला। जैसे—फिरदर अवस्था मे रहनेवाली जगली जातियाँ।

फिर—अव्य० [हि० फिरना] १ जैसा एक बार हो चुका हो, वैसा ही दूसरी बार भी। एक बार और। दोबारा। पुन। जैसे—(क) इस बार तो छोड देता हूँ, फिर कभी ऐसा काम मत करना। (ख) उनके मकान के बाद फिर एक बगीचा पडता है।
पद—फिर फिर =एक से अधिक बार। बार बार।
२ भविष्य मे कभी या किसी समय। जैसे—फिर आना तो बाते होगी। ३ कोई बात हो चुकने पर। पीछे। अनतर। उपरात। बाद। जैसे—अगर उससे बाते शुरू करो, फिर देखो कि वह क्या क्या करता है।
पद—फिर क्या है! =तब क्या पूछना है! तब तो कोई अडचन ही नही है। जैसे—अगर आप वहाँ चले जायँ तो फिर क्या है?
५ इसके अतिरिक्त। इसकेसिवाय। जैसे—फिर यह भी तो है कि वह कहाँ जाकर बैठ रहे।

फिरक—स्त्री० [हि० फिरना] एक प्रकार की छोटी गाडी जिस पर देहाती लोग चीजों को लादकर इधर-उधर ले जाते है (रुहेलखण्ड)

फिरकना—अ० [हि० फिरना] १ फिरकी की तरह घूमना। किसी अक्ष पर घूमना या चक्कर लगाना। २ थिरकना। नाचना।

फिरका—पु० [अ० फिर्क] १ जाति। २ वर्ग। ३ गिरोह। जत्था। ४ पथ। सप्रदाय। ५ अफरीदियों, पख्तूनों आदि मे कोई विशिष्ट वर्ग जो अलग जाति के रूप मे रहता हो।

फिरकी—स्त्री० [हि० फिरकना] १ चमडे, दफ्ती, धातु आदि का वह गोल या चक्राकार टुकडा जो बीच की कीली को एक स्थान पर टिकाकर उसके चारो ओर घूमता हो। २ लडको का एक प्रकार का छोटा खिलौना जो घुमाने से अपनी धुरी पर जोरो से घूमता हुआ चक्कर लगाता है। फिरहरी। भँभीरी। ३ चकई या चकरी नाम का खिलौना। ४ धातु, लकडी या और किसी चीज का वह गोल टुकडा जो चरखे, तकले आदि मे लगा रहता है। ५ मालखभ की एक कसरत जिसमे जिधर के हाथ से मालखभ लपटते हैं उसी ओर गर्दन झुकाकर

फुरती से दूसरे हाथ के कधे पर मालखभ को लेते हुए उड़ान करते हैं। ६ कुश्ती का एक दाँव या पेंच।

फिरकी डंड—पु० [हि०] एक प्रकार की कसरत या दड जिसमे दड करते समय दोनों हाथों को जमीन पर जमाकर उनके बीच मे से सिर देकर चारो ओर चक्कर लगाते है।

फिरकेबदी—स्त्री० [फा० फिर्क बदी] दलबदी।

फिरकैया—स्त्री० [हि० फिरना] १ घूमने या चक्कर लगाने की क्रिया या भाव। उदा०—फिरकैया लै निर्त अलायन, बिच बिच तान रसीली। —ललित किशोरी। २ दे० 'फिरकी'।

फिरगाना*—पु०=फिरगी।

फिरता—वि० [हि० फिरना या फेरना] १ जो जाकर फिर आया हो। लौटा हुआ। २ जो फेर दिया गया हो। लौटाया या वापस किया हुआ। जैसे—फिरता माल। ३ जो घूम-फिर रहा हो अथवा घूम-फिर कर कोई काम करता हो।

पु० १ फिरने, लौटने या वापस होने की अवस्था क्रिया या भाव। २ फेरने, लौटने या वापस करने की क्रिया या भाव। ३. दलाली के रूप मे मिलनेवाला धन। (दलाल)

फिरदौस—पु० [अ० फिर्दौस] १ वाटिका। बाग। २ स्वर्ग। बहिश्त।

फिरदौसी—वि० [अ० फिर्दौसी] स्वर्ग म रहनेवाला।

पु० फारसी भाषा का एक महान कवि जिसकी प्रसिद्ध रचना 'शाहनामा' महाकाव्य है।

फिरना—अ० [हि० फेरना का अ०] १ किसी चीज का ऐसी स्थिति मे आना, होना या लाया जाना कि वह किसी अक्ष या धुरी पर अथवा किसी विशिष्ट घेरे मे या मार्ग पर घूमने या चक्कर खाने लगे। जैसे—(क) चक्की का पहिया फिरना। (ख) मनका या माला फिरना। २ किसी दिशा मे घूमना या मुडना अथवा घुमाया या मोडा जाना। मुडना। जैसे—(क) ताले मे ताली फिरना। (ख) यह गली आगे चलकर दाहिनी ओर फिर गई है। ३ किसी मार्ग या पथ पर किसी का घूमना, विशेषत बार बार चक्कर लगाना। जैसे—गली मे लोगो या शहर मे सिपाहियो का फिरना। ४ जहाँ से कोई चला हो उसका लौटकर फिर वहीं आना या पहुँचना। वापस लौटना। जैसे—साजन अब क्या फिरेगे। ५ जो चीज जहाँ से आई हो उसका वही वापस भेजा जाना। जैसे—बिका हुआ माल फिरना। ६ सूचना आदि के रूप मे सब के सामने घुमाया जाना। जैसे—(क) डुग्गी या डौंगी फिरना। (ख) दुहाई फिरना। ७ घूम, मुड या पलटकर विरुद्ध दिशा मे आना। जैसे—पीछे की ओर मुँह फिरना।

मुहा०—जी फिरना=चित्त विरक्त होना।

८ उन्मुख होना। जैसे—ध्यान फिरना।

मुहा०—किसी ओर फिरना=प्रवृत्त होना।

९ लाक्षणिक अर्थ मे, पहले से बिलकुल विपरीत स्थिति मे आना। दशा बदलना। जैसे—(क) किस्मत फिरना। (ख) दिन फिरना। १० सामान्य या साधारण अवस्था की अपेक्षा हीन अवस्था को प्राप्त होना। जैसे—(क) बुद्धि फिरना। (ख) आँखें फिरना। (मर जाना)

मुहा०—सिर फिरना=बुद्धि भ्रष्ट होना। हर बात उलटी समझ में आना।

११ कही हुई बात या दिये हुए वचन पर दृढ न रहना। मुकरना। १२ किसी तरल पदार्थ का पोता जाना। जैसे—कमरे मे चूना या दरवाजो पर रग फिरना। १३. धीरे से मला जाना। जैसे—सिर पर हाथ फिरना। १४ गुदा से गूह या विष्टा का त्यागा जाना। जैसे—झाडा या टट्टी फिरना।

फिरनी—स्त्री० [?] चीनी, मेवे आदि से युक्त एक प्रकार का खाद्य जो दूध मे चौरठे को उबाल तथा जमाकर तैयार किया जाता है।

फिरवा—पु० [हि० फिरना] १ गले मे पहनने का एक आभूषण। २ सोने के तार मे कई फेरे डालकर बनाई जानेवाली अँगूठी।

फिरवाना—स० [हि० फेरना का प्रे०] फेरने का काम दूसरे से कराना।

फिराई—स्त्री० [हि० फिराना] फिराने या फेरने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

फिराऊ—वि० [हि० फिरना] १ जो लौट रहा हो। वापस आने या लौटनेवाला। जैसे—फिराऊ मेला। २. जिसके सबध मे यह निश्चय हो कि कोई शर्त पूरी होने या न होने की दशा मे फेरा या लौटाया जा सकेगा। जैसे—फिराऊ रेहन। ३ दे० 'जाक'।

फिराक—पु० [अ० फिराक] १ वियोग। बिछोह। २ किसी बात की अपेक्षा या आवश्यकता होने पर उसके सबध की चिंता या सोच। जैसे—नौकरी के फिराक मे इधर-उधर घूमना।

†स्त्री० -फ्राक।

फिराद (वि)—स्त्री०=फरियाद।

फिराना—स० [हि० फिरना] १ फिरने मे प्रवृत्त करना। ऐसा काम करना जिससे कोई या कुछ फिरने लगे। २ घुमाना, टहलाना या सैर कराना। ३ चारो ओर चक्कर देना। घुमाना। ४ ऐंठना। मरोडना। ५ वापस करना। लौटाना। ६ दे० 'फेरना'।

फिरार†—वि०=फरार।

फिरारी—स्त्री० [देश०] ताश के खेल मे उतनी जीत जितनी एक हाथ चलने मे होती है। एक चाल की जीत।

वि०=फरार (भागा हुआ)।

फिरि—क्रि० वि०=फिर।

फिरियाद—स्त्री०=फरियाद।

फिरियादी—वि०=फरियादी।

फिरिश्ता—पु०=फरिश्ता।

फिरिहरा—पु० [हि० फिरना] एक प्रकार की चिडिया जिसकी छाती लाल और पीठ काल रग की होती है।

फिरिहरी—स्त्री० [हि० फिरना+हारा (प्रत्य०)] फिरकी नाम का खिलौना।

फिरौती—स्त्री० [हि० फेरना] १ फिराने या फेरने की क्रिया, भाव या मजदूरी। २ वह धन जो दूकानदार किसी बेची हुई वस्तु को वापस लेते वक्त विक्रय-मूल्य मे से काट लेते है। ३ वापस आने या लौटने का भाव।

पद—फिरौती में=आती या लौटती बार। वापसी मे।

फिर्का†—पु०=फिरका।

फिलहकीकत—अव्य०[अ० फिलहकीकत] हकीकत मे। सचमुच। वस्तुत।

फिलहाल—अव्य०[अ०फिलहाल] इस समय। अभी।

फिल्म—स्त्री० [अं० फिल्म] [वि० फिल्मी] १. फोटो या छाया-चित्र उतारने के लिए रासायनिक क्रिया से बनाई हुई एक प्रकार की लबी पट्टी। २ उक्त प्रकार की वह पट्टी जिस पर चल-चित्र या सिनेमा के चित्र अकित होते है। ३. उक्त की सहायता से दिखाया जानेवाला चल-चित्र।

फिल्मी—वि०[अ० फ़िल्म+हि० ई (प्रत्य०)] १ फिल्म-सबधी। फिल्म का। २ चल-चित्र या सिनेमा सबधी। जैसे—फिल्मी गाने।

फिल्ली—स्त्री० [देश०] १. लोहे की छड का एक टुकडा जो जुलाहो के करघे मे तूर मे लगाया जाता है।
स्त्री० —पिंडली।

फिस—अव्य०[अनु०] कुछ भी नही। (व्यग्य) जैसे—टाँय टाँय फिस।

फिसड्डी—वि० [अनु० फिस] [भाव० फिसड्डीपन] १ जो किसी प्रकार की प्रतियोगिता मे सबसे पीछे रह गया हो या हार गया हो। २ सबसे पिछडा हुआ। ३. जिससे कुछ करते-धरते न बनता हो। अकर्मण्य। निकम्मा।

फिसफिसाना—अ०[अनु० फिस] ढीला, मद या शिथिल पडना या होना।

फिसलन—स्त्री०[हि० फिसलना] १. फिसलने की क्रिया या भाव। २ ऐसा स्थान जहाँ से अथवा जहाँ पर कोई फिसलता हो। ३ ऐसा स्थान जहाँ कोई चिकनाई आदि के कारण पैर फिसलता हो।

फिसलना—अ० [स० प्रसरण] १ किसी स्थान पर काई, चिकनाहट, ढाल आदि के कारण पैरो, हाथो आदि का ठीक तरह से जमकर न बैठना और फलत उस पर रगड खाते हुए कुछ दूर आगे बढ जाना। रपटना। जैसे—(क) सीढियो पर पैर फिसलने के कारण नीचे आ गिरना। (ख) शीशे पर हाथ फिसलना। २ लाक्षणिक रूप मे किसी प्रकार का आकर्षक या लाभदायक तत्त्व देखकर उचित मार्ग से भ्रष्ट होते हुए सहसा उस ओर प्रवृत होना। जैसे—तुम तो कोई अच्छी चीज देखकर तुरत फिसल पडते हो।
सयो० क्रि०—जाना।—पड़ना।
वि० जिसपर सहज मे कुछ या कोई फिसल सकता है। फिसलनवाला। जैसे—फिसलना पत्थर।

फिसलाना—स०[हि० फिसलना का स०] किसी को फिसलने मे प्रवृत करना।

फिहरिस्त—स्त्री०=फेहरिस्त (सूची)।

फींचना—स०=फीचना।

फी—अव्य०[अ० फी]हर एक। प्रत्येक। जैसे—फी आदमी दो आने लगेंगे।
स्त्री०[अनु०] ऐब। त्रुटि। दोष।
क्रि० प्र०—निकालना।
स्त्री० [अ० फी] फीस।

फीचना—स०[अनु० फिच् फिच्] कपडे को गीला करके और बार बार पटककर साफ करना। पछाडना।

फीक—स्त्री०[?] चाबुक की मार।

फीका—वि०[स० अपक्क; प्रा० अपिक्क] १ (खाद्य पदार्थ) जिसमे आवश्यक, उपयुक्त अथवा यथेष्ट मिठास, रस अथवा स्वाद न हो। जैसे—फीका दूध (जिसमे यथेष्ट मिठास न हो), फीकी तरकारी (जिसमे यथेष्ट नमक-मिर्च न हो)। २ (रग) जो यथेष्ट चमकीला या तेज न हो। धूमिल। मलिन। जैसे—चार दिन मे ही साडी का रग फीका हो जायगा। ३ (खेल, तमाशा आदि) जिसमे आनद की प्राप्ति न हुई हो। ४ (पदार्थ या व्यक्ति) काति, तेज, प्रभा आदि से रहित या हीन। जैसे—मुझे-देखते ही उसके चेहरे का रग फीका पड़ गया।
मुहा०—(किसी व्यक्ति का) फीका पड़ना=लज्जित होने के कारण निष्प्रभ या श्री-हत होना।
५ जिसका अभीष्ट या यथेष्ट परिणाम न हुआ हो अथवा प्रभाव न पडा हो। उदा०—नीकी दई अनाकनी, फीकी परी गुहारि।—बिहारी।
६ (व्यक्ति का शरीर) जो हलके ज्वर के कारण कुछ गरम और तेजहीन या सुस्त हो गया हो। (स्त्रियाँ) जैसे—हाथ लगाकर देखा तो पिंडा फीका लगा।

फीता—पु०[पुर्त०] १ सूत आदि की बुनी हुई बहुत कम चौडी और बहुत अधिक लबी वह धज्जी या पट्टी जो कई प्रकार की चीजे बाँधने और कई प्रकार के कपडो पर टाँकने के काम आती है। जैसे—जूता बाँधने का फीता, साडी पर टाँकने का फीता। २ उक्त प्रकार की वह धज्जी या पट्टी जिस पर इचो आदि के चिह्न बने होते है और जो चीजो की ऊँचाई, गहराई, लबाई आदि नापने के काम आती है। (टेप)

फीफरी—स्त्री०=फेफरी।

फीरनी—स्त्री०=फिरनी (खाद्य पदार्थ)।

फीरोज—वि० [फा० फीरोज] १ विजयी। २ सफल। ३ सुखी और सम्पन्न। ४. भाग्यवान्। फीरोजे के रग का। हरापन लिये पीले रग का।

फीरोजा—पु० [फा० फीरोज] एक प्रकार का बहुमूल्य पत्थर या रत्न जो हरापन लिये नीले रग का होता है।

फीरोजी—वि०[फा० फीरोजी] फीरोजे के रग का। हरापन लिये नीला।
पु० उक्त प्रकार का रग।

फील—पु०[फा० फील] हाथी।

फीलखाना—पु०[फा०] वह स्थान जिसमे हाथी रखे जाते है। हस्तिशाला। हथिसार।

फीलपा—पु०[फा०] एक प्रकार का रोग जिसम पैर या हाथ फूलकर बहुत मोटा हो जाता है।

फीलपाया—पु०[फा० फीलपा] १ ईंटो का बना हुआ वह मोटा खभा जिस पर छत ठहराई जाती है। २ पाँव सूजने का एक रोग।
पु०=फीलपा (रोग)।

फीलवान—पु०=महावत (हाथीवान)।

फीला—पु०[फा० फील] शतरज के खेल मे हाथी नाम का मोहरा।

फीली—स्त्री०=पिंडली।

फीस—स्त्री०[अ० फी] १ कुछ विशिष्ट व्यवसायियो को उनके विशिष्ट कृत्यो के बदले मे पारिश्रमिक के रूप मे दिया जानेवाला धन। जैसे—डाक्टर या वकील की फीस। २ वह धन जो विद्यार्थी को किसी विद्यालय मे शिक्षा ग्रहण करने के बदले मे मासिक रूप से देना पडता है। शुल्क। ३ कर।

फी सदी—अव्य० [फा० फी सदी] हर सौ के हिसाब से। प्रतिशत।

फुंकना—अ० [हि० फूंकना का अ० रूप] १ वस्तु आदि का जलकर पूर्णतया भस्म होना। जैसे—मकान या शव फुँकना। २ वायु का फूंककर किसी में भरा जाना। जैसे—गुब्बारा फुँकना। ३ धन आदि का बहुत ही बुरी तरह से और व्यर्थ बरबाद या व्यय होना।
पु० १ धातु, बांस आदि की वह पतली नली जिससे हवा फूंककर आग सुलगाई जाती है। २ भाथी। ३ फुंकैया। (दे०) ४ गुरदा (शरीर का अंग)।

फुंकरना—अ० [हि० फुंकार] फूत्कार करना। फूं फूं शब्द करना।

फुंकवाना—स० [हि० फूंकना का प्रे०] फूंकने का काम दूसरे से कराना।

फुंकाना—स० =फुँकवाना।

फुंकार—स्त्री० =फूत्कार।

फुंकारना—अ० =फुंकरना।

फुंकैया—पु० [हि० फूंकना] १ हवा फूंकने या फूंककर भरनेवाला व्यक्ति। २ व्यर्थ धन नष्ट, बरबाद या व्यय करनेवाला व्यक्ति।

फुंदना—पु० [हि० फूल+फंदा?] [स्त्री० अल्पा० फुँदिया] १ कली, फूल आदि के रूप में ऊन, सूत आदि की बनी हुई वह छोटी गाँठ या लच्छी जो दुपट्टे चादर, साड़ी आदि के किनारे पर बनी या लगी हुई झालर के नीचे लटकाई जाती है। २ उक्त आकार-प्रकार की कोई गाँठ। जैसे—तराजू की डंडी का फुँदना।

फुंदारा—वि० [हि० फुंदना] जिसमें फुंदने टँके या लगे हों।

फुंदिया—स्त्री० हि० फुंदना का स्त्री० अल्पा०।

फुंदी—स्त्री० बिंदी।

फुंसी—स्त्री० [सं० पनसिका, पा० फनस] रक्त आदि के विकार के कारण त्वचा पर निकलनेवाला ऐसा छोटा दाना जिसमें कुछ मवाद भी हो।

फुआ—स्त्री० =बुआ।

फुआरा—पु० =फुहारा।

फुकना—स्त्री० [हि० फुँकना] १ फुकने की अवस्था या भाव। २ दाह। जलन।

फुकना—अ० =फुँकना
पु० [स्त्री० अल्पा० फुकनी] वह नली जिससे फूंक मारकर आग सुलगाते है।

फुकनी—स्त्री० हि० 'फुकना' का स्त्री० अल्पा०।

फुकाना—स० =फुंकाना।

फुक्क—वि० [हि० फुंकना] १ जो जलते या जलाये जाने पर पूर्णत भस्म हो गया हो। २ (धन) जो पूर्णत बरबाद या व्यर्थ व्यय हो चुका हो।
पु० =फुक्कू।

फुक्कू—वि० [हि० फूंकना] १ फूंकने या भस्म करनेवाला। २ धन व्यर्थ नष्ट करनेवाला।

फुचड़ा—पु० [देश०] बुनावटवाली वस्तुओं से बाहर निकला हुआ सूत या रेशा। जैसे—इस झोले में जगह-जगह फुचड़े निकल आये है।
क्रि० प्र०—निकलना।

फुजला—पु० [अ० फुज़्ल] १ जूठा बचा हुआ भोजन। जूठन। २ बचा हुआ रद्दी अंश। सीठी। ३ मैल। ४ गुह। मल।

फुट—वि० [सं० स्फुट] १ जिसका जोड़ा न हो। एकाकी। अकेला। २ जो किसी क्रम या शृंखला से अलग हो। पृथक्। जुदा।
वि० [हि० फूटना] टूटा हुआ। जैसे—फुटमत।
पु० [अ०] १ लंबाई नापने का एक उपकरण जो १२ इंच लंबा होता है। २. उक्त लंबाई का मान।

फुटक*—पु० =फुटका। उदा०—पानी पर पराग परि ऐसी बीर फुटक भरी आरसि जैसी।—नंददास।

फुटकर—वि० [सं० स्फुट+हि० कर (प्रत्य०)] १ जो युग्म न हो। जिसका जोड़ या जोड़ा न हो। अयुग्म। २ जो किसी विशिष्ट मद या वर्ग में न हो और इसी कारण उन सबसे अलग रहकर अपना अलग वर्ग बनाता हो। भिन्न भिन्न या अनेक प्रकार का। कई मेल का। जैसे—फुटकर कविता, फुटकर खर्च, फुटकर चीजों की दूकान। ३ (माल या सौदा) जो इकट्ठा या एक साथ नहीं, बल्कि अलग अलग या खंडों में आता या रहता हो। 'थोक' का विपर्याय। जैसे—फुटकर माल बेचनेवाला दूकानदार।

फुटकल—वि० फुटकर।

फुटका—पु० [सं० स्फोटक] [स्त्री० अल्पा० फुटकी] १ फफोला। छाला। २ उक्त आकार-प्रकार का कोई छोटा दाग या धब्बा। ३ उक्त आकार-प्रकार का कोई छोटा कण।
क्रि० प्र०—पड़ना।
४ भुनी हुई ज्वार, धान, मक्के आदि का लावा।
पु० [?] ऊख का रस पकाने का बड़ा कड़ाहा।

फुटकी—स्त्री० [सं० पुटक] १ किसी वस्तु के छोटे लच्छे, या जमे हुए कण जो किसी तरल पदार्थ में अलग अलग ऊपर तैरते हुए दिखाई पड़ते हैं। बहुत छोटी अंठी। जैसे—(क) जब दूध फट जाता है तब उसके ऊपर फुटकियाँ-सी दिखाई पड़ती हैं। (ख) रोगी के कफ (या थूक) में खून की फुटकियाँ दिखाई देती है। ३. फुदकी (चिड़िया)।

फुट-नोट—पु० [अं०] पाद-टिप्पणी।

फुट-बाल—पु० [अं०] १ हवा भरा हुआ रबड़ का वह बड़ा गेंद जिस पर चमड़े की खोली भी चढ़ी होती है तथा जिसे पैर की ठोकर से उछाल-कर खेला जाता है। २ गेंद से खेला जानेवाला खेल।

फुट-मत—पु० [हि० फूटना+सं० मत] १ ऐसी स्थिति जिसमें दो या अधिक पक्षों विशेषत. परिवार, संस्था आदि के विभिन्न सदस्यों में किसी बात के संबंध में कई परस्पर विरोधी मत होते है। मत-भेद। २ फूट। (देखे)

फुटहरा—पु० =फुटेहरा।

फुटा—पु० [अं० फुट] लंबाई नापने का वह उपकरण जिस पर इंचों और फुटों के निशान और अंक बने रहते है। (फुट रूल)

फुटेहरा—पु० [हि० फूटना+हरा=फल] १ ज्वार, मकई आदि का भुना हुआ वह दाना जो फूटकर खिल गया हो। २ खूब जोरों की हँसी।
मुहा०—**फुटेहरा फुटना** =जोर की हँसी होना। (व्यंग्य)

फुटैल—वि० =फुट्टैल।

फुट्ट—वि० दे० 'फुट'।

फुट्टक—पु० [सं०] [स्त्री० फुट्टिका] एक तरह का कपड़ा।

फुट्टैल—वि० [सं० स्फुट, पा० फुट+ऐल (प्रत्य०)] १ पक्षी या पशु

जो झुंड या दल से फटकर अलग हो गया हो। २ जो अपने जोड़े के साथ न रहता हो। ३ बदकिस्मत। हत-भाग्य।

फुतूर—पु०=फतूर।

फुतूरिया—वि०=फतूरिया।

फुतूरी—वि०=फतूरिया।

फुत्कार—पु० फूत्कार।

फुत्कृत—भू० कृ० [स०] फूंका हुआ।

फुत्कृति—स्त्री० [स० फूत्√कृ+क्तिन्] फुत्कृति (फत्कार)।

फुदकना—अ० [अनु०] १ थोड़ी थोड़ी दूर पर उछलते हुए यहाँ से वहाँ तथा वहाँ से यहाँ आते-जाते रहना। जैसे—चिड़िया का पेड़ा की डालियों पर फुदकना। २ उमग मे आकर अथवा प्रसन्नतापूर्वक उछलते हुए इधर-उधर आना-जाना।

फुदकी—स्त्री० [हि० फुदकना] १ फुदककर एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने का भाव।

क्रि० प्र०—भरना।

२ एक प्रकार की छोटी चिड़िया जो उछल-उछलकर या फुदकती हुई चलती है। ३ टिड्डी।

फुनंग—पु०=फुनगा।

फुन—अव्य० [स० पुन] १ पुन। फिर। २ और। ३ भी।

फुनक—स्त्री० १ फुत्कार। २ =फुनगी (छोटा फुनगा)।

फुनकार—स्त्री० =फुत्कार।

फुनगा—पु० [?] [स्त्री० अल्पा० फुनगी] १ वृक्षकी शाखा का अग्र भाग जिसमे कोमल पत्ते होते है। फुनग। २ आलू, कपास आदि की फसलों का एक रोग। मूँड़ी।

फुनना—पु० =फुँदना।

फुनि*—अव्य० फुन (फिर)।

पद—फुनि फुनि (क) बार-बार। (ख) रह-रहकर।

फुप्फुस—पु० [स०] [वि० फौप्फुसीय] फेफड़ा।

फुफँदी—स्त्री० १ =फुबती (नीवी)। २ =फफूँदी।

फुफकाना—अ० =फुफकारना।

फुफकार—स्त्री० [अनु०] १ फुफकारने की क्रिया या भाव। २ मुँह से निकाला जानेवाला फूँ फूँ शब्द। फुफकारने से होने-वाला शब्द। जैसे—बैल या साप की फुफकार।

फुफकारना—अ० [हि० फुफकार] क्रोध मे आकर मुँह से फूँ फूँ करना (जिससे आघात करने का भाव भी सूचित होता है)। फुत्कार करना।

फुफी—स्त्री०=फूफी (बूआ)।

फुफनी—स्त्री०=फफूँदी।

फुफू—स्त्री०=फूफी (बूआ)।

फुफेरा—वि० [हि० फूफा+एरा (प्रत्य०)] [स्त्री० फुफेरी] १ फूफा-सबधी। २ फूफा से उत्पन्न। जैसे—फुफेरा भाई।

फुर—वि० [हि० फुरना] सत्य। सच्चा। उदा०—पिता बचन फुर चाहिअ कीन्हा।—तुलसी।

अव्य० सचमुच। वास्तव मे।

पु० [अनु०] पक्षियो के उड़ने पर होनेवाला शब्द।

पद—फुर से=(क) फुर शब्द करते हुए। (ख) एकाएक। जल्दी से।

फुरकत—स्त्री० [अ० फुर्कत] वियोग। जुदाई। बिछोह।

फुरकना—स० [अनु०] जुलाहो की बोली मे किसी वस्तु को मुँह से चबाकर साँस के जोर से थूकना।

अ० फड़कना।

फुरकाना—स० =फड़काना।

फुरती—स्त्री० [स० स्फूर्ति] [वि० फुरतीला] १ स्वस्थ शरीर का वह गुण जिससे कोई उमग मे तथा शीघ्रतापूर्वक किसी काम मे प्रवृत्त या सलग्न होता तथा अपेक्षाकृत थोड़े समय मे ही उसका सपादन करता है। २ शीघ्रता।

क्रि० प्र०—करना।

फुरतीला—वि० [हि० फुरती+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० फुरतीली] १ जिसमे फुरती हो। फुरती से काम करनेवाला। २. बहुत तेज चलनेवाला।

फुरन—स्त्री० [हि० फुरना] फुरने की क्रिया या भाव।

फुरना—अ० [स० स्फुरण, प्रा० फुरण] [भाव० फुरन] १ स्फुरित होना। उद्भूत या प्रकट होना। निकलना। जैसे—मुँह से बात फुरना। २ ठीक या पूरा उतरना। सत्य सिद्ध होना। ३ अर्थ या आशय समझ मे आना। ४ किसी सोची हुई बात का पूरा या सफल होना। ५ चमकना। ६ परो का फड़फड़ाना।

फुरनी-दाना—पु० [फुरनी ? + हि० दाना] एक प्रकार का चबैना जिसमे चना और चिउड़ा एक साथ मिला रहता है और जो प्राय घी या तेल मे भुना हुआ होता है।

फुरफुर—स्त्री० [अनु०] पक्षियो के उड़ते समय तथा परो के फड़फड़ाने से उत्पन्न होनेवाला शब्द।

फुरफुराना—अ० [अनु० फुर फुर] [भाव० फुरफुराहट] १ किसी चीज का इस प्रकार हिलना कि उससे फुर फुर शब्द हो। जैसे—चिड़ियो या फतिगो का फुरफुराना। २ फहराना।

स० १ कोई चीज इस प्रकार हिलना कि उससे फुर फुर शब्द हो। २ फड़फड़ाना।

फुरफुराहट—स्त्री० [अनु०] फुर फुर शब्द करने या होने की क्रिया या भाव।

फुरफुरी—स्त्री० [अनु० फुर फुर] १ कुछ समय तक बराबर होता रहनेवाला फुर फुर शब्द।

मुहा०—(चिड़ियो का) फुरफुरी लेना=उड़ने के लिए पख फड़फड़ाना।

फुरमान—पु० फरमान।

फुरमाना—स०=फरमाना।

फुरसत—स्त्री० [अ० फुर्सत] १ अवसर। समय। २ हाथ मे कोई काम न होने के कारण अवकाश का समय।

क्रि० प्र०—देना।—निकालना।—पाना।—मिलना।

पद—फुरसत से=अवकाश के समय।

३ झझट, बखेड़े, रोग आदि से होनेवाली मुक्ति।

फुरसा—पु० [?] बालू के रग का एक प्रकार का छोटा किंतु भीषण साँप।

फुरसी—स्त्री० [?] एक प्रकार की सजा जो किसी अपराधी को सजा

भोगते रहने की दशा में फिर पहले का-सा अपराध करने पर दी जाती है और पहले मिली हुई सजा के साथ जोड़ दी जाती है।

फुरहरना—अ० [स० स्फुरण] फूटकर निकलना। प्रादुर्भूत होना।

फुरहरा—पु० [हि० फुरना=स्फुरण] १ ज्वार, मकई आदि के दानो का वह खिला हुआ रूप जो उन्हे भूनने पर प्राप्त होता है। २ खूब जोरो की हँसी। ठहाका।

क्रि० प्र०—फूटना।

फुरहरी—स्त्री० [अनु०] १ फुर फुर शब्द करने या होने की अवस्था या भाव। फुरफुराहट। २ पक्षियो के पर फड़फड़ाने का शब्द।

मुहा०—(पक्षियों का) **फुरहरी खाना या लेना**—पक्षियों का मग्न होकर अपने पर फड़फड़ाना।

३ कपड़े आदि के हवा मे हिलने की क्रिया या शब्द। फरफराहट। ४ सरदी, भय आदि के कारण होनेवाली थरथराहट या रोमाच। रोमाचयुक्त कप।

क्रि० प्र०—आना।—खाना।—लेना।

५ वह सीक जिसके सिरे पर हलकी रूई लपेटी हो और जो तेल, इत्र, दवा आदि मे डुबोकर काम मे लाई जाय।

फुराना—स० [हि० फुर] १ कथन आदि पूरा उतारना। सच्चा ठहराना। २. प्रमाणित या सिद्ध करना।

अ०=फुरना।

फुरि†—वि०=फुर।

फुरेरी†—स्त्री०=फुरहरी।

फुरेरू—स्त्री० [अनु० फुर] १ आवेश। जोश। २. साहस। हिम्मत। (बुदेल०) उदा०—देशराज के साथ अपने को पाकर बिक्रम को फुरेरू आ गई।—वृन्दावनलाल वर्मा।

फुरं—अव्य० [हि० फुरना] सचमुच।

फुर्ती—स्त्री०=फुरती।

फुर्सत—स्त्री०=फुरसत।

फुलंगो—स्त्री० [हि० फूल ?] पहाड़ो मे होनेवाली जगली भाँग का वह पौधा जिसमे बीज बिल्कुल नही लगते (कलगो से भिन्न)।

फुल—पु० [हि० फूल] हि० 'फूल' का वह सक्षिप्त रूप जो उसे समस्त पदो के आरभ मे लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—फुलझड़ी, फुलवारी आदि।

पु०=फूल। (पश्चिम)

फुलई—स्त्री० [हि० फूल] वनस्पतियो मे वह सीका जिसके अगले भाग मे फूल लगे होते हैं। जैसे—सरकडे की फुलई।

फुलका—वि० [हि० 'हलका' का अनु०] फूल की तरह हलका। फूल जैसा। जैसे—हलका फुलका।

पु० [स्त्री० अल्पा० फुलकी] १ हलकी और फूली हुई रोटी। चपाती। २ एक प्रकार का छोटा कड़ाहा जिसमे रस से चीनी बनाई जाती है। ३ छाला। फफोला।

फुलकारी—स्त्री० [हि० फूल+कारी (प्रत्य०)] १ कपड़े पर सूत आदि से फूल-पत्तियाँ बनाने का काम। २ एक प्रकार का कपड़ा जिसमे मामूली मलमल आदि पर रगीन रेशमी डोरियो से फूल-बूटियाँ आदि काढ़ी हुई होती है।

फुलचुही—स्त्री०=फुलसुंघनी (चिड़िया)।

फुलझड़ी—स्त्री० [हि० फूल+झड़ना] १. छोटी, पतली डडी की तरह की एक प्रकार की आतिशबाजी जिससे फूल की-सी चिनगारियाँ निकलती है। २. लाक्षणिक अर्थ मे ऐसी बात जिसका मूल उद्देश्य दो पक्षो मे झगड़ा कराकर स्वय तमाशा देखना होता है।

क्रि० प्र०—छूटना।—छोड़ना।

फुलझरी—स्त्री०=फुलझड़ी।

फुलनी—स्त्री० [हि० फूलना] ऊसर भूमि मे होनेवाली एक तरह की घास।

फुलरा—पु०=फुँदना।

फुलवर—स्त्री० [हि० फूल+वर (प्रत्य०)] एक तरह का बूटीदार रेशमी कपड़ा।

फुलवा—पु० [हि० फूल] १ एक प्रकार की गोद जो उबटन तथा इत्र के रूप मे काम आती है। २ एक प्रकार का बैल। ३. देशी सफेद आलू।

†पु०=फूल (पुष्प)।

फुलवाई—स्त्री०=फुलवारी।

फुलवाड़ी—स्त्री०=फुलवारी।

फुलवार—वि० [स० फुल्ल] प्रफुल्ल। प्रसन्न।

फुलवारा—पु० [देश०] चिउली नाम का पेड़।

फुलवारी—स्त्री० [हि० फूल+वारी] १ वह छोटा उद्यान या बगीचा जिसमे सुन्दर फूलो के पौधे ही हो, झाड़ियाँ या वृक्ष न हो। पुष्प-वाटिका। २ कागज के बने हुए फूल और पौधे जो तख्तो पर लगाकर विवाह मे बरात के साथ शोभा के लिए निकाले जाते हैं। ३ लाक्षणिक रूप मे, बाल-बच्चे जो माता-पिता के लिए परम आनन्ददायक होते हैं।

फुलसरा—पु० [हि० फूल+सार] काले रग की एक चिड़िया जिसके सिर पर छीटे होते हैं।

फुलसुंघी—स्त्री० [हि० फूल+सूँघना] एक प्रसिद्ध छोटी चिड़िया जिसका रग नीलापन लिये काले रग का होता है तथा जो फूलो पर फुदकती तथा मँडराती रहती है। इसका घोसला बहुत ही सुन्दर तथा कलापूर्ण होता है।

फुलहरा† —पु० [हि० फूल+हारा] सूत, रेशम आदि के बने हुए झब्बेदार बदनवार जो उत्सवो मे द्वार पर लगाये जाते हैं।

पु०=फुलहारा (माली)।

फुलहा†—वि० [हि० फूल (धातु)] [स्त्री० फुलही] फूल नामक धातु का बना हुआ। जैसे—फुलही बटलोही।

†पु०=फुलवा।

फुलहारा—पु० [हि० फूल+हारा (प्रत्य०)] [स्त्री० फुलहारिन, फुलहारी] माली।

फुलांग—स्त्री०=फुलगो (भाँग)।

फुलाई—स्त्री० [हि० फूलना] १ फूले हुए होने की अवस्था या भाव। २. फुलाने की क्रिया या भाव। ३ एक प्रकार का बबूल जो पजाब मे सिंधु और सतलज नदियो के बीच की पहाड़ियो पर होता है। फुलाह। ४ दे० 'सर-फुलाई'।

फुलाना—स० [हि० फूलना] १. वृक्षो आदि को फूलो से युक्त करना।

पुष्पित करना। २ किसी चीज को फूलने मे प्रवृत्त करना। ऐसी क्रिया करना जिससे कोई चीज हवा से भरकर फूल जाय। जैसे—गुब्बारा फुलाना, फुलका फुलाना।

मुहा०—गाल या मुँह फुलाना=अभिमानपूर्वक रुष्ट होना।

३ किसी को आनंदित, पुलकित या प्रसन्न करना। ४. किसी के मन मे अभिमान या गर्व उत्पन्न करना। गर्वित करना। घमंड बढ़ाना। जैसे—तुम्ही ने तो तारीफ कर करके उसे और फुला दिया है।

†अ०=फलना।

फुलायल—पु०=फुलेल।

फुलाव—पु० [हिं० फलना] १ फले हुए होने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ दे० 'फुलावट'।

फुलावट—स्त्री० [हिं० फूलना] १ किसी चीज के फूले हुए होने की अवस्था या भाव। फुलाव। २ वृक्ष आदि के फूलने की अवस्था, क्रिया या भाव।

फुलावा—पु० [हिं० फूल] स्त्रियो के सिर के बालो को गूँथने की डोरी जिसमे फूल या फुँदने लगे रहते है। खजुरा।

फुलिंग—पु० [स० स्फुलिंग, प्रा० फुलिंग] चिनगारी।

फुलिया—स्त्री० [हिं० फूल] १ किसी चीज का फूल की भाँति उभरा और फैला हुआ गोल सिरा। २ लोहे का एक प्रकार का बड़ा काँटा जिसका ऊपरी भाग या सिरा गोलाकार फैला हुआ होता है। ३ नाक मे पहनने का फूल या लौग नाम का गहना।

फुलिसकेप—पु० [अ० फूल्सकैप] आकार के विचार से वह कागज जो १७ इंच लंबा और १२ इंच चौड़ा होता है।

फुलुरिया—स्त्री० [देश०] कपड़े का वह टुकड़ा जो छोटे बच्चो के चूतड़ के नीचे बिछाया जाता है। पोतड़ा।

फुलेरा—पु० [हिं० फूल] फूल की बनी हुई छतरी जो देवताओ के ऊपर लगाई जाती है।

फुलेल—पु० [हिं० फूल+तेल] फूलों की महक से सुवासित किया हुआ तेल जो सिर मे लगाने के काम आता है। सुगंधित तेल।

पु० [हिं० फूल] एक प्रकार का पहाड़ी वृक्ष।

फुलेली—स्त्री० [हिं० फुलेल] काच आदि का वह बड़ा बरतन जिसमें फुलेल रखा जाता है।

फुलेहरा—पु० फुलहरा।

फुलौरा—पु० [हिं० फूल+बड़ा] [स्त्री० अल्पा० फुलौरी] चौरेठे, मैदे आदि के घोल को उबालकर बनाई जानेवाली एक तरह की बरी जो तले जाने पर काफी फूल जाती है।

फुलौरी—स्त्री०=छोटा फुलौरा।

फुल्ल—वि० [स०√फुल्ल् (खिलना)+अच्] १ फूला हुआ। विकसित। २ प्रसन्न। हर्षित।

पु० फूल। पुष्प।

फुल्लदाम (न्)—पु० [स० ष० त०] उन्नीस वर्णो की एक वृत्ति जिसके प्रत्येक चरण मे ६, ७, ८, ९, १०, ११ और १७वाँ वर्ण लघु होता है।

फुल्ला—पु० [हिं० फुलना] १ अन्न का वह दाना जो सेंकने से फूल गया हो। फुरेहरा। (पश्चिम) २ खील। ३ फूली हुई या फूल की तरह की कोई चीज। ४ आँख का फूली नामक रोग।

फुल्ली—स्त्री० [हिं० फूल] १ फूल के आकार का कोई आभूषण या उसका कोई भाग। २ दे० 'फुलिया'। ३ दे० 'फूली'।

फुवारा—पुं०=फुहारा।

फुस—पु० [अनु०] वह शब्द जो मुँह से फूटकर साफ न निकले। बहुत धीमी आवाज। जैसे—फुस से किसी के कान मे कुछ कहना।

फुसकारना—अ० [अनु०] फूँक मारना। फुत्कार छोड़ना।

फुसकी—स्त्री० [अनु०] १ किसी के कान मे धीरे से कुछ कहना। २ गुदा मार्ग से निकलनेवाली वह हवा जिससे शब्द नही होता। ठुसकी।

फुसड़ा—पु०=फुचड़ा।

फुसफस—स्त्री० [अनु०] १ किसी के कान के पास मुँह करके इतने धीरे से कुछ कहना कि आस-पास के लोग न सुन सकें। २ इस प्रकार आपस मे होनेवाली बात-चीत। काना-फूसी। (ह्विस्पर)

फुसफुसा—वि० [हिं० फुस या अनु० फुस] १. जो दबाने से बहुत जल्दी चूर चूर हो जाय। जो कड़ा या करारा न हो। कमजोर और नरम। २. जिसमे तीव्रता न हो। मंद। मद्धिम।

फुसफुसाना—स० [अनु०] फुसफुस शब्द करते हुए कुछ कहना। बहुत ही दबे हुए या धीमे स्वर से बोलना।

फुसलाना—स० [हिं०] १ किसी को मीठी मीठी बातों से या बड़ी बड़ी आशाएँ दिलाकर अपने अनुकूल करना। जैसे—बच्चे या स्त्री को फुसलाना। २ रूठे हुए व्यक्ति को मनाना।

सयो० क्रि०—लेना।

फुहार—स्त्री० [स० फूत्कार=फूँक से उठा हुआ पानी का छींटा या बुलबुला] १ आकाश से बरसनेवाली पानी की बहुत ही छोटी छोटी बूँदें जो देखने में झरने या फुहारे से उड़नेवाली बूँदो के समान जान पड़ें। (ड्रिज़िल)। २ ऊपर से गिरनेवाली किसी तरल पदार्थ की बहुत छोटी छोटी बूँदें। जैसे—गुलाब जल की फुहार।

क्रि० प्र०—गिरना।—पड़ना।

फुहारना—स० [हिं० फुहार] किसी चीज को धोने, रँगने आदि के लिए उस पर किसी तरल पदार्थ की फुहार डालना।

फुहारा—पु० [हिं० फुहार] १. एक विशिष्ट प्रकार का उपकरण जिसकी सहायता से पानी या किसी तरल पदार्थ की बहुत छोटी-छोटी बूँदें चारो ओर गिराई जाती हैं। जल यन्त्र। २ जल या किसी तरल पदार्थ की तेजधार। जैसे—सिर से खून का फुहारा छूटना।

क्रि० प्र०—छूटना।

फुही—स्त्री०=फूही।

फुहुँकना—अ०=फुफकारना। उदा०—भृगुटि के कुंडल वक्र मरोर, फुहुँकता अंध रोष फन खोल?—पन्त।

फूँक—स्त्री० [अनु० फूफू] १. मुँह से वेगपूर्वक निकाली जानेवाली हवा।

क्रि० प्र०—मारना।

२ श्वास-प्रश्वास जो किसी के जीवित होने के सूचक होते हैं।

मुहा०—फूँक निकलना या निकल जाना=शरीर से प्राण निकल जाना। मरना।

३. किसी की ओर मंत्र पढ़कर मुँह से छोड़ी जानेवाली वायु जो अनेक प्रकार के प्रभाव उत्पन्न करनेवाली मानी जाती है।

पद—झाड़-फूंक। (देखें)

फूंकना—स० [हि० फूंक] १ मुंह का विवर समटकर वेग के साथ हवा छोड़ना। होठों को चारों ओर से दबाकर झोंक से हवा निकालना। जैसे—यह बाजा फूंकने से बजता है।

सया० क्रि०—देना।

मुहा०—फूंक फूंककर चलना या पैर रखना—बहुत ही सतर्क तथा सावधान रहकर आगे बढ़ना।

२ शख, बाँसुरी आदि मुंह से बजाये जानेवाले बाजों को फूंककर बजाना। जैसे—शख फूंकना। ३ मत्र आदि पढ़कर किसी पर फूंक मारना। ४ किसी के कान में धीरे से कोई ऐसी बात कहना जिसका कोई अभीष्ट प्रभाव उत्पन्न हो। जैसे—न जाने किसने उन्हे फूंक दिया है कि वे मुझसे नाराज हो गये है। ५ मुंह की हवा छोड़कर आग दहकाना या सुलगाना। फूंककर अग्नि प्रज्वलित करना। जैसे—चूल्हा फूंकना। ६ पूरी तरह से भस्म करने के लिए आग लगाना। जलाना। जैसे—किसी का घर या झोपड़ी फूंकना। ७ धातुओं का वैद्यक की रासायनिक रीति से अथवा जड़ी-बूटियों की सहायता से भस्म करना। जैसे—सोना-फूंकना। ८ बुरी तरह से नष्ट या बरबाद करना। जैसे—दुर्व्यसनों मे धन या सम्पत्ति फूंकना।

पद—फूंकना-तापना—सुख-भोग के लिए व्यर्थ और बहुत अधिक खर्च करना। उड़ाना।

९ बहुत दु खी या सतप्त करना।

फूंका—पु० [हि० फूंक] १ भाथी या नली से आग पर फूंक मारने की क्रिया या भाव। २ गौओ-भैंसो के स्तनों से अधिक से अधिक दूध उतारने या निकालने की एक प्रक्रिया जिसमें बाँस की नली मे चरपरी या झालदार चीजे (जैसे—मिर्च आदि) भरकर फूंक मारते हुए उनके स्तनो के अन्दर इसलिए पहुँचा देते है कि वे अपने बच्चों के लिए दूध चुराकर न रख सके। ३ बाँस आदि की वह नली जिससे उक्त क्रिया की जाती है। ४ छाला। फफोला।

फूंद—स्त्री०=फुंदना।

पद—फूंद-फूंदारा—जिसमे बहुत से झब्बे या फुँदने लगे हों।

फूंदरी—स्त्री०—छोटा फुंदना। (बुन्देल०) उदा०—गहरे लाल रगवाले फूलों की फूंदरी लटक रही थी।—वृन्दावनलाल वर्मा।

फुंदा—पु० =फुंदना।

फुई—स्त्री०—फही।

फूकना—स०=फूंकना।

फूजना—पु० [?] अस्त-व्यस्त होना। बिखरना। (पूरब)

फूट—स्त्री० [हि० फूटना] १ फूटने की क्रिया या भाव। २ जिन लोगो का आपस मे मिलकर रहना या जो आपस मे मिलकर रहते आये हो, उनमें उत्पन्न होनेवाला पारस्परिक विरोध या वैमनस्य। आपसी अनबन या बिगाड़।

पद—फूट-फटक—आपस मे होनेवाली अनबन या फूट।

मुहा०—फूट डालना—जो लोग मिलकर रहते हो उनमे भेद-भाव या विरोध उत्पन्न करना।

३ एक प्रकार की बड़ी ककड़ी जो पकने पर प्राय खेतों मे ही फट जाती है।

फूटन—स्त्री० [हि० फूटना] १ फूटने की क्रिया या भाव। २ वह खड या टुकड़ा जो फूटकर अलग हो गया या निकल आया हो। ३. शरीर के जोड़ों मे होनेवाली वह पीड़ा जिसमे अग फूटते हुए-से जान पड़ते है। जैसे—हड़फूटन।

फूटना—अ० [स० स्फुटन] १ मिट्टी, धातु आदि की बनी हुई वस्तु का आघात लगने पर अथवा गिरने के फलस्वरूप अनेक छोटे-छोटे टुकड़ों मे विभक्त होना। जैसे—(क) शीशा फूटना। (ख) स्लेट फटना। २ विशेषत किसी कड़ी और प्राय गोलाकार चीज का आघात लगने पर या दबाव पड़ने पर इस प्रकार टूटना कि उसके अदर का अवकाश आस-पास के अवकाश के साथ मिलकर एक हो जाय। जैसे—मटका या हँड़िया फटना। ३ शरीर के किसी अग मे ठोकर लगने पर उसमें से रक्त बहने लगा। जैसे—पाँव या सिर फटना। ४ अन्दर का दबाव पड़ने से अथवा किसी प्रकार की बाहरी क्रिया से किसी चीज का ऊपरी आवरण या स्तर फटना। जैसे—आँख फूटना, कटहल फटना, फोड़ा फटना। ५ रासायनिक पदार्थो विशेषत गोले, बम आदि का धमाके के साथ फटना। विस्फोट होना। ६ किसी प्रकार या रूप मे ऊपर या बाहर आकर दृश्य, प्रकट या स्पष्ट होना। जैसे—(क) चन्द्रमा या सूर्य की किरणें फूटना। (ख) अग अग से शोभा या सौंदर्य फूटना। ७ किसी चीज का अपने ऊपरी आवरण को तोड़ या भेद कर वेगपूर्वक बाहर निकलना। जैसे—पहाड़ मे से पानी का सोता फटना। ८ ऊपरी दबाव हटाकर निकलना। बाहर आना अथवा प्रकट होना। जैसे—(क) गरमी के कारण शरीर मे दाने फूटना। (ख) वनस्पतियों मे अकुर या वृक्ष मे डाले फूटना।

मुहा०—फूट पड़ना—मन मे भरा हुआ आवेश बाहर निकलना या निकालना। जैसे—जी चाहा कि फूट पड़ूं। **फूट-फूटकर रोना**—बिलख-बिलखकर रोना। बहुत विलाप करना।

९ उक्त के आधार पर शाखा के रूप मे अलग होकर किसी ओर मे जाना। जैसे—थोड़ी दूर पर सड़क से एक और रास्ता फूटा है। १० कली का खिलकर फूल का रूप धारण करना। प्रस्फुटित होना। ११ मत-भेद, राग-द्वेष आदि होने पर दल, मडली, समाज आदि में से निकल कर किसी का अलग होना। जैसे—(क) दल मे से बहुत से लोग फूटकर विरोधियो मे जा मिले है। (ख) इस मुकदमे का एक गवाह फूट गया है। १२ सयुक्त या साथ न रहकर अलग होना। जैसे—यह नर (पशु) अपनी मादा से फूट गया है। १३ शरीर के अंगों या जोड़ों मे ऐसा दर्द होना कि वह अग फटता हुआ-सा जान पड़े। फटना।

मुहा०—उँगलियाँ फूटना—खीचने या मोड़ने से उँगलियों के जोड़ों का खट खट बोलना। उगलियाँ चटकना।

१४ इस प्रकार या इतना अधिक विकृत होना कि किसी काम का न रह जाय। जैसे—भाग्य फूटना।

पद—फूटी आँखों का तारा—कोई ऐसी बहुत ही प्रिय वस्तु जो उसी प्रकार की बहुत सी वस्तुओं के नष्ट हो जाने पर अकेली बच रही हो। जैसे—सात बच्चों मे यह एक बच्चा फूटी आँखों का तारा रह गया है। **फूटी कौड़ी**—वह टूटी हुई कौड़ी जिसका कुछ भी महत्त्व या मूल्य न रह गया हो। जैसे—इसे बेचने पर तो फूटी कौड़ी भी न मिलेगी।

मुहा०—फूटी आँखों न देख सकना—जरा भी देखने की प्रवृत्ति या रुचि

न होना। जैसे—सौत के लड़कों को तो वह फूटी आँखों नहीं देख सकती। **फूटी आँखों न भाना**—तनिक भी अच्छा न लगना। बहुत बुरा या अप्रिय लगना। जैसे—तुम्हारा यह आवागमन मुझे फूटी आँखों नहीं भाता। **फूटे मुँह से न बोलना** उपेक्षा, द्वेष आदि के कारण किसी से साधारण बात-चीत भी न करना।

१५ पानी का या तरल पदार्थ का इतना खौलना कि उसके तल पर छोटे छोटे बुलबुलों के समूह दिखाई देने लगें। जैसे—जब दूध (या पानी) फूटने लगे, तब उसमें चावल छोड़ देना। १६ पानी या किसी तरल पदार्थ का किसी तल के इस पार से उस पार निकलना। जैसे—यह कागज अच्छा नहीं है, इस पर स्याही फूटती है। १७ मुँह से शब्द उच्चरित होना या निकलना। जैसे—(क) लाख समझाओ, पर वह मुँह से कुछ फूटता ही नहीं है। (ख) अब भी तो मुँह से कुछ फूटो। १८ कोई गुप्त बात, भेद या रहस्य सब पर प्रकट हो जाना। जैसे—देखो, यह बात कहीं फूटने न पावे, अर्थात् किसी पर प्रकट न होने पावे।

फूटा—पु० [हि० फूटना] १ फसल की वह बालें जो टूटकर खेतों में गिर पड़ती हैं। २ शरीर के जोड़ों में होनेवाला वह दर्द जिसमें अंग फूटते हुए जान पड़ते हैं।

वि० [स्त्री० फूटी] १ जो फूट चुका हो। २ फलतः खराब या बिगड़ा हुआ। जैसे—फूटी आँख।

फूत्कार—पु० [सं० फूत्√कृ+घञ्] वह शब्द जो कुछ जन्तुओं के वेगपूर्वक साँस बाहर निकालते समय होता है। फू-फू। जैसे—साँप की फूत्कार।

फूत्कृति—स्त्री० [सं० फूत्√कृ+क्तिन्] फूत्कार। (दे०)

फूफा—पु० [स्त्री० फूफी] [वि० फुफेरा] संबंध के विचार से फूफी अर्थात् बुआ का पति।

फूफी—स्त्री० [सं० पितृष्वसा, प्रा० पिउच्छा पा० पितुच्छा?] बाप की बहन। बुआ।

फूफू—स्त्री० फूफी।

फूर—पु०—फूल।

फूरना—अ०—फूलना।

फूल—पु० [सं० फुल्ल] १ पौधों और वृक्षों का वह प्रसिद्ध अंग जो कुछ नियत ऋतुओं में गोल या लंबी पंखड़ियों के योग से गाँठों आदि के रूप में बना होता है। कुसुम। पुष्प। सुमन। (फ्लावर)

विशेष—वनस्पति विज्ञान की दृष्टि से इसे पेड़-पौधों की जननेंद्रिय कह सकते हैं, क्योंकि फल उत्पन्न करनेवाला मूल तत्त्व या शक्ति इसी में निहित होती है। भिन्न भिन्न फूलों के आकार-प्रकार और रूप-रंग भिन्न होते हैं और प्रत्येक वर्ग के फूल में प्रायः कुछ अलग प्रकार की और विभिन्न गंध या सुगंध भी होती है। लोक में फूल अपनी कोमलता, सुंदरता और हलकेपन के लिए प्रसिद्ध है।

क्रि० प्र०—चुनना।—झड़ना।—निकलना।—फूलना।—लगना।—लादना।

पद—फूल-सा—बहुत ही सुन्दर, सुकुमार या हलका। **फूलों की चादर**—फूलों से गूँथ कर चादर की तरह का बनाया हुआ वह जाल जो मुसलमान पीरों आदि की कब्रों पर चढ़ाते हैं। **फूलों की छड़ी** दे० 'फूल-छड़ी'। **फूलों की सेज**—वह पलंग या शय्या जिस पर सजावट और कोमलता के लिए फूलों की पंखड़ियाँ फैलाई या बिछाई गई हों। (शृंगार की एक सामग्री)

मुहा०—(पेड़ पौधों में) फूल आना—शाखाओं आदि में फूल उत्पन्न होना या निकलना। **फूल उतरना**—पेड़-पौधों में से फूलों का झड़कर या तोड़े जाने पर इस प्रकार अलग होना कि काम में आ सके। जैसे—बेल की इस क्यारी में रोज सेरों फूल उतरते हैं। **फूल चुनना** वृक्षों के फूल तोड़कर इकट्ठे करना। **(किसी के मुँह से) फूल झड़ना**—मुँह से बहुत ही मनोहर और मीठी बातें निकलना, बहुत ही प्रिय-भाषी होना। **फूल सूँघ कर रहना**—बहुत ही कम खाना। अत्यन्त अल्पाहारी होना। जैसे— आप खाते तो क्या है, फूल सूँघकर रहते हैं।

२ किसी चीज पर अंकित किये या और किसी प्रकार बनाये हुए फूल के आकार के बेल-बूटे या नक्काशी। ३ फूल के आकार-प्रकार की बनाई हुई कोई चीज या रचना। जैसे—(क) कान या नाक में पहनने का फूल। (ख) मथानी के डंडे के सिरे पर का फूल, कागज या चाँदी-सोने के फूल।

मुहा०—(किसी के गालों पर) फूल पड़ना बोलने, हँसने आदि के समय गालों पर छोटे गोलाकार गड्ढे से बनना जो सौंदर्यसूचक होते हैं। जैसे—जब यह बच्चा मुस्कराता है, तब इसके गालों पर फूल पड़ते हैं।

४ कोई ऐसी चीज जो देखने में वृक्षों के फूलों के आकार-प्रकार की हो। जैसे—चार फूल मेथी (सूखे हुए दाने), दस फूल लौंग। ५ किसी प्रकार के चूर्ण का वह रूप जिसके दाने या रवे फूल की तरह खिले हुए और अलग हों। जैसे—आटे या चीनी के फूल। ६ किसी चीज का सत्त या सार। जैसे—फूल शराब—सुरासार। ७ किसी पतले या द्रव पदार्थ को सुखाकर जमाया हुआ पत्तर या रवा। जैसे—अजवायन के फूल, देशी स्याही के फूल। ८ एक प्रकार की मिश्र धातु जो ताँबे और राँगे के मेल से बनती है। ९ दीपक की जलती हुई बत्ती पर पड़े हुए गोल दमकते दाने जो उभरे हुए मालूम होते हैं। गुल।

क्रि० प्र०—झड़ना।—झाड़ना।

मुहा०—(दीपक को) फूल करना—दीआ बुझाना।

१० शरीर पर पड़नेवाला वह लाल या सफेद धब्बा जो श्वेत कुष्ठ नामक रोग होने पर होता है। ११ स्त्रियों का वह रक्त जो मासिक धर्म में निकलता है। रज। पुष्प।

क्रि० प्र०—आना।

पद—फूल के दिन—स्त्री के रजस्वला होने के दिन। उदा०—स०महीने में कुढ़ाते थे मुझे फूल के दिन। बारे अब की तो मेरे टल गये मामूल के दिन।—रंगीन।

१२ स्त्रियों का गर्भाशय। १३ घुटने या पैर की गोल हड्डी। चक्की। टिकिया। १४ शव जलाने के बाद मृत शरीर की बची हुई हड्डियाँ जो प्रायः इकट्ठी करके किसी पवित्र जलाशय या नदी में फेंकी या प्रवाहित की जाती हैं।

क्रि० प्र०—चुनना।

स्त्री० [हि० फूलना] १ वृक्षों आदि के फूलने की अवस्था, क्रिया या भाव। फुलावट। २ मन के फूलने अर्थात् प्रफुल्लित होने की अवस्था या भाव। प्रसन्नता। प्रफुल्लता। उदा०—मृग नैनी दृग की फरक, उर उछाह, तन फूल।—बिहारी।

वि० (रंगों के संबंध में) साधारण से कम गहरा। हलका। (यौ० पदों के आरम्भ में 'नीम' और 'हवा' की तरह प्रयुक्त)। जैसे—इस साड़ी का रंग गुलाबी तो नहीं, हाँ फूल-गुलाबी कहा जा सकता है।

फूलकारी—स्त्री० [हिं० फूल+फा० कारी] १ बेल-बूटे बनाने का काम। २ दे० 'फुलकारी'।

फूलगोभी—स्त्री० [हिं० फूल+गोभी] एक प्रकार का पौधा जिसमें बड़े फूल के आकार का बँधा हुआ ठोस पिंड होता है। यह तरकारी के काम आती है। गोभी।

फूल-छड़ी—स्त्री० [हिं०] १ शृंगार, सजावट आदि के काम आनेवाली वह छड़ी जिसके चारों ओर बहुत से फूल टाँके या बाँधे गये हों। २ चित्रों, मूर्तियों आदि में उक्त प्रकार का चित्रण या लक्षण।

फूलझाड़—पु० [हिं०] काँस आदि की (फूलों के आकार की) सींका का बना हुआ झाड़ू जिससे महीन धूल बहुत अच्छी तरह साफ होती है।

फूल-डोल—पु० [हिं० फूल+डाल] चैत्र शुक्ल एकादशी को मनाया जानेवाला एक उत्सव जिसमें देवता की मूर्ति को फूलों के हिंडोले में रखकर झुलाते हैं।

फूल ढोक—पु० [?] १ प्रायः हाथ भर लंबी एक प्रकार की मछली जो भारत के सभी प्रांतों में पाई जाती है।

फूलदान—पु० [हिं० फूल+फा० दान (प्रत्य०)] मिट्टी, धातु, शीशे आदि का वह पात्र जिसमें शोभा के लिए, फूल, गुलदस्ते आदि लगाकर रखे जाते हैं। गुलदान।

फूलदार—वि० [हिं० फूल+दार (प्रत्य०)] जिस पर बेल-बूटे बने अर्थात् फूलकारी का काम हुआ हो।

फूलना—अ० [हिं० फूल+ना (प्रत्य०)] १ पौधों, वृक्षों आदि का फूलों से युक्त होना। पुष्पित होना। जैसे—वह पौधा वसंत में फूलता है।

मुहा०—(किसी व्यक्ति का) फूलना-फलना—लाक्षणिक रूप में, धन धान्य, संतति आदि से परिपूर्ण और सुखी रहना। सब तरह से बढ़ना और सम्पन्न होना।

२ कली का संपुट इस प्रकार खुलना कि उसकी पखड़ियाँ चारों ओर से पूरे फूल का रूप धारण कर लें। ३ लाक्षणिक रूप में बहुत अधिक आनंद या उल्लास से युक्त होना। बहुत प्रसन्न या मगन होना।

मुहा०—फूले अंग न समाना आनंद का इतना अधिक उद्वेग होना कि बिना प्रकट किये रहा न जाय। अत्यंत आनंदित होना। **फूले फिरना या फूले फूले फिरना** बहुत अधिक आनंद, उत्साह या उमंग से भरकर निश्चित भाव से इधर-उधर घूमना। उदा०—स्वतंत्र सिरताज फिरत फूलन के फूले।—दीनदयाल गिरि।

४ लाक्षणिक रूप में, मन में विशेष अभिमान या गर्व का अनुभव करना। जैसे—अपनी प्रशंसा सुनकर वह फूल जाता है। ५ किसी वस्तु के भीतरी अवकाश में किसी चीज के भर जाने के कारण उसका ऊपरी या बाहरी तल बहुत अधिक उभर आना या ऊँचा हो जाना। जैसे—(क) हवा भरने से गेंद फूलना। (ख) वायु का विकार होने या बहुत अधिक भोजन करने पर पेट फूलना। ६ उक्त के आधार पर अभिमान, रोष आदि के कारण किसी से रूठना या कुछ समय के लिए विरक्त होना। जैसे—हम उनके यहाँ नहीं जायँगे, आज-कल वे हमसे फूले हुए हैं। ७. आघात, आंतरिक विकार आदि के कारण शरीर के किसी अंग का कुछ उभर आना। सूजना। जैसे—इतने जोर का तमाचा लगा है कि गाल फूल गया है। ८. किसी व्यक्ति का असाधारण रूप से मोटा या स्थूल होना। जैसे—उसका शरीर बादी से फूला है।

फूल-पत्ती—स्त्री० [हिं०] १ वे फूल-पत्ते जो देवी-देवताओं को चढ़ाये जाते हैं। २ वनस्पति विज्ञान में किसी फूल का प्रत्येक दल अथवा पत्ती के आकार का अंग। (फ्लॉवर-लीफ)

फूल-पान—वि० [हिं० फूल+पान] (फूल या पान के समान) बहुत ही कोमल। नाजुक।

फूल-बत्ती—स्त्री० [हिं०] देवताओं की आरती आदि के लिए बनाई जानेवाली रूई की एक प्रकार की बत्ती जिसके नीचे का भाग खिले हुए फूल की तरह गोलाकार फैला हुआ होता है।

फूल-बाग—पु० [हिं०+अ०] वह छोटा बगीचा जिसमें केवल फूलों के पौधे हों।

फूल बिरज—पु० [हिं० फूल+बिरज] एक प्रकार का बढ़िया धान।

फूल-भाँग—स्त्री० [हिं० फूल+भाँग] हिमालय में होनेवाली एक प्रकार की भाँग। फुलगाँ।

फूलमती—स्त्री० [हिं० फूल+मत (प्रत्य०)] एक देवी जो शीतला रोग की अधिष्ठात्री मानी जाती है।

फूल-वाला—वि० [हिं० फूल+वाला (प्रत्य०)] १ फूलों से युक्त। २ फूलों अर्थात् बेल-बूटों का काम जिस पर हुआ हो।

पु० [स्त्री० फूलवाली] माली, विशेषतः फूल बेचनेवाला व्यक्ति।

फूल-शराब—स्त्री० दे० 'सुरासार'।

फूल-सँपेल—वि० [हिं० फूल+साँप] बैल या गाय जिसका एक सींग दाहिनी ओर और दूसरा बाईं ओर गया हो।

फूल सुंघनी—स्त्री०=फुल-सुंघनी।

फूला—पु० [हिं० फूलना] १. भुने हुए अनाज की खील। २ पक्षियों का होनेवाला एक प्रकार का रोग। ३ गन्ने का रस पकाने का बड़ा कड़ाहा। ४ फूली (आँख का रोग)।

फूली—स्त्री० [हिं० फूल] १ सफेद दाग जो आँख की पुतली पर पड़ जाता है और जिससे दृष्टि में बाधा होती है। २ एक प्रकार की सब्जी। ३ एक प्रकार की रूई।

फूस—पु० [सं० तुष, प्रा० भुस, फुस] १ एक प्रकार की घास जो सुखा कर छप्पर आदि डालने के काम आती है। २ तृण। तिनका।

वि० फूस की तरह बहुत ही तुच्छ या हीन। उदा०—पूस मास अति फूस ए सखि, जड़वा में फूटेला बालि।—ग्राम्य गीत।

फूह—स्त्री० =फूही (फुहार)।

फूहड़—वि० [?] [भाव० फूहड़पन] १ सभ्यों की दृष्टि से, अश्लील और हेय। जैसे—फूहड़ शब्द। २ (व्यक्ति) जो उजड्ड या गँवार हो तथा जिसे किसी बात का शऊर न हो। ३ बहुत ही निकम्मा (व्यक्ति)।

फूहड़पन—पु० [हिं० फूहड़+पन (प्रत्य०)] फूहड़ होने की अवस्था या भाव।

फूहर—वि० =फूहड़।

फूहा—पु० [देश०] रूई का गाला। फाहा।

फूही—स्त्री० [हिं० फुहार] १ पानी का महीन छींटा। सूक्ष्म जल-कण। २ बरसनेवाले, पानी की छोटी छोटी बूंदों की झड़ी। झींसी। जैसे—फूही फूही तालाब भरता है। उदा०—निशि के तम मे झर झर, हलकी जल की फूही, धरती को कर गई सजल।—पन्त। ३ घी, दूध, मलाई आदि के ऊपर दिखाई देनेवाले चिकनाई के छोटे छोटे कण। ४ फँफूदी। भुकड़ी।

फेंक—स्त्री० [हिं० फेंकना] फेंकने की क्रिया या भाव।
वि० फेंकनेवाला (समस्त पदो के अंत में)। जैसे—दिल-फेंक औरत या मरद।

फेंकना—स० [सं० प्रेषण, प्रा० पेखण] १ हाथ मे ली हुई वस्तु जोर या झटके मे इस प्रकार छोड़ना कि वह उड़ती-उड़ती कुछ दूर जा गिरे। जैसे—(क) ईंट, पत्थर या रोड़ा फेंकना। (ख) नदी में जाल फेंकना। २ हाथ मे ली हुई कोई चीज इस प्रकार पकड़ से अलग करना कि वह नीचे जा गिरे। गिरा या छोड़ देना। जैसे—पाठशाला से घर आते समय लड़का रास्ते मे किताब कहीं फेंक आया। ३ किसी प्रकार की कमानी, दाब आदि से दबी हुई चीज के प्रति ऐसी क्रिया करना कि वह जोर या झटके से दूर जा गिरे। जैसे—कमान से तीर या तोप से गोला फेंकना। ४ असावधानी, आलस्य, भूल आदि के कारण चीज या चीजें अस्त-व्यस्त रूप मे इधर-उधर फैलाना या छोड़ देना। जैसे—कपड़े (या पुस्तकें) इस तरह फेंका मत करो, सँभाल कर रखना सीखो। ५ उपेक्षापूर्वक कोई चीज किसी के आगे पटकना। जैसे—बच्चा बस्ता फेंककर उसी समय कहीं चला गया। ६ आघात, प्रहार आदि के उद्देश्य से अथवा ठीक लक्ष्य पर पहुँचने के लिए वेगपूर्वक कोई चीज उछालते हुए कहीं दूर पहुँचाना। जैसे—(क) चिड़ियों (या मछलियों) पर ढेले या पत्थर फेंकना। (ख) खेल मे गेंद फेंकना। ७ अनावश्यक और व्यर्थ समझकर दूर हटाना। जैसे—ये पुराने कपड़े फेंको और नये कपड़े पहनो। ८ अनावश्यक रूप से या व्यर्थ व्यय करना। जैसे—तुम सौदा खरीदना नहीं जानते, यों ही रुपए फेंक आते हो। ९ जुए के खेल मे, उसका कोई उपकरण दाँव लाने के लिए चलना। जैसे—कौड़ी, गोटी, ताश आदि का पत्ता या पाँसा फेंकना। १० शरीर के अंगों के संबंध मे, उछालते या ऊपर उठाते हुए नीचे गिराना या पटकना। जैसे—यह बच्चा नींद मे प्रायः हाथ-पैर फेंकता है। ११ क्रिकेट के खेल मे उछली हुई गेंद को ठीक न लोक पाने के कारण नीचे गिरा देना। १२. इस प्रकार ऊपर से कोई चीज गिराना कि नीचे से उसे कोई लोक ले। १३ कुश्ती मे प्रतिद्वंद्वी को जमीन पर गिराना या पटकना। १४ काम-धन्धे आदि के संबंध मे, स्वयं पूरा न करके उदासीनता या उपेक्षापूर्वक दूसरों पर उसका भार डालना। जैसे—तुम सब काम मुझ पर फेंककर निश्चिंत हो जाते हो।

फेंकरना—अ०=फेकरना।

फेंकाना—अ० [हिं० फेंकना] फेंका जाना।

फेंट—स्त्री० [हिं० पेट या पेटी] १ कमर के चारों ओर का घेरा। २ धोती का लंबाई के बल का उतना अंश जो रस्से की तरह मरोड़कर कमर के चारों ओर बाँधा या लपेटा जाता है। फेटा। (मुहा० के लिए दे० फेंटा के मुहा०)। ३ घुमाव। फेरा। लपेट।
स्त्री० [हिं० फेंटना] फेंटने की क्रिया या भाव। जैसे—ताश के पत्तों की फेंट।

फेंटना—स० [सं० पिष्ट, प्रा० पिट्ठ+ना (प्रत्य०)] १ किसी गाढ़े द्रव को इस प्रकार उँगलियों अथवा किसी उपकरण से बार बार हिलाना कि उसमे कण आदि न रह जायँ। जैसे—खोया, दही या पीठी फेंटना। २. उँगली से हिलाकर खूब मिलाना। जैसे—यह दवा शहद मे फेंट कर खाई जाती है। ३. ताश के पत्तों को इस प्रकार मिलाना कि उनका क्रम बदल जाय।

फेंटा—पु० [हिं० फेंट] [स्त्री० अल्पा० फेंटी] १ कमर का घेरा। †२ धोती का वह भाग जो कमर के चारों ओर लपेटकर बाँधा जाता है (जिससे धोती नीचे खिसकने या गिरने न पावे)।
मुहा०—(अपना) फेंटा कसना या बाँधना=किसी काम या बात के लिए कमर कसकर तैयार होना। कटिबद्ध या सन्नद्ध होना। **(किसी का) फेंटा पकड़ना**=धोती का उक्त अंश पकड़कर रोकना या और किसी प्रकार किसी को पकड़ रखना।
३ कमरबंद। फेटका। ४ छोटे या कम लंबे कपड़े से सिर पर बाँधी जानेवाली हलकी पगड़ी। ५ अटेरन पर लपेटी हुई सूत की बड़ी अंटी।

फेकरना—अ० [अनु० फेंकें] १ फूट-फूट कर रोना। चिल्ला-चिल्ला कर रोना। २ जोर से चिल्लाते हुए कर्ण-कटु शब्द उत्पन्न करना। जैसे—गीदड़ का फेकरना।

फेकारना—स० [हिं० फेंकना] सिर के बाल खोलकर झटकारना। (स्त्रियाँ)

फेकैत†—पु०=फिकैत।

फेच—पु०=पेच। (पूरब)

फेट—स्त्री० =फेंट।

फेटना—स०=फेंटना।

फेटा—पु०=फेंटा।

फेड़—पु० =फेर।
अव्य० =फिर।

फेण—पु० =फेन।

फेणक—पु० [सं० फेण+क] १ फेन। २ फेनी नाम का व्यंजन। बतासफेनी।

फेंद—पु०=फेटा।

फेदा—पु० [देश०] घुँइया। अरुई।

फेन—पु० [सं०√स्फाय् (बढ़ना)+नक्, फे—आदेश] [वि० फेनिल] १ बहुत छोटे छोटे बुलबुलों का वह गठा हुआ समूह जो पानी या किसी द्रव पदार्थ के खूब हिलने, सड़ने, खौलने आदि से ऊपर दिखाई पड़ता है। झाग।
क्रि० प्र०—उठना।—निकलना।
२ नाक से निकलनेवाला कफ। रेंट।

फेनक—पु० [सं० फेन+कन्] १ फेन। झाग। २ ऐसी चीजों से शरीर मल या रगड़कर धोना जिनमे से फेन निकलता हो। ३ फेनी नाम का व्यंजन।
वि० फेन उत्पन्न करने या बनानेवाला। जिससे फेन उत्पन्न हो।

फेनका—स्त्री० [सं० फेन√कै+क+टाप्] एक तरह की पीठी।

फेनना—स० [हि० फेन] ऐसा काम करना जिससे किसी तरल पदार्थ में फेन उत्पन्न होने लगे।

फेन-मेह—पु० [स० ब० स०] एक प्रकार का प्रमेह रोग जिसमें वीर्य फेन की भाँति थोड़ा-थोड़ा गिरता है।

फेनल—वि० [स०√फन+लच्] फेनयुक्त। फेनिल।

फेना—स्त्री० [स० फेन+अच्+टाप्] एक प्रकार का क्षुप।

फेनाग्र—पु० [स० फेन-अग्र, ष० त०] बुदबुद। बुलबुला।

फेनिका—स्त्री० [स० फेन+ठन्—इक,+टाप्] फेनी नाम की मिठाई।

फेनिल—वि० [स० फन+इलच्] जिसमें फेन हो। फेन या झाग से युक्त।
पु० रीठा।

फेनी—स्त्री० [स० फेनिका] लपेटे हुए सूत के लच्छे की तरह मैदे की एक प्रसिद्ध मिठाई जो प्रायः दूध में मिलाकर खाई जाती है।
वि० १ टेढ़ा। २ कुटिल।

फेनोच्छ्वासित—वि० [स० फेन-उच्छ्वासित, तृ० त०] क्रोध, परिश्रम आदि के कारण जिसके मुँह से फेन निकल रहा हो।

फेनोज्ज्वल—वि० [स० फेन-उज्ज्वल, उपमि० स०] फेन की तरह उजला।

फेफड़ा—पु० [स० फुप्फुस+हिं० ड़ा (प्रत्य०)] शरीर के भीतर धौंकनी के आकार का वह अवयव जो प्रायः दो भागों में होता है तथा जिसके द्वारा जीव हवा अंदर खींचते तथा बाहर छोड़ते हैं। श्वसन अंग। फुफ्फुस। (लंग)
पद—**फेफड़े की कसरत**=बच्चों के रोने का परिहासात्मक पद।

फेफड़ी—स्त्री० [हि० फेफड़ा] चौपायों का एक रोग जिसमें उनके फेफड़े सूज जाते हैं और उनका रक्त सूख जाता है।
स्त्री० पपड़ी।

फेफरी—स्त्री०=फेफड़ी।

फेरंड—पु० [स० फे√रण्ड+अच] गीदड़। सियार।

फेर—पु० [हि० फेरना] १ फिरने या फेरने की क्रिया या भाव। २ ऐसी स्थिति जिसमें किसी को अथवा किसी के चारों ओर फिरना पड़ता है। घुमाव। चक्कर।
क्रि० प्र०—पड़ना।
पद—**फेर की बात**=घुमाव की बात। ऐसी बात जो सीधी या सरल न हो, बल्कि जिसमें घुमाव-फिराव, पेच या चालाकी भरी हो।
मुहा०—**फेर खाना**=सीधे रास्ते से न जाकर घुमाव-फिराववाले रास्ते से जाना।
३ किसी प्रकार का ऐसा क्रम या सिलसिला जिसमें आवश्यकतानुसार थोड़ा-बहुत परिवर्तन होता रहे। जैसे—अभी तो काम शुरू किया है, जब फेर बँध (या बैठ) जायगा, तब कुछ न कुछ अच्छा परिणाम ही निकलेगा।
क्रि० प्र०—बँधना।—बाँधना।—बैठना।—बैठाना।
४ कोई बड़ा या महत्त्वपूर्ण परिवर्तन। कुछ से कुछ हो जाना।
पद—**उलट-फेर** (दे० स्वतंत्र शब्द)। **दिनों (या भाग्य) का फेर**=दैवी घटनाओं का ऐसा क्रमिक परिवर्तन जिससे रूप या स्थिति बिलकुल बदल जाय विशेषतः अच्छी दशा से निकलकर बुरी दशा की होनेवाली प्राप्ति।
५ ऐसी स्थिति जिसमें भ्रम-वश कुछ का कुछ समझ में आवे। धोखा। जैसे—(क) और कुछ नहीं यह तुम्हारी समझ का ही फेर है। (ख) यदि इस फेर में रहोगे तो बहुत धोखा खाओगे। ६ ऐसी स्थिति जिसमें बुद्धि जल्दी काम न करती हो। अनिश्चय, असमंजस या दुबिधा की स्थिति। जैसे—वह बड़े फेर में पड़ गया है कि क्या करे।
क्रि० प्र०—में डालना।—में पड़ना।
७ ऐसी स्थिति जो अंत में हानिकर सिद्ध हो। जैसे—उसकी बातों में आकर मैं हजारों रुपए के फेर में पड़ गया।
क्रि० प्र०—में आना।—में डालना।—में पड़ना।
८ चालाकी या धोखेबाजी से भरी हुई चाल या उक्ति। जैसे—(क) तुम उसके फेर में मत पड़ना वह बहुत बड़ा धूर्त है। (ख) वह आज-कल तुम्हें फँसाने के फेर में लगा है। उदा०—फेर कछु करि पौरि तें फिरि चितई मुसकाई।—बिहारी।
क्रि० प्र०—में आना।—में डालना।—में पड़ना।—में लगना।
लगाना।
पद—**फेर-फार** (दे० स्वतंत्र शब्द)।
९ उपाय। तरकीब। युक्ति। उदा०—दैव जो जोरी दुइ लिखी, मिले सो कवनेउ फेर।—जायसी।
मुहा०—**फेर बाँधना**=तरकीब या युक्ति लगाना।
१० लेन-देन, व्यवसाय आदि के प्रसंग में, समय समय पर कुछ लेते और कुछ देते रहने की अवस्था या भाव।
पद—**हेर फेर**=लेन-देन का क्रम या व्यवसाय। जैसे—इसी तरह हेर-फेर चलता रहता है।
क्रि० प्र०—बँधना।—बाँधना।
११ जंजाल। झंझट। बखेड़ा। जैसे—प्रेम (या रुपए-पैसे) का फेर बहुत बुरा होता है।
पद—**निन्नाबे का फेर**=अधिक धन कमाने की चिंता या धुन।
विशेष—यह पद एक ऐसी कहानी के आधार पर बना है जिसमें किसी अपव्ययी को ठीक मार्ग पर लाने के उद्देश्य से उसे ९९) दे दिये। अपव्ययी ने सोचा था कि ये किसी प्रकार पूरे सौ हो जायँ, और फलतः वह धीरे धीरे धन इकट्ठा करने लगा था।
१२ भूत-प्रेत का आवेश या प्रभाव। जैसे—कुछ फेर है इसी से वह अच्छा नहीं हो रहा है। (इस अर्थ में प्रायः ऊपरी फेर पद का ही अधिक प्रयोग होता है।) १३ ओर। तरफ। दिशा। उदा०—सगुन होहिं सुन्दर सकल मन प्रसन्न सब केर। प्रभु आगमन जनाव जनु नगर रम्य चहुँ फेर।—तुलसी। १४ दे० 'फेरा'।
अव्य०=फिर।
पु० [स० फे√रु+ड] शृगाल। गीदड़।

फेरना—स० [हि० फेर या फेरा] १ कोई चीज किसी फेरे या घेरे में बार बार मंडलाकार अथवा किसी धुरी पर चारों ओर घुमाना। जैसे—(क) माला फेरना (अर्थात् एक एक दाना या मनका सरकाते हुए बार-बार ऊपर नीचे करते हुए चक्कर देना)। (ख) चक्की फेरना। (ग) मुगदर फेरना (बार बार घुमाते हुए शरीर के चारों ओर ले जाना और ले आना) घोड़ा फेरना (घोड़े को ठीक तरह से चलना सिखाने के लिए खेत या मैदान में मंडलाकार चक्कर लगाने में प्रवृत्त करना)। २ किसी तल पर कोई चीज चारों ओर इधर-उधर ऊपर-नीचे ले जाना

और ले आना। जैसे—(क) किसी की पीठ या सिर पर हाथ फेरना (ख) दीवार पर चूना या रंग फेरना। (ग) पान फेरना—पान की गड्डी या ढोली के पानों को बार बार उलट-पलटकर देखना और सड़े-गले पान निकालकर अलग करना। ३ कोई चीज लेकर चारों ओर या चक्कर-सा लगाते हुए सबके सामने जाना। जैसे—(क) अतिथियों के सामने पान, इलायची फेरना। (ख) नगर में डुग्गी या मुनादी फेरना। ४ जो वस्तु या व्यक्ति जहाँ या जिधर से आया हो, उसे लौटाते हुए वहीं या उसी ओर कर या भेज देना। वापस करना। जैसे—(क) बुलाने के लिए आया हुआ आदमी फेरना। (ख) दुकानदार से लिया हुआ माल या सौदा फेरना। ५ किसी के द्वारा भेजी हुई वस्तु न लेना और फलतः उसे लौटा देना। लौटाना। ६ किसी काम या चीज या बात की गति की दिशा बदलना। किसी ओर घुमाना या मोड़ना। जैसे—(क) गाड़ी या घोड़े को दाहिने या बाएँ फेरना। (ख) कुंजी या पेच इधर या उधर फेरना। ७ जो चीज जिस दिशा में हो, उसका पार्श्व या मुँह उससे विपरीत दिशा में करना। जैसे—(क) किसी की ओर पीठ फेरना। (ख) किसी की ओर से मुँह फेरना। ८ जैसा पूर्व में रहा हो या साधारणतः रहता हो, उससे भिन्न या विपरीत करना। उदा०—कदि धरहि कपि फेरि चलावहि।—तुलसी। ९ किसी चीज या बात की पहले की स्थिति बिलकुल उलट या बदल देना। जैसे—(क) जबान फेरना=बात कहकर मुकर जाना या वचन का पालन न करना। (ख) किसी के दिन फेरना=किसी को बुरी से अच्छी दशा में या प्रतिकूल से अनुकूल स्थिति में लाना। १० अभ्यास या कंठस्थ करने के लिए बार बार उच्चारण करना या दोहराना। जैसे—लड़का का पाठ फेरना=अच्छी तरह याद करने के लिए दोहराना।

फेर-पलटा—पु० [हि० फेरना+पलटा] गौना। द्विरागमन।

फेर-फार—पु० [हि० फेर+अनु० फार] १ बहुत बड़ा तथा महत्त्वपूर्ण परिवर्तन। उलट-फेर। २ घुमाव-फिराव। चक्कर। ३ घुमाव-फिराव या छल-कपट की बात-चीत। धूर्तता का व्यवहार। चालाकी। जैसे—हमसे इस तरह की फेर-फार की बातें मत किया करो। ४ लेन-देन या व्यवहार के चलते रहने की अवस्था या भाव। जैसे—राजगारियों का फेर-फार चलता रहना चाहिए।

फेरव—पु० [सं० फेरव] गीदड़। उदा०—फेरवि फफ् फारिस गाइआ। विद्यापति।

फेरव—वि० [सं० फे-रव, ब० स०] १ धूर्त। चालबाज। २ हिंसक। पु० १ राक्षस। २ गीदड़।

फेरवट—स्त्री० [हि० फेरना] १ फेरने या फिरने का भाव। २ फेरे जाने पर होनेवाला चक्कर। फेरा। ३ घुमाव-फिराव। ४. अंतर। फरक।

फेरवा—पु० [हि० फेरना] सोने का वह छल्ला जो तार को दो, तीन बार लपेटकर बनाया जाता है। लपेटा हुआ तार।

पु०=फेरा।

†पु० [सं० फेरव] गीदड़।

फेरा—पु० [हि० फेरना] [स्त्री० फेरी] १ किसी चीज के चारों ओर फिरने अर्थात् घूमने की क्रिया या भाव। चक्कर। परिक्रमण। जैसे—यह पहिया एक मिनट में सौ फेरे लगाता है। २ किसी लम्बी तथा लचीली चीज को दूसरी चीज के चारों ओर घुमाने, आवृत्त करने, लपेटने आदि की क्रिया या भाव। ३ उक्त प्रकार से किया हुआ आवर्तन, घुमाव या लपेट। जैसे—इस लकड़ी पर रस्सी के चार फेरे अभी और लगाने चाहिए।

सयो० क्रि०—देना।—लगाना।

४ बार-बार कहीं आने-जाने की क्रिया या भाव। जैसे—यह भिखमगा दिन भर में इस बाजार के चार फेरे लगाता है।

सयो० क्रि०—डालना।—लगाना।

५ कहीं जाकर वहाँ से लौटना या वापस आना विशेषतः निरीक्षण करने, मिलने, हाल-चाल पूछने आदि के उद्देश्य से किसी के यहाँ थोड़ी देर या कुछ समय के लिए जाना और फिर वहाँ से वापस लौट आना। जैसे—दिन भर में तकाजे के उद्देश्य से दस फेरे लगाता हूँ।

सयो० क्रि०—लगाना।—लगाना।

६ आवर्त। घेरा। मंडल। ७ विवाह के समय वर-वधू द्वारा की जानेवाली अग्नि की परिक्रमा। भाँवर। ८ (विवाह के उपरान्त) लड़की का ससुराल जाने का भाव। जैसे—उसे दूसरे फेरे घड़ी और तीसरे फेरे बाइसिकिल मिली थी। (पश्चिम) ९ दे० फेर'।

फेरा-फेरी—स्त्री० [हि० फेरना] १ बार बार इधर-उधर फेरने की क्रिया या भाव। २ दे० 'हेरा-फेरी'।

क्रि० वि० १ बारी-बारी से। २ रह-रहकर।

फेरि—अव्य० [हि० फिर] फिर (पुनः)।

पद—फेरि फेरि=फिर फिर। बार बार।

फेरी—स्त्री० [हि० फेरना] १ देवी-देवता आदि की की जानेवाली परिक्रमा। प्रदक्षिणा। २ विवाह के समय वर और वधू की वह प्रदक्षिणा, जो अग्नि के चारों ओर की जाती है। भाँवर।

क्रि० प्र०—डालना।—पड़ना।

३ भिक्षुकों का भिक्षा के उद्देश्य से गली-मुहल्ले का लगाया जानेवाला चक्कर।

क्रि० प्र०—देना।—लगाना।—लेना।

४ छोटे व्यापारी द्वारा गलियों, गाँवों आदि में फुटकर ग्राहकों के हाथ समान बेचने के उद्देश्य से लगाया जानेवाला चक्कर।

पद—फेरीवाला। (दे०)

५ बार बार कहीं आने-जाने रहना। ६ एक तरह की चरखी जिससे रस्सी पर ऐंठन डाली जाती है। ७ फेर। ८ फेरा।

फेरीदार—पु० [हि० फेरी+फा० दार] [भाव० फेरीदारी] वह जो किसी दूकानदार या महाजन की ओर से घूम-घूमकर कर्जदारों से पावना वसूल करने का काम करता हो।

फेरीदारी—स्त्री० [हि० फेरीदार] फेरीदार का काम, पद या भाव।

फेरीवाला—पु० [हि० फेरी+वाला] वह छोटा व्यापारी जो गली-गली या गाँव-गाँव में घूम-घूमकर फुटकर ग्राहकों के हाथ सौदा बेचता हो।

फेरुआ—पु०=फेरवा।

फेरुक—पु० [सं०] गीदड़। सियार।

फेरौती—स्त्री० [हि० फेरना] टूटे-फूटे खपरैलों के स्थान पर नये खपरैले रखने की क्रिया या भाव।

फेल—पु० [अ० फ़ेल] १. कार्य, कृत्य या क्रिया। २ बुरा कर्म।
पु० [?] एक प्रकार का वृक्ष जिसे बेयार भी कहते है।
पु० [स०] १. जूठा भोजन। २ जूठन।
वि० [अ० फ़ेल] १ जो परीक्षा मे अनुत्तीर्ण हुआ हो। २ जो अपने प्रयास मे विफल हुआ हो। ३ जो समय पर ठीक और पूरा काम न दे।

फेला—स्त्री० [स०] १ जूठा भोजन। २ जूठन।

फेलिका—स्त्री०=फेला।

फेली—स्त्री० [स०] दे० 'फेला'।
वि० [अ० फ़ेल] १ बुरा या बुरे काम करनेवाला। २ दुराचारी। ३ व्यभिचारी। ४ धूर्त।

फेलो—पु० [अ० फ़ेलो] १. सहयोगी। २ किसी बहुत उच्च तथा बडी सभा या सस्था का सदस्य या सभासद। जैसे—विश्वविद्यालय का फेलो।

फेल्ट—पु० [अ० फेल्ट] १ जमाया हुआ ऊन। नमदा। जैसे—फेल्ट की टोपी। २ एक तरह की टोपी जो बहुत-कुछ हैट से मिलती-जुलती होती है।

फेहरिस्त—स्त्री० [अ० फ़ैहरिस्त] १ सूची। २ सूची-पत्र।

फैंसी—वि० [अ० फ़ैंसी] १ जो किसी ठीक कल्पना तथा रुचि के अनुकूल हो। फलत अलकृत तथा सुदर। २ काट-छाँट, रग-रूप आदि के विचार से अपने वर्ग की औसत चीजो से उत्कृष्ट और सुन्दर। जैसे—फैंसी साडी।

फैकल्टी—स्त्री० [अ०] विश्वविद्यालय के अन्तर्गत किसी विद्या या शास्त्र के पडितो और आचार्यों का वर्ग। विद्वन्मडल।

फैक्टरी—स्त्री० [अ०] वह स्थान जहाँ यत्रो की सहायता से वस्तुओ का उत्पादन या निर्माण किया जाता हो। कारखाना। निर्माणशाला।

फैज—पु० [अ० फैज] १ दानशीलता। २ फायदा। लाभ।
क्रि० प्र०—पहुँचाना।
३ उपकार। भलाई। ४ यश। कीर्ति।

फैदम—पु० [अ०] जलाशयो की गहराई की एक नाप जो छ फुट की होती है। पुरसा।

फैयाज—वि० [अ० फैयाज] [भाव० फैयाजी] १ जिसमे फैज अर्थात् दानशीलता हो। दानी। मुक्तहस्त। २ बहुत बडा उदार और भलमानुस।

फैयाजी—स्त्री० [अ० फैयाजी] १ फैयाज होने की अवस्था, गुण या भाव। दानशीलता। २ उदारता।
क्रि० प्र०—दिखलाना।

फैर—स्त्री० [अ० फायर] १ बदूक, तोप आदि हथियारो को दागने की क्रिया या भाव। २ उक्त के दागने से होनेवाले शब्द। ३ बदूक आदि की गोली का लगने या होनेवाला आघात।

फैल—स्त्री० [हि० फैलना] १ फैलने या फैले हुए होने की अवस्था या भाव। विस्तार। २ लडको का वह दुराग्रह जो वे जमीन पर फैल अर्थात् इधर-उधर लोट-पोटकर प्रकट करते हैं। ३ और अधिक प्राप्त या वसूल करने के लिए किया जानेवाला हठ अथवा इधर-उधर की बातें।
क्रि० प्र०—मचाना।
†पु०=फेल (कर्म)।
†पु० [अ० फ़ेल] क्रीडा। खेल।

फैलना—अ० [स० प्रसरण प्रा० पयल्ल+ना (प्रत्य०)] १. किसी चीज का चारो ओर दूर तक विस्तृत प्रदेश में स्थित रहना या होना। विस्तार से युक्त होना। जैसे—(क) यह पर्वत (प्रदेश) सैकडों मील तक फैला है। (ख) कपडे पलगनी पर फैले हैं। २. किसी चीज का अभिवर्धित होकर अथवा पनपकर बहुत दूर तक पहुँचना। इधर-उधर बढ़ते हुए अधिक स्थान घेरना। जैसे—बगीचे मे लताओ का फैलना। ३. किसी क्षेत्र, प्रदेश या स्थान मे प्रभावपूर्ण तथा सक्रिय होना। जैसे—(क) शहर मे बीमारी फैलना। (ख) गाँव मे आग फैलना। ४. आकार, रूप आदि मे पहले से अधिक बड़ा या बढ़ा हुआ होना। जैसे—(क) बादी से शरीर फैलना। (ख) आबादी बढ़ने से बस्ती का चारो तरफ फैलना। ५. अधि-क्षेत्र या कार्यक्षेत्र की सीमाएँ बढ़ना। जैसे—विदेशो मे व्यापार फैलना। ६ बात आदि का व्यापक क्षेत्र में चर्चा का विषय बनना। जैसे—हड़ताल की खबर फैलना। ७. चारो ओर छितरा या बिखरा हुआ होना। जैसे—कमरे मे सारा सामान फैला पड़ा है। ८. किसी प्रकार के अवकाश, विवर आदि का यथा-साध्य अधिक विस्तृत होना। जैसे—मुँह फैलना। ९, किसी काम, चीज या बात का प्रचलन या प्रचार मे आना। जैसे—आज-कल स्त्रियो मे फैशन बहुत फैल गया है। १० किसी रूप मे दूर दूर तक पहुँचा हुआ होना या लोगो की जानकारी मे होना। जैसे—बदनामी फैलना, बदबू फैलना। ११ व्यक्तियो के सबध मे, कुछ अधिक पाने या लेने के लिए आग्रहपूर्वक याचना या हठ करना। जैसे—दस रुपए इनाम मिल जाने पर भी पडे कुछ और पाने के लिए फैलने लगे। १२ गणित के प्रसग मे, लेखे या हिसाब का परिकलन होना या बैठाया जाना।

फैल-फुट्ट†—वि० [हि० फैलना+फुट=अकेला] १ इधर-उधर फैला या बिखरा हुआ। २ फुटकर।

फैलसूफ—वि० [यू० फ़िलसफ=दार्शनिक] [भाव० फैलसूफी] १ बहुत बडा अपव्ययी। फजूलखर्च। बहुत ठाट-बाट या शान-शौकत से रहनेवाला। ३ फरेबी और धूर्त।
पु० दार्शनिक।

फैलसूफी—स्त्री० [हि० फैलसूफ] १. आवश्यकता से अधिक धन व्यय करना। अपव्यय। फजूलखर्ची। २. झूठा और दिखावटी ठाट-बाट। ३ चालाकी। धूर्तता।

फैलाना—स० [हि० फैलना का स०] १ किसी को फैलने मे प्रवृत्त करना। २ कोई चीज खीचकर उस विस्तार या सीमा तक ले जाना, जहाँ तक वह जा सकती हो अथवा जहाँ तक उसे ले जाना आवश्यक या सगत हो। लबाई-चौड़ाई अथवा चौडाई के बल विस्तार बढ़ाना। पसारना। जैसे—(क) सुखाने के लिए पेड या रस्सी पर कपडे फैलाना। (ख) कुछ पकडने या लेने के लिए हाथ फैलाना। ३ किसी चीज को तानते हुए आगे बढाना। जैसे—(क) पक्षियो के पर फैलाना। (ख) आराम से बैठने के लिए पैर फैलाना। ४. ऐसा काम करना जिससे कोई चीज आवश्यक या उचित से अधिक स्थान घेरे। बिखेरना। जैसे—चौकी पर तो तुमने कागज-पत्र फैला रखे हैं। ५. किसी पदार्थ के क्षेत्र, मर्यादा, सीमा आदि का विस्तार करना। बढाना। जैसे—उन्होने अपने कार-बार सारे देश मे फैला रखा है। ६. किसी प्रकार के घेरे या विवर का विस्तार बढाना। जैसे—(क)

कुछ लेने के लिए झोली फैलाना। (ख) दाँत उखाड़ने के लिए मुँह फैलाना। ७. ऐसी क्रिया करना जिससे दूर तक किसी प्रकार का परिणाम या प्रभाव पहुँचे। जैसे—यश (या सुगन्ध) फैलाना। ८. ऐसी क्रिया करना जिससे दूर तक के लोगों को किसी बात की जानकारी या परिचय हो। जैसे—फूलो का सुगन्ध फैलाना। ९ ऐसी क्रिया करना जिससे किसी चीज का लोगो में यथेष्ट प्रचार या व्यवहार हो। उदा०—राज-काज दरबार मे फैलावहु यह रत्न।—भारतेन्दु। १०. कोई चीज ऐसी स्थिति मे लाना कि उस पर विशेष रूप से या अधिक लोगो की दृष्टि पडे या ध्यान आकृष्ट हो। जैसे—आडम्बर या ढोंग फैलाना। ११. गणित के क्षेत्र मे, किसी प्रकार लेखा या हिसाब तैयार करने के लिए अथवा तैयार किये हुए हिसाब की जाँच करने के लिए किसी प्रकार का परिकलन करना। जैसे—(क) ब्याज या सूद फैलाना। (ख) लागत फैलाना।

फैलाव—स्त्री० [हि० फैलाना] १ फैले हुए होने की अवस्था या भाव। विस्तार। २ उतनी लबाई-चौड़ाई जिसमे कोई चीज फैली हुई हो।

फैलावट—स्त्री०=फैलाव।

फैशन—पु० [अं० फैशन] १ समाज मे विशेषत: समाज के उच्च वर्गों द्वारा किये जानेवाले बनाव-श्रृगार, धारण की जानेवाली वेश-भूषा आदि का इस रूप में होनेवाला प्रयत्न जिसे जन-साधारण भी अपनाने मे अग्रसर हो रहा हो। २ ढग। रीति।

फैसला—पु० [अ० फैसल] १ न्याय-कर्त्ता द्वारा दी जानेवाली व्यवस्था। निर्णय। निबटारा।

मुहा०—**फैसला सुनाना**=न्यायाधीश अथवा निर्णायक द्वारा किसी विवादास्पद विषय के सबध में अपना निर्णय सुनाना।

२ किसी बात के सबध मे किया जानेवाला अंतिम तथा दृढ़ निश्चय। क्रि० प्र०—करना।

फैसिज्म—पु० [अ० फैसिज्म] शासन का वह प्रकार जिसमें प्रभुसत्ता किसी राष्ट्रवादी निरकुश शासक मे केन्द्रीभूत होती है।

फैसिस्ट—पुं० [अं० फ़ैसिस्ट] १ वह जो फैसिज्म के सिद्धान्त मानता हो। २ फैसिज्म के सिद्धान्तो पर बना हुआ इटली मे एक राजनैतिक दल। ३. लाक्षणिक अर्थ मे, वह व्यक्ति जो सारा अधिकार अपने हाथ मे रखना चाहता तथा विरोधियो को कुचल डालने का पक्षपाती हो।

फोंक—पु० [सं० पुख] १ तीर का पिछला सिरा जिसपर पख लगाये जाते हैं। २ दे० 'भोंगली'।

† वि० पु०=फोक।

फोंकली—स्त्री० दे० 'भोंगली'।

फोंका—पु० [स० पुख या हिं० फुंकना] १. लबा और पोला चोगा। फोकी। २ पोले डठलवाले शस्यों की फुनगी। जैसे—मटर का फोंका। †पुं० १ =फूंका। २. =सर-फोंका।

फोंका गोला—पु० [हि० फोक+गोला] तोप का एक प्रकार का लबा गोला।

फोंदा†—पुं०=फुंदना।

फोंफर—वि० [अनु०] १. खोखला। २. पोला। ३. निस्सार। थोथा। पुं० दो तलो के बीच की ऐसी दरज या सन्धि जिसमे से उस पार की चीजें दिखाई देती हों।

फोंफी—स्त्री० [अनु०] १. गोल लबी नली। छोटा चोगा। २. सुनारों की वह नली जिससे वे आग धौंकते हैं। ३. दे० 'भोंगली'।

फोक—पुं० [स० स्फोट] १. वह नीरस अश जो किसी रसपूर्ण पदार्थ मे से रस निचोड़ कर निकाल लेने के उपरान्त बच रहता है। सीठी। २. लाक्षणिक अर्थ में ऐसी चीज जिसमे कोई तत्त्व न रह गया हो। पु० [?] एक तृण जिसका साग बनाया जाता है। स्त्री० [?] पीड़ा। वेदना। वि० [?] चार। (दलाल)

फोकट—वि० [मरा० फुकट] १. जिसमे कुछ भी तत्त्व या सार न हो। निस्सार। २ जिसके लिए कुछ भी परिश्रम या व्यय न करना पड़ा हो। मुफ्त का। जैसे—फोकट का माल।

पद—**फोकट का**=मुफ्त। **फोकट में**=(क) बिना कुछ व्यय किये। मुफ्त। (ख) व्यर्थ बे-फायदा।

फोकला—पु० [सं० वल्कल, हि० बोकला] [स्त्री० फोकलाई] किसी फल आदि का ऊपरी छिलका। वि०=फोका।

फोकलाप—वि० [देश०] चौदह। (दलाल)

फोका—वि० [हिं० फोक] [स्त्री० फोकी] १ फोक के रूप मे होनेवाला अर्थात् रस-हीन और बेस्वाद। २. जिसमे मिठास न हो। ३. जिसमे कोई तत्त्व न हो। ४ खाली। रिक्त। ५ खोखला। पोला। जैसे—फोका बाँस। ६. हलके दरजे का। घटिया। अव्य० केवल। निरा। † पुं०=पोका।

फोकी—स्त्री० [हिं० फोका] ऐसी मुलायम भूमि जिसमे आसानी से हल चल सके।

फोग—पु० [?] राजस्थान में होनेवाला एक प्रकार का क्षुप।

फोट—पु० [सं० स्फोट] स्फोट। पु० [हिं० फूटना] १. फूटने की क्रिया या भाव। २ मुँह से निकलनेवाली मन की बात। उद्‌गार।

फोटक†—वि०=फोकट।

फोटा—पु० [स० स्फोटक] १ माथे पर लगाई जानेवाली गोल बिंदी। २. किसी प्रकार का गोलाकार चिह्न। ३. दे० 'टीका'।

फोटो—पु० [अं० फ़ोटोग्राफ] १ एक विशिष्ट यांत्रिक उपकरण द्वारा खीचा हुआ चित्र। छाया-चित्र। २ वह पत्र जिसपर उक्त चित्र छपा होता है। क्रि० प्र०—उतारना।—खीचना।—लेना।

फोटोग्राफ—पुं०=फोटो।

फोटोग्राफर—पुं० [अ०] फोटो अर्थात् छाया चित्र बनानेवाला कलाकार।

फोटोग्राफी—स्त्री० [अ०] फोटो उतारने के यत्र के द्वारा फोटो या छाया-चित्र बनाने की कला तथा कृत्य।

फोड़न—स्त्री० [हिं० फोड़ना] वे मसाले जो दाल-तरकारी आदि आँच पर रखने से पहले उन्हें छौंकने या बघारने के लिए डाले जाते हैं। तडका। †वि० फोड़नेवाला।

फोड़ना—स० [स० स्फोटन; प्रा० फोडन] १. हिं० 'फूटना' का स०

रूप। ऐसा काम करना जिससे कोई चीज फूटे। २ खरी या करारी वस्तुओं को दबाव या आघात द्वारा तोडना। खड खड करना। जैसे—घडा फोडना।

पद—तोड़ना-फोड़ना।

३ ऊपरी आवरण या तल मे स्थान स्थान पर अवकाश उत्पन्न करना कि अन्दर की चीज बाहर निकल आये या निकलने लगे। जैसे—(क) कच्चा पारा शरीर को फोड देता है। (ख) बरसात मे जमीन को फोडकर उसमे से नये कल्ले निकलते है। ४ किसी दल या पक्ष के व्यक्ति या व्यक्तियों को प्रलोभन आदि देकर अपनी ओर मिलाना। दूसरों मे फूट डालकर उनमे से कुछ को अपनी ओर मिला लेना। जैसे—शत्रुओं ने कई अधिकारियो को फोडकर अपनी ओर मिला लिया। ५ व्यर्थ ऐसा परिश्रम करना जिसका कोई फल न हो या बहुत ही कम फल हो। जैसे—(क) किसी महीन काम के लिए आँखें फोडना। (ख) किसी को समझाने के लिए अपना सिर फोडना अर्थात् माथा-पच्ची करना। ६ किसी का भेद या रहस्य सब पर प्रकट करना। जैसे—किसी का भडा फोडना। ७ उँगलियों के सबध मे उनके पोरो को इस प्रकार ऐंठना या खीचना कि उनमे से खट् खट् शब्द हो। जैसे—बार बार उँगलियाँ फोडते रहना अशुभ होता है।

फोड़ा—पु० [स० स्फोटक, प्रा० फोड] [स्त्री० अल्पा० फोडिया] शारीरिक विकार के कारण होनेवाला ऐसा व्रण जिसमे रक्त सडकर मवाद का रूप धारण कर लेता है। (एब्सेस)

फोड़िया—पु० [हि० फोडा, या स० पिडिका] छोटा फोडा।

फोता—पु० [फा० फोत] १ कमरबन्द। पटका। २ लुगी। ३ पगडी। ४ खेत या जमीन पर लगनेवाला राज-कर। पोत। लगान।

मुहा०—फोता भरना—कर या लगान देना।

५ रुपये आदि रखने की थैली। ६ अड-कोश।

फोतेदार—पु० [फा० फोतदार] १ कोषाध्यक्ष। खजाची। २ रोकडिया। पोतदार।

फोनोग्राफ—पु० [अ० फोनोग्राफ] एक प्रकार का यत्र जिसमे कही हुई बाते और बजाये हुए बाजों के स्वर आदि चूडियो मे भरे रहते है और ज्यो के त्यों सुनाई पडते है। (ग्रामोफोन इसी का विकसित रूप है।)

फोरना—स०=फोडना।

फोरमैन—पु० [अ० फोरमैन] कारखानो मे कारीगरो और काम करने वालो का प्रधान या सरदार। जैसे—प्रेस का फोरमैन।

फोहा—पु०=फाहा।

फोहारा—पु०=फुहारा।

फौंकना—अ० [अनु०] आवेश मे आकर डीग मारना। शेखी हाँकना।

फौंदना†—पु०=फुदना।

फौआरा—पु०=फुहारा।

फौक—वि० [अ० फौक] १ उच्च। श्रेष्ट। २ उत्तम।

पु० १ उच्चता। ऊँचाई। २. प्रधानता। श्रेष्ठता।

मुहा०—(किसी से) फौक ले जाना=किसी से बहुत बढकर या श्रेष्ठ सिद्ध होना।

फौज—स्त्री० [अ० फौज] [वि० फौजी] १ सेना। २ झुड। जैसे—बदरों या बच्चो की फौज।

फौजदार—पु० [अ० फौज+फा० दार] [भाव० फौजदारी] सेना का एक छोटा अधिकारी।

फौजदारी—स्त्री० [अ०] १. फौजदार का कार्य या पद। २ वह न्यायालय जिसमे मार-पीट, हत्या आदि सबधी मुकदमो की सुनवाई होती है। ३ गहरी मार-पीट की कोई घटना।

फौजी—वि० [फा० फ़ौजी] १. फौज का। जैसे—फौजी अफसर। २ फौज या फौजों में होनेवाला। जैसे—फौजी लडाई।

फौत—वि० [अ० फौत] १ मरा हुआ। मृत। २ जो नष्ट हो गया हो। जैसे—किसी बात का मतलब फौत होना।

स्त्री० मृत्यु। मौत।

फौती—वि० [अ० फौत] १ मृत्यु-सबधी। मृत्यु का। ३ मरा हुआ। मृत।

स्त्री० १ मृत्यु। मौत। २ किसी विशिष्ट स्थानीय शासक विशेषत जन-गणना करनेवाले किसी अधिकारी को दी जानेवाली किसी की मृत्यु की सूचना।

फौतीनामा—पु० [अ० फ़ौत+फा० नामा] १ मृत व्यक्तियो के नाम और पते की सूची जो नगरपालिका आदि की चौकी पर तैयार की जाती है, और प्रधान कार्यालय मे भेजी जाती है। २ सेना द्वारा किसी मृत सैनिक के घर उसकी मृत्यु का भेजा जानेवाला समाचार।

फौरन—क्रि० वि० [अ० फौरन] तत्क्षण। उसी समय। जल्दी ही। तत्काल। तुरन्त।

फौरी—वि० [अ० फौरी] (काम) जो चट पट या तुरत किया जाने को हो।

फौलाद—पु० [फा० फौलाद] असली लोहा।

फौलादी—वि० [फा०] १ फौलाद का बना हुआ। जैसे—फौलादी ढाँचा। २ बहुत ही दृढ या पक्का।

स्त्री० वह डडा जिसके सिरे पर बल्लम या भाला जडा रहता है।

फौवारा†—पु०=फुहारा।

फ्रास—पु० [अ०] यूरोप का एक प्रसिद्ध देश जो स्पेन के उत्तर मे है।

फ्रांसीसी—वि० [हि० फ्रास+ईसी (प्रत्य०)] फ्रास का।

पु० फ्रास देश का निवासी।

स्त्री० फ्रान्स देश की भाषा

फ्राक—पु० [अ० फ्राक] लबी आस्तीन का ढीला ढीला एक प्रकार का छोटे बच्चों विशेषत लडकियो के पहनने का कुरता।

फ्री—वि० [अ० फ्री] १ जिस पर किसी का दबाव या नियन्त्रण न हो। स्वतत्र। २ जिसके लिए कोई कर या देन नियत न हो। ३ जो किसी प्रकार का कर या देन चुकाने से मुक्त कर दिया गया हो।

फ्रीमेसन—पु० [अ०] फ्रीमेसनरी नामक सम्प्रदाय का अनुयायी या सदस्य।

फ्रीमेसनरी—स्त्री० [अ०] अमेरिका और यूरोप मे मध्ययुग का एक रहस्य सम्प्रदाय।

फ्रेंच—वि० [अ० फ्रेंच] फ्रास देश का।

स्त्री० फ्रास देश की भाषा।

पु० फ्रास देश का निवासी।

फ्रेम—पु० [अं० फ्रेम] १ चित्रो आदि का या और किसी प्रकार का चौकठा। २ ढाँचा।

ब

ब—देवनागरी वर्णमाला का पवर्गीय वर्ण जो व्याकरण तथा भाषा-विज्ञान की दृष्टि से ओष्ठ्य, अघोष, अल्पप्राण तथा स्पृष्ट व्यंजन है।
पुं० [सं०√बल् (जीवन देना)+ड] १ वरुण। २ समुद्र। ३. जल। पानी। ४ सुगंधि। ५. ताना। ६ घडा। ७. भग। योनि।
अव्य०[फा०]एक अव्यय जो अरबी-फारसी शब्दो के पहले लगकर ये अर्थ देता है—(क) सहित। साथ। जैसे—बखैरियत=खैरियत से। (ख) पूर्वक। जैसे—बखूबी। (ग) के द्वारा। जैसे—बजरिया जरिये द्वारा। (घ) पर या से। जैसे—खुद-ब-खुद=आप से आप। (च) किसी की तुलना मे। जैसे—ब-जिन्स किसी के ठीक अनुरूप। (छ) अनुसार। जैसे—बदस्तूर, बमूजिब।

बंक—वि० [सं० वक्र, वक] १ टेढा। तिरछा। २. जिसमे पुरुषार्थ और विक्रम हो। ३ दुर्गम। ४ विकट।
पुं० दे० 'बाँकरा'।
†पुं० अस्थि। हड्डी। उदा०—मचक्कहिं रीढक बंक अमाप।—कविराज सूर्यमल।
पुं० [अं० बैंक] वह महाजनी संस्था जो मुख्य रूप से सूद पर रुपयो के लेन-देन का काम करती हो।

बंकर—वि० [सं० वक] १. वक। टेढ़ा। २. तीव्र। ३ विकट।
पुं० [सं० व्यंकट ?] हनुमान।

बकनाल—स्त्री० [हिं० बक+नाल] १ सुनारो की एक नली जो बहुत बारीक टुकडो की जोडाई करने के समय चिराग की लौ फूँकने के काम आती है। बगनहा। २ कोई टेढ़ी पतली नली। ३ हठ-योग मे शखिनी नाडी का एक नाम।

बकराज—पुं० [हिं० बक+राज] एक प्रकर का साँप।

बंकवा†—पुं० [सं० वक] एक तरह का बढ़िया अगहनिया धान।

बंकसाल—पुं० [देश०] जहाज का वह बडा कमरा जिसमे मस्तूलों पर चढ़ाई जानेवाली रस्सियाँ या जजीरें ठीक करके रखी जाती है।

बंका—वि० [सं० वक] [भाव० बकाई] १ टेढ़ा। तिरछा। २. दुर्गम। ३ विकट। ४ पराक्रमी। ५ बाँका।

बंकाई—स्त्री० [हिं० बक+आई (प्रत्य०)] टेढ़ापन। तिरछापन। वक्रता।

बंकी—स्त्री०=बाँक।

बंकुर†—वि० [भाव० बंकुरता]=बंक (वक्र)।

बंकुरा†—वि०=बक।

बंकैअन*—अव्य०, पुं०=बकैयाँ।

बंग—पुं०=वग।

बंगई—स्त्री० [सं० वग] सिलहट की भूमि में होनेवाली एक तरह की कपास।
† स्त्री० [हिं० बंगा] १. उद्दंडता। २. झगड़ालूपन। ३. † बदमाशी। लुच्चापन।

बंगउरा†—पुं०=बिनौला।

बंगड़ी†—स्त्री० [देश०] १. लाख या काँच की बनी हुई चूडी या कंगन। २. आलू की फसल मे होनेवाला एक तरह का रोग।

बँगला—वि० [हिं० बंगाल] १. बंगाल प्रदेश-सबंधी। २ बगाल में बनने या होनेवाला। जैसे—बँगला मिठाई।
स्त्री० १ बगाल देश की भाषा। २. उक्त भाषा की लिपि जो देवनागरी का ही एक स्थानिक रूप है।
पुं० १. एक मजिला हवादार तथा बरामदेवाला छोटा मकान जिसकी छत प्राय खपरैल की होती है तथा जो खुले स्थान मे बना हुआ होता है। २ कोई छोटा हवादार तथा बरामदेवाला मकान। † ३ बोल-चाल में, ऊपरवाली छत पर बना हुआ हवादार कमरा।

बंगलिया—पुं० [हिं० बंगाल] १. एक प्रकार का धान। २. एक प्रकार की मटर।

बंगली—स्त्री० [?] स्त्रियों का एक आभूषण जो हाथो मे चूडियों के साथ पहना जाता है।
पुं० [हिं० बगाल] एक प्रकार का पान।
पुं० [?] घोड़ा। (डिंगल)

बंगसार—पुं०[?] समुद्र मे बनाया हुआ वह चबूतरा जिस पर से यात्री जलयान मे चढते हैं। बनसार।

बगा—वि० [सं० बक] [स्त्री० बगी] १. टेढा। २ झगडालू। ३ पाजी। लुच्चा। ४ अज्ञानी। मूर्ख। ५ उद्दड।

बगारी—पुं० [सं० वग+अरि] हरताल। (डि०)

बंगाल—पुं० [सं० वग] १ भारत का एक पूर्वी प्रदेश जिसका आधा भाग पूर्वी बगाल (पाकिस्तान) और आधा भाग पश्चिमी बगाल (भारत) के नाम से प्रसिद्ध है। बग प्रदेश। २ सगीत मे एक प्रकार का राग जिसे कुछ लोग भैरव राग का और कुछ लोग मेघ राग का पुत्र मानते हैं।

बंगालिका—स्त्री० [?] एक रागिनी जिसे कुछ लोग मेघराग की पत्नी मानते हैं।

बंगाली—पुं० [हिं० बगाल+ई (प्रत्य०)] बगाल अर्थात् वग-प्रदेश का निवासी।
वि० १. बंगाल देश का। बगाल-सम्बन्धी।
स्त्री० १ बँगला भाषा। २ संगीत में सम्पूर्ण जाति की रागिनी जो ग्रीष्म ऋतु मे प्रातःकाल गाई जाती है। ३ विशुद्ध अद्वैत का ज्ञान प्राप्त होने की अवस्था। (बौद्ध)

बंगुरी—स्त्री०=बँगली (आभूषण)।

बंगू—पुं० [देश०] १ वग तथा दक्षिण भारत की नदियों मे होनेवाली एक तरह की मछली। २ जंगी या भौंरा नाम का खिलौना।

बंगोभा—पुं० [देश०]गगा और सिंधु नदियो में होनेवाला एक तरह का कछुआ।

बंचक—वि० [भाव० बचकता]=वंचक (ठग)।

बंचकताई—स्त्री०=बचकता।

बंचन—पुं०=वंचन।

बंचना—स० [सं० वंचन] ठगना। छलना।
अ० ठगा जाना।
स्त्री०=वंचना।

स० [सं० वाचन] पढ़ना। बाँचना।

बंचर—पु०=वनचर।

बंचवाना—हिं० [सं० बाँचना का प्रे०] बाँचने (पढ़ने) का काम दूसरे से कराना। पढ़वाना।

बंचित—वि०=वंचित।

बंछना† —स० [सं० वांछा] वांछा अर्थात् इच्छा करना। चाहना।

बंछनीय† —वि०=वाँछनीय।

बंछित† —वि०=वांछित।

बंज—पु० [देश०] हिमालय प्रदेश मे होनेवाला एक प्रकार का बलूत जिसकी लकड़ी का रग खाकी होता है। इसे सिल और मारू भी कहते हैं।

† पु०=बनिज।

बंजर—वि० [सं० बन+उजड़] (भूमि) जिसमे कोई चीज न उगती हो फलत जो उपजाऊ न हो। ऊसर।

पु० बजर भूमि।

बंजर भूमि—स्त्री० [सं०]शुष्क प्रदेशों मे कटा-फटा या ऊबड़-खाबड़ भू-खड जिसमे कोई वनस्पति नही होती। ऐसी भूमि में बीच बीच में छोटी-मोटी चट्टानें या टीले भी होते है। (बैड लेंड)

बजरिया† —वि० बजर।

स्त्री०=बन-जरिया।

बंजारा—पु०=बनजारा।

बजुल—पु० वजुल (अशोक)।

बंझा—वि०, स्त्री०=बाँझ।

बँटन—पु०[हिं० बाँटना] बाँटने की क्रिया या भाव।

बँटना—अ० [हिं० 'बाँटना' का अ०] १ अलग अलग हिस्सों मे बाँटा जाना। २ किसी प्रकार या रूप मे विभक्त या विभाजित होना। सयो० क्रि०—जाना।

†पु०=बटना।

बँटवाई—स्त्री० [हिं० बँटवाना] बँटवाने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक।

†स्त्री०=बटाई।

बँटवाना—स० [हिं० बाँटना] दूसरो को कोई चीज बाँटने में प्रवृत्त करना।

स०=बटवाना।

बँटवारा—पु० [हिं० बाँटना] १ बाँटने का काम। २ भाइयों, हिस्सेदारो आदि मे होनेवाला सपत्ति का विभाजन। अलगोझा। जैसे—(क) खेत का बँटवारा। (ख) देश का बँटवारा।

बंटा—पु० [सं० वटक, हिं० बटा+गोला] [स्त्री० अल्पा० बंटी] कोई छोटा गोल चौकोर डिब्बा। जैसे—पान का बटा।

वि० छोटे कद का। नाटा।

बँटाई—स्त्री० [हिं० बाँटना] १ बाँटने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक। २ बाँटे जाने की अवस्था या भाव। ३. किसी को जोतने-बोने के लिए खेत देने का वह प्रकार जिसमे खेत का मालिक लगान के बदले मे उपज का कुछ अश लेता है। जैसे—यह खेत इस साल बँटाई पर दिया गया है।

बँटाधार† —वि० [सं० विनष्ट+आधार] पूरी तरह से चौपट, नष्ट या भ्रष्ट किया हुआ। (पूरब)

बँटाना—स० [हिं० बाँटना] १ किसी संपत्ति आदि के हिस्से लगवाकर अपना हिस्सा लेना। जैसे—उसने सारी जायदाद बँटा ली है। २. किसी काम या बात में इस प्रकार सम्मिलित होना कि दूसरे का भार कुछ हलका हो जाय। जैसे—(क) किसी का दुःख बँटाना। (ख) किसी काम में हाथ बँटाना। ३. दे० 'बँटवाना'।

बँटावन—वि० [हिं० बँटवाना] बँटवाकर अपना हिस्सा लेनेवाला।

बँटी—स्त्री० [?] हिरन आदि पशुओं को फँसाने का जाल या फंदा।

स्त्री० हिं० 'बंटा' का स्त्री० अल्पा०।

बँटैया—वि० [हिं० बाँटना] बाँटनेवाला।

वि० [हिं० बँटवाना] बँटवाकर अपना हिस्सा ले लेनेवाला।

बंड—वि०=बाँड़ा।

पु०=बड़ा।

बंडल—पु० [अं०] रस्सी आदि से अच्छी तरह बँधा हुआ पुलिंदा।

बंडवा† —वि०=बाँड़ा।

बंडा—पु० [हिं० बटा] १ अरुई की जाति की एक लता। २. उक्त लता के कद जिनकी तरकारी बनाई जाती है। ३ अनाज रखने का बखार।

बंडी—स्त्री० [हिं० बाँड़ा=कटा हुआ] १ बिना अस्तीन की एक प्रकार की कुरती। फतूही। मिरजई। २ बगलबन्द नाम का पहनने का कपड़ा।

बँडेर—स्त्री० [सं० वरदड ?] वह बल्ला या शहतीर जिसके ऊपर छाजन का ठाठ स्थित होता है।

बडेरा† —पु०=बँडेर।

बँडेरी† —स्त्री०=बडेर।

बद—पु० [सं० बध से फा०] १ वह चीज जो किसी दूसरी चीज को बाँधती हो। जैसे—डोरी, रस्सी आदि। २ लोहे आदि की वह लम्बी पट्टी जो बड़ी बड़ी गठरियों, सदूको आदि पर इसलिए रक्षा के विचार से बाँधी जाती है कि माल बाहर भेजते समय उसमे से कुछ चुराया या निकाला न जा सके। ३. किसी प्रकार की लम्बी धज्जी या पट्टी। जैसे—कपड़े या कागज का बन्द। ४ वास्तुरचना मे, पत्थर की वह पटियाँ या पत्थरों की वह शृखला जो दीवारों में मजबूती के लिए लगाई जाती है और जिसके ऊपर फिर दीवार उठाई जाती है। ५. पानी की बाढ़ आदि रोकने के लिए बनाया जानेवाला धुस्स। बाँध। ६ फीते की तरह सीकर बनाई हुई कपड़े की वह डोरी या फीता जिससे अँगरखे, चोली आदि के पल्ले आपस मे बाँधे जाते हैं। ७ कागज, धातु आदि की पतली लबी धज्जी। पट्टी। ८. लाक्षणिक रूप में, किसी प्रकार का नियत्रण या बधन। जैसे—बदे के जाये बदी मे नही रहते। ९. उर्दू कविता मे वह पद जो पाँच या छ चरणों का होता है। १०. कविता का कोई चरण या पद। ११ शरीर के अगो का जोड़ या संधि-स्थान। जैसे—बद बद जकड़ना या ढीला होना। १२. कोई काम कौशलपूर्वक करने का गुण, योग्यता या शक्ति। १३. तरकीब। युक्ति। उदा०—कस्बोहुनर के याद हैं जिनको हजार बन्द।—नजीर।

वि० १. (पदार्थ या व्यक्ति) जो चारों ओर से घिरा या रुका हुआ हो। जैसे—(क) कोठरी मे सब सामान बद है। (ख) पुलिस ने उसे थाने मे बन्द कर रखा है। २. (स्थान) जो चारों ओर से खुलता या खुला हुआ न हो फलत. जो इस प्रकार घिरा हो कि उसके अन्दर कुछ या कोई आ-जा न सके। जैसे—वह मकान तो चारो तरफ से बन्द है; अर्थात् उसमे प्रकाश, वायु आदि के आने का यथेष्ठ मार्ग नहीं है। ३. (स्थान) जिसके अन्दर लोगों के आने-जाने की मनाही या रुकावट हो। जैसे—जन-साधारण के लिए किला आज-कल बन्द हो गया है। ४. (किसी प्रकार का मार्ग या रास्ता) जो अवरुद्ध हो अर्थात् जिसके आगे ढकना, ताला, दरवाजा, या ऐसी ही कोई और बाधक चीज या बात लगी हो जिसके कारण उसके अन्दर पहुँचना या बाहर निकलना न हो सकता हो। जैसे—नाली का मुँह बन्द हो गया है, जिससे छत पर पानी रुकता है। ५ ढकने, दरवाजे, पल्ले आदि के सबध मे, जो इस प्रकार भेड़ा या लगाया गया हो कि आने-जाने या निकालने-रखने का रास्ता न रह जाय। जैसे—कमरा (या सदूक) बद कर दो।

विशेष—इस अर्थ मे इस शब्द का प्रयोग ढकने, दरवाजे आदि के सबध मे भी होता है, और उस चीज के सबंध मे भी जिसके आगे वे लगे रहते हैं।

६ शरीर के अगो, यत्रो आदि के सबध मे, जिनकी क्रिया या व्यापार पूरी तरह से रुक गया हो अथवा रोक दिया गया हो। जैसे—(क) बुढ़ापे के कारण उनके कान बन्द हो गए है। (ख) घोड़े के पिछले पैर दो दिन से बन्द हैं, अर्थात् ठीक तरह से हिल-डुल नही सकते। (ग) पानी की कल (या बिजली) बन्द कर दो। ७. किसी प्रकार के मुख या विवर के सबध मे, जिसका अगला भाग अवरुद्ध या सपुटित हो। जैसे—(क) कमल रात मे बन्द हो जाता है और दिन मे खुलता (या खिलता) है। (ख) थोड़ी मिट्टी डालकर यह गड्ढा बन्द कर दो। ८. (कार्य करने का स्थान) जहाँ अस्थायी या स्थायी रूप से कार्य रोक दिया गया हो या स्थगित हो चुका हो। जैसे—(क) जाड़े मे रात को ९ बजे सब दूकाने बन्द हो जाती हैं। (ख) उनका छापाखाना (या विद्यालय) बहुत दिनो से बद पड़ा है। ९. कोई ऐसा कार्य, गति या व्यापार जो चल न रहा हो, बल्कि थम या रुक गया हो। जैसे—(क) अब थोड़ी देर मे वर्षा बन्द हो जायगी। (ख) उन्होंने प्रकाशन का काम बन्द कर दिया है। १०. (व्यक्ति) जो अक्रिय तथा उदास होकर बैठा हो। (क्व०) जैसे—आज सबेरे से तुम इस तरह बन्द से क्यो बैठे हो? ११. लेन-देन या हिसाब-किताब जिसके व्यवहार का अन्त हो चुका हो। जैसे—आज-कल हमारा उनका लेन-देन बन्द है। १२. (व्यक्ति) जिसके साथ सामाजिक व्यवहार का अन्त हो चुका हो। जैसे—वह साल भर से बिरादरी से बन्द है। १३. कोई परिमित अवधि या समय जिसकी समाप्ति हो गई या हो चली हो। जैसे—एक दो दिन में यह महीना (या साल) बन्द हो रहा है। १४. शस्त्रों की धार आदि के सबध मे, जिसमे कार्य करने की शक्ति न रह गई हो। जो कुठित हो गया हो। जैसे—यह चाकू (या कैंची) तो बिलकुल बन्द है, अर्थात् इससे काटने या कतरने का काम नहीं हो सकता।

वि० शब्दो के अन्त में प्रत्यय के रूप मे, प्रयुक्त होने पर, जड़ने, बाँधने या लगानेवाला। जैसे—कमर-बन्द, नाल-बन्द, नैचा-बंद।

† वि०=वंद्य (वंदनीय)।

† पुं०=विंदु।

बंदक†—वि० १. =वंदक (वदना करनेवाला)। २ बधक (बाँधनेवाला)।

†वि० [हिं० बद+क (प्रत्य०)] बन्द करनेवाला।

बंदगी—स्त्री० [फा०] १. किसी के सामने यह मान लेना कि मैं बन्दा (सेवक) हूँ और आप मालिक (स्वामी) हैं। अधीनता और दीनता स्वीकृत करना। २. मन में उक्त प्रकार का भाव या विचार रखकर की जानेवाली ईश्वर की वदना। ईश्वराराधन। ३. किसी को आदरपूर्वक किया जानेवाला अभिवादन। नमस्कार। सलाम। ४ आज्ञा पालन। ५. टहल। सेवा। उदा०—जैसी बन्दगी, वैसा इनाम। (कहा०)

बंद-गोभी—स्त्री० [हिं० बद+गोभी] १ करमकल्ला। पातगोभी का पौधा। २. उक्त पौधे का फल जिसकी तरकारी बनाई जाती है।

बंदन—पुं० [स० बदनी=गोरोचन] १ रोचन। रोली। २. ईंगुर। सिंदूर।

पुं०=वदन।

बंदनता†—स्त्री०=वदनीयता।

बंदनवान†—पुं० [स० बधन] कारागार का प्रधान अधिकारी।

बंदनवार—पुं० [स० वदनमाला] आम, अशोक आदि की पत्तियो को किसी लम्बी रस्सी में जगह-जगह टाँकने पर बननेवाली शृखला जो शुभ अवसरो पर दरवाजो, दीवारो आदि पर लटकाई जाती है। तोरण।

बंदनसाल†—स्त्री० [सं० बधन+शाला] कारागार।

बंदना—स० [सं० वदन] १ वदना या आराधना करना। २. नमस्कार या प्रणाम करना।

† स्त्री०=वंदना।

बंदनी—स्त्री० [स० वंदनी=माथे पर बनाया हुआ चिह्न] स्त्रियों का एक आभूषण जो सिर पर आगे की ओर पहना जाता है। इसे बदी या सिरबदी भी कहते हैं।

वि०=वदनीय। जैसे—जग-बदनी।

बंदनीमाल—स्त्री० [स० वदनमाल] वह लम्बी माला जो गले से पैरों तक लटकती हो। घुटनों तक लटकती हुई लबी माला।

बंदर—पुं० [स० वानर] [स्त्री० बँदरिया, बँदरी] १. एक प्रसिद्ध स्तनपायी चौपाया जो अनेक बातों मे मनुष्य से बहुत-कुछ मिलता-जुलता होता और प्रायः वृक्षो आदि पर रहता है। कपि। मर्कट। शाखा-मृग।

पद—**बंदर का घाव**=दे० 'बँदर-खत'। **बंदर घुड़की या बंदर भभकी**=बदरो की तरह डराते हुए दी जानेवाली ऐसी धमकी जो दिखावे भर को हो पर जो पूरी न की जाय।

२. राजा सुग्रीव की सेना का कोई सैनिक।

पुं० [फा०] बदरगाह।

बंदर-खत†—पुं० [हिं० बदर+क्षत=घाव] १. बन्दर के शरीर में होनेवाला घाव जिसे वह प्राय नोच-नोच कर बढ़ाता रहता है। २. ऐसा कार्य या बात जिसकी खराबी या बुराई जान-बूझकर बढ़ाई जाय।

बंदरगाह—पु० [फा०] समुद्र के किनारे का वह स्थान जहाँ जहाज ठहरते है।

बंदर बाँट—स्त्री० [हिं० बदर+बाँटना] न्याय के नाम पर किया जानेवाला ऐसा स्वार्थपूर्ण बँटवारा जिसमे न्यायकर्ता सब कुछ स्वय हजम कर लेता है और विवादी पक्षो को विवाद-ग्रस्त सपत्ति मे से कुछ भी प्राप्ति नही होती।

बँदरा—पु० दे० 'बनरा'। २ दे० 'बन्दर'।

बंदरिया—स्त्री० हिं० बदर का स्त्री० रूप।

बंदरी—स्त्री० [फा० बन्दर] १. बन्दर या बन्दरगाह-सम्बन्धी। २ बन्दरगाह मे होकर आनेवाला, अर्थात् विदेशी। जैसे—बदरी तलवार।

स्त्री० हिं० बन्दर (जानवर) का स्त्री०। मादा बदर।

बदली—पु० [देश०] रुहेलखड मे पैदा होनेवाला एक प्रकार का धान जिसे रायमुनिया और तिलोकचदन भी कहते है।

बंदवान—पु० [स० बदी+वान] बदी गृह का रक्षक। कैद खाने का प्रधान अधिकारी।

बदसाल—पु० [स० वदीशाला] वदीगृह। कैदखाना।

बदा—पु० [फा० बद] १ दास। सेवक। २ भक्त। ३ मनुष्य। विशेष—वक्ता नम्रता सूचित करने के लिए इसका प्रयोग अपने लिए भी करता है। जैसे—लीजिए बन्दा हाजिर है।

पु० [स० बदी] कैदी। बदी।

बदा-नवाज—वि० [फा० बद नवाज] [भाव० बदा-नवाजी] १. आश्रितो और दीनो पर अनुग्रह या कृपा करनेवाला। दीन-दयालु। २ भक्त-वत्सल।

बदा-परवर—पु० [फा० बद पर्वर] [भाव० बदा-परवरी] =बदा-नवाज।

बदानी—पु० [?] गालदाज। तोप चलानेवाला। (लश्करी)

पु० [?] एक प्रकार का हलका गुलाबी रग जो प्याजी से कुछ गहरा होता है।

वि० उक्त प्रकार के रग का।

बदारु—वि० [स० वदारु, √वन्द्+आरु] आदरणीय और पूज्य। वदनीय।

†पु० बदाल।

बदाल—पु० [?] देवदाली। घघरबेल।

बदि—स्त्री० [स० वदि] बधन। २. कैद।

†स्त्री०=वदीगृह (कारागार)।

पु०=बदी या वदी (कैदी)।

बदि कोष्ठ—पु० [स० वदीकोष्ठ] वदीगृह (कारागार)।

बदि छोर—वि०=बदीछोर।

बदिया—स्त्री० =बदी (आभूषण)।

बंदिश—स्त्री० [फा०] १ बाँधने की क्रिया या भाव। २. किसी प्रकार का बन्धन या रुकावट। ३ कविता के चरणों, वाक्यो आदि मे होनेवाली शब्द-योजना। रचना-प्रबध। जैसे—गजल या गीत की बदिश। ४ किसी को चारो ओर से बाँध रखने के लिए की जानेवाली योजना। ५ कोई बड़ा काम छेड़ने अथवा किसी प्रकार की रचना आरभ करने से पहले किया जानेवाला आयोजन या आरभिक व्यवस्था। ६. षड्यत्र।

बंदी—पु० [सं०] चारणों की एक जाति जो प्राचीन काल में राजाओं का कीर्तिगान किया करती थी। भाट। चारण। दे० 'वदी'।

पु० [स० वन्दिन्] कैदी। बँधुआ।

स्त्री०=बदनी (सिर पर पहनने का गहना)।

वि० फा० 'बंदा' (दास या सेवक) का स्त्री०।

स्त्री० [फा०] १. बद करने की क्रिया या भाव। जैसे—दुकान बदी। २. बाँधने की क्रिया या भाव। जैसे—नाकेबदी। ३. व्यवस्थित रूप मे लाने का भाव। जैसे—दलबन्दी।

बंदीखाना—पु० [फा० बदीखान.] जेलखाना। कैदखाना।

बदीघर—पु० [स० वदिगृह] कैदखाना। जेलखाना।

बंदीछोर—वि० [फा० बदी+हिं० छोर (ड़) ना] १. कैद से छुड़ानेवाला। २ सकटपूर्ण बंधन से छुड़ानेवाला।

बंदीवान—पु० [स० वदिन्] कैदी।

बंदूक—स्त्री० [अ०] एक प्रसिद्ध अस्त्र जिसमे कारतूस, गोली आदि भरकर इस प्रकार छोडी जाती है कि लक्ष्य पर जाकर गिरती है।

क्रि० प्र०—चलाना।—छोडना—दागना।

मुहा०—बदूक भरना=बदूक में कारतूस, गोली आदि रखना।

बंदूकची—पु० [अ० बदूक+फा० ची (प्रत्य०)] १ बदूक चलानेवाला सिपाही। २ बदूक की गोली से लक्ष्य-भेदन करनेवाला व्यक्ति।

बंदूख†—स्त्री०=बदूक।

बंदेरा†—पु० [फा० बन्द] [स्त्री० बँदेरी] १ दास। २ सेवक।

बंदोड़†—पु० [फा० बन्द] गुलाम। दास।

बदोबस्त†—पु० [फा०] १ प्रबध। व्यवस्था। २ खेतो की हदबदी, उनकी मालगुजारी आदि निश्चित करने का काम।

पद—बदोबस्त आरिजी=कृषि-सबधी होनेवाली अस्थायी व्यवस्था। **बदोबस्त-इस्तमरारी या दवामी**=पक्की और सदा के लिए निश्चित कृषि व्यवस्था।

बध—पु० [स०√बध् (बधना)+घञ्] १ वह चीज जिसमे कोई दूसरी चीज बाँधी जाय। जैसे—डोरी, फीता, रस्सी आदि। २ बाँधने की क्रिया या भाव। ३. बधन। ४. किसी को पकडकर बाँध रखने की क्रिया। कैद। ५ कोई चीज अच्छी तरह गठ या बाँधकर तैयार करना। जैसे—काव्य-ग्रथ का सर्ग-बध। ६ रचना करना। बनाना। ७ कल्पना करना। ८ गद्य या पद्य के रूप मे साहित्यिक रचना करना। निबध रचना। ९. लगाव। सबध। १०. आपस में होनेवाला किसी प्रकार का निश्चय। ११. योग-साधन की कोई मुद्रा। जैसे—उड्डीयान बध। १२ कोक शास्त्र में, रति के मुख्य सोलह आसनो मे से एक आसन। १३ रति या स्त्री-समोग करने का कोई आसन या मुद्रा। १४ चित्रकाव्य मे छद की ऐसी रचना जिसमें कुछ विशिष्ट नियमो के अनुसार उसकी पक्तियों के अक्षर बैठाने से किसी विशेष प्रकार की आकृति या चित्र बन जाय। जैसे—अश्वबध, खड्गबध, छत्र-बध आदि। १५. बनाये जानेवाले मकान की लंबाई और चौडाई का योग। १६ काया। शरीर। १७ जलाशय के किनारे का बाँध।

†पु० १. =बधु।

बंधक—वि० [स०√बध् (बंधना)+ण्वुल्—अक] १. बाँधनेवाला

२. (पदार्थ) जो किसी से रुपए उधार लेने के समय इस दृष्टि से जमानत के रूप मे उसके पास रखा गया हो कि जब तक रुपया (और सूद) चुकाया न जायगा; तब तक वह उसी के पास रहेगा। रेहन। ३. अदला-बदली या विनिमय करनेवाला।

पु० [सं० बध+कन्] लेन-देन या व्यवहार का वह प्रकार जिसमे किसी से रुपया उधार लेने के समय कोई मूल्यवान् वस्तु इस दृष्टि से महाजन के पास जमानत के तौर पर रख दी जाती है कि यदि ऋण और ब्याज न चुकाया जा सके तो महाजन वह वस्तु बेचकर अपना प्राप्य धन ले सकता है। रेहन। (मार्टगेज)

बंध-करण—पु० [ष० त०] कैद करना। कारावास मे बद करना।

बंधक-कर्ता (र्तृ)—पु० [स० ष० त०] वह जो कोई चीज बधक रूप मे किसी के यहाँ रखता हो। (मार्टगेजर)

बधकी—स्त्री० [स० बधक+ङीष्] १ व्यभिचारिणी स्त्री। २. रडी। वेश्या।

वि० [हिं० बंधक] जो बधक के रूप मे पडा हुआ या रखा गया हो। जैसे—बधकी मकान।

बंध-तंत्र—पुं० [मध्य० स०] किसी राजा अथवा राज्य की संपूर्ण सैनिक शक्ति। पूरी सेना।

बंधन—पु० [स०√बध्+ल्युट्—अन] १ बँधने या बाँधने की क्रिया या भाव। २. बाँधनेवाली कोई चीज, तत्त्व या बात। जैसे—जजीर, डोरा, रस्सी, प्रतिज्ञा, वचन आदि। ३ कोई ऐसी चीज या बात जो किसी को उच्छृखल होने या मन-माना आचरण अथवा व्यवहार करने से रोकती हो। कोई ऐसा तत्त्व या बात जो किसी को नियमित या मर्यादित रूप से आचरण करने के लिए बाध्य करती हो। जैसे—प्रेम या समाज का बधन। ४. वह स्थान जहाँ कोई बाँध या रोककर रखा गया हो अथवा रखा जाता हो। जैसे—कारागार आदि। ५. कोई चीज अच्छी तरह गठ या बाँधकर तैयार करना। जैसे—सेतु-बधन। ६. शरीर के अन्दर की रगे जिनसे भिन्न-भिन्न अंग बँधे रहते हैं।

मुहा०—(किसी के) बंधन ढीले करना=(क) बहुत अधिक मारना-पीटना। (ख) सारी शेखी या हेकडी निकाल देना।

७. नदियो आदि का बाँध। ८. पुल। सेतु। ९. वध। हत्या। १०. हिंसा। ११. शिव का एक नाम।

बंधन-ग्रंथि—स्त्री० [ष० त०] १. शरीर मे वह हड्डी जो किसी जोड पर हो। २. फाँस। ३. पशुओं को बाँधने की डोरी या रस्सी।

बंधन-पालक—पु० [ष० त०] कारागार का प्रधान अधिकारी।

बंधन-रक्षी (क्षिन्)—पुं० [सं० बधन√रक्ष्+णिनि] कारागार का प्रधान अधिकारी।

बंधन स्तंभ—पुं० [ष० त०] वह खभा या खूँटा जिससे पशुओ को बाँधा जाता है।

बँधना—अ० [हिं० 'बाँधना' का अ० रूप] १ बधन मे आना या पड़ना। बाँधा जाना। २. डोरी रस्सी आदि से इस प्रकार लपेटा जाना अथवा कपड़े आदि की गाँठ से इस प्रकार कसा या जकडा जाना कि जल्दी उससे छूटा न जा सके। जैसे—गौ या घोड़ा बँधना, गठरी या पारसल बँधना। ३. किसी प्रकार के नियमन, प्रतिबध आदि से युक्त होना। जैसे—प्रतिज्ञा या वचन से बँधना। ४. कारागार आदि मे रखा जाना। कैद होना। जैसे—दोनों गुडे साल-साल भर के लिए बँध गए। ५. अच्छी तरह गठकर ठीक या प्रस्तुत होना। बनाया जाना। रचित होना। जैसे—मजमून बँधना। ६. पालन, प्रचलन आदि के लिए नियत या निर्धारित होना। जैसे—कायदा या नियम बँधना। ७. किसी के साथ इस प्रकार सबद्ध, संयुक्त या संलग्न होना कि जल्दी अलगाव या छुटकारा न हो। उदा०—अली कली ही तैं बँध्यो आगे कौन हवाल।—बिहारी। ८. ध्यान, विचार आदि के सबध मे, निरतर कुछ समय तक एक ही रूप मे बना या लगा रहना। जैसे—किसी आदमी या बात का ख्याल बँधना।

बंधनागार—पु० [स० बधन-आगार, ष० त०] कारागार।

बंधनालय—पु० [स० बंधन-आलय, ष० त०] कारागार।

बँधनि—स्त्री०=बधन।

बंधनी—स्त्री० [स०√बध्+ल्युट्—अन, ङीप्] १. शरीर के अन्दर की वे मोटी नसें जो संधि स्थान पर होती है और जिनके कारण दो अवयव आपस में जुड़े रहते है। २. वह जिससे कोई चीज बाँधी जाय।

बंधनीय—वि० [स०√बंध्+अनीयर्] जो बाँधा जा सके या बाँधा जाने को हो।

पु० १ बाँध। २. पुल। सेतु

बंध-पत्र—पु० [स० ष० स०] १ विधिक दृष्टि से मान्य वह पत्र जिस पर हस्ताक्षर करनेवाला व्यक्ति अपने आप को कोई काम करने के लिए प्रतिज्ञा-बद्ध करता है। जैसे—नियत काल तक कोई काम या नौकरी करते रहने, नियत समय पर कही उपस्थित होने या कुछ धन देने का बध पत्र। २ एक प्रकार का सार्वजनिक ऋण-पत्र जिनमे निश्चित समय के अन्दर कुछ विशिष्ट नियमों या शर्तों के अनुसार लिया हुआ ऋण चुकाने की प्रतिज्ञा होती है। (बाड)

विशेष—अतिम प्रकार का बंध-पत्र प्राय राज्यो, नगर-निगमो और बड़ी बडी व्यापारिक सस्थाओ के द्वारा प्रचलित होते हैं।

बंध-मोचनिका—स्त्री० [स० ष० त०] एक योगिनी का नाम।

बंध-मोचिनी—स्त्री०=बंधमोचनिका।

बंधव †—पु०=बाँधव।

बँधवाना—स० [हिं० बाँधना का प्रे०] १. बाँधने का काम किसी दूसरे से कराना। किसी को कुछ बाँधने में प्रवृत्त करना। जैसे—बिस्तर बँधवाना। २ नियत या मुकर्रर कराना। ३ वास्तु आदि की रचना कराना। जैसे—कूआँ या तालाब बँधवाना। ४ बंधन अर्थात् कारागार आदि मे डलवाना या रखवाना। जैसे—चोरो को बँधवाना।

बधान—स्त्री० [हिं० बँधना] १. बँधे हुए की अवस्था या भाव। २ वह नियत परम्परा या परिपाटी जिसके अनुसार कुछ विशिष्ट अवसरो पर कोई विशिष्ट काम करने का बधन लगा होता है। ३ वह धन जो उक्त परिपाटी के अनुसार दिया या लिया जाय। ४ सगीत मे गीत, ताल, लय, स्वर आदि के संबंध में बँधे हुए नियम। ५ बाँध।

बंधाना—स०=बँधवाना।

बंधानी—पु० [स० बध] बोझ ढोनेवाला। मजदूर। कुली।

स्त्री०=बधान।

बंधाल—पु० [हि० बधान] जलयान, नाव आदि के पेदे का वह भाग जिसमे छेदों मे से रिसकर आया हुआ पानी जमा होता है और जो बाद मे उलीचकर बाहर फेंका जाता है। गमतखाना। गमतरी।

बधिका—स्त्री० [हि० बधन] करघे में की वह डोरी जिससे ताने की साँथी बाँधी जाती है। (जुलाहे)

बधित—भू० कृ० [स० वध्या] बाँझ । (डिंगल)

बंधित्र—पु० [स०√बंध्+इत्र] १ काम-देव। २ तिल (चिह्न)। ४ चमडे का बना हुआ पखा।

बधी (धिन्)—वि० [स० बध+इनि] १ बधन मे कसा जकडा या पडा हुआ। २ जिसमे या जिसके लिए किसी प्रकार का बधन हो। स्त्री० [हि० बाधना] १ बधे हुए होने की अवस्था या भाव। २ बँधा हुआ क्रम। नियमित रूप से या नियत समय पर नित्य किया जानेवाला काम। जैसे—हमारे यहाँ दूध की बँधी लगी है।

क्रि० प्र०—लगना।—लगाना।

बंधु—पु० [स०√बन्ध् (बन्धन)+उ] १ भाई। भ्राता। २ परम आत्मीय और भाइयो की तरह साथ रहने या काम आनेवाला व्यक्ति। ३ ऐसा प्रिय मित्र जिसके साथ भाइयो का सा व्यवहार हो। ४ पिता। ५ एक वर्ण वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रमश तीन तीन भगण और दो दो गुरु होते है। दोधक। ६ बधूक नामक पौधा और उसका फूल।

बँधुआ—वि० [हि० बँधना+आ (प्रत्य०)] १ जो बँधा रहता हो। २ (पशु आदि) जिसे बाँधकर रखा गया हो।

पु० कैदी। बदी।

बधुक—पु० [स०√बधु+उक] १ डेढ-दो फुट ऊँचा एक तरह का क्षुप जिसमे गोलाकार लाल रग के फूल दोपहर के समय खिलते है। २ उक्त क्षुप का फूल जो वैद्यक मे वात तथा पित्त नाशक और कफ बढानेवाला माना गया है। दुपहरिया। ३ जारज सतान।

बधुका—स्त्री० [स० बधु+कन्+टाप्] व्यभिचारिणी स्त्री।

बधुकी—स्त्री० [स० बधु+कन्+ङीष्] व्यभिचारिणी स्त्री।

बधु-कृत्य—पु० [स० ष० त०] व्यक्ति का अपने भाई-बधुओ तथा स्वजनो के प्रति होनेवाला कर्तव्य।

बधु-जीव—पु० [स० बधु√जीव् (जीना)+णिच्+अच्] बधूक (पौधा और फूल)। दुपहरिया।

बधु-जीवक—पु० [स० बधुजीव+कन्] बधूक। दुपहरिया।

बधुता—स्त्री० [स० बधु+तल्+टाप्] १ बधु होने की अवस्था या भाव। २ बधुओ अर्थात् स्वजनों मे परस्पर होनेवाला उचित व्यवहार। भाई-चारा। ३ दोस्ती। मित्रता। ४ भाई-बधु तथा स्वजनो का वर्ग।

बधुत्व—पु० [स० बधु+त्व]=बधुता।

बधु-दत्त—भू० कृ०[स० तृ० त०] बधुओ द्वारा दिया हुआ। बधुओ से प्राप्त। पु० बधुओ, स्वजनो आदि द्वारा कन्या को उसके विवाह के अवसर पर दिया जानेवाला धन।

बधुदा—स्त्री० [स० बधु√दा (देना)+क+टाप्] १ दुराचारिणी स्त्री। बदचलन औरत। २ रडी। वेश्या।

बधुमान् (मत्)—वि० [स० बधु+मतुप्] जिसके कई या बहुत से बंधु या स्वजन हो।

बंधुर—पुं० [स०√बध्+उरच्] १ बहरा आदमी। २ हस। ३ बगला। ४ मुकुट। ५ गुल दुपहरिया का पौधा या फूल। ६ काकडा-सिंघी। ७ विडग। ८ चिडिया। पक्षी। ९ खली। वि० १. मनोहर। सुन्दर। २ नम्र। विनीत। ३ झुका हुआ। ४. ऊँचा-नीचा।

बधुरा—स्त्री० [स० बधुर+टाप्] बधुदा। (दे०)

बधुल—वि० [स०√बध्+उलच्] १ झुका हुआ। वक्र। २ सुन्दर। नम्र।

पु० १ वह व्यक्ति जो पर-पुरुष से उत्पन्न हुआ हो पर किसी दूसरे के घर मे पला हो तथा पराये के अन्न से पुष्ट हुआ हो। २ बदचलन स्त्री का लडका। ३ वेश्या का लडका।

बँधूआ†—पु० बँधुआ।

बधूक—पु० [स०√बध्+ऊक] बधूक।

बधूप†—पु०=बधूक।

बधूर—पु० [स०√बध्+ऊरच्] १ झुका हुआ। २ ऊँचा-नीचा। ३ मनोहर।

पु० छेद।

बधेज—पु० [हि० बधना+एज (प्रत्य०)] १ कोई नियत और परम्परागत प्रथा। विशेषत बँधी हुई तथा सर्वमान्य ऐसी परम्परा जिसके अनुसार सबधियो, सेवकों आदि का कुछ विशिष्ट अवसरों पर धन आदि दिया जाता है। २ उक्त प्रथा के अनुसार दिया अथवा किसी को मिलनेवाला धन। ३ दे० बाँधनूँ (छपाई)। ४ प्रतिबध। रुकावट। ५ ऐसी युक्ति जिससे वीर्य को जल्दी स्खलित नहीं होने दिया जाता वाजीकरण।

बध्य—वि०[स०√बध्+यक्] १ जो बाँधा जा सके अथवा बाँधने के योग्य हो। २ कारावास मे रखे जाने के योग्य। ३ जो तैयार किये जाने, बनाये जाने अथवा निर्मित किये जाने को हो। ४ जो उपजाऊ न हो। ऊसर। ५ बाझ (स्त्री)।

बध्या—स्त्री०[स० बध्य+टाप्] १ स्त्री या मादा प्राणी जिसे सतान न होती हो। बाँझ।

पद—बध्या-पुत्र। (देखे)

२ योनि का एक रोग। ३ एक गध-द्रव्य।

बंध्या-कर्कोटकी—स्त्री०[स० ष० त०] कडवी ककडी। बाँझ-ककोड़ा।

बध्यापन—पु०=बाँझपन।

बध्यापुत्र—पु०[स० ष० त०] १ बाँझ स्त्री का पुत्र अर्थात् ऐसा अनहोना व्यक्ति जो कभी अस्तित्व मे न आ सकता हो। २ लाक्षणिक अर्थ मे कोई ऐसी चीज या बात जो बध्या के पुत्र के समान अनहोनी हो।

बध्यासुत—पु० [ष० त०] बध्यापुत्र।

बं-पुलिस—स्त्री०[अ० बम+पुलिस] सार्वजनिक शौचालय।

बब—पु०[अनु०] १ बब शिव शिव आदि शब्दो की ऊँची ध्वनि जो शैव लोग भक्ति की उमग मे शिव को प्रसन्न करने के लिए किया करते हैं। २ युद्धारम मे वीरो का उत्साहवर्धक नाद। रणनाद। उदा०—नारद कब बदूक चलाया व्यासदेव कब बंब बजाया।—कबीर। ३ बहुत जोर का शब्द।

क्रि० प्र०—देना।—बोलना।

४. घौसा। नगाड़ा। ५. सींग का बना हुआ तुरही की तरह का एक बाजा। ६. दे० 'बम'।

बंबई—स्त्री०[सं० वल्मीक] १ दीमकों की बाँबी। २ रहस्यवादी संतो की भाषा मे, देह। शरीर।

बंबा—पु०[अ० मंबा] १ स्रोत। सोता। २. उद्गम। ३. पानी की कल। पंप। ४ जल-कल। ५ पानी बहाने का नल। ६ कोई लंबोतरा गोल पात्र। जैसे—डाक की चिट्ठियाँ डालने का बंबा।

बंबाना—अ०[अनु०] गौ आदि पशुओं का बाँ बाँ शब्द करना। रँभाना।

बंबू—पु०[मलाया० बम्बू=बाँस] १ चंडू पीने की बाँस की नली। २ नली।

क्रि० प्र०—पीना।

बंबूकाट—पु०[मलाया बंबू+अ० कार्ट] एक प्रकार की टाँगे की तरह की सवारी। (पश्चिम)

बँबूर—पु०=बबूल।

बंभ†—पु०=ब्रह्म।

बँभनाई—स्त्री०[सं० ब्राह्मण] १ ब्राह्मणत्व। ब्राह्मणपन। २ ब्राह्मणों की यजमानी पोती। ३. दुराग्रह। ४ जिद। हठ।

बंस—पु०=वंश।

बंसकपूर—पु० बंस-लोचन।

बंसकार*—पु०[सं० वंश] बाँसुरी।

बँसगर—पु०[हिं० बाँस+फा० गर (प्रत्य०)] बाँस की चटाइयाँ, टोकरियाँ आदि बनानेवाला व्यक्ति।

वि०[सं० वंश] अच्छे वंशवाला। कुलीन।

बँस-दिया—पु० [हिं० बाँस+दिया] गाड़े हुए बाँस के ऊपरी सिरे पर लटकाया जानेवाला दीया। विशेष दे० 'आकाश दीप'।

बंसमुरगी—स्त्री० [हिं० बाँस+मुरगी] एक प्रकार की चिड़िया जो तालों के किनारे तथा घनी झाड़ियों के आस-पास प्राय: रहती है। इसे दहक भी कहते है।

बंसरी*—स्त्री०=बाँसुरी।

बँसली—स्त्री०=बाँसुरी।

बंस-लोचन—पु०=वंशलोचन।

बँसवाड़ा—पु० [हिं० बाँस+वाड़ा (प्रत्य०)] [स्त्री० अल्पा० बँसवाड़ी] १ वह बाजार या मुहल्ला जहाँ बाँस बेचनेवालों की बहुत सी दुकानें या घर हों। २ एक जगह उगे हुए बाँसों का समूह। कोठी।

बँसवार†—पु०[स्त्री० अल्पा० बँसवारी] बँसवाड़ा।

बँसहटा—पु०[हिं० बाँस] [स्त्री० अल्पा० बँसहटी] वह चारपाई जिसमें पाटी की जगह बाँस लगे हुए हों।

बंसार—पु०[देश०] बगसार। (लश्करी)

बंसी—स्त्री०[सं० वंशी] १ बाँसुरी। बंशी। २ देवताओं के चरणों मे मानी जानेवाली एक प्रकार की रेखा जो बाँसुरी के आकार की होती है। ३ लाक्षणिक अर्थ मे कोई ऐसी चीज या बात जिससे किसी को फँसाया जाता हो। ४ धान के खेतों में होनेवाली एक प्रकार की घास। बाँसी। ५. एक प्रकार का गेहूँ। ६. तीस परमाणुओं की एक तौल। त्रसरेणु।

स्त्री०[सं० बडिशी] मछली फँसाने की कँटिया।

बंसीधर—पु०=वंशीधर (श्रीकृष्ण)।

बँसुला, बँसूला—पु०=बसूला।

बँसोर—पु०[हिं० बाँस] बाँस की चटाइयाँ, टोकरियाँ आदि बनानेवाली एक जाति।

बँहगी—स्त्री०[सं० वह] भार ढोने का एक प्रकार का उपकरण जिसमे एक लंबे बाँस के टुकड़े के दोनों सिरों पर रस्सियों के बड़े-बड़े छींके या दौरे लटका दिये जाते है और जिनमे बोझ रखा जाता है।

क्रि० प्र०—उठाना।—ढोना।

बँहरखा†—पु० [हिं० बाँह] बाँह पर पहनने का एक गहना।

बँहिया—स्त्री० १=बाँह। २=बँहगी।

बँहूटा, बँहूँटा†—पु०[हिं० बाँह] बाँह पर पहनने का एक प्रकार का गहना।

बँहोल (ी)—स्त्री०[हिं० बाँह] आस्तीन।

बँहोलनी, बँहोली†—स्त्री०=बँहोल।

बइठना†—अ०=बैठना।

बइर*—पु० १=बैर। २=बेर (पेड़ या फल)।

वि०=बधिर (बहरा)।

बउर†—पु० १ दे० 'बौर'। २ दे० 'मौर'।

बउरा†—वि०=बावला।

बउराना—अ०, स०=बौराना।

बक—पु०[सं०√वक् (टेढ़ा होना),+अच्, पृषो० सिद्धि] १ बगला। २ एक प्राचीन ऋषि। ३ अगस्त्य नामक वृक्ष और उसका फूल। ४. कुबेर। ५. एक राक्षस जिसे भीम ने मारा था। ६ एक राक्षस जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था।

वि० बगले की तरह सफेद।

स्त्री०[हिं० बकना] १ बकने की क्रिया या भाव। २. बकवाद।

क्रि० प्र०—लगाना।

पद—बक बक या बक झक—(क) बकवाद। प्रलाप। व्यर्थवाद। (ख) कहा-सुनी।

३. मुँह से निलकनेवाली बात। वचन।

बकचंदन—पु०[देश०] एक वृक्ष का नाम जिसकी पत्तियाँ गोल और बड़ी होती है। भकचदन।

बक-चक—स्त्री०[अनु०] मध्य युग का एक प्रकार का हथियार।

बकचन—पु०=बक-चदन।

†स्त्री०=बकुचन।

बकचर—वि०[सं० बक√चर् (गति)+ट] ढोंगी।

बकचा—पु०=बकुचा।

बक-चिंचिका—स्त्री०[सं०] कौआ नाम की मछली।

बकची—स्त्री० बकुची।

बकचुन—स्त्री०=बकुचन।

बकजित—पु० [सं० बक√जि (जीतना)+क्विप्, तुक्, उप० स०] १ भीम। २ श्रीकृष्ण।

बकठाना—अ०[सं० विकुंठन] बहुत कसैली चीज खाने से जीभ का कुछ ऐंठना या सिकुड़ना।

बकतर—पु०[फा० बक्तर] [स्त्री० अल्पा० बकतरी] मध्य-युग में युद्ध

के समय पहना जानेवाला एक तरह का अँगरखा जिसमे आगे और पीछे दो-दो तवे लगे रहते थे। चार-आईना। सन्नाह। (जिरह से भिन्न)

बकतर-पोश—पु० [फा० बक्तर+पोश] वह योद्धा जो बकतर पहने हो।

बकता†—पु०=वक्ता।

पु०=बखता।

बकतार†—पु०=वक्ता।

बकतिया—स्त्री०[देश०] एक प्रकार की छोटी मछली।

ब-कदर—क्रि० वि० [फा० ब+अ० कद्र] १ अमुक दर, मान या हिसाब से। २ अनुसार।

बक-ध्यान—पु० [स० ष० त०] कोई दुष्ट उद्देश्य सिद्ध करने के लिए उसी प्रकार भोले-भाले या सीधे-सादे बनकर विचार करते रहना जिस प्रकार बगला जलाशयो मे से मछलियाँ पकडकर खाने के लिए चुपचाप खडा रहता है। बनावटी साधु-भाव।

क्रि० प्र०—लगाना।

बक-ध्यानी (निन्)—वि० [हिं० बकध्यान+इनि] बक-ध्यान लगानेवाला।

बकना—स० [स० वचन] १ उटपटाँग या व्यर्थ की बहुत-सी बातें कहना। व्यर्थ बहुत बोलना।

पद—**बकना-झकना**=क्रोध मे आकर बिगडते हुए बहुत-सी खरी खोटी बातें कहना।

२ निरर्थक बातों या शब्दो का उच्चारण करना। प्रलाप करना। बडबडाना। ३ विवश होकर अपने अपराध या दोष के सम्बन्ध की सब बातें बतलाना।

बक-निषूदन—पु० [स० ष० त०] १ भीम। २. श्रीकृष्ण।

बक-पंचक—पु० [स० ब० स०,+कप्] कातिक महीने मे शुक्लपक्ष की एकादशी से पूर्णिमा तक के पाँच दिन जिनमें मांस, मछली आदि खाना बिलकुल मना है।

बकम—पुं०=बक्कम।

बकमौन—पु०[स० ष० त०]अपने दुष्ट उद्देश्य की सिद्धि के निमित्त बगुले की भाँति मौन तथा शांत बनकर चुपचाप रहने की क्रिया, भाव या मुद्रा।

वि० जो उक्त उद्देश्य तथा प्रकार से बिलकुल चुप या मौन हो।

बक-यंत्र—पु०[स० उपमि० स०] वैद्यक मे औषधों का सार निकालने के लिए एक प्रकार का यत्र, जो काँच की शीशी के आकार का होता है।

बकर—पु०[अ० बक़र] गाय या बैल।

बकर-ईद—स्त्री०=बकरीद।

बकर-कसाव—पु० [हिं० बकरी+अ० कस्साव=कसाई] [स्त्री० बकर-कसायिन] बकरों का मांस बेचनेवाला पुरुष। कसाई।

बकरना—स०[हिं० बकार अथवा बकना] १. आप से आप बकना। बड़बडाना। २ अपने अपराध या दोष की बातें विवश होकर कहना।

बकरम—पु० [अ० बक्रम] गोंद आदि लगाकर कड़ा किया हुआ वह करारा कपडा जो पहनने के कपडों के कालर, आस्तीन आदि में कड़ाई लाने के लिए अन्दर लगाया जाता है।

बकरवाना—स०[हिं० बकरना का प्रेर०]किसी को बकरने में प्रवृत्त करना।

बकरा—पुं० [सं० बर्कर] [स्त्री० बकरी] एक प्रसिद्ध नर पशु जिसके सींग तिकोने, गठीले और ऐंठनदार तथा पीठ की ओर झुके हुए होते हैं। पूँछ छोटी होती है और शरीर से एक प्रकार की गंध आती है। अज। छाग।

बकराना—स०=बकरवाना।

बकल†—पु०=बकला।

बकलस—पु०=बकसुआ।

बकला—पु०[सं० वल्कल] [स्त्री० अल्पा० बकली] १. पेड़ की छाल। २. फल के ऊपर का छिलका।

बकली—स्त्री० [देश०] एक प्रकार का बड़ा और सुन्दर वृक्ष जिसे धावा, धव आदि भी कहते हैं।

बकवती—स्त्री० [स० वक+मतुप्, ङीप्+वकवती] एक प्राचीन नदी।

बकवाद—स्त्री० [हिं० बक+वाद] लबी-चौड़ी, बेसिर-पैर की तथा बिना मतलब की कही जानेवाली बातें।

क्रि० प्र०—करना।

बकवादी—वि०[हिं० बकवाद+ई (प्रत्य०)] १ (व्यक्ति) जो बकवाद करता हो। २. बहुत अधिक बातें करने वाला। जो प्रकृतिश: प्राय बातें करता रहता हो। ३ बकवाद सबधी या बकवाद के रूप मे होनेवाला।

बकवाना—स०[हिं० बकना का प्रे०] १. किसी को बकने या बकवाद करने मे प्रवृत्त करना। २. किसी से कोई बात कहलवा लेना। कहने में विवश करना।

बकवास—स्त्री०[हिं० बकना+वास(प्रत्य०)] १. बकवाद। २ बकवाद या बक-बक करने की प्रवृत्ति या शौक।

क्रि० प्र०—लगना।

बकवासी—वि०=बकवादी।

बक-वृत्ति—स्त्री०[सं० ष० त०] बकों या बगलो (पक्षियो) की-सी वह वृत्ति जिसमें वह ऊपर से देखने पर तो बहुत भोला-भाला या सीधा-सादा बना रहता है, पर अन्दर ही अन्दर अनेक प्रकार के छल-कपट की बातें सोचता रहता है।

वि० [ष० त०] (व्यक्ति) जिसकी मनोवृत्ति उक्त प्रकार की हो। बक-ध्यानी।

बकव्रती (तिन्)—वि०[स० बक-व्रत, ष० त०,+इनि] बक वृत्तिवाला। कपटी।

बकस—पु० [अ० बाक्स]१. लकड़ी, लोहे आदि का बना हुआ एक तरह का ढक्कनदार चौकोर आधान जिसमे वस्त्र आदि सुरक्षा की दृष्टि से रखे जाते हैं। संदूक। २. गहने, घड़ियाँ आदि रखने का खाना।

बकसना—स० [फा० बख्श+हिं० ना(प्रत्य०)] १ उदारतापूर्वक किसी को कुछ दान देना। २ अपराधी या दोषी को दण्डित न करके उसे क्षमा करना। माफ करना। ३ दयापूर्वक छोड़ देना या जाने देना।

बकसवाना—स०=बखशवाना।

बकसा—पु०[देश०] जलाशयों के किनारे होनेवाली एक तरह की घास।

†पुं०=बकस (संदूक)।

बकसाना—स० [हिं० 'बकसना' का प्रे० रूप] क्षमा या माफ कराना। बखशवाना।

बकसी† —पु०=बख्शी।

बकसीला—वि० [हिं० बकठाना] [स्त्री० बकसीली] जिसके खाने में मुँह का स्वाद बिगड़ जाय और जीभ ऐंठने लगे। बकबका।

बकसीस—स्त्री० [फा० बख्शिश] १. दान। २. इनाम। पुरस्कार। ३. शुभ अवसरों पर गरीबों तथा सेवकों को दिया जानेवाला दान।

बकसुआ†—पुं० [अ० बकल] पीतल, लोहे आदि का एक तरह का चौकोर छल्ला जिससे तस्में, फीते आदि बाँधे जाते हैं।

बका—स्त्री० [अ० बक़ा] १. नित्यता। २ अनश्वरता। ३ अस्तित्व में बने रहना। ४. जीवन।

बकाइन†—पुं०=बकायन (वृक्ष)।

बकाउ†—स्त्री०=बकावली।

बकाउर†—स्त्री०=बकावली।

बकाना—स० [हिं० बकना का प्रे० रूप] १. किसी को बकने में प्रवृत्त करना। २ किसी को दबाकर उसके मन की छिपी हुई बात कहलाना।

बकायन—पु० [हिं० बडका+नीम ?] नीम की जाति का एक पेड़ जिसकी पत्तियाँ नीम की पत्तियों के समान तथा कुछ बडी और दुर्गन्ध-युक्त होती हैं। महानिंब।

बकाया—वि० [अ० बकाय.] बाकी बचा हुआ। अवशिष्ट। शेष। पु० १. वह धन जो किसी की ओर निकल रहा हो। ऐसा धन जिसका भुगतान अभी होने को हो। २. बचा हुआ धन। बचत। ३. किसी काम या बात का वह अंश जिसका अभी सपादन होना शेष हो।

बकारि—पु० [स० बक-अरि, ष० त०] बकासुर के शत्रु अर्थात् श्रीकृष्ण।

बकारी—स्त्री० [स० वकार या वाक्य] वह शब्द जो मुँह से प्रस्फुटित हो। मुँह से निकलनेवाला शब्द ।
क्रि० प्र०—निकलना।—फूटना।
†स्त्री०=बिकारी।

बकावर†—स्त्री०=बकावली।

बकावली—स्त्री० [स० बक-आवली ष० त०] १. बगलों की पंक्ति। बक-समूह। २. दे० 'गुल-बकावली' (पौधा और फूल)।

बकासुर—पुं० [स० बक-असुर, मध्य० स०] एक दैत्य जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था।

बकिनव†—पु०=बकायन (वृक्ष)।

बकिया—वि० [अ० बकिय:] बाकी बचा हुआ। अवशिष्ट।

बकी—स्त्री० [सं० बक+ङीष्] बकासुर की बहिन पूतना नामक राक्षसी।

बकुचन*—स्त्री० [?] १. हाथ जोडना। २. मुट्ठी या पंजे मे पकड़ना।

बकुचना—अ० [सं० विकुचन] सिमटना। सिकुडना। संकुचित होना।

बकुचा—पुं० [हिं० बकुचना] [स्त्री० बकुची] १. छोटी गठरी। बकचा। २. ढेर। ३. गुच्छा। ४. जुड़ा हुआ हाथ।

बकुचाना—स० [हिं० वकुचा] किसी वस्तु को वकुचे में बाँधकर कधे पर लटकाना या पीछे पीठ पर बाँधना।

बकुची—स्त्री० [सं० वाकुची] एक प्रकार का पौधा जो हाथ सवा हाथ ऊँचा होता है। इसके कई अंग ओषधि के काम में आते हैं।
†स्त्री० हिं० 'बकुचा' (गठरी) का स्त्री० अल्पा०।

बकुचौहाँ—अव्य० [हिं० बकुचा+औहाँ (प्रत्य०)] [स्त्री० बकुचौही] बकुचे की भाँति। बकुचे के समान।
वि० जो बकुचे या गठरी के रूप में हो।

बकुर—पुं० [स० भास्कर या भयकर पृषो० सिद्धि] १. भास्कर। सूर्य। २. बिजली। विद्युत। ३ तुरही।
†पु०=बक्कुर।

बकुरना—अ०=बकरना।

बकुराना—स० [हिं० बकुरना का प्रे० रूप] अपराध या दोष कबूल कराना या मुँह से कहलाना।

बकुल—पु० [स०√बक्+उरच्, र—ल] १ मौलसिरी। २ शिव। ३ एक प्राचीन देश।
वि० [स्त्री० बकुली]=वक्र (टेढा)।

बकुलटर—पु० [हिं० बकुला+टरर अनु०] पानी के किनारे रहनेवाली एक प्रकार की चिड़िया जिसका रंग सफेद होता है और जो दो-तीन हाथ ऊँची होती है।

बकुला†—पु०=बगला।

बकुली†—स्त्री० हिं० बक (बगला) की मादा। उदा०—बकुली तेहि जल हस कहावा।—जायसी।

बकूल—पु०=वकुल।

बकेन—स्त्री० [स० वष्कयणी] ऐसी गाय या भैंस, जिसे ब्याये ५-६ महीने से ऊपर हो चुका हो, और जो बराबर दूध देती हो। दे० 'लवाई' का विपर्याय।

बकेना†—स्त्री०=बकेन।

बकेरुका—स्त्री० [स० बक (टेढा)+ड+एरुक्+कन्,+टाप्,.] १ छोटी बकी। २ हवा से झुकी हुई वृक्ष की शाखा।

बकेल—स्त्री० [हिं० बकला] पलाश की जड जिसे कूटकर रस्सी बनाते हैं।

बकैयाँ—स्त्री० [स० बक+ऐयाँ (प्रत्य०)] छोटे बच्चो का घुटनों के बल चलने की क्रिया।

बकोट—स्त्री० [स० प्रकोष्ठ वा अभिकोष्ठ, पा० पक्कोष्ठ] १ बकोटने की क्रिया या भाव। २ बकोटने के फल-स्वरूप पडा हुआ चिह्न। ३ बकोटने के लिए बनाई हुई उँगलियों और हथेली की मुद्रा। ४. किसी पदार्थ की उतनी मात्रा जितनी उक्त मुद्रा में समाती हो। चंगुल। जैसे—एक बकोट चना इसे दे दो।

बकोटना—स० [वि० बकोट+ना (प्रत्य०)] १ नाखूनो से कोई चीज विशेषत. शरीर की त्वचा या मांस नोचना। २. लाक्षणिक रूप में कोई चीज किसी से बलपूर्वक लेना या वसूल करना। उदा०—ये चदा बकोटनेवाले फिर जेल से बाहर आ गये।—वृन्दावनलाल वर्मा।

बकोटा—पु० [हिं० बकोटना] १ बकोटने की क्रिया या भाव। २. बकोटने से पडनेवाला चिह्न या निशान। ३. उतनी मात्रा जितनी चंगुल या मुट्ठी मे आ जाय।

बकोरी—स्त्री० =गुलबकावली।

बकौंड़ा—पु० [हिं० बक्कल] पलाश के पेड़ की जड़ों का कूटा हुआ वह रूप जिसे बटकर रस्सी बनाई जाती है।

पु०—बकौरा।

बकौरा—पु० [हि० बाँका] [स्त्री० अल्पा० बकौरी] वह टेढ़ी लकड़ी जो बैलगाड़ी के दोनों ओर पहिए के ऊपर लगाई जाती है। पैंगनी। पंजनी।

पु० बकौड़ा।

बकौरी—स्त्री० गुल-बकावली। उदा०—कोइ बोल सिरि पुहुप बकौरी।—जायसी।

बकौल—अव्य० [अ० बकौल] (किसी के) कथनानुसार। जैसे—बकौले शख्से किसी व्यक्ति के कथनानुसार।

बक्कम—पु० [अ० बकम] एक प्रकार का वृक्ष जो मद्रास, मध्यप्रदेश, तथा बर्मा में अधिक होता है। यह आकार में छोटा और कँटीला होता है। पतग।

बक्कल—पु० [सं० वल्कल, पा० वक्कल] १ छिलका। २ छाल।

बक्का—पु० [देश०] [स्त्री० अल्पा० बक्की] धान की फसल में लगनेवाले एक तरह के सफेद या खाकी रंग के छोटे छोटे कीड़े।

बक्काल—पु० [अ० बक्काल] १ सब्जी बेचनेवाला व्यक्ति। कुँजड़ा। २ बनिया। वणिक्। ३ परचूनिया।

बक्की—वि० [हि० बकना] बकवाद करनेवाला। बकवादी।

स्त्री० [देश०] भादों में पककर तैयार होनेवाला एक तरह का धान।

बक्कुर—पु० [सं० वाक्य] मुँह से निकला हुआ शब्द। बोल। वचन।

क्रि० प्र०—निकलना।—फूटना।

पु०—बक्कर।

बक्खर—पु० [देश०] १ कई प्रकार के पौधों की पत्तियाँ और जड़ों आदि को कूटकर तैयार किया हुआ वह खमीर जो दूसरे पदार्थों में खमीर उठाने के लिए डाला जाता है। २ वह स्थान जहाँ पर गाय-बैल बाँधे जाते हैं।

पु० बखार। (तृण)।

बक्षोज*—पु० वक्षोज (स्तन)।

बक्स—पु० बकस।

बखत—पु० १ वक्त (समय)। २ बख्त (भाग्य)।

बखतर—पु० बकतर।

बखता—पु० [?] भुना हुआ चना जिसका ऊपरी छिलका उतारा जा चुका हो।

बखर—पु० [?] खेत जोतने के उपकरण।

पु० बखार।

बखरा—पु० [फा० बखर] १ भाग। हिस्सा। २ किसी चीज या चीजों का कई अंशों में होनेवाला वह विभाजन जो अलग-अलग हिस्सेदारों को मिलता है।

पु० बखार।

बखरी—स्त्री० [हि० बखार का स्त्री अल्पा०] गाँव में, वह मकान जो साधारण घरों की अपेक्षा बड़ा तथा बढ़िया हो।

बखरैत—वि० [हि० बखरा+ऐत (प्रत्य०)] बखरा या हिस्सा बटानेवाला। हिस्सेदार। साझीदार।

बखसना—अ० बख्शना (क्षमा करना)।

बखसीस—स्त्री० बकसीस।

बखसीसना—स० [फा० बखशिश] बखशिश के रूप में देना। प्रदान करना।

बखान—पु० [सं० व्याख्यान, पा० वक्खान] १ बखानने की क्रिया या भाव। २ बखान कर कही जानेवाली बात। ३ विस्तारपूर्वक किया जानेवाला वर्णन। ४ तारीफ। प्रशंसा।

बखानना—स० [हिं० बखान+ना (प्रत्य०)] १ विस्तारपूर्वक कहना या वर्णन करना। २ तारीफ या प्रशंसा करना। ३. विस्तारपूर्वक तथा गालियाँ देते हुए किसी के दुर्गुणों, दोषों आदि का उल्लेख करना। ४ गालियाँ देते हुए किसी का उल्लेख करना। जैसे—किसी का बाप-दादा बखानना।

बखार—पु० [सं० आकार] [स्त्री० अल्पा० बखारी] १ दीवार या टट्टी आदि से घेरकर बनाया हुआ गोल और विस्तृत घेरा जिसमें गाँवों में अन्न रखा जाता है। २ वह स्थान जहाँ किसी चीज की प्रचुरता हो।

बखारी—स्त्री० [हि० बखार] छोटा बखार।

बखिया—पु० [फा० बखिय] एक प्रकार की महीन और मजबूत सिलाई, जिसमें दोहरे टाँके लगाये जाते हैं।

क्रि० प्र०—उधड़ना।—उधेड़ना।—करना।

मुहा०—बखिया उधेड़ना—भेद खोलना। भंडा फोड़ना।

२ जमा। पूँजी। ३ योग्यता। ४ शक्ति। सामर्थ्य। ५ गति। पहुँच।

बखियाना—स० [हिं० बखिया] बखिया (सिलाई) करना।

बखीर—स्त्री० [हि० खीर का अनु०] गन्ने के रस में चावल पकाकर बनाई जानेवाली एक तरह की खीर।

बखील—वि० [अ० बखील] [भाव० बखीली] कृपण। कंजूस। सूम।

बखीली—स्त्री० [अ० बखीली] कंजूसी। कृपणता।

बखूबी—अव्य० [फा०] १ खूबी के साथ। भली भाँति। अच्छी तरह से। २ पूरी तरह से या पूर्ण रूप से।

बखेड़ा—पु० [हिं० बिखरना] १ किसी चीज के इस प्रकार बिखरे हुए होने की स्थिति कि उसे इकट्ठा करने तथा सँवारने में अधिक परिश्रम तथा समय अपेक्षित हो। २ व्यर्थ का विस्तार। आडंबर। ३ कोई उलझनवाला और बहुत कठिन काम जिसे सरलता से सुलझाया और संपन्न न किया जा सकता हो। ४ कोई सांसारिक क्रिया कलाप। ५ झगड़ा। विवाद।

बखेड़िया—वि० [हि० बखेड़ा+इया (प्रत्य०)] बखेड़ा करनेवाला। बखेड़ा अर्थात् विवाद करनेवाला। बहुत अधिक झगड़ालू।

बखेरना—स०—बिखेरना।

बखेरी—स्त्री० [देश०] छोटे कद का एक प्रकार का कँटीला वृक्ष जिसके फलों से चमड़ा रंगा तथा सिझाया जाता है। इसे कुती भी कहते हैं।

बखोरना—स० [हि० खोर+गली] सीधे रास्ते से छुड़ा या बहकाकर किसी और रास्ते पर ले जाना। बहकाकर इधर-उधर ले जाना। उदा०—साकरि खोरि बखोरि हमें किन खोरि लगाय खिसैबौ करौ कोइ।—देव।

बख्त—पु० [फा० बख्त] किस्मत। भाग्य।

पद—बख्तो-जला—बहुत बड़ा अभागा।

पु० =वक्त (समय)।

बख्तर—पु०=बकतर।

बख्तावर—वि० [फा० बख्तावर] [भाव० बख्तावरी] १ सौभाग्य-शाली। २ धनी। सम्पन्न।

बख्श—वि० [फा० बख्श] १ समस्त पदो के अन्त में, देने या प्रदान करनेवाला। जैसे—जाँ-बख्श=जीवन देनेवाला। २ बख्शने अर्थात् क्षमा करनेवाला। जैसे—खता-बख्श अपराध क्षमा करनेवाला। ३ नामो के अन्त मे बख्शिश, देन, प्रसाद। जैसे—करीम-बख्श, मौला-बख्श।

बख्शना—स० [फा० बख्श] १. प्रदान करना। देना। २ क्षमा करना। ३ दयापूर्वक छोड देना या जाने देना।

बख्शनामा—पु०=बख्शिशनामा।

बख्शवाना—स० [हि० बख्शना का प्रे० रूप] किसी को कोई चीज बखसीस रूप मे देने अथवा किसी अपराधी को क्षमा करने मे प्रवृत्त करना।

बख्शाना—स० बख्शवाना।

बख्शिश—स्त्री० [फा० बख्शिश] १ दानशीलता। २ दान। ३ इनाम। पुरस्कार। ४ क्षमा।

बख्शिशनामा—पु० [फा० बख्शिशनाम] वह पत्र जिसके अनुसार कोई सम्पत्ति बख्शी या प्रदान की गई हो। दान-पत्र।

बख्शी—पु० [फा०] १ मध्य-युग मे सैनिको को तनख्वाह बाँटनेवाला एक कर्मचारी। २. खजाची। ३ गाव, देहातो मे कर वसूल करने-वाला अधिकारी।

बख्शीश—स्त्री०=बख्शिश।

बग—पु०=बगला।

स्त्री० हि० बाग (लगाम) का सक्षिप्त रूप। जैसे—बगछुट, बग-मेल।

बगई† —स्त्री० [देश०] १ एक प्रकार की मक्खी जो कुत्तों पर बहुत बैठती है। कुकुरमाछी। २ पतली और लबी पत्तियोवाली एक प्रकार की घास, जिससे डोरियाँ बटी जाती है।

बगछुट—वि० [हि० बाग+छुटना] १ (घोडा) जिसकी बाग या लगाम छोड दी गई हो और इसी लिए जो बहुत तेजी से दौडा जा रहा हो।

अव्य० इस रूप मे दौडना या भागना कि मानो कोई नियत्रण न रह गया हो। बे-तहाशा। सरपट।

बगटुट—वि०, अव्य०=बगछुट।

बगड़—पु० [?] बाडा। घेरा।

†पु० बागड। (राज०)

†स्त्री० बगल।

बगड़ा† —पु० [?] गौरैया (चिडिया)।

बगतर† —पु०=बकतर।

बगदना—अ० [स० विकृत, हि० बिगडना] १ बिगडना। खराब होना। २ रास्ता भूलकर कही से कही चले जाना। भटकना। ३ कर्तव्य, सुमार्ग आदि से च्युत होना।

बगदर†—पु० [देश०] मच्छर।

बगदवाना—स० [हि० बगदाना का प्रे० रूप] किसी को बगदाने मे प्रवृत्त करना।

बगदहा† —वि० [हि० बगदना+हा (प्रत्य०)] [स्त्री० बगदही] १ बिगड़नेवाला। २ (पशु) जो गुस्से मे आकर जल्दी बिगड खडा होता हो। ३ लडनेवाला।

बगदाद—पु० [फा० बगदाद] इराक नामक राज्य की राजधानी।

बगदाना—स० [हि० बगदना] १ नष्ट या बरबाद करना। २ भ्रम मे डालकर भटकाना। ३ गिराना। लुढकाना। ३ कर्तव्य, प्रतिज्ञा आदि से च्युत कराना।

बगना† —अ० [स० वल्गन] १ घूमना-फिरना। २ गमन करना। जाना। ३ दौडना। ४ भागना।

बगनी† —स्त्री० [?] १ एक प्रकार का टोटीदार लोटा।

स्त्री०=बगई (घास)।

बगबगाना—अ० [अनु०] ऊँट का काम-वासना से मत्त होना।

बग-मेल—पु० [हि० बाग+मेल] १ दूसरे के घोडे के साथ बाग मिला-कर चलना। एक पक्ति मे या बराबर-बराबर चलना। २ घुड-सवारों की पक्ति या सतर। ३ यात्रा, युद्ध आदि मे होनेवाला सग-साथ। ४ बराबरी। समानता।

क्रि० वि० १ घोडो के सवारो के सबध में, बाग मिलाये हुए और साथ साथ। २. बराबर साथ रहते हुए।

बगर—पु० [स० प्रघण, प्रा० पघण] १ महल। प्रासाद। २. घर। मकान। ३ कमरा। कोठरी। ४ आँगन। सहन। ५ गौए-भैसे आदि बाँधने का स्थान।

† स्त्री०=बगल।

बगरना†—अ० [स० विकिरण] फैलना। बिखरना। छितराना।

बगरवाना—स० [हि० बगराना का प्रे० रूप] किसी को कुछ बगराने अर्थात् बिखेरने मे प्रवृत्त करना।

बगरा—पु० [देश०] एक प्रकार की छोटी मछली जो जमीन पर उछ-लती हुई चलती है। इसे धुमा भी कहते है।

बगराना—स० [हि० बगरना का स० रूप] बिखेरना। छितराना।

अ० बिखरना।

बगरिया† — स्त्री० [देश०] गुजरात राज्य के कच्छ-काठियावाड आदि प्रदेशो मे होनेवाली एक तरह की कपास।

बगरी† —पु० [हि० बगर का स्त्री० रूप] १ छोटा महल। २ मकान। बखरी। ३ गौएँ, भैसे आदि बाँधने का छोटा बाडा।

पु० [देश०] एक प्रकार का धान।

बगल—स्त्री० [फा० बगल] १ बाहु-मूल के नीचे का गड्ढा। काँख।

पद—बगल-गध। (देखे)

मुहा०—बगलें बजाना बहुत प्रसन्नता प्रकट करना। खूब खुशी मनाना।

विशेष—प्राय लड़के बहुत प्रसन्न होने पर बगल मे हथेली रखकर उसे जोर से बाँह से दबाते हैं जिससे विलक्षण शब्द होता है। उसी के आधार पर यह मुहा० बना है।

२. छाती के दोनो किनारो का वह भाग जो बाँह गिराने पर उसके नीचे पड़ता है। पार्श्व।

पद—बगल-बदी। (देखें)

मुहा०—(किसी की) बगल गरम करना=सहवास या संभोग करना। बगल में दाबना या लेना=(क) कोई चीज उठाकर ले चलने के लिए उसे बगल मे रखना तथा भुजा से अच्छी तरह दबाकर थामे रखना। जैसे—गठरी बगल मे दबाकर चल पडना। (ख) अपने अधिकार मे करना। उदा०—लै गै अनूप रूप-सपत्ति बगल में दाबि उचिके अचान कुच कचन पहार से।—देव। बगलें झांकना=निरुत्तर या लज्जित होने पर यह समझने के लिए इधर-उधर देखना कि अब क्या करना या कहना चाहिए।

३ कपडे का वह टुकडा जो अंगरखे, कुरते आदि की आस्तीन मे बगल के नीचे पडनेवाले अश मे लगाया जाता है। ४ वह जो किसी की दाहिनी या बाईं ओर स्थित या प्रतिष्ठित हो। जैसे—(क) सभापति की बगल मे अतिथि विराजमान थे। (ख) उनकी दूकान की बगल मे पान की एक दूकान है। ५. समीप का स्थान। पास की जगह। जैसे—सडक के बगल मे ही एक नया मकान बना है।

पद—बगल में=(क) पास मे। (ख) एक ओर। जैसे—बगल में हो जाओ।

बगल गंध—स्त्री० [हि० बगल+गध] १. बगल या काँख मे होनेवाला एक प्रकार का फोडा। कँखवार। कँखौरी। २ एक प्रकार का रोग जिसमे बगल या काँख मे से बहुत बदबूदार पसीना निकलता है।

बगलगीर—वि० [अ० बगल+फा० गीर] [भाव० बगलगीरी] १. जो बगल या पास मे स्थित हो। जिसे बगल मे सटाकर बैठाया गया हो। पार्श्ववर्ती। २ जो गले मिला हो अथवा जिसे गले मे लगाया गया हो। आलिंगित।

मुहा०—बगलगीर होना=आलिंगन करना।

बगलबंदी—स्त्री० [हि० बगल+बद] एक प्रकार की मिरजई जिसमे बगल मे बन्द बाँधे जाते हैं।

बगला—पु० [हि० बक+ला (प्रत्य०)] [स्त्री० बगली] १ सारस की जाति का सफेद रग का एक पक्षी जिसकी टाँगे, चोंच और गला लबा और पूंछ बहुत छोटी होती है।

पद—बगला-भगत। (देखें)

२ रहस्य सप्रदाय मे, मन।

पु० [हि० बगल] थाली की बाढ। अँवठ।

पु० [देश०] एक प्रकार का झाडीदार पौधा।

बगला भगत—पु० [हि०] वह जो देखने मे बहुत धार्मिक तथा सीधा-सादा जान पडता हो, पर वास्तव मे बहुत बडा कपटी या धूर्त्त हो।

बगलामुखी—स्त्री० [स०] तत्र के अनुसार एक देवी। कहते हैं कि इसकी आराधना करने से शत्रु की वाणी कुठित एव शेष इंद्रियाँ स्तभित हो जाती हैं।

बगलियाना—अ० [हि० बगल+इयाना (प्रत्य०)] बात-चीत या सामना न करते हुए बगल से होकर निकल जाना। कतराकर निकल जाना। स० १ बगल मे करना या लाना। २ बगल मे दबाना। ३ अलग करना या हटाना।

बगली—वि० [हि० बगल+ई (प्रत्य०)] १ बगल से सबध रखने-वाला। बगल का।

पद—बगली घूँसा। (देखें)

२. एक ओर का।

स्त्री० १ ऊँटो का एक दोष जिसमे चलते समय उनकी जाँघ की रग पेट मे लगती है। २ मुगदर चलाने का एक ढग। ३ वह थैली जिसमे दरजी सूई-तागा आदि रखते है। तिलेदानी। ४ दरवाजे की बगल मे लगाई जानेवाली सेंध।

क्रि० प्र०—काटना।—मारना।

५ अँगरखे की आस्तीन मे लगाया जानेवाला कपडे का वह टुकडा जो बगल के नीचे पड़ता है। बगल।

स्त्री० [हि० बगला] १ मादा बगला। २ बगले की जाति की एक छोटी चिडिया जो ढीठ होने के कारण मनुष्यो के इतने पास आ जाती है कि लोग इसे 'अंधी बगली' भी कहते है।

बगली घूँसा—पु० [हि०] १ वह घूँसा जो किसी की बगल मे अथवा किसी की बगल मे स्थित होकर लगाया जाय। २ वह वार जो आड़ मे रहकर अथवा छिपकर किया जाय। ३ वह वार जो साथी बनकर या साथी होने का ढोग रचकर किया जाय। ४ वह व्यक्ति जो धोखे से उक्त प्रकार का वार करता हो।

बगली टाँग—स्त्री० [हि० बगली+टाँग] कुश्ती का एक पेच।

बगली बाँह—स्त्री० [हि० बगली+बाँह] एक प्रकार की कसरत जिसमे दो आदमी बराबर खडे होकर अपनी बाँह से एक दूसरे की बाँह मे धक्का देते है।

बगलेंदी—स्त्री० [?] एक प्रकार की चिडिया।

बगलौहाँ†—वि० [हि० बगल+औहाँ] [स्त्री० बगलौही] बगल की ओर झुका हुआ। तिरछा।

बगसना†—स० =बख्शना। उदा०—होइ कृपाल हस्तिनी सग बगसी रुचि सुन्दर।—चदवरदायी।

बगा—पु० [स० वक] बगला।

†पु०=बागा (पहनने का)।

बगाना—स० [हि० बगना] घुमाना-फिराना। सैर कराना।

†स० [स० विकीरण] फैलाना। बिखेरना। उदा०—टूटि तार अगार बगावै।—नददास।

†स०=भगाना।

†अ०=भागना।

बगार†—पु० [देश०] गौओं के बाँधने का स्थान। गो-शाला।

बगारना†—स० [स० विकिरण, हि० बगरना] १ फैलाना। २ छितराना। बिखेरना।

स०=बगराना। उदा०—सब देसनि मैं निज प्रभात निज प्रकृति बगारति—रत्नाकर।

बगावत—स्त्री० [अ० बग़ावत] १ आज्ञा, आदेश आदि की की जानेवाली स्पष्ट अवज्ञा। २ विद्रोह। सैनिक विद्रोह अथवा युद्धात्मक भावना से युक्त विद्रोह।

बगितारा†—पु० [स० वक्तृ] १ जोर से की जानेवाली पुकार। २ बकबक। बकवाद।

बगिया—स्त्री० [हि० बाग+इया] छोटा बाग विशेषतः फुल-वारी।

बगीचा—पु० [फा० बाग़च:] [स्त्री० अल्पा० बगीची] १. छोटा बाग। २. फुलवारी।

बगुरवा—पु० [?] पुरानी चाल का एक अस्त्र।

बगुलपतोख—पु० [हिं० बगला+पतोख] एक प्रकार का जल-पक्षी।

बगुला—पु० १ =बगला। २. =बगूला।

बगुली†—स्त्री०=बगली (चिड़िया)।

बगूरा†—पु०=बगूला।

बगूला—पु० [हिं० बाउ (वायु)+गोला] तेज हवा की वह अवस्था जिसमे वह घेरा बाँधकर चक्कर लगाती हुई तथा ऊपर उठती हुई आगे बढ़ती है। चक्रवात। बवंडर।

बगेड़ी†—स्त्री०=बगेरी (चिड़िया)।

बगेदना*—स० [हिं० बगदना] १ धक्का देकर गिरा या हटा देना। २ विचलित करना।

बगेरी—स्त्री० [देश०] खाकी रंग की एक प्रकार की छोटी चिड़िया। बगौधा। भरुही।

बगैचा†—पु०=बगीचा।

बगैर—अव्य० [अ० बगैर] न होने की दशा मे। बिना। जैसे—आपके बगैर काम नहीं चलेगा।

बगौधा†—पु० [देश०] [स्त्री० बगौधी] बगेरी (चिड़िया)।

बग्गा-गोटी—स्त्री० [?] लड़को का एक प्रकार का खेल। उदा०—तीनो बग्गा-गोटी खेला करेंगे।—वृन्दावनलाल वर्मा।

बग्गी†—स्त्री०=बग्घी।

बग्घी—स्त्री० [अ० बोगी] चार पहियो की पाटनदार गाड़ी जिसे एक या दो घोड़े खींचते है।

बघंबर†—पु०=बाघंबर।

बघ—पु० [हिं० बाघ] हिन्दी 'बाघ' का सक्षिप्त रूप जो उसे समस्त पदो के आरभ मे लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—बघ-छाला, बघ-नखा।

बघ-छाला—स्त्री० [हिं० बाघ+छाला] बाघ की खाल। बाघबर।

बघनखा—पु० [हिं० बाघ+नखा (नखोंवाला)] [स्त्री० अल्पा० बघनखी] १ बाघ के नख के आकार-प्रकार के प्राचीन अस्त्र। शेर-पजा। २ गले मे पहनने का एक प्रकार का गहना जिसमे चाँदी या सोने के खड़ो मे बाघ के नाखून जड़े रहते हैं।

बघनहाँ*—पु०=बघनखा।

बघनहियाँ†—स्त्री० दे० 'बघनखा'।

बघना† —पु०=बघनहाँ।

बघबाव†—पु० [हिं० बाघ+वायु] बाघ या शेर के शरीर की दुर्गंध।

बघरूरा—पु० [हिं० वायु+गंडूरा] बगूला। चक्रवात। बवडर।

बघवार*—पु० [हिं० बाघ+बाल] बाघ की मूँछ का बाल।

बघार—पु० [हिं० बघारना] १. बघारने की क्रिया या भाव। २. वह मसाला जो बघारते समय घी मे डाला जाय। तड़का। छौंक।

क्रि० प्र०—देना।

३. बघारने से निकलनेवाली सोंधी गध।

क्रि० प्र०—आना।—उठना।—निकलना।

४. पाण्डित्य प्रदर्शन के लिए किसी विषय की की जानेवाली थोथी चर्चा। ५. शराब पीने के समय बीच-बीच मे तमाकू, बीड़ी आदि पीने की क्रिया। (व्यग्य)

बघारना—स० [स० व्याघारण] १. कलछी या चिम्मच मे घी को आग पर तपाकर और उसमे हीग, जीरा आदि सुगंधित मसाले छोड़कर उसे तरकारी, दाल आदि की बटलोई मे उसका मुँह ढाककर छोड़ना जिससे वह सुगंधित हो जाय। तड़का देना या लगाना। छौंकना। २ अपनी योग्यता, शक्ति का बिना उपयुक्त अवसर के ही आवश्यक से अधिक या निरर्थक प्रदर्शन करना। जैसे—अँगरेजी या संस्कृत बघारना। ३ डींग या शेखी के सबध मे, आतक जमाने के लिए, बढ़ा-चढ़ाकर चर्चा करना। जैसे—शेखी बघारना।

बघूरा† —पु०=बगूला।

बघेरा† —पुं० [हिं० बाघ] लकड़बग्घा।

बघेलखंड—पु० [हिं० बघेल (जाति)+खंड] [वि० बघेलखडी] आधुनिक मध्यप्रदेश के अन्तर्गत नागौद, रीवाँ, मैहर आदि भूभागो की सामूहिक सज्ञा।

बघेलखंडी—वि० [हिं० बघेलखड] बघेलखड का। बघेलखड-सबधी। पु० बघेलखड का रहनेवाला।

स्त्री० बघेलखड की बोली। बघेली। (देखें)

बघेली—स्त्री० [हिं० बघेलखड] बघेलखड की बोली जो पूर्वी हिन्दी के अन्तर्गत मानी गई है और अवधी से बहुत कुछ मिलती-जुलती है।

स्त्री० [हिं० बाघ+एली (प्रत्य०)] बरतन खरादनेवालो का वह खूँटा जिसका ऊपरी सिरा आगे की ओर कुछ बढ़ा होता है।

बघैरा† —पु० =बगेरी (चिड़िया)।

बच—स्त्री० [स० वचा] पर्वतीय प्रदेश के जलाशयों के तट पर होनेवाला एक प्रकार का पौधा जिसके अगों का उपयोग औषधो मे होता है।

†पु० [स० वच:] वचन। बात।

बचका† —पु०=बजका (पकवान)।

बचकाना—वि० [हिं० बच्चा+काना (प्रत्य०)] [स्त्री० अल्पा० बचकानी] १ बच्चों के पहनने या काम मे आनेवाला। जैसे—बचकानी टोपी। २ बच्चों की तरह छोटे आकार-प्रकार का। जैसे—बचकाना पेड़। ३. बच्चो के स्वभाव का। जैसे—बचकानी बुद्धि।

बचत—स्त्री० [हिं० बचना] १ बचे हुए होने की अवस्था या भाव। जैसे—इस तरह करने से काम मे समय की बहुत बचत होती है। २. व्यय आदि के बाद बच रहनेवाली धन-राशि। ३ लागत, व्यय आदि निकालने के बाद बचा हुआ धन। मुनाफा। लाभ। (सेविंग) ४ लाक्षणिक अर्थ मे, किसी प्रकार से होनेवाला छुटकारा या बचाव। जैसे—झूठ बोलने से तुम्हारी बचत नहीं हो सकेगी।

बचता† —पु० [हिं० बचना] [स्त्री० बचती] देन चुकाने, उपयोग, व्यय आदि करने के उपरात बचा हुआ धन।

बचन—पु० [स० वचन] १. मुँह से कही हुई बात। वचन। २. वाणी। ३ दृढ़ता, प्रतिज्ञा, शपथ आदि के रूप मे कही हुई ऐसी बात जिसमे कभी अन्तर न पड़े। प्रतिज्ञा। जैसे—हम तो अपने बचन से बँधे है।

क्रि० प्र०—छोड़ना।—तोड़ना।—देना।—निभाना।—पालना।—लेना।

मुहा०—बचन देना=दृढ़ प्रतिज्ञापूर्वक यह कहना कि हम तुम्हारा अमुक काम अवश्य कर देंगे। **(किसी से) बचन बँधाना**=दृढ़ प्रतिज्ञा कराना।

उदा०—नन्द जसोदा बचन बँधायो, ता कारण देही धरि आयो।—सूर। **बचन माँगना**=किसी से यह प्रार्थना करना कि आपने जो वचन दिया था, उसका पालन करें। **बचन हारना**=प्रतिज्ञापूर्वक किसी से कही हुई बात या किसी को दिए हुए वचन का पालन करने के लिए विवश होना।

४ किसी से निवेदन या प्रार्थनापूर्वक कही जानेवाली बात।

मुहा०—**(किसी के आगे) बचन डालना**=किसी काम या बात के लिए प्रार्थना या याचना करना।

बचन-विदग्धा—स्त्री०=वचन-विदग्धा।

बचना—अ० [सं० वचन=न पाना] १ उपयोग, कार्य, व्यय आदि हो चुकने के बाद भी कुछ अंश, पास या शेष रह जाना। अवशिष्ट होना। जैसे—(क) दस रुपयों में से तीन रुपए बचे हैं। (ख) दो कुरते बन जाने पर भी गज भर कपड़ा बचेगा। २ बंधन, विपद्, संकट आदि से किसी प्रकार अलग या दूर या सुरक्षित रहना। जैसे—वह गिरने से बाल बाल बच गया। ३ किसी कार्य में संलग्न न होना अथवा दूसरा द्वारा किए जानेवाले कार्यों के परिणाम, प्रतिक्रिया, प्रभाव आदि से अछूता रहना। जैसे—(क) किसी के आक्षेप से बचना। (ख) झूठ बोलने से बचना। ४ किसी का सामना करने या किसी के सम्पर्क में आने से घबराना या संकोच करना और सहसा उसका सामना न करना या उसके सम्पर्क में न आना। जैसे—वह तगादा करनेवालों से बचता फिरता है। ५ किसी गिनती, वर्ग, समाज आदि के अन्तर्गत न आना या न होना। छूट या रह जाना। जैसे—इनके व्यंग्य-बाणों से कोई बचा नहीं है।

†स० [सं० वचन] कथन करना। कहना।

बचपन—पुं० [हिं० बच्चा+पन (प्रत्य०)] १ 'बच्चा' (अल्प-वयस्क) होने की अवस्था या भाव। २ बाल्यावस्था। लड़कपन। ३ बालकों की तरह किया जानेवाला सयानों द्वारा कोई कार्य। बच-पना।

बचपना—पुं० [हिं० बचपन] १ बचपन। २ सयाने व्यक्तियों द्वारा किया जानेवाला कोई ऐसा अशोभनीय कार्य जो उनकी बुद्धि की अपरि-पक्वता का सूचक होता है।

बचवा†—पुं० [हिं० बच्चा] १ बालक। बच्चा। २ हाथ में पह-नने की अँगूठी में लगे हुए छोटे घुँघरू। उदा०—उँगली तेरी छल्ला सोभे, बचवे की बहार। (झूमर)

बचवैया—वि० [हिं० बचाना+वैया (प्रत्य०)] बचानेवाला। रक्षक।

बचा—पुं० [सं० वत्स, पा० वच्छ, हिं० वच्चा] [स्त्री० बच्ची] १ लड़का। बालक। २ एक प्रकार का तुच्छतासूचक संबोधन। जैसे—अच्छा बचा, तुमसे भी किसी दिन समझ लूँगा।

बचाना—स० [हिं० बचना का स०] १ ऐसी क्रिया करना जिससे कुछ या कोई बचे। २ उपयोग, व्यय आदि के उपरांत भी कुछ अव-शिष्ट रखना। जैसे—वह दो-चार रुपए रोज बचा लेता है। ३ किसी प्रकार के कष्ट, बंधन, संकट आदि से किसी प्रकार अलग करके मुक्त या सुरक्षित करना। जैसे—जुरमाने, रोग या सजा से बचाना। ४. दुष्कर्म, दूषित प्रभाव आदि से अलग और सुरक्षित रखना। जैसे—किसी को कुमार्ग में पड़ने से बचाना। ५. आघात, आक्रमण आदि से सुरक्षा करना। ६ सामना न होने देना या संपर्क में न आने देना। जैसे—(क) किसी से आँख बचाना। (ख) किसी का सामना बचाना।

बचाव—पुं० [हिं० बचना] १ कष्ट, संकट आदि में बचे हुए होने की अवस्था या भाव। जैसे—इस पेड़ के नीचे धूप (या वर्षा) से बचाव रहेगा २. त्राण। रक्षा। २. कष्ट, संकट आदि से बचने के लिए किया जानेवाला उपाय या प्रयत्न। †३ बचत।

बचिया—स्त्री० [हिं० बच्चा=छोटा] कसीदे के काम में छोटी-छोटी बूटियाँ।

बचुआ—पुं० [देश०] एक प्रकार की मछली।

†पुं०=बच्चा।

बचून—पुं० [हिं० बच्चा] भालू का बच्चा। (कलंदर)

बचो—पुं० [देश०] एक तरह की लता।

बच्चा—पुं० [सं० वत्स, प्रा० बच्छ से फा० बच्च] [स्त्री० बच्ची] १. किसी प्राणी का नवजात शिशु। जैसे—कुत्ते या बिल्ली का बच्चा, आदमी का बच्चा। २ मनुष्य जाति का कम अवस्थावाला प्राणी। बालक।

पद—**बच्चे-कच्चे**=छोटे छोटे बच्चे। बाल-बच्चे।

मुहा०—**बच्चा देना**=गर्भ से संतान उत्पन्न करना। प्रसव करना।

पद—**बच्चों का खेल**=बहुत ही तुच्छ, सहज या साधारण काम।

वि० १ कम उमरवाला। २ नादान। ३ अनुभवहीन।

बच्चाकश—वि० [फा०] बहुत बच्चे जननेवाली (स्त्री)। (विनोद)

बच्चादान—पुं० [फा०] गर्भाशय।

बच्ची—स्त्री० [हिं० बच्चा का स्त्री० रूप] १ छोटी लड़की। २ वह छोटी घोड़िया जो छत या छाजन में बड़ी घोड़िया के नीचे लगाई जाती है। ३. वे बाल जो होंठ के नीचे बीच में जमते हैं। ४ दे० 'बचिया'।

बच्चेदानी—स्त्री०=बच्चादान (गर्भाशय)।

बच्छ—पुं० [सं० वत्स, प्रा० वच्छ] १ बच्चा। २ बेटा। ३ बछड़ा।

बच्छनाग†—पुं०=बछनाग।

बच्छल—वि०=वत्सल।

बच्छस—पुं० [सं० वक्षस्] वक्षःस्थल। छाती।

बच्छा—पुं० [सं० वत्स, प्रा० वच्छ] [स्त्री० बछिया] १. गाय का बच्चा। बछड़ा। बछवा। २ किसी पशु का बच्चा। (क्व०)

बछ—पुं० [सं० वत्स, प्रा० वच्छ] गाय का बच्चा। बछड़ा।

†स्त्री०=बच (ओषधि)।

बछड़ा—पुं० [हिं० वच्छ+ड़ा (प्रत्य०)] [स्त्री० बछड़ी, बछिया] गाय का बच्चा।

बछनाग—पुं० [सं० वत्सनाग] एक स्थावर विष। (एकोनाइट)

बछरा†—पुं०=बछड़ा।

बछरू†—पुं०=बछड़ा (गाय का बच्चा)।

बछल†—वि०=वत्सल।

बछवा—पुं० [हिं० वच्छ] [स्त्री० बछिया] गाय का बच्चा। बछड़ा।

बछा†—पुं०=बच्छा।

बछिया—स्त्री० [हिं० बछा] गाय का मादा बच्चा।

पद—बछिया का ताऊ या बाबा=(बैल की तरह) निर्बुद्धि या मूर्ख।

बछेड़ा—पुं० [सं० वत्स; प्रा० वच्छ; पु० हिं० वच्छ] [स्त्री० बछेड़ी] घोड़े का बच्चा।

बछेरा†—पुं०=बछेड़ा।

बछेरु†—पु०=बछड़ा।

बछौंटा—पु० [हिं० बाछ+औंटा (प्रत्य०)] वह चदा जो हिस्से के मुताबिक लगाया या लिया जाय।

बजंत्री—पु० [हिं० बाजा] १. बाजा बजानेवाला। बजनियाँ। २ बाजे बजानेवालो की मण्डली। ३ मुसलमानी राज्य-काल मे बाजा बजानेवालो से लिया जानेवाला एक तरह का कर।

बजकंद—पु० [स० वज्रकद] एक प्रकार की जगली लता।

बजकना—अ० [अनु०] तरल पदार्थ का सडकर या बहुत गदा होकर बुलबुले फेंकना। बजबजाना।

बजका—पु० [हि० बजकना] १ बेसन आदि की वे पकौडियाँ जो दही मे डाली जाने से पहले पानी मे फुलाई जाती है। २ दे० 'बचका'।

बजगारी—स्त्री० [स० वज्र] वज्रपात। उदा०—देऊ जवाब होई बजगारी।—कबीर।

†वि० दे० 'बज-मारा'।

बजट—पु० [अ०] १ आय-व्यय का मासिक या वार्षिक लेखा। २. आय-व्यय पत्रक।

बजड़ना—स० १ टकराना। २ कही जाकर पहुँचना।

बजड़ा—पु०= बजरा।

बजमक—पु० [?] पिस्ते का फूल जिससे रेशम का सूत रँगा जाता है।

बजना—अ० [हिं० बाजा] १ किसी चीज पर आघात किये जाने पर ऊँची ध्वनि निकलना। जैसे—(क) घटा बजना। (ख) तबला या मृदग बजना। २ ऐसा आघात लगना जिससे किसी प्रकार का उच्च शब्द उत्पन्न हो। जैसे—किसी के सिर पर डडा बजना। ३ अस्त्र-शस्त्र आदि का शब्द करते हुए प्रहार होना। जैसे—लाठी बजना। ४ ऐसी लडाई या झगडा होना जिसमे मार-पीट भी हो। ५. हठ करना। जिद करना। अडना। ६ किसी नाम से ख्यात या प्रसिद्ध होना।

†वि० बजनेवाला। जो बजता हो।

पु० १ चाँदी का रुपया जो ठनकाने या पटकने से बजता अर्थात शब्द करता है। (दलाल) २ दे० 'बाजा'।

बजनियाँ—पु० [हिं० बजना+इया (प्रत्य०)] वह जो बाजा बजाने का व्यवसाय करता हो। वह जिसका पेशा बाजा बजाना हो। (प्राय ब्याह-शादी आदि के अवसरों पर बाजे बजानेवालों के लिए प्रयुक्त)

बजनिहाँ—पु०=बजनियाँ।

बजनी—स्त्री० [हिं० बजाना] ऐसी लड़ाई या झगड़ा जिसमे उठा-पटक या मार-पीट भी हो।

वि० बजने या बजाया जानेवाला। बजनूँ।

बजनूँ—वि० [हि० बजाना] बजने या बजाया जानेवाला। जो बजता या बजाया जाता हो।

बजबजाना—अ० [अनु०] १ उमस, गरमी आदि के कारण किसी जलीय या तरल पदार्थ मे खमीर उठने पर अथवा उसके सड़ने पर उसमें से बुलबुले निकलना। जैसे—कटहल या भात बजबजाना। २ इस प्रकार बुलबुले निकलने से पदार्थ का दूषित होना।

बजमारा—वि० [सं० वज्र+हिं० मारा] [स्त्री० बजमारी] १. वज्र से आहत। जिस पर वज्र पड़ा हो। २ बहुत बडा अभागा।

बजरंग—वि० [स० वज्र+अंग] १ वज्र के समान कठोर अंगोंवाला। २. परम शक्तिशाली और हृष्ट-पुष्ट।

पु० हनुमान।

बजरंगबली—पु० [हिं० बजरंग+बली] हनुमान्। महावीर।

बजरंगी बैठक—स्त्री० [हिं० बजरग+बैठक] एक प्रकार की बैठक जिससे शरीर बहुत अधिक पुष्ट होता है।

बजर—वि० [स० वज्र] १ बहुत मजबूत। दृढ़ या पक्का। उदा०—किसू सफीला भुरज की, काहू बजर कपाट।—बाकीदास। २. कठोर।

पु०=वज्र।

बजरबट्टू—पु० [हिं० बजर+बट्टा] १. एक प्रकार के वृक्ष के फल का दाना या बीज जो काले रंग का होता है और जिसकी माला नजर आदि की बाधा से बचाने के लिए लोग बच्चो को पहनाते हैं। २ व्यापक अर्थ मे कोई ऐसी चीज जो किसी प्रकार का अपशकुन तथा दूषित प्रभाव रोकती है। ३ एक प्रकार का खिलौना।

बजरबोंग—पु० [हिं० बजर+बोग(अनु०)] १ एक प्रकार का धान जो अगहन मास मे पकता है। २ बड़ा भारी या मोटा डडा।

बजर-हड्डी—स्त्री० [हिं० बजर+हड्डी] घोड़ो के पैरो में गाँठें पड़ने का एक रोग।

बजरा—पु० [स० वज्रा] वह बड़ी नाव जो कमरे के समान खिड़कियों तथा पक्की छतवाली होती है।

†पुं०=बाजरा।

बजराग्नि—स्त्री०=वज्राग्नि (बिजली)।

बजरिया—स्त्री० [हिं० बाजार+इया (प्रत्य०)] छोटा बाजार।

बजरी—स्त्री० [स० वज्र] १. पत्थर को तोड़कर बनाये जानेवाले वे छोटे छोटे टुकड़े जो फरश, सड़क आदि बनाने के काम आते हैं। २. आकाश से गिरनेवाला पत्थर। ओला। ३ वह छोटा नुमायशी कँगूरा जो किले आदि की दीवारो के ऊपरी भाग में बराबर थोड़े-थोड़े अतर पर बनाया जाता है और जिसकी बगल मे गोलियाँ चलाने के लिए कुछ अवकाश रहता है।

† स्त्री०[हिं० बाजरा] वह बाजरा जिसके दाने बहुत छोटे-छोटे हों।

बजवाई—स्त्री० [हिं० बजवाना+ई (प्रत्य०)] १. बाजा बजवाने का कार्य या भाव। २. वह मजदूरी जो किसी से बाजा बजवाने के फल स्वरूप उसे दी जाती है।

बजवाना—स० [हिं० बजाना का प्रे०] [भाव० बजवाई] किसी को कुछ बजाने मे प्रवृत्त करना। जैसे—बाजा बजवाना।

बजवैया—वि० [हिं० बजाना+वैया (प्रत्य०)] बजानेवाला। जो बजाता हो।

बजा—वि० [फा० बजा] १. जो अपने उचित, उपयुक्त या ठीक स्थान पर हो। २ उचित। वाजिब।

मुहा०—बजा लाना=(क) पूरा करना। पालन करना। जैसे—हुकुम बजा लाना। (ख) सम्पादन करना। जैसे—आदाब बजा लाना।

३. जो दुरुस्त तथा शुद्ध हो।

बजागि—स्त्री० [सं० वज्र + अग्नि] वज्र की आग अर्थात् विद्युत्। बिजली। उदा०—सूरज आग बजागि-दुख तृष्ण पाप बिलाप।—केशव। २ भीषण कष्ट देनेवाला ताप। उदा०—विरह-बजगि सौंह रथ हाँका।—जायसी।

बजागिन—स्त्री०=बजागि।

बजाज—पु० [अ० बज़्ज़ाज़] [स्त्री० बजाजिन, भाव० बजाजी] कपडे का व्यापारी। कपडा बेचनेवाला।

बजाजा—पु० [हिं० बजाज] वह बाजार जिसमे कपडो की बहुत-सी दुकानें हो।

बजाजी—स्त्री० [अ० बज़्ज़ाज़ी] १ बजाज का काम। कपडा बेचने का व्यवसाय। २ बजाज की दूकान पर बिकनेवाले या बिकने योग्य कपडे।

बजाना—स० [हिं० बाजा] १. किसी चीज पर इस प्रकार आघात करना कि उसमे से शब्द निकलने लगे। जैसे—(क) घंटा बजाना। (ख) ताली बजाना। २ कोई ऐसी विशिष्ट प्रक्रिया करना जिससे कोई वाद्य, सुर, ताल, लय आदि मे शब्द करने लगे। जैसे—शहनाई या सितार बजाना।

पद—बजाकर=डंका पीटकर। खुल्लमखुल्ला।

मुहा०—गाल बजाना=दे० 'गाल' के अन्तर्गत मुहा०। **बर्दीबजाना**=सैनिको को कवायद आदि के लिए बुलाने के उद्देश्य से बिगुल बजाना।

३ लाठी, सोंटे आदि से लडाई-झगडा करना।

४ पुकारना। बुलाना। (पूरब) ५ खरेपन आदि की परीक्षा के लिए किसी चीज को उछालकर, पटककर अथवा उसपर आघात करके शब्द उत्पन्न करना।

पद—ठोंकना-बजाना=(क) अच्छी तरह जाँचना या परखना। जैसे—जो चीज लो वह ठोक-बजाकर लिया करो। (ख) बात या व्यक्ति के संबंध मे प्रामाणिकता, सत्यता आदि का निश्चय करना। जैसे—उन्हे अच्छी तरह ठोक-बजाकर देख लो। कही ऐसा न हो, कि वे पीछे मुकर जायँ।

५ आघात या प्रहार करना। मारना-पीटना। जैसे—जूते बजाना।

६ स्त्री के साथ प्रसग या सभोग करना। (बाजारू)

स० [फा० बजा+ना (प्रत्य०)] पालन करना। जैसे—ताबेदारी बजाना, हुकुम बजाना।

बजाय—अव्य० [फा०] (किसी की) जगह या स्थान पर अथवा बदले मे। जैसे—उन्हे रुपयो के बजाय कपड़ा भी मिल जाय तो काम चल जायगा।

बजार†—पु०=बाजार।

बजारी†—वि०=बाजारी।

वि० [हिं० बाजना=बोलना] बहुत बढ-चढकर और व्यर्थ बोलनेवाला। उदा०—कीरति बडो करतूति बडो जन, बात बड़ो सो बड़ोई बजारी।—तुलसी।

बजारू†—वि०=बाजारू।

बजावनहार†—वि० [हिं० बजाना+हार (प्रत्य०)] बजानेवाला।

बजावना†—स०=बजाना।

बजुआ—पु०=बाजू।

बजुज—क्रि० वि० [फा० बजुज़] अतिरिक्त। सिवा। जैसे—बजुज इसके और कोई चारा नही है।

बजुल्ला—पु० [सं० बाजू+उल्ला (प्रत्य०)] बाँह पर पहनने का बिजायट नाम का गहना।

बजूका—पु० [?] १. धातु का एक प्रकार का बडा नल जिसमे से बिजली की सहायता से शत्रुओ पर अग्नि-बाण आदि छोडे जाते है। (इसका प्रयोग पहले-पहल अमेरिका ने दूसरे युरोपीय महायुद्ध मे किया था)। २. दे० 'बिजूखा'।

बजूखा—पु० १.=बजूका २.=बिजूखा।

बज्जना—अ०=बजना।

बज्जर—पु०=वज्र।

बज्जात—वि० [फा० बद जात] [भाव० बज्जाती] १ दुष्ट। पाजी। २ कमीना। नीच। अधम।

बज्जाती—स्त्री० [फा० बदज़ाती] १. दुष्टता। पाजीपन। २ कमीनापन। नीचता। अधमता।

बज्जुन—पु० [हिं० बजना] बाजा।

बज्म—स्त्री० [फा० बज़्म] १ सभा। २ गोष्ठी।

बज्र*—पु०=वज्र।

बज्री—पु०=वज्री (इन्द्र)।

बझना—अ० [सं० बद्ध, प्रा० वज्झ+ना (प्रत्य०)] १ बधन मे पडना। बँधना। २ उलझना। फँसना। ३. किसी से उलझकर लडाई-झगडा करना। ४ जिद या हठ करना।

बझवट—स्त्री० [हिं० बाँझ+वट (प्रत्य०)] १ बाँझ स्त्री। २ कोई बाँझ मादा पशु। ३ वह डठल जिसमे से बाल तोड ली गई हो।

स्त्री० बझावट।

बझाऊ—वि० [हिं बझाना] बझाने अर्थात् फँसाने वाला।

पु०=बझाव।

बझान—स्त्री० [हिं० बझना] बझने या बझाने की अवस्था, क्रिया या भाव। बझाव।

बझाना—स० [हिं० बझना का सकर्मक रूप] १ बधन मे डालना या लाना। २. उलझाना। फँसाना। ३ जाल मे फँसना।

†अ० बधन मे फँसना। जकडा जाना। बझना।

बझाव—पु० [हिं० बझना] १. जाल, फंदे आदि मे बझाने की क्रिया या भाव। बझावट। २ बझाने या फँसानेवाली कोई चीज। बझावट।

बझावट—स्त्री० [हिं० बझना+आवट (प्रत्य०)] १. बझने या बझाने की अवस्था, क्रिया या भाव। बझाव। २ उलझन। ३. जाल। बझाव।

बझावना—स०=बझाना।

बझावा—पु० [हिं० बझाना=फँसाना] किसी को फँसाने के लिए बनाया हुआ जाल या गभीर योजना।

बट—पु० [सं० वट] १ बड का पेड़। वट। २ किसी चीज का गोला।

३. सिल पर चीजें पीसने का बट्टा। ४. बाट। मार्ग। रास्ता।
५ चीजो को तौलने का बटखरा। बाट। ६. बड़ा नाम का पकवान।
पु० [हिं० बटना=बल डालना] १ बटे हुए होने की अवस्था या भाव।
२. रस्सी आदि के वह ऐंठन जो उसे बटने से पड़ती है। बल।
क्रि० प्र०—डालना।—देना।
३. पेट मे होनेवाली ऐंठन या पडनेवाली मरोड।
पुं० हिं० बाट का वह सक्षिप्त रूप जो उसे यौगिक शब्दो के आरभ मे लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—बट-खरा, बट-मार।
पु० [हिं० बँटना] बँटने पर मिलनेवाला अश। बाँट। हिस्सा। उदा०—लाज अजाद मिली औरन कौं मृदु मुसुकानि मेरे बट आई।—नारायण स्वामी।

बटई†—स्त्री० =बटेर। उदा०—तीतर बटई लवा न बाँचे।—जायसी।

बटकना—अ०=बचना। (बुन्देल०) उदा०—ईसुर कान बटकने नइयाँ देख लेव यह ज्वानो।—लोकगीत।

बटखर—पु०=बटखरा।

बटखरा—पु० [स० वटक] धातु, पत्थर आदि का किसी नियत तौल का टुकडा जिसमे अन्य पदार्थ तराजू पर तौले जाते है।

बट-छीर*—पु० [स० वट+हिं० छीर] वट वृक्ष की वह छाल जो पहनने के काम आती थी। उदा०—होत प्रात बट-छीर मँगावा।—तुलसी।

बटन—स्त्री० [हिं० बटना] १ रस्सी आदि बटने या ऐंठने की क्रिया या भाव। २ बटने के कारण रस्सी आदि मे पड़ी हुई ऐंठन। बल।
पु० [अ०] १ धातु, सीग, सीप आदि की बनी हुई चिपटे आकार की कड़ी गोल घुडी, जो कोट, कुरते अगरखें आदि मे टाँकी जाती है और जिसे काज नामक छेद मे फँसा देने से खुली जगह बद हो जाती है और कपडा पूरी तरह से बदन को ढक लेता है। बुताम। २ उक्त आकार-प्रकार की वह घुडी जिसे उठाने, दबाने, हिलाने आदि से कोई यात्रिक क्रिया आरंभ या बद होती है। जैसे—बिजली का बटन।
क्रि० प्र० —दबाना।
३ बादले का एक प्रकार का तार।

बटना—स० [स० वट्=बटना] कई ततुओं, तागों या तारो को एक साथ मिलाकर इस प्रकार मरोडना कि वे सब मिलकर एक हो जायें। ऐंठन देकर मिलाना। जैसे—डोरी, तागा या रस्सी बटना।
पु० रस्सी आदि बटने का कोई उपकरण या यन्त्र।
†स० बाटना (बट्टे से पीसना)।
पु० [स० उद्वर्तन; आ० उव्वाट्टन] सिल पर पीसी हुई सरसों, चिरौंजी, आदि का लेप जो शरीर की मैल छुड़ाने के लिए मला जाता है। उबटन।

बटपरा—पु०=बटपार।

बटपार—पु० [स्त्री० बटपारिन] दे० 'बट-मार'।

बट-पारी—स्त्री० दे० 'बट-मारी'।
† पु०=बट-पार (बट-मार)।

बटम—पु० [?] पत्थर गढ़नेवालो का एक औजार जिससे वे कोना नापकर ठीक करते है। कोनिया।
†पु०=बटन।

बटम-पाम—पुं० [बटम+अ० पाम=ताड़] बंगाल मे होनेवाला एक प्रकार का ऊँचा पेड़।

बट-मार—पु० [हिं० बाट+मारना] पथिको या यात्रियो को मार्ग मे मारकर धन, सपत्ति छीन लेनेवाला लुटेरा।

बट-मारी—स्त्री० [हिं० बटमार] बटमार का काम या भाव।

बटला—पु० [स० वर्तुल; प्रा० वट्टुल] [स्त्री० अल्पा० बटली] चावल, दाल आदि पकाने का चौडे मुँह का गोल बरतन। बडी बटलोई। देग। देगचा। बटुआ।

बटली—स्त्री०=बटलोई।

बटलोई—स्त्री० [हिं० बटला] छोटा बटला। बटली। देगची।

बटवाँ—वि० [हिं० बाटना=पीसना] सिल पर पीसा या पिसा हुआ।
उदा०—कटवाँ बटवाँ मिला सुबासू।—जायसी।
वि० [हिं० बटना=बल डालना] बटा हुआ।

बटवा—पु०=बटुआ।
†पु०=बटला।

बटवाई—स्त्री० [हिं० बटवाना+आई (प्रत्य०)] बटवाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

बटवाना—स० [हिं० बाटना का प्रे०] बाटने या पीसने का काम किसी से करवाना।
†स०=बँटवाना।

बटवार—पु० [हिं० बाट] १ रास्ते पर पहरा देनेवाला व्यक्ति। पहरेदार। २ रास्ते पर खड़ा होकर वहाँ का कर उगाहनेवाले कर्मचारी।

बटवारा—पु०=बँटवारा।

बटा—पु० [स० वटक] [स्त्री० अल्पा० बटिया] १ कोई गोलाकार चीज। गोला। २. कदुक। गेंद। ३ पत्थर का टुकड़ा। ढोका। ४ सिल पर चीजें पीसने का बट्टा।
पु० [हिं० बाट] बटोही।
पु० १ गणित मे एक प्रकार का चिह्न जो छोटी किंतु सीधी क्षैतिज रेखा के रूप मे (—) होता है और जो किसी पूरी इकाई का भिन्न अर्थात् अश या खड सूचित करता है। जैसे—$\frac{3}{4}$ (तीन बटा चार) मे ३ और ४ के बीच की पाई बटा कहलाती है। २. गणित मे भिन्न अर्थात् पूरी इकाई के तुलनात्मक अश या खड का वाचक शब्द। जैसे—दो बटा (या बटे) तीन का अर्थ होगा—पूरी इकाई के तीन भागों मे से दो भाग।

बटाई—स्त्री० [हिं० बटना] बटने या ऐंठन डालने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक।
† स्त्री०=बँटाई।

बटाऊ—पु० [हिं० बाट=रास्ता+आऊ (प्रत्य०)] १ बाट अर्थात् राह पर चलता हुआ व्यक्ति। राही। २. अनजान। अपरिचित या राह-चलता नया आया हुआ व्यक्ति।
मुहा०—बटाऊ होना=चलता होना। चल देना।
पु० [हिं० बाँटना] १ बँटवाने या विभाग करानेवाला। २ अपना अश या प्राप्य बँटवा या अलग कराकर लेनेवाला।

बटाक—वि० [हिं० बड़ा ?] १ बड़ा। २. ऊँचा। ३ विशाल।
बटाटा—पु० [अ० पोटैटो] आलू (कद)।
बटाना—स० [हिं० बटना का प्रे०] बटने या बाटने का काम किसी और से कराना।
† अ० पटाना (बन्द होना)।
बटालियन—पु० [अ०] पैदल सेना का एक बड़ा विभाग।
बटाली—स्त्री० [लश०] बढ़इयों का एक औजार। रुखानी। (लश०)
बटिका—स्त्री०=वटिका।
बटिया—स्त्री० [हिं० बटा-गोला] १ गोली। बटी। २ सिल पर पीसने का छोटा बट्टा। लोढ़िया।
†स्त्री०=बँटाई (खेतों की उपज की)।
बटी—स्त्री० [सं० वटी] १ किसी चीज की बनाई हुई छोटी गोली। वटी। २ पीठी की बड़ी या बरी।
स्त्री०=वाटिका।
बटु—पु०=वटु (ब्रह्मचारी)।
बटुआ—पु० [सं० वटक या हिं० बटना] [स्त्री० अल्पा० बटुई] १ कपड़े, चमड़े आदि का खाने तथा ढक्कनदार एक उठौआ छोटा आधान जिसमे रुपये पैसे, आदि रखे जाते है।
बटुई—स्त्री० बटलोई।
बटुक—पु०= वटुक (ब्रह्मचारी)।
पु० [?] लवग।
बटुरना—अ० [हिं० बटोरना का अ०] १ इकट्ठा या एकत्र होना। २ सिमटना। ४ बटोरा जाना।
संयो० क्रि०—जाना।
बटुरी—स्त्री० [देश०] खेसारी या मोठ नाम का कदन्न।
स्त्री० =बटलोई।
बटुला—पु० [स्त्री० अल्पा० बटुली]=बटला।
बटुवा—पु०=बटुआ।
†पु०=बटला।
बटे—पु०=बटा (गणित का)।
बटेर—स्त्री० [सं० वर्तिर] तीतर की तरह की एक छोटी चिड़िया जो अधिक उड़ नहीं सकती। इसका मांस खाया जाता है। कुछ शौकीन लोग बटेरो को आपस मे लड़ाते भी है।
बटेरबाज—पु० [हिं० बटेर+फा० बाज] [भाव० बटेरबाजी] बटेर पकड़ने, पालने या लड़ानेवाला व्यक्ति।
बटेरबाजी—स्त्री० [हिं० बटेर+फा० बाजी] बटेर पकड़ने, पालने या लड़ाने का काम या शौक।
बटेरा—पु० [हिं० बटा] कटोरा।
† पु०=नर बटेर।
बटेरी—स्त्री० [हिं० बाँटना] हिन्दुओ मे विवाह के समय की एक रस्म जिसमे कन्या-पक्षवाले वर-पक्षवालों को आभूषण, धन, वस्त्र, आदि देते हैं।
बटोई—पु०=बटोही।
स्त्री० =बटलोई।
बटोर—पु० [हिं० बटोरना] १. बटोरने की क्रिया या भाव। २ किसी विशिष्ट उद्देश्य से बहुत से आदमियों को इकट्ठा करना। जैसे—बिरादरी के लोगों की अथवा पंचायत की बटोर। ३ चीजें बटोर कर उनका लगाया हुआ ढेर। ४. कूड़े-करकट का ढेर। (कहार)
बटोरन—स्त्री० [हिं० बटोरना] १ बटोरने की क्रिया या भाव। २ वह जो कुछ बटोर कर रखा गया या हुआ हो। ३ कमरे, घर, आदि के झाड़े-बुहारे जाने पर निकलनेवाला कूड़ा जो प्राय एक स्थान पर इकट्ठा कर लिया जाता है। ४ खेत मे पड़े हुए अन्न के दाने जो बटोर कर इकट्ठे किये जायँ।
बटोरना—स० [हिं० बटुरना] १. छितरी या बिखरी हुई वस्तुओ को उठा या खिसकाकर एक जगह करना। जैसे—(क) गिरे हुए पैसे बटोरना। (ख) कूड़ा बटोरना।
क्रि० प्र०—देना।—लेना।
२ इकट्ठा करना, जोड़ना या जमा करना। जैसे—धन बटोरना।
३. फैलाई या फैली हुई चीज समेटना। जैसे—चादर या पैर बटोरना।
४. चुनना।
बटोही—पु० [हिं० बाट] बाट अर्थात् रास्ते पर चलनेवाला या चलता हुआ यात्री। राही। पथिक। मुसाफिर।
बट्ट—पु० [हिं० बटक] १ बटा। गोला। २ कन्दुक। गेंद। ३. बटखरा। बाट।
पु० [हिं० बटना] १ कोई चीज बटने से पड़ा हुआ बल। बट। २ शिकन। सिलवट।
† पु०=बाट (रास्ता)।
बट्टन—पु० [हिं० बटना] बादले से भी पतला एक प्रकार का तार।
बट्टा—पु० [सं० वटक, हिं० बटा=गोला] [स्त्री० अल्पा० बट्टी, बटिया] १ पत्थर का वह गोल टुकड़ा जो सिल पर कोई चीज कूटने या पीसने के काम मे आता है। कूटने या पीसने का पत्थर। लोढ़ा। २ पत्थर आदि का कोई गोल-मटोल टुकड़ा। ढेला। ३ छोटा गोल डिब्बा। जैसे—गहने या पान के बीड़े रखने का बट्टा। ४ छोटा गोलाकार दर्पण। ५ वह कटोरा या प्याला जिसे औंधा रखकर बाजीगर उसमे किसी वस्तु का आना या निकल जाना दिखलाते है।
पद—बट्टेबाज। (देखें)
६ एक प्रकार की उबाली हुई सुपारी।
पु० [सं० वर्त्त, प्रा० बट्ट=बनिये का व्यवसाय] १ किसी चीज के पूरे दाम मे होनेवाली वह कमी जो उस चीज में कोई खोट, त्रुटि, दोष या मिलावट होने के कारण की जाती है।
पद—बट्टे से=त्रुटि, दोष मिलावट आदि के कारण किसी चीज की अंकित, नियत या प्रसम दर की अपेक्षा कुछ कम मूल्य पर। जैसे—जिस गहने मे टाँके अधिक होते है, वह पूरे दाम पर नहीं, बल्कि बट्टे से बिकता है।
क्रि० प्र०—काटना।—देना।—लगाना।
२. सिक्के आदि तुड़ाने या बदलवाने मे होनेवाली मूल्य की कमी। भाँज। जैसे—सौ रुपए का नोट भुनाने मे दो आना बट्टा लगता है।
क्रि० प्र०—लगना।
पद—ब्याज-बट्टा। (देखें)

३. उक्त दृष्टि या विचार से होनेवाला घाटा या टोटा। जैसे—वह थान अन्दर से कटा हुआ निकला था, इसलिए दूकानदार को एक रुपया बट्टा सहना पड़ा।

क्रि० प्र०—सहना।

पद—बट्टा-खाता। (देखें)

४ दस्तूरी, दलाली आदि के रूप में दिया जानेवाला धन। ५ किसी चीज या बात मे होनेवाला ऐब, कलक या दोष। दाग। जैसे—तुम्हारा यह आचरण तुम्हारी प्रतिष्ठा मे बट्टा लगानेवाला है।

क्रि० प्र०—लगना।—लगाना।

बट्टा-खाता—पु० [हि० बट्टा+खाता] महाजनो के यहाँ वह बही या लेखा जिसमे डूबी हुई अथवा न वसूल हो सकनेवाली रकमे लिखी जाती हैं।

मुहा०—बट्टे खाते लिखना=न प्राप्त हो सकनेवाली रकम डूबी हुई रकमो के खाते मे चढ़ाना।

बट्टाढाल—वि० [हि० बट्टा+ढालना] इतना चौरस और चिकना कि उस पर कोई गोला लुढ़काया जाय तो लुढ़कता जाय। खूब समतल और चिकना।

पु० उक्त प्रकार का चिकना और चौरस समतल स्थान।

बट्टाबाज—वि०, पु०—बट्टेबाज।

बट्टी—स्त्री० [हि० बट्टा] १ पत्थर आदि का छोटा टुकडा। २ सिल पर चीजे पीसने का छोटा बट्टा। ३. किसी चीज का प्राय गोलाकार खड। टिकिया। जैसे —साबुन की बट्टी।

बट्टू—पु० [देश०] १ धारीदार चारखाना। २ दक्षिण भारत मे होनेवाला एक प्रकार का ताड। बजरबट्टू। ताली। ३ बोडा या लोबिया नाम की फली। ४ लोहे का वह गोला जिसे नट लोग उछालते, गायब करते और फिर निकालकर दिखलाते है। बट्टा। उदा०—जिहि बिधि नट के बट्टू।—नागरी दास।

बट्टे-खाते—वि० [हि०] (रकम) जो डूब गई हो या वसूल न हो सकती हो।

क्रि० प्र०—डालना।—लिखना।

बट्टेबाज—पु० [हि० बट्टा+फा० बाज] १ नजर-बद का खेल करनेवाला जादूगर। २ बहुत बडा चालाक या धूर्त।

वि० दुश्चरित्रा (स्त्री)। पुश्चली।

बठिया—स्त्री० [देश०] पाथे हुए सूखे कडो का ढेर। उपलो का ढेर।

बड़ंगा—पु० [हि० बडा+अग+आ (प्रत्य०)] [स्त्री० अल्पा० बडगी] दीवारो पर लबाई के बल बीचो-बीच रखा जानेवाला बल्ला जिस पर छाजन टिकी होती है।

बड़ंगी—पु० [हि० बडा+अग] घोड़ा। (डि०)

बड़ंगू—पु० [देश०] दक्षिण भारत मे होनेवाला एक प्रकार का जगली पेड।

बड़—स्त्री० [अनु० बड बड] १. बडबडाने या मुँह से बड बड़ शब्द उत्पन्न करने की क्रिया या भाव। २ निरर्थक या व्यर्थ की बातें। प्रलाप। जैसे—पागलो की बड। ३ डींग। शेखी।

क्रि० प्र०—मारना।—हाँकना।

पु० [स० वट] बड का पेड। वट वृक्ष।

वि० १ हि० 'बडा' का वह सक्षिप्त रूप जो उसे समस्त पदो के आरम्भ में लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—बड-बोला, बड-भागी। २ उदा०—पुनि दातार दइअ बड़ कीन्हा।—जायसी।

बड़का—वि० [हि० बडा] [स्त्री० बडकी] बोल-चाल मे (वह) जो सबसे बडा हो। जैसे—बडके भैया, बडकी दीदी। (पूरब)

बड़कुँइयाँ—स्त्री० [हि० बडा+कूआँ] कच्चा कूआँ।

बड़-कौला—पु० [हि० बड+कोपल] बरगद का फल।

बड़-गुल्ला—पु० [हि० बड+बगुला] एक प्रकार का बगला।

बड़-दंता—वि० [हि० बडा+दाँत] [स्त्री० बडदती] बडे-बडे दाँतों वाला।

बड़-दुमा—पु० [हि० बड़ा+फा० दुम] वह हाथी जिसकी पूँछ पाँव तक लबी हो। लबी दुम का हाथी।

वि० [स्त्री० बड-दुमी] बडी दुम या पूँछवाला।

बड़प्पन—पु० [हि० बडा+पन (प्रत्य०)] बडे अर्थात् श्रेष्ठ होने की अवस्था, गुण या भाव। महत्त्व। श्रेष्ठता। बडाई। जैसे—तुम्हारा बड़प्पन इसी मे है कि तुम कुछ मत बोलो।

बड़-फर—पु० [हि० बड+फलक] ढाल। (डि०) उदा०—बड-फरि ऊछजतै विरुधि।—प्रिथीराज।

बड़-फली—स्त्री० [हि० बडा+फली] वह मठिया (हाथ मे पहनने का गहना) जो साधारण से अधिक चौडी होती है।

बड़-बट्टा—पु० [हि० बड+बट्टा] बरगद का फल।

बड़बड़—स्त्री० [अनु०] १ मुँह से निकलनेवाले ऐसे शब्द जो न तो स्पष्ट रूप मे दूसरों को सुनाई पडे और न जिनका जल्दी कोई सगत अर्थ निकल सकता हो। बडबडाने की क्रिया या भाव। २ व्यर्थ की बातचीत। प्रलाप। बकवाद।

क्रि० प्र०—करना।—लगाना।

३ क्रोध मे आकर अपने मन की भडास निकालने के विचार से बहुत धीरे-धीरे मुँह से उच्चारित होने वाले शब्द।

बड़बड़ाना—अ० [अनु० बडबड] १ धीरे-धीरे तथा अस्पष्ट रूप से इस प्रकार बोलना कि 'बड बड' के सिवा और कुछ सुनाई न दे। २ क्रोध मे आकर आप ही आप कुछ कहते रहना। कुडबुडाना। ३ बक-बक करना। बकवाद करना।

बड़बड़िया—वि० [अनु० बडबड+इया (प्रत्य०)] १ बडबड अर्थात् बकवाद करनेवाला। २ कोई बात अपने मन में न रख सकने के कारण दूसरो से कह देनेवाला।

बड़-बोल—पु० [हि० बडा+बोल] [स्त्री० बड-बोली] अपने कर्तृत्व, योग्यता, शक्ति आदि का अत्युक्तिपूर्ण कथन। डींग या शेखी की बात।

वि०=बड-बोला।

बड़-बोला—वि० [हि० बडा+बोल] [स्त्री० बड-बोली] बडी बडी बातें बघारने या डींग हाँकनेवाला। बढ-बढकर लबी-चौड़ी बातें करनेवाला।

बड़-भाग—वि०=बडभागी।

बड़-भागा—वि० [हि० बडा+भागी (स० भागिन्)] [स्त्री० बड-भागी] बडे अर्थात् उत्तम भाग्यवाला। सौभाग्यशाली। उदा०—ऊधो आज भई बड-भागी।—सूर।

बड़-भागी—वि०=बड़भागा।

बड़-भुज†—पु० =भड-भूंजा।

बड़रा†—वि० [स्त्री० बडरी] =बडका।

बड़राना†—अ० =बर्राना।

बड़वा—स्त्री० [सं० बल√वा+क,+टाप, ल—ड] १ घोडी। २. सूर्य की पत्नी की संज्ञा जिसने घोडी का रूप धारण कर लिया था। ३ अश्विनी नक्षत्र। ४ वायु देव की एक परिचारिका। ५ एक प्राचीन नदी। ६ दासी। सेविका। ७ बडवानल।

†पु० [हि० बडा] भादों मास के अंत मे होनेवाला एक प्रकार का धान।

बड़वाग्नि—स्त्री०= बडवानल (समुद्र की अग्नि)।

बड़वानल—पु० [सं० बडवा-अनल, ष० त०] समुद्र के अन्दर चट्टानो मे रहनेवाली आग जो सबसे अधिक प्रबल तथा भीषण मानी गई है।

बड़वामुख—पु० [सं० बडवा मुख, ष० त०, अच्] १ बडवाग्नि। २ शिव का मुख।

बड़वार†—वि० [भाव० बडवारी] बडा।

बड़वारी—स्त्री० [हि० बडवार] १ बडप्पन। २ बडाई। महत्त्व। ३ प्रशंसा।

बड़वाल—स्त्री० [देश०] हिमालय की तराई मे होनेवाली भेडो की एक जाति।

बड़वा-सुत—पु० [सं० ष० त०] अश्विनीकुमार।

बड़वाहृत—पु० [सं० तृ० त०] स्मृतियो के अनुसार वह व्यक्ति जिसे किसी दासी से विवाह करने के कारण दासत्व ग्रहण करना पडा हो।

बड़-हंस—पु० [हि० बड+सं० हंस] एक राग जो मेघ राग का पुत्र माना जाता है। कुछ लोग इसे संकर राग भी कहते है।

बड़-हंस-सारंग—पु० [हि० बडहंस+सारंग] सम्पूर्ण जाति का एक राग जिसमे सब शुद्ध स्वर लगते है।

बड़-हंसिका—स्त्री० [हि० बड+सं० हंसिका] एक रागिनी जो हनुमत् के मत से मेघराग की स्त्री कही गई है।

बड़हना—पु० [हि० बडा+धान] १ एक तरह का धान। २ उक्त धान का चावल।

†वि० =बडा।

बड़हर†—पु० [?] वह स्थान जहाँ पर जलाने के लिए सूखे कडे इकट्ठे करके रखे जाते है।

पु० =बडहल।

बड़हल—पु० [हि० बडा+फल] १. एक प्रकार का बडा पेड जो पश्चिमी घाट, पूर्व बंगाल और कुमाऊँ की तराई आदि मे बहुत होता है। २. उक्त पेड का फल जो अचार बनाने अथवा यो ही खाने के काम आता है।

बड़हार—पु० [हि० वर+आहार] विवाह हो जाने के उपरान्त कन्या-पक्षवालो द्वारा वर और बरातियों को दी जानेवाली ज्योनार।

बड़ा—वि० [सं० वर्द्धन, प्रा० बड्ढन, हि० बढ़ना या सं० बड्] [स्त्री० बडी] १. जो अपने आकार, धारिता, मान, विस्तार आदि के विचार से औरो से बढ-चढकर हो। प्रसम या साधारण से अधिक डील-डौल वाला। जैसे—(क) बडा पेड, बडा मकान, बडा संदूक। (ख) बडा दिन।

पद—**बड़ा आदमी, बड़ा घर, बड़ा-बूढ़ा**। (दे० स्वतत्र शब्द)

मुहा०—**बड़ी बड़ी बातें करना**=अपनी अथवा किसी की योग्यता, शक्ति आदि के संबंध मे बहुत-कुछ अत्युक्तिपूर्ण या बढा-चढाकर बातें करना।

२ जो गरिमा, गुण, मर्यादा, महत्त्व आदि के विचार से औरो से बहुत आगे बढा हुआ हो। जैसे—(क) बडा दिल। (ख) बडा साहस। (ग) बडा कारीगर। ३ जो अधिकार, अवस्था, पद, मर्यादा, शक्ति आदि के विचार से बढा हुआ या बढ-चढकर हो। जैसे—(क) बडा अधिकारी। (ख) बड़े-बूढ़े (या बडे लोग) जो कहे, वह मान लेना चाहिये। ४ जो किशोर विशेषत युवावस्था को प्राप्त हो चुका हो। जैसे—लडकी बडी हो गई है अब इसका विवाह कर देना चाहिए। ५ तुलनात्मक दृष्टि से जिसकी अवस्था या वय अपने वर्ग के औरो से अधिक हो। ज्यादा उमरवाला। जैसे—बडा भाई, बडे मामा। ६ जो मात्रा, मान, संख्या आदि के विचार से औरों से बढ़-चढकर हो। जैसे—(क) उन्हे इस वर्ष सबसे बडा इनाम मिला है। (ख) खाते मे एक बड़ी रकम छूट गई है। ७ जो बहुत अधिक स्थान घेरता हो। अधिक जगह घेरनेवाला। जैसे—बड़ा कारखाना, बडी दूकान। ८ जो देखने मे तो बहुत बढ-चढकर, महत्त्वपूर्ण या प्रभावशाली हो (फिर भी जिसमे कुछ तत्त्व या सार न हो)। जैसे—बडा बोल बोलना, बडी बडी बाते बघारना। ९ कुछ अवस्थाओं मे किसी अनिष्ट, अप्रिय या अशुभ क्रिया के स्थान पर अथवा ऐसी ही किसी संज्ञा के साथ प्रयुक्त होनेवाला विशेषण। जैसे—(क) दीया बडा करना (अर्थात् बुझाना), बडा जानवर (अर्थात गीदड या साँप)।

क्रि० वि० बहुत अधिक। उद०—बडी लंबी है जमी, मिलेंगे लाख हमी—। कोई शायद।

पु० [सं० वटक, हि० वटा] [स्त्री० अल्पा० बडी] १ एक प्रकार का पकवान जो मसाला मिली हुई उर्द की पीठी की गोल चक्राकार टिकियो के रूप मे होता और घी या तेल मे तलकर बनाया जाता है। २ उत्तरी भारत मे होनेवाली एक प्रकार की बरसाती घास।

बड़ा आदमी—पु० [हि०] १ ऐसा आदमी जिसके पास यथेष्ट धन-सम्पत्ति हो। अमीर। धनवान। २ ऐसा आदमी जो गुण, पद, मर्यादा आदि के विचार से औरो से बहुत बढकर हो।

बड़ाई—स्त्री० [हि० बडा+ई (प्रत्य०)] १ बडे होने की अवस्था या भाव। बडापन। २ किसी काम या बात मे औरों की अपेक्षा बढ-चढकर होनेवाला कोई विशेष गुण या श्रेष्ठता। ३ उक्त के आधार पर किसी की होनेवाली प्रतिष्ठा या मान-मर्यादा। महिमा। ४ किसी मे होनेवाले विशिष्ट गुण के संबंध मे कही जानेवाली प्रशंसात्मक उक्ति। ५ प्रशंसा। तारीफ।

मुहा०—**(किसी को) बड़ाई देना**=किसी के गुण, योग्यता आदि का आदर करते हुए उसका आदर या प्रशंसा करना। **(अपनी) बड़ाई मारना**=अपने मुँह से आप अपनी योग्यता का बखान या प्रशंसा करना।

बड़ा कुँवार—पु० [हि० बडा+कुँवार] केवडे की तरह का एक पेड जिसके पत्ते किरिच की तरह लम्बे होते है।

बड़ा घर—पु० [हि०] १ कुलीन प्रतिष्ठित और सम्पन्न कुल। ऊँचा और कुलीन घराना। २ लाक्षणिक अर्थ मे, कारागार या जेलखाना।

मुहा०—**बड़े घर की हवा खाना**=कैद भुगतना।

बड़ा दिन—पुं०[हिं० बड़ा+दिन] २५ दिसम्बर का दिन जो ईसाइयों का प्रसिद्ध त्यौहार है।

विशेष—प्रायः इसी दिन या इसके कुछ आगे-पीछे दिन-मान का बढ़ना आरम्भ होता है, इसी से इसे बड़ा दिन कहते है।

बड़ा नहान—पु० [हिं०] वह स्नान जो प्रसूता को प्रसव के चालीसवें दिन कराया जाता है।

बड़ानी†—वि०=बड़ा।

बड़ा पीलू—पु० [हिं० बड़ा+पीलू] एक प्रकार के रेशम का कीड़ा।

बड़ा बाबू—पु०[हिं०] किसी कार्यालय का प्रधान लिपिक जिसके अधीन कई लिपिक काम करते हो।

बड़ा-बूढ़ा—पु०[हिं०] ऐसा व्यक्ति जो अवस्था या वय के विचार से भी और गुण, योग्यता आदि के विचार से भी औरो से बढ़-चढ़कर या श्रेष्ठ हो। बुजुर्ग।

बडि(लि)श—पु० [स० बलिन√शो (तीक्ष्ण करना)+क, ल—ड] १. मछली फँसाने की कँटिया। बंसी। ३. शल्य-चिकित्सा मे काम आनेवाला एक शस्त्र।

बड़ी—स्त्री०[हिं० बडा] १ आलू, दाल, सफेद कुम्हड़े आदि को पीसकर तथा उसमे नमक, मिरच, मसाला आदि डालकर उसका सुखाया हुआ कोई छोटा टुकड़ा जो दाल, तरकारी आदि मे डाला जाता है। कुम्हड़ौरी। २ मास की बोटी। (डि०)।

बड़ी इलायची—स्त्री०[हिं०] १ एक तरह का इलायची का पेड जिसका फल कुछ बड़ा और काले रग का होता है। २ उक्त का फल जिसके दाने या बीज मसाले के रूप मे प्रयुक्त होते है।

बड़ी गोटी—स्त्री०[?] चौपायों की एक बीमारी।

बड़ी बात—स्त्री० [हिं०] कोई महत्वपूर्ण किंतु कठिन काम। जैसे—उन्हे रास्ते पर लाना कौन बड़ी बात है।

बड़ी माता—स्त्री०[हिं० बड़ी+माता] शीतला। चेचक। (पॉक्स)

बड़ी मैल—स्त्री०[देश०] एक प्रकार की चिड़िया जो बिलकुल खाकी रग की होती है।

बड़ी राई—स्त्री०[हिं० बडी+राई] एक प्रकार की सरसों जो लाल रग की होती है। लाही।

बड़ूजा—†पु०=बिड़ौजा।

बड़ेरा†—वि०[हिं० बड़ा+रा (प्रत्य०)] [स्त्री० बड़ेरी] १ बडा। २ प्रधान। मुख्य।

पु०[स० बडीभि, प्रा० बडीहि+रा] [स्त्री० अल्पा० बड़ेरी] कुएँ पर दो खभों के ऊपर ठहराई हुई वह लकड़ी जिसमें घिरनी लगी रहती है।

पु० १.=बँडेर। २.=बवडर।

बड़े लाट—पु०[हिं० बडा+अ० लार्ड] अगरेजी शासन-काल मे भारत का सर्व-प्रमुख प्रधान शासक। गवर्नर-जनरल।

बड़ेल†—पुं० [हिं० बडा] जगली सूअर।

बड़ौंखा†—पु०[हिं० बड़ा+ऊख] एक प्रकार का गन्ना जो बहुत लबा और नरम होता है।

बड़ौना†—पु० [हिं० बड़ापन] १ बड़ाई। महिमा। २ प्रशसा। तारीफ।

बड्ड—वि०=बडा।

बड्डाना—अ०=बड़बड़ाना।

बढ़ंती†—स्त्री०=बढ़ती।

बढ़—वि०[हिं० बढ़ना] १. बढा हुआ। २ अधिक। ज्यादा। ३ मूर्ख। ४ हिं० बढना (क्रि०) का विशेषण की तरह प्रयुक्त होने वाला सक्षिप्त रूप।

स्त्री० १ =बढती। २. बाढ़।

बढ़ई—पु०[सं० वर्द्धकि; प्रा० वड्ढइ] १. लकड़ी को छील तथा गढ़कर उसके उपयोगी उपकरण बनानेवाला कारीगर। २. उक्त कारीगरों की जाति या वर्ग। ३ रहस्य सप्रदाय मे, गुरु जो शिष्य रूपी कुन्दे को गढ़-छीलकर सुन्दर मूर्ति का रूप देता है।

बढ़ई मधु-मक्खी—स्त्री०[हिं०] एक प्रकार की मधु-मक्खी जिसका रग काला और पख नीले होते हैं। यह वृक्षो के काठ तक काट डालती है।

बढ़ती—स्त्री०[हिं० बढ़ना+ती(प्रत्य०)] १ बढ़ने अथवा बढ़े हुए होने की अवस्था या भाव। २. गिनती, तौल, नाप, मान आदि मे उचित या नियत से अधिक या बढा हुआ अंश। ३ धन-धान्य, परिवार आदि की वृद्धि।

पद—बढ़ती का पहरा=उन्नति और समृद्धि के दिन।

४ आवश्यकता, उपभोग, व्यय आदि की पूर्ति हो चुकने पर भी कुछ बच रहने की अवस्था या भाव। बचत (सरप्लस) ५ मूल्य की वृद्धि।

पद—बढ़ती से=अश-पत्र, राज-ऋण, विनिमय आदि की दर के सबध मे अकित या नियत मूल्य की अपेक्षा कुछ अधिक मूल्य पर।

बढ़ती फसल—स्त्री० [हिं०+अ०] वह फसल जो अभी खेत में बढ़ रही हो, पर अभी पूरी तरह से तैयार न हुई हो। (ग्रोइंग क्रॉप)

बढ़धार†—स्त्री० [हिं० बाढ=धार?] पत्थर काटने की टाँकी।

बढ़न—स्त्री० [हिं० बढ़ना] बढ़ने तथा बढे हुए होने की अवस्था या भाव। बढती। वृद्धि।

बढ़ना—अ० [स० वर्द्धन, प्रा० वड्ढन] १. आकार, क्षेत्र, विस्तार व्याप्ति, सीमा आदि मे अधिकता या वृद्धि होना। जितना या जैसा पहले रहा हो, उससे अधिक होना। जैसे—(क) पेड़-पौधों या बच्चों का बढ़ना। (ख) कर्मचारियो की छुट्टियाँ बढ़ना। (ग) दाढ़ी या नाखूनों का बढना। २ परिमाण, मात्रा, सख्या आदि में अधिकता या वृद्धि होना। जैसे—(क) घर का खरच बढ़ना। (ख) देश की जन-सख्या बढ़ना। (ग) नदी मे जल बढना। ३ कार्य-क्षेत्र, गुण आदि का विस्तार होना। व्याप्ति मे अधिकता या वृद्धि होना। जैसे—(क) झगड़ा-तकरार या वैर-विरोध बढ़ना। (ख) प्रभाव-क्षेत्र या व्यापार बढ़ना। ४ तीव्रता, प्रबलता, वेग, शक्ति आदि मे अधिकता या वृद्धि होना। जैसे—(क) किसी चलनेवाली चीज की चाल बढ़ना। (ख) रोग या विकार बढ़ना। ५ किसी प्रकार की उन्नति या तरक्की होना। जैसे—वह तो हमारे देखते देखते इतना बढ़ा है। ६. आगे की ओर चलना या अग्रसर होना। जैसे—(क) आज-कल औद्योगिक क्षेत्र मे अनेक पिछड़े हुए देश आगे बढ़ने लगे है। (ख) आकाश मे गुड्डी या पतग बढ़ना। (ग) तुम्हारे तो पैर ही नही बढ़ते।

मुहा०—बढ़ चलना=(क) उन्नति करना। (ख) अपनी योग्यता, सामर्थ्य आदि से अतिरिक्त आचरण या व्यवहार करना। (ग) अभिमान या ऐंठ दिखाना। इतराना।

७. प्रतियोगिता, होड़ आदि में किसी से आगे होना। जैसे—अब वह

कई बातों मे तुमसे बहुत आगे बढ़ गया है। ८ रोजगार या व्यापार मे लाभ के रूप मे धन प्राप्त होना। जैसे—चलो, इस सौदे मे हजार रुपए तो बढे, अर्थात् हजार रुपए की आय या लाभ हुआ। ९ कुछ विशिष्ट प्रसगो मे, मगल-भाषित के रूप मे, कुछ समय के लिए किसी काम, चीज या बात का अन्त या समाप्ति होना। जैसे—(क) किसी स्त्री के हाथ की चूड़ियाँ बढना, अर्थात् उतारी या तोडी जाना। (ख) दीया बढना, अर्थात् बुझाया जाना, दूकान बढना अर्थात् कुछ समय के लिए बन्द होना।

*स० बढाना। विस्तृत करना। उदा०—स्रवन सुनत करुना सरिता भए बढ़ैयौ बसन उमगी।—सूर।

बढ़नी†—स्त्री० [स० वर्द्धनी, प्रा० बड्ढनी] १ झाड़ू। बुहारी। कूचा। मार्जनी। २ वह अनाज या धन जो किसानो को खेती-बारी आदि के काम पर पेशगी दिया जाता और बाद मे कुछ बढाकर लिया जाता है।

स्त्री० [हि० बढना] पेशगी। अग्रिम।

बढ़वाना*—स० [हि० बढाना का प्रे०] किसी को कुछ बढाने मे प्रवृत्त करना।

बढ़वारि†—स्त्री०=बढती।

बढ़ाना—स० [हि० बढना का स०] १ किसी को बढने मे प्रवृत्त करना। ऐसा काम करना जिससे कुछ या कोई बढे। २ कोई चीज या बात का विस्तार करते हुए उसे किसी दूर के बिंदु, समय आदि तक ले जाना। विस्तार अधिक करना। जैसे—(क) उपन्यास या कहानी का कथा-भाग बढाना। (ख) नौकरी की अवधि या समय बढाना। (ग) धातु को पीटकर उसका तार या पत्तर बढाना। ३ परिमाण, मात्रा, सख्या आदि मे अधिकता या वृद्धि करना। जैसे—(क) किसी चीज की दर या भाव बढाना। (ख) किसी का वेतन (या सजा) बढाना। (ग) अपनी आमदनी बढाना। ४ किसी प्रकार की व्याप्ति मे विस्तार करना। जैसे—झगडा या बात बढाना। कार-बार या रोजगार बढाना।

पद—**बढ़ा-चढ़ाकर**—(क) इतनी अधिकता करके कि अत्युक्ति के क्षेत्र तक जा पहुँचे। जैसे—बढा-चढाकर किसी की प्रशसा करना या कोई बात कहना। (ख) उत्तेजित या उत्साहित करके। बढावा देकर। जैसे—किसी को बढा-चढाकर किसी के साथ लडा देना।

५ जो चीज आगे चल या जा रही हो, उसके क्षेत्र, गति आदि मे अधिकता या वृद्धि करना। जैसे—(क) चलने मे कदम या पैर बढाना, अर्थात् जल्दी जल्दी पैर रखते हुए चलना। (ख) गुड्डी या पतग बढाना अर्थात् उसकी डोर या नख इस प्रकार ढीली करना कि वह दूर तक जा पहुँचे। ६ गुण, प्रभाव, शक्ति आदि मे किसी प्रकार की तीव्रता या प्रबलता उत्पन्न करना। जैसे—(क) किसी का अधिकार (या मिजाज) बढाना। (ख) अपनी जानकारी या परिचय बढाना। ७ जो चीज जहाँ स्थित हो, उसे वहाँ से और आगे बढने मे प्रवृत्त करना। जैसे—जलूस या बरात बढाना। ८ प्रतियोगिता आदि मे किसी की तुलना मे आगे ले जाना या श्रेष्ठ बनाना। जैसे—घुड-दौड़ मे घोडा आगे बढाना। ९ किसी को यथेष्ठ उन्नत, सफल या समृद्ध करना। उदा०—सूरदास करुणा-निधान प्रभु जुग जुग भगत बढा दो।—सूर। १० कुछ प्रसगो मे मगल-भाषित के रूप मे, कुछ समय के लिए किसी काम या चीज का अन्त या समाप्ति करना। जैसे—(क) चूड़ियाँ बढाना=उतारना या तोडना। (ख) दीया बढ़ाना=बुझाना। (ग) दूकान बढाना=बन्द करना।

अ० खतम या समाप्त होना। बाकी न रह जाना। चुकाना। उदा०—मेघ सबै जल बरखि बढ़ाने विधि गुन गये सिराई।—सूर।

बढ़ा-बढ़ी—स्त्री० [हि० बढना] १ आचरण, व्यवहार आदि मे आवश्यकता या औचित्य से अधिक आगे बढने की क्रिया या भाव। मर्यादा या सीमा का उल्लघन। जैसे—इस तरह की बढा-बढी ठीक नही है। २. प्रतिद्वंद्विता। होड।

बढ़ार—पु० दे० 'बढहार'।

बढ़ाली—स्त्री० [देश०] कटारी। कटार।

बढ़ाव—पु० [हि० बढ़ना+आव (प्रत्य०)] १. बढने या बढे हुए होने की अवस्था या भाव। २ फैलाव। विस्तार। ३ मूल्य आदि की वृद्धि। बढती। बाढ़।

बढ़ावन—स्त्री० [हि० बढावना] गोबर की टिकिया जो बच्चों की नजर झाडने मे काम आती है।

बढ़ावना—स०=बढ़ाना।

बढ़ावा—पु० [हि० बढाव] १ आगे बढकर कोई महत्त्वपूर्ण काम करने के लिए किसी को दिया जानेवाला प्रोत्साहन। २ प्रोत्साहित करने के लिए कही जानेवाली बात।

क्रि० प्र०—देना।

बढ़िया—वि० [हि० बढना] (पदार्थ) जो गुण, रचना, रूप-रग, सामग्री आदि की दृष्टि से उच्च कोटि का हो। उम्दा। जैसे—बढिया कपडा, बढिया चावल, बढ़िया पुस्तक, बढिया बात।

पु० १ गन्ने, अनाज आदि की फसल का एक रोग जिसमे कनखे नही निकलते और बढाव बन्द हो जाता है। २ प्राय डेढ सेर की एक पुरानी तौल। ३ एक प्रकार का कोल्हू।

स्त्री० १ एक प्रकार की दाल। २ जलाशयो आदि की बाढ़।

बढ़ियार†—वि० [हि० बढना] (जलाशय या नदी) जिसमे बाढ आई हो। जैसे—बढ़ियार गगा।

स्त्री० नदियो आदि मे आनेवाली पानी की बाढ।

बढ़ेल—स्त्री० [देश०] हिमालय पर पाई जानेवाली एक प्रकार की भेड।

बढ़ेला—पु० [स० वराह] बनैला सूअर। जगली सूअर।

बढ़ैया—वि० [हि० बढाना, बढना] १ बढानेवाला। २ उन्नति करनेवाला।

वि० [हि० बढना] बढ़नेवाला। उन्नतिशील।

†पु०=बढई।

बढ़ोतरी—स्त्री० [हि० बाढ+उत्तर] १ उत्तरोत्तर होनेवाली वृद्धि। बढती। २ उन्नति। तरक्की। ३ व्यापार मे होनेवाला लाभ।

बणिक—पु० [स० वणिक्] १ वह जो वाणिज्य अर्थात् रोजगार या व्यापार करता हो। रोजगारी। व्यवसायी। व्यापारी। २ कोई विशिष्ट चीज बेचनेवाला सौदागर। ३ गणित, ज्योतिष मे छठा करण।

बणिक-पथ—पु० [स० वणिकपथ] १ वाणिज्य। २ व्यापार की चीजों की आमदनी। रफ्तनी। ३ व्यापारी। ४. दुकान। ५ तुला राशि।

बणिक-सार्थ—पु० [स० वणिक्सार्थ] दे० 'वणिक् कटक'।

बणिग्बंधु—पु० [सं० वणिग्बंधु] नील का पौधा।

बणिग्वह—पु० [सं० वणिग्वह] ऊँट।

बणिग्वीथी—स्त्री० [सं० वणिग्वीथी] बाजार।

बणिग्वृत्ति—स्त्री० [स० वणिग्वृत्ति] वणिक का पेशा। व्यापार।

बणिज्—पु०=वणिक्।

बत—स्त्री० [हिं० 'बात' का सक्षिप्त रूप] हिंदी 'बात' का सक्षिप्त रूप जो उसे समस्त पदो के आरम्भ मे लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—बत-कही, बत-रस।

स्त्री० [अ०] १ बतख की जाति की एक मौसिमी चिड़िया जो मटमैले रग की होती है। २ बत्तख।

बतक—स्त्री० [हिं० बत्तख] १ बतख की गरदन के आकार की एक प्रकार की सुराही जिसमें शराब रखी जाती थी। (राज०) २ बतख नाम की चिड़िया।

बत-कट—वि० [हिं० बात+काटना] १ बात काटने अर्थात् उसकी यथार्थता को चुनौती देनेवाला। २ किसी के बोलने के समय बीच मे उसे बार-बार टोकनेवाला। उदा०—नस-कट खटिया, बत-कट जोय।—घाघ।

बत-कहाव†—पु० =बत-कही।

बत-कही—स्त्री० [हिं० बात+कहना] १ साधारणत केवल मन बहलाने या समय बिताने के लिए की जानेवाली इधर-उधर की बात-चीत। उदा०—करत बत-कही अनुज सन, मन सिय-रूप लुभान।—तुलसी। २ बात-चीत की तरह का बहुत ही तुच्छ या साधारण काम। उदा०—दसकधर मारीच बत-कही।—तुलसी। ३ वाद-विवाद। कहा-सुनी। तकरार। ४ झूठ-मूठ या मन से गढ़कर कही जानेवाली बात।

बतख—स्त्री० [अ० बत] हस की जाति की पानी की एक चिड़िया जिसका रग सफेद, पजे झिल्लीदार और चोंच का अग्र भाग चिपटा होता है, और जिसके अडे मुरगी के अडो से कुछ बड़े होते है।

बत-चल—वि० [हिं० बात+चलाना] बकवादी। बक्की।

स्त्री०=बात-चीत।

बत-छुट—वि० [हिं० बात+छूटना] बिना सोचे-समझे अच्छी-बुरी सब तरह की बातें कह डालनेवाला।

बत-धर—वि० [हिं० बात+स० धर=धारण करनेवाला] जो अपनी कही हुई बात या दिये हुए वचन का सदा पूरी तरह से पालन करता हो।

बत-बढ़ाव—पु० [हिं० बात+बढाव] १ बात बढने अर्थात् झगडा खडे होने की अवस्था या भाव। २ छोटी या तुच्छ बात को दिया जानेवाला विकट और विस्तृत रूप।

बत-बाती†—स्त्री० [हिं० बात] १ बे-सिरपैर की बात। बकवाद। २ किसी से छेड़-छाड करने या घनिष्ठता बढ़ाने के लिए की जानेवाली बात-चीत। उदा०—कछुक अनूठे मिस बनाय ढिग आय करत बत-बाती।—आनन्दघन।

बतर—वि०=बदतर।

बत-रस—पु० [हिं० बात+रस] बातों से मिलनेवाला आनद।

बत-रसिया—वि० [हिं० बात+रसिया] १ हर बात में रस लेनेवाला। २. जिसे बहुत बात-चीत करने का चस्का हो। बातों का शौकीन।

बतरान—स्त्री० [हिं० बतराना] बातचीत।

बतराना—अ० [हिं० बात+आना (प्रत्य०)] बातचीत करना। उदा०—हम जाने अब बात तिहारी सूधे नहिं बतराति।—सूर।

बतरानि†—स्त्री०=बतरान (बात-चीत)।

बतरावनि†—स्त्री० [हिं० बतराना] १ बात-चीत। वार्तालाप। उदा०—'ललित किसोरी' फूल झरनि या मधुर-मधुर बतरावनि।—ललित किशोरी। २ बात-चीत करने का ढग या प्रकार।

बतरौहाँ†—वि० [हिं० बात] [स्त्री० बतरौही] बहुत बातें करनेवाला।

बतलाना—स०=बताना।

अ०=बतराना (बात-चीत करना)।

बत-वन्हा—पु० [देश०] एक तरह की नाव।

बताना—स० [हिं० बात+ना (प्रत्य०), या स० वदन=कहना] १ कोई बात कहकर किसी को कोई जानकारी या परिचय कराना। जैसे—तुम्हारी नौकरी लगने की बात मुझे उसी ने बताई थी। २ कोई कठिन काम या बात इस प्रकार कर दिखलाना या समझाना कि उससे अनजानो का ज्ञान या योग्यता बढे। जैसे—(क) गुरु जी ने अभी तुम्हे व्याकरण का विषय नही बताया है। (ख) नौकर ने मालिक को खर्च का हिसाब बताया। ३ किसी प्रकार का निर्देश या संकेत करना। जैसे—किसी की ओर उंगली दिखाकर बताना। ४. नाच-गाने आदि के प्रसग मे ऐसी मुद्राएँ बनाना जो गीत के भाव के अनुरूप या उनकी स्पष्ट परिचायक हों। जैसे—वह गाता (या नाचता) तो उतना अच्छा नही है, पर भाव बहुत अच्छा बताता है।

मुहा०—भाव बताना=किसी काम या बात के समय स्त्रियो के से हाव-भाव प्रदर्शित करना।

५ किसी को धमकाते हुए यह आशय प्रकट करना कि हम तुम्हारा अभिमान दूर कर देगे या तुम्हारी बुद्धि ठिकाने कर देगे। जैसे—अच्छा किसी दिन तुम्हे भी बताऊँगा। ६ दिखलाना। जैसे—बावली को आग बताई, उसने ले घर मे लगाई। (कहा०)

पु० [स० वर्तक एक धातु] १. हाथ में पहनने का कड़ा। २ वह फटा-पुराना या साधारण कपडा जो पगडी बाँधने से पहले यों ही सिर पर इसलिए लपेट लिया जाता है कि बालों से पगडी गदी या मैली न होने पावे।

बताशा—पु०=बतासा।

बतास—स्त्री० [स० वातास] १ वात के प्रकोप के कारण होनेवाला गठिया नामक रोग।

क्रि० प्र०—धरना।—पकड़ना।

२ वायु। हवा।

बतासना†—अ० [हिं० बतास] हवा चलना या बहना। (पूरब)

बतासफेनी—स्त्री० [हिं० बतासा+फेनी] टिकिया के आकार की एक मिठाई।

बतासा—पु० [हिं० बतास=हवा] १. एक प्रकार की मिठाई जो

चीनी की चासनी टपकाकर बनाई जाती है और जो फूल की तरह फूली हुई और बहुत हलकी होती है। २ एक प्रकार की छोटी आतिशबाजी जो मिट्टी के कसोरे मे मसाला रखकर बनाई जाती है। ३ पानी का बुलबुला।

बतासी—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की कालापन लिए हुए खैरे रंग की चिड़िया जिसकी आँख की पुतली गहरी-भूरी, चोच काली और पैर लल-छौंह होते हैं।

बतिया†—स्त्री० [स० वर्तिका, प्रा० बत्तिआ =बत्ती] सब्जी के काम मे आनेवाला कोई छोटा कच्चा ताजा हरा फल। जैसे—कद्दू या बैंगन की बतिया।

† स्त्री०=बात।

बतियाना—अ० [हिं० बात] बातचीत करना।

बतियार—स्त्री० [हिं० बात] बातचीत।

बतीसा—पु० [हिं० बत्तीस] [स्त्री० अल्पा० बतीसी] १ बत्तीस वस्तुओ का समाहार या समूह। २ बत्तीस दवाओ और मेवो के योग से बनाया हुआ लड्डू या हलवा जो प्रसूता को पुष्टि के लिए खिलाया जाता है। ३. दाँत से काटने का घाव या चिह्न।

बतीसी—स्त्री०=बत्तीसी।

बतू—पु०=कलाबत्तू।

बतोला—पु० [हिं० बात+ओला (प्रत्य०)] १ धोखा देने के उद्देश्य से कही जानेवाली बात। २ झाँसा।

मुहा०—बतोले बनाना—(क) बाते बनाना। (ख) भुलावा देना।

बतौर—अव्य० [अ०] १ (किसी की) तरह पर। रीति से। तरीके पर। २ के सदृश। के समान।

बतौरी—स्त्री० [?] रसौली।

बतौल कुंती—स्त्री० [हिं० बात] कान मे बातचीत करने की नकल जो बदर करते हैं। (कलदर)

बत्त† —स्त्री०=बात।

बत्तक—स्त्री०=बतक।

बत्तर—वि०=बदतर।

बत्तरी†—स्त्री०=बात।

बत्ता—पु० [सं० वर्त्तक] सरकडे के वे मुट्ठे जो छाजन के छप्पर के अगले भाग मे बाँधे जाते हैं।

बत्तिस—वि०=बत्तीस।

बत्ती—स्त्री० [स० वर्त्ति, प्रा० वत्ति] १. प्रकाश के निमित्त जलाया जानेवाला सूत, रूई, कपड़े आदि का बटा हुआ लबोतरा लच्छा जो तेल आदि से भरे हुए दीए मे रखा जाता है।

मुहा०—बत्ती चढ़ाना=शमादान मे मोमबत्ती लगाना। **बत्ती जलाना**= अँधेरा होने पर प्रकाश के लिए दीपक जलाना। **(किसी चीज में) बत्ती लगाना**=पूरी तरह से नष्ट-भ्रष्ट करना। जैसे—वह लाखो रुपए की सपत्ति मे बत्ती लगाकर कगाल हो गया।

३ दीपक। चिराग। ४ रोशनी। प्रकाश।

मुहा०—बत्ती दिखाना=प्रकाश दिखाना।

५. लपेटा हुआ चीथड़ा जो किसी वस्तु में आग लगाने के लिए काम में लाया जाय। फलीता। पलीता। ६. बत्ती के आकार-प्रकार की कोई गोलाकार लंबी चीज। जैसे—घाव मे भरने की बत्ती, लाह की बत्ती। ७ छाजन मे लगाने का फूस आदि का पूला। ८. कपड़े की वह लंबी धज्जी जो घाव मे मवाद साफ करने के लिए भरते हैं। ९ सींक आदि पर गध-द्रव्य या ज्वलनशील पदार्थ लपेटकर बनाई जानेवाली बत्ती जो पूजन आदि के समय जलाई जाती है। जैसे—अगर-बत्ती, धूप-बत्ती, मोमबत्ती। १० पगड़ी या चीरे का ऐंठा या बटा हुआ कपड़ा। ११. कपड़े के किनारे का वह भाग जो सीने के लिए मरोड़कर बत्ती के रूप में लाया जाता है।

बत्तीस—वि० [स० द्वात्रिंशत, प्रा० बत्तीसा] गिनती या सख्या में जो तीस से दो अधिक हो।

पु० उक्त की सूचक सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती (३२) है।

बत्तीसा—पु० बतीसी।

बत्तीसी—स्त्री० [हिं० बत्तीस] १ एक ही तरह की बत्तीस चीजों का समूह। २. मनुष्य के मुँह के ३२ दाँतो का समूह।

मुहा०—बत्तीसी खिलना=मुँह पर स्पष्ट रूप से हँसी दिखाई देना। **(किसी की) बत्तीसी झाड़ना**=इतना मारना की सब दाँत टूट जायँ। **बत्तीसी दिखाना** निर्लज्जतापूर्वक हँसना। **बत्तीसी बजना**=सरदी के कारण दाँतों का काँपकर कटकट शब्द करना।

बत्रीस—वि०, पु०=बत्तीस।

बथना†—अ० [स० व्यथा] पीड़ा या दर्द होना।

बथान†—पु० [स० वास+स्थान] १ पशुओं के बाँधे जाने की जगह। पशु-शाला। २ गरोह। झुंड।

स्त्री० [हिं० बथना] पीड़ा। दर्द।

बथिया—स्त्री० [?] सूखे गोबर का ढेर।

बथुआ—पु० [स० वास्तुक, पा० वात्थुआ] १ मोटे, चिकने हरे रग के पत्तोवाला एक पौधा जो १ से ४ हाथ तक ऊंचा होता है तथा गेहूँ, जौ आदि के खेतो मे अधिक होता है। २. उक्त के पत्ते अथवा उनका बना हुआ साग।

बथ्थ—स्त्री० [स० वस्तु] चीज।

बद—स्त्री० [स० वर्धन=गिलटी] १ आतशक या गरमी की बीमारी के कारण या यो ही सूजी हुई जाँघ पर की गिलटी। गोहिया। बाघी। २ चौपायो का एक सक्रामक रोग जिसमे उनके मुँह मे लार बहती है और खुर तथा मुँह मे दाने पड़ जाते है।

वि० [फा०] [भाव० बदी] १ खराब। बुरा। २. दुराचारी। ३. दुष्ट। पाजी।

स्त्री० [हिं० बदना] १ पलटा। बदला। एवज। जैसे—इसके बद मे कुछ और दे दो। २ किसी का निश्चित पक्ष। जैसे—दो गाँठ रूई हमारी बद की भी खरीद लो, अर्थात् उसके घाटे-नफे के हम जिम्मे-दार रहेगे।

बद-अमली—स्त्री० [फा० बद+अ० अमल] राज्य या शासन का कुप्रबध। शासनिक अव्यवस्था। अराजकता।

बदइंतजामी—स्त्री० [फा०] कुप्रबंध। अव्यवस्था।

बदकार—वि० [फा०] [भाव० बदकारी] १. बुरा काम करने-वाला। कुकर्मी। २ दुराचारी।

बदकारी—स्त्री० [फा०] १. कुकर्म। २. व्यभिचार।

बदकिस्मत—वि० [फा० बद+अ० किस्मत] बुरी किस्मतवाला। फूटे भाग्यवाला। अभागा।

बदखत—वि० [फा० बदखत] [भाव० बदखती] लिखने में जिसके अक्षर सुन्दर और स्पष्ट न होते हों।

बदख्वाह—वि० [फा० बदख्वाह] [भाव० बदख्वाही] १. बुराई चाहनेवाला। २. जो शुभचिंतक न हों।

बद-गुमान—वि० [फा०] [भाव० बद-गुमानी] जिसके मन मे किसी के प्रति बुरी धारणा हो।

बद-गुमानी—स्त्री० [फा०] किसी के प्रति होनेवाली बुरी धारणा।

बद-गो—वि० [फा०] [भाव० बद-गोई] १. दूसरो की निन्दा या बुराई करनेवाला। २ चुगलखोर। ३. गालियाँ बकनेवाला।

बद-गोई—स्त्री० [फा०] १ किसी के संबध में बुरी बात कहना। निंदा या निंदा करने की क्रिया या भाव। २. बदनामी। ३ चुगलखोरी। ४. गाली-गलौज।

बद-चलन—वि० [फा०] [भाव० बद-चलनी] १ बुरे रास्ते पर चलनेवाला। २. दुश्चरित्र। ३ वेश्यागामी।

बद-चलनी—स्त्री० [फा०] बद-चलन होने की अवस्था या भाव।

बद-जबान—वि० [फा० बद-जबान] [भाव० बद-जबानी] १ अनुचित, गदी या दूषित बाते करनेवाला। २ गाली-गलौज करनेवाला।

बदजात—वि० [फा० बद+अ० जात] [भाव० बदजाती] अधम। नीच।

बद-तमीज—वि० [फा० बद+तमीज] [भाव० बदतमीजी] शिष्टाचार और सलीके का ध्यान न रखते हुए अनुचित आचरण या व्यवहार करनेवाला (व्यक्ति)।

बद-तमीजी—स्त्री० [फा० बदतमीजी] १ बदतमीज होने की अवस्था या भाव। २ शिष्टाचार और सलीके से रहित कोई अशोभनीय आचरण या व्यवहार।

बदतर—वि० [फा०] बुरे से बुरा। बहुत बुरा।

बददिमाग—वि० [फा०+अ०] [भाव० बद दिमागी] १ जरा सी बात पर बुरा मान जानेवाला (व्यक्ति)। २. अभिमानी। घमडी।

बद-दिमागी—स्त्री० [फा०+अ०] १ जरा सी बात पर बुरा मानने की आदत। २. अहकार।

बद-दुआ—स्त्री० [फा०+अ०] ऐसी अहित कामना जो शब्दो के द्वारा प्रकट की जाय। शाप।

क्रि० प्र०—देना।

बदन—पु० [फा०] तन। देह। शरीर।

मुहा०—बदन टूटना=शरीर की हड्डियों विशेषत जोडो में पीडा होना। अंग अंग में पीड़ा होना। **बदन तोड़ना**=पीडा के कारण अगो को तानना और खीचना। **तन-बदन की सुध न रहना**=(क) अचेत रहना। बेहोश रहना। (ख) इतना ध्यानस्थ रहना कि आस-पास की बातों का कुछ भी पता न चले।

†पु० [सं० वदन] मुख। चेहरा। जैसे—गज-बदन।

स्त्री० [हिं० बदना] **कोई बात बदने की क्रिया या भाव।** बदान। उदा०—बदन बदी थी रंग-महल की टूटी मँड़ैया मे ल्याइ उतारयो। (गीत)

बदन-तौल—स्त्री० [फा० बदन+हिं० तौल] मालखम की एक कसरत जिसमें हत्थी करते समय मालखम को एक हाथ से लपेटकर उसी के सहारे सारा बदन ठहराते या तौलते हैं।

बदन-निकाल—पु०[फा० बदन+हिं० निकालना]मालखंभ की एक कसरत जिसमे मालखभ के पास खड़े होकर दोनों हाथो की कैंची बाँधते हैं।

बद-नसीब—वि० [फा०+अ०] [भाव० बद-नसीबी] बुरे नसीबवाला। अभागा।

बद-नसीबी—स्त्री० [फा०] दुर्भाग्य।

बदना—स० [सं०√ वद्=कहना] १ कथन या वर्णन करना। कहना। २ बात करना। बोलना। ३ दृढ़ता या निश्चयपूर्वक कोई बात कहना।

पद—बदकर या कह-बदकर—(क) बहुत ही दृढ़ता या निश्चयपूर्वक कहकर। जैसे—वह कह-बदकर कुश्ती जीतता है। (ख) दृढ़तापूर्वक आगे बढकर।

४ प्रमाण के रूप मे मानना। ठीक समझना। सकारना। उदा०—औरहू न्हायो सु मैं न बदी, जब नेह-नदी मे न दी पग-आँगुरी।—नागरीदास। ५ आपस में नियत, निश्चित या पक्का करना। ठहराना। जैसे—दोनो पहलवानों की कुश्ती बदी गई है। उदा०—(क) बदन बदी थी रग-महल की टूटी मँड़ैया मे ल्याइ उतारयो। (ख) अवधि बदि सैयाँ अजहूँ न आये।—गीत। ६ किसी प्रकार की प्रतिद्वंद्विता या होड के सबंध में बाजी या शर्त लगाना। जैसे—तुम तो बात बात मे शर्त बदने लगते हो। ७ बड़ा या महत्त्व का मानना। उदा०—हिरदय मे से जाइहौं, मरद बदौंगी तोहि। ८ किसी को किसी गिनती या लेखे मे समझना। ध्यान में लाना। मान्य समझना। जैसे—वह तो तुम्हे कुछ भी नही बदता। उदा०—(क) सकति, सनेहु कर सुनति करीऐ, मैं न बदउँगा भाई।—कबीर। (ख) बदतु हम कौं नेकु नाँही, मरहिं जौ पछिताहिं।—सूर। १०. नियत या मुकर्रर करना। जैसे—किसी को अपना गवाह बदना।

अ० पहले से नियत, निश्चित या स्थिर होना। जैसे—जो भाग्य में बदा होगा, वही होगा।

बदनाम—वि० [फा०] [भाव० बदनामी] जिसका बुरा नाम फैला हो, अर्थात् कुख्यात।

बदनामी—स्त्री० [फा०] वह गर्हित या निन्दनीय लोक-चर्चा जो कोई अनुचित या बुरा काम करने पर समाज में विपरीत धारणा फैलने के कारण होती है। अपकीर्ति। कुख्याति। लोक-निंदा। (स्कैंडल्)

क्रि० प्र०—फैलना।—फैलाना।

बदनी—वि० [फा०] १. शारीरिक। २ शरीर से उत्पन्न।

पु० [हिं० बदना] एक तरह का शर्तनामा जिसके अनुसार किसान अपनी फसल बाजार भाव से कुछ सस्ते मूल्य पर महाजन को उससे लिए हुए ऋण के बदले में देता है।

बद-नीयत—वि० [फा० बद+अ० नीयत] [भाव० बद-नीयती] १. जिसकी नीयत बुरी हो। जो सदाशय न हो। बुरे भाववाला। २. लोभी। लालची। ३. बेईमान।

बदनीयती—स्त्री० [फा०+अ०] १. नीयत बुरी होने की अवस्था या भाव। २. लालच। ३. बेईमानी।

बदनुमा—फा० [फा० बद=बुरा+नुमा=दिखानेवाला] [भाव० बद-नुमाई] जो देखने में कुरूप, भद्दा या भोंडा हो।

बद-परहेज—वि० [फा० बद-परहेज] [भाव० बद-परहेजी] व्यक्ति जो ऐसी चीजों का भोग करता हो जो उसके स्वास्थ्य के लिए हानिकर हों और जिनसे उसे वस्तुतः परहेज करना चाहिए।

बद-परहेजी—स्त्री० [फा० बद-परहेजी] १ परहेज न करने की अवस्था या भाव। बीमार का खाने-पीने में परहेज न करना। २ कुपथ्य का भोग।

बदफेल—वि० [फा० बद+अ० फेल] [भाव० बद-फेली] दुष्कर्म करनेवाला। दुष्कर्मी।

बदफेली—स्त्री० [फा० बद+अ० फेली] १ दुष्कर्म। २ पर-स्त्री के साथ किया जानेवाला संभोग।

बदबख्त—वि० [फा० बदबख्त] [भाव० बदबख्ती] अभागा।

बदबख्ती—स्त्री० [फा० बदबख्ती] अभागापन।

बद-बला—स्त्री० [फा०] चुड़ैल। डाइन।

वि० १ चुड़ैल या डाइन की तरह का। २ दुष्ट। ३ उपद्रवी।

बद-बाछ—पु० [फा० बद+हिं० बाछ] बेईमानी या अनुचित रूप से प्राप्त किया जानेवाला हिस्सा।

बदबू—स्त्री० [फा०] बुरी गंध या दुर्गन्ध।

क्रि० प्र०—आना।—उठना।—निकलना।—फैलना।

बदबूदार—वि० [फा०] जिसमें से बुरी बास निकल रही हो। दुर्गन्ध-युक्त।

बद-मजगी—स्त्री० [फा० बदमजगी] 'बद-मजा' होने की अवस्था या भाव।

बद-मजा—वि० [फा० बदमजा] [भाव० बद-मजगी] १ (वस्तु) जिसका मजा अर्थात् स्वाद बुरा हो। २ (स्थिति आदि) जिसके रंग में भंग पड़ गया हो फलतः जिसमें पूरा पूरा आनंद न मिल सका हो।

बद-मस्त—वि० [फा०] [भाव० बदमस्ती] १ मदोन्मत्त। २ कामोन्मत्त।

बदमस्ती—स्त्री० [फा०] १ बद-मस्त होने की अवस्था या भाव। २ नशा।

बदमाश—वि० [फा० बद+अ० मआश=जीविका] [भाव० बदमाशी] १ जिसकी जीविका बुरे कामों से चलती हो। २ बुरे और निकृष्ट काम करनेवाला। दुर्वृत्त। ३ कुपथगामी। बदचलन। ४ गुंडा और लुच्चा।

बदमाशी—स्त्री० [फा० बद+अ० मआशी] १ बदमाश होने की अवस्था या भाव। २ बदमाश का कोई कार्य। ३. कोई ऐसा कार्य जो लड़ाई-झगड़ा कराने अथवा किसी के अहित के उद्देश्य से जानबूझकर किया जाय। ४ व्यभिचार।

बद-मिजाज—वि० [फा० बदमिजाज] [भाव० बद-मिजाजी] (व्यक्ति) जो चिड़चिड़े स्वभाव का हो।

बद-मिजाजी—स्त्री० [फा० बद+मिजाजी] बुरा स्वभाव। चिड़-चिड़ापन।

बदरंग—वि० [फा०] १ बुरे रंगवाला। २ जिसका रंग उड़ गया हो या फीका पड़ गया हो। ३ विवर्ण। ४ खराब। खोटा। ५ (ताश के खेल में वह व्यक्ति) जिसके पास किसी विशिष्ट रंग का पत्ता न हो।

पु० १ बदरंगी। २ चौसर के खेल में, वह गोटी जो रंग न हुई हो; अर्थात् पुगनेवाले घर में न पहुँची हो।

बदरंगी—स्त्री० [फा०] १ रंग का फीकापन या भद्दापन। २ ताश के खेल में किसी विशिष्ट रंग के पत्ते न होने की स्थिति।

बदर—पु० [सं०√बद् (स्थिर होना)+अरच्] १. बेर का पेड़ या फल। २ कपास। ३. बिनौला।

क्रि० वि० [फा०] दरवाजे पर। जैसे—दर-बदर भीख माँगना।

मुहा०—(किसी को) बदर करना=घर से निकालकर दरवाजे के बाहर कर देना। जैसे—किसी को शहर बदर करना अर्थात् इसलिए दरवाजे तक पहुँचा देना कि वह जहाँ चाहे चला जाय, परन्तु लौटकर न आवे। **(किसी के नाम) बदर निकालना**=किसी के जिम्मे रकम बाकी निकालना। किसी के हिसाब में उसके नाम बाकी बताना।

बदर-नवीसी—स्त्री० [फा०] १. हिसाब-किताब की जाँच। २. हिसाब-किताब में से गड़बड़ रकमें छाँटकर अलग करना।

बदरा—स्त्री० [सं० बदर+टाप्] वराह क्रांति का पौधा।

†पु०=बादल (मेघ)।

बदराई†—स्त्री०=बदली (आकाश की मेघाच्छन्नता)।

बदरामलक—पु० [सं० उपमि० स०] पानी आमला।

बद-राह—वि० [फा०] १ बुरे रास्ते पर चलनेवाला। कुमार्गी। २ दुष्ट। पाजी।

बदरि—पु० [सं०√बद् (स्थिर होना)+अरि, बा०] १ बेर का पेड़। २ उक्त पेड़ का फल।

बदरिका—स्त्री० [सं० बदरी+कन्+टाप्, ह्रस्व] १. बेर का पेड़ और उसका फल। बदरि। २ गंगा का उद्गम-स्थान तथा उसके आस-पास का क्षेत्र।

बदरिकाश्रम—पु० [सं० बदरिका-आश्रम, मध्य० स०] उत्तर प्रदेश के गढ़वाल जिले के अन्तर्गत एक प्रसिद्ध तीर्थ-स्थान जहाँ किसी समय नर-नारायण ऋषियों ने तपस्या की थी।

बदरी—स्त्री० [सं० बदर+ङीष्] बेर का पेड़ और उसका फल। बदरि।

†स्त्री०=बदली।

स्त्री० [देश०] १ थैली। २ बोझ। ३ माल का बाहर भेजा जाना।

बदरीच्छद—पु० [सं० ब० स०] एक तरह का गंध द्रव्य।

बदरी-नाथ—पु० [सं० ष० त०] १ बदरिकाश्रम नाम का तीर्थ। २ उक्त तीर्थ के देवता या उनकी मूर्ति।

बदरी-नारायण—पु० [सं० ष० त०] बदरी-नाथ।

बदरी-पत्रक—पु० [सं० ब० स०,+कन्] एक प्रकार का सुगन्ध द्रव्य। नखरी।

बदरीफला—स्त्री० [सं० ब० स०] नील शेफालिका का वृक्ष और उसका फल।

बदरीबण—पु०=बदरीवन।

बदरी-वन—पु० [स० ष० त०] १. वह स्थान जहाँ बेर के बहुत से पेड़ हैं। २. बदरिकाश्रम।

बदरन—पु० [?] पत्थर या लकडी में की जानेवाली एक प्रकार की जालीदार नक्काशी जिसमें बहुत से कोने होते हैं।

बदरोब—वि० [फा०+अ०] [भाव० बदरोबी] १. जिसका रोब होना तो चाहिए, फिर भी कुछ रोब न हो। २ तुच्छ। ३ भद्दा।

बदरौंह—वि० [फा० बदरी] बदचलन। बदराह।
पु० [हिं० बादल] आकाश मे छाये हुए हलके बादल।

बदरौनक—वि० [फा० बदरौनक] १ जिसमे कोई शोभा न हो। श्री-हीन। २ उजाड़।

बदल—पु० [अ०] १ बदलने की क्रिया या भाव। २ बदले मे दी हुई वस्तु। ३ पलटा। प्रतिकार। ४ क्षतिपूर्ति।
पु० [हिं० बदलना] बदले हुए होने की अवस्था या भाव।

बद-लगाम—वि० [फा०] जिसके मुँह मे लगाम न हो; अर्थात् जिसे भला-बुरा कहने मे सकोच न हो। मुँहजोर। मुँहफट।

बदलना—अ०[अ० बदल=परिवर्तन+ना(प्रत्य०)] १. किसी चीज या बात का अपना पुराना रूप छोडकर नया रूप धारण करना। एक दशा या रूप से दूसरी दशा या रूप में आना या होना। जैसे—ऋतु बदलना, रग बदलना, स्वभाव बदलना। २ किसी चीज, बात या व्यक्ति का स्थान किसी दूसरी चीज, बात या व्यक्ति को प्राप्त होना। जैसे—(क) इस महीने से कई गाडियो का समय बदल गया है। (ख) जिले के कई अधिकारी बदल गये है। (ग) कल सभा मे हमारा छाता (या जूता) किसी से बदल गया था। ३ आकार-प्रकार, गुण-धर्म, रूप-रग आदि के विचार से और का और, अथवा पहले से बिलकुल भिन्न हो जाना। जैसे (क) इतने दिनो तक पहाड पर (या विदेश मे) रहने से उसकी शकल ही बिलकुल बदल गई है।
सयो० क्रि०—जाना।
स० १ जो कुछ पहले से हो अथवा चला आ रहा हो, उसे हटाकर उसके स्थान पर कुछ और करना, रखना या लाना। जैसे—(क) कपडे बदलना अर्थात पुराने या मैले कपडे उतारकर नये या साफ कपडे पहनना। (ख) नौकर, पहरेदार या रसोइया बदलना, अर्थात् पुराने को हटाकर नया रखना। २ जो कुछ पहले से हो, उसे छोडकर उसके स्थान पर दूसरा ग्रहण करना। जैसे—(क) उन्होने अपना पहलेवाला मकान बदल दिया है। (ख) रास्ते मे दो जगह गाडी बदलनी पड़ती है। ३ अपनी कोई चीज किसी को देकर उसके स्थान पर उससे दूसरी चीज लेना। विनिमय करना। जैसे—हमने दूकानदार से अपनी कलम (या किताब) बदल ली है।
सयो० क्रि०—डालना।—देना।—लेना।
४ किसी के आकार-प्रकार, गुण-धर्म, रंग-रूप आदि मे कोई तात्त्विक या महत्त्वपूर्ण परिवर्तन करना। जैसे—(क) उन्होंने मकान की मरम्मत क्या कराई है, उसकी शकल ही बिलकुल बदल दी है। (ख) विद्रोहियो ने एक ही दिन मे देश का सारा शासन बदल दिया। (ग) अब मैंने अपना पुराना विचार बदल दिया है।
सयो० क्रि०—डालना।—देना।

बदलवाना—स० [हिं० बदलना का प्रे०] बदलने का काम दूसरे से कराना।

बदला—पु० [अ० बदल, हिं० बदलना] १. बदलने की क्रिया, भाव या व्यापार। २. वह अवस्था जिसमे एक चीज देकर उसके स्थान पर दूसरी चीज ली जाती है। आदान-प्रदान। विनिमय। जैसे—किसी की घडी (या छडी) से अपनी घडी (या छड़ी) का बदला करना। ३ किसी की कोई क्षति या हानि हो जाने पर उसकी पूर्ति के लिए दिया जानेवाला धन या कोई चीज। क्षति-पूर्ति। जैसे—यदि आपकी पुस्तक मुझसे खो जायगी, तो मै उसका बदला आपको दे दूँगा।
पद—बदले या बदले में—रिक्त स्थान की पूर्ति के लिए। किसी के स्थान पर। जैसे—हमारी जो कलम उनसे टूट गई थी, उसके बदले (या बदले मे) उन्होने यह नई कलम भेज दी है।
४ किसी ने जैसा व्यवहार किया हो, उसके साथ किया जानेवाला वैसा ही व्यवहार। प्रतिकार। पलटा। जैसे—सज्जन पुरुष बुराई का बदला भी भलाई से ही देते हैं। ५ जिसने जैसी हानि पहुँचाई हो, उसे भी अपने सतोषार्थ वैसी ही हानि पहुँचाने की भावना, अथवा पहुँचाई जानेवाली वैसी ही हानि।
मुहा०—(किसी से) बदला चुकाना या लेना=जिसने जैसी हानि पहुँचाई हो, उसे भी वैसी ही हानि पहुँचाना। अपने मनस्तोष के लिए किसी के साथ वैसा ही बुरा व्यवहार करना जैसा पहले उसने किया हो। जैसे—भले ही आज उन्होंने मुझ पर झूठा अभियोग लगाया हो, पर मैं भी किसी दिन उनसे इसका बदला लेकर रहूँगा।
६ किसी काम या बात से प्राप्त होनेवाला प्रतिफल। किसी काम या बात का वह परिणाम जो प्राप्त हो या भोगना पडे। जैसे—तुम्हे भी किसी न किसी दिन इसका बदला मिलकर रहेगा।
क्रि० प्र०—देना।—पाना।—मिलना।
७ वह धन या और कोई चीज जो किसी को कोई काम करने पर उसे प्रसन्न या सतुष्ट करने के लिए दिया जाय। एवज। मुआवजा। जैसे—उनकी सेवाओ का बदला यह सामान्य पुरस्कार नही हो सकता।

बदलाई—स्त्री० [हिं० बदलना+आई (प्रत्य०)] १ बदलने की क्रिया या भाव। अदल-बदल। विनिमय। २ बदले मे ली या दी जानेवाली चीज। ३ बदलने के लिए बदले मे दिया जानेवाला धन। ४ अपकार, हानि आदि करने पर किसी की की जानेवाली क्षति-पूर्ति।

बदलाना—स० बदलवाना।
†अ० बदलना (बदला जाना)।

बदली—स्त्री० [अ० बदल+ई (प्रत्य०)] १ बदले हुए होने की अवस्था या भाव। २ किसी सेवा के कर्मचारी को एक स्थान से हटाकर दूसरे स्थान पर भेजा जाना। तबादला। स्थानान्तरण। (ट्रान्स्फर)
स्त्री० [हिं० बादल] १ छोटा बादल। २. आकाश मे बादलो के छाये हुए होने की अवस्था या भाव।
†स्त्री०=बदरी (बेर का फल)। उदा०—भली विधि हो बदली मुख लावै।—केशव।

बदलौअल—स्त्री० [हिं० बदलना] १ अदल-बदल करने की क्रिया या भाव। २. बदले जाने की अवस्था या भाव।

बदलौवल—स्त्री०=बदलौअल।

बद-शकल—वि० [फा० बदशक्ल] [भाव० बदशकली] बुरी और भद्दी शक्ल-सूरत का। कुरूप। बेडौल।

बदशऊर—वि० [फा० बद+अ० शऊर] [भाव० बदशऊरी] १ जो ठीक ढंग से तथा शिष्टतापूर्वक कोई काम करना न जानता हो। २ बदतमीज। ३ मूर्ख।

बदशगुन—वि० [फा०] १ अशुभ। २ मनहूस।

बदशगुनी—स्त्री० [फा०] शगुन का खराब होना।

बदसलीका—वि० [फा० बद+अ० सलीक] १ बदशऊर। २ बदतमीज।

बदसलूकी—स्त्री०, [फा० बद+अ० सलूक] बुरा व्यवहार। अशिष्ट व्यवहार।

बदसूरत—वि० [फा० बद+अ० सूरत] [भाव० बद-सूरती] भद्दी सूरतवाला। कुरूप। बेडौल।

बदसूरती—स्त्री० [फा० बद+अ० सूरती] बद-सूरत होने की अवस्था या भाव।

ब-दस्त—अव्य० [फा०] किसी के हाथ से या द्वारा। मारफत। हस्ते।

बदस्तूर—अव्य० [फा०] १ जिस प्रकार पहले से होता आया हो, उसी प्रकार। २ जिस रूप मे पहले रहा हो, उसी रूप मे। बिना किसी परिवर्तन या हेर-फेर के। यथापूर्व। यथावत्।

बदहजमी—स्त्री० [फा० बद+अ० हज्मी] १ खाई हुई चीज हजम न होने की अवस्था या भाव। अजीर्ण। अपच। २ वह स्थिति जिसमे कोई चीज या बात ठीक तरह से नियंत्रित न रखी जा सके, और अनावश्यक रूप मे प्रदर्शित की जाय। जैसे—अक्ल या दौलत की बद-हजमी।

बदहवास—वि० [फा० +अ०] [भाव० बद-हवासी] १ जिसके होश-हवास ठिकाने न हो। बौखलाया हुआ। २ उद्विग्न। विकल। ३ अचेत। बेहोश।

बद-हाल—वि० [फा० +अ०] [भाव० बद-हाली] १ दुर्दशाग्रस्त। २ रोग से आक्रांत और पीडित। ३ कगाल।

बदान—स्त्री० [हि० बदना+आन (प्रत्य०)] १ बदने की क्रिया या भाव। २ बाजी या शर्त का बदा जाना।

अव्य० १ जान मे। बाजी लगाकर। २ दृढतापूर्वक प्रतिज्ञा करते हुए।

बदा-बदी—स्त्री० [हि० बदना] १ ऐसी स्थिति जिसमे दोनो पक्ष एक दूसरे से आगे निकलना अथवा एक दूसरे को नीचा दिखाना चाहते हो। २ दे० 'बदान'।

क्रि० वि० बद-बदकर। उदा०— बदा-बदी ज्यौं लेत हैं ए बदरा बदराह।—बिहारी।

बदाम—पु०=बादाम।

बदामा—वि० [फा०] बादाम के आकार-प्रकार का। अडाकार। (ओवल)

बदामी—पु० [हि० बादाम] कौडियाले की जाति का एक प्रकार का पक्षी। वि० बादाम के रग का। बादामी।

बदि—स्त्री० [स० वर्त्त =पलटा] किसी काम या बात का बदला चुकाने के लिए किया जानेवाला काम या बात। बदला।

अव्य० १ किसी काम या बात के पलटे या बदले मे। २ किसी की खातिर मे। ३ लिए। वास्ते।

† स्त्री० =बदी (कृष्ण पक्ष)।

बदी—स्त्री० [स० बहुल में का ब+दिवस मे का दि=बदि] चांद्र मास का कृष्ण पक्ष। अँधेरा पाख। 'सुदी' का विपर्याय। जैसे—भादो बदीअष्टमी। स्त्री० [फा०] १. बद अर्थात् बुरे होने की अवस्था या भाव। खराबी। बुराई।

पद—नेकी-बदी=(क) उपकार और अपकार। भलाई और बुराई। (ख) घर-गृहस्थी मे होनेवाले शुभ और अशुभ काम या घटनाएँ। (विवाह, मृत्यु आदि)। जैसे—वह नेकी-बदी मे सबका साथ देते (या सबके यहाँ आते जाते) है।

२ किसी का किया जानेवाला अपकार या अहित। जैसे—उन्होने तुम्हारे साथ कोई बदी तो नही की है।

३ किसी की अनुपस्थिति मे की जानेवाली उसकी निंदा।

बदीत—वि० [स० विदित] प्रसिद्ध। मशहूर। उदा०—जगत बदीत करी मन-मोहना।—मीराँ।

बदूख†—स्त्री०=बदूक।

बदूर(ल)†—पु०=बादल।

बदे—अव्य० [हि० बद=पक्ष] वास्ते। लिए। खातिर। (पूरब) उदा०—भेवल छयल बा दूध मे खाजा तोरे बदे।—तेगअली। पु० वह मूल्य जिसमे दलाली की रकम भी सम्मिलित हो। (दलाल)

बदौलत—अव्य० [फा० ब०+अ० दौलत] १ कृपापूर्ण अवलब या सहारे से। जैसे—उन्हे यह नौकरी आपकी ही बदौलत मिली थी। २ कारण या वजह से।

बद्दर†—पु०=बादल।

बद्दल†—पु०=बादल।

बद्दू—पु० [अ० बदू] अरब की एक असभ्य खानाबदोश जाति। वि० [फा० बद]=बदनाम।

बद्ध—वि० [स०√बध्+क्त] १ जो बँधा हो या बाँधा गया हो। जकडा या बधन मे पडा हुआ। २ जो किसी प्रकार के घेरे मे हो। जैसे—सीमा-बद्ध। ३ जिस पर कोई प्रतिबंध या रुकावट लगी हो। जैसे—नियम-बद्ध, प्रतिज्ञा-बद्ध। ४ जो किसी प्रकार निर्धारित या निश्चित किया गया हो। जैसे—आशा-बद्ध। ६ अच्छी तरह जमाया या बैठा हुआ। स्थित। जैसे—पक्ति-बद्ध। ६ जो पकडकर कही रोक रखा गया है। जैसे—कारावद्ध। ७ किसी के साथ जुड़ा, लगा या सटा हुआ। जैसे—कर-बद्ध। ८ कुछ विशिष्ट नियमो के अनुसार किसी निश्चित और विशिष्ट रूप मे लाया या रखा हुआ। जैसे—छंदोबद्ध, भाषा-बद्ध। ९ उलझा या फँसा हुआ। जैसे—प्रेम-बद्ध, मोह-बद्ध। १० जिसकी गति, मार्ग या प्रवाह रुका हुआ हो। जैसे—कोष्ठ-बद्ध। ११ धार्मिक क्षेत्र मे, जो सासारिक बधनो या मोह-माया मे पडा हो। 'मुक्त' का विपर्याय।

बद्धक—वि० [स० बद्ध+कन्] जो बाँध या पकडकर मँगाया गया हो। पु० बँधुआ। कैदी।

बद्ध-कक्ष—वि० [स० ब० स०] बद्ध-परिकर। तैयार। प्रस्तुत।

बद्धकोष्ठ—पु० [स० ब० स०] पाखाना कम या न होने का रोग। कब्ज। कब्जियत।

वि० जिसे उक्त रोग हुआ हो। कब्ज से पीड़ित।

बद्ध-कोष्ठता—स्त्री० [सं० बद्ध-कोष्ठ+तल्, टाप्] वह स्थिति जिसमे पाखाना कम या न होता हो। कब्जियत।

बद्ध-गुद—पु० [सं० ब० स०] आँतों मे मल अवरुद्ध होने का रोग।

बद्ध-गुदोदर—पु० [सं० ब० स०] पेट का एक रोग जिसमे हृदय और नाभि के बीच में पेट कुछ बढ़ आता है और जिसके फलस्वरूप मल रुक-रुककर और थोडा-थोड़ा निकलता है।

बद्ध-ग्रह—वि० [सं० ब० स०] हठी।

बद्ध-चित्त—वि० [सं० ब० स०] जिसका मन किसी वस्तु या विषय पर जमा हो। एकाग्र।

बद्ध-जिह्व—वि० [सं० ब० स०] जो चुप्पी साधे हो। मौन।

बद्ध-दृष्टि—वि० [सं० ब० स०] जिसकी दृष्टि किसी पर जमी या लगी हो।

बद्ध-परिकर—वि० [सं० ब० स०] जो कमर बाँधे हुए कोई काम करने के लिए तैयार हो। उद्यत। तत्पर।

बद्ध-प्रतिज्ञ—वि० [सं० ब० स०] प्रतिज्ञा से बँधा हुआ। वचन-बद्ध।

बद्ध-फल—पुं० [स० ब० स०] करज।

बद्ध-भूमि—स्त्री० [स० कर्म० स०] १ मकान बनाने के लिए ठीक की हुई भूमि। २. मकान का पक्का फर्श।

बद्ध-मुष्टि—वि० [सं० ब० स०] १ जिसकी मुट्ठी बँधी रहती हो; अर्थात् जो निर्धनो को भिक्षा, ब्राह्मणो को दान आदि न देता हो। २ बहुत कम खरच करनेवाला। कजूस।

बद्ध-मूल—वि० [सं० ब० स०] १. जिसने जड पकड ली हो। २ जो मूलत दृढ़ और अटल हो गया हो।

बद्ध-मौन—वि० [स० ब० स०] चुप्प। मौन।

बद्ध-रसाल—पु० [स० कर्म० स०] एक प्रकार का बढ़िया आम।

बद्ध-राग—वि० [स० ब० स०] किसी प्रकार के राग या प्रेम में बँधा हुआ। अनुरक्त।

बद्ध-वर्चस—वि० [स० ब० स०] मल-रोधक। कब्जियत करनेवाला।

बद्ध-वाक्—वि० [सं० ब० स०] वचन-बद्ध।

बद्ध-वैर—वि० [स० ब० स०] जिसके मन मे किसी के प्रति पक्का वैर हो।

बद्ध-शिख—वि० [स० ब० स०] १ जिसकी शिखा या चोटी बँधी हुई हो। २ अल्पवयस्क।

पु० छोटा बच्चा। शिशु।

बद्ध-शिखा—स्त्री० [स० बद्ध-शिख+टाप] भूम्यामलकी।

बद्ध-सूतक—पु० [सं० कर्म० स०] रसेश्वर दर्शन के अनुसार पारा जो अक्षत, लघुद्रावी, तेजोविशिष्ट, निर्मल और गुरु कहा गया है।

बद्ध-स्नेह—वि० [स० ब० स०] किसी के स्नेह मे बँधा हुआ। अनुरक्त। आसक्त।

बद्धांजलि—वि० [सं० बद्ध-अजलि, ब० स०] सम्मान-प्रदर्शन के लिए जिसने हाथ जोडे हों। कर-बद्ध।

बद्धानुराग—वि० [स० बद्ध-अनुराग, ब० स०]=आसक्त।

बद्धी—स्त्री० [स० बद्ध+हि० ई (प्रत्य०)] १ वह जिससे कुछ कसा या बाँधा जाय। जैसे—डोरी, तस्मा, फीता आदि। २ माला या सिकड़ी के आकार का चार लड़ों का एक गहना जिसकी दो लडें तो गले मे होती हैं और दो लड़ें दोनों कंधो पर से जनेऊ की तरह बाँहो के नीचे होती हुई छाती और पीठ तक लटकी रहती हैं। ३ किसी लबी चीज की चोट से शरीर पर पड़नेवाला लबा चिह्न या निशान। साँट। जैसे—बेंत की मार से शरीर पर बद्धियाँ पड़ना।

क्रि० प्र०—पड़ना।

बद्धोदर—पु० [स० बद्ध-उदर, ब० स०] बद्ध-गुदोदर रोग। बद्ध-कोष्ठ।

बध—पु०=वध।

†स्त्री०=बढ़ती (अधिकता)।

बधइया†—स्त्री०=बधाई।

बध-गराड़ी—स्त्री० [हि० बाध+गराड़ी] रस्सी बटने का एक उपकरण।

बधना—स० [स० वधू+हि०ना (प्रत्य०)] बध या हत्या करना। मार डालना।

पुं० [स० वर्द्धन] मुसलमानो का एक तरह का टोटीदार लोटा।

पुं० [देश०] लाख की चूड़ियाँ बनानेवालो का एक औजार।

बध-भूमि—स्त्री० [स० वध-भूमि] १. वध करने का नियत स्थान। २ वह स्थान जहाँ अपराधियो को प्राण-दड दिया जाता हो।

बधवा†—पु० १=बधावा। २ दे० 'बधाई'।

बधाई—स्त्री० [स० वर्द्धन, प० वधना=बढ़ना] १ बढ़ने की अवस्था, क्रिया या भाव। बढ़ती। वृद्धि। २ किसी की उन्नति या भाग्योदय होने अथवा किसी के यहाँ कोई मांगलिक अथवा शुभ कार्य होने पर प्रसन्नतापूर्वक उसका किया जानेवाला अभिनदन और उसके प्रति प्रकट की जानेवाली शुभ-कामना। यह कहना कि हम आपके अमुक अच्छे काम या बात से बहुत प्रसन्न हुए हैं, और आपकी इसी प्रकार की उन्नति या वृद्धि की हार्दिक कामना करते हैं। मुबारकबाद। (कांग्रैचुलेशनस्) जैसे—किसी के यहाँ पुत्र का जन्म या विवाह होने पर या किसी के प्रतिष्ठित पद पर पहुँचने अथवा कोई बहुत बडा काम करने या सफल-मनोरथ होने पर उसे बधाई देना।

क्रि० प्र०—देना।—मिलना।

३. घर मे पुत्र जन्म, विवाह आदि शुभ कृत्यो के अवसर पर होनेवाला आनद-मगल या उसके उपलक्ष में होनेवाला उत्सव। ४ उक्त अवसरो पर होनेवाले नृत्य, गीत आदि।

क्रि० प्र०—गाना।—बजना।—बजाना।

५ वह उपहार या धन जो उक्त प्रकार के आनंदमय अवसरो पर अपने आश्रितो, छोटो या निकटस्थ सबधियो को अपनी प्रसन्नता के प्रतीक के रूप मे दिया या बाँटा जाता है। जैसे—उन्होंने अपने सबधियो को दो दो रुपए बधाई के दिये है।

क्रि० प्र०—देना।—बाँटना।

बधाऊ†—पु०=१. बधाई। २=बधावा।

बधाना—स० [हि० बधना का प्रे०] बधने या हत्या करने का काम दूसरे से कराना।

†अ० [हि० बधिया] (बैल आदि का) बधिया किया जाना।

†स०=बढाना।

बधाया—पु० [हि० बधाई] १ बधाई। २ बधावा।

बधावड़ा†—पु०=बधावा।

बधावना†—स०=बधाना।

पु० दे० 'बधाई'।

बधावा—पु० [हि० बधाई] १ बधाई। २ शुभ अवसर पर होनेवाला आनन्दोत्सव या गाना-बजाना।
क्रि० प्र०—बजना।
३ वह उपहार या भेट जो गाजे-बाजे के साथ कुछ विशिष्ट मागलिक अवसरो पर सबधियो के यहाँ भेजी जाती है। ४ इस प्रकार उपहार ले जानेवाले लोग।

बधिक—पु० [स० घातक] १ बध करने या मार डालनेवाला। हत्यारा। २ वह जो अपराधियो के प्राण लेता हो। फाँसी देने या सिर काटनेवाला। जल्लाद। ३ व्याध। बहेलिया।

बधिया—वि० [हि० बध=मारना] (वह बैल या कोई नर पशु) जिसका अडकोश कुचल या निकाल लिया गया हो और फलत उसे षड कर दिया गया हो। नपुसक किया हुआ चौपाया। खस्सी। आख्ता। 'आँड़' का विपर्याय।
पु० उक्त प्रकार का बैल जिस पर प्राय बोझ लादकर ले जाते है।
मुहा०—बधिया बैठना=इतना अधिक घाटा होना कि कारबार बद हो जाय।
†पु० [?] एक प्रकार का गन्ना।

बधियाना—स० [हि० बधिया] कुछ विशिष्ट नर पशुओ का शल्य से अडकोश निकालकर उन्हे बधिया करना। बधिया बनाना।

बधिर—पु० [स०√बन्ध् (बाँधना)+किरच्, न-लोप] [भाव० बधिरता] जिसमे सुनने की शक्ति न हो या न रह गई हो। बहरा।

बधिरता—स्त्री० [स० बधिर+तल्×,टाप्] श्रवण-शक्ति का अभाव। बहरापन। बधिर होने की अवस्था या भाव।

बधिरित—भू० कृ० [स० बधिर+क्विप्+क्त] बहरा किया या बनाया हुआ।

बधिरिमा (मन्)—स्त्री० [स० बधिर+इमनिच्] बधिरता। बहरापन।

बधू—स्त्री० [स०√बन्ध् (बाँधना)+ऊ, न लोप] वधू।

बधूक—पु०=बधूक।

बधूटी—स्त्री० [स० बधू+टि+डीप] १ पुत्र की स्त्री। पतोहू। २ सौभाग्यवती स्त्री। ३. नई ब्याही हुई स्त्री।

बधूरा†—पु०=बगूला (बवडर)।

बधैया—स्त्री०=बधाई।

बध्य—वि० [स० वध्य] १ जिसे वध किया जा सके या जो वध किये जाने को हो। २ बध किये या मारे जाने के योग्य।

बन—पु० [स० वन] १ वह पर्वतीय या मैदानी क्षेत्र जिसमे न तो मनुष्य रहते हो और न जिसमे खेती-बारी होती हो, बल्कि जिसमे प्रकृति-प्रदत्त पेड़-पौधा तथा जगली जानवरो की बहुलता हो। जगल। कानन।
पद—बन की धातु=गेरु नामक लाल मिट्टी।
२ समूह। ३ जल। पानी। ४ उपवन। बगीचा। ५ निराने या नीदने की मजदूरी। निरौनी। निदाई। ६ वह अन्न जो किसान लोग मजदूरो को खेत काटने की मजदूरी के रूप मे देते हैं। ७ कपास का पौधा। उदा०—रानु सुक्यौ, बीतौ बनौ, ऊखौ लई उखारि।—बिहारी। ८ वह भेट जो किसान लोग अपने जमीदार को किसी उत्सव के उपलक्ष मे देते है। शादियाना। ९ दे० 'वन'।
पु०=बद।

स्त्री० [हिं० बनाना] १ सज-धज। बनावट। २. बाना। भेस।

बन-आलू†—पु० [हिं० बन+आलू] जमीकद की जाति का एक कद।

बनउर†—पु०१ =बिनौला। २.=ओला।

बन-कंडा—पु० [हि० बन+कंडा] वह कडा या गोहरी जो पाथकर न बनाई गई हो बल्कि जगल मे गाय-बैल आदि के गोबर के सूख जाने पर आप से आप बनी हो।

बनक—स्त्री० [सं० वन+क (प्रत्य०)] वन की उपज। जगल की पैदावार। जैसे—गोंद, लकडी, शहद आदि।
स्त्री० [?] एक प्रकार की साटन।
†स्त्री०=बानक।

बन-ककड़ी—स्त्री० [स० वन-कर्कटी] एक पौधा जिसका गोंद दवा के काम आता है।

बनकटी—स्त्री० [हि० वन (जगल)+काटना] १ जगल काटकर उसे आबाद करने, खेती-बारी अथवा रहने के योग्य बनाने का हक। २ एक प्रकार का पहाडी बाँस जिससे टोकरे बनाये जाते है।

बनकर—पु० [स० वनकर] १ शत्रु के चलाये हुए हथियार का निष्फल करने की एक युक्ति। २ सूर्य। (डि०)
पु० [स० वन+कर] वह कर जो जगल मे होनेवाली वस्तुओ के क्रय-विक्रय पर लगता है।

बन-कल्ला—पु० [हिं० बन+कल्ला] एक प्रकार का जगली पेड।

बन-कस—पु० [हि० वन+कुश] एक प्रकार की घास जिसे बनकुस, बँभनी, मोय और बाभर भी कहते हैं। इससे रस्सियाँ बनाई जाती है।

बनकोरा—पु० [देश०] लोनिया का साग। लोनी।

बनखंड—पु० [स० वनखड] १ वन का कोई खण्ड या भाग। २ वन्य प्रदेश।

बनखंडी—स्त्री० [हिं० वन+खड=टुकडा] १ वन का कोई खड या भाग। २ छोटा जगल या वन।
वि० वन या जगल मे रहने या होनेवाला।

बनखरा—पु० [हि० वन+खरा] वह भूमि जिसमे पिछली फसल मे कपास बोई गई हो।

बनखोर—पु० [देश०] कौर नामक वृक्ष।

बनगाव—पु० [हि० वन+फा० गाव=हि० गौ] १ एक प्रकार का बडा हिरन जिसे रोझ भी कहते है। २ एक प्रकार का तेदू (वृक्ष)।

बनगोभी—स्त्री० [हि० बन+गोभी] एक तरह की जगली घास।

बनचर—पु० [स० वनचर] १. जगल मे रहनेवाला पशु। वन्य पशु। २ बन या जगल मे रहनेवाला आदमी। जगली मनुष्य। ३ जल मे रहनेवाले जीव-जन्तु।
वि० वन मे रहनेवाला।

बनचरी—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की जगली घास जिसकी पत्तियाँ ज्वार की पत्तियों की तरह होती है। बरो।
पु०=बनचर।
वि० बनचर का। बनचर-सम्बन्धी। जैसे—बनचरी रग-ढग।

बनचारी—वि० [स० वनचारिन्] वन मे घूमने-फिरने या रहनेवाला।
पु० १ वन मे रहनेवाले; पशु, मनुष्य आदि। २ जल मे रहनेवाले जीव-जन्तु। जलचर।

बनचौर—स्त्री० [सं० वन+चमरी] पर्वतीय प्रदेशों में होनेवाली एक तरह की गाय जिसकी पूँछ की चँवर बनाई जाती है। सुरागाय।

बनचौरी—स्त्री० =बनचौर।

बनज—पु० [सं० वनज] जंगल में होने या रहनेवाला जीव।
वि० दे० 'वनज'।
†पु०=वाणिज्य (व्यापार)।

बनजना*—स० [हिं० बनज] १ व्यापार करना। २ किसी के साथ किसी तरह की बात-चीत या लेन-देन निश्चित करना। जैसे—किसी की लड़की के साथ अपना लड़का बनजना (अर्थात् ब्याह पक्का करना)।
स० १ व्यापार करने के लिए कोई चीज खरीदना।
†२ किसी को इस प्रकार वश में करना कि मानो उसे मोल ले लिया गया हो।

बनजर—स्त्री०=बंजर।

बनजरिया—स्त्री० [हिं० बन+जारना=जलाना] भूमि का वह टुकड़ा जो जंगल को जला या काटकर के खेती-बारी के लिए उपयुक्त बनाया गया हो।

बनजात—पु० [सं० वनजात] कमल।

बनजारा—पु० [हिं० वनिज+हारा] १ वह व्यक्ति जो बैलों पर अन्न लादकर बेचने के लिए एक देश से दूसरे देश को जाता है। टाँडा लादनेवाला व्यक्ति। टँड़ैया। टँडवरिया। बंजारा। २ व्यापारी। सौदागर।

बनजी—पु० [सं० वाणिज्य] १ व्यापार या रोजगार करनेवाला। सौदागर। २ वाणिज्य। व्यापार।

बनज्योत्स्ना—स्त्री० [सं० वनज्योत्स्ना] माधवी लता।

बनड़ा—पु० [?] बिलावल राग का एक भेद। यह झूमडा ताल पर गाया जाता है।
पु० [हिं० बना=दूल्हा] विवाह के समय वर-पक्ष में गाया जानेवाला एक प्रकार का गीत।

बनड़ा जैत—पु० [हिं० बनडा+सं० जयत] एक शालक राग जो रूपक ताल पर गाया जाता है।

बनड़ा-देवगरी—पु० [हिं० बनडा+सं० देवगिरि] एक शालक राग जो एकताले पर गाया जाता है।

बनत—स्त्री० [हिं० बनना+त (प्रत्य०)] १ किसी चीज के बनने या बनाये जाने का ढंग, प्रक्रिया या भाव। २ किसी चीज की बनावट या रचना का विशिष्ट ढंग या प्रकार। अभिकल्प। भात। (डिजाइन) ३. पारस्परिक अनुकूलता या सामंजस्य। मेल। ४. गोटे-पट्टे की तरह की एक प्रकार की पतली पट्टी। बाँकड़ी।

बनताई†—स्त्री० [हिं० बन+ताई (प्रत्य०)] १. वन या जंगल की सघनता। २ वन की भयंकरता।

बनतुरई—स्त्री० [हिं० बन+तुरई] बंदाल।

बन-तुलसी—स्त्री० [सं० वन+तुलसी] बर्बर नाम का पौधा जिसकी पत्ती और मंजरी तुलसी की-सी होती है। बर्बरी।

बनद—पु० [सं० वनद] बादल। मेघ।
वि० जल देनेवाला। जलद।

बनदाम—स्त्री० [सं० वनदाम] वन माला।

बनदेवी—स्त्री० [सं० वनदेवी] किसी वन की अधिष्ठात्री देवी।

बनधातु—स्त्री० [सं० वनधातु] गेरू या और कोई रंगीन मिट्टी।

बनना—अ० [सं० वर्णन, प्रा० वण्णन=चित्रित होना, रचा जाना] १. अनेक प्रकार के उपकरणों, तत्त्वों आदि के योग से कोई नई चीज तैयार होना अथवा किसी नये आकार या रूप में प्रस्तुत होकर अस्तित्व में आना। जैसे—कल-कारखानों में कागज, चीनी या धातुओं की चीजें बनाना।

पद—बना बनाया=(क) जो पहले से बनकर ठीक या तैयार हो। जैसे—बना-बनाया कुरता मिल गया। (ख) जिसमें पहले से ही पूर्णता हो, कोई कोर-कसर न हो। उदा०—मैं याचक बना-बनाया था।—मैथिलीशरण।

मुहा०—(किसी का) बना रहना=संसार में कुशलतापूर्वक जीवित रहना। जैसे—ईश्वर करे यह बालक बना रहे। **(किसी का किसी स्थान पर) बना रहना**=उपस्थित या वर्तमान रहना। जैसे—आप जब तक चाहें तब तक यहाँ बने रहें।

२ किसी पदार्थ का ऐसे रूप में आना जिसमें वह व्यवहार में आ सके। काम में आने के योग्य होना। जैसे—दवा या भोजन बनना। ३. किसी प्रकार के रूप-परिवर्तन के द्वारा एक चीज से दूसरी नई चीज तैयार होना। जैसे—चीनी से शरबत बनना, रूई से डोरा या सूत बनाना। ४ उक्त के आधार पर, पारस्परिक व्यवहार में किसी के साथ पहलेवाले भाव या संबंध के स्थान पर कोई दूसरा नया भाव या संबंध स्थापित होना। जैसे—(क) मित्र का शत्रु, अथवा शत्रु का मित्र बनना। (ख) किसी का दत्तक पुत्र या मुँह-बोला भाई बनना। ५ आविष्कार आदि के द्वारा प्रस्तुत होकर सामने आना। जैसे—अब तो नित्य सैकड़ों तरह के नये नये यंत्र बनने लगे हैं। ६ पहले की तुलना में अधिक अच्छी, उन्नत या संतोषजनक अवस्था या दशा में आना या पहुँचना। जैसे—वे तो हमारे देखते देखते बने हैं।

पद—बनकर=अच्छी तरह। पूर्ण रूप से। भली-भाँति। उदा०—मनमोहन से बिछुरे इतही बनि कै न अबै दिन द्वै गये है। —पद्माकर। **बन ठनकर**=खूब बनाव-सिंगार या सजावट करके। जैसे—आज-कल तो वह खूब बन-ठनकर घर से निकलते है।

७. किसी विशिष्ट प्रकार का अवसर, योग या स्थिति प्राप्त होना।

मुहा०—बन आना=अच्छा अवसर, योग या स्थिति प्राप्त होना। जैसे—उन लोगो के लड़ाई झगड़े में तुम्हारी खूब बन आई है। **प्राणों पर आ बनना**=ऐसी स्थिति आ पहुँचना कि प्राण जाने का भय हो। जान जाने की नौबत आना। जैसे—तुम्हारे अत्याचारो (या दुर्व्यवहारों) से तो मेरे प्राणों पर आ बनी है। **(किसी का) कुछ बन बैठना**=वास्तविक अधिकार, गुण, योग्यता आदि का अभाव होने पर भी किसी पद या स्थिति का अधिकारी बन जाना अथवा यह प्रकट करना कि हम उपयुक्त या वास्तविक अधिकारी हैं। जैसे—वह कुछ सरदारों को अपनी ओर मिलाकर राजा (या शासक) बन बैठा। (हिं० के हो बैठना' मुहा० की तरह प्रयुक्त।)

८. किसी काम का ऐसी स्थिति में होना कि वह पूरा या सम्पन्न हो सके। संभव होना। जैसे—जिस तरह बने, उसकी जान बचाओ। ९. किसी प्रक्रिया से ऐसे रूप में आना जो बहुत ही उपयुक्त, ठीक या सुंदर जान पड़े। जैसे—(क) नई बेल टँकने से यह साड़ी बन गई है। (ख) दफ्ती

पर चढ़ने और हाशिया लगने से यह तस्वीर बन गई है। १० किसी प्रकार के दोष, विकार आदि दूर किये जाने पर या मरम्मत आदि होने पर किसी चीज का ठीक तरह से काम मे आने के योग्य होना। जैसे—पाँच रुपये मे यह घडी बनकर ठीक हो जायगी। ११ किसी पद या स्थान पर नियुक्त या प्रतिष्ठित होकर नये अधिकार, मर्यादा आदि से युक्त होना। जैसे—किसी कार्यालय का व्यवस्थापक (या मदिर का पुजारी) बनना।

मुहा०—बन बैठना=अधिकार ग्रहण करके या रूप धारण करके किसी पद या स्थान पर आसीन होना। जैसे—उनके मरते ही उनका भतीजा मालिक बन बैठा।

१२ आर्थिक क्षेत्र मे, किसी प्रकार की प्राप्ति या लाभ होना। जैसे—चलो, इस सौदे मे १०) बन गये। १३ आपस मे यथेष्ट मित्रता के भाव से और घनिष्ठतापूर्वक आचरण, निर्वाह या व्यवहार होना। जैसे—इधर कुछ दिनों से उन दोनों मे खूब बनने लगी है। १४ अभिनय आदि मे किसी पात्र की भूमिका मे दर्शको के सामने आना। किसी का रूप धारण करना। जैसे—मैं अकबर बनूँगा और तुम महाराणा प्रताप बनना। १५ समाज मे प्रतिष्ठा प्राप्त करने के उद्देश्य से अपने आपको अधिक उच्च कोटि का या योग्य सिद्ध करने के लिए प्राय गभीर मुद्रा धारण करके औरो से कुछ अलग अलग रहना। जैसे—अब तो बाबू साहब हम लोगो से बनने लगे हैं। १६ किसी के बढावा देने या बहकाने पर अपने आपको अधिक योग्य या समर्थ समझने लगना, और फलत दूसरो की दृष्टि मे उपहासास्पद तथा मूर्ख सिद्ध होना। जैसे—आज पडितों की सभा मे शास्त्री जी खूब बने।

विशेष—इस अर्थ मे इस शब्द का प्रयोग प्राय सकर्मक रूप मे ही अधिक होता है। (जैसे—शास्त्री जी खूब बनाये गये।) अकर्मक रूप मे अपेक्षया कम ही होता है।

बनिनि†—स्त्री० [हिं० बनना] १. बनावट। २ बनाव-सिंगार। ३. सजावट।

बननिधि—पु० [सं० वननिधि] समुद्र।

बन-पति—पु० [स० वनपति] सिंह। शेर।

बन-पथ—पु० [स० वनपथ] १ समुद्र। २. ऐसा रास्ता जिसमे नदियाँ या जलाशय बहुत पड़ते हो। ३. ऐसा रास्ता जिसमे जगल बहुत पडते हो।

बन-पाट—पु० [हिं० बन+पाट] जगली सन। जगली पटुआ।

बन-पाती—स्त्री० =वनस्पति।

बन-पाल—पु० [स० वनपाल] बन या बाग का रक्षक। माली।

बन-पिडालू—पु० [हिं० बन+पिंडालू] एक प्रकार का मझोला जगली वृक्ष। इसकी लकड़ी कघी, कलमदान या नक्काशीदार चीजें बनाने के काम आती है।

बनप्रिय—पु० [स० वनप्रिय, ब० स०] कोयल। कोकिल।

बन-पती†—स्त्री०=वनस्पति। उदा०—भएउ बसत राती बनपती।—जायसी।

बन-फूल—पुं० [हिं० वन+फूल] जगली वृक्षो के फूल।

बन-फ़शई—वि० [फा०] १. नीले रग का। २ हलका हरा।

पु० उक्त प्रकार का रग।

बनफ़शा—पु० [फा० बनफ़्शा] एक प्रकार की बनस्पति जो नेपाल, कश्मीर और हिमालय पर्वत के अनेक स्थानो मे होती और औषध के काम आती है।

बनबकरा—पुं० [हिं० बन+बकरा] पर्वतीय प्रदेशो मे होनेवाला एक तरह का बकरा।

बन-बास—पु० [स० वनवास] १ बन में जाकर रहने या बसने की क्रिया या अवस्था। २. प्राचीन भारत मे, एक प्रकार का देश-निकाले का दड।

बन-बासी—वि० [हिं० बनबास] १ बन में रहनेवाला। जगली। २ बन मे जाकर बसा हुआ। ३. जिसे बनवास (दड) मिला हो।

बनबाहन—पुं० [स० वनवाहन] जलयान। नाव। नौका।

बन-बिलार†—पु०=बन-बिलाव।

बनबिलाव—पु० [हिं० बन+बिलाव=बिल्ली] बिल्ली की तरह का, या उससे कुछ बड़ा और मटमैले रग का एक जगली हिंसक जतु जो प्राय झाडियों में रहता और चिड़ियाँ पकडकर खाता है। कुछ लोग इसे इसलिए पालते भी हैं कि उससे चिडियो का शिकार करने मे बहुत सहायता मिलती है। इसके कानो का ऊपरी या बाहरी भाग काला होता है, इसी लिए इसे 'स्याहगोश' भी कहते है।

बनबेर—पु० [हिं०] एक प्रकार का जगली बेर।

बन-मानुस—पु० [हिं० बन+मानुष] बदरो से कुछ उन्नत और मनुष्य से मिलते-जुलते जगली जतुओ का वर्ग जिसमे गोरिल्ला, चिंपैंजी, ओरग, ऊटग आदि जन्तु हैं।

बनमाल—स्त्री०=बनमाला।

बनमाला—स्त्री० [स० वनमाला] १. जगली फूलो को पिरो कर बनाई हुई माला। २ पैरो तक लबी वह माला जो तुलसी की पत्तियो और कमल, परजाते और मंदार के फूलो को पिरो कर बनाई जाती है।

बनमाली—वि० [स० वनमाली] जो बनमाला धारण करता या धारण किये हुए हो।

पु० १ श्रीकृष्ण। २ नारायण। विष्णु। ३. बादल। मेघ। ४ ऐसा प्रदेश जिसमे बहुत से बन या जंगल हों।

बनमुरगा—पु० [हिं० बन+फा० मुर्ग] [स्त्री० बनमुर्गी] एक तरह का जगली मुरगा जो पालतू मुर्गों की अपेक्षा कुछ बडा होता है।

बनमुरगिया—स्त्री० [हिं० बन+फा० मुर्ग+हिं० इया (प्रत्य०)] हिमालय की तराई में रहनेवाला एक प्रकार का पक्षी जिसका गला और छाती सफेद और सारा शरीर आसमानी रग का होता है।

बनमुर्गी—स्त्री० [हिं० +फा०] कुकुट्टी नामक जगली चिड़िया।

बनरखा—पु० [हिं० बन+रखना=रक्षा करना] १. जगल और उसमें की संपत्ति की रक्षा करनेवाला व्यक्ति। २ एक जगली जाति जो पशु-पक्षी पकडने और मारने का काम करती है।

बनरा—पुं० [हिं० बनना] [स्त्री० बनरी] १ वर। दूल्हा। २ विवाह के समय गाये जानेवाले एक प्रकार के गीत।

†पु०=बदर।

बनराज—पु० [स० वनराज, ष० त०] १. बन का राजा अर्थात् सिंह। २. बहुत बडा वृक्ष।

†पु० =वृंदावन।

बनरायं†—पुं०=बनराज।

बनराह†—पुं० [सं० वन+राज] घना या बड़ा जंगल।

बनरी—स्त्री० [हिं० बनरा का स्त्री०] नई ब्याही हुई वधू। दुल्हन। †स्त्री०=बंदरी (मादा बंदर)।

बनरीठा—पुं० [हिं० बन+रीठा] एक प्रकार का जंगली रीठे का वृक्ष जिसके बीजों से लोग कपड़े तथा केश धोते है।

बनरीहा—स्त्री० [हिं० बन+रीहा (रीस) या सं० रुह=पौधा] एक प्रकार का पौधा जिसकी घास को बटकर रस्सी बनाई जाती है। रीसा।

बनरुह—पुं० [सं० वनरुह] १. जंगली पेड़। २ कमल।

बनरुहिया—स्त्री० [सं० वनरुह] एक तरह का पौधा और उसकी कपास।

बनरोह—पुं० [हिं०] एक प्रकार का चौपाया जो देखने मे बड़ी छिपकली की तरह होता है। (पैंग्मेलिन)

बनबना†—स०=बनाना।

बनबरा—पुं०=बिनौला।

बनवसन—पुं० [सं० वनवसन] वृक्ष की छाल का बना हुआ कपड़ा।

बनवा†—पुं० [सं० वन=जल। वा (प्रत्य०)] पनडुब्बी नामक जल-पक्षी। पुं० [?] एक प्रकार का बछनाग (विष)।

बनवाना—स० [हिं० बनाना का प्रे० रूप] बनानेका काम दूसरे से कराना। किसी को कुछ बनाने मे प्रवृत्त करना।

बनवारी—पुं०=वनमाली (श्रीकृष्ण)।

बनवासी—वि०, पुं०=वनवासी।

बनवैया—वि० [हिं० बनाना+वैया (प्रत्य०)] बनानेवाला। वि० [हिं० बनवाना+वैया (प्रत्य०)] बनवानेवाला।

बनसपती—स्त्री०=वनस्पति।

बनसार—पुं० [सं० वन+शाला] समुद्र तट का वह स्थान जहाँ से जहाज पर चढ़ा या जहाँ पर जहाज से उतरा जाता है।

बनसी†—स्त्री० [हिं० बंसी] १ बाँसुरी। २ मछलियाँ फँसाने की कटिया।

बनस्थली—स्त्री०=वनस्थली (वन की भूमि)।

बनस्पति—पुं० =वनस्पति।

बनहटी—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की छोटी नाव।

बनहरदी—स्त्री० [सं० बन हरिद्रा] दारुहल्दी।

बना—पुं० [?] एक प्रकार का छंद जिसमे १०, ८ और १४ के विश्राम से ३२ मात्राएँ होती हैं। इसे 'दंडकला' भी कहते हैं। †पुं० [हिं० बनना] [स्त्री० बनी] दूल्हा। वर।

बनाइ*—अव्य० [हिं० बनाकर=अच्छी तरह] १. अच्छी तरह। भली-भाँति। (दे० 'बनाना' के अन्तर्गत पद 'बनाकर') २ अधिकता से। ३. निपट। बिलकुल।

बनाउ†—पुं०=बनाव।

बनाउरि†—स्त्री०=बाणावलि (बाणों की पंक्ति)।

बनाग्नि—स्त्री० [सं० वनाग्नि] वन मे लगनेवाली आग। दावानल।

बनात—स्त्री० [हिं० बनाना] [वि० बनाती] एक प्रकार का बढ़िया तथा रंगीन ऊनी कपड़ा।

बनाती—वि० [हिं० बनात+ई (प्रत्य०)] १. बनात-संबंधी। २. बनात का बना हुआ।

बनान—स्त्री० [हिं० बनाना] बनाने की क्रिया, ढंग या भाव। बनावट।

बनाना—स० [हिं० बनना का स०] १. किसी चीज को अस्तित्व देना या सत्ता में लाना। रचना। जैसे—(क) ईश्वर ने यह संसार बनाया है। (ख) सरकार ने कानून बनाया है। २ भौतिक वस्तुओं के संबंध में, उन्हें तैयार या प्रस्तुत करना। रचना। जैसे—(क) मकान या कारखाना बनाना। (ख) गंजी या मोजा बनाना। ३. अभौतिक तथा अमूर्त वस्तुओं के संबंध मे, विचार-जगत से लाकर प्रत्यक्ष करना। जैसे—कविता बनाना।

पद—बनाकर=खूब अच्छी तरह। भली-भाँति। जैसे—आज हम बनाकर तुम्हारी खबर लेंगे।

मुहा०—(किसी व्यक्ति को) बनाये रखना—अच्छी दशा में अथवा ज्यों का त्यों रखना। रक्षापूर्वक रखना। **(किसी व्यक्ति को) बनाये रखना**=सकुशल, जीवित या वर्तमान रखना। जैसे—ईश्वर आपको बनाये रखे। (आशीर्वाद) (ख) किसी को अनुकूल या अपने प्रति दयालु रखना। जैसे—उन्हे बनाये रखने से तुम्हारा लाभ ही होगा। ४ ऐसे रूप मे लाना कि वह ठीक तरह से काम में आ सके अथवा भला और सुन्दर जान पड़े। ५. किसी विशिष्ट स्थिति में लाना। जैसे—उन्होंने अपने आपको बना लिया है, अथवा अपने लड़के को बना दिया है।

मुहा०—बनाये न बनना=बहुत प्रयत्न करने पर भी कार्य की सिद्धि या सफलता न होना। जैसे—अब हमारे बनाये तो नहीं बनेगा। उदा०—जौं नहिं जाऊँ रहइ पछितावा। करत विचार न बनइ बनावा।—तुलसी।

६ आर्थिक क्षेत्र मे, उपार्जित या प्राप्त करना। लाभ करना। जैसे—उन्होंने कपड़े के रोजगार मे लाखों रुपए बना लिए हैं। ७ किसी पदार्थ के रूप आदि मे कुछ विशिष्ट क्रियाओं के द्वारा ऐसा परिवर्तन करना कि वह नये प्रकार से काम मे आ सके। जैसे—गुड़ से चीनी बनाना; चावल से भात बनाना, आटे से रोटी बनाना। ८ एक विशिष्ट रूप से दूसरे विपरीत या विरोधी रूप में लाना। जैसे—(क) मित्र को शत्रु अथवा शत्रु को मित्र बनाना। (ख) झूठ को सच बनाना। ९ दोष, विकार आदि दूर करके उचित या उपयुक्त दशा या रूप मे लाना। जैसा होना चाहिए, वैसा करना। जैसे—पछोड़ या फटककर अनाज बनाना। १०. जो चीज किसी प्रकार बिगड़ गई हो, उसे ठीक करके ऐसा रूप देना कि वह अच्छी तरह काम दे सके। मरम्मत करना। जैसे—कलम बनाना, घड़ी बनाना। ११. किसी प्रकार का आविष्कार करके कोई नई चीज तैयार या प्रस्तुत करना। जैसे—नई तरह का इंजन या हवाई जहाज बनाना। १२ अंकन, लेखन आदि की सहायता से नई रचना प्रस्तुत करना। जैसे—गजल या तसवीर बनाना। १३. किसी को किसी पद या स्थान पर आसीन अथवा प्रतिष्ठित करके अधिकार, प्रतिष्ठा, मर्यादा आदि से युक्त करना। जैसे—(क) किसी को मठ का महंत या सभा का सभापति बनाना। (ख) अपना प्रतिनिधि बनाना। १४. किसी के साथ कोई नया पारिवारिक संबंध स्थापित करना। जैसे—किसी को अपना दामाद, भाई या लड़का बनाना। १५. बात-चीत

मे किसी की प्रशंसा करते हुए या उसे बढ़ावा देते हुए ऐसी स्थिति मे लाना कि वह आत्म-प्रशसा करता करता औरो की दृष्टि मे उपहासास्पद और मूर्ख सिद्ध हो। जैसे—आज पडित जी को लोगो ने खूब बनाया। १६ कोई विशिष्ट क्रिया या व्यापार सम्पन्न करना। जैसे—(क) खिलाडी का गोल बनाना। (ख) नाई का दाढी बनाना। (ग) डाक्टर का आँख बनाना।

बनाफर—पु०[स० वन्यफल ?]राजपूत क्षत्रियो की एक शाखा।

बना-बनत—स्त्री०[हिं० बनना] वर और कन्या का सम्बन्ध स्थिर करने से पहले उनकी जन्म-पत्रियो का गणित ज्योतिष के अनुसार किया जानेवाला मिलान।

क्रि० प्र०—निकालना।—बनाना।—मिलाना।

बनाम—अव्य०[फा०]१ किसी के नाम पर। नाम से। जैसे—बनामे खुदा ईश्वर के नाम पर। २ किसी के उद्देश्य से किसी के प्रति। ३. किसी के विरुद्ध। जैसे—यह दावा सरकार बनाम बेनीमाधव दायर हुआ है, अर्थात् सरकार ने बेनीमाधव पर मुकदमा चलाया है।

बनाय—अव्य० [हिं० बनाकर अच्छी तरह] १ अच्छी तरह बनाकर। २ ठीक ढग से। अच्छी तरह। ३ पूरी तरह से। पूर्णतया।

बनार—पु०[?]१ चाकसू नामक ओषधि का वृक्ष। २ काला कसौदा। कासमर्द। ३ एक मध्ययुगीन राज्य जो वर्तमान काशी की सीमा पर था।

†अव्य० दे० 'बनाय'।

बनारना—स०[?] काटना, विशेषत काट-काटकर किसी चीज के टुकडे करना।

बनारस—पु०[स० वाराणसी] [वि० बनारसी] हिन्दुओ के प्रसिद्ध तीर्थ काशी का आधुनिक नाम।

बनारसी—वि० [हिं० बनारस+ई (प्रत्य०)] १ बनारस (नगर) सबधी। २ बनारस मे बनने, रहने या होनेवाला। जैसे— बनारसी साडी।

पु० बनारस का निवासी।

बनारी—स्त्री०[स० प्रणाली] कोल्हू मे नीचे की ओर लगी हुई नाली की वह लकडी जिससे रस नीचे नाँद मे गिरता है।

बनाल†—पु० बदाल।

बनाला†—पु० =बदाल।

बनावत —स्त्री० दे० 'बना-बनत'।

बनाव—पु०[हिं० बनना+आव (प्रत्य०)] १ बनने या बनाये जाने की क्रिया या भाव। २ बनावट। रचना। ३ शृगार। सजावट।

पद—**बनाव-सिगार**।

बनावट—स्त्री०[हिं० बनाना+आवट (प्रत्य०)] [वि० बनावटी]१. किसी चीज के बनने या बनाये जाने का ढग या प्रकार। रचने या रचे जाने की शैली। रूप-विधान। २ किसी वस्तु का वह रूप जो उसे बनाने या बनाये जाने पर प्राप्त होता है। रूप-रचना। गठन। जैसे—इन दोनो कमीजों की बनावट मे बहुत थोडा अन्तर है। ३. किसी चीज को विशिष्ट और सुन्दर रूप मे लाने की क्रिया या भाव। रूपाधान। (फार्मेशन) ४ केवल दूसरो को दिखाने के लिए बनाया जानेवाला ऐसा आचरण, रूप या व्यवहार जिसमे तथ्य, दृढ़ता, वास्तविकता, सत्यता आदि का बहुत कुछ या सर्वथा अभाव हो। केवल दिखावटी आकार-प्रकार, आचार-व्यवहार या रूप-रग। ऊपरी दिखावा। आडंबर। कृत्रिमता। जैसे—(क) यह उनकी वास्तविक सहानुभूति नही है; कोरी बनावट है। (ख) उसकी बनावट मे मत आना, वह बहुत बडा धूर्त है। ५. वह दभपूर्ण मानसिक स्थिति जिसमे मनुष्य अपने आपको यथार्थ अथवा वास्तविकता से अधिक योग्य, सदाचारी आदि सिद्ध करने का प्रयत्न करता है। पाखंडपूर्ण मिथ्या आचरण और व्यवहार। (एफेक्टेशन) जैसे—यों साधारणत. वे अच्छे विद्वान हैं, पर उनमें बनावट इतनी अधिक है कि लोग उनकी बातो से घबराते हैं। ६. दे० 'रचना'।

बनावटी—वि० [हिं० बनावट]१. जिसमें केवल बनावट हो, तथ्य या वास्तविकता कुछ भी न हो। ऊपरी या बाहरी। जैसे—बनावटी हँसी। २ वास्तविक के अनुकरण पर बनाया हुआ। कृत्रिम। नकली। जैसे—बनावटी नगीना।

बनावन—पु०[हिं० बनाना]१ बनाने की क्रिया या भाव। २. अन्न में मिली हुई वे ककडियाँ आदि जो बिनकर निकाली जाती है। ३. इस तरह बिनकर निकली हुई रद्दी चीजो का ढेर।

बनावनहारा—वि० पु० [हिं० बनाना+हारा (प्रत्य०)] १ बनानेवाला। २. सुधारनेवाला।

बनाव-सिंगार—पु०[हिं०] किसी चीज की विशेषत शरीर की वह सजावट जो प्राय दूसरों को आकृष्ट करने या उन पर प्रभाव डालने के लिए की जाती है।

बनास—स्त्री०[देश०] राजपूताने की एक नदी जो अर्वली पर्वत से निकलकर चबल नदी मे गिरती है।

बनासपती—स्त्री० वनस्पति।

†वि० वनस्पतियो से बनाया हुआ। जैसे—बनासपती घी।

बनि†—अव्य०[हिं० बनाना] पूर्ण रूप से। अच्छी तरह। बनाकर।उदा०—अमित काल मै कीन्ह मजूरी। आजु दीन्ह विधि बनि भलि भूरी।—तुलसी।

बनिक†—पु० =वणिक।

बनिज—पु०[सं० वाणिज्य] १ रोजगार। व्यापार। २ व्यापार की वस्तु। सौदा। ३. ऐसा असामी जिससे यथेष्ट आर्थिक लाभ किया जा सके। ४ धनी या सम्पन्न यात्री। (ठग)

क्रि० प्र०—फँसना।

बनिजना—स०[स० वाणिज्य, हिं० बनिज+ना (प्रत्य०)] १ खरीदना और बेचना। रोजगार करना। २ मोल लेना। खरीदना। ३ किसी को मूर्ख बनाकर कुछ रुपए ठगना।

बनिजारा—पु० =बनजारा।

बनिजारिन†—स्त्री० =बनजारिन।

बनिजारी—स्त्री० =बनजारिन।

बनिजी—वि०[स० वणिज्] वाणिज्य-सम्बन्धी।

पु० घूम-घूमकर सौदा बेचनेवाला व्यापारी। फेरीदार।

बनित—स्त्री० [हिं० बनना] बानक। बाना। बेश।

बनिता—स्त्री० [स० वनिता]१ स्त्री। औरत। २. जोरू। पत्नी। भार्या।

बनिया—पु०[स० वणिक्] [स्त्री० बनियाइन, बनैनी] १. व्यापार

करनेवाला व्यक्ति। व्यापारी। वैश्य। २ आटा, दाल, नमक-मिर्च आदि बेचनेवाला दूकानदार। मोदी। ३. लाक्षणिक अर्थ मे, व्यापारिक मनोवृत्तिवाला फलत. स्वार्थी व्यक्ति।

बनियाइन—स्त्री०[अं० बैनियन] कमीज, कुरते आदि के नीचे पहनने का एक तरह का सिला हुआ कम लंबा पहनावा। गजी।
†स्त्री० हिं० 'बनिया' का स्त्री०।

बनिस्बत—अव्य० [फा०] किसी की तुलना या मुकाबले में। अपेक्षया। जैसे—उस कपडे की बनिस्बत यह कपडा कही अच्छा है।

बनिहार—पु०[हिं० बन+हार (प्रत्य०) अथवा हिं० बन्नी] वह आदमी जो कुछ वेतन अथवा उपज का अंश लेकर दूसरो की जमीन जोतने, बोने, फसल आदि काटने और खेत की रखवाली का काम करता है।

बनी—स्त्री०[हिं० बन]१. वन का एक टुकडा। वनस्थली। २ बगीचा। बाटिका। उदा०—महादेव की सी बनी चित्र लेखी।—केशव। ३ एक प्रकार की कपास।
स्त्री०[हिं० बना] १ दुल्हन। वधू। २ सुन्दरी स्त्री। नायिका।
पु० =बनिया।

बनीनी—स्त्री० [हिं० बनी+ईनी (प्रत्य०)] १ वैश्य जाति की स्त्री। बनिये की स्त्री।

बनीर—पु०=वानीर (बेत)।

बनेटी—स्त्री०[हिं० बन+स० यष्टि] एक तरह की छडी जिसके दोनो सिरो पर एक एक लट्टू लगा रहता है और जिसका उपयोग मुख्यत पटेबाजी के खेलों में होता है।

बनेला—पु०[देश०] रेशम बनानेवाला एक प्रकार का कीडा।
वि० बनैला

बनैया†—वि०[हिं० बनाना] बनानेवाला।
†वि०=बनैला।

बनैल†—वि०=बनैला।

बनैला—वि०[हिं० बन+ऐला (प्रत्य०)] जगली। वन्य।
पु० जगली सूअर।

बनोबास†—पु०=बनबास।

बनौआ—वि०[हिं० बनाना+औआ (प्रत्य०)]१. बना या बनाया हुआ। २. कृत्रिम। बनावटी।

बनौट†—स्त्री० =बिनवट।

बनौटी—वि०[हिं०बन+औटी(प्रत्य०)]कपास के फूल का सा। कपासी।
पु० एक प्रकार का रग जो कपास के रग मे मिलता-जुलता है।
†स्त्री०=बिनवट।

बनौरी†—स्त्री० [हिं० बन=जल+ओला] आकाश से बरसनेवाले हिमकण। ओला।

बन्ना—पु०[हिं० बनना या बना] [स्त्री० बन्नी]१. लोक गीतो मे, वर। दूल्हा। २ विशेषत वह व्यक्ति जिसका विवाह हो रहा हो। ३ विवाह के समय मे, वर पक्ष की स्त्रियो के द्वारा गाया जानेवाला एक तरह का लोकगीत। बनडा।

बन्नात—स्त्री०=बनात (एक तरह का ऊनी रंगीन कपड़ा)।

बन्नी—वि०[हिं०बन] वन मे होनेवाला। जैसे—बन्नी खड़िया, बन्नी मिट्टी आदि।
स्त्री०[हिं० बन्ना]१ दुल्हिन। २ कन्या जिसका विवाह हो रहा हो।
स्त्री०[?]१. खेत मे काम करनेवालों को मिलनेवाला खडी फसल का कुछ अश। २. उतनी भूमि जिसमे उक्त अश हो।

बन्हि—स्त्री०=बहिन (बहिन)।

बपंस—पु०[हिं० बाप+स० अंश] १ पिता की सपत्ति में से पुत्र को मिलनेवाला अंश। २ वह गुण जो पुत्र को पिता से प्राप्त हुआ माना जाय।

बप—पु०[सं० वप्तृ] बाप। पिता।
पु०=वपु (शरीर)।

बपतिस्मा—पु० [अं० बैप्टिज्म] नव-जात शिशु अथवा अन्य धर्मावलबी को मसीही धर्म मे दीक्षित करते समय होनेवाला एक सस्कार।

बपना—स०[स० वपन] वपन करना। बीज बोना।

बप-मार—वि० [हिं० बाप+मारना] [भाव० बप-मारी] १ जिसने अपने पिता का वध किया हो। २ जो अपने पूज्य और बडे व्यक्तियों तक का अपकार करने से भी न चूके। बडो तक के साथ द्रोह या विश्वासघात करनेवाला।

बपु—पु०[स० वपु] १. शरीर। देह। २. ईश्वर का शरीरधारी रूप। अवतार। ३. आकृति। रूप। शकल।

बपुख*—पु०[स० वपुष्] देह। शरीर।

बपुरा†—वि० बापुरा (बेचारा)।

बपौती—स्त्री०[हिं० बाप+औती (प्रत्य०)] १ पिता की ऐसी सपत्ति जो पुत्र को उत्तराधिकार के रूप मे मिली हो, मिलने को हो, अथवा उसे प्राप्य हो। २ वह अधिकार जो किसी को अपने पिता तथा पितृ पक्ष की सपत्ति पर होता है।

बप्पा—पु०[हिं० बाप] पिता। बाप।
पद—बप्पा रे बप्पा- आश्चर्य, दुःख आदि के समय मुंह से निकलनेवाला पद।

बफरना†—अ०[स० विस्फालन] १ अभिमान या गर्वपूर्वक लडने के लिए ताल ठोकना या किसी प्रकार का शब्द करना। २ उत्पात या उपद्रव करना।

बफारा—पु०[हिं० भाप+आरा (प्रत्य०)]१. ओषधि से युक्त किये गये जल को उबालने पर उसमें से निकलनेवाली भाप। ३. उक्त भाप से किया जानेवाला सेक।
क्रि० प्र०—देना।—लेना।
३. वे ओषधियाँ जो उक्त कार्य के लिए गरम पानी मे उबाली जाती हैं।

बफौरी—स्त्री०[हिं० भाप] भाप से पकाई जानेवाली या पकी हुई बरी।
†अ० [हिं० बफरना ?] उछलने की क्रिया या भाव। उछाला।

बबकना—अ०=बमकना। (दे०)

बबर—पु०[अ०] १ बिल्ली की जाति का एक बिना पूंछवाला वन्य पशु जो शेर को भी मार डालता है। २ बडा शेर। सिंह। ३ वह कम्बल जिसपर शेर की खाल की सी धारियाँ बनी होती हैं।
वि० शेर के साथ विशेषण रूप मे प्रयुक्त होने पर, भयानक और विकराल। जैसे—बबर शेर।

बबरी—स्त्री०[हिं० बबर]१ लटका हुआ बाल (विशेष कर घोडे का)। २. बालों की लट।

बबा†—पु०=बाबा।

बबुआ—पु०[हि० बाबू] [स्त्री० बबुआइन, बबुई] १ दामाद और पुत्र के लिए प्यार का सबोधन। (पूरब) २. जमीदार और रईस। ३. छोटे लडको के लिए प्यार का सबोधन।

बबुई—स्त्री०[हिं० बबुआ का स्त्री०] १. बेटी। कन्या। २ बड़े जमीदार या रईस की लडकी। ३. पति की छोटी बहन। छोटी ननद।

बबुनी—स्त्री० बबुई।

बबुर—पु० = बबूल।

बबूना—पु० [?] एक प्रकार की छोटी चिडिया जिसका ऊपरी बदन हरापन लिये सुनहला पीला और दुम गहरी भूरी होती है। इसकी आँखो के चारो ओर एक सफेद छल्ला-सा रहता है।

बबूल—पु०[स० बब्बूर] एक प्रसिद्ध कँटीला पेड़ जिसकी पतली पतली शाखाएँ दतुअन के काम आती हैं। कीकर।

बबूला†—पु०[देश०] हाथियो के पाँव मे होनेवाला एक प्रकार का फोड़ा।
वि० समस्त पदो के अन्त मे, उक्त फोडे के समान तना और सूजा हुआ।
पद—आग-बबूला। (दे०)
पु०१ =बगूला। २ =बुलबुला। ३ =बबूला।

बब्बू—पु० [?] उल्लू (पक्षी)।
पु० [हि० बाबू] छोटे बच्चो के लिए प्यार का एक सबोधन। (पश्चिम)

बभनी†—स्त्री० = बम्हनी।

बभूत—स्त्री० =१ भभूत। २ =विभूति।

बभ्रवी—स्त्री०[स० बभ्रु+अण् + ङीप्] दुर्गा।

बभ्रु—वि०[स० √भृ +कु] १. गहरे भूरे रग का। २ खल्वाट। गजा।
पु० १. गहरा भूरा रग। २ अग्नि। ३ नेवला। ४ चातक। ५. विष्णु। ६ शिव।

बभ्रु-धातु—स्त्री० [स० कर्म० स०] १. सोना। स्वर्ण। २ गेरू।

बभ्रु-लोमा (मन्)—वि० [स० ब० स०] भूरे बालोवाला।

बभ्रुवाहन—पु० [स० ब०स०] चित्रागदा के गर्भ से उत्पन्न अर्जुन का एक पुत्र जो मणिपुर का शासक था।

बम—पु० [अनु०] १ शिव के उपासकों का वह 'बम बम' शब्द जिससे शिवजी का प्रसन्न होना माना जाता है।
महा—**बम बोलना या बोल जाना** शक्ति, धन आदि की समाप्ति या अत हो जाना। बिलकुल खाली हो जाना। कुछ न रह जाना।
२ शहनाईवालो का वह छोटा नगाड़ा, जो बजाते समय बाईं ओर रहता है। मादा नगाडा। नगडिया।
पु० [कन्नड बबू बाँस] १ बग्घी, फिटन आदि मे आगे की ओर लगा हुआ वह लबा बाँस जिसके दोनो ओर घोड़े जोते जाते है। २ इक्के, टाँगे आदि मे के वे बाँस या लबोतरे अग जिनमे घोड़ा जोता है।
पु०[अ० बाम्ब] १. वह विस्फोटक रासायनिक गोला जिसके फूटने से घोर शब्द होता तथा व्यापक बरबादी और जीव-सहार होता है। २. एक तरह की आतिशबाजी जिसमे से जोर का शब्द निकलता है।

बमकना—अ० [अनु०] १. क्रुद्ध होकर जोर से बोलना। २ डीग हाँकना।

बमकाना—स० [हिं० बमकना] ऐसा काम करना जिससे कोई बमके। किसी को बमकाने में प्रवृत्त करना।

बमगोला—पुं० [हि० बम+गोला] बम (विस्फोटक तथा रासायनिक गोला)।
वि०१. आफत का परकाला। २. हो-हुल्ला करने वाला।

बम-चख—स्त्री० [अनु० बम+चीखना] १. शोरगुल। हुल्ला-गुल्ला। २ लडाई-झगड़ा।
क्रि० प्र०—चलना।—चलाना।—मचना।—मचाना।
३. कहा-सुनी।

बमना—स०[स० वमन] १. वमन करना। कै करना। २ उगलना।

बम-पुलिस—पु०=बपुलिस (सार्वजनिक शौचालय)।

बम-बाज—वि०[हिं० बम+फा० बाज] [भाव० बम-बाजी] १. (वायुयान) जो बम गिराता हो। २ (व्यक्ति) जो शत्रुओं पर बम फेकता हो।

बम-बाजी—स्त्री० [हिं० बम+फा० बाजी] बम गिराने या फेकने की क्रिया या भाव।

बम-बारी—स्त्री० [हिं० बम+फा० बारी=बर्षा] बमो की वर्षा करना। बहुत अधिक बम गिराना या फेकना।

बम-भोला—पु० [हिं० बम+भोला] महादेव। शिव।

बम-वर्षक—पु०[हिं० बम+सं० वर्षक] एक तरह का बहुत बडा हवाई जहाज जो बम फेकने के काम आता है। (बॉम्बर)

बम-वर्षा—स्त्री०[हिं० बम+वर्षा] बम-बारी।

बमीठा†—पु०=बाँबी (दीमकों की)।

ब-मुकाबला—अव्य० [फा०+अ०] १. मुकाबले मे। समक्ष। सामने। २ तुलना मे। अपेक्षया।

ब-मुश्किल—अव्य० [फा०+अ०] कठिनता से।

ब-मूजिब—अव्य०[फा०+अ०] अनुसार। मुताबिक। जैसे—हुकुम बमूजिब।

बमेल—स्त्री०[देश०] एक प्रकार की मछली।

बमोट—पु०=बमीठा (दीमको की बाँबी)।

बम्भण—पु०=ब्राह्मण।

बम्हनी—स्त्री० [स० ब्राह्मण, हिं० बाम्हन] १ छिपकली की तरह का एक रेंगनेवाला छोटा पतला कीडा। इसकी पीठ चित्तीदार, काली दुम और मुँह लाल चमकीले रग का होता है। २. आँख की पलकों पर होनेवाली फुसी। गुहाजनी। बिलनी। ३ वह गाय जिसकी पलकों पर के बाल झड़ गये हो। ४. ऊख या गन्ने को होनेवाला एक रोग। ५. हाथी का एक रोग जिसमे दुम सड़-गलकर गिर जाती है। ६ ऐसी जमीन जिसकी मिट्टी लाल हो। ७. कुश की जाति का एक तृण। वन-कुस।

बयंड—पु० [हिं० गयद=स० गजेन्द्र] हाथी। (डिं०)

बय—स्त्री०=वय (अवस्था)।
पु०=बै (विक्रय)।

बयन—पु० [स० वचन] वाणी। बोली। बात।

बयना—स० [स० बपन; प्रा० बयन] खेत मे बीज बोना।
स० [स० वचन] कहना।

†पु०=बैना।

बयनी—वि०[हिं० बयन] यौ० के अन्त में; बोलनेवाली† विशेषत मधुर स्वर में बोलनेवाली। जैसे—पिक-बयनी।

बयर†—पु०=बैर।

बयल—पु०[?]सूर्य। (डिं०)

बयस—स्त्री० [स० वयष] अवस्था। उमर।

बयसर—स्त्री० [देश०] कमखाब बुननेवालों की वह लकड़ी जो उनके करघे मे गुलने के ऊपर और नीचे लगती है।

बयसवाला—वि० [स० वयस+हिं० वाला] [स्त्री० बयसवाली] युवक। जवान।

बयस-शिरोमनि—पु० [स० वयस् शिरोमणि] युवावस्था। जवानी। यौवन।

बया—पु० [सं० वयन=बुनना] पीले तथा चमकीले माथेवाली एक प्रसिद्ध छोटी चिड़िया जो खजूर, ताड, आदि ऊँचे पेड़ों पर बहुत ही कलापूर्ण ढंग से अपना घोंसला बनाती है।

पु० [अ० वाग:=बेचनेवाला] वह जो अनाज तौलने का काम करता हो। अनाज तौलनेवाला। तौलैया।

बयाई—स्त्री० [हिं० बया+आई (प्रत्य०)] १ 'बया' का काम या पद। २. अन्न आदि तौलने की मजदूरी। तौलाई।

बयान—पु०[फा०] १ बात-चीत। २. जिक्र। चर्चा। ३ वृत्तात। हाल। ४ न्यायालय में अभियुक्त द्वारा दिया जानेवाला अपना वक्तव्य।

क्रि० प्र०—देना।—लेना।

बयाना—पु०[अ० बै (बिक्री)+फा० आन (प्रत्य०)] वह धन जो किसी वस्तु का खरीददार उसके बेचनेवाले को क्रय-विक्रय की बात पक्की करने के समय पहले देता है। पेशगी।

†अ०=बडबडाना।

बयाबान—पु० [फा०] [वि० बयाबानी] १ जगल। २ उजाड या सुनसान जगह।

बयाबानी—वि०[फा०]१. जगली। २ बनवासी।

बयार—स्त्री०[स० वायु] हवा। पवन।

मुहा०—**बयार करना**=पखा झलकर किसी को हवा पहुँचाना। **बयार भखना**=प्राणायाम करने के लिए नाक से वायु अंदर खीचना। उदा०—ऊधौ हाय हम कौं बयारि भखिबौ कहौ।—रत्नाकर।

बयारा—पु० [हिं० बयार] १. हवा का झोंका। २ अधड। तूफान।

बयारि—स्त्री०=बयार।

बयारी—स्त्री० बयार (हवा)।

बयाला—पु०[स० बाह्य+हिं० आला] १. दीवार में का वह छेद जिसमे से झाँककर उस पार की घटनाएँ या दृश्य देखे जाते है। २ आला। ताखा। ३. किले की दीवारो पर तोपें रखने के लिए बना हुआ स्थान। ४. उक्त स्थान के आगे दीवार मे बना हुआ वह छेद जिसमे से तोप का गोला बाहर जाकर गिरता है। ५. पटे या पाटे हुए स्थान के नीचे का खाली स्थान।

बयालीस—वि०[सं० द्विचत्वारिंशत्, प्रा० विचत्तालीसा] जो गिनती मे चालीस से दो अधिक हो।

पुं० उक्त की सूचक संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—४२।

बयालीसवाँ—वि० [हिं० बयालीस+वाँ (प्रत्य०)] क्रम, संख्या के विचार से बयालीस के स्थान पर पडने या होनेवाला।

बयासी—वि०[स० द्वि+अशीति; प्रा० बिअसी] जो गिनती में अस्सी से दो अधिक हो।

पु० उक्त की सूचक सख्या जो अंको में इस प्रकार लिखी जाती है—८२।

बरंग—पु०[देश०] मझोले कद का एक जगली पेड़ जिसकी लकडी का रंग सफेद होता है। पोला।

पु०[?] बकतर। कवच। (डिं०)

बरंगा—पु०[देश०] छत पाटते समय धरनों पर रखी जानेवाली पत्थर की पटिया या लकड़ी की तख्ती।

बरंगिनी†—स्त्री०=वरांगना (सुन्दरी)।

बर—पु०[स०√वृ (वरण करना)+अप्] १. वह व्यक्ति जिसका विवाह हो रहा हो या निश्चित हो चुका हो। वर।

पद—**बर का पानी**=विवाह से पहले नहछू के समय का वह पानी जो वर को स्नान कराने पर गिरकर बहता है और जो एक पात्र मे एकत्र करके कन्या के घर उसे स्नान कराने के लिए भेजा जाता है।

२ वह आशीर्वाद-सूचक वचन जो किसी की अभिलाषा, प्रार्थना, मनोकामना आदि पूरी करने लिए कहा जाता है। वर।

क्रि० प्र०—देना।—माँगना।—मिलना।

वि० १ अच्छा। बढ़िया। २ उत्तम। श्रेष्ठ।

पु०[स० वट] वट वृक्ष। बरगद।

पु०[स० बल] १ शक्ति। उदा०पु-बर करि कृपा सिंधु उर लाये।—तुलसी २ रेखा। लकीर। ३. दृढता या प्रतिज्ञापूर्वक कही हुई बात।

मुहा०—**बर खींचना**=(क) कोई प्रतिज्ञा करने या बात कहने के समय अपनी दृढ़ता सूचित करने के लिए उँगली से जमीन पर रेखा खींचना। (ख) किसी काम या बात के लिए जिद या हठ करना।

पु०[स० वर्ग] १ कपडे या किसी लबी चीज की चौडाई। अरज। २ व्यापारिक क्षेत्रो मे किसी तरह या मेल की चीजो में का कोई अलग और छोटा वर्ग। जैसे—बनारसी कपडों के व्यवसाय मे लहँगे, साड़ी या साफे का बर। अर्थात् वह क्षेत्र जिसमे केवल लहँगे, केवल साड़ियाँ अथवा केवल साफे आते हैं।

पु०[देश०] एक प्रकार का कीडा जिसे खाने से पशु मर जाते हैं।

† अव्य०=‘बरु' (बल्कि या वरन्)।

पु०[फा०] वृक्ष का फल।

वि० १. फल से युक्त। सफल। जैसे—किसी की मुराद बर आना, अर्थात् मनोकामना सफल होना। २ किसी की तुलना, प्रतियोगिता आदि मे बढ़कर। श्रेष्ठ।

मुहा०—**(किसी से) बर आना या पाना**=प्रतियोगिता, बल-परीक्षा आदि में किसी की बराबरी का ठहरना। जैसे—चालाकी मे तुम उससे बर नही सकते (या नही पा सकते)। **(किसी से) बर पड़ना**=बढ़कर या श्रेष्ठ सिद्ध होना।

अव्य० [सं० वर से फा०] १. ऊपर। जैसे—बर-तर=किसी के ऊपर अर्थात् किसी से बढ़कर। २. आगे। जैसे—बर-आमद=बरामदा। ३. अलग। पृथक्। जैसे—बर-तरफ। ४. विपरीत या सामने की दिशा मे। जैसे—बर-अक्स।

बर-अग—स्त्री०[स० वर+अग ?] योनि। (डि०)

बरई—पु०[हि० बाड=क्यारी] [स्त्री० बरइन] १ पान की खेती तथा व्यापार करनेवाली एक जाति। तमोली। २ इस जाति का कोई व्यक्ति।

बरकदाज—पु०[अ० बर्क+फा० अदाज] [भाव० बरकदाजी] १. चौकी-दार। २ सिपाही। ३ तोपची।

बरक—स्त्री० [अ० बर्क] बिजली। विद्युत्।

बरकत—स्त्री०[अ०] १ वह शुभ स्थिति जिसमे कोई चीज या चीजें इस मात्रा मे उपलब्ध हो कि उनमें आवश्यकताओं की पूर्ति सहज मे तथा भली-भाँति हो जाय। जैसे—(क) घर मे गाय-भैस होने पर ही दूध-दही की बरकत होती है। (ख) अब तो रुपए-पैसे मे बरकत नहीं रह गई। (ग) ईश्वर तुम्हे रोजगार मे बरकत दे।

मुहा०—(किसी से या किसी चीज मे) **बरकत, उठना या उठ जाना**=पहले की-सी शुभ स्थिति या सपन्नता न रह जाना।

२. किसी चीज का वह थोडा सा अश जो इस भावना से बचाकर रख लिया जाता है कि इसी मे आगे चलकर और अधिक वृद्धि होगी। जैसे—अब थैली मे बरकत के (१) ही बच रहे हैं, बाकी सब खरच हो गये। ३ अनुग्रह। कृपा। जैसे—यह सब आपके कदमो की ही बरकत है। ४ मगल-भाषित के रूप मे गिनते समय एक की सख्या।

विशेष—प्राय लोग गिनती आरभ करने पर 'एक' की जगह 'बरकत' कहकर तब दो, तीन, चार आदि कहते है।

५ मगल-भाषित के रूप मे अभाव या समाप्ति का सूचक शब्द। जैसे—आज-कल घर मे अनाज (या कपडो) की बरकत ही चल रही है, अर्थात् अभाव है, यथेष्टता नही है।

बरकती—वि०[अ० बरकत+ई (प्रत्य०)] १ जिसके कारण या जिसमे, बरकत हो। बरकतवाला। जैसे—जरा अपना बरकती हाथ लगा दो तो रुपए घटेंगे नही। २ जो बरकत के रूप मे या शुभ माना जाता हो। जैसे—बरकती रुपया।

बरक-दम—स्त्री०[अ० बर्क+फा० दम] एक प्रकार की चटनी जो कच्चे आम को भूनकर उसके पने मे चीनी, मिर्च आदि डालकर बनाई जाती है।

बरकना—अ०[स० वर्जन] १ अलग या दूर रहना या रखा जाना। २ कोई अप्रिय या अशुभ बात घटित न होने पाना। ३ सकट आदि से बचने के लिए कही से हटना। ४ बचाया जाना।

स० =बरकाना।

बर-करार—वि०[फा० बर+अ० करार] १ जिसका अस्तित्व या स्थिति बतमान हो। सकुशल, वर्तमान और स्थिर। जैसे—आपकी जिन्दगी बर-करार रहे। २ उपस्थित। मौजूद। ३. पुनर्नियुक्त किया हुआ। बहाल।

क्रि० प्र०—रखना।—रहना।

बर-काज—पु०[स० वर+कार्य] शुभ-कार्य। जैसे—मुडन, विवाह आदि अवसरो पर होनेवाले कार्य।

बरकाना—स०[स० वारण, वारक] १. कोई अनिष्ट अथवा अप्रिय घटना या बात न होने देना। निवारण करना। बचाना। जैसे—झगडा बरकाना। २. अपना पीछा छुडाने के लिए किसी को भुलावा देकर अलग करना या दूर रखना। ३ मना करना। रोकना।

बरख†—पु०=वर्ष (बरस)।

बरखना†—अ० =बरसना (वर्षा होना)।

बरखा—स्त्री०[स० वर्षा] १ आकाश से जल बरसना। वर्षा। बारिश। वृष्टि। २ वर्षा ऋतु। बरसात।

बरखाना†—स०=बरसाना(वर्षा करना)।

बरखास†—वि०=बरखास्त।

बरखास्त—वि०[फा० बरखास्त] [भाव० बरखास्तगी] १. (अधि-वेशन, बैठक, सभा आदि के सबध मे) जिसका विसर्जन किया गया या हो चुका हो। समाप्त किया हुआ। २ (व्यक्ति) जिसे किसी नौकरी या पद से हटा दिया गया हो। पदच्युत।

बरखास्तगी—स्त्री०[फा० बरखास्तगी] बरखास्त करने या होने की अवस्था, क्रिया या भाव।

बर-खिलाफ—अव्य०[फा० बर+अ० खिलाफ] उलटे। प्रतिकूल। विपरीत। वि० =खिलाफ।

बरखुरदार—वि०[फा० बरखुर्दार] [भाव० बरखुरदारी] १ सौभाग्य-शाली। २ सफल-मनोरथ। ३ फला-फूला। सपन्न।

पु० १ पुत्र। बेटा। २ छोटो के लिए आशीर्वाद सूचक सबोधन।

विशेष—मूलत बर-खुरदार का शब्दार्थ है—जीविका पर बने रहो, अर्थात् खाने-पीने से सुखी रहो।

बरखुरदारी—स्त्री०[फा० बरखुर्दारी] १ बर-खुरदार होने की अवस्था या भाव। २ धन-धान्य आदि की यथेष्ठता। सम्पन्नता। ३. आशी-र्वाद के रूप मे, किसी के सौभाग्य तथा सम्पन्नता की कामना।

बर-गध†—पु०[स० वर+गध] सुगधित मसाला।

बरग—पु०[फा० बर्ग] पत्ता। पत्र।

†पु०=वर्ग।

†पु०=बरक।

बरगद—पु०[स० वट, हि० बड] पीपल, गूलर आदि की जाति का एक बडा वृक्ष जो भारत मे अधिकता से पाया जाता है। बड का पेड। बट वृक्ष। (साधु सतो की कृतियों मे यह विश्वास का प्रतीक माना गया है।)

बरगश्ता—वि०[फा० बरगश्त] १ अभागा। हत-भाग्य। २ विमुख।

बरगा—वि०[स० वर्ग] [स्त्री० बरगी] तरह या प्रकार का। जैसे—उसके बरगा और कौन है?

बरगी—पु०[फा० बरगीर] १ अश्वपाल। साईस। २ अश्व। घोडा। ३. मुगल काल मे घोडे पर सवार होकर शासन व्यवस्था करनेवाला सैनिक।

बरगेल—पु० [देश०] एक प्रकार का लवा (पक्षी) जिसके पजे कुछ छोटे होते है।

बरचर—पु०[देश०] देवदार की एक जाति।

बरचस—पु०[स० वर्चस्क] विष्ठा। मल। (डि०)

बरच्छा—पु० [स० वर+ईक्षा] कन्या पक्षवालों द्वारा वर को देखकर पसद कर तथा धन आदि देकर वैवाहिक संबध स्थिर करने की एक रसम।

बरछा—पुं०[सं० व्रश्चन=काटनेवाला] [स्त्री० अल्पा० बरछी] भाला नामक अस्त्र। दे० 'भाला'।

बरछी—स्त्री०[हिं० बरछा] छोटा बरछा।

बरछैत—पुं०[हिं० बरछा+ऐत (प्रत्य०)] बरछा धारण करने या चलाने वाला। भाला-बरदार।

बरजन—पुं०=वर्जन (मनाही)।

बरजनहार—वि०[हिं० बरजना+हार (प्रत्य०)] मना करने या रोकने-वाला।

बरजना—स०[सं० वर्जन] १. मना करना। रोकना। २ ग्रहण न करना। त्यागना। ३ प्रयोग या उपयोग मे न लाना।

बरजनि—स्त्री०=वर्जन (मनाही)।

बर-जबान—वि०[फा० बरजबाँ] जो जबान पर हो अर्थात् रटा हुआ हो। कंठस्थ।

बर-जबानी†—वि०=बर-जबान।

बरजस्ता—वि०[फा० बर-जस्त] बात पड़ने पर तुरन्त कहा हुआ। बिना पहले से सोचा हुआ (उत्तर, कथन आदि)।

अव्य० तुरत। फौरन।

बरजोर—वि०[हिं० बल+फा० जोर] [भाव० बर-जोरी] १. प्रबल। बलवान। जबरदस्त। २ अत्याचारी। ३ बहुत कठिन या भारी। उदा०—को कृपाल बिनु पालि है, बिरुदावलि बर जोर।—तुलसी।

बर-जोरन—पुं०[सं० वर=पति+हिं० जोरना=मिलाना] १ विवाह मे वर और वधू का गठ-बंधन। २. विवाह। (डिं०)

अव्य० जबरदस्ती से।

बरजोरी—स्त्री०[हिं० बरजोर] १. बलात् किया या किसी से कराया जानेवाला कोई काम विशेषत कोई अनुचित काम। २ बल-प्रयोग। क्रि० वि० जबरदस्ती से। बलपूर्वक। बलात्।

बरटना†—अ०[?] सड़ना।

बरणी†—स्त्री०[सं० वरणीया] कन्या। (राज०)

बरत†—पुं० =व्रत।

स्त्री०[सं० वर्त्त] डोरी। रस्सी। उदा०—डीठि बरत बाँधी अटनु चढ़ि धावत न डरात।—बिहारी।

बरतन—पुं०[सं० वर्तन] मिट्ठी, धातु आदि का बना हुआ कोई ऐसा आधान जो मुख्यत खाने-पीने की चीजे रखने के काम आता हो। पात्र। जैसे—कटोरा, गिलास, थाली, लोटा आदि।

†पुं० [सं० वर्त्तन] १. बरतने की क्रिया या भाव। २. बरताव या व्यवहार।

बरतना—अ०[सं० वर्त्तन] १ पारस्परिक संबंध बनाये रखने के लिए किसी के साथ आपसदारी का व्यवहार होना। बरताव किया जाना। जैसे—भाई-बंदों या बिरादरी के लोगों से बरतना। २. किसी के ऊपर कोई घटना घटित होना। जैसे—जैसी उन पर बरती है, वैसी दुश्मन पर भी न बरते। ३. समय आदि के संबंध में, व्यतीत होना। गुजरना। जैसे—आज-कल बहुत ही बुरा समय बरत रहा है। ४ उपस्थित या वर्तमान रहना। उदा०—लट छूटी बरतै बिकराल।—कबीर। ५. खाने-पीने की चीजों के संबंध में, भोजन के समय लोगो के आगे परोसा या रखा जाना। जैसे—दाल बरत गई है (परोसी जा चुकी है)।

स० १. कोई चीज अपने उपयोग, काम या व्यवहार मे लाना। जैसे—कपड़ा या मकान बरतना। २. दे० 'बरताना'।

बरतनी—स्त्री० [सं० वर्तनी] १. लकड़ी आदि की एक प्रकार की कलम जिससे छात्र मिट्ठी, गुलाल आदि बिछाकर उस पर अक्षर लिखते हैं अथवा तांत्रिक यंत्र आदि भरते हैं। २. शब्द लिखने में अक्षरों का क्रम। हिज्जे। वर्त्तनी। (देखें)

बर-तर—वि०[फा०] [भाव० बरतरी] १ श्रेष्ठतर। अधिक अच्छा। २. ऊँचा।

बर-तरफ—वि०[फा० बर+अ० तरफ़] [भाव० बर-तरफी] १. एक ओर। किनारे। अलग। २. नौकरी, पद आदि से अलग किया या हटाया हुआ। बरखास्त किया हुआ।

बर-तरफी—स्त्री० [फा० बर+अ० तरफ़ी] १. बर-तरफ होने की अवस्था या भाव। २ पद-च्युति।

बरताना—स०[सं० वर्त्तन या वितरण] बारी बारी से कोई चीज अथवा उसका कुछ अंश लोगों मे बाँटते चलना। जैसे—पगत मे भोजन करने-वालों को पूरी बरताना।

संयो० क्रि०—डालना।—देना।

बरताव—पुं०[हिं० बरतना का भाव०] १ किसी के साथ बरतने की क्रिया, ढंग या भाव। २. किसी के साथ किया जानेवाला आचरण या व्यवहार।

बरती—वि०[सं० व्रतिन्; हिं० व्रती] जो व्रत रखे हुए हो।

स्त्री०[?] एक प्रकार का पेड़।

†स्त्री०=बत्ती।

बरतेल†—पुं० [देश०] जुलाहों की वह खूँटी जो करघे की दाहिनी ओर रहती है और जिसमे ताने को कसा रखने के लिए रस्सी बंधी रहती है।

बरतोर†—पुं०=बाल-तोड़।

बरदना—अ० दे० 'बरदाना'।

बरदवान—पुं०[हिं० बरद+फा० वान (प्रत्य०)] कमखाब बुननेवालों के करघे की एक रस्सी जो पगिया मे बँधी रहती है। 'नथिया' भी इसी में बँधी रहती है।

पुं०[फा० बादबान] जोर की या तेज हवा। (कहार)

बरदवाना—स०[हिं० बरदाना का प्रे०]बरदाने का काम किसी से कराना।

बरदा—स्त्री०[देश०] दक्षिण भारत में होनेवाली एक प्रकार की रूई।

पुं०[फा० बर्द] गुलाम। दास।

पद—बरदा फरोश। (देखें)

पुं०=बरधा (बैल)।

बरदाना—स०[हिं० बरधा=बैल] गौ, भैंस आदि पशुओं का गर्भाधान कराने के लिए उनकी जाति के नर पशुओ से संभोग या सयोग कराना। जोड़ा खिलाना।

संयो० क्रिया०—डालना।—देना।

अ० गौ, भैंस आदि का जोड़ा खाना।

बरदा-फरोश—पुं० [तु० बर्द+फा० फरोश] [भाव० बरदा-फरोशी] वह व्यक्ति जो गुलामो या दासो का क्रय-विक्रय करता हो।

बरदा-फरोशी—स्त्री० [फा०] गुलाम या दास खरीदने और बेचने का पेशा या व्यवसाय।

बरदार—वि० [फा०] [भाव० बरदारी] १ उठाने, धारण करने या वहन करनेवाला। जैसे—नाज-बरदार, भाला-बरदार। २ पालन करनेवाला। जैसे—फरमाँ-बरदार।

बरदारी—स्त्री० [फा०] १. बरदार होने की अवस्था या भाव। २ उठाने, धारण करने या वहन करने का काम।

बरदाश्त—स्त्री० [फा०] सहनशीलता। सहन।

बरदि (या)†—पु०=बरधिया।

बरदुआ—पु० [देश०] बरमे की तरह का एक औजार जिससे लोहा छेदा जाता है।

बरदौर—पु० [स० वर्द+हिं० और (प्रत्य०)] गोशाला। मवेशी-खाना।

बरद्—पु० [स० बलीवर्द] बैल।

बरध†—पु०=बरधा।

बरध-मुतान—स्त्री० [हिं० बरधा+मूतना] वह अकन या रेखा जो उसी प्रकार लहरियेदार हो, जिस प्रकार चलते हुए बैल के मूतने से जमीन पर निशान पडता है। गो-मूत्रिका।

बरधवाना—स०=बरदवाना।

बरधा—पु० [स० बलीवर्द मे का वर्द] बैल।

बरधाना—स०=बरदाना।

अ०=बरदाना।

बरधिया†—पु० [हिं० बरधा] १ वह व्यक्ति जो एक स्थान से दूसरे स्थान पर बैलो पर माल ढोकर पहुँचाता हो। २ हलवाहा। ३ चरवाहा।

बरधी—पु० [हिं० बरधा ?] एक प्रकार का चमडा (कदाचित् बैल का चमडा)।

बरन†—पु०=वर्ण।

अव्य० [स० वर्ण] तरह। प्रकार। उदा०—तरुन तमाल बरन तनु सोहा।—तुलसी।

अव्य० वरन् (बल्कि)

बरन धरम†—पु० दे० 'वर्णाश्रम'।

बरनन† —पु०=वर्णन।

बरनना†—स० [स० वर्णन] वर्णन करना।

बरनर—पु० [अ० बर्नर] लप, लालटेन आदि का एक उपकरण जिसमे बत्ती लगाई जाती है।

बरना—स० [स० वरण] १ वर या वधू के रूप मे ग्रहण करना। पति या पत्नी के रूप मे स्वीकार करना। वरण करना। ब्याहना। २ कोई काम करने के लिए किसी को चुनना या ठीक करना। नियुक्त करना। ३ दान के रूप मे देना।

स्त्री० [स० वरुणा] काशी के पास की वरुणा नाम की नदी।

पु० [स० वरुण] एक प्रकार का सुन्दर वृक्ष जो प्राय सीधा ऊपर की ओर उठा रहता है। बल्ला। बलासी।

†अ०=बलना (जलना)।

†स० बटना (डोरा रस्सी आदि)।

बरनाबरन*—वि० [स० वर्ण] १ अनेक वर्णोंवाला। रग-बिरगा। २ अनेक प्रकार का। तरह तरह का।

बरनाला—पु० [हिं० परनाला] समुद्री जहाज मे की वह नाली जिसमे से उसका फालतू पानी निकलकर समुद्र मे गिरता है। (लश०)

बरनि—स्त्री० [हिं० बरना] बरने अर्थात जलने की अवस्था या भाव।

बरनी—वि० स्त्री० [स० वरण] वरण की हुई।

स्त्री० दुलहिन। उदा०—दुहुँ सँकोच सँकुचित बर बरनी।—तुलसी।

† स्त्री०=वरणी।

बरनेत—स्त्री० [हिं० बरना=वरण करना+एत (प्रत्य०)] विवाह के मुहूर्त से कुछ पहले की एक रसम जिसमे कन्या पक्षवाले वर-पक्ष के लोगो को मडप मे बुलाकर उनसे गणेश आदि का पूजन कराते है।

बरन्न†—पु०=वर्ण।

बरपटे—वि० [हिं० बर+पटना] (हिसाब) जो पट गया या चुकता हो चुका हो।

बरपा—वि० [फा०] १ जो अपने पैरो पर खडा हो। २ (उत्पात या उपद्रव) जो उठ खडा हुआ हो। ३ उपस्थित।

बरफ—स्त्री० [फा० बर्फ] १ हवा मे मिली हुई भाप के अत्यन्त सूक्ष्म अणुओ की तह जो वातावरण की ठढक के कारण आकाश मे बनती और भारी होने के कारण जमीन पर गिरती है। पाला। हिम। तुषार।

क्रि० प्र०—गिरना।—पडना।

२ बहुत अधिक ठढक के कारण जमा हुआ पानी जो ठोस और पारदर्शी हो जाता है और आघात लगने पर टुकडे-टुकडे हो जाता है।

क्रि० प्र०—गलना।—जमना।

३ कृत्रिम उपायो या रासायनिक क्रियाओ के द्वारा जमा हुआ पानी जो बहुत ठढा और ठोस हो जाता है तथा खाने-पीने की चीजे ठढी करने के काम आता है।

क्रि० प्र०—गलना। गलाना।—जमना।—जमाना।

४ उक्त प्रकार से जमाया हुआ दूध, फलो का रस या ऐसी ही और कोई चीज। जैसे—मलाई की बरफ।

वि० जो बरफ के समान ठढा हो। जैसे—सर्दी से हाथ बरफ हो गये।

बरफानी—वि० [फा० बर्फानी] बर्फ से ढका हुआ या युक्त। जैसे—बरफानी तूफान। बरफानी पहाड।

बरफिस्तान—पु० [फा० बर्फ़िस्तान] वह स्थान जहाँ चारो ओर बरफ ही बरफ हो।

बरफी—स्त्री० [फा० बर्फी] १ खोए आदि की बनी एक प्रकार की मिठाई जो चौकोर चुकडो के रूप मे कटी हुई होती है और जिसमे कभी कभी खोए के साथ और चीजे भी मिली रहती है। जैसे—पिस्ते या बादाम की बरफी। २ बुनाई, सिलाई आदि मे, चौकोर बनाये हुए खड या खाने।

क्रि० प्र०—काटना।

बरफीदार—वि० [हिं० बरफी+फा० दार (प्रत्य०)] जिसमे बरफी की तरह चौकोर खाने बने हो। जैसे—रूईदार अगे मे होनेवाली बरफी-दार सिलाई।

बरफीला—वि० [फा० बर्फ से] [स्त्री० बरफीली] १ जिसमे या जिसके साथ बरफ भी हो। २ जो बरफ के योग से या बरफ की तरह ठढा हो। जैसे—बरफीली हवा।

बरफीला तूफान—पु० [हिं०+अ०] वह तूफान या बहुत तेज हवा जिसमे

प्रायः बरफ के बहुत छोटे छोटे कण भी मिले रहते हैं। हिम झंझावात। (ब्लिजर्ड)

विशेष—ऐसे तूफान अधिकतर ध्रुवीय प्रदेशो और बरफ से ढके हुए पहाडो की चोटियो पर चलते हैं जिनके कारण आस-पास के प्रदेशो मे सरदी बहुत बढ जाती है। इनकी गति प्रति घण्टे ५०-६० मील होती है और इनमे पड़ने पर किसी को कुछ भी दिखाई नही देता।

बरफी-संदेस—पु० [फा० बरफी+ब० सदेश] एक प्रकार की बगला मिठाई।

बरबंड—वि० [सं० बलवत] १. बलवान्। ताकतवर। २ प्रतापशाली। ३ उद्दड। उद्धत। ४ बहुत तेज। प्रखर। प्रचड।

बरबट†—अव्य०=बरबस।

†पु०=बरवट (तिल्ली)।

बरबट्टा†—पु० दे० 'बोडा' (फली)।

बरबत—पु० [अ०] एक तरह का बाजा।

बरबर—स्त्री०=बडबड (बकवाद)।

पु० [अ० बर्बर] [भाव० बर-बरता, बर-बरीयत] १ अफीका का एक प्रदेश। २. उक्त प्रदेश का निवासी।

वि० असभ्य और राक्षसी प्रकृतिवाला।

बरबरिस्तान—पु० [अ० बर्बर] अफीका का एक देश।

बरबरी—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की बकरी।

पु० [अ० बर्बर] बरबर देश का निवासी।

बरबस—अव्य० [स० बल+वश] १ बलपूर्वक। जबरदस्ती। दृढात। २ निरर्थक। व्यर्थ। बे-फायदे।

वि० जिसका कोई वश न चलता हो। लाचार।

बरबाद—वि० [फा०] [भाव० बरबादी] १ (रचना) जो पूर्णतया ध्वस्त हो गई हो। २ (देश) जिसकी अवस्था बहुत ही शोचनीय हो गई हो। ३ (काम) जो चौपट हो गया हो। ४ (व्यक्ति) जिसकी सपत्ति उसके हाथ से निकल चुकी हो। जो लुट चुका हो।

बरबादी—स्त्री० [फा०] बरबाद होने की अवस्था या भाव। तबाही। विनाश।

बरम—पु०=वर्म (कवच)।

बरमन†—पु०=वर्मा।

बर-मला—अव्य० [फा०] १ खुले आम। सबके सामने। २ मनमाने ढग या रूप से। जी भरकर। जैसे—किसी को बर-मला खरी-खोटी सुनाना।

बरमहल—अव्य० [फा०] १ उपयुक्त, ठीक अथवा प्रत्यक्ष अवसर या समय पर। २ बदला लेने की दृष्टि से। मुँहतोड।

बरमा—पु० [देश०] [स्त्री० अल्पा० बरमी] लकडी आदि मे छेद करने का लोहे का एक प्रसिद्ध औजार।

पु० [स० ब्रह्म देश०] भारत की पूर्वी सीमा पर बगाल की खाडी के पूर्व और आसाम, चीन के दक्षिण का एक पहाडी प्रदेश।

†पुं०=वर्म्मा।

बरमी—वि० [हि० बरमा=ब्रह्म देश] बरमा-सबधी। बरमा देश का। जैसे—बरमी चावल।

पु० बरमा या ब्रह्म देश का निवासी।

स्त्री० बरमा या ब्रह्म देश की भाषा।

स्त्री० [?] धातु, लकडी आदि मे छेद करने का छोटा बरमा।

स्त्री० [?] गीली नाम का पेड।

बरमूबोट—स्त्री० [हि० बरमा (देश) अ० बोट=नाव] प्रायः चालीस हाथ लंबी एक प्रकार की नाव। इसका पिछला भाग अगले भाग की अपेक्षा अधिक चौडा होता है।

बरम्हा†—पु० १ दे० 'ब्रह्मा'। २ दे० 'बरमा'। ३ दे० 'वर्म्मा'।

बरम्हाउ†—पु०=बरम्हाव।

बरम्हाना—स० [स० ब्रह्म] [भाव० बरम्हाव] (ब्राह्मण का) किसी को आशीर्वाद देना। उदा०—तोरन तूर न ताल बजै बरम्हावत भाट गावत ठाढी।—केशव।

बरम्हाव†—पु० [स० ब्रह्म+आव (प्रत्य०)] १. ब्राह्मणत्व। २ ब्राह्मण का दिया हुआ आशीर्वाद। उदा०—बाएँ हाथ देइ बरम्हाऊ। —जायसी।

बरराना—अ०=बर्राना।

बररे, बररै†—पु०=बरें (भिड)।

बरवट†—स्त्री० दे० 'तिल्ली' (रोग)।

बरवल—पु० [देश०] एक प्रकार की भेड।

बरवह†—पु० [?] मछलियाँ खाकर निर्वाह करनेवाली एक चिड़िया।

बरवा—पु०=बरवै।

बरवै—पु० [देश०] एक छद जिसके विषम अर्थात् पहले और तीसरे चरणो मे बारह-बारह और सम अर्थात् दूसरे और चौथे चरणो मे सात-सात मात्राएँ होती हैं। सम चरणो की अतिम चार-चार मात्राओ का जगण के रूप मे होना आवश्यक होता है।

बरष*—पु०=वर्ष।

बरषना†—अ०=बरसना।

बरषा†—स्त्री०=वर्षा।

बरषाना†—स०=बरसाना।

बरषासन—पु० [स० वर्षाशन] साल भर की भोजन सामग्री जो एक व्यक्ति अथवा एक परिवार के लिए यथेष्ट हो।

बरस—पु० [स० वर्ष] १ उतना समय जितना पृथ्वी को सूर्य की पूरी एक परिक्रमा करने मे लगता है अर्थात् ३६५ दिन ५ घटे, ४८ मिनट और ४५ ५१ सेकड का समय। २ ३६५ दिनो का समय। अधिवर्ष मे इसका मान ३६६ दिनो का होता है। ३ विभिन्न पचागो के द्वारा नियत ३६५ दिनों का विशिष्ट समय।

पद—बरस दिन का दिन—ऐसा दिन। (त्योहार आदि) जो साल में एक ही बार आता हो। बडा त्योहार।

४ वह समय जो एक जन्म-दिन से दूसरे जन्म-दिन तक मे पडता है। जैसे—इस समय इसका तीसरा वर्ष चल रहा है।

बरस गाँठ—स्त्री० [हि० बरस+गाँठ] १. वह तिथि या दिन जो किसी के जन्म की तिथि या जन्म-दिन के क्रमात् ३६५-३६५ दिनों के उपरात पडता है। साल-गिरह। २ उक्त दिन मनाया जानेवाला उत्सव।

बरसना—अ० [स० वर्षण] १. बादलो से जल का बूँदो के रूप मे गिरना। वर्षा होना। २ वर्षा के जल की तरह ऊपर से कणो या छोटे-छोटे टुकडो के रूप मे गिरना। जैसे—मकानो पर से फूल बरसना।

३ बहुत अधिक मात्रा, मान या सख्या मे लगातार आना या आता रहना। जैसे—(क) किसी के घर रुपए बरसना, किसी पर लाठियाँ बरसना (निरंतर लाठियों का प्रहार होना)।

मुहा०—(किसी पर) बरस पड़ना =बहुत अधिक क्रुद्ध होकर लगातार कुछ समय तक डाँटने-डपटने लगना। बहुत कुछ बुरी-भली बातें कहने लगना। जैसे—तुम तो जरा-सी बात पर नौकरों पर बरस पड़ते हो। ४. बहुत अच्छी तरह और यथेष्ठ मात्रा में दिखाई देना या खूब प्रकट होना। जैसे—किसी के चेहरे से शरारत बरसना, किसी जगह शोभा बरसना। ५ दाँयें हुए गल्ले का इस प्रकार हवा मे उड़ाया जाना जिसमे दाना-भूसा अलग अलग हो जाय। ओसाया जाना। डाली होना।

बरस बियावर—वि० स्त्री० [हि० बरस+बियावर (बच्चा देनेवाली)] हर साल बच्चा देनेवाली (मादा चौपाया)।

बरसाइत†—स्त्री०=बरसायत।

बरसाइन†—वि० स्त्री०=बरस-बियावर।

बरसाऊ—वि० [हि० बरसना+आऊ (प्रत्य०)] बरसनेवाला। वर्षा करनेवाला (बादल आदि)। उदा०—ह्वै कै बरसाऊ एक बार तौ बरसते।—सेनापति।

वि० [हि० बरसाना] बरसानेवाला। वर्षा करनेवाला।

बरसात—स्त्री० [स० वर्षा; हि० बरसना+आत (प्रत्य०)] [वि० बरसाती] १ वह समय जिसमें आकाश से जल बरस रहा हो। जैसे—बरसात हो रही है, अभी घर से मत निकलो। २ वर्ष की वह ऋतु या मास जिसमें प्राय पानी बरसता रहता है। वर्षाकाल। ३ वर्षा।

बरसाती—वि० [हि० बरसात+ई (प्रत्य०)] १ बरसात-संबंधी। बरसात का। जैसे—बरसाती हवा। २ बरसात के दिनों में होनेवाला। जैसे—बरसाती तरकारियाँ, बरसाती मेले।

स्त्री० १ प्लास्टिक, मोमजामे आदि का बना हुआ एक प्रकार का ढीला-ढाला कोट जिसे पहनने मे शरीर या कपड़ों पर वर्षा के पानी का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। २ कोठियों आदि के प्रवेश-द्वार पर बना हुआ वह छायादार थोड़ा-सा स्थान जहाँ सवारियाँ उतारने के लिए गाड़ियाँ खड़ी होती हैं।

पु० १ घोड़ों का एक रोग जो प्राय बरसात मे होता है। २ प्राय बरसात के दिनों मे आँख के नीचे होनेवाला एक प्रकार का घाव। ३ बरसात के दिनों मे पैर की उँगलियों मे होनेवाली एक प्रकार की फुंसियाँ। ४ चरस नाम का पक्षी। चीनी मोर।

बरसाना—स० [हि० बरसना का प्रे०] १ बादलों का जल की वर्षा करना। २ वर्षा के जल की तरह लगातार बहुत सी चीजें ऊपर से नीचे गिराना। जैसे—फूल बरसाना। ३ बहुत अधिक मात्रा मे चारों ओर से प्राप्त करना। ४ अनाज को इस प्रकार हवा मे गिराना जिससे दाने और भूसा अलग हो जायँ। ओसाना। डाली देना।

सयो० क्रि०—डालना।—देना।

बरसायत—स्त्री० =बरसाइत।

स्त्री० [स० वट+सावित्री] जेठ बदी अमावस जिस दिन स्त्रियाँ वट-सावित्री की पूजा करती है।

बरसावना†—स० =बरसाना।

बरसिंघा—पु० [हि० बर=ऊपर+हि० सींग] वह बैल जिसका एक सींग खड़ा और दूसरा सींग नीचे की ओर झुका हुआ हो। मैना।

†पु०=बारहसिंगा।

बरसी—स्त्री० [हि० बरस+ई (प्रत्य०)] १. वह तिथि या दिन जो किसी के मरने की तिथि या दिन के ठीक वर्ष-वर्ष बाद पड़ता हो। २ मृत का वार्षिक श्राद्ध।

बरसीला*—वि० [हि० बरसना+ईला (प्रत्य०)] बरसनेवाला।

बरसू—पु० [देश०] एक प्रकार का वृक्ष।

बरसोदिया—पु० [हि० बरस+ओदिया (प्रत्य०)] वह नौकर जो साल भर तक कोई काम करने के लिए नियुक्त हुआ या किया गया हो।

बरसौंड़ी†—स्त्री० [बरस+औंडी (प्रत्य०)] वर्ष के वर्ष दिया जानेवाला कोई कर।

बरसौंहा*—वि० [हि० बरसना+औंहा (प्रत्य०)] [स्त्री०] बरसौंही। १ बरसनेवाला। २ जो बरसने को हो।

बरहँटा—पु० [स० भटाकी] कड़वे भटे का पौधा और फल।

बरह—पु० [फा० बर्ग] दल। पत्ता। पत्ती।

बर-हक—वि० [फा०] १ जो धर्म अथवा न्याय की दृष्टि मे बिलकुल ठीक हो। २. उचित। वाजिब।

बरहना—वि० [फा० बर्हन] जिसके शरीर पर कोई वस्त्र न हो। नंगा। नग्न।

बरहमंड†—पु० =ब्रह्मांड।

बरहम—वि० [फा० बरह्म] [भाव० बरहमी] १ जिसे क्रोध आ गया हो। क्रुद्ध। २ भड़का हुआ। उत्तेजित। क्षुब्ध। ३ इधर-उधर छितरा या बिखरा हुआ।

†पु०=ब्रह्म।

बरहा—पु० [हि० बहना] [स्त्री० अल्पा० बरही] छोटी नाली विशेषत दो मेड़ों के बीच की वह छोटी नाली जिससे खेतों को पानी पहुँचाया जाता है।

पु० [स० बर्हि] मोर।

पु० [हि० बरना=बटना] मोटा रस्सा।

पु० [स० वाराह] [स्त्री० अल्पा० बरही] जंगली सूअर।

बरीह—पु० =बरही।

बरहिया†—स्त्री० [हि० बारह?] पुरानी चाल की एक प्रकार की नाव जो बारह हाथ चौड़ी होती थी।

बरही—पु० [स० बर्हि] १ मयूर। मोर। २ साही नामक जंगली जंतु। ३ अग्नि। आग। ४ कुक्कुट। मुरगा।

स्त्री० [हि० बारह] १ संतान उत्पन्न होने से बारहवाँ दिन। २ उक्त अवसर पर प्रसूता को कराया जानेवाला स्नान और उसके साथ होनेवाला उत्सव।

स्त्री० [हि० बरहा] १ पत्थर आदि भारी बोझ उठाने का मोटा रस्सा। २ जलाने की लकड़ियों का गट्ठर। ईंधन का बोझ (रस्सी से बँधी होने के कारण)।

बरही पीड़—पु० [स० बर्हि पीड] मोर के परों का बना हुआ मुकुट। मोर-मुकुट।

बरही-मुख—पु० [स० बर्हिमुख] देवता।

बरहौं†—पु० [हि० बरती]=बरही (सन्तान-जन्म की)।

बरह्मना—स०=बरम्हाना।

बरांडल—पु० [देश०] १ जहाज का वह रस्सा जो मस्तूल को सीधा खडा रखने के लिए उसके चारो ओर ऊपरी सिरे से लेकर नीचे तक जहाज के भिन्न भिन्न भागों मे बाँधे जाते हैं। बराडा। २ जहाजी काम मे आनेवाला कोई रस्सा।

बरांडा—पु० १ दे० 'बरामदा'। दे० 'बंडल'।

बरांडी—स्त्री० [अ० ब्रैंडी] आड़ू, सेब आदि के रस मे बनाई जानेवाली एक तरह की बढ़िया शराब।

बरा—पु० [स० बरी] उडद की पीसी हुई दाल का बना हुआ टिकिया के आकार का एक प्रकार का पक्वान्न जो घी या तेल मे पकाकर यो ही अथवा दही, इमली के पानी आदि मे डालकर खाया जाता है। बड़ा।

†पु०=बरगद (वट वृक्ष)।

†पु०=बहूँटा (बाँह पर पहनने का गहना)।

बराई†—स्त्री० [देश०] एक प्रकार का गन्ना।

स्त्री०=बडाई।

बराक—पु० [स० वराक] १ शिव। २ युद्ध। लडाई।

वि० १ शोचनीय। सोच करने के योग्य। २ अधम। नीच। ३ पापी। ४ बापुरा। बेचारा।

बराट—पु० [स० वराटिका] कौडी।

वि०=वराट्।

बराड़ी—स्त्री०=बरारी।

बरात—स्त्री० [स० वरयात्रा] १ विवाह के समय वर के साथ कन्या-वालों के यहाँ जानेवाले लोगों का दल या समूह जिसके साथ शोभा के लिये बाजे, हाथी, घोडे आदि भी रहते है। जनेत।

क्रि० प्र०—आना।—जाना।—निकलना।—सजना।—सजाना।

२. एक साथ मिलकर या दल बाँधकर कही जानेवालों का समूह।

बराती—वि० [हि० बरात+ई (प्रत्य०)] बरात-सबधी।

पु० किसी बरात मे सम्मिलित होनेवाला या होनेवाले व्यक्ति।

बरान कोट—पु० [अ० ब्राउन कोट] १ सिपाहियों के पहनने का एक प्रकार का बडा तथा ढीला-ढाला ऊनी कोट। २ ओवर कोट।

बराना—स० [स० वारण] १. प्रसग आने पर भी कोई बात न कहना। मतलब छिपाकर इधर-उधर की बाते कहना। बचाना। २ बहुत सी वस्तुओं या बातों मे से किसी एक वस्तु या बात को किसी कारण छोड देना। जान-बूझकर अलग करना। बचाना। ३ रक्षा या हिफा-जत करना। खेतो मे से चूहे आदि भगाना।

स० [स० वरण] बहुत सी चीजों मे से अपनी इच्छा के अनुसार चीजे चुनना। देख-देखकर अलग करना। चुनना। छांटना।

स० [स० वारि] १ सिंचाई का पानी एक नाली से दूसरी नाली में ले जाना। २ खेतों मे पानी देना। सींचना।

† स०=बालना (जलाना)

बराबर—वि० [फा० बर] १. गुण, महत्त्व, मात्रा, मान, मूल्य, संख्या आदि के विचार से जो किसी के तुल्य या समान हो। जो तुलना के विचार से न किसी से घटकर और न किसी से बढ़कर ही हो। समान। जैसे—(क) दोनों किताबे तौल में बराबर हैं। (ख) कानून की दृष्टि में सब लोग बराबर हैं।

पद—बराबर का=(क) पूरी तरह से तुल्य या समान। जैसे—इसमें आटा और चीनी दोनों बराबर के पडते है। (ख) बहुत कुछ तुल्य या समान। जैसे—जब लड़का बराबर का हो जाय, तब उसे मारना-पीटना नही चाहिए।

२ (तल) जो ऊँचा-नीचा या खुरदुरा न हो। सम। जैसे—वह सारा मैदान बराबर कर दो। ३. जैसा होता हो या होना चाहिए, वैसा ही। उपयुक्त और ठीक। ४. (ऋण या देन) जो चुका दिया गया हो। चुकता किया हुआ। ५. जिसका अत या समाप्ति कर दी गई हो। जैसे—सारा काम बराबर करके तब यहाँ से उठना।

मुहा०—(कोई चीज) बराबर करना=समाप्त कर देना। अंत कर देना। न रहने देना। जैसे—उन्होंने दो ही चार बरस मे बड़ों की सारी सम्पत्ति बराबर कर दी।

६ जिसके अभाव, त्रुटि, दोष आदि की पूर्ति या सशोधन कर दिया गया हो। जैसे—गड्ढे बराबर करना।

क्रि० वि० १ बिना रुके हुए। लगातार। निरतर। जैसे—बराबर आगे बढते रहना चाहिए। २. एक ही पक्ति या सीध मे। जैसे—सड़क के दोनो तरफ बराबर पेड़ लगे हैं। ३ सदा। हमेशा। जैसे—हमारे यहाँ तो बराबर ऐसा ही होता आया है। ४ पार्श्व म। बगल में। जैसे—दुश्मन की कब्र तेरे बराबर बनायेंगे।—दाग। ५. बिना किसी परिवर्तन, विकृति आदि के। ६ साथ-साथ। जैसे—भीड़ मे हमारे बराबर रहना; इधर-उधर मत हो जाना। ७ किसी से समान दूरी पर। समानान्तर। जैसे—इसी के बराबर एक और रेखा खींचो।

बराबरी—स्त्री० [हि० बराबर+ई (प्रत्य०)] १ बराबर होने की अवस्था या भाव। समानता। तुल्यता।

पद—बराबरी से=अशपत्र, राज-ऋण, विनिमय आदि की दर के सबंध में अकित, नियत या वास्तविक मूल्य पर। (ऐट पार)

२ गुण, रूप, शक्ति आदि की तुल्यता या सादृश्य। ३ वह स्थिति जिसमे प्रतियोगिता, स्पर्धा आदि के कारण किसी का अनुकरण करने, अथवा उसके तुल्य या समान बनने का प्रयत्न किया जाता है। मुकाबला। जैसे—वह तो बडे आदमी हैं, तुम उनकी क्या बराबरी करोगे?

४. कुश्ती, खेल आदि के परिणाम की वह स्थिति जिसमे दोनो पक्ष न तो एक दूसरे को हरा ही सके हों और न एक दूसरे से हारे ही हों।

बरामद—वि० [फा०] १. जो बाहर निकला हुआ हो। बाहर आया हुआ। सामने आया हुआ। २ (चुरा या छिपाकर रखा हुआ पदार्थ) किसी के घर से ढूंढ़कर बाहर निकाला या सामने लाया हुआ। जैसे—किसी के यहाँ से चोरी या चोर-बाजारी का माल बरामद होना।

स्त्री० १ बाहर जानेवाला माल। निर्यात। २. प्राप्य धन की होने-वाली वसूली। ३. दे० 'गग-बरार'।

बरामदगी—स्त्री० [फा०] १. बरामद होने अर्थात् बाहर आने की क्रिया या भाव। २. खोये या चोरी गये हुए माल का किसी के पास से निकाल कर प्राप्त किया जाना। ३. विदेशो को माल भेजने की क्रिया या भाव। निर्यात करना।

बरामदा—पु० [फा० बरामद.] १. मकानों में वह छाया हुआ लंबा

सँकरा भाग जो कुछ आगे या बाहर निकला रहता है। बारजा। छज्जा।
२ ओसारा। दालान।

बराम्हन†—पु० ब्राह्मण।

बराय—अव्य० [फा०] वास्ते। लिए। निमित्त। जैसे—बराय नाम= नाम-मात्र के लिए।
अव्य० बराह।

बरायन—पुं० [सं० वर+आयन (प्रत्य०)] लोहे का वह छल्ला जो ब्याह के समय दूल्हे के हाथ मे पहनाया जाता है।

बरार—पु० [फा०] वह चदा जो गाँवो मे हर घर से लिया जाता हो।
वि० [फा०] १. लानेवाला। २. किसी के द्वारा लाया हुआ। जैसे—गग-बरार जमीन।
पु० [देश०] एक प्रकार का जगली जानवर।

बरारक—पु० [डि०] हीरा।

बरारी—स्त्री० [स० वरारी] सपूर्ण जाति की एक रागिनी जो दोपहर मे गाई जाती है। कोई कोई इसे भैरव राग की रागिनी मानते हैं।
स्त्री० [हि० बरार प्रदेश] बरार या खानदेश मे होनेवाली एक प्रकार की रूई।

बरारी श्याम—पु० [स०] सपूर्ण जाति का एक सकर राग जिसमे सब शुद्ध स्वर लगते है।

बराव—पु० [हि० बराना+आव (प्रत्य०)] बराने अर्थात् बचकर रहने की क्रिया या भाव। परहेज। जैसे—घर मे किसी को चेचक निकलने पर कई तरह के बराव करने पडते है।

बरास—पु० [स० पोतास ?] एक तरह का अत्यधिक सुगधित कपूर। भीमसेनी कपूर।
पु० [अ० ब्रेस] जहाज मे पाल की वह रस्सी जिससे पाल का रुख घुमाया जाता है।

बराह—क्रि० वि० [फा०] १ मार्ग या रास्ते से। २ जरिये से। द्वारा। ३ के तौर पर। के रूप मे। जैसे—बराह मेहरबानी रास्ता दे दे। ४ के विचार से। जैसे—बराह इसाफ=इसाफ के विचार से।
†पु० वराह।

बराहमन†—पु० ब्राह्मण।

बराहिल—पु० [?] करिन्दा। गुमाश्ता। (पूरब)

बराही—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की घटिया ऊख।
†स्त्री० =वाराही।

बरिअ†—वि० बलवान।

बरिआई†—स्त्री० [हि० बरियार] १ बलवान होने की अवस्था या भाव। शक्तिमत्ता। २ बल-प्रयोग। जबरदस्ती।
अव्य० १ बलपूर्वक। जबरदस्ती। २ विवशता के कारण अथवा स्वय को न रोक सकने पर। उदा०—कहत देव हरषत बरिआई।—तुलसी।
†स्त्री० बडाई।

बरिआत†—स्त्री० बरात।

बरिच्छा†—पु०=बरच्छा।

बरिबंड—वि० [स० बलवत] १ बलवान। बली। २. प्रचड। विकट। ३ प्रतापशाली।

बरियाई—स्त्री० =बरिआई।
†अव्य०=बरिआई।

बरियात†—स्त्री०=बरात।

बरियार—वि० [हि० बल+आर (प्रत्य०)] [स्त्री०, भाव० बरियारी] बल मे जो किसी से अधिक हो। बली।

बरियारा—पु० [स० बला] दे० 'बनमेथी' (पौधा)।

बरियाल—पु० [देश०] एक प्रकार का पतला बाँस। बाँसी।

बरिल†—पु० [हि० बडा, बरा] पकौडी या बडे की तरह का एक पक-वान।

बरिलना—पु० [देश०] एक तरह की क्षारयुक्त मिट्टी। सज्जी। मज्जी-खार।

बरिषना†—अ० बरसना।

बरिषा†—स्त्री० वर्षा।

बरिष्ठ—वि०=वरिष्ठ।

बरिस†—पु०=बरस।

बरी—स्त्री० [स० वरी; प्रा० बडी] १ गोल टिकिया। वटी। २ उडद, मूँग आदि की पीठी आदि की बडी। ३ मट्टी मे फूँके हुए एक तरह के ककड जिन्हे बुझा तथा पीटकर दीवारो आदि की जोडाई और पलस्तर के लिए मसाला तैयार किया जाता है।
स्त्री० [स० वर दूल्हा] गहने, कपडे, मेवे और मिठाइयाँ जो दूल्हे की ओर से दुलहिन के यहाँ भेजी जाती है।
स्त्री० [देश०] एक प्रकार की घास जिसके दाने बाजरे मे मिलाकर राजपूताने की ओर गरीब लोग खाते हैं।
वि० [फा०] १. अभियोग, दोष आदि से छूटा हुआ। बरी। मुक्त। २ निर्दोष। बेकसूर। ३. अलग। पृथक्। ४ आजाद। स्वतत्र।
† वि०=बली (बलवान)।

बरीस†—पु० बरस।

बरु—अव्य० [स० वर=श्रेष्ठ, भला] १. भले ही। ऐसा हो जाय तो हो जाय। चाहे। २. वरन्। बल्कि।

बरुआ—पु० [स० वटुक, प्रा० बडुअ] १ जिसका यज्ञोपवीत तो हो गया हो, पर जो अभी तक गृहस्थ न हुआ हो। ब्रह्मचारी। वटु। २ उपनयन या यज्ञोपवीत के समय गाये जानेवाले गीत। ३ उपनयन या यज्ञोपवीत नामक सस्कार। ५. ब्राह्मण का बालक। ५ पढ़ा-लिखा और पुरोहिताई करनेवाला ब्राह्मण।
पु० [हि० बरना] मूँज के छिलके की बनी हुई बद्धी जिससे डलियाँ आदि बनाई जाती है।

बरुक†—अव्य० =बरु।

बरुन—पु०=वरुण।

बरुना—पु०=बरना (वृक्ष)।
स्त्री०=वरुणा (नदी)।

बरुनी—स्त्री० [देश०] १ वट-वृक्ष की जटा। (पूरब)
†स्त्री०=बरौनी।

बरुला†—पु०=बल्ला (लबा काठ)।

बरुवा†—पुं०=बरुआ।

बरुथ—पुं०=वरूथ।

बरुथी—स्त्री० [सं० वरूथ] एक नदी जो सई और गोमती के बीच मे है।

बरेंडा—स्त्री० [सं० वरडक=गोला, गोल लकडी] [स्त्री० अल्पा० बरेंडी] १ छाजन के नीचे लम्बाई के बल लगी हुई लकडी। बलीडा। २ खपरैल या छाजन के बीचवाला सबसे ऊँचा भाग।

बरे—अव्य० [सं०√बल, हि बर] १ जोर से। २. ऊँचे स्वर से। बलपूर्वक। ३ जबरदस्ती। ४. बदले मे। ५. निमित्त। लिए। वास्ते।

बरेखी—स्त्री० [हिं० बाँह+रखना] बाँह पर पहनने का एक गहना। स्त्री० [हिं० वर+रक्षा] विवाह-सबंध निश्चित और स्थिर करने के लिए वर या कन्या देखना। विवाह की ठहरौनी।

बरेच्छा—पुं०=बरच्छा।

बरेजा—पुं० [सं० वाटिका, प्रा० बाडिअ] पान का भीटा।

बरेठा†—पुं० [सं० वरिष्ठ?] धोबी।

बरेत—पुं०=बरेता।

बरेता—पुं० [हिं० वरना, बटना+एत (प्रत्य०)] [स्त्री० अल्पा० बरेती] सन का मोटा रस्सा। नार।

बरेदी†—पुं० [देश०] चरवाहा।

बरेषी—स्त्री० बरेखी।

बरेंड़ा†—पुं० बरेंडा।

बरो—स्त्री० [हिं० बार=बाल] १ आलू की जड का पतला रेशा। (रगरेज) २ एक प्रकार की घास।

बरोक—पुं० [हिं० बर+रोकना] १ विवाह-संबंध निश्चित होने के पहले होनेवाला एक कृत्य। विशेष दे० 'बरच्छा'। २ वह धन जो उक्त अवसर पर कन्या-पक्ष की तरफ से वर-पक्षवालो को दिया जाता है।

अव्य० [फा० ब+हिं० रोक] बिना किसी रोक-टोक या बाधा के।

*पुं० [सं० बलौक] सेना।

बरोज†—स्त्री० [सं० वट+ज] बरगद की जटा। बरोह।

बरोठा—पुं० [सं० द्वार+कोष्ठ; हिं० बार+कोठा] १ ड्योढी। पौरी।

पद—बरोठे का चार–विवाह के समय होनेवाली द्वार-पूजा।

२. दीवानखाना। बैठक।

बरोधा—पुं० [देश०] वह खेत जिसमे पिछली फसल कपास की हुई हो।

बरोबर†—वि०=बराबर।

बरोह—स्त्री० [सं० वा+रोह=आनेवाला] बरगद के पेड के ऊपर की डालियों में टँगे हुए सूत या रस्सी के जैसा वह अंग जो क्रमशः नीचे की ओर झुकता तथा जमीन पर पहुँचकर जम जाता तथा नये वृक्ष का रूप धारण करता है।

बरोही—अव्य० [हिं० बर=बल] १. किसी के बल या आधार पर। २ बलपूर्वक।

बरौंछी—स्त्री० [हिं० बार+औंछना] वह कूँची जिसमे सूअर के बाल लगाये गये हो।

बरौखा—पुं० [हिं० बड़ा+ऊख] एक प्रकार का बड़ा गन्ना।

बरौठा—पुं०=बरोठा।

बरौनी—स्त्री० [सं० वरण=ढाँकना] पलकों के आगे के बालों की पंक्ति।

बरौरी—स्त्री० [हिं० बडी-बरी] बड़ी या बरी नाम का पकवान।

बर्क—स्त्री० [अ० बर्क] बिजली। विद्युत।

वि० १. बहुत जल्दी काम करनेवाला। तेज। २. (पाठ) जो इतना कठस्थ हो कि तुरन्त कहा या सुनाया जा सके।

बर्कत†—स्त्री०=बरकत।

बर्कर—पुं० [सं० वर्कर] १ बकरा। २. पशु का बच्चा। ३ हँसी-मजाक।

बर्की—वि० [अ० बर्की] बर्क अर्थात् बिजली-सबंधी। विद्युत् का।

बर्खास्त—वि० [भाव० बर्खास्तगी]=बरखास्त।

बर्ग—पुं० [फा०] दल। पत्ता। पत्ती।

बर्छा—पुं०=बरछा।

बर्ज*—वि० [सं० वर या वर्य] अपने वर्ग मे श्रेष्ठ। उदा०—ब्यास आदि कवि बर्ज बखानी।—तुलसी।

बर्जना—स०=बरजना।

बर्णन—पुं०=वर्णन।

बर्णना—स० [हिं० वर्णन] वर्णन करना। बयान करना।

बर्त†—पुं०=व्रत।

बर्तन—पुं०=बरतन।

बर्तना—स०=बरतना।

बर्ताव—पुं०=बरताव।

बर्द—पुं० [सं० वलद] बैल।

बर्दवानी—स्त्री० [बर्दवान (स्थान)] पुरानी चाल की एक प्रकार की तलवार जो कदाचित् बर्दवान मे बनती थी।

बर्दाश्त—स्त्री०=बरदाश्त।

बर्न†—पुं०=वर्ण।

बर्न्य—वि०=वर्ण्य।

बर्फ—पुं०=बरफ।

विशेष—'बर्फ' के सभी विकारी रूपो के लिए दे० 'बरफ' के विकारी रूप।

बर्बट—पुं० [सं०√बर्ब् (गति)+अटन्] राजमाष।

बर्बटी—स्त्री० [सं० बर्बट+ङीष्] १ राजमाष। २ वेश्या।

बर्बर—पुं० [सं०√बर्ब् (जाना)+अरन्?] १ प्राचीन काल मे, आर्यों से भिन्न कोई व्यक्ति। २ उत्तर काल मे कोई ऐसा व्यक्ति जिसमें आर्यों के से गुण न हो, बल्कि जो असभ्य, क्रूर और हिंसक हो। जंगली व्यक्ति। ३ जगली जातियो का नृत्य। ४ अस्त्रो आदि की झकार। ५. सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति का एक राग। ६ घुँघराले बाल। ७. एक तरह का पौधा। ८. एक तरह की मछली। ९. एक तरह का कीड़ा।

वि० [भाव० बर्बरता] १. जो असभ्य, क्रूर, जंगली और हिंसक हो। २. उद्धत। उद्दड। ३. घुँघराला (बाल)।

बर्बरक—पुं० [सं०] एक प्रकार का नक्षत्र जिसे शीत चन्दन भी कहते है।

बर्बरता—स्त्री० [सं० बर्बर+तल्+टाप्] १ बर्बर अर्थात् परम असभ्य, क्रूर तथा हिंसक होने की अवस्था या भाव। २. बर्बर व्यक्ति का कोई विशिष्ट आचरण या कार्य।

बर्बरा—स्त्री० [सं० बर्बर+टाप्] १ बर्बरी। बन-तुलसी। २ एक प्रकार की मक्खी। २ एक प्राचीन नदी।

बर्बरी—स्त्री० [सं० बर्बर+ङीष्] १ बन तुलसी। २ ईंगुर। सिंदूर। ३. पीला चन्दन।

बर्रा†—पु०=बर्रे।

पु० [हिं० बरना] रस्सा-कशी।

बर्राक—वि० [अ० बर्राक] १ जगमगाता हुआ। चमकीला। २. बहुत उजला। सफेद। ३ वेगवान्। तेज। ४ चतुर। चालाक। ५ जिसका पूरी तरह से अभ्यास किया गया हो। ६ कंठस्थ। मुखाग्र।

बर्राना—अ० [अनु० बर बर] १ बर बर या बड बड करना। व्यर्थ बोलना। बकना। २ नींद मे पड़े पड़े व्यर्थ की बातें करना।

बर्रे—पु० [सं० वरण] १ मधु-मक्खियों की तरह छत्ते बनाकर रहनेवाला एक तरह का भौंरे के आकार-प्रकार का डंक मारनेवाला कीड़ा जो उड़ते समय भूं-भूं शब्द करता रहता है। भिड़। २ दे० 'कुसुम'।

बर्रो—पु० [देश०] एक प्रकार की चिड़िया।

बर्सात—स्त्री० बरसात।

बर्ह—पु०=बर्ह (मोर का पंख)।

बर्ही—पु०=बर्ही (मोर)।

बलंद—वि० [फा०] १. उच्च। ऊँचा। २ महान्।

बलंदी—स्त्री० [फा०] १ ऊँचाई। २. महत्ता।

बलंधरा—स्त्री० [सं०] भीमसेन की पत्नी। (महाभारत)

बलबी—स्त्री० [देश०] एक प्रकार का पेड़ जिसके फल खट्टे होते हैं और अचार के काम आते हैं। २ उक्त पेड़ का फल।

बल—पु० [सं०√बल् (जीवन देना)+अच्] १ वह शारीरिक तत्त्व जिसके सहारे हम चलते-फिरते और सब काम करते है। यह वस्तुत: हमारी शक्ति का कार्यकारी रूप है, और चीजें उठाना, खींचना, ढकेलना, फेंकना आदि काम इसी के आधार पर होते है।

मुहा०—बल बाँधना विशेष प्रयत्न करना। जोर लगाना। उदा०—जनि बल बाँधि बढ़ावहु छीनि।—सूर। **बल भरना** जोर या ताकत दिखाना या लगाना।

२ उक्त का वह व्यावहारिक रूप जिससे दूसरो को दबाया, परिचालित किया अथवा वश मे रखा जाता है। ३ राज्य या शासन के सशस्त्र सैनिकों आदि का वर्ग जिसकी सहायता से युद्ध, रक्षा, शाति-स्थापन आदि कार्य होते हैं। (फोर्स, उक्त तीनो अर्थों मे) ४ शरीर। ५ पुरुष का वीर्य। ६ ऐसा परकीय आधार या आश्रय जिसके सहारे अपने बूते या शक्ति से बढ़कर कोई काम किया जाता है। जैसे—तुम तो उन्ही के बल पर बढ़-बढ़कर बाते कर रहे हो।

पद—किसी के बल=किसी के आसरे या सहारे से। जैसे—हाथ के बल उठना, पैरों के बल बैठना।

७ पहलू। पार्श्व। जैसे—दाहिने (या बाएँ) बल लेटना।

पु० [सं० बल] १ बलराम। बलदेव। २ कौआ। ३ एक राक्षस का नाम। ४ बरुना नामक वृक्ष।

पु० [सं० बलि=झुर्री, मरोड या वलय] १ वह घुमाव, चक्कर या फेरा जो किसी लचीली या नरम चीज के बटने या मरोडने से बीच बीच मे पड जाता है। ऐंठन। मरोड। जैसे—रस्सी जल गई, पर उसके बल नही गये।

क्रि० प्र०—डालना।—देना।—निकालना।

मुहा०—बल खाना—(क) बटने या घुमाये जाने से घुमावदार हो जाना। ऐंठा जाना। (ख) कुंचित या टेढ़ा होना। **बल देना** (क) ऐंठना। मरोडना। (ख) बटना। जैसे—डोरी या रस्सी मे बल देना।

२. किसी चीज को यो ही अथवा किसी दूसरी चीज के चारो ओर घुमाने पर हर बार पड़नेवाला चक्कर या फेरा। लपेट। जैसे—रस्सी के दो बल डाल दो तो गठरी मजबूती से बँध जायगी।

क्रि० प्र०—डालना।—देना।

३ गोलाई लिये हुए वह घुमाव या चक्कर जो लहरो के रूप मे दूर तक चला गया हो। ४ ऐसा अभिमान जिसके कारण मनुष्य सरल भाव से आचरण या व्यवहार न करता हो। जैसे—मुझसे टाग हॉकोगे तो मैं तुम्हारा सारा बल निकाल दूँगा।

मुहा०—बल की लेना—घमंड करना। इतराना।

५ ऐसा अभाव, त्रुटि या दोष जिसके कारण कोई चीज ठीक तरह से काम न करती हो। जैसे—न जाने इस घडी मे क्या बल है कि यह रोज एक दो बार बंद हो जाती है।

क्रि० प्र०—निकालना।—पड़ना।

६ कपड़ो आदि मे पड़नेवाली सिलवट। शिकन। जैसे—इस काट मे दो जगह बल पड़ता है; इसे ठीक कर दो। ७ वह अवस्था जिसमे कोई चीज सीधी न रहकर बीच मे या और कही कुछ झुक, दब या लचक जाती है। लचक।

मुहा०—(किसी चीज का) बल खाना बीच मे से कहीं कुछ टेढ़ा होकर किसी ओर थोड़ा मुड़ जाना। झुकना। लचकना। जैसे—कमानी का दबने पर बल खाना। **(शरीर का) बल खाना** कोमलता, दुर्बलता, सुकुमारता आदि के कारण अथवा भाव-भंगी सूचक रूप मे शरीर के किसी अंग का बीच मे से कुछ लचकना। जैसे—चलने से कमर या हँसने मे गरदन का बल खाना।

८ सहसा झटका लगने पर शरीर के अन्दर की किसी नस के कुछ इधर-उधर हो जाने की वह स्थिति जिसमे उस नस के ऊपरी स्थान पर कुछ पीड़ा होती है। जैसे—आज सबेरे सोकर उठने (या झुककर लोटा उठाने) के समय कमर मे बल पड़ गया है।

क्रि० प्र०—पड़ना।

९ अंतर। फरक। जैसे—हमारे और तुम्हारे हिसाब मे ५) का बल है।

क्रि० प्र०—निकलना।—पड़ना।

मुहा०—बल खाना या सहना—हानि सहना। जैसे—चलो, ५ पाँच रुपए हम ही बल खायें।

स्त्री०—बाल (अनाज की)।

पु० हिं० बाल का संक्षिप्त रूप जो उसे यौगिक पदों के आरंभ मे प्राप्त होता है। जैसे—बल-तोड़।

बलक—पु० [सं०] स्वप्न, विशेषतः आधी रात के बाद आनेवाला स्वप्न। पु० [हिं० बलकना] बलकने की अवस्था, क्रिया या भाव। वि० दे० 'बलकना'।

बल-कटी—स्त्री० [हिं० बाल (अनाज की)+काटना] मुसलमानी राज्य-काल में फसल काटने के समय किसानों आदि से उगाही जानेवाली कर की किस्त।

बलकना—अ० [अनु०] १ उबलना। उफान आना। खौलना। २ आवेश या उमंग में आना। ३. उभड़ना।

बलकर—वि० [सं० ष० त०] [स्त्री० बलकारी] १ बल देनेवाला। २ बल बढ़ानेवाला। पु० अस्थि। हड्डी।

बलकल†—पु०=वल्कल (छाल)।

बलकाना—स० [हिं० बलकना] १. उबालना। खौलाना। २ उत्तेजित करना। उभाड़ना। ३. उमंग में लाना। उदा०—जोबन ज्वर केहि नहिं बलकावा।—तुलसी।

बल-काम—वि० [सं०] बल या शक्ति प्राप्त करने का इच्छुक।

बलकुआ—पु० [देश०] एक तरह का बाँस।

बलक्ष—वि० [सं० √बल्+क्विप्, बल्√अक्ष्+घञ्] श्वेत। सफेद। पु० सफेद रंग।

बलख—पु० [फा० बलख] अफगानिस्तान का एक प्राचीन नगर।

बलगम—पु० [अ०] [वि० बलगमी] नाक, मुँह आदि में से निकलनेवाला एक तरह का लसीला गाढ़ा पदार्थ। कफ। श्लेष्मा।

बलगमी—वि० [फा०] १. बलगम-संबंधी। २. कफ-प्रधान (प्रकृति)। ३ कफजन्य अर्थात् बलगम के कारण होनेवाला।

बलगर—वि० [हिं० बल+गर] १ बलवान्। २ दृढ़। पक्का। मजबूत

बलचक्र—पु० [सं० मध्य० स०] १ राज्य। २ राजकीय शासन। ३ सेना।

बलज—पु० [सं० बल√जन् (पैदा होना)+ड] १ अन्न की राशि। २ अन्न की फसल। ३ खेत। ४ नगर का मुख्य द्वार। ५. दरवाजा। द्वार। ६ युद्ध। लड़ाई। वि० बल से उत्पन्न। बलजात।

बलजा—स्त्री० [सं० बलज+टाप्] १ पृथ्वी। २ सुंदर स्त्री। ३. एक तरह की जूही और उसकी कली। ४. रस्सी।

बल-तोड़†—पु०=बाल-तोड़।

बलद—पु० [सं० बल√दा (देना)+क] १. बैल। २ जीवक नामक वृक्ष। ३ वह गृह्याग्नि जिससे पौष्टिक कर्म किये जाते थे। वि० बल देनेवाला।

बल-दर्शक—पु० [सं० प० त०] प्राचीन भारत में एक प्रकार का सैनिक अधिकारी।

बलदाऊ*—पु०=बलदेव (बलराम)।

बलदिया—पु० [हिं० बलद=बैल] १. बैल आदि चरानेवाला। चरवाहा। २. बनजारा।

बलदेव—पु० [सं० बल√दिव्+अच्] १. बलराम। २. वायु।

बलन—पु० [सं०√बल् (जीवन)+ल्युट्—अन] बलवान् बनाने की क्रिया। बल देना या बढ़ाना।

बलना—अ० [सं० बर्हण या ज्वलन] १. जलना। २ किसी चीज का इस प्रकार जलना कि उसमें से लपट या लौ निकले। जैसे—आग या दीआ बलना।

बल-नीति—स्त्री० [सं० ष० त०] १ आधुनिक राजनीति में वह नीति जिसके अनुसार कोई राष्ट्र सैनिक-बल के प्रयोग या सहायता से अपना बल, प्रभाव, हित आदि बढ़ाने का प्रयत्न करता रहता है। २ प्रतियोगियों की तुलना में अपना बल या शक्ति बढ़ाते चलने की चाल या नीति। (पावर-पॉलिटिक्स)

बल-नेह—पु० [हिं० बल+नेह] एक प्रकार का संकर राग जो रामकली, श्याम, पूर्वी, सुंदरी, गुणकली और गांधार से मिलकर बना है।

बल-पति—पु० [सं० ष० त०] १ सेनापति। २ इंद्र।

बल-परीक्षा—स्त्री० [सं० ष० त०] १. वह क्रिया जिससे किसी का बल जाना जाता हो। २ विरोधी दलों या वर्गों में होनेवाला वह द्वंद्व जो बलपूर्वक एक दूसरे को दबाने अथवा एक दूसरे से अपनी बात मनवाने के लिए होता है। (शोडाउन)

बल-पुच्छक—पु० [सं० ब० स०] कौआ।

बल-पूर्वक—अव्य० [सं० ब० स०, कप्] १. बल लगाकर। शक्ति-पूर्वक। २ किसी की इच्छा के विरुद्ध और अपने बल का प्रयोग करते हुए। बलात्। जबरदस्ती।

बल-पृष्ठक—पु० [सं० ब० स०,+कप्] रोहू (मछली)।

बल-प्रयोग—पु० [सं०] १ किसी को उसकी इच्छा के विरुद्ध कोई कार्य करने के लिए शक्ति का किया जानेवाला प्रयोग। (कोअर्शन) २ अनुचित दबाव।

बल-प्रसू—स्त्री० [सं० ष० त०] बलराम की माता, रोहिणी।

बलबलाना—अ० [अनु० बलबल] [भाव० बलबलाहट] १. जल अथवा किसी तरल पदार्थ का उबलते समय बल-बल करना। २ ऊँट का बलबल शब्द करना। †अ०=बिलबिलाना। †अ०=बड़बड़ाना।

बलबलाहट—स्त्री० [हिं० बलबलाना] बलबलाने से होनेवाला शब्द। †स्त्री०=बिलबिलाहट। †स्त्री०=बड़बड़ाहट।

बलबीज—पु० [सं० बला—बीज] कघी के बीज।

बलबीर—पु० [हिं० बल (=बलराम)+वीर (=भाई)] बलराम के भाई श्रीकृष्ण।

बलबूता—पु० [हिं० बल+बूता] १ बल तथा बिसात या सामर्थ्य जो किसी दुष्कर काम के संपादन के लिए आवश्यक होते हैं। २ शारीरिक शक्ति और आर्थिक संपन्नता का समाहार।

बलभ—पु० [सं० बल√भा (चमक)+क] एक प्रकार का विषैला कीड़ा।

बलभद्र—पु० [सं० बल+अच्, बल-भद्र, कर्म० स०] १ बलदेव जी का एक नाम। २ लोध का पेड़। ३. नील गाय। ४ पुराणानुसार एक पर्वत।

बलभद्रा—स्त्री० [सं० बलभद्र+टाप्] १. कुमारी कन्या। २. त्रायमाण लता। ३. नील गाय।

बलभी—स्त्री० [सं० वलभि] मकान की सबसे ऊपरवाली छत पर की कोठरी या कमरा। ऊपर का खंड। चौबारा।

बलम—पु० [सं० वल्लभ] प्रियतम। पति। बालम।

बलमीक—पु०=वल्मीक (बाँबी)।

बल-मुख्य—पु० [सं० स० त०] सेनानायक।

बलय—पु०=वलय।

बलया*—स्त्री०=वलय।

बलराम—पु० [सं०√रम् (रमण)+घञ्, बल-राम, ब० स०] श्रीकृष्ण-चन्द्र के बड़े भाई जो रोहिणी से उत्पन्न थे। बलदेव।

बलल—पु० [सं० बल√ला (लेना)+क] १ बलराम। २ इंद्र।

बलवड*—वि० [सं० बलवत] बलवान्।

बलवत—वि० [सं० बलवत्] बलवान्। ताकतवर।

बलवत्—वि० [सं० बल+मतुप्] (ऐसा विधान या नियम) जो चलन मे हो और इसी लिए जो अपना बल प्रदर्शित कर रहा हो। (इन-फोर्स) † अव्य० बलपूर्वक। बलात्।

बलवती—वि० स्त्री० [सं० बलवत्+ङीष्] जो बहुत अधिक प्रबल हो और जिसे रोका या मिटाया न जा सकता हो। जैसे—बलवती इच्छा।

बलवत्ता—स्त्री० [सं० बलवत्+तल्+टाप्] १. बलवान् होने की अवस्था या भाव। २ श्रेष्ठता।

बल-वर्धक—वि० [सं० ष० त०] बल बढानेवाला।

बल-वर्धन—पु० [सं० ष० त०] बल या शक्ति बढ़ाने का काम।

बल-वर्धी—वि०=बलवर्धक।

बलवा—पु० [फा० बल्व] १. दो दलो या सप्रदायो मे होनेवाला वह उग्र सघर्ष जिसमे मार-काट, अग्निकांड आदि उपद्रव भी होते है। २ बगावत। विद्रोह।

बलवाई—पु० [फा० बलवा+ई (प्रत्य०)] १. बलवा करनेवाला। २. विद्रोही। बागी।

बलवान् (न)—वि० [सं० बल+मतुप्, वत्व] [स्त्री० बलवती, भाव० बलवत्ता] १ जिसमे अत्यधिक बल हो। शक्तिशाली। २ पुष्ट। मजबूत। बलिष्ठ।

बलवार†—वि० बलवान्।

बलवीर—पु०=बलवीर।

बल-व्यसन—पु० [सं० ष० त०] सेना की हार। सैनिक पराजय।

बलशाली (लिन्)—वि० [सं० बल√शल् (प्राप्ति)+णिनि] [स्त्री० बलशालिनी] बलवान्। बली।

बल-शील—वि० [सं० ब० स०] बलवान्।

बलसुम—वि० [हिं० बालू+?] (जमीन) जिसमें बालू हो। बलुआ।

बलसूदन—पु० [सं० बल√सूद् (नाश)+णिच्+ल्यु—अन] १. इन्द्र। २ विष्णु।

बल-स्थिति—स्त्री० [सं० ष० त०] सैनिक शिविर। छावनी।

बलहन्—पु० [सं० बल√हन् (मारना)+क्विप्] १. इन्द्र। २. कफ। श्लेष्मा।

बलहा—वि० [सं० बलहन्] १. बल अर्थात् शक्ति का नाश करनेवाला। २. बल अर्थात् सेना का नाश करनेवाला।

बल-हीन—वि० [सं० तृ० त०] जिसमे बल न हो। अशक्त। शक्ति-हीन।

बला—स्त्री० [सं० बल+अच्+टाप्] १ बरियारा नामक क्षुप। २ वैद्यक मे पौधो का एक वर्ग जिसके अतर्गत ये चार पौधे है—बला या बरियारा, महाबला या सहदेई, अतिबला या कँगनी और नागबला या गँगरेन। ३. वह क्रिया या विद्या जिसके बल से युद्ध-क्षेत्र मे योद्धाओ को भूख-प्यास नही लगती थी। ४. दक्ष प्रजापति की एक कन्या। ५. नाटको मे छोटी बहन के लिए सबोधन-सूचक शब्द। ६ पृथ्वी। ७ लक्ष्मी। ८ जैनो के अनुसार एक देवी जो वर्तमान अवसर्पिणी के सत्रहवे अर्हत् के उपदेशो का प्रचार करनेवाली कही गई है।

स्त्री० [अ०] १. कोई ऐसा काम, चीज या बात जो बहुत अधिक कष्ट-दायक हो और जिससे सहज मे छुटकारा न मिल सकता हो। आपत्ति। विपत्ति। सकट। २ कोई ऐसा काम, चीज या बात जो अनिष्टकारक या कष्टप्रद होने के कारण बहुत ही अप्रिय तथा घृणित मानी जाती हो या जिससे लोग हर तरह से बचना चाहते हो। जैसे—वियोगियो के लिए चाँदनी रात (या बरसात) भी एक बला ही होती है। ३ बहुत ही अप्रिय, घृणित, तुच्छ या हेय वस्तु। जैसे—यह कहाँ की बला तुम अपने साथ लगा लाये।

पद—बला का=(क) बहुत अधिक तीव्र या प्रबल। जैसे—आज तो तरकारी (या दाल) मे बला की मिरचे पड़ी हैं। (ख) बहुत ही उग्र, प्रचंड, भीषण या विकट। जैसे—वह तो बला का लड़ाका निकला। **बला से**=कोई चिंता नही। कुछ परवाह नही। जैसे—वह जाता है तो जाय, हमारी बला से। **हमारी बला ऐसा करे** हम कभी ऐसा नही कर सकते।

मुहा०—(किसी की) बलाएँ लेना=किसी के सिर के पास दोनो हाथ ले जाकर धीरे-धीरे उसके दोनो पार्श्वों पर से नीचे की ओर लाना जो इस बात का सूचक होता है कि तुम्हारे सब कष्ट या विपत्तियाँ हम अपने ऊपर लेते है। (स्त्रियो का शुभ-चिंतना सूचक एक अभिचार या टोटका) ४ भूत-प्रेत आदि अथवा उनके कारण होनेवाला उपद्रव या बाधा। (स्त्रियाँ) जैसे—उसे तो कोई बला लगी है।

बलाइ—स्त्री०=बला (विपत्ति)।

बलाक—पु० [सं० बल√अक् (जाना)+अच्] [स्त्री० बलाका, बला-किका] १. बक। बगला। २. एक राजा जो भागवत के अनुसार पुरु का पुत्र और जह्नु का पौत्र था। ३ एक राक्षस का नाम।

बलाका—स्त्री० [सं० बलाक+टाप्] १ मादा बगला। बगली। २. बगलो की पक्ति। ३ प्रेयसी। ४ कामुक स्त्री। ५ नृत्य मे एक प्रकार की गति।

बलाकिका—स्त्री० [सं० बलाक+कन्+टाप्, इत्व] १ मादा बगला। बलाका। २ बगलो की एक जाति।

बलाग्र—पु० [सं० बल-अग्र, ष० त०] १. सेना का अगला भाग। २. सेनापति।

वि० बलवान्। शक्तिशाली।

बलाघात—पु० [सं० बल+आघात, तृ० त०] १. किसी काम, चीज या बात पर साधारण से कुछ अधिक बल लगाने या जोर देने की क्रिया

या भाव। (स्ट्रेस) २. मनोभाव, विचार आदि प्रकट करते समय उनकी आवश्यकता, उपयोगिता, महत्त्व आदि की ओर ध्यान दिलाने के लिए उन पर डाला जानेवाला जोर। (एमफैसिस) ३. दे० 'स्वराघात'।

बलाट—पुं० [सं० बल√अट् (जाना)+अच्] मूँग।

बलाढ्य—वि० [सं० बल–आढ्य, तृ० त०] बलवान्।
पुं० उरद। माष।

बलात्—अव्य० [सं०बल√अत् (निरन्तर गमन)+क्विप्] १. बल-पूर्वक। जबरदस्ती से। बल से। २ हठ-पूर्वक। हठात्।

बलात्कार—पुं०[सं० बलात्√कृ (करना)+घञ्]१. बलात् या हठ-पूर्वक कोई काम करना। विशेषतः किसी या दूसरो की इच्छा के विरुद्ध कोई काम करना। २ पुरुष द्वारा किसी पर-स्त्री की इच्छा के विरुद्ध बलपूर्वक धमकाकर या छलपूर्वक किया जानेवाला संभोग। (रेप) ३ स्मृति मे, महाजन का ऋणी को अपने यहाँ रोककर तथा मार-पीटकर पावना वसूल करना।

बलात्कारित—भू० कृ०· बलात्कृत।

बलात्कृत—भू० कृ०[सं० बलात्√कृ (करना)+क्त] १ जिसके साथ बलात्कार किया गया हो। २ जिससे बलपूर्वक या जबरदस्ती कोई काम कराया गया हो।

बलात्मिका—स्त्री० [सं० बल-आत्मन्, ब० स०,+कप+टाप्, इत्व] हाथी-सूँड नाम का पौधा।

बलाधिक—वि०[सं० स० त०] [भाव० बलाधिक्य] अधिक बलवाला।

बलाधिकरण—पुं०[सं० बल-अधिकरण, ष० त०] सैनिक कार्रवाई।

बलाधिकृत—पुं०[सं० बल-अधिकृत, ष० त०] सेना-विभाग का प्रधान अधिकारी।

बलाध्यक्ष—पुं०[सं० बल-अध्यक्ष, ष० त०] सेना का अध्यक्ष। सेनापति।

बलाना†—स० बुलाना।

बलानुज—पुं०[सं० बल-अनुज, ष०त०] बलराम के छोटे भाई श्रीकृष्ण।

बलान्वित—भू० कृ०[सं० बल-अन्वित, तृ०त०] १ बल से युक्त किया हुआ। २ बली। बलशाली।

बला पंचक—पुं०[सं० ष० त०] वैद्यक में बला, अतिबला, नागबला, महाबला और राजबला नाम की पाँच ओषधियो का समुदाय।

बलाबल—पुं० [सं० द्व० स०] किसी मे होनेवाले बल और निर्बलता दोनों का योग। जैसे—पहले अपने बलाबल का विचार करके काम मे हाथ लगाना चाहिए।

बलामोटा—स्त्री०[सं० बल+आ√मुट् (मर्दन)+अच्+टाप्] नाग-दमनी नाम की ओषधि।

बलाय—पुं०[सं० बल-अय, ष० त०] बरुना नामक वृक्ष। बन्ना। बलास।
स्त्री० [अ० बला] १ आपत्ति। विपत्ति। संकट। २ कष्टदायक चीज या बात। दे० 'बला'। ३ एक प्रकार का रोग जिसमे हाथ की किसी उँगली के सिरे पर गाँठ निकल आती है या ऐसा फोड़ा हो जाता है जो उँगली टेढ़ी कर देता है।

बलाराति—पुं०[सं० बल-आराति, ष० त०]१. इंद्र। २ विष्णु।

बलालक—पुं०[सं० बल√अल् (पर्याप्ति)+ण्वुल्—अक] जलआँवला।

बलावलेप—पुं०[सं० बल-अवलेप, तृ० त०]१ अपने सम्बन्ध मे यह कहना कि मुझमे बहुत अधिक बल है। २. अभिमान। घमंड।

बलाश—पुं०[सं० बल√अश्+अण्]१ कफ। २. क्षय।

बलास—पुं०[सं०बल√अस् (फेंकना)+अण्]१ कफ। २. कफ के बढ़ने से होनेवाला एक रोग जिसमें गले और फेफड़े मे सूजन और पीड़ा होती है।
पुं०[सं० बला] बरुना नाम का पौधा।

बलासी (सिन्)—वि०[सं० बलास+इनि] बलास अर्थात् क्षय (रोग) से पीड़ित।
पुं०[सं० बलास] बरुना या बन्ना नाम का पौधा।

बलाहक—पुं०[सं० बल+आ√हा (छोड़ना)+क्वुन्—अक] १. बादल। मेघ। २ सात प्रकार के बादलों मे से एक प्रकार के बादल जो प्रलय के समय छाते है। ३ मोथा। ४. श्रीकृष्ण के रथ के एक घोड़े का नाम। ५ सुश्रुत के अनुसार दर्वीकर साँपो का एक भेद या वर्ग। ६. एक तरह का बगला। ७ कुश द्वीप का एक पर्वत।

बलाहर—पुं०[देश०]१ मछुओं या धीवरों की एक जाति। २. गाँव का चौकीदार।

बलाही—पुं०[?]१ चमड़ा कमानेवाला व्यक्ति। २ चमड़े का व्यव-साय करनेवाला-व्यक्ति।

बलिंदम—पुं०[सं० बलि√दम् (दमन करना)+खश्, मुम्] विष्णु।

बलि—पुं०[सं०√बल् (देना)+इन्]१ प्राचीन भारत मे (क) भूमि की उपज का वह छठा अंश जो भूस्वामी प्रतिवर्ष राजा को देता था। राजकर। (ख) वह कर जो राजा अपने धार्मिक कृत्यों के लिए प्रजा से लेता था। २ वह अंश या पदार्थ जो किसी देवता के लिए अलग किया गया हो या निकालकर रखा गया हो। ३ देवताओ के आगे रखा जाने-वाला भोजन। नैवेद्य। भोग। ४ देवताओ पर चढ़ाई जानेवाली चीजें। चढ़ावा। ५ देवताओं के पूजन की सामग्री। ६ वह पशु जो किसी देवता या अलौकिक शक्ति को प्रसन्न तथा संतुष्ट करने के लिए उसके सामने या उसके उद्देश्य से मारा जाता हो।
क्रि० प्र०—चढ़ाना।—देना।
२ वह स्थिति जिसमे कोई व्यक्ति अपने प्राण या शरीर तक किसी काम, बात या व्यक्ति के लिए पूर्ण रूप से अर्पित कर देता है।
मुहा०—(किसी पर) बलि जाना किसीके महत्त्व, मान आदि का ध्यान करते हुए अपने आपको उस पर निछावर करना। बलिहारी होना। उदा०—तात जाऊँ बलि वेगि नहाहू।—तुलसी।
८ पंच महायज्ञों मे से भूत यज्ञ नामक चौथा महायज्ञ। ९ उपहार। भेंट। १०. खाने-पीने की चीज। खाद्य सामग्री। ११ चँवर का डंडा। १२ आठवें मन्वन्तर मे होनेवाले इंद्र का नाम। १३ प्रह्लाद का पौत्र और विरोचन का पुत्र जो दैत्यों का राजा था, जिसे विष्णु ने वामन अवतार धारण करके छलपूर्वक बाँध लिया था और ले जाकर पाताल मे रख दिया था।
स्त्री० १ शरीर के चमड़े पर पड़नेवाली झुर्री। २ बल। शिकन। ३ एक प्रकार का फोड़ा जो गुदावर्त के पास अर्श आदि रोगो में उत्पन्न होता है। ४ बवासीर का मसा।
स्त्री०[सं० बला=छोटी बहन] सखी। उदा०—ए बलि ऐसे बलम को विविध भाँति बलि जाऊँ।—पद्माकर।

बलि-कर—वि०[सं० बलि√कृ (करना)+अच्]१ बलि चढ़ानेवाला। २. कर या राजस्व देनेवाला। ३. शरीर मे झुर्रियाँ उत्पन्न करनेवाला।

बलि-कर्म (न्)—पु०[सं० ष० त०] बलि देने या चढाने का काम।

बलित—भू० कृ० [हिं० बलि] (पशु) जो बलि चढाया गया हो।

बलि-दान—पु०[सं० ष०त०][वि० बलिदानी] १ देवताओ आदि को प्रसन्न करने के लिए उनके उद्देश्य से किसी पशु का किया जानेवाला वध। २ किसी उद्देश्य या बात की सिद्धि के लिए अपने प्राण तक दे देना। जैसे—देश सेवा के लिए अपने आपको बलिदान करना।

पद—**बलिदान का बकरा** ऐसा व्यक्ति जिस पर किसी काम या बात का व्यर्थ ही सारा अपराध या दोष लाद दिया जाय, और तब उसे पूरा पूरा दंड दिया जाय। (प्राय अपने आपको उस अपराध या दोष का भागी बनने से बचाने के लिए और दूसरे को उसका भागी बनाने के लिए)।

बलिदानी—वि० [सं० बलिदान] १ बलिदान-सबधी। बलिदान का। जैसे—बलिदानी परम्परा, बलिदानी बकरा। २ बलिदान करने या चढानेवाला।

स्त्री० बलिदान।

बलिद्विट् (ष्)—पु०[सं० बलि√ द्विष् (वैर करना)+क्विप्] विष्णु।

बलिध्वसी (सिन्)—पु० [सं० बलि√ध्वस् (नाश)+णिनि] विष्णु।

बल-नदन—पु०[सं० ष० त०] बाणासुर।

बलि-पशु—पु०[सं० मध्य० स०] वह पशु जो यज्ञ आदि मे अथवा किसी देवता को सतुष्ट तथा प्रसन्न करने के लिए उसके नाम पर मारा जाता हो।

बलि-पुष्ट—पु०[तृ० त०] कौआ।

बलि-प्रदान—पु०[सं० ष० त०]=बलि-दान।

बलि-प्रिय—पु०[सं० बलि√ प्री+क] १. लोध का पेड। २ कौआ।

बलि-बधन—पु०[सं० बलि√बध् (बाँधना)+णिच्+युच्—अन] विष्णु, जिन्होंने राजा बलि को बाँधा था।

बलिभुक् (ज्)—पु०[सं० बलि√ भुज्+क्विप्] कौआ।

बलि भुज्—पु०[सं०] बलि-भुक् का वह रूप जो उसे सम्बोधन कारक में प्रयुक्त होने पर प्राप्त होता है। उदा०—किन्तु कौन पा सकता, बलिभुज् अमिट कामना पर जय।—पत।

बलिभृत—वि०[सं० बलि√भृ (भरण करना)+क्विप्, तुक्] १ बलि अर्थात राज-कर देनेवाला। २ अधीनस्थ।

बलिभोजी (जिन्)—पु० [सं० बलि√भुज् (खाना)+णिनि] कौआ।

बलि-मंदिर—पु०[ष० त०] राजा बलि के रहने का स्थान, पाताल-लोक।

बलि-मुख—पु०[ब० स०] बन्दर।

बलिवर्द—पु०=बलीवर्द।

बलि-वेश्म (न्)—पु०[ष० त०]=बलि-मदिर।

बलि-वैश्वदेव—पु०[कर्म० स०] पच महायज्ञो मे से भूतयज्ञ नाम का चौथा महायज्ञ।

बलिश—पु० [सं० बलि√शो (पैना करना)+क] मछली फँसाने की कटिया। बसी।

बलिष्ठ—वि०[सं बलिन्+इष्ठन्] जो सबसे अधिक बलवान् हो।

पु० ऊँट।

बलिष्णु—वि० [सं०√बल् (सवरण)+इष्णुच्] अपमानित।

बलिहरण—पु०[ष० त०] सब प्रकार के जीवो को बलि देना।

बलिहारना—स०[हिं० बलि+हारना] कोई चीज किसी पर से निछावर करना। जैसे—जान बलिहारना।

बलिहारी—स्त्री० [हिं० बलि+हारना] बलिहारने अर्थात् निछावर करने की क्रिया या भाव। कुर्बान जाना।

मुहा०—**बलिहारी जाना**=निछावर होना। **बलिहारी लेना**=बलाएँ लेना। (दे० 'बला' के अतर्गत)।

पद—**बलिहारी है**=मै इतना मोहित या प्रसन्न हूँ कि अपने को निछावर करता हूँ। वाह-वाह! क्या बात है!

बलिहृत—वि०[सं० बलि√हृ (हरण करना)+क्विप्, तुक्] १ बलि या भेंट लानेवाला। २ कर देनेवाला।

पु० राजा।

बलींडा†—पु०[सं० वरडक] १ छाजन के नीचे लबाई के बल लगी हुई लकडी। बरेडा। २ सतों की परिभाषा मे, ज्ञान की उच्च अवस्था।

बली (लिन्)—वि०[सं० बल+इनि,] बलवान्। बलवाला। पराक्रमी।

पु० १ भैंसा। २ साँड। ३. ऊँट। ४. सूअर। ५ बलराम। पु० ६. सैनिक। ७ कफ। ८. एक तरह की चमेली।

स्त्री० [हिं०बल] १. बल। शिकन। सिलवट। ३. त्वचा पर पडनेवाली झुर्री।

बलीक—पु०[सं०] छप्पर का किनारा।

बलीन—पु०[सं० बल+ख—ईन] बिच्छू।

वि०=बलवान्।

बलीना—स्त्री०[यू० फैलना] एक प्रकार की ह्वेल मछली।

बलीबैठक—स्त्री०[हिं० बली+बैठक] एक प्रकार की बैठक (कसरत) जिसमे जघे पर भार देकर उठना-बैठना पडता है।

बलीमुख—पु०[सं० ब० स०] बदर।

बलीवर्द—पु०[सं०√वृ+क्विप्+वर, ई+वर, द्व० स०, ईवर्√दा+क, बलिन्-ईवर्द, कर्म० स०] १. साँड। २. बैल।

बलुआ—वि०[हिं० बालू] [स्त्री० बलुई] (स्थान) जिसकी मिट्टी मे बालू भी मिला हुआ हो।

पु० रेतीली जमीन।

बलूच—पु०=बलोच।

बलूचिस्तान—पु०=बलोचिस्तान।

बलूची—पु०=बलोच।

बलूत—पु०[अ०] ठंढे प्रदेशो मे होनेवाला माजूफल की जाति का एक पेड।

बलूल—वि०[सं० बल+लच्—ऊङ्] बलवान्।

बलूला†—पु०=बुलबुला।

बलै†—पु०=वलय।

बलैया—स्त्री०[अ० बला, हिं० बलाय] बला। बलाय।

मुहा०—**(किसी की) बलैया लेना**=दे० 'बला' के अन्तर्गत 'बलाए लेना'।

बलोच—पु० आधुनिक पाकिस्तान के पश्चिमोत्तर में बसनेवाली एक योद्धा मुसलमान जाति।

बलोचिस्तान—पु० [फा०] आधुनिक पाकिस्तान के पश्चिमोत्तर का एक प्रदेश।

बलोची—पु०[हिं० बलोच] बलोचिस्तान का निवासी।

स्त्री० बलोचिस्तान की बोली।

वि० बलोच जाति का।

बल्कल—पु० दे० 'वल्कल'।

बल्कस—पु०[सं० बल्क√अस् (फेंकना)+अच्, शक० पररूप] आसव की तलछट।

बल्कि—अव्य०[फा०] एक अव्यय जिसका प्रयोग यह आशय सूचित करने के लिए होता है कि —ऐसा नहीं इसके स्थान पर . . । प्रत्युत। वरन्। जैसे—मैं नहीं, बल्कि आप ही वहीं चले जायँ।

बल्ब—पु०[अं०] १ शीशे की नली का अधिक चौड़ा भाग। २ पतले शीशे का एक उपकरण जो बिजली के योग से चमकने और प्रकाश करने लगता है। लट्टू।

बल्य—वि० [सं० बल+यत्] बलकारक। शक्ति-वर्धक।

पु० वीर्य। शुक्र।

बल्या—स्त्री० [सं० बल्य+टाप्] १ अतिबला। २. अश्वगंधा। ३. प्रसारिणी। ४. चगोनी।

बल्ल—पु० =वल्ल।

बल्लकी—स्त्री० =वल्लकी।

बल्लभ—पु० =वल्लभ।

बल्लम—पु०[सं० बल, हिं० बल्ला] १ मोटा छड़। २ लकड़ी का बड़ा और मोटा डंडा। बल्ला। ३. डंडा। सोटा। ४. वह सुनहला या रुपहला डंडा जिसे प्रतिहारी या चोबदार राजाओं या बड़े आदमियों के आगे आगे शोभा के लिए लेकर चलते थे और जो अब भी बरातों आदि के साथ लेकर चलते हैं।

पद—आसा-बल्लम।

५. बरछा। भाला।

बल्लमटर—पु० [अं० वालंटियर के अनुकरण पर हिं० बल्लम से] १. स्वेच्छापूर्वक सेना मे भरती होनेवाला सैनिक। २. दे० 'स्वयंसेवक'।

बल्लम नोक—वि०[हिं०] १ जिसकी नोक या अगला सिरा बल्लम के फल की तरह नुकीला हो। २ बहुत ही चुभनेवाला, तीखा या पैना। जैसे—तुमने भी खूब बल्लम नोक सवाल किया।

बल्लम-बरदार—पु०[हिं० बल्लम+फा० बर्दार] वह नौकर जो राजाओं की सवारी या बरात के साथ हाथ मे बल्लम लेकर चलता हो।

बल्लरी—स्त्री० =वल्लरी।

बल्लव—पु० [सं०√बल्ल् (छिपाना)+घञ्, बल्ल√वा (गमन)+क] [स्त्री० बल्लवी] १ चरवाहा। २ भीम का उस समय का कृत्रिम नाम जब वह राजा विराट के यहाँ रसोइया था। ३. उक्त के आधार पर, रसोइया।

बल्ला—पु०[सं० बल्ल=लट्ठा या डंडा] [स्त्री० अल्पा० बल्ली] १ लंबी, सीधी और मोटी लकड़ी या लट्ठा जिसका उपयोग छतें आदि पाटने और मकान बनाने के समय पाइट आदि बाँधने के लिए होता है। २. मोटा डंडा। ३. नाव खेने का डंडा या बाँस। ४ गेंद के खेल मे छोटे डंडे के आकार का काठ का वह चपटा टुकड़ा जिससे गेंद पर आघात करते हैं। (बैट)

पद—गेंद-बल्ला।

पु० [सं० वलय] गोबर की सुखाई हुई गोल टिकिया जो होली जलने के समय उसमें डाली जाती है।

बल्लारी—स्त्री०[देश०] सम्पूर्ण जाति की एक रागिनी जिसमे केवल कोमल गाधार लगता है।

बल्लि†—स्त्री०=बल्ली (लता)।

बल्ली—स्त्री०[हिं० बल्ला] १ लकड़ी का लंबा छोटा टुकड़ा। छोटा बल्ला। २. नाव खेने का बाँस।

†स्त्री० =बल्ली (लता)।

बल्व—पु०[सं०] गणित ज्योतिष मे, एक करण का नाम।

बल्वल—पु०[सं०] इल्वल नामक दैत्य का पुत्र जिसका वध बलराम ने किया था।

बवंडना†—अ०[सं० व्यावर्तन; प्रा० व्यावट्टन] व्यर्थ इधर-उधर घूमना। मारा-मारा फिरना।

बवंडर—पु० [सं० वायु-मंडल?] १ हवा का वह तेज झोंका जो चक्कर खाता हुआ चलता है और जिसमे पड़ी हुई धूल खंभे के रूप मे ऊपर उठती हुई दिखाई पड़ती है। चक्रवात। बगूला।

क्रि० प्र०—उठना।—चलना।

२ आँधी। तूफान। ३. व्यर्थ का बहुत बड़ा उपद्रव।

क्रि० प्र०—खड़ा होना।

बवड़ा†—पु०—बवडर।

बवड़ियाना†—अ०=बवंडना (भटकना)।

बव—पु०[सं०] गणित ज्योतिष मे, एक करण का नाम।

बवघूरा†—पु०=बवडर (बगूला)।

बवन—पु० १ =वपन। २.=वमन।

बवना—स० [सवपन] १. जमने के लिए जमीन पर बीज डालना। बोना। २. छितराना। बिखेरना।

अ० छितराना। बिखरना।

†पु०=बौना (बामन)।

बवरा*—वि०[स्त्री० बवरी] बावला (पागल)। उदा०—आसनु पवनु दूरि कर बवरे।—कबीर।

बवाल†—पु०=बवाल। (देखें)

बवासीर—स्त्री०[अ० बवासिर] गुदेंद्रिय मे मस्से निकलने का एक रोग जो खूनी और बादी दो प्रकार का होता है। (पाइल्स)

बशर—पु०[अ०] मनुष्य। आदमी।

बशरी—वि०[अ०] [भाव० बशरीयत] मनुष्य-संबधी।

बशरीयत—स्त्री०[अ०] आदमीयत। मनुष्यत्व।

बशर्ते कि—अव्य० [अ०] शर्त यह है कि।

बशिष्ट—पु०=वशिष्ट।

बशीर—वि०[अ०] शुभ संवाद सुनानेवाला।

बशीरी—पु०[अ० बशीर] एक प्रकार का बारीक रेशमी कपड़ा।

बष्कय—वि० [सं०√मस्क् (जाना)+अयन्, म—ब, पृषो०, स्—ष्] १. (बछड़ा) जो काफी बड़ा हो गया हो। २. हट्टा-कट्टा। हृष्ट-पुष्ट।

बष्कयणी—स्त्री०[सं० बष्कय+इनि+ङीप, न—ण] वह गाय जिसको बच्चा दिये बहुत समय हो गया हो। बकेना।

बसंत—पु०[सं० वसंत] [वि० बसती] वसत ऋतु।

पद—उल्लू बसंत=निरा या बहुत बड़ा मूर्ख।

बसंत-बहार—पु० [सं० वसन्त+हिं० बहार] एक प्रकार का संकर राग जो बसंत और बहार के योग से बनता है।

बसंत मुखारी—पु० [सं० वसंत+मुखारी] संगीत में एक प्रकार का राग।

बसंतर†—पु० =बसंदर (अग्नि)।

बसंता—पु० [सं० वसन्त] भूरे रंग की एक प्रकार की चिड़िया।

पु० [सं० वास] कहीं बसने या रहनेवाला। निवासी।

बसंती—वि० [हिं० बसंत] १. बसंत ऋतु-संबंधी। २. बसंत ऋतु में होनेवाला। ३. सरसों के फूल की तरह का। पीला। जैसे—बसंती सेहरा।

पु० १. सरसों के फूल की तरह का चमकदार और खुलता पीला रंग। (कोम) २. पीला केवड़ा।

स्त्री० एक प्रकार की चेचक या माता (रोग)।

बसंदर—पु० [सं० वैश्वानर] अग्नि। आग।

बस—अव्य० [फा०] १. यथेष्ट है कि। पर्याप्त है कि। जैसे—बस इतनी ही दया चाहिए। २. समाप्ति का सूचक एक अव्यय। जैसे—अब बस करोगे या नहीं! ३. इतना मात्र। केवल। सिर्फ।

वि० १. यथेष्ट। पर्याप्त। २. समाप्त। खतम।

पु० [सं० वश] १. अधिकार या शक्ति। जैसे—(क) यह हमारे बस की बात नहीं है। (ख) वह तो अब पूरी तरह से तुम्हारे बस में है।

मुहा०—(किसी को) **बस करना** दे० नीचे 'बस में करना'। (**किसी के आगे या सामने**) **बस चलना**=किसी के मुकाबले में अधिकार या शक्ति का काम करना। जैसे—ईश्वर की इच्छा के आगे किसी का बस नहीं चलता।

मुहा०—(**किसी को**) **बस में करना या लाना**=किसी को इस प्रकार अपने अधिकार में लेना कि वह अपनी इच्छा के अनुसार कोई काम न कर सके।

स्त्री० [अं० ओमनी बस का संक्षिप्त रूप] प्रायः किसी नगर की सीमा के अंदर किसी निश्चित पथ पर चलने वाली बड़ी मोटर गाड़ी जो थोड़ी-थोड़ी दूरी पर सवारियाँ उतारती तथा चढ़ाती चलती है।

बसकर†—वि० [सं० वशीकर] [स्त्री० बसकरी] १. किसी को अपने वश में कर लेनेवाला। वशीकर। २. परम आकर्षक और मनोहर। उदा०—बसुधा की बसकरी मधुरता सुधा पगी बतरानि।—रहीम।

बसत†—स्त्री० [सं० वास] बसा हुआ स्थान। बस्ती।

स्त्री० वस्तु।

बसतर†—पु० वस्त्र।

बसती†—स्त्री० बस्ती।

बसदेवा†—पु० [सं० वासुदेव] एक जाति जो भीख माँगने का पेशा करती है।

बसन—पु० [सं० वस्=प्रेम करना] स्त्री का पति। स्वामी। उदा०—बसन हीन नहिं सोह सुरारी।—तुलसी।

बसना—अ० [सं० वसन निवास करना] १. जीव-जन्तुओं, पक्षियों आदि का बिल या घोंसला बनाकर अथवा मनुष्यों का गुफा, झोंपड़ी, मकान आदि बनाकर उसमें निवास करना या रहना। जैसे—किसी समय यहाँ जंगली जानवर बसते थे, पर अब तो यहाँ मनुष्य बस गये है। २. घर, नगर या किसी प्रकार के स्थान की ऐसी स्थिति में होना कि उसमें प्राणी या मनुष्य निवास करते हों। जैसे—यह गाँव पहले तो उजड़ चला था, पर अब यह धीरे-धीरे फिर से बसने लगा है। ३. घर या मकान के संबंध में कुटुंबियों और धन-धान्य से भरा-पूरा और सुखपूर्ण होना। जैसे—चाहे किसी का घर बसे या उजड़े, तुम तो मौज करते रहो।

मुहा०—(**किसी का**) **घर बसना**=(क) विवाह होने पर घर में गृहिणी या पत्नी का आना। जैसे—पर-साल उसकी नौकरी लगी थी, इस साल घर भी बस गया। (ख) घर धन-धान्य और बाल-बच्चों से भरा-पूरा या युक्त होना। जैसे—पहले तो घर में पति-पत्नी दो ही आदमी थे, पर अब बाल-बच्चे हो जाने से उनका घर बस गया है। (**किसी का घर में**) **बसना**=किसी का अपने घर में रहकर गृहस्थी के कर्तव्यों का सुखपूर्वक निर्वाह और पालन करना। जैसे—यह औरत तो चार दिन भी घर में नहीं बसेगी, अर्थात्-घर छोड़कर (किसी के साथ या यों ही) कहीं निकल जायगी। उदा०—नारद का उपदेस सुनि, कहहु बसेउ का गेह।—तुलसी।

४. कुछ समय तक कहीं अवस्थान करना। टिकना। ठहरना। जैसे—हम तो रमते राम है, जहाँ जी चाहा, वहीं दस-पाँच दिन बस गये। ५. लाक्षणिक रूप में किसी चीज, बात या व्यक्ति का ध्यान या विचार मन में दृढ़तापूर्वक जमना या बैठना। जैसे—(क) तुम्हारी बात मेरे मन में बस गई है। (ख) उनके मन में तो भगवान् की भक्ति बसी हुई है।

संयो० क्रि०—जाना।

विशेष—इस अर्थ में इस शब्द का प्रयोग मन के सिवा आँखों के संबंध में भी होता है। जैसे—तुम्हारी सूरत मेरी आँखों में बसी हुई है।

६. स्थित होना। ७. बैठना। (क्व०)

अ० [हिं० बासना (गंध से युक्त करना) का अ०] किसी वस्तु का किसी प्रकार की गंध या वास से युक्त होना। महक से भरना। बासा जाना। जैसे—(क) इत्र से बसे हुए कपड़े या (सिर के) बाल। (ख) गुलाब से बसी हुई गँडेरियाँ या रेवड़ियाँ।

पु० [सं० वसन] १. वह कपड़ा जिसमें कोई वस्तु लपेटकर रखी जाय। वेष्ठन। बेठना। जैसे—बही-खाते का बसना। २. वह थैला जिसमें दुकानदार अपने बटखरे आदि रखते हैं। ३. टाट आदि की वह जालीदार थैली जिसमें रुपए आदि भरकर रखे जाते है। ४. वह कोठी जहाँ ऋण आदि देने का कार-बार होता है।

†पु०=बासन (बरतन)।

बसनि—स्त्री० [हिं० बसना] निवास। वास।

बसर—स्त्री० [फा०] १. जीवन-निर्वाह। २. गुजारा। निवाह।

बसवार—पु० [सं० वास+गंध] छौंक। बघार।

बसवास—पु० [हिं० बसना+सं० वास] १. निवास। रहना। २. ढंग। रहन-सहन। ठहरने या रहने का सुभीता।

†पु०=विश्वास।

बसह—पु० [सं० वृषभ, प्रा० बसह] बैल।

बसाँधा—वि० [हिं० बास+गन्ध] बासा या सुगंधित किया हुआ। सुवासित।

बसा—स्त्री० [देश०] १. बर्रे। भिड़। २. एक प्रकार की मछली।

स्त्री०=वसा (चरबी)।

बसात—स्त्री० बिसात।

बसाना—स० [हिं० 'बसना' का स०] १. व्यक्ति के सम्बन्ध में रहने

के लिए घर अथवा जीवन-निर्वाह के लिए उचित साधन या सुभीते देना। जैसे—शरणार्थियों को बसाने के लिए सरकार को बहुत अधिक धन व्यय करना पड़ा है। २ स्थान के सम्बन्ध में, नये घर आदि बनाकर अथवा गाँव या बस्तियाँ बनाकर उनमें लोगों को स्थिर रूप से रखने की व्यवस्था करना। ३. घर-गृहस्थी या जीवन-यापन के साधनों से युक्त करना।

मुहा०—(अपना) घर बसाना—(क) विवाह करके पत्नी को घर में लाना। (ख) गृहस्थी की सब सामग्री इस प्रकार एकत्र करना कि कुटुंब के सब लोग सुख से रह सकें। **(किसी का) घर बसाना** किसी का विवाह करा देना।

४ अस्थायी रूप से किसी को कहीं टिकाने या ठहराने की व्यवस्था करना। (क्व०) जैसे—इन यात्रियों को दो दिन के लिए अपने यहाँ बसा लो। उदा०—नूपुर जनि मुनिवर कल-हंसनि, रचे नीड़ दै बाँह बसायो।—तुलसी। ५ स्थिति में लाना स्थान देना। उदा०—मुनि कै सुक सों हृदय बसायौ।—सूर। ६ लाक्षणिक रूप में, किसी बात या व्यक्ति का ध्यान अथवा विचार अपने मन में दृढ़तापूर्वक स्थित करना। जैसे—यदि आपका उपदेश हृदय में बसा लोगे तो तुम्हारा बहुत बड़ा कल्याण होगा। ७ स्थापित करना। रखना। ७ बैठाना। (क्व०)

स० [हिं० बास+ना (प्रत्य०)] बास अर्थात् गंध से युक्त करना। जैसे—फूलों से तेल बसाना।

†अ० =बसना (गंध से युक्त होना)।

†अ० [सं० वश] अधिकार, जोर या वश चलना। शक्ति या सामर्थ्य का काम देना अथवा सफल सिद्ध होना। उदा०—मिला रहे और ना मिलै तासों कहा बसाय।—कबीर।

बसारत—स्त्री० [अ०] १ देखने की शक्ति। दृष्टि। २ अनुभव करने या समझने की शक्ति। समझ।

बसाव—पु० [हिं० बसना+आव (प्रत्य०)] बसने की अवस्था, क्रिया या भाव। निवास। जैसे—बसाव शहर का, खेत नहर का।—कहा०।

बसिऔरा†—पु० [हिं० बासी] १ वर्ष की कुछ विशिष्ट तिथियाँ जिनमें स्त्रियाँ बासी भोजन खाती और बासी पानी पीती हैं। बासी। २ वह भोजन जो उक्त तिथियों में खाने के लिए एक दिन पहले बनाकर रख लिया जाता है। ३. बासी खाने की प्रथा।

बसिया—स्त्री०=बासी।

स्त्री०=बंसी।

बसियाना—अ० [हिं० बासी, या बसिया+ना (प्रत्य०)] बासी हो जाना।

स० किसी चीज को रखकर बासी करना।

अ० [हिं० बास] बास अर्थात् गंध से युक्त होना।

बसिष्ठ†—पु०=वसिष्ठ।

बसीकत—स्त्री० [हिं० बसना] १. बसने की क्रिया या भाव। २ बसने का स्थान। ३ बस्ती। आबादी।

बसीकर†—वि०=वशीकर।

बसीकरन†—पु०=वशीकरण।

बसीगत—स्त्री०=बसीकत।

बसीठ—पु० [सं० अवसृष्ट] १. दूत। २ पैगम्बर। ३ गाँव का मुखिया। ४. हल में का जुआठा।

बसीठी—स्त्री० [हिं० बसीठ] बसीठ होने की अवस्था या भाव। दूत का पद या भाव।

बसीत—पु० [अ०] जहाज पर का एक यंत्र जिससे सूर्य का अक्षांश जाना जाता है। कमान।

बसीता†—पु० १. बस्ती। २ =बसाव। उदा०—जुद्ध जुरे दुर-जोधन सों कहि कौन करै जमलोक बसीतो।—केशव।

बसीना†—पु० [हिं० बसना] बसने की क्रिया या भाव।

बसीला—वि० [हिं० बास=गंध] १ बास अर्थात् गन्ध से युक्त। २ दुर्गंध युक्त। बदबूदार।

बसु—पु०=वसु।

बसुकला—स्त्री०=वसुकला (वर्ण वृत्त)।

बसुदेव—पु०=वसुदेव।

बसुधा—स्त्री०=वसुधा।

बसुमति—स्त्री०=वसुमती।

बसुरी†—स्त्री०=बाँसुरी।

बसुला—पु०=बसूला।

बसुली—स्त्री० १ बसूली। २ =बाँसुरी।

बसू—पु० वसु।

बसूला—पु० [सं० वाशी+ल (प्रत्य०)] [स्त्री० अल्पा० बसूली] बढ़इयों का एक प्रसिद्ध औजार जिससे वे लकड़ी छीलते और गढ़ते है।

बसूली—स्त्री० [हिं० बसूला] १ छोटा बसूला। २ राजगीरों का एक औजार जिससे वे ईंटे गढ़ते या तोड़ते हैं।

†स्त्री० वसूली।

बसेंडा†—पु० [हिं० बाँस+डा (प्रत्य०)] [स्त्री० अल्पा० बसेंडी] पतला बाँस।

बसेधा—वि० [हिं० बास=गंध] [स्त्री० बसेंधी] १ बसाया अर्थात् गंध या बास से युक्त किया हुआ। २ खुशबूदार। सुगंधित।

बसेठ†—पु० [हिं० बसना] १ बसने या रहने की जगह। २. दे० 'बसेरा'।

बसेरा—पु० [हिं० बसना] १ वह स्थान जहाँ रहकर यात्री रात बिताते है। मार्ग में टिकने की जगह। २ वह स्थान जहाँ ठहरकर चिड़ियाँ रात बिताती है।

मुहा०—बसेरा लेना=रात बिताने के लिए कहीं टिकना या ठहरना।

वि० विश्राम करने के लिए कहीं टिकने या ठहरनेवाला।

बसेरी†—वि० [हिं० बसेरा] १ बसेरा लेनेवाला। २ निवासी।

बसेंधा†—वि०=बसेधा।

बसैया†—वि० [हिं० बसना] बसनेवाला। रहनेवाला।

वि० [हिं० बसाना] बसानेवाला। बसवैया।

बसोबास—पु० [सं० वास+आवास] १. निवास। २. निवास-स्थान। रहने की जगह।

बसौंधी—स्त्री० [हिं० बास+औंधी] अत्यधिक खौलाये हुए दूध का वह लच्छेदार रूप जिसमें दूध का अंश कम और मलाई का अंश अधिक होता है तथा जिसमें चीनी, मेवा आदि भी मिलाया गया होता है। रबड़ी।

बस्ट—पु० [अ०] चित्र-कला और मूर्ति-कला मे वह चित्र या वह मूर्ति, जिसमे किसी व्यक्ति के मुख और छाती के ऊपर के भाग की आकृति बनाई गई हो।

बस्त—पु० [स०√बस्त् (याचना करना)+घञ्] १ सूर्य। २ बकरा।

बस्तर—पु०=वस्त्र (कपड़ा)।

बस्ताम्बु—पु० [स० बस्त-अम्बु, ष० त०] बकरे का मूत्र।

बस्ता—पु० [फा० बस्त] १ कपडे का वह चौकोर टुकडा जिसमे कागज के मुट्ठे, बही-खाते और पुस्तके आदि बाधकर रखते है। बेठन। २ इस प्रकार बँधी हुई पुस्तके या कागज-पत्र।

क्रि० प्र०—बाँधना।

३. थैले या बेठन की तरह का वह उपकरण जिसमे विद्यार्थी अपनी पुस्तके रखकर विद्यालय ले जाता है। जैसे—सब लडके अपना अपना बस्ता खोले।

मुहा०—बस्ता बाँधना=उठाने या चलने की तैयारी कर पुस्तके आदि बस्ते मे बाँध या रखकर चलने को तैयार होना।

बस्ताजिन—पु० [स० बस्त-अजिन, ष० त०] बकरे की खाल।

बस्तार—पु० [फा० बस्त] एक मे बँधी हुई बहुत-सी वस्तुओ का समूह। मुट्ठा। पुलिदा।

बस्ति—स्त्री० वस्ति।

बस्ती—स्त्री० [स० वसति] १ बहुत से मनुष्यों का एक जगह घर बनाकर रहने का भाव। आबादी। निवास। २ वह स्थान जहाँ बहुत से लोग घर बनाकर एक साथ रहते हों।

क्रि० प्र०—बसना।—बसाना।

बस्तु—स्त्री०=वस्तु।

बस्त्र—पु०=वस्त्र।

बस्य—वि० वश्य।

बस्साना—अ० [स० वास] बास अर्थात दुर्गंध से युक्त होना।

बहँगा—पु० [हि० बहँगी का पु०] बडी बँहगी।

बहँगी—स्त्री० [स० विहगिका] तराजू की तरह का एक प्रसिद्ध ढाँचा जिसके दोनो पलडो मे बोझ रखकर ढोया जाता है।

बहक—स्त्री० [हि० बहकना] १ बहकने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ पथ-भ्रष्ट होने की अवस्था या भाव। ३ बहुत बढ़-बढ़कर और व्यर्थ कही जानेवाली बाते। ४ केवल शब्दो के ध्वनि-सादृश्य के आधार पर बिना समझे बूझे या अनुमान से कही हुई कोई बहुत बडी भ्रमपूर्ण और हास्यास्पद बात। (हाउलर) जैसे—मथुरा नगरी केकेयी की दासी मन्थरा के नाम पर बसी है।

बहकना—अ० [?] १ पालतू पशुओ के सबध मे, गुस्से, हठ आदि के कारण सीधा मार्ग छोड़कर गलत मार्ग की ओर प्रवृत्त होना। २ व्यक्तियो के सबध मे, दूसरो के भुलावे मे आकर अथवा उनकी देखा-देखी पथभ्रष्ट होना। ३. आवेश या मद मे चूर होना।

मुहा०—बहकी बहकी बातें करना=आवेश मे आकर पागलो की-सी या बढ़ी-चढ़ी बाते करना।

४ ठीक लक्ष्य या स्थान पर न जाकर दूसरी ओर या जगह जा पड़ना। चूकना। जैसे—किसी पर वार करते समय लाठी या हाथ बहकना।

बहकाना—स० [हि० बहकना का स०] १ किसी को बहकने मे प्रवृत्त करना। २ ऐसा काम करना जिसमे कोई बहके, और ठीक रास्ता छोडकर पथ-भ्रष्ट हो। चकमा या भुलावा देना।

सयो० क्रि०—देना।

३ दे० '**बहलाना**'।

बहकावट—स्त्री०=बहकावा।

बहकावा—पु० [हि० बहकाना] १ बहकाने की क्रिया या भाव। २ ऐसी बात जो किसी को बहकाने के उद्देश्य से कही जाय। भुलावा।

क्रि० प्र०—देना।

बहड़—पु० [देश०] एक प्रकार का छद जिसके प्रत्येक चरण मे २१ मात्राएँ और अन्त मे जगण होता है।

बहतोल—स्त्री० [हि० बहता+ओल (प्रत्य०)] पानी बहने की नाली।

बहत्तर—वि० [स० द्विसप्तति, प्रा० बहत्तरि] जो कम या गिनती के विचार से सत्तर से दो अधिक हो।

पु० उक्त की सूचक सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—७२।

बहत्तरवाँ—वि० [हि० बहत्तर+वाँ (प्रत्य०)] [स्त्री० बहत्तरवी] जो कम या गिनती मे इकहत्तर वस्तुओ के पीछे अर्थात बहत्तर के स्थान पर पड़े।

बहदुरा—पु० [देश०] चने, धान आदि की फसल के पत्तो को काटने-वाला एक प्रकार का कीड़ा।

बहन—स्त्री० [स० भगिनी, प्रा० बहिणी] १ किसी व्यक्ति (या जीव) के सबध के विचार से वह स्त्री (या मादा जीव) जो उसी के माता-पिता की सतान हो अथवा सतान के तुल्य हो। २ उक्त अथवा उक्त की समवयस्क स्त्री के लिए प्रयुक्त होनेवाला सबोधन।

†पु०=वहन।

बहना—अ० [स० वहन] १ द्रव पदार्थ का धारा के रूप मे किसी नीचे तल की ओर चलना या बढ़ना। प्रवाहित होना। जैसे—नल बहना, जल बहना।

मुहा०—बहती गगा में हाथ धोना=किसी ऐसे अवसर या बात मे, जिससे और लोग भी लाभ उठा रहे हो, अनायास सहज मे लाभ उठाना। (कही कही ऐसे अवसरो पर 'हाथ धोना' की जगह 'पाव पखारना' का भी प्रयोग होता है।)

२ उक्त प्रकार की धारा मे पडकर उसके साथ आगे चलना या बढना। जैसे—नदी मे नाव बहना।

सयो० क्रि०—चलना।

३ किसी आधार या पात्र मे पूरी तरह से भर जाने पर तरल पदार्थ का इधर-उधर चलना। जैसे—घोर वर्षा के कारण तालाब का बहना।

४ किसी घन पदार्थ का गलकर या अपना आधार छोडकर द्रव रूप मे किसी ओर चलना। जैसे—फोडा बहना, मोमबत्ती बहना।

विशेष—इस अर्थ मे इस शब्द का प्रयोग उस पदार्थ के लिए भी होता है जो निकलता है और इस आधार के सबध मे भी होता है जिसमे से वह निकलता है। जैसे—(क) फोडा बहना; और (ख) फोडे मे से मवाद बहना।

५. अधिक मात्रा या मान मे निरतर किसी ओर गतिशील होना। जैसे—हवा बहना। ६ नियत या नियमित स्थान से हटकर दूर होना या दूसरे रास्ते पर चलना या जाना। जैसे—(क) पहनी हुई धोती या

पाजामा बहना, अर्थात् नीचे खिसकना। (ख) गोल में से कबूतर बहना। (ग) हवा में पतंग बहना। ७. विशेष आवेग के कारण खूब खुलकर किसी ओर प्रवृत्त होना। उदा०—अपनी चौंड़ सारि उन लीन्हों, तू काहे अब वृथा बहै री।—सूर।

मुहा०—बहकर खत्र खुलकर। मनमाने ढग से या निस्सकोच होकर। उदा०—ताहीं सो रसाल बाल बहि कै बैराई है।—भारतेन्दु। ८. दुर्दशाग्रस्त होकर इधर-उधर घूमना। मारा-मारा फिरना। उदा०—कब लगि फिरिहो दीन बह्यो।—सूर।

मुहा०—बहा फिरना=किसी वस्तु की इतनी अधिकता होना कि उसका आदर घट जाय या विशेष मूल्य न रह जाय। जैसे—आज-कल बाजारों मे अमरूद (या आम) बहे फिरते है।

९. व्यक्ति का आचरण भ्रष्ट या कुमार्गी होना। सन्मार्ग से च्युत होना। जैसे—यह लडका तो बह चला। १० पशुओं का गर्भस्राव होना। अडाना। जैसे—गाय या भैस का बहना। ११ पक्षियो का अधिक या प्राय अडे देना। जैसे—कबूतरी या मुरगी का बहना।

पद—बहता हुआ जोड़ा=ऐसे नर और मादा पशु-पक्षियों का जोडा जिससे साधारण से बहुत अधिक अडे निकलते हों।

१२ धन का व्यर्थ के कामो में या बहुत अधिक व्यय होना। जैसे—साल भर में उनके बीस हजार रुपए बह गये। १३ किसी चीज या बात का नष्ट, पतित या विकृत होना। उदा०—(क) सुक सनकादि सान्त मन माहि, ध्यानिन ध्यान बह्यो—सूर। (ख) निज दिव्य जन-पद की कहा चिर चेतना बह बह गई।—मैथिलीशरण। १४. आघात या प्रहार के लिए शस्त्र या हाथ का ऊपर उठना। उदा०—बहहिं न हाथ दहहि रिसि छाती।—तुलसी।

स० १ अपने ऊपर भार रखना या लादना। ढोना। उदा०—नाहि बहि मरहु पचहु निज स्वारथ, जम को दंड सह्यो।—कबीर। २ पशुओं का कोई चीज खींचकर ले चलना। उदा०—श्वेत तुरग बहै रथ हाँकी।—रघुराज। ३ अपने उत्तरदायित्व, महत्त्व आदि का ध्यान रखकर किसी बात का निर्वाह या पालन करना। उदा०—मीरां के प्रभु हरि अबिनासी, लाज बिरद की बहौ।—मीरां। ४ कोई चीज अपने शरीर पर धारण करना। पहनना। जैसे—कवच या कुडल बहना।

स० [सं० वध] वध करना। मार डालना। वधना।

†स्त्री० [हि० बहन] 'बहन' के लिए सबोधनकारक रूप। जैसे—ना बहना, ऐसा मत कहो।

स० दे० 'बाहना'।

बहनापा—पु० [हिं० बहन+आपा (प्रत्य०)] स्त्रियो का वह पारस्परिक सम्बन्ध जिसमे व एक दूसरी की बहन न होने पर भी ठीक बहनों का-सा व्यवहार करती है। स्त्रियों मे बहनों की तरह का होनेवाला पारस्परिक संबंध।

क्रि० प्र०—जोडना।—लगाना।

बहनाथा*—पु०=बहनापा।

बहनी—स्त्री० [हिं० बहना] १. पानी आदि बहने की नाली। २. वह गगरी जिसमे कोल्हू मे से रस निकलकर इकट्ठा होता है।

†स्त्री०=बहन।

*स्त्री०=वह्नि (आग)।

बहनु*—पु० [सं० वाहन] सवारी।

†पु०=बहन।

बहनेली—स्त्री० [हिं० बहन+एली (प्रत्य०)] स्त्री की दृष्टि से वह दूसरी स्त्री जिससे उसका बहनों का-सा सबध हो। बनाई, मानी हुई या मुँह-बोली बहन।

बहनोई—पु० [सं० भगिनीपति] सबध के विचार से किसी की बहन का पति।

बहनोली†—स्त्री०=बहनेली।

बहनौता†—पु० [हिं० बहन+औता] बहन का लडका। भांजा। उदा०—स्वय अपने बहनौते की परिचर्या करना चाहती थी।—वृन्दावन लाल वर्मा।

बहनौरा†—पु० [हिं० बहन+औरा (प्रत्य०)] १ सबध के विचार से किसी की बहन का घर। बहन का ससुराल। २ बहनोई अथवा उसके परिवार से होनेवाला सबध।

बहबहा—वि० [भाव० बहबही]=बेहनू (बहने अर्थात् इधर उधर व्यर्थ घूमनेवाला।

बहबही—स्त्री० [हिं० बहबहा] १. व्यर्थ इधर-उधर घूमते रहने की क्रिया या भाव। २. उपद्रव। ३. नटखटी। ४ शरारत।

बहम—अव्य० [फा० बाहम] १ साथ। सग। २ एक दूसरे के साथ या प्रति। परस्पर।

बहमन† —पु०=ब्राह्मण।

बहर—पु० [अ० बह्र] १. बहुत बडा जलाशय या नदी। २ समुद्र। ३. उर्दू-फारसी कविताओं का कोई छन्द। जैसे—इस बहर मे मैंने भी एक गजल लिखी है।

अव्य० [फा० ब+हर] १. हर एक। प्रत्येक। २. हर प्रकार से। हर तरह से। जैसे—बहर हाल=प्रत्येक दशा मे।

बहरना†—१ =बहुरना। २. =बहराना।

बहरा—वि० [सं० बधिर, प्रा० बहिर] [स्त्री० बहरी, भाव० बहरा-पन] १. जिसे कानों से सुनाई न पडता हो। जिसकी श्रवण-शक्ति नष्ट हो गई हो। २ किसी की बात पर ध्यान न देनेवाला।

मुहा०—बहरा बनना=जान-बूझकर किसी की सुनी बात अनसुनी करना।

बहराना†—पु० [हिं० बाहर] किस नगर या बस्ती की सीमा पर अथवा उससे बाहरवाला भाग या मुहल्ला।

†स० १. बाहर करना या निकालना। २ (नाव आदि) किनारे से दूर और धार की तरफ ले जाना।

अ० १. बाहर होना। निकलना। २. अलग या दूर होना।

स० [हिं० भुलाना] १. बहलाना। २. सुनकर भी अन-सुनी करना। टाल मटोल करना। बहलाना। उदा०—जबहीं मैं बरजति हरि सगहिं तब ही तब बहरायो।—सूर। ३. बहकाना। ४. फुसलाना।

बहरिया—पु० [हिं० बाहर+इया (प्रत्य०)] वल्लभ सप्रदाय के मंदिरो के छोटे कर्मचारी जो प्रायः मंडप के बाहर ही रहते हैं।

† वि०=बाहरी।

बहरियाना†—स० [हिं० बाहर+इयाना (प्रत्य०)] १. बाहर करना या हटाना। २ (नाव आदि) किनारे से दूर करके धारा की ओर ले जाना। ३. अलग या जुदा करना।
अ० १ बाहर की ओर होना। २ (नाव का) किनारे से दूर हटना। ३ अलग या जुदा होना।

बहरी—स्त्री० [अ०] एक प्रकार की शिकारी चिड़िया जिसका रूप रंग और स्वभाव बाज का-सा होता है, पर आकार छोटा होता है।
वि० [हिं० बाहर+ई (प्रत्य०)] बाहरी।
पद—बहरी अलग (ओर या तरफ)—नगर के बाहर या बस्ती से कुछ दूरी पर का वह एकांत और रमणीक स्थान जहाँ लोग प्रायः सैर-सपाटे के लिए जाते है।

बहरू—पु० [देश०] मध्य प्रदेश, बरार और मदरास मे होनेवाला एक प्रकार का मझोला पेड़ जिसकी लकड़ी सुन्दर चमकीली और मजबूत होती है।
†वि० बहरा।

बहरूप—पु० [हिं० बहु+रूप] १ बैलो का व्यवसाय करनेवाला व्यक्ति। २ एक जाति जो बैलो का व्यवसाय करती है।

बहरूपिया—पु० बहुरूपिया।

बहल†—स्त्री० बहली (गाड़ी)।

बहलना—अ० [हिं० बहलाना का अ०] १ ऊबे, थके, खाली बैठे या दुःखी व्यक्ति अथवा उसके मन का मनोरंजक या रमणीक वस्तुओ से परचना या कुछ समय के लिए प्रसन्न और शांत होना। २ झंझट-बखेड़े, चिंता आदि की बात भूलकर मन का किसी दूसरी ओर लगना, और फलतः कुछ स्वस्थ या हलका अनुभव करना। जैसे—दिन भर काम करने के बाद सध्या को थोड़ा टहल लेने से मन बहल जाता है।
संयो० क्रि०—जाना।

बहलवान—पु०[हिं० बहल या बहली+वान (प्रत्य०)] बहल या बहली हाँकनेवाला।

बहलाना—स० [फा० बहाल=अच्छी या ठीक दशा मे] १ कष्ट, राग, विरक्ति आदि की दशा मे दुःखी या चिन्तित को इधर-उधर की बातो मे लगाकर प्रसन्न, शात या सुखी करने का प्रयत्न करना। जैसे—बीमारी के दिनो मे पड़ा पड़ा मै ताश खेलकर मन बहला लेता था। २ झंझट या बखेड़े की बातो से अलग रहकर मन की चिंताएँ दूर करने का प्रयत्न करना। मनोरंजक कामों, चीजों या बातो से मन पर पड़ा हुआ भार हलका करना। ३ किसी एक काम या बात मे लगा हुआ मन इस उद्देश्य से किसी दूसरे काम या बात मे लगाना कि शिथिलता दूर हो जाय और प्रफुल्लता आ जाय। जैसे—वह हर रविवार को मन बहलाने के लिए बगीचे चले जाया करते है। ४ इधर-उधर की बाते करके किसी को भुलावा देते हुए उसका ध्यान या मन दूसरी ओर लगाना। जैसे—रोते हुए लड़के को बहलाने के लिए उसे खिलौना देना।
संयो० क्रि०—देना।

बहलाव—पु० [हिं० बहलना] १ बहलाने की क्रिया या भाव। २ मन-बहलाव। मनोरंजन।

बहलावा—पु० १ बहलाव। २ बहकावा।

बहलिया†—पु० बहेलिया।
†स्त्री० बहली।

बहली—स्त्री० [स० वाह्याली या वह्याली] बैलो द्वारा खींची जानेवाली एक तरह की पुरानी चाल की सवारी गाड़ी।

बहल्ला—वि० [फा० बहाल] आनंदित। खुश।
पु० आनंद। खुशी।

बहस—स्त्री० [अ० बह्स] १ ऐसा तर्क-वितर्क या बात-चीत जिसमे दो पक्ष अपना अपना मत ठीक सिद्ध करने का प्रयत्न करते हो। तर्क, युक्ति आदि के द्वारा होनेवाला खंडन-मंडन।
पद—बहस-मुबाहसा।
२ उक्त के फलस्वरूप होनेवाली होड़। उदा०—मोहि तुम्हे बाढी बहस को जीतै जदुराज। अपने अपने बिरद की दुहूँ निबाहै लाज।—बिहारी। ३ न्यायालय मे, मुकदमे मे गवाहियों, जिरहों आदि के उपरांत वकीलो का होनेवाला तर्क-वितर्क पूर्ण भाषण।

बहस-तलब—वि० [अ० बहस तलब] जिसमे तर्क-वितर्क या वाद-विवाद की अपेक्षा हो। जिसके सम्बन्ध मे तर्क-वितर्क हो सकता हो या होना आवश्यक तथा उचित हो।

बहसना—अ० [अ० बहस+ना] १ बहस या विवाद करना। तर्क-वितर्क करना। २ प्रतियोगिता करना। होड़ लगाना।

बहस-मुबाहसा—पु० [अ० बहसोमुबाहसा] तर्क-वितर्क या खण्डन-मडन के रूप मे होनेवाला वाद-विवाद।

बहा—पु० [हिं० बहना] छोटी नहर या नाला।

बहाउ†—पु० बहाव।

बहाऊ—वि० [हिं० बहाना] १ बहानेवाला। २ बहाये जाने के योग्य। ३ बुरा। हेय। उदा०—परी परारी बात की कौन बहाऊ बानि।—बिहारी।

बहादर†—वि० बहादुर।

बहादुर—वि० [तु०] वीर। शूर। सूरमा।

बहादुराना—वि० [फा० बहादुरान] वीरों का-सा। वीरों जैसा।
अव्य० वीरता-पूर्वक।

बहादुरी—स्त्री० [तु०] बहादुर होने की अवस्था या भाव। वीरता। शूरता।

बहादुरी टोडी—स्त्री० [हिं०] संगीत मे टोडी रागिनी का एक प्रकार या भेद।

बहाना—स० [हिं० बहना क्रिया का स०] १ द्रव पदार्थ को धारा के रूप मे किसी ओर चलाना या प्रवाहित करना। जैसे—दूध या पानी बहाना। २ ऐसी क्रिया करना कि कोई चीज उक्त प्रकार की धारा मे पड़कर किसी ओर चले या आगे बढ़े। जैसे—पानी गिराकर कूड़ा या गंदगी बहाना। ३ किसी आधार पर या पात्र मे का कोई तरल पदार्थ किसी रूप मे निकालकर नीचे की ओर ले जाना। जैसे—आँसू बहाना, पसीना बहाना, फोड़े मे का मवाद बहाना। ४. वेग-पूर्वक गति मे लाकर किसी अनिर्दिष्ट दिशा मे ले जाना। जैसे—हवा का बादलो को बहाना। ५ नियत या नियमित स्थान से हटाकर दूर ले जाना। ६ किसी को आचरण-भ्रष्ट करके कुमार्ग मे लगाना। ७ बहुत बुरी तरह से नष्ट, पतित या विकृत करना। बहुत ही गया-बीता कर देना। जैसे—(क) इस लड़के की काली करतूतों ने घर

बहा डाला है। (ख) उन्होने अपनी सारी मर्यादा बहा दी। ८. ऐसी क्रिया करना जिससे पशु-पक्षियो का गर्भ-स्राव हो जाय। जैसे—उसने कोई दवा खिलाकर गाभिन भैस को बहा दिया। ९ व्यर्थ के कामो मे या बिना सोचे-समझे बहुत अधिक धन व्यय करना। जैसे—आज-कल कुछ देश अपना प्रभुत्व बढाने के लिए पानी की तरह धन बहा रहे हैं। १०. बहुत ही सस्ता या महत्त्वहीन कर देना। जैसे—कुछ लोगो ने पुस्तक प्रकाशन का काम बिलकुल बहा दिया है।

पु० [फा० बहान=कारण, सबब] १ चालाकी या धूर्तता की ऐसी बात जो दूसरो को ऐसे तथ्य की प्रतीति कराने के लिए कही जाती है जो वस्तुत अ-वास्तविक या मिथ्या होता है। जैसे—पेट मे दर्द होने का बहाना करके वह चला गया।

विशेष—इसका मुख्य उद्देश्य अपने आपको अभियोग, आक्षेप, कर्तव्य-पालन आदि से बचाने हुए अपने आपको दोष-रहित सिद्ध करना होता है।

क्रि० प्र०—करना।—बताना।—बनाना।

२ उक्त अवस्था और रूप मे उपस्थित किया जानेवाला तथ्य। जैसे—असल मे तो उन्हे छुट्टी चाहिए, बीमारी तो सिर्फ बहाना है। ३ दे० 'मिस' और 'हीला'।

बहानेबाज—वि० [फा० बहानबाज] बहाने बनानेवाला।

बहानेबाजी—स्त्री० [फा० बहानबाजी] बहाने बनाने का काम।

बहार—स्त्री० [फा०] १ फूलो के खिलने का मौसीम। वसतऋतु। २ मन का आनन्द और प्रफुल्लता। मजा। मौज। जैसे—किसी जगह (या किसी की बातो) की बहार लेना।

क्रि० प्र०—उडाना।—लूटना।—लेना।

३ किसी वस्तु या व्यक्ति का यौवन-काल जिसमे उसे देखकर मन प्रसन्न होता है। ४. सौदर्य आदि के फल-स्वरूप होनेवाली रमणीयता या शोभा। जैसे—पगडी पर कलगी खूब बहार देती है।

क्रि० प्र०—देना।

मुहा०—(किसी चीज का) **बहार पर आना** ऐसी अवस्था मे आना या होना कि उसकी शोभा या श्री देखकर मन प्रसन्न हो जाय। **बहार बजना**=आनद उमडना। खुशी छाना। उदा०—मिले तार उनके औरो से नही, नही बजती बहार।—निराला।

५ सगीत मे, वसत राग से मिलती-जुलती एक प्रकार की रागिनी।

बहार-गुर्जरी—स्त्री० [फा० बहार+स० गुर्जरी] सपूर्ण जाति की एक रागिनी जिसमे सब शुद्ध स्वर लगते है।

बहारना—स० =बुहारना।

बहारबुर्ज—पु० [फा०+अ०] किले, महल आदि का सबसे ऊँचा वह कमरा जो चारों ओर से खुला होता है और जिसमे बैठकर लोग चारो ओर की शोभा और सौन्दर्य देखते है। हवा-महल।

बहारी—स्त्री० बुहारी।

बहाल—वि० [फा०] १ जो फिर उसी हाल (दशा या हालत) मे आया हो जिसमे वह पहले था। फिर से अपनी पूर्व दशा या स्थिति मे आया हुआ। जैसे—(क) जो कर्मचारी हडताल करने के लिए मुअत्तल हुए थे, वे फिर बहाल कर दिये गये, अर्थात् अपने पूर्व पद पर ले लिये गये। (ख) उच्च न्यायालय ने अपील खारिज करके छोटी अदालत का फैसला बहाल रखा, अर्थात् उसे ज्यों का त्यों उसी रूप मे रहने दिया। ७ (व्यक्ति) शारीरिक दृष्टि से भला-चंगा। स्वस्थ। ३. (मन) प्रफुल्लित और प्रसन्न। जैसे—ताजी हवा मे रहने से तबीयत बहाल रहती है।

बहाली—स्त्री० [फा०] १ बहाल करने या होने की अवस्था, क्रिया या भाव। २. किसी को फिर से उसी हाल (दशा या हालत) मे लाना जिसमे वह पहले रहा हो। ३ अपने पद से अस्थायी रूप से हटाये हुए व्यक्ति को फिर से उस पद पर नियुक्त करने की क्रिया या भाव। ४ आरोग्य। तंदुरुस्ती। ५. प्रसन्नता।

स्त्री० [हि० बहलाना] १ किसी को बहलाने अर्थात् धोखे मे रखने की क्रिया या भाव। २ धोखा देनेवाली बात। झाँसा-पट्टी। दम-बुत्ता। ३ बहाना।

क्रि० प्र०—देना।—बताना।

बहाव—पु० [हि० बहना] १ बहने की क्रिया या भाव। प्रवाह। २. नदियो आदि के जल की वह गति जो उसके निम्न तल की ओर जाने या बहने से होती है। ३ समुद्र के जल की वह स्थिति जिसमे उसके तल पर किसी दिशा मे बहती हुई हवा लगने से गति उत्पन्न होती है। (ड्रिफ्ट) ४ पानी की बहती हुई धारा। जैसे—नाव का बहाव मे पड़ना। ५. लाक्षणिक रूप मे, किसी विशिष्ट दिशा मे होनेवाली ऐसी वेगपूर्ण गति जिसे रोकना या जिसका विरोध करना सहज न हो। जैसे—आज-कल जिसे देखो वही अनाचार (या भ्रष्टाचार) के बहाव मे बहता चला जा रहा है।

बहि (**हिस्**)—अव्य० [स० √वह्+इसुन्] बाहर। 'अन्त' (अन्दर) का विपर्याय।

बहिअर—स्त्री० [स० वधूवर हि० बहुवर] स्त्री। औरत।

बहिकिरनी—स्त्री० [स० बहि+कृ] बाहर के काम करनवाली मज-दूरनी। गृहदासी।

बहिक्रम—पु० [स० वय क्रम] अवस्था। उम्र।

बहित्र—पु० [स० वहित्र] जल-यान, नाव, जहाज आदि।

बहिन†—स्त्री०=बहन

बहिनापना†—पु० बहनापा।

बहिनापा†—पु०=बहनापा।

बहिनोता†—पु० बहनोता।

बहियाँ†—स्त्री० बाँह (भुजा)।

बहिया†—स्त्री० [हि० बहना] नदियो आदि मे आनेवाली पानी की बाढ।

पु०[स० वाही वहन करनेवाला] १ मजदूर। २ नौकर। सेवक।

बहिरग—वि० [स० बहिस्-अग, ब० स०] १ बाहर का। बाहरी। 'अतरग' का विपर्याय। २ जो किसी क्षेत्र, दल, वर्ग आदि से अलग, बाहर या भिन्न हो। ३ अनावश्यक। फालतू। (क्व०)

पु० १. किसी प्रकार की रचना का बाहरी अग जो ऊपर से दिखाई देता है। जैसे—इस पुस्तक का अन्तरग और बहिरग दोनो बहुत ही सुन्दर है। २ ऐसा व्यक्ति जो यो ही कही से आ गया या आ पहुँचा हो। ३ पूजन आदि के आरभ मे किये जानेवाले औपचारिक कृत्य।

बहिरा†—वि०=बहरा।

बहिरत—अव्य० [सं० बहिः] बाहर।
बहिरति—स्त्री० =बहिरति।
बहिरर्थ—पु० [सं० कर्म० स०] बाहर या ऊपर से दिखाई देनेवाला उद्देश्य।
बहिराना—स० =बहराना (बाहर करना)।
पु० बहराना।
बहिरिंद्रिय—स्त्री० [सं० बहिस्-इंद्रिय, मध्य० स०] बाह्य विषयो को ग्रहण करनेवाली इंद्रिय। कर्मेन्द्रिय। जैसे—आँख, नाक, कान, आदि।
बहिर्गत—भू० कृ० [सं० बहिस्-गत, द्वि० त०] १ बाहर आया या निकला हुआ। २ बाहरवाला। बाहर का। ३ अलग, जुदा पृथक।
बहिर्गमन—पु० [सं० बहिस्-गमन, सुप्सुपा स०] बाहर जाना। बाहर निकलना।
बहिर्गामी (मिन्)—वि० [सं० बहिस्√गम् (जाना)+णिनि] बाहर या बाहर की ओर जानेवाला।
बहिर्गिरि—पु० [सं० बहिस्-गिरि, मध्य० स०] १ पर्वत-माला की बाहरी या सिरे पर की पहाड़ी या पहाड। २. हिमालय की वह बाहरी शृंखला जिसमे ६ हजार फुट तक की ऊँचाई के पर्वत हैं। जैसे—नैनीताल, मसूरी, शिमला आदि।
बहिर्जगत्—पु० [सं० बहिस्-जगत्, मध्य० स०] बाह्य अर्थात् दृश्य जगत्।
बहिर्जानु—अव्य० [सं० बहिस्-जानु, अव्य० स०] हाथों को दोनो घुटनो के बाहर किये या निकाले हुए।
बहिर्जीवन—पु० [सं० बहिस्-जीवन, मध्य० स०] १ बाहरी अर्थात् दृश्य और लौकिक जीवन। 'आध्यात्मिक जीवन' से भिन्न। २ इस जीवन का आचरण, व्यवहार आदि।
बहिर्देश—पु० [सं० बहिस्-देश, मध्य० स०] १. गाँव या नगर के बाहर का स्थान। परदेश। विदेश। ३ अनजानी या नई जगह।
बहिर्द्वार—पु० [सं० बहिस्-द्वार, मध्य० स०] घर का बाहरी दरवाजा।
बहिर्द्वारी (रिन्)—वि० [सं० बहिर्द्वार+इनि] जो घर के बाहर हो या होता हो।
पु० फुटबाल, हाकी आदि का खेल जो खुले मैदानो मे खेला जाता हो। (आउटडोर)
बहिर्ध्वजा—स्त्री० [सं० बहिस्-ध्वजा, ब० स०] दुर्गा।
बहिर्भूत—वि० [सं० बहिस्-भूत, सुप्सुपा स०] १. जो बाहर हुआ हो। २ बाहर का। बाहरी। ३ अलग। जुदा। पृथक्।
बहिर्भूमि—स्त्री० [सं० बहिस्-भूमि, मध्य० स०] बस्ती से बाहर की भूमि, जहाँ लोग प्राय शौच आदि के लिये जाते हैं।
बहिर्मनस्क—वि० [सं० बहिस्-मनस्, ब० स०+कप्] जिसका मन किसी दूसरी तरफ लगा हो।
बहिर्मुख—वि० [सं० बहिस्-मुख, ब० स०] १ जिसका मुँह बाहर की ओर हो। २ जो प्रवृत्त या दत्तचित्त न हो। पराड्मुख। विमुख। ३ विपरीत।
पु० देवता।
बहिर्मुखी (खिन्)—वि० [सं०] १ जिसका मुँह या अगला भाग बाहर की ओर हो। २. जो बाहर की ओर उन्मुख या प्रवृत्त हो।
बहिर्योग—पु० [सं० बहिस्-योग, स० त०] १. बाह्य विषयो पर ध्यान जमाना। २ हठ-योग।
बहिर्रति—स्त्री० [सं० बहिस्-रति, मध्य० स०] रति के दो भेदों में से एक। ऐसी रति या समागम जिसके अन्तर्गत, आलिंगन, चुंबन, स्पर्श, मर्दन, नखदान, रददान और अधर पान हैं। ('लैंगिक' रति से भिन्न)
बहिर्रेखा—स्त्री० [सं० बहिस्-रेखा, मध्य० स०] [भू० कृ० बहिर्रेखित, भाव० बहिर्रेखन] १. वह रेखा जो किसी दृश्य वस्तु या उसके विभागो का विस्तार या सीमा सूचित करती हो। २ किसी चीज या बात का वह स्थूल रूप जो उसके आकार-प्रकार इतिवृत्ति, सिद्धांत, स्वरूप आदि का ज्ञान कराती हो। (आउट-लाइन) जैसे—विद्युत् शास्त्र की बहिर्रेखा।
बहिर्लंब—पु० [सं० बहिस्-लंब, मध्य० स०] रेखा गणित मे वह लंब जो किसी क्षेत्र के बाहर आये हुए आधार पर आकर गिरता और अधिक कोण बनाता है।
बहिर्लापिका—स्त्री० [सं० बहिस्-लापिका, ष० त०] एक प्रकार की पहेली जिसमे उसके उत्तर का शब्द उस पहेली के शब्दो मे नही रहता है। 'अन्तर्लापिका' का विपर्याय।
बहिर्लोम, बहिर्लोमा (मन्)—वि० [सं० बहिस्-लोमन्, ब० स०] जिसके बाल बाहर की ओर निकले हों।
बहिर्वाणिज्य—पु० [सं० बहिस्-वाणिज्य, मध्य० स०] किसी देश का दूसरे या बाहरी देशो के साथ होनेवाला वाणिज्य या व्यापार। (एक्स्टर्नल ट्रेड)
बहिर्वासा (सस्)—पु० [सं० बहिस्-वासस्, मध्य० स०] कौपीन के ऊपर पहनने का कपडा।
बहिर्विकार—पु० [सं० बहिस्-विकार, मध्य० स०] गरमी नाम की बीमारी। आतशक।
बहिर्व्यसन—पु० [सं० बहिस्-व्यसन, मध्य० स०] [वि० बहिर्व्यसनी] लपटता।
बहिला—वि० [सं० बेहत् या हिं० बाँझ ?] ऐसी गाय या भैंस जो बच्चा न देती हो। बाँझ। ठाँठ।
बहिश्चर—वि० [सं० बहिस्√चर् (चलना)+ट,] १. बाहर जानेवाला। २ बाहरी।
पु० १ बाहरी या दूसरे देश का भेदिया। २. केंकडा।
बहिश्त—पु० [सं० वशिष्ट (=प्रकाशमान) से फा० बिहिश्त] स्वर्ग।
बहिश्ती—वि० [हिं० बहिश्त] बहिश्त-सबधी।
पु० स्वर्ग का निवासी।
बहिष्क—वि० [सं०] बाहर का।
बहिष्करण—पु० [सं० बहिस्-करण, सुप्सुपा स०] १ बाहर करना या निकालना। २ किसी क्षेत्र से अलग या दूर करना। दे० 'बहिष्कार'। ३. शरीर की बाहरी इन्द्रिय। 'अंत.करण' का विपर्याय।
बहिष्कार—पु० [सं० बहिस्-कार, सुप्सुपा स०] [वि० बहिष्कृत] १. बाहर करना। निकालना। २ अलग या दूर करना। हटाना। ३ एक प्रकार का आधुनिक आन्दोलन जिसमें किसी व्यक्ति से या

किसी के काम या बात से असन्तुष्ट और रुष्ट होकर उसके साथ सब प्रकार का व्यवहार या सम्बन्ध छोड़ दिया जाता है। ४. देश-विशेष के माल का सामूहिक व्यवहार-त्याग। (बॉयकॉट; उक्त दोनों अर्थों में)

बहिष्कृत—भू० कृ० [सं० बहिस्-कृत, सुप्सुपा स०, स—ष्] १. जिसका बहिष्कार हुआ हो या किया गया हो। २. बाहर किया हुआ। निकाला हुआ। ३. अलग या दूर किया हुआ। हटाया हुआ। ४. जिसके साथ सम्बन्ध रखना छोड दिया गया हो। त्यक्त।

बहिष्क्रिया—स्त्री० [सं० बहिस्क्रिया, सुप्सुपा स०] १ किसी चीज पर या उसके सम्बन्ध मे बाहर की ओर से की जानेवाली क्रिया। २. बहिष्करण।

बहिष्प्रज्ञ—वि० [सं० बहिस्-प्रज्ञ, ब० स०] जिसे बाह्य विषयों का अच्छा ज्ञान हो।

बही—स्त्री० [सं० बद्ध; हिं० बँधी ?] लंबी पुस्तिका के रूप मे बनाई हुई कागजो की वह गड्डी जिस पर क्रम से नित्य प्रति का लेखा या हिसाब लिखा जाता हो।

मुहा०—**बही पर चढ़ाना या टाँकना**=बही पर लिखना। दर्ज करना।

†पुं० [सं० बहि:] घर से दूर का स्थान। (क्व०)

†स्त्री० [हिं० 'बहा' का स्त्री० अल्पा०] १ खेत सीचने के लिए बनाई हुई पानी की नाली। २ कुएँ से पानी खीचने की रस्सी।

बही-खाता—पुं० [हिं०] हिसाब-किताब की पुस्तके, बहियाँ,खाते आदि।

बहीर—स्त्री० [?] १. सेना के साथ साथ चलनेवाली भीड जिसमें साईस, सेवक, दुकानदार आदि रहते है। २ सैनिक सामग्री।

†स्त्री० भीड।

†अव्य० बाहर।

बहीरा—पुं० =बहेड़ा।

बहु—वि० [सं०√बह् (बढ़ना)+कु, न—लोप] १. संख्या मे एक से अधिक। अनेक। जैसे—बहुमुखी, बहुरंगा आदि। २ मान, मात्रा आदि में बहुत अधिक। ज्यादा। जैसे—बहुमत, बहुमूत्र, बहुमूल्य।

†स्त्री० =बहू।

बहुअर—स्त्री० [सं० वधूवर] नई ब्याही हुई स्त्री। बहू।

बहु-कंटक—पुं० [सं० ब० स०] १. जवासा। २ हिंताल वृक्ष।

बहु-कंटा—स्त्री० [सं० ब० स०] कंटकारी।

बहु-कंद—पुं० [ब० स०] सूरन।

बहुक—पुं० [सं० बहु+कन्] १. केकड़ा। २ आक। मदार। ३. चातक। पपीहा। ४. सूर्य। ५. तालाब।

वि० १ 'बहु'-सम्बन्धी। २ बहुत। ३. अधिक दाम का। मँहगा।

बहुकर—पुं० [सं० बहु√कृ (करना)+ट] १. झाड़ू देनेवाला। २. ऊँट।

स्त्री० [सं० बहुकरी] झाड़ू। (पश्चिम)

बहुकरी—स्त्री० [सं० बहुकर+ङीष्] झाड़ू। बुहारी।

बहुकर्णिका—स्त्री० [सं० ब० स०,+कप्,+टाप्, ह्रस्व] मूसाकानी।

बहुक-वाद—पुं० [सं० ष० त०] [वि० बहुकवादी] दर्शन में, वह विचार-प्रणाली जिसमें किसी बात या वस्तु के एक की जगह अनेक या बहुत से मूल कारण या सिद्धान्त माने जाते हों। 'अद्वैतवाद' का विपर्याय। बहुत्ववाद (प्लूरलिज्म)

बहुकवादी (दिन्)—वि० [सं० बहुकवाद+इनि] १. बहुकवाद-संबंधी। २. बहुकवाद के सिद्धान्तो के अनुकूल।

पुं० बहुकवाद का अनुयायी।

बहुगंध—पुं० [सं० ब० स०] १. दारचीनी। २ कुंदुरू। ३ पीत चन्दन।

बहुगंधा—स्त्री० [सं० ब० स०,+टाप्] १ जूही। २ काला जीरा।

बहुगव—पुं० [सं० ब० स०,+टच] एक पुरुवंशीय राजा। (भागवत)

बहुगुण—वि० [सं० ब० स०] १. जिसमें बहुत से गुण हो। २. जो मान या संख्याओ मे अनेक गुना अधिक हो। (मल्टिपुल) ३ जो कई अंगों, तत्त्वो आदि से युक्त हो।

बहुगुना—पुं० [हिं० बहु+गुण] चौडे मुँह का एक गहरा बरतन जिसके पेंदे और मुँह का घेरा बराबर होता है।

बहुग्रंथि—पुं० [सं० ब० स०] झाऊ का पौधा।

बहुज्ञ—वि० [सं० बहु√ज्ञा+क] [भाव० बहुज्ञता] १. बहुत-सी बातें जाननेवाला। २ अनेक विषयो का ज्ञाता।

बहुटनी—स्त्री० [हिं० बहूँटा] बाँह पर पहनने का एक गहना। छोटा बहूँटा।

बहुत—वि० [सं० प्रभूत, प्रा० पहुत्त] १ जो गिनती मे दो-चार से अधिक हो। ज्यादा। 'थोड़ा' का विपर्याय। जैसे—आज बहुत दिनो पर आप से भेंट हुई है। २. परिमाण, मात्रा आदि मे आवश्यक या उचित से अधिक। जैसे—बहुत बोलना अच्छा नही होता।

पद—**बहुत अच्छा**=(क) स्वीकृति सूचक वाक्य। एवमस्तु। ऐसा ही होगा। (ख) डराने-धमकाने के लिए कहा जानेवाला शब्द। जैसे—बहुत अच्छा! तुमसे भी किसी दिन समझ लूँगा। **बहुत करके**—(क) अधिकतर अवसरो पर या अधिकतर अवस्थाओ मे। प्राय। बहुधा। (ख) बहुत संभव है कि। संभवत.। जैसे—बहुत करके तो वह कल चला ही जायगा। **बहुत कुछ**=विशेष, अधिक या यथेष्ट न होने पर भी, आवश्यक अथवा उचित मात्रा या मान मे अथवा उसमें कुछ ही कम। जैसे—इस झगड़े में उन्हे सब तो नही, फिर भी बहुत-कुछ मिल गया। **बहुत हो लिये**=तुम जितना कर सकते थे बहुत कर चुके, अब रहने दो, क्योंकि तुमसे यह काम नही होगा।

३. जितना होना चाहिए, उतना या उससे कुछ अधिक। यथेष्ट। जैसे—मेरे लिए तो आध सेर दूध भी बहुत होगा।

पद—**बहुत खूब**=(क) वाह! क्या कहना है। (किसी अनोखी बात पर) (ख) दे० ऊपर 'बहुत अच्छा'।

क्रि० वि० अधिक परिमाण या मात्रा मे। ज्यादा। जैसे—बहुत बिगड़ा और उठकर चला गया।

बहुतक—वि० [हिं० बहुत+एक अथवा क] बहुत से। बहुतेरे।

बहुतां—वि०=बहुत।

बहुता—स्त्री० बहु (बहुत) होने की अवस्था या भाव। बहुत्व।

†वि०=बहुत।

बहुताइत—स्त्री० =बहुतायत ।

बहुताई—स्त्री० [हिं० बहुत+आई (प्रत्य०)] बहुत होने की अवस्था या भाव। बहुतायत। अधिकता। ज्यादती।

बहुतात—स्त्री० =बहुतायत ।

बहुतायत—स्त्री० [हिं० बहुत+आयत (प्रत्य०)] बहुत होने की अवस्था या भाव। अधिकता। ज्यादती।

बहुतिक्ता—स्त्री० [सं० ब० स०] काकमाची। मकोय।

बहुतेरा—वि० [हिं० बहुत+एरा (प्रत्य०)] [स्त्री० बहुतेरी] १ मान या मात्रा मे बहुत अधिक। २ प्रचुर। यथेष्ट।
क्रि० वि० बहुत तरह से। अनेक प्रकार से।

बहुतेरे—वि० [हिं० बहुतेरा] सख्या मे अधिक। बहुत से। अनेक।

बहुत्व—पु० [सं० बहु+त्व] बहुत होने की अवस्था या भाव। आधिक्य। अधिकता।

बहुत्वक् (च्)—पु० [सं० ब० स०] भोजपत्र।

बहुत्ववाद—पु० [सं०] [वि० बहुत्ववादी] बहुकवाद।

बहुदर्शिता—स्त्री० [सं० बहुदर्शिन्+तल्+टाप्] बहुदर्शी होने की अवस्था या भाव।

बहुदर्शी (शिन्)—वि० [सं० बहु√दृश्+णिनि] [भाव० बहुदर्शिता] जिसने ससार बहुत कुछ देख-भाला हो। विशेषत जिसने अच्छी तरह से दुनिया देखी हो।

बहुदल—पु० [सं० ब० स०] चेना नाम का अन्न।

बहुदला—स्त्री० [सं० ब० स०,+टाप्] चेच नाम का साग। चचु।

बहुदुग्ध—पु० [सं० ब० स०] गेहूँ।

बहुदुग्धा—स्त्री० [सं० ब० स०,+टाप्] दुधार गाय।

बहुदुग्धिका—स्त्री० [सं० ब० स०,+कप्] थूहड।

बहुदेव-वाद—पु० [सं० बहु-देव, कर्म० स०, बहुदेव-वाद, ष० त०] यह मत या सिद्धान्त कि धर्म मे बहुत से छोटे-बडे देवता और देवियाँ होती है, और समाज मे लोग अपनी अपनी रुचि के अनुसार उनमे से किसी न किसी के उपासक होते है। (पालीथीज्म)
विशेष—यह एकेश्वरवाद से भिन्न और प्राय उसका विरोधी है।

बहुदेववादी (दिन्)—पु० [सं० बहुदेववाद+इनि] वह जो बहुदेव वाद का अनुयायी या समर्थक हो।

बहुधन—वि० [सं० ब० स०] जिसके पास बहुत धन हो।

बहुधर—पु० [सं० ष० त०] शिव। महादेव।

बहुधा—अव्य० [सं० बहु+धाच्] १ अनेक प्रकार से। बहुत तरह से। २ अधिकतर अवसरो पर। अक्सर। प्राय.।

बहुधान्य—पु० [सं० ष० स०] साठ सवत्सरो मे से बारहवाँ सवत्सर।

बहुधार—पु० [सं० ब० स०] एक प्रकार का हीरा। वजहीरक।

बहुनाद—पु० [सं० ब० स०] शख।

बहुनामा (मन्)—वि० [सं० ब० स०] जिसके बहुत-से नाम हो।

बहुपतित्व—पु० [सं० बहु-पति, ब० स०,+त्व] वह सामाजिक प्रथा जिसमे एक स्त्री एक ही समय या एक साथ कई पुरुषो से विवाह करके उन के साथ दाम्पत्य जीवन बिताती है। (पालिएण्ड्री)

बहुपत्नीक—वि० [सं० ब० स०,+कप्] जिसकी बहुत सी पत्नियाँ हों।

बहुपत्नीत्व—पु० [सं० ब० स०,+त्व] वह सामाजिक प्रथा जिसमे एक पुरुष एक ही समय मे या एक साथ कई स्त्रियो से विवाह करके उनके साथ दाम्पत्य जीवन बिताता है। (पालिजिनी)

बहुपत्र—वि० [सं० ब० स०] बहुत से पत्तोवाला।
पु० १ अभ्रक। अबरक। २ प्याज। ३. वशपत्र। ४ मुचकुद वृक्ष। ५ ढाक। पलाश।

बहुपत्रा—स्त्री० [सं० बहुपत्र+टाप्] १ तरुणी पुष्प वृक्ष। २ बहुलिंगी लता। ३ दूधिया घास। ४ भुँआवला। ५ घीकुआर। ६ वृहती। ७ जतुका लता।

बहुपत्रिका—स्त्री० [सं० ब० स०,+कप्,+टाप्, इत्व] १ भूम्यामलकी। २ महाशतावरी। ३ मेथी। ४ बच। वचा।

बहुपत्री—स्त्री० [सं० बहु-पत्र+ङीष्] १. भूम्यामलकी। २ शिवलिगनी लता। ३ तुलसी। ४ जतुका। ५ बृहती। ६ दूधिया घास।

बहुपद (द्)—वि०, पु० =बहुपाद।

बहुपाद—वि० [सं० ब० स०] बहुत से पैरोवाला।
पु० बरगद का पेड। वट वृक्ष।

बहु-पुत्र—पु० [सं० ब० स०] १ पाचवे प्रजापति का नाम। २ सप्तपर्ण।
वि० जिसके बहुत से पुत्र हो।

बहु-पुत्रिका—स्त्री० [सं० बहुपुत्रा+कन्,+टाप्, इत्व] स्कन्द की अनुचरी एक मातृका।

बहु-पुष्प—पु० [सं० ब० स०] १ परिभद्र वृक्ष। फरहद का पेड। २ नीम का पेड।

बहुपुष्पिका—स्त्री० [सं० बहुपुष्प+कन्+टाप्, इत्व] धातकी वृक्ष। धाय का पेड।

बहु-प्रकार—वि० [सं० ब० स०] बहुविधि।
अव्य० बहुत प्रकार से।

बहु-प्रज—वि० [सं० ब० स०] जिसके बहुत से बच्चे हो।
पु० १ सूअर। २ मूँज का पौधा।

बहु-प्रद—वि० [सं०] १ बहुत देनेवाला। २ दानवीर।

बहु-फल—पु० [सं० ब० स०] १ कदब। २ बन-भटा। कटाई। विककत।
वि० जिसमे बहुत अधिक फल लगते हो।

बहुफला—स्त्री० [सं० बहुफल+टाप्] १ भूम्यामलकी। २ खीरा। ३ एक प्रकार का बन-भटा जिसे क्षविका कहते है। ३ काक-माची। ४ छोटा या जगली करेला। करेली।

बहु-फली—स्त्री० [सं० बहुफल+ङीष्] एक प्रकार की जगली गाजर जिसका पौधा अजवाइन का-सा पर उससे छोटा होता है।

बहु-फेना—स्त्री० [सं० ब० स०] १ पीले दूधवाला थूहर। सातला। २. शखाहुली।

बहु-बल—पु० [सं० ब० स०] सिह।
वि० बहुत अधिक बलवाला।

बहु-बीज—पु० [सं० ब० स०] १. बिजौरा नीबू। २. शरीफा। ३ बीजदार केला।
वि० जिसमे बहुत से बीज हो।

बहुव्रीहि—पु० [सं० ब० स०] व्याकरण में समास का वह प्रकार, जिसमें समस्त पदों के योगार्थ से भिन्न कोई अन्य अर्थ ग्रहण किया जाता है। जैसे—बहुबाहु (रावण), चन्द्रमौलि (शिव)।

बहु-भाग्य—वि० [सं० ब० स०] बड़भागी।

बहु-भाषी (षिन्)—पु० [सं० बहु√भाष् (बोलना)+णिनि] १ बहुत बोलनेवाला। २ बकवादी।

बहु-भुजा—स्त्री० [सं० ब० स०+टाप्] दुर्गा।

बहु-भूमिक—वि० [सं० ब० स०+कप्] कई मंजिलोंवाला।

बहु-भोक्ता (क्तृ)—वि० [सं० ष० त०] १ बहुत तरह की चीजों का या बहुत अधिक भोग करनेवाला। २ बहुत खानेवाला। पेटू। ३ भुक्खड़।

बहु-भोग्या—स्त्री० [सं० तृ० त० या ष० त०] वेश्या।

बहु-मंजरी—स्त्री० [सं० ब० स०] तुलसी।

बहु-मत—पु० [सं० ष० त०] १ बहुत से लोगों का अलग-अलग मत। २. किसी संस्था, समिति आदि के आधे से अधिक सदस्यों का मत। ३ किसी संस्था के दल आदि की ऐसी स्थिति जिसमें समर्थक या अनुयायी कुल सदस्यों में से आधे से अधिक हों। ४ आधे से अधिक मतदाताओं का समाहार। जैसे—इस बँटवारे में हमारा बहुमत होगा।

बहुमल—पु० [सं० ब० स०] सीसा नाम की धातु।
वि० बहुत मैला।

बहुमात्र—वि० [सं० ब० स०] जो मात्रा में बहुत अधिक हो। बहुत अधिक मानवाला। ढेर-सा। (मास) जैसे—बहु-मात्र उत्पादन।

बहुमात्र-उत्पादन—पु० [सं० कर्म० स०] आधुनिक उद्योग-धन्धों में कोई चीज एक साथ बहुत अधिक मात्रा या मान में तैयार करना या बनना। (मास प्रोडक्शन)

बहुमान—पु० [सं० कर्म० स०] अधिक आदर। अधिक मान।

बहुमानी (निन्)—वि० [सं० कर्म० स०] बहुत आदरणीय।

बहु-मार्ग—वि० [सं० ब० स०] जिसमें या जिसके अनेक मार्ग हों।
पु० चौराहा।

बहु-मूत्र—पु० [सं० ब० स०] एक प्रकार का रोग जिसमें रोगी को मूत्र बहुत अधिक और बार बार आता है। पेशाब अधिक आने का रोग।

बहुमूर्ति—पु० [सं० ब० स०] १ बहुरूपिया। २ विष्णु। ३. बन-कपास।

बहुमूल—पु० [सं० ब० स०] १. रामशर। सरकंडा। २. नरसल। नरकट। ३. शोभांजन। सहिंजन।

बहुमूलक—पु० [सं० बहुमूल+कन्] खस। उशीर।

बहुमूला—स्त्री० [सं० बहुमूल+टाप्] शतावरी।

बहुमूल्य—वि० [सं० ब० स०] १ जिसका मूल्य बहुत हो। २. जो आदर, गुण, महत्त्व आदि की दृष्टि से अति प्रशंसनीय या उपयोगी हो। जैसे—बहुमूल्य उपदेश।

बहुरंगा—वि०, पु०=बहुरंगी।

बहुरंगी—वि० [हिं० बहु+रंग] १ जिसमें बहुत से रंग हों। अनेक रंगोंवाला। २. जिसके मन में अनेक प्रकार के भाव या विचार आते-जाते रहते हों। ३. मन-मौजी। अनेक प्रकार या भाँति का।
पुं० बहुरूपिया।

बहुरंगी-पलंग—पु० दे० 'झाँगा'।

बहुरना—अ० [सं० प्रघूर्णन; प्रा० पहोलन] १. वापस आना। लौटाना। २ कोई चीज फिर से मिलना या हाथ में आना। फिर से प्राप्त होना।

बहुरि—अव्य० [हिं० बहुरना] १. पुनः। फिर। २ अनन्तर। उपरान्त। पीछे।

बहुरिया—स्त्री० [सं० वधूटी, वधूटिका; प्रा० बहुरिआ] नई बहू।

बहुरी—स्त्री० [सं० वाटुक या हिं० भौरना=भूनना ?] भूना हुआ खड़ा अन्न। चर्वण। चबेना।

बहुरूप—वि० [सं० ब० स०] अनेक रूप धारण करनेवाला।
पु० [हिं० बहुरूपिया] वह रूप जो बहुरूपिया धारण करता है।
क्रि० प्र०—भरना।
पु० [सं०] १. विष्णु। २. शिव। ३. ब्रह्मा। ४ कामदेव। ५. एक बुद्ध का नाम। ६. पुराणानुसार एक वर्ष या भूमि-खंड का नाम। ७. ऐसा तांडव नृत्य जिसमें अनेक रूप धारण किये जाते हों। ८. गिरगिट। सरट।

बहुरूपक—पु० [सं० बहुरूप+कन्] एक प्रकार का जंतु।

बहुरूपा—स्त्री० [सं० बहुरूप+टाप्] १. दुर्गा। २ अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक।

बहुरूपिया—वि० [हिं० बहु+रूप] १. अनेक प्रकार के रूपोंवाला। २. अनेक प्रकार के रूप धारण करनेवाला।
पु० वह जो जीविका-निर्वाह के लिए अनेक प्रकार के वेष धारण करके या स्वाँग बनाकर लोगों के सामने उनका मनोरंजन करता और उनसे पुरस्कार लेता हो।

बहुरूपी—वि० [सं० बहुरूप] अनेक रूप धारण करनेवाला।
पु० बहुरूपिया।

बहुरेता (तस्)—पु० [सं० ब० स०] ब्रह्मा।
वि० जिसमें बहुत वीर्य हो।

बहुरोमा (मन्)—पु० [सं० ब० स०] १. मेष। मेढ़ा। २ लोमड़ी। ३. बन्दर।
वि० बहुत अधिक बालोंवाला। जिसका शरीर बालों से भरा हो।

बहुरौ—अव्य० दे० 'बहुरि'।

बहुल—वि० [सं० बंहि (वृद्धि)+कुलच्] [भाव० बहुलता] अधिक। बहुत।
पु० १ शिव। २. अग्नि। ३. आकाश। ४ काला रंग। ५. चांद्र मास का कृष्ण पक्ष। ६. सफेद गोल मिर्च।

बहुलच्छद—पु० [सं० ब० स०] लाल सहिंजन।

बहुलता—स्त्री० [सं० बहुल+तल्+टाप्] बहुल होने की अवस्था या भाव। अधिकता।

बहुला—स्त्री० [सं० बहुल+टाप्] १. गाय। गौ। २. एक विशिष्ट गौ जो पुराणानुसार बहुत ही सत्यनिष्ठ थी और जिसके नाम पर लोग भादों बदी चौथ और माघ बदी चौथ को व्रत रखते हैं। ३. एक देवी का नाम। ४. पुराणानुसार एक नदी। ५. कृत्तिका नक्षत्र। ६ इलायची। ७ नील का पौधा। ८. एक प्रकार की समुद्री मछली।

बहुलाचौथ—स्त्री० [स० बहुला+हि० चौथ] भादो बदी चौथ। इस दिन सत्यवती गौ के नाम पर लोग व्रत रखते हैं।

बहुलालाप—वि० [स० बहुल-आलाप, ब० स०] बकवादी।
पु० बकवाद।

बहुलावन—पु० [स०] वृन्दावन के ८४ वनो मे से एक वन।

बहुलित—वि० [स० बहुल+इतच्] कई गुणा बढाया हुआ। (मल्टिपुल) जैसे—बहुलित उद्देश्य।

बहुली—स्त्री० [स० बहुला] इलायची।

बहुलीकृत—वि० [स० बहुल+च्वि,√कृ (करना)+क्त] १ बढ़ाया हुआ। वर्धित। २ प्रकट किया हुआ।

बहु-वचन—पु० [स० ष० त०] व्याकरण मे सज्ञा आदि का वह रूप जिससे एक से अधिक वस्तुओ का बोध होता है।

बहुवर्षीय—वि० [स०] वर्षानुवर्षी। (दे०)

बहुवल्क—पु० [स० ब० स०] पियासाल।

बहुवार—पु० [स० बहु√वृ (विभाग करना)+णिच्+अण्] लिसोडे का पेड।

बहुविद्य—वि० [स० ब० स०] १ जिसने बहुत सी विद्याएँ पढी या सीखी हो। २ बहुत-सी बाते जाननेवाला। बहुज्ञ।

बहुविवाह—पु० [स० ब० स०] १. वह सामाजिक प्रथा जिसमे एक व्यक्ति (पुरुष या स्त्री) एक साथ कई व्यक्तियो (स्त्रियो या पुरुषो) के साथ विवाह करके रहता है। २. विशेषत' वह सामाजिक प्रथा जिसमें एक पुरुष एक-साथ कई स्त्रियो के साथ विवाह करके दाम्पत्य जीवन व्यतीत करता है। (पॉलिगैमी)

बहुवीर्य—पु० [स० ब० स०] १ विभीतक। बहेडा। २ शाल्मली। सेमल। ३. मरुआ।

बहुश.(शस्)—अव्यय० [स० बहु+शस्] १ बहुत बार। २. बहुत तरह से।

बहुशत्रु—पु० [स० ब० स०] गौरा पक्षी। चटक।

बहुशिर (रस्)—पु० [स० ब० स०] विष्णु।

बहुशृंग—पु० [स० ब० स०] विष्णु।

बहुश्रुत—वि० [स० ब० स०] १ (व्यक्ति) जिसने अनेक विषयो की ज्ञान सम्बन्धी बहुत-सी बाते सुनी तथा स्मरण रखी हो। २ विद्वान्। पडित।

बहुसख्यक—वि० [स० ब० स०+कप्] १ जिसकी सख्या बहुत अधिक हो। गिनती मे बहुत। २. जिसकी सख्या दूसरो की तुलना मे बहुत अधिक हो। जैसे—समद् का बहुसख्यक दल।

बहुसार—पु० [स० ब० स०] खदिर। खैर।

बहुसू—स्त्री० [स० बहु√सू+क्विप्] शूकरी। मादा सूअर।

बहुस्रव—पु० [स० बहु√स्रु (बहना)+अच्] शल्लकी वृक्ष। सलई।

बहुस्वन—पु० [स० ब० स०] १. उल्लू। २ शख।

बहु-हेतुक—वि० [स० ब० स०,+कप्] जिसमे कई या बहुत हेतु हो। (मल्टी-पर्पज)

बहूँटा—पु० [स० बाहुस्थ, प्रा० बाहुट्ठ] [स्त्री० अल्पा० बहूँटी] बाँह पर पहनने का एक प्रकार का गहना।

बहू—स्त्री० [स० वधू] १ सबध के विचार से पुत्र की पत्नी। पतोहू। २ जोरू। पत्नी। ३. नव विवाहिता स्त्री। दुलहिना। ४ रहस्य सप्रदाय मे सुबुद्धि या धार्मिक बुद्धि।

बहूकरी—स्त्री०=बहुकरी।

बहूदक—पु० [स० बहु-उदक, ब० स०] संन्यासियो का एक भेद।

बहूपमा—स्त्री० [स० बहु-उपमा, ष० त०] एक अर्थालंकार जिसमे उपमेय के एक ही धर्म के लिए अनेक उपमाना का कथन होता है।

बहेंगा—पु० [स० विहगम] १. एक प्रकार का पक्षी जिसे भुजगा भी कहते हैं। २ चौपाया की गुदा मे होनेवाला एक रोग।
वि० १. वह जो प्राय इधर-उधर व्यर्थ घूमता रहता हो। घुमक्कड। २ आवारा।

बहेंत†—स्त्री० [हि० बहना] वह मिट्टी जो बहकर किसी स्थान पर जमा हुई हो।

बहेवा—पु० [देश०] घडे का ढाँचा जो चाक पर से गढ़कर उतारा जाता है। यही पीटकर बढाने से सुडौल घडे के रूप मे हो जाता है। (कुम्हार)

बहेड़ा—पु० [स० विभीतक, प्रा० बहेडअ] १. पर्वतो तथा जगलो मे होनेवाला एक ऊँचा वृक्ष जिसके पत्ते वट-वृक्ष के पत्तो से कुछ छोटे तथा फल अण्डाकार या गोल होते हैं। २. उक्त वृक्ष का फल जो स्वाद मे कसैला होता है तथा वैद्यक मे, कफ, पित्त तथा कृमि रोग नष्ट करनेवाला माना जाता है।

बहेतू—वि० [हि० बहना] १ (व्यक्ति) जो इधर-उधर मारा-मारा फिरता हो। २. बहुत ही निम्न कोटि का। तुच्छ या हीन। ३. (धन या पदार्थ) जो मुफ्त मे या बिना परिश्रम के प्राप्त होता या हुआ हो।

बहेरा†—पु०=बहेडा।

बहेरी—स्त्री० [हि० बहराना] बहाना। हीला।

बहेला—पु० [हि० बहाली] कुश्ती का एक पेच।
वि० [स० वल्लभ ?] प्रिय। प्यारा।

बहेलिया—पु० [स० वध+हेला] वह व्यक्ति जो छोटे-मोटे पशु-पक्षियो को पकडता तथा उन्हें बेचकर अपनी जीविका का निर्वाह करता हो। चिडीमार।

बहोर—पु० [हि० बहुरना] बहुरने की क्रिया या भाव। वापसी। पलटा। फेरा।
*अव्य०=बहोरि।

बहोरना—स० [हि० बहुरना] १ गये हुए को फिर पहले या पुराने स्थान पर ले आना। लौटाना। २ चरनेवाले चौपायो का घर की ओर हाँकना। ३. सँभालकर ठीक अवस्था मे लाना। उदा०—कबीर इह तनु जाइगा, सकहु त लेहु बहोरि।—कबीर।

बहोरि—अव्य० [हि० बहोर] दोबारा। पुन। फिर।

बहोरी—स्त्री० [हि० बहोरना] बहोरने की क्रिया या भाव।

बह्वर्थक—वि० [स० बहु-अर्थ+ब० स०,+कप्] (कथन, बात या शब्द) जिसके बहुत से अर्थ हो या निकल सकते हो। (सेन्टेन्शस)

बाँ—पु० [अनु०] गाय के रँभाने का शब्द।
पु०=बार (दफा)।

बाँक—स्त्री० [स० बंक] १ टेढ़ापन। वक्रता। २. घुमाव या मोड़। जैसे—नदी की बाँक। ३. हाथ मे पहने की एक प्रकार की चूड़ी। ४ पैरों मे पहनने का चाँदी का एक प्रकार का गहना। ५. बाँह पर का गहना। ५. बाँह पर पहनने का एक प्रकार का गहना। ६. लोहारो

का वह धिकंजा जिसमें वे चीजों को कसकर रखते हैं। ७. गन्ना छीलने का सरौते के आकार का एक उपकरण। ८. एक प्रकार की टेढ़ी-बड़ी छुरी या कटारी। ९. उक्त छुरी या कटारी चलाने का कौशल या विद्या। १०. उक्त कौशल या विद्या सीखने के लिए किया जानेवाला अभ्यास।

वि० १. घुमावदार। टेढ़ा। वक्र। २. दे० 'बाँका'।

स्त्री० [देश०] एक प्रकार की घास।

पु० [?] जहाज के ढाँचे में वह शहतीर जो खड़े बल में लगाया जाता है।

बाँकड़ा†--पुं० [सं० बंक] छकड़े के आँक की वह लकड़ी जो धुरे के नीचे आड़े बल में लगी रहती है।

वि०=बाँकुड़ा।

बाँकड़ी—स्त्री० [सं० बंक+हिं० डी] कलाबत्तू या बादले की बनी हुई वह पतली डोरी या फीता जो साड़ियों आदि के किनारों पर शोभा के लिए लगाया जाता है।

बाँक-डोरी—स्त्री० [हिं० बाँक] एक प्रकार का शस्त्र।

बाँकनल—पु०[सं० बकनाल] सुनारों का एक औजार जिससे फूँक मारकर टाँका लगाते हैं।

बाँकना—स०[स० बक] टेढ़ा करना।

†अ० टेढ़ा होना।

बाँकपन—पुं०[हिं० बाँका+पन (प्रत्य०)] १ टेढ़ापन। तिरछापन। २ बाँका होने की अवस्था या भाव। ३ बनावट, रचना या रूप की अनोखी सुन्दरता।

बाँका—वि०[स० बक] [स्त्री० बाँकी]१. टेढ़ा। तिरछा। २. जिसमें बहुत ही अनोखा माधुर्य और सौन्दर्य हो। जैसे—बाँकी अदा। ३ (व्यक्ति) जिसकी चाल-ढाल, वेष-भूषा, सज-धज आदि मे अनोखा सौन्दर्य हो। जैसे—बाँका जवान। ४. छैला। ५ बहादुर और हिम्मतवर। वीर और साहसी। जैसे—बाँका सिपाही। ६. विकट। बीहड़। (राज०)

पु० १. लोहे का बना हुआ एक प्रकार का हथियार जो टेढ़ा होता है। २. वह गुंडा या बदमाश जो बराबर अपने पास उक्त शस्त्र रखता हो। ३ सदा बना-ठना रहनेवाला बदमाश और लुच्चा। गुंडा। (लखनऊ) ४. बरातों आदि में अथवा किसी जुलूस मे वह बालक या युवक जो खूब सुन्दर वस्त्र और अलंकार आदि से सजाकर तथा घोड़े या पालकी मे बैठाकर शोभा के लिए निकाला जाता है। ५. धान की फसल को नुकसान पहुँचानेवाला एक प्रकार का कीड़ा।

बाँकिया—पु०[स० बक=टेढ़ा] १. नरसिंहा नाम का बाजा जो आकार मे कुछ टेढ़ा होता है। २. रथ के पहिये की आगे की वह टेढ़ी लकड़ी जिस पर उसकी धुरी टिकी रहती है।

बाँकी—स्त्री०[हिं० बाँका] बाँस को काटकर खपाचियाँ, तीलियाँ आदि बनाने का एक प्रकार का उपकरण।

वि०, स्त्री०=बाकी।

बाँकुड़—वि०[स्त्री० बाँकुडी]=बाँकुरा।

बाँकुर—वि०[हिं० बाँका]१. बाँका। टेढ़ा। २. नुकीला। पैना। ३. चतुर। होशियार।

बाँकुरा—वि० [हिं० बाँका] १. बाँका। टेढ़ा। २. तेज धार का। ३. कुशल। चतुर।

बाँग—स्त्री०[फा०]१. ध्वनि। स्वर। २. नमाज के समय नमाज पढ़नेवालों को मसजिद में आकर नमाज पढ़ने के लिए बुलाने के निमित्त मुल्ला द्वारा की जानेवाली उच्च स्वर मे पुकार। ३. भोर के समय मुरगे के बोलने का स्वर।

बाँगड़—पु० [देश०] करनाल, रोहतक, हिसार आदि के आस-पास का प्रदेश। हरियाना।

स्त्री० उक्त प्रदेश की बोली जो खड़ी बोली या पश्चिमी हिन्दी की एक शाखा है। हरियानी।

वि० =बाँगड़।

बाँगड़ी—वि०[हिं० बाँगड़] बाँगड या हरियाना प्रदेश का।

स्त्री०=बाँगड (बोली)।

बाँगड़ू—वि०[हिं० बाँगड]असभ्य, उजड्ड और पूरा गँवार।

बाँगबरा—स्त्री० [फा० बाँग] १. घंटे या घड़ियाल की ध्वनि। २ काफिले मे प्रस्थान के समय बजनेवाले घण्टो की ध्वनि या आवाज।

बाँगर—पु०[देश०]१ छकड़ा गाड़ी का वह बाँस जो फड़ के ऊपर लगाकर फड़ के साथ बाँध दिया जाता है। २. ऐसी ऊँची जमीन जिस पर आस-पास के जलाशय की बाढ़ का पानी न पहुँचता हो। 'खादर' का विपर्याय। ३ वह भूमि जो पशुओं के चरने के लिए छोड़ दी गई हो, अथवा जिसमे पशु चरते हों। चरागाह। चरी। (मेडो) ४. अवध प्रान्त मे होनेवाला एक प्रकार का बैल।

बाँगा—पु०[देश०] ऐसी रूई जिसमे से बिनौले अभी तक न निकाले गये हों। कपास।

बाँगुर—पु०[स० वागुरा]१. पशुओं या पक्षियो को फँसाने का जाल। फँदा। २ फँसने या फँसाने का कोई स्थान। उदा०—तुलसीदास यह विपति बाँगुरो, तुमहिं सौं बनै निबेरे।—तुलसी।

बाँचना—स० [सं० वाचन]१. पढ़ना। २ पढ़कर सुनाना।

†अ०=बचना।

†स०=बचाना।

बाँछना—स०[स० वांछा]१ इच्छा या कामना करना। चाहना। २ चुनना। छाँटना।

स्त्री०=वांछा (कामना)।

स० दे० 'बाछना'।

बाँछा—स्त्री० =वाछा (इच्छा)।

बाँछित—भू० कृ०=वाछित।

बाँझ—स्त्री०[सं० वध्या]१ वह स्त्री जिसे किसी शारीरिक विकार के कारण संतान न होती हो। वध्या। २ कोई ऐसा मादा जंतु या पशु जिसे शारीरिक विकार के कारण बच्चा न होता हो। ३ ऐसी वनस्पति या वृक्ष जिसमे आन्तरिक विकार के कारण फल, फूल आदि न लगें। वि० संतो की परिभाषा मे, अज्ञानी या ज्ञानहीन।

स्त्री०[देश०] एक प्रकार का पहाड़ी वृक्ष जिसके फलों की गुठलियाँ बच्चो के गले में, उनको रोग आदि से बचाने के लिए बाँधी जाती हैं।

बाँझ ककोड़ी—स्त्री० [सं० वंध्या-कर्कोटकी] बनककोड़ा। खेखसा। बन-परवल।

बाँझपन—पु० [हिं० बाँझ+पन (प्रत्य०)] बाँझ होने की अवस्था या वन्ध्यत्व।

बाँट—स्त्री० [हिं० बाँटना] १ बाँटने की क्रिया या भाव। २ बाँटने पर हर एक को मिलनेवाला अलग-अलग अंश या भाग। हिस्सा।

मुहा०—(कोई चीज किसी के) बाँट या बाँटे पड़ना—इस प्रकार अधिकता से होना कि मानो सब कुछ छोड़कर उसी के हिस्से में आई या उसी को मिली हो। जैसे—जी हाँ, सारी अक्ल तो आप के ही बाँटे पड़ी है। (व्यंग्य)

३ संगीत में गीत के नियत बोलो को नियमित तालो में ही सुन्दरता-पूर्वक कहीं कुछ खीचकर और कहीं कुछ बढ़ाकर उच्चरित करना।

पु० [देश०] १ गौओ आदि के लिए एक विशेष प्रकार का भोजन, जिसमे खरी, बिनौला आदि चीजे रहती है। २ धान के खेत में फसल को हानि पहुँचानेवाली ढेढर नाम की घास। ३ घास या पयाल का बना हुआ एक मोटा सा रस्सा जिसे गाँव के लोग कुआर सुदी १४ को बनाते है और दोनो ओर से कुछ कुछ लोग उसे पकड़कर तब तक खीचते है जब तक वह टूट नही जाता।

†पु०=बाट (बटखरा)।

बाँट-चूँट—स्त्री० [हिं० बाँट+चूँट (अनु०)] बाँटने या लोगो को उनका हिस्सा देने की क्रिया या भाव।

बाँटना—स० [सं० वण्ट्, गु० वाँटवूँ, मरा० वाटणे] १ किसी चीज को कई भागो मे विभक्त करना। जैसे—यह जिला चार तहसीलों मे बाँटा जायगा। २ संपत्ति आदि के संबंध मे उसके हिस्सेवार कई विभाग करके उसे उनके अधिकारियो को देना या सौंपना। ३ खानेवाली चीज के संबंध मे, उसका थोड़ा-थोड़ा अंश सब लोगो को देना। जैसे—बच्चो को मिठाई बाँटना। ४ आर्थिक क्षेत्र मे, किसी निर्माणशाला या कार्यालय मे काम करनेवालो को उनके पावने का भुगतान करना। जैसे—अधि-लाभ या वेतन बाँटना।

†स०=बाटना (पीसना)।

बाँटा—पु० [हिं० बाँटना] १ बाँटने की क्रिया या भाव। बाँट। २ गाने-बजानेवाले लोगो का इनाम या पारिश्रमिक का धन आपस मे यथा-योग्य बाँटने की क्रिया या भाव।

क्रि० प्र०—लगाना।

३ बँटने या बाँटने पर प्रत्येक को मिलनेवाला अंश या भाग। हिस्सा। उदा०—रूप लूट कीन्ही तुम काहै अपने बाँटे कौ घरिहौं ली।—सूर।

क्रि० प्र०—पाना।—मलाना।

मुहा०—(किसी चीज का) बाँटे पड़ना=किसी संपत्ति आदि के हिस्से लगना।

बाँटा चौदस—स्त्री० [स्त्री० बाँट=एक प्रकार का रस्सा+चौदस (तिथि)] कुआर सुदी १४ जिस दिन देहात के लोग बाँट (रस्सा) बटकर खीचते और तोड़ते हैं। वि० दे० 'बाँट'।

बाँड़—पु० [देश०] दो नदियो के संगम के बीच की भूमि जो वर्षा मे नदियों के बढ़ने से डूब जाती है और पानी उतर जाने पर फिर निकल आती है।

†पु०=बाँड़ा।

बाँड़ा—पु० [सं० वंड] १ वह पशु जिसकी पूँछ कट गई हो। २. वह व्यक्ति जिसकी घर-गृहस्थी या बाल-बच्चे न हो। ३. तोता।

वि० [स्त्री० बाँड़ी] जिसकी पूँछ न हो। दुम-कटा या बिना दुम का।

पु० [देश०] दक्षिण-पश्चिम की हवा।

बाँड़ी—स्त्री० [हिं० बाँड़ा] १ बिना पूँछ की गाय। २. छोटी लाठी। छड़ी।

बाँड़ीबाज—पु० [हिं० बाँड़ी+फा० बाज] १ लट्ठबाज। लठैत। २ उपद्रवी। शरारती।

बाँद—पु०=बंदा (दास)।

बाँदर—पु०=बंदर। (पश्चिम)

बाँदा—पु० [सं० वन्दाक] ऐसी वनस्पतियो का वर्ग जो भूमि पर नही उगती बल्कि दूसरे वृक्षो पर फैलकर उन्ही की शाखाओ आदि का रस चूसती और अपना पोषण करती हैं।

बाँदी—स्त्री० [हिं० बंदा का स्त्री०] लौडी। दासी।

पद—बाँदी का बेटा—(क) वह जो पूरी तरह से अपने अधीन कर लिया गया हो। (ख) तुच्छ। हीन। (ग) वर्णसंकर। दोगला।

पु० [फा० बंदी] कैदी। कारावासी।

बाँदू—पु० [फा० बंदी] कैदी। कारावासी।

बाँध—पु० [हिं० बाँधना] १ बाँधने की क्रिया या भाव। २ वह बंधन जो किसी बात को रोकने या उसके आगे बढ़ने पर नियन्त्रण रखने के लिए लगाया जाता हो। (बार) ३ जलाशय का जल फैलने से रोकने के लिए उसके किनारे लगाया हुआ मिट्टी, पत्थर आदि का धुस। पुश्ता। बंद। (एम्बैंकमेन्ट) ४ वह वास्तु-रचना जो किसी नदी की धारा को रोकने के लिए अथवा किसी ओर प्रवृत्त करने के लिए बनाई गई हो। (डैम) जैसे—भाँखरा या हीराकुण्ड बाँध। ५ लाक्षणिक अर्थ मे दिखावे, शोभा आदि के लिए किसी चीज के ऊपर बाँधी हुई दूसरी चीज।

मुहा०—बाँध बाँधना—आडंबर रचना।

बांधकिनेय—पु० [सं० बंधकी+ढक्—एय, इनङ्] अविवाहिता स्त्री का जारज पुत्र।

बाँधना—स० [सं० बंधन] १ डोरी, रस्सी आदि कसकर किसी चीज के चारो ओर लपेटना। जैसे—घाव पर पट्टी बाँधना। २ डोरी, रस्सी आदि के द्वारा किसी एक चीज के साथ आबद्ध करना। जैसे—कमर मे पेटी या नाड़ा बाँधना। ३ रस्सी आदि के दो छोरो को गाँठ लगाकर आपस मे जोड़ना या सम्बद्ध करना।

मुहा०—गाँठ बाँधना—दे० 'गाँठ' के अन्तर्गत।

४ रस्सी आदि के बनाये हुए फंदे मे कोई चीज इस प्रकार फँसाना कि वह छूटने, निकलने या भागने न पाये। जैसे—गौ या भैंस बाँधना। ५ पुस्तक के फरमो की इस प्रकार सिलाई करना कि वे एक ओर से आपस मे जुड़े रहें, अलग, अलग न होने पावे और उनके ऊपर से दफ्ती आदि लगाना। जैसे—जिल्द बाँधना। ६ कागज, कपड़े आदि से किसी चीज को इस प्रकार लपेटना कि वह बाहर न निकल सके अथवा सुरक्षित रहे। जैसे—दवा की पुड़िया बाँधना, कपड़ो या किताबो की गठरी बाँधना। ७ ऐसी क्रिया करना कि जिससे कोई चीज किसी विशिष्ट क्षेत्र या सीमा मे ही रहे, उससे आगे या बाहर न जाने पाये। जैसे—नदी का पानी बाँधना। ८ उक्त के आधार पर लाक्षणिक रूप में, किसी

बात, भाव या विचार को इस प्रकार शब्दों मे सजाना कि उसमे कोई कोर-कसर, त्रुटि या शिथिलता न रह जाय, अथवा उसे कोई विशिष्ट रूप प्राप्त हो जाय। ९. किसी व्यक्ति को कैद या बंधन मे डालना। बँधुआ बनाना। १० तंत्र-मंत्र आदि के प्रयोग से ऐसी क्रिया करना जिससे किसी की गति या शक्ति नियन्त्रित और सीमित हो जाय अथवा मनमाना काम न कर सके। जैसे—जादू के जोर से दर्शकों की नजर बाँधना, मन्त्र के बल से साँप को बाँधना (अर्थात् इधर-उधर बढ़ने मे असमर्थ कर देना) ११ कोई ऐसी क्रिया करना जिससे दूसरा कोई किसी रूप मे अधिकार या वश मे आ जाय अथवा किसी रूप मे विवश हो जाय। जैसे—किसी को प्रेमसूत्र में बाँधना। १२. किसी चीज को ऐसे रूप या स्थिति मे लाना कि वह इधर-उधर न हो सके और अपने नये रूप या स्थान मे यथावत् रहे। जैसे—किसी चूर्ण से गोली या लड्डू बाँधना, कमर मे कटार या तलवार बाँधना। १३. कुछ विशिष्ट प्रकार की वास्तु-रचनाओ के प्रसग मे बनाकर तैयार करना। जैसे—कुँआ, घर, नया पुल बाँधना। १४ बौद्धिक क्षेत्र या विचार के प्रसग मे, सोच-समझकर स्थिर करना। जैसे—बन्दिश बाँधना, मन्सूबा बाँधना। १५ साहित्यिक क्षेत्र मे, किसी विषय के वर्णन की रचना-सामग्री एकत्र करके उसका ढाँचा खडा करना। जैसे—आलकारिक वर्णन के लिए रूपक बाँधना, गजल मे कोई मजमून बाँधना। १६ ऐसी स्थिति मे लाना कि नियमित रूप से अपना ठीक और पूरा काम कर सके या प्रभाव दिखला सके। जैसे—किसी की तनख्वाह या भत्ता बाँधना, किसी पर रग बाँधना, किसी काम या बात का डौल या हिसाब बाँधना। १७ उपमा देना। सादृश्य स्थापित करना। उदा०—सब कद को सरो बाँधे हैं, तू उसको ताड बाँध।—कोई कवि। अर्थात् सब लोग कद की उपमा सरो (वृक्ष) मे देते है तुम उसकी उपमा (ताड वृक्ष) से दो। १८ उपक्रम या योजना करना।

बाँधनी-पौरि—स्त्री० [हिं० बाँधना+पौरि] वह घेरा या बाडा जिसमे पालतू पशुओं को बाँधकर रखा जाता है।

बाँधनू—पु० [हिं० बाँधना] १ वह उपाय या युक्ति जो किसी कार्य को आरभ करने से पहले सोची या सोचकर स्थिर की जाती है। पहले से ठीक की हुई तस्वीर या स्थिर किया हुआ विचार। उपक्रम। मसूबा। २. किसी सम्भावित बात के संबध मे, पहले से किया जानेवाला सोच-विचार।

क्रि० प्र०—बाँधना।

३ किसी पर लगाया जानेवाला झूठा अभियोग। ४ मनगढ़त बात। ५ रंगने से पहले कपडे मे बेलबूटे या बुँदकियाँ रखने के लिए उसे जगह जगह डोरी, गोटे या सूत से बाँधने की क्रिया या प्रणाली।

पद—**बाँधनू की रंगाई**—कपड़े रगने का वह प्रकार जिसमे चुनरी, साडी आदि रँगने से पहले बुँदकियाँ डालने या कलात्मक आकृतियाँ बनाने के लिए उन्हें जगह जगह सूतो से बाँधा जाता है। (टाई एण्ड डाई)

३ उक्त प्रकार से रगी हुई चुनरी या साड़ी या और कोई ऐसा वस्त्र जो इस प्रकार बाँधकर रगा गया हो। उदा०—कहै पद्माकर त्यौ बाँधनू बसनवारी ब्रज बसनहारी ह्यौ हरनवारी है।—पद्माकर।

बाँधव—पु० [स० बन्धु+अण् स्वार्थे] १. भाई। बन्धु। २ नाते-रिश्ते के लोग। ३ घनिष्ठ मित्र। गहरा दोस्त।

बाँधव्य—पु० [स० बांधव+ष्यञ्] १. बन्धु होने की अवस्था या भाव। बंधुता। २. रक्त-संबंध। नाता। रिश्ता।

बाँधुआ—वि०, पु०=बँधुआ।

बाँब—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की मछली जो साँप के आकार की होती है।

बाँबा घोड़ी—स्त्री० [?] एक प्रकार का रत्न जो लहसुनिया की जाति का होता है।

बाँबाँ रथी—पु० [स० वामन] वामन। बौना। बहुत ठिगना।

बाँबी—स्त्री० [स० वम्री] १ दीमकों द्वारा बनाया हुआ मिट्टी का स्थान जो रेखाकार होता है। बँबीठा। २ साँप का बिल।

बाँभन—पु०=ब्राह्मण।

बाँभी—स्त्री०=बाँबी।

बाँया—वि०=बायाँ।

बाँवना*—स० दे० 'रखना'।

बाँवला—वि०=बावला।

बाँस—पु० [स० वश] १. तृण जाति की गन्ने आदि की तरह की एक गाँठदार वनस्पति, जिसके काण्ड बहुत मजबूत किन्तु अन्दर से खोखले होते हैं तथा जो छप्पर आदि छाने और इमारत के दूसरे कामो में आते है।

मुहा०—**बाँस पर चढ़ना**=(क) बहुत उच्च स्थिति तक पहुँचना। (ख) बहुत प्रसिद्ध होना। (ग) बहुत बदनाम होना।

मुहा०—**(किसी को) बाँस पर चढ़ाना**=(क) बहुत बढा देना। बहुत उन्नत या उच्च कर देना। (ख) बहुत प्रसिद्ध करना। (ग) बहुत बदनाम करना। (घ) व्यर्थ की प्रशसा करके घमड या मिजाज बढा देना। **(कलेजा) बाँसों उछलना**=कलेजे मे बहुत अधिक धड़कन या विकलता होना। **(व्यक्ति का) बाँसो उछलना** बहुत अधिक प्रसन्न होना। खूब खुश होना।

२ लबाई की एक माप जो सवा तीन गज की होती है। लाठी। ३. पीठ के बीच की हड्डी जो गरदन से कमर तक चली गई है। रीढ। ४ भाला। (डिं०)

बाँसपूर—पु० [हिं० बाँस+पूरना] एक तरह की बढ़िया महीन मलमल।

बाँसफल—पु० [हिं० बाँस+फल] एक प्रकार का धान। बाँसी।

बाँसली—स्त्री० [हिं० बाँस+ली (प्रत्य०)] एक प्रकार की जालीदार लबी पतली थैली जिसमे रुपया-पैसा रखा जाता है और जो कमर मे बाँधी जाती है। हिमयानी।

†स्त्री०=बाँसुरी (वशी)।

बाँसा—पु० [हिं० बाँस] १. बाँस का बना हुआ चोंगे के आकार का वह छोटा नल जो हल के साथ बँधा रहता है। इसी मे बोने के लिए अन्न भरा जाता है। अरना। तार। २ एक प्रकार की घास जिसकी पत्तियाँ बाँस की पत्तियों की तरह होती है।

पु० [स० प्रियावास ?] १ पियाबाँसा नाम का पौधा जिसमे चंपई रग के फूल लगते हैं और जिसकी लकड़ी के कोयले से बारूद बनती थी। २ उक्त पौधे का फूल।

पु० [स० वश+रीढ] १ रीढ की हड्डी। २ नाक के ऊपर की हड्डी जो दोनो नथनो के बीचोबीच रहती है।

मुहा०—**बाँसा फिर जाना**=नाक का टेढा हो जाना। (मृत्यु के बहुत समीप होने का लक्षण)

बाँसिनी—स्त्री० [हिं० बाँस] एक प्रकार का छोटा बाँस जिसे बरियाल, ऊना अथवा कुल्लुक भी कहते हैं।

बाँसी—स्त्री० [हिं० बाँस+ई (प्रत्य०)] १ एक प्रकार का छोटा, पतला और मुलायम बाँस जिससे हुक्के के नैचे आदि बनते है। २ एक प्रकार का गेहूँ। जिसकी बाल कुछ कुछ काली होती है। ३. एक प्रकार का धान जिसका चावल बहुत सुगंधित, मुलायम और स्वादिष्ट होता है। इसे बाँसफल भी कहते हैं। ४ एक प्रकार की घास जिसके डठल कडे और मोटे होते हैं। ५ एक प्रकार की चिडिया। ६ कुछ सफेदी लिए हुए पीले रग का एक प्रकार का पत्थर।

बाँसुरी—स्त्री० [हिं० बाँस] पतले बाँस का बनाया हुआ एक प्रसिद्ध बाजा जो मुँह से फूँककर बजाया जाता है। मुरली। वंशी।

बाँसुली—स्त्री० [हिं० बाँस] १ एक प्रकार की घास जो अन्तर्वेद मे होती है। २ बाँसुरी। वशी।

बाँसुलीकंद—पु० [हिं० बाँसुली+स० कद] एक प्रकार का जगली सूरन या जमीकंद जो गले मे बहुत अधिक लगता है।

बाँह—स्त्री० [स० बाहु] १ मनुष्य के शरीर मे कधे से लेकर कलाई के बीच का अवयव। भुजा।

मुहा०—(किसी की) बाँह ऊँची (या बुलंद) होना=(क) वीर और साहसी होना। (ख) उदार और परोपकारी होना। **(किसी की) बाँह गहना या पकड़ना**=(क) किसी की सहायता करने के लिए प्रस्तुत होना। सहारा देना। (ख) किसी स्त्री को अपने आश्रय मे लेकर और पत्नी बनाकर रखना। पाणिग्रहण करना। **बाँह चढ़ाना**=(क) कुछ करने के लिए उद्यत होना। (ख) किसी से लडने या हाथा-बाँही करने के लिए तैयार होना। आस्तीन चढाना।

२ कमीज, कुरते, कोट आदि का वह अश जिससे बाँह ढकी रहती है। ३ एक प्रकार की कसरत जो दो आदमी मिलकर करते है और जिसमे दोनो विशिष्ट प्रकार से एक दूसरे की बाहे पकडकर बलपूर्वक स्वय आगे बढते और दूसरो को पीछे हटाते है। ४ भुजबल। शक्ति।

मुहा०—(किसी की) बाँह की छाँह लेना=किसी की शरण मे जाकर उसके भुज-बल का आश्रित होना।

५ वह जो किसी का बहुत बडा मदद करनेवाला या सहायक हो।

पद—बाँह-बोल=आश्रय या सहायता देने, रक्षा करने आदि के सबध मे दिया जानेवाला वचन। उदा०—लाज बाँह-बोल की, नेवाजे की सँभार सार, साहेब न राम सो, बलैया लीजै सील की।—तुलसी।

मुहा०—बाँह टूटना=बहुत बडे सहायक का न रह जाना। जैसे—भाई के मरने से उसकी बाँह टूट गई।

६ सहायता या सहारे का आसरा। भरोसा।

मुह०—(किसी को) बाँह देना=सहायता या सहारा देना। मदद करना।

बाँहड़ली—स्त्री०=दे० 'बाँह'। उदा०—राम मोरी बाँहडली जी गहो। —मीराँ।

बाँहतोड़—पु० [हिं० बाँह+तोडना] कुश्ती का एक पेच।

बाँहबोल—पु० [हिं० बाँह+बोल=वचन] बाँह पकडने अर्थात् रक्षा करने या सहायता देने का वचन।

बाँहाँ जोड़ी—क्रि० वि० [हिं० बाँह+जोडना] किसी के कधे के साथ अपना कधा मिलाते हुए। साथ-साथ। उदा०—सूरदास दोउ बाँहाँ जोरी राजत स्यामा स्याम।—सूर।

स्त्री० कधे से कधा मिलाकर खडे होने या बैठने की मुद्रा या स्थिति।

बाँही—स्त्री०=बाँह।

बा—पु० [स० वा=जल] जल। पानी।

पु०=बार (दफा)

स्त्री० [अनु०] माता। माँ। (गुजरात और राजस्थान)

अव्य० [फा०] १. सहित। साथ। जैसे—बा-अदब=अदब से। २ युक्त। सम्मिलित। जैसे—बा-ईमान (बे-ईमान का विपर्याय)।

स्त्री०=बाई का सक्षिप्त रूप। (स्त्रियो का सबोधन)

बा०—हिं० 'बाबू' का सक्षिप्त रूप। जैसे—बा० दुर्गाप्रसाद।

बाइ—स्त्री० [स० वापी] छोटा तालाब। बावली। उदा०—अति अगाधु अति औथरो नदी कूपु सरु बाइ।—बिहारी।

*स्त्री०=वायु (हवा)।

बाइगी—स्त्री० [स० वार्ता या हिं० बाई=वायु ?] व्यर्थ की बकवाद। उदा०—कौन बाइगी सुनै ताहि किन मोहि बनायौ।—नन्ददास।

बाइबिल—स्त्री० [अ०] ईसाइयो की मुख्य और प्रसिद्ध धर्म-पुस्तक।

बाइस—पु० [फा०] सबब। कारण। वजह।

वि०, पु०=बाईस।

बाइसवाँ—वि०=बाईसवाँ।

बाइसिकिल—स्त्री० [अ०] आगे-पीछे बँधे हुए दो पहियो की एक प्रसिद्ध सवारी जो पैरो से चलाई जाती है।

बाई—स्त्री० [स० वायु] वात, जो त्रिदोषो मे से एक है। वि० दे० 'वात'।

क्रि० प्र०—आना।—उतरना।—चढ़ना।

पद—बाई की झोक=(क) वायु का प्रकोप। (ख) किसी प्रकार के मनोवेग का बहुत ही तीव्र या प्रबल आवेग।

मुहा०—बाई चढ़ना=(क) वायु का प्रकोप होना। (ख) किसी प्रकार का बहुत ही तीव्र या प्रबल मनोवेग उत्पन्न होना। **बाई पचना**=(क) वायु का प्रकोप शान्त होना। (ख) उग्र या तीव्र मनोवेग शान्त होना। (ग) व्यर्थ का घमड टूटना या नष्ट होना। **(किसी की) बाई पचाना**=अभिमान नष्ट करना। घमड तोडना।

स्त्री० [हिं० बाबा] १ स्त्रियो के लिए एक आदर सूचक शब्द। जैसे—लक्ष्मी बाई। २ उत्तर भारत मे प्राय नाचने-गानेवाली वेश्याओ के के साथ लगनेवाला शब्द। जैसे—जानकी बाई, मोती बाई।

पद—बाई जी=नाचने-गानेवाली वेश्या।

बाईस—वि० [स० द्वाविंशति, प्रा० बाइसा] जो गिनती मे बीस से दो अधिक हो।

पु० उक्त की सूचक सख्या जो अको मे इस प्रकार लिखी जाती है—२२.

बाईसवाँ—वि० [हिं० बाईस+वाँ (प्रत्य०)] [स्त्री० बाईसवी] क्रम के विचार से बाईस के स्थान पर पडनेवाला।

बाईसी—स्त्री० [हिं० बाईस+ई (प्रत्य०)] १ एक ही प्रकार की बाईस वस्तुओ का समूह। जैसे—खटमल बाईसी। २ मुगल सम्राटो के काल मे वह सेना जो उसके बाईस सूबो के सैनिको से बनाई जाती थी। ३ बाईस हजार सैनिको की सेना।

मुहा०—(किसी पर) बाईसी टूटना=पूरी शक्ति से आक्रमण होना।

बाईं†—वि०=वाम (बायाँ)।

क्रि० वि०=बाएँ।

बाउ†—स्त्री०=वायु।

बाउर—वि०[सं० वातुल] [स्त्री० बाउरी] १ बावला। पागल। २ भोला-भाला। ३. बेवकूफ। मूर्ख। ४ गूंगा। ५. खराब। बुरा।

बाउरी—स्त्री०[देश०] एक प्रकार की घास।

†स्त्री०=बावली।

बाउल—पु०[सं० वातुल]१ बंगाल का एक वैष्णव सम्प्रदाय जो विवेक को ईश्वर और अपना प्रियतम मानकर उसी की उपासना करता है। २. उक्त सम्प्रदाय का अनुयायी।

†वि०=बावला।

बाऊ—पु०[सं० वायु] हवा। पवन।

बाएँ—क्रि० वि०[हिं० बायाँ]१. जिधर बायाँ हाथ हो उधर अथवा उस दिशा मे। बाएँ हाथ। २ वस्तु आदि के सबंध में, जिस का मुँह जिस ओर हो उससे उत्तर दिशा मे।

बाओटा—पु०[सं० वायु] वात के कारण होनेवाला, गठिया नामक रोग। †पु०१. बावटा (झडा)। २. =बाहुटा (बाजूबद)।

बाकचाल†—वि० =बाचाल।

बाकना†—अ०=बकना।

बाकर—वि०[फा० बाकिर] पडित। विद्वान्।

बाकरखानी—स्त्री० [बाकर खाँ नाम] एक प्रकार की मुसलमानी रोटी (या खिचडी)।

बाकरी†—स्त्री०=बावली।

बाकल—पु०=वल्कल (छाल)।

बाकलि—पु०=बकरा।

स्त्री०=वल्कल।

बाकली—स्त्री०[सं० वकुल] एक प्रकार का वृक्ष जिसके पत्ते रेशम के कीड़ो को खिलाये जाते है। इसे धौरा और बोदाग भी कहते हैं।

बाकस†—पु०=बक्स।

बाकसी—स्त्री० [अ० बैकसेल] जहाज के पाल को एक ओर से दूसरी ओर करने का काम।

बाका—स्त्री०[सं० वाक्] बोलने की शक्ति। वाणी।

बाकी—वि०[अ० बाकी]१. जो कुल या समस्त मे से अधिकांश निकाल लिये जाने, क्षय अथवा व्यय होने पर बच रहा हो। २ (काम, चीज या बात) जो अभी किये, बनाये, होने या कहे जाने को हो। जैसे—बाकी काम कल करूँगा।

क्रि० प्र०—पडना।—बचना।—रहना।

३. (धन, राशि या रकम)जो अभी किसी को देय हो अथवा किसी से प्राप्य हो। जिसका लेन-देन अभी होने को हो। जैसे—अभी खाते मे सौ रुपए उनके नाम बाकी हैं।

क्रि० प्र०—निकलना।—पडना।—होना।

४. (अवधि या समय) जो अभी व्यतीत न हुआ हो। जैसे—अभी महीना पूरा होने मे चार दिन बाकी हैं।

क्रि० प्र०—रहना।

५. जो अन्त में या सबसे पीछे होने को हो। जैसे—अब तो मरना बाकी है।

स्त्री०१. गणित में वह क्रिया जो किसी बड़ी सख्या (या मान) मे से छोटी सख्या (या मान) घटाने के लिए की जाती है। एक बडी और दूसरी छोटी संख्या का अन्तर निकालने की क्रिया या प्रकार। जैसे—७ मे से ५ घटाना या निकालना। २. उक्त क्रिया करने पर निकलनेवाला फल। वह मान या संख्या जो एक बड़ी संख्या मे से दूसरी छोटी सख्या घटाने पर प्राप्त होती है। जैसे—१० में से यदि ६ घटावें तो बाकी ४ होगा।

क्रि० प्र०—निकलना।

३. वह धन या रकम जो अभी तक वसूल न हुई हो और वसूल की जाने को हो। जैसे—इतना तो ले लीजिए, और जो बाकी निकले, वह नये खाते में लिख लीजिए। ४ वह जो सबके अन्त में बचा रहे। जैसे—अब तो यही बाकी है कि उन पर मुकदमा चलाया जाय। ५. अवशेष। अव्य० परन्तु। मगर। लेकिन। जैसे—आपका कहना तो ठीक है बाकी मैं स्वयं चलकर उनके घर नही जाऊँगा। (बोल-चाल)

पु०[देश०] एक प्रकार का धान।

बाकुंभा—पु०[हिं० कुंभी] कुंभी के फूल का सुखाया हुआ केसर जो खाँसी और सरदी में दवा की भाँति दिया जाता है।

बाखड़ी—स्त्री०=बाखली (गौ या भैंस)।

बाखर—पु० [देश०] एक प्रकार का तृण।

बाखरि—स्त्री० दे० 'बखरी'।

बाखल†—स्त्री०=बखरी।

बाखली—स्त्री० [देश०] वह गाय या भैंस जो बच्चा देने के बाद पाँच महीने तक दूध दे चुकी हो।

बाखैर—वि० [फा० बा+अ० खैर] खरियत से। कुशलपूर्वक।

बाख्तर—पु०[फा० बख्तर] १ पूर्व। पूरब। २. हिन्दुकुश और वक्षु (आक्सस) के बीच एक प्राचीन जनपद। बल्ख नामक प्रदेश।

बाग—पु०[अ० बाग] खेती के योग्य भूमि का वह टुकडा जो चारों ओर से प्राय दीवार से घिरा होता है तथा जिसमे फूलों और फलोवाले अनेक प्रकार के पौधे और वृक्ष होते हैं।

स्त्री०[सं० वल्गा] १. लगाम। २. शक्ति। सामर्थ्य। उदा०—मम सेवक कर केतिक बागा।—तुलसी।

मुहा०—बाग मोड़ना=किसी ओर चलते हुए को किसी दूसरी ओर प्रवृत्त करना। किसी ओर घुमाना। बाग हाथ से छूटना=अवसर, नियन्त्रण आदि हाथ से निकल जाना।

† स्त्री०[सं० वाक्] वाणी।

बागड़—पु० [?] १ बिना बस्ती का देश। उजाड़। २. दे० 'शाद्वल'।

बागडोर—स्त्री०[हिं० बाग+डोर=रस्सी]१. वह रस्सी जो घोडे की लगाम में बाँधी जाती है और पकड़कर साईस लोग उसे टहलाते हैं। २. लगाम। ३ लाक्षणिक अर्थ में, कोई ऐसी चीज या बात जिसके द्वारा किसी को वश मे किया जाता है।

बागदार—पु० [फा० बाग+दार] बाग का स्वामी।

बागना—अ० [फा० बाग] १. बाग में घूमना। २. सैर करना। घूमना।

अ०[सं० वाक्=बोलना] १ कहना। बोलना। २ आक्रमण करना। ३ किसी को दबाने के लिए आगे बढना या उद्यत होना । उदा०—सब्दति अहेडै मिस रिघ कोस बलस्यू बागो ।—गोरखनाथ।

बागबान—पु०[फा० बाग्बान] [भाव० बागबानी] वह व्यक्ति जो बाग मे पेड-पौधे उगाता तथा रोपता हो और उनकी देखभाल तथा सेवा-सुश्रूषा करता हो। बाग का माली ।

बागबानी—स्त्री० [फा०] बाग मे पेड-पौधे उगाने तथा उनकी देख-रेख करने का काम।

बागबिलास*—पु० वाग्विलास।

बागर—पु०[देश०] १ नदी के किनारे की वह ऊँची भूमि जहाँ तक नदी का पानी कभी पहुँचता ही नही । २ दे० 'बाँगुर'। ३ चमगादड। (राज०)

बागल—पु०=बगला।

बागवान—पु०[भाव० बागवानी] बागबान।

बागा—पु०[फा० बागी] अगे की तरह का एक तरह का पुरानी चाल का पहनावा।

बागी—पु०[अ० बागी] देश की प्रभुसत्ता के विरुद्ध तथा शासन उलटने के उद्देश्य से सैनिक विद्रोह करनेवाला व्यक्ति। बगावत करनेवाला।

बागीचा—पु० [फा० बागीच]छोटा बाग विशेषत घर के चारो ओर का वह स्थान जिसमे शोभा के लिए पेड पौधे लगाये जाते है।

बागुर—पु०[देश०] १ वह जाल जिसमे बहेलिये पक्षियो तथा छोटे-मोटे जगली पशुओ को फँसाते हैं। २ बहेलिया।

बागेसरी—स्त्री०[सं० बागीश्वरी] १ सरस्वती। २ बागेश्वरी नाम की एक रागिनी जिसे आधी रात के समय गाया जाता है तथा जो किसी के मत से मालकोश राग की स्त्री और किसी के मत से सकर रागिनी की है।

बाघबर—पु० [सं० व्याघ्राम्बर]१ बाघ की खाल जो ओढने, बिछाने आदि के काम आती है। २ एक प्रकार का रोएँदार कंबल जो देखने मे बाघ की खाल का-सा जान पडता है।

बाघ—पु०[सं० व्याघ्र] शेर की जाति का परन्तु उससे आकार-प्रकार मे कुछ छोटा एक हिसक पशु। व्याघ्र।

बाघ-कुजर—पु०[हिं०+सं०] कपडो की छपाई, रँगाई, आदि मे ऐसी आकृतियाँ जिनमे बाघ और हाथी की लडाई का दृश्य हो।

बाघा—पु०[हिं० बाघ] १ चौपायो का एक रोग जिसमे उनका पेट अत्यधिक फूल जाता है। २ एक प्रकार का कबूतर।

बाघी—स्त्री०[देश०] आतशक, गरमी आदि के रोगियों को पेडू और जाँघ के सधि-स्थल पर होनेवाली एक तरह की गिल्टी।

बाघुल—स्त्री०[देश०] एक प्रकार की छोटी मछली।

बाच—वि०[सं० वाच्य] १ वर्णन करने के योग्य। २. अच्छा। बढिया। ३ सुन्दर

†स्त्री० =वाचा (वाणी)।

बाचना†—अ०=बचना।

स०=बचाना।

स० =बाँचना (पढना)।

बाचा—स्त्री० [सं० वाचा] १ बोलने की शक्ति। २ बात-चीत। ३ प्रतिज्ञा। प्रण।

बाचाबंध—वि० वचन-बद्ध।

बाछ—पु० [हिं० बाछना] १. बाछने की क्रिया या भाव। २ गाँव मे कर, चदे मालगुजारी आदि का फैलाया हुआ ऐसा परता जो प्रत्येक हिस्सेदार के हिस्से के अनुसार हो। बछौटा। बेहरी।

†पु० बाछा।

स्त्री०[प्रा० बच्छ] होठो का कोना या सिरा।

मुहा०—**बाछे खिलना**-इतना प्रसन्न होना कि मुँह पर बरबस मुस्कराहट या हँसी आ जाय।

बाछड़ा†—पु०=बछडा।

बाछना†—स० [सं० विचयन] चुनना। छाँटना।

बाछा—पु०[सं० वत्स, प्रा० वच्छ] [स्त्री० बाछी] १ गाय का बच्चा। बछडा। उदा०—बाछा बैल पतुरिया जोय, न घर रहे न खेती होय। —घाघ। २ बच्चो के लिए प्यार का सबोधन।

बाज—पु०[अ० बाज] १ एक प्रकार का बडा शिकारी और हिसक पक्षी। २ एक प्रकार का बगला। ३ वह पर जो तीर मे लगाया जाता है।

वि०[फा०] वचित। रहित।

मुहा०—**(किसी चीज या बात से) बाज आना**-(क) उपेक्षापूर्वक और जान-बूझकर अथवा त्याज्य या हानिकर समझकर उसे छोड देना या वचित रहना। जैसे—हम ऐसे मकान (या रुपए) से बाज आये। (ख) अलग या दूर रहना। जैसे—तुम बदमाशी से बाज नही आओगे। **(किसी को किसी काम या बात से) बाज करना**=मना करना। रोकना। **बाज रखना**=(क)न रहने देना। (ख) रोक रखना। **बाज रहना**-अलग या दूर रहना।

प्रत्य०[फा०] एक प्रत्यय जो शब्दो के अत मे लगकर निम्न अर्थ देता है—(क) करने या बनानेवाला, जैसे—बहानेबाज। (ख) अपने अधिकार मे, वश मे या पास मे रखनेवाला अथवा किसी चीज या बात का व्यसन करनेवाला, जैसे—कबूतरबाज, नशेबाज, रडीबाज।

वि० [अ० बअज] कोई कोई। कुछ-थोडे। कुछ विशिष्ट । जैसे—बाज आदमी बहुत जिद्दी होते है।

क्रि० वि० बगैर। बिना। उदा०—अब नेहि बाज रौंक भा डोलौ। —जायसी।

†पु०[सं० वाजि] घोडा।

†पु० [सं०वाद्य, हिं० बाजा] १ बाजा। २ बाजो से उत्पन्न होनेवाला शब्द। ३. बाजा बजाने का ढग या रीति। जैसे—मुझे उनमे से किसी का बाजा पसन्द नही आया। ४ सितार के ५ तारो मे से पहला जो पक्के लोहे का होता है।

अव्य०[सं० वर्ज] बिना। उदा०—गगन अतरिख राखा बाज खभ बिनु टेक।—जायसी।

पु०[देश०] ताने के सूतो के बीच मे देने की लकडी।

बाजड़ा†—पु०=बाजरा।

बाज-दावा—पु०[फा०] १ दावा वापस लेना। नालिश वापस लेना। २ वह पत्र या लेख्य जिसमे अपना दावा वापस लेने का विवरण होता है।

क्रि० प्र०—लिखना। —लिखाना

बाजना—पु०=बाजा।

बाजना—अ०[सं० व्रजन] १. जाना। २ पहुँचना।

अ० [सं० वादन] १. तर्क-वितर्क या बहस करना। २. लड़ाई-झगड़ा करना।

अ०[सं० वदन] १ कहना। बोलना। २ किसी नाम से प्रसिद्ध होना। पुकारा जाना। ३. आघात लगना। प्रहार होना।

वि० बजनेवाला। जो बजता हो।

बाजरा—पु०[सं० वर्जरी] १ एक प्रसिद्ध पौधा जिसके दानों की गिनती मोटे अन्नों में होती है। २ उक्त पौधे के दाने जो उबाल या पीसकर खाये जाते हैं।

बाजरा मुर्ग—पु०[हिं० + फा०] एक प्रकार की काली चिड़िया जिसके ऊपर बाजरे की तरह के पीले पीले दाग होते है।

बाजहर—पु०=जहर मोहरा।

बाजा—पु०[सं० वाद्य] १ संगीत में, वह उपकरण जो फूँके अथवा आघात किये जाने पर बजता है तथा जिसमें से अनेक प्रकार के स्वर आदि निकलते है।

क्रि० प्र०—बजना।—बजाना।

पद—**बाजा-गाजा**। (दे०)

२ बच्चो के बजाने का कोई खिलौना।

वि० [अ० बअज] कोई-कोई। कुछ। जैसे—बाजे आदमी किसी की पुकार पर जरा भी ध्यान नही देते।

बाजा-गाजा—पु०[हिं० बाजा + गाजना=गरजना] तरह तरह के बाजे और उनके साथ होनेवाली धूम-धाम या हो-हल्ला। जैसे—बाजे-गाजे से बरात निकलना।

बा-जाब्ता—अव्य०[अ० बा + फा० ज़ाबित] जाब्ते के साथ। नियम,विधान आदि के अनुसार। जैसे—किसी के माल की बा-जाब्ता कुर्की कराना।

वि० जो जाब्ते अर्थात् नियम, विधान आदि के अनुसार ठीक हो।

बाजार—पु०[फा० बाजार] [वि० बाजारी, बाजारू] १ वह स्थान जहाँ किसी एक चीज अथवा अनेक चीजो के विक्रय के लिए पास-पास अनेक दूकानें हो।

मुहा०—**बाजार करना**=चीजे खरीदने के लिए बाजार जाना और चीजे खरीदना। **बाजार गरम होना**=बाजार मे चीजों या ग्राहकों आदि की अधिकता होना। खूब लेन-देन या खरीद-बिक्री होना। (**किसी काम या बात का**) **बाजार गरम होना**=किसी काम या बात की बहुत अधिकता या बाहुल्य होना। जैसे—आज-कल चोरियों (या जुए) का बाजार गरम है। **बाजार लगना**=(क) बहुत सी चीजो का इधर-उधर ढेर लगना। बहुत-सी चीजों का यों ही सामने रखा होना। (ख) बहुत भीड़-भाड़ इकट्ठी होना और वैसा ही हो-हल्ला होना जैसा बाजारो मे होता है। **बाजार लगाना**=(क) चीजें इधर-उधर फैला देना। (ख) अटाला या ढेर लगाना। (ग) भीड़-भाड़ लगाना और वैसा ही हो-हल्ला करना जैसा बाजारों में होता है।

२ वह स्थान जहाँ किसी निश्चित समय, वार, तिथि या अवसर आदि पर सब तरह की चीजों की दुकाने लगती हों। हाट। पैंठ।

मुहा०—**बाजार लगना**=बाजार में सब तरह की दुकानें आकर खुलना या लगना। **बाजार लगाना**=ऐसी व्यवस्था करना कि किसी स्थान पर आकर सब तरह की दुकाने लगें। जैसे—राजा साहब हर मंगलवार को अपने किले के सामने बाजार लगवाते थे।

३. किसी चीज की बिक्री की वह दर या भाव जिस पर वह साधारणतः सब जगह बाजारो में बिकती या मिलती हो।

क्रि० प्र०—उतरना।—गिरना।—चढ़ना।—बढ़ना।

पद—**बाजार-भाव**=किसी चीज का वह भाव या मूल्य जिस पर वह साधारणत सब जगह बाजारो मे मिलती हो।

मुहा०—(**किसी का**) **बाजार के भाव पिटना**=बहुत बुरी तरह से मारा-पीटा जाना। (व्यंग्य) **बाजार तेज होना**=चीजो की माँग की अधिकता के कारण उनका मूल्य बढ़ना। **बाजार मंदा होना**=चीजो की माँग कम होने के कारण चीजों का भाव या मूल्य घटना।

४ व्यापारिक क्षेत्रों मे व्यापारियों आदि का वह प्रत्यय या साख जिसके आधार पर उन्हें बाजार से चीजे और रुपए उधार मिलते हैं। जैसे—व्यापारियों को अपना व्यापार चलाने के लिए अपना बाजार बनाये रखना पड़ता है।

बाजारी—वि०[हिं० बाजार] १. बाजार-संबंधी। बाजार का। २. जो बहुत अच्छा या बढ़िया न हो। बाजारू। साधारण। ३. बाजार में होनेवाला। बाजार मे प्रचलित। जैसे—बाजारी बोल-चाल। ४ बाजार मे रहने या बैठनेवाला। जैसे—बाजारी औरत। ५. दे० 'बाजारू'।

बाजारू—वि० [फा० बाजार] १ बाजार का। बाजारी। (देखें) २. (शब्द या प्रयोग) जिसका प्रयत्न बाजार के साधारण लोगों मे ही हो, शिक्षित या शिष्ट समाज में न होता हो।

बाजिंदा—पु० [फा० बाजिन्द] १ खेल-तमाशे दिखानेवाला। खेलाड़ी। २ लोटन कबूतर।

बाजि—पु० [सं० वाजिन्, बाज + इनि] १. घोड़ा। २ चिड़िया। ३ तीर। बाण। ४ अड़ूसा।

वि० चलनेवाला।

बाजी—स्त्री०[फा० बाजी] १. किसी प्रकार की घटना के अनिश्चित परिणाम के प्रसंग में दो या अधिक पक्षों में होनेवाला यह पारस्परिक निश्चय कि जो पक्ष हार जायगा, उसे जीतनेवाले को इतना धन देना पड़ेगा, अथवा अपनी हार का सूचक अमुक काम करना पड़ेगा। खेलो या लाग-डाँटवाली बातों के संबंध मे लगाई जानेवाली ऐसी शर्त जिसके अनुसार हार-जीत के साथ कुछ लेना-देना भी पड़ता हो अथवा पुरस्कार भी मिलता हो। बदान। शर्त। २. इस प्रकार होनेवाला लेन-देन या मिलनेवाला पुरस्कार।

क्रि० प्र०—जीतना।—बदना।—लगना।—लगाना।—हराना।

मुहा०—**बाजी मारना**=बाजी जीतना। **बाजी ले जाना**=बाजी जीतना। ३. प्रत्येक बार आदि से अंत तक होनेवाला कोई ऐसा खेल जिसमें हार-जीत के भाव की प्रधानता हो। जैसे—आओ दो बाजी ताश (या शतरंज) हो जाय।

क्रि० प्र०—जीतना।—हारना।

४. उक्त प्रकार के खेलो में प्रत्येक खेलाड़ी या दल के खेलने की पारी या बारी। दाँव।

स्त्री० [फा० बाज का भाव०] १. 'बाज' होने की अवस्था या भाव। २. किसी काम या बात के व्यसनी या शौकीन होने की अवस्था या भाव। जैसे—कबूतरबाजी, पतगबाजी। ३. किसी प्रकार की क्रिया कुछ समय तक होते रहने का भाव। जैसे—दोनो मे कुछ देर तक खूब घूँसेबाजी हुई।

पु०[स० वाजिन्] घोडा।

पु०[हि० बाजा]वह जो बाजा बजाने का काम करता हो। बजनिया।

बाजीगर—पु० [फा० बाजीगर] [भाव० बाजीगरी] जादू के खेल करनेवाला। जादूगर। ऐंद्रजालिक ।

बाजु—अव्य० [फा० बाज] १. बिना। बगैर। उदा०—को उठाइ बसारइ, बाजु पियारे जीवँ।—जायसी। २ अतिरिक्त। सिवा।

पु०[फा० बाजू] १ भुजा। बाँह। २ बाजूबद।

बाजू—पु०[फा० बाजू] १ भुजा। बाहु। बाँह। २ वह जो हाथ की तरह सदा साथ रहता और पूरी सहायता देता हो। ३ किसी चीज का कोई विशिष्ट अग या पक्ष। पार्श्व। ४ पक्षियो का डैना। ५ बाजूबद नाम का गहना। ६ उक्त गहने के आकार का गोदना।

बाजूबद—पु०[फा० बाजूबद] बाँह पर पहनने का एक प्रकार का गहना। भुजबद।

बाजूबीर—पु०=बाजूबद।

बाजोटा—पु०[स० वाद्य+पट्ट] १ चौकी। २ बैठने की ऊँची जगह। (राज०) उदा०—वाजोटा ऊपरि गादी बैठी।—प्रिथीराज।

बाझ—अव्य०[स० वर्जन] बगैर। बिना । उदा०—भिस्त न मेरे चाहिए बाझ पियारे तुज्झ।—कबीर।

बाझन—स्त्री०[हि० बझना=फँसना] १ बझने या फँसने की क्रिया या भाव। फँसावट। २. उलझन। पेच। ३. झझट। बखेडा। ४ लडाई-झगडा।

बाझना—अ० [हि० बझना] १ उलझना। फँसना। बझना। २ गुत्थम-गुत्था या हाथा-बाँही होना। ३ दे० 'बझना'।

बाट—पु०[स० वाट=मार्ग] रास्ता।

पद—बाट घाट=नगर या बस्ती के इधर-उधर के छोटे-मोटे सभी प्रकार के स्थान।

मुहा०—**बाट करना**=रास्ता खोलना। मार्ग बनाना। **बाट काटना**=चलकर रास्ता पार करना। **बाट जोहना या देखना**=प्रतीक्षा करना। आसरा या रास्ता देखना। **(किसी के) बाट पड़ना**=(क) रास्ते मे आ-आकर बाधा देना। तग करना। पीछे पड़ना। (ख) रास्ते मे डाकुओ का आकर लूट लेना। डाका पड़ना। **बाट पारना**=रास्ते में यात्रियो को लूटना। डाका डालना। **(किसी को) बाट लगाना** (क) ठीक रास्ता बतलाना या ठीक रास्ते पर लाना। (ख) काम करने का ठीक ढग बतलाना। **बाट रोकना**=(क) मार्ग मे बाधा या रुकावट खडी करना। (ख) किसी के काम मे अड़चन खड़ी करना। बाधक होना।

पु०[स० वटक] १ पत्थर आदि का वह टुकडा जो चीजें तौलने के काम आता है। बटखरा।

मुहा०—**बाट हड़ना**=(क) इस बात की जाँच या परीक्षा करना कि कोई बटखरा तौल मे पूरा है या नही। (ख) किसी की प्रामाणिकता, सत्यता आदि की जाँच या परीक्षा करना। (ग) तग या परेशान करना। जैसे—रात दिन मुझसे बाट हड़ता है। (स्त्रियाँ)

२ पत्थर का वह टुकड़ा जिससे सिल पर कोई चीज पीसी जाती है। बट्टा।

स्त्री०[हि० बटना] १ डोरी, रस्सी आदि बटने की क्रिया या भाव। २ बटने के कारण डोरी, रस्सी आदि मे पडी हुई ऐंठन। बल।

स्त्री०[हि० बाटना=पीसना] बाटने अर्थात् पीसने की क्रिया, ढग या भाव

बाटकी—स्त्री०=बटलोई।

बाटना—स०[हि० बट्टा या बाट] सिल पर बट्टे आदि से पीसना। चूर्ण करना। उदा०—यों रहीम जस होतु है उपकारी के सग, बाटन वारे कै लगै ज्यो मेहदी को रग।—रहीम।

†स०=बटना (बल देना)।

†पु०=बटना।

बाटली—स्त्री [अ० बटलाइन] जहाज के पाल मे ऊपर की ओर लगा हुआ वह रस्सा जो मस्तूल के ऊपर से होकर फिर नीचे की ओर आता है। इसी को खीचकर पाल तानते हैं। (लश०)

†स्त्री०=बोतल।

बाटिका—स्त्री०[सं० वाटिका] १. छोटा बगीचा जिसमे शोभा के लिए फूल तथा फलो के छोटे-मोटे पौधे लगाये गये हों। २ गद्य काव्य का एक भेद।

बाटी—स्त्री०[स० वटी] १. गोली। पिंड। २ उपलो या अगारो पर सेका हुआ आटे का गोलाकार लोंदा।

†स्त्री०[प०] चौड़े मुँहवाली एक तरह की बडी कटोरी।

बाड़—स्त्री०=बाढ। उदा०—यह ससार बाड का काँटा।—मीराँ।

बाडकिन—पु० [अं०] १ छापेखाने मे काम आनेवाला एक प्रकार का सूआ जिसमे पीछे की ओर लकड़ी का दस्ता लगा रहता है। २ दफ्तरी खाने मे काम आनेवाला एक प्रकार का सूआ जिससे दफ्ती आदि मे छेद किया जाता है।

बाड़ना†—स० [हि० बडना=घुसना या पैठना का स०] अन्दर प्रविष्ट करना। घुसाना। (पश्चिम)

बाड़व—पु० [स० बड़वा+अण्] १ ब्राह्मण। २ घोडियों का झुड। ३ बडवानल।

वि० बडवा-सम्बन्धी।

बाड़व-अनल—पु०=बडवानल।

बाड़व-वह्नि—स्त्री०=बडवानल।

बाड़ा—पु० [सं० वाट] १ चारों ओर से घिरा हुआ कुछ विस्तृत खाली स्थान। २. वह स्थान जहाँ पर पशु आदि घेरकर या बद करके रखे जाते हो। पशुशाला।

बाड़ि—स्त्री०=बाडिस।

बाडिस—स्त्री० [अ०] स्त्रियों के पहनने की एक प्रकार की अगरेजी ढग की कुरती।

बाडी—स्त्री०=बाडिस।

बाड़ी—स्त्री० [स० वारी] १ वाटिका। बारी। फुलवारी। २. घर। मकान। (पूरब) जैसे—ठाकुरबाड़ी। ३. कपास का खेत। (पश्चिम)

†स्त्री० [?] कपास।

बाडी-गार्ड—पु०=अंग रक्षक। (दे०)

बाड़ौ*—पु०=बाड़व।

बाढ़—स्त्री० [हिं० बढ़ना] १ बढ़ने की क्रिया या भाव। बढ़ाव। वृद्धि। जैसे—पेड़-पौधों की बाढ़।

मुहा०—**बाढ़ पर आना**=ऐसी अवस्था में आना कि निरन्तर वृद्धि होती रहे। जैसे—अब यह पेड़ बाढ़ पर आया है।

२. नदी-नाले की वह स्थिति जब उसका पानी किनारों के बाहर बहने लगता है और आस-पास के झोंपड़ों, मकानों, फसलों, पशुओं आदि को बहाने लगता है।

क्रि० प्र०—आना।—उतरना।

३. कँटीले पौधों आदि की वह लंबी पंक्ति जो खेतो, बगीचों आदि मे इसलिए लगाई जाती है कि पशु आदि अन्दर न आ सके।

क्रि० प्र०—रूँधना।—लगाना।

४. कुछ विशिष्ट प्रकार की चीजों में किनारे या सिरे पर की ऊँचाई। जैसे—टोपी या थाली की बाढ़। ५. व्यापार आदि में अधिकता से होनेवाला लाभ या वृद्धि। ६. किसी प्रकार का जोर या तेजी। प्रबलता। ७. तोप, बन्दूक आदि से गोलों-गोलियों का निरन्तर छूटते रहना। ८ उक्त से लगातार होता रहनेवाला प्रहार। जैसे—तोपों की बाढ के सामने शत्रु सेना न ठहर सकी।

क्रि० प्र०—दगना।—दागना।

स्त्री० [सं० वाट, हिं० बारी] कुछ विशिष्ट प्रकार के हथियारों की धार जिससे चीजें कटती हैं। जैसे—कैंची, छुरी या तलवार की बाढ।

मुहा०—**बाढ़ रखना**=उक्त चीजों को सान पर चढ़ाकर उनकी धार तेज करना।

†पु०=टाँड (बाँह पर पहनने का गहना)।

बाढ़ काढ़—स्त्री० [हिं० बाढ़=हथियार की धार] १. तलवार। २. खड्ग। खाँड़ा। (डिं०)

बाढ़ना—स० [हिं० बाढ=धार] १. धारदार चीज से काटना। मार डालना। वध या हत्या करना। ३. नष्ट या बरबाद करना। †अ०=बढ़ना।

बाढ़ाली—स्त्री० [हिं० बाढ़=धार] १. तलवार। २. खड्ग। खाँडा। (राज०)

बाढ़ि—स्त्री०=बाढ़।

बाढ़ी—स्त्री० [हिं० बढ़ना या बाढ़] १. बढ़ती। वृद्धि। २. वह ब्याज जो किसी को अन्न उधार देने पर मिलता है। ३. उधार दिया या लिया हुआ ऐसा ऋण जिसका सूद दिन पर दिन बढ़ता चलता हो। जैसे—वह उधार बाढ़ी का काम करता है। ४. व्यापार में होनेवाला लाभ। मुनाफा। ५ पानी की बाढ़।

बाढ़ीवान्—पु० [हिं० बाढ़=धार+सं० वान्] वह जो छुरी, कैंची आदि सान पर चढ़ाकर उनकी धार तेज करता हो। औजारों पर सान रखनेवाला।

बाण—पु० [सं०√बण् (शब्द)+घञ्] १. एक प्रकार का नुकीला अस्त्र जो कमान या धनुष पर चढ़ाकर चलाया जाता है। तीर। शर। सायक। २. उक्त का अगला नुकीला भाग जो जाकर शरीर के अन्दर धँस जाता है। ३ वह चीज जिसे बेधने के उद्देश्य से बाण या तीर चलाया जाता है। निशाना। लक्ष्य। ४. कामदेव के प्रसिद्ध पाँच बाणों के आधार पर पाँच की सख्या का वाचक शब्द। ५. गाय का थन। ६. अग्नि। आग। ७ रामसर। सरपत। ८ नीली कटसरैया। ९ दे० 'बाणभट्ट'।

बाण गंगा—स्त्री० [स० मध्य० स०] हिमालय के सोमेश्वर गिरि से निकली हुई एक प्रसिद्ध नदी।

बाण गोचर—पु० [ष० त०] उतनी दूरी जितनी कोई बाण छूटने पर पार करता है। बाण की पहुँच या मार तक की दूरी।

बाण-पति—पु० [ष० त०] बाणासुर के स्वामी महादेव। (डिं०)

बाण-पाणि—वि० [ब० स०] बाणों से लैस।

बाणपुर—पु० [ष० त०] शोणितपुर (आधुनिक तेजपुर, आसाम) जो बाणासुर की राजधानी थी।

बाणरेखा—स्त्री० [तृ० त०] बाण से शरीर पर होनेवाला लंबा घाव।

बाणलिंग—पु० [मध्य० स०] नर्मदा मे मिलनेवाला एक प्रकार का सफेद पत्थर जिसका शिवलिंग बनता है।

बाणविद्या—स्त्री० [ष० त०] वह विद्या जिससे बाण चलाना आवे। बाण चलाने की विद्या। तीरदाजी।

बाणवृष्टि—स्त्री० [ष० त०] लगातार बाण चलाते रहना। बाणों की वर्षा।

बाणावती—स्त्री० [स०] बाणासुर की पत्नी का नाम।

बाणावलि—स्त्री० [स० बाण-अवलि, ष० त०] १ बाणों की पंक्ति। २ शत्रुओं पर होनेवाली बाणों या तीरों की बौछार।

बाणाश्रय—पु० [सं० बाण-आश्रय, ष० त०] तरकश।

बाणासन—पु० [स० बाण-आसन, ष० त०] धनुष।

बाणासुर—पु० [स० बाण-असुर, कर्म० स०] राजा बलि के सौ पुत्रों मे से सबसे बड़े पुत्र का नाम जो बहुत ही वीर, गुणी और सहस्रबाहु था।

बाणिज्य†—पु०=वाणिज्य।

बात—स्त्री० [सं० वार्ता] १. किसी से अथवा किसी विषय में कहा जानेवाला कोई सार्थक वाक्य। कथन। वचन। वाणी। जैसे—तुम तो मुँह से बात भी नही निकालने देते।

क्रि० प्र०—कहना।—निकलना।—निकालना।

मुहा०—**(मुँह से) बात न निकलना**=मुँह से शब्द तक न निकलना। चुप या मौन हो जाना। **(मुँह से) बात फूटना**=मुँह से बात या शब्द निकलना।

२ किसी विशिष्ट उद्देश्य से या अपने मन का भाव प्रकट करने के लिए किया जानेवाला कथन।

पद—**बात कहते**=उतनी थोड़ी देर मे जितनी में मुँह से कोई बात निकलती है। पल भर मे। चटपट। तुरंत। **बात का कच्चा या हेठा**=वह जिसके कथन या बात का सहसा विश्वास न किया जा सकता हो। प्रतिज्ञा, वचन आदि का ध्यान न रखनेवाला। **बात का धनी, पक्का या पूरा**=वह जो अपने कथन, प्रतिज्ञा, वचन आदि का पूरी तरह से पालन करता हो। **बात का बतंगड़**=साधारण सी बात को व्यर्थ

बहुत बढ़ा-चढ़ाकर झंझट या झगडे-बखेडे का दिया जानेवाला रूप। **बात की बात मे**=बहुत थोडी देर मे। क्षणभर मे। **बात बात पर**=(क) प्रत्येक प्रसग पर। थोडा सा भी कुछ होने पर। हर काम मे। (ख) दे० 'बात बात मे'। **बात बात में**--(क) जो कुछ कहा जाता हो प्राय उन सब मे। प्राय हर बात मे। जैसे---वह बात बात मे झूठ बोलता है। (ख) बार बार। हर बार। (ग) दे० 'बात बात पर'। **बात है** कथन मात्र है। सत्य नही है। ठीक नहीं है। जैसे---वे निराहार रहते है, यह तो बात है। **बातो का धनी** वह जो बाते तो बहुत-सी कह जाता हो, पर करता-धरता कुछ भी न हो। (व्यग्य) मुहा०---**(किसी की) बात उठाना**--(क) किसी के आदेश, कथन आदि की अवज्ञा करना अथवा उसका पालन न करना। बात न मानना। (ख) किसी की कठोर बाते सहना। **(अपनी) बात उलटना**=एक बार कुछ कहकर फिर दूसरी बार कुछ और कहना। बात पलटना। **(किसी की) बात उलटना**=किसी की कही हुई बात के उत्तर मे उसके विरुद्ध बात कहना। किसी की बात का अशालीनता या उद्दडतापूर्वक उत्तर देना। **(किसी की) बात काटना** (क) किसी के बोलते समय बीच मे बोल उठना। बात मे दखल देना। (ख) किसी के कथन या मत का खडन या विरोध करना। **बात खाली जाना**=अनुरोध, आग्रह, प्रार्थना आदि का माना न जाना अथवा निष्फल सिद्ध होना। **बात गढ़ना**--झूठ बात कहना। मिथ्या प्रसग की उद्भावना करना। बात बनाना। **बात घूंटना या घूंट जाना**--दे० नीचे 'बात पी जाना।' **बात चबा जाना**=(क) कुछ कहते कहते रुक जाना। (ख) एक बार कही हुई बात को छिपाने या दबाने के लिए किसी दूसरे या बदले हुए रूप मे कहना। **(मन में कोई) बात जमना या बैठना**=अच्छी तरह समझ मे आ जाना कि जो कुछ हमसे कहा गया है, वह ठीक है। **बात टलना**=कथन का अन्यथा सिद्ध होना। जैसा कहा गया हो, वैसा न होना। **(किसी की) बात टालना**--(क) पूछी हुई बात का ठीक जवाब न देकर इधर-उधर की और बात कहना। सुनी-अनसुनी करना। (ख) किसी के आदेश, कथन आदि की अवज्ञा करते हुए उसका पालन न करना। **(किसी की) बात डालना**=कहना न मानना। कथन का पालन न करना। जैसे---उनकी बात इस तरह टाली नही जा सकती। **(किसी की) बात दोहराना**--किसी की कही हुई बात का उलटकर जवाब देना। जैसे---बडो की बात दोहराते हो! **(किसी से) बात न करना** (क) घमड के मारे किसी से बात-चीत करने को भी तैयार न होना। (ख) किसी को इतना तुच्छ या हीन समझना कि उससे बाते करने मे भी अपना अपमान प्रतीत होता हो। **(किसी की) बात नीचे डालना** किसी की बात पर ध्यान न देकर उसकी अवज्ञा करना। **(किसी की) बात पकड़ना**--किसी के कथन मे पारस्परिक विरोध या दोष दिखाना। किसी के कथन को उसी के कथन द्वारा अयुक्त सिद्ध करना। **(किसी की) बात या (बातों) पर जाना**=(क) बात का खयाल करना। बात पर ध्यान देना। जैसे---तुम भी लडको की बात पर जाते हो। (ख) किसी के कहने के अनुसार या भरोसे पर कोई काम करना। **बात पलटना**--दे० नीचे 'बात बदलना'। **बात पी जाना**=(क) कोई अनुचित या अप्रिय घटना होने पर भी या इस प्रकार की कोई बात सुनकर भी उस पर ध्यान न देना। (ख) किसी कारण-वश कोई सुनी हुई बात अपने मन मे ही रखना, दूसरो पर प्रकट न करना। **(किसी पर) बात फेंकना**=व्यंग्यपूर्ण बात कहना। बोली बोलना। **बात फेरना**--(क) चलते हुए प्रसग को बीच से उड़ाकर कोई और बात छेड़ना। बात पलटना। (ख) किसी बात का समर्थन करते हुए उसकी प्रामाणिकता या महत्त्व बढाना। **बात बढ़ना** साधारण सी बात का ऐसा रूप धारण करना कि झगडा-तकरार होने लगे। किसी बात का उग्र या विकट रूप धारण करना। **(किसी की) बात बढ़ाना** किसी के कथन की पुष्टि या समर्थन करना अथवा उसका महत्त्व बढ़ाना। **(कोई) बात बढ़ाना**-किसी घटना, प्रसग या विषय का व्यर्थ विस्तार करके उसे अनावश्यक तथा अनुचित रूप से उग्र या विकट रूप देना। फजूल का तूल देना। **बात बदलना**- गढकर एक बार कोई बात कहना, और तब उससे मुकरने के लिए और बात कहना। **बात बनाना**--किसी कही हुई बात से अपनी हानि होते देखकर उसे बदलने और अपने अनुकूल करने के लिए कोई नई बात कहना। **बात (या बातें) मारना** -(क) असल बात छिपाने के लिए इधर-उधर की बाते करना। **(किसी पर) बात मारना** व्यग्यपूर्ण बात कहना। बोली बोलना। **बात मुंह पर लाना** चार आदमियो के सामने कोई बात कहना। **बात मे बात निकालना**=बाल की खाल निकालना। किसी के कथन मे यो ही या व्यर्थ के दोष निकालना। **(अपनी) बात रखना**--(क) अपने कहे अनुसार करना। जैसा कहा हो, वैसा करना। प्रतिज्ञा या वचन का पालन करना। (ख) अपने कथन या बात के सम्बन्ध मे अनुचित आग्रह या हठ करना। **(किसी की) बात रखना**--(क) कथन या आदेश का पालन करना। कहना मानना। (ख) किसी का आग्रह, प्रार्थना आदि मानकर उसकी इच्छा पूरी करना। **बातें छाँटना या बघारना**--(क) व्यर्थ तरह तरह की बाते कहना। (ख) बढ-बढकर बाते करना। डीग हाकना। **बाते बनाना** (क) झूठ-मूठ इधर-उधर की बाते कहना। (ख) बहानेबाजी या हीला-हवाली करना। (ग) किसी को अनुरक्त या प्रसन्न करने के लिए चापलूसी की बाते कहना। **बातें मिलाना**--(क) किसी को प्रसन्न करने के लिए उसकी हाँ मे हाँ मिलाना। (ख) अपना दोष या भूल छिपाने के लिए इधर-उधर की बाते करना। **(किसी की) बातें सुनना**=कठोर वचन या डाँट-फटकार सुनना। जैसे---यदि तुम ठीक तरह से रहते तो आज तुम्हे इतनी बाते न सुननी पडती। **(किसी को) बातें सुनना**-ऊँची-नीची या खरी-खोटी बाते कहना। कठोरतापूर्वक डाँटना-फटकारना। **बातो मे उड़ाना** (क) इधर-उधर की या व्यर्थ बाते कहकर असल बात दबाने का प्रयत्न करना। (ख) हँसी उडाते या तुच्छ ठहराते हुए टाल-मटोल करना। **बातों में फुसलाना या बहलाना** किसी को केवल झूठा आश्वासन देकर उसका ध्यान किसी दूसरी ओर ले जाना।

३ दो या अधिक आदमियो मे किसी विषय पर होनेवाला कथोपकथन। वार्तालाप। जैसे---आज तो बातो ही मे दो घटे बीत गये।

पद---बात-चीत। (देखें) **बातो बातों में**-बात-चीत करते हुए। कथोपकथन के प्रसग मे। जैसे---बातो ही बातो मे वह बिगड खडा हुआ।

४ किसी के साथ कोई व्यवहार सम्पन्न करने अथवा कोई सबध स्थापित या स्थिर करने के लिए चलनेवाला कथोपकथन, प्रसग या

वार्तालाप। जैसे—(क) काम-धन्धे या रोजगार की बात। (ख) ब्याह-शादी की बात।

मुहा०—बात ठहरना=किसी विषय में यह स्थिर होना कि ऐसा होगा। मामला तै होना। **बात डालना**=प्रस्ताव के रूप में किसी के सामने कोई विषय उपस्थित करना। मामला पेश करना। जैसे—चार भले आदमियो के बीच में यह बात डालकर निपटा लो। **(अपनी) बात पर आना या रहना**—अपने कहे हुए वचन के अनुसार ही काम करने के लिए प्रस्तुत होना या रहना। यह आग्रह या हठ करना कि जैसा मैंने कहा, वैसा ही हो। **बात लगाना** विवाह सबंध स्थिर करने के लिए कही कहना, सुनना या प्रस्ताव रखना। **बात हारना**=ऐसी स्थिति मे होना कि अपनी कही हुई बात या दिये हुए वचन का पालन करना आवश्यक हो जाय। जैसे—मैं तो उनसे बात हार चुका हूँ, अब इधर-उधर नहीं हो सकता।

५. सामान्य रूप से होनेवाली किसी विषय की चर्चा। जिक्र।

क्रि० प्र०—आना। —उठना। —चलना। —छिड़ना। —पडना।

मुहा०—बात चलाना, छेड़ना या निकालना—ऐसा प्रसग उपस्थित करना कि किसी विषय या व्यक्ति के सबध में कुछ बाते हों। चर्चा या जिक्र चलाना। **बात पडना**=किसी विषय का प्रसग प्राप्त होना। चर्चा आरम होना। जैसे—बात पडी, इसलिए मैंने कहा, नही तो मुझ से क्या मतलब ? **बात मुंह पर लाना**—(किसी विषय की) चर्चा कर बैठना। जैसे—किसी के सामने ऐसी बात मुंह पर नही लानी चाहिए।

६ कोई ऐसा कार्य या घटना जिसकी लोगो मे विशेष चर्चा हो। लोक मे प्रचलित कोई प्रसग।

मुहा०—बात उड़ना या फैलना=चारों ओर या बहुत से लोगों में चर्चा होना। **बात नाचना**=बात चारों ओर प्रसिद्ध होना या बहुत अच्छी तरह फैलना। विशेष प्रसिद्ध होना। उदा०—मेरे ख्याल परौ जनि कोऊ बात दसों दिसि नाची।—हितहरिवश। **बात बहना**—किसी बात की चर्चा चारों ओर फैलना। उदा०—जो हम सुनति रही सो नाही, ऐसे ही यह बात बहानी।—सूर।

७ ऐसा कथन या कार्य जो ठीक या प्रामाणिक माना जा सकता हो अथवा सभी दृष्टियों से उचित समझा जा सकता हो। जैसे—भला यह भी कोई बात है। ८. विशेष महत्त्व का कोई कथन अथवा दृढ़, निश्चित या प्रामाणिक मत, विचार या सिद्धान्त।

मुहा०—बात (किसी के) कान पड़ना=बात का किसी के द्वारा इस प्रकार सुना जाना कि वह उसका भेद समझ जाय और उससे अनुचित लाभ उठा सके। जैसे—जहाँ यह बात किसी के कान पडी, तहाँ सारा काम बिगड़ जायगा।

९ किसी विषय मे किसी की कोई आज्ञा, आदेश, या उपदेश। नसीहत। सीख। जैसे—बड़ों की बात माननी चाहिए।

मुहा०—(किसी की) बात आँचल या गाँठ में बाँधना—अच्छी तरह और सदा के लिए अपने ध्यान या मन मे बैठाना। उपभोग या व्यवहार मे लाने के लिए अच्छी तरह याद रखना। जैसे—हमारी यह नसीहत गाँठ में बाँध रखो, नही तो किसी समय बहुत पछताओगे।

१०. किसी काम या चीज में होनेवाला कोई विशिष्ट गुण या तत्व। जैसे—उसमे अगर कुछ बुरी बाते हैं तो कई अच्छी बातें भी हैं।

११. कोई उक्ति, कथन या कार्य जिसमें कुछ विशिष्ट कौशल या चमत्कार हो, अथवा जिससे प्रभावित होकर लोग प्रशंसा करें। जैसे—(क) उनकी हर बात मे एक बात होती है। (ख) वे साधारण कामों में भी एक नई बात पैदा कर देते है। (ग) तुम भी इन्ही की तरह काम करके दिखलाओ, तब बात है। (घ) उसे हराना कोई बडी बात नही है। उदा०—कितक बात यह धनुष रुद्र को सकल विश्व कर लैहो।—सूर।

पद—क्या बात है!—बहुत प्रशसनीय काम या बात है। (साधारण रूप में भी और व्यंग्य के रूप मे भी) जैसे—(क) क्या बात है! बहुत सुन्दर चित्र बनाया है। (ख) आप बहुत बहादुर है, क्या बात है!

१२. कोई ऐसा कार्य या घटना जिससे कोई विशेष महत्त्व का प्रयोजन सिद्ध होता हो। जैसे—(क) ये सब झगडा छोड़ो, काम (या मतलब) की बात करो।

क्रि० प्र०—करना।—कहना।—बनना।—बनाना।—बिगड़ना।—बिगाडना।—होना।

१३. किसी के कथन, वचन, व्यवहार आदि की प्रामाणिकता। प्रतीति। साख। जैसे—(क) बाजार मे उनकी बडी बात है। (ख) अब तुम बहुत झूठ बोलने लगे हो, इससे मित्र-मडली मे तुम्हारी वह बात नही रह गई।

क्रि० प्र०—खोना।—गँवाना।—बनना। —बनाना।

मुहा०—(किसी की) बात जाना=बात की प्रामाणिकता नष्ट हो जाना। एतबार या विश्वास न रह जाना। **बात हेठी होना**=बात की प्रामाणिकता या साख न रह जाना। विश्वास उठ जाने के कारण प्रतिष्ठा या मान मे बहुत कमी होना।

१४. किसी के गुण, महत्त्व आदि के विचार से उसके प्रति मन मे उत्पन्न होनेवाला आदर-भाव।

मुहा०—बात न पूछना=अवज्ञा के कारण ध्यान न देना। तुच्छ समझकर बात तक न करना। कुछ भी कदर न करना। जैसे—तुम्हारी यही चाल रही तो मारे मारे फिरोगे, कोई बात न पूछेगा। उदा०—सिर हेठ ऊपर चरन सकट, बात नहिं पूछै कोऊ।—तुलसी। **बात न पूछना**=दशा पर ध्यान न देना। खयाल न करना। परवाह न करना। उदा०—मीन वियोग न सहि सकै नीर न पूछै बात।—सूर। **बात पूछना**—(क) खोज रखना। खबर लेना। सुख या दुख है, इसका ध्यान रखना। (ख) आदर या कदर करना।

१५ लोक या समाज मे होनेवाली प्रतिष्ठा या मान-मर्यादा। धाक। जैसे—बिरादरी (या शहर) मे उनकी बड़ी बात है।

क्रि० प्र०—खोना।—गँवाना।—जाना।—बनना —बनाना।—बिगडना।—बिगाडना।—रखना।—रहना।

१६. मन मे छिपा हुआ अभिप्राय या आशय। मन का गूढ़ भाव या विचार। जैसे—तुम्हारे मन की बात कोई कैसे जाने।

मुहा०—(मन में कोई) बात खोलना किसी अभिप्राय या उद्देश्य के सिद्ध न हो सकने पर मन ही मन उसके सम्बन्ध में उद्वेग बना रहना। **(मन में कोई) बात रखना**—अपना अभिप्राय या उद्देश्य किसी पर प्रकट न होने देना।

१७. कोई गुप्त या रहस्यमय तत्त्व या तथ्य। भेद या मर्म का प्रसग या विषय। जैसे—(क) उसका आना मतलब से खाली नही है, जरूर इसमे कोई

बात है। (ख) उसने मुझे ऐसी बात बतलाई कि मेरी आँखे खुल गईं।
मुहा०—**बात खुलना या फूटना**= भेद, मर्म या रहस्य प्रकट होना। **बात (या बात की तह) तक पहुँचना** दे० नीचे 'बात पाना'। **बात पाना**- असल मतलब या गूढ तत्त्व समझ जाना।
१८ कोई ऐसा अनुचित कथन या कार्य जिससे किसी पर कोई दोष या लाछन लगता या लग सकता हो।
मुहा०—**(किसी पर) बात आना** ऐसी स्थिति होना कि किसी पर कोई दोष या लाछन लग सकता हो। **(किसी पर कोई) बात रखना, लगाना या लाना** किसी को दोषी सिद्ध करने का प्रयत्न करना। कलक या दोष की बात किसी के सिर पर मढना।
१९. कोई ऐसा कथन या बात जो किसी को धोखा देकर अपना कोई दुष्ट उद्देश्य सिद्ध करने के लिए की जाय। जैसे—उनकी बातो मे मत आना, नही तो पछताओगे।
मुहा०—**बातें बनाना** किसी को कौशलपूर्वक अपने अनुकूल करने के लिए तरह-तरह की झूठी या बनावटी बाते कहना। **(किसी की) बात (या बातो) पर जाना** = (किसी की) बात (या बातो) मे आना। **(किसी की) बात या बातों में आना** किसी की बातो पर विश्वास करके उनके अनुसार आचरण या व्यवहार करना। **बात लगाना** किसी को हानि पहुँचाने के उद्देश्य से किसी दूसरे से उसकी कोई बात कहना। **बातों में लगाना** किसी का ध्यान बँटाने या उसे किसी और प्रवृत्त होने से रोकने के लिए छलपूर्वक उससे इधर-उधर की बाते छेडना। जैसे—इधर तो उसने मुझे बातो मे लगा रखा, और उधर अपना आदमी भेजकर अपना काम करा लिया।
२० ऐसा झूठा या बनावटी कथन जो किसी को धोखा देने के लिए हो या जिसमे कोई बहानेबाजी हो। जैसे—यह सब उसकी बात (या बाते) है। २१ अपनी हैसियत, योग्यता, गुण, सामर्थ्य, आदि के सबध मे बढा-चढाकर किया जानेवाला उल्लेख। जैसे—अब तो वह बहुत लबी-चौडी बाते करता है।
†पु० बात।

बात-चीत—स्त्री० [हिं० बात+स० चितन ?] १ दो या अधिक व्यक्तियों, पक्षो आदि मे परस्पर होनेवाली औपचारिक तथा मौखिक बाते। वार्तालाप। २ लेन-देन, समझौता, सधि आदि करने के उद्देश्य से होनेवाली मौखिक बाते या लिखा-पढी। जैसे—ठेके की बात-चीत चल रही है।

बातड—वि० [स० वातुल] १ वायु-युक्त। वायुवाला। २. बात का प्रकोप उत्पन्न करनेवाला।

बातप—पु० [स० वाताप] हिरन। (अनेकार्थ०)

बातफरोश—पु० [हिं० बात+फा० फरोश] [भाव० बात-फरोशी] वह जो केवल उटपटाग या व्यर्थ की बाते गढ-गढकर सुनाता और उन्ही के भरोसे अपने सब काम चलाता हो।

बात-बनाऊ—वि० [हिं० बात+बनाना] १ झूठ-मूठ व्यर्थ की बाते बनानेवाला। २ दूसरो का काम पूरा करनेवाला।

बातर—पु० [देश०] पजाब मे धान बोने का एक प्रकार।

बातला—पु० [स० वात] एक प्रकार का योनि रोग जिसमे सुई चुभने की-सी पीडा होती है।

बाताबी—पु० [बटेविया देश०] चकोतरा।

बातास†—पु० [स० वात] हवा। वायु।

बातिन—पु० [अ०] [वि० बातिनी] १. किसी चीज का भीतरी भाग। २ अन्तःकरण।

बातिनी—वि० [अ०] १ भीतरी। २ अन्तःकरण का।

बातिल—वि० [अ०] १ जो सत्य न हो। झूठ। मिथ्या। २. निकम्मा। रद्दी। व्यर्थ। ३ नियम-विरुद्ध।

बाती—स्त्री० [स० वर्ती] १ वह लकडी जो पान के खेत के ऊपर बिछाकर छप्पर छाते है। २ दे० 'बत्ती'।
†स्त्री० =बात।

बातुल—वि० [स० वातुल] पागल। सनकी।
वि० [हिं० बात] १ बहुत बातें करनेवाला। बकवादी। २ बहुत बाते बनानेवाला। बातूनी।

बातूनिया—वि०=बातूनी।

बातूनी—वि० [हिं० बात+ऊनी] (प्रत्य०)] १. जिसे बाते करने का चस्का हो। २ बहुत बढ-चढकर और व्यर्थ की बाते करनेवाला।

बाथ—पु० [?] अँकवार। अक। उदा०—दृग मीचत मृग लोचनी धरयो उलटि भुज बाथ।—बिहारी।

बाथू—पु० [स० वस्तुक, प्रा० वत्थु] बथुआ नाम का साग।

बाद—पु० [स० वाद] १ खडन-मडन की बात-चीत। तर्क-वितर्क। बहस-मुबाहसा। २ झगडा। तकरार। वाद-विवाद।
क्रि० प्र०—बढाना।
३ नाना प्रकार के तर्क-वितर्कों के द्वारा बात का किया जानेवाला व्यर्थ का विस्तार। उदा०—त्यो पद्माकर वेद पुरान पढयो पढि के बहु बाद बढायो।—पद्माकर।
४ प्रतिज्ञा। ५. बाजी। होड।
मुहा०—**बाद मेलना**=शर्त बदना। बाजी लगाना।
अव्य० [स० वाद, हिं० बादि=बाद करके, हठ करके, व्यर्थ] निष्प्रयोजन। बिना मतलब। व्यर्थ।
अव्य० [अ०] १. पश्चात्। अनतर। पीछे। २ अतिरिक्त। सिवा।
वि० किसी प्रकार के वर्ग से अलग किया या निकाला हुआ। जैसे—आमदनी मे से खरच बाद करना, दाम मे से लागत बाद करना।
क्रि० प्र०—करना।—देना।
पु० १. छूट या दस्तूरी जो दाम मे से काटी जाती हो। २ किसी अच्छी चीज मे की वह घटिया मिलावट जो निकाली जाती हो या जिसके विचार से चीज का दाम घटता हो। जैसे—इस सोने मे दो रत्ती टाँका (या ताँबा) बाद जायगा। ४ देन, मूल्य आदि की वह कमी जो किसी चीज के खराब होने या बिगडने के फल-स्वरूप की जाती है। जैसे—पाले के कारण फसल मे चार आने बाद है। (पूरब)
पु० [स० वात से फा०] बात। हवा।
†पु०=वाद्य।

बाद-कश—पु० [फा०] १ छत से लटकाने का पंखा। २ धौंकनी।

बाद-गर्द—पु० [फा०] बवडर। बगूला।

बादना—अ० [स० वाद+हिं० ना (प्रत्य०)] १ बकवाद करना।

२ तर्क-वितर्क करना। ३ झगड़ा या तकरार करना। जैसे—काहुहि बादिन देइअ दोषू।—तुलसी। ४ बढ़-बढ़कर बातें करना। उदा०—बादत बड़े सूर की नाईं, अबहिं लेत हौं प्रान तुम्हारे।—सूर। ५. ललकारना।

बादनुमा—पु० [फा०] वायु के प्रवाह की दिशा सूचित करनेवाला एक प्रकार का यन्त्र। पवन-प्रचार।

बादबान—पु० [फा०] नाव या जहाज का पाल। पोत-पट। मरुत्पट।

बादबानी—वि० [फा०] १. बादबान संबंधी। २. जिसमें बादबान लगाया जाता है। बादबान के द्वारा चलनेवाला।

बादर—वि० [सं०] १. बदर या बेर नामक फल का, उससे उत्पन्न या उससे सम्बन्ध रखनेवाला। २. कपास या रूई से सम्बन्ध रखने या उससे बननेवाला। ३. भारी या मोटा। बारीक, या सूक्ष्म का विपर्याय।

पु० नैऋत्य कोण का एक देश। (बृहत्संहिता)

पु० [?] १ कपास का पौधा। २. कपास या रूई से बना हुआ। कपड़ा।

†वि० [?] आनंदित। प्रसन्न।

†पु०=बादल (मेघ)।

बादरा—स्त्री० [सं० बादर+टाप्] १ बदरी या बेर का पेड़। २. कपास का पौधा। ३ जल। पानी। ४. रेशम। ५. दक्षिणावर्त शंख।

†पु०=बादल।

बादरायण—पु० [सं० बदरी+फक्—आयन] वेदव्यास का एक नाम।

बादरायण संबंध—पुं० [कर्म० सं० ?] बहुत खींचतानकर जोड़ा हुआ नाम मात्र का संबंध। बहुत दूर का लगाव या सम्बन्ध।

बादरायण-सूत्र—पु० [मध्य० सं०] ब्रह्मसूत्र।

बादरिया—स्त्री० =बदली (मेघ)।

बादरी—स्त्री० बदली (मेघ)।

बादल—पु० [सं० वारिद, हिं० बादर] १ आकाश में होनेवाला जल-कणों का वह जमाव जो वाष्प के हवा में घनीभूत होने पर होता है। मेघ। मुहा०—**बादलों का फट पड़ना**=ऐसी घोर या भीषण वर्षा जो प्रलय का-सा दृश्य उपस्थित कर दे। मेघस्फोट।

क्रि० प्र०—आना।—उठना।—उमड़ना।—गरजना।—घिरना।—चढ़ना।—छटना।—छाना।—फटना।

२. लाक्षणिक अर्थ में, चारों ओर छाया रहने या मँडरानेवाला तत्त्व या पदार्थ। जैसे—दुःख के बादल, धूएँ का बादल। ३. एक प्रकार का पत्थर। जिस पर बैंगनी रंग की बादल की-सी धारियाँ पड़ी होती है।

बादला—पुं० [हिं० पतला ?] सोने या चाँदी का चिपटा चमकीला तार जो गोटा बुनने या कलाबत्तू बटने और कपड़ों पर टाँकने के काम आता है। कामदानी का तार।

बादली—स्त्री० बदली।

बादशाह—पु० [फा०] १ वह जो किसी बड़े साम्राज्य का शासक या स्वामी हो। सम्राट्। २. वह जो किसी कला, कार्य, क्षेत्र या वर्ग में सबसे बहुत बढ़-चढ़कर हो। जैसे—शायरों का बादशाह, झूठों का बादशाह। ३. वह जिसका आचरण या व्यवहार बादशाहों की तरह उच्च, उदार या स्वेच्छाचारपूर्ण हो। जैसे—तबीयत का बादशाह। ४ शतरंज का एक मोहरा जो सब मोहरों में प्रधान होता है और किश्त लगने से पहले केवल एक बार घोड़े की चाल चलता है और दौड़-धूप से बचा रहता है। इसे केवल राह दी जा सकती है, यह मारा नहीं जाता। जब इसके चलने के लिए कोई घर नहीं रह जाता, तब खेल की हार मानी जाती है। ५. ताश का एक पत्ता जिस पर बादशाह की तस्वीर बनी रहती है।

बादशाही—वि० [फा०] १ बादशाह से संबंध रखनेवाला। २. बादशाहों की तरह का अर्थात् वैभवपूर्ण। जैसे—बादशाही ठाट। ३ शासन या राज्य-संबंधी।

स्त्री० १ बादशाह का राज्य या शासन। २ बादशाहों का-सा मन-माना आचरण या व्यवहार।

बाद-हवाई—क्रि० वि० [फा० बाद+हवा] फिजूल। व्यर्थ।

वि० १ (काम या बात) जिसका कोई सिर-पैर न हो। आधार, तत्त्व, सार आदि में बिलकुल रहित। जैसे—तुम तो यों ही बाद-हवाई बातें किया करते हो।

बादहि*—अव्य० [हिं० बाद=व्यर्थ] व्यर्थ ही।

बादाम—पु० [फा०] १ मझोले आकार का एक प्रकार का वृक्ष जो पश्चिमी एशिया में अधिकता से और पश्चिमी भारत (काश्मीर और पंजाब आदि) में कहीं कहीं होता है। २ उक्त वृक्ष का फल जो मेवों में गिना जाता है और जिसकी गिरी पौष्टिक होती है।

बादामा—पु० [फा० बादाम] १. एक प्रकार का रेशमी कपड़ा। २. मुसलमान फकीरों के पहनने की एक प्रकार की गुदड़ी।

बादामी—वि० [फा० बादाम+ई (प्रत्य०)] १ बादाम के ऊपरी कठोर छिलके के रंग का। २ बादाम के आकार-प्रकार का। लंबो-तरा। गोलाकार। जैसे—बादामी आँख, बादामी मोती।

पु० १. बादाम के छिलके की तरह का ऐसा लाल रंग जिसमें कुछ पीलापन भी मिला हो। २ एक प्रकार का धान। ३ एक प्रकार की लंबोतरी गोलाकार डिबिया जिसमें स्त्रियाँ गहने आदि रखती हैं। ४ बादशाही महलों में ऐसा हिजड़ा जिसकी इंद्रिय बहुत ही छोटी या बादाम की तरह होती थी। ५ बादाम के रंग का घोड़ा। ६. एक प्रकार की छोटी चिड़िया जो पानी के किनारे रहती है और मछलियाँ खाती हैं। किलकिला।

बादि—अव्य० [सं० वादि] व्यर्थ। निष्प्रयोजन। फिजूल। निष्फल।

पु० [सं० वाजिन्] घोड़ा। उदा०—बादि मेलि कै खेल पसारा।—जायसी।

बादित—भू० कृ०=वादित (बजाया हुआ)।

बादित्र—पु० =वादित्र।

बादिया—पु० [देश०] १. लोहारों का पेच बनाने का एक औजार। २ एक प्रकार का कटारा।

बादिहि—अव्य० [हिं० बाद+ही] व्यर्थ ही। उदा०—जनम तौ बादिहि गयौ सिराई।—सूर।

बादी—वि० [फा० बाद=हवा से] १. वात संबंधी। वायु-संबंधी। २ शरीर के वायु सम्बन्धी विकार के कारण होनेवाला। जैसे—बादी बवासीर। ३. शरीर में वात या वायु का विकार उत्पन्न करने-वाला। जैसे—मटर बहुत बादी होता है।

स्त्री० शरीर की वायु के बिगड़ने के कारण होनेवाला प्रकोप।

स्त्री० [देश०] लोहारों का वह औजार जिससे वे लोहे पर सिकली करते है।

वि०, पु०† वादी।

बादीगर—पु० =बाजीगर।

बादी-बवासीर—स्त्री० [हिं०] बवासीर के दो भेदो मे से एक जिसमे मस्सो मे से खून नही निकलता। (खूनी बवासीर से भिन्न)

बादुर—पु० [हिं० गादुर] चमगादड।

बादूना—पु० [देश०] हलवाइयो का एक उपकरण जो घेवर नाम की मिठाई बनाने के काम आता है।

बाध—पु० [स०√बाध् (रोकना)+घञ्] [वि० बाध्य, भाव० बाधता, कर्ता बाधक] १ अड़चन। बाधा। २ कठिनता। दिक्कत। मुश्किल। ३. साहित्य मे किसी कथन या प्रतिपादन मे आनेवाली वह असगति या कठिनता जो उसके अर्थ, आशय या वाक्य-रचना मे तर्क-सगत सम्बन्ध के अभाव के कारण स्पष्ट दिखाई देती है। जैसे—जहाँ वाच्यार्थ ग्रहण करने मे अर्थ की बाधा हो वहाँ लक्ष्यार्थ ग्रहण करना चाहिए। ४ तर्क या न्याय मे वह पक्ष जिसमे साध्य का अभाव-सा दिखाई देता हो। ५ आज कल किसी प्रकार की उन्नति, प्रगति आदि के मार्ग मे किसी विशिष्ट उद्देश्य से खडी की जानेवाली वह रुकावट जिसे पार करने के लिए विशिष्ट कार्यक्षमता योग्यता, स्थिति आदि दिखानी पडती हो। जैसे—बडी बडी सरकारी नौकरियो मे कर्मचारियो को समय समय पर कई बाध पार करने पडते है। (बार, उक्त सभी अर्थो मे) ६ कष्ट। पीडा।

पु० [स० बद्ध] [स्त्री० बाधी] मूँज की रस्सी जो प्राय. साधारण चारपाइयाँ बुनने के काम आती है।

बाधक—वि० [स० बाध् (रोकना)+ण्वुल्—अक] [स्त्री० बाधिका, भाव० बाधकता] १. बाधा के रूप मे होनेवाला। २. बाधा अर्थात् विघ्न उत्पन्न करनेवाला। ३ किसी काम मे अड़चन डालनेवाला। ४ ऐसा कष्टदायक जो कुछ हानिकारक भी हो।

पु० स्त्रियो का एक रोग जिसमे उन्हे सतति नही होती या सतति होने मे बडी पीडा या कठिनता होती है।

बाधकता—स्त्री० [स० बाधक+तल्+टाप्] १ बाधक होने की अवस्था या भाव। २ बाधा।

बाधण—पु० =बढना। उदा०—बाधण लागा बधाइहार।—प्रिथीराज।

स० =बाधना।

बाधन—पु० [स०√बाध् (रोकना)]+ल्युट्—अन] [वि० बाधित बाधनीय, बाध्य] १ बाधा या विघ्न उत्पन्न करने या रुकावट डालने की क्रिया या भाव। २ कष्ट देना। पीडित करना। ३ किसी अनुचित या निदनीय काम के सबध मे होनेवाली मनाही। ४. दे० 'अभिनिषेध'।

बाधना—स० [स० बाधन] १ बाधा डालना। रुकावट या विघ्न डालना। २ कष्ट देना पीडित करना।

स्त्री० बाधा। उदा०—नाम रूप ईश की बाधना।—निराला।

†स० [स० वर्द्धन] बढाना।

†अ० =बढना।

बाधयिता—पु० [स०√बाध् (रोकना)+णिच्+तृच्] वह जो दूसरो के काम या मार्ग मे बाधाएँ खडी करता हो।

बाधा—स्त्री० [स०√बाध्+अ+टाप्] १ वह बात या स्थिति जो किसी को आगे बढने अथवा कोई काम सपादित करने से रोकती है। उन्नति या प्रगति मे बाधक होनेवाला तत्त्व। (आब्स्टैकल)

क्रि० प्र०—डालना।—देना।—पडना।—पहुँचना।

२. कष्ट। सकट। ३ डर। भय। उदा०—कहु सठ तोहि न प्रान कै बाधा।—तुलसी। ४ भूत-प्रेत आदि के कारण होनेवाला कोई भौतिक या शारीरिक उपद्रव या कष्ट। जैसे—लोग कहते है कि उसे रोग नही है, कोई बाधा है।

†पु० [स० वृद्धि] १ बढती। वृद्धि। २ मुनाफा। लाभ। (पश्चिम)

बाधित—भू० कृ० [स०√बाध्+क्त] १ जिसके मार्ग मे बाधा खडी की गई हो। बाधा मे जिसका मार्ग अवरुद्ध हो। २. जो किसी प्रकार की बाधा, बधेज आदि के द्वारा परिमित या सीमित किया गया हो। (बार्ड) जैसे—अवधि-बाधित। ४ भूत-प्रेत आदि की बाधा से ग्रस्त। निषिद्ध ठहराया हुआ। ५ दे० 'अभिनिष्ठ'।

बाधिर्य—पु० [सं० बधिर+ष्यञ्] बधिरता (बहरापन)।

बाधी (धिन्)—वि० [स० बाध+इनि, दीर्घ, नलोप] बाधा देनेवाला। बाधक।

बाध्य—वि० [स० बाध् (रोकना)+ण्यत्] [भाव० बाध्यता] १ जिस पर कोई बाधा या बाधक तत्त्व लगा हो या लगाया गया हो। २ जो आज्ञा, नियम, मनोवेग, परिस्थिति आदि से कुछ करने मे विवश हो। मजबूर।

बाध्य-रेता (तस्)—पु० [स० ब० स०] क्लीब। नपुसक।

बान—पु० [स० बाण] १ बाण। तीर। २ उक्त के आकार की एक प्रकार की आतिशबाजी जो उडकर आकाश मे जाती और वहा फुल-झडियाँ छोडती हैं। ३ नदी, समुद्र आदि मे उठनेवाली ऊँची लहर। ४ वह छोटा डडा जिसके दोनो सिरो पर गोलाकार लट्टू लगे होते हैं और जिससे धुनकी (कमान) की ताँत को झटका देकर धुनिए रूई धुनते हैं।

पु० [स० वर्ण] १ रग। वर्ण। २ आभा। काति। चमक।

स्त्री० [हिं० बनना] १ ऐसा अभ्यास या आदत जो बनते बनते स्वभाव का अग बन गई हो। टेव। उदा०—होली के दिन गान न करिए, लाडली, कौन तिहारी बान। (होली)

क्रि० प्र०—डालना।—पडना।—लगना।

२. रचना-प्रकार। बनावट।

पु० [देश०] १ जड़हन (धान) रोपने के समय उतनी पेडियाँ जितनी एक साथ एक थान मे रोपी जाती हैं। जडहन के खेत मे रोपी हुई धान की जूरी।

क्रि० प्र०—बैठना।—रोपना।

२. अफगानिस्तान से असम प्रदेश तक और प्राय: हिमालय मे होनेवाला एक प्रकार का वृक्ष।

†पु० [हिं० बाध] खाट बुनने की मूँज की रस्सी। बाध। उदा०—

सोने की वह नार कहावै बिना कसौटी बान दिखावे। (खाट या चारपाई की पहेली)

†पुं०=बाना (वेष)।

प्रत्य० [फा०] देख-रेख या रखवाली करनेवाला। रक्षक। जैसे—दरबान, निगहबान।

बानइत†—पुं०=बानैत।

बानक—पुं० [सं० वर्ण; हिं० बानक] १. भेस। वेष। २. सुन्दर बनावट या रूप। सज-धज। सजावट। उदा०—या बानकी बट बानिक (बानक) या बन ही बनि आवै।—नन्ददास। ३. ढंग। तरीका। उदा०—जोग रत्नाकर में साँस घँटि बूड़ै, कौन ऊधो हम सूधो यह बानक विचार चुकी।—रत्नाकर। ४ पीले या सफेद रंग का एक प्रकार का रेशम।

पु० [हिं० बनना] किसी घटना के घटित होने के लिए उपयुक्त परिस्थिति या सयोग।

मुहा०—बानक बनना या बैठना=(क) किसी काम या बात के लिए बहुत ही उपयुक्त सयोग या सुयोग उपस्थित होना। उदा०—हम पतित तुम पतितपावन दोऊ बानक बने।—तुलसी। (ख) मेल या सगति बैठना।

बानगी—स्त्री० [सं० वर्ण; हिं० बाना] १. वह अश, अवयव या भाग जो आकार-प्रकार रूप-रग स्थिति आदि की दृष्टि से किसी राशि, वर्ग या समूह का परिचायक, प्रतीक और प्रतिनिधि होता है। (सैम्पुल) जैसे—गेहूँ (जौ या चावल) की बानगी देखकर सौदा करना चाहिए। २ दे० 'नमूना'।

बानना†—स०[हिं०बाना] १. किसी प्रकार या बात का बाना ग्रहण अथवा धारण करना। २. किसी काम या बात का उपक्रम करना। ठानना। उदा०—दिन उठि विषय-वासना बानत।—सूर।

स० बनाना। उदा०—कदम तीर तैं मोहिं बुलायो गढ़ि गढ़ि बातैं बानति।—सूर।

बानबे—वि०[स० द्विनवति; प्रा० बाणवइ] जो गिनती मे नब्बे से दो अधिक हो। दो ऊपर नब्बे।

पु० उक्त की सूचक सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—९२।

बानर—पु०[स० वानर] [स्त्री० बानरी] बंदर।

बानवर—पु०[?] बत्तखों की जाति की काले रग की एक प्रकार की बड़ी चिड़िया जो लगभग तीन फुट की होती है। साँप जैसी लम्बी और पतली गरदन के कारण इसे 'नागिन' भी कहते हैं।

बाना—पु०[स० वर्ण] १. पहनावा। पोशाक। २. विशेषतः वह पहनावा जो वीर लोग पहनकर रण-क्षेत्र मे जाते थे। जैसे—केसरिया बाना। ३. कोई विशिष्ट प्रकार का वेष-विन्यास। भेस। उदा०—सोना पहिरि लजावै बाना।—कबीर। ४. वह स्थिति जो किसी को उसके पद, मर्यादा आदि के कारण प्राप्त होती है। (पोजीशन) जैसे—महाराज को अपने बाने की लाज रखने के लिए बहुत बड़ा इनाम देना पड़ा। ५. वह कार्य या धर्म जो किसी विशिष्ट स्थिति में अगीकृत या गृहीत किया गया हो। अपनाई हुई चाल या रीति। उदा०—ह्वै है प्राणविहीन देखि दसरथ को बानो।—दीनदयाल गिरि।

मुहा०—बाना बाँधना=किसी प्रकार का उत्तरदायित्व, कार्य का भार, चाल या परिपाटी अपनाना या ग्रहण करना।

६. व्यापारिक क्षेत्र मे, कुछ ऐसी विशिष्ट वस्तुओ का वर्ग या समूह जिनका क्रय-विक्रय होता हो। जैसे—बनारसी बाना, बिसात बाना।

पु०[सं० वयन=बुनना] १. बुनावट। बुनन। बुनाई। २. कपड़े की वह बुनावट जो चौड़ाई के बल मे समानान्तर होती है। भरनी। (ताने से भिन्न)

विशेष—कपड़े की लंबाई के बल में लगे हुए सूत 'ताना' और चौड़ाई के बल मे लगे हुए सूत 'बाना' कहलाते है।

३. एक प्रकार का बटा हुआ महीन रेशम जिससे कुछ लोग गुड्डी या पतंग उड़ाते हैं। ४. खेत में एक बार अथवा पहली बार होनेवाली जोताई।

पुं०[स० बाण] १. एक प्रकार का हथियार जो तीन या साढ़े तीन हाथ लबा होता है। २. भाले या साँग की तरह का एक हथियार।

स०[सं० व्यापन] ऐसी चीज का अगला गोलाकार अंग, छेद या मुँह फैलाना जो साधारणत' बद रहता या कम खुलता हो। जैसे—मुँह बाना। उदा०—दिखरायो मुख बाई।—सूर।

मुहा०—(किसी वस्तु के लिए) मुँह बाना=पाने या लेने के लिए बहुत ही आतुर या लालायित होना। जैसे—तुम तो हर चीज के लिए मुँह बाये रहते हो।

†स० [स० वादन]=बजाना। उदा०—रास कइ यह बंसली बाई।—नरपति नाल्ह।

†स० [हिं० बाहना] बालो मे कघी करना।

बानात—स्त्री०=बनात (कपड़ा)।

बानावरी—स्त्री०[हिं० बाण+फा० आवरी (प्रत्य०)] बाण चलाने की विद्या या ढग।

बानि—स्त्री०[स० वर्ण; हिं० बाना] १ वर्ण। रग। २. बाना। भेस। वेष। ३. सुन्दर और सजीली बनावट या वेष। उदा०—कर धरि चक्र चरन की धावनि, नहि बिसरति वह बानि।—सूर। ४. आभा। काति। चमक।

अव्य० तरह या प्रकार से। भाँति। उदा०—अम्रित बानि कपूर सुबासू।—जायसी।

†स्त्री०=वाणी (वचन)।

†स्त्री०=बान (आदत, टेव)।

बानिक—पु०=बानक।

†पु०=वणिक्।

बानिज—पु०=वाणिज्य।

बानिन—स्त्री०[हिं० बनी=बनिया] बनिया जाति की या बनिये की स्त्री।

बानिया—पु० [स० वणिक्] [स्त्री० बानिन] =बनिया।

बानी—स्त्री०[सं० वाणी] १. मुँह से निकला हुआ सार्थक शब्द, बात या वचन। २. दृढ़ता या प्रतिज्ञापूर्वक कही हुई बात। ३. साधु-महात्माओ की उपदेशपूर्ण बात। जैसे—कबीर, दादू या नानक की बानी। ४. मनौती। मन्नत। ५. सरस्वती। ६. दे० 'वाणी'।

स्त्री०[स० वाण] बाना नामक हथियार।

स्त्री०[सं० वर्ण] १ रंग। वर्ण। २ आभा। काति। चमक। जैसे—बारह बानी का सोना। (दे० 'बारह बानी') उदा०—एक रूप बानी

जाके पानी की रहति है।—सेनापति। ३. एक प्रकार की पीली मिट्टी जिससे पकाये जाने से पहले मिट्टी के बरतन रगे जाते है। कपसा।

वि० [फा०] १. किसी काम या बात की बुनियाद (नीव) डालने या जड जमानेवाला। २ आरमिक या मूल प्रवर्तक।

पु०[स० वणिक्] बनिया।

बानैत—पु०[हिं० बाना+ऐत (प्रत्य०)] १. वह जो बाना चलाता या फेरता हो। २ वह जो कोई बाना या वेष धारण किये हो।

पु० [हिं० बान तीर] १ वह जो तीर चलाता हो। तीरदाज। २ योद्धा। सैनिक।

बानो—स्त्री०[फा०] महिला अर्थात् भले घर की स्त्री के नाम के साथ लगाया जानेवाला एक आदरार्थक शब्द। जैसे—जमीला बानो, हुस्न बानो।

बाप—पु०[सं० वाप=बीज बोनेवाला] पिता। जनक।

पद—बाप का=पैतृक। **बाप-दादा**=पूर्व-पुरुष। पूर्वज।

बाप-माँ- सब प्रकार से पालन और रक्षण करनेवाला। जैसे—सरकार बाप-माँ हैं, जो चाहे सो कहे। **बाप रे**! =बहुत अधिक आश्चर्य, भय, सकट आदि के समय कहा जानेवाला पद।

मुहा०—**(किसी का) बाप-दादा बखानना**=किसी के बाप-दादा के दुर्गुण बतलाते हुए उन्हे गालियाँ देना और उनकी निंदा करना। **(किसी को) बाप बनाना**=(क) बहुत अधिक आदरपूर्वक अपना पूज्य और बडा बनाना। (ख) अपना काम निकालने के लिए खुशामद करते हुए बहुत आदर-सम्मान प्रकट करना।

बापा—पु०=बप्पा।

बापिका—स्त्री०=वापिका (बावली)।

बापी—स्त्री०=वापी (बावली)।

बापु—पु०=बाप।

बापुरा—वि०[?] [स्त्री० बापुरी] १ जिसकी कोई गिनती न हो। तुच्छ। हीन। २ जिसकी देख-रेख करने, बात पूछने या रक्षा करनेवाला कोई न हो। बेचारा।

बापू—पु०[फा० बाप] १. बाप। पिता। २ पिता तुल्य कोई वृद्ध पुरुष। ३ महात्मा गाधी के लिए प्रयुक्त होनेवाला एक आदरसूचक शब्द।

बापूकारना—स० [हिं० बापू+कारना (प्रत्य०)] 'बापू' कहकर ललकारना। (राज०) उदा०—बेली तदि बालमद्र बापूकारे।—प्रिथीराज।

बापोती—स्त्री०=बपौती।

बाफ—वि० [फा० बाफ] १ बुननेवाला। जैसे—जर-बाफ, दरी-बाफ। २ बुना हुआ।

†स्त्री०=भाप (वाष्प)।

बाफ्ता—पु०[फा० बाफ्त] एक प्रकार का बूटीदार रेशमी कपडा।

बाब—पु०[अ०] १ पुस्तक का कोई विमाग। परिच्छेद। २ मुकदमा। ३. तरह। प्रकार। ४ विषय। ५ अभिप्राय। आशय। मतलब।

बाबची—स्त्री० दे० 'बकुची'।

बाबड़ी†—स्त्री०=बावरी।

बाबत—स्त्री०[अ०] १. सबध। २. विषय।

अव्य० विषय या सबध में। जैसे—इसकी बाबत आप की क्या राय है?

बाबननेट—स्त्री०[अ० बाबिननेट]=बाबरलेट।

बाबर—पु०[फा०] भारत मे मुगल राज्य की स्थापना करनेवाला एक प्रसिद्ध सम्राट्।

बाबरची—पु०=बावरची।

बाबरलैट—स्त्री०[अ० बाबिननेट] एक प्रकार का जालीदार कपडा जिसमे गोल या छकोने छोटे छोटे छेद होते हैं।

बाबरी—स्त्री०[हिं० बबर+सिंह] १. सिर के बढाये हुए लबे बाल। २. पट्टा। जुल्फ।

बाबल—पु०=बाबुल (पिता या बाप)। उदा०—बाबल वैद बुलाइया रे पकड दिखाई म्हाँरी बाँह।— मीराँ।

बाबस—वि० [स० विवश] १. लाचार। विवश। २ निराश। हताश।

बाबा—पु०[स० वाप, प्रा० बप्प] १. पिता । २ पितामह। दादा। ३. बडे-बूढो के लिए आदरसूचक सम्बोधन। ४ किसी भले आदमी विशेषत साधु-महात्माओ के लिए आदरसूचक सम्बोधन। ५ लडको के लिए स्नेहसूचक सम्बोधन।

बाबिल—पु० [बाबुल देश] एशिया खड का एक अति प्राचीन नगर जो फारस के पश्चिम फरात नदी के किनारे था। (बैबिलोन)

बाबी—स्त्री०[हिं० बाबा] १ साधु स्त्री। सन्यासिनी। २ लडकियो के लिए स्नेह सूचक सम्बोधन।

बाबीहा†—पु०=पपीहा। (राज०)

बाबुना†—पु०=बाबूना।

बाबुल—पु०[हिं० बाबा] १ बाबू । २ पिता। बाप।

†पु०=बाबिल।

बाबू—पु०[हिं० बाप या बाबा] १ एक प्रकार का आदरसूचक शब्द जिसका प्रयोग पहले राजाओ आदि के सम्बन्धियो के लिए होता था, और अब सभी प्रकार के प्रतिष्ठित क्षत्रियो, वैश्यो आदि के नाम के साथ होता है। जैसे—बाबू महादेवप्रसाद। २ पिता या बडो के लिए सम्बोधन।

बाबूड़ा†—पु०[हिं० बाबू +डा (प्रत्य०)] बाबू' के लिए उपेक्षा सूचक शब्द।

बाबूना—पुं० [देश०] १ पीले रग का एक पक्षी जिसकी आँखो के ऊपर का रग सफेद, चोच काली और आँखे लाल होती है। २ एक प्रकार का छोटा पौधा जो फारस और युरोप मे होता है।

बाभन—पु० १ दे० 'ब्राह्मण'। २ दे० 'भूमिहार'।

बाम—पु०[फा०] १ अटारी। कोठा। २ घर मे सबसे ऊपर का कोठा और छत। ३ लबाई, ऊँचाई आदि नापने का एक मान जो साढे तीन हाथ का होता है। पुरसा।

स्त्री०[स० ब्राह्मी] १ एक प्रकार की मछली जो देखने मे साँप सी पतली, गोल और लबी होती है। २. कान मे पहनने का एक गहना।

†स्त्री०=बामा।

बामदेव—पु०=वामदेव।

बामन—पु०=वामन।

बामा—स्त्री०=वामा।

बामी—स्त्री० १. दे० 'बाँबी'। २ दे० 'लाही'।

बायँ—वि०[सं० वाम] १. (निशाना) जो अपने ठीक लक्ष्य पर न लगा हो। चूका हुआ।
मुहा०—बायँ देना=(क) किसी के वार करने पर इस प्रकार इधर-उधर हो जाना कि आघात न लगने पावे। (ख) उपेक्षापूर्वक छोड़ देना। ध्यान न देना। जाने देना। (ग) किसी के चारो ओर चक्कर या फेरा लगाना।
२ दे० 'बायाँ'।
स्त्री०[अनु०] पशुओं आदि के मुँह से निकलनेवाला बाँ बाँ या बाँयँ बाँयँ शब्द।
बाय—स्त्री०[स० वायु] १ वायु। हवा। २ शरीर मे होनेवाला वात का प्रकोप। बाई।
स्त्री०=बावली (वापी)। उदा०—अति अगाध अति औथरौ नदी, कूप, सर, बाय।—बिहारी।
बायक—पु०[स० वाचक] १ वाचक। २ वक्ता। ३ पढनेवाला। पाठक। ४ दूत।
बायकाट—अव्य० [अं०] बहिष्कार। (देखे)
बायद व शायद—अव्य०[फा०] ऐसा अच्छा जैसा होना चाहिए, फिर भी जैसा बहुत कम होता या सिर्फ कभी कभी दिखाई देता हो। जैसे—उसने ऐसे अनोखे करतब दिखाये कि बायद व शायद।
बायन—पु०[स० वायन] १ वह मिठाई या पकवान आदि जो लोग उत्सव आदि के उपलक्ष मे अपने इष्ट-मित्रों के यहाँ भेजते हैं। बैना। २ उपहार। भेंट। ३ किसी काम या बात का निश्चय करने के लिए उसके सम्बन्ध मे पहले से दिया जानेवाला धन। पेशगी। बयाना।
क्रि० प्र०—देना।—पाना—मिलना— लेना।
मुहा०—**बायन देना**—किसी के साथ कोई ऐसा व्यवहार करना, जिसका बदला उसे आगे चलकर चुकाना पडे। उदा०—भले भवन अब बायन दीन्हा।—तुलसी।
बायबरंग—स्त्री०=बायबिडंग।
बायबिडंग—स्त्री०[स० बिडग] एक लता जो हिमालय पर्वत, लंका और बरमा मे होती है।
बायबिल—स्त्री०=बाइबिल।
बायबी—वि०[सं० वायवीय] ऐसा अपरिचित या बाहरी जिससे किसी प्रकार की आत्मीयता या सबध न हो।
बायरा—पु०[देश०] कुश्ती का एक पेच।
बायल—वि०[हिं० बायाँ, बयं] १ (प्रहार या वार) जो खाली गया या निष्फल हुआ हो।
क्रि० प्र०—जाना।—देना।
२. (जूए का दाँव) जो खाली गया हो और किसी का न आया हो।
क्रि० प्र०—जाना।
बायलर—पु०[अं०] १ वह पात्र जिसमे कोई पदार्थ उबाला या गरम किया जाता है। २. विशेषत इंजन का वह बडा आधान जिसमें भरे हुए पानी को गरम करके भाप तैयार की जाती है तथा जिसकी शक्ति से यन्त्र चलाये जाते हैं।
बायला†— वि०[हिं० बाय+ला (प्रत्य०)] [स्त्री० बायली] शरीर मे वायु का विकार उत्पन्न करने या बढानेवाला। जैसे—किसी को बैंगन बायला किसी को बैंगन पथ्य। (कहा०)
बायली—वि०=बायबी।
बायव्य—पु०=वायव्य।
बायस—पु०=वायस।
बायस्कोप—पु०[अं०] एक प्रसिद्ध यन्त्र जिसके द्वारा परदे पर चल-चित्र दिखलाये जाते हैं।
बायाँ—वि०[स० वाम] [स्त्री० बाईं] १ शरीर के उस पक्ष से संबध रखनेवाला अथवा होनेवाला जो शरीरिक दृष्टि से अपने विपरीत पक्ष से कुछ दुर्बल और कम कर्मशील होता है। 'दाहिना' का विपर्याय। जैसे—बायाँ हाथ, बाईं आँख। २. जिस ओर उक्त पक्ष हो, उस ओर मे स्थित होनेवाला।
मुहा०—बायाँ देना=(क) किनारे से निकल जाना। (ख) उपेक्षा पूर्वक छोड देना।
३. मकानों आदि के सबध में, उनके मुख्य द्वार की ओर पीठ करके खडे होने पर बाये हाथ की ओर का। ४. चित्र के उस पार्श्व से सबध रखनेवाला जिस ओर द्रष्टा का बायाँ हाथ हो (चित्र का वस्तुत यह दाहिना पक्ष होता है)। ५. उलटा। 'सीधा' का विपर्याय। ६. प्रतिकूल। विरुद्ध।
पु० तबले के साथ प्राय. बाएँ हाथ से बजाया जानेवाला उसका जोड़। डुग्गी।
बायु†—स्त्री० ·वायु।
बायें—अव्य० [हिं० बायाँ] १. जिस ओर बायाँ हाथ पडता हो उस ओर। बाईं ओर। बाईं तरफ। २ विपरीत पक्ष मे। ३ प्रतिकूल या विरुद्ध रूप मे। ४. अप्रसन्न और असन्तुष्ट रहकर या होकर।
बारबार—अव्य० [स० वारवार] अनेक, कई या बहुत बार। पुन पुन.।
बार—पु०[सं० द्वार] १ द्वार। दरवाजा। उदा०—हस्ति सिंघली बाँधे बारा।—जायसी। २. आश्रय लेने की जगह। ठौर-ठिकाना। ३. राज-सभा। दरबार।
स्त्री० [सं० वार या वेला?] १. काल। वक्त। समय। २. देर। विलब। उदा०—भइ बडि बार जाइ बलि मैया।—सूर।
क्रि० प्र०—करना। लगाना।—होना।
*पु०[सं० वारि] जल। पानी।
स्त्री०[फा०] १. दफा। मरतबा। जैसे—पहली बार, दूसरी बार।
पद—बार बार=रह-रहकर कुछ देर बाद। कई फिर। फिरफिर। पुन।
पु०[सं० भार से फा०] १. बोझ। भार।
क्रि० प्र०—उठाना।—रखना।—लादना।
२ कहीं भेजने के लिए गाड़ी, जहाज आदि पर लादा जानेवाला माल।
मुहा०—बार करना=जहाज पर माल लादना। (लश०)
३ वृक्षो आदि की पैदावार या फसल।
†स्त्री० [स० वाट] १. किसी स्थान को घेरने के लिए बनाया हुआ घेरा। बाढ़। २. किनारा। छोर। सिरा। ३. हथियारो की तेज धार। बाढ। ४. दे० 'बारी'।
†पु०[स० बाल] बालक। लड़का।
पु०=बाल (सिर या शरीर के)।
†स्त्री०=बाला (युवती स्त्री)।

बारक†—अव्य०[हिं० बार+एक] एक दफा। एक बार।
स्त्री०=बैरक।

बारकफत—पु०[देश०] एक प्रकार का पौधा जो साँप का विष दूर करनेवाला माना जाता है।

बारगाह—स्त्री०[फा०] १ ड्योढ़ी। २ खेमा। डेरा। तबू। ३. राजाओ आदि का दरबार। कचहरी। ४ राजमहल।

बारगी—वि०[फा० बारगाह] लडाई का एक ढग या प्रकार।
पु०[फा०] अश्व। घोडा।

बारगीर—वि०[फा०] बोझ ढोनेवाला। भारवाहक।
पु० १ घोडो के लिए घास, चारा काटकर लाने और साईस की सहायता करनेवाला घसियारा। २ मध्ययुग मे, वह सिपाही या सैनिक जो किसी राजा या सरदार के घोडे पर चढकर युद्ध आदि करता था। ३ घोडा। ४ ऊँट। ५ बैल।

बारजा—पु० [हिं० बार=द्वार+जा=जगह] १ मकान के सामने के दरवाजे के ऊपर पाटकर बढाया हुआ छज्जा। बरामदा। २ कमरे के आगे का छोटा दालान। ३ छत के ऊपर का कमरा। अटारी। कोठा।

बारण†—पु०=वारण।

बारता†—स्त्री०=वार्ता।

बारतिय—स्त्री०[हिं० बार+तिय] वेश्या।

बारतुंडी—स्त्री०[ब० स०] आल का पेड।

बारदाना—पु०[फा० बारदान] १. वह चीज जिसमे बोझ विशेषत व्यापार के सामान बाँधे या रखे जाते है। जैसे—खुरजी, बोरा आदि। २. वे टाट आदि जिनमें बाँधकर माल के बडे-बडे गट्ठर बाहर भेजे जाते हैं। ३. फौज के खाने-पीने की सामग्री। रसद। ४ टूटी फूटी चीजे या सामान। अगड़-खगड।

बारदार—वि०[फा०] १. जिस पर किसी प्रकार का बार या बोझ हो। २. (वृक्ष) जो फलो से भरा या लदा हो। ३. (स्त्री) जिसे गर्भ हो।

बारन†—पु० [सं० वारण] हाथी।
†पु०=वारण।

बारना—अ०[स० वारण] १. मना करना। २ बाधा डालना।
स०=बालना (जलाना)।
स०=वारना (निछावर करना)।

बारनिश—स्त्री०=वारनिश।

बार-बँटाई—स्त्री०[फा० बार=बोझ+हिं० बाँटना] दाये जाने से पहले कटी हुई फसल का होनेवाला बँटवारा।

बार-बधू—स्त्री०[स० वारवधू] वेश्या।

बार-बधूटी—स्त्री०[सं० वारवधूटी] वेश्या।

बार-बरदार—वि० [फा०] [भाव० बारबरदारी] भार उठानेवाला। बोझ ढोनेवाला।

बार-बरदारी—स्त्री०[फा०] १. माल या सामान ढोने की क्रिया या भाव। २. उक्त के बदले में मिलनेवाला पारिश्रमिक या मजदूरी।

बारमुखी—स्त्री०[स० वारमुख्या] वेश्या।

बार-रुकाई—स्त्री०[हिं० बार=द्वार+रोकना] १. विवाह की एक रसम जिसमे लडकीवाले के घर की स्त्रियाँ दरवाजे पर वर को रोककर कुछ नेग देती हैं।

बारवा—स्त्री०[देश०] एक रागिनी जिसे कुछ लोग श्री राग की पुत्रबधू मानते है।

बारह—वि०[स० द्वादश, प्रा० बारस, अप० बारह] [वि० बारहवाँ] जो सख्या मे दस और दो हो।
पु० उक्त की सूचक सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—१२।

बारह खडी—स्त्री० [स० द्वादश+अक्षरी] १ अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए ऐ, ओ औ, अं और अः इन बारह स्वरो की मात्राएँ क्रमात् प्रत्येक व्यजन मे लगा कर बोलने या लिखने की क्रिया। २ वह रूप जिसमे सभी व्यजनो मे उक्त स्वर लगाकर दिखाये गये हों।

बारह टोपी†—स्त्री०[हिं०] १. मध्ययुग मे यूरोप के बारह प्रमुख राष्ट्र जो अपने टोपो की विभिन्नता के कारण प्रसिद्ध थे।

बारहठ—पु०[स० द्वारस्थ] राजपूताने के चारणो का एक भेद या वर्ग।

बारहदरी—स्त्री०[हिं० बारह+फा० दर=दरवाजा] किसी इमारत का ऊपरवाला वह कमरा जिसमे चारो ओर तीन तीन दरवाजे अर्थात् कुल मिलाकर बारह दरवाजे हों।

बारह पत्थर—पु०[हिं० बारह+पत्थर] १ वे बारह पत्थर जो पहिले छावनी की सरहद पर गाडे जाते थे। २ सैनिक शिविर। छावनी।

बारह बाट—पु०[हिं०] १ इधर-उधर फैले हुए बहुत से मार्ग। जैसे—बारहबाट अठारह पैंडे। २ व्यर्थ का प्रसार या फैलाव। ३ किसी विषय मे लोगो के ऐसे परस्पर विरोधी मत या विचार जो एकता, दृढता आदि मे बाधक हो।
वि० १ छिन्न-भिन्न। तितर-बितर। २ नष्ट-भ्रष्ट। बरबाद।
मुहा०—बारह बाट करना या घालना=तितर-बितर या छिन्न-भिन्न करना। व्यर्थ इधर-उधर करके नष्ट करना। **बारहबाट जाना या होना**=(क) तितर-बितर होना। छिन्न-भिन्न होना। (ख) नष्ट भ्रष्ट होना। बरबाद होना।
३ ऐसा निरर्थक जो घातक भी सिद्ध हो या हो सकता हो।

बारहबान—पु०[स० द्वादश वर्ण] [वि० बारहबानी] एक प्रकार का खरा और बढिया सोना।
पु०[हिं० बारह+बाना] मध्ययुगीन भारत मे अच्छे सैनिक के पास रहनेवाले ये बारह हथियार—कटार, कमान, चक्र, जमदाढ, तमचा, तलवार, बदूक, बकतर, बाँस, बिछुआ और साँग।

बारह-बाना—वि०[हिं०] १ सूर्य के समान चमक-दमकवाला। २ खरा और चोखा (सोना)।

बारह-बानी—वि०[स० द्वादश (आदित्य)+वर्ण, पा० बारस वण्ण] १ सूर्य के समान चमक-दमकवाला। बहुत चमकीला। २ (सोना) बिलकुल खरा, चोखा और बढिया। ३. जिसमे कोई खोट, दोष या विकार न हो। निर्मल और स्वच्छ। ४ जिसमे कोई कसर या त्रुटि न हो। ठीक और पक्का।
स्त्री० १ सूर्य की सी चमक। २ आभा। चमक। दीप्ति। ३. बारह बाना सोना।

बारहमासा—पु०[हिं० बारह+मास] वह पद्य या गीत जिसमे बारह महीनो की प्राकृतिक विशेषताओ का वर्णन किसी विरही या विरहिनी के मुँह से कराया गया हो।

बारहमासी—वि० [हिं० बारह+मास] १. बारहों मास होनेवाला।

२. वर्ष के बारहों महीनों में से अलग अलग प्रत्येक भाग से सम्बन्ध रखनेवाला। जैसे—बारह-मासी चित्रावली=ऐसी चित्रावली जिसमे चैत, बैसाख, जेठ आदि महीनों की प्राकृतिक स्थिति और उनके ध्यान अर्थात् कल्पित स्वरूपों के अलग अलग चित्र हों। ३. सब ऋतुओ मे फलने फूलनेवाला। ४. (काम या बात) जो बराबर या सदा हुआ करे।

बारह वफात—पु०[हिं० बारह+अ० वफात] अरबी महीने रबी-उल-अव्वल की वे बारह तिथियाँ, जिनमे मुसलमानो के विश्वास के अनुसार मुहम्मद साहब बीमार रहकर अन्त मे पर-लोकवासी हुए थे।

बारहवाँ— वि०[हिं० बारह] [स्त्री० बारहवीं] संख्या मे बारह के स्थान पर पड़नेवाला।

बारहसिंगा—पु०[हिं० बारह+सींग] एक प्रकार का बड़ा हिरन जो तीन चार फुट ऊँचा और सात आठ फुट लंबा होता है। नर के सीगों में कई शाखाएँ निकलती है। इसी से इसे 'बारह सिंगा' कहते हैं। शिकार। साल-साँमर।

बारहाँ—वि०[हिं० बारह] जो बारह (अर्थात् बहुत से) लोगो मे सबसे प्रबल हो। जैसे—बारहाँ गुडा, बारहाँ मिस्तरी।

वि० बहादुर। वीर।

वि० =बारहवाँ।

बारहा—अव्य० [फा०] अनेक बार। प्राय। बहुधा।

बारही—स्त्री० =बरही (जन्म से बारहवाँ दिन)।

बारहों—पु०[हिं० बारह] १ किसी मनुष्य के मरने के दिन से बारहवाँ दिन। बारहवाँ। द्वादशाह। २ बरही (जन्म से बारहवाँ दिन)।

बारा—वि०[फा०] बरसनेवाला।

पु० बरसनेवाला पानी। वर्षा। मेंह।

बारा—वि०[स० बाल] छोटी अवस्थावाला। अल्पवयस्क। 'प्रौढ' या 'वयस्क' का विपर्याय। जैसे—नन्हा बारा बच्चा।

पद—बारे तें*=बाल्यावस्था से ही। छोटे पन से ही।

पु० बच्चा। बालक। लड़का।

पु०[हिं० बाढ =ऊँचा किनारा] १ वह कँगनी जो बेलन के सिरे पर लगी रहती है और जिसके फिरने से बेलन फिरता है। २. जंते से तार खीचने का काम।

पु०[हिं० बारह] मृतक के बारहवे दिन होनेवाला भोज।

पु०[हिं० बार] वह दूध जो चरवाहा चौपायो को चराने के बदले मे आठवे दिन पाता है।

पु०[?] १. वह आदमी जो कूएँ पर खड़ा होकर भरकर निकले हुए चरसे या मोट का पानी उलटकर गिराता है। २ वह गीत जो चरस या मोट खीचनेवाला उक्त समय पर गाता है।

बारा जोरी—क्रि० वि०=बर-जोरी (बल-पूर्वक)।

बारात—स्त्री०=बरात।

बाराती—पु०=बराती।

बारादरी—स्त्री० ='बारहदरी'।

बारानी—वि०[फा०]वर्षा सबंधी। बरसाती।

स्त्री० १. ऐसी भूमि जिसकी सिंचाई केवल वर्षा के जल से होती हो। २. उक्त प्रकार की सिंचाई से अर्थात् वर्षा के जल में होनेवाली फसल। ३. दे० 'बरसाती' (ओढ़ने का कपड़ा)।

बाराह—पु०=वाराह (सूअर)।

बाराही—स्त्री०=वाराही।

बाराही कद—स्त्री० =वाराही कद।

बारि—पुं०=वारि।

स्त्री०=बारी।

बारिक—पु०[अं० बैरक] ऐसे बँगलों या मकानों की श्रेणी या समूह जिनमे फौज के सिपाही रहते हैं। छावनी।

बारिगर—पु०[हिं० बारी+फा० गर] हथियारो पर बाढ या सान रखने-वाला। सिकलीगर।

बारिगह—स्त्री०=बारगाह। उदा०—चिरउर सौहँ बारिगह तानी। —जायसी।

बारिज—पु०=वारिज।

बारिद—पु० =वारिद।

बारिधर—पु०[स० वारिधर] १ बादल। मेघ। २. एक वर्णवृत्त।

बारिधि—पु० वारिधि।

बारिवाह—पु० [स० वारि+वाह] बादल।

बारिश—स्त्री०[फा०] [वि० बारिशी] १ वर्षा। वृष्टि। २ वर्षा ऋतु। बरसात।

बारिस्टर—पु० =बैरिस्टर।

बारी—स्त्री०[स० अवार] १. किनारा। तट। २. किसी प्रकार के विस्तार का अतिम सिरा। किनारा। हाशिया। ३ खेतों, बगीचो आदि के चारो ओर या किसी पार्श्व मे खड़ा किया जानेवाला घेरा। बाढ़। ४. किसी प्रकार का उठा हुआ किनारा या घेरा। अवँठ। जैसे—कटोरी। या थाली की बारी। ५ किसी प्रकार का पैना किनारा या सिरा। धार। बाढ।

स्त्री०[स० वाटी, वाटिका] १ वह स्थान जहाँ बहुत से पेड़ लगाये गये हो। जैसे—आम की बारी। २ उपवन। बगीचा। ३. बगीचे का माली। बागवान। उदा०—बारी आइ पुकारे, लिहै सबै कर पूँछ।—जायसी। ४ खेतो बगीचों आदि मे अलग किया हुआ विभाग। क्यारी। ५ घर। मकान। (दे० 'बाड़ी') ६ खिड़की। झरोखा। ७ जहाजो के ठहरने की जगह। बंदरगाह। ८ रास्ते मे बिखरे हुए काँटे या झाड-झखाड़। (पालकी ढोनेवाले कहार)

पु० हिंदुओं मे दोने, पत्तले आदि बनानेवाली एक जाति।

स्त्री० [फा० बारी] १ थोड़े थोड़े समय या रह-रह कर होनेवाले कामो के सबध मे, क्रम से हर बार आनेवाला अवसर या समय। पारी। जैसे—(क) पहले लड़के के बाद दूसरे लड़के की और दूसरे के बाद तीसरे की बारी आयगी।

क्रि० प्र०—आना।—पड़ना।—बधना।

२ उक्त प्रकार के क्रम में, वह आदमी या चीज जिसे नियमत. अवसर मिलता हो, जिसे काम करना पड़ता हो या जिसका उपयोग होता हो। जैसे—आज जिस सिपाही की पहरा देने की बारी है वह बीमार है।

पद—बारी बारी से=कालक्रम मे एक के पीछे एक करके। अपनी बारी आने पर। समय के नियत अतर पर। जैसे—सब लोग एक साथ मत बोलो, बारी बारी से बोलो।

स्त्री० दे० 'बाली'।

वि० हि० 'बारा' का स्त्री०।

पु० [अ०] ईश्वर। परमात्मा।

बारीक—वि० [फा०] [भाव० बारीकी] १ जिसका तल बहुत पतला हो। बहुत ही थोडी मोटाईवाला। महीन। जैसे—बारीक मलमल। २ जिसका घेरा या मोटाई बहुत ही कम हो। पतला। जैसे—बारीक तार, बारीक सूत। ३ अपेक्षाकृत् बहुत ही छोटा। जैसे—बारीक अक्षर, बारीक सिलाई। ४ जिसके अणु या कण बहुत ही छोटे या सूक्ष्म हो। जैसे—बारीक आटा। ५ (विचार) जिसमे भावों के बहुत ही सूक्ष्म अन्तर हो, और इसी लिए जो सहसा सबकी समझ मे न आता हो। जैसे—बारीक फरक, बारीक बात। ६ गूढ़। ७. जटिल।

बारीका—पु० [फा० बारीक] चित्रकारी मे, रेखाएँ खीचने की एक तरह की महीन कलम।

बारीकी—स्त्री० [फा०] १ बारीक होने की अवस्था या भाव। सूक्ष्मता।

क्रि० प्र०—निकालना।

२ गूढता। ३ जटिलता।

बारीदार—पु० [हि० बारी पारी+फा० दार (प्रत्य०)] [स्त्री० बारीदारनी, भाव० बारीदारी] पारी पारी से पहरा देनेवाले पहरेदारो मे से हर एक।

बारीस† —पु०=वारीश (समुद्र)।

बारुणी†—स्त्री०=वारुणी (मदिरा)।

बारुन†—पु० [स० वारण] हाथी। (राज०)

बारू† —पु० बार (द्वार)। उदा०—महि घूँबिअ पाइअ नहि बारू। —जायसी।

†पु० बालू।

बारूत† —स्त्री० बारूद।

बारूद—स्त्री० [स० वारूद्र (अग्नि) से फा०] १ गधक, शोरे, कोयले आदि का वह मिश्रण जो विस्फोटक होता है और आतिशबाजी तथा तोपे, बन्दूके आदि चलाने के काम आता है।

पद—**गोला बारूद**—युद्ध मे काम आनेवाली तोपे, बन्दूके, उनके गोले-गोलियाँ तथा अन्य आवश्यक सामग्री।

२ कोई ऐसा तत्त्व या पदार्थ जो जरा सा सहारा पाकर बहुत भीषण परिणाम उत्पन्न करता या कर सकता हो।

बारूदखाना—पु० [फा० बारूदखान] वह स्थान जहाँ बारूद तैयार किया जाता अथवा सुरक्षित रखा जाता हो।

बारूदी—वि० [फा०] १ बारूद-सबधी। २ जिसमे बारूद हो अथवा रखा या बिछाया गया हो। जैसे—बारूदी सुरग।

बारे—अव्य० [फा०] १ अतत। आखिरकार। २ अस्तु। खैर। ३ चलो, अच्छा हुआ। कुशल है कि। जैसे—मुझे तो बहुत चिता हो रही थी, बारे आप आ गये। अब काम हो जायगा। उदा०—हर महीने मे कुढ़ाते थे मुझे फूल के दिन। बारे अब की तो मेरे टल गये मामूल के दिन।—रगीन।

पद—**बारे में**=(किसी के) प्रसग, विषय, या सम्बन्ध मे। विषय मे। जैसे—उनके बारे में आपकी क्या राय है?

बारोठा—पु०=बरोठा (द्वार)।

बारोमीटर—पु०=बैरोमीटर।

बार्डर—पु० [अ०] १ छोर। किनारा। २ धोती के किनारे पर की पट्टी। ३ सीमा। हद।

बार्बर—वि० [स० बर्बर+अण्] १ बर्बर देश मे उत्पन्न। बर्बर देश का। २ बर्बर सम्बन्धी।

पु० [अ०] नाई। हज्जाम।

बार्ह—वि० [स० बर्ह+अण्] १. बर्हि या मोर सम्बन्धी। २ मोर के पख का बना हुआ।

बार्हस्पत्य—वि० [स० बृहस्पति+अण्] बृहस्पति-सम्बन्धी।

पु० १ गणित ज्योतिष मे, साठ सवत्सरो मे से एक। २ नास्तिक मतवादियों का लोकायत सम्प्रदाय जो गुरु बृहस्पति द्वारा प्रवर्तित माना गया है।

बार्हिण—वि० [स० बर्हिण+अण्] मयूर-सबधी। मोर का।

बालंगा—पु० [फा० बालिग्] एक ओषधि जिसके बीज जीरे की तरह के होते है। तुत-मलगा।

बाल—पु० [स० √बल् (जीवनदाता)+ण] [स्त्री० बाला] १ वह जो अभी जवान या सयाना न हुआ हो। बच्चा। बालक।

पद—**बाल-गोपाल**=बाल-बच्चे। सतान। (मगला-भाषित) जैसे—बाल-गोपाल सुखी रहे। (आशीर्वाद) २ वह जिसे समझ न हो। नासमझ। ३ किसी पशु का बच्चा। ४. नेत्रबाला। सुगधबाला।

वि० १ जो सयाना न हो। जो पूरी बाढ को न पहुँचा हो। २ जिसे अभी यथेष्ठ ज्ञान या समझ न हो। ३ जिसका आरभ, उदय या जन्म हुए अभी अधिक समय न हुआ हो। जैसे—बाल इंदु, बाल रवि।

†स्त्री०=बाला (युवती स्त्री)।

पु० [स०] १ जीव-जतुओ के शरीर मे, चमडे मे से ऊपर निकले हुए वे सूक्ष्म ततु जो रोयो से कुछ अधिक बडे और मोटे होते तथा प्राय बढते रहते है। केश। जैसे—दाढी या मूँछ के बाल, सिर के बाल।

क्रि० प्र०—गिरना।—झडना।—निकलना।

पद—**बाल बराबर या बाल भर**=(क) बहुत ही कम या थोडा। (ख) बहुत ही पतला, महीन या सूक्ष्म।

मुहा०—**नहाते समय भी बाल तक न खसना**=नाम को भी किसी प्रकार का आघात न लगना या कष्ट अथवा हानि न होना। उदा०—नित उठि यही मनावति देवन, न्हात खसै जनि बार।—सूर। **बाल न बाँकना**=दे० नीचे 'बाल बाँका न होना'। उदा०—परै पहार न बाँकै बारू।—जायसी। (किसी काम में) **बाल पकाना**=(कोई काम करते करते) बुड्ढे हो जाना। बहुत दिनो का अनुभव प्राप्त करना। जैसे—मैंने भी सरकारी नौकरी मे ही बाल पकाये है। **बाल बनवाना**=हजामत बनवाना। **बाल बनाना**=हजामत बनाना। **बाल बाँका न होना**=कुछ भी कष्ट या हानि न पहुँचना। पूर्ण रूप से सुरक्षित रहना। जैसे—निश्चित रहो, तुम्हारा बाल तक (या भी) बाँका न होगा। (दुर्घटना आदि से) **बाल बाल बचना**=बहुत ही थोडे अन्तर या कसर के कारण दुर्घटना, सकट आदि से बच जाना या सुरक्षित रह जाना। जैसे—मोटर का धक्का लगने (या मरने) से बाल बाल बचना।

२. कुछ विशिष्ट प्रकार की चीजो के तल मे आघात आदि से चटकने दरकने, फटने आदि के कारण पड़नेवाली वह बहुत पतली धारी या रेखा जो देखने में शरीर के बाल की तरह होती है। जैसे—इस मोती (या शीशे) में बाल आ गया है।

क्रि० प्र०—आना।—पड़ना।

पु० [सं० बल्ल या वालु—तीन रत्ती की तौल] किसी चीज का बहुत थोड़ा अंश।

मुहा०—बाल भर भी फरक न होना=नाममात्र का भी अन्तर न होना।

स्त्री० कुछ अनाजो के पौधो के डठल का वह अग्र भाग जिसके चारों ओर दाने निकले या लगे रहते हैं। जैसे—जौ या गेहूँ की बाल।

स्त्री० [देश०] एक प्रकार की मछली।

पु० [अ० बॉल] १ गेंद। २ युरोपीय ढग का नाच।

बालक—पु० [सं० बाल+कन्] [स्त्री० बालिका, भाव० बालकता] १ वह जिसकी अवस्था अभी अभी १५-१६ वर्ष से अधिक न हो। बच्चा। लड़का। २ पुत्र। बेटा। ३ वह जो किसी बात या विषय मे अनजान या अबोध हो। ४ हाथी का बच्चा। उदा०—बालक मृणालिन ज्यौ तोरि डारै सब काल, कठिन कराल त्यौ अकाल दीह दुखकौ।—केशव। ५ घोड़े का बच्चा। बछेड़ा। ६. केश। बाल। ७ हाथी की दुम। ८ कगन। ९ अँगूठा। १० नेत्र-बाला। गन्ध-बाला।

बालकता—स्त्री० [सं० बालक+तल्+टाप्] बालक होने की अवस्था या भाव।

बालकताई†—स्त्री० [सं० बालकता+हिं० ई (प्रत्य०)] १ बाल्यावस्था, लड़कपन। २. बालकों की तरह ऐसा आचरण या व्यवहार जिसमे समझदारी कुछ भी न हो या बहुत कम हो। लड़कपन।

बालकपन—पु० [सं० बालक+हिं० पन (प्रत्य०)] १. बालक होने की अवस्था या भाव। २. बालको की तरह की ना-समझी।

बालक-प्रिया†—स्त्री० [सं० ष० त०] १ केला। २. इद्रवारुणी।

बालकांड—पु० [सं० मध्य० स०] रामचरित्र मानस का प्रथम प्रकरण जिसमे मुख्य रूप से भगवान रामचन्द्र जी की बाललीला का वर्णन है।

बाल-काल—पु० [सं० ष० त०] बालक होने की अवस्था। बाल्यावस्था। बचपन।

बालकी—स्त्री० [सं० बालक+ङीष्] १ कन्या। लड़की। २. पुत्री। बेटी।

बालकृमि—पु० [सं० ष० त०] जूँ।

बाल-कृष्ण—पु० [सं० कर्म० स०] बहुत छोटी या बाल्यावस्था के कृष्ण।

बाल-केलि—स्त्री० [सं० ष० त०] १. लड़को का खेल। खिलवाड़। २ ऐसा काम जिसमे बहुत ही थोड़ी बुद्धि या शक्ति लगती हो।

बाल-क्रीड़ा—स्त्री० [सं० ष० त०] वे खेल आदि जो छोटे छोटे बच्चे किया करते हैं। लड़कों के खेल और काम।

बालखंडी—पु० [?] ऐसा हाथी जिसमें कोई दोष हो।

बालखिल्य—पु० [सं०] पुराणानुसार ब्रह्मा के रोएँ से उत्पन्न ऋषियों का एक वर्ग जिसका प्रत्येक ऋषि डीलडौल मे अँगूठे के बराबर कहा गया है।

बालखोरा—पुं० [फा०] एक प्रकार का रोग जिसमें सिर के बाल झड़ने लगते हैं।

बाल-गोपाल—पुं० [सं० कर्म० स०] १ बाल्यावस्था के कृष्ण। २. गृहस्थ के बाल-बच्चे।

बाल-गोविंद—पु० [सं० कर्म० स०] कृष्ण का बालक-स्वरूप। बाल-कृष्ण।

बाल-ग्रह—पु० [सं० ष० त०] ऐसे नौ ग्रहो का एक वर्ग जो छोटे बच्चों के लिए घातक माने गये है। यथा—स्कद, स्कदापस्मार, शकुनी, रेवती, पूतना, गधपूतना, शीतपूतना, मुख-मडिका, और नैगमेय।

बाल-चंद्रिका—स्त्री० [सं०] सगीत मे कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

बालचर—पु० [सं० कर्म० स०] १. वह बालक जिसे अनेक प्रकार की सामाजिक सेवाएँ करने की शिक्षा मिली हो। (बॉय स्काउट) २ उक्त प्रकार के बालको का दल या सघटन।

बालचर्य—पु० [सं० ष० त०] १ बालको की चर्या। बाल-क्रीड़ा। २ [ब० स०] कार्तिकेय।

बालछड़—स्त्री० [देश०] जटामासी।

बालटी—स्त्री० [पुर्त० बॉल्डे] डोल की तरह का पानी रखने का एक प्रसिद्ध पात्र।

बालटू—पु० [अ० बॉल्ट] लोहे आदि का वह पेचदार छल्ला जो एक तरह की पेचदार कील पर चढाया तथा कसा जाता है।

बाल-तंत्र—पु० [सं० ष०त०] बालको के पालन पोषण की विद्या। कौमार भृत्य।

बाल-तनय—पु० [सं० ब०स०] खैर का पेड़।

बालती†—स्त्री० [सं० बाल] कन्या। कुमारी। उदा०—ज्यो नवजोबन पाइ लसति गुनवती बालती।—नददास।

बाल-तोड़—पु० [हिं० बाल+तोडना] एक तरह का फोड़ा जो शरीर पर किसी बाल के टूटने या तोडने विशेषत जड से उखड़ने या उखाड़ने के फलस्वरूप होता है।

बालद—पु० [सं० बलिवर्द] बैल। उदा०—दास कबीर घर बालद जो लाया, नामदेव की छान छवन्द।—मीराँ।

बालदार सुंडा†—पु० दे० 'भालू सुडा'।

बालधि—पु० [सं० बाल√धा+कि] दुम। पूँछ।

बालधी—स्त्री० [सं० बालधि] दुम। पूँछ।

बालना—स० [सं० बालन] जलाना।

बाल-पक्व—वि० [सं० कर्म० स०] १. जो बाल्य अथवा प्रारम्भिक अवस्था मे ही पक्व हो गया हो। २ समय से कुछ पहले पका हुआ।

बाल-पत्र—पु० [सं० ब० स०] १. खैर का पेड़। २. जवासा।

बालपन—पु० [सं० बाल+हिं० पन (प्रत्य०)] १. बालक होने की अवस्था या भाव। २. बालको का सा आचरण-व्यवहार। लड़कपन। ३ बालकों की सी मूर्खता।

बाल-पुष्पी—स्त्री० [सं० ब० स०+ङीप्] जूही।

बाल-बच्चे—पु० [सं० बाल+हिं० बच्चा] लड़के-बाले। संतान। औलाद।

बाल-बुद्धि—स्त्री० [सं० ष० त०] बालको की-सी बुद्धि। छोटी बुद्धि। थोड़ी अकल।

वि० जिसकी बुद्धि बालकों की-सी हो।

बाल-बोध—पुं० [सं० ब० स०] देवनागरी लिपि। (मध्य-प्रदेश)

बाल-ब्रह्मचारी (रिन्)—पुं० [सं० कर्म० स०] [स्त्री० बाल-ब्रह्मचारिणी] वह व्यक्ति जिसने बाल्यावस्था से ही ब्रह्मचर्य-व्रत धारण कर रखा हो और पूर्ण रूप से उसका पालन किया हो।

बाल-भोग—पुं० [सं० ष० त०] वह नैवेद्य जो देवताओं के आगे सबेरे रखा जाता है।

बाल-भैषज्य—पुं० [सं० ष० त०] रसांजन।

बाल-भोज्य—पुं० [सं० ष० त०] चना।

वि० बालकों या लड़कों के लिए उपयुक्त (खाद्य पदार्थ)।

बालम—पुं० [सं० वल्लभ] १ स्त्री का पति। स्वामी। २ युवती या स्त्री की दृष्टि से वह व्यक्ति जिससे वह प्रणय करती हो। प्रेमी। प्रियतम।

बालम-खीरा—पुं० [हिं०] १. एक प्रकार का बढ़िया मोटा खीरा।

बालम चावल—पुं० [हिं०] १ एक प्रकार का धान। २. उक्त धान का चावल।

बाल-मुकुंद—पुं० [सं० कर्म० स०] १. बाल्यावस्था के श्रीकृष्ण। बालकृष्ण। २ श्री कृष्ण की शिशुकाल की वह मूर्ति जिसमें वे घुटनों के बल चलते हुए दिखाये जाते हैं।

बाल-मूलक—पुं० [सं० कर्म० स०] छोटी और कच्ची मूली, जो वैद्यक में कटु, उष्ण, तिक्त, तीक्ष्ण तथा श्वास, अर्श, क्षण और नेत्ररोग आदि की नाशक, पाचक एवं बलवर्द्धक मानी गई है।

बालरखा—पुं० [हिं० बाल (अनाज की)+रखना] १. खेतों में बना हुआ वह ऊँचा चबूतरा जिस पर बैठकर गल्ले की देख-माल की जाती है। २. खेत की फसल की रखवाली करने का पारिश्रमिक या मजदूरी।

बाल-रस—पुं० [सं० मध्य० स०] वैद्यक के अनुसार एक प्रकार का औषध जो पारे, गंधक और सोनामक्खी से बनाया जाता है और बालकों के पुराने ज्वर, खाँसी, शूल आदि का नाशक कहा गया है।

बालराज—पुं० [सं० बाल√राज् (शोभित होना)+अच्] वैदूर्यमणि।

बाल-लीला—स्त्री० [सं० ष० त०] बालकों की क्रीडाएँ।

बालवाँ—पुं० बालमखीरा। उदा०—औ हिंदुआना बालवाँ खीरा। —जायसी।

बाल-विधवा—वि० [सं० कर्म० स०] (स्त्री) जो बाल्यावस्था में विधवा हो गई हो।

बाल-विधु—पुं० [सं० कर्म० स०] अमावास्या के उपरान्त निकलनेवाला नया चन्द्रमा। शुक्लपक्ष की द्वितीया का चन्द्रमा।

बाल-विवाह—पुं० [सं० ष० त०] वह विवाह जो बाल्यावस्था में हुआ हो। छोटी अवस्था में होनेवाला विवाह।

बाल-व्यंजन—पुं० [सं० ष० त०] चामर। चँवर।

बालव्रत—पुं० [सं० ब० स०] मंजुश्री या मंजुघोष का एक नाम।

बालसाँगड़ा—पुं० [सं० बाल-शृंखला] कुश्ती का एक पेंच।

बाल-साहित्य—पुं० [सं० मध्य० स०] ऐसी पुस्तकें आदि जो मुख्यत बालकों का मनोविनोद करने के साथ ही उन्हें अध्ययन की ओर प्रवृत्त करनेवाली भी हों। (जुवेनाइल लिटरेचर)

बाल-सूर्य—पुं० [सं० कर्म० स०] १. उदयकाल के सूर्य। प्रातःकाल के उगते हुए सूर्य। २. वैदूर्य मणि।

बाला—स्त्री० [सं० बाल+टाप्] १. बारह वर्ष से सत्रह वर्ष तक की अवस्था की स्त्री। २ जवान स्त्री। युवती। ३. जोरू। पत्नी। भार्या। ४ औरत। स्त्री। ५. बहुत छोटी लड़की। बच्ची। ६ कन्या। पुत्री। ७ दस महाविद्याओं में से एक महाविद्या। ८. एक प्रकार का वर्ण वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में तीन रगण और एक गुरु होता है। ९ एक वर्ष की अवस्था की गौ। १०. [बाल+अच्+टाप्] नारियल। ११ हलदी। १२ एक प्रकार की चमेली। १३ घी कुआर। घृतकुमारी। १४ सुगंधबाला। १५ खैर का पेड़। १६ चीनी ककड़ी। १७ पोइया नामक वृक्ष। १८ नीली कटसरैया। १९ इलायची।

वि० [सं० बाल=बालक] १ बालकों के समान अनजान और सीधा-सादा। निश्छल और निष्कपट।

पद—बाला-भोला=बहुत ही सीधा-सादा। सरल प्रकृति का। २ बच्चों की प्रकृति का। जैसे—सिर जाला, मुँह बाला। (कहा०)

पुं० [सं० वलय] हाथ में पहनने का एक प्रकार का कड़ा। (पूरब)

पुं० [?] एक प्रकार का कीड़ा जो गेहूँ की फसल के लिए बहुत घातक होता है।

वि० [फा०] १ जो सबसे ऊँचा या ऊपर हो। जैसे—तुम्हारा बोल-बाला हो, अर्थात् तुम्हारी बात सबके लिए मान्य हो।

पद—बाला-बाला=(क) इस प्रकार अलग अलग या ऊपर ऊपर जिसमें और लोगों को पता न चले। जैसे—तुमने बाला-बाला सारी कारंवाई कर ली, और हम लोगों को पता भी न चलने दिया। (ख) अलग से या बाहर बाहर बिना परिचित या सूचित किये। जैसे—व यहाँ आये भी और बाला-बाला चले भी गये। हम लोगों का पता ही न चला।

२ सबसे अच्छा, बढ़िया या श्रेष्ठ। उदा०—मोरा बाला ... मोरा बाला जोबन।—दादरा। ३. अलग। पृथक्।

मुहा०—(किसी को) बाला बताना=टाल-मटोल या बहानेबाजी करना।

बालाई—वि० [फा०] १ ऊपर का। ऊपरी। २. वेतन, वृत्ति, व्यापार आदि से होनेवाली आय के अतिरिक्त या उससे भिन्न। ऊपरी। जैसे—बालाई आमदनी।

स्त्री० मलाई।

बालाखाना—पुं० [फा० बाला खानः] १. अट्टालिका। २ मकान का सबसे ऊपरवाला कमरा।

बालाग्र—पुं० [सं०] १ शरीर के बाल का अगला भाग। २ प्राचीन काल का एक परिमाण जो ६४ परमाणु या ८ रज के बराबर कहा गया है।

बालातप—पुं० [सं० बाल-आतप, कर्म० स०] बालसूर्य का ताप। सबेरे की धूप।

बालादवी—स्त्री० [?] टोह लेने के लिए इधर-उधर घूमना-फिरना। उदा०—यह कह (नाजिम) कूर सिंह से बिदा हो बालादवी के वास्ते चला गया।—देवकीनन्दन खत्री।

बाला-दस्त—वि० [फा०] [भाव० बालादस्ती] १. बलवान। जबर-दस्त। २. प्रधान। मुख्य। ३. श्रेष्ठ। ४. ऊँचा।

बालादस्ती—स्त्री० [फा०] १. जबरदस्ती। बल-प्रयोग। २. प्रधानता। ३. श्रेष्ठता। ४. ऊँचाई। उच्चता।

बालादित्य—पु० [सं० बाल-आदित्य, कर्म० स०] बालसूर्य।

बालानशीन—वि० [फा० बालानशी] १. मान्य। प्रतिष्ठित। २ सबसे अच्छा। जैसे—कम खरच और बालानशीन।

पु० सभापति।

बालापन—पु० [सं० बाल+हिं० पन] बाल्यावस्था। बचपन।

बाला-बाला—अव्य० दे० 'बाला' (फा०) के अन्तर्गत पद।

बालामय—पु० [सं० बाल-आमय, ष० त०] बच्चों को होनेवाले रोग। बाल-रोग।

बालार्क—पु० [सं० बाल-अर्क, कर्म० स०] १. प्रातःकाल का सूर्य। बाल-सूर्य। २. कन्या राशि मे स्थित सूर्य।

बालि—पु० [सं० बल्+इन्, णित्व] किष्किंधा का एक प्रसिद्ध वानर राजा जिसका वध भगवान राम ने किया था।

बालिका—स्त्री० [सं० बाला+कन्+टाप्, ह्रस्व, इत्व] १. छोटी लड़की। कन्या। २ पुत्री। बेटी। ३ कान मे पहनने की बाली। ४ छोटी इलायची। ५ बालू। रेत।

बालिग—वि० [अ० बालिग] [भाव० बालिगी] (व्यक्ति) जो कानून की दृष्टि से युवावस्था प्राप्त कर चुका हो और फलतः जिसे विधिक दृष्टि से कुछ विशिष्ट कार्य करने का अधिकार प्राप्त हो गया हो। वयस्क।

बालिनी—स्त्री० [सं० बाल+इनि+ङीप्] अश्विनी नक्षत्र का एक नाम।

बालिमा (मन्)—स्त्री० [सं० बाल+इमनिच्] बचपन। बाल्यावस्था।

बालिश—पु० [सं०√बाड्+इन्, बाडि√शो+ड, ड—ल] [भाव० बालिश्य] १ बालक। शिशु। २. अबोध या नासमझ व्यक्ति।

वि० अबोध। नासमझ।

पु० [फा०] तकिया। सिरहाना।

बालिश्त—पु० [फा०] कोई चीज नापने मे हाथ के पंजे को भरपूर फैलाने पर अँगूठे की नोक से लेकर कानी उंगली की नोक तक की दूरी, जो लगभग नौ इंच के बराबर मानी जाती है। बित्ता।

बालिश्तिया—वि० [फा० बालिश्त+हिं० इया (प्रत्य०)] बहुत ही छोटा या नाटा।

बालिश्य—पु० [सं० बालिश+ष्यञ्] १. बाल्यावस्था। लड़कपन। २ बड़े हो जाने पर भी छोटे बालकों की तरह अबोध और कम समझ होने की अवस्था या भाव। इसकी गणना मानसिक रोगों मे होती है। (एमेन्शिया)

बालिस—वि० [सं० बालिश] नासमझ। मूर्ख। उदा०—माही बल बालिसो विरोध रघुनाथ सो।—तुलसी।

बाली (लिन्)—पु० [सं० बाल+इनि] किष्किंधा का एक प्रसिद्ध वानर राजा जिसका वध भगवान राम ने किया था।

स्त्री० [सं० बालिका] कानों में पहनने का एक तरह का वृत्ताकार आभूषण।

स्त्री० [देश०] हथौड़े के आकार का कसेरों का एक औजार जिससे वे लोग बरतनों की कोर उभारते हैं।

†स्त्री०=बाल (अनाज की)।

वि० [हिं० 'बाला' का स्त्री० रूप] नया। उदा०—पीव कारन पीली पड़ी बाला जोबन बाली बेस।—मीराँ।

बाली-कुमार—पुं० [सं०] अंगद।

बालीसबरा—पु० [बाली?+हिं० सबरा] एक तरह का उपकरण जिससे कसेरे थाली, परात आदि की कोर उभारते हैं।

बालुंकी (लुंगी)—स्त्री०=बालुकी।

बालुक—पु० [सं०√बल्+उण्+कन्] १. एलुआ नामक वृक्ष। २. पनियालू।

बालुका—स्त्री० [सं०√बल्+उण्+कन्+टाप्] १. रेत। बालू। २. एक प्रकार का कपूर। ३. ककड़ी।

बालुका-यंत्र—पुं० [सं० मध्य० स०] औषध आदि फूँकने का वह यंत्र जिसमें औषध को बालू भरी हाँडी मे रखकर आग से चारों ओर से ढँकते हैं। (वैद्यक)

बालुका-स्वेद—पु० [सं० मध्य० स०] बालू से सेंकने पर होनेवाला पसीना।

बालू—पु० [सं० बालुका] पत्थरों का वह बहुत ही महीन चूर्ण जो रेगिस्तानो तथा नदियो के तटो पर अत्यधिक मात्रा में पड़ा रहता है तथा जो चूने, सीमेंट आदि के साथ मिलाकर इमारतों मे जोड़ाई के काम आता है।

पद—बालू की भीत—ऐसी चीज जो शीघ्र ही नष्ट हो जाय अथवा जिसका भरोसा न किया जा सके।

स्त्री० [देश०] एक प्रकार की मछली जो दक्षिण भारत और लंका के जलाशयों में पाई जाती है।

बालूड़ा†—पु० [सं० बाल] बच्चा। बालक।

बालूदानी—स्त्री० [हिं० बालू+फा० दानी] एक प्रकार की झँझरी-दार डिबिया जिसमे लेख आदि की स्याही सुखाने के लिए बालू रखा जाता है।

बालूबुर्द—वि० [हिं० बालू+फा० बुर्द=ले गया] जो नदी के बालू के नीचे दब गया हो।

पु० वह भूमि जिसकी उर्वरा शक्ति नदी की बाढ़ या बालू पड़ने के कारण नष्ट हो गई हो।

बालूशाही—स्त्री० [हिं० बालू+शाही=अनुरूप] मैदे की बनी हुई एक तरह की प्रसिद्ध मिठाई।

बालूसूअर—पु० [हिं०] एक प्रकार का छोटा सूअर जो नदी तट की रेतीली भूमि मे रहता और प्रायः रात के समय निकलकर पेड़ो की जड़ें और मछलियाँ खाता है। कुछ लोग भूल से इसे 'भालू सूअर' भी कहते हैं।

बालेंदु—पु० [सं० बाल-इंदु, कर्म० स०] शुक्लपक्ष की द्वितीया का चन्द्रमा। दूज का चाँद।

बाले-मियाँ—पु०=गाजी-मियाँ (महमूद गजनवी का भांजा)।

बालेय—वि० [सं० बाल+ढञ्—एय] १. कोमल। मृदु। २. जो बलि दिए जाने के योग्य हो। ३ जो बालकों के लिए लाभदायक या हितकर हो।

पु० १. बावल। २. गधा।

बालेष्ट—पु० [सं० बाल-इष्ट, ष० त०] बेर।

बालोपचार—पु० [सं० बाल-उपचार, ष० त०] बच्चों की चिकित्सा।

बालोपवीत—पु० [सं० बाल-उपवीत, ष० त०] १. लँगोटी। २ जनेऊ।

बाल्टी†—स्त्री०=बालटी।

बाल्य—वि० [सं० बाल+यक्] १. बालक-संबंधी। २. बचपन का। जैसे—बाल्य अवस्था। ३ बालकों का सा। जैसे—बाल्य-स्वभाव।

पु० १ बाल का भाव। २. बचपन। लड़कपन।

बाल्यावस्था—स्त्री० [सं० बाल्य-अवस्था, कर्म० स०] बालक होने की अर्थात् सोलह-सत्रह वर्ष तक की अवस्था। युवावस्था से पहले की अवस्था। लड़कपन।

बाल्हक—वि० [सं० बल्हि+वुञ्—अक] बलख देश।

पु० १. बलख देश का निवासी। २ बलख का घोड़ा। ३. केसर। ४ हींग।

बाल्हा†—पु० [सं० वल्लभ] प्रियतम। उदा०—(क) बाल्हा मैं बैरागिण हूँगी हो।—मीराँ। (ख) बाल्हा आव हमारे गेहरे।—कबीर।

बाल्हिक—वि०, पु०=बाल्हक।

बाल्हीक—वि०, पु०=बाल्हक।

पु०=बाह्लीक।

बाव—पु० [सं० वायु] १ वायु। हवा। पवन। २ बात का शारीरिक प्रकोप। बाई। ३ अपान-वायु। पाद।

क्रि० प्र०—निकलना।—सरना।

†पु० दे० 'बाब'।

बावज†—स्त्री०=बातचीत।

बावजूद—अव्य० [फा० बावुजूद] १. यद्यपि। २. इतना होने पर भी।

बावटा†—पु० [हिं० बाव=हवा] झंडा।

बावड़ी—स्त्री०=बावली (जलाशय)।

बावन—वि० [सं० द्वि पचाशत; पा० द्विपण्णासा; प्रा० विपण्णा] जो गिनती मे पचास से दो अधिक हो।

पद—बावन तोले पाव रत्ती=हर तरह से ठीक या पूरा।

विशेष—कहते है कि मध्ययुग के रसायनिकों का विश्वास था कि खरा रसायन वही है जो बावन तोले ताँबे मे पाव रत्ती मिलाया जाय तो वह सब सोना हो जाता है। इसी आधार पर यह पद बना है।

बावनवीर=बहुत बड़ा बहादुर या चालाक।

पु० उक्त की सूचक संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—५२।

†पु०=वामन।

बावनवाँ—वि० [हिं० बावन+वाँ (प्रत्य०)] [स्त्री० बावनवी] क्रम, संख्या आदि के विचार से ५२ के स्थान पर पड़नेवाला।

बावना†—वि०=बौना (वामन)।

स०=बाहना (हल चलाना)।

बावनी—स्त्री० [हिं० बावन] १. एक ही तरह की ५२ चीजो का वर्ग या समूह। जैसे—शिवा-बावनी। २ बहुत से लोगो का जमावड़ा या समूह। ३. मध्य-युग मे वह वर्ग या समुदाय जो होली के अवसर पर नाच-गाने आदि की व्यवस्था करता था। ४ ठठोलों या मसखरों का दल या वर्ग। ५ ताश के कोट-पीस के खेल मे वह स्थिति जब कोई पक्ष तेरहों हाथ बनाता है और जबकि दूसरा पक्ष एक भी हाथ नहीं बना पाता। इसमे ५२ बाजियो की जीत मानी जाती है।

बावभक—स्त्री० [हिं० बाव=वायु+अनु० भक] वायु के प्रकोप के कारण होनेवाला पागलपन। सिड़ीपन। झक।

बावर—पु० [फा०] यकीन। विश्वास।

वि०, पु०=बावरा (बावला)।

बावरची—पु० [फा०] रसोइया। पाचक।

बावरचीखाना—पु० [फा० बावरचीखाना] रसोई-घर।

बावरा—वि० [हिं० बाव=वायु+रा (प्रत्य०)] १. शरीर मे वायु या बात का प्रकोप उत्पन्न करनेवाला। उदा०—काहू को बैंगन बावरा काहू को बैंगन पत्य।—कहावत। २ दे० 'बावला'।

बावरी†—स्त्री०=बावली (जलाशय)।

वि० हिं० 'बावरा' का स्त्री०।

स्त्री० [हिं० बावरा=पागल] सम्राट् अकबर के समय की एक प्रसिद्ध भक्त महिला जिनके नाम पर एक सम्प्रदाय भी चला था।

बावल—पु० [सं० वायु] आँधी। अंधड़। (डिंगल)

बावला—वि० [सं० वातुल; प्रा० बाउल] वायु के प्रकोप के कारण जिसका मस्तिष्क विकृत हो गया हो, अर्थात् पागल। विक्षिप्त।

बावलापन—पु० [हिं० बावला+पन (प्रत्य०)] पागलपन। सिड़ीपन। झक।

बावली—स्त्री० [सं० वाप+ड़ी पाली (प्रत्य०)] १. चौड़े मुँह का एक प्रकार का कूआँ या जलाशय जिसमे पानी तक पहुँचने के लिए सीढ़ियाँ बनी हो। उदा०—मजनूँ की प्यास वह बुझाती, लैला कुछ बावली नहीं थी।—कोई शायर। २. ऐसा छोटा तालाब जिसके किनारे सीढ़ियाँ बनी हो। ३. हजामत का एक प्रकार जिसमे माथे से लेकर चोटी के पास तक के बाल चार पाँच अंगुल की चौड़ाई मे मूँड़ दिये जाते है।

बावाँ†—वि०, पु०=बायाँ।

बाशिंदा†—वि० [फा० बाशिन्द.] रहनेवाला।

पु० निवासी।

बाषर—पु०=बखर (घर)। उदा०—सहज सुभावै बाषर ल्याई।—गोरखनाथ।

बाष्कल—पु० [सं०] १. योद्धा। वीर। २. एक प्राचीन ऋषि। ३. एक उपनिषद। ४ एक दानव।

बाष्प—पु० [सं०√बा+प, पुक् आगम] भाप। वाष्प।

बाष्पकल—वि० [सं० मध्य० स०] (शब्द) जो आँखो से आँसू बहने के कारण मुँह से स्पष्ट न निकल रहा हो।

बाष्प-दुर्दिन—पु०=बाष्पपूर।

बाष्पपूर—पु० [सं० तृ० त०] आँखो मे बहनेवाले आँसुओ की धारा।

बाष्प-मोचन—पु० [ष० त०] आँसू बहाना। रोना।

बाष्प-वृष्टि—स्त्री० [सं० ष० त०] आँखो से आँसुओं की धारा बहना।

बाष्प-सलिल—पु० [सं० ष० त०] अश्रु-जल। आँसू।

बाष्पांबु—पु० [सं० बाष्प-अंबु, ष० त०] अश्रु-जल। आँसू।

बाष्पाकुल—वि० [सं० बाष्प-आकुल, तृ०, त०] जो रोता-रोता विकल हो रहा हो।

बाष्पी—स्त्री० [सं० बाष्प+ङीष्] हिंगुपत्री।

बासंतिक—वि० [सं० वासंतिक] १ बसंतऋतु-संबंधी। २. बसंत ऋतु मे होनेवाला।

बासंती—स्त्री० [सं० वासंती] १ अडूसा। बासा। २ माधवी लता। ३. दे० 'वासंती'।

वि० [हि० बसंत] पीले रंग का। पीला।

बास—पु० [सं० वास] १. रहने की क्रिया या भाव। निवास। २. रहने का स्थान। निवास-स्थान। ३. कपड़ा। वस्त्र। ४ एक प्रकार का छन्द।

स्त्री० १. गन्ध। बू। महक। २ बहुत ही छोटा या थोड़ा अंश। जैसे—उसमे मल-मनसत की बास तक नही है।

स्त्री० [सं० वाशि] १ अग्नि। आग। २. एक प्रकार का अस्त्र। ३ पत्थर, लोहे आदि के टुकडे जो तोप के गोलो मे भरकर फेंके जाते है।

†स्त्री०=वासना।

पु० [सं० वासर] दिन।

पु० [देश०] एक प्रकार का बड़ा वृक्ष जिसकी लकडी लाल रंग की और बहुत मजबूत होती है। बिपरसा।

*पु० [सं० वसन] वस्त्र। उदा०—मंद मंद हास बदन बासि (बास) मे दुरावे।—अलबेली अलि।

बासक†—पु० [सं० वासुकि] सांप। उदा०—पेट्यां बासक भेजिया जी।—मीरां।

†पु०=वासक।

स्त्री० [फा०] जँभाई।

बासक-सज्जा—स्त्री०=वासक-सज्जा (नायिका)।

बासठ—वि० [सं० द्विषष्टि; प्रा० द्वासट्ठि वासट्ठि] जो गिनती मे साठ और दो हो। इकतीस का दूना।

पु० उक्त की सूचक सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—६२।

बासठवाँ—वि० [सं० द्विषष्ठितम, हिं० बासठ+वाँ (प्रत्य०)] [स्त्री० बासठवी] क्रम या गिनती के विचार से बासठ के स्थान पर पड़नेवाला। जैसे—बासठवी वर्ष-गाँठ।

बासदेव†—पुं० [सं० वाशिदेव] अग्नि। आग। (डिंगल)

पु०=वासुदेव।

बासन†—पु०=बरतन।

बासना—स्त्री० [सं० वास] १. गंध। महक। २. विशेषतः हल्की गंध।

स०=सुगंधित करना।

स्त्री०=वासना।

बासफूल—पु० [हिं० बास=गंध+फूल] १. एक प्रकार का धान। २. उक्त धान का चावल।

बासमती—पु० [हिं० बास=महक+मती (प्रत्य०)] १ एक प्रकार का धान। २. उक्त धान का चावल जो बहुत बढ़िया और सुगंधित होता है।

बासर—पु० [सं० वासर] १. दिन। २ प्रातःकाल। सवेरा। ३. प्रातःकाल गाये जानेवाले, प्रभाती, भैरवी आदि गीत या भजन।

बासव—पु०=वासव (इन्द्र)।

बासवी—पु० [सं० वासवि] अर्जुन। (डिं०)

बासवी दिसा—पु० [सं० वासवी दिशा] पूर्व दिशा जो इन्द्र की दिशा मानी जाती है।

बाससी—पु० [सं० वास] वस्त्र।

बासा—पु० [सं० वास=निवास] १. रहने की जगह। निवास-स्थान। २. बसेरा उदा०—मानस पांख लेहि फिर बासा।—जायसी। ३. वह स्थान जहां दाम देने पर पकी-पकाई रसोई, (चावल, दाल, रोटी आदि) खाने को मिलती हो। भोजनालय।

पु० [सं० वासक] १ अड़ूसा। २. एक प्रकार की घास।

पु० [देश०] एक प्रकार का शिकारी पक्षी।

†पु० दे० 'पिया-बांस'।

पु० [सं० वास=कपडा] कपड़ा। वस्त्र। उदा०—मंद मंद हास बदन, बासि मे दुरावें। —अलबेली अलि।

†पु०=बांसा।

बासिग*—पु०=वासुकि (नाग)।

बासित—भू० कृ०=वासित।

बासिन—पु०=बासा (शिकारी पक्षी)।

बासिष्ठी*—स्त्री० [सं० वासिष्ठी] बनास नदी का एक नाम जो वशिष्ठ जी के तप प्रभाव से उत्पन्न मानी गई है।

बासी—वि० [हिं० बास=दिन+ई (प्रत्य०)] १ (खाद्य पदार्थ) जो एक या कई दिन पहले का बना हुआ हो। जैसे—बासी रोटी। २. (फल आदि) जो एक या अनेक दिन पहले पेड (या पौधे) से तोड़ा गया हो। 'ताजा' का विपर्याय।

विशेष—बासी अन्न मे कुछ बू सी आने लगती है, और बासी फल कुछ मुरझा से जाते हैं।

पद—**बासी-तिबासी**। (देखें)

३ जो कुछ समय तक रखा या यों ही पड़ा रहा हो। जैसे—(क) रात का रखा हुआ बासी पानी। (ख) बासी मुंह।

पद—**बासी मुंह**=बिना कुछ खाये-पीये हुए।

४. सूखा या कुम्हलाया हुआ। जो हरा-भरा न हो। जैसे—बासी फूल।

मुहा०—**बासी कढ़ी में उबाल आना**=बहुत समय बीत जाने पर किसी काम के लिए उत्सुकतापूर्वक प्रयत्न होना।

पु० १ धार्मिक दृष्टि से कुछ विशिष्ट अवसरो पर पहले दिन का बना हुआ बासी भोजन दूसरे दिन खाना।

२. दे० 'बसिऔरा'।

वि०=वासी (निवासी)।

बासी-तिबासी—वि० [हिं० बास+तीन+बासी] दो-तीन दिन का रखा हुआ। जो बासी से भी कुछ और अधिक बिगड चुका हो। जैसे—बासी-तिबासी रोटी।

बासु—स्त्री०=बास।

बासुकी—स्त्री०=वासुकि।

बासू—पु०=वासुकि (नाग)।

बासूर—स्त्री० [अ०] बवासीर।

बासौंधी—स्त्री०=बसौंधी (रबड़ी)।

बास्त—पु०[सं० बस्त+अण्] १ बकरे से संबंध रखनेवाला। २ बकरे से प्राप्त होनेवाला।

बाह—पु० [हिं० बाहना] खेत जोतने की क्रिया। खेत की जोताई।
†पु०—बाट।
†पु०—बाह (प्रवाह)।

बाहक—पु०[सं० वाहक] [स्त्री० बाहकी] १. ढोने या ले चलनेवाला कहार। उदा०—सजी बाहकी सखी सुहाई।—रघुराज। २ कहार।

बाहड़ी—स्त्री० [देश०] वह खिचड़ी जो मसाला और कुम्हड़ौरी डालकर पकाई गई हो।

बाहन—पु०[देश०] एक प्रकार का बहुत ऊँचा वृक्ष जिसके पत्ते जाड़े के दिनों में झड़ जाते हैं। सफेदा।
†पु०=वाहन।

बाहना—स०[सं० वहन] १ वहन करना। २ उठा या ढोकर ले चलना। ३ (अस्त्र-शस्त्र) चलाना या फेंकना। उदा०—बाहत अस्त्र नृपति पर आगे।—पद्माकर। ३. (जानवर या सवारी) हाँकना। ४. ग्रहण या धारण करना। ५ उत्तरदायित्व, कर्तव्य आदि के रूप में अपने ऊपर लेना। अंगीकरण करना। ६ (खेत या जमीन) हल चलाकर जोतना। ७ (गौ, बकरी, भैंस आदि) नर से मिलाकर गाभिन कराना।
अ० इधर-उधर घूमना। भटकना। उदा०—भूलै भरम दुनी कत बाहौ।—कबीर।

बाहनी—स्त्री०[सं० वाहिनी] सेना। फौज।

बाहम—क्रि० वि० [फा०] एक दूसरे के प्रति या साथ। आपस में। परस्पर।

बाहर—अव्य०[सं० बहिस् का दूसरा रूप बाहिर] [वि० बाहरी] १ किसी क्षेत्र, घेरे, विस्तार आदि की सीमा से परे। किसी परिधि से कुछ अलग, दूर या हटकर। 'अंदर' और 'भीतर' का विपर्याय। जैसे—यह सामान कमरे के बाहर रख दो।
पद—बाहर-बाहर बिना किसी क्षेत्र, घेरे या विस्तार के अन्दर आये हुए। बिना अन्तर्भुक्त हुए। जैसे—वे पटने से लौटे तो, पर बाहर-बाहर लखनऊ चले गये।
२ किसी देश या स्थान की सीमा से अलग या दूर, अथवा किसी दूसरे देश या स्थान में। जैसे—महीने में दस बारह दिन तो उन्हें दौरे पर बाहर ही रहना पड़ता है। ३ किसी प्रकार के अधिक्षेत्र, मर्यादा, संपर्क आदि से भिन्न या रहित। अलग। जैसे—हम आपसे किसी बात में बाहर नहीं हैं, अर्थात् आप जो कहेंगे या चाहेंगे, हम वही करेंगे। ४. बगैर। सिवा। (क्व०)
†पु० [हिं० बाहना] वह आदमी जो कुएँ की जगत पर खड़ा रहकर मोट का पानी नाली में उलटता या गिराता है।

बाहरजामी—पु० [सं० बाह्ययामी] ईश्वर का सगुण रूप। राम, कृष्ण इत्यादि अवतार।

बाहरला†—वि०=बाहरी।

बाहरी—वि०[हिं० बाहर+ई (प्रत्य०)]१ बाहर की ओर का। बाहर-वाला। 'भीतरी' का विपर्याय। २ जो अपने देश, वर्ग या समाज का न हो। पराया और भिन्न। जैसे—बाहरी आदमी। ३. जो ऊपर या केवल बाहर से देखने भर को हो। जिसके अन्दर कुछ तथ्य न हो। जैसे—कोरा बाहरी ठाठ-बाट। ४. बिलकुल अलग या भिन्न। उदा० —पच हँसिहैं री, हो तो पचन ते बाहरी।—देव।

बाहस—पु०[डिं०] अजगर।

बाहाँ-जोरी—अव्य०[हिं० बाँह+जोड़ना] हाथ में हाथ मिलाये हुए।

बाहा—पु०[हिं० बाँधना]वह रस्सी जिससे नाव का डाँड बँधा रहता है।
†पु०[हिं० बहना]१ पानी बहने की नहर या नाली। २. वह छेद जिसमें से होकर कोल्हू का तेल या रस बहकर नीचे गिरता है।

बाहिज—अव्य०[सं० बाह्य] ऊपर से। बाहर से देखने में।
वि०=बाह्य (बाहरी)।

बाहिनी—वि०, स्त्री० =वाहिनी।

बाहिर†—अव्य० =बाहर।

बाही†—वि० =वाही।
स्त्री०[हिं० बाहना]बाहने की क्रिया या भाव।
स्त्री०[सं० बाहु] पहाड़ की भुजा या किसी पक्ष की लंबाई।

बाहीक—पु०=बाह्लीक

बाहु—स्त्री०[सं० √बाध्+कु, ह—आदेश] भुजा। बाँह।

बाहुक—पु०[सं०]१ राजा नल का उस समय का नाम जब वे अयोध्या के राजा के सारथी थे। २ नकुल का एक नाम।
वि०—बाहक।

बाहु-कुंज—वि०[ब० स०] जिसके हाथ कुबड़े या टेढ़े हों। लूला।

बाहुगुण्य—पु०[सं० बहुगुण+ष्यञ्] १ बहु-गुण होने की अवस्था या भाव। बहुत से गुणों का होना।

बाहुज—पु०[सं० बाहु√जन्+ड] क्षत्रिय जिनकी उत्पत्ति ब्रह्मा के हाथ से मानी जाती है।
वि० बाहु से उत्पन्न या निकला हुआ।

बाहुजन्य—वि०[सं० बहुजन+ष्यञ्] जो बहुजन अर्थात् बहुत बड़े जन-समाज में फैला अथवा उससे संबंध रखता हो। बहु-जन संबंधी।

बाहुटा—पु०[सं० बाहु] बाँह पर पहनने का बाजूबंद (गहना)।

बाहुड़ना†—अ०=बहुरना।

बाहुड़ि†—अव्य० =बहुरि।

बाहु-त्राण—पु०[ब०स०] चमड़े या लोहे आदि का वह दस्ताना जो युद्ध में हाथों की रक्षा के लिए पहना जाता है।

बाहुदंती (तिन्)—पु० [सं० बहु-दंत, ब० स०, +अण् (स्वार्थे)+इनि] इंद्र।

बाहुदा—स्त्री० [सं०] १ महाभारत के अनुसार एक नदी। २ राजा परीक्षित् की पत्नी।

बाहु-पाश—पु० [सं०कर्म० स०] दोनों बाहों को मिलाकर बनाया हुआ वह घेरा जिसमें किसी को लेकर आलिंगन करते हैं। भुज-पाश।

बाहु-प्रलंब—वि० [सं० ब० स०] जिसकी बाँहें बहुत लंबी हों। आजानु-बाहु।

बाहु-बल—पु० [सं० ष० त०] पराक्रम। बहादुरी।

बाहु-भूषण—पु०[ष० त०] भुज-बंद नाम का गहना।

बाहु-मूल—पु० [ष० त०] कंधे और बाँह का जोड़।

बाहु-युद्ध—पु० [ष० त०] कुश्ती।

बाहु-योधी (धिन्)—पुं० [सं० बाहु√युध् +णिनि] कुश्ती लड़नेवाला। पहलवान।

बाहुरना—अ०=बहुरना।

बाहुरूप्य—पुं० [सं० बहुरूप+ष्यञ्] बहुरूपता।

बाहुल—पुं० [सं० बहुल+अण्] १. युद्ध के समय हाथ में पहनने का एक उपकरण जिससे हाथ की रक्षा होती थी। दस्ताना। २ कार्तिक मास। ३. अग्नि। आग।

बाहुल-ग्रीव—पुं० [सं० ब० स०] मोर।

बाहुल्य—पुं० [सं० बहुल+ष्यञ्] बहुल होने की अवस्था या भाव। बहुतायत। अधिकता। ज्यादती।

बाहु-विस्फोट—पुं० [सं० ष० त०] ताल ठोकना।

बाहु-शाली (लिन्)—पुं० [सं० बाहु√शाल्+णिनि] १ शिव। २. भीम। ३ धृतराष्ट्र का एक पुत्र। ४. एक दानव।

बाहुशोष—पुं० [सं० ष० त०] बाँह मे होनेवाला एक प्रकार का वायु रोग जिसमें बहुत पीडा होती है।

बाहु-श्रुत्य—पुं० [सं० बहुश्रुत+ष्यञ्] बहुश्रुत होने की अवस्था या भाव। बहुत सी बातो को सुनकर प्राप्त की हुई जानकारी।

बाहु-संभव—पुं० [सं० ब० स०] क्षत्रिय, जिनकी उत्पत्ति ब्रह्मा की बाँह से मानी जाती है।

बाहु-हजार†—पुं०=सहस्रबाहु।

बाहू—स्त्री०=बाहु।

बाह्मन—पुं०=ब्राह्मण।

बाह्य—पुं० [सं० बहिस्+यञ्, टि-लोप] १ बाहरी। बाहर का। २ प्रस्तुत विषय से भिन्न। ३ किसी मूल से अलग या भिन्न। जैसे—बाह्य प्रभाव। ४ समस्त पदो के अत मे, क्षेत्र, परिधि, सीमा के बाहर रहने या होनेवाला। जैसे—आलबन बाह्य=स्वय आलबन मे न होकर उससे अलग या बाहर का। ५ किसी घिरे हुए स्थान में न होकर उससे अलग और खुले हुए स्थान मे होनेवाला। जैसे—बाह्य खेल।

पुं० [सं० बाह्य] १ भार ढोनेवाला पशु। जैसे—बैल आदि। २. यान। सवारी।

बाह्य-तपश्चर्या—स्त्री० [सं० कर्म० स०] जैनियो के अनुसार तपस्या का एक भेद जिसमे अनशन, औनोदर्य, वृत्तिसक्षेप, रसत्याग, कायक्लेश और लीनता ये छ बाते होती है।

बाह्य-द्रुति—पुं० [सं० कर्म० स०] पारे का एक सस्कार। (वैद्यक)

बाह्य-नाम—पुं० [सं० कर्म० स०] किसी का नाम और ठिकाना जो उसे भेजे जानेवाले पत्र के ऊपर लिखा जाता है। ठिकाना। पता। (एड्रेस)

बाह्यनामिक—पुं० [सं० बाह्यनामन्+ठक्—इक] वह जिसके नाम पर और पते से पत्र या और कोई चीज भेजी गई हो। (एड्रेसी)

बाह्य-पटी—स्त्री० [सं० कर्म० स०] नाटक का परदा। यवनिका।

बाह्यप्रांत—पुं० [सं० कर्म० स०] वह जो किसी चीज के बिलकुल अन्तिम सिरे पर स्थित हो। विस्तार के अन्तिम भाग का अग। (एक्स्ट्रीम)

बाह्य-प्रयत्न—पुं० [सं० कर्म० स०] व्याकरण मे, कंठ से लघु ध्वनि उत्पन्न करने के उपरान्त होनेवाली क्रिया या प्रयत्न। इसके घोष और अघोष दो भेद है।

बाह्य-रति—स्त्री० [सं० कर्म० स०] आलिंगन, चुबन आदि कार्य जो बाहरी रति के विशेष रूप माने गये है।

बाह्य-रूप—पुं० [सं० कर्म० स०] ऊपरी या बाहरी रूप। दिखाऊ रूप।

बाह्यवासी—वि० [सं० बाह्य√वस् (निवास)+णिनि, उप० स०] बस्ती के बाहर रहनेवाला।

पुं० चाडाल।

बाह्य-विद्रधि—स्त्री० [सं० कर्म० स०] एक प्रकार का रोग जिसमें शरीर के किसी स्थान में सूजन और फोडे की सी पीड़ा होती है। इसमे रोगी के मुँह अथवा गुदा से मवाद भी निकलती है।

बाह्य-वृत्ति—स्त्री० [सं० कर्म० स०] प्राणायाम का एक भेद जिसमे अन्दर से निकलते हुए श्वास को धीरे-धीरे रोकते हैं।

बाह्यांचल—पुं० [सं० बाह्य अचल, कर्म० स०] बस्ती के बाहर का स्थान। (आउटस्कर्टस)

बाह्यांतर—वि० [सं०] बाहर और अन्दर दोनो का। जैसे—बाह्यातर शुद्धि। क्रि० वि० बाहर और अन्दर दोनों ओर।

बाह्याचरण—पुं०=बाह्याचार।

बाह्याचार—पुं० [सं० बाह्य-आचार, कर्म० स०] वह आचरण विशेषत धार्मिक या नैतिक आचरण जो केवल दूसरो को दिखलाने के लिए हो, शुद्ध मन से न हो। आडम्बर। ढकोसला।

बाह्याभ्यंतर—पुं० [सं० द्व० स०] प्राणायाम का एक भेद जिसमें आते और जाते हुए श्वास को कुछ-कुछ रोकते रहते है।

बाह्याभ्यंतराक्षेपी (पिन्)—पुं० [सं० बाह्याभ्यतर-आक्षेप, ष० त०, +इनि, दीर्घ, न-लोप] प्राणायाम का एक भेद जिसमें श्वास वायु को भीतर से बाहर निकलते समय निकलने न देकर उलटे लौटाते और अन्दर जाने के समय उसको बाहर रोकते हैं।

बाह्येंद्रिय—स्त्री० [सं० बाह्य-इंद्रिय, कर्म० स०] आँख, कान, नाक जीभ और त्वचा, ये पाँच इन्द्रियाँ जिनसे बाहरी विषयों का ज्ञान होता है।

बाह्लीक—पुं०=वाह्लीक।

बिंग†—पुं० व्यग्य।

क्रि० प्र०—छोड़ना।—बोलना।

बिंजन†—पुं०=व्यंजन।

बिंट†—पुं०=वृंत।

बिंद—पुं० [सं० विंदु] १. पानी की बूँद। २. वीर्य की बूंद जिससे गर्भाधान होता है। ३ दोनो भौहो के बीच का स्थान। भ्रू-मध्य। ४. माथे पर लगाई जानेवाली बिंदी। ५ दे० 'बिंदु'।

†पुं० [?] दूल्हा। वर। (राज०)

बिंदक—वि०=विंदक।

बिंदना—स० [सं० वन्दन] १ वदना करना। २ ध्यान करना। उदा०—सबद बिंदौरे अवधूस बद बिंदौ।—गोरखनाथ। ३. प्रशसा करना। उदा०—कोई निन्दौ कोई बिन्दौ म्हे तो गुण गोविंद।—मीराँ।

बिंदा—पुं० [सं० विंदु] १. माथे पर का गोल और बडा टीका। बेंदा। बुंदा। बडी बिंदी। २. उक्त आकार का कोई चिह्न।

†स्त्री०=बृंदा (गोपी)।

बिंदी—स्त्री० [सं० विंदु] १. शून्य का सूचक चिह्न। सिफर। सुन्ना।

२. उक्त आकार का छोटा टीका जो माथे पर लगाया जाता है। ३ इस प्रकार का कोई चिह्न या पदार्थ। ४. दे० 'टिकुली'।

बिंदु—पु०[स०√विद् (विभक्त करना)+उ] १ पानी या किसी तरल पदार्थ की बूंद। कतरा। २ किसी पदार्थ का बहुत ही छोटा कण। ३ लेख आदि की बिंदी। शून्य। सिफर। ४ बहुत ही छोटा गोलाकार अकन या चिह्न। ५. ज्यामिति मे, उक्त प्रकार का वह अकन या चिह्न जिसके विभाग न हो सकते हो। ६ लेखन आदि मे उक्त प्रकार की वह बिंदी जो अनुस्वार की सूचक होती है। ७ प्रेमी या प्रेमिका के शरीर पर दाँत गड़ाकर किया जानेवाला क्षत। दत-क्षत। ८ भौहो और ललाट के बीचोबीच का स्थान। ९ नाटक मे अर्थ-प्रकृति की पाँच स्थितियो मे से दूसरी स्थिति जिसमे कोई गौण घटना उसी प्रकार बढकर प्रधान या मुख्य घटना के समान जान पडने लगती है, जिस प्रकार पानी पर गिरी हुई तेल की बूँद फैलकर उस पर छा जाती है। १० योग मे अनाहत नाद के प्रकाश का व्यक्त रूप।

†स्त्री०—बेंदी (गहना)।

बिंदुक—पु०[सं० बिंदु+कन्] १ बूंद। २. बिंदी।

बिंदुकित—भू० कृ०[स० बिंदुक+इतच्] जिस पर बिंदु लगे या लगाये गये हो।

बिंदु-चित्र—पु०[स० तृ० त०] एक प्रकार का चित्तीदार हिरन।

बिंदु-तंत्र—पु०[स० ष० त०] १ चौसर आदि खेलने की बिसात और पासा। २ गेंद।

बिंदु-देव—पु० [स० ष० त०] शिव।

बिंदु-पत्र—पु०[स० मध्य० स०] भोजपत्र।

बिंदु-फल—पु० [उपमि० स०] मोती।

बिंदुरी†—स्त्री० =बिंदी।

बिंदु-रेखक—पु०[स० ब० स०,+कप्] १ अनुस्वार। २ एक तरह का पक्षी।

बिंदु-रेखा—स्त्री० [स० ष० त०] वह रेखा जो बिन्दुओ के योग से बनी हो। जैसे—. . . . ।

बिंदुल—स्त्री० [स० बिंदु] स्त्रियो के माथे का टीका या बिंदी।

बिंदुली†—स्त्री०=बिंदी।

बिंदुवासर—पु०[स० ष० त०] वह दिन जिसमे स्त्री को गर्भाधान हुआ हो।

बिंद्रावन—पु० =वृंदावन।

बिंध—पु०=विन्ध्याचल।

बिंधना—अ० [स० वेधन] १ बीधना का अकर्मक रूप। बीधा जाना। छेदा जाना। विद्ध होना। २. अटकना। उलझना। फँसना।

बिंधवाना—स०[हिं० बिंधना का प्रे०] बीधने का काम किसी से कराना।

बिंधाना—स०=बिंधवाना।

†अ०=बिंधना।

बिंधिया—पु०[हिं० बीधना+ईया (प्रत्य०)] वह जो मोती बीधने का काम करता हो। मोती मे छेद करनेवाला कारीगर।

बिंब—पु० [स०√वी (गमना)+वन्, नि० सिद्धि] १ किसी आकृति की वह झलक जो किसी पारदर्शक पदार्थ मे दिखाई पडती है। २. परछाँही। ३. प्रतिमूर्ति। ४ चद्रमा या सूर्य का मडल। ५. कोई गोलाकार चिह्न। मडल। ६. सूर्य। ७. आभास। झलक। ८ कमडलु। ९. गिरगिट। १० कुँदरू नामक फल। ११. एक प्रकार का छद। १२ साहित्य मे, शब्द का लक्षणा या व्यजना शक्ति से निकलनेवाला अर्थ। संकेत' का विपर्याय। १३ चद्रमा, सूर्य या किसी ग्रह का थाली के आकार का वह चिपटा रूप जो साधारणत देखने पर सामने रहता है।

बिंबक—पु० [स० बिम्ब+कन्] १ चद्रमा या सूर्य का मडल। २. प्राचीन काल का एक प्रकार का बाला। ३ कुदरू। ४. साँचा।

बिंब-ग्रहण—पु०[स ष०त०] भाषा विज्ञान और मनोविज्ञान मे वह बौद्धिक या मानसिक प्रक्रिया जिससे कोई शब्द या बात सुनकर अभिधा शक्ति से निकलनेवाले साधारण अर्थ से भिन्न कोई विशेष अर्थ या आशय ग्रहण किया जाता है।

बिंब-प्रतिबिंब-भाव—पु०[स० बिंब-प्रतिबिंब, द्व० स०, बिंबप्रतिबिंब-भाव ष० त०] वह अवस्था जिसमे दो वस्तुएँ एक दूसरी की छाया या बिंब से युक्त और उसके प्रतिबिंब के रूप मे होती या जान पड़ती हैं।

बिंब-फल—पु०[स० कर्म० स०] कुँदरू।

बिंब-सार—पु०—बिंबिसार।

बिंबा—पु०[स० बिम्ब+अच्+टाप्] १ कुदरू। २. प्रतिच्छाया। बिंब। ३ चद्रमा या सूर्य का मडल।

बिंबित—भू० कृ० [स० बिम्ब+इतच] जिस पर बिंब या प्रतिबिंब पड़ा हो।

बिंबिसार—पु०[स०] मगध का एक प्राचीन राजा जो अजातशत्रु के पिता और गौतमबुद्ध के समकालीन थे।

बिंबु—पु०[स०] सुपारी का पेड़।

बिंबो(बो)ष्ठ—वि०[स० बिंब-ओष्ठ, ब० स०, पररूप] [स्त्री० बिंबोष्ठी] जिसके होंठ कुदरू की तरह लाल हो।

पु० कुद— जैसा लाल होंठ।

बि—वि०[स० द्वि० भि० गु० ये०] एक और एक। दो।

बिअ*—वि० [स० द्वि] दो

बिअहुता†—वि० [स० विवाहिता] १ जिसके साथ विवाह-सबध हुआ हो। विवाहित या विवाहिता। २ विवाह-सबधी। विवाह का।

बिआज†—पु० =ब्याज।

बिआध—स्त्री०=व्याधि।

बिआधि—स्त्री० =व्याधि।

बिआना—स० [हिं० ब्याह, स० विजायन] १ स्त्री का सतान प्रसव करना। उदा०—बा पूत की एकै नारी एकै माय बिआया।—कबीर। २ विशेषत मादा पशुओ का बच्चे को जन्म देना।

बिआपी—वि०=व्यापी।

बिआपना—अ० [सं० व्यापन] व्याप्त होना।

बिआवर†—वि०, स्त्री० =बियावर।

बिआस†—पु०=व्यास।

बिआहना†—स०=ब्याहना।

बिओग—पु०=वियोग।

बिओगी†—वि०=वियोगी।

बिकट—वि०=विकट।

बिकना—अ०[स० विक्रय] १ किसी पदार्थ का द्रव्य के बदले मे किसी को

दिया जाना।। मूल्य लेकर दिया जाना। बेचा जाना। बिक्री होना। २. किसी का पूर्ण अनुगामी, अनुचर या दास होना।
संयो० क्रि०—जाना।
बिकरम—पु०=१ बिक्रमादित्य। २. विक्रम।
बिकरार†—वि०=बेकरार।
वि०=बिकराल।
बिकल†—वि०=विकल।
बिकलाई†—स्त्री०=विकलता।
बिकलाना—अ० [सं० विकल] विकल या व्याकुल होना। बेचैन होना।
स० विकल या व्याकुल करना। बे-चैन करना।
बिकवाना—स० [हि० बिकना का प्रे०] बेचने का काम दूसरे से कराना। दूसरे को बेचने मे प्रवृत्त करना।
बिकवाल†—पु० [हि० बिकना+वाला] वह जो कोई चीज बेचता हो। बेचनेवाला। विक्रेता।
बिकसना—अ०[स० विकसन] १ विकसित होना। खिलना। २. बहुत प्रसन्न होना।
बिकसाना—स०[स० विकसन] १. विकसित करना। खिलाना। २ बहुत प्रसन्न करना।
†अ०=बिकसना।
बिकाऊ—वि०[हि० बिकना+आऊ (प्रत्य०)] (वस्तु) जो बिक्री के लिए रखी गई हो।
बिकाना†—स०=बिकवाना।
†अ०=बिकना।
बिकार†—पु०[स० वि√कृ(करना)+घञ्, विकार] १ विकार। खराबी। २ बीमारी। रोग। ३. ऐब। खराबी। दोष। ४ बुरा काम। दुष्कर्म।
बिकारी—वि० [स० विकार+इनि] १ जिसका रूप बिगड़कर और का और हो गया हो। विकारयुक्त। विकृत। २ विकार उत्पन्न करनेवाला।
स्त्री०[सं० विकृत या वक्र] एक प्रकार की टेढी पाई जो अंको आदि के आगे सख्या या मान आदि सूचित करने के लिए लगाई जाती है। लिखने में रुपये-पैसे या मन-सेर आदि का चिह्न, जिसका रूप) होता है।
बिकास—पु०=विकास।
बिकासना—स०[सं० विकास] विकसित करना।
†अ०=विकसित होना।
बिकुंठ—पु०=वैकुंठ।
बिकुटा†—वि० [हि० बि=दो+कुटा प्रत्य०] [स्त्री० बिकुटी] दूसरा। द्वितीय। उदा०—इकुटी बिकुटी त्रिकुटी संधि।—गोरखनाथ।
बिक्ख*—पु०=विष।
बिक्रमाजीत—पु०=विक्रमादित्य।
बिक्रमी—पु०[स० बिक्रम] वह जिसमें बिक्रम हो। पराक्रमी
वि०=वैक्रमीय।
बिक्री—स्त्री०[स० विक्रय] १. बिकने का भाव। २. बेचने की क्रिया या भाव।
पद—बिक्री-बट्टा=दूकानदारों की होनेवाली बिक्री और उससे प्राप्त होनेवाला धन।
३. वस्तुओं के बिक जाने पर प्राप्त होनेवाला धन।
बिक्री-कर—पु०[स०] वह राजकीय कर जो विक्रेता बेची जानेवाली वस्तु के दाम के अतिरिक्त क्रेता से वसूल करता और तत्पश्चात राज्य सरकार को देता है। (सेल्स टैक्स)
बिकू—वि०=बिकाऊ।
बिख—पु०[स० विष] जहर।
मुहा०—बिख बोना=बहुत बडे अनर्थ का सूत्र-पात करना। बिख बोलना=बहुत ही कटु और लगती हुई बात कहना।
बिखम—वि०[स० विष] विष। जहर। गरल।
†वि०=विषम।
बिखय*—पु०=विषय।
अव्य०=विषय मे। सम्बन्ध में।
बिखयी*—वि०=विषयी।
बिखरना—अ०[स० विकीर्ण] १. किसी चीज के कणो, रेशों, इकाइयों आदि का अधिक क्षेत्र मे फैल जाना।
संयो० क्रि०—जाना।
२ एक-साथ, साथ-साथ या सयुक्त न होना। अलग-अलग या दूर-दूर होना। जैसे—परिवार के सदस्यो का बिखरना।
बिखराना—स०=बिखेरना।
बिखराव†—पु० [हि० बिखरना] १ बिखरे हुए होने की अवस्था या भाव। २. आपस मे होनेवाली फूट।
बिखाद†—पु०=विषाद।
बिखान—पु०[स० विषाण] १ पशुओं के सींग। २. सिंगी नाम का बाजा।
बिखिया†—स्त्री०=विषय-वासना।
बिखे*—अव्य०, पु०=विषय।
बिखेरना—स० [हि० बिखरना का स०] १. कणों, रेशों आदि के रूप मे होनेवाली वस्तु के कणों को अधिक विस्तृत क्षेत्र मे यो ही अथवा किसी विशेष ढग से गिराना या फेंकना। जैसे—खेत मे बीज बिखेरना। २ वस्तुओ को बिना किसी सिलसिले के फैलाकर रखना। जैसे—पुस्तकें बिखेरना।
बिखै†—अव्य०[सं० विषय] किसी विषय में। संबध में। उदा०—जगत बिखै कोई काम न सरही।—गुरु गोविंदसिंह।
*पु० १. =विषय। २. =विषय-वासना।
बिखौंड़ा—पु०[हि० बिख=विष] ज्वार की जाति की एक प्रकार की बडी घास जो बारहों महीने हरी रहती है। काला मुच्छ।
बिगंध—स्त्री०[सं० वि+गध] दुर्गंध। बदबू।
बिग†—पु०=वीग।
बिगड़ना—अ०[सं० विकार, हि० बिगाड़] १. किसी तत्त्व या पदार्थ के गुण, प्रकृति, रूप आदि मे ऐसा विकार या खराबी होना जिससे उसकी उपयोगिता, क्रियाशीलता या महत्त्व कम हो जाय या न रह जाय। प्रकृत स्थिति से गिरकर विकृत या खराब होना। जैसे—(क) बासी होने या सड़ने के कारण खाद्य पदार्थ का बिगड़ना। (ख) पुरजा टूटने के कारण कल या यत्र बिगड़ना। २. किसी क्रिया के होते रहने या किसी चीज के

बनने के समय उसमें कोई ऐसी खराबी आना कि काम ठीक या पूरा न उतरे। जैसे—(क) पकाने के समय भोजन या सिलाई के समय कुरता या कोट बिगडना। (ख) गवाही देते समय गवाह बिगडना। ३. अच्छी या ठीक अवस्था से खराब या बुरी स्थिति मे आना। जैसे—(क) जरा सी भूल से किया-कराया काम बिगडना। (ख) घर की स्थिति या देश की शासन-व्यवस्था बिगडना। ४ आपस के व्यवहार मे ऐसी खराबी या दोष आना कि सुगमतापूर्वक निर्वाह न हो सके। जैसे—(क) शासन से पीडित होने पर प्रजा का बिगडना। (ख) भाइयो मे आपस मे बिगडना। ५ आचरण, प्रवृत्ति, स्वभाव आदि मे ऐसा दोष या विकार उत्पन्न होना जो नीति, न्याय, सभ्यता आदि के विरुद्ध समझा जाता हो। उचित पथ से भ्रष्ट होना। जैसे—(क) गलियो के लडको के साथ रहते-रहते तुम्हारी जबान भी बिगड़ चली है। (ख) बुरी सगति मे अच्छा आदमी भी बिगड जाता है। ६ व्यक्तियो के सबध मे, किसी पर क्रुद्ध या नाराज होकर उसे कड़ी बाते सुनाना। जैसे—आज भाई साहब हम लोगो पर बिगडे थे। ७ पशुओ आदि के सबध में, क्रुद्ध होने के कारण नियत्रण या वश से बाहर होकर उपद्रव या खराबी करना। जैसे—जुते हुए घोडे (या बैल) जब बिगड जाते हैं, तब गाड़ी (या हल) तक तोड डालते है। ८ रुपये-पैसे के संबध मे, बुरी तरह से व्यर्थ व्यय होना। जैसे—तुम्हारे फेर मे हमारे दस रुपये बिगड गये।

बिगड़ै-दिल—पु०[हि० बिगडना+फा० दिल] १ उग्र या विकट स्वभाववाला। २ जिसकी प्रवृत्ति प्राय कुमार्ग की ओर रहती हो। †३. बात बात पर बिगडने या नाराज होनेवाला व्यक्ति।

बिगड़ैल—वि० [हि० बिगडना+ऐल (प्रत्य०)] १. जो बात-बात में और बहुत जल्दी बिगडने या नाराज होने लगता हो। हर बात में क्रोध करनेवाला। क्रोधी स्वभाव का। २ जो प्राय कुमार्ग की ओर प्रवृत्त रहता हो। ३ जिद्दी। हठी। (क्व०)

बिगत—पु०[?] प्रकार। भाँति। तरह। उदा०—बिगत बिगत के नाम धरायो यक माटी के भाँडे।—कबीर।
*वि० = विगत।

बिगर†—अव्य०—बगैर (बिना)।

बिगरना†—अ० =बिगडना।

बिगराइल†—वि०=बिगडैल।

बिगरायल†—वि०=बिगड़ैल।

बिगसना*—अ०=विकसना।

बिगसाना*—स०=बिकसाना (विकसित करना)।
†अ० विकसना (विकसित होना)।

बिगहा†—पु०—बीघा (जमीन की नाप)।

बिगहीं†—स्त्री०[देश०] खेत की क्यारी। बरही।

बिगाड़—पु०[हि० बिगडना] १. बिगडने की क्रिया या भाव। विकार। २. ऐब। खराबी। दोष। ३ पारस्परिक संबध बिगड़े हुए होने की अवस्था या भाव। आपस मे होनेवाला द्वेष और वैमनस्य। ४ नुकसान। हानि।

बिगाड़ना—स०[हि० बिगडना का स०] १. ऐसी क्रिया करना जिससे किसी काम, चीज या बात मे किसी तरह की खराबी हो। इस प्रकार विकृत करना कि अच्छी या ठीक स्थिति मे न रह जाय। जैसे—असावधानी से कोई काम (या यंत्र) बिगाड़ना। २ कोई काम करते समय उसमे ऐसा दोष या विकार आने देना कि वह अभीष्ट या उपयुक्त रूप मे न आ सके। जैसे—(क) दरजी ने तुम्हारा कोट बिगाड दिया। (ख) चित्रकार ने यहाँ हरा रग देकर चित्र बिगाड दिया। ३ अच्छी दशा या अवस्था से बुरी दशा या अवस्था मे लाना। जैसे—किसी को कुमार्ग पर लगाकर उसका घर बिगाडना। ४ किसी को उचित या नियत मार्ग से हटाकर अनुचित या दूषित मार्ग पर लगाना या ले जाना। जैसे—(क) बुरी आदते सिखाकर लडको को बिगाडना। (ख) उलटी-सीधी बाते कहकर किसी का मिजाज बिगाडना। (ग) डरा-धमका कर किसी का गवाह बिगाडना। ५ कुमारी अथवा स्त्री के सबध मे, कौमार्य या सतीत्व नष्ट करना। ६ रुपए-पैसे के सबध मे, व्यर्थ नष्ट या व्यय करना। जैसे—आज मेले मे हम भी पाँच रुपए बिगाड आये।

बिगाना†—वि०=बेगाना (पराया)।

बिगार†—पु०=बिगाड़।
†स्त्री०=बेगार।

बिगारना†—अ० [स० विकीर्ण] १ चारो ओर फैलाना। २ भरना या समाना। उदा०—ज्यूँ बिबहि प्रतिबिब समाना, उदिक कुभ बिगराना। —कबीर।
† स० =बिगाडना।

बिगारि—स्त्री० =बेगार।

बिगारी—स्त्री०=बेगारी।
पु०=बेगार।

बिगास†—पु०—विकास।

बिगासना*—स०=बिकासना।

बिगाहा—पु०=बिग्गाहा।

बिगिर†—अव्य० =बगैर।

बिगुन—वि०[स० विगुण] जिसमे कोई गुण न हो। गुण रहित।
वि० =बेगुन (बिना रस्सी का)।

बिगुरचन—स्त्री०=बिगूचन।

बिगुरचना*—अ० [स० विकुचन] असमजस कठिनता, या सकोच मे पडना।

बिगुरदा—पु०[देश०] मध्ययुग का एक प्रकार का हथियार।

बिगुर्चन†—स्त्री०=बिगूचन।

बिगुल—पु० [अं०] १ पाश्चात्य ढग की एक प्रकार की तुरही जो प्राय सैनिको को एकत्र करने अथवा इसी प्रकार का कोई और काम करने के लिए सकेत रूप मे बजाई जाती है। २ उक्त वाद्य का शब्द।

बिगुलर—पु०[अं०] फौज मे बिगुल बजानेवाला।

बिगूचन—स्त्री०[स० विकुचन अथवा विवेचन] १ वह अवस्था जिसमें मनुष्य किकर्तव्य-विमूढ़ हो जाता है। असमजस। २ कठिनता। दिक्कत। अड़चन।

बिगूचना—अ० [स० विकुचन] १. कठिनता या दिक्कत में पड़ना। २ असमजस मे पड़ना। ३ पकडा या दबाया जाना।
† स० धर दबाना। दबोचना।

बिगूतना—अ० = बिगूचना।
स०[स० विगत] १ नष्ट करना। २. बिगाड़ना।

* अ० १. नष्ट होना। २. विकृत होना। बिगड़ जाना। ३. दुर्दशाग्रस्त होना। उदा०—मैं मेरी करि बहुत बिगूता।—कबीर।

† अ० १. दे० 'बिगूचना'। २. दे० बिगुरचना'।

बिगोड़, बिगौड़—पुं० [हिं० बिगोना] १. नाश। बरबादी। २. खराबी। बुराई।

बिगोना—स० [सं० विगोपन] १ खराब या नष्ट करना। बिगाड़ना। २. दुरुपयोग करना। ३. छिपाना। चुराना। ४. तंग, दिक या परेशान करना। ५. धोखा देना। ६. बहकाना। ७. व्यतीत करना। बिताना।

बिग्गाहा—पुं० [सं० विगाथा] आर्या छंद का एक भेद जिसे 'उद्गीति' भी कहते हैं। इसके पहले पद में १२, दूसरे में १५ तीसरे में १२ और चौथे में १८ मात्राएँ होती हैं।

बिग्यान†—पुं०=विज्ञान।

बिग्रह—पुं० [सं० विग्रह] १. शरीर। देह। २. झगड़ा। लड़ाई। ३. विभाग। ४. दे० 'विग्रह'।

बिघटना—स० [सं० विघटन] १ विघटित करना। तोडना-फोडना। २. नष्ट करना।

अ० विघटित होना। नष्ट या भ्रष्ट होना।

बिघन†—पुं०=विघ्न।

बिघनहरन—वि० [सं० विघ्नहरण] बाधा या विघ्न हरनेवाला। बाधा दूर करनेवाला।

पुं०=गणेश।

बिघार†—पुं०=बाघ।

बिच†—क्रि० वि०=बीच।

बिचकना—अ० [सं० विकुचन ?] (मुँह) इस प्रकार कुछ टेढा होना जिससे अप्रसन्नता, अरुचि आदि सूचित हो। जैसे—मुझे देखते ही उनका मुँह बिचक जाता है।

बिचकाना—स० [हिं० बिचकना का स०] १. कोई चीज देखकर उसके प्रति अपनी अप्रसन्नता, अरुचि आदि प्रकट करते हुए मुँह कुछ टेढा करना। जैसे—किसी को देखकर या किसी चीज के अप्रिय स्वाद के कारण मुँह बिचकाना। २. किसी का उपहास करने या मुँह चिढ़ाने के लिए उसकी तरह कुछ विकृत करके मुँह बनाना। किसी को चिढ़ाने के लिए बिगाड़-कर उसी की तरह मुँह बनाना।

बिचच्छन†—वि०=विचक्षण।

बिचरना—अ० [सं० विचरण] १. इधर-उधर घूमना। चलना-फिरना। विचरण करना। २. यात्रा या सफर करना।

बिचलना†—अ० [सं० विचलन] १. विचलित होना। इधर-उधर हटना। २. कहकर मुकरना। ३. साहस या हिम्मत छोड़ना। हतोत्साह होना। ४. सम्बन्ध छोड़कर अलग होना।

† अ० १.=बिछलना (फिसलना)। २. बिछड़ना। ३ मचलना।

बिचला—वि० [हिं० बीच+ला (प्रत्य०)] [स्त्री० बिचली] १ बीच में होने या पड़नेवाला। २. जो न बहुत बड़ा हो और न बहुत छोटा। ३. मध्यम श्रेणी का।

बिचलाना—स० [सं० विचलन] १. विचलित करना। डिगाना। २. उचित मार्ग से इधर-उधर करना। बहकाना। ३. तितर-बितर करना। बिखेरना। ४. हिलाना।

बिचवई—पुं० [हिं० बीच+वई (प्रत्य०)] १. बीच-बचाव करनेवाला। २. मध्यस्थ।

स्त्री० दो आदमियों का झगड़ा निपटाने के लिए की जानेवाली मध्यस्थता।

बिचवान†—पुं०=बिचवई।

बिचवानी†—स्त्री०=बिचवई (मध्यस्थता)।

बिचार†—पुं०=विचार।

बिचारना†—अ० [सं० विचार+ना (प्रत्य०)] १. विचार करना। सोचना। गौर करना। २. प्रश्न करना। पूछना।

बिचारा—वि० [स्त्री० बिचारी]=बेचारा।

बिचारी—पुं० [हिं० बिचारना] विचार करनेवाला। विचारशील।

बिचाल—पुं० [सं० विचाल] अंतर। फरक।

†स्त्री०=बे-चाल।

बिचुनना—स० [सं० विचयन] १. चयन करना। चुनना। २. कपास से बिनौले अलग करना।

स० [सं० विचूर्णन] चूर्ण या टुकड़े-टुकड़े करना।

बिचेत—वि० [सं० विचेतस्] १. मूर्च्छित। बेहोश। अचेत। २. जिसकी बुद्धि ठिकाने न रह गई हो। बद-हवास।

बिचौलिया†—पुं०=बिचौली।

बिचौली—पुं० [हिं० बीच+औली (प्रत्य०)] १. वह व्यक्ति जो उत्पादक से माल खरीदकर और बीच मे कुछ नफा खाकर दुकानदारो आदि के हाथ बेचता हो। वह व्यक्ति जो किसी प्रकार का देन चुकानेवालो से वसूल करके मूल अधिकारी या स्वामी को देता हो और इस प्रकार बीच मे स्वय भी कुछ लाभ करता हो। (मिडिल मैन; उक्त दोनो अर्थो मे) जैसे—जमीदार, जागीरदार आदि सरकार और किसानो के बीच मे रहकर बिचौली का काम करते थे।

बिचौहाँ*—वि० [हिं० बीच+औहाँ (प्रत्य०)] बीच का। बीचवाला।

बिच्छा—पुं० [हिं० बीच] १. बीच की दूरी या जगह। २. बीच का काल या समय। ३ अन्तर। फरक।

|पुं० [स्त्री० बिच्छी] बिच्छू।

बिच्छित्ति—स्त्री०=विच्छित्ति।

बिच्छी—स्त्री० [हिं०] बिच्छू। मादा बिच्छू।

बिच्छू—पुं० [सं० वृश्चिक] [स्त्री० बिच्छी] १. एक प्रसिद्ध छोटा जहरीला जानवर जो प्राय गरम देशो मे अंधेरे स्थानो मे (जैसे—लकडियों या पत्थरों के नीचे, बिलो मे) रहता है। २. एक प्रकार की घास जो शरीर से छू जाने पर जलन उत्पन्न करती है। ३ काकतुंडी का पौधा या फल।

बिच्छेप†—पुं०=विक्षेप।

बिछड़न—स्त्री० [हिं० बिछडना] १. बिछड़ने की क्रिया या भाव। २. बिछड़े हुए होने की अवस्था या दशा। बिछोह। वियोग।

बिछड़ना—अ० [सं० विच्छेदन] १. साथ रहनेवाले दो व्यक्तियों का एक दूसरे से अलग होना। जुदा होना। अलग होना। २. प्रेमी और प्रेमिका का किसी कारण इस प्रकार एक दूसरे से अलग होना कि दोनो का मन दु:खी हो। ३ साथी के अलग होने या छूट जाने के कारण अकेला पड़ जाना।

बिछत—स्त्री० [अ० बिदअत] १ पुरानी अच्छी बात को बिगाड़नेवाली नई खराब बात। २ खराबी। दोष। ३ कष्ट। तकलीफ। ४ विपत्ति। संकट। ५ अत्याचार। जुल्म। ६ दुर्दशा।
क्रि० प्र०—भोगना।—सहना।

बिछना—अ० [हिं० बिछाना का अ०] १ (बिस्तर आदि का) बिछाया जाना। फैलाया जाना। २. (छोटी छोटी चीजों का) दूर तक फैलाया या बिखेरा जाना। जैसे—जमीन पर फूलों का बिछना। ३. (व्यक्ति का) मारे-पीटे जाने के कारण जमीन पर गिर या लेट जाना। जैसे—दंगों मे बहुत से आदमी बिछ गये (या लाशें बिछ गईं)।

बिछलना†—अ० =फिसलना।

बिछलाना†—अ० =फिसलना।

बिछवाना—स० [हिं० बिछाना का प्रे०] बिछाने का काम दूसरे से कराना। दूसरे को बिछाने में प्रवृत्त करना।

बिछाना†—पुं० =बिछौना।

बिछाना—स० [स० विस्तरण] १. (बिस्तर या कपड़े आदि का) जमीन पर उतनी दूर तक फैलाना जितनी दूर तक फैल सके। जैसे—बिछौना बिछाना। २. बिछाना। कोई चीज या चीजें जमीन पर दूर तक फैलाना या बिखेरना। जैसे—फर्श पर फूल बिछाना। ३ इस प्रकार मारना-पीटना कि आदमी जमीन पर गिरकर पड़ या लेट जाय।

बिछावत†—स्त्री० =बिछावन (बिछौना)।

बिछावन†—पुं० =बिछौना।

बिछावना†—स० =बिछाना।

बिछिआ†—स्त्री० [हिं० बिच्छू+इया (प्रत्य०)] पैर की उँगलियों मे पहनने को एक प्रकार का छल्ला।

बिछिप्त†—वि० =विक्षिप्त।

बिछुआ—पु० [हिं० बिच्छू] १ पैर में पहनने का एक गहना। २ एक प्रकार का छोटा टेढ़ा छुरा जिससे प्राय प्रहार करते हैं। ३. अगियासन। ४ घास आदि का पूला।

बिछुड़न—स्त्री० =बिछड़न।

बिछुड़ना†—अ० =बिछड़ना।

बिछुरता—पु० [हिं० बिछुड़ना+अता (प्रत्य०)] १ बिछड़नेवाला। २ बिछड़ा हुआ।

बिछुरना—अ० =बिछड़ना।

बिछुरनि†—स्त्री० =बिछड़न।

बिछुवा†—पु० =बिछुआ।

बिछूना—वि० [हिं० बिछुड़ना] बिछड़ा हुआ। जो बिछड गया हो।
†पु० बिछोह (वियोग)। उदा०—जल मँह अगिनि सो जान बिछूना। —जायसी।

बिछोई—वि०, पु० दे० 'बिछूना'।

बिछोड़ा—पु० [हिं० बिछड़ना] १ बिछड़ने की क्रिया या भाव। अलग अलग होना। २ बिछड़े हुए होने की अवस्था। बिछोह। वियोग।

बिछोय†—पु० =बिछोह (वियोग)।

बिछोया†—पु० =बिछोह (वियोग)। उदा०—मित्र बिछोया कठिन है, जनि दीजौ करतार।

बिछोह†—पु० =बिछोड़ा (वियोग)।

बिछोही—वि० [हिं० बिछोह] १ जिससे कोई बिछुड गया हो। २ जो बिछोह या वियोग के फलस्वरूप दुखी हो।

बिछौन—पु० =बिछौना।

बिछौना—पु० [हिं० बिछाना] १ दरी, गद्दी, चादर आदि ऐसे कपड़े जो बैठने या लेटने के लिए जमीन पर बिछाये जाते है। बिछावन। बिस्तर।
क्रि० प्र०—बिछाना।
२. बिछी या बिछाई हुई ऐसी वस्तुओं का विस्तार जिस पर लेटा जाय। जैसे—काँटो का बिछौना, फूलों का बिछौना, पत्थरो का बिछौना।
स० =बिछाना।

बिजई†—वि० =विजयी।

बिजउर—पु० =बिजौरा (नीबू)।

बिजड़—स्त्री० [?] तलवार। खग। (डि०)

बिजड़ा—पु० [हिं० बिजड़] बड़ी तलवार।

बिजन—पु० [फा० बिजन] जनता का वध। कत्ले-आम।
†पु० =व्यजन (पखा)।
†वि० =विजन (जन-रहित)।

बिजना†—पु० [स० व्यजन] पखा।
वि० [सं० विजन] १ एकान्त (स्थान)। २ जिसके साथ कोई न हो। अकेला।

बिजनी†—स्त्री० [स० विजन] हिमालय पर रहनेवाली एक जंगली जाति।

बिजय—स्त्री० विजय।

बिजयघट—पु० [स० विजयघण्ट] वह बड़ा घटा जो मंदिरो मे लटकाया रहता है।

बिजयसार—पु० [स०] एक प्रकार का बहुत बड़ा जंगली पेड जिसके पत्ते पीपल के पत्तो से कुछ छोटे होते है। इस पेड की लकडी ढोल आदि बनाने के काम आती है।

बिजरी†—स्त्री० =बिजली।

बिजली—स्त्री० [सं० विद्युत, प्रा० बिज्जु] १ एक प्रसिद्ध प्राकृतिक शक्ति जो तत्त्वमात्र के मूल-भूत अणुओं या कणों मे नैहिक और महिक अथवा ऋणात्मक और धनात्मक रूपों में वर्तमान रहती है और जो संघर्ष तथा रासायनिक परिवर्तन या विकारों से उत्पन्न होती है। विद्युत्। (इलेक्ट्रिसिटी)
विशेष—इसका कार्य चारो ओर अपनी किरणें या धाराएँ फैलाना, आकर्षण तथा विकर्षण करना और पदार्थों मे रासायनिक परिवर्तन या विकार उत्पन्न करना है।
२ उक्त का वह रूप जो कुछ विशिष्ट रासायनिक प्रक्रियाओ अथवा जलप्रपातो के संघर्ष आदि से कुछ विशिष्ट यन्त्रों के द्वारा उत्पादित किया जाता है और जिसका उपयोग घरों मे प्रकाश करने, गाड़ियाँ, पंखे आदि चलाने और कल-कारखाने चलाने के लिए तारों के द्वारा चारो ओर वितरित किया जाता है।
विशेष—प्राय ढाई हजार वर्ष पूर्व थेल्स नामक व्यक्ति ने पहले-पहल यह देखा था कि रेशम के साथ कुछ विशिष्ट चीजे रगड़ने से उसमे हलकी चीजों को अपनी ओर खींचने की शक्ति आ जाती है। बाद में लोगों ने देखा कि मोर का पख थोडी देर तक रगड़ने, रेशम को शीशे से रगड़ने तथा लोहे को फलालेन से रगड़ने पर भी यह शक्ति उत्पन्न होती है। तब से

पाश्चात्य वैज्ञानिक इसके संबंध में अनेक प्रकार के अनुसंधान और परीक्षण करने लगे, जिनके फलस्वरूप अब यह शक्ति सारे संसार के सभ्य-जीवन का एक प्रधान अंग बन गई है; और इससे सैकड़ों तरह के काम किए जाने लगे हैं। यह धातुओं, प्राणियों के शरीर, जल आदि में बहुत ही तीव्र गति से चलती है। ऊन, चूना, मोम, रेशम, लाह, शीशा आदि अनेक ऐसे पदार्थ भी हैं, जिनमें इसका संचार नहीं होता। अब इसका उपयोग बिना तार के सम्पर्क के दूर दूर तक समाचार भेजने और अनेक प्रकार के रोगों की चिकित्सा करने में भी होने लगा है। ३. उक्त शक्ति का वह घनीभूत रूप जो आकाश के बादलों में प्रवाहित होता और कभी कभी बहुत ही घोर शब्द करता हुआ तीव्र वेग से तथा क्षणिक प्रबल प्रकाश से युक्त होकर पृथ्वी पर आता या गिरता हुआ दिखाई देता है और जिसमे बहुत अधिक नाशक शक्ति होती है। चपला। (लाइटनिंग)

क्रि० प्र०—कड़कना।—चमकना।

मुहा०—बिजली कड़कना= बादलों में बिजली का प्रवाह या संचार होने के कारण बहुत जोर का शब्द होना, जिसके परिणामस्वरूप बहुत तीव्र प्रकाश दिखाई देता है। और कभी-कभी बिजली गिरती भी है। बिजली गिरना या पड़ना= आकाश से बिजली तिरछी रेखा के क्रम में पृथ्वी की ओर बड़े वेग से चलकर आती है, जिससे रास्ते मे पड़नेवाली चीजें जलकर नष्ट हो जाती या टूट-फूट जाती हैं।

४. कान मे पहनने का एक प्रकार का गहना, जिसमें बहुत चमकीला लटकन लगा रहता है। ५ गले मे पहनने का उक्त प्रकार का हार। ६. आम की गुठली के अन्दर की गिरी।

वि०१ बिजली की तरह बहुत अधिक चमकीला। २. बिजली की तरह बहुत अधिक तीव्र गति या वेगवाला। ३. बिजली की तरह चचल या चपल।

बिजली-घर—पु०[हि०] वह स्थान जहाँ रासायनिक प्रक्रियाओं, जल-प्रपातों आदि से बिजली उत्पन्न करके कल-कारखाने आदि चलाने और घरो में प्रकाश आदि करने के लिए जगह-जगह तार की सहायता से पहुँचाई जाती है।

बिजली-बचाव—पुं०[हि०] लोहे का वह टुकड़ा और तार जो ऊँची इमारतो आदि पर आकाश से गिरनेवाली बिजली आकृष्ट करके जमीन के अन्दर पहुँचाने के लिए लगा रहता है और जिसके फलस्वरूप बिजली गिरने के नाशक प्रभावों से रक्षा होती है। तड़ित्रक्षक। (लाइटनिंग प्रोटेक्टर)

बिजलीसार—पु०[हि०] एक प्रकार का बहुत सुन्दर और छायादार बड़ा वृक्ष।

बिजहन—पु०[हि० बीज+हन] अनाजों आदि का ऐसा दाना या ऐसा बीज जिसकी उत्पादन-शक्ति नष्ट हो चुकी हो। निर्बीज बीज।

बिजाती—वि०[सं० विजातीय]१. दूसरी जाति का। और जाति या तरह का। २ जाति से निकाला हुआ। जाति से बहिष्कृत।

बिजान†—वि०=अनजान।

बिजाय—पुं०[सं० विजय]बाजूबंद (गहना)।

बिजार—पुं०[देश०] १. बैल। २. साँड।

बिजुरी†—स्त्री०=बिजली।

बिजूका—पु०=बिजूखा।

बिजूखा—पु०[देश०]१. खेत में गाड़ा हुआ छोटा बाँस या डंडा जिस पर काली हाँड़ी टँगी होती है और जिस का मुख्य प्रयोजन पशु-पक्षियों को डराकर फसल से दूर रखना होता है। उजका। धोखा। २ छल। धोखा।

बिजै*—स्त्री०=विजय।

बिजैसार—पु०=विजयसार।

बिजोग†—पु०=वियोग।

बजोटा—पुं०[?] केशव के अनुसार एक छंद का नाम।

बिजोना*—स०[हि० जोवना या जोहना]१ अच्छी तरह देखना। २. देख-रेख करना।

अ० [हि० बीज=बिजली] बिजली चमकना।

†स०[हि० बीज] बीज बोना। उदा०—आछी भाँति सुधारि कै खेत किसान बिजोय।—दीनदयाल गिरि।

बिजोरा—वि०[सं० वि+फा० जोर=ताकत] कमजोर। अशक्त। निर्बल।

†पु० बिजौरा।

बिजौरा—पु० [स० बीजपूरक] एक प्रकार का नींबू।

वि० [हि० बीज+औरा (प्रत्य०)] बीज से उत्पन्न होनेवाला। बीजू।'कलमी' से भिन्न।

बिजौरी—स्त्री० [हि० बीज+औरी (प्रत्य०)] बड़ी कुम्हड़ौरी।

बिज्जल—स्त्री०=बिजली।

बिज्जु†—स्त्री०=बिजली।

बिज्जुपात—पु०[स० विद्युत्पात]आकाश से बिजली गिरना। वज्रपात।

बिज्जुल†—पु०[सं० बिज्जुल] त्वचा। छिलका।

†स्त्री०=बिजली।

बिज्जू—पु०[देश०]बिल्ली की तरह का एक जगली जानवर। बीजू।

बिज्जूहा—पु०[?] एक वर्णिक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में दो 'रगण' होते हैं।

बिझँवारी—स्त्री० [देश०] छत्तीसगढ़ में बोली जानेवाली एक उपभाषा या बोली।

बिझकना*—अ०=बिचकना।

बिझरा—पुं०[हि० मेझरना=मिलाना] एक मे मिला हुआ मटर, चना, गेहूँ और जौ।

बिझुकना—अ०[हि० झुकना] १. भड़कना। २ डरना। ३. दबने के कारण कुछ टेढ़ा होना। ४. चंचल होना।

अ०=बिचकना।

बिझुका†—पु०= बिजूखा।

बिझुकाना—स०[हि० बिझुकना] १ भड़काना। २. डराना। ३. टेढ़ा करना।

अ०=बिझुकना।

बिटंड†—पु०=वितंडा। उदा०—करसि बिटंड मरम नहिं करसी।—जायसी।

बिडंबना—अ०[सं० बिडंबना] हँसी उड़ाना।

†स्त्री०=विडंबना।

बिट—पु०[सं० विट्]१. वैश्य। २ दे० 'विट'।

स्त्री०=बीठ (पक्षियों की विष्ठा)।

बिटक—पु०[सं० पिटक] [स्त्री० अल्पा० बिटकी]फोड़ा।

बिटप—पुं०=विटप (वृक्ष)।
बिटपी—पुं०=विटपी।
बिटरना—अ०[हिं० बिटारना का अ० रूप] घंघोले जाने पर गदा होना।
बिटारना—स०[स० विलोडन] १. घंघोलना। २ घंघोलकर गदा करना।
बिटिनिया—स्त्री०=बेटी।
बिटिया—स्त्री०=बेटी।
बिटौरा—पुं०[स० विट]१ सूखे कडो का ढेर। २ ढेर। राशि। उदा०—कर्यौ सबनि परनाम, बिटौरा रूप पेटतर।—भगवत रसिक।
वि० बहुत बडा और भारी।
बिट्ठल—पुं०[स० विष्णु, महा० विठोवा] १ विष्णु का एक नाम। २. विष्णु की एक विशिष्ट मूर्ति जिसकी उपासना प्राय: दक्षिण भारत मे होती है और जिसकी प्रधान मूर्ति पढरपुर मे है।
बिठलाना†—स०=बैठाना।
बिठाना†—स० =बैठाना।
बिठालना—स०=बैठाना।
बिडंब—पुं०[स० विडम्ब] आडबर। दिखावा।
बिडंबना—अ० [स० वि√डम्ब+युच्—अन] किसी को चिढ़ाने या उपहास्यास्पद बनाने के लिए उसकी नकल उतारना।
स्त्री०=बिडम्बना।
बिड—पुं०[सं० विट] १. गुह। मल। विष्ठा। २. एक प्रकार का नमक।
वि०१ दुष्ट। पाजी। २ नीच।
बिडर—वि०[हिं० बिडरना] बिखरा या छितराया हुआ।
†वि०=निडर।
*वि०=विरल।
बिडरना—अ०[सं० विट्=तीखे स्वर से पुकारना, चिल्लाना]१ बिखरना। २ पशुओं आदि का बिचकना या बिदकना। ३. नष्ट होना। ४ बिगड़ना।
अ०[हिं० डरना] भयभीत होना। डरना।
बिडराना—स०[स० विट्=जोर से चिल्लाना]१ इधर-उधर करना। तितर-बितर करना। बिखराना। २. भगाना।
†स०=डराना।
बिडवना—स०[स० विट्=जोर से चिल्लाना] तोड़ना।
बिड़से—वि०=बिड़ायते। (दलाल)
बिड़ायते—वि०[स० बद्धायते] अधिक। ज्यादा। (दलाल)
बिड़ारना—स०[हिं० बिडरना] १. भयभीत करके भगाना। २. बाहर करना। निकालना।
†स०=बिगाड़ना।
बिड़ाल—पुं०[स० बिडाल]१. बिल्ली। बिलाव। २. दोहे के बीसवें भेद का नाम जिसमें ३ अक्षर गुरु और ४२ अक्षर लघु होते हैं। ३. आँख का ढेला। ४. आँख के रोगों की एक प्रकार की चिकित्सा। ५. दे० 'बिड़ालाक्ष'।
बिड़ालक—पुं०[सं० बिडालक]१. आँख का गोलक। नेत्र-पिंड। २. आँखों पर लेप चढ़ाना। ३. नर बिड़ाल। बिल्ला।
बिड़ालपाद—पुं०[सं० बिडालपाद] एक तौल जो एक कर्ष के बराबर होती है।
बिड़ालव्रतिक—वि०[स० बिडालव्रतिक] बिल्ली के समान स्वभाववाला। लोभी, कपटी, दभी, हिंसक, सबको धोखा देनेवाला और सबसे टेढ़ा रहनेवाला।
बिड़ालाक्ष—वि० [स० विडालाक्ष] जिसकी आँखें बिल्ली की आँखों के समान हों।
पुं० एक प्रसिद्ध राक्षस जिसे दुर्गा ने मारा था।
बिड़ालिका—स्त्री०[सं० विडालिका]१. बिल्ली। २ हरताल।
बिड़ाली—स्त्री०[स० विडाली]१ बिल्ली। २ आँखो मे होनेवाला एक प्रकार का रोग। ३ एक योगिनी जो उक्त रोग की अधिष्ठात्री कही गई है।
बिड़िक—स्त्री०[स० विडिक] पान का बीडा। गिलौरी।
बिड़ी†—स्त्री० =बीड़ी।
बिड़ौजा—पुं०[स० बिडौजस्] इद्र का एक नाम।
बिढ़तो†—पुं०[हिं० बढ़ना] नफा। लाभ।
बिढ़वना—स०[स० वृद्धि, हिं० बढ़ना] १ बढाना। २. इकट्ठा करना।
बिढ़ाना—स०=बिढवना।
बित†—पुं०=दे० 'वित्त'।
बितताना—अ०[सं० व्यथित]१. व्यथित होना। २ विलाप करना। बिलखना।
स० दुःखी या संतप्त करना।
अ०[स० वितान] पसरना। फैलना।
स० पसारना। फैलाना।
बितनु*—वि० =वितनु (कामदेव)।
बितपन्न*—वि०=व्युत्पन्न।
बितरना—स०[स० वितरण]१. वितरण करना। बाँटना। २. चारो ओर फैलाना। बिखेरना।
वि० [स्त्री० बितरनी] बाँटनेवाला। उदा०—चतुरानन हरि ईस परम पद बिसद बितरनी।—रत्ना०।
बितराना†—स०[हिं० बितरना]१. वितरण करना। २. चारों ओर फैलाना।
अ०[?]१ बुरा कहना या बताना। ऐब या दोष लगाना। २ किसी को झूठा बनाना। यह कहना कि अमुक झूठा है या झूठ बोलता है।
बितवना—स० =बिताना।
बिता†—पुं०=बित्ता।
बिताना—स०[स० व्यतीत, हिं० बीतना का सक्षिप्त रूप] अवधि, समय आदि के सम्बन्ध में, व्यय या व्यतीत करना। जैसे—उन्होने सारा दिन सोकर बिताया।
बिताल†—पुं०=बैताल।
बितावना†—स०=बिताना।
बितिरिक्त†—वि० =व्यतिरिक्त (अधिक)।
बितीतना—अ०[स० व्यतीत] व्यतीत होना। बीतना।
स०=बिताना।

बिसुंड—पुं०=वितुंड (हाथी)।
बिसु†—पुं०=बित्त।
बित—पुं० [सं० वित्त] १ धन। दौलत। २. निजी साधनों के बल पर कोई काम कर सकने की समर्थता। बिसात। बूता। ३ आर्थिक सम्पन्नता। औकात। हैसियत। ४. ऊँचाई या आकार।
बित्ता—पु० [?] १. मनुष्य के एक हाथ के अँगूठे और कनिष्ठिका के सिरों के बीच की अधिकतम दूरी। २. उक्त दूरी की एक नाप जो नौ इंच के बराबर होती है।
पद—बित्ता भर=आकार मे बहुत छोटा।
बित्ती†—स्त्री० [सं० वित्त] आय आदि मे से धर्म-कार्यों के लिए निकाला हुआ धन।
वि० १ वित्तवाला। सम्पन्न। २. समर्थ।
स्त्री० [?] लड़कों का एक प्रकार का खेल जिसमें एक लड़का कंकड़ या ठीकरा दूर फेंकता और दूसरा उसे उठाकर लाता है।
बिथकना—अ० [हिं० थकना] १ थकना। २. चकित होना। ३. मोहित होना।
बिथकाना—स० [हिं० बिथकना] १. थकाना। २ चकित करना। ३ मोहित करना।
अ०=बिथकना।
बिथरना—अ० [सं० विस्तरण] १ छितराना। २ अलग-अलग होना। ३. छिन्न-भिन्न या नष्ट-भ्रष्ट होना।
स० १ बिखेरना। २. (बीज) बोना। उदा०—बारि बीज बिथरै।—सूर।
बिथा—स्त्री०=व्यथा।
बिथारना—स० [हिं० बिथरना] बिखेरना।
बिथित†—वि०=व्यथित।
बिथुरना†—अ०=बिथरना।
बिथुराना†—स०=बिथराना (बिखेरना)।
बिथुरित*—भू० कृ० [हिं० बिथुरना] १ बिखरा हुआ। २. छिन्न-भिन्न। नष्ट-भ्रष्ट।
बिथुलना†—अ०=बिथुरना।
बिथोरना—स०=बिथराना।
बिद*—वि० [सं० विद्] जाननेवाला। ज्ञाता। जैसे—जोग बिद=योग का ज्ञाता।
बिदकना†—अ० [सं० विदारण] १. कुछ डरते हुए पीछे हटना। भड़कना। २ विदीर्ण होना। चिरना। फटना। ३. घायल होना।
बिदकाना—स० [सं० विदारण] १. चौंका या डराकर पीछे हटाना। भड़काना। २. चीरना या फाड़ना। ३ घायल करना।
बिदर—पुं०=बीदर। (विदर्भ देश)
पुं०=विदुर। (दे०)
बिदरन—स्त्री० [सं० विदीर्ण] १. विदीर्ण होने अर्थात् फटने की अवस्था, क्रिया या भाव। २. दरज। दरार।
वि० विदीर्ण करने या फाड़नेवाला। (यौ० के अन्त में)
बिदरना†—अ० [सं० विदारण] १. विदीर्ण होना। फटना। उदा०—जो बासना न बिदरत अंतर तेई तेई अधिक अनूअर चाहत।—सूर। २. नष्ट होना।
स० विदीर्ण करना। फाड़ना।
बिदरी—वि०, स्त्री०=बीदरी।
बिदलना*—अ० [सं० विदलन] १. दलित करना। २. छिन्न-भिन्न या नष्ट-भ्रष्ट करना।
बिदहना—स० [स० विदहन] १. भस्म करना। जलाना। २. बहुत अधिक दुखी या संतप्त करना। ३. धान या ककुनी आदि की फसल मे आरम्भ मे पाटा या हेंगा चलाना।
बिदहनी—स्त्री० [हिं० बिदहना] बिदहने की क्रिया या भाव।
बिदा—स्त्री० [फा० विदाअ] १. कहीं से कुछ अधिक समय के लिए चले जाना या प्रस्थान करना। रवाना होना। प्रस्थान। २. उक्त के लिए मिलने या माँगी जानेवाली अनुमति या आज्ञा।
क्रि० प्र०—देना।—माँगना।—मिलना।
३. विवाहित पुत्री का मायके से ससुराल जाना। ४. द्विरागमन। गौना।
बिदाई—स्त्री० [फा० बिदाअ+हिं० आई (प्रत्य०)] १. बिदा होने की अवस्था क्रिया या भाव। २. वह धन जो बिदा होनेवाले को बिदा देनेवाले देते, हैं। ३. वह उत्सव जिसमें किसी को सम्मानपूर्वक बिदा किया जाता है। ४. बिदा होने के लिए मिलनेवाली आज्ञा। ६. विवाहिता कन्या, बहू अथवा दामाद को बिदा करने की रस्म।
बिदाम—पुं०=बादाम।
बिदामी—वि०, स्त्री०=बादामी।
बिदायत—पु० [स० विद्यापति] गाने बजानेवालों का वह दल या मण्डली जो मिथिला मे घूम घूम कर मैथिल कोकिल विद्यापति के पद गाती है।
बिदायगी—स्त्री०=बिदाई।
बिदारना—स० [स० विदारण] १. विदीर्ण करना। चीरना। फाड़ना। २. नष्ट करना। न रहने देना।
बिदारी—पु० [स० विदारी] १ शालपर्णी। २. भुई कुम्हड़ा। ३. एक प्रकार का कठरोग। ४ दे० 'बिदारी कद'।
बिदारीकंद—पु० [स० विदारी कद] एक प्रकार का कंद जिसकी बेल के पत्ते अरुई के पत्तो के समान होते हैं। बिलाई कद।
बिदाहना†—स० [?] खेत को उस समय पुन जोतना जब उसमें नई फसल के अंकुर निकल आते हैं।
बिदिसा†—स्त्री०=विदिशा।
बिदीरना—स०=बिदारना।
बिदुराना—अ०=मुस्कराना।
बिदुरानी—स्त्री० [हिं० बिदुराना] मुस्कराहट। मुस्कान।
बिदूरित—भू० कृ० [स० बिदूर+इतच्, विदूरित] दूर किया हुआ या हटाया हुआ।
बिदूखना—अ० [सं० विदूषण] १ दोष या कलंक लगाना। २. खराब करना। बिगाड़ना।
बिदूखक—वि०, पुं०=विदूषक।
बिदेस—पुं० [सं० विदेश] अपने देश के अतिरिक्त और कोई देश। परदेस। विदेस।

बिदेसिया—पुं०[हिं० विदेशी] पूरब में गाये जानेवाले एक प्रकार के गीत जिनमे विदेश गये हुए पति के सम्बन्ध में उसकी प्रियतमा के उद्‌गार होते हैं और जिनके प्रत्येक चरण के अन्त में 'बिदेसिया' शब्द होता है। जैसे—दिनवाँ बितैला सइयाँ बटिया जोहत तोर रतिया बीतैली जागि जागि रे बिदेसिया।

बिदेसी—वि०=विदेशी।

बिदोख†—पुं०[सं० विद्वेष] वैर। वैमनस्य।

बिदोरना—स०[सं० विदारण] दीनतापूर्वक मुँह या दाँत खोलकर दिखाना।

बिद्ध—वि० =विद्ध।

बिद्दत—स्त्री०[अ० बिद्अत]१ खराबी। बुराई। २ कष्ट। ३ विपत्ति। ४. अत्याचार। ५ दुर्दशा।

बिद्रूप—वि० =विद्रूप।

बिधंसना—स०[सं० विध्वसन] विध्वंस करना। नष्ट करना।

बिध—स्त्री०[सं० विधि] १ विधाता। ब्रह्मा। २ तरह। प्रकार। उदा०—जाही बिध राखे राम, ताही बिधि रहिये।

क्रि० प्र०—बैठना।—बैठाना।

३ जमा और खर्च की मदों को जोड़ने-घटाते हुए उनका हिसाब मिलाने की क्रिया या भाव।

मुहा०—बिध मिलना—(क) जोड़ने-घटाने आदि पर आय-व्यय आदि का योग ठीक होना। हिसाब मिलना। (ख) किसी के साथ मेल या सगति बैठना। अनुकूलता होना। जैसे—वर और वधू के ग्रहो की बिध मिलना। बिध मिलाना—(क) आय और व्यय की मदो का जोड़ लगाकर यह देखना कि लेखा ठीक है या नही। (ख) यह देखना कि अनुकूलता या संगति बैठती है या नही।

पुं०[?] हाथियो का चारा या रातिब।

बिधना—पुं०[सं० विधि+न (प्रत्य०)] ब्रह्मा। विधाता।

†अ० =बिंधना।

बिधबदी—स्त्री०[हिं० बिधि=जमा+फा० बंदी] मध्य युग में भूमि-कर देने की वह रीति जिसमें बीघे आदि के हिसाब से कोई कर नियत नही होता था, बल्कि सारी जमीन के लिए यों ही अंदाज से कुछ रकम दे दी जाती थी। बिलमुकता।

बिधवपन—पुं०=वैधव्य।

बिधवा—वि०=विधवा।

बिधवाना—स०=बिंधवाना।

बिधंसना—स०[सं० विध्वसन] विध्वंस करना। नष्ट करना।

बिधाई—पुं०[सं० विधायक] वह जो विधान करता हो। विधायक।

बिधाता—पुं० =विधाता।

बिधान—पुं०=विधान।

बिधाना—स०=बिधाना।

†अ० =बिंधना।

बिधानी†—पुं०=विधायक।

बिधि—स्त्री०- विधि।

*पुं० विधि (ब्रह्मा)।

बिधितात*—पुं०[सं० विधि+तात] ब्रह्मा का जनक अर्थात् कमल।

बिधिना—स्त्री० =बिधना (विधाता)।

बिधिबान—पुं० दे० 'ब्रह्मास्त्र'।

बिधुंतुद—पुं०=विधुंतुद (राहु)।

बिधुंसना*—स० [विध्वसन]विध्वस करना। नष्ट करना।

बिधुली*—पुं०[देश०] एक प्रकार का बाँस जो हिमालय की तराई में पाया जाता है। नल-बाँस। देव-बाँस।

बिन—अव्य०=बिना (बगैर)।

पुं० बिंद नाम की जाति।

पुं०[अ०]पुत्र पुं० बेटा।

बिनई†—वि० =विनयी।

स्त्री०=बिनाई।

बिनउ†—स्त्री०=विनय।

बिनकार—वि० [हिं० बुनना] बुनकर। जुलाहा।

बिनकारी—स्त्री०[हिं० बिनकार] जुलाहे का काम।

बिनठना—स्त्री०[हिं० विनष्ट] नष्ट होना।

स० नष्ट करना।

बिनता—स्त्री०[देश०] पिढ़की नाम की चिड़िया।

स्त्री०[हिं० बिनती] १ विनय। २ विवशता। ३. दीनता।

बिनति—स्त्री०- विनती।

बिनती—स्त्री० [सं० विनय] प्रार्थना। निवेदन। अर्ज।

बिनन—स्त्री०[हिं० बिनना =चुनना]१ बिनने या चुनने की क्रिया या भाव। २ बिनने या चुनने पर निकलनेवाला कूड़ा-करकट। ३. बुने हुए होने की अवस्था, क्रिया या भाव। बुनावट।

बिनना—स०[सं० वीक्षण] १ छोटी छोटी वस्तुओं को एक एक करके उठाना। चुनना। बीनना। २ छाँटकर अलग करना। ३. दे० 'बुनना'।

†स०=बीधना।

बिनय—स्त्री०=विनय।

बिनयना*—स० [सं० विनयन] विनय या प्रार्थना करना।

बिनरी†—स्त्री०=अरनी (वृक्ष)।

बिनवट—स्त्री०[?] रूमाल या रस्सी मे पैसा आदि बाँधकर बनेठी भाँजने की क्रिया या खेल।

†स्त्री० १.=बिनावट। २ =बुनावट।

बिनवना—अ०[सं० विनय] विनय करना। प्रार्थना करना।

बिनवाना—स०[हिं० बीनना]बीनने या चुनने का काम किसी से कराना।

स०=बुनवाना।

बिनसना†—अ०[सं० विनाश]नष्ट होना। बरबाद होना।

स० नष्ट या बरबाद करना

बिनसाना—स०[सं० विनाश] विनाश करना। बिगाड़ डालना। नष्ट कर देना।

†अ० नष्ट या बरबाद होना।

बिनस्टी†—स्त्री०=विनाश।

बिनहु†—अव्य०=बिना।

बिना—अव्य०[सं० विना]१. न रहने या न होने की दशा मे। २ बगैर। जैसे—रुपये के बिना काम न चलेगा। ३. अतिरिक्त। सिवा।

उदा०—राम बिना कछु आनत नाही।

स्त्री०[अ०] १. नीव। बुनियाद। २. कारण। सबब। जैसे—यही तो सारे झगड़े की बिना है।

बिनाई—स्त्री०[हिं० बिनना या बीनना]१. बीनने या बुनने की क्रिया, भाव या मजदूरी। १. दे० 'बुनाई'।

स्त्री०[अ० बीनाई] आँखों की ज्योति।

बिनाती—स्त्री०=बिनती।

बिनाना—स०=बुनवाना।

बिनानी—वि०[सं० विज्ञानी] अज्ञानी। अनजान।

स्त्री०[सं० विज्ञान] विशिष्ट रूप में किया जानेवाला चिन्तन या विचार।

बिनावट—स्त्री०=बुनावट।

बिनास—स्त्री०[सं० पीनसः] नाक से खून गिरना या जाना। नकसीर।

क्रि० प्र०—फूटना।

पु०=विनाश।

बिनासना—स० [स० विनष्ट] १. विनष्ट करना। बरबाद करना। २ संहार करना।

बिनाहु†—पु०=विनाश। उदा०—साकत संग न कीजिए जाते होइ बिनाहु।—कबीर।

बिनि—अव्य०=बिना।

बिनु†—अव्य०=बिना (बगैर)।

बिनुआ—वि०[हिं० बीनना]१ जो बीन तथा चुनकर इकट्ठा किया गया हो। जैसे—बिनुआ कंडे। २ छाँटा हुआ।

बिनूठा—वि०[हिं० अनूठा] अनूठा। अनोखा। विलक्षण।

बिनै*—स्त्री० =विनय।

बिनैका—पु०[सं० विनायक]वह पकवान जो पहले घान मे से निकालकर गणेश जी के निमित्त अलग कर देते हैं।

बिनौरा†—पुं०=बिनौला।

बिनौरिया—स्त्री० [हिं० बिनौला] एक प्रकार की घास जो खरीफ के खेतों में पैदा होती है।

बिनौरी—स्त्री०[हिं० बिनौला] बिनौले के छोटे-टुकड़े।

बिनौला—पु०[?] कपास का बीज।

बिपक्ष—पु०=विपक्ष।

बिपक्षी—वि०, पु०=विपक्षी।

बिपच्छ—पु०[स० विपक्ष] शत्रु। बैरी। दुश्मन।

वि०१. जो विरोधी पक्ष मे हो। २. अप्रसन्न। नाराज।

बिपच्छी—पुं०=विपक्षी।

बिपनि—स्त्री०=विपणि।

बिपता†—स्त्री०=विपत्ति।

बिपति†—स्त्री०=विपत्ति।

बिपत्त†—स्त्री०=विपत्ति।

बिपत्ति†—स्त्री०=विपत्ति।

बिपथ†—पु०= विपथ।

बिपद—स्त्री०[सं० विपद]आफत। मुसीबत। विपत्ति।

बिपदा—स्त्री०=विपद।

बिप्र—पुं०=विप्र (ब्राह्मण)।

बिफरता†—पुं० [?] दे० 'बाँस' (वृक्ष)।

बिपाक—पुं०=विपाक।

बिफल—वि०=विफल।

बिफरना—अ०[स० विप्लवन ?]१. नाराज होना। बिगड़ना। २. हठ करना। ३. अभिमान आदि में फूलना। ४ लड़ने को तैयार होना। ५. विद्रोह या विप्लव करना। बागी होना।

बे०=बैफरना।

बिफुलता—स्त्री०=प्रफुल्लता। उदा०—तो तन दुति अतिबदन बिफुलता कहूँ देति छवि निरखत बात।—ललित किशोरी।

बिबछना—अ०[स० विपक्ष]१. विरोधी पक्ष में जाना, रहना या होना। २. अटकना। उलझना। फँसना।

बिबर*—पुं०=विवर।

बिबरजित—भू० कृ० =विवर्जित।

बिबरन†—वि०[स० विवर्ण]१. जिसका रंग खराब हो गया हो। बदरंग। २. चिंता आदि के कारण जिसका रंग फीका पड़ गया हो।

पु०=विवरण।

बिबराना*—स० [सं० विवरण] १. (बाल) सुलझाना। २ उलझन या विकटता दूर करना। ३. स्पष्ट रूप से विवरण बतलाना।

बिबर्ध*—वि०=विवर्ध (बहुत बड़ा हुआ)।

बिबस—वि०[सं० विवश]१. मजबूर। विवश। २ पराधीन। परवश।

क्रि० वि०विवश होकर। लाचारी हालत में।

बिबसना*—अ० [हिं० बिबस] विवश होना।

बिबहार†—पु०=व्यवहार।

बिबाई†—स्त्री०=बिवाई।

बिबाक†—वि०=बेबाक।

बिबाकी†—स्त्री० = बेबाकी।

बिबादना*—अ०[सं० विवाद] विवाद करना। झगड़ना।

बिबाहना*—स०[स० विवाह] ब्याह करना। ब्याहना।

बिबि—वि०[स० द्वि]१. दो। २. दोनो।

बिबेक*—पु०=विवेक।

बिबेचना—स०[सं० विवेचन] विवेचन करना।

स्त्री०=विवेचन।

बिब्बोक—पु०[स० बिब्बोक]स्वाभिमान, गर्व आदि के फलस्वरूप प्रिय के प्रति प्रदर्शित की जानेवाली उदासीनता।

बिभचारी—वि०, पु०=व्यभिचारी।

बिभाना*—अ०[स० विभा+हिं० ना (प्रत्य०)]१. चमकना। २. सुशोभित होना।

स०१. चमकाना। २ सुशोभित करना।

बिभिचारी—वि०, पुं०=व्यभिचारी।

बिभिनाना*—स०[सं० विभिन्न] अलग या पृथक् करना।

बिभीषक—वि०=विभीषक।

बिभीषिका—स्त्री०=विभीषिका।

बिमै—पुं०=विभव।

बिमोर†—वि०=विमोर।

बिमौ*—पुं० =विमद।

बिमन—वि० [स० विमनस्] [स्त्री० बिमना] जिसका मन या चित्त ठिकाने न हो। अन्य-मनस्क। विमन।

बिमफल†—पु०=बिंबफल (कुंदरू)।

बिमला—स्त्री०=विमला। (दे०)

बिमली—स्त्री०[स० विमल] इड़ा नाड़ी।

बिमान*—पु०=विमान।

बिमानी—वि०[स० वि+मान] जिसे अभिमान न हो। निरभिमान।

†स्त्री०=बेईमानी।

बिमुद—वि० [स० वि+मुद्] १ जिसे मोद या प्रसन्नता न हो। फलत. खिन्न या दुःखी। २ चिंतित।

बिमोचना—स०[स० विमोचन] मुक्त कराना। छुडाना।

बिमोहना—स० =मोहना।

अ०=मोहित होना।

बिमौट, बिमौटा—पु०=बाँबी (वल्मीक)।

बिमौर—पु०[स० वल्मीक]बाँबी। (दे०)

बिय—वि०[स० द्वि]१. दो। युग्म। २. दूसरा। द्वितीय। ३. अन्य। और।

† पु०=बीया (बीज)।

बियत—पु०[स० वियत्]१. आकाश। २ एकात स्थान।

बियन —पु० [स० विजन] एकान्त स्थान। सुनसान जगह। उदा०—बियन भजन दृढ गहि रहै तजि कुटुब परिवार।—ध्रुवदास।

बियना—स०=बीजना।

†पु०=बीज।

बियर—स्त्री०[अ०] एक तरह का विलायती मादक तथा शीतल पेय जो जौ के रस को सडाकर बनाया जाता है। यविरा।

बियरसा—पु०[देश०] एक प्रकार का ऊँचा पहाड़ी वृक्ष।

बियहुता—वि०=ब्याहता।

बिया—वि०[स० द्वि] दूसरा। अन्य। अपर।

पु० शत्रु। (डि०)

†पु०=बीया (बीज)।

बियाज†—पु०=ब्याज (१. सूद २. बहाना)।

बियाजू†—वि०[स० ब्याज+ऊ]२ ब्याज या सूद-सबधी। २. ब्याज के रूप मे या ब्याज पर दिया जानेवाला (धन)।

बियाड़—पु०[हिं० बिया+ड (प्रत्य०)]वह खेत जिसके पौधे उखाड़कर अन्य खेतों मे रोपे जाने को हों।

बियाध (धा)†— पु०=व्याध (बहेलिया)।

बियाधि†—स्त्री० =व्याधि।

बियान—पु०[हिं० बियाना] बियाने अर्थात् बच्चा देने की क्रिया या भाव। प्रसव।

बियाना—स०=ब्याना (पशुओं का बच्चा देना)।

बियापना—अ०[सं० व्याप्त] व्याप्त होना।

बियाबान—पु०[सं० वि+आप् (जल-रहित) से फा०] जंगल। वन।

बियाबानी—वि० [फा०] १ बियाबन का जंगल-सबधी। २. जगली।

बियारी†—स्त्री०=ब्यालू (रात का भोजन)।

बियारू—स्त्री०=ब्यालू।

बियाल—पु०=व्याल।

बियालू—स्त्री०=ब्यालू (रात का भोजन)।

बियाव†—पु०१. =बियान। २ =विवाह।

बियावर—वि० स्त्री०[हिं० बियाना=बच्चा देना] (मादा जीव या पशु) जो गाभिन हो और जल्दी ही बच्चा देने को हो। जैसे—बियावर गाय या भैंस।

पद—**बरस बियावर**। (देखें)

बियाह†—पु०=विवाह।

बियाहता—वि०=ब्याहता।

बियाहना*—स०[हिं० ब्याह] ब्याह करना।

बियाहा†—वि०[स० विवाहिता] [स्त्री० बियाही] जिसका विवाह हो चुका हो।

बियो—पु०[डि०] बेटे का बेटा। पोता।

बियोग†—पु० =वियोग।

बिरंग (ग)—वि०[सं० विरग] [स्त्री० बिरगी] १ कई रगोंवाला। २ बिना किसी प्रकार के रग का। वर्णहीन।

बिरंचना —स०=बिरचना।

बिरंज—पु०[फा०]१. चावल। २ पका हुआ चावल। भात।

बिरंजी—स्त्री०[?] लोहे की छोटी कील। छोटा काँटा।

वि०[फा० बिरंज]चावल या भात सम्बन्धी।

बिरई†—स्त्री०[हिं० बिरवा]१ छोटा पौधा। २ जड़ी-बूटी।

बिरख†—पु० =वृक्ष।

बिरखभ—पु०=वृषभ (बैल)।

बिरखा†—स्त्री० =वर्षा।

बिरगिड़—पु०[अ० ब्रिगेड] सेना का एक विभाग जिसमे कई रेजिमेंट या पलटनें होती है।

बिरचना*—स० [स० विरचन] रचना। बनाना।

अ०[स० वि+रुचि] १. मन उचटना। ऊबना। उदा०—बिरच्यौ किहि दोष न जानि सकौं जु गयौ मन मो तजि रोपन तें।—घनआनद।

२. अप्रसन्न होना। नाराज होना।

बिरछ—पु०=वृक्ष।

बिरछिक—पु०=वृश्चिक।

बिरज†—पु०=व्रज।

बिरजफूल—पु०[?] एक प्रकार का जड़हन—धान।

बिरझना—अ०[स० विरुद्ध]१ उलझना। २ झगडना।

बिरझाना—स० [हिं० बिरझाना]१ उलझाना। २. लडाई झगडे में किसी को प्रवृत्त करना।

†अ०=बिरझना।

बिरतंत†—पु०=वृत्तांत।

बिरतांत†—पु०=वृत्तांत।

बिरता—पु०=बूता (सामर्थ्य)।

बिरताना†—स० =बरताना।

बिरतिया—पु०[स० वृत्ति+इया (प्रत्य०)]१ वह व्यक्ति (विशेषत: नाई या भाट) जो एक पक्ष की ओर से दूसरे पक्षवालों के यहाँ वैवाहिक सबंध स्थिर करने के लिए तथा उनकी आर्थिक तथा सामाजिक स्थिति

का पता लगाने के लिए भेजा जाता था। २. वह जो दान, पुण्य आदि प्राप्त करके जीविका चलाता हो।

बिरथा†—अव्य०=वृथा (व्यर्थ)।
†वि०=वृथा (निरर्थक)।

बिरद—पुं०=विरुद (यश)।
वि०=विरद (दंतहीन)।

बिरदैत—पुं०[हिं० बिरद+ऐत (प्रत्य०)] कीर्तिवान योद्धा। यशस्वी वीर।
वि० प्रसिद्ध। मशहूर।

बिरध†—वि०[स्त्री० बिरधा]=वृद्ध।

बिरधाई—स्त्री०[हिं० वृद्ध+आई (प्रत्य०)] वृद्धावस्था। बुढ़ापा।

बिरधापन—पु०[सं० वृद्ध+हिं० पन (प्रत्य०)]वृद्ध होने की अवस्था या भाव। बुढ़ापा।

बिरमना—अ०[सं०विरमण]१. किसी पर आसक्त या मोहित होकर उसके प्रेमपाश में फँसना या फँसकर उसके पास रुक जाना। २ बिलंब करना। देर लगाना।
अ०[स० विराम]१. विराम करना। ठहरना। २. आराम करना। सुस्ताना। ३. अलग होना। उदा०—अपने कृत तें ही नहिं बिरमत।—सूर।

बिरमाना—स०[हिं० बिरमना का स० रूप] १. किसी को बिरमने मे प्रवृत्त करना। (दे० 'बिरमना') २. किसी को अपने पर आसक्त या मोहित करना। ३ (समय) गुजारना। बिताना।
†अ० दे० 'बिरमना'।

बिरला—वि० [स० विरल] [स्त्री० बिरली] १ जो सब जगह या अधिकता से नही, बल्कि कमी-कमी और कहीं-कहीं दिखाई देता या मिलता हो। इक्का-दुक्का। जैसे—उसका स्वभाव भी कुछ बिरला ही है। २. अनेक या बहुतों मे से ऐसा ही कोई जिसमें किसी विशिष्ट काम को करने की समर्थता तथा साहस होता है। जैसे—कलियुग में परोपकारी कोई विरला ही होता है।
विशेष—इसके साथ 'ही' का प्रयोग होता है।

बिरव—पु०=बिरवा।

बिरवा—पु०[स० विटपक, प्रा० बिरवआ]१. वृक्ष। पेड़। २. पौधा। उदा०—होनहार बिरवान के, होत चीकने पान।—३ चना। बूट।

बिरवाही—स्त्री०[हिं० बिरवा+ही (प्रत्य०)]१. वह स्थान जहाँ बहुत से पेड़-पौधे हों। २. वह स्थान जहाँ छोटे-छोटे पौधे बिक्री, रोपाई आदि के लिए उगाये जाते हों।

बिरषभ†—पु०=वृषभ।

बिरष्ठ—पु० [सं० वृक्ष] पेड़।

बिरस*—वि०[सं० विरस] जिसमें रस न हो। रसहीन।
पु०१. रस (प्रेम) का अभाव। २. जहर। विष। (डिं०) ३. अनबन। बिगाड़।

बिरसना†—अ०[सं० विलास]१. विलास करना। २. भोगना।

बिरह†—पुं०=विरह।

बिरहना†—स० [सं० विराधन] १. खंडित करना। तोड़ना-फोड़ना। २. नष्ट करना।
अ०१. खंडित होना। २. नष्ट होना।

बिरहा—पु०[सं० विरह]भोजपुरी बोली में, दो पंक्तियोंवाला एक प्रसिद्ध लोकछंद।

बिरहागि—स्त्री०[सं० विरह+हिं० आग] विरह के कारण प्रिय (या प्रेयसी) को होनेवाली हार्दिक पीड़ा या कष्ट।

बिरहाना*—अ०[सं० विरह]विरह-व्यथा का अनुभव करना। उदा०—राधा बिरह देख बिरहानी।—सूर।

बिरही†—पुं०=विरही।

बिरहुला—पुं०[पा० बिल्लहक=नाग] [स्त्री० बिरहुली] सर्प। साँप। उदा०—बोइनी सातो बीज बिरहुली।—कबीर।

बिरहुली—स्त्री०[हिं० बिरहुला का अल्पा० स्त्री० रूप] १. सर्पिणी। २. साँप के काटने पर उसका विष उतारने का मंत्र।

बिरागना*—अ० [सं० विराग] १. विरक्त होना। २. सन्यास ग्रहण करना।

बिराजना—अ०[सं० वि+रंजन] १. शोभित होना। शोभा देना। उदा०—सीस मोतियन का सेहरा बिराजै।—गीत। २. बैठना। (आदरसूचक) जैसे—आइए, बिराजिए। उदा०—राज-सभा रघु-राज बिराजा।—तुलसी। ३. स्थित होना। जैसे—उनके मुख पर सदा राम नाम बिराजता है।

बिरादर—पु०[फा० बरादर] भाई। भ्राता।

बिरादराना—वि० [फा० बरादरान] (व्यवहार)जैसा भाइयों में होता या होना चाहिए। भाइयों जैसा।

बिरादरी—स्त्री०[फा० बरादरी] १. भाईचारा बंधुत्व। २. ऐसे लोगों का दल या वर्ग जिनमें परस्पर बंधुत्व या भाईचारे का व्यवहार होता हो। ३. विशेषत किसी एक ही जाति या वर्ग के वे सब लोग जो सामाजिक उत्सवों पर एक दूसरे के यहाँ आते-जाते हों। जैसे—हिन्दुस्तानी बिरादरी।

बिरान†—वि०=बिराना (पराया)।
वि०=वीरान।

बिराना—स०[स० विरव या अनु० ?]किसी को चिढ़ाने या हास्यास्पद बनाने के लिए उसकी आकृति को बिगाड़कर या उसकी मुद्रा का विलक्षण अनुकरण करना। जैसे—किसी का मुँह बिराना।
वि०=बेगाना (पराया)।

बिराम†—वि०[हिं० बे+आराम] १. बीमार। रोगी। २. बेचैन। विकल।
पु०=विराम।

बिराल—पु०=बिड़ाल।

बिरावना—स०=बिराना।

बिरास†—पु०=विलास।

बिरासी—वि०=बिलासी।

बिरिख—पु०=वृक्ष। २.=वृष।

बिरिछ†—पुं०=वृक्ष।

बिरिध†—वि०=वृद्ध।

बिरियाँ—स्त्री०[हिं० बेला]१. समय। वक्त। बेला।
स्त्री०[स० वार]१. बार। दफा। मरतबा। २ पारी। बारी।

उदा०—मेरी बिरियाँ विरह कितै बिसरायौ—सूर।

बिरिया—स्त्री०[हिं० बाली]१ छोटी कटोरी के आकार का एक गहना जो कान मे पहना जाता है। पश्चिमी जिलों मे इसे 'ढार' भी कहते हैं। २ चरखे के बेलन मे की कपड़े या लकडी की वह गोल टिकिया जो इस हेतु लगाई जाती है कि चर्खे की मूड़ी खूँटे से रगड न खाय।
†स्त्री०=बिरियाँ।

बिरियानी—स्त्री०[फा०] एक प्रकार का नमकीन पुलाव।

बिरी†—स्त्री०=बीड़ी।

बिरुआ—पु०[देश०] एक प्रकार का राजहस।

बिरुझना—अ०[स० विरुद्ध या हिं० उलझना]१. उलझना। २ झगडा करना। झगड़ना।

बिरुझाना—स०[हिं बिरुझना] १ उलझाना। २ लोगों से झगडा करना।
†अ०=बिरुझना।

बिरुद†—पु०=विरुद (यश)।

बिरुदैत—पु०=बिरदैत।

बिरुधाई—स्त्री०=वृद्धावस्था।
स्त्री० [स० विरुद्ध] विरुद्ध होने की अवस्था या भाव। विरोध।

बिरूप—वि०=विरूप।

बिरोग—पु०[स० वियोग]१ वियोग। २ दुःख। ३. चिंता।

बिरोगी—पु०[स्त्री० बिरोगिन]=बियोगी।

बिरोजा—पु० दे० 'गधा बिरोजा'।

बिरोधना—अ० [स० विरोध] १ (किसी व्यक्ति या बात का) विरोध करना। २ किसी से विरोध या शत्रुता करना। ३ मार्ग अवरुद्ध करना।

बिरोलना—स०=बिलोड़ना।

बिरौना†—स०=बिलोड़ना।

बिरौनी—स्त्री० [?] कोदो, बाजरे आदि के खेतो मे होनेवाली एक प्रकार की जोताई जो उनके अकुरित होने पर की जाती है।

बिर्छ*—पु०=वृक्ष।

बिर्ध*—वि०=वृद्ध।

बिलंगी—स्त्री०=अलगनी।

बिलद†—वि० [फा० बुलद] १ जो बुरी तरह पराजित या विफल हुआ हो। २ दे० 'बुलद'।

बिलदना—अ० [हिं० बिलद] १. नष्ट होना। २ हारना।
स० १ नष्ट करना। २. हराना।

बिलंदा—वि० [हिं० बिलदना] १ नष्ट-भ्रष्ट। २ पराजित। ३ भ्रष्ट या हीन चरित्रवाला।

बिलंब—पु०=बिलब।

बिलंबत†—वि०=विलबित।

बिलंबना—अ० [स० विलब] १ बिलब करना। देर करना। २. ठहरना। रुकना।
अ०=विरमना।

बिलंबी—पु० [?] एक प्रकार का वृक्ष और उसका फल।

बिल—पु० [स०√बिल् (भेदन)+क] १. जमीन मे, तल से नीचे की ओर गया हुआ वह रेखाकार मार्ग या खाली स्थान जिसे कीड़े-मकोड़े, चूहों आदि ने अपने रहने के लिए बनाया होता है।
मुहा०—**बिल ढूँढ़ते फिरना**=अपनी रक्षा का उपाय ढूँढ़ते फिरना। बहुत परेशान होकर अपने बचने की तरकीब ढूँढ़ना। (व्यग्य)
पु० [अ०] १. वह पुरजा जिसमें उन वस्तुओं का विवरण तथा मूल्य लिखा रहता है जो किसी के हाथ बेची गयी हो या उन सेवाओं का विवरण हो जिनका पारिश्रमिक प्राप्य हो। प्राप्यक। २ दे० 'विधेयक'।

बिलकना†—अ०=बिलखना।

बिलकारी (रिन्)—पु० [स० बिल√कृ (करना)+णिनि, दीर्घ, नलोप] चूहा।
वि० बिल मे रहनेवाला।

बिलकुल—अव्य० [अ० बिल्कुल] १ जितना हो, उतना सब। कुल। सब। सारा। जैसे—उनका हिसाब बिलकुल साफ कर दिया गया। २ निरा। निपट। जैसे—वह भी बिलकुल बेवकूफ है। ३ बिना कुछ भी बाकी छोड़े हुए। ४ कुछ भी। तनिक भी। जैसे—मैंने बिलकुल देखा ही नही।

बिलखना—अ० [स० विकल या विलाप] १ विलाप करना। रोना। २ रोते अथवा सतप्त होते हुए निरतर अपने दुःख की चर्चा करना।
अ० [?] सकुचित होना। सिकुड़ना।

बिलखाना—स० [हिं० बिलखना का स०] ऐसा काम करना जिसमे कोई बिलखे। बहुत ही दुःखी या सतप्त करना।
†अ०=बिलखना। उदा०—बिकसित कज, कुमुद बिलखाने।—तुलसी।

बिलग—वि० [हिं० विलगना] अलग। पृथक।
पु० १. विलग अर्थात् अलग या पृथक् होने की अवस्था या भाव। पार्थक्य। २ परकीय होने की अवस्था या भाव। परायापन। ३. पार्थक्य आदि के कारण मन मे होनेवाला कुभाव या दुर्भाव। उदा०—देवि करौ कछु बिनय सो बिलगु मानब। तुलसी।
क्रि० प्र०—मानना।

बिलगना—अ० [स० विलग्न] अलग या पृथक होना।

बिलगाऊ—वि० [हिं० बिलग+आऊ (प्रत्य०)] अलग या पृथक् करनेवाला।

बिलगाना—अ०[हिं० बिलग+आना (प्रत्य०)] अलग होना। पृथक् होना। दूर होना।
स० १ अलग या पृथक करना। २ चुनना। छाँटना।

बिलगाव—पु०[हिं० विलग+आव (प्रत्य०)] बिलग या अलग होने की क्रिया या भाव। अलगाव। पार्थक्य।

बिलगी—पु०[देश०] एक प्रकार का मकर राग।

बिलच्छन†—वि०=विलक्षण।

बिलछना†—अ०[स० लक्ष] लक्ष करना। ताड़ना।

बिलटना†—अ० [स० विलुठन]१ उलटा या विपरीत होना। उदा०—बिधि ही बिलटती दीखती है नियत नरकुल कर्म की।—मैथिली शरण। २ तहस-नहस होना। विनष्ट होना। ३ परीक्षा, प्रयत्न आदि में विफल होना।
†स०=बिलटाना।

बिलटाना—स०[हिं० बिलटना]१. उलटा या विपरीत करना। २. तहस-नहस या विनष्ट करना।

बिलटी—स्त्री० [अं० बिलेट] रेल से भेजे जानेवाले माल की वह रसीद जिसे दिखलाने पर पानेवाले को वह माल मिलता है।

बिलना—अ०[हिं० बेलना का अ०] बेला जाना।

बिलनी—स्त्री०[हिं० बिल]१. काली भौरी जो दीवारों या किवाड़ों पर अपने रहने के लिए मिट्टी की बाँबी बनाती है। २. आँख पर होनेवाली गुहाजनी नाम की फुंसी।

बिलपना—अ०[स० विलाप] विलाप करना। रोना।

बिल-फर्ज—अव्य०[अ०] यह फर्ज करते हुए। यह मान कर।

बिलफेल—अव्य० [अ०]वर्तमान अवस्था में। इस समय। अभी। संप्रति।

बिलबिलाना—अ०[अनु०] १ छोटे-छोटे कीडो का इधर-उधर रेंगना। २. विकल होकर बे-सिर पैर की बाते करना। प्रलाप करना। ३ विलाप करना। रोना-चिल्लाना। ४. दे० 'बलबलाना'।

बिलम†—पु०=बिलंब।

बिलमना—अ०[स० विलब] बिलब करना। देर करना।

अ०[सं० विरमण] किसी के प्रेम-पाश मे बधकर कही ठहर या रुक जाना।

बिलमाना—स० [हिं० बिलमना का स०]१. ऐसा काम करना जिससे कोई बिलमे। उदा०—भाव बुद्धि के सोपानों मे बिलमाये न हृदय मन।—पन्त।

स०[स० विरमण] किसी को अपने प्रेम-पाश मे बाँधकर ठहरा या रोक रखना।

बिललाना—अ०[सं० बिलाना अथवा अनु०]१ बिलखकर रोना। विलाप करना। २ विकल होकर असबद्ध प्रलाप करना।

बिलल्ला—वि०[हिं० लल्ला (बच्चा) का अनु०] [स्त्री० बिलल्ली] जिसे कुछ भी बुद्धि या शऊर न हो। निरा मूर्ख।

बिलवाना—स०[हिं० बिलाना का स०] १ विलीन कराना। २ गुम कराना। खोवाना। ३ नष्ट या बरबाद कराना। ४ छिपवाना। लुकवाना।

सयो० क्रि०—देना।

स०[हिं० बेलना का स०] किसी से बेलने का काम कराना।

बिलवारी†—स्त्री०[?] बुदेलखंड मे कुआर मे गाया जानेवाला एक प्रकार का गीत।

बिल-बास—वि० [स० ब० स०] दे० 'बिलकारी'।

बिलवासी (सिन्)—वि० [सं० बिल√वस् (निवास)+ णिनि, दीर्घ, नलोप] दे० 'बिलकारी'।

बिलशय—वि०[स० बिल√शी (शयन करना) +अच्] बिल मे रहने-वाला।

पु० बिल मे रहने वाला जन्तु।

बिलशायी (यिन्)—वि०[सं० बिल √शी (शयन रना)+ णिनि, दीर्घ नलोप] बिल में रहनेवाला।

बिलसना—अ०[सं० विलसन] विशेष रूप से शोभा देना। बहुत भला जान पड़ना।

स० उपयोग मे लाना। भोग करना। भोगना। जैसे—संपत्ति या सुख बिलसना।

बिलसाना—स०[हिं० बिलसना का स०] किसी को बिलसने में प्रवृत्त करना।

बिलस्त†—पु०=बालिश्त।

बिलहरा—पु०[हिं० बेल ?] बाँस की पतली तीलियों का बना हुआ एक प्रकार का छोटा डिब्बा जिसमे पान के बीड़े बनाकर रखे जाते हैं।

बिला—अव्य०[अ०] बिना। बगैर।

बिलाई—स्त्री०[सं० बिड़ाल]१. बिल्ली। २ सिटकिनी। ३ संतों की परिभाषा में, बुरी बुद्धि। कुबुद्धि। ४ दे० 'बिलैया'।

बिलाई कंद—पुं०=बिदारी कंद।

बिलाना—अ०[स० बिलायन]१. विलीन होना। न रह जाना। २. नष्ट या बरबाद हो जाना। ३. छिपना। लुकना।

बिलापना*—अ० [स० विलाप] बिलाप करना।

बिलार—पु०[सं० बिडाल] [स्त्री० बिलारी] बिल्ला। मार्जार।

बिलारी†—स्त्री०=बिल्ली।

बिलारी कंद—पु० [स० विदारी कद] एक प्रकार का कंद। दे० 'बिदारी कंद'।

बिलाव—पु० दे० 'बिलार'।

बिलावर†—पु०=बिल्लौर।

बिलावल—पु०[देश०] षाडव-सपूर्ण जाति का एक राग जो रात के पहले पहर में गाया जाता है।

बिलासखानी टोड़ी—स्त्री० [बिलास खाँ (व्यक्ति) +हिं० टोडी] सगीत में एक प्रकार की टोड़ी रागिनी।

बिलासना—स०[सं० विलसन]१. भोग करना। भोगना। २. विलास या आनद-मगल करना।

बिलिंबी—स्त्री०[मलाया० बलिंबा] एक प्रकार की कमरख का फल या उसका पेड़।

बिलियर्ड—पुं०[अं०] एक तरह का पाश्चात्य खेल जो लाल, सफेद तथा चितकबरे रग के तीन गेंदो और लबी छड़ियो की सहायता से एक विशेष आकार-प्रकार की मेज पर खेला जाता है।

बिलिया—स्त्री०[देश०] गाय, बैल आदि के गले की एक बीमारी।

स्त्री० हिं० बेला (कटोरा) का अल्पा० स्त्री०।

बिलिश—पुं०[?] १ मछली फँसाने का काँटा। २ उक्त में लगाया जानेवाला चारा।

बिलुठना†—अ०=लोटना।

बिलुलित—वि०[सं० विलुलित]अस्तव्यस्त। उदा०—बिलुलित अलक धूरि-धूसर तन, गमन लोट भुव आवनि ?—ललित किशोरी।

बिलूर†—पु०= बिल्लौर।

बिलैया—स्त्री०=[हिं० बिल्ली]१. बिल्ली।

पद—**बिलैया डंडवत**=केवल दिखाने के लिए बिल्ली की तरह बहुत ही झुककर किया जानेवाला नमस्कार। **बिलैया भगत**=वह जो केवल दूसरों को दिखाने के लिए भक्तो का सा वेश धारण किये हो।

२ लकड़ी का वह छोटा टुकड़ा जो अन्दर से दरवाजा कसने के लिए लगाया जाता है और आवश्यकतानुसार उठाया तथा गिराया जा सकता है। काठ की सिटकिनी। कुत्ता। ३. कुएँ में गिरा हुआ बरतन आदि निकालने का काँटा जो प्राय लोहे का बनता है। ४ कद्दूकश। (देखें)

बिलोकना—स०[सं० बिलोकन] १. अच्छी तरह या ध्यानपूर्वक देखना। २. जाँच-पड़ताल करने के लिए अच्छी तरह देखना।

बिलोकनि—स्त्री०[स० विलोकन] देखने की क्रिया या भाव। कटाक्ष। दृष्टिपात।

बिलोड़ना—स०=बिलोना।

बिलोन—वि०[सं० वि+लावण्य]=बिलोना।

बिलोना—स०[सं० बिलोड़न]१ किसी तरल पदार्थ मे कोई चीज डालकर अच्छी तरह हिलाना। २. घघोलना। ३ चीजे इधर-उधर करना। अस्त-व्यस्त करना। ४. (आँसू) गिराना या बहाना।

वि० [हिं० बि+लोन=नमक][स्त्री० बिलोनी] १. जिसमे नमक न पड़ा हो। बिना नमक का। अलोना। उदा०—लोनि बिलोनि तहाँ को कहाँ—जायसी। २. लावण्य या सौन्दर्य से रहित। कुरूप। भद्दा। ३. नीरस। फीका।

बिलोरना—स०=बिलोना।

बिलोलना—अ०[सं० बिलोलन] इधर-उधर लहरे मारना। स० इधर-उधर हिलाना। लहराना।

बिलोवना—स०=बिलोना।

बिलौर—पु०=बिल्लौर।

बिल्कुल—अव्य०=बिलकुल।

बिल्मुक्ता—वि०[अ० बिल्मुक्त.] सब फुटकर मदों को मिलाकर एक में किया हुआ। जैसे—आप बिल्मुक्ता सौ रुपए दें, सब हिसाब साफ हो जायँगे।

पुं० मध्ययुग मे लगान का वह प्रकार जिसमे सब मदों के लिए एक साथ कुछ निश्चित रकम दे दी जाती थी।

बिल्ला—पु०[सं० विडाल] [स्त्री० बिल्ली]बिल्ली का नर।

पु०[म० पटल ?] कपड़े आदि की वह चौड़ी पट्टी जो कुछ विशिष्ट प्रकार का काम करनेवाले लोग अपनी पहचान के लिए छाती पर लगाते या बाँह पर बाँधते हैं। जैसे—स्वय-सेवकों का बिल्ला, कुलियो या चपरासियों का बिल्ला।

बिल्ली—स्त्री०[स० बिडाल, हिं० बिलार] १. चीते, शेर आदि की जाति का, पर अपेक्षया बहुत ही छोटे आकार का एक प्रसिद्ध जन्तु जो प्राय. घरो मे पाला जाता है।

मुहा०—**बिल्ली के गले में घंटी बाँधना**=किसी काम का सबसे कठिन अश पूरा या संपादित करना।

२. किवाड़ की सिटकिनी जिसे कोंढ़े में डाल देने से ढकेलने पर किवाड़ नही खुल सकता। ३. भारतीय नदियो मे पाई जानेवाली एक प्रकार की मछली।

बिल्ली लोटन—स्त्री० [हिं० बिल्ली+लोटना] एक प्रकार की बूटी जिसकी गंध से बिल्ली मस्त होकर लोटने लगती है।

बिल्लूर—पु०=बिल्लौर।

बिल्लौर—पु० [सं० वैदूर्य्य प्रा० बेलुरिय मि० फा० बिल्लूर] [वि० बिल्लौरी] १. एक प्रकार का स्वच्छ सफेद पत्थर जो शीशे के समान पारदर्शी होता है। स्फटिक। (क्रिस्टल) २. उक्त की तरह स्वच्छ और बढ़िया शीशा।

बिल्लौरी—वि०[हिं० बिल्लौर] १. बिल्लौर-संबंधी। २. बिल्लौर पत्थर का बना हुआ। ३ बिल्लौर की तरह चमकीला सफेद और स्वच्छ। जैसे—बिल्लौरी चूड़ियाँ।

बिल्व—पुं०[सं०] बेल का वृक्ष और फल।

बिल्वपत्र—पु०[सं०] बेल के वृक्ष के पत्ते जो पवित्र मानकर शिवजी पर चढ़ाये जाते हैं।

बिल्हण—पु०[सं०] कश्मीर का एक प्रसिद्ध कवि जिसने 'विक्रमांक देव चरित' की रचना की थी।

बिवरना—स०[सं० विवरण]१ एक मे उलझी या गुथी हुई वस्तुओं को अलग-अलग करना। सुलझाना। जैसे—कंघी से सिर के बाल बिवरना। २ पूरा विवरण देना या बतलाना। ३. साफ करना। स्वच्छ करना। उदा०—बिवरौं काया, पावौ सिद्धि।—गोरखनाथ।

अ०१. सुलझाना। २ विवरण से युक्त या विस्तृत होना।

बिवराना—स०[हिं० बिवरना क प्रे०] १. आपस मे उलझी या गुथी हुई चीजों को अलग अलग कराना। सुलझवाना। जैसे—बाल बिवराना। २. विवरण सहित वर्णन कराना।

बिवसाइ†—पु०=व्यवसायी।

बिवाई—स्त्री० [सं० विपादिका] एक रोग जिसमें प्राय जाडे के दिनों मे पैर के तलुए का चमडा फट जाता या उसमे छोटे-छोटे घाव हो जाते हैं।

बिवान†—पुं०=विमान।

बिशप—पु०[अ०] मसीही धर्म का आचार्य।

बिश्नी†—पु०=बिसनी।

बिषान†—पु०=विषाण।

बिषारा†—वि०[स० विष+आरा (प्रत्य०)] जहरीला। विषाक्त।

बिषिया*—स्त्री०=विषया।

बिसच—पु०[सं० वि-सचय]१ सचय का अभाव। वस्तुओ की सभाल न रखना। २. उपेक्षा। लापरवाही। ३. कार्य मे होनेवाली बाधा या हानि। ४ अमागलिक या अशुभ बात की आशका।

बिसंभर—वि०[स० वि+हिं० सँभार] १ जो ठीक स्थिति मे रह या समल न सके। २. (व्यक्ति) जो अपने आप को सँभाल न सके। असावधान। ३. गाफिल। बेहोश। उदा०—राघौ मारा बीजुरी। बिसँभर कछु न सभार।—जायसी।

बिसंभर†—पुं०=विश्वम्भर।

बिसँभार—वि०[सं०वि+हिं० सँभार] जिसे तन-बदन की खबर न हो। गाफिल।

बिस—पु०[स० विष] जहर। विष।

पद—**बिस की गाँठ**=ऐसा पदार्थ या व्यक्ति जिससे सदा बहुत बडा अपकार, अहित या हानि ही होती हो। बहुत अधिक अनर्थों, दोषो आदि का मूल।

बिसकरमा†—पुं०=विश्वकर्मा।

बिसकुसुम—पु०[मध्यम० स०] पद्म पुष्प।

बिस-खपरा—पु०[सं० विष+खर्पर]१ गोह की जाति का एक विषैला सरीसृप जतु। २. एक प्रकार की जड़ी या बूटी जिसकी पत्तियाँ बन-गोभी की सी पर कुछ अधिक हरी और लंबी होती हैं। ३ गदहपूरना। पुनर्नवा।

बिसखापर—पुं०=बिसखपरा।
बिसखोपड़ा†—पुं०=बिस-खपरा।
बिसटी—स्त्री०[देश०] बेगार। (हिं०)
बिसतरना—स०[सं० विस्तरण] विस्तार करना। बढ़ाना। फैलाना।
अ०=विस्तृत होना।
बिसतार†—पुं०=विस्तार।
बिसथार*—पुं०=विस्तार।
बिसद†—पुं०=विशद।
बिसन†—पुं०=व्यसन।
बिसनी—वि०[सं० व्यसनी] १ जिसे किसी बात का व्यसन हो। किसी काम या बात का शौकीन।
पुं० १. छैला। २ दुर्व्यसनी। ३. वेश्यागामी। रंडीबाज।
बिसमउ†—पुं० [सं० विस्मय] १. आश्चर्य। ताज्जुब। २. दु:ख। रंज। —हरष समय बिसमउ कत कीजै।—तुलसी।
बिसमरना—स०[सं० विस्मरण] विस्मृत करना। भूल जाना।
बिसमय†—पुं०=विस्मय।
बिसमाद*—पुं०=विषाद। उदा०—तहँ बिसमाद बीच मुख सोहै।—नूर मुहम्मद।
बिसमिल—वि०=बिस्मिल।
बिसमिल्ला (ह)—अव्य०=बिस्मिल्लाह।
बिसयक—पुं०[सं० विषय] १ देश। प्रदेश। २. छोटा राज्य। रियासत।
बिसरना—अ०[सं० विस्मरण, प्रा० बिम्हरण, बिस्स] विस्मृत होना। भूलना।
स० विस्मृत करना। भुला देना।
बिसरात—पुं०[सं० वेशर] खच्चर।
बिसराना—स०[हिं० बिसरना] विस्मृत करना। भुला देना।
बिसराम†—पुं०=विश्राम।
बिसरामी—वि०[सं० विश्राम] १. विश्राम करने या देनेवाला। २. सुखद। ३ किसी के साथ रहकर सुख भोगनेवाला।
बिसरावना†—स०=बिसराना।
बिसवा—पुं०=बिस्वा।
*स्त्री०=वेश्या।
बिसवार—पुं०[सं० विषय=वस्तु+हिं० वार (प्रत्य०)] वह पेटी जिसमें नाई हजामत का सामान रखते हैं। किसबत।
बिसवास†—पुं०=विश्वास।
बिसवासी—वि०[सं० विश्वासिन्] [स्त्री० बिसवासिनी] १. जो विश्वास करे। २ जिस पर विश्वास हो। विश्वसनीय।
वि०[सं० अविश्वासिन्] १. जिस पर विश्वास न हो। २. विश्वासघाती। उदा०—मैं यह पेट भएउ बिसवासी।—जायसी।
बिससना—स० [सं० विश्वसन] विश्वास करना।
स० [सं० विशसन] १. मार डालना। वध करना। खतम करना। २. शरीर के अंग काटना। ३. काटकर टुकड़े टुकड़े करना।
बिसहना†—स०=बिसाहना।
बिसहर—पुं०=विषधर (साँप)।
वि०=विषाक्त (जहरीला)।
बिसहक†—पुं० [हिं० बिसहना+क (प्रत्य०)] मोल लेनेवाला। खरीददार। ग्राहक।
बिसहिनी—स्त्री० [?] एक प्रकार की चिड़िया।
बिसा*—पुं०=बिस्वा।
बिसाख†—पुं०=वैशाख।
स्त्री०=विशाखा (नक्षत्र)।
बिसात—स्त्री० [अ०] १ वह कपड़ा या चटाई जिस पर छोटे दूकानदार बिक्री की चीजें फैलाकर रखते हैं। २ वह कपड़ा, कागज आदि जिस पर चौपड़, शतरंज आदि खेलने और गोटियों, मोहरें आदि रखने के लिए खाने बने होते हैं। ३. धन संपत्ति, आदि के विचार से होनेवाला सामर्थ्य। औकात। बिसात। हैसियत। ४. पास में होनेवाला धन। जमा। पूंजी। ५. शारीरिक शक्ति, योग्यता आदि के विचार से होनेवाला सामर्थ्य। ६ कुछ ग्रहण या धारण करने के विचार से होनेवाला सामर्थ्य। समाई।
बिसात-खाना—पुं० [अ० बिसातखान] १. बिसाती की दुकान। २ बिसाती की दुकान पर बिकनेवाले सामानों का समूह।
बिसातखाना—पुं० [हिं०] वे सब सामान जो बिसातियों की दूकानों पर मिलते हैं।
बिसाती—पुं० [अ०] १. वह जो बिसात पर सामान फैलाकर बेचता हो। २. सूई, तागा, बटन, साबुन, तेल आदि फुटकर सामान बेचने, वाला दूकानदार।
बिसाना—अ० [सं० वश] वश चलना। काबू या ज़ोर चलना।
अ० [सं० विष बिस+ना (प्रत्य०)] विष का प्रभाव करना। जहर का असर करना। जहरीला होना।
स० विष से युक्त या जहरीला करना।
स० =बिसाहना (मोल लेना)।
बिसायँध—वि० [सं० वसा=मज्जा, चरबी+गंध] सड़ी मछली या मांस की-सी गंधवाला।
बिसारद†—पुं०=विशारद।
बिसारना—स० [हिं० बिसरना] स्मरण न रखना। ध्यान में न रखना। विस्मृत करना। भुलाना।
संयो० क्रि०—देना।
बिसारा—वि० [सं० विषालु] [स्त्री० बिसारी] विष भरा। विषाक्त। जहरीला।
पुं०=बिसायँध।
बिसास*—पुं० १ =विश्वास। २. दे० 'विश्वासघात'।
बिसासी—वि० [सं० अविश्वसिन्] [स्त्री० बिसासिन, बिसासिनी] १ जिस पर विश्वास न किया जा सके। २. कपटी। धोखेबाज।
पुं० [सं० विश्व+आशिन्] विश्व का भक्षक, अर्थात काल।
बिसाह—पुं० [सं० व्यवसाय] बिसाहने की क्रिया या भाव।
† विश्वास। (पश्चिम)
बिसाहन—पुं० [हिं० बिसाहना] मोल लेने की वस्तु। काम की वह चीज जो खरीदी जाय। सौदा।
बिसाहना—स० [हिं० बिसाह] १. दाम देकर कोई वस्तु लेना।

क्रय करना। खरीदना। २ जान-बूझकर अपने पीछे या साथ लगाना। जैसे—किसी से बैर बिसाहना।

पु० १ बिसाहने की क्रिया या भाव। २. मोल लेना। खरीदना। उदा०—पूरा किया बिसाहना बहुरि न आवै हद।—कबीर।

बिसाहनी—स्त्री० [हिं० बिसाहना] १ क्रय-विक्रय का काम। व्यापार। २ मोल ली जानेवाली चीजें।

बिसाहा—पु० [हिं० बिसाहना] वह वस्तु जो मोल ली जाय। सौदा।

बिसिअर*—पु०=विषधर।

*वि० विषाक्त।

बिसिख†—पु०=विशिख (तीर)।

बिसियर†—पु०, वि० बिसिअर।

बिसुकर्मा†—पु०=विश्वकर्मा।

बिसुनना—अ० [हिं० सुरकना, सुनकना] खाने के समय किसी अन्न-कण का कंठ के बदले नासिका के ऊपरी छिद्र मे चला जाना।

बिसुनी—स्त्री० [स० विष्णु] अमरबेल। (अनेकार्थ)

वि० बिसनी।

बिसुवा†—पु०=बिस्वा।

*स्त्री० वेश्या।

बिसूरना—अ० [स० विसूरणा=शोक] १ सोच करना। चिंता करना। खेद करना। मन मे दुःख मानना। २ मन मे दुःख होने पर निरंतर कुछ समय तक धीरे-धीरे रोते रहना। उदा०—(क) ना मेरे पख, न पाँव बल, मैं अपख, पिय दूर। उड न सकूँ, गिर गिर पड़ूँ, रहूँ बिसूर बिसूर। (ख) पिस्सू से मछाहारो से रोवे कोई बिसूर।—नजीर।

पु० १ बिसूरने की क्रिया या भाव। २ चिन्ता। फिक्र। उदा०—लालची लबार बिललात द्वारे द्वार, दीन बदन मलीन मन मिटै ना बिसूरना।—तुलसी।

बिसेक—वि०, पु०=विशेष।

बिसेख—वि०=विशेष।

पु० विशेषता। उदा०—इन नैनन का यही बिसेख। वह भी देखा, यह भी देख। (कहा०।)

बिसेखता†—स्त्री०=विशेषता।

बिसेखना—स० [स० विशेष] १ विशेष प्रकार से वर्णन करना। ब्योरेवार वर्णन करना। विशेष रूप से कहना। विकृत करना। २ विशिष्ट रूप से निर्धारित या निश्चित करना। ३ विशिष्ट रूप से जान पडना या प्रतीत होना।

बिसेखा†—पु० [स० विशेष] अधिकता अथवा विशिष्ट रूप मे होनेवाला कोई काम, चीज या बात। उदा०—शोखी, शरारत, मक्र ओ फन सब का बिसेखा है यहाँ। —कोई शायर।

बिसेन—पु० [?] क्षत्रियो की एक शाखा जिसका राज्य किसी समय वर्तमान गोरखपुर के आस-पास के प्रदेश से नैपाल तक था।

बिसेषक—पु० [स० विशेषक] माथे पर लगाया जानेवाला टीका या तिलक।

बिसेस†—पु०=विशेष।

बिसेसर†—पु०=विश्वेश्वर।

बिसैधा†—वि० [हिं० बिसायँध] १ बिसायँध से युक्त। उदा०—कर्वल बिसैंध सौं मन लावा।—जायसी। २ जिसमे से बिसायँध अर्थात् सड़े मास या मछली आदि की-सी गध निकल रही हो।

बिसैला†—पु० [स० विष] उँगली पर होनेवाला एक प्रकार का जहरीला घाव या फोडा।

वि०=विषैला (जहरीला)।

बिसैसा—वि० [स्त्री० बिसैसी]=विशेष।

बिसोक*—वि० [स० विशोक] शोक-रहित।

पु०=अशोक (वृक्ष)।

बिस्कुट—पु० [अ०] एक प्रकार का खस्ता मीठी या नमकीन टिकिया जो आटे को दूध मे सानकर तथा उसमे घी, चीनी (या नमक) आदि मिलाकर और साँचों मे भरकर तथा भट्ठी मे सेककर पकाई जाती है।

बिस्तर—पु० [स० विस्तर से फा०] बैठने, लेटने आदि के लिए बिछाया जानेवाला कपडा। बिछावन। बिछौना।

†पु०=विस्तार।

बिस्तरना—अ० [स० विस्तरण] इधर-उधर बढना। फैलना।

स० १ विस्तृत करना। फैलाना। २ विस्तारपूर्वक वर्णन करना।

बिस्तरबंद—पु० [फा०] कैनवस आदि का बना हुआ एक प्रकार का आधान जिसमे यात्रा के समय बिस्तर बाँधकर ले जाया जाता है। (होलडाल)

बिस्तरा†—पु०=बिस्तर (बिछौना)।

बिस्तार†—पु०=विस्तार।

बिस्तारना—स० [स० विस्तारण] १ विस्तृत करना। फैलाना। २ विस्तारपूर्वक वर्णन करना।

बिस्तुइया—स्त्री० [हिं० विष+तूना=(टकना, चूना)] छिपकली। गृहगोधा।

बिस्माना—स० [स० विस्मरण] १ विस्मृत करना। भूलना। २ सदा के लिए छोडना। त्यागना।

बिस्मिल—वि० [फा०] १ जबह किया हुआ। २ आहत। घायल। जख्मी।

बिस्मिल्ला—अव्य० [अ० बिस्मिल्लाह] ईश्वर का नाम लेकर या लेते हुए (कोई कार्य आरंभ करते समय)।

पु० १ कुरान की एक आयत जिसका अर्थ है—मै उस ईश्वर का नाम लेकर प्रारंभ करता हूँ जो बडा दयालु और महाकृपालु है। २ ईश्वर का नाम लेकर किसी काम या बात का किया जानेवाला आरंभ। शुभारंभ। ३ उक्त पद कहते हुए किसी पशु की हत्या करने की क्रिया या भाव। (मुसलमान)

बिस्राम*—पु०=विश्राम।

बिस्वा—पु० [हिं० बीसवाँ] जमीन की एक नाप जो एक बीघे का बीसवाँ भाग है।

पद—**बीस बिस्वे**=(क) बहुत अधिक संभव है कि। जैसे—मैं तो समझता हूँ कि बीस बिस्वे वे अवश्य यहाँ आयँगे। (ख) निश्चित रूप से। अवश्य। निस्सन्देह। उदा०—बीस बिसे व्रत भंग भयो, सो कहौ अब केशव को धनु ताने।—केशव।

बिस्वादार—पु० [हिं० बिस्वा+फा० दार] १. हिस्सेदार। पट्टीदार।

२. मध्ययुग मे, किसी बड़े जमीदार के अधीन रहनेवाला छोटा जमीदार।

बिस्वास†—पु०=विश्वास।

बिहंग†—पु०=विहंग (पक्षी)।

बिहंगम—पु०=विहग (पक्षी)।

वि०=बेढगम (बेढब या भद्दा)।

बिहंडना—स० [सं० विघटना, पा० विहडन] १ खड-खडकर डालना। तोड़ना। २ काटना-छाँटना या चीरना-फाड़ना। ३ जोर से हिलाना। झकझोरना। उदा०—धाइ धार अपार वेग सो बायु विहड़ित।—रत्ना०। ४. मार डालना। वध करना। ५. नष्ट या बरबाद करना।

बिहँसना—अ० [सं० विहसन] १. मंद मंद हँसना। मुस्कराना। २ हँसना। ३. फूलों आदि का खिलना। ४. प्रफुल्लित या प्रसन्न होना।

बिहँसाना—अ०=बिहँसना।

†स०=हँसाना।

बिहँसौहाँ†—वि० [हिं० बिहँसना] हँसता हुआ।

बिह†—पुं० [स० विधि] विधाता। उदा०—छत्रपति गयद हरि हस गति, बिह बनाय सचै सचिय। —चदबरदाई।

पु० [स० विद्ध या वेध] किसी चीज मे किया हुआ छेद। जैसे—नथ पहनने के लिए नाक का या बाली पहनने के लिए कान का बिह; मूँगे या मोती को पिरोने के लिए उसमे किया जानेवाला बिह।

बिहग†—पु०=विहग।

बिहडना—अ०, स०=बिहरना।

बिहतर—वि०=बेहतर।

बिहतरी—स्त्री०=बेहतरी।

बिहद्द†—वि०=बेहद।

बिहबल—वि०=विह्वल।

बिहरना—अ० [स० विहरण] विहार करना। घूमना। फिरना। सैर करना।

स० [स० विघटन, प्रा० विहडन] १ फटना। दरकना। विदीर्ण होना। २ टूटना-फूटना।

स० १ फाडना। २. तोड़ना-फोड़ना।

बिहराना—स० [हिं० बिहरना] बिहरने मे प्रवृत्त करना।

†अ०=बिहारना।

बिहरी†—स्त्री०=बेहरी (चदा)।

बिहाग—पु० [?] ओडव-सम्पूर्ण जाति का एक राग जो आधी रात के बाद लगभग २ बजे के गाया जाता है। यह हिंडोल राग का पुत्र भी माना जाता है।

बिहागड़ा—पु० [सं० विहाग] सगीत मे बिहाग राग का एक प्रकार या भेद।

बिहान†—पु० [स० विभात; प्रा० विहाड, विहाण] १. सवेरा। प्रात. काल। २. आनेवाला दूसरा दिन। आगामी कल।

पु०=बियान।

बिहाना—स० [स० वि+हा=छोड़ना] छोड़ना। त्यागना।

स०=बिताना (व्यतीत करना)।

बिहार—पु० [सं० विहार] १. गणतंत्र भारत का एक राज्य जो उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, बगाल और आसाम राज्यो से घिरा है। २. दे० 'विहार'।

बिहारना—अ० [सं० विहरण] विहार करना।

बिहारी—पु० [हिं० बिहारी] बिहार राज्य का निवासी।

स्त्री० बिहार की बोली।

वि० १. बिहार-सम्बन्धी। बिहार का। २. बिहार मे होनेवाला।

बिहाल—वि०=बेहाल।

बिहास†—पु० [हिं० बिसाह] १. व्यवसाय। २. व्यवसायी। व्यापारी।

बिहि*—पु०=विधि (ब्रह्मा)।

बिहित—वि०=विहित।

बिहिश्त—पु० [फा०] स्वर्ग। बैकुठ।

बिहिश्ती—वि० [फा०] १ बिहिश्त या स्वर्ग-सबधी। स्वर्गीय। ३. स्वर्ग में होने या रहनेवाला।

पु० स्वर्ग का वासी।

†पु०=भिश्ती।

बिही—स्त्री० [फा०] १ एक प्रकार का पेड जिसके फल अमरूद से मिलते-जुलते है। २. उक्त पेड़ का फल। ३ अमरूद। (क्व०)

स्त्री० [फा०] मलाई।

पद—बिहीख्वाह=शुभ चितक। हितैषी।

बिहीदाना—पु० [फा०] बिही नामक फल का बीज जो दवा के काम मे आता है।

बिहीन†—वि०=विहीन।

बिहुँ—वि० [स० द्वि] दो। उदा०—कनक वेलि बिहुँपान किरि।—प्रिथीराज।

बिहुँसन†—अ०=बिहसना।

बिहुरना†—अ०=बिथरना (बिखरना)।

बिहून—वि०=विहीन।

बिहोरना†—अ०=बिछुडना।

बींक—पु० [?] चना।

बींट†—पु० [?] घेरा। (राज०)

बींड़—पु० १. =बीडा। २ =बीड़ा।

स्त्री०=बीड़।

बींड़ा—पु० [?] [स्त्री० अल्पा० बींड़ी] १. पेड की पतली टहनियों से बुनकर बनाया हुआ मेडरे के आकार का लबा नाल जो कच्चे कुएँ मे भगाड की मजबूती के लिए लगाया जाता है। २ धान के पयाल को बुन और लपेटकर बैठने के लिए बनाया हुआ गोल आसन। ३ घास आदि को लपेटकर बनाई हुई गेडुरी जिस पर घड़े रखे जाते हैं। ४. किसी चीज को लपेटकर बनाया हुआ गोला पिंड। लुडा। ५. कोई चीज बाँध या लपेटकर बनाया हुआ बोझ।

बींड़िया†—पुं० [हिं० बींडी] तीन बैलोवाली गाडी मे सबसे आगे जोता हुआ बैल।

बींड़ी—स्त्री० [हिं० बीड़ा] १. वह मोटी और कपड़े आदि में लपेटी हुई रस्सी जो उस बैल के आगे गले के सामने छाती पर रहती है जो तीन बैलों की गाड़ी मे सबसे आगे रहता है। २ रस्सी या सूत की वह पिंडी जो लकड़ी या किसी और चीज के ऊपर लपेटकर बनाई जाती

है। ३. वह लकड़ी जिस पर उक्त प्रकार से सूत लपेटा जाता है। ४. बोझ के नीचे रखने की गेंडुरी।

बींवना—स० [स० विद्] अनुमान करना।
स०=बींधना।

बींधन—स्त्री० [हिं० बींधना] १ बींधने की क्रिया या भाव। २ बींधने पर पड़नेवाला चिह्न या निशान। ३ कठिनता। दिक्कत। उदा०—उसने अपनी कुछ बींधनें गिनाईं। वृन्दावनलाल वर्मा।

बींधना—स० [स० विद्ध] १. किसी चीज मे आर-पार छेद करने के लिए उसमे नोकदार चीज गडाना या धँसाना। विद्ध करना। छेदना। जैसे—कान बींधना, मोती बींधना। २ ऊपर से छेद करके अन्दर गड़ाना या धँसाना। जैसे—किसी के शरीर मे तीर बींधना। ३. बहुत ही चुभती या लगती हुई बात कहना। ४. उलझाना। फँसाना। (क्व०)
अ० १. विद्ध या आबद्ध होना। २. फँसा या उलझा रहना।

बी—स्त्री० [फा० बीबी का संक्षिप्त रूप] दे० 'बीबी'। उदा०—बड़ी बी, आपको क्या हो गया है?—अकबर।

बीका—वि० [स० वक्र] टेढा। वक्र।
मुहा०—बाल तक बीका न होना=कुछ भी कष्ट या हानि न पहुँचना।

बीख†—पु० [?] पद। कदम। डग।
†पुं० =विष।

बीग—पु० [सं० वृक] [स्त्री० बीगिन] भेडिया।

बीगना—स० [स० विकिरण] १ छितराना। बिखेरना। २ फेंकना।

बीगहाटी—स्त्री० [हिं० बीघा+टी (प्रत्य०)] वह लगान जो बीघे के हिसाब से लिया जाता हो।

बीघा—पु० [स० विउगह, प्रा० विग्गह] खेत नापने का एक वर्ग-मान जो बीस बिस्वे का होता है। एक एकड़ का ⅝वाँ भाग।

बीच—पु० [स० विच्—अलग करना] १. किसी वस्तु का वह केन्द्रीय अंश या भाग जहाँ से उसके सभी छोर समान दूरी पर पड़ते हो। २. किसी वस्तु के दो छोरो के भीतर का कोई बिंदु या स्थान। जैसे—काशी से दिल्ली जाते समय इलाहाबाद, कानपुर और अलीगढ़ बीच मे पड़ते हैं।
पद—बीच खेत=(क) खुले मैदान। सबके सामने। प्रकट रूप मे। (ख) निश्चित रूप मे। अवश्य। बीच बीच में।=(क) रह-रहकर। थोड़ी थोड़ी देर मे। (ख) थोड़ी थोड़ी दूर पर।
†२. जगह। स्थान। जैसे—वहाँ तिल धरने को बीच नहीं है। ३. अन्तर। फरक।
क्रि० प्र०—डालना।—पडना।
मुहा०—बीच डालना या पारना=पार्थक्य या भेद उत्पन्न करना। बीच रखना=मन मे पार्थक्य का भाव रखना। दूसरा या पराया समझना।
४. दो पक्षों मे झगड़ा या विवाद होने पर उसे निपटाने के लिए की जाने वाली मध्यस्थता।
पद—बीच बचाव=दो विरोधी पक्षों के बीच में आकर दोनों पक्षों के हितो की की जानेवाली रक्षा।
मुहा०—बीच करना=(क) लड़नेवालों को लड़ने से रोकने के लिए अलग-अलग करना। (ख) दो दलों या पक्षों का आपस का झगड़ा निपटाना।
५. दो वस्तुओ या खंडो के बीच का अन्तर या अवकाश। दूरी।
मुहा०—(किसी को) बीच मान या रखकर=(क) किसी को मध्यस्थ बनाकर। (ख) किसी को साक्षी बनाकर। जैसे—ईश्वर को बीच मानकर प्रतिज्ञा करना। बीच में कूदना=अनावश्यक रूप से हस्तक्षेप करना। व्यर्थ टाँग अड़ाना। बीच में पड़ना=(क) झगडा निपटाने के लिए मध्यस्थ बनना या होना। पंच बनना। (ख) किसी का जमानतदार या जिम्मेदार बनना।
६. अवसर। मौका। उदा०—चतुर गँभीर राम महतारी। बीच पाइ निज बात सवाँरी। —तुलसी।
अव्य० दरमियान। अन्दर। मे।
स्त्री० =वीचि(लहर)।

बीचु—पुं०=बीच।

बीचोबीच—क्रि० वि०[हिं० बीच] बिलकुल बीच मे। जैसे—सड़क के बीचो बीच नही चलना चाहिए।

बीछना—स०[स० विचयन] १. चुनना। छाँटना। २ सबको अलग अलग करके देखना।

बीछी—स्त्री०[सं० वृश्चिक] बिच्छू।
मुहा०—बीछी चढ़ना=बिच्छू के डंक का विष चढ़ना। बीछी मारना=बिच्छू का अपने डंक से किसी पर आघात करना। बिच्छू का काटना।

बीछू—पु०१ =बिच्छू। २ =बिछुआ।

बीज—पु०[स० बीज] १. अन्न का वह कण जो खेत मे बोने के काम आता है।
क्रि० प्र०—उगना।—डालना।—बोना।
२ लाक्षणिक अर्थ में, ऐसी आरंभिक बात जो आगे चलकर बहुत बड़ा रूप धारण करती हो। ३. किसी काम, चीज या बात का मुख्य अथवा मूल कारण। ४. जड़ी। ५ कारण। सबब। हेतु। ६ वीर्य। शुक्र। ७ नाट्य-शास्त्र मे अर्थ प्रकृति की पाँच स्थितियो मे से पहली स्थिति जो उसे हेतु का सकेत करती है और जो आगे चलकर फल का कारण होता है। ८. वह भावपूर्ण अव्यक्त सांकेतिक वर्ण-समुदाय या शब्द जिसका अर्थ या आशय सब लोग न समझ सकते हों, केवल जानकर समझ सकते हों। ९ वह अव्यक्त ध्वनि या शब्द जिसमें तंत्रानुसार किसी देवता को प्रसन्न करने की शक्ति मानी गई हो।
पद—बीज-मंत्र=बीजाक्षर। (देखें)
१०. मंत्र का प्रधान अंश या भाग। ११. वह अक्षर या चिह्न जो कोई अज्ञात अथवा अव्यक्त राशि या संख्या सूचित करने के लिए प्रयुक्त होता है।
पद—बीजगणित। (देखें)
†स्त्री०=बिजली।

बीजक—पु०[सं० बीजक] १ सूची। फिहरिस्त। २. वह सूची जिसमे किसी को भेजे जानेवाले माल का ब्यौरा, दर, मूल्य आदि लिखा रहता है। (इन्वॉयस) ३ वह सूची जो मध्य युग मे जमीन मे गाड़ी जानेवाली धन-संपत्ति के साथ प्रायः धातु के पत्तर पर उत्कीर्ण कर रखी जाती थी और जिस पर गाड़नेवाले का नाम, समय और धन संपत्ति

का विवरण अंकित रहता था। ४. किसी संत या महात्मा के प्रामाणिक पदों या वाणियों का संग्रह। जैसे—कबीर का बीजक, दरियादास का बीजक आदि। ५. वैद्यक में, जन्म के समय बच्चे की वह अवस्था जब उसका सिर दोनों भुजाओं के बीच में होकर योनिद्वार पर आ जाता है। ६. अनाजों, फलों आदि का दाना। बीज। ७ बिजौरा नीबू। ८. असना नामक वृक्ष।

बीज-कोश—पु० [सं० बीजकोश] वनस्पति का वह अंश जिसके अन्दर उसके बीज या दाने बंद रहते हैं।

बीजक्रिया—स्त्री०[सं० बीजक्रिया] बीजगणित के नियमानुसार गणित के किसी प्रश्न का उत्तर जानने के लिए की जानेवाली क्रिया।

बीजखाद—पु०[हिं० बीज+खाद] वह रकम जो मध्य युग मे जमींदारों, महाजनों आदि की ओर से किसानों को बीज और खाद आदि खरीदने के लिए दी जाती थी।

बीजगणित—पु०[सं० बीजगणित] गणित का वह प्रकार जिसमें अक्षरों को अज्ञात संख्याओं के स्थान पर मानकर वास्तविक मान या संख्याएँ जानी जाती हैं। (अलजबरा)

बीजगर्भ—पु०[सं० बीज गर्भ] परवली।

बीजगुप्ति—स्त्री० [सं० बीजगुप्ति] १. सेम। २. फली। ३ भूसी।

बीजत्व—पु०[सं०] 'बीज' होने की अवस्था या भाव। बीज-पन।

बीजदर्शक—पु०[सं० बीजदर्शक] नाटकों मे वह व्यक्ति जो नाटकों के अभिनय की व्यवस्था करता हो। परिदर्शक।

बीजद्रव्य—पु०[सं० बीजद्रव्य] किसी पदार्थ का मूल तत्व या द्रव्य।

बीजधान्य—पु०[सं० बीजधान्य] धनियाँ।

बीजन—पु०[सं० व्यजन] पखा।

पु०[हिं० बीजना] १. बीजने या बोने की क्रिया, ढंग या भाव। २. बीज।

बीजना—स०[हिं० बीज] १ किसी अनाज, पेड़ या पौधे का बीज बोना। २. किसी काम या बात का बीजारोपण करना।

†पु०[सं० व्यजन] पखा।

बीजपादप—पु०[सं० बीजपादप] भिलावाँ।

बीजपुष्प—पु०[सं० बीजपुष्प] १. मरुआ। २. मदन वृक्ष।

बीजपूर—पु०[सं० बीजपूर] १. बिजौरा नीबू। २ चकोतरा।

बीजपूरक—पु०=बीजपूर।

बीजबंद—पु०[हिं० बीज+बाँधना] खिरैंटी या बरियारे का बीज। बला।

बीजमंत्र—पु०[सं० बीजमन्त्र] १. तंत्रशास्त्र मे, किसी देवता के उद्देश्य से निश्चित किया हुआ मूल-मंत्र। २. कोई काम करने का वह ढंग जो सबसे सुगम हो और जिससे वह काम निश्चित रूप से पूरा होता हो। मूल-मंत्र। गुर।

बीजमातृका—स्त्री०[सं० बीजमातृका] कमलगट्टा।

बीजमार्ग—पुं०[सं० ष० त०] वाममार्ग का एक भेद।

बीजमार्गी—पु०[सं० बीजमार्गी] बीजमार्ग पंथ के अनुयायी।

बीजरत्न—पुं०[सं० बीजरत्न] उड़द की दाल।

बीजरी†—पु०=बिजली।

बीजरेचन—पुं०[सं० बीजरेचन] जमालगोटा।

बीजल—पुं०[सं० बीजल] वह जिसमें बीज हो।

वि० बीज-युक्त।

स्त्री०[हिं० बिजली] तलवार। (डि०)

बीजवाहन—पु०[सं० बीजवाहन] शिव।

बीजवृक्ष—पु०[सं० बीजवृक्ष] असना का पेड़।

बीजसि—स्त्री० [सं० द्वितीय] चांद्र मास की दूसरी तिथि। द्वितीया। दूज। उदा०—पड़वा आनंदा बीजसि चंदा पाँचों लेवा पाली—गोरखनाथ।

बीजसू—स्त्री०[सं० बीजसू] पृथ्वी।

बीजहरा—स्त्री०[सं० बीजहरा] १ एक डाकिनी का नाम। २ जादू-गरनी।

बीजांक प्रक्रिया—स्त्री०[सं० बीजांक प्रक्रिया] गुप्त रूप से पत्र आदि लिखने या समाचार भेजने की वह प्रक्रिया जिसमे अभिप्रेत अक्षरों के स्थान पर सांकेतिक रूप से कुछ दूसरे ही अक्षर, चिह्न आदि अंकित किये अथवा कुछ विशिष्ट और असाधारण क्रम से रखे जाते है। (साइफर प्रोसिज्योर)

बीजांकुर—पु०[सं० बीजांकुर] बीज से निकलनेवाला अंकुर।

बीजांकुर न्याय—पु० [सं० बीजांकुर न्याय] तर्कशास्त्र मे वह स्थिति जिसमे यह पता न चले कि दो तत्त्वों में से कौन किसका कारण या मूल है। जैसे—पहले बीज हुआ या वृक्ष अथवा पहले अंडा बना या चिड़िया।

बीजांड—पु०[सं० बीज+अंड] १ जीव-विज्ञान मे भ्रूण का वह आरम्भिक और मूल रूप जिसके विकसित होने पर भ्रूण का रूप बनता है। २. वनस्पति विज्ञान मे, बीज का आरम्भिक और मूल रूप। (ओव्यूल)

बीजा—वि०[सं० द्वितीया, पा० द्वितियो, प्रा० दुओ पु० हिं० दूज्जा] दूसरा।

†पु०=बीज।

बीजाक्षर—पु०[सं० बीजाक्षर] किसी बीज मत्र का पहला अक्षर।

बीजाढ्य—पु०[सं० बीजाढ्य] जमालगोटा।

बीजाध्यक्ष—पु०[सं० बीज-अध्यक्ष] शिव।

बीजारोपण—पु०[सं० बीज-आरोपण] १ खेत मे बीज बोना। २ छोटे रूप मे कोई ऐसा काम करना जिसका आगे चलकर बहुत बड़ा परिणाम हो।

बीजाश्व—पु०[सं० बीज-अश्व] कोतल घोड़ा।

बीजित—भू० कृ० [सं० बीजित] जिसमे बीज बोया जा चुका हो। बोया हुआ।

बीजी—वि०[सं० बीजिन्] १ बीज या बीजों से युक्त। जिसमे बीज हो या हो। २ बीज-संबंधी।

पु० पिता। बाप।

स्त्री०[हिं० बीज] १. फल के अंदर की गिरी। मीगी। २. फल की गुठली।

†स्त्री०=बिजली।

बीजुपात†—पु०=वज्रपात।

बीजुरी†—स्त्री०=बिजली।

बीजू—वि०[हिं० बीज+ऊ (प्रत्य०)] १. (पौधा) जो बीज बोने से उगा हो। कलमी से भिन्न। २ (फल) जो उक्त प्रकार के पौधे या वृक्ष का हो। जैसे—बीजू आम, बीजू नींबू।

पु० १.=बिज्जु। २.=बिज्जू।

बीजोदक—पु०[स० वीज-उदक] ओला।

बीज्य—वि०[सं० वीज्य] १. अच्छे बीज से उत्पन्न। २ अच्छे कुल मे उत्पन्न। कुलीन।

बीझ*—वि० [?] घना। सघन।

बीझना†—अ० =बझना।

बीझा—वि०[स० विजन] (स्थान) जहाँ मनुष्य न हों। निर्जन। एकात। पु० निर्जन स्थान।

बीट—स्त्री० [स० विट्] १ पक्षियो की विष्ठा। चिड़ियो का गुह। २. गुह। मल। ३. बहुत ही तुच्छ या हेय वस्तु। (व्यग्य)

पु० =विटलवण।

बीटिका—स्त्री० =बीटिका (पान का बीडा)।

बीठल—पु० =बिट्ठल।

बीड़—स्त्री०[स० वीट या वीटक] एक पर एक रखे हुए सिक्को का थाक। जैसे—रुपयो की बीड़।

पु०=बीड।

बीड़ा—पु०[स० वीटक] १ पान के पत्ते पर कत्था, चूना आदि लगाकर तथा उस पर सुपारी आदि रखकर उसे (पत्ते को) विशेष प्रकार से मोड़कर दिया जानेवाला तिकोना रूप। खीली। गिलौरी।

मुहा०—**बीड़ा उठाना**=कोई महत्त्वपूर्ण या विकट काम करने का उत्तरदायित्व या भार अपने ऊपर लेना। **बीड़ा डालना या रखना**=कोई कठिन काम करने के लिए सभा मे लोगो के सामने पान की गिलौरी रखकर यह कहना कि जो इसका भार अपने ऊपर लेना चाहता हो, वह यह बीड़ा उठा ले।

विशेष—मध्य युग मे राज-दरबारो मे यह प्रथा थी कि जब कोई विकट काम सामने आता था, तब थाली मे पान का बीड़ा, सबके बीच मे रख दिया जाता था। जो व्यक्ति वह काम करने का उत्तरदायित्व या भार अपने ऊपर लेने को प्रस्तुत होता था, वह पान का बीड़ा उठा लेता था। इसी से उक्त मुहा० बने है।

२. उक्त प्रथा के आधार पर, परवर्ती काल मे, कोई काम करने के लिए किसी को नियुक्त करने के सबध मे होनेवाला पारस्परिक निश्चय।

मुहा०—**बीड़ा देना**=(क) किसी को कोई काम करने का भार सौपना। (ख) नाचने-गाने, बाजा बजाने आदि का पेशा करनेवालो को कुछ पेशगी धन देकर यह निश्चय करना कि अमुक दिन या अमुक समय पर आकर तुम्हे अपनी कला का प्रदर्शन करना होगा।

३ तलवार की म्यान के ऊपरी सिरे की वह डोरी जिससे तलवार की मूठ से म्यान बाँधी जाती है।

बीड़िया—वि०[हि० बीड़ा+इया (प्रत्य०)] बीड़ा उठानेवाला। पु० अगुआ नेता।

बीड़ी—स्त्री० [हि० बीड़ा] १ पान का छोटा बीड़ा। २. मिस्सी, जिसे मलने से होठ उसी प्रकार रगीन हो जाते हैं, जिस प्रकार पान खाने से होते है। ३. तम्बाकू। ४ कुछ विशिष्ट प्रकार के पत्तो मे तम्बाकू का चूर्ण लपेटकर बनाया जानेवाला एक तरह का छोटा लबोतरा पिड जिसे सुलगाकर सिगरेट की तरह पीया जाता है। ५. एक प्रकार की नाव। ६ कलाई पर पहनने का चूड़ी की तरह का एक गहना। ७ दे० 'बीड़' (गड्डी)। ८. वह सामान तथा नकदी जो विवाह की बात पक्की होने पर कन्यापक्षवालो के यहाँ से वरपक्षो के यहाँ भेजी जाती है। (पूरब)

बीत—स्त्री०[सं० वृत्त] वह धन जो छोटे-मोटे काम करनेवाले लोगों नेगियो आदि को पारिश्रमिक या वृत्ति के रूप मे दिया जाता है।

बीतक—स्त्री[स०वृत्तक या हि० बीतना] पुरानी हिंदी मे वह रचना जिसमें किसी पर बीती हुई या किसी से सम्बन्ध रखनेवाली मुख्य घटनाओं या बातो का उल्लेख होता था।

बीतना—अ०[स० व्यतीत] १ काल-मान की दृष्टि से घटना, बात आदि का वर्तमान से होते हुए भूत मे जाना। जैसे—दिन या समय बीतना। २ लाक्षणिक अर्थ मे किसी घटना, बात आदि का फल-भोग सहन किया जाना। जैसे—उन दिनो हम पर जो बीती थी, वह हम ही जानते हैं। ३ किसी काम, चीज या बात का अन्त या समाप्ति होना। उदा०—(क) बीती ताहि बिसारि देइ, आगे की सुध लेइ।—गिरधर। (ख) सब के भय बीते।

बीता—पु० =बित्ता (लबाई की नाप)।

बीथि (थी)—स्त्री०=वीथी।

बीथित*—वि०=व्यथित।

बीदर—पु०[स० विदर्भ] १. विदर्भ देश का एक नगर। २ एक प्रकार की उपधातु जो ताँबे और जस्ते के मेल से बनती है। (आरभ म वह बीदर नगर म बनी थी, इसी लिए इसका यह नाम पड़ा।)

बीदरी—स्त्री० [हि० बीदर]जस्ते और ताँबे के मेल से बरतन आदि बनाने का काम जिसमे बीच-बीच मे सोने या चाँदी के तारो से नक्काशी की हुई होती है। बीदर की धातु का काम।

वि० १ बीदर-सबधी। बीदर का। २ बीदर की धातु का बना हुआ।

बीदरीसाज—पु० [हि० बीदर+फा० साज] वह जो बीदर की धातु से बरतन आदि बनाता हो। बीदर का काम बननेवाला।

बीध—अव्य०[सं० विधि] विधिपूर्वक।

बीधना†—स्त्री०=बीधन।

बीधना—स०=बीधना।

अ०=बिधना।

बीधा—पु०[स० विधान]मालगुजारी निश्चित करने की क्रिया या भाव।

बीन—स्त्री०[स० वीणा] १ सितार की तरह का पर उससे बडा एक प्रकार का प्रसिद्ध बाजा। वीणा। २. सँपेरो के बजाने की तूमडी। ३. उक्त के बजाने पर होनेवाला शब्द। ४ बाँसुरी।

वि०[स० वीक्षण से फा०] [भाव० बीनी] १. देखनेवाला। यौ० के अन्त मे। जैसे—तमाशबीन। २ दिखानेवाला। जैसे—दूरबीन।

बीनकार—पु० [हि० बीन+फा० कार] [भाव० बीनकारी] वह जो बीन या वीणा बजाने में प्रवीण हो।

बीनना—स०[स० विनयन] १ दे० 'चुनना'। २. छोटी-छोटी चीजो को उठाना। ३ चीजे अलग करना। छाँटना।

स० १ =बीँधना। २ =बुनना। उदा०—बीनो स्नेह सुरुचि सयम से शील-वसन नव भव यौवन का।—पंत।

बीनी—स्त्री० [फा०] देखने की क्रिया या भाव। जैसे—तमाशबीनी, सैरबीनी आदि।

बीफै†—पुं० [सं० बृहस्पति] बृहस्पतिवार। गुरुवार।

बीबी—स्त्री० [फा०] १. कुल वधू। कुलीन स्त्री। महिला। २. जोरू। पत्नी। ३. पश्चिम मे स्त्रियों के लिए आदरसूचक सम्बोधन। जैसे—बीबी हरबंस कौर। ४. अविवाहित कन्या तथा माता के लिए सम्बोधन। (पश्चिम)

बीभच्छ—वि० =बीभत्स।

बीभत्स—वि० =बीभत्स।

बीभत्सु—पु० [सं० बध्+सन्, द्वित्वादि,+उ] १. अर्जुन। २. अर्जुन नामक वृक्ष।

बीम—पु० [अ०] १. शहतीर। २ जहाज के पार्श्व मे लबाई के बल में लगा हुआ बडा शहतीर। आडा। (लश०) ३. जहाज का मस्तूल।
पु० [फा० [डर। भय।

बीमा—पु० [फा० बीम=भय] १. किसी प्रकार की हानि विशेषत आर्थिक हानि पूरी करने की वह जिम्मेदारी जो कुछ निश्चित धन मिलने पर उसके बदले मे अपने ऊपर ली जाती है। कुछ धन लेकर इस बात का भार अपने ऊपर लेना कि यदि अमुक कार्य में अमुक प्रकार की हानि होगी तो उसकी पूर्ति हम इतना धन देकर कर देंगे। (इन्श्योरेन्स)
विशेष—ऐसी जिम्मेदारी बाहर भेजी जानेवाली चीजो और दुर्घटनाओं से होनेवाली धन-जन की हानि के संबंध में, पारस्परिक समझौते से होती है, और बीमा करानेवाले को उसके बदले मे कुछ निश्चित धन एक साथ अथवा कुछ किश्तों मे देना पडता है।
२ वह पत्र जिसपर उक्त प्रकार के समझौते की शर्तें लिखी होती हैं और जिस पर दोनो पक्षों के हस्ताक्षर होते हैं। ३ वह पत्र या पारसल जिसकी हानि आदि के सबंध मे उक्त प्रकार की जिम्मेदारी ली या सौंपी गई हो।

बीमार—वि० [फा०] १ जो किसी रोग विशेषत किसी ज्वर से पीड़ित हो।
क्रि० प्र०—पडना।—होना।
२ लाक्षणिक अर्थ मे, ऐसा व्यक्ति जो किसी उग्र भावावेश, सताप आदि के कारण उत्क्षिप्त तथा अस्वस्थ बना रहता हो।

बीमारदार—वि० [फा०] [भाव० बीमारदारी] रोगी की सेवा-सुश्रूषा करनेवाला।

बीमारदारी—स्त्री० [फा०] रोगियो की सेवा-सुश्रूषा।

बीमारी—स्त्री० [फा०] १ बीमार होने की अवस्था या भाव। जैसे—बीमारी मे भी वे भोजन किये चलते हैं। २. वह विकार जिसके फलस्वरूप शरीर अस्वस्थ तथा रुग्ण रहता है। ३. बुरी आदत। दुर्व्यसन। ४. झगड़े या झझट का काम।

बीय†—वि० =बीजा (दूसरा)।

बीया—वि० [सं० द्वितीय] दूसरा।
†पुं० [हिं० बीज] बीज। (दे०)
†पुं० =बया।

बीर—पुं० [सं० वीर] १ प्राय समस्त पदों के अत में, किसी काम या बात में औरों से बहुत आगे बढ़ा हुआ या बहादुर। २. भाई के लिए प्रयुक्त होनेवाला संबोधन। ३. वह जो टोने, टोटके, यंत्र-मंत्र आदि का बहुत बडा ज्ञाता हो। ४. ऐसी प्रेतात्मा जिसे किसी ने वश में किया हो।
स्त्री० [सं० वीरा] १. स्त्रियो में प्रचलित सखी या सहेली के लिए संबोधन। २. कान में पहनने का बिरिया नामक गहना।
स्त्री० [सं० वृत्ति?] चरागाह मे पशुओं को चराने का वह महसूल जो पशुओं की संख्या के अनुसार लिया जाता था।
पु० =चरागाह।
†स्त्री० =बीड़।

बीरउ—पुं० =बिरवा।

बीरज—पु० =वीर्य।

बीरत—पु० =वीरत्व (वीरता)।

बीरन—पु० [स० वीर] स्त्रियो का अपने भाई के लिए सम्बोधन। बीर।

बीरनि—स्त्री० [स० वीर] कान मे पहनने का एक प्रकार का गहना। तरना। बीरी।

बीर-बहूटी—स्त्री० [सं० विर+बधूटी] गहरे लाल रंग का छोटा रेंगनेवाला कीड़ा, जो देखने में बहुत ही सुन्दर होता है।

बीरा—पु० [हिं० बीडा] १ वह फूल, फल आदि जो देवता के प्रसाद स्वरूप भक्तों आदि को मिलता है। २ दे० 'बीडा'।

बीरी—स्त्री० [सं० वीरि या हिन्दी बीडा] १. ढरकी के बीच में लबाई के बल वह छेद जिसमे से नरी भरकर तागा निकाला जाता है। २. लोहे का वह छेददार टुकडा जिस पर कोई दूसरा लोहा रखकर लोहार छेद करते हैं। ३ कान में पहनने का तरना या बिरिया नाम का गहना ४ दे० 'बीडी'।

बीरो*—पु० ='बिरवा'।

बील—वि० [सं० विल] अंदर से खाली। खोखला। पोला।
पु० वह नीची भूमि जिसमें पानी जमा होता है। जैसे—झील आदि की भूमि।
पुं० [सं० विल्व] १ एक प्रकार की ओषधि। २. बेल (वृक्ष और फल)।
पु० [स० वीज मंत्र] मत्र। उदा०—जब तें वह सिर पढ़ि दियौ हेरन मैं हित बील।—रसनिधि।

बीवी†—स्त्री० =बीबी।

बीस—वि० [सं० विंशति, प्रा० वीसति, बीसा] १ जो सख्या मे दस का दूना या उन्नीस से एक अधिक हो।
पद—बीस बिस्वे=(क) इस बात की बहुत अधिक सभावना है कि। अधिकतम संभावित रूप मे। जैसे—बीस बिस्वे वे आज ही यहाँ आ जायँगे। (ख) भली भाँति। अच्छी तरह। **बीसहू कै**- बीस बिस्वे। भली-भाँति। उदा०— मातु-पिता बधु हित मोको बीसहू कै ईस अनुकूल आज भो।—तुलसी।
२. किसी की तुलना मे अच्छा या बढ़कर। जैसे—कुश्ती मे यह लडका औरो से बीस पड़ता है।
क्रि० प्र०—ठहरना।—पड़ना।
पुं० उक्त की सूचक संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—२०।

बीसना—स० [सं० वेशन] शतरंज या चौसर आदि खेलने के लिए बिसात बिछाना। खेल के लिए बिसात फैलाना।

बीसरना*—अव्य० =बिसरना (भूलना)।

बीसवाँ—वि० [हिं० बीस+वाँ (प्रत्य०)] [स्त्री० बीसवी] क्रम, गिनती आदि में बीस के स्थान पर पड़नेवाला।

बीसी—स्त्री०[हिं० बीस] १ एक ही तरह की बीस चीजों का समूह। कोडी। २. गिनती का वह प्रकार जिसमे बीस बीस वस्तुओं के समूह को एक-एक इकाई मान कर गिना जाता है। ३. गणित ज्योतिष मे, साठ संवत्सरों के तीन विभागो मे से कोई विभाग। इनमे पहली ब्रह्म-बीसी दूसरी विष्णुबीसी और तीसरी रुद्रबीसी कहलाती है।४. भूमि की एक प्रकार की नाप जो एक एकड से कुछ कम होती है। ५. उतनी भूमि जिसमे बीस नालियाँ हो। ६ वह लगान जो बीस बिस्वे अर्थात् पूरे बीघे के हिसाब से लगता हो।

स्त्री०[स० विशिख] तौलने का काँटा। तुला।

बीह—पु०[स० भय] भय। डर। उदा०—भिड दहूँ ऐ भाजै नही, नही मरण री बीह।—बाँकीदास।

वि०=बीस।

बीहड़—वि०[स० विकट] १ ऊँचा-नीचा। ऊबडखाबड। विषम। जैसे—बीहड भूमि। २ जो सम या सरल न हो, अर्थात् बहुत विकट। जैसे—बीहड काम।

पु० ऊँची-नीची और ऊबड-खाबड भूमि। उदा०—इन लोगों ने अपनी पैदल पल्टन पूर्व और दक्षिण के बीहड मे छिपा ली।—वृन्दावनलाल वर्मा।

बीहर|—वि०[स० बहिर्] अलग । पृथक्। जुदा।

बुंद†—स्त्री०=बूँद।

†वि० बूँद भर, अर्थात् बहुत जरा सा या थोडा।

बुंदका—पु०[स० विंदुक] [स्त्री० अल्पा० बुंदकी] बडी बुंदकी।

बुंदकी—स्त्री०[हिं० बुंदका का स्त्री० रूप] १. छोटी गोल बिंदी। २. किसी चीज पर बना हुआ छोटा गोल चिह्न, दाग या निशान। ३ छोटा बुंदा।

बुंदकीदार—वि० [हिं० बुंदकी+फा० दार] जिस पर बुंदकियाँ पडी या बनी हों। जिसपर बूँदों के से चिह्न हो। बुंदकीवाला।

बुंदवान—स्त्री० [हिं० बूंद+वान(प्रत्य०)] छोटी छोटी बूँदो की वर्षा।

बुंदा—पु०[स० विंदु] १ कान मे पहनने का एक तरह का गहना जो प्राय झूलता रहता है। लोलक। २. माथे पर लगाने की बडी टिकली जो पन्नी, काँच आदि की बनती है। ३ बडी टिकली के आकार का गोदना जो माथे पर गोदा जाता है।

बुंदिया—स्त्री० दे० 'बूँदी'।

स्त्री०[हिं० बूँद+इया (प्रत्य०)] १ छोटी बूँद। २. छोटी बूँदो या दानो के रूप मे बननेवाला एक पकवान जो मीठा और नमकीन दोनो प्रकार का होता है, तथा जो बेसन के घोल को पौने से छानकर और घी, तेल आदि मे तलने पर तैयार होता है।

बुंदीदार—वि० [हिं० बूँदी+फा० दार (प्रत्य०)] जिसमें छोटी छोटी बिंदियाँ बनी या लगी हो।

बुंदेलखंड—पु०[हिं० बुंदेला जाति से] उत्तर प्रदेश के झाँसी, जालौन, बाँदा, हमीरपुर आदि जिलों और उनके आस-पास के जिलों के भू-भाग का नाम।

बुंदेलखंडी—वि० [हिं० बुंदेलखंड+ई (प्रत्य०)] बुंदेलखंड-संबंधी बुंदेलखंड का।

पु० बुंदेलखंड का निवासी।

स्त्री० बुंदेलखंड की बोली। बुंदेली।

बुंदेला—पु० [हिं० बूँद+एला (प्रत्य०)] १ क्षत्रियों की एक शाखा जो मध्ययुग मे बुंदेलखंड मे बसी हुई थी। २ बुंदेलखंड का निवासी।

बुंदेली—स्त्री० [हिं० बुंदेलखंड] बुंदेलखंड की बोली जो पश्चिमी हिंदी की एक शाखा मानी जाती है।

बुंदोरी—स्त्री० [हिं० बूंद+ओरी (प्रत्य०)] बुँदिया या बूँदी नाम की मिठाई।

बुअजानि†—स्त्री० [स० प्रभजन] वायु। पवन।

बुआ—स्त्री०=बूआ।

बुआई†—स्त्री०=बोआई।

बुकचना†—स० [स० भक्षण हिं० भखना] भोजन करना। खाना। उदा० —भीलणी का बेर सुदामा का तदुल भर मुठडी बुकद।—मीराँ।

बुक—स्त्री० [फा० बुक] १ कलफ किया हुआ एक प्रकार का महीन कपडा जो बच्चो की टोपियो मे अस्तर देने या अँगिया, कुरती, जनानी चादरे आदि बनाने के काम मे आता है। २ एक प्रकार की महीन पन्नी या वरक।

स्त्री०[अ०] किताब। पुस्तक।

बुकचा—पु०[तु० बुक्च] [स्त्री० अल्पा० बुकची] १ वह गठरी जिसमे कपडे बँधे हुए हो। २. गठरी।

बुकची—स्त्री०[हिं० बुकचा+ई (प्रत्य०)] १. छोटी गठरी। २. वह थैली जिसमे दरजी सुई, धागा आदि रखते है।

† स्त्री०—बकुची।

बुकना—अ०[हिं० बूकना का अ०] बूका या पीसा जाना। चूर्ण होना।

†पु०=बुकनी।

बुकनी—स्त्री०[हिं० बूकना+ई (प्रत्य०)] किसी चीज का महीन पीसा हुआ चूर्ण। जैसे—रग की बुकनी।

बुकवा—पु०[हिं० बूकना] १. उबटन। बटना। २ दे० 'बुक्का'।

बुकस—पु०[स० बुक्का] भगी। मेहतर। हलाल खोर।

बुका—पु०=बुक्का।

बुकार—पु०[देश०] वह बालू जो बरसात के बाद नदी अपने तट पर छोड जाती हो और जिसमे कुछ अन्न आदि बोया जा सकता हो। भाट।

बुकुन—पु०[हिं० बूकना] १ बुकनी। २ किसी प्रकार का पाचक चूर्ण।

बुकौर—पु० [हिं० बूक—कलेजा] सतप्त होकर मन ही मन रोने की क्रिया या भाव।

बुक्क—पु० [स० बुक्क् (शब्द करना)+अच्] १ हृदय। २ बकरा। ३. समय।

बुक्कन—पु०[सं० बुक्क्√(कहना)+ल्युट् अन] १. कुत्ते को भौंकना। २. पशुओ का शब्द करना।

बुक्कस—पु०[स०—पुक्कस पृषो० पस्यव] १ चाडाल। २ भगी।

बुक्का—स्त्री०[स० बुक्क+टाप्] १ हृदय। कलेजा। २ गुरदे का मांस। ३. रक्त। लहू। ४ बकरी। ५. फूँककर बजाया जानेवाला एक तरह का पुरानी चाल का बाजा।

पु० [हिं० बूकना] १ बूका अर्थात् पीसा हुआ चूर्ण विशेषत. चूर्ण के रूप में लाया हुआ पदार्थ। २. अबरक का चूर्ण।

बुक्की—स्त्री०[स० बुक्क+ङीष्] हृदय।

बुखार—पुं०[फा० बुख़ार] १. वाष्प। भाप। २ शरीर में किसी प्रकार का रोग होने के कारण उसका बढ़ा हुआ ताप-मान। विकार-जन्य शारीरिक ताप-वृद्धि। ज्वर।
क्रि० प्र०—आना।—उतरना।—चढ़ना।
२. उत्कट मनोवेग के फलस्वरूप होनेवाली उत्तेजना। जैसे—रुपए का नाम लेने पर उन्हें बुखार चढ़ जाता है।

बुखारचा—पुं०[फ़ा० बुखार्चः] १ खिड़की के आगे का छोटा बरामदा २. कोठरी के अंदर तख्तों आदि की बनी हुई छोटी कोठरी।

बुग—पुं० [देश०] मच्छर। (बुंदेलखंड)
स्त्री०=बुक (कपड़ा)।

बुगचा—पुं०[फा० बुगच·][स्त्री० अल्पा० बुगची] बगल मे दबाई जानेवाली पोटली।

बुगदा—पुं०[अ०बुग्द] कसाइयो का छुरा जिससे वे पशुओ की हत्या करते हैं।

बुगला—पुं० =बगला (पक्षी)।

बुगिअल—पुं०[देश०] पशुओ के चरने का स्थान। चरी। चरागाह।

बुगुल—पुं० =बिगुल।

बुग्ज—पुं०[अ० बुग्ज] मन में छिपाकर रखा हुआ वैर।
क्रि० प्र०—निकालना।

बुचका—पुं०[स्त्री० अल्पा० बुचकी] =बुकचा।

बुज—स्त्री०[फा० बुज] बकरी। बूचड़।
वि० डरपोक।

बुज-कसाब—पुं०[फा०] वह जो पशुओं की हत्या करता अथवा उनका मास आदि बेचता हो। बकर-कसाव। कसाई।

बुजदिल—वि०[फा० बुज़दिल][भाव० बुज़दिली] कायर। डरपोक। भीरु।

बुजदिली—स्त्री० [फा० बुज़दिली] कायरता। भीरुता।

बुजनी—स्त्री० [देश०] करनफूल के आकार का कान का एक गहना है जिसके नीचे झुमका भी लगा होता है।

बुजियाला—पुं०[फ़ा० बुज] १ बकरी का वह बच्चा जिसे कलदर लोग तमाशा करना सिखलाते हैं। २. वह बन्दर जिसे नचाकर मदारी तमाशा दिखाते है। (कलंदर)

बुजुर्ग—वि०[फा० बुज़ुर्ग] जिसकी अवस्था अधिक हो। वृद्ध।
पुं० बाप, दादा आदि। पूर्वज। पुरखे।

बुजुर्गी—स्त्री०[फ़ा०बुज़ुर्गी] बुजुर्ग होने की अवस्था या भाव। बड़प्पन।

बुज्जा—पुं० [देश०] करांकुल की जाति का एक प्रकार का पक्षी।

बुज्जी—स्त्री०[फ़ा ० बुज] बकरी। (डिं०)

बुज्झा—पुं०=बुज्जा (पक्षी)।

बुझना—अ०[स० उज्झति] १. जलते हुए पदार्थ का जलना बंद हो जाना। जलने का अंत या समाप्ति होना। जैसे—आग बुझना, दीया बुझना। २. किसी जलते या तपे हुए पदार्थ का पानी मे पड़ने के कारण ठंडा होना। तपी हुई या गरम चीज का पानी में पड़कर ठंढा होना। जैसे—(क) तपी हुई धातु का पानी में बुझना। (ख) सफेदी करने के लिए पानी में चूना बुझना। ३. किसी प्रकार के ताप का पानी अथवा किसी और प्रकार के पदार्थ से शांत या समाप्त होना। जैसे—प्यास बुझना। ४. किसी विशिष्ट प्रकार से प्रस्तुत किये हुए तरल पदार्थ में किसी चीज का इस प्रकार डूबाया जाना कि उसमें तरल पदार्थ का कुछ गुण या प्रभाव आ जाय। जैसे—जहर के पानी में छुरे या तलवार का बुझना। ५. चित्त का आवेग, उत्साह, बल आदि मंद पड़ना। जैसे—ज्यों ज्यों बुढापा आता है, त्यों त्यों जी बुझता जाता है। उदा०—शाम से ही बुझा सा रहता है, दिल हुआ है चिराग मुफलिस का। —मीर।
मुहा०—**बुझकर रह जाना** -अप्रमाणित या लज्जित होकर चुप हो जाना। उदा०—महफिल चमक उठी और मियाँ मजनूँ बुझकर रह गये।—फिराक गोरखपुरी।
६. खाद्य पदार्थों का जलने, पकने आदि पर मात्रा या मान मे पहले से बहुत कम हो जाना। जैसे—सेर भर साग पकाने पर बुझकर पाव भर रह गया।
सयो० क्रि०—जाना।

बुझाई—स्त्री०[हिं० बुझाना+ई (प्रत्य०)] बुझाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

बुझाना—स०[हिं० बुझना का स०] १. ऐसी क्रिया करना जिससे आग अथवा किसी जलते हुए पदार्थ का जलना बंद हो जाय। जैसे—दीया बुझाना। २. किसी जलती हुई धातु या ठोस पदार्थ को ठंडे पानी में डाल देना जिससे वह पदार्थ भी ठंडा हो जाय। तपी हुई चीज को पानी मे डालकर ठंढा करना। जैसे—तपा हुआ लोहा पानी मे बुझाना।
पद—**जहर का बुझाया हुआ**—दे० 'जहर' के मुहा०।
मुहा०—**(कोई चीज) जहर में बुझाना**—छुरी, बरछी आदि शस्त्रों के फलों को तपाकर किसी जहरीले तरल पदार्थ में इसलिए बुझाना कि वह फल भी जहरीला हो जाय।
३ कोई चीज तपाकर इसलिए ठंढे पानी में डालना कि उस चीज का कुछ गुण या प्रभाव उस पानी में आ जाय। पानी को छौंकना। जैसे—इनको लोहे का बुझाया हुआ पानी पिलाया करो। ४ पानी की सहायता से किसी प्रकार का ताप शांत या समाप्त करना। पानी डालकर ठंढा करना। जैसे—प्यास बुझाना, चूना बुझाना। ५. किसी क्रिया से चित्त का आवेग या उत्साह आदि शात करना। जैसे—दिल की लगी बुझाना।
सयो० क्रि०—डालना।—देना।
स०[हिं० बूझना का प्रे० रूप] १. बूझने का काम दूसरे से कराना। किसी को बूझने मे प्रवृत्त करना। जैसे—पहेली बुझाना। २. किसी को कुछ समझने मे प्रवृत्त करना। बोध कराना। समझाना। जैसे—किसी को समझा-बुझाकर ठीक रास्ते पर लाना। ३ समझाकर तृप्त या संतुष्ट करना।

बुझारत—स्त्री०[हिं० बुझाना=समझाना] १. किसी गाँव के जमींदारों के वार्षिक आय-व्यय आदि का लेखा। २. पहेली।
क्रि० प्र०—बुझाना।—बूझना।

बुझौअल—स्त्री० [हिं० बुझाना] १ किसी को चकित करके उसकी बुद्धि की थाह लगाने के लिए सीधे-सादे शब्दो में पूछी जानेवाली कोई पेचीली बात। पहेली। २. लाक्षणिक अर्थ मे इस प्रकार कही हुई बात जो किसी की समझ में जल्दी भली-भाँति न आती हो।

बुटा—स्त्री०=बूटी।

बुटना—अ०[?] दौड़कर चला जाना या हट जाना। भागना।
बुट्ठ†—स्त्री० [सं० वृष्टि] वर्षा। (राज०)
बुड़की—स्त्री०=डुबकी (गोता)।
बुड़ना—अ०=बूडना। (डूबना)।
बुड़बक—वि०[हिं० बूढ़ा+बक=बगला] ना-समझ। मूर्ख।
बुड़बुड़ाना—अ०[अनु०] मन ही मन कुढ़कर या क्रोध मे आकर अस्पष्ट रूप से कुछ बोलना। बड़बड़ करना। बड़बड़ाना। बुढ़ापे मे होनेवाली हिरस।
बुड़भस—स्त्री०[हिं० बूढ़ा+भस=इच्छा भोग] बुढ़ापे मे होनेवाली हिरस।
बुड़भूंजा†—पु० दे० 'भड़भूंजा'।
बुड़ाना—स० =डुबाना।
बुड़ार—स्त्री०[हिं० बूडना?] एक प्रकार की छोटी पनडुब्बी बतख जिसका मुख्य भोजन पानी मे उगनेवाले पेड़ों की जड़ें हैं। 'करछिया' और 'लालसर' इसके दो मुख्य भेद हैं।
बुड़ाव†—पु०=डुबाव।
बुड़ीत—वि०[हिं० बूड़ना] (प्राप्य धन) जो वसूल न हो सकता हो और इसी लिए डूबा हुआ मान लिया गया हो।
बुड्ढा—वि०[सं० वृद्ध] [स्त्री० बुड्ढी] १ युवावस्था पार करने के उपरांत जिसकी अवस्था अधिक हो गई हो। जैसे—बुड्ढा आदमी, बुड्ढा बैल। २ (जीव) जो साधारणत मानी जानेवाली पूर्ण आयु का आधे से अधिक या लगभग तीन-चौथाई भाग पार कर चुका हो।
बुढ़ऊ†—वि० =बुड्ढा।
पु० १ बुड्ढा आदमी। २ पिता या दादा जो बहुत बुड्ढा हो गया हो।
बुढ़ना—पु०[?] छडीला। पत्थर फूल।
†वि०=बूढ़ा (बुड्ढा।)
बुढ़वा—वि०[स्त्री० बुढ़िया] बुड्ढा।
बुढ़ाई—स्त्री०[हिं०बूढ़ा+आई (प्रत्य०)] वृद्ध या बुड्ढे होने की अवस्था या भाव। वृद्धावस्था। बुढ़ापा।
बुढ़ाना—अ० [हिं० बूढ़ा+ना (प्रत्य०)] वृद्धावस्था को प्राप्त होना। †स० बुड्ढा या बुड्ढों के समान कर देना। जैसे—रोग ने उन्हे बुढा दिया है।
बुढ़ापा—पु०[हिं० बूढ़ा+पा (प्रत्य०)] बुड्ढे होने की अवस्था या भाव। वृद्धावस्था।
बुढ़िया—स्त्री०[सं० वृद्धा] बूढ़ी औरत।
पद—बुढ़िया का काता—एक प्रकार की चीनी की मिठाई जो देखने मे काते हुए सूत के लच्छो की तरह होती है।
बुढ़िया-बैठक†—स्त्री०[हिं०बुढ़िया+बैठक=कसरत] एक प्रकार की बैठक।
बुढ़ौती†—स्त्री०=बुढ़ापा।
बुत—पु०[सं० बुद्ध से फा०] १ मूर्ति। प्रतिमा।
विशेष—प्राचीन फारस मे इसलाम के प्रचार से पहले स्थान स्थान पर गौतम बुद्ध की मूर्तियाँ और मन्दिर बहुत अधिक संख्या मे थे। इसीलिए इसलाम का प्रचार होने पर यहाँ के लोग प्रतिमा या मूर्ति मात्र को बुत कहने लगे थे।
२ किसी की आकृति के अनुरूप बना हुआ चित्र या प्रतीक। ३ गढ़ी हुई मूर्तियो के सौन्दर्य और कठोरता के आधार पर फारसी-उर्दू कविताओं मे प्रियतमा या प्रेमी की संज्ञा।
वि० १. मूर्ति की तरह मौन और निश्चल। २ मूर्ख। ३. नशे में बेहोश।
बुतना†—अ०=बुझना।
बुत-परस्त—पु०[फा०] [भाव० बुतपरस्ती] मूर्तिपूजक। मूर्तियों का आराधक।
बुत-परस्ती—स्त्री०[फा०] मूर्तिपूजा।
बुत-शिकन—पु०[फा०] वह जो मूर्ति-पूजा का विरोधी होने के कारण प्रतिमाओ को तोडता या नष्ट करता हो।
बुताल—स्त्री०[अ० मुअताद] १ किसी चीज की मात्रा या मान। २ २ खर्च। व्यय।
बुताना-बुताम—स०=बुझाना।
अ०=बुझना।
पु०=बटन।
बुत्त—वि०, पु०=बुत।
बुत्ता—पु० [हिं० बुत मूर्ख?] बातो मे मूर्ख बनाकर किसी को दिया जानेवाला चकमा या धोखा।
पद—दम बुत्ता। (देखें)
बुत्थि*—वि० बहुत।
बुद—वि०[देश०] पाँच। (दलाल)
बुदबुद, बुदबुदा—पु०[सं० बुद्‌ बुद्‌] पानी का बुलबुला। बुल्ला।
बुदबुदाना—अ० [अनु०] १ किसी तरल पदार्थ मे बुलबुले आना। २ मन ही मन या बहुत धीरे धीरे इस प्रकार बोलना कि और लोग सुन न सके।
बुदलाय—वि०[दलाली बुद+लाय (प्रत्य०)] पन्द्रह। दस और पाँच। (दलाल)
बुद्ध—वि०[सं० बुध् (ज्ञान करना)+क्त] १ जो जागा हुआ हो। जागरित। २ ज्ञान-सम्पन्न। ज्ञानी। ३ पंडित।
पु० शाक्य वंशीय राजा शुद्धोदन के पुत्र और बौद्ध धर्म के प्रवर्तक सिद्धार्थ गौतम का प्रचलित और प्रसिद्ध नाम (जन्म ई० पू० ५६६? मृत्यु ई० पू० ४८३?)।
बुद्धत्व—पु०[सं० बुद्ध+त्व] बुद्ध होने की अवस्था या भाव।
बुद्धागम—पु०[सं० बुद्ध-आगम, ष० त०] बौद्ध धर्म के सिद्धान्त।
बुद्धि—स्त्री०[सं०√बुध्+क्तिन्] १ शरीर का वह तत्त्व या शक्ति जिसके द्वारा किसी चीज या बात के विषय में आवश्यक ज्ञान प्राप्त होता है और जिसकी सहायता से तर्क वितर्क-पूर्वक सब प्रकार के अन्तर-सम्बन्ध आदि समझ मे आते है। ज्ञान या बोध प्राप्त करने और निश्चय विचार आदि करने की शक्ति। अक्ल। समझ। मनीषा। धी।
विशेष—दार्शनिक दृष्टि से यह मन से भिन्न तत्त्व या शक्ति है। हमारे यहाँ इसे अन्त करण की चार वृत्तियो मे से एक वृत्ति माना है, पर पाश्चात्य विद्वान् इसका अधिष्ठान मस्तिष्क मे मानते हैं। सांख्यकार ने इसे २५ तत्त्वो के अन्तर्गत दूसरा तत्त्व माना है।
२ एक प्रकार का छंद जिसके चरो पदो मे क्रम से १६, १४, १४, १३, मात्राएँ होती है। इसे लक्ष्मी भी कहते है। ३ उक्त वृत्त का चौदहवाँ भेद जिसे सिद्धि भी कहते हैं। ४. छप्पय छंद का ४२ वाँ भेद।

बुद्धि-कृत—भू० कृ०[तृ० त०] सोच-समझकर किया हुआ।

बुद्धि-कौशल—पु०[ष० त०] १. बहुत ही समझ-बूझकर तथा ठीक ढंग से काम करने की कला। २. चतुराई।

बुद्धि-गम्य—वि०[तृ०त०] बुद्धि के द्वारा जिसे जाना या समझा जा सकता हो।

बुद्धि-ग्राह्य—वि०[तृ० त०] बुद्धि द्वारा ग्रहण किये जाने के योग्य। जिसे बुद्धि ठीक मान सके।

बुद्धि-चक्षु (स्)—पु०[ब०स०] धृतराष्ट्र।

बुद्धिजीवी (विन्)—वि०[सं० बुद्धि√जीव् (जीना)+णिनि] १. बुद्धि-पूर्वक काम करनेवाला। विचारशील। २. जिसकी जीविका दिमागी कामों से चलती हो। जैसे—वकील, मंत्री आदि।

बुद्धितत्त्व—पु० =दे० 'महत्त्व'। (सांख्य)

बुद्धि-दौर्बल्य—पु० [सं०] बुद्धि के बहुत ही दुर्बल होने की अवस्था, भाव या रोग। बालिश्य (एमेन्शिया)

बुद्धिद्यूत—पु०[तृ० त०] शतरंज का खेल।

बुद्धि-पर—वि० [पं० त०] जो बुद्धि की पहुँच से परे हो।

बुद्धि-प्रामाण्य-वाद—पु०[ष० त०] यह सिद्धान्त कि वही बात ठीक मानी जानी चाहिए जो बुद्धि-ग्राह्य हो।

बुद्धि-भ्रंश—पु०[ष० त० या ब० स०] दे० 'मनोभ्रंश'।

बुद्धिमत्ता—स्त्री०[सं० बुद्धि+मतुप्+तल्, टाप्] बुद्धिमान् होने की अवस्था या भाव। समझदारी। अक्लमंदी।

बुद्धिमान्—वि०[स० बुद्धि+मतुप्, नुम्, दीर्घ] जिसकी बुद्धि बहुत प्रखर हो। जो बहुत समझदार हो। अक्लमंद। जिसमे अच्छी और यथेष्ट बुद्धि हो। जो सोच-समझकर कोई काम करता अथवा किसी काम में हाथ डालता हो।

बुद्धिमानी—स्त्री० [हिं० बुद्धिमान्+ई (प्रत्य०)] १. बुद्धिमान् होने की अवस्था या भाव। बुद्धिमत्ता। २ बुद्धिमान् का किया हुआ कोई कार्य।

बुद्धि-मोह—पु०[ष०त०] वह स्थिति जिसमे बुद्धि कुछ गडबडा तथा चकरा गई हो।

बुद्धि-योग—पु०[ष० त०] पर-ब्रह्म के साथ होनेवाला बौद्धिक संपर्क।

बुद्धिवंत—वि०=बुद्धिमान्।

बुद्धि-वाद—पु०[ष० त०] १. यह दार्शनिक मत या सिद्धान्त कि मनुष्य को समस्त ज्ञान बुद्धि द्वारा ही प्राप्त होते है। (इन्टलेकचुअलिज्म) २. आज-कल यह मत या सिद्धान्त कि धार्मिक आदि विषयो मे वही बाते मानी जानी चाहिए जो बुद्धि और युक्ति की दृष्टि से ठीक सिद्ध हो। (रैशनलिज्म)

बुद्धिवादी (दिन्)—वि० [सं० बुद्धि√वद् (बोलना)+णिनि, दीर्घ, नलोप] बुद्धि-वाद सम्बन्धी।

पु० बुद्धिवाद का अनुयायी। (इन्टलेकचुअलिस्ट)

बुद्धि-विलास—पुं०[ष० त०] १. बौद्धिक कामों मे लगकर मन बहलाना। २. कल्पना।

बुद्धिशाली (लिन्)—वि०[सं० बुद्धि√शाल् शोभित होना+णिनि] बुद्धिमान्।

बुद्धि-शील—वि०[ब० स०] बुद्धिमान्।

बुद्धि-सख—पुं०[ब० स०] १. मन्त्री। २. परामर्शदाता।

बुद्धि-सहाय—पुं०[स० त०] १. मन्त्री। वजीर। २. परामर्शदाता।

बुद्धि-हत—वि०[ब० स०] जिसकी बुद्धि नष्ट या भ्रष्ट हो गई हो।

बुद्धिहा (हन्)—वि० [सं० बुद्धि√हन् (मारना)+क्विप्, दीर्घ, नलोप] (पदार्थ) जो बुद्धि का नाश करता हो। जैसे—मदिरा।

बुद्धि-हीन—वि०[तृ० त०] [भाव० बुद्धिहीनता] जिसमें बुद्धि न हो। निर्बुद्धि।

बुद्धींद्रिय—स्त्री०[बुद्धि-इंद्रिय, कर्म० स०] ज्ञानेंद्रिय। मन।

बुद्धौ†—स्त्री० =बुद्धि।

बुद्बुद—पु०[स० बुद्+क, पृषो० द्वित्व] पानी का बुलबुला।

बुधंगड़†—वि०[स० बुद्धि+हिं० अगड़ (प्रत्य०)] मूर्ख।

बुध—पु०[सं०√बुध् (ज्ञान प्राप्त करना)+क] १ बुद्धिमान् और विद्वान् व्यक्ति। पडित। २ देवता। ३. सौर जगत् का सबसे छोटा ग्रह जो सूर्य से अन्य ग्रहो की अपेक्षा समीप है। सूर्य से इसकी दूरी ३६००००००० मील है और यह सूर्य की परिक्रमा ८८ दिनो मे करता है। (मर्करी)

विशेष—फलित ज्योतिष मे, यह नौ ग्रहो मे से चौथा ग्रह माना गया है, और पुराणानुसार इसकी उत्पत्ति उस समय हुई थी जब चन्द्रमा ने अपने गुरु बृहस्पति की पत्नी तारा के साथ संभोग किया था।

४ कुत्ता।

बुध-चक्र—पु०[ष० त० मध्य० स०] ज्योतिष मे, एक चक्र जिससे बुध नक्षत्र की गति का शुभाशुभ फल जाना जाता है।

बुधजन—पु०[स० कर्म० स०] पडित। विद्वान्।

बुधजायी—पु० [स० बुध+हिं० जन्मना=उत्पन्न होना] बुध ग्रह को जन्म देनेवाला, चन्द्रमा।

बुधवान्†—वि०=बुद्धिमान्।

बुधवार—पु०[सं० कर्म० स०] सात वारो मे से एक। मगलवार और गुरुवार के बीच का वार।

बुधि†—स्त्री०=बुद्धि।

बुधियार†—वि०=बुद्धिमान्।

बुधिल—वि०[स० बुध+किलच्] बुद्धिमान्।

बुधिवाही*—वि०=बुद्धिमान्।

बुध्य—वि०[स० बोध्य] जो जाना जा सके। जिसका बोध हो सके।

बुनकर—पु० [हिं० बुनना] कपडा बुननेवाला कारीगर। (वीवर)

बुनना—स० [पुं० हिं० बिनना] १. करघे के द्वारा ताने तथा बाने के तारों को इस प्रकार एक दूसरे मे ऊपर नीचे करके फँसाना के वे वस्त्र का रूप धारण कर ले। जैसे—दरी बुनना। २. सलाइयो आदि के द्वारा विशेष रूप से किसी एक ही डोरी मे विशिष्ट प्रकार से फंदे डालते हुए उसे वस्त्र का रूप देना। जैसे—स्वेटर बुनना। ३. सीधे तथा बेड़े बल मे बहुत से तार आदि स्थापित करके कोई चीज तैयार करना। जैसे—चटाई बुनना, जाला बुनना।

बुनवाना—स०[हिं० बुनना] [भाव० बुनवाई] बुनने का काम दूसरे से कराना।

बुनवाई—स्त्री०[हिं० बुनवाना] १. बुनवाने की क्रिया। भाव या पारिश्रमिक। २. दे० 'बुनाई,

बुनाई—स्त्री०[हिं० बुनना+ई (प्रत्य०)] १. बुनने की क्रिया, ढंग

भाव। २ बुनने का पारिश्रमिक या मजदूरी। ३ कपडे बुनने का ढग या प्रकार। जैसे—बुनाई घनी है। ४ दे० 'बुनवाई'।

बुनावट—स्त्री०[हिं० बुनना+ आवट (प्रत्य०)] बुनने मे सूतो की मिलावट का ढग। सूतों के बुनने का प्रकार।

बुनिया†—स्त्री०=बुँदिया।

†पु०=बुनकर।

बुनियाद—स्त्री०[फा० बुन्याद] १ आधार। नीव। २ जड। मूल। ३ आरभ।

बुनियादी—वि० [फा० बुन्यादी] १ नीव या बुनियाद-सबधी। २. नीव या बुनियाद के रूप मे होनेवाला। ३. आरभिक। प्रारभिक। ४. दे० 'आधारिक'।

बुबुका—स्त्री०[अनु०]१ जोर से रोने की क्रिया। रुलाई। २ भभक।

बुबुकना—अ०[अनु०] जोर जोर से रोना।

बुबुकारी—स्त्री०[अनु० बुबुक+आरी (प्रत्य०)] जोर जोर से रोने का शब्द।

क्रि० प्र०—देना।—भरना।

बुभुक्षा—स्त्री०[स० √भुज् (खाना)]+सन्, द्वित्वादि टाप्] खाने की इच्छा। भूख।

बुभुक्षित—भू० कृ०[स० बुभुक्षा+इतच्] जिसे भूख लगी हो। भूखा। क्षुधित।

बुभुत्सा—स्त्री०[स०√बुध+सन्, द्वित्वादि टाप्] अनोखी या विचित्र चीज या बात को जानने की प्रबल इच्छा या आतुरता।

बुयाम—पु०=बयाम।

बुर—स्त्री०[स० बुलि] स्त्री की योनि। भग।

बुरकना—स०[अनु०]चुटकी मे चूर्ण आदि भर कर छितराना या छिडकना। पु० बच्चो के लिखने की वह दवात जिसमे खडिया मिट्टी घोलकर रखी जाती थी।

बुरका—पु०[अ० बुर्क]१ मुसलमान स्त्रियो का एक पहनावा जिससे वे सिर से लेकर एडी तक अपने सब अग ढक लेती हैं। २. नकाब। ३. वह झिल्ली जिसमे जन्म के समय बच्चा लिपटा रहता है। खेडी।

बुरकाना—स०=बुरकना।

बुरकापोश—वि० [अ० बुर्क+फा० पोश] १. जो बुरका पहने हुए हो। २. जो बुरका पहनती हो।

बुरकी—स्त्री०[हिं० बुरकना]१ मत्र-तत्र आदि के समय प्रयुक्त होनेवाली धूल या राख। २. उक्त की सहायता से किया जानेवाला जादू-टोना। **मुहा०**—**बुरकी मारना**=मत्र पढकर किसी पर कुछ धूल या राख फेकना। उदा०—मै आगे जनाखे के कुछ बोल नही सकती। क्या जानिए क्या उसने मारी है मुझे बुरकी।—रगीन।

बुरद—पु० [अ० बोर्ड]१ पार्श्व। बगल। २. जहाज का बगलवाला भाग। ३ जहाज का वह भाग जो तूफान या हवा के रुख पर नही, बल्कि पीछे की ओर पडता हो। (लश०)

बुरबक—वि०[हिं० बूढ़ा+बक] १. अवस्था ढलने के फलस्वरूप जो दूसरो की दृष्टि मे मूर्खों का-सा आचरण करने लगा हो। २. बहुत बडा बेवकूफ। मूर्ख।

बुरा—वि०[स० विरूप] [स्त्री० बुरी, भाव० बुराई]१. जो वैसा न हो, जैसा उसे साधारण या उचित रूप मे होना चाहिए। जो अच्छा या ठीक न हो। खराब। निकृष्ट। 'अच्छा' का विपर्याय'। २. (व्यक्ति) जिसमे कोई स्वभावजन्य दुर्गुण या दोष हो। खराब। दूषित। ३. (आचरण) जो धार्मिक, नैतिक या सामाजिक दृष्टि से परम अनुचित और निदनीय हो। जैसे—बुरा चाल-चलन। ४ जिसका रूप-रंग आकार-प्रकार देखकर मन मे अरुचि, घृणा या विराग उत्पन्न हो। जैसे बुरी सूरत। ५. जो बहुत अधिक कष्ट या दुर्दशा मे पडा हो। जैसे—आज-कल उनका बुरा हाल है। ६ जिसमे उग्रता, कठोरता, तीव्रता आदि बहुत बढ़ी हुई हो। जैसे—(क) किसी को बुरी तरह से कोसना या मारना-पीटना। (ख) लालच बुरी बला है। ७ जिसमें क्षति, हानि या अनिष्ट की आशका हो। जैसे—(क) आवारा लड़को के साथ घूमना या जूआ खेलना बुरा है। (ख) बुरे आदमी सदा दूसरो की बुराई ही करते है। ८. जो अमगल-कारक या अशुभ हो अथवा सिद्ध हो सकता हो। जैसे—बुरी घड़ी, बुरी खबर, बुरी नजर, बुरी साइत। ९ जिसमे किसी प्रकार का अनौचित्य, खराबी या दोष हो।

पद—**बुरा काम**=किसी के साथ स्थापित किया जानेवाला लैंगिक सम्बन्ध। सभोग। **बुरा-भला**-(क) हानि-लाभ। अच्छा और खराब परिणाम। जैसे—अपना बुरा-भला सोचकर सब काम करने चाहिए। (ख) उचित और अनुचित सभी तरह की बातें। मुख्यत उक्त प्रकार की ऐसी बातें जो किसी की भर्त्सना करने के लिए कही जायँ। जैसे—वह नित्य अपने नौकरों को बुरा-भला कहते रहते है। **बुरे दिन**—कष्ट, दुर्भाग्य या पतन का समय। जैसे—जब आदमी के बुरे दिन आते हैं, तब उसकी बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है। **बुरी वस्तु**=गदगी। मैला। **मुहा०**—**(किसी से) बुरा बनना**=किसी की दृष्टि मे दोषी या द्वेषपूर्ण भाव रखनेवाला ठहरना या बनना। **(किसी से) बुरा मानना**=मन मे द्वेश या बैर रखना। **बुरा लगना**=अनुचित या अप्रिय जान पड़ना।

बुराई—स्त्री०[हिं० बुरा+ई (प्रत्य०)]१. वह तत्त्व जिसके फलस्वरूप किसी चीज को बुरा कहा जाता है। २ किसी को बुरा कहने की क्रिया या भाव। ३ अनुचित या निन्दनीय आचरण अथवा व्यवहार। जैसे—जो तुम्हारे साथ बुराई करे, उसके साथ भी भलाई करो। ४ आपस मे होनेवाला द्वेष, मनोमालिन्य या बैर-भाव। जैसे—दोनो भाइयो मे बुराई पड़ गई है।

क्रि० प्र०—पडना।

५. अवगुण। दोष। ऐब। जैसे—उसमे बुराई यही है कि वह बहुत झूठ बोलता है। ६ किसी से की जानेवाली किसी की निन्दा या शिकायत। जैसे—वह जगह जगह तुम्हारी बुराई करता फिरता है।

बुराई-भलाई—स्त्री०[हिं०]१. अच्छी और बुरी घटनाएँ। नेकी-बदी। जैसे—वह सबकी बुराई-भलाई मे साथ देते हैं। २. किसी की निन्दा या शिकायत और किसी की प्रशंसा या तारीफ। जैसे—तुम्हें किसी की बुराई-भलाई करने से क्या मतलब।

बुराक—पु०[अ० बुराक] वह घोड़ा जिस पर रसूल चढ़कर आकाश मे गए थे।

बुरादा—पुं०[फा० बुरादः]१ आरे से लकड़ी चीरने पर उसमे से निकलनेवाला आटे की तरह का महीन अश। २. चूर्ण। चूरा।

बुरापन—पुं०=बुराई।
बुरुज—पुं०=बुर्ज।
बुरुड़—पुं०[देश०] एक जाति जो टोकरे, चटाइयाँ आदि बनाने का काम करती थी।
बुरुला†—पुं०=रावरखा (वृक्ष)।
बुरुश—पु०[अं०ब्रुश] १ तारों, बालो अथवा किसी चीज का बना हुआ वह उपकरण जिससे रगड़कर कोई चीज साफ की जाती अथवा पोती जाती है। २. तूलिका।
बुरूल—पुं०[देश०] एक प्रकार का बहुत बड़ा वृक्ष।
बुरैया†—पुं० [हिं० बुरा]१ बुरा काम करनेवाला आदमी। २ दुष्ट। पाजी। ३. वह जो दूसरों की बुराई या निन्दा करता फिरे। ४ दुश्मन। शत्रु। (पूरब)
बुर्ज—पु०[अ०]१ किले आदि की दीवारों मे कोनों पर ऊपर की ओर निकला हुआ गोल या पहलदार भाग जिसमे बीच मे बैठने आदि के लिए थोड़ा सा स्थान होता है। गरगज। २. उक्त आकार प्रकार की मीनार का ऊपरी भाग। ३. गुबद। ४. गुब्बारा। ५. फलित ज्योतिष का राशि-चक्र।
बुर्जतोप—स्त्री०[हिं०] वह तोप जो मुख्यत. किले के बुर्ज पर रखकर चलाई जाती है।
बुर्जी—स्त्री०[बुर्ज का अल्पा० रूप] छोटा बुर्ज।
बुर्द—स्त्री०[फा०]१ ऊपरी आमदनी। ऊपरी लाभ। २. प्रतियोगिता। होड़। ३. प्रतियोगिता आदि मे लगाई जानेवाली बाजी या शर्त। ४ शतरज के खेल मे किसी पक्ष की वह स्थिति जिसमे उसके बादशाह को छोडकर अन्य मोहरे मारे जाते हैं। यह स्थिति आधी मात की सूचक होती है।
वि० १ डूबा हुआ। २ नष्ट-भ्रष्ट। चौपट। बरबाद। जैसे—उसने जुए में सारा घर बुर्द कर दिया।
बुर्दबार—वि०[फा०] [भाव० बुर्दबारी] १. शान्तिप्रिय। २. सहनशील।
बुर्दाफरोश—पु०[फा० बर्द फरोश] [भाव० बुर्दाफरोशी] १ वह जो मनुष्य बेचने का व्यापार करता हो। २. वह व्यक्ति जो जवान स्त्रियो को भगाता और दूसरो के हाथ बेचकर धन कमाता हो।
बुर्राक—वि०[फा०] १. चमकता हुआ। चमकीला। २. बहुत ही साफ और स्वच्छ। जैसे—बुर्राक कपड़े। ३ बहुत ही तीव्र गतिवाला। ४. चतुर। चालाक।
बुर्री—स्त्री०[हिं०बुरकना] बोने का वह ढंग जिसमें बीज हल की जोत मे डाल दिये जाते हैं और उसमें से आपसे आप गिरते चलते हैं।
बुर्श—पुं०=बुरुश।
बुलंद—वि०[फा० बलंद] [भाव० बुलदी] १. जिसकी ऊँचाई बहुत अधिक हो। बहुत ऊँचा। २. उत्तुंग। भारी। जैसे—बुलंद आवाज। ३. बहुत अधिक बढ़ा-चढ़ा या उन्नत। जैसे—इकबाल बुलंद होना।
बुलंदी—स्त्री०[फा० बलंदी] १. बुलंद होने की अवस्था या भाव। ऊँचाई।
बुल-डाग—पुं०[अं०]मझोले आकार किन्तु डरावनी सूरत के कुत्तों की एक जाति।

बुलबुल—स्त्री०[फा०] एक प्रसिद्ध गानेवाली चिड़िया जो कई प्रकार की होती और एशिया, यूरोप तथा अमेरिका मे पाई जाती है।
विशेष—उर्दूवाले प्राय: इसे पुंलिंग मानते हैं और इसे आशिक के प्रतीक के रूप में ग्रहण करते हैं।
बुलबुल-चश्म—स्त्री०[फा०] एक प्रकार की सहिली (चिड़िया)।
बुलबुलबाज—पु०[फा०] [भाव० बुलबुलबाजी] वह जो बहुत सी बुलबुलें पालता तथा लड़ाता हो।
बुलबुलबाजी—स्त्री०[फा०] बुलबुलें पालने या लड़ाने का काम या शौक।
बुलबुलहजार दास्ताँ—स्त्री०[फा०] बहुत ही मधुर स्वरवाला एक प्रसिद्ध ईरानी पक्षी जिसकी चर्चा अरबी और फारसी काव्यों में अधिकता से होती है। संस्कृत में इसे 'कलविक' कहते हैं।
बुलबुला—पुं०[सं० बुद्बुद]१ किसी तरल पदार्थ या पानी की बूँद का वह खोखला और फूला हुआ रूप जो उसे अन्दर हवा भर आने के कारण प्राप्त होता है। बुदबुदा। बुल्ला। २. लाक्षणिक रूप में कोई क्षण-भगुर चीज या बात। जैसे—जिन्दगी पानी का बुलबुला है।
बुलवाना—स०[हिं० बुलाना का प्रे०]१. किसी को बोलने में प्रवृत्त करना। बोलने का काम किसी दूसरे से कराना। २. किसी को किसी के द्वारा यह कहलाना कि तुम यहाँ आओ। किसी को बुलाने का काम किसी के द्वारा कराना।
संयो० क्रि०—भेजना।
बुलाक—पु०[तु०] १. नाक की बीचवाली हड्डी। २. नाक में पहनी-जानेवाली नथ। ३. वह लबोतरा मोती जो नथ में लटकाया जाता है।
बुलाकी—पु० [तु० बुलाक] घोड़े की एक जाति। उदा०—मुश्की और हिरमंजि इराकी। तुरकी कंगी भुथोर बुलाकी।—जायसी।
बुलाना—स०[हिं० बोलना का स० रूप] १. किसी को बोलने में प्रवृत्त करना। बोलने का काम किसी से कराना। २. किसी को अपने पास आने या अपनी ओर प्रवृत्त करने के लिए आवाज देना। पुकारना। ३. किसी से यह कहना या कहलाना कि तुम यहाँ या हमारे पास आओ।
सयो० क्रि०—भेजना।
बुलावा—पु० [हिं० बुलाना+आवा (प्रत्य०)]१ बुलाने की क्रिया या भाव। २. आवाहन। निमंत्रण।
क्रि० प्र०—आना।—जाना।—भेजना।
बुलाह—पु०[स० वोल्लाह] वह घोड़ा जिसकी गरदन और पूँछ के बाल पीले हो। (अश्व वैद्यक)
बुलाहट—स्त्री०[हिं०बुलाना] किसी को कही बुलाने के लिए भेजी जाने-वाली आज्ञा या संदेश। बुलावा।
बुलिन—स्त्री०[अं० बुलियन] एक प्रकार का रस्सा जो चौकोर पाल के लम्बे में बाँधा जाता है। (लश०)
बुलेटिन—पु०[अं०]किसी सार्वजनिक बात या विषय से सबध रखनेवाला वह संक्षिप्त सूचनापत्र जो किसी की ओर से आधिकारिक रूप से प्रकाशित किया गया हो।
बुलेली—स्त्री०[तामिल] मँझोले आकार का एक तरह का पेड़।
बुलौआ†—पुं०=बुलावा।
बुल्लन—पुं०[देश०]१. गिरई की तरह की पर भूरे रग की एक मछली जिसके मूँछें नहीं होती। २. चेहरा। मुँह। (दलाल)

†पु०[अनु०] पानी का बुलबुला।

बुल्ला†—पु०=बुलबुला।

बुवाई—स्त्री०=बोआई।

बुस—पु०[सं० तुष] अनाज आदि के ऊपर का छिलका। भूसी।

बुसना—अ०[हिं० बासी] खाद्य पदार्थ का बासी पड़ने के कारण दुर्गन्ध युक्त होना। जैसे—कढ़ी तो बुस गई है।

बुहरी†—स्त्री०=बहुरी।

बुहारना—स०[सं० बहुकर+ना (प्रत्य०)] झाड़ू से जगह साफ करना। झाड़ू देना। झाड़ना। २ लाक्षणिक अर्थ मे अवांछित तत्त्व दूर करना या बाहर निकालना।

बुहारा—पु०[हिं० बुहारना] [स्त्री० अल्पा० बुहारी] ताड़ की सींको का बना हुआ बड़ा झाड़ू।

बुहारी—स्त्री०[सं० बहुकरी, हिं० बुहारना+ई (प्रत्य०)] झाड़ू। बढ़नी।

बूँच—स्त्री०[हिं० गूछ] एक प्रकार की मछली जिसे गूँच भी कहते हैं।

बूँद—स्त्री०[सं० बिंदु] १. जल अथवा किसी तरल पदार्थ का कण। कतरा।

पद—**बूँद भर**=बहुत थोड़ा। जरा-सा।

मुहा०—**बूँदें गिरना या पड़ना**=धीमी वर्षा होना। थोड़ा-थोड़ा सा पानी बरसना।

२ पुरुष के वीर्य का वह अश जो स्त्री के गर्भाशय में पहुँचकर उसे गर्भवती करता है।

मुहा०—**बूँद चुराना**=स्त्री का पुरुष के सभोग के कारण गर्भवती होना।

३ एक प्रकार का रगीन देसी कपड़ा जिसमे बूँदो के आकार की छोटी छोटी बूटियाँ बनी होती है और जो स्त्रियो के लहँगे आदि बनाने के काम मे आता है।

वि० बहुत तेज (अस्त्र)।

बूँदा†—पु० [हिं० बूँद]१ सुराहीदार मणि या मोती जो कान मे या नथ मे पहना जाता है। २ दे० 'बुंदा'।

बूँदा-बाँदी—स्त्री० [बूँद] हलकी या थोड़ी वर्षा।

बूँदी—स्त्री०[हिं० बूँद+ई (प्रत्य०)]१ वर्षा के जल की बूँद। २ एक प्रकार की मिठाई जो झरने मे से घुले हुए बेसन की छोटी छोटी बूँदें टपकाकर बनाई जाती है। बुँदिया।

बू—स्त्री० [फा०] १ बास। गंध। महक। २. दुर्गंध। बदबू। ३ लाक्षणिक रूप मे, किसी प्रकार का आभास। जैसे—(क) उसकी बातो मे शरारत की बू रहती है। (ख) उनमे से अभी तक रईसी की बू नही गई है।

पद—**बू-बास**=हलकी गंध।

बूआ—स्त्री०[देश०]१ पिता की बहन। फूफी। २ बड़ी बहन। ३ स्त्रियो का परस्पर आदर-सूचक सबोधन। (मुसल०) ४. एक प्रकार की मछली। ककसी।

बूई—स्त्री०[देश०] एक तरह की वनस्पति।

बूक—पु०[देश०] ऊँची पहाड़ियो पर होनेवाला माजूफल की जाति का एक वृक्ष।

पु०[हिं० बकोटा] हाथ के पंजो की वह स्थिति जो उँगलियो को बिना हथेली से लगाये किसी वस्तु को पकड़ने, उठाने या लेने के समय होती है। चगुल। बकोटा।

†पु०[सं० वक्ष]१ कलेजा। हृदय। २. छाती। वक्ष स्थल।

स्त्री०=बुक (कपड़ा)।

बूकना—स०[सं० वृक्ण=तोड़ा-फोड़ा हुआ]१. सिल और बट्टे की सहायता से किसी चीज को महीन पीसना। पीसकर चूर्ण करना। २ अनावश्यक और हास्यास्पद रूप मे अपने किसी गुण, योग्यता आदि का प्रदर्शन करना। बघारना। जैसे—अगरेजी या सस्कृत बूकना, कानून या कारीगरी बूकना।

बूका—पु०[देश०] वह भूमि जो नदी के हटने से निकल आती है। गंगबरार।

†पु०=बुक्का।

बूगा—पु०[देश०] भूसा।

बूच—पु०[अं० बच=गुच्छा] कपड़े, कागज या चमड़े आदि का वह टुकड़ा जो बदूक आदि मे गोली या बारूद को यथास्थान स्थिर रखने के लिए उसके चारों ओर लगाया जाता है। (लश०)

पु०[अं० बूच] बड़ी मेख। (लश०)

मुहा०—**बूच मारना**=गोले या गोली आदि की मार से होनेवाला छेद डाट लगाकर बद करना

बूचड़—पु०[अं० बुचर] वह जो पशुओ का मांस आदि बेचने के लिए उनकी हत्या करता है। कसाई।

बूचड़खाना—पु०[हिं० बूचड़+फा० खाना] कसाई-खाना।

बूचा—वि०[सं० बुस=विभाग करना] [स्त्री० बूची] १ जिसके कान कटे हुए हों। कनकटा। २ जो कुछ अग या अवयव कट जाने के कारण कुरूप या भद्दा जान पड़े। जैसे—बूचा पेड़। ३ जो किसी चीज के अभाव के कारण अशोभन या भद्दा जान पड़े। जैसे—बूचे हाथ, जिनमे चूड़ियाँ या गहने न हों। (स्त्रियाँ)

बूची—स्त्री०[हिं० बूचा] वह भेड़ जिसके कान बाहर निकले हुए न हो। बल्कि जिसके कान के स्थान मे केवल छोटा सा छेद ही हो। गुजरी।

बूजम—पु०[फा० बूजन.] बदर। (कलदर)

बूजना—स०[?] किसी को धोखा देने के लिए कुछ छिपाना।

बूझ—स्त्री०[सं० बुद्धि]१. बूझने की क्रिया या भाव। २ बूझने की शक्ति। बुद्धि। समझ।

पद—**समझ बूझ**=समझने की और ज्ञान प्राप्त करने की योग्यता या शक्ति।

३ पहेली या बुझारत।

बूझन†—स्त्री०=बूझ।

बूझना—स० [हिं० बूझ] १. किसी प्रकार का ज्ञान या बोध प्राप्त करना। जानना और समझना। २. कोई गूढ़ या रहस्यपूर्ण बात समझना या उसकी तह तक पहुँचना। जैसे—पहेली बूझना। ३ प्रश्न करना। पूछना।

बूझनी†—स्त्री० [हिं० बूझना, सं० बुध्य] १. प्रश्न। सवाल। उदा०—जब अति सखिन बूझनी लई, तब हँसि कुँवरि गोद लुठि गई।—नन्ददास। २ पहेली। बुझारत।

बूट—पुं० [सं० विटप, हिं० बूटा] १ चने का हरा पौधा। २ चने का हरा दाना। ३ पेड़ या पौधा।

पु०[अं०] एक तरह का विलायती ढग का फीतेवाला जूता।

बूझना†—अ० [?] मांगना।
बूटनि—स्त्री०[हिं० बहूटी] बीर बहूटी नाम का कीड़ा।
बूट पुलाव—पुं०[हिं०] वह पुलाव जो चावल और हरे चने को मिलाकर पकाया जाता है।
बूटा—पुं०[सं० विटप]१. छोटा वृक्ष। पौधा। २. उक्त आकार का कोई अंकन या चित्रण। जैसे—कपड़े या दीवार पर बने हुए बेल-बूटे। ३. एक प्रकार का छोटा पहाड़ी पौधा।
बूटी—स्त्री०[हिं० बूटा का स्त्री० रूप] १ ऐसी जंगली वनस्पति जिसका उपयोग औषध आदि के रूप में होता है।
पद—जड़ी-बूटी। (दे०)
२ छोटे पौधों या फूलों के आकार का कोई अंकन या चित्रण। जैसे—अशरफी बूटी। ३ भाँग। विजया। ४. ताश के पत्तों पर अंकित रंग के चिह्न। ५. एक प्रकार का पौधा जिसके रेशों से रस्सियाँ बनाई जाती हैं। ऊदल। गुल-बादला।
बूटेदार—वि०[हिं० बूटा+फा० दार (प्रत्य०)] जिस पर बूटे बने हों।
बूठना—अ०[सं० वर्षण] बरसाना। वर्षा होना। उदा०—आँधी पीछे जो जल बूठा।—जायसी।
बूड़—स्त्री०[हिं० बूड़ना] जल की इतनी गहराई जिसमें आदमी डूब सके। डुबाव।
बूड़न—स्त्री०=बूड़ (डुबाव)।
बूड़ना—अ०[सं० वुड=डूबना]१. निमज्जित होना। डूबना। २. किसी काम या बात या विषय में निमग्न या लीन होना। उदा०—अनबूड़े बूड़े तिरे जे बूड़े सब अंग।—बिहारी।
संयो० क्रि०—जाना।
बूड़ा—पुं०[हिं० डूबना]१. वर्षा आदि के कारण होनेवाली जल की बाढ़। २ उतना गहरा पानी जिसमें आदमी डूब सकता हो। डुबाव।
क्रि० प्र०—आना।
बूड़िया—पुं०[हिं० बूड़ना] गहरे पानी में गोता लगाकर चीजें निकालनेवाला। गोताखोर। डुब्बा।
बूढ़—पुं०[हिं० बूढ़ा]१. बीरबहूटी। २. बीरबहूटी की तरह का गहरा लाल रंग।
†वि०=बूढ़ा (वृद्ध)।
बूढ़ा—पुं०[स्त्री० बूढ़ी]=बुड्ढा (वृद्ध)।
पद—बूढ़ा आढ़ा=बुढ़ापे के बहुत कुछ पास पहुँचा हुआ।
†स्त्री०=बुढ़िया (वृद्धा स्त्री)।
बूढ़ी†—स्त्री०=बीर बहूटी।
बूता†—पुं०=बूता। उदा०—है काकर अस बूता।—जायसी।
बूता—पुं०[हिं० वित्त]१. बल। पराक्रम। २. शक्ति। सामर्थ्य।
बूथड़ी—स्त्री०[देश०]१. आकृति। २. चेहरा। सूरत। शकल। ३. रुआँसा मुँह।
बूना—पुं०[देश०] चनार नाम का वृक्ष।
बूबक—पुं०[देश०]मूर्ख व्यक्ति।
बूबला†—पुं०[?] बाजरे की भूसी।
बूबास—स्त्री० [फा०+हिं०] १. गंध। महक। २. किसी परम्परा का चिह्न या लक्षण। (प्रायः नहिक प्रयोगों में प्रयुक्त) जैसे—उसमें बड़ों की बू-बास नहीं है।
बूबू—स्त्री० [अनु०] १. बड़ी बहिन। ३ बड़ी-बूढ़ी स्त्रियों के लिए सम्बोधन।
बूम—पुं०[फा०] १. उल्लू। २. बंजर भूमि।
बूर—पुं०[देश०]१. पश्चिमी भारत में होनेवाली एक प्रकार की घास जिसके खाने से गौओं, भैंसों आदि का दूध और अन्य पशुओं का बल बहुत बढ़ जाता है। खोई। २. पशुओं के खाने का कटा हुआ चारा। ३. निकम्मी, फालतू या रद्दी चीज। ४. कुछ विशिष्ट प्रकार के कपड़ों के ऊपर निकले हुए रोएँ। जैसे—बूरदार कम्बल, बूरदार तौलिया। ५. एक प्रकार की मिठाई जो अन्न की भूसी या छिलके से तैयार की जाती है। उदा०—बूर के लड्डू खाये तो पछताये, न खाये तो पछताये। (कहा०)
†स्त्री०=बुर(भग)।
बूरना—अ०=बूड़ना (डूबना)।
बूरा—पुं०[हिं० भूरा]१ कच्ची चीनी जो भूरे रंग की होती है। शक्कर। २ एक प्रकार की साफ की हुई बढ़िया चीनी। ३ महीन चूर्ण।
बूरी—स्त्री०[देश०] एक प्रकार की बहुत छोटी वनस्पति जो पौधों, उनके तनों, फूलों और पत्तों आदि पर उत्पन्न हो जाती है और जिसके कारण वे सड़ने या नष्ट होने लगते हैं।
बूला—पुं०[देश०] पयाल का बना हुआ जूता। लतड़ी।
बृंद—पुं० दे० 'वृंद'।
बृंदा—स्त्री० दे० वृंदा।
बृंदारण्य—पुं०[सं० वृंदारण्य] वृंदावन।
बृंहण—वि०[सं०√ बृंह् (वृद्धि करना)+ल्युट् —अन] पोषक। पुष्टिकर।
पुं०१. पुष्ट करने की क्रिया या भाव। २. एक प्रकार की मिठाई।
बृच्छ†—पुं०=वृक्ष।
बृटिश—वि०=ब्रिटिश।
बृष—पुं०[सं० वृष]१. साँड़। २. बैल। ३ मोरपंख। ४ इंद्र। ५ दे० 'वृष'।
बृहज्जन—पुं०[सं० वृहद्-जन, कर्म० स०] नामी, यशस्वी या बहुत बड़ा आदमी।
बृहत्—वि०[सं० √बृह् (वृद्धि)+अति नि० सिद्धि]१ बहुत बड़ा या भारी। विशाल। २. दृढ़। पक्का। मजबूत। ३ बलवान। ४. (स्वर) ऊँचा या भारी। ५ पर्याप्त। यथेष्ट। ६ घना। निविड़।
पुं० एक मरुत् का नाम।
बृहतिका—स्त्री०[सं० बृहती+कन्+टाप्-ह्रस्व] उपरना। दुपट्टा।
बृहती—स्त्री०[सं० बृहत्+ङीष्] १.कटाई। बरहंटा। बनभंटा। २. भटकटैया। ३. वाक्य। ४. उत्तरीय वस्त्र। उपरना। ५. विश्वावसु गंधर्व की वीणा का नाम। ५. सुश्रुत के अनुसार एक मर्मस्थान जो रीढ़ के दोनों ओर पीठ के बीच में है। ६. एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में नौ अक्षर होते हैं।
बृहतीपति—पुं०[सं० ष० त०] बृहस्पति।
बृहत्कंद—पुं०[सं० ब० स०] १. विष्णुकंद। २. गाजर।

बृहत्केतु—पुं०[सं० ब० स०] अग्नि।

बृहत्तर—वि०[सं० बृहत्+तरप्]१ किसी बडे या बृहत् की तुलना मे और भी बडा। जिसमे मूल क्षेत्र के अतिरिक्त आसपास के क्षेत्र भी मिले हों। जैसे—बृहत्तर भारत।

बृहत्ताल—पुं०[कर्म० स०] हिंताल।

बृहत्तृण—पुं०[स० कर्म० स०] बाँस।

बृहत्त्वक् (च्)—पुं०[स० ब० स०] नीम का वृक्ष।

बृहत्पत्र—पुं०[सं० ब० स०] १ हाथी कद। २. सफेद लोध। ३. कासमर्द।

बृहत्पर्ण—पुं०[सं० ब० स०] सफेद लोध।

बृहत्पाद—पुं०[स० ब० स०] वटवृक्ष। बड़ का पेड़।

बृहत्पीलु—पुं०[सं० कर्म० स०] महापीलु। पहाडी अखरोट।

बृहत्पुष्प—पुं०[स० ब० स०]१ पेठा। २ केले का पौधा।

बृहत्पुष्पी—स्त्री०[स० ब० स०, ङीष्] सन का पेड़। सनई।

बृहत्फल—पुं०[स० ब० स०]१ चिचिडा। चिचड़ा। २ कुम्हडा। ३ कटहल। ४ जामुन। ५. तितलौकी। ६ महेन्द्र-वारुणी।

बृहद्—वि०=बृहत्।

बृहदारण्यक—पुं०[स० कर्म० स०] एक प्रसिद्ध उपनिषद् जो दस मुख्य उपनिषदों के अन्तर्गत है। यह शतपथ ब्राह्मण के मुख्य उपनिषदो मे से और उसके अतिम ६ अध्यायो या ५ प्रपाठकों मे है।

बृहदेला—स्त्री०[स० कर्म० स०] बड़ी इलायची।

बृहद्दंती—स्त्री०[स० कर्म० स०] एक प्रकार की दती जिसके पत्ते एरंड के पत्तो के समान होते हैं। दे० 'दती'।

बृहद्बला—स्त्री०[स० कर्म० स०] १ महाबला। २ सफेद लोध। ३. लज्जावती। लजालू।

बृहद्बीज—पुं०[स० ब० स०] अमडा।

बृहद्भानु—पुं०[स० ब०स०] १ अग्नि। २. सूर्य। ३ चित्रक नामक वृक्ष। चीता। ४. विष्णु।

बृहद्रथ—पुं०[स० ब० स०]१ इन्द्र। २ सामवेद का एक अश। २. यज्ञ-पात्र।

बृहद्वर्ण—पुं०[स० ब० स०] सोनामक्खी। स्वर्णमाक्षिक।

बृहद्वल्ली—स्त्री०[स० कर्म० स०] करेला।

बृहद्वादी (दिन्)—वि०[स० बृहत्√वद् (कहना) + णिनि, दीर्घ, नलोप] बहुत अधिक या बढ़-बढ़कर बातें करनेवाला।

बृहन्नट—पुं०[स० कर्म० स०] अर्जुन।

बृहन्नल—पुं०[सं० कर्म० स०]१ अर्जुन। २. बाहु। बाँह।

बृहन्नारदीय—पुं०[सं० बृहत्-नारदीय, कर्म० स०] एक उपपुराण।

बृहन्नारायण—पुं० [स० बृहत्-नारायण, कर्म० स०] याज्ञिकी उपनिषद् का दूसरा नाम।

बृहन्निंब—पुं०[स० बृहत्-निम्ब, कर्म० स०] महानिंब।

बृहस्पति—पुं०[सं० बृहत्-पति, ष० त०, सुट् नि०] १ एक प्रसिद्ध देवता जो अंगिरस के पुत्र और देवताओं के गुरु कहे गये हैं। २. सौरजगत् का पाँचवाँ और सबसे बड़ा ग्रह जिसका व्यास ८७००० मील है। यह लगभग ११० वर्षों मे सूर्य की परिक्रमा करता है। (जुपिटर)

बृहस्पति चक्र—पुं०[ष० त०] ६० संवत्सरों का चक्र। (गणित ज्योतिष)

बृहस्पतिवार—पुं०[ष० त०] बुधवार के बाद और शुक्रवार से पहले पडनेवाले दिन की संज्ञा। गुरुवार। बीफै।

बेंग—पुं०[सं० व्यंग] मेढक।

बेंगनकुटी—स्त्री०[देश०] अबाली। (दे०)

बेंच—स्त्री०[अं०]१. पत्थर आदि का बना हुआ पाश्चात्य ढग का एक आसन जो कुरसी से कई गुना लबा होता है तथा जिस पर कई आदमी एक साथ बैठ सकते हैं। ३. राजकीय न्यायालयो में न्यायाधीशों के बैठने का स्थान। ३. संसद भवन मे दल विशेष के सदस्यो का बैठने का स्थान।

बेंचना—स०=बेचना।

बेंट—स्त्री०[सं० वंट] औजारो आदि मे लगा हुआ काठ आदि का दस्ता। मूठ। दस्ता। जैसे—छुरी की बेंट।

बेंठ—स्त्री०=बेंट।

बेंड़—पुं०[देश०] १ वह मेडा जो मेडो के झुड में बच्चे उत्पन्न करने के लिए छूटा रहता है। (गडरिये) २ नगद रुपया। (दलाल) ३. किसी भारी चीज को गिरने से बचाने के लिए उसके नीचे लगाया जानेवाला सहारा। चाँड। ४ पड़ाव। (क्व.)

स्त्री० [हिं० बेडा] टेक। चाँड।

बेंड़ना—स०=बेढ़ना (बाढ लगाना)।

बेंड़ा†—पुं०=बेवड़ा।

वि० [हिं० बेडा (आडा या तिरछा)] १ आड़ा। तिरछा। २. कठिन।

पुं०=ब्योंडा।

बेंड़ी—स्त्री० [देश०] १ एक तरह की चौडे मुँहवाली छिछली टोकरी जिससे गड्ढे आदि मे भरा हुआ पानी खेतो मे उलीचा जाता है। २. हँसिया के आकार का लोहे का एक औजार जिससे बरतनो पर जिला करते हैं।

बेंड़—पुं० [?] जहाज के खंभे के ऊपरी सिरे पर लगा रहनेवाला धातु का पत्तर जो हवा का रुख बतलाता है। (लश०)

बेंत—पुं० [स० वेतस्] १ खजूर, ताड़ आदि की जाति की एक प्रसिद्ध लता जो पूर्वी एशिया और उसके आस-पास के टापुओ में जलाशयो के पास अधिकता से होती है। इसकी छड़ियाँ बनती हैं और इसके छिलको आदि से कुर्सियाँ, टोकरियाँ आदि बुनी जाती हैं। २ उक्त के डठल की बनी हुई छड़ी या डंडा।

मुहा०—बेंत की तरह काँपना=थरथर काँपना। बहुत अधिक डरना। जैसे—यह लड़का आपको देखते ही बेंत की तरह काँपता है।

बेंदली†—स्त्री०=बिंदी।

बेंदा—पुं० [सं० बिंदु] १ माथे पर लगाया जानेवाला चंदन आदि का गोल टीका। २. माथे पर पहनने का बंदी या बेंदी नाम का गहना।

बेंदी—स्त्री० [स० बिंदु, हिं० बिंदी] १ टिकली। बिंदी। २ बिंदी। सिफर। सुन्ना। ३ माथे पर पहनने का बेंदी नाम का गहना। ४. सरों के पेड़ की तरह का अकन या चित्रण।

बेंवड़ा†—पुं०=ब्योंडा।

बेंवताना—स० [हिं० ब्योंतना का प्रे०] ब्योंतने का काम दूसरे से कराना। सिलाने के लिए किसी से कपड़ा नपवाना और कटवाना।

बे—अव्य० [सं० वि, मि० फा० बे] बिना। बगैर। (इसका प्रयोग प्रायः अरबी, फारसी आदि शब्दों के साथ यौगिक बनाते समय पूर्व पद के रूप के रूप में होता है। जैसे—बेइज्जत, बेईमानी आदि।
अव्य० [अनु०] हि० अबे का संक्षिप्त रूप जिसका प्रयोग उपेक्षासूचक संबोधन के लिए होता है।
मुहा०—बे ते करना=किसी को तुच्छ समझते हुए उसके साथ अशिष्टतापूर्वक बातें करना।

बेअंत—वि० [हि० बे=बगैर+सं० अंत] जिसका कोई अंत न हो। अनंत। असीम। बेहद।
पद—बेअंत माया=अत्यधिक मात्रा मे होनेवाली कोई चीज। (व्यंग्य)

बेअकल—वि० [फा० बे+अ० अक्ल] [भाव० बेअकली] जिसे अकल न हो। निर्बुद्धि।

बेअकली—स्त्री० [फा० बे+अ० अक्ल] नासमझी। मूर्खता। बेवकूफी।

बेअदब—वि० [फा० बे+अ० अदब] [भाव० बेअदबी] १. जो बड़ो का अदब या आदर न करता हो। २. जो मर्यादा का ध्यान न रखकर अशिष्ट आचरण करता हो। अशिष्ट। उद्दंड। धृष्ट।

बेआब—वि० [फा० बे+अ० आब] [भाव० बेआबी] १. जिसमे आब (चमक) न हो। २ जिसकी कोई प्रतिष्ठा न हो।

बेआबरू—वि० [फा०] [भाव० बे-आबरुई] जिसकी कोई आबरू या प्रतिष्ठा न हो। फलतः अपमानित और तिरस्कृत।

बेआबी—स्त्री० [फा० बे+अ० आब] १. बेआब होने की अवस्था या भाव। मलिनता। निस्तेजता। २. अप्रतिष्ठा।

बेआरा†—पुं० [देश०] एक मे मिला हुआ जौ और चना।

बेइंतिहा—वि० [अ०+फा०] अपार। असीम। बेहद।

बेइसाफ—वि० [फा०] [भाव० बेइंसाफी] अन्यायी।

बेइज्जत—वि० [फा० बे+अ० इज्जत] १. जिसकी कोई इज्जत या प्रतिष्ठा न हो। अप्रतिष्ठित। २ जिसका अपमान किया गया हो अपमानित।

बेइज्जती—स्त्री० [फा०+अ०] १. अप्रतिष्ठा। २. अपमान।

बेइलि—पुं० दे० 'बेला'।
†स्त्री०=बेल (वल्ली)।

बेइल्म—वि० [फा० बे+अ० इल्म] [भाव० बेइल्मी] बे पढ़ा-लिखा। अपढ़।

बेईमान—वि० [फा० बे+अ० ईमान] [भाव० बेईमानी] १. जिसका ईमान ठीक न हो। जिसे धर्म का विचार न हो। अधर्मी। २. अविश्वसनीय।

बेईमानी—स्त्री० [फा० बे+अ० ईमान] १. बेईमान होने की अवस्था या भाव। २. बुरी नियत से किया जानेवाला कोई कार्य।

बेउंगा—पुं० [देश०] बाँस का वह चोंगा जिसे कंबल की पट्टियाँ बुनते समय ताने की साँथी अलग करने के लिए रखते हैं।

बेउ†—वि० [सं० द्वि+अपि] दोनों। उदा०—बाहाँ तिकरि पसारी बेउ।—प्रिथीराज।

बेउज्र—वि० [फा० बे+अ० उज्र] जो उज्र या आपत्ति न करता हो।

बेउसूल—क्रि० वि० [फा०+अ०] बिना किसी सिद्धांत के।
वि० जिसका कोई उसूल या सिद्धांत न हो। सिद्धांतहीन।

बेएतबार—पुं० [फा०+अ०] [भाव० बे-एतबारी] अविश्वास।
वि० १. जिस पर विश्वास न किया जा सके। २ जो विश्वास न करता हो।

बेऐब—वि० [फा०+अ०] निर्दोष।

बेओंगी—स्त्री० [देश०] जुलाहो का कघी की तरह का एक औजार जिसे वे ताने के सूतों के बीच मे रखते हैं।

बेऔलाद—वि० [फा०+अ०] निःसंतान।

बेकति†—पुं०=व्यक्ति।

बेकदर—वि० [फा० बे+अ० कद्र] [भाव० बेकदरी] १. जिसकी कुछ भी कदर न हो। २. जो किसी की कदर न करता हो।

बेकदरा—वि०=बेकदर।

बेकदरी—स्त्री० [फा०] १. बेकदर होने की अवस्था या भाव। २. अनादर।

बेकरा†—पुं० [देश०] पशुओं का खुरपका नामक रोग। खुरहा।

बेकरार—वि० [फा० बे+अ० करार] [भाव० बेकरारी] १. बेचैन। विकल। २. परम उत्सुकता।

बेकरारी—स्त्री० [फा० बेक़रारी] १. बेकरार होने की अवस्था या भाव। बेचैनी। व्याकुलता। २. परम उत्सुकता।

बेकल—वि० [स० विकल] व्याकुल। विकल। बेचैन।

बेकली—स्त्री० [हि० बेकल+ई (प्रत्य०)] १. बेकल होने की अवस्था या भाव। बेचैनी। व्याकुलता। २. स्त्रियो का एक रोग जिसमें उनकी धरन या गर्भाशय अपने स्थान से कुछ हट जाता है और जिसमें रोगी को बहुत अधिक पीड़ा होती है। उदा०—मीर गुल से अब के रहने में हुई वह बेकली। टल गई का नाफदानी, पेडू पत्थर हो गया।—जान साहब।

बेकस—वि० [फा०] [भाव० बेकसी] १. निःसहाय। निराश्रय। २ दीन-हीन। २. कष्टग्रस्त।

बेकसूर—वि० [फा० बे+अ० कुसूर] [भाव० बेकसूरी] जिसका कोई कसूर न हो। निरपराध।

बेकहा—वि० [फा० बे+हि० कहना] [स्त्री० बेकही] जो किसी का कहना न मानता हो। किसी के कहने के अनुसार न चलनेवाला।

बेकानूनी—वि० [फा० बे+कानून] अवैध।

बेकाबू—वि० [फा० बे+अ० काबू] १. जो काबू में किया या वश मे लाया न जा सके। २ जिस पर किसी का काबू या वश न हो। अनियंत्रित। ३. निरंकुश।

बेकाम—वि० [फा० बे+हि० कम] १. जिसे कोई काम न हो। निकम्मा। निठल्ला। २. जिसमे कोई काम न निकल सके। रद्दी।
क्रि० वि० निरर्थक। व्यर्थ।

बेकायदा—वि० [फा० बे+अ० कायदा] जो कायदे अर्थात् नियम या विधान के विरुद्ध हो। अनियमित।

बेकार—वि० [फा०] [भाव० बेकारी] १ जो काम मे न लगा हुआ हो। २. जो काम न कर सकता या किसी काम में न आ सकता हो। निरर्थक। निकम्मा।

क्रि० वि० व्यर्थ। बे-फायदा।

बेकारा†—पु० [सं० बेकुरा=शब्द] किसी को जोर से बुलाने का शब्द। जैसे—अरे, हो आदि।

बेकारी—स्त्री० [फा०] बेकार होने की अवस्था या भाव। ऐसी स्थिति जिसमे आदमी या कुछ लोगो के हाथ में कोई काम, धन्धा या रोजगार न हो; और इसी लिए जिसकी आय या जीविका-निर्वाह का कोई साधन न हो। (अन्-एम्प्लॉयमेन्ट)

बेकूप†—वि० =बेवकूफ। उदा०—सबै स्वान बेकूप।—भगवत रसिक।

बेख—स्त्री० [फा०] जड। मूल।

†पु० १ वेष। २.=स्वाँग।

बेखटक—वि० [हिं० बे+हिं० खटका] बिना किसी प्रकार के खटके के। बिना किसी प्रकार की रुकावट या असमजस के। निस्सकोच।

अव्य०=बेखटके।

बेखटके—अव्य० [हिं० बेखटक] बिना आशंका या खटके के। फलत निर्भय होकर।

बे-खता—वि० [फा० बे+अ० खता=कुसूर] १ जिसने कोई खता या अपराध न किया हो। निरपराध। बेकसूर। २. जो कही खता न करे, अर्थात् कही न चूकनेवाला। अचूक। अमोघ। जैसे—बेखता निशाना लगाना।

बेखबर—वि० [फा० बे+खबर] [भाव० बेखबरी] १. जिसको किसी बात की खबर न हो। अनजान। नावाकिफ। २. जिसे कुछ भी खबर न हो। बेसुध। बेहोश। जैसे—सब लोग बेखबर सोये थे।

बेखबरी—स्त्री० [फा० बे०+अ० खबरी] १. बेखबर होगे की अवस्था या भाव। अज्ञानता। २. बेहोशी।

बेखुद—वि० [फा० बेखुद] [भाव० बेखुदी] जो आपे मे न हो। अपनी सुध-बुध भूला हुआ।

बेखुदी—स्त्री० [फा०] बेखुद होने की अवस्था या भाव। आपे मे न होना।

बेखुर—पु० [देश०] एक प्रकार का पक्षी जिसका शिकार किया जाता है।

बेखौफ—वि० [फा० बे+अ० खौफ] जिसे खौफ या भय न हो। निर्भय।

बेग—पु० [अ० बैग] कपड़े, चमड़े, प्लस्टिक आदि लचीले पदार्थों का कोई ऐसा थैला जिसमें चीजे रखी जाती हों और जिसका मुँह ऊपर से बंद किया जा सकता हो। थैला।

पु० [तु०] [स्त्री० बेगम] १ अमीर। धनवान्। २ नेता। सरदार। ३ मुगलो का अल्ल।

†पु०=वेग।

†क्रि० वि० वेगपूर्वक। जल्दी से।

बेगड़ी—पु० [देश०] १. हीरा काटनेवाला कारीगर। हीरा तराश। २ जौहरी। ३. नगीने बनानेवाला कारीगर। हक्काक।

बेगती—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की मछली।

बेगना*—अ० [हिं० वेग] १ वेगपूर्वक कोई काम करना। २ जल्दी करना या मचाना।

बेगम—स्त्री० [तु० बेग का स्त्री०] [बहु० बेगमात] १ भले घर की स्त्री। महिला। २ किसी बड़े नवाब, बादशाह या सरदार की पत्नी। ३ ताश का वह पत्ता जिस पर रानी या स्त्री का चित्र बना रहता है।

बे-गम—वि० [हिं० बे+अ० ग़म] जिसे किसी बात का ग़म या चिन्ता न हो। निश्चिन्त।

बेगम-फूली—पु० [तु० बेगम हिं० फूल+ई (प्रत्य०)] एक प्रकार का बढिया आम।

बेगम-बेलिया—पु० [अं० बिगनोलिया] एक प्रकार की लता जिसमें कई रगों के फूल लगते हैं।

बेगमा—स्त्री० 'हिं० 'बेगम' का सम्बोधन कारक मे रूप।

बेगमी—वि० [तु० बेगम+ई (प्रत्य०)] १ बेगम-सबधी। बेगम का। २. बेगमो के लिए उपयुक्त अर्थात् उत्तम। बहुत बढिया।

वि० [फा० बे+अ० गमी] निश्चितता। बेफिक्री।

पु० १ एक प्रकार का बढिया कपूरी पान। २ एक प्रकार का बढिया चावल। ३. एक प्रकार का पनीर जिसमे नमक कम होता है।

बेगर†—अव्य०=बगैर।

बेगरज—वि० [फा० बे+अ० गरज] [भाव० बेगरजी] जिसे कोई गरज या परवा न हो।

क्रि० वि० बिना किसी गरज, प्रयोजन या मतलब के। नि स्वार्थ रूप से।

बेगरजी—स्त्री० [फा० बे+अ० गरज+ई (प्रत्य०)] बेरगज होने की अवस्था या भाव।

†वि०=बेगरज। जैसे—बेगरजी नौकर, बेगरजी सैंया।

बेगरा†—वि० [?] १ अलग। २ दूर का।

अव्य० दूर।

बेगल—अव्य०=बगैर।

बेगला†—वि०, अव्य०=बेगरा।

बेगवती—स्त्री० [स० वेग+मतुप्,म=व, ङीष्] एक प्रकार का वर्णार्द्धवृत्त जिसके विषमपादों मे ३ सगण, १ गुरु और समपादो मे ३ भगण और २ गुरु होते हैं।

बेगसर—पु० [स० वेग√सृ (जाना)+अच्]। खच्चर। (डिं०)

बेगा—पु० [?] आत्मीय। 'पराया' का विपर्याय। उदा०—बेगा कै मुर्दई मिलत।—घाघ।

बेगानगी—स्त्री० [फा०] १. बेगाना होने की अवस्था या परायापन। २ अपरिचय।

बेगाना—वि० [फा० बेगाना] १ जो अपना न हो। गैर। पराया। २ जिससे आत्मीयता पूर्ण जान-पहचान, परिचय या सम्बन्ध न हो। ३. जो किसी काम या बात से अनजान या अपरिचित हो। ना-वाकिफ।

बेगार—स्त्री० [फा०] १ वह काम जो किसी से जबरदस्ती और बिना कुछ अथवा उचित पारिश्रमिक दिये कराया जाय। २ उक्त के आधार पर बिना किसी पारिश्रमिक या पुरस्कार की संभावना के चलता किया जानेवाला काम।

मुहा०—बेगार टालना=बिना चित्त लगाये कोई काम यो ही चलता करना। पीछा छुडाने के लिए कोई काम जैसे-तैसे पूरा करना।

३ ऐसा व्यर्थ और झगड़े का काम जिसका कोई अच्छा फल न हो। उदा०—नाहिं तो भव बेगारि महँ परिहौ छूटत अति कठिनाई रे।—तुलसी।

बेगारी—पु० [फा०] १ वह मजदूर जिससे बिना मजदूरी दिये जबरदस्ती काम लिया जाय। बेगार मे काम करनेवाला आदमी।

क्रि० प्र०—पकड़ना।
२. मन लगाकर काम न करनेवाला। काम चलता करनेवाला।
स्त्री०=बेगार।
बेगि—क्रि० [सं० वेग] १. जल्दी से। शीघ्रतापूर्वक। २ चटपट। तुरत।
बेगुन†—पु०=बैंगन।
वि०=विगुण (गुण रहित)।
बेगुनाह—वि० [फा०] [भाव० बेगुनाही] १. जिसने कोई गुनाह न किया हो। जिसने कोई पाप न किया हो। निष्पाप। २. जिसने कोई अपराध न किया हो। निरपराध।
बेगुनी—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की सुराही।
वि०=विगुण (गुण रहित)।
बेगैरत—वि० [फा० बे०+अ० ग़ैरत] [भाव० बेगैरती] निर्लज्ज।
बेचक—पु० [हिं० बेचना] बेचनेवाला। बिक्री करनेवाला। विक्रेता।
बेचना—स० [सं० विक्रय] १ अपनी कोई चीज या सपत्ति किसी से दाम लेकर उसे दे देना।
सयो० क्रि०—डालना।—देना।
मुहा०—**बेच खाना**=पूरी तरह से रहित, वंचित या हीन हो जाना। जैसे—तुमने तो लाज-शरम बेच खाई है।
२. स्वार्थ-सिद्धि के उद्देश्य से अपने किसी गुण को खो या छोड़ बैठना। जैसे—ईमान या धर्म बेचना।
बेचवाना—स०=बिकवाना।
बेचवाल—पु० [हिं० बेचना+वाला (प्रत्य०)] माल या सौदा बेचनेवाला। 'लिवाल' का विपर्याय।
बेचाना—स०=बिकवाना।
बेचारगी—स्त्री० [फा०] बेचारा होने की अवस्था या भाव।
बेचारा—वि० [फा० बेचार] [भाव० बेचारगी] [स्त्री० बेचारी] १. जिसके लिए कोई चारा (उपाय या साधन) न रह गया हो। २. जो दीन और निःस्सहाय हो। जिसका कोई साथी या अलवब न हो। गरीब। दीन।
बेचिराग—वि० [फा० बे+अ० चिराग] १ (स्थान) जहाँ दीया तक न जलता हो, अर्थात् उजड़ा हुआ। २. निःसतान। बे-औलाद।
बेची—स्त्री० [हिं० बेचना] १. बिक्री। विक्रय। २ बेचने के सम्बन्ध में लिखा हुआ लेख। जैसे—इस हुडी पर बेची तो है ही नही।
बेचू—पु० [हिं० बेचना] बेचनेवाला। विक्रेता।
बेचैन—वि० [फा०] जिसे किसी प्रकार चैन न पड़ता हो। व्याकुल। विकल। बेकल।
बेचैनी—स्त्री० [फा०] बेचैन होने की अवस्था या भाव। विकलता। व्याकुलता। बेकली।
बेजड़—वि० [फा० बे+हिं० जड़] जिसकी कोई जड़ या बुनियाद न हो। जिसके मूल मे कोई तत्त्व या सार न हो। जो यों ही मन से गढ़ या बना लिया गया हो। निर्मूल।
बेजबान—वि० [फा० बे+जबान] [भाव० बेजबानी] १. जो कुछ कहना न जानता हो। २. जो किसी बात की शिकायत न करके सब कुछ चुपचाप सह लेता हो। ३. जो दीनता या नम्रता के कारण किसी प्रकार का दुःख या विरोध न करे। दीन। गरीब।
बेजबानी—स्त्री० [फा०] १. बेजबान होने की अवस्था या भाव। २ चुप रहना। ३. शिकायत न करना।
बेजर—वि० [फा० बेजर] [भाव० बेजरी] धनहीन। निर्धन।
बेजा—वि० [फा०] जो उचित या संगत न हो।
बेजान—वि० [फा०] १. जिसमें जान न हो। निर्जीव। २. मरा हुआ। मृत। ३. जिसमें कुछ भी दम या शक्ति न हो। बहुत ही अशक्त या दुर्बल।
बे-जाब्तगी—स्त्री० [फा० बे+अ० जाब्तगी] बेजाब्ता अथवा अनियमित या नियमविरुद्ध होने की अवस्था या भाव।
बेजाब्ता—वि० [फा० बे+अ० जाब्ता] [भाव० बेजाब्तगी] जो जाब्ते के अनुसार न हो। कानून या नियम आदि के विरुद्ध। अवैध।
बेजार—वि० [फा० बेजार] [भाव० बेजारी] १ जो किसी बात से बहुत तग आ गया हो। जिसका चित किसी बात से बहुत दुखी हो चुका हो। जैसे— आप तो जिंदगी से बेजार हुए जाते हैं। २. बहुत ही अप्रसन्न, खिन्न या नाराज। ३. विमुख। पराङ्मुख।
बेजुर्म—वि० [फा०+अ०] जिसने कोई जुर्म या अपराध न किया हो। निरपराध।
बेजू—पु० [अ० बैजर] डेढ़ दो हाथ लबा एक प्रकार का जगली जानवर जो प्रायः सभी गरम देशो मे पाया जाता है।
बेजोड़—वि० [फा० बे+हिं० जोड़] १ जिसमे जोड़ न हो। जो एक ही टूकड़े का बना हो। अखड। २. जिसके जोड़ या मुकाबले का और कोई न हो। अद्वितीय। अनुपम।
बेझ†—पु० दे० 'बेझा'।
बेझड़—पु० [हिं० मेझरना=मिलाना] एक मे मिले हुए कई तरह के अन्न। जैसे—गेहूँ, चने और जौ का बेझड़।
बेझना†—स०=बेधना।
बेझरा†—पुं०=बेझड़।
बेझा—पु० [सं० वेध] निशाना। लक्ष्य।
बेट—स्त्री०=बेंट।
बेटकी—स्त्री० [हिं० बेटा] १ बेटी। २ पुत्री। ३. कन्या। लड़की।
बेटला†—पु० [स्त्री० बेटली] =बेटा।
बेटवा†—पु०=बेटा।
बेटा—पु० [सं० बटु=बालक] [स्त्री० बेटी] पुत्र। सुत। लड़का।
पद—**बेटेवाला**=वर का पिता अथवा वरपक्ष का और कोई बड़ा आदमी।
बेटा-बेटी—पु० [हिं० बेटा] बाल-बच्चे। औलाद।
बेटी—स्त्री० [स०] १ लड़की। पुत्री।
पद—**बेटी का बाप**=(क) वैसा ही दीन और नम्र जैसा विवाह के समय वधू का पिता होता है। (ख) सब प्रकार से दीन-हीन और विवश।
बेटीवाला=वधू का पिता अथवा वधू-पक्ष का और कोई बड़ा आदमी।
मुहा०—**बेटी देना**—अपनी पुत्री का किसी के साथ विवाह करना।
उदा०—जिसने बेटी दी उसने सब कुछ दिया। (कहा०)
बेटौना†—पु०=बेटा।
बेट्टा—पुं० [देश०] एक प्रकार का भैंसा जो मैसूर देश में होता है।
†पु०=बेटा (पुत्र)
बेठ—पुं० [देश०] १. एक प्रकार की ऊसर जमीन जिसे बीहड़ भी कहते

हैं। २. ऋण के रूप में लिया हुआ वह पेशगी धन जो मजदूर, कारीगर आदि धीरे धीरे कुछ काम करके या सामान देकर चुकाते हैं।

मुहा०—**बेठ भरना**=काम करके या सामान देकर उक्त प्रकार का ऋण चुकाना। उदा०—नित उठ कोरिया बेठ भरत है। . .।—कबीर।

बेठन—पु०[सं० वेष्ठन] वह वस्त्र जो किसी चीज को धूल, मिट्टी आदि से सुरक्षित रखने के उद्देश्य से उस पर लपेटा जाता है।

पद—**पोथी का बेठन**=(क) जो कुछ भी पढ़ा-लिखा न हो। (ख) जो पढ़ा-लिखा होने पर भी किसी काम का न हो।

बेठिकाने—वि०[फा० बे+हिं० ठिकाना] १ जो अपने स्थान पर न हो। स्थानच्युत। २ जिसका कोई ठौर-ठिकाना न हो। ३ जिसका कोई सिर-पैर न हो। ४ निरर्थक। व्यर्थ।

अव्य० ठिकाने अर्थात् उपयुक्त या निश्चित स्थान पर न होकर किसी अन्य स्थान पर। अनुपयुक्त अवसर या स्थान पर।

बेड़—पु०[हिं० बाढ़] खेतो या वृक्षो के चारो ओर लगाई हुई बाढ। मेड।

पुं०[हिं० बीड़] नगद रुपया। सिक्का। (दलाल)

पु०[?] [स्त्री० बेड़नी, बेड़िन] नटों आदि के वर्ग की एक छोटी जाति जो गाने-बजाने का पेशा करती है।

बेड़ना—स०[हिं० बेड़+ना (प्रत्य०)] नये वृक्षो आदि के चारों ओर उनकी रक्षा के लिए छोटी दीवार आदि खड़ी करना। थाला बाँधना। मेड या बाढ़ लगाना।

स० [स० विडवन?] तोडना-फोडना नष्ट-भ्रष्ट करना। उदा०—बिजड़ा मुहे बेडते बलभद्र।—प्रिथीराज।

बेड़नी—स्त्री०[हिं० बेड] बेड जाति की स्त्री जो प्राय देहातों मे गाने-बजाने का पेशा करती है।

बेड़ा—पु०[स० वेष्ट] १. बडे लट्ठो, लकडियों या तख्तों आदि को एक मे बाँधकर बनाया हुआ ढाँचा जिस पर बाँस का टट्टर बिछा देते हैं और जिस पर बैठकर नदी आदि पार करते है। तिरना।

मुहा०—**बेड़ा डूबना**=विपत्ति मे पड़कर पूर्ण रूप से विनष्ट होना। **(किसी का) बेड़ा पार करना या लगाना**=किसी को सकट से पार लगाना या छुड़ाना। विपत्ति के समय सहायता करके किसी का काम पूरा कर देना या रक्षा करना।

२ बहुत सी नावो या जहाजो आदि का समूह। जैसे—उन दिनो भारतीय महासागर मे अमरीकी बेड़ा आया हुआ था। ३. नाव। (डि०) ४. झुड। समूह। (पूरब)

मुहा०—**बेड़ा बाँधना**=बहुत से आदमियों को इकट्ठा करना। लोगो को एकत्र करना।

वि०[हिं० आडा का अनु० या सं० बलि=टेढ़ा] १. जो आँखों के समानांतर दाहिनी ओर से बाईं ओर अथवा बाईं ओर से दाहिनी ओर गया हो। आड़ा। २ कठिन। मुश्किल। विकट। जैसे—बेडा काम।

बेड़िया—पु०[देश०]बाँस की कमाचियों की बनी हुई एक प्रकार की टोकरी जो थाल के आकार की होती है और जिससे किसान लोग खेत सीचने के लिए तालाब से पानी निकालते हैं।

बेड़िन†—स्त्री० =बड़नी।

बेड़ी—स्त्री० [स०वलय] लोहे के कड़ों की जोड़ी या जंजीर जो कैदियों या पशुओं आदि को इसलिए पहनाई जाती है जिसमें वे स्वतन्त्रतापूर्वक घूम-फिर न सकें। निगड।

क्रि० प्र०—डालना।—देना।—पड़ना।—पहनना।—पहनाना।

२ बाँस की टोकरी जिसके दोनों ओर रस्सी बँधी रहती है और जिसकी सहायता से नीचे से पानी उठाकर खेतों में डाला जाता है। ३ साँप काटने का एक इलाज जिसमे काटे हुए स्थान को गरम लोहे से दाग देते हैं।

स्त्री०[हिं० बेड़ा का स्त्री० अल्पा०] १. नदी पार करने का टट्टर आदि का बना हुआ बेडा। २ नाव। (पश्चिम)

बेडौल—वि०[हि० बे+डौल=रूप] १ जिसका डौल या रूप अच्छा न हो। भद्दा। २ जो अपने स्थान पर उपयुक्त न जान पड़े। बेढगा।

बेढंग†—वि० =बेढगा।

बेढंगा—वि०[हिं० बे+हिं० ढग+आ (प्रत्य०)] १ जिसका ढग ठीक न हो। बुरे ढगवाला। २. जो ठीक क्रम या प्रकार मे लगाया, रखा या सजाया न गया हो। बेतरतीब। ३ कुरूप। भद्दा। भोड़ा।

बेढंगापन—पु०[हिं बेढगा+पन (प्रत्य०)] बेढगे होने की अवस्था या भाव।

बेढ़—पुं०[?] १ नाश। बरबादी। २ बोया हुआ वह बीज जिसमे अंकुर निकल आया हो।

स्त्री० वृक्षो आदि के चारों ओर लगा हुआ घेरा। बाढ।

बेढ़ई—स्त्री०[हिं० बेढ़ना] वह रोटी या पूरी जिसमे दाल, पीठी आदि कोई चीज भरी हो। कचौडी।

बेढ़न—पु०[हिं० बेढना] वह जिससे कोई चीज घेरी हुई हो। बेठन। घेरा।

बेढ़ना—स०[स० वेष्टन] १. वृक्षो या खेतों आदि को, उनकी रक्षा के लिए चारो ओर से टट्टी बाँधकर, काँटे बिछाकर या और किसी प्रकार घेरना। रूँधना। २ चौपायों को घेरकर हाँक ले जाना।

बेढ़नी†—स्त्री०=बेड़नी।

बेढ़ब—वि०[हिं० बे+ढब] १. जिसका ढब या ढग अच्छा या ठीक न हो। २ भद्दा। भोडा।

क्रि० वि० १ बुरी तरह से। अनुचित या अनुपयुक्त रूप से। २. अनावश्यक या असाधारण रूप से।

बेढ़ा—पु०[हिं० बेढना=घेरना] १. हाथ मे पहनने का एक प्रकार का कडा। २ घर के आसपास वह छोटा सा घेरा हुआ स्थान जिसमें तरकारियाँ आदि बोई जाती हो।

बेढ़ाना—स०[हिं०बेढना का प्रे०] १. घेरने का काम दूसरे से कराना। घिरवाना। २ ओढना या ढाँकना।

बेढुआ—पु०[देश०] गोल मेथी।

बेणीफूल—पु० दे० 'सीसफूल'।

बेत†—पु०=बेत।

बेतकल्लुफ—वि०[फा० बे+अ० तकल्लुफ़] [भाव० बेतकल्लुफी] जो तकल्लुफ अर्थात् दिखावटी ऊपरी शिष्टचार का विशेष ध्यान न रखता हो। सीधा सादा और सच्चा व्यवहार करनेवाला, और मन की बात स्पष्ट रूप मे कहनेवाला।

क्रि० वि० १. बिना किसी प्रकार के तकल्लुफ या दिखावटी शिष्टाचार के। २ निःसकोच। बेधड़क।

बे-तकल्लुफी—स्त्री०[फा०] बेतकल्लुफ होने की अवस्था या भाव। सरलता। सादगी।

बे-तकसीर—वि०[फा० बे+अ० तक़सीर] जिसने कोई तकसीर या अपराध न किया हो। निरपराध। निर्दोष। बेगुनाह।

बेतना—अ०[?] जान पड़ना।

बे-तमीज—वि०[फा० बे+अ० तमीज] [भाव० बेतमीजी] जिसे तमीज न हो। अशिष्ट और उद्दड।

बे-तरह—क्रि० वि०[फा० बे+अ० तरह] १. विकट रूप से। २. असाधारण रूप से। बहुत अधिक। जैसे—आज तो बे-तरह पानी बरसा।

बे-तरीका—वि०[फा० बे+अ० तरीका] जो सही ढग से न हुआ हो। क्रि० वि० बिना तरीके या ठीक ढग के।

बे-तरतीब—वि०[फा० बे+अ० तर्तीब] [भाव० बेतरतीबी] १ जो किसी क्रम से न रखा हुआ हो। क्रमहीन। २. अस्त-व्यस्त।

बेतला—वि०[?] [स्त्री० बेतली] अभागा।

बेतवा—स्त्री०[स० वेत्रवती] बुदेलखड की एक नदी।

बे-तहाशा—क्रि० वि०[फा० बे+अ० तहाशा] १. अकस्मात् और तेजी से। अचानक और वेगपूर्वक। २ बहुत घबराकर या बिना सोचे-समझे।

बे-ताब—वि०[फा०] [भाव० बेताबी] १. जिसमे धैर्य या सब्र न हो। २ विकल। व्याकुल। ३ परम उत्सुक। ४. अशक्त।

बे-ताबी—स्त्री०[फा०] १. बेताब होने की अवस्था या भाव। २ विकलता। ३. परम उत्सुकता।

बेताल—पु०[स० वैतालिक] भाट। बदी।
पु०=वैताल।

बे-ताला—वि० [फा० बे+हिं० ताल] [स्त्री० बेतालो] १. जो ठीक ताल के हिसाब से गाता या बजाता न हो। २. (गाना या बजाना) जो ताल के हिसाब से ठीक न हो। (सगीत)

बे-तुका—वि०[फा० बे+हिं० तुका][स्त्री० बेतुकी] १ (पद्यमय रचना) जिसकी तुके न मिलती हों। अत्यानुप्रास-हीन। २ (बात) जो अवसर, प्रसग आदि के विचार से बहुत ही अनुपयुक्त तथा महत्त्वहीन हो। **मुहा०—बेतुकी हाँकना**= बेढगी बात कहना। ऐसी बात कहना जिसका कोई सिर-पैर न हो।
३. (व्यक्ति) जो अवसर-कुअवसर का ध्यान न रखकर बेढगे या भद्दे काम करता अथवा बाते कहता हो। ४. (पदार्थ) जो ठीक ढग या ठिकाने का न हो। जैसे—बेतुकी पगडी।

बेतुका छंद—पु०[हिं० बेतुका+स० छद] ऐसा छद जिसके तुकात आपस में न मिलते हों। अमिताक्षर छद।

बेतौर—क्रि० वि० [फा० बे+अ० तौर] बुरी तरह से। बेढंगेपन से। बेतरह।
वि० जिसका तौर-तरीका या रंग-ढग ठीक न हो।

बेद—पुं०१. =वेद। २. बेंत। ३ =मुश्क बेद।

बेदक—पुं०[सं० वैदिक] हिंदू। (डिं०)

बे-दखल—वि०[फा० बे+अ० दख़्ल] [भाव० बेदखली] जिसका किसी चीज पर दखल अर्थात् कब्जा न रह गया हो। अधिकार-च्युत।

बे-दखली—स्त्री०[फा० बे+अ० दख़्ली] दखल या कब्जे का हटाया जाना अथवा न होना। अधिकार मे न रहने देने की अवस्था या भाव।

बेदन—पु०[स० वेदन] १. पशुओ का एक प्रकार का सक्रामक भीषण ज्वर जिसमें रोगी पशु काँपने लगता है, और उसे पाखाने के साथ आँव निकलती है। २. दे० 'वेदन'।

बेदना—स्त्री०=वेदना।

बे-दम—वि०[फा०] १. जिसमे जीवनी शक्ति न हो अथवा नही के समान हो। २ मुरदा। मृतक। ३. जिसकी जीवनी-शक्ति बहुत कुछ नष्ट हो चुकी हो। जर्जर। बोदा।

बेद-मजनूं—पु०[फा०] एक प्रकार का वृक्ष जिसकी शाखाएँ बहुत झुकी हुई रहती है और जो इसी कारण बहुत मुरझाया और ठिठुरा हुआ जान पड़ता है।

बेद-माल—पु०[देश०] लकड़ी की वह तख्ती जिस पर रगड़कर सिकलीगर औजार चमकाते हैं।

बेद-मुश्क—पु०[फा०] एक प्रकार का वृक्ष जो पश्चिम भारत और विशेषतः पजाब मे अधिकता से होता है।

बेदरी—वि०=बीदरी।

बे-दर्द—वि०[फा०] [भाव० बेदर्दी] जो दूसरो के दुःख का अनुभव न करता हो। दूसरो के कष्टो को देखकर दुःखी न होनेवाला। कठोर हृदय। पाषाण हृदय।

बे-दर्दी—स्त्री०[फा०] बेदर्द होने की अवस्था या भाव। निर्दयता। बेरहमी। कठोरता।
वि० =बेदर्द।

बेद-लैला—पु०[फा०] एक प्रकार का पौधा जिसमे सुन्दर फूल लगते हैं।

बेदवा—पु०[स० वेद] वेदो का ज्ञाता और अनुयायी। (उपेक्षासूचक)

बेदाग—वि० [फा० बेदाग़] १. जिसमे या जिसपर कोई दाग या धब्बा न हो। साफ। २ (व्यक्ति, उसका चरित्र या स्वभाव) जिसमे कोई ऐब या दोष न हो। बे-ऐब। निर्दोष। ३. निरपराध। बेकसूर।
क्रि० वि० बिना किसी प्रकार की त्रुटि या दोष के। जैसे—बेदाग निशाना लगाना।

बेदाना—पु०[हिं० बिहीदाना या फा० बे+दाना] १ पतले छिलकेवाला एक प्रकार का बढ़िया अनार जिसके दानो मे मिठास अधिक होती है। २ बिहीदाना नामक फल। ३ उक्त फल के बीज जो रेचक और ठंढे होते हैं। ४ दारु-हल्दी। ५ एक प्रकार का छोटा शहतूत। ६. बहुत छोटे दानोंवाली बुँदिया नामक मिठाई।
†वि०=नादान (नासमझ)।
वि०[फा० बेदान] (फल) जिसमे बीज न हो। जैसे—बेदाना अमरूद।

बे-दाम—वि०[फा०] बिना दाम का। जिसका कुछ मूल्य न दिया गया हो।
क्रि० वि० बिना दाम या मूल्य दिये।
† पु०=बादाम।

बे-दार—वि०[फा०] [भाव० बेदारी] जो जाग्रत तथा सचेत हो। जागा हुआ।

बेदारी—स्त्री०[फा०] जाग्रत और सचेत होने की अवस्था या भाव। जागृति।
बेदिल—वि०[फा०] [भाव० बेदिली] उदास। खिन्न।
बेदी*—स्त्री०=वेदी।
*पु० [सं० वेद] वेदों पर श्रद्धा रखनेवाला व्यक्ति।
बेध—पुं०[सं० वेध] १ छेद। २ मोती, मूँगे आदि मे किया हुआ छेद। ३. दे० 'वेध'।
बे-धड़क—क्रि० वि० [फा० बे+हिं० धड़क] १. भय, मर्यादा अथवा सकोच की परवाह न करते हुए। २. बिना किसी आशा या खटके या भय के। ३ बिना किसी बात की चिन्ता या परवाह किये हुए। ४. बिना कुछ सोचे-समझे हुए।
वि० १. जिसे किसी प्रकार का सकोच या खटका न हो। निर्द्वंद्व। २. जिसे किसी प्रकार की आशका या भय न हो।
बेधना—स०[सं० वेधन] १. किसी नुकीली चीज की सहायता से छेद करना। सूराख करना। छेदना। भेदना। जैसे—मोती बेधना। २. शरीर पर किसी प्रकार का क्षत या घाव करना।
बे-धर्म—वि०[फा० बे+सं० धर्म] [भाव० बेधर्मी] १ जिसे अपने धर्म का ध्यान न हो। २. जो अपना धर्म छोड़ चुका हो। धर्मच्युत।
बेधिया—पुं०[सं० वेध] अंकुश।
वि० बेधने या छेदनेवाला।
बेधी—वि०=वेधी।
*स्त्री०=वेदी।
बेधीर—वि०=अधीर।
बेनंग—पुं०[देश०] एक प्रकार का छोटा पहाड़ी बाँस जो प्रायः लता के समान होता है।
बेन—पुं०[सं० वेणु] १. वंशी। मुरली। बाँसुरी। बाँस। ३. सँपेरों के बजाने की बीन। महुअर। ४ एक प्रकार का वृक्ष। ५ दे० 'वेणु'।
पुं० [अं० वेन] एक प्रकार की झडी जो जहाज के मस्तूल पर लगा दी जाती है और जिसके फहराने से यह पता चलता है कि हवा का रुख किधर है। (लश०)
पुं०[अ० विंड] वायु। हवा। (लाश०)
बेनउर—पुं०=बिनौला।
बे-नजीर—वि०[फा० बे+अ० नजीर] अद्वितीय। अनुपम।
बेनट—स्त्री०[अं० बायोनेट] लोहे की वह छोटी किरच जो सैनिको की बदूक के अगले सिरे पर लगी रहती है। सगीन।
बेनवर†—पुं०=बिनौला।
बे-नसीब—वि०[फा०+अ०] [भाव० बेनसीबी] अभागा। भाग्यहीन।
बेना—पुं०[सं० वीरण] खस।
पुं०[सं० वेणु] १. बाँस। २. बाँस का बना हुआ पखा।
पुं०[सं० वेणी] एक गहना जो माथे पर बेंदी के बीच मे पहना जाता है।
पद—बेना-बंदी=बेना और बेंदी नाम के गहने जो प्रायः एक साथ पहने जाते हैं।
बेनागा—क्रि० वि० [फा० बे+अ० नागा] बिना नागा किये। निरंतर। लगातार। नित्य।
बे-नाम—वि०[फा०] १. जिसका कोई नाम न हो। २. अप्रसिद्ध।
बे-नामी—वि०[हिं० बे+नाम] (सम्पत्ति) जिस पर उसके वास्तविक स्वामी ने अपना नाम न चढ़वाकर अपने किसी अधीनस्थ या दूसरे विश्वसनीय आदमी का नाम चढ़वा रखा हो।
बे-नियाज—वि०[फा०] [भाव० बेनियाजी] निःस्पृह।
बेनी—स्त्री० [सं० वेणी] १ स्त्रियो की चोटी। २. किवाड़ के एक पल्ले मे लगी हुई एक छोटी लकड़ी जो दूसरे पल्ले को खुलने से रोकती है। ३. एक प्रकार का धान जो भादों के अत या कुआर के आरभ में तैयार होता है। ४. दे० 'त्रिवेणी'।
बेनी-पान—पुं०=बेंदी (गहना)।
बेनु—स्त्री० १.=बेन। २. वेणु।
बेनुली†—स्त्री०[हिं० बिंदली] जाँते या चक्की मे वह छोटी सी लकड़ी जिसके दोनो सिरों पर जोती रहती है।
बेनौटी—वि०[हिं०बिनौला] कपास के फूल की तरह हलके पीले रंग का। कपासी।
पुं० उक्त प्रकार का रंग।
बेनौरा—पुं०=बिनौला।
बेनौरी†—स्त्री०[हिं० बिनौला] ओला।
बेपरद—वि०[फा० बेपर्द] १. जिसपर कोई आवरण न हो। २ (स्त्री) जिसने परदा न किया हो अथवा बुरका न पहना हो। ३ नगा। नग्न।
क्रि० वि० बिना किसी प्रकार के परदे (आवरण या ओट) के। खुल्लम-खुल्ला।
बे-परदगी—स्त्री०[फा० बे-पर्दगी] १ बे-परदा होने की अवस्था या भाव। २. स्त्री का परदे मे न रहना। बिना परदा किये तथा निस्सकोच भाव से स्त्रियों का पर-पुरुषों के सामने आना।
बे-परवा—वि०[फा० बेपर्वा] [भाव० बेपरवाई] १ जिसे कोई परवा न हो। बेफिक्र। २ जो किसी बात की परवा न करता हो। ला-परवाह। ३ बहुत बड़ा उदार और दानी।
बेपर्द—वि०=बेपरद।
बे-पाय†—वि०[हिं० बे+सं० उपाय] जिसे घबराहट के कारण कोई उपाय न सूझे। भौचक। हक्काबक्का। उदा०—पाय महावर देह को, आप भई बे-पाय।—बिहारी।
बेपार—पुं०[देश०]एक प्रकार का बहुत ऊँचा वृक्ष जो हिमालय की तराई मे ६००० से ११००० फुट की ऊँचाई तक अधिकता से पाया जाता है। फेल।
†पुं०=व्यापार।
†वि०=अपार।
बेपारी†—पुं०=व्यापारी।
बेपीर†—वि०[फा० बे+हिं० पीर=पीड़ा] १. जिसके हृदय मे किसी के दुःख के लिए सहानुभूति न हो। दूसरों के कष्ट को कुछ न समझनेवाला। २. निर्दय। बेरहम।
बेपेंदा—वि०[हिं० बे+पेंदा] [स्त्री० बेपेंदी] जिसमे पेंदा न हो और इसी कारण जो इधर-उधर लुढ़कता हो।
पद—बेपेंदी का लोटा=व्यक्ति जो अपने किसी निश्चय पर स्थिर न रहता हो बल्कि दूसरो की बातें सुन-सुनकर अपना निश्चय बारबार बदलता रहता हो।

बे-फायदा—वि०[फा० बे-फ़ाइद:] जिससे कोई फायदा न हो। जिससे कोई लाभ न हो सके। व्यर्थ का।

क्रि० वि० बिना किसी फायदे या लाभ के। निरर्थक। व्यर्थ।

बे-फिकरा†—वि०[फा० बे-फ़िक्र] १. जिसे कोई फ़िक्र या चिन्ता न हो। २. अपनी ही मौज में रहनेवाला तथा घर-बार की कुछ भी चिन्ता न रखनेवाला। ३. आवारा और निकम्मा।

बे-फिकरी—स्त्री०[फा० बे-फिक्री] बेफिक्र होने की अवस्था या भाव। निश्चिंतता।

बे-फिक्र—वि० [फा० बेफिक्र] [भाव०] [भाव० बे-फिकरी] जिसे कोई फिक्र न हो। निश्चिन्त। बेपरवा।

बेबस—वि०[स० विवश] [भाव० बेबसी] १. जिसका कुछ वश न चले। लाचार। २ पर-वश। पराधीन।

बे-बसी—स्त्री०[हिं० बेबस+ई (प्रत्य०)] १ बेबस होने की अवस्था या भाव। लाचारी। मजबूरी। विवशता। २. पर-वशता।

बे-बाक़—वि०[फा० बे+अ० बाक़] १. (देय) जो चुका दिया गया हो, और इसी लिए जिसका कुछ भी अंश बाकी न रह गया हो। चुकता किया हुआ। चुकाया हुआ। २ ऋणमुक्त।

वि० [फा०] [भाव० बेबाकी] निडर। निर्भय।

बेबाकी—स्त्री०[फा० बेबाकी] ऋण का चुकता होना। पूर्ण परिशोध।

बे-बुनियाद—वि०[फा० बेबुन्याद] १ जिसकी कोई बुनियाद या जड़ न हो। निर्मूल। बेजड़। २ आधार-रहित।

बे-ब्याहा—वि०[फा० बे+हिं० ब्याहा] [स्त्री० बे-ब्याही] जिसका विवाह न हुआ हो। अविवाहित। कुँआरा।

बे-भाव—क्रि० वि०[फा० बे+हिं० भाव] बिना किसी भाव (गिनती या हिसाब) के। बेहिसाब।

वि० बहुत अधिक। बेहद।

मुहा०—बेभाव की पड़ना (क) बहुत अधिक मार पड़ना। (ख) बहुत अधिक भर्त्सना होना।

बेम—स्त्री० [देश०] जुलाहों की कंघी। बय। बैसर।

बे-मग़ज—वि०[फा० न+अ०मग़्ज़] निर्बुद्धि।

बेमजगी—स्त्री०[फा० बेमजगी] बेमजा होने की अवस्था या भाव।

बेमजा—वि०[फा० बेमज़.] १ (खाद्य पदार्थ) जिसमे कोई स्वाद न हो। नीरस और फीका। २. (स्थिति) जिसके रंग में भंग हो गया हो। ३. आनंद-रहित।

बे-मन—क्रि० वि०[फा० बे+हिं० मन] बिना मन लगाये। बिना दत्त-चित्त हुए।

वि० (काम मे) जिसका मन न लगता हो या न लग रहा हो।

बे-मरम्मत—वि०[फा०+अ०] [भाव० बेमरम्मती] जिसकी मरम्मत होने को हो, पर न हुई हो। टूटा-फूटा और बिगड़ा हुआ।

बे-मरमती—स्त्री०[फा०] बेमरम्मत होने की अवस्था या भाव।

†वि० बेमरम्मत।

बेमाई†—स्त्री०=बिवाई (रोग)।

बेमारी—स्त्री०=बीमारी।

बेमालूम—क्रि० वि०[फा०] ऐसे ढंग से जिसमें किसी को मालूम न हो। बिना किसी को पता लगे।

वि० जो ऊपर से देखने पर मालूम न पड़ता हो।

बेमुख†—वि०=विमुख।

बे-मुनासिब—वि०[फा०] जो मुनासिब न हो। अनुचित। ना-मुनासिब।

बे-मुरव्वत—वि०[फा०] जिसमें मुरव्वत न हो। जिसमें शील या संकोच का अभाव हो। तोता-चश्म।

बे-मुरव्वती—स्त्री०[फ़ा०] बेमुरव्वत होने की अवस्था या भाव।

बे-मेल—वि०[फा० बे+हिं० मेल] जिसका किसी से मेल न बैठता हो। अनमेल।

बे-मौका—वि०[फा० बेमौका] जो अपने मौके पर न हो। जो अपने उपयुक्त अवसर या स्थान पर न हो।

क्रि० वि० बिना मौके या उपयुक्त अवसर का ध्यान रखे हुए।

पु० मौके अर्थात् उपयुक्त अवसर का अभाव।

बे-मौत—अव्य०[फा० बे+हिं० मौत] बिना मौत आये ही। जैसे—हम तो बे-मौत मर गए।

बे-मौसिम—वि०[फा०] १. जिसका मौसिम न हो। २. मौसिम न होने पर भी होनेवाला।

बेयरा†—पुं०=बेरा।

बेरंग—वि०[फा०] निर्लज्ज।

वि० [अं० बियरिंग] (डाक द्वारा भेजा हुआ वह पत्र) जिस पर टिकट लगा ही न हो अथवा कम मूल्य का लगा हुआ हो।

बेर—पु०[सं० बदरी] १. एक प्रसिद्ध पेड़ जिसके काड रेखा युक्त और विदीर्ण होते हैं, पत्र गोल, कँटीदार तथा वक्र, फल हरे तथा पकने पर पीले होते हैं। २ उक्त के फल जिनमें लम्बोतरी या गोल गुठली भी होती है।

†स्त्री० [सं० वेला, हिं० वार] १. बार। दफा। २. देर। विलंब।

बेर-झरी—स्त्री०[हिं० बेर+झड़ी?] झड़बेरी। जंगली बेर।

बेरजा—पु०=बिरोजा।

बेरवा—पु०[देश०] कलाई पर पहनने का एक प्रकार का कड़ा।

†पु०=ब्योरा (विवरण)।

बेरस—वि०[फा० बे+हिं० रस] १. जिसमें रस का अभाव हो। नीरस। रस-हीन। फीका २. जिसमें कुछ स्वाद न हो। ३. जिसमें कोई आनन्द या मजा न हो।

बे-रसना†—स०[सं० विलसन] १. विलास करना। २. भोगना।

बेर-हड्डी—स्त्री०[बेर? +हिं० हड्डी] घुटने के नीचे की हड्डी में का उभार।

बे-रहम—वि०[फा० बेरहम] [भाव०] जिसके हृदय में रहम अर्थात् दया न हो। निर्दय। निष्ठुर।

बेरहमी—स्त्री०[फा०] बेरहम होने की अवस्था या भाव। निर्दयता। निष्ठुरता।

बेरा—पुं०[सं० वेला] १. समय। वक्त। बेला। २. प्रभात का समय। तड़का।

पुं०[हिं० मेझरा?] एक में मिला हुआ जौ और चना। बेरी।

†पुं०=बेड़ा।

पु०[अं० बेअरर=वाहक] चपरासी, विशेषतः साहब लोगों का

वह चपरासी जिसका काम चिट्ठी-पत्री, समाचार आदि पहुँचाना और ले आना आदि होता है।

बे-राग—वि० [फा० बे+स० राग] जिसमे किसी प्रकार का राग या प्रवृत्ति न हो। राग-रहित। उदा०—कौतुक देखत फिरेउ बेरागा। —तुलसी।
†पु० - बैराग्य।

बेरादरी†—स्त्री०=बिरादरी।

बेराम†—वि० [हिं० बे+आराम] बीमार। रोगी।

बेरामी—स्त्री० [हिं० बे+आरामी] बीमारी। रोग।

बेरास*—पु०—विलास।

बे-राह—वि० [फा०] गलत या बुरे रास्ते पर चलनेवाला। पथभ्रष्ट।

बेरिआ†—स्त्री० [स० वेला=समय] बेला। समय।

बेरियाँ—स्त्री० [हिं० बेर] समय। वक्त। काल। बेला।

बेरी—स्त्री० [हिं० बेर (फल)] १ हिमालय में होनेवाली एक प्रकार की लता। इसे 'मुरकुल' भी कहते है। २ बेर का छोटा वृक्ष।
स्त्री० [?] एक मे मिली हुई तीसी और सरसो।
स्त्री० [हिं० बार=दफा] १. उतना अनाज जितना एक बार चक्की मे पीसने के लिए डाला जाता है। २ बेर। दफा।
†स्त्री०१ =बेडी (पैरो की)। २. बेडी (नाव)। उदा०—नाव फाटी प्रभु पाल बाँधो बूडत है बेरी।—मीराँ।

बेरी-छत—पु० [देश०] एक पद जो महावत लोग हाथी को किसी काम से मना करने के लिए कहते हैं।

बेरी बेरी—पु० [सिंह० बेरी=दुर्बलता] एक प्रकार का भीषण सक्रामक ज्वर। विशेष दे० 'वातवलासक'।

बेरुआ—पु० [देश०] बाँस का वह टुकडा जो नाव खीचने की गुन मे आगे की ओर बँधा रहता है और जिसे कधे पर रखकर मल्लाह नाव खीचते हुए चलते है।

बेरुई†—स्त्री० [हिं० बेडिन] वेश्या। रडी।

बेरुकी—स्त्री० [देश०] बैलो का एक रोग जिसमे उनकी जीभ पर काले छाले हो जाते हैं।

बेरुख—वि० [फा० बेरुख] [भाव० बेरुखी] १ जो समय पडने पर (मुँह) फेर ले। बेमुरव्वत। २ अप्रसन्न। नाराज।
क्रि० प्र०—पडना।—होना।

बेरुखी—स्त्री० [फा० बेरुखी] १ बेरुख होने की अवस्था या भाव। २ अपेक्षा।
क्रि० प्र०—दिखलाना।

बेरूप—वि० [फा० बे+सं० रूप] कुरूप।

बेरोक—वि० [फा० बे+हिं० रोक] जिस पर रोक न लगी हुई हो।
अव्य० बिना रोक के। स्वच्छद रूप में।

बे-रोजगार—वि० [फा० बेरोजगार] [भाव० बेरोजगारी] व्यवसाय-हीन। बेकार।

बे-रोजगारी—स्त्री० [फा०] बेरोजगार होने की अवस्था या भाव अर्थात् व्यवसायहीन या बेकार होने की अवस्था या भाव।

बे-रौनक—वि० [फा० बेरौनक] १. जिसमें या जिस पर रौनक न हो। २. श्रीहीन। शोभाहीन। ३. (स्थान) जहाँ चहल-पहल न हो।

बे-रौनकी—स्त्री० [बेरौनकी] बेरौनक होने की अवस्था या भाव।
क्रि० प्र०—छाना।

बेर्रा†—पु० [देश०] १. मिले हुए जौ और चने का आटा। २. कोई का फल।

बेर्रा-बरार—पु० [हिं० बेर्रा=जौ और चना+फा० बरार=लादा हुआ] अन्न की उगाही।

बेलंद†—वि० [फा० बलद] १ ऊँचा। २. जो बुरी तरह परास्त या विफल हुआ हो। (व्यग्य)

बेलंब†—पु०=विलब।

बेल—पु० [स० बिल्व] १ एक प्रसिद्ध बहुत बडा पेड जिसकी त्वचा श्वेत वर्ण की होती तथा जिसके तने मे नही, बल्कि शाखाओ मे काँटे होते हैं। यह बहुत पवित्र माना जाता है और इसकी पत्तियाँ शिवजी पर चढाई जाती हैं। २. उक्त वृक्ष का गोलाकार फल जिसका गूदा पेट के रोग के लिए बहुत गुणकारी होता है।
स्त्री० [स० वल्ली] वनस्पति का वह प्रकार या वर्ग जिसमे अधिक मोटा काड या तना नही होता और जो जमीन पर चारो ओर दूर तक फैलती या बाँसों, वृक्षो आदि के सहारे ऊपर की ओर बढती है। लहर। लता।
मुहा०—**बेल मँढ़े चढ़ना**=किसी कार्य का अन्त तक ठीक ठीक या पूरा उतरना। आरभ किये हुए कार्य में पूरी सफलता होना।
२ उक्त के आकार-प्रकार का अकन या चित्रकारी। जैसे—बेल-दार किनारे की साडी।
पद—**बेल-बूटे**।
३. रेशमी या मखमली फीते आदि पर जर-दोजी आदि से बनी हुई इसी प्रकार की फूल-पत्तियाँ जो प्राय पहनने के कपडो पर टाँकी जाती हैं। जैसे—इस दुपट्टे पर बेल टँक जाय तो और भी अच्छा हो।
क्रि० प्र०—टाँकना।—लगाना।
४ लाक्षणिक रूप मे, वश या सन्तान की परम्परा।
मुहा०—**बेल बढ़ना**=वश-वृद्धि होना। पुत्र-पौत्र आदि होना।
५ विवाह आदि कुछ विशिष्ट अवसरो पर सबधियो और बिरादरी-वालों की ओर से हज्जामो, गानेवालियों और इसी प्रकार के नेगियों को मिलनेवाला थोडा-थोडा धन, जिसे पाकर वे वश-वृद्धि का आशीर्वाद देते या शुभ कामना प्रकट करते है।
क्रि० प्र० —देना।—पडना।
६. नाव खेने का डाँडा। बल्ली। ७ घोडो का एक रोग जिसमे उनके पैर सूज जाते है।
स्त्री० [स० वेला] १ तरंग। लहर। २ जलाशय का किनारा। तट। उदा०—गहि सु-बेल बिरलइ समुझि बहिगे अपर हजार।—तुलसी।
पु० [फा० बेलचः] १ एक प्रकार की कुदाली जिससे मजदूर जमीन खोदते है। २ इमारत, सडक आदि बनाने के लिए चूने आदि से जमीन पर डाली हुई लकीर जो केवल चिह्न के रूप मे और भिन्न-भिन्न विभागों की सीमा निर्धारित करने के लिए होती है।
क्रि० प्र०—डालना।
पद—**दाग-बेल**।

३. एक प्रकार का बड़ा और लंबा खुरपा।

पुं० [सं० मल्ल या मल्ली] वह स्थान जहाँ शक्कर तैयार होती हो।

†पुं०=बेला (पौधा और उसका फूल)।

पुं० [अं०] कपड़े, कागज आदि की वह बड़ी गठरी जो एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजने के लिए बनाई जाती है। गाँठ।

बेलक—पुं० [फा० बेल्च] १ फरसा। फावड़ा। २ डाँडा।

बेलकी—पुं० [हिं० बेल] चरवाहा।

बेल-गजी—पुं० [देश०] एक प्रकार का बहुत ऊँचा वृक्ष जिसके हीर की लकड़ी लाल होती है।

बेल-गगरा—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की मछली।

बे-लगाम—वि० [फा०] १. (घोड़ा) जिसके मुँह मे लगाम न लगी हो। २. लाक्षणिक अर्थ मे, मुँह-फट।

बेल-गिरी—स्त्री० [हिं० बेल+गिरी=मीगी] बेल के फल का गूदा।

बेलचक—पुं०=बेलचा।

बेलचा—पुं० [फा० बेल्चः] १ एक प्रकार की छोटी कुदाल जिससे माली लोग बाग की क्यारियाँ आदि बनाते है। २ किसी प्रकार की छोटी कुदाली। ३ एक प्रकार की लबी खुरपी।

बे-लज्जत—वि० [फा० बेलज्जत] १ जिसमे किसी प्रकार की लज्जत अर्थात् स्वाद न हो। स्वाद-रहित। २ नीरस। फीका। ३ जिसमे कोई आनन्द या सुख न हो। जैसे—गुनाह बेलज्जत।

बेलड़ी—स्त्री० [हिं० बेल+ड़ी (प्रत्य०)] छोटी बेल या लता। बौर।

बेलदार—पुं० [फा०] वह मजदूर जो फावडा चलाने, जमीन खोदने आदि का काम करता हो।

वि० [हिं० बेल+फा० दार] जिसमें बेल-बूटे बने हो। जैसे—बेलदार साड़ी।

बेलदारी—स्त्री० [फा०] फावडा चलाने का काम, भाव या मजदूरी।

बेलन—पुं० [हिं० बेलना] १. लकडी, पत्थर, लोहे आदि का वह भारी, गोल और दड के आकार का खंड जो अपने अक्ष पर घूमता है और जिसे लुढ़काकर कोई चीज पीसते, किसी स्थान को समतल करते अथवा कंकड़, पत्थर आदि कूटकर सडके बनाते हैं। (रोलर) २ यंत्र आदि मे लगा हुआ इस आकार का कोई बडा पुरजा जो घुमाकर दबाने आदि के काम मे आता है। जैसे—छापने की मशीन का बेलन। ३. कोल्हू का जाठ। ४. रूई धुनने की मुठिया या हत्था। ५. करघे में का पौसार। ६. रोटी, पूरी आदि बेलने का 'बेलना' नामक उपकरण।

पुं० [देश०] १. एक प्रकार का जड़हन धान। २ एक मे मिलाई हुई वे दो नावें जिनकी सहायता से डूबी हुई नाव पानी में से निकाली जाती है।

बेलना—स० [सं० वलन] १. रोटी, पूरी, कचौरी आदि के पेड़े या लोई को चकले पर रखकर बेलने (उपकरण) की सहायता से आगे-पीछे बार-बार चलाते हुए बढ़ाकर बड़ा और पतला करना।

मुहा०—(कई तरह के) पापड़ बेलना=अनेक प्रकार के ऐसे काम करना जिनमें से किसी में भी सफलता न हो। जैसे—वे कई तरह के पापड़ बेल चुके हैं।

२. कपास ओटना। ३. चौपट या नष्ट करना।

मुहा०—पापड़ बेलना=काम बिगाडना। चौपट करना। जैसे—यह सारा पापड़ आपका ही बेला हुआ है।

४. मनोविनोद के लिए जलाशय में एक दूसरे पर पानी के छीटे उड़ाना।

पुं० काठ, पीतल आदि का बना हुआ एक प्रकार का लंबा उपकरण जो बीच में मोटा और दोनों ओर कुछ पतला होता है और जो प्राय रोटी, पूरी, कचौरी आदि की लोई को चकले पर रखकर बेलने के काम आता है।

बेलनी—स्त्री० [हिं० बेलना] कपास ओटने की चरखी।

बेलपत्ती—स्त्री०=बेलपत्र।

बेलपत्र—पुं० [सं० बिल्वपत्र] बेल (वृक्ष) के पत्ते।

बेलपात†—पुं० =बेलपत्र।

बेलबागुरा—पुं० [डिं०] हिरनो को पकड़ने का जाल।

बेलबूटे—पुं० [हिं० बेल-+बूटे] किसी चीज पर अंकित या चित्रित लताओ, पेड़-पौधों आदि के अंकन या चित्र।

बेलवाना—स० [हिं० बेलना का प्रे०] बेलने का काम दूसरे से कराना।

बेलसना—अ० [सं० विलास+ना (प्रत्य०)] भोग-विलास करना। सुख लूटना। आनंद करना।

बेलहरा†—पुं०=बिलहरा।

बेलहरी—पुं० [हिं० बल+हरी (प्रत्य०)] साँची पान।

बेल-हाजी—स्त्री० [हिं० बेल+हाजी?] धोती आदि के किनारो पर लहरियेदार बेल छापने का लकडी का ठप्पा। (छीपी)

बेल-हाशिया—पुं० [हिं० बेल+फा० हाशिया] धोती आदि के किनारों पर बेल छापने का ठप्पा।

बेला—पुं० [सं० मल्लिका?] १. चमेली आदि की जाति का एक प्रकार का छोटा पौधा जिसमे सफेद रग के सुगधित फूल लगते है। इसके मोतिया, मोगरा और मदनवान नामक तीन प्रकार होते हैं। २. मल्लिका। त्रिपुरा। ३ बेले के फूल के आकार का एक प्रकार का गहना।

स्त्री० [सं० वेला] १ समय। वक्त। जैसे—सबेरे की बेला।

मुहा०—बेला बाँटना=सबेरे या सन्ध्या के समय नियमित रूप से गरीबो को अन्न, धन आदि बाँटना।

२ पानी की लहर। ३. समुद्र का किनारा जहाँ लहरे आकर टकराती है। ४. एक प्रकार का छोटा कटोरा। ५ चमडे की बनी हुई एक प्रकार की छोटी कुल्हिया जिसमे लकड़ी की लबी डडी लगी रहती है और जिसकी सहायता से तेल नापते या दूसरे पात्र मे डालते हैं।

स्त्री० [अं० वायोलिन] सारगी की तरह का एक प्रकार का पाश्चात्य बाजा।

बेलाई—स्त्री० [हिं० बेलना+आई (प्रत्य०)] १. बेलने की क्रिया, भाव या मजदूरी। २ धातु के पत्तरों को यत्र की सहायता से दबाकर चौड़ा या लबा करना।

स्त्री०=बिलाई (बिल्ली)।

बे-लाग—वि० [फा० बे+हिं० लाग=लगावट] १ जिसमे किसी प्रकार की लगावट या संबध न हो। बिलकुल अलग और साफ या स्वतंत्र। २. सच्चा और साफ। खरा।

बेलावल—पुं० [सं० वल्लभ] १. पति। २. प्रियतम।

†स्त्री० [सं० वल्लभा] १. पत्नी। २. प्रियतमा।
पु०=बिलावल (राग)।

बेलि*—स्त्री०=बेल (वल्ली)। उदा०—अँसुवन तन सींचि सींचि प्रेम बेलि बोई।—मीराँ।

बेलिया†—स्त्री० [हिं० बेला का अल्पा०] छोटी कटोरी।

बेली—पुं० [हिं० बल ?] रक्षक और सहायक। जैसे—गरीबों का भी है अल्लाह बेली।—कोई शायर।
स्त्री० [सं० वल्ली] १. बेल। लता। २. रहस्य-संप्रदाय मे, (क) विषय-वासना। (ख) ईश्वर-भक्ति के रूप मे फैलनेवाली बेल।

बेलुत्फ—वि० [फा०+अ०] [भाव० बेलुत्फी] जिससे कोई लुत्फ या मजा न मिल रहा हो। बेमजा।

बे-लौस—वि० [फा० बे+अ० लौस] [भाव० बेलौसी] जो किसी से लौस अर्थात् कामनापूर्ण लगाव या सम्बन्ध न रखता हो, अर्थात् खरा और सच्चा व्यवहार करनेवाला। पाक-साफ।

बेवकूफ—वि० [फा० बे+अ० वुकूफ] [भाव० बेवकूफी] जिसे किसी प्रकार का वकूफ अर्थात् शऊर न हो। मूर्ख। निर्बुद्धि। नासमझ।

बेवकूफी—स्त्री० [फा० बे+अ० वुकूफी] १. बेवकूफ होने की अवस्था या भाव। २ बेवकूफ का कोई कार्य।

बे-वक्त—अव्य० [फा०+अ०] कुसमय मे।

बे-वजह—अव्य० [फा०+अ०] बिना किसी वजह अर्थात् कारण या हेतु के। निष्प्रयोजन।

बेवट*—स्त्री० [?] १. विवशता। २. संकट।

बे-वतन—वि० [फा०] १ जिसका कोई वतन अर्थात् देश न हो। २ जिसके रहने आदि का कोई ठिकाना न हो। बे-घर बार का। ३ परदेसी। विदेशी।

बेवतना—स०=ब्योतना।

बेवपार†—पु०=व्यापार।

बेवपारी—पु०=व्यापारी।

बे-वफा—वि० [फा० बे+अ० वफा] [भाव० बेवफाई] १. जिसमे वफा अर्थात् निष्ठा, सद्भाव आदि बाते न हो; फलतः कृतघ्न। २. वचन भग करनेवाला। दगाबाज।

बेवफाई—स्त्री० [फा०+अ०] १. बेवफा होने की अवस्था या भाव। कृतघ्नता। २. वचन भग। दगाबाजी।

बेवर—पु० [देश०] एक तरह की घास जो रस्सी बुनने के काम आती है।

बेवरा†—पु०=ब्योरा।

बेवरेबाजी—स्त्री० [हिं० ब्यौरा+फा० बाजी] चालाकी। चालबाजी। (बाजारू)

बेवरेवार—वि० [हिं० बेवरा+वार (प्रत्य०)] तफसीलवार। विवरण-सहित।

बेवसाउ†—पु०=व्यवसाय।

बेवस्था†—स्त्री०=व्यवस्था।

बेवहना—अ० [स० व्यवहार] १. व्यवहार करना। बरताव करना। बरतना। २. सूद पर रुपयों का लेन-देन करना।

बेवहरिया—पु० [सं० व्यवहार+इया (प्रत्य०)] १. सूद पर रुपयों का लेन-देन करनेवाला। महाजन। २. बही-खाता लिखनेवाला। लिपिक। मुनीम।

बेवहार—पुं० [स० व्यवहार] १. सूद पर रुपए उधार देने का व्यवसाय। महाजनी। २ रोजगार। व्यापार। ३. दे० 'व्यवहार'।

बेवहारी†—पु०=बेवहरिया।

बेवा—स्त्री० [फा० बेव.] विधवा स्त्री। राँड।

बेवाई†—स्त्री० बिवाई।

बेवान†—पुं०=विमान।

बेवि*—वि०=विवि (दो)। उदा०—बेवि सरोरुह उपर देखल।—विद्यापति।

बेश—वि० [फा०] [भाव० बेशी] अधिक। ज्यादा। जैसे—बेश-कीमत=बहुत अधिक मूल्य का।
†अव्य० ऐसा ही सही। अच्छा। (पूरब)
†पु०=मेस (वेष)।

बे-शऊर—वि० [फा० बे+अ० शुऊर] [भाव० बेशऊरी] जिसे शऊर न हो अर्थात् जिसे कोई काम ठीक तरह से करने का ढग न आता हो। मूर्ख।

बेशऊरी—स्त्री० [फा० बे+अ० शुऊर+हिं० ई (प्रत्य०)] बे शऊर होने की अवस्था या भाव।

बे-शक—अव्य० [फा० बे+अ० शक] १ बिना किसी प्रकार के शक या सदेह के। २. अवश्य। जरूर। निःसन्देह।

बेश-कीमत—वि० [फा० बेश+अ० कीमत] बहुमूल्य।

बेश-कीमती†—वि०=बेशकीमत।

बे-शरम—वि० [फा० बेशर्म] [भाव० बेशरमी] जिसे शरम या हया न हो। निर्लज्ज। बेहया।

बे-शरमी—स्त्री० [फा० बेशर्मी] निर्लज्जता। बेहयाई।

बेशी—स्त्री० [फा०] १ बेश होने की अवस्था या भाव। २ अधिकता। ज्यादती। ३. लाभ। नफा।

बे-शुबहा—अ० [फा० बे+अ० शुब्ह] बिना किसी शक या शुबहा के। निःसदेह। बेशक।

बेशुमार—वि० [फा०] [भाव० बेशुमारी] जो गिना न जा सके। अगणित। असख्य। अनगिनत।

बेशोकम—वि० [फा०] थोडा-बहुत।

बेश्म—पु० [स० वेश्म] घर। मकान।

बेसंदर—पु० [सं० वैश्वानर] अग्नि।

बे-सँभार—वि० [फा० बे+हिं० सँभाल=सुध] जो अपने आपको सँभाल न सकता हो अर्थात् अचेत या बेसुध।

बेस†—स्त्री० [स० वयस्] उम्र। अवस्था। उदा०—बाल बेस ससि ता समीप, अम्रित रस पिन्निय।—चदबरदाई।
पु०, वि०=बेश।

बेसन—पुं० [देश०] चने की दाल का चूर्ण। चने का आटा।

बेसनी—वि० [हिं० बेसन+ई (प्रत्य०)] १. बेसन का बना हुआ। जैसे—बेसनी लड्डू। २ जिसमें बेसन पड़ा या मिला हो। जैसे—बेसनी पूरी या रोटी।

स्त्री० १. बेसन की बनी हुई पूरी। २. बेसन भरकर बनाई हुई कचौरी।

बे-सबब—अव्य० [फा०] बिना कारण। अकारण।

बे-सबर(१)—वि० [फा० बे+अ० सब्र+हिं० आ (प्रत्य०)] [भाव० बेसबरी] जिसे सब्र या संतोष न होता हो। जो संतोष न रख सके। अधीर।

बे-सबरी—स्त्री० [फा० बे+अ० सब्री] बेसबर होने की अवस्था या भाव। अधीरता।

बे-समझ—वि० [फा० बे+हिं० समझ] मूर्ख। निर्बुद्धि। ना-समझ।

बे-समझी—स्त्री० [हिं० बेसमझ+ई (प्रत्य०)] बे-समझ होने की अवस्था या भाव। मूर्खता। नासमझी।

बेसर—स्त्री० [?] नाक मे पहनने की एक तरह की बुलाक।

पुं० १. गधा। २. खच्चर। ३. एक अंत्यज जाति।

बेसरा—वि० [फा० बे+सरा=ठहरने का स्थान] जिसके लिए ठहरने का कोई स्थान न हो। आश्रयहीन।

†पुं० एक प्रकार की चिड़िया।

बे-सरोसामान—वि० [फा०] १. जिसके पास कुछ भी सामान या सामग्री न हो। २. दरिद्र। कंगाल।

बे-सलीका—वि० [फा० बे+अ० सलीक:] [भाव० बेसलीकगी] १. जिसे काम करने का सलीका या ढग न आता हो। २ अशिष्ट और असभ्य।

बेसवा†—स्त्री०=वेश्या।

बेसवार—पु० [देश०] वह सड़ाया हुआ मसाला जिससे शराब चुआई जाती है।

बेसहना†—स०=बेसाहना।

बेसा†—स्त्री०=वेश्या।

पु० =भेस।

बेसाख्ता—अव्य० [बे+फा० साख्त:] [भाव० बेसाख्तगी] बिलकुल आप से आप और स्वाभाविक रूप से।

बेसारा—वि० [हिं० बैठाना, गुज० बैसाना] १ बैठानेवाला। २ जमाकर रखने या स्थापित करनेवाला।

बेसाहना—स० [सं० व्यवसन] १. मोल लेना। खरीदना। २. जान-बूझकर अपने ऊपर लेना अथवा पीछे या साथ लगाना। बिसहना। जैसे—किसी से झगड़ा या बैर बेसाहना।

बेसाहनी†—स्त्री० [हिं० बेसाहना] १. खरीदने या मोल लेने की क्रिया या भाव। क्रय। २ मोल ली हुई चीज। सौदा। ३. जान-बूझकर अपने पीछे लगाई हुई चीज या बात।

बेसाहा—पुं० [हिं० बेसाहना] १. खरीदी हुई चीज। सौदा। सामग्री। २. जान-बूझकर अपने ऊपर लिया हुआ संकट।

बे-सिलसिले—अव्य० [हिं० बे+फा० सिलसिला] बिना किसी क्रम या सिलसिले के। अव्यवस्थित रूप से।

बेसी—स्त्री० =बेशी।

वि०=बेश।

बेसुध—वि० [फा० +हिं० सुध-होश] १. जिसे सुध अर्थात् होश न हो। अचेत। बेहोश। २. जिसका होश-हवास ठिकाने न हो। बहुत घबराया हुआ। बद-हवास।

बेसुधी—स्त्री० [हिं० बेसुध+ई (प्रत्य०)] बेसुध होने की अवस्था या भाव।

बेसुर—वि०=बेसुरा।

बेसुरा—वि० [हिं० बे+सुर=स्वर] १. जो नियमित स्वर में न हो। जो अपने नियत स्वर से हटा हुआ हो। (संगीत) जैसे—बेसुरा गाना। २. (व्यक्ति) जो ठीक स्वर मे न गाता हो। ३. जो उपयुक्त अथवा ठीक अवसर या समय पर न हो। बे-मौका।

बेसूद—वि. [फा०] जिसमें कुछ भी लाभ न हो। बेफायदा।

बेस्या—स्त्री० [सं० वेश्या] १. रंडी। वेश्या। २. एक प्रकार की बर्रे जो देखने मे बहुत सुन्दर होती है पर जिसका डंक बहुत जहरीला होता है।

बे-स्वाद—वि० [हिं० +सं० स्वादु] १. जिसमे कोई अच्छा स्वाद न हो। स्वाद-रहित। २. नीरस। फीका।

बेहंगम—वि० [सं० विहगम] १. जो देखने में भद्दा हो। बेढंगा। २. बेढब। ३. विकट।

बेहँसना—अ०=विहँसना (ठठाकर हँसना)।

बेह—पु० [सं० वेध] १. छेद। सुराख। २ दे० 'वेध'।

बेहड़—पु० [?] पहाड़ी इलाकों मे वह नीची और ऊबड़-खाबड़ भूमि जिसकी बहुत सी मिट्टी नदी या वर्षा के जल से बह गई हो, और जगह जगह गहरे गड्ढे पड़ गये हो।

बेहड़†—वि०, पु०=बीहड़।

पु०=बेहट।

बेहतर—वि० [फा०] अपेक्षाकृत अच्छा। किसी की तुलना या मुकाबले मे अच्छा। किसी से बढ़कर।

अव्य० प्रार्थना या आदेश के उत्तर में स्वीकृति-सूचक अव्यय। अच्छा। (प्रायः इस अर्थ मे इसका प्रयोग 'बहुत' शब्द के साथ होता है। जैसे—आप कल सुबह आइयेगा? उत्तर—बहुत बेहतर।

बेहतरी—स्त्री० [फा०] १. बेहतर होने की अवस्था या भाव। अच्छापन। २ उपकार। भलाई। ३. कल्याण। मंगल।

बेहद—वि० [फा०] १. जिसकी हद या सीमा न हो। असीम। अपार। २ बहुत अधिक।

बेहन—पु० [सं० वपन] अनाज आदि का बीज जो खेत मे बोया जाता है। बीया।

क्रि० प्र०—डालना।—पड़ना।

वि० [?] जर्द। पीला।

बेहना—पुं० [देश०] १. जुलाहों की एक जाति जो प्रायः रूई धुनने का काम करती है। २. धुनिया।

बेहनौर—पुं० [हिं० बेहन+और (प्रत्य०)] वह स्थान जहाँ धान या जड़हन का बीज डाला जाय। पनीर। बियाड़ा।

बे-हया—वि० [फा०] [भाव० बेहयाई] (व्यक्ति) जिसे हया या लज्जा न हो। निर्लज्ज। बेशर्म।

बे-हयाई—स्त्री० [फा०] बेहया होने की अवस्था या भाव। बेशर्मी। निर्लज्जता।

बेहर†—वि० [सं० विहृ?] १. अचर। स्थावर। २. अलग। जुदा। पृथक्। उदा०—बेहर बेहर भाऊ तेन्ह खंड-खंड ऊपर जात।—जायसी।

पु०[?] वापी।- बावली।

बेहरना—अ०[हि० बेहर] किसी चीज का फटना या तड़क जाना। दरार पड़ना।

बेहरा—पु० [देश०]१. एक प्रकार की घास जिसे चौपाये बहुत चाव से खाते है। (बुंदेल०) २. मूंज की बनी हुई गोल या चिपटी पिटारी जिसमे नाक मे पहनने की नथ रखी जाती है।

वि०[हिं० बेहर] अलग। जुदा। पृथक्।

†पु०- बेयरा।

बेहराना—स०[हि० बेहरना का स०] फाड़ना।

बेहरी—स्त्री०[सं० विहृति -बलपूर्वक लेना] १ किसी विशेष कार्य के लिए बहुत से लोगों से चंदे के रूप मे माँगकर थोड़ा-थोड़ा धन इकट्ठा करने की क्रिया या भाव।

क्रि० प्र०—उगाहना।—माँगना।

२ उक्त प्रकार से इकट्ठा किया हुआ धन। ३ वह किस्त जो असामी शिकमीदार को देता है। बाछा।

बेहला—पु० [अ० वायोलिन]सारगी की तरह का एक प्रकार का पाश्चात्य बाजा।

बेहाई†—स्त्री० [फा० बे-हयाई] बेहया होने की अवस्था या भाव। निर्लज्जता। बेशरमी।

क्रि० वि० बे-हया बनकर। निर्लज्जता-पूर्वक। उदा०—आए नैन धाइ कै लीजै, आवत अब बेहया बेहाई।—सूर।

बे-हाथ—वि०[फा० बे+हि० हाथ]१ जो अपने हाथ (अर्थात् कार्य करने की शक्ति या साधन) से रहित या हीन हो चुका हो। जैसे—फारखती लिखकर तो तुम बे-हाथ हो चुके हो। २ जो हाथ (अर्थात् अधिकार या वश) के बाहर हो गया हो। जैसे—अब तो लड़का तुम्हारे हाथ से निकल कर बे-हाथ हो चुका हो।

बेहान†—पु० बिहान।

बे-हाल—वि०[फा० बे+अ० हाल] [भाव० हाली] १ जिसका बेहाल अर्थात् दशा बहुत बिगड़ गई हो। मरणासन्न। २ दुर्दशाग्रस्त। ३ अचेत। संज्ञाहीन। ४ व्याकुल। विकल।

बे-हाली—स्त्री०[फा०] १ बेहाल होने की अवस्था या भाव। २ बेचैनी। व्याकुलता।

बे-हिसाब—अव्य० [फा० बे+अ० हिसाब] बहुत अधिक। बहुत ज्यादा। वि० असख्य।

बेही†—स्त्री०[?] नव विवाहित वर-बधू को गाँव के कुम्हारों द्वारा दिया जानेवाला नया बर्तन। (पूरब)

बे-हुनर†—वि० [फा० बे+हुनर] १ जिसे कोई हुनर न आता हो। २ जो कुछ भी काम न कर सकता हो। मूर्ख।

बे-हुनरी—स्त्री०[फा०] किसी प्रकार का हुनर या गुण न होने की अवस्था या भाव।

बे-हुरमत—वि०[फा०] [भाव० बेहुरमती] जिसकी कोई प्रतिष्ठा न हो। बेइज्जत।

बे-हूदगी—स्त्री०[फा०]१ बेहूदा होने की अवस्था या भाव। असभ्यता। अशिष्टता। २ बेहूदेपन से भरा हुआ काम या बात।

बेहूदा—वि०[फा० बेहूद]१. (व्यक्ति) जिसे तमीज या समझ न हो और इसी लिए जो शिष्टता या सभ्यतापूर्वक आचरण या व्यवहार करना न जानता हो। (२. काम या बात) जो शिष्टता या सभ्यता के विरुद्ध हो। अशिष्टता-पूर्ण।

बेहूदापन—पुं०[फा० बेहूदा+पन (प्रत्य०)] बेहूदा होने की अवस्था या भाव। बेहूदगी। अशिष्टता।

बे-हून—अ० य०[स० विहीन]बिना। बगैर। रहित।

बे-हैफ—वि०[फा० बेहैफ] बेफिक्र। जिससे कोई चिंता न हो। चिंता-रहित।

बे-होश—वि०[फा०] [भाव० बेहोशी] जिसे होश न रह गया हो। मूर्च्छित। बेसुध। अचेत।

बे-होशी—स्त्री०[फा०] बेहोश होने की अवस्था या भाव। मूर्च्छा। अचेतनता।

बैंक—पु०[अ०] दे० 'बक'(महाजनी कोठी)।

बैंकर—पु०[अ०] महाजन।

बैंगन—पु०[स० वगण ?]१. एक पौधा जिसके लबोतरे फलो की तरकारी बनाई जाती है। भटा। २. उक्त पौधे का फल जिसकी तरकारी बनती है। ३. दक्षिण भारत मे होनेवाला एक प्रकार का धान और उसका चावल।

बैंगनी—वि०[हि० बैंगन+ई (प्रत्य०)]बैंगन के रग का। जो ललाई लिये नीले रग का हो। बैंजनी।

पु० उक्त प्रकार का रग।

स्त्री० एक प्रकार का पकवान जो बैंगन के टुकड़ो को घुले हुए बेसन में लपेटकर और घी या तेल मे तलकर बनाया जाता है।

बैंच†—पु०[?] एक प्रकार का वृक्ष और उसका फल।

स्त्री० बेंच।

बैंजनी—वि० - बैंगनी।

बैंटा†—पु०=बेंट (मुठिया)।

बैंड—पु०[अ०] १ झुंड। दल। २ अँगरेजी बाजा बजाने वालो का दल जिसमें सब लोग मिलकर एक साथ बाजा बजाते है। ३. पाश्चात्य ढंग के कुछ विशिष्ट बाजों का समूह जो एक साथ बजाये जाते हैं।

बैंडना†—स० - बेंड़ना।

बैंडा†—वि० - बेंडा।

बैंडी†—स्त्री०[?] तालाब या जलाशय मे सींचने के लिए पानी उछालने का कार्य।

बैंत—पु०१ बैत। २. बेत।

बै—स्त्री०[अ० बैअ] रुपए, पैसे आदि के बदले मे कोई वस्तु दूसरे को इस प्रकार दे देना कि उस पर अपना कोई अधिकार न रह जाय। बेचना। बिक्री।

स्त्री०[स० वाय]करघे मे की कघी। बैसर।

स्त्री० वय (अवस्था या उमर)।

बैकना†—अ० - बहकना।

बैकल—वि०[स० विकल, मि० फा० बेकल] १. विकल। बेचैन। २. पागल। उन्मत्त।

बैकुंठ†—पु०=वैकुण्ठ।

बैखरी—स्त्री०- वैखरी।

बैखानस—वि०=वैखानस।
बैग—पुं०[अं०]१. थैला। झोला। २. बोरा।
बैगन—पुं०=बैंगन।
बैगना†—पुं०=बैंगनी (पकवान)।
बैजंती—स्त्री०[सं० वैजयंती] १. फूल के एक पौधे का नाम जिसके पत्ते हाथ-हाथ भर लंबे और चार पाँच अंगुल चौडे धड या मूल कांड से लगे हुए होते हैं। २. विष्णु के गले की माला का नाम।
बैज—पुं०[अं०]१. चिह्न। निशान। २ चपरास। ३ संस्था आदि का चिह्न सूचित करनेवाला पट्टा या कागज अथवा कपडे आदि का टुकडा। बिल्ला।
बैजई—वि०[फा० बैजावी] हलके नीले रंग का।
पुं० उक्त प्रकार का अर्थात् हलका नीला रंग।
बैजनाथ*—पुं०=बैद्यनाथ।
बैजयंती—स्त्री०=बैजती।
बैजला—पुं०[देश०]१ उर्द का एक भेद। २. कबड्डी नामक खेल।
बैजवी—वि०[अ०बजावी]१ अंडे का। २ अंडाकार।
बैजा—पुं०[अ० बैज]१ अंडा। २ गलका नामक रोग जिसकी गिनती चेचक या शीतला में होती है।
बैजावी—वि० [अ० बजावी] अडाकार।
बैजिक—वि० [सं० बीज+ठक्--इक]१ बीज-सबधी २. मूल-सबधी। ३ पैतृक।
पुं०१ अकुर। २ कारण। ३ आत्मा।
बैटरी—स्त्री०[अं०] १ ताबे या पीतल आदि का वह पात्र जिसमे रासायनिक पदार्थों के योग से रासायनिक प्रक्रिया द्वारा बिजली पैदा करके काम मे लाई जाती है। (बैटरी)
मुहा०—**बैटरी चढ़ाना**—बैटरी या बिजली की सहायता से किसी चीज पर किसी धातु का मुलम्मा करना। २. तोपखाना।
बैटा†—स्त्री०[देश०] रूई ओटने की चरखी। ओटनी।
बैठ—पुं०[हिं० बैठना=पडता पडना] सरकारी मालगुजारी या लगान की दर। राजकीय कर या उसकी दर।
बैठक—स्त्री०[हिं० बैठना]१ बैठने की क्रिया, ढग भाव या मुद्रा। जैसे—इस जानवर की बैठक ही ऐसी होती है। बैठकी। २ घर का वह कमरा जिसमे प्राय आये-गये लोग बैठकर आपस मे बात-चीत करते है। बैठका। ३. बैठने के लिए बना हुआ कोई आसन या स्थान। उदा०—अति आदर सों बैठक दीन्ही।—सूर। ४ नीचे का वह आधार जिस पर खभा, मूर्ति या ऐसी ही और कोई चीज खड़ी की या बैठाई जाती है। पद-स्तल। ५. सभा, सम्मेलन आदि का एक बार मे और एक साथ होनेवाला कोई अधिवेशन। (सिटिंग) जैसे—आज सम्मेलन की दूसरी बैठक होगी। ६ कुछ लोगों के आपस मे प्राय: सग मिलकर बैठने की क्रिया या भाव। बैठकी। ७ एक प्रकार की कसरत जिसमे बार-बार खडा होना और बैठना पड़ता है। बैठकी।
क्रि० प्र०—लगाना।
८. किसी विशिष्ट उद्देश्य से किसी स्थान पर आकर तब तक बैठने की क्रिया, जब तक वह काम पूरा न हो जाय। ९. काँच, धातु आदि का दीवट जिसके सिरे पर बत्ती जलती या मोमबत्ती खोंसी जाती है। बैठकी। १०. दे० 'बैठकी'।

बैठका—पुं०[हिं० बैठक] १ वह चौपाल या दालान आदि जहाँ कोई बैठता हो और जहाँ आकर लोग उससे मिलते या उसके पास बैठकर बात-चीत करते हों। २. बैठक।
बैठकी—स्त्री०[हिं० बैठक+ई (प्रत्य०)]१ किसी स्थान पर प्राय जाकर बैठने की क्रिया। जैसे—आज-कल वकील साहब के यहाँ उनकी बहुत बैठकी होती है। २ बार बार बैठने और उठने की कसरत। बैठक। ३ बैठने का आसन। बैठक। ४ वेश्याओ का वह गाना जिसमे वे बैठकर गाती है, नाचती नही। ५ शीशे का वह झाड़ जो जमीन पर रखकर जलाया जाता है। (छत मे लटकाये जानेवाले झाड से भिन्न) ६. वह नगीना जो किसी गहने मे जड़कर बैठाया जाता है। (बेधकर पिरोये जानेवाले नगीने से भिन्न) जैसे—अँगूठी मे जडा जानेवाला मोती 'बैठकी' कहलाता है।
वि० बैठने से सम्बन्ध रखनेवाला। जैसे—बैठकी हड़ताल।
बैठकी हड़ताल—स्त्री० [हिं०] हडताल का वह प्रकार या रूप जिसमे किसी कर्मशाला या कार्यालय मे कर्मचारी लोग उपस्थित तो होते है, पर अपने अपने स्थान पर खाली बैठे रहते है, अपना काम नही करते। बैठ-हडताल। (सिट डाउन स्ट्राइक)
बैठन—स्त्री०[हिं० बैठना]१ बैठने की क्रिया, ढग या भाव। २. आसन।
पुं०=बेठन
बैठना—अ०[सं० वेशन, विष्ठ, प्रा० बिट्ठ+ना (प्रत्य०)] १. प्राणियो का अपने घुटने टेक या टाँगे मोड़कर शरीर को ऐसी स्थिति मे करना या लाना कि धड सीधा ऊपर की ओर रहे और उसका सारा भार चूतड़ो और जाँघो के नीचेवाले तल पर पडे। शरीर का नीचेवाला आधा भाग किसी आधार पर टिका या रखकर पुट्ठो के बल आसीन या स्थित होना। (खडे रहने और लेटने या सोने से भिन्न) जैसे—कुरसी, चौकी या जमीन पर बैठना।
विशेष—पक्षियो को बैठने के लिए प्राय: अपने पैर मोड़ने नही पड़ते और उनका खडा रहना तथा बैठना दोनो समान होते हैं। जब वे उड़ना छोडकर जमीन या पेड की डाल पर खड़े होते है, तब उनकी वही स्थिति 'बैठना' भी कहलाती है। पर अडे सेने के समय जब वे बैठते है, तब उनकी टाँगें भी मुड़ जाती है।
पद—(कहीं या किसी के साथ) **बैठना-उठना या उठना-बैठना**=किसी के सग या साथ रहकर बात-चीत करना और समय बिताना। जैसे—उनका बैठना-उठना सदा से बडे आदमियो के यहाँ (या साथ) ही रहा है। **बैठते-उठते या उठते-बैठते**=अधिकतर अवसरो पर। प्राय। हर समय। जैसे—बैठते उठते (या उठते-बैठते) ईश्वर का ध्यान रखना चाहिए। **बैठे-बैठे**-(क) अचानक। सहसा। उदा०—बैठे-बैठे हमे क्या जानिए क्या याद आया।—कोई शायर। (ख) बिना कुछ किये। जैसे—चलो, बैठे-बैठे तुम्हे भी सौ रुपये मिल गये। (ग) दे० 'बैठे-बैठाये'। **बैठे-बैठाये**=अकारण, निष्प्रयोजन या व्यर्थ। जैसे—बैठे-बैठाये तुमने यह झगड़ा मोल ले लिया।
मुहा०—**बैठे रहना**=कर्तव्य, कार्य आदि का ध्यान छोडकर यथा-साध्य उससे अलग या दूर रहना। जैसे—तुम जहाँ जाते हो, वहीं बैठ रहते हो। **बैठे रहना**=(क) कुछ भी काम-धधा न करना। जैसे—छुट्टी के दिन वे घर पर ही बैठे रहते हैं, कहीं आते-जाते नही। (ख) किसी

काम या बात मे योग न देना अथवा हस्तक्षेप न करना। जैसे—मै भी वहाँ चुपचाप बैठा रहा, कुछ बोला नही।
२. किसी विशिष्ट उद्देश्य की पूर्ति या कार्य की सिद्धि के लिए आसन या स्थान ग्रहण करना। जैसे—(क) विद्यार्थी का पढ़ने के लिए (या परीक्षा में) बैठना। (ख) अधिकारी का काम के समय अपनी जगह पर (या मालिक का गद्दी पर) बैठना। (ग) अपना चित्र अकित कराने के लिए चित्रकार के सामने बैठना। (घ) चिड़ियो या मछलियो का अडे सेने के लिए बैठना।
३ किसी का किसी पद या स्थान पर अधिकारी या स्वामी बनकर आसीन होना। जैसे—(क) उनके बाद उनका लड़का गद्दी पर बैठा। (ख) कल राज्य मे नये राज्यपाल बैठेगे। ४. जिस काम के लिए कोई उद्यत, तत्पर या सन्नद्ध हुआ हो, उससे अलग दूर या विरत होना अथवा सबध छोड़ना। जैसे—(क) चुनाव के लिए जो चार उम्मेदवार थे, उनमे से दो बैठ गये। (ख) अब उनके सभी सहायक और साथी बैठ गये हैं। ५. किसी प्रकार की सवारी पर आसीन या स्थित होना। जैसे—घोड़े, नाव, मोटर या रेल पर बैठना। ६. किसी चीज का नीचेवाला अश या भाग या जमीन मे अच्छी तरह यथास्थान स्थित होना। ठीक तरह से लगना। जैसे—(क) यहाँ अभी एक खभा और बैठेगा। (ख) इस जमीन मे जड़हन (या धान) नही बैठेगा। ७. किसी स्थान पर जमकर या दृढ़तापूर्वक आसीन या स्थित होना। उदा०—हजरते दाग जहाँ बैठ गये, बैठ गये।—दाग। ८. स्त्रियो के सबध मे, किसी के साथ अवैध सम्बन्ध स्थापित करके उसके घर मे जाकर पत्नी के रूप मे रहना। जैसे—विधवा होने पर वह अपने देवर के घर जा बैठी। ९ नर और मादा का समोग करने के लिए किसी स्थान पर आना या होना, अथवा समोग करना। (बाजारू) जैसे—इस बार यह कुतिया किसी बाजारू कुत्ते के साथ बैठी थी। १०. किसी रखी जानेवाली अथवा अपने स्थान से हटी हुई चीज का उपयुक्त और ठीक रूप से उस स्थान पर जमना, फिर से आना या स्थित होना, जहाँ उसे वस्तुत आना, रहना या होना चाहिए। जैसे—(क) धरन या पत्थर का अपनी जगह पर बैठना। (ख) टोपी या पगड़ी का सिर पर ठीक से बैठना। (ग) उखडी हुई नस या हड्डी का फिर से अपनी जगह पर बैठना। ११ जो ऊपर की ओर उठा या खड़ा हो, उसका गिर या हटकर नीचे आना या धराशायी होना। गिर पड़ना या जमीन से आ लगना। जैसे—(क) इस बरसात मे पचासो मकान बैठ गये। (ख) कड़ाके की धूप या पाले मे सारी फसल बैठ गई। (ग) भार की अधिकता के कारण नाव बैठ गई। १२ किसी काम, चीज या बात का अपने उचित या साधारण रूप मे न रहकर चौपट या नष्ट हो जाना। जैसे—(क) लगातार कई बरसो तक घाटा होने के कारण उसका कारबार बैठ गया। (ख) अधिक व्यय और कुव्यवस्था के कारण सस्था बैठ गई। १३ तरल पदार्थ मे घुली या मिली हुई चीज का थिर कर तल मे जा लगना। जैसे—पानी मे घोला हुआ चूना या रग बैठना। १४. किसी उभारदार चीज का नष्ट या विकृत होकर कुछ गहरा या समतल हो जाना। पिचकना जैसे—(क) पुल्टिस लगाने से फोडा (या दवा लगाने से सूजन) बैठना। (ख) शीतला के प्रकोप से किसी की आँख बैठना। (ग) बीमारी या बुढ़ापे में गाल बैठना। १५. किसी चीज का गल, पिघल या सड़कर अपना गुण, रूप, स्वाद आदि गँवा देना। जैसे—(क) अधिक आँच लगने से गुड का बैठना। (ख) गदे हाथ लगने से अचार का बैठना। (ग) पानी अधिक हो जाने से भात का बैठना। (घ) अधिक उमस के कारण अमरूद या आम बैठना। १६ नापने-तौलने, पड़ता निकालने या हिसाब लगाने पर किसी निश्चित मात्रा, मान, मूल्य आदि का ज्ञात अथवा स्थिर होना। जैसे—(क) तौलने पर गेहूँ का बोरा सवा दो मन बैठा। (ख) नाव और उसका सामान खरीदने मे तीन सौ रुपये बैठे। (ग) घर तक ले जाने मे यह कपडा तीन रुपये गज बैठेगा। १७. प्रहार आदि के लिए अस्त्र शस्त्र, शारीरिक अग अथवा ऐसा ही किसी चीज का चलाये जाने या फेके जाने पर अपने ठीक लक्ष्य पर जाकर लगना। जैसे—(क) निशाने पर गोला या गोली बैठना। (ख) शरीर पर थप्पड या मुक्का बैठना। १७ ग्रहो, तारो आदि का आकाश मे नीचे उतरना या उतरते हुए क्षितिज के नीचे जाना। अस्त होना। जैसे—सूर्य के बैठने का समय हो चला था। १९. अर्थ, उक्ति, कथन सिद्धात आदि का कही इस प्रकार लगना कि उसका ठीक ठीक आशय या रूप समक्ष मे आ जाय अथवा वह उपयुक्त रूप से घटित या चरितार्थ हो। जैसे—(क) यहाँ इस चौपाई का ठीक अर्थ नहीं बैठता। (ख) आपका वह कथन (या सिद्धात) यहाँ बिलकुल ठीक बैठता है। २० कार्यों, क्रियाओं आदि के सम्बन्ध मे, हाथ का इस प्रकार अभ्यस्त होना कि सहज मे स्वभावत उससे ठीक और पूरा परिणाम निकले। जैसे—बाजे पर (या लिखने मे) अभी उसका हाथ ठीक नही बैठता है।
सयो० क्रि०—जाना।
विशेष—'बैठना' क्रिया का प्रयोग कुछ मुख्य क्रियाओ के साथ सयोज्य क्रिया के रूप मे प्राय नीचे लिखे अर्थों मे भी होता है। (क) अवधारण या अधिक निश्चय सूचित करने के लिए, जैसे—कोई चीज खो या गँवा बैठना। (ख) कार्य की पूर्णता सूचित करने के लिए, जैसे—कही जा बैठना या मालिक बन बैठना। (ग) अनजान मे या सहसा होनेवाली आकस्मिकता सूचित करने के लिए, जैसे—कह बैठना, दे बैठना या मार बैठना और (घ) दृढता या धृष्टता सूचित करने के लिए, जैसे—चढ बैठना, पूछ बैठना, बिगड बैठना।

बैठनि—स्त्री०=बैठन (बैठक)।

बैठनी†—स्त्री०[हिं० बैठन] वह आसन या स्थान जिस पर बैठकर जुलाहे करघे से कपड़ा बुनते हैं।

बैठवाँ—वि०[हिं० बैठना+वाँ (प्रत्य०)] [स्त्री० बैठवी] बैठा या दबा हुआ। फलत चिपटा। जैसे—बैठवाँ जूता।

बैठवाई—स्त्री०[हिं० बैठवाना]१. बैठवाने की क्रिया या भाव। २ दे० 'बैठाई'।

बैठवाना—स०[हिं० बैठाना का प्रे०] बैठाने का काम दूसरे से कराना।

बैठ-हड़ताल—स्त्री०=बैठकी हड़ताल।

बैठाना—स०[हिं० बैठना का स०]१ किसी को बैठने मे प्रवृत्त करना। ऐसा काम करना जिससे कोई बैठे। आसीन, उपविष्ट या स्थित करना। जैसे—जो लोग खड़े हैं, उन्हें यथा-स्थान बैठा दो। २ किसी उद्देश्य की पूर्ति या कार्य की सिद्धि के लिए किसी को किसी पद या स्थान पर आसीन या नियुक्त करना। जैसे—(क) किसी को कही का प्रबंधक बनाकर बैठाना। (ख) झगड़ा निपटाने के लिए पचायत बैठाना।

(ग) रखवाली के लिए पहरा बैठाना। ३. आये हुए व्यक्ति या व्यक्तियों को आदरपूर्वक उचित आसन या स्थान पर आसीन करना। जैसे—अतिथियों को बैठाना। ४ किसी को किसी काम मे इस प्रकार लगाना कि वह वहाँ आसन जमाकर काम करे। जैसे—पंडित को पूजा-पाठ के लिए या लड़के को किसी के यहाँ काम सीखने के लिए बैठाना। ५. जिस काम के लिए कोई उद्यत, तत्पर या सन्नद्ध हुआ हो, उससे उसे रोककर उदासीन या विरत करना। जैसे—चुनाव के लिए खड़े होनेवाले किसी उम्मेदवार को बैठाना। ६ जो चीज किसी प्रकार उठी, उभरी या अपने स्थान से बढी या हटी हुई हो, उसे फिर यथा-स्थान करना या लाना। जैसे—नस, सूजन या हड्डी बैठाना। ७. किसी को किसी यान या सवारी पर आसीन कराना। जैसे—यात्रियों को जहाज या रेल पर बैठाना। किसी स्थान पर ठीक तरह से जमाकर रखना या लगाना। जैसे—बगीचे में पेड़-पौधे बैठाना। ९. उबालने, गरम करने, पकाने आदि के लिए आग या चूल्हे पर चढाना या रखना। जैसे—दाल या दूध बैठाना।

पद—बैठा भात—वह भात जो चावल और पानी एक ही साथ आग पर रख कर पकाया गया हो।

१० किसी प्रकार या रूप में नीचे की ओर गिराना, दबाना या धँसाना। जैसे—उस कमरे के बोझ ने सारा मकान बैठा दिया। ११. कोई चलता हुआ काम इस प्रकार विकृत करना कि उसका अंत या नाश हो जाय। जैसे—ये नये कार्यकर्ता तो चार दिन में कारखाने (या संस्था) को बैठा देंगे। १२ किसी वस्तु या व्यक्ति को ऐसी अवस्था मे लाना कि वह निकम्मा, रद्दी या बेकार हो जाय। जैसे—(क) बीमारी (या बुढ़ापे) ने उन्हें बैठा दिया है। (ख) तुमने लापरवाही से सारा अचार बैठा दिया। १३. किसी स्त्री को उपपत्नी बनाकर अपने घर ले आना और रखना। जैसे—उन्होंने एक वेश्या को बैठा लिया था। १४ नर और मादा को समोग करने के लिए एक साथ रखना। जोडा खिलाना। जैसे—मुरगे को मुरगी के साथ बैठाना। १५ पानी आदि मे घुली वस्तु को तल मे ले जाकर जमाना। जैसे—यह दवा सब मैल नीचे बैठा देगी। १६ किसी काम मे कौशल प्राप्त करने के लिए इस प्रकार अभ्यास करना कि शरीर का कोई अंग ठीक तरह से काम करने लगे। जैसे—चित्रकारी में हाथ बैठाना। १७. प्रहार के समय फेंक या चलाकर कोई चीज ठीक जगह पर पहुँचाना। क्षिप्त वस्तु को निर्दिष्ट लक्ष्य या स्थान पर जमाना या लगाना। जैसे—निशाना बैठाना। १८ उक्ति, कथन, सिद्धान्त आदि कहीं इस रूप में लगाना कि वह उपयुक्त या सार्थक जान पड़े। घटित करना। घटाना। जैसे—(क) आप अपना यह सिद्धान्त हर जगह नहीं बैठा सकते। (ख) इस दोहे का अर्थ बैठाओ तो जानें कि तुम भी बडे पंडित हो। १९ गणित-सम्बन्धी किसी प्रश्न का ठीक उत्तर या फल निकालने के लिए उचित क्रिया या हिसाब करना। जैसे—जोड़, पड़ता या हिसाब बैठाना। २० उगाहने आदि के लिए कर या शुल्क नियत करना। जैसे—अब तो नित्य नए नए कर बैठाये जाते हैं। २१. कोई चीज किसी के पास गिरवी या रेहन रखना। (जुआरी) जैसे—उसने दाँव चुकाने के लिए अपनी अँगूठी बैठा दी।

संयो० क्रि०—देना।

बैठारना†—स०=बैठाना।

बैठालना†—स०=बैठाना।

बैड़ाल—वि०[सं० बिडाल+अण्] बिल्ली-सम्बन्धी।

बैड़ाल-व्रत—पुं० [सं० उप० स०] बिल्ली की तरह ऊपर से सौजन्य और सद्भाव प्रकट करने पर भी मन मे कपट छिपाये रखना और घात में लगे रहना।

बैड़ालव्रती—पुं० [सं० बैड़ालव्रत+इनि] १. वह जो बैड़ालव्रत धारण किये हो। बिल्ली के समान ऊपर से सीधा-सादा पर समय पर घात करनेवाला। कपटी। २. ऐसा व्यक्ति जो स्त्री के अभाव में ही सदाचारी बना हुआ हो, अपनी इन्द्रियों पर वश रखने के कारण सदाचारी न हो।

बेढ़ना—स०=बेढ़ना (घेरना)।

बैण—पु०[स० वैण] बाँस की खपाचियों से टोकरियाँ तथा अन्य सामान बनानेवाला कारीगर।

बैत—स्त्री० [अ०] किसी शेर (पद्य) के दोनों चरण। मिसरों में से कोई मिसरा।

बैतड़ा†—वि०[फा० बदतर?]१. बदमाश। लुच्चा। २. बेहूदा।

बैतबाजी—स्त्री०[अ० +फा०] वह प्रतियोगिता जिसमे एक बालक एक शेर पढ़ता है और दूसरा बालक उक्त शेर के अन्तिम शब्द से आरम्भ होनेवाला दूसरा शेर पढता है और इसी प्रकार यह प्रतियोगिता चलती रहती है।

बैतरनी—स्त्री०[सं० वैतरणी] १. एक प्रकार का धान जो अगहन मे तैयार होता है। २ दे० 'वैतरणी'।

बैतरा†—पु०=बैतड़ा।

बैताल—पु०=बेताल।

बैतालिक—वि०, पु०=वैतालिक।

बैतुल्लाह—पु०[अ०] १. खुदा का घर। २. मुसलमानों का काबा तीर्थ।

बैद†—पु०[स्त्री० बैदिन]=वैद्य।

बैदई†—स्त्री०[हिं० बैद] वैद्य का काम, पेशा या भाव। बैदगी। उदा०—अर्थ, सुनारी, बैदई, करि जानत पतिराम।—बिहारी।

बैदाई—स्त्री०—बैदई।

बैदूर्य—पुं०=वैदूर्य।

बैदेही—स्त्री० =वैदेही।

बैन—पुं०[सं० वचन, प्रा० वयन]१. वचन। बात।

मुहा०—बैन झरना=मुँह से बात निकलना।

२. वेणु। बाँसुरी। उदा०—मोहन मन हर लिया सुबैन बजाय कै।—आनंदघन। ३. घर मे मृत्यु होने पर कुछ विशिष्ट शोकसूचक पद या वाक्य जिन्हें स्त्रियाँ कह कहकर रोती हैं। (पजाब)

बैनतेय—पु०=वैनतेय।

बैनसगाई—स्त्री० [हिं० बैन+सगाई] रचना में होनेवाला अनुप्रास। वर्णमैत्री। (राज०)

बैना—पु०[सं० वायन] शुभ अवसरों पर इष्ट-मित्रों तथा सम्बन्धियों के यहाँ से आने अथवा उनके यहाँ भेजी जानेवाली मिठाई।

क्रि० प्र०—देना।—बाँटना।—भेजना।

स०[सं० वपन] (बीज) बोना।

†पुं०=बैंदा।

†पु०=बैन।

बैनामा—पु०[अ० बै+फा० नामा] वह पत्र जिसमे किसी वस्तु विशेषत मकान या जमीन, जायदाद आदि के बेचने और उससे सबध रखनेवाली बातों का उल्लेख होता है। विक्रय-पत्र। (सेल डीड)

बैपर—स्त्री०[स० बधूवर हिं० बहुअर]औरत।

बैपार†—पु० =व्यापार।

बैपारी†—पु०=व्यापारी।

बैमातेर—वि० वैमात्रेय।

बैयां*—अव्य० [?] घुटनो के बल। घुटनो के सहारे।

बैया—पु० [स० बाय] बै। बैसर। (जुलाहे)

बैरंग—वि० [अ० बियरिंग] १ वह (चिट्ठी) जिस पर टिकट न लगाया हो फलत जिसका महसूल उसे पानेवाले को चुकाना पडता हो। २ विफल।

मुहा०—**बैरग लौटना**=बिना काम हुए, विफल लौटना।

बैर—पु० [स० वैर] १ किसी का बहुत बडा अहित या अपकार करने की मन मे होनेवाली उत्कट भावना जो स्वभावजन्य, कारण-जन्य अथवा ईर्ष्याजन्य होती है। २ बदला लेने की भावना।

मुहा०—**बैर काढ़ना**=किसी का अहित या अपकार करके उसके द्वारा किये हुए अहित या अपकार का बदला चुकाना। **बैर चितारना, चुकाना या साधना**=पुराना बैर याद करके उसका बदला लेना। उदा०—पपैया प्यारे कब को बैर चिताइयो।—मीराँ। **बैर ठानना**=बदला लेने के लिए अथवा दुर्भावनावश किसी का अपकार करने के लिए तत्पर होना। **बैर डालना**=विरोध उत्पन्न करना। दुश्मनी पैदा करना। **बैर निकालना**=बैर काढना। **(किसी के) बैर पड़ना**=प्राय जान-बूझकर किसी को सताना। **बैर बढ़ाना**=अधिक दुर्भाव उत्पन्न करना। दुश्मनी बढ़ाना। ऐसा काम करना जिससे अप्रसन्न या कुपित मनुष्य और भी अप्रसन्न और कुपित होता जाय। **बैर बिसाहना या मोल लेना**=जिस बात से अपना कोई सबध न हो, उसमे योग देकर दूसरे को व्यर्थ अपना विरोधी या शत्रु बनाना। बिना मतलब किसी से दुश्मनी पैदा करना। **बैर मानना**=मन मे दुर्भाव रखना। बुरा मानना। दुश्मनी रखना। **बैर लेना**=किसी का अपकार करके वैर का बदला चुकाना।

पु० [स० बदरी] बेर का पेड और उसका फल।

पु० [देश०] नल मे लगा हुआ चिलम के आकार का चोगा जिसमे भरे हुए बीज हल चलाने मे बराबर कूंड मे पडते जाते है।

बैरक—पु० [तु० बैरक] १ छोटा झडा। झडी। २ अधिकार मे लाई हुई अथवा जीती हुई जमीन मे गाड़ा जानेवाला झडा।

मुहा०—**बैरक बांधना**=कोई अनुष्ठान करने अथवा दूसरो को अपना अनुयायी बनाने के लिए झडा खडा करना। उदा०—अपने नाम की बैरक बाँधो सुबस बसौ इहि गाँव।—सूर।

स्त्री० [अ०] छावनी मे वह इमारत अथवा इमारतों की शृखला जिसमे सैनिक समूह रहते हों।

बैरख—पु०=बैरक (झडा)।

बैरन—स्त्री० [हिं० बैरी का स्त्री० रूप] १ वह स्त्री जो किसी से शत्रुतापूर्ण व्यवहार करती हो। २. सौत।

बैरा—पु० [देश०] १ हल के मूठे मे बाँधा जानेवाला एक प्रकार का चोंगा जिसमे बोते समय बीज डाले जाते हैं। माला। २. ईंट के टुकड़े, रोडे आदि जो मेहराब बनाते समय उसमे चुनी हुई ईंटों को जमी रखने के लिए खाली स्थान मे भर देते हैं।

पु० [अं० बेयरर] होटलो आदि मे वह व्यक्ति जो अभ्यागतों को भोजन पहुँचाता है।

बैराखी—स्त्री०=बरेखी।

बैराग†—पुं०=वैराग्य।

बैरागर—पु० [बैर? +स० आगार] रत्नों आदि की खान। उदा०—गुणमणि बैरागर धीरज को सागर।—केशव।

बैरागी†—पु०=वैरागी।

बैराग्य†—पु०=वैराग्य।

बैराना—अ० [हिं० बाइ=वायु] वातग्रस्त होना।

†अ०=बौराना।

बैरिस्टर—पु० [अ०] इंग्लैंड के उच्चतर न्यायालयो मे बहस करने की मान्यता प्राप्त करनेवाला अधिवक्ता या वकील।

बैरिस्टरी—स्त्री० [अ० बैरिस्टरी+हिं० ई (प्रत्य०)] बैरिस्टरी का काम या पेशा।

बैरी—वि० [स० वैरी, वैर+इनि] जिसका किसी से वैर हो।

पु० शत्रु।

बैरोमीटर—पु० [अं०] वायु के दबाव या भार का सूचक एक वैज्ञानिक उपकरण।

बैल—पु० [सं० बलिवर्द] १ गाय से उत्पन्न प्रसिद्ध नर चौपाया जो गाडी, हल आदि मे जोता जाता है। २ लाक्षणिक अर्थ मे, (क) बहुत बडा मूर्ख व्यक्ति। (ख) परिश्रमी व्यक्ति। ३ रहस्य संप्रदाय में (क) शरीर (ख) त्रिगुण।

बैल-मुतनी—स्त्री० दे० 'गौमूत्रिका'।

बैलर—पु० [अ० ब्वायलर] पीपे के आकार का लोहे का बडा देग जो भाप से चलनेवाली कलो मे होता है।

बैलून—पु० [अं०] १ गुब्बारा। २ आज-कल वह बहुत बडा गुब्बारा जो विशिष्ट वैज्ञानिक अनुसधानों आदि के लिए आकाश मे उडाया जाता है; अथवा जिसके सहारे लोग कुछ दूर तक ऊपर आकाश मे उडते हैं।

बैल्व—वि० [स० बिल्व+अण्] १ बेल वृक्ष अथवा उसकी लकडी से सबध रखनेवाला। २ बेल की लकडी का बना हुआ। ३ (स्थान) जिसमे बहुत से बेल के वृक्ष हो।

बैवानस†—पु०=वैखानस।

बैल्क—पु० [सं०] शिकार किये हुए पशु का मांस।

बैसंदर—पु०=वैसतर (अग्नि)।

बैस—स्त्री० [स० वयस्] १. वयस। वर। उमर। उदा०—बारी बैस गुलाब की, सींचत मनमथ छैल।—रसनिधि। २. युवावस्था। जवानी।

क्रि० प्र०—चढ़ना।

†पु०=वैश्य।

पुं० (किसी मूल पुरुष के नाम पर) क्षत्रियो की एक प्रसिद्ध शाखा जो अधिकतर कन्नौज से अतर्वेद तक बसी है।

बैसना†—स० =बैठना।
बैसरा—स्त्री० दे० 'कंघी' (जुलाहों की)।
बैसवाड़ा—पु० [हिं० बैस+बाड़ा (प्रत्य०)] [वि० बैसवाड़ी] अवध के दक्षिण-पश्चिमी भू-भाग का नाम।
बैसवाड़ी—वि० [हिं० बैसवाड़ा] बैसवाड़े में होनेवाला।
स्त्री० बैसवाड़े की बोली।
पु० बैसवाड़े का निवासी।
बैसवारा—वि० [सं० वयस+हिं० वाला (प्रत्य०)] [स्त्री० बैसवारी] जवान। युवक।
पु०=बैसवाड़ा।
बैसा—पु० [सं० वंश=बाँस] औजारो की मूठ या दस्ता। उदा०—बैसौ लगै कुठार को ..।—वृंद।
बैसाख—पु० [सं० वैशाख] चैत के बाद और जेठ के पहले का महीना। वैशाख।
बैसाखी—स्त्री० [सं० वैशाख] १ सौर वैशाख का पहला दिन। २ उक्त दिन मनाया जानेवाला त्यौहार।
स्त्री० [सं० द्विशाखी=दो शाखाओंवाला] १ वह डंडा जिसे बगल के नीचे रखकर लंगड़े चलते हैं। २ डंडा।
बैसारना†—स०=बैठाना।
बैसिक†—पु०=वैशिक।
बैस्वा†—स्त्री०=वेश्या।
बैहर†—वि० [सं० वैर=भयानक] भयानक। विकट।
स्त्री० [सं० वायु] वायु। हवा।
बोंक—पु० [हिं० बक, बाँक ?] लोहे की वह नुकीली मोटी कील जो पुरानी चाल के दरवाजों में चूल का काम देती है।
बोंगना—पु० दे० 'बहुगुना'।
बोंट†—पुं० [?] घास-पात मे रहनेवाला एक प्रकार का छोटा कीडा।
बोंड़री—स्त्री०=बोंडरी।
बोंड़ा—पु० [?] बारूद मे आग लगाने का पलीता।
बोंड़ी—स्त्री०=बौड़ी।
बोअनी†—स्त्री०=बोनी (बोआई)।
बोआई—स्त्री० [हिं० बोना] बोने की क्रिया, ढंग, भाव या मजदूरी।
बोआना—स० [हिं० बोना] बोने का काम दूसरे से कराना।
बोक†—पु०=बकरा।
बोकरा—पु०=बकरा।
बोकरी—स्त्री० =बकरी।
बोकला—पु०=बकला (छिलका)।
†पु०=बकरा।
बोका—पुं० [हिं० बोक=बकरा] १. बकरे की खाल। २ चमड़े का डोल।
वि० मूर्ख। (पूरब)
बोक्काण—पुं० [स०] वह पात्र जिसमे घोड़े के खाने के लिए दाना आदि डालकर उसके गले मे बाँध दिया जाता है।
बोखार†—पुं०=बुखार।
बोगदा—पु० [?] ऊँचे पहाड़ के बीचोबीच खोदकर बनाया हुआ रास्ता। (टनेल)
बोगस—वि० [अं०] १. रद्दी। व्यर्थ का। २. कृत्रिम। जाली। ३. झूठा या नकली।
बोगुआ—पुं० [?] घोड़े के पेट मे होनेवाला एक तरह का शूल।
बोज—पु० [?] घोड़ो का एक भेद।
स्त्री० [?] पासंग नामक बकरे की मादा।
बोजा—स्त्री० [फा० बोज] चावल से बना हुआ मद्य। चावल की शराब।
बो-जोत—स्त्री० [हिं० बोना+जोतना] खेती-बारी। कृषि-कर्म।
बोझ—पु० [?] १ भारी होने की अवस्था या भाव। भार। २. भारी गट्ठर। ३. भारी गट्ठर का भार। वजन। ४ उतनी वस्तु जितनी एक खेप मे ले जाई या ढोई जाती है। जैसे—चार बोझ लकड़ी। ५ लाक्षणिक अर्थ मे, ऐसा विकट और श्रम-साध्य कार्य जो भार-स्वरूप जान पड़ता तथा जिसे करने की रुचि बिलकुल न हो।
मुहा०—**बोझ उठाना**=कोई कठिन काम करने का उत्तरदायित्व अपने पर लेना। **बोझ उतारना**=कोई विकट और श्रमसाध्य काम संपन्न करना अथवा उससे छुट्टी पाना।
बोझना†—स० [हिं० बोझ] बोझ से युक्त करना। भार रखना। लादना। जैसे—नाव या बैलगाड़ी बोझना।
बोझला—वि०=बोझिल।
बोझा—पु० [?] वह कोठरी जिसमें राब के बोरे इसलिए नीचे ऊपर रखे जाते हैं कि शीरा या जूसी निकल जाय।
†पु०=बोझ (भार)।
बोझाई—स्त्री० [हिं० बोझना+आई (प्रत्य०)] बोझने या लादने का काम, ढंग, भाव या मजदूरी।
बोझिल—वि० [हिं० बोझ] १ अधिक बोझवाला। भारी। वजनदार। वजनी। २ जिस पर अधिक बोझ लदा हो। ३. (काम) जो विकट हो तथा जिसमे रुचि न लगती हो।
बोट—स्त्री० [अं०] १. नाव। नौका। २ जहाज।
पु० [?] टिड्डा नाम का कीड़ा।
बोटा—पु० [सं० वृत, प्रा० वोण्ट=डाल, लट्ठा] [स्त्री० अल्पा० बोटी] १ लकड़ी का वह मोटा टुकड़ा जो लबाई मे हाथ दो हाथ से अधिक का न हो। कुंदा। २. किसी चीज का बड़ा टुकड़ा।
बोटी—स्त्री० [हिं० बोटा] मास का छोटा टुकड़ा। विशेषत ऐसा टुकड़ा जिसमें हड्डी भी हो।
मुहा०—**बोटी-बोटी काटना**=तलवार, छुरी आदि से शरीर को काट कर खड-खड करना। (**किसी की**) **बोटी बोटी फड़कना**=उद्दडता, धृष्टता, युवावस्था आदि के कारण शरीर के सभी अंगो का बहुत अधिक चचल होना।
†स्त्री०=टिड्डा।
बोड़—स्त्री० [देश०] सिर पर पहनने का एक आभूषण।
†स्त्री० =बौर (बल्ली)।
बोड़ना†—स०=डुबाना।
बोड़री—स्त्री० [हिं० बोंडी] तोंदी। नाभि।
बोड़ल—स्त्री० [देश०] एक प्रकार का पक्षी।
बोड़ा—पुं० [देश०] एक प्रकार की पतली लबी कली जिसकी तरकारी बनती है। लोबिया। बजरबट्टू।

†पुं० [सं० वोडु] अजगर। (पूरब)

बोड़ी—स्त्री० [?] १. एक प्रकार की कोमल फली जिसका अचार और तरकारी बनती है। २ कौड़ी। कपर्दिका। ३ बहुत ही थोड़ा धन।

बोत—पुं० [देश०] घोड़ो की एक जाति।

स्त्री० [हिं० बोना ?] पान की पहले वर्ष की उपज या खेती।

बोतल—स्त्री० [अ० बॉट्ल] १. कांच का लबी गरदन का गहरा बरतन जिसमे द्रव पदार्थ रखा जाता है। शीशी। २ शराब जो प्रायः बोतलो मे रहती है। जैसे—उन्हे तो हर वक्त दो बोतल का नशा रहता है।

मुहा०—बोतल चढ़ाना=मद्य या शराब पीना।

बोतलिया—वि०=बोतली।

बोतली—स्त्री० [हिं० बोतल] छोटी बोतल।

वि० साधारण बोतल की तरह का कालापन लिये हरा।

पुं० उक्त प्रकार का हरा रग।

बोता—पुं० [स० पोत] ऊँट का ऐसा बच्चा जिसपर अभी सवारी न होती हो।

बोद†—वि० बोदा। उदा०—निर्सैहैं बोद, बुद्धि बल मूला—जायसी।

बोदक—स्त्री० [देश०] कुसुम या बरें की एक जाति जिसमे काँटे नही होते और जिसके केवल फल रँगाई के काम मे आते हैं। इसके बीजो से तेल नही निकाला जाता।

बोदर—स्त्री० [?] पतली छड़ी।

बोदला†—वि० बोदा।

बोदा—वि० [स० अबोध] [स्त्री० बोदी] १ जिसकी बुद्धि तीव्र या प्रखर न हो। कम-समझ। २ मट्ठर। सुस्त। ३ जिसमे अधिक दृढ़ता या शक्ति न हो। कमजोर। ४. कायर। डरपोक। ५ तुच्छ। निकम्मा।

बोदापन—पुं० [हिं० बोदा+पन (प्रत्य०)] बोदे होने की अवस्था या भाव।

बोद्धव्य—वि० [स०√बुध् (जानना)+तव्यत्] १. जानने या ध्यान देने योग्य। २ जाग्रत करने योग्य।

बोद्धा (द्धृ)—पुं० [स०√बुध्+तृच्] नैयायिक।

बोध—पुं० [स० बुध्+घञ्] १ किसी के अस्तित्व, प्रकार, स्वरूप आदि का होनेवाला मानसिक भान। २ शब्दो के द्वारा होनेवाला किसी चीज या बात का ज्ञान। अर्थ। ४. तसल्ली। धीरज। सान्त्वना।

बोधक—वि० [स०√बुध्+णिच्—ण्वुल्—अक] १ बोध या ज्ञान करानेवाला। जतानेवाला। ज्ञापक।

पुं० [स०] शृंगार रस के हावो मे से एक हाव जिसमें किसी सकेत या क्रिया द्वारा एक दूसरे को अपना मनोगत भाव जताया जाता है।

बोधगम्य—वि० [स०] (विषय) जिसका बोध हो सके। समझ मे आने योग्य।

बोधन—पुं० [स०√बुध्+णिच्+ल्युट्—अन] १. बोध या ज्ञान कराने की क्रिया या भाव। ज्ञापन। जताना। २ सोते हुए को जगाना। ३ अग्नि, दीपक आदि प्रज्वलित करना। ४. तेज या प्रबल करना। उद्दीपन। ५ मत्र आदि सिद्ध करना या जगाना।

बोधना—स० [स० बोधन] १ बोध या ज्ञान कराना। जताना। २. कुछ कह-सुनकर सतुष्ट या शांत करना। समझाना-बुझाना। उदा०—मुकता पानिप सरिस स्वच्छ कहि कछु मन बोधत।—रत्ना०। ३. उद्दीप्त या प्रज्वलित करना।

बोधनी—स्त्री० [स० बोधन+ङीष्] १. प्रबोधनी एकादशी। २ पिप्पली।

बोधव्य—वि० [सं० बोद्धव्य] १. जिसका बोध प्राप्त किया जा सकता हो अथवा किया जाने को हो। २ जिसे किसी बात का बोध कराया जा सके या कराया जाय।

बोधि—पुं० [स०√बुध्+इन्] १ एक प्रकार की समाधि। २. पीपल का पेड़।

बोधित—भू० कृ० [स०√बुध् (जानना)+णिच्+क्त, गुण, इट्] जिसे बोध हो चुका हो।

बोधि तरु—पुं० [स० कर्म० स०] दे० 'बोधिवृक्ष'।

बोधितव्य—वि० [स०√बुध्+णिच्+तव्य] जानने योग्य।

बोधिद्रुम—पुं० दे० 'बोधिवृक्ष'।

बोधिवृक्ष—पुं० [स० कर्म० स०] बुद्धगया मे पीपल का वह वृक्ष जिसके नीचे बुद्ध को बोध हुआ था।

बोधिसत्व—पुं० [सं० उपमि० स०] वह जो बुद्धत्व प्राप्त करने का अधिकारी हो, पर बुद्ध न हो पाया हो। (बौद्ध)

बोधी (धिन्)—वि० [स० बोध+इनि] जाननेवाला।

बोध्य—वि० [स०√बुध् (जानना)+ण्यत्] जानने योग्य।

बोना—स० [सं० वपन] १. बीज, पौधे आदि को इस उद्देश्य से जमीन मे स्थापित करना कि वह बढे तथा फले-फूले। २ किसी बात का सूत्रपात करना। ३ ऐसा काम करना जिसका फल आगे चलकर दिखाई दे। उदा०—कलम बोती है अपने गान।—दिनकर।

बोनी—स्त्री० [हिं० बोना] १ बोने की क्रिया या भाव। २ बीज आदि बोने का मौसम।

बोबा—पुं० [अनु०] [स्त्री० बोबी] १ स्तन। थन। चूँची। २ ऐसा छोटा बच्चा जो अभी माता का दूध पीकर रहता हो। ३ घर-गृहस्थी का सामान, विशेषत टूटा-फूटा समान। अगड़-खगड़। ४ बड़ी गठरी। गट्ठर।

वि० निरा मूर्ख। गावदी।

बोय†—स्त्री० [फा० बू] १ गध। बास। २ दुर्गंध। बदबू।

बोर—पुं० [हिं० बोरना] १ पानी आदि मे बोरने अर्थात् डुबाने की क्रिया या भाव। जैसे—दो बोर की रगाई। २ गोता। डुबकी।

क्रि० प्र०—देना।

पुं० [स० वर्तुल] १ चाँदी या सोने का बना हुआ गोल और कँगूरेदार घुँघरू जो आभूषणो मे गूँथा जाता है। जैसे—पाजेब के बोर। २ सिर पर पहनने का एक गहना जिसमे मीनाकारी का काम होता है। इसे बीजू भी कहते हैं।

†पुं० [?] १ गड्ढा। २ आहार। भोजन। (पूरब) ३. घमंड। दर्प।

बोरका—पुं० [हिं० बोरना] १ मिट्टी की वह दवात जिसमे लड़के खड़िया घोलकर रखते हैं। २. दवात।

†पुं०=बुरका।

बोरना—स० [हिं० बूड़ना] १. जल या किसी तरल पदार्थ में निमग्न करना। डुबाना। २. अच्छी तरह से तर करना। भिगोना। ३. बुरी तरह से चौपट या नष्ट करना। जैसे—कुल का नाम बोरना। ४. किसी चीज या बात में पूरी तरह से युक्त करना। उदा०—कपट बोरि बानी मृदुल बोलेउ जुगुति समेत।—तुलसी।

बोरसी—स्त्री० [हिं० गोरसी] मिट्टी का बरतन जिसमें आग रखकर जलाते हैं। अँगीठी।

बोरा—पुं० [सं० पुर दोना या पत्र] [स्त्री० अल्पा० बोरी] १ टाट का बना थैला जिसमें अनाज आदि कहीं ले जाने के लिए रखते हैं।
†पुं० [सं० वर्तुल] घुंघरू। (दे० 'बोर')

बोराबंदी—स्त्री० [हिं० बोरा+बंद (करना)] १ अनाज बोरों आदि मे भरकर बन्द करने का काम। २ अनाज आदि की बिक्री का वह प्रकार जिसमे पूरे और भरे हुए बोरे ही बेचे जाते हैं, खोलकर फुटकर रूप मे नही।

बोरिका†—पुं० = बोरका।

बोरिया—पुं० [फा०] १ चटाई। २ बिस्तर। बिछौना।
पद—बोरिया-बधना = घर-गृहस्थी का बहुत थोडा-सा सामान।
मुहा०—(कहीं से) बोरिया या बोरिया-बधना उठाना = चलने की तैयारी करना। प्रस्थान करना।
†स्त्री० बोरी (छोटा बोरा)।

बोरी—स्त्री० [हिं० बोरा] टाट की छोटी थैली। छोटा बोरा।

बोरो—पुं० [म० बोरव] एक प्रकार का मोटा धान जो नदी के किनारे की सीड में बोया जाता है।

बोरो-बाँस—पुं० [देश० बोरो+हिं० बाँस] एक प्रकार का बाँस जो पूर्वी बगाल मे होता है।

बोर्जुआ—पुं० [जर०] मध्यवर्ग का ऐसा व्यक्ति जो पुरानी प्रथाएँ मानता हो, और अपने आपको निम्नवर्ग की तुलना मे बहुत प्रतिष्ठित समझता हो तथा लोभी और स्वार्थी हो।

बोर्ड—पुं० [अं०] १ किसी स्थायी कार्य के लिए बनी हुई समिति। जैसे—म्युनिसिपल बोर्ड। २ माल के मामलो के फैसले या प्रबंध के लिए बनी हुई समिति या कमेटी। ३. कागज की मोटी दफ्ती। गत्ता।

बोल—पुं० [हिं० बोलना] १ बोलने पर मनुष्य के मुख से निकला हुआ सार्थक पद, वाक्य या शब्द। वाणी।
क्रि० प्र०—बोलना।
मुहा०—दो बोल पढ़वाना = धार्मिक दृष्टि से कुछ मत्रों आदि का उच्चारण कराते हुए साधारण रूप से लड़की का विवाह करा देना। जैसे—कोई अच्छा लड़का मिले तो मै भी इसके दो बोल पढवाकर छुट्टी पाऊँ। (किसी के काम में) बोल मारना = किसी को कोई बात अच्छी तरह सुझा और समझा देना। जैसे—तुम तो उनके काम में बोल मार ही चुके हो, वे अब मेरी बाते क्यो सुनने लगे।
२. कही हुई बात। उक्ति। कथन। वचन। जैसे—तुम्हारी बात का भी कोई मोल है (अर्थात् तुम्हारी बात का कोई विश्वास नही)। उदा०—(क) सुन रे ढोल, बहू के बोल।—कहा०। (ख) परदेशी दूर का मुख के बोल सँभाल।—लोक-गीत। ३. किसी की कही हुई बात का ऐसा भाव या महत्त्व जो उसकी प्रामाणिकता, शक्तिमत्ता आदि का सूचक होता है। उदा०—पचन मे मेरी पत रहे, सखियन में रहे बोल। साईं से साँची रहूँ, बाज बाज रे ढोल।—लोकगीत।
पद—बोल-बाला = हर जगह होनेवाली प्रतिष्ठा या सम्मान। जैसे—सच्चे का बोला-बाला, झूठे का मुँह काला। (कहा०)
मुहा०—(किसी का) बोलबाला रहना = (क) बात की साख बनी रहना। (ख) ऐसी प्रतिष्ठा या मर्यादा बनी रहना कि हर जगह जीत और मान हो। जैसे—सरकार का सदा बोलबाला रहे। बोल बाला होना = प्रताप, भाग्य, मान-मर्यादा, यश आदि की वृद्धि होना। (किसी का) बोल रहना = मान-मर्यादा या साख बनी रहना।
३. चुभती या लगती हुई अथवा व्यग्यपूर्ण उक्ति। ताना। बोली।
क्रि० प्र०—सुनाना।
मुहा०—बोल मारना = व्यग्यपूर्ण या चुभती हुई बात कहना। उदा०—ननदिया री काहे मारे बोल।—गीत। ४. अदद या संख्या-सूचक शब्द। जैसे—सौ बोल लड्डू आये थे, सो चार चार सब को बाँट दिये। (स्त्रियाँ) ५. वे शब्द जिनसे गीत का कोई चरण या पद बना हो। जैसे—इस गीत के बोल हैं—'बँसुरिया कैसी बजाई श्याम'।
मुहा०—बोल बनाना = सगीत में, गाने के समय किसी गीत के एक एक शब्द का कई बार अलग अलग तरह से बहुत ही कोमल और सुन्दरता-पूर्वक नये नये रूपों में उच्चारण करना।
६. सगीत मे, बाजों से निकलनेवाली अलग-अलग ध्वनियों के वे गठे या बँधे हुए शाब्दिक रूप जो विद्यार्थियो को सुगमतापूर्वक सिखाने आदि के लिए कल्पित कर लिये गये हों। जैसे—तबले के बोल धा धा धिन ता; और सितार के बोल दा दा दिर दारा आदि।
पुं० [देश०] एक प्रकार का सुगंधित गोद जो स्वाद मे कडुवा होता है।

बोलक—पुं० [देश०] जल-भ्रमर। (डिं०)

बोल-चाल—स्त्री० [हिं० बोलना+चालना] १. मिलने-जुलने या साथ रहनेवाले लोगों में होनेवाली बात-चीत। वार्तालाप। जैसे—आज-कल उन दोनों मे बोल-चाल बद है। २. वह सबध-सूचक अवस्था या स्थिति जिसमें परस्पर उक्त प्रकार की बात-चीत होती है। ३. बात-चीत करने का ढंग या प्रकार। जैसे—बोल-चाल से तो वे पजाबी ही जान पड़ते हैं। ४. साहित्यिक क्षेत्र मे, मुहावरो से भिन्न वे विशिष्ट गढे हुए पद जिनका प्रयोग कुछ निश्चित प्रचलित अर्थ मे ही होता है और जिनके रूप मे कभी किसी प्रकार का परिवर्तन या विकार नही होता। जैसे—(क) मुझे डर है कि कही कुछ उन्नीस-बीस (अर्थात् कोई सामान्य अनिष्ट कारक बात) न हो जाय। (ख) वे वे घर बार छोड़कर त्यागी हो गये हैं। (ग) उन लोगों मे खूब तू-तू मैं-मैं हुई। (घ) आज-कल तो उन दोनो मे साहब-सलामत भी बद है। उक्त वाक्यों में उन्नीस-बीस, घर-बार, तू-तू मैं-मै और साहब-सलामत पद बोल-चाल के हैं।
विशेष—ऐसे अवसरों पर उन्नीस-बीस की जगह बीस-इक्कीस घर-बार की जगह मकान-बार, तू-तू मैं-मैं की जगह हम-हम तुम-तुम और साहब-सलामत की जगह जनाब-सलामत या साहब-खैरियत सरीखे पदों का प्रयोग नही हो सकता। उर्दू मे इसी को 'रोजमर्रा' कहते हैं।

बोलता—पुं० [हिं० बोलना] १. ज्ञान कराने और बोलनेवाला तत्त्व अर्थात् आत्मा। उदा०—बोलते को जान ले पहचान ले। बोलता जो कुछ

कहे सो मान ले। २ जीवनी-शक्ति या प्राण। ३. सार्थक बातें कहनेवाला प्राणी, अर्थात् मनुष्य। ४ हुक्का।

वि० १ बोलनेवाला। जैसे—बोलता सिनेमा। २. बोल-चाल मे चतुर। वाक्-पटु। ३. बहुत बोलनेवाला। बकवादी।

बोल-तान—स्त्री० [हिं०] सगीत मे ऐसी तान जिसमे विशुद्ध स्वरो के स्थान पर उनके नामो के सक्षिप्त रूपो का उच्चारण होता हो। सरगम से युक्त तान।

बोलती—स्त्री० [हिं० बोलना] बोलने की शक्ति। वाक्। वाणी। २. बोलने मे अत्यधिक पटु, जीभ।

मुहा०—बोलती बद होना या मारी जाना=बहुत अधिक बडबड़ करना बद होना। जैसे—मुझे देखते ही उनकी बोली बद हो गई।

बोलनहार—वि० [हिं० बोलना+हार (प्रत्य०)] बोलनेवाला।

पुं० आत्मा जिससे बोलने की शक्ति प्राप्त होती है।

बोलना—अ० [स० वल्ह्, प्रा० बोल्ल] १. शब्द, ध्वनि आदि का साधारण स्वर मे (गाने, चिल्लाने आदि से भिन्न) उच्चरित करना। जैसे—किसी की जय या जयजयकार बोलना।

मुहा०—बोल उठना=एकाएक कुछ कहने लगना। मुंह से सहसा कोई बात निकाल देना। जैसे—बीच मे तुम क्यो बोल उठे?

२. शब्दो द्वारा कहकर अपना विचार प्रकट करना। जैसे—झूठ बोलने मे उन्हें लज्जा नही आती। ३ किसी से बात-चीत करना और इस प्रकार उससे आपसदारी का सबध बनाये रखना। जैसे—उनके क्षमा माँगने पर ही मैं उनसे बोलूंगा।

पद—बोलना चालना=परस्पर बातचीत करना।

३. किसी का नाम आदि लेकर इसलिए चिल्लाना जिसमे वह सुन सके। उदा०—ग्वाल सखा ऊँचे चढ़ि बोलत बार बार लै नाम।—सूर।

मुहा०—(किसी को) बोल पठाना=किसी के द्वारा बुलवाना या बुला भेजना।

५ किसी प्रकार की छेड़-छाड या रोक-टोक करना। किसी रूप मे बाधक होना। जैसे—तुम चुप-चाप चले जाओ, कोई कुछ नही बोलेगा। ६. वस्तुओ के सबध मे, उनका किसी प्रकार का शब्द करना। जैसे—सिक्के का टनटन बोलना। ७. किसी चीज का विशेष रूप से अपनी उपस्थिति जतलाना। जैसे—खीर मे केसर बोल रहा है। ८ इतना जीर्ण-शीर्ण होना कि काम मे आ सकने योग्य न रह जाय।

सयो० क्रि०—जाना।

मुहा०—(व्यक्ति का) बोल जाना=(क) मर जाना। ससार में न रह जाना। (बाजारू) (ख) किसी के सामने बिल्कुल दब या हार जाना। (ग) दिवालिया हो जाना। जैसे—सट्टे मे बड़े बडे धनी बोल जाते है। (पदार्थ का) बोल जाना=(क) नि शेष या समाप्त हो जाना। बाकी न रह जाना। चुक जाना। (ख) इतना निकम्मा, पुराना या रद्दी हो जाना कि उपयोग मे आने योग्य न रह गया हो। जैसे—यह कुरता तो अब बोल गया है।

स० १. मन्नत पूरी होने पर भक्तिपूर्वक कुछ करने की प्रतिज्ञा करना। जैसे—एक रुपए का प्रसाद बोलो तो तुम्हारी कामना पूरी हो। †२. आवाज देकर पास बुलाना। उदा०—मुनिवर निकट बोलि बैठाये।—तुलसी।

सयो० क्रि०—पठाना।

३. आज्ञा या आदेश देकर किसी को किसी काम के लिए नियुक्त करना। जैसे—आज पहरे पर उसकी नौकरी बोली गई है।

बोलपट—पु० [हिं० बोलना+मरा० पट] वह चलचित्र जिसमें पात्रो के कथोपकथन गीत आदि सुनाई पड़ते हो। (टॉकी)

बोलबाला—पु० [हिं० बोल+फा० बाला=ऊँचा] १ वचन या बात जिसे सर्वोपरि महत्त्व प्राप्त हुआ हो। २. ऐसी स्थिति जिसमे किसी विशिष्ट व्यक्ति की बात को सबसे अधिक आदर मिलता या प्राप्त होता हो।

बोलवाना—स० [हिं० बोलना का प्रे०] १. किसी को बोलने मे प्रवृत्त करना। २ उच्चारण कराना। जैसे—पहाडे बोलवाना।

†स० [हिं० बुलाना] बुलवाना।

बोलसर—स्त्री०=मौलसिरी।

पु० [?] एक प्रकार का घोड़ा।

बोलांस†—पु० [हिं० बोला+अश] वह अश जिसे किसी को देने का वचन दिया गया हो।

बोलचाली†—स्त्री० =बोलचाल।

बोलाना†—स०=बुलाना।

बोलावा†—पु०=बुलावा।

बोली—स्त्री० [हिं० बोलना] १ बोलने की क्रिया या भाव। २. किसी प्राणी के मुंह से निकला हुआ शब्द। मुंह से निकली हुई आवाज या बात। वाणी। जैसे—जानवरो या बच्चो की बोली। ३ ऐसी बात या वाक्य जिसका कुछ विशिष्ट अभिप्राय या अर्थ हो। ४ किसी भाषा की वह शाखा जो किसी छोटे क्षेत्र या वर्ग मे बोली जाती हो। स्थानिक भाषा। विभाषा। जैसे—अवधी, मैथिली, ब्रज आदि की गिनती आधुनिक हिंदी की बोलियो मे ही होती है।

क्रि० प्र०—बोलना।

५ विशिष्ट अर्थवाली कोई ऐसी उक्ति या कथन जिसमे किसी को चिढाने या लज्जित करने के लिए कोई कूट या गूढ व्यग्य मिला हो।

पद—बोली ठोली। (देखें)

मुहा०—बोली या बोली ठोली छोड़ना, बोलना या मारना=किसी को चिढाने के लिए व्यग्यपूर्ण बात कहना।

६ नीलाम के द्वारा चीजो के बिकने का वह दाम जो कोई खरीददार अपनी ओर से लगाता है। जैसे—उस मकान पर हमारी भी पाँच हजार रुपयो की बोली हुई थी।

क्रि० प्र०—बोलना।

बोली ठोली—स्त्री० [हिं० बोली+अनु० ठोली] ताने या व्यग्य से भरी हुई बात। बोली। (देखे)

क्रि० प्र०—छोड़ना।—बोलना।—मारना।—सुनाना।

बोलीदार—पु० [हिं० बोली+फा० दार] वह असामी जिसे जोतने के लिए खेत यों ही जबानी कहकर दिया जाय, कोई लिखा-पढ़ी न की जाय।

बोल्लक—पु० [स० बोल्ल+कन्] वह जो बहुत बोलता हो।

बोल्लाह—पु० [देश०] घोडो की एक जाति।

बोल्शेविक—पु० [रूसी] रूस की बोल्शेविक दल, आधुनिक कम्युनिष्ट दल का सदस्य।

बोल्शेविकी—पु० [रूसी] मार्क्सवाद के सिद्धान्तो का समर्थक एक रूसी

राजनीतिक दल जिसका नाम सन् १९१८ से कम्युनिस्ट पार्टी हो गया है।

बोल्शेविज्म—पुं० [रूसी] मार्क्स के सिद्धांतों के अनुसार शासन व्यवस्था अपनाने का वह विचार या सिद्धान्त जिसमे राष्ट्र की सारी प्रजा और संपत्ति पर शासन का पूरा पूरा अधिकार होता है।

बोवना†—स०=बोना।

बोवाई†—स्त्री०=बोआई।

बोवाना†—स० [हिं० बोना का प्रे०] बोने का काम दूसरे से कराना।

बोह—स्त्री० [हिं० बोर, या स० वाह] डुबकी। गोता।
क्रि० प्र०—देना।—लगाना।—लेना।

बोहड़†—पु०=बड (बरगद)।

बोहथ्थ†—पु०=बोहित।

बोहना—अ० [हिं० बोह] डुबकी लगाना।
स० [स० वयन, हिं० बोना का पु० रूप] उत्पन्न करना। पैदा करना।
उदा०—फटिक सिला के बाद बिसाल मन बिस्मय बोहत।—रत्ना०।

बोहनी—स्त्री० [स० बोधन=जगाना] १. दुकान खुलने अथवा दुकान पर दीया जलाने पर या फेरीवाले की होनेवाली पहली बिक्री। २ उक्त बिक्री से प्राप्त होनेवाला धन। ३. लाक्षणिक अर्थ मे, कोई काम आरंभ करते ही होनेवाली प्राप्ति या सफलता।

बोहनी बट्टा—पु० [हिं०] किसी चीज की पहले-पहले होनेवाली बिक्री और उससे मिलनेवाला धन।

बोहरा—पु० [हिं० व्यवहारिया=व्यापारी] १ गुजरात और महाराष्ट्र राज्यो मे रहनेवाले एक प्रकार के मुसलमान जो बहुधा व्यापार करते हैं। २ रोजगारी। व्यापारी।

बोहारना—स०=बुहारना।

बोहारी—स्त्री०=बुहारी (झाड़ू)।

बोहित—पु० [स० बोहित्थ] १ नाव। २ जहाज।

बोहित्थ—पु०=बोहित (जहाज)।

बोहिया—स्त्री० [देश०] एक तरह की काली पत्तीवाली चाय।

बोहियाना†—स०=बहाना।

बौंगा†—पु० [अनु०] बेवकूफ। मूर्ख।
†पुं०=चोगा।

बौंड़—स्त्री० [स० वोण्ट=वृत, टहनी] १ वृक्ष की वह टहनी जो दूर तक डोरी के रूप मे गई हो। २. बेल। लता।

बौंड़ना—अ० [हिं० बौंड़] १. लता की भाँति बढ़ना। २. टहनी का बढ़कर फैलना।

बौंडर—पुं०=बवडर।

बौंड़ी—स्त्री० [हिं० बौंड़] १. पौधो या लताओं के वे कच्चे फल जो सार रहित होते हैं। ढोडा। जैसे—मदार या सेमल के बौंडी। २. छीमी। फली।

बौआना—अ० [सं० वायु, हिं० वाउ+आना (प्रत्य०)] १. सपने मे निरर्थक बाते कहना। स्वप्नावस्था में प्रलाप करना। २. पागलो की तरह व्यर्थ की बातें बकना। बड़बड़ाना।

बौखल—वि० [हिं० बौखलाना] १.बौखलाया हुआ। २.पागल। सनकी।

बौखलाना—अ० [हिं० वाउ+सं० स्खलन] १. आवेश या क्रोध में आकर अड-बड बकना। २.होश-हवाश मे न रहकर पागलो का-सा आचरण या व्यवहार करना।

बौखा—स्त्री० [सं० वायु+स्खलन] हवा का तेज झोका जो वेग मे आँधी से कुछ हलका होता है।

बौछाड़†—स्त्री०=बौछार।

बौछार†—स्त्री० [स० वायु+क्षण] १. वायु के झोके से वर्षा की तिरछी आती हुई बूँदो का समूह। बूँदो की झडी जो हवा के झोके से तिरछी गिरती हो। झटास।
क्रि० प्र०—आना—पड़ना।
२. उक्त प्रकार या रूप से होने वाला बहुत-सी चीजो का पात। जैसे—गोलियो या ढेलो की बौछार। ३ बहुत अधिक सख्या मे लगातार किसी वस्तु का उपस्थित किया जाना। बहुत सा देते जाना या सामने रखते जाना। झडी। जैसे—लड़के के ब्याह मे उसने रुपयो की बौछार कर दी। ४. किसी के प्रति लगातार कही जानेवाली व्यग्यपूर्ण या लगती हुई बातो की झडी। आक्षेप से युक्त करके कही जानेवाली बातें। जैसे—उनके भाषण मे आधुनिक राजनीतिक नेताओ पर खूब बौछार थी।
क्रि० प्र०—छूटना।—छोड़ना।—पड़ना।

बौड़ना†—अ०=बौरना।

बौड़म—पु० [?] पागल। सनकी।

बौड़हा—वि० [स० वातुल, हिं० वाउर+हा (प्रत्य०)] [स्त्री० बौड़ही] बावला। पागल।

बौड़ी—स्त्री० [?] १. जमीन की एक नाप। २ कौडी का बीसवाँ भाग।

बौद्ध—वि० [सं० बुद्ध+अण्] १. बुद्ध-सबधी। २ बुद्ध द्वारा प्रचारित। जैसे—बौद्ध मत। ३. गौतम बुद्ध के धर्म का अनुयायी।

बौद्ध धर्म—पु० [स० कर्म स०] बुद्ध द्वारा प्रवर्तित धर्म।

बौद्धिक—वि० [सं० बुद्ध या बुद्धि+ठक्-इक] १ बुद्धि-सबधी। बुद्धि का। २ बुद्धि द्वारा ग्रहण किये जाने के योग्य। (इन्टलेक्चुअल)

बौध—पु० [स० बुध+अण्] बुध का पुत्र। पुरूरवा।

बौना—पु० [स० वामन] [स्त्री० बौनी] बहुत ही छोटे कद का आदमी।

बौनी—स्त्री०=बोनी (बोआई)।

बौर—पु० [स० मुकुल, प्रा० मुउड] आम की मजरी। मौर।
वि० दे० 'बौरा' (पागल)।

बौरई—स्त्री० [हिं० बौराना] पागलपन। सनक।

बौरना—अ० [हिं० बौर+ना (प्रत्य०)] बौर से युक्त होना।

बौरहा—वि० [हिं० बौरा+हा (प्रत्य०)] [स्त्री० बौरही] पागल। विक्षिप्त।

बौरा—वि० [स० वातुल, प्रा० वाउड, पु० हिं० बाउर] [स्त्री० बौरी] १. बावला। पागल। विक्षिप्त। २. भोला-भाला। सीधा-सादा। ३ गूँगा। (क्व०)

बौराई—स्त्री० [हिं० बौरा+ई] बावलापन। पागलपन।

बौराना—अ० [हिं० बौरा+ना (प्रत्य०)] १. पागल हो जाना। सनक जाना। विक्षिप्त हो जाना। २. विवेक आदि से रहित होकर उन्मत्त होना।

स० १. किसी को बावला या पागल बनाना। २. बेवकूफ बनाना।
अ०=बौरना।

बौराह—वि०[हिं० बौरा] बावला। पागल। सनकी।

बौरी—स्त्री० =बावली।
वि० हिं० 'बौरा' का स्त्री०।

बौलड़ा—पु० [हिं० बहु+लड़] सिकड़ी के आकार का सिर पर पहनने का एक गहना।

बौलसिरी—स्त्री०=मौलसिरी।

बौलाना—अ०, स० =बौराना।

बौसाना—अ० [स० वस्=रहना] १ भोग-विलास करते हुए आनन्द लेना। २ उन्नति करना। बढ़ना।

बौहर—स्त्री० =बहू (वधू)।
†पु०=व्यवहार।

बौहरगत†—स्त्री० [स० व्यवहार=लेन-देन+गत] सूद पर रुपए उधार देने का व्यवसाय। (ब्रज०)

बौहरा—पु० [हिं० व्यवहरिया] कर्ज देनेवाला महाजन। साहूकार। व्यवहरिया।

बौहित†—पु०=बोहित (जहाज)।

ब्यंग्य†—पु०=व्यंग्य।

ब्यंजन†—पु०=व्यंजन।

ब्यक्ति†—पु०=व्यक्ति।

ब्यजन—पु०=व्यजन।

ब्यतीतना—स०[स० व्यतीत+हिं० ना (प्रत्य०)] व्यतीत होना। गुजरना। बीतना।

ब्यथा†—स्त्री०=व्यथा।

ब्यथित†—वि०=व्यथित।

ब्यलीक†—वि०=व्यलीक।

ब्यवसाय†—पु०=व्यवसाय।

ब्यवस्था†—स्त्री०=व्यवस्था।

ब्यवहरिया—पु०[हिं० व्यवहार] वह महाजन जो सूद पर रुपए उधार देता हो।

ब्यवहार—पु०[स० व्यवहार] १ सूद पर रुपयों का किया जानेवाला लेन-देन। महाजनी। २ उक्त प्रकार के लेन-देन का लगाव या सम्बन्ध ३ आपस मे होनेवाला आत्मीयता का बरताव। व्यवहार। ४. दे० 'व्यवहार'।

ब्यवहारी—पु०[स० व्यवहार] १. व्यवहारिया। २. महाजनी सूद पर रुपए उधार देने का काम। ३. वह जिसके साथ मैत्री सबंध हो।

ब्यसन†—पु०=व्यसन।

ब्यसनी†—पु०=व्यसनी।

ब्याज—पु०[सं० व्याज] १ वह धन जो ऋण लेनेवाले को मूल धन के अतिरिक्त देना पड़ता है। उधार दिये हुए रुपयो का सूद। वृद्धि।
क्रि० प्र०—जोड़ना।—फैलाना।—लगाना।
२ दे० 'व्याज'।

ब्याजखोर—पु०[हिं० ब्याज+फा० खोर] वह जो सूद पर रुपया कर्ज दे। ब्याज की कमाई खानेवाला।

ब्याजू—वि०[हिं० ब्याज] १. ब्याज-संबंधी। २ ब्याज अर्थात् सूद पर लगाया हुआ (धन)।

ब्याध†—पु०=व्याध।

ब्याधा†—स्त्री०=व्याधि।

ब्याधि†—स्त्री०=व्याधि।

ब्यान—पु०[हिं० ब्याना] मादा पशुओ के सबध मे, प्रसव करने की क्रिया या भाव।
पु०=बयान (वर्णन)।

ब्याना—स०[स० बीज, हिं० बिया+ना (प्रत्य०)] मादा पशुओं का सन्तान प्रसव करना। बच्चा जनना।
अ० मादा पशुओ मे सन्तान का प्रसव होना।
†अ०=ब्याहना।

ब्यापक†—वि०=व्यापक।

ब्यापना—अ०[स० व्यापन] १. किसी वस्तु या स्थान मे इस प्रकार फैलना कि उसका कोई अश बाकी न रह जाय। किसी स्थान मे पूरी तरह से भर जाना। व्याप्त होना। जैसे—कलियुग का घर घर व्यापना। २. चारो ओर से घिरना। ३ इस प्रकार ग्रस्त होना कि किसी दूसरी चीज का प्रभाव स्पष्ट रूप मे दिखाई दे। जैसे—शरीर मे गरमी व्यापना। ४ मन में किसी बात की अनुभूति या ज्ञान होना। उदा०—यह समा मोहिं निस दिन ब्यापै, कोई न कह समुझावै।—कबीर।
सयो० क्रि०—जाना।

ब्यापार†—पु०=व्यापार।

ब्यापारी†—पु०=व्यापारी।

ब्यार—स्त्री० =बयार (हवा)।

ब्यारी†—स्त्री०[स० विहार?] =ब्यालू (रात का भोजन)।

ब्याल†—पु०[स्त्री० ब्याली]=व्याल (साँप)।
पु०=व्यालि (शिव)।

ब्याला—स्त्री०=ब्यालू।

ब्यालू—पु०[स० विहार?] संध्या समय किया जानेवाला भोजन।

ब्याव*—पु० १. =ब्याह। २ ब्यान।

ब्याह—पु०[स० विवाह] देश, काल और जाति के नियम और प्रथा के अनुसार वह रीति या रस्म जिससे स्त्री और पुरुष मे पति-पत्नी का सबध स्थापित होता है। पाणि-ग्रहण । विवाह।
मुहा०—ब्याह रचाना=विवाह सम्बन्धी उत्सव तथा कृत्य की व्यवस्था करना।

ब्याहता—वि० [स० विवाहित] (स्त्री) जो ब्याह कर लाई गई हो। रखेली से भिन्न।
पु० स्त्री का विवाहित पति।

ब्याहना—स०[स० विवाह+ना (प्रत्य०)] [वि० ब्याहता] विवाह का सम्बन्ध स्थापित करना। ब्याह करना। जैसे—किसी की लड़की के साथ अपना लड़का ब्याहना।
क्रि० प्र०—डालना।—देना।

ब्योंगा†—पु०[देश०] रॉपी की तरह का लकडी का एक औजार जिससे चमार चमड़ा रगड़कर सुलझाते या सीधा करते हैं।

ब्योंचना—अ० [सं० विकुंचन, प्रा० विउंचन] नस का अपने स्थान से

टूट-बढ़ या खिसक जाना जिसके फलस्वरूप अंग या अंगों में पीड़ा और सूजन होने लगती है।
क्रि० प्र०—जाना।

ब्योंची—स्त्री०[हिं० ब्योंचना] उलटी। वमन। कै।

ब्योंत—स्त्री०[हिं० ब्योंतना] १. ब्योंतने की क्रिया, ढग, भाव या व्यवस्था। जैसे—कपड़े की ब्योंत, काम की ब्योंत।
पद—कतर-ब्योंत।
क्रि० प्र०—करना।—बैठना।—बैठाना।
मुहा०—ब्योंत खाना=शक्ति, साधना, सामग्री आदि के विचार से ऐसी अवस्था या स्थिति होना जिसमे काम ठीक तरह से और पूरा हो सके। जैसे—जहाँ तक ब्योंत खाये वही तक कोई काम (या खर्च) करना चाहिए। ब्योंत फैलना*=ब्योंत खाना।
२. पहनने के कपड़े बनाने के लिए कपड़े को काट-छाँटकर और जोड या सीकर तैयार करने की क्रिया या भाव। जैसे—इस कपडे मे कुरते और टोपी की ब्योंत नही बैठती।
क्रि० प्र०—बैठना। बैठाना।
३. पहनने के कपडो की काट-छाँट का ढग। तराश। जैसे—इस बार किसी और ब्योंत की कमीज सिलवानी चाहिए। ४. कार्य-साधन की उपयुक्त प्रणाली। ढंग। तरीका। विधि। ५ उपाय। तरकीब। युक्ति।
क्रि० प्र०—निकलना।— निकालना।— बनना।— बनाना।—बैठना।—बैठाना।
६. किसी काम या बात का आयोजन या उपक्रम। तैयारी। ७. इन्तजाम। प्रबंध। व्यवस्था।
क्रि० प्र०—बाँधना।
८ कोई काम या बात होने का अवसर या सयोग। नौबत। ९ विस्तृत विवरण। ब्योरा। हाल। उदा०—बलि बामन को ब्योंत सुनि को बलि तुमहि पत्याय।—बिहारी।

ब्योंतना—स०[?] १. कपडे को युक्ति-पूर्वक काटने और सीने की क्रिया या भाव। २. मारना। पीटना। ३ मार डालना। (बाजारू)

ब्योंताना—स०[हिं० ब्योंतना का प्रे०] दरजी से नाप के अनुसार कपड़ा कटाना।

ब्योपार†—पु०=व्यापार।

ब्योपारी†—पु०=व्यापारी।

ब्योरन*—स्त्री०[हिं० ब्योरना] १.ब्योरने अर्थात् सुलझाने, सँवारने की क्रिया या ढंग। २ विवरण या ब्योरे से युक्त कही जानेवाली बात। ३ दे० 'ब्योरा'।

ब्योरना—स०[स० विवरण] १. ब्योरेवार कोई बात बतलाना। २. २. उलझे हुए बालो या सूतों को सुलझाना।
अ० (किसी बात के सब अगों पर) अच्छी तरह विचार करना। सोचना-समझना।

ब्योरा—पु०[हिं० ब्योरना] १. किसी घटना के अतर्गत एक एक बात का उल्लेख या कथन। विवरण से युक्त कथन या वर्णन। विस्तृत वृत्तान्त। तफसील। २. बीच मे पड़ने या होनेवाली कोई ऐसी बात जो अपनी समझ में न आती हो। उदा०—वेई कर ब्यौरनि वहै ब्योरो कौन बिचार।—बिहारी।
पद—ब्योरेवार।
२. किसी विषय के अंग-प्रत्यंग से संबंध रखनेवाली भीतर की सारी बातें। किसी बात को पूरा करनेवाला एक एक खंड। जैसे—जो बड़ी बड़ी रकमें खर्च हुई हैं, उनका ब्योरा भी आना चाहिए।
३. पूरा वृत्तांत। सारा हाल।

ब्योरेबाज—वि० [हिं०+फा०] [भाव० ब्योरेबाजी] १. युक्तिपूर्वक काम करनेवाला। २. धूर्त। चालाक।

ब्योरेबाजी—स्त्री०[हिं०+फा०] चालाकी। धूर्तता।

ब्योरेवार—वि०[हिं० ब्योरा+वार (प्रत्य०)] एक एक बात के उल्लेख के साथ। विस्तार के साथ। विवरण-युक्त।

ब्योसाय—पु०=व्यवसाय।

ब्योहर—पु०=व्यवहार।
स०=व्यवहारना।

ब्योहरा—पु०=व्यवहरिया।

ब्योहरिया—पु०=व्यवहरिया।

ब्योहार—पु०=व्यवहार।

ब्यौहर—पु०=ब्योहर।

ब्यौहरिया—पु०=व्यवहरिया।

ब्यौहार—पु०=व्यवहार।

ब्रंद*—पुं०=वृंद (समूह)।

ब्रज†—पुं०=व्रज।

ब्रजना—अ०[सं० व्रजन] गमन करना। चलना।

ब्रजबादिनी—स्त्री०[स० ब्रजवादिनी?] एक प्रकार का आम जिसका पेड़ लता के रूप मे होता है।
पु० उक्त पेड़ का फल।

ब्रध्न—पु०[सं०√बन्ध (बाँधना)+नक्, ब्रधादेश] १. सूर्य। २. आक। मदार। ३. शिव। ४. दिन। दिवस। ५ घोड़ा। ६. वृक्ष की जड़। ७. एक प्रकार का रोग।

ब्रनंन†—पु० दे० 'वर्णन'।

ब्रन—पु० १. =वर्ण। २. =व्रण।

ब्रश—पु०[अं०] बुरुश।

ब्रह्मंड*—पु०=ब्रह्मांड।

ब्रह्म(न्)—पु०[सं० √बृंह्+मनिन्, नकारस्य अकार; रत्वम्] १. वेदांत दर्शन के अनुसार वह एक मात्र चेतन, नित्य और मूल सत्ता जो अखड, अनत, अनादि, निर्गुण और सत्, चित् तथा आनद से युक्त कही गई है।
विशेष—साधारणत यही सत्ता सारे विश्व या सृष्टि का मूल कारण मानी जाती है। परन्तु अधिक गम्भीर दार्शनिक दृष्टि से यह माना जाता है कि यही जगत् का निमित्त भी है और उपादान भी। इसी आधार पर यह जगत् उस ब्रह्म का विवर्त (देखे) मात्र माना जाता है, और कहा जाता है कि ब्रह्म ही सत्य है; और बाकी सब मिथ्या या उसका आभास मात्र है। प्रत्येक तत्त्व और प्रत्येक वस्तु के कण कण मे ब्रह्म की व्याप्ति मानी जाती है, और कहा जाता है कि अत या नाश होने पर सबका इसी ब्रह्म में लय होता है।
२ ईश्वर। परमात्मा। ३. उक्त के आधार पर एक की सख्या का सूचक पद। ४. अन्तरात्मा। विवेक। जैसे—हमारा ब्रह्म वहाँ

जाने को नही कहता। ५ ब्राह्मण। (विशेषत समस्त पदो के आरंभ मे) जैसे—ब्रह्मद्रोही, ब्रह्महत्या। ६ ब्रह्म का वह रूप जो उसे समस्त पदो के आरभ में लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—ब्रह्म-कन्यका। ७. ऐसा ब्राह्मण जो मर कर प्रेत हो गया हो। ब्रह्म-राक्षस।

मुहा०—(किसी को) ब्रह्म लगना=किसी पर ब्राह्मण प्रेत का आविर्भाव होना। ब्राह्मण प्रेत से अभिभूत होना। ८ वेद। ९ फलित ज्योतिष मे २७ योगो मे से २५वाँ योग जो सब कार्यों के लिए शुभ कहा गया है। १०. सगीत मे ताल के चार मुख्य भेदों मे से एक।

ब्रह्म-कन्यका—स्त्री० [स०] १ ब्रह्मा की कन्या; सरस्वती। २ ब्राह्मी नाम की बूटी।

ब्रह्मकर्म (न्)—पु०[स० मध्य० स] १ वेद विहित कर्म। २ ब्राह्मणो के लिए विहित कर्म।

ब्रह्म-कल्प—वि० [सं० ब्रह्मन्+कल्पप्] जो ब्रह्म के समान हो। ब्रह्म तुल्य।

पुं०[ष० त०] उतना काल या समय जितने मे एक ब्रह्म का अस्तित्व रहता और कार्य होता है।

ब्रह्म-काष्ठ—पु०[स० मध्य० स०] तूत का पेड। शहतूत।

ब्रह्मक्षत्र—पु०[स०] ब्राह्मण और क्षत्रिय से उत्पन्न एक जाति। (विष्णु-पुराण)

ब्रह्म-गति—स्त्री०[सं० स०त०] १ मरने पर ब्रह्म मे विलीन होने की अवस्था, अर्थात् मुक्ति। मोक्ष। २ प्राय साधु-सन्यासियो के सबध मे उनके देहावसान या मृत्यु का वाचक पद।

ब्रह्मगाँठ—स्त्री०=ब्रह्म-ग्रंथि।

ब्रह्म-ग्रंथि—स्त्री०[स० ष० त०] यज्ञोपवीत या जनेऊ के डोरे मे लगाई जानेवाली मुख्य गाँठ। ब्रह्मगाँठ।

ब्रह्म-घातक—वि०[स० ष० त०] ब्राह्मण की हत्या करनेवाला।

ब्रह्म-घातिनी—स्त्री० [सं० ब्रह्मन्√+णिनि+ङीप्, उप० स०] रजस्वला स्त्री की वह सज्ञा जो उसे रजस्राव के दूसरे दिन प्राप्त होती है।

ब्रह्मघाती (तिन्)—वि०[स० ब्रह्मन्√हन्+णिनि] [स्त्री० ब्रह्म-घातिनी] जिसने ब्राह्मण की हत्या की हो।

ब्रह्म-घोष—पु०[स० ष० त०] १ वेद-ध्वनि। २ वेद-पाठ।

ब्रह्म-चक्र—पु० [स० मध्य० स०] १. ससार चक्र। (उपनिषद्) २ एक तरह का मायावी चक्र।

ब्रह्मचर्य—पु० [स० च० त०] १ भारतीय आर्यों की वह अवस्था तथा व्रत जिसमे विद्यार्थी विशेषत ब्राह्मण विद्यार्थी को वेदो का अध्ययन करना पडता, सब प्रकार के सासारिक बधनो से दूर रहकर सात्विक जीवन बिताना पडता और अपने वीर्य को अक्षुण्ण रखना पडता है। २ अष्ट-विध मैथुनो से बचने का व्रत। ३ योग मे एक प्रकार का यम। वीर्य को रक्षित रखने का प्रतिबध। मैथुन से बचने की साधना।

ब्रह्मचारिणी—स्त्री०[स० ब्रह्मन्√चर्+णिनि, वृद्धि, ङीप्] १ ब्रह्म-चर्य व्रत का पालन करनेवाली स्त्री। २ सरस्वती। ३. दुर्गा। ४ ब्राह्मी बूटी।

ब्रह्मचारी (रिन्)—पुं०[स० ब्रह्मन्√चर् (करना)+णिनि, दीर्घ, नलोप] [स्त्री० ब्रह्मचारिणी] वह व्यक्ति जो ब्रह्मचर्य आश्रम में हो।

ब्रह्मछिद्र—पु०=ब्रह्म-रंध्र।

ब्रह्मज—वि०[स० ब्रह्मन्√जन् (पैदा करना)+ड] जो ब्रह्मा से उत्पन्न हुआ हो।

पु० १ यह जगत जो ब्रह्म से उत्पन्न माना गया है। २ कार्तिकेय। ३ हिरण्य-गर्भ।

ब्रह्म-जन्म (न्)—पु०[स० मध्य० स०] उपनयन सस्कार।

ब्रह्मजीवी (विन्)—वि० [स० ब्रह्मन्√जीव् (जीना)+णिनि, उप० स०] शुद्ध ज्ञान का व्यापारिक लाभ उठानेवाला।

ब्रह्मज्ञ—वि०[स० ब्रह्मन् √ज्ञा (जानना)+क] ब्रह्म का ज्ञाता। ब्रह्म-ज्ञानी।

ब्रह्मज्ञान—पु०[स० ष० त०] १ ब्रह्म को जानना। २ परमतत्व का ज्ञान।

ब्रह्मज्ञानी (निन्)—वि० [स० ब्रह्म ज्ञान+इनि, दीर्घ, नलोप] परमार्थ तत्त्व का बोध रखनेवाला। ब्रह्म-ज्ञान मे युक्त या सम्पन्न।

ब्रह्मण्य—वि० [स० ब्रह्मन्+यत्] १. ब्राह्मणो से सबध रखनेवाला। २ ब्रह्म-सबधी। ३ सभ्य तथा शिष्ट समाज के उपयुक्त।

पु० १ ब्राह्मण होने की अवस्था या भाव। २ वह जो ब्राह्मणों के प्रति निष्ठा रखता हो। ३. शहतूत।

ब्रह्मताल—पु० [स०] सगीत मे १४ मात्राओ का एक ताल जिसमें १० आघात और ४ खाली रहते है।

ब्रह्मतीर्थ—पु०[स० ष० त०] नर्मदा के तट का एक प्राचीन तीर्थ। (महा-भारत)

ब्रह्मतेज—पु०[स० ष० त०] वह तेज जो उच्च कोटि के कर्मशील ब्राह्मणों के मस्तक पर झलकता है।

ब्रह्मत्व—पु०[स० ब्रह्मन्+त्व, नलोप] १ ब्रह्म होने की अवस्था या भाव। २ ब्रह्मा नामक ऋत्विज होने की अवस्था या भाव। ३ ३ ब्राह्मणत्व।

ब्रह्मदड—पु०[स० ष० त०] १ वह दड जो ब्राह्मण ब्रह्मचारी धारण करता है। २ ब्राह्मण के द्वारा मिला हुआ शाप। ३ ऐसा केतु जिसकी तीन शिखाएँ हों।

ब्रह्म-दंडी—स्त्री०[स० च० त०] एक प्रकार की जगली जडी जिसकी पत्तियो और फलो पर काँटे होते है। अजदती।

ब्रह्म-दर्भा—स्त्री०[सं० ब० स०] अजवायन।

ब्रह्म-दाता (तृ)—पु०[स० ष० त०] वेद पढ़ानेवाला आचार्य।

ब्रह्म-दान—पु०[स० ष० त०] वेद पढाना।

ब्रह्म-दाय—पु०[स० ष० त०] वेद का वह भाग जिसमे ब्रह्म का निरूपण है।

ब्रह्म-दारु—पु०[स० ष० त०] तूत का पेड। शहतूत।

ब्रह्म-दिन—पु०[स० ष० त०] ब्रह्मा का एक दिन जो १०० चतुर्युगियो का माना जाता है।

ब्रह्म-देया—स्त्री०[स० च० त०] ब्रह्म विवाह मे दी जानेवाली कन्या।

ब्रह्म-दैत्य—पुं०=ब्रह्मराक्षस।

ब्रह्म-दोष—पु० [स०मध्य०स०] ब्राह्मण को मारने का दोष। ब्रह्म-हत्या का पाप।

ब्रह्म-दोषी (षिन्)—वि०[स० ब्रह्मदोष+इनि] जिसे ब्रह्म हत्या लगी हो।

ब्रह्म-द्रव—पुं०[सं० ष० त०] गंगाजल।
ब्रह्म-द्रुम—पु०[स० ष० त०] पलास। टेसू।
ब्रह्म-द्रोही (हिन्)—वि०[सं० ष० त०] ब्राह्मणों से वैर रखनेवाला।
ब्रह्म-द्वार—पु०[सं० ष० त०] ब्रह्म-रंध्र।
ब्रह्म-नाडी—स्त्री०[स० ष० त०] हठ योग में, सुषुम्ना के अन्तर्गत वह नाडी जिससे होकर कुडलिनी ब्रह्म-रध्र तक पहुँचती है।
ब्रह्म-नाभ—पु०[सं० ब० स०] विष्णु।
ब्रह्म-निष्ठ—वि०[स० ब० स०] १. ब्राह्मणो के प्रति निष्ठा या भक्ति रखनेवाला। २. ब्रह्म-ज्ञान से युक्त या सपन्न।
पु० पीपल।
ब्रह्म-पत्र—पु०[स० ष० त०] पलास का पत्ता।
ब्रह्म-पद—पु० [स० ष० त०] १. ब्रह्मत्व। २ ब्राह्मण का पद या स्थिति। ब्राह्मणत्व। ३ मुक्ति। मोक्ष।
ब्रह्म-पर्णी—स्त्री०[स० ब० स०, +ङीष्] पिठवन नाम की लता।
ब्रह्मपवित्र—पु०[स० स० त० उपमि० स० वा] कुश।
ब्रह्म-पादप—पु०[स० मध्य० स०] पलास का पेड।
ब्रह्म-पाश—पु०[स० मध्य० स०] एक तरह का पाश या अस्त्र जो ब्रह्म-शक्ति से परिचालित होता था।
ब्रह्मपिता(तृ)—पु०[स० ष० त०] विष्णु।
ब्रह्मपुत्र—पु०[स० ष० त०]१ ब्रह्मा का पुत्र। २ नारद। ३ मनु। ४ वशिष्ठ। ५. मरीचि। ६. सनकादिक। ७. एक प्रकार का विषाक्त कन्द। ८. असम तथा बगाल में बहनेवाला एक प्रसिद्ध नद जिसका उदगम मानसरोवर है।
ब्रह्म-पुत्री—स्त्री० [स० ष० त०] १ सरस्वती देवी। २ सरस्वती नदी। ३ वाराही कद।
ब्रह्म-पुर—पु०[स० ष० त०] १ ब्रह्मलोक। २ हृदय, जिसमे ब्रह्म की अनुभूति होती है। ३ पुराणानुसार ईशान कोण का एक देश।
ब्रह्म-पुराण—पु०[स० मध्य० स०] अठारह पुराणो मे से एक।
ब्रह्म-प्राप्ति—स्त्री०[स० ष० त०] मृत्यु।
ब्रह्म-फाँस—स्त्री०=ब्रह्मपाश।
ब्रह्म-बंधु—पु०[स० ष० त० या ब० स०] कर्महीन ब्राह्मण। पतित या नाम-मात्र का ब्राह्मण।
ब्रह्म-बल—पु० [सं० ष० त०] वह तेज या शक्ति जो ब्राह्मण को तप आदि के द्वारा प्राप्त हो।
ब्रह्म-भाव—पु०[स० ष० त०] १. ब्रह्म मे समाना या लीन होना। २ मृत्यु।
ब्रह्म-भूत—भू० कृ०[स० स० त०] ब्रह्म मे लीन या समाया हुआ।
ब्रह्म-भूय—पु०[स० ष० त०] १. ब्रह्मत्व। २. मुक्ति। मोक्ष।
ब्रह्म-भोज—पु० [सं० ष० त०] बहुत से ब्राह्मणों को एक साथ पगत मे बैठाकर भोजन कराना। ब्राह्मण-भोजन।
ब्रह्म-मय—वि० [स० ब्रह्मन्+मयट्] १. ब्रह्म से युक्त। २ वेदों से संबध रखनेवाला।
ब्रह्म-मुहूर्त—पुं०=ब्राह्म मुहूर्त।
ब्रह्म-मेखला—पुं०[स० ष० त०] मूँज नामक तृण। मूँज।
ब्रह्म-यज्ञ—पु० [स० मध्य० स०] विधिपूर्वक किया जानेवाला वेदों का अध्ययन और अध्यापन।
ब्रह्म-यष्टि—स्त्री०[सं० ष० त०] भारंगी। ब्रह्मनेटी।
ब्रह्म-योग—पु०[स० ष० त०] १. सगीत मे १८ मात्राओं का एक ताल जिसमे १२ आपात और ६ खाली होते है।
ब्रह्म-योनि—स्त्री० [स० ष० त०] १ ब्रह्म की प्राप्ति के लिए किया जानेवाला उसका ध्यान। २. [ब० स०] गया का एक तीर्थ। ३ सरस्वती।
वि० ब्रह्म से उत्पन्न।
ब्रह्म-रंध्र—पु० [स० ष० त०] हठयोग मे, मस्तिष्क के ऊपरी मध्य भाग मे माना जानेवाला वह छिद्र या रध्र जहाँ सुषुम्ना, इगला और पिंगला ये तीनो नाड़ियाँ मिलती हैं। कहते है कि पुण्यात्मा लोगों और योगियो के प्राण इसी रंध्र को भेदकर निकलते हैं।
विशेष—ब्रह्म-रध्र को शरीर का दसवाँ द्वार कहा जाता है। अन्य द्वार इन्द्रियाँ है जो खुली रहती है। किन्तु यह दसवाँ द्वार सदा बद रहता है। तपस्या द्वारा इसे खोला जाता है। इसके खुलने पर सहस्रार चक्र से अमृत रस निकलने लगता है जिससे योगी को अमर काया प्राप्त हो जाती है।
ब्रह्म-राक्षस—पु० [स० कर्म० स०] १ प्रेत-योनि मे गया हुआ ब्राह्मण। वह ब्राह्मण जो मरकर प्रेत या भूत हुआ हो। कहते है कि जिस ब्राह्मण की अकाल-मृत्यु या हत्या होती है, वह प्राय इसी योनि मे जाता है। २ शिव का एक गण।
ब्रह्म-रात—पुं०[सं० ब० स०] १ शुकदेव। २ याज्ञवल्क्य मुनि।
ब्रह्म-रात्र—पुं०[स० रात्रि+अण्, ब्रह्म-रात्र, ष० त०] रात के अन्तिम चार दड। ब्राह्म मुहूर्त।
ब्रह्म-रात्रि—स्त्री० [स० ष० त०] ब्रह्मा की एक रात जो एक कल्प की मानी जाती है।
ब्रह्म-राशि—पु० [स० ष० त०]१ परशुराम का एक नाम। २ बृहस्पति से आक्रात श्रवण नक्षत्र।
ब्रह्म-रीति—पु० [सं० मध्य० स०] एक प्रकार का पीतल।
ब्रह्म-रूपक—पु० [स० ब० स०, +कप् अथवा ष० त०] एक प्रकार का छद जिसके प्रत्येक चरण में गुरु लघु के क्रम से १६ अक्षर होते हैं। इसे 'चंचला' और 'चित्र' भी कहते हैं।
ब्रह्म-रूपिणी—स्त्री० [सं० ष० त०] बाँदा।
ब्रह्म-रेखा—स्त्री० [स० मध्य० स०] पुराणानुसार ललाट पर ब्रह्म द्वारा लिखी हुई भाग्य-रेखा या भाग्य-लिपि।
ब्रह्मर्षि—पु० [स० ब्रह्मन्-ऋषि, कर्म० स०] वशिष्ठ आदि मन्त्रद्रष्टा ऋषि।
ब्रह्मर्षि-देश—पु० [स० ष० त०] वह प्राचीन भू-भाग जिसके अन्तर्गत कुरुक्षेत्र, मत्स्य, पांचाल और शूरसेन देश थे। (मनु०)
ब्रह्म-लेख—पु० [स० ष० त०] १ ब्रह्मा द्वारा मनुष्य के ललाट पर लिखी हुई वे पक्तियाँ जो उसके भाग्य की सूचक होती हैं। २. ऐसा लेख जो कभी अन्यथा या मिथ्या न हो सकता हो।
ब्रह्म-लोक—पु० [सं० ष० त०] १. वह लोक जिसमे ब्रह्म का निवास माना गया है। २ एक प्रकार का मोक्ष।
ब्रह्म-वध—पु० [स० ष० त०] ब्रह्म हत्या।

ब्रह्म-वर्चस्—पुं० [सं० ष० त०] वह शक्ति जो ब्राह्मण तप और स्वाध्याय द्वारा प्राप्त करे। ब्रह्मतेज।

ब्रह्मवर्चस्वी (स्विन्)—वि० [सं० ब्रह्मवर्चस्+विनि] ब्रह्मतेजवाला।

ब्रह्मवर्त—पुं० [सं०] ब्रह्मावर्त। (दे०)

ब्रह्मवाणी—स्त्री० [सं० ष० त०] वेद।

ब्रह्म-वाद—पुं० [सं० ष० त०] यह सिद्धांत कि सपूर्ण विश्व ब्रह्म से निकला है और उसी की प्रेरणा तथा शक्ति से चल रहा है।

ब्रह्मवादिनी—स्त्री० [सं०] गायत्री।

ब्रह्मवादी (दिन्)—वि० [सं० ब्रह्मन्√वद् (बोलना)+णिनि] ब्रह्म-वाद-सबधी।

पुं० [स्त्री० ब्रह्मवादिनी] वह जो सारे विश्व को ब्रह्ममय मानता हो।

ब्रह्म-बिंदु—पुं० [सं० मध्य० स०] वेद पाठ करते समय मुँह से निकला हुआ थूक का छींटा।

ब्रह्मविद्—वि० [सं० ब्रह्मन्√विद् (जानना)+क्विप्] १. ब्रह्म को जानने या समझनेवाला। २. वेदों और उनके अर्थ का ज्ञाता।

ब्रह्म-विद्या—स्त्री० [सं० ष० त०] १ वह विद्या जिसके द्वारा ब्रह्म का ज्ञान होता है। उपनिषद् विद्या। २ दुर्गा।

ब्रह्म-वृक्ष—पुं० [सं० मध्य० स०] १ पलाश। २ गूलर।

ब्रह्म-वेत्ता (त्तृ)—पुं० [सं० ष० त०] ब्रह्म को समझनेवाला। ब्रह्म-ज्ञानी। तत्त्वज्ञ।

ब्रह्म-वैवर्त—पुं० [सं० ष० त०+अण्] १ वह प्रतीति जो ब्रह्म के कारण हो। जैसे—जगत् की प्रतीति। २ जगत, जिसकी प्रतीति और सृष्टि ब्रह्म के द्वारा होती है। ३ श्रीकृष्ण। ४. अठारह पुराणो मे से एक पुराण जो श्रीकृष्ण भक्ति के सम्बन्ध मे है।

ब्रह्म-शल्य—पुं० [सं० ब० स०] बबूल का पेड़।

ब्रह्म-शासन—पुं० [सं० ष० त०] १ वेद या स्मृति की आज्ञा। २. ब्राह्मण को दान मे मिली हुई भू-सपत्ति।

ब्रह्म-शिर (स्)—पुं० [सं० ब० स०] एक अस्त्र जिसका उल्लेख रामायण और महाभारत मे हुआ है।

ब्रह्म-सती—स्त्री० [सं० मध्य० स०] सरस्वती नदी।

ब्रह्म-सत्र—पुं० [सं० मध्य० स०] विधिपूर्वक किया जानेवाला वेदपाठ। ब्रह्मयज्ञ।

ब्रह्म-सदन—पुं० [सं० ष० त०] यज्ञ मे ब्रह्मा का आसन।

ब्रह्म-सभा—स्त्री० [सं० ष० त०] १. ब्रह्मा की सभा। २. ब्राह्मणो की सभा या समाज।

ब्रह्म-समाज—पुं० [सं० ष० त०] एक आधुनिक सप्रदाय जिसके प्रवर्तक बंगाल के राजा राममोहन राय थे। ब्राह्मण-समाज।

ब्रह्म-समाजी (जिन्)—वि० [सं०] ब्रह्म-समाज सम्बन्धी।

पुं० ब्रह्म-समाज का अनुयायी।

ब्रह्म-सर (स्)—पुं० [सं० ष० त०] एक प्राचीन तीर्थ। (महाभारत)

ब्रह्मसावर्णि—पुं० [सं० मध्य० स०] दसवें मनु का नाम।

ब्रह्मसिद्धान्त—पुं० [सं० ष० त०] ज्योतिष की एक सिद्धान्त पद्धति।

ब्रह्म-सुत—पुं० [सं० ष० त०] मरीचि आदि ब्रह्मा के पुत्र।

ब्रह्मसुता—स्त्री० [सं० ष० त०] सरस्वती।

ब्रह्मसूत्र—पुं० [सं० मध्य० स०] १. यज्ञोपवीत। जनेऊ। २ व्यास का शारीरिक सूत्र जिसमे ब्रह्म का प्रतिपादन है और जो वेदान्त दर्शन का आधार है।

ब्रह्मसृज्—वि० [सं० ब्रह्मन्√सृज् (सिरजना)+क्विप्] ब्रह्म को उत्पन्न करनेवाला।

पुं० शिव।

ब्रह्मस्तेय—पुं० [सं० ष० त०] गुरु की अनुमति बिना अन्य को पढ़ाया हुआ पाठ सुनकर अध्ययन करना जिसे मनु ने अनुचित कहा है।

ब्रह्मस्व—पुं० [सं० ष० त०] १ ब्राह्मण का अश या भाग। २. ब्राह्मण का धन।

ब्रह्महत्या—पुं० [सं० ष० त०] ब्राह्मण को मार डालने का पाप।

ब्रह्म-हृदय—पुं० [सं० ष० त०] प्रथम वर्ग के १९ नक्षत्रो मे से एक नक्षत्र जिसे अँगरेजी मे कैपेल्ला कहते है।

ब्रह्मांड—पुं० [सं० ब्रह्मन्-अड, ष० त०] १ चौदहो भुवनो का समूह जो अडाकार माना गया है। सपूर्ण विश्व, जिसमे अनत लोक हैं। विश्व-गोलक। २ मत्स्य-पुराणानुसार एक महादान जिसमे सोने का विश्व गोलक (जिसमें लोक, लोकपाल आदि बने रहते है) दान दिया जाता है। ३ कपाल। खोपडी।

मुहा०—**ब्रह्मांड चटकना**—(क) खोपडी फटना। (ख) बहुत अधिक ताप आदि के कारण सिर मे बहुत पीडा होना।

ब्रह्माण्डकिरण—स्त्री० [सं०] प्रबल भेदक शक्तिशाली एक प्रकार की किरणें जो सुदूर अतरिक्ष से आकर इस पृथ्वी पर पडती और कई प्रकार के परिणाम या प्रभाव उत्पन्न करती है। अतरिक्ष किरण विश्वक किरण। (कास्मिक रेज)

विशेष—इस किरण का पता इस शती के पहले चरण मे उस समय लगा था जब वायुयानो की उडान के लिए वायु की चालकता के सबध मे अनेक प्रकार के प्रयोग किये जा रहे थे। वैज्ञानिकों का अनुमान है कि ये किरणे हमारी ही मंदाकिनी या आकाश गगा से निकली है।

ब्रह्मांडीय—वि० [सं०] समस्त ब्रह्माड मे होने या उससे सबध रखनेवाला। विश्वक। (कास्मिक)

ब्रह्मा (ह्मन्)—पुं० [सं० दे० ब्रह्मन्] १ हिन्दू धर्म में त्रिदेवो मे से पहले देव (अन्य दो देव विष्णु और महेश हैं) जो ब्रह्म के तीन सगुण रूपों मे से एक और सृष्टि की रचना करनेवाले माने गये हैं; और इसीलिए पितामह तथा विधाता कहे जाते हैं। २ यज्ञ का एक ऋत्विक्। ३ एक प्रकार का धान जो जल्दी पककर तैयार होता है।

ब्रह्माक्षर—पुं० [सं० ब्रह्मन् (अक्षर) मध्य० स०] ऊँकार मंत्र।

ब्रह्माणी—स्त्री० [सं० ब्रह्मन्√अन् (कीर्तन करना)+णिच्+अण्+ङीप्] १ ब्रह्मा की स्त्री। ब्रह्म की शक्ति। २ सरस्वती। ३ रेणुका नामक गध द्रव्य। ४ उडीसा की एक छोटी नदी जो वैतरणी मे मिलती है।

ब्रह्मानंद—पुं० [सं० ब्रह्मन्-आनद, मध्य० स०] ब्रह्म के स्वरूप का अनुभव होने पर प्राप्त होनेवाला आनन्द जो सब प्रकार के आनन्दों से बढ़कर माना जाता है। ब्रह्मज्ञान से उत्पन्न आत्मतृप्ति।

ब्रह्माभ्यास—पुं० [सं० ब्रह्मन्-अभ्यास, ष० त०] वेदाध्ययन।

ब्रह्मारण्य—पुं० [सं० ब्रह्मन्-अरण्य, ष० त०] १. एक प्राचीन वन। २. वेदपाठ-भूमि।

ब्रह्मार्पण—पुं० [सं० ब्रह्मन्-अर्पण, च० त०] अपने किये हुए सभी कर्मों के फल परमात्मा को अर्पित करने की क्रिया।

ब्रह्मावर्त—पुं० [सं० ब्रह्मन्-आवर्त्त, ष० त०] सरस्वती और दृषद्वती नदियों के बीच के प्रदेश का पुराना नाम।

ब्रह्मासन—पुं० [सं० ब्रह्मन्-आसन, ष० त०] १ वह आसन जिस पर बैठकर ब्रह्म का ध्यान किया जाता है। २. तांत्रिक पूजा का एक आसन।

ब्रह्मास्त्र—पुं० [सं० ब्रह्मन्-अस्त्र, मध्य० स०] १. ब्रह्म-शक्ति से परिचालित होनेवाला अमोघ अस्त्र। २ एक प्रकार का अस्त्र, जो मंत्र से पवित्र करके चलाया जाता था। ३. वैद्यक मे, एक रसौषध जो सन्निपात में दिया जाता है।

ब्रह्मिष्ठ—वि० [सं० ब्रह्मन्-इष्ठन्] वेदो का पूर्ण ज्ञाता।

ब्रह्मिष्ठा—स्त्री० [सं० ब्रह्मिष्ठ+टाप्] दुर्गा।

ब्रह्मोपदेश—पुं० [सं० ब्रह्मन्-उपदेश, ष० त०] ब्रह्मज्ञान की शिक्षा।

ब्रांडी—पुं० [अं०] एक प्रकार की विलायती शराब।

ब्रात—पुं०=व्रात्य।

ब्राह्म—वि०[सं०ब्रह्मन्+अण्]ब्रह्म-संबंधी। ब्रह्मा का। जैसे—ब्राह्मदिन। पुं० १. हिंदू धर्म-शास्त्र के अनुसार आठ प्रकार के विवाहो मे से एक। २ ब्रह्म पुराण। ३. नारद। ४. नक्षत्र। ५. प्राचीन राजाओं का एक धर्म जिसमें उन्हें गुरुकुल से लौटे हुए ब्राह्मणों की पूजा करनी पड़ती थी।

ब्राह्मण—पुं० [सं० ब्रह्मन्+अण्] [स्त्री० ब्राह्मणी] १. हिंदुओं के चार वर्णों में से पहला और सर्वश्रेष्ठ वर्ण जिसके मुख्य कर्म वेदों का पठन-पाठन, यज्ञ, ज्ञानोपदेश आदि हैं। २. उक्त जाति या वर्ण का मनुष्य। द्विज। विप्र। ३ वेदों का वह भाग जो उनके मंत्र भाग से भिन्न है। ४ विष्णु। ५. शिव। ६. अग्नि।

ब्राह्मणक—पुं० [सं० ब्राह्मण+कन्] निंदनीय या बुरा ब्राह्मण।

ब्राह्मणत्व—पुं० [सं० ब्राह्मण+त्व] ब्राह्मण होने की अवस्था, धर्म या भाव। ब्राह्मण-पन।

ब्राह्मण ब्रुव—पुं० [सं० ब्राह्मण√ब्रू (बोलना)+क] कर्म और संस्कार से हीन तथा नाममात्र का ब्राह्मण।

ब्राह्मण भोजन—पुं०[सं० ष० त०] बहुत से ब्राह्मणों को बुलाकर कराया जानेवाला भोजन।

ब्राह्मणायन—पुं० [सं० ब्राह्मण+फक्—आयन] विद्वान् और विशुद्ध ब्राह्मणकुल मे उत्पन्न ब्राह्मण।

ब्राह्मणी—स्त्री० [सं० ब्राह्मण+ङीष्] १ ब्राह्मण जाति की स्त्री। २ बुद्धि। ३. एक प्राचीन तीर्थ।

ब्राह्मण्य—पुं० [सं० ब्राह्मण+यत्] १. ब्राह्मण का धर्म या गुण। ब्राह्मणत्व। २. ब्राह्मणों का वर्ग या समाज। ३. शनि ग्रह।

ब्राह्मधर्म—पुं०=ब्रह्म-समाज।

ब्राह्मप्रलय—पुं०=नैमित्तिक प्रलय। (देखें)

ब्राह्म मुहूर्त—पुं० [सं० कर्म० स०] सूर्योदय से पहले दो घड़ी तक का समय (जो बहुत ही पवित्र तथा शुभ माना गया है)।

ब्राह्म-विवाह—पुं० [सं० कर्म० स०] दे० 'ब्राह्म' के अन्तर्गत।

ब्राह्म समाज—पुं० [सं० कर्म० स०] बंग देश मे प्रवर्तित एक आधुनिक संप्रदाय। ब्रह्म-समाज।

ब्राह्म समाजी (जिन्)—पुं० [सं० ब्राह्म समाज+इनि,] ब्राह्म समाज का अनुयायी।

वि० १. ब्रह्म समाज-संबंधी। २. ब्रह्म समाजियो का।

ब्राह्मी—स्त्री० [सं० ब्राह्म+ङीप्] १. दुर्गा। २ शिव की आठ मातृकाओं में से एक। ३. रोहिणी नक्षत्र। ४. भारतवर्ष की वह प्राचीन लिपि जिससे नागरी, बँगला आदि आधुनिक लिपियाँ विकसित हुई हैं। हिंदुस्तान की एक प्रकार की पुरानी लिखावट। ५. औषध के काम में आनेवाली एक बूटी जो छत्ते की तरह जमीन मे फैलती है। यह बहुत ठंढी होती है और मस्तिष्क के लिए बहुत गुणकारी कही गई है।

ब्रिगेड—पुं० [अं०] १. सेना का एक वर्ग। २ किसी विशिष्ट प्रकार के कार्यकर्ताओं का दल। जैसे—फायर ब्रिगेड।

ब्रिज—पुं० [अं०] १ पुल। सेतु। २. ताश का एक प्रकार का खेल।

ब्रिटिश—वि० [अं०] १ ब्रिटेन-संबंधी। २. अँगरेजों का।

ब्रिटेन—पुं० [अं०] इग्लैंड, वेल्स और स्काटलैंड नामक प्रदेशो का सम्मिलित नाम।

ब्रीड़—पुं०=व्रीड़ा।

ब्रीड़ना—अ० [सं० व्रीडन] लज्जित होना। लजाना।

ब्रीड़ा—स्त्री०=व्रीड़ा।

ब्रीवियर—पुं० [अं०] छापेखाने में, एक प्रकार का छोटा टाइप जो आठ प्वाइंट का अर्थात् पाइका का २।३ होता है।

ब्रीहि—पुं०=व्रीहि।

ब्रुश—पुं० [अं०] बुरुश।

ब्रूहम—स्त्री० [अं०] एक प्रकार की घोड़ागाड़ी जिसे ब्रूहम नामक डाक्टर ने डाक्टरो के लिए प्रचलित किया था।

ब्रूहि—अव्य० [सं०] उच्चारण करो। कहो।

ब्रेक—पुं० [अं०] गाड़ियों में पहिये या गति-चक्र की गति रोकनेवाला उपकरण।

ब्लाउज—पुं० [अं०] विलायती ढंग की जनाना कुरती।

ब्लाक—पुं० [अं०] १. वह ठप्पा जिस पर से कोई चित्र छापा जाय। २. भूमि का कोई चौकोर खंड या टुकड़ा। ३. किसी विशिष्ट कार्य के लिए नियत किया हुआ भू-भाग।

ब्यौ—वि०=बिय (दो)।

ब्यौना—स०=बौना।

भ

भ—१ हिन्दी वर्णमाला का चौबीसवाँ और पवर्ग का चौथा वर्ण जो व्याकरण तथा भाषा विज्ञान के दृष्टिकोण से ओष्ठ्य, अघोष, महाप्राण तथा स्पर्श व्यंजन है। २ छंद-शास्त्र में भगण का अल्पार्थक तथा संक्षिप्त रूप। [सं०√भा+ड] ३ नक्षत्र। ४ ग्रह। ५ राशि। ६ पर्वत। पहाड़। ७ भौंरा। ८ भ्रम। भ्रांति। ९ शुक्राचार्य।

भँइस†—स्त्री० भैंस।

भँइसा†—पु० भैंसा।

भँइसुर†—पु० भसुर (जेठ)।

भकार—पु० [सं० भ√कृ (करना) अण्] १ भीषण शब्द। २ भनभनाहट।

भकारी—स्त्री० [सं० भकार+ङीप्] १ भुनगा। २ चौपायों को काटनेवाला एक प्रकार का मच्छर।

भंक्ता (क्तृ)—पु० [सं०√भज् (तोड़ना)+तृच्] वह जो भंग या भग्न करता हो।

भक्ति—स्त्री० [सं०√भज्+क्तिन्] १ भंग या भग्न करने या होने की अवस्था या भाव। २ अस्थि-भंग।

भंग—पु० [सं०√भज्+घञ्] १ टूटने की क्रिया या भाव। २. विघटित करने की क्रिया या भाव। ३ ध्वंस। नाश। ४ पराजय। हार। ५ खंड। टुकड़ा। ६ भेद। ७ कुटिलता। टेढ़ापन। ८ बीमारी। रोग। ९ गमन। जाना। १० पानी के निकलने का स्थान। सोता। स्रोत। ११ डर। भय। १२ तरंग। लहर। १३ बाधा। विघ्न। १४ लकवा नामक रोग। १५ निश्चय, प्रतीति, नियम आदि में पड़नेवाला अन्तर। १६ कर्तव्य, व्यवस्था आदि का बीच में कुछ समय के लिए रुकना और ठीक तरह से न चल सकना। (ब्रीच) जैसे—शांति-भंग।

स्त्री० [सं० भंगा] एक पौधा जिसकी पत्तियाँ नशीली होने के कारण लोग पीसकर पीते हैं। भाँग।

पु० विभंग।

भंगड़—पु० [हिं० भाँग+अड़ (प्रत्य०)] वह जो नित्य भाँग पीने का अभ्यस्त हो। जिसे भाँग पीने की लत हो।

भँगड़ा—पु० [हिं० भंगेड़ी ?] बड़े ढोल के ताल पर होनेवाला पंजाबियों का एक प्रकार का लोक-नृत्य।

विशेष—अभी कुछ दिन पहले तक पंजाब के जाट और सिक्ख खूब भंग पीया करते थे, हो सकता है कि उस भंग की तरंग में खूब नाचने के कारण इसका नाम भँगड़ा पड़ा हो।

भंगना—अ० [हिं० भंग] १ भग्न होना। टूटना। २ किसी से दबना। स० १ भग्न करना। तोड़ना। २ किसी को दबाना या हराना।

भंग-पद—पु० [सं० मध्य० स०] श्लेष कथन के दो भेदों में से एक जिसमें किसी की कही हुई बात के शब्दों के टुकड़े करके और उन्हें आगे या पीछे जोड़कर कुछ और ही मतलब निकाला जाता है।

भँगरा—पु० [हिं० भाँग+रा=का] भाँग के पौधों के रेशों से बुना हुआ एक प्रकार का मोटा कपड़ा।

पुं०=भंगरैया।

भंगराज—पु० [सं० भृंगराज] १. कोयल की तरह की एक प्रकार की चिड़िया जो बहुत सुरीली और मधुर बोली बोलती है और प्रायः सभी पशु-पक्षियों की बोलियों की नकल करती है।

भंग-रेखा—स्त्री० [सं० मध्य०स०] चित्र-कला में ऐसी रेखा जो बिलकुल सीधी न हो, बल्कि आकर्षक या सुन्दर रूप में किसी ओर कुछ मुड़ी हुई हो। (कर्व)

भंगरैया—स्त्री० [सं० भृंगराज] जमीन पर फैलनेवाला एक क्षुप जिसके फूल पीले, सफेद या नीले रंग के होते हैं और बीज काली जीरी की तरह छोटे-छोटे होते हैं।

भंगा—स्त्री० [सं० भंग+टाप्] भाँग का पौधा और उसकी पत्तियाँ।

भंगार—पु० [सं० भंग से ?] १ वह गड्ढा जो बरसात के दिनों में वर्षा के पानी से भर जाता है। २ वह गड्ढा जो कूआँ बनाते समय पहले खोदा जाता है।

पु० [हिं० भाँग] १ घास-फूस। २ कूड़ा-करकट।

भंगि—स्त्री० [सं०√भज्+इन] १. भंग होने की अवस्था या भाव। विच्छेद। २ कुटिलता। टेढ़ापन। ३ शरीर के अंगों की ऐसी विशिष्ट मुद्रा या संचालन जो किसी प्रकार के मनोभाव का सूचक हो। ४ तरंग। लहर। ५. भाँग। ६ ब्याज। ७ प्रतिकृति।

भंगिमा (मन्)—स्त्री० [सं० भंग+इमनिच्] १. वह कलापूर्ण शारीरिक मुद्रा, जिससे कोई विशिष्ट मनोभाव प्रकट होता है। अदा। २ वक्रता। कुटिलता।

भंगियाना—अ० [हिं० भाँग] भाँग के नशे में चूर होना। स० भाँग पिलाकर नशे में चूर करना।

भंगी (गिन्)—वि० [सं० भंग+इनि] [स्त्री० भंगिनी] १ भंगशील। नष्ट होनेवाला। २ भंग करने या तोड़नेवाला।

स्त्री० [सं० भंग+ङीप्] १ रेखाओं के झुकाव से खींचा हुआ चित्र या बेल-बूटे आदि। २ मनोभाव प्रकट करनेवाली शारीरिक मुद्रा या अंग-संचालन। भंगी।

वि० [हिं० भाँग] भाँग पीनेवाला। भँगेड़ी।

पु० [?] [स्त्री० भंगिन] झाड़ू देने तथा मैला उठानेवाला व्यक्ति।

भंगुर—वि० [सं०√भज्+घुरच्] १ भंग होने अर्थात् टूट-फूटकर या विघटित होकर नष्ट होनेवाला। नाशवान्। जैसे—क्षणभंगुर। २. टेढ़ा। वक्र। उदा०—उरज भार भंगुर जाति गति जाकी।—नन्ददास। ३ छली। धूर्त।

पु० नदी का मोड़ या घुमाव।

भंगुरा—स्त्री० [सं० भंगुर+टाप्] १ अतिविषा। अतीस। २. प्रियंगु।

भँगेड़ी—पु० [हिं० भाँग+एड़ी (प्रत्य०)] वह जिसे भाँग पीने की लत हो। प्रायः बहुत भाँग पीनेवाला। भंगड़।

भँगेरा—पु० भंगरा (भंगरैया)।

भँगेला—पु० भँगरा।

भंग्य—वि० [सं०√भज्+ण्यत्] जो भंग किया जा सके अथवा भंग किया जाने को हो।

पु० भाँग का खेत।

भंजक—वि० [स०√भंज्+ण्वुल्—अक] [स्त्री० भंजिका] भंग करने या तोड़ने-फोड़नेवाला।

भंजन—पुं० [स०√भञ्+ल्युट्—अन] १. भग करना। २. तोड़ना-फोड़ना। ३ ध्वंस। नाश। ४. आक। मदार। ५ भाँग। ६. व्रण की वह पीडा जो वायु के प्रकोप के कारण होती है।

वि०=भजक। (समस्त पदों के अत में, जैसे—भव-भय-भंजन)।

भंजनक—पु० [स०√भंज्+ल्युट्—अन+कन्] एक तरह का रोग जिसमे दाँत टूट जाते हैं और मुँह कुछ टेढा हो जाता है।

भँजना—अ० [स० भंजन] १. भग्न होना। टुकडे-टुकड़े होना। २ भाँजा या मोडा जाना। ३ तहो या परतो के रूप मे मोडा जाना। जैसे—कागज भँजना। ४ इधर-उधर घुमाना या चलाया जाना। जैसे—तलवार, पाटा या लाठी भँजना। ५ बडे सिक्के का छोटे सिक्को में परिवर्तित होना। भुनना। जैसे—रुपया भँजना।

स०=भाँजना।

भंजना—अ० [स० भजन] पात्र आदि का टूट-फूट जाना।

स० तोड़ना-फोडना।

स०=भाँजना।

अ०=भागना।

स०- भगाना।

भँजनी—पु० [हिं० भाँजना] करघे की वह लकड़ी जो ताने को विस्तृत करने के लिए उसके किनारो पर लगाई जाती है। मँसरा।

भंजा—स्त्री० [स० भञ्ज्+अच्—टाप्] अन्नपूर्णा।

भँजाई—स्त्री० [हिं० भाँजना] १ भाँजने की अवस्था, क्रिया, ढग या भाव। २ कोरे या छपे हुए कागज को परतो मे मोड़ने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

†स्त्री० दे० 'भुनाई'।

भँजाना—स० [हिं० भँजना का स०] १ किसी को कुछ भाँजने मे प्रवृत्त करना। २. भाँजने का काम किसी से कराना। भँजवाना। (दे० 'भाँजना' और 'भँजना')।

† अ०=भँजना।

भँटकटैया—स्त्री०=भटकटैया।

भंटा—पु०—बैगन।

भटाकी—स्त्री० [स०√भण् (शब्द)+टाकन्+ङीष्] भटा। बैंगन।

भंठी†—स्त्री० [?] १ बाधा। विघ्न। २. अड़चन। (राज०)

भंड—पु० [स०√भंड् (प्रतारण)+अच्]=भाँड।

वि० १ अश्लील या गदी बातें बकनेवाला। २. किसी बात को स्थान-स्थान पर कहते फिरनेवाला। ३. धूर्त। ४. पाखंडी। जैसे—भंड तपस्वी।

†पु०=भाँड़।

भंडक—पु० [स० भंड+कन्] खिंडरिच पक्षी।

भँड़-ताल—पु० [हिं० भाँड+ताल] एक प्रकार का गाना और नाच जिसमें गानेवाला गाता है और शेष समाजी उसके पीछे तालियाँ बजाते हैं। भँड़-तिल्ला।

भँड़-तिल्ला—पु० [हिं० भाँड+तिल्ला] १. भँड-ताल। २. आडंबर-पूर्ण काम।

भंडन—पु० [स०√भड् (बिगाड़ना)+ल्युट्—अन] १. हानि। क्षति। २. कवच।

भडना—स० [सं० भंडन] १. क्षति या हानि पहुँचाना। २ खराब करना। बिगाड़ना। ३ तोडना-फोडना। ४ किसी को चारो ओर बदनाम करते फिरते रहना।

भँड-फोड़—पु० [हिं० भाँडा+फोडना] १ मिट्टी के बर्तन तोड़ना-फोडना। २ दे० 'भडा-फोड'।

वि० १ मिट्टी के बरतन तोड-फोडकर नष्ट करना। २ किसी का भंडा-फोड या रहस्योद्घाटन करना।

भँड़भाँड़—पु० [स० भांडीर] एक प्रकार का कटीला क्षुप जिसकी पत्तियाँ नुकीली, लम्बी और कँटीली होती हैं। इसके पौधे से पीले रंग का दूध निकलता है जो घाव और चोट पर लगाया जाता है।

भँडरिया—स्त्री० [हिं० भडारा+इया (प्रत्य०)] दीवारो मे बनी हुई खानेदार तथा पल्लोंवाली छोटी अलमारी।

वि० [हिं० भड्डरि] १ ढोंगी। पाखडी। २ चालाक। धूर्त।

पु०=भड्डर।

भँडसाल—स्त्री० [हिं० भाड+स० शाला] अन्न इकट्ठा करके रखने का स्थान। खत्ती। खत्ता।

भंडा—पु० [स० भाड] १ पात्र। बरतन। २. भडार। ३. भेद। रहस्य।

मुहा०—(किसी का) भंडा फूटना=रहस्य विशेषत कुचक्र का पता लोगो को लगना। भेद प्रकट होना। भंडा फोडना=गुप्त रहस्य खोलना। सब पर भेद प्रकट करना।

४ वह लकडी या बल्ला जिसका सहारा लगाकर मोटे और भारी बल्लो को उठाते या खिसकाते हैं।

भँडाना—स० [हिं० भाँड] १ उछल-कूद मचाना। उपद्रव करना। २. तोडना-फोडना।

स० [हिं० भडना का प्रे०] भडने का काम किसी से कराना।

भंडा-फोड़—वि० [हिं० भाँडा+फोड़ना] दूसरों का रहस्य, विशेषत. कुचक्र लोगों पर प्रकट करनेवाला।

पु० किसी के गुप्त रहस्यो या कुचक्रो का सब पर किया जानेवाला उद्घाटन।

भंडार—पु० [सं० भाडार] १ कोष। खजाना। २ किसी चीज या बात का बहुत बड़ा आधान या आश्रय स्थान। जैसे—विद्या का भडार। ३. अनाज रखने का कोठा। खत्ता। खत्ती। ४ वह कमरा या कोठरी जिसमे भोजन बनाने के लिए अन्न, बरतन आदि रखे जाते हैं। ५ उदर। पेट। ६ खोपडी। ७ नदी का तल। तलहटी। ८. किसी राजा या जमीदार की वह भूमि या गाँव जिसमे वह स्वय खेती करता है। ९ दे० 'भडारा'।

भंडारा—पु० [हिं० भडार] १ साधु-संन्यासियों आदि का भोज। वह भोज जिसमे सन्यासियो और साधुओ को खिलाया जाता है।

क्रि० प्र०—करना।—देना।

२. उदर। पेट। ३ खोपड़ी। ४. जीव-जन्तुओं का झुंड या समूह।

क्रि० प्र०—जुड़ना ।
५ दे० 'भडार'।

भंडारी—पु० [हिं० भंडार+ई (प्रत्य०)] १ भंडार का प्रधान अध्यक्ष और व्यवस्थापक। भडार का प्रबधक। २. रसोइया। ३. खजांची। ४ तोपखाने का दारोगा।
स्त्री० [हिं० भंडार+ई (प्रत्य०)] १ कोश। खजाना। २. छोटी कोठरी।
स्त्री०=१ भँडरिया। २=भंडार।

भडिमा (मन्)—स्त्री०[सं० भड+इमनिच्] छल। धोखा।

भंडिर—पु० [स०√भड्+इलच्, र—ल] सिरस का वृक्ष। शिरीष।

भंडिल—पु० [स०√भड्+इलच्] १. सिरस का पेड। २. दूत। ३ कारीगर। शिल्पी।
वि० १ अच्छा। उत्तम। २. मागलिक। शुभ।

भँड़िहा—पु० [स० भाड+हर] चोर।

भँड़िहाई—स्त्री० [हिं० भाँड] भाँड़ों या विदूषकों का-सा आचरण या व्यवहार।
अव्य० [हिं० भँडिहा] चोरी से। छिपे छिपे।

भडी—स्त्री०[स० भड+इनि] १ मजीठ। २. सिरिस का पेड।

भंडीर—पुं० [स० भड्+ईरन्] १. चौलाई का साग। २. बड का पेड। वट। ३ भड-भाँड। ४ सिरस।

भंडूक—पु० [स०√भड्+ऊक] १ भाकुर नामक मछली। श्योनाक। सोना-पाढ़ा।

भँडेर—पु० [देश०] एक वृक्ष जिसकी छाल चमडा रँगने के काम मे आती है।
स्त्री०=भँडेहर।

भँडेरिया—पु०=भड्डर।
स्त्री०=भँडरिया।

भँडेरियापन—पु० [हिं० भँडेरिया+पन (प्रत्य०)] १ ढोंग। मक्कारी। २ चालाकी। धूर्तता।

भँडेहर—स्त्री० [हिं० भाँडा] १ मिट्टी के छोटे-छोटे बरतन। २ घड़े के आकार-प्रकार के मिट्टी के छोटे-छोटे पात्रों का एक पर एक रखा हुआ थाक। ३ लाक्षणिक अर्थ मे, बहुत अलकृत तथा सजाई हुई ऐसी वस्तु जो देखने मे भद्दी लगती हो।

भँडेहरी—स्त्री० [हिं० भाँड+हरी (प्रत्य०)] १ भाँडो का काम। २ भाँडपन।
वि० भाँडो का-सा।

भँडैती—स्त्री० [हिं० भाँड़] १ भाँडों का काम या पेशा। २ भाँडो की-सी ओछी बाते या हास-परिहास।

भँड़ौआ—पु० [हिं० भाँड] १ भाँडो के गाने का गीत। २ व्यग्य और हास्य से युक्त ऐसी कविता या गीत जो कहे या गाये जाने के योग्य न हो।

भँति—स्त्री०=भ्रांति।
अव्य०=भाँति (प्रकार)।

भँबूरी—स्त्री० [हिं० बबूर]=फुलाई (वृक्ष)।

भंभ—पु० [सं० भ√भा (शोभित होना)+क] १ चूल्हे का मुँह। २. धूआँ। ३. मक्खी।

भंभर*—पु० [सं० भ्रमर] १ बडी मधु-मक्खी। सारंग। २. बर्रे। भिड़।

भँभरना—अ० [हिं० भय+ना (प्रत्य०)?] भयभीत होना। डरना।
अ०=भमरना।

भंभा—पु० [स० भभ] १ बिल। विवर। २ छेद। सूराख।
स्त्री० [स०] डुग्गी।

भभाका—पु० [हिं० भभा] १ बहुत बडा छेद। २ बहुत बड़ा बिल या विवर।
वि० मोटा और स्थूल-काय।

भँभाना—अ० [स० भभाख] गौ-भैसो आदि पशुओ का चिल्लाना। रँभाना।

भँभीरा—पु०[अनु०] एक प्रकार का बरसाती फतिगा।

भँभीरी—स्त्री० [अनु०] १. पीले रंग का उँगली भर लबा तथा झिल्ली के समान पारदर्शक परोवाला एक प्रसिद्ध फतिगा। २ लकडी आदि का एक प्रकार का छोटा खिलौना जो हाथ से घुमाने पर लट्टू की तरह घूमता है। फिरकी।

भँभूरा—पु० [हिं० बगूला का रूप] १ चक्रवात। बगूला। उदा०—धरनि गिरतु बिचही फिरतु पस्यौ भभूरे पात।—वृद। २. गरम राख या रेत।

भँभेरि*†—स्त्री०=भय।

भंभो—स्त्री० [अनु०] १ स्थूल-काय स्त्री। मोटी औरत।

भँभोड़ना—पु० [?] नोच-खसोट कर क्षत-विक्षत करना। जैसे—शेर का हिरन को भँभोड़ना।

भँयना†—अ०=भँवना (घूमना)।

भँवन*—स्त्री० [स० भ्रमण] १ घूमने या चक्कर लगाने की क्रिया, ढग या भाव। २ भ्रमण।

भँवना—अ० [स० भ्रमण] १ चक्कर लगाना। २ घूमना-फिरना।

भँवर—पु० [सं० भ्रमर] १ भ्रमर (भौरा)। २ नदी के मोड या तट पर तथा पानी का बहाव रुकने पर लहरो के चक्कर काटते हुए आगे बढ़ने की स्थिति। ३. गड्ढा। गर्त। ४ भौर की तरह का या काले रग का घोडा। भौंरा। मुश्की। उदा०—हासुल भँवर कि आह बखानै।
वि० काला।

भँवरकली—स्त्री० [हिं० भँवर+काली] लोहे या पीतल की वह कडी जो कील मे इस प्रकार ढीली जडी रहती है कि चारो ओर सहज मे घुमाई जा सकती है।

भँवर-गीत—पु०=भ्रमर-गीत।

भँवर-जाल—पु० [हिं० भँवर+जाल] ससार और उसके झगडे-बखेडे। भ्रमजाल।

भँवर-भीख—स्त्री०=[हिं० भँवर+भीख] चारो ओर घूम-घूमकर प्राप्त की हुई भिक्षा।

भँवरा—पु०=भौरा।

भँवरी—स्त्री० १.=भौंरी। २=भाँवर।
†स्त्री०=भँवर (नदी का)।
स्त्री० [हिं० भँवना] घूम-घूमकर सौदा बेचना।

भँवाना—स० [हिं० भँवना] १ घुमाना। २. चक्कर देना। ३.धोखे या भ्रम में डालना।

भँवारा—वि० [हिं० भँवना+आरा (प्रत्य०)] जो प्राय. घूमता-फिरता रहता हो। जिसे भ्रमण करने की लत पड़ी हो।

भँवैया†—वि० [हिं० भँवना] १. घुमाने या चक्कर दिलानेवाला। २. तरह तरह के नाच नचाने या खेल खेलानेवाला।

भँसरा—पु०=भँजनी (करघे की)।

भंसा†—पुं० [सं० भाड-शाला] १. रसोई-घर। चौका। २. दे० 'भसार'।

भंसार†—पु० १.=भाड़। २.=मट्ठा। ३ ='भंसा'।

भइया—पु० [हिं० भाई+इया (प्रत्य०)] १. भाई। २. भाई अथवा बराबर वालों के लिए सम्बोधन-सूचक शब्द।

भई—अव्य० [हिं० भाई] संबोधन रूप मे प्रयुक्त होनेवाला एक अव्यय। जैसे—भई वाह? क्या बात है।

भउ*—पु०=भव (ससार)।

भउजाई†—स्त्री०=भौजाई।

भक—स्त्री० [हिं० भभकना] आग के एकाएक भभकने से होनेवाला शब्द। **पद—भक से**=एकाएक। सहसा।

भकटना—अ०= भकसना।

भकटाना—अ०, स०=भकसाना।

भकड़ना—अ० =भगरना।

भकभकाना—अ० [अनु०] १ 'भक-भक' शब्द करके जलना या रह-रहकर चमकना। २ चमकाना।

स० १ उक्त प्रकार से जलाना। सुलगाना। २. चमकाना।

भक-भूर(रि)—वि० [स० भेक] १ मूर्ख। २. उजड्ड। उदा०—चाह की चटक ते भयो न हियें खोय जा के, प्रेमपरि कथा कहै कहा भकभूर सो।—घनानद।

भकराँध—स्त्री० [हिं० भगरना अथवा भक+गंध] सड़े हुए अनाज की गध। भुकरायँध।

भकराँधा—वि० [हिं० भकराँध+आ (प्रत्य०)] दुर्गन्ध से युक्त या सड़ा हुआ (अन्न)।

भकरंड—पु० [स० भग्न-रुण्ड] छिन्न-भिन्न या कटा हुआ धड़।

भकवा†—वि०=भकुआ।

भकसना—अ० [अनु०] इस प्रकार सड़ना कि दुर्गन्ध निकलने लगे। †स०=भकोसना।

भकसा—वि० [हिं० भकसाना या भकटाव] खाद्य पदार्थ।

भकसाना—स० [हिं० भकसना का स०] इस प्रकार सड़ाना कि दुर्गन्ध निकलने लगे।

†अ०=भकसना।

भकसी—स्त्री० [?] काल-कोठरी। (पूरब)

भकाऊँ—पु० [अनु०] बच्चों को डराने के लिए एक कल्पित जन्तु। हौआ।

भकुआ—वि० [स० भेक] १. मूर्ख। मूढ़। २. बहुत घबराया हुआ।

भकुआना—अ० [हिं० भकुआ] १. मूर्ख बनना। २. घबरा जाना। स० १. किसी को भकुआ बनाना। बेवकूफ बनाना। २. बहुत ही घबराहट में डालना।

भकुड़ा—पु० [हिं० भौंकुट] वह मोटा गज जिससे तोप मे बत्ती आदि ठूँसी जाती है।

भकुड़ाना—स० [हिं० भकुड़ा+आना (प्रत्य०)] १. लोहे के गज से तोप के मुँह में बत्ती भरना। २. उक्त प्रकार से तोप का नल साफ करना।

भकुरना†—अ० [?] नाराज या रुष्ट होना। मुँह फुलाना। उदा०—भकुर गई है तो भकुरी रहे।—वृंदावनलाल वर्मा।

भकुवा—वि०=भकुआ।

भकूट—पुं० [सं० ष० त०] एक प्रकार का राशियोग जो विवाह की गणना में शुभ माना जाता है। (फलित ज्यो०)

भकोसना—स० [सं० भक्षण] १. बहुत बड़े बड़े तथा एक पर एक कौर मुँह मे ठूसते चलना। २. लाक्षणिक अर्थ मे, बहुत बड़ी संपत्ति हजम कर या खा-पी जाना।

भकोसू—वि० [हिं० भकोसना] १. भकोसनेवाला। २. बहुत अधिक खानेवाला। भुक्खड़। ३. बहुत बड़ी सपत्ति हजम करने या खा-पी जानेवाला।

भक्त—वि० [सं०√भज् (सेवा करना)+क्त, कुत्व] [भाव० भक्ति] १. बाँटा हुआ। भागों में बाँटा हुआ। जिसका या जिसके विभाग हुए हों। २. सब को बाँटकर हिस्से के मुताबिक दिया हुआ। ३ अलग या पृथक् किया हुआ। ४. किसी का पक्ष लेनेवाला। पक्षपाती। ५ अनुगामी। अनुयायी। ५. किसी पर भक्ति और श्रद्धा रखनेवाला।

पु० १. पका हुआ चावल। भात। २. धन। ३. वह जो श्रद्धा-पूर्वक किसी की उपासना या पूजा करता या किसी पर पूरी निष्ठा रखता हो। ४. वह जो धार्मिक दृष्टि से मांस-मछली खाना पाप समझता हो।

भक्त-गृह—पु० [स० ष० त०] बौद्ध भिक्षुओं की भोजनशाला।

भक्तजा—स्त्री० [सं० भक्त√जन् (उत्पत्ति)+ड+टाप्] अमृत।

भक्तता—स्त्री० [स० भक्त+तल्+टाप्] भक्ति।

भक्त-तूर्य्य—पु० [स० मध्य० स०] एक प्रकार का बाजा जो भोजन के समय बजाया जाता था।

भक्तत्व—पुं० [स० भक्त+त्व] किसी के खड या विभाग होने का भाव।

भक्त-दाता (तृ)—पुं० [स० ष० त०] भरण-पोषण करनेवाला।

भक्त-दास—पु० [सं० सुप्सुपा स०] वह भक्त जिसे अपने सेव्य या स्वामी से केवल भोजन-कपड़ा मिलता हो।

भक्त-पुलाक—पु० [स० ष० त०] १. भात का कौर। २. माँड। पीच।

भक्त-प्रिय—पु० [स० ष० त०]सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

भक्त-मंड—पु० [सं० ष० त०] माँड। पीच।

भक्त-मंडक—पुं० [स० ष० त०] =भक्तमंड।

भक्त-बच्छल—वि० दे० 'भक्तवत्सल'।

भक्त-वत्सल—वि० [स० स० त०] [भाव० भक्त-वत्सलता] जो भक्तों पर कृपा करता और स्नेह रखता हो।

पु०=विष्णु।

भक्त-शरण—पुं० [सं० ष० त०] भोजनशाला। रसोई-घर।

भक्त-शाला—स्त्री० [स० ष० त०] १ पाकशाला। रसोई-घर। २ भक्त के बैठकर धर्मोपदेश सुनने का स्थान ।

भक्त-सिक्थ—पु० [स० ष० त०] दे० 'भक्तपुलाक'।

भक्ताई—स्त्री० [हिं० भक्त+आई (प्रत्य०)] भक्ति।

भक्ति—स्त्री० [सं०√भज्+क्तिन्] १ कोई चीज काटकर या और किसी प्रकार कई टुकड़ो या भागो मे बाँटने की क्रिया या भाव। विभाजन। २. उक्त प्रकार से काटे हुए टुकड़े या किये हुए विभाग। ३ अग। अवयव। ४ खड। टुकडा। ५ कोई ऐसा विभाग जिसकी सीमाएँ रेखाओं के द्वारा अकित या निश्चित हो। ६ उक्त प्रकार का विभाजन करनेवाली रेखा। ७ किसी प्रकार की रचना। ८ भावभगी। ९ उपचार। १० किसी के प्रति होनेवाली निष्ठा, विश्वास या श्रद्धा। ११ उक्त के फलस्वरूप किसी के प्रति होनेवाला अनुराग या स्नेह, अथवा की जानेवाली किसी की सेवा-शुश्रूषा या अर्चन-पूजन। १२ धार्मिक क्षेत्र मे, आराध्य, ईश्वर, देवता आदि के प्रति होनेवाला वह श्रद्धापूर्ण अनुराग जिसके फल-स्वरूप वह सदा उसका अनुयायी रहता और अपने आपको उसका वशवर्ती मानता है। (डिवोशन)

विशेष—शाडिल्य के भक्ति-सूत्र मे यह सात्विकी, राजसी और तामसी तीन प्रकार की कही गई है।

१३ किसी बडे के प्रति होनेवाली पूज्य बुद्धि, श्रद्धा या आदरभाव। १४ जैन मतानुसार वह ब्रमन जिसमे निरतिशय आनद हो और जो सर्वप्रिय, अनन्य, प्रयोजनविशिष्ट तथा वितृष्णा का उदयकारक हो। १५ साहित्य मे ध्वनि, जिसे कुछ लोग गौण और लक्षणागम्य मानते हैं। १६ प्राचीन भारत मे कपडो की छपाई, रगाई आदि मे बनी हुई कोई विशेष आकृति या अभिप्राय। १७ छद शास्त्र मे एक प्रकार का वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे तगण, भगण और अत मे गुरु होता है।

भक्ति-गम्य—वि० [स० तृ० त०] भक्ति द्वारा प्राप्य।
पु० शिव।

भक्तिमान्-(मत्)—वि० [स० भक्ति+मतुप्] [स्त्री० भक्तिमती] १ जिसके विभाग हुए हो। २ जिसके मन मे किसी के प्रति भक्ति हो।

भक्ति-मार्ग—पु० [स० ष० त०] ईश्वर-दर्शन या मोक्ष प्राप्ति के तीन मार्गों मे से एक जिसमे ईश्वर को भक्ति से अनुरक्त तथा प्रसन्न किया जाता है।

भक्ति-योग—पु० [स० ष० त०] १ उपास्यदेव मे अत्यत अनुरक्त होकर उसकी भक्ति मे लीन रहना। सदा भगवान मे श्रद्धापूर्वक मन लगाकर उनकी उपासना करना। २ भक्ति का साधन।

भक्तिल—वि० [सं० भक्ति√ला (लेना)+क] १ भक्तिदायक। २ विश्वसनीय।
पु० विश्वसनीय। घोड़ा।

भक्ति-वाद—पु० [स० ष० त०] साहित्य मे, कुछ लोगो का यह मत या सिद्धान्त कि काव्य मे ध्वनि प्रमुख नही, बल्कि भक्ति (गौण और लक्षण गम्य) है।

भक्ति-वादी (दिन्)—वि० [स० भक्तिवाद+इनि] भक्ति-वाद सम्बन्धी। भक्ति-वाद का।
पु० वह जो भक्तिवाद का अनुयायी या समर्थक हो।

भक्ति-सूत्र—पु० [स० मध्य० स०] वैष्णव सम्प्रदाय का एक सूत्र-ग्रन्थ जो शाडिल्य मुनि का रचा हुआ माना जाता है और जिसमे भक्ति का विस्तृत विवेचन है।

भक्ती†—स्त्री०=भक्ति।

भक्तोपसाधक—पु० [स० भक्त-उपसाधक, ष० त०] १ पाचक। रसोइया। २ वह जो भोजन परोसता हो।

भक्ष—पु० [स०√भक्ष् (भोजन करना)+घञ्] १. भोजन करना। खाना। २ खाने का पदार्थ। भक्ष्य। खाना। भोजन।

भक्षक—वि० [स०√भक्ष्+ण्वुल्—अक] [स्त्री० भक्षिका] १ भोजन करनेवाला। खादक। २ खा जानेवाला। जैसे—नर-भक्षक।

भक्षकार—पु० [स० भक्ष√कृ (करना)+अण्, उप० स०] १. हलवाई। २ पाचक। रसोइया।

भक्षण—पु० [स०√भक्ष्+ल्युट्—अन] [वि० भक्ष्य, भक्षित, भक्षणीय] १ किसी वस्तु को दाँतो से काटकर खाना। २ भोजन करना। ३. आहार। भोजन।

भक्षणीय—वि० [स०√भक्ष्+अनीयर्] जो खाया जा सके अथवा जो खाया जाने को हो।

भखना—स० [स० भक्षण] १ भक्षण करना। खाना। २ बुरी तरह से अपने अधिकार मे कर दुरुपयोग करना।

भक्षयित(तृ)†—[स०√भक्ष्+णिच्+तृच्] भक्षण करनेवाला।

भक्षित—भू० कृ० [स०√भक्ष्+क्त] खाया हुआ।
पु० आहार।

भक्षी—वि० [स० भक्ष+इनि] [स्त्री० भक्षिणी] समस्त पदो के अन्त मे, खानेवाला। भक्षक। जैसे—कीट-भक्षी, मास-भक्षी।

भक्ष्य—वि० [स०√भक्ष्+ण्यत्] खाये जाने के योग्य। जो खाया जा सके।
पु० खाने-पीने की चीजे। खाद्य पदार्थ।

भक्ष्याभक्ष्य—वि० [स० भक्ष्य-अभक्ष्य, द्व० स०] खाद्य और अखाद्य (पदार्थ)।

भख†—पु० भोजन।

भखना—स० [स० भक्षण प्रा० भक्खन] १. भोजन करना। खाना। २ निगलना।

भखी—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की घास जो छप्पर छाने के काम आती है।

भगंदर—पु० [स० भग√दृ (विदारण करना)+णिच्+खश्, मुम्] एक प्रकार का फोडा जो गुदावर्त के किनारे होता है। यह नासूर के रूप मे हो जाता है और इतना बढ जाता है कि इसमे से मल-मूत्र निकलने लगता है। (फिस्च्यूला)

भग—पु० [स० भज्+घ] १ सूर्य। २ बारह आदित्यो मे से एक। ३ चद्रमा। ४ धन-सम्पत्ति। ऐश्वर्य। ५. इच्छा। कामना। ६ माहात्म्य। ७ प्रयत्न। ८ धर्म। ९ मोक्ष। १०. सौभाग्य। ११. कांति। चमक। १२. पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र। १३ एक देवता। दक्ष के यज्ञ मे वीरभद्र ने इनकी आँख फोड़ दी थी। १४ छ प्रकार की विभूतियाँ सम्यगैश्वर्य, सम्यग्वीर्य, सम्यग्यश, सम्यक्श्रिय और सम्यग्ज्ञान कहते हैं।
स्त्री० [स० भग] स्त्रियो की योनि।

भगई—स्त्री० [हिं० भगवा] कपड़े का वह लंबा टुकड़ा जिसे पहले कमर में लपेटकर फिर लगोटी की तरह लाँग लगाई जाती है।

भग-काम—वि० [सं० भग√कम्+णिङ्+अण्, उप० स०] सयोग-सुख का इच्छुक।

भगण—पु० [सं० ष० त०] १ खगोल मे ग्रहो का पूरा चक्कर जो ३६० अंश का होता है। २ छंदशास्त्र में तीन वर्णों का एक गण जिसका आदि का वर्ण गुरु और अंत के दो वर्ण लघु होते हैं। जैसे—कारण, पोषण।

भगत—वि० [स० भक्त] [स्त्री० भगतिन] १ भक्ति करनेवाला। भक्त। २ विचारवान्।

पु० १ साधु या सन्यासी। २ वह जो धार्मिक विचार से मास-मछली आदि न खाता हो। ३ वैष्णव, जो तिलक लगाता और मास आदि न खाता हो। ४. राजपूताने की एक जाति। इस जाति की कन्याएँ वेश्या-वृत्ति और नाचने-गाने का काम करती है। दे० 'भगतिया'। ५ होली मे वह स्वांग जो भक्तों आदि का रचा जाता है। इसमे भक्तो का उपहास होता है। ६. श्रृंगाररस प्रधान तथा लोक-कथा पर आश्रित एक प्रकार का सगीत रूपक जो प्राय नौटकी (देखे) की तरह होता और प्राय पुरसा भर ऊँचे मच पर अभिनीत होता है। इसमे प्राय व्यग्य और हास्य का भी अच्छा मिश्रण रहता है। ७ वेश्या के साथ बाजा बजानेवाला सगतिया। (राज०) ८ मत्र-तन्त्र से भूत-प्रेत झाडनेवाला पुरुष। ओझा। सयाना।

भगत-बछल*—वि० दे० 'भक्त-वत्सल'।

भगत-बाज—पु० [हिं० भगत+फा० बाज] १ स्वाग भरकर लौड़ो को अनेक रूप का बनानेवाला पुरुष। २ लौडो को नाच-गाना सिखाने-वाला व्यक्ति।

भगताना—स० भुगताना।

भगति—स्त्री०=भक्ति।

भगतिन—स्त्री० [हिं० भगत] भक्त स्त्री।

स्त्री० [हिं० भगतिया का स्त्री०] रडी। वेश्या।

भगतिया—पु० [हिं० भक्त] [स्त्री० भगतिन] राजपूताने की एक जाति। कहते हैं कि ये लोग वैष्णव साधुओं की संतान हैं जो अब गाने-बजाने का काम करते है और जिनकी कन्याएँ वेश्या-वृत्ति करती और भगतिन कहलाती है।

भगती—स्त्री० =भक्ति।

भगदड़—स्त्री० [हिं० भागना+दौड़ना] संकट की स्थिति मे भीड़ का सत्रस्त होकर इधर-उधर भागना।

क्रि० प्र०—मचना।

भगन—वि० भग्न।

भगनहा—पु० [सं० भग्नहा] करेरुआ नामक कँटीली बेल।

भगना—अ०=भागना

पु० =भागिनेय (भानजा)।

भगनी—स्त्री०=भगिनी (बहन)।

भग-भक्षक—पु० [स० ष० त०] स्त्रियों का दलाल। कुटना।

भगर—पुं० [हिं० भगरना] १. सड़ा हुआ अन्न। २. दे० 'भगल'।

†पुं० [देश०] [स्त्री० भगरी] १. छल। कपट। २ ढोंग।

मुहा०—भगर भरना=ढोंग करना।

भगरना—अ० [सं० विकरण, हिं० बिगडना] खत्ते मे गर्मी पाकर अनाज का सड़ने लगना।

सयो० क्रि०—जाना।

भगल—पु० [देश०] १. छल। कपट। धोखा। २. आडम्बर। ढोंग। ३ इन्द्रजाल। जादू। ४ किसी नकली चीज को असली बताकर अथवा साधारण चीज को बहुमूल्य बना देने का ढोंग रचकर दूसरो को ठगने की कला या क्रिया। जैसे—ताबे या पीतल को सोना बनाने का प्रलोभन देकर दूसरो को ठगना। (स्विडलिंग)

भगलिया—पु० [हिं० भगल] १. ढोंगी। पाखडी। २. कपटी। छलिया। ३ ऐंन्द्रजालिक। जादूगर। ४ वह जो लोगो का विश्वास-भाजन बनकर उन्हें ठगता हो। (स्विन्डलर)

भगली—पु०=भगलिया।

स्त्री०—भगल।

भगवत—पु० [स० भगवत का बहु० भगवन्त] भगवान।

भगवत्—वि० [स० भग+मतुप्, वत्व] [स्त्री० भगवती] १. ऐश्वर्य-शाली। २. पूज्य। मान्य।

पु० १. भगवान। २ विष्णु। ३ शिव। ४ गौतम बुद्ध। ५ कार्तिकेय। ६ सूर्य। ७ जैनो के जिनदेव।

भगवती—स्त्री० [स० भगवत्+ङीप्] १ देवी। २. गौरी। ३ सरस्वती। ४ गगा। ५ दुर्गा।

भगवदीय—वि० [स० भगवत्+छ—ईय] १. भगवद्भक्त २ भगवत्-सबधी।

भगवद्भक्त—पु० [स० भगवत्-भक्त, ष० त०] १ भगवान का भक्त। ईश्वर-भक्त। २ विष्णु का भक्त। ३ दक्षिण भारत के वैष्णवो का एक सम्प्रदाय।

भगवद्भक्ति—स्त्री० [स० भगवत्-भक्ति, ष० त०] भगवान की भक्ति।

भगवद्विग्रह—पु० [सं० भगवत्-विग्रह, ष० त०] भगवान का विग्रह या मूर्ति।

भगवल्लीला—स्त्री० [सं० भगवत्-लीला, ष० त०] ईश्वरीय लीला।

भगवा—पु० [हिं० भक्त] एक प्रकार का रग जो गेरू के रग की तरह का लाल होता है।

वि० उक्त प्रकार के रग से रँगा हुआ। जैसे—भगवे कपडे, भगवा झंडा।

भगवान (वत्)—वि० [सं० दे० भगवत्] १. ऐश्वर्यशाली। २ पूज्य। मान्य। ३. कुछ क्षेत्रो मे पारिभाषिक रूप मे, ऐश्वर्य, बल, यश, श्री, ज्ञान और वैराग्य से सम्पन्न।

पु० १ ईश्वर। परमेश्वर। २ शिव। ३ विष्णु। ४ गौतम बुद्ध। ५ जिनदेव। ६ कार्तिकेय। ७ कोई पूज्य और आदरणीय व्यक्ति। जैसे—भगवान वेदव्यास।

भगहर†—स्त्री०—भगदड़।

भगहा (हन्)—पु० [सं० भग√हन् (मारना)+क्विप्] १ शिव। २ विष्णु।

भगांकुर—पु० [स० भग-अकुर, ष० त०] अर्श रोग। बवासीर।

भगाई—स्त्री० [हिं० भागना] १. भागने की क्रिया या भाव। २. भगदड़।

भगाड़—पु० [?] पोली जमीन के धँसने या बैठ जाने के फलस्वरूप होने-वाला गड्ढा।

भगाना—स० [सं० व्रज] १. किसी को भागने में प्रवृत्त करना। ऐसा काम करना जिससे कोई भागे। २ बच्चे, स्त्री आदि को उसके अभिभावकों से चोरी, उठाकर या फुसलाकर कहीं ले जाना। (ऐब्डक्शन) ३. दूर करना। हटाना।
†अ० =भागना।

भगाल—पु० [सं० √भज् (सेवा करना) + कालन्, ज-ग] (मनुष्य की) खोपड़ी।

भगाली—वि० [सं० भगाल + इनि] १. भगाल-संबंधी। २ खोपड़ी धारण करनेवाला।
पुं० शिव।

भगास्त्र—पु० [सं० भग-अस्त्र, मध्य० स०] प्राचीन काल का एक प्रकार का अस्त्र।

भगिना†—पु०=भागिनेय (भानजा)।

भगिनिका—स्त्री० [सं० भगिनी + कन्, + टाप्, ह्रस्व] छोटी बहन।

भगिनी—स्त्री० [सं० भग + इनि + ङीप्] १ बहन। २ भाग्यवती स्त्री।

भगिनी-पति—पु० [सं० ष० त०] बहनोई।

भगिनीय—पु० [सं० भगिनी + छ-ईय] बहन का लड़का। भगिनेय। भांजा।

भगीरथ—पु० [सं० भ-गीर्, द्व० स०, भगीर्-रथ, ब० स०] अयोध्या के एक सूर्यवंशी राजा जो राजा सगर के पर-पोते थे तथा जिन्होंने तपस्या करके स्वर्ग से गंगा नदी की अवतारना कराई थी।
वि० [सं०] भगीरथ की तपस्या के समान बहुत बड़ा, भारी या विशाल। जैसे—भगीरथ प्रयत्न।

भगीरथ-सुता—स्त्री० [सं० ष० त०] गंगा।

भगेड़—वि० =भगेलू।

भगेलू—वि० [हिं० भागना + एलू (प्रत्य०)] १ जो कहीं से छिपकर भागा हो। भागा हुआ। २ जो काम पड़ने पर भाग जाता हो। कायर।

भगोड़ा—पु० [हिं० भागना + ओड़ा (प्रत्य०)] १ वह जो कहीं से छिप या डरकर भाग गया हो। २ वह जो दण्ड भोगने के भय से कहीं भाग गया हो। (ऐब्सकाडर) ३ कायर या डरपोक व्यक्ति।

भगोल—पु० [सं० ष० त०] नक्षत्र-चक्र। खगोल।

भगौती—स्त्री० =भगवती।

भगौहाँ—वि० [हिं० भागना + औहाँ (प्रत्य०)] १ जिसमें भागने की प्रवृत्ति हो। २. कायर। डरपोक।
†वि० भगवा।

भग्गा—वि० [हिं० भागना] (पशु या पक्षी) जो प्रतिद्वंद्वी से डरकर या पराजित होकर भाग गया हो।

भग्गी—स्त्री० भगदड़।

भग्गुल—पु० =भगोड़ा।

भग्गू—वि० [हिं० भागना + ऊ (प्रत्य०)] १ जो विपत्ति देखकर भागता हो। भागनेवाला। २ कायर। डरपोक।

भग्न—वि० [सं० √भज् (टूटना) + क्त] १ टूटा हुआ। खंडित। २ हारा हुआ। पराजित।
पु० दे० 'विभंग'।

भग्न-दूत—पु० [सं० कर्म० स०] प्राचीन भारत में, रणक्षेत्र से हारकर भागी हुई वह सेना जो राजा के पराजय को समाचार देने आती थी।

भग्न-पाद—पु० [सं० ब० स०] फलित ज्योतिष में पुनर्वसु, उत्तराषाढ़, कृतिका, उत्तरा फाल्गुनी, पूर्वभाद्रपद और विशाखा ये छ नक्षत्र जिनमें से किसी एक में मनुष्य के मरने से त्रिपाद दोष लगता है और धर्मशास्त्र के अनुसार जिसकी शान्ति कराना आवश्यक होता है।

भग्न-मना (नस्)—वि० [सं० ब० स०] जिसका मन टूट गया हो। हतोत्साह।

भग्न-मान—वि० [सं० ब० स०] जिसका मान नष्ट हो चुका हो। तिरस्कृत।

भग्नांश—पु० [सं० भग्न-अंश, कर्म० स०] मूल द्रव्य का कोई अलग किया हुआ भाग का अंश।

भग्नात्मा (त्मन्)—पु० [सं० भग्न-आत्मन्, ब० स०] चन्द्रमा।

भग्नावशेष—पु० [सं० भग्न-अवशेष, ष० त०] १ किसी टूटी-फूटी चीज के बचे हुए टुकड़े। २ किसी टूटे-फूटे मकान या उजड़ी हुई बस्ती का बचा हुआ अंश। खँडहर।

भचक—स्त्री० [हिं० भचकना] भचकने की अवस्था, क्रिया या भाव।

भचकना—अ० [हिं० भौंचक] आश्चर्य में निमग्न होकर रह जाना।
अ० [अनु० भच] चलने के समय पैर का कुछ रुककर उठना या टेढ़ा पड़ना कि देखने में लंगड़ाता हुआ सा जान पड़े।

भ-चक्र—पु० [सं० ष० त०] १ राशियों या ग्रहों के चलने का मार्ग। कक्षा। २ नक्षत्रों का वर्ग या समूह।

भच्छ†—पु० =भक्ष्य।

भच्छक†—वि० भक्षक।

भच्छन*—पु० =भक्षण।

भच्छना—स० [सं० भक्षण] भक्षण करना। खाना।

भजन—पु० [सं० √भज् (सेवा करना) + ल्युट्-अन] १ खण्ड, टुकड़े या भाग करना। २ श्रद्धापूर्वक ईश्वर और उसकी लीलाओं का गुण-गान और स्मरण करना। ३ वह गेय पद जिसमें ईश्वर और उसकी लीलाओं का गुण-कथन हो।

भजना—स० [सं० भजन] १ किसी की सेवा-शुश्रूषा करना। २ किसी का आश्रय लेना या आश्रित होना। ३ कहीं जाकर पहुँचना। ४ ईश्वर और उसकी लीलाओं का श्रद्धापूर्वक कथन और स्मरण करना। ५ बार बार किसी का नाम लेते हुए जप करना। जैसे—राम भजो, सुख पाओगे। ६ भोगना। ७ धारण या वहन करना। उदा०—भजत भार भयभीत है घुन चन्दन बन माल।—बिहारी।
अ० [सं० व्रजन, पा० वजन] १ भागना। उदा०—नर कौ भज्यौ नाम सुनि मेरो, पीठ दई जमराज।—सूर। २ प्राप्त होना। पहुँचना।

भजनानंद—पु० [सं० भजन-आनंद, मध्य० स०] वह आनन्द जो परमेश्वर या देवता के नाम का भजन करने पर मिलता हो।

भजनानंदी (दिन्)—पु० [सं० भजनानंद + दीर्घ] १ वह जिसे ईश्वर भजन में ही आनंद मिलता हो। २. वह जिसकी जीविका भजन आदि करने से चलती हो।

भजनी—पुं० [हिं० भजन] १. वह जो प्रायः ईश्वर-भजन करता हो। २. दे० 'भजनीक'।

भजनीक—पुं० [हिं० भजनी] १. भजन गाने और उनके द्वारा लोगों का मनोरंजन करनेवाला। २. जिसका पेशा भजन गाकर लोगों को उपदेश देना तथा मनोविनोद करना हो।

भजनीय—वि० [सं०√भज्+अनीयर] १. जिसे भजना उचित हो अथवा जिसे भजना चाहिए। २. जिसका आश्रय लिया जा सकता हो या लिया जाना उचित हो।

भजनोपदेशक—पुं० [सं० भजन-उपदेशक, सुप्सुपा स०] भजन के द्वारा या माध्यम से उपदेश देनेवाला व्यक्ति।

भजाना—स० [हिं० भजना का प्रे० रूप] भजने या भजन करने मे प्रवृत्त करना।

अ० =भजना (भागना)।

स० १. भगाना। २. परे करना या हटाना। उदा०—कीर पिंजरै गहत अंगुरी ललन लेत भजाई।—सूर।

भजार†—वि० [हिं० भजना ?] मित्र। दोस्त।

भजियाउर—पुं० [हिं० भाजी+चावर (चावल)] १. चावल, दही, घी आदि एक साथ पकाकर बनाया हुआ नमकीन खाद्य-पदार्थ। २. दही, साग-भाजी आदि मिलाकर पकाये जानेवाले चावल।

भट—पुं० [सं० √भट् (बोलना)+अच्] १ युद्ध करने या लड़नेवाला योद्धा। २. पहलवान। मल्ल। ३. सिपाही। सैनिक। ४. प्राचीन काल की एक वर्णसंकर जाति। ५ दास।

†पुं० १ भटनास। २. =भट्ट।

भटई—स्त्री० [हिं० भाट] १. भाट होने की अवस्था या भाव। २ भाट का काम या पेशा। भाटों की-सी खुशामद या चापलूसी अथवा झूठी तारीफ।

भटक—स्त्री० [हिं० भटकना] भटकने की क्रिया, दशा या भाव।

भट-कटैया—स्त्री० [सं० कंटकारी, हिं० कटेरी या कटाई] एक प्रकार का कँटीला छोटा क्षुप जो बहुधा औषध के काम मे आता है।

भटकन—स्त्री० [हिं० भटकना] भटकने की क्रिया या भाव। भटक।

भटकना—अ० [सं० भ्रम] १. व्यर्थ इधर-उधर घूमते-फिरते रहना। २. ठीक रास्ता भूल जाने पर इधर-उधर घूम-फिरकर उसे ढूँढ़ते फिरना। ३. धोखे या भ्रम मे पड़कर निश्चित तत्त्व तक न पहुँचना। ४. मन या विचार का शान्त न रहकर इधर-उधर जाते फिरना।

भटका—पुं० [हिं० भटकना] १. व्यर्थ घूमने की क्रिया। २. चक्कर।

भटकाई†—स्त्री० =भट-कटैया।

भटकान—स्त्री० =भटकन।

भटकाना—स० [हिं० भटकना का स० रूप] किसी को भटकने मे प्रवृत्त करना। ऐसा काम या बात करना जिससे कोई भटके।

भटकैया—पुं० [हिं० भटकना+ऐया (प्रत्य०)] १. भटकनेवाला। २. भटकानेवाला।

†स्त्री० =भट-कटैया।

भटकौहाँ—वि० [हिं० भटकना+औहाँ (प्रत्य०)] १. भटकता रहनेवाला। २. भटकानेवाला। भुलावे में डालनेवाला।

भट-तीतर—पुं० [हिं० भट=बड़ा+तीतर] प्रायः एक फुट लंबा एक प्रकार का पक्षी जो जाड़े में उत्तर-पश्चिमी भारत में आता है। प्रायः इसके मांस के लिए इसका शिकार किया जाता है।

भटना†—अ० [?] गड्ढे आदि का पाटा या भरा जाना। पटना। उदा०—बहु कुंडशोनित सो भटे, पितु तर्पणादि क्रिया सची।—केशव।

भटनास—स्त्री० [देश०] १. एक लता और उसकी फलियाँ। २. उक्त फलियों के बीज जो दाल की तरह राँध कर खाये जाते हैं। भटवाँस।

भटनेर—पुं० [सं० भट-नगर] सिंधु नद पर स्थित एक प्राचीन राज्य।

भटनेरा—पुं० [सं० भट+नगरा] १. भटनेर नगर का निवासी। २. वैश्यों की एक जाति।

वि० भटनेर नगर का या उससे संबंध रखनेवाला।

भटभटी—स्त्री० [अनु०] ऐसी अवस्था जिसमें आँखों मे चकाचौंध होने के कारण कुछ दिखाई न पड़े। उदा०—बात अटपटी बढ़ी, चाह चटपटी रहे, भटभटी लागै औ पै बीच बहनी बसै।—घनानद।

भटभेरा*—पुं० [हिं० भट+भिड़ना] १. दो वीरों का सामना। मुकाबला। भिड़ंत। २. टक्कर, ठोकर या धक्का। ३. अनायास हो जानेवाली भेंट या सामना। उदा०—गली अँधेरी साँकरी भौ भटभेरा आनि।—बिहारी

भटवाँस†—पुं० =भटनास।

भटा†—पुं० =भंटा (बैंगन)।

भटियार—पुं० [?] संगीत मे एक प्रकार का राग।

भटियारा—पुं० =भठियारा।

भटियारी—स्त्री० [?] संपूर्ण जाति की एक संकर रागिनी जिसमे ऋषभ कोमल लगता है।

भटियाल†—पुं० =भठियाल।

भटुआ—पुं० [?] वह सूखी हल्की भूमि जिसमे केवल जाड़े की फसल होती है।

भटू—स्त्री० [सं० भट का स्थानिक स्त्री०] १. स्त्रियों के संबोधन के लिए एक आदर-सूचक शब्द। २. सखी। सहेली।

भटेरा—पुं० [देश०] वैश्यों की एक जाति।

भटेस—पुं० [?] एक प्रकार का पौधा।

भटै—स्त्री० =भटई।

भटोट—पुं० [देश०] मध्य-युग मे यात्रियो के गले में फाँसी लगानेवाला ठग। (ठगों की परिभाषा)

भटैया—स्त्री० =भटकटैया।

भटोला—वि० [हिं० भाट+ओला (प्रत्य०)] १. भाट का। भाट-संबंधी। २. भाटों के लिए उपयुक्त।

पुं० वह भूमि जो भाटों को निर्वाह के लिए पुरस्कार रूप मे मिली हो।

भट्ट—पुं० [सं०√भट्+तन्] १ ब्राह्मणों की एक उपाधि जिसके धारण करनेवाले दक्षिण भारत, मालव आदि कई प्रांतो में पाये जाते हैं। २. विशिष्ट रूप से महाराष्ट्र ब्राह्मणों की उपाधि। ३. दे० 'भट'। ४. दे० 'भाट'।

भट्टाचार्य—पुं० [सं० भट्ट-आचार्य, द्व०स०,+अच्] १. दर्शनशास्त्र का पंडित २. सम्मानित अध्यापक (पदवी रूप में प्रयुक्त)। ३. बंगाली ब्राह्मणों की एक जाति या वर्ग।

भट्टार—पु०[स० भट्ट√ऋ+अण्, वृद्धि] पूज्य। माननीय। (पदवी रूप मे प्रयुक्त)

भट्टारक—वि० [स० भट्टार+कन्] [स्त्री० भट्टारिका] पूज्य। माननीय। पु० १ राजा। २ मुनि। ३ पडित। ४ सूर्य। ५. देवता।

भट्टिनी—स्त्री०[स० भट्ट+इनि, ङीप्] नाटक की भाषा मे राजा की वह पत्नी जिसका अभिषेक न हुआ हो।
स्त्री० हिं० भट्ट का स्त्री०।

भट्टी—स्त्री० भट्ठी।

भट्ठा—पु०[स० भ्रष्ट, प्रा० भट्ठ] [स्त्री० अल्पा० भट्ठी] वह स्थान जहाँ कूडा, कोयला आदि जलाकर ईंटे पकाई जाती हैं। आँवाँ।

भट्ठी—स्त्री०[स० भ्रष्ट, प्रा० भट्ठ] १ वह घिरा हुआ आधान या स्थान जिसमे धातु आदि गलाने अथवा कुछ विशिष्ट प्रकार की चीजे सेकने के लिए आग जलाई जाती अथवा ताप उत्पन्न किया जाता है।
मुहा०—भट्ठी दहकना=(क) किसी का कारोबार जोरो पर होना। बहुत आय होना। (व्यग्य) (ख) किसी काम या बात की बहुत अधिकता या जोर होना।
२ वह स्थान जहाँ देशी शराब बनती हो।

भठा†—पु०=भट्ठा।

भठियाना—अ०[हिं० भाठा+इयाना (प्रत्य०)] समुद्र मे भाटा आना। समुद्र के पानी का नीचे उतरना।

भठियार—पु०=भटियार (राग)।

भठियारखाना—पु०[हिं० भठियारा+फा० खाना] १ भठियारो के रहने का स्थान। २. वह जगह जहाँ बहुत शोरगुल होता हो। ३. कमीने तथा असभ्य लोगो की बैठक।

भटियारपन—पु०[हिं० भठियारा+पन(प्रत्य०)] १ भठियारे का काम। २ भठियारो की तरह की लडाई या अश्लील आचरण, या व्यवहार।

भठियारा—पु०[हिं० भट्ठा+इयार (प्रत्य०)] [स्त्री० भठियारन, भठियारिन भठियारी,] सराय का मालिक या प्रबधक जो यात्रियो के टिकने तथा खाने-पीने आदि की व्यवस्था करता था।

भठियारी†—स्त्री० १ भठियारा का स्त्री०। २ भठियारपन।

भठियाल—पु०[हिं० भाटा] समुद्र के पानी का नीचे उतरना। भाटा।

भठिहारा†—पु०[स्त्री० भठिहारिन] भठियारा।

भठुली-स्त्री०[हिं० भट्ठी+उली (प्रत्य०)] ठठेरो की मिट्टी की बनी हुई वह छोटी भट्ठी जिसमे गढ़ने से पहले चीजे तपाते या लाल करते हैं।

भडग—पु०[अनु०][भाव०भडगी] १ दिखावे की झूठी बात। आडबर। उदा०—धरि राखौ ज्ञान गुन गौरव गुमान गोइ गोपिनि कौ आवतन भावत भडग है।—रत्नाकर। २ भाँडपन।

भडगी—स्त्री०=भडक।
वि० दिखावा करनेवाला। आडंबर रचनेवाला।

भडबा—पु०[स० विडबा] १ दिखावटी ठाठ-बाट। आडबर। २ व्यर्थ का बहुत बडा जंजाल या बखेडा।

भड़—पु०[अनु०] 'भड़' शब्द' जो प्राय किसी चीज के गिरने से होता है।
†पु०=भट (योद्धा)।

भडक—स्त्री०[अनु०] भडकने की अवस्था या भाव।
स्त्री०[?] तीव्र चमक-दमक।

भड़कदार—वि०[हिं० भडक+फा० दार] भडकीला।

भड़कना—अ० [अनु० भडक+ना (प्रत्य०)] १ कोयले, गोहरे आदि का आग से स्पर्श होने पर सहसा जोरो से जल उठना। २. किसी प्रकार के मनोभाव का सहसा तीव्र या प्रबल होना। जैसे—क्रोध भडकना। ३. पशुओ का भयभीत होकर या सहमकर अपनी सामान्य गति या स्थान छोडकर उछलने-कूदने या इधर-उधर भागने लगना। ४ व्यक्ति का प्राय दूसरो की बातो मे आकर आवेश या क्रोध से युक्त होना और कुछ का कुछ करने लगना। ५ किसी के पास या समीप जाने मे हिचकना और सशकित रहकर उससे दूर या परे रहना। जैसे—मुझे देखकर वह भडकता है।

भडकाना—स०[हिं० भडकना का स० रूप] १ अग्नि प्रज्वलित करना। ज्वाला बढाना। २. उत्तेजित या क्रुद्ध करना। ३ तीव्र या प्रबल करना। ४ ऐसा काम करना जिससे कोई या कुछ भडके। ५ किसी को इस प्रकार भ्रम मे डालना या भयभीत करना कि वह कोई काम करने के लिए तैयार न हो। जैसे—किसी का ग्राहक भडकाना।
सयो० क्रि०—देना।

भडकीला—वि०[हिं० भडक+ईला (प्रत्य०)] [भाव० भडकीलापन] जिसमे खूब चमक-दमक हो। भडकदार।
वि०[हिं० भडकना] जल्दी भडकनेवाला।

भडकीलापन—पु०[हिं० भडकीला+पन (प्रत्य०)] १ भडकीले होने की अवस्था या भाव। २ चमक-दमक।

भडकैल—वि० [हिं० भडकना] जल्दी चौकने, बिदकने या भडकनेवाला।

भडभड़—स्त्री०[अनु०] १ भडभड शब्द जो प्राय एक चीज पर दूसरी चीज जोर जोर से पटकने अथवा बडे बडे ढोल आदि बजाने मे उत्पन्न होता है। आघातो का शब्द। २ व्यर्थ की बाते और हो-हल्ला। ३ दे० 'भीड-भाड'।

भडभडाना—स०[अनु०] भड-भड शब्द उत्पन्न करना।
अ० किसी चीज मे से भड-भड शब्द उत्पन्न होना।

भडभड़िया—वि०[हिं० भड भड+इया (प्रत्य०)] १ भड भड अर्थात् व्यर्थ बहुत अधिक बाते करनेवाला। २ मन मे छिपाकर बात न रख सकनेवाला। भेद की बाते दूसरो पर प्रकट कर देनेवाला। ३ जो डीग तो बहुत हाकता हो, पर काम कुछ भी न करता हो।

भड़भांड़—पु०[स० भाडार] एक कँटीला पौधा जिसके बीजो का तैल जहरीला होता है। सत्यानासी। भोय।

भडभूंजा—पु०[हिं० भाड+भूंजना] हिन्दुओं मे एक जाति जो भाड़ मे अन्न भूनने का काम करती है। भुजवा। भुरजी।

भडरी—स्त्री०[देश०] १ अनाज की मँड़ाई हो जाने पर भी पौधो मे बचा हुआ अन्न। गँठा।

भड़वा—पु० भडुआ।

भड़वाई—स्त्री० भँडुआई।

भड़साई—स्त्री०[हिं० भाँड] भडभूजे का भाड या भट्ठी जिसमें वह अनाज के दाने भूनता है।

मुहा०—भड़साई बहकना या बिकना=किसी काम या बात की बहुत उन्नति या प्रबलता होना। (व्यंग्य)

भड़सार—स्त्री०[हिं० माँड़+शाला] वह भँडरिया जिसमे पकाया हुआ भोजन रखा जाता है।

भड़हर—स्त्री०=भँडेहर।

भड़ार—पुं०=भंडार।

भड़ाल—पु०[स० भट] योद्धा। वीर।

भड़ास—स्त्री०[हिं० भड से अनु०] १. वह गरमी जो तपी हुई जमीन पर पानी गिरने या छिड़कने से उत्पन्न होती है। २ आवेश मे आकर तथा कड़े शब्दो में किसी पर प्रकट किया जानेवाला मानसिक असतोष। क्रि० प्र०—निकालना।

भड़िक—अव्य० [अनु०] १. अचानक। सहसा। २. चट-पट। तुरन्त। ३. बिना सोचे-समझे और एकदम से।

भड़िहा—पु० [स० भाडहर] [भाव० भड़िहाई] चोर। तस्कर। (बुन्देल०)

भड़िहाई—क्रि० वि० [हिं० भड़िहा] चोरो की तरह। लुक-छिप या दबकर।
स्त्री० =चोरी।

भड़ी—स्त्री० [हिं० भड़काना] भड़काने की क्रिया या भाव। विशेषत किसी को मूर्ख बनाने अथवा किसी का अहित चाहने के उद्देश्य से उसे कोई गलत काम करने के लिए दिया जानेवाला बढ़ावा।
क्रि० प्र०—देना।—में आना।

भड़ुआ—पु० [हिं० भाँड़] १. वेश्याओं के साथ तबला या सारंगी बजानेवाला। सपरदाई। २. वेश्याओ का दलाल।

भड़ुआई—स्त्री०=भड़ुआपन।

भड़ुआपन—पु० [हिं० भड़ुआ+पन (प्रत्य०)] भड़ुआ होने की अवस्था, काम या भाव।

भड़ेरिया—पु० =भड्डर।

भड़ैत—पु० [हिं० भाडा] [भाव० भड़ैती] १. वह जिसने किसी की दूकान या मकान भाड़े या किराये पर लिया हो। किरायेदार। २. भाड़े पर दूसरों का काम करनेवाला व्यक्ति।

भड़ोलना—स० [देश०] रहस्य प्रकट कर देना। गुप्त बात खोल देना। भेद बताना। जैसे—तेरी सब बाते भड़ोलकर रख दूँगी। (स्त्रियाँ)

भड्डर—पु० [स० भद्र] ब्राह्मणों मे निम्न श्रेणी की एक जाति। इस जाति के लोग फलित ज्योतिष या सामुद्रिक आदि की सहायता से लोगो का भविष्य बताकर अपनी जीविका चलाते हैं।

भण—पुं० [?] ताड़ का वृक्ष। (डिं०)

भणन—पु० [स०√भण् (बोलना)+ल्युट्—अन] १. कथन। २. वार्तालाप।

भणना*—अ० [सं० भणन] कहना।

भणित—भू० कृ० [सं०√भण् (करना)+क्त] जो कहा गया हो। कहा हुआ।
स्त्री० कही हुई बात। उक्ति।

भणिता (तृ)—पुं० [स०√भण् (कहना)+तृच्] बोलनेवाला। वक्ता।

भणिता—स्त्री० [सं० भणित] कविता में होनेवाला कवि का उपनाम। छाप।

भणिति—स्त्री० [स०√भण् (कहना)+(क्तिन्)] १. किसी की कही हुई बात। २. उक्ति। कथन। ३ कहावत। लोकोक्ति। ४. वाणी।
उदा०—ललित भणिति का किया प्रीतिवश चपल अनुकरण।—पन्त।

भतरौंड़—पु० [हिं० भात+रौंड़ ?] १. मथुरा और वृन्दावन के बीच का एक स्थान जिसके विषय मे यह प्रसिद्ध है कि यहाँ श्रीकृष्ण ने चौबाइनों से भात मँगाकर खाया था। २. आस-पास की भूमि से कुछ ऊँची भूमि या स्थान। ३ मंदिर का शिखर। ४. ऊँची जगह। टीला।

भतवान—पु० [हिं० भात+वान] पूरब में, वर और उसके साथ कुछ और कुँआरे लड़कों को विवाह से पहले कन्यापक्ष द्वारा कच्ची रसोई खिलाने की एक रस्म।

भतहा†— पु० [हिं० भात] १. वह जो भात खाता हो, अथवा भात खाना अधिक पसन्द करता हो। २. वह व्यक्ति जिसके हाथ की कच्ची रसोई खाई जा सके। ३ वह जो रूखे-सूखे भोजन पर ही सन्तुष्ट रहकर नौकरी करता हो।

भतार—पु० [सं० भर्तार] विवाहिता स्त्री का पति। खाविंद। खसम।

भति†—स्त्री०=भाँति।

भतीजा—पु० [स० भ्रातृज] [स्त्री० भतीजी] भाई का पुत्र। भाई का लड़का।

भतुआ—पु० [देश०] सफेद कुम्हड़ा। पेठा।

भतुला—पुं० [देश०] आग पर पकाया या भूना हुआ आटे का पेड़ा। बाटी

भत्ता—पु० [स० भरण] वह धन जो किसी कर्मचारी को उसके वेतन के अतिरिक्त कुछ विशिष्ट अवसरों (जैसे—महँगी, यात्रा आदि) पर अतिरिक्त व्यय के विचार से दिया जाता है। (एलावेन्स)

भदंत—वि० [सं०√मन्द् (कल्याण)+झच्—अन्त, न—लोप] १. पूजित। सम्मानित। २. सन्यस्त।
पु० बौद्ध भिक्षु।

भद—स्त्री० [अनु०] किसी चीज के गिरने का शब्द। जैसे—भद से गिर पड़ना।

भदई—वि० [हिं० भादों] १. भादो सबंधी। भादो का। २ भादो मे होनेवाला।
स्त्री० भादों मे तैयार होनेवाली फसल।

भदभद—वि० [अनु०] १. बहुत मोटा। २. भद्दा।

भदरंगा—वि० [हिं० बदरग] जिसका रग फीका पड़ गया हो। उदा०—न तो कभी उसका रक्त घुलेगा, न कभी वह भदरगा होगा।—वृन्दावनलाल वर्मा।

भदवरिया—वि० [हिं० भदावर+इया (प्रत्य०)] भदावर प्रात का।

भदाक—पु० [सं० √भन्द्+आकन्, न—लोप] १. सौभाग्य। २. अभ्युदय।

भदावर—पु० [सं० भद्रवर] आधुनिक ग्वालियर प्रदेश का पुराना नाम।

भदेस—पुं० [हिं० भद्दा+देश ?] ऐसा देश जो आहार-विहार, जलवायु आदि के विचार से बहुत खराब हो। खराब या बुरा देश।

वि० कुरूप। भद्दा।

भदैसल (सिल)—वि० [हिं० भदेस] १ भदेस-संबंधी। २ भदेस में रहने या होनेवाला।

भदैसिया—वि० [हिं० भदेस] १ भदेस में रहने या होनेवाला। २ गँवार। ३. भद्दा। भोंड़ा।

भदैल—पु० [हिं० भादों ?] मेढक।

भदैला—वि० [हिं० भादों] भादों मास में उत्पन्न होनेवाला। भादों का।

भदौंह (हा)—वि० [हिं०भादों] [स्त्री० भदौंही] भादों में होनेवाला। जैसे—भदौंहा अमरूद।

भदौरिया—वि० [हिं० भदावर] भदावर प्रांत का।

पु० १ भदावर प्रांत का निवासी। २ क्षत्रियों की एक जाति।

भद्द—स्त्री० [हिं० भद्दा] १. वह स्थिति जिसमें किसी को अपमानित और लज्जित होना पड़े। अपमान। २ किसी को तुच्छ ठहरानेवाला काम या बात।

भद्दव—पु० -भादों (महीना)।

भद्दा—वि० [अनु० भद्] [स्त्री० भद्दी] १ (पदार्थ) जिसकी बनावट में अंग-प्रत्यंग की सापेक्षिक छोटाई-बड़ाई का ध्यान न रखा गया हो, और इसी लिए जो देखने में कुरूप या बेढंगा हो। २ (बात) जो शिष्टों और सभ्यों के लिए उपयुक्त न हो। अश्लील। फूहड़। जैसे—भद्दी गालियाँ। ३ जिसमें कला, सुरुचि आदि का अभाव हो। (आकवर्ड)

भद्दापन—पु० [हिं० भद्दा+पन (प्रत्य०)] भद्दे होने का भाव।

भद्रंकर—वि० [सं० भद्र√कृ (करना)+खच्, मुम्] मंगलकारक। शुभ।

भद्रंकरण—पु० [सं० भद्र√कृ+ल्युन्—अन, मुम्] मंगल-साधन।

भद्र—वि० [सं०√भन्द्+रन्, न–लोप] १ शिष्ट, सभ्य और सुशिक्षित। २ कल्याण या मंगल करनेवाला। शुभ। ३ उत्तम। श्रेष्ठ। ४ भला। साधु।

पु० १ क्षेम-कुशल। २ कल्याण। मंगल। ३ चन्दन। ४ शिव। ५ खंजन पक्षी। ६ बैल। ७ सुमेरु पर्वत। ८ कदंब। ९ सोना। स्वर्ण। १० मोथा। ११. एक प्राचीन देश। १२ विष्णु का एक द्वारपाल। १३ उत्तर दिशा के दिग्गज का नाम। १४ रामचन्द्र की सभा का वह सभासद जिसके मुँह से सीता की निंदा सुनकर उन्होंने सीता को बनवास दिया था। १५ बलदेव का एक सहोदर भाई। १६ पुराणानुसार स्वायंभुव मन्वंतर के विष्णु से उत्पन्न एक प्रकार के देवता जो तुषित भी कहलाते है। १७ हाथियों की एक जाति जो पहले विन्ध्याचल में होती थी। १८ संगीत में स्वर-साधन की एक प्रणाली जो इस प्रकार है—सारेसा, रेगरे, गमग, मपम, पधप, धनिध, निसानि, सारेसा। सा नि सा, नि ध नि, ध प ध, प म प, म ग म, ग रे ग, रे सा रे, सा नि सा।

पु० [सं० भद्रकरण] सिर, दाढ़ी, मूँछों आदि के बालों का मुंडन। उदा०—सो जोगी सिर भद्र कराइ।—गोरखनाथ।

भद्रकंट—पु० [सं० ब० स०] गोक्षुर। गोखरू।

भद्रक—पु० [सं० भद्र+कन्] १. एक प्राचीन देश का नाम। २ चना, मूँग आदि अनाज। ३. नागरमोथा। ४. देवदार। ५. एक प्रकार का वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में ऽ।। ऽ।ऽ ।।। ऽ।ऽ ।।। ऽ।ऽ ।।। ऽ (भ र न र न र न ग) और ८, ६, ६, ६, पर यति होती है। ६ कोई अच्छी बात। उत्तम गुण। उदा०—क्या कहूँ मिर्च है न अद्रक है, इस मछन्दर में कुछ भी भद्रक है।—मीर। ७ दृढ़ता। मजबूती। जैसे—तुम्हारी बात में कुछ भी भद्रक नहीं है। उदा०—मुतलक तेरी बात में नहीं है भद्रक।—रंगीन।

भद्रकाय—पु० [सं० ब० स०] हरिवंश के अनुसार श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।

भद्रकार—वि० [सं० भद्र√कृ (करना)+अण्, उप० स०] मंगल या कल्याण करनेवाला।

पु० महाभारत के अनुसार एक प्राचीन देश।

भद्रकारक—वि० [सं० ष० त०] मंगलकारक।

पु० एक प्राचीन देश। (महाभारत)

भद्रकाली—स्त्री० [सं० कर्म० स०] १. दुर्गा देवी की एक १६ भुजाओं-वाली मूर्ति। २ कात्यायिनी ३ कार्तिकेय की एक मातृका। ४ गंध-प्रसारिणी लता। ५ नागरमोथा।

भद्रकाशी—स्त्री० [सं० भद्र√काश् (प्रकाशित होना)+अच्,+ङीष्] भद्र-मुस्ता। नागरमोथा।

भद्र-काष्ठ—पु० [सं० ब० स०] देवदारु वृक्ष।

भद्र-कुंभ—पु० [सं० कर्म० स०] मंगल-घट।

भद्र-गणित—पु० [सं० कर्म० स०] बीज गणित की वह शाखा जिसमें चक्रविन्यास की सहायता से गणना की जाती है।

भद्र-घट—पु० [सं० कर्म० स०] मंगल-घट।

भद्रचारु—पु० [सं०] रुक्मिणी के गर्भ से उत्पन्न श्रीकृष्ण का एक पुत्र।

भद्रज—पु० [सं० भद्र√जन् (उत्पन्न करना)+ड] इन्द्रजौ।

भद्र-तरुणी—स्त्री० [सं० कर्म० स०] एक प्रकार का गुलाब।

भद्रता—स्त्री० [सं० भद्र+तल्,+टाप्] भद्र होने का भाव। शिष्टता। सभ्यता। शराफत। भलमनसी।

भद्र-दंत—पु० [सं० ब० स०] हाथी।

भद्र-दारु—पु० [सं० कर्म० स०] देवदारु।

भद्रदेह—पु० [सं०] पुराणानुसार श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।

भद्र-द्वीप—पु० [सं० कर्म० स०] पुराणानुसार कुरु वर्ष के अन्तर्गत एक द्वीप का नाम।

भद्र-निधि—पु० [सं० ब० स०] पुराणानुसार एक प्रकार का महादान।

भद्र-पदा—स्त्री० [सं० ब० स०,+टाप्] भाद्रपद।

भद्र-पर्णा—स्त्री० [सं० ब० स०,+टाप्] गंधप्रसारिणी लता।

भद्र-पीठ—पु० [सं० कर्म० स०] १ अच्छा और बढ़िया आसन। २. वह सिंहासन जिस पर राजाओं या देवताओं का अभिषेक होता है।

भद्र-बला—स्त्री० [सं० कर्म० स०] १ गन्ध प्रसारिणी लता। २. माधवी लता।

भद्र-बाहु—पु० [सं० ब० स०] रोहिणी के गर्भ से उत्पन्न वसुदेव के एक पुत्र।

भद्र-मद—पु० [सं० कर्म० स०] हाथियों की एक जाति।

भद्रमंद्र—पु०- भद्रमद।

भद्रमनसी—स्त्री० [सं० ब० स०,+ङीष्] ऐरावत की माता का नाम।

भद्र-मुख—वि० [सं० ब० स०] १. जो देखने मे भला आदमी जान पड़े। भला-मानस। २. सुन्दर।

पु० पुराणानुसार एक नाग का नाम।

भद्रमुखी—स्त्री० [सं० ब० स०,+ङीष्]=चंद्रमुखी। (सुन्दरी स्त्रियों के लिए संबोधन)।

भद्रमुस्तक—पु० [सं० कर्म० स०] नागरमोथा।

भद्रमुस्ता—पुं० [सं० कर्म० स०] नागरमोथा।

भद्र-यव—पु० [सं० कर्म० स०] इन्द्रजौ।

भद्र-रेणु—पुं० [सं० ब० स०] ऐरावत।

भद्रवती—स्त्री० [सं० भद्र+मतुप्, वत्व,+ङीप्] १ कटहल। २ नग्नजिति के गर्भ से उत्पन्न श्रीकृष्ण की एक कन्या का नाम।

भद्र-वल्लिका—स्त्री० [सं० कर्म० स०] अनतमूल।

भद्रवल्ली—स्त्री० [सं० कर्म० स०] माधवी लता।

भद्रवान (वत्)—वि० [सं० भद्र+मतुप्, वत्व] मगलमय।

पु० देवदारु वृक्ष।

भद्र-विराट्—पु० [सं० कर्म० स०] एक वर्णार्द्धसम वृत्त जिसके पहले और तीसरे चरणो मे १० और दूसरे तथा चौथे चरण मे ११ अक्षर होते हैं।

भद्र-शाख—पु० [सं० ब० स०] कार्तिकेय।

भद्रश्रय—पु० [सं० भद्र√श्रि (शोभा)+अच्] चंदन।

भद्र-श्रवा (वस्)—पु० [सं० ब० स०] पुराणानुसार धर्म के एक पुत्र का नाम।

भद्र-श्री—पु० [सं० ब० स०] चंदन का वृक्ष।

भद्रसेन—पु० [सं० ब० स०] १ देवकी के गर्भ से उत्पन्न वसुदेव का एक पुत्र। २ भागवत के अनुसार कुंतिराज के पुत्र का नाम। ३ बौद्धो के अनुसार मारपापीय आदि कुमति के दलपति का नाम।

भद्रांग—पु० [सं० भद्र-अंग, ब० स०] बलराम।

भद्रा—स्त्री० [सं० भद्र+टाप्] १ कल्याणकारिणी शक्ति। २ कैकेय-राज की कन्या जो श्रीकृष्ण को ब्याही गई थी। ३ आकाश-गंगा। ४. गौ। ५ दुर्गा। ६. पृथ्वी। ७. सुभद्रा का एक नाम। ८. रास्ता। ९ गन्ध-प्रसारिणी लता। १०. जीवती। ११ शमी। १२ बच। बचा। १३. दती। १४. हलदी। १५ दूब। दूर्वा। १६ चसुर। १७. कटहल। १८ बरियारी। १९ छाया के गर्भ से उत्पन्न सूर्य की एक कन्या। २० गौतम बुद्ध की एक शक्ति। २१ कामरूप देश की एक नदी। २२ पिंगल मे उपजाति वृत्त का दसवाँ भेद। २३. पुराणानुसार भद्राश्ववर्ष की एक नदी जो गगा की शाखा कही गई है। २४. ज्योतिष में द्वितीया, सप्तमी, द्वादशी तिथियो की सज्ञा। २५ फलित ज्योतिष मे, एक अशुभ योग जो कृष्ण पक्ष की तृतीया और दशमी के शेषार्द्ध मे तथा अष्टमी और पूर्णिमा के पूर्वार्द्ध में रहता है। **विशेष**—कहते हैं कि जब यह योग कर्क, सिंह, कुंभ या मीन राशि में होता है, तब पृथ्वी पर; जब मेष, वृष मिथुन या वृश्चिक राशि में होता है, तब पाताल मे; और जब कन्या, धन, तुला या मकर राशि में होता है तब यह योग स्वर्ग मे होता है। इस योग के स्वर्ग में रहने पर कार्य सिद्धि, पाताल मे रहने पर धन प्राप्ति और पृथ्वी पर रहने पर बहुत अनिष्ट होता है। इसे विशिष्ट भद्रा भी कहते हैं।

२६. कोई बहुत अनिष्टकारक बात या बाधा।

क्रि० प्र०—लगना।—लगाना।

स्त्री० [सं० भद्राकरण; हिं० भद्र] कोई ऐसा काम या बात जिससे किसी की बहुत बड़ी आर्थिक हानि या अपमान आदि हो। जैसे—आज वहाँ उनकी अच्छी भद्रा हुई।

मुहा०—किसी के सिर की भद्रा उतरना=(क) किसी प्रकार की हानि विशेषत: आर्थिक हानि होना। (ख) बहुत अधिक अपमान या दुर्दशा होना।

भद्राकरण—पु० [सं० भद्र+डाच्√कृ (करना)+ल्युट्—अन] सिर मुँड़ाना। मुडन।

भद्राकृति—वि० [सं० भद्रा-आकृति, ब० स०] सुन्दर या भव्य आकृति-वाला।

भद्रात्मज—पु० [सं० भद्र-आत्मज, उपमि० स०] खड्ग।

भद्रानंद—पु० [सं० भद्र-आनद, कर्म० स० ?] संगीत में, एक प्रकार की स्वर-साधना प्रणाली जो इस प्रकार है—आरोही—सा रे ग म, रे ग म प, ग म प ध, म प ध नि, प ध नि सा। अवरोही—सा नि ध प, नि ध प म, ध प म ग, प म ग रे, म ग रे सा।

भद्राभद्र—वि० [सं० भद्र-अभद्र, द्व० स०] भद्र और अभद्र। भला-बुरा।

भद्रावती—स्त्री० [सं० भद्र+मतुप्, वत्व, दीर्घ, +ङीप्] १. कटहल का पेड़। २. एक प्राचीन नदी।

भद्राश्व—पु० [सं० भद्र-अश्व, ब० स०] जंबू द्वीप के नौ खंडों या वर्षों मे से एक खंड या वर्ष।

भद्रासन—पु० [सं० भद्र-आसन, कर्म० स०] १ मणियो से जड़ा हुआ राजसिंहासन जिस पर राज्याभिषेक होता है। भद्रपीठ। २ योग-साधन का एक प्रकार का आसन।

भद्रिका—स्त्री० [सं० भद्रा+कन्,+टाप्, ह्रस्व] १. एक प्रकार का वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में रगण, नगण और रगण होते हैं। २ भद्रा तिथियाँ। (दे० 'भद्रा') ३ फलित ज्योतिष के अनुसार योगिनी दशा के अन्तर्गत पाँचवी दशा।

भद्री (द्रिन्)—वि० [सं० भद्र+इनि, दीर्घ, न—लोप] भाग्यवान्।

भनक—स्त्री० [सं० भणन] १ धीमा शब्द। मन्द ध्वनि। २. यो ही उड़ती-सी खबर जिसकी प्रामाणिकता निश्चित न हो। जैसे—मेरे कान में यो ही इसकी भनक पड़ी थी।

भनकना*—स० [सं० भणन] १ भनभन शब्द करना। २ बोलना। कहना।

अ० भनभन शब्द होना।

भनना*—स० [सं० भणन] कहना।

भनपैरा—वि० [हिं० मन+पैर] [स्त्री० भनपैरी] जिसके कहीं पहुँचते ही अनेक प्रकार के दोष या हानियाँ होने लगती हों। खराब और बुरे पैर या पौरेवाला। जैसे—क्या मुझे भी आप उसी की तरह भनपैरा समझते हैं।

भनभनाना—स० [अनु०] भनभन शब्द करना। गुंजारना।

अ० भनभन शब्द होना।

भनभनाहट—स्त्री० [हिं० भनभनाना+आहट (प्रत्य०)] भनभनाने की क्रिया, भाव या शब्द। गुंजार।

भनित—भू० कृ०, स्त्री०=भणित।

भपाड़ा—पु० [हिं० भँपाना=दिखाना] छल। जैसे—उसके भपाडे मे मत आना।

क्रि० प्र०—मे आना।—मे पडना।

भबकना†—अ० =भभकना।

भबका†—पु०=भभका।

भबकी†—स्त्री०=भभकी।

भबूका—वि०, पु०=भभूका।

भब्भड़—पु० [हिं० भीड़+भाड़] १ भीड़-भाड़। २ झगड़े-बखेड़े का या व्यर्थ का काम।

भभक—स्त्री० [हिं० भक से अनु०] भभकने की अवस्था, क्रिया या भाव।

भभकना—अ० [हिं० भभक] १ किसी चीज का सहसा जोर से जल उठना। भडकना। २. ताप आदि के योग से किसी चीज का जोर से उबल या फूट पडना। ३ जोर से बाहर निकलना। जैसे—पनाले मे से दुर्गन्ध भभकना।

भभका—पु० [हिं० भभकना या भाप] हडे के आकार का बद मुँहवाला वह उपकरण जिसमे से अर्क चुआया जाता है।

भभकी—स्त्री० [हिं० भभक] ऐसी आवेशपूर्ण धमकी जो दुर्बल होने पर भी अपने आप को प्रबल सिद्ध करने के लिए दी जाय। जैसे—बदर भभकी।

भभरना—अ० [हिं० भय] १. भयभीत होना। २ घबरा जाना। ३ धोखे या भ्रम मे पडना। ४ कान्तिहीन या विवर्ण होना। रग-हीन होना। ५ हरहराकर गिर पडना।

भभीरी—स्त्री० [अनु०] १ फिरकी नाम का खिलौना। (पश्चिम) २ झींगुर।

भभू—स्त्री० [हिं० भाई+बहू] छोटे भाई की स्त्री। छोटी भौजाई। (बिहार)

भभूका—पु० [हिं० भभक] आग की लपट। ज्वाला।

वि० १ खूब तपा हुआ लाल। २ आवेश, क्रोध आदि के कारण जिसका वर्ण लाल हो गया हो। ३. उज्ज्वल। स्वच्छ। उदा०—वह हँसता सा मुखडा, भभूका सा रग।—कोई कवि। ४ चमकीला।

भभूत—स्त्री० [स० विभूति] १. शिवलिंग के समक्ष जलनेवाली आग की भस्म जिसे शैव भुजाओ, मस्तक आदि पर पोतते हैं।

क्रि० प्र०—मलना।—रमाना।—लगाना।

२ दे० 'विभूति'।

भभूदर—स्त्री०=भूभल।

भम्भड़—पु० =भब्भड़।

भमना—अ०=भ्रमना।

भमरा†—पु०=भ्रमर।

स्त्री०=भँवर।

भयंकर—वि० [सं० भय√कृ (करना)+खच्, मुम्] [भाव० भयं-करता] १ जिसे देखकर लोग भयभीत होते हो। भयभीत करने-वाला। २ आकार-प्रकार की दृष्टि से उग्र तथा डरावना। ३. बहुत अधिक तीव्र या प्रबल। अत्यधिक भीषण। जसे—भयंकर गरमी पड़ना।

भयंकरता—स्त्री० [सं० भयंकर+तल्+टाप्] भयंकर होने की अवस्था या भाव।

भय—पु० [स०√भी (भय)+अच्] १ वह मानसिक स्थिति जो किसी अनिष्ट या सकट सूचक सभावना से उत्पन्न होती है और जिससे प्राणी चिन्तित और विकल होने लगता है।

मुहा०—(किसी से) भय खाना=डरना।

२ बालकों का वह रोग जो उनके डर जाने के कारण होता है।

३. निऋति के एक पुत्र का नाम। ४ अभिमति नामक स्त्री के गर्भ से उत्पन्न द्रोण का एक पुत्र।

भय-कर—वि० [सं० ष० त०] [भाव० भयककारी] भय उत्पन्न करने या डरानेवाला। भयभीत करनेवाला।

भयचक—वि०=भौचक।

भयडिडम—पु० [सं० मध्य० स०] एक प्रकार का बाजा जो युद्ध के समय बजाया जाता था।

भयत—पु० [?] चंद्रमा। (डिंगल)

भयद—वि० [सं० भय√दा (देना)+क] [स्त्री० भयदा] भय उत्पन्न करनेवाला। भयप्रद।

भय-दर्शी (शिन्)—वि० [सं० भय√दृश् (देखना)+णिनि] भयकर। भयानक।

भय-दान—पु० [सं० ष० त०] १ किसी प्रकार के भय से दान करना। २ वह दान जो भयभीत होकर दिया गया हो।

भय-दोष—पु० [सं० मध्य० स०] ऐसा दोष जो अपनी इच्छा के विरुद्ध परन्तु जातीय प्रथा के अनुसार कोई काम करने पर माना जाता है। (जैन)

भय-नाशन—वि० [स० ष० त०] [स्त्री० भयनाशिनी] भय को दूर करनेवाला।

पु० विष्णु।

भय-प्रद—वि० [सं० भय+प्र√दा (देना)+क] भय उत्पन्न करनेवाला।

भय-भीत—भू० कृ० [स० ष० त०] भय से आतकित। डरा हुआ।

भय-भ्रष्ट—वि० [सं० तृ० त०] [भाव० भयभ्रष्टता] डर कर भागा हुआ।

भय-मोचन—वि० [स० ष० त०] भय दूर करने या हटानेवाला।

भय-वर्जिता—स्त्री० [स० तृ० त०] प्राचीन भारत में, व्यवहार मे दो गाँवों के बीच की वह सीमा जिसे वादी और प्रतिवादी आपस मे मिलकर स्थिर कर लें।

भयवाद—पु० [हिं० भाई+आद (प्रत्य०)] १. एक ही गोत्र या वश के लोग। भाई-बंद। २. आपसदारी के लोग। आत्मीय जन।

भय-व्यूह—पु० [सं० मध्य० स०] प्राचीन भारत में सकट की स्थिति मे सैनिकों की होनेवाली एक प्रकार की व्यूहरचना।

भय-हरण—वि० [सं० ष० त०] भय दूर करनेवाला।

भय-हारी (रिन्)—वि० [सं० भय√हृ(हरण)+णिनि] भय दूर करनेवाला।

भय-हेतु—पुं० [सं० ष० त०] भय का विषय। वह जिसके कारण भय उत्पन्न होता हो।

भया—स्त्री० [सं० भय+अच्+टाप्] १. एक राक्षसी जो काल की बहन तथा विद्युत्केश की माता थी। २. प्राचीन भारत मे ६२ हाथ लंबी, ५६ हाथ चौड़ी तथा ३३ हाथ लंबी एक प्रकार की नाव।
पुं० [हिं० भइया] भाई के लिए संबोधन। भइया। जैसे—सँभार हे भइया तू बार आपन।

भयाकुल—वि० [म० भय-आकुल, तृ० त०] जो भय से व्याकुल या विकल हो रहा हो। भय से घबराया हुआ।

भयादोहन—पु० [सं० भय+आदोहन] किसी को भय दिखलाकर या डरा-धमका कर उससे कुछ प्राप्त करने या लाभ उठाने की क्रिया या भाव। (ब्लैकमेल)

भयान†—वि०=भयानक।

भयानक—वि० [स०√भी (डरना)+आनक] जिसकी असाधारण शारीरिक विकृति या उग्रतापूर्ण आचरण से भय लगता हो।
पु० १ बाघ। २. राहु। ३ साहित्य मे नौ रसो मे एक रस जिसका स्थायी भाव भय है। हिंसक पशु, अपराधी व्यक्ति, वीभत्स आचरण आदि इसके आलंबन हैं। आलम्बन की चेष्टाएँ और अपनी असहाय अवस्था इसके उद्दीपन हैं। अश्रु, कप आदि अनुभाव हैं और त्रास, मोह, चिंता, आवेश आदि व्यभिचारी हैं।

भयाना—अ० [सं० भय+हिं० आना (प्रत्य०)] भयभीत होना। डरना।
स० भयभीत करना। डराना।

भयापह—वि० [स० भय+अप√हन् (मारना)+ड] भय दूर करनेवाला।

भयारा—वि०=भयानक।

भयार्त—भू० कृ० [सं० भय-आर्त, तृ० त०] भय से आर्त या भय से त्रस्त।

भयावन—वि०=भयावना।

भयावना—अ०, स०=भयाना।
वि० [स० भय+हिं० आवना (प्रत्य०)] [स्त्री० भयावनी] भयानक।

भयावह—वि० [सं० भय+आ√वह् (पहुँचाना)+अच्] जिसे देखने से डर लगे। भयजनक। भयंकर। डरावना।

भय्या—पु०=भैया।

भरंत*—स्त्री० [सं० भ्रांति] १. धोखा। भय। २. सदेह। शक।
स्त्री० [हिं० भरना] भरने की क्रिया या भाव। विशेष दे० 'भरत'।

भर—अव्य० [हिं० भरना] १. अवकाश, परिमाण, वय आदि की सपूर्णता (या समस्तता) किसी इकाई के रूप में सूचित करते हुए। जैसे—कटोरा भर, गज भर, उमर भर आदि। २. तक। पर्यंत। ३. अच्छी तरह से। पूरी तरह से। जैसे—लड़के को एक बार आँख भर देखने की उसकी कामना थी।
अव्य० [सं० भार] १. के द्वारा या सहायता से। उदा०— सिर भर जाऊँ उचित अस मोरा।—तुलसी।
पुं० भरे हुए होने की अवस्था या भाव। पूर्णता। यथेष्टता। उदा० —भर लाय्यो परन उरोजनि मैं रघुनाथ राजी रोम राजी भाँति कल अलि सैनी की।—रघुनाथ।
क्रि० प्र०—डालना।—पड़ना।
वि० कुल। पूरा। समस्त।
मुहा०—भर पाना=(क) कुल प्राप्य धन या सामग्री प्राप्त करना। (ख) पूरा बदला चुक जाना। जैसे—जैसा तुमने किया वैसा भर पाया।
पु० [सं० भरत या भरद्वाज ?] हिंदुओं मे एक जाति जो किसी समय अस्पृश्य मानी जाती थी।
†पुं०=भट (वीर)।
पु० [स०] भार। बोझ। उदा०—भर लंचे भंजियौ भिड़। —प्रिथीराज।
वि० [स०√भृ (भरण करना)+अप्] (वह) जो भरण-पोषण करता हो।
पु० युद्ध। लड़ाई।
पु० [?] उत्तर प्रदेश के पूर्वी जिलों मे रहनेवाली एक निम्न जाति।

भरई—पु०=भरदूल या भरत (पक्षी)।

भरक—पु० [देश०] पजाब और बगाल की दलदलों में रहनेवाला एक प्रकार का पक्षी जो प्रायः अकेला रहता है, मांस के लिए इसका शिकार किया जाता है।
†स्त्री०=भड़क।

भरकना—अ०=भड़कना।

भरका—पुं० [देश०] १. वह जमीन जिसकी मिट्टी काली और चिकनी हो, परन्तु सूख जाने पर सफेद और भुरभुरी हो जाय। यह प्रायः जोती नही जाती। २ जगलों, पहाड़ो आदि का वह गड्ढा जिसमे चोर छिपते हैं। ३. छोटा नाला। नाली। ३ जमीन का छोटा टुकड़ा। उदा०—बड़ा रकबा काटकर छोटे छोटे भरको में पलट दिया गया था।—वृन्दावन लाल।
†पु०=भरक (पक्षी)।

भरकाना—स०=भड़काना।

भरकी—स्त्री०=भरका।

भरकूट—पु० [डिं०] मस्तक। माथा।

भरट—पुं० [सं०√भृ (भरण करना)+अटच्] १. कुम्हार। २. सेवक। नौकर।

भरटक—पु० [स० भरट+कन्] संन्यासियो का एक वर्ग या संप्रदाय।

भरण—पुं० [स०√भृ (भरण करना)+ल्युट्—अन] १ भरना। २. खिलापिला कर जीवित रखना। पालन-पोषण आदि के लिए दी जानेवाली वृत्ति या वेतन। ४. किसी चीज के न रहने या नष्ट होने पर की जानेवाली उसकी पूर्ति। भरती। ५. भरणी नक्षत्र।
वि० [स्त्री० भरणी] भरण अर्थात् पालन-पोषण करनेवाला। (यौ० के अन्त मे) उदा०—तोही कर्णि हरणी तो ही विश्व भरणी।—विश्राम सागर।

भरण-पोषण—पु० [सं० द्व० स०] किसी का इस प्रकार पालन करना कि वह जीविका निर्वाह की चिंता से दूर रहे। (मेन्टेनेन्स)

भरणी—स्त्री० [सं० भरण+ङीष्] १. घोषक लता। कड़वी तरोई। २. सत्ताइस नक्षत्रों में दूसरा नक्षत्र जिसमे त्रिकोण के रूप मे तीन तारे हैं। ३. भूमि खोदने की एक शुभ लग्न। (ज्यो०)

भरणी-भू—पु० [सं० ब० स०] राहु।

भरणीय—वि० [सं०√भृ+अनीयर्] जिसका भरण किया जाने को हो या करना उचित हो। पाले-पोसे जाने के योग्य।

भरण्य—पुं० [सं० भरण+यत्] १ मूल्य। दाम। २ वेतन। तनखाह। ३. नौकर। सेवक। ४ मजदूर।

भरण्या—स्त्री० [सं० भरण्य+टाप्] १ वेतन। मजदूरी। २ पत्नी। जोरू।

भरण्यु—पुं० [सं० भरण्य+उन्] १ ईश्वर। २. चन्द्रमा। ३. सूर्य। ४ अग्नि। ५ मित्र।

भरत—पुं० [सं०√भृ+अतच्] १ दुष्यंत का शकुंतला के गर्भ से उत्पन्न पुत्र, जिसके नाम के आधार पर इस देश का नाम भारत पड़ा था। २ राम के सौतेले भाई जो कैकेयी के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। ३ नाट्य-शास्त्र के एक प्रधान आचार्य। ४ अभिनेता। ५ दे० 'जड़ भरत'। ६ जैनों के अनुसार प्रथम तीर्थंकर ऋषभ के ज्येष्ठ पुत्र का नाम।

पुं० [सं० भरद्वाज] एक प्रकार का लंबा लवा पक्षी जो झुंड में रहता है। इसका शब्द बहुत मधुर होता है और यह बहुत ऊँचाई तक उड़ सकता है।

स्त्री० [हिं० भरना] १ भरने की क्रिया या भाव। २ वह चीज जो किसी दूसरी चीज में भरी जाय। ३ किसी आधान के अन्दर का वह अवकाश जिसमें चीजें भरी जाती हैं। ४ कसीदे आदि के कामों में वह रचना जो बीच का खाली स्थान भरने के लिए की जाती है। ५ मालगुजारी या लगान। (पश्चिम)

पुं० [देश०] १ काँसे नामक धातु। कसकुट। २ उक्त धातु के बरतन बनानेवाला ठठेरा। ३ भरी हुई चीज। भराव।

भरत-खंड—पुं० [सं० ष० त०] राजा भरत के किए हुए पृथ्वी के नौ खंडों में से एक खंड। भारतवर्ष। हिन्दुस्तान। भारतवर्ष के दक्षिण का कुमारिका खंड।

भरतज्ञ—वि० [सं० भरत√ज्ञा (जानना)+क] नाट्यशास्त्र का ज्ञाता।

भरत-पुत्रक—पुं० [सं० ष० त०] अभिनेता। नट।

भरत-भूमि—स्त्री० [सं० ष० त०] भारतवर्ष।

भरतरी—स्त्री० [सं० भर्तृ] पृथ्वी। (डिं०)

पुं० भर्तृहरि।

भरतवर्ष—पुं० =भारतवर्ष।

भरत-वाक्य—पुं० [सं० ष० त०] संस्कृत नाटकों के अंत में वह पद्य जिसमें नाट्यशास्त्र के जन्मदाता भरत मुनि की स्तुति की जाती है।

भरत-शास्त्र—पुं० [सं० मध्य० स०] नाट्यशास्त्र।

भरता—पुं० [देश०] १ कुछ विशिष्ट तरकारियों को आग पर भूनकर तदुपरांत उनके गूदे को छौंक कर बनाया जानेवाला सालन। चोखा। जैसे—बैंगन का भरता, आलू का भरता। २ लाक्षणिक अर्थ में, किसी चीज का मसला हुआ रूप।

†पुं० =भर्त्ता।

भरतार—पुं० [सं० भर्त्ता] १ स्त्री का पति। खसम। २. मालिक। स्वामी।

भरतिया—वि० [हिं० भरत (काँसा)+इया (प्रत्य०)] भरत अर्थात् काँसे का बना हुआ।

पुं० भरत के बरतन आदि बनानेवाला कसेरा। ठठेरा। भरत।

भरती—स्त्री० [हिं० भरना] १ किसी चीज में कोई दूसरी चीज भरने की क्रिया या भाव। भराई।

पद—भरती का जो अनावश्यक रूप में यों ही स्थान-पूर्ति मात्र के विचार से रखा या सम्मिलित किया गया हो। जैसे—इस पुस्तकालय में बहुत सी पुस्तकें तो यों ही भरती की जान पड़ती हैं।

२ नक्काशी, चित्रकारी, कसीदे आदि के बीच का स्थान इस प्रकार भरना जिसमें उसका सौन्दर्य बढ़ जाय। जैसे—कसीदे के बूटों में की भरती, नैचे में की भरती। ३ किसी दल, वर्ग, समाज आदि में कार्यकर्ता, सदस्य आदि के रूप में प्रविष्ट या सम्मिलित किये जाने की क्रिया या भाव। जैसे—विद्यालय में विद्यार्थी की या सेना में रंगरूट की होनेवाली भरती। ४ वह जहाज या नाव जिसमें माल लादा जाता हो। (लश०) ५ जहाज या नाव में उक्त प्रकार से भरा हुआ माल। (लश०)। ६ जहाज या नाव पर माल लादने की क्रिया। (लश०)। ७ समुद्र में पानी का चढ़ाव। ज्वार। (लश०)। ८ नदी की बाढ़। (लश०)

स्त्री० [देश०] १ एक प्रकार की घास जो पशुओं के चारे के काम में आती है। २ मौर्वा नामक कदन।

भरतोद्धता—स्त्री० [सं० न० त०] केशव के अनुसार एक प्रकार का छंद।

भरत्थ—पुं० भरत।

भरथ—पुं० =भरत।

भरथरी—पुं० दे० 'भर्तृहरि'।

भरदूल—पुं० दे० 'भरत' (पक्षी)।

भरद्वाज—पुं० [सं०√भृ+अप् भर, द्वि√जन्+ड, पृषो० द्वाज; भर द्वाज, कर्म०स०] १ अंगिरस गोत्र के उतथ्य ऋषि की स्त्री ममता के गर्भ से और उतथ्य के भाई बृहस्पति के वीर्य से उत्पन्न एक वैदिक ऋषि जो गोत्र प्रवर्तक और मंत्रकार थे। बनवास काल में रामचन्द्र इनके आश्रम में भी गए थे। २ उक्त ऋषि के गोत्र का व्यक्ति। ३ बौद्धों के अनुसार एक अर्हत् का नाम। ४ एक अग्नि का नाम। ५ एक प्राचीन जनपद। ६ भरत पक्षी।

भरन—स्त्री० [हिं० भरना] १ भरने या भरे जाने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ ऐसी भरपूर वर्षा जिसमें खेत आदि अच्छी तरह भर जायँ। उदा०—(क) आने से उसके दिल का मेरे खिल गया चमन, ऐसी तरब के अब्र की पड़ने लगी भरन।—नजीर। (ख) सावन की झड़ी, भादों की भरन। (कहा०)

भरना—स० [सं० भरण] [भाव० भराई, भराव] १ किसी आधार या पात्र के अन्दर की खाली जगह में कोई चीज उँडेलना, गिराना, डालना या रखना। बीच के अवकाश में इस प्रकार कोई चीज रखना कि वह खाली न रह जाय। जैसे—गाड़ी में माल, घड़े में पानी या गुब्बारे में हवा भरना।

पद—भरापूरा।

२ बीच के अवकाश में कोई अपेक्षित, आवश्यक या उपयुक्त चीज रखना या लगाना। स्थापित करना। जैसे—गड्ढे में मिट्टी भरना, चित्र में रंग भरना, तोप में गोला भरना, मुँह में पान भरना, लिफाफों में चिट्ठियाँ भरना आदि। ३ खाली आसन, पद आदि पर किसी को बैठाना या नियुक्त करके स्थान की पूर्ति करना। जैसे—उन्होंने मंत्री होते ही

सारा विभाग भाई-बन्धुओ से भर दिया। ४. पशुओं, यानों आदि पर बोझ लादना। ५. भावी लाभ के विचार से अधिक मात्रा में कोई चीज या माल खरीद कर इकट्ठा करना और रख छोड़ना। जैसे—फसल के दिनों में गेहूँ भरना, मंदी के समय कपड़ा या सोना भरना। ६. सिंचाई के लिए खेत मे पानी पहुँचाना। सींचना। ७ छेद, मुँह, विवर, सन्धि आदि बद करने के लिए उनमे कोई चीज जड़ना, ठूँसना, बैठाना या लगाना। जैसे—खिड़की या झरोखे मे ईंटे, छड़ या जाली भरना। ८ लेख आदि के द्वारा आवश्यक अपेक्षाओ की पूर्ति करना या सूचनाएँ अकित करना। जैसे—आवेदन-पत्र, पंजी या प्रपत्र (फार्म) भरना। ९ किसी के मन में तुष्टि, पूर्णता, यथेष्टता आदि की धारणा या भावना उत्पन्न करना। किसी का मनस्तोष करना। जैसे—बातचीत या व्यवहार से किसी का मन भरना। १० अपेक्षित समर्थन, सहमति, स्वीकृति आदि की सूचक पूर्ति करना। जैसे—किसी के कथन की सही या साखी भरना, किसी बात की हामी भरना। ११. किसी को किसी का विद्रोही या विरोधी बनाने अथवा अपने अनुकूल करने के लिए उसके मन मे कोई बात अच्छी तरह जमाना या बैठाना। जैसे—आपने तो उन्हे पहले ही भर रखा था, फिर वे मेरी बात क्यो सुनते? १२ जीव-जतुओं का किसी को काटना या डसना। उदा०—जहाँ सो नागिन भर गई, काला करै सो अग।—जायसी। १३ आर्थिक देन, क्षति-पूर्ति, भार आदि के परिशोध के रूप मे धन देना। चुकाना। जैसे—ऋण या दड भरना। १४ यत्रो आदि मे कुजी घुमाकर या और किसी प्रकार ऐसी क्रिया करना जिसमें वे अपना काम करने लगे। जैसे—घडी भरना, ताला भरना। १५ जैसे-तैसे या कुछ कष्ट सहकर दिन काटना या समय बिताना। जैसे—नैहर जनमु भरब बरु जाई।—तुलसी। १६. (कष्ट या विपत्ति) भोगना। सहना। जैसे—करे कोई, भरे कोई। उदा०—राम वन वपु धरि विपति भरे।—सूर।

विशेष—भिन्न भिन्न संज्ञाओ के साथ इस क्रिया के योग से बहुत से मुहावरे भी बनते है। जैसे—किसी की गोद भरना, देवी या देवता की चौकी भरना, महावर आदि से किसी के पैर भरना, (किसी बात या व्यक्ति का) दम भरना, रिश्वत देकर किसी का घर भरना, मनो-विनोद के लिए किसी का स्वांग भरना आदि। ऐसे मुहावरों के लिए सबद्ध सज्ञाएँ देखें।

सयो० क्रि०—डालना।—देना।—रखना।

अ० १. खाली जगह या आधार का किसी बाहरी या नये पदार्थ के योग से पूर्ण या युक्त होना। जैसे—बरसाती पानी से तालाब भरना, दवा से घाव भरना, पाल से हवा भरना, कीचड से पैर भरना, फलो या फूलों से पेड भरना, माता (चेचक) के दागो से शरीर भरना, आदमियों से बाजार, मेला या सभा भरना आदि।

विशेष—ऊपर स० 'भरना' मे जो अर्थ आये हैं, उनमे से अधिकतर अर्थों के प्रसग मे इसका अ० प्रयोग भी होता है। जैसे—(क) खेत, देन या रंग भर गया। (ख) भोजन से पेट भर गया।

२ दुर्बल या रुग्ण शरीर का यौवन, स्वस्थता आदि के योग से धीरे-धीरे हृष्ट-पुष्ट होना। जैसे—पहले तो वह बहुत दुबला-पतला था, पर अब धीरे धीरे भरने लगा है। ३. पशुओं पर बोझ लदना अथवा सवा-रियो पर यात्रियों का बैठना। ४. मन का असंतोष, क्रोध, संताप आदि से युक्त होना। जैसे—जब देखो, तब तुम भरे बैठे रहते हो। उदा०—वह भरी ही थी, उमड़ बहने लगी यों।—मैथिलीशरण गुप्त। ५. आवेश करुणा, स्नेह आदि से अभिभूत होने के कारण कुछ कहने के योग्य न रह जाना। किसी भाव की प्रबलता के कारण कुछ कहने मे असमर्थ होना। उदा०—गया भरा-सा भमरा कनिष्ठ।—मैथिलीशरण।

विशेष—(क) ऐसे अवसरों पर इसके साथ प्राय. सयो० क्रि० 'आना' का प्रयोग होता है। जैसे—उसे रोते देख कर मेरा जी भर आया; अर्थात् उसमे करुणा का आविर्भाव हुआ। कुछ अवसरों पर इसका प्रयोग बिना पूरक सज्ञा के भी होता है। जैसे—उसे देखते ही मेरी आँखें भर आईं; अर्थात् आँखो मे आँसू भर गये। (ख) कुछ अवस्थाओं मे अ० 'भरना' और 'भर जाना' के अर्थों मे बहुत अधिक अन्तर भी होता है। जैसे—(क) तुम्हारी तरफ से हमारा मन भरा है; अर्थात् हम पूर्ण रूप से सतुष्ट हैं और (ख) यहाँ रहते रहते हमारा जी भर गया है; अर्थात् हम ऊब गये हैं अथवा विरक्त हो गये हैं।

६. किसी चीज या बात से ओत-प्रोत या पूर्ण रूप से युक्त होना। जैसे—(क) इसी तरह की फालतू बातो से सारी पुस्तक भरी है। (ख) कीचड भरे पैर तो पहले धो लो। ७. ऋण, देन आदि का चुकाया जाना। परिशोधन होना। ८. अपेक्षा, आवश्यकता, आशा आदि की किसी रूप मे पूर्ति होना। जैसे—खाने-पीने की चीजो से पेट भरना, किसी के आचरण या व्यवहार से मन भरना। ९. अवकाश, छिद्र, विवर आदि का बद होना। १०. (अक, गोद आदि के पूर्ण या किसी से युक्त होने के विचार से) आलिगन होना। गले लगना। भेटना। उदा०—भरी सखी सब भेटत फेरा।—जायसी। ११ रिक्त आसन, पद आदि की पूर्ति होना। १२ कही जाकर रहना। निवास करना। बसना। उदा०—हरी चद सो करे जगदाता सो घर नीच भरै।—सूर। १३. किसी अग से अधिक और कुछ समय तक निरंतर कोई काम लेते रहने पर उस अग का कुछ पीडा-युक्त और भारी होना तथा काम करने मे कष्ट बोध करना। जैसे—चलते-चलते पाँव भरना, लिखते-लिखते हाथ भरना (या भर जाना)। १४. गौ, घोडी, भैंस आदि मादा पशुओ का गर्भवती होना।

सयो० क्रि०—आना।

पु० १. भरने या भरे जाने की क्रिया या भाव। २. भरने के लिए दी जानेवाली कोई चीज या किया जानेवाला परिश्रम, व्यय आदि। जैसे—इसी तरह बैठकर जनम भर दूसरों का भरना भरते रहो। ३. घूस। रिश्वत। (क्व०)

स० [हिं० भार] भार उठाना या ढोना। उदा०—भरि भरि भार कहारन आना।—तुलसी।

भरनि—स्त्री० [स० भरण] १ कपड़े-लत्ते। पोशाक। २ दे० 'भरनी'।

भरनी—स्त्री० [हिं० भरना] १. भरने या भरे जाने की क्रिया या भाव। २. वह चीज जो भरी जाय। ३. किसी काम या बात के फलस्वरूप प्राप्त होनेवाली दशा या स्थिति। जैसे—जैसी करनी वैसी भरनी। ४. खेतों मे बीज आदि बोने की क्रिया। ५. खेतो की सिंचाई। ६ करघे में की ढरकी। नार। ७. बुनाई मे बाने का सूत।

स्त्री० [?] १ छछूँदर। २. मोरनी। ३. गारुडी मत्र। ४. एक प्रकार की जड़ी या बूटी।

†स्त्री०-भरणी (नक्षत्र)।

भर-पाई—स्त्री० [हिं० भरना+पाना] १. वह स्थिति जिसमें से किसी से कुल प्राप्य धन वसूल हो जाय। २ उक्त का सूचक लेख, जो इस बात का सूचक होता है कि अब हमें अमुक व्यक्ति से कुछ लेना शेष नहीं रह गया है।

क्रि० वि० पूर्ण रूप से। पूरी तरह से। उदा०—माला दुखित भई भर-पाई।—सूर।

भरपूर—वि० [हिं० भरना+पूरा] १ जो पूरी तरह से भरा हुआ हो। परिपूर्ण। २ जिसमें किसी प्रकार की कमी या त्रुटि न हो।

क्रि० वि० १ बहुत अधिक मात्रा या परिमाण में। जितना चाहिए, उतना या उससे भी कुछ अधिक। २ पूर्ण रूप से। ३ अच्छी तरह। भली भाँति।

†पु०-ज्वार (समुद्र का)।

भरभराना—अ० [अनु०] [भाव० भरभराहट] १. रोएँ खड़ा होना। २. (आँखों में) जल भर आना। ३ (हृदय का) आवेगपूर्ण या विह्वल होना। ४. विफल होना। घबराना। ५ (ज्वर आदि में शरीर में) हलकी सूजन या दानों का उभार होना।

भर-भराहट—स्त्री० [अनु०] भरभराने की अवस्था, क्रिया या भाव।

भरभूँजा—पु०=भड़भूँजा।

भरभेंटा—पु० [हिं० भर+भेंटना] १ अच्छी तरह गले मिलने की क्रिया या भाव। २. मुकाबला। मुठभेड़।

भरम*—पु० [स० भ्रम] १ भ्रांति। संशय। संदेह। २. भेद। रहस्य। ३ अपने महत्त्व, साख आदि का रहस्य या विश्वसनीयता।

क्रि० प्र०—खोना।—गँवाना।

भरमना*—अ० [स० भ्रमण] १ चलना-फिरना। घूमना या टहलना। २ इधर-उधर मारे मारे फिरना। ३. धोखे में पड़कर इधर-उधर होना। भटकना।

स्त्री० [स० भ्रम] १. भूल। गलती। २ धोखा। भ्रांति। ३ मन में होनेवाला अनिश्चय।

भरमाना—स० [हिं० भरमना का स० रूप] १ ऐसा काम करना अथवा ऐसी स्थिति उत्पन्न करना जिससे किसी को भ्रम हो जाय। भ्रम में डालना। २ व्यर्थ इधर-उधर घूमना। भटकना। ३ आसक्त या मोहित करना। बिलमाना।

†अ० अचंभे में आना। चकित होना।

भर-मार—स्त्री० [हिं० भरना+मार=अधिकता] अनावश्यक या व्यर्थ चीजों की अधिकता।

भरमौहाँ—वि० [हिं० भरम+औहाँ (प्रत्य०)] भ्रम उत्पन्न करनेवाला। भरमानेवाला।

वि० [हिं० भरमना (घूमना)+औहाँ (प्रत्य०)] १. घूमने या घुमानेवाला। २ चक्कर खाने या खिलानेवाला।

भरराना—अ० [अनु०] १. भरर शब्द करते हुए गिरना। अरराना। २. किसी पर टूट या पिल पड़ना।

स० १ भरर शब्द के साथ गिराना। २ किसी को किसी पर टूट या पिल पड़ने में प्रवृत्त करना।

भरल—स्त्री० [देश०] नीले रंग की एक प्रकार की जंगली भेड़ जो बहुत कुछ बकरी की तरह होती और हिमालय में भूटान से लद्दाख तक होती है।

भरवाई—स्त्री० [हिं० भरवाना] १. भरवाने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक। २ वह टोकरी जिसमें बोझ रखकर ढोया जाता है।

भरवाना—स० [हिं० भरना का प्रे० रूप] भरने का काम दूसरों से कराना। किसी को कुछ भरने में प्रवृत्त करना।

भर-सक—अव्य० [हिं० भर+सकना] जितनी समर्थता या शक्ति हो सकती है उतनी का उपयोग करते हुए। यथासाध्य।

भरसना†—स्त्री०-भर्त्सना।

भरसाई—स्त्री० भड़साइ (भाड़)।

भरहरना—अ० [देश०] अस्त-व्यस्त या तितर-बितर करना।

†अ०-भरभराना।

भरहराना—अ०-भहराना।

भराचिटी—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की घास।

भराँति—स्त्री०-भ्रांति।

भरा—वि० [हिं० भरना] [स्त्री० भरी] १ जिसमें कोई चीज पूरी तरह से डाली गई हो या पड़ी हो। जैसे—भरा घड़ा, भरा बोरा। २. जिसमें अपेक्षित, आवश्यक, उपयुक्त या संगत तत्त्व अथवा पदार्थ यथेष्ट मात्रा में हो। जैसे—भरी गोद, भरा घर, भरी बंदूक, भरा बाजार, भरी सभा। ३ जो यथेष्ट उत्कर्ष, उन्नति, अर्थात् पूर्णता तक पहुँच चुका हो। जैसे—भरी जवानी, भरी बरसात, भरा शरीर। ४. जो किसी विशिष्ट तत्त्व या बात से इस प्रकार बहुत कुछ युक्त हो कि जरा सा संकेत या सहारा पाकर उबल या फूट पड़े। जैसे—वह तो पहले ही (क्रोध या दुःख से) भरा बैठा था, तुम्हें देखते ही बिगड़ खड़ा हुआ।

पद—**भरी सभा में**=सब के सामने।

भराई—स्त्री० [हिं० भरना] १. भरने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक। २. मध्य-युग में एक प्रकार का स्थानीय कर।

भरापूरा—वि० [हिं०] १ जिसमें किसी बात की कमी या न्यूनता न हो। सब प्रकार से या सभी अपेक्षित बातों से युक्त। २ हर तरह से सम्पन्न और सुखी। जैसे—भरा-पूरा घर या परिवार।

भरा महीना—पु० [हिं० पद] बरसात के दिन जिनमें खेतों में बीज बोये जाते हैं।

भराव—पु० [हिं० भरना+आव (प्रत्य०)] १ भरे हुए होने की अवस्था या भाव। २ भरने की क्रिया या भाव। ३ वह पदार्थ या रचना जिससे कोई अवकाश या खाली जगह भरी गई हो या भरी जाती हो। जैसे—कसीदे की बूटियों में तागों का भराव।

भरावदार—वि० [हिं०+फा०] जिसमें भराव हो। जैसे—भरावदार कंगन।

भरित—भू० कृ० [स० भर+इतच्] १ जो भरा गया हो। भरा हुआ। २ जिसका भरण-पोषण किया गया हो।

भरिया—वि० [हिं० भरना] १ भरनेवाला। २. ऋण भरने या चुकानेवाला।

पु० वह जो बरतन आदि ढालने का काम करता हो। ढलाई करनेवाला। ढालिया।

पु० [हिं० भार] १. भार ढोनेवाला मजदूर। २. कहार।

भरी—स्त्री० [हिं० भर] दस माशे की तौल जिससे सोना, चाँदी आदि धातुएँ तौली जाती थीं।

स्त्री० [?] एक प्रकार की घास जिससे छप्पर छाये जाते हैं।

भरी गोद—स्त्री० [हिं०] (स्त्री की) ऐसी गोद जिसमें संतान हो।

मुहा०—**भरी गोद खाली होना**=पुत्र या संतान का मर जाना।

भरी जवानी—स्त्री० [हिं०] पूर्णता तक पहुँची हुई ऐसी युवावस्था जिसका उतार अभी दूर हो। पूर्ण यौवन प्राप्त स्थिति।

पद—**भरी जवानी माँझा ढीला**=यौवनावस्था में भी फुरती और शक्ति न होना।

भरी थाली—स्त्री० [हिं०] ऐसी स्थिति जिसमे जीविका का निर्वाह या इच्छाओं की पूर्ति सहज मे होती हो। जैसे—तुमने तो उसके आगे से भरी थाली खींच (या छीन) ली।

मुहा०—**भरी थाली पर लात मारना**=मिलती रोजी या लगी नौकरी जान-बूझकर छोड़ देना।

भरु—पु० [स० √ भृ (भरण करना)+उन्] १. विष्णु। २. शिव। ३. समुद्र। ४ सोना। स्वर्ण। ५ मालिक। स्वामी।

पुं० १ =भर। २. =भार। उदा०—मावक उभरौंही भयो कछू पर्‌यो भरु आय।—बिहारी।

भरुआ—पु० [देश०] टसर।

†पुं०=भडुआ।

भरुआना—अ० [हिं० भारी+आना (प्रत्य०)] भारी होना।

†स० भारी करना।

भरुका—पु० [हिं० भरना] पुरवे के आकार का मिट्टी का बना हुआ कोई छोटा पात्र। चुक्कड़।

भरुज—पु० [सं० भ√रुज् (भंग करना)+क] [स्त्री० भरुजा] १. शृगाल। २. भूना हुआ जौ।

भरुटक—पु० [सं० भृ (भरण करना)+उट+कन्] भूना हुआ मांस।

भरुहाना—अ० [हिं० भार या भारी+आना या हाना (प्रत्य०)] अभिमान या घमड करना।

स० [हिं० भ्रम] १. भ्रम मे डालना। २. बहकाना। ३. उत्तेजित करना। उकसाना। भड़काना।

भरुही—स्त्री० [देश०] कलम बनाने की एक प्रकार की कच्ची किलक।

†स्त्री०=भरत (पक्षी)।

भरेंड—पु०=रेंड।

भरेठ—पुं० [हिं० भार+काठ] दरवाजे के ऊपर लगी हुई वह लकड़ी जिसके ऊपर दीवार उठाई जाती है। इसे 'पटाव' भी कहते हैं।

भरैया—वि० [हिं० भरना+ऐया (प्रत्य०)] भरनेवाला।

वि० [सं० भरण] भरण-पोषण करनेवाला। पालक। पोषक।

भरोट—पु० [देश०] एक प्रकार की जंगली घास।

भरोटा†—पुं० [हिं० भार+ओटा (प्रत्य०)] घास या लकड़ी आदि का गट्ठा। बोझ।

भरोस†—पुं०=भरोसा।

भरोसा—पु० [?] १. मन की ऐसी स्थिति जिसमे यह आशा या विश्वास हो कि अमुक व्यक्ति समय पड़ने पर हमारी सहायता करेगा। आश्रय या सहारे के सम्बन्ध में मन में होनेवाली प्रतीति। अवलंब। आसरा। जैसे—हमे तो आप (या ईश्वर) का ही भरोसा है। २. ऐसी आशा जिसकी पूर्ति की बहुत संभावना हो। जैसे—मन में भरोसा रखो, वे तुम्हें निराश नहीं करेंगे।

पद—**भरोसे का**=जिस पर बहुत कुछ भरोसा किया जा सकता हो। विश्वसनीय।

भरोसी—वि० [हिं० भरोसा+ई (प्रत्य०)] १. भरोसा या आसरा रखनेवाला। जो किसी (काम, बात या व्यक्ति) का भरोसा रखता हो। २. जिसका भरोसा रखा जा सके। विश्वसनीय। ३. जो किसी के भरोसे रहता है। आश्रित।

भरौती—स्त्री० [हिं० भरना+औती (प्रत्य०)] १. भरने या भराने की क्रिया या भाव। २. वह रसीद जिसमें भरपाई लिखी गई हो। भरपाई का कागज। ३. दे० 'भरती'।

भरौना—वि० [हिं० भार+औना (प्रत्य०)] बोझिल। भारी। वजनी।

भर्ग—पु० [सं० √भृज् (भूनना)+घञ्] १. शिव। महादेव। २. सूर्य का तेज। ३. चमक। दीप्ति। ४. एक प्राचीन जनपद।

भर्जन—पु० [सं०√भृज्+ल्युट्—अन] भाड़ में भूना हुआ अन्न।

भर्तव्य—वि० [सं० भृ+तव्य] १. (भार) जो वहन किया जा सके। २. (व्यक्ति) जिसका भरण-पोषण किया जा सके या किया जाने को हो। पालनीय।

भर्ता (र्तृ)—वि० [स० √भृ+तृच्] भरण-पोषण करनेवाला।

पु० १. विष्णु। २ स्त्री का पति। ३. मालिक। स्वामी।

†पु०=भरता।

भर्तार†—पु० [स० भर्तृ] स्त्री का पति। स्वामी।

भर्ती—स्त्री०=भरती।

भर्तृमती—स्त्री० [स० भर्तृ+मतुप्, ङीप्] सधवा स्त्री।

भर्तृस्थान—पु० [सं०] ग्रहों के स्वामी सूर्य का मूलस्थान, अर्थात् मुल्तान नगर।

भर्तृहरि—पु० [सं०] १ उज्जैन के राजा इन्द्रसेन के पोते जो अपनी स्त्री सामदेई (सिंघल की राजकुमारी) की दुश्चरित्रता के कारण दुःखी होकर संसार से विरक्त हो गये थे। संस्कृत मे इनके बनाए हुए शृगार शतक, नीति शतक, वैराग्य शतक, वाक्य पदीय आदि ग्रन्थ प्रसिद्ध हैं। २. संगीत मे एक प्रकार का संकर राग जो ललित और पुरज के मेल से बनता है।

भर्त्सन—पु० [सं० √भर्त्स्+ल्युट्—अन] किसी के अनुचित तथा दूषित आचरण या व्यवहार से क्रुद्ध और दुःखी होकर उसे कटु शब्दो मे कुछ कहना और फलतः उसे लज्जित करना।

भर्त्सना—स्त्री० [स०√भर्त्स्+णिच्+युच्—अन,+टाप्] १.=भर्त्सन। २. भर्त्सित होने की अवस्था या भाव।

भर्त्सित—भू० कृ० [स० √भर्त्स्+णिच्+क्त] जिसकी भर्त्सना हुई या की गई हो।

भर्म—पु० [स०√भृ (भरण करना)+मनिन्] १ सोना। स्वर्ण। २ नाभि।

पु०=भ्रम।

भर्मन*—पु०=भ्रमण।

भर्मना—अ०=भरमना।

भर्माना†—स०=भरमाना।

भर्य—पुं० [सं०√भृ (भरण करना)+यत्] किसी को भरण-पोषण के निमित्त दिये जाने या मिलनेवाला धन। खरचा। गुजारा।

भर्रा—पुं० [भर शब्द से अनु०]१ झाँसा। दमबुत्ता।

क्रि० प्र०—देना।

२ पक्षियो की उड़ान। ३. एक प्रकार की चिड़िया।

भर्राटा—पुं०[अनु०]१ भरभर शब्द होने की अवस्था या भाव। २ कुछ समय तक बराबर होनेवाला भरभर शब्द।

क्रि० वि० १ भरभर शब्द करते हुए। २ बहुत जल्दी या तेजी से।

भर्राना—अ० [भर्र से अनु०] भर्र भर्र शब्द होना। जैसे—आवाज भर्राना।

स० भर्र भर्र शब्द उत्पन्न करना।

†अ०=भरमाना।

भर्सन†—पुं०=भर्त्सन।

भर्सना†—स्त्री०=भर्त्सना।

भल—पुं०[सं०√भल् (मारना)+अच्] १ मार डालने की क्रिया। वध। हत्या। २ दान। ३. निरूपण।

क्रि० वि०[हिं० भला] भली भाँति।

†वि०=भला।

भलका—पुं०[देश०]१ नथ मे शोभा के लिए जड़ा जानेवाला सोने या चाँदी का छोटा टुकड़ा। २ एक प्रकार का बाँस।

भलटी—स्त्री०[?] हँसिया।

भलपति—पुं०[हिं० भाला+सं० पति] भाला धारण करनेवाला। भाला-बरदार।

भलभल—स्त्री०[अनु०] पानी या किसी तरल पदार्थ के बहने का शब्द।

स्त्री० [अनु०] नदी-नाले के जल के बहने का शब्द।

भलभलाहट—स्त्री०[अनु० भलभल+हिं० आहट (प्रत्य०)] भलभल शब्द होने की अवस्था या भाव।

भलमनसत—स्त्री०[हिं० भला+सं० मनुष्य]१ भले मानस होने की अवस्था या भाव। २ भले आदमियो का सा भद्रतापूर्ण व्यवहार। ३ वह स्थिति जिसमे कोई किसी के प्रति भद्रतापूर्ण व्यवहार करता है।

भल-मनसाहत†—स्त्री० =भलमनसत।

भलमनसी†—स्त्री०=भलमनसत।

भला—वि०[सं० भद्र, प्रा० भल्ल] [स्त्री० भली] १ (व्यक्ति) जो सदाचारी हो और दूसरो की भलाई या हित करता या चाहता हो। शुद्ध हृदय और सात्विक प्रवृत्तियोवाला। २ (आचरण या व्यवहार) जिसमे कोई नैतिक दोष न हो और जिससे भलाई या हित होता अथवा हो सकता हो। ३ (वस्तु या विषय) जो (क) मन को भाता हो, (ख) सतोषजनक और लाभप्रद हो।

पद—**भला-चगा**—(क) हर तरह से ठीक और सतोषजनक। जैसे—भला-चगा मकान छोड़कर वे कही और चले गये। (ख) शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ।

४. मगलकारी। शुभ।

पुं० भलाई। मगल। हित।

मुहा०—**(किसी का) भला मनाना**—किसी के कुशल-मगल की कामना करना। **किसी का भला मानना**—उपकार मानकर अनुगृहीत करना। उदा०—राजा का भला मानहु भाई।—जायसी।

२. नफा। लाभ।

पद—**भला-बुरा**—(क) लाभ और हानि। जैसे—पहले अपना भला-बुरा सोच लो। (ख) ऐसी बातें जिनमे कुछ डाँट-फटकार भी हो। जैसे—वह दिन भर मुझे भला-बुरा कहते रहते हैं।

अव्य० १ मगलजनक या बहुत अच्छा! शुभ है कि! जैसे—भला आप आये तो! २ जोर देने के लिए प्रयुक्त होनेवाला अव्यय। जैसे—भला ऐसा भी कही होता है!

भलाई—स्त्री०[हिं० भला+ई (प्रत्य०)]१ भले होने की अवस्था या भाव। भलापन। अच्छापन। २ किसी के साथ किया जानेवाला उपकार। नेकी। ३ किसी प्रकार का लाभ या हित।

भलापन—पुं० भलाई।

भलामानस—पुं०[हिं०] भला व्यक्ति। नेक आदमी।

भले—अव्य०[हिं० भला]१ भली भाँति। अच्छी तरह। पूर्ण रूप से। उदा०—एहि बिधि भलेहिं सो रोग नसाही।—तुलसी।

पद—**भले को**=उद्दिष्ट लाभ या हित के विचार से, अच्छा ही हुआ। जैसे—भले को मैं कुछ बोला ही नही, नही तो झगड़ा हो जाता। **भले ही**—ऐसा हुआ करे। इसकी चिंता नही। इससे कोई हानि नही। जैसे—भले ही वह वही रहे।

अव्य० खूब। वाह। 'काकु' से नही का सूचक। जैसे—तुम कल शाम को आनेवाले थे, भले आये।

भलेरा†—वि०, पुं०=भला।

भल्ल—पुं०[सं०√भल्ल् (वध करना)+अच्] १ वध। हत्या। २. दान। ३. भाला। ४ एक प्रकार का बाण। ५ शिव का एक नाम। ६ एक प्राचीन जनपद और तीर्थ। ७ प्राचीन काल का एक प्रकार का शस्त्र जिससे शरीर मे धसा हुआ तीर निकाला जाता था। (वैद्यक) ८ भालू।

भल्लक—पुं० [सं० भल्ल+कन्] १ भालू। २ भिलावाँ। ३ इंगुदी का पेड़। ४ एक प्रकार की चिड़िया। ५ सन्निपात का 'भल्लु', नामक भेद। ६ एक प्राचीन जनपद।

भल्ल-नाथ—पुं०[सं० ष० त०] जाबवान्।

भल्ल-पति—पुं०[सं० ष० त०] जाम्बवान्।

भल्ल-पुच्छी—स्त्री०[सं० ब० स०, ङीष्]गोरखमुडी।

भल्लाक्ष—वि०[सं० भल्ल-अक्षि ब०, स०,+षच्] जिसे कम दिखाई देता हो। मददृष्टि।

भल्लाट—पुं०[सं० भल्ल√अट् (जाना)+अन्] १ भालू। २. एक पर्वत का प्राचीन नाम।

भल्लात, भल्लातक—पुं०[सं०भल्ल√अत् (गमन)+अच्,भल्लात+कन्] भिलावाँ।

भल्लातकी—स्त्री०[सं० भल्लातक+ङीष्] भिलावाँ।

भल्लु—पुं०[सं० √भल्ल्+उ] एक तरह का सन्निपात ज्वर।

भल्लुक—पुं०[सं० भल्लूक, पृषो० ह्रस्व] भालू।

भल्लूक—पुं०[सं०√भल्ल्+ऊक]१ भालू। २ एक प्रकार का श्योनाक। ३ कुत्ता।

भवँ—स्त्री०=भौह।

भवंग, भवंगा*—पुं० [सं० भुजंग] साँप। सर्प। उदा०—बिरह भवंग मेरो डस्यो है कलेजो।—मीराँ।

भवँर—स्त्री० =भँवर।
पु०=भौंरा।

भवँरी—स्त्री०=भौरी।

भव—पु०[स०√भू (होना)+अप्] १. होने की अवस्था, क्रिया या भाव। सत्ता। २ उत्पत्ति। ३. जन्म। ४. जगत। ससार। ५. ससार मे बार बार जन्म लेने और मरने का कष्ट। ६. प्राप्ति। ७. कारण। हेतु। ८ शिव। ९ कामदेव। १०. मांस। ११. बादल। मेघ। वि० १. समस्त पदों के अन्त मे, किसी से उत्पन्न। जन्मा हुआ। उत्पन्न। २. कुशल। होशियार। ३ मगलकारक। शुभ।
†पु०=भय (डर)।

भवक—वि०[स०√भू +वुन्—अक] १. उत्पन्न । जीता हुआ।

भव-कूप—पु०[स० कर्म० स०] ससार रूपी कूआँ, जिसमें लोग अँधेरे मे रहकर कष्ट भोगते हैं।

भव-केतु—पु०[स० ष० त०] बृहत्सहिता के अनुसार पूर्व में कभी कभी दिखाई देनेवाला एक पुच्छल तारा जिसकी पूँछ शेर की पूँछ की भाँति दक्षिणावर्त्त होती है। कहते है कि जितने मुहूर्त्त तक यह दिखाई देता है, उतने महीने तक भीषण अकाल या महामारी होती है।

भवचक्र—पुं०[सं० ष० त०] १ धनुष। २ बौद्धों में वह कल्पित चक्र जिससे यह जाना जाता है कि कौन कौन कर्म करने से जीवात्मा को किन किन योनियो मे जन्म लेना पडता है।

भव-चाप—पु०[स० ष० त०] शिव जी का धनुष। पिनाक।

भवच्छेद—पु०[स० ष० त०] ससार मे होनेवाले आवागमन से मुक्ति।

भव-जाल—पु०[स०] सासारिक प्रपच।

भवत्—पु०[स०√भा (प्रकाश)+डवतु] १ भूमि। जमीन। २ विष्णु। वि० पूज्य। मान्य।

भवतव्यता—स्त्री०=भवितव्यता।

भवती—स्त्री०[स० भवत्+ङीप्] एक प्रकार का जहरीला बाण।

भव-दारु—पु०[स० मध्य० स०] देवदारु ।

भवदीय—सर्व० [स० भवत्+छस्—ईय, स-लोप] [स्त्री० भवदीया] आपका। (प्राय पत्रो के अन्त मे, लेखक के नाम से पहले आत्मीयता और नम्रता सूचित करने के लिए प्रयुक्त।

भवन—पु०[स०√भू (होना)+ल्युट्—अन] १. अस्तित्व मे आना। उत्पत्ति या जन्म। २ कोई वास्तु-रचना विशेषत. वास-स्थान। ३ प्रासाद। महल। ४. जगत। ससार। ५ आधार या आश्रय का स्थान। जैसे—करुणाभवन। ६. छप्पय का एक भेद।
पु०[सं० भ्रमण] १. चारो ओर घूमने या चक्कर लगाने की क्रिया या भाव। भ्रमण। २. कोल्हू के चारों ओर का वह चक्कर जिसमे बैल घूमते हैं।

भवन-कक्ष्या—स्त्री०[स०] महल या राजप्रासाद का आंगन या चौक।

भवन-दीर्घिका—स्त्री० दे० 'गृह-दीर्घिका'।

भवन-पति—पु०[स० ष० त०] १. घर का मालिक। गृहपति। २. राशि चक्र में किसी ग्रह का स्वामी। ३. जैनियों के दस देवताओं का एक वर्ग जिनके नाम ये हैं—असुरकुमार, नागकुमार, तड़ित्कुमार, सुपर्णकुमार, बह्निकुमार, अनिलकुमार, स्तनितकुमार, उदधिकुमार, द्वीपकुमार और दिक्कुमार।

भवनवासी (सिन्)—पुं० [सं० भवन√वस् (निवास करना)+णिनि] जैनों के अनुसार आत्माओ के चार भेदो मे से एक।

भवना—अ०[सं० भ्रमण] घूमना। फिरना। चक्कर खाना।

भव-नाशिनी—स्त्री०[सं० ष० त०] सरयू नदी।

भवनी—स्त्री० [सं० भवन]=गृहिणी।

भवनीय—वि०[स० √ भू (होना)+अनीयर्,] १ भविष्य में होनेवाला। २ आसन्न। सन्निकट।

भवनाथ—पुं०[स० ष० त०] विष्णु।

भवपाली—स्त्री०[स० ष० त०, +ङीप्] तांत्रिकों के अनुसार भुवनेश्वरी देवी जो ससार की रक्षा करनेवाली मानी गई हैं।

भव-प्रत्यय—पु०[सं० ष० त०] योग मे, समाधि की एक अवस्था।

भव-बंधन—पु०[स० ष० त०] १. जन्म-मरण का चक्र। २. सांसारिक कष्ट और दु.ख।

भव-भंग—पु०[स० ष० त०] आवागमन से होनेवाली छुट्टी।

भव-भंजन—पु०[स० ष० त०] १. परमेश्वर। २ ससार का नाश करनेवाला, काल।

भव-भय—पु०[सं० ष० त०] बार बार संसार में जन्म लेने और मरने का भय।

भव-भामिनी—स्त्री० [सं० ष० त०] शिव की पत्नी-पार्वती।

भव-भाव—पुं० [स० ष० त०] भौतिक बातों के प्रति होनेवाला प्रेम।

भव-भीत—वि०[सं० ष० त०] [भाव० भव-भीति] जिसे यह भय हो कि मुझे बार बार संसार मे जन्म लेना और मरना पड़ेगा।

भव-भीति—स्त्री०[सं० ष० त०] दे० 'भव-भय'।

भव-भूति—स्त्री०[सं० ष० त०] ऐश्वर्य।
पु० 'उत्तर रामचरित' नाटक के रचयिता संस्कृत के एक प्रसिद्ध महाकवि।

भव-भूषण—वि०[ष० त०] जो जगत् के भूषण के रूप में हो।
पु० शिव का भूषण, राख आदि।

भव-भोग—पु०[सं० ष० त०] सांसारिक सुखों का किया जानेवाला भोग।

भव-मन्यु—पुं० [सं० तृ० त०] सांसारिक सुखों से होनेवाली विरक्ति।

भव-मोचन—वि०[स० ष० त०] भव-बंधन काटनेवाला।
पु० श्रीकृष्ण।

भवरया†—स्त्री०=भाँवरी।

भव-रस—पुं०[सं० ष० त०] सांसारिक बातो के प्रति होनेवाला अनुराग और उनसे मिलनेवाला सुख।

भव-वामा—स्त्री०[ष० त०] शिव की पत्नी, पार्वती।

भव-विलास—पु०[सं० ष० त०] १. माया। २. सासारिक सुखों के भोग के निमित्त की जानेवाली क्रीडाएँ।

भव-शूल—पु०[सं० ष० त०] लोक में जन्मने, जीवित रहने और मरने पर होनेवाला कष्ट।

भव-शेखर—पु०[सं० ष० त०] चंद्रमा।

भव-सागर—पु०[सं० कर्म० स०] संसार रूपी समुद्र।

भव-सिंधु—पु०[सं० कर्म० स०] ससार रूपी समुद्र।

भवाँ—स्त्री० [हिं० भवना] चक्कर। फेरी। उदा०—राते कँवल करहि अलि भवाँ, घूमहिं मानि चहहि अपसवाँ।—जायसी।

भवांतर—पु०[स० मयू० स०] पहले का अथवा आगे चलकर होनेवाला जन्म।

भवाँना—स०[सं० भ्रमण] घुमाना। फिराना। चक्कर देना।

भवांबुधि—पु० [स० भव-अबुधि, कर्म० स०] संसार रूपी सागर।

भवा—स्त्री०[सं० भव+टाप्]१ भवानी। पार्वती। २ दुर्गा।

भवाचल—पु० [स० ष० त०] कैलास पर्वत।

भवाना*—स०=भवाँना।

भवानी—स्त्री०[सं० भव+ङीष्, आनुक्] १ भव की भार्या। दुर्गा। २ छत्रपति शिवाजी की तलवार की सज्ञा। ३ सगीत मे बिलावल ठाठ की एक रागिनी।

भवानी-कांत—पु०[स० ष० त०] शिव।

भवानी-गुरु—पु०[स० ष० त०] हिमवान्।

भवानी-नंदन—पु०[स० ष० त०]१ गणेश। २ कार्तिकेय।

भवानी-पति—पु०[स० ष० त०] शिव।

भवायना—स्त्री०[स०भव-अयन, ब० स०,+टाप्] गगा जो शिव की जटा से निकली हैं। भवायनी।

भवार्णव—पु०[स० भव-अर्णव, कर्म० स०] भव-सागर।

भवि*—वि०=भव्य।

भविक—वि०[स० भव+ठन्—इक] १. मंगलकारी। २ धार्मिक। ३ उपयोगी। उपयुक्त। ४. प्रसन्न। ५ समृद्ध।
पु० कल्याण। मगल।

भवित—भू० कृ० [स०] १ अस्तित्व मे आया हुआ। २ गत। भूत।

भवितव्य—वि० [स०√भू+तव्यत्] [भाव० भवितव्यता]१ जो भविष्य मे विशेषत आसन्न भविष्य मे निश्चित रूप से होने को हो। २. जो भाग्य मे बदा हो।

भवितव्यता—स्त्री०[सं० भवितव्य+तल्+टाप्] १ ऐसा काम या बात जो भविष्य मे ईश्वरीय विधान के अनुसार अवश्य होने को हो। २ भाग्य।

भविता (तृ)—वि० [सं० √भू+तृच्] [स्त्री० भवित्री] १. आगे चलकर आने या होनेवाला। २ जो आगे चलकर अच्छा या उत्तम होने को हो। होनहार।

भविषय*—पु०=भविष्य।

भविष्य—पु०[स०√भू (होना)+लृट्—शतृ, स्य, पृषो०, त–लोप] १. आनेवाला समय। वर्तमान के बाद आनेवाला काल। २ व्याकरण मे, भविष्यत् काल। (दे०)

भविष्य-गुप्ता—स्त्री०[सं० ब० स०,+टाप्] वह गुप्ता नायिका जो रति मे प्रवृत्त होनेवाली हो और पहले से उसे छिपाने का प्रयत्न करे। भविष्य सुरति गुप्ता।

भविष्य-ज्ञान—पुं० [स० कर्म० स०] होनेवाली बातों की जानकारी।

भविष्यत्—पुं०[सं०√भू (होना)+लृट्—शतृ, स्य] वर्तमान काल के उपरान्त आनेवाला काल। आनेवाला समय। आगामी काल। भविष्य।

भविष्यत्-काल—पु०[सं०कर्म० स०]व्याकरण में, क्रियापद का वह रूप जो भविष्य में क्रिया के घटित होने की सूचना देता है। क्रियापद के इस रूप में गा, गी, गे आदि जुड़े होते हैं।

भविष्यदाक्षेप—पु०[स० भविष्यत्-आक्षेप, कर्म० स०] साहित्य में एक प्रकार का अर्थालकार।

भविष्यद्वक्ता (क्तृ)—पु० [स० भविष्यत्-वक्तृ, ष० त०]१. भविष्य में होनेवाली घटनाओ का कथन करनेवाला। २. ज्योतिषी।

भविष्यद्वाणी—स्त्री० [स० भविष्यत्-वाणी, ष० त०] ऐसा कथन या वक्तव्य जो भविष्य मे होनेवाली किसी घटना कि अग्रिम सूचना देता हो। आने या होनेवाली घटना का पहले से कथन।

भविष्य-निधि—स्त्री० [स० ष० त०]१ भविष्य में होनेवाली आवश्यकताओ या स्थितियो के निमित्त सचित किया जानेवाला कोश या धन-राशि। २ आज-कल नियोक्ता द्वारा कर्मचारी के लिए सचित किया जानेवाला धन जो कर्मचारी की सेवा छोडने के समय दिया जाता है। निर्वाह-निधि। (प्राविडेंट फड) ३ वह धन जो उक्त निधि मे समय-समय पर कर्मचारी या नियोक्ता जमा करते है।

भविष्य-पुराण—पु०[स० मध्य० स०] अठारह पुराणो मे से एक।

भविष्य सुरति गोपना—स्त्री०=भविष्य गुप्ता (नायिका)।

भवीला†—वि०[हिं० भाव+ईला (प्रत्य०)] १ भावपूर्ण। २. बाँका। तिरछा।

भवेश—पु०[स० भव-ईश, ष० त०]१ ससार का स्वामी परमेश्वर। २. शिव।

भव्य—वि०[स०√भू (होना)+यत्] [भाव० भव्यता]१ जो देखने मे बडा और सुन्दर जान पडे। शानदार। २ मगलदायक। शुभ। ३ सच्चा। सत्य। ४ योग्य। लायक। ५ भविष्य मे आने या होनेवाला। ६ जिसे जन्म धारण करना पडता हो।
पु०१ भलता नामक वृक्ष। २ कमरख। ३. नीम। ४. करेला। ५ मनु चाक्षुष के अन्तर्गत देवताओ का एक वर्ग। ६ ध्रुव का एक पुत्र। ७ वह जिसे लिंगपद की प्राप्ति हो। भवसिद्धक। (जैन)

भव्यता—स्त्री०[सं० भव्य+तल्,+टाप्] भव्य होने की अवस्था या भाव।

भव्या—स्त्री०[सं० भव्य+टाप्]१ उमा। पार्वती। २ गजपीपल।

भष—पु०[सं० √भष् (भूँकना)+अच्] कुत्ता।
†पु०=भक्ष्य (आहार या भोजन)।

भषण—पु०[स०√भष्+ल्युट्—अन]१ भूँकना। २ कुत्ता।
†पु०=भक्षण (खाना)।

भषना*—स०[स० भक्षण] भोजन करना। खाना।

भसंधि—स्त्री० [स० ष० त०] ज्योतिष मे, अश्लेषा, ज्येष्ठा, और रेवती नक्षत्रों के चौथे चरण के बाद के नक्षत्रो से संधि।

भसकाना—स०=भकोसना। उदा०—आफू खाय भाँगि भसकावै।—गोरखनाथ।

भसन—पु०[सं०√भस् (प्रकाश करना)+ल्यु—अन] भ्रमर। भौंरा।

भसना—अ० [बँ०] १. पानी के ऊपर तैरना। २. पानी मे डाला या डुबाया जाना।

भसमंत*—वि० [सं० भस्म] जो भस्म हो चुका हो। जला हुआ।

भसम—वि०, पु०=भस्म।

भसम पत्ती—स्त्री० [सं० भस्म] गाँजा। (गँजेड़ी)

भसमा—पुं० [सं० भस्म] पीसा हुआ आटा। (साधुओं की परिभाषा)
पुं०[अ० वस्म] १. नील की पत्तियो का चूरा या बुकनी जिसके घोल

से सफेद बाल काले किये जाते थे। २. किसी प्रकार का खिजाब।

भसाकू—पु० [हिं० तमाकू का अनु०] घटिया तमाकू जिसका धूआँ पीने पर कड़आ न लगता हो।

भसान—पु० [बँ० भसाना] १. जल में भसाने या डुबाने की क्रिया या भाव। २. पूजा के उपरात देवी-देवता आदि की मूर्ति को किसी नदी में प्रवाहित करना। जैसे—काली भसान, सरस्वती भसान।

भसाना—स० [बँ०] १. किसी चीज को पानी मे तैरने के लिए छोडना। जैसे—जहाज भसाना (लश०), मूर्ति भसाना। २. पानी मे डालना या डुबाना।

भसींड, भसीड—स्त्री० [देश०] कमल की नाल जिसकी तरकारी बनती है। मुरार। कमलनाल।

भसुंड—पु० [सं० भुशुण्ड] हाथी। गज।
वि० बहुत मोटा-ताजा या भारी-भरकम परन्तु बेडौल या भद्दा।

भसुर—पुं० [हिं० ससुर का अनु०] विवाहिता स्त्री के विचार से उसके पति का बड़ा भाई। जेठ।

भसूँड़—पु० [सं० भुसुंड] हाथी का सूँड। (महावत)

भस्त्रा—स्त्री० [स०√भस् (प्रकाश करना)+ष्ट्रन्+टाप्] आग सुलगाने की भाथी।

भस्म—वि० [सं० भस+मनिन्, न—लोप] जो पूरी तरह से जलकर राख हो गया हो।
पु० १ कोयले, लकडी आदि के जल जाने पर बची हुई राख। २ चिता की राख जो पुराणानुसार शिव जी अपने शरीर में लगाते हैं।
क्रि० प्र०—रमाना।—लगाना।
३ विशेष प्रकार से तैयार की हुई अथवा अग्निहोत्र मे की राख जो पवित्र मानी जाती है और जिसे शिव के भक्त मस्तक तथा अगो मे लगाते अथवा साधु लोग सारे शरीर मे लगाते हैं। ४ वैद्यक मे, किसी धातु को फूंककर तैयार की हुई राख जो चिकित्सा के काम आती है। जैसे—लौह भस्म, स्वर्ण भस्म। ५ एक प्रकार का पथरी रोग।

भस्मक—पुं० [स० भस्मन्+कन् वा भस्मन्√कृ+ड] १. भावप्रकाश के अनुसार एक प्रकार का रोग जिसमें सब कुछ खाया हुआ तुरन्त पच जाता है, और फिर खाने की इच्छा होती है। इसे 'भस्मकीट' भी कहते हैं। २ आधुनिक रसायन मे वह भस्म या राख जो किसी धातु के पूरी तरह से जल जाने पर बच रहती है। ३ सोना। स्वर्ण। ४. बिडग।
वि० भस्म करनेवाला।

भस्मकारी (रिन्)—वि० [सं० भस्मन्√कृ (करना)+णिनि] जलाकर भस्म करनेवाला।

भस्म-गंधा—स्त्री० [स० ब० स०,+टाप्] रेणुका (गंधद्रव्य)।

भस्म-गर्भ—पु० [सं० ब० स०] तिनिश वृक्ष।

भस्म-गर्भा—स्त्री०[ब० स०,+टाप्] १ रेणुका नामक गंध-द्रव्य। २. शीशम।

भस्म-जाबाल—पु० [सं०] एक उपनिषद् का नाम।

भस्मता—स्त्री० [सं० भस्मन्+तल्+टाप्] भस्म होने की अवस्था या भाव।

भस्म-तूल—पुं० [सं० भस्मन्√तूल्+क] तुषार। पाला।

भस्म-प्रिय—पुं० [सं० ब० स०] शिव। महादेव।

भस्म-वेधक—पुं० [उप० मि० स०] कपूर।

भस्म-शयन—पुं० [सं० ब० स०] शिव।

भस्मशायी (यिन्)—पुं० [सं० भस्मन्√शी (शयन करना)+णिनि] शिव।

भस्मसात्—वि० [सं० भस्मन्+साति] जो जलकर भस्म या राख हो गया हो। भस्मीभूत।

भस्म-स्नान—पु० [स० तृ० त०] सारे शरीर में राख मलना। (साधु)

भस्माग्नि—स्त्री० [सं० भस्मन्-अग्नि, मध्य० स०] भस्मक रोग।

भस्मावशेष—पु०[स० भस्म-अवशेष, कर्म० स० या ब० स०] किसी चीज के पूरी तरह से जल जाने पर बचनेवाली उसकी राख या और किसी प्रकार का पूर्ण विनष्ट अश।

भस्मासुर—पु० [स० भस्मन्-असुर, मध्य० स०] एक प्रसिद्ध राक्षस जिसने शिव जी से यह वर प्राप्त किया था कि जिसके सिर पर मै हाथ रखूँ वह भस्म हो जाय। पर जब वह शिव को ही भस्म करने चला, तब कृष्ण ने उसे मार डाला था।

भस्मित—भू० कृ० [सं० भस्मन+इतच्] १ भस्म किया या जलाया हुआ। २ जो जलकर भस्म हो चुका हो।

भस्मीभूत—भू० कृ० [स० भस्मन्+च्वि, इत्व, दीर्घ, भस्मी√भू+क्त] जो पूरी तरह से जलकर राख हो चुका हो।

भस्सड़—वि० [अनु० भस्म] बहुत मोटा और भद्दा (विशेषत आदमी)।

भस्सी—स्त्री० [?] कोयले, चूने आदि का महीन चूर्ण।

भहराना—अ० [अनु०] १. झोके से गिर या फिसल पडना। एकाएक गिर पड़ना। २. किसी पर अचानक वेगपूर्वक टूट पडना। ३ किसी काम मे सारी शक्ति लगाकर और जोरो से लगना। (व्यग्य)

भहूँ†—स्त्री०=भौंह।

भाँई—पु० [हिं० भाना=घुमाना] खरादनेवाला। खरादी। कूनी।

भाँउर†—स्त्री०=भाँवर।

भाँऊँ*—पु० [म० भाव] अभिप्राय। आशय।

भाँकड़ी—पु० [देश०] एक प्रकार का जंगली झाड़ जो गोखरू से मिलता-जुलता होता है।

भाँग—स्त्री० [स० भृंग या भृगी] एक प्रसिद्ध क्षुप जिसकी पत्तियाँ मादक होती हैं, और नशे के लिए पीसकर पी जाती हैं।
मुहा०—**भाँग छानना**=भाँग की पत्तियो को पीसकर और छानकर नशे के लिए पीना। **भाँग खा जाना या पी जाना**=नशे की सी बाते करना। नासमझी की या पागलपन की बातें करना। **घर में भूँजी भाँग न होना**=बहुत ही कंगाल या दरिद्र होना।
पु० [?] वैश्यो की जाति।

भाँगड़ा†—पु०=भँगडा।

भाँगर—स्त्री० [हिं० भाँगना=तोड़ना] धातु आदि की गर्द या छोटे छोटे कण।

भाँज—स्त्री० [हिं० भाँजना] १. भाँजने की क्रिया या भाव। २ किसी चीज के भाँजे जाने के कारण पड़नेवाला चिह्न या रेखा। ३. वह धन

जो रुपया, नोट आदि भँजाने अर्थात् भुनाने के बदले मे दिया जाय। भुनाई। ४ ताने का सूत। (जुलाहे)

स्त्री० [स० भज] बारी।

भाँजना—स० [हि० भँजना] १ किसी लम्बी चौडी चीज की परत या पल्ले लगाना। तह करना। मोडना। जैसे—कपडा या कागज भाँजना। २ तलवार, पटा, मुगदर, लाठी आदि के सम्बन्ध में, हाथ मे लेकर अभ्यास, प्रदर्शन, वार, व्यवहार आदि के लिए इधर-उधर घुमाना। ३ दो या कई लडो को एक मे मिलाकर बटना या मरोडना।

भाँजा†—पु० भानजा।

भाँजी—स्त्री० [हि० भाँजना तोडना] ऐसी बात जो जान-बूझकर किसी का काम बिगाडने के लिए किसी दूसरे से कही जाय।

मुहा०—भाँजी मारना=किसी से किसी के विरुद्ध उक्त प्रकार की बात कहना।

भाँट—पु० भाट।

†पु० =भंटा (बेंगन)।

भाँटा†—पु० भटा (बैंगन)।

भाँड़—पु० [स० भांड, प्रा० भाँडा] १ बरतन। भाँडा। २ घी, तेल आदि रखने का कुप्पा। ३ कोई उपकरण या औजार। ४. वाद्य-यत्र। बाजा। ५ खरीदा या बेचा जानेवाला माल। ६ नदी का पेट। ७ गदभाड वृक्ष।

पु० [स० भड] १ एक जाति जिसके पुरुषो का पेशा नाटक आदि खेलना, गाना-बजाना, हास्यपूर्ण स्वाँग भरना, नकले उतारना आदि है। २ वह व्यक्ति जो बहुत अधिक तथा प्राय निम्न कोटि के परिहास से लोगो को हँसाता रहता हो। मसखरा। विदूषक। ३ बोल-चाल मे ऐसा व्यक्ति जिसके पेट मे बात न पचती हो और जो कोई बात सुन लेने पर सब जगह कहता-फिरता हो। ४. भाँडो का-सा गुल-गपाडा या हो-हल्ला।

भांड—पु० [स०√भण् (शब्द)+ड+अण्] १ पात्र। बरतन। २ मूलधन। पजी। ३ भूषण। ४ गर्दभाड वृक्ष।

भाड-कला—स्त्री० [सं०] मिट्टी के बरतन आदि बनाने की कला।

भाड-गोरक—पु० [स०ष० त०] वह जो प्राचीन काल मे बौद्ध विहारो मे बरतन आदि सुरक्षापूर्वक रखने का काम करता था।

भाँड़ना*—अ० [स० भड] १ व्यर्थ इधर-उधर घूमना। मारे मारे फिरना। २ किसी पर अनुरक्त होना। ३. किसी ओर प्रवृत्त होना। ४ किसी प्रकार के कष्ट का अनुभव करना। उदा०—सो बोलै जा को जिउ भाँडै।—जायसी।

स० १ किसी के अपराधो, कुकृत्यो, दोषो आदि की जगह जगह चर्चा करके उसे बदनाम करना। २ किसी का भडा फोडना या उसे नष्ट-भ्रष्ट करना। बिगाडना।

भाड-पति—पु० [स० ष० त०] व्यापारी।

भाँडपन—पु० [हि० भाँड+पन (प्रत्य०)] १ भाँड़ होने की अवस्था या भाव। २ भाँड़ो का सा आचरण।

भांड-शाला—स्त्री० [स० ष० त०] भंडार।

भाँड़ा—पु० [स० भाण्ड] खाने-पीने की चीजें आदि रखने का बरतन। बासन। पात्र। (पश्चिम)

मुहा०—भाँड़े भरना=पश्चात्ताप करना। पछताना। उदा०—रिसनि आगे कहि जो आवनि अब लै भाँडे भरति।—सूर।

†पु० =भाँडपन।

भांडागार—पु० [स० भाड-आगार] १. वह आगार या कोठरी जिसमें वस्तुएँ विशेषत घरेलू उपयोग की वस्तुएँ रखी जाती हैं। २ भंडार।

भांडागारिक—पु० [स० भाडागार+ठन्—इक] भाडागार या भडार का प्रधान अधिकारी।

भांडार—पु० [स० भाड√ऋ (गति)+अण्] १ वह कमरा या कोठरी जिसमे घरेलू उपयोग मे आनेवाली तरह तरह की बहुत सी वस्तुएँ रखी जाती है। २ वह स्थान जहाँ बेची जानेवाली बहुत सी चीजें जमा की तथा सुरक्षित रखी जाती है। (स्टाक) ३. आधार स्थान। ४ कोश। खजाना।

भाडार-पजी—स्त्री० [स० ष० त०] वह पजी या बही जिसमे भाडार मे रखी जानेवाली चीजों की सख्या और विवरण लिखा रहता है। (स्टाक-बुक)

भांडार-पाल—पु० [स० भाडार√पाल्+णिच्+अच्] १ भाडार का मुख्य अधिकारी। २ वह जिसका भाडार हो। भडार का स्वामी। (स्टाकिस्ट)

भांडारी(रिन)—पु० [स० भाडार+इनि] भाडारपाल। (दे०)

भाँडपो†—पु० भाँडपन।

भाँण—पु० भान (सूर्य)। उदा०—जाँणे उदयाचल उगइ छइ भाँण। नरपति नाल्ह।

†पु० भाण।

भाँत*—स्त्री० [स० भक्ति] १ तरह। प्रकार। २ किसी चीज की बनावट या रचना का विशिष्ट ढग या प्रकार। तर्ज। परिरूप। (डिजाइन)

भाँत-भतीला†—वि० [हि० भाँत+अनु० भतीला] [स्त्री० भाँत-भतीली] (वस्त्र) जिस पर अनेक प्रकार की आकृतियाँ, बेल-बूटे आदि बने हो।

भाँति—स्त्री० [स० भाँति] १ तरह। प्रकार। जैसे—वहाँ भाँति भाँति की चीजे रखी हुई थी। २ चाल-ढाल। रग-ढग। ३ आचार, व्यवहार आदि की मर्यादा। ४ प्रथा। रीति। रग-ढग।

भाँपना—स० [?] १ क्रियाओं चेष्टाओ, परिस्थितियो, लक्षणो आदि से यह अनुमान करना कि वस्तु-स्थिति क्या है, किसी के मन मे क्या है अथवा कोई छिपकर क्या करना चाहता है अथवा क्या कर रहा है। २ देखना। (बाजारू)

भाँपू—वि० [हि० भाँपना] भाँपनेवाला।

भाँभी†—पु० [?] मोची। (डि०)

भाँयँ भाँयँ—पु० [अनु०] १ नितात एकात स्थान या सन्नाटे मे हवा के चलने से होनेवाला शब्द। २ ऐसी परिस्थिति या वातावरण जिसमे बहुत अधिक उदासीनता या सूनापन जान पड़े।

मुहा०—(किसी स्थान का) भाँयँ भाँयँ करना=बहुत ही उदास, डरावना और सूना मान पड़ना।

भाँरी†—स्त्री० =भाँवर।

भाँवता†—पु० भावता।

भाँवना—स० [सं० भ्रमण] १. किसी चीज को खराद आदि पर रख कर घुमाना। २. खरादना। कुनना ३. अच्छी तरह गढ़कर सुन्दर और सुडौल बनाना। ४ दही या मट्ठा मथना। उदा०—मट्ठा भाँवने के समय हँसुली नाचती होगी। —वृंदावनलाल वर्मा।

अ० १. चक्कर या फेरा लगाना। २ व्यर्थ इधर-उधर घूमना।

भाँवर—स्त्री० [सं० भ्रमण] १. चारो ओर घूमना या चक्कर काटना। घुमरी लेना। २ परिक्रमा। फेरी।

मुहा०—भाँवर भरना=परिक्रमा करना।

३. विवाह हो चुकने पर वर और वधू के द्वारा की जानेवाली अग्नि की परिक्रमा।

क्रि० प्र०—पड़ना।—पारना।—फिरना।—भरना।—लेना।

४. हल जोतने के समय एक बार खेत के चारो ओर घूम आना।

†पु०=भौरा।

भाँवरी *—स्त्री०=भाँवर।

भाँस—स्त्री० [?] आवाज। शब्द।

भा—स्त्री० [सं०√भा (प्रकाश करना)+अङ्+टाप्] १ दीप्ति। चमक। २ प्रकाश। रोशनी। ३. छटा। छवि। शोभा। ४ किरण। रश्मि। ५ बिजली। विद्युत्।

अव्य० [हिं० भाना] यदि इच्छा हो।

भाइ*—पु० [सं० भाव] १ प्रेम। प्रीति। मुहब्बत। २. प्रकृति। स्वभाव। ३ मन मे उठनेवाला भाव या विचार।

स्त्री० [हिं० भाँति] १. भाँति। प्रकार। तरह। २. चाल-ढाल। रग-ढग।

†स्त्री० =भट्ठी। (राज०)

पु० [सं० भाव] १ भाव। विचार। २. प्रीति। प्रेम। ३ स्वभाव। स्त्री० आभा। चमक।

भाइप*—पु० [हिं० भाई+प (पन) (प्रत्य०)] १. भाईचारा। २. गहरी दोस्ती। घनिष्ठ मित्रता।

भाई—पु० [सं० भ्रातृ] १ किसी प्राणी के सबध के विचार से वह नर प्राणी जो उसी के माता-पिता अथवा माता या पिता से उत्पन्न हुआ हो। भ्राता। सहोदर। २ एक ही वश या परिवार की किसी एक पीढ़ी के व्यक्ति की दृष्टि से उसी पीढ़ी का कोई दूसरा पुरुष। जैसे—चाचा का लड़का =चचेरा भाई, फूफी का लड़का=फुफेरा भाई, मौसी का लड़का मौसेरा भाई, मामा का लड़का =ममेरा भाई। ३. अपनी जाति या समाज का कोई ऐसा व्यक्ति जिसके साथ समानता का व्यवहार होता है। जैसे—जाति भाई, मुंह बोला भाई।

†अव्य०—भई। (सम्बोधन)

भाईचारा—पु० [हिं० भाई+सं० आचार] दो व्यक्तियों या पक्षो मे होने-वाला ऐसा आत्मीयतापूर्ण सबंध जिसमे सामाजिक अवसरों पर भाइयो की तरह आपस मे लेन-देन होता है।

भाई-दूज—स्त्री० [हिं० भाई+दूज] कार्तिक शुक्ल द्वितीया। भयादूज। (इस दिन बहन अपने भाई को टीका लगाती, भोजन कराती तथा फल, मिठाई आदि देती है।)

भाईपन—पु० [हिं० भाई+पन (प्रत्य०)] १. भाई होने की अवस्था या भाव। भ्रातृत्व। २. घनिष्ठ आत्मीयता या बंधुता। भाई-चारा।

भाई-बंद—पु० [हिं० भाई+बंधु] १. भाई और मित्र-बधु आदि। २. अपनी जाति बिरादरी या नाते के ऐसे लोग जिनके साथ भाइयो का-सा व्यवहार होता हो।

भाई-बंधु—पुं०= भाई-बद।

भाई-बिरादरी—स्त्री० [हिं० भाई+बिरादरी] एक ही जाति या समाज के वे लोग जिनके साथ आत्मीयता का और भाइयो का-सा व्यवहार होता हो।

भाउ*—पु० [सं० भाव] १. मन मे उत्पन्न होनेवाला भाव या विचार २. प्रीति। प्रेम। ३ दे० 'भाव'।

पु० [सं० भव] १. उत्पत्ति। २. जन्म।

भाऊ*—पु० [सं० भाव] १. मन मे उठनेवाला भाव, भावना या विचार। २. प्रीति। प्रेम। स्नेह। ३ प्रकृति। स्वभाव। ४. अवस्था। दशा। हालत। ५ महत्व। महिमा। ६. आकृति। रूप। ७ प्रभाव। ८. मनोवृत्ति।

भाएँ*—क्रि० वि० [सं० भाव] समझ मे। बुद्धि के अनुसार।

भाकर—पु० [सं०] १. पुराणानुसार नैर्ऋत्य कोण मे का एक देश। २. भास्कर। सूर्य।

वि० १ भा अर्थात् प्रकाश करनेवाला। २. दमकानेवाला।

भाकसी—स्त्री० [सं० भस्मी] १. भट्ठी। २. भाड़। भड़साई।

भाकुर—स्त्री० [सं०?] १ एक प्रकार की मछली जिसका सिर बहुत बड़ा होता है। २ दे० 'भकाऊँ'।

वि० बहुत बड़ा और विकराल।

भाकूर—स्त्री० [सं०] एक तरह की मछली।

भा-कोश—पु० [सं० ष० त०] सूर्य।

भाक्त—वि० [सं० भक्ति या भक्त+अण्] १. जिसका पालन-पोषण दूसरे लोग करते हो। दूसरों की कृपा से जीवित रहनेवाला। परा-श्रित। २ जो खाये जाने के योग्य हो। खाद्य। ३. कम महत्त्व का या घट कर। गौण। जैसे—कुछ साहित्यकार ध्वनि को भाक्त (गौण और लक्षण-गम्य) मानते है।

पु० चावल।

भाख†—पु०=भाषण।

भाखना*—स० [सं० भाषण] कहना। बोलना।

भाखर—पु० [?] पर्वत। पहाड़। (डिं०)

भाखा—स्त्री० [सं० भाषा] १ मुँह से कही हुई बात। कथन। २ मध्य-युग मे हिंदी भाषा के लिए प्रयुक्त होनेवाली उपेक्षासूचक सज्ञा। ३. बोली। भाषा।

भाग—पु० [सं०√भज् (विभाग करना)+घञ्] १ किसी चीज के कई खडों, टुकड़ो या विभागो मे से हर एक। हिस्सा। (पार्ट) जैसे—पुस्तक का पहला और दूसरा भाग छप गया है, तीसरा और चौथा अभी छपना बाकी है। २. किसी चीज की किसी ओर या दिशा का अश या पार्श्व। जैसे—(क) मकान का अगला भाग। ३. किसी समूची और पूरी चीज का कोई अश। (पोर्शन) जैसे—पेट के बीच का भाग। ४. किसी चीज का एक चौथाई अश। ५. वृत्त की परिधि का ३६० वाँ अश। ६. गणित की वह क्रिया जिससे कोई सख्या कई बरा-बर खडों या टुकड़ो मे बाँटी जाती है। तकसीम। (डिवीजन) जैसे—

१०० को ४ से भाग करो। ७ ज्योतिष मे, राशि चक्र की किसी राशि का ३९ वाँ अंश। ८ जगह स्थान। ९ तकदीर। भाग्य। नसीब। १०. ऐश्वर्य या वैभव से युक्त होने की अवस्था। सौभाग्य। ११ भाल या ललाट जहाँ भाग्य का अवस्थान माना जाता है। १२ उष:काल। तडका। मोर। १३ पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र। १४. एक प्राचीन देश।

भागक—पु० [स० भागसे] लिखाई, छापे आदि मे एक प्रकार का चिह्न जो दो राशियो या सख्याओ के बीच मे रहकर इस बात का सूचक होता है कि पहलेवाली राशि या सख्या को बादवाली राशि या सख्या से भाग देना चाहिए। इस प्रकार लिखा जाता है, ÷।

भाग-कल्पना—स्त्री० [स० ष० त०] बँटवारा।

भागड़—स्त्री० [हि० भागना + ड़ (प्रत्य०)] १ वैसी ही उतावली या जल्दी जैसी कही से भागने के समय होती है। जैसे—तुम्हे तो हर काम की भागड़ पडी रहती है। २. दे० 'भगदड'।

क्रि० प्र०—पड़ना।—मचना।

भागण*—वि० [स्त्री० भागणी] भाग्यवान्।

भागदुह—पु० [स० भाग√दुह् (दुहना) + क] प्राचीन काल मे राजकर उगाहनेवाला एक अधिकारी।

भाग-दौड़—स्त्री० [हि० भागना + दौड़ना] १ किसी काम या बात के लिए होनेवाली दौड-धूप। २ दे० 'भागड'।

भाग-धान—पु० [स० ष० त०] कोश। खजाना।

भागधेय—पु० [स० भाग-धेय] १ भाग्य। तकदीर। किस्मत। २ राज को दिया जानेवाला उसका अश या भाग जो कर के रूप में होता है। ३ सगोत्र या सपिड लोग। दायाद।

भागना—अ० [स० भाज्] १. आपत्ति, भय आदि उपस्थित होने अथवा दिखाई देने पर उससे बचने के लिए कही से जल्दी जल्दी चल या दौड कर दूर निकल जाना। पलायन करना। जैसे—सिपाही को देखते ही चोर भाग गया।

सयो० क्रि०—जाना।—निकलना।—पडना

मुहा०—सिर पर पैर रखकर भागना—बहुत तेजी से भागना। जल्दी चलकर दूर हो जाना।

२ किसी काम या बात से पीछा छुडाने या बचने के लिए आगा-पीछा करना। वहाँ से टलने या हटने का विचार करना। जैसे—जहाँ कोई कठिन काम आता है, वही तुम भागना चाहते हो।

सयो० क्रि०—जाना।

३ किसी काम, बात या व्यक्ति को बुरा समझकर उससे बिलकुल अलग या दूर रहना। जैसे—मैं तो सदा ऐसे कामो से दूर भागता हूं।

विशेष—प्राय लोग भ्रम से 'दौड़ना के अर्थ मे भी इसका प्रयोग करते हैं। जो ठीक नही है।

भागनेय—पु० [स० भागिनेय] बहन का बेटा। भानजा।

भाग-फल—पु० [स० ष० त०] गणित मे वह सख्या जो भाज्य को भाजक से भाग देने पर प्राप्त हो। लब्धि। जैसे—यदि १०० को २० से भाग दें तो भाग-फल ५ होगा।

भाग-भरा—वि० [हि० भाग्य + भरना] [स्त्री० भाग-भरी] १. भाग्यवान् (व्यक्ति)। २ भाग्यवान् बनानेवाला या सौभाग्यपूर्ण (पदार्थ)।

भाग-भरी—स्त्री० [हि० भाग-भरा] १. सौभाग्यशालिनी स्त्री। २. जोरू या पत्नी के लिए सम्बोधन। ३ सूर्य की संक्राति। (स्त्रियाँ)

भाग-भुक (ज्)—पु० [स० भाग√भुज् (खाना) + क्विप्] राजा।

भागम भाग—क्रि० वि० [हि० भागना] १ भागते या दौडते हुए। २. बहुत अधिक जल्दी मे।

स्त्री० =भागा-भाग।

भागरा—पु० [देश०] सगीत मे एक सकर राग जिसे कुछ सगीतज्ञ श्रीराग का पुत्र मानते है।

भागवत—वि० [स० भाग्यवत] जिसका भाग्य बहुत अच्छा हो। भाग्यवान।

भागवत—वि० [स० भाग्यवत् या भगवती अण्] १ भगवत् अर्थात् विष्णु सम्बन्धी। भगवत् या विष्णु का। २ भगवत् अर्थात् विष्णु की उपासना और सेवा करनेवाला।

पु० १. ईश्वर या भगवान का भक्त। हरि भक्त। २ एक पुराण जिसमें १२ स्कध, ३१२ अध्याय और १८००० श्लोक है। ३. दे० 'देवी भागवत'। ४ वैष्णव। ४ भगवान् बुद्ध का अनुयायी या भक्त। ५ एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण मे १३ मात्राएँ होती हैं।

भागवत-धर्म—पु० [स० कर्म० स०] एक प्राचीन धर्म या भक्ति-प्रधान संप्रदाय जो कि वि० पू० तृतीय शताब्दी मे चला था।

भागवती—स्त्री० [स० भाग्यवत + ङीप्] एक तरह की कठी जो वैष्णव भक्त पहनते है।

भागवान—वि० =भाग्यवान्।

भागहर—वि० [स० भाग√हृ + अच्] भाग या अश पाने या लेनेवाला। हिस्सेदार।

भागहारी (रिन्)—वि० [स० भाग√हृ (हरण करना) + णिनि] हिस्सेदार।

पु० उत्तराधिकारी।

भागाभाग—स्त्री० [हि० भागना] वह स्थिति जिसमे सब लोगों को भागने की पडी होती है। भाग-दौड। भागड़।

क्रि० वि० १ जल्दी जल्दी दौडते हुए। २ बहुत जल्दी मे या तेजी से।

भागार्थ (र्थन्)—वि० [स० भाग√अर्थ + णिनि,] जो अपना भाग या हिस्सा प्राप्त करना या लेना चाहता हो।

भागार्ह—वि० [स० भाग-अर्ह, ष० त०] १ जिसके भाग हो सकें। विभक्त होने के योग्य। २. जिसे अपना भाग या हिस्सा प्राप्त करने का अधिकार हो।

पु० उत्तराधिकारी।

भागिक—वि० [स० भाग+ठन्-इक] १ भाग या हिस्से से सबध रखनेवाला। २ भाग या हिस्से के रूप मे होनेवाला। ३ (मूलधन) जिस पर सूद मिलता हो।

भागिता—स्त्री० [स० भागिन् + तल + टाप्] १ भागी अर्थात् हिस्सेदार होने की अवस्था या भाव। २ वह स्थिति जिसमे दो या अधिक लोग हिस्सेदार बनकर कोई उद्योग या व्यापार चलाते है। (पार्टनरशिप)

भागिनेय—पुं०[सं० भगिनी+ढक्—एय] [स्त्री० भागिनेयी] बहन का लड़का। भानजा।

भागी (गिन्)—पुं० [सं० √भज्+घिनुण] १ वह जो किसी प्रकार का भाग पाने का अधिकारी हो। हिस्सेदार। २. वह जिसने किसी के कार्य में सहायता दी हो और फलत. अपने उतने कार्य के फल का पात्र या भाजन हो। जैसे—पाप का भागी।

पु० शिव।

भागीरथ—पुं०=भगीरथ।

वि०[सं० भगीरथ+अण्] भगीरथ-संबंधी।

भागीरथी—स्त्री० [सं० भागीरथ+ङीप्] १. गंगा नदी। जाह्नवी। २. बंगाल की एक नदी जो गंगा में मिलती है। ३ हिमालय की एक चोटी जो गढ़वाल के पास है।

भागुरि—पु०[सं०] सांख्य के भाष्यकर्ता एक ऋषि का नाम।

भागू—वि०[हिं० भागना+ऊ (प्रत्य०)] भागनेवाला।

पु० भगोड़ा।

भागौत†—पु०=भागवत।

भाग्य—वि०[सं०√भज्+ण्यत्, कुत्व] जिसके भाग अर्थात् हिस्से हो सकते हों या होने को हो। भागार्ह।

पु० १ वह ईश्वरीय या दैवी विधान जिसके संबंध में यह माना जाता है कि प्राणियों, विशेषत मनुष्यों के जीवन में जो घटनाएँ घटती हैं, वे पूर्व-निश्चित और अवश्यंभावी होती है और उन्हीं के फलस्वरूप मनुष्यों को सब प्रकार के सुख-दुःख प्राप्त होते है और उनके जीवन का क्रम चलता है। किस्मत। तकदीर। नसीब।

विशेष—साधारणत लोक में इसका निवास मनुष्य के ललाट में माना जाता है।

क्रि० प्र०—खुलना।—चमकना।—फूटना।

पद—भाग्य का साँढ़-बहुत बड़ा भाग्यवान्। (परिहास और व्यंग्य)

मुहा० के लिए देखें 'किस्मत' के मुहा०।

२ उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र का एक नाम।

भाग्यदा—स्त्री०[सं० भाग्य√दा (देना)+क+टाप्] चिट्ठी निकालकर टिकट खरीदनेवालों में इनाम बाँटने की पद्धति जिसमें केवल भाग्य से ही लोगों को धन मिलता है। (लॉटरी)

भाग्य-पत्रक—पु०[सं०मध्य० स०] आकस्मिक रूप से उठाई या चुनी हुई दो या अधिक परचियों में से कोई एक जिस पर कुछ लिखा रहता और जिसके अनुसार धन-संपत्ति आदि का बँटवारा, कोई नियुक्ति या निश्चय किया जाता है। (लाट)

भाग्य-भाव—पु०[ष० त०] जन्म-कुंडली में जन्म-लग्न से नवाँ स्थान जहाँ से मनुष्य के भाग्य के शुभाशुभ का विचार किया जाता है। (फलित-ज्योतिष)

भाग्य-योग—पु०[सं० ष० त०] ऐसा अवसर या समय जिसमें किसी का भाग्य खुलता या चमकता हो।

भाग्य-लिपि—स्त्री०[सं० ष० त०] भाग्य में लिखी हुई बातें।

भाग्य-वश—अव्य०[सं० ष० त०] भाग्य या किस्मत से ही (बुद्धि बल या प्रयत्न से नहीं)।

भाग्य-वशात्—अव्य०[सं० ष० त०]=भाग्य-वश।

भाग्य-वाद—पु०[सं० ष० त०] यह विचार-धारा या सिद्धान्त कि भाग्य में जो कुछ बदा या लिखा है वह अवश्य होगा और जितना बदा या लिखा है उतना नियत समय पर अवश्य प्राप्त होगा।

भाग्यवादी (दिन्)—वि०[सं० भाग्यवाद+इनि] भाग्यवाद-संबंधी।

पु० वह जो भाग्य पर भरोसा रखता हो।

भाग्यवान् (वत्)—वि०[सं०=भाग्य+मतुप्] जो भाग्य का धनी हो। अच्छे भाग्यवाला। भाग्यशाली।

भाग्य-विधाता (तृ)—पु० [सं० ष० त०] किसी के भाग्य का विधान अर्थात् भला-बुरा निश्चित करनेवाला।

भाग्य-विप्लव—पु०[सं० ष० त०] अच्छे भाग्य का बिगड़कर बुरा होना। दुर्भाग्य।

भाग्यशाली (लिन्)—वि०[सं०भाग्य√शाल्+णिनि] भाग्यवान्। (दे०)

भाग्य-संपद्—स्त्री०[ष० त०] अच्छा भाग्य। सौभाग्य।

भाग्य-हीन—वि०[सं० तृ० त०] अभागा। बद-किस्मत।

भाग्योदय—पु० [सं० भाग्य-उदय, ष० त०] भाग्य का खुलना। सौभाग्य का समय आना।

भाजक—वि० [सं० √भज्+ण्वुल्—अक] १. विभाग करनेवाला। २ बाँटनेवाला।

पु० गणित में वह राशि या संख्या जिससे भाज्य को भाग दिया जाता जाता है। (डिवाइज़र)

भाजकांश—पु०[सं०भाजक-अंश, कर्म० स०] गणित में, वह संख्या जिससे किसी राशि को भाग देने पर शेष कुछ भी न बचे। गुणनीयक।

भाजन—पु०[सं०√भाज् (पृथक् करना)+ल्युट्—अन] १ बरतन। २. आधार। ३ किसी काम या बात का अधिकारी या पात्र। जैसे—कृपा-भाजन, कोप-भाजन, विश्वास-भाजन आदि। ४. आढक नामक तौल। ५ भाग करना। (गणित)

भाजनता—स्त्री०[सं० भाजन+तल्+टाप्] १. भाजन होने की अवस्था या भाव। २ पात्रता। योग्यता।

भाजना*—अ० भागना।

भाजित—भू० कृ०[सं० √भाज्+क्त, इत्व] १ बाँटकर अलग किया हुआ। विभक्त। २ (संख्या) जिसको दूसरी संख्या से भाग दिया जाय।

भाजी—स्त्री०[सं०√भाज्+घञ्+ङीप्] १. माँड। पीच। २ तरकारी, साग आदि चीजें। ३. मेथी। ४ मांगलिक अवसरों पर सम्बन्धियों आदि के यहाँ भेजे जानेवाले फल और मिठाइयाँ।

क्रि० प्र०—देना।—बाँटना।

५ भाग। हिस्सा।

भाज्य—पु०[सं०√भाज्+ण्यत्] जिसका विभाजन हो सके। जिसके हिस्से किये जा सके।

पु० गणित में वह संख्या जिसका भाजक से भाग किया जाता है।

भाट—पु०[सं० भट्ट] [स्त्री० भाटिन] १. राजाओं के यश का वर्णन करनेवाला कवि। चारण। बंदी। २ एक जाति जिसके लोग राजाओं का यश-गान करते थे; और अब कुलों, परिवारों आदि की वंशावलियाँ याद रखते और उनकी कीर्ति का वर्णन करते हैं। ३. राजदूत। ४.

खुशामद करनेवाला पुरुष। खुशामदी पुरुष। खुशामदी। ५ दे० 'भाटक'।

†पुं०=भाठ।

भाटक—पु० [सं०√भट् (पालन करना)+ण्वुल्—अक] १ भाड़ा। किराया। २ लगान।

भाटक-अधिकारी—पु०[स० ष० त०] १. भाडे की उगाही करनेवाला अधिकारी। २ वह शासनिक अधिकारी जो मकान मालिक और किरायेदारों से सपर्क स्थापित करता और उनके विवादो को निर्णीत करता है। (रेन्ट आफिसर)

भाटा—पु०[हिं० भाट] १ समुद्र के जल की वह अवस्था जब वह ज्वार या चढ़ाव के बाद वेगपूर्वक पीछे हटने या उतरने लगता है। (एबटाइड) २. उक्त के फलस्वरूप आस-पास की नदियो में होनेवाला पानी का उतार।

†पु०=भटा (बेंगन)।

भाटिया—पु०[स० भट्ट] क्षत्रियो, खत्रियो आदि का एक वर्ग या जाति।

भाटी†—स्त्री०[हिं० भाटा] नदियों आदि में पानी के बहाव की दिशा। (मल्लाह)

स्त्री०=भट्ठी।

भाट्यौ *—पु०[हिं० भाट] भाट का काम। भटई। भाट-पन।

भाठ—पु०[हिं० भाठना या भरना] १. वह मिट्टी जो नदी अपने साथ चढाव मे बहाकर लाती है और उतार के समय कछार मे ले जाती है। २. नदी के दो किनारो के बीच की भूमि। ३. नदी का किनारा। तट। ४ नदी के बहाव का रुख। उतार। 'चढाव' का विपर्याय। ५. दे० 'भाट'।

भाठन—स०[?] नष्ट या बरबाद करना। उदा०—जलमय थल करि देहु जलधि सब थल भरि भाठौ।—रत्नाकर।

भाठा—पु० [हिं० भाठ] १ गड्ढा। २. दे० 'भाटा'।

भाठी—स्त्री० [हिं० भाठा] नदी या समुद्र के पानी का उतार।

†स्त्री०=भट्ठी।

भाड़—पु० [स० भ्राष्ट्र,—पा० भट्ठो] १ अन्न के दाने भूनने की भड़-भूँजो की भट्ठी। २ लाक्षणिक अर्थ मे, ऐसा स्थान जहाँ सब कुछ नष्ट हो जाता हो।

पद—भाड़ में पडे या जाय—हमे कुछ चिन्ता या परवाह नही है। (उपेक्षा-सूचक)

मुहा०—भाड़ झोंकना=बहुत ही तुच्छ और व्यर्थ का काम करना। **भाड़ में झोकना या डालना**=(क) नष्ट या बरबाद करना। (ख) बहुत ही उपेक्षापूर्वक परित्याग करना।

पु० [स० भाटक] १ वेश्या की आमदनी या कमाई। २ दे० 'भाडा'।

भाड़ा—पु० [सं० भाट] १ वह धन जो किसी की चीज का कुछ समय तक उपयोग करने के बदले मे दिया जाता है। किराया। जैसे—दूकान या मकान का भाडा। २ वह धन जो कोई चीज या किसी व्यक्ति को यान आदि पर ले जाकर कही पहुँचाने के बदले मे दिया या लिया जाता है। किराया। जैसे—गाडी, नाव या रेल का भाड़ा।

पद—भाड़े का टट्टू=(क) थोडे दिन तक रहनेवाला। जो स्थायी न हो। क्षणिक। (ख) वह जो केवल धन के लोभ से (मन लगाकर नही) दूसरो का कोई काम करता हो। (ग) ऐसा पदार्थ जो किसी आधार पर ही काम करता हो, स्वत. काम देने मे बहुत कुछ असमर्थ हो। जैसे—अब तो यह शरीर भाड़े का टट्टू हो गया है।

पु० [सं० भरण] वह दिशा जिधर वायु बहती हो।

मुहा०—भाड़े पड़ना=जिधर वायु जाती हो, उधर नाव को चलाना। नाव को वायु के सहारे ले जाना। भाडे फेरना=जिधर हवा का रुख हो, उधर नाव का मुँह फेरना।

पुं० एक प्रकार की घास जो प्राय हाथ भर ऊँची होती और चारे के काम आती है।

भाड़ू—पु० [हिं० भाँड़] मूर्ख। बेवकूफ।

पु०=भड़ुआ।

भाण—पु० [स०√भण् (कहना)+घञ्] १ एक अक का एक प्रकार का हास्य-रस-प्रधान नाटक जिसमे एक ही पात्र होता है जो किसी कल्पित व्यक्ति से वार्तालाप करता है। २ व्याज। मिस। ३ ज्ञान। बोध।

भाणिका—स्त्री० [स० भाण+कन्+टाप्, इत्व] एक अक का एक तरह का छोटा नाटक जिसका नायक मन्दगति और नायिका प्रगल्भा होती है।

भात—पु०[स० भक्त, पा० भत] १ खाने के लिए उबाले हुए चावल। २ विवाह की एक रस्म जो विवाह के दूसरे या तीसरे दिन होती है। इसमे दोनो समधी साथ बैठकर भात खाते है।

पु० [स०√भा (दीप्ति)+क्त] १ प्रभात। तड़का। २ चमक। दीप्ति।

भाता—पु० [स भक्त=भत्त] उपज का वह भाग जो हलवाहे को खलिहान की राशि म से मिलता है।

भाति—स्त्री० [स०√भा+क्तिन्] १ शोभा। काति। २ चमक। दीप्ति।

†स्त्री०=भाँति।

भातिजा†—पु०=भतीजा।

भातु—पु० [स०√भा+तु] सूर्य।

भाथा—पु० [स० भस्त्रा, पा० भत्था] १ तरकस। २ बडी भाथी।

भाथी†—स्त्री० [स० भस्त्रा—पा० भत्थी] लोहारो की धौकनी जिससे वे आग सुलगाते हैं।

भादों—पु० [सं० भाद्र, पा० भद्दो] भाद्रपद मास।

भाद्र—पु० [स० भद्रा+अण्+ङीप्, भाद्री+अण्] भाद्रपद या भादो नाम का महीना।

भाद्र-पद—पु० [स०भद्र+अण्, भाद्र-पद, ब०स०, +टाप्, भाद्रपदा+अण्+ङीप्; भाद्रपदी+अण्] १ भादों नाम का महीना। २ बृहस्पति के उस वर्ष का नाम जब वह पूर्व भाद्रपदा या उत्तर भाद्रपदा मे उदय होता है।

भाद्र-पदा—स्त्री० [स० दे० भाद्रपद] पूर्वाभाद्रपदा और उत्तरा भाद्र-पदा दो नक्षत्र।

भाद्र-मातुर—वि० [सं० भद्रमातृ+अण्, उकारादेश] जिसकी माता सती हो। सती का पुत्र।

भान—पु० [सं०√भा (प्रकाश करना)+ल्युट्—अन] १. प्रकाश।

रोशनी। २. चमक। दीप्ति। ३. ज्ञान। बोध। ४. किसी चीज या बात के लक्षणों से होनेवाला ज्ञान। आभास। उदा०—हो गया भस्म वह प्रथम भान।—निराला।
†पुं०=भानु (सूर्य)।
†पुं० दे० 'तुंग' (वृक्ष)।

भानजा—पु० [हिं० बहन+जा] [स्त्री० भानजी] बहिन का लड़का। भागनेय।

भानना*—स० [सं० भजन, मि० प० भन्नना] १. भग्न करना। काटना या तोड़ना। २. नष्ट या बरबाद करना। ३. दूर करना। हटाना।
†स० [हिं० भान] १. आभास देखकर भान या ज्ञान प्राप्त करना। २. अनुमान से समझना।

भानमती—स्त्री० [स० भानुमती] जादू के खेल दिखलानेवाली स्त्री। जादूगरनी।
पद—भानमती का कुनबा—जहाँ-तहाँ से लिए हुए बेमेल उपादानों से बनी वस्तु। भानमती का पिटारा=वह आधान जिसमें तरह-तरह की चीजें मौजूद हों। (व्यंग्य)

भानवीय—वि० [स० भानु+छ—ईय, गुण] भानु-संबंधी। भानु का।
पु० दाहिनी आँख।

भाना*—अ० [सं० भान=ज्ञान] १. भान या आभास होना। जान पड़ना। मालूम होना। २ रुचिकर प्रतीत होना। अच्छा लगना। पसन्द आना। ३ शोभित जान पड़ना। फबना। सोहना।
स० [स० भा] १. उज्ज्वल करना। चमकाना। २ दीप्त या प्रकाशमान करना। ३. चारों ओर चक्कर देना। घुमाना। उदा०—चले पिता का चक्र नियम से, बैठ शिला पर तू धम-धम से, उठे एक आकृति क्रम क्रम से, भली भाँति मैं भाऊँ।—मैथिलीशरण गुप्त।

भानु—पु० [स० भा+नु] १ सूर्य। २ आक। मदार। ३ प्रकाश। ४. किरण। ५ विष्णु। ६ कृष्ण के एक पुत्र का नाम। ७. उत्तम मन्वंतर के एक देवता। ८ राजा। ९. वर्तमान अवसर्पिणी के पंद्रहवें अर्हत् के पिता का नाम। (जैन)
स्त्री० [स०] १ सुन्दर स्त्री। सुन्दरी। २. दक्ष की एक कन्या।

भानु-कंप—पु० [स० ष० त०] भारतीय ज्योतिष मे, कुछ अवसरों पर सूर्य-ग्रहण के समय सूर्य के बिंब मे होनेवाला कंपन जो अमंगल-सूचक माना गया है।

भानु-किरणी—स्त्री० [स०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

भानु-केशर—पु० [स० ब० स०] सूर्य।

भानुज—वि० [स० भानु√जन् (उत्पन्न करना)+ड] [स्त्री० भानुजा] भानु से उत्पन्न।
पु० १. यम। २. शनैश्चर। ३. कर्ण।

भानुजा—स्त्री० [सं० भानुज+टाप्] १. यमुना (नदी)। २. राधिका।

भानु-तनया—स्त्री० [स० ष० त०] यमुना (नदी)।

भानु-दिन—पुं० [सं० ष० त०] रविवार।

भानु-दीपक—पु० [सं०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

भानु-देव—पुं० [सं० कर्म० स०] सूर्य।

भानु-पाक—पुं० [स० तृ० त०] १. सूर्य के ताप में कोई चीज पकाने की क्रिया। २. वह चीज विशेषतः ओषधि जो धूप मे रखकर पकाई गई हो।

भानु-प्रताप—पु० [स० ब० स०] १. रामचरित मानस मे वर्णित एक राजा जो कैकय देश के राजा सत्यकेतु का पुत्र था तथा जो दूसरे जन्म में रावण के रूप मे जन्मा था। २. संगीत में, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

भानु-फला—स्त्री० [सं० ब० स०,+टाप्] केला।

भानु-मंजरी—स्त्री० [सं०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

भानु-मत्—वि० [स० भानु+मतुप्] १. प्रकाशमान्। चमकीला। २. सुन्दर।
पु० १. सूर्य। २. श्री कृष्ण का एक पुत्र।

भानुमती—स्त्री० [सं० भानुमत्+ङीप्] १. विक्रमादित्य की रानी जो राजा भोज की कन्या थी। २. अंगिरस की एक कन्या। ३. दुर्योधन की स्त्री। ४. राजा सगर की एक स्त्री। ५. गंगा। ६. जादूगरनी। ७. संगीत में कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

भानु-मुखी—पुं० [स० ब० स०,+ङीप्] सूर्यमुखी। (पौधा और फूल)

भानु-वार—पु० [सं० ष० त०] रविवार।

भानु-सुत—पु० [स० ष० त०] १. यम। २. मनु। ३. शनैश्चर। ४. कर्ण।

भानु-सुता—स्त्री० [स० ष० त०] यमुना (नदी)।

भाप—स्त्री० [सं० वाष्प; पा० वप्प] १. किसी तरल पदार्थ विशेषतः जल का वह अदृश्य वाष्पीय रूप जो उसे खौलाने पर प्राप्त होता है तथा जिसका आज-कल शक्ति के प्रमुख साधन के रूप में उपयोग होता है। (स्टीम)
क्रि० प्र०—उठना।—निकलना।
२. मुँह से निकलनेवाली हवा।
मुहा०—भाप भरना=पक्षियों का अपने छोटे बच्चो के मुँह में मुँह मिलाकर उनमें अपने साँस की हवा फूँकना जिससे वे सशक्त होते हैं। भाप लेना=भाप के द्वारा शरीर अथवा उसके किसी अंग को सेंकना।
३ भौतिक शास्त्र में, घन या द्रव पदार्थ की वह अवस्था जो उनके बहुत तपकर वायु में विलीन होते समय अथवा कुछ विशिष्ट रासायनिक प्रक्रियाओं के द्वारा होता है। (वेपर)

भापना—स० [हिं० भाप] भाप भरना (भाप के अन्तर्गत मुहा०)।
†अ०=भाँपना।

भाफ—स्त्री०=भाप।

भाबर—पु० [स० वप्र] १. तलहटी और तराई के मध्य के जंगलों की संज्ञा। २. एक तरह की घास जिसे बटकर रस्सी का रूप दिया जाता है। बनकस। बबरी। बबई।

भाभर—पुं०=भाबर।

भाभरा*—वि० [हिं० भा+भरना] १. प्रकाशयुक्त। २. लाल। रक्ताभ।

भाभरी—स्त्री० [अनु०] १. गरम राख। भूमल। २. रास्ते की धूल। (पालकी ढोनेवाले कहार)

भाभी—स्त्री० [दरदी पीपी बूआ] सबंध के विचार से भाई की विशेषत बडे भाई की स्त्री। भौजाई।

भाभी रग†—पु० दे० 'बायबिडग'।

भा-मडल—पु० [स० ष० त०] १. प्रकाशमान् पिंडो के चारों ओर कुछ दूरी तक दिखाई पडनेवाला प्रकाश जो मडलाकार होता है। २ तेजस्वी पुरुषो, देवताओ आदि के चित्रों मे उनके मुख-मडल के चारो ओर दिखाया जानेवाला प्रकाशमान घेरा। परिवेश। प्रभा-मडल। (हैलो)

भाम—पु० [स०√भाम् (क्रोध करना)+घञ्] १ क्रोध। २ दीप्ति। चमक। ३ प्रकाश। रोशनी। ४ सूर्य। ५. बहनोई। ६ एक प्रकार का वर्णवृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण मे मगण, मगण और अन्त मे तीन सगण होते हैं।
†स्त्री०=भामा।

भामक—पु० [स० भाम+कन्] बहनोई।

भामता—वि० [स्त्री० भामती] भावता (प्रियतम)।

भामतीय—पु० [हि० भ्रमना] एक जाति जो दक्षिण भारत मे घूमा करती है और चोरी तथा ठगी से जीविका निर्वाह करती है।

भामनी—वि० [स० भाम√नी (ढोना)+क्विप्] प्रकाश करनेवाला।
पु० १ ईश्वर। २ मालिक। स्वामी।

भामा—स्त्री० [स० भाम+अच्+टाप्] १ स्त्री। २ क्रुद्ध स्त्री। ३ दे० 'सत्यभामा'।

भामिणि†—स्त्री० भामिनी।

भामिन*—स्त्री० भामिनी।

भामिनि*—स्त्री० भामिनी।

भामिनी—स्त्री० [स०√ भाम्+णिनि,+ङीप्] १ युवती तथा सुन्दर स्त्री। कामिनी। २ सदा क्रुद्ध रहनेवाली अथवा बहुत जल्दी क्रुद्ध हो जानेवाली स्त्री। ३ मोदक नामक छन्द का दूसरा नाम।

भामी (मिन्)—वि० [स०√भाम्+णिनि] [स्त्री० भामिनी] क्रुद्ध। नाराज।
स्त्री० क्रोधी स्वभाव की स्त्री।

भाय†—पु० १ =भाव। २ =भाई।
पु०=भाँति (प्रकार)।

भायप—पु० [हि० भाई+प पन (प्रत्य०)] १ भाईपन। भ्रातृभाव। २ भाईचारा।

भाया†—वि०=भावता।
पु०=भाई।

भारगी—स्त्री० [स०] एक प्रकार का पौधा जसकी पत्तियाँ महुए की पत्तियो से मिलती हुई, गुदार और नरम होती है और जिनका साग बनाकर खाते हैं। बम्हनेटी। भृगजा। असबरग।

भार—पु० [स०√भृ+ (भरण करना)+घञ्, वृद्धि] [वि० भारित] १ काँटे, तुला आदि की सहायता से जाना जानेवाला किसी चीज के परिणाम का गुरुत्व। वजन। (वेट) २. ऐसा बोझ जो किसी अग, यान, वाहन आदि पर रखकर ढोया या कही ले जाया जाता है। बोझ। (लोड)
क्रि० प्र०—उठाना।—ढोना।—रखना। —लादना।
३ वह बोझ जो बँहगी के दोनो पल्लो पर रखकर ले जाया जाता है। उदा०— भरि भरि भार कहारन आना।—तुलसी।
क्रि० प्र०—उठाना।—काँधना।—ढोना।—मरना।
४ ऐसा अप्रिय, अरुचिकर या कठिन काम या उत्तरदायित्व जो कहीं से बलात् आकर पडा हो, अथवा जिसका वाहन विवशता तथा कष्टपूर्वक किया जा रहा हो। (बर्डन, उक्त दोनो अर्थो में) जैसे—आज-कल मुझ पर कई कामो का भार आ पडा है।
क्रि० प्र०—उठाना।—उतरना।—उतारना।
५ किसी प्रकार का कार्य चलाने, कोई देन चुकाने या किसी प्रकार की देखरेख, रक्षा, सँभाल आदि करने का उत्तरदायित्व। कार्य-भार। (चार्ज) जैसे—अब उन पर भाई के बाल-बच्चों का भी भार आ पडा है। ६ बधक या रेहन पडे रहने अथवा ऋण-ग्रस्त होने की अवस्था या भाव। (एन्कम्बेरेन्स)
क्रि० प्र०—उठाना।—उतरना।—उतारना।—देना।—देखना।
७. आश्रय। सहारा। उदा०—दुहूँ के भार सृष्टि सुम रही।—जायसी। ८ दो हजार पल या बीस पसेरी की एक पुरानी तौल। ९ विष्णु का एक नाम।
†अव्य० ओर। बल। जैसे—मुँह के भार गिरना।
पु० [स० भट] वीर। शूर।
†पु० १ =भाड। २. =भाडा।

भारक—पु० [स० भार+कन्] १ भार। २ एक तौल।

भार-कन्द्र—पु० [स० ष० त०] गुरुत्व का केन्द्र।

भारजीवी (विन्)—पु० [स० भार√जीव (जीना)+णिनि] भार ढोकर जीविका उपार्जन करनेवाला मजदूर। भारवाहक।

भारत—पु० [स० भरत+अण्, वृद्धि] १ वह जो भरत के गोत्र मे उत्पन्न हुआ हो। २ [भरत+अण्] हमारा यह भारतवर्ष नामक देश। दे० 'भारतवर्ष'। ३ भारतवर्ष का निवासी। ४ महाभारत नामक काव्य का वह पूर्व रूप जब वह २४००० श्लोको का था। दे० 'महाभारत'। ५ उक्त ग्रथ के आधार पर घमासान या घोर युद्ध। ६ उक्त ग्रथ के आधार पर कोई बहुत लबा-चौडा विवरण या व्याख्या। ७ अग्नि। आग। ८ अभिनेता। नट।

भारतखंड—पु०=भारतवर्ष।

भारतनंद—पु० [स०] ताल के साठ मुख्य भेदो मे से एक। (सगीत)

भारत-यूरोपीय—पु० [हि०] आधुनिक भाषा-विज्ञान के अनुसार उन भाषाओ का वर्ग या समूह जो भारत, ईरान और यूरोप, अमेरिका, के अनेक देशो मे बोली जाती हैं।

भारत-रत्न—पु० [स० ष० त०] स्वतत्र भारत मे एक सर्वोच्च उपाधि जो उच्चकोटि के विद्वानों तथा राष्ट्रसेवियो को प्रदान की जाती है।

भारत-वर्ष—पु० [स० मध्य० स०] हमारा यह महादेश जिसके उत्तर मे हिमालय, दक्षिण में भारतीय महासागर, पश्चिम मे पश्चिमी पाकिस्तान और पूर्व मे पूर्वी पाकिस्तान तथा बरमा या ब्रह्मदेश है। हिन्द। हिन्दुस्तान।
विशेष—पुराणानुसार यह जबू द्वीप के अन्तर्गत नौ वर्षों या खडों मे से एक है और हिमालय के दक्षिण तथा गगोत्तरी से लेकर कन्या-

कुमारी तक और सिन्धु नदी से ब्रह्मपुत्र तक विस्तृत है। आर्यावर्त। हिन्दुस्तान।

भारतवर्षीय—वि० [सं० भारतवर्ष+छ—ईय] भारतवर्ष-संबंधी। भारतवर्ष का।

भारतवासी(सिन्)—पु० [सं० भारत√वस् (निवास करना)+णिनि] भारतवर्ष का निवासी। हिन्दुस्तान का रहनेवाला।

भारत-विद्या—स्त्री० [सं०] पुरातत्त्व की वह शाखा जिसमें भारतवर्ष के प्राचीन इतिहास, दर्शन, धर्म, भाषातत्त्व, साहित्य आदि का अनुसंधानात्मक अध्ययन और विवेचन होता है। (इण्डोलॉजी)

भारति—स्त्री०=भारती।

भारती—स्त्री० [सं०√भृ (भरण करना)+अतच्,+अण्+ङीप्] १. वचन। वाणी। २ सरस्वती। ३. साहित्य में एक प्रकार की वृत्ति (पुरुषार्थसाधक व्यापार) जिसका प्रयोग मुख्यतः रौद्र तथा वीभत्स रस में होता था परन्तु आज-कल इसका संबंध पाठ्य अभिनय और रसाभिनय से जोड़ा गया है। ४ एक प्राचीन नदी का नाम। ५. एक प्राचीन तीर्थ। ६ दश-नामी सन्यासियों का एक भेद या वर्ग। जैसे—स्वामी परमानन्द भारती। ७ ब्राह्मी नाम की बूटी। ८ एक प्रकार का पक्षी।

भारतीय—वि० [सं० भारत+छ—ईय] १ भारत देश में उत्पन्न होनेवाला अथवा उससे संबंध रखनेवाला। जैसे—भारतीय पूँजी, भारतीय विचारधारा, भारतीय व्यापार। २ (व्यक्ति) जो भारत में बसी हुई अथवा रहनेवाली किसी जाति का हो। जैसे—भारतीय मुसलमान या भारतीय मसीही।

भारतीयकरण—पु० [सं०] किसी विदेशी ज्ञान, पदार्थ, विद्या आदि को ग्रहण करके उसे आत्मसात् करते हुए भारतीय रूप देने की क्रिया या भाव। (इन्डियनाइजेशन)

भारतीय वृत्त—पु० [सं० कर्म० स०] =भारत-विद्या।

भार-तुला—स्त्री० [सं०] वास्तुविद्या के अनुसार स्तंभ के नौ भागों में से पाँचवाँ भाग जो बीच में होता है।

भारथ*—पु० [हिं० भारत] १. भारतवर्ष। २ महाभारत। ३. युद्ध। लड़ाई।

पु० [सं०] भारद्वाज नामक पक्षी। भरदूल।

भारथी—पु० [सं० भारत] योद्धा। सैनिक।

स्त्री० =भारती।

भारथ्य—पु० [सं० भारत] घमासान या घोर युद्ध।

भारदंड—पु० [सं० ष० त०] १ एक प्रकार का साम। २ बँहगी।

पु० [हिं० भार+दंड] एक प्रकार का दंड जिसमें दंड करनेवाला साधारण दंड करते समय अपनी पीठ पर एक दूसरे आदमी को बैठा लेता है। (कसरत)

भारद्वाज—पु० [सं० भरद्वाज+अल्] १ भरद्वाज के कुल में उत्पन्न व्यक्ति। २ एक ऋषि जिनका रचा हुआ श्रौतसूत्र और गृह्यसूत्र है। ३ द्रोणाचार्य। ४ बृहस्पति का एक पुत्र। ५. मंगल ग्रह। ६. एक प्राचीन देश। ७ अस्थि। हड्डी। ८. भरदूल पक्षी।

भारद्वाजी—स्त्री० [सं०] जंगली कपास का पौधा और उसकी रूई।

भार-धारक—पु० [सं० ष० त०] वह जो भार विशेषतः कार्यभार धारण कर रहा हो। (चार्ज-होल्डर)

भारना*—स० [हिं० भार] १ भार या बोझ लादना। २. किसी पर अपने शरीर का भार या बोझ देना या रखना। ३. दबाना।

भार-प्रमाणक—पु० [सं० भारण-प्रमाणक] वह प्रमाणक (प्रमाण-पत्र) जो इस बात का सूचक हो कि अमुक व्यक्ति ने दूसरे को अमुक कार्य, पद, कर्तव्य आदि का भार सौंप दिया है। (चार्ज सर्टिफिकेट)

भारभृत—वि० [सं० भार√भृ+क्विप्, तुक्—आगम] बोझ ढोनेवाला।

भारमापी (पिन्)—पु० [सं० भार√मा+णिच्, पुक्,+णिनि] एक प्रकार का यंत्र जिससे पदार्थों का विशिष्ट गुरुत्व या तुलनात्मक भार जाना जाता है। (ग्रैवीमीटर)

भारमिति—स्त्री० [सं० ष० त०] [वि० भारमितीय] तरल और घन पदार्थों का विशिष्ट गुरुत्व या भार जानने की कला या विद्या।

भारय—पु० [सं० भा√रय् (गति)+अच्] एक तरह का पक्षी। भरदूल।

भार-यष्टि—स्त्री० [सं० ष० त०] बहँगी।

भारव—पु० [सं० भार√वा (प्राप्त होना)+क] धनुष की रस्सी। ज्या।

भारवाह—वि० [सं० भार√वह् (ढोना)+अण्] १ भार ढोनेवाला। २ कार्य-भार का वहन करनेवाला।

पु० बहँगी ढोनेवाला व्यक्ति।

भारवाह-अधिकारी—पु० [सं० कर्म० स०] वह अधिकारी जिस पर किसी पद और उससे संबंध रखनेवाले कार्यों का भार हो। अवधायक अधिकारी। (आफिसर इनचार्ज)

भारवाहक—वि०, पुं० [सं० ष० त०] =भारवाह।

भार-वाहन—पु० [सं० ष० त०] बोझ ढोने की क्रिया या भाव।

भार-वाही(हिन्)—वि०, पु० [सं० भार√वह्+णिनि]=भारवाह।

भारवि—पु० [सं०] 'किरातार्जुनीय' नामक महाकाव्य के रचयिता संस्कृत भाषा के एक प्रसिद्ध कवि।

भार-हानि—स्त्री० [सं० ष० त०] भार या वजन में होनेवाली कमी।

भारहारी (रिन्)—पु० [सं० भार√हृ+णिनि] पृथ्वी का भार उतारनेवाले, विष्णु।

भारा—वि० भारी।

पु० [हिं० भार] १ बोझ। २ भार या बँहगी जिस पर बोझ ढोते हैं। उदा०—लिअ फल मूल भेंट भरि भारा।—तुलसी।

†पु० भाला।

भाराक्रांत—वि० [सं० भार-आक्रांत, तृ० त०] [भाव० भाराक्रांति] १ जिसके ऊपर किसी प्रकार का बड़ा भार हो। २ भार से पीड़ित तथा व्यथित। ३ (संपत्ति) जिस पर देन आदि का भार उसे रेहन रखकर डाला गया हो। (हाइपाथेकेटेड)

भाराक्रांता—स्त्री० [सं० भाराक्रांत+टाप्] एक प्रकार का वार्णिक वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण में न भ न र स और एक लघु और एक गुरु होते हैं और चौथे, छठे तथा सातवें वर्ण पर यति होती है।

भाराक्रांति—स्त्री० [सं० भार-आक्रांति, तृ० त०] १. भाराक्रांत होने

की अवस्था या भाव। २. रेहन रखकर संपत्ति पर देन का भार रखना। (हाइपॉथेकेशन)

भारि—पु० [सं० ष० त०, पृषो० इ-लोप] सिंह।

भारिक—वि० [सं० भार+ठन्—इक] १. बोझ ढोनेवाला। २. जिसमे भार हो या जिसके कारण भार पड़े। दे० 'निर्णायक'। जैसे—भारिक मत।

भारिक मत—पु० [सं० कर्म० स०] दे० 'निर्णायक मत'।

भारित—भू० कृ० [सं० भार+इतच्] १ जिस पर कोई भार या बोझ हो। २ जिस पर किसी प्रकार का ऋण या देन हो। (एनकम्बर्ड)

भारी—वि० [हिं० भार] १. अधिक भारवाला। जो आसानी से न उठाया या वहन किया जा सके अथवा जिसे उठाने या वहन करने मे अधिक सामर्थ्य या शक्ति व्यय होती हो। जैसे—भारी पत्थर। २. अपेक्षित या सामान्य मात्रा आदि से बहुत अधिक। जैसे—भारी वर्षा, भारी भूकप, भारी फसल तथा भारी बहुमत। ३ (शरीर अथवा उसका अंग) जिसमे कुछ विकार या दर्द हो और फलत इसी लिए जो सुस्त और निकम्मा-सा हो गया हो। जैसे—उनका शरीर या सिर आज कुछ भारी है।

मुहा०—**आवाज भारी होना**=गले से ठीक तरह से आवाज या स्वर न निकलना। **पेट भारी होना**=खाये हुए पदार्थों का ठीक से न पचने के कारण पेट मे अपच जान पड़ना। **सिर भारी होना**=सिर मे थकावट जान पड़ना और हलकी पीड़ा होना। **कान भारी होना**=अच्छी तरह सुनाई न पडना। (स्त्री का) **पैर भारी होना**=गर्भवती होना। पेट मे बच्चा होना।

३ व्यक्ति के संबध मे, जिसके मन मे अभिमान, रोष या इसी प्रकार का और कोई विकार हो; और इसी लिए जो ठीक तरह से बातचीत न करता या सरल तथा स्वाभाविक व्यवहार न करता हो। जैसे—(क) आज-कल वे हमसे कुछ भारी रहते हैं। (ख) आज उनका मुँह कुछ भारी जान पड़ता है।

मुहा०—**(किसी अवसर पर) भारी रहना**=(क) कुछ न बोलना। चुप रहना। (दलाल) जैसे—अभी तुम भारी रहो, पहले देख लो कि वे क्या कहते हैं। (ख) धीमी या मन्द गति से चलना। (कहार)

४ कार्यों, प्रयत्नो आदि के संबध मे, जिसमे कोई कठिनता या विकटता हो। जैसे—तुम्हे तो हर काम भारी मालूम होता है। ५ समय के संबध मे, जिसमे अधिक कष्ट होता हो या जिसे बिताना सहज न हो। जैसे—(क) गरमी के दिनो मे यहाँ की दोपहर भारी होती है। (ख) आज की रात इस रोगी के लिए भारी है।

क्रि० प्र०—पडना।—लगना।

६ वस्तुओ, व्यक्तियो आदि के सम्बन्ध मे, जिसका किसी पर कोई अनिष्ट परिणाम या प्रभाव पड़ता हो या पड सकता हो। जैसे—यह लड़का अपने पिता (या भाई) पर भारी है, अर्थात् हो सकता है कि इसके ग्रहो के फलस्वरूप इसके पिता (या भाई) का कोई बहुत बड़ा अनिष्ट हो।

क्रि० प्र०—पडना।

७ बहुत बडे या विशाल आकार-प्रकार या रूप-रंग वाला। बहुत बड़ा। बृहत्। जैसे—(क) उनके यहाँ भारी भारी पुस्तकें देखने मे आईं। (ख) उनका भाषण भारी भारी शब्दो से भरा था। (ग) सावन में यहाँ भारी मेला लगता है। ८ जो औरो की तुलना मे बहुत अधिक बड़ा, महत्त्वपूर्ण या मान्य हो। बहुत बड़ा। जैसे—वे दर्शनशास्त्र के भारी विद्वान् हैं।

पद—**भारी भरकम या भड़कम**=बहुत बडा और भारी। जैसे—भारी भरकम गठरी। **बहुत भारी**=बहुत बड़ा।

९. बहुत अधिक। अत्यन्त। जैसे—यह तुम्हारी भारी मूर्खता है। १०. जो किसी प्रकार से असह्य या दुर्वह हो। जैसे—(क) क्या मेरा ही दम तुम्हें भारी है? (ख) मुझे अपना सिर भारी नही पड़ा है, जो मै उनसे लड़ने जाऊँ।

क्रि० प्र०—पडना।—लगना।

११ किसी की तुलना मे अधिक प्रबल या बलवान। जैसे—वह अकेला दो आदमियों पर भारी है।

क्रि० वि० बहुत अधिक। उदा०—गो व्यग्य तुम पै डरपौं भारी।—कबीर।

भारीपन—पु० [हिं० भारी+पन (प्रत्य०)] भारी होने की अवस्था या भाव। गुरुत्व।

भारी पानी—पु० [हिं०] १ जलाशयों, नदियो आदि का ऐसा पानी जिसमें खनिज पदार्थों की मात्रा अपेक्षया अधिक हो। २ आधुनिक रसायनशास्त्र मे पानी की तरह का एक मिश्र पदार्थ जो आक्सीजन और भारी हाइड्रोजन के योग से बनता है और जिसका उपयोग परमाणुओ के विस्फोट मे होता है। (हेवी वाटर)

भारुड—पु० [सं०] १ रामायण के अनुसार एक वन जो पजाब मे सरस्वती नदी के पूर्व मे था। २ एक ऋषि। ३. एक पक्षी।

भारु—पु० [हिं० भारी] धीरे चलने के लिए एक संकेत जिसका व्यवहार कहार करते है।

वि० [हिं० भार] १ भारी। २ जो बोझ या भार के रूप मे हो या जान पड़े। प्राय असह्य। जैसे—लडकी हमे भारु नही पडी है।

भा-रूप—पु० [सं० ब० स०] १ आत्मा। २ ब्रह्मा।

भारोद्वह—वि० [सं० भार+उद्√वह् (ढोना)+अच्] भार ले जानेवाला। भारवाहक।

पु० मजदूर।

भारोपीय—पु० भारत-युरोपीय।

भार्गव—वि० [सं० भृगु+अण्] १ भृगु के वंश मे उत्पन्न। २. भृगु सम्बन्धी। भृगु का। जैसे—भार्गव अस्त्र।

पु० १ भृगु के वंश मे उत्पन्न व्यक्ति। २ परशुराम। ३. शुक्राचार्य। ४. मार्कण्डेय। ५ जमदग्नि। ६ च्यवन ऋषि। ७ एक उप-पुराण का नाम। ८ पुराणानुसार भारतवर्ष के अन्तर्गत एक पूर्वीय देश। ९ हीरा। १० हाथी। ११. श्योनाक। १२ नीला भँगरा। १३ कुम्हार। १४ उत्तर प्रदेश के उत्तरी भागो मे बसी हुई एक हिन्दू जाति।

भार्गव-क्षेत्र—पु० [सं०] दक्षिण भारत के आधुनिक मलयालम प्रदेश का पुराना नाम।

विशेष—प्रवाद है कि परशुराम के परशु फेकने से यह प्रदेश बना था, इसी से इसका यह नाम पड़ा।

भार्गवी—स्त्री०[सं० भार्गव+ङीप्] १. पार्वती। २. लक्ष्मी। ३. दूब। ४. उड़ीसा की एक नदी।

भार्गवीय—वि०[सं० भार्गव+छ—ईय] भृगु-संबंधी। भार्गव।

भार्गवेश—पुं०[सं० भार्गव-ईश, ष० त०] परशुराम।

भार्गायन—पुं०[सं० भर्ग+फञ्-वृद्धि-आयन] भर्ग के गोत्र मे उत्पन्न व्यक्ति।

भार्गी—स्त्री०[सं० भर्ग+अण्+ङीप्] भारगी।

भार्य—वि० -सं०[√भृ(भरण करना)+ण्यत्, वृद्धि] जिसका भरण किया जाने का हो या किया जाय।

पुं०१. नौकर। सेवक। २. आश्रित व्यक्ति। ३. आयुधजीवी। योद्धा।

भार्य्या—स्त्री०[सं०] जोरू। पत्नी।

भार्याजित—वि०[स० तृ० त०] भार्या या जोरू के वश मे रहनेवाला।

पुं० एक तरह का हिरन।

भार्याट—पुं०[स० भार्या√अट् (जाना)+अण्, उप० स०] वह जो किसी दूसरे पुरुष को भोग के लिए अपनी भार्या या पत्नी दे। अपनी स्त्री का दूसरे पुरुष के साथ सम्बन्ध करानेवाला व्यक्ति।

भार्याटिक—वि० [स० भार्याट+ठन्—इक]जोरू का गुलाम। स्त्रैण।

पु० १ एक प्राचीन मुनि। २. एक प्रकार का हिरन।

भार्यात्व—पुं०[स० भार्या+त्व] भार्या होने का भाव। पत्नीत्व।

भार्यारु—पुं०[स० भार्या√ऋ (जाना)+उण्] १. एक प्रकार का हिरन। २ एक प्राचीन पर्वत। ३ वह व्यक्ति जिसके वीर्य से परस्त्री को पुत्र हुआ हो।

भार्या-वृक्ष—पुं०[स० मध्य० स०] पतग नामक वृक्ष।

भाल—पुं०[सं०√भा (प्रकाश करना)+लच्] १. भौहो के ऊपर का भाग जो भाग्य का स्थान माना गया है। कपाल। ललाट। मस्तक। माथा। २ तेज।

†पुं० १ =भाला। २ =भालू (रीछ)।

भाल-चंद्र—पुं०[स० ब० स०]१ महादेव। २ गणेश।

भाल-चंद्री—स्त्री०[स० ब० स०,+ङीष्] दुर्गा।

भाल-दर्शन—पुं०[स० ब० स०] सिंदूर। सेंदुर।

भालना—स०[स० निभालन]१ ध्यानपूर्वक देखना। अच्छी तरह देखना। जैसे—देखना-भालना। २ तलाश करना। ढूँढना।

भाल-नेत्र, भाल-लोचन—पुं०[सं० ब०स०] शिव, जिनके मस्तक मे एक नेत्र है।

भालबी†—पुं०[स० भल्लुक] रीछ। भालू। (डिं०)

भालांक—पुं०[स०भाल-अंक, ब० स०]१ करपत्र नामक अस्त्र। २. एक प्रकार का साग। ३. रोहू मछली। ४. कछुआ। ५. महादेव। ६. ऐसा मनुष्य जिसके शरीर मे बहुत अच्छे लक्षण हों। (सामुद्रिक)

भाला—पुं० [स० भल्ल] एक प्रसिद्ध अस्त्र जिसमे बड़े और मोटे डंडे के सिरे पर नुकीला बडा फल लगा रहता है। बरछा। नेजा।

भालाबरदार—पुं० [हिं० भाला+फा० बरदार] भाला या बरछा उठाने अर्थात् धारण करनेवाला। योद्धा। बरछैत।

भालि*—स्त्री०[हिं० भाला का स्त्री० अल्पा०] १. बरछी। साँग। २. काँटा। शूल।

भालिम—पुं० [हिं० भला] भलापन। भलाई। उदा०—भालिम दिन दिन चढ़ि भरण।—प्रिथीराज।

भालिया—पुं० [देश०] वह अन्न जो हलवाहे को वेतन में दिया जाता है। भाता।

†पुं०=भाला-बरदार।

भाली—स्त्री० [हिं० भाला] १. छोटा भाला। २. भाले की गाँसी या नोक। ३. काँटा। शूल।

भालुक—पुं० [स०√भल् (हिंसा)+उक्+अण्] भालू। रीछ।

भालुनाथ—पुं० [हिं० भालू+स० नाथ] भालुओं का राजा। जाबवान्। जामवत।

भालू—पुं० [सं० भल्लुक] मोटे तथा लंबे काले (या भूरे) बालोंवाला एक हिंसक जगली तथा स्तनपायी चौपाया जिसे पकडकर मदारी लोग नचाते भी हैं।

भालूक—पुं० [स०√भल्+ऊक्+अण्] भालू।

भालुसुंडा—पुं० [हिं० भालू+सूँड] भूरे रग का एक तरह का रोएँदार छोटा कीड़ा जो खरीफ की फसल को हानि पहुँचाता है।

भालूसुअर—पुं० दे० 'बालू सूअर'।

भावंता—वि० =भावता।

भाव—पुं० [स०√भू (होना)+णिच्+अच्] [वि० भाविक, भावुक] १. किसी वस्तु के अस्तित्व मे आने, रहने या होने की अवस्था। प्रस्तुत या वर्तमान होने का तत्त्व या दशा। अस्तित्व। सत्ता। 'अभाव' इसी का विपर्याय है। (एग्जिस्टेन्स)। २ प्रत्येक ऐसा पदार्थ जो अस्तित्व मे आता या जन्म लेता, बढता या विकसित होता तथा अत में नष्ट हो जाता हो। ३. मन में उत्पन्न होनेवाले विचार का वह अपरिपक्व आरंभिक और मूल रूप जिसमें उसका आशय या उद्देश्य भी निहित होता है। मानस उद्भावना का वह रूप जो परिवर्धित तथा विकसित होकर विचार मे परिणत होता है। जैसे—उस समय मेरे मन मे अनेक प्रकार के भाव उत्पन्न हो रहे थे। ४ मन में उत्पन्न होनेवाली कोई भावना। खयाल। विचार। ५. कथन, लेख्य आदि का वह उद्दिष्ट और मुख्य अभिप्राय या आशय जो कुछ अस्पष्ट तथा गूढ होता है, और जो सहसा दूसरो की समझ मे नही आता। आशय। तात्पर्य। मतलब। (सेन्स) जैसे—यहाँ कवि का भाव कुछ और ही है। ६. मन मे उत्पन्न होनेवाली भावनाओ, विचारो आदि का वह आभास या छाया जो कुछ अवसरों पर आकृति आदि पर पडती और उन भावनाओं, विचारों आदि की सांकेतिक रूप मे सूचक होनी है। जैसे—उसके चेहरे पर एक भाव आता और एक जाता था।

मुहा०—भाव देना=मन का कोई भाव शारीरिक चेष्टा या अग-सचालन से प्रकट करना। उदा०—श्याम को भाव दै गई राधा।—सूर।

७. किसी चीज के प्रति होनेवाली हार्दिक भक्ति, विश्वास या श्रद्धा। उदा०—का भाखा, का सस्कृत, भाव चाहियतु साँच।—तुलसी। ८. किसी काम, चीज या बात का वह गुणात्मक अथवा धर्मात्मक तत्त्व जो उसकी मूल प्रकृति या विशेषता का आधार या सूचक होता है; और जिसकी सत्ता से पृथक् तथा स्वतंत्र मानी जाती है। (सब्स्टेन्स) जैसे—शीतल होने का भाव ही शीतलता है; इसी लिए 'शीतलता' भाव-वाचक संज्ञा है। ९. सांख्य मे, बुद्धि-तत्त्व का कार्य, धर्म या विकार जो वेदांत के अनुसार 'कर्म' है। १०. वैशेषिक में द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष और समवाय ये छः पदार्थ जिनका अस्तित्व

निश्चित तथा वास्तविक माना गया है। ११ व्याकरण में, धातु का अर्थ। १२ साहित्य में आश्रय की मानसिक स्थितियों का व्यंजक प्रदर्शन जिसमें रस की उत्पत्ति होती है, और अनेक प्रकार के शारीरिक व्यापारों से व्यक्त होती है। साहित्यकारों ने इसके स्थायी, व्यभिचारी और सात्त्विक ये तीन प्रकार या भेद कहे हैं। (देखें उक्त शब्द) १३ संगीत के सात अंगों में से पाँचवाँ अंग जिसमें गाये जानेवाले गीत में वर्णित मनोभाव, शारीरिक अंग-संचालनों और चेष्टाओं के द्वारा मूर्त रूप में प्रदर्शित किये जाते है।

मुहा०—भाव बताना=संगीत में गेय पद में वर्णित मनोभाव आंगिक चेष्टाओं के द्वारा प्रदर्शित करना। १४ चोचला। नखरा।

मुहा०—भाव बताना=कोई काम करने का समय आने पर केवल हाथ-पैर हिला कर या बातें बना कर उसे टालने का प्रयत्न करना। (बाजारू)

१५ फलित ज्योतिष में, ग्रहों की शयन, उपवेशन, प्रकाशन, गमन आदि बारह चेष्टाओं में से प्रत्येक चेष्टा या स्थिति जिसका ध्यान जन्म-कुंडली का विचार करने के समय रखा जाता है। और जिसके आधार पर फलाफल कहे जाते है। १६ ज्योतिष में साठ संवत्सरों में से आठवें संवत्सर की संज्ञा। १७ ज्योतिष में जन्म-समय का नक्षत्र। १८ चीजों आदि की वह दर या मूल्य जो प्रायः बाजारों में चलता और समय समय पर घटता-बढ़ता रहता है। निर्ख। जैसे—पहले भाव पूछ कर तब चीज खरीदनी चाहिए।

पद—भाव-ताव। (देखें)

क्रि० प्र०—उतरना।—गिरना।—घटना।—चढ़ना।—बढ़ना १९ आत्मा। २० जगत्। संसार। २१ जन्म। पैदाइश। २२ चित्त। मन। २३ कार्य, कृत्य या क्रिया। २४ कल्पना। २५. उपदेश। २६ विभूति। २७ पंडित। विद्वान। २८ पशु। जानवर। २९ भग। योनि। ३० रति-क्रीडा। संभोग। ३१ अच्छी तरह देखना। पर्यालोचन। ३२ प्रेम। मुहब्बत। स्नेह। ३३ ढंग। तरीका। ३४ तरह। प्रकार। भाँति। ३५ उपदेश। ३६ उद्देश्य। हेतु। ३७. प्रकृति। स्वभाव। ३८ कामना। वासना। ३९ अवस्था। दशा। हालत। ४० विश्वास। ४१ आदर-सम्मान। ४२ दे० 'भाव अलंकार'।

भाव-अलंकार—पु० [सं० कर्म० स०] नाट्य शास्त्र में अंगज अलंकारों का एक भेद जिसमें नायिका के वे आंगिक विकार या क्रिया व्यवहार आते है जो उसके निर्विकार चित्तावस्था में यौवनोद्‌गम के साथ साथ काम-विकार का वपन करते है।

भावइ*—अव्य०[हिं० भावना या भाना=अच्छा लगना, मि० प० भाँवे] अगर इच्छा हो तो। अगर मन चाहे तो।

भावक—वि० [सं०√भू+णिच्+ण्वुल्—अक] १ भावना करनेवाला। २ भाव से युक्त। भाव-पूर्ण। ३ उत्पन्न करनेवाला। उत्पादक। ४ किसी का अनुयायी, प्रेमी या भक्त।

पु० १ भाव। २ साहित्य-शास्त्र में, काव्य का अधिकारी पाठक।

अव्य० [सं० भाव+क (प्रत्य०)] थोड़ा सा। जरा सा। किंचित्।

भाव-गति—स्त्री० [सं० ष० त०] १ इरादा। इच्छा। २ विचार। ३ मराठी साहित्य में वह गीत जिसमें मुख्यतः मनोभावों की प्रधानता हो।

भावगम्य—वि० [सं० तृ० त०] सद्‌भाव से जाने के योग्य। जो अच्छे भाव की सहायता से जाना जा सके।

भाव-ग्रंथि—स्त्री० [सं०] दे० 'मनोग्रंथि'।

भाव-ग्राह्य—वि० [सं० तृ० त०] जिसे ग्रहण करने से पूर्व मन में सद्‌भाव लाने की आवश्यकता हो।

भावग्राही (हिन्)—वि० [सं० भाव√ग्रह् (ग्रहण करना)+णिनि] भाव या आशय समझनेवाला।

भाव-चित्र—पु० [सं० मध्य० स०] वह चित्र जो विशेषतः कोई मानसिक भाव प्रकट करने के उद्देश्य से बनाया गया हो।

भावज—वि० [सं० भाव√जन् (उत्पत्ति)+ड] भाव से उत्पन्न।

स्त्री० [सं० भ्रातृजाया, हिं० भौजाई] भाई, विशेषतः बड़े भाई की पत्नी। भाभी।

भावज्ञ—वि० [सं० भाव√ज्ञा (जानना)+क] [भाव० भावज्ञता] मन की प्रवृत्ति या भाव जाननेवाला।

भावतः—अव्य० [सं० भाव+तस्] भाव की दृष्टि से। भाव के विचार से।

भावता—वि० [हिं० भावना=अच्छा लगना+ता (प्रत्य०)] [स्त्री० भावती] जो भला लगे। मोहक। लुभावना।

पु० प्रियतम।

भाव-ताव—पु० [सं० भाव+हिं० ताव] १ किसी चीज का भाव अर्थात् दर, मूल्य आदि। निर्ख। २ किसी चीज या बात का रंग-ढंग।

क्रि० प्र०—जाँचना।—देखना।

भाव-दत्त—पु० [सं० त० त०] चोरी न करके मन में केवल चोरी की भावना करना जो जैनियों के अनुसार एक प्रकार का पाप है।

भाव-दया—वि० [सं० मध्य० स०] किसी जीव की दुर्गति देखकर उसकी रक्षा के लिए अंतःकरण में दया लाना। (जैन)

भावन—पु० [सं०√भू (होना)+णिच्+ल्युट्—अन] १. भावना। २ ध्यान। ३ विष्णु।

वि० [हिं० भाना=भला लगना] भाने या भला लगनेवाला। प्रियदर्शी।

भावना—स्त्री० [सं०√भू+णिच्+युच्—अन, +टाप्] १ मन में किसी बात का होनेवाला चिंतन। ध्यान। २ मन में उत्पन्न होनेवाली कोई कल्पना, भाव या विचार। ख्याल।

विशेष—दार्शनिक दृष्टि से यह चित्त का एक संस्कार है जो अनुभव, स्मृति आदि के योग से उत्पन्न होता है।

३. कामना। चाह। वासना। ४ वैद्यक में, औषध आदि को किसी प्रकार के रस या तरल पदार्थ में बार बार मिला कर घोंटना और सुखाना जिसमें उस औषध में रस या तरल पदार्थ के कुछ गुण आ जायँ। पुट। ५. चिन्ता। फिक्र।

क्रि० प्र०—देना।

अ०=भाना (अच्छा लगना)।

वि०=भावता या भावन (अच्छा लगनेवाला)।

भाव-नाट्य—पु० [सं० मध्य० स०] वह भाव-प्रधान नाटक जिसमें कुछ संगीत भी हो।

भावनामय-शरीर—पु० [सं० भावना+मयट्, भावनामय-शरीर, कर्म० स०] सांख्य के अनुसार एक प्रकार का शरीर जो मनुष्य मृत्यु से कुछ ही

पहले धारण करता है और जो उसके जन्म भर के किए हुए सभी कर्मों के अनुरूप होता है। कहते हैं कि जब आत्मा इस शरीर मे पहुँच जाती है, तभी मृत्यु होती है।

भावना-मार्ग—पुं० [सं० ष० त०] ईश्वर आदि का आध्यात्मिक तथा भक्तिपूर्ण मार्ग या साधन।

भावनि*—स्त्री० [हिं० भाना या भावना=अच्छा लगना] मन मे सोचा हुआ काम या बात। वह जो जी मे आया हो।

भाव-निक्षेप—पुं० [सं० ष० त०] जैनों के अनुसार, किसी पदार्थ का वह नाम जो उसका केवल प्रस्तुत स्वरूप देखकर रखा गया हो।

भावनीय—वि० [सं०√भू+णिच्+अनीयर्] चित्त या विचार मे लाये जाने के योग्य। जिसकी भावना की जा सके या हो सके।

भाव-पक्ष—पुं० [सं० ष० त०] साहित्यिक रचना का वह पक्ष जिसमे उसकी निष्पत्ति रस का सांगोपांग वर्णन या विवेचन होता है। इसमे विशेष रूप से काव्यगत भावनाओं, कल्पनाओं तथा विचारो की प्रधानता होती है।

भाव-परिग्रह—पुं० [सं० ष० त०] वह स्थिति जिसमे मनुष्य धन का संग्रह करता तो नही है अथवा नहीं कर पाता परन्तु उसमे धन-संग्रह की भावना प्रबल होती है।

भाव-प्रधान—पुं०=भाववाच्य।

वि० [सं०] जिसमे भाव या भावो की तीव्रता या प्रधानता हो।

भाव-बंध—पुं० [सं० तृ० त०] जैनों के अनुसार भावनाएँ या विचार जिनके द्वारा कर्म-तत्त्व से आत्मा बंधन मे पडती है।

भाव-भंगी—स्त्री० [सं० ष० त०] मन का भाव प्रकट करनेवाला अंग-विक्षेप। वह शारीरिक क्रिया जो मन का भाव प्रकट करनेवाली हो।

भाव-भक्ति—स्त्री० [सं० मध्य० स०] १ भक्ति-भाव। २. आदर-सत्कार। सम्मान।

भाव-मृषावाद—पुं० [सं० तृ० त०] १ वह स्थिति जिसमे मनुष्य झूठ नही बोलता पर उसके मन मे झूठ बोलने की प्रवृत्ति जागरूक होती है। २. शास्त्र के वास्तविक अर्थ को दबाकर अपना हेतु सिद्ध करने के लिए झूठ-मूठ नया अर्थ करना। (जैन)

भाव-मैथुन—पुं० [सं० तृ० त०] वह स्थिति जिसमे मनुष्य प्रत्यक्ष रूप से तो मैथुन नही करता या नही करना चाहता परन्तु उसका मन विशेषत सुप्त मन मैथुनिक विचारो में रत रहता है।

भावय—पुं० [देश०] वह व्यक्ति जो धातु की चद्दर पीटने के समय पासे को सँड़से से पकड़े रहता और उलटता रहता है।

भावर (रि)—स्त्री० [हिं० भाना] १. भाने की अवस्था या भाव। २. अभिरुचि। उदा०—भावरि अनभावरि भरे करौ कोरि बकवाद।—बिहारी।

†स्त्री०=भाँवर।

भाव-लय—स्त्री० [सं० ष० त०] वह स्थिति जिसमें शुद्ध भावात्मक धरातल पर लय की प्रतीति होती है।

भावलिपि—स्त्री० [सं० ष० त०] लिपि का वह आरंभिक और मूल प्रकार जिसमें मन के भाव या विचार अक्षरों या वर्णों के द्वारा नही, बल्कि उन भावों या विचारों के प्रतीकों के द्वारा अंकित और सूचित किये जाते थे। (आइडिओग्राफी) उत्तरी अमेरिका और मिस्र के आदिम निवासियों की लिपियो की गणना भाव-लिपि मे होती है।

भावली—स्त्री० [देश०] जमींदार और असामी के बीच उपज की होनेवाली बँटाई।

भाव-वाचक—स्त्री० [सं० ष० त०] व्याकरण मे वह संज्ञा जिससे किसी पदार्थ का भाव, धर्म या गुण आदि सूचित हो। जैसे—कुरूपता, सुशीलता, कट्टरपन, बुरापन आदि।

भाव-वाच्य—पुं० [सं० तृ० त०] व्याकरण मे वह तत्त्व जो अकर्मक क्रिया पद की उस स्थिति का सूचक होता है जब वह कर्ता का व्यापार सूचित न कर के क्रिया के व्यापार का ही बोध कराता है। उक्त अवस्था में क्रिया पद के साथ कर्ता प्रथमा विभक्ति से युक्त न हो कर तृतीया विभक्ति से युक्त होता है। जैसे—अब हाथ से कलम उठने लगी है।

भाव-विकार—पुं० [सं० ष० त०] जन्म, अस्तित्व, परिणाम, वर्धन, क्षय और नाश ये छ: विकार। (यास्क)

भाव-व्यंजक—वि० [सं० ष० त०] अच्छी तरह या स्पष्ट रूप मे भाव प्रकट या व्यक्त करनेवाला।

भाव-व्यंजन—पुं० [सं० ष० त०] मन का भाव प्रकट करने की क्रिया या दशा।

भाव-शबलता—स्त्री० [सं० ष० त०] वह स्थिति जिसमे एक एक करके अनेक भाव शृंखलाबद्ध रूप मे प्रकट होते हैं अथवा अनेक भावो का मिश्रण दिखाई पड़ता हो।

भाव-शांति—स्त्री० [सं० ष० त०] साहित्य मे वह अवस्था जब मन मे किसी नये विरोधी भाव के उत्पन्न होने पर पहले का कोई भाव शान्त या समाप्त हो जाता है।

भाव-संधि—स्त्री० [सं० ष० त०] वह स्थिति या स्थल जहाँ दो अविरोधी भावो की संधि होती है।

भाव-संवर—पुं० [सं० ष० त०] जैनो के अनुसार वह क्रिया या शक्ति जिससे मन मे नये भावो का ग्रहण रुक जाता है।

भाव-सत्य—पुं० [सं० तृ० त०] ऐसा सत्य जो ध्रुव न होने पर भी भाव की दृष्टि से सत्य हो।

भाव-सर्ग—पुं० [सं० ष० त०] तन्मात्राओ की उत्पत्ति। (सांख्य)

भाव-हरण—पुं० [सं० ष० त०] १ किसी की कविता, लेख आदि के भाव चुरा कर उन्हे अपनी मौलिक कृति के रूप मे लोगो के सामने उपस्थित करना। २ साहित्यिक चोरी। (प्लेजिअरिज़्म)

भाव-हारी (रिन्)—पुं० [सं० भाव√हृ+णिनि, उप० स०] दूसरो की कविताओ, लेखों आदि के भाव चुरा कर उन्हे अपनी मौलिक कृति बतलानेवाला व्यक्ति। (प्लेजिअरिस्ट)

भाव-हिंसा—स्त्री० [सं० स० त०] केवल मन मे किसी के प्रति हिंसापूर्ण भाव होना। ऐसी स्थिति मे मनुष्य हिंसा की भावना कार्य रूप मे परिणित नही करता।

भावांकन—पुं० [सं० भाव-अंकन, ष० त०] भावों को चित्रों या विशेष प्रकार के चिह्नों में अंकित करने की क्रिया या भाव। (आइडिओग्राफी) विशेष दे० 'चित्रलिपि'।

भावांतर—पुं० [सं० भाव-अंतर, ष० त०] १ मन की अवस्था का बदल कर कुछ और हो जाना। २. अर्थान्तर।

भावात्मक—वि० [सं० भाव-आत्मन्, ब० स०,+कप्] १. जिसमे किसी

प्रकार का मानसिक भाव भी मिला हो। २ भावों से परिपूर्ण या युक्त (रचना)। ३. जो भाव से युक्त हो अर्थात् जिसमे अभाव न हो। वि० दे० 'सहिक'।

भावानुग—वि० [सं० भाव-अनुग, ष० त०] [स्त्री० भावानुगा] भाव का अनुसरण करनेवाला।

भावानुगा—स्त्री० [स० भावानुग + टाप्] छाया।

भावापहरण—पु० = भावहरण।

भावाभाव—पु० [स०भाव-अभाव, द्व० स०] १. भाव और अभाव। होना और न होना। २. उत्पत्ति और नाश या लय। ३ जैनों के अनुसार भाव का अभाव मे अथवा वर्तमान का भूत मे होनेवाला परिवर्तन।

भावाभास—पु० [स० भाव + आभास, ष० त०] साहित्य में काव्यदोषों के अन्तर्गत वह स्थिति जिसमे कोई व्यभिचारी भाव किसी रस का पोषक न होकर स्वतत्र रूप से भाव-अवस्था को प्राप्त होता हुआ-सा दिखाई देता है।

भावार्थ—पु० [स०भाव-अर्थ] १ ऐसा विवरण या विवेचन जिसमे मूल का केवल भाव या आशय आ जाय, अक्षरश अनुवाद न हो। (शब्दार्थ से भिन्न) २ अभिप्राय। आशय। तात्पर्य। मतलब।

भावालंकार—पु० दे० 'भाव-अलकार'।

भावालीना—स्त्री० [स० भाव-आलीना, स० त०] छाया।

भावाश्रित—वि० [स० भाव-आश्रित, ष० त०] (काव्य, गीत, नृत्य आदि) जो मानसिक भावों के आधार पर स्थित हो।

पु० सगीत मे हस्तक का एक भेद। गेय पद के भाव के अनुसार हाथ उठाना, घुमाना और चलाना।

भाविक—वि० [स० भाव + ठक्—इक] १ भाव-संबंधी। भाव का। २. भाव या आशय जाननेवाला। ३. मर्मज्ञ। ४. नैसर्गिक। प्राकृतिक। ५ असली। वास्तविक। ६ भविष्य मे होनेवाला। भावी।

पु० १ ऐसा अनुमान जो अभी हुआ न हो, पर आगे चल कर होनेवाला हो। भावी अनुमान। २ साहित्य मे एक प्रकार का अलकार जिसमे भूत और भविष्यत् भावो या पदार्थों का एक साथ तथा प्रत्यक्षवत् प्रदर्शन किया जाता है।

भावित—भू० कृ० [स०√भू (होना) + णिच् + क्त] १ जिसकी भावना की गई हो। सोचा या विचारा हुआ। २ मिलाया हुआ। मिश्रित। ३ शुद्ध किया हुआ। शोधित। ४. जिसमे किसी रस आदि की भावना की गई हो। जिसमे पुट दिया गया हो। ५ किसी गध से युक्त किया हुआ। बासा या बसाया हुआ। ६ अधिकार मे आया हुआ। प्राप्त। ७ भेंट किया हुआ। अर्पित। ८. उत्पन्न। जात।

भाविता—स्त्री० [स० भाविन् + तल् + टाप्] भावी का भाव। होनहार। होनी।

भावितात्मा (त्मन्)—वि० [सं० भावित-आत्मन्, ब० स०] जिसने ईश्वर का मनन तथा चिंतन करके अपनी आत्मा शुद्ध कर ली हो।

भावित्र—पु० [सं०√भू (होना) + णित्रिन्, वृद्धि] स्वर्ग, मर्त्य और पाताल इन तीनों का समाहार। त्रैलोक्य।

भावी (विन्)—वि० [स०√भू + इनि, णित्व] १ भविष्य मे होने या घटित होनेवाला। २. जो भाग्य के विधान के अनुसार अवश्य होने को हो। किस्मत में बदा हुआ।

स्त्री० १. भविष्यत् काल। २. भविष्य मे अनिवार्य तथा निश्चित रूप से घटित होनेवाली बात या व्यापार। अवश्य होनेवाली बात। भवितव्यता।

भावुक—वि० [स०√भू (होना) + उकञ्, वृद्धि] १ भावना करने या सोचने-समझनेवाला। २ जिसके मन मे भावो का उद्वेग या सचार बहुत जल्दी होता हो। ३ (व्यक्ति) जो मन मे उठे हुए भाव के वशीभूत हो जाय और कर्तव्य-अकर्तव्य भूल जाय। ४ उत्तम भावना करनेवाला। अच्छी बाते सोचनेवाला।

पु० १. भला आदमी। सज्जन। २ कल्याण। मगल। ३. बहनोई।

भावै†—अव्य०—भावे।

भावे प्रयोग—पु० [स० व्यस्त पद] व्याकरण मे क्रिया का ऐसे रूप मे होनेवाला प्रयोग जिसमें कर्ता या कर्म के पुरुष, लिग और वचन के अनुसार उसके रूप नही बदलते, और क्रिया सदा अन्य पुरुष, पुल्लिग और एक वचन मे रहती है। (इम्पर्सनल यूज) जैसे—उन्हे यहाँ बुलाया जायगा। (विशेष दे० 'प्रयोग' के अन्तर्गत)

भावै*—अव्य० [हिं० भाना = अच्छा लगना] १ चाहे जो हो। २ जी चाहे तो। अच्छा लगे तो। ३. अथवा। चाहे। या।

भावोत्सर्ग—पु० [स० भाव-उत्सर्ग, ष०त०] क्रोध आदि बुरे भावो का त्याग। (जैन)

भावोदय—पु० [स० भाव + उदय, ष०त०] साहित्य मे एक अलकार जिसमे किसी नवीन भाव के उदय होने का उल्लेख या वर्णन होता है।

भावोन्मेष—पु० [स० भाव + उन्मेष, ष०त०] मन मे होनेवाला किसी भाव का उदय।

भाव्य—वि० [स०√भू (होना) + ण्यत्] १ जिसका होना बिलकुल निश्चित हो। अवश्य होनेवाला। अवश्यम्भावी। २. जिसकी भावना की जा सके। ३ जो प्रमाणित या सिद्ध किया जाने को हो।

भाषक—वि० [स०√भाष् (बोलना) + ण्वुल्—अक] १. भाषण करनेवाला। कहनेवाला। २ किसी रूप मे कुछ बोलनेवाला। जैसे—उच्च भाषक।

भाषण—पु० [स०√भाष् + ल्युट्—अन] १ मुँह से कह या बोलकर कोई बात कहना। २ कही हुई बात। कथन। ३ आपस मे होनेवाली बातचीत या वार्तालाप। ४ सभा, सस्था आदि मे किसी उपस्थित या प्रासगिक विषय पर धाराप्रवाह रूप मे किसी द्वारा व्यक्त किये जानेवाले विचार या प्रस्तुत किया जानेवाला विवरण। वक्तृता (स्पीच)

भाषण-स्वातंत्र्य—पु० [सं० ष० त०] अपने मन मे विचार विशेषत धार्मिक राजनैतिक या सामाजिक विषयो पर मन के विचार प्रकट करने की स्वतन्त्रता, जो शासन की ओर से प्राप्त होनेवाले अधिकारों के अन्तर्गत है।

भाषना†—अ० [सं० भाषण] १ कहना। बोलना। २ बात-चीत करना।

†स० [सं० भक्षण] भोजन करना। खाना।

भाषांतर—पु० [स० भाषा-अतर, मयू० स०] १ एक भाषा मे लिखे हुए लेख का दूसरी भाषा में अनुवाद करना। २. इस प्रकार किया हुआ अनुवाद।

भाषांतरकार—पु० [स० भाषातर√कृ (करना) + अण्] भाषातर अर्थात् अनुवाद या उलथा करनेवाला। अनुवादक।

भाषांतर-सम—पुं० [सं० तृ० त०] एक प्रकार का शब्दालंकार (शब्दों की ऐसी योजना जिससे वाक्य कई भाषाओं का माना जा सके)।

भाषा—स्त्री० [सं०√भाष्+अ+टाप्] १. किसी विशिष्ट जनसमूह द्वारा अपने भाव, विचार आदि प्रकट करने के लिए प्रयोग में लाए जानेवाले शब्द तथा उनके संयोजन का एक व्यवस्थित क्रम। बोली। जबान। २. दे० 'बोली'।

विशेष—साहित्यकारों के अनुसार भाषा का क्षेत्र 'बोली' की तुलना में बड़ा और विस्तृत होता है, और एक भाषा के अन्तर्गत अनेक बोलियाँ होती हैं।

३ वह अव्यक्त नाद जिससे पशु-पक्षी आदि अपने मनोविकार या भाव प्रकट करते है। जैसे—बंदरों की भाषा। ४. वह बोली जो वर्तमान समय में किसी देश मे प्रचलित हो। ५. आधुनिक हिंदी का पुराना नाम। ६. सगीत मे एक प्रकार की रागिनी। ७ संगीत मे एक प्रकार का ताल। ८. वाग्देवी। सरस्वती। ९ अभियोग-पत्र। अरजी-दावा।

भाषाई—वि० [हिं० भाषा+ई (प्रत्य०)] भाषा-सम्बन्धी। भाषा का। भाषिक। जैसे—भाषाई आंदोलन।

भाषा-तत्त्व—पु० [सं० ष० त०] भाषा विज्ञान।

भाषा-पत्र—पु० [सं० ष० त०] १ वह पत्र जिसमे अपने कष्टो का निवेदन किया गया हो। २ अभियोग पत्र। अरजी-दावा।

भाषा-बाद—पु० [ष० त०] भाषा-पत्र।

भाषाबद्ध—भू० कृ० [सं० तृ० त०] १. (भाव या विचार) जो शब्दो में (बोल या लिखकर) व्यक्त किया गया हो। २ देश भाषा मे लिखा हुआ।

भाषा-विज्ञान—पु० [सं० ष० त०] एक आधुनिक विज्ञान जिसमें भाषा की उत्पत्ति, विकास, उसके शब्दों तथा उन शब्दों के अर्थों, ध्वनियों आदि का वैज्ञानिक ढग से प्रतिपादन तथा विवेचन किया जाता है। (फिलोलोजी)

भाषाविद्—पु० [सं० भाषा√विद् (जानना)+क्विप्] १. वह जो अपनी भाषा का ज्ञाता हो। २ वह जो अनेक भाषाओ का ज्ञाता हो।

भाषा-शास्त्र—पु० [सं० ष० त०] व्याकरण।

भाषा-सम—पु० [सं० स० त०] एक प्रकार का शब्दालकार जिसमे शब्दो की योजना की जाती है जो कई भाषाओं मे समान रूप से प्रयुक्त होते हों।

भाषा-समिति—स्त्री० [सं० ष० त०] जैनियो के अनुसार एक प्रकार का आचार जिसके अन्तर्गत ऐसी बातचीत आती है जिससे सब लोग प्रसन्न और सतुष्ट हो।

भाषिक—वि० [सं० भाषा+ठक्—इक] १ भाषा-सबधी। २. भाषा के गुणों के फलस्वरूप होनेवाला। जैसे—भाषिक वैभव।

भाषिका—स्त्री० [सं० भाषा+कन्+टाप्, इत्व] १. भाषा। २. वाणी।

भाषिणी—स्त्री० [सं० भाषिन्+ङीप्] सगीत मे कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

वि० स्त्री० सं० 'भाषी' का स्त्री०। जैसे—मधुर-भाषिणी।

भाषित—भू० कृ० [सं०√भाष् (कहना)+क्त] कहा हुआ। कथित।
पुं० १. उक्ति। कथन। २ बात-चीत। वार्तालाप।

भाषी (षिन्)—वि० [सं०√भाष्+णिनि] बोलनेवाला। (समस्त पदो के अन्त में) जैसे—मिष्ठ-भाषी, संस्कृत-भाषी।

भाष्य—पुं० [सं०√भाष् (कहना)+ण्यत्] १. उक्ति। कथन। २. सूत्र-ग्रंथों का विस्तृत विवरण या व्याख्या। ३. वह ग्रन्थ जिसमें किसी के सूत्रों की व्याख्या तथा स्पष्टीकरण किया गया हो। ४. बोलचाल में किसी गूढ़ बात या वाक्य की विस्तृत व्याख्या। जैसे—आपके इस लेख पर तो एक भाष्य की आवश्यकता है।

भाष्यकार—पु० [सं० भाष्य√कृ (करना)+अण्] सूत्रों की व्याख्या करनेवाला लेखक।

भासंत—वि० [सं०√भास् (चमकना)+झच्—अन्त] प्रकाशमान। सुंदर।
पु० १ सूर्य। २. चन्द्रमा। ३ नक्षत्र। ४. शकुन्त पक्षी।

भासंती—स्त्री० [सं० भासन्त+ङीप्] तारा।

भास—पु० [सं०√भास्+घञ्] १. चमक। दीप्ति। २. प्रकाश। रोशनी। ३. किरण। मयूख। ४. इच्छा। कामना। ५. मिथ्या ज्ञान। ६. गोशाला। ७. कुक्कुट। मुरगा। ८. गिद्ध। ९. शकुंत पक्षी। १०. स्वाद। लज्जत। ११. एक प्राचीन पर्वत।

भासक—पु० [सं०√भास्+ण्वुल्—अक] चमकानेवाला। प्रकाशक।

भासना—अ० [सं० भास] १. प्रकाशित होना। चमकना। २. लक्षणों से कुछ कुछ जान पड़ना। आभास होना। ३. दिखाई देना।
अ० [हिं० भासन-बूड़ना] १. पानी मे डूबना। २. लिप्त या लीन होना। ३. फँसना।
स०=भाषना (कहना)।

भासमंत—वि० [सं० भासमान] १. ज्योति या प्रकाश से युक्त। २. चमकदार। चमकीला।

भासमान—वि० [सं० भास+शानच्, मुम्] जान पड़ता या दिखाई देता हुआ। भासता हुआ।
पु०=सूर्य।

भासिक—वि० [सं० भास+ठक्—इक] १. दिखाई पड़नेवाला। दृश्य। २ लक्षणों से जान पड़ने या मालूम होनेवाला।

भासित—वि० [सं०√भास्+क्त] १ तेजोमय। प्रकाशमान। २. चमकदार। चमकीला।

भासु—पु० [सं०√भास्+उण्] सूर्य।

भासुर—पुं० [सं०√भास्+घुरच्] १. कुष्ठ रोग की औषधि। कोढ़ की दवा। २ बिल्लौर। स्फटिक। ३ बहादुर। वीर।
वि० चमकदार। चमकीला।

भास्कर—पु० [सं०√भास्+कृ (करना)] १ सूर्य। २. सोना। स्वर्ण। ३. बहादुर। वीर। ४. अग्नि। आग। ५. आक। मदार। ६. शिव। ७. पत्थरों आदि पर नक्काशी करने की कला या विद्या।

भास्करि—पु० [सं० भास्कर+इञ्] शनि ग्रह।

भास्मन—वि० [सं० भस्मन्+अण्] १. भस्म से बना हुआ। २. भस्म सबंधी।

भास्वत—पु० [सं० भास+मतुप्—व] १. सूर्य्य। २. आक। मदार। ३. चमक। दीप्ति। ४. बहादुर। वीर।
वि० चमकदार। चमकीला।

भास्वती—स्त्री० [सं० भास्वत्+ङीप्] एक प्राचीन नदी। (महाभारत)

भास्वर—पु० [सं०√भास्+वरच्] १. सूर्य। २. सूर्य का एक अनुचर। ३ दिन। ४. कुष्ठ रोग की औषधि। कोढ़ की दवा।
वि० चमकदार। चमकीला।

भिंग†—पुं० [सं० भृंग]१. भृंगी नाम का कीड़ा जिसे बिलनी भी कहते हैं। २ भौंरा।
†पुं०=भग (टूटना)।

भिंगराज†—पुं०=भृंगराज।

भिंगाना†—स० भिगोना।

भिंगोरा†—पुं० [सं० भृंगार]१. भँगरा नाम का पौधा। २ भृंगराज पक्षी।

भिंगोरी—स्त्री०[सं० भृंगराज] भृंगराज नामक पक्षी।

भिंजाना†—स० भिगोना।

भिंजो(ब)ना†—स० भिगोना।

भिंड—पुं० भीटा।

भिंडा—स्त्री० [सं०√ भण् (शब्द)+ड, पृषो० सिद्धि,+टाप्] भिंडी।
†पुं०[?] हुक्के की लम्बी सटक।
†पुं० भीटा।

भिंडि—पुं०[सं० भिंदि] गोफना। ढेलवाँस।

भिंडी—स्त्री०[सं० भिंडा,भिण्ड,+ङीप्] एक प्रकार का पौधा और उसकी फली जिसकी तरकारी बनती है। राम तरोई।

भिंडीतक—पुं०[सं० भिंडी√तक (हँसना)+अच्] भिंडी का क्षुप।

भिंसार—पुं०[सं० भानु-सरण] सबेरा। प्रातःकाल।

भिआ†—पुं०[हिं० भैया] भाई। भइया।

भिक्षण—पुं०[सं०√भिक्ष् (माँगना)+ल्युट्—अन्] [भू० कृ० भिक्षित] १. भिक्षा माँगने की क्रिया या भाव। भीख माँगना। २. भिक्षा पर निर्वाह करना।

भिक्षा—स्त्री०[सं० भिक्ष्+अ+टाप्]१ असहाय या निरुपाय अवस्था में उदरपूर्ति के लिए लोगों से दीनतापूर्वक अपने निर्वाह के लिए हाथ-फैलाकर अन्न, कपड़ा, पैसा आदि माँगने का काम या वृत्ति। २. इस प्रकार माँगने पर प्राप्त होनेवाला अन्न, कपड़े, पैसे आदि। भीख। ३ विशेष अनुग्रह की प्राप्ति के लिए किसी से दीनतापूर्वक की जानेवाली याचना ४ नौकरी।

भिक्षाक—पुं०=भिक्षुक।

भिक्षाचर—पुं०[सं० भिक्षा√चर् (प्राप्ति)+ट] भिक्षुक।

भिक्षा-चर्या—स्त्री० [ष० त०] भिक्षा माँगने के लिए इधर-उधर घूमना।

भिक्षाटन—पुं० [सं० भिक्षा-अटन, मध्य० स०] भिखमंगों या साधु संन्यासियों का भिक्षा-प्राप्ति के लिए लोगों के द्वार पर जाना।

भिक्षान्न—पुं०[सं० भिक्षा-अन्न, मध्य० स०] भिक्षा में मिला हुआ अन्न।

भिक्षा-पात्र—पुं०[सं० मध्य० स०] वह पात्र जिसमें भिखमंगे भीख माँगते हैं।
वि०(व्यक्ति) जिसे भिक्षा देना उचित हो। भिक्षा प्राप्त करने का अधिकारी।

भिक्षार्थी(र्थिन्)—वि०[सं०भिक्षार्थ+इनि] भीख चाहने या माँगनेवाला।
पुं० भिखारी।

भिक्षार्ह—वि०[सं० भिक्षा √अर्ह् (योग्य होना)+अच्] जिसे भिक्षा दी जा सकती हो।

भिक्षाशी(शिन्)—वि०[सं० भिक्षा√अश् (खाना)+णिनि] भिक्षाजीवी।

भिक्षित—भू० कृ०[सं०√ भिक्ष् (भिक्षा माँगना)+क्त] जो भिक्षा के रूप में माँगा गया हो।

भिक्षु—पुं०[सं०√भिक्ष्+उ, (स्त्री० भिक्षुणी)] १ वह जो मिली हुई भिक्षा पर निर्वाह करता हो। भिखमंगा या साधु। २. संन्यासी; विशेषत बौद्ध संन्यासी। ४ गोरख-मुंडी।

भिक्षुक—पुं० [सं० √भिक्ष+उक ञ् वा भिक्षु+कन्] [स्त्री० भिक्षुकी] भिक्षु।
वि० भीख माँगनेवाला।

भिक्षु-चर्या—स्त्री०[सं० ष० त०] भिक्षा-वृत्ति।

भिक्षु-रूप—पुं०[सं० ब० स०] महादेव।

भिक्षु-संघ—पुं०[सं० ष० त०] बौद्ध संन्यासियों का संघ।

भिखमंगा—पुं०[हिं० भीख+माँगना]१ वह जो भीख माँगता हो। जिसका पेशा भीख माँगना हो। २ बोलचाल में ऐसा व्यक्ति जिसके पास सदा किसी न किसी चीज का अभाव रहता हो और अपने इस अभाव की पूर्ति दूसरों से चीजें माँगकर करता हो।

भिखमंगी—स्त्री० [हिं० भिखमंगा] १ भीख माँगने की क्रिया या भाव। २ ऐसी स्थिति या समय जिसमें (गाँव, नगर आदि में) बहुत अधिक भिखमंगे भीख माँगते फिरते हों।

भिखार†—पुं० भिखारी।

भिखारिणी—स्त्री०=भिखारिन।

भिखारिन—स्त्री० हिं० 'भिखारी' का स्त्री०।

भिखारी—पुं० [हिं० भीख+आरी (प्रत्य०)] [स्त्री० भिखारिन, भिखारिणी] १. भीख माँग कर निर्वाह करनेवाला व्यक्ति। भिखमंगा।

भिखिया†—स्त्री०=भीख (भिक्षा)।

भिखियारी†—पुं० भिखारी।

भिगाना†—स० भिगोना।

भिगोना—स०[सं० अभ्यज]१ कोई चीज पानी में डालकर या किसी चीज पर पानी डालकर उसे आर्द्र, गीला या तर करना। जैसे—कपड़ा भिगोना।
संयो० क्रि०—डालना।—देना।
२ अन्न कणों को इसलिए पानी में डालना कि वे नरम पड़कर फूल जायँ। जैसे—चने या चावल भिगोना।

भिच्छा†—स्त्री० भिक्षा।

भिच्छु†—पुं०—भिक्षु।

भिच्छुक*—पुं० भिक्षुक।

भिजवाना—स०[हिं० भीजना] भिगोने का काम किसी से कराना।
†स० भेजवाना।

भिजवावर†—स्त्री०=मजियाउर।

भिजाना—स० भिगोना।
†स० भेजवाना।

भिजोना, भिजोवना*—स०—भिगोना।

भिज्ञ—वि० [सं० अभि√ज्ञा (जानना), पृषो०, अ—लोप] जानकर।
†वि०=अभिज्ञ।

भिटक—स्त्री०[हिं० भिटकना]१ भिटकने की अवस्था, क्रिया या भाव।

२. वह बहुत हलकी घृणा जो किसी अप्रिय वस्तु या व्यक्ति का सामना होने पर उत्पन्न होती और उससे दूर हट जाने के लिए प्रवृत्त करती है।

भिटकना—अ० [स० भिद् (=हटाना)] कोई अप्रिय तथा घृणित वस्तु या व्यक्ति सामने आने पर मन का उससे दूर हट जाने में प्रवृत्त होना।

भिटका—पु० [हिं० भीटा] दीमकों की बाँबी। बमीठा।

भिटना—पु० [देश०] छोटा गोल फल। जैसे—कपास का भिटना।

अ० [हिं० भेंट] १ भेंट या मुलाकात होना। २. संपर्क या संबंध होना। ३ अपवित्र वस्तु या व्यक्ति से छू जाने पर अपवित्र होना। (पश्चिम)

भिटनी†—स्त्री० [हिं० भिटना] स्तन के आगे का भाग। चूँची।

भिटाना†—स०=भेंटाना।

अ० [हिं० भिटना] किसी वस्तु या व्यक्ति का किसी अपवित्र वस्तु या व्यक्ति से छू जाना और फलत अपवित्र या अशुद्ध हो जाना।

भिट्ठा†—पुं०=भीटा।

भिड़त—स्त्री० [हिं० भिड़ना] १ भिड़ने की क्रिया या भाव। २. मुठ-भेड़।

भिड़—स्त्री० [स० वरटा] बर्रे। ततैया।

मुहा०—**भिड़ के छत्ते में हाथ डालना**=जान-बूझकर बहुत बड़ा संकट अपने पीछे लगाना।

भिड़ज्जा—पु० [हिं० भिड़ना] घोड़ा। (डिं०)

भिड़ना—अ० [स० भिद्?] १. परस्पर विरुद्ध दिशा मे चलनेवाली चीजो का एक दूसरे से टकराना। जैसे—गाड़ियों, मोटरों या साइकिलो का भिड़ना। २ प्राणियों के संबध मे एक दूसरे से पूरी शक्ति से लड़ना। जैसे—साँड़ो का भिड़ना। ३ व्यक्ति का किसी से लड़ने या विवाद करने के लिए दृढ़तापूर्वक उससे जूझना या सवाल-जवाब करना। ४ मैथुन या संयोग करना। (बाजारू)

अ०† [हिं० भीड़ना] १ संलग्न होना। सटना। २ दरवाजे के सम्बन्ध मे, दोनो पल्लो का इस प्रकार एक दूसरे पर सटना कि मार्ग बंद हो जाय। भीड़ा जाना।

भिड़ाना—स० [हिं० भिड़ना का स०] १. किसी को भिड़ने मे प्रवृत्त करना। २ एक को दूसरे के साथ लगाना या सटाना। ३ एक को दूसरे से लड़ाना। आपस मे लड़ाई-झगड़ा कराना। ४. किसी को किसी के साथ रति या संभोग करने मे प्रवृत्त करना। (बाजारू) ५. कोई चीज या कुछ चीजें कहीं से एक स्थान पर लगाना। एकत्र करना।

भिड़ाव†—पु० [हिं० भिड़ना] १. भिड़ने की क्रिया या भाव। २. आपस मे होनेवाला सामना। ३. दे० 'भिड़त'।

भितरिया—वि०, पु०=भीतरिया।

भितल्ला—पु० [हिं० भीतर+तल] दोहरे कपड़े मे भीतरी ओर का पल्ला। दोहरे कपड़े के भीतर की परत। अस्तर।

क्रि० प्र०—लगाना।

वि० [स्त्री० भितल्ली] अन्दर या भीतर का।

भितल्ली—स्त्री० [हिं० भीतर+तल] चक्की के नीचे का पाट।

भिताना*—स० [स० भीति] भयभीत होना। डरना।

भित्ति—स्त्री० [स० √भिद् (फाड़ना)+क्तिन्] १. दीवार। २. वह पदार्थ या स्तर जिस पर चित्र बनाया जाय। ३ भीति। डर। ४. खंड। टुकड़ा। (डिं०)

भित्तिका—स्त्री० [स० √भिद्+डिकन्,+टाप्] १. दीवार। २. छिप-कली।

भित्ति-चित्र—पु० [मध्य० स०] १ दीवार पर बना हुआ चित्र। २. विशेषत: ऐसा चित्र जो दीवार बनाने के समय गीले पलस्तर से बनाया गया हो। (फ्रेस्को, म्यूरल)

भित्ति-चौर—पु० [सुप्सुपा स०] दीवार मे सेंध लगानेवाला चोर।

भिद्†—वि० [सं० √भिद् (विदारण करना)+क्विप्] तोड़ने-फोड़ने या नष्ट करनेवाला। (समस्त पदों के अन्त में)

भिद†—पु० भेद।

भिदक—पु० [स० भिद्+क्वुन्—अक] १. तलवार। २. वज्र। ३ हीरा।

भिदना—अ० [सं० भिद्] १ भेदा या छेदा जाना। २. किसी के अन्दर घुसना, धँसना या पैवस्त होना। ३. घायल होना।

भिदिर—पु० [सं० √भिद्+किरच्] वज्र।

भिदुर—पु० [स० √भिद्+कुरच्] वज्र।

भिन—वि० =भिन्न।

भिनकना—अ० [अनु०] १. (मक्खियों का) भिन भिन शब्द करना।

मुहा०—**किसी पर मक्खियाँ भिनकना**=(क) किसी का इतना अशक्त हो जाना कि उस पर मक्खियाँ भिनभिनाया करें और वह उन्हे उड़ा न सके। नितांत असमर्थ हो जाना। (ख) किसी चीज का इतना गन्दा या मलिन होना कि उस पर मक्खियाँ आ-आकर बैठा करे।

२ गन्दगी आदि के कारण मन में घृणा उत्पन्न होना।

भिनना†—अ०=भीनना।

भिन-भिन—स्त्री० [अनु०] वह शब्द जो मक्खियाँ हवा मे उड़ते समय करती हैं।

भिनभिनाना—स्त्री० [अनु०] भिन भिन शब्द होना।

भिनभिनाहट—स्त्री० [अनु० भिनभिनाना+आहट (प्रत्य०)] १. भिनभिनाने की क्रिया या भाव। २. भिन भिन शब्द।

भिनसार†—पु० [स० विनिशा] प्रात काल। सबेरा।

भिनहीं†—अव्य० [सं० विनिशा] प्रात काल। सबेरे।

भिन्न—वि० [सं० √भिद् (विदारण करना)+क्त, नत्व] १ काट या तोड़कर अलग किया हुआ। जैसे—छिन्न-भिन्न। २. जिसके विभाग किये गये हों। विभक्त। विभाजित। ३ अलग। जुदा। पृथक्। (अदर) ४ जो प्रस्तुत है, उससे अलग या किसी दूसरे प्रकार का। अलग तरह का। (डिफरेंट) ५ अपने मेल या वर्ग के औरों से कुछ अलग और विशेष प्रकार का (डिस्टिंक्ट) ६ कोई और। अन्य। अपर। दूसरा।

पु० १. किसी चीज का खड या टुकड़ा। २. गणित मे, किसी पूरी इकाई का छोटा अंश, खड या टुकड़ा जो या तो बटे वाले रूप मे व्यक्त किया जाता है (जैसे—१/२, १/३) या दशमलव प्रणाली से (जैसे—३.७ अर्थात् ३/७)। (फ्रैक्शन) ३ वैद्यक मे, शरीर का वह अंग या अवयव जो किसी तेज धारवाले शस्त्र से कटकर अलग हो गया हो। ४. क्षत। घाव। नीलम का एक दोष जिसके कारण पहननेवाले को पति, पिता, पुत्रादि का शोक प्राप्त होना माना जाता है। ६. फूल की कली।

भिक्षक—पु० [सं० भिक्ष+कन्] बौद्ध।

भिन्न-क्रम—वि० [ब० स०] क्रम-भग दोष से युक्त।

भिन्नता—स्त्री० [सं० भिन्न+तल्+टाप्] १. भिन्न होने की अवस्था या भाव। अलगाव। पार्थक्य। २. अंतर। भेद।

भिन्नत्व—पु० [सं० भिन्न+त्व] भिन्न होने का भाव। जुदाई।

भिन्नदर्शी (शिन्)—वि० [स० भिन्न√दृश् (देखना)+णिनि] पक्षपाती।

भिन्नमतावलंबी (बिन्)—पु० [स० भिन्न-मत, कर्म० स०, भिन्नमत–अव√लम्ब्+णिनि, उप० स०] किसी दूसरे मत या मजहब का माननेवाला।

भिन्न-मनुष्या—वि० स्त्री० [सं० ब० स०,+टाप्] (भूमि) जिसमे भिन्न भिन्न जातियों, स्वभावों और पेशो के लोग बसते हों।

भिन्न-मर्याद—वि० [ब० स०] मर्यादा, नियत्रण आदि से रहित।

भिन्न-वृत्त—वि० [ब० स०] १. कर्तव्य पथ से भ्रष्ट। २ (छन्द) जिसमे छन्दोभग दोष हो।

भिन्न-वृत्ति—वि० [ब० स०] १. दूसरे पेशे का। २. बुरा जीवन व्यतीत करनेवाला। ३ भिन्न भाव या रुचिवाला।

भिन्न-हृदय—वि० [ब० स०] जिसका हृदय बहुत ही दु:खी हो गया हो।

भिन्नाना—अ० [अनु०] १. दुर्गंध आदि से सिर चकराना। २ डर कर अलग या दूर रहना।

अ० भिनभिनाना।

अ०=भुनभुनाना।

भिन्नार्थ—वि० [स० भिन्न-अर्थ, ब० स०] १ भिन्न उद्देश्यवाला। २. स्पष्ट अर्थवाला।

भिन्नार्थक—वि० [स० ब० स०,+कप्] किसी (शब्द) से भिन्न अर्थवाला (शब्द)।

भिन्नोदर—पुं० [स० भिन्न-उदर, ब० स०] सौतेला भाई।

भियना†—अ० [स० भीत] भयभीत होना। डरना।

भिरना†—अ० =भिड़ना।

भिरमना†—अ०=भरमना।

भिरमाना†—स०=भरमाना।

भिराव†—पु०=भिड़ाव।

भिरिग†—पु०=भृग।

भिलनी—स्त्री० [हि० भील] भील जाति की स्त्री।

स्त्री० [देश०] एक प्रकार का धारीदार कपड़ा।

†स्त्री०=बिलनी।

भिलावाँ—पु० [सं० भल्लातक] १. एक प्रकार का जगली पेड़ जिसमे जामुन के आकार के लाल रंग के फल लगते है। २. उक्त वृक्ष का फल जो औषध के काम आता है।

भिल्ल—पु० [स०√भिल्+लक्, बा०] दे० 'भील'।

भिल्ल-तरु—पु० [मध्य० स०] लोध।

भिल्ल-भूषण—पु० [सं० भिल्ल√भूष् (अलकृत करना)+ल्यु–अन] घुंघची।

भिश्त *—पु० [फा० बिहिश्त] स्वर्ग।

भिश्ती—वि० [फा० बिहिश्ती] स्वर्गीय।

पु० [?] मशक द्वारा पानी ढोनेवाला व्यक्ति। सक्का।

भिषक् (ज्)—पु० [स०√भी (भय)+अच्, षुक्, ह्रस्व] वैद्य।

भिशक्-प्रिया—स्त्री० [स० ष० त०] गुडुच।

भिषग्भद्रा—स्त्री० [स० स० त०] भद्रदतिका।

भिषग्माता (तृ)—स्त्री० [स० ष० त०] वासक। अडूसा।

भिषग्वर—पु० [स० स० त०] अश्विनीकुमार।

भिषग्विद—पु० [सं० भिषज्√विद् (जानना)+क्विप्] चिकित्सक। वैद्य।

भिष्ट†—वि० १ अभीष्ट। २ =भ्रष्ट।

भिष्टा†—स्त्री० =विष्ठा (मल)।

भिसज†—पु० [स० भिषज्] वैद्य। (डिं०)

भिसटा—स्त्री० =विष्ठा (मल)।

भिसत *—पु० [फा० बिहिश्त] स्वर्ग।

भिसर—पु० [स० भूसुर] ब्राह्मण। (डिं०)

भिसिणी†—वि० व्यसनी। (डिं०)

भिस्त†—पु०=बहिश्त (स्वर्ग)।

भिस्ती—पु० दे० 'भिश्ती'।

भिस—स्त्री० [स० बिश] कमल की नाल। मसीड।

भींगना—अ० =भीगना।

भींगी†—स्त्री० =भृगी (मादा भौरा)।

भींच—स्त्री० [हि० भीचना] भीचने की क्रिया या भाव।

भींचना—स० [हि० खीचना] १ कसकर खीचना या दबाना। जैसे—किसी को बाँहो मे भीचना। २ (आँख या मुँह) इस प्रकार जोर से दबाना कि वह बहुत कुछ बद हो जाय।

भींजना *—अ० [हि० भीगना] १ आर्द्र, गीला या तर होना। भीगना। २ किसी कोमल मनोभाव से अच्छी तरह युक्त होना। गदगद या पुलकित होना। ३. स्नान करना। नहाना। ४ किसी के साथ बहुत अधिक हिल-मिल जाना। ५ किसी के अन्दर घुसना या समाना।

भींट†—पु० =भीट।

भींतड़ा†—पु० [हि० भीत ?] घर। मकान। उदा०—मागीजै तज भीतड़ा, ओडे जिम तिम अत।—कविराजा सूर्यमल।

भी—अव्य० [स० अपि या हि] एक अव्यय जिसका प्रयोग नीचे लिखे अर्थ या आशय व्यक्त करने के लिये होता है। (क) निश्चित रूप से किसी अथवा औरो के अतिरिक्त, साथ या सिवा। जैसे—दोनो भाइयों के साथ एक नौकर भी गया है। (ख) अधिक। ज्यादा। जैसे—यह और भी अच्छा है। (ग) तक या पर्यंत। लौ। जैसे—उसने कुछ कहा भी नही, और वह चला गया। (घ) कुछ अवस्थाओ मे केवल जोर देने के लिए विशेषत किसी प्रकार की अनुपयुक्तता दिखायी देने पर। जैसे—आप भी कैसी बातें करते है (अर्थात् समझदार होकर भी विलक्षण बाते करते है)।

स्त्री० [स०√भी (भय होना)+क्विप्] भय। डर।

भीउँ *—वि०, पु०=भीम।

भीक†—स्त्री०=भीख।

भीख—स्त्री० [स० भिक्षा] १. किसी दरिद्र का दीनता दिखाते हुए उदरपूर्ति के लिए कुछ माँगना। भिक्षा। २ उक्त प्रकार से माँगने पर मिलनेवाली चीज।

पद—भिखमंगा, भिखारी।

क्रि० प्र०—देना।—पाना।—माँगना।—मिलना।

भीखन *—वि०=भीषण।

भीखम*—वि०, पुं०=भीष्म।

भीखमक†—पुं०=भीष्मक।

भीगना—अ० [सं० अभ्यंज] १. पानी या और किसी तरल पदार्थ के संयोग के कारण तर होना। आर्द्र होना। २ तरल पदार्थ के संयोग से अन्नकणों का नरम पड़ना तथा फूलना। ३ दयार्द्र होना।

पद—भीगी बिल्ली=बहुत ही दीन-हीन बना हुआ तथा हत-प्रभ व्यक्ति।

भीचना—अ० १.—भींचना। २.=भीगना।

भीचर—पुं० [?] सुभट। वीर। (डिं०)

भीजना†—अ० [हिं० भीगना] १. किसी के साथ परचना तथा हिलना-मिलना। २. दे० 'भीगना'।

भीट—पुं० [देश०] १. उभरी हुई या ऊँची जमीन। २. दे० 'भीटा'। ३. मन भर के बराबर एक पुरानी तौल।

भीटना†—पुं०=भीटा।

भीटा—पुं० [देश०] १. मिट्टी, ककड़ों आदि का कोई प्राकृतिक ऊँचा ढेर जो प्राय कहीं कहीं समतल भूमि पर दिखाई देता है। २. पान की खेती के लिए बनाया या तैयार किया हुआ अधिक ऊँचा और चारों ओर ढालुआँ खेत जो ऊपर तथा चारों ओर से छाजन तथा लताओं से घिरा रहता है।

भीड़—स्त्री० [हिं० भिड़ना] १ किसी स्थान पर एक साथ तथा बिना किसी क्रम से जुटे हुए लोगों की संज्ञा।

क्रि० प्र०—लगना।—लगाना।

मुहा०—भीड़ छँटना=भीड़ में आये हुए लोगों का धीरे-धीरे इधर-उधर होना जिससे भीड़ कम हो।

२. किसी चीज या बात की अधिकता। जैसे—काम की भीड़। उदा०—परी रस भीड़ दृग धीर नाहिन धरे।—अलबेला अली। आपत्ति। मुसीबत। सकट। उदा०—(क) जुग जुग भीर(भीड़) हरी सतन की।—मीराँ। (ख) तुम हरो जन की भीर (भीड़)। —मीराँ।

क्रि० प्र०—कटना।—काटना।—पड़ना।

३. आगा-पीछा। असमजस। उदा०—पर घर घालक लाज न भीरा। —तुलसी।

भीड़न—स्त्री० [हिं० भीड़ना] १. भीड़ने की क्रिया या भाव। २ मलने, लगाने या भरने की क्रिया।

भीड़ना*—स० [हिं० भिड़ाना] १ मिलाना। २. लगाना। ३. मलना। ४. (दरवाजा) बन्द करना। ५. दे० 'भिड़ाना'।

भीड़-भड़क्का—पुं०=भीड़-भाड़।

भीड़-भाड़—स्त्री० [हिं० भीड़+भाड़ अनु०] एक स्थान पर होनेवाला बहुत से मनुष्यो का जमाव। जन-समूह। भीड़।

भीड़ा—वि० [हिं० भिड़ना] [स्त्री० भीड़ी] सँकरा। तंग। जैसे—भीड़ी गली।

†स्त्री०=भीड़।

भीड़ी—स्त्री०=भिंडी।

स्त्री० =भीड़।

वि० भीड़ा की स्त्री० रूप।

भीत—भू० कृ० [सं० √भी+क्त] [स्त्री० भीता] १. डरा हुआ। जिसे भय लगा हो। २ विपद् या संकट में पड़ा हुआ।

स्त्री० =भीति (डर)।

†स्त्री० [सं० भित्ति] दीवार।

मुहा०—(किसी को) भीत में चुनना=प्राण-दड देने के लिए किसी को कहीं खड़ा करके उसके चारों ओर दीवार खड़ी करना। भीत में दौड़ना=अपने सामर्थ्य से बाहर कार्य करना। भीत के बिना चित्र बनाना=बिना किसी आधार के कोई काम करना या बात कहना।

२. विभाग करनेवाला परदा। ३. चटाई। ४. कमरे का फरश। गच। ५. खंड। टुकड़ा। ६. जगह। स्थान। ७. दरार। ८. कसर। त्रुटि। ९. अवसर। मौका।

भीतचारी (रिन्)—वि० [सं० भीत√चर् (प्राप्त होना)+णिनि, उप० स०] डर-डर कर काम करनेवाला।

भीतमना (नस्)—वि० [सं० ब० स०] मन में डरा हुआ।

भीतर—अव्य० [सं० अभ्यतर] १ घेरे, भवन आदि की सीमाओं के अन्तर्गत। जैसे—घर के भीतर जो चाहे सो करो। २ मन में।

पुं० १ अन्दरवाला भाग। २. मन। ३ अंत.पुर।

पद—भीतर का कूआँ=वह उपयोगी पदार्थ जिससे कोई काम न उठा सके। अच्छी, पर किसी के काम न आ सकने योग्य चीज।

भीतरा†—वि० [हिं० भीतर] भीतर या जनानखाने मे जानेवाला। स्त्रियों में आने जानेवाला।

भीतरि*—अव्य०=भीतर।

भीतरिया—पुं० [हिं० भीतर] १. वल्लभ सप्रदाय के मदिरों मे वह पुजारी जो गर्भ-गृह अर्थात् मन्दिर के भीतरी भाग में रहकर देवता की सेवा-पूजा करता हो। २ वह जो किसी का भीतरी भेद या रहस्य जानता हो।

वि०=भीतरी।

भीतरी—वि० [हिं० भीतर+ई (प्रत्य०)] १ भीतरवाला। अदर का। जैसे—भीतरी कमरा, भीतरी दरवाजा। २ छिपा हुआ। गुप्त। जैसे—भीतरी बात या भेद। ३ घनिष्ठ। जैसे—भीतरी दोस्त।

भीतरी-टाँग—स्त्री० [हिं० भीतरी+टाँग] कुश्ती का एक पेच। जब विपक्षी पीठ पर रहता है, तब मौका पाकर खिलाड़ी भीतर ही से टाँग मार कर विपक्षी को गिराता है। इसी को भीतरी टाँग कहते हैं।

भीति—स्त्री० [सं०√भी+क्तिन्] १ डर। भय। २ किसी काम, चीज, बात या स्थिति को भीषण या विकट समझने की दशा मे मन मे उत्पन्न होनेवाला वह तीव्र भय जो प्रायः अयुक्त होने पर भी निरंतर बना रहता और उस काम, चीज या बात से मनुष्य को बहुत दूर रखता है। (फोबिया) जैसे—जल-भीति, पाप-भीति, भोजन-भीति, रोग-भीति, स्त्री-भीति आदि।

†स्त्री०=भीत (दीवार)।

भीतिकर—वि० [सं० भीति√कृ (करना)+अच्] भयकर। भयावना।

भीतिकारी—वि०=भीतिकर।

भीती—स्त्री० [सं०] कार्तिकेय की एक अनुचरी या मातृका का नाम।

†स्त्री० १.=भित्ति (दीवार)। २.=भीति (डर)।

भीन*—पु० [हिं० बिहान] सवेरा। प्रातःकाल।

भीनना—अ० [हिं० भीगना] १ किसी चीज के छोटे छोटे अंशों या कणों का किसी दूसरी चीज के सभी भीतरी भागों में पहुँचकर अच्छी तरह एक-रस और सम्मिलित होना। जैसे—कपड़े में रंग भीनना। २ लाक्षणिक रूप में किसी तत्व का किसी के अन्दर पहुँचकर अच्छी तरह व्याप्त तथा सम्मिलित होना। जैसे—मन में किसी का अनुराग या हवा में कोई सुगंध भीनना। ३ चारों ओर से आच्छादित होना। ४ अटकना। फँसना। उदा०—भीन ज्यों बसी भीने।—सूर।

भीना—वि० [हिं० भीनना या भीजना] [स्त्री० भीनी] बहुत ही मन्द, सूक्ष्म या हलका। जैसे—भीनी भीनी गन्ध।

भीभल†—वि० विह्वल।

भीम—वि० [सं०√भी (भय करना)+मक्] १ भयंकर। भीषण। २ बहुत बड़ा। ३ बहुत बड़ा उत्साही तथा बहादुर।

पु० १ साहित्य का भयानक रस। २. शिव। ३. विष्णु। ४ अम्लबेल। ५ कुंती के एक पुत्र जो युधिष्ठिर से छोटे तथा अन्य पांडवों से बड़े थे और जो गदा धारण करते थे। भीमसेन। वृकोदर। **पद—भीम का हाथी**—भीमसेन का फेंका हुआ हाथी। (कहा जाता है कि एक बार भीमसेन ने सात हाथी आकाश में फेंक दिए थे जो आज तक वायुमंडल में घूम रहे हैं, लौटकर पृथ्वी पर नहीं आए। इसका प्रयोग ऐसे पदार्थ या व्यक्ति के लिए होता है जो एक-बार जाकर फिर न लौटे।) ६ विदर्भ के एक राजा जिन्हें दमन नामक ऋषि के वर से दम, दांत और दमन नामक तीन पुत्र तथा दमयंती नाम की कन्या हुई थी। ७ महर्षि विश्वामित्र के पूर्व-पुरुष जो पुरूरवा के पौत्र थे। ८ संगीत में काफी ठाठ का एक राग।

भीमक—पु० [सं०] पुराणानुसार एक प्रकार के गण जो पार्वती के क्रोध से उत्पन्न हुए थे।

भीमकर्मा(र्मन्)—वि० [ब० स०] बहुत बड़ा पराक्रमी।

भीमता—स्त्री० [सं०भीम+तल्+टाप्] भीम या भयानक होने की अवस्था या भाव। भयंकरता। डरावनापन।

भीम-तिथि—स्त्री० [मध्य० स०] भीमसेनी एकादशी।

भीम-दर्शन—वि० [ब० स०] [स्त्री० भीम-दर्शना] जो देखने में भयानक हो। डरावनी आकृतिवाला।

भीम-द्वादशी—स्त्री० [मध्य० स०] माघ शुक्ला द्वादशी।

भीम-नाद—वि० [ब० स०] डरावनी आवाज करनेवाला।

पु० शेर। सिंह।

भीम-पलाशी—स्त्री० [सं०] संपूर्ण जाति की एक संकर रागिनी।

भीम-बल—पु० [ब० स०] १ एक प्रकार की अग्नि। २ धृतराष्ट्र का एक पुत्र।

भीम-मुख—पु० [ब० स०] एक प्रकार का बाण। (रामायण)

भीम-रथ—पु० [ब० स०] १ पुराणानुसार एक असुर जिसे विष्णु ने अपने कूर्म अवतार में मारा था। २ धृतराष्ट्र का एक पुत्र।

भीमरथी—स्त्री० [सं०] १ सह्य पर्वत से निकली हुई एक नदी। (पुराण)

स्त्री० ७७वें वर्ष के सातवें मास की सातवीं रात की समाप्ति पर होने-वाली मनुष्य की शारीरिक अवस्था जो असह्य तथा बहुत कठिन होती है। (वैद्यक)

वि० ऐसा बुड्ढा जो ७०–८० वर्षों का हो चुका हो। बहुत बुड्ढा (व्यक्ति)।

भीमरा†—स्त्री० भीमा (नदी)।

भीमराज—पु० [सं० भृंगराज] काले रंग की एक प्रकार की चिड़िया जिसकी टाँगें छोटी और पंजे बड़े होते हैं और इसकी दुम में केवल १० पर होते हैं। यह अनेक पशुओं तथा मनुष्यों की बोली अच्छी तरह बोल सकती है।

भीमरिका—स्त्री० [सं०] सत्यभामा के गर्भ से उत्पन्न श्री कृष्ण की एक कन्या।

भीमसेन—पु० [सं०] युधिष्ठिर के छोटे भाई भीम। वृकोदर (दे० 'भीम')।

भीमसेनी—वि० [हिं० भीमसेन] भीमसेन-संबंधी। भीमसेन का। जैसे—भीमसेनी एकादशी।

पु० कपूर का बरास नामक प्रकार या भेद।

भीमसेनी एकादशी—स्त्री० [हिं० भीमसेनी एकादशी] १ ज्येष्ठ शुक्ला एकादशी। निर्जला एकादशी। २ कार्तिक शुक्ला एकादशी। ३. माघ शुक्ला एकादशी।

भीमसेनी कपूर—पु० [हिं०] एक विशेष प्रकार का कपूर जो बोर्नियो, सुमात्रा आदि द्वीपों में होनेवाले एक प्रकार के वृक्ष के निर्यास से तैयार किया जाता है। बरास।

भीमा—स्त्री० [सं० भीम+टाप्] १ रोचन नाम का गंध-द्रव्य। २ कोड़ा या चाबुक। ३ दुर्गा। ४ दक्षिणी भारत की एक नदी जो पश्चिमी घाट से निकलकर कृष्णा नदी में मिलती है। ५. ४० हाथ लंबी, २० हाथ चौड़ी और २९ हाथ ऊँची नाव। (युक्तिकल्पतरु)

वि० सं० 'भीम' का स्त्री०।

भीमान् (मत्)—वि० [सं० भी+मतुप्] भयावह। भयंकर।

भीमोदरी—स्त्री० [सं० भीम-उदर, ब० स०, ङीप्] दुर्गा।

भीर†—स्त्री० =भीड़।

वि० =भीरु।

भीरना*—अ० [सं० भी या हिं० भीरु] भयभीत होना। डरना।

भीरा—पु० [देश०] एक प्रकार का वृक्ष जो मध्य भारत तथा दक्षिण-भारत में होता है। इसकी लकड़ियों से शहतीर बनते हैं और इसमें से गोंद, रंग और तेल निकलता है।

वि० भीरु (कायर)।

स्त्री० =भीड़।

†वि० =भीड़ा।

भीरी†—स्त्री० [देश०] अरहर का टाल या राशि।

भीरु—वि० [सं० भी+क्रु] १ जिसे भय हुआ हो। डरा हुआ। २. कायर। डरपोक।

पु० [सं०] १ शृगाल। गीदड़। २ बाघ। ३ एक प्रकार की ईख।

स्त्री० [सं०] १ शतावरी। २ कटकारी। भटकटैया। ३. बकरी। ४. छाया।

भीरुक—पुं० [सं० भीरु+कन्] १. बन। जंगल। २ चाँदी। ३. एक प्रकार की ईख। ४. उल्लू।
वि० भीरु। कायर। डरपोक।

भीरुता—स्त्री० [सं० भीरु+तल्+टाप्] १. भीरु होने की अवस्था या भाव। कायरता। बुजदिली। २ डर। भय।

भीरुताई*—स्त्री०=भीरुता।

भीरु-पत्री—स्त्री० [सं० ब० स०,+ङीष्] शतमूली।

भीरु-हृदय—पुं० [सं० ब० स०] हिरन।

भीरू—स्त्री० [सं० भीरु] स्त्री। (डिं०)
वि०=भीरु।

भीरे—अव्य० [हिं० भिड़ना] पास। समीप।

भील—पुं० [सं० भिल्ल] [स्त्री० भीलनी] १. विन्ध्य की पहाड़ियों तथा खानदेश, मेवाड, मालवा और दक्षिण के जगलो मे रहनेवाली एक वन्य जाति। २. उक्त जाति का पुरुष।
स्त्री० [?] वह मिट्टी जो ताल के सूखने पर निकलती है तथा जिस पर पपड़ी जमी होती है।

भील-भूषण—स्त्री० [सं० भिल्लभूषण] गुजा या घुँघची जिसकी मालाएँ भील लोग पहनते है।

भीली—वि० [हिं० भील] १ भील-सबधी। २. भीलों मे होनेवाला।
स्त्री० भीलो की बोली।

भीलुक—वि० [सं० भी+क्लुकन्] भीरु। डरपोक।

भीवँ†—वि०=भीम।
पुं०=भीम (पाडव)।

भीवँ सेन†—पुं०=भीमसेन।

भीव*—पुं० भीमसेन।
वि०=भीम।

भीष†—स्त्री० भीख।

भीषक—वि०[सं०√भी (भय करना)+णिच्, षुक्,+ण्वुल्—अक]भीषण।

भीषज—पुं०=भेषज।

भीषण—वि० [सं०√भी+णिच्, षुक्,+ल्यु—अन] [भाव० भीषणता] १. जो देखने मे बहुत भयानक हो। डरावना। २. बहुत ही उग्र तथा दुष्ट स्वभाववाला। ३. दुष्परिणाम के रूप में होनेवाला। विकट। बहुत ही बुरा। जैसे—भीषण काड।
पुं० १. साहित्य का भयानक रस। २. कुदरु। ३. कबूतर। ४. एक प्रकार का ताल या ताड़। ५. शल्लकी। सलई। ६. ब्रह्मा। शिव।

भीषणता—स्त्री० [सं० भीषण्+तल्+टाप्] भीषण होने की अवस्था या भाव।

भीषन†—वि०=भीषण।

भीषम†—पुं०=भीष्म।

भीषा—स्त्री० [सं०√भी+णिच्, षुक्,+अङ्+टाप्] १. भयभीत स्त्री। २. डर। भय।

भीषिका—स्त्री० [सं० विभीषिका] १. ऐसी स्थिति जिसमे बहुत से लोग भयभीत हों। २. बहुत बड़े अनिष्ट की आशंका जिसके फलस्वरूप लोग विचलित होते तथा इधर-उधर भागने लगते हैं। आतंक। (पैनिक)

भीष्म—वि० [सं०√भी+मक्, षुक्-आगम] डरावना। भयंकर। भीषण।
पुं० १. शिव। २. गंगा के गर्भ से उत्पन्न राजा शान्तनु का आठवाँ और सबसे छोटा पुत्र जो 'गांगेय' और 'देवव्रत' भी कहा जाता है। ३. साहित्य का भयानक रस। ४. राक्षस। ५. दे० 'भीष्मक'।

भीष्मक—पुं० [सं० भीष्म+कन्] विदर्भ देश के एक राजा जो रुक्मिणी के पिता थे।

भीष्म-पंचक—स्त्री० [सं० मध्य० स०] कार्तिक शुक्ला एकादशी से पूर्णिमा तक के पाँच दिन।

भीष्म-पितामह—पुं० [सं० कर्म० स०] राजा शान्तनु के पुत्र। भीष्म।

भीष्म-मणि—पुं०[सं० कर्म० स०] एक तरह का सफेद पत्थर।

भीष्म-रत्न—पुं०=भीष्म मणि।

भीष्म-सू—स्त्री० [सं० ष० त०] भीष्म की माता, गगा।

भीष्माष्टमी—स्त्री० [सं०भीष्म-अष्टमी, मध्य०स०]माघ शुक्ला अष्टमी। इस तिथि को भीष्म ने प्राण त्यागे थे।

भीसम—वि०, पुं०=भीष्म।

भुंइ*—स्त्री० [सं० भूमि] पृथ्वी। भूमि।
मुहा०—भुंइ लाना=झुकाना। उदा०—कुडल गहै सीस भुइ लावा।—जायसी।

भुंइ आँवला—पुं० [सं० भूम्यामलक] एक प्रकार की घास जो बरसात मे ठंढे स्थानो मे होती और ओषधि के काम मे आती है। भुइआँवला।

भुंइकांडा—पुं० [हिं० भुंइ+कंद] समुद्र या जलाशय के तट पर होनेवाली एक तरह की घास।

भुंइचाला†—पुं०=भूचाल (भूकंप)।

भुंइडोल—पुं० [हिं० भुंइ+डोलना] भूकंप। भूचाल।

भुंइ-तरवर—पुं० [हिं० भुंइ+सं० तरुवर] सनाय की जाति का एक पेड़।

भुंइदग्धा—पुं० [हिं० भुंइ+दग्ध] १. वह कर जो भूमि पर चिता जलाने के बदले मे मृतक के संबंधियो से लिया जाता है। मसान कर। २. वह कर जो भूमि का मालिक किसी व्यवसायी से व्यवसाय करने के बदले मे लेता है।

भुंइधर†—पुं०=भूमिहार।

भुंइधरा—पुं० [हिं० भुंइ+धरना] १. आँवाँ लगाने की वह रीति या ढंग जिसमे बिना गड्ढा खोदे ही भूमि पर बरतन आदि रखकर आग सुलगा देते हैं। २. दे० भुंइहरा।

भुंइनास—पुं० [सं० भून्यास] १. किसी वस्तु के एक छोर को भूमि में इस प्रकार दबाकर जमाना कि उसका कुछ अंश पृथ्वी के भीतर गड़ जाय। २. किसी चीज का वह अश जो इस प्रकार से जमीन मे गड़ या धँस जाय। ३. किवाडों की वह सिटकनी जो नीचे की ओर पत्थर के गड्ढे मे बैठती है। ४. प्राय खेतो मे होनेवाली एक प्रकार की वनस्पति जिसकी जडे नही होती। ५ अनार। ६. दे० 'भुन्नास'।

भुंइनासी—पुं०=भुन्नासी।

भुंइफोड़—पुं० [हिं० भुंइ+फोड़ना] बरसात के दिनों मे प्राय दीमको की बाँबी के पास निकलनेवाला एक तरह का कुकुरमुत्ता। गरजुआ।

भुंइहरा—पुं० [हिं० भुंइ+घर] १. वह स्थान जो भूमि के नीचे खोदकर बनाया गया हो। २ मकान की कुर्सी के नीचे बना हुआ कमरा। तहखाना। ३. दे० 'भुंइधरा'।

भुंइहार—पुं० [सं० भूमि+हार] १ मिरजापुर जिले के दक्षिण भाग में रहनेवाली एक अनार्य जाति । २. दे० 'भूमिहार।'

भुंकाम—स्त्री०[हिं० भूंकना] भूंकने या भौंकने की अवस्था, भाव या शब्द।

भुंकाना—स० [हिं० भूंकना] किसी को भूंकने में प्रवृत्त करना।

भुंगाल—पुं० [अनु०] तुरही या भोंपा जिसके द्वारा नौ-सेना का अध्यक्ष घोषणा करता है। (लश०)

भुंजन—पुं० [सं०] भोजन करने की क्रिया। खाना।

भुंजना†—अ०=भुनना।

भुंजवा—पुं० [हिं० भुजना] दे० 'भड़भूंजा'।
वि०=भुजिया।

भुंजा†—पुं०=भड़-भूंजा।

भुंजौना—पुं० [हिं० भूंजना+औना (प्रत्य०)] १. भूंजा या भूंजा हुआ अन्न। २. वह अन्न या पारिश्रामिक जो भूंजा अन्न भूंजने के बदले में लेता है।
†स०=भुनना।
†पुं०=भुनाई (दे०)।

भुंटा†—पुं०=भुट्टा।

भुंडली—स्त्री० [हिं० भूरा या भुडा] एक प्रकार का कीड़ा जिसके शरीर पर कँटीले और जहरीले बाल होते हैं। पिल्ला।

भुंडा—वि० [सं० रुंड का अनु०] [स्त्री० भुडी] १. बिना सींग का। जिसके सींग न हो। (पशु) २. दुष्ट। पाजी। बदमाश।
वि० [स्त्री० भुडी] भद्दा। भोंडा। उदा०—पासि बैठि सोभै नही, साथि रमाई भुडि।—गोरखनाथ।

भुंडी—स्त्री० [हिं० भुडा] एक प्रकार की छोटी मछली जिसे मूँछ नहीं होती। देहातियों की धारणा है कि इसके खाने से खानेवालों को मूँछें नहीं निकलतीं।

भुअंग*—पुं० [सं० भुजग] [स्त्री० भुअगिन] साँप। सर्प।

भुअंगम*—पुं०=भुअग (साँप)।

भुअ†—वि०, पुं०=भुव।
†स्त्री०=भूमि।

भुअन†—पुं०=भुवन।

भुअना†—अ०=भूलना।

भुआ†—पुं०=घूआ।
†स्त्री०=बूआ।

भुआर†—पुं०=भुआल (भूपाल)।

भुआल†—पुं०=भूपाल (राजा)।

भुइं*—स्त्री०=भूमि।

भुइयाँ—अव्य० [हिं० भुइँ=भूमि] जमीन या भूमि पर।

भुई†—स्त्री०=भूमि।

भुई*—स्त्री०=घूआ। उदा०—हूँ पुनि मरब होब जरि भुई।—जायसी।
†स्त्री० [हिं० भूआ] एक प्रकार का कीड़ा जिसके शरीर पर लंबे-लबे बाल होते है, तथा जिसका स्पर्श खुजली उत्पन्न करता है।

भुक*—पुं० [सं० भुज्] १. भोजन। आहार। २. अग्नि। आग।
†स्त्री०=भूख।

भुकड़ी—स्त्री०[?] बरसात के दिनों में प्रायः सड़ी हुई चीजों पर जमनेवाली एक प्रकार की सफेद रग की काई। फफूंदी।
क्रि० प्र०—लगना।

भुकराँद—स्त्री०=भुकरायँध।

भुकरायँध—स्त्री० [हिं० भुंकडी+गध] किसी चीज पर भुकड़ी जमने से निकलनेवाली गध।

भुकाना—स०=भुकाना।

भुक्खड़—वि० [हिं० भूख+अड (प्रत्य०)] १ जिसे विशेष तेज भूख लगी हो। २ जिसकी भूख मिटती न हो। जो प्राय. कुछ न कुछ खाता रहता या खाना चाहता हो। ३. लालची। लोलुप। ४. कंगाल। दरिद्र।

भुक्त—भू० कृ० [सं०√भुज् (खाना)+क्त, कुत्व] १ जो खाया गया हो। भक्षित। २. जिसका भोग किया गया हो। ३. (अधिकार-पत्र) जिसे भुना लिया गया हो। (कैश्ड)

भुक्त-भोग—वि० [ब० स०] जिसने भोग किया हो।

भुक्त-भोगी—वि० [सं० भुक्त-भोग] जिसे किसी बुरे काम या बात का दूषित परिणाम या फल भोगना पडा हो।

भुक्त-मान—पुं० [सं० कर्म० स०] कर्म का वह फल या भोग जो भोगा जाता हो या भोगा जाने को हो।

भुक्त-वृद्धि—स्त्री० [ष० त०] खाये हुए पदार्थों का पेट मे फूलना।

भुक्त-शेष—वि० [ष० त०] खाने से बचा हुआ। उच्छिष्ट। जूठा।

भुक्ति—स्त्री० [सं०√भुज् (खाना)+क्तिन्, कुत्व] १ भोजन। आहार। २. किसी पदार्थ का किया जानेवाला भोग। ३ लौकिक सुख। ४. ज्योतिष मे ग्रहों का किसी राशि मे अवस्थित होना। ५ वह स्थिति जिसमे कोई किसी पदार्थ पर अपना अधिकार रखकर उसका भोग करता है। कब्जा। दखल। (पजेशन)

भुक्ति-पात्र—पुं० [ष० त०] ऐसे बरतन जिनमे रखकर चीजें खाई जाती हैं।

भुक्ति-प्रद—वि० [सं० भुक्ति+प्र√दा (देना)+क] [स्त्री० भुक्ति-प्रदा] भोग देनेवाला। भोगदाता।
पुं० मूँग।

भुक्तोच्छिष्ट—वि० [भुक्त-उच्छिष्ट, कर्म० स०] किसी के खाने-पीने के बाद बचा हुआ। जूठन के रूप में होनेवाला।
पुं० उच्छिष्ट। जूठन।

भुक्तोज्झित—वि०, पुं० [भुक्त-उज्झित, कर्म० स०]=भुक्तोच्छिष्ट।

भुखमरा—वि० [हिं० भूख+मरना] १. जो भूखों मरता हो। २. जो खाने पीने के लिए मरा जाता हो।

भुखमरी—स्त्री० [हिं० भूख+मरना] भूखों विशेषत अन्नाभाव के कारण भूखो मरने की अवस्था या भाव। (स्टारवेशन)

भुखमुआ—वि०=भुखमरा।

भुखाना—अ० [हिं० भूख+आना (प्रत्य०)] भूखा होना। क्षुधित होना।
स० किसी को कुछ समय तक भूखा रखना।

भुखालू†—वि० [हिं० भूख+आलू (प्रत्य०)] जिसे भूख लगी हो। भूखा।

भुगत†*—स्त्री०, [हिं० भुगतना] १. भुगतने की अवस्था या भाव। २. दे० 'भुक्ति'।

भुगतना—स० [सं० भुक्ति] १. भोग करना। भोगना। जैसे—दंड भुगतना, सजा भुगतना। २. कार्य, व्यय आदि का भार अपने ऊपर लेना। जैसे—ब्याह का खरच हम भुगतेंगे।

अ० १. समाप्त होना। पूरा होना।

संयो० क्रि०—लेना।

२. व्यतीत होना। ३. ऋण, देन आदि का पटना।

भुगतान—पु० [हिं० भुगतना] १. भुगतने की अवस्था, क्रिया या भाव। २. भुगताने की अवस्था, क्रिया या भाव। ३ देन, मूल्य आदि चुकाने की अवस्था, क्रिया या भाव।

भुगतान-तुला—स्त्री० [हिं०+सं०] व्यापारिक वस्तुएँ, पूँजी, सूद, बीमा-शुल्क, जहाज का किराया जिनके संबंध में एक देश को दूसरे देशों से कुछ पावना हो या दूसरे देशों को देना हो। (बैलेन्स आफ पेमेंट)

भुगताना—स० [हिं० भुगतना का स०] १. कोई काम पूरा या संपादन करना। २. किसी को सुख-दुःख आदि का भोग करने में प्रवृत्त करना। ३. देन आदि चुकाना। भुगतान करना। ३. समय बिताना या लगाना। व्यतीत करना। जैसे—जरा-से काम में तुमने सारा दिन भुगता दिया।

भुगति†—स्त्री०=भुक्ति।

भुगाना—स० [हिं० भोगना का प्रे० रूप] भोग कराना। भोगवाना।

भुगुति†—स्त्री० [सं० भुक्ति] १. भोजन। उदा०—भुगुति न मिटै जौ लहि बिधि राखा।—जायसी। २. भिक्षा। उदा०—तब लगि भुगुति न लै सका, रावन सिय, एक साथ।—जायसी। ३. दे० 'भुक्ति'।

भुग्गा†—पु० [?] कूटकर और खाँड या चीनी मिलाकर तैयार किया हुआ चूर्ण।

वि० बेवकूफ। मूर्ख।

भुग्न—वि० [सं०√भुज् (टेढ़ा होना)+क्त, कुत्व, नत्व] [स्त्री० भुग्ना] १. टेढ़ा। वक्र। २. बीमार। रोगी।

भुग्ननेत्र—पु० [सं० ब०स०] एक प्रकार का सन्निपात जिसमें आँखें टेढ़ी हो जाती हैं।

भुच्च—वि० [हिं० भूत+चढ़ना] बहुत बड़ा गँवार और मूर्ख। भुच्चड़।

स्त्री० गँवार और मूर्ख होने की अवस्था या भाव। उदा०—लाख जाट पिंगल पढ़ै, एक भुच्च लागी रहे। (कहा०)

भुच्चड़—वि० [हिं० भूत+चढ़ना] बहुत बड़ा बेवकूफ। निरा मूर्ख।

भुजंग—पुं० [सं० भुज√गम् (जाना)+खच्, मुम्] १. साँप। २. हठ-योग में, कुंडलिनी रूपी नागिन का पति या स्वामी। ३. स्त्री का उपपति। यार। ४. प्राचीन भारत में राजा का एक प्रकार का अनुचर। ५. सीसा नामक धातु।

†वि० लंपट।

भुजंग-घातिनी—स्त्री० [सं० ष० त०] काकोली।

भुजंग-दमनी—स्त्री० [सं० ष० त०] नाकुली कंद।

भुजंग-पर्णी—स्त्री० [सं० ब० स०,+ङीष्] नागदमन।

भुजंग-प्रयात—पुं० [सं० ब० स०] एक प्रकार का वर्णिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में चार चार यगण होते हैं।

भुजंगभुज्—पुं० [सं० भुजंग√भुज् (खाना)+क्विप्] १. गरुड़। २. मयूर। मोर।

भुजंग-भोजी (जिन्)—पुं० [सं० भुजंग√भुज् (खाना)+णिनि, उप० स०] [स्त्री० भुजंग-भोजिनी] २. गरुड़। २. मयूर। मोर।

वि० साँप को खा जानेवाला।

भुजंगम—पुं० [सं० भुज√गम् (जाना)+खच्, मुम्] १. साँप। २. सीसा नामक धातु।

भुजंग-लता—स्त्री० [मध्य० स०] पान की बेल।

भुजंग-शत्रु—पुं० [ष० त०] गरुड़।

भुजंगा—पु० [सं० भुजंग] १. कीड़े-मकोड़े खानेवाला काले रंग का एक प्रकार का पक्षी। भुजैटा। कोतवाल। २. दे० 'भुजंग'।

भुजंगाख्य—पु० [सं० भुजंग-आख्या, ब० स०] नागकेसर।

भुजंगी—स्त्री० [सं० भुजंग+ङीप्] १. साँपिन। नागिन। २. एक प्रकार का वर्णिक वृत्ति का नाम जिसके प्रत्येक चरण मे क्रमशः तीन यगण एक लघु और एक गुरु होता है।

भुजगेंद्र—पुं० [सं० भुजंग-इंद्र, ष० त०] शेषनाग।

भुजंगेश—पुं० [सं० भुजंग-ईश, ष० त०] १ वासुकि। २. शेषनाग। ३. पिंगल मुनि का एक नाम। ४. पतंजलि ऋषि का एक नाम।

भुज—पुं० [सं०√भुज् (खाना)+क] १. बाहु। बाँह। भुजा।

मुहा०—भुज भर भेंटना या मिलना=आलिंगन करना। गले लगाना। उदा०—उन्मुक्त उर अस्तित्व खो क्यों तू उसे भुज भर मिली।—महादेवी। भुज में भरना=आलिंगन करना। गले लगाना।

२ हाथ। ३. दोनों हाथों के कारण, दो की संख्या का सूचक शब्द। ४. हाथी का सूँड़। ५. वृक्ष की डाली। शाखा। ६. किनारा। सिरा। ७. फेरा। लपेट। ८. ज्यामिति या रेखागणित में किसी क्षेत्र का कोई किनारा या सिरा अथवा उस पर खिंची हुई रेखा। (साइड) जैसे—चतुर्भुज, त्रिभुज आदि। ९. त्रिभुज का नीचेवाला किनारा या सिरा। आधार। १०. छाया का मूल आधार। ११. रेखा गणित में, सम-कोणो का पूरक कोण। १२. ज्योतिष में तीन राशियों के अन्तर्गत ग्रहों की स्थिति या खगोल का वह अंश जो तीन राशि से कम हो।

भुजइल†—पुं० [सं० भुजंग] भुजंगा नामक पक्षी।

भुज-कोटर—पुं० [सं० ष० त०] बगल। काँख।

भुजग—पुं० [सं० भुज√गम्+ड] १. साँप। २. अश्लेषा नक्षत्र। ३. सीसा नामक धातु।

भुजग-पति—पु० [सं० ष० त०] वासुकि।

भुजगांतक—पुं० [सं० भुजग-अंतक, ष० त०] १. गरुड़। २. मोर। ३. नेवला।

भुजगाशन—पुं० [सं० भुजग√अश् (भोजन करना)+ल्युट—अन] भुजगांतक। (दे०)

भुजगेंद्र—पुं० [सं० भुजग-इंद्र, ष० त०] शेषनाग। वासुकि।

भुजगेश, भुजगेश्वर—पु० [सं० भुजग-ईश, भुजग-ईश्वर, ष० त०] भुजगेन्द्र। वासुकि।

भुज-ज्या—स्त्री० [सं० ष० त०] त्रिकोणमिति में भुज की ज्या।

भुज-दंड—पुं० [सं० मध्य० स०] बाहुदंड।
भुजपात†—पु० दे० 'भूर्जपत्र'।
भुज-पाश—पु० [सं० मध्य० स०] किसी के गले मे हाथ डालना। गलबाँही।
भुज-प्रतिभुज—पु० [सं० द्व० स०] रेखा-गणित मे, सरल क्षेत्र की समानांतर या आमने-सामने की भुजाएँ।
भुज-बंध—पुं० =भुजबंध।
भुजबंध—पु० [सं० तृ० त०] १. भुजाओं से किसी को बाँधने की क्रिया या भाव। २ अंगद या बाजूबंद नाम का (बाँह पर पहनने का) गहना।
भुज-बल—पु० [ष० त०] १. बाँहो अर्थात् शरीर मे होनेवाला बल। शारीरिक शक्ति। २ शालिहोत्र के अनुसार एक प्रकार की भौंरी जो घोडे के अगले पैर मे ऊपर की ओर होती है।
भुजबाँध*—पु० [हिं० भुज+बाँधना] गले मे हाथ डालकर किया जानेवाला आलिंगन। गलबाँही।
भुजमान—पु० [सं० ष० त०] रेखा-गणित मे उन दो रेखाओ मे से प्रत्येक रेखा, जो किसी क्षेत्र पर कोई बिन्दु निश्चित करने के लिए खीची जाती है। (आर्डिनेन्ट)
भुज-मूल—पु० [सं० ष० त०] १ कन्धा, जहाँ से भुजा का आरंभ होता है। २ काँख।
भुजरी—स्त्री० [?] १ गेहूँ की वे बाले जो स्त्रियाँ धार्मिक अवसरों (जैसे—नागपंचमी, हरतालिका तीज) पर टोकरियो मे रखकर उगाती और नियत समय पर किसी जलाशय या नदी मे प्रवाहित करती हैं। जरई। २ उक्त को प्रवाह के लिए ले जाने के समय गाये जानेवाले विशिष्ट प्रकार के गीत।
भुजवा—पु० [हिं० भूनना] भड़भूँजा।
वि० भूँजा हुआ।
भुजवाई—स्त्री० [हिं० भुजवाना] भुनवाने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक। भुनाई।
भुज-शिखर—पु० [सं० ष० त०] कंधा।
भुजांतर—पु० [सं० भुज-अंतर, ष० त०] १ दोनों बाँहो के बीच का स्थान, अर्थात् क्रोड़। गोद। २ छाती। वक्ष। ३. दो भुजाओं के बीच का अन्तर या दूरी।
भुजा—स्त्री० [सं० भुज+टाप्] बाँह। बाहु।
मुहा०—**भुजा उठा या टेककर (कहना)**=प्रण अथवा प्रतिज्ञा करते हुए (कहना)।
भुजा-कंट—पु० [ष० त०] हाथ की उँगली का नाखून।
भुजाग्र—पु० [सं० भुजा-अग्र, ष० त०] हाथ।
भुजा-दल—पु० [ष० त०] कर रूपी पल्लव।
भुजाना†—स०=भुनाना।
भुजा-मध्य—पुं० [ष० त०] कोहनी।
भुजा-मूल—पु० [ष० त०] कंधे का वह अगला भाग जहाँ से हाथ आरंभ होता है। बाहु-मूल।
भुजायन—पु० [सं०] १ भुजाओं के रूप में अपने कुछ अंग शरीर के बाहर निकालना। २. दे० 'विकिरण'।
भुजाली—स्त्री० [हिं० भुज+आली (प्रत्य०)] १. एक प्रकार की बड़ी टेढी छुरी। २ छोटी बरछी।
भुजिया—वि० [हिं० भूँजना=भूनना] जो भूनकर तैयार किया या बनाया गया हो। जैसे—भुजिया चावल, भुजिया तरकारी।
पु० १ वह चावल जो धान को उबालकर तैयार किया गया हो। २. वह तरकारी जो सूखी ही भूनकर बनाई जाती है और जिसमें रसा या शोरबा नही होता। सूखी तरकारी।
भुजिष्य—पु० [सं०√भुज् (भोगना)+किष्यन्] [स्त्री० भुजिष्या] दास। सेवक।
भुजिष्या—स्त्री० [सं० भुजिष्य+टाप्] १ दासी। २. गणिका। रंडी। वेश्या।
भुजेना—पु० [हिं० भूजना] भूना हुआ दाना। चबेना।
भुजैल—पु० [सं० भुजग] भुजंगा (पक्षी)।
भुजौना*—पु० [हिं० भूजना] १ भूना हुआ अन्न। भूना। भूजा। २. वह अन्न या पारिश्रमिक जो भूँजा अन्न भूनने के बदले मे लेता है। ३ बड़े सिक्के भुनाने के लिए बदले मे दिया जानेवाला धन। भुनाई।
भुटिया—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की धारी जो डोरिये और चारखाने के बुनने मे चाली जाती है। (जुलाहे)
†पुं०=भोट या भोटिया।
भुट्टा—पु० [सं० भृष्ट, प्रा० भुट्टो] १. मक्के की हरी बाल जिसे भूनकर खाते हैं। २ ज्वार-बाजरे आदि की हरी बाल।
मुहा०—**भुट्टा सा उड़ना या उड़ जाना**=एक साधारण झटके मे ही कटकर अलग हो जाना या कटकर दूर जा पड़ना। जैसे—तलवार के एक ही वार से उसका सिर भुट्टा-सा उड गया।
३ गुच्छा।
भुठार—पु० [हिं० भूड+ठौर] वह छोटा या ऐसा ही और कोई पशु जो ऐसे प्रदेश मे उत्पन्न हुआ हो जहाँ की भूमि बलुई या रेतीली हो।
भुठौर†—पु० [हिं० भूड+ठौर] घोडो की एक जाति।
भुडली—स्त्री० [देश०] एक प्रकार का फूल और उसका पौधा।
भुड़िला†—पु० दे० 'भुडा'।
भुतलाना†—अ० [हिं० भुलाना=भूलना] १. रास्ता भूलकर इधर-उधर हो जाना। २ कोई चीज भूलने के कारण गुम हो जाना।
भुन—पु० [अनु०] मक्खी आदि के बोलने का शब्द। अव्यक्त गुंजार का शब्द।
मुहा०—**भुनभुन करना**=कुढ़कर अस्पष्ट स्वर मे कई तरह की बातें कहना।
भुनगा—पु० [अनु०] [स्त्री० भुनगी] १ एक प्रकार का छोटा उड़नेवाला कीड़ा जो प्राय फूलो और फलों मे रहता है और शिशिर ऋतु में प्राय. उड़ता रहता है। २. पतंगा। फतिंगा। ३ बहुत ही तुच्छ पदार्थ या व्यक्ति।
भुनगी—स्त्री० [हिं० भुनगा] एक प्रकार का छोटा कीड़ा जो ईख के पौधो को हानि पहुँचाता है।
भुनचट्टी†—स्त्री० [?] एक प्रकार की मछली।
भुनना—अ० [हिं० भुनाना का अ०] १ आग की गरमी से भूना जाना।

२. तोप, बन्दूक आदि की मार से मारा जाना। ३. नोट, रुपए आदि का छोटे छोटे सिक्कों में परिवर्तित होना।

भुनभुनाना—अ०[अनु०]१. भुनभुन शब्द होना।

स० १. भुनभुन शब्द करना। २. कुढ़कर बहुत धीरे धीरे या अस्पष्ट रूप में कई तरह की बातें कहना।

भुनवाई—स्त्री०[हिं० भुनवाना]१. भुनवाने की क्रिया या भाव। २. भुनाने के बदले में दी जानेवाली रकम। भाँज।

भुनाई†—स्त्री०=भुनवाई।

भुनाना—स०[हिं० भूनना का प्रे०]१ भूनने का काम किसी दूसरे से कराना। २. किसी को कुछ भूनने में प्रवृत्त करना। ३. नोट रुपए आदि को छोटे सिक्को में बदलवाना।

†अ०=भूनना (भूना जाना)।

भुनुगा—पुं०=भुनगा।

भुन्नास—पु०-[हिं० मुंइनास]१ दे० 'मुंइनास'। २.पुरुष की इंद्रिय। लिंग। (बाजारू)

भुन्नासी—पु०[हिं० मुंइनास] एक प्रकार का बडा देशी ताला जो प्राय: दूकानो आदि मे बन्द किया जाता है। इसमें लोहे का एक छोटा छड़ होता है जो ताला बन्द करने पर जमीन मे किये हुए छेद मे बैठ जाता है।

भुबि*—स्त्री०=भूमि।

भुमिया†—पु०=भूमिया (१ जमीदार, २. देवता)।

भुयंग—पु०=भुजग (साँप)।

भुरकना—अ०[स० भुरण]१. सूखकर भुरभुरा हो जाना। २. विस्मृत होना। भूलना।

†स०=बुरकना (छिडकना)।

भुरकस—पु०[हिं० भुरकना]१ किसी चीज का बहुत बुरी तरह कुचला या मसला हुआ रूप।

महा०—(किसी का)भुरकस निकलना=(क) चूर-चूर होकर विनष्ट होना। (ख) परिश्रम, मार आदि के कारण बहुत अधिक दुर्दशाग्रस्त होना।

२. बुकनी।

वि० चूर्ण या टुकडे किया हुआ।

भुरका—पु०[हिं० भुरकना]१. भुरकने की अवस्था किया, या भाव। २ चूर्ण। बुकनी। ३. अभ्रक का चूर्ण। अबीर। ४. मिट्टी का कसोरा या प्याला। ५ कुल्हड़। कूजा। ६ मिट्टी की दवात।

भुरकाना—स०[हिं० भुरकना] १. किसी चीज को इतना सुखाना कि वह भुरभुरी हो जाय। २. छिड़कना। भुरभुराना। ३ भुलावा देना। बहकाना। भुलाना।

भुरकी—स्त्री० [हिं० भुरका] १. अन्न रखने की छोटी कोठिला। धुनकी। २. पानी का छोटा गड्ढा। ३. हौज। ४. छोटा भुरका या कुल्हड। ५ छिद्र। छेद। (पूरब)

भुरकुटा—पु० [अनु० भुर] छोटा कीडा-मकोड़ा।

भुरकुन†—पु०[सं० भुरण; हिं० भुरकना] १. चूर्ण। चूरा। २. दे० 'भुरकस'।

भुरकुस†—वि०,पुं०=भुरकस।

भुरजाल†—पुं०[?] गढ़। उदा०—भला चीत भुरजालरा, आम लगावा सींग।—बाँकीदास।

भुरजी†—पु०=भूँजा।

†स्त्री०=बुर्जी (छोटा बुर्ज)।

भुरत—पुं०[देश०] एक प्रकार की बरसाती घास।

भुरता—पु०[हिं० भुरकाना या भुरभुरा]१ वह पदार्थ जो कुचले जाने पर दबकर ऐसा बिगड गया हो कि उसके अवयवों और आकृति की पहचान न हो सके। २. चोखा या भरता नाम का सालन।

भुरभुर—स्त्री०[देश०] एक प्रकार की घास जो ऊपर या रेतीली भूमि मे होती है। भुरभुरोई। भुलनी।

भुरभुरा—वि०[अनु०] [स्त्री० भुरभुरी]साधारण स्पर्श या हलके दबाव से जिसके कण या रवे अलग-अलग हो जायँ। जैसे—भुरभुरी मिट्टी।

पु०[देश०] एक बरसाती घास।

भुरभुराना—स०[हिं० भुरभुरा] १. इस प्रकार किसी चीज को स्पर्श करना कि उसके कण या रवे अलग अलग हो जायँ। २. चुटकी या उँगली मे कोई चूर्ण रखकर किसी चीज पर छिडकना। बुरकना।

भुरभुराहट—स्त्री० [हिं० भुरभुरा+आहट (प्रत्य०)] भुरभुरे होने की अवस्था, गुण या भाव। भुरभुरापन।

भुरली†—स्त्री०[हिं० भुडली]१. कमला या सूँडी नाम का कीड़ा। भुडली। २. फसल को हानि पहुँचानेवाला एक प्रकार का कीड़ा।

भुरवना†—स०[स० भ्रमण, हिं० भरमना का प्रे०]१. किसी को भ्रम में डालना। भुलावा देना। २ प्रलोभन देना। फुसलाना। उदा०—बातनि भुरइ राधिका मोरी।—सूर।

भुरहरा*—पु०=भोर (तडका या सवेरा)।

वि०=भुरभुरा।

भुरहरे—अव्य०=भोरहरे।

भुराई—स्त्री० [हिं० भोला+आई (प्रत्य०)] भोलापन। सीधापन।

*स्त्री०[हिं० भूरा+आई (प्रत्य०)]भूरापन।

भुराना—अ०[हिं० भुलाना या भूलना]१. किसी के भुलावे या धोखे में आना। २. विस्मृत होना। भूलना।

स० भुलावे या धोखे में डालना। बहकाना। भुरवना।

भुरावना*—अ०, स०=भुराना।

भुरकी—स्त्री०=भुरका।

भुर्रा—वि०[हिं० भूरा या भौरा] अत्यधिक काला या कुरूप।

पु० एक तरह की चीनी।

भुलक्कड—वि० [हिं० भूलना+अक्कड़ (प्रत्य०)] [भाव० भुलक्कड़ी-पन] (व्यक्ति) जो प्राय कुछ न कुछ भूल जाता हो। फलतः क्षीण स्मरण शक्तिवाला।

भुलना—वि० [हिं० भूलना] अक्सर भूलता रहनेवाला। विस्मरणशील-भुलक्कड़। जैसे—भुलना स्वभाव।

†अ०=भूलना।

पुं०एक प्रकार की घास जिसके विषय मे लोगों मे यह प्रवाद है कि इसके खाने से लोग सब बातें भूल जाते हैं।

भुलभुला—पुं० [अनु०] गरम राख। भूभल।

भुलवाना—स० [हिं० भूलना का प्रे०]१. किसी को कुछ भूलने में प्रवृत्त

करना। २. ऐसा काम करना जिससे कोई भूलकर भ्रम में पड़े। धोखे में डालना।

भुलसना†—अ०, स०=झुलसना।

भुलाना—स०[हिं० भूलना]१. स्मरण की हुई या रटी हुई बात स्मृति पथ से उतरना। २ ऐसा प्रयत्न करना कि पुरानी विशेषत दुःखद घटनाएँ या बातें स्मरण-शक्ति में न आवें। ३. भ्रम में डालना। धोखा देना।

अ०१. विस्मृत होना। भूलना। २. धोखे या भ्रम में पडना। भुलावे में आना। ३. इधर-उधर भटकना।

भुलावा—पु० [हिं०भूलना] ऐसी बात जो किसी को धोखे या भ्रम मे डालने के लिए कही जाय। छलपूर्ण बात।

क्रि० प्र०—देना।

भुलेखा—पु०[हिं० भूल+धोखा] भूल से होनेवाला धोखा या भ्रम।

भुवंग—पुं०=भुजग (साँप)।

भुवंगम†—पु०=भुजगम (साँप)।

भुव(स्)—पु०[स० भू+असुन्]१. वह आकाश या अवकाश जो भूमि और सूर्य के बीच मे है। अतरिक्ष।

विशेष—यह सात लोकों के अंतर्गत दूसरा लोक कहा गया है।

२. सात महाव्याहृतियों के अतर्गत दूसरी महाव्याहृति।

विशेष—मनुस्मृति के अनुसार यह महाव्याहृति ओकार की उकार मात्रा के सग यजुर्वेद से निकाली गई है।

भुव—पु०[स० भू+क]अग्नि। आग।

†स्त्री०१.—भू (पृथ्वी)। ३. भौंह (भ्रू)।

भुवण†—पु०=भवन।

भुवन—पु० [स०√भू (होना)+क्युन्—अन] १. जगत। ससार। २. पुराणानुसार चौदह लोकों में से प्रत्येक लोक की संज्ञा। सातों स्वर्गों और सातों पातालों मे से प्रत्येक। (दे० 'लोक') ३. उक्त के आधार पर चौदह की सख्या का सूचक शब्द। ४. जल। पानी। ५. आकाश। ६. जन। लोग। ७. एक प्राचीन मुनि।

भुवनकोश—पु०[ष० त०] १. भूमडल। पृथिवी। २ चौदहो भुवनो की समष्टि। ३. समस्त ब्रह्माण्ड।

भुवन-त्रय—पु० [स० ष० त०] स्वर्ग, मर्त्य और पाताल ये तीनों लोक।

भुवनपति—पु०[सं ष० त०] एक देवता जो महीधर के अनुसार अग्नि का भाई है।

भुवन-पावनी—स्त्री०[ष० त०]गंगा।

भुवन-भावन—पु० [ष० त०] सब लोकों की सृष्टि करनेवाला; परमेश्वर।

भुवन-माता (तृ)—स्त्री०[ष० त०] दुर्गा।

भुवन-मोहिनी—स्त्री०[ष० त०] देवी का एक रूप।

भुवनाधीश—पुं०[भुवन-अधीश, ष० त०] एक रुद्र का नाम।

भुवनेश—पु०[भुवन-ईश, ष० त०]१. शिव की एक मूर्ति। २. ईश्वर।

भुवनेश्वर—पु० [भुवन-ईश्वर, ष० त०] १. शिव की एक मूर्ति या रूप। २ एक प्रसिद्ध तीर्थ जो उड़ीसा मे पुरी के पास है और जहाँ उक्त शिव की मूर्ति है।

भुवनेश्वरी—स्त्री०[भुवन-ईश्वरी, ष० त०] दस महाविद्याओं में से एक। (तंत्र)

भुवन्यु—पुं०[भू+कन्युच्] १. सूर्य। २. अग्नि। आग। ३. चन्द्रमा। ४ प्रभु। स्वामी।

भुवपाल†—पु०=भूपाल (राजा)।

भुवर्लोक—पु० [सं० कर्म० स०] सात लोको मे से दूसरा लोक। पृथ्वी और सूर्य का मध्यवर्ती भाग। अतरिक्ष।

भुवा—पु०[हिं० धूआ] धूआ। रूई।

भुवार—पु०=भुवाल (भूपाल)।

भुवाल†—पु०[स० भूपाल, प्रा० भुआल] राजा।

भुशुंडी—पु० [स०]१ काक भुशुडी। २. महाभारत काल का चमड़े का एक प्रकार का अस्त्र। इसके बीच में एक गोल चदोआ होता था जिसके साथ डोरी या तस्मे से दो कड़े बधे रहते थे, जिनसे आघात या वार होता था।

भुस†—पुं०=भूसा

भुसी*—स्त्री०=भूसी।

भुसुंड—पु०[स० भुशुंड] सूँड।

वि० बहुत मोटा और भद्दा। जैसे—काला भुसुड।

भुसुंडी—पु०=भुशुंडी।

भुसौला—पु०[हिं० भूसा+औला (प्रत्य०)] [स्त्री० भुसौली] वह कोठरी जिसमें भूसा भरा रहता है।

भुहराना†—स० =भुरभुराना।

भूँई†—स्त्री० [स० भूमि] भूमि। पृथ्वी।

भूँकना—अ०[अनु०]१. कुत्तों का भूँ-भूँ या भौं-भौं शब्द करना। २ झूठ-मूठ या व्यर्थ मे (किसी के पीछे पडकर उसके सबध मे) बुरा-भला बकते फिरना।

भूँख†—स्त्री० =भूख।

भूँखा†—वि०=भूखा।

भूँगड़ा†—पु०[हिं० भूनना] भूना हुआ चना।

भूँचाल—पु०=भूकंप। (पश्चिम)

भूँजा†—पु०=भड़भूँजा। उदा०—करम बिहून ए दूनी, कोड रे धोबि भूकोक भूँजा—जायसी।

भूँजना—स० १. =भूनना। २ भोगना।

भूँजा—पु० [हिं० भूनना]१. भूना हुआ अन्न। चबेना। २ अन्न भूँजनेवाला व्यक्ति। भड़भूँजा। ३. अन्न भूँजनेवालों की जाति।

भूँड़—स्त्री०=भूड (बलुई भूमि या मिट्टी)।

भूँड़री—स्त्री०[स० भू] मध्य युग में, नाउ, बारी आदि को जोतने-बोने के लिए जमीदार से मिलनेवाली ऐसी भूमि जिसपर उन्हें लगान नही देना पड़ता था।

भूँडा†—वि०=भोडा।

भूँड़िया—पुं०[हिं० भूँडरी=माफी जमीन] ऐसा कृषक जो दूसरो से हल-बैल माँगकर खेती करता हो।

भूँडोल†—पु०=भूकंप।

भूँरी—पु० [सं० भ्रमर] भ्रमर। भौंरा। (डिं०)

भूँसना—अ०=भूकना।

भू—स्त्री० [सं०√भू+क्विप्] १. पृथ्वी। २. जमीन। भूमि। ३. जगह। स्थान। ४ अस्तित्व। सत्ता। ५. प्राप्ति। ६. यज्ञ की अग्नि। ७. रसातल। ८. सीता की एक सखी।
†स्त्री०=भू (भौंह)।
भू-आँवला—पुं०[सं० भूम्यामलक]एक तरह की घास।
भूआ—पुं०[हिं० भूआ] [स्त्री० अल्पा० भूई]रूई के समान हलकी और मुलायम वस्तु का बहुत छोटा टुकड़ा। घूआ। जैसे—सेमर का भूआ।
†स्त्री०=बूआ (पिता की बहन)।
भू-आगम—पुं० [सं० सुप्सुपा स०] १. भूमि से होनेवाली आय। २ सरकार को लगान के रूप में होनेवाली आय। (लैंड रेवेन्यू)
भूई—स्त्री०[हिं० भूआ का स्त्री० अल्पा०] पूनी।
भूकंद—पुं०[ष० त०] जमीकंद। सूरन।
भू-कंप—पुं०[ष० त०] कुछ क्षणो के लिए धरातल पर होनेवाला वह प्राकृतिक कंपन जिस के फलस्वरूप मकान आदि हिलने लगते या गिर पड़ते, जमीन फट या दब जाती और कुछ अवस्थाओं में थल के स्थान पर जल या जल के स्थान पर थल हो जाता है। भूचाल। (अर्थक्वेक)
भूकंपमापी—पुं०=भूकंप लेखी।
भूकंपलेख—पुं० [सं०] वह अंकन या लेख जो भूकंप लेखी यंत्र से भूकंपों की गतिविधि, वेग, व्यापकता आदि के संबंध मे प्रस्तुत होता है। (सीस्मोग्राम)
भूकंपलेखी—पुं० [सं० भूकंप-लेखिन्] एक प्रकार का यंत्र जो जमीन के नीचे रहता है, और जिससे यह जाना जाता है कि भूकंप कहाँ और किस ओर से आया और कितने समय तक रहा और उसकी तीव्रता या वेग कितना है। (सीस्मोग्राफ)
भूकंप-विज्ञान—पुं० [ष० त०] आधुनिक विज्ञान की वह शाखा जिसमें भूकंपो के कारणो तथा गतिविधि, वेग, स्वरूप आदि का विवेचन होता है। (सीस्मोलाजी)
भूक†—स्त्री०=भूख।
भू-कदंब—पुं०[स० त०] एक तरह का कदंब।
भूकना—अ० दे० 'भूँकना'।
भू-कर्ण—पुं०[ष० त०] पृथ्वी का व्यास।
भू-कश्यप—पुं०[स० त०] कृष्ण के पिता वसुदेव का एक नाम।
भूका—वि०=भूखा।
भू-काक—पुं०[सं० स० त०]१. एक तरह का बाज पक्षी। २. क्रौंच पक्षी। ३. नीला कबूतर।
भू-कुष्मांडी—स्त्री०[सं० स० त०] भुँइकुम्हड़ा। बिदारी।
भूकेश—पुं० [ष० त०]१. बरगद का पेड़। वट। वृक्ष। २. सेवार।
भूकेशा—स्त्री०[सं० ब० स०,+ङीष्] राक्षसी।
भूखंड—पुं० [सं० ष० त०] १. भूमि का कोई टुकड़ा। २. पृथ्वी का कोई खंड या विभाग। (ट्रैक्ट)
भूख—स्त्री०[सं० बुभुक्षा] पेट खाली होने पर अन्न आदि भक्षण करने की तीव्र इच्छा।
मुहा०—भूख मरना=(क) ऐसी शारीरिक स्थिति उत्पन्न होना जिसमें पूरी भूख न लगती हो और फलतः उचित मात्रा में भोजन न किया जा सकता हो। (ख) इच्छा न रहना। भूख लगना=भोजन करने की आवश्यकता प्रतीत होना। कुछ खाने को जी चाहना। भूखों मरना=(क) भोजन के अभाव में भूख से व्याकुल होकर मरना। (ख) भोजन के लिए मारे मारे फिरना।
२. कोई चीज पाने या लेने की आवश्यकता और इच्छा।(व्यापारी) जैसे—जितनी भूख होगी, उतना माल खरीद लेंगे। ३. अवकाश। गुंजाइश। समाई। ४. कोई चीज प्राप्त करने की उत्कट इच्छा। उदा०—मेरे मन में स्त्री की भूख जाग उठती थी।—अमृतलाल नागर।
भूखन, भूखना†—पुं०=भूषण।
भूखना*—स०[सं० भूषण] भूषित करना। सुसज्जित करना। सजाना। अ० भूषित होना। सजना।
भूखर—स्त्री०[हिं० भूख] १. भूख। क्षुधा। २. इच्छा। कामना।
भूखरी—स्त्री०[मध्य० स०] छोटी खजूर।
भूखा—वि०[हिं० भूख]१. जिसे भूख लगी हो। २. उत्कट इच्छुक या याचक। जैसे—प्यार का भूखा। ३. दरिद्र।
भूखा-नंगा—वि० [हिं०] अन्न-वस्त्र के कष्ट से पीड़ित और दरिद्र।
भूखा-प्यासा—वि० [हिं०] जिसे भूख तथा प्यास लगी हो। क्षुधित-तृषित।
भू-गंधा—स्त्री० [सं० ब० स०,+टाप्] मुरा नामक गन्ध द्रव्य।
भू-गर्भ—पुं० [सं० ष० त०] १. पृथ्वी का नीचेवाला या भीतरी भाग। २. विष्णु। ३. संस्कृत के भवभूति कवि का एक नाम।
भू-गर्भगृह—पुं० [सं० मध्य० स०] तल-घर। तहखाना।
भू-गर्भविद्या—स्त्री० [ष० त०] दे० 'भूशास्त्र'।
भू-गर्भशास्त्र—पुं० [ष० त०] भू-शास्त्र। (दे०)
भूगोल—पुं० [सं० ष० त०] १. पृथ्वी। २. वह शास्त्र जिसमे पृथ्वी तल के ऊपरी स्वरूप, प्राकृतिक या विभागों जगलों, नदियों, पहाड़ों आदि कृत्रिम या मानवी राजनीतिक विभागो (देश, नगर, गाँव आदि) वातावरणिक विभागों (उष्ण कटिबंध, शीत कटिबंध) तथा उद्योग-धंधों, ऋतुओं, निवासियों तथा इसी प्रकार की और बातों का विचार होता है। (जियॉग्रैफ़ी)
भूगोलक—पुं० [सं० भूगोल+कन्] भूमंडल।
भूचक्र—पुं० [सं० ष० त०] १. पृथ्वी की परिधि। २. क्रान्ति वृत्त। ३. विषुवत् रेखा।
भूचर—वि० [सं० भू√चर् (जाना)+ट] स्थलचर।
पुं० १. स्थलचर प्राणी। शिव। ३. दीमक। ४. वह सिद्धि जिससे मनुष्य के लिए सब कुछ गम्य, प्रत्यक्ष तथा प्राप्य होता है। (तंत्र)
भूचरी—स्त्री० [सं० भूचर+ङीष्] योग साधन में समाधि की एक मुद्रा जिसके द्वारा प्राण और अपान वायु दोनों एकत्र हो जाती हैं।
भूचाल—पुं० [सं० भू+हिं० चाल=चलना] भूकंप। (देखें)
भू-चित्रावली—स्त्री० [सं० ष० त०] दे० 'मान-चित्रावली'।
भू-छाया—स्त्री० दे० 'प्रच्छाया'।
भूजंतु—पुं० [सं० ष० त०] १. हाथी। २. एक तरह का घोंघा। ३. सीसा नामक धातु।
भूजंबु—पुं० [सं० ष० त०] १. गेहूँ। २. बन जामुन।

भूजा—स्त्री० [सं० भू√जन् (उत्पत्ति)+ड+टाप्] सीता। उदा०—आर्द्र नयन भूजा ने तत्क्षण आर्तों का दुख किया निवारण।—पंत। †पु०=भूंजा।

भूजाल—पु० [स० ष० त०] वृक्ष। पेड़।

भूजी†—स्त्री=भुजिया।

भूटान—पु० [स० भोटँग] नेपाल के पूर्व तथा आसाम के उत्तर में स्थित एक स्वतंत्र देश।

भूटानी—वि० [हि० भूटान+ई (प्रत्य०)] भूटान देश का। भूटान संबंधी। पु० १. भूटान देश का निवासी। २ भूटान देश का घोड़ा। स्त्री० भूटान देश की बोली।

भूटिया बादाम—पु० [हि० भूटान+फा० बादाम] एक प्रकार का मँझोला पहाड़ी वृक्ष जिसे कपासी भी कहते है। इसका फल खाया जाता है।

भूड़—स्त्री० [देश०] १ वह भूमि जिसमे बालू मिला हुआ हो। बलुई भूमि। २ कुएँ का भीतरी स्रोत। झिर। सोत।

भूडोल—पु० [स० भू+हि० डोलना] भूकप। (देखे)

भूण—पु० [स० भ्रमण] १ नदी, समुद्र आदि की यात्रा। जल-यात्रा। २ जल-विहार। (डिं०)

भूत—वि० [सं० √भू (होना)+क्त] १ जो अस्तित्व मे आ चुका या बन चुका हो। बना हुआ। २ जो घटना आदि के रूप मे घटित हो चुका हो। ३ जो किसी विशिष्ट रूप को प्राप्त हो चुका हो। जैसे—अन्तर्भूत, भस्मीभूत। ४ जो समय के विचार से बीत चुका हो। पहले का। पुराना। जैसे—भूत-काल, भूत-पूर्व मत्री। ५ जो किसी के सदृश या समान हो चुका हो। जैसे—ब्रह्मीभूत।

पु० [स० भूत] १ शिव का एक रूप। २ चद्रमास का कृष्णपक्ष। ३. चद्रमास के कृष्णपक्ष की चतुर्दशी। ४. देवताओ के एक पुरोहित। ५. पुत्र। बेट।

पु० [स० भूत] १ वह जिसकी कोई सत्ता हो। कोई चेतन या जड पदार्थ। २. जीव। प्राणी। ३ दार्शनिक क्षेत्र मे वे विशिष्ट मूल तत्त्व जिनसे सारी सृष्टि की रचना हुई है। द्रव्य। महाभूत। (इनकी सख्या पाँच कही गई है, यथा—पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश)। ४ बीता हुआ काल या समय। गुजरा हुआ जमाना। ५ व्याकरण मे, क्रिया के तीन कालों मे से एक जो किसी घटना के पूर्व समय मे समाप्त या सम्पन्न हो चुकने का सूचक होता है। जैसे—वह चला गया। यहाँ 'चला गया' क्रिया भूतकाल की सूचक है। ६ पुराणानुसार एक प्रकार के पिशाच या देव जो रुद्र के अनुचर हैं और जिनका मुँह नीचे की ओर लटका हुआ या ऊपर की ओर उठा हुआ माना जाता है। ७ लोक-व्यवहार मे किसी मृत प्राणी की आत्मा जिसके सबध मे यह माना जाता है कि छाया के रूप मे और बहुत ही सूक्ष्म शरीर वाली होती है। जिन। शैतान।

विशेष—इनके विषय मे यह भी माना जाता है, कि इनका यह रूप तब तक बना रहता है, जब तक इनकी मुक्ति या मोक्ष नही हो जाता; अथवा इन्हे दूसरा जन्म नही प्राप्त होता। यह भी समझा जाता है कि ये कभी कभी लोगो को दिखाई भी पड़ती हैं और अनेक प्रकार के उपद्रव भी करती हैं। यह भी कहा जाता है कि कभी कभी ये किसी व्यक्ति के शरीर और मस्तिष्क पर अधिकार करके उसके होश-हवास बिगाड देती हैं, जिससे वह बकने-झकने और पागलो के से काम करने लगता है। इसी दृष्टि से इस शब्द के साथ *आना, उतरना, चढ़ना, लगना* आदि क्रियाओ का भी प्रयोग होता है।

पद—भूतों का पकवान या मिठाई=(क) ऐसा पदार्थ जो भ्रम-वश दिखाई तो दे पर वास्तव मे जिसका कोई अस्तित्व न हो। (कहते हैं कि भूत प्रेत आकर ऐसी मिठाई रख जाते है, जो खाने या छूने पर मिठाई नही रह जाती, राख, मिट्टी, विष्ठा आदि हो जाती है। (ख) बिना किसी परिश्रम के या बहुत सहज मे मिला हुआ धन जो शीघ्र ही नष्ट हो जाय।

मुहा०—(किसी पर) भूत चढ़ना या सवार होना (क) किसी पर भूत का आवेश होना। (ख) किसी का बहुत अधिक क्रुद्ध होकर पागलो का-सा आचरण या व्यवहार करने लगना। (किसी बात का) भूत चढ़ना या सवार होना=(किसी बात के लिए) बहुत अधिक आग्रह, तन्मयता या हठ होना। जैसे—तुम्हे तो हर बात का भूत चढ जाता है। (किसी काम या बात के लिए) भूत बनना—बहुत ही तन्मयता या दृढ़तापूर्वक और पागलो की तरह किसी काम के पीछे पडना या उसमें बुरी तरह से लगना। (किसी को) भूत लगना=किसी पर भूत चढना या सवार होना। (दे० ऊपर)

८. वह औषध जिसके सेवन से प्रेतो और पिशाचो का उपद्रव शांत होता हो। ९ मृत शरीर। शव। लाश। १० सत्य। ११ कार्तिकेय। १२ योगी। १३ वृत्त। १४ लोध्र। लोध।

भूतक—पु० [स० भूत+कन्] पुराणानुसार सुमेरु पर के २१ लोको मे से एक लोक।

भूतकर्ता (र्तृ)—पु० [ष० त०] ब्रह्मा। स्रष्टा।

भूतकला—स्त्री० [ष० त०] एक प्रकार की शक्ति जो पच भूतो को उत्पन्न करनेवाली मानी गई है।

भूतकाल—पु० [कर्म० स०] बीता हुआ समय।

भूतकालिक—वि० [स० भूतकाल+ठन्—इक] भूतकाल-सबधी। जो बीते हुए समय मे हुआ हो या उनसे सम्बन्ध रखता हो। जैसे—भूत-कालिक कृदत।

भूतकालिक कृदन्त—पु० [कर्म०स०] क्रिया से बना हुआ भूत काल का सूचक विशेषण रूप। जैसे—कृत, गत, परिष्कृत आदि।

भूत-कृत—पु० [स० भूत√कृ (करना)+क्विप्, तक्-आगम] १. देवता। २ विष्णु।

भूतकृदंत—पु० [स०] व्याकरण मे क्रिया का वह रूप जिससे यह सूचित होता है कि क्रिया भूत काल मे पूरी या समाप्त हो चुकी थी। जैसे—'चलना' क्रिया का भूतकृदत 'चला' और 'बैठना' क्रिया का भूतकृदत 'बैठा' है।

भूत-केश—पु० [ष० त०] १. सफेद दूब। २. इद्र-वारुणी। ३. सफेद तुलसी। ४ जटामासी।

भूतकांति—स्त्री० [ष०त०] किसी व्यक्ति पर होनेवाला भूतों का आवेश।

भूतखाना—पु० [हि० भूत+फा० खाना=घर] बहुत मैला कुचैला या ऐसा अँधेरा जो भूतो के रहने का स्थान जान पड़े।

भूतगंधा—स्त्री० [ब० स०,+टाप्] मुरा नामक गध द्रव्य।

भूतगण—पु० [ष० त०] शिव के अनुचरों का वर्ग।

भूतग्राम—पुं० [ष० त०] देह। शरीर।

भूतघ्न—पुं० [सं० भूत√हन् (मारना)+टक्, कुत्व] १. लहसुन। २. भोजपत्र। ३. ऊँट।
वि० भूतों का नाश करनेवाला।

भूतघ्नी—स्त्री० [सं० भूतघ्न+ङीप्] तुलसी।

भूत-चतुर्दशी—स्त्री० [मध्य० स०] कार्तिक कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी। नरक चौदस।

भूत-चारी(रिन्)—पुं० [सं० भूत√चर् (गति)+णिनि] महादेव। शिव।

भूत-चिंता—स्त्री० [ष० त०] भूत नामक तत्त्वों की छानबीन।

भूत-जटा—स्त्री० [ष० त०] जटामासी।

भूतत्त्व-विज्ञान—पुं० [ष० त०] भूशास्त्र।

भू-तत्त्व-विद्या—स्त्री० [ष० त०]=भू-शास्त्र।

भूत-दया—स्त्री० [ष० त०] चेतन और जड़ सभी के प्रति मन मे रखा जानेवाला दया-भाव।

भूत-द्रुम—पुं० [मध्य० स०] श्लेष्मातक वृक्ष।

भूत-धात्री—स्त्री० [ष० त०] पृथ्वी।

भूत-धारिणी—स्त्री० [सं० भूत√धृ (धारण करना)+णिनि,+ङीष्, उप० स०] धरती। पृथ्वी।

भूत-धाम (न्)—पुं० [ष० त०] पुराणानुसार इंद्र का एक पुत्र।

भूत-नाथ—पुं० [ष० त०] शिव। महादेव।

भूत-नायिका—स्त्री० [ष० त०] दुर्गा।

भूत-नाशन—पुं० [ष० त०] १. रुद्राक्ष। २. सरसों। ३. भिलावाँ। ४ हींग।

भूत-निचय—पुं० [ष० त०] देह। शरीर।

भूतनी—स्त्री० [हिं० भूत+नी] १. भूत योनि की स्त्री। २. डाकिनी। ३. लाक्षणिक अर्थ में काले रंग और प्रायः क्रोधी तथा लड़ाके स्वभाव-वाली स्त्री।

भूत-पक्ष—पुं० [मध्य० स०] कृष्ण पक्ष। अँधेरा पाख।

भूत-पति—पुं० [ष० त०] १. शिव। २. अग्नि। ३. काली तुलसी।

भूत-पत्री—स्त्री० [ब० स०,+ङीप्] काली तुलसी।

भूत-पाल—पुं० [सं० भूत√पाल् (पालना)+णिच्+अच्] विष्णु।

भूत-पूर्णिमा—स्त्री० [ष० त०] आश्विन की पूर्णिमा। शरद् पूर्णिमा।

भूत-पूर्व—वि० [सुप्सुपा स०] १. पहलेवाला। प्राचीन। २ गत। ३. (पदाधिकारी के संबंध में) जो किसी पद पर पहले कभी रह चुका हो। जैसे—भूतपूर्व सभापति।

भूत-प्रकृति—स्त्री० [ष० त०] १. भूतों अर्थात् जीवों की उत्पत्ति। २. दे० 'मूल-प्रकृति'।

भूत-प्रेत—पुं० [द्व० स०] भूत, पिशाच, प्रेत आदि की योनियाँ, अथवा इन योनियों में प्राप्त होनेवाले सूक्ष्म शरीरों का वर्ग।

भूत-बलि—स्त्री० [ष० त० या मध्य० स०] भूतयज्ञ। (दे०)

भूत-भर्ता (र्तृ)—पुं० [ष० त०] १. भूतों का भरण-पोषण करनेवाले; शिव। २. भैरव का एक रूप।

भूत-भावन—पुं० [सं० भूत√भू (होना)+णिच्+ल्यु—अन] १. १. ब्रह्मा। २. शिव। विष्णु।

भूत-भाषा—स्त्री० [सं० ष० त०] १. भूत-प्रेतों की भाषा। २. पैशाची भाषा।

भूत-भैरव—पुं० [सं० कर्म० स०] १. भैरव का एक रूप। २. उक्त रूप की मूर्ति। ३. हरताल, गंधक आदि के योग से बनाया जानेवाला रस जो ज्वर तथा वात नाशक होता है। (वैद्यक)

भूत-माता (तृ)—स्त्री० [ष० त०] गौरी।

भूत-मात्रा—स्त्री० [ष० त०] (पाँचों में से हर एक) भूत का मूल सूक्ष्म रूप। तन्मात्र। तन्मात्रा।

भूत-यज्ञ—पुं० [मध्य० स०] गृहस्थ के लिए विहित पाँच यज्ञों में से एक जिसमें वह समस्त जीवों को आहुति देता है। भूतबलि।

भूत-योनि—स्त्री० [ष० त०] प्रेतयोनि।
पुं० परमेश्वर।

भूत-राज—पुं० [ष० त०] शिव।

भूतल—पुं० [ष० त०] १. पृथ्वी का ऊपरी तल। धरातल। भू-पृष्ठ। २. जगत। संसार। ३. पाताल।

भूत-लक्षी—वि०=पूर्व-व्यापित।

भूत-वाद—पुं० [ष० त०] १. प्राचीन भारत में, एक नास्तिक दार्शनिक संप्रदाय जो पंच-भूतों को ही सृष्टि का कर्ता मानता था, ईश्वर या ब्रह्मा को नहीं। २ दे० 'भौतिकवाद'। (मेटीरियलिज़्म)

भूत-वादी (दिन्)—वि० [सं० भूतवाद+इनि] भूत-वाद सम्बन्धी।
पुं० भूत-वाद का अनुयायी।

भूत-वास—पुं० [ब० स०] १ महादेव। शिव। २. विष्णु। ३. बहेड़े का पेड़।

भूत-वाहन—वि० [ब० स०] भूतों पर सवारी करनेवाला।
पुं० महादेव। शिव।

भूत-विक्रिया—स्त्री० [ष० त०] १. भूत-प्रेतों के कारण होनेवाली बाधा। प्रेत-बाधा। २. [ब० स०] अपस्मार रोग।

भूत-विद्या—स्त्री० [मध्य० स०] आयुर्वेद का वह अंग जिसमे देवता, असुर, गंधर्व, यक्ष, पिशाच, नाग, ग्रह, उपग्रह आदि के प्रभाव से उत्पन्न होनेवाले मानसिक रोगों का निदान और विवेचन होता है। इन्हें दूर करने के लिए बहुधा ग्रह-शांति, पूजा, जप, होम, दान, रत्न पहनने और औषध आदि के सेवन का विधान होता है।

भूत-विनायक—पुं० [ष० त०] भूतों अर्थात् जीवो के नायक, शिव।

भूत-शुद्धि—स्त्री० [ष० त०] पूजन आदि से पहले मंत्रों द्वारा की जानेवाली शरीर की शुद्धि। (तांत्रिक)

भूत-संचार—पुं० [ष० त०] भूतोन्माद नामक रोग।

भूत-संचारी(रिन्)—पुं० [सं० भूत√चर् (चलना)+णिनि] दावानल।

भूत-संप्लव—पुं० [ष० त०] प्रलय।

भूत-सिद्ध—पुं० [ब० स०] वह जिसने किसी भूत-प्रेत को सिद्ध किया हो। (तंत्र)

भूत-हंत्री—स्त्री० [सं० ष० त०] १. नीली दूब। २. बाँझ ककोड़ी।

भूत-हत्या—स्त्री० [ष० त०] जीवों या प्राणियों का वध या हत्या।

भूत-हन—पुं० [सं० भूत√हन् (मारना)+क्विप्] भोजपत्र का वृक्ष।

भूत-हर—पुं० [ष० त०] गुग्गुल।

भूतहा—पुं० [सं० भूत√हन् (मारना)+क्विप्,] भोजपत्र का वृक्ष।

भूतहारी (रिन्)—पुं० [सं० भूत√हृ (हरण करना)+णिनि] १. लाल कनेर। २. देवदारु।

भूतांकुश—पुं० [भूत-अंकुश, ष० त०] १ कश्यप ऋषि। २. गावजुबाँ नामक वनस्पति। २ वैद्यक मे, एक प्रकार का रसौषध जो भूतोन्माद के लिए उपयोगी कहा गया है।

भूतांतक—पुं० [भूत-अतक, ष० त०] १ यम। २. रुद्र।

भूता—स्त्री० [स० भूत+टाप्] कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी।

भूतागति—स्त्री० [हिं० भूत+गति] भूत-प्रेत की लीला की तरह का कोई अद्‌भुत व्यापार। विलक्षण कार्य या बात।

भूतात्मा (त्मन्)—पुं० [भूत-आत्मन्, ष० त०] १. शरीर। २. परमेश्वर। ३ शिव। ४ विष्णु। ५ जीवात्मा।

भूतादि—पुं० [भूत-आदि, ष० त०] १. परमेश्वर। २. सांख्य मे, अहकार, तत्त्व, जिससे पचभूतों की उत्पत्ति मानी गई है।

भूताधिपति—पुं० [भूत-अधिपति, ष० त०] शिव।

भूतायन—पुं० [भूत-अयन, ष० त०] नारायण। परमेश्वर।

भूतारि—पुं० [भूत-अरि, ष० त०] हीग।

भूतार्त—वि० [भूत-आर्त, तृ० त०] भूतों या प्रेतो की बाधा से पीड़ित।

भूतार्थ—वि० [भूत-अर्थ, ब० स०] जो वस्तुत: घटित हुआ हो। यथार्थ मे होनेवाला।

भूतावास—पुं० [भूत-आवास, ष० त०] १. पचभूतो से बना हुआ शरीर। २ जीवों का वासस्थान। जगत। दुनिया। ससार। ३. विष्णु। ४. बहेड़ा।

भूताविष्ट—वि० [तृ० त०] भूत-प्रेत से ग्रस्त।

भूतावेश—पुं० [भूत-आवेश, ष० त०] किसी को भूत लगना। प्रेतबाधा।

भूति—स्त्री० [स०√भू (होना)+क्तिन् या क्तिच्] १. अस्तित्व मे आने या घटित होने की क्रिया, दशा या भाव। प्रस्तुत या वर्तमान होना। २. उत्पत्ति। जन्म। ३. कल्याण या वैभव से युक्त वैभव और सुख। ४ सौभाग्य। ५ धन-सम्पत्ति। ६. गौरव। महिमा। ७ अधिकता। बहुलता। ८. बढ़ती। वृद्धि। ९ अणिमा, महिमा आदि आठ प्रकार की सिद्धियाँ। १०. रगो आदि से हाथी के मस्तक पर बनाये जानेवाले बेल-बूटे। ११ लक्ष्मी। १२ मुक्ति। मोक्ष। १३. वृद्धि नाम की ओषधि। १४. भूतृण। १५ सत्ता। १६. पकाया हुआ मास। १७ रुसा नामक घास।

पुं० १. शिव का एक रूप। २. विष्णु। ३ बृहस्पति। ४. पितरों का एक गण या वर्ग। राजा का मंत्री।

वि० मागलिक और शुभ।

भूतिकाम—पुं० [स० भूति√कम् (इच्छा)+अण्] १. राजा का मंत्री। २ बृहस्पति।

भूतिकृत—पुं० [स० भूति√कृ (करना)+क्विप्, तुक्] शिव।

भूतिद—पुं० [स० भूति√दा (देना)+क] शिव।

भूतिदा—स्त्री० [स० भूतिद+टाप्] गगा।

भूतिघ्नि—स्त्री०=भूतघ्नी।

भूतिनिधान—पुं० [ष० त०] धनिष्ठा नक्षत्र।

भूतिनी—स्त्री०=भूतनी।

भूति-भूषण—पुं० [ब० स०] शिव।

भूती—पुं० [हिं० भूत+ई (प्रत्य०)] भूत-प्रेतों को पूजनेवाला अथवा उन्हें सिद्ध करनेवाला व्यक्ति।

भूतीवानी—स्त्री० [सं० विभूति] भस्म। राख। (डिं०)

भूतृण—पुं० [ष० त०] १. रुसा नाम की घास। रोहिष। २. कपूर।

भूतेज्य—पुं० [स० मध्य० स०] भूती। (दे०)

भूतेज्या—स्त्री० [सं० भूत-इज्या, ष० त०] भूत-प्रेतो की पूजा।

भूतेश—पुं० [स० भूत-ईश, ष० त०] १ परमेश्वर। २. शिव। ३. कार्तिकेय।

भूतेश्वर—पुं० [स० भूत-ईश्वर, ष० त०] १. महादेव। २. एक प्राचीन तीर्थ।

भूतैल—पुं० [स०] पृथ्वी के कुछ विशिष्ट भू-भागों की चट्टानों के नीचे से निकलनेवाला एक प्रकार का प्राकृतिक तैलीय और ज्वलनशील द्रव पदार्थ जो हरे रग या काले रग का होता है और जिसे साफ करने पर मिट्टी का तेल और कई प्रकार की चीजें निकलती हैं। (पेट्रोलियम)

भूतोन्माद—पुं० [सं० भूत-उन्माद, मध्य० स०] भूत,बाधा के परिणाम स्वरूप होनेवाला उन्माद।

भूत्तम—पुं० [स० भू-उत्तम, स० त०] सोना।

भू-दान—पुं० [सं० ष० त०] दान रूप मे भूमि देना।

भूदान-यज्ञ—पुं० [स० ष० त०] महात्मा गांधी के सर्वोदय आन्दोलन के आधार पर आचार्य विनोवा भावे का चलाया हुआ एक प्रसिद्ध आन्दोलन जिसमे भू-स्वामियो से दान रूप मे भूमि प्राप्त करके ऐसे लोगो को बिना मूल्य दी जाती है जिनके पास न तो जोतने-बोने के लिए जमीन होती है और न जिनकी जीविका का कोई निश्चित तथा विशिष्ट साधन होता है।

भूदार—पुं० [सं० भू√दृ (फाडना)+अण्,] सूअर।

भू-धारक—पुं० [स० ष० त०] शूर। वीर।

भू-दृश्य—पुं० [स० ष० त०] १ किसी स्थान से दिखाई पडनेवाला कोई भूखड। २ पृथ्वी का कोई दर्शनीय खड या भाग। ३ उक्त का अकित चित्र। (लैंड स्केप, उक्त सभी अर्थों मे)

भू-देव—पुं० [स० ष० त०] ब्राह्मण।

भूधन—पुं० [ब० स०] राजा।

भूधर—पुं० [सं० ष० त०] १ पर्वत। पहाड। २ पृथ्वी को धारण करनेवाले शेषनाग। ३ विष्णु। ४ राजा। ५ वाराह अवतार। ६. रस आदि बनाने का एक उपकरण। (वैद्यक)

भूधरेश्वर—पुं० [स० भूधर-ईश्वर, ष० त०] पर्वतों का राजा, हिमालय।

भूधात्री—स्त्री० [स० मध्य० स०] भुई आँवला।

भू-धृति—स्त्री० [ष० त०] १ लोक-व्यवहार मे वह स्थिति जिसमें कोई व्यक्ति कुछ धन देकर किसी दूसरे की भूमि कुछ समय के लिए अपने अधिकार मे कर लेता और उसका उपभोग करके लाभ उठाता है। (लैंड टेन्योर)

भूध्र—पुं० [सं० भू√धृ (धारण करना)+क] पर्वत। पहाड़।

भूना—पुं०=भ्रूण।

भूनना—स० [सं० भर्जन] १ किसी खाद्य पदार्थ को जलते हुए अंगारों पर सेककर पकाना। जैसे—पापड़ भूनना, भुट्टा भूनना। २. गरम बालू मे (या से) अन्न-कणों को पकाना। जैसे—दाने भूनना। ३. घी, तेल आदि मे कोई तरकारी अच्छी तरह लाल करना। जैसे—

भुरता या प्याज भूनना। ४. लाक्षणिक अर्थ में, बहुत अधिक सताना।
क्रि० प्र०—डालना।—देना।

५. रासायनिक क्षेत्र में, कोई चीज इस प्रकार तपाना कि उसमें के अवांछित तत्त्व या जल-कण निकल जायँ। (रोस्टिंग)

भू-नाग—पुं० [सं० स० त०] केंचुआ।

भू-नेता (तृ)—पुं० [सं० ष० त०] राजा।

भूप—पुं० [सं० भू√पा (रक्षा करना)+क] १. राजा। २. रात के पहले पहर में गाया जानेवाला ओड़व जाति का एक राग।

भूपग—पुं० [सं० भूप√गम् (जाना)+ड] राजा। (डिं०)

भूपता—स्त्री०=भूपता।
पुं०=भूपति।

भूपता—स्त्री० [सं० भूप+तल्, +टाप्] १. राजा होने की अवस्था या भाव। २. राजा का पद।

भू-पति—पुं० [सं० ष० त०] १ राजा। २. शिव। २. इन्द्र। ३. ४. वटुक भैरव। ५ संगीत मे एक प्रकार का राग जो मेघ राग का पुत्र कहा गया है।

भू-पतित—भू० कृ० [सं० स० त०] (घायल होकर या टूट-फूट कर) पृथ्वी पर गिरा या पड़ा हुआ।

भू-पद—पुं० [सं० ब० स०] वृक्ष। पेड़।

भूपदी—स्त्री० [सं० भूपद+ङीष्] एक तरह की चमेली।

भूपरा—पुं० [सं० भूप से] सूर्य्य। (डिं०)

भू-परिमाप—स्त्री० [ष० त०] भूमि अथवा उसके किसी खण्ड आदि की होनेवाली नाप-जोख। (लैंड सर्वे)

भूपाल—पुं० [सं० भू√पाल् (रक्षा करना)+अण्] राजा।
स्त्री० झड़बेरी।

भूपाली—स्त्री० [सं० भूपाल+ङीप्] वर्षा ऋतु मे रात के पहले पहर मे गाई जानेवाली एक रागिनी जिसे कुछ लोग हिंडोल राग की रागिनी और कुछ मालकोश की पुत्रवधू मानते हैं।

भूपुत्र—पुं० [सं० ष० त०] १. मगल ग्रह। २ नरकासुर नामक राक्षस।

भूपुत्री—स्त्री० [सं० भूपुत्र+ङीष्] जानकी। सीता।

भू-पृष्ठ—वि० [सं० ब० स०] जिसका नीचेवाला भाग या पीठ समतल भूमि पर हो। 'मेरु पृष्ठ' का विपर्याय। जैसे—भू-पृष्ठ यंत्र। (तांत्रिकों का)

भूपेंद्र—पुं० [सं० भूप-इंद्र, ष० त०] राजाओं में श्रेष्ठ, सम्राट्।

भू-प्रकंप—पुं० [सं० ष० त०] भूकंप।

भूबंधी—स्त्री० [हिं० भू+बंधना] युद्ध का वह ढंग या प्रकार जिसमें दोनों पक्ष खुले मैदान मे आमने-सामने होकर लड़ते हैं। उदा०—घाटियाँ और नदियाँ बारगी और भूबंधी दोनों प्रकार की लड़ाइयों के लिए बहुत उपयोगी हैं।—वृन्दावनलाल वर्मा।

भू-बदरी—पुं० [सं० मध्य० स०] एक प्रकार का छोटा बेर।

भूबल—स्त्री०=भूभल।

भू-भर्त्ता (र्त्तृ)—पुं० [सं० ष० त०] राजा।

भूभल—स्त्री० [सं० भू-भुर्ज या अनु०?] १. ऐसी राख जो कुछ गरम हो तथा जिसमे अभी कुछ चिनगारियाँ भी दबी हों। २. गरम रेत।

भूभा—स्त्री० [सं० ष० त०] चंद्र ग्रहण के समय चंद्रमा पर पड़नेवाली पृथ्वी की छाया।

भूभाग—पुं० [सं० ष० त०] १. भूखंड। प्रदेश। २. विशेषतः ऐसा प्रदेश जो किसी नगर या राज्य के किसी ओर हो और उसके अधिक्षेत्र में हो। (टेरिटरी)

भूभागीसमुद्र—पुं० [सं०] प्रादेशिक-समुद्र।

भू-भार—पुं० [सं० स० त०] धरती पर होनेवाले पाप का भार।

भूभुज—पुं० [सं० भू√भुज् (उपभोग करना)+क्विप्] राजा।

भूभरि—स्त्री०=भूभल।

भूभृत—पुं० [सं० भू√भृ (धारण-पोषण)+क्विप्, तुक्] १. राजा। २. पर्वत। पहाड़।

भूभौतिकी—स्त्री० [सं०] आधुनिक विज्ञान की वह शाखा जिसमें इस बात का विवेचन होता है कि आँधी, वर्षा के जल, नदियों और समुद्रों की लहरों आदि का पृथ्वी के भू-तल पर कैसा और क्या प्रभाव पड़ता है। (जिओफिजिक्स)

भू-मंडल—पुं० [सं० ष० त०] धरती। पृथ्वी।

भूम—पुं० [सं०√भू+मन्] पृथ्वी।
स्त्री०=भूमि।

भू-मध्य—पुं० [सं० ष० त०] चारों ओर से पृथ्वी से घिरा हुआ।

भू-मध्यरेखा—स्त्री० [सं०] भूगोल में, वह कल्पित रेखा जो दोनों ध्रुवों से बराबर दूरी पर है और पृथ्वी को दो भागों में विभाजित करती है। (ईक्वेटर)

भूमध्य-सागर—पुं० [मध्य० स०] यूरोप और एशिया के बीच अवस्थित समुद्र।

भूमय—स्त्री० [सं० भू+मयट्] सूर्य की पत्नी; छाया।

भूमा (मन्)—स्त्री० [सं० बहु+इमनिच्, भू-आदेश] १. आधिक्य। बहुलता। २ जमीन। भूमि। ३. पृथ्वी। ४. निसर्ग। प्रकृति। ५ ऐश्वर्य। ६. पर-ब्रह्म की वह उत्तरोत्तर बढ़ती हुई अनुभूति जो मन का द्वैत भाव मिटाती है। उदा०—यही भूमा का मधुमय दान।—प्रसाद।
पुं० सर्व-व्यापी पर-ब्रह्म। विराट् पुरुष।
वि० बहुत अधिक। प्रचुर।

भूमानंद—पुं०=परमानंद।

भू-मापन—पुं० [सं० ष० त०] किसी देश, राजा, प्रदेश, खेत आदि की नाप-जोख करना। (सर्वे)

भूमि—स्त्री० [सं०√भू+मि] १. यह सारी पृथ्वी जो सौर जगत् के एक ग्रह के रूप में है। (दे० 'पृथ्वी') २. पृथ्वी-तल के ऊपर का वह ठोस भाग जिस पर देश, नदियाँ, पर्वत आदि हैं और जिस पर हम सब लोग रहते और वनस्पतियाँ उगती हैं। जमीन। (लैंड)
मुहा०—भूमि होना*=पृथ्वी पर गिर पड़ना।
३. उक्त का कोई ऐसा छोटा टुकड़ा जिस पर किसी का अधिकार हो और जिसमें कुछ उपज आदि होती हो। (एस्टेट)
पद—भूमिधर। (दे०)
४. जगह। स्थान। जैसे—जन्म-भूमि, मातृ-भूमि। ५. ऐसी जमीन जिस पर खेतीबारी होती हो। जैसे—भूमिधर। ६. कोई बड़ा देश

या प्रान्त। जैसे—आर्यभूमि। ७. कोई ऐसा आधार जिसपर कोई दूसरी चीज बनी अथवा आश्रित या स्थित हो। क्षेत्र। जैसे—पृष्ठ-भूमि। ८. धन सम्पत्ति या वैभव। ९. मकान के ऐसे खड जो ऊपर-नीचे के विचार से अलग-अलग होते है। मंजिल। १० कोई विशिष्ट प्रकार का ऐसा विषय जो किसी स्थिति के रूप मे हो। जैसे—विश्वास भूमि, स्नेह-भूमि। ११ किसी प्रकार का विस्तार या उसकी सीमा। १२. योगशास्त्र के अनुसार वे अवस्थाएं जो क्रम-क्रम से योगी को प्राप्त होती हैं और जिनको पार करके वह पूर्ण योगी होता है। १३. जिह्वा। जीभ। १४. दे० 'भूमिका'।

भूमि कंदक—पुं० [मध्य० स०] कुकुरमुत्ता।

भूमि-कंप—पुं० [स० ष० त०] भूकप। भूडोल।

भूमिका—स्त्री० [सं० भूमि√कै+क,+टाप् अथवा भूमि+कन्,+टाप्] १. जमीन। भूमि। २. जगह। स्थान। ३. मकान के वे खंड जो एक दूसरे के ऊपर नीचे होते हैं। मंजिल। ४. योग में क्रम क्रम से प्राप्त होनेवाली उन्नत स्थितियो में से प्रत्येक। भूमि। ५. किसी प्रकार की रचना। ६ कोई ऐसा आधार जिस पर कोई चीज आश्रित या स्थित हो। पृष्ठभूमि। (बैक ग्राउंड) ७. आज-कल किसी ग्रंथ के आरंभ मे लेखक का वह वक्तव्य जिसमे उस ग्रंथ से सम्बन्ध रखनेवाली आवश्यक तथा ज्ञातव्य बातों का उल्लेख होता है। आमुख। मुख-बंध। (प्रिफेस) ८ कोई महत्त्वपूर्ण बात कहने से पहले कही जानेवाली वे बातें जिनके फल-स्वरूप उस महत्त्वपूर्ण बात का उपयुक्त परिणाम या फल होता या हो सकता हो।

मुहा०—(किसी काम या बात की) भूमिका बाँधना=कुछ कहने से पहले उसे प्रभावशाली बनाने के लिए कुछ और बातें कहना। जैसे—जरा सी बात के लिए इतनी भूमिका मत बाँधा करो।

९. वेदान्त के अनुसार चित्त की पाँच अवस्थाएं, जिनके नाम ये हैं—क्षिप्त, मूढ, विक्षिप्त, एकाग्र और निरुद्ध। १०. नाटकों आदि मे किसी पात्र का अभिनय तथा कार्य। (पार्ट) जैसे—शिवा जी की भूमिका में मोहनवल्लभ ने बहुत प्रशंसनीय काम किया था। १२. मूर्तियों आदि का किया जानेवाला शृंगार या सजावट।

भूमिका-गत—पुं० [सं० द्वि० त०, उप० स०] वह जिसने नाटक में अभिनय करने के लिए कोई विशिष्ट वेश-भूषा धारण की हो।

भूमि-कुष्मांड—पुं० [सं० मध्य० स०] गरमी के दिनों में होनेवाला कुम्हड़ा जो जमीन पर होता है। भुंई-कुम्हड़ा।

भूमि-खर्जूरी—स्त्री० [सं० मध्य० स०] एक प्रकार की छोटी खजूर।

भूमि-गत—वि० [द्वि० त०] १. जमीन पर गिरा या पड़ा हुआ। २ जो भूमि की सतह के नीचे हो। ३. जो जन-साधारण के सामने से हटकर कहीं छिपा हो। (अंडर-ग्राउंड)

भूमि-गृह—पु० [सं० मध्य० स०] तहखाना।

भूमि-चंपक—पुं० [सं० मध्य० स०] १. एक प्रकार का पौधा जिसकी छाल, पत्ते तथा जड़ें औषधि के रूप मे प्रयुक्त होती हैं। भुइँचंपा। २. उक्त पौधे का फूल।

भूमि-चल—पुं० [सं० ष० त०] भूकंप।

भूमिजंबु—पुं० [स० मध्य० स०] छोटा जामुन।

भूमिज—वि० [सं० भूमि√जन्+ड] भूमि से उत्पन्न।

पुं० १. मंगल ग्रह। २. सोना। स्वर्ण। ३. सीसा। ४. नरकासुर राक्षस। ५. भू-कदंब।

भूमि-जल—पुं० [मध्य० स०] जमीन के नीचे रहने या होनेवाला पानी।

भूमिजा—स्त्री० [स० भूमि√जन्+ड, +टाप्] जानकी। सीता।

भूमि-जात—वि० [सं० पं० त०] जो भूमि से उत्पन्न हुआ हो। भूमिज।

पु० पेड। वृक्ष।

भूमि-जीवी (विन्)—पु० [स० भूमि√जीव् (जीना)+णिनि, उप० स०] १. वह जिसकी जीविका का आधार भूमि हो। कृषक। २. वैश्य।

भूमि-तल—पु० [ष० त०] पृथ्वी का ऊपरी भाग या सतह।

भू-मिति—स्त्री० [सं०] १ जमीन नापने की क्रिया। २. किसी देश, प्रदेश या भूखंड के रूप, सीमा, स्थिति आदि का चित्र या लेखा तैयार करने के लिए ज्यामिति के सिद्धातो के अनुसार कोणो, रेखाओ आदि का विचार करते हुए नाप-जोख करना। (सर्वे) जैसे—भारत सरकार का भू-मिति विभाग।

भूमित्व—पुं० [स० भूमि+त्व] 'भूमि' का धर्म या भाव।

भूमिदेव—पु० [सं० ष० त०] १. ब्राह्मण। २ राजा।

भूमि-धर—पु० [सं० ष० त०] १. पर्वत। पहाड। २ शेष-नाग। ३. आज-कल वह किसान जिसने उचित धन देकर जमीन पर खेती-बारी करने का स्थायी अधिकार प्राप्त कर लिया हो।

भूमि-पति—पु० [स० ष० त०] राजा।

भूमिपाल—पु० [स० भूमि√पाल् (पालन करना)+णिच्+अच्] राजा।

भूमिपिशाच—पु० [सं० स० त०] ताड़ का पेड़।

भूमि-पुत्र—पु० [ष० त०] १ मंगल ग्रह। २. नरकासुर का एक नाम। ३. श्योनाक। सोना-पाढ़।

भूमि-पुत्री—स्त्री० [ष० त०] सीता।

भूमि-पुरंदर—पु० [ष० त०] राजा दिलीप का एक नाम।

भूमि-भुक् (ज्)—पु० [स० भूमि√भुज् (उपभोग करना)+क्विप्] राजा।

भूमिभृत्—पु० [स० भूमि√भृ (भरण करना) +क्विप्, तुक्] राजा।

भूमि-भोग—पु० [ब० स०] वह राष्ट्र या राजा जिसके पास बहुत अधिक भूमि हो।

भूमिया—पु० [हिं० भूमि+इया (प्रत्य०)] १. भूमि का मूल अधिकारी और स्वामी। २. जमीदार। ३. किसी देश का प्राचीन और मूल निवासी। ४. ग्राम-देवता।

भूमिरुह—पुं० [स० भूमि√रुह् (ऊपर चढ़ना)+क] वृक्ष।

भूमिरुहा—स्त्री० [स० भूमि√रुह्+टाप्] दूब।

भूमि-लग्ना—स्त्री० [सं० त०] सफेद फूलोंवाली अपराजिता।

भूमि-लता—स्त्री० [मध्य० स०] शख पुष्पी।

भूमि-लवण—पु० [ष० त०] शोरा।

भूमि-लाभ—पु० [ब० स०] मृत्यु।

भूमि-लेप—पु० [ष० त०] गोबर।

भूमि-वर्द्धन—पु० [ष० त०] मृत शरीर। शव। लाश।

भूमि-वल्ली—स्त्री० [मध्य० स०] भुँई आँवला।

भूमि-संधि—स्त्री० [मध्य० स०] १. वह संधि जो परस्पर मिलकर कोई

भूमि प्राप्त करने के लिए की जाय। २. शत्रु को कुछ भूमि देकर उससे की जानेवाली सन्धि।

भूमि-संभवा—स्त्री० [ब० स०,+टाप्] जानकी। सीता।

भूमि-सात्—वि० [सं० भूमि+सात् (प्रत्य०)] जो गिर कर जमीन के साथ मिल गया हो। जैसे—भूकंप में मकानों का भूमिसात होना।

भूमि-सुत—पुं० [ष० त०] १. मंगल ग्रह। २. नरकासुर। ३. केंचुआ। कौंछ। ४. पेड़। वृक्ष।

भूमि-सुता—स्त्री० [ष० त०] जानकी जी।

भूमि-सुर—पुं० [ष० त०] ब्राह्मण। भूसुर।

भूमि-स्खलन—पुं० =भू-स्खलन।

भूमि-स्पर्श—पुं० [ब० स०] उपासना के लिए बौद्धों का एक प्रकार का आसन। वज्रासन।

भूमि-हार—पुं० [सं० भूमि+हिं० हार (प्रत्य०)] एक ब्राह्मण जाति जो प्रायः उत्तर-प्रदेश और बिहार में बसती और प्रायः खेती-बारी से जीविका-निर्वाह करती है।

भूमींद्र—पुं० [भूमि-इंद्र, ष० त०] राजा।

भूमी—स्त्री० [सं० भूमि+ङीष्] भूमि।

भूमीरुह—पुं० [सं० भूमी√रुह्+क] वृक्ष। पेड़।

भूमीश्वर—पुं० [सं० भूमि-ईश्वर, ष० त०] राजा।

भूम्यामलकी—स्त्री० [भूमि-आमलकी, मध्य० स०] भुँई आँवला।

भूम्युच्च—पुं० [सं० भूमि+उच्च] ज्योतिष में, किसी ग्रह की वह स्थिति जब वह अपनी कक्षा पर चलते समय पृथ्वी से अधिकतम दूरी पर होता है। (एपोजी)

भूय(स्)—अव्य० [सं० भू√यस् (प्रयत्न)+क्विप्] पुनः। फिर।
स्त्री०=भू (पृथ्वी)।

भूयण—स्त्री० [हिं० भूय] पृथ्वी। (डिं०)

भूयशः(शस्)—अव्य० [सं० भूयस्+शस् (वीप्सार्थ) स-लोप] बहुत अधिक रूप में।

भूयस्—वि० [सं० बहु+ईयसुन्, ई-लोप, भू-आदेश] बहुत। अधिक।

भूयसी—वि० [सं० भूयस्+ङीष्] बहुत अधिक।
क्रि० वि० बार बार।

भूयसी दक्षिणा—स्त्री० [सं० व्यस्तपद] १. कोई धार्मिक या मंगल कृत्य सपन्न होने पर अन्त में ब्राह्मणों को बाँटी जानेवाली दक्षिणा। २. लाक्षणिक अर्थ मे किसी बड़े खरच के बाद होनेवाला कोई छोटा खरच।

भूयिष्ठ—वि० [सं० बहु+इष्ठन्, यिट्-आगम, भू-आदेश] बहुत अधिक। अत्यधिक।

भू-खुक्ता—स्त्री० [सं० तृ० त०] भूमि खर्जूरी। भुई खजूर।

भूयोभूयः—अ० [सं० भूयस्, वीप्सा में द्वित्व] पुनः पुनः। बार बार।

भूयोविद्य—पुं० [सं० ब० स०] प्राचीन भारत में ऐसा विद्वान् जो छन्द, ब्राह्मण, कल्प, धर्म व्याकरण, काव्य आदि अनेक विद्याओं का अच्छा ज्ञाता या पारंगत होता था।

भूर्—पुं० [सं० √भू (होना)+रुक्] अन्तरिक्षलोक से नीचे पैर रखने योग्य स्थान। लोक।

भूर—वि० [सं० भूरि] अधिक बहुत।
पुं० [हिं० भुरभुरा] बालू। रेत।
पुं० [?] गौओं की एक जाति।

भूरज (जस्)—पुं० [सं० ष० त०] पृथ्वी की धूलि। गर्द। मिट्टी।
†पुं० [सं० भूर्ज] भोजपत्र।

भूरजपत्र—पुं० =भोज पत्र।

भूरपुर*—वि० =भूर-पूर।
अव्य०, वि० =भर-पूर।

भूरला—पुं० [देश०] वैश्यों की एक जाति।

भूर-लोखरिया—स्त्री० [हिं० भूर=बालू+लोखरी=लोमड़ी] वह बलुई मिट्टी जिसमें लोमड़ी माँद बनाती है।

भूरसी दक्षिणा—स्त्री० =भूयसी दक्षिणा।

भूरा—वि० [सं० बभ्रु] मिट्टी के रंग का। मटमैले रंग का। खाकी।
पुं० १. मिट्टी का सा या मटमैला रंग। २. एक प्रकार का कबूतर जिसकी पीठ काली और पेट पर सफेद छींटें होती हैं। ३. कच्ची चीनी को पकाकर साफ़ करके बनाई हुई चीनी। बूरा। ४. कच्ची चीनी। खाँड़। ५. चीनी। ६. युरोप का निवासी। यूरोपियन। (राज०)

भूरा कुम्हड़ा—पुं० [हिं० भूरा+कुम्हड़ा] पेठा।

भू-राजस्व—पुं० [ष० त०] राज्य या शासन को भूमि से होनेवाली आय। (लैंड रेविन्यू)

भूरि—वि० [सं० √भू (होना)+क्रिन्] बहुत अधिक। प्रचुर। जैसे—भूरि-भूरि प्रशंसा करना।
पुं० १. ब्रह्मा। २. विष्णु। ३. शिव। ४. इन्द्र। ५. सोना। स्वर्ण।
अव्य० बहुत अच्छी तरह। उदा०—पैर छोड़ो और मुझको भूरि भेंटो। —मैथिलीशरण।

भूरि गंधा—स्त्री० [ब० स०] मुरा नामक गंध द्रव्य।

भूरिगम—पुं० [सं० भूरि√गम् (जाना)+अप्] गधा।

भूरिता—स्त्री० [सं० भूरि+तल्+टाप्] भूरि अथवा अधिक होने का भाव। अधिकता। बहुलता।

भूरि-तेजस्—पुं० [ब० स०] १. अग्नि। २. सोना। स्वर्ण।

भूरि-दक्षिण—पुं० [ब० स०] विष्णु।

भूरिदा—वि० [सं० भूरि√दा (देना)+क+टाप्] यथेष्ट दान देनेवाला।

भूरि-धाम (न्)—पुं० [सं० ब० स०] नवें मनु के एक पुत्र का नाम।

भूरि-पुष्पा—स्त्री० [ब० स०] शत पुष्पा।

भूरि-प्रेमा (मन्)—पुं० [ब० स०] चकवा।

भूरि-फेना—स्त्री० [ब० स०] सातला।

भूरि-बल—पुं० [सं० ब० स०] धृतराष्ट्र का एक पुत्र।

भूरि-बला—स्त्री० [सं० ब० स०,+टाप्] अतिबला। कँगही। कककही।

भूरि-भाग्य—वि० [ब० स०] भाग्यवान्।

भूरि-मंजरी—स्त्री० [ब० स०] सफेद तुलसी।

भूरि-मल्ली—स्त्री० [सं० भूरि√मल्ल्+अच्+ङीष्] ब्राह्मणी या पाढ़ा नाम की लता।

भूरि-माय—वि० [ब० स०] बहुत बड़ा मायावी।
पुं० १. सियार। २. लोमड़ी।

भूरि-मूलिका—स्त्री० [ब० स०, कप्—टाप्] ब्राह्मणी लता। पाढ़ा।

भूरि-रस—पुं० [ब० स०] ईख। ऊख।

भूरि-लग्ना—स्त्री० [ब० स०] सफेद अपराजिता।

भूरि-विक्रम—वि०[ब० स०] बहुत बड़ा शूरवीर।

भूरि-श्रवा (वस्)—पुं०[सं० ब० स०] एक प्रसिद्ध योद्धा जो महाभारत के युद्ध में कौरवों की तरफ से लड़ा था तथा जिसका वध सात्यकि ने किया था।

भूरिषेण—पुं०[स० ब० स०] भागवत के अनुसार एक मनु का नाम।

भूरिसेन—पुं०[स० ब० स०] राजा शर्याति के तीन पुत्रो मे से एक।

भूरुह—पुं० [स० भू√रुह् (उगना)+क] १. वृक्ष। पेड़। २ अर्जुन। वृक्ष। ३. शाल वृक्ष।

भूरुहा—स्त्री०[स० भूरुह+टाप्] दूब।

भूर्ज—पुं०[स० भू√ऊर्ज्+अच्] भोजपत्र का वृक्ष।

भूर्ज-पत्र—पुं०[स० ष० त० या ब० स०] भोजपत्र।

भूर्णि—स्त्री०[स० √भृ (भरण करना)+नि,] १ पृथ्वी। २. मरुभूमि। रेगिस्तान।

भूर्भुव—पुं० [सं० ब्रह्मा] के एक मानस-पुत्र का नाम।

भूर्लोक—पुं० [स० मध्य० स०] १. मर्त्य लोक। ससार। जगत। २ विषुवत् रेखा के दक्षिण का देश।

भूल—स्त्री० [हिं० भूलना] १. भूलने की क्रिया या भाव। २. अज्ञान, असावधानता, भ्रम आदि के कारण कुछ का कुछ समझने और उसके फल-स्वरूप कोई अनुचित या गलत काम करने की अवस्था, या भाव। गलती। (एरर) जैसे—मैंने उन्हें झूठा समझ लिया, यह मुझसे बहुत बड़ी भूल हुई। ३ अर्थ, तथ्य, प्रक्रिया आदि ठीक तरह से न जानने या समझने के कारण गलत तरह से कुछ कर डालने की अवस्था, क्रिया या भाव। अशुद्धि। गलती। (मिस्टेक) जैसे—उनके साथ साझा करके तुमने बहुत बड़ी भूल की। ४. कोई ऐसी चूक या त्रुटि जो जल्दी मे रहने या पूरा ध्यान न देने के कारण हो जाय। (स्लिप) जैसे—इस हिसाब मे कई भूलें रह गयी हैं। ५ अनजान में या असावधानता के कारण होनेवाला कोई अपराध या दोष। कसूर। जैसे—(क) मै अपनी इस भूल के लिये बहुत दुखी हूँ। (ख) भगवान सबकी भूलें क्षमा करता है।

भूलक—पुं० [हिं० भूल+क (प्रत्य०)] भूल करनेवाला। जिससे भूल होती हो।

भूल-चूक—स्त्री० [हिं० भूलना+चूकना] लेख या हिसाब में ब्यौरे आदि की ऐसी गलती जो दृष्टि-दोष आदि के कारण हो और बाद मे जिसका सुधार हो सकता हो। (एरर्स एण्ड ओमिशन्स)

पद—भूल-चूक, लेना देना=एक पद जिसका प्रयोग लेन-देन के पुरजों, प्राप्यकों आदि के अन्त मे यह सूचित करने के लिए होता है कि कोई भूल रह गई हो तो उसका हिसाब या लेन-देन बाद मे हो सकेगा।

भू-लग्ना—स्त्री० [स० स० त०] शंखपुष्पी।

भूलना—अ० [प्रा० भुल्ल] १ उचित अवधान या ध्यान न रहने के कारण किसी काम या बात का स्मृति-क्षेत्र में न रह जाना। याद न रहना। विस्मृत होना। जैसे—मैं तो बिलकुल भूल ही गया था, अच्छा किया जो तुमने याद दिला दिया। २. दृष्टि-दोष, प्रमाद आदि के कारण किसी प्रकार की गलती, त्रुटि या भूल करना। जैसे—भूल गया था।

पद—भूलकर भी-दृढ़ता-पूर्वक प्रतिज्ञा करते हुए। कदापि। कभी-भी अथवा किसी भी दशा में। (केवल नहिक प्रसंगों में) जैसे—(क) अब कभी भूलकर भी उनका साथ न करना। (ख) वहाँ मैं भूलकर भी नही जाऊँगा।

३ किसी प्रकार के धोखे या भ्रम में पड़कर कर्तव्य न करना या उचित मार्ग से हटकर इधर-उधर हो जाना। जैसे—तुम तो दूसरों की बातो मे भूलकर अपनी हानि कर बैठते हो। ४. उक्त प्रकार की बातों के फलस्वरूप किसी पर अनुरक्त होना। जैसे—तुम भी किसकी बातों में भूले हो, वह तुम्हे बहुत धोखा देगा।उदा०—मैं तो तोरी लाल पगिया पै भूली रे साजनाँ।—लोक-गीत। ५ किसी प्रकार के घमण्ड के वश मे होकर इतराना। गर्व पूर्वक प्रसन्न रहना। जैसे—(क) उन्हें एक मकान मिल गया है, इसी पर वह भूले हुए हैं। (ख) सासारिक वैभव पर भूलना नही चाहिए। ६ किसी चीज का खो जाना। गुम होना। जैसे—हमारी कलम यहाँ कही भूल गई है।

स० १. कोई बात इस प्रकार मन से हटा देना कि फिर उसका ध्यान न आवे। याद न रखना। विस्मृत करना। जैसे—अब तो वह अपनी पुरानी हालत भूल गये है। २ असावधानता, उदासीनता, उपेक्षा, दृष्टि-दोष, प्रमाद आदि के कारण, परन्तु अनजान मे वह न करना जो करना चाहिए। जैसे—उस पत्र मे मैं एक बात लिखना भूल गया था। ३. अनजान मे उस ओर ध्यान न देना जिधर ध्यान देना आवश्यक और उचित हो। जैसे—मुझे आपने जो वचन दिया था वह तो आप भूल ही गये। ४ गलती या चूक के कारण कर्तव्य, ठीक मार्ग आदि से विचलित होकर इधर-उधर हो जाना। जैसे—वह रास्ता भूलकर कही का कही चला गया। ५. कोई चीज खो या गवाँ देना। जैसे—मैं अपनी घड़ी बाजार मे भूल आया हूँ।

वि०=भुलना।

भूलभुलैया—स्त्री० [हिं० भूलना+ऐयाँ (प्रत्य०)] १. ऐसी इमारत जिसमे अत्यधिक गलियाँ तथा दरवाजे होते हैं और जिसमे जाकर आदमी रास्ता भूल जाता है और जल्दी बाहर नही निकल पाता। २. खेल-तमाशे के लिए रेखाओ, दीवारो आदि से बनाई हुई उक्त प्रकार की रचना। चकाबू। (लैबिरिन्थ) ३. बहुत घुमाव-फिराववाली बात। पेचीली बात।

भूलिंग—पुं०[सं०?] अरावली के उत्तर-पश्चिम मे रहनेवाली एक प्राचीन जाति।

भू-लोक—पुं० [स० मध्य० स०] मर्त्य-लोक। भूतल। ससार। जगत।

भू-लोटन—वि०[हिं० भू+लोटना] पृथ्वी पर लोटनेवाला।

भू-वल्लभ—पुं० [स० ष० त०] राजा।

भूवा—वि०, पुं०=भूआ।

स्त्री०=बुआ।

भूवारि—पुं०[डिं०] वह स्थान जहाँ हाथी पकड़कर रखे या बाँधे जाते हैं।

भू-विज्ञान—पुं० [स० ष० त०] वह विज्ञान जिसमे इस बात का विवेचन होता है कि पृथ्वी की मिट्टी और पत्थर की तहे किस प्रकार और कब कब बनती रही हैं, और आरभ से कब तक किस प्रकार विकसित हुई हैं; तथा किस प्रकार की मिट्टी तथा चट्टानो के नीचे किस प्रकार के खनिज पदार्थ दबे रहते हैं। भूगर्भ-शास्त्र। भौमिकी (जियालोजी)

भू-विद्या—स्त्री०=भू-विज्ञान।

भूशक—पुं०[सं० स० त०] राजा।

भूशय—पुं० [सं० भू√शी (शयन करना)+अच्,] बिल बनाकर रहनेवाले जानवर। जैसे—गोह, चूहा, नेवला, लोमड़ी आदि।

भू-शय्या—स्त्री०[सं० कर्म० स०] १. जमीन पर सोना। २. शयन करने की भूमि।

भू-शर्करा—स्त्री०[सं० मध्य० स०] एक प्रकार का कंद।

भूशायी (यिन्)—वि० [सं० भू√शी (शयन करना)+णिनि,]१. पृथ्वी पर सोनेवाला। २. जो टूट-फूट कर जमीन पर गिर पड़ा हो। ३. मरा हुआ। मृत।

भू-शास्त्र—पुं०=भू-विज्ञान।

भू-शुद्धि—स्त्री० [ष० त०] लीप-पोत या धोकर की जानेवाली भूमि की शुद्धि या सफाई।

भू-शुल्क—पुं०[स०] भू-संपत्ति पर लगनेवाला कर। (एस्टेट ड्यूटी)

भूषण—पुं०[सं०√भूष् (भूषित करना)+ल्युट्—अन] १. अलंकार। गहना। जेवर। २. शोभा बढ़ानेवाली कोई वस्तु या गुण। ३. विष्णु।

भूषणीय—वि० [सं०√भूष् (भूषित करना)+अनीयर] अलकृत किये जाने के योग्य

भूषन*—पुं०=भूषण।

भूषना*—सं० [स० भूषण] भूषित करना। अलंकृत करना। सजाना। अ० अलंकृत होना। सजना।

भूषा—स्त्री०[स०√भूष्+णिच्+अ+टाप्] १ गहना+जेवर। २. अलकृत करने की क्रिया या भाव।

पद—वेष-भूषा।

भूषाचार—पुं०[भूषा-आचार, ष० त०] १. कपड़े आदि पहनने का विशिष्ट ढंग। २. समाज के उच्च वर्गों में या आदृत ढंग या रीति। (फैशन)

भूषित—भू० कृ० [स०√भूष्+णिच्+क्त] १. भूषणों से युक्त किया हुआ। अलकृत। २. सजा हुआ।

भूष्णु—वि०[स०√भू (होना)+ग्स्नु] १. होनेवाला। २. ऐश्वर्य का इच्छुक।

भूष्य—वि०[सं०√भूष्+णिच्+यत्] भूषित किये जाने योग्य। सजाये जाने के योग्य।

भू-संपत्ति—स्त्री०[स० कर्म० स०] जमीन के रूप में होनेवाली संपत्ति (खेत, जमीदारी आदि)।

भू-संस्कार—पुं०[स० ष० त०] यज्ञ करने से पहले भूमि को परिष्कृत करने, नापने, रेखाएँ खींचने आदि के कार्य।

भूस—पुं०=भूसा।

भूसठ—पुं०[स० भू+शठ?] कुत्ता। श्वान।

भूसन—पुं०[हिं० भूँकना] कुत्तों का बोलना। भूँकना।
पुं०=भूषण।

भूसना—अ०[हिं० भूँकना] कुत्तों का शब्द करना। भूँकना।

भूसा—पुं०[स० तुष]गेहूँ, जौ आदि के पौधों के डठलों के सूखे छोटे महीन टुकड़े जो गाय-भैंसों आदि को खिलाये जाते हैं।

भूसी—स्त्री०[हिं० भूसा] १. किसी चीज के पतले या महीन छिलकों के छोटे छोटे टुकड़े। जैसे—ईसबगोल की भूसी। २. भूसा। ३. चोकर।

भूसीकर—पुं० [हिं० भूसी+कर] अगहन में होनेवाला एक तरह का धान और उसका चावल।

भू-सुत—वि०[सं० ष० त०] जो पृथ्वी से उत्पन्न हुआ हो।
पुं० १ मंगल ग्रह। २. पेड़-पौधे, वृक्ष और वनस्पतियाँ। ३. नरकासुर का एक नाम।

भू-सुता—स्त्री०[स० ष० त०] सीता।

भू-सुर—पुं०[सं० स० त०] पृथ्वी के देवता ब्राह्मण।

भू-स्खलन—पुं०[सं०] चट्टानों, पहाड़ों आदि के ढालुएँ पार्श्व पर से मिट्टी और पत्थर के बड़े-बड़े ढेरों का खिसककर नीचे आना या गिरना। (लैंड-स्लिप)

भूस्तृण—पुं०[स० ष० त०, सुट्-आगम] एक प्रकार की घास। घटिपारी।

भूस्था—पुं०[सं० भू√स्था (ठहरना)+क, आ-लोप] मनुष्य।

भू-स्फोट—पुं०[ष० त०] कुकुरमुत्ता।

भू-स्वर्ग—पुं०[सं० स० त०] सुमेरु पर्वत।

भू-स्वामी (मिन्)—पुं०[ष० त०] जमीन का मालिक। जमीदार।

भूहरा*—पुं०=भुइँहरा।

भृंग—पुं०[सं०√भृ (भरण करना)+गन्, नुट्-आगम] १. भौंरा। २. एक प्रकार का कीड़ा जिसके विषय में प्रसिद्ध है कि यह किसी कीड़े के ढोले को पकड़कर ले आता है और उसे मिट्टी से ढक देता है और उस पर बैठकर और डंक मार-मार कर इतनी देर तक और इतनी जोर से "भिन्न भिन्न" करता है कि कीड़ा भी उसी की तरह हो जाता है। ३. भृंगराज पक्षी।

भृंगक—पुं०[सं० भृंग+कन्] भृंगराज पक्षी।

भृंगज—पुं०[स० भृंग√जन् (उत्पन्न करना)+ड] अगर।

भृंगजा—स्त्री०[स० भृंगज+टाप्] भारगी।

भृंग-प्रिया—स्त्री०[ष० त०] माधवी लता।

भृंग-बंधु—पुं०[ष० त०] १. कुंद का पेड़। २. कदम का पेड़।

भृंगमोही—पुं० [स० भृंग√मुह् (मुग्ध होना)+णिच्+णिनि] १. चंपा। २. कनक चंपा।

भृंगरज—पुं०=भृंगराज।

भृंगराज—पुं०[सं० भृंग√राज्(शोभित होना)+अच्], १. भँगरा नामक वनस्पति। भंगरैया। घमरा। २. दे० 'भृंग' कीड़ा।

भृंगरीट—पुं० [सं० भृंग√रट् (शब्द)+अच्, पृषो० सिद्धि] १. शिव के द्वारपाल। २. लोहा।

भृंग-वल्लभ—पुं०[ष० त०] भूमि कदंब।

भृंग-सोदर—पुं०[ष० त०] भँगरैया।

भृंगाभीष्ट—पुं०[भृंग-अभीष्ट, ष० त०] आम का वृक्ष।

भृंगार—पुं०[सं० भृंग√ऋ (गति)+अण्] १. लौंग। २. सोना। स्वर्ण। ३. पानी पीने के लिए बना हुआ सोने का एक प्राचीन पात्र। ४. जल का अभिषेक करने की झारी।

भृंगारि—स्त्री०[स० भृंग√ऋ (प्राप्त होना)+इनि] केवड़ा।

भृंगारिका—स्त्री० [सं० भृंगार+कन्+टाप्, इत्व] झिल्ली नामक कीड़ा।

भृंगावली—स्त्री०[सं० भृंग-आवली, ष० त०] भौंरों की पाँत।

भृंगी(गिन्)—पुं० [स० भृंग+इनि] १. शिव जी का एक परिषद् का

गण। २. वट वृक्ष। बड़ का पेड़। ३. भौंरा। ४ तितली। ५. अतिविषा। अतीस।

स्त्री० [सं० भृग+ङीष्] भृग नामक कीट की मादा। बिलनी।

भृंगी-फल—पु०[सं० ब० स०] अमड़ा।

भृंगीश—पु०[स० भृंगिन्-ईश, ष० त०] शिव। महादेव।

भृंगेष्टा—स्त्री० [स० भृग-इष्टा, ष० त०] १ घीकुआर। २ भारंगी। ३. युवती स्त्री। जवान औरत।

भृकुटी—स्त्री०[स० भ्रूकुटी] भौह।

भृगु—पु०[सं०√भ्रस्ज्+क्, सम्प्रसारण, कुत्व] १. एक प्रसिद्ध मुनि जो शिव के पुत्र और सप्तर्षियों मे से एक माने जाते है। कहते है कि इन्होंने भगवान विष्णु की छाती मे लात मारी थी। २. परशुराम जो उक्त मुनि के वंशज थे। ३. शुक्राचार्य। ४. शुक्रवार। ५ शिव। ६. जमदग्नि। ७. पहाड़ का ऐसा किनारा जहाँ से गिरने पर मनुष्य बिलकुल नीचे आ जाय, बीच मे कहीं रुक न सके।

भृगुक—पु०[स० भृगु+कन्] पुराणानुसार कूर्म्म चक्र के एक देश का नाम।

भृगुकच्छ—पु०[स०] आधुनिक भड़ौच नगर।

भृगुज—पु०[सं० भृगु√जन् (उत्पत्ति)+ड] १. भृगु के वंशज। २. शुक्राचार्य।

भृगु-तुंग—पु०[सं०] हिमालय की एक चोटी जो एक पवित्र तीर्थ के रूप में मानी जाती है।

भृगुनंद—पु०[स० भृगु√नंद् (प्रसन्न करना)+णिच्+अच्] परशुराम।

भृगुनाथ—पु०[ष० त०] परशुराम।

भृगु-नायक—पु०[ष० त०] परशुराम।

भृगु-पति—पु०[ष० त०] परशुराम।

भृगु-पात—पु० [प०त०] पहाड़ की चोटी पर से गिरकर आत्म-हत्या करना।

भृगु-पुत्र—पु० [ष० त०] शुक्र।

भृगु-रेखा—स्त्री०[मध्य० स०] भृगु-लता।

भृगु-लता—स्त्री०[मध्य० स०] भृगु मुनि के चरण का चिह्न जो विष्णु की छाती पर अंकित है।

भृगु-वल्ली—स्त्री०[मध्य० स०] १ तैत्तिरीय उपनिषद की तीसरी वल्ली जिसका अध्ययन भृगु मुनि ने किया था। २. भृगु लता।

भृगुसुत—पु०[ष० त०] १ शुक्राचार्य। २. शुक्र ग्रह।

भृत—पु०[स०√भृ(भरण करना)+क्त] [स्त्री० भृता] १. भृत्य। दास। २. सेवक। नौकर। ३. बोझ ढोनेवाला दास जो मिताक्षरा में अधम कहा गया है।

भू० कृ० १ भरा हुआ। पूरित। २. पाला-पोसा हुआ। ३ (वेतन, धन आदि) चुकाया हुआ। (पेड)

भृतक—पुं०[सं० भृत+कन्] वेतन पर काम करनेवाला नौकर।

भृतक-बल—पु०[स० कर्म० स०] वेतन पर रखी हुई सेना। (कौ०)

भृतकाध्यापक—पु०[सं० भृतक-अध्यापक, कर्म० स०] वह जो वेतन पर अध्यापन-कार्य करता हो।

भृति—स्त्री०[स०√भृ+क्तिन्] १ भरने की क्रिया या भाव। २. पालन-पोषण। ३. नौकरी। ४. तनख्वाह। वेतन। ५. मजदूरी। ६. दाम। मूल्य।

भृतिभुक् (ज्)—पु० [सं० भृति√भुज् (उपभोग करना)+क्विप्, कुत्व] वेतन पर काम करनेवाला नौकर।

भृति-भोगी (गिन्)—वि०[सं० भृति)√भुज् +णिनि, उप० स०] वेतन लेकर या भाड़े पर किसी का काम करनेवाला। वेतन-भोगी। (मर्सीनरी)

भृति-रूप—पु०[स० ब० स०] १ पारिश्रमिक। २. पुरस्कार। इनाम।

भृत्य—पु०[स०√भृ+क्यप्, तुक्] [स्त्री० भृत्या] सेवक। नौकर।

भृत्यता—स्त्री० [स० भृत्य+तल्+टाप्] भृत्य होने की अवस्था, धर्म्म या भाव।

भृत्य-भर्ता (र्तृ)—पु०[ष० त०] गृह-स्वामी।

भृत्या—स्त्री०[स० भृत्य+टाप्] १ दासी। २ तनख्वाह। वेतन।

भृमि—पु०[सं०√भ्रम्+इन, कित्व, सम्प्रसारण] १. घूमनेवाली वायु। बवडर। २ बहते हुए पानी का चक्कर। भँवर। ३. वैदिक काल की एक प्रकार की वीणा।

वि० घूमने या चक्कर लगानेवाला।

भृश—क्रि० वि०[सं० √भृश् (नीचे गिरना)+क] अत्यधिक। बहुत अधिक।

भृश-कोपन—वि०[स० कर्म० स०] बहुत अधिक क्रोधी।

भृष्ट—वि० [स०√भ्रस्ज् (पकाना)+क्त, सम्प्रसारण] भूना हुआ।

भृष्टकार—पु०[स० भृष्ट√कृ+अण्] भड़भूँजा।

भृष्टान्न—पु०[स० भृष्ट-अन्न, कर्म० स०] लाई।

भृष्टि—स्त्री०[स० √भ्रस्ज्+क्तिन्] १. भूनने की क्रिया या भाव। २ सूनी वाटिका।

भेंउती—स्त्री०=भौती।

भेंगा—वि०[देश०] (व्यक्ति) जिसकी आँखो की पुतलियाँ कुछ टेढ़ी-तिरछी चलती हो, अथवा एक पुतली कुछ ताकने में तिरछी होती हो।

भेंट—स्त्री०[हिं० भेटना] १. परिचितो में प्राय. कुछ समय के उपरान्त होनेवाला मिलन। मुलाकात। जैसे—आज तो कई महीनो पर आपसे भेट हुई है। २. पत्रो आदि मे प्रकाशित करने के लिए किसी बड़े आदमी से मिलकर उसके विचार जानने का काम। ३ वह वस्तु जो बड़ो को आदर तथा नम्रतापूर्वक उपहार या सौगात के रूप मे दी जाय। जैसे—सभा ने इन्हे बहुत सी पुस्तके भेट की थी।

विशेष—'उपहार' और 'भेट' मे अतर यह है कि उपहार तो प्रसन्नता, शुभाशसा और सद्‌भाव सूचित करने के लिए दिया जाता है, पर 'भेंट' मे आदर और पूजनीयता का भाव प्रधान होता है।

क्रि० प्र०—देना।—मिलना।

४. देवता, पूज्य व्यक्ति आदि की सेवा मे भक्ति और श्रद्धा-पूर्वक उपस्थित की जानेवाली वस्तु या धन। जैसे—महंत जी को भक्तों से हर साल हजारों रुपयो की भेंट मिलती है। ५. उपहार।

क्रि० प्र०—चढ़ना।—चढ़ाना।

६ चडिका देवी की स्तुति के रूप मे गाये जानेवाले एक प्रकार के भजन। (पंजाब)

भेंटना—स० [स० भिद्=आमने-सामने आकर भिड़ना] १. मुलाकात करना। मिलना। २. गले लगकर आलिंगन करते हुए मिलना। ३. किसी को कोई चीज भेट रूप मे देना। (पश्चिम)

भैंटाना—अ०=भैंटना।

भेंड—स्त्री०=भेड।

भेंवना—स०=भिगोना।

भेउ*—पुं०[सं० भेद] भेद। मर्म। रहस्य।

भेक—पुं०[√भी (भय करना)+कन्, गुण] मेढक।

भेकासन—पुं०[सं० भेक-आसन, उपमि० स०] तंत्र-साधन का एक प्रकार का आसन।

भेकी—स्त्री०[सं० भेक+ङीष्] १. मेढ़की। २ मडूकपर्णी।

भेख†—पुं०=भेस (वेष)।

भेखज†—पुं०=भेषज।

भेज—स्त्री०[हिं० भेजना] १. वह जो कुछ भेजा जाय। भेजी हुई चीज। २. भूमि-कर। लगान। ३. अनेक प्रकार के कर जो जमीन और उसकी उपज पर लगाये जाते है।

भेजना—स०[सं० ब्रजन्] १. आग्रह करके या आदेश देकर किसी व्यक्ति को कही जाने मे प्रवृत्त करना। प्रस्थान कराना। रवाना करना। जैसे—नौकर (या लड़के) को सामान लाने के लिए बाजार भेजना। २. किसी के द्वारा किसी साधन से ऐसी क्रिया करना कि कोई चीज किसी दूसरी जगह चली और पहुँच जाय। जैसे—डाक से पत्र या रेल से माल भेजना।

भेजवाना—स० [हिं० भेजना का प्रे०] भेजने का काम किसी दूसरे के द्वारा कराना। जैसे—नौकर के हाथ पत्र भेजवाना।
सयो० क्रि०—देना।

भेजा—पुं०[स० मज्जा ?] खोपड़ी के अन्दर का गूदा। मगज।
मुहा०—**भेजा खाना**—दे० 'मगज' के अन्तर्गत 'मगज खाना'।
पुं०[हिं० भेजना] १ वह चीज जो भेजी जाय। किसी के यहाँ भेजा जानेवाला पदार्थ। २. चदा।

भेजाबरार—पुं० [हिं० भेजा=चदा+बरार?] १. किसी के सहायतार्थ विशेषत किसी का देय धन चुकाने के उद्देश्य से चदे के रूप मे इकट्ठा किया हुआ धन। २ इस प्रकार धन इकट्ठा करने की एक मध्ययुगीन प्रथा।

भेट†—स्त्री०=भेंट।

भेटना†—पुं०[देश०] कपास के पौधे का फल। कपास का डोड़ा।
†स०=भेंटना।

भेड़—स्त्री०[स० मेष] [पुं० भेड़ा] १. बकरी के आकार-प्रकार का एक प्रसिद्ध पालतू चौपाया जिसका ऊन तथा खाल विविध कामो में आती है और मांस खाया जाता है।
पद—**भेड़िया धँसान**
२. उक्त पशु की तरह सीधा-सादा और मूर्ख व्यक्ति। उदा०—भेड़ जाओगे, मारेगी जो दो मूग तुम्हें।—कोई शायर।
स्त्री० [?] भेड़ने की क्रिया या भाव। २.थप्पड़ या धौल। ३. ताँबे की बनी हुई एक प्रकार की तुरही या भोंपा।

भेड़ना—स०[हिं० भिड़ना] १.कोई चीज किसी के साथ सटाकर लगाना। भिड़ाना। २.(दरवाजा) बन्द करना। ३. (घूस या रिश्वत) देना। (बाजारू)

भेड़ा—पुं०[हिं० भेड़] भेड़ जाति का नर। मेढ़ा। मेष।

भेड़िया—पुं०[हिं० भेड़ या सं० भेरुंड?] कुत्ते से कुछ बड़ा एक जगली हिंसक पशु जो झुड बनाकर रहता है और बस्तियों से मुर्गियाँ, बत्तखें, छोटी छोटी भेड-बकरियाँ, नन्हें बच्चे आदि उठाकर ले जाता है।
वि०[हिं० भेड़+इया (प्रत्य०)] भेड़ या भेड़ों का सा। जैसे—भेड़िया धँसान।

भेड़िया-धंसान— स्त्री० [हिं० भेड़+धँसान] भेड़ों का सा अंध अनुकरण।
विशेष—जब भेड़ें झुड मे चलती हैं तब प्राय: ऐसा होता है कि एक भेड़ जिस ओर चलने लगती है बाकी सब भेड़ें भी बिना कुछ सोचे-समझे चुपचाप उसीके पीछे चलने लगती हैं। इसी आधार पर यह पद बना है।

भेड़िहर—पुं०[हिं० भेड़] गड़ेरिया। भेड़े चरानेवाला।

भेतव्य—वि०[सं०√भी (भय करना)+तव्य] १. जिससे डर या भय लगता हो। २. जिससे डरना या भयभीत होना उचित हो।

भेता(तृ)—वि०[स०√भिद् (विदारण)+तृच्] १. भेदन करने अर्थात् छेदनेवाला। २. विभेद या खड करनेवाला। ३. हिस्से लगानेवाला। ४. भेद रहस्य खोलनेवाला। ५ दो पक्षों मे मत-भेद उत्पन्न करनेवाला। ६. षड्यत्र करनेवाला।

भेद—पुं०[स०√भिद्+घञ्]१ भेदने या छेदने की क्रिया या भाव। २ काट-कर, तोड़कर या और किसी प्रकार अलग करने की क्रिया। ३. किसी तल के बीच में से होकर या एक पार्श्व से दूसरे पार्श्व तक जाना। जैसे—शकट भेद। ४. प्राचीन भारतीय राजनीति मे शत्रु को वश मे करने के चार उपायों मे से तीसरा उपाय जिसके अनुसार शत्रु पक्ष के लोगो को धन देकर या बहकाकर अपनी ओर मिला लिया जाता था अथवा उनमे परस्पर द्वष उत्पन्न कर दिया जाता था। ५. कोई ऐसी भीतरी छिपी हुई तथा रहस्यपूर्ण बात जो दूसरे लोग न जानते हों। रहस्य।
क्रि० प्र०—देना।—पाना।—बताना।—मिलना।—लेना।
६. छिपा हुआ तात्पर्य। मर्म। उदा०—वैद-वधू हँसि भेद सो रही नाह मुख चाहि।—बिहारी। ७ वह गुण, तत्त्व या विशेषता जो प्राय: समान प्रतीत होनेवाली चीजों में से किसी एक मे होती है और जिससे दोनो का अन्तर जाना जाता है। ८.अन्तर। फरक। ९ किस्म। तरह। प्रकार।

भेदक—वि० [सं०√भिद्+ण्वुल्—अक] भेदन करनेवाला। भेदने या छेदने वाला। २. लोगों मे भेदभाव या लडाई-झगडा करानेवाला। ३. आँतो को भेदकर उनमे का मल निकालनेवाला। दस्तावर। रेचक। ४ छपाई, लिखाई आदि मे वह सांकेतिक चिह्न जो किसी अक्षर या वर्ण का विशिष्ट उच्चारण बताने के लिए उसके ऊपर या नीचे लगाया जाता है। जैसे—अरबी के गैन वर्ण का उच्चारण बताने के लिए ग़ मे की बिन्दी। पुं०=भेदज्ञ।

भेदकर—वि०=भेदक।

भेदकातिशयोक्ति—स्त्री० [सं० भेदक-अतिशयोक्ति] साहित्य मे अति-शयोक्ति अलकार का एक भेद जिसमे उपमेय और उसके किये हुए वर्णन मे भेद दिखाई देने पर उसे 'और ही कुछ' कहकर अभेद सूचित किया जाता है।

भेद-कारक—वि०[स० ष० त०]=भेदक।

भेदकारी (रिन्)—वि० [स०भेद√कृ+णिनि, उप० स०]=भेदक।

भेदज्ञ—वि०[स० भेद√ज्ञा (जानना)+क] भेद या रहस्य जाननेवाला।

भेद-ज्ञान—पु०[ष० त०] द्वैतभाव का ज्ञान।

भेदड़ी—स्त्री०[देश०] बसौधी। रबड़ी।

भेदता—स्त्री०[सं० भेद] १ वह स्थिति जिसमे भेद दिखाई देता हो। उदा०—सीत घाम भेद खेद सहित लखाते सबै भूले भाव भेदत निषेधन विधान के।—रत्नाकर। २ भेद।

भेददर्शी(र्शिन्)—त्रि० [सं० भेद√दृश्(देखना) +णिनि, उप०स०] वि० दे० 'द्वैतवादी'।

भेदन—पु०[सं० √भिद् +ल्युट्—अन] [वि० भेदनीय, भेद्य] १ भेदने की क्रिया। छेदना। बेधना। विदीर्ण करना। २ भेद लेने की क्रिया या भाव।

वि० [√भिद् +ल्यु—अन] १ भेदने या छेदनेवाला। २ दस्त लानेवाला। रेचक।

पु०१. अमलबेत। २ हींग। ३ सूअर।

भेदना—स०[सं० भेदन] १ भेदन करना। छेदना। बेधना। २ किसी के मन का आशय जानने के लिए उसकी ओर गम्भीर दृष्टि से देखना। उदा०—ता पाछे दुर्जोधन भेदी सिर दिसीनै मन गर्व धरी।—सूर।

भेद-नीति—स्त्री०[ष० त०] दूसरो मे आपस मे फूट डालने या भेद-भाव उत्पन्न करने की नीति।

भेद-बुद्धि—स्त्री० [ष० त०] १. यह समझना कि अमुक और अमुक मे भेद है। २ फूट। बिलगाव।

भेद-भाव—पु०[सं०] १ मन में होनेवाला यह ज्ञान या भाव कि अमुक और अमुक मे भेद है। २ एकता या एकात्मता का भाव या विचार। ३ मतैक्य का अभाव। ४ अन्तर। फरक। ५ आज-कल सबके प्रति समान व्यवहार न करके किसी के प्रति पक्षपातपूर्ण और दूसरे के प्रति अनुचित व्यवहार करना। (डिस्क्रिमिनेशन)

भेद-मति—स्त्री० =भेद-बुद्धि। (दे०)

भेद-वाद—पु० द्वैतवाद।

भेद-वादी (दिन्)—वि० =द्वैतवादी।

भेद-विधि—स्त्री० [ष० त०] दो वस्तुओ मे अन्तर करने की प्रणाली या शक्ति।

भेद-साक्षी (क्षिन्)—पु०[ष० त०] सारा भेद या रहस्य जाननेवाला वह अभियुक्त जो शासन की ओर से साक्षी बन गया हो। इकबाली गवाह। (एप्रूवर)

भेदित—पु०[सं०√भिद् +णिच् +क्त] तंत्र के अनुसार एक प्रकार का मंत्र जो निंदित समझा जाता है।

भू० कृ० भेदा हुआ। छेदा हुआ।

भेदिनी—पु०[सं० भेदिन् +ङीप्] षट-चक्र को भेदन करने की शक्ति या सिद्धि। (तंत्र)

भेदिया—पु०[सं० भेद +हिं० इया (प्रत्य०)] १ वह जो कोई भेद या रहस्य जानता हो। २ जिसने किसी का कोई भेद जान लिया हो। ३. दूत। गुप्तचर।

भेदिर—पु० [सं० भिदुर+पृषो०] वज्र।

भेदी (दिन्)—वि० [सं०√भिद् +णिनि] भेदन करनेवाला। फोडनेवाला। भेदक।

पु० अमलबेत।

पु० भेदिया। जैसे—घर का भेदी लंका दाहे। (कहा०)

भेदीकरण—पु०[सं० भेद +च्वि, ईत्व√कृ +ल्युट्—अन] १ भेदने की क्रिया या भाव। २ भेद-भाव या विभाग करने की क्रिया या भाव।

भेदुर—पु०[सं० भिदुर, पृषो० सिद्धि] वज्र।

भेद्य—वि० [सं० भिद् (भेदन करना) +ण्यत्, गुण] जो भेदा या छेदा जा सके। भेदे जाने के योग्य। (परमिएबुल)

पु० वैद्यक मे शस्त्रो आदि की सहायता से किसी पीडित अंग या फोड़े आदि का भेदन करने की क्रिया। चीर-फाड।

भेन—स्त्री० =भैन (बहन)।

भेना—स०[हिं० भिगोना] भिगोना। तर करना।

भेभभ—पु०[देश०] एक तरह का पतला पहाडी बाँस जिससे हुक्को की निगालियाँ बनाई जाती हैं।

भेर—स्त्री० =भेरी

भेरवा—पु०[देश०] एक प्रकार की खजूर (वृक्ष और फल)।

भेरा—पु० [देश०] मध्य तथा दक्षिणी भारत मे होनेवाला मझोले आकार का एक प्रकार का पेड़। मीरा।

†पु० =बेडा।

भेरि—स्त्री० =भेरी।

भेरिकार—पु० [सं०√भी+क्रिन्, भेरि√कृ +अण्] भेरी बजानेवाला।

भेरी—स्त्री०[सं० भेरि +ङीप्] प्राचीन काल मे रण-क्षेत्र मे बजाया जानेवाला एक प्रकार का बडा ढोल।

भेरीकार—पु० [सं० भेरी√कृ +अण्] [स्त्री० भेरिकारी] भेरी बजानेवाला।

भेरुंड—वि०[सं०] भयानक।

पु० १. गर्भ-धारण। २ एक प्रकार का पक्षी। ३ हिंस्र जंतु (भेडिया, सियार आदि)।

भेल—वि०[सं०] १ कायर। डरपोक। भीरु। २ चंचल। ३. मूर्ख।

पु० एक प्राचीन ऋषि।

भेलना—स०[सं० भेलन] १ तोडना-फोडना। २ अस्त-व्यस्त करना। ३ लूटना। (राज०)

भेला*—पु०[हिं०भेंट या सं० भेलन?]१ भेंट। मुलाकात। उदा०—पुरि भेला मिलि किओ प्रवेश।—पृथ्वीराज। २ मुठभेड। भिडंत। ३ एकत्र होने की क्रिया या भाव। उदा०—कर चुका हूँ हेर रहा यह देख कोई नही भेला।—निराला।

पु० [?] [स्त्री० अल्पा० भेली] बडा गोला या पिंड। जैसे—गुड़ का भेला।

पु० भिलावाँ।

भेली—स्त्री०[?] १ गुड का छोटा टुकडा या पिंड। २. गुड़। (क्व०) ३. किसी चीज का डला या पिंड।

भेव*—पु०[सं० भेद] १ मर्म की बात। भेद। रहस्य। २. तरह। प्रकार। ३. पारी। बारी।

भेवना*—स० =भिगोना।

भेश—पु० वेश।

भेष—पु० =भेस।

भेषज—पु०[सं० भिषज् +अण्] १ रोगी को निरोग तथा स्वस्थ करना या

बनाना। २. ओषधि। औषध। दवा। ३. जल। पानी। ४ सुख। ५. विष्णु का एक नाम।

भेषज-करण—पु०[ष० त०] दवा तैयार करना। औषध बनाना।

भेषज-संग्रह—पु० [सं०] किसी देश या राज्य के द्वारा प्रकाशित वह आधिकारिक ग्रंथ जिसमें प्रामाणिक और मान्य औषधों की तालिका और उनके गुणों, धर्मों, मात्राओं आदि का विवेचन हो। (फारमाकोपिआ)

भेषजांग—पु०[सं० भेषज-अंग, ष०त०] वह पदार्थ जो दवा के साथ अथवा जिसमे दवा मिलाकर खाया जाता है और इसी लिए जो दवा का अग माना जाता है।

भेषजागार—पु० [सं० भेषज-आगार, ष० त०] औषधालय।

भेषना*—स० [हिं० भेष] १. भेस बनाना। स्वांग बनाना। २ कपडे आदि धारण करना। पहनना।

भेस—पु०[स० वेष] १. किसी व्यक्ति का वह रूप-रग जो उसके साधारण पहनावे आदि से प्रकट होता है।

क्रि० प्र०—बदलना।—बनाना।

२ वह बनावटी रूप-रग और नकली पहनावा आदि जो अपना वास्तविक रूप या परिचय छिपाने के लिए धारण किया जाय। कृत्रिम रूप और वस्त्र आदि।

क्रि० प्र०—धरना।

मुहा०—**भेस बदलना या बनाना**=किसी दूसरे का ऐसा रूप रग धारण करना और पहनावा पहनना जिसे देखकर लोग सहसा उस व्यक्ति को पहचान न सके, और वही व्यक्ति समझे जिसका भेस उसने बना रखा हो।

३. योगियो, साधु-सन्यासियो आदि का वह रूप-रग और पहनावा जो उसके विशिष्ट संप्रदाय का सूचक होता है। उदा०—कौन से भेस में, कौन गुरु के चेला।—कबीर।

भेसज*—पु०=भेषज।

भेसना—स०[स० हिं० भेष] १ वस्त्रादि पहनना। २ किसी का भेस धारण करना।

भैंस—स्त्री०[स० महिष] १. गाय की तरह का एक प्रसिद्ध पालतू मादा चौपाया जिसका दूध दूहा जाता है।

मुहा०—**भैंस काटना**=गरमी या आतशक नाम का रोग होना। उपदश होना। (बाजारू)

२ एक प्रकार की बडी मछली जो पजाब, बंगाल तथा दक्षिण भारत की नदियो मे पाई जाती है। इसका मांस खाने मे स्वादिष्ट होता है, परन्तु इसमे हड्डियाँ अधिक होती हैं। ३ एक प्रकार की घास।

भैंसवाली—स्त्री०[देश०] एक प्रकार की बेल जिसकी पत्तियाँ पाँच से आठ इच तक लम्बी होती हैं।

भैंसा—पु०[हिं० भैंस] १. भैंस का नर। २. लाक्षणिक अर्थ मे, हट्टा-कट्टा व्यक्ति।

भैंसाव—पु०[हिं० भैंस+आव (प्रत्य०)] भैंस और भैंसे का जोड़ा खाना। भैंसे से भैस का गर्भ धारण करना।

भैंसासुर—पुं०=महिषासुर।

भैंसिया गूगल—पु०[हिं० भैंसिया+गूगल] एक प्रकार का गूगल जिसका व्यवहार ओषधि के रूप में होता है।

भैंसिया लहसुन—पु०[हिं० भैंसिया+लहसुन] सामुद्रिक में एक प्रकार का लाल दाग या निशान जो प्राय. गाल, गरदन आदि पर होता है। लच्छन।

भैंसौरी—स्त्री०[हिं० भैंसा+औरी (प्रत्य०)] भैंस का चमड़ा।

भै—पु०=भय।

भैकर—वि०[स्त्री० भैंकरी]=भयकर (भयकर)।

भैक्ष—पु०[स० भिक्षा+अण्,वृद्धि] १ भिक्षा मांगने की क्रिया या भाव। भिखमगी। २. वह चीज जो भिक्षा मांगने पर मिले। भीख।

भैक्ष-चर्या—स्त्री०[सं० ष० त०] चारो ओर घूम-घूमकर भिक्षा मांगने की क्रिया।

भैक्षव—वि०[स० भिक्षु+अञ्,] भिक्षु-सबंधी।

पु० भिक्षुओं का समूह।

भैक्ष-वृत्ति—स्त्री०[तृ० त०]=भैक्ष-चर्या।

भैक्षाकुल—पु०[सं० भैक्ष-आकुल, तृ० त०] वह स्थान जहाँ बहुत से लोगों को भिक्षा मिलती हो। दानशाला।

भैक्षान्न—पु०[स० भैक्ष-अन्न, कर्म० स०] भीख मे मिला हुआ अन्न।

भैक्षाशी (शिन्)—वि०[सं० भैक्ष√अश् (खाना)+णिनि] भिक्षान्न खानेवाला।

पु० भिक्षुक। भिखमगा।

भैक्षाहार—पु०[स० भैक्ष-आहार, ब० स०] भिक्षुक।

भैक्षुक—पु०[स० भिक्षुक+अण्] १ भिक्षुको का दल। २ सन्यास।

भैक्ष्य—पु०[स० भिक्षा+ष्यञ्] भिक्षा। भीख।

भैक्ष्य-चरण—पु०=भिक्षु-चर्या।

भैक्ष्यचर्या—स्त्री० =भिक्षु-चर्या।

भैक्ष्य-जीविका—स्त्री०[तृ० त०] भिक्षा पर जीवन बिताना।

भैक्ष्य-वृत्ति—स्त्री०[तृ० त०] भिक्षा-वृत्ति।

भैक्ष्य-शुद्धि—स्त्री०[स० मध्य० स०] भिक्षा मांगने और ग्रहण करने के दोष से मुक्त होने के लिए की जानेवाली शुद्धि। (जैन)

भैचक, भैचक्क—वि०=भौचक।

भैजन*—वि० [हिं० भै=भय+जनक] भय उत्पन्न करनेवाला। भयप्रद।

भैडक—वि०[स०] भेड-सबधी। भेड़ो का।

भैदा*—वि० [सं० भय+दा (प्रत्य०)] भयप्रद। डरावना।

भैन—स्त्री०[हिं० बहिन] बहन। भगिनी।

भैना†—स्त्री० [हिं० बहन] बहन के लिए सम्बोधन।

†स्त्री०[?] गगई नामक पक्षी।

†अ० १.=भीनना। २ भीगना।

भैनी—स्त्री०[हिं० बहन] बहन। भगिनी।

भैने—पु०[स० भागिनेय] बहन का पुत्र। भानजा।

भैम—वि०[स० भीम+अण्] भीम-सम्बन्धी। भीम का।

भैमी—स्त्री० [स० भैम+ङीप्] १ माघ शुक्ल एकादशी। भीमसेनी एकादशी। २ दमयती जो राजा भीम की कन्या थी।

भैयंस—पुं०[हिं० भाई+अश] सपत्ति मे भाइयों का हिस्सा। भाइयो का अंश।

भैया—पुं०[हिं० भाई] १ भाई। भ्राता। २ बराबरवालों का छोटों के लिए सम्बोधन का शब्द। ३. उत्तरी भारत विशेषत: उत्तर प्रदेश का वह

निवासी जो पश्चिमी भारत में रईसों के यहाँ दरवान का काम करता हो। (बम्बई)
पुं०[?] नाव की पट्टी या तख्ती।
भैयाचारा†—पुं०=भाईचारा।
भैयाचारी†—स्त्री०=भाईचारा।
भैयादूज—स्त्री० भाई-दूज।
भैरव—वि० [सं० भीरु+अण्] १ जिसका रव अर्थात् शब्द भीषण हो। २. जो देखने मे भयकर हो। भयानक। ३ घोर विनाश करनेवाला। ४ बहुत अधिक उग्र, तीव्र या विकट। उदा०—पचभूत का भैरव मिश्रण।—पत।
पु०[सं०] १ महादेव। शिव। २. शिव के एक प्रकार के गण जो उन्ही के अवतार माने जाते हैं। ३ साहित्य मे भयानक नामक रस। ४ संगीत मे सपूर्ण जाति का एक राग जो शरद् ऋतु मे प्रात काल गाया जाता है। ५. ताल के सात मुख्य भेदो में से एक। ६. कपाली। ७ ऐसी तीव्र मदिरा जिसे पीते ही आदमी वमन करने लगे। (तान्त्रिक) ८. एक प्राचीन नद।
भैरव-झोली—स्त्री०[सं० भैरव+हिं० झोली] एक प्रकार की लंबी झोली जो प्राय साधु-सन्यासी अपने पास रखते हैं।
भैरव-तर्जक—पु० [सं० ष० त०] विष्णु।
भैरव-बहार—पु०[सं० भैरव+हिं०बहार] वसत-ऋतु में प्रात गाया जाने-वाला एक सकर राग जो भैरव और बहार के मेल से बनता है।
भैरव-मस्तक—पुं०[सं०] ताल के साठ मुख्य भेदो मे से एक।
भैरवांजन—पु० [सं० भैरव-अजन, मध्य० स०] आँखों मे लगाने का एक प्रकार का अजन। (वैद्यक)
भैरवी—स्त्री० [सं० भैरव+ङीप्] १. तान्त्रिकों के अनुसार एक प्रकार की देवी जो महाविद्या की मूर्ति मानी जाती है। २ पार्वती। ३ पुराणा-नुसार एक नदी। ४ सगीत में एक रागिनी जो भैरव राग की भार्या कही गई है और जो शरद् ऋतु मे प्रात काल के समय गाई जाती है। इसका स्वरग्राम इस प्रकार है:— म, प, ध, नि, सा, ऋ, ग।
वि० भैरव-सबधी। जैसे—भैरवी यातना।
भैरवी-चक्र—पु० [सं० मध्य० स०] तान्त्रिकों का वह मडल जो देवी के पूजन के लिए एकत्र होता है। मद्यपो और अनाचारियों आदि का वर्ग या समूह।
भैरवी-यातना—स्त्री० दे० 'भैरवी यातना'।
भैरवी यातना—स्त्री० [सं० भैरवी+यातना व्यस्त पद] वह कष्ट जो प्राणियो को मरते समय भैरव देते हैं।
भैरवेश—पु०[सं० भैरव-ईश, ष० त०] शिव।
भैरा—पु०=बहेड़ा।
भैरी—पुं० =बहरी (पक्षी)।
भैरू—पु०=भैरव।
भैरो—पु०=भैरव।
भैवा†—पु० [हिं० भैया] भाई अथवा बराबरवालो के लिए संबोधन।
भैवाद—पुं० [हिं० भाई+आद (प्रत्य०)] १. कुल या परिवार के लोग जिनसे भाइयों का सा संबंध हो। २. एक ही वंश या परिवार के लोग। ३. भाई-चारा।
भैषज—पुं०[सं० भेषज+अण्] १. औषध। दवा। २. वैद्य के शिष्य और अनुचर। ३. लवा पक्षी।
भैषजिकी—स्त्री०[सं० भैषज से] औषध आदि बनाने की कला, विद्या या शास्त्र। (फार्मेसी)
भैषज्य—पुं० [सं० भेषज+ष्य] दवा। औषध।
भैषज्यज्ञ—पु० [सं०] वह जो भैषज-शास्त्र का ज्ञाता हो। ओषधियों आदि की सहायता से अच्छी चिकित्सा करनेवाला चिकित्सक। काय-चिकित्सक।
भैष्मकी—स्त्री० [सं० भीष्मक+इञ्-ङीप्] भीष्मक की कन्या रुक्मिणी।
भैहा*—पु०[हिं० भय+हा (प्रत्य०)] १ भयभीत। डरा हुआ। २. जो भूत-प्रेत आदि से डरकर उनके आवेश मे आ गया हो।
भों—स्त्री०[अनु०] १ भों भों का शब्द। कुत्तो के भाकने का शब्द।
भोंकना†—स० [भों भों] १ किसी नरम पदार्थ मे कोई कडी तथा नुकीली चीज एकबारगी धँसाना। २ नुकीला अस्त्र किसी में धँसाना। †अ० =भूकना।
भोंगरा—पु०[देश०] एक प्रकार की बेल या लता।
भोंगाल—पु० [अ० बिगुल] एक प्रकार का बडा भोपा।
भोंचाल—पु० = भूकप।
भोंडर†—पु० मोडर।
भोंडा—वि०[हिं० भद्दा या भो से अनु०] [स्त्री०भोंडी] बहुत ही भद्दी और विकृत आकृतिवाला। (क्लम्ज़ी) २ जिसमे शालीनता, शिष्टता आदि का नितान्त अभाव हो। ३ जो दोषी और लज्जित होने के कारण सिर न उठा सके। उदा०—भौंवते भोंडी करी मानिनि ते भोरी करी। —देव।
पु०[देश०] एक प्रकार की घास और उसके दाने जिसे पशु खाते है।
भोंडापन—पु०[हिं० भोंडा+पन (प्रत्य०)] १ 'भोंडा' होने की अवस्था या भाव। २ भद्दापन।
भोंडी—स्त्री० [हिं०भोंडा] काले रग की भेड़ जिसके छाती पर के बाल सफेद हो।
भोंतला—वि०=भुथरा।
भोंतण—वि० भुथरा (कुछ धारवाला)।
भोंदू—वि०[हिं० बुद्धू] बहुत ही सीधा-सादा और बेवकूफ।
भोंपू—पु० [अनु० भों+पू (प्रत्य०)] १. फूंककर बजाया जानेवाला एक तरह का पुरानी चाल का बाजा। २ वह ऊँची तथा लबी सीटी जो समय सूचित करने के लिए कल-कारखाने बजाते हैं। ३. मोटरों आदि मे शब्द करने के लिए दबाकर बजाया जानेवाला बाजा।
भों भों—पु०[अनु०] भूंकने की आवाज।
भोंसला—पु०[देश०] महाराष्ट्र के एक राजकुल की उपाधि। महाराज शिवाजी और रघुनाथ राव आदि इसी राजकुल के थे। नागपुर के महाराष्ट्र राजा लोग भोंसले ही थे।
भो*—वि० [हिं० भया] भया। हुआ।
अव्य०[सं० भोस्] हे। हो। (सम्बोधन)
भौकस*—पु०[सं० पुल्कस] दानव। राक्षस।
वि०=मुक्खड़।

भोकार—स्त्री०[भो से अनु०+कार (प्रत्य०)] जोर जोर से रोना। क्रि० प्र०—फाड़ना।

भोक्तव्य—वि०[सं०√भुज् (खाना, उपभोग करना)+तव्य] १. जो भोगा जाने को हो। २. जो भोगा जा सके।

भोक्ता(क्तृ)—वि०[सं०√भुज् (खाना)+तृच्] १. भोजन करनेवाला। २. भोग अर्थात् उपभोग या उपयोग करनेवाला। ३. सुखों का भोग करनेवाला।

पुं० १. विष्णु। २. स्त्री का पति। स्वामी। ३. एक प्रकार के प्रेत।

भोक्तृत्व—पुं०[सं० भोक्तृ+त्व] भोक्ता होने की अवस्था, धर्म या भाव।

भोक्तृ-शक्ति—स्त्री०[सं० ष० त०] बुद्धि।

भोग—पुं० [सं०+भुज् (उपभोग करना)+घञ्] १ भोगने की अवस्था, क्रिया या भाव। २. सुख-दुख आदि का अनुभव करते हुए उन्हें अपने मन और शरीर पर प्राप्त या सहन करना। ३. इच्छाओं की तृप्ति, प्रसन्नता, मनस्तोष आदि के विचार से अभीष्ट, लाभदायक या सुखद वस्तु मनमाने ढंग से अपने उपयोग मे लाने की क्रिया या भाव। जैसे—सम्पत्ति का भोग, सासारिक सुखों का भोग। ४ किसी पदार्थ का किया जानेवाला उपयोग या व्यवहार। किसी चीज का काम में लाया जाना। ५. भोजन करना। खाना। ६ देवी-देवताओं की मूर्ति के सामने उनके काल्पनिक उपभोग के उद्देश्य से रखे जानेवाले खाद्य पदार्थ। नैवेद्य।

मुहा०—भोग लगाना=(क) देवताओ की मूर्तियो के सामने खाद्य पदार्थ यह समझकर रखना कि वे उसका आस्वादन और उपभोग करेंगे। (ख) स्वस्थ भोजन करना। खाना।

७ व्यावहारिक क्षेत्र मे वह स्थिति जिसमें कोई भूमि या संपत्ति अपने अधिकार में रखकर उससे पूरा लाभ उठाया जाता है। भुक्ति। कब्जा। (पजेशन) ८ पुरुष और स्त्री में होनेवाला मैथुन। संभोग। ९. पाप, पुण्य आदि का वह फल जो भोगा अर्थात् प्राप्त या सहन किया जाता है। प्रारब्ध। १० किसी काम या बात से प्राप्त होनेवाला फल। ११. किसी की दुर्दशाओं, दुष्कर्मों आदि का वह उल्लेख जो लड़ाई-झगड़े के समय गाली-गलौज के साथ किया जाता है। जैसे—अब अगर किसी ने मेरा नाम लिया तो मैं सैकड़ों भोग सुनाऊँगी। (स्त्रियाँ) १२. ज्योतिष में, सूर्य आदि ग्रहो का मीन, मेष आदि राशियो मे अवस्थित रहने का काल या समय। जैसे—अभी इस राशि मे बुध का भोग एक महीने और रहेगा। १३. सुख। १४ दुख। १५. ऐसी वस्तु जिससे किसी प्रकार का सुख प्राप्त हो। १६. दावत। भोज। १७ फायदा। लाभ। १८. आमदनी। आय। १९ धन-सम्पत्ति। २० वह धन जो वेश्या को उसके साथ संभोग करने के बदले मे दिया जाता है। २१ साँप का फन। २२. साँप। २३. देह। शरीर। २४ पंक्तिबद्ध सेना। २५. किराया। भाडा। २६. घर। मकान। २७. पालन-पोषण २८ परिमाण। मान। २९. पुर। नगर। ३०. एक प्रकार की सैनिक व्यूह-रचना।

भोग-काल—पुं० [सं० ष० त०] १. उतना समय जितने में कोई घटना या बात आदि से अन्त तक घटित हो। (ड्यूरेशन) २ कष्ट, रोग, सुख आदि भोगे जाने का पूरा समय।

भोग-गृह—पुं०[सं० ष० त०] अन्तःपुर। जनानखाना।

भोग-चिन्तामणि—पुं०[सं०] संगीत मे कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

भोग-देह—पुं० [सं० मध्य० स०] पुराणानुसार वह सूक्ष्म शरीर जो मनुष्य को मरने के उपरांत स्वर्ग या नरक में जाकर सुख या दुःख भोगने के लिए धारण करना पड़ता है।

भोग-धर—पुं०[सं० ष० त०] सर्प। साँप।

भोगना—स०[सं० भोग+हिं० ना (प्रत्य०)] १. किसी चीज का भोग करना। उपभोग या प्रयोग करना। २. किसी चीज या बात के अच्छे-बुरे फल वहन या सहन करना। ३. कष्ट सहना।

विशेष—भोगना, झेलना और सहना का अन्तर जानने के लिए दे० 'सहना' का विशेष।

४ स्त्री के साथ प्रसंग या संभोग करना।

भोग-नाथ—पुं०[सं० ष० त०] वह जो पालन-पोषण करता हो। पालक।

भोग-पति—पुं० [सं० ष० त०] प्राचीन भारत में किसी क्षेत्र विशेषतः किसी जनपद या प्रदेश का शासक।

भोग-पत्र—पुं० [सं० मध्य० स०] १ प्राचीन भारत में वह पत्र जो राजा को उपहार भेजने के संबंध में लिखा जाता था। (शुक्र नीति) २. वह पत्र जिसके अनुसार किसी को कोई चीज या संपत्ति भोगने का अधिकार दिया जाय।

भोग-पाल—पुं० [सं० भोग√पाल् (पालन करना)+अण्, उप० स०] १. भोगपति। २. साईस।

भोग-पिशाचिका—स्त्री०[सं० स० त०] भूख।

भोग-बंधक—पुं० [सं० भोग्य+हिं०'बंधक] बंधक या रेहन का वह प्रकार जिसमें रेहन रखी जानेवाली चीज के भोग का अधिकार भी महाजन को रहता है। (मार्टगेज विद पोजेशन)

भोग-भूमि—स्त्री०[सं० मध्य० स०] जैनों के अनुसार वह लोक जिसमें किसी प्रकार का कर्म नही करना पड़ता है और सुख भोग की सब आवश्यकताएँ कल्पवृक्ष के द्वारा पूरी होती हैं।

भोग-भृतक—पुं०[सं० मध्य० स०] केवल भोजन, वस्त्र लेकर काम करनेवाला नौकर।

भोग-लदाई—स्त्री० [हिं० भोग+लदाई?] खेत में कपास का सबसे बडा पौधा जिसके आसपास बैठकर देहाती लोग उसकी पूजा करते हैं।

भोग-लाभ—पुं० [सं० ष० त०] पहले दिये हुए अन्न के बदले मे फसल तैयार होने पर ब्याज के रूप में मिलनेवाला कुछ अधिक अन्न।

भोग लियाल—स्त्री०[?] कटारी नाम का शस्त्र। (डिं०)

भोगली—स्त्री०[देश०] १. छोटी नली। पुपली। २ नाक मे पहनने का लौंग। ३. कान मे पहनने की तरकी। ४. नाक (या कान) मे पहनने के लौंग (या फूल) मे पीछे की ओर से बंद करने के लिए डाली जानेवाली लम्बी पतली और पोली कील।

भोगवती—स्त्री० [सं० भोग+मतुप्, म—व,+ङीप्] १. पाताल गंगा। २. गगा। ३. पुराणानुसार एक प्राचीन तीर्थ। ४. एक प्राचीन नदी। ५ नागों के रहने की नाग नाम की पुरी। ६. कार्तिकेय की एक मातृका।

भोगवना*—स०=भोगना।

भोगवसा—पुं०[सं०] सगीत में कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

भोगवान् (वत्)—पुं०[सं० भोग+मतुप्, म—व] १. साँप। २. अभिनय। नाट्य। ३. गीत। गाना।

भोगवाना—स०[हिं० भोगना का प्रे०रूप] भोगने में दूसरे को प्रवृत्त करना। भोग कराना।

भोग-विलास—पु० [स० द्व० स०] सब प्रकार के सुख भोगते हुए किया जानेवाला आमोद-प्रमोद। सुख-चैन की वह स्थिति जिसमें मनुष्य वासनाओं की तृप्ति मे लिप्त रहता हो।

भोग-वेतन—पु० [स० मध्य० स०] वह धन जो किसी धरोहर रखी हुई वस्तु के व्यवहार के बदले मे उसके स्वामी को दिया जाय।

भोग-व्यूह—पु० [स० मध्य० स०] वह व्यूह जिसमे सैनिक एक दूसरे के पीछे खडे किये गये हो। (कौ०)

भोग-शरीर—पु० =भोगा-देह।

भोग-सामंत—पु०[सं०] संगीत मे कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

भोगांतराय—पु०[सं० भोग-अतराय, सुप्सुपा स०] वह अतराय जिसका उदय होने से मनुष्य के भोगो की प्राप्ति मे विघ्न पडता है। (जैन)

भोगांश—पु०[स०] =देशातर (भूगोल का)।

भोगाधिकार—पु०[स० भोग-अधिकार, मध्य० स०] वह अधिकार जो किसी दूसरे की वस्तु का कुछ समय तक भोग करते रहने के उपरान्त प्राप्त होता है। (ऑकुपैन्सी राइट)

भोगाना—स०[हिं० भोगना का प्रे०] भोगने मे दूसरे को प्रवृत्त करना। भोग कराना।

भोगावती—स्त्री० =भोगवती।

भोगिआर—वि०[हिं० भोगना] जो भोगे जाने के योग्य हो। फलत आकर्षक या सुन्दर। (पूरब)

भोगिक—पु० [स०भोग+ठन्—इक] १ गाँव का मुखिया। २. साईस।

भोगिन—स्त्री० =भोगिनी।

भोगिनी—स्त्री० [स० भोग+इनि,+ङीप्] १ राजा की उपपत्नी। २ रखेली स्त्री। ३ नागिन।

भोगींद्र—पु० [स० भोगिन्-इन्द्र, स० त०] पतजलि का एक नाम।

भोगी (गिन्)—वि०[स० भोग-इनि] १ भोगनेवाला। जो भोगता हो। २ सुखी। ३ इन्द्रियो के सुख-भोग की इच्छा रखनेवाला। विषयासक्त। ४ विषयी। व्यसनी। ५ खानेवाला।

पु० १ वह जो गृहस्थाश्रम मे रहकर सब प्रकार का सुख-दु ख भोगता हो। गृहस्थ। २. राजा। ३. जमीदार। ४ नाई। हज्जाम। ५ साँप। ६. शेषनाग। (डिं०) ७ सगीत मे कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

भोगीन—पु०[स० भोग+ख—ईन]=भोगी।

भोगीभुक्—पु०[स० भोगिभुक्] नेवला।

भोगीश्वरी—स्त्री०[स०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

भोगेंद्र—पु०[स० भोग-इन्द्र, स० त०] १, अधिक मात्रा मे अच्छी चीजें खानेवाला। २ अच्छी तरह सुखों का भोग करनेवाला।

भोग्य—वि० [स० भुज् (उपभोग करना)+ण्यत्,] १ (पदार्थ या सपत्ति) जिसका भोग करना उचित हो, किया जाने को हो अथवा किया जा रहा हो। २ जो भोगे अर्थात् झेले या सहे जाने को हो।

पु० १ धन। २ धान्य। ३ रेहन या भोगबंधक का प्रकार।

भोग्य भूमि—स्त्री० [सं० कर्म० स०] १ वह स्थान जहाँ आनन्द केलि की जाती हो। २ मर्त्य-लोक, जिसमे जीव को अपने किये हुए कर्मों का फल भोगना पड़ता है।

भोग्या—वि०[स० भोग्य+टाप्] भोग्य का स्त्रीलिंग रूप।

स्त्री० वेश्या।

भोज—पु० [स० भोज+अण् अण्-लुक्] १ भोजकट नामक देश जिसे आज-कल भोजपुर कहते है। २ चन्द्रवशी क्षत्रियो का एक कुल या शाखा। ३. महाभारत के अनुसार राजा द्रुह्यु के एक पुत्र का नाम। ४. पुराणानुसार वसुदेव का एक पुत्र। ५ श्रीकृष्ण का सखा, एक ग्वाल। ६ विदर्भ के एक प्राचीन राजा। ७ मालवे के एक प्रसिद्ध राजा जिन्होंने सस्कृत भाषा मे कई ग्रथ लिखे थे। इनका जन्म-काल १०वी शताब्दी है।

पु०[स० भोजन] १ किसी विशिष्ट अवसर पर या उपलक्ष मे निमंत्रित व्यक्तियो को एक साथ बैठाकर कराया जानेवाला भोजन। २. खाने-पीने की चीजें। खाद्य पदार्थ।

भोजक—वि० [स०√भुज् (खाना भोग करना)+ण्वुल्–अक] १ भोग करनेवाला। भोगी। २ भोजन करने या खानेवाला।

पु० ऐयाश।। विलासी।

भोजकट—पु०[स०] भोजपुर।

भोजन—पु०[स० √भुज्+ल्युट्—अन्] १ भक्षण करना। खाना। २. भूख मिटाने के उद्देश्य से प्राय भर पेट खाये जानेवाले खाद्य पदार्थ। खाने की सामग्री। ३. विशेष परिस्थिति या अवस्था मे खाई जाने वाली कुछ विशिष्ट प्रकार की वस्तुएँ। (डायट)

भोजनखानी*—स्त्री० [स० भोजन+हिं० खानी] १ पाकशाला। रसोई-घर। २ भोजनालय।

भोजन-गृह—पु० [सं० ष० त०] वह स्थान जहाँ बैठकर भोजन किया जाता है।

भोजनग्राही (हिन्)—वि० [स० भोजन√ग्रह+णिनि, उप० स०] भोजन ग्रहण करनेवाला। २ जो किसी विशेष अवस्था मे कहीं से मिलने वाला भोजन ग्रहण करता हो। (डायटेड) जैसे—इस अस्पताल मे २० भोजनग्राही रोगी हैं।

भोजन-नलिका—स्त्री० [स० ष० त०] गले और छाती के अन्दर की वह नली जिसमें से होकर खाई हुई चीजें नीचे उतरती और पक्वाशय में पहुँचती है। (फूड पाइप)

भोजन नली—स्त्री० =भोजन नलिका।

भोजन-भट्ट—वि०[स० स० त०] बहुत अधिक खानेवाला। पेटू।

भोजन शाला—स्त्री० [स० ष० त०] १ रसोई-घर। पाकशाला २ भोजनालय।

भोजनाच्छादन—पु०[स० भोजन-आच्छादन, द्व० स०] खाने और पहनने की सामग्री। अन्न-वस्त्र। खाना-कपडा।

भोजनालय—पु० [स० ष० त०] १ पाकशाला। रसोई-घर। २. वह स्थान जहाँ मूल्य लेकर पका हुआ भोजन परोसकर खिलाया जाता है। (रेस्टोरेण्ट)

भोजनीय—वि०[स०√भुज् (खाना)+अनीयर] जो खाया जा सके। खाये जाने के योग्य। खाद्य।

भोजनोत्तर—वि०[स० भोजन-उत्तर, ष० त०] जो भोजन के बाद खाया जाता हो (औषध आदि)।

क्रि० वि० भोजन करने के उपरान्त। खाने के बाद।

भोजपति—पुं०[सं० ष० त०] १ कंसराज । २. राजा भोज।

भोज-पत्र—पुं० [सं० भूर्जपत्र] १. ऊँचे पर्वतों पर होनेवाला मझोले आकार का एक वृक्ष। २ उक्त वृक्ष की छाल जो प्राचीन काल मे ग्रंथ और लेख आदि लिखने के काम आती थी। छाल।

भोज-परीक्षक—पु० [सं० ष० त०] वह जो इस बात की परीक्षा करता हो कि भोजन मे विष आदि तो नही मिला है।

भोजपुर—पु० [वि० भोजपुरिया, भोजपुरी] बिहार के शाहाबाद जिले मे स्थित एक गाँव।

भोजपुरिया—पु० [हिं० भोजपुर+इया (प्रत्य०)] भोजपुर का रहनेवाला।

वि० भोजपुर में रहने या होनेवाला।

भोजपुरी—वि०[हिं० भोजपुर] भोजपुर-संबंधी। जैसे—भोजपुरी भाषा।

पुं० भोजपुर का निवासी।

स्त्री० पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार के अधिकतर भागो मे बोली जानेवाली बोली, जिसकी उत्पत्ति मागधी अपभ्रंश से हुई है।

भोज-भात—पु० [हिं०] बिरादरी आदि के लोगो का एक साथ बैठकर भोजन करना। भोज।

भोजयिता (तृ०)—वि० [सं०√भुज्+णिच्+तृच्] खिलानेवाला।

भोजराज—पु०=भोज (राजा)।

भोज-विद्या—स्त्री०[सं० मध्य० स०] इंद्रजाल। बाजीगरी।

भोजी—पु० [सं० भोजिन्] भोजन करने या खानेवाला। जैसे—मांस-भोजी।

भोजू*—पु०=भोजन।

वि० [सं० भोज्य] काम मे आने योग्य।

पद—काजू भोजू=काम चलाऊ।

वि० १ भोजन करनेवाला। २. भोगनेवाला। ३. भोगा जानेवाला।

भोजेश—पु०[सं० भोज-ईश, ष० त०] १ भोजराज। २ कंस।

भोज्य—वि० [सं०√भुज्+ण्यत्] खाये जाने के योग्य। जो खाया जा सके। खाद्य।

पु० वे पदार्थ जो खाये जाते हैं। खाद्य पदार्थ।

भोट—पु०[सं० भोटग] १ भूटान देश। २. उक्त देश का निवासी। ३. एक प्रकार का बड़ा और मोटा पत्थर जो प्राय २॥ इंच मोटा, ५ फुट लम्बा और १॥ फुट चौड़ा होता है।

भोटिया—वि० [हिं० भोट+इया (प्रत्य०)] भूटान देश का।

पु० भोट या भूटान देश का निवासी।

स्त्री० भूटान देश की भाषा।

भोटिया बादाम—पु० [हिं० भोटिया+फा० बादाम] १. आलूबुखारा। २. मूंगफली।

भोटी—वि०[हिं० भोट+ई (प्रत्य०)] भूटान देश का।

पु० भोट।

भोडर—पु०[देश०] १. अभ्रक। अबरक। २. अबरक का चूरा। बुक्का। ३. एक प्रकार का मुश्क बिलाव।

भोडल—पु० दे० 'अबरक'।

भोडलय—पु०[सं० भू-मंडल] नक्षत्र-समूह। (डिं०)

भोडागार—पु०[सं० भांडागार] भंडार। (डिं०)

भोण—पु०=भवन। (डिं०)

भोत—वि०=बहुत।

भोथार (रा)—वि०=भुथरा।

भोथार—पु०[?] एक प्रकार का घोड़ा।

भोना—अ० [हिं० भीनना] १ किसी तेल का किसी पदार्थ मे पूरी तरह से व्याप्त या संचारित होना। भीनना। २ किसी काम या बात में लिप्त या लीन होना। ३. किसी पर अनुरक्त या आसक्त होना। उदा०—नारी चितवत भर रहै भीना—सूर।

संयो० क्रि०—आना। पड़ना।

४. युक्त होना । मिलना। ५. धोखे मे आना।

स० १. भिगोना। २. लिप्त करना। ३. अनुरक्त करना। ४. मिलाना। ५. धोखे में डालना।

भोपा—वि०, पु०=भोपा।

भोबरा—पु०[देश०] एक तरह की घास। झेरन।

भोम—स्त्री०[सं० भूमि] पृथ्वी। (डिं०)

भोमि—स्त्री०=भूमि.

भोमी—स्त्री०[सं० भूमि] पृथ्वी। (डिं०)

भोयन—पु०=भोजन।

भोर—पु०[सं० विभावरी] प्रातःकाल। सबेरा। तड़का।

पु० [सं० भ्रम] धोखा। भ्रम।

†वि०=भोला (सीधा-सादा)।

पु०[देश०] १. एक प्रकार का बड़ा पक्षी जिसके पर बहुत सुन्दर होते हैं। यह जल तथा हरियाली बहुत पसन्द करता है और खेतो को बहुत अधिक हानि पहुँचाता है। २. एक प्रकार का सदाबहार वृक्ष जिसे 'खमो' भी कहते हैं।

भोरा—पु०[देश०] एक तरह की मछली।

†पुं०=भोर।

†वि०=भोला (सीधा-सादा)।

पु०[हिं० भूल] धोखा। भुलावा। उदा०—दीन दुखी जो तुमको जाँचत सो दाननि के भोरे।—सत्यनारायण।

वि०१ धोखे या भुलावे मे आया हुआ। २. मोह या भ्रम मे पड़ा हुआ। ३. भूला या खोया हुआ। उदा०—रची विरंचि विषय सुख भोरी।—तुलसी।

भोराई—स्त्री०[हिं० भोरा+आई (प्रत्य०)]भोलापन।

स्त्री० [हिं० भोराना+आई (प्रत्य०)] १. धोखा। भुलावा। २. भ्रम।

भोराना*—स० [हिं० भँवर या भ्रम] किसी को धोखे या भ्रम मे डालना। चकमा देना।

†अ० धोखे या भ्रम मे आना या पड़ना।

भोरानाथ*—पु०=भोलानाथ (शिव)।

भोरी—स्त्री०[देश०] पोस्ते के पौधे का एक रोग।

वि० स्त्री०=भोली (भोला का स्त्री०)।

भोरु—पुं०=भोर।

भोरे—अव्य० [सं० भ्रम या हिं० भूल] भूलकर भी। उदा०—बहत न बरत भूपपद भोरे।—तुलसी।

भोल—पु०[स० मा+उल्]वैश्य पिता और नटी माता से उत्पन्न सतान।
भोलना—स०[हिं० भुलाना] धोखे मे डालना। भुलावा देना। बहकाना।
उदा०—अग्यानी पुरुष कौ भोलि भोलि खाई।—कबीर।
भोलपन†—पु०=भोलापन।
भोला—वि०[स० भ्रम, प्रा० भोल]१. (व्यक्ति) जो (क) छल-कपट न जानता हो, (ख) लोक-व्यवहार न जानता हो। सीधा-सादा। सरल। २ (कथन या बात) जो ऊपर से देखने मे बहुत ही सरल तथा ठीक प्रतीत होती हो परन्तु प्रस्तुत प्रसग मे अनुपयुक्त या अव्यवहार्य हो। उदा०—आहा! यह परमार्थ कथन है कैसा भोला भाला। —मैथिली-शरण। ३. (व्यक्ति) जो किसी की बात पर सहसा विश्वास कर लेता हो।
भोलानाथ—पु०[हिं० भोला+स० नाथ] महादेव। शिव।
भोलापन—पु०[हिं० भोला+पन (प्रत्य०)] भोले होने की अवस्था, गुण या भाव। सिधाई।
भोला-भाला—वि० [हिं० भोला+अनु० भाला] निश्छल और निरीह। सरल-हृदय।
भोस—पु०[?] एक प्रकार का केला।
भोसर—वि०[देश०] मूर्ख।
भौं†—स्त्री० =भौंह।
भौंकना—अ०=भूंकना।
भौंगर—पु०[देश०] क्षत्रियो की एक जाति।
वि० मोटा-ताजा। हृष्ट-पुष्ट।
भौंचाल—पु०=भूकप।
भौंडा—वि०=भोंडा (भद्दा)।
स्त्री०=भौंड़ी।
भौंडी†—स्त्री० [देश०]१ छोटा पहाड। पहाड़ी। २ टीला।
भौंतुआ—पु०[हिं० भ्रमना+घूमना] काले रग का एक तरह का छोटा कीडा जो जल के ऊपरी तल पर तेजी से दौड़ता और चक्कर काटता रहता है। २. एक प्रकार का रोग जिसमे बाहुदड के नीचे एक गिलटी निकल आती है। ३. तेली का बैल जिसे दिन भर घूमते या चक्कर लगाते रहना पड़ता है।
वि० बराबर घूमता रहनेवाला या चक्कर लगानेवाला।
भौंना*—अ० [स० भ्रमण] घूमना।
भौंर—पु० [हिं० भौंर, स० भ्रमर] १. भौंरा। २ मुश्की घोड़ा।
†स्त्री०=भौंरी।
भौंरकली—स्त्री० =भंवरकली।
भौंरा—पु० [स० भ्रमर, पा० भमर; प्रा० भवर] [स्त्री० भंवरी] १. काले रग का उडनेवाला एक पतगा जो फूलो पर मँडराता और उनका रस चूसता है। इसके छः पैर, दो पर और दो मूंछें होती हैं। २. बडी मधुमक्खी। सारग। डगर। ३. बर्रे। भिड़। ४. ज्वार आदि की फसल को हानि पहुँचानेवाला एक प्रकार का कीड़ा। ५ लट्टू के आकार का एक प्रकार का खिलौना जिसमे कील या छोटी डंडी लगी रहती है। इसी कील मे रस्सी लपेटकर लड़के इसे जमीन पर नचाते हैं। ६. हिंडोले की वह लकड़ी जो मयारीमे लगी रहती है और जिसमें डोरी डडी बँधी रहती है। ७. गाड़ी के पहिये का वह भाग जिसके बीच के छेद मे धुरे का गज रहता है और जिसमें आरा लगाकर पहिये की पट्टियाँ जड़ी जाती है। नाभि। लट्ठा। मूँडी। ८ रहट की खड़ी चरखी जो भँवरी को फिराती है। चकरी। (बुदेल) ९. पशुओं का एक रोग जिसे 'चेचक' भी कहते हैं। (बुदेल०) १०. पशुओ को आनेवाली मिरगी। ११. गड़ेरिये की भेडो की रखवाली करनेवाला कुत्ता। १२ तहखाना। १३ अनाज रखने का खत्ता। खात। १४ रहस्य सम्प्रदाय में, मन।
†पुं०=भांवर।
भौंराना—स०[स० भ्रमण]१. परिक्रमा कराना। घुमाना। २. चक्कर या फेरा देना। ३. विवाह के समय भाँवर की क्रिया सम्पन्न कराना। ४. विवाह कराना।
†अ० =भौरना (घूमना या चक्कर खाना)।
भौंराला*—वि०[हिं० भौंरा] [स्त्री० भौंराली] भौंरे की तरह काले रग का।
वि०[हिं० भँवर] छल्लेदार। घुंघराला। (बाल)
भौंराही—स्त्री०[हिं० भौंराना+आही (प्रत्य०)]१ भौंरे के मँडराने की क्रिया या भाव। २. वह शब्द जो भौंरा मँडराते समय करता है।
भौंरी—स्त्री०[स० भ्रमर्थ]१. प्राय पशुओ के शरीर पर होनेवाला रोओं का मडलाकार छोटा घेरा जो अनेक आकृतियो आदि के विचार से शुभ या अशुभ माना जाता है। २ दे० 'भांवर'। ३ दे० 'भँवर'।
स्त्री०=भौंह।
†स्त्री०[देश०] लिट्टी। बाटी।
भौंह—स्त्री० [स० भ्रू] आँखो के ऊपर की हड्डी पर के रोएँ या बाल। भृकुटी। भौं।
मुहा०—(किसी के सामने) भौंह उठाना=आँख उठाकर देखना। भौंह चढ़ाना या तानना आँखें तानकर क्रोध या क्षोभ प्रकट करना। त्योरी चढ़ाना। बिगडना। (किसी की) भौंह जोहना या ताकना यह देखते रहना कि कोई अप्रसन्न न होने पावे। भौंह नचाना=बराबर भौंहे हिलाना जो स्त्रियो के हाव-भाव और विशेष चचलता का सूचक है। भौंह मरोड़ना=(क) असतोष, उपेक्षा, रोष आदि प्रकट करने के लिए अपनी आकृति विकृत करना। नाक-भौंह चढ़ाना। उदा०—सुनि सौतिनि के गुनि की चरचा द्विज जू तिय भौंह मरोरन लागी।—द्विजदेव। (ख) दे० ऊपर 'भौंह चढ़ाना या तानना'।
स्त्री०[अनु०] कुत्तो के भूंकने का शब्द।
भौंहरा—पु०=भुइँहरा।
†पु०=भौंरा।
भौ*—[पु० स० भव]१. ससार। जगत। दुनियाँ। २ जन्म।
†पु०=भय (डर)।
अ०[हिं० भवना] हुआ। (अवधी)
भौकन—स्त्री० [हिं० भभक] १ आग की लपट। ज्वाला। २. जलन। ताप।
भौका—पु०[देश०] [स्त्री० भौकी] बडी दौरी। टोकरी।
भौगर्भिक—वि० [स० भूगर्भ+ठक्—इक] भूपटल के अन्दर जन्म लेने-वाला। पृथ्वी के भीतरी भाग में होनेवाला।
भौगिया—वि० भोगी।

भौगोलिक—वि०[सं० भूगोल+ठक्—इक] भूगोल-संबंधी। भूगोल का। (जियाग्रैफ़िकल)

भौगोलिकी—स्त्री० [सं० भौगोलिक+ङीष्] वह पुस्तक जिसमें किसी देश, महादेश अथवा सारी पृथ्वी के भौगोलिक नामों और नगरों, नदियों पहाड़ों आदि के संबंध की सब बातें रहती हैं। (गजेटियर)

भौचक—वि०[सं० भय+चकित] १ सहसा भयपूर्ण स्थिति उत्पन्न होने पर जो घबरा गया हो और फलतः कुछ करने-धरने में असमर्थ-सा हो गया हो। २. चकित। हैरान।

भौचक्का—वि०=भौचक।

भौचाल—पुं०=भूकंप।

भौज†—स्त्री०=भावज (भौजाई)।

भौ-जल*—पुं०=भवजाल।

भौजाई—स्त्री० [सं० भ्रातृजाया] भाई के विचार से विशेषतः बड़े भाई की स्त्री। भाभी।

भौजी†—स्त्री०=भौजाई।

भौट—पुं०[सं० भोट+अण्] भोट या भूटान देश का निवासी।

भौठा—पुं०=भीठा।

भौण†—पुं०=भवन (घर)।

भौत—वि० [सं० भूत+अण्]१. भूत-संबंधी। २. भूत-निर्मित। भौतिक। ३ भूत-प्रेत संबंधी। पैशाचिक। ४. भूताविष्ट।
पुं० १. मन्दिर। २. पुजारी। ३ वह जो भूत-प्रेतों की पूजा करता हो। ४ भूतों का दल या वर्ग। ५ भूत-यज्ञ।
†वि० -बहुत।

भौतारन—वि०=भव-तारण (परमेश्वर)।

भौतिक—वि०[सं० भूत+ठक्—इक]१. पंचभूतों से संबंध रखनेवाला। २. पंचभूतों से बना हुआ। ३. इस जगत से संबंध रखनेवाला। लौकिक। सांसारिक। ४. पार्थिव। शरीर संबंधी। शारीरिक। (मैटीरियल) ५ भूत योनि से संबंध रखनेवाला। ६. प्राकृतिक नियमों, सिद्धान्तों, रूपों आदि से संबंध रखनेवाला। (फ़िजिकल) जैसे—भौतिक विज्ञान।
पुं०१. महादेव। शिव। २. उपद्रव। ३. आधि, व्याधि, कष्ट और रोग। ४. आँख, कान आदि शरीर की इंद्रियाँ।

भौतिक चिकित्सा—स्त्री०[सं०] आधुनिक चिकित्सा प्रणाली की वह शाखा जिसमें इस बात का विवेचन होता है कि शरीर की उखड़ी या टूटी हुई हड्डियाँ बैठाने या जोड़ने के उपरांत किस प्रकार मालिश, व्यायाम सेंक आदि के द्वारा उन्हें ठीक तरह से काम करने के योग्य बनाया जाता है। (फिजियोथैरैपी)

भौतिक भूगोल—पुं०[सं० कर्म० स०] भूगोल की वह शाखा जिसमें इस बात का विवेचन होता है कि पृथ्वी के किस अंश की प्राकृतिक बनावट कैसी है और उसमें कैसे कैसे उत्पादन होते हैं। (फ़िजिकल जियाग्रैफ़ी, फ़िजियोग्रैफ़ी)

भौतिकवाद—पुं०[सं० ष० त० ?]१. वह दार्शनिक सिद्धान्त जिसके अनुसार पंचभूतों से बना हुआ यह संसार ही वास्तविक और सत्य माना जाता है। (मिटीरियलिज्म) २. दे० 'यथार्थवाद'।

भौतिकवादी—वि०[सं०] भौतिकवाद का।
पुं० जो भौतिकवाद का अनुयायी या पोषक हो।

भौतिक विज्ञान—पुं०[सं० कर्म० स०] वह शास्त्र जिसमें भूतों तथा तत्त्वों का विवेचन हो। २ वह विज्ञान जिसमें अजैव सृष्टि विशेषतः ताप, प्रकाश, ध्वनि आदि पदार्थों का वैज्ञानिक विवेचन करते हैं। (फ़ीजिक्स)

भौतिक विद्या—स्त्री०[सं० कर्म० स०]१. भूत-प्रेत से संबंध स्थापित करने, उन्हें बुलाने और दूर करने की विद्या। २. दे० 'भौतिक विज्ञान'।

भौतिक सृष्टि—स्त्री०[सं० कर्म० स०] पुराणानुसार दैव, मनुष्य और तिर्यक् योनियों का समाहार।

भौतिकी—स्त्री० दे० 'भौतिक विज्ञान'।

भौती—स्त्री०[सं० भूत+अण्, वृद्धि,+ङीप्] रात। रात्रि। रजनी।
स्त्री०[हिं० भँवना=घूमना] एक बालिश्त लम्बी और पतली लकड़ी जिसकी सहायता से ताने का चरखा घुमाते हैं। भेंवती। (जुलाहा)

भौत्य—पुं०[सं० भूति+ष्यञ्] चौदहवें मनु जो भूतिमुनि के पुत्र थे। (पुराण)

भौन*—पुं०=भवन।

भौना*—अ० [सं० भ्रमण]१. चक्कर लगाना। घूमना। २. व्यर्थ इधर-उधर घूमना।

भौपाल—पुं०[सं० भूपाल+अण्, वृद्धि] राजकुमार।

भौम—वि० [सं० भूमि+अण्] १. भूमि-संबंधी। भूमि का। २. भूमि से उत्पन्न होनेवाला। भूमिज। ३ भूमि पर रहने या होनेवाला।
पुं० १. मंगल ग्रह। २ अंबर नामक गंध द्रव्य। ३ लाल पुनर्नवा। ४. योग में एक प्रकार का आसन। ५. वह केतु या पुच्छल तारा जो दिव्य और अंतरिक्ष के परे हो।

भौमदेव—पुं०[सं०] एक प्राचीन लिपि।

भौम-रत्न—पुं०[सं० कर्म० स०] मूँगा।

भौमवती—स्त्री० [सं० भौम+मतुप्+ङीप्] भौमासुर की स्त्री का नाम।

भौम-वार—पुं०[सं० ष० त०] मंगलवार।

भौमासुर—पुं०[सं० कर्म० स०] नरकासुर का एक नाम।

भौमिक—पुं० [सं० भूमि+ठक्—इक] भूमि का अधिकारी या स्वामी। जमींदार।
वि०=भौम।

भौमिकी—स्त्री०[सं० भौमिक से] १.=भूगोल। २.=भू-विज्ञान।

भौमिकीय—वि०[सं०] १. भूमिका-संबंधी। भूमिका का। २. भूमिका के रूप में होनेवाला।
वि०=भौमिक।

भौमी—स्त्री०[सं० भौम+ङीप्] पृथ्वी की कन्या, सीता।

भौम्य—वि०[सं० भूमि+ष्यञ्] १. भूमि-संबंधी। २ पृथ्वी पर होनेवाला।

भौर*—पुं०[सं० भ्रमर]१ घोड़े का एक भेद। २. भँवर। ३ भौंरा।

भौरिक—पुं० [सं० भूरि+ठक्—इक] १. राजकीय कोष का प्रधान अधिकारी। २. कोषाध्यक्ष।

भौरिकी—स्त्री०[सं० भौरिक+ङीष्]१. कोषागार। २. टकसाल।

भौलिया—स्त्री०[सं० बहुला]एक प्रकार की छोटी नाव जो ऊपर से ढकी रहती है।

भोल—पु०[सं० मा+उल्]वैश्य पिता और नटी माता से उत्पन्न संतान।
भोलना—स०[हिं० भुलाना] धोखे में डालना। भुलावा देना। बहकाना। उदा०—अग्यानी पुरुष कौ भोलि भोलि खाई।—कबीर।
भोलपन†—पु०=भोलापन।
भोला—वि०[सं० भ्रम; प्रा० भोल]१. (व्यक्ति) जो (क) छल-कपट न जानता हो, (ख) लोक-व्यवहार न जानता हो। सीधा-सादा। सरल। २. (कथन या बात) जो ऊपर से देखने मे बहुत ही सरल तथा ठीक प्रतीत होती हो परन्तु प्रस्तुत प्रसग मे अनुपयुक्त या अव्यवहार्य हो। उदा०—आहा! यह परमार्थ कथन है कैसा भोला भाला। —मैथिली-शरण। ३ (व्यक्ति) जो किसी की बात पर सहसा विश्वास कर लेता हो।
भोलानाथ—पु०[हिं० भोला+सं० नाथ] महादेव। शिव।
भोलापन—पु०[हिं० भोला+पन (प्रत्य०)] भोले होने की अवस्था, गुण या भाव। मिघाई।
भोला-भाला—वि० [हिं० भोला+अनु० भाला] निश्छल और निरीह। सरल-हृदय।
भोस—पु०[?] एक प्रकार का केला।
भोसर—वि०[देश०] मूर्ख।
भौं†—स्त्री० =भौंह।
भौंकना—अ०=भूंकना।
भौंगर—पु०[देश०] क्षत्रियो की एक जाति।
वि० मोटा-ताजा। हृष्ट-पुष्ट।
भौंचाल—पु०=भूकप।
भौंडा—वि०=भोंडा (भद्दा)।
स्त्री०=भौंडी।
भौंडी†—स्त्री० [देश०]१. छोटा पहाड। पहाड़ी। २ टीला।
भौंतुआ—पु०[हिं० भ्रमना=घूमना] काले रग का एक तरह का छोटा कीडा जो जल के ऊपरी तल पर तेजी से दौडता और चक्कर काटता रहता है। २ एक प्रकार का रोग जिसमे बाहुदड के नीचे एक गिलटी निकल आती है। ३ तेली का बैल जिसे दिन भर घूमते या चक्कर लगाते रहना पड़ता है।
वि० बराबर घूमता रहनेवाला या चक्कर लगानेवाला।
भौंना*—अ० [सं० भ्रमण] घूमना।
भौंर—पु० [हिं० भौंर; सं० भ्रमर] १. भौंरा। २ मुश्की घोड़ा।
†स्त्री०=भौंरी।
भौंरकली—स्त्री० =भँवरकली।
भौंरा—पु० [सं० भ्रमर; पा० भमर; प्रा० भंवर] [स्त्री० भँवरी] १. काले रग का उड़नेवाला एक पतगा जो फूलो पर मँडराता और उनका रस चूसता है। इसके छ: पैर, दो पर और दो मूंछे होती हैं। २. बड़ी मधुमक्खी। सारग। डंगर। ३. बर्रे। भिड़। ४. ज्वार आदि की फसल को हानि पहुँचानेवाला एक प्रकार का कीड़ा। ५ लट्टू के आकार का एक प्रकार का खिलौना जिसमे कील या छोटी डंडी लगी रहती है। इसी कील मे रस्सी लपेटकर लड़के इसे जमीन पर नचाते हैं। ६. हिंडाले की वह लकडी जो मयारीमे लगी रहती है और जिसमें डोरी डडी बँधी रहती है। ७. गाड़ी के पहिये का वह भाग जिसके बीच के छेद में धुरे का गज रहता है और जिसमें आरा लगाकर पहिये की पट्टियाँ जड़ी जाती हैं। नाभि। लट्ठा। मूँड़ी। ८. रहट की खड़ी चरखी जो भँवरी को फिराती है। चकरी। (बुदेल) ९. पशुओं का एक रोग जिसे 'चेचक'भी कहते हैं। (बुदेल०)१०.पशुओं को आनेवाली मिरगी। ११. गड़ेरिये की भेड़ो की रखवाली करनेवाला कुत्ता। १२. तहखाना। १३ अनाज रखने का खत्ता। खात। १४ रहस्य सम्प्रदाय मे, मन।
†पु०=भाँवर।
भौंराना—स०[सं० भ्रमण]१. परिक्रमा कराना। घुमाना। २ चक्कर या फेरा देना। ३. विवाह के समय भाँवर की क्रिया सम्पन्न कराना। ४. विवाह कराना।
†अ०=भौंरना (घूमना या चक्कर खाना)।
भौंराला*—वि०[हिं० भौंरा] [स्त्री० भौंराली] भौंरे की तरह काले रग का।
वि०[हिं० भँवर] छल्लेदार। घुंघराला। (बाल)
भौंराही—स्त्री०[हिं० भौंराना+आही (प्रत्य०)]१. भौंरे के मँडराने की क्रिया या भाव। २ वह शब्द जो भौंरा मँडराते समय करता है।
भौंरी—स्त्री०[सं० भ्रमथ]१ प्राय. पशुओ के शरीर पर होनेवाला रोओं का मडलाकार छोटा घेरा जो अनेक आकृतियो आदि के विचार से शुभ या अशुभ माना जाता है। २. दे० 'भाँवर'। ३ दे० 'भँवर'।
स्त्री०=भौंह।
†स्त्री०[देश०] लिट्टी। बाटी।
भौंह—स्त्री० [सं० भ्रू] आँखो के ऊपर की हड्डी पर के रोएँ या बाल। भृकुटी। भौं।
मुहा०—(किसी के सामने) भौंह उठाना=आँख उठाकर देखना। **भौंह चढ़ाना या तानना**=आँखे तानकर क्रोध या क्षोभ प्रकट करना। त्योरी चढाना। बिगडना। (किसी की) **भौंह जोहना या ताकना**=यह देखते रहना कि कोई अप्रसन्न न होने पावे। **भौंह नचाना**=बराबर भौहे हिलाना जो स्त्रियो के हाव-भाव और विशेष चंचलता का सूचक है। **भौंह मरोड़ना**—(क) असतोष, उपेक्षा, रोष आदि प्रकट करने के लिए अपनी आकृति विकृत करना। नाक-भौंह चढाना। उदा०—सुनि सौतिनि के गुनि की चरचा द्विज जू तिय भौंह मरोरन लागी।—द्विजदेव। (ख) दे० ऊपर 'भौंह चढ़ाना या तानना'।
स्त्री०[अनु०] कुत्तों के भूंकने का शब्द।
भौंहरा—पु०=भुइँहरा।
†पु०=भौंरा।
भौ*—[पुं० सं० भव]१ संसार। जगत। दुनियाँ। २ जन्म।
†पु०=भय (डर)।
अ०[हिं० भवना] हुआ। (अवधी)
भौकम—स्त्री० [हिं० भभक] १ आग की लपट। ज्वाला। २. जलन। ताप।
भौका—पु०[देश०] [स्त्री० भौकी] बडी दौरी। टोकरी।
भौगर्भिक—वि० [सं० भूगर्भ+ठक्—इक] भूपटल के अन्दर जन्म लेने-वाला। पृथ्वी के भीतरी भाग मे होनेवाला।
भौगिया—वि०=भोगी।

भौगोलिक—वि०[सं० भूगोल+ठक्—इक] भूगोल-संबंधी। भूगोल का। (जियाग्रैफ़िकल)

भौगोलिकी—स्त्री० [सं० भौगोलिक+ङीष्] वह पुस्तक जिसमें किसी देश, महादेश अथवा सारी पृथ्वी के भौगोलिक नामों और नगरों, नदियों पहाड़ों आदि के संबंध की सब बातें रहती हैं। (गजेटियर)

भौचक—वि०[सं० भय+चकित] १. सहसा भयपूर्ण स्थिति उत्पन्न होने पर जो घबरा गया हो और फलत कुछ करने-धरने में असमर्थ-सा हो गया हो। २. चकित। हैरान।

भौचक्का—वि०=भौचक।

भौचाल—पु०=भूकप।

भौज†—स्त्री०=भावज (भौजाई)।

भौ-जल*—पु०=भवजाल।

भौजाई—स्त्री० [सं० भ्रातृजाया] भाई के विचार से विशेषतः बड़े भाई की स्त्री। भाभी।

भौजी†—स्त्री०=भौजाई।

भौट—पुं०[सं० भोट+अण्] भोट या भूटान देश का निवासी।

भौठा—पु०=भीठा।

भौण†—पु०=भवन (घर)।

भौत—वि० [स० भूत+अण्]१. भूत-सबधी। २. भूत-निर्मित। भौतिक। ३. भूत-प्रेत सबधी। पैशाचिक। ४. भूताविष्ट।

पु० १. मन्दिर। २. पुजारी। ३ वह जो भूत-प्रेतों की पूजा करता हो। ४ भूतों का दल या वर्ग। ५. भूत-यज्ञ।

†वि० -बहुत।

भौतारन—वि०=भव-तारण (परमेश्वर)।

भौतिक—वि०[सं० भूत+ठक्—इक]१. पचभूतों से सबंध रखनेवाला। २. पंचभूतो से बना हुआ। ३. इस जगत से सबंध रखनेवाला। लौकिक। सासारिक। ४. पार्थिव। शरीर संबंधी। शारीरिक। (मैटीरियल) ५. भूत योनि से संबध रखनेवाला। ६. प्राकृतिक नियमों, सिद्धान्तो, रूपो आदि से संबध रखनेवाला। (फिजिकल) जैसे—भौतिक विज्ञान।

पुं०१. महादेव। शिव। २. उपद्रव। ३. आधि, व्याधि, कष्ट और रोग। ४ आँख, कान आदि शरीर की इंद्रियाँ।

भौतिक चिकित्सा—स्त्री०[स०] आधुनिक चिकित्सा प्रणाली की वह शाखा जिसमे इस बात का विवेचन होता है कि शरीर की उखड़ी या टूटी हुई हड्डियाँ बैठाने या जोड़ने के उपरात किस प्रकार मालिश, व्यायाम सेंक आदि के द्वारा उन्हे ठीक तरह से काम करने के योग्य बनाया जाता है। (फ़िजियोथैरैपी)

भौतिक भूगोल—पुं०[सं० कर्म० स०] भूगोल की वह शाखा जिसमें इस बात का विवेचन होता है कि पृथ्वी के किस अंश की प्राकृतिक बनावट कैसी है और उसमें कैसे कैसे उत्पादन होते हैं। (फ़िज़िकल जियाग्रैफी, फ़िजियोग्रैफी)

भौतिकवाद—पुं०[सं० ष० त० ?]१. वह दार्शनिक सिद्धान्त जिसके अनुसार पंचभूतों से बना हुआ यह संसार ही वास्तविक और सत्य माना जाता है। (मिटीरियलिज्म) २. दे० 'यथार्थवाद'।

भौतिकवादी—वि०[सं०] भौतिकवाद का।

पु० जो भौतिकवाद का अनुयायी या पोषक हो।

भौतिक विज्ञान—पुं०[सं० कर्म० स०] वह शास्त्र जिसमें भूतों तथा तत्त्वों का विवेचन हो। २ वह विज्ञान जिसमें अजीव सृष्टि विशेषतः ताप, प्रकाश, ध्वनि आदि पदार्थों का वैज्ञानिक विवेचन करते हैं। (फ़ीजिक्स)

भौतिक विद्या—स्त्री०[सं० कर्म० स०]१. भूत-प्रेत से संबंध स्थापित करने, उन्हें बुलाने और दूर करने की विद्या। २. दे० 'भौतिक विज्ञान'।

भौतिक सृष्टि—स्त्री०[सं० कर्म० स०] पुराणानुसार दैव, मनुष्य और तिर्यक् योनियों का समाहार।

भौतिकी—स्त्री० दे० 'भौतिक विज्ञान'।

भौती—स्त्री०[स० भूत+अण्, वृद्धि,+ङीप्] रात। रात्रि। रजनी।

स्त्री०[हिं० भँवना=घूमना] एक बालिश्त लम्बी और पतली लकड़ी जिसकी सहायता से ताने का चरखा घुमाते हैं। भेड़ंती। (जुलाहा)

भौत्य—पु०[सं० भूति+ष्यञ्] चौदहवें मनु जो भूतिमुनि के पुत्र थे। (पुराण)

भौन*—पु०=भवन।

भौना*—अ० [सं० भ्रमण]१. चक्कर लगाना। घूमना। २. व्यर्थ इधर-उधर घूमना।

भौपाल—पु०[सं० भूपाल+अण्, वृद्धि] राजकुमार।

भौम—वि० [स० भूमि+अण्] १. भूमि-संबधी। भूमि का। २. भूमि से उत्पन्न होनेवाला। भूमिज। ३. भूमि पर रहने या होनेवाला।

पु० १ मगल ग्रह। २. अबर नामक गध द्रव्य। ३ लाल पुनर्नवा। ४. योग मे एक प्रकार का आसन। ५. वह केतु या पुच्छल तारा जो दिव्य और अंतरिक्ष के परे हो।

भौमदेव—पु०[स०] एक प्राचीन लिपि।

भौम-रत्न—पुं०[सं० कर्म० स०] मूँगा।

भौमवती—स्त्री० [सं० भौम+मतुप् +ङीप्] भौमासुर की स्त्री का नाम।

भौम-वार—पु०[सं० ष० त०] मंगलवार।

भौमासुर—पु०[स० कर्म० स०] नरकासुर का एक नाम।

भौमिक—पुं० [सं० भूमि+ठक्—इक] भूमि का अधिकारी या स्वामी। जमींदार।

वि०=भौम।

भौमिकी—स्त्री०[स० भौमिक से] १.=भूगोल। २ =भू-विज्ञान।

भौमिकीय—वि०[सं०] १. भूमिका-सबधी। भूमिका का। २. भूमिका के रूप मे होनेवाला।

वि०=भौमिक।

भौमी—स्त्री०[स० भौम+ङीप्] पृथ्वी की कन्या, सीता।

भौम्य—वि०[सं० भूमि+ष्यञ्] १. भूमि-सबंधी। २. पृथ्वी पर होनेवाला।

भौर*—पु०[सं० भ्रमर]१. घोड़े का एक भेद। २ भँवर। ३ भौंरा।

भौरिक—पु० [स० भूरि+ठक्—इक] १ राजकीय कोष का प्रधान अधिकारी। २. कोषाध्यक्ष।

भौरिकी—स्त्री०[सं० भौरिक+ङीष्]१. कोषागार। २. टकसाल।

भौलिया—स्त्री०[स० बहुला]एक प्रकार की छोटी नाव जो ऊपर से ढकी रहती है।

भौंसा—पुं०[देश०]१. भीड़-भाड़। जन-समूह। २.हो-हुल्लड़। शोर-गुल। बहुत अधिक कुव्यवस्था।

भौसागर—पुं०=भव-सागर।

भ्रंगारी—पुं०[सं० भृगार] झींगुर। (डिं०)

भ्रंगी—पुं०[सं० भृंगी] गुंजार करनेवाला एक प्रकार का फतिंगा।
स्त्री०=भृग का स्त्री०।

भ्रंश—पुं०[सं० √भ्रंश् (नीचे गिरना)+घञ्] अध.पतन। १ नीचे गिरना। २ ध्वंस। नाश। ३ तोड़ना-फोड़ना।
वि०=भ्रष्ट।

भ्रंश(स)न—पुं०[सं० √भ्रंश्+ल्युट्—अन] १. नीचे गिरना। पतन। २. भ्रष्ट होना।
वि० नीचे गिरानेवाला।

भ्रंशी(शिन्)— वि०[सं० भ्रंश+इनि] १ भ्रष्ट होनेवाला। २. नष्ट करनेवाला। ३ छीजनेवाला।

भ्रंशोद्धार—पुं०[सं० भ्रंश-उद्धार, ष० त०]समुद्र मे डूबी हुई या आग में जलती हुई चीज को बचाने के लिए बाहर निकालना या उसका उद्धार करना। (सैल्वेज)

भ्रकुंश—पुं० [सं० भ्रू-कुंश, ब० स०, पृषो० सिद्धि] स्त्री का वेश धारण करके नाचनेवाला व्यक्ति।

भ्रकुटि—स्त्री० [सं० भ्रू-कुटि, ष० त०, अत्व] १.क्रोध के मारे भौंह का सिकुड़ना। २ भौंह।

भ्रत†—पुं० [सं० भृत्य] दास। सेवक।

भ्रत्त†—पुं०=भृत्य।

भ्रद्र—पुं०[सं० भद्र] हाथी। (डिं०)

भ्रम—पुं०[सं० √भ्रम्(भ्रांत होना)+घञ्]१ भ्रमण करने की अवस्था या भाव। २. चारो ओर घूमना। ३. वह अवस्था जिसमे दृष्टिकोण अथवा पुरानी या बँधी हुई धारणा के कारण किसी चीज को कुछ का कुछ समझ लिया जाता है। ४ सदेह। सशय। ५ एक प्रकार का रोग जिसमे रोगी का शरीर चलने के समय चक्कर खाता है और प्राय जमीन पर पडा रहता है। यह रोग मूर्च्छा के अन्तर्गत माना जाता है। ६ बेहोशी। मूर्छा। ७ नाबदान। पनाला। ८ कुम्हार का चाक।
वि०१. चक्कर काटने या घूमनेवाला। २ चलने या भ्रमण करनेवाला।
पुं०[सं० सम्भ्रम] प्रतिष्ठा। मान।

भ्रमकारी(रिन्)—वि०[सं० भ्रम√कृ (करना)+णिनि, उप० स०] जिससे भ्रम उत्पन्न होता है अथवा जो भ्रम उत्पन्न करता हो।

भ्रमजाल—पुं०[सं० ष० त०] सासारिक मोह का पाश।

भ्रमण—पुं० [सं०√भ्रम् (घूमना)+ल्युट्—अन] १ घूमना-फिरना। विचरण। २ आना-जाना। ३. देश-विदेश मे जाना। देशाटन। ३. यात्रा। सफर।

भ्रमणकारी(रिन्)—वि०[सं० भ्रमण√कृ (करना)+णिनि] भ्रमण करनेवाला।

भ्रमणी—स्त्री०[सं० भ्रमण+ङीप्] सैर या मनोविनोद के लिए चलना। घूमना-फिरना। २. जोक नाम का कीडा।

भ्रमणीय—वि० [सं०√भ्रम्+अनीयर्] १. घूमनेवाला। २. चलने-फिरनेवाला।

भ्रमत्कुटी—स्त्री०[सं० कर्म० स०] खपच्चियो आदि का बना हुआ बड़ा छाता।

भ्रमद—वि०[सं० भ्रम√दा (देना)+क] [स्त्री० भ्रमदा] भ्रम उत्पन्न करनेवाला। उदा०—हृतभागिनी कवित भ्रमदा वस्तुनि लौं भावै।—रत्नाकर।

भ्रमन—पुं०=भ्रमण।

भ्रमना—अ०[सं० भ्रमण] १. घूमना-फिरना। २ चक्कर खाना।
अ०[सं० भ्रम] १ भ्रम या धोखे मे पड़ना। २ भूलकर इधर-उधर भटकना।

भ्रमनि*—स्त्री०=भ्रमण।

भ्रम-मूलक—वि०[सं० ब० स०, कप्] जिसके मूल मे भ्रम हो। भ्रम के कारण उत्पन्न।

भ्रमर—पुं०[सं०√भ्रम् (घूमना)+अरन्] १ भौरा नाम का फतिंगा। २. उद्धव का एक नाम। ३. दोहे का पहला भेद जिसमे २२ गुरु और ४ लघु वर्ण होते है। ४ छप्पय का तिरसठवाँ भेद जिसमे ८ गुरु, १३६ लघु, १४४ वर्ण या कुल और १५२ मात्राएँ होती है। ५ साहित्य मे चंचल मन वाला वह नायक जो अनेक नायिकाओ से अनुराग अथवा संबंध रखता हो। ६ सत समाज मे चचल मन जो अनेक प्रकार की विषय-वासनाओ का रस लेता रहता है।
वि० कामुक। लम्पट।

भ्रमरक—पुं०[सं० भ्रमर+कन्] १. माथे पर लटकनेवाले बाल। जुल्फ। २ भ्रमर। भँवर। ३. खेलने का गेद।

भ्रमर-करंडक—पुं०[ष० त०] प्राचीन भारत मे मधुमक्खियों की वह पिटारी जिसे चोर साथ रखते थे और कहीं की रोशनी बुझाने के लिए खोल देते हैं।

भ्रमर-कीट—पुं०[उपमि० स०] एक प्रकार की बर्रे।

भ्रमर-गीत—पुं० [मध्य० स०] वह गीत जिसमे उद्धव और गोपियो का सवाद हो।

भ्रमर-गुफा—स्त्री० [सं०] हठ योग मे ब्रह्मरध्र।

भ्रमरच्छली—स्त्री०[सं० भ्रमर√छल् (धावा देना)+अच्+ङीष्] एक प्रकार का बहुत बड़ा जगली वृक्ष जिसके पत्ते बादाम के पत्तो के समान होते हैं और जिसमें बहुत पतली-पतली फलियाँ लगती हैं।

भ्रमर-ध्वनि—पुं० [सं० ष० त०] सगीत मे कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

भ्रमरपद—पुं०[ष० त०] एक प्रकार का वृत्त।

भ्रमरप्रिय—पुं० [ष० त०] एक प्रकार का कदब।

भ्रमरमुखी—पुं०[सं०] सगीत मे कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

भ्रमर सारंग—पुं०[सं०] सगीत मे कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

भ्रमर-हंसी—स्त्री०[सं०] सगीत मे कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

भ्रमर-हस्त—पुं०[सं० मध्य० स०] नाटक के चौदह प्रकार के हस्त-विन्यासो में से एक प्रकार का हस्त-विन्यास।

भ्रमर-हासिनी—स्त्री० [सं०] सगीत मे कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

भ्रमरा—स्त्री०[सं० भ्रमर+टाप्] भ्रमरछली नामक पौधा।

भ्रमरातिथि—पुं०[सं० भ्रमर-अतिथि, ब० स०] चपा का वृक्ष।

भ्रमरानंद—वि०[सं० भ्रमर-आनद, ब० स०] बकुल वृक्ष।

भ्रमरावली—स्त्री०[सं० भ्रमर-आवली, ष० त०] १. भौंरों की पंक्ति या श्रेणी। २. छंद शास्त्र में नलिनी या मनहरण नाम का वृत्त।

भ्रमरी—स्त्री०[सं०भ्रमर+ङीष्] १. भ्रमर की स्त्री। भौंरे की मादा। २. पार्वती। ३. मिरगी नामक रोग। ४. जतुका नाम की लता। षटपदी।

भ्रमरेष्ट—पुं०[सं० भ्रमर-इष्ट, ष० त०] एक प्रकार का स्योनाक।

भ्रमरेष्टा—स्त्री०[सं०भ्रमर-इष्टा, ष०त०] १. भुँई जामुन। २. नारंगी।

भ्रमवात—पुं०[सं० मध्य स०] आकाश का वह वायु-मंडल जो सर्वदा घूमा करता है।

भ्रमात्मक—वि०[सं०भ्रम-आत्मन्, ब०स०, +कप्] जिससे अथवा जिसके संबंध मे भ्रम उत्पन्न होता हो। भ्रम से युक्त। संदिग्ध।

भ्रमाना—स०[हिं० भ्रमना का स०] १. घुमाना-फिराना। २ चक्कर देना। ३. भ्रम या धोखे में डालना।

भ्रमासक्त—पुं०[सं० भ्रम-आसक्त, स० त०] वह जो अस्त्र-शस्त्र आदि साफ करने का काम करता हो।

भ्रमि—स्त्री०[सं० भ्रम+इ]=भ्रमी।

भ्रमित—भू० कृ०[सं० भ्रम+इतच्] १. जिसे भ्रम हुआ हो। शंकित। २. जिसे भ्रम में डाला गया हो। ३ घूमता या चक्कर खाता हुआ। ४ जो घुमाया या चक्कर मे डाला गया हो।

भ्रमित-नेत्र—वि०[सं० ब० स०] ऐंचा-ताना।

भ्रमी—स्त्री०[सं० भ्रमि+ङीष्] १ घूमना-फिरना। भ्रमण। २ चक्कर खाना या लगाना। ३ तेज बहते हुए पानी का भँवर। ४. कुम्हार का चाक। ५. एक प्रकार की सैनिक व्यूह-रचना जिसमें सैनिक मंडल बाँधकर खड़े होते हैं।

वि० १. भ्रम में पड़ा हुआ। २. भौचक।

भ्रमीन*—वि०=भ्रमी।

भ्रष्ट—भू० कृ०[सं०√भ्रश्+क्त] १. ऊँचाई या ऊपर से नीचे गिरा हुआ। २. गिरने के कारण जो टूट-फूट गया हो। ३ ध्वस्त। ४. जो अपने मार्ग से इधर-उधर हो गया हो। ५. कुछ भी काम न दे सकनेवाला। ६. आचार, धर्म, नीति आदि की दृष्टि से दूषित और निंदनीय। बुरे आचार-विचार वाला। (कोरप्ट) ७. किसी चीज या बात से वंचित।

भ्रष्ट-क्रिय—वि०[ब० स०] जो विहित कर्म न करता हो।

भ्रष्ट-निद्र—वि०[ब०स०] जिसे निद्रा न आती हो।

भ्रष्ट-श्री—वि०[ब० स०] श्री से रहित।

भ्रष्टा—स्त्री० [सं० भ्रष्ट+टाप्] भ्रष्ट चरित्र वाली स्त्री। कुलटा। पुश्चली।

भ्रष्टाचरण—पुं०[भ्रष्ट-आचरण, कर्म० स०] भ्रष्टाचार करना।

भ्रष्टाचार—वि०[सं० भ्रष्ट-आचार, कर्म० स०] जिसका आचार बिगड़ गया हो।

पुं० १. दूषित और निन्दनीय आचार-विचार। २ आज-कल वह बहुत बिगड़ी हुई स्थिति जिसमें अधिकारी तथा कर्मचारी विहित कर्तव्यों का पालन निष्ठापूर्वक, भली-भाँति और समय पर नहीं करते बल्कि मनमाने ढंग से, विलंब से, तथा अनुचित रूप से करते हैं। (कोरप्शन)

भ्रसुंड—पुं०=भुशुंड।

भ्रांत—वि० [सं०√भ्रम्(घूमना)+क्त] १. जिसे भ्रान्ति या भ्रम हुआ हो। धोखे में डाला या पड़ा हुआ। २. घबराया हुआ। विकल। ३ उन्मत्त। ४. घुमाया या चक्कर में लाया हुआ।

पुं० १. घूमना-फिरना। भ्रमण। २. तलवार चलाने का एक ढंग या हाथ जिसमें उसे चारों ओर घुमाते हुए शत्रु के वार विफल किये जाते हैं। ३. मस्त हाथी। ४. राज-धतूरा।

भ्रांतापह्नुति—स्त्री० [सं० भ्रांत-अपह्नुति, कर्म० स०] साहित्य में अपह्नुति अलंकार का एक भेद जिसमें किसी एक बात या वस्तु में दूसरी बात या वस्तु की भ्रांति होने पर वास्तविक बात बतलाकर वह भ्रम दूर करने का उल्लेख होता है।

भ्रांति—स्त्री०[सं०√भ्रम्+क्तिन्] १ चारों ओर घूमने या चक्कर लगाने की क्रिया या भाव। २. चक्कर। फेरा। ३. वह मानसिक स्थिति जिसमें किसी चीज को ठीक तरह से पहचान या समझ न सकने के कारण कुछ और ही मान लिया जाता है। धोखा। ४. सन्देह। शक। ५. उन्माद। पागलपन। ६ सिर में चक्कर आने का रोग। घुमेर। ७. भूल-चूक। ८. प्रमाद। ९. मोह। १०. साहित्य में एक प्रकार का काव्यालंकार जिसमें किसी चीज या बात को धोखे से कुछ और मान या समझ लेने का उल्लेख होता है। जैसे—चंद्रमुखी नायिका को देख कर यह कहना—अरे यह चन्द्रमा कहाँ से निकल आया।

भ्रांतिमान(मत्)—वि० [सं० भ्रांति+मतुप्] १. जिसे भ्रांति या धोखा हुआ हो। २ चक्कर खाता हुआ।

पुं० साहित्य में एक प्रकार का काव्यालंकार जिसमें भ्रम से उपमेय को उपमान समझ लेने का उल्लेख होता है।

भ्रांत्यापह्नुति—स्त्री०=भ्रांतापह्नुति।

भ्राजक—पुं० [सं०√भ्राज् (चमकना)+ण्वुल्—अक] त्वचा में रहनेवाला पित्त। (वैद्यक)

वि० चमकानेवाला।

भ्राजना—अ० [सं० भ्राजन=दीपन] १. चमकना। २ सुशोभित होना।

स० १ चमकाना। २ सुशोभित करना।

भ्राजमान—वि० [सं०√भ्राज्+शानच्, मक्-आगम] शोभायमान।

भ्राजिर—पुं० [सं०] मौत्य मन्वतर के देवता। (पुराण)

भ्राजिष्णु—वि० [सं० भ्राज्+इष्णुच्] चमकनेवाला।

पुं०१. विष्णु। २. शिव।

भ्राजी (जिन्)—वि० [सं० भ्राज्+इनि,] चमकनेवाला। दीप्तियुक्त।

भ्रात *—पुं०=भ्राता।

भ्राता (तृ)—पुं०[सं०√भ्राज्+तृन्, नि० सिद्धि] सगा भाई। सहोदर।

भ्रातृक—पुं० [सं०भ्रातृ+उञ्—क] धन सम्पत्ति जो भाई से मिली हो।

भ्रातृज—पुं०[सं० भ्रातृ√जन् (उत्पत्ति)+ज] [स्त्री० भ्रातृजा] भाई का लड़का। भतीजा।

भ्रातृ-जाया—स्त्री० [सं० ष० त०] भाई की स्त्री। भौजाई। भाभी।

भ्रातृत्व—पुं० [सं० भ्रातृ+त्व] भाई होने की अवस्था, धर्म या भाव। भाईपन।

भ्रातृ-द्वितीया—स्त्री० [सं० मध्य० स०] कार्तिक शुक्ल द्वितीया। इसी दिन बहन अपने भाइयों को राखी बाँधती है।

भ्रातृ-पुत्र—पुं० [सं० ष० त०] भतीजा।

भ्रातृ-भांड—पुं० [सं० ष० त०] यमज भाई। जुड़वाँ बच्चे।

भ्रातृ-भाव—पुं० [सं० ष० त०] भाई या भाइयों का सा व्यवहार और संबंध। २. भाइयों में होनेवाला परस्पर प्रेम।

भ्रातृ-वधू—स्त्री० [सं० ष० त०] भौजाई। भाभी। भावज।

भ्रातृव्य—पुं० [सं० भ्रातृ+व्यत्] भाई का लड़का। भतीजा।

भ्रातृश्वसुर—पुं०[सं० उपमि० स०] पति का बड़ा भाई। जेठ। भसुर।

भ्रात्र—पुं०[सं० भ्रातृ+अण्] भाई।

भ्रात्रीय—वि०[सं० भ्रातृ+छ—ईय] भ्राता-संबंधी। भाई का।
पुं० भाई का लड़का। भतीजा।

भ्राम—वि० [सं०√भ्रम् (संदेह)+ण] १ भ्रम-युक्त। २. घूमनेवाला।
पुं० १. धोखा। भ्रम। २ भूल-चूक।

भ्रामक—वि० [सं०√भ्रम्(संदेह)+णिच्+ण्वुल्—अक] १. भ्रम या धोखे मे डालनेवाला। मन में भ्रम उत्पन्न करनेवाला। २. सन्देह उत्पन्न करनेवाला। ३ घुमाने या चक्कर देनेवाला। ४. चालबाज। धूर्त। मक्कार।
पुं० १. कांतिसार लोहा। २. चुम्बक पत्थर। ३. गीदड़। सियार।

भ्रामर—वि० [सं० भ्रमर+अञ्] १ भ्रमर-संबंधी। भ्रमर का। २ भ्रमर से उत्पन्न या प्राप्त होनेवाला।
पुं० १ भ्रमर से उत्पन्न होनेवाला मधु या शहद। २. चुम्बक पत्थर। ३. अपस्मार या मिरगी नामक रोग। ४ दोहे का दूसरा भेद जिसमे २१ गुरु और ६ लघु मात्राएँ होती हैं। उदा०—माधो मेरे ही बसो राखो मेरी लाज। कामी क्रोधी लपटी जानि न छाँडो काज। ५ ऐसा नाच जिसमें बहुत से लोग फेरा या मंडल बाँधकर गोलाकार नाचते हों।

भ्रामरी(रिन्)—वि०[सं० भ्रामर+इनि] जिसे भ्रामर या अपस्मार रोग हुआ हो।
स्त्री० [भ्रामर+ङीष्] १ पार्वती। २. पुत्रदात्री नाम की लता।

भ्रामित—भू० कृ०[सं० √भ्रम्+णिच्+क्त, इट्] घुमाया या इधर-उधर चक्कर खिलाया हुआ।

भ्राष्ट्र—पुं०[सं०√भ्रस्ज्+ष्ट्रन्] १ आकाश। २. वह बरतन जिसमे अनाज रखकर भड़भूँजे भूनते हैं।

भ्रिंग†—पुं०=भृंग।

भ्रिंगी—स्त्री०, पुं०=भृंगी।

भ्रू-कुंस—पुं०[सं० भ्रू-कुंस, ब० स०, ह्रस्व] स्त्रियों के वेष में नाचनेवाला नट।

भ्रुकुटि—स्त्री० =भृकुटी।

भ्रू—स्त्री०[सं०√भ्रम्+डू] आँखों के ऊपर के बाल। भौं। भौंह।

भ्रू-क्षेप—पुं०[सं० ष० त०] भौंहें टेढ़ी करना।

भ्रूण—पुं०[सं०√भ्रूण(आशा करना)+घञ्] १. स्त्री का गर्भ। २. प्राणी के माता के गर्भ में पहले चार महीने तक रहने की अवस्था। (एम्ब्रीयो)
३. जीव का गर्भ या अंडे मे स्थित होने की अवस्था में प्राप्त होनेवाला रूप। (फीटस)

भ्रूणघ्न—पुं० [सं० भ्रूण√हन् (मारना)+क] भ्रूण-हत्या करनेवाला। वह जो गर्भ मे स्थित बालक को मार डालता हो।

भ्रूण विज्ञान—पुं० [सं०]आधुनिक जीव-विज्ञान की वह शाखा जिसमें इस बात का विवेचन होता है कि भ्रूण किस प्रकार बनता और विकसित होता है। (ऐंब्रीयोलोजी)

भ्रूण-हत्या—स्त्री० [सं० ष० त०] गर्भ मे आये हुए बालक की की जानेवाली हत्या जो बहुत बड़ा अपराध हो।

भ्रूणहा (हन्)—पुं०[सं० भ्रूण√हन्+क्विप्] वह जिसमे भ्रूण हत्या की हो।

भ्रूणाग्र—पुं०[सं० भ्रूण-अग्र, ष० त०] भ्रूण का अगला भाग।

भ्रू-प्रकाश—पुं० [ष०त०] एक प्रकार का काला रंग जिससे शृंगार आदि के लिए भौहे बनाते हैं।

भ्रू-भंग—पुं० [ष० त०] क्रोध आदि प्रकट करने के लिए भौंहे चढ़ाना। त्योरी चढ़ाना।

भ्रू-भेद—पुं०[ष० त०] क्रोध आदि मे होकर भौहे टेढ़ी करना।

भ्रू-मध्य—पुं०[ष० त०] दोनो भौंहो के बीच का स्थान।

भ्रू-लता—स्त्री०[कर्म० स०] मेहराबदार भौह।

भ्रू-विक्षेप—पुं० [ष०त०] त्योरी बदलना। नाराजगी दिखाना। भ्रू-भंग।

भ्रू-विलास—पुं० [ष० त०] १. भौहो की कोई विशेष भावभंगी। २. भौंहो का सचालन करके प्रकट किया जानेवाला कोई मोहक भाव।

भ्रूह—स्त्री० =भ्रू।

भ्रेष—पुं०[सं०√भ्रेष् (गिरना)+घञ्] १. नाश। २ गमन। चलना।

भ्रौण-हत्या—स्त्री०[कर्म० स०] =भ्रूण-हत्या।

भ्रौणिकी—स्त्री०=भ्रूण विज्ञान।

भ्वहरना*—अ० [हिं० भय+हरना (प्रत्य०)] भयभीत होना। डरना।

भ्वासर†—वि० [?] बेवकूफ। मूर्ख।

म

म—नागरी वर्णमाला का पचीसवाँ और पवर्ग का पंचम वर्ण जो भाषा-विज्ञान तथा उच्चारण की दृष्टि से ओष्ठ्य, अल्पप्राण, घोष, स्पर्श तथा अनुनासिक व्यंजन हैं।
पुं० १ शिव। २. ब्रह्मा। ३ विष्णु। ४ चंद्रमा। ५. यम। ६. समय। ७ विष। ८ संगीत मे 'मध्यम स्वर' का संक्षिप्त रूप। ९ पिंगल-शास्त्र मे 'मगण' का संक्षिप्त रूप।
अव्य० [सं० मा] नहीं। उदा०—(क) मूल म हारों म्हारा भाई। —गोरखनाथ। (ख) हर म करी प्रति रायहर। —प्रिथीराज।

मं*—सर्व०=मैं। उदा०—मं ही सकल अनरथ कर मूला। —तुलसी।

मंकणक—पुं०[सं०] १ एक प्राचीन ऋषि। २. एक दक्ष का नाम। (महाभारत)

मंकुर—पुं०[सं०√मक् (भूषित करना)+उरच्] दर्पण।

मंक्षण—पुं० [सं० √मख् (गति)+ल्युट्—अन, पृषो० ख—क्ष्] प्राचीन काल मे युद्ध के समय जाँघ पर बाँधा जानेवाला एक तरह का कवच। उरुत्राण।

मंक्षु—अव्य०[सं०√मंस्+उन्, पृषो० स्—क्ष्] १. चट-पट। तुरंत। शीघ्रता से। २. यथार्थ में। वस्तुतः।

मंख—पु०[सं०√मख्+अच्] १. चारण। भाट। ३ संस्कृत भाषा के एक प्रसिद्ध कोशकार।

मंखी—स्त्री० [देश०] बच्चों के गले का एक गहना।

मंग—पु० [सं० √मग्+अच्] नाव का अगला भाग। गलही।
†स्त्री०=माँग (सीमन्त)।
†पुं०[देश०] आठ की संख्या। (दलाल)
वि० आठ। (दलाल)

मंगता—पुं० [हिं० माँगना+ता (प्रत्य०)] भिखमंगा। भिक्षुक।
वि० जो प्रायः किसी न किसी से कुछ माँगता रहता हो।

मंगन†—पु०=मंगता।

मंगना†—पु०=मंगता।
†स०=माँगना।

मंगनी—स्त्री० [हिं० माँगना+ई (प्रत्य०)] १ माँगने की क्रिया या भाव।
पद—**मंगनी का**=(पदार्थ) जो किसी अवसर पर काम चलाने के लिए माँग कर किसी से लिया गया हो और फिर लौटाया जाने को हो।
२ उक्त के आधार पर मँगनी की चीज। ३ वह रस्म जिसमें वर और कन्या का विवाह निश्चित या पक्का किया जाय। (पश्चिम)

मंगल—वि० [सं०√मग् (गति)+अलच्] १ सुख-सौभाग्य आदि देनेवाला। २. हर तरह से भला। शुभ।
पु० १. कोई ऐसा काम या बात जो हर तरह से अभीष्ट और शुभ हो तथा सुख-सौभाग्य देनेवाली हो। २. कल्याण। भलाई। हित। जैसे—इससे सबका मंगल होगा। ३ हमारे सौर जगत का एक ग्रह जिसका व्यास ४२०० मील, सूर्य से दूरी १४१०००००० मील और जमीन से दूरी ३५००००००। यह सूर्य की परिक्रमा ६८७ दिनो मे करता है। (मार्स) ४. उक्त ग्रह के नाम पर सात वारो मे से एक वार जो सोमवार और बुधवार के बीच मे पडता है। ५ विष्णु। ६ कोई शुभ अवसर, पदार्थ या लक्षण। ७. विवाह। जैसे—पार्वती-मंगल।
मुहा०—**मंगल गाना**—(क) विवाह अथवा ऐसे ही दूसरे शुभ अवसरों पर मांगलिक गीत गाना। आनंद के गीत गाना। (ख) विफल होकर चुपचाप बैठना। (व्यंग्य) जैसे—अगर हमारी बात नही मानते हो तो बैठकर मंगल गाओ।
८. अग्नि का एक नाम। ९. आज-कल सफेद रंग की एक कठोर धातु जिसका उपयोग शीशे के समान बनाने में होता है। (मैंगनीज)

मंगलकरी—स्त्री० [सं० मंगल√कृ (करना)+ट।ङीप्] संगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

मंगल-कलश—पु०=मंगल-घट।

मंगल-काम—वि०[सं० मंगल√काम्+णिङ्+अच्] मंगल चाहनेवाला। शुभ-चिंतक।

मंगलकारक—वि० [सं० ष० त०] मंगल अर्थात् भलाई या हित करनेवाला।

मंगलकारी(रिन्)—वि०[सं० मंगल√कृ+णिनि, उप० स०]=मंगलकारक।

मंगल-क्षौम—पुं०[मध्य० स०] किसी मांगलिक अवसर पर पहना जानेवाला वस्त्र विशेषतः रेशमी वस्त्र।

मंगल-गान—पुं०[ष० त०] विवाह आदि मंगल अवसरों पर गाये जानेवाले गीत।

मंगल-गीत—पुं०[ष० त०]=मंगल-गान।

मंगल-गौरी—स्त्री० [कर्म० स०] संगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

मंगल-घट—पु०[मध्य० स०] मंगल अवसरों पर पूजा के लिए अथवा यों-ही रखा जानेवाला जल से भरा हुआ घडा।

मंगल-चंडिका—स्त्री०[कर्म० स०] दुर्गा का एक नाम।

मंगल-चंडी—स्त्री०[कर्म० स०] एक देवी।

मंगलच्छाय—पुं०[ब० स०] बड का पेड।

मंगल-तूर्य—पु०[मध्य०स०] शुभ अवसर पर बजाया जानेवाला बाजा।

मंगलना—स०[सं० मंगल=शुभ] किसी शुभ अवसर पर अग्नि आदि जलाना। प्रज्वलित करना। (मंगल-भाषित) जैसे—दीया मंगलना, होली मंगलना। उदा० दे० 'मँगारना' मे।
अ० प्रज्वलित होना। जलना।

मंगल-पाठ—पु०[ष० त०] मंगलाचरण।

मंगल-पाठक—पुं० [ष० त०] वह जो राजाओं की स्तुति आदि करता हो। बंदीजन। भाट।

मंगल-प्रद—वि०[सं० मंगल+प्र√दा (देना)+क] मंगलकारक। शुभ।

मंगल-प्रदा—स्त्री० [सं० मंगलप्रद+टाप्] १. हलदी। २ शमी वृक्ष।

मंगल-भाषण—पुं० [ष० त०] किसी अप्रिय अथवा अशुभ बात को प्रिय तथा शुभ रूप में कहने का प्रकार।

मंगल-भेरी—स्त्री० [मध्य० स०] मांगलिक अवसरों, उत्सवों आदि के समय पर बजाया जानेवाला ढोल।

मंगलमय—वि० [सं० मंगल+मयट्] जिससे सब प्रकार का मंगल ही होता हो।
पुं० परमेश्वर।

मंगल-यात्रा—स्त्री० [च० त०] १. मांगलिक कार्य के लिए होनेवाली यात्रा। २. आनंद-मंगल या मन-बहलाव के लिए कहीं जाना।

मंगल-वाद—पु० [ष० त०] आशीर्वाद। आशीष।

मंगल-वाद्य—पु० [मध्य० स०] मांगलिक अवसरों पर बजाये जानेवाले बाजे।

मंगल-वार—पु० [ष० त०] सप्ताह का तीसरा दिन। सोमवार और बुधवार के बीच का दिन। भौमवार।

मंगल-सूत्र—पु० [मध्य० स०] कलाई पर बाँधा जानेवाला डोरा या तागा।

मंगल-स्नान—पुं० [मध्य० स०] किसी मांगलिक अवसर पर किया जानेवाला स्नान।

मंगला—स्त्री० [सं० मंगल+अच्+टाप्] १. पार्वती। २. पतिव्रता स्त्री। ३. तुलसी। ४. दूब। ५. एक प्रकार का करंज।

मंगलागुरु—पु० [सं० मंगल-अगुरु, कर्म० स०] एक तरह का अगर (गन्ध द्रव्य)।

मंगलाचरण—पुं०[सं० मंगल-आचरण, ष० त०] १. किसी का कार्य

श्रीगणेश करने से पहले पढ़ा जानेवाला कोई मांगलिक मंत्र, श्लोक या पद्यमय रचना। २. ग्रंथ के आरंभ में मगल की कामना तथा उसकी सफल समाप्ति के निमित्त लिखा जानेवाला पद्य।

मंगलाचार—पु०[मगल-आचार, ष० त०] १. मंगल कृत्य के पहले होनेवाला मगल-गान या ऐसा ही और कोई कार्य। २ मंगलाचरण।

मंगला-मुखी—स्त्री० [हिं०] वेश्या। रंडी। (परिहास)

मंगलाय—पु० [दलाली मंग-=आठ+आय (प्राप्त०)] अठारह की सख्या। (दलाल)

मंगलारंभ—पु०[सं० मगल-आरभ, ष०त०] मांगलिक कार्य का आरभ। श्रीगणेश।

मंगलालय—पु० [सं० मगल-आलय, ष० त०] परमेश्वर।

मंगला-व्रत—पु० [सं० ष० त०] १ शिव। २. पार्वती को प्रसन्न करने के उद्देश्य से रखा जानेवाला व्रत।

मंगलाष्टक—पु० [स०मगल-अष्टक, ष० त०] वे मंत्र जिनका पाठ विवाह के समय वर-वधू के कल्याण की कामना से किया जाता है।

मंगलाह्निक—पु० [स० मगल-आह्निक, मध्य० स०] कल्याण के लिए प्रति दिन किया जानेवाला कोई मगल कृत्य।

मंगली(लिन्)—वि० [सं० मगल+इनि] १ (व्यक्ति) जिसकी जन्म कुडली के पहले, चौथे, आठवे या बारहवें घर मे मगल ग्रह पडा हो। **विशेष**—कहते है कि ऐसा वर जल्दी ही विधुर हो जाता है, और ऐसी कन्या जल्दी ही विधवा हो जाती है।

२. (कुडली) जिसके चौथे आठवे या बारहवे घर मे मगल बैठा हो।

मंगलीय—वि० [स० मंगल+छ-ईय] १ मंगलकारक। २. भाग्यवान्।

मंगलोत्सव—पु० [स० मंगल-उत्सव, मध्य० स०] मागलिक अवसरों पर होनेवाला उत्सव।

मंगल्य—वि० [स० मंगल+यत्] १. मगल या कल्याण करनेवाला। मगल कारक। २ मनोहर। ३ सुन्दर। ४. सीधा-सादा। साधु। पुं० १ त्रायमाणा लता। २. अश्वत्थ। पीपल। ३. बिल्व। बेल। ४ मसूर। ५. जीवक वृक्ष। ६ नारियल। ७ कपित्थ। कैथ। ८ रीठ। करंज। ९ दही। १० चदन। ११. सोना। स्वर्ण। १२ सिंदूर।

मंगल्य-कुसुमा—स्त्री० [स० ब० स०,+टाप्] शखपुष्पी।

मंगल्या—स्त्री० [स० मंगल्य+टाप्] १. दुर्गा का एक नाम। २ एक प्रकार का अगरु जिसमें चमेली की सी गंध होती है। ३ शमी वृक्ष। ४. सफेद बच। ५ रोचना। ६. शंखपुष्पी। ७. जीवती। ८ ऋद्धिनामक लता। ९ हलदी। १०. दूब।

मँगवाना—स० [हिं० माँगना का प्रे०] १. माँगने का काम दूसरे से कराना। किसी को माँगने मे प्रवृत्त करना। जैसे—तुम्हारे ये लक्षण तुमसे भीख मँगवा कर छोड़ेंगे। २ किसी से यह कहना कि अमुक स्थान से अमुक वस्तु खरीद या मांग लाओ। जैसे—बाजार से कपड़ा या मित्र के यहाँ से पुस्तक मँगवाना।

सयो० क्रि०—देना।—रखना।—लेना।

मँगाना—स०[हिं० माँगना का प्रे०] १. लड़के या लड़की की मँगनी का सबध स्थिर कराना। विवाह की बातचीत पक्की कराना। २. दे० 'मँगवाना'।

मँगारना*—स० =मगलना। उदा०—बिरह अगारिनि मँगारि हिय होरी सी।—घनानद।

मँगियाना—स० [हिं० माँग =सीमन्त] १ सिर के बालो मे इस प्रकार कघी करना कि जिससे माग निकल आवे। २ अलग या विभक्त करना।

मँगुरी†—स्त्री० [?] एक प्रकार की छोटी मछली।

मँगेतर—वि० [हिं० मँगनी+एतर (प्रत्य०)] १ (युवक या युवती) जिसकी मँगनी हो चुकी हो। २ (वह) जिसके साथ किसी की मँगनी हुई हो, अथवा विवाह होना निश्चित हुआ हो।

मंगोल—पु० [मगोलिया प्रदेश से] मध्य एशिया और उसके पूरब की ओर (तातार, चीन, जापान मे) बसने वाली एक जाति जिसका रंग पीला, नाक चिपटी और चेहरा चौड़ा होता है।

मंच—पु० [स०√मच् (उच्च होना)+घञ्] १ खाट। खटिया। २ खाट की तरह बुनी हुई बैठने की छोटी पीढ़ी। मँचिया। ३. सभा-समितियों आदि मे ऊँचा बना हुआ मडल जिस पर बैठकर सर्व साधारण के सामने किसी प्रकार का कार्य किया जाय। (स्टेज) ४. रगमंच। (स्टेज) ५ लाक्षणिक अर्थ मे, कुछ विशिष्ट प्रकार के क्रिया-कलापो के लिए उपयुक्त क्षेत्र। जैसे—राजनीतिक मच।

मंचक—पु० [सं० मच+कन्] =मच।

मंचकाश्रय—पु० [स० मचक-आश्रय ब० स०] खटमल।

मंचन—पु० [म० मच से] [मू० कृ० मचित] किसी नाटक या रूपक का रगमच पर अभिनय करना या होना। जैसे—कई स्थानो पर इस नाटक का मचन भी हो चुका है।

मच-मंडप—पु० [स० उपमि० स०] मचान। (दे०)

मंचिका—स्त्री० [सं० मचक+टाप्, इत्व] मचिया।

मंची—स्त्री० [स० मच] खड़े बल स लगाई हुई लकडियो, खभो आदि की वह रचना जिसके आधार पर कोई भारी चीज ठहराई या रखी जाती है। (पेडेस्टल)

मँछु—पु० [स० मच्छ] मछली। उदा०—चेला मछु, गुरू जस काछू।—जायसी।

मंजन—पु० [स०√मज् (चमकना)+ल्युट्—अन] वह बुकनी या चूर्ण जो दाँतो पर उँगली आदि से मला तथा रगड़ा जाता है। दाँत साफ करने का चूर्ण।

*पु० =मज्जन (स्नान करना)।

मँजना—अ० [म० मज्जन] १ (दाँतो का) मजन से साफ किया जाना। २. (बरतनों के सबंध मे) राखी आदि से माँजा तथा साफ किया जाना। ३. किसी काम या बात का, अभ्यास के कारण ठीक तरह से सपन्न या पूरा होना। जैसे—(क) लिखने मे हाथ मँजना। (ख) मँजी हुई कविता पढ़ना।

मंजर—पु० [स०√मज्+अर] १. फूलों का गुच्छा। २ मोती। ३. तिलक वृक्ष।

मजरि—स्त्री०=मजरी।

मंजरिका—स्त्री०=मजरी।

मंजरित—भू० कृ० [सं० मजर+इतच्] १. मजरियो से युक्त। २. पुष्पित।

मंजरी—स्त्री० [सं० मंजर+ङीष्] १. नया कल्ला। कोंपल। २.

कुछ विशिष्ट पौधों के सींके मे लगे हुए बहुत से दानों का समूह। जैसे—आम या तुलसी की मंजरी। ३. तुलसी। ४ तिलक वृक्ष। ५. मोती। ६. वाम नामक छंद का दूसरा नाम। ७. संगीत में, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

मंजरीक—पुं० [सं० मंजरी+कन्] १. एक तरह का सुगंधित तुलसी का पौधा। २. मोती। ३. तिल का पौधा। ४. बेंत। ५. अशोक वृक्ष।

मंजरी-चामर—पुं० [मध्य० स० या उपमि० स०] फलो की मंजरी से बना हुआ या उसकी तरह बना हुआ चामर।

मँजाई—स्त्री० [हिं० माँजना] १. माँजे जाने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ माँजने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक।

मंजाना—स० [हिं० माँजना का प्रे०] १. किसी को माँजने मे प्रवृत्त करना। २. अच्छी तरह साफ कराना। ३. अच्छी तरह अभ्यास कराना। जैसे—लिखने मे लड़के का हाथ मँजाना।

मँजार†—स्त्री० [सं० मार्जार] बिल्ली।

मजारी†—स्त्री० [स० मार्जार] बिल्ली।

मँजावट—स्त्री० [हिं० मँजना] १. माँजने या मँजने की अवस्था, क्रिया, ढग या भाव। २ कोई काम करने में हाथ के मँजे हुए या अभ्यस्त होने की अवस्था या भाव।

मंजि—स्त्री० [स०√मज्+इन्] १. मजरी। २ लता।

मंजिका—स्त्री० [स०√मज्+ण्वुल्—अक,-टाप्, ह्रस्व] वेश्या। रंडी।

मंजि-फला—स्त्री० [स० ब० स०,+टाप्] केला।

मंजिमा(मन्)—स्त्री० [स० मंजु+इमनिच्] सुदरता। मनोहरता।

मंजिल—स्त्री० [अ० मंजिल] १. यात्रा के मार्ग मे बीच-बीच में यात्रियों के ठहरने के लिए बने हुए या नियत स्थान। पडाव। मुहा०—**मंजिल काटना** एक पडाव से चलकर दूसरे पड़ाव तक का रास्ता पार करना। **मंजिल देना**=कोई बड़ी या भारी चीज उठाकर ले चलने के समय रास्ते में सुस्ताने के लिए उसे कही उतारना या रखना। **मंजिल मारना**=(क) बहुत दूर से चलकर कही पहुँचना। (ख) कोई बहुत बड़ा काम या उसका कोई विशिष्ट अंश पूरा करना। २. वह स्थान जहाँ तक पहुँचना हो। अभीष्ट, उद्दिष्ट या नियत स्थान अथवा स्थिति। ३. ऊपर-नीचे बने हुए होने के विचार से मकान का खड। मरातिब। जैसे—(क) दो (या तीन) मजिल का मकान। (ख) तीसरी मजिल की छत।

मंजिष्ठा—स्त्री० [स० मजिमती+इष्ठन्, टि-लोप,+टाप्] मजीठ नामक पेड और उसका फल।

मंजिष्ठा-मेह—पुं० [उपमि० स०] सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का प्रमेह जिसमें मजीठ के पानी के समान मूत्र होता है।

मंजिष्ठा-राग—पुं० [ष० त०] १. मजीठ का रग। २. [उपमि० स०] पक्का या स्थायी अनुराग अथवा प्रेम।

मंजी†—स्त्री०=मंजरी।

स्त्री० दे० 'खाट'।

मंजीर—पुं० [सं०√मंज्+ईरन्] १. नूपुर। घुंघरू। २. वह खंभा या लकड़ी जिसमें मथानी का डंडा बंधा रहता है। ३. पश्चिमी बंगाल की एक पहाड़ी जाति।

मँजीरा, मंजीरा—पुं० [सं० मंजीर] १. काँसे, पीतल आदि का बना हुआ एक प्रकार का बाजा जो दो छोटी कटोरियों के रूप में होता है, और जिसमें की एक कटोरी से दूसरी कटोरी पर आघात करके संगीत के समय ताल देते हैं। जोड़ी।

मंजु—वि० [सं०√मंज्+कु] सुंदर। मनोहर।

मंजु-गर्त—पुं० [सं० ब० स०] नेपाल।

मंजु-घोष—पुं० [सं० ब० स०] १. तांत्रिकों के एक देवता का नाम। २ एक बौद्ध आचार्य।

वि० मधुर ध्वनि मे बोलनेवाला।

मंजु-घोषा—स्त्री० [सं० ब० स०,+टाप्] एक अप्सरा का नाम।

मंजु-तिलका—स्त्री० [स०] हंस-गति नामक मात्रिक छंद का दूसरा नाम।

मंजुदेव—पुं०=मजुघोष (आचार्य)।

मंजुनाशी—स्त्री० [सं०] १. दुर्गा का एक नाम। ३. इंद्राणी का एक नाम। ३. सुदर स्त्री।

मंजु-पाठक—पुं० [सं० कर्म० स०] तोता।

मंजु-प्राण—पुं० [स० ब० स०] ब्रह्मा।

मजु-भद्र—पुं० =मजुघोष (आचार्य)।

मजुभाषी—वि० [सं० मंजु√भाष् (बोलना)+णिनि] [स्त्री० मजुभाषिणी] मधुर और प्रिय बातें करनेवाला।

मंजु-मालिनी—स्त्री० [स० कर्म० स०] मालिनी छद का दूसरा नाम।

मंजुल—वि० [सं० मंजु+लच्] सुन्दर। मनोहर।

पुं० १. जलाशय या नदी का किनारा। २ संगीत मे, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

मंजुला—स्त्री० [स० मजुल+टाप्] एक नदी का नाम।

मंजुश्री—पुं०=मजुघोष (आचार्य)।

मंजूर—वि० [अ० मजूर] जो मान लिया गया हो। स्वीकृत। जैसे—अरजी या छुट्टी मजूर होना।

†पुं०—मयूर (मोर)।

मंजूरी—स्त्री० [अ० मजूरी] मजूर होने की अवस्था, क्रिया या भाव। स्वीकृति।

मंजूषा—स्त्री० [सं०√ मस्ज्+ऊषन्, नुम्] १. छोटा पिटारा या डिब्बा। पिटारी। २ पत्थर। ३. मंजीठ। ४. पक्षियो का पिंजरा। ५. हाथी का हौदा।

मंजुसा†—स्त्री० =मजूषा।

मंझ—अव्य०, पुं०=मध्य (बीच में)।

मँझधार—स्त्री० [हिं० मझली+धार] नदी के बीच की धारा।

अव्य० नदी, समुद्र आदि की धारा के बीच में।

मँझना—अ०=मँजना।

मँझरिया*—अव्य० [स० मध्य, हिं० माँझ] बीच मे। मध्य मे।

मँझला—वि० [स० मध्य, पुं० हिं० मँझ+ला (प्रत्य०)] [स्त्री० मंझली] वय, स्थिति आदि के विचार से बीच या मध्य का। जैसे—मँझला मकान (दो मकानो के बीच का मकान), मँझला लड़का।

मंझा—वि० [सं० मध्य; पा० मझ] १. जो दो के बीच में हो। बीचवाला। २. दे० 'मँझला'।

पुं०[सं० मध्य०; पा० मज्झ] १ सूत कातने के चरखे मे वह मध्य का अवयव जिसके ऊपर माल रहती है। मुँडला। २. अटेरन के बीच की लकड़ी।

स्त्री०[सं० मध्य ; पा० मज्झ] वह भूमि जो गोयंड और पालो के बीच में पड़ती हो।

पुं०[सं० मंच] १ पलग। खाट। (पंजाब) २. चौकी। ३ मचिया।

मुहा०—**मंझा बैठना**--एक ही आसन से या स्थिति मे अच्छी तरह जम कर बैठना।

पु० [हिं० माँजना] वह पदार्थ जिससे रस्सी या पलग की डोर माँजते हैं। माँझा।

मुहा०—**माँझा देना**=डोरी, रस्सी आदि पर मझा या माँझा लगाना।

मंझाना†—स० [हिं० माँझ=बीच] बीच मे डालना, रखना या लाना।

अ० बीच मे पड़ना या होना।

मँझार†—स्त्री०, अव्य०=मँझधार।

मँझियार†—वि०[सं० मध्य, प्रा० मज्झ] मध्य का। बीच का।

मँझोला—वि०[सं० मध्य, पु० हिं० मँझ+ओला (प्रत्य०)] आकार, मान आदि के विचार से बीच या मध्य का। जो न बहुत बडा ही हो और न बहुत छोटा ही हो। जैसे—मँझोला।

मँझोली—स्त्री० मझोली।

मंठ—पु०[सं०√मंठ्+अच्] शीरे मे पकाया हुआ एक तरह का पकवान।

मंड—पु०[स० √मड् (भूषित करना)+अच्] १. मंडन करने की क्रिया या भाव। सजावट। २ उबले हुए चावलों का गाढा पानी। भात का पानी। माँड। ३ रेड का पेड। ४. मेढ़क। ५ सारभाग। ६ दूध या दही की मलाई। ७ मदिरा। शराब। ८ आभूषण। गहना। ९. एक प्रकार का साग। १० कुएँ की जगत। ११. श्वेतसार।

मँड़ई†—स्त्री०[स० मडप] १ झोपडी। २ कुटिया।

मंडई†—स्त्री०=मडी।

मडक—पु०[सं० मड+कन्] १. मैदे की एक प्रकार की रोटी। २. माधवी लता। ३ सगीत मे गीत का एक अंग।

वि० मडन या सजावट करनेवाला।

मंडन—पु०[स०√मड्+ल्युट्—अन] १. शृंगार करना। सजाना। २. तर्क या विवाद के प्रसग मे युक्ति आदि देकर किसी कथन या सिद्धान्त का पुष्टिकरण। जैसे—अपने पक्ष का मडन। 'खडन' का विपर्याय।

वि० मडित करनेवाला या सजानेवाला।

मंडना—स० [सं० मडन] १. मडित या सुसज्जित करना। शृंगार करना। अच्छी तरह सजाना। २. तर्क, विवाद आदि के समय युक्तिपूर्वक अपना पक्ष या समर्थन ठीक सिद्ध करते हुए लोगो के सामने उपस्थित करना। कोई बात अच्छी तरह प्रतिपादित और सिद्ध करना। ३. किसी रचना की रूपरेखा आदि तैयार करना या बनाना। ४. पूरी तरह से आच्छादित करना। छाना। ५. कोई बड़ा काम करना या ठानना।

स० [स० मर्दन] दलित या मर्दित करना। नष्ट करना।

अ०[हिं० माँडना का अ०]१. माँड़ा या लिखा जाना। जैसे— खाते में रकम मंडेना। २ किसी काम या बात में लीन होना। जैसे—सब लोग नाच-रग मे मडे थे।

स०[?]मनाना। (डिं०) उदा०—आगमि सिसुपाल मंडिजै उछव। —प्रिथीराज।

मँडनी—स्त्री०[हिं० माँडना] अनाज के डंठलों को बैलों से रौंदवाने का काम। दँवरी।

मंडप—पु०[सं०मड√पा+क]१ वह छाया हुआ स्थान जहाँ बहुत से लोग धूप, वर्षा आदि से बचते हुए बैठ सके। विश्राम-स्थान। २. किसी विशिष्ट काम के लिए छाया हुआ स्थान। जैसे—यज्ञ-मंडप, विवाह-मडप। ३. आदमियो के बैठने योग्य चारों ओर से खुला, पर ऊपर से छाया हुआ स्थान। बारहदरी। ४ देवमंदिर का ऊपर का छाया हुआ गोलाकार अंश या भाग। ५ चदोआ। शामियाना।

मंडपक—पु०[सं० मडप+कन्] [स्त्री० मंडपिका] छोटा मडप।

मंडपी—स्त्री०[सं० मडप+ङीष्] छोटा मडप।

मंडर—पुं०=मडल।

मँडरना—अ०[स० मडल] चारो ओर से घिरना।

स० चारो ओर से घेरना।

मँडराई*—स्त्री०[स० मडल] पक्षियों आदि का घेरा बाँध या मडल बनाकर आकाश मे उड़ने की क्रिया या भाव।

मँडराना—अ०[स० मंडल]१. मंडल या घेरा बाँधकर छा जाना। २. पक्षियो, फतिगों आदि का किसी चीज के ऊपर तथा चारों ओर चक्कर लगाते हुए उड़ना। ३ लाक्षणिक अर्थ मे लोभ या स्वार्थ वश किसी के पास रह-रह कर या घूम-घूम कर पहुँचना। किसी व्यक्ति या स्थान के आसपास घूमते या चक्कर लगाते रहना।

मंडरी—स्त्री०[देश०] पयाल की बनी हुई गोंदरी या चटाई।

मडल—पु०[स०√मड्+कलच्] १. चक्र के आकार का घेरा। गोलाई। वृत्त। जैसे—रास मडल।

मुहा०—**मडल बाँधना**=गोलाकार घेरा बनाना। जैसे—(क) मडल बाँधकर नाचना। (ख) बादलो का मडल बाँधकर बरसना।

२. किसी प्रकार की गोलाकार आकृति, रचना या वस्तु। जैसे— भू-मंडल। ३. चद्रमा, सूर्य आदि के चारो ओर छाया का पड़नेवाला घेरा जो कभी कभी आकाश मे बादलो की बहुत हल्की तह रहने पर दिखाई देता है। ४ किसी वस्तु का वह गोलाकार अंश जो दृष्टि के सम्मुख हो। जैसे—चद्र-मण्डल, सूर्य-मडल, मुख-मंडल। ५. चारो दिशाओ का घेरा जो गोल दिखाई देता है। क्षितिज। ६. प्राचीन भारत मे १२ राज्यों का क्षेत्र, वर्ग या समूह। ७. प्राचीन भारत मे चालिस योजन लंबा और बीस योजन चौड़ा क्षेत्र या भूखंड। ८ किसी विशिष्ट दृष्टि से एक माना जानेवाला क्षेत्र या भू-भाग। (जोन) ९ कुछ विशिष्ट प्रकार के लोगों का वर्ग या समाज। (सर्किल) जैसे—मित्र-मडल, राजकीय मडल। १०. एक प्रकार की गोलाकार सैनिक व्यूह-रचना। ११. एक प्रकार का साँप। १२ बघनखी नामक गध-द्रव्य। १३. वह कक्ष या गोलाकार मार्ग जिस पर चलते हुए ग्रह चक्कर लगाते हैं। १४. शरीर की आठ सधियों मे से एक। (सुश्रुत) १५ कंदुक। गेद। १६. किसी प्रकार का गोल चिह्न या दाग। १७ चक्र। १८. पहिया। १९. ऋग्वेद का कोई विशिष्ट खंड या भाग।

मंडलक—पुं० [सं० मंडल+कन्] १. किसी प्रकार की मंडलाकार आकृति, छाया या रचना। (डिस्क)। २ दर्पण। शीशा। ३. दे० 'मंडल'।

मंडल-नृत्य—पुं० [सं० सुप्सुपा स०] घेरा बाँधकर या मंडल के रूप में होनेवाला नृत्य।

मंडल-पत्रिका—स्त्री० [सं० ब० स०, +कप्+टाप्, इत्व] रक्त पुनर्नवा। लाल गदहपूरना।

मंडल-पुच्छक—पुं० [सं० ब०स०, +कप्] एक जहरीला कीड़ा। (सुश्रुत)

मंडलवर्ती(र्तिन्)—पुं० [सं० मंडल√वृत् (बरतना)+णिनि] प्राचीन भारत में, किसी मंडल या भू-भाग का शासक।

मंडल-वर्ष—पुं० [सं० मध्य० स०] सारे देश में एक साथ होनेवाली वर्षा।

मंडलाकार—वि० [सं० मंडल-आकार, ब० स०] जो बिलकुल गोल न होकर बहुत कुछ गोल या गोले के समान हो। गोलाकार। (ऑर्बिक्यू-लर)

मंडलाधिप—पुं० [सं० मंडल-अधिप, ष० त०] दे० 'मंडलेश्वर'।

मंडलाधीश—पुं० [सं० मंडल-अधीश, ष० त०] दे० 'मंडलेश्वर'।

मंडलाना—अ०=मंडराना।

मंडलायित—वि० [सं० मंडल+क्यङ्+क्त] गोलाकार। वर्तुल।

मंडली—स्त्री० [सं० मंडल+अच्+ङीष्] १. मनुष्यों की गोष्ठी या समाज। २. जीव-जंतुओं का झुंड या दल। ३. एक ही प्रकार का उद्देश्य या विचार रखनेवाले अथवा एक ही तरह का काम करनेवाले लोगों का दल या समूह। जैसे—भजन-मंडली, रास-मंडली। ४. दूब। ५. गुरुच। गिलोय।

पुं० [सं० मंडल+इनि] १. सुश्रुत के अनुसार साँपों के आठ भेदों में से एक भेद या वर्ग। २ वट वृक्ष। बड़ का पेड़। ३ बिडाल। बिल्ली। ४. नेवले की जाति का बिल्ली की तरह का एक जंतु जिसे बंगाल में खटाश और उत्तर प्रदेश में सँभुआर कहते हैं। ५. सूर्य।

मंडलीक—पुं० [सं० मांडलिक] एक मंडल या १२ राजाओं का अधिपति।

मंडलीकरण—पुं० [सं० मंडल+च्वि, ईत्व√कृ (करना)+ल्युट्—अन] १. मंडल या घेरा बनाना। २. कुंडली बनाना, बाँधना या मारना।

मंडलेश्वर—पुं० [सं० मंडल-ईश्वर, ष०त०] १. एक मंडल का अधिपति। २. प्राचीन भारत में १२ राजाओं का अधिपति। ३. साधु समाज में वह बहुत बड़ा साधु जो किसी क्षेत्र में सर्वप्रधान माना जाता हो।

मंडव†—पुं०=मंडप।

मँड़वा—पुं० [सं० मंडप; प्रा० मंडव] १. किसी विशिष्ट कार्य के लिए छाकर बनाया हुआ स्थान। मंडप। २. वह खेल तमाशा जो किसी मंडप के अन्दर दिखलाया जाता हो। (पश्चिमी)

मंड-हारक—पुं० [सं० ष० त०] मद्य का व्यवसायी। कलवार।

मंडा—स्त्री० [सं० मंड+अच्+टाप्] सुरा।

पुं० [सं०मंडल] १. भूमि का एक मान जो दो बिस्वे के बराबर होता है। २. एक प्रकार की बँगला मिठाई।

†पुं० [हिं० मंडी] बड़ी मंडी।

मंडान—स्त्री० [हिं० मंडना] १. मंडित करने की क्रिया या भाव। २. किसी बड़े कृत्य के आरम्भ में की जानेवाली व्यवस्था। ३. आयोजन। प्रबंध। इन्तजाम। जैसे—राज-तिलक या विवाह का मंडान।

क्रि० प्र०—बाँधना।

मँड़ार—पुं० [सं०मंडल] १. गड्ढा। २. झाबा, टोकरा या डलिया।

मंडित—भू० कृ० [सं०√मंड् (सजाना)+क्त] १. सजाया हुआ। विभूषित। २. ऊपर से छाया हुआ। आच्छादित। ३. भरा या पूरी तरह से युक्त किया हुआ। पूरित।

मँड़ियार—पुं० [देश०] झरबेरी नाम की कँकरीली झाड़ी।

मंडी—स्त्री० [सं०मंडप] वह बहुत बड़ा विक्रय-स्थल जहाँ थोक माल बेचने की बहुत-सी दुकानें हों। जैसे—अनाज की मंडी, कपड़े की मंडी।

स्त्री० [सं० मंडल] दो बिस्वे के बराबर जमीन की एक पुरानी नाप।

मँड़ुआ—पुं० [देश०] एक प्रकार का कदन्न।

†पुं० मँड़वा।

मंडूक—पुं० [सं०√मंड्+ऊकण्] १. मेढ़क। २. एक प्राचीन ऋषि। ३. प्राचीन काल का एक प्रकार का बाजा। ४. एक प्रकार का नृत्य। ५. संगीत में रुद्रताल के ग्यारह भेदों में से एक। ६. एक प्रकार का फोड़ा। ७. दोहा, छंद का पाँचवा भेद जिसमें १८ गुरु और १२ लघु अक्षर होते हैं।

मंडूक-पर्णी—स्त्री० [सं० ब० स०, ङीष्] १. ब्राह्मी बूटी। २ मंजीठ।

मंडूक-प्लुति—स्त्री० [सं० ष० त०] १. मेंढक का छलाँग लगाना। २. मेढक की तरह छलाँगें लगाना।

मंडूका—स्त्री० [सं० मंडूक+टाप्] मजिष्ठा। मजीठ।

मंडूकी—स्त्री० [सं० मंडूक+ङीष्] १. ब्राह्मी। २. आदित्य-भक्ता।

मंडूर—पुं० [सं०√मंड्+ऊरच्] १. गलाये हुए लोहे की मैल। २. लौह-किट्ट। ३. वैद्यक में उक्त से बनाया हुआ एक प्रकार का रसौषध।

मँड़ा, मंढा—पुं० [हिं० मढ़ना] १. कमख्वाब बुननेवालों का एक औजार। २. किसी विशिष्ट कार्य के लिए छाकर बनाया हुआ स्थान। मंडप। ३. लकड़ियों आदि का वह ढाँचा जो किसी तरह की बेल चढ़ाने के लिए खड़ा किया या बनाया जाता है।

मुहा०—बेल मँढे (मंढे) चढ़ना=किसी काम का ठीक तरह से चलने लगना या पूरा होना। जैसे—तुमने इतना बड़ा काम तो हाथ में ले लिया है, पर यह बेल मँढे नहीं चढ़ेगी।

मंत—पुं० [सं० मंत्र] १. परामर्श। सलाह। २. मंत्र।

मंतक—पुं० [अं० मतिक] तर्कशास्त्र।

मंतव्य—वि० [सं०√मन् (मानना)+तव्यत्] मानने योग्य। माननीय। मान्य।

पुं० १. किसी काम या बात के संबंध में वह विचार जो मन में स्थिर किया गया हो। मत। (इन्टेन्ट) २. उद्देश्य, सभा-समिति आदि में उपस्थित और स्वीकृति होनेवाला प्रस्ताव या निश्चय। (रिज़ोल्यूशन) ३. सभा, समिति आदि द्वारा किया हुआ कोई निश्चय या निर्णय। ४. संकल्प।

मंत्र—पुं० [सं०√मन्त्+घञ् वा अच्] १. भारतीय वैदिक साहित्य में देवता से की जानेवाली वह प्रार्थना जिसमें उसकी स्तुति भी हो।

विशेष—वैदिक काल में मंत्र तीन प्रकार के होते थे। जो छंदोबद्ध या पद्य के रूप में होते थे और जिनका उच्चारण उच्च स्वर से किया जाता था, उन्हें 'ऋचा' कहते थे। गद्य रूप में होनेवाले और मंद स्वर से कहे जानेवाले मंत्रों को 'यजु' कहते थे, और पद्य रूप में गाये जानेवाले मंत्रों

को 'साम' कहते थे। इसके सिवा निरुक्त में मंत्रों के तीन और भेद बतलाये गये है। जिन मंत्रो मे देवता को परोक्ष मे मान कर प्रथम पुरुष मे उनकी स्तुति की जाती है, वे 'परोक्ष-कृत' कहलाते है। जिनमे देवताओ को प्रत्यक्ष मान कर मध्यम पुरुष मे उनकी स्तुति की जाती है, उन्हे 'प्रत्यक्षकृत' कहते है। और जिन मंत्रो मे स्वय अपने आप मे आरोप करके और उत्तम पुरुष मे स्तुति की जाती है, वे 'आध्यात्मिक' कहलाते हैं। वैदिक मंत्रो मे प्रायः प्रार्थना और स्तुति के सिवा अभिशाप, आशीर्वाद, निंदा, शपथ आदि की भी बहुत सी बाते पाई जाती है। वैदिक काल मे इसी प्रकार के मंत्रो के द्वारा यज्ञ-संबंधी सब कृत्य किये जाते थे। २ वेदो का वह संहिता नामक भाग जिसमे उक्त प्रकार के मंत्र संगृहीत है और जो उनके ब्राह्मण नामक भाग से भिन्न हैं। ३ कोई ऐसा शब्द, पद या वाक्य जो दैवी शक्ति से युक्त माना जाता हो और जिसका उच्चारण किसी देवता को प्रसन्न करके उससे अपनी कामना पूरी कराने के लिए किया जाता हो।

विशेष—उक्त प्रकार के मंत्रो मे जो एकाक्षरी और बिना स्पष्ट अर्थवाले होते है, उन्हे तंत्र शास्त्र मे बीज-मंत्र कहते हैं।

पद—मंत्र-तंत्र, यंत्र-मंत्र।

४ राय या सलाह। मंत्रणा। ५ कोई ऐसी बात जो किसी प्रकार का उद्देश्य सिद्ध करने के लिए किसी को गुप्त रूप मे बतलाई, समझाई या सिखाई जाय। कार्य-सिद्धि का गुर, ढंग या नीति। जैसे—न जाने तुमने उसे कौन सा मंत्र बता (या सिखा) दिया है कि वह लोगों से अपना काम तुरत करा लेता है।

मंत्रकार—पु० [स० मंत्र√कृ+अण्, उप०स०] मंत्र रचनेवाला। जैसे—मंत्रकार ऋषि।

मंत्र-गूढ़—पु० [म० स० त०] गुप्तचर। जासूस। भेदिया।

मंत्र-गृह—पु० [म० ष० त०] वह स्थान जहाँ बैठकर मंत्रणा या सलाह करते है।

मंत्र-जल—पु० [म० मध्य० स०] मंत्र से प्रभावित किया हुआ जल।

मंत्र-जिह्व—पु० [म० ब० स०] अग्नि।

मंत्रज्ञ—वि० [स० मंत्र√ज्ञा (जानना)+क] १ मंत्र जाननेवाला। २ परामर्श या सलाह देने की योग्यता रखनेवाला। ३ भेद या रहस्य जाननेवाला।

मंत्रण—पु० [स०√मंत्र् (गुप्त भाषण)+ल्युट्—अन] १ मंत्रणा या सलाह करना। २ परामर्श।

मंत्रणा—स्त्री० [√मंत्र्+णिच्+युच्—अन,+टाप्] १ किसी महत्त्वपूर्ण विषय के संबंध मे आपस मे होनेवाली बात-चीत या विचार-विमर्श। सलाह। २ उक्त बात-चीत या विचार-विमर्श के द्वारा स्थिर किया हुआ मत। मंतव्य। ३ किसी काम के संबंध मे किसी को दिया जानेवाला परामर्श या सलाह। (एडवाईज)

मंत्रणाकार—पु० [स० मंत्रणा√कृ (करना)+अण्] वह जो किसी को उसके कार्यों के संबंध मे मंत्रणा देता रहता हो। (एडवाइजर)

मंत्रणा-परिषद्—स्त्री० [स० ष० त०] मंत्रणाकारो की ऐसी परिषद् जो किसी बड़े अधिकारी या शासन को मंत्रणा देती रहती हो। (ऐडवाइजरी कौंसिल)

मंत्र-तंत्र—पु० [स० द्व० स०] वे मंत्र जो कुछ विशिष्ट प्रकार की क्रियाओं के साथ जादू-टोन के रूप में किसी अभीष्ट की सिद्धि के लिए पढ़े जाते हैं।

विशेष—ऐसे मंत्र या तो तंत्रशास्त्र के क्षेत्र के होते हैं, या उनके अनुकरण पर मन-माने ढंग से बनाये हुए होते है।

मंत्रद—वि० [स०मंत्र√दा (देना)+क, उप० स०] परामर्श देनेवाला। पु० वह गुरु जिसने गुरु-मंत्र दिया हो।

मंत्रदर्शी (र्शिन्)—वि०[स० मंत्र√दृश् (देखना)+णिनि, उप० स०] वेदवित्। वेदज्ञ।

मंत्र-दीधिति—पु० [ब० स०] अग्नि। आग।

मंत्र-द्रष्टा—वि० [ष० त०] जो मंत्रो का अर्थ जानता हो। पु० मंत्रो के अर्थ जानने और बतानेवाला ऋषि।

मंत्र-धर—पु० [ष० त०] मंत्री।

मंत्र-पति—पु० [ष० त०] मंत्र का अधिष्ठाता देवता।

मंत्र-पूत—भू० कृ० [तृ० त०] १ मंत्र द्वारा पवित्र किया हुआ। २. मंत्र पढ़कर फूँका हुआ।

मंत्र-बीज—पु० [ष० त०] मूल मंत्र।

मंत्र-भेदक—पु० [ष० त०] वह जो शासन के निश्चय, भेद या रहस्य दूसरो पर प्रकट कर देता हो। (ऐसा व्यक्ति, राज्य या राष्ट्र का शत्रु माना जाता है।)

मंत्र-मूल—पु० [ब० स०] राज्य।

मंत्र-यान—पु० [ब० स० या सुप्सुपा स० ?] बौद्धो की एक शाखा जिसके प्रवर्त्तक सिद्ध नागार्जुन माने जाते है। इसे वज्रयान (देखे) भी कहते हैं। इस शाखा मे बुद्ध के उपदेशो का सारांश मंत्रों के रूप मे जपा जाता है।

विशेष—बौद्ध धर्म का तीसरा यान या मार्ग जो महायान के बाद चला था, और जिसमे कुछ मंत्रो के उच्चारण से ही निर्वाण प्राप्त करने का प्रयत्न किया जाता था।

मंत्र-युद्ध—पु०[सुप्सुपा स०] केवल बातचीत या बहस के द्वारा शत्रु को वश मे करने की क्रिया या प्रयत्न।

मंत्र-योग—पु० [ष० त०] १ मंत्रो का प्रयोग। मंत्र पढना। २. हठयोग मे प्राणायाम करते हुए मंत्र या नाम जपना। शब्द योग। ३. इन्द्रजाल। जादू।

मंत्रवादी (दिन्)—वि० [स० मंत्र√वद् (कहना)+णिनि लोप] १. मंत्रज्ञ। २ मंत्र उच्चारण करनेवाला।

मंत्र-विद्—वि० [स० मंत्र√विद् (जानना)+क्विप्] १. मंत्र जाननेवाला। मंत्रज्ञ। २ वेदज्ञ। ३ राज्य या शासन के रहस्य और सिद्धांत जाननेवाला।

मंत्र-विद्या—स्त्री० [ष० त०] =मंत्र-शास्त्र।

मंत्र-शास्त्र—पु० [ष० त०] वह शास्त्र जिसमें भिन्न प्रकार के मंत्रों के द्वारा उसके कार्य सिद्ध करने की क्रियाएँ और विवेचन हो। तंत्र-शास्त्र।

मंत्र-संस्कार—पु० [म० ष० त०] १ मंत्रो की विधि से किया जानेवाला संस्कार। २ मंत्र-ग्रहण करने से पूर्व उसका किया जानेवाला संस्कार। (तंत्र) ३ विवाह।

मंत्र-संहिता—स्त्री० [ष० त०] वेदो का वह अंश जिसमे मंत्रों का संग्रह है।

मंत्र-सिद्ध—वि० [तृ० त०] १. जो मंत्रों के द्वारा सिद्ध किया गया हो। २. [ब० स०] जिसे मंत्र सिद्ध हो।

मंत्र-सिद्धि—स्त्री० [ष० त०] मंत्र-तंत्र का इस प्रकार सिद्ध होना कि उनसे उपयुक्त काम लिया जा सके।

मंत्र-सूत्र—पु० [मध्य० स०] रेशम या सूत का वह तागा जो शरीर के किसी अंग में बाँधने के लिए मंत्र पढ़कर तैयार किया गया हो। गंडा।

मंत्रालय—पु० [मंत्र-आलय, ष० त०] १. मंत्री का कार्यालय। २ आज-कल शासन मे, कर्मचारियों का वह विभाग जो किसी मंत्री के निर्देशन में काम करता हो। (मिनिस्टरी) जैसे—शिक्षा मंत्रालय।

मंत्रित—भू० कृ० [सं०√मंत्र्+क्त या मंत्र+इतच्] १ मंत्र द्वारा संस्कृत। अभिमंत्रित। २ जिसे मंत्र दिया गया हो।

मंत्रिता—स्त्री० [सं० मंत्रिन्+तल्+टाप्] १. मंत्री होने की अवस्था, पद या भाव। मंत्रित्व। २ मंत्री का कार्य।

मंत्रित्व—पु० [सं० मंत्रिन्+त्व] मंत्री का कार्य या पद। मंत्री-पद।

मंत्रि-पति—पु० [सं० ष० त०] प्रधान मंत्री।

मंत्रि-परिषद्—स्त्री० [ष०त०] किसी राज्य, संस्था आदि के मंत्रियों का समूह या समाहार। (कैबिनेट, काउन्सिल)

मंत्रि-मंडल—पुं० [ष० त०] किसी राज्य के मंत्रियों का मंडल, वर्ग या समूह (मिनिस्टरी)

मंत्री (त्रिन्)—पु० [सं० मंत्र+इनि,] १. वह जो मंत्रणा अर्थात् परामर्श या सलाह देता हो। २ राजा का वह प्रधान अधिकारी जो उसे राजकार्यों के संबंध में परामर्श देता और राज-कार्यों का संचालन करता हो। अमात्य। ३ वह व्यक्ति जिसके आदेश और परामर्श से राज्य के किसी विभाग के सब काम-काज होते हों। (मिनिस्टर) जैसे—अर्थ-मंत्री, शिक्षा मंत्री।

विशेष—मंत्री और सचिव के अन्तर के लिए दे० 'सचिव' का विशेष। ४ किसी सस्था का वह प्रधान अधिकारी जिसके आदेश तथा परामर्श से उसके सब काम होते हों। (सेक्रेटरी) जैसे—सभा का मंत्री। ५ वह जो किसी उच्च अधिकारी के साथ रहकर उसके पत्र-व्यवहार तथा महत्त्व के कार्यों की व्यवस्था करता हो। सचिव। (सेक्रेटरी) ६ शतरंज मे वजीर नाम की गोटी या मोहरा।

मंथ—पु० [सं०√मंथ् (मथना)+घञ्] १ मथना। बिलोना। २ २ हिलाना। ३ मलना। रगड़ना। ४. मारना-पीटना। ५. काँपना। कंपन। ६. मथानी। ७ सूर्य की किरण। ८. एक प्रकार का मृग। ९. एक प्रकार का पेय पदार्थ जो कई प्रकार के तरल पदार्थों को मथकर बनाया जाता था। १० दूध या जल मे मिलाकर मथा हुआ सत्तू। ११ आँख का एक रोग जिसमें आँखों से पानी या कीचड़ बहता है। १२. एक प्रकार का ज्वर जो बाल-रोग के अंतर्गत माना जाता है। मंथर।

मंथक—पुं० [सं०√मथ्+ण्वुल्—अक] १. एक गोत्रकार मुनि का नाम। २ उक्त ऋषि के वंशज या अनुयायी। ३. चँवर डुलाने पर निकलनेवाली वायु।

वि० मंथन करनेवाला।

मंथज—वि० [सं० मंथ्√जन् (उत्पन्न करना)+ड] मथने से उत्पन्न होनेवाला। मथकर निकाला जानेवाला।

पुं० नवनीत।

मंथन—पु० [सं०√मंथ्+ल्युट्—अन] १ वह प्रक्रिया जिससे दही को मथानी द्वारा चलाकर मक्खन निकाला जाता है। २. किसी गूढ़ या नवीन तत्त्व को खोज निकालने के लिए परिश्रमपूर्वक की जानेवाली छान-बीन। जैसे—शास्त्रों का मन्थन।

मंथन-घट—पु० [ष० त०] [स्त्री० अल्पा० मंथन-घटी] वह मटका जिसमे दही मथा जाता है।

मंथनी—स्त्री० [सं० मंथन+ङीष्] मिट्टी का वह पात्र जिसमें दही मथा जाता है। मटकी।

मंथ-पर्वत—पु० [सं० ष० त०] मंदर पर्वत।

मंथर—वि० [सं०√मंथ्+अरन्] १ धीमा। मन्द। २ मट्ठर। सुस्त। ३ मन्द-बुद्धि। कम-समझ। ४. बड़ा और भारी। स्थूल। ५. टेढ़ा। वक्र। ६. अधम। नीच।

पु० १ बालों का गुच्छा। २ कोष। खजाना। ३. फल। ४ बाधा। रुकावट। ५ मथानी। ६ क्रोध। गुस्सा। ७. दूब। ८. वैशाख का महीना। ९ भँवर। १० किला। दुर्ग। ११ मृग। हिरन। १२ नवनीत। मक्खन। १३. मंथ (देखें) नामक ज्वर।

मंथरा—स्त्री० [सं० मंथर+टाप्] रानी कैकेयी की एक प्रसिद्ध कुबड़ी दासी जिसके बहकावे मे आकर उसने राजा दशरथ से दो वर माँगे थे और राम को वन-वास दिलाया था। २. १२० हाथ लंबी, ६० हाथ चौड़ी और ३० हाथ ऊँची नाव। (युक्तिकल्पतरु)

मंथ-शैल—पु० [ष० त०] मंदर पर्वत।

मंथान—पु० [सं०√मंथ्+आनच्] १ बड़ी मथानी। २ महादेव। शिव। ३. मंदर पर्वत। ४ एक भैरव का नाम। ५. मथानी। ६ अमलतास। ७. एक प्रकार का वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे दो तगण होते हैं।

मंथानक—पु० [सं० मंथान+कन्] एक तरह की घास।

मंथिता (तृ)—वि० [सं०√मंथ्+तृच्] [स्त्री० मंथिनी] जो मथानी से दही मथता हो। मथनेवाला।

मंथिनी—स्त्री० [सं० मंथ+इनि+ङीप्] दही मथने की मटकी।

मंथिप—वि० [सं० मंथिन्√पा (पीना)+क] मथा हुआ सोम पीनेवाला।

मंथी (थिन्)—वि० [सं० मंथ+इनि,] १ मंथन करने या मथनेवाला। २. कष्ट देनेवाला। पीड़क।

पु० मथा हुआ सोमरस।

मंद—वि० [सं० √मद् (सुस्त पड़ना)+अच्] १. जिसकी गति, चाल, प्रवाह, वेग अपेक्षाकृत अपने वर्गवालों से कम या घटकर हो। धीमा। २. जिसमें अधिक उग्रता या तीव्रता न हो। जैसे—मंद ज्वर। ३. जो जल्दी या सहसा नहीं, बल्कि धीरे-धीरे अपना प्रभाव दिखाता हो। जैसे—मंद विष। ४ जिसमें जल्दी-जल्दी तथा अच्छी तरह काम करने की शक्ति या सामर्थ्य न हो। जैसे—मंद-बुद्धि। ५ बेवकूफ। मूर्ख। ६. खल। दुष्ट।

पु० १. वह हाथी जिसकी छाती और मध्य-भाग की बलि ढीली हो, पेट लंबा, चमड़ा मोटा, गला, कोख और पूछ की चँवरी मोटी हो।

२. शनि नामक ग्रह। ३ यम। ४. अभाग्य या दुर्भाग्य। ५. प्रलय। †पुं०=मद्य (शराब)।
प्रत्य० [सं० मान् या मन् से फा०] किसी गुण या वस्तु से प्राप्त अथवा संपन्न। वाला। जैसे—दौलतमंद, गरजमंद, जरूरतमंद।

मंदक—पु० [देश०] घोड़े की गले की हड्डी सूजने का एक रोग।

मंदक—वि० [सं० मंद+कन्] मूर्ख। ना-समझ।

मंदग—वि० [सं० मद√गम् (जाना)+ड] [स्त्री० मदगा] मद गतिवाला। धीमी चालवाला।
पु० महाभारत के अनुसार शाकद्वीप के अन्तर्गत चार जन-पदों मे से एक।

मंद-गति—स्त्री० [सं० कर्म० स०] ग्रहो की गति की वह अवस्था जब वे अपनी कक्षा में घूमते हुए सूर्य से दूर निकल जाते हैं।
वि० [ब० स०] धीमे चलनेवाला।

मंद-ज्वर—पु० [सं० कर्म० स०] प्रायः आता रहनेवाला ऐसा ज्वर जिसमे शरीर का तापमान बहुत अधिक न बढ़े। धीमा या हल्का ज्वर। (स्लो फीवर)

मंदट—पु० [सं० मन्द√अट्+अच्] देवदारु।

मंदता—स्त्री० [सं० मद+तल्+टाप्] १ मद होने की अवस्था, कर्म या भाव। धीमापन। २ आलस्य। सुस्ती। ३ क्षीणता।

मंद-धूप—पु० [सं० कर्म० स०] काला धूप। काला डामर।

मंदना†—अ० [सं० मन्द] १. मद होना। धीमा पडना। २. सुस्त होना। ३. फीका या हलका पड़ना।

मंद-फल—पु० [सं० ब० स०] गणित ज्योतिष मे ग्रहों की गति का एक प्रकार या भेद।

मंदभागी—वि० [सं० मदभाग्य] अभागा। बदकिस्मत।

मंदर—पु० [सं०√मद+अर्] १ पुराणानुसार एक पर्वत जिससे समुद्र मथा गया था। मन्दराचल। २. मंदार नामक वृक्ष। ३ स्वर्ग। ४ दर्पण। शीशा। ५. पुराणानुसार कुश द्वीप का एक पर्वत। ६ पुराणानुसार प्रासाद के बीस भेदो मे से दूसरा भेद या प्रकार। ७ एक वर्णवृत्त का नाम जिसमे प्रत्येक चरण मे एक भगण (ऽ।।) होता है। ८. मोतियों का वह हार जिसमे आठ या सोलह लड़ियाँ हों। वि०=मद।

मंदर-गिरि—पु० [सं० मध्य० स०] १ मंदराचल पर्वत। २ मुगेर के पास का एक पहाड़ जहाँ सीता-कुड नाम का गरम पानी का कुड और जैनो, बौद्धो तथा हिन्दुओं के मंदिर हैं।

मँदरा—वि० [सं० मंदर मि० पं० मैंदरा=नाटा] [स्त्री० मँदरी] छोटे आकार का। नाटा।
पु० [सं० मडल] एक प्रकार का बाजा जिसे मंदिल भी कहते हैं।

मँदरी—स्त्री० [देश०] खाजे की जाति का एक पेड़।

मदला—पु०=मंदिल (बाजा)।

मंदसान—पु० [सं०√मंद् (प्राप्त होना)+सानच्)] १. अग्नि। २ प्राण। ३ निद्रा। नींद।

मंदा—स्त्री० [सं० मन्द+टाप्] १. सूर्य की वह संक्रांति जो उत्तरा फाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तरा भाद्रपद और रोहिणी नक्षत्र में पड़े। २. बल्ली करंज।
वि० [सं० मंद] [स्त्री० भाव० मंदी] १. मंद। धीमा। २. ढीला। शिथिल। ३. (शारीरिक अवस्था) जो ठीक न हो। ४. बिगड़ा हुआ। विकृत। ५ (बाजार या व्यापार) जिसमें तेजी न हो। जिसमें लेन-देन या क्रय-विक्रय बहुत कम हो रहा हो।

मंदाकिनी—स्त्री० [सं०√मद्+आक, मदाक+इनि वा मंद√अक् (गति)+णिनि+ङीप्] १ पुराणानुसार गंगा की वह धारा जो स्वर्ग मे है। २ आकाश-गंगा। ३ सात प्रकार की सक्रातियों में से एक। ४. चित्रकूट के पास बहनेवाली एक नदी। (महाभारत) ५ एक वर्ण वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रमश: दो दो नगण और दो दो रगण होते है।

मंदाक्रांता—स्त्री० [सं० मद-आक्रान्ता, कर्म० स०] सत्रह अक्षरो का एक वर्ण वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रमशः मगण, भगण, नगण और तगण और अत मे दो गुरु होते है।

मंदाक्ष—वि० [सं० मद-अक्षि, +षच्] सकुचित आँखोंवाला।
पुं० लज्जा। शरम।

मंदाग्नि—स्त्री० [सं० मद-अग्नि, कर्म० स०] एक प्रकार का रोग जिसमें रोगी की पाचन शक्ति मद पड जाती है, भूख कम लगती है और खाई हुई चीज जल्दी हजम नही होती।

मंदात्मा (त्मन्)—वि० [सं० मद-आत्मन्, ब० स०] १ मूर्ख। २ नीच।

मंदान—पु० [?] जहाज का अगला भाग। (लश०)

मंदानल—पु० [सं० मद-अनल, कर्म० स०] मदाग्नि (रोग)।

मंदाना*—अ० [हिं० मद] मद पड़ना या होना।
स० मन्द या धीमा करना।

मंदानिल—पु० [सं० मद-अनिल, कर्म० स०] धीमे चलनेवाली हलकी और सुखद वायु।

मंदार—पु० [सं०√मद्+आरन्] १ स्वर्ग के पाँच वृक्षो मे से एक देव वृक्ष। २. आक। मदार। ३ स्वर्ग। ४. हाथ। ५. धतूरा। ६ हाथी। ७ बिन्ध्य पर्वत के पास का एक तीर्थ। ८. हिरण्य-कश्यप का एक पुत्र।

मंदारक—पु० [सं० मदार+कन्]=मदार।

मंदार-माला—स्त्री० [सं० ष० त०] बाइस अक्षरों का एक वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे सात तगण और अत में एक गुरु होता है।

मंदालसा—स्त्री०=मदालसा।

मंदिमा (मन्)—स्त्री० [सं० मद+इमनिच्,] १. मदता। धीमापन। २ शिथिलता। सुस्ती। ३ अल्पता। कमी।

मंदिर—पु० [सं०√मद्+किरच्] १ रहने का घर। मकान। २. वह घर या मकान जिसमे पूजन आदि के लिए कोई मूर्ति स्थापित हो। देवालय। ३ किसी विशिष्ट शुभ कार्य के लिए बना हुआ भवन या मकान। जैसे—विद्या-मदिर। ४ नगर। शहर। ५ छावनी। ६. समुद्र। ७. घोड़े की जाघ का पिछला भाग।

मंदिर-पशु—पु० [सं० मध्य० स०] बिल्ली।

मंदिरा—स्त्री० [सं० मन्दिर+टाप्] १. घुड़साल। अश्वशाला। २. मँजीरा नाम का बाजा।

मंदिल—पु० [सं० मंदिर] १. घर। मकान। ३. देव-मदिर। देवालय। ३. वह धन जो व्यापारी लोग किसी चीज का दाम चुकाने के समय किसी बडे मन्दिर मे भेजने के लिए काट लेते हैं।

क्रि० प्र०—काटना।
पुं०=मंदल (बाजा)।

मंदी—स्त्री० [हिं० मंद] १. मंद होने की अवस्था या भाव। २. बाजार की वह स्थिति जिसमें चीजों की दर या भाव उतर रहा हो। ३. बाजार की वह स्थिति जिसमें चीजें कम बिकती हों या रोजगार कम चलता हो। 'तेजी' का विपर्याय। ४. अर्थ-शास्त्र में, बाजार की वह स्थिति जिसमें लोगों की क्रयशक्ति कम होने के कारण चीजों की बिक्री घटने लगती है।

मंदील—पुं० [हिं० मुंड] एक प्रकार का सिरबंद जिस पर जरदोजी का काम बना रहता है।
†पुं०=मंदिल।

मंदुरा—स्त्री० [सं०√मंद्+उरच्+टाप्] १. अश्व-शाला। घुड़साल। २. चटाई।

मंदोच्च—पुं०[स० मंद-उच्च, कर्म० स०] ग्रहों की एक प्रकार की गति जिससे राशि आदि का संशोधन करते है।

मंदोदर—वि० [स० मंद-उदर, ब० स०] [स्त्री० मंदोदरी] छोटे या पतले पेटवाला।

मंदोदरी—स्त्री० [सं० मंदोदर+ङीष्] रावण की पटरानी जो मय दानव की कन्या थी।

मंदोवै*—स्त्री०=मंदोदरी।

मंदोष्ण—वि० [सं० मंद-उष्ण, कर्म० स०] कम या थोड़ा गरम। कुनकुना।

मंद्र—पु० [सं०√मंद्+रक्] १. गंभीर ध्वनि। जोर का शब्द। २ संगीत में तीन प्रकार के स्वरों मे से एक जो अपेक्षया धीमा या मंद होता है। ३. मृदंग। ४. हाथियों की एक जाति।
वि० १. मनोहर। सुन्दर। २. प्रसन्न। ३. गंभीर। गहरा। ४. धीमा। मन्द। (शब्द या स्वर)

मंद्राज—पुं० [सं०][स्त्री० मंद्राजिन] १. दक्षिण का एक प्रधान नगर जो पूर्वी घाट के किनारे है। २. उक्त नगर के आसपास का प्रदेश जो अब कई राज्यों में बँट गया है। मदरास।

मंद्राजी—वि०, पु०=मदरासी।

मंशा—स्त्री० [अ० मि० सं० मनस्] १. इच्छा। इरादा। २. अभिप्राय। उद्देश्य।

मंसना—स०=मनसना।

मंसब—पुं० [अ०] १. बड़े अधिकारी या कार्य-कर्ता का पद। ओहदा। २. किसी पद या स्थान पर रहकर किया जानेवाला कर्त्तव्य या काम।

मंसा—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की घास जो बहुत शीघ्रता से बढती और पशुओं के लिए बहुत पुष्टिकारक समझी जाती है। मकड़ा।
†स्त्री०=मंशा (अभिप्राय या उद्देश्य)।

मंसूख—वि० [अ०] [भाव० मंसूखी] (आज्ञा या निश्चय) जो रद्दकर दिया गया हो।

मंसूखी—स्त्री० [अ०] मंसूख अर्थात् रद्द किये जाने की क्रिया, दशा या भाव।

मंसूबा—पुं०=मनसूबा।

मंसूर—वि० [अ०] १. जिसे ईश्वरीय सहायता मिली हो। २. विजयी।

मअन†—पुं०=मदन (कामदेव)।

मई, मइ—सर्व०=मैं।

मइका†—पुं०=मायका।

मइत्री*—स्त्री०=मैत्री।

मइमंत†—वि०=मैमंत (मतवाला)।

मइया†—स्त्री०=मैया (माँ)।

मइला†—वि० मैला।
स्त्री०=मैल।

मई—स्त्री० [सं० मयी] १ मय जाति की स्त्री। २. ऊँटनी।
†वि० स्त्री० सं० 'मयी' का विकृत रूप।
स्त्री० अंगरेजी में मसीही वर्ष का पाँचवाँ महीना जो अप्रैल के उपरांत और जून से पहिले आता है।

मई दिवस—पु० [हिं० +सं०] मई मास की पहली तारीख को श्रमिकों द्वारा मनाया जानेवाला एक अंतर्राष्ट्रीय समारोह जिसमे वे खुशियाँ मनाते, जलूस निकालते तथा सुभीतों की रक्षा तथा वृद्धि के लिए अपना संघटन दृढ़ करते हैं।

मउगा—पु० [?] [स्त्री० मउगी] १. पुरुष। मरद। २. नपुसक। हिजड़ा।

मउर†—पु०=मौर।

मउरना—अ०=मौरना।

मउरी†—स्त्री०=मौरी।

मउलसिरी—स्त्री०=मौलसिरी।

मउलना†—स०=मसलना।

मउसी—स्त्री०=मौसी (माता की बहिन)।

मकई—स्त्री० [हिं० मक्का] १. एक प्रसिद्ध पौधा जिसकी बालों (भुट्टों) मे से दाने निकलते हैं, जिनकी गिनती अन्नों मे होती है। मक्का। २. उक्त पौधे के दाने।

मकड़-जाल—पु० [हिं० मकड़ी+जाल] १ मकड़ी का बुना हुआ जाला। २ ऐसी बात या रचना जो विशेष रूप से दूसरों को फँसाने के लिए की या बनाई गई हो।

मकड़ा—पुं० [देश०] एक प्रकार की घास। मधाना। खमकरा। मनसा।
पु०=नर मकड़ी।

मकड़ाना—अ० [हिं० मकड़ी] १. मकड़ी की तरह चलना। २. अकड़कर चलना।

मकड़ी—स्त्री० [स० मर्कटक] १ एक प्रसिद्ध कीड़ा जो अपने मुँह मे से निकाले हुए एक तरह के लसीले पदार्थ से चक्राकार जाल बुनता है और उसमे फँसी हुई मक्खियों आदि को खाता है। २. संतों की परिभाषा में माया।

मकतब—पु० [अ० मक्तब] १. वह स्थान जहाँ बैठकर कोई कुछ लिखता-पढ़ता हो। २. छोटे बालकों के पढ़ने का स्थान। पाठशाला। मदरसा। चटसाल। ३ छोटे बच्चों को कराया जानेवाला शिक्षा का आरम्भ। विद्यारम्भ।

मकतबखाना—पु० [अ० मकतब+फा० खाना] १. मकतब। पाठशाला। २. जुआड़ियों के अड्डे। (जुआरी)

मकतबा—पु० [अ० मक्तब] १. पुस्तकालय। २. पुस्तक विक्रय-स्थान।

मकतल—पु० [अ० मक्तल] वध-स्थान। वध-भूमि।

मकता—पु० [स० मगध] मगध देश। (आईन अकबरी मे मगध देश का यही नाम दिया गया है।)

पु० [अ० मक्तः] गजल के पहले शेर का पहला चरण।

मकतूल—वि० [अ० मक्तूल] वधित। हत।

मकदूनिया—पु० [अ० मक्दूनिय] बालकन का एक प्रदेश। सिकदर यही राज्य करता था। (मेसिडोनिया)

मकदूर—पु० [अ० मक्दूर] १ ताकत। शक्ति। सामर्थ्य। २ काबू। वश। ३ गुजाइश। समाई। ४ धन-सपत्ति।

मकना—पु० [अ० मिक्नः] वह रगीन ओढनी जिसे विवाह के समय दुल्हिन को पहनाया जाता है। (मुसलमान)

†पु० =मकुना। (दे०)

मकनातीस—पु० [अ०] [वि० मिकनातीसी] चुबक पत्थर। २ चुबक।

मकफूल—वि० [अ० मक्फूल] १. ताले मे बन्द किया हुआ। २ रेहन किया हुआ। गिरो रखा हुआ।

मकबरा—पु० [अ० मक्बर] १ वह कब्र जिस पर इमारत या गुबद बना हो। २ कब्र पर बनी हुई इमारत या गुबद।

मकबूजा—वि० [अ० मक्बूज] जिस पर कब्जा या अधिकार किया गया हो। अधिकृत।

मकबूल—वि० [अ० मक्बूल] [भाव० मकबूलियत] १ जो कबूल कर लिया या मान लिया गया हो। स्वीकृत। २ जिसे सब लोग कबूल करते या मानते हो। मान्य और सर्वप्रिय। ३ पसद किया हुआ। ४ रुचिकर।

मकबूलियत—स्त्री० [अ०] १ कबूल या स्वीकृत किये जाने की अवस्था या भाव। २ लोकप्रियता या सर्वप्रियता। ३ पसद। रुचि।

मकरद—पु० [सं० मकर√अन्द् (बाँधना) +अण्, शक० पररूप] १ फूलो का रस जिसे मधुमक्खियाँ और भौरे आदि चूसते है। २ फूल का केसर। ३ किंजल्की। कुन्द का पौधा या फूल। ४ सगीत मे ताल के साठ मुख्य भेदो मे से एक। ५ वाम नामक सवैया-छद का दूसरा नाम।

मकरदवती—स्त्री० [स० मकरन्द+मतुप्, वत्व, +ङीप्] पाटला लता।

मकर—पु० [स० मुख√कृ (फेकना) +ट, पृषो० सिद्धि] [स्त्री० मकरी] १ मगर या घडियाल नामक प्रसिद्ध जल-जतु जो कामदेव की ध्वजा का चिह्न और गगा जी तथा वरुण का वाहन माना गया है। २ बारह राशियो मे से दसवी राशि जिसमे उत्तराषाढ नक्षत्र के अन्तिम तीन पाद, पूरा श्रवण नक्षत्र और धनिष्ठा के आरम्भ के दो पाद है। उसकी आकृति मकर (जतु) के समान मानी गई है। ३. सौर माघ मास जो मकर सक्राति से आरंभ होता है। उदा०—दासन मकर चैन होत है नदी न कौं।—सेनापति। ४ कुबेर की नौ निधियो मे से एक निधि। ५ एक प्राचीन पर्वत। ६ मछली। ७ सुश्रुत के अनुसार कीडो और छोटे जीवो का एक वर्ग। ८ अस्त्र-शस्त्र आदि के वार निष्फल बनाने के लिए उन पर पढा जानेवाला एक प्रकार का मत्र। ९. प्राचीन भारत मे, सैनिक व्यूह-रचना का एक प्रकार। १०. छप्पय के उनतालिसवें भेद का नाम जिसमे ३२ गुरु, ८८ लघु, १२० वर्ण की १५२ मात्राएँ अथवा ३२ गुरु, ८४ लघु, ११६ वर्ण, कुल १४८ मात्राएँ होती हैं।

पु० [फा० मक्र] १ छल। कपट। २ दूसरों को धोखे मे रखने के लिए बनाई जानेवाली कोई स्थिति।

क्रि० प्र०—रचना।—फैलाना।

मुहा०—मकर साधना=छलपूर्वक दूसरों पर यह प्रकट करना कि हम बहुत ही हीन दशा मे हैं।

मकर-कुंडल—पु० [मध्य० स०] मकर के आकृति का कानो मे पहनने का कुडल।

मकर-केतन—पु० दे० 'मकर-केतु'।

मकर-केतु—पु० [ब० स०] कामदेव।

मकर-ध्वज—पु० [ब० स०] १ कामदेव। २ वैद्यक मे चद्रोदय नामक रसौषध। ३ लौग। ४ पुराणानुसार अहिरावण का द्वारपाल जो हनुमान का पुत्र माना जाता है। मत्स्योदर।

मकर-पति—पु० [स०ष०त०] १ कामदेव। २ ग्राह नामक जल-जन्तु।

मकर-व्यूह—पु० [मध्यम० स०] एक प्रकार की सैनिक व्यूह-रचना जिसमे सैनिक मकर के आकार मे खडे किये जाते है।

मकर-संक्रांति—स्त्री० [स० स० त०] वह समय जब सूर्य मकर राशि मे प्रवेश करता है। यह पुण्य काल माना जाता है।

मकर-सप्तमी—स्त्री० [ष० त०] माघ शुक्ला सप्तमी।

मकरांक—पु० [म० मकर-अक, ब० स०] १ कामदेव। २ समुद्र। ३ एक मनु का नाम।

मकरा—पु० [स० वरक] मडुआ नामक अन्न।

पु० [हिं० मकडा] १ भूरे रग का एक कीडा जो दीवारो और पेडो पर जाला बनाकर रहता है। २ हलवाइयो की एक प्रकार की चौघडिया जिसमे सेव बनाया जाता है। यह एक चौकी होती है। ३ दे० 'मकडा'।

मकराकर—स्त्री० [मकर-आकर, ष० त०] समुद्र।

मकराकार—वि० [मकर-आकार, ब० स०] मकर की आकृति जैसा।

मकराकृत—वि० [मकर-आकृत, सुप्सुपा स०] मकर की आकृति जैसा बनाया हुआ। जैसे—मकराकृत कुडल।

मकराक्ष—पु० [मकर-अक्षि, ब०स०,+षच्] खर नामक राक्षस का पुत्र जो रावण का भतीजा था।

मकराज—स्त्री० =कैंची।

मकरानन—पु० [मकर-आनन, ब० स०] शिव का एक अनुचर।

मकराना—पु० [देश०] राजस्थान का एक प्रसिद्ध क्षेत्र जो संगमरमर की खान के लिए ख्यात है।

मकराराई—स्त्री० [मकरा ? + राई] काली राई।

मकरालय—पु० [मकर-आलय, ष० त०] समुद्र।

मकराश्व—पु० [मकर-अश्व, ब० स०] १ वरुण। २ तान्त्रिको का एक प्रकार का आसन जिसमे हाथ और पैर पीठ की ओर कर लिए जाते हैं।

मकरिका-पत्र—पु० [स० उपमि० स०] मछली के आकार का बना हुआ चदन का चिह्न जो प्राचीन काल मे स्त्रियाँ कनपटियो पर बनाती थी।

मकरी—स्त्री० [सं० मकर+ङीप्] १. मकर या मगर नामक जल-जन्तु की मादा। २. एक प्रकार का वैदिक गीत। ३ चक्की में लगी हुई एक लकड़ी जो करीब आठ अंगुल की होती है। ४ जहाज मे फर्श या खंभो आदि में लगा हुआ लकड़ी या लोहे का वह चौकोर टुकड़ा जिसके अगले दोनों भाग अँकुसे के आकार के होते हैं।
†स्त्री०=मकड़ी।

मकरूक—भू० कृ० [अ०] कुर्क किया हुआ (माल)। आसजित।

मकरूज—वि० [अ० मक़रूज] कर्जदार। ऋणी।

मकरूह—वि० [अ० मकरूह] १ घृणित। २ अपवित्र। ३. खराब या गन्दा, बुरा। ४ (काम) जो इस्लाम के अनुसार निषिद्ध या वर्जित हो।

मकरेड़ा†—पुं० [हिं० मक्का+एड़ा (प्रत्य०)] मक्के के पौधे का डंठल।

मकरौरा†—पु०=मकोड़ा।

मकलई—स्त्री०[मकालिया बंदरगाह से] एक प्रकार का गोंद जो अदन से आता है।

मकलूब—वि० [अ० मक्लूब] उलटा हुआ। औंधा।
पु० वह शब्द या पद जो सीधा और उलटा दोनो ओर से पढ़ने पर समान हो। जैसे—दरद, सरस आदि।

मकसद—पु० [अ० मक्सिद] १ उद्देश्य। २. मनोरथ। ३ अभिप्राय।

मकसूद—वि० [अ० मक्सूद] १ अभिप्रेत। २ उद्दिष्ट।
पु०=मकसद।

मकसूम—वि० [अ०] बांटा हुआ। विभक्त।
पु० १. भाग्य। किस्मत। तकदीर। २ गणित मे भाज्य। ३ भाग। हिस्सा।

मकाँ—पु०=मकान।

मकाई—स्त्री०=मकई (ज्वार)।

मकान—पु० [अ०] [बहु० मकानात] १ गृह। घर। २ निवास-स्थान। रहने की जगह। ३ मूल निवास-स्थान। जैसे—वह रहते तो है बम्बई मे पर उनका मकान मथुरा मे है।

मकानदार—पु० [अ०+फा०] मकान मालिक।

मकाम—पु० मुकाम (स्थान)।

मकुंद—पु०=मुकुंद।

मकु—अव्य०[सं० √मक्+ड बा० ?]१ विकल्प-वाचक शब्द। चाहे। २. बल्कि। वरन्। ३ हो सकता है कि। कदाचित्। शायद। ४. यदि ऐसा हो जाता तो अच्छा होता। उदा०—मकु तेहि मारग होइ परौं, कंत धरै जहँ पाउँ।—जायसी।

मकुआ†—पु० [हिं० मक्का] बाजरे के पत्तो का एक रोग।

मकुट†—पु०=मुकुट।

मकुना—पु० [सं० मनाक=हाथी] [स्त्री० मकुनी]१. वह नर हाथी जिसके दाँत न हों अथवा छोटे छोटे दाँत हों। २ ऐसा वयस्क पुरुष जिसे मूँछे न निकली हो या बहुत कम निकली हो। (परिहास और व्यंग्य)
वि० अपेक्षाकृत कम ऊँचाईवाला।

मकुनी—स्त्री०[देश०]१. आटे की लोई के अन्दर बेसन या चने की पीठी भर कर बनाई हुई कचौरी। बेसन की रोटी। २. चने का बेसन और गेहूँ का आटा एक मे मिलाकर उसमें नमक, मेथी, मँगरैल आदि मिलाकर तवा भूमल पर सेंककर पकाई हुई बाटी। ३. मटर के आटे की रोटी।

मकुर—पु०[सं०√मक्+उरच्, पृषो० सिद्धि]१ कुम्हार का वह डंडा जिससे वह चाक चलाता है। २ बकुल। मौलसिरी। ३. दर्पण। मुकुर। शीशा। ४. फूल की कली।

मकुष्ठ—पु० [सं० मकु√स्था+क]१ एक प्रकार का धान। २ मोठ नामक अन्न। बन मूँग।

मकुष्ठक—पु०[सं० मकुष्ठ+कन्] मोठ नामक अन्न।

मकूनी—स्त्री० =मकुनी।

मकूलक—पु०[सं०√मक्+ऊलच्+कन्]१. कली। २ दंती का पेड़।

मकूला—पु०[अ० मकूल]१. उक्ति। कथन। वचन। २ कहावत। लोकोक्ति।

मकेरा—पु०[हिं०मक्का] वह खेत जिसमें ज्वार या बाजरा बोया जाता है।

मको—स्त्री०=मकोय।

मकोइ—पु०=मकोई।

मकोइया—वि०[हिं० मकोय+इया (प्रत्य०)] मकोय के रंग के समान। ललाई लिए हुए पीला रंग।
पु० उक्त प्रकार का रंग।

मकोई—स्त्री०=मकोय।

मकोड़ा—पु०[देश०]१ हिन्दी 'कीड़ा' का अनुकरण वाचक शब्द। जैसे—कीड़ा-मकोड़ा। २ काले रंग का बड़ा च्यूँटा। (पश्चिम)

मकोय—स्त्री०[सं० काकमाता या काकमाची]१ डेढ़-दो हाथ ऊँचा एक तरह का पौधा जिसमे छोटे-छोटे खट-मीठे फल लगते है। २ उक्त फल। रसभरी।

मकोरना†—स०=मरोड़ना।

मकोसल—पु० [देश०] एक प्रकार का सदाबहार ऊँचा वृक्ष जिसकी लकड़ी से नावे बनाई जाती हैं।

मकोह†—स्त्री०=मकोय।

मकोहा*—पु० [सं० मतुठा या हिं०मकोय ?] प्राय फसल को हानि पहुँचानेवाला एक प्रकार का लाल रंग का कीड़ा।

मक्कड़†—पु०[हिं० मकड़ी]१. बड़ी मकड़ा। २ नर मकड़ी।

मक्कर†—पु० मकर (छल या धोखा)।
पु०=मकड़ा।

मक्का—पु०[अ०मक्क]सऊदी अरब की राजधानी जहाँ धार्मिक विचारों वाले मुसलमान हज्ज करने जाते है। यहीं मुहम्मद साहब का जन्म हुआ था।
†पु०=मकई (ज्वार)।

मक्कार—वि० [अ०] [भाव० मक्कारी]१ कपटी। छली। २ दूसरों को धोखा देने के लिए अपनी हीन स्थिति बनानेवाला।

मक्कारी—स्त्री०[अ०]१ मक्कार होने की अवस्था या भाव। २ कोई छल या धूर्ततापूर्ण कार्य।

मक्की†—स्त्री० दे० 'मकई'।

मक्कुल—पु०[सं०√मक्क् (गति) +उलच्]शिलाजीत।

मक्कोल—पु०[सं०√मक्क्+ओल] खड़िया।

मक्खन—पुं०[सं० म्रक्षण]१ दूध, दही आदि को मथकर उसमें से

निकाला जानेवाला एक प्रसिद्ध स्निग्ध सार पदार्थ जिसे तपाकर घी बनाया जाता है। नवनीत। (बटर)

मुहा०—(किसी को) मक्खन लगाना=बहुत अधिक खुशामद या चापलूसी करना। **कलेजे पर मक्खन मला जाना**=शत्रु की हानि देखकर प्रसन्नता और संतोष होना। कलेजा ठंडा होना।

२. एक प्रकार का सेम (फली)।

मक्खी—स्त्री०[सं० मक्षिका]१ एक प्रसिद्ध छोटा कीड़ा जो प्रायः सारे संसार में पाया जाता है। यह प्रायः खाने-पीने की चीजों पर बैठकर उनमें संक्रामक रोगों के कीटाणु फैलाता है। मक्षिका।

पद—मक्खीचूस, मक्खी-मार।

मुहा०—जीती मक्खी निगलना=(क) जान-बूझकर कोई ऐसा अनुचित कृत्य या पाप करना जिसके कारण आगे चलकर बहुत बड़ी हानि हो। (ख) जान-बूझकर किसी के दोष आदि की ओर ध्यान न देना। **नाक पर मक्खी न बैठने देना**=(क) किसी को अपने ऊपर एहसान करने का तनिक भी अवसर न देना। (ख) अपने संबंध में कोई, ऐसा काम या बात न होने देना जिसमें किसी प्रकार की दीनता सूचित होती हो। **मक्खी की तरह निकाल देना या निकाल फेंकना**=किसी को किसी काम से बिलकुल अलग या दूर कर देना। **मक्खी छोड़ना और हाथी निगलना**=छोटे-छोटे पापों से बचना, पर बहुत बड़े-बड़े पाप करने में संकोच न करना। **मक्खी मारना**=बिलकुल खाली और निकम्मे बैठे रहना, अथवा तुच्छ और व्यर्थ के काम करना।

२ मधु-मक्खी। ३ बंदूक के अगले भाग में वह उभरा हुआ अंश जिसकी सहायता से निशाना साधा जाता है।

मक्खीचूस—पुं०[हिं० मक्खी+चूसना]१ घी आदि में पड़ी हुई मक्खी तक को चूस लेनेवाला व्यक्ति। २ लाक्षणिक अर्थ में बहुत बड़ा कंजूस।

मक्खीदानी—स्त्री० [हिं० मक्खी+फा० दानी] एक तरह का जालीदार कपड़े का बना हुआ संदूक जिसमें मक्खियाँ फँसाई जाती हैं।

मक्खीमार—पुं० [हिं० मक्खी+मारना]१ एक प्रकार का बहुत छोटा जानवर जो प्रायः मक्खियाँ मार मारकर खाया करता है। २ एक प्रकार की छड़ी जिसके सिरे पर चमड़ा लगा होता है। जिसकी सहायता से लोग प्रायः मक्खियाँ उड़ाते है। ३. बहुत ही घृणित व्यक्ति।

वि० (चीज) जिसकी सहायता से मक्खियाँ मारी जाती हो। जैसे—मक्खीमार कागज।

मक्खीलेट—स्त्री०[हिं०मक्खी+लेट?] एक प्रकार की जाली जिसमें मक्खी के आकार की बहुत छोटी छोटी बूटियाँ होती हैं।

मक्र—पुं० दे० 'मकर' (छल या धोखा)।

मक्ष—पुं०[सं०√मक्ष्+घञ्]१. अपना दोष छिपाना। २ क्रोध। ३ समूह।

मक्षदृग—पुं०[सं० मत्स्यदृग्] एक प्रकार का मोती जिसके विषय में लोगों की धारणा है कि इसके पहनने से पुत्र मर जाता है।

मक्षिका—स्त्री०[सं०√मश् (शब्द करना)+सिकन्, पृषो० सिद्धि] १. मक्खी। २ शहद की मक्खी।

मक्षिका-मल—पुं०[ष० त०] मोम।

मक्षिकासन—पुं० [मक्षिका-आसन, ष० त०] शहद की मक्खी का छत्ता।

मक्सी—पुं०[देश०]१. वह सब्जा घोड़ा जिसपर काले फूल या दाग हों। २. बिलकुल काले रंग का घोड़ा।

मख—पुं०[सं०] यज्ञ।

मखजन—पुं०[अ० मख्ज़न]१. कोष। खजाना। २ भंडार।

मखतूल—पुं०[सं० महर्घ तूल] काला रेशम।

मखत्राता—वि०[सं० मखत्रातृ] जो यज्ञ की रक्षा करता हो।

पुं० रामचन्द्र जिन्होंने विश्वामित्र के यज्ञ की रक्षा की थी।

मखदूम—वि०[अ०]१. जिसकी खिदमत की जाय। २ जिसकी खिदमत या सेवा करना उचित हो। सेव्य। ३ पूज्य। मान्य।

पुं० मालिक। स्वामी।

मखदूमी—पुं०[अ०] पूज्य। सेव्य। (संबोधन)

मखदूश—वि०[अ० मख्दूश]१ जिससे खदशा या खतरा अथवा भय हो। २ धूर्त्त।

मखद्वेषी(षिन्)—पुं०[सं० मख√द्विष् (द्वेष करना)+णिनि, उप० स०] राक्षस।

मखधारी(रिन्)—पुं० [सं० मख√धृ (धारण करना)+णिनि, उप० स०] यज्ञ करनेवाला।

मखन*—पुं०=मक्खन।

मखना—पुं०=मकुना।

मख-नाथ—पुं०[सं० ष० त०] यज्ञ के स्वामी, विष्णु।

मखनिया—वि०[हिं० मक्खन+इया (प्रत्य०)] १ मक्खन-संबंधी। मक्खन का। (क्व०) २ (दूध) जिसे मथकर उसमें से मक्खन निकाल लिया गया हो। सप्रेटा। ३ (दही) जो मक्खन निकाले हुए दूध को जमाकर बनाया गया हो।

पुं०१ मक्खन बेचनेवाला व्यक्ति। २ उक्त दूध का जमाकर तैयार किया जानेवाला दही।

मखनी—स्त्री० [हिं० मक्खन] प्रायः एक बित्ता लम्बी एक प्रकार की मछली।

मख-पाल—पुं०[सं० मख√पा (रक्षा करना)+णिच्+अण्] यज्ञ की रक्षा करनेवाला। यज्ञ-रक्षक।

मखफी—वि०[अ० मख़्फ़ी] छिपा हुआ। गुप्त।

मखमय—पुं०[सं० मख+मयट्] विष्णु।

मखमल—स्त्री०[अ० मख्मल] [वि० मखमली] १. एक तरह का बढ़िया, महीन, चिकना तथा रोएँदार कपड़ा। २. एक प्रकार की रंगीन दरी जिसके बीचोबीच एक गोल चँदोआ बना रहता है।

मखमली—वि० [अ० मखमल+ई (प्रत्य०)] १ मखमल का बना हुआ। जैसे—मखमली टोपी। २ मखमल का-सा कोमल और चमकीला। जैसे—मखमली किनारे की धोती।

मखमसा—पुं०[अ० मख्मस] १ झगड़ा। २. झमेला। बखेड़ा। ३. डर। भय।

मखरज—पुं० [अ० मखज] १. उद्गम। स्रोत। २. मूल। ३ कंठ (अक्षर के उच्चारण का स्थान)।

मखराज—पुं०[सं० ष० त०] यज्ञों में श्रेष्ठ राजसूय यज्ञ।

मखलूक—पुं०[अ० मख्लूक़]१. ईश्वर की सृष्टि। संसार। जगत। २. मनुष्य। लोग।

मखलूकात—स्त्री०[अ० मख्लूकात] चराचर जगत और प्राणी वर्ग। सृष्टि के सब जीव और वनस्पतियाँ।
मखलूत—वि० [अ० मख्लूत] १ मिला-जुला। मिश्रित। २. गड्ड-मड्ड।
मखवाल्क्य—पु०=याज्ञवल्क्य।
मख-शाला—स्त्री०[सं० ष० त०] यज्ञ करने का स्थान। यज्ञ-शाला।
मखसूस—वि०[अ०मख्सूस]१. जो खास तौर पर या किसी विशेष कार्य के लिए अलग कर दिया गया हो। विशिष्ट। खास। २. प्रधान। प्रमुख।
मख-स्वामी—पु० [सं० ष० त०] यज्ञ के स्वामी, विष्णु।
मखाग्नि—स्त्री०[सं० मख-अग्नि, ष० त०] यज्ञ की संस्कृत अग्नि।
मखाना—पु०[सं० मखान्न] तालमखाना। (देखें)
मखान्न—पु०[सं० मख-अन्न, सुप्सुपा स०] तालमखाना।
मखालय—पु०[सं० मख-आलय, ष० त०] यज्ञ-शाला।
मखी†—स्त्री०=मक्खी।
मखीर†—पु०[हिं० मक्खी]शहद। मधु।
मखेश—पु०[सं० मख-ईश, ष० त०] राजसूय यज्ञ।
मखोना†—पुं० [देश०] पुरानी चाल का एक प्रकार का कपड़ा।
मखौल—पु०[देश०] ऐसी मजेदार तथा व्यंग्यपूर्ण बात जो, प्रायः किसी को हास्यास्पद बनाने के लिए कही जाती है।
क्रि० प्र०—उड़ाना।
मखौलिया—वि० [हिं० मखौल+इया (प्रत्य०)] १ मखौल-संबंधी। २ मखौल के रूप मे होनेवाला।
पु० व्यक्ति जो मखौल करते रहने का अभ्यस्त हो।
मग—पु०[√मग् (गति)+अच्, पृषो० सिद्धि?]१ मगह देश। मगध। २ मगध का निवासी। ३ एक प्रकार के शाकद्वीपी ब्राह्मण। ४ पिप्पलीमूल। पीपल।
पु०=मार्ग (रास्ता)।
(मुहा० के लिए दे० 'बाट' और 'रास्ता')।
मगज—पु०[अ० मग्ज]१ दिमाग। मस्तिष्क।
मुहा०—**(किसी का) मगज खाना**=बहुत बक-बक करके तंग करना। **मगज खाली करना**=बहुत बक-बक कर या परिश्रम करके मस्तिष्क थकाना। **मगज खौलना**=क्रोध के कारण दिमाग या मस्तिष्क खराब होना। **मगज चलना या चल जाना**=(क) उन्माद या पागलपन का रोग होना। (ख) अभिमान आदि से मस्त होना।
२ फलों आदि के अन्दर की गिरी। जैसे—बादाम का मगज।
मगज-चट—पु०[हिं० मगज+चाटना] बकवादी। बकनेवाला।
मगज-चट्टी—स्त्री०[हिं० मगज+चाटज] बकवाद। बकबक।
मगज-पच्ची—स्त्री० [हिं० मगज+पचाना] सिर खपाना। सिर-पच्ची।
मगजी—स्त्री०[देश०] कपड़े के किनारे पर लगी हुई पतली गोट।
मगण—पु० [सं० ष० त०] कविता के आठ गणों में से एक जिसमें ३ गुरु वर्ण होते हैं। लिखने मे इसका स्वरूप यह है, —SSS।
मगद—पु०=मगदल (मिठाई)।
मगदर—पु०=मगदल।
मगदल—पु० [सं० मुद्ग] उड़द (या मूँग) के रवों को भूनकर, फेंटकर तथा चीनी मिलाकर बनाया जानेवाला लड्डू।
मगदा—वि०[सं० मग+दा (प्रत्य०)] मार्ग-प्रदर्शक।
मगदूर†—पुं०=मकदूर (शक्ति)।
मगध—पु०[सं० मग√धा (धारण)+क] [वि० मागध] १ दक्षिणी बिहार का प्राचीन नाम। २. उक्त देश का निवासी। ३. दे० 'मागध'।
मगधा—स्त्री०[सं० मगध+अच्+टाप्] पिप्पली।
मगधाधिप—पु०[सं० मगध-अधिप, ष० त०]१. मगध का राजा। २. जरासंध।
मगधेश—पु०[सं० मगध+ईश,ष०त०] मगध देश का राजा। जरासंध।
मगधेश्वर—पु०[सं० मगध-ईश्वर, ष० त०] मगधेश।
मगन—वि० [सं० मग्न]१. डूबा हुआ। २. बहुत अधिक आनन्द या प्रसन्नता मे लीन। ३. किसी काम या बात में पूरी तरह से लीन। जैसे—इस समय वह अपने काम मे मगन है। ४ रीझा हुआ। लट्टू। ५. बेहोश। मूर्च्छित। (क्व०)
मगनना—स०[सं० मग्न]१. मग्न या प्रसन्न करना। २. किसी को मग्न करके अपने मे लीन या आत्मसात् करना। उदा०—अगनि न दहै पवन नहिं मगनै तसकरु नेरि न आवै।—कबीर।
अ० मग्न होना।
मगना—अ०[सं० मग्न] १ मगन या लीन होना। तन्मय होना। २. डूबना।
मगमा—पु०[देश०] देशी कागज बनाने मे उसके लिए तैयार किए हुए गूदे को धोने की क्रिया।
मगर—पु० [सं० मकर] १. घड़ियाल। २. मछली। ३ मगर या मछली के आकार का कान में पहनने का एक प्रकार का गहना। ४. नेपाल मे बसी हुई एक जाति।
†पु० [सं० मग] अराकान देश जहाँ मग नामक जाति के लोग रहते थे। उदा०—खसिया मगर जहाँ लगि भले।—जायसी।
अव्य०[फा०]१ लेकिन। परन्तु। पर। जैसे—आप कहते तो है, मगर यहाँ सुनता कौन है। २. किसी प्रकार भी। (क्व०) उदा०—चैन तुझ बिन मुझे नहीं आता। नहीं आता, मगर नहीं आता।—कोई शायर।
मुहा०—**अगर-मगर करना**=(क) आना-कानी करना। (ख) तर्क-वितर्क करना।
मगरधर—पु०[सं० मकर-धर] समुद्र। (डिं०)
मगरब—पु० [अ०] पश्चिम दिशा।
पद—**मगरब की नमाज**=वह नमाज जो सूर्य अस्त होने के समय पढ़ी जाती है।
मगर-बाँस—पु०[हिं० मगर?+बाँस] एक प्रकार का काँटेदार बाँस जो पश्चिमी घाट मे होता है।
मगर-मच्छ—पु० [हिं० मगर+मछली]१ मगर या घड़ियाल नामक प्रसिद्ध जल-जन्तु। २ बहुत बड़ी मछली।
मगरा†—वि० [अ० मग़रूर] १. अभिमानी। घमंडी। २ ढीठ। धृष्ट। ३ ढीला। मट्ठर। सुस्त। ४ अकर्मण्य। ५ जिद्दी। हठी। ६. उद्दंड। उद्धत। ७. चुप्पा। घुन्ना।
मगरापन—पु०[हिं० मगरा+पन (प्रत्य०)] 'मगरा' होने की अवस्था या भाव।

मगरिबी—वि०[अ०] पश्चिम दिशा का। पश्चिमी।

मगरी†—स्त्री० [देश०] १. ढालुऐं छप्पर के बीच का या सबसे ऊँचा भाग। २ छप्पर के उक्त अंश या भाग पर रखी जानेवाली मोटी लकड़ी या शहतीर। ३ कोई मोटी और बहुत लबी लकड़ी। लाठ। ५ आसपास की भूमि से ऊँचा स्थान। ६. मूल की आकृति का एक प्रकार का कंद।

मगरूर—वि०[अ०] [भाव० मगरूरी] जिसे गरूर हो। घमंडी। अभिमानी।

मगरूरी—स्त्री०[अ० मगरूर +ई (प्रत्य०)] १ मगरूर होने की अवस्था या भाव। २ घमड। अभिमान।

मगरो†—पु०[देश०] नदी का ऐसा किनारा जिसमे बालू के साथ कुछ मिट्टी मिली हो और जो जोतने-बोने के योग्य हो।

मगरोसन—स्त्री०[अ० मग्ज+रौशन] सुंघनी। नसवार।

मगली एरड—पु० [देश० मगली+हिं० एरंड] रतनजोत। बागबेरडा।

मगलूब—वि० [अ० मग्लूब] १ पराजित। परास्त। २ अधीन। ३. दबैल। कमजोर।

पु० फारसी सगीत के आधार पर चौबीस शोभाओ मे से एक।

मगस—पु० [स० मग] शकद्वीप की एक प्राचीन योद्धा जाति का नाम। †पु०[देश०] पेरे हुए ऊख की सीठी। खोई।

मगसिर—पु०[स० मार्गशीर्ष] अगहन मास।

मगह—पु०[सं० मगध] मगध देश।

मगहपति—पु० [स० मगधपति] मगध देश का राजा, जरासध।

मगहय—पु० [स० मगध] मगध देश।

मगहर—पु०[स० मगध] मगध देश।

मगही—वि०[स० मगह+ई (प्रत्य०)] १ मगध-सबधी। मगध देश का।

पु०मगध या बिहार के कुछ भागो मे होनेवाला एक प्रकार का बढिया पान।

मगु—पु०[स० मार्ग] मग। मार्ग। पथ।

मगोर—स्त्री० [देश०] सीगी की तरह की एक प्रकार की मछली जो बिना छिलके की और कुछ लाली लिए हुए काले रग की होती है। मगुर।

मग्ग—पु०[स० मार्ग] राह। रास्ता।

मग्ज—पु० [अ०]१ मस्तिष्क। दिमाग। २ अक्ल। बुद्धि। ३ कुछ विशिष्ट फलो के अन्दर का कड़ा गूदा। गिरी। (मुहा० के लिए दे० 'मगज')।

मग्ज-रोगन—पु० [फा०] सुंघनी। नास। दे० 'सुंघनी'।

मग्न—वि०[स० √मस्ज् (शुद्धि)+क्त]१. डूबा हुआ। २. किसी काम या बात मे तन्मय। लीन। ३ खूब प्रसन्न। ४ नशे में चूर। मदमस्त। ५ नीचे की ओर झुका या दबा हुआ। जैसे—मग्न नासिका, मग्न स्तन।

पु० एक प्राचीन पर्वत।

मग्नांशुक—पु०[सं० मग्न-अंशुक,कर्म० स०]१. ऐसा महीन कपड़ा जो गीला होने पर शरीर से चिपक जाता हो तथा जिसमे से शरीर के विभिन्न अग साफ-साफ दिखाई पड़ते हो। २ चित्रकला मे, वह अवस्था या चित्रण जिसमे गीला वस्त्र शरीर से चिपके हुए दिखाये जाते हैं। (वेट ड्रैपरी)

मघ—पु०[सं०√ मघ् (गति) +अच्, पृषो० सिद्धि]१ एक प्राचीन द्वीप का नाम। २ एक प्राचीन देश। ३. आनद। ४ दे० 'मघा'। ५. धन। ६. पुरस्कार। ७. एक पौधा और उसका फूल।

मघई†—वि०, पु०=मगही (पान)।

मघवा(वन्)—पु० [स० मह् (पूज्य) +क्वनिन्, ह—घ] १. इद्र। २. सातवे द्वापर के व्यास। ३ उल्लू।

मघवाजित्—पु०[स० मघवजित्] इन्द्र। (डि०)

मघवाप्रस्थ—पु०[स० मघवप्रस्थ] इन्द्रप्रस्थ (नगर)।

मघवारिपु—पु०[स० मघवरिपु] इन्द्र का शत्रु। मेघनाद।

मघा—स्त्री०[स० √ मह् +घ, +टाप्] १ २७ नक्षत्रों में से दसवाँ नक्षत्र जो पाँच तारो का है। (हिं० मे यह प्राय पुंलिग की तरह प्रयुक्त होता है) २ छोटा पीपल।

मघा-त्रयोदशी—स्त्री०[मध्य० स०] माद्र कृष्ण त्रयोदशी।

मघाना—पु० [देश०] एक प्रकार की बरसाती घास। मकडा। (देखें)

मघाभव—पु०[स० मघा√भू (होना) +अच्] शुक्र (ग्रह)।

मघारना—स०[हिं० माघ+आरना (प्रत्य०)]आगामी वर्षा ऋतु मे धान बोने के लिए माघ के महीने मे हल चलाना।

मघोना†—पु०—[स्त्री० मघोनी] मघवा (इन्द्र)।

*पु०=मेघौना।

मघोनी—स्त्री० [स० मघवन्+ङीष्,] मघवा अर्थात इन्द्र की पत्नी। इन्द्राणी। शची।

मचक—स्त्री०[हिं० मचकना] मचकने की क्रिया या भाव।

मचकना—अ०[मच मच से अनु०] मच-मच शब्द उत्पन्न होना।

स० १ मच मच शब्द उत्पन्न करना। मचकाना। २ इस प्रकार दबाना कि मच-मच शब्द हो।

मचका—पु०[हिं० मचकना] [स्त्री० अल्पा० मचकी]१. झोंका। २ धक्का। ३ झूले की पेग।

मचकाना—स०[हिं० मचकना का स०]१ मच मच शब्द उत्पन्न करना। २. किसी को दबाते हुए मच मच शब्द करने मे प्रवृत्त करना।

मचकी†—स्त्री०[हिं० मचकना] छोटा झूला।

मचक्रुक—पु० [स०] १ महाभारत के अनुसार एक यक्ष का नाम। २ कुरुक्षेत्र के समीप स्थित एक प्राचीन तीर्थ।

मचना—अ०[अनु०]१ जोरो से या धूमधाम से आरम्भ होना। जैसे—फाग या होली मचना। २. चारो ओर फैलना। छा जाना। जैसे—किसी बात की धूम मचना।

†स० मचकना।

मचमचाना—अ०[अनु०] काम-वासना के प्रबल आवेग मे होना। बहुत अधिक कामातुर होना।

स० इस प्रकार दबाना कि मच मच शब्द होने लगे। जैसे—कुरसी या पलग मचमचाना।

मचमचाहट—स्त्री० [हिं० मचमचाना+आहट (प्रत्य०)] १ मचमचाने की क्रिया या भाव। २ काम-वासना का बहुत अधिक आवेश।

मचमची—स्त्री०=मचमचाहट।

मचल—स्त्री०[हिं० मचलना]१. मचलने की क्रिया या भाव। २. मचलापन।

मचलन—स्त्री०=मचल।

मचलना—अ०[अनु०] १.किसी चीज की प्राप्ति के लिए मन का आतुर या उद्विग्न होना। २. प्रायः बच्चों का कोई चीज पाने या लेने के लिए आतुरता प्रदर्शित करते हुए हठ करना।
सयो० क्रि०—जाना। —पड़ना।
†अ०=मिचलाना।

मचला—वि० [हिं० मचलना, पं० मचला] १. मचलनेवाला। २. जो काम करने या बोलने के अवसर पर भी जान-बूझकर चुप रहे। जान-बूझकर अनजान बननेवाला।

मचलापन—पु० [हिं० मचला+पन (प्रत्य०)] १. किसी को चिढ़ाने या स्वय दोषी बनने से बचने के लिए चुप रहने की अवस्था या भाव। २. दे० 'मचल'।

मचली—स्त्री०=मितली (वमन का प्रवृत्ति)।

मचवा—पु०[सं० मच] १. खटिया या चौकी का पावा। २. नाव। दे० 'मचिया'।

मचंग†—स्त्री०=मचान।

मचान—स्त्री०[स० मंच+हिं० आन (प्रत्य०)] १ बाँसो, लट्ठो आदि के सहारे बनाया हुआ वह ऊँचा आसन जिसपर बैठकर शिकारी शिकार खेलते या कृषक खेतों की रखवाली करते हैं। २ ऊँची बैठक। मच। ३. दीयट।

मचाना—स०[हिं० मचना का स०] १ आरम करना। जारी करना। २ चारों ओर फैलाना।
स०[?] गदा करना।

मचामच—स्त्री०[अनु०] किसी पदार्थ को दबाने से होनेवाला मचमच शब्द। हुमचने का शब्द।

मचिया—स्त्री०[स० मंच +इया (प्रत्य०)] १ छोटी खाट। २ बैठने की पीढ़ी।

मचिलई—स्त्री०=मचलापन।

मचुला†—पु० [देश०] गिरगिट्टी नामक वृक्ष जो प्राय बागों में शोभा के लिए लगाया जाता है।

मचेरी†—स्त्री०[देश०] बैलो के जुए के नीचे की लकड़ी।

मचोर†—स्त्री० [?] हिलने-डुलने के कारण लगनेवाला धक्का। हिच-कोला। (बुन्देल) उदा०—बैलगाड़ी पर जब मचोरें बदन को सहलाती हुई जावेगी तब बैकुण्ठ नजर आवेगा।—वृन्दावनलाल वर्मा।

मचोला—पु०[देश०] बगाल की दलदलों में होनेवाला एक प्रकार का पौधा जिससे सुहागा बनता है।

मच्छ—पुं०[सं० मत्स्य; प्रा० मच्छ] १. बहुत बड़ी मछली। मत्स्य। २ दोहे का एक भेद जिसमें ७ गुरु और ३४ लघु मात्राएँ होती हैं। ३. रहस्य संप्रदाय में मन, जो सद्वृत्तियों को खा जाता है।

मच्छ-असवारी—पु०[हिं० मच्छ+सवारी] कामदेव। मदन। (डि०)

मच्छ-घातिनी—स्त्री० [हिं० मच्छ+सं० घातिनी] मछली फँसाने की लग्गी। बंसी।

मच्छड़—पुं०[सं० मशक] हवा में उड़नेवाला एक प्रसिद्ध छोटा कीड़ा जो भन भन करता रहता है। इसकी मादा काटती और खून चूसती है।
पद—मच्छड़ की झँल=बहुत ही तुच्छ और हास्यास्पद वस्तु।
वि० कृपण या। कंजूस।

मच्छर—पु०[सं० मत्सर] १. डाह या द्वेष। मत्सर। २. क्रोध। गुस्सा। (डि०)
पु०=मच्छड़।

मच्छरता—स्त्री०[सं० मत्सर+ता (प्रत्य०)] मत्सर। ईर्ष्या। द्वेष।

मच्छरदानी—स्त्री०[हिं० मच्छर+फा० दानी] मसहरी। (दे०)

मच्छा†—पु०=मच्छ।

मच्छी—स्त्री० १ दे० मछली। २. दे० 'मक्खी'।

मच्छी-काँटा—पुं०[हिं० मच्छी+काँटा] १. ऐसी सिलाई जिसमें जोड़े जानेवाले कपड़े के टुकड़ों के बीच में जाली सी बन जाती है। २ कालीन में होनेवाली एक विशेष प्रकार की बुनावट।

मच्छीमार—पु०[हिं० मच्छी+मार (प्रत्य०)] मछुआ।

मच्छोदरी—स्त्री०[स० मत्स्योदरी] व्यास जी की माता और शांतनु की भार्या, सत्यवती।

मछंदर—पु०[सं० मत्स्येन्द्र] १. सुप्रसिद्ध योगी मत्स्येंद्रनाथ। २. बहुत बड़ा मूर्ख और दुष्ट व्यक्ति।
†पुं०=मुछदर।

मछ†—पु०=मच्छ।

मछरंगा—पु०[हिं० मच्छ=मछली] मछली पकड़कर खानेवाला एक जल-पक्षी। राम-चिड़िया।

मछरंधा—पु०=मछरंगा।

मछरिया—स्त्री० [सं० मत्स्य] १. एक प्रकार की बुलबुल। २ मछली।

मछली—स्त्री०[सं० मत्स्य; प्रा० मच्छ] १ सदा जल में रहने और अंडों से उत्पन्न होनेवाले जीवों का एक प्रसिद्ध और बहुत बड़ा वर्ग जिनमें फेफड़ों के स्थान पर गलफड़े होते हैं और जो पानी से बाहर निकालने पर प्राय. बहुत जल्दी मर जाते हैं।
विशेष—अधिकतर मछलियों के शरीर मे दोनों ओर पख के समान अग होते हैं, जिनसे वे जल में खूब तैर सकती हैं। इनकी अधिकतर जातियो का मास सारे संसार में खाया जाता है। कुछ मछलियों की चरबी या तेल भी बहुत से कामो में आता है।
पद—मछली का मोती=एक प्रकार का कल्पित मोती जिसके विषय मे कहा जाता है कि यह मछली के पेट से निकलता है।
२. मछली के आकार का बना हुआ सोने, चाँदी आदि का लटकन जो प्राय कुछ गहनों मे लगाया जाता है। ३ उक्त आकार-प्रकार की कोई रचना। ४ पुष्ट बाहों मे दिखाई पड़नेवाला मासल पेशियों का उभार। जैसे—उनकी बाँहों में मछलियाँ पड़ती थी।
क्रि० प्र०—पड़ना।

मछली का दाँत—पु० [हिं०] गेंडे के आकार के एक पशु का दाँत जो प्राय हाथी दात के समान होता है और उसी नाम से बिकता है।

मछली की स्याही—स्त्री० [हिं०] एक प्रकार का काला रोगन जो नकशे आदि बनाने के काम में आता है।

मछली-गोता—पु० [हिं० मछली+गोता] कुश्ती का एक पेंच।

मछली-डंड—पु० [हिं० मछली+डंड] एक प्रकार का डंड। (कसरत)

मछलीदार—पु०[हिं० मछली+दार (प्रत्य०)] दरी की एक प्रकार की बुनावट।

वि० जिसमे मछली के आकार-प्रकार की कोई रचना बनी या लगी हो।

मछलीमार—पु० [हिं० मछली+मार (प्रत्य०)] मछुआ।

मछवा—पु० [हिं० मछली] १. वह नाव जिसपर बैठकर मछली का शिकार करते हैं। (लश०) २ मछुआ।

मछुआ—पुं० [हिं० मछ-उआ (प्रत्य०)] मछलियों का शिकार करनेवाला व्यक्ति। मछलियाँ पकड तथा बेचकर जीविका अर्जित करनेवाला व्यक्ति।

मछेह—पु० [देश०] शहद की मक्खी का छत्ता।

मजकूर—वि० [फा० मज्कूर] कहा हुआ। कथित।

मजकूरात—पु० [फा० मज्कूरा] मध्य-युग में कुछ लोगो के सम्मिलित खेतो का वह लगान जिसका कुछ अंश गाँव के सार्वजनिक कार्यों मे लगता था।

मजकूरी—पु० [फा० मज्कूरी] १. ताल्लुकेदार। २. चपरासी। ३ वह चपरासी या नौकर जिसे वेतन न मिलता हो और जो नौकरी पाने की आशा मे ही काम करने लगा हो। ४ वह जमीन जिसका बँटवारा न हो सके और जो जन-साधारण के लिए छोड दी गयी हो।

मजजूब—पु० [अ० ज्जूब] बावलो की तरह ब्रह्म मे लीन फकीर।

मजदूर—पु० [फा० मज्दूर] [स्त्री० मजदूरनी, मजदूरिन] १ वह व्यक्ति जो भाड़े पर शारीरिक परिश्रम सबधी कार्य करता हो। २. शारीरिक श्रम के द्वारा जीविका कमानेवाला कोई व्यक्ति। जैसे—इमारत बनाने, कल कारखानो मे काम करनेवाले अथवा बोझ ढोनेवाले मजदूर।

मजदूरी—स्त्री० [फा० मज्दूरी] १ मजदूर का काम। २ भाडे या वेतन के रूप मे दिया जानेवाला वह धन जो नियोक्ता मजदूर को उसके परिश्रम के बदले मे देता है।

मजन*—पु० =मज्जन।

†पु० =मार्जन।

मजना*—अ० [स० मज्जन] १ डूबना। निमज्जित होना। २ अनुरक्त होना।

†अ०=मँजना।

मजनूँ—वि० [अ० मज्नूँ] जिसे जनून या उन्माद हुआ हो। पागल। विक्षिप्त।

पु० १ अरब देश का एक प्रसिद्ध प्रेमी जिसका वास्तविक नाम कैस था और जो लैला के प्रेम मे पागल हो गया था। २. पागलो की तरह आचरण करनेवाला प्रेमी। ३ दुबला-पतला या कमजोर व्यक्ति। (व्यग्य) ४ बेद मजनूँ नामक वृक्ष।

मजबह—पु० [अ० मज्बह] वधस्थल।

मजबूत—वि० [अ० मज्बूत] [भाव० मजबूती] १. बनावट, रचना आदि के विचार से जो दृढ़ तथा पुख्ता हो। २. जो अच्छी तरह या दृढ़तापूर्वक अपने स्थान पर जमा बैठा या लगा हो। ३ (व्यक्ति) जो शारीरिक दृष्टि से तगडा और हृष्ट-पुष्ट हो। शक्तिशाली।

मजबूती—स्त्री० [अ० मज्बूती] १. मजबूत होने की अवस्था या भाव। दृढता। पक्कापन। २. ताकत। बल। शक्ति। साहस। हिम्मत।

मजबून—पु०=मजमून।

मजबूर—वि० [अ० मज्बूर] १. जिस पर जब्र किया गया हो फलत. बाध्य। २. जिसका कुछ भी वश न चल रहा हो। विवश तथा निसहाय।

मजबूरन—अव्य० [अ० मज्बूरन] मजबूर होने की या किये जाने पर। विवशतापूर्वक।

मजबूरी—स्त्री० [अ० मजबूर+ई (प्रत्य०)] १ मजबूर होने की अवस्था या भाव। लाचारी। विवशता। २. नि.सहायता।

मजमा—पु० [मज्मूअ] १ भीड़भाड। २. तमाशबीनो का समूह।

मजमुआ—वि० [अ० मज्मूअ] १ एकत्र किया हुआ। संगृहीत। २ बहुतो को मिलाकर एक किया हुआ।

पु० १ किसी की समस्त कृतियो का एक स्थान पर किया हुआ सग्रह। २ खजाना। ३ जखीरा। ३ एक तरह का इत्र जिसमे कई तरह के इत्र मिले होते है।

मजमूई—वि० [अ०] इकट्ठा किया हुआ। सामूहिक।

मजमून—पु० [अ० मजमून] कोई ऐसी बात जिस पर कुछ कहा, लिखा या सोचा-समझा जाय, अथवा कुछ कहा, लिखा या सोचा-समझा गया हो। विषय।

मुहा०—मजमून तराशना=कोई विलक्षण बात या विषय अपनी कल्पना के बल से प्रस्तुत करना। **मजमून बाँधना**=कोई विषय अथवा नवीन विचार गठे हुए रूप मे गद्य या पद्य मे लिखना। **मजमून मिलना या लड़ना** =दो अलग-अलग लेखकों या कवियो के वर्णित विषयो या भावो का सयोग से एक तरह का होना या आपस मे मिल जाना।

मजमूम—वि० [अ० मज्मूम] १ जिसकी मजम्मत या निन्दा की गई हो। निंदित। बुरा। खराब। २ अश्लील।

मजम्मत—स्त्री० [अ०] १ निंदा। मजम्मत २ तिरस्कार।

मजरी—स्त्री० [देश०] एक तरह का झाड।

मजरूआ—वि० [अ० मज्रूअ] जोता और बोया हुआ।

पु० जोता बोया हुआ खेत।

मजरूब—वि० [अ० मज्रूब] जिस पर जरब या चोट लगाई गई हो। जिस पर आघात किया गया हो।

मजरूह—वि० [अ० मज्रूह] १ चोट खाया हुआ। आहत। घायल। जख्मी। २ (बयान) जो जिरह मे बिगड़ गया हो।

मजल—स्त्री० =मजिल।

मजलिस—स्त्री० [अ० मज्लिस] [वि० मजलिसी] १ बहुत से लोगों के बैठने की जगह। २. किसी विशेष उद्देश्य से एक साथ बैठे हुए बहुत से लोगो का समाज। जैसे—गाने-बजाने की मजलिस। ३. सभा-समिति आदि का अधिवेशन। ४ सभा।

क्रि० प्र०—जमना—बैठना।—लगना।

मजलिसी—वि० [अ० मज्लिसी] १ मजलिस-सबधी। मजलिस का। २ जो किसी मजलिस मे सम्मिलित हो। ३ जो मजलिस के लिए उपयुक्त हो। मजलिस के योग्य।

पु० वह जिसे किसी मजलिस में आमंत्रित किया गया हो।

मजलूम—वि० [मज्लूम] [भाव० मजलूमी] जिस पर जुल्म हुआ हो। सताया हुआ। अत्याचार-पीड़ित।

मजहब—पु० [अ० मज्हब] [वि० मजहबी] १ धार्मिक सम्प्रदाय। पंथ। मत। २ धर्म। उदा०—मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना।—इकबाल।

मजहबी—वि०[अ० मज़्हबी] १. किसी मजहब या धार्मिक संप्रदाय से संबंध रखनेवाला अथवा उसमें होनेवाला। २. धार्मिक।
पुं०सिक्खों का एक वर्ग या सम्प्रदाय जिसमें अधिकतर चमार, मेहतर आदि हैं।

मजहूल—वि० [अ० मजहूल]१ अज्ञात। नामालूम। २ सुस्त। निकम्मा। ३. थका हुआ। शिथिल।

मजा—पुं० [फा० मज़]१ किसी काम विशेषत किसी चीज के भोग करने पर होनेवाली वह तृप्ति जिसमें मन और शरीर दोनो आनंद से भर उठते हैं। जैसे—(क) आज खेल मे मजा था। (ख) हमने देहात का मजा पा लिया है।
क्रि० प्र०—आना।—देखना।—मिलना।—लेना।
पद—मजे में=(क) अच्छी तरह और सन्तोषजनक रूप में। जैसे—कलकत्ते मे वह मजे मे है। (ख) अच्छे और ठीक ढंग या प्रकार से। जैसे—अब नो लडका मजे मे अगरेजी बोलने लगा है।
मुहा०—मजा आ जाना या आना=ऐसी स्थिति उत्पन्न होना जिससे लोगों का यथेष्ट मनोरजन हो अथवा वे विशिष्ट रूप से प्रसन्न हो। जैसे—आज तो इन लोगों की बातचीत (या नाच-गाने) में मजा आ गया। **मजा (या मजे) उड़ाना**=मनमाने ढंग से यथेष्ट आनंद और सुख भोग करना। **मजा किरकिरा होना** सुखप्रद स्थिति में किसी प्रकार की बाधा या विघ्न होना। **(किसी को मजा) चखाना या दिखाना**=किसी को ऐसी स्थिति मे लाना कि वह अपने किये हुए किसी काम का अच्छी तरह फल भोगे और दुःखी होकर पछताने लगे। **मजा लूटना**—दे० ऊपर 'मजा उड़ाना'।
२ खाने पीने की चीजों से मिलनेवाला प्रिय स्वाद। जायका। रस।
मुहा०—किसी चीज या बात का मजा पड़ना=रस या सुख मिलने पर किसी चीज या बात का चसका लगना।
३ किसी चीज या बात की ऐसी स्थिति जिसमे वह परिपक्व होकर यथेष्ट आनद या सुख देने के योग्य हो जाय।
मुहा०—(किसी चीज का) मजे पर आना=अच्छी तरह परिपक्व होकर पूर्ण रूप से सुखद होना। **(किसी व्यक्ति का) मजे पर आना**=ऐसी स्थिति में आना या होना कि मनमाना आचरण या व्यवहार करके आनद या सुख प्राप्त कर सके।
४ बातचीत आदि की ऐसी स्थिति जिससे लोगों का विशेष मनोरंजन होता या उन्हे सुख मिलता हो। जैसे—मजा तो तब हो जब आप भी उन लोगों के साथ पकड़े जायँ।

मजाक—पुं०[अ० मज़ाक़] १ हँसी-ठट्ठा। परिहास।
मुहा०—(किसी का) मजाक उड़ाना=किसी को तुच्छ सिद्ध करने के लिए हँसी की बातें कहकर उपहासास्पद बनाना। उपहास करना। **(किसी काम को) मजाक समझना**=हँसी-खेल या खेलवाड समझना।
पद—मजाक में=किसी विशिष्ट विचार से नही, बल्कि परिहास में या यों ही।
२ किसी बात या विषय में होनेवाली स्वाभाविक प्रवृत्ति या रुचि।

मजाकन—अ० [अव्य० मज़ाक़न] मजाक या परिहास के रूप में। हँसी के तौर पर।

मजाकिया—वि०[अ० मज़ाकिय:]१. मजाक या परिहास से सम्बन्ध रखनेवाला। जैसे—मजाकिया मजमून, मजाकिया शायरी। २. (व्यक्ति) जो बहुत अधिक या प्राय मजाक करता रहता हो। मजाकपसद।
क्रि० वि०=मजाकन।

मजाज—वि० [अ० मजाज़] १. अवास्तविक। कल्पित या मिथ्या। २ अधिकार-प्राप्त।
†पुं०=मिजाज।

मजाजन—अव्य०[अ० मजाज़न]१. अधिकारिक रूप से। २ नियम, विधि आदि के अनुसार। ३. काल्पनिक रूप मे। ४ लाक्षणिक रूप मे।

मजाजी—वि० [अ० मजाज़ी] १ अवास्तविक। कल्पित या मिथ्या। २ कृत्रिम। बनावटी। ३. सांसारिक। लौकिक।

मजार—पु०[अ० मज़ार]१ कोई दर्शनीय स्थल। २ विशेषतः किसी पीर, फकीर या महापुरुष की कब्र।

मजारी*—स्त्री०[स० मार्जार] बिल्ली। बिड़ाल।

मजाल—स्त्री०[अ० मज़ाल] शक्तिमत्ता। सामर्थ्य। जैसे—उसकी क्या मजाल है जो मेरे सामने बोले। (प्राय नहिक प्रसंगो मे प्रयुक्त)

मंजिल*—स्त्री०=मंजिल।

मजिस्टर—पु०=मजिस्ट्रेट।

मजिस्ट्रेट—पु०[अ०] फौजदारी अदालत का अफसर।

मजिस्ट्रेटी—स्त्री०[अ० मजिस्ट्रेट+ई (प्रत्य०)]१ मजिस्ट्रेट होने की अवस्था या भाव। २ मजिस्ट्रेट का कार्य या पद। ३ मजिस्ट्रेट की अदालत।

मजीठ—स्त्री०[स० मंजिष्ठा] एक लता जिसके छोटे गोल फलों से लाल या गुलनार रंग तैयार किया जाता है।

मजीठी—वि०[हिं० मजीठ] मजीठ के रंग का। लाल। सुर्ख।
पु० उक्त प्रकार का रंग।
†स्त्री० दे० 'मजेठी'।

मजीद—वि०[अ० मजीद]१. जितना आवश्यक या उचित हो, उससे अधिक। ज्यादा। २ और भी।

मजीर—स्त्री०[स० मंजरी] मंजरी।

मजीरा—पु०[स० मंजीर] जोडी या ताल नाम का बाजा।

मजूर*—पु०=मयूर (मोर)।
†पु०=मजदूर।

मजूरा†—पु०=मजदूर।

मजूसा†—स्त्री०=मजूषा।

मजेज—वि०[फा० मिजाज] दर्प। अहकार।

मजेजवंत—वि०[हिं० मजेज+वंत (प्रत्य०)] दिमागवाला। अभिमानी।

मजेठी—स्त्री० [सं० मध्य] १. सूत कातने के चरखे में वह लकड़ी जो नीचे से उन दोनों डडों को जोड़े रहती है। २. सूत कातने के चरखे की डोरी या रस्सी। जौत। माल।

मजेदार—वि० [फा०मज़:दार] जिसमें विशेष मजा (आनंद, सुख या स्वाद) हो। जैसे—मजेदार बात, मजेदार मिठाई।

मजेदारी—स्त्री०[फा० मज़:दार+ई (प्रत्य०)] मजेदार होने की अवस्था या भाव।

†वि०=मजेदार।
मज्ज*—स्त्री०=मज्जा।
मज्जका—स्त्री०[सं० मज्जा से] १. शरीर की हड्डी के अंदर का गूदा। (मेंड्यला)
मज्जन—पुं०[सं०√मस्ज् (शुद्ध होना)+ल्युट्-अन्, स्—ज्] १. स्नान। २. किसी बात या विषय की गहराई में डूबना या लीन होना।
मज्जना*—अ०[सं० मज्जन] १ स्नान करना। नहाना। २ निमग्न या लीन होना।
मज्जा—स्त्री० [सं०√मस्ज्+अच्+टाप्] १. शरीर के अन्तर्गत नली की हड्डी के अन्दर का गूदा जो कोमल और चिकना होता है। २. पेड़-पौधों, फलों आदि के अन्दर का सार-भाग।
†स्त्री०[सं० मंजरी] बौर। मंजरी।
मज्जा-रस—पुं०[सं० ष० त०] पुरुष का वीर्य। शुक्र।
मझ—पुं०[सं० मध्य, प्रा० मज्झ] मध्य।
वि० मध्य का। बीच का।
क्रि० वि० बीच या मध्य में।
†स्त्री०[सं० महिषी] भैंस। (पश्चिम)
मझ—वि०, पुं०, क्रि० वि०=मध्य।
मझक्का†—पुं०[हिं० माथा+झाँकना] वर पक्षवालों का विवाह के उपरान्त दुल्हिन के घर जाकर की जानेवाली मुँह-देखनी की रसम।
मझधार—स्त्री०[हिं० मझ-मध्य+धार] १. नदी आदि के बीच की धारा। २. किसी काम या बात के मध्य की स्थिति।
मुहा०—(किसी को) मझधार में छोड़ना=(क) किसी को संकट की स्थिति में डालना। (ख) उक्त प्रकार की स्थिति में किसी का साथ छोड़ना। (कोई काम) मझधार में छोड़ना=अपूर्ण अवस्था में छोड़ना। अधूरा रहने देना।
मझरासिंगही—पुं०[हिं० मझरा ?+सींग] बैलों की एक जाति।
मझला—वि०[सं० मध्य, प्रा० मज्झ+ला (प्रत्य०)] [स्त्री० मझली] १. मध्य का। २ अवस्था, आकार आदि के विचार से दो के बीच का। एक छोटे और एक बड़े के बीच का। जैसे—(क) मझला भाई। (ख) मझली पुस्तक।
मझाना—अ० [सं० मध्य] १ मध्य या बीच में आना या पहुँचाना। २. प्रविष्ट होना।
स०१ मध्य या बीच में करना या लाना। २ प्रवेश कराना।
मझार†—क्रि० वि०[सं० मध्य, प्रा० मज्झ+आर (प्रत्य०)] मध्य में।
पुं० बीच या मध्य का अंश या भाग।
मझावना—अ०, स०=मझाना।
†अ०=मझियाना।
मझिया—स्त्री०[सं० मध्य, प्रा० मज्झ+इया (प्रत्य०)] उन पट्टियों में से हर एक जो गाड़ी, सग्गड़ आदि के पेंदे में लगी रहती है।
मझियाना—स०[हिं० माझ=मध्य+इयाना (प्रत्य०)] किसी चीज को मध्य में ले जाना।
अ० नाव खेना।
†अ०, स०=मझाना।
मझियारा—वि० [सं० मध्य, प्रा० मज्झ+इयारा (प्रत्य०)] १. मध्य संबंधी। २. जो मध्य में स्थित हो। बीच का। ३. मझला।
मझु—सर्व०१ =मैं। २.=मेरा।
मझुआ —पुं०[सं० मध्य, प्रा० मज्झ+उआ (प्रत्य०)] हाथ में पहनने की मठिया नामक चूड़ियों में कोहनी की ओर से पड़नेवाली दूसरी चूड़ी जो पछेला के बाद होती है।
मझेरू—पुं०[सं० मध्य, प्रा० मज्झ+एरू (प्रत्य०)] जुलाहों के ऊड़ी नामक औजार के बीच की लकड़ी।
मझेला—पुं०[देश०] एक तरह का सूजा जिससे मोची जूतों के तले सीते हैं।
†पुं०=झमेला।
मझोला—वि० [सं० मध्य, प्रा० मज्झ+ओला (प्रत्य०)] १. मध्यम आकार का। न बहुत छोटा और न बहुत बड़ा। २ मध्य या बीच का। मझला।
मझोली—स्त्री०[हिं० मझोला] १ एक प्रकार की बैलगाड़ी जिसमें प्राय जनानी सवारी बैठती है। २. टेकुरी की तरह का एक औजार जिससे जूते की नोक सी जाती है।
मट—पुं०=मटका।
उप० 'मिट्टी' का वह संक्षिप्त रूप जो समस्त पदों के आरंभ में लगता है। जैसे—मट-मैला।
मटक—स्त्री०[सं० मट=चलना+क (प्रत्य०)] मटकने की क्रिया, ढंग, मुद्रा या भाव।
पद—मटक-मटक।
२. गति। चाल। (क्व०)
मटकना—अ०[सं० मट=चलना] १ चलते या बातें करते समय कुछ नाज-नखरे तथा गर्वपूर्वक अपने को बार-बार हिलाने तथा लचकाते रहना। २ संकोचवश या और किसी कारण चल-विचल या इधर-उधर होना। उदा०—देखत रूप मदन मोहन को, पियत पियूख न मटके।—मीराँ।
†पुं०[हिं० मटका] १ छोटा मटका। २ पुरवा।
मटकनि—स्त्री०[हिं० मटकना] १ मटकने की क्रिया या भाव। मटक। २. मटककर चली जानेवाली चाल। ३ गति। चाल। ४ नखरा। ५ नाच। नृत्य।
मटका—पुं०[हिं० मिट्टी+क (प्रत्य०)] [स्त्री० अल्पा० मटकी] मिट्टी का घड़ा। मट। माट।
मटकाना—स०[हिं० मटकना का स०] १ किसी को मटकने में प्रवृत्त करना। २ किसी अंग में मटक लाना। ऐसी स्थिति में किसी को लाना कि वह हिलने-डुलने तथा लचकने लगे। नाज-नखरे से किसी अंग का संचालन करना। जैसे—कमर मटकाना, आँखें मटकाना।
मटकी—स्त्री० [हिं० मटका] छोटा मटका।
स्त्री० [हिं० मटकना] मटकने या मटकाने की क्रिया या भाव। मटक।
मुहा०—मटकी देना या मारना=स्त्रियों की तरह नखरे से आँखें, उँगलियाँ या हाथ हिलाकर इशारा या संकेत करना।
मटकीला—वि० [हिं० मटकना+ईला (प्रत्य०)] १ मटक दिखाने या मटकनेवाला। २. जिसमें किसी प्रकार की मटक हो। मटक से युक्त।

मटकौअल, मटकौवल—स्त्री० [हिं० मटकाना+औवल (प्रत्य०)] मटकने या मटकाने की क्रिया या भाव। जैसे—सूत न कपास जुलाहों से मटकौअल। (कहा०)

मटक्का—पुं० [हिं० मटकना या मटकाना] आँखें, उँगलियाँ, हाथ आदि मटकाने की क्रिया या भाव।

मटखौरा†—पु० [हिं० मट+खौर ?] एक प्रकार का हाथी जो दूषित माना जाता है।

मटना—पुं० [देश०] एक प्रकार की ईख।

मट-पीला—वि० [हिं० मट (उप०)+पीला] मटमैले या खाकी मिले पीले रंग का। कुछ पीलापन लिए हुए मिट्टी के रंग का।

मट-मंगरा—पु० [हिं० मट (उप०)+मंगल] विवाह के पहले की एक रीति जिसमे स्त्रियाँ गाती-बजाती हैं।

मटमैला—वि० [हिं० मिट्टी+मैला] मिट्टी के रंग का। खाकी।

मटर—पुं० [सं० मधुर या वर्तुल] १ एक प्रसिद्ध पौधा जिसकी फलियों मे गोल दाने रहते हैं और जिनकी तरकारी आदि बनाई जाती है। २ उक्त पौधे की फली या दाना। (पी)

मटर-गश्त—स्त्री०, [हिं० मट्ठर=मद+फा० गश्त] १. धीरे धीरे घूमना। २ निश्चिन्त होकर प्रसन्नतापूर्वक व्यर्थ इधर-उधर घूमना।

मटरगश्ती—स्त्री०=मटरगश्त।

मटर-बोर—पु० [हिं० मटर+बोर=घुँघरू] मटर के बराबर घुँघरू जो पाजेब आदि में लगते हैं।

मटराला—पु० [हिं० मटर+आला (प्रत्य०)] एक मे मिले हुए मटर और जौ के दाने अथवा उनका पीसा हुआ चूर्ण।

†वि०=मटमैला।

मटलनी—स्त्री० [हिं० मिट्टी] कच्ची मिट्टी का बरतन।

मटा—पु० [हिं० माटा] पेड़ो पर झुंडो मे रहनेवाला एक तरह का लाल रंग का च्यूंटा।

मटिआ†—वि०, पु०, स्त्री०=मटिया।

मटिआना—अ०, स०=मटियाना।

मटिया—वि० [हिं० मिट्टी] १. मिट्टी का सा। २ मिट्टी का बना हुआ। जैसे—मटिया सांप। ३. खाकी। मटमैला।

पु० मिट्टी का बरतन।

†स्त्री०=मिट्टी।

पु० [?] कजला या लटोरा नाम का पक्षी।

मटियाना—स० [हिं० मिट्टी] १. किसी चीज पर मिट्टी लगाना, अथवा मिट्टी से युक्त करना। २. (कपड़े) मिट्टी मे लथेड़ना। ३. बरतन, हाथ आदि मिट्टी मलकर धोना और साफ करना।

† अ०=महटियाना।

मटिया-फूस—वि० [हिं० मिट्टी+फूस] इतना अधिक जर्जर, वृद्ध और दुर्बल कि मानो मिट्टी और फूस के योग से बना हो।

मटिया-मसान—वि० [हिं० मटिया+मसान] १. बहुत ही तुच्छ या हीन। गया-बीता। २. टूटा-फूटा। नष्ट-प्राय।

पु० उजड़ा हुआ स्थान या खँडहर।

मटिया-मेट—पु० दे० 'मलिया-मेट'।

मटियार—पु० [हिं० मिट्टी+आर (प्रत्य०)] चिकनी मिट्टीवाला प्रदेश जो बहुत अधिक उपजाऊ होता है।

मटियार दुम्मट—स्त्री० [हिं०] ऐसी भूमि जिसमें मटियार और दुम्मट दोनों के तत्त्व हों। (क्ले लोम)

मटियाला—वि० =मटमैला।

मटीला—वि० [हिं० मट (उप०)+ईला (प्रत्य०)] १. जिसमें मिट्टी पड़ी या मिली हुई हो। जैसे—मटीला पानी। २. मटमैला।

मटुका—पुं०=मुकुट।

मटुका†—पु० [स्त्री० अल्पा० मटुकिया, मटुकी] =मटका।

मट्टी†—स्त्री०=मिट्टी।

मट्ठर—वि० [स० अठर=जो नशे में हो] चलने-फिरने और काम-धन्धा करने में सुस्त। काहिल।

मट्ठा—वि० [सं० मन्द] १ धीमा। मन्द। २. सुस्त।

पु०=मठा।

मट्ठी—स्त्री० [देश०] पूरी की तरह तला हुआ मैदे का बना हुआ एक मीठा पकवान।

मठ—पु० [स०√मठ् (निवास करना)+क] १. वह मकान जिसमें साधु-संन्यासी रहते हों। २. देवालय। मन्दिर। उदा०—मठ-पूतली पाखाण-मय।—प्रिथीराज।

मठधारी(रिन्)—पु० [सं० मठ√धृ (रखना)+णिनि, उप० स०] वह साधु या महंत जो मठ का प्रधान अधिकारी हो। मठाधीश।

मठ-पति—पु० [ष० त०]=मठधारी।

मठर—वि० [स० मन् (जानना)+अरन्, न्=ठ्] जो नशे में हो। मद-मत्त।

पु० एक प्राचीन ऋषि।

मठरना—पु० [?] कसेरो, सुनारों आदि का एक औजार जिससे वे धातु के पत्तरो या चद्दरो को पीटते हैं।

अ० पत्तर, चद्दर आदि का उक्त उपकरण से पीटा जाना।

स० दे० 'मठारना'।

मठरी (ली)†—स्त्री० [सं० मेठ]=मट्ठी।

मठा—पु० [स० मथन] दही का वह घोल जिसमें से मक्खन निकाल लिया गया हो। तक्र। मट्ठा। लस्सी।

मुहा०—मठे मूसल की हाँकना=बढ़-बढ़कर इधर-उधर की बातें कहना। उदा०—....गया था, अब लगा है मठा मूसल की हाँकने।—वृन्दावन लाल वर्मा।

मठाधीश—पु० [स० मठ-अधीश, ष० त०] मठ में रहनेवाले साधुओं का प्रधान। महन्त।

मठान—पु०=मठरना (औजार)।

मठारना—स० [हिं० मठरना] १. कसेरों, सुनारों आदि का मठरना नामक औजार से पत्तरों या चद्दरों को पीटना। २. पत्तरों, चद्दरों आदि को पीट कर गोलाई में लाना।

स० [?] १. गूँधे हुए आटे को इस प्रकार हाथों से मसलना तथा सँवारना कि उसमे लस उत्पन्न हो जाय। २. धीरे धीरे तथा बना-सँवार कर कोई बात कहना।

मठारा—पु० [हिं० मठारना] १. मठारने की क्रिया या भाव। २. किसी

बात को सुधारते-संवारते हुए उसकी पुष्टि करने की क्रिया या भाव। जैसे—उन्हें जो वक्तृता देनी थी, उसी पर मठारा दे रहे थे।
क्रि० प्र०—देना।

मठिया—स्त्री० [हिं० मठ+इया (प्रत्य०)] छोटा मठ।
स्त्री० [?] काँसे या फूल की बनी हुई चूड़ी।

मठी(ठिन्)—पु० [सं० मठ+इनि] मठ का अधिकारी। मठाधीश।
स्त्री० (हिं० मठ) छोटा मठ। मठिया।

मठुलिया, मठुली—स्त्री०=मट्ठी।

मठोठा†—पु० [?] कूएँ की जगत।

मठोर—स्त्री० [हिं० मट्ठा] १ वह बड़ी मटकी जिसमे दही मथा जाता है। २ नील पकाने का माठ।

मठोरना—स० [हिं० मठारना] १ किसी लकड़ी को खरादने के लिए रदा लगा कर ठीक करना। २ दे० 'मठारना'।

मठोलना—स० [हिं० मठोला+ना (प्रत्य०)] हस्त-मैथुन करना।

मठोला—पु० [हिं० मुट्ठी+ओला (प्रत्य०)] मुट्ठी मे लिंग पकडकर उसे सहलाते हुए वीर्य-पात करना। हस्त-मैथुन। उदा०—लड्डू मे न पेडे मे, न बर्फी मे मजा है, जो मर्दे-मुजर्रद के मठोलो मे मजा है। —नजीर।

मठौरा†—पु० [हिं० मठोरना] एक प्रकार का रदा जिससे लकड़ी रंद कर खरादने आदि के योग्य बनाते हैं।

मड़ई—स्त्री० [सं० मडपी] १ छोटा मडप। २ कुटिया। झोपड़ी।
† स्त्री०=मडी।

मडउआ†—पु०=मड़आ (मडप)।

मड़क—स्त्री० [अनु०] किसी बात के अन्दर छिपा हुआ हेतु। भीतरी सूक्ष्म आशय।

मड़मड़ाना—अ०, स० =मरमराना।

मड़राना—अ०=मँडराना।

मड़ला†—पु० [सं० मडल] अनाज रखने की छोटी कोठरी।

मडलाना—अ०=मँडराना। उदा०—अनुपम शोभा पर उसकी कितने न भँवर मडलाते।—निराला।

मड़वा—पु० [सं० मडप] १ मचान। २ मडप।
पद—**मड़वे तर की गाँठ**=विवाह के समय वर और वधू के दुपट्टो मे बाँधी जानेवाली गाँठ।

मड़वाना†—पु० [हिं० मँडवा=मडप] एक प्रकार का कर जो मध्य युग में जमीदार लोग अपने असामियों से उनके यहाँ विवाह होने पर लिया करते थे।

मड़वारी†—पु०=मारवाड़ी।

मड़हट†—पु०=मरघट।

मड़हा†—पु० [सं० मडप] मिट्टी या घास आदि का बना हुआ छोटा घर।
†पु० [?] भूना हुआ चना।

मड़ा†—पु० [हिं० मढ़ी] बड़ी कोठरी। कमरा।
पु०=माँडा (नेत्ररोग)।

मड़ाड़†—पु०=मडार।

मड़ार—पु० [देश०] १. तालाब। २ पोखरा।

मड़ियार—पु० [हिं० मारवाड़ ?] मारवाड में बसी हुई क्षत्रियो की एक जाति।

मड़आ—पु० [देश०] १ बाजरे की जाति का एक प्रकार का कदन्न जो बहुत प्राचीनकाल से भारत में बोया जाता है। वैद्यक मे इसे कसैला, कडआ,हलका, बलवर्द्धक और रक्त-दोष को दूर करनेवाला माना गया है। २ एक प्रकार का पक्षी।
†पु०=मडआ (मडप)।

मड़ैया—स्त्री०=मड़ई।

मड़ोड़—स्त्री०=मरोड।

मड़ोवी—स्त्री० [हिं० मरोडना+ई (प्रत्य०)] लोहे की छोटी पेंचदार कटिया।

मढ़—वि० [हिं० मढना] १ अडकर बैठनेवाला। २ जल्दी अपनी जगह से न हिलनेवाला। ३. मूढ।
† पु०=मठ। उदा०—काकर घर, काकर मढ़ माया।—जायसी।

मढ़ना—स० [सं० मडन] [भाव० मढाई] १ कोई चीज किसी दूसरी चीज पर चिपकाना, जडना, लगाना या सटाना। जसे—किताब पर जिल्द या दीवार पर कागज मढना। २ बहुत से गहनो से किसी को लादना। जैसे—आभूषणों से सुदरी मढी हुई थी। ३ कोई काम या बात बलपूर्वक किसी के जिम्मे लगाना। जैसे—किसी के सिर कोई काम मढ़ना। ४. व्यर्थ किसी के सिर कोई अपराध या दोष आरोपित करना। जैसे—काम तो तुमने बिगाडा, और कलक मेरे सिर मढ रहे हो।
क्रि० प्र०—डालना।—देना।
अ० (काम या बात) आरभ होना।
अ०=मडलाना। जैसे—आकाश मे बादल मढ आये है।

मढ़वाई—स्त्री० [हिं० मढवाना] मढ़वाने का कार्य तथा पारिश्रमिक।

मढ़वाना—स० [हिं० मढना का प्रे०] [भाव० मढवाई] मढने का काम दूसरे से कराना।

मढ़ा—पु० [हिं० मढी] १ मिट्टी का बना हुआ छोटा घर। बड़ी मढ़ी। २ दे० 'मढ़ा'।

मढ़ाई—स्त्री० [हिं० मढना] मढने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक।

मढ़ाना—स०=मढवाना।

मढ़ी—स्त्री० [सं० मठ] १ छोटा मठ। २ छोटा देवालय या मन्दिर। ३ कुटिया। झोंपड़ी। ४ छोटा मडप। ५ किसी सन्यासी के समाधि-स्थल के समीप बनी हुई कुटिया।

मढ़ैया—वि० [हिं० मढ़ना+ऐया (प्रत्य०)] मढनेवाला।
स्त्री०=मढ़ी।

मणि—स्त्री० [सं०√मण् (अव्यक्त शब्द)+इन्] १ बहुमूल्य रत्न। जवाहिर। २ किसी वर्ग का कोई सर्व-श्रेष्ठ पदार्थ या व्यक्ति। जैसे—रघुकुल मणि। ३. बकरी के गले मे लटकनेवाली थैली। ४. पुरुष की इन्द्रिय का अगला भाग। ५ योनि का अगला भाग। ७ घड़ा।

मणिक—पु० [सं० मणि+कन्] १ मिट्टी का घड़ा। २. योनि का अग्रभाग। ३ स्फटिक निर्मित प्रासाद।

मणि-कर्णिका—स्त्री० [मध्य० स०] १. मणियों से जड़ा हुआ कान मे पहनने का गहना। २. काशी का एक प्रसिद्ध घाट।
विशेष—पौराणिक कथा है कि शिव जी का मणि-जटित कुंडल उक्त स्थल पर उस समय गिरा था जब वे विष्णु की तपस्या से प्रसन्न होकर झूम उठे थे।
मणि-कानन—पु० [ष० त०] गला। कंठ।
मणिकार—पु० [स० मणि√कृ (करना)+अण्] जौहरी।
मणि-कूट—पु० [ब० स०] कामरूप के पास का एक पर्वत। (पुराण)
मणि-केतु—पु० [उपमि० स०] एक बहुत छोटा पुच्छल तारा जिसकी पूँछ दूध-सी सफेद मानी गई है।
मणि-गुण—पु० [ब० स०] एक प्रकार का वर्णिक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में चार नगण और एक सगण होता है। शशिकला। शरभ।
मणिगुण-निकर—पु० [स० ष० त०] मणि-गुण नामक छंद का एक भेद जो उसके ८वें वर्ण पर विराम करने से बनता है।
मणि-ग्रीव—पु० [ब० स०] कुबेर का एक पुत्र।
मणिच्छिद्रा—स्त्री० [ब० स०] १ मेधा नाम की ओषधि। २ ऋषभा नाम की ओषधि।
मणि-जला—स्त्री० [ब० स०] महाभारत के अनुसार एक प्राचीन नदी।
मणि-तारक—पु० [ब० स०] सारस।
मणि-दीप—पु० [स० मणिदीप] १ मणिजटित दीपक। २. दीपक की तरह प्रकाश करनेवाला रत्न।
मणि-द्वीप—पु० [मध्य० स०] पुराणानुसार रत्नो का बना हुआ एक द्वीप जो क्षीरसागर मे है। इसी मे त्रिपुर सुदरी का निवास माना गया है।
मणि-धनु(स्)—पु० [मध्य० स० या उपमि० स०] इंद्र का धनुष।
मणि-धर—पु० [ष० त०] सर्प। साँप।
मणिपुर—पु० [ष० त०] १ भारत तथा बर्मा की सीमा पर स्थित केन्द्र-शासित भारतीय प्रदेश। २. उक्त प्रदेश की राजधानी।
मणिपूर—पु० [स० मणिपुर] सुषुम्ना नाड़ी के अदर माने जानेवाले छ. चक्रों मे से तीसरा चक्र जो नाभिक्षेत्र मे स्थित है।
मणि-बंध—पु० [सुप्सुपा स०] १. एक नवाक्षरी वृत्त जिसके प्रति चरण में भगण, मगण और सगण होते हैं। २ कलाई। पहुँचा।
मणि-बीज—पु० [ब० स०] अनार का पेड़।
मणिभ—पु० [स०] किसी तरल घोल को सुखाकर उसके बनाये हुए छोटे नुकीले कण। रवा (क्रिस्टल)
मणि-भद्र—पु० [ब० स०] एक यक्ष।
मणि-भित्ति—स्त्री० [ब० स०] शेषनाग का प्रासाद।
मणिभीकरण—पु० [सं०] ऐसी क्रिया करना जिससे कोई तरल घोल स्फटिक का रूप ग्रहण कर ले। निश्चित और ठोस आकार धारण करना। (क्रिस्टेलाइजेशन)
मणिभू—स्त्री० [ष० त०] वह क्षेत्र विशेषत खान जिसमें रत्न हो।
मणि-मंडप—पु० [मध्य० स०] १. मणियों से सजाया हुआ मंडप। २. शेषनाग का प्रासाद।
मणिमध्य—पु० [ब० स०] मणिबंध नामक छद।
मणिमय—पु० [सं० मणि+मयट्] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।
वि० मणि या मणियों से युक्त।
मणिमान्(मत्)—वि० [सं०मणि+मतुप्] मणि-युक्त।
पु० १. सूर्य। २. एक प्राचीन पर्वत।
मणि-माला—स्त्री० [ष० त०] १ मणियो अर्थात् रत्नो की माला। २. लक्ष्मी। ३. चमक। ४. बारह अक्षरो का एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में तगण, यगण, तगण, यगण होते हैं। ५. आभा। चमक।
मणिमेघ—पु० [सं०] दक्षिण भारत का एक पर्वत। (पुराण)
मणि-राग—पु० [ब० स०] १. हिंगुल। शिंगरफ। २ रत्न का रंग।
मणि-राजी—स्त्री० [ष० त०] मणियों का समूह। उदा०—देख बिखरती है मणिराजी, अरी उठा बेसुध चचल।—प्रसाद।
मणि-रोग—पु० [ष० त०] पुरुषेंद्रिय संबधी एक रोग।
मणि-शैल—पु० [ष० त०] मदराचल के पूर्व मे स्थित एक पर्वत। (पुराण)
मणि-श्याम—पु० [स० त०] नीलम।
मणि-सर—पु० [सुप्सुपा स०] मोतियों की माला।
मणि-सोपानक—पु० [मध्य० स०] सोने के तार मे पिरोए हुए मोतियों की ऐसी माला जिसके बीच मे रत्न हो। (कौ०)
मणी—स्त्री० [सं० मणि+ङीष्]=मणि।
मणीचक—पु० [स० मणी√चक् (प्रतिघात करना)+अच्] १. चन्द्रकात मणि। २ पुराणानुसार शाक-द्वीप के एक वर्ष का नाम। ३. एक प्रकार की चिड़िया।
मतंग—पु० [सं०] १. हाथी। २. बादल। मेघ। ३. एक प्राचीन तीर्थ। ४. एक प्राचीन ऋषि जो शबरी के गुरु थे। ५. कामरूप के अग्नि-कोण का एक प्राचीन देश।
मतंगज—पु० [स०√मद् (मस्त होना)+अगच्, द्—त्,+ √जन्ड] हाथी।
मतगा—पु० [सं० मतंग] एक प्रकार का बाँस जो बगाल और बरमा मे होता है।
मतंगी (गिन्)—पु० [स० मतग+इनि, दीर्घ,] हाथी का सवार।
मत—पु० [सं०√मन्+क्त] १ सोच-समझकर निश्चित की हुई बात। २. अपने निजी विचारों के रूप मे किसी विषय के सबध मे कही या प्रकट की जानेवाली बात। सम्मति। जैसे—दूसरों को सब कोई मत देता है। ३ धर्म-ग्रथों अथवा ऋषि-मुनियो द्वारा प्रतिपादित अथवा समर्थित कोई कथन या सिद्धात। (डाक्ट्रिन) ४ किसी विशिष्ट धर्म-ग्रथ या महापुरुष के सिद्धात का अनुयायी सप्रदाय। पथ। ५ लोक-तत्र के क्षेत्र में, अपना प्रतिनिधि चुनने के लिए किसी व्यक्ति अथवा समाज को प्राप्त वह अधिकार जिससे वह अपनी इच्छा, रुचि आदि के अनुकूल दो या अधिक व्यक्तियो, पक्षो आदि मे से किसी एक या कुछ का अधिकारिक रूप से समर्थन कर सकता है। वोट। (वोट)
विशेष—मत दो प्रकार से दिया जाता है। एक तो सभाओं आदि मे खुले-आम हाथ उठाकर और दूसरे गुप्त रूप से परचियाँ डालकर।
६ उक्त के द्वारा किसी का किया जानेवाला समर्थन। जैसे—इस चुनाव में समाजवादी उम्मीदवारों को १५००० मत मिले थे।
स्त्री०=मति।
अव्य० [सं० मा] निषेध-वाचक शब्द। न। नहीं। जैसे—वहाँ मत जाया करो।

मत-क्षेत्र—पु० दे० 'निर्वाचन-क्षेत्र'।

मत-गणना—स्त्री० [ष० त०] दे० 'जनमत-संग्रह'।

मत-दाता (तृ)—पु० [ष० त०] वह व्यक्ति जिसे लोकतंत्र के क्षेत्र में मत देने, विशेषतः निर्वाचन आदि में मत देने का अधिकार हो।

मतदान—पु० [ष० त०] किसी विचारणीय विषय के संबंध में अथवा किसी प्रकार के चुनाव के समय किसी के पक्ष में अपना मत देने की क्रिया। (वोटिंग)

मतदान-केंद्र—पु० [ष० त०] वह केन्द्र या स्थान जहाँ निर्वाचन के समय किसी विशिष्ट क्षेत्र में मतदाता आकर मत देते हैं। (पोलिंग स्टेशन)

मतदान-कोष्ठ—पु० [ष० त०] जिसमें रखी हुई पेटी में मत-पत्र छोड़ा जाता है। (पोलिंग-बूथ)

मतदान-पेटिका—स्त्री० [ष० त०] वह पेटी जिसमें मतदाताओं द्वारा मत-पत्र छोड़े या डाले जाते हैं। (बैलट-बॉक्स)

मतना—अ० [स० मति+हिं० ना (प्रत्य०)] किसी विषय में अपना मत सम्मति निश्चित या प्रकट करना।
†अ०=मातना (उन्मत्त होना)।

मत-पत्र—पु० [ष० त०] वह परची जिस पर किसी विशेष उम्मीदवार या पक्ष के समर्थन मे चिह्न आदि बनाकर उसे मतदान पेटिका मे डाला जाता है। (वोटिंग-पेपर)

मत-परिवर्तन—पु० [स० ष० त०] अपना मत या विचार अथवा धर्म, सप्रदाय आदि छोड़कर दूसरा मत या विचार अथवा धर्म, संप्रदाय आदि ग्रहण करना। (कन्वर्सन)।

मत-बंध—पु० [ष० त०] १ किसी विवादास्पद विषय से सबध रखनेवाले सभी प्रकार के मतों या विचारों की गवेषणा करके उस पर अपना आधिकारिक मत प्रकट करना। (डिस्सर्टेशन) २ दे० 'शोध-निबंध'।

मत-भेद—पु० [ष० त०] वह अवस्था जिसमें किसी दल, वर्ग या समूह के सदस्यो मे किसी विषय में एक मत नही, बल्कि दो या कई मत होते है।

मतरिया†—स्त्री० [हिं० माता] माता। माँ।
मुहा०—मतरिया बहिनिया करना=किसी को माँ-बहन की गालियाँ देना और उससे ऐसी ही गालियाँ सुनना।
वि० [स० मत्र] १ मंत्र देनेवाला। मंत्री। २ मंत्र से प्रभावित किया हुआ। मंत्रित।

मतरूक—वि० [अ०] त्याग किया या छोड़ा हुआ। त्यक्त। परित्यक्त।

मतलब—पु० [अ० मतलबी] १ मन मे रहनेवाला आशय या उद्देश्य। अभिप्राय। २. पद, वाक्य या शब्द का अर्थ। माने। ३ अपने भला या हित का विचार। स्वार्थ।
पद—मतलब का यार=सदा अपने स्वार्थ का ध्यान रखनेवाला व्यक्ति। स्वार्थी।
मुहा०—मतलब गाँठना=स्वार्थ साधन करना। **(अपना) मतलब निकालना**=स्वार्थ सिद्ध करना। **मतलब हो जाना**=(क) स्वार्थ सिद्ध हो जाना। (ख) पूरी दुर्गति या दुर्दशा हो जाना। (व्यंग्य)
४ सम्पर्क। सबध। वास्ता। जैसे—हमारा उनसे कोई मतलब नही है।

मतलबिया—वि०=मतलबी।

मतलबी—वि० [अ० मतलबी+ई (प्रत्य०)] अपना ही मतलब निकालनेवाला। स्वार्थ-परायण। स्वार्थी। खुदगरज।

मतला—पु० [अ० मत्ल] गजल का पहला शेर जिसके मिस्रे सानुप्रास होते हैं।

मतली—स्त्री०=मिचली।

मतलूब—वि० [अ० मत्लूब] १. चाहा हुआ। जिसकी इच्छा हो। अभिप्रेत। २. प्रिय।

मतवा†—स्त्री०=माता।

मतवार†—वि०=मतवाला।

मतवाल—स्त्री० [हिं० मतवाला] १. मतवालापन। मत्तता। २. मतवालों या पागलो की तरह का कोई काम। उदा०—करत मतवाल जहँ सन्त जन सूरमा . ।—कबीर।

मतवाला—वि०,पु० [स० मत्त+हिं० वाला (प्रत्य०)] [स्त्री० मतवाली] १ नशे आदि के कारण मस्त। नशे में चूर। २. किसी प्रकार के अभिमान या मद के कारण मस्त और ला-परवाह। ३ उन्मत्त। पागल।
पु० १ वह भारी पत्थर जो किले या पहाड़ पर से नीचे के शत्रुओ को मारने के लिए लुढ़काया जाता है। २. कागज का बना हुआ एक प्रकार का खिलौना जो जमीन पर फेकने से सीधा खड़ा रहकर इधर-उधर हिलता रहता है।

मत-संग्रह—पु० [ष० त०] किसी प्रश्न पर मत-दान की परिपाटी के द्वारा लोगो के मत एकत्र करना।

मत-सुन्न—वि० [स० मत-शून्य] मूर्ख।

मत-स्वातंत्र्य—पु० [ष० त०] प्रत्येक व्यक्ति को अपना मत या विचार प्रकट करने की स्वतंत्रता।

मता†—पु०=मत (विचार)।
†स्त्री०=मति।

मताधिकार—पु० [मत-अधिकार; ष० त०] किसी चुनाव या विषय मे मत (या वोट) देने का अधिकार जो शासन से प्राप्त हो। प्रतिनिधिक सस्थाओं के सदस्य या प्रतिनिधि निर्वाचित करने मे वोट या मत देने का अधिकार। (फ्रैंचाइज)

मताधिकारी (रिन्)—पु० [स० मताधिकार+इनि,] मत देने का अधिकारी। वोटर।

मताना*—अ० [स० मत+हिं० ना (प्रत्य०)] मत्त या मस्त होना। उदा०—पाइ बहै कज मे सुगध राधिका की, मजु ध्याए कदलीबन मतंग लौं मताए हैं।—रत्ना०।
स० मत्त या मस्त करना।

मतानुज्ञा—स्त्री० [मत-अनुज्ञा, ष० त०] २१ प्रकार के निग्रह स्थानों में से एक। (न्याय-दर्शन)

मतानुयायी (यिन्)—पु० [स० मत-अनुयायिन्, ष० त०] किसी मत का अनुयायी। मतावलबी।

मतारी†—स्त्री० =महतारी (माता)।

मतार्थना—स्त्री० [स० मत+अर्थना] चुनाव आदि के अवसरों पर लोगो के पास जाकर उनसे अपने पक्ष में मत माँगने या उन्हे अपने अनुकूल करने की क्रिया या भाव। (कैन्वेसिंग आँफ वोट्स)

मतावलंबी (बिन्)—पुं०[मत-अवलंबिन्, ष० त०] किसी मत, सिद्धान्त आदि का अनुयायी। जैसे—जैन मतावलंबी।

मताही†—स्त्री० [हिं० माता=चेचक] चेचक या माता का रोग जो कहीं कुछ दूर तक फैला हो। (पूरब)
क्रि० प्र०—फैलना।

मति—स्त्री० [सं०√मन्+क्तिन्] १. बुद्धि। अक्ल। २. राय। सम्मति। ३. इच्छा। कामना। ४. याद। स्मृति। ५. साहित्य में एक संचारी भाव। यह उस समय माना जाता है जब कोई अनुचित बात हो जाती है तब उसके बाद नीति की कोई बात सूझती है।
वि० १ बुद्धिमान। २. चतुर। चालाक।
†अव्य०=मत।

मति-दर्शन—पुं० [सं० ष० त०] वह शक्ति जिसके अनुसार दूसरे की योग्यता का पता लगाया जाता है।

मतिदा—स्त्री० [सं० मति√दा (देना)+क,+टाप्] १. ज्योतिष्मती नाम की लता। २. सेमल। शाल्मलि।

मतिन†—अव्य० [सं० मत् या वत्?] सदृश। समान। (पूरब)
†अव्य०=मत (निषेधार्थक)।

मतिभंगी (गिन्)—वि० [सं० मति√भञ्ज् (नष्ट करना)+णिनि] मति या बुद्धि नष्ट करनेवाला।

मति-भ्रंश—पुं० [सं० ष० त०] वह अवस्था जिसमें बुद्धि कुछ भी सोच-समझ सकने में असमर्थ होती है। बुद्धि-भ्रंश।

मति-भ्रम—पुं० [सं० ष० त०] अस्वस्थ अथवा विकृत बुद्धि या समझ के कारण होनेवाला वह भ्रम जिसके फलस्वरूप मनुष्य कुछ का कुछ समझने लगता है, अथवा उसे किसी अवास्तविक घटना या दृश्य का भान होने लगता है। (हैल्यूसिनेशन)

मतिमंत—वि० [सं० मतिमत्] बुद्धिमान्। चतुर।

मति-मंद—वि० [सं० मंदमति] मूर्ख।

मति-मांद्य—पुं० [ष० त०] मति-मंद होने की अवस्था या भाव।

मतिमान् (मत्)—वि० [सं० मति+मतुप्] बुद्धिमान। समझदार।

मतिमाह*—वि०=मतिमान्।

मतिवंत—वि०=मतिमत।

मती—वि० [सं० मतिमान्] १ किसी प्रकार का मत या राय रखनेवाला। २. किसी मत या सम्प्रदाय का अनुयायी।
†स्त्री० [सं० मति] =मत (विचार या संप्रदाय)।
अव्य०=मत (निषेधात्मक)।

मतीरा—पुं० [सं० मेट] तरबूज।

मतीस—पुं० [देश०] एक प्रकार का बाजा।

मतेई—स्त्री० [सं० विमातृ मि० पं० मतरई=विमाता] माता की सौत। विमाता।

मतैक्य—पुं० [सं० मत+ऐक्य] किसी विषय में दो या अधिक व्यक्तियों का एक ही मत या राय होना। मत या विचार में होनेवाली एकता या समानता।

मत्कुण—पुं० [सं० कर्म० स०] खटमल।

मत्त—वि० [सं०√मद् (मतवाला होना)+क्त] १. नशे आदि में चूर। मस्त। २. किसी बात की अधिकता के कारण जिसमें विवेक न रह गया हो। जैसे—धन-मत्त। ३. किसी प्रकार के मनोवेग के पूर्ण आवेश से युक्त। ४. किसी काम या बात के पीछे मतवाला। जैसे—रण-मत्त। ५. उन्मत्त। पागल। ६. बहुत अधिक प्रसन्न।
पुं० १. मतवाला हाथी। २. धतूरा। ३. कोयल।
†स्त्री०=मात्रा।

मत्तक—वि० [सं० मत्त+कन्] जो कुछ-कुछ मत्त हो।

मत्तकाशी—वि० [सं०] [स्त्री० मत्तकाशिनी] अत्यन्त रूपवान। परम सुन्दर।

मत्तकोकिल—पुं० [सं० कर्म० स०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

मत्त-गयंद—पुं० [सं० मत्त+हिं० गजेन्द्र] सवैया छंद का एक भेद जिसके प्रत्येक चरण में ७ भगण और २ गुरु होते हैं।

मत्तता—स्त्री० [सं० मत्त+तल्+टाप्] मत्त होने की अवस्था या भाव। मस्ती।

मत्तताई†—स्त्री०=मत्तता।

मत्त-मयूर—पुं० [सं० मध्य० स०] पद्रह अक्षरों का एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः यगण, मगण, यगण, सगण, और फिर मगण होता है।

मत्त-वारण—पुं० [सं० कर्म० स०] १ बरामदा। २. आँगन के पास या सामने की छत। ३. मस्त हाथी। ४. सुपारी का चूर्ण।

मत्ता—स्त्री० [सं० मत्त+टाप्] १. बारह अक्षरो का एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में मगण, भगण, सगण और एक गुरु होता है और ४, ६ पर यति होती है। २. मदिरा। शराब।
स्त्री० [सं० मत् का भाव] सं० मत का वह रूप जो भाव वाचक शब्द बनाने के लिए प्रत्यय के रूप में अन्त में लगता है। जैसे—नीतिमत्ता, बुद्धिमत्ता आदि।
†स्त्री०=मात्रा।

मत्ता-क्रीड़ा—स्त्री०[सं० ब० स०] तेईस अक्षरों का एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः दो मगण, एक तगण, चार नगण एक लघु और एक गुरु अक्षर होता है।

मत्था—पुं० [सं० मस्तक] १. ललाट। मस्तक। माथा। २. किसी पदार्थ का अगला या ऊपरी भाग।

मत्थे—क्रि० वि०[हिं० माथा] १. मस्तक या सिर पर। २. किसी पर उत्तरदायित्व, भार आदि के रूप में।
मुहा०—**(किसी के) मत्थे मढ़ना**=जबरदस्ती देना। जैसे—यह काम तुम्हारे मत्थे पड़ेगा। **(कोई बात किसी के) मत्थे मढ़ना**=बलात् किसी पर कोई दोष मढ़ना।

मत्य—पुं० [सं० मत+यत्] १ पटेला। हेंगा। २. ज्ञान-प्राप्ति का साधन।

मत्सर—पुं० [सं०√मद्+सरन्] १ द्वेष। विद्वेष। २ द्वेष-जन्य और ईर्ष्यापूर्ण मानसिक स्थिति। ३. क्रोध। गुस्सा।

मत्सरी (रिन्)—पुं० [सं० मत्सर+इनि, दीर्घ] मत्सर करनेवाला व्यक्ति। जिसके मन में मत्सर हो।

मत्स्य—पुं०[सं०√मद्+स्यन्] १. मछली। २. विष्णु के दस अवतारों में से पहला अवतार जो मछली के रूप में हुआ था। ३ ज्योतिष में मीन नामक राशि। ४. नारायण। ५. प्राचीन विराट देश का दूसरा नाम।

६ पुराणानुसार सुनहले रंग की एक प्रकार की शिला जिसका पूजन करने से मुक्ति होना माना जाता है। ७ छप्पय छद के २३वे भेद का नाम। ७ दे० 'मत्स्य-पुराण'।

मत्स्य-गंधा—स्त्री० [सं०ब०स०, +टाप्] १ सत्यवती (व्यास की माता)। २ जल-पीपल।

मत्स्यजीवी (विन्)—पु० [सं० मत्स्य√जीव् (जीना) +णिनि, उप० स०] मछुआ। धीवर।

मत्स्य-द्वादशी—स्त्री० [मध्य० स०] अगहन सुदी द्वादसी।

मत्स्य-द्वीप—पु० [मध्य० स०] पुराणानुसार एक द्वीप।

मत्स्य-नारी—स्त्री० [कर्म०म०] १. वह जो आकृति मे आधी मछली हो और आधी नारी। विशेषत. जिसका धड से ऊपरी भाग नारी का हो और शेष भाग मछली का। (एक प्रकार का काल्पनिक प्राणी) २ सत्यवती।

मत्स्यनाशक—पु० [ष० त०] कुरर पक्षी।

मत्स्यनाशन—पु० =मत्स्यनाशक।

मत्स्यनी—स्त्री०[स०] देशो की पाँच प्रकार की सीमाओ मे से वह सीमा जो नदी या जलाशय आदि के द्वारा निर्धारित हो।

मत्स्य-न्याय—पु० [ष० त०] १ यह मान्यता कि छोटो को बडे अथवा दुर्बलो को सबल उसी प्रकार खा जाते या नष्ट कर देते है जिस प्रकार बडी मछलियाँ छोटी मछलियो को खा जाती है। २ अराजको या आततायियो का राज्य।

मत्स्य-पालन—पु० [ष०त०] मछलियाँ पालकर उनकी पैदावार बढ़ाने का काम। (पिसीकल्चर)

मत्स्य-पुराण—पु० [मध्य० स०] अठारह पुराणो मे से एक पुराण जो महापुराण माना जाता है।

मत्स्य-बध—पु० [ष० त०] मछलियाँ पकडनेवाला। मछुआ। धीवर।

मत्स्य-बंधन—पु० [ष० त०] मछली पकडने की बशी। कँटिया।

मत्स्य-मुद्रा—स्त्री० [मध्य० स०] तान्त्रिको की एक मुद्रा।

मत्स्य-राज—पु० [ष० त०] १ रोहू मछली। रोहित। २ विराट-नरेश।

मत्स्य-वेधनी—स्त्री० [ष० त०] मछली फँसाने की बसी। कँटिया।

मत्स्य-संवर्धन—पु० [ष० त०] मत्स्य-पालन।

मत्स्याक्षी—स्त्री०[मत्स्य-अक्षि, ब० स०,+षच्,+ङीष्] १ सोम लता। ब्राह्मी बूटी। ३ गाँडर। दूब।

मत्स्यादिनी—स्त्री० [मत्स्य-अदिनी, सुप्सुपा स०] १ जल पीपल। ३ दे० 'मत्स्याक्षी'।

मत्स्यावतार—पु० [मत्स्य-अवतार, ष० त०] भगवान विष्णु का पहला अवतार जिसमे उन्होने मत्स्य का रूप धारण किया था।

मत्स्याशन—वि० [सं० मत्स्य√अश् (खाना) +ल्यु-अन] मछली खानेवाला।

पु० मछरग नामक पक्षी।

मत्स्यासन—पु० [मत्स्य-आसन, मध्य०स०, ष० त०]तान्त्रिकों के अनुसार योग का एक आसन।

मत्स्येंद्रनाथ—पु० [सं०] एक प्रसिद्ध हठयोगी महात्मा जो गोरखनाथ के गुरु थे।

मत्स्योदरी—स्त्री०[मत्स्य-उदरी, ब० स०,+ङीष्] सत्यवती। मत्स्यगंधा।

मत्स्योपजीवी (विन्)—पु० [सं० मत्स्य,+उप√जीव्(जीना)+णिनि] मछुआ। धीवर।

मथन—पु० [सं०√मथ् (मथना)+ल्युट्—अन] १. मथने की क्रिया या भाव। बिलोना। २ एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र। ३. गनियारी नामक वृक्ष।

वि० १ नष्ट करनेवाला। २ मार डालने या बध करनेवाला। (यौ० के अन्त में) जैसे—मदन-मथन।

मथना—स० [स० मथन या मथन] १ मथानी आदि के द्वारा दूध या दही को इस प्रकार चलाना या हिलाना कि उसमें से मक्खन निकल आये। सयो० क्रि०—डालना।—देना।—लेना।

२ कई चीजो को हिला-डुलाकर एक मे मिलाना। ३ अस्त-व्यस्त या नष्ट-भ्रष्ट करना। ४ कुछ जानने या पता लगाने के लिए जगह-जगह ढूँढ़ना या देखना। जैसे—(क) बडे-बड़े शास्त्र मथना। (ख) किसी को ढूँढने के लिए सारा शहर मथना। ५ कोई क्रिया बहुत अधिक या बार बार करना। जैसे—तुम तो एक ही बात लेकर मथने लगते हो। ६ अच्छी तरह पीटना या मारना।

पु० मथानी। रई।

मथनियाँ†—स्त्री०=मथनी।

मथनी—स्त्री० [हिं० मथना] १ मथने की क्रिया या भाव। २ वह मटका जिसमे दही मथा जाता है। ३ मथानी। रई।

मथवाह†—पु० [हिं० माथा+वाह (प्रत्य०)] सिर मे होनेवाला दर्द।

पु० =महावत।

मथाई—स्त्री० [हिं० मथना+आई (प्रत्य०)] १ मथने की क्रिया या भाव। २ मथने की मजदूरी।

मथाना—स० [हिं० मथना] मथने का काम किसी दूसरे से कराना।

अ० (दही आदि का) मथा जाना।

पु० बडी मथानी।

मथानी—स्त्री० [हिं० मथना] काठ का बना हुआ एक प्रकार का उपकरण जिसकी सहायता से दही मथकर मक्खन निकाला जाता है।

मुहा०—मथानी पड़ना या बहना=खलबली मचना।

मथाव—पु० [हिं० मथना+आव (प्रत्य०)] मथने की क्रिया या भाव।

मथित—भू० कृ० [स०√मथ् (मथना)+क्त] १ जिसका मथन या मथन किया गया हो। मथा हुआ। २ घोलकर अच्छी तरह मिलाया हुआ।

मथितार्थ—पु० [स० मथित-अर्थ, कर्म० स०] १ वह अर्थ या आशय जो किसी विषय का मथन या मथन करने पर निकलता है। २. सारांश।

मथुरा—स्त्री० [स०√मथ् (मथना)+उरच्+टाप्] पश्चिमी उत्तर प्रदेश की एक प्रसिद्ध नगरी, जिसकी गिनती सात मोक्षदायिका पुरियो मे होती है।

मथुरिया—वि० [हिं० मथुरा+इया (प्रत्य०)] मथुरा का। जैसे—मथुरिया चौबे।

मथूल†—पु०=मस्तूल। उदा०—जानी के सोक जल जान की मथूल किधौं।—रत्नाकर।

मथौरा†—पु० [हिं० मथना] बढइयो का एक उपकरण या औजार।

मथौरी—स्त्री० [हिं० माथा+औरी (प्रत्य०)] एक गहना जो स्त्रियाँ सिर पर पहनती हैं।

मथ्था—पुं०=माथा।

मर्दग—पुं० [सं० मृदंग] एक प्रकार का बाँस।

मदंती—स्त्री० [सं०] विकृत धैवत की चार श्रुतियों में से दूसरी श्रुति।

मदंध—वि०=मदांध।

मद—पुं० [सं०√मद्+अप्] १ मादक द्रव्य खाने या पीने से होनेवाली वह उद्वेगपूर्ण अवस्था जिसमें मस्तिष्क ठीक तरह से काम नहीं करता। नशा। २. अपनी किसी विशिष्टता या श्रेष्ठता के कारण उत्पन्न होनेवाली वह मानसिक स्थिति जिसमे मनुष्य औरों को इस प्रकार तुच्छ या हीन समझने लगता है, मानों उसने किसी मादक द्रव्य का सेवन किया हो। निदनीय अहंकार या गर्व। यह अभिमान का एक निकृष्ट प्रकार माना जाता है। ३ उन्मत्तता। पागलपन। ४ अज्ञान या प्रमाद के कारण होनेवाला मतिभ्रम। ५ वह मानसिक अवस्था जिसमें यौवन अथवा किसी प्रकार की वासना के कारण उचित-अनुचित या भले-बुरे का विशेष ध्यान नहीं रह जाता। मस्ती।

मुहा०—**मद पर आना**=(क) युवा होना। (ख) तीव्र या प्रबल उमंग में होना। (ग) काम-वासना से उन्मत्त होना।

६ वह गधयुक्त द्राव जो मतवाले हाथियों की कनपटियो से बहता है। दान। ७ मद्य। शराब। ८ कस्तूरी। ९. शहद। १०. वीर्य। ११ कामदेव। मदन।

वि० १ मतवाला। मत्त। २ बहुत अधिक प्रसन्न या मत्त।

स्त्री० [अ०] १ वह लंबी लकीर जिसके नीचे लेखा या हिसाब लिखा जाता है। शीर्षक। २. लेखे या हिसाब का वह विशिष्ट भाग जो किसी कार्य या व्यक्ति के नाम से अलग रखा जाता है। खाता। जैसे—ये १०) भी इसी मद मे लिखे जायँगे। ३. कार्य या कार्यालय का विभाग। सरिश्ता। ४. समुद्र की ऊँची लहर। ज्वार।

मदक—स्त्री० [हिं० मद+क (प्रत्य०)] तबाकू की तरह पीने का एक मादक पदार्थ जो अफीम के योग से बनाया जाता है।

मदकची—पुं० [हिं० मदक+ची (प्रत्य०)] वह जो मदक पीता हो। मदक पीनेवाला।

मदकट—पुं० [सं० मद√कट् (प्रकट करना)+अच्] १. साँड। २. २. नपुंसक।

मद-कर—वि० [ष० त०] जिससे मद उत्पन्न हो। मद-कारक।

पुं० धतूरा।

मद-कल—वि० [ब० स०] [स्त्री० मद-कला] १. मत्त। मतवाला। २. उन्मत्त। पागल। ३. जो किसी प्रकार के मद से विह्वल हो रहा हो।

मदकी—पुं०=मदकची।

मदकृत्—वि० [सं० मद√कृ (करना)+क्विप्+तुक्] १. उन्माद-कारक। २. मादक।

मदखूला—स्त्री० [अ० मद्खूल:] वह स्त्री जिसे कोई बिना विवाह किये ही पत्नी बनाकर अपने घर में रख ले। गृहीता। रखनी।

मद-गंध—पुं० [ब० स०] १. छतिवन। २. मद्य। शराब।

मदगंधा—स्त्री० [सं० मदगंध+टाप्] १. मदिरा। शराब। २. अतसी। अलसी।

मद-गमन—पुं० [ब० स०] भैंसा। महिष।

मदगल—वि० [सं० मदकल] मत्त। मस्त।

पुं०=मगदल (मिठाई)।

मदगलित—वि० [सं० मदकल] मदमत्त। उदा०—गमे गमे मदगलित गुडंता। —प्रिथीराज।

मदघ्नी—स्त्री० [सं० मद√हन् (मारना)+ट+ङीप्] पोई नाम का साग। पूतिका।

मद-जल—पुं० [स० कर्म० स०] हाथी का मद। दान।

मदत—स्त्री०=मदद।

मदद—स्त्री० [अ०] १. वह कार्य या सेवा जो किसी कार्यकर्ता के काम के संपादन में की जाय। सहायता। २. वह धन जो किसी को उद्देश्य-सिद्धि, जीविका, निर्वाह आदि के लिए उसे दिया जाय। ३ वे पदार्थ या व्यक्ति जो किसी काम को पूरा करने के लिए भेजे जायँ। ४. नौकरों, मजदूरों आदि को दिया या बाँटा जानेवाला पारिश्रमिक अथवा वेतन का कुछ अंश।

क्रि० प्र०—बाँटना।

मदद-खर्च—स्त्री० [अ० मदद+फा० खर्च] १. वह धन जो किसी को सहायता के लिए दिया जाय। २ किसी काम के लिए अग्रिम दिया जानेवाला धन। पेशगी।

मददगार—वि० [अ० मदद+फा० गार (प्रत्य०)] मदद या सहायता करनेवाला। सहायक।

मदन—पुं० [सं०√मद्+णिच्+ल्यु—अन] १. काम-देव। २ रति-क्रीड़ा। संभोग। ३ कामशास्त्र के अनुसार एक प्रकार का आलिंगन जिसमें नायक अपना एक हाथ नायिका के गले में डालकर और दूसरा हाथ मध्यदेश में लगाकर उसका आलिंगन करता है। ४ महादेव के चार प्रधान अवतारों में से तीसरे अवतार का नाम। ५. ज्योतिष-शास्त्र के अनुसार जन्म से सप्तम गृह का नाम। ६ एक प्रकार के गीत। ७. मैना नामक पक्षी। ८ मैनफल। ९ धतूरा। १०. खदिर। खैर। ११ मौलसिरी। १२ भौरा। १३. मोम। १४. अखरोट। १५ प्रेम। स्नेह। १६. रूपमाल नामक छंद का दूसरा नाम। १७. खंजन पक्षी।

मदन-कंटक—पुं० [सं० मध्य० स०] साहित्य मे सात्विक रोमांच।

मदनक—पुं० [सं० मदन+कन्] १. मदन वृक्ष। मैन फल। २. दमनक या दौना नाम का पौधा। ३. मोम। ४ खदिर। खैर। ५. मौलसिरी। ६ धतूरा।

मदन-कदन—पुं० [ष० त०] शिव। महादेव।

मदन-गृह—पुं० [ष० त०] १. योनि। भग। २. फलित ज्योतिष के अनुसार जन्म कुंडली मे सातवाँ स्थान। ३ मदनहर नामक छन्द।

मदन-गोपाल—पुं० [उपमि० स०] श्रीकृष्णचन्द्र का एक नाम।

मदन-चतुर्दशी—स्त्री० [मध्य० स०] चैत्र शुक्ल चतुर्दशी।

मदन-ताल—पुं० [ष० त०] सगीत में, एक प्रकार का ताल जिसमें पहले दो द्रुत और अंत में दीर्घ मात्रा होती है।

मदन-त्रयोदशी—स्त्री० [मध्य० स०] चैत्र शुक्ल त्रयोदशी।

मदन-दमन—पुं० [ष० त०] शिव का एक नाम।
मदन-दिवस—पुं० [ष० त०] मदनोत्सव का दिन। वसंत।
मदन-वीला—स्त्री० [ष० त०] संगीत में, इन्द्र ताल के छः भेदों में से एक।
मदन-द्वादशी—स्त्री० [सं० मध्य० स०] चैत्र द्वादशी जो मदन महोत्सव के अन्तर्गत है।
मदन-नालिका—स्त्री० [ष० त०] वह स्त्री जिसका विश्वास न हो। दुश्चरित्रा या भ्रष्टा स्त्री।
मदन-पति—पुं० [ष० त०] १. इन्द्र। २. विष्णु।
मदन-पाठक—पुं० [ष० त०] कोकिल।
मदन-फल—पुं० [सं० मध्य० स०] मैनफल।
मदनबान—पुं० [सं० मदनबाण] एक प्रकार का बेला और उसका फूल।
मदन-भवन—पुं० [सं० ष० त०] योनि। भग।
मदन-मनोरमा—स्त्री० [उपमि० स०] केशव के मतानुसार सवैया का एक भेद जिसे दुर्मिल भी कहते हैं।
मदन-मनोहर—पुं० [उपमि० स०] दडकवृत्त का एक भेद जिसे मनहर भी कहते हैं।
मदन-मस्त—पुं० [हिं० मदन+मस्त] १ जगली सूरन का सुखाया हुआ टुकड़ा जिसका प्रयोग औषध मे होता है। २. चपा के फूल का एक भेद जिसकी गन्ध बहुत उग्र होती है।
मदन-महोत्सव—पुं० [ष० त०] प्राचीन भारत का एक उत्सव जो चैत्र शुक्ल द्वादशी से चतुर्दशी पर्यंत होता था।
मदन-मोदक—पुं० [ष० त०] केशव के मतानुसार सवैया छंद का एक भेद जिसे सुंदरी भी कहते हैं।
मदन-मोहन—पुं० [ष० त०] कृष्णचन्द्र का एक नाम।
मदन-ललिता—स्त्री० [सुप्सुपा स०] एक प्रकार का वर्णिक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में सोलह वर्ण होते हैं।
मदन-लेख—पुं० [सं० मध्य० स०] प्रेमी और प्रेमिका के पारस्परिक प्रेम-पत्र।
मदन-शलाका—स्त्री० [सं० मध्य० स०] १ मैना। २. कोयल।
मदन-सदन—पुं० [ष० त०] १ भग। योनि। २. फलित ज्योतिष के अनुसार, जन्म-कुडली का सातवाँ स्थान।
मदन-सारिका—स्त्री० [सं० मध्य० स०] मैना।
मदन-हर—पुं० [ष० त०]=मदनहरा।
मदन-हरा—स्त्री० [सं० मदनहर+टाप्] चालीस मात्राओं के एक छंद का नाम।
मदनांकुश—पुं० [मदन-अंकुश, ष० त०] १. लिंग। २ नख-क्षत।
मदनांतक—पुं० [मदन-अंतक, ष० त०] शिव।
मदनांध—वि० [मदन-अंध, तृ० त०] कामांध।
मदना—स्त्री० [सं० मदन+टाप्] मैना।
मदनाग्रक—पुं० [सं० मदन-अग्रक, ब० स०,+कप्] कोदों।
मदनायुध—पुं० [सं० मदन-आयुध, ष० त०] १. कामदेव का अस्त्र। २. भग। योनि।
मदनारि—पुं० [मदन-अरि, ष० त०] शिव।
मदनालय—पुं० [मदन-आलय, ष० त०] १. भग। योनि। २. फलित ज्योतिष के अनुसार जन्म-कुंडली में का सातवाँ स्थान।
मदनावस्था—स्त्री० [मदन अवस्था, ष०त०] वह अवस्था जिसमें काम-वासना बहुत प्रबल हो।
मदनास्त्र—पुं० [मदन-अस्त्र, ष० त०] =मदनायुध।
मदनी—स्त्री० [सं० मदन+ङीप्] १. मद्य। शराब। २. कस्तूरी। ३. मेथी। ४. घौ।
मदनीय—वि० [सं०√मद्+अनीयर्] नशा उत्पन्न करने या लानेवाला। मादक।
मदनोत्सव—पुं० [मदन–उत्सव, च० त० या ष०त०] मदन-महोत्सव।
मदनोत्सवा—स्त्री० [मदन–उत्सव, ब० स०,+टाप्] अप्सरा।
मदनोद्यान—पुं० [मदन-उद्यान, च० त० या ष० त०] प्रमोद-वन।
मदपी—वि०=मद्यप (शराबी)।
मद-प्रयोग—पुं० [ष० त०] हाथियों का मद बहना।
मद-प्रस्रवण—पुं० [ष० त०] दे० 'मदप्रयोग'।
मदफन—पुं० [अ० मद्फ़न] वह स्थान जहाँ मुरदे गाड़े जाते हैं। कब्रि-स्तान।
वि० १ जमीन में गाड़ा हुआ। २ गुह्य।
मदभंजिनी—स्त्री० [सं० मद√भञ्ज् (भग करना)+णिनि+ङीप्] शतमूली।
मद-मत्त—वि० [सं० तृ० त०] १. (हाथी) जो मद बहने के कारण मस्त हो। २ मतवाला। मत्त।
मदयंतिका—स्त्री० [सं०√मद् (मतवाला होना)+णिच्+झच्–अन्त, +ङीप्+कन्+टाप, ह्रस्व] मल्लिका।
मदयित्नु—पुं० [सं० √मद्+णिच्+इत्नुच्] १ कामदेव। २ मद्य। शराब। ३ कलवार।
मदर—पुं० [सं० मंडल] मँडराने की क्रिया या भाव। उदा०—ब्रज पर मदर करत है काम।—सुर।
मदरज—पुं०=मकरंद।
मदरसा—पुं० [अ० मदरिस] पाठशाला। विद्यालय।
मदरास—पुं० १. दक्षिण भारत का एक प्रदेश जो अब कई राज्यो में विभक्त हो गया है। २. उक्त प्रदेश की एक प्रसिद्ध नगरी।
मदरासी—वि० [हिं० मदरास] मदरास का।
पुं० मदरास का रहनेवाला।
मद-लेखा—स्त्री० [ष० त०] एक प्रकार की वर्णिक वृत्ति जिसके प्रत्येक चरण मे सात सात वर्ण होते हैं।
मद-विक्षिप्त—वि० [तृ० त०] मद से पागल। मदमस्त।
पुं० मतवाला हाथी।
मद-शाक—पुं० [ब० स०] पोई का साग।
मदसार—पुं० [सं० मद्√सृ (गति)+णिच्+अण्] शहतूत का पेड़।
मदह—स्त्री० [अ०] प्रशसा। तारीफ।
मद-हेतु—पुं० [ष० त०] धौ का पेड़।
मदहेसहाबा—स्त्री० [अ० मदह-ई-सहाबः] मुहर्रम के दिनों में सुन्नी संप्रदाय वालो द्वारा पढ़ी जानेवाली वे कविताएँ जिनमें मुहम्मद साहब और उनके साथियो की प्रशसा होती है।
मदहोश—वि० [फ़ा०] नशे के कारण जिसके होश ठिकाने न हों।
मदहोशी—स्त्री० [फ़ा०] मदहोश होने की अवस्था या भाव।

मदांतक—पुं० [मद-अंतक, ष० त०] मदात्यय नामक रोग।
मदांध—वि० [मद-अंध, तृ० त०] [भाव० मदांधता] मद अर्थात् किसी गुण आदि की अधिकता के फलस्वरूप जो अंधा या विवेकहीन हो रहा हो।
मदांधता—स्त्री० [सं० मदांध+तल्+टाप्] मदांध होने की अवस्था या भाव।
मदाखिल—स्त्री० [अ०] लगाम।
मदाखिलत—स्त्री० [अ०] १. दाखिल होने की क्रिया या भाव। प्रवेश। २. बीच में दखल देने की क्रिया या भाव। ३. बँध।
मदाखिलत बेजा—स्त्री० [अ० मदाखिलत+फा० बेजा] १. अनुचित रूप से किया जानेवाला प्रवेश। २. अनुचित रूप से दखल देने की क्रिया या भाव। अनुचित हस्तक्षेप।
मदाढ्य—पुं० [मद-आढ्य, तृ० त०] ताड़।
मदात्यय—पुं० [सं० मद-अत्यय, ब० स०] बहुत अधिक मदिरा या शराब पीने के फल-स्वरूप उत्पन्न होनेवाले कई प्रकार के शारीरिक विकार। (एल्कोहलिज्म)
मदानि*—वि० [?] कल्याण करनेवाला। मंगलकारक।
मदार—पुं० [सं० √मद्+आरन्] १. हाथी। २. सूअर। ३. एक प्रकार का गंध द्रव्य। ४ आक नाम का पौधा।
वि० चालाक। धूर्त्त।
पुं० [अ०] १. दौरा करने का रास्ता। भ्रमण-मार्ग। २. ग्रहों के भ्रमण का मार्ग। कक्षा। ३ आधार। आश्रय।
पद—वार मदार।
४. मुसलमानों के एक पीर।
†पुं०=मदारी।
मदार गदा—पुं० [हिं० मदार+गदा] धूप में सुखाया हुआ मदार का दूध जो प्राय: औषध के रूप में काम आता है।
मदारिया—पुं० [देश०] एक प्रकार का मिट्टी का हुक्का। (अवध)
पुं०=मदारी।
मदारी—पुं० [अ० मदार] १. वह जो बन्दर, भालू आदि नचाकर जीविका चलाता हो। कलंदर। २. जादू आदि के खेल दिखानेवाला बाजीगर।
मदालसा—स्त्री० [सं०] पुराणानुसार विश्वावसु गंधर्व की कन्या जिसे पातालकेतु दानव ने उठा ले जाकर पाताल में रखा था।
मदालापी (पिन्)—पुं० [सं० मद+आ√लप् (बोलना)+णिनि] [स्त्री० मदालापिनी] कोकिला। कोयल।
मदालु—वि० [सं० मद+आलुच्] १. जिससे मद झरता हो। २. मस्त।
मदाह्व—पुं० [मद-आह्व, ब० स०] कस्तूरी।
मदि—स्त्री० [सं०√मृद् (चूर्ण करना)+इनि, पृषो० सिद्धि] हेंगा। पटेला।
मदिया—स्त्री० [फा० मादा] पशुओं में स्त्री जाति। स्त्री जाति का जानवर। मादा। जैसे—कबूतर की मदिया=कबूतरी।
मदिर—स्त्री० [सं०√मद्+किरच्] लाल खैर।
वि० मद से भरा हुआ। उदा०—गूँजते जब मदिर घन में वासना के गीत।—प्रसाद।
मदिरा—स्त्री० [सं० मदिर+टाप्] १. कुछ विशिष्ट प्रकार के अन्नों, फलों, रसों आदि को सड़ाकर उनका भभके से खींचकर निकाला जाने-वाला नशीला रस। २. शराब। ३. कामदेव की पत्नी। रति। ३. बाइस अक्षरों का एक वर्णिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में सात भगण और अंत में एक गुरु होता है। इसे मालिनी, उमा और दिवा भी कहते हैं।
मदिराक्ष—वि० [मदिर-अक्ष, ब० स०+षच्] [स्त्री० मदिराक्षी] मस्त आँखोंवाला। मत्तलोचन।
मदिराभा—स्त्री० [मदिरा-आभा, ष० त०] मदिरा की आभा या आभास। जैसे—स्वर्णोदय सी अंतर्मन में मदिराभा भरती तुम क्षण में।—पंत।
मदिरायत—वि० [सं० मदिरायतन] मद से भरा हुआ। मदिर। जैसे—मदिरायत नयन।
मदिरालय—पुं० [मदिरा-आलय, ष० त०] शराबखाना। कलवरिया।
मदिरालस—वि० [सं० मदिरा-अलस, तृ० त०] [स्त्री० मदिरालसा] अधिक शराब पीने के बाद जिसे बहुत आलस्य आ रहा हो।
मदी—स्त्री०=मदि।
मदीना—पुं० [अ० मदीन:] अरब का एक प्रसिद्ध नगर जहाँ इस्लाम के प्रवर्तक मुहम्मद साहब की समाधि है।
मदीय—वि० [सं० अस्मद्+छ—ईय, मदादेश] [स्त्री० मदीया] मेरा।
मदीला—वि० [सं० मद+हिं० ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० मदीली] १. मद से युक्त। मदिर। २. नशा लानेवाला। नशीला।
मदुकल—पुं० [?] ऐसा दोहा जिसके प्रत्येक चरण मे १३ गुरु और २२ लघु मात्राएँ हों। गयंद।
मदुरा—पुं० [?] काठ का बना हुआ एक प्रकार का कड़ा जो योगी हाथ मे पहनते हैं।
मदोत्कट—वि० [सं० मद-उत्कट, तृ० त०] मद से उन्मत्त।
पुं० मस्त हाथी।
मदोदग्र—वि० [सं० मद-उदग्र, तृ० त०] मस्त। मतवाला।
मदोद्धत—वि० [सं० मद-उद्धत, तृ० त०] १. मदोन्मत्त। मत्त। २. बहुत बड़ा अभिमानी या घमंडी।
मदोन्मत्त—वि० [सं० मद-उन्मत्त, तृ० त०] १ जो मद या नशे के कारण उन्मत्त हो रहा हो। मदांध। २ जो धन, बल आदि की अधिकता के फलस्वरूप बहुत घमंडी हो, इसलिए जिसे भले-बुरे का ज्ञान न रह गया हो।
मदोवै*—स्त्री०=मंदोदरी।
मद्गु—पुं० [सं० √मस्ज् (डूबना)+उ] १. एक प्रकार का जल-पक्षी। २. पेड़ों पर रहनेवाला एक प्रकार का जंतु। ३. मंगुर या मद्गुरी नाम की मछली। ४ एक प्रकार का साँप। ५. एक प्रकार का जहाज जो जल-युद्ध में काम आता था। ६. एक पुरानी वर्ण-संकर जाति।
मद्गुर—पुं० [सं०√मद्+उरच्, नि० सिद्धि] १. मंगुर या मंगुरी नामक मछली। २. मद्गु नामक संकर जाति।
मद्द—स्त्री०= मद (विभाग)।
मद्दत†—स्त्री०=मदद।
मद्दा†—वि०=मंदा।
मद्दाह—वि० [अ०] [भाव० मद्दाही] मदह अर्थात् प्रशंसा या स्तुति करनेवाला।
मद्दी†—स्त्री०=मंदी।
मद्दू—पुं० [सं० ककुद] साँड़ का डिल्ला।

मदूसाही—पु०[हिं० मधुसाह] ताँबे का एक प्रकार का पुराना सिक्का जो प्राय एक पैसे के बराबर होता था।

मद्धम—वि०१.=मद्धिम। २ =मध्यम।

मद्धिक—पु०[सं०] दाख से बनाई हुई शराब। द्राक्ष।

मद्धिम—वि०[सं० मध्यम] १ गति गुण आदि के विचार से जिसमे तेजी या प्रखरता न हो। सामान्य अवस्था की अपेक्षा कम तेज या कम प्रखर। हलका। जैसे—मद्धिम चाल, मद्धिम रोशनी।

मद्धे—अव्य [सं० मध्ये]१ मध्य या बीच मे। २ मे। ३ किसी विभाग या विषय के क्षेत्र या मद मे। जैसे—सौ रुपए मकान की मरम्मत मद्धे खरच हुए।

मद्य—पु०[सं०√मद्+यत्] मदिरा। शराब। सुरा। (वाइन)

मद्यप—वि० [सं० मद्य√पा (पीना)+क] जो मद्यपान करता हो। मद्य पीने का अभ्यस्त। शराबी।

मद्य-पान—पु०[ष० त०] मद्य पीने की क्रिया या भाव। शराब पीना।

मद्यपाशन—पु०[सं० मद्यप-अशन, ष०त०] मद्य के साथ खाई जानेवाली चटपटी चीज। चाट। गजक।

मद्य-पुष्पा—स्त्री०[ब० स०,+टाप्] धातकी। धौ।

मद्य-बीज—पु०[ष० त०]१ शराब के लिए उठाया हुआ खमीर। पाँस। २ वह पदार्थ जिसके द्वारा खमीर या पाँस उठाया जाता है।

मद्य-मंड—पु०[ष०त०]=मद्यपाशन।

मद्यवासिनी—स्त्री०[सं० मद्य-वास, ष० त०, +इनि+ङीप्] धातकी। धौ।

मद्यसंधान—पु०[ष० त०] भभके से शराब खीचने की प्रक्रिया।

मद्रंकर—वि०[सं० मद्र√कृ+खच्, मुमागम] मगलकारक। शुभ।

मद्र—पु०[सं०√मद्र+रक्]१ पचनद में स्थित एक प्राचीन जनपद। २ उक्त जनपद का शासक। ३ मद्र जनपद का निवासी।

मद्रक—वि०[सं० मद्र+कन्]१ मद्र जनपद-सबधी। २ मद्र देश मे उत्पन्न।

पु०१ मद्र जनपद का शासक। २ मद्र देश का निवासी।

मद्रकार—वि० [सं०मद्र√कृ (करना)+अण्] मगलकारक। शुभ।

मद्र-सुता—स्त्री०[सं० ष० त०] माद्री।

मद्रास—पु० =मदरास।

मद्रासी—वि०, पु०=मदरासी।

मधं†—पु०१ =मध्य। २ =मद्य। ३ मधु।

अव्य० [सं० मध्य] मे।

मधई†—वि०[सं० मद्य+हिं० ई (प्रत्य०)] शराब पीनेवाला। शराबी।

मधथ—पु० मध्यस्थ। उदा०—दुहु दिश मधथ दिवाकर भले।—विद्यापति।

मधव्य—पु०[सं० मधु+यत्] वैशाख मास।

मधाना—पु०[देश०] एक प्रकार की घास। मकड़ा।

मधि—स्त्री० [सं० मध्य०]१ मध्य में होने की अवस्था या भाव। २ सुख-दुःख, स्वर्ग-नरक आदि को समान भाव से देखने की अवस्था, क्रिया या भाव।

*अव्य० मध्य।

मधिम†—वि०१ =मद्धिम। २. =मध्यम।

मधियाती—वि०[सं० मध्यवर्ती] बीच मे रहने या होनेवाला। बीच का। उदा०—जेते मधियाती सब तिन सौ मिलाय छूट्यौ।—सेनापति।

मधु—पु०[सं०√मन् (जानना)+उ, ध—आदेश] १. शहद। २. जल। पानी। ३ मदिरा। शराब। ४ फूलो का रस। मकरंद। ५. वसत ऋतु। ६ चैत का महीना। ७ दूध। ८. मिसरी। ९. मक्खन। १० घी। ११. अशोक वृक्ष। १२. महुआ। १३. मुलेठी। १४ अमृत। १५ शिव का एक नाम। १६. एक प्रकार का छंद जिसके प्रत्येक चरण मे दो लघु अक्षर होते हैं। १७. सगीत मे एक राग जो भैरव राग का पुत्र माना जाता है। १८ एक दैत्य जिसे विष्णु ने मारा था और जिसके कारण उनका नाम 'मधुसूदन' पड़ा था।

वि० १ मीठा। २ मधुर। ३ स्वादिष्ट।

स्त्री० जीवती का पेड।

मधुआ†—पु०[?] आम के बौर मे होनेवाला एक प्रकार का रोग।

मधु-ऋतु—स्त्री०[सं० कर्म० स०] वसत ऋतु।

मधु-कंठ—वि०[ब० स०] जिसके गले मे मिठास हो।

पु० कोकिल। कोयल।

मधुक—पु०[सं० मधु+कन् वा मधु√कै+क]१ महुए का पेड़। २ महुए का फल। ३ मुलेठी।

मधु-कर—पु०[ष० त०] १ भौरा। २ कामुक व्यक्ति। ३ भँगरा।

मधुकरी—स्त्री० [सं० मधुकर+ङीष्] १ मधुकर की मादा। भौंरी। २ साधु-सन्यासियो की वह भिक्षा जो केवल पके हुए अन्न (चावल, दाल, रोटी आदि) के रूप मे होती है।

क्रि० प्र०—माँगना।

३ सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी। ४ आटे के पेड़े की पकाई हुई रोटी। बाटी। भौरिया। लिट्टी।

मधु-कर्कटिका—स्त्री०[उपमि० स०] बिजौरा नीबू।

मधु-कर्कटी—स्त्री०[उपमि० स०] १ बिजौरा नीबू। २. खजूर का फल।

मधुका—स्त्री० [सं० मधु+कन्+टाप्] १ मुलेठी। २ मधु। शहद। ३ कृष्णपर्णी लता।

मधुकार—पु०[सं० मधु√कृ (करना)+अण्] १ मधुमक्खी। २ मधु-पर्णी।

मधुकारी (रिन्)—पु०[सं० मधु√कृ+णिनि, उप० स०] मधुमक्खी। पु०[हिं० मधुकरी] वह सन्यासी जो मधुकरी माँगता या ग्रहण करता हो।

मधु-कुल्या—स्त्री०[ष० त०] कुश द्वीप की एक नदी। पुराण।

मधु-कृत—पु० [सं० मधु√कृ+क्विप्, तुक्] १. भौरा। २. मधु-मक्खी।

मधु-कैटभ—पु०[द्व० स०] मधु और कैटभ नामक दो दैत्य जो विष्णु के कान की मैल से उत्पन्न हुए माने गये हैं। (पुराण)

मधु-कोष—पु०[ष० त०] शहद की मक्खी का छत्ता। मधु-चक्र।

मधु-क्षीर—पु०[ब० स०] खजूर का पेड़।

मधु-गंध—पु०[ब० स०]१ अर्जुन (वृक्ष)। २ मौलसिरी।

मधु-गायन—पु०[ब० स०] कोयल।

मधु-गुंजन—पु०[ब० स०] सहिंजन का वृक्ष।

मधु-घोष—पुं०[ब० स०] कोकिल। कोयल।

मधु-चंद्र—पुं० [सं० मधु-चन्द्र] नव-विवाहित वर और वधू का वह समय जो वे सब काम-धन्धों से छुट्टी लेकर और किसी रमणीक स्थान मे प्रायः घर के लोगो से अलग रहकर आनन्द-भोग मे बिताते हैं। (हनीमून)

विशेष—यह शब्द अंगरेजी के 'हनीमून' का तदर्थीय है, जिसका मूल अर्थ था—विवाह के बाद का पहला महीना, परन्तु जो आजकल इसी अर्थ मे प्रयुक्त होता है जो ऊपर 'मधु-चंद्र' का बतलाया गया है।

मधु-चक्र—पुं०[ष० त०] शहद की मक्खियों का छत्ता।

मधुज—वि०[सं० मधु√जन् (उत्पत्ति)+ड] मधु से उत्पन्न।
पुं० मोम।

मधुजा—स्त्री०[सं० मधुज+टाप्]१ मिश्री। २. पृथ्वी।

मधुजित्—पुं० [सं० मधु√जि (जीतना)+क्विप्, तुक्] विष्णु।

मधु-जीवन—पुं०[ब० स०] बहेडा (वृक्ष)।

मधु-तृण—पुं०[कर्म० स०] ईख।

मधु-त्रय—पुं०[ष० त०] शहद, घी और चीनी का समाहार।

मधुत्व—पुं०[सं० मधु+त्व] मधु का भाव। शहद की मिठास।

मधु-दीप—पुं०[सं० मधु√दीप् (चमकना)+क] कामदेव।

मधु-दूत—पुं०[ष० त०] आम का पेड।

मधु-दूती—स्त्री०[ष० त०] पाटला।

मधुद्र—पुं०[सं० मधु√द्रा (जाना)+क] भौंरा।

मधु-द्रव—पुं०[ब० स०] लाल सहिजन का वृक्ष।

मधु-द्रुम—पुं०[मध्य० स०] १ महुए का पेड। २ आम का पेड़।

मधु-धूलि—स्त्री०[ष० त०] खाँड़। शक्कर।

मधु-धेनु—स्त्री०[मध्य० स०] दान के लिए कल्पित शहद की गाय।

मधुप—पुं०[सं० मधु√पा (पीना)+क]१ भौरा। २. शहद की मक्खी। ३ उद्धव का एक नाम।
वि० मधु पीनेवाला।

मधु-पटल—पुं०[ष० त०] शहद की मक्खियों का छत्ता।

मधु-पति—पुं०[ष० त०] श्रीकृष्ण।

मधु-पर्क—पुं०[ब० स०]१ दही, घी, जल, शहद और चीनी का समाहार जिसका भोग देवता को लगाया जाता है। २ तंत्र के अनुसार घी, दही और मधु का समूह जिसका उपयोग तान्त्रिक पूजन मे होता है।

मधु-पर्क्य—वि०[सं० मधुपर्क+य]जिसके सामने मधुपर्क रखा जा सके। मधुपर्क का अधिकारी या पात्र।

मधु-पर्णी—स्त्री० [ब० स०,+ङीष्]१ गुरुच। २ गभारी नाम का पेड। ३. नीली नाम का पौधा।

मधुपायी (यिन्)—पुं०[सं० मधु√पा (पीना)+णिनि, युक्] भौंरा।
वि० मधु पीनेवाला।

मधु-पीलु—पुं०[कर्म० स०] अखरोट (वृक्ष)।

मधु-पुर—पुं०[ष० त०] मथुरा (नगरी)।

मधु-पुष्प—पुं० [ब० स०] १ महुआ। २. अशोकवृक्ष। ३. सिरिस नामक वृक्ष। ४. मौलसिरी।

मधु-पुष्पा—स्त्री०[सं० मधुपुष्प+टाप्]१. नागदंती। २. घी का पेड़।

मधु-प्रमेह—पुं०=मधु-मेह।

मधु-प्रिय—पुं०[ब० स०]१ बलराम। २. भुँइ जामुन।

मधु-फल—पुं०[ब० स०] मीठा नारियल।

मधुफलिका—स्त्री०[सं० मधुफल+कन्,+टाप्, इत्व] मीठी खजूर।

मधुबन—पुं०[सं० मधुवन]१. ब्रजभूमि का एक वन। २ सुग्रीव के उपवन का नाम।

मधु-बहुल—पुं०[ब० स०]१. वासती लता। २. सफेद जूही।

मधु-बीज—पुं० [ब० स०] अनार।

मधुभाजन—पुं० [ष० त०] मद्य या शराब पीने का प्याला। चषक।

मधुभार—पुं०[सं०] एक प्रकार का मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में आठ मात्राएँ होती हैं और अंत में जगण होता है।

मधु-मक्खी—स्त्री०[सं० मधुमक्षिका] मक्खी की तरह का एक छोटा पतिंगा जो फूलों पर मँडराता और उनका रस चूसता है। यह समूहों मे तथा छत्ता बनाकर रहता है और उसमें शहद एकत्र करता है। यह प्राणियों को डंक भी मारता है।

मधु-मक्षिका—स्त्री०[मध्य० स०] मधुमक्खी।

मधु-मज्जन—पुं०[ब० स०] अखरोट (वृक्ष)।

मधुमती—स्त्री०[सं० मधु+मतुप्+ङीप्]१. योग साधन में, समाधि की वह अवस्था जो रज और तम के नष्ट होने तथा सत् का पूर्ण प्रकाश होने पर प्राप्त होती है। २. एक प्रकार का वर्ण-वृत्त जिसका प्रत्येक चरण दो नगण और एक गुरु का होता है। ३ मधु दैत्य की कन्या और इक्ष्वाकु के पुत्र हर्यश्व की पत्नी का नाम। ४. तांत्रिकों के अनुसार एक प्रकार की नायिका जिसकी उपासना और सिद्धि से मनुष्य जहाँ चाहे आ-जा सकता है।५. एक प्राचीन नदी जो नर्मदा की शाखा थी। ६. गगा नदी।

मधुमथन—पुं० [सं० मधु√मथ्+ल्यु—अन]मधु नामक दैत्य को मारने वाले, विष्णु।

मधु-मल्ली—स्त्री० [सं० मध्य० स०] मालती।

मधु-मस्तक—पुं०[ब० स०] प्राचीन काल का एक तरह का मैदे का पकवान जो मधु में डुबोकर खाया जाता था।

मधुमाखी—स्त्री०=मधु-मक्खी।

मधुमात—पुं०[सं०] संगीत मे एक राग जो भैरव राग का सहचर माना जाता है।

मधुमात सारंग—पुं० [सं०] संगीत मे मधुमात और सारंग के योग से बना हुआ एक संकर राग जिसके गाने का समय दिन में १७ दंड से २० दंड तक माना जाता है।

मधु-माधव—पुं०[द्व० स०]१. मालश्री, कल्याण और मल्लार के मेल से बना हुआ एक सकर राग। २ बसंत के दो मास—चैत्र और वैशाख।

मधुमाधव सारंग—पुं०[सं० मध्यम० स०] १. मधुमाधव और सारंग के योग से बना हुआ औड़व जाति का एक सकर राग जिसमें धैवत और गाधार वर्जित है।

मधु-माधवी—स्त्री० [मध्य० स०] १. संगीत में, एक रागिनी जो भैरव राग की सहचरी मानी जाती है। २. वासंती लता। ३ एक प्रकार की पुरानी शराब।

मधु-माध्वीक—पुं०[मध्य० स०] शराब।

मधुमान (मत्)—वि०[सं० मधुमत्][स्त्री० मधुमती]१ जिसमें मधु

या शहद वर्तमान हो अथवा मिलाया हुआ हो। २. मधुर। मीठा। ३. मन को प्रसन्न, सतुष्ट या सुखी करनेवाला। प्रिय और सुखद।

मधु-मारक—पु०[ष० त०] भौंरा।

मधुमालती—स्त्री० [मध्य० स०] मालती (लता)।

मधुमासी†—स्त्री०=मधुमक्खी। उदा०—कुल कुटुंबी आन बैठे मनहु मधुमासी।—मीरां।

मधुमूल—पु०[कर्म० स०] रतालू नामक कंद।

मधुमेह—पु०[ब० स०]एक प्रसिद्ध रोग जो अग्न्याशय मे मधुसूदनी (देखे) के कम बनने के कारण होता है और जिसमे मूत्र अधिक शर्करा युक्त होकर प्राय धीरे धीरे और अधिक मात्रा मे या अधिक देर तक होता है। (डायबिटीज)

मधुमेही (हिन्)—पु०[स० मधुमेह+इनि] वह जिसे मधुमेह रोग हो।

मधु-यष्टि—स्त्री०[कर्म० स०]१ जेठी मधु। मुलेठी। २ ईख। ऊख।

मधु-यष्टिका—स्त्री०[स० मधुयष्टि+कन्+टाप्] मुलेठी।

मधु-यष्ठी—स्त्री०[सं० मधुयष्टि+ङीष्] मुलेठी।

मधुर—वि०[स० मधु√रा (देना)+क] [स्त्री० मधुरा] १ जिसका स्वाद मधु के समान हो।मीठा। २ जो सब प्रकार की कटुताओ से रहित, और मधु के समान मीठा जान पडे। जैसे—मधुर वचन। ३. जो कठोरता, कर्कशता आदि से रहित होने के कारण बहुत भला जान पडता हो। जैसे—वीणा का मधुर स्वर। उदा०—मधुर मधुर गरजत घन घोरा।—तुलसी। ४ जो अपनी मनोहरता, सुन्दरता आदि के कारण। प्रिय और भला लगता हो। जैसे—मधुर मूर्ति। ५ जो गति या चाल के विचार से धीमा या मंद हो। जैसे—मधुर गति। ६. धीर और शात। ७ जो काम करने मे बहुत मट्ठर या सुस्त हो। जैसे—मधुर पशु। पु०१ किसी मीठी चीज का या किसी प्रकार का मीठा रस। २ लाल रग की ईख। लाल ऊख। ३. गुड। ४ बादाम। ५ जीवक वृक्ष। ६ जगली बेर। ७ महुआ। ८ मटर। ९. धान। १० काकोली। ११ लोहा। १२ जहर। विष।

मधुरई*—स्त्री०=मधुरता (माधुर्य)।

मधुर-कंटक—पु०[ब० स०] एक प्रकार की मछली जिसे कजली कहते है।

मधुरक—पु०[स० मधुर+कन्] जीवक वृक्ष।

मधुर-कर्कटी—स्त्री०[कर्म० स०] मीठा नीबू।

मधुर-जंबीर—पु०[कर्म० स०] मीठा जबीरी नीबू।

मधुर ज्वर—पु०[कर्म० स०] मद-ज्वर।

मधुरता—स्त्री०[सं० मधुर+तल्+टाप्] मधुर होने की अवस्था, गुण या भाव। माधुर्य।

मधुर-त्रय—पु० [ष० त०] शहद, घी और चीनी, तीनो का समाहार।

मधुर त्रिफला—स्त्री०[कर्म० स०] दाख (या किशमिश), गमारी और खजूर इन तीनो का समाहार।

मधुरत्व—पु०[स० मधुर+त्व] मधुरता।

मधुर-स्वच—पु०[ब० स०] धौ का पेड।

मधुर-फल—पु०[ब० स०]१. बैर का वृक्ष। बेर। २. तरबूज।

मधुर-फला—स्त्री०[स० मधुरफल+टाप्] मीठा नीबू।

मधु-रस—पु०[ब० स०] ईख।

मधुरसा—स्त्री० [स० मधुरस+टाप्] १. मूर्वालता। २. दाख। ३ गमारी। ४ दूधिया घास। ५ शतपुष्पी। ६. गंधप्रसारिणी लता।

मधु-रसिक—पु०[ष० त०] भौंरा।

मधुर-श्रवा—स्त्री०[ब० स०, टाप्] पिंडखजूर।

मधुर स्वर—पु०[ब० स०] गधर्व।

मधुरा—स्त्री० [स० मधुर+टाप्] १ मथुरा नगरी। २. मदरास प्रांत का एक प्राचीन नगर जो अब मदुरा या मदुरा कहलाता है। २ मीठा नीबू। ३ मुलेठी। ४ मीठी खजूर। ५ शतावर। ६ महामेदा। ७ मेदा। ८ शतपुष्पी। ९ पालक का साग। १०. सेम। ११. काकोली। १२ केले का पेड। १३ सौफ। १४ मसूर।

मधुरा—वि० [स० मधुर] [स्त्री० मधुरी] मधुर। उदा०—लबा टीका मधुरी बानी। दगाबाज की यही निशानी। (कहा०)

स्त्री० साहित्य मे वह शब्द-योजना जिससे रचना मे माधुर्य या मिठास आती है।

†स्त्री०१ =मदुरा। २ =मथुरा।

मधुराई*—स्त्री०=मधुरता।

मधुराकर—पु०[मधुर-आकर, ष० त०] ईख। ऊख।

मधुराज—पु०[स० ष० त०] भौरा।

मधुराना—अ०[स० मधुर+हिं० आना (प्रत्य०)] १ मधुर होना। २. फलो तथा खाद्य वस्तुओ के सबध मे, मिठास से युक्त होना। मीठा होना।

स० मधुर बनाना।

मधुरान्न—पु०[मधुर-अन्न, कर्म० स०]१ मीठा अन्न। २ मिठाई। मिष्ठान्न।

मधुराम्लक—पु० [मधुर-अम्लक, कर्म० स०] अमडा।

मधुरालापा—स्त्री०[मधुर-आलाप, ब० स०+टाप्] मैना पक्षी।

मधुरिका—स्त्री०[स० मधुर+कन्+टाप्, इत्व] सौफ।

मधुरित—भू० कृ०[स० मधुर+इतच्]१ मिठास से युक्त किया हुआ। २ मधुर रूप मे लाया हुआ।

मधुरिन—पु०[स० मधुर से] ग्लिसरीन (तरल पदार्थ)।

मधु-रिपु—पु०[ष० त०] मधुराक्षस के शत्रु, विष्णु।

मधुरिमा—स्त्री०[सं० मधुर+इमनिच्] मधुर होने की अवस्था या भाव। मधुरता।

वि०=मधुर।

मधुरी—स्त्री०[स० मधुर] मुंह से फूँककर बजाया जानेवाला एक तरह का पुराना बाजा।

†स्त्री०[स० माधुरी]१ मधुरता। २ शराब।

मधु-रीछ—पु०[हिं० मधु+रीछ] दक्षिणी अमेरिका का रीछ की तरह का एक जगली जतु जो ऊँचाई मे कुत्ते के बराबर होता है। यह प्राय वृक्षों पर चढकर मधुमक्खियो के छत्ते का रस चूसता है, इसी से इसका यह नाम पडा है।

मधूदक—पु० [मधुर-उदक, कर्म० स०] १ मधु मिश्रित जल। २. [ब० स०] पुराणानुसार सात समुद्रो मे से अतिम समुद्र जो मीठे जल का और पुष्कर द्वीप के निकट चारो ओर स्थित कहा गया है।

मधुल—पु० [स० मधु√ला (लेना)+क] मदिरा।

वि०=मधुर।

मधुलिका—स्त्री० [सं० मधुल+कन्+टाप्, ह्रस्व] १. प्राचीन काल में मधुली नामक गेहूँ के पौधे से तैयार की जानेवाली मदिरा। २. राई। ३. फूलों का पराग। ४. कार्तिकेय की एक मातृका।

मधुली—पु०[सं० मधुलिका] भाव प्रकाश के अनुसार एक प्रकार का गेहूँ।

मधु-लोलुप—पु०[स० स० त०] भौंरा।

मधुवंती—स्त्री०[सं० मधुवती] संगीत में टोडी ठाठ की एक रागिनी।

मधुवटी—स्त्री०[स० ब० स०, ङीप्?] एक प्राचीन स्थान। (महा०)

मधु-वन—पु०[मध्य० स०]१. मथुरा के पास यमुना के किनारे का एक वन जहाँ शत्रुघ्न ने लवण नामक दैत्य को मारकर मधुपुरी स्थापित की थी। २. ब्रज में यमुना तट पर स्थित एक वन। ३. किष्किन्धा मे स्थित एक वन। ४. वह वन जहाँ प्रेमी और प्रेमिका मिलते हों। ५ कोयल।

मधु-वल्ली—स्त्री०[सं० मध्य० स०]१ मुलेठी। २ करेला।

मधु-वार—पु०[ष० त०]१ मद्य या शराब पीने का दिन। २ बार बार शराब पीने का क्रम। शराब का दौर। ३ मद्य। शराब।

मधु-वाही (हिन्)—पु०[स० मधु√वह् (ढोना) +णिनि, उप० स०] महाभारत के अनुसार एक प्राचीन नद।

मधु-व्रत—पु०[ब० स०]भौंरा।

मधु-शर्करा—स्त्री० [मध्य० स०] १ शहद से बनाई हुई शक्कर। २ सेम। लोबिया।

मधु-शाक—पु०[ब० स०] महुए का वृक्ष।

मधु-शिग्नु—पु०[मध्य० स०] शोभाजन। सहिजन।

मधु-शिष्ट—पु०[ष० त०] मोम।

मधु-शेष—पु०[ब० स०] मोम।

मधु-श्रावणी—स्त्री०[सं०] १. मिथिला का एक पर्व जो सावन शुक्ल द्वितीया को मनाया जाता है। इसमे नव विवाहिता वधू को जलती बत्ती से दागते है। यदि फफोले अच्छे पड़ें तो समझा जाता है कि इसका सुहाग बहुत दिनो तक बना रहेगा।

मधुष्ठील—पु०[स० मधु√ष्ठीव् (फेकना) +क, पृषो० लत्व] महुए का वृक्ष।

मधु-संभव—पु०[ब० स०]१. मोम। २. दाख।

मधु-सख—पु०[ब० स०] कामदेव।

मधु-सहाय—पु०[ब० स०] कामदेव।

मधु-सारथि—पु०[ब० स०] कामदेव।

मधु-सिक्थक—पु०[ब० स०,+कप्]१ एक प्रकार का विष। २. मोम।

मधु-सुहृद—पु०[ष० त०] कामदेव।

मधुसूदन—पु० [सं० मधु√सूद् +णिच्+ल्यु—अन] १ मधु नामक दैत्य को मारनेवाले, विष्णु। २ भौंरा।

मधुसूदनी—स्त्री० [स० मधुसूदन +ङीप्] १. पालक का साग। २. आज-कल शरीर के अन्दर अग्न्याशय में बननेवाला वह तत्त्व जिसके अभाव या कमी के कारण शरीर में शर्करा का ठीक समवर्त्तन नहीं होने पाता, रक्त विषाक्त होने लगता है और मूत्र सम्बन्धी अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न होने लगते हैं। २. उक्त तत्त्व से बनाई जानेवाली एक प्रसिद्ध दवा। (इन्स्यूलिन)

मधु-स्थान—पु०[ष० त०] मधुमक्खियों का छत्ता।

मधु-स्रव—पु०[ब० स०] १. महुए का वृक्ष। २. पिंडखजूर का पेड़।

मधु-स्रवा—स्त्री०[स० मधुस्रव+टाप्] १. संजीवनी बूटी। २. मुलेठी। ३. मूर्वा लता। ४. हंसपदी लता।

मधु-स्राव—पु०[ब० स०] महुए का वृक्ष।

मधु-स्वर—पु०[ब० स०] कोयल।

मधु-हंता (तृ)—पु०[ष० त०] मधुसूदन। (दे०)

मधूक—पु०[स०√मद्+ऊक, नि०सिद्धि]१ महुए का पेड़, फूल और फल। २. मुलेठी। ३. भ्रमर।

मधूक-पर्णी—स्त्री०[स० ब० स०,+टाप्] अमड़ा।

मधूकरी—स्त्री०=मधुकरी।

मधूक-शर्करा—स्त्री० [ष० त०] वह शक्कर जो महुए के रस से बनाई गई हो।

मधूख—पु०=मधूक।

मधूच्छिष्ट—पु०[मधु-उच्छिष्ट, ष० त०] मोम।

मधूत्थ—पु०[सं० मधु+उत्√स्था (ठहरना) +क] मोम।

मधूत्थित—पु०[मधुत्थित, प० त०] मोम।

मधूत्पन्ना—स्त्री०[मधु–उत्पन्ना, प० त०] शहद से बनाई हुई चीनी।

मधूत्सव—पु०[मधु-उत्सव, ब० स०] १. चैत्र की पूर्णिमा। २ [ष० त०] वसंतोत्सव।

मधूल—पु० [स० मधु√उर् (प्राप्त होना) +क, र—ल]जल-महुआ।

मधूलक—पु०[स० मधूल+कन्]१ जल-महुआ। २. मद्य। शराब।

मधूलिका—स्त्री०[स० मधूल+कन्+टाप्, इत्व]१ मूर्वा (लता)। २. मुलेठी। ३. एक प्रकार की घास। ४ मधुली नामक गेहूँ। ५ उक्त गेहूँ से बनाई जानेवाली मदिरा।

मधूली—पु०[सं० मधूल+ङीष्]१ आम का पेड़। २ जल में उत्पन्न होनेवाली मुलेठी। ३ मध्यदेश मे होनेवाला एक प्रकार का गेहूँ। मधुली।

मध्य—पु०[सं०√मन्+यक्, नि० सिद्धि]१ किसी चीज के बीच का भाग। २. शरीर का मध्यभाग। कटि। कमर। ३. वह जो किसी विशिष्ट दल या पक्ष में न हो। तटस्थ। निष्पक्ष। उदा०—बूझि मित्र और मध्य गति तस तब करहिउँ आइ।—तुलसी। ४ संगीत मे, तीन सप्तकों में से बीचवाला सप्तक जिसके स्वरों का उच्चारण स्थान वक्षस्थल और कंठ का भीतरी भाग कहा गया है।

विशेष—साधारणतः गाना-बजाना इसी सप्तक से आरंभ होता है। जब स्वर ऊँचे होकर और आगे बढ़ते हैं, तब वे 'तार' नामक सप्तक में पहुँचते हैं। और जब स्वर इस सप्तक से नीचे होकर उतरने लगते हैं, तब 'मंद्र' नामक सप्तक मे पहुँच जाते हैं।

५ नृत्य में वह गति जो न बहुत तेज हो और न बहुत धीमी। ६. सुश्रुत के अनुसार १६ वर्ष से ७० वर्ष तक की अवस्था। ७ आपस में होनेवाला अन्तर। दूरी या फरक। ८ पश्चिम दिशा। ९ विश्राम। १०. दस अरब की संख्या की सज्ञा।

वि० १. बीच में रहने या होनेवाला। बीच का। २. जो बहुत अच्छा भी न हो और बहुत बुरा भी न हो, फलतः काम चलाने लायक। ३. अधम। नीच।

मध्यक—वि०[सं० मध्य से] १. मध्य या बीच में रहने या होनेवाला। २ जो न बहुत बड़ा हो और न बहुत छोटा। मझोले आकार का।

मध्यका—स्त्री० [स० मध्य से] दे० 'माध्यिक'।

मध्य-कुरु—पु० [मध्य से] उत्तर कुरु और दक्षिण कुरु के मध्य मे स्थित एक प्राचीन देश।

मध्य-खंड—पु० [मध्य० स०] ज्योतिष मे, पृथ्वी का वह भाग जो उत्तरी क्रातिवृत्त और दक्षिणी क्रातिवृत्त के बीच मे पडता है।

मध्य-गंध—पु० [ब० स०] आम का वृक्ष।

मध्यग—वि० [मध्य√गम् (जाना)+ड] बीच मे पडने या स्थित होनेवाला।

पु० दलाल।

मध्यगत—भू० कृ० [द्वि० त०] मध्य मे आया या लाया हुआ।

मध्यगति—स्त्री० [मध्य० स०] तटस्थता की वह नीति या स्थिति जिसमे किसी से न तो विशेष मित्रता ही होती है और न लडाई या झगडा बखेडा हो।

मध्य-जीवकल्प—पु० [कर्म० स०] भू-विज्ञान के अनुसार इस पृथ्वी की रचना के इतिहास मे, पाँच कल्पो मे से चौथा कल्प जो पुरा कल्प के बाद और आज से प्राय बारह से बीस करोड वर्ष पहले था और जिसमें अनेक प्रकार के विशाल काय जन्तुओ तथा पक्षियो की सृष्टि हुई थी (मेसोजोइक एरा)

विशेष—शेष चार कल्प ये हैं—आदि कल्प, उत्तर कल्प, पुरा कल्प और नव कल्प।

मध्यता—स्त्री० [स० मध्य+तल्+टाप्] मध्य होने की अवस्था, धर्म या भाव।

मध्य-तापिनी—स्त्री० [स०] एक उपनिषद् का नाम।

मध्यदेश—पु० [मध्य० स०] १ किसी चीज का बीचवाला भाग। २ शरीर का मध्य भाग। कटि। ३ प्राचीन भारत का वह विस्तृत मध्य भाग जिसके उत्तर मे हिमालय, पूर्व मे बगाल, दक्षिण मे महाराष्ट्र, पश्चिम मे पजाब और सिंध, तथा पश्चिम-दक्षिण मे गुजरात था।

मध्य-देह—पु० [स० कर्म० स०] उदर। पेट।

मध्य पद-लोपी—पु०=मध्यम पद-लोपी। (समास)

मध्य-पात—पु० [स०] १ ज्योतिष मे एक प्रकार का पात। २ परिचय करानेवाली बात या लक्षण। पहचान।

मध्य-पूर्व—पु० [स० कर्म० स०] १. यूरोप वालो की दृष्टि से एशिया या दक्षिण पश्चिमी तथा अफ्रीका का उत्तर-पूर्वी भाग। (मिडिल ईस्ट) २ उक्त भाग मे स्थित राज्यो का समाहार।

मध्य-प्रत्यय—वि० [सं० ब० स०] किसी के बीच या मध्य में बैठाया या लगाया हुआ।

पु० व्याकरण मे कोई ऐसा अक्षर या शब्द जो प्रत्यय के रूप मे किसी दूसरे शब्द के बीच मे लगकर उसके अर्थ मे कोई विशेषता उत्पन्न करता हो। मसंग। (इन्फिक्स)

मध्यम—वि० [स० मध्य+म] १ जो विपरीत कोणो, दिशाओ या सीमाओ के बीच में हो। मध्य का। बीच का। २ न बहुत बडा और न बहुत छोटा।

†वि०=मद्धिम।

पु० १. सगीत के सात स्वरो मे से चौथा स्वर जिसका मूल स्थान नासिका, अन स्थान कठ और शरीर मे उत्पत्ति स्थान वक्षस्थल माना गया है। २ वह उपपति जो नायिका की चेष्टाओं से ही उसके मन का भाव जान ले और उसके क्रोध दिखलाने पर अनुराग न प्रकट करे। यह साहित्य में तीन प्रकार के नायको मे से एक है। ३. एक प्रकार का हिरन। ४ सगीत मे एक प्रकार का राग। ५ दे० 'मध्य देश'।

मध्यमता—स्त्री० [स० मध्यम+तल्+टाप्] मध्यम होने की अवस्था या भाव।

मध्यम पद-लोपी(पिन्)—[स० मध्यम-पद, कर्म०स०, मध्यमपद] व्याकरण मे एक प्रकार का समास जिसमे पहले पद से दूसरे पद का सबध बतलानेवाला शब्द अध्याहृत या लुप्त रहता है। लुप्त पद-समास।

मध्यम-पुरुष—पु० [स० कर्म० स०] व्याकरण मे वक्ता की दृष्टि से उस व्यक्ति का वाचक सर्वनाम जिससे वह कुछ कह रहा हो। (सेकेंड पर्सन) जैसे—तू, तुम, आप।

मध्यम-मार्ग—पु० [स० कर्म० स०] १ दो चरम सीमाओ या परस्पर विरोधी मार्गों अथवा साधनो के बीच का ऐसा मार्ग या साधन जिसमें दोनो पक्षो या विचार-धाराओं का उचित समाधान या सामजस्य होता हो। बीच का रास्ता। (वाया-मीडिया) २ महात्मा बुद्ध द्वारा प्रतिपादित एक प्रसिद्ध मत या सिद्धात।

मध्यम-राजा (जन्)—पु० [स०कर्म० स०] वह राजा जो कई परस्पर विरोधी राजाओं के मध्य मे हो।

मध्यम-लोक—पु० [स० कर्म० स०] पृथ्वी।

मध्यम-वर्ग—पु० [स० कर्म० स०] मनुष्य समाज के आर्थिक तथा सामाजिक दृष्टि से विभाजित वर्गों (उच्च, मध्यम और निम्न) मे से बुद्धि-प्रधान एक वर्ग जो सामान्य आर्थिक स्थिति तथा सामाजिक स्थितिवाला समझा जाता है और उच्च वर्ग (धनी वर्ग) और निम्नवर्ग (श्रमिक वर्ग) के बीच मे माना जाता है। (मिडिल क्लास)

मध्यम-सग्रह—पु० [स० कर्म० स०] पर-स्त्री को फुसलाने तथा अपने वश मे करने के विचार से उसे गहने-कपडे आदि भेजना। (मिताक्षरा)

मध्यम-साहस—पु० [स० कर्म० स०] मनु के अनुसार पाँच सौ पणो तक का अर्थ-दड या जुरमाना।

मध्यमा—स्त्री० [स० मध्यम+टाप्] १ हाथ की बीचवाली उँगली। २ साहित्य मे वह नायिका जो अपने प्रिय के द्वारा हित अथवा अहित का व्यवहार देखकर उसके प्रति वैसा ही हित अथवा अहित का व्यवहार करती हो। ३ २४ हाथ लबी, १२ हाथ चौडी और ८ हाथ ऊँची नाव। (युक्तिकल्पतरु) ४ रजस्वला स्त्री। ५ कनियारी। ६. छोटा जामुन। ७ काकोली।

मध्यमागम—पु० [स० मध्यम-आगम, कर्म० स०] बौद्धो के चार प्रकार के आगमो मे से एक।

मध्यमान—पु० [स०] [वि० मध्य-मानिक] १ लेखे या हिसाब में बराबर का। औसत। पडता। मध्यक। २ परस्पर विपरीत दिशाओं में स्थित दो बिंदुओ या सख्याओ के ठीक बीचोबीच में स्थित बिंदु या संख्या। (मीन) जैसे—यदि कही का तापमान घटकर ९५ अश तक और बढ़कर १०५ अश तक पहुँच जाता हो तो वहाँ के ताप-मान का मध्यमान १०० अश होगा।

वि० १. दे० 'मध्यक'। २. दे० 'मध्या'।
३. संगीत में, एक प्रकार का ताल जिसमे ८ ह्रस्व अथवा ४ दीर्घ मात्राएँ होती हैं और ३ आघात और १ खाली होता है।

मध्यमाहरण—पुं० [सं०] बीज गणित की वह क्रिया जिसके अनुसार कोई आयत-मान जाना जाता है।

माध्यमिक—वि०=माध्यमिक।

मध्यमिका—स्त्री० [सं० मध्यम+कन्+टाप्, इत्व] रजस्वला स्त्री।

मध्यमीय—वि० [सं० मध्यम+छ—ईय] मध्यम।

मध्य-यव—पुं० [सं० कर्म० स०] प्राचीन काल का एक परिमाण जो पीली सरसों के छः दानों की तौल के बराबर होता था।

मध्य-युग—पुं० [सं० कर्म० स०] [वि० मध्ययुगीन] १. प्राचीन युग और आधुनिक युग के बीच का युग या समय। २. एशिया युरोप आदि के इतिहास मे, ईसवी छठी से पन्द्रहवी शताब्दी तक का काल या समय। (मिडिल एजेज) ३. आधुनिक भारतीय इतिहास में, मुसलमानी शासन काल का समय।

मध्ययुगीन—वि० [सं० मध्ययुग+ख—ईन] मध्ययुग-सम्बन्धी। मध्ययुग का। (मेडीवल)

मध्य-रेखा—स्त्री० [सं० कर्म० स०] ज्योतिष और भूगोल मे वह रेखा जिसकी कल्पना देशातर निकालने के लिए की जाती है।

मध्य-लोक—पुं० [सं० कर्म० स०] १ पृथ्वी। २ जैनो के अनुसार वह मध्यवर्ती लोक जो मेरु पर्वत पर १००० ४० योजन की ऊँचाई पर है।

मध्यवर्ती (र्तिन्)—वि० [सं० मध्य√वृत् (बरतना)+णिनि] १ जो मध्य मे वर्तमान या स्थित हो। बीच का। २. जो दो पक्षों के बीच में रहकर उनमे से सम्बन्ध स्थापित करता हो। (इन्टरमिडिअरी)

मध्यविवरण—पुं० [सं० ष० त०] बृहत्संहिता के अनुसार सूर्य या चन्द्रग्रहण के मोक्ष का एक प्रकार जिसमे सूर्य या चन्द्रमा का मध्य भाग पहले प्रकाशित होता है।

मध्यसर्ग—पुं०=मध्य-प्रत्यय।

मध्यसूत्र—पुं० =मध्यरेखा।

मध्यस्थ—वि० [सं० मध्य√स्था (ठहरना)+क] [भाव० मध्यस्थता] जो बीच या मध्य मे स्थित हो। बीच का।
पुं० १. वह जो दो विरोधी पक्षो या व्यक्तियों के बीच में पड़कर उनका झगड़ा या विवाद निपटाता हो। आपस मे मेल या समझौता करानेवाला व्यक्ति। (मीडिएटर) २. वह जो दो दलों या पक्षो के बीच मे रहकर उनके पारस्परिक व्यवहार या लेन-देन मे कुछ सुभीते उत्पन्न करके स्वयं भी कुछ लाभ उठाता हो। (मिडिलमैन) जैसे—उत्पादको और उपभोक्ताओ के बीच मे व्यापारी, अथवा राज्य और कृषकों के बीच मे जमींदार आदि। ३. वह जो दोनों विरोधी पक्षो मे से किसी पक्ष मे न हो। उदासीन। ४. वह जो अपनी हानि न करता हुआ दूसरो का उपकार करता हो।

मध्यस्थता—स्त्री० [सं० मध्यस्थ+तल्—टाप्] मध्यस्थ होने की अवस्था या भाव। (मीडिएशन) २. मध्यस्थ का काम और पद।

मध्य-स्थल—पुं० [सं० कर्म स०] १. मध्यप्रदेश। कमर।

मध्यांतर—पुं० [सं० मध्य+अंतर] १. दो घटनाओ वस्तुओं आदि के मध्य या बीच का अंतर। २. उक्त प्रकार के अंतर के कारण बीतनेवाला समय। ३. किसी काम या बात के बीच में सुस्ताने आदि के लिए निकाला या नियत किया हुआ थोड़ा-सा समय। (इन्टर्वल)

मध्या—स्त्री० [सं० मध्य+टाप्] १. साहित्य में स्वकीया नायिका के तीन भेदों में से एक जिसमें काम और लज्जा की समान स्थिति मानी गई है। स्वकीया के अन्य दो भेद हैं—मुग्धा और प्रगल्भा। २. एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे तीन अक्षर होते हैं। इसके आठ भेद हैं। ३ बीच की उँगली। मध्यमा।

मध्याना—पुं०=मध्याह्न।

मध्यावकाश—पुं० [सं० मध्य+अवकाश] =मध्यांतर।

मध्याह्न—पुं० [सं० मध्य-अहन्, एकदेशि त०स०] १. दिन के ठीक बीच का वह समय जब सूर्य सबसे ऊपर आ जाता है। २ उक्त समय के बाद का थोड़ी देर तक का समय।

मध्याह्नोत्तर—पुं० [सं० मध्य अहन्-उत्तर, ष० त०] मध्याह्न के ठीक बादवाला समय। तीसरा पहर।

मध्ये—अव्य० =मद्धे। (देखें)

मध्व—पुं० दे० 'मध्वाचार्य'।
†पुं०=मधु।

मध्वक—पुं० [सं० मध्व+कन्] मधुमक्खी।

मध्वल—पुं० [सं० मधु√अल् (पर्याप्त)+अण्] बार बार और बहुत शराब पीना।

मध्वाचार्य—पुं० [सं० मध्व-आचार्य, कर्म० स०] दक्षिण भारत के एक प्रसिद्ध वैष्णव आचार्य जिन्होंने माध्व या मध्वाचारि नामक सप्रदाय का प्रावर्तन किया था। इनका समय ईसवी बारहवी शताब्दी के लगभग माना जाता है।

मध्वाधार—पुं० [सं० मधु-आधार, ष० त०] मधुमक्खियो का छत्ता।

मध्वालु—पुं० [सं० मधु-आलु, कर्म० स०] एक प्रकार के पौधे की जड़ जो खाई जाती है।

मध्वावास—पुं० [सं० मधु-आवास, ष० त०] आम का पेड़।

मध्वासव—पुं० [सं० मधु-आसव, तृ० त०] महुए के रस के पाँस से बनाई जानेवाली मदिरा।

मध्वासवनिक—पुं० [सं० मध्वासवन+ठन्—इक] शराब बनाने तथा बेचनेवाला। कलवार।

मध्विजा—स्त्री० [सं० मधु√ईज् (प्राप्त होना)+क, पृषो० ह्रस्व, +टाप्] मद्य।

मनः (नस्)—पुं० [सं०√मन् (मानना)+असुन्] मन।

मनः कल्पित—वि० [सं० तृ० त०] मनगढ़त। फरजी।

मनःक्षेप—पुं० [सं० ष० त०] मन में होनेवाला उद्वेग।

मनःपति—पुं० [सं० ष० त०] विष्णु।

मनःपर्याप्ति—स्त्री० [सं० ष० त०] मन से संकल्प विकल्प या बोध प्राप्ति करने की शक्ति।

मनःपर्याय—पुं० [सं० ष० त०] सत्य का बोध होने से ठीक पहलेवाली स्थिति। (जैन)

मनःपूत—वि० [सं० तृ० त०] १. पवित्र मन या शुद्ध आत्मावाला।

२ मन की दृष्टि में जो पवित्र तथा शुद्ध हो। ३. जितना मन चाहता हो उतना।

मनःप्रसूत—वि० [सं०स०त०] १ मन मे उत्पन्न होनेवाला। २. कल्पित।

मनःप्रीति—स्त्री० [स० ष० त०] मन की प्रसन्नता।

मनःभव—वि० [स० मनोभव] १. मन से उत्पन्न। २ कल्पित।

मनःविश्लेषण—पु० =मनोविश्लेषण।

मनःशक्ति—स्त्री० [स० ष० त०] मानसिक शक्ति। मनोबल।

मनःशास्त्र—पु० [स० ष० त०] =मानस शास्त्र। मनोविज्ञान।

मनःशिल—पु० [स० मनस्√शिल् (आकर्षित करना)+क] मैनसिल (खनिज द्रव्य)।

मनःशिला—स्त्री० [स० मन शिल+टाप्] मैनसिल।

मनःसंस्कार—पु० [स० ष० त०] मन का परिष्कार।

मन—पु० [स० दे० 'मन'] १ प्राणियों के अत करण का वह अश जिससे वे अनुभव, इच्छा, बोध, विचार और सकल्प-विकल्प करते हैं।

विशेष—(क) शास्त्रीय दृष्टि से यह उन सभी शक्तियो का उद्गम या मूल है जिनके द्वारा हम सब काम करते, सब बाते जानते और याद रखते तथा सब कुछ सोचते-समझते हैं। इसी लिए वैशेषिक ने इसे उभयात्मक अर्थात् कर्मेन्द्रिय और ज्ञानेद्रिय दोनो के गुणो से युक्त माना है। यह आत्मा, शरीर तथा हृदय तीनों से भिन्न एक स्वतत्र तत्त्व है; और अत करण की चार वृत्तियो मे से एक वृत्ति के रूप मे माना गया है। (शेष तीन वृत्तियाँ चित्त, बुद्धि और अहकार हैं।) परन्तु योग-शास्त्र मे इसी को चित्त कहा गया है। शरीर के अत के साथ इसका भी अत हो जाता है। (ख) भाषिक क्षेत्र मे यह अर्थ और प्रयोग की दृष्टि से बहुत व्यापक शब्द है। अनुभूति, अनुराग, उत्साह, प्रकृति, प्रवृत्ति, विचार, सकल्प आदि अनेक प्रसगो मे इसका प्रयोग होता है, और इसके बहुत से मुहावरे उक्त बातो से सम्बद्ध है। कुछ अवस्थाओ मे यह चित्त और हृदय के पर्याय के रूप मे भी प्रयुक्त होता है।

पद—**मन का मारा**=बहुत ही उदास, खिन्न और हतोत्साह। **मन का मैला**=जिसके मन मे कपट, द्वेष, वैर आदि दूषित भाव प्रबल होते हो। **मन ही मन**=अपने हृदय मे और चुपचाप। बिना किसी से कुछ कहे-सुने।

मुहा०—**(किसी से) मन अटकना**=शृगारिक क्षेत्र मे, किसी से अनुराग या प्रेम का सम्बन्ध होना। **मन अपनाना**=अपने मन को अपने वश मे करना या धैर्य धारण करते हुए शात करना। उदा०—सूर श्याम देखें बिनु सजनी कैसे मन अपनाऊँ।—सूर। **(किसी पर) मन आना**=किसी के प्रति काम-पूर्ण अनुराग या वासना उत्पन्न होना। **(किसी से) मन उलझना**=दे० ऊपर 'किसी से मन अटकना'। **मन कचोटना**=कष्ट, पश्चात्ताप, वियोग आदि के कारण मन मे क्लेश या दुःख होना। **(किसी काम, चीज या बात के लिए) मन करना**=इच्छा या प्रवृत्ति होना। जी चाहना। जैसे—आज तो खीर खाने को हमारा मन करता है। **मन की मन में रहना**=(क) मन की बात दूसरो पर प्रकट करने का अवसर न मिलना। (ख) इच्छा, कामना आदि की तृप्ति या पूर्ति न होना। जैसे—मैंने कई बार उनसे मिलना चाहा, पर मन की मन मे ही रह गई; अर्थात् उनसे किसी प्रकार भेट न हो सकी। **मन के लड्डू खाना**=ऐसी बात सोचकर प्रसन्न होना जिसका पूरा होना असंभव हो। व्यर्थ की आशा पर प्रसन्न होना। **मन खराब होना**=(क) मन मे कोई कुरुचि या विरक्त करनेवाली बात या भावना उत्पन्न होना। जैसे—तुम्हारी दुष्टताओ से सबका मन खराब होता है। (ख) शरीर अस्वस्थ या रोगयुक्त होना। (ग) कै या मिचली मालुम होना। **(किसी से) मन खोलना**=दुराव छोडकर किसी पर अपना उद्देश्य या विचार प्रकट करना। **(किसी काम, चीज या बात पर) मन चलना**=इच्छा या प्रवृत्ति होना। जैसे—बीमारी मे तरह तरह की चीजो पर मन चलता है (अर्थात् तरह तरह की चीजे खाने को जी चाहता है)। **(किसी का) मन टटोलना**=बातो ही बातो मे किसी के भावो, विचारो आदि से परिचित होने का प्रयत्न करना। **मन टूटना**=उत्साह, उमग, साहस आदि का नाश या ह्रास होना। **(किसी काम, चीज या बात पर) मन डालना**=कुछ करने, पाने आदि के लिए मन चचल होना। चित्त चलायमान होना। **(किसी का) मन तोड़ना**=उत्साह या उमग में बाधक होकर उसका अत करना। हतोत्साह करना। **(किसी काम या बात में) मन देना**=अच्छी तरह चित्त या मन लगाना। जैसे—हर काम मन देकर किया करो। **(किसी को) अपना मन देना**=(क) किसी के प्रति अपने मन के भाव प्रकट करना। (ख) किसी पर पूर्ण रूप से अनुरक्त होना। प्रेम के कारण किसी के वश मे होना। आसक्त होना। **मन धरना**=ध्यान देना। मन लगाना। **(किसी से) मन फट जाना या फिर जाना**=किसी के अनुचित कृत्य या व्यवहार के कारण उससे विरक्त होना। **मन फेरना**=किसी काम या बात से मन हटाना। किसी ओर प्रवृत्ति न होने देना। **मन बढ़ना**=उत्साह या साहस बढना। **(अपना) मन बढ़ाना**=मन को अधिक प्रवृत्त करना। **(किसी का) मन बढ़ाना**=उत्तेजित या उत्साहित करना। बढ़ावा देना। **मन बहलाना**=खिन्न या दुःखी चित्त को किसी काम मे लगाकर खेद और दुःख दूर करके आनदित या प्रसन्न करना। **मन बिगड़ना**=दे० ऊपर 'मन खराब होना'। **(अपना) मन बूझना**=मन मे ढारस, तृप्ति, धैर्य, शाति या सतोष होना। **(किसी का) मन बूझना**=किसी के मन की थाह लेना। **मन भर जाना**=अघा जाना। तृप्ति होना। विशेष अनुराग या प्रवृत्ति न रह जाना। **(किसी काम या बात से) मन भरना**=(क) प्रतीति न होना। (ख) तृप्ति या सतोष होना। (ग) अधिक तृप्ति होने के कारण अनुराग या प्रवृत्ति न रह जाना। **मन भाना**=मन को अच्छा या भला जान पड़ना। **मन भारी होना**=मन मे किसी प्रकार की अस्वस्थता का अनुभव या बोध होना। **(किसी की ओर से) मन भारी होना**=दुःख, द्वेष आदि के कारण किसी के प्रति पहले का-सा अनुराग न रह जाना। **मन मानना**=किसी काम या बात के सबध मे, मन मे तृप्ति निश्चय या सतोष होना अथवा निश्चिततापूर्वक उसकी ओर प्रवृत्ति होना। जैसे—मन माने तो सौदा पक्का कर लो। **(किसी से) मन मानना**=किसी के साथ अनुराग या प्रेम होना। उदा०—(क) सखी री श्याम सो मन मान्यौ।—सूर। (ख) राम नाम जाका मन माना।—तुलसी। **(अपना) मन मारना**=(क) प्रवृत्तियो को दबाकर मन को वश मे करना या रखना। इच्छा या मन का भाव दबाना या रोकना। (ख) मन की उमग पूरी न होने के कारण उदास या खिन्न होना। उदा०—मौन गहौं, मन मारे रहौ, निज प्रीतम की कहौ कौन कहानी।—प्रताप। **(किसी से) मन मिलाना**=(क) प्रकृति, प्रवृत्ति, रुचि, विचार आदि

की समानता के कारण किसी से आत्मीयता का संबंध होना। जैसे—मन मिले का मेला। (कहा०) (ख) शृंगारिक दृष्टि से अनुराग या प्रेम होना। **मन में आना**=(क) किसी काम या बात के लिए मनमें कोई भाव या विचार उत्पन्न होना। जैसे—आज मन में आया कि चलकर तुमसे मिल आऊँ। (ख) कोई बात ध्यान या समझ में न आना। अच्छा या ठीक मालूम होना। उदा०—और देत कछु मन नहिं आवै।—सूर। (ग) मन पर किसी बात का प्रभाव पड़ना। उदा०—ता सों उन कटु बचन सुनाये, पै ताके मन कछू न आये।—सूर। **मन में जमना या बैठना**=उचित या ठीक जान पड़ना। **मन में ठानना**=निश्चय करना। दृढ़ संकल्प करना। **मन में धरना**—दे० ऊपर 'मन में ठानना'। **मन में बसना**=बहुत अच्छा लगने या पसन्द आने के कारण मन में बराबर ध्यान बना रहना। **(कोई बात) मन में भरना**=हृदयंगम करना। मन में जमाकर रखना। **(कोई बात) मन में रखना**=(क) अच्छी तरह छिपाकर रखना। किसी पर प्रकट न होने देना। (ख) अच्छी तरह ध्यान में या स्मरण में रखना। **मन में लाना**=(क) विचार करना। सोचना। (ख) कोई काम करने का विचार या संकल्प करना। जैसे—अगर मन में लाओ तो तुम जरूर यह काम कर सकते हो। **(किसी से) मन मैला करना**=किसी की ओर से अपने मन मे दुर्भाव द्वेष या वैर-विरोध रखना। **(किसी से) मन मोटा होना**=दे० ऊपर '(किसी की ओर से) मन भारी होना'। **मन मोड़ना**=प्रवृत्ति या विचार को एक ओर हटाकर दूसरी ओर लगाना। **(किसी का) मन रखना**=किसी को प्रसन्न रखने के लिए उसकी इच्छा पूरी करना। **मन रहना या रह जाना**=इच्छा या कार्य की ऐसी आंशिक पूर्ति होना कि निराश या हताश न होना पड़े। **(किसी काम या बात में) मन लगाना**=पूरा अवधान या ध्यान होना। चित्त का प्रवृत्त और सलग्न होना। जैसे—संगीत में उनका मन लगता है। **(किसी स्थान पर) मन लगना**=भला जान पड़ने के कारण रहने की इच्छा होना या जी न ऊबना। **(किसी काम या बात में) मन लगाना**=अच्छी तरह ध्यान देते हुए या मनोयोगपूर्वक सलग्न होना। **(किसी व्यक्ति से) मन लगाना**=किसी से अनुराग या प्रेम करना। **मन लाना***=(क) मन लगाना। जी लगाना। (ख) मन मे निश्चय या संकल्प करना। **(किसी का) मन लेना**=(क) किसी के मन की भीतरी बातो की थाह या पता लेना। जैसे—आज वह भी मेरा मन लेने आये थे, पर मैंने उन्हें इधर-उधर की बातो में टाल दिया। (ख) किसी को अपनी ओर अनुरक्त या प्रवृत्त करना। (ग) किसी को किसी रूप मे अपने अधिकार या वश मे करना। **मन से उतरना**=(क) मन में आदर भाव न रह जाना। तिरस्कृत होना। (ख) ध्यान या स्मृति में न रह जाना। भूल जाना। विस्मृत होना। **(किसी का) मन हरना**=किसी को अपने प्रति मुग्ध या मोहित करना। **मन हरा होना**=खिन्न या दुःखी मन का प्रफुल्लित या प्रसन्न होना। **(किसी का मन) हाथ में लेना या करना**=किसी का मन अपने अधिकार या वश में करना। अपना अनुगामी, प्रेमी या भक्त बनाना। **मन होना**=इच्छा होना।

पुं०[सामीमिन वैदिक स० मना] १. चालीस सेर की तौल या परिमाण। २ उक्त तौल या परिमाण का बाट।

†पुं०=मणि।

मनई—पुं० [सं० मानव] मनुष्य।

मनउती†—स्त्री०=मनौती।

मनकना—अ० [अनु०] १. हिलना-डोलना। चेष्टा करना। हाथ-पैर चलाना।

अ०=मिनकना।

मनकरा—वि०[हिं० मणि+कर (प्रत्य०)] चमकदार। चमकीला।

मनका—पुं०[सं० मणिक]१ धातु, लकड़ी, आदि का वह गोल या अंडाकार छोटा टुकड़ा जिसके बीचोबीच छेद होता है तथा जो माला के रूप में पिरोया जाता है। एक साथ पिरोये जानेवाले बहुत से मनके माला का रूप धारण कर लेते हैं। २. माला। सुमिरनी। उदा०—करका मन का छोड़कर मनका मनका फेर।

पुं० [सं०मन्यका=गले की नस] गरदन के पीछे की वह हड्डी जो रीढ़ के ठीक ऊपरी भाग मे होती है।

मुहा०—**मनका ढलना या ढलकना**=आसन्न मृत्यु के समय रोगी की गरदन टेढ़ी हो जाना।

मनकामना—स्त्री०=मन कामना (मनोरथ)।

मनकुमार—पुं०[सं० मन कुमार] कामदेव। उदा०—कुवलय-दल सुकुमार तन, मन-कुमार जय मार।—मतिराम।

मनकूल—वि०[अ० मन्कूल]१ जिसकी प्रतिलिपि तैयार कर ली गई हो। नकल किया हुआ। प्रतिलिपित। २. (सम्पत्ति) जो एक स्थान से दूसरे स्थान पर लाई जा सके। चल।

पद—**मनकूला जायदाद**=चल-सपत्ति।

मनकूहा—वि० स्त्री०[अ० मन्कूह] (स्त्री) जिसका विवाह हो चुका हो। जो ब्याही हुई हो। परिणीता। विवाहिता।

मनगढ़ंत—वि० [हिं० मन=गढ़ना] मन द्वारा गढ़ा हुआ। फलत कल्पित अथवा मिथ्या। कपोल-कल्पित। जैसे—मनगढ़ंत किस्सा।

स्त्री०=कल्पित या मिथ्या बात।

मनचला—वि० [स० मन+हिं० चलना][स्त्री० मनचली]१ (व्यक्ति) जिसका मन आकर्षक तथा सुन्दर वस्तुओं की प्राप्ति के लिए ललचा उठता हो। २. (व्यक्ति) जो प्रायः किसी आकर्षक तथा सुन्दर वस्तु की प्राप्ति के लिए किसी प्रकार की जोखिम का काम करने के लिए प्रस्तुत हो जाय। ३. कामुक तथा रसिक स्वभाववाला।

मन-चाहता—वि० [हिं० मन+चाहना] [स्त्री० मनचाहती] १. जो मन के अनुकूल हो। २. जिसे मन चाहे। प्रिय।

मन-चाहा—वि०[हिं० मन+चाहना] [स्त्री० मनचाही] १. जिसे मन चाहता हो। जैसे—मन-चाहा काम, मनचाही नौकरी। २. इच्छानुसार किया हुआ।

मनचाहे—अव्य०[हिं० मन-चाहा] इच्छानुसार।

मन-चीतना—वि०=मन-चीता।

मन-चीता—वि०[हिं० मन+चेतना] [स्त्री० मनचीती] मन में चाहा और सोचा हुआ।

मनजात—पुं०[स० मनोजात] कामदेव।

मनतोरवा—पुं०[देश०] एक प्रकार का पक्षी।

मनन—पुं०[सं०√मन् (मानना)+ल्युट्—अन]१. मन लगाकर कोई काम सोचना या समझना। २. किसी विषय में सब अंगों पर अच्छी

तरह विचार करते हुए उसे समझने के लिए किया जानेवाला प्रयत्न या प्रयास। चिंतन। (कन्टेम्प्लेशन)। जैसे—आध्यात्मिक ग्रंथों या राजनीतिक समस्याओं का मनन। ३. वेदांत शास्त्रानुसार सुने हुए वाक्यों पर बार बार विचार करना और प्रश्नोत्तर या शंका-समाधान द्वारा उसका निश्चय करना।

मनन-शील—वि० [सं० ब० स०] जो स्वाभावतः मनन करने में प्रवृत्त रहता हो।

मनमनाना—अ० [मन मन से अनु०] गुंजारना। गूँजना।

मन-मंग—पु०[सं० मनोमंग]बदरिका आश्रम के पास का एक पर्वत।

मन-मरौती—स्त्री०[हिं० मन मरना] १. मन मरने की क्रिया या भाव। मनस्तोष। खुशामद। चापलूसी। उदा०—अफसरों के बंगले पर जाना और सलाम बोलकर मनमरौती कर आना।—वृन्दावनलाल वर्मा।

मन-माया—वि०[सं० मन+हिं० माना] [स्त्री० मन-माई] १ जो मन को भाता या रुचिकर प्रतीत होता हो। मन को भाने या अच्छा लगनेवाला। २ प्रिय। प्यारा।

मन-भावता—वि० =मन-माया।

मन-भावन—वि०=मनमाया। उदा०—सावन की मन मावन की, घिरि आइ बदरिया।—गीत।

मन-मति—वि०[मन+मति] अपने मन का काम करनेवाला। स्वेच्छाचारी।

मन-मस्त—वि०=मैमंत (मदमस्त)।

मन-मथ—पु०=मन्मथ (कामदेव)।

मन-मानता—वि०[हिं० मन+मानना]१ मनमाना। २ मनचाहा।

मनमाना—वि० [सं०मन+हिं० मानना]१. (व्यक्ति) जो अपनी इच्छा को सर्वोपरि महत्त्व देता हो; और किसी की इच्छा बात या राय को कुछ भी महत्त्व न देता हो। २. (आचार या व्यवहार) जो अपनी इच्छा से तथा बिना किसी के सुख-सुभीते का ध्यान रखे किया गया हो।

मनमानी—स्त्री० [हिं० मन-माना] १. मनमाना कार्य। २ वह स्थिति जिसमे बिना औचित्य आदि का विचार किये मन-माने ढंग से काम किया जाय।

मन-मुखी (खिन्)—वि० [सं० मन+मुखी] मनमाना काम करनेवाला। स्वेच्छाचारी।

मन-मुटाव—पु०=मनमोटाव।

मन-मोटाव—पु०[सं० मन+हिं० मोटाव] द्वेष आदि के फलस्वरूप होनेवाली वह स्थिति जिसमे किसी का मन किसी दूसरे से कुछ खिंचा रहता है।

मन-मोदक—पु०[हिं०मन+मोदक] केवल अपना मन प्रसन्न करने के लिए बनाई हुई ऐसी कल्पना जिसका कोई वास्तविक आधार न हो।

मन-मोहन—वि० [सं०] [स्त्री० मनमोहनी] १. मन को मोहनेवाला। २ प्रिय। प्यारा।

पु० श्रीकृष्ण।

मन-मौज—पु०[सं० मन+मौज]१. मन की तरंग। १. हार्दिक प्रसन्नता। ३ अपनी प्रसन्नता या सुख के लिए किया जानेवाला काम या खेल।

मन-मौजी—वि०[हिं० मनमौज]१. अपने मन में उठी तरंग के अनुसार काम करनेवाला। २. अपनी प्रसन्नता के उद्देश्य से कोई विशेष आचरण या व्यवहार करनेवाला।

मनरंज*—वि० =मनरंजन।

मनरंजन—वि० [हिं० मन+रंजना] मनोरंजन करनेवाला। मन को प्रसन्न करनेवाला।

पु०=मनोरंजन।

मन-रोचन—वि०[सं० मनरोचन]मन को मुग्ध करनेवाला। सुन्दर।

मनलाडू†—पु० =मनमोदक।

मनवाँ—पु०[देश०] देव-कपास। रामकपास। नरमा।

पु०=मन।

मनवांछित—वि० =मनोवांछित।

मनवाना—स०[हिं० मनाना का प्रे०]१ किसी को कुछ मान लेने में प्रवृत्त या विवश करना। २ मनाने का काम किसी दूसरे से कराना।

मनशा—स्त्री० [अ० मन्शा] १ आशय। मतलब। २ उद्देश्य। प्रयोजन। ३ इच्छा। इरादा। संकल्प।

मनसना—स० [सं० मनस्यन] १ मन मे इच्छा विचार या संकल्प करना। उदा०—मनमई नारि किया तन छारा।—गोरखनाथ। २ मन मे दृढ़ निश्चय या संकल्प करना। ३ कोई चीज दान करने के उद्देश्य से सामने रखकर या हाथ मे लेकर विधि से संकल्प या मंत्र पढ़ना।

मनसब—पु०[अ० मंसब]१ राज्य, शासन आदि मे ऐसा ऊँचा पद जिसके साथ कुछ विशिष्ट अधिकार भी प्राप्त हो। २ कर्तव्य। कर्म। कृत्य। ३ अधिकार। इख्तियार।

मनसबदार—पु०[अ० मंसब+फा० दार] वह जो किसी मनसब अर्थात् ऊँचे पद पर आसीन हो।

मनसा—स्त्री०[सं० मनस्+अच्+टाप्]एक देवी जो पुराणानुसार जरत्कारु मुनि की पत्नी और आस्तीक की माता थी तथा कश्यप की पुत्री और वासुकी की बहन थी। वह साँपो के कुल की अधिष्ठात्री मानी गई है।

वि० १ मन मे उत्पन्न। २ मन-सम्बन्धी। मन का।

क्रि वि० मन के द्वारा। मन से।

स्त्री०[अ० मंशा]१ इरादा। विचार। २ अभिलाष। कामना। ३ मन। ४ बुद्धि। ५ अभिप्राय। ६ उद्देश्य।

स्त्री०[देश०]एक प्रकार की घास जो बहुत तेजी से बढ़ती और पशुओं के लिए बहुत पुष्टिकारक समझी जाती है। मकड़ा। मधाना। खमकरा।

मनसाकर—वि० [हिं० मनसा+सं० कर (प्रत्य०)] मनोवांछित फल देनेवाला। मनोकामना पूर्ण करनेवाला।

मनसाना—अ० [हिं० मनसा] उमंग मे आना। तरंग में आना।

स० [हिं० मनसना का प्रे०] किसी को कुछ मनसने मे प्रवृत्त करना। मनसवाना।

मनसा-पंचमी—स्त्री० [सं० मध्य० स०] आषाढ़ की कृष्णपंचमी। इस दिन मनसा देवी का उत्सव होता है।

मनसायन—वि०[हिं० मानुस मनुष्य+आयन(प्रत्य०)]१ ऐसी स्थिति जिसमें कुछ लोगों के रहने के कारण अच्छी चहल-पहल हो।

क्रि० प्र०—रखना।

२. चहल-पहल की और मन लगने की जगह। गुलजार।

मनसाराम—पुं०[सं० मनस्-राम] बोल-चाल में, अपने मन और फलत: व्यक्तित्व की संज्ञा। जैसे—चलो मनसाराम कोई जगह ढूँढे।

मनसि—अव्य०[हिं० मन] १. मन में। २. हृदय से।

मनसिज—पुं०[सं० मनसि√ जन् (उत्पन्न करना) +ड] १ कामदेव। २. संगीत में, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

मनसूख—वि०[अ० मंसूख] [भाव० मंसूखी] १. रद्द किया हुआ। २. टाला हुआ। ३. परित्यक्त।

मनसूखी—स्त्री०[अ० मन्सूखी] मनसूख होने की अवस्था, क्रिया या भाव।

मनसूबा—पुं० [अ० मन्सूब:] १. कोई काम करने से पहले मन में सोची जानेवाली युक्ति।

क्रि० प्र०—ठानना।—बाँधना।

२ इरादा। विचार।

मनसूर—वि०[अ० मन्सूर] विजेता।

पुं० ९वीं शताब्दी का एक प्रसिद्ध सूफी संत जो अपने को अनहलक (अहं ब्रह्मास्मि) कहता था और इसी लिए जो सूली पर चढ़ा दिया गया था।

मनसेधू—पुं०[सं० मनुष्य] पुरुष। आदमी। (पूरब)

मनस्क—वि०[सं०] [भाव० मनस्कता] १. जिसका मन किसी विशिष्ट समय मे किसी ओर प्रवृत्त हुआ या लगा हो। जैसे—अन्य-मनस्क। २. जिसका मन किसी कार्य या विषय की ओर अनुरक्त या प्रवृत्त हो। कुछ करने, जानने आदि की इच्छा से युक्त। (माइन्डेड) जैसे—अब वे भी संगीत मनस्क होने लगे हैं।

मनस्कता—स्त्री० [सं० मनस्क+तल्+टाप्] मनस्क होने की अवस्था या भाव।

मनस्कांत—वि०[स० ष० त०] १ जो मन के अनुकूल हो। मनोनुकूल। २. प्रिय। प्यारा।

पुं० मन की अभिलाषा या इच्छा। मनोरथ।

मनस्काम—पुं०[सं० ष० त०] मन की अभिलाषा। मनोरथ।

मनस्ताप—पुं०[सं० ष० त०] १ मन:पीड़ा। आतरिक दुख। २ अनुताप। पश्चात्ताप। पछतावा।

मनस्ताल—पुं०[सं० ब० स०] १ हरताल। २. दुर्गा की सवारी के सिंह का नाम।

मनस्तोष—पुं०[सं० ष० त०] १. मन में होनेवाला तोष या तृप्ति। २. आवश्यकता, इच्छा, शंका, संशय आदि की पूर्ति या निवारण के फलस्वरूप मन में होनेवाली शान्ति। तुष्टि। (सैटिस्फैक्शन)

मनस्विता—स्त्री० [सं० मनस्विन्+तल्+टाप्] मनस्वी होने की अवस्था या भाव।

मनस्विनी—स्त्री० [सं० मनस्+विनि+ङीप्] १. मृकंडु ऋषि की पत्नी का नाम। २. प्रजापति की एक पत्नी।

मनस्वी (स्विन्)—वि० [सं० मनस्+विनि] [स्त्री० मनस्विनी] १. श्रेष्ठ मन से सम्पन्न। बुद्धिमान्। उच्च विचारवाला। २ मनमाना आचरण करनेवाला। स्वेच्छाचारी।

पुं० शरभ।

मनहंस—पुं०[हिं० मन+हंस] पंद्रह अक्षरों का एक वर्णिक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में क्रमश: एक सगण, दो जगण, भगण और अंत में रगण होता है।

मनहर—वि०[हिं० मन+हरना या सं० मनोहर] मन हरनेवाला। मनोहर। उदा०—गिरने से नयनों से उज्ज्वल आँसू के कण मनहर।—प्रसाद।

पुं० घनाक्षरी छंद का एक नाम।

मनहरण—पुं०[हिं० मन+हरण] १. मन हरने की क्रिया या भाव। २. पन्द्रह अक्षरों का एक वर्णिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में पाँच सगण होते हैं। इसे नलिनी और भ्रमरावली भी कहते हैं।

वि०=मनोहर।

मनहरन—वि० पुं०=मनहरण।

मनहार—वि०=मनोहारी।

मनहारी—वि०=मनोहारी।

मनहुँ*—अव्य०[हिं० मानना या मानों] मानों। जैसे। यथा।

मनहूस—वि०[अ०मनहूस] १. अशुभ। बुरा। २. अभागा। बदकिस्मत। ३. जिसमें चमक-दमक, रौनक या सरस जीवन का कोई लक्षण न हो। जैसे—मनहूस आदमी, मनहूस मकान।

मना—वि० [अ०] १. जिसके संबंध में निषेध हो। निषिद्ध। जैसे—यहाँ तमाकू या बीड़ी पीना मना है। २. जो कोई काम करने से रोका गया हो। वारण किया हुआ। जैसे—लड़कों को मना कर दो; यहाँ शोर न करें।

मनाइन—स्त्री०[?] वह स्त्री जो शुभ-अशुभ सभी प्रकार के कर्मों के विधि-विधान जानती हो और इसी लिए स्त्री-समाज मे मान्य हो। (पूरब)

मनाई†—स्त्री०=मनाही।

मनाक्—वि०[सं०√मन् (ज्ञान करना)+आक्] १ बहुत जरा सा। अल्प। थोड़ा। २. धीमा। मन्द।

मनाकु—वि०=मनाक (थोड़ा)। उदा०—जेंहि बखान मति सक्ति मनाकू।—नूरमोहम्मद।

मनादी†—स्त्री०=मुनादी।

मनाना—स०[हिं० मानना का प्रे०] १ किसी को कुछ मानने मे प्रवृत्त करना। ऐसा काम करना जिससे कोई दूसरा कुछ मान ले। २. किसी को किसी काम या बात के लिए उद्यत, तत्पर या राजी करना। ३. जो किसी कारण से अप्रसन्न हो गया या रूठ गया हो उसे मीठी मीठी बातें करके अपने अनुकूल बनाना और प्रसन्न करना। ४ अपनी त्रुटि या दोष मानकर उसके लिए क्षमा माँगना। उदा०—या भूल-चूक अपनी पहले मनाऊँ।—मैथिलीशरण। ५. किसी प्रकार की कामना आदि की पूर्ति या कार्य की सिद्धि के लिए ईश्वर या देवी देवता से प्रार्थना करना। जैसे—मैं तो ईश्वर से यही मनाता हूँ कि वह आपको सद्बुद्धि दे। ६ प्रार्थना या स्तुति करना। उदा०—ताके युग पद कमल मनाऊँ, जासु कृपा निरमल मति पाऊँ।—तुलसी।

मनायी—स्त्री० दे० 'मनावी'।

मनार—पुं०=मीनार।

मनाल—पुं०[सं० मृणाल] शिमले की पहाड़ियों पर रहनेवाला एक तरह का चकोर पक्षी।

मनावन—पुं०[हिं० मनाना] १ असंतुष्ट या रूठे हुए को मनाने की क्रिया

या भाव। २ किसी पर कोई बात मान लेने के लिए डाला जानेवाला जोर।

मनावी—स्त्री०[सं० मनु+ङीप्, औ—आव्] मनु की स्त्री का नाम।

मनाही—स्त्री०[अ०]१ मना करने या होने की क्रिया या भाव। २ कोई काम न करने की आज्ञा। निषेध। रोक।

मनि†—स्त्री०=मणि।

मनिकरा—वि०[सं० मणि+कर]१ सुन्दर। २ देदीप्यमान। चमकीला। उदा०—दुइज लिलाट अधिक मनिकरा।—जायसी।

मनिका—पु० =मनका (माला का)।

मनित—भू० कृ० [सं०√मन् (जानना)+क्त, इत्व] ज्ञात। उत्पन्न।

मनिधर—पु०=मणिधर।

मनिया—स्त्री० [सं० माणिक्य, हिं० मनिका]१ माला का दाना। गुरिया। मनका। २ गले मे पहनने की कंठी या माला।

मनियार*—वि०[हिं० मणि+आर (प्रत्य०)] १ उज्ज्वल। चमकीला। २ शोभनीय। ३ दर्शनीय। सुन्दर।

पु०=मनिहार।

मनिहार—पु०[हिं० मणिकार, प्रा० मनियार] [स्त्री० मनिहारिन, मनिहारी] चूड़ी बनानेवाला। चुड़िहारा।

मनिहारी—स्त्री०[हिं० मनिहार] सूई, तागा, शीशा, कंघे चूड़ियाँ आदि फुटकर सामान बेचने का काम।

स्त्री० मनिहार का स्त्री०।

मनी—स्त्री०[सं० मणि]१. मणि। २ वीर्य। ३ अहं। उदा०—तजे सकुच के भानु मान् तजि मान मनी के।—सेनापति।

स्त्री०[हिं० मन=४० सेर] खेत की उपज की बटाई का वह प्रकार जिसमे जमीन का मालिक प्रति बीघे कुछ मन पैदावार मे से ले लेता है।

मनीआर्डर—पु०[अं०] १ डाकखाने के द्वारा कहीं कुछ रुपये भेजने की एक प्रकार की व्यवस्था जिसमे पानेवाले को घर बैठे रुपए मिल जाते हैं। २ वह पत्रक जिसे भरकर उक्त उद्देश्य से डाकखाने मे दिया जाता है।

मनीक—पु०[सं०√मन्+कीकन्] अजन (आँखो का)।

मनीजर†—पु०=मनेजर।

मनीबैग—पु० [अं०] रुपए-पैसे रखने का छोटा डिब्बा, थैली या बटुआ।

मनीर—स्त्री०[देश०] मोरनी।

मनीषा—स्त्री०[सं० मनस्-ईषा, ष० त०, पररूप] १ मन या मस्तिष्क की वह विशिष्ट शक्ति जिससे वह इच्छा, कामना, सोच-विचार आदि करता है। मानसिक शक्ति। (फैकल्टी)२ फलत (क) अभिलाषा या इच्छा। (ख) अकल या बुद्धि।

मनीषिका—स्त्री०[सं० मनीषा+कन्,+टाप, इत्व] मनीषा।

मनीषित—भू० कृ०[सं० मनीषा+इतच्] मनोभिलषित। वांछित।

मनीषिता—स्त्री० [सं० मनीषिन्+तल्+टाप्] १ मनीषी होने की अवस्था या भाव। २ बुद्धिमत्ता।

मनीषी (षिन्)—वि०[सं० मनीषा+इनि] १. ज्ञानी। २ बुद्धिमान्। ३. पडित। विद्वान्। ४ यथेष्ट मनन और विचार करनेवाला। विचारशील।

मनु—पु०[सं०√मन्+उ]१ ब्रह्मा के पुत्र जो मनुष्यो के मूल पुरुष माने जाते है।

विशेष—(क) वेदो में मनु को ही यज्ञों का आदि प्रवर्तक भी माना गया है। पुराणो मे यह भी कहा गया है कि जब एक बार महाप्रलय के समय सारी पृथ्वी जलमग्न हो गई थी तब मनु ही एक नाव पर चढ़कर डूबने से बचे थे, और उन्ही से सारी मानव जाति उत्पन्न हुई थी। पुराणों मे यह भी कहा गया है कि प्रत्येक महाप्रलय के उपरांत मनु ही मानव जाति की उत्पत्ति करते है। इसी लिए प्रत्येक मन्वन्तर के अलग-अलग मनुओ के नाम भी पुराणों मे मिलते हैं। चौदह मन्वतन्रो के १४ मनुओं के नाम ये हैं, स्वायभुव, स्वारोचिष, उत्तम, तामस, रैवत, चाक्षुष, वैवस्वत, सावर्णि, दक्षसावर्णि, ब्रह्मसावर्णि, धर्मसावर्णि, रुद्रसावर्णि, देवसावर्णि और इन्द्रसावर्णि। (ख) इस्लामी, मसीही आदि सभी पौराणिक कथाओ मे मनु के समकक्ष नूह और नोहा हैं। २ विष्णु। ३. ब्रह्मा। ४ अन्तःकरण। ५ अग्नि। ६ मत्र। ७. एक रुद्र का नाम। ८ जैनों के एक जिन देव। ९ चौदह मन्वन्तरो के मनुओं के आधार पर १४ की संख्या का सूचक शब्द।

स्त्री० १ मनु की स्त्री। मनावी। २ वन-मेथी।

†अव्य०=मनहुँ (मानो)।

मनुआँ—पु० =मानव (मनुष्य)।

पु०[?] देव कपास। नरमा।

मनुख—पु०=मनुष्य।

मनुग—पु०[सं० मनु√गम् (प्राप्त होना)+ड] प्रियव्रत के पौत्र और द्युतिमान के पुत्र का नाम।

मनुज—पु० [सं० मनु√जन् (उत्पन्न करना)+ड] [स्त्री० मनुजा, मनुजी] मनुष्य।

मनु-जात—वि०[सं० प० त०] मनु से उत्पन्न।

पु० मनुष्य।

मनुजाद—वि०[सं० मनुज√अद् (खाना)+अण्] नर-भक्षक। मनुष्यों को खानेवाला।

पु०=राक्षस।

मनुजाधिप—पु० [सं० मनुज-अधिप, ष० त०] राजा।

मनु-युग—पु० [सं० ष० त०] मन्वतर।

मनु-श्रेष्ठ—पु० [सं० ष० त०] विष्णु।

मनुष—पु० [सं० मनुष्य] १ मनुष्य। २ स्त्री का पति। स्वामी।

मनुषी—स्त्री० [सं० मनुष्य+ङीप्, य-लोप] स्त्री।

मनुष्य—पु० [सं० मनु+यत्, षुक-आगम] जरायुज जाति का एक स्तनपायी प्राणी जो अपने मस्तिष्क या बुद्धि बल की अधिकता के कारण सब प्राणियों मे श्रेष्ठ है। आदमी। नर।

मनुष्यकार—पु० [सं० मनुष्य+कार] उद्योग। प्रयत्न।

मनुष्य-गणना—स्त्री० [सं० प० त०] जन-गणना।

मनुष्य-गति—स्त्री० [सं० प० त०] जैन शास्त्रानुसार वह कर्म जिसे करने से मनुष्य बार-बार मरकर मनुष्य का ही जन्म पाता है। ऐसे कर्म पर-स्त्री-गमन, मास-भक्षण चोरी आदि बतलाये गये हैं।

मनुष्यता—स्त्री० [सं० मनुष्य+तल्+टाप] १ मनुष्य होने की अवस्था या भाव। आदमीपन। २ सज्जन मनुष्य के लिए सभी आवश्यक और

उपयोगी गुणों का समूह। ३ वे बातें जो किसी मनुष्य को शिक्षित और सभ्य समाज में उठने-बैठने के लिए आवश्यक होती हैं।

मनुष्यत्व—पुं० [सं० मनुष्य+त्व] १ मनुष्य होने की अवस्था या भाव। मनुष्यता। २. मनुष्यों के लिए आवश्यक और उपयुक्त गुणों (दया, प्रेम, सहृदयता आदि) से युक्त होने की अवस्था या भाव।

मनुष्य-धर्मा (र्मन्)—पुं० [सं० ब० स०] कुबेर।

मनुष्य-यज्ञ—पुं० [सं० ष० त०] मनुष्य, विशेषत अभ्यागत व्यक्ति का किया जानेवाला आदर-सत्कार। अतिथियज्ञ। नृयज्ञ।

मनुष्य-रथ—पुं० [सं० मध्य० स०] प्राचीन काल मे वह रथ जिसे मनुष्य (पशु नही) खीचते थे। नर-रथ।

मनुष्य-लोक—पुं० [सं० ष० त०] यह जगत जिसमे मनुष्य (देवता नही) रहते है। मर्त्य-लोक। भूलोक।

मनुष्य-शीर्ष—पुं० [सं० ब० स०] एक प्रकार की जहरीली मछली जिसका सिर आदमी के सिर की तरह होता है। (टेटाओडन)

मनुस(१)—पुं० [सं० मनुष्य] [भाव० मनुसाई] १ आदमी। मनुष्य। २ नौ-जवान। युवक। ३ स्त्री का पति। स्वामी। ४. पौरुष से युक्त व्यक्ति। मर्द।

मनुसाई—स्त्री० [हिं० मनुस+आई (प्रत्य०)] १ मनुष्यत्व। २ मनुष्यों का फलत शिष्टतापूर्ण व्यवहार। ३ पौरुष।

मनुसाना†—अ० [हिं० मनुस] १ पौरुष का भाव जगना। २ क्रोधान्वित होना।

स० १ किसी मे पौरुष का भाव जगाना। २ क्रुद्ध या क्रोधित करना।

मनु-स्मृति—स्त्री० [सं० मध्य० स०] मनु द्वारा प्रणीत एक प्रसिद्ध ग्रंथ जिसकी गिनती धर्म-शास्त्र मे होती है। मानव-धर्मशास्त्र।

मनुहर†—स्त्री०=मनुहार।

मनुहार—स्त्री० [हिं० मान+हरना] १ किसी रूठे हुए व्यक्ति को मनाने तथा उसका मान छुड़ाने के लिए की जानेवाली विनती या मीठी-मीठी बाते। २ इस प्रकार की विनती करने की क्रिया, प्रयत्न या भाव। ३ खुशामद। ४ तुष्टि। तृप्ति। ५ आदर-सत्कार।

मनुहारना—स० [हिं० मनुहार] १ रूठे हुए व्यक्ति से मीठी-मीठी बाते करके उसे प्रसन्न करने का प्रयत्न करना। मनाना। २ निवेदन, प्रार्थना या विनती करना। ३ आदर-सत्कार करना। ४ खुशामद करना।

मनुहारी†—वि० [हिं० मन+हरना] [स्त्री० मनुहारिन] जो बात-बात पर रूठता हो तथा जिसे प्रसन्न करने के लिए बार बार मनुहार करनी पड़ती हो। उदा०—पासा सार खेलि कित कौन मनुहारिन सौं, जीति मनुहारि मनुहारि हारि आयो हौ।—पद्माकर।

मनूरी—स्त्री० [अ० मुनौवर] एक प्रकार की बुकनी जो मुरादाबादी कलई के बरतनो को उजला करने में काम आती है। यह धातु गलाने की पुरानी घरियों को कूटकर बनाई जाती है।

मने*—अव्य० हिं० मानो का पुराना रूप।

† वि०=मुझे। (गुज० और राज०)

मनेजर—पुं० दे० 'व्यवस्थापक'।

मनौं—अव्य० [हिं० मानना] १. मान लेना पड़ता है कि। २ ऐसा भासित होता है कि। मानों।

मनोनुकूल—वि० [सं० मनस्-अनुकूल, ष० त०] मन चाहता हो वैसा। इच्छा या मन के अनुसार।

मनोकामना—स्त्री० [सं० मन कामना] मन में रहनेवाली कामना। अभिलाषा।

मनोगत—भू० कृ० [सं० द्वि० त०] मन में आया या उठा हुआ। (विचार) पुं० १ कामदेव। मदन। २ काम वासना। ३. विचार।

मनोगति—स्त्री० [सं० मनस्-गति, ष० त०] १ मन की गति। चित्त-वृत्ति। २ अभिलाषा। इच्छा।

मनोगुप्ता—स्त्री० [सं० मनस्-गुप्ता, तृ० त०] मैनसिल।

मनोग्रंथि—स्त्री० [सं०] आधुनिक मनोविश्लेषण के अनुसार इच्छाओं और स्मृतियों का एक तंत्र जिससे मन मे पुंजीभूत धारणाओं की ऐसी गाँठ सी बँध जाती है जो दमित होने पर भी अनजान मे ही और प्रच्छन्न रूप से मनुष्य के वैयक्तिक आचरणों और व्यवहारों को प्रभावित करती रहती है। (काम्पलेक्स)

विशेष—कहा गया है कि यह ऐसे विचारो और सवेगो का पुंज है जिन्हें मनुष्य को समय-समय पर आंशिक या पूर्ण रूप से दमन करना पड़ता है। ऐसे विचार अनजान में ही अचेतन मन मे घर कर लेते हैं; और इन्हीं के वशवर्ती होकर वह धार्मिक नैतिक, सामाजिक आदि क्षेत्रों में अनेक प्रकार के असाधारण तथा विलक्षण कार्य करने लगता है। मनोग्रंथियाँ मनुष्य के मन की उन वृत्तियों के अंग बन जाती हैं, और मनुष्य अपने आप को औरो से छोटा या बड़ा समझने लगता है, भूत-प्रेत, स्वर्ग-नरक आदि पर विश्वास करने लगता है, नये ढंग और नई बातें निकालने का प्रयत्न करता है, अपने सामने अनोखे आदर्श रखने और विचित्र सिद्धांत बनाने लगता है, आदि आदि। यह भी कहा गया है कि इनका बहुत ही सूक्ष्म रूप मनुष्य मे जन्मजात होता है, और आगे चलकर बढ़ता या विकसित होता रहता है। किसी मनोग्रंथि की तीव्रता या प्रबलता के फलस्वरूप मनुष्य को अनेक प्रकार के विकट मानसिक विकार तथा शारीरिक रोग भी हो जाते हैं।

मनोग्राही (हिन्)—वि० [सं० मनस्√ग्रह्+णिनि, उप० स०] [स्त्री० मनोग्राहिणी] मन को अपनी ओर खीचनेवाला।

मनोज—पुं० [सं० मनस्√जन् (उत्पन्न करना)+ड] कामदेव। मदन।

मनोजव—वि० [सं० मनस्-जव, ब० स०] १. मन के समान वेगवान्। अत्यन्त वेगवान्। २ पितृतुल्य। बड़ों के समान।

पुं० १ विशद। २. रुद्र के एक पुत्र का नाम। ३ एक प्राचीन तीर्थ। ४ छठे मन्वन्तर के इन्द्र का नाम। ५ अनिल या वायु के एक पुत्र जो उसकी शिवा नाम की पत्नी से उत्पन्न हुआ था।

मनोजवा—स्त्री० [सं० मनोजव+टाप्] १. कलिहारी। करियारी। २ स्कद की माता का नाम। ३ क्रौंच द्वीप की एक नदी। ४. अग्नि की एक जिह्वा का नाम।

मनोज-वृद्धि—स्त्री० [सं० ब० स०] कामवृद्धि नामक क्षुप। कामज।

मनोज्ञ—वि० [सं० मनस्√ज्ञा (जानना)+क] [स्त्री० मनोज्ञा] मनोहर। सुंदर।

पुं० कुन्द का पौधा और फूल।

मनोज्ञता—स्त्री० [सं० मनोज्ञ+तल्+टाप्] सुदरता। मनोहरता। खूबसूरती।

मनोज्ञा—स्त्री० [सं० मनोज्ञ+टाप्] १. कलौंजी। २ मैंगरैला। ३. जावित्री। ४ मदिरा। शराब। ५ आवर्तकी। बाँझ ककोडा। ६. कोई सुन्दरी स्त्री, विशेषत राजकुमारी।

मनोदंड—पु० [सं० मनस्-दंड, ष० त०] मन की वृत्तियो का विरोध। मनोनिग्रह।

मनोदत्त—वि० [सं० मनस-दत्त, तृ० त०] १. जो अभी प्रत्यक्ष रूप मे तो नही पर मन से दिया जा चुका हो। जिसे देने का मन मे संकल्प कर लिया गया हो। २. जिसका मन किसी काम मे पूरी तरह लग रहा हो। दत्त-चित्त।

मनोदशा—स्त्री० [सं० मनोदशा+टाप्] किसी कार्य या विषय के प्रति होनेवाले राग-विराग या प्रवृत्ति -विरति आदि के विचार से समय-विशेष पर होनेवाली मनकी अवस्था या दशा। (मूड)

मनोदाह—पु० [सं० मनस्-दाह, ष०त०] मन में होनेवाला दु ख मनस्ताप।

मनोदाही (हिन्)—वि० [सं० मनस्√दह् (जलना)+णिनि] मन मे सन्ताप उत्पन्न करनेवाला।

मनोदुष्ट—वि० [सं० मनस्-दुष्ट, तृ० त०] दुष्ट प्रकृति।

मनोदेवता—पु० [सं० मनस्-देवता, ष० त०] अन्त.करण। विवेक।

मनोदौर्बल्य—पु० [सं० मनस्-दौर्बल्य, ष० त०] १ मन मे होनेवाली किसी प्रकार की दुर्बलता। (मेन्टल वीकनेस) २ उक्त दुर्बलता का सूचक कोई कार्य।

मनोध्यान—पु० [सं० ष० त०] सम्पूर्ण जाति का एक राग जिसमे सब शुद्ध स्वर लगते हैं।

मनोनयन—पु० [सं० मनस्-नयन, स० त० या तृ० त०] [भू० कृ० मनोनीत] १. कोई बात या विचार मन में लाना या उस पर कुछ सोचना। २. अपनी इच्छा, रुचि आदि के अनुसार किसी को चुनना अथवा नामांकित, नियुक्त या प्रतिष्ठित करना।

मनोनिग्रह—पु० [सं० मनस्-निग्रह, ष० त०] विषय-वासनाओ मे प्रवृत्त होने से मन को रोकना। मन को वश में रखना।

मनोनीत—भू० कृ० [सं० मनस्-नीत, तृ० त०] १ मन मे आया हुआ (विचार आदि)। २. जिसका मनोनयन हुआ या किया गया हो।

मनोन्मनी—स्त्री० [सं० ?] योग-साधन मे वह अवस्था जिसमे मन सारी चचलता छोडकर पूर्ण रूप से शान्त और स्थिर हो जाता है।

विशेष—कबीर साहित्य मे 'उन्मनी' का प्रयोग इसी अर्थ मे हुआ है।

मनोबल—पु० [सं० मनस्-बल, ष० त०] १. मानसिक बल। २. आत्मिक शक्ति।

मनोभंग—पु० [सं० मनस्-भंग, ष० त०] मन की शान्ति मे पड़नेवाला विघ्न। जैसे—खिन्नता, निराशा, विषाद आदि।

मनोभव—पु० [सं० मनस्√भू (होना)+अच्] कामदेव।

मनोभाव—पु० [सं०मनस्-भाव, ष०त०] मन में उत्पन्न होने या रहनेवाला भाव या विचार। (सेन्टीमेन्ट)

मनोभिराम—वि० [सं० मनस्-अभिराम, ष० त०] मनोज्ञ। सुन्दर।

मनोभू—पु० [सं० मनस्√भू (होना) क्वप्] कामदेव। मदन।

मनो-भ्रंश—पु० [सं०] एक तरह का रोग जिसमें बुद्धि ठीक तरह से और पूरा काम नही करती। (डिमोन्शिया)

मनोमय—वि० [सं० मनस्+मयट्] १. मन से युक्त। २ मानसिक।

मनोमय-कोश—पु० [सं० कर्म० स०] वेदान्त मे आत्मा को आवृत रखनेवाला पाँच कोशो मे से तीसरा कोश जिसमे मन, अहंकार और कर्मेन्द्रियाँ अंतर्भूत मानी जाती है। इसी को बौद्ध दर्शन मे संज्ञा स्कंध कहते हैं।

मनोमल—पु० [सं० मनस्-मल ष० त०] मन में होनेवाला कोई दूषित भाव या विचार।

मनोमालिन्य—पु० [सं० मनस्-मालिन्य, ष० त०] मन में रहनेवाला दुर्भाव या बैर-विरोध जो जल्दी ऊपर प्रकट न होता हो। मनमुटाव। रंजिश।

मनोमोही (हिन्)—वि० [सं० मनस्√मुह् (मुग्ध होना)+णिच्+णिनि] [स्त्री० मनोमोहिनी] मन को मोहनेवाला। उदा०—मनो मोहिनी है वह मनोरमा है।—निराला।

मनोयोग—पु० [सं० मनस्-योग, ष० त०] किसी काम या बात में मन को एकाग्र करके लगाना। चित्त की वृत्ति का निरोध करके एकाग्र करना और उसे किसी एक काम या बात मे लगाना।

मनोयोनि—पु० [सं० मनस्-योनि, ब० स०] कामदेव।

मनोरंजक—वि० [सं० मनस्-रजक, ष० त०] मनोरजन करनेवाला। मन को बहलाकर प्रसन्न करनेवाला। मन का रजन करनेवाला, फलतः जिससे समय बहुत आनदपूर्वक व्यतीत होता है।

मनोरंजन—पु० [सं० मनस्-रजन, ष० त०] [वि० मनोरजक, मनोरजनीय] १ मन का रंजन। दिल-बहलाव। २. कोई ऐसा कार्य या बात जिससे समय बहुत ही आनदपूर्वक व्यतीत होता है। (इन्टरटेनमेन्ट, उक्त दोनों अर्थों मे)। ३. एक प्रकार की बँगला मिठाई।

मनोरंजन-कर—पु० [ष० त०] एक प्रकार का कर जो मनोरंजन चाहनेवाले व्यक्तियो को किसी व्यावसायिक मनोरजक कार्यक्रम मे सम्मिलित होने के समय देना पडता है। (इन्टरटेनमेट टैक्स)

मनोरथ—पु० [सं० मनस्-रथ, ब० स०] [वि० मनोरथिक] अभिलाषा। वाछा। इच्छा।

मनोरथ तृतीया—स्त्री० [सं० मध्य० स०] चैत्र शुक्ल तृतीया जो व्रत का दिन कहा गया है।

मनोरथ द्वादशी—स्त्री० [सं० मध्य० स०] चैत्र शुक्ल पक्ष की द्वादशी जो व्रत का दिन कहा गया है।

मनोरथिक—वि० [सं० मानोरथिक] १ मनोरथ से सम्बन्ध रखनेवाला। मनोरथ का। २ मनोरथ के रूप मे होनेवाला।

मनोरन—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की कपास।

मनोरम—वि० [सं० मनस्√रम् (रमण करना)+णिच्+अण्, उप०स०] [स्त्री० मनोरमा] जिसमे मन रमने लगे। सुदर।

पु० सखी छद का एक भेद जिसके प्रत्येक चरण मे,५, ४ और ५ के अतर पर विराम कुल चौदह मात्राएँ होती है।

मनोरमा—स्त्री० [सं० मनोरम+टाप्] १ सात सरस्वतियो मे से चौथी सरस्वती। २ गौतम बुद्ध की एक शक्ति। ३. दस दस वर्णों के चरणों वाला एक छद जिसके प्रत्येक चरण का पहला, दूसरा, तीसरा, सातवाँ और नवाँ वर्ण लघु होता है। तथा अन्य वर्ण गुरु होते हैं। (छदोमजरी) ४ महाकवि चन्द्रशेखर के अनुसार आर्या के ५७ भेदों मे से एक जिसमे १२ गुरु और २२ लघु वर्ण होते हैं। ५ दस अक्षरो

का एक वर्णिक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे नगण, रगण और अंत में गुरु होता है। ६. केशव के मतानुसार चौदह अक्षरो का एक वर्णिक वृत्त जिसके प्रत्येक पाद में ४ सगण और अंत में दो लघु होते हैं। ७. केशव के अनुसार दोधक छंद का एक नाम जिसके प्रत्येक चरण में ४ भगण और दो गुरु होते हैं। ८. सूदन के अनुसार दस अक्षरो का एक वर्णिक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे तीन तगण और एक गुरु होता है। ९. गोरोचन।

मनोरा—पु० [स० मनोहर] पूजा आदि के उद्देश्य से बनाई जानेवाली गोबर की मूर्ति।

मनोराजा†—पु० मनोराज्य।

मनोराज्य—पु० [स० मनस्-राज्य, मध्य० स०] १ मन रूपी राज्य। २ मनमाने सुखों की मन मे की जानेवाली कल्पना। ३ कल्पना से खड़ा किया हुआ कोई सुन्दर तथा सुखद आयोजन।

मनोरा-झूमक—पु० [?] स्त्रियो का एक प्रकार का देहाती लोक गीत।

मनोरिया—स्त्री० [हि० मनोहर] एक प्रकार की सिकड़ी या जजीर जिसकी कड़ियो पर चिकनी चपटी दाल या घुडी जडी रहती है और जिसमे घुघरुओ के गुच्छे लगातार बंदनवार की तरह टाँगते या लटकाते हैं।

मनोलीला—स्त्री० [स० मनस्-लीला, ष० त०] ऐसी कल्पित अद्भुत बात जिसका कोई आधार न हो। (फैन्टन)

मनोवती—स्त्री० [स० मनस्+मतुप्, म—व+ङीष्] १ पुराणानुसार मेरु पर्वत पर की एक नगरी। २ चित्रांगद विद्याधर की एक कन्या।

मनोवांछा—स्त्री० [सं० मनस्-वाछा, ष० त०] =मनोकामना।

मनोवांछित—भू० कृ० [सं० मनस्-वाछित, तृ० त०] जो मन मे चाहा गया हो। अभिलषित। इच्छित।

मनोविकार—पु० [स० मनस्-विकार, ष० त०] १. मन मे उठनेवाला कोई भाव या विचार। मन मे होनेवाला कोई आवेग।

मनोविज्ञान—पु० [स० मनस्-विज्ञान, ष० त०] वह विज्ञान या शास्त्र जिसमें मनुष्य के मन उसकी विभिन्न अवस्थाओ तथा क्रियाओं, उस पर पड़नेवाले प्रभावो आदि का अध्ययन तथा विवेचन होता है। (साइकॉलोजी)

मनोविश्लेषण—पु० [स० मनस्-विश्लेषण, ष०त०] आधुनिक मनोविज्ञान की वह शाखा जिसमे कुछ विशिष्ट प्रकार के रोगो और विकारो का उपचार या चिकित्सा यह मानकर की जाती है कि वे रोग कुछ मनोवेगों का दमन करने से उत्पन्न होते हैं। (साइको-एनैलैसिस)

विशेष—इसका आविष्कार फ्रायड तथा उसके परवर्ती मनोवैज्ञानिकों ने किया था। इसमे रोगी के पूर्व-इतिहास का परिचय प्राप्त करके रोग का निदान किया जाता है और तब मनोवैज्ञानिक ढंग से उसका उपचार या चिकित्सा की जाती है।

मनोवृत्ति—स्त्री० [सं० मनस्-वृत्ति, ष० त०] वह मानसिक शक्ति या स्थिति जिसके कारण मनुष्य किसी ओर प्रवृत्त होता अथवा उससे हटता है। (मैन्टैलिटी)

मनोवेग—पुं० [स० मनस्-वेग, ष० त०] मन में उत्पन्न होनेवाला तीव्र विकार।

मनोवैकल्य—पुं० [सं० मनस्-वैकल्य, ष० त०] मनुष्य की वह मानसिक अवस्था जिसमें ठीक तरह से मानसिक विकास न होने के कारण बुद्धि परिष्कृत नहीं होने पाती, और इसी लिए ठीक तरह से अपना कार्य करने के योग्य नहीं होती। (मेन्टल डिफ़ीशिएन्सी)

मनोवैज्ञानिक—वि० [सं० मनोविज्ञान+ठक्—इक] मनोविज्ञान से सम्बन्ध रखनेवाला। (साइकॉलाजिकल)
पुं० वह जो मनोविज्ञान का ज्ञाता है। (साइकॉलोजिस्ट)

मनोव्यथा—स्त्री० [स० मनस्-व्यथा, ष० त०] मन में होनेवाली व्यथा। मानसिक कष्ट।

मनोव्याधि—स्त्री० [स० मनस्-व्याधि, ष०त०] मन या मानस में होनेवाले रोग।

मनोव्यापार—पु० [सं० मनस्-व्यापार, ष० त०] मन की क्रिया। संकल्प-विकल्प। विचार।

मनोसर*—पु० [सं० मन] मन की वृत्ति। मनोविकार।

मनोहंस—पु० [स०] एक प्रकार का सम-वृत्त वर्णिक छद जिसके प्रत्येक चरण मे एक सगण, दो नगण, एक भगण और एक रगण होता है। (कलहस नामक छन्द से भिन्न)

मनोहत—वि० [स० मनस्-हत, तृ० त०] जिसका मन टूट गया हो। निराश।

मनोहर—वि० [सं०मनस्-हर, ष०त०] [स्त्री० मनोहरता] १. मन हरनेवाला। २ मनोज्ञ। सुन्दर।
पु० १ छप्पय छद का एक भेद। २. एक संकर राग। ३. कुंद का पौधा और उसका फूल। ४. सोना। स्वर्ण।

मनोहरता—स्त्री० [सं० मनोहर+तल्+टाप्] मनोहर होने की अवस्था या भाव। सुंदरता।

मनोहरताई†—स्त्री०=मनोहरता।

मनोहरा—स्त्री० [सं० मनोहर+टाप्] १. जाती पुष्प। २. सोनजुही। ३. त्रिशिर की माता का नाम। ४. स्वर्ग की एक अप्सरा का नाम।

मनोहरी—स्त्री० [हि० मनोहर] कान में पहनने की एक प्रकार की छोटी बाली।

मनोहारी (रिन्)—वि० [सं० मनस्√हृ (हरण)+णिनि] [स्त्री० मनोहारिणी] मनोहर। चित्ताकर्षक। सुंदर।

मनोह्लादी (दिन्)—वि० [सं० मनस्√ह्लाद् (प्रसन्न होना)+णिनि] [स्त्री० मनोह्लादिनी] १ मन को आह्लादित या प्रसन्न करनेवाला। २. मनोहर। सुंदर।

मनोह्वा—स्त्री० [सं० मनस्√ह्वा (बुलाना)+क+टाप्] मन शिला। मैनसिल।

मनौं†—अव्य०=मानो।

मनौअल—स्त्री० [हिं० मानना] मन मे कोई बात मानने या धारण करने की क्रिया या भाव।
स्त्री० [हिं० मनाना] क्रुद्ध अथवा रूठे हुए को मनाने की क्रिया या भाव। जैसे—मान-मनौअल।

मनौती*—स्त्री० [हिं० मानना+औती (प्रत्य०)] १ रूठे हुए को मनाने की क्रिया या भाव। मनुहार। २. देवी-देवता के प्रति की जानेवाली यह प्रतिज्ञा या सकल्प कि अमुक मनोरथ सिद्ध हो जाने पर हम आपकी अमुक प्रकार से पूजा करके आपको प्रसन्न करेंगे। दे० 'मन्नत'।

क्रि० प्र०—चढ़ाना।—मानना।

मनत—स्त्री० [हिं० मानना] किसी देवी-देवता की पूजा करने की वह प्रतिज्ञा या संकल्प जो किसी विशिष्ट कामना की पूर्ति के लिए किया जाता है। मानता। मनौती।

मुहा०—**मनत उतारना या बढ़ाना**=उक्त प्रकार की पूजा की प्रतिज्ञा पूरी करना। **मनत मानना**=यह प्रतिज्ञा करना कि अमुक कार्य हो जाने पर अमुक पूजा की जायगी।

मना—पु० [देश०] बाँस आदि में से रसनेवाला एक तरह का मीठा निर्यास।

मनाना—अ० [हिं० मान या मन] १ (साँप का) फन उठाना। २ मन में बहुत अप्रसन्न या नाराज होना।

मन्मथ—पु० [सं०√मथ्+अच्, पृषो० सिद्धि] १ कामदेव। २. काम-वासना ३ कपित्थ। कैथ। ४ साठ संवत्सरों में से उन्नीसवाँ संवत्सर।

मन्मथ-लेख—पु० [सं० मध्य० स०] प्रेमी या प्रेमिका को विरह सम्बन्धी लिखा जानेवाला प्रेम-पत्र।

मन्मथानंद—पु० [सं० मन्मथ+आ√नद् (प्रसन्न होना)+णिच्+अच्] एक प्रकार का आम जिसे महाराज चूत भी कहते हैं।

मन्मथारि—पु० [सं० मन्मथ-अरि, ष० त०] कामदेव के शत्रु, शिव।

मन्मथालय—पु० [सं० मन्मथ-आलय, ष० त०] १ आम का पेड़। २ कामुकों का विहार-स्थल।

मन्मथी (थिन्)—वि० [सं० मन्मथ+इनि,] कामी। कामुक।

मन्य—वि० [सं०√समास के अन्त में प्रयुक्त होनेवाला पद] समस्त पदों के अन्त में अपने आपको मानने या समझनेवाला। जैसे—अहंमन्य, पंडित-मन्य।

मन्या—स्त्री० [सं०√मन्+क्यप्+टाप्] गरदन की एक नस।

मन्या-स्तंभ—पु० [सं० ष० त०] एक प्रकार का रोग जिसमें गले पर की मन्या नामक शिरा कड़ी हो जाती है और गरदन इधर-उधर नहीं घूम सकती और भीषण ज्वर होता है। गरदन तोड़ बुखार। (मेने-जाइटिस)

मन्यु—पु० [सं०√मन् (ज्ञान करना)+युच्] १ स्तोत्र। २ कर्म। ३. दुःख या शोक। ४ यज्ञ। ५ क्रोध। गुस्सा। ६ अभिमान। अहंकार। ७ दीनता। ८ अग्नि। ९ शिव।

मन्यु-देव—पु० [सं० ष० त०] १ क्रोध का अभिमानी देवता। २ एक प्राचीन ऋषि।

मन्युमान् (मत्)—वि [सं० मन्यु+मतुप्,] क्रोध, अहंकार या दैन्य से युक्त (व्यक्ति)।

मन्वंतर—पु० [सं० मनु-अंतर, ष० त०] १ इकहत्तर चतुर्युगियों का काल। ब्रह्मा के एक दिन का चौदहवाँ भाग। २ अकाल। दुर्भिक्ष। ३. दे० 'मनु'।

मन्वंतरा—स्त्री० [सं० मन्वन्तर+अच्+टाप] प्राचीन काल का एक प्रकार का उत्सव जो आषाढ़ शुक्ल दशमी, श्रावण-कृष्ण अष्टमी और भाद्र शुक्ल तृतीया को होता था।

मन्हियार—पु०=मनिहार।

मन्होला*—पु० [देश०] तमाल।

मफ़रूर—वि० [अ० मफ़रूर] पलायित। भागा हुआ।

मम—सर्व० [सं० मा+उम या अह का षष्ठी एक वचन रूप] मेरा।

ममता—स्त्री० [सं० मम+तल्+टाप्] १ यह भाव या विचार कि अमुक (पदार्थ या व्यक्ति) मेरा है, 'मम' का भाव, ममत्व। २ परम आत्मीयता के कारण मन में होनेवाला प्रेम या स्नेह। जैसे—पिता या माता की सन्तान के प्रति होनेवाली ममता। ३ मन में होनेवाला किसी प्रकार का मोह या लोभ। ४ अभिमान। गर्व।

ममता-युक्त—वि० [सं० तृ० त०] १ जिसके मन में किसी के प्रति ममता हो। २ अभिमानी। ३ कंजूस। कृपण।

ममत्व—पु० [सं० मम+त्व] १ 'मम' का भाव। ममता। अपनापन। २ स्नेह। ३ अभिमान। घमंड।

ममनून—वि० [अ०] कृतकृत्य। अनुगृहीत।

ममरखी—स्त्री० [फा० मुबारकी] १ मुबारकबादी। बधाई। २. बधावा।

ममरी—स्त्री० [सं० बर्बरी] बनतुलसी। बबई।

ममाखी*—स्त्री०—मधु-मक्खी।

ममाना—पु० [हिं० मामा] मामा का घर। ननिऔरा।

ममिया—वि० [हिं० मामा+इया (प्रत्य०)] जो संबंध में मामा या मामी के स्थान पर पड़ता हो। ममेरा। जैसे—ममिया ससुर, ममिया सासु।

ममियाउरा†—पु०=मामियौरा।

ममियौरा†—पु० [हिं० मामा+औरा (प्रत्य०)] मामा का घर। ममाना।

ममिला†—पु०=मामला।

ममीरा—पु० [अ० मामीरान] हलदी की जाति के एक पौधे की जड़ जिसकी कई जातियाँ होती हैं। यह आँख के रोगों की बहुत अच्छी ओषधि मानी जाती है।

ममोला—पु० [देश०] १ धोबिन नामक छोटा पक्षी जिसके पेट पर काली धारियाँ होती हैं। २ छोटा, प्यारा बच्चा।

मम्मा—पु० [अनु०] १ स्त्रियों का स्तन। छाती। २ जल। पानी। (छोटे बच्चे)

†पु०=मामा।

मयंक—पु० [सं० मृगांक] चन्द्रमा।

मयंक-मुख—वि० [हिं० मयंक+मुख] [स्त्री० मयंकमुखी] चन्द्रमा के समान सुन्दर मुखवाला।

मयंद—पु० [सं० मृगेंद्र] १ शेर। सिंह। २ रामकी सेना का एक बन्दर।

मयंदी—स्त्री० [देश०] लोहे की वह छोटी सामी जो गाड़ी में चक्के की नाभि के दोनों ओर उस छेद के मुँह पर खोदकर बैठाई जाती है जिसमें धुरे का सिरा रहता है।

मय—पु० [सं०√मय् (शीघ्र जाना)+अच्] [स्त्री० मयी] १ ऊँट। २ खच्चर। ३ घोड़ा। ४ आराम। सुख। ५. एक प्राचीन देश का नाम। ६ पुराणानुसार एक प्रसिद्ध दानव जो बहुत बड़ा शिल्पी था। इसे असुरों और दैत्यों का शिल्पी मानते हैं। कहते हैं कि मन्दोदरी इसी की कन्या थी। ७ अमेरिका के मेक्सिको नामक देश के प्राचीन मूल अधिवासी जो प्राचीन काल में उन्नत और सभ्य समझे जाते थे।

प्रत्य० [सं०] तद्धित का एक प्रत्यय जो तद्रूप विकार और प्राचुर्य अर्थ में शब्दों के साथ लगाया जाता है। और जो नीचे लिखे अर्थ देता है—
१. किसी चीज या बात से अच्छी तरह पूर्ण। भरा हुआ या युक्त। जैसे—आनन्दमय। २. आधार या आश्रय के रूप में होनेवाला। जैसे—अन्नमय कोश, प्राणमय कोश।
स्त्री० दे० 'मै' (शराब)।
मयगल—पु० [सं० मंदकल, प्रा० मयगल] मत्त हाथी। मदमस्त हाथी।
मयत्री†—स्त्री०=मैत्री (मित्रता)।
मयन—पु० [सं० मदन] कामदेव।
मयनी†—स्त्री०=मैना।
मयमंत, मयमत्त—वि० [सं० मदमत्त] मस्त। मदमत्त।
मय-सुता—स्त्री० [सं० ष० त०] मय दानव की कन्या, मन्दोदरी।
मयस्सर—वि० [अ०] १. हाथ मे आया हुआ। प्राप्त। लब्ध।
मया—स्त्री० [सं० √मय्+क+टाप्] चिकित्सा। इलाज।
स्त्री० [सं० माया] १ माया। भ्रमजाल। २ ममता के कारण होनेवाला स्नेह। प्रेम का पाश या बन्धन। ३ अनुग्रहपूर्ण मनोभाव। प्रेम-भाव। उदा०—जा कहँ मया करहु भलि सोई।—जायसी। ४. जगत्। ससार। ५ जीवनी-शक्ति। प्राण। ६. सासारिक धन-सम्पत्ति।
मयाजिव—वि० [सं० मायाजीव] १ जिसके मन मे माया या मोह हो। २ अनुग्रह या कृपा का भाव रखनेवाला।
मयार—वि० [सं० माया, हिं० माया] [स्त्री० मयारी] दयार्द्र। दयालु।
मयारी—स्त्री० [देश०] १ वह शाखा या धरन जिसपर हिंडोले की रस्सी लटकाई जाती है। २ धरन।
मयाल†—वि०=मयार (दयार्द्र)।
मयी—स्त्री० [सं० मय+ङीष्] ऊँटनी।
अव्य० सं० 'मय' का स्त्री०। जैसे—दयामयी माता।
मयु—पु०[सं०√मय् (गमन करना)+कु वा√मि (मान करना)+उ] १ किन्नर। २. मृग। हिरन।
मयु-राज—पु० [सं० ष० त०] कुबेर।
मयूख—पु० [सं० √मा (मान)+ऊख, मय्-आदेश] १. किरण। रश्मि। २ चमक। दीप्ति। ३ प्रकाश। रोशनी। ४ ज्वाला। लपट। ५ शोभा। ६ काँटा या कील। ७ पर्वत। पहाड़।
मयूर—पु० [सं० मयू√रु (शब्द)+क, पृषो० सिद्धि] [स्त्री० मयूरी] १ मोर। २ मयूर-शिखा नामक क्षुप। ३. पुराणानुसार सुमेरु पर्वत के अंदर का एक पर्वत।
मयूरक—पु० [सं०] १ अपामार्ग। चिचड़ा। २ तूतिया। ३. मयूर। मोर। ४. मयूर। शिखा नामक क्षुप।
मयूर-केतु—पु० [सं० ब० स०] स्कद का एक नाम।
मयूर-गति—स्त्री० [सं० ब० स०] चौबीस अक्षरो की एक वृत्ति जिसके प्रत्येक चरण मे आदि मे पाँच यगण, फिर मगण, यगण और अन्त में भगण होता है। (य य य य य म य भ)।
मयूरगामी (मिन्)—पु० [सं० मयूर√गम् (जाना)+णिनि,] मयूर पर सवारी करनेवाले कार्तिकेय।
मयूर-ग्रीवक—पु० [सं० ब० स० +कन्, ह्रस्व] तूतिया।
मयूरचूड़—पु० [सं० ब० स०] मयूर शिखा।
मयूरचूड़ा—स्त्री० [सं० मयूरचूड+टाप्] मयूर शिखा नामक क्षुप।
मयूरजंघ—पु० [सं० ब० स०] सोनापाढ़ा। श्योनाक।
मयूर-नृत्य—पु० [सं० ष० त०] एक प्रकार का नाच जिसमें थिरकन अधिक होती है।
मयूर-पदक—पु० [सं० ष० त०] नखाघात। नखक्षत।
मयूर-रथ—पु० [सं० ब० स०] कार्तिकेय। स्कद।
मयूर-शिखा—स्त्री० [सं० ब० स०] मोर शिखा नामक क्षुप।
मयूरिका—स्त्री० [सं० मयूर+ठन्—इक, +टाप्] १ अंबष्ठा। मोइया। २. एक प्रकार का जहरीला कीड़ा।
मयूरेश—पु० [सं० मयूर-ईश, ष० त०] कार्तिकेय।
मयेश्वर—पु० [सं० मय-ईश्वर, ष० त०] मय दानव।
मरंद—पु०=मकरंद।
मर—पु०[सं०√मृ (मरण)+अप्] १ मृत्यु। २ मर्त्यु-लोक। ससार। ३ पृथ्वी।
स्त्री०=मुरा।
*वि० १ जो मरता या मर सकता हो। मरणशील। २ मृतक।
मरक—पु० [सं०√मृ (मरण)+अप्+कन्] लोक मे फैलनेवाला कोई ऐसा घातक या सक्रामक रोग जिसके कारण बहुत से लोग जल्दी मर जाते हैं। मरी। महामारी। (एपिडेमिक)
†स्त्री० [हिं० मरक] १. भेद। रहस्य। २ आकर्षण। खिचाव। ३ मन मे दबा रहनेवाला द्वेष या वैर।
मुहा०—मरक काढ़ना=बदला लेना। वैर चुकाना।
४. मन की उमंग या हौसला। ५. दे० 'मडक'।
मरकज—पु० [अ० मर्कज] १ वृत्त का केंद्र। २ कोई केन्द्र स्थल; विशेषत व्यापारिक केंद्रस्थल। ३ राजधानी।
मरकजी—वि० [अ० मर्कजी] केन्द्र-सबधी। केन्द्रीय।
मरकट†—पु०=मर्कट।
मरकत—पु० [सं० मरक√तृ (तरना)+ड] पन्ना नामक रत्न।
मरकताल—पु० [देश०] समुद्र की तरंगो के उतार की सबसे अन्तिम अवस्था। भाटा की चरम अवस्था जो प्राय अमावस्या और पूर्णिमा से दो-चार दिन पहले होती है।
मरकना†—वि०=मर-खना।
†अ०=मड़कना।
†स०=मुड़काना।
मरक-विज्ञान—पु० [सं० ष० त०] =महामारी विज्ञान।
मरकहा—वि० [हिं० मारना+हा (प्रत्य०)] [स्त्री० मरकही] मारनेवाला (पशु)।
मरकाना—स० [हिं० मरकना] १ दबाकर चूर करना। इतना दबाना कि मरमराहट का शब्द उत्पन्न हो। २ दे० 'मुड़काना'।
मरकी—स्त्री० [हिं० मरना] १ मरी। महमारी। २ मृत्यु।
मरकूम—वि० [अ० मर्कूम] लिखित। लिखा हुआ।
मरकोटी—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की मिठाई।
मरखंडा—वि०=मरकना (मरकहा)।
मरखना—वि० [हिं० मारना+खना (प्रत्य०)] जल्दी गुस्से मे आकर

मार बैठनेवाला। मरकहा। जैसे—मरखना बैल या साँड़। २.(व्यक्ति) जिसे मारने-पीटने की आदत पड़ गई हो।

मरखम—पु० [हिं० मल्लखंभ] १. वह खूँटा जो कातर में गाड़ा जाता है। २. दे० 'माल खंभ'।

मरखौका—वि० [हिं० मरा+खाना] [स्त्री० मरखौकी] मरे हुए जीवों का मांस खानेवाला।

वि० [हिं० मार+खाना] [स्त्री० मरखौकी] जो प्रायः मार खाते रहने का अभ्यस्त हो। बहुत मार खानेवाला।

मरगजा—वि० [हिं० मलना+गीजना] [स्त्री० मरगजी] मला-दला। मसला हुआ। मलित-दलित।

†पु०=मलगजा।

मरगी—स्त्री० [हिं० मरना+मि० फा० मर्ग] महामारी। मरी।

मरगोल(ला)—पु० [अ०] गाने में ली जानेवाली गिटकरी। स्वर-कंपन। (संगीत)

क्रि० प्र०—मरना।—लेना।

मरघट—पु० [स०] वह स्थान जहाँ चिताएँ जलती हों।

वि० १ मरकट। ३. दे० 'मनहूस'।

मरचा—पु०=मिर्च।

मर-चिरैया†—स्त्री०=उल्लू (पक्षी)।

मरचोआ—पु० [देश०] एक प्रकार की तरकारी जिसका व्यवहार युरोप में अधिकता से होता है।

मरज—पु० [अ० मर्ज] १. रोग। बीमारी। २ खराब आदत। बुरी टेव। लत।

मरजाद*—स्त्री० [स० मर्य्यादा] १. मर्यादा। २ सीमा। हद। ३ प्रतिष्ठा। सम्मान। ४. सामाजिक परिपाटी, रीति या विधान। ५ परिमाण। माप।

मरजादा—स्त्री०=मरजाद (मर्यादा)।

मरजिया—वि० [हिं० मरना+जीना] १. एक बार मरकर फिर से जीनेवाला। २ मृत-प्राय। ३ जो मरने-जीने की परवाह न करता हो। पु०समुद्र तल पर पड़ी हुई वस्तुएँ निकालनेवाला गोताखोर।

मरजी—स्त्री० [अ० मर्जी] १ इच्छा। कामना। २ किसी काम, बात या व्यक्ति के प्रति होनेवाला अनुकूल मनोभाव या वृत्ति। जैसे—हम तो आपकी मरजी से ही यह काम करेंगे। ३ अनुज्ञा। अनुमति।

मुहा०—मरजी मिलना या पटना=(क) एक राय होना। सहमत होना। (ख) स्वभाव या प्रवृत्ति का एक-सा होना।

मरजीवा†—वि०, पु०=मर-जिया।

मरण—पु० [स०√मृ (मरना)+ल्युट्—अन] १. मरने की क्रिया या भाव। मौत। २ साहित्य में एक संचारी भाव जो विरही की उस अवस्था का सूचक होता है जब वह विरह में मरणासन्न-सा रहता है।

मरण-गति—स्त्री० [ष० त०] आबादी या जन-संख्या के विचार से उसके अनुपात में होनेवाली मृत्युओं की दर या हिसाब। (डेथ रेट) जैसे—अमुक देश की मरण-गति धीरे धीरे घट (या बढ़) रही है।

मरणधर्मा—वि०=मरणशील।

मरण-प्रमाणक—पु० [स० ष०त०] व्यक्ति का मरण सूचित करनेवाला प्रमाण-पत्र।

मरण-शील—वि० [स०ब० स०] मर जाना जिसका धर्म या स्वभाव हो। जो अन्त में अवश्य मरता हो। मरण-धर्मा।

मरण-शुल्क—पु० [स० ष० त०] दे० 'मृत्युकर'।

मरणाशंसा—स्त्री०[सं० मरण-आशंसा, ष० त०] शीघ्र मरने की इच्छा। जल्दी मरने की कामना। (जैन)

मरणाशौच—पु० [स० मरण-अशौच, ष० त०] घर में किसी की मृत्यु होने के कारण सम्बन्धियों आदि को लगनेवाला सूतक। अशौच।

मरणीय—वि० [स० मरण+छ—ईय] १. जो मरने को हो या मरने के समीप हो। मर्त्य। २ जिसका मरना अवश्यम्भावी हो।

मरणोन्मुख—वि० [स० मरण-उन्मुख, ष० त०] जो मर रहा हो या जल्दी मरने को हो। मृत्युवाला।

मरत—पु० [स०√मृ (जाल)+अतच्, गुण] मृत्यु। मौत।

मरतबा—पु० [अ० मर्तब] १ पद। पदवी। २ दफा। पारी। बार। जैसे—दूसरी मरतबा।

मरतबान—पु० [स० अमृतबान] चीनी मिट्टी का बना हुआ एक प्रसिद्ध आधान।

मरता—वि० [हिं० मरना] जो मरने के सन्निकट हो। जैसे—मरता क्या नही करता। (कहा०)

पद—मरते जीते=बहुत ही कठिनता से और जैसे-तैसे। **मरते दम तक**=प्राण निकलने के समय तक। जीवन के अन्तिम क्षणों तक। **मरते मरते**=(क) ठीक मृत्यु के समय। जैसे—(क) वह मरते-मरते यह बात कह गया था। (ख) ठीक मृत्यु के समय तक। जैसे—वह मरते मरते मर गया, पर कभी किसी से दबा नही।

मरद*—पु० [फा० मर्द] १ पुरुष। २ वीर पुरुष।

मरदई†—स्त्री० [हिं० मर्द+ई (प्रत्य०)] १. मनुष्यत्व। आदमीयत। २ बहादुरी। वीरता।

मरदन—पु०=मर्दन।

मरदना—स० [स० मर्दन] १. मसलना। २ ध्वस्त या नष्ट करना। ३ गूँधना। माँड़ना। सानना।

मरदनिया—पु० [हिं० मर्दना] वह सेवक जो बड़े आदमियों के अंगों में तेल आदि मला करता है। मालिश करनेवाला आदमी।

मरदानगी—स्त्री० [फा० मर्दानगी] १. मरद अर्थात पुरुष होने की अवस्था या भाव। पुरुषत्व। २ वीरता। शूरता।

मरदाना—वि० [फा० मर्दान] [स्त्री० मरदानी] १. मरद या पुरुष-सम्बन्धी। पुरुष या पुरुषों का। जैसे—मरदाना लिबास, मरदानी पोशाक। २ मरदों जैसा। वीरों जैसा। जैसे—मरदाना वार। पु० शूर-वीर।

मरदी—स्त्री० [फा० मर्दी] १ मनुष्यता। २. पौरुष ३. काम शक्ति। जैसे—ना-मरदी।

मरदुआ—पु० [फा० मर्द] मरद या पुरुष के लिए अपेक्षा-सूचक संज्ञा। (स्त्रियाँ)

मरदुम—पु०=मर्दुम (आदमी)।

मरदूद—वि० [अ० मर्दूद] १ निकाला हुआ। बहिष्कृत। २. तिर-स्कृत। ३ पाजी। लुच्चा। ४. नीच।

पुं० बहुत ही तुच्छ या हीन व्यक्ति।

मरन—स्त्री०=मरण।

मरना—अ० [सं० मरण] १. जीव-जंतुओं या प्राणियों के शरीर में से जीवनी शक्ति या प्राण का सदा के लिए निकल जाना जिसके फलस्वरूप उनकी सभी शारीरिक क्रियाएँ या व्यापार बन्द हो जाते हैं। आयु या जीवन का अंत या समाप्त होना। मृत्यु को प्राप्त होना। जान निकलना। जैसे—महामारी से (या युद्ध में) लोगों का मरना।
पद—मरना-जीना। (देखें स्वतंत्र पद)
मुहा०—मरने तक की छुट्टी (या फुरसत) न होना=काम की अधिकता के कारण तनिक भी अवकाश न होना। काम को भी साँस लेने या सुस्ताने का समय न मिलना।
२. वनस्पतियों, वृक्षों आदि का कुम्हला या मुरझाकर इस प्रकार सूख जाना कि फिर वे खिलने-पनपने, फूलने-फलने या हरे-भरे रहने के योग्य न हो सकें। जैसे—अधिक गरमी पड़ने या वर्षा न होने से बाग के बहुत से पौधे मर गये।
विशेष—प्राणियो और वनस्पतियो की उक्त प्रकार की अवस्था प्राकृतिक कारणो से भी होती है और भौतिक कारणों से भी।
३ इतना अधिक कष्ट या दुःख भोगना कि मानों शरीर का अंत हो जाने की नौबत या बारी आ रही हो। जैसे—उन्होंने जन्म भर मर मर कर लाखो रुपये कमाये पर वे धन का सुख न भोग सके। उदा०—देव पूजि पूजि हिंदू मुए (मरे) तुरुक मुए (मरे) हज जाइ।—कबीर।
४. किसी काम या बात के लिए बहुत अधिक चिन्तित या प्रयत्नशील रहना और परेशान या हैरान होना। जैसे—हम तो लड़के के सुधार के लिए मरे जाते हैं और वह ऐरे-गैरे लोगों के साथ घूमता-फिरता रहता है।
मुहा०—(किसी के लिए) मरना-पचना=बहुत अधिक कष्ट सहना। उदा०—बहि बहि मरहु पचहु निज स्वारथ, जम को डड सह्यो।—कबीर। **मर मिटना**=(क) प्रयत्न करते-करते बहुत बुरी दशा में पहुँचना या दुर्दशा भोगना। जैसे—हम तो इस काम के लिए मर मिटे, और आपके लेखे अभी कुछ हुआ ही नही। (ख) पूर्ण रूप से अपना अन्त या विनाश करना। जैसे—हमने तो ठान लिया है कि देश-सेवा के लिए मर मिटेंगे। **मर रहना**=थक या हारकर हताश हो जाना और कुछ करने-धरने के योग्य न रह जाना। **मर लेना**=प्रयत्न करते-करते असह्य कष्ट भोगना। **(किसी काम या बात के लिए) मरे जाना**=(क) इतना अधिक चिन्तित या व्याकुल होना कि मानों उसके बिना जीवन या शरीर चल ही न सकता हो। जैसे—तुम तो मकान बनवाने के पीछे मरे जाते हो। (ख) बहुत अधिक कष्ट या दुःख भोगना। जैसे—हम तो सूद चुकाते चुकाते मरे जाते हैं। उदा०—अब तो हम साँस के लेने में मरे जाते हैं।—कोई शायर। (ग) ऐसी स्थिति मे आना या होना कि मानों शरीर में प्राण ही न हों। मृतक के समान असमर्थ या निष्क्रिय हो जाना। जैसे—वह तो लज्जा (या संकोच) के मारे मरा जाता है और तुम उसके सिर पर चढ़े आ रहे हो।
५. व्यावहारिक क्षेत्र में, किसी काम या बात को सबसे अधिक आवश्यक या महत्त्वपूर्ण समझते हुए उसके लिए सब प्रकार के कष्ट भोगने या त्याग करने के लिए प्रस्तुत रहना या होना। जैसे—भले आदमी तो अपनी इज्जत (या बात) पर मरते हैं। ६. शृंगारिक क्षेत्र में किसी के प्रेम में इतना अधिक अधीर होना कि उसके विरह में मानों प्राण निकल रहे हों या जीना दूभर हो रहा हो। किसी के प्रेम में बहुत ही विकल या विह्वल रहना (प्रायः 'पर' विभक्ति के साथ प्रयुक्त)। जैसे—वे जन्म भर सुन्दर स्त्रियों पर मरते रहे। ७ भारतीय खेलों में, खेलाड़ियो का किसी निश्चित क्रिया, नियम या विधान के अनुसार या फलस्वरूप खेल मे सम्मिलित रहने के योग्य न रह जाना। जैसे—कबड्डी के खेल में खेलाड़ियों का मरना। ८ कुछ विशिष्ट खेलों में गोटी, मोहरे आदि का उक्त प्रकार से खेले जाने योग्य न रह जाना और बिसात आदि पर से हटा दिया जाना। जैसे—चौसर के खेल मे गोटी या शतरंज के खेल मे ऊँट, घोड़ा या वजीर मरना। ९ किसी प्रकार नष्ट होना। न रह जाना। जैसे—आँखो का पानी मरना, अर्थात् लज्जा, शील, संकोच आदि न रह जाना। १०. किसी चीज का किसी दूसरी चीज मे या किसी स्थान मे इस प्रकार विलीन होना या समाना कि ऊपर या बाहर से जल्दी उसका पता न चले। जैसे—छत या दीवार मे पानी मरना। ११. किसी पदार्थ का अपनी क्रिया, शक्ति आदि से रहित या हीन होना। जैसे—आग मरना (बुझना या मन्द होना), पानी छिड़कने पर धूल मरना, (उड़ने योग्य न रह जाना या बैठ जाना), १२. मन या शरीर के किसी वेग का दबकर नही के समान होना। बहुत ही धीमा होना या मन्द पड़ना। जैसे—भूख मरना, प्यास मरना, उत्साह या मन मरना। १३ किसी से पराजित या परास्त होकर उसके अधीन या वश में होना। (क्व०)
वि० [स्त्री० मरनी] १. मरनेवाला। २. मरण या मृत्यु की ओर अग्रसर होनेवाला। जो जल्दी ही मरने को हो। मरणासन्न या मरणोन्मुख। उदा०—जाहि ऊब क्यों न, मति भई मरनी।—सुर।

मरना-जीना—पु० [हिं०] गृहस्थी में प्राय. होती रहनेवाली किसी की मृत्यु, सन्तान की उत्पत्ति, जनेऊ, ब्याह आदि कृत्य जिनमे आपसदारी के लोगों के यहाँ आना-जाना पड़ता है। जैसे—मरना-जीना तो सभी के यहाँ लगा रहता है।

मरनि*—स्त्री०=मरनी।

मरनी—स्त्री० [हिं० मरना] १ मृत्यु। मौत। २. वह स्थिति जिसमे घर का मनुष्य मरा हो और उसके अन्त्येष्टि आदि संस्कार हो रहे हों। जैसे—मरनी-करनी तो सबके घर होती है। ३. किसी के मरने पर मनाया जानेवाला शोक। ४ बहुत अधिक कष्ट, दुःख या परेशानी।
पद—मरनी-करनी=मृत्यु और मृतक की अन्त्येष्टि क्रिया।

मर-पुरी*—स्त्री० [हिं० मरना+पुरी]=यमपुरी। उदा०—तूं मरपुरी न कबहूँ देखी।—जायसी।

मरबुली—स्त्री० [देश०] एक प्रकार का पहाडी कन्द जिसके टुकडे गज गज भर गहरे गड्ढे खोद कर बोये जाते हैं।

मरभुक्खा—वि० [हि० मरना+भूखा] १ भूख का मारा हुआ। २. भुक्खड़। ३. कंगाल।

मरम—पु०=मर्म।

मरमर—पु० [फा० मर्मर] एक तरह का सफेद पत्थर।

मरमरा—वि० [अनु०] जो सहज में टूट जाय। जरा सा दबाने पर मरमर का शब्द कर के टूट जानेवाला।

पु० एक प्रकार का पक्षी ।

पु० [हिं० मल या अनु०] वह पानी जो थोड़ा खारा हो ।

मरमली—स्त्री० [देश०] छोटे आकार का एक वृक्ष जिसकी लकडी कडी और बहुत टिकाऊ होती है ।

मरमराना—अ० [अनु०] टूटने के समय दाब पाकर मरमर शब्द करना । स० इस प्रकार तोडना या दबाना कि मरमर शब्द हो।

मरमी*—वि० [स० मर्म] किसी का मर्म जाननेवाला। मर्मज्ञ।

मरम्म*—पु०=मर्म ।

मरम्मत—स्त्री० [अ०] १ क्षत, टूटी-फूटी अथवा बिगडी हुई वस्तु को फिर से ठीक करके अच्छी स्थिति मे लाने का काम। (रिपेयर्स) २. लाक्षणिक अर्थ मे, वह मार-पीट जो किसी को सीधे रास्ते पर लाने के लिए की जाय।

मरम्मत-तलब—वि० [अ०] जिसमे मरम्मत की आवश्यकता हो। मरम्मत किये जाने के योग्य।

मरम्मती—वि० [हिं० मरम्मत] १. (पदार्थ) जिस की मरम्मत करने की आवश्यकता हो। मरम्मत-तलब। २ (पदार्थ) जिसकी मरम्मत की जा चुकी हो।

मरल—पु० [देश०] दो हाथ लम्बी एक प्रकार की मछली।

मरवट—स्त्री० [हिं० मरना] वह माफी जमीन जो किसी के मारे जाने पर उसके उत्तराधिकारियो को भरण-पोषण के लिए दी गई हो।

स्त्री० [देश०] पटुए की कच्ची छाल जो निकालकर सुखाई गई हो। सन का उलटा।

मरवा—पु०=मरुआ (पौधा)।

मरवाना—स० [हिं० मारना का प्रे०] १ किसी को मारने-पीटने का काम किसी दूसरे से कराना। २ वध या हत्या कराना। (बाजारू) सयो क्रि०—डालना।

मरसा—पु० [स० मारिश] एक प्रकार का साग जिसकी पत्तियाँ गोल, झुर्रीदार और कोमल होती है।

मरसिया—पु० [अ० मर्सिय] १. कर्बला के मैदान में शहीद होनेवाले इमाम हुसेन और उनके साथियो की स्मृति मे लिखा हुआ शोक-गीत। २. किसी मृत व्यक्ति की स्मृति मे लिखा हुआ शोक-गीत। ३. रोना-पीटना।

क्रि० प्र०—पढ़ना।

मरहट*—पु०=मरघट।

पु० दे० 'मोठ' (कदन्न)।

मरहटा—पु० [स० महाराष्ट्र] १. उन्तीस मात्राओं के एक मात्रिक छद का नाम जिसमे १०, ८ और ११ पर विश्राम होता है तथा अत मे एक गुरु और लघु होता है। २ दे० 'मराठा'।

मरहठा—पु० दे० 'मराठा'।

मरहठी—वि०, स्त्री०=मराठी।

मरहबा—अव्य० [अ० मर्हबा] १ शाबाश। धन्य।

मरहम—पु० [अ० मर्हम] ओषधियो का वह गाढ़ा और चिकना लेप जो घाव या फोड़े पर उसे भरने या ठीक करने के लिए लगाया जाता है।

क्रि० प्र०—लगना।—लगाना।

पद—**मरहम-पट्टी**—(क) आघात की चिकित्सार्थ घाव पर मरहम और पट्टी लगाना। २ जीर्ण-शीर्ण या टूटी-फूटी चीज की साधारण मरम्मत।

मरहमत—स्त्री० [अ० मर्हमत] १ कृपा। अनुग्रह। २ कृपापूर्वक किया जानेवाला प्रदान।

मरहला—पु० [अ० मर्हलः] १ वह स्थान जहाँ यात्री रात के समय ठहरते है। पड़ाव। टिकान। २ कुटिया। झोपड़ी। ३. दरजा। मरातिब। ४. कोई बहुत कठिन या विकट काम।

क्रि० प्र०—डालना। —तै करना।—निपटाना।—पडना।

मरहून—वि० [अ० मर्हून] बन्धक या रेहन रखा हुआ।

मरहूम—वि० [अ० मर्हूम][स्त्री० मर्हूमा] जो मर गया हो। दिवगत। स्वर्गवासी।

मराठा—पु० [स० महाराष्ट्र] १. महाराष्ट्र देश का निवासी। २. महाराष्ट्र देश का अब्राह्मण निवासी।

मराठी—स्त्री० [स० महाराष्ट्री] महाराष्ट्र देश की भाषा।

वि० मराठो का।

पद—**मराठी घिस-घिस**—ऐसी भद्दी अवस्था जिसमे हर काम में व्यर्थ बहुत देर लगती हो।

मरातिब—पु० [अ०] १. उत्तरोत्तर या क्रमात् आनेवाली अवस्थाएँ। २ अधिकार युक्त पद। दरजा। ३ तह। पृष्ठ। ४ मकान। मजिल। जैसे—तीन मरातिब का मकान। ५ झडा। ध्वजा। पताका। (किसी के उच्च पद की सूचक) ६ दे० 'माही मरातिब'।

मराना—स० [हिं० मारना का प्रे०] १ मारने का काम किसी दूसरे से कराना। मरवाना। २ सभोग कराना। (बाजारू)

मराय—पु० [स०] १ एकाह यज्ञ। २ एक प्रकार का साम।

मरायल—वि० [हिं० मारना+आयल (प्रत्य०)] १ जिसने मार खाई हो। पीटा हुआ। २ जिसमे कुछ भी तत्त्व या जीवनी-शक्ति न हो। निस्सार। मरियल।

पु० घाटा। टोटा। (क्व०)

क्रि० प्र०—आना। —पडना।—लगना।

मराल—पु० [स० मृ+आलच्] १ एक प्रकार की बतख जो हलकी ललाई लिये सफेद रग की होती है। २ हस। ३ कारडव पक्षी। ४ घोड़ा। ५ हाथी। ६ अनार का बाग। ७ काजल। ८ ८. बादल। मेघ। ९. दुष्ट या पाजी व्यक्ति।

मरासी—पु०=मिरासी।

मरिंद—पु० १ दे० 'मलिंद'। २ दे० 'मरंद'।

मरिखम—पु० =माल खभ।

मरिच—पु० [स०√मृ(मरण)+इच, बा०] मिरिच।

मरिचा—पु० [स० मरिच] १ बड़ी लाल मिर्च। २ मिर्च।

मरियम—स्त्री० [अ० मर्यम] १ वह बालिका जिसका विवाह न हुआ हो। कुमारी कन्या। ३ पतिव्रता और साध्वी स्त्री। ३ ईसा मसीह की माता का नाम।

पद—**मरियम का पंजा**—एक प्रकार की सुगधित वनस्पति जिसका आकार हाथ के पजे का-सा होता है।

विशेष—प्राय इसका सूखा हुआ पत्ता प्रसव के समय प्रसूता के सामने पानी मे रख दिया जाता है जो धीरे धीरे फैलने लगता है। कहते हैं कि

इसे देखते रहने से प्रसव जल्दी होता है। पर वास्तव मे प्रसूता का ध्यान बँटाने के लिए ऐसा किया जाता है।

मरियल—वि० [हिं० मरना+इयल (प्रत्य०)] १. इतना अधिक दुर्बल कि मरा हुआ-सा जान पड़े। बे-दम।

पद—मरियल-टट्टू=कमजोर तथा सुस्त आदमी।

मरी—स्त्री० [सं० मारी] एक ऐसा घातक और संक्रामक रोग जिसमें एक साथ बहुत से लोग मरते हैं। मरक। महामारी।

स्त्री० [हिं० मारना] एक प्रकार का भूत।

स्त्री० [देश०] साबूदाने का पेड़।

मरीचि—पु०[सं०√मृ+ईचि] १ एक प्रसिद्ध प्राचीन ऋषि जो भृगु के पुत्र और कश्यप के पिता थे। २. एक मरुत् का नाम।

विशेष—मरीचि, अंगिरा, अत्रि, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु और वसिष्ठ ये सात सप्तर्षि कहलाते हैं।

३ एक प्राचीन मान जो ६ त्रसरेणु के बराबर होता है। ४ किरण। मयूख। ५ कान्ति। चमक। ६. दे० 'मरीचिका'।

मरीचिका—स्त्री० [सं० मरीचि+कन्+टाप्] १ गरमी के दिनो में बहुत तेज धूप के समय वातावरण की विशिष्ट स्थितियों के कारण दिखाई देनेवाले कुछ भ्रामक दृश्य। मृग-तृष्णा। जैसे—रेगिस्तान मे दूरी पर जलाशय दिखाई देना या आकाश मे नगर अथवा वन दिखाई देना।

विशेष—प्राय: ऐसे भ्रामक दृश्य जिन्हें देखकर यात्री या पशु उन तक पहुँचने के लिए बहुत दूर तक चले जाते हैं पर अन्त मे उन्हें थककर निराश ही होना पड़ता है।

२ वह स्थिति जिसमें मनुष्य व्यर्थ की आशा या कल्पना के कारण किसी क्षेत्र मे बहुत आगे बढ़ता जाता और अंत मे विफल-मनोरथ तथा हताश होता है। मृगतृष्णा। मृगमरीचिका। (मिराज) ३ किरण। मयूख।

मरीचि-गर्भ—पु० [सं० ब० स०] १. सूर्य। २ दक्ष सावर्णि मन्वन्तर मे होनेवाले एक प्रकार के देवताओं का गण।

मरीचि-जल—पु० [सं० कर्म० स०] मृग-तृष्णा।

मरीचि-तोय—पुं० [सं० कर्म० स०] मृगतृष्णा।

मरीचिमाली (लिन्)—पुं० [सं० मरीचिमाला+इनि] सूर्य।

मरीची (चिन्)—वि० [सं० मरीचि+इनि] [स्त्री० मरीचिनी] जिसमें किरणें हों। किरण युक्त।

पु० १. सूर्य। २. चन्द्रमा।

मरीज—वि० [अ० मरीज] [स्त्री० मरीजा] रोगी। बीमार।

मरीना—पुं० [स्पेनी० मेरिनो] एक प्रकार का बहुत मुलायम ऊनी पतला कपड़ा जो मेरीना नामक भेड़ के ऊन से बनता है।

मरु—पुं० [सं०√मृ+उ] १ ऐसी भूमि जहाँ जल न हो और केवल बलुआ मैदान हो। मरुस्थल। रेगिस्तान। २. ऐसा पर्वत जिसमे जल न होता हो। ३ मारवाड़ प्रदेश। ४. मरुआ नामक पौधा। ५. नरकासुर का साथी एक असुर।

मरुआ—पुं० [सं० मरुव] बन-तुलसी की जाति का एक पौधा जो बागो में लगाया जाता है।

†पुं० [?] १. बँडेर। २. लकड़ी या धरन जिसमें हिंडोला लटकाया जाता है। ३. मौंड। पीच।

मरुक—पुं० [सं० मरु+कन्] १. मोर। मयूर। २. एक प्रकार का हिरन।

†स्त्री०[हिं० मुड़काना] १. मुड़कने की क्रिया या भाव। २. उत्तेजना।

मरुकांतार—पुं० [सं० ष० त०] रेगिस्तान।

मरु-कूप—पुं० [सं० ष० त०] मरुस्थल या रेगिस्तान का कुआँ जिसमें जल नही होता।

मरुज—पुं० [सं० मरु√जन् (उत्पन्न करना)+ड] १. नख नामक सुगंधित द्रव्य। २ बाँस का कल्ला।

मरु-जात—स्त्री० [सं० मरुज+टाप्] मरुस्थल में होनेवाली इंद्रायण की जाति की एक लता।

मरु-जाता—स्त्री० [सं० पं० त०] कौंछ।

मरुत्—पुं० [सं०√मृ+उत्] १ एक देवगण का नाम। वेदों में इन्हें रुद्र और वृश्नि का पुत्र लिखा है। २. राजा बृहद्रथ का एक नाम। ३. वायु। हवा। ४. प्राण। ५ सोना। स्वर्ण। ६. सौंदर्य। ७. मरुआ नाम का पौधा। ८ ऋत्विक्। ९ गठिवन। १०. अस-वर्ग। ११. दे० 'मरुत्त'।

मरुतवान*—पुं०=मरुत्वान्।

मरुत्कर—पुं० [सं० ष० त०] राजमाष। उड़द।

मरुत्गण—पुं० [सं० ष० त०] एक प्रकार के देव-गण जिनकी संख्या पुराणो मे ४९ कही गई है।

मरुत्त—पुं० [सं० मरुत्+तप्] पुराणानुसार एक चन्द्रवंशी राजा जो महाराज करंधर का पौत्र और अवीक्षित का पुत्र था।

मरुत्तक—पुं० [सं० मरुत√तक् (हँसना)+अच्] मरुआ। (पौधा)

मरुत्पति—पुं० [सं० ष० त०] इन्द्र।

मरुत्पथ—पुं० [सं० ष० त०,+अच् (प्रत्य०)] आकाश।

मरुत्प्लव—पुं० [सं० मरुत् √प्लु (कूदना)+अच्] सिंह। शेर।

मरुत्फल—पु० [सं० ष० त०] ओला।

मरुत्वती—स्त्री० [सं० मरुत्वत्+ङीप्] धर्म की पत्नी जो प्रजापति की कन्या थी।

मरुत्वान् (त्वत्)—पु० [सं० मरुत् वत्व] १. इन्द्र। २. हनुमान्।

मरुत्सख—पुं० [सं० ष० त०,+टच् प्रत्य०] १. इन्द्र। २. अग्नि।

मरुत्सहाय—पु० [सं० ब० स०] अग्नि।

मरुत्सुत—पुं० [सं० ष० त०] १. हनुमान्। २ भीम।

मरुथल—पुं०=मरुस्थल।

मरुदांदोल—पुं० [सं० मरुत्-आंदो, ष० त०] धौंकनी।

मरुदिष्ट—पु० [सं० मरुत्-इष्ट, ष० त०] गूगुल।

मरुद्रथ—पुं० [सं० मरुत्-रथ, ब० स०] घोड़ा।

मरुद्रुम—पुं०[सं० ष० त०]१ विट्खदिर। २. बबूल।

मरुद्वर्त्म (न्)—पु०[सं० मरुत-वर्त्मन्, ष० त०] आकाश।

मरुद्वाह—पु०[सं० मरुत-वाह, ब० स०] १ धूआँ। २. आग।

मरुद्विप—पु०[सं० ष० त० या स० त०] ऊँट।

मरुद्वीप—पु०[सं० ष०त०] मरुस्थल के बीच में कोई हरा-भरा क्षेत्र। ऐसा छोटा उपजाऊ प्रदेश जो मरुस्थल मे हो।

मरुधन्वा (न्वन्)--पु० [सं० ब० स०, अनङ्--आदेश] मरुभूमि। मरुस्थल।

मरु-धर--पु०[सं० ष० त०] मारवाड़।

मरुभूमि--स्त्री०[सं० ष० त०] रेतीला तथा जल-विहीन प्रदेश। रेगिस्तान।

मरु-भूरुह--पु०[सं० ष० त०] करील।

मरु-मक्षिका--स्त्री०[सं० ष० त०] मक्खी की तरह का एक पतिंगा जो प्राय अँधेरे और ठंढे स्थानो मे रहता है। यह फुदकता ही है, उड़ नही सकता। कालज्वर का संक्रमण प्राय इसी के द्वारा है। (सैंडफ्लाई)

मरुरना*--अ०-- मरुड़ना (मरोड़ा जाना)।

स० = मरोड़ना।

मरुव--पु०[सं० मरु√ वा (प्राप्त होना) +क] मरुआ।

मरुवक--पु०[सं० मरुव+कन्]१ दौना या मरुआ नाम का पौधा। २ मैनी नाम का कँटीला पेड़। ३ तिल का पौधा। ४ बाघ नामक जन्तु। ५ राहु ग्रह।

मरुवा--पु० = मरुआ।

मरुसंभव--पु०[सं० ब० स०] एक तरह की मूली।

मरुसंभवा--स्त्री०[सं० मरुसभव+टाप्] १ महेंद्र वारुणी। २. एक प्रकार का खैर। ३ एक प्रकार का कनेर। ४ छोटा जवासा।

मरुस्थल--पु०[सं० ष० त०] वह बहुत बड़ा प्राकृतिक मैदान जिसमे मिट्टी की जगह बालू या रेत ही हो। रेगिस्तान। (डिजर्ट)

मरुस्था--स्त्री०[सं० मरु√स्था (ठहरना)+क+टाप्] छोटा जवासा।

मरू --वि०[सं० मेरु या हिं० मरना] मुश्किल। कठिन।

पद--मरूकर(करि)* =अनेक प्रकार के उपाय करके और बहुत कठिनता से। उदा०--ता कहूँ तौ अब लौं बहराई कै राखी स्वगइ मरू करि मैं हैं।--केशव।

स्त्री०[सं० मूर्च्छना] सगीत में एक ग्राम से दूसरे ग्राम तक जाने मे सातो स्वरो का आरोह अवरोह करना। दे० 'मूर्च्छना'।

मरूक--पु०[सं०√मृ (मरना)+ऊक्]१ एक प्रकार का मृग। २ मयूर। मोर।

मरूद्भवा--स्त्री०[सं० मरु-उद्भव, ब० स०,+टाप्] १ जवासा। २ कपास। ३ एक प्रकार का खैर का वृक्ष।

मरूरा*--पु० = मरोड़ा।

मरूल--पु०[सं० मुर्व] गोरखकरा। मरूर।

मरेठी--स्त्री०[?] वह मोटी तथा मजबूत रस्सी जिससे खेतो मे हेंगा खीचा जाता है।

†स्त्री० = मराठी।

मरोड़--पु०[हिं० मरोड़ना]१ मरोडने की क्रिया या भाव। २ मरोड़ने के कारण पड़नेवाला बल। ३ किसी प्रकार का घुमाव-फिराव या चक्कर।

पद--मरोड़ की बात = घुमाव-फिराव या चक्कर की कोई बात।

मुहा०--मरोड़ खाना = (क) चक्कर खाना। (ख) उलझन मे पड़ना।

४ दुख, व्यथा, दुर्भाव आदि के फलस्वरूप मन मे होनेवाला क्षोभ या कपट।

मुहा०--मरोड़ खाना या गहना = अभिमान, क्रोध आदि के कारण क्षुब्ध रहना।

५ अनपच के कारण पेट में रह-रहकर होनेवाली ऐंठन जिससे पीड़ा भी होती है। पेचिश।

मुहा०--मरोड़ खाना = पेट में ऐंठन और पीड़ा होना।

मरोड़ना--स०[हिं० मोड़ना]१ किसी चीज मे घुमाव, बल आदि डालने के उद्देश्य से उसे कुछ जोर से घुमाना। जैसे--किसी का कान मरोड़ना।

२ किसी चीज को ऐसी स्थिति मे लाना कि उसमे कुछ तनाव या ऐंठन आ जाय। जैसे--अंग मरोड़ना (अंगड़ाई लेना)। उदा०--सब अंग मरोरि मुरी मन मे झरि पूरि रही रस मैं न भई।--गुमान। ३ गरदन मरोड़कर मार डालना। ४ पीड़ा देना। दुःख पहुँचाना।

मरोड़फली†--स्त्री०[हिं० मरोड़+फली]मुर्रा। अवतरनी।

मरोड़ा--पु० = मरोड़।

मरोड़ी--स्त्री०[हिं० मरोडनी]१ ऐंठन। घुमाव। बल। मरोड़। २ खीचातानी। ३ उबटन, मैल आदि का वह पतला तथा बल खाया हुआ छोटा टुकड़ा जो शरीर को मलने तथा रगड़ने पर छूटता है। ४ हाथ से मलकर बनाई हुई गीले आटे की बत्ती।

मर्क--पु०[सं० √मर्क् (गति)+अच्] १ शरीर। देह। २ प्राण। ३ बन्दर।

मर्कक--पु० [सं० मर्क+कन्] १ मकड़ा। २ हड़गीला पक्षी।

मर्कट--पु०[सं०√मर्क्+अटच्]१ बंदर। २ मकड़ा। ३ हड़गीला। ४ एक प्रकार का विष। ५ दोहे का वह भेद जिसमे १७ गुरु और १४ लघु मात्राएँ होती है। ६ छप्पय का एक भेद।

मर्कटक--पु० [सं० मर्कट+कन्] १ बंदर। २. मकड़ी। ३. एक प्रकार की मछली। ४ मड़ुआ नामक कदन्न। ५ मकरा नामक घास।

मर्कट-तिंदुक--पु०[सं० मध्य० स०] कुपीलु।

मर्कटपाल--पु०[सं० मर्कट√पाल् (बचाना)+णिच्+अच्] सुग्रीव।

मर्कट-पिप्पली--स्त्री०[सं० ष० त०] अपामार्ग। चिचड़ा।

मर्कट-प्रिय--पु०[सं० ष० त०] खिरनी का पेड और उसका फल।

मर्कट-वास--पु०[सं० ष० त०] मकड़ी का जाला।

मर्कट-शीर्ष--पु०[सं० ष० त०] हिंगुल।

मर्कटी--स्त्री०[सं० मर्कट+ङीप्]१ बंदरी। मादा बन्दर। बँदरिया। २ मकड़ी। ३ केवाँच। कौछ। ४ अपामार्ग। चिचड़ा। ५. अजमोदा। ६ एक प्रकार का करज। ७ छदशास्त्र मे ९ प्रत्ययो मे से अन्तिम प्रत्यय जिसके द्वारा मात्रा के प्रस्तार में छद के लघु, गुरु, कला और वर्णों की सख्या का परिज्ञान होता है।

मर्कटेंदु--पु०[सं० मर्कट-इदु, स० त०] कुचला।

मर्कत--पु० = मरकत।

मर्कर--पु०[सं०√मर्क्+अर] भृगराज। भँगरा।

मर्करा--स्त्री०[सं० मर्कर+टाप्]१ सुरंग। २ तहखाना। ३ बरतन। ४. बाँझ स्त्री।

मर्ची--स्त्री० = मिर्च।

मर्ज--पु० = मरज।

मर्ज़ी--स्त्री० = मरजी।

मर्त्त--पुं० [सं०√मृ (मरण)+तन्] १ मनुष्य। २ दे० 'मर्त्यलोक'।

मर्तबा--पुं०=मरतबा।

मर्तबान--पुं०[दक्षिणी बरमा के मर्तबान नगर के नाम पर] १. चीनी मिट्टी आदि का बना हुआ एक प्रकार का गोलाकार आधान। २. धातु आदि का बना हुआ कोई ऐसा लम्बा पात्र जिसमे दवाएँ, रासायनिक पदार्थ आदि रखे जाते हैं। ३ एक प्रकार का बढ़िया केला।

मर्त्य--पुं०[सं० मर्त्त+यत्]१. मनुष्य। २. शरीर। ३ 'दे० मर्त्यलोक'।

मर्त्य-धर्मा (र्मन्)--वि०[ब० स०] मरणशील।

मर्त्यमुख--पुं०[ब० स०] [स्त्री० मर्त्यमुखी, मर्त्य-मुख ङीप्] किन्नर।

मर्त्यलोक--पुं०[ष० त०] यह संसार जिसमे सबको अंत मे मरना पड़ता है।

मर्द--पुं०[फा० मि० सं० मर्त्त और मर्त्य] १. मनुष्य। प्राणी। २ पौरुष से युक्त और वीर व्यक्ति। ३ पति। स्वामी।

वि० वीर तथा साहसी।

पद--मर्द आदमी=वीर पुरुष।

मर्दक--वि०[सं०√मृद् (चूर्ण)+णिच्+ण्वुल्--अक] मर्दन करनेवाला। मर्दनकारक।

मर्दन--पुं०[सं०√ मृद्+णिच्+ल्युट्--अन]१ शरीर पर कोई स्निग्ध पदार्थ या ओषधि रगड़कर मलने की क्रिया या भाव। २ इस प्रकार किसी चीज को मलना या रगड़ना कि वह क्षत-विक्षत हो जाय। ३ कुचलना। रौंदना। ४ नष्ट-भ्रष्ट करना। ५ कुश्ती के समय एक मल्ल का दूसरे मल्ल की गर्दन आदि पर हाथो से घस्सा लगाना। ६ रसेश्वर दर्शन के अनुसार अठारह प्रकार के रस संस्कारो मे से दूसरा संस्कार। इसमे पारे आदि को ओषधियो के साथ खरल करते या घोंटते हैं। घोटना। ७. पीसना या रगड़ना।

वि० [स्त्री० मर्दिनी] मर्दन करनेवाला (यौ० के अन्त मे)। जैसे--महिष-मर्दिनी।

वि०[स्त्री० मर्दिनी] १ मर्दन करनेवाला। २ नष्टभ्रष्ट करनेवाला (यौ० के अन्त मे)। जैसे--मधु मर्दन।

मर्दना*--स०[सं० मर्दन] १. मालिश करना। मलना। २ तोड-मरोडकर नष्ट करना। ३ चूर-चूर करना। ४ अंग-भंग करना। खंडित करना।

मर्द-बच्चा--पुं०[फा०] बहादुर। वीर।

मर्दबाज--वि०[फा०] पुंश्चली (स्त्री)।

मर्दल--पुं०[सं०√मृद्+घ, मर्द√ला लेना)+क] मृदंग की तरह का पुरानी चाल का एक बाजा। आज-कल बँगला मे 'मादल' कहलाता है।

मर्दाना--वि०, पुं०=मरदाना।

मर्दानगी--स्त्री०=मरदानगी।

मर्दित--भू० कृ०[सं०√मृद्+णिच्+क्त]१. जिसका मर्दन किया गया हो या हुआ हो। २. तोड़ा-फोड़ा हुआ। ३. ध्वस्त या नष्ट किया हुआ।

मर्दी--स्त्री०=मरदी।

मर्दुम--पुं०[फा०] मनुष्य।

मर्दुमशुमारी--स्त्री०[फा०] मनुष्य-गणना।

मर्दुमी--स्त्री० [फा०] १ मनुष्यता। २ पौरुष। वीरता। ३. पुंसत्व।

मर्दूद--वि० दे० 'मरदूद'।

मर्म--पुं० [सं०√मृ+मनिन्] १ स्वरूप। २ भेद। रहस्य। ३. संधि-स्थान। ४ किसी बात के अन्दर छिपा हुआ तत्त्व। ५. प्राणियो के शरीर मे वह स्थान जहाँ आघात पहुँचने से अधिक वेदना होती है और मृत्यु तक की सम्भावना होती है। ६ हृदय।

मर्मग--वि०[सं० मर्म√गम् (प्राप्त होना)+ड]नुकीला तथा तीव्र।

मर्मघाती (तिन्)--वि० [सं० मर्म√हन् (मारना)+णिनि न्--त्] मर्म पर आघात करनेवाला।

मर्मघ्न--वि०[मर्म√हन् (मारना)+टक्, ह--घ] अत्यन्त कष्टप्रद।

मर्मचर--पुं०[सं० मर्म√चर् (प्राप्त होना)+ट] हृदय।

मर्मच्छिद--वि०[सं० मर्म√छिद् (छेदना)+क्विप्]दे० 'मर्मच्छेदी'।

मर्मच्छेदक--वि०[सं० ष० त०] मर्मभेदक। मर्म भेदनेवाला।

मर्मच्छेदन--पुं०[सं० ष० त०]१ प्राणघातन। जान लेना। २ मर्म-स्थल पर ऐसा आघात करना जिससे बहुत अधिक कष्ट हो।

मर्मच्छेदी (दिन्)--वि० [सं० मर्म√छिद् (छेदना)+णिनि]मर्मभेदी।

मर्मज्ञ--वि० [सं० मर्म√ज्ञा+क] किसी बात का मर्म या गूढ़ रहस्य जाननेवाला।

मर्म-प्रहार--पुं०[सं०स० त०] ऐसा आघात या प्रहार जो मर्म स्थान पर हो।

मर्म-भेद--पुं० [ष० त०]१ मर्मस्थल पर किया जानेवाला आघात। २ दूसरों के भेद या रहस्य का किया जानेवाला उद्घाटन।

मर्म-भेदक--वि०[ष० त०]१. मर्म छेदनेवाला। २ हृदय विदारक।

मर्म-भेदन--पुं०[ष०त०]१ मर्मस्थल पर आघात करना। २ बाण। तीर।

मर्म-भेदी (दिन्)--वि० [सं० मर्म√ भिद् (फाड़ना)+णिनि] १. मर्मस्थल अर्थात् हृदय पर आघात करनेवाला (शब्द या बात)। २ दुःखी तथा संतप्त करनेवाला।

मर्मर--पुं०[सं०√मृ+अरन्, मुट्-आगम] १ पत्तों के हिलने से होनेवाली खड़खड़ाहट। २ ऐसा कलफदार कपडा जिससे मर्मर शब्द निकलता हो।

पुं० दे० 'मरमर'।

मर्मरित--भू० कृ०[सं० मर्मर+इतच्] मर्मर ध्वनि करता हुआ।

मर्मरी--स्त्री०[सं० मर्मर+ङीप]१ एक तरह का देवदारु। २. हल्दी।

मर्मरीक--पुं०[सं० मर्मर+ईकन]१ निर्धन व्यक्ति। २ दुष्ट व्यक्ति।

मर्म-वचन--पुं०[ष०त०] ऐसा कथन, बात या वचन जो मर्म या हृदय पर आघात करनेवाला हो।

मर्म-वाक्य--पुं०[ष० त०]१ रहस्य की बात। २. दे० 'मर्मवचन'।

मर्मविद्--वि०[सं० मर्म√विद् (जानना)+क्विप्]मर्म या तत्त्व जानने-वाला। मर्मज्ञ।

मर्मविदारण--पुं०[ष० त०] मर्मच्छेदक।

मर्मवेदी (दिन्)--वि० [सं०√मर्म√विद् (जानना)+णिनि] मर्मज्ञ।

मर्मवेधी (धिन्)--वि० [सं० मर्म√विध् (छेदना)+णिनि] मर्म भेदी।

मर्म-स्थल--पुं०[ष० त०]१. शरीर का कोई ऐसा अंग जिसपर आघात लगने से बहुत अधिक पीड़ा होती है और जिससे मनुष्य मर भी सकता है। जैसे--अण्डकोश, कंठ, कपाल आदि। २ हृदय, जिसपर किसी की बात का आघात लगता है।

मर्म-स्थान--पुं०[स० त०] मर्म का स्थान अर्थात् मर्म। (देखें)

मर्मस्पर्शी (शिन्)--वि०[स० मर्म√स्पृश्+णिनि] [स्त्री० मर्मस्पर्शिनी, भाव० मर्मस्पर्शिता] मर्म को स्पर्श करने अर्थात् उस पर प्रभाव डालनेवाला।

मर्मांतक--वि०[स० मर्म-अन्तक, ष० त०] मर्म तक पहुँचकर उस पर अनिष्ट प्रभाव डालनेवाला। मर्मभेदक।

मर्माघात--पुं०[सं० मर्म-आघात, स० त०] मर्मस्थल पर होनेवाला आघात। हृदय पर लगनेवाली गहरी चोट।

मर्मातिग--वि०[स० मर्म√अति-गम् (जाना) ड] मर्म को छेदनेवाला। मर्म-भेदी।

मर्मान्वेषण--पुं०[स० मर्म-अन्वेषण, ष० त०] भेद या रहस्य जानने के लिए की जानेवाली खोज।

मर्माहत--वि०[स० मर्म-आहत, स० त०] जिसके मर्म अर्थात् हृदय को कड़ी चोट पहुँची हो।

मर्मिक--वि०[स० मर्म+ठन्--इक] मर्मविद्। मर्मज्ञ।

मर्मी--वि०[सं० मर्म] मर्म या रहस्य जाननेवाला।

मर्मोद्घाटन--पुं०[स०मर्म+उद्घाटन,ष०त०] मर्म या रहस्य प्रकट करना।

मर्य--पुं०[स० √मृ (मरण)+यत्]मनुष्य।

मर्या--स्त्री०[स० मर्य+टाप्] सीमा।

मर्याद--स्त्री०[सं० मर्या√दा (देना)+क] १. दे० 'मर्य्यादा'। २. रीत-रिवाज। रसम। ३ चाल-ढाल। ४ रंग-ढंग। ५ विवाह के उपरान्त होनेवाला 'बढ़ार' नामक भोज।

मुहा०--मर्याद रहना=बरात का विवाह के तीसरे दिन ठहर कर 'बढ़ार' नामक भोज मे सम्मिलित होना।

मर्यादा--स्त्री० [स० मर्याद+टाप्] १ सीमा। हद। २ नदी का किनारा। तट। ३. लोक मे प्रचलित व्यवहार और उसके नियम आदि। ४ सदाचार। ५ गौरव। प्रतिष्ठा। मान। ६ धर्म। ७ दो या अधिक आदमियों मे होनेवाला निश्चय या प्रतिज्ञा। समझौता।

मर्यादाचल--पुं०[स० मर्यादा-अचल, मध्य०स०] सीमा पर स्थित पर्वत। सीमा सूचक पर्वत। सीमान्त पर्वत।

मर्यादाबंध--पुं०[स०ष०त०] १ अधिकारों की रक्षा। २ नजरबन्दी (अपराधियों आदि की)।

वि० जो मर्यादाओ से बँधा हुआ हो।

मर्यादा-मार्ग--पुं०[ष० त०] वेद-विहित कर्मों का आचरण करते हुए ज्ञान-प्राप्ति का प्रयत्न करना।

मर्यादा-वचन--पुं०[स० ष० त०] ऐसा कथन जिसमे अधिकार, कर्तव्य प्रदेश, स्थान आदि की सीमाओं का निर्देश हो।

मर्यादी (दिन्)--वि० [सं० मर्य्यादा+इनि,] १. मर्यादा से युक्त। मर्यादावाला। २ सीमित।

मर्रो--स्त्री०[हि० मरना] वह भूमि जो कर्ज लेनेवालो ने सूद के बदले मे महाजन को दी हो।

मर्श--पुं०[स०√मृश् (छूना)+घञ्]१ मनन। २ मत। सम्मति। राय।

मर्शन--पुं० [सं०√मृश्+ल्युट्--अन,] १ विचार करना। २. सलाह देना। ३ रगड़ना।

मर्ष--पुं०[स०√मृष्(सहन करना)+घञ्] १. क्षमा। शान्ति। २. धैर्य। ३ सहनशीलता।

मर्षण--पुं० [स०√मृष्+ल्युट्--अन] १ क्षमा करना। माफी। २ रगड़ना। मर्षण।

वि० १ ध्वस या नाश करनेवाला। २ दूर करने, रोकने या हटानेवाला। (यौ० के अन्त मे)

मर्षणीय--वि० [स०√मृष्+अनीयर्] जिसका मर्षण हो सके; या मर्षण करना उचित हो। मर्षण के योग्य।

मर्षित--भू० कृ० [स०√मृष् (क्षमा करना)+क्त] १ सहा हुआ। २ क्षमा किया हुआ।

मर्हूम--वि०[अ०] जो मर गया हो। दिवगत। स्वर्गीय।

मलग--पुं०[फा०]१ निश्चित तथा मस्त रहनेवाले एक तरह के मुसलमान फकीरों की संज्ञा। २ निश्चिंत तथा मस्त रहनेवाला व्यक्ति।

वि०१. मन-मौजी। २ निश्चिंत। ३ ला-परवाह।

पुं०[देश०] पीले रंग की चोंचवाला बगला।

मलगा--पुं० १ दे० 'मलग'। २ दे० 'तूतमलगा'।

वि०=मलग।

मलंगी--पुं० [फा० मलग] नमक बनाने का काम करनेवाला मजदूर।

मल--पुं०[स०√मल्+अच्]१ मैल। कीट। जैसे--धातुओं का मल। २ शरीर से निकलनेवाली मैल या विकार। जैसे--कफ, पसीना, विष्ठा आदि। ३ गुह। विष्ठा। ४ दोष। विकार। ५ पाप।

वि०१ गंदा। मलीन। २ दुष्ट।

अव्य० हाथियों को उठाने के लिए कहा जानेवाला शब्द। (महावत)

मलकना--अ०[अनु०]१ हिलना-डोलना। २ मटकना। ३ इतराना। ४ चमकना।

†स०=मलकाना।

मलकरन--पुं०[देश०] बरतनो पर रेखाएँ खीचने का एक उपकरण।

मलका--स्त्री०[अ० मलिक]१ महारानी। २ रानी। ३ बहुत ही सुन्दर स्त्री।

मलकाछ--पुं०[हिं०मलल+काछ] देवताओ के शृंगार के लिए एक प्रकार की कछनी जिसमे तीन झब्बे लगे होते हैं।

मलकाना--स०[अनु०]१ हिलाना-डुलाना। जैसे--आँख मलकाना। २ बहुत ठमक ठमककर या रुक रुककर बातें करना।

†अ०=इतराना।

पुं० [अ० मलिक] मुसलमानों की एक जाति। (पहले ये लोग राजपूत थे)।

मलकीट--पुं०[स० ष० त०]१ बहुत ही गन्दी चीजो या जगहों मे रहनेवाला कीड़ा। २ बहुत ही घृणित और नीच आदमी।

मलकुल मौत--पुं०=मल्कुल मौत।

मलकूत--पुं०[अ०] [वि० मलकूती]१ इस्लामी धर्म-शास्त्र के अनुसार

ऊपर के नौ लोकों में से दूसरा लोक। २. फरिश्तों के रहने का लोक। देवलोक।

मलखंभ--पु०=माल-खंभ।

मलखम--पुं०[सं० मल्ल+हिं० खंभा] १. पुरानी चाल के कोल्हू में लकडी का एक खूँटा जो कातर या पाट में कोल्हू से दूसरी छोर पर गाडा जाता है। २. दे० 'माल-खंभ'।

मलखाना--पुं०[सं० मल्ल+सेन] आल्हा-ऊदल का चचेरा भाई।
पु० दे० 'मलकाना'।
वि०[सं० मल+हिं० खाना]१. मल अर्थात् विष्ठा खानेवाला। २ बहुत ही गन्दा और मलिन (व्यक्ति)।

मलखानी--स्त्री०[हिं०मलखम] वह ऊँचा और सीधा पतला खंभा जिस पर बेंत से मालखंभ की कसरत की जाती है।

मलगजा --वि०[हिं० मलना+मीजना] १. मला-दला हुआ। मरगजा। २ मैला-कुचैला। ३. किसी की तुलना मे मद और हीन। उदा०--सबै मरगजे मुँह करी, इही मरगजे चीर।--बिहारी।
पुं०बेसन मे लपेटकर तेल या घी मे तला हुआ बैंगन का पतला टुकडा या फाँक।

मलगिरी--पु०[हिं० मलयागिरि] एक प्रकार का हल्का कत्थई रंग। चन्दन की तरह का रंग।
वि० उक्त प्रकार के रंग का।

मलगोबा--पु०[तु० मल्गोबा] १. गीली चीजे। २. एक प्रकार की पकी हुई दाल जिसमे दही भी मिला होता है। ३ पीब। मवाद। ४ कूडा-करकट। ५. गंदगीपन।

मलघन--पु० [सं० मलघ्न] एक प्रकार का कचनार, जो लता के रूप मे होता है।

मलघ्ना--वि०[सं० मल√हन् (मारना)+टक्, कुत्व][स्त्री० मलघ्नी] मलनाशक।
पु०१ एक प्रकार का कचनार। २. सेमल का मुसला।

मलघ्नी--स्त्री०[सं० मलघ्न+ङीष्] नागदौना।

मलज--पु०[सं० मल√जन् (उत्पन्न करना)+ड] पीब। मवाद।

मल-ज्वर-पु० [स० मध्य० स०] मल के रुकने के कारण होनेवाला ज्वर।

मलतन--पु० [देश०] एक प्रकार की बेल जो बागो मे लगाई जाती है।

मलट--पु०[अं० मैलेट] लकडी का हथौडा।

मलता--वि० [हिं० मलना] [स्त्री० मलती] १. मला या घिसा हुआ (सिक्का)। जैसे--मलता पैसा या रुपया। २ जो मले-दले जाने के कारण खराब हो गया हो। उदा०--मैला मलता इह संसारा।--कबीर।

मलद--पु०[सं०]वाल्मीकीय रामायण के अनुसार एक प्रदेश जहाँ ताडका रहती थी।

मल-दूषित--वि०[सं० तृ० त०] मलिन। मैला।

मलद्रावी (विन्)--वि० [मल√द्रु (संचालन करना)+णिच्+णिनि, वृद्धि, दीर्घ, नलोप] मल को द्रवित करने या गलानेवाला।
पुं० जमालगोटा।

मल-द्वार--पुं०[सं०ष०त०] १ शरीर की वे इन्द्रियाँ जिनसे मल निकलते हैं। २ गुदा। गाँड़।

मल-धात्री--स्त्री०[स० ष० त०]बच्चो का मल-मूत्र धोनेवाली धाय।

मलधारी (रिन्)--पु० [स० मल√धृ (धारण करना)+णिनि] एक प्रकार के जैन साधु जो शौच के उपरान्त जल से गुदा नही धोते।

मलना--स०[सं० मर्दन] १ कोई पदार्थ किसी अन्य पदार्थ पर पोतने या लगाने के उद्देश्य से उस पर बार बार कुछ जोर से रगडना। जैसे--(क) कपडे पर साबुन मलना। (ख) शरीर पर तेल मलना। २ लेप करना। ३ इस प्रकार रगडते हुए दबाना कि चूर चूर हो जाय। जैसे--सुरती मलना। ४. खुजलाने आदि के उद्देश्य से हाथ फेरना। जैसे--आँखें मलना। ५ एक चीज को दूसरी चीज पर बार बार आगे पीछे या इधर-उधर रगडते हुए ले जाना। जैसे--हाथ मलना (पश्चाताप आदि के समय)। ६ उमेठना। मरोड़ना। जैसे--किसी का कान मलना।

मलनी--स्त्री०[हिं० मलना] आठ दस अंगुल लंबा, दो अंगुल चौडा सुडौल और चिकना बाँस का वह टुकडा जिससे कुम्हार बरतनों की फालतू मिट्टी काटकर निकालते है।

मलपंकी (किन्)--वि० [स० मलपंक, ष० त०+इनि] १ मलिन। मैला। २. कीचड आदि से सना हुआ।

मलपट--पु०[सं० मल+हिं० पट=चित्र] १ चित्र-कला मे, ऐसा चित्र जिसमे केवल चेहरा दिखाया गया हो, शरीर के और अंग न दिखाये गये हो। २ दे० 'मल-पट्ट'।

मलपट्ट--पु० [स०ष०त०] १. किसी चीज को धूल से बचाने के लिए उस पर चढाया जानेवाल कपडा, कागज या ऐसी ही और कोई चीज। २ दे० 'मल-पट्ट'।

मल-पतंग--पुं०[ष० त०] एक प्रकार का छोटा कीडा जो वर्षा ऋतु के आरंभ मे उत्पन्न होता और प्राय मल के छोटे छोटे टुकडे इधर-उधर लुढ़काता फिरता है।

मल-परीक्षा--स्त्री०[सं० ष० त०] रोगी के मल (गुह) की वह वैज्ञानिक परीक्षा या विश्लेषण जिससे यह पता चलता है कि उसके शरीर मे किस किस रोग के कीटाणु हैं। (स्टूल एग्जामिनेशन)

मलपू--पु०[सं० मल√पू (पवित्र करना)+क्विप्] जंगली गूलर। कठूमर।

मल-पृष्ठ--पु०[मध्य० स०] प्राचीन भारत मे, पुस्तक का ऊपरी तथा पहला पृष्ठ, जो जल्दी मैला हो जाता था।

मलबा--पु०[हिं० मल?] १ गिरे हुए मकान की टूटी-फूटी ईंटे, मिट्टी, मसाला आदि जो फेंकवाया जाता है। २. भूगोल विज्ञान मे, चट्टानों की सतह पर से टूट-फूटकर गिरे हुए कंकड़ों का समूह। विखंड राशि। (डेट्रिटस) ३. कूडा करकट।
पु० एक तरह का वृक्ष।

मलभुज्--पु० [स० मल√भुज् (खाना) +क्विप्, कुत्व] कौआ।
वि० मलखानेवाला।

मलभेदिनी--स्त्री० [स० मल√भिद् (पृथक् करना)+णिनि,+ङीप्] कुटकी।

मलमल—स्त्री० [सं० मलमल्लक] एक तरह का बढ़िया महीन सूती कपड़ा।

मलमला—पु०[देश०] कुलफे का साग।
वि०१ बहुत ही कोमल। २ उदास या खिन्न।
†पु० दे० 'मलोला'।

मलमलाना—स०[हिं० मलना] [भाव० मलमलाहट] १ बार बार हलका स्पर्श करना। धीरे धीरे मलना। २ (आँख या पलक) बार बार खोलना और बन्द करना। ३ बार बार गले लगाना या आलिंगन करना। ४ (मन मे) पश्चात्ताप करना। पछताना।

मलमलाहट—स्त्री० [हिं० मलमला] १ मलमले होने की अवस्था या भाव। २ उदासी। खिन्नता। ३. पश्चात्ताप। पछतावा।

मलमा†—पु० १ =मलबा। २ =मुलम्मा।

मल-मास—पु०[स० कर्म० स०]१. वह अमात मास जिसमे संक्रान्ति न पडती हो। दो संक्रान्तियों के बीच मे पडनेवाला चान्द्रमास।
विशेष— चान्द्रगणना के अनुसार प्राय तीसरे या चौथे वर्ष बारह की जगह तेरह महीने भी होते हैं। यही तेरहवाँ महीना (जो वर्ष के बीच मे पड़ता है) अधिमास, अधिक मास, मलमास या पुरुषोत्तम कहलाता है। इस मास मे कोई शुभ काम करने का विधान नही है।
२ क्षयमास।

मलय--पु० [स०√मल्+कयन्]१ दक्षिणी भारत का एक प्रसिद्ध पर्वत जो पुराणों मे सात कुलपर्वतों मे गिनाया गया है। २ उक्त पर्वत के आस-पास का प्रदेश जो आज-कल मलाबार कहलाता है। ३ उक्त देश का निवासी। ४ उक्त प्रदेश मे होनेवाला सफेद चन्दन। ५ नन्दन कानन। ६ पुराणानुसार एक उप-द्वीप। ७ गरुड का एक पुत्र। पहाड का कोई पार्श्व या प्रदेश। शैलाग्र। ९ छप्पय छन्द का एक भेद जिसके प्रत्येक चरण मे २५ गुरु, १०२ लघु, कुल १२७ वर्ण या १५२ मात्राएँ अथवा २५ गुरु, ९८ लघु, कुल १२३ वर्ण या १४८ मात्राएँ होती है।

मलय-गिरि--पु०[स० मध्य० स०]१ मलय नामक पर्वत जो दक्षिण मे है। २ उक्त पर्वत पर होनेवाला चन्दन। ३ असम मे कामरूप के आस-पास के प्रदेश का पुराना नाम। ४. दार चीनी की तरह का एक वृक्ष। ५ भूरापन लिये लाल रंग।
वि० भूरापन लिए हुए लाल रंग का।

मलयज--पु०[स० मलय√जन् (उत्पन्न करना)+ड] १ चंदन। २ राहु नामक ग्रह।
वि० मलय पर्वत मे उत्पन्न होनेवाला।

मलय-द्रुम—पु०[मध्य० स०] १ चन्दन। २ मदन या मैनी नाम का पेड।

मलय-मारुत--पु० [सं० मध्य० स०] १. संगीत मे कर्नाट की पद्धति का एक राग। २ मलय समीर।

मलय-वासिनी—स्त्री०[स०मलय√वस् (निवास करना) +णिनि, +ङीप्] दुर्गा।

मलय-समीर--पु० [मध्य स०] १ मलय पर्वत की ओर से आनेवाली हवा जिसमे चन्दन की सुगंध मिली होती है। २. अच्छी और बढ़िया हवा।

मलया—स्त्री०[सं० मलय+टाप्] १ त्रिवृता। निसोथ। २ सोमराजी। बकुची।

मलयागिरि--पु०=मलयगिरि।

मलयाचल--पु०[मलय-अचल, कर्म० स०] मलय पर्वत।

मलयानिल—पु० [मलय-अनिल, कर्म० स०] १. मलय पर्वत की ओर से आनेवाली वायु। दक्षिण की वायु। २. शीतल और सुगंधित वायु। ३ वसंत ऋतु की वायु।

मलयालम--पु० [ता० मलय=पर्वत+अलम=उपत्यका] आधुनिक केरल राज्य का एक प्रदेश।
स्त्री० उक्त प्रदेश की भाषा।

मलयालि—पु०[ता० मलयालम] मलयालम में बसनेवाली एक पहाड़ी जाति का नाम।

मलयाली—वि०[ता० मलयालम] १. मलाबार देश का । मलाबार देश सम्बन्धी। २ मलाबार मे उत्पन्न।
पु० मलाबार का निवासी।
स्त्री० मलाबार की भाषा।

मलयुग—दे० [कर्म० स० या ष० त०] कलियुग।

मलयेशिया—पु०[मलया+एशिया] दक्षिण-पूर्वी एशिया का एक नवीन संघ राज्य जिसके अन्तर्गत मलाया, सारवाक, बोर्नियो और सिंगापुर है। इसकी स्थापना १६ दिसबर १९६३ को हुई थी।

मलयोद्भव—पु०[स० मलय-उद्भव, ब० स०] चंदन।

मलराना*—स०[हिं० मल्हारना] चुमकारना। पुचकारना। मल्हराना।
उदा०—कोऊ दुलरावै, मलरावै, हलरावै कोउ चुटकी बजावै, कोऊ देति करतारे हैं।—पद्माकर।

मल-रुचि—वि०[स० ब० स०]१. दूषित रुचिवाला। २. पापी।

मल-रोधक—वि०[स०ष० त०] जो पेट के अन्दर के मल को रोके। कब्जियत करनेवाला। काबिज।

मल-रोधन—पु०[स० ष० त०] पेट या आँतो मे मल रुकना। कोष्ठबद्धता। कब्जियत।

मलवा—वि० [?] स्वाद रहित और अरुचि उत्पन्न करनेवाला।

मलवाना—स०[हिं० मलना का प्रे०] [भाव० मलवाई] मलने का काम दूसरे से कराना। मलने मे किसी को प्रवृत्त करना।

मल-वासा—स्त्री०[ब० स०] ऋतुमती या रजस्वला स्त्री।

मल-विनाशिनी—स्त्री०[स० ष० त०]१ शंखपुष्पी। २ क्षार।

मल-विसर्जन—पु०[ष० त०] पाखाना फिरना। हगना।

मल-वेग—स्त्री०[स० ष० त०] अतीसार।

मल-शुद्धि—स्त्री० [ष० त०] पेट या आँतो मे रुके हुए मल का गुदा के रास्ते बाहर निकल आना।

मलसा—पु०[स० मल्लक] घी रखने का एक तरह का बड़ा कुप्पा।

मलहंता (हंतृ)—पु० [ष० त०] सेमल का मूसल।

मलहम—पु०[अ० मर्हम] घाव पर लगाने के लिए औषध का लेप। मरहम।

मलहर—पु०[सं० ष० त०] जमालगोटा।

मलहारक—पु०[स० ष० त०] भंगी। मेहतर।

मला—स्त्री०[स० मल+अच्+टाप्]१. चमड़ा। २ चमड़े से बना हुआ पदार्थ। ३. कासा नामक धातु। ४ भू-आँवला। ५. बिच्छू का डंक। ६. आँवा हल्दी।

मलाई—स्त्री०[हिं० मलना]१. मलने की क्रिया या भाव। २. मलने का पारिश्रमिक या मजदूरी।
स्त्री०[देश०]१. वह गाढ़ा चिकना अंश जो दूध उबालने पर उसके ऊपर जमने और तैरने लगता है। दूध की साढ़ी।
क्रि० प्र०—आना।—जमना।—पड़ना।
२. किसी चीज का उत्तम सार भाग।
पु० दूध की मलाई या साढ़ी की तरह का सफेद रंग जिसमें कुछ हलकी बादामीपन भी रहती है।

मलाकर्षी (र्षिन्)—पु० [सं० मल+आ√कृष् (घसीटना) +णिनि दीर्घ, नलोप] [स्त्री० मलाकर्षिणी] भंगी। मेहतर।

मलाका—स्त्री०[स० अमल√अक् (जाना)+अच्+टाप्] १. कामिनी। स्त्री। २ रंडी। वेश्या। ३. दूती। ४. मादा हाथी। हथिनी।

मलाट—पु०[सं०मलपट्ट]एक प्रकार का मोटा तथा मजबूत कागज जिसमे छापे, लिखाई आदि के काम आनेवाले कागजों के दस्ते या रीम लपेटे जाते हैं।

मलान*—वि०=म्लान।

मलानि*—स्त्री० =म्लानि।

मलापह—वि०[स० मल+अप√हन् (मारना)+ड] [स्त्री०मलापहा] १. मलनाशक। २ पापनाशक।

मलापोह—पु०[स०]मल या पाखाना कहीं से हटाकर दूर फेंकने का काम।

मलाबार—पु० [स० मलय+वार=किनारा] आधुनिक केरल राज्य का एक प्रदेश।

मलाबारी—वि०[हिं० मलाबार] मलाबार-सम्बन्धी।
पु० मलाबार का निवासी।

मलामत—स्त्री०[अ०]१. किसी के कोई बुरा कार्य करने पर की जानेवाली उसकी निन्दा या भर्त्सना।
पद—लानत-मलामत।
२ झिड़की। डाँट। ३. मल। गंदगी।
क्रि० प्र०—निकलना।

मलामती—वि०[फा०]१. जिसकी मलामत की गई हो। २ जो मलामत किये जाने के योग्य हो। दुतकारे या फटकारे जाने का पात्र।

मलायतन—वि०=मलिन।

मलायन—वि०=मलिन।

मलाया—पु०[सं० मलय] बर्मा के दक्षिण मे स्थित एक द्वीप।

मलार—पु० [सं०मल्लार] संगीत शास्त्रानुसार एक प्रसिद्ध राग जो वर्षा ऋतु में सायकाल अथवा रात के समय गाया जाता है।
मुहा०—मलार गाना=बहुत निश्चिन्त और प्रसन्न होकर कुछ कहना, विशेषत: गाना। जैसे—आप दिन भर बैठे मलार गाया करते हैं।

मलारि—पु०[सं० मलअरि, ष० त०] क्षार।

मलारी—स्त्री०[सं०मल्लारी] बसंत राग की एक रागिनी। (संगीत)

मलाल—पुं०[अ०] १. मन मे होनेवाला दुःख। रंज।
मुहा०—(दिल का) मलाल निकालना=कुछ कह-सुनकर अथवा बक-झक कर मन में दबा हुआ दुःख कम करना।
२. पश्चात्ताप। ३ उदासीनता।

मलावरोध—पुं०[सं० मल-अवरोध,ष०त०]१. मल का रुकना। २. पेट से मल का ठीक तरह से नहीं,बल्कि बहुत रुक-रुककर निकलने का रोग। कब्जियत।

मलावह—पुं०[सं० मल-आ√वह् (ढोना)+अच्] कुछ विशिष्ट प्रकार के पापों का समाहार। (मनु०)

मलाशय—पु०[स०मल-आशय, ष०त०] शरीर मे अंतड़ियों के नीचे का वह भाग जिसमें शौच के समय बाहर निकलने से पहले मल या गुह एकत्र होता है। (रेक्टम्)

मलाह*—पु०=मल्लाह।

मलाहत—स्त्री०[अ०] २. सलोनापन। लावण्य। सौंदर्य। २. कोमलता।

मलिंद—पु०[सं० मलिंद] भौंरा।

मलिक—पु०[अ०] [स्त्री० मलिका]१ राजा। अधीश्वर। ३. मुसलमानो की एक जाति। ४ पंजाब मे रहनेवाली हिन्दुओं की एक जाति।

मलिका—स्त्री०[अ० मलिक]१ मलका। महारानी। २. अधीश्वरी।
†स्त्री०=मल्लिका।

मलिकाना†—पु०[हिं० मालिक]१ नौकर की दृष्टि से उसके मालिक का घर। २ मालिक के घर के लोग।

मलिच्छ*—पु० =म्लेच्छ।

मलिच्छ*—पु०=म्लेच्छ।

मलित—पु०[देश०] सोनारो की एक छोटी कूंची।

मलिन—वि०[स० √मल्+इनच्] [स्त्री० मलिना, मलिनी] [भाव० मलिनता] १ मल से युक्त। २ मैला-कुचैला। गंदा। ३ खराब। बुरा। ४ धूएँ या मिट्टी के रंग का। मट-मैला। ५ दुष्कर्म या पाप करनेवाला। पापी। ६. (ज्योति या प्रकाश) जिसमे उज्ज्वलता कम हो। धीमा। मंद। मद्धिम। ७ उदास। म्लान।
पुं० १ एक प्रकार के साधु जो मैले-कुचैले कपड़े पहनते हैं। पाशुपत। २ तक्र। मठा। ३ सोहागा। ४. अगर। चन्दन। ५. गौ का ताजा दूध। ६ हस। ७. उपकरणो आदि का दस्ता। मूठ। हत्था। ८ दोष। ९ पाप। १० रत्नो की चमक और रंग का फीका और धुँधला होना जो उनका दोष माना जाता है।

मलिनता—स्त्री०[स० मलिन+तल्+टाप्] मलिन होने की अवस्था या भाव।

मलिनत्व—पु०[स० मलिन+त्व] मलिनता।

मलिन-मुख—पुं०[सं० ब० स०] १ अग्नि। २ बैल की दुम या पूछ। प्रेत।
वि० १ जिसका मुख अर्थात् चेहरा मलिन या उदास हो। २ क्रूर। निर्दय। ३. खल। दुष्ट।

मलिनांबु—पु०[स० मलिन-अंबु, कर्म० स०] स्याही।

मलिना—स्त्री० [स० मलिन+टाप्] १. रजस्वला स्त्री। २ लाल शक्कर। ३. छोटी भटकटैया।

मलिनाई†—स्त्री०=मलिनता।

मलिआना*—अ०[हिं० मलिन] १ मलिन या मैला होना। २ म्लान या उदास होना।
स० १. मैला या मलिन करना। २. म्लान या उदास करना।

मलिनावास--पु०[मलिन-आवास, ष० त०] मजदूरा या गरीबो की गदी बस्तियाँ। (स्लम)

मलिनिया--स्त्री०=मालिन (माली की स्त्री)।

मलिनी--स्त्री०[स० मल+इनि+ङीप्] रजस्वला स्त्री।

मलिनीकरण--पु०[स० मलिन+च्वि, इत्व, दीर्घ,√कृ (करना)+ल्युट्--अन]१ मलिन करने की क्रिया या भाव। २ पापो की एक कोटि का नाम। मलावह।

मलिम्लुच--पु०[स० मलिन्√म्लुच् (प्राप्त होना)+क] १ मलमास। २ अग्नि। आग। ३ चोर। ४ वायु। हवा। ५ वह जो पचयज्ञ न करता हो।

मलिया--स्त्री०[स० मल्लक या मल्लिका; हिं० मरिया] १ तग मुँह का मिट्टी का एक प्रकार का बरतन जिसमे घी, दूध, दही आदि पदार्थ रखे जाते हैं। २. गोटी के खेल मे वह चौकोर या तिकोना चक्र जो गोटियाँ रखने के लिए बनाया जाता है।

पद--मलिया मेट। (देखे)

३ घेरा। चक्कर।

मुहा०--मलिया बाँधना--रस्सी को मोडकर बाँधना। (लश०)

मलिया-मेट--पु०[हि० मलिया+मिटाना] उसी तरह का किया जानेवाला लोप या विनाश जैसा कि लडके मलिया बनाने के बाद उसे मिटाकर करते है। पूरी तरह से किया जानेवाला नाश। सर्वनाश।

मलिष्ठ--वि०[स० मल+इष्ठन्] अत्यन्त मलिन।

मलिष्ठा--स्त्री०[स० मलिष्ठ+टाप्] रजस्वला स्त्री।

मलीदा--वि०[फा० मालीद] मला हुआ। मर्दित।

पु० १ रोटी या पकवान का चूर चूर करके और अच्छी तरह मलकर बनाया जानेवाला एक प्रकार का खाद्य पदार्थ जो चूरमे की तरह होता है। २ गुड से मला हुआ आटा जो प्राय हाथियो को खिलाया जाता है। ३ एक प्रकार का ऊनी वस्त्र जो बहुत मुलायम और गरम होता है।

मलीन--वि०[स० मलिन]१ मैला। २ खिन्न या दुखी होने के कारण उदास।

मलीनता--स्त्री०=मलिनता।

मलीह--वि०[अ०]१ नमकीन। २ सलोना।

मलू--स्त्री०[सं० मालु]१ मलधन नामक कचनार। २ उक्त की छाल जो बहुत कडी होती है और ऊन रगने के काम आती है।

मलूक--पु०[?] १ एक प्रकार का कीडा। २. एक प्रकार का पक्षी। ३ बौद्ध शास्त्रों मे एक बहुत बडी सख्या की सज्ञा। ४ दे० 'अमलूक'।

वि०[?] मनोहर। सुन्दर।

मलूल--वि०[अ०]१ खिन्न। दुखी। २ उदास।

मलूहा--पु०[?] सगीत मे, एक प्रकार का राग।

मलूहा केदार--पु०[मलूहा+स० केदार]संगीत मे बिलावल ठाठ का एक राग।

मलेछ†--पु०=म्लेच्छ।

मलेच्छ†--पु०=म्लेच्छ।

मलेपंज--पु०[देश०] बूढा घोडा।

मलेरिया--पु०[अ०] एक तरह का ज्वर जो मच्छरों के काटने से उत्पन्न होता है। जूडी बुखार।

मलेशिया--पुं०[अ० मिलिशिया] १ एक प्रकार का कपडा जो विगत महायुद्ध मे प्रचलित हुआ था। २ दे० 'मलयेशिया'।

मलै†--पु०=मलय।

मलोत्सर्ग--पु०[स० मल-उत्सर्ग, ष० त०] मलत्याग। हगना।

मलोलना--अ०[हिं० मलोला] मन मे किसी काम या बात के लिए दुखी होना या पछताना। उदा०--जानि पैगो टेक टरे कौन धौ मलोलि है।--घनानद।

मलोला--पु०[अ० मलाल या मलूल]१ मानसिक व्यथा। दुख। रज।

मुहा०--मलोला या मलोले आना=रह रहकर दुख या पश्चात्ताप होना। **मलोले खाना**=मन ही मन कष्ट सहना। **(मन) के मलोले निकालना**=कुछ कह-सुनकर मन का कष्ट या व्यथा कम या दूर करना।

२ मन मे दबी हुई ऐसी कामना जो रह रहकर विकल करती हो। अरमान।

क्रि० प्र०--आना।--उठना।--निकलना।--निकालना।

मल्कुल-मौत--पु०[अ०] वह देवदूत जो जीवो के प्राण लेता है।

मल्ल--पु०[स० मल्ल+अच्] १ एक प्राचीन प्रसिद्ध जाति।

विशेष--इस जाति के लोग द्वन्द्व युद्ध मे बडे निपुण होते थे,इसी लिए द्वन्द्व युद्ध का नाम मल्लयुद्ध और कुश्ती लडनेवालोंका नाम मल्ल पडा है।

२ पहलवान। ३ एक सकर जाति। ४ एक प्राचीन जनपद।

मल्लक--पु०[स० मल्ल+कन्] १ दात। २ दीअट। ३ दीपक। दीआ। ४ पात्र। बरतन। ५ नारियल की खोपडी का बना हुआ प्याला।

मल्ल-क्रीड़ा--स्त्री०[सं० ष० त०] मल्लयुद्ध। कुश्ती।

मल्लखंभ†--पु०=मालखभ।

मल्लज--पु० [स० मल्ल√जन्+ड] काली मिर्च।

मल्ल-तरु--पु०[स० मध्य० स०] चिरौंजी।

मल्ल-ताल--पु०[स० मध्य० स०] सगीत मे एक प्रकार का ताल जिसमे पहले चार लघु और तब दो द्रुत मात्राएँ होती है।

मल्ल-नाग--पु०[स० उपमि० स०]१ ऐरावत। २ कामसूत्र के रचयिता वात्स्यायन का एक नाम।

मल्ल-भूमि--स्त्री०[स० ष० त०]१ मलद नामक देश। २ कुश्ती लडने का स्थान। अखाड़ा।

मल्ल-युद्ध--पु०[स० ष० त०] मल्लो का युद्ध। कुश्ती।

मल्ल-विद्या--स्त्री०[स० ष० त०] कुश्ती के दाँव-पेच।

मल्ल-शाला--स्त्री०[स० ष० त०] मल्लभूमि। अखाडा।

मल्ला--स्त्री० [सं० मल्ल+टाप्] १ स्त्री। २ मल्लिका। चमेली। २ पत्र-वल्ली नाम की लता।

पु०[देश०]१ करघे मे के हत्थे का ऊपरी भाग जिसे पकडकर हत्था चलाया जाता है। २ एक प्रकार का लाल रग जो कपडे को लाल या गुलाबी रग के माठ मे बचे हुए रग मे डुबाने से आता है।

मल्लार--पु० [सं० मल्ल√ऋ (प्राप्त होना)+अण्]वर्षा ऋतु में गाया जानेवाला एक प्रसिद्ध राग। मलार।

मल्लारि--पु०[स० मल्लअरि, ष० त०]१. कृष्ण। २. शिव।

स्त्री०=मल्लारी।

मल्लारी--स्त्री० [सं० मल्लार+ङीप्] वर्षाऋतु मे सवेरे के समय गाई जानेवाली एक रागिनी।

मल्लाह—पुं०[अ०] [स्त्री० मल्लाहिन, भाव० मल्लाही] वह जो नदी मे नाव खेकर अपनी जीविका अर्जित करता हो। केवट। माँझी।

मल्लाही—वि०[फा०] मल्लाह-सम्बन्धी। मल्लाह का।
स्त्री० १ मल्लाह होने की अवस्था या भाव। २. मल्लाह का कार्य, पेशा और पद। ३ तैरने के समय दोनो हाथ चलाने का एक विशेष ढंग। ४ उक्त ढग से की जानेवाली तैराई। ५ मल्लाहो की तरह की गदी और भद्दी गालियाँ। उदा०—उन्होने चूर घर कर लड़कियों को मल्लाही सुनाना शुरू किया।—अजीम बेग चगताई।
क्रि० प्र०—सुनाना।

मल्लि—पु०[स०√मल्ल+इन] जैनो के एक जिन।
स्त्री०=मल्लिका।

मल्लिक—पु०[स० मल्लि+कन्] १. एक प्रकार का हस जिसकी चोच तथा टाँगे भूरे रंग की होती हैं। २. जुलाहो की ढरकी। ३ माघ मास।
†पुं०=मलिक।

मल्लिका—स्त्री०[सं० मल्लिक+टाप्] १. चमेली। २. एक प्रकार का बेला। ३. आठ अक्षरो का एक वर्णिक छन्द जिसके प्रत्येक चरण मे क्रमश एक एक रगण, जगण, गुरु और लघु होता है। ४ सुमुखी वृत्ति का एक नाम।

मल्लिकाक्ष—पु०[सं० मल्लिका-अक्षि, ब० स०, षच्]१ एक प्रकार का घोडा जिसकी आँख पर सफेद धब्बे होते हैं। २. उक्त प्रकार का सफेद धब्बा। ३ एक प्रकार का हंस। मल्लिक।

मल्लिकार्जुन—पु० [स०] एक शिवलिंग जो श्रीशैल पर प्रतिष्ठित है।

मल्लि-गंधि—पु० [सं० ब० स०, इत्व] अगर।

मल्लि-नाथ—पु० [स०] १ जैनियो के उन्नीसवे तीर्थंकर का नाम। २ ई० १४वी शताब्दी के एक प्रसिद्ध टीकाकार। रघुवश, कुमार-संभव मेघदूत, नैषधचरित् आदि अनेक ग्रथों पर इन्होंने टीकाएँ लिखी थी।

मल्ली—स्त्री० [सं० मल्लि+ङीष्] २ मल्लिका। २ सुन्दरी नामक वृत्त का दूसरा नाम।

मल्लु—पु० [स०√मल्ल् (धारण करना)+उ, बा०] १ भालू। २ बन्दर।

मल्हनी—स्त्री० [हिं० देश०] एक तरह की नाव।

मल्हपना—स्त्री० [हिं० मल्हपना] इठलाते हुए और नखरे से धीमे-धीमे चलने की क्रिया या भाव।

मल्हपना—अ० [?] कुछ कहते हुए और इठलाते हुए चलना।

मल्हरना—अ०=मल्हाना।

मल्हा—स्त्री० [देश०]वृक्षों पर चढ़नेवाली एक बेल जो उन्हें बहुत अधिक हानि पहुँचाती है। मौला।

मल्हाना—स०=मल्हारना।

मल्हार—पु० [हिं० मल्हारना] १. मल्हारने की क्रिया या भाव। २ लाड़-प्यार। दुलार।
†पुं०=मलार।

मल्हारना—स० [सं० मल्ह=गोस्तन] [भाव० मल्हार] १. दुलार करते हुए किसी को विशेषतः बच्चों को कुछ समझाना या प्रेरित करना। २. चुमकारना।

मल्हू†—वि०=मल्लू।

मवक्किल—पुं० [अ० मुवक्किल] १. वह व्यक्ति जो वकील को अपना मुकदमा लड़ने के लिए सौंपता है। वकील का आसामी। २. वह जो अपना कार्य किसी को सौंपता हो।

मवन†—पुं०=मौन। उदा०—मेटिये भगवत व्यथा, हँसि भेंटिये तजि मवन।—भगवत रसिक।

मवर्रिखा—वि० [अ० मवर्रिख.] लिखित।

मवस्सर†—वि०=मयस्सर।

मवाजिब—पु० [अ० मुवज्जब का बहु रूप] १ उचित रूप से प्राप्य धन। २. वेतन।

मवाजी—वि०[अ० मुवाजी] १ बराबर। २ बराबरी का।

मवाद—पु०[अ०] १. सामग्री। सामान। मसाला। २. प्रमाण। ३ घाव में से निकलनेवाली पीब।

मवारि—स्त्री०[सं० मुकुल] मौर।

मवाली—पु० [?] १ दक्षिण भारत की एक अर्ध सभ्य जाति। २ इस जाति का व्यक्ति।

मवासी—पु०=मवेशी।

मशकूक—वि०[अ०] जिस पर शक किया गया या किया जा रहा हो। संदिग्ध।

मवास—पु० [?] १. आश्रय। शरण। २ कुछ समय के लिए कहीं ठहरना। टिकाना। बसेरा। उदा०—कुच पतंग गिरिवर गह्यो मीना मैन मवास।—बिहारी। ३ किला। दुर्ग। ४. किले के परकोटे आदि पर लगे हुए बाँस, पेड़ आदि।

मवासी—स्त्री० [हिं० मवास का स्त्री० अल्पा०] १. छोटा गढ़।
मुहा०—**मवासी तोड़ना**=(क) किला तोडना तथा उस पर अधिकार करना। (ख) विजय प्राप्त करना।
पु० [हिं० मवास+ई (प्रत्य०)] गढ़पति।
वि० मवास-संबधी। किले का।

मवेशी—पु० [अ० मवाशी] चौपाये, विशेषत गाय, बैल, आदि चौपाये जिन्हे मनुष्य पालता है।
पद—**मवेशी-खाना**=वह स्थान विशेषत घेरा जहाँ पालतू चौपाये रखे जाते हैं।

मश—पु० [स०√मश् (गुन-गुन शब्द करना)+अच्] १. वह जो मश् मश् करता हो। मच्छड। २ क्रोध।

मशक—पु० [स० मश+कन्] १ मच्छर। २ शरीर पर निकलनेवाला मसा। ३ शकद्वीप का एक प्रदेश।
स्त्री० बकरी आदि की खाल का बना हुआ पानी भरने का थैला।
स्त्री०=मसक।

मशक-कुटी—स्त्री० [सं० ष० त०] वह छोटा चौरा जिससे मच्छड़ हाँके जाते हैं।

मशकहरी—स्त्री० [स० मशक√हृ (हरण करना)+अच्, गुण,+ङीष्] मसहरी।

मशकी (किन्)—पु० [सं० मशक+इनि] गूलर का पेड़।

मशक्कत—स्त्री० [अ० मशक्कत] १ कठिन परिश्रम। कडी मेहनत। २ व्यायाम के द्वारा किया जानेवाला परिश्रम। ३. कष्ट। दुःख।

मशगला—पु० [अ० मश्गल] १ व्यापार। २. कोई काम, विशेषत समय बिताने तथा मन-बहलाव के लिए किया जानेवाला काम। ३ दिल-बहलाव।

मशगूल—वि० [अ० मश्गूल] काम या व्यापार मे लगा हुआ। प्रवृत्त या व्यस्त।

मशरिक—पु० [अ० मश्रिक] पूर्व दिशा। पूरब।

मशरिकी—वि० [अ० मश्रिकी] पूर्वीय देशो मे होने अथवा उनसे सबध रखनेवाला। पूरब का।

मशरू—पु० [अ० मशरुअ] एक प्रकार का धारीदार रेशमी कपडा।

मशरूअ—वि० [अ० मश्रूअ] जो इस्लामी धर्मशास्त्र के अनुकूल या अनुरूप हो।

मशरूह—वि० [अ० मश्रूह] १. जिसकी शरह या टीका की गई हो। २ विवरण सहित तथा विस्तारपूर्वक कहा हुआ।

मशविरा—पु० [अ० मश्वुर] किसी से या बहुत से लोगों से किया जानेवाला परामर्श।

मशहूर—वि० [अ० मश्हूर] जिसकी खूब शोहरत हो। प्रख्यात। प्रसिद्ध विख्यात।

मशहूरी—स्त्री० [अ०] प्रसिद्धि। शोहरत।

मशान—पु०=श्मशान (मरघट)।

मशाल—पु० [अ० मशअल] जलाने की एक लंबी लकडी जिसके एक सिरे पर कपडा लपेटा जाता है और प्रकाश के लिए जलाया जाता है।

मशालची—पु० [अ० मशाल+फा० ची] [स्त्री० मशालचिन] वह जो जलती हुई मशाल लेकर दिखलाता हुआ चलता हो।

मशीखत—स्त्री० [अ० मशीखत] १ बड़प्पन। २ अभिमान। घमंड। ३ शेखी।

मशीन—स्त्री० [अं०] यत्र। कल।

मशीनगन—स्त्री० [अ०] एक प्रकार की चक्राकार बन्दूक जिसमे साधारण बन्दूक की तुलना मे बहुत अधिक गोलियाँ लगातार चलती हैं।

मशीन-मैन—पु० [अ०] १ मशीन चलानेवाला कारीगर। २ विशेषत छापेखाने मे छापे की मशीन चलानेवाला कारीगर।

मशीनरी—स्त्री० [अ०] १. मशीनों का समूह। २. मशीनों के कल-पुरजे।

मशीर—पु० [अ०] मशविरा देनेवाला। परामर्श-दाता। सलाहकार।

मश्क—स्त्री० [फा०] १ अभ्यास करने या सिद्ध होने के लिए कोई काम बार बार करना। अभ्यास। २. बार बार करते रहने पर होनेवाले किसी काम का अभ्यास।

†स्त्री०=मशक।

मश्मूल—वि० [अ०] किसी के साथ शामिल किया हुआ। सम्मिलित।

मश्शाक—वि० [अ० मश्शाक़] [भाव० मश्शाकी] जिसे कोई काम या बात अच्छी तरह मश्क हो। अभ्यस्त।

मष†—पु०=मख।

मषि—स्त्री० [सं०√मष्+इन्] १. काजल। २ सुरमा। ३. स्याही।

मषि-कूपी—स्त्री० [स० ष० त०,+ङीष्] दावात।

मषि-धंटी—स्त्री० [सं० ष० त०,+ङीष्] दावात।

मषिधान—पु० [सं० ष० त०] दावात।

मषि-प्रसू—स्त्री० [सं० ष० त०] १. दावात। २. कलम।

मषिमणि—स्त्री० [सं० ष० त०] दावात।

मषी—स्त्री०=मषि।

मष्ट—वि० [स० मष्ठ; प्रा० मष्ट=मट्ठ] १. सस्कार शून्य। २ जो भूल गया हो। ३. जो बिलकुल चुप हो। मौन।

मुहा०—मष्ट मारना, मारना या साधना=जान-बूझ कर चुप रहना। कुछ न कहना। मचला बनना।

मस—स्त्री० [स० श्मश्रु] मूँछ निकलने के पहले उसके स्थान पर की बालो की हलकी रेखा या रोमावली।

क्रि० प्र०—निकलना।

मुहा०—मस भीँजना या भीनना=ऊपरी होठ पर मूँछों का उगना आरंभ होना।

पु० [स० मास] हिं० 'मास' का सक्षिप्त रूप जो उसे यौगिक पदो के आरंभ में लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—मसवास=मसोपवास।

†पु०=मशक (मच्छर)।

†स्त्री०=मसि (स्याही लिखने की)। उदा०—धरती समुद दुहूँ मस भरई।—जायसी।

पु० [सं०] १ तौल। २ माप।

मसऊद—वि० [अ०] १ भाग्यवान्। २ प्रसन्न। ३ पवित्र।

मसक—स्त्री० [हिं० मसकना] १ मसकने की क्रिया या भाव। २. किसी चीज के मसकने के कारण उस पर बननेवाला चिह्न या पड़नेवाली दरार।

†स्त्री०=मशक (पानी भरने की)।

†पु०=मशक (मच्छड)।

मसकत†—स्त्री०=मशक्कत।

मसकना—स० [अनु०] १ खिंचाव या दबाव मे डाल कर कपड़े को इस प्रकार विकृत करना कि उसकी बुनावट के सूत टूटकर अलग या दूर हो जाय। २ किसी चीज को इस प्रकार दबाना कि वह बीच मे ही फट जाय या उसमे दरार पड जाय। ३ इस प्रकार जोर से दबाना कि बीच मे से कुछ खड अलग हो जायँ। ४ दे० 'मसलना'।

सयो० क्रि०—डालना।—देना।

अ० १ कपडे आदि का (दबाव पडने के कारण) बीच बीच में कुछ फट या टूट जाना। २ अपने स्थान से खिसकना या हटना। जैसे—तुमसे मसका भी जाता नही, तुम काम क्या करोगे। ४ चिंतित या दुखी होना।

सयो० क्रि०—जाना।

मसकरा†—पु०=मसखरा।

मसकला—पु० [अ० मिस्कल] [स्त्री० अल्पा० मसकली] १ लोहे का वह उपकरण जिससे रगडकर तलवारे आदि चमकाई जाती हैं। २. तलवार आदि चमकाने की क्रिया या भाव।

मसकली—स्त्री०=मसकला।

मसका—पु० [फा० मस्क] १. नवनीत। मक्खन। २ ताजा निकाला हुआ घी। ३ दही का पानी। ४. बँधा हुआ पारा।

पुं० [हिं० मसकना] १. चूने की बरी का वह चूर्ण जो पानी छिड़कने पर उस पर हो जाता है। २. सुनारों की परिभाषा में; कायस्थ।

मसखरा—पु० [अ० मस्खरः] १. वह जो अपनी क्रिया-कलापों, बातों आदि से दूसरों को बहुत हँसाता हो। हँसी-विनोद की बातें कहनेवाला व्यक्ति। २. वह जो दूसरों की नकलें उतारता हो।

मसखरापन—पुं० [अ० मसखरा+हिं० पन (प्रत्य०)] मसखरे होने की अवस्था या भाव।

मसखरी—स्त्री० [फा० मसखरा+ई (प्रत्य०)] वह क्रिया, चुहुल या हँसी की बात जिसका उद्देश्य दूसरों को हँसाना हो। ठट्ठा। दिल्लगी।

मस-खवा—पु० [हिं० मांस+खाना] वह जो मांस खाता हो। मांसाहारी।

मसजिद—स्त्री० [फा० मस्जिद] १. सिजदा करने अर्थात् ईश्वर के आगे सिर झुकाने का स्थान। २. वह भवन या स्थान जिसमें मुसलमान नमाज पढ़ते तथा ईश्वर की वंदना करते हैं। मसीत।

मसटि (टी)*—स्त्री० दे० 'मष्ट'।

मसड़ी—स्त्री० [देश०] एक प्रकार का पक्षी।

†स्त्री०=मिसरी। (डिं०)

मसती—पु० [हिं० मस्त] हाथी। (डिं०)

†स्त्री०=मस्ती।

मसन—पु० [सं०] १. तौल। २. माप। ३. ओषधि। ४. चोट। पु० [देश०] एक प्रकार का टकुआ जिससे ऊन के कई तागे एक साथ मिलाकर बटे जाते हैं।

मसनद—स्त्री० [अ० मस्नद] १. एक प्रकार का गोल, लबोतरा तथा बड़ा तकिया। गाव-तकिया। २. वह स्थान जहाँ उक्त प्रकार का तकिया रखा रहता है। ३. अमीरों और बड़े आदमियों के बैठने की गद्दी।

मसनद-नशीन—पु० [अ० मसनद+फा० नशी] १. मसनद पर बैठने-वाला अर्थात् अमीर, रईस या राजा। २. तख्तनशी। सिंहास-नासीन।

मसनवी—स्त्री० [अ० मस्नवी] उर्दू साहित्य में वह कविता जिसमे कई शेर होते हैं। इन शेरों मे अंत्यानुप्रास नही होता।

मसना—स० [हिं० मसलना] १ मसलना। २. गूँधना।

मसनूई—वि० [अ० मस्नूई] १ कृत्रिम। बनावटी। २. अप्राकृतिक ३ मिथ्या।

मसमुंद—वि० [हिं० मस्त+मुड] ऐसी खींचा-तानी जिसमें धक्कम-धक्का भी हो।

मसयारा*—पु० [हिं० मशाल] १. वह जो मशालें जलाता हो। २. मशालची। ३ मशाल।

मसरफ—पु० [अ० मस्रफ़] उपयोग। प्रयोजन।

मसरू—पु०=मशरू (देशी कपड़ा)।

मसरूका—वि० [अ० मसरूकः] चोरी किया या चुराया हुआ। जैसे—माल मसरूका।

मसरूफ—वि० [अ० मस्रूफ़] काम में लगा हुआ। निरत। संलग्न।

मसरूफियत—स्त्री० [अ० मस्रूफ़ियत] मसरूफ होने की अवस्था या भाव।

मसल—स्त्री० [अ०] कहावत। लोकोक्ति।

मसलति†—स्त्री० =मसलहत।

मसलन—स्त्री० [हिं० मसलना] मसलने की क्रिया या भाव। उदा०—मैं वह हलकी सी मसलन हूँ जो बनती कानों की लाली।—प्रसाद। अव्य० [अ० मस्लन] उदाहरण के रूप में। उदाहरणार्थ। जैसे। यथा।

मसलना—स० [हिं० मलना] १. किसी नरम चीज को हाथ, हथेली या उँगलियों से दबाते हुए रगड़ना। मलना। २ जोर से इस प्रकार कोई चीज दबाना कि वह टूट-फूट जाय। ३. गूँधना। ४. सानना। संयो० क्रि०—डालना।—देना।

मसलहत—स्त्री० [अ० मस्लहत] १. किसी काम या बात का ऐसा बुद्धिमत्तापूर्ण शुभ उद्देश्य या हेतु जो ऊपर से देखने पर समझ में न आता हो। २. परामर्श। ३ हित। भलाई।

मसलहतन्—अव्य० [अ०] छिपे हुए शुभ उद्देश्य या हेतु से। जैसे—हमने मसलहतन् तुम्हें वहाँ भेजा था।

मसला—पु० [अ० मस्सलः] १. कहावत। लोकोक्ति। २. समस्या। मुहा०—मसला हल होना=समस्या का निराकरण होना।

मसवाप्त—पु० [हिं० मास+वास (प्रत्य०)] वह स्थान जहाँ प्रसूता स्त्री प्रसव के बाद एक मास रहती हो।

मसवास—पुं० [हिं० मास+वास] विरक्तों, सन्यासियों आदि का वह नियम या व्रत जिसके अनुसार किसी स्थान पर अधिक से अधिक एक मास तक रहते और तब वहाँ से दूसरी जगह चले जाते हैं।

†पु० दे० 'मासोपवास'।

मसवासी—पुं० [सं० मासवासी] एक स्थान पर केवल एक मास तक निवास करनेवाला विरक्त।

स्त्री० वेश्या।

पुं०=मासोपवासी। (देखें)

मसविदा—पु० दे० 'मसौदा'।

मसहरी—स्त्री० [सं० मशकहरी] १. जलीदार कपड़े का बना हुआ एक प्रकार का चौकोर आवरण जो खाट या पलंग के ऊपर इसलिए टाँगा जाता है कि मच्छर अन्दर आकर सोनेवाले को तंग न करें। २. ऐसा पलग जिसके चारों पायों पर इस प्रकार का जालीदार कपड़ा टाँगने के लिए ऊँची लकड़ियाँ या छड़ लगे हों। ३ बड़ी खटिया। पलंग।

मसहार*—पु०=मांसाहारी।

मसहूर†—वि०=मशहूर (प्रसिद्ध)।

मसा—पु० [सं० मशक] विंदु के आकार का शरीर पर होनेवाला काला चिह्न।

†पु०=मस्सा।

मसान—पु० [सं० श्मशान] १ शव जलाने का स्थान। मरघट। मुहा०—मसान जगाना=श्मशान में बैठकर तांत्रिक प्रयोगों के द्वारा भूत-पिशाच आदि वश मे या सिद्ध करने का प्रयत्न करना। मसान पड़ना=श्मशान की-सी उदासी और सन्नाटा छाना।

२ श्मशान में रहनेवाले भूत-पिशाच आदि। ३. युद्ध-भूमि या रण-क्षेत्र जिसमे श्मशान की तरह लाशों का ढेर लगा रहता है।

मसाना—पु० [अ० मसानः] मूत्राशय। वस्ति।

†पु०=मसान (श्मशान)।

मसानिया—वि० [हिं० मसान+इया (प्रत्य०)] १ मसान-संबंधी।

मसान का। २. मसानों में अथवा उनकी सहायता से सिद्ध किया हुआ।
पु० १. वह व्यक्ति विशेषत डोम जो मसानों मे रहता हो। २. मसान मे रहकर भूत-प्रेत सिद्ध करनेवाला तांत्रिक। ३ अर्थ-पिशाची। कजूस।

मसानी—स्त्री० [सं० श्मशानी] डाकिनी। पिशाचिनी।

मसार—पु० [सं०] नीलम। इंद्रनीलमणि।

मसाल—स्त्री० १=मशाल। २.=मिसाल।

मसालची—पु० [हिं० मसाला+ची (प्रत्य०)] वह जो बावर्चीखानो आदि मे मिर्च-मसाले पीसने तथा इसी तरह के छोटे मोटे काम करता हो।
पु०=मशालची।

मसाल-दुम्मा—पु० [हिं० मशाल+दुम] एक प्रकार का पक्षी जिसकी दुम काली होती है।

मसालहत—स्त्री० [अ०] १. मेल-मिलाप। २. सुलह। ३ समझौता।

मसाला—पु० [फा० मसालह] १ चीजें जिनकी सहायता से कोई चीज तैयार होती हो। सामग्री। जैसे—वे किताब लिखने या मुकदमा चलाने के लिए ढूँढ़-ढूँढ़कर मसाला इकट्ठा करना। २ ओषधियो, रासायनिक द्रव्यो आदि का तैयार किया हुआ वह मिश्रण जिसका उपयोग किसी विशिष्ट कार्य के लिए होता हो। जैसे—पान का मसाला, मकान बनाने का मसाला (गारा, चूना आदि)। ३ धनियाँ, मिर्च, लौंग, हींग, आदि वे पदार्थ जिनका उपयोग दाल, तरकारी आदि को सुगंधित और स्वादिष्ट करने में होता है। ४ सलमा-सितारे, बांकडी, गोखरू आदि चीजें जो कपडो पर शोभा के लिए बेल-बूटो आदि के रूप मे टाँकी जाती हैं। जैसे—अँगिया, ओढ़नी, साड़ी आदि मे लगाया जानेवाला मसाला। ५. किसी काम या बात का आधार-भूत साधन। जैसे—लोगों को दिल्लगी उडाने का अच्छा मसाला मिल गया। ६ आतिशबाजी जो कई तरह के मसालों से बनती है। ७ युवती और सुन्दरी परन्तु दुश्चरित्रा स्त्री। (बाजारू) ८ मगल-भाषित रूप मे, तेल। जैसे—लालटेन का मसाला खत्म हो गया है, लेते आना।
विशेष—प्राय किसी के चलते समय तेल का नाम लेना अशुभ समझा जाता है इसी लिए प्राय स्त्रियाँ इसे मसाला कहती हैं।

मसाली—स्त्री० [?] रस्सी। डोरी। (लश०)

मसाले का तेल—पु० [हिं० मसाला+तेल] एक प्रकार का सुगंधित तेल जो साधारण तिल के तेल मे कपूर, कचरी, बाल-छड आदि मिलाकर बनाया जाता है।

मसालेदार—वि० [हिं० मसाला+फा० दार] १ जिसमे मसाला पडा हुआ हो। जैसे—मसालेदार चना, मसालेदार तरकारी। २ झगडा आदि लगाने अथवा किसी को प्रसन्न करने के लिए बना-सँवार कर अथवा बढा-चढाकर किया जानेवाला (कथन या बात)।

मसाहत—स्त्री० [अ०] १ नापना। पैमाइश। २ क्षेत्रमिति।

मसाहती—स्त्री०=मसाहत।

मसिंजर—पु० [अ० मेसेंजर] जहाज में, लंगर उठाने का रस्सा। (लश०)

मसि—स्त्री० [सं० √मस्+इन] १ रोशनाई। २ काजल। ३ कालिख। ४ निर्गुंडी का फल।

मसिऔरा—पु० [हिं० मास+औरा (प्रत्य०)] मांस के योग से बना हुआ कोई खाद्य पदार्थ।

मसिकर—पु० [सं० ष० त०] मसि अर्थात् स्याही बनानेवाला व्यक्ति।

मसि-कूपी—स्त्री० [सं० ष० त०] दावात।

मसि-जल—पु० [सं० ष० त०] रोशनाई।

मसित—भू० कृ० [सं० √मस् (परिवर्तन)+क्त, इत्व] चूर किया हुआ।

मसिदानी—स्त्री० [सं० मसि+फा० दानी] दावात।

मसि-धान—पु० [सं० ष० त०] दावात।

मसि-पण्य—पु० [सं० ब० स०] लेखक।

मसि-पथ—पु० [सं० ब० स०] कलम।

मसि-बिंदु—पु० [सं० ष० त०] दावात।

मसि-बुंदा—पु० [सं० मसिबिंदु] मसिबिंदु।

मसि-मणि—स्त्री० [सं० मध्य० स०] दावात।

मसि-मुख—वि० [सं० ब० स०] १ जिसके मुँह पर कालिख पुती या लगी हो अर्थात् कल-मुँहाँ। २ दुष्कर्म करनेवाला।

मसियर†—स्त्री०=मशाल।

मसियाना—अ० [हिं० मांस] शरीर का भली भाँति मास से भर जाना। शरीर का मासल होना।
स० ऐसी क्रिया करना जिसमे किसी का शरीर मासल अर्थात् हृष्ट-पुष्ट हो जाय।

मसियार—स्त्री०=मशाल।

मसियारा—पु०=मशालची।

मसिल†—पु० मैनसिल।

मसि-विंदु—पु० [सं० ष० त०] काजल, कालिख आदि की वह बिन्दी जो स्त्रियाँ बच्चो के गाल, माथे आदि पर उन्हे नजर से बचाने के लिए लगाती है। दिठौना।

मसी—स्त्री०=मसि।

मसीका—पु० [हिं० माशा] १ आठ रत्ती का मान। माशा। २ चवन्नी। (दलाल)

मसीत†—स्त्री०=मसजिद।

मसीद†—स्त्री०=मसजिद।

मसीना—स्त्री० [सं० √मस् (परिवर्तन)+इनच्—दीर्घ, पृषो०+टाप्] अलसी।
†पु० [?] मोटा अनाज। कदन्न।

मसीला—वि० [हिं० मस+ईला (प्रत्य०)] जिसकी मसें निकल अर्थात् भीज रही हों। नवयुवक।
वि० [स्त्री० मसीली] दे० 'मासल'।

मसीह—पु० [अ०] हजरत ईसा। मसीहा।

मसीहा—पु० [अ० मसीह] १ वह जिसमे रोगियो को नीरोग करने और मृतकों का जीवित करने की शक्ति हो। २ ईसाई धर्म के प्रवर्तक ईसा-मसीह। ३. उर्दू फारसी कविताओ मे प्रेम-पात्र की सज्ञा या उसके लिए सम्बोधन।

मसीहाई—स्त्री० [अ०] १. मसीहा का काम या भाव। मसीहापन। २ मुर्दों को जिन्दा करना। ३ मसीहा की सी वह अलौकिक शक्ति जिसमें रोगी चगे होते और मृतक जी उठते हैं।

मसीही—वि० [अ० मसीह+फा० ई (प्रत्य०)] ईसा मसीह-सबधी। ख्रिष्टीय।

पुं० ईसा मसीह का अनुयायी। ईसाई।
मसुर†—पुं०=मसूर।
मसुरिया†—स्त्री०=मसूरिका।
मसुरी—स्त्री०=मसूर।
मसू*—अव्य०[हिं० मरू, प० मसाँ-मसाँ=कठिनता से] कठिनाई से। मुश्किल से।
मसूड़ा—पुं०[सं० श्मश्रु] मुँह का वह मासल अग जिसमें दाँत जमे होते हैं।
मसूड़ी—स्त्री०[देश०] धातु गलाने की भट्ठी।
मसूर—पुं०[सं०√मस्+ऊरन]एक प्रकार का अन्न जो द्विदल और चिपटा होता है और जिसका रग मटमैला होता है। इसकी प्राय. दाल बनती है।
मसूरक—पुं०[सं० मसूर+कन्] गोल तकिया।
मसूरति—पुं० =मुहूर्त। उदा०—मेच्छ मसूरति सत्ति कै बच कुररनी बार।—चदबरदायी।
मसूरा—स्त्री० [सं०√मस् (परिणाम)+ऊरन,+टाप्] १. वेश्या। रडी। २ मसूर नामक अन्न। ३. उक्त अन्न की दाल। ४ उक्त दाल की बनी हुई बडी।
†पुं०=मसूड़ा।
मसूरिका—स्त्री०[सं० मसूरा+कन्+टाप्, इत्व]१. चेचक का एक भेद जिसमे शरीर पर मसूर के बराबर दाने निकलते है। खसरा। २ कुटनी। दूती।
मसूरी—स्त्री०[सं० मसूर+ङीष्] मसूरिका नामक रोग।
पुं०[देश०] एक प्रकार का पेड जो कद मे छोटा होता है और शिशिर ऋतु मे जिसके पत्ते झड़ जाते है।
†स्त्री०=मसूर।
मसूल†—पुं०=महसूल।
मसूला—पुं०[देश०] एक प्रकार की पतली लम्बी नाव।
मसूस—स्त्री०[हिं० मसूसना]१ मन मसूसने की क्रिया या भाव। २ मन मे दबा रहनेवाला कष्ट या दु.ख।
मसूसन—स्त्री०[हिं० मसूसना] मन मसूसने की क्रिया या भाव। आतरिक व्यथा।
मसूसना—अ०[हिं० मरोड़ना या फा० अफसोस, प्र० मसोस]१ मरोड़ना। ऐंठना। २. निचोड़ना। ३. मनोवेग को दबाना या रोकना। ४. अच्छी तरह भग होना। उदा०—रस मे मसूसी रही आलस निवारि कै।—भारतेंदु।
†अ०=मसोसना।
मसृण—वि०[सं० मस्√ऋण (दीप्त होना)+क, पृषो० सिद्धि] १. चिकना। २. मुलायम। ३. चमकीला।
मसृणा—स्त्री०[सं० मसृण+टाप्] अलसी।
मसेरा†—वि०[सं० मसि] [स्त्री० मसेरी] काले रग का। काला। उदा०—वा कटाच्छ तें लिखै मसेरी।—नूर मुहम्मद।
मसेवरा†—पुं०=मसिऔरा।
मसोढ़ा—पुं०[देश०] सोना, चाँदी आदि गलाने की घरिया। (कुमाऊँ)
†पुं०=मसूड़ा।
मसोसना—अ०[फा० अफसोस]१. मन ही मन कुढ़ना। २. मनोवेग को दबाना या रोकना।
†अ०=मसूसना।
मसोसा—पुं०[फा० अफसोस, हिं० मसोसना]१. मन में होनेवाला दुःख या रंज। मानसिक दुःख। २ पश्चात्ताप। पछतावा।
मसौदा—पुं०[अ० मसव्विद]१ लेख, लेख्य आदि का वह आरम्भिक रूप जिसमे आगे चलकर कुछ काट-छाँट या परिवर्तन किया जाने को हो या किया जा सकता हो। पांडुलिपि। मसविदा। २. किसी काम या बात के सबंध में पहले से सोचा जानेवाला उपाय या युक्ति।
क्रि० प्र०—निकालना।
मुहा०—**मसौदा गाँठना या बाँधना**=अच्छी तरह सोचकर तरकीब या युक्ति निकालना और योजना बनाना।
मसौदेबाज—पुं०[अ० मसौदा+फा० बाज़ (प्रत्य०)]१ अच्छी युक्ति सोचनेवाला। २. चालाक। धूर्त।
मसौरा†—पुं०=मसिऔरा।
मस्कर—पुं०[सं० √मस्क्+अरच्]१. वंश। खानदान। २. गति। चाल। ३ ज्ञान। जानकारी।
मस्करा—पुं०=मसखरा।
मस्करी (रिन्)—पुं० [सं० मस्कर+इनि] १.संन्यासी। २. भिक्षु। ३ चन्द्रमा।
†स्त्री०=मसखरी।
मस्का—पुं०=मसका।
मस्कूरा†—पुं०=मसूड़ा।
मस्खरा—पुं०=मसखरा।
मस्जिद—स्त्री० =मसजिद।
मस्त—वि०[फा०] [भाव० मस्ती]१ जो नशे मे चूर हो। मदोन्मत्त। २ जो मद या नशे से युक्त या प्रभावित हो। जैसे—मस्त आँखें। ३. किसी प्रकार के मद से युक्त। जैसे—अपनी जवानी में मस्त। ४ जो किसी पर रीझा हो। किसी के गुण सौंदर्य आदि पर अनुरक्त। ५. किसी बात या विषय में पूरी तरह से लीन। ६. निश्चित और ला-परवाह।
मस्तक—पुं०[सं०√मस्+तकन्] मनुष्य के शरीर का सबसे ऊपरी और पशु-पक्षियों के शरीर का सबसे आगेवाला भाग जिसमें आँखें, मुँह, कान आदि होते हैं। भाल।
मुहा०—**मस्तक ऊँचा रखना**=(क) बहुत अच्छा और सम्मानपूर्ण कार्य करना। (ख) प्रतिष्ठा और सम्मानपूर्वक रहना।
मस्तकी†—स्त्री०=मस्तगी।
मस्तगी—स्त्री० [अ० मस्तकी] एक प्रकार का बढ़िया पीला गोंद जो कुछ सदाबहार पेडों के तनो को पोंछकर निकाला जाता है। रूमी मस्तगी।
मस्त-मौला—पुं०=मस्तराम।
मस्तराम—पुं०[फा०+हिं०] वह व्यक्ति जो अपने विचारों, कार्यों आदि में मस्त रहता हो और सांसारिक झगड़ों-प्रपंचों मे न पड़ता हो।
मस्तरी—स्त्री०[सं० भस्त्रा] धातु गलाने की भट्ठी। (पश्चिम)
मस्ताना†—वि०=मस्ताना।

मस्ताना—वि०[फा० मस्तान.] [स्त्री० मस्तानी] १ मस्ती का मा। जैसे—मस्ताना रग-ढग; मस्तानी चाल। २ मत्त। मस्त।
अ० मस्ती मे आना। मस्ती मे भरना।
स० मस्ती में लाना। मस्त करना।

मस्तिक†—पु०=मस्तिष्क।

मस्तिकी†—स्त्री०=मस्तगी।

मस्तिष्क—पु०[स० मस्त√इष्+क, पृषो० सिद्धि] १ मस्तक के अदर का गूदा। २ वह मानसिक शक्ति जिसके द्वारा मनुष्य सोचने-समझने आदि का काम करता है। दिमाग। (ब्रेन)
वि० [स०] १ मस्तिष्क-सबधी। मस्तिष्क का। २ मस्तिष्क मे रहने या होनेवाला।

मस्ती—स्त्री०[फा०] १. मस्त होने की अवस्था या भाव। मतवालापन।
क्रि० प्र०—आना।—उठना।—उतरना।—चढ़ना।—मे आना।
मुहा०—**मस्ती झड़ना**=कष्ट आदि मे पड़ने के कारण मस्ती दूर होना। **मस्ती झाड़ना**=इतना कष्ट देना कि मस्ती दूर हो जाय।
२. सभोग की ऐसी प्रबल इच्छा या काम-वासना कि भले-बुरे का विचार न रह जाय।
मुहा०—**मस्ती झाड़ना या निकालना**=किसी के साथ प्रसग करके काम-वासना शान्त करना।
३. मद। जैसे—हाथी की मस्ती, ऊँट की मस्ती।
क्रि० प्र०—टपकना।—बहना।
४. वह स्राव जो कुछ विशिष्ट वृक्षों, पत्थरो आदि मे कुछ विशेष अवसरो पर होता है। जैसे—नीम की मस्ती, पहाड की मस्ती।
क्रि० प्र०—टपकना।—बहना।

मस्तु—पु०[सं०√मस् (परिणाम)+तुन्] १. दही का पानी। २ फटे हुए दूध का पानी।

मस्तूरी†—स्त्री०[स० भस्त्रा] धातु गलाने की भट्ठी।

मस्तूल—पु०[पुर्त०] बड़ी नावो आदि के बीच का वह बडा खभा जिसमे झडा या पाल बाँधा जाता है।

मस्सा—पु०=मसा।

महँ—अव्य०[सं० मध्य] मे।

महँई—वि०[स० महान्] बड़ा। महान्।
अव्य=महँ (मे)।

महँक—स्त्री०=महक।

महँकना—अ० =महकना।

महँगा—वि०[स० महार्घ] [स्त्री०, भाव० महँगी] १. जिसका मूल्य उचित या साधारण से अधिक हो। बहुमूल्य। २. जिसका मूल्य पहले की अपेक्षा अधिक हो। अपेक्षाकृत अधिक दामवाला। ३ जिसे प्राप्त करने के लिए आवश्यकता से अधिक व्यय करना, कष्ट उठाना या बद-नामी या हानि सहनी पड़ी हो। जैसे—यह मन्त्रित्व आप को बहुत महँगा पड़ा है।

महँगाई—स्त्री०[हिं० महँगा] १. महँगी के कारण नौकरो को वेतन के अतिरिक्त दिया जानेवाला मासिक धन या भत्ता। (डियरनेस एलाउन्स) २. दे० 'महँगी'।

महँगी—स्त्री०[हिं० महँगा] १. महँगे होने की अवस्था या भाव। २. ऐसा समय जिसमे चीजो का भाव अधिक बढ़ गया हो। पहले की अपेक्षा अधिक मूल्य पर वस्तुएँ बिकने की स्थिति। ३ अकाल। दुर्भिक्ष।
क्रि० प्र०—पड़ना।

महँडा†—पु०[देश०] भुना हुआ चना।

महंत—पु०[सं० महत्=बड़ा] [भाव० महंती] वह संन्यासी (या साधु) जो अपने समाज अथवा किसी मठ का प्रधान हो।
वि०=महत् (बहुत बड़ा)।

महंताई†—स्त्री०=महंती।

महंति—वि०=महत् (बहुत बडा)। उदा०—मनसि विचारि एक ही महंति। —प्रिथीराज।

महंती—स्त्री०[हिं० महंत+ई (प्रत्य०)] महत का काम पद या भाव। उदा०—भारी विपति महती आई, लगन राम सों छूटी।

महँदी—स्त्री०=मेहदी।

मह—वि० [स०] १. महा। अति। बहुत। २ बहुत बड़ा। महत्।
†अव्य०=महँ।

महक—स्त्री० [स० महक्क] १ दूर तक फैलनेवाली सुगंध। जैसे—कमरा इत्र से या उद्यान फूलो से महक रहा था। २. (प्रिय या अप्रिय) गध या वास। जैसे—जलते हुए कपडे की महक।

महकदार—वि०[हिं० महक+फा० दार (प्रत्य०)] जिसमे महक या सुगंध हो।

महकना—अ०[हिं० महक+ना (प्रत्य०)] महक या गध देना।

महकमा—पु०[अ० महकम] १. कचहरी। न्यायालय। २ शासनिक दृष्टि से उसका कोई विशिष्ट विभाग।

महकान—स्त्री०=महक।

महकाना—स०[हिं० महक] १ महक या सुगध से युक्त करना। २ महक या सुगन्ध चारो ओर फैलाना।

महकाली—स्त्री०[स० महाकाली] पार्वती। (डि०)

महकीला—वि०[हिं० महक+ईला (प्रत्य०)] जो महक रहा हो। जिसमें से महक निकलती हो।

महकूम—वि०[अ० मह्कूम] १. जिसे हुक्म दिया गया हो। २ शासित।
पु० प्रजा। रिआया।
†पु०[?] सूर्य। (डि०)

महज—अव्य०[अ० महज] १ केवल। निरा। जैसे—यह तो महज पानी है। २. केवल। मात्र। सिर्फ। जैसे—यह तो महज पागलपन है।

महजर—पु०[अ० मह्ज़र] लोगों के हाजिर होने का स्थान।

महजरनामा—पु०[अ० मह्ज़र+फा० नाम] १. वह प्रार्थनापत्र जो बहुत से आदमियो की ओर से दिया जाय। २ वह साक्ष्य पत्र जिसमे बहुत से गवाहो की गवाही हो।

महजित*—स्त्री०=मसजिद।

महज्जन—पु०=महाजन।

महटिआना—स० [हिं० मिट्टी + आना (प्रत्य०)] सुनी अनसुनी करना।

महण—पु० [स० महार्णव] समुद्र। सागर। उदा०—महण मथे मूँ लीध महमहण।—प्रिथीराज।

महत्—वि०[स०√मह्+अति] १ बहुत बड़ा। महान्। २. सर्वश्रेष्ठ।

पुं०१. दार्शनिक क्षेत्रों में, प्रकृति का आरंभिक या मूल विकार। महत्तत्व। २. ब्रह्मा। ३. राज्य। ४ जल। पानी।

*पुं०=महत्त्व।

महतम—पुं०[सं० महत्तम] मालिक। स्वामी।

महतमाइन—स्त्री०[हिं० महतम]मालकिन। स्वामिनी।

महतबान—पुं०[देश०] करघे में पीछे की ओर लगी हुई वह खूँटी जिसमें ताने को पीछे की ओर खींचे रखनेवाली डोरी लपेटकर बाँधी जाती है। हथेला। पिंडा।

महत्ता*—पुं०[सं० महत्] गाँव का मुखिया। महतो।

*स्त्री० [म०महत्ता]१ महत्ता। २ अभिमान। ३. एक प्राचीन नदी।

महताब—पुं०[फा० माहताब]१. चंद्रमा। २. एक तरह का जंगली कौआ। मतूरी।

स्त्री० १. चन्द्रिका। चाँदनी। २. महताबी नाम की आतिशबाजी। ३. जहाज पर रात मे संकेत के लिए जलाई जानेवाली एक प्रकार की नीली रोशनी।

महताबी—स्त्री०[फा०]१. मोमबत्ती के आकार की एक तरह की आतिश-बाजी जिसके जलने से तेज सफेद प्रकाश होता है। २ प्रासादों आदि के आगे का बाग के बीच का गोल चबूतरा जिस पर बैठकर चाँदनी का आनन्द लिया जाता है। ३ चकोतरा। (पूरब)

महताम—वि० [सं० महत्तम] श्रेष्ठ। बड़ा। उदा०—आय रह्यो महताम।—जटमल।

महतारा—पुं०[हिं० महतारी (माता) का पुं०] पिता। बाप। (क्व०) उदा०—अवतारी सब अवतारन को महतारी महतारो।

महतारी†—स्त्री० [सं० माता] माता। माँ।

महती—स्त्री०[सं० महत्+ङीप्] १. नारद की वीणा का नाम। २. बृहती। बन-भंटा। ३ महत्त्व। महिमा। ४ कुश द्वीप की एक नदी। ५ एक प्रकार का रोग जिसमें हिचकी आती है और उसके फल-स्वरूप छाती में पीड़ा होती है। ६. योनि के फैलने का रोग। (वैद्यक)

महती-द्वादशी—स्त्री० [सं० मध्य० स० अथवा व्यस्त पद] श्रवण नक्षत्र में पड़नेवाली भाद्र शुक्ल द्वादशी।

महतु†—पुं०=महत्त्व।

महतो—पुं० [हिं० महता] १. मालिक। स्वामी। २ सरकार। ३ कुछ गयावाल पंडों की एक उपाधि। ४ कहार। (बिहार) ५ गाँव का मुखिया। ६. किसी मंडली या समाज का मुखिया।

महत्कथ—पुं० [सं० महती-कथा, ब० स०] खुशामदी।

महत्तत्व—पुं०[सं० महत्-तत्त्व, कर्म० स०]१ दार्शनिक क्षेत्र मे प्रकृति का पहला विकार या कार्य।

विशेष—सांख्यकार ने कहा है कि पहले-पहल जब जगत सुषुप्तावस्था से उठा या जागा था, तब सबसे पहले इसी महत्तत्त्व का आविर्भाव हुआ था। इसी को दार्शनिक परिभाषा मे बुद्धि-तत्त्व भी कहते हैं।

२. कुछ तांत्रिकों के अनुसार संसार के सात तत्त्वों मे से सबसे अधिक सूक्ष्म तत्त्व। ३. जीवात्मा।

महत्तनु†—पुं०=महत्तत्व।

महत्तम—वि०[सं० महत्+तमप्]१. जिसका महत्त्व सबसे अधिक आँका, माना या समझा जाता हो। २. सबसे बड़ा। (ग्रेटेस्ट)

महत्तम-समापवर्तक—पुं० [कर्म० स०] गणित में, वह बड़ी से बड़ी संख्या जिसका भाग दो या अन्य संख्याओं में पूरा पूरा हो सके।

महत्तर—वि० [सं० महत्+तरप्] किसी की अपेक्षा अधिक महत्त्ववाला। पुं० शूद्र।

महत्तरक—पुं०[सं० महत्तर+कन्] दरबारी। मुसाहब।

महत्ता—स्त्री०[सं० महत्+तल्+टाप्] महत्त्व।

महत्पुरुष—पुं०[सं० कर्म० स०] पुरुषोत्तम।

महत्त्व—पुं०[सं० महत्+त्व]१ महत् या महा अर्थात् सबसे बड़े होने की अवस्था या भाव। २ बड़प्पन। बड़ाई। श्रेष्ठता। ३. किसी काम, चीज या बात की वह अवस्था जिसमे वह अर्थ, उपयोग, परिणाम, प्रभाव, मूल्य आदि के विचार से औरों से बहुत बढ़कर मानी या समझी जाती है। (इम्पार्टेन्स) जैसे—महत्त्व का विचार, महत्त्व का समाचार आदि।

महत्त्वपूर्ण—वि०[सं० तृ० त०] जिसका कुछ या अधिक महत्त्व हो।

महत्त्वाकांक्षा—स्त्री० [सं०महत्त्व-आकांक्षा,ष० त०] दे० 'उच्चाकांक्षा'।

महदी—वि० [अ० महदी] १. जिसे दीक्षा मिली हो। दीक्षित। २. धर्मनेता।

पुं० बारहवें इमाम। (मुसलमान)

महदूद—वि०[अ० महदूद]१. जिसकी हद बँधी हो। सीमाबद्ध। सीमित। २. घिरा हुआ। ३. कुछ। चंद।

महदूम—वि०[अ० मह्दूम]२. नष्ट। २. ध्वस्त।

महदेवर—पुं०[हिं०] मैसूर मे होनेवाली बैलों की एक जाति।

महद्वारुणी—स्त्री०=महेंद्रवारुणी (लता)।

महन†—पुं०=मथन।

महना*—स०=मथना।

पुं०[हिं० मथना] बड़ी मथानी।

पुं०=मेहना।

महना-मथना—पुं०[हिं० महना=मथना]१. बार बार किसी बात पर तर्क करते चलना। २. व्यर्थ की बहुत अधिक तकरार या हुज्जत।

महनिया—पुं०[हिं० महना=मथना+इया (प्रत्य०)]मथनेवाला।

महनीय—वि०[सं० √मह्+अनीयर्] [भाव० महनीयता] १. महान्। २. पूज्यनीय। मान्य।

महनु—पुं०[हिं० महना]१. मंथन करनेवाला। २ विनाशक।

महफा—पुं०[?] एक प्रकार की पालकी।

महफिल—स्त्री० [अ० महफ़िल] १ मजलिस। सभा। समाज। २. वह समाज या स्थान जिसमे नाच-रंग हो रहा हो।

क्रि० प्र०—जमना।—लगना।

३. इस्लामी धार्मिक क्षेत्र मे, उपासना या साधना का स्थान। ४. सूफियों की परिभाषा मे संसार।

महफूज—वि०[अ० महफूज]१ जिसकी हिफाजत की गई हो। २. आवश्यकता के लिए बचाकर रखा हुआ।

महबूब—पुं०[अ०मह्बूब][स्त्री०महबूबा] वह जिससे प्रेम किया जाय। प्रेमपात्र। प्रिय।

महबूबा—स्त्री०[अ० महबूबा] प्रेमपात्री। प्रेयसी।

महमंत—वि०[सं० महा+मत्त]१. मस्त। २. उन्मत्त।

महमद*—पुं०=मुहम्मद।

महमदी—वि०[अ० मुहम्मदी] मुसलमान-सम्बन्धी।

मह मह—क्रि० वि०[हि० महकना] मह मह करते हुए। सुगंधि के साथ।

महमहण—पु०[स० महीमथन] विष्णु। (डि०) उदा०—महण मथे मूँ लीध महमथण।—प्रिथीराज।

महमहा—वि०[हि० महमह] महकदार। सुगंधित।

महमहाना—अ०[हि० महमह अथवा महकना] गमकना। सुगंधि देना। स० महक या सुगंधि से युक्त करना।

महमा†—स्त्री० =महिमा।

महमान—पु० =मेहमान।

महमानी—स्त्री० =मेहमानी।

महमाय—स्त्री०[सं० महामाया] पार्वती। (डि०)

महमिल—पु०[अ० मह्‌मिल] वह कजावा जिसमें स्त्रियाँ बैठती हों।

महमूद—वि०[अ० मह्‌मूद] जिसकी हम्द् अर्थात् प्रशंसा की गई हो। प्रशंसित।

महमूदी—स्त्री०[फा० मह्‌मूदी] एक तरह की मलमल।
वि० महमूद-सम्बन्धी।

महमेज—स्त्री०[फा० मेहमेज़] जूते की एड़ी में लगाई जानेवाली नाल। (घुड़सवारी के समय इसी से घोड़े के पेट में आघात करके उसे एड़ लगाई जाती है।)

महम्मद—पु० =मुहम्मद।

महम्मदी—वि०, पु० =मुहम्मदी।

महर—पु०[सं० महत्] [स्त्री० महरि] १ ब्रज में बोला जानेवाला एक आदरसूचक शब्द जिसका प्रयोग विशेषतः जमींदारों और वैश्यों आदि के संबंध में होता है। २ एक प्रकार का पक्षी। ३ दे० 'महरा'।
वि० महमहा (सुगंधित)।
पु०[फा०] वह रकम जो निकाह के समय दुलहिन को देनी निश्चित की जाती है। (मुसलमान)
क्रि० प्र०—बँधना।—बाँधना।

महरबान—पु० =मेहरबान।

महरम—पु०[अ० मह्‌रम] १ कन्या की दृष्टि से ऐसा व्यक्ति जिससे उसका विवाह न हो सकता हो। २ वह जो भीतरी रहस्य से परिचित हो। हार्दिक मित्र।
स्त्री० [?] १ अँगिया। २ अँगिया की कटोरी।

महरा—पु०[हि० महता] [स्त्री० महरी] १ कहार। २ मुखिया। सरदार। ३ पूज्य या श्रेष्ठ व्यक्ति।
वि० १ प्रधान। मुख्य। २ पूज्य और श्रेष्ठ।

महराई*—स्त्री०[हि० महर+आई (प्रत्य०)] १ महर होने की अवस्था या भाव। २ प्रधानता।

महराज†—पु० =महाराज।

महराजा†—पु० =महाराज।

महराण—पु० [स० महार्णव] समुद्र। (डि०)

महराना—पु०[हि० महर+आना (प्रत्य०)] महरों के रहने की जगह, महल्ला या गाँव।
पु० =महाराणा।
अ० =मेहराना।

महराब—स्त्री० =मेहराब।

महरि—स्त्री०[हि० महर] १ एक प्रकार का आदरसूचक शब्द जिसका व्यवहार ब्रज में किसी प्रतिष्ठित स्त्री विशेषतः सास के लिए होता है। २ घर की मालकिन। गृह-स्वामिनी। ३ ग्वालिन (चिड़िया)।
†स्त्री० =मेहर।

महरी—स्त्री०[देश०] ग्वालिन (चिड़िया)।
स्त्री० हि० 'महरा' का स्त्री०।

महरुआ†—पु० [देश०] जस्ता। (सुनार)

महरू—पु०[देश०] १ चंडू पीने की नली। २ एक प्रकार का वृक्ष।

महरूम—वि०[अ० मह्‌रूम] १ जिसे कोई चीज न मिल सकी हो। जो कुछ पाने से रह गया हो। वंचित। २ अभागा।

महरूमी—स्त्री०[अ० मह्‌रूमी] १ महरूम होने की अवस्था या भाव। २ बदकिस्मती।

महरेटा—पु०[हि० महर+एटा (प्रत्य०)] [स्त्री० महरेटी] १ महर अर्थात् मुखिया या सरदार का बेटा। २ श्रीकृष्ण।

महरेटी—स्त्री०[हि० महरेटा] वृषभानु महर की लड़की, राधिका।

महर्घ—वि० =महार्घ।

महर्घता—स्त्री० =महार्घता।

महर्लोक—पु०[सं० कर्म० स०] पुराणानुसार भू, भुव. आदि चौदह लोकों में से एक।
विशेष—अरविन्द दर्शन में यह लोक ऊपर के तीन लोकों—सत्, चित् और आनन्द तथा नीचे के तीन लोकों भू भुव स्व के मध्य में माना गया है; और इसी में प्रति-मानस (देखें) का निवास माना गया है।

महर्षभी—स्त्री०[स० महती-ऋषभी, कर्म० स०] कौंछ। केवाँच।

महर्षि—पु०[स० महत्-ऋषि, कर्म० स०] १ बहुत बड़ा ऋषि। ऋषीश्वर। जैसे—वेदव्यास। २ संगीत में एक प्रकार का राग जो भैरव के आठ पुत्रों में से एक कहा गया है।

महर्षिका—स्त्री०[स० महर्षि+कन्+टाप्] भटकटैया।

महल—पु०[अ०] १ राजाओं, रईसों आदि के रहने का बहुत बड़ा मकान। भवन। प्रासाद। २ अंतःपुर। रनिवास। ३ बहुत बड़ा और सजा हुआ कमरा। ४ अवसर। मौका। ५ बड़ी मधुमक्खी। सारग। ६ पत्नी। बीवी।

महलम—पु०[अ० मह्‌लम] वह जिसके पास ईश्वर कोई विशेष सन्देश भेजे। उदा०—विद्यापति छवि भान महलम जुगपति चिरे जीवे जीवयु।—विद्यापति।

महल-सरा—स्त्री०[अ० महल+फा० सरा] अंतःपुर। जनानखाना। रनिवास।

महलाठ—पु०[देश०] एक प्रकार का पक्षी जिसकी दुम लम्बी, ठोर काली, छाती खैरी, पीठ खाकी रंग की और पैर काले होते हैं। इसे कोकैया और मुटरी भी कहते हैं।

महली—पु०[हि० महल] १ वह जनखा, जो महलों में पहरा देता तथा बेगमों की सेवा करता हो। २ कंचुकी।

महली-पटैला—पु०[हि० महल+पटैला] एक प्रकार की बड़ी नाव जिस पर केवल लकड़ी, पत्थर आदि लादे जाते हैं।

महल्ला—पु०[अ० महल्लः] शहर का कोई विभाग जिसमें बहुत से मकान तथा कई गलियाँ होती हैं। टोला। पाड़ा।

महल्लेदार—पुं० [अ० महल्ल+फा० दार (प्रत्य०)] १. महल्ले का चौधरी या प्रधान। २. चमार, भंगी, मेहतर आदि जो अलग अलग महल्लों में सफाई करते हैं।

महल्लेदारी—स्त्री० [हिं० महल्लेदार] एक ही महल्ले में रहनेवालों में होनेवाला बरताव या लेन-देन।

महशर—पुं० [अ० मह्शर] १ कयामत। प्रलय। २. कयामत का दिन।

महसार†—स्त्री० =महासीर (मछली)।

महसिल—पुं० [अ० मुहस्सिल] तहसील वसूल करनेवाला। उगाहने वाला।

महसीर—स्त्री०=महासीर (मछली)।

महसूद—वि० [अ० मह्सूद] १ जिससे हसद या ईर्ष्या की गई हो। २. ईर्ष्या किये जाने के योग्य।

महसूर—वि० [अ० मह्सूर] घेरे मे पड़ा हुआ। घिरा हुआ।

महसूल—पुं० [अ० मह्सूल] १. किसी चीज पर लगनेवाला किसी प्रकार का कर या शुल्क। २ कोई चीज कहीं भेजने का किराया या भाड़ा। ३ जमीन की मालगुजारी या लगान।

महसूली—वि० [अ० मह्सूली] जिस पर किसी प्रकार का महसूल लगा हो या लग सकता हो। महसूल के योग्य।

†स्त्री० भूमि जिस पर लगान न देना पड़ता हो।

महसूस—वि० [अ० मह्सूस] जिसका एहसान (अर्थात् किसी ज्ञानेन्द्रिय के द्वारा ज्ञान) हुआ हो। जैसे—किसी चीज या बात की कमी महसूस होना।

महाँ—अव्य०=महँ।

वि०=महा।

महा—वि० [सं०] १ बहुत अधिक। अत्यन्त। २ बड़ा। महान्। ३. सबसे बढ़कर। सर्वश्रेष्ठ।

†पुं० [हिं० महना=मथना] मठा। छाछ।

महाई—स्त्री० [सं० मथन, हिं० महना+आई (प्रत्य०)] १. महने अर्थात् मथने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक। २. नील की मथाई।

महाउत†—पुं०=महावत।

महाउर†—पुं०=महावर।

महाकंद—पुं० [सं० महत्-कंद, कर्म० स०] १ लहसुन। २ प्याज।

महाकंबु—पुं० [सं० महत्-कंबु, ब० स०] शिव।

महाकच्छ—पुं० [सं० महत्-कच्छ, ब० स०] १. समुद्र। सागर। २. वरुण देवता। ३ पर्वत। पहाड़। ४. एक प्राचीन देश।

महाकपि—पुं० [सं० महत्-कपि, कर्म० स०] १. शिव का एक अनुचर। २ एक बोधिसत्व का नाम।

महाकपित्थ—पुं० [सं० महत्-कपित्थ, कर्म० स०] १. बेल का वृक्ष। २. लाल लहसुन।

महाकपोत—पुं० [सं० महत्-कपोत, कर्म० स०] एक तरह का जहरीला साँप।

महाकरंज—पुं० [सं० महत्-करंज, कर्म० स०] एक प्रकार का बड़ा करंज।

महाकर—पुं० [सं० महत्-कर, ब० स०] एक बोधिसत्व का नाम।

वि० १. लंबे हाथोंवाला। २. अधिक आय करनेवाला।

महाकर्ण—पुं० [सं० महत्-कर्ण, ब० स०] १. शिव। २. नाग।

महाकर्णा—स्त्री० [सं० महाकर्ण+टाप्] कार्तिकेय की एक मातृका।

महाकर्णिकार—पुं० [सं० महत्-कर्णिकार, कर्म० स०] अमलतास।

महाकल्प—पुं० [सं० महत्-कल्प, कर्म० स०] ब्रह्मा कल्प। (पुराण)

महाकांत—पुं० [सं० महत्-कांत, कर्म० स०] शिव।

महाकांता—स्त्री० [सं० महती-कांता, कर्म० स०] पृथ्वी।

महाकाय—पुं० [सं० महत्-काय, ब० स०] १ शिवजी का नंदी नामक गण और द्वारपाल। २. विष्णु। ३. हाथी।

वि० बहुत बड़ी काया या शरीरवाला।

महाकार्तिकी—स्त्री० [सं० महती-कार्तिकी, कर्म० स०] कार्तिक की वह पूर्णिमा जो रोहिणी नक्षत्र में हो।

महाकाल—पुं० [सं० महत्-काल, कर्म० स०] १ सृष्टि और प्राणियों का अंत करनेवाले, महादेव या शिव का एक रूप। २. सारा समय जो विष्णु के समान अनंत और अखंड है। ३. शिव का एक गण जो कुछ पुराणों में शिव का पुत्र कहा गया है। ४ प्राचीन भारत में सूर्योदय का प्रामाणिक और मानक काल जो उज्जयिनी के सूर्योदय काल के अनुरूप और उसके आधार पर माना जाता था। ५ उक्त के आधार पर उज्जयिनी में स्थित शिव का एक प्रसिद्ध मंदिर।

महाकाली—स्त्री० [सं० महाकाल+ङीष्] १. महाकाल स्वरूप शिव की पत्नी जिसके पाँच मुख और आठ भुजाएँ मानी जाती हैं। २. दुर्गा की एक प्रसिद्ध मूर्ति या रूप। ३ शक्ति की एक अनुचरी। ४. जैनों के अनुसार सोलह विद्या-देवियों में से एक जो अवसर्पिणी के पाँचवें अर्हत् की देवी हैं।

महाकाव्य—पुं० [सं० महत्-काव्य, कर्म० स०] बहुत बड़ा और विस्तृत काव्य-ग्रंथ।

विशेष—भारतीय साहित्य में पहले महाकाव्य वह कहलाता था जिसमें किसी व्यक्ति के आदि से अन्त तक के पूरे जीवन का विस्तृत विवरण होता था। पर बाद के साहित्यकारों ने इसके सम्बन्ध में कई प्रकार के प्रतिबन्ध लगा दिये थे। यथा—यह शृंखला-बद्ध होने के सिवा सर्ग-बद्ध भी होना चाहिए, इसका नायक देवता, राजा या धीरोदात्त क्षत्रिय होना चाहिए; इसमें वीर, शान्त या शृंगार रसों में से कोई एक रस प्रधान होना चाहिए, बीच बीच में प्रसंग-वश और रस भी होने चाहिए, अनेक प्रकार के प्राकृतिक दृश्यों और शोभाओं, मानव या लौकिक जीवन के भिन्न भिन्न अंगों, कार्यों, घटनाओं आदि का भी वर्णन होना चाहिए आदि आदि। इस दृष्टि से महाभारत और रामायण तो महाकाव्य हैं ही; कालिदास कृत रघुवंश, माघ कृत शिशुपाल-वध, भारविकृत किराता-र्जुनीय और श्री हर्ष-कृत नैषध-चरित भी महाकाव्य की श्रेणी में आ जाते है। पर आज-कल वह बहुत बड़ा काव्य भी महाकाव्य मान लिया जाता है जो कवित्व की दृष्टि से बहुत उच्च कोटि का हो और जिसमें बहुत से विषयों का सुंदर रूप में वर्णन हो।

महाकाश—पुं० [सं० महत्-आकाश, कर्म० स०] १. पूरा आकाश। २. [ब० स०] एक पर्वत का नाम।

महाकुमार—पुं० [सं० महत्-कुमार, कर्म० स०] युवराज।

महाकुमुदा—स्त्री० [सं० महती-कुमुदी, कर्म० स०] गंभारी।

महाकुल—पुं० [सं० महत्-कुल, कर्म० स०] उच्च कुल।

वि० [ब० स०] महाकुलीन

महाकुलीन—वि० [स०+महाकुल+ख—ईन] ऊँचे कुल मे जन्मा हुआ।

महाकुष्ठ—पु०[स० महत्-कुष्ठ,कर्म० स०] कुष्ठ का वह भेद जिसमें हाथ पैर की उँगलियाँ गलने तथा गलकर गिरने लगती हैं। गलित कुष्ट।

महाकृच्छ्र—पु० [स० महत्-कृच्छ्र, कर्म० स०] १ विष्णु का एक नाम। २. घोर तपस्या।

महाकृष्ण—पु० [सं० महत्-कृष्ण, कर्म०स०] सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का बहुत जहरीला साँप।

पु० शिव।

महाकोश—पु० [सं० महत्-कोश, ब० स०] शिव।

महाकोशातकी—स्त्री० [स० महती-कोशातकी, कर्म० स०] निनुआँ या घीआ नामकी तरकारी।

महाक्रतु—पु० [सं० महत्-क्रतु, कर्म० स०] बहुत बडा यज्ञ। राजसूय यज्ञ।

महाक्रोध—पु० [स० महत्-क्रोध, ब० स०] शिव।

महाक्ष—पु० [स० महत्-अक्षि, ब० स०, षच्] १. शिव। २ विष्णु।

महाक्षीर—पु० [सं० महत्-क्षीर, ब० स०] ईख।

महाखर्व—पु० [स० महत्-खर्व, कर्म० स०] सौ खर्व की सख्या।

महागंगा—स्त्री० [सं० कर्म० स०] एक प्राचीन नदी। (महा०)

महागंध—पु० [स० महत्-गध, ब० स०] १ चन्दन। २. कुटज। ३ जलबेंत।

महागंधा—स्त्री० [स० महागध+टाप्] १ केवडा। २ नागबला। ३ चामुडा देवी।

महागज—पु० [स० महत्-गज, कर्म० स०] दिग्गज।

महागणनाध्यक्ष—पु०=महालेखापाल।

महागणपति—पु० [सं० महत्-गणपति, कर्म० स०] १ शिव का एक अनुचर। २ गणेश।

महागद—पु० [सं० महत्-गद, कर्म० स०] १. ज्वर। बुखार। २ कठिन रोग। ३. एक औषध।

महागर्त्त—पु० [स० महत्-गर्त्त, ब० स०] विष्णु।

महागर्भ—पु० [स० महत्-गर्भ, ब० स०] १ विष्णु। २ शिव।

महागिरि—पु० [स० महत्-गिरि, कर्म० स०] बहुत बड़ा पहाड़।

महागीत—पु० [स० महत्-गीत, ब० स०] शिव।

महागुण—वि० [स० महत्-गुण, ब० स०] अति गुणकारी।

महागुनी—पु०=महोगनी।

महागुरु—पु० [सं० महत्-गुरु, कर्म०स०] माता, पिता और गुरु इन तीनों का समाहार।

महागुल्मा—स्त्री० [स० महत्-गुल्म, ब० स०,+टाप्] सोमलता।

महागोधूम—पु० [सं० महत्-गोधूम, कर्म० स०] बड़े दाने का गेहूँ।

महाग्रंथिक—पु० [स० महत्-ग्रथिक, कर्म०स०] वह औषध जिसके सेवन से रोग निश्चित रूप से रुक जाय।

महाग्रह—पु० [स० महत्-ग्रह, कर्म० स०] राहु।

महाग्रीव—पु० [स० महती-ग्रीवा, ब० स०] १. शिव। २ शिव का एक अनुचर। ३. पुराणानुसार एक देश का नाम। ४. ऊँट।

महाघूर्णा—स्त्री०[स० महती-घूर्ण, ब० स०,+टाप्] शराब। मदिरा।

महाघृत—पु० [सं० महत्-घृत+कर्म० स०] बहुत पुराना घी।

महाघोष—पु० [सं० महत्-घोष, कर्म० स०] १ भारी शब्द। २. [ब० स०] बाजार। हाट।

महाघोषा—स्त्री० [स० महाघोष+टाप्] काकडा सिंगी।

महाचंचु—पु० [सं० महती-चञ्चु, ब० स०] चेंच।

महाचंड—पु० [स० महत्-चड, कर्म० स०] १ यम के दूत। २. शिव का एक गण।

वि०=प्रचड।

महाचंडा—स्त्री० [स० महाचड+टाप्] चामुडा।

महाचक्रवर्ती (तिन्)—पु० [स० महत्-चक्रवर्तिन्, कर्म० स०] बहुत बड़ा चक्रवर्ती राजा। सम्राट्।

महाचपला—स्त्री० [सं० महती-चपला, कर्म० स०] ऐसा आर्या छद जिसके दोनों दलो में चपला छंद के लक्षण हों।

महाचमू—पु० [स० महती-चमू, कर्म० स०] बहुत बडी सेना।

महाचार्य—पु० [सं० महत्-आचार्य, कर्म० स०] १ बहुत बडा आचार्य। २. शिव।

महाचिति—स्त्री० दे० 'महा-शक्ति'।

महाचेतन—पु० [स० महत्-चेतन, कर्म० स०] वह सर्वप्रमुख चेतना-शक्ति जो सारे विश्व और उसमे के प्राणियो तथा पदार्थों मे व्याप्त है।

महाच्छाय—पु० [सं० महती-छाया, ब० स०] बड़ का पेड। वट वृक्ष।

महाजंबीर—पु० [स० महत्-जबीर, कर्म० स०] कमला नीबू।

महाजंबु—पु० [स० महती-जबु, कर्म० स०] जामुन का बड़ा तथा पुराना पेड।

महाजन—पु० [स० महत्-जन, कर्म० स०] १ मनुष्यो का समूह। जनता। २ बहुत बडा आदमी। श्रेष्ठ व्यक्ति। ३. मुखिया। ४. धनवान् व्यक्ति। ५ वह व्यक्ति (क) जो सूद पर रुपये उधार देने का व्यवसाय करता हो। (ख) जिससे सहायता रूप मे अधिक धन प्राप्त किया जा सकता हो।

महाजनी—वि० [स० महाजन+हिं० ई (प्रत्य०)] महाजन-सबधी। महाजनों मे होनेवाला।

स्त्री० १ महाजनो का पेशा या व्यवसाय। सूद पर रुपये उधार देने के कारबार। २ एक विशेष लिपि जिसमे महाजन लेन-देन का हिसाब रखते हैं। बही-खाते मे प्रयुक्त होनेवाली लिपि।

महाजल—पु० [स० महत्-जल, ब० स०] समुद्र।

महाजाल—पु० [स० महत्-जाल, कर्म० स०] १ मछलियाँ पकडने का बहुत बडा जाल। २ किसी को धोखे मे फँसाने के लिए फैलाया हुआ बहुत बड़ा जाल या सोची हुई युक्ति। ३ मध्य युग में, एक प्रकार का बढिया कागज जो मछलियाँ पकडने के पुराने जालो को सड़ाकर बनाया जाता था।

महाजिह्व—पु० [स० महती-जिह्वा, ब० स०] शिव।

महाज्ञानी (निन्)—पु० [स० महत्-ज्ञानिन्, कर्म० स०] १ बहुत बड़ा ज्ञानी पुरुष। २ शिव।

महाज्यैष्ठी—स्त्री० [स० महती-ज्यैष्ठी, कर्म० स०] ज्येष्ठ मास की पूर्णिमा।

महाज्योतिष्मती—स्त्री० [सं० महती-ज्योतिष्मती, कर्म०स०] बड़ी माल-कँगनी।

महाज्वाल—पु० [सं० महती-ज्वाला, ब० स०] १ हवन की अग्नि। २. महादेव। ३. एक नरक का नाम।

वि० बहुत अधिक चमकता हुआ।

महा डाकपाल—पुं०[हिं०] वह डाकपाल जिसके निरीक्षण मे किसी राज्य या प्रदेश के अन्य सब डाकपाल काम करते हों। (पोस्टमास्टर जनरल)

महाडोल—पुं० [सं० महा+हिं० डोला] वह बहुत बड़ी पालकी जिसमे कई स्त्रियाँ एक साथ बैठ सकती थीं। शिविका। उदा०—महाडोल दुलहिन के चारी। देहु बताय होउ उपकारी।—रघुराज।

महातत्त्व—पु०=महत्तत्त्व।

महातपा (पस्)—पु० [महत्-तपस्, ब० स०] बहुत बडा तपस्वी।

महातम—पु०=माहात्म्य।

महातल—पु० [सं० महत्-तल, कर्म० स०] पुराणानुसार पृथ्वी के नीचे माने जानेवाले सात तलों (लोकों) मे से छठा तल। (ये सात तल इस प्रकार हैं—अतल, वितल, सुतल, रसातल, तलातल, महातल, और पाताल।

महातारा—स्त्री० [सं० महती-तारा, कर्म० स०] एक देवी। (तंत्र)

महातिक्त—पु० [सं० महत्-तिक्त, ब० स०] १ महानिंब। बकायन। २ चिरायता।

महातीक्ष्ण—वि० [सं० महत्-तीक्ष्ण, कर्म० स०] १ बहुत तेज। २. बहुत कड़आ या क्षारदार।

पुं० भिलावाँ।

महातीक्ष्णा—स्त्री० [सं० महती-तीक्ष्णा, कर्म० स०] भिलावाँ।

महातेज (जस्)—पु० [सं० महत्-तेजस्, ब० स०] १ शिव। २ पारा। ३. योद्धा।

वि० १ जिसमे बहुत अधिक तेज हो। परम तेजवान्। २ पराक्रमी तथा शक्तिशाली।

महात्मा (त्मन्)—पु० [सं० महत्-आत्मन्, ब० स०] १. पवित्र आत्मा। शुद्ध हृदय तथा उच्च विचारोंवाला व्यक्ति। जैसे—महात्मा ईसा, महात्मा बुद्ध, महात्मा गांधी, आदि। २. बहुत बडा तपस्वी, विरक्त और सन्यासी या साधू। ३. परमात्मा। ४ पितरों का एक गण या वर्ग। ५. शिव। ६. दे० 'महत्तत्त्व'।

महात्रिफला—स्त्री० [सं० महती-त्रिफला, कर्म० स०] बहेड़ा, आँवला और हड़ इन तीनों का समाहार। (वैद्यक)

महात्याग—पु० [सं० महत्-त्याग, कर्म० स०] १. बहुत बड़ा त्याग। २ महादान। (दे०)

महात्यागी (गिन्)—पु० [सं० महात्याग+इनि] १ बहुत बड़ा त्यागी या दानी। २ शिव।

महादंड—पु० [सं० महत्-दंड, कर्म० स०] १. यम के हाथ का दंड। २. यम के दूत। ३. बहुत बड़ा या कठोर दंड।

महादंडधारी (रिन्)—पुं० [सं०महादंड√धृ (रखना)+णिनि] यमराज।

महादंत—पुं० [सं० महत्-दंत, ब० स०] १ महादेव। २. हाथी। ३. [कर्म० स०] हाथी-दाँत।

वि० बहुत बड़े बड़े दाँतोंवाला।

महादंष्ट्र—पु० [सं० महती-दंष्ट्रा, ब० स०] १. शिव। २. विद्याधर।

महादशा—स्त्री० [सं० महती-दशा, कर्म० स०] फलित ज्योतिष में वह सारा समय जिसमें मोटे हिसाब से किसी एक ग्रह की पूरी अवस्थिति रहती और फल-भोग चलता रहता है। जैसे—आज-कल इस कुंडली मे शनि की महादशा के अन्तर्गत बुध की दशा चल रही है।

महादान—पु० [सं० महत्-दान, कर्म० स०] १. पुराणानुसार सोने की गौ या घोड़ा आदि तथा पृथ्वी आदि पदार्थों का दान जिससे स्वर्ग की प्राप्ति होती है। बहुत बड़ा दान। ३ ग्रहण आदि के समय किया जाने-वाला दान।

महादारु—पुं० [सं० महत्-दारु, ब० स०] देवदारु।

महादूत—पु० [सं० महत्-दूत, कर्म० स०] यमदूत।

महादेव—पु० [सं० महत्-देव, कर्म० स०] सबसे बड़े देव, शिव।

महादेवी—स्त्री० [सं० महती-देवी, कर्म० स०] १. पार्वती। २ दुर्गा। ३. प्राचीन भारत में पटरानी की उपाधि या संज्ञा।

महादेश—पु० [सं० महत्-देश, कर्म० स०] १ बहुत बडा देश। २. पृथ्वी के पाँच बडे स्थल-विभागों मे से हर एक। महाद्वीप। जैसे—एशिया युरोप, अफरीका आदि। (कान्टिनेन्ट)

महादैत्य—पु० [सं० महत्-दैत्य, कर्म० स०] १ बहुत बड़ा दैत्य। २. एकदैत्य।(पुराण)

महाद्रावक—पु० [सं० महत्-द्रावक, कर्म० स०] वैद्यक में एक प्रकार का औषध जो सोना-मक्खी, रसाजन, समुद्रफेन, सज्जी आदि से बनाया जाता है।

महाद्रुम—पु० [सं० महत्-द्रुम, कर्म० स०] १. पीपल। २. ताड़। ३. महुआ। ४. पुराणानुसार एक देश या वर्ष।

महाद्वार—पुं० [सं० महत्-द्वार, कर्म० स०] प्रासाद या मंदिर का बाहरी और सबसे बडा द्वार। सदर फाटक।

महाद्वीप—पु० [सं० महत्-द्वीप, कर्म० स०] १. पुराणानुसार पृथ्वी के निम्न सप्त विभागों मे से हर एक—जंबु, प्लक्ष, शाल्मलि, कुश, क्रौंच, शाक और पुष्कर। २ बहुत बड़ा द्वीप।

वि० दे० 'महादेश'।

महाद्वीपीय—वि० [सं० महाद्वीप+छ—ईय] महाद्वीप-सम्बन्धी। महाद्वीप का।

महाधन—वि० [सं० महत्-धन, ब० स०] १. बहुमूल्य। २. बहुत बड़ा धनी।

पु० १. सोना। स्वर्ण। २. धूप नामक गन्ध-द्रव्य। ३ खेती-बारी। कृषि।

महाधमनी—स्त्री० [सं० महती-धमनी, कर्म०स०] शरीर के अन्दर की वह सबसे बडी धमनी जो हृदय के बाँए निलय से (ऊपर और नीचे की ओर) निकलकर शरीर की अन्य सभी धमनियों मे रक्त का संचार करती है। (आओर्टा)

महाधनु (षु)—पु० [सं० महत्-धनुष्, ब० स०] शिव।

महाधातु—पु० [सं० महत्-धातु, कर्म० स०] १ शिव। २. सोना। स्वर्ण। ३ मेरु (पर्वत)।

महाधिकार-पत्र—पु० [सं० महत्-अधिकार, कर्म० स०, महाधिकार-पत्र;

ष० त०] वैयक्तिक तथा राजनीतिक स्वतंत्रता प्रदान करनेवाला वह प्रसिद्ध अधिकारपत्र जो ब्रिटेन के राजा जॉन से सन् १२१५ ई० मे लिखाया गया था। (मैग्ना कार्टा)

महाधिवक्ता (क्तृ)—पु०[महत्-अधिवक्तृ, कर्म० स०] आधुनिक विधिक क्षेत्र में किसी राज्य का वह प्रमुखतम अधिकारी जो उस राज्य के शासकीय विवादो मे उच्च न्यायालय के सामने राजकीय पक्ष उपस्थित करने के लिए नियत होता है। (एडवोकेट जनरल)

महाध्वनिक—पु०[सं० अध्वन्+ठक्—इक, आध्वनिक, महत्-आध्वनिक, कर्म० स०] वह जो पुण्य कार्य के लिए हिमालय गया हो, और वही मर गया हो।

वि० मृत।

महान् (हत्)—वि० [सं० √मह+अति,] १ बहुत बड़ा। विशाल। २. बहुत अधिक बढकर या श्रेष्ठ। उच्चकोटि का।

महानंद—पु० [स० महत्-आनद, कर्म० स०] १ अत्यंत आनद। २ [ब० स०] मगध के नद वश का एक प्रसिद्ध राजा। २ मोक्ष।

महानन्दा—स्त्री० [स०ब० स०,+टाप्] १ शराब। मदिरा। २ माघ-शुक्ला नवमी। ३ बगाल की एक नदी जो दारजिलिंग के पास से निकली है।

महानक—पु० [स०महत्-आनक, कर्म० स०] प्राचीन काल का एक प्रकार का बाजा जिस पर चमडा मढा होता था।

महानगर—पु० [स० महत्-नगर, कर्म० स०] बहुत बडा नगर।

महानगर-पालिका—स्त्री० [ष० त०] महापालिका।

महानट—पु० [स० महत्-नट, कर्म० स०] सर्वश्रेष्ठ नट, शिव।

महानद—पु० [स० महत्-नद, कर्म० स०] १ पुराणानुसार एक नद का नाम। २ एक प्राचीन तीर्थ।

महानदी—स्त्री० [स० महती-नदी, कर्म० स०] १ बहुत बडी और विशेष पवित्र नदी। जैसे—गगा, यमुना, कृष्णा आदि। २ बगाल की एक नदी जो बगाल की खाडी मे गिरती है।

महानरक—पु० [महत्-नरक, कर्म० स०] पुराणानुसार २१ नरको मे से पाँचवाँ नरक।

महानवमी—स्त्री० [स० महती-नवमी, कर्म० स०] आश्विन शुक्ल नवमी जिस दिन दुर्गा की पूजा बहुत धूमधाम से होती है।

महानस—पु० [सं० महत्-अनस्, कर्म० स०, टच्] पाकशाला। रसोई-घर।

महानसावलेही—पु० [स० ष० त०] वह जिसके छूने मे चौका या रसोई अपवित्र हो जाती हो।

महानाटक—पु० [स० महत्-नाटक, कर्म० स०] वह बहुत बडा नाटक जिसमे दस अक हो।

महानाद—पु०[स० महत्-नाद, कर्म० स०] १ घोर शब्द। २ [ब० स०] हाथी। ३. ऊँट। ४ शेर। सिंह। ५. बादल। मेघ। ६ शख। ७ बडा ढोल। ८. शिव।

वि० बहुत जोर का शब्द करनेवाला।

महानाभ—पु० [स० महत्-नाभि, ब० स०,+अच्] १ एक मत्र जिसके बल से शत्रु द्वारा फेंके हुए शस्त्र व्यर्थ किये जाते हैं। २. हिरण्यकशिपु का एक पुत्र।

महानारायण—पु० [स० महत्-नारायण, कर्म स०] विष्णु।

महानास—पु० [स० महती-नासिका, ब० स०] महादेव।

महानिंब—स्त्री० [स० महत्-निंब, कर्म० स०] नीम की जाति का एक पेड। बकायन।

महानिद्रा—पु० [स० महती-निद्रा, कर्म० स०] मृत्यु।

महानिधान—पु० [स०महत्-निधान, कर्म० स०] बुभुक्षित धातुभेदी पारा।

महानियम—पु० [सं० महत्-नियम, ब० स०] विष्णु।

महानियुत—पु० [स० महत्-नियुत, कर्म० स०] एक बहुत बडी संख्या। (बौद्ध)

महानिर्वाण—पुं०[स० महत्-निर्वाण, कर्म० स०] वह स्थिति जिसमे जीव की सत्ता का पूर्ण नाश हो जाता है। बौद्धो मे इसके अधिकारी केवल अर्हत् या बुद्धगण माने गये हैं।

महानिशा—स्त्री०[सं० महती-निशा, कर्म० स०] १. रात्रि का मध्य भाग। २ प्रलय की रात। ३ दुर्गा।

महानीच—पु० [स० महत्-नीच, कर्म० स०] धोबी। रजक।

महानींबू—पु० [स० महा+हिं० नीबू] बिजौरा नीबू।

महानीम—स्त्री० =महानिंब (बकायन)।

महानील—पु०[स० महत्-नील, कर्म० स०] १ भृगराज पक्षी। २ एक प्रकार का बढिया नीलम। ३ एक प्रकार का गुग्गुल। ४ एक प्रकार का साँप। ५ एक प्राचीन पर्वत। ६ सौ नील की सख्या।

महानीली—स्त्री०[स० महती-नील, कर्म० स०] नीली अपराजिता।

महानुभाव—पु०[स० महत्-अनुभाव, ब० स०] [भाव० महानुभावता] १ बहुत बडा व्यक्ति। २. उच्च विचारवाला तथा सत्यनिष्ठ व्यक्ति।

महानुभावता—स्त्री० [स० महानुभाव+तल्+टाप्] महानुभाव होने की अवस्था या भाव।

महानृत्य—पु० [स० महत्-नृत्य, कर्म० स०] १ ताडव नृत्य। २ शिव।

महानेत्र—पु०[स० महत्-नेत्र, ब० स०] शिव।

महान्यायवादी—पु०[स०]आज-कल विधिक क्षेत्र मे, किसी राज्य या राष्ट्र का वह प्रधान अधिकारी जिसे लोगों के विरुद्ध कानूनी कार्रवाइयाँ करने का पूर्ण अधिकार प्राप्त हो। (एटर्नी जनरल)

महापंक—पु०[स० महत्-पंक, कर्म० स०] बहुत बडा पाप। महापाप। (बौद्ध)

महापंचमूल—पु०[स० पचमूल द्विग स०, महत्-पचमूल, कर्म० स०]वैद्यक मे, बेल, अरनी, सोनापाढा, काश्मरी और पाटला इन पाँचो वृक्षों की जड़ो का समाहार।

महापचविष—पु० [स० पच-विष, द्विगु स०, महत् पचविष, कर्म० स०] वैद्यक मे, शृगी, कालकूट, मुस्तक, बछनाग और शखकर्णी इन पाँचो विषो का समाहार।

महापंचागुल—पु०[स० पच-अगुल, द्विगु स०, महत्-पचागुल, कर्म० स०] लाल अडी या रेड का वृक्ष।

महापक्ष—पु०[स० महत्-पक्ष, ब० स०] १ गरुड। २ एक प्रकार का राजहस।

वि० १ बडे बडे परोवाला। २ जिसके पक्ष या दल की संख्या बहुत अधिक हो।

महापक्षी (क्षिन्)—पु०[स० महापक्ष+इनि] उल्लू।

महापथ—पुं०[महत्-पथिन्, कर्म० स०, समासान्त अच्]१. बहुत बड़ा लंबा, चौड़ा मार्ग। २ महाप्रस्थान का पथ।

विशेष—प्राचीनकाल में मनुष्य स्वर्ग-प्राप्ति के उद्देश्य से हिमालय की किसी ऊँची चोटी पर जाते थे और उस पर से कूदकर प्राण त्यागते थे। ऐसी चोटी के पथ या मार्ग को महापथ कहते थे।

३ स्वर्गारोहण का साधन अर्थात् मृत्यु। ४. केदारनाथ और उसकी यात्रा। ५ एक नरक।

महापथ-गमन—पुं० [सं० ष० त०] मरण। मृत्यु।

महापथिक—पुं०[सं० कर्म० स०] प्राचीन काल मे वह व्यक्ति जो स्वर्गारोहण की दृष्टि से हिमालय पर्वत पर जाता था।

महापद्म—पुं०[सं० ब० स०]१ कुबेर की नौ निधियों मे से एक निधि। २. कुबेर का अनुचर एक किन्नर। ३. आठ दिग्गजो मे से एक दिग्गज जो दक्षिण दिशा मे स्थित है। ४ हाथियों की एक जाति। ५ एक प्रकार का फनदार साँप। ६. एक प्रकार के दैत्य। ७ सफेद कमल। ८ महाभारत काल का एक नगर जो गगा के किनारे था। ९ जैनो के अनुसार महाहिमवान् पर का एक जलाशय। १०. सौ पद्म की सख्या। ११. मगध के नंदवश का अंतिम सम्राट्।

महापवित्र—पुं०[सं० महत्-पवित्र, कर्म० स०] विष्णु।

महापातक—पुं०[सं० महत्-पातक, कर्म० स०] वह बहुत बड़ा तथा घोर पाप जिसके फल-भोग के लिए मनुष्य को नरक मे जाना पड़ता है।

महापातकी (किन्)—पुं०[सं० महापातक+इनि] वह जिसने महापातक किया हो।

महापातर†—पुं०=महापात्र।

महापात्र—पुं० [सं० महत्-पातत्र, कर्म० स०] १. वह ब्राह्मण जो मृत व्यक्ति का दाह कर्म करता है तथा उसके सबंधियों से श्राद्ध का दान लेता है। महाब्राह्मण। २. महामंत्री। महामात्य।

पुं०[सं० महत्-पाद, ब० स०] शिव।

महापाप—पुं०[सं० महत्-पाप, कर्म० स०] बहुत बड़ा। पाप। महापातक।

महापालिका—स्त्री० [महा नगरपालिका का सक्षिप्त रूप] १ प्रमुख तथा अधिक जनजनसख्यावाले नगर की स्वायत्त शासनिक इकाई, जिसे नगरपालिका की अपेक्षा अधिक अधिकार प्राप्त होते है। (सिटी कारपोरेशन) २. नगर-महापालिका द्वारा शासित भू-भाग।

महापाली—स्त्री०=महापालिका।

महापाश—पुं०[सं०महत्-पाश,ब०स०]पुराणानुसार एक प्रकार के यमदूत।

महापाशुपत—पुं०[सं० महत्-पाशुपत, कर्म० स०] १ शैवों का एक प्राचीन सप्रदाय जिसमे पशुपति की उपासना होती थी। २ बकुल। मौलसिरी।

महापीठ—पुं०[सं० महत्-पीठ, कर्म० स०]१. बहुत बड़ा पीठ या पुण्य-स्थान। जैसे—कामरूप किसी समय तांत्रिकों का महापीठ माना जाता था। २. वह पवित्र आधार या स्थान जहाँ किसी देवी, देवता की प्रतिमा प्रतिष्ठित हो। मूर्ति का आधार। ३. उन प्रसिद्ध स्थानों में से हर एक जहाँ सती के शव के अंग कटकर गिरे थे। ४. शंकर मठ। ५ कोई बहुत बड़ा स्थान।

महापीलु—पुं०[सं० महत्-पीलु, कर्म० स०] एक प्रकार का पीलु वृक्ष।

महापुट—पुं० [सं०] वैद्यक में, भस्म, रस आदि तैयार करने की एक विधि।

महापुण्य—पुं०[सं० महत्-पुण्य, कर्म० स०] १. बहुत बड़ा पुण्य। २. एक बोधिसत्व का नाम।

महापुण्या—स्त्री०[सं० महापुण्य+टाप्] एक नदी। (पुराण०)

महापुत्र—पुं०[सं० महत्-पुत्र, कर्म० स०] पुत्र का पुत्र। पोता।

महापुर—पुं०[सं० महत्-पुर, कर्म० स०] १. प्राचीन काल मे वह पुर या नगर जो प्राचीर से रक्षित होता था। २. एक प्राचीन तीर्थ।

महापुराण—पुं० [सं० महत्-पुराण, कर्म० स०] अठारह पुराणों में से एक जिसके रचयिता व्यास थे।

महापुरी—स्त्री०[सं० महती-पुरी, कर्म० स०] राजधानी।

महापुरुष—पुं०[सं० महत्-पुरुष, कर्म० स०]१. बहुत बड़ा तथा उच्च विचारोंवाला पुरुष। २. नारायण। ३. व्यंग्यार्थ में दुष्ट व्यक्ति।

महापुष्प—पुं०[सं० महत्-पुष्प, ब० स०]१. कुंद का वृक्ष। २. काला मूँग। ३. लाल कनेर। ४ एक प्रकार का कीड़ा। (सुश्रुत)

महापुष्पा—स्त्री०[सं० महापुष्प+टाप्] अपराजिता (लता)।

महापूजा—स्त्री०[सं०महती-पूजा, कर्म०स०] आश्विन के नवरात्र में की जानेवाली दुर्गा की पूजा।

महापृष्ठ—पुं०[सं० महत्-पृष्ठ, ब० स०] ऊँट।

महाप्रजापति—पुं०[सं० महत्-प्रजापति, कर्म० स०] विष्णु।

महाप्रतिहार पुं०[सं० महत्-प्रतिहार, कर्म० स०] १ प्राचीन काल का एक उच्च राज कर्मचारी, जो आज-कल के कोतवाल के समान होता था। २ मुख्य-द्वारपाल।

महा-प्रभाव—वि०[सं०] [स्त्री० महा-प्रभावा] दूसरों को अपना झूठा प्रभाव दिखलाकर उनपर आतंक जमाने या रोब गाँठनेवाला।

महाप्रभु—पुं०[सं० महत्-प्रभु, कर्म० स०]१. ईश्वर। २. शिव। ३. विष्णु। ४ इन्द्र। ५. राजा। ६ संन्यासी। ७ स्वामी वल्लभाचार्य। ८ चैतन्य।

महाप्रलय—पुं०[सं० महत्-प्रलय, कर्म० स०] वह प्रलय जिसमे सब लोको, उनके निवासियो, देवताओ तथा ब्रह्मा का भी नाश हो जाता है।

महाप्रशासक—पुं०[सं० महत्-प्रशासक, कर्म० स०] वह प्रशासक जिसके निरीक्षण तथा अधीनता मे अन्य प्रशासक काम करते हों। (ऐडमिनिस्ट्रेटर जनरल)

महाप्रसाद—पुं०[सं० महत्-प्रसाद, कर्म० स०]१. देवी देवता को चढ़ाया हुआ प्रसाद। २ जगन्नाथ जी को चढ़ाया हुआ भात। ३ मास आदि ऐसे खाद्य पदार्थ जिन्हें वैष्णव अखाद्य पदार्थ समझते हैं। (परिहास और व्यंग्य)। ४ सिक्खो मे पकाया हुआ मांस। महाप्रसाद।

महाप्रस्थान—पुं०[सं० महत्-प्रस्थान, कर्म० स०] १. प्राचीन काल में स्वर्गारोहण के उद्देश्य से महापथ के द्वारा की जानेवाली दुर्गम पर्वतो की यात्रा। २ मृत्यु। मौत।

महाप्राण—पुं०[सं० महत्-प्राण, ब० स०] व्याकरण के अनुसार ऐसा वर्ण जिसके उच्चारण मे प्राण-वायु का विशेष व्यवहार करना पड़ता है। जैसे—ख्, घ्, छ्, झ्, ठ्, ढ्, थ्, ध्, फ्, भ्, श्, ष्, स्, और ह्।

महाफल—वि०[सं० महत्-फल, ब० स०]१. (वृक्ष) जिसमें बहुत अधिक फल लगते हों। २ (कार्य) जिसका बहुत अच्छा और अधिक फल मिलता हो।

महाफला—स्त्री०[सं० महाफल+टाप्] कड़ुआ कद्दू।

महाबकी—स्त्री०[सं० महती-बकी, कर्म० स०]पूतना राक्षसी का एक नाम। उदा०—महाबकी जिमि आवति राति।—नंददास।

महाबल—वि०[सं० महत्-बल, ब० स०]१. अत्यन्त बलवान्। बहुत बड़ा शक्तिशाली।

पुं०१ पितरों का एक गण। २ गौतम बुद्ध। ३. वायु। ३ शिव के एक अनुचर। ५ सीसा नामक धातु।

महाबला—स्त्री०[सं० महाबल+टाप्]१ सहदेवी नाम की जड़ी। पीली सहदेइया। २ पीतल। ३ धौ का पेड़। ४. नील का पौधा। ५ कार्तिकेय की एक मातृका। ६ एक बहुत बड़ी संख्या की संज्ञा।

महाबली (लिन्)—वि० [सं० महत्-बलिन्, कर्म० स०] बहुत बड़ा बलवान्।

पुं० मुगल सम्राट् अकबर के लिए तत्कालीन दरबारियो आदि का एक सम्बोधन।

महाबाहु—वि०[सं० महत्-बाहु, ब० स०]१ लंबी भुजाओंवाला। २ बलवान्। शक्तिशाली।

पुं० १ विष्णु। २. धृतराष्ट्र का एक पुत्र।

महाबुद्धि—वि०[सं० महती-बुद्धि, ब० स०]१ बहुत बुद्धिमान्। २ चालाक। धूर्त।

पुं० एक प्रकार का वैदिक छंद।

महाबोधि—पुं० [सं०√बुध् (जानना)+इन्, महत्बोधि, कर्म० स०] १ महात्मा बुद्ध द्वारा अर्जित किया हुआ ज्ञान। २ बुद्धदेव।

महाब्राह्मण—पुं०[सं० महत्-ब्राह्मण, कर्म० स०]१ महापात्र। (दे०) २. निकृष्ट ब्राह्मण।

महाभद्रा—स्त्री०[सं० महत्-भद्र, ब० स०,+टाप्]१ गंगा। २ काश्मरी।

महाभाग—वि०[सं० महत्-भाग, ब० स०] महाभागी।

महाभागवत—पुं०[सं० महत्-भागवत, कर्म० स०] १ परम वैष्णव। २ पुराणानुसार ये बारह प्रसिद्ध भक्त—मनु, सनकादि, नारद, कपिल, जनक, ब्रह्मा, बलि, भीष्म, प्रह्लाद, शुकदेव, धर्मराज और शंभु। ३ श्रीमद्भागवत् पुराण। ४ एक प्राचीन छंद।

महाभागा—स्त्री० [सं० महाभाग+टाप्] कश्यप की पत्नी, अदिति। दाक्षायणी।

महाभागी (गिन्)—वि०[सं० महाभाग+इनि] अत्यन्त भाग्यवान्।

महाभाट—पुं०[सं०महत्-भाट, कर्म० स०] भाटों का एक वर्ग जो साधारण भाटों में उच्च माना जाता है।

महाभारत—पुं० [सं० महत्-भारत, कर्म० स० अथवा महाभार√तन्+ड] १ महर्षि व्यास रचित एक प्रसिद्ध प्राचीन ऐतिहासिक महाकाव्य जिसमे कौरवो और पांडवों के युद्ध का वर्णन है, और जिसे हिन्दू अपना प्रामाणिक धर्मग्रन्थ मानते हैं।

विशेष—यह १८ पर्वो मे विभक्त है और इसमे प्राय ८० हजार से अधिक श्लोक हैं। इसमें तत्त्व-ज्ञान, कर्म, राजनीति, व्यवहार आदि के सम्बन्ध की भी बहुत-सी अच्छी बातें हैं। कहते है कि पहले इसका नाम 'जय' काव्य था बाद में वैशम्पायन ने इसे कुछ बढ़ाकर इसका नाम 'भारत' रखा, और तब सौति ने इसमे बहुत सी कथाएँ तथा बातें बढ़ाकर इसे वर्तमान रूप दिया; और इसे 'महाभारत' नाम दिया।

२. कौरवो और पांडवों का वह बहुत बड़ा युद्ध जिसका वर्णन उक्त ग्रन्थ मे हुआ है। ३ कोई बहुत बड़ा युद्ध या लड़ाई-झगड़ा। ४. कोई बहुत बड़ा और विस्तृत विवरणवाला ग्रन्थ।

महाभाव—पुं०[सं० महत्-भाव, कर्म० स०] वैष्णव धर्म मे ईश्वर-प्रेम का वह चरम रूप जो स्नेह, मान, प्रणय, राग और अनुराग की अवस्था पार कर चुकने पर प्राप्त होता है।

महाभाष्य—पुं०[सं० महत्-भाष्य, कर्म० स०] पाणिनि कृत अष्टाध्यायी पर लिखा हुआ पतंजलि का भाष्य ग्रन्थ।

महाभिक्षु—पुं०[सं० महत्-भिक्षु, कर्म० स०] भगवान बुद्ध।

महाभियोग—पुं०[सं० महत्-अभियोग, कर्म० स०] राज्य के किसी प्रमुख विशेषत. सर्वप्रमुख शासनिक अधिकारी पर चलाया जानेवाला मुकदमा। (इम्पीचमेंट)

महाभिषव—पुं०[सं० महत्-भिषव, कर्म० स०] सोमरस।

महाभीत—पुं०[सं० महत्-भीत, कर्म० स०]१. राजा शांतनु का एक नाम। २ भृंगी (द्वारपाल)।

महाभीता—स्त्री०[महाभीत+टाप्] लाजवंती। लजालू।

महाभीम—पुं०[सं० महत्-भीम, कर्म० स०]१ राजा शांतनु का एक नाम। २ शिव का भृंगी नामक द्वारपाल।

वि० अत्यन्त भयंकर।

महाभीरु—पुं० [सं० महत्-भीरु, कर्म० स०] ग्वालिन नाम का बरसाती कीड़ा।

वि० बहुत अधिक डरपोक।

महाभीष्म—पुं०[सं० महत्-भीष्म, कर्म०स०] राजा शांतनु का एक नाम।

महाभुज—वि०[सं० महती-भुजा, ब० स०] आजानु-बाहु।

महाभूत—पुं०[सं० महत्-भूत, कर्म० स०]१ भारतीय दर्शन मे, पृथ्वी आकाश, जल आदि पाँचो तत्त्व या भूत। २ आधुनिक विज्ञान मे वह मूल तत्त्व या परम द्रव्य जो सभी तत्त्वो या भूतो मे समान रूप मे पाया जाता है और उन सबका मूल कारण है। (मैटर)

महाभूमि—स्त्री०[सं० महती-भूमि, कर्म०स०] प्राचीन भारत में वह भूमि जो सार्वजनिक उपयोग मे आती थी और जिस पर किसी व्यक्ति विशेष का अधिकार नहीं होता था। (पबलिक प्लेस)

महाभृंग—पुं० [सं० महत्-भृंग, कर्म० स०] नीले फूलोंवाला भंगरा।

महाभैरव—पुं०[सं० महत्-भैरव, कर्म० स०] शिव।

महाभैरवी—स्त्री० [सं० महती-भैरवी, कर्म० स०] तान्त्रिकों की एक विद्यादेवी।

महाभोग—पुं० [सं० महत्-भोग, कर्म० स०]१ अत्यन्त भोग। २ [ब० स०] साँप।

महाभोगा—स्त्री०[सं० महाभोग+टाप्] दुर्गा।

महाभोगी (गिन्)—पुं० [सं० महाभोग+इनि] बड़े फनवाला साँप।

महाभोज—पुं०[सं०] प्राचीन भारत मे विदर्भ से महीशूर (मैसूर) तक के बड़े बड़े राजाओं की उपाधि।

महामंडल—पुं०[सं० महत्-मंडल, कर्म० स०]१. बहुत बड़ा मंडल। २ वह मंडल जिसके अधीनस्थ अन्य मंडल हों।

महामंत्र—पुं०[सं० महत्-मंत्र, कर्म० स०]१. वेद का कोई मंत्र। २. वह मंत्र जो अपना प्रभाव या फल अवश्य दिखलाता हो। ३. अच्छा और बढ़िया परामर्श या सलाह।

महामंत्री (त्रिन्)—पुं०[सं० महत्-मंत्रिन्, कर्म० स०]१. सबसे बड़ा मंत्री। २. प्राचीन काल में राज्य या साम्राज्य का प्रधान मंत्री।

महामणि—पुं०[सं० महत्-मणि, कर्म० स०] अत्यन्त बहुमूल्य रत्न।

महामति—वि०[सं० महती-मति, ब० स०] बहुत बड़ा बुद्धिमान्।
पुं० १. गणेश। २. एक बोधिसत्व।

महामत्स्य—पुं०[सं० महत्-मत्स्य, कर्म० स०] बहुत बड़ी मछली।

महामद—पुं०[सं० महत्-मद, ब० स०] मस्त हाथी।

महामना (नस्)—वि०[सं० महत्-मनस् ब० स०] जिसका मन या अन्तःकरण बहुत उच्च स्तर पर हो और सब प्रकार से शुद्ध हो। उदारचित्त। जैसे—महामना मालवीय जी।

महामह—पुं०[सं० महत्-मह, कर्म० स०] महोत्सव।

महामहिम (न्)—वि०[सं० महत्-महिमन्, ब० स०] जिसकी महिमा बहुत अधिक हो।
विशेष—इसका प्रयोग आज-कल अं० के 'हिज एक्सलेन्सी' की तरह या उसके स्थान पर होने लगा है।

महामहोपाध्याय—पुं०[सं०महत्-महोपाध्याय, कर्म० स०] १. बहुत बड़ा गुरु, पंडित या विद्वान्। २. एक उपाधि जो अंगरेजी शासन में संस्कृत के प्रकांड पंडितों को दी जाती थी।

महामांस—पुं०[सं० महत्-मांस, कर्म० स०]१. गौ का गोश्त। गोमांस। २. मनुष्य का मांस।

महामाई—स्त्री०[सं० महा+हिं० माई]१. दुर्गा। २. काली।

महामात्य—पुं०[सं० महत्-अमात्य, कर्म० स०] महामंत्री।

महामात्र—पुं०[सं० महती-मात्रा, ब०स०] [स्त्री०महामात्री]१. प्राचीन भारत में, एक प्रकार का उच्चपदस्थ राजकीय अधिकारी। २. महामंत्री। ३. महावत।
वि०१. बड़ा। २. उच्च कोटि का। ३. धनवान्।

महामान्य—वि०[सं० महत्-मान्य, कर्म० स०] बहुत अधिक माननीय।

महामाय—वि०[सं० महती-माया, ब० स०] अत्यन्त मायावी।
पुं०१. शिव। २ विष्णु।

महामाया—स्त्री०[सं० महती-माया, कर्म० स०] १. वह सांसारिक भ्रम जिसके फलस्वरूप यह मिथ्या जगत वास्तविक सा प्रतीत होता है। २. प्रकृति। ३. दुर्गा। ४. गंगा। ५. गौतम बुद्ध की माता। ६. एक छंद।
पुं० विष्णु।
वि० मायावी।

महामारी—स्त्री०[सं० महत्√मृ (मरना)+णिच्+अच्+ङीप्] १. ऐसा संक्रामक रोग जिससे बहुत अधिक लोग मरें। मरक। मरी। (एपिडेमिक) जैसे—हैजा, चेचक आदि। २. महाकाली का एक नाम।

महामारी विज्ञान—पुं०[सं०] वह आधुनिक विज्ञान जिसमें इस बात का विचार होता है कि मरक या महामारियाँ किन कारणों से और कैसे फैलती हैं और उन्हें कैसे रोका या कम किया जा सकता है। (एपिडेमियालोजी)

महामार्ग—पुं०[सं० महत्-मार्ग, कर्म० स०]१. बहुत बड़ा मार्ग या रास्ता। वह बहुत बड़ा या लंबा रास्ता जिसपर से होकर कोई चीज आती-जाती हो। जैसे—गंगा या यमुना का महामार्ग। ३. परलोक या स्वर्ग का रास्ता। महापथ। (दे०)

महामाल—पुं०[सं० महती-माला, ब० स०] शिव।

महामालिनी—स्त्री०[सं० महती-मालिनी, कर्म० स०] नाराच (छंद)।

महामाष—पुं०[सं० महत्-माष, कर्म० स०] बड़ा उड़द।

महामुख—पुं०[सं० महत्-मुख, ब० स०] १. घड़ियाल। २. नदी का मुहाना। ३. शिव।

महामुद्रा—स्त्री०[सं० महती-मुद्रा, कर्म० स०]१. योग साधन में एक विशिष्ट प्रकार की मुद्रा या अंगों की स्थिति। २ तांत्रिक उपासना में वह सिद्ध योगिनी जिसे साधक अपनी सहचरी बनाकर साधना करता है। कहते है कि महामुद्रा की साधना कर लेने पर साधक सब प्रकार के बाह्य अनुष्ठानों से मुक्त हो जाता है। ३ बौद्ध तांत्रिकों के अनुसार भगवती नैरात्मा जिसकी उपासना परम सुखद कही गई है और जिसकी साधना में पूरे उतरने पर ही साधक की गिनती सिद्धाचार्यों में होती है। ४. एक बहुत बड़ी संख्या की संज्ञा।

महामुनि—पुं० [सं० महत्-मुनि, कर्म० स०] १. बहुत बड़ा और मुनियों में श्रेष्ठ मुनि। जैसे—अगस्त्य, व्यास आदि। गौतम बुद्ध । ३. कृपाचार्य। ४. काल। ५. एक जिन देव। ६. तुंबुरु नामक वृक्ष।

महामूर्ति—स्त्री०[सं० महती-मूर्ति, ब० स०] १. विष्णु। २ न्यायमूर्ति।

महामूल—पुं०[सं० महत्-मूल, कर्म० स०] प्याज।

महामूल्य —पुं०[सं० महत्-मूल्य, ब० स०] माणिक।
वि० १. बहुमूल्य। कीमती। २. मँहगा।

महामृग—पुं०[सं० महत्-मृग, कर्म० स०]१. सबसे बड़ा पशु, हाथी। ३ बहुत बड़ा पशु। ३. शरभ।

महामृत्युंजय—पुं०[सं० महत्-मृत्युंजय, कर्म० स०]१. शिव। २. शिव का अकाल मृत्यु निवारक एक मंत्र। ३ एक औषध।

महामेद—पुं०[सं० महत्-मेद, कर्म० स०] महामेदा।

महामेदा—स्त्री०[सं० महामेद+टाप्] एक प्रकार का कंद जो देखने में अदरक के समान होता है।

महामेध—पुं०[सं० महती-मेधा, ब० स०] शिव।

महामेधा—स्त्री०[सं० महामेध+टाप्] दुर्गा।

महामोह—पुं०[सं० महत्-मोह, कर्म० स०] अत्यन्त या घोर मोह।

महामोहा—स्त्री०[सं० महामोह+अच्+टाप्] दुर्गा।

महाय*—वि०[सं० महा]१ बहुत बड़ा। महान्। २. बहुत अधिक। महा।

महायक्ष—पुं०[सं० महत्-यक्ष, कर्म० स०]१ यक्षों का राजा। २. एक प्रकार के बौद्ध देवता।

महायज्ञ —पुं०[सं० महत्-यज्ञ, कर्म० स०]१. बहुत बड़ा यज्ञ। २. हिन्दू धर्मशास्त्र के अनुसार नित्य किये जानेवाले पाँच प्रमुख धार्मिक कर्म। पंचयज्ञ।

महायम—पुं०[सं० महत्-यम, कर्म० स०] यमराज।

महायात्रा—स्त्री० [सं० महती-यात्रा कर्म० सं०] मृत्यु।

महायान—पुं०[सं० महत्-यान्, कर्म० स०]१ उत्तम, प्रशस्त और श्रेष्ठ मार्ग। २.बौद्ध धर्म की वह भक्ति प्रधान शाखा या सम्प्रदाय जो हीनयान की तुलना में बहुत श्रेष्ठ माना जाता था और जिसका आरम्भ सम्भवत. कनिष्क के समय हुआ था। इसमें उदारता, परोपकार, सदाचार आदि तत्त्वों की प्रधानता थी। बोधिसत्व की भावना और बुद्ध भगवान् की

प्रतिमाएँ बनाकर उनकी पूजा करने की प्रणाली इसी मत से निकली थी। यह नामकरण बौद्धों की पूर्वी शाखा ने किया था।

महायानी (निन्)—वि० [सं० महायान+इनि] महायान-सम्बन्धी। महायान का।

पु० महायान मत या सम्प्रदाय का अनुयायी।

महायुग—पु० [सं० महत्-युग, कर्म० स०] चारों युगों का समूह। चौकड़ी।

महायुत—पु० [सं० महत्-अयुत, कर्म० स०] सौ अयुत की संख्या की संज्ञा।

महायुद्ध—पु० [सं० महत्-युद्ध, कर्म० स०] बहुत बड़े तथा व्यापक भू-भाग में लड़ा जानेवाला ऐसा युद्ध जिसमें अनेक राष्ट्र सम्मिलित हों और जिसमें बहुत अधिक नर-संहार तथा विनाश हो। (ग्रेट वार) जैसे—प्रथम या द्वितीय महायुद्ध।

महायुध—पु० [सं० महत्-आयुध, ब० स०] शिव।

महायोगी (गिन्)—पु० [महत्-योगिन्, कर्म० स०] १ बहुत बड़ा योगी। २ शिव। ३ विष्णु। ४ मुर्गा।

महायोगेश्वर—पु० [सं० महत्-योगेश्वर, कर्म० स०] पितामह, पुलस्त्य, वसिष्ठ, पुलह, अंगिरा, क्रतु और कश्यप जो बहुत बड़े ऋषि और योगी माने गये है।

महायोगेश्वरी—स्त्री० [सं० महती-योगेश्वरी, कर्म० स०] १ दुर्गा। नाग दौन।

महायोजन—पु० [सं० महत्-आयोजन, कर्म० स०] बहुत बड़ा आयोजन। महत् आयोजन।

महायोनि—स्त्री० [सं० महती-योनि, कर्म० स० या ब० स०] योनि के अधिक फैलने का एक रोग। (वैद्यक)

महारंभ—वि० [सं० महत्-आरंभ, ब० स०] १ बहुत बड़े काम का श्रीगणेश करनेवाला। २ बड़ा काम।

महार—स्त्री० =मुहार (ऊँट की नकेल)।

महारक्त—पु० [सं० महत्-रक्त, कर्म० स०] मूँगा।

महारजत—पु० [सं० महत्-रजत, कर्म० स०] १ सोना। २ धतूरा।

महारजन—पु० [सं० महत्-रजन, कर्म० स०] १ कुसुम का फूल। २ सोना। स्वर्ण।

महारण्य—पु० [सं० महत्-अरण्य, कर्म० स०] बहुत बड़ा या भारी जंगल।

महारत—स्त्री० [फा०] १ हस्तकौशल। २ निपुणता। ३ अभ्यास।

महारत्न—पु० [सं० महत्-रत्न, कर्म० स०] मोती, हीरा, वैदूर्य, पद्मराग, गोमेद, पुष्पराग, पन्ना, मूँगा और नीलम इन नौ रत्नों में से हर एक।

महारथ—पुं० [सं० महत्-रथ, ब० स०] महारथी।

महारथी (थिन्)—पु० [महत्-रथिन्, कर्म० स०] प्राचीन भारत में, वह बहुत बड़ा योद्धा जो अकेला दस हजार योद्धाओं से लड़ सकने में समर्थ माना जाता था।

महारथ्या—स्त्री० [सं० महती-रथ्या, कर्म० स०] चौड़ी और बड़ी सड़क।

महारनी—स्त्री० =मुहारनी।

महारस—पु० [सं० महत्-रस, ब० स०] १ काँजी। २ ऊख। ३ खजूर। ४ कसेरु। ५ जामुन। ६ पारा। ७. अभ्रक। ८. ईंगुर। ९ कांतिसार लोहा। ११. सोना-मक्खी। १२. रूपा-मक्खी।

महाराग—पु० [सं० महत्-राग, कर्म० स०] वज्रयानी तांत्रिक साधना मे, वह राग या परम अनुराग जो साधक के मन में महामुद्रा के प्रति होता है। कहते हैं, कि बिना इस प्रकार का राग उत्पन्न हुए इस जन्म मे बोधि की प्राप्ति असंभव होती है।

महाराज—पु० [सं० महत्-राजन्, कर्म० स०] [स्त्री० महारानी] १ बहुत बड़ा राजा। अनेक राजाओं का प्रधान राजा। २. गुरु, धर्माचार्य, पूज्य ब्राह्मण आदि के लिए सम्बोधन सूचक पद। ३. भोजन बनानेवाला ब्राह्मण रसोइया। ४ अंगरेजी शासनकाल में बड़े राजाओं को दी जाने-वाली उपाधि।

महाराजाधिराज—पु० [सं० महत्-राजाधिराज, कर्म० स०] १. बहुत बड़ा राजा। २ अंगरेजी शासन में एक प्रकार की उपाधि जो प्रायः बड़े राजाओं को मिलती थी।

महाराजिक—पु० [सं० महती-राजि, ब० स०,+कप्] एक प्रकार के देवता जिनकी संख्या कहीं २२६ और कहीं ४००० कही गई है।

महाराज्ञी—स्त्री० [सं० महती-राज्ञी, कर्म० स०] १ दुर्गा। २ महारानी।

महाराज्य—पु० [सं० महत्-राज्य, कर्म० स०] बहुत बड़ा राज्य। साम्राज्य।

महाराज्यपाल—पु० [सं० महत्-राज्यपाल, कर्म० स०] किसी बहुत बड़े देश या राज्य के द्वारा नियुक्त वह सबसे बड़ा अधिकारी जिसके अधीन कई प्रांतीय या प्रादेशिक राज्यपाल हों। (गवर्नर जनरल)

महाराणा—पु० [सं० महा+हिं० राणा] मेवाड़, चित्तौर और उदयपुर के राजाओं की उपाधि।

महारात्रि—स्त्री० [सं० महती-रात्रि, कर्म० स०] १ महा प्रलयवाली रात, जब कि ब्रह्मा का लय हो जाता है। २ तांत्रिकों के अनुसार ठीक आधी रात बीतने पर दो मुहूर्तों का समय जो बहुत ही पवित्र समझा जाता है। ३ दुर्गा।

महारावण—पु० [सं० महत्-रावण, कर्म० स०] पुराणानुसार वह रावण जिसके हजार मुख और दो हजार भुजाएँ थीं।

महारावल—पु० [सं० महा+हिं० रावल] जैसलमेर, डूंगरपुर आदि राज्यों के राजाओं की उपाधि।

महाराष्ट्र—पु० [सं० महत्-राष्ट्र, कर्म० स०] १ बहुत बड़ा राष्ट्र। २. दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध प्रदेश जो अब भारत का एक राज्य है तथा जिसकी राजधानी बम्बई है। ३ उक्त राज्य का निवासी। मराठा।

महाराष्ट्री—स्त्री० [सं० महाराष्ट्र+अच्+ङीप्] १ मध्ययुग में एक प्रकार की प्राकृत भाषा जो महाराष्ट्र देश मे बोली जाती थी। २. दे० 'मराठी'। ३ जल-पीपल।

महाराष्ट्रीय—वि० [सं० महाराष्ट्र+छ—ईय] महाराष्ट्र-संबंधी। महाराष्ट्र का।

महारुख—पु० [सं० महावृक्ष] १ सेहुड़। थूहर। २ एक प्रकार का सुन्दर जंगली वृक्ष।

महारुद्र—पु० [सं० महत्-रुद्र, कर्म० स०] शिव।

महारुरु—पु० [सं० महत्-रुरु, कर्म० स०] मृगों की एक जाति।

महारूप—पु० [सं० महत्-रूप, ब० स०] शिव।

महारूपक—पु० [सं० महत्-रूपक, कर्म० स०] साहित्य में रूपक या नाटक का एक प्रकार या भेद।

महारोग—पुं० [सं० महत्-रोग, कर्म० स०] बहुत बड़ा और प्रायः असाध्य रोग।

महारोगी (गिन्)—वि० [सं० महत्-रोगिन्] किसी महारोग से पीड़ित।

महारौद्र—पुं० [सं० महत्-रौद्र, कर्म० स०] १. शिव। २. बाइस मात्राओं वाले छन्दों की सामूहिक संज्ञा।

महारौरव—पुं० [सं० महत्-रौरव, कर्म० स०] १. पुराणानुसार एक नरक का नाम। २. एक प्रकार का साम।

महार्घ—वि० [सं० महत्-अर्घ, ब० स०] [भाव० महार्घता] १. बहुमूल्य। २ मँहगा।

महार्घता—स्त्री० [सं० महार्घ+तल्+टाप्] महार्घ होने की अवस्था या भाव।

महार्घ्य—वि०=महार्घ।

महार्णव—पुं० [सं० महत्-अर्णव, कर्म० स०] १ महासागर। २ शिव। ३ पुराणानुसार एक दैत्य जिसे भगवान् ने कूर्म अवतार मे अपने दाहिने पैर से उत्पन्न किया था।

महार्द्रक—पुं० [सं० महत्-आर्द्रक, कर्म० स०] १ जगली अदरक। २. सोंठ।

महार्बुद—पुं० [सं० महत्-अर्बुद, कर्म० स०] सौ करोड़ की सख्या।

महार्ह—पुं० [सं० महत्-अर्ह, ब० स०] सफेद चंदन।
वि०=महार्घ।

महाल—पुं० [अ० महल का बहु० रूप] १. महल्ला। टोला। २ कोई ऐसी चीज या जगह जिसमें एक ही तरह के बहुत से जीव एक साथ रहते हो। जैसे—शहद की मक्खियों का महाल अर्थात् छत्ता। ३. जमीन के बदोबस्त के काम के लिए किया हुआ जमीन का ऐसा विभाग, जिसमे कई गाँव होते हैं। ४ मध्य युग में, ऐसी जमीदारी जिसमे बहुत-सी पट्टियाँ या हिस्सेदार होते थे।
वि०=मुहाल (बहुत कठिन या दुष्कर)।

महालक्ष्मी—स्त्री० [सं० महती-लक्ष्मी, कर्म० स०] १ लक्ष्मी देवी की एक मूर्ति। २ वह कन्या जो दुर्गापूजा के उत्सव मे दुर्गा का रूप धारण करती है। ३. नारायण की एक शक्ति। ४. एक प्रकार का वर्णिक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे तीन रगण होते हैं।

महालय—पुं० [सं० महत्-आलय, कर्म० स०] १. महाप्रलय। २. पितृपक्ष। ३ तीर्थ। ४. नारायण।

महालया—स्त्री० [सं० महालय+टाप्] आश्विन कृष्ण अमावस्या, यह पितृ विसर्जन का दिन है।

महालिंग—पुं० [सं० महत्-लिंग, ब० स०] महादेव।

महालेखापाल—पुं० [सं० महत्-लेखापाल, कर्म० स०] वह लेखपाल जिसकी अधीनता तथा निरीक्षण में अन्य लेखापाल विशेषतः किसी सार्वजनिक विभाग के सब लेखपाल काम करते हों। (अकाउटेंट जनरल)

महालोक—पुं० [सं० महत्-लोक, कर्म० स०] ऊपर के सात लोकों में से चौथा लोक। महर्लोक।

महालोध्र—पुं० [सं० महत्-लोध्र, कर्म० स०] पठानी लोध।

महालोल—पुं० [सं० महत्-लोल, कर्म० स०] कौआ।

महालोह—वि० [सं० महत्-लोह, कर्म० स०] चुंबक।

महावक्ष (क्षस्)—पुं० [सं० महत्-वक्षस्, ब० स०] महादेव।

महावट—पुं० [सं० महत्-वट, कर्म० स०] १. बहुत बड़ा वट वृक्ष। २. पुराणानुसार एक वट वृक्ष जिसके साथ मनु ने प्रलयकाल में नौका बाँधी थी।
स्त्री० [हिं० माघ+वट (प्रत्य०)].माघ के महीने में होनेवाली वर्षा।

महावत—पुं० [सं० महामात्र] हाथीवान। फीलवान।

महावन—पुं० [सं० महत्-वन, कर्म० स०] १. बहुत बड़ा वन या जंगल। २. वृन्दावन के अंतर्गत एक वन।

महावर—पुं० [सं० महावर्ण] लाख से तैयार किया जानेवाला एक तरह का गहरा चटकीला लाल रंग जिससे स्त्रियाँ अपने पैर चित्रित करती तथा तलुए रंगती हैं।

महावराह—पुं० [सं० महत्-वराह, कर्म० स०] विष्णु का तीसरा अवतार जिसमें उन्होंने वाराह का रूप धारण किया था।

महावरी—वि० [हिं० महावर] १ महावर-सबंधी। २. महावर के रंग का।
स्त्री० वह छोटा फाहा जिससे पैरों मे महावर लगाया जाता है।

महावरेदार†—वि०=मुहावरेदार।

महावल्ली—स्त्री० [सं० महती-वल्ली, कर्म० स०] माधवी (लता)।

महावस—पुं० [सं० महती-वसा, ब० स०] १. मगर। २. सूँस।

महावस्त्र—पुं० [सं०] १. सब कपड़ो के ऊपर अबा, कबा आदि की तरह पहना जानेवाला वह कपड़ा जो साधारण कपड़ो से अधिक चौड़ा तथा लंबा होता है और किसी बहुत बड़े अधिकार, पद आदि का सूचक होता है। (रोब) २ दे० 'खिलअत'।

महावाक्य—पुं० [सं० महत्-वाक्य, कर्म० स०] १ बहुत बड़ा वाक्य। कोई महत्त्व पूर्ण वाक्य या मत्र। जैसे—सोऽहं, तत्त्वमसि आदि। ३. दान देते समय पढा जानेवाला मत्र या संकल्प।

महावाणिज्यदूत—पुं० [सं० महत्-वाणिज्यदूत, कर्म० स०] किसी देश का वह वाणिज्य दूत जो किसी अन्य देश की राजधानी में रहता हो और जो उस देश मे स्थित अपने यहाँ के अन्य वाणिज्य दूतो का प्रधान हो। (कॉन्सल जनरल)

महावात—पुं० [सं० महत्-वात, कर्म० स०] बहुत जोरों से या तेज चलनेवाली हवा। जैसे—झंझा, तूफान, प्रवात आदि।

महावाद—पुं० [सं० महत्वाद, कर्म० स०] महत्त्वपूर्ण वाद-विवाद। शास्त्रार्थ।

महावादी (दिन्)—वि० [सं० महावाद+इनि] महावाद-सबंधी।
पुं० वह जो शास्त्रार्थ करता हो।

महावारुणी—स्त्री० [सं० महती-वारुणी, कर्म० स०] गंगा-स्नान का एक पर्व या योग जो शनिवार के दिन चैत्र कृष्ण त्रयोदशी पड़ने पर होता है।

महावाहन—पुं० [सं० कर्म० स०] एक बहुत बड़ी सख्या की संज्ञा।

महाविक्रम—पुं० [सं० महत्-विक्रम, ब० स०] सिंह। शेर।
वि० बहुत बडा बलवान् या विक्रमी।

महाविद्या—स्त्री० [सं० महती-विद्या, कर्म० स०] १. इन दस देवियों मे से हर एक—काली, तारा, षोडषी, भुवनेश्वरी, भैरवी, छिन्नमस्ता, धूमावती, बँगलामुखी, मातगी और कमलात्मिका। (तंत्र) २. दुर्गा। ३. गगा।

महाविद्यालय—पुं०[सं० महत्-विद्यालय, कर्म० स०] वह बड़ा विद्यालय जिसमें ऊँची कक्षाओं की पढाई होती है।(कालेज)

महाविद्येश्वरी—स्त्री० [सं० महती-विद्येश्वरी, कर्म० स०] दुर्गा की एक मूर्ति या रूप।

महाविभूति—पुं० [सं० महती-विभूति, ब० स०] विष्णु।

महाबिल—पुं० [सं० महत्-बिल, कर्म० स०] १ आकाश। २ अंतःकरण।

महाविष—पुं० [सं० महत्-विष, ब०स०] वह बहुत अधिक जहरीला साँप जिसके काटते ही मृत्यु हो जाय।

महाविषुव—पुं० [सं० महत्-विषुव, कर्म० स०] सूर्य के मीन से मेष राशि में प्रवेश करने का समय।

महावीचि—पुं० [सं० महत्-वीचि, ब० स०] मनु के अनुसार एक नरक का नाम।

महावीर—वि० [सं० महत्-वीर कर्म० स०] बहुत बड़ा वीर।
पुं० १ हनुमान जी। २ शेर। सिंह। ३. गरुड। ४. देवता। ५. वज्र। ६ घोड़ा। ७ बाज नामक पक्षी। ८. मनु के पुत्र मरवामल का एक नाम। ९ गौतम बुद्ध। २ रानी त्रिशला के गर्भ से उत्पन्न राजा सिद्धार्थ के पुत्र जो जैनियों के चौबीसवें और अंतिम जिन या तीर्थंकर माने जाते है।

महावीर-चक्र—पुं०[मध्य० स०] स्वतंत्र भारत में सेना के किसी वीर को रणभूमि में असामान्य वीरता दिखाने पर केन्द्रीय पदक या राष्ट्रपति की ओर से दिया जानेवाला एक विशेष पदक जो परमवीर चक्र से कुछ घटकर माना जाता है।

महावीर्य—पुं० [सं० महत्-वीर्य, ब० स०] १ ब्रह्मा। २ एक बुद्ध का नाम। ३. जैनो के एक अर्हत्। ४ तामस शौच्य मन्वंतर के एक इंद्र। ५ वाराही कन्द।

महावीर्या—स्त्री० [सं० महावीर्य।टाप्] १ सूर्य की पत्नी सज्ञा का एक नाम। २ महा-शतावरी। ३. बन-कपास।

महावृक्ष—पुं० [सं० महत्-वृक्ष, कर्म० स०] १ सेंहुड़। २. करज। ३ ताड़। ४ महापीलु।

महावेग—पुं० [सं० महत्-वेग, ब० स०] १ शिव। २ गरुड।

महावेगा—स्त्री० [सं० महावेग+टाप्] स्कंद की अनुचरी एक मातृका।

महाव्याधि—स्त्री० [सं० महत्-व्याधि, कर्म० स०] बहुत कठिन और प्रायः अचिकित्स्य रोग।

महाव्याहृति—स्त्री० [सं० महती-व्याहृति, कर्म० स०] ऊपर स्थित भूः भुवः और स्वः इन तीनो लोको का समाहार।

महाव्योम—पुं० [सं० महत्-व्योमन, कर्म० स०] वह सारा अनन्त व्योम जिसमे सारा ब्रह्मांड स्थित है। (फर्मामेन्ट)

महाव्रण—पुं० [सं० महत्-व्रण, कर्म० स०] १. कभी अच्छा न होनेवाला व्रण २. नासूर।

महाव्रत—पुं० [सं० महत्-व्रत, कर्म० स०] १ ऐसा व्रत जो लगातार १२ वर्षों तक चलता रहे। २ आश्विन की दुर्गा पूजा या नवरात्र।

महाव्रती (तिन्)—पुं० [सं० महाव्रत+इनि] १. वह जिसने महाव्रत धारण किया हो। २. शिव।

महाशंख—पुं० [सं० महत्-शख, कर्म० स०] १. बहुत बड़ा शंख। २. ललाट। ४. कनपटी की हड्डी। ३. मनुष्य की ठठरी। ५. कुबेर की नौ निधियों मे से एक निधि। ६. एक प्रकार का साँप। ७. सौ शख की सख्या की संज्ञा।

महाशक्ति—स्त्री०[सं० महती-शक्ति, कर्म० स०]१. विश्व की रचना या सृष्टि करनेवाली मूल शक्ति। २ दुर्गा का एक नाम। ३. प्रकृति। ४. आज-कल कोई बहुत बडा या परम प्रबल राष्ट्र जिसकी सैनिक शक्ति बहुत बड़ी हो। (ग्रेट पावर)
पुं० १ कार्तिकेय। २. शिव।

महाशठ—पुं० [सं० महत्-शठ, कर्म० स०] पीला धतूरा।

महाशतावरी—स्त्री० [सं० महती-शतावरी, कर्म० स०] बड़ी शतावरी। सतावर।

महाशय—पुं० [सं० महत्-आशय, ब० स०] १ उच्च और उदार आशयो या विचारोंवाला व्यक्ति। सज्जन। (प्रायः भले आदमियो के नामों के साथ आदरार्थक प्रयुक्त) २ समुद्र। सागर।

महाशय्या—स्त्री० [सं० महती शय्या, कर्म० स०] १. राजाओ के सोने की शय्या। २. सिंहासन।

महाशल्क—पुं० [सं० महत्-शल्क, ब० स०] झींगा मछली।

महाशाखा—स्त्री० [सं० महती-शाखा, ब० स०] नागबला।

महाशासन—पुं०[सं० महत्-शासन, कर्म० स०] १ ऐसी आज्ञा जिसका पालन अनिवार्य हो। २ राजा का वह मंत्री जो उसकी आज्ञाओं या दानपत्रो आदि का प्रचार करता हो।

महाशिव—पुं० [सं० महत्-शिव, कर्म० स०] महादेव।

महाशीता—स्त्री० [सं० महती-शीता, कर्म० स०] शतमूली।

महाशुक्ति—स्त्री० [सं० महती-शुक्ति, कर्म० स०] सीपी।

महाशुक्ला—स्त्री० [सं० महती-शुक्ला, कर्म० स०] सरस्वती। (देवी)

महाशुभ्र—पुं० [सं०महत्-शुभ्र, कर्म० स०] चाँदी।

महाशून्य—पुं० [सं० महत्-शून्य, कर्म० स०] आकाश।

महाशोण—पुं० [सं० महत्-शोण, कर्म० स०] सोन (नद)।

महाश्मशान—पुं० [सं० महत्-श्मशान, कर्म० स०] काशी नगरी।
विशेष—ऐसा कहा जाता है कि काशी के मणिकर्णिका घाट पर चौबीसो घंटे एक न एक शव जलता रहता है।

महाश्रावणिका—स्त्री० [सं० महती-श्रावणिका, कर्म० स०] गोरखमुंडी।

महाश्वास—पुं० [सं० महत्-श्वास, कर्म० स०] १ एक प्रकार का श्वास रोग। २ मरने के समय का अन्तिम श्वास।

महाश्वेता—स्त्री० [सं० महती-श्वेता, कर्म० स०] १ सरस्वती। (देवी) २. दुर्गा। ३ सफेद शक्कर। ४. सफेद अपराजिता।

महाषष्ठी—स्त्री० [सं० महती-षष्ठी, कर्म० स०] १ दुर्गा। २ सरस्वती (देवी)।

महाष्टमी—स्त्री० [सं० महती-अष्टमी, कर्म० स०] आश्विन शुक्ला अष्टमी।

महा-संक्रांति—स्त्री० [सं० महती-संक्रांति, कर्म० स०] मकर संक्रांति।

महासंस्कार—पुं० [सं० महत्-संस्कार, कर्म० स०] मृतक की अंत्येष्टि-क्रिया।

महासंस्कारी (रिन्)—पुं० [सं० कर्म० स०] सत्रह मात्राओं के छंदों की संज्ञा।

महासत्ता—स्त्री० [सं० महती-सत्ता, कर्म० स०] एक विश्व-व्यापिनी सत्ता। (जैन)

महासत्त्व—पुं० [सं० महत्-सत्त्व, ब० स०] १. कुबेर। २. शाक्य मुनि। ३ एक बोधिसत्व।

महासन—पुं० [सं० महत्-आसन, कर्म० स०] सिंहासन।

महासभा—स्त्री० [सं० महती-सभा, कर्म० स०] १. कोई बहुत बड़ी सभा। २. हिन्दू महासभा नामक एक भारतीय दल। ३. राष्ट्र-संघ के तत्त्वावधान मे होनेवाली वह सभा जिसमे संबद्ध समस्त राष्ट्रों के प्रतिनिधि सम्मिलित होते हैं।

महासभाई—पुं० [सं० महासभा+हिं० आई (प्रत्य०)] (हिन्दू) महासभा (दल) का सदस्य या कार्यकर्ता।

महासमुद्र—पुं० [सं०] प्रादेशिक समुद्र को छोड़कर शेष समुद्र का वह सारा विस्तार जिसमे सभी देशो के जहाज बिना रोक-टोक आ-जा सकते हैं। (हाई सी)

महासर्ग—पुं० [सं० महत्-सर्ग, कर्म० स०] प्रलय के उपरान्त होनेवाली सृष्टि।

महासर्ज—पुं० [सं० महत्-सर्ज, कर्म० स०] कटहल का वृक्ष।

महासांतपन—पुं० [सं० महत्-सांतपन, कर्म० स०] एक प्रकार का व्रत जिसमें पाँच दिनों तक क्रम से पंचगव्य, छठे दिन कुश का जल पीकर और सातवें दिन उपवास करते है।

महासांधिविग्रहिक—पुं० [सं० महत्-सांधिविग्रहिक, कर्म० स०] गुप्त-कालीन भारत का वह उच्च अधिकारी जिसे दूसरे राज्यों से संधि और विग्रह करने का अधिकार होता था।

महासागर—पुं० [सं० महत्-सागर, कर्म० स०] १. वह समस्त जल राशि जो इस लोक के स्थल भाग को चारो ओर से घेरे हुए है। २. उक्त के पाँच प्रमुख विभागों (अतलांतक, प्रशांत भारतीय, उत्तर ध्रुवीय और दक्षिण ध्रुवीय) मे से हर एक।

महासामंत—पुं० [सं० महत्-सामंत, कर्म० स०] सामतो का सरदार।

महासारथि—पुं० [सं० महत्-सारथि, ब० स०] अर्जुन।

महासाहसिक—पुं० [सं० महत्-साहसिक, कर्म० स०] चोर। वि० अत्यधिक साहसी।

महासिंह—पुं० [सं० महत्-सिंह, कर्म० स०] वह सिंह जिस पर दुर्गा देवी सवारी करती हैं।

महासिद्धि—स्त्री० [सं० महती-सिद्धि, कर्म० स०] योग में, विशिष्ठ साधना के उपरान्त प्राप्त होनेवाली ये आठ सिद्धियाँ—अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशत्व और वशित्व।

महासिरा—पुं०=मुहासिरा (घेरा)।

महासिल—पुं० [अ०] १. वह धन जो हासिल या प्राप्त किया गया हो। २. आय। आमदनी। ३. मालगुजारी। लगान।

महासीर—पुं० [देश०] एक प्रकार की मछली।

महासुख—पुं० [सं० महत्-सुख, कर्म० स०] १. साधकों को सिद्धि प्राप्त हो जाने पर मिलनेवाला परमानन्द। २. मैथुन। रति। ३. शृंगार। ४. गौतम बुद्ध का एक नाम।

महासूक्ष्मा—स्त्री० [सं० महती-सूक्ष्मा, कर्म० स०] रेत।

महासेन—पुं० [सं० महती-सेना, ब० स०] १. शिव। २. कार्तिकेय। ३. बहुत बड़ी सेना का सेनानायक।

महास्कंध—पुं० [सं० महत्-स्कंध, ब० स०] ऊँट।

महास्कंधा—स्त्री० [सं० महास्कंध+टाप्] जामुन का वृक्ष।

महास्थली—स्त्री० [सं० महती-स्थली, कर्म० स०] पृथ्वी।

महास्नायु—पुं० [सं० महती-स्नायु, कर्म० स०] शरीर की प्रधान रक्त-वाहिनी नाड़ी।

महास्पद—वि० [सं० महत्-आस्पद, ब० स०] १. उच्चपदस्थ। २. शक्तिशाली।

महाहंस—पुं० [सं० महत्-हंस, कर्म० स०] १ एक प्रकार का हंस। २ विष्णु।

महाहनु—पुं० [सं० महती-हनु, ब० स०] १. शिव। २. तक्षक जाति का एक प्रकार का साँप।

महाहस्त—पुं० [सं० महत्-हस्त, ब० स०] शिव।

महाहास—पुं० [सं० महत्-हास, कर्म० स०] अट्टहास।

महाहि—पुं० [सं० महत्-अहि, कर्म० स०] वासुकि (नाग)।

महाहिक्का—स्त्री० [सं० महती-हिक्का, कर्म० स०] अत्यधिक अर्थात्-कुछ समय तक निरंतर हिचकी होते रहने का रोग।

महिं—अव्य०=महँ (में)।

महि—स्त्री० [सं०√मह् (पूजा)+इन्] १ पृथ्वी। २ महिमा। ३ महत्ता।

महिकांशु—पुं० [सं० महिका-अंशु, ब० स०] चंद्रमा।

महिका—स्त्री० [सं०√मह् (पूजा)+कुन्, वु—अक,+टाप्] १. पृथ्वी। २ कुहरा। पाला। हिम।

महिख†—पुं०=महिष।

महिखरी—स्त्री० [?] एक प्रकार का छंद जिसके प्रत्येक चरण में अट्ठाइस मात्राएँ और चौदह मात्राओ पर यति होती है।

महिदास—पुं०=महीदास।

महिधर—पुं०=महीधर।

महिनंदिनी—स्त्री० दे० 'महीपुत्री'।

महिपाल—पुं०=महीपाल।

महिपुत्र—पुं० =महीपुत्र (मंगल)।

महिफल—पुं० [सं० मधुफल] मधु। शहद।

महिमा (मन्)—स्त्री० [सं० महत्-+इमनिच्,] १. महत्त्वपूर्ण होने की अवस्था या भाव। गौरव। २. महत्ता की होनेवाली प्रसिद्धि। ३. वह स्थिति जिसमे किसी की क्रियाशीलता, प्रभावोत्पादकता आदि की प्रसिद्धि तथा मान्यता लोक मे होती है। ४. उक्त क्रियाशीलता तथा प्रभावोत्पादकता। जैसे—यह तीर्थ या गीता की महिमा थी। ५. आठ सिद्धियो मे से एक जिसकी प्राप्ति होने पर मनुष्य इच्छानुसार अपना विस्तार कर लेता है।

महिमाधर—वि० [सं० महिमधर]=महिमावान्।

महिमावान्—वि० [सं० महिमवान्] महिमा से युक्त। महिमावाला। पुं० पितरों का एक गण या वर्ग।

महिम्न—पुं० [सं० महि√म्ना (अभ्यास)+क] शिव का एक प्रसिद्ध स्तोत्र जिसे पुष्पदंताचार्य ने रचा था।

महिय—स्त्री०=मही।

महियाँ†—अव्य० [स० मध्य; प्रा० मज्झ=मँह] =महँ (मे)।

महिया—पु० [हिं० महना] [स्त्री० महियारी] ग्वाला।
स्त्री० ऊख के रस का फेन।

महियाउर—पु० [हिं० मही=मठा+चाउर=चावल] दही के मठे मे पकाया हुआ चावल। महेरा।

महिर—पुं० [पु० मह+इलच्, ल=र] सूर्य।

महिरांण†—पु० [स० महार्णव] समुद्र।

महिरावण—पु० [स०] पुराणानुसार एक राक्षस का नाम।

महिला—स्त्री० [स०√मह्+इलच्+टाप्] १. स्त्री। औरत। २ स्त्री के लिए प्रयुक्त होनेवाला एक आदरसूचक शब्द। ३ प्रियगु (लता)। ४ रेणुका। नामक गन्ध-द्रव्य।

महिष—पु० [स० √मह+टिषच्] [स्त्री० महिषी] १ भैसा। २ वह राजा जिसका अभिषेक शास्त्रानुसार हुआ हो। ३. एक प्राचीन वर्ण-सकर जाति। ४ एक साम का नाम। ५ कुश द्वीप का एक पर्वत।

महिष-कंद—पु० [स० मध्य० स०] भैसा कद।

महिषघ्नी—स्त्री० [स० महिष√उहन् (मारना)+टक्+ङीप्] दुर्गा।

महिष-ध्वज—पु० [स० ब० स०] १ यमराज। २ जैनों के एक अर्हत्।

महिष-मंडल—पु० [स०] प्राचीन भारत मे, आधुनिक हैदराबाद के दक्षिण भाग का एक नाम।

महिषमर्दिनी—स्त्री० [स० महिष√मृद् (मर्दन करना)+णिनि+ङीप्] दुर्गा का एक नाम और रूप।

महिष-वल्ली—स्त्री० [स० मध्य० स०] छिरेटा (लता)।

महिष-वाहन—पु० [स० ब० स०] यमराज।

महिषाकार—वि० [स० महिष-आकार, ब० स०] १ भैसे के आकार का। २ बहुत बड़े डील-डौलवाला।

महिषाक्ष—पु० [स०महिष-अक्षि, ब०स०,+षच्] १ भैसा। २. गुग्गुल।

महिषार्दन—पु० [स० महिष√अर्द (मर्दन करना)+ल्युट्—अन] कार्तिकेय।

महिषासुर—पु० [स० महिष-असुर, मध्य० स०] भैसे के-से मुँहवाला एक प्रसिद्ध दैत्य जो रंभ नामक दैत्य का पुत्र था। इसका वध दुर्गा ने किया था। (पुराण)

महिषी—स्त्री० [स० महिष+ङीष्] १. भैंस। २ राजा की वह पटरानी जिसका उसके साथ अभिषेक हुआ हो। ३ सैरिंध्री। ४ एक प्रकार की ओषधि।

महिषी-कद—पु० [स० मध्य० स०] भैसा कद। शुभ्रालु।

महिषी-प्रिया—पु० [स० ष० त०] शूकी (घास)।

महिषेश—पु० [स० महिष-ईश, ष० त०] १ यमराज। २ महिषासुर। (दे०)

महिषोत्सर्ग—पु० [स० महिष-उत्सर्ग, ष० त०] एक प्रकार का यज्ञ।

महिष्ठ—वि० [स०√मह् (पूजा)+इष्ठन्] १. बहुत बड़ा। २ महिमा-पूर्ण।

महिसुर—पु०=महीसुर।

मही—स्त्री० [स० √मह+अच्+ङीष्] १ पृथ्वी। २ पृथ्वी के आधार पर एक की सख्या। ३ मिट्टी। ४. खाली स्थान। अवकाश। ५. नदी। ६. सेना। फौज। ७. समूह। ८. गाय। गौ। ९. एक प्रकार का छद जिसमे एक लघु और एक गुरु मात्रा होती है। जैसे—मही, लगी इत्यादि।
पु० [हिं० मथित] मट्ठा।

महिक्षित—पु० [स० मही√क्षि (निवास या हिंसा)+क्विप्, तुक्-आगम] राजा।

महीखड़ी—स्त्री० [देश०] सिकलीगरो का एक औजार।

महीज—पु० [स० मही√जन् (उत्पन्न करना)+ड] १ मगल ग्रह। २. अदरक।

मही-तल—पु० [स० ष० त०] पृथ्वी। ससार।

महीदास—पु० [स० ष० त०] ऐतरेय ब्राह्मण के रचयिता एक प्रसिद्ध ऋषि।

महीदेव—पु० [स० ष० त०] भू-देव। ब्राह्मण।

महीधर—पु० [स० ष० त०] १ पर्वत। पहाड। २ शेषनाग। ३. बौद्धो के अनुसार एक देवपुत्र। ४. एक प्रकार का वार्णिक वृत्त जिसमे चौदह बार क्रम से लघु और गुरु आते हैं।

महीध्र—पु० [सं० मही√धृ (धारण)+क] महीधर।

महीध्रक—पु० [स० महीध्र+कन्] =महीध्र।

महीन—वि० [स० महत्+क्षीन] (स० क्षीण) १ जिसका घेरा, तल या विस्तार इतना कम या थोडा हो कि सहसा दिखाई न दे। सूक्ष्म। 'मोटा' का विपर्याय। जैसे—महीन काम, महीन निशान। २ बहुत ही पतला या बारीक। झीना। जैसे—कपडे का महीन पोत।
पद—महीन काम=ऐसा काम जिसे करने मे बहुत आँख गडाने और सावधानी रखने की आवश्यकता होती हो। जैसे—मीना-पिरोना, चित्र-कारी, नक्काशी आदि।
३ (स्वर) जो बहुत कम ऊँचा या तेज हो। कोमल। धीमा। मद। जैसे—महीन आवाज।
पु० [स०] राजा।

महीना—पु० [स० मास या मा मि० फा० माह] १ काल का एक प्रसिद्ध परिमाण जो वर्ष के बारहवे अश के बराबर और प्राय तीस दिनो का होता है। मास। माह। २ हर महीने अर्थात् महीना भर काम करने के बदले मिलनेवाला वेतन या वृत्ति। ३ स्त्रियो का रजोधर्म या मासिक धर्म जो प्राय महीने-महीने भर पर होता है।
मुहा०—(स्त्री का) महीने से होना=रजोधर्म मे होना। रजस्वला होना।

महीप—पु० [स० मही√पा (रक्षा)+क] राजा।

महीपति—पु० [स० ष० त०] राजा।

महीपाल—पु० [स० मही√पाल् (पालन)+णिच्+अण्] राजा।

मही-पुत्र—पु० [ष० त०] मगल ग्रह।

मही-पुत्री—स्त्री० [ष० त०] सीता जी।

मही-प्राचीर—पु० [ष० त०] समुद्र।

मही-भर्ता (भर्तृ)—पु० [ष० त०] [स्त्री० महीभर्त्री] पृथ्वी (के निवासियो) का भरण-पोषण करनेवाला, राजा।

महीभुक् (भुज्)—पु० [स० मही√भुज् (उपभोग करना)+क्विप्, कुत्व] राजा।

महीभृत्—पु० [स० मही√भृ (पालन करना)+क्विप्, तुक्] १ राजा। २ पर्वत। पहाड़।

मही-मंडल—पुं०[सं० ष० त०] पृथ्वी। भूमंडल।

महीन—पु०[देश०] एक प्रकार का गन्ना।

महीयान (यस्)—वि०[सं० महत्+ईयसुन्] [स्त्री० महीयसी]१ किसी की तुलना में अधिक बड़ा। २. महान्। ३ शक्तिशाली।

महीर—स्त्री०[हिं० मही]१. मक्खन को तपाने पर निकलनेवाली तलछट। २ महेरा। (दे०)

महीरावण—पु०[सं०]१. अद्भुत रामायण के अनुसार रावण के एक पुत्र का नाम। २ महिरावण।

महीरुह—पुं०[सं० मही√रुह (उत्पन्न होना) +क] वृक्ष।

महीलता—स्त्री०[सं० स० त०] केंचुआ।

महीश—पु०[मही-ईश, ष० त०]राजा।

मही-सुत—पु०[ष० त०]मगल ग्रह।

मही-सुता—स्त्री०[ष० त०]सीता जी।

मही-सुर—पु०[स० त०] ब्राह्मण।

मही-सूनु—पु०[ष० त०]मगल ग्रह।

महुँ—अव्य०=महँ।

महु†—पु०=मधु।

महुअर—पु० [स० मधुकर; प्रा० महुअर]१. सँपेरो का एक प्रकार का बाजा जिसे तुमड़ी या तूंबी भी कहते हैं। २. एक प्रकार का इंद्रजाल का खेल जो उक्त बाजा बजाकर किया जाता है और जिसमे खिलाड़ी अपने प्रतिद्वन्द्वी को अपनी इच्छा के वश मे करके अनेक प्रकार के शारीरिक कष्ट देने का प्रयत्न करता है।

स्त्री० [हिं० महुआ] १ वह भेड जिसका ऊन कालापन लिए लाल रग का होता है। २ महुए को पीसकर उसके चूर्ण से बनाई जानेवाली रोटी।

महुअरि—स्त्री०=महुअर।

महुअरी†—स्त्री०[हिं० महुआ]महुए के रस से साने हुए आटे की पकाई हुई रोटी।

महुआ—पु० [स० मधूक, प्रा० महुअ]१ बलुई भूमि में होनेवाला एक वृक्ष जिसका काड चिकना तथा धूसरित होता है और फूल सफेद तथा पीले रग के होते हैं तथा पत्ते रोएँदार होते है। २. इस वृक्ष के छोटे, मीठे, सफेद फल जो खाये जाते हैं, और उनके पास से शराब बनाई जाती है। ३. धूसरित रंग का बैल। ४. हलका पीला रग।

†पु०=मुमरा (मछली)।

वि०[हिं० महना=मथना] मथा हुआ। जैसे—महुआ दही।

महुआ-दही—पु०[हिं० महना=मथना+दही] वह मथा हुआ दही जिसमें से मक्खन निकाल लिया गया हो।

महुआरी—स्त्री०[हिं० महुआ+वारी]वह स्थान जहाँ महुए के बहुत से वृक्ष हों।

महुकम—वि०=मुहकम (पक्का)।

महुम्म—वि० [हिं० महुआ] महुए के रंग का। हलके पीले रग का।

महुर†—वि०=मधुर।

महुरेठी†—स्त्री०=मुलेठी।

महुर्खा†—पुं०=महोछा।

महुला—वि०[हिं० महुआ] [स्त्री० महुली] महुए के रग का। हलका पीला।

पु० १. हलका पीला रंग। २. हलके पीले रंग का बैल।

महुवर—पुं०=महुअर।

महुवा—पु०=महुआ।

महूक*—पु०[स० मधूक]१. महुए का पेड़ और उसका फल। २. मुलेठी।

महूरत†—पु०=मुहूर्त।

महूम—स्त्री०=मुहिम। उदा०—दिग विजय काज महूम की।—पद्‌माकर।

महूव—पु०=मधूक (महुआ)।

महेंद्र—पु०[सं० महत्-इंद्र, कर्म० स०]१. विष्णु। २ इन्द्र।

महेंद्राल—स्त्री०=महेंद्री (नदी)।

महेंद्री—स्त्री०[स०] गुजरात प्रदेश की एक नदी।

महे†—अव्य०[सं० मध्य]मे। अन्दर।

महेर—पु० [देश०]१ झगड़ा। बखेडा। २. व्यर्थ की देर या विलम्ब। क्रि० प्र०—करना।—डालना।

†पुं०=महेरा।

†स्त्री०=महेरी।

महेरा—पु०[हिं० मही+एरा (प्रत्य०)]१ दही। मठा। २ दही मे पकाया हुआ चावल, खेसारी का आटा या ऐसी ही और कोई चीज।

†पु०१.=महेर। २.=महेला।

महेरी—स्त्री०[हिं० महेरा]१ उबाली हुई ज्वार जिसे लोग नमक मिर्च से खाते हैं। २. दही के साथ पकाया हुआ चावल। महेरा।

वि०[हिं० महेर] १. झगडा-बखेड़ा खडा करनेवाला। २ व्यर्थ देर लगानेवाला।

महेल*—पु०=महल।

महेला—पु०[हिं० माष]चने, उडद, मोठ आदि को उबालकर और घी, गुड आदि डालकर बनाया हुआ वह मिश्रण जो पशुओं को खिलाया जाता है।

*वि०[?] सुन्दर।

महेलिया—स्त्री०[स० महल्लिका] माल ढोनेवाली एक प्रकार की बड़ी नाव।

महेश—पु०[स० महत्-ईश, कर्म० स०]१ ईश्वर। २ शिव।

महेश-बंधु—पु०[सं० ष० त०] बैल।

महेशान—प० [स० महत्-ईशान, कर्म० स०] [स्त्री० महेशानी] शिव।

महेशानी—स्त्री०[स० महेशान+ङीष्]१. पार्वती। २ दुर्गा।

महेशी—स्त्री०=महेश्वरी (पार्वती)।

महेश्वर—पु०[स० महत्-ईश्वर, कर्म० स०] [स्त्री० महेश्वरी]१ ईश्वर। २. शिव। ३ सफेद महार। ४. सोना। स्वर्ण।

महेश्वरी—स्त्री०[सं० महत्-ईश्वरी, कर्म० स०] दुर्गा।

महेषुधि—वि०[स० महत्-इषुधि, ब० स०] बहुत बड़ा धनुर्धारी।

महेष्वास—पु०[स० महत्-इष्वास, कर्म० स०] बहुत बड़ा धनुर्धारी योद्धा।

महेस—पुं०=महेश।

महेसिया—पु०[हिं० महेश] एक प्रकार का बढ़िया अगहनी धान।

महेली—स्त्री०=महेश्वरी।
महेसुर*—पुं० १. =महेश्वर। २ =माहेश्वर।
महैत—वि०[हिं० महा] पूरी तरह से व्याप्त। ओतप्रोत।
महैला—स्त्री० [सं० महती-एला, कर्म० स०] बड़ी इलायची।
महोखा†—पुं०=मधूक (महुआ)।
पुं०=महोखा।
महोक्ष—पुं० [सं० महत्-उक्षन, कर्म० स०, + अच्] १ बड़ा बैल। २ कामशास्त्र मे वृषभ जाति का पुरुष।
महोखा†—पुं०=मधूक (महुआ)।
†पुं०=महोखा।
महोखा†—पुं०[सं० मधूक] कौए के आकार का एक पक्षी।
महोगनी—पुं०[अं०] एक प्रकार का बहुत बडा पेड जो सदा हरा रहता है। इसके फल खाये जाते है, और लकडी इमारत के काम आती है।
महोच्चार—पुं०[सं० महत्-उच्चार, कर्म० स०] ऊँचा या घोर शब्द। घोष। उदा०—मूल गये देवता उदय का महोच्चार था मै ही।—दिनकर।
महोच्छव†—पुं०=१. महोछा। २. महोत्सव।
महोछव—पुं०१ =महोछा। २ =महोत्सव।
महोछा†—पुं०[सं० महोत्सव] १ महोत्सव। २ एक उत्सव जिसमे खत्री संप्रदाय बाबा लालू जसराम की पूजा करते है। यह श्रावणमास के कृष्ण पक्ष मे होता है।
महोटी—स्त्री०[सं० ब० स०,+ङीप्] कटैया।
महोती—स्त्री०[हिं० महुआ] महुए का फल। कुलेंदी।
महोल्का—पुं०=महोल्का।
महोत्सव—पुं०[सं०महत्-उत्सव, कर्म० स०] बहुत बडा उत्सव या समारोह।
महोदधि—पुं०[सं० महत्-उदधि, कर्म० स०] समुद्र।
महोदय—पुं०[सं० महत्-उदय, ब० स०] [स्त्री०महोदया] १ अधिपति। स्वामी। २. महानुभाव। महाशय। ३ अपने से बडे व्यक्ति के लिए अथवा औपचारिक रूप से किसी अच्छ व्यक्ति के लिए प्रयुक्त किया जानेवाला एक आदरसूचक सबोधन ४ स्वर्ग। ५ महाफूल। ६ कान्यकुब्ज प्रदेश का एक नाम।
महोदया—स्त्री०[सं० महोदय+टाप्] नागबला। गुलशकरी। गगेरन। स्त्री० स० 'महोदय' का स्त्री०।
महोदर—पुं० [सं० महत्-उदर, ब० स०] १. शिव। २ धृतराष्ट्र का एक पुत्र। ३. एक असुर का नाम। ४ एक नाग का नाम।
वि० बहुत बड़े पेटवाला।
महोदरी—वि० स्त्री०[सं० महोदर+ङीप्] बड़े पेटवाली।
स्त्री० भगवती का एक नाम।
महोदार—वि०[सं० महत्-उदार, कर्म० स०] बहुत अधिक उदार।
महोद्यम—वि०[सं० महत्-उद्यम, ब० स०] बहुत बडा उद्यम या बडे बड़े काम करनेवाला।
महोना—पुं०[हिं० मुँह] पशुओ के मुँह आदि पकने का एक रोग।
महोन्नत—वि०[सं० महत्-उन्नत, कर्म० स०] बहुत अधिक उन्नत या ऊँचा।
महोपाध्याय—पुं०[सं० महत् उपाध्याय, कर्म० स०] बहुत बड़ा अध्यापक या पडित।
महोबा—पुं०[देश०] बुदेलखण्ड का एक प्राचीन नगर जो हमीरपुर जिले मे है।
महोबिया—वि०=महोबी।
महोबी—वि०[हिं० महोबा+ई (प्रत्य०)] १. महोबे का। महोबा-सबधी। २. महोबे मे होनेवाला।
पुं० महोबे का निवासी।
महोरग—पुं०[सं० महत्-उरग, कर्म० स०] बहुत बडा साँप।
महोरस्क—वि० [सं० महत्-उरस्, ब० स०+कप्] जिसका वक्षःस्थल विशाल हो।
महोर्मि—स्त्री० [सं० महती-ऊर्मि, कर्म० स०] बहुत ऊँची या बड़ी लहर।
महोला—पुं० [अ० मुहेल] १. हीला-हवाला। बहाना। २ चकमा। धोखा।
महौघ—पुं०[सं० महत्-ओघ, कर्म० स०] समुद्र की बाढ या तूफान।
महौजस्क—वि० [सं० महत्-ओजस्, ब० स०,+कप्] बहुत अधिक तेजस्वी। बहुत तेजवान्।
महौजा (जस्)—वि०[सं० महत्-ओजस्, ब० स०]बहुत अधिक तेजस्वी। पुं० एक असुर जो काल का पुत्र था।
महौली—स्त्री०[देश०] एक प्रकार का वृक्ष जिसकी लकडी इमारत के काम आती है।
महौषध—पुं०[सं० महत्-औषध, कर्म० स०] १. बहुत बडा और प्राय पूरा गुण दिखानेवाला औषध। २. भुजित स्वर। भूम्माहुल्य। ३. सोठ। ४ लहसुन। ५ बाराही कन्द। गेठी। ६ बछनाग। ७ पीपल। ८ अतीस।
महौषधि—स्त्री०[सं० महती-ओषधि, कर्म० स०] १. कुछ विशिष्ट ओषधियो का चूर्ण जो महास्थान या अभिषेकादि के जल मे मिलाया जाता है। २ दूब। ३ सजीवनी। ४ लजालू नाम की लता।
महौषधी—स्त्री०[सं० महती-ओषधी, कर्म० स०] १ सफेद भटकटैया। २ ब्राह्मणी। ३ कुटकी। ४ अतिबला। ५. हिल मोचिका।
मह्यो—पुं०[हिं० मही] मट्ठा। छाछ।
माँ—स्त्री०[सं० अबा या माता] जन्म देनेवाली, माता। जननी।
पद—माँ-जाया।
†अव्य०=मे।
माँकड़ी—स्त्री० [हिं० मकडी] १. कमखाब बुननेवालो का एक औजार जिसमे डेढ डेढ बालिश्त की पाँच तीलियाँ होती हैं। २ पतवार के ऊपरी सिरे पर लगी हुई और दोनों ओर निकली हुई एक लकड़ी। ३. जहाज मे रस्से बाँधने के खूँटे आदि का बनाया हुआ ऊपरी भाग। ४ दे० 'मकडी'।
माँख*—पुं०=माख (अप्रसन्नता)।
माँखण†—पुं०=मक्खन (राग)।
माँखना*—अ०=माखना (क्रोध करना)।
माँखा*—पुं०[सं० मक्षिका] मच्छर। उदा०—जू उँबरी जेहि भीतर माँखा।—जायसी।

मांखी*—स्त्री०=मक्खी।

मांग—स्त्री०[हिं० मांगना] १. मांगने की क्रिया या भाव। याचना। २. अर्थशास्त्र में वह स्थिति जिसमें लोग (क्रेता) कोई चीज किसी निश्चित मूल्य पर खरीदना चाहते हों। ३. किसी निश्चित मूल्य पर तथा किसी निश्चित अवधि में क्रेताओं द्वारा किसी चीज की खरीदी या चाही जानेवाली मात्रा। ४. बिक्री या खपत आदि के कारण किसी पदार्थ के लिए लोगों को होनेवाली आवश्यकता या चाह। जैसे—बाजार में देशी कपड़ों की मांग बढ़ रही है। ५ किसी से आधिकारिक रूप में या दृढ़तापूर्वक यह कहना कि हमें अमुक अमुक सुभीते मिलने चाहिएँ। (डिमान्ड) जैसे—दुकानदारों की मांग, मजदूरों की मांग, राजनीतिक अधिकारों की मांग।

स्त्री०[सं० मार्ग ?]१ सिर के बालों को विभक्त करके बनाई जानेवाली रेखा। सीमांत।

पद—**मांग-चोटी, मांग-जली, मांग-पट्टी।**

मुहा०—**मांग उजड़ना**=विवाहिता स्त्री का विधवा होना। **मांग कोख से सुखी रहना या जुड़ाना**=स्त्रियों का सौभाग्यवती और संतानवती रहना (आशीर्वाद)। **मांग पारना या फारना**=केशों को दो ओर करके बीच मे मांग निकालना। **मांग बांधना**=कंघी-चोटी या केश-विन्यास करना। **मांग संवारना**=कंघी करके बाल संवारना।

२ किसी पदार्थ का ऊपरी भाग। सिरा। (क्व०) ३ सिल का वह ऊपरी भाग जिस पर पिसी हुई चीज रखी जाती है। ४. नाव का अगला भाग। दुम सिरा। ५. दे० 'मांगी'।

मांग-चोटी—स्त्री०[हिं०] स्त्रियों का केश-विन्यास।

मांग-जली—स्त्री०[हिं०] विधवा। रांड़।

मांग-टीका—पु०[हिं०] एक प्रकार का मांग-फूल जिसमे मोतियों की लड़ी लगी रहती है।

मांगन*—पु० [हिं० मांगना]१ मांगने की क्रिया या भाव। २ मंगता। भिखमंगा। भिक्षुक।

मांगनहार†—पुं० [हिं० मांगना] मांगनेवाला।

पु०=मंगता (भिखमंगा)।

मांगना—स० [सं० मार्गण=याचना]१. किसी से यह कहना कि आप हमें अमुक वस्तु या कुछ धन दें। याचना करना। जैसे—मैंने उनसे एक पुस्तक मांगी थी। २. खरीदने के उद्देश्य से किसी से कुछ लाकर प्रस्तुत करने या दिखाने के लिए कहना। जैसे—दुकानदार से पुस्तक मांगना। ३. किसी से कोई आकांक्षा पूरी करने के लिए कहना। याचना या प्रार्थना करना। ४. अपनी कन्या या पुत्र के साथ विवाह करने के लिए किसी से उसके पुत्र या कन्या के संबंध मे प्रस्ताव करना। ५.किसी से अधिकारपूर्वक यह कहना कि तुम हमें इतना धन या अमुक वस्तु उधार दो। ६. भिक्षा मांगना। हाथ पसारना।

†पु० दी हुई वस्तु वापस देने के लिए किसी से कहना।

मांग-पट्टी—स्त्री०=मांग चोटी।

मांग-पत्र—पु०[हिं०+सं०]वह पत्र जिस पर कोई किसी व्यापारी को यह लिखता है कि आप हमे अमुक अमुक वस्तुएँ भेज दें।(आर्डर फार्म) २. वह पत्र जिसमें किसी से अधिकारपूर्वक यह कहा जाय कि अमुक चीज मुझे दे दो।

मांग-फूल—पु०[हिं०]मांग में लगाया जानेवाला एक प्रकार का टीका।

मांग-भरी—वि०स्त्री० [हिं० मांग+भरना] सधवा। सुहागिन।

मांगल-गीत—पु०[सं० मांगल्य-गीत]वह शुभ गीत जो विवाह आदि मंगल अवसरों पर गाये जाते हैं।

मांगलिक—वि०[सं० मंगल+ठक्—इक, वृद्धि] १. मंगल-करनेवाला। शुभ। २. मंगल कार्यों से सम्बन्ध रखनेवाला। जैसे—मांगलिक कृत्य। पुं० वह जो नाटक आदि विशिष्ट अवसरों पर मंगल पाठ करता हो।

मांगल्य—वि०[सं० मंगल+ष्यञ् वृद्धि] शुभ। मंगलकारक। पु० 'मंगल' की अवस्था या भाव। मंगलता।

मांगल्य-कामा—स्त्री० [सं० ब० स,०+टाप्] १ दूब। २. हलदी। ३ ऋद्धि नामक ओषधि। ४. गोरोचन। ५ हरीतकी। हर्रे।

मांगल्य-कुसुमा—स्त्री०[सं० ब० स,०+टाप्]शंखपुष्पी।

मांगल्य-प्रवरा—स्त्री०[सं० स० त०] बच।

मांगल्या—स्त्री०[सं० मांगल्य+टाप्]१. गोरोचन। २. जीवनी। ३. शमी।

मांगा—पु०[हिं० मांगना] मांगने विशेषत. मंगनी मांगने की क्रिया या भाव।

वि०[स्त्री० मांगी] मंगनी मांगा हुआ। मंगनी का।

मांगी—स्त्री०[सं० मार्ग ? हिं० मांग] धुनियों की धुनकी मे वह लकड़ी जो उसकी उस डांड़ी के ऊपर लगी रहती है जिस पर तांत चढ़ाते हैं।

मांगुर—स्त्री०[?] एक प्रकार की मछली।

मांच—पु०[देश०]१ पाल मे हवा लगने के लिए चलते हुए जहाज का रुख कुछ तिरछा करना। (लश०) २ पाल के नीचेवाले कोने में बँधा हुआ वह रस्सा जिसकी सहायता से पाल को आगे बढ़ाकर या पीछे हटाकर हवा के रुख पर करते है। (लश०)

†स्त्री०=मांच।

मांचना—अ०[हिं० मचना] १. प्रसिद्ध होना। २ लीन होना। उदा०—*स्याम प्रेम रस मांची।*—सूर।

अ०=मचना।

†स०=मचाना।

मांचा—पु० [सं० मंच, मञ्च] [स्त्री० अल्पा० मांची] १ पलंग। खाट। २ बैठने की पीढ़ी। ३. मचान।

मांछ—स्त्री० [सं० मत्स्य] मछली।

†पु०=मांच।

मांछना—अ०[सं० मध्य ?] घुसना। पैठना। (लश०)

मांछर†—स्त्री० =मछली।

†पु०=मच्छड़।

मांछली†—स्त्री०=मछली।

मांछी—स्त्री०=मक्खी।

मांज—स्त्री०[देश०]१. दलदली भूमि। २ कछार। तराई। ३ नदी के खिसकने के कारण निकली हुई भूमि। गंग-बरार।

मांजना—सं०[सं० मञ्जन]१. कोई चीज अच्छी तरह साफ करने के लिए किसी दूसरी चीज से उसे अच्छी तरह मलना या रगड़ना। जैसे—बरतन मांजना। २ जुलाहों का सूत चिकना करने के लिए उस पर सरेस का पानी रगड़ना। ३. डोर या नख पर मांझा लगाना। ४. कुम्हारों का

खपुए के तवे पर पानी देकर उसे ठीक करने के लिए उसके किनारे झुकाना। ५. किसी काम या चीज का अभ्यास करना। जैसे—(क) लिखने के लिए हाथ माँजना। (ख) गाने के लिए गीत या राग माँजना।

मांजर†—पुं०=पंजर (ठठरी)।

मांजा—पुं० [देश०] पहली वर्षा का फेन जो मछलियों के लिए मादक कहा गया है।

†पुं०=माँझा।

माँ-जाया—पुं० [हिं० माँ+जाया=जात] [स्त्री० माँजाई] माँ से उत्पन्न, अर्थात् सगा भाई। सहोदर।

मांजिष्ठ—वि० [सं० मंजिष्ठा+अण्] १ मजीठ से बना हुआ। २. मजीठ के रंग का। ३ मजीठ-सम्बन्धी। मजीठ का।

पुं० एक प्रकार का मूत्र रोग या प्रमेह जिसमे मजीठ के रंग का पेशाब होता है।

मांझ—अव्य० [सं० मध्य] मे। भीतर। बीच।

पुं० १. अन्तर। फरक। २ नदी के बीच मे निकली हुई रेतीली भूमि।

मांझा—पुं० [सं० मध्य] १ नदी के बीच की सूखी जमीन या टापू। २. वृक्ष का तना। ३ वे कपड़े जो वर और कन्या को विवाह से पहले पहनाये जाते हैं। ४ पगड़ी पर लगाया जानेवाला एक तरह का आभूषण। ५. एक प्रकार का ढाँचा जो गोड़ाई के बीच मे रहता है और जो पाई को जमीन पर गिरने से रोकता है। (जुलाहे)

पुं० [हिं० माँजना] लेई, शीशे की बुकनी आदि का वह रूप जो डोर या नख पर उसे तेज तथा धारदार करने के लिए चढ़ाया जाता है।

क्रि० प्र०—चढ़ाना।—देना।

†पुं० १.=मझा (बड़ी खाट)। २=माँजा (फेन)।

मांझिल—वि० [सं० मध्य] मध्य का। बीच का।

क्रि० वि० बीच या मध्य मे।

मांझी—पुं० [सं० मध्य, हिं० मांझ?] केवट। मल्लाह।

†पुं०=मध्यस्थ।

पुं० [?] बलवान। (डिं०)

माँट—पुं० [सं० मट्टक] १ मिट्टी का बड़ा बरतन। मटका। कुंडा। २ घर के ऊपर की कोठरी। अटारी। कोठा।

माँठ—पुं० [सं० मट्टक] १. मटका। २ कुंडा। २ नील घोलने का बड़ा मटका।

माँठी—स्त्री० [देश०] फूल नामक धातु की ढली हुई एक प्रकार की चूड़ियाँ जो देहाती स्त्रियाँ पहनती हैं।

†स्त्री०=मठरी या मठ्ठी (पकवान)।

माँड़—पुं० [सं० मण्ड] उबाले या पकाये हुए चावलो में से बाकी बचा हुआ पानी जो गिरा या निकाल दिया जाता है। पसाव। पीच।

स्त्री० [हिं० माँड़ना] १. माँडने की क्रिया या भाव। २ एक प्रकार का राग जिसका प्रचलन राजस्थान मे अधिक है। ३. एक प्रकार की रोटी। उदा०—झालर माँड आए घिउ पोए।—जायसी।

माँड़ना—स० [सं० मंडन] १ मर्दन करना। मसलना। २. गूँधना। सानना। जैसे—आटा माँड़ना। ३. लेप करना। पोतना। ४. सजाना या सँवारना। ५ अन्न की बालो मे से दाने झाड़ना। ६. ठानना। किसी प्रकार की क्रिया संपन्न करना अथवा उसका आरम्भ करना। जैसे—खाते या बही में कोई रकम माँडना, अर्थात् चढ़ाना या लिखना।

मुहा०—पग माँड़ना=पैर रोकना। ठहरना। रुकना। उदा०—आयी हूँ पग माँडि अहीर।—प्रिथीराज। बाद माँड़ना=(क) हठ करना। (ख) विवाद या बहस करना। उदा०—जाणे बाद माँड़ियौ जीपण।—प्रिथीराज।

७ दे० 'मलाना'।

माँडनी†—स्त्री० [सं० मंडन; हिं० माँडना] १ माँडने की क्रिया या भाव। २. किनारा। हाशिया। ३ मगजी। गोट।

मांडलिक—पुं० [सं० मंडल+ठक्, ठ=इक्, वृद्धि] १ मंडल का प्रधान प्रशासक। २ वह छोटा राजा जो किसी चक्रवर्ती या बड़े राजा के अधीन हो और उसे कर देता हो।

३. शासन का कार्य।

वि० मंडल संबंधी।

मांडव†—पुं०=मंडप।

मांडवी—स्त्री० [सं०] राजा जनक के भाई कुशध्वज की कन्या जिसका विवाह राजा दशरथ के पुत्र भरत से हुआ था।

मांडव्य—पुं० [सं०] १ एक प्राचीन ऋषि जिनको बाल्यावस्था के किये हुए अपराध के कारण यमराज ने सूली पर चढ़वा दिया था। २ एक प्राचीन जाति। ३ एक प्राचीन नगर।

माँड़ा—पुं० [सं० मंड] १. आँख मे झिल्ली पड़ने का एक रोग। २ इस प्रकार आँख मे पड़नेवाली झिल्ली।

पुं० [हिं० माँडना=गूँधना] १. एक प्रकार की बहुत पतली पूरी जो मैदे की होती और घी मे पकती है। लुच्ची। २. पराठा या परौंठा नामक पकवान। ३. उलटा या चीला नामक पकवान।

†पुं०=मँड़वा (मंडप)।

माँड़ी—स्त्री० [सं० मंड] १ भात का पसाव या माँड जो प्राय कपड़े या सूत पर कलफ करने के लिए लगाते हैं। २ उक्त काम के लिए बनाया जानेवाला जुलाहों का एक प्रकार का घोल या मिश्रण।

क्रि० प्र०—चढ़ाना।—देना।—लगाना।

मांडूक—पुं० [सं० मंडूक+अण्,] प्राचीन काल के एक प्रकार के ब्राह्मण जो वैदिक मंडूक शाखा के अंतर्गत होते थे।

मांडूकायनि—पुं० [सं० मंडूक+फिञ्, फ—आयन] एक वैदिक आचार्य।

मांडूक्य—पुं० [सं० मंडूक+यञ्, वृद्धि] एक प्रसिद्ध उपनिषद्।

वि० मंडूक संबंधी।

मांढ†—पुं० [सं० मंडप] स्त्रियों का पीहर। मायका। उदा०—नयरी नवै माढ़े बीचई।—नरपतिनाल्ह।

माँढ़ा—पुं०=माँडव।

मांत—वि० [सं० मत्त] १ मत्त। मस्त। २ मस्ती आदि के कारण बेसुध। ३. उन्मत्त। पागल।

वि० [सं० मन्द] जिसका रंग या शोभा बहुत कम हो गई हो। फीका पड़ा हुआ।

वि० [फा० मांद] १ थका हुआ। २ हारा हुआ।

मांतना—अ०=मातना (मत्त होना)।

मांता—वि०=माता (मत्त)।

मांत्र—वि०[सं० मंत्र+अण्, वृद्धि] मंत्र-संबंधी। मंत्र का।

मांत्रिक—पुं० [सं० मंत्र+ठक्, ठ—इक,] १. वह जो मंत्रों का पाठ करने में पारंगत हो। २. वह जो मंत्र-तंत्र आदि का अच्छा ज्ञाता हो।

मांथर्य—पु० [सं० मंथर+ष्यञ्] १. मंथर होने की अवस्था या भाव। मंथरता। धीमापन। २. सुस्ती।

मांथा—पुं०[सं० मस्तक] माथा। सिर।

मांद—वि०[सं० मंद] १. जो उदास या फीका पड़ गया हो। जिसका रंग उतर गया या हलका पड़ गया हो। मलिन। २ फीका। श्री-हीन। ३. किसी की तुलना में घटकर या हलका।

क्रि० प्र०—पड़ना।

४ दबा या हारा हुआ। पराजित। मात।

स्त्री०[देश०]१. गोबर का ढेर जो सूख गया हो और जलाने के काम में आता हो। २ जगलों, पहाड़ों, आदि मे सुरंग की तरह का कोई ऐसा प्राकृतिक स्थान जिसमे कोई हिंसक पशु रहता हो।

मांदगी—स्त्री०[फा०]१. 'मांदा' होने की अवस्था या भाव। २. बीमारी। रोग। ३. थकावट।

मांदर†—पु०=मर्दल (बाजा)।

मांदा—वि०[फा० मांद]१. बीमार। रोग आदि से ग्रस्त।

पद—**थका-मांदा।**

२. छोड़ा हुआ। बचा हुआ।

मांदार—वि०[स० मंदार+अण्] मंदार (मदार) संबंधी।

मांद्य—पुं० [सं० मंद+ष्यञ्] १. मंद होने की अवस्था या भाव। मंदता। जैसे—अग्नि-मांद्य। २. दुर्बलता। ३. कमी। न्यूनता। ४. बीमारी। रोग। ५. मूर्खता।

मांधाता (तृ)—पुं० [स० माम्√धे (पाना)+तृच्] अयोध्या का एक प्राचीन सूर्यवंशी राजा जो दिलीप के पूर्वजों में से था।

मांपना—अ०[हिं० मातना] नशे मे चूर होना। मत्त होना। मातना।

स०=मापना (नापना)।

मांस*—अव्य०=में।

मांस—पु० [सं०√मन् (ज्ञान)+स] [वि० मांसल] १. मनुष्यों तथा जीव-जंतुओं के शरीर का हड्डी, नस, चमड़ी, रक्त आदि से भिन्न अंश जो रक्त वर्ण का तथा लचीला होता है। आमिष। गोश्त।

पद—**मांस का घी**=चरबी।

२ कुछ विशिष्ट पशु-पक्षियो का मांस जिसे मनुष्य खाद्य समझता है। जैसे—बकरे या मुर्गे का मास।

†पु०=मास (महीना)।

मांसकारी (रिन्)—पुं०[सं० मास√कृ+णिनि]रक्त। लहू।

मांस-कीलक—पुं०[ष० त०] बवासीर का मसा।

मांसखोर—वि०[सं० मांस+फा० खोर] [भाव० मांसखोरी] मांसाहारी। मांस-खानेवाला।

मांस-ग्रंथि—स्त्री०[ष० त०] शरीर के विभिन्न अगों में निकलनेवाली मास की गाँठ।

मांसज—वि०[सं० मांस√जन् (उत्पन्न होना)+ड] मांस से उत्पन्न होनेवाला।

पुं० चरबी, जो मांस से उत्पन्न होती है।

मांस-तेज (स्)—पु०[ब० स०] चरबी।

मांस-धरा—स्त्री०[ष० त०]सुश्रुत के अनुसार शरीर की त्वचा की सातवीं तह। स्थूकापर।

मांस-पिंड—पुं०[ष० त०]१. शरीर। देह। २ मांस का टुकड़ा या लोथड़ा।

मांस-पिंडी—स्त्री०[ष० त०]शरीर के अन्दर रहनेवाली मांस की गाँठ।

मांस-पेशी—स्त्री०[ष० त०]शरीर के अंदर होनेवाली झिल्ली तथा रेशों के आकार का मांस पिंड जिसका मुख्य कृत्य गति उत्पन्न करना होता है।

विशेष—पक्षाघात रोग में किसी अग की मासपेशियाँ गति उत्पन्न करना बंद कर देनी हैं जिसके फलस्वरूप वह अंग हिलाया-डुलाया नहीं जा सकता।

मांस-फल—पुं० [स० उपमि० स०] तरबूज।

मांस-भक्षी (क्षिन्)—वि० [सं० मांस√भक्ष् (खाना)+णिनि,] मांस खानेवाला। मांसाहारी।

मांसभोजी (जिन्)—वि० [सं० मास√भुज् (खाना) +णिनि,] मांसाहारी।

मांस-मंड—पुं०[सं० ष० त०] उबाले या पकाये हुए मांस का रसा। यखनी। शोरबा।

मांस-योनि—पुं०[ब० स०] रक्त और मांस से उत्पन्न जीव।

मांस-रज्जु—स्त्री०[स० ष० त०]१. सुश्रुत के अनुसार शरीर के अंदर होनेवाले स्नायु जिनसे मास बँधा रहता है। २. मांस का रसा। शोरबा।

मांस-रस—पु०[ष० त०] मांस का रसा। शोरबा।

मांसरोहिणी—स्त्री०[सं० मांस√रुह् (उत्पन्न होना)+णिच्, +णिनि, +ङीप्] एक प्रकार का जंगली वृक्ष।

मांसल—वि०[सं० मांस+लच्] [भाव० मांसलता] १.(शरीर का कोई अग) जो मांस से अच्छी तरह भरा हो। २ जिसमें मास या उसकी तरह के गूदे की अधिकता हो। गुदगुदा। (फ्लेशी) ३. मोटा-ताजा। हृष्ट-पुष्ट। ४. दृढ़। पक्का। मजबूत।

पु० १ गौड़ी रीति का एक गुण। २ उड़द।

मांसलता—स्त्री० [सं० मांसल+तल्+टाप्] १ मास से भरे होने की अवस्था या भाव। २. बहुत अधिक मोटे-ताजे तथा हृष्ट-पुष्ट होने की अवस्था या भाव।

मांस-लिप्त—पु०[तृ० त०] हड्डी।

मांस-विक्रयी (यिन्)—पु०[स० मांस+वि√क्री+इनि, उपपद स०]१. वह जो मास बेचता हो। कसाब। २. वह जो धन के लोभ में अपनी सन्तान किसी के हाथ बेचता हो।

मांस-वृद्धि—स्त्री०[ष० त०]शरीर के किसी अंग के मांस का बढ़ जाना। जैसे,—घेघा, फील पाँव आदि।

मांस-समुद्भवा—स्त्री० [सं० ब० स०,+टाप्] चरबी।

मांस-सार—पु०[ष० त०] शरीर के अन्तर्गत मेद नामक धातु।

वि० हृष्ट-पुष्ट। मोटा-ताजा।

मांस-स्नेह—पु०[ष० त०] चरबी। वसा।

मांस-हासा—पुं०[ब० स०,+टाप्] चमड़ा।

मांसाद्—वि०[सं० मांस√अद् (खाना)+क्विप्)] जो मांस खाता हो। मांस भक्षक।
पुं० राक्षस।
मांसादन—पुं० [मांस-अदन, ष० त०] मांस खाने की क्रिया या भाव।
मांसादी (दिन्)—वि० [सं० मांस√अद्+णिनि,] मांस खानेवाला। मांसाहारी।
मांसारि—पुं०[मांस-अरि, ष० त०]अम्लबेत।
मांसार्गल—पुं०[मांस-अर्गल, ष० त०] गले में लटकनेवाला मांस।
मांसार्बुद—पुं०[मांस-अर्बुद, ष० त०]१ एक प्रकार का रोग जिसमें लिंग पर फुंसियाँ निकल आती है। २ शरीर के किसी अंग में आघात लगने से होनेवाली वह सूजन जो पत्थर की तरह कड़ी हो जाती है और जिसमे प्राय पीडा नही होती।
मांसाशन—पुं०=मांसादन।
वि०=मांसाशी।
मांसाशी (शिन्)—वि०[सं० मांस√अश् (खाना)+णिनि] जो मांस खाता हो। मांसाहारी।
पुं० राक्षस।
मांसाष्टका—स्त्री० [मांस-अष्टका, मध्य० स०] माघ कृष्णाष्टमी। इस दिन मांस से पिंडदान करने का विधान था।
मांसाहारी (रिन्)—वि०[सं० मांस+आ√हृ+णिनि] [स्त्री० मांसाहारिणी] मांस का भोजन करनेवाला। मांसभक्षी।
मांसी—वि०[सं० माष] माष अर्थात् उड़द के रंग का।
पुं० उक्त प्रकार का रंग जो उड़द के दाने के रंग की तरह होता है।
मांसी—स्त्री० [सं० मांस+अच्+ङीप्] १. जटामासी। २. काकोली। ३ चन्दन का तेल। ४ इलायची।
मांसु—पुं०=मांस।
मांसोदन—पुं०[सं० मध्य० स०] एक तरह का पुलाव जिसमे मांस के टुकड़े भी डाले जाते हैं।
मांसोपजीवी (विन्)—वि० [सं० मांस+उप√जीव्(जीना)+णिनि] १ जिसकी जीविका मांस से चलती हो। २ जो मांस बेचकर जीवन निर्वाह करता हो।
मांह*—अव्य०[सं० मध्य] मे।
मांहरा†—सर्व०=हमारा। (राज०)
मांहा*—अव्य०=मांह (मे)।
मांहि, माहीं*—अव्य०=मांह।
मांहुटि†—पुं०[हिं० माघ (महीना)] माघ के महीने मे होनेवाली वर्षा।
उदा०—नैन चुवहिं जस मांहुटि नीरू।—जायसी।
मांहूँ—पुं०[?]सरसो, गोभी, मूली, शलजम, आदि मे लगनेवाला एक प्रकार का हल्के हरे पीले रंग का कीड़ा जिसके शरीर के पिछले भाग पर ऊपर की ओर दो छोटी छोटी नलियाँ रहती हैं। लाही।
मांहैं*—अव्य०=मांह।
मा—स्त्री० [सं०√ मा+क्विप्] १ माता। माँ। २ लक्ष्मी। ३. ज्ञान। ४ प्रकाश। रोशनी। ५. चमक। दीप्ति।
अव्य० नही। मत। (निषेधार्थक)
पुं०[अ० मा]१. पानी। २. अरक। जैसे—माउल्लहम।
माइ*—स्त्री० =माई (माता)।
*स्त्री०=माया।
माइक—पुं०[अं०]=ध्वनिवर्धक।
माइका†—पुं० =मायका।
माइक्रोफोन—पुं०[अं०]=ध्वनिवर्धक।
माइट—पुं०[?]ईख की पत्तियाँ खानेवाला एक तरह का कीड़ा।
माईं—स्त्री०[सं० मातृ]१ माता। २ देवी। ३ वैवाहिक अवसरों पर मातृपूजन के काम आनेवाला एक तरह का छोटा पूआ।
†स्त्री०=मामी।
*स्त्री०[?] बेटी। पुत्री।
माई—स्त्री०[सं० मातृ] १ माता। जननी। माँ। २ मातातुल्य विशेषत. कोई बूढ़ी स्त्री। ३ औरत। स्त्री।
पद—माई का लाल-ऐसा व्यक्ति जो जोखिम, त्याग या वीरता-प्रदर्शन के लिए प्रस्तुत हो।
स्त्री०[देश०]एक प्रकार का वृक्ष और उसका फल जो माजू से मिलता-जुलता होता है।
माउल्लहम—पुं०[अ० माउल्लहम] हकीमी चिकित्सा मे, दवाओ में गोश्त मिलाकर खीचा हुआ अरक।
माकंद—पुं०[सं०√मा+क्विप् -मा -परिमित-कन्द, ब० स०] आम का वृक्ष।
†पुं०=मानकंद।
माकंदी—स्त्री०[सं० माकन्द+ङीप्]१. आंवला। २ पीला चन्दन। ३ एक प्राचीन नगरी।
माकर—वि०[सं०मकर+अण्,] १ मकर-संबंधी। २ मकर से उत्पन्न।
माकरा—स्त्री०[सं० माकर+टाप्] मरुआ।
माकरी—स्त्री०[सं० माकर+ङीप्]माघ शुक्ला सप्तमी।
माकल—स्त्री०[देश०] इंद्रायन नामक लता।
माकूल—वि० [अ० माकूल] १. उचित। ठीक। वाजिब। २ यथेष्ट। ३ योग्य। लायक। ४ उत्तम। अच्छा। बढ़िया।
पद—ना-माकूल। (देखे)
५ जिसने वाद-विवाद मे प्रतिपक्षी की बात मान ली हो। जो निरुत्तर हो गया हो। कायल।
माकूलियत—स्त्री०[अ० माकूलीयत] माकूल होने की अवस्था या भाव।
माक्षिक—पुं०[सं० मक्षिका+अण्]१ शहद। मधु। २ सोना-मक्खी। ३ रूपा मक्खी। ४ लोहे या तांबे का एक प्रकार का रासायनिक विकार। (पाइराइट)
वि०[सं०]१ मक्षिका-संबंधी। २ मक्खियों द्वारा बनाया हुआ।
माक्षिकज—पुं०[सं० माक्षिक√जन् (उत्पन्न करना) +ड] मोम।
माक्षिकाश्रय—पुं०[सं० माक्षिक-आश्रय, ष० त०] मोम।
माक्षीक—पुं०[सं० मक्षिका+अण्, नि० दीर्घ]=माक्षिक।
माख*—पुं०[सं० मक्ष]१ अप्रसन्नता। नाराजगी। २ अभिमान। घमंड। ३. पश्चात्ताप। पछतावा। ४. अपना अपराध या दोष छिपाने का प्रयत्न।
माखता†—पुं०=माख। (दे०)
माखन†—पुं० =मक्खन।

पद—माखन चोर=श्री कृष्ण।

माखना—अ०[हिं० माख]१. मन में अप्रसन्न या दुःखी होना। २. क्षुब्ध होना। ३. पश्चात्ताप करना।

माखा†—पुं०[हिं० मक्खी]नरमक्खी।

माखी*—स्त्री०[सं० माक्षिक] सोनामक्खी।

†स्त्री०=मक्खी।

माखी—स्त्री० [हिं० मुख]१ लोगों मे फैलनेवाली चर्चा। जनरव।

†स्त्री०=मधु मक्खी।

मागध—वि०[सं० मगध+अण्,] मगध-सबंधी।

पुं० १. *एक प्राचीन जाति जो मनु के अनुसार वैश्य के वीर्य से क्षत्रिय* कन्या के गर्भ से उत्पन्न है। २ मगध के राजा जरासन्ध का एक नाम। ३. जीरा। ४. पिप्पलीमूल।

मागधक—पुं०[सं० मगध+वुञ्—अक]१ मगध देश का निवासी। २ मागध। भाट।

मागध-पुर—पुं०[सं० ष० त०] मगध की पुरानी राजधानी, राजगृह।

मागधा—स्त्री०[सं० मागध+टाप्] १. मगध की राजकुमारी। २ पिप्पली।

मागधिक—वि० [सं० मगध+ठक्—इक,] मगध-सबधी। मगध का।

पुं० १. मगध का राजा। २. मगध का निवासी।

मागधी—स्त्री० [सं० मगध+अण्+ङीप्]१ मगध देश की प्राचीन प्राकृत भाषा। २ जूही। यूथिका। ३ चीनी। शक्कर। ४ छोटी इलायची। ५. पिप्पली।

मागरमाटी—स्त्री०=मट-मँगरा (विवाह की रस्म)।

मागि†—पुं०=मार्ग।

मागी†—स्त्री०[?] औरत। स्त्री। (पूरब)

माघ—पुं०[सं० माघी+अण्]१. १०वाँ सौर मास और ११वाँ चांद्रमास जो पूस के बाद और फागुन से पहले पड़ता है। २. संस्कृत के एक प्रसिद्ध महाकवि जो ईसवी १०वीं शती में हुए थे, और जिनका बनाया 'शिशुपाल वध' संस्कृत का एक प्रसिद्ध महाकाव्य है। ३. कुंद का फूल।

माघी—वि०[सं० मघा+अण्+ङीप्] माघ-सबधी।

स्त्री० माघ मास की पूर्णिमा। कलियुग का आरम्भ इसी तिथि से माना जाता है।

माघ्य—पुं०[सं० माघ+यत्] कुंद का फूल।

माच—पुं०[सं० मा√अच्+क] मार्ग। रास्ता।

पुं०[सं० मंच या हिं० मचना?] मालवे में प्रचलित एक प्रकार का ग्राम्य अभिनय या लोक-नाटक जो खुले मैदान में खेला जाता है। इसमें प्रायः भाव संगीत के द्वारा ग्राम्य जीवन की घटनाएँ दिखाई जाती हैं।

†पुं०=मचान।

माचना*—अ०=मचना।

स०=मचाना।

माचल—पुं०[सं० मा√चल् (चलना)+अच्]१ ग्रह। २. बीमारी। रोग। ३. कैदी। बंदी। ४. चोर।

वि० [हिं० मचलना] बहुत अधिक मचलनेवाला फलतः हठी।

†वि०=मचला।

माचा—पुं०[सं० मंच]बैठने की पीढ़ी या बड़ी मचिया जो खाट की तरह बुनी होती है। माँचा।

माचिका—स्त्री०[सं० मा√अंच् (जाना)+क+कन्+टाप्, इत्व] १. मक्खी। २. अमड़ा या आमड़ा नामक वृक्ष और उसका फल।

माचिस†—स्त्री०[अं० मैचेस] दीया-सलाई।

माची—स्त्री०[सं० मंच]१ हल मे का जूआ। २. बैलगाड़ी मे वह स्थान जहाँ गाड़ीवान बैठता और अपना सामान रखता है। ३. खाट की तरह बुनी हुई बैठने की पीढ़ी। मचिया।

माछ—पुं०[सं० मत्स्य] मछली विशेषतः बड़ी मछली।

†पुं०=मच्छर।

माछर—पुं०[सं० मत्स्य] मछली।

†पुं०=मच्छर।

माछरी†—स्त्री०=मछली।

माछी—स्त्री० [सं० मक्षिका] मक्खी।

†स्त्री०=मछली।

†स्त्री०=मछिया (बंदूक की)।

माजा†—पुं०=माँजा।

माजन—पुं०=मज्जन।

माजरा—पुं० [अ०] १. हाल। घटना। २ घटना का विवरण। ३ बोलचाल में, कोई विशिष्ट किंतु अज्ञात बात (किसी की दृष्टि से)।

माजी—वि०[अ०माज़ी]१. गुजरा या बीता हुआ। गत। ३. समय के विचार से भूतकाल से संबद्ध।

पुं० व्याकरण में, भूतकाल।

माजू—पुं०[फा०]१ एक प्रकार की झाड़ी जो यूनान और फारस आदि देशो में बहुतायत से होती है। २ उक्त झाड़ी का फल जो औषध के काम आता है। (हकीमी)

†पुं०[?]ऐसा वर या व्यक्ति जिसकी पहली विवाहिता स्त्री मर चुकी हो।

माजून—स्त्री०[अ०]१ हकीमी मे, शहद, शक्कर, आदि के योग से बना हुआ दवाओं का अवलेह। २ उक्त प्रकार का वह अवलेह जिसमे भाँग पीसकर मिलाई गई हो।

माजूफल—पुं०[फा० माजू+सं० फल] माजू नामक झाड़ी का गोटा या गोंद जो ओषधि तथा रँगाई के काम आता है। मादा-फल।

माजूल—वि०[मअजूल]१ अपदस्थ। २ पदच्युत।

माझ—अव्य०, पुं० -माँझ (मध्य)।

सर्व०[स्त्री० माझी] मेरा।

माट—पुं० [हिं० मटका] १ रंगरेजो के रंग घोलने का मिट्टी का बड़ा बरतन।

मुहा०—**माट बिगड़ जाना या बिगड़ना**=(क) किसी का स्वभाव ऐसा बिगड़ जाना कि उसका सुधार असम्भव हो। (ख) किसी काम या बात का पूरी तरह से बिगड़कर नष्ट-भ्रष्ट हो जाना।

२. दही रखने की मटकी।

पुं०[देश०] एक प्रकार की वनस्पति जिसका व्यवहार तरकारी के रूप मे होता है।

माटा—पुं०[हिं० मटा]लाल रंग का च्यूँटा जिसके झुंड आम के पेड़ों पर रहते हैं।

†पु०=मटका।

माटी—स्त्री०[हिं० मिट्टी] १ मिट्टी। २. बैलो के संबंध में, साल भर की जोताई या उसकी मेहनत। जैसे—यह बैल चार माटी का चला है। ३ पाँच तत्त्वों में से पृथ्वी नामक तत्त्व। ४. शरीर, जो मिट्टी का बना हुआ माना जाता है। ५ मृत शरीर। लाश। शव।

माठ—पु०[हिं० मटकी] मटकी।

†पु०[?] एक प्रकार की मिठाई।

माठर—पु०[स०√मठ्+अरन्+अण्] १. सूर्य के एक पारिपार्श्वक जो यम माने जाते हैं। २. वेद-व्यास। ३. ब्राह्मण। ४. कलाल। कलवार।

†वि०=मट्ठर।

माठा†—वि०[हिं० मीठा] १ मधुर। २ गंभीर। ३ कंजूस। (डिं०)

पु० =मठा या मट्ठा।

माठाधूपा—पु०[सं० मधुर+ध्रुपद] ध्रुपद का एक भेद।

माठी—स्त्री०[देश०] एक तरह की कपास।

माठू†—पु०[हिं० मिठ्ठू] १ बदर। वानर। २. तोता।

वि० निर्बुद्धि। मूर्ख।

माड़—पुं०[सं०] ताड की जाति का एक पेड।

†पु०=माँड़।

माड़ना—स०[स० मडन] १. मंडित करना। भूषित करना। २. धारण करना। पहनना। ३ आदर-सम्मान करना। ४ मचाना। ५. मांडना। ६. मलना। मसलना। ७. रौंदना।

अ० घूमना-फिरना। टहलना।

†अ०, स० =माँडना।

माड़व†—पु०=मंडप।

माड़ा—वि०[सं० मद] १ खराब। निकम्मा। २. दुर्बल शरीर का। दुबला-पतला। ३ बीमार। रोगी। ४ बहुत थोड़ा।

माड़ी†—स्त्री० १ =मंडप। २ =माँडी।

माढ़ा*—पु०[स० मडप] घर के ऊपर का चौबारा जिसकी छत मडप जैसी होती है।

†पु० =मठा या मट्ठा।

माढ़ी†—स्त्री०[हिं० मेंढ़ी] मचिया।

स्त्री =मढ़ी।

माण†—पु० =मान।

माणक—पु०[स०√मान् (पूजा)+घञ्,+कन्, नि० णत्व] मानकद।

माणना—अ०, स० १ =माँडना। २ =माड़ना।

माणव—पु०[स० मनु+अण्, न=ण, वृद्धि] १. मनुष्य। २. बालक। लडका। ३ ऐसा हार जिसमे १६ लड़ हो।

माणवक—पु०[सं० माणव+कन्] १ सोलह वर्ष की अवस्थावाला युवक। २ तुच्छ या हीन व्यक्ति। ३ नाटा या बौना आदमी। ४ बालक। लडका। ५ विद्यार्थी। ६ सोलह लड़ोवाली मोतियों की माला।

माणवक-क्रीड़ा—पु०[सं० ष० त०] एक प्रकार का वर्ण वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रमश नगण, मगण और दो लघु होते हैं।

माणव-विद्या—स्त्री०[स० ष० त०] जादू-टोना। तंत्र-मंत्र। (कौ०)

माणस†—पु०=मानुस (मनुष्य)।

†पु०=मानस।

माणिक—पु०=माणिक्य।

माणिक्य—पु०[सं० मणि+कन्+ष्यञ्] १. लाल नामक रत्न। २. एक प्रकार का केला।

वि० सब मे श्रेष्ठ।

माणिक्या—स्त्री०[स० माणिक्य+टाप्] छिपकली।

माणिबंध—पु०[स० मणिबन्ध+अण्] सेंधा नमक।

माणिमंथ—पु०[स० मणिमंथ+अण्] सेंधा नमक।

मातंग—पु० [स० मतग+अण्] १. हाथी। २. चाडाल। ३. किरात आदि किसी असभ्य जाति का व्यक्ति। ४. एक ऋषि। ५ अश्वत्थ। पीपल। ६ सवर्त्तक मेघ।

मातंगी—स्त्री०[स० मातग+ङीप्] १ पार्वती। २ वसिष्ठ की पत्नी। ३. चांडाल जाति की स्त्री। ४ दस महाविद्याओ मे से एक। (तंत्र)

मात—वि०[अ०] १ जो मर गया हो। मरा हुआ। २ हारा हुआ। पराजित।

स्त्री० १. शतरज के खेल मे वह स्थिति जब कोई पक्ष बादशाह को मिलनेवाली शह को न बचा सकता हो और इस प्रकार उसकी हार हो जाती हो।

मुहा०—मात करना=(क) शतरज के खेल मे विपक्षी को हराना। (ख) किसी गुण, कार्य या बात मे किसी से बढ़-चढ़कर होना। मात खाना=(क) शतरज के खेल मे हार होना। (ख) पराजित होना।

२. पराजय।

वि० [स० मत्त] मतवाला। उदा०—मात निमत सब गरजहिं बाँधे। —जायसी।

†स्त्री०=माता।

मातदिल—वि०[अ० माउतदिल] १ (पदार्थ) जिसका गुण या तासीर न तो अधिक गरम हो और न अधिक ठढी। समशीतोष्ण। २ जिसमे कोई बात आवश्यकता से अधिक या कम न हो। मध्यम प्रकृति का। सतुलित।

मातना*—अ०[स० मत्त] १ मस्त या मत्त होना। २ नशे मे चूर होना।

मातबर—वि०[अ० मोतबर] [भाव० मातबरी] जिसका एतबार किया जा सके। विश्वसनीय। विश्वस्त।

मातबरी—स्त्री० [अ० मोतबरी] मातबर अर्थात् विश्वसनीय होने की अवस्था या भाव। विश्वसनीयता।

मातम—पु०[स०] १. मृतक का शोक। मृत्युशोक। २ मृत्यु शोक के कारण होनेवाला रोना-पीटना। ३ किसी बहुत बडी या अशुभ घटना का दुःख या शोक।

क्रि० प्र०—मनाना।

मातम-पुर्सी—स्त्री०[फा०] मृतक के सबधियों के यहाँ जाकर प्रकट की जानेवाली सहानुभूति।

मातमी—वि०[फा०] १ मातम-संबंधी। २. शोकसूचक। जैसे—मातमी पोशाक। ३ मातम के रूप में होनेवाला। ४ मातम करनेवाला।

मातमुख—वि०[डिं०] मूर्ख।

मातरि-पुरुष—पुं०[सं० स० त०, विभक्ति का अलुक्] वह जो अपनी माँ के सामने अपनी वीरता का बखान करे, पर बाहर कुछ भी न कर सके।

मातरिश्वा—पुं०[सं०] १. पवन। वायु। २. एक प्रकार की अग्नि।

मातलि—पुं०[सं०मतल+इञ्] इंद्र का सारथी।

मातलि-सुत—पुं०[सं० ब० स०] इंद्र।

मातहत—वि०[अ०] [भाव० मातहती] जो किसी के अधीन हो।
पुं० अधीनस्थ कर्मचारी।

मातहतदार—पुं०[अ०+फा०] जमीन का वह मालिक जो दूसरे बड़े मालिक के अधीन हो।

मातहती—स्त्री०[अ०] मातहत होने की अवस्था या भाव।

माता (तृ)—स्त्री०[सं०√मान् (पूजा)+तृच्, नि० न-लोप] १. जन्म देनेवाली स्त्री। जननी। माँ। २. आदरणीय, पूज्य या बड़ी स्त्री। ३ प्राचीन भारत में वेश्याओं की दृष्टि से वह वृद्धा स्त्री जो उनका पालन पोषण करती थी और उन्हें नाच-गाना आदि सिखाकर उनसे पेशा कराती थी। खाला। ४. चेचक या शीतला नामक रोग। ५. गौ। ६. जमीन। भूमि। ७. विभूति। ८. लक्ष्मी। ९. इन्द्रवारुणी। १०. जटामासी।
वि०[सं० मत्त] [स्त्री० माती] मदमस्त। मतवाला।

मातामह—पुं०[सं० मातृ+डामहच्] [स्त्री० मातामही] किसी की माता का पिता। नाना।

मातु*—स्त्री०=माता।

मातुल—पुं०[सं० मातृ+डुलच्] [स्त्री० मातुला, मातुलानी] १ माता का भाई। मामा। २. धतूरा। ३. एक प्रकार का धान। ४. एक प्रकार का साँप। ५. मदन नामक वृक्ष।

मातुला—स्त्री०=मातुलानी।

मातुलानी—स्त्री० [सं० मातुल+ङीष्+आनुक्] १. मामा की स्त्री। मामी। २. भाँग।

मातुली—स्त्री०[सं० मातुल+ङीष्] १. मामा की पत्नी। मामी। २. भाँग।

मातुलुंग—पुं० [सं० मातुल√गम्+खच्, मुम्, पृषो० सिद्धि] बिजौरा नीबू।

मातुलेय—पुं० [सं० मातुली+ढक्—एय?] [स्त्री० मातुलेयी] मामा का लड़का। ममेरा भाई।

मातृ—स्त्री०[सं० दे० 'माता'] जननी। माता।

मातृक—वि०[सं० समास में] १. माता-संबंधी। माता का। २. माता के पक्ष से प्राप्त होनेवाला (अधिकार, व्यवहार आदि)। 'पितृक' का विरुद्धार्थक। (मैट्रिआर्कल)
पुं० १. मामा। २. ननिहाल।
† वि० सं० 'मात्रिक' का अशुद्ध रूप।

मातृक-च्छिद—पुं० [सं०मातृ-क=सिर, ष०त०, मातृक√छिद् (काटना)+क, लुक्] परशुराम।

मातृक-प्रणाली—स्त्री० दे० 'मातृ-तंत्र'।

मातृका—स्त्री०[सं० मातृ+कन्+टाप्] १. जननी। माता। २. गौ। ३. दूध पिलानेवाली दाई। धाय। ४. सौतेली माँ। उपमाता। ५. तांत्रिकों की एक प्रकार की देवियाँ जिनकी संख्या सात कही गई है। ६. वर्णमाला की बारहखड़ी। ७. ठोढ़ी पर की आठ विशिष्ट नसें। ८. वह स्त्री जो लड़कियों, दाइयों आदि के कामों की देख-रेख करती हो। (मेट्रन)

मातृका-क्रम—पुं० दे० 'अक्षर'-क्रम'।

मातृ-गण—पुं०[ष० त०] सात अथवा आठ मातृकाओं का गण या वर्ग।

मातृ-चक्र—पुं०[ष० त०] मातृकाओं का समूह।

मातृ-तंत्र—पुं०[ष० त०] कुछ प्राचीन जातियों में वह सामाजिक व्यवस्था जिसमें गृह की स्वामिनी माता मानी जाती थी और वही घरेलू व्यवस्था भी करती थी। (मैट्रिआर्की)

मातृ-तीर्थ—पुं०[मध्य० स०] हथेली में छोटी उँगली के मूल का उभरा हुआ स्थान। (ज्योतिष)

मातृत्व—पुं०[सं० मातृ+त्व] मातृ या माता अर्थात् सन्तानवती होने की अवस्था पद या भाव। (मैटर्निटी)

मातृ-देश—पुं० [सं० ष० त०] १ मातृभूमि। २. विशेषत विदेशों में जाकर बसे हुए लोगों की दृष्टि से उनके पूर्वजों की मातृभूमि।

मातृ-नंदन—पुं०[सं० ष० त०] १. कार्तिकेय। २ महाकरंज।

मातृ-पक्ष—पुं० [सं०ष०त०] किसी की माता के पूर्वजों का कुल या पक्ष। ननिहाल।

मातृ-पूजा—स्त्री०[ष० त०] विवाह के दिन से पहले छोटे-छोटे मीठे पूए बनाकर पितरों का किया जानेवाला पूजन।

मातृ-प्रणाली—स्त्री०=मातृ-तंत्र।

मातृ-बंधु—पुं०[ष० त०] माता के संबंध का अथवा मातृ-पक्ष का कोई आत्मीय।

मातृ-भाषा—स्त्री०[ष० त०] १. किसी व्यक्ति की दृष्टि से उसकी माँ द्वारा बोली जानेवाली भाषा जिसे वह माँ की गोद में ही सीखने लगता है। २. किसी व्यक्ति की दृष्टि से वह भाषा जो उसकी राष्ट्रीयता के अन्य लोग बोलते हों।

मातृ-भूमि—स्त्री०[ष०त०] वह स्थान या देश जिसमें किसी का जन्म हुआ हो, और इसी लिए जो उसे माता के समान प्रिय समझता हो।

मातृ-मंडल—पुं०[ष० त०] दोनों आँखों के बीच का स्थान।

मातृ-माता (तृ)—स्त्री०[सं० ष० त०] १. माता की माता। नानी। २. दुर्गा।

मातृ-मुख—वि०[ब० स०] हर काम या बात में माता का मुँह ताकनेवाला अर्थात् जडमति। मूर्ख।

मातृ-यज्ञ—पुं०[स० ष० त०] एक प्रकार का यज्ञ जो मातृकाओं के उद्देश्य से किया जाता है।

मातृ-रिष्ट—पुं०[सं० ष० त०] फलित ज्योतिष के अनुसार एक दोष जिसके कारण प्रसव के उपरान्त माता पर संकट आता या उसके प्राण जाने का भय होता है।

मातृ-वत्सल—पुं०[सं० स० त०] कार्तिकेय।

मातृ-शासित—वि०[सं० तृ० त०] माता के शासन में ही ठीक तरह से रहनेवाला, अर्थात् मूर्ख।

मातृ-ष्वसा (सृ)—स्त्री०[सं० ष० त०] मौसी। माँ की बहन।

मातृष्वसेय—पुं० [सं० मातृष्वसृ+ढक—एय] [स्त्री० मातृष्वसेयी] मौसेरा भाई।

मातृसत्ता—स्त्री०[सं०]=मातृतंत्र।

मातृ-सपत्नी—स्त्री०[सं० ष० त०] सौतेली माता। विमाता।

मातृ-स्तन्य—पु०[सं० ष० त०] माँ का दूध।

मातृ-हत्या—स्त्री०[सं० ष० त०]१ माँ को मार डालना। (मैट्रिसाइड) २. माँ को मार डालने से लगनेवाला पाप।

मात्र—अव्य०[सं०√मा (मान)+त्रण्]इस, इन या इतने से अधिक या दूसरा नहीं। जैसे—(क) मात्र एक रुपया मुझे मिला है। (ख) मात्र १५ आदमी वहाँ पहुँचे। (ग) सब चुप रहे, मात्र बोलनेवाले अधिकारी-गण थे।

मात्रक—पुं०[सं० मात्र+कन्]१ वह निश्चित मात्रा या मान जिसे एक मानकर उसी के हिसाब से या मेल से अन्य चीजो की सख्या निर्धारित की जाय। इकाई। (युनिट) २. किसी समूह की कोई एक वस्तु या अग। ३. वह जिसकी भिन्न या स्वतन्त्र सत्ता हो। (यूनिट)

मात्रा—स्त्री०[सं० मात्र+टाप्]१. लबाई, चौडाई, ऊँचाई, गहराई, दूरी, विस्तार, सख्या आदि जानने या निश्चित करने का परिमाण या साधन। २ कोई ऐसा मानक उपकरण या साधन जिससे कोई चीज तौली या नापी-जोखी जाती हो। परिमाण या माप जानने का साधन। ३ किसी वस्तु का ठीक आयतन, तौल या नाप। परिमाण। ४ किसी पूरी या समूची इकाई का उतना अश या भाग जितना अपेक्षित, आवश्यक या प्रस्तुत हो। जैसे—(क) वहाँ सभी पदार्थ बहुत अधिक मात्रा मे रखे थे। (ख) दाल मे नमक कुछ अधिक मात्रा मे पड गया है। ५ औषध आदि का उतना अश या परिमाण जितना एक बार मे खाया जाता हो या खाया जाना अपेक्ष्य हो या उचित हो। ६ किसी चीज का नियत या निश्चित छोटा भाग। ७ उतना काल या समय जितना एक ह्रस्व अक्षर का उच्चारण करने मे लगता है। ८ उच्चारण, सगीत आदि मे काल का उतना अश जितना किसी विशिष्ट ध्वनि के उच्चारण मे लगता है। ९ बारह-खडी लिखने मे वह स्वर सूचक चिह्न जो किसी अक्षर के ऊपर, नीचे या आगे-पीछे लगता है। जैसे—ह्रस्व इ की मात्रा और दीर्घ ऊ की मात्रा। १०. सगीत मे उतना काल जितना एक स्वर के उच्चारण मे लगता है। ११ सगीत मे ताल का नियत या निश्चित विभाग। जैसे—तीन मात्राओ का ताल, चार मात्राओं का ताल। १२ इद्रिय, जिसके द्वारा विषयो का ज्ञान होता है। १३ अंग। अवयव। १४ किसी वस्तु का बहुत छोटा कण या अणु। १५ आवृत्ति रूप। १६ बल। शक्ति। १७. राजाओ के वैभव के सूचक घोडे, हाथी आदि परिच्छद। १८. कान मे पहनने का एक प्रकार का गहना।

मात्रा-वृत्त—पु०[मध्य० स०] मात्रिक छन्द।

मात्रासम—पु०[सं० त०, +कन्] एक प्रकार का छंद जिसके प्रत्येक चरण मे १६ मात्राएँ और अत मे गुरु होता है।

मात्रा-स्पर्श—पु०[ष० त०] विषयो के साथ इन्द्रियो का संयोग।

मात्रिक—वि० [सं० मात्रा+ठक्—इक] १ मात्रा-संबंधी। २ किसी एक इकाई से सम्बन्ध रखनेवाला। एकात्मक। (युनिटरी) ३ जिसमे मात्राओं की गणना या विचार होता हो। जैसे—मात्रिक छन्द।

मात्रिक-छंद—पु०[सं० कर्म० स०] वह छद जिसके चरणों की गठन मात्राओं का ध्यान रख कर की गई हो।

मात्सर—वि०[सं० मत्सर+अण्]मत्सर युक्त।

मात्सर्य—पु०[सं० मत्सर+ष्यञ्] मत्सर का भाव। ईर्ष्या। डाह।

मात्स्य—वि०[सं० मत्स्य+अण्] मछली-सम्बन्धी। मछली का।
पु० एक प्राचीन ऋषि।

मात्स्य-न्याय—पु०[सं० कर्म० स०] ऐसी स्थिति जिसमे बड़ा या शक्तिशाली छोटे या दुर्बल को उसी प्रकार नष्ट कर देता है जिस प्रकार बड़ी मछली छोटी मछली को खा जाती है।

मात्स्यिक—पु०[सं० मत्स्य+ठक्—इक] मछली मारनेवाला। मछुआ।
वि० मत्स्य या मछली से सम्बन्ध रखनेवाला।

माथ†—पु० =माथा।

माथना*†—स०=मथना।

माथ-बधन—पु०[हि० माथा+सं० बधन] १ सिर पर लपेटने या बाँधने का कपडा। जैसे—पगडी, साफा आदि। २ स्त्रियों की चोटी बाँधने की डोरी। चोटी। परांदा।

माथा—पु०[सं० मस्तक]१ सिर का अगला भाग। मस्तक।
पद—माथा-पच्ची, माथा-पिट्टन।
मुहा०—(किसी के आगे या सामने) माथा घिसना बहुत दीनता या नम्रतापूर्वक मिन्नत या खुशामद करना। **माथा टेकना**=सिर झुकाकर प्रणाम करना। **माथा ठनकना**=(क) सिर में हलकी धमक या पीडा होना। (ख) लाक्षणिक रूप मे, पहले से ही किसी दुर्घटना या बाधा होने की आशका होना। **माथा रगड़ना**=दे० ऊपर 'माथा घिसना'। **माथे चढ़ाना**=शिरोधार्य करना। **(किसी के) माथे टीका होना**=कोई ऐसी विशेषता होना जिसके कारण महत्त्व या श्रेष्ठता प्राप्त हो। **माथे पर बल पड़ना**=आकृति से अप्रसन्नता, रोष आदि प्रकट होना। **माथे भाग होना**=भाग्यवान् होना। **(कोई चीज किसी के) माथे मारना**=बहुत उपेक्षापूर्वक या तुच्छ भाव मे देना। जैसे—वह रोज तगादा करता है, उसकी किताब उसके माथे मारो।
२ ऐसा अकन या चित्र जिसमे केवल मुख और मस्तक बना हो, धड आदि शेष अग न दिखाये गये हो।
विशेष—शेष मुहावरो के लिए देखे 'सिर' के मुहा०।
३ किसी पदार्थ का अगला और ऊपरी भाग। जैसे—नाव का माथा।
मुहा०—माथा मारना=जहाज का वायु के विपरीत जोर मारकर चलना। (लश०)
पु०[देश०] एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।

माथा-पच्ची—स्त्री०[हि० माथा+पचाना] किसी काम या बात के लिए बहुत अधिक बोलने या समझने-समझाने के लिए होनेवाला ऐसा परिश्रम जिससे जी ऊब जाय या शरीर थक जाय। सिर-पच्ची।

माथा-पिट्टन—स्त्री०[स्त्री० माथा+पीटना]१ दुःख आदि के समय अपना सिर पीटने की किया या भाव। २ दे० 'माथा-पच्ची'।

माथुर—पु०[सं० मथुरा+अण्] [स्त्री० मथुरानी]१. मथुरा का निवासी। २ मथुरा मे रहनेवाले चतुर्वेदी ब्राह्मण। चौबे। ३ कायस्थों मे एक जाति या वर्ग। ४ वैश्यो मे एक जाति या वर्ग। ४. मथुरा और उसके आस-पास का प्रदेश। ब्रज-मंडल।
वि० मथुरा-सबंधी। मथुरा का।

माथे—क्रि० वि०[हि० माथा] मस्तक पर।
अव्य०=मत्थे।

मात्थे†—अव्य०=मत्थे ।

माद—पुं० [सं०√मद् (मत्त होना)+घञ्] १. अभिमान । २. प्रसन्नता । हर्ष । ३. मद । मत्तता ।

†पुं० [?] छोटा रस्सा । (लश०)

मादक—वि० [सं०√मद् +णवुल्-अक] मद के रूप में होनेवाला । फलतः नशा लानेवाला । नशीला ।

पुं० १. नशा उत्पन्न करनेवाला पदार्थ । जैसे—अफीम, भाँग, शराब आदि । २. प्राचीन काल का एक प्रकार का अस्त्र । कहते हैं कि इसके प्रयोग से शत्रु में प्रमाद उत्पन्न होता था । ३. एक प्रकार का हिरन ।

मादकता—स्त्री० [सं० मादक+तल्+टाप्] मादक होने की अवस्था या भाव ।

मादन—पुं० [सं०√मद्+णिच्+ल्युट्-अन वृद्धि] १. मदन नामक वृक्ष । २. कामदेव । मदन । ३. लौंग । ४. धतूरा ।

वि०=मादक । उदा०—जैसे असंख्य मुकुलों का मादन विकास कर आया ।—प्रसाद ।

मादनी—स्त्री० [सं० मादन+ङीप्] १. भाँग । २. मदिरा । शराब । ३. नशा लानेवाली कोई चीज । उदा०—बिना मादनी का जग जीवन बिना चाँदनी का अंबर ।

मादनीय—वि० [सं०√मद्+णिच्+अनीयर्] मादक । नशीला ।

मादर—स्त्री० [सं० मातृ से फा०] माँ । माता ।

†पुं०=मादल या मर्दल नामक बाजा । उदा०—मंदिर वेगि सँवारा मादर तूर उछाह ।—जायसी ।

मादरजाद—वि० [फा०] १. जन्म का । जैसे—मादरजाद अंधा । २. जैसा जन्म के समय रहा हो, ठीक वैसा । जैसे—मादर-जाद नंगा । ३. एक ही माता से उत्पन्न (दो या अधिक) । सगा । सहोदर ।

मादरिया*—स्त्री०=मादर ।

मादरी—वि० [फा०] माता-संबंधी । माता का ।

मादल—पुं० [सं० मर्दल] पखावज की तरह का एक बाजा ।

मादा—स्त्री० [फा० माद॰] स्त्री जाति का जीव या प्राणी । जैसे—साँड़ की मादा गाय कहलाती है ।

†पुं०=माद्दा ।

मादिक†—वि०=मादक ।

मादिकता†—स्त्री०=मादकता ।

मादिन†—स्त्री० =मादा ।

मादी—स्त्री०=मादा ।

मादीन—स्त्री०=मादा ।

माद्दा—पुं० [अ० माद्द] १ वह मूल तत्त्व या द्रव्य जिससे सारे संसार की सृष्टि हुई है । २. वह मूल पदार्थ जिससे कोई दूसरा पदार्थ बना हो । ३. व्याकरण में शब्द का मूल या व्युत्पत्ति । ४. वह गुण, तत्त्व, योग्यता अथवा पात्रता जिससे मनुष्य कुछ करने-धरने या समझने-बूझने के योग्य होता है । ५. फोड़े में से निकलनेवाली पीब । मवाद । ५. किसी चीज के अन्दर भरा हुआ कोई दोष या विकार ।

माद्दी—वि० [अ०] १. मादा-सम्बन्धी । मादा का । २. भौतिक । जड़ । ३. पैदाइशी ।

माद्रवती—स्त्री० [सं०] १. राजा परीक्षित् की स्त्री का नाम । २. पांडु की दूसरी पत्नी का नाम । माद्री ।

माद्री—स्त्री० [सं० मद्र+अण्+ङीप्] मद्र देश के राजा की कन्या जो राजा पांडु से ब्याही गई थी । नकुल और सहदेव इसी के पुत्र थे ।

माद्रेय—पुं० [सं० माद्री+ढक्, ढ—एय] माद्री के पुत्र नकुल और सहदेव ।

माधव—वि० [सं० मधु+अण्] १. मधु-संबंधी । २. मधु ऋतु संबंधी । ३. मधु राक्षस का (वंशज) ।

पुं० [सं० ष० त०] १ कृष्ण । २. वैशाख । मास । ३ वसंत ऋतु । ४. महुआ । ५. काला उड़द । ६. एक प्रकार का वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में ८ जगण होते हैं । ७. एक प्रकार का राग जो भैरव राग के आठ पुत्रों मे से एक माना गया है । ८. एक प्रकार का संकर राग जो मल्लार बिलावल और नट-नारायण के योग से बना है ।

माधवक—पुं० [सं० माधव+वुञ्-अक] महुए की शराब ।

माधविका—स्त्री० [सं० माधवी+कन्+टाप्, ह्रस्व] माधवी लता ।

माधवी—स्त्री० [सं० माधव+ङीप्] १ एक तरह का प्राचीन पेय पदार्थ जो मधु से बनाया जाता था । २ एक प्रसिद्ध लता जिसमें सुगंधित फूल लगते हैं । ३. उक्त लता के फूल । ४. संगीत में, ओडव जाति की एक रागिनी जिसमे गांधार और धैवत वर्जित है । ५. धाम नामक सवैया छन्द का एक भेद । ६ तुलसी । ७ दुर्गा । ८ कुटनी । दूती । ९. शहद की चीनी ।

माधवी-लता—स्त्री० [सं० मध्य० स०] माधवी नामक सुगंधित फूलों की लता ।

माधवोद्भव—पुं० [सं० माधव-उद्भव, ब० स०] खिरनी का पेड़ ।

माधी—पुं० [देश०] एक प्रकार का राग ।

माधुक—पुं० [सं० मधुक+अण्] १ मैत्रेयक नाम की वर्ण संकर जाति । २. महुए की शराब ।

माधुकर—वि० स्त्री० [सं० मधुकर+अण्] [स्त्री० माधुकरी] मधुकर या भौंरे की तरह का ।

माधुपर्किक—पुं० [सं० मधुपर्क+ठक्—इक] वह पदार्थ जो मधुपर्क देने के समय दिया जाता है ।

वि० १. मधुपर्क-संबंधी । मधुपर्क का । २ अतिथि को आदरपूर्वक दिया जानेवाला ।

माधुर—पुं० [सं० मधुर+अण्] मल्लिका । चमेली ।

माधुरई†—स्त्री०=मधुरता ।

माधुरता†—स्त्री०=मधुरता ।

माधुरी—स्त्री० [सं० माधुर्य+ङीष्, य लोप] १. मधुर होने की अवस्था या भाव । मधुरता । २ मिठास । ३ मिठाई । ४ शराब ।

माधुर्य—पुं० [सं० मधुर+ष्यञ्] १ मधुर होने की अवस्था या भाव । मधुरता । २ शोभा से युक्त सुन्दरता । ३. मिठास । ४ पांचाली रीति के अन्तर्गत काव्य का एक गुण । ५ संगीत मे, कर्नाटकी पद्धति का एक राग ।

माधैया*—पुं०=माधव ।

माधो†—पुं०=माधव ।

माधौ†—पुं०=माधव ।

माध्यंदिन—पुं० [सं० मध्य+दिनण् पृषो० नुम्] मध्याह्न । दोपहर ।

माध्यंदिनी—स्त्री० [सं० माध्यदिन+ङीष्] शुक्ल यजुर्वेद की एक शाखा।

माध्यंदिनीय—पुं० [सं० माध्यदिन+छ–ईय] नारायण। परमेश्वर।

माध्य—वि० [सं० मध्य+अण्] मध्य का। बिचला।
पुं० १. कई संख्याओं आदि के जोड़ को गिनती की उन संख्याओं से भाग देने पर निकलनेवाला भाग-फल जो उन सब संख्याओं का मध्यम मध्मान सूचित करता है। बराबर का पड़ता। औसत। (एवरेज) उदाहरणार्थ यदि किसी विद्यालय की पहली कक्षा में ३०, दूसरी कक्षा मे २५, तीसरी कक्षा में २०, चौथी कक्षा मे १५ और पाँचवी कक्षा मे १० विद्यार्थी हों तो सब मिलाकर १०० विद्यार्थी हुए। कक्षाएँ कुल ५ हैं, अत. १०० को ५ से भाग देने पर भाग-फल २० होगा। इस आधार पर कहा जायगा कि विद्यालय की प्रत्येक कक्षा में विद्यार्थियों का माध्य २० है। २ दे० 'मध्यमान'।

माध्यम—वि० [सं० मध्यम+अण् या मध्य+मण्,] मध्यम का। बीचवाला।
पु० १. वह तत्त्व जिसके द्वारा कोई क्रिया संपन्न होती हो, कोई परिणाम या फल निकलता हो अथवा किसी प्रकार का प्रभाव उत्पन्न होता हो। किसी क्रिया का मध्यवर्ती उपाय या साधन। २ वह भाषा जिसके द्वारा शिक्षा दी जाय। ३. कला के क्षेत्र मे, वह पदार्थ जिसके आधार या सहायता से कोई कृति प्रस्तुत की जाय। ४. वह व्यक्ति जिसमें किसी अन्य व्यक्ति की आत्मा आकर कुछ समय के लिए ठहरती और अपनी बाते, उत्तर आदि उसी व्यक्ति के द्वारा प्रकट करती या कहती हो।

माध्यमिक—पु० [सं० मध्यम+ठक्–इक,] १. बौद्धो के महायान की दो शाखाओ मे से एक शाखा (दूसरी शाखा योगाचार है) जिसका मत है कि सब पदार्थ शून्य से उत्पन्न होते हैं और अत मे शून्य हो जाते है। २. मध्य देश। ३. मध्य देश का निवासी।
वि०=माध्य।

माध्यमिक-शिक्षा—स्त्री० [कर्म० स०] प्रारंभिक शिक्षा के उपरांत और उच्च शिक्षा के पहले दी जानेवाली शिक्षा। (सेकेंडरी एजुकेशन)
विशेष—मुख्यत' पाँचवी कक्षा से १०वी या ११वी कक्षाओं तक दी जानेवाली शिक्षा।

माध्यस्थ—पु० [सं० मध्य√स्था (ठहरना)+क+अण्] १. मध्यस्थ। बिचवई। २ मध्यस्थता। ३ दलाल। ४ प्रेमी और प्रेमिका का दूतत्व करनेवाला व्यक्ति। कुटना। ५ विवाह करानेवाला ब्राह्मण। बरेखी।

माध्याकर्षण—पु० [सं० माध्य-आकर्षण, कर्म० स०] भौतिक विज्ञान में यह तत्त्व या सिद्धान्त कि पृथ्वी और उसके चारो ओर के आकाश या वातावरण मे जितने पदार्थ हैं, वे सब पृथ्वी के केंद्र की ओर आकृष्ट होते हैं—पृथ्वी का मध्यभाग या केन्द्र उन्हे अपनी ओर आकृष्ट करता है। प्रत्येक पदार्थ गिरने पर पृथ्वी की ओर आकृष्ट होता है, वह इसी माध्याकर्षण का परिणाम है। (ग्रैविटी)

माध्याह्निक—पु० [सं० मध्याह्न+ठञ्—इक,] ठीक माध्याह्न के समय किया जानेवाला धार्मिक कृत्य।

माध्यिक—वि० [सं०] १. मध्य-संबंधी। मध्य का। २. बीच मे रहने या होनेवाला।
पु० किसी क्रम या शृंखला के ठीक बीच का वह बिंदु जिसके उपर और नीचे दोनों ओर गिनती के विचार से बराबर इकाइयाँ हो। (मीडियन) जैसे—१, २, ३, ४ और ५ मे ३ माध्यिक है।

माध्व—वि० [सं० मध्व+अण्] १. मधुनिर्मित। २ वसत-संबंधी।
पु० १. विष्णु। २. कृष्ण। ३ वसत। ४ वैशाख। ५ मध्वाचार्य द्वारा चलाया हुआ एक वैष्णव सम्प्रदाय। ६. महुए का पेड। ६. काला मूँग।

माध्वक—पु० [सं० माध्वीक, पृषो० ई—अ] महुए की शाखा।

माध्विक—पुं० [सं० मधु+ठक्–इक, वृद्धि] वह जो मधु-मक्खियो के छत्तों मे से शहद इकट्ठा करने का काम करता हो।

माध्वी—स्त्री० [सं० मधु+अण्+ङीप्] १ एक तरह की लता जिसमें सुगंधित फूल लगते है। माधवी लता। २. महुए की शराब। ३. मदिरा। शराब। ४ पुराणानुसार एक नदी का नाम। ५. मधुर कटक नामक मछली। ६ वाम नामक छद।

माध्वीक—पु० [सं० माध्वी+कन्] १ महुए की शराब। २. दाख की शराब। ३. मकरद। ४ सेम।

माध्वीका—स्त्री० [सं० माध्वीक+टाप्] सेम।

मानःशिल—वि० [सं० मन शिल+अण्] १ मन शिला या मैनशिल सम्बन्धी। २. मैनसिल के रग मे रगा हुआ।

मान—पु० [सं० √मान् (पूजा)+घञ्] १. प्रतिष्ठा। सम्मान। इज्जत।
पद—मान-महत, मान-हानि।
मुहा०—(किसी का) मान रखना ऐसा काम करना जिससे किसी की प्रतिष्ठा बनी रहे।
२. अपनी प्रतिष्ठा या सम्मान अथवा गौरव का उचित अभिमान या ध्यान। आत्म-गौरव या आत्मप्रतिष्ठा का मन मे रहनेवाला भाव या विचार। ३ अनुचित और निंदनीय रूप मे होनेवाला अभिमान। घमड। शेखी।
मुहा०—(किसी का) मान मथना – अच्छी तरह दबाकर या पीड़ित करके अभिमान और प्रतिष्ठा नष्ट करना।
४. मन मे होनेवाला विकार जो अपने प्रिय व्यक्ति को अनुचित तथा उपेक्षासूचक आचरण करते हुए देखकर होता है, और जिसके फलस्वरूप उस व्यक्ति के प्रति उदासीनता होने लगती है। रूठने की क्रिया या भाव।
विशेष—स्त्रियाँ प्राय ईर्ष्यावश अपने पति या प्रेमी के प्रति रूठे हुए होने का जो भाव व्यक्त करती हैं, साहित्य मे विशिष्ट रूप से वही मान कहलाता है।
पद—मान-मोचन।
मुहा०—**मान मनाना**=रूठे हुए व्यक्ति का मान दूर करके उसको मनाना। **मान मोड़ना**=मान का त्याग करना। रूठा न रहना।
पुं० [सं०√मा (मापना)+ल्युट्—अन] १. मापने या नापने की क्रिया या भाव। २. मापने या नापने पर ज्ञात होनेवाला परिमाण। माप-फल। ३. वह मानक दड या पात्र जिसके द्वारा कोई चीज तौली या नापी जाती है। तौल, नाप आदि जानने का साधन। जैसे—गज, सेर आदि। ४. ऐसा काम या बात जिससे कोई चीज या बात प्रमाणित अथवा सिद्ध हो जाती हो। ५. तुल्यता। समानता। ६. किसी काम

या बात के संबंध में ऐसी योग्यता या शक्ति जिससे वह काम या बात पूरी उतर सके या उस पर ठीक तरह से बश चल सके। जैसे—यह काम उनके मान का नहीं है, अर्थात् इस काम के लिए जिस योग्यता या शक्ति की अपेक्षा है, उसका उनमें अभाव है।

मुहा०—(किसी के) मान रहना=किसी के आश्रय में या भरोसे पर रहना। किसी के बल या सहारे पर अच्छी तरह जीवन-निर्वाह करना या समय बिताना। जैसे—यदि आज उन्हें कुछ हो जाता तो मैं किसके मान दिन बिताती? (स्त्रियाँ)

७. पुष्कर द्वीप का एक पर्वत। ८. उत्तर दिशा का एक देश। ९. ग्रह। १०. मंत्र। ११. संगीत शास्त्र के अनुसार ताल मे का विराम जो सम, विषम, अतीत और अनागत चार प्रकार का होता है।

मानकंद—पुं०[सं० मध्य० स० ?]१. एक तरह का कंद। मान कच्चू। २. सालिब मिश्री नामक कद।

मानक—पुं० [सं० मान+कप्] मान कच्चू। मान कंद।

पुं० [सं० मान से] विशिष्ट वस्तुओं के आकार, प्रकार महत्त्व आदि जाँचने का कोई आधिकारिक आदर्श, मानदंड या रूप। (स्टैन्डर्ड)

मानक काल—पुं०[सं०]दे० 'मानक समय'।

मान कच्चू—पुं०=मानकंद।

मानकित—भू० कृ० [हिं० मानक से] मानक के रूप मे किया या लाया हुआ। (स्टैंडर्डाइज्ड)

मानक समय—पुं०[स०] दिन-रात आदि के समय का वह विभाजन जो किसी क्षेत्र या देश मे आधिकारिक रूप से मानक माना जाता हो। (स्टैंडर्ड टाइम)

मानकीकरण—पुं०[सं० ?] एक ही प्रकार या वर्ग की बहुत सी वस्तुओं के गुण, महत्त्व आदि का एक मानक रूप स्थिर करने की क्रिया या भाव। (स्टैण्डर्डाइजेशन) जैसे—बटखरो का मानकीकरण, जजो का मानकीकरण।

मानगृह—पुं०[सं० ष० त०] १. प्राचीन राजमहलों मे वह कमरा जिसमें राजा से रूठी हुई रानी मान करके बैठती थी। २. साहित्य में वह स्थान, जहाँ पर नायिका मान करके बैठी हुई हो।

मान-चित्र—पुं०[सं० ष० त०] किसी चिपटे तल पर किया हुआ रेखाओं का ऐसा अंकन जिसमें किसी भू-भाग की नदियों, पहाड़ों, नगरों आदि के स्थान, विस्तार आदि दिखाये गये हों। किसी स्थान का बना हुआ नकशा। (मैप) जैसे—एशिया का मानचित्र।

मान-चित्रक—पुं० [सं०] वह जो मानचित्र बनाता या मान-चित्रण करता हो।

मान-चित्रण—पुं० [सं०] मानचित्र अर्थात् नक्शे बनाने की कला या विद्या। (मैपिंग)

मानचित्रांकन—पुं०[सं० मानचित्र-अंकन, ष० त०] मानचित्र बनाने और रेखाचित्र अंकित करने की कला या विद्या।

मानचित्रावली—स्त्री०[सं० मानचित्र-आवली, ष० त०] पृथ्वी, भूखंडों, देशों, प्रांतों आदि के भौगोलिक चित्रों का पुस्तकाकार समूह। मानचित्रों का संकलन या संग्रह। (एटलस)

मानज—पुं०[सं० मान√ जन् (उत्पत्ति)+ड] क्रोध।

वि० मान से उत्पन्न।

मानतव—पुं० [सं० मध्यम० स०] खेतपापड़ा।

मानता†—स्त्री०=मनौती।

क्रि० प्र०—उतारना।—चढ़ाना।—मानना।

मान-दंड—पुं०[सं० ष० त०]१. मान नापने का कोई उपकरण। २. लाक्षणिक रूप में कोई ऐसा कल्पित परिमाण जिससे दूसरी बातों का महत्त्व या मूल्य आँका जाता हो।

मानद—पुं०[सं० मान√दा (देना)+क] विष्णु।

वि० मान या प्रतिष्ठा देने या बढ़ानेवाला।

मान-देय—पुं० [सुप्सुपा स०] किसी काम या सेवा के बदले में आदरपूर्वक दिया जानेवाला धन। (आनरेरियम)

मान-धन—पुं०[ब० स०]१. वह जो अपने मान या प्रतिष्ठा को सबसे अधिक मूल्यवान् समझता हो। आत्म-सम्मान का ध्यान रखनेवाला। २. अभिमानी। घमंडी।

मानधाता—पुं०=मांधाता (एक सूर्यवंशी राजा)।

मानन—पुं०[सं० √ मान्+ल्युट्—अन]१. मान करने की क्रिया या भाव। २. आदर या सम्मान करना।

मानना—अ०[सं० मानन]१. मन से यह समझ लेना कि जो कुछ कहा या किया गया है, अथवा जो कुछ प्रस्तुत है वह उचित है। ठीक समझकर अगीकृत या गृहीत करना। जैसे—मैं मानता हूँ कि इसमें आपका कोई दोष नहीं है। २. मन में किसी प्रकार की धारणा या विचार स्थिर करना। जैसे—आप तो जरा सी बात में बुरा मान गये। ४. किसी प्रकार की आज्ञा, आदेश, विधान आदि को ठीक समझकर उसके अनुकूल आचरण या व्यवहार करना। जैसे—वह सीधी तरह से नही मानेगा।

स० १. किसी बात को अंगीकृत, ग्रहण या स्वीकार करना। जैसे—किसी की बात मानना। २. किसी काम, बात या विषय के सम्बन्ध में तर्क के निर्वाह के लिए कुछ समय के लिए वस्तु-स्थिति के विपरीत कामना करना। जैसे—मान लीजिए कि उसने आकर आपसे क्षमा माँग ली, तो फिर क्या होगा? ३. किसी को पूज्य या श्रेष्ठ समझकर उसके प्रति मन में आदर, श्रद्धा या विश्वास रखना। जैसे—आर्य-समाजी हो जाने पर भी वे सनातन धर्म की बहुत सी बाते मानते थे। ४ किसी को विशिष्ट रूप से गुणी, योग्य या समर्थ समझना। जैसे—(क) मैं तो उसे बहादुर मानूँगा जो यह काम पूरा कर दिखलावे। (पूरब) (ख) ऐरे गैरे लोगों को मैं कुछ नही मानता। ५. किसी प्रकार के आचरण, विधान आदि को निर्वाह या पालन के योग्य समझना और उसका अनुसरण करना। जैसे—(क) किसी का अनुरोध या आग्रह मानना। (ख) जन्माष्टमी या शिवरात्रि मानना। ६ मनौती या मन्नत के रूप में प्रतिज्ञा या संकल्प करना। जैसे—(क) काली जी को बकरा मानो तो लड़का जल्दी अच्छा हो जायगा अर्थात् काली जी के सामने बकरे के बलिदान की प्रतिज्ञा या संकल्प करो तो लड़का जल्दी अच्छा हो जायगा। (ख) मैंने हनुमान् जी को सवा सेर लड्डू माना है, अर्थात् यह संकल्प किया है कि अमुक काम हो जाने पर सवा सेर लड्डू चढ़ाऊँगा। ७. शृंगारिक क्षेत्र में, किसी के प्रति यथेष्ट अनुराग या प्रेम रखना। किसी पर आसक्त होना। जैसे—दुश्चरित्रा स्त्रियाँ कभी एक को मानती हैं तो कभी दूसरे को मानने लगती हैं। (बाजारू) ८. सहन करना। सहना। उदा०—उपजत दोष नैन नहिं सूझत, रवि की किरन उलूक

न मानत।—सूर। ९ किसी बात या स्थिति को अपने लिए अनुकूल, ठीक या हितकर समझते हुए शांति और सुखपूर्वक रहना। जैसे—कुत्ते या बिल्ली का पोस मानना। उदा०—कबहूँ मन बिस्राम न मान्यो —तुलसी।

माननीय—वि०[सं० √मान्+अनीयर्] जिसका मान-सम्मान करना आवश्यक तथा उचित हो। आदरणीय।

पुं० बड़े लोगों के नाम या पद के पहले उपाधि के रूप मे प्रयुक्त पद। (आनरेबुल) जैसे—माननीय मंत्री महोदय।

मानपत्र—पुं०[ष० त०] वह पत्र जो किसी का आदर या सम्मान करने के लिए उसे भेंट किया जाता है और जिसमे उसके सत्कार्यों, सद्‌गुणो आदि की स्तुति रहती है। अभिनन्दन-पत्र।

मन-परेखा*—पुं० [हिं०] १ मन में होनेवाला मान-अपमान आदि का विचार और अपमान के कारण होनेवाला क्षोभ। २. आशा। भरोसा।

मानपात—पुं०=मानकद।

मान-भाव—पुं०[ष० त०]१ वह अवस्था जिसमें कोई मान करके या रूठकर बैठा हो। २ चोचला। नखरा।

मान-मंदिर—पुं०[स० त०]१ दे० 'मानगृह'। २. वह स्थान जिसमें ग्रहों आदि का वेध करने के यंत्र तथा सामग्री हो। वेधशाला।

विशेष—जयपुर के महाराज मानसिंह ने काशी, दिल्ली, उज्जैन आदि मे अपने नाम पर कुछ वेधशालाएँ बनवाई थी, उन्ही के आधार पर अब वेधशाला मात्र को (मान-मदिर) कहने लगे है।

मान-मनौअल—स्त्री०[हिं० मान=अभिमान+मनाना] रूठकर बैठनेवाले या रूठे हुए को मनाने की क्रिया या भाव।

मान-मनौती—स्त्री०[हिं० मान+मनौती]१ मानता। मनौती। २ पारस्परिक प्रेमपूर्ण सम्बन्ध। ३ दे० 'मान-मनौअल'।

मान-मरोर—स्त्री० दे० 'मन-मुटाव'।

मान-महत्—वि०[ब० स० ?] बहुत बड़ा अभिमानी या घमंडी।

मान-महत—पुं०[स० मान-महत्व] प्रतिष्ठा और बडप्पन।

मान-मोचन—पुं०[ष० त०]साहित्य मे, मान करनेवाले प्रिय को मनाकर या समझा-बुझाकर उसका मान छुडाना, और उसे अपने प्रति प्रसन्न करना।

मान-रंध्रा—स्त्री०[स० ब० स०,+टाप्] प्राचीन काल की जल-घड़ी जिसका व्यवहार समय जानने के लिए होता था।

मानव—वि०[स० मनु+अण्] मनु से संबंधित अथवा उससे उत्पन्न। पुं०१. मनुष्य। २ मनुष्य जाति। ३ १४ मात्राओं के छदो की संज्ञा। इनके ६१० भेद हैं।

मानवक—पुं०=माणवक।

मानवत्—पुं० [स० मान+मतुप्, म—व] [स्त्री० मानवती] रूठा हुआ।

मानवता—स्त्री० [सं० मानव+तल्+टाप्] १. मनुष्य जाति। २ मानव होने की अवस्था या भाव। ३. मनुष्य के आदर्श तथा स्वाभाविक गुणों, भावनाओ आदि का प्रतीक या समूह।

मानवता-वाद—पुं०[ष० त०] [वि० मानवतावादी] वह लौकिक सिद्धान्त जिसमे यह माना जाता है कि संसार के सभी मनुष्यो का समान रूप मे कल्याण होना चाहिए और सबको उन्नत करके सतुष्ट तथा सुखी रखने की व्यवस्था होनी चाहिए। (ह्यूमैनिज्म)

मानवतावादी (दिन्)—वि०[सं० मानवतावाद+इनि] मानवतावाद-सम्बन्धी। (ह्यूमैनिस्ट)

पुं० वह जो मानवतावाद के सिद्धान्तों का अनुयायी और पोषक या समर्थक हो। (ह्यूमैनिटेरियन)

मानवती—स्त्री० [मानवत्+ङीप्] साहित्य मे वह नायिका जो नायक से रुष्ट या असंतुष्ट होने पर मान करती हो या मान करके बैठी हो।

मानव-देव—पुं०[स० ष० त०] राजा।

मानव-पति—पुं०[सं० ष० त०] राजा।

मानव-भूगोल—पुं०[स०] भूगोल शास्त्र का वह अग जिसमे इस बात का विवेचन होता है कि प्राकृतिक और भौगोलिक परिस्थितियो का मानव जाति पर क्या प्रभाव पडता है। (एन्थ्रोपोजिअग्रैफी)

मानव-वर्जित—वि० [स० तृ० त०]जिसका कुछ भी मान या प्रतिष्ठा न हो अर्थात् तुच्छ या नीच।

मानव-विज्ञान—पुं०=मानव-शास्त्र।

मानव-व्यापार—पुं०[ष० त०] मनुष्यो को बेचने-खरीदने का काम।

मानव-शास्त्र—पुं०[ष० त०]१ मनुष्यो की उत्पत्ति, उनकी जातियो, उनके स्वभावों आदि का विवेचन करनेवाला शास्त्र। (एन्थ्रोपालोजी) २. अर्थशास्त्र, इतिहास, दर्शन, पुरातत्त्व, मनोविज्ञान, राजनीति, सगीत, संस्कृति, साहित्य आदि से सबध रखनेवाले वे सभी शास्त्र जो मुख्यत मानव जाति की उन्नति, विकास आदि मे सहायक होते हैं। (ह्यूमैनिटिक्स)

मानव-शास्त्री (स्त्रिन्)—पुं० [स० मानवशास्त्र+इनि] मानव-शास्त्र का ज्ञाता या पडित। (एन्थ्रोपालोजिस्ट)

मानव-शास्त्रीय—वि०[स० मानवशास्त्र+छ—ईय] मानव-शास्त्र-संबंधी। (एन्थ्रोपालोजिकल)

मानवाचल—पुं०[सं० मानव-अचल, मध्य० स०] पुराणानुसार एक पर्वत।

मानवी—स्त्री०[सं० मानव+ङीप्]१. मानव जाति की स्त्री। नारी। २. पुराणानुसार स्वयभुव मनु की कन्या का नाम।

वि० =मानवीय।

मानवीकरण—पुं०[स० मानव+च्वि, इत्व, दीर्घ,√ कृ+ल्युट्—अन] १. किसी वस्तु को मानव अर्थात् मनुष्य का रूप देने की क्रिया या भाव। मानुषीकरण। (ह्यूमेनिजेशन) जैसे—कथा कहानियो मे पशु-पक्षियों आदि का होनेवाला मानवीकरण। २ कला, धर्म आदि के क्षेत्र मे, यह मानकर कि पदार्थों में राग-द्वेष आदि मानव गुण होते है, उन्हे मानव के रूप में कल्पित और प्रस्थापित करना।

मानवीय—वि० [सं० मानव+छ—ईय]१. मानव-सबधी। मानव या मनुष्य का। २. मनुष्योचित। (ह्यूमेन)

मानवेंद्र, मानवेश—पुं०[स० मानव-इंद्र, मानव-ईश, ष० त०] राजा।

मानस—वि०[सं० मनस्+अण्] १ मन से उत्पन्न। मनोमय। २. मन में सोचा या विचारा हुआ। जैसे—मानस चित्र।

क्रि० वि० मन के द्वारा। मन से।

पुं० १. आधुनिक मनोविज्ञान मे, मनुष्य की वह आतरिक सत्ता जिसमे अनुभूतियाँ, विचार और सवेदनाएँ होती हैं। इसी का सबसे अधिक चेतन, परिचित तथा प्रत्यक्ष 'रूप' चेतना कहलाता है। मन। (माइंड)

विशेष—इसके अचेतन, अवचेतन, अर्ध-चेतन आदि कुछ और अंग या पक्ष भी माने गये हैं।

२. मन में होनेवाला संकल्प-विकल्प। ३. मानसरोवर। ४. कामदेव। ५. संगीत में एक प्रकार का राग। ६. आदमी। मनुष्य। ७. घर। दूत। शाल्मली द्वीप का एक वर्ष। ९. पुष्कर द्वीप का एक पर्वत।

मानसचारी (रिन्)—पुं०[सं० मानस√चर् (गति)+णिनि] मानसरोवर के आसपास रहनेवाला हंस।

मानसता—स्त्री०[सं०]१. मन का भाव या स्थिति। २. वह विशेष स्थिति या वृत्ति जिसके वशवर्ती होकर मनुष्य किसी कार्य या विचार में प्रवृत्त होता है। मनोवृत्ति। (मेन्टैलिटी)

मानस-तीर्थ—पुं०[कर्म०स०]ऐसा मन जो राग, द्वेष आदि से बिलकुल रहित हो गया हो।

मानस-पुत्र—पुं०[सं०कर्म० स०] वह सन्तान जिसकी उत्पत्ति मात्र इच्छा से हुई हो शारीरिक संयोग से न हुई हो। जैसे—सनक आदि ब्रह्मा के मानस-पुत्र कहे जाते हैं।

मानस-पूजा—स्त्री०[सं० कर्म० स०] पूजा के दो प्रकारों में से वह जिसमें मन से ही सब कृत्य किये जाते है लौकिक उपचारों या साधनों का सहारा नहीं लिया जाता।

मानसर—पुं०=मानसरोवर।

मानसरोवर—पुं०[सं० मानस-सरोवर] १. तिब्बत के क्षेत्र में एक प्रसिद्ध झील जो कैलास पर्वत के नीचे हैं और जो बहुत पवित्र तथा बड़े तीर्थों में मानी जाती है। २ हठयोग मे, सहस्रार चक्र जिसे कैलास भी कहते है और इसी दृष्टि से जिसमे उस भाव-सरोवर की भी कल्पना की गई जिसमें निर्लिप्त चित्त-रूपी हंस विहार करता है।

मानस-विज्ञान—पुं०[सं० कर्म० स०]वह विज्ञान या शास्त्र, जिसमे इस बात का विवेचन होता है कि मनुष्य का मन किस प्रकार अपने काम करता है। (मेन्टल साइन्स)

मानस-व्रत—पुं०[सं० मध्य० स०]अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य आदि व्रत जिनका पालन मन से ही होता है।

मानस-शास्त्र—पुं०[सं० मध्य० स०] मनोविज्ञान।

मानस-सन्यासी (सिन्)—पुं०[सं० कर्म० स०] दशनामी सन्यासियों का एक उपभेद।

मानस-सर (स्)—पुं०[सं० कर्म० स०] मानसरोवर।

मानस-हंस—पुं०[सं० कर्म० स०] एक प्रकार का वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में 'स ज ज भ र' होता है। इसे 'मानहंस' तथा 'रणहंस' भी कहते हैं।

मानसालय—पुं०[सं० मानस-आलय, ब० स०] हंस।

मानसिक—वि०[सं० मानस्+ठक्—इक]१. मन की कल्पना से उत्पन्न। २. मन मे होने या मन से सम्बन्ध रखनेवाला। जैसे—मानसिक रोगी, मानसिक कष्ट। ३ जिसमे सोच-विचार तथा मनन की अधिक अपेक्षा हो। (शारीरिक से भिन्न) जैसे—मानसिक कार्य।

पुं० विष्णु का एक नाम।

मानसिक चिकित्सालय—पुं०[सं० कर्म० स०] वह चिकित्सालय जहाँ पर मानसिक रोगियों का उपचार किया जाता है। (मेन्टल हॉस्पिटल)

मानसिकी—स्त्री०=मानस-विज्ञान। (मनोविज्ञान)

मानसी—स्त्री०[सं० मानस+ङीप्]१. वह पूजा जो मन ही मन की जाय। मानसपूजा। २. एक विद्या देवी का नाम।

वि०=मानसिक।

मानसी-गंगा—स्त्री०[सं०] ब्रज में गोवर्धन पर्वत के पास का एक सरोवर।

मानसूत्र—पुं०[सं० ष० त०] करधनी।

मानसून—पुं० दे० 'मानसून'।

मान-हंस—पुं०[सं० ष० त०] एक प्रकार का वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में 'स ज ज भ र' होते हैं।

मान-हानि—स्त्री०[सं० ष० त०]१ कोई ऐसा काम या बात जिसमें किसी का अपमान या अप्रतिष्ठा होती हो और जो सामाजिक आदि दृष्टियों से अनुचित और निन्दनीय हो। २. इस प्रकार होनेवाली मानहानि। (डिफेमेशन)

मानहुँ*—अव्य०=मानो।

मानांकन—पुं० दे० 'मूल्यांकन'।

माना—पुं०[इब०]कुछ विशिष्ट प्रकार के वृक्षों, बाँसों आदि का गोंद या निर्यास जो चिकित्सा के काम आता है। मन्ना।

*स० [सं० मान]१. नापना, मापना या तौलना। २ जाँचना।

पुं० अन्न आदि नापने का पात्र।

†अ०=अमाना।

मानाथ—पुं०[सं० ष० त०] लक्ष्मी के पति। विष्णु।

मानाभिषेक—पुं०[सं०] किसी बड़े अधिकारी या प्रधान व्यक्ति के अधिकारारूढ़ होने की क्रिया अथवा उससे सम्बन्ध रखनेवाला समारोह। (इन्वेस्टिचर)

मान्‍का-मथ—पुं०=महना-मथन।

मानिंद—वि०[फा०] सदृश।

†वि०=माननीय या मान्य।

मानिक—पुं०[सं०माणिक्य]१ लाल रंग के एक मणि का नाम। कुरुविंद। पद्मराग। २. आठ पल की एक पुरानी तौल।

मानिक-खंभ—पुं० [हिं० मानिक+खंभा]१ वह खूँटा जो कातर के किनारे गड़ा रहता है। मरखम। २ विवाह के समय मंडप के बीच में गाड़ा जानेवाला खंभा। ३ दे० 'मालखंभ'।

मानिकचंदी—स्त्री०[हिं० मानिकचंद]एक तरह की छोटी सुपारी।

मानिक-जोड़—पुं०[हिं० मानिक+जोड़]एक प्रकार का बगला जिसकी चोंच और टाँगें अधिक लंबी होती हैं।

मानिक रेत—स्त्री०[हिं० मानिक+रेत] मानिक का चूरा जिससे गहने साफ किये जाते हैं।

मानिका—स्त्री० [सं०√मन् (गर्व करना)+णिच्+ण्वुल्—अक,+टाप्, इत्व]१. मद्य। शराब। २ आठ पल या साठ तोले की एक पुरानी तौल।

मानित—भू० कृ०[सं० मान+इतच्]जिसका मान होता हो। प्रतिष्ठित। सम्मानित।

मानिता—स्त्री०[सं० मानित+टाप्]१. मानित्व। सम्मान। २ गौरव। ३. अहंकार। घमंड।

मानिनी—वि० स्त्री० [सं० मान+इनि+ङीप्] सं० 'मानी' का स्त्री०। मान (अभिमान या गर्व) करनेवाली।

स्त्री० साहित्य में वह नायिका जो नायक का दोष देखकर उससे रूठ गई हो या मान कर रही हो।

मानी (निन्)—वि०[सं० मान+इनि] [स्त्री० मानिनी] १. जिसमें मान हो। मानवाला। २ अपने मान या प्रतिष्ठा का अधिक या यथेष्ट ध्यान रखनेवाला। ३. किसी गुण या बात का अभिमान करनेवाला। अभिमानी। घमंडी। ४. मान करने या रूठने-वाला। ५. जिसका लोग मान या सम्मान करते हो। माननीय। जैसे—शहर के सभी धनी-मानी वहाँ आये थे। ६. मन लगाकर काम करनेवाला। मनोयोगी।

पु०[सं०] साहित्य मे शृगार रस का आलंबन वह नायक जो बहुत बड़ा अभिमानी हो।।

स्त्री०[सं०]१ घडा। २. चक्की के नीचेवाले पाट के बीचोबीच लगी रहनेवाली वह लकडी जिसके चारो ओर ऊपरवाला पाट घूमता है। ३. कुदाल, बसूले आदि का वह छेद जिसमें बेट लगाई जाती है। ४. किसी चीज मे बनाया हुआ वह छेद जिसमे कुछ जडा जाय। ५ किसी तरह का छेद या सूराख। ६ अन्न नापने का एक मान या तौल जो सोलह सेर की होती थी।

पु०[अ० मानी]१ पद, वाक्य, शब्द आदि का अभिप्राय या आशय। अर्थ। माने। २ भेद या रहस्यमूलक तत्त्व का आशय। तात्पर्य। मतलब। ३ उद्देश्य। प्रयोजन।

मानुख†—पु० मनुष्य।

मानुष—वि० [सं० मनु+अञ्, षुक्,] [स्त्री० मानुषी] मनुष्य-सबधी। मनुष्य का।

पु०१. आदमी। मनुष्य। २. प्रमाण के तीन भेदो मे से एक।

मानुषक—वि० [सं० मनुष्य+वुञ्—अक] मनुष्य-संबधी। मनुष्य का।

मानुषता—स्त्री० [सं० मानुष+तल्+टाप्] मानुष होने की अवस्था या भाव। आदमीयत। मनुष्यत्व।

मानुषिक—वि० [सं० मनुष्य+ठञ्—इक, वृद्धि, य—लोप] १. मनुष्य सम्बन्धी। २. मनुष्यों का-सा। (असुरो देवताओं आदि की तरह का नही)

मानुषी—स्त्री०[सं० मानुष+ङीप्] स्त्री। औरत।

वि०=मानुषीय। जैसे—मानुषी चिकित्सा।

मानुषीकरण—पु०=मानवीकरण।

मानुषी चिकित्सा—स्त्री० [सं० व्यस्तपद] वैद्यक मे तीन प्रकार की चिकित्साओ मे से एक। मनुष्यो के उपयुक्त चिकित्सा।

मानुषीय—वि०[सं० मानुष+छ—ईय]मनुष्य-सबधी।

मानुष्य—वि०[सं० मनुष्य+अण्, वृद्धि] १ मनुष्य-संबधी। २ मनुष्य या मनुष्यो मे पाया जाने या होनेवाला।

मानुष्यक—वि० [सं० मनुष्य+वुञ्—अक,] मनुष्य-सबधी।

मानुस†—पु०=मनुष्य।

माने—पु०[अ० मानी] अर्थ। आशय।

मानों—अव्य०[हि० मानना] एक अव्यय जिसका प्रयोग नीचे लिखे अर्थ या भाव सूचित करने के लिए होता है—(क) अनुरूपता या तुल्यता के विचार से यह समझ लो कि। जैसे—वह मनुष्य क्या था मानों देवता था। (ख) स्थिति आदि के विचार से कल्पना करो या मान लो कि। जैसे—हम लोग समझ लें कि मानों हम वही बैठे है।

मानौली—स्त्री०[देश०] एक प्रकार की चिड़िया।

मानोपाधि—स्त्री०[सं० मान+उपाधि] वह उपाधि या खिताब जो किसी का मान बढ़ाकर उसे सम्मानित करने के लिए दिया जाय। (टाइटिल ऑफ आनर)

मानौं*—अव्य०=मानो।

मान्य—वि०[सं०√मान्+ण्यत्] [स्त्री० मान्या] १. (बात) जिसे मान सकें। माने जाने के योग्य। २. (व्यक्ति) जिसका मान या सम्मान करना आवश्यक या उचित हो। मान या सम्मान का अधिकारी या पात्र। ३. प्रार्थना के रूप मे उपस्थित किये जाने के योग्य। प्रार्थ-नीय।

पु० १. विष्णु। २ शिव। ३ मैत्रावरुण।

मान्य औषध कोश—पुं०[सं०] दे० 'भेषज सग्रह'।

मान्यता—स्त्री० [सं० मान्य+तल्+टाप्]१ मान्य होने की अवस्था या भाव। २ किसी विषय मे माने और स्थिर किये हुए तत्त्व या सिद्धांत। जैसे—कविता के स्वरूप के सम्बन्ध मे उनकी कुछ मान्यताएँ बहुत ही अनोखी (या नई) है। ३ सिद्धान्त, प्रथा आदि के रूप मे मानने योग्य कोई तत्त्व, तथ्य या बात। ४ किसी बडी सस्था द्वारा किसी दूसरी छोटी संस्था के सबध मे यह मान लिया जाना कि वह प्रामाणिक है और उसके किये हुए कार्य ठीक समझे जायँगे। ५ वह अवस्था जिसमे उक्त प्रकार की बातें मान ली जाती है और उसके अनुसार छोटी सस्था को बडी संस्था के अग के रूप मे काम करने का अधिकार मिल जाता है। (रिकाग्निशन)

मान्य-व्यक्ति—पुं० दे० 'ग्राह्य-व्यक्ति'।

मान्य-स्थान—पुं०[सं० ष० त०] आदर या मान्य का कारण।

मान्सून—पु०[अ० मौसिम] १ भारतीय महासागर और दक्षिणी एशिया में चलनेवाली एक हवा जो अप्रैल से अक्तूबर तक दक्षिण पश्चिम की ओर से तथा अक्तूबर से अप्रैल तक उत्तर-पश्चिम की ओर बहती है। २ वह समय जब यह हवा दक्षिण पश्चिम की ओर से बहती है और जिसके फलस्वरूप पृथ्वी के अधिकतर भागो मे खूब वर्षा होती है। पावस।

माप—स्त्री० [हि० मापना]१ मापने या नापने की क्रिया या भाव। नाप। पद—माप-तौल।

२. मापने या तौलने पर ज्ञात होनेवाला परिमाण, मात्रा या मान। ३. वह मान जिससे कोई पदार्थ मापा जाय। मान।

मापक—वि०[सं०√मा+णिच्, पुक्+ण्वुल्—अक] माप करने या नापनेवाला। जैसे—दुग्ध-मापक।

पुं०१ वह जो मापने या नापने का काम करता हो। २. वह जो तौलने का काम करता हो। ३ वह पात्र जिसमे भरकर कोई चीज नापी-जोखी जाती हो। ४. वह यंत्र जिसके द्वारा किसी प्रवाहित होनेवाले तत्त्व या पदार्थ की मात्रा, मान, वेग आदि की नाप होती हो। (मीटर) जैसे-विद्युत-मापक।

माप-तौल—स्त्री०[सं०+हि०]१ मापने, तौलने आदि की क्रिया या भाव। २. अच्छी तरह जाँच या परखकर किसी चीज का महत्त्व, मान, मूल्य आदि जानने या निर्धारित करने की क्रिया या भाव।

मापना—स०[सं० मापन]१. किसी पदार्थ के विस्तार, आयत, या वर्गत्व और घनत्व का किसी नियत मान के आधार पर परिमाण जानना या जानने के लिए कोई क्रिया करना। नापना। २ किसी मान या पैमाने में भरकर द्रव, चूर्ण या अन्नादि पदार्थों को नापना। जैसे—दूध मापना, चूना मापना।

†अ० मातना (मस्त होना)।

मापनी—स्त्री०[सं० मापन से] मापने अर्थात् नापने-जोखने, तौलने आदि की क्रिया या भाव। (मेजरमेन्ट)

मापांक—पुं०[सं०] आज-कल भौतिक विज्ञान में, वह परिमाण या मान जो किसी अमूर्त परिणाम, प्रभाव या शक्ति (लचीलापन, तन्यता) की किसी निश्चित इकाई या माप के आधार पर जाना या स्थिर किया जाता है। (मॉड्यूलस)

माफ—वि० [अ० माफ़] जिसे क्षमा किया गया हो या माफी दी गई हो।

माफकत—स्त्री०[अ० मुवाफिकत] १. अनुकूलता। २. मेल। मैत्री।

पद—मेल-माफकत।

माफिल—पुं०[?] एक प्रकार का खट्टा नीबू।

माफिक—वि०[अ० मुआफ़िक] १. अनुकूल। अनुसार। २. उपयुक्त।

क्रि० प्र०—आना।—पड़ना।—होना।

माफिकत—स्त्री०=माफकत।

माफी—स्त्री० [अ० माफी] १ माफ करने की क्रिया या भाव। क्षमा।

क्रि० प्र०—चाहना।—माँगना।—मिलना।

२. ऐसी भूमि जिसका कर लेना जमीदार, राजा या सरकार ने छोड़ दिया या माफ कर दिया हो।

पद—माफीदार। (देखें)

माफीदार—पुं०[अ०+फा०] वह जिसे ऐसी जमीन मिली हो जिसका कर शासन ने माफ कर दिया हो।

माम*—पुं०[सं० माम्]१. ममता। ममत्व। २. अहंकार। ३. अधिकार। ४. बल। शक्ति।

मामता—स्त्री०[सं० ममता]१. आत्मीयता। अपनापन। २ आत्मीयता के कारण होनेवाला प्रेम या स्नेह। ममता। ममत्व। जैसे—माँ की मामता बच्चे पर होती है।

मामरी—स्त्री०[देश०] एक प्रकार का पेड़ जो हिमालय की तराई में रावी नदी से पूर्व की ओर मद्रास और तथा मध्यभारत में होता है। रूही।

मामलत, मामलति*—स्त्री०[अ० मुआमिलत] १. बात। मामला। २ विवादास्पद बात या विषय जो विचार के लिए उपस्थित हो।

मामला—पुं०[अ० मुआमिलः]१ आपस में मिलकर तै या निश्चित की हुई कोई ऐसी बात जिसपर अमल करना पड़े या जिसे कार्य रूप में परिणत करना हो। २. आपस में होनेवाले काम, व्यवहार या व्यापार। जैसे—क्रय-विक्रय, देन-लेन आदि।

मुहा०—मामला बनाना=ऐसी स्थिति लाना जिसमें कोई काम पूरी तरह हो जाय। कार्य-सिद्ध की व्यवस्था करना।

३. उलझन या झगड़े का कोई ऐसा काम या बात जिसके संबंध में किसी प्रकार का आचरण, विचार या व्यवहार होने को हो या होना आवश्यक हो। प्रधान अथवा मुख्य बात या विषय। जैसे—आज-कल उनके सामने एक बहुत बड़ा मामला आ गया है।

मुहा०—मामला तै करना=उक्त प्रकार के काम के सम्बन्ध में बात-चीत करके निपटारा या निश्चय करना। मामला बनाना या साधना=विकट और विचारणीय विषय का संतोषजनक रूप में निराकरण करना।

४. आपस में पक्की या तै की हुई बात। निर्णीत और निश्चय किया हुआ तथ्य। ५. ऐसी विवादास्पद बात जिसके संबंध में न्यायालय में विचार हो रहा हो या होने को हो। मुकदमा। व्यवहार। जैसे—इधर वकील साहब ने कई बड़े-बड़े मामले जीते हैं। (मुहा० के लिए दे० 'मुकदमा' के 'मुहा०') ६. युवती और सुन्दरी स्त्री। (बाजारू) ७. स्त्री-प्रसंग। मैथुन। संभोग।

मुहा०—मामला बनाना=पर-स्त्री के साथ मैथुन या संभोग करना।

मामा—पुं०[सं० माम, मामका; पा० मामको, प्रा० मामअ] [स्त्री० मामी] संबंध के विचार से माँ का भाई।

स्त्री०[फा०] घर की नौकरानी। परिचारिका। दासी।

मामागीरी—स्त्री०[फा०]१. मामा अर्थात् दूसरों की रोटी पकानेवाली स्त्री का काम या पद। २ बुढ़िया स्त्री। बूढ़ी।

मामिला—पुं०=मामला।

मामी—स्त्री०[सं० मा, निषेधार्थक]अपने ऊपर लगाया हुआ आरोप या दोष न मानने की अवस्था, क्रिया या भाव।

मुहा०—मामी पीना=अपने ऊपर लगाये हुए आरोप या दोष पर ध्यान न देकर चुप रह जाना अथवा मुकर जाना।

स्त्री० हिं० 'मामा' का स्त्री० रूप। संबंध के विचार से मामा की पत्नी।

मामू†—पुं०=मामा।

मामूर—वि०[अ०]१ जिसे आदेश दिया गया हो। २. नियुक्त किया हुआ। ३. पूरी तरह से भरा हुआ। ४ आबाद। ५ समृद्ध।

मामूल—पुं०[अ०]१ नित्य-नियम। २. ऐसा काम या बात जो साधारणतः सभी अवसरों पर अमल अर्थात् व्यवहार में लाई जाती है। सभी अवसरों पर साधारण रूप में होती रहनेवाली बात या व्यवहार। दस्तूर।

पद—मामूल के दिन=स्त्रियों के रजोधर्म के या रजस्वला होने के दिन। (मुसल० स्त्रियाँ) उदा०—हर महीने में कुढ़ाते थ, मुझे फूल के दिन बारे अबकी तो मेरे टल गये मामूल के दिन।—रंगीन।

३. रीति-रिवाज। परिपाटी। प्रथा। ४. वह धन जो किसी को परिपाटी, प्रथा, रिवाज आदि के अनुसार मिलता हो। ४ अभिचार आदि द्वारा बेसुध किया हुआ व्यक्ति।

मामूली—वि०[अ०]१ नित्य-नियम-सम्बन्धी। २ प्राय होता रहनेवाला। ३. जिसमें कोई महत्व की विशेषता न हो। औसत दरजे का। साधारण।

मामोला—पुं०[?]वीर वधूटी। (राज०) उदा०—मामोली बिदली कुँकुँमै।—प्रिथीराज।

मायँ*—अ०=माँहि (बीच)।

माय†—पुं०[सं० माया+अच्]१ पीताम्बर। २ असुर।

†स्त्री०[सं० माता] १. माता। माँ। २. बड़ी या आदरणीय स्त्री के लिए संबोधन का शब्द।

†स्त्री०=मादा।

†अव्य०=माँहि (बीच में)।

मायक—पुं०[सं० माय+कन्] मायावी।

पुं०=मायका।

मायका—पुं०[सं० मातृ+क (प्रत्य०)] विवाहिता स्त्री की दृष्टि से उसके माता-पिता का घर और परिवार। नैहर। पीहर।

मायण—पुं०[सं० माया+युच्—अन] वेद का भाष्य करनेवाले सायण के पिता का नाम।

मायन*—पुं०[सं० मातृका] १ मातृका-पूजन और पितृ-निमंत्रण संबंधी एक कृत्य जो विवाह से पहले किया जाता है। २ उक्त दिन होनेवाला कृत्य।

मायनी—स्त्री० दे० 'मायाविनी'।

†पुं०=माने (अर्थ)।

मायल—वि० [अ० माइल] १ जो किसी ओर प्रवृत्त हुआ हो। जैसे—किसी पर दिल मायल होना, अर्थात् किसी की ओर अनुरक्त होना। २ आसक्त। ३ किसी प्रकार के झुकाव या प्रवृत्ति से युक्त। जैसे—सुरखी मायल काला रंग; अर्थात् ऐसा काला जिसमें लाल रंग की भी कुछ झलक हो।

माया—स्त्री० [सं०√मा+य+टाप्] १ कोई काम करने या कोई चीज बनाने की अलौकिक अथवा असाधारण कला या शक्ति। जैसे—इन्द्र अपनी माया से अनेक रूप धारण करता है। २ बहुत ही उत्कृष्ट या प्रखर बुद्धि। प्रज्ञा। ३ कोई ऐसी कृति, रचना या रूप जिससे लोग धोखे या भ्रम में पड़ते हों। छलपूर्ण तथ्य या बात। जैसे—इंद्र-जाल या जादूगरी। ४ वेदांत में वह ईश्वरीय शक्ति जिससे इस नाम-रूपात्मक सारे दृश्य जगत् की सृष्टि हुई है।

विशेष—वेदांत दर्शन का सिद्धांत है कि यह सारी सृष्टि अमूर्त और नित्य ब्रह्म से उत्पन्न हुई है, फिर भी यह वास्तविक नहीं है। उस ब्रह्म की अलौकिक शक्ति से ही यह हमें दृश्य जगत् के रूप में दिखाई देती है। पुराणों में इसी माया पर चेतन धर्म का आरोप करके इसे स्त्री के रूप में माना और ब्रह्म की सहधर्मचारिणी कहा है। इसी कारण लोग मोह-वश अवस्तु को वस्तु और अवास्तविक को वास्तविक और मिथ्या को सत्य समझने लगते हैं। हमें इस जगत और उसके सब पदार्थों का जो ज्ञान या भास होता है, वह वस्तुतः भ्रम मात्र है। सांख्यकार ने इसी को प्रकृति या प्रधान कहा है। शैव दर्शन में इसे आत्मा को बंधन में रखनेवाले चार पाशों (जालों या फंदों) में से एक पाश माना है; और वैष्णवों ने इसे विष्णु की नौ शक्तियों के अन्तर्गत एक शक्ति कहा है। परवर्ती काल में कुछ लोग इसे अनृत की और कुछ लोग अधर्म की कन्या कहने लगे थे और मृत्यु की जननी या माता मानने लगे थे। बौद्ध इसे २४ दुष्ट मनोविकारों में से एक मनोविकार या वासना मानते हैं। पर सब मतों का सारांश यही है कि यह मूर्तिमान भ्रम है और लोगों को धोखे में रखकर ईश्वर या मुक्ति से विमुख रखनेवाली है। इसी लिए जितने काम चीजें या बातें वास्तव में कुछ और होती हैं पर देखने में कुछ और, उन सबका अन्तर्भाव माया में ही होता है। हिंदू धर्म में देवी-देवताओं की इच्छा प्रेरणा या शक्ति से जो अद्भुत, अलौकिक या विलक्षण लीला-पूर्ण कृत्य होते हैं, उन सबकी गिनती उन देवी-देवताओं की माया में ही होती है।

५ उक्त के आधार पर अज्ञान या अविद्या। ६ उक्त के फलस्वरूप और भ्रम या मोह-वश किसी के प्रति होनेवाला अनुराग, प्रेम या स्नेह। ममता। ममत्व। ७. किसी प्रकार की अवास्तविक और मिथ्या धारणा या विचार। (इल्यूजन) ८ उक्त के कारण किसी के प्रति मन में उत्पन्न होनेवाला अनुग्रह या दया का भाव। उदा०—भलेहि आई अब माया कीजै।—जायसी। ९. कपट। छल। फरेब। जैसे—माया-मृग। १० धोखा। भ्रम। ११ ऐसी गूढ़ और विलक्षण बात जो जल्दी समझ में न आवे अथवा जिसे समझने के लिए बहुत मानसिक परिश्रम करना पड़े। जैसे—माया-वर्ग। १२. इंद्रजाल। जादूगरी।

पद—**मायाकार, मायाजीवी**।

१३. राजनीतिक चाल या दाँव-पेच। १४ अनुग्रह। कृपा। १५. दया। मेहरबानी। १६ लक्ष्मी देवी। १७ धन-सम्पत्ति। दौलत। जैसे—उनके पास लाखों रुपयों की माया है। १८ कोई आदरणीय और पूज्य स्त्री। १९ मय दानव की कन्या जो विश्रवा को ब्याही थी। २० गौतम बुद्ध की माता मायादेवी। २१ गया नामक नगरी। २२ इंद्रवज्रा नामक वर्णवृत्त का एक उपभेद जो इंद्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा के मेल से बनता है। इसके दूसरे तथा तीसरे चरण का प्रथम वर्ण लघु होता है। २३ एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः मगण, तगण, यगण, सगण और एक गुरु वर्ण होता है।

स्त्री०[हिं० माता] माता। माँ। जननी। उदा०—बिनवै रतनसेन की माया।—जायसी।

मायाकार—पुं०[सं० माया√कृ+अण्]=मायाजीवी।

माया-क्षेत्र—पुं०[सं० ष० त०] दक्षिण भारत का एक तीर्थ।

मायाचार—पुं०[सं० माया√चर् (गति)+अण्] मायावी।

मायाजीवी (विन्)—पुं०[सं० माया√जीव् (जीना)+णिनि] ऐंद्रजालिक। जादूगर।

मायाति—स्त्री०[सं० मया√अत् (निरन्तर गमन)+इण्] तांत्रिकों की वह नर-बलि जो अष्टमी या नवमी के दिन दुर्गा को प्रसन्न तथा संतुष्ट करने के उद्देश्य से दी जाती थी। (तांत्रिक)

मायादेवी—स्त्री०[सं०] गौतम बुद्ध की माता का नाम।

माया-धर—पुं०[ष० त०] मायावी।

माया-पति—पुं०[ष० त०] ईश्वर। परमेश्वर।

माया-पात्र—पुं०[हिं० माया=धन+सं० पात्र] धनवान्। अमीर।

माया-फल—पुं०[ष० त०] माजूफल।

माया-मोह—पुं०[सं० माया√मुह्+णिच्+अच्] शरीर से निकला हुआ एक कल्पित पुरुष जिसने असुरों का दमन किया था। (पुराण०)

माया-यंत्र—पुं०[ष० त०] सम्मोहन क्रिया।

मायावत्—पुं०[सं० माया+मतुप्। वत्व] १ मायावी। २ राक्षस। ३. कंस का एक नाम।

मायावती—स्त्री०[सं० मायावत्+ङीप्] कामदेव की स्त्री, रति।

मायावर—वि० [ष० त०] माया करनेवाला। उदा०—अभिनय करते विश्वमंच पर तुम मायावर।—पंत।

पुं०१ ईश्वर। २. ऐंद्रजालिक। जादूगर।

माया-वर्ग—पुं०[सं० ष० त०] गणित में वह बड़ा वर्ग जिसमें कई छोटे-छोटे वर्ग होते हैं और उन छोटे-छोटे वर्गों में से हर एक में कुछ अंक या संख्याएँ किसी ऐसे विशिष्ट क्रम से रखी होती हैं कि हर ओर से अर्थात् खड़े, बेड़े तथा तिरछे बलों की संख्याओं का जोड़ एक ही आता है। (मैजिक स्क्वेयर)

माया-वाद—पुं०[सं० ष० त०] ब्रह्म को सत्य और जगत् को मिथ्या मानने का सिद्धान्त।

माया-वादी (दिन्)—पुं०[सं० माया-वाद+इनि] मायावाद का सिद्धान्त माननेवाला व्यक्ति।

वि० मायावाद-सम्बन्धी।

मायावान् (वत्)—वि०=मायावी।

मायाविनी—स्त्री०[सं० माया+विनि+ङीप्] छल या कपट करनेवाली स्त्री। ठगिनी।

मायावी (विन्)—वि०[सं० माया+विनि] [स्त्री० मायाविनी] १. माया-संबंधी। २. माया के रूप में होनेवाला। ३ जादू आदि से संबंध रखनेवाला।

पुं० १ वह जो अनेक प्रकार की मायाएँ रचने अर्थात् तरह-तरह के रहस्यमय कृत्य करके लोगो को चकित करने तथा धोखे मे रखने में कुशल या दक्ष हो। २. बहुत बडा कपटी या धोखेबाज। ३ बिडाल। बिल्ला। ४. ईश्वर या परमात्मा का एक नाम। ५. मय दानव के पुत्र का नाम।

माया-बीज—पुं० [सं० ष० त०] 'ह्रीं' नामक तांत्रिक मंत्र।

मायाशय—वि०[सं०माया+आशय, ष०त०] माया से अभिभूत। उदा०—सुरभित दिशि-दिशि कवि हुआ धन्य मायाशय।—निराला।

माया-सीता—स्त्री०[सं० मध्य०स०] सीता-हरण मे पूर्व सीता द्वारा राम की आज्ञा से धारण किया गया मायावी रूप।

माया-सुत—पुं०[सं० ष० त०] माया देवी के पुत्र गौतम बुद्ध।

मायिक—वि० [सं० माया+ठन्—इक] १ माया-संबंधी। २. मायावी। अवास्तविक पर वास्तविक-सा दिखाई पडनेवाला। ३ माया करने या दिखानेवाला। मायावी।

पुं० माजूफल।

मायी (यिन्)—पुं०[सं० माया+इनि] १ माया का अधिष्ठाता। परब्रह्म। ईश्वर। २ माया दिखानेवाला। मायावी। ३. जादूगर।

†स्त्री०=माई (माता)।

मायु—पुं०[सं० √मि (फेंकना)+उण्, आत्व, युक्] १. पित्त। २. आवाज। शब्द। ३ वाक्य।

मायुक—वि०[सं० मायु+कन्] शब्द करनेवाला।

मायूर—पुं०[सं० मयूर+अण्, वृद्धि] १ मयूर। मोर। २. वह रथ जिसे मयूर खींचकर ले चलते हो।

वि० मयूर-सम्बन्धी। मोर का।

मायूरक—पुं०[सं० मायूर+कन्] मोर पकड़नेवाला बहेलिया।

मायूरा—स्त्री०[सं० मायूर+टाप्] कठूमर।

मायूरी—स्त्री०[सं० मायूर+ङीप्] अजमोदा।

मायूस—वि०[अ०] [भाव० मायूसी] निराश। हताश।

मायूसी—स्त्री०[अ०] मायूस होने की अवस्था या भाव। निराशा।

मार—पुं०[सं०√मृ (मरना)+घञ्] १. कामदेव। २. जहर। विष। ३. धतूरा। ४. बाधा। विघ्न।

स्त्री०[हिं० मारना] १. मारने अर्थात् चोट पहुँचाने या पीटने की क्रिया या भाव। जैसे—मार के आगे भूत भागता है।

पद—मार-काट, मार-धाड़, मार-पीट, मार-मार। (दे० स्वतन्त्र पद)

क्रि० प्र०—खाना।—पड़ना।—पिटना।

२. किसी प्रकार का अथवा किसी रूप में होनेवाला आघात या प्रहार। कोई ऐसा काम या बात जो कष्ट पहुँचानेवाला अथवा नाश या हानि करनेवाला हो। जैसे—गरीबी की मार, रोटी की मार। उदा०—बड़ी मार कबीर की चित्त से दिया उतार।—कबीर।

विशेष—ऐसे अवसरों पर मार का आशय यही होता है कि उसके फलस्वरूप मनुष्य की दशा बहुत ही दीन-हीन तथा शोचनीय हो जाती है। अकल की मार, शामत की मार सरीखे प्रयोगों मे 'मार' का आशय यही होता है कि चाहे किसी चीज या बात के अभाव से हो, चाहे आधिक्य से, मनुष्य की दशा बहुत बुरी हो जाती है। गरीबी की मार में गरीबी के आधिक्य का भाव है, और रोटी की मार में रोटी के अभाव का, ईश्वर या खुदा की मार में कोप या प्रकोप का भाव प्रधान है।

३ उतनी दूरी जहाँ तक कोई चलाया या फेंका हुआ अस्त्र जाकर पहुँचता और अपना काम करता या प्रभाव दिखलाता है। (रेंज) जैसे—इस बंदूक की मार एक हजार गज है। ४. निशान। लक्ष्य। ५. दे० 'मार-पीट'। जैसे—गाँववालो मे अक्सर मार होती रहती है। ६. किसी प्रकार का प्रभाव या फल नष्ट करनेवाली चीज या बात। मारक तत्त्व। जैसे—खुजली की मार घी है अर्थात् घी से खुजली दब या मिट जाती है।

अव्य० १ बहुत अधिकता से। अत्यन्त। जैसे—तुमने तो सबेरे से मार आफत मचा रखी है।

स्त्री०[देश०] काली मिट्टी की जमीन।

†स्त्री०=माला।

मारकंडेय—पुं०=मार्कंडेय।

मारक—वि०[सं०√मृ+णिच्+ण्वुल्—अक] १. जान से मार डालनेवाला। २ पीडक। ३ प्रभाव, वेग, विष आदि को दबाने या नष्ट करनेवाला। (एन्टीडोट)

मारका—पुं०[अं० मार्क] १. चिह्न। निशान। २ किसी प्रकार की पहचान के लिए लगाया जानेवाला चिह्न या निशान। ३. वह विशिष्ट चिह्न या निशान जो बडे व्यापारी अपने बनवाये हुए पदार्थों पर उसकी विशिष्टता की पहचान के लिए लगाते हैं। छाप।

पुं०[अ० मारिक.] १ युद्ध। लड़ाई। २. कोई बहुत बडी और महत्त्वपूर्ण घटना। ३. कोई बहुत बड़ा और महत्त्वपूर्ण काम।

पद—मारके का=बहुत बड़ा और महत्त्वपूर्ण।

मार-काट—स्त्री०[हिं० मारना+काटना] १ एक दूसरे को मारने और काटने की क्रिया या भाव। २. युद्ध या लडाई जिसमे आदमी मारे और काटे जाते हैं।

मारकीन—स्त्री०[अं० नैनकिन्] एक तरह का साधारण कपडा।

मारकुवा—वि०=मरकहा (मारनेवाला)।

मारकेश—पुं०[सं० मारक-ईश, कर्म० स०] किसी की जन्म-कुंडली मे पड़नेवाला ग्रहों का एक योग जो व्यक्ति के लिए घातक होता है। (ज्यो०)

मारखोर—पुं०[फा०] बहुत बडे सींगोंवाली एक प्रकार की बहुत सुन्दर जंगली बकरी जो काश्मीर और अफगानिस्तान मे होती है। इसके नर के शरीर से बहुत तेज गन्ध निकलती है।

मारग*—पुं०[सं० मार्ग] मार्ग। रास्ता।

मुहा०—मारग मारना=किसी राह चलते आदमी को लूटना। मारग

लगना या लेना=(क) रास्ते पर चलना। (ख) चले जाना। दूर हो जाना।

मारगन*—पु०[सं० मार्गण]१. बाण। तीर। २. भिक्षुक। याचक।

मारगी†—स्त्री०[स० मार्ग] राह चलतो को लूटने की क्रिया। बटमारी। उदा०—चोरी करौं न मारगी।—मीराँ।

मारजन—पु० =मार्जन।

मारजनी—स्त्री०=मार्जनी।

मारजार†—पु०=मार्जार।

मारजित्—पु०[स० मार√जि (जीतना)+क्विप्, तुक्]१ वह जिसने कामदेव को जीत लिया हो। २ शिव। ३. बुद्ध।

मारण—पुं०[स० √मृ (मारना)+णिच्+ल्युन—अन्]१ मार डालने अर्थात् प्राण लेने की क्रिया या भाव। २ वह तान्त्रिक प्रयोग जो किसी के प्राण लेने या मार डालने के उद्देश्य से किया जाता है।

मारतंड—पु०=मार्तंड।

मारते खाँ—पु०[हिं० मारना+फा० खान] वह जो अपने बल के गर्व मे दूसरों को जरा सी बात पर मार बैठता हो।

मारतोल—पु० [पु० मार्टेली] एक प्रकार का बडा हथौड़ा।

मार-धाड़—स्त्री०[हि०]१ बहुत से लोगो का तेजी से आगे बढकर किसी पर आक्रमण करना। जैसे—मुगल सेना मार-धाड करती हुई बढती चली जा रही थी। २ गडबडी की वह स्थिति जिसमे लोग बहुत जल्दी अपने काम मे या इधर-उधर दौड़ने-घूमने मे लगे हो।

मारना—स०[स० मारण]१ ऐसा आघात या क्रिया करना जिससे किसी के प्राण निकल जायँ। आयु या जीवन का अत करना। जैसे—(क) यह दवा कई तरह के जहरीले कीड़े मारती है। (ख) इसने कल एक साँप मारा था।

मुहा०—(किसी को) मार गिराना=आघात या प्रहार करके प्राण लेकर अथवा मृतप्राय करके जमीन पर गिराना। जैसे—सिपाहियो ने चार डाकू मार गिराये।

सयो० क्रि०—डालना।—देना।

२ क्रोध मे आकर दड देने या बदला चुकाने के लिए किसी के शरीर पर थप्पड मुक्का, लात आदि से या छड़ी, डडे, बेत आदि से बार-बार आघात या प्रहार करना। जैसे—उसने नौकर को मारते-मारते बेहोश कर दिया।

पद—मारना-पीटना।

३. कोई चीज किसी दूसरी चीज पर इस प्रकार जोर से गिराना या फेंकना कि वह जाकर टकरा जाय और स्वय क्षतिग्रस्त हो अथवा दूसरी चीज को क्षतिग्रस्त करे। जैसे—चिड़ियों को ढेले पत्थर मारना।

मुहा०—(किसी को) दे मारना=उठाकर जोर से गिराना, पटकना या फेंकना। उदा०—मेरा दिल लेके शीशे की तरह पत्थर पे दे मारा।—कोई शायर।

४ साधारण रूप से कोई चीज किसी दूसरी चीज पर पटकना। जैसे—यही बात पक्की रही, लाओ मारो हाथ। (अर्थात् पक्का वचन दो) ५ आखेट में किसी जीव-जतु के प्राण लेना। शिकार करना। जैसे—कबूतर, मछली, शेर या हिरन मारना। ६ जीव-जंतुओं के अपने किसी अग से किसी पर आघात या प्रहार करना अथवा घाव या जखम करना। जैसे—बर्रे या बिच्छू डक मारता है, घोडा लात मारता है, बैल सींग मारता है, कुत्ता दात मारता है आदि। ७. किसी क्रिया से किसी चीज का आगे बढ़ा हुआ अग या अश काटना, निकालना या मोड़ना। जैसे—(क) बढ़ई ने रंदे से इसका किनारा मार दिया है। (ख) तुमने कागज काटते-काटते कैंची (या चाकू) की धार मार दी है। ८ किसी प्रकार का परिणाम या फल उत्पन्न करने के लिए कोई अग इधर उधर या ऊपर-नीचे हिलाना। जैसे—(क) चिड़ियो का उडने के लिए पर मारना। (ख) बधन से छूटने के लिए हाथ-पैर मारना अर्थात यथा-साध्य प्रयत्न करना। ९ किसी पदार्थ का तत्त्व या सार-भाग कम या नष्ट करके उसे निरर्थक या निर्बल करना। जैसे—यह दवा कई तरह के जहर मारती है। १० वैद्यक मे रासायनिक प्रक्रियाओ से धातु आदि का भस्म तैयार करना। जैसे—पारा मारना, सोना मारना। ११ किसी को किसी प्रकार से या किसी रूप मे अक्रिय, अयोग्य या निकम्मा करके किसी काम या बात के योग्य न रहने देना। बुरी तरह से नष्ट या बरबाद करना। जैसे—(क) हमें तो दिन-रात की चिंता ने मारा है। (ख) उन्हे तो ऐयाशी (या शराब-खोरी) ने मारा है। १२ बहुत अधिक मानसिक या शारीरिक कष्ट देकर तग, दु खी या परेशान करना। (प्राय किसी दूसरी क्रिया के साथ सयोज्य क्रिया के रूप मे) जैसे—(क) इस लडके की नालायकी ने तो हमे जला मारा (या सता मारा) है। (ख) आज तो तुमने नौकर को दिन भर दौड़ा मारा।

पद—(किसी चीज या बात) का मारा=किसी चीज या बात के कारण बहुत अधिक त्रस्त या दु खी। जैसे—आफत का मारा, भूख का मारा, रोटियों का मारा आदि।

१३ द्वेष या वैरमूलक लडाई-झगडा, विवाद आदि के प्रसग मे विपक्षी या विरोधी को परास्त करते हुए नीचा दिखाना या वश मे करना। जैसे—इस चुनाव मे इन्होंने उसे ऐसा मारा है कि अब वह कभी इनके मुकाबले मे खडे होने का नाम न लेगा।

पद—वह मारा=बस अब परास्त करके वश मे कर लिया। पूरी तरह से जीत लिया और हरा दिया। उदा०—वह मारा! अब कहां जाती है। आज का शिकार तो बहुत नफीस है।—राधाकृष्णदास।

१४ खेल, प्रतियोगिता आदि के प्रसग मे विपक्षी का हराकर विजय प्राप्त करना। (स्वय खेल के सबध मे भी और खेलाड़ी के सम्बन्ध मे भी) जैसे—(क) कुश्ती या बाजी मारना=जीतना। (ख) एक पहलवान को दूसरे पहलवान का मारना—पछाडना। १५. गंजीफे, ताश, शतरज आदि खेलो मे विपक्षी के पत्ते, गोट आदि जीतना। जैसे—(क) प्यादे से हाथी मारना। (ख) दहले से नहला मारना। १६ किसी प्रकार का मानसिक या शारीरिक आवेग दबाना या रोकना। जैसे—(क) मन मारना=मन मे होनेवाली इच्छाएँ दबाना। (ख) प्यास या भूख मारना=प्यास या भूख लगने पर भी पानी न पीना या भोजन न करना। उदा०—रिस उर मारि रक जिमि राजा।—तुलसी। १७. अनुचित रूप से चालबाजी से या बलपूर्वक किसी का धन, सपत्ति या कोई चीज प्राप्त करके अपने अधिकार मे करना। जैसे—(क) किसी की गठरी मारना। (ख) किसी का माल या रुपया मारना।

मुहा०—मार खाना=उक्त प्रकार से प्राप्त करके अधिकार मे कर लेना। जैसे—इस सौदे मे उसने सौ रुपये मार खाये। **मार रखना**=अनुचित

रूप से दबाकर अपने पास रख लेना। जैसे—अभी तो वह किताब मार रखो; फिर देखा जायगा। **मार लेना**=अनुचित रूप से प्राप्त करके अपने अधिकार में कर लेना। जैसे—इस सौदे मे उसने भी सौ रुपये मार लिए।

१८. कुछ विशिष्ट क्रियाओं के सम्बन्ध में, पूरा या सम्पन्न करना। जैसे—पानी में गोता मारना, किसी के चारो ओर चक्कर मारना, सिलाई करने के लिए टाँका मारना। १९. किवाड़े या ताले के सम्बन्ध मे ऐसी क्रिया करना कि वह बद हो जाय,खुला न रहे। जैसे-(क) कोठरी का दरवाजा मारना। (ख) दरवाजे में ताला मारना। (पश्चिम) २० मैथुन या संभोग करना। (बाजारू)

विशेष—अनेक क्रियाओ के साथ संयो० क्रिया के रूप में भी और अनेक सज्ञाओं के साथ क्रि० प्र० के रूप में भी 'मारना' का प्रयोग अनेक प्रकार के भाव प्रकट करने के लिए होता है। उनमे मुख्य भाव तीन हैं—(क) किसी प्रकार के आघात या क्रिया से उपेक्षापूर्वक अंत या समाप्त करना। जैसे—किसी के लिखे हुए पर लकीर मारना, किसी चीज को लात मारना, किसी काम या बात को गोली मारना आदि। (ख) किसी प्रकार का प्रभाव विशेषत· दूषित प्रभाव उत्पन्न करना। जैसे—जादू या मतर मारना; किसी आदमी को पीस मारना। (ग) कोई क्रिया कष्टपूर्ण रूप से या बुरी तरह से पूरी या सम्पन्न करना। जैसे—गाल मारना, डींग मारना, दम मारना, कोई चीज किसी के सिर मारना (अर्थात् उपेक्षापूर्वक देना या फेंकना)। किसी काम या बात के लिए मगज या सिर मारना अर्थात् बहुत अधिक मानसिक परिश्रम करना आदि। कुछ अवस्थाओ मे इसका प्रयोग (मुहावरे के प्रसग मे) अकर्मक क्रिया के रूप में भी होता है। जैसे—(क) यह सुनते ही उसे काठ मार गया, अर्थात् वह काष्ठ के समान स्तब्ध हो गया। (ख) सारी फसल को पाला मार गया (अर्थात् लग गया) है। (ग) उसके भाई को लकवा मार गया (अर्थात् हो गया) है। ऐसे प्रयोगो के ठीक अर्थों के लिए सबद्ध क्रियाएँ या सज्ञाएँ देखनी चाहिएँ।

मार-पीट—स्त्री० [हिं० मारना+पीटना] वह लड़ाई जिसमे लड़नेवाले एक दूसरे को मारते-पीटते हैं।

मार-पेंच—पु० [हिं० मारना+पेच] धूर्तता। चाल-बाजी।

मारफत—अव्य० [अ० मारफत] १. किसी व्यक्ति के माध्यम से। जैसे—मैं कुछ रुपये श्री कृष्णचद की मारफत तुम्हें भेजूंगा। २ पत्रों पर पता लिखते समय, किसी अमुक के द्वारा।

स्त्री० १. [अ०] १ अध्यात्म। २. इस्लाम विशेषत: सूफी संप्रदाय में साधना की चार स्थितियो मे से तीसरी स्थिति जिसमे साधक अपने गुरु या पीर के उपदेश और शिक्षा से ज्ञानी हो जाता है।

विशेष—शेष तीन स्थितियाँ शरीअत, तरीकत और हकीकत कहलाती हैं।

३. उर्दू कविता का वह प्रकार जिसमें साधारण रूप में तो लौकिक प्रेम का उल्लेख होता है प्ररन्तु ध्वनि या श्लेष से वस्तुत· ईश्वर के प्रति प्रेम प्रकट होता है। (अन्योक्ति का एक प्रकार) जैसे—अगर कोई मारफत की गजल याद हो तो सुनाओ।

मारवा—पु० [देश०] १ एक प्रकार का संकर राग जो परज, बिभास और गौरी के मेल से बनता है। इसके गाने का समय सायंकाल है। २. संगीत में एक प्रकार का खयाल।

मारवाड़—पु० [सं० मरुवर्त] १. मेवाड़ प्रदेश। २. मेवाड़ और उसके आस-पास के अनेक प्रदेश जो अब राजस्थान के रूप में परिणत हो गये हैं।

मारवाड़ी—पु० [हिं० मारवाड] [स्त्री० मारवाड़िन]। मारवाड़ देश का निवासी।

स्त्री० मारवाड़ देश की बोली।

वि० मारवाड देश का। मारवाड़-सम्बन्धी।

मारा—वि० [हिं० मारना] १. जो मारा गया हो। २. जिस पर मार पड़ी हो।

मुहा०—**मारा फिरना, या मारा-मारा फिरना**=बहुत ही दुर्दशा भोगते हुए इधर-उधर घूमना।

३ जो किसी प्रकार के आघात या प्रकोप से त्रस्त या पीड़ित हो। जैसे—आफत का मारा, किस्मत का मारा, बीमारी का मारा आदि।

†स्त्री०=माला।

मारात्मक—वि० [सं० मार-आत्मन्, ब० स०+कप्] १. हिंसक। २. प्राण-नाशक। ३ दुष्ट।

माराभिभू—पुं० [स० मार-अभि√भू (होना)+डू] गौतम बुद्ध।

मारामार†—क्रि० वि० [हिं० मारना] बहुत अधिक तेजी से या इतने वेग से कि मानों किसी को मारने जा रहे हों।

†स्त्री० १ मार-पीट। २ बहुत अधिक जल्दी। जैसे—इतनी मारा-मार करना ठीक नही ।

मारा-मारी—स्त्री० [हिं० मारना] १ ऐसी लड़ाई जिसमें मार-काट हो रही हो। २ जबरदस्ती। बल-प्रयोग।

क्रि० वि०=मारामार।

मारि*—स्त्री० १ मार। २ मरी।

मारिच†—पु० १ =मारीच (राक्षस)। २ =मार्च (महीना)।

मारित*—भू० कृ० [सं०√मृ+णिच्+क्त] १ जो मार डाला गया हो। २. भस्म के रूप मे किया या लाया हुआ। (वैद्यक) जैसे—मारित स्वर्ण। ३. नष्ट किया हुआ।

मारिष—पु० [स०√मृष् (सहन करना)+अच्, निपा० सिद्धि, या मा√रिष्+क] १ नाटक का सूत्रधार। २. नाटकों मे आदरणीय या मान्य व्यक्ति के लिए सम्बोधन। ३ मरसा नाम का साग।

मारिषा—स्त्री० [स० मारिष+टाप्] दक्ष की माता का नाम।

मारी—स्त्री० [सं०√मृ+णिच्+इन्+ङीष्] १. चंडी नाम की देवी। २ माहेश्वरी शक्ति। ३. महामारी। मरी।

मारीच—पु० [सं०] १. एक राक्षस जिसने रावण के कहने पर सीताहरण कराने के लिए सोने के हिरन का रूप धारण किया था। २. हाथी। ३ मिर्च के पौधो का समूह।

वि० [सं० मरीचि+अण्] मरीचि द्वारा रचित।

मारीचि—स्त्री० [सं०] बुद्ध की माता का नाम। माया देवी।

मारु†—पुं० १. मार (कामदेव)। २ मारवाड (देश)।

स्त्री०=मार।

मारुत—पु० [सं० मरुत+अण्] १. वायु। पवन। २. वायु या पवन के अधिपति देवता।

मारुत-सुत—पु० [ष० त०] १. हनुमान्। २. भीम।

मारुतात्मज—पु० [सं० मारुत-आत्मज, ष० त०] हनुमान्।

मारुतापह—पुं०[सं० मारुत-अप√हन् (मारना)+ड] वरुण वृक्ष।
मारुताशन—पुं०[सं० मरुत-अशन, ब० स०]१ कार्तिकेय का एक अनुचर। २. साँप।
मारुति—पुं०[सं०मारुत+इञ्] १ हनुमान्। २ भीम।
मारुध—पुं०[सं०] एक प्राचीन देश।
मारू—वि०[हिं० मारना]१ मार डालने या जान लेनेवाला। २. हृदय या मर्मस्थल पर आघात करनेवाला। ३ मारने-पीटनेवाला।
पुं०१ उन गीतों या रागों का वर्ग जो युद्ध के समय वीरो को उत्तेजित तथा उत्साहित करने के लिए गाये जाते है। २. युद्ध मे बजाया जानेवाला बहुत बडा डका या नगाडा।
पुं०[देश०]१ एक प्रकार का शाहबलूत जो शिमले और नैनीताल मे अधिकता से पाया जाता है। २ काकरेजी रग।
†पुं०=मारवाडी।
मारूज—वि०[अ० मारूज़]१ अर्ज किया हुआ। निवेदित। २ उक्त। कथित।
पुं०१ निवेदन। प्रार्थना। २. उक्ति। कथन।
मारूत—स्त्री०[हिं० मारना ?] घोडो के पिछले पैरो की एक भौरी जो मनहूस समझी जाती है।
†पुं०=मारुति।
मारे—अव्य० [हिं० मारना] वजह से। कारण। (विवशतासूचक) जैसे—जल्दी के मारे वह अपनी पुस्तक यही भूल गया।
मार्कंड—पुं०=मार्कंडेय।
मार्कंडेय—पुं०[सं० मृकड+ढक्—एय] मृकड ऋषि के पुत्र एक प्राचीन मुनि जिन्होने अपने तपोबल से अमरत्व प्राप्त किया था, इनके नाम पर एक पुराण भी प्रचलित है।
मार्क—पुं०[अं०]१ चिह्न। छाप। २ मारका। ३ लक्षण।
मार्का—पुं०= मारका (चिह्न)।
मार्क्विस—पुं०[अं०] इगलैण्ड के कुछ मामतो की परंपरागत एक उपाधि।
मार्क्स—पुं० एक प्रसिद्ध जरमन क्रान्तिकारी समाजवादी नेता जिसने दर्शन, राजनीति आदि के कई प्रसिद्ध ग्रन्थ लिखे है, और जिसके नाम पर मार्क्सवाद (देखे) नाम का मत या वाद आजकल विशेष प्रचलित है। इसका पूरा नाम हैनरिच कार्ल मार्क्स था। (सन् १८१८–१८८३ ई०)
मार्क्सवाद—पुं०[जर्मन मार्क्स (नाम)+सं० वाद] जर्मन समाजवादी कार्ल मार्क्स (देखे) का यह सिद्धान्त कि सारी सम्पत्ति श्रम से ही उत्पन्न होती या बनती है, अत. उससे प्राप्त होनेवाला धन श्रमिको को ही मिलना चाहिए। इसमे पूँजीवादी अर्थ-व्यवस्था का तिरस्कार किया गया है।
विशेष—मार्क्स का मत है कि श्रमिकों को पूँजीपतियो के साथ सघर्ष करते रहना चाहिए और इस प्रकार पूँजीदारी अर्थ-व्यवस्था का पूरी तरह से नाश करना चाहिए।
मार्क्सवादी—वि०[हिं०मार्क्सवाद] मार्क्सवाद-सम्बन्धी। मार्क्सवाद का। जैसे—मार्क्सवादी दृष्टिकोण।
पुं० वह जो मार्क्सवाद के सिद्धान्तों का अनुयायी हो।
मार्केट—पुं०[अं०] बाजार। हाट।
मार्ग—पुं०[सं०√मार्ग बा√मृज्+घञ्]१. आने जाने का रास्ता। पथ। राह। २. कोई ऐसा द्वार, माध्यम या साधन जिसका अनुसरण, पालन या व्यवहार करने से कोई अभिप्राय या कार्य सिद्ध होता हो। ३ मलद्वार। गुदा। ४. अभिनय, नृत्य और सगीत की एक उच्च कोटि की शैली। ५. गंधर्व सगीत की वह शाखा जो देशी सगीत के संयोग से निकली थी। ६ मृगशिरा नक्षत्र। ७. मार्गशीर्ष या अगहन नाम का महीना। ८. विष्णु। ९ कस्तूरी। १०. अपामार्ग। चिचड़ा।
वि० मृग-सबधी। मृग का।
मार्गक—स्त्री०[सं० मार्ग+कन्]मार्गशीर्ष या अगहन का महीना।
मार्ग-कर—पुं०[सं० ष० त०] वह कर जो यात्री को किसी विशिष्ट मार्ग से होकर जाने के बदले मे देना पड़ता है। पथ-कर। (टोल टैक्स)
मार्गण—पुं० [सं०√ मार्ग् (खोजना)+ल्युट्—अन] १. अन्वेषण। खोज। २ प्रेम। ३ याचना। ४ याचक। भिखमगा। ५ तीर। बाण।
मार्गणा—स्त्री०[√मार्ग+णिच्+युच्—अन,+टाप्] १. अन्वेषण। २. याचना।
मार्गद—पुं०[सं० मार्ग√दा (देना)+क] केवट। मल्लाह।
मार्ग-दर्शक—पुं०[सं० ष० त०]१ मार्ग दिखलानेवाला व्यक्ति। २. वह जो यात्रियो, भ्रमण करनेवालो का पथ-प्रदर्शन करता हो।
मार्ग-दर्शन—पुं०[सं० ष० त०]१ रास्ता दिखलाना। २ पथ-प्रदर्शन।
मार्ग-देशिक—पुं०[सं०] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।
मार्ग-देशी—पुं०[हिं०]सगीत शास्त्र की दृष्टि से आज-कल का वह प्रचलित सगीत जिसमे ध्रुपद, खयाल, टप्पा, ठुमरी आदि सम्मिलित हैं।
मार्ग-धेनु (क)—पुं०[सं० ष० त] चार कोस की दूरी। एक योजन।
मार्गप—पुं०[सं० मार्ग √ पा (रक्षा करना)+क] मार्ग अर्थात् रास्ते का निरीक्षण करनेवाला अधिकारी।
पुं०=मार्गण (तीर)।
मार्गपति—पुं०=मार्गप।
मार्ग-राग—पुं० [सं०] सगीत-शास्त्र मे प्राचीन राग, जिन्हे शुद्धराग भी कहते हैं। जैसे—भैरव, मेघ आदि राग। (देशी रागो स भिन्न)
मार्गव—पुं०[सं०]१ अयोगवी माता और निषाद पिता से उत्पन्न एक प्राचीन सकर जाति। २ उक्त जाति का व्यक्ति।
मार्गवती—स्त्री०[सं० मार्ग+मतुप्, म—व+ङीप्] एक देवी जो मार्ग चलनेवालो की रक्षा करनेवाली मानी गई है।
मार्गशिर—पुं०=मार्गशीर्ष।
मार्गशीर्ष—पुं०[सं० मृगशीर्ष+अण्+ङीप्, मार्गशीर्षी+अण्]अगहन का महीना।
मार्गाधिकार—पुं०[सं० मार्ग-अधिकार, ष० त०] वह अधिकार जो किसी मार्ग पर आने-जाने अथवा अपने आदमी या चीजें भेजने-मँगाने आदि के संबध मे किसी विशिष्ट व्यक्ति, देश आदि को प्राप्त होता है। (राइट आफ पैसेज)
मार्गिक—पुं० [सं० मृग+ठक्—इक] १ पथिक। यात्री। २. मृगों को मारनेवाला व्याध।
मार्गी (गिन)—पुं०[सं० मार्ग+इनि] मार्ग पर चलनेवाला व्यक्ति। बटोही। यात्री।
स्त्री० संगीत मे एक मूर्च्छना जिसका स्वर-ग्राम इस प्रकार है—नि, स, रे, ग, म, प, ध। म, प, ध, नि, स, रे, ग, म, प, ध, नि, स।

मार्च—पुं०[अं०]१. अंग्रेजी वर्ष का तीसरा मास जो फरवरी के बाद और अप्रैल से पहले पड़ता है और सदा ३१ दिनों का होता है। २. सैनिकों आदि का दल बाँधकर किसी उद्देश्य से आगे बढ़ना या चलना। ३. सेना का कूच या प्रस्थान।

मार्ज—पु० [सं०√मृज् (शुद्ध करना)+णिच्+अच्] १ विष्णु। २. धोबी। ३. [√मृज+घञ्] मार्जन।

मार्जक—वि०[सं० √ मृज्+णिच्+ण्वुल्—अक] मार्जन करनेवाला।

मार्जन—स्त्री० [सं०√मृज् (शुद्ध करना)+णिच्+ल्युट्—अन] १ दोष, मल आदि दूर करके साफ करने की क्रिया या भाव। सफाई। २. अपने ऊपर जल छिड़ककर अपने आपको शुद्ध करना। ३. मल, दोष आदि का परिहार। ४. लोध नामक वृक्ष।

मार्जना—स्त्री०[सं०√मृज्+णिच्+युच्—अन,+टाप्]१ मार्जन करने की क्रिया या भाव। सफाई। २. क्षमा। माफी।

मार्जनी—स्त्री० [सं० मार्जन+ङीप्] १. झाड़ू। बुहारी। २ संगीत में मध्यम स्वर की एक श्रुति।

मार्जनीय—[स० √मृज्+णिच्+अनीयर्] अग्नि।
वि० जिसका मार्जन होना आवश्यक या उचित हो। मार्जन के योग्य।

मार्जार—पु०[सं०√मृज्+आरन्,[स्त्री० मार्जरी] १ बिल्ली। २ लाल चीते का पेड़। ३. पूति सारिवा।

मार्जारक—पु०[स० मार्जार+कन्]मोर।

मार्जारकर्णिका—स्त्री०[सं० मार्जार-कर्ण, ब० स०, ङीप्+कन्, +टाप्, ह्रस्व] चामुंडा (दुर्गा का एक रूप) का एक नाम।

मार्जारगंधा—स्त्री०[स० ब० स० टाप्] मुद्गपर्णी।

मार्जारपाद—पु०[स० ब० स०] एक प्रकार का बुरे लक्षणोवाला घोड़ा।

मार्जाराक्षक—पु०[स० मार्जार-अक्षि, ब०स०, षच्+कन्] एक प्रकार का रत्न। (कौ०)

मार्जारी—स्त्री०[स० मार्जार+ङीप्]१ बिल्ली। २ कस्तूरी। ३ गन्ध-नाकुली।

मर्जारी टोड़ी—स्त्री०[स० मार्जारी+हिं० टोडी] संपूर्ण जाति की एक रागिनी जिसमे सब कोमल स्वर लगते है।

मार्जारीय—पु०[सं० मार्जार+छ—ईय]१. बिल्ली। २ शूद्र।
वि० मार्जन करनेवाला।

मार्जाल—पु०=मार्जार।

मार्जालीय—पु०[स०√मृज+अलीयच्,]१ बिल्ली। २. शूद्र। ३ शिव। ४. एक प्राचीन ऋषि।
वि०=मार्जारीय।

मार्जित—भू० कृ० [सं०√मृज् (शुद्ध करना)+णिच्+क्त] जिसका मार्जन हुआ हो या किया गया हो। साफ या स्वच्छ किया हुआ।
पु० एक प्रकार का श्रीखण्ड जो दही, कपूर, चीनी, शहद और मिर्च आदि मिलाकर बनाया जाता था।

मार्तंड—पुं०[सं० मृत-अण्ड, कर्म० स०, पररूप, +अण्, वृद्धि] १. सूर्य। २. आक। मदार। ३. सूअर। ४. सोनामक्खी।

मार्तंड-वल्लभा—स्त्री०[सं० ष० त०] १. सूर्य की पत्नी। २. छाया।

मार्तिक—भू० कृ० [सं० मृत्तिका+ठक्—इक] मिट्टी से बना या बनाया हुआ।
पुं० १. सकोरा। २. पुरवा।

मार्तिकावत—पुं० [सं०] १. पुराणानुसार चेदि राज्य का एक प्राचीन नगर। २. उक्त नगर के आसपास का प्रदेश। ३. उक्त देश का निवासी।

मार्त्य—पु०[सं० मर्त्य+ष्यञ्]१. मर्त्य होने की अवस्था या भाव। मरण-शीलता। २. शारीरिक मल।

मार्दंग—पु०[सं० मृत्-अंग, ब० स०, +अण्]१ मृदंग बजानेवाला। २. नगर। शहर।

मार्दंगिक—पु०[सं० मृदंग+ठक्—इक] वह जो मृदंग बजाता हो। मृदं-गिया।

मार्दव—पु०[स० मृदु+अण्] १ मृदु होने की अवस्था या भाव। मृदुता। २ दूसरे को दुःखी देखकर दुःखी होने की वृत्ति। हृदय की कोमलता और सरसता। ३. अहंकार आदि दुर्गुणों से रहित होने की अवस्था या भाव। ३. एक प्राचीन जाति।

मार्द्वीक—वि०[स० मृद्वीका+अण्, वृद्धि] १ अंगूर-संबंधी। २. अंगूर से बना या बनाया हुआ।
स्त्री०[सं०] अंगूरी शराब।

मार्फत—अव्य०, स्त्री०=मारफत।

मार्मिक—वि०[सं० मर्मन्+ठक्—इक,] [भाव० मार्मिकता] १. मर्म-सम्बन्धी। मर्म का। २. मर्म-स्थान (हृदय) पर प्रभाव डालने अथवा उसे आंदोलित करनेवाला। ३ किसी विषय का मर्म अर्थात् निहित तत्त्व के आधार पर या विचार से होनेवाला। जैसे—मार्मिक विवेचन।

मार्मिकता—स्त्री०[सं० मार्मिक तल्+टाप्] १ मार्मिक होने की अवस्था या भाव। २. किसी विषय, शास्त्र आदि के गूढ़ रहस्यों की अभिज्ञता या अच्छी जानकारी।

मार्शल—पु०[अं०] सेना का एक उच्च अधिकारी।

मार्शल-ला—पु०[अं०]१. वह आदेश जिसके द्वारा किसी देश की शासन-व्यवस्था सेना को सौंपी जाती है। २ सैनिक व्यवस्था या शासन। फौजी कानून या हुकूमत।
विशेष—जब देश में विशेष उपद्रव आदि की आशंका होती है तब वहाँ से साधारण नागर शासन हटाकर इसी प्रकार का शासन कुछ समय के लिए प्रचलित किया जाता है।

मार्ष—पु०=मारिष।

मालंबा—पु०[?] एक प्रकार का साग जो पानी में होता है।

माल—पु०[स० मा+रन्, र—ल, पृषो०] १ क्षेत्र। २. कपट। छल। ३ वन। जंगल। ४. हरताल। ५. विष्णु। ६ एक प्राचीन अनार्य या म्लेच्छ जाति। ७. एक प्राचीन देश।
स्त्री०[स० माला] १ गले मे पहनने की माला। २ वह रस्सी या सूत की डोरी जो चरखे में बेलन पर से होकर जाती है और टेकुए को घुमाती है। ३. पंक्ति। श्रेणी। ४. झुंड। समूह। उदा०—बाल मृगनि का माल सघन वन भूलि परी ज्यौं।—नंददास।
†पु०—मल्ल (पहलवान)।
पु०[अ०]१. प्रत्येक ऐसी मूल्यवान वस्तु जिसका कुछ उपयोग होता हो और इसी लिए जिसका क्रय-विक्रय होता हो। जैसे—खेतों की उपज, वृक्षों के फल, घर का सामान, खनिज पदार्थ, गहने-कपड़े आदि।

पद—मालखाना, मालगाड़ी, मालगोदाम।

मुहा०—माल काटना, चीरना या मारना=अनुचित रूप से कहीं से मूल्यवान पदार्थ या सम्पत्ति लेकर अपने अधिकार में करना।

२. धन-संपत्ति। रुपया-पैसा। दौलत।

पद—माल-टाल, मालदार, माल-मता।

३ वह धन जो राज्य को कर, लगान आदि के रूप में प्राप्त होता है। राजस्व।

पद—मालगुजारी।

४. किसी पदार्थ का वह मूल अंश या तत्त्व जो वस्तुतः उपयोगी तथा मूल्यवान हो। जैसे—इस अंगूठी का माल (अर्थात् चाँदी या सोना) अच्छा है। ५ सुन्दर और सुस्वाद भोजन। ६ युवती और सुन्दरी स्त्री। (बाजारू) ७ गणित में वर्ग का घात। वर्ग अंक।

माल-कंगनी—स्त्री०[हिं० माल+कंगनी]१ एक प्रकार की लता जिसके बीजों का तेल निकलता है। २ उक्त लता के दाने या बीज जो औषध के काम आते हैं और जिनमें से एक प्रकार का तेल निकलता है।

मालक—पुं०[सं०√मल् (धारण)+ण्वुल्—अक] १ स्थल-पद्म। २ नीम।

†पुं०=मालिक।

मालका—स्त्री०[सं० मालक+टाप्] माला।

मालकोश—पुं०[सं०माल-कोश, ष० त०+अण्] संगीत में ओडव जाति का एक राग जिसे कौशिक राग भी कहते हैं तथा जो रात के दूसरे पहर में गाया जाता है।

मालखंभ—पुं० [सं० मल्ल+खंभ]१ एक प्रकार की भारतीय कसरत या व्यायाम जो लकड़ी के खंभे या डंडे के सहारे किया जाता है और जिसमें कसरत करनेवाला अनेक प्रकार से बार-बार ऊपर चढ़ता और कलाबाजियाँ करता हुआ नीचे उतरता है। कुछ लोग लकड़ी के खंभे की जगह छत में लटकाये हुए लम्बे बेंत का भी सहारा लेते हैं। २ वह खंभा जिसके सहारे उक्त प्रकार की कसरत या व्यायाम किया जाता है।

मालखाना—पुं०[अ० माल+फा० खानः]१. बहुमूल्य वस्तुएँ सँभालकर रखने का स्थान। २ भंडार। ३ गोदाम।

माल गाड़ी—पुं०[हिं० माल+गाड़ी] रेल में वह गाड़ी (सवारी-गाड़ी से भिन्न) जिसमें केवल माल-असबाब भरकर एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाया जाता है।

मालगुजार—पुं० [अ० मालगुज़ार]१ मालगुजारी देनेवाला व्यक्ति। २ जमींदार।

मालगुजारी—स्त्री०[फा०]१ जोती-बोई जानेवाली जमीन का वह कर जो सरकार को दिया जाता है। लगान। २ मालगुजार होने की अवस्था या भाव।

मालगुंजरी—स्त्री०[सं० मालगुर्जर+ङीप्] संपूर्ण जाति की एक रागिनी जिसमें सब शुद्ध स्वर लगते है।

माल गोदाम—पुं०[हिं० माल+गोदाम]१. वह स्थान जिसमें व्यापारी वस्तु का भंडार रखते है। गोदाम। २ रेलवे स्टेशन का वह स्थान जहाँ से मालगाड़ी में माल चढ़ाया और उतारा जाता है।

माल गाम—पुं०[?] एक प्रकार का आम (फल)।

मालचक्रक—पुं०[सं०] कूल्हा।

मालटा—पुं०[मालटा (टापू से)] मुसम्मी की जाति का एक प्रकार का बढ़िया फल और उसका पेड़। यह पहले भूमध्यसागर के मालटा द्वीप से आता था पर अब भारत में भी होता है।

माल टाल†—पुं०=माल-मता।

मालति*—स्त्री०=मालती।

मालती—स्त्री०[सं०√मल्+अतिच् दीर्घ,+ङीष्]१. एक प्रकार की लता। जिसमें वर्षा ऋतु में सफेद रंग के सुगंधित फूल लगते हैं। २. उक्त लता का फूल। ३. छ: अक्षरों की एक प्रकार की वर्णवृत्ति जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से एक नगण, दो जगण और एक रगण होता है। ४ मदिरा नामक छंद। ५. सवैया के मत्तगयंद नामक भेद का दूसरा नाम। ६ युवती स्त्री। ७ चंद्रमा की चाँदनी। ज्योत्स्ना। ८. रात्रि। रात। ९. पाढा या पाठा नाम की लता। १० जात्री या जायफल नामक वृक्ष।

मालती-क्षार—पुं०[सं० ष० त०] सुहागा।

मालती-जात—पुं०[सं० स० त०] सुहागा।

मालती-टोडी—स्त्री०[हिं० मालती+टोडी] संपूर्ण जाति की एक रागिनी जिसमें सब शुद्ध स्वर लगते हैं।

मालती-पत्रिका—स्त्री०[सं० ष० त०] जावित्री।

मालती-फल—पुं०[सं० ष० त०] जायफल।

मालद—पुं०[सं०]१ वाल्मीकीय रामायण के अनुसार एक प्रदेश का नाम जिसे ताड़का ने उजाड़ दिया था। २ एक प्राचीन अनार्य जाति।

मालदह—पुं०[देश०]१ पूर्वी बिहार के एक नगर का नाम। २ उक्त नगर और उसके आस-पास के स्थान में होनेवाला एक प्रकार का बढ़िया आम।

मालदही—स्त्री०[हिं० मालदह] एक प्रकार की नाव जिसमें माझी छप्पर के नीचे बैठकर उसे खेते है।

पुं० मध्यकाल में मालदह में बननेवाला एक तरह का कपड़ा।

वि० मालदह-संबंधी।

मालदा—पुं० =मालदह।

मालदार—वि०[फा०] [भाव० मालदारी] धनवान्। धनी।

मालद्वीप—पुं०[सं० मलयद्वीप] हिंद महासागर का एक द्वीपपुंज।

मालन—स्त्री०=मालिन।

मालपूआ—पुं०[हिं० माल+सं० पूआ] घी में तली हुई एक प्रकार की मीठी पूरी या पकवान।

मालबरी—स्त्री०[हिं० मालाबार] एक प्रकार की ईख।

माल-भंजिका—स्त्री०[सं० ष० त०] प्राचीन काल का एक प्रकार का खेल।

माल-भंडारी—पुं०[हिं० माल+भंडारी]मालगोदाम, भंडार आदि का निरीक्षक।

माल-भूमि—स्त्री०[सं० मल्लभूमि] नैपाल के पूर्व का एक प्रदेश।

माल-मंत्री—पुं० दे० 'राजस्व मंत्री'।

माल-मता—पुं० [अ० माल+मताअ] धन-दौलत। संपत्ति।

मालय—वि० [सं० ष० त०]१ मलय पर्वत का। २ मलय पर्वत पर होनेवाला।

पुं०१ चंदन। २ व्यापारियों का दल। २. गरुड़ के एक पुत्र का नाम।

मालव—पुं०[सं० माल+व]१. आधुनिक मध्य प्रदेश का एक भू-भाग जो मध्य तथा प्राचीन काल में एक स्वतन्त्र राज्य था। मालव देश। २. उक्त देश का निवासी। ३. संगीत में एक राग जो भैरव का पुत्र कहा गया है। ४. सफेद लोध।

वि० मालवा नामक देश का।

मालवक—वि०[सं० मालव+वुन्—अक] मालव-संबंधी। मालवे का। पुं० मालव देश का निवासी।

मालवश्री—स्त्री० [सं० ष० त०]संपूर्ण जाति की एक रागिनी जो सायंकाल गाई जाती है।

मालवा—पुं०[सं० मालव] आधुनिक मध्यप्रदेश के अंतर्गत एक भू-भाग। मालव।

स्त्री० एक प्राचीन नदी।

मालविका—स्त्री०[सं० मालवा+ठक्—इक,+टाप्] निसोथ।

मालवी—स्त्री० [सं० मालव+अण्+ङीप्]१. संगीत में, श्री राग की एक रागिनी। २ पाढ़ा नाम की लता। ३ मालवे की बोली।

वि०=मालवीय।

मालवीय—वि०[सं० मालव+छ—ईय] मालव देश-संबंधी। मालव का। पुं० मालव देश का निवासी।

मालश्री—स्त्री० =मालवश्री।

मालसी—स्त्री०=मालवश्री।

माला—स्त्री०[सं० मा=शोभा√ला (लेना)+क,+टाप्]१ एक ही पंक्ति या सीध में लगी हुई बहुत सी चीजों की स्थिति। अवली। पंक्ति। जैसे—पर्वत-माला। २. एक तरह की चीजों का निरन्तर चलता रहनेवाला क्रम। जैसे—पुस्तक माला। ३. फूलों का हार। गजरा। ४ फूलों के हार की तरह बनाया हुआ सोने चाँदी, रत्नों आदि का हार। जैसे—मोतियों या हीरों की माला। ५. कुछ विशिष्ट प्रकार के दानों या मनकों का हार जो धार्मिक दृष्टियों से पहना जाता है। जैसे—तुलसी की माला, रुद्राक्ष की माला अर्थात् जिसके दानों या मनकों की गिनती के हिसाब से इष्टदेव के नाम का जप किया जाता है।

मुहा०—**माला जपना या फेरना**= हाथ में माला लेकर इष्टदेव का नाम जपना। **(किसी के नाम की) माला जपना**=हरदम या प्रायः किसी का नाम लेते रहना अथवा चर्चा या ध्यान करते रहना।

६. समूह। झुंड। जैसे—मेघमाला। ७ एक प्राचीन नदी। ८ दूब। ९. भुईं आँवला। १०. काठ की एक प्रकार की कटोरी जिसमें उबटन या तेल रखकर शरीर पर मला या लगाया जाता है। ११. उपजाति छंद का एक भेद जिसके प्रथम और द्वितीय चरण में जगण, तगण, जगण और अंत में दो गुरु तथा तीसरे और चौथे चरण में दो तगण फिर जगण और अंत में दो गुरु होते हैं।

पुं०[अ० महल, हिं० महला] मकान का खंड। (महाराष्ट्र) जैसे—मकान का चौथा माला।

मालाकंड—पुं०[सं० ब० स०]१. अपामार्ग। चिचड़ा। २. एक प्रकार का गुल्म।

माला-कंद—पुं०[सं० मध्य० स०] एक प्रकार का कंद जो वैद्यक में तीक्ष्ण दीपन, गुल्म और गंडमाला रोग को हरनेवाला तथा वात और कफ का नाशक कहा गया है। कंडलता। बल-कंद।

मालाकार—पुं०[सं० माला√कृ+अण्] [स्त्री० मालाकारी]१. पुराणानुसार एक वर्णसंकर जाति।

विशेष—ब्रह्मवैवर्त पुराण के अनुसार यह जाति विश्वकर्मा और शूद्रा से उत्पन्न है। पराशर पद्धति के अनुसार यह तेलिन और कर्मकार से उत्पन्न है।

२. माली।

मालाकृति—वि० [माला-आकृति, ब० स०] माला के आकार का। दे० 'रज्जुवक्र'।

मालागिरी—वि०, पुं०=मलयागिरि।

मालातृण—पुं०[सं० मध्य० स०] एक तरह की सुगंधित घास। भूस्तृण।

माला दीपक—पुं० [सं० ष० त०] साहित्य में, दीपक अलंकार का एक भेद जिसमें किसी वस्तु के एक ही गुण के आधार पर उत्तरोत्तर अनेक वस्तुओं का संबंध बतलाया जाता है। जैसे—रस से काव्य, काव्य से वाणी, वाणी से रसिक और रसिक से सभा की शोभा बढ़ती है।

माला-दूर्वा—स्त्री०[सं० उपमि० स०] एक प्रकार की दूब जिसमें बहुत सी गाँठें होती हैं। गंडदूर्वा।

मालाधर—पुं०[सं० ष० त०] सत्रह अक्षरों का एक वर्णिक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में नगण, सगण, जगण फिर सगण और गण में एक लघु और फिर गुरु होता है।

मालाप्रस्थ—पुं०[सं०] एक प्राचीन नगर।

मालाफल—पुं०[सं० ष० त०] रुद्राक्ष।

माला मणि—पुं०[ष० त०] रुद्राक्ष।

मालामाल—वि०[फा०] जिसके पास बहुत अधिक माल या धन हो। धन-धान्य से पूर्ण। संपन्न।

माला रानी—स्त्री०[हिं०] संगीत में कल्याण ठाठ की एक रागिनी।

मालाली—स्त्री०[सं० माला√अल्+अच् + ङीष्] पृक्का। असबरग।

मालावती—स्त्री०[सं० माला+मतुप्, वत्व, ङीप्] एक प्रकार की संकर रागिनी जो पंचम, हम्मीर, नट और कामोद के संयोग से बनती है। कुछ लोग इसे मेघराज की पुत्रवधू मानते हैं।

मालिक—पुं०[सं० माला+ठक्,—इक]१. मालाएँ बनानेवाला। माली। २. रजक। धोबी। ३. एक प्रकार का पक्षी।

पुं०[अ०] [स्त्री० मालिका]१ वह जो सब का स्वामी हो और सब पर अधिकार रखता हो। २. ईश्वर। जैसे—जो मालिक की मरजी होगी, वही होगा। ३. संपत्ति आदि का स्वामी। अध्यक्ष। ४ विवाहिता स्त्री का पति। शौहर।

मालिका—स्त्री०[सं० माला+कन्+टाप् इत्व]१ पंक्ति। श्रेणी। २. फूलों आदि की माला। ३ गले में पहनने का एक प्रकार का गहना। ४ पक्के मकान के ऊपर का कोठा। अटारी। ५. अंगूर की शराब। ६ मदिरा। शराब। ७ पुत्री। बेटी। ८ चमेली। ९ अलसी। १० माली जाति की स्त्री। मालिन। ११. मुरा नामक गंध द्रव्य। १२ सातला।

स्त्री० फा०'मालिक' का स्त्री०। स्वामिनी।

मालिकाना—पुं० [अ० मालिक+फा० आन.] १ स्वामी का अधिकार या स्वत्व। मिलकियत। स्वामित्व। २. वह कर या धन जो मध्ययुग में जमीन के मालिक या जमींदार को किसानों आदि से आधिकारिक रूप में प्राप्त होता था।

वि० १. मालिकों का। २ मालिकों जैसा।

अव्य० मालिक के रूप में। मालिक की तरह।

क्रि० वि० मालिक की भाँति। जैसे—मालिकाना तौर पर।

वि० मालिक या स्वामी का। जैसे—मालिकाना हक।

मालिकी—स्त्री०[फा० मालिक+ई (प्रत्य०)] मालिक होने की अवस्था या भाव। स्वामित्व। मालियत।

वि० मालिक या स्वामी का। जैसे—मालिकी माल।

मालित—भू० कृ०[स० माला+इतच्]१. जिसे माला पहनाई गई हो। २ जो घेर लिया गया हो।

मालिन—स्त्री०[हि० माली]१. माली की स्त्री। २ माली का काम करनेवाली स्त्री।

स्त्री०[स० मालिनी] सगीत मे एक प्रकार की रागिनी।

मालिनी—स्त्री०[स० माला+इनि+ङीप्]१ माली जाति की स्त्री। मालिन। २. चंदा नगरी का एक नाम। ३ गौरी। ४ गगा। ५. अवासा। ६. कलियारी। ७ स्कद की सात मातृकाओ मे से एक। ८ साहित्य मे, मदिरा नाम की वृत्ति। ९. एक प्रकार का वार्णिक वृत्त जिसके प्रत्येक पाद मे १५ अक्षर होते है।पहले ६ वर्ण, दसवाँ और तेरहवाँ लघु और शेष गुरु होते है (न न म य य)। इसे कोई कोई मात्रिक भी मानते है। १० मार्कंडेय पुराण के अनुसार रौच्य मनु की माता का नाम। ११ हिमालय की एक प्राचीन नदी। कहते है कि इसी के तट पर मेनका के गर्भ से शकुंतला का जन्म हुआ था।

मालिन्य—पु० [स० मलिन+ष्यञ्', णत्व वा, वृद्धि] १ मलिन होने की दशा या भाव। मलिनता। मैलापन। २ अधकार। अंधेरा।

मालियत—स्त्री० [अ०] १ माल का वास्तविक मूल्य। कीमत। २ धन। सपत्ति। ३ मूल्यवान् पदार्थ। कीमती चीज।

मालिया—पु० [देश०] पाल आदि बाँधते समय दी जानेवाली रस्सी मे एक विशेष प्रकार की गाँठ। (ल०)

पु० [हि० माल] मालगुजारी। (पश्चिम)

मालिवान*—पु०=माल्यवान्।

मालिश—स्त्री० [फा०] १ शरीर पर तेल आदि मलने की क्रिया या भाव। मर्दन। २ रक्त-सचार आदि के लिए शरीर के किसी अग पर बार-बार हाथ से मलने की क्रिया।

मुहा०—जी मालिश करना=उबकाई या मिचली-सी आना। जैसे—उसे देखकर मेरा तो जी मालिश करने लगा।

माली (लिन्)—वि० [स० माला+इनि] [स्त्री० मालिनी] जो माला धारण किये हो।

पु० १ वाल्मीकीय रामायण के अनुसार सुकेश राक्षस का पुत्र जो माल्यवान् और सुमाली का भाई था। २ राजीव-गण नामक छन्द का दूसरा नाम।

पु० [स० माला+इनि, दीर्घ, न-लोप, मालिन्; प्रा० मालिय][स्त्री० मालिन, मालिनि, मालिनी] १ बाग को सीचने और पौधो को ठीक स्थान पर लगानेवाला व्यक्ति। बागवान। २. हिन्दुओं मे उक्त काम करनेवाली एक जाति। ३. उक्त जाति का व्यक्ति।

स्त्री० [हि० माला] छोटी माला। सुमिरनी। उदा०—तननारी माली पकाई और न कछू उपाय।—बिहारी।

वि० [अ०] माल अर्थात् धन या सपत्ति से सबध रखनेवाला। अर्थ सबधी। आर्थिक।

माली खूलिया—पु० [अ०] एक प्रकार का मानसिक रोग जिसमें रोगी प्राय खिन्न या दु खी और सशक रहता है। उन्माद।

माली गौड़—पु०=मालव-गौड। (राग)

मालीद—पु० [अ० मालिबडेना] एक प्रकार की उज्ज्वल और चमकदार धातु जो चाँदी से अधिक कडी होती है।

मालीदा—पु० दे० 'मलीदा'।

मालु—पु० [स०√मृ (प्राप्त करना)+उण् वृद्धि, र—ल] एक प्रकार की लता जो पेडो से लिपटती है। पत्रलता।

मालुक—पु० [स० मालु+कन्] १ काली तुलसी। २ मटमैले रग का एक प्रकार का राजहस।

मालुधान—पु० [स० मालु√धा (रखना)+ल्यु—अन] १ एक प्रकार का साँप। २ पुराणानुसार आठ प्रमुख नागो मे से एक। ३ महापथ।

मालुधानी—स्त्री० [स० मालुधान+ङीप्] एक प्रकार की लता।

मालुमात—स्त्री० [अ०] १ जानकारी। ज्ञान। २ किसी बात या विषय की अच्छी और पूरी जानकारी।

मालुर—पु० [स० मा√लू (काटना)+र] १ बेल का पेड। २ कपित्थ। कैथ।

मालूम—वि० [अ०] १ (बात, वस्तु या विषय) जिसका इल्म अर्थात् ज्ञान हो चुका हो। जाना हुआ। ज्ञात। विदित। २ प्रकट। स्पष्ट।

पु० जहाज का प्रधान अधिकारी या अफसर। (लश०)

मालोपमा—स्त्री० [स० माला-उपमा उपमि० स०] साहित्य मे उपमालंकार का एक भेद जिसमे एक उपमेय के (क) एक ही धर्मवाले अथवा (ख) विभिन्न धर्मवाले अनेक उपमान बतलाये जाते हैं।

माल्य—पु० [स० माला+ष्यञ्] १ फूल। २ माला। ३ सिर पर लपेटी जानेवाली माला।

माल्यक—पु० [स० माल्य+कन्] १ दमनक। दौना। २ माला।

माल्य-पुष्प—पु० [स० ब० स०] सन का पौधा।

माल्यवत—पु० =माल्यवान्।

माल्यवत्—वि० [स० माल्य+मतुप्, वत्व] [स्त्री० माल्यवती] जो माला पहने हो।

पुं०=माल्यवान्।

माल्यवती—स्त्री० [स० माल्यवत्+ङीप्] पुराणानुसार एक प्राचीन नदी।

वि० हि० माल्यवत् का स्त्री०।

माल्यवान् (वत्)—पु० [स० दे० माल्यवत्] १ पुराणानुसार एक पर्वत जो केतुमाल और इलावृत वर्ष के बीच का सीमा-पर्वत कहा गया है। २ सुकेश का पुत्र एक राक्षस जो गधर्व की कन्या देववती से उत्पन्न हुआ था।

वि० [स० माल्यवत्] [स्त्री० माल्यवती] जो माला पहने हो।

माल्ल—पु० [स० मल्ल+अण्] १ एक वर्णसंकर। २. दे० 'मल्ल'।

माल्लवी—स्त्री० [स०√मल्ल्+वण्,+ङीप्] १ मल्लो की विद्या या कला। २ मल्लो का जोड।

माल्ह—पु०=मल्ल।

स्त्री०=माला।

मावत†—पु०=महावत।
मावना†—अ०=अमाना (किसी के बीच मे समाना)।
मावला—पुं० [?] [स्त्री० मावली] १ महाराष्ट्र राज्य के पहाड़ों में रहनेवाली एक योद्धा जाति। २ उक्त जाति का व्यक्ति।
मावली—वि० [हिं० मावला] मावलों से सबध रखनेवाला। मावलो का। जैसे—मावली गाँव, मावली दल।
स्त्री० 'मावला' की स्त्री।
†पु०=मावला।
मावस†—स्त्री०=अमावस।
मावा—पुं० [सं० मड; हिं० माँड] १ माँड। पीच। २ किसी चीज का सार-भाग। सत्त।
मुहा०—**(किसी का) मावा निकालना**=खूब मारना-पीटना।
३. वह दूध जो गेहूँ आदि को भिगोकर या कच्चा मलकर निचोड़ने से निकलता है। ४. दूध का खोआ। ५. प्रकृति। ६ अडे के अंदर की जरदी। ६. चदन का तेल या ऐसी ही और कोई चीज जिसमे दूसरी चीजों का सार भाग मिलाकर इत्र तैयार करते हैं। इत्र की जमीन। ७ एक प्रकार का गाढ़ा लसदार सुगधित द्रव्य जिसे तमाकू मे डालकर उसे सुगंधित करते है। ८. किसी प्रकार का मसाला या सामग्री। ९ हीरे की बुकनी जिससे मलकर सोने-चाँदी के गहने चमकाते हैं।
मावासी†—स्त्री०=मवासी।
मावीत्र—पु० [स० मातृ-पितृ] माता-पिता। (राज०) उदा०—मावीत्र भ्रजाद मेटि बोलै मुखि।—प्रिथीराज।
माश—पु० [सं० माष से फा०] उरद।
मुहा०—**माश मारना**=मत्र पढ़कर किसी को वश में करने के लिए उस पर उरद फेंकना। उदा०—भेड़ बन जाओगे मारेगी जो वो माश तुम्हे।—जान साहब।
पु० [स० महाशय] १ महाशय। २. बंगाली।
माशा अल्लाह—अव्य० [अ०] एक प्रशसासूचक पद जिसका अर्थ है—वाह क्या कहना है! बहुत अच्छे या क्या कहने!
माशा—पुं० [सं० माष, जद० मष, माह] आठ रत्ती मान की एक प्रकार की तौल जिसका व्यवहार सोने, चाँदी, रत्नो और औषधियो के तौलने में होता है।
†पुं० [स० महाशय] १. महाशय। २ बगाली।
माशी—पु० [फा० माश=उडद] १. माष अर्थात् उडद की तरह का कालापन लिये लाल रग। २. जमीन की एक नाप।
वि० उक्त प्रकार के रंग का।
माशूक—पुं० [अ० माशूक़] [स्त्री० माशूका] लौकिक अथवा आध्यात्मिक प्रेम-पात्र। प्रिय।
माशूका—स्त्री० [अ० माशूक़] प्रेम-पात्री।
माशूकाना—वि० [अ० माशूक़+फा० आन] १. माशूक-संबंधी। माशूक का। २. माशूक अर्थात् सुन्दरी स्त्रियाँ या प्रेयसियों की तरह का।
माशूकी—स्त्री० [फा०] माशूक होने की अवस्था या भाव। प्रेम-पात्रता।
माष—पुं० [सं०√मष् (मारना)+घञ्] १. उड़द। २. माशा नामक तौल। ३. शरीर पर होनेवाला मसा।
वि० मूर्ख।
†स्त्री०=माख।
माषक—पुं० [सं० माष+कन्] १ माशा नाम की तौल। २. उड़द। माष।
माष-तैल—पुं० [सं० ष० त०] वैद्यक में एक प्रकार का तेल जो अर्द्धांग, कंप आदि रोगो मे उपयोगी माना जाता है।
माषना†—अ०=माखना (क्रुद्ध होना)।
माष-पत्रिका—स्त्री० [सं० ब० स०,+कन्+टाप्, ह्रस्व] माषपर्णी।
माष-पर्णी—स्त्री० [सं० ब० स०, ङीष्] जंगली उड़द।
माष-योनि—स्त्री० [स० ब० स०] पापड़।
माष-वटी—स्त्री० [स० ष० त०] उडद की बनी हुई बड़ी। (दे० 'बड़ी')
माषाद—पु० [स० माष√अद् (भक्षण करना)+अण्] कछुआ।
माषाश—पु० [सं० माष√अश् (खाना)+अच्] घोड़ा।
माषीण—पु० [स० माष+ख—ईन] माष या उड़द का खेत।
माष्य—पुं० [स० माष+यत्] माष या उड़द बोने योग्य खेत। मशार।
मास्—पु० [सं०√मा (मानना)+असुन्] १. चद्रमा। २. महीना। मास।
मास—पु० [सं० √मस् (परिणाम)+घञ्] काल का एक विभाग जो वर्ष के बारहवें भाग के बराबर होता है। महीना।
विशेष—मास या महीना साधारणत: ३० दिनो का माना जाता है; परन्तु चांद्र, सौर आदि गणनाओ के अनुसार कभी-कभी एक दिन अधिक या कम का भी होता है। इसके सिवा नाक्षत्र मास और सावन मास भी होते हैं। जिनका विवेचन उक्त शब्दो के अन्तर्गत मिलेगा।
पद—अधिमास, मल-मास।
†पु०=मांस (गोश्त)।
मासक—पुं० [सं० मास+कन्] महीना। मास।
मासज्ञ—पु० [सं० मास√ज्ञा (जानना)+क] १. दात्यूह नामक पक्षी। बनमुर्गी। २. एक प्रकार का हिरन।
मास-ताला—पुं० [सं० ब० स०,+टाप्] एक प्रकार का बाजा।
मासना†—अ० [स० मिश्रण हिं० मीसना] मिलना।
†स०=मिलाना।
मास-फल—पु० [सं० ष० त०] गणित ज्योतिष मे, किसी की जन्म-कुंडली के अनुसार किसी एक महीने का फल। (वर्ष-फल की तरह)
मास-भृत—पु० [सं० तृ० त०] वह मजदूर जिसे मासिक वेतन मिलता हो।
मास-मान—पुं० [ब० स०] वर्ष।
मासर—पुं० [सं०√मस् (परिणाम)+णिच्+अरन्] १. एक प्रकार का मादक पेय पदार्थ जो चावल के माँड़ और अंगूरों के उठे हुए रस से बनाया जाता था। २. काँजी।
मास-स्तोम—पुं० [स० मध्य० स०] एक यज्ञ।
मासांत—पुं० [सं० मास-अन्त, ष० त०] १. महीने का अंत। २. महीने का अन्तिम दिन। ३ अमावस्या। ४. सौर सक्रान्ति का दिन।
मासा—पुं०=माशा।
मासाधिप—पुं० [सं० मास-अधिप, ष० त०] वह ग्रह जो मास का स्वामी हो। मासेश।
मासानुमासिक—वि० [स० ष० त०] प्रतिमास सबधी। प्रतिमास का।

मासावधिक—वि० [सं० मास-अवधि, ब० स०,+कप्] जिसकी अवधि एक मास पर्यंत हो।

मासिक—वि० [सं० मास+ठञ्—इक] १ मास-संबंधी। २. मास-मास पर नियमित रूप से होनेवाला।
पुं० दे० 'मासिक-धर्म'।

मासिक-धर्म—पुं० [म० कर्म० स०] स्त्रियों को प्रति मास होनेवाला रज-स्राव।

मासी—स्त्री०[सं० मातृष्वसा; पा० मातुच्छा; प्रा० मउच्छा] संबंध के विचार से माँ की बहन। मौसी।

मासीन—वि० [सं० मास+खञ्—ईन] एक महीने की अवस्थावाला।

मासुरकर्ण—पुं० [सं० मसुरकर्ण+अण्] मसुकर्ण के गोत्र मे उत्पन्न पुरुष।

मासुरी—स्त्री० [सं० मसूर+अण्+ङीप्] चीर-फाड के काम मे आनेवाला एक प्राचीन शस्त्र या औजार।

मासूम—वि० [अ०] १ जिसने कोई अपराध या दोष न किया हो। निरपराध। बेगुनाह। २ कलुष या पाप से रहित। ३ जो हर प्रकार से असमर्थ, निर्दोष तथा दया का पात्र हो। जैसे—मासूम बच्चा।

मासूमियत—स्त्री० [अ०] मासूम होने की अवस्था या भाव।

मासूर—वि० [सं० मसूर+अण्] १. मसूर-संबंधी। मसूर का। २ मसूर की आकृति का।

मासेष्टि—स्त्री० [सं० मास-इष्टि, मध्य० स०] वह इष्टि या यज्ञ जो प्रतिमास किया जाता हो।

मासोपवास—पुं० [सं० मास-उपवास, मध्य० स०] १. लगातार महीने भर तक किया जानेवाला उपवास। २ आश्विन शुक्ल ११ से कार्तिक शुक्ल ११ तक किया जानेवाला एक प्रकार का उपवास जिसका विधान गरुड पुराण में है।

मासोपवासी (सिन्)—पुं० [सं० मास-उपवास, मध्य० स०,+इनि] वह जो मासोपवास अर्थात् लगातार महीने भर तक उपवास करता हो।

मास्टर—पुं० [अ०] [भाव० मास्टरी] १ स्वामी। मालिक। २. अध्यापक। शिक्षक। ३ किसी कला, गुण, विद्या या विषय मे निष्णात व्यक्ति। ४ छोटे बच्चों के लिए एक प्रकार का प्रेमपूर्ण सम्बोधन।

मास्टरी—स्त्री० [अ० मास्टर+ई (प्रत्य०)] १ मास्टर अर्थात् अध्यापक का काम, पद या पेशा। २. किसी कला, हुनर आदि मे निष्णात होने की अवस्था या भाव।

मास्तिष्क्य—वि० [सं० मस्तिष्क+ष्यञ्] मस्तिष्क-संबंधी। मस्तिष्क का। जैसे—मास्तिष्क्य चिंतन।

मास्य—वि० [सं० मास+यत्] महीने भर का। मासीन।

माह*—अव्य०[सं० मध्य, प्रा० मज्झ] मे।
पुं० [सं० माष, प्रा० माह] उड़द।
†पुं०=मास (महीना)।
†पुं०=माघ (नामक महीना)।

माहत—स्त्री० [सं० महत्ता] महत्त्व। बड़ाई।

माहताब—पुं० [फा०] १ चंद्रमा। २ चाँदनी।
†स्त्री०=माहताबी।

माहताबी—स्त्री० [फा०] १ एक तरह की आतिशबाजी। २ चाँदनी रात का मजा लेने के लिए बैठने के लिए बनाया हुआ चबूतरा। ३ तरबूज। ४ चकोतरा। ५ एक तरह का कपडा।
वि० माहताब अर्थात् चन्द्रमा की चाँदनी मे बनाया या तैयार किया हुआ। जैसे—माहताबी गुलकन्द।

माहना†—अ०=उमाहना (उमडना)।

माहर—पुं० [सं० माहिर=इंद्र] इंद्रयान।
पद—**माहुर का फल**=ऐसा पदार्थ जो देखने में तो सुंदर हो, पर दुर्गुणों से भरा हो।
†वि०=माहिर (जानकर)।

माहरा†—सर्व०=हमारा। (राज०)

माहली—पुं० [हिं० महल] १ महल अर्थात् अन्त पुर मे काम करनेवाला सेवक। २ महली। खोजा। ३ नौकर। सेवक।

माहव†—पुं०=माधव।

माहवार—अव्य०[फा०] प्रतिमास। हर महीने।
पुं० हर महीने मिलनेवाला वेतन। मासिक वेतन।
वि० हर महीने होनेवाला। मासिक।

माहवारी—वि० [फा०] मासिक।
*स्त्री० स्त्रियों का मासिक-धर्म।

माहाँ—अव्य०=महँ (बीच)।

माहाकुल—वि० [सं० महाकुल+अञ्] ऊँचे घराने मे उत्पन्न। महाकुल।

माहाकुलीन—वि० [सं० महाकुल+खञ्—ईन] बहुत बड़ा कुलीन।

माहाजनीन—वि० [सं० महाजन+खञ्—ईन, वृद्धि] १ जो महाजनों के लिए उपयुक्त हो। २ महाजनों की तरह का।

माहात्मिक—वि० [सं० महात्मन्+ठक्—इक] १ महात्मा-सम्बन्धी। महात्मा का। २ जिसकी विशेष महत्ता हो। महात्मा से युक्त।

माहात्म्य—पुं० [सं० महात्मन्+ष्यञ्] १ महत् होने की अवस्था या भाव। गौरव। महिमा। २ आदर-सम्मान। ३ धार्मिक क्षेत्र में किसी पवित्र या पुण्य-कार्य से अथवा किसी स्थान के महत्त्व का वर्णन। जैसे—एकादशी माहात्म्य, काशी माहात्म्य।

माहाना—वि० [फा०] माहवार। मासिक।

माहिं—अव्य० [सं० मध्य, प्रा० मज्झ] अन्दर। भीतर। मे। (अधिकरण कारक का चिह्न)

माहित—पुं० [सं० महित+अण्] महित ऋषि के गोत्र मे उत्पन्न व्यक्ति।

माहित्य—पुं० [सं० महित+यञ्] महित ऋषि के गोत्र मे उत्पन्न व्यक्ति।

माहियत—स्त्री० [अ० माहीयात] १ भीतरी और वास्तविक तत्त्व। २ प्रकृति। ३ विवरण।

माहिया—पुं० [पं०] १ प्रियतम। प्रिय। २ एक प्रकार का प्रसिद्ध पंजाबी गेयपद जो तीन चरणों का होता है और जिसमे मुख्यतः करुण और शृंगार रस की प्रधानता होती है और विरह-दशा का मार्मिक वर्णन होता है।

माहियाना—वि० [फा० माहियानः] प्रतिमास होनेवाला। मासिक। माहवारी।
पुं० मासिक वेतन।

माहिर—पुं० [सं०√मह्+इरन् बा०] इन्द्र।
वि० [अ०] किसी बात या विषय का पूर्ण ज्ञाता। अच्छा जानकार।

माहिला†—पुं० [सं० मध्य] अन्तर। फरक।
वि० [स्त्री० माहिली] १. मध्य या बीच का। मँझला। २. अंदर का। आन्तरिक।
†पुं०=माँझी।

माहिले†—अव्य० [हिं० माँहि] अदर। भीतर।

माहिष—वि० [सं० महिषी+अण्] भैंस सम्बन्धी या भैंस का (दूध आदि)।

माहिष-वल्लरी—स्त्री० [सं० उपमि० स०] काला विधारा। कृष्ण वृद्धदारक।

माहिष-वल्ली—स्त्री० [सं० उपमि० स०] छिरहटी।

माहिषिक—पुं० [सं० महिषी+ठक्—इक, वृद्धि] १. व्यभिचारिणी स्त्री का पति। २ भैंस के द्वारा जीविका निर्वाह करनेवाला व्यक्ति।

माहिष्मती—स्त्री० [सं०] वर्तमान मध्य प्रदेश मे स्थित एक बहुत पुरानी नगरी जिसे मांधाता के पुत्र मुचकुंद ने बसाया था।

माहिष्य—पुं० [सं० महिषी+ष्यञ्, वृद्धि] स्मृतियो के अनुसार एक सकर जाति।

माहीं—अव्य०=माँहि।

माही—स्त्री० [सं० माहेय] एक नदी जो खभात की खाडी मे गिरती है।
स्त्री० [फा०] मछली।
पद—माही-गीर, माही-पुश्त, माही-मरातिब।

माही-गीर—पुं० [फा०] मछली पकडनेवाला। मछुवा।

माही-पुश्त—वि० [फा०] जो मछली की पीठ की तरह उभरा हुआ और किनारे-किनारे ढालुआँ हो।
पुं० एक प्रकार का कारचोबी का काम जो बीच मे उभरा हुआ और दोनो ओर से ढालुआँ होता है।

माही-मरातिब—पुं० [फा०] मुगल बादशाहो के आगे हाथी पर चलनेवाले सात झंडे जिन पर अलग-अलग मछली, सातो ग्रही आदि की आकृतियाँ कारचोबी की बनी होती थी।

माहुति†—स्त्री० [सं० माघ-घटा] माघ महीने की घटा या बादल।

माहुर—पुं० [सं० मधुर, प्रा० महुर=विष] विष।
पद—माहुर की गाँठ=(क) बहुत ही जहरीली और खराब चीज। (ख) बहुत ही दुष्ट हृदय का व्यक्ति।

माहुरी—स्त्री० [सं० माधुरी ?] सगीत मे कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

माहूँ—स्त्री० [देश०] १ एक प्रकार का छोटा कीडा जो राई, सरसो, मूली आदि की फसल में उनके डंठलों पर फूलने के समय या उसके पहले अंडे दे देता है। २ कनसलाई नाम का कीडा।

माहेंद्र—वि० [सं० महेन्द्र+अण्] १. महेन्द्र-संबंधी। महेन्द्र का। २. जिसका देवता महेन्द्र हो।
[illegible] ज्योतिष मे, वार के अनुसार भिन्न-भिन्न दंडों में पड़नेवाला एक योग जिसमें यात्रा करने का विधान है। २. एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र। ३ सुश्रुत के अनुसार एक देवग्रह जिसके आक्रमण करने से ग्रहग्रस्त पुरुष में माहात्म्य, शौर्य, शास्त्र-बुद्धिता आदि गुण एकाएक आ जाते हैं। ४ जैनियों के एक देवता जो कल्पभव नामक वैमानिक देवगण में हैं। ५. जैनों के अनुसार चौथे स्वर्ग का नाम।

माहेंद्री—स्त्री० [सं० महेन्द्र+ङीप्] १ महेन्द्र अर्थात् इन्द्र की शक्ति। २ इन्द्र की पत्नी। ३ इन्द्रासन। ४. गाय। गौ। ५. सात मातृकाओं में से एक।

माहेय—वि० [सं० मही+ढक्, ढ्—एय्] मिट्टी का बना हुआ।
पुं० १ मूँगा नामक रत्न। विद्रुम। २ मंगल ग्रह। ३. नरकासुर।

माहेयी—स्त्री० [सं० माहेय+ङीप्] १ गाय। गौ। २ माही नाम की नदी।

माहेल—पुं० [सं० महेल+अण्] एक गोत्र-प्रवर्तक ऋषि।

माहेश—वि० [सं० महेश+अण्] महेश का।

माहेशी—स्त्री० [सं० माहेश+ङीप्] दुर्गा।

माहेश्वर—वि० [सं० महेश्वर+अण् वृद्धि] महेश्वर-सबंधी। महेश्वर का।
पुं० १ एक प्रसिद्ध शैव सम्प्रदाय। २. एक प्रकार का यज्ञ। ३. एक उप-पुराण का नाम। ४ एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र। ५ पाणिनि के वे चौदह सूत्र जिन्हें प्रत्याहार कहते हैं और जिन्हें पाणिनि ने अष्टाध्यायी के सूत्रो का प्रमुख आधार बनाया है।

माहेश्वरी—स्त्री० [सं० माहेश्वर+ङीप्] १. दुर्गा। २ एक मातृका का नाम। ३. एक प्राचीन नदी। ४. एक प्रसिद्ध पीठ या तीर्थ-स्थान।
पुं० वैश्यो की एक जाति।

माहों—पुं०=माहूँ (कीडा)।

मिंगनी†—स्त्री०=मेंगनी।

मिंगी†—स्त्री०=मींगी (गिरी)।

मिंट—पुं० [अं०] टकसाल।
†पुं०=मिनट।

मिंट-हाउस—पुं० [अं०] टकसाल।

मिंडाई—स्त्री० [हिं० मीडना] १ मिंडने या मीडने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ मींडने का पारिश्रमिक या मजदूरी। ३ देशी छीटों की छपाई मे एक क्रिया जो कपडे को छापने के उपरात और धोने से पहले होती है।

मिंहदी—स्त्री०=मेंहदी।

मित*—पुं०=मित्र।

मिंबर—पुं० [अ०] मसजिद मे वह स्थान जहाँ इमाम बैठकर नमाजियों को नमाज पढवाता है।
†पुं०=मेम्बर।

मिआद—स्त्री०=मीआद।

मिआदी†—वि०=मीआदी।

मिआना†—पुं०, वि०=मियाना।
†स्त्री०=म्यान।

मिकदार—स्त्री० [अ० मिक्दार] १. मात्रा। २ तौल।

मिकना—पुं० [अ० मिक्ना] एक प्रकार की महीन ओढ़नी या चादर।

मिकनातीस—पुं० [अ० मिक्नातीस] [वि० मिकनातीसी=चुबकीय] **चुंबक पत्थर**।

मिकराज—स्त्री० [अ० मिक्राज] कतरनी। कैंची।

मिकराजी—पुं० [अ०] वह तीर जिसके फल मे दो गाँसियाँ होती है।

मिकाडो—पुं० [जा०] जापान के सम्राटो की उपाधि।

मिग†—पुं०=मृग।

मिचकना—अ० [हिं०मिचना] (आँखो या पलको का) बार-बार खुलना या उठना और बद होना या गिरना। मिचना।

मिचकाना—स० [हिं० मिचना] बार-बार (आँखें या पलकें) खोलना या उठाना और बंद करना या गिराना।

मिचकी—स्त्री० [हिं० मिचकना] १. आँखें मिचकने या मिचकाने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ आँखें मिचकाकर किया जानेवाला सकेत। आँख का इशारा।

स्त्री० [?] १. छलांग। उछाल। २ झूले की पेंग। उदा०—कर छोड शरीर तौल के हम लेटी मिचकी किलोल के।—मैथिलीशरण।

मिचना—अ० [हिं० मीचना का अक० रूप] (आँखो का) बद होना। मीचा जाना।

मिचराना—अ० [मिचर, चाबने के शब्द से अनु०] बिना भूख के खाना। जबरदस्ती खाना।

मिचलाना—अ० [हिं० मथना, मतलाना] मतली आना। कै आने को होना।

मिचली—स्त्री० [हिं० मिचलाना] जी मिचलाने की क्रिया या भाव। शरीर की ऐसी अवस्था जिसमे कै करने की इच्छा या प्रवृत्ति हो।

मिचवाना—स० [हिं० मीचना का प्रे० रूप] मीचने का काम दूसरे से कराना। किसी को मीचने मे प्रवृत्त करना।

मिचौंहाँ—वि० [हिं० मिचना] मिचने या मीचनेवाला। बद होनेवाला।

मिचौनी (ली)—स्त्री० [हिं० मीचना] १ मीचने या मूँदने की क्रिया या भाव। जैसे—आँख-मिचौनी। २ दे० 'आँख-मिचौली'।

मिचौना—स०=मीचना।

मिछा†—वि०=मिथ्या।

मिजराब—स्त्री० [अ०] सितार बजाने का एक तरह का छल्ला। नाखुना।

मिजबानी†—स्त्री०=मेजबानी।

मिजाज—पु० [अ० मिज़ाज] १. तासीर। किसी पदार्थ का वह मूल गुण जो सदा बना रहे। मूल प्रकृति। २. प्राणी की प्रधान प्रवृत्ति। स्वभाव। जैसे—उनका मिजाज बहुत सख्त है। ३ मन या शरीर की स्वाभाविक स्थिति। तबीयत। दिल।

मुहा०—**मिजाज खराब होना**=(क) मन मे किसी प्रकार की अप्रसन्नता आदि उत्पन्न होना। (ख) कुछ अस्वस्थ होना। **(किसी का) मिजाज पाना**=(क) किसी के स्वभाव से परिचित होना। (ख) किसी को अपने अनुकूल या अनुरक्त स्थिति मे देखना। **मिजाज पूछना**=(क) तबीयत का हाल पूछना। (ख) अच्छी तरह दंड देना या बदला चुकाना। (व्यंग्य) **मिजाज बिगड़ना**=(क) शरीर अस्वस्थ-सा जान पड़ना। (ख) मन में क्रोध या रोष उत्पन्न होना। **मिजाज का आना**=ध्यान में आना। समझ मे आना। जैसे—अगर आपके मिजाज मे आवे तो आप भी वहाँ चलिए। **मिजाज सीधा होना**=अनुकूल या प्रसन्न होना। तबीयत ठिकाने होना।

४. अभिमान। घमंड।

पद—**मिजाजदार**।

मुहा०—**मिजाज करना या दिखाना**=(क) क्रोध या गुस्से मे आना। (ख) अभिमान या घमड करना या दिखाना। **मिजाज न मिलना**=घमड के कारण सीधी तरह से बात न करना। जैसे—आज-कल तो उनका मिजाज ही नही मिलता।

मिजाज अली—अव्य० [अ० मिजाजे अली] आप प्रसन्न और स्वस्थ तो है? (भेंट होने पर प्रश्नवाचक पद की तरह प्रयुक्त।)

मिजाजदार—वि० [अ० मिजाज+फा० दार (प्रत्य०)] घमंडी। अभिमानी।

मिजाजदारी—स्त्री० [अ०+फा०] मिजाजदार होने की अवस्था या भाव।

मिजाज-पीटा—वि० [अ० मिजाज+हिं० पीटना] [स्त्री० मिजाज-पीटी] अभिमानी।

मिजाज-पुरसी—स्त्री० [अ० मिजाज+फा० पुर्सी] किसी का कुशल-मंगल या हाल-चाल पूछना।

मिजाज-शरीफ—अव्य० [अ० मिजाजे शरीफ]=मिजाज अली।।

मिजाजी—वि० [अ० मिजाज+ई (प्रत्य०)] बहुत अधिक मिजाज अर्थात् अभिमान करने या रखनेवाला। घमडी।

मिजाजो—वि० स्त्री० [हिं० मिजाज+ओ (प्रत्य०)] अभिमानी। घमंडी।

मिजान—स्त्री०=मीजान (जोड)।

मिजालु†—पुं०=मज्जा।

मिटका†—पु० [स्त्री० अल्पा० मिटकी] मटका।

मिटना—अ० [सं० मृष्ट; प्रा० मिट्ट] १ अकित चिह्न, लिखित लेख आदि पर का रग, स्याही आदि का इस प्रकार पोछा जाना कि वह चिह्न या लेख ठीक तरह से दिखाई न दे या पढा न जा सके। जैसे—इस पत्र के कई अक्षर मिट गये हैं। २ नष्ट हो जाना। न रह जाना। ३ बुरी तरह से खराब, चौपट या बरबाद होना। जैसे—इस आपस की लड़ाई में दोनों घर मिट गये।

मुहा०—**किसी के लिए मर मिटना**=बुरी तरह से चौपट या बरबाद होना। जैसे—वह अपने भाई को बचाने के लिए मर मिटा।

मिटाना—स० [हिं० मिटना का सक० रूप०] ऐसा काम करना जिससे कुछ या कोई मिटे। (देखें 'मिटना')

मिट्टी—स्त्री० [सं० मृत्तिका; प्रा० मिट्टीआ] १ प्राय. सभी जगह जमीन के ऊपरी भाग में पाया जानेवाला वह भुरभुरा और मुलायम तत्त्व जिसमे पेड़-पौधे उगते हैं, जिस पर जीव-जंतु चलते हैं और जिससे बहुत प्राचीन काल से तरह-तरह के बरतन आदि बनाये जाते हैं। जैसे—जो मिट्टी से बना है, वह अंत में मिट्टी होकर रहेगा।

विशेष—मिट्टी और जल के योग से ही संसार की अधिकतम वस्तुएँ बनती हैं, इसी आधार पर इससे संबद्ध बहुत से पद और मुहावरे बने हैं।

पद—**मिट्टी का पुतला**=(क) मानव शरीर। (ख) बहुत ही अकर्मण्य और निकम्मा व्यक्ति। **मिट्टी की सूरत**=मनुष्य का शरीर। मानव देह।

मिट्टी के माधव=निरा मूर्ख और अयोग्य। **मिट्टी के मोल**=बहुत सस्ता। जैसे—उन्होंने अपना सब सामान मिट्टी के मोल बेच दिया।

मुहा०—मिट्टी अजीज होना=मिट्टी खराब होना। बरबाद होना।

विशेष—मूलतः मिट्टी 'अजीज होना' का अर्थ है—मेरी यह मिट्टी या शरीर ईश्वर को प्रिय हो जाय अर्थात् वह मुझे इस संसार से उठा ले। पर आगे चलकर यह 'मिट्टी खराब होना' के अर्थ में चल पड़ा।

मुहा०—(कोई चीज) मिट्टी करना=नष्ट करना। चौपट करना। जैसे—उसने बना-बनाया घर मिट्टी कर दिया। **मिट्टी छूते ही सोना होना**=इतना अधिक भाग्यवान् होना कि सामान्य-सी बातों मे ही बहुत अधिक लाभ प्राप्त कर सके। **(किसी बात पर) मिट्टी डालना**=(क) किसी बात को जाने देना। ध्यान न देते हुए छोड़ देना। (ख) परदा डालना। छिपाना या दबाना। **(किसी को) मिट्टी देना**=(क) मुसलमानों में किसी के मरने पर उसके प्रति स्नेह या श्रद्धा प्रकट करने के लिए उसकी कब्र मे तीन-तीन मुट्ठी मिट्टी डालना। (ख) मृत शरीर को कब्र मे गाड़ना। **मिट्टी पकड़ना**=पौधे, बीज आदि का जमीन मे अच्छी तरह जम जाना। **मिट्टी में मिलना**=(क) नष्ट या बरबाद होना। (ख) मर जाना। **मिट्टी होना**=(क) चौपट या बरबाद होना। (ख) बहुत गंदा या मैला होना। (ग) मर जाना।

२. किसी विशिष्ट प्रकार या रूप-रंग का अथवा किसी विशिष्ट स्थान में पाया जानेवाला उक्त पदार्थ। जैसे—पीली मिट्टी, बलुआ मिट्टी, मुलतानी मिट्टी आदि।

पद—चीनी मिट्टी। (देखें)

३. जीव, जंतु या मनुष्य का शरीर जो मूलतः मिट्टी या पृथ्वी नामक तत्त्व का बना हुआ माना जाता है।

मुहा०—(किसी की) मिट्टी खराब, पलीद या बरबाद करना=दुर्दशा करना। खराबी करना।

४ स्थायित्व या स्थिरता के विचार से, शरीर की गठन और बनावट। जैसे—(क) उसकी मिट्टी अच्छी है, पचास बरस का हो जाने पर भी वह अभी ४० से अधिक का नहीं जान पड़ता। (ख) जिसकी मिट्टी ठस नहीं होती, वह जवानी मे ही बुड्ढा लगने लगता है। ५ मृत शरीर। लाश। शव।

मुहा०—मिट्टी ठिकाने लगना=शव की उचित अत्येष्टि क्रिया या सस्कार होना।

६. किसी चीज को जलाकर तैयार की हुई राख। भस्म। जैसे—पारे की मिट्टी। ७ चदन का तेल या ऐसी ही और कोई चीज जो कोई इत्र बनाने के समय आधार रूप मे काम आती है। जमीन। जैसे—अगर मिट्टी अच्छी होती तो यह इत्र बहुत बढ़िया होता।

मिट्टी का तेल—पु० [हिं०] एक प्रसिद्ध तरल खनिज पदार्थ जिसका व्यवहार आग, दीया आदि जलाने के लिए होता है।

मिट्टी का फूल—पु० [हिं० मिट्टी+फूल] रेह।

मिट्टी खराबी—स्त्री० [हिं०] १. बरबादी। विनाश। २ दुर्गति। दुर्दशा।

मिट्टी खरिया—स्त्री०=खड़िया।

मिट्ठा—वि०, पु०=मीठा।

मिट्ठी—स्त्री० [हिं० मीठा] चुबन। चूमा।

क्रि० प्र०—देना।—लेना।

मिट्ठू—वि० [हिं० मीठा+ऊ (प्रत्य०)] १. मीठी बातें बोलनेवाला। मिष्ट-भाषी। २. प्रायः कम बोलने और चुप रहनेवाला।

पु० तोता। सुग्गा।

† पु०=मिट्ठी।

मिट्ठी—स्त्री०=मिट्ठी।

मिठ—वि०[हिं० मीठा] 'मीठा' का वह संक्षिप्त रूप जो उसे यौ० के आरम्भ मे लगाने पर प्राप्त होता है। जैसे—मिठलोना, मिठबोला।

मिठ-बोलना†—वि०=मिठबोला।

मिठ-बोला—वि० [हिं० मीठा+बोलना] १. मीठी बातें करनेवाला। मधुरभाषी। २. जो ऊपर से मीठी बातें करता हो परन्तु मन में कपट रखता हो।

मिठरी†—स्त्री०=मठरी (मिट्ठी)।

मिठ-लोना—वि० [हिं० मीठा=कम+लोन=लोन] [स्त्री० मिठ-लोनी] (खाद्य पदार्थ) जिसमे नमक बहुत ही कम हो। कम नमकवाला। जैसे—मिठलोनी तरकारी।

मिठाई—स्त्री० [हिं० मीठा+आई (प्रत्य०)] १. मीठे होने की अवस्था या भाव। मिठास। माधुरी। २. कुछ विशिष्ट प्रकार की बनाई हुई खाने की मीठी चीजें। जैसे—(क) पेडा, बरफी, लड्डू आदि। (ख) खोए या छेने की मिठाई। ३ कोई अच्छी और प्रिय चीज या बात। जैसे—वहाँ तुम्हारे लिए क्या मिठाई रखी है जो दौड़-दौड़ कर वहीं जाते हो।

मिठाना—अ० [हिं० मीठा+आना (प्रत्य०)] मीठा होना।

स० मीठा करना।

मिठास—स्त्री० [हिं० मीठा+आस (प्रत्य०)] मीठे होने की अवस्था, धर्म या भाव। मीठापन।

मिठौरी—स्त्री० [हिं० मीठा+बरी] एक तरह की बरी।

मिढ़ाई—स्त्री०=मिडाई।

मिडिल—पु० [अं०] १ वह बिंदु, वस्तु या स्थान जो दो विशिष्ट छोरों के बीच मे हो। मध्य। २ आधुनिक शिक्षा-क्रम मे प्रारम्भिक और उच्च शिक्षा के बीच के दरजे। साधारणतया ५ से ८ तक के दरजों का समाहार।

मिडिलची—पुं० [हिं० मिडिल+ची (प्रत्य०)] वह जिसने मिडिल परीक्षा तो पास की हो परन्तु उसके आगे न पढ़ा हो। (उपेक्षा और व्यग्य)

मिणधर—पुं०=मणिधर (मणिधारी सर्प)।

मितंग—पुं०=मतंग (हाथी)।

मित—वि० [सं०√मा+क्त] १. नपा-तुला। २. सीमित। परिमित। ३. जितना चाहिए उतना ही, उससे अधिक नहीं। ४ कम। थोड़ा। जैसे—मित-भाषी। ५ फेंका हुआ। क्षिप्त।

मितद्रु—पुं० [सं० मित√द्रु (गति)+कु] समुद्र।

मित-भाषिणी—वि० [सं० मित√भाष् (बोलना)+णिनि+ङीष्] संगीत मे काफी ठाठ की एक रागिनी।

मितभाषी (षिन्)—वि० [सं० मित√भाष्+णिनि] [स्त्री० मितभा-षिणी] अपेक्षया कम तथा आवश्यकतानुसार बोलनेवाला। 'बकवादी' का विरुद्धार्थक।

मित-मति—वि०, पुं० [सं० ब० स०] अल्प-बुद्धि।

मित-विक्रय—पुं० [सं० ष० त०] तौल या नाप कर पदार्थ बेचना। (कौ०)

मित-व्यय—वि० [ब० स०] [भाव० मितव्ययता] कम खरच करनेवाला अथवा आवश्यकता से अधिक खरच न करनेवाला। मितव्ययी। पुं० १ जितना चाहिए, उतना ही खर्च करना, अधिक न करना। २. थोड़े खरच मे काम चलाना।

मितव्ययता—स्त्री० [सं० मितव्यय+तल्+टाप्] मितव्यय होने की अवस्था या भाव। कम-खरची।

मितव्ययी—वि० [सं० मितव्यय] कम या थोडा खरच करनेवाला। किफायत करनेवाला।

मिताई†—स्त्री० [हिं० मीत+आई (प्रत्य०)] मित्रता। दोस्ती।

मिताक्षर—वि० [सं० मित-अक्षर, ब० स०] संक्षिप्त। लघु।

मिताक्षरा—स्त्री० [सं० मिताक्षर+टाप्] याज्ञवल्क्य स्मृति की विज्ञानेश्वर कृत टीका।

मितार्थ—पुं०=मितार्थक।

मितार्थक—पुं० [सं० मित-अर्थ, ब०स०,+कप्] साहित्य मे तीन प्रकार के दूतो मे से एक प्रकार का दूत। ऐसा दूत जो थोड़ी बातें करके ही अपना काम निकाल लेता हो।

मिताशन—पुं० [सं० मित-अशन, कर्म० स०] १ कम या थोडा भोजन करना। २ अल्पाहार।

मिताशी (शिन्)—वि० [सं० मित√अश् (खाना)+णिनि] [स्त्री० मिताशिनी] अल्प आहार करनेवाला।

मिताहार—पुं० [सं० मित-आहार, कर्म० स०] परिमित या थोडा भोजन करना। कम खाना।

वि० [ब० स०] =मिताहारी।

मिताहारी (रिन्)—वि० [सं० मिताहार+इनि] थोडा और परिमित भोजन करनेवाला। कम खानेवाला।

मिति—स्त्री० [सं०√मा (मान)+क्तिन्] १ नाप-जोख या उससे निकलनेवाला फल। परिणाम। मान। २. नापने-जोखने की क्रिया या प्रणाली। जैसे—अम्ल मिति, क्षार मिति। (ज्यामिति) ३ सीमा। हद। ४ नियम, मर्यादा आदि का बंधन। उदा०—कोउ न रहत मिति मानि।—सूर।

† स्त्री०=मिती।

मिती—स्त्री० [सं० मिति] १ चाद्र मास के किसी पक्ष अथवा सौर मास की तिथि या तारीख।

मुहा०—**मिती चढ़ाना**=बही-खाते मे किसी दिन का हिसाब लिखने से पहले ऊपर मिती लिखना। (महाजन) **मिती-पूजना**=हुंडी के भुगतान का नियत समय पूरा होना। जैसे—इस हुंडी की मिती पूजे दो दिन हो गए, पर रुपया नही आया।

२. दिन। दिवस। जैसे—चार मिती का ब्याज अभी आपकी ओर निकलता है। ३ वह तिथि जब तक का ब्याज देना हो। जैसे—इस हुंडी की मिती मे अभी चार दिन बाकी हैं। (महाजन)

मुहा०—**मिती काटना**=हिसाब मे जितने दिनो का सूद देय या प्राप्य न हो, उतने दिनो का ब्याज काटना या बाद करना।

मिती काटा—पुं० [हिं० मिती+काटना] १ हुंडी की मिती पूजने से पहले रुपया चुकाने पर अवधि के शेष दिनो का ब्याज काटने की क्रिया। (महाजन) २ ब्याज या सूद लगाने की वह भारतीय महाजनी प्रणाली जिसमे प्रत्येक रकम का सूद उसकी अलग, अलग मिती से एक साथ जोड़ा जाता है।

मितर—पुं० [सं० मित्र] १ मित्र। दोस्त। २ लड़को के खेल में वह लड़का जो सब का अगुआ होता है।

मित्र—पुं० [सं० √मि+क्त्र] [भाव० मित्रता] १ वह प्राणी जिससे अधिक मेल-जोल हो और जो समय कुसमय पर साथ देता और सहायता करता हो। सखा। सुहृद्। दोस्त। २ भारतीय आर्यों के एक प्रसिद्ध वैदिक देवता। ३ बारह आदित्यों मे से पहला आदित्य। ४ सूर्य। ५ युद्ध में साथ देनेवाला राष्ट्र।

मित्रकृत्—पुं० [सं० मित्र√कृ (करना)+क्विप्, तुक्] पुराणानुसार बारहवें मनु के एक पुत्र का नाम।

मित्र-घात—पुं० [सं० ष० त०] १ मित्र की हत्या। २ मित्र के साथ किया जानेवाला धोखा।

मित्रघ्न—वि० [सं० मित्र√हन् (मारना)+टक्, कुत्व] जिसने अपने मित्र को दगा दिया हो। फलत विश्वासघाती।

मित्रता—स्त्री० [सं० मित्र+तल्+टाप्] मित्र होने की अवस्था, धर्म या भाव। दोस्ती।

मित्रत्व—पुं० [सं० मित्र+त्व] मित्रता। दोस्ती।

मित्रदेव—पुं० [सं०] १. बारहवें मनु के एक पुत्र का नाम। २ बारह आदित्यो मे से एक।

मित्र-पंचक—पुं० [सं० ष० त०] घी, शहद, घुँघची, सुहागा और गुग्गुल, इन पाँचो का समाहार। (वैद्यक)

मित्र-प्रकृति—पुं० [सं० ब० स०] विजेता के चारो ओर रहनेवाले मित्र, राष्ट्र या राजा। (कौ०)

मित्र-भाव—पुं० [सं० ष० त०] मित्रता का भाव। दोस्ती।

मित्र-भेद—पुं० [सं० ष० त०] मित्रता टूटना।

मित्र-रंजनी—स्त्री० [सं० ष० त०] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

मित्रवन—पुं० [सं०] पजाब के मुलतान नामक नगर का प्राचीन नाम।

मित्रवान् (वत्)—वि० [सं० मित्र+मतुप्, वत्व] [स्त्री० मित्रवती] जिसका कोई मित्र हो। मित्रवाला।

पुं० १. मनु के एक पुत्र का नाम। २ श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।

मित्रविंद—पुं० [सं० मित्र√विद् (लाभ करना)+श, नुम्] अग्नि।

मित्रविंदा—स्त्री० [सं० मित्रविंद+टाप्] श्रीकृष्ण की एक पत्नी। (पुराण)

मित्र-विक्षिप्त—वि० [सं० स० त०] मित्र राजा के देश मे पड़ी हुई (सेना)। (कौ०)

मित्रविद्—पुं० [सं० मित्र√ विद् (जानना)+क्विप्] गुप्तचर। जासूस।

मित्र-सप्तमी—स्त्री० [सं० ष० त०] मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी।

मित्रसह—पुं० [सं० मित्र√सह् (सहना)+अच्] कल्माषपाद राजा का एक नाम।

मित्रसेन—पु० [सं०] १. बारहवें मनु के एक पुत्र का नाम। २ श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम। ३ एक बुद्ध का नाम।

मित्रा—स्त्री० [सं० मित्र+टाप्] १. मित्र नामक वैदिक देवता की स्त्री का नाम। २. शत्रुघ्न की माता, सुमित्रा।

मित्राई†—स्त्री०=मित्रता।

मित्राक्षर—पु० [स० मित्र-अक्षर, ब०स०] वह छंद जिसके दोनों चरणों की तुक मिलती हो।

मित्रावरुण—पु० [स० द्व० स०, आ-आदेश] मित्र और वरुण नामक वैदिक देवता।

मितिमा—स्त्री० दे० 'मापाक'।

मित्री—स्त्री० [स० मित्र+ङीप्] सुमित्रा।

मिथि—पु० [स० मिथ्+इन्] राजा जनक।

मिथिल—पु० [सं०√मथ्+इलच्, अ—इ नि०] राजा जनक।

मिथिला—स्त्री० [स० मिथिल+टाप्] १ वर्तमान तिरहुत का प्राचीन नाम। राजा जनक इसी प्रदेश के थे। २. उक्त प्रदेश की प्राचीन राजधानी। जनकपुरी।

मिथु—वि० [स०√मिथ्+उण्] मिथ्या। झूठा।

अव्य० झूठ-मूठ।

मिथुन—पु० [स०√मिथ्+उनन्,] १ स्त्री और पुरुष का युग्म। नर और मादा का जोड़ा। २ संयोग। समागम। मैथुन। ३ बारह राशियों मे से तीसरी राशि।

मिथुनचर—पु०[स० मिथुन√चर् (चलना)+ट, अलुक् स०] चक्रवाक। चकवा पक्षी।

मिथुनत्व—पु० [स० मिथुन+त्व] मिथुन होने की अवस्था, धर्म या भाव।

मिथुनीकरण—पु० [स० मिथुन+च्वि, इत्व, दीर्घ√कृ (करना)+ल्युट्—अन] नर-मादा को इकट्ठा करना। जोड़ा खिलाना या मिलाना।

मिथुनीभाव—पु० [स० मिथुन+च्वि, इत्व, दीर्घ,√भू (होना)+अण्] मैथुन। सभोग।

मिथ्या—वि० [स०√मथ् (मंथन करना) +क्यप्, नि० सिद्धि] १ जो अस्तित्व में न हो, पर फिर भी जिसका अज्ञानवश या भ्रमवश बोध होता हो। २ असत्य। झूठा। ३ कृत्रिम। बनावटी। ४ निराधार। जैसे—मिथ्या आग्रह। ५ कपट-पूर्ण। ६ नियम या नीति के विरुद्ध। जैसे—मिथ्या आचरण।

मिथ्याचार—पु० [सं० मिथ्या-आचार, ब० स०] १ ऐसा आचरण या व्यवहार जिसमें सत्यता न हो। कपटपूर्ण आचरण। २. उक्त प्रकार का आचरण करनेवाला व्यक्ति।

मिथ्यात्व—पु० [सं० मिथ्या+त्व] १ मिथ्या होने की अवस्था, धर्म या भाव। २. माया।

मिथ्या दृष्टि—स्त्री० [स० कर्म० स०] नास्तिकता।

पु० नास्तिक।

मिथ्याध्यवसिति—स्त्री० [स० मिथ्या-अध्यवसिति, कर्म० स०] साहित्य मे एक अर्थालंकार जिसमें किसी कल्पित या मिथ्या बात को आधार बनाकर कोई और मिथ्या बात कही जाती है।

मिथ्या-निरसन—पु० [म० कर्म० स०] शपथपूर्वक सच्ची बात अग्राह्य करना या न मानना।

मिथ्या-पुरुष—पु० [स० कर्म० स०]=छायापुरुष।

मिथ्या-मति—स्त्री० [स० कर्म० स०] १. धोखा। २. गलती।

मिथ्या-योग—पु० [स० कर्म० स०] चरक के अनुसार वह कार्य जो रूप, रस, प्रकृति आदि के विरुद्ध हो। जैसे—मल, मूत्र आदि को रोकना।

मिथ्या-वाद—पु० [सं० ष० त०] झूठ बोलना।

मिथ्या-वादी (दिन्)—वि० [स० मिथ्या√वद् (बोलना)+णिनि, उप० स०] [स्त्री० मिथ्यावादिनी] असत्यवादी। झूठा।

मिथ्याहार—पु० [स० मिथ्या-आहार, कर्म० स०] ऐसी चीजे साथ-साथ खाना जिनकी प्रकृति परस्पर भिन्न या विरुद्ध हो। जैसे—मछली या मांस के साथ दूध पीना।

मिन—अव्य० [अ०] से।

पद—मिन जानिब=ओर से। तरफ से।

मिनकी*—स्त्री० [हिं० मिनकना] बिल्ली।

मिनजालिक†—पु० [अ० मिजल=कुछ रखने की जगह] हिसाब-किताब मे, खरच का विभाग या मद। उदा०—माबिक जमा हुती जो जोरी, मिनजालिक तल ल्यायी।—सूर।

विशेष—यह अरबी मिनजुमला से भी व्युत्पन्न हो सकता है, और इस दशा मे इसका अर्थ सख्याओं का जोड या योग होगा।

मिन जुम्ला—अव्य० [अ० मिन जुम्ल] कुल मिलाकर। सब मिलाकर।

मिनट—पु० [अ०] काल-गणना मे एक घंटे का साठवाँ भाग। साठ सेकंड का समय।

मिनकी†—स्त्री० मिनकी (बिल्ली)।

मिनती—स्त्री० [अनु० मक्खी के शब्द से] मक्खी की बोली के समान कुछ धीमा, नाक से निकला हुआ स्वर।

† स्त्री०=विनती।

मिनना†—स० [स० मान=परिमाण] आयति, विस्तार आदि जानने के लिए नापना या तौलना। (पश्चिम) उदा०—गजी न मिनी औ, तोलि न तुलीअे, पाचु न सेर अढाई।—कबीर।

मिनमिन—अव्य० [अनु०] अस्पष्ट तथा धीमे स्वर मे।

मिनमिना—वि० [हिं० मिन मिन] १ मिनमिनाने अर्थात् अस्पष्ट स्वर मे तथा बहुत धीरे-धीरे बोलनेवाला। २ जरा-सी बात पर कुढ़ने या चिढ़नेवाला। ३ बहुत धीरे-धीरे काम करनेवाला। मट्ठर। सुस्त।

मिनमिनाना—अ० [अनु०] १. मिन मिन करना अर्थात् अस्पष्ट तथा धीमे स्वर मे बोलना। २. नाक से स्वर निकालते हुए बोलना। नकियाना। ३. अपेक्षया बहुत धीरे-धीरे काम करना।

मिनहा—वि० [अ०] [भाव० मिनहाई] कम किया, घटाया या निकाला हुआ।

मिनहाई—स्त्री० [अ०] मिनहा करने की क्रिया या भाव। घटाना, कम करना या निकालना।

मिनारा†—पु० =मीनार।

मिनिट†—पु०=मिनट।

मिनिस्टर—पु० [अ०] १ मत्री। सचिव। २. आज-कल राज्य का मत्री। ३. राजदूत। ४. ईसाई धर्मोपदेशक। पादरी।

पद—प्राइम मिनिस्टर=प्रधान मन्त्री ।

मिनिस्टरी—स्त्री० [अं०] १ मिनिस्टर का काम, पद या भाव। २. मिनिस्टर का कार्यालय । ३ मिनिस्टर का विभाग। ४. सब मिनिस्टरों का सम्मिलित वर्ग। मन्त्रि-मंडल।

मिन्नत—स्त्री० [अ०, मि० स० विनति] १ विशेषत किसी को मनाने के उद्देश्य से बहुत नम्रतापूर्वक किया जानेवाला निवेदन। प्रार्थना। विनती। २ उपकार। एहसान।
†स्त्री०=मन्नत ।

मिमियाई—स्त्री० [हिं० मिमियाना+ई (प्रत्य०)] बकरी।
स्त्री०=मोमियाई।

मिमियाना—अ० [अनु०] १. बकरी या भेड का मे-मे शब्द करना। मनुष्य का बकरी की तरह मे-मे करना। २ बहुत ही दबी जबान से चापलूसी करना ।

मियनी†—पु० [?] एक प्रकार का बैल जो अच्छा समझा जाता है।

मियाँ—पु० [फा०] १ स्वामी। मालिक। २ स्त्री का पति। ३ प्रतिष्ठित और मान्य व्यक्ति। ४ बच्चो के लिए दुलार का सम्बोधन। ५ पढ़ाने या सिखानेवाला व्यक्ति। शिक्षक। ६ मुसलमान। ७. उत्तर भारत के पहाडी राजपूतो की एक उपाधि । जैसे—मियाँ रामसिंह।

मियाँ मिट्ठू—वि० [हिं० मियाँ+मिट्ठू] मधुर-भाषी। मिठबोला। **मुहा०—अपने मुँह मियाँ मिट्ठू**=अपनी प्रशसा स्वय करनेवाला। पु० १ तोता। २ भोला व्यक्ति।

मियाऊँ—स्त्री०=म्याऊँ।

मियाद—स्त्री० =मीयाद ।

मियान—पु० [फा०] मध्य भाग ।
स्त्री०=म्यान ।

मियान-तह—स्त्री० [फा० मियान=मध्य+हिं० तह] वह कपडा जो किसी अच्छे कपडे की रक्षा के लिए उस के नीचे दिया जाता है। अस्तर। जैसे—रजाई की मियानतह।

मियान-तही—स्त्री० =मियानतह।

मियाना—वि० [फा० मियान] न बहुत छोटा, न बहुत बडा। मझोले आकार का।
पु० एक प्रकार की डोली या पालकी ।

मियानी—स्त्री० [हिं० मियान+ई (प्रत्य०)] १ पायजामे मे वह कपड़ा जो दोनो पायँचो के बीच मे पड़ता है। २ कमरे के ऊपरी भाग मे छत के नीचे बनी हुई छोटी कोठरी जो केवल सामान रखने के काम आती है। परछत्ती। (पश्चिम)

मियार—पु० [हिं० मझार ?] कूएँ पर खभो आदि की सहायता से बेडे बल मे लगाया जानेवाला बाँस जिसमें गड़ारी पहनाई जाती है।

मियाल—पु०=मियार।

मिरंगा—पु० [फा०] मूँगा ।

मिरग*—पु०=मृग।

मिरग-चिड़ा—पुं० [हिं० मिरग+चिड़ा] एक प्रकार का छोटा पक्षी ।

मिरग-छाला†—स्त्री०=मृगछाला।

मिरगिया—वि० [हिं० मिरगी+इया (प्रत्य०)] मिरगी रोग से ग्रस्त।

मिरगी—स्त्री० [स० मृगी] एक प्रसिद्ध स्नायविक रोग जिसमें सहसा हाथ-पैर ऐंठने लगते हैं, और प्रायः रोगी बेहोश होकर गिर पड़ता है। इसके रोगी को प्राय दौरा आता रहता है। अपस्मार। (एपिलेप्सी)
क्रि० प्र०—आना।

मिरच†—स्त्री०=मिर्च ।

मिरचन—स्त्री० [हिं० मिर्च+न (प्रत्य०)] झड़बेरी के फलों का चूर्ण जो नमक-मिर्च मिलाकर चाट के रूप मे बेचा जाता है।

मिरचा—पु० [सं० मरिच] लाल या हरी मिर्च जो फली के रूप मे होती है।

मिरचाई†—स्त्री० [हिं० मिर्च+आई (प्रत्य०)] १ लाल या हरी मिर्च जो फली के रूप मे होती है। २. कालादाना।

मिरचिया—स्त्री० [हिं० मिर्च+इया (प्रत्य०)] रोहिस घास।
वि० मिर्च की तरह का। कडआ और तीक्ष्ण ।

मिरचिया कंद—पुं० [हिं० मिरिच+गध] रोहिस घास।

मिरचिया-गंध—पु० [हिं० मिर्च+गध] रूसा घास।

मिरची—स्त्री० [हिं० मिर्च] छोटी लाल मिर्च।

मिरजई—स्त्री० [फा० मिराज] एक प्रकार की बददार कुरती। अगा।

मिरजा—पु० [फा०] १ मीर या अमीर का लडका। २ राजकुमार। ३ मुगलों की एक उपाधि। ४ तैमूर वश के शाहजादो की उपाधि।
वि० कोमल। नाजुक। (व्यक्ति)

मिरजाई—स्त्री० [फा०] १. मिरजा का पद या भाव। २ नेतृत्व। ३ अभिमान ।
†स्त्री०=मिरजई।

मिरजान—पु० [फा०] [वि० मिरजानी] मूँगा।

मिरजा-मिजाज—वि० [फा० मिरजा+मिजाजा] नाजुक दिमाग का।

मिरत†—स्त्री०=मृत्यु ।

मिरदंग†—पुं०=मृदग।

मिरदंगी—पु० [हिं० मिरदग+ई (प्रत्य०)] मृदग बजानेवाला। पखावजी।
स्त्री० [मिरदग का स्त्री० अल्पा० रूप] १ छोटा मृदग। २ मृदग के आकार की एक प्रकार की आतिशबाजी।

मिरवना*—स०=मिलाना।

मिरहामति†—स्त्री० [अ० मरहमत] १ अनुग्रह। कृपा। २ अनुग्रह या कृपा करके दी हुई चीज ।

मिरा—स्त्री० [स०] १ मूर्च्छा । २. मदिरा। शराब।

मिरास—स्त्री०=मीरास ।

मिरासी—पु०=मिरासी ।

मिरिका—स्त्री० [स० मिरि+कन+टाप्] एक तरह की लता।

मिरिगाखी†—वि०=मृगाक्षी।

मिरिच—स्त्री०=मिर्च ।

मिरियास†—स्त्री०=मीरास।

मिर्ग—पुं०=मृग ।

मिर्गी—स्त्री०=मिरगी (रोग)।

मिर्च—स्त्री० [स० मरिच] १. एक प्रसिद्ध पौधा जिसमे लंबी फली अथवा

गोल दाने के रूप में फल लगते हैं। २. उक्त फली अथवा उसके बीज जो आकार में चिपटे तथा स्वाद में तिक्त होते हैं ।

विशेष—इस पौधे और इसकी फलियों के अनेक अवातर भेद हैं, जिनमे लाल मिर्च और काली मिर्च दो प्रसिद्ध भेद हैं।

मुहा०—मिर्चे लगना=किसी की तीखी बातें सुनने पर बहुत बुरा लगना और क्रोध या झुँझलाहट होना। जैसे—मेरी सच बात सुनते ही उन्हे मिर्चे लग गईं।

३. काली मिर्च या गोल मिर्च जो छोटे दानो के रूप मे होती है और जिसका व्यवहार मसाले के रूप में होता है । देखें 'काली मिर्च' ।

वि० बहुत ही कटु, उग्र या तीक्ष्ण स्वभाववाला (व्यक्ति) ।

मिर्दी—पु०=मीर (विजयी) ।

मिल—स्त्री० [अ०] १ वह बहुत बडी मशीन जिसमे बडे पैमाने पर चीजें बनाई अथवा तैयार की जाती है। जैसे—कपडे की मिल, चीनी की मिल। २ वह स्थान जहाँ पर उक्त प्रकार की मशीन बैठी हो। ३ लाक्षणिक अर्थ मे, वह व्यक्ति जो किसी मशीन की तरह लगातार तथा एक-रस काम करता चलता हो।

मिलक—स्त्री० [अ० मिल्क] १. जमीन-जायदाद । भू-संपत्ति। २ जागीर।

मिलकना—अ० [?] प्रज्वलित होना । जलना। उदा०—तब फिरि जरनि भई नख-सिख तें, दिया-बाति जनु मिलकी।—सूर।

†स०=जलाना।

मिलकियत—स्त्री०=मिल्कियत।

मिलकी—स्त्री० [हिं० मिलक+ई (प्रत्य०)] १ जमींदार। २. धनवान्। अमीर।

मिलगत—स्त्री० [हिं० मिलना+गत (प्रत्य०)] बचत या मुनाफे की रकम। आर्थिक प्राप्ति। जैसे—इस सौदे मे चार पैसे की मिलगत हो जायगी।

मिलन—पुं० [स०√मिल् (मिलना)+ल्युट्—अन] १ मिलने की क्रिया या भाव। २ विशेषत दो बिछुड़े हुए अथवा लडते-झगडे तथा परस्पर न बोलनेवाले व्यक्तियों का होनेवाला मेल या मिलाप। ३. मिलावट। मिश्रण।

मिलनसार—वि० [हिं० मिलन+सार (प्रत्य०)] [भाव० मिलनसारी] जिसकी प्रवृत्ति सबसे मिलते रहने तथा प्यार-मुहब्बत बनाये रखने की हो ।

मिलनसारी—स्त्री० [हिं० मिलनसार+ई (प्रत्य०)] मिलनसार होने की अवस्था या भाव।

मिलना—अ० [स० मिलन] १. पदार्थों का एक दूसरे मे पड़कर इस प्रकार मिश्रित या सम्मिलित होना कि वे बहुत कुछ एकाकार हो जायँ और सहज में एक दूसरे से अलग न किये जा सकें। जैसे—(क) दाल में नमक या हल्दी मिलना। (ख) दूध मे चीनी या पानी मिलना। २. पदार्थों का आपस मे साधारण रूप से एक दूसरे में इस प्रकार आकर पड़ना कि उनका स्वतंत्र अस्तित्व बना रहे। जैसे—(क) गेहूँ के दानों मे चने या जौ के दाने मिलना। (ख) मोतियों में हीरे मिलना।

पद—मिला-जुला=(क) आपस में एक दूसरे के साथ अच्छी तरह मिश्रित या सम्मिलित। (ख) जिसमें कई पदार्थों का मिश्रण या मेल हो। जैसे—मिला-जुला अन्न। ३ किसी रेखा, बिंदु, सीमा आदि पर दो या कई चीजों का इस प्रकार आकर पहुँचना या स्थित होना कि वे एक दूसरी से लग या सट जायँ। जैसे—(क) गाँवो या देशो की सीमाएँ मिलना। (ख) चौराहे पर चारों ओर की सड़कें मिलना। ४. प्राणियो, व्यक्तियों आदि के सम्बन्ध मे, किसी प्रकार या रूप में भेंट, साक्षात्कार या सामना होना। जैसे—(क) जंगल मे घूमने के समय शेर मिलना। (ख) रास्ते मे किसी परिचित या मित्र का मिलना। ५. किसी पदार्थ का किसी रूप मे आगे या सामने आना। जैसे—रास्ते मे झरना, नदी या पहाड़ मिलना, जानवर मिलना। ६. व्यक्तियो का इस प्रकार आमने-सामने या पास होना कि आपस मे बात-चीत हो सके। जैसे—कल फिर हम लोग यही मिलेंगे। ७ किसी प्रकार का अभीष्ट अथवा सुखद लाभ या सिद्धि होना। जैसे—(क) दवा से आराम मिलना। (ख) किसी स्थान पर रहने से सुख मिलना। ८ छान-बीन करने या ढूँढने पर किसी चीज, तत्त्व या बात का ज्ञान अथवा परिचय होना। जैसे—(क) अनुसधान करने पर कोई नई दवा, द्रव्य या धातु मिलना। (ख) सोचने पर नई तरकीब या रास्ता मिलना। ९. किसी चीज या बात का किसी रूप मे प्राप्त या हस्तगत होना। जैसे—(क) कही से अनुमति, आदेश, रुपए या समाचार मिलना। (ख) खोई हुई अँगूठी या कलम मिलना। (ग) अदालत से सजा मिलना। १० व्यक्तियों का किसी अभिप्राय या उद्देश्य की सिद्धि के लिए आपस मे समझौता करके गुट या दल बनाना। जैसे—चोरों, डाकुओं या राजनीतिक दलो का आपस में मिलना।

पद—मिली-भगत। (दे० स्वतन्त्र पद)

११. अपना दल या पक्ष छोड़कर गुप्त अथवा प्रत्यक्ष रूप से किसी दूसरे दल या पक्ष की ओर होना। जैसे—(क) सदन के सदस्यों का विरोधी दल मे मिलना। (ख) घर के नौकर-चाकरो का चोरो से मिलना। १२ व्यक्तियो के अगो का एक दूसरे के सामने होना या एक दूसरे से सम्बद्ध अथवा सलग्न होना। जैसे—किसी से आँखें मिलाना। १३ दो या अधिक तत्त्वों या पदार्थों का अवस्था, गुण, रूप आदि के विचार से एक दूसरे के अनुरूप, तुल्य या समान होना। जैसे—एक दूसरे की आकृति, मत, विचार या स्वभाव मिलना।

पद—मिलता-जुलता=गुण, प्रकृति, रूप आदि के विचार से बहुत कुछ किसी दूसरे के समान अथवा आपस मे एक तरह का। जैसे—इसी से मिलता-जुलता कोई और कपड़ा लाओ।

१४. दो या अधिक तत्त्वों, पदार्थों आदि का इस प्रकार एक स्थान या स्थिति मे आना, पहुँचना या होना कि उनका पार्थक्य या भेद-भाव दूर हो जाय। जैसे—(क) सगम पर नदियो का मिलना। (ख) सन्ध्या के समय दिन और रात मिलना। (ग) विरोधी दलो का आपस मे मिलना। १५ कुछ विशिष्ट प्रकार के बाजो के सबध मे, ऐसी स्थिति मे आना या लाया जाना कि उनमे से ठीक तरह से और एक मेल मे स्वर निकल सकें और साथ के दूसरे बाजा के स्वरों के अनुरूप हो सकें। बाजों का अधिक उतरा या चढा न रहना, बल्कि समस्थिति मे आना या होना। जैसे—(क) पखावज या सितार मिलना। (ख) तबले से सारगी मिलना।

†स०[?] गौ, भैंस आदि का दूध दूहना।

मिलनी—स्त्री०[हिं० मिलना+ई (प्रत्य०)] १ विवाह के समय की एक रसम, जिसमे वर और कन्या-पक्ष के लोग आपस मे गले मिलते हैं और कन्या-पक्ष के लोग वर-पक्ष के लोगो को कुछ धन भेंट करते हैं। २ इस प्रकार कन्या-पक्ष वालो द्वारा वर-पक्षवालो को दिया जानेवाला धन। जैसे—उनके यहाँ दो सौ रुपये की मिलनी हुई है। ३ मिलना। मिलन।

मिलवना†—स०=मिलाना।

मिलवाई—स्त्री०[हिं० मिलवाना+ई (प्रत्य०)] मिलवाने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक अथवा पुरस्कार।

मिलवाना—स०[हिं० मिलाना का प्रे० रूप]१. मिलाने का काम दूसरे से कराना। २ आपस में मेल कराना। ३. आपस मे परिचय या भेंट कराना। ४ स्त्री और पुरुष का संभोग कराना।

मिलाई—स्त्री०[हिं० मिलाना+ई (प्रत्य०)] १ मिलाने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक। २ जाति से निकाले हुए लोगो का फिर से जाति मे मिलाया जाना। ४ आज-कल, जेल के अधिकारियों द्वारा कैदियो को उनके मित्रों, सम्बन्धियो आदि से भेंट कराने की क्रिया या भाव। ३ विवाह की मिलनी नामक रसम।

मिलान—पु०[हिं० मिलाना]१ मिलाने की क्रिया या भाव। २ तुलनात्मक दृष्टि से अथवा ठीक होने की जाँच करने के लिए दो या अधिक चीजों या बातो का आपस मे साथ रखकर मिलाया और देखा जाना। जैसे—सब रकमो का मिलान कर लो। ३ गुण, दोष, विभेद, विशेषताएँ, समानताएँ आदि जानने के लिए दो चीजो या बातो के सबध मे किया जानेवाला विचार या विवेचन। तुलना (कम्पैरिज़न) ४ पैदल चलनेवालो के ठहरने का डेरा या पडाव। (बुदेल०) उदा०—भयो महूरत भोर के पौरिहि प्रथम मिलानु--बिहारी।

मिलान-केन्द्र—पु० नगर या जिले का मुख्य दूर-भाष कार्यालय जिससे वहाँ के सभी दूर-भाष यत्र सबद्ध होते है और जहाँ स्थानीय लोगों से या अन्य नगरवालो से दूर-भाष करने के लिए परस्पर सबध मिला देने की व्यवस्था की जाती है। (एक्सचेंज)

मिलाना—स० [हिं० मिलना का स० रूप] १ पदार्थों का एक दूसरे मे डालकर या साथ करके इस प्रकार मिश्रित या सम्मिलित करना कि वे बहुत कुछ एक रूप हो जायँ और सहज मे एक दूसरे से अलग न हो सकें। जैसे—तरकारी मे मसाला या तेल मे रग मिलाना। २ एक पदार्थ मे दूसरा पदार्थ इस प्रकार डालना कि वे साथ रहने पर भी अपना स्वतत्र अस्तित्व बनाये रहें। जैसे—कई तरकारियो को एक मे मिलाना। ३ किसी रेखा, बिन्दु या विस्तार पर कोई चीज इस प्रकार लाकर पहुँचाना या लाना कि वे आपस मे लग या सट जायँ अथवा किसी रूप मे एक हो जायँ। जैसे—(क) कोई दीवार बढ़ाकर छत या दूसरी दीवार से मिलाना। (ख) नगर के आस-पास की बस्तियो को नगर मे मिलाना। ४. प्राणियो, व्यक्तियों आदि को इस प्रकार एक दूसरे के पास लाना या सामने पहुँचाना कि उनमे किसी प्रकार का सबध या सयोग घटित हो। जैसे—(क) भूले हुए बच्चे को उसके माँ-बाप से मिलाना। (ख) अपने किसी मित्र को और मित्रो से मिलाना। ५ किसी को अपने दल, वर्ग या समूह मे सम्मिलित करके उसको अंग बनाना। जैसे—(क) जाति से निकाले हुए व्यक्ति को जाति मे मिलाना। (ख) विधर्मी को अपने धर्म मे मिलाना। ६. विपक्षी या विरोधी को अपने अनुकूल बनाना या पक्ष मे लाना। जैसे—किसी के गवाह या नौकर को अपनी तरफ मिलाना। ७ दलो, व्यक्तियो आदि का पारस्परिक वैर-विरोध दूर करके उनमे मित्रता या सद्भाव स्थापित करना। जैसे—दलबंदी दूर करके दलो को आपस मे मिलाना। ८. चीजो को आपस में गाँठ लगाकर, जोडकर या सीकर एक करना। जैसे—चाँदनी बडी करने के लिए उसमे और कपडा मिलाना। ९. शरीर के कुछ अंगों या उनकी क्रियाओ के सबध मे, किसी प्रकार का सम्पर्क या सहयोग स्थापित करना या कराना। जैसे—किसी से आँखें, मन या हाथ मिलाना। १०. एक पदार्थ के तल को दूसरे पदार्थ के तल के इतने पास पहुँचाना कि वे आपस मे लग या सट जायँ। जैसे—यह अलमारी जरा और आगे बढ़ाकर दीवार से मिला दो। ११ उपयोगिता, गुण, महत्त्व आदि स्थिर करने के लिए एक की दूसरे से तुलना करते हुए विचार करना। जैसे—दोनो कपडो को मिलाकर देखो कि दोनो में कौन अच्छा है। १२. इस बात की जाँच करना कि कोई चीज या लेख ठीक और शुद्ध है या नही। जैसे—(क) आय-व्यय का हिसाब मिलाना (अर्थात् उनके ठीक या शुद्ध होने की जाँच करना। १३ पुरुष और स्त्री का मैथुन या सभोग के लिए साथ कराना। (बाजारू) १४ कुछ विशिष्ट प्रकार के बाजो के सबध मे, उनके अगो का तनाव या बधन कसकर अथवा ढीला करके उन्हे ऐसी स्थिति मे लाना कि उनमे ठीक स्वर निकल सकें। जैसे—(क) तबला या सारंगी मिलाना। (ख) सारगी से तबला मिलाना।

मिलाप—पु० [हिं० मिलना+आप (प्रत्य०)] १ मिलने की क्रिया या भाव। २ मिले हुए होने की अवस्था या भाव। ३ दो या अधिक व्यक्तियो का आपस मे प्रेमपूर्वक मिलना। स्नेहपूर्ण मिलन। जैसे—राम और भरत का मिलाप। ४. वह स्थिति जिसमे लोग आपस मे मिल-जुलकर और स्नेहपूर्वक रहते हो। मेल।

पद—मेल-मिलाप।

५ मुलाकात। भेंट। ६ स्त्री और पुरुष का मैथुन या सभोग।

मिलाव—पु० [हिं० मिलाना+आव (प्रत्य०)] १ मिलावट। २. मिलाप।

मिलावट—स्त्री० [हिं० मिलाना+आवट (प्रत्य०)] १ मिलाए जाने की क्रिया या भाव। २ किसी अच्छी चीज मे घटिया चीज के मिले हुए होने की अवस्था या भाव। अप-मिश्रण। घाल-मेल। (एडल्टरेशन) जैसे—मिलावट का घी, दूध या सोना। ३ इस प्रकार शुद्ध चीज मे मिलाया जानेवाला खराब चीज का अश या मात्रा। खोट।

मिलावा†—पुं०=मिलाप।

मिलिंद—पु० [सं०] भ्रमर। भौरा।

मिलिक—स्त्री० दे० 'मिलक'।

मिलिटरी—वि० [अ०]१ सेना या फौजी सैनिक सबधी। २. युद्ध या समर सबधी। सामरिक।

स्त्री० पलटन। फौज।

मिलित—भू० कृ० [स०√मिल् (मिलना)+क्त] किसी के साथ मिला हुआ।

मिलि-भगत—स्त्री० [हिं० मिलना+भगत] किसी को तग या परेशान करने के लिए आपस मे मिल-जुलकर चली जानेवाली

ऐसी धूर्ततापूर्ण चाल जो ऊपर से देखने पर बहुत-कुछ निर्दोष या साधारण जान पड़े। जैसे—यात्रियों को ठगने के लिए दलालों या पंडों की मिली-भगत।

मिलेठी—स्त्री०=मुलेठी।

मिलौना—स०[हिं० मिलाना] १. गौ का दूध दूहना। २. मिश्रित करना। मिलाना।

पुं० एक प्रकार की बढ़िया जमीन जिसमे कुछ बालू भी मिला रहता है।

मिलौनी—स्त्री० [हिं० मिलाना+औनी (प्रत्य०)] १. मिलाने की क्रिया या भाव। मिलाई। २ मिलावट। ३ मिलने-मिलाने आदि के समय दिया जानेवाला धन। ४. आज-कल विशिष्ट रूप से, जेल के कैदियो को उनके सम्बन्धियो, परिचितों आदि से भेंट कराने की क्रिया या भाव।

मिल्क—पुं० [अ०] १. जमींदारी। २. माफी। मिली हुई जमीन या जागीर। ३. मध्य युग मे जमीन पर होनेवाला एक विशिष्ट प्रकार का स्वामित्व। ४. धन-सपति। ५. अधिकार।

मिल्कियत—स्त्री० [अ०] १. मिल्क की अवस्था या भाव। २. किसी चीज के मालिक होने की अवस्था या भाव। स्वामित्व। जैसे—इस जमीन पर हमारी मिल्कियत है। ३. जमींदारी। ४. जागीर। ५. धन-संपत्ति। ६ कोई ऐसी चीज जिस पर किसी का स्वामित्व-पूर्ण भोग हो।

मिल्की—पुं०=मिलकी।

मिल्लत—स्त्री० [हिं० मिलन+त (प्रत्य०)] १. मेल-जोल या मेल-मिलाप होने की अवस्था या भाव। २ मिलन-सारी। ३. कोई धार्मिक वर्ग या सप्रदाय। जैसे—बडे नगरो मे आपको हर मिल्लत के आदमी मिलेंगे।

मिशन—पु० [अं०] १ उद्देश्य। २ कुछ लोगो का वह दल जो किसी विशिष्ट उद्देश्य की सिद्धि, किसी प्रकार के सेवा-कार्य या विशिष्ट महत्त्वपूर्ण विषय की बात-चीत करके कोई नया सम्बन्ध स्थापित करने के लिए दूसरे देश या स्थान मे भेजा जाता हो। ३ वह सस्था, विशेषतः ईसाइयो की सस्था जो सघटित रूप से धर्म-प्रचार का प्रयत्न करती हो।

मिशनरी—पुं०[अं०]१ वह जो किसी दूसरी जगह या दूसरे देश मे केवल लोक-सेवा के भाव से जाता या जाकर रहता हो। २ वे ईसाई पादरी आदि जो किसी मिशन के सदस्य के रूप मे अनेक देशो मे धर्म का प्रचार करने के लिए जाते हैं। ३ उक्त प्रकार का कोई पादरी।

मिशी—स्त्री०[स० मिश+ङीष्] १. जटामांसी। २. सोआ नामक साग। ३. सौंफ। ४ मेथी। ५ डाभ।

मिश्र—वि०[सं०√मिश्र् (मिलाना)+रक्] १. जो अनेक के योग से मिलकर एक हो गया हो। कइयों को मिलाकर एक किया या बनाया हुआ। जैसे—मिश्र धातु। २. मिला हुआ। संयुक्त। ३. जिसने अनेक अगों, तत्त्वो, प्रक्रियाओं आदि के योग से एक नया और स्वतन्त्र रूप धारण कर लिया हो। जैसे—मिश्र अनुपात, मिश्र गुणन, मिश्र वाक्य आदि। ४ बडा और मान्य। श्रेष्ठ।

पु०१. कुछ विशिष्ट वर्गीय ब्राह्मणों (जैसे—कान्यकुब्ज, सरयूपारी, सारस्वत आदि) की एक विशिष्ट शाखा का अल्ल या जाति-नाम। २ साहित्य में इतिवृत्त के मूल के विचार से नाटकों की कथा-वस्तु के तीन भेदो में से एक। ऐसी कथा-वस्तु जिससे इतिवृत्त की पीठिका या पृष्ठभूमि तो प्रख्यात या लोक-विदित हो, परन्तु उसके साथ अनेक उत्पाद्य या कल्पित कथाएँ अथवा घटनाएँ भी मिला दी गई हो। (अन्य दो भेद 'उत्पाद्य' और 'प्रख्यात' कहलाते हैं।) ३. ज्योतिष मे सात प्रकार के गणों में से अंतिम या सातवाँ गण जो कृत्तिका और विशाखा नक्षत्र के योग में, होता है। ४. व्याकरण में तीन प्रकार के वाक्यों मे से एक, जिसमें मुख्य उपवाक्य तो एक ही होता है, परन्तु आश्रित उपवाक्य एक से अधिक होते हैं। ५ हाथियों की चार जातियों में से एक जाति। ६. सन्निपात रोग। ७ खून। रक्त। ८ मूली।

पुं०=मिस्र (देश)।

मिश्रक—वि०[सं० मिश्र+कन्] मिश्रण करने या मिलानेवाला।

पुं० १ खारी नमक। २ जस्ता। ३ मूली। ४. नन्दन वन। ५. एक प्राचीन तीर्थ। ६ वैद्यक के अनुसार एक प्रकार का रोग।

मिश्रक-स्नेह—पुं० [सं० ष० त०] एक प्रकार का औषध जो त्रिफला, दशमूल और दती की जड आदि से बनता है। (वैद्यक)

मिश्रज—वि० [स० मिश्र√जन् (उत्पत्ति)+ड] १ जो किसी प्रकार के मिश्रण से उत्पन्न हुआ हो। २. वह जो दो भिन्न-भिन्न जातियों के मिश्रण या मेल से बना या उत्पन्न हो। वर्ण-संकर। दोगला।

पु० खच्चर।

मिश्रण—पु० [स०√मिश्+ल्युट्—अन] १ दो या अधिक चीजों को आपस में मिलाना। मिश्रित करना। २. उक्त को मिलाने से तैयार होने या बननेवाला पदार्थ या रूप। ३. मिलावट। ४. गणित मे, संख्याओं का जोड़ लगाने की क्रिया। ५ रसायन विज्ञान में, द्रव, ठोस या गैस रूप में होनेवाले किसी पदार्थ को किसी दूसरे द्रव, ठोस या गैस रूप में होनेवाले पदार्थ में मिलाना। ६. उक्त के मिलाये जाने पर तैयार होनेवाला पदार्थ विशेषत. तरल पदार्थ। घोल। (सेल्यूशन, उक्त दोनों अर्थों मे) ७ वह तरल औषध जो कई ओषधियों के मेल से बना हो। (मिक्सचर)

मिश्रणीय—वि० [सं०√मिश्+अनीयर्] जो मिश्रण के योग्य हो; अथवा जिसका मिश्रण होने को हो।

मिश्रता—स्त्री० [सं० मिश्र+तल+टाप्] मिश्रण या मिश्रित होने की अवस्था या भाव।

मिश्र-धातु—पु० [कर्म० स०] वह धातु जो दो या अधिक धातुओं के मिश्रण से बनी हो। (एलॉय) जैसे—पीतल।

मिश्र-धान्य—पुं० [स० कर्म० स०] एक में मिलाए हुए कई प्रकार के अनाज या धान्य।

मिश्र-पुष्पा—स्त्री० [स०ब० स०,+टाप्] मेथी।

मिश्र वर्ण—पु० [स० ब० स०] १. काला अगर। २. गन्ना।

वि० दो या दो से अधिक रंगोवाला।

मिश्र-वाक्य—पु० [सं० कर्म० स०] व्याकरण में तीन प्रकार के वाक्यों मे से एक जिसमे एक मुख्य उपवाक्य होता है और दो या दो से अधिक आश्रित उपवाक्य होते हैं।

मिश्र-शब्द—पु० [स० ब० स०] खच्चर।

मिश्रित—भू० कृ० [स०√मिश्र्+क्त] १. एक से मिला या मिलाया हुआ। २. मिलावटवाला (पदार्थ)।

मिश्रिता—स्त्री० [सं० मिश्रित+टाप्] सात सक्रान्तियो मे से एक।

मिश्री—स्त्री०=मिसरी।

मिश्रीकरण—पु० [सं० मिश्र+च्वि, इत्व दीर्घ,√कृ (करना)+ल्युट्—अन,] मिलाने की क्रिया या भाव। मिश्रण करना।

मिश्रौदन—पु० [सं० मिश्र-ओदन, कर्म० स०] खिचडी।

मिष—पु० [सं०√(मिष् स्पर्धा आदि)+क] १ कपट। छल। धोखेबाजी। २ बहाना। मिस। ३ ईर्ष्या। डाह। ४ स्पर्द्धा। होड। ५ देखना। दर्शन। ६ सींचना। सिंचन।

मिषि—स्त्री० =मिसि।

मिषिका—स्त्री० [सं० मिषि+कन्+टाप्] १ सोआ। ३ जटामासी। ३ सौंफ।

मिषी—स्त्री०=मिसि।

मिष्ट—वि० [√मिष् (सेचन)+क्त] १ मिठास से युक्त। २ स्वादिष्ट। ३. नम।

पु० १ मीठा रस। २ मीठापन। मिठास। ३ मिठाई।

मिष्ट-निंब—पु० [सं० कर्म० स०] मीठी नीम (वृक्ष और उसकी फली)।

मिष्ट-पाक—पु० [सं० ब० स०] मुरब्बा।

मिष्ट-पाचक—पु० [सं० ष० त०] स्वादिष्ट भोजन बनानेवाला। रसोइया।

मिष्टभाषी (षिन्)—वि० [सं० मिष्ट√भाष् (बोलना)+णिनि मिष्टाभाषिन्] मीठे वचन बोलनेवाला। मधुरभाषी।

मिष्टान्न—पु० [सं० मिष्ट-अन्न, कर्म० स०] मीठा अन्न अर्थात् मिठाई।

मिस—पु० [सं० मिष] १. ऐसी स्थिति जिसमे किसी काम, चीज या बात का वास्तविक रूप तो कुछ और हो, पर किसी गूढ़ उद्देश्य से कुछ और ही रूप प्रकट करके दिखाया जाता हो। जैसे—पंडित जी ने उपदेश के मिस से श्रोताओ को उनके बहुत से दोष बतलाये और उन्हे ठीक मार्ग बताया।

विशेष—'बहाना' से इसमे यह अन्तर है कि इसमे कौशल या निपुणता की मात्रा अधिक होती है, पर इसका प्राय बुरा फल नही होता, और न इसमे अपना दोष छिपाने का ही भाव होता है।

२ उक्त स्थिति मे या उक्त प्रकार के उद्देश्य से कही जानेवाली बात। उदा०—(क) मैं क्या बच्चो का सा मिस कर रहा हूँ।—वृदावनलाल। (ख) भाड पुकारे पीर बस, मिस समझै सब कोय।—वृद। ३ दे० 'बहाना' और 'हीला'।

अव्य० १. नाते या सबंध के विचार से। जैसे—फूफी मिस लीजिए, भतीजे मिस दीजिए। (कहा०) २. बहाने से।

पु० [फा०] ताँबा।

स्त्री० [अ०] कुमारी कन्या या अविवाहिता स्त्री का वाचक शब्द। जैसे—मिस कल्याणी।

मिसकना—अ० दे० 'मिनमिनाना'।

मिसकीन—वि० [अ० मिस्कीन] १ दीन-हीन। बेचारा। २ दरिद्र। निर्धन। गरीब। ३ भोला-भाला। सीधा-साधा। ४ विनम्र। ५ त्यागी या विरक्त।

मिसकीनी—स्त्री० [हिं० मिसकीन+ई (प्रत्य०)] मिसकीन होने की अवस्था या भाव।

मिसगर—पु० [फा०] [भाव० मिसगरी] १ ताँबे के बरतन आदि बनानेवाला। कारीगर। २ ठठेरा।

मिसन—स्त्री० [हिं० मिसना=मिलना] १ वह जमीन जिसकी मिट्टी मे बालू मिला हो। २ बलुई मिट्टी।

मिसना—अ० [सं० मिश्रण] मिलाया जाना। मिश्रित होना। अ० [हिं० मीसना का अक० रूप] मीसा अर्थात् मीजा या मला जाना। † वि०, पु०=मीसना।

मिसमिल*—स्त्री० [अ० बिस्मिल्लाह] मुसलमानो मे 'बिस्मिल्लाह' कहकर पशु की हत्या करने की प्रथा। उदा०—कतहूँ मिसमिल कतहूँ छेव।—कबीर।

मिसर—पु० १.=मिश्र। २ =मिस्र (देश)।

मिसरा—पु० [अ० मिसरअ] १ उर्दू फारसी आदि की कविता मे, किसी कविता आदि का आधारभूत पहला चरण। २ चरण। पद।

पद—मिसरा तरह।

मुहा०—मिसरा लगाना=किसी एक मिसरे मे अपनी ओर से रचना करके दूसरा मिसरा जोडना या लगाना।

मिसरा तरह—पुं० [अ०+फा०] वह चरण जिसे आधार बनाकर कोई कविता लिखी जाती हो।

मिसरी—वि० [मिस्र देश से] मिस्र या मिसर नामक देश का। पु० मिस्र देश का निवासी।

स्त्री० १ मिस्र देश की भाषा। २ विशेष प्रकार से कूँडे या थाल मे जमाई हुई चीनी, जो खाने मे स्वादिष्ट होती है। (यह मिस्र देश मे पहले-पहल बनी थी)।

पद—मिसरी की डली=बहुत ही मीठा और स्वादिष्ट पदार्थ।

३ एक प्रकार की शहद की मक्खी।

मिसरोटी—स्त्री० [हिं० मिस्सा+रोटी] १ मिस्मे आटे अर्थात् दालो आदि के चूर्ण की बनी हुई रोटी। मिस्सा। २ अंगाकडी। बाटी।

मिसल—स्त्री० [अ० मिसिल] सिक्खो के वे अनेक समूह जो अलग-अलग नायको की आधीनता मे स्वतन्त्र हो गये हों। २ दे० 'मिसिल'। वि०=मिस्ल।

मिसहा—वि० [हिं० मिस+हा (प्रत्य०)] मिस (दे०) या बहाना करनेवाला।

मिसाल—स्त्री० [अ०] १ उपमा। २ उदाहरण। दृष्टांत। ३. कहावत। लोकोक्ति।

मिसालन—अव्य० [अ०] उदाहरण-स्वरूप। उदाहरणार्थ।

मिसाली—वि० [अ०] मिसाल अर्थात् उदाहरण के रूप में होनेवाला या प्रस्तुत किया जानेवाला।

मिसि—स्त्री० [सं०√मस् (परिवर्तन करना)+इन्, इत्व] १ जटामाँसी। २ सौंफ। ३ सोआ नामक साग। ४ अजमोदा। ५ उशीर। खस।

मिसिर—स्त्री०=मिसरी।

मिसिल—स्त्री० [अ० मिस्ल] १ एक साथ रखे हुए अथवा नत्थी किये हुए किसी मुकदमे, विवाद या विषय से संबध रखनेवाले कागज-पत्र।

२. दफ्तरी खाने मे, पुस्तक की सिलाई से पहले फरमों का क्रमानुसार लगाया हुआ रूप।

क्रि० प्र०—उठाना। —लगाना।

मिसिली—वि० [हिं० मिसिल+ई (प्रत्य०)] १ जिसके संबंध में अदालत मे कोई मिसिल बन चुकी हो। २. जिसे न्यायालय से सजा मिल चुकी हो। जैसे—मिसिली चोर या डाकू।

मिसी—स्त्री० [फा०] मिस्सी। (दे०)

मिस्कला—पु० [अ० मिस्कल] तलवारें चमकाने का एक तरह का लोहे का यंत्र।

मिस्की—स्त्री० [?] संगीत मे गाने का वह ढंग या प्रकार जिसमें गानेवाला अपने पूरे कंठ-स्वर से या खुलकर नहीं बल्कि बहुत ही कोमल और धीमे कंठ-स्वर मे गाता है। (क्रून)

मिस्कीन—वि०=मिसकीन।

मिस्कीनी—स्त्री०=मिसकीनी।

मिस्कोट—पु० [अ० मेस=भोज] १. भोजन। २. एक साथ बैठकर खाने-पीने वालों का समूह। ३ आपस मे होनेवाला गुप्त परामर्श।

मिस्टर—पु० [अ०] महाशय। (नाम के पहले प्रयुक्त) जैसे—मिस्टर जिन्ना। इसका संक्षिप्त रूप मि० ही अधिक प्रचलित है।

मिस्तर—पु० [हिं० मिस्तरी ?] १ इमारत मे गच पीटने का पिटना नामक उपकरण। २ दफ्ती का वह टुकड़ा जिस पर समानांतर पर डोरे लपेट या सी लेते हैं और जिनकी सहायता से कागज पर सीधी लकीरें खींची जाती हैं।

पु०=मेहतर।

मिस्तरी—पु० [अ० मास्टर=उस्ताद] वह चतुर कारीगर जो इमारत, धातु या लकड़ी का काम करता हो अथवा यंत्रों आदि की मरम्मत करता हो।

मिस्तरीखाना—पु० [हिं० मिस्तरी+फा० खाना] वह स्थान जहाँ बढ़ई, लोहार आदि बैठकर काम करते हैं।

मिस्ता—पु० [देश०] १ अनाज दाँने के लिए तैयार की हुई भूमि। २ बंजर जमीन।

मिस्मिरेजिम—पु० =मेस्मरेजिम।

मिस्र—पु० [अ०] अफ्रीका महादेश के उत्तर का एक प्रसिद्ध देश जो किसी समय बहुत अधिक उन्नत तथा सभ्य था। आजकल यह संयुक्त अरब गणराज्य के अन्तर्गत है।

पु०=मिश्र।

मिस्रा—पु०=मिसरा।

मिस्री—वि० [फा० मिस्र] मिस्र देश का।

मिस्ल—वि० [अ०] समान। तुल्य। जैसे—यह घोड़ा मिस्ल तीर के जाता है।

स्त्री० दे० 'मिसिल'।

मिस्सा—पु० [हिं० मिसना=मिलना या मीसना=मलना] १. मूँग, मोठ आदि का भूसा जो भेड़ों और ऊँटों के लिए अच्छा समझा जाता है। २ कई तरह की दालें एक साथ पीसकर तैयार किया हुआ आटा जिसकी रोटी बनती है।

पद—**मिस्सा कुस्सा**=मोटा अन्न।

मिस्सी—स्त्री० [फा० मिसी] १. माजूफल, लोहचून, तूतिया आदि के योग से तैयार किया जानेवाला एक तरह का मंजन जिससे स्त्रियाँ अपने दाँत और होंठ रँगती हैं।

क्रि० प्र०—मलना। —लगाना।

मुहा०—**मिस्सी काजल करना**=स्त्रियों का बनाव-सिंगार करना।

२. मुसलमान वेश्याओं की एक रस्म जिसमे किसी कुमारी वेश्या को पहले-पहले समागम कराने के लिए उसे मिस्सी लगाते हैं। नथिया उतरने या सिर-ढकाई की रसम। उदा०—हमको आशिक लबों दन्दों का समझकर उसने चमका भेजा है कि हमारी मिस्सी।—कोई शायर।

मिह—वि० [फा०] महान्।

मिहचना—स०=मीचना।

मिहतर—पु०=मेहतर।

मिहदार—पु० [फा० मिह=मिहनत+दार (प्रत्य०)] वह मजदूर जिसे नकद मजदूरी दी जाती हो। (रुहेल०)

मिहनत†—स्त्री०=मेहनत।

मिहना—पुं०=मेहना।

स० =महना (मथना)।

मिहमान†—पु०=मेहमान।

मिहर—स्त्री०=मेहर।

पु०=मिहिर।

मिहरबान—पुं०=मेहरबान।

मिहरा†—पु० १. =मेहरा। २ =महरा।

मिहराब—स्त्री०=मेहराब।

मिहरारू—स्त्री०=मेहरारू (स्त्री)।

मिहरी†—स्त्री०=मेहरी (स्त्री)।

मिहाना—अ० [सं० हिमायन या हिं० मेह] वर्षा ऋतु मे पकवानों का नमी के कारण मुलायम पड़ जाना और फलत कुरकुरा न रह जाना।

मिहानी†—स्त्री०=मथानी।

मिहिका—स्त्री० [सं०√मिह् (सींचना)+क्वुन्—अक,+टाप्, इत्व] १. पाला। हिम। २ ओस। ३ कपूर।

मिहिचना†—स०='मीचना'।

मिहिर—पु० [सं०√मिह्+किरच्] १ सूर्य। २. आक। मदार। ३. ताँबा। ४ बादल। मेघ। ५ वायु। हवा। ६ चन्द्रमा। ७ राजा। ८ दे० 'वराह-मिहिर'।

वि० बुड्ढा। वृद्ध।

मिहीं—वि०=महीन।

मिही—स्त्री० [देश०] मध्य-प्रदेश मे होनेवाला एक प्रकार का अरहर।

मिहीन—वि०=महीन।

मीं†—पु०=मेंह (वर्षा)। (पश्चिम)

मींगनी†—स्त्री०=मेंगनी।

मींगी—स्त्री० [सं० मुद्ग =दाल] बीज के अंदर का गूदा।

मींजना—स० [हिं० मीडना] १ मलना। ममलना। जैसे—छाती मींजना, हाथ मींजना।

† स०=मूँदना।

मींजू—वि० [हिं० मीजना] बहुत मीज-मीजकर अर्थात् कठिनता से धन निकालनेवाला। कंजूस। कृपण।

मीट†—स्त्री० [हिं० मीटना=बंद करना] नींद की झपकी। (राज०) उदा०—जागिया मीट जनारदन।—प्रिथीराज।

मींड़—स्त्री० [अ० मीडम्] १. मींडने की अवस्था, क्रिया या भाव। २. संगीत में एक स्वर से दूसरे स्वर पर जाते समय मध्य का अश ऐसी सुन्दरता से कहना कि दोनों स्वरो के बीच का सबध स्पष्ट हो जाय।

मींडक†—पु० मेढक।

मींडना—स० [हिं० मांडना] १. मलना। मसलना। २ गूँधना। जैसे—आटा मींडना।

मीआद—स्त्री० [अ०] १ किसी काम या बात के लिए नियत किया हुआ समय। अवधि। २. कैद की सजा की अवधि।

क्रि० प्र०—काटना।—भुगतना।

मीआदी—वि० [हिं० मीआद+ई (प्रत्य०)] १ जिसके लिए कोई मीआद या समय नियत हो। नियत समय तक रहनेवाला। जैसे—मीआदी बुखार, मीआदी हुडी। २ जो मीआद अर्थात् कैद की सजा भोग चुका हो।

मीआदी बुखार—पु० [अ० मीआदी+बुखार] सान्निपातिक ज्वर जो प्रायः ७, १४, २१, २८ या ४१ दिनो तक रहता है। (टाइफॉयड)

मीआदी हुंडी—स्त्री० [अ०+हिं०] वह हुडी जिसका भुगतान नियत मिती पूजने पर होता है।

मीच*—स्त्री० [स० मीति] मृत्यु। मौत।

मीचना—स० [प्रा० मिचण] बद करना। जैसे—आँखे या मुँह मीचना।

मीचु†—स्त्री०=मृत्यु।

मीजना†—स०=माँजना।

मीजा—स्त्री० [अ० मिज़ाज] १ पारस्परिक व्यवहार मे स्वभाव आदि की अनुकूलता।

मुहा०—(किसी से) मीजा पटना या मिलना=स्वभाव मिलने के कारण मेल-जोल होना।

२ राय। सम्मति। ३ सहमति। स्वीकृति।

मीजान—स्त्री० [अ० मीजान] १ तुला। तराजू। २ तुला राशि। ३ गणित मे कई अको, सख्याओं आदि का जोड़। योग।

†स्त्री० =मीजा।

मीटना—अ०=मीचना।

मीटर—पु० [अ०] १ वह यत्र जिसमे प्रयुक्त होनेवाली वस्तु, शक्ति आदि का मान जाना जाता हो। मापक। जैसे—नल के पानी या बिजली का मीटर। २ वह यत्र जिससे किसी कार्य, गति आदि का मान या सख्या जानी जाती हो। मापका। जैसे—मोटर गाडी का मीटर जिससे पता चलता है कि मोटर कितनी दूर चली। ३. दाशमिक प्रणाली मे दूरी या लबाई नापने की एक आधारिक इकाई जो ३९.३७ इच के बराबर होती है।

मीटिंग—स्त्री० [अ०] १ गोष्ठी, समिति आदि की बैठक। २ सभा, समिति आदि का अधिवेशन।

मीठा—वि० [स० मिष्ट; प्रा० मिट्ठ] [स्त्री० मीठी] १ चीनी, शहद आदि की तरह के स्वादवाला। मधुर। जैसे—मीठा आम, मीठी नारगी, मीठा पुलाव। २. अच्छे स्वादवाला। स्वादिष्ट। ३ अनुकूल और प्रिय। जैसे—मीठी नजर, मीठी नींद। उदा०—मीठा मीठा गप, कड़आ कड़आ थू। (कहा०) ४. धीमा। मंद। जैसे—मीठी चाल, मीठा ज्वर, मीठा दरद। ५. अल्प। कम। थोडा। जैसे—दाल मे नमक मीठा ही रहे। ६ मामूली। साधारण। ७ किसी की तुलना मे घटकर या हलका। ८ (व्यक्ति) जिसका स्वभाव कोमल हो और जो प्रिय व्यवहार करता हो। ९ (व्यक्ति) जिसमें पुसत्व बहुत ही कम हो या बिलकुल न हो। १०. (व्यक्ति) जो गुदा-भंजन कराता हो। ११ बहुत अधिक सीधा तथा प्रायः सबके साथ सद्व्यवहार करनेवाला। सुशील और सौम्य। जैसे—इतने मीठे न बनो कि लोग चट कर जायँ। १२ (खेत) जिसकी मिट्टी भुर-भुरी हो।

पु० १ मिठाई। २ गुड। ३. हलुआ। ४. किसी प्रकार की प्राप्ति या लाभ की स्थिति।

मुहा०—मीठा होना=अपने पक्ष मे कुछ भलाई होना। जैसे—हमे ऐसा क्या मीठा है, जो हम उनके घर जायँ।

५. एक प्रकार का कपड़ा, जो प्रायः मुसलमान पहनते थे। शीरींबाफ। ६ दे० 'मीठा नीबू'। ७ दे० 'मीठा तेलिया'।

मीठा अमृतफल—पु० [हिं० मीठा+अमृतफल] मीठा चकोतरा।

मीठा आलू—पु० [हिं० मीठा+आलू] शकरकद।

मीठा इंद्रजौ—पु० [हिं० मीठा+इंद्रजौ] काला कुटज।

मीठा कद्दू—पु० [हिं० मीठा+कद्दू] कुम्हड़ा।

मीठा गोखरू—पु० [हिं० मीठा+गोखरू] छोटा गोखरू।

मीठा जहर—पु० [हिं० मीठा+अ० जहर] वत्सनाभ। बछनाग विष।

मीठा जीरा—पु० [हिं० मीठा+जीरा] १ काला जीरा। २ सौंफ।

मीठा ठग—पु० [हिं० मीठा+ठग] ऐसा ठग या धूर्त जो मीठी मीठी बातें करके अपना दुष्ट उद्देश्य सिद्ध करता हो।

मीठा तेल—पु० [हिं० मीठा+तेल] १ तिल का तेल। २ खसखस का तेल।

मीठा तेलिया—पु० [हिं० मीठा+तेलिया] वत्सनाभ। बछनाग।

मीठा नीबू—पु० [हिं० मीठा+नीबू] चकोतरा।

मीठा नीम—पु० [हिं० मीठा+नीम] नीम की तरह का एक छोटा वृक्ष।

मीठा पानी—पु० [हिं० मीठा+पानी] शरबत।

मीठा पोइया—पु० [हिं० मीठा+पोइया] घोड़े की मध्यम चाल।

मीठा प्रमेह—पु० [हिं० मीठा+स० प्रमेह] मधुमेह।

मीठा बरस—पु० दे० 'मीठा साल'।

मीठा भात—पु०=मीठे चावल।

मीठा विष—पु० [हिं० मीठा+स० विष] वत्सनाभ।

मीठा साल—पु० [हिं०] स्त्रियों के वय का अठारहवाँ और कुछ लोगों के मत से तेरहवाँ साल जो उनके लिए कष्टदायक और संकटात्मक समझा जाता है। मीठा बरस।

मीठी खरखोड़ी—स्त्री० [हिं० मीठी+खरखोडी] पीली जीवंती। स्वर्ण जीवती।

मीठी छुरी—स्त्री० [हिं० मीठी+छुरी] ऐसा व्यक्ति जो मीठी बातें करके

या मित्र बनकर अन्दर ही अन्दर हानि पहुँचाने का प्रयत्न करता हो। कपटी या कुटिल परन्तु ऊपर से बहुत अच्छा व्यवहार करनेवाला आदमी।

मीठी तूँबी—स्त्री० [हिं० मीठी+तूँबी] कद्दू।

मीठी थियार—स्त्री० [हिं० मीठा+दियार] महापीलू वृक्ष।

मीठी मार—स्त्री० [हिं० मीठी+मार] ऐसी मार जिससे अन्दर तो चोट लगे या पीड़ा हो, पर ऊपर से जिसका कोई चिह्न दिखाई न दे।

मीठी लकड़ी—स्त्री० [हिं० मीठी+लकड़ी] मुलेठी।

मीठे चावल—पुं० [हिं० मीठा+चावल] वह भात जिसे पकाते समय चीनी या गुड़ भी मिला दिया गया हो।

मीड़ना†—स०=मींजना।

मीढ़ा सींगी—स्त्री०=मेढ़ासींगी।

मीढ़—वि० [स०√मिह् (सींचना)+क्त] १ पेशाब किया हुआ। मूता हुआ। २. पेशाब या मूत्र के समान।

मीत†—पु० [स० मित्र] मित्र। दोस्त।

मीतता*—स्त्री०=मित्रता।

मीता†—पु० [सं० मित्र] १ परम प्रिय मित्र। २. मित्र के लिए सम्बोधन। ३. दे० 'नाम-रासी'।

मीन—पु० [स०√मी (हिंसा)+नक्, नि०] १. मछली। २ बारह राशियों मे से एक राशि जिसमे पूर्वा भाद्रपद, उत्तर भाद्रपद तथा रेवती नक्षत्र हैं।

मीन-केतन—पु० [स० ब० स०] कामदेव।

मीन-केतु—पु० [सं० ब० स०] कामदेव।

मीन-क्षेत्र—पु० [स० ष० त०] वह क्षेत्र जिसमे मुख्य रूप से मछलियाँ रखकर उनका पालन और सवर्धन किया जाता है।

मीन-गंधा—स्त्री० [स० ब० स० टाप्] सत्यवती का एक नाम। सत्यवती।

मीनघाती (तिन्)—पु० [सं० मीन√हन् (मारना)+णिनि, ह्—घ्, न्—त्,] बगला।

वि० मछली मारनेवाला।

मीन-ध्वज—पु० [स० ब० स०] कामदेव।

मीन-नाथ—पु० [स० ब० स० ?] योगी मत्स्येन्द्र नाथ का एक नाम।

मीन-नेत्रा—स्त्री० [स० ब० स०,+टाप्] गाडर दूब।

मीन-मेख—पु० [स० मीन-मेष] सोच-विचार। आगा-पीछा। असमजस।

मुहा०—मीन-मेख करना या निकालना=(क) बाधक होने के लिए इधर-उधर के तर्क करना। (ख) व्यर्थ की आलोचना करते हुए आपत्ति खड़ी करना।

मीनरंक—पु० [सं० मीनरंग, पृषो० सिद्धि] १. जलकौआ। २. मछरंग (पक्षी)।

मीनरंग—पु०=मीन-रंक।

मीनर—पुं० [सं० मीन+र] सहोरा (वृक्ष)।

मीनांडी—स्त्री० [सं०मीन-अंड, ष० त०,+ङीष्] एक प्रकार की शक्कर।

मीना—स्त्री० [स० मीन+टाप्] ऊषा की कन्या जिसका विवाह कश्यप से हुआ था।

पुं० [देश०] राजपूताने की एक प्रसिद्ध योद्धा जाति।

पु० [फा०] १ रग-बिरंगा शीशा। २. शीशे का एक विशिष्ट प्रकार का पात्र जो सुराही की तरह का होता था और जिसमें शराब रखी जाती थी। ३. नीले रग का एक प्रकार का बहुमूल्य पत्थर। ४ सोने-चाँदी आदि पर किया जानेवाला एक प्रकार का रग-बिरंगा काम जो कड़ा तथा चमकीला होता है।

पद—मीनाकार, मीनाकारी।

५. कीमिया।

मीनाकार—पु० [फा०] [भाव० मीनाकारी] सोने-चाँदी पर मीने का रग-बिरगा काम करनेवाला कारीगर।

मीनाकारी—स्त्री० [फा०] १ सोने या चाँदी पर होनेवाला मीने का रगीन काम। २. इस प्रकार किया हुआ काम। मीना। ३ किसी काम मे निकाली या की हुई बहुत बड़ी बारीकी।

मीनाक्ष—वि० [सं०मीन-अक्षि, ब० स०,+षच्] [स्त्री०मीनाक्षी] जिसकी आँखें मछली की तरह लबोतरी तथा सुदर हों।

मीनाक्षी—स्त्री० [स० मीनाक्ष+ङीष्] १ कुबेर की कन्या का नाम। २ गाडर दूब। ३ ब्राह्मी बूटी। ४ चीनी।

वि० स्त्री० जिसकी आँखे मछली के आकार की और बहुत सुदर हों।

मीना बाजार—पु० [फा०] १ वह बाजार जिसमे केवल स्त्रियाँ क्रय-विक्रय करती थी। (अकबर द्वारा प्रचलित) २ सुदर चीजो का बाजार। ३ जौहरी बाजार।

मीनार—स्त्री० [अ० मनार] बहुत ऊँची वास्तु रचना जो स्तभ के रूप में होती है। लाट।

मीनारा†—पु०=मीनार।

मीनालय—पु० [सं० मीन-आलय, ष० त०] समुद्र।

मीनाशय—पुं० [स० मीना-आशय, ष० त०] मीन-क्षेत्र।

मीमांसक—वि० [स०√मान् (विचार)+सन्, द्वित्वादि, ह्रस्व, दीर्घ, +ण्वुल्—अक] मीमांसा करनेवाला।

पु० [मीमासा+वुन्—अक] १. पूर्व मीमासा के सूत्रकार जैमिनि ऋषि। २. मीमासा शास्त्र का ज्ञाता या पण्डित। ३. कुमारिल भट्ट। ४ शबर स्वामी। ५ रामानुज। ६ माधवाचार्य।

मीमांसन—पु० [स०√मीमास्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० मीमासित] मीमांसा करने की क्रिया या भाव।

मीमांसा—स्त्री० [स०] १. वह गभीर मनन और विचार जो किसी विषय के मूल तत्त्व या तत्त्वो का ज्ञान प्राप्त करने के लिए किया जाता है। किसी बात या विषय का ऐसा विवेचन जिसके द्वारा कोई निर्णय किया या परिणाम निकाला जाता हो। २ छः प्रसिद्ध भारतीय दर्शनो मे से एक दर्शन जो मूलत पूर्व मीमासा और उत्तर मीमांसा नामक दो भागो मे विभक्त था।

विशेष—पूर्व मीमासा के कर्ता जैमिनि और उत्तर मीमासा के कर्ता बादरायण कहे जाते हैं। दोनो के विवेच्य विषय एक दूसरे से बहुत भिन्न हैं। पूर्व मीमासा मे मुख्यतः वैदिक कर्मकाण्ड का विवेचन है; इसी लिए इसे कर्ममीमासा भी कहते हैं। इसमे वेदों के यज्ञपरक संदिग्ध स्थलो का विचार करके उनका स्पष्टीकरण किया गया है। इसमे आत्मा, जगत्, ब्रह्म आदि का विवेचन नहीं है; और वेदों तथा उसके मत्रों को ही नित्य तथा सर्वस्व माना है; इसी लिए इसकी गणना अनीश्वरवादी

दर्शनो मे होती है। इसी लिए इसे कर्म मीमासा भी कहते हैं। इसके विपरीत उत्तर मीमासा मे ब्रह्म अथवा विश्वात्मा का विवेचन है, और इसी लिए यह वेदात दर्शन कहलाता तथा पूर्व मीमासा से भिन्न तथा स्वतन्त्र दर्शन माना जाता है। आजकल 'मीमासा' शब्द से 'पूर्व मीमासा' ही अभिप्रेत होता है।

मीमांसित—भू० कृ० [स०√मीमास्+क्त] जिसकी मीमासा की गई हो या हुई हो।

मीमांस्य—वि० [स०√मीमास्+यत्] जिसकी मीमासा करना आवश्यक या उचित हो।

मीयाद—स्त्री० =मीआद।

मीयादी—वि० =मीआदी।

मीर—पुं० [स०√मी (फेकना)+रन्] १ समुद्र। २ पर्वत। पहाड। ३ सीमा। हद। ४ जल। पानी।

पु० [फा० अमीर का लघु रूप] १ नेता। सरदार। २ किसी वर्ग का प्रधान या मुख्य व्यक्ति। ३ इस्लाम धर्म का आचार्य। ४ सैयदो की उपाधि। ५ विजेता। ६ बादशाह (ताश का)। ७ उर्दू के एक प्रसिद्ध कवि।

मीर अर्ज—पु० [फा० मीर+अ० अर्ज] मध्ययुग मे वह कर्मचारी जो लोगो की अर्जियाँ बादशाह तक पहुँचाता था।

मीर आतिश—पु० [फा०] मुगल शासन मे तोपखाने का प्रधान अधिकारी।

मीरजा—पु० [फा०] [स्त्री० मीरजादी] १ किसी मीर (अमीर या सरदार) का लडका। २ मुगल बादशाहो की एक उपाधि। ३ सैयद मुसलमानो की एक उपाधि। ४ दे० 'मिरजा'।

मीरजाई—स्त्री० [फा०] १ मीरजा होने की अवस्था या भाव। २ मीरजा की उपाधि या पद। ३ अमीरो या शाहजादो का सा ऊँचा दिमाग, रहन-सहन और स्वभाव। ५ अभिमान। घमड। ६ दे० 'मिरजई' (कुरती)।

मीर-तुजक—पुं० [फा० मीर+तु० तुजुक] सेनापति।।

मीर-दहाँ—पु० [अ०+फा०] पुराने राज-दरबारो का वह चोबदार जो राजाओ, बादशाहो अथवा उनके सम्बन्धियो आदि के आने से पहले दरबारियो को इसलिए पुकार कर सूचना देता था कि वे आदर-सत्कार करने या उठ खडे होने के लिए तैयार हो जायँ।

मीरवा—पु०[?]१. दक्षिण भारत मे रहनेवाले गडेरियो की एक जाति। २. उक्त जाति का व्यक्ति।

मीर-फर्श—पु०[फा०]१ वे पत्थर जो बडे-बडे फर्शों या बिछाई हुई चाँदनियो आदि के चारो कोनो पर इसलिए रखे जाते हैं कि हवा से वे उडने न पावें। २ ऐसा निकम्मा और सुस्त व्यक्ति जो एक जगह चुपचाप बैठा रहे, कुछ काम-धन्धा न करे। (व्यंग्य)

मीर-बख्शी—पु० [फा०] मुस्लिम शासन-काल मे वेतन बाँटनेवाला कर्मचारी।

मीर-बहर—पु० [अ० मीर बह्र] जलसेना का प्रधान। नौ-सेनापति।

मीर-बार—पु०[फा०] मुसलमानी शासनकाल मे वह अधिकारी जो किसी को बादशाह के सामने उपस्थित होने की आज्ञा देता था।

मीर-भुचडी—पु० [फा० मीर+हि० भुचडी] एक कल्पित पीर जिसे हिजडे पूजते तथा अपना गुरु मानते है। इसे पीर-भुचडी भी कहते है।

मीर-मंजिल—पु०[फा० मीर+अ० मंजिल] वह कर्मचारी जो सेना के पहुँचने से पहले पड़ाव पर पहुँचकर ठहरने आदि की सब प्रकार की व्यवस्था करता था।

मीर-मजलिस—पु०[अ०] मजलिस या सभा का प्रधान। सभापति।

मीर-महल्ला—पुं०[फा० मीर+अ० महल्ला] मुहल्ले का मुखिया।

मीर-मुंशी—पु०[फा० मीर+अ० मुशी] कार्यालय के मुशियों के वर्ग का प्रधान।

मीर-शिकार—पु०[अ०] वह प्रधान कर्मचारी जो अमीरो या बादशाहो के शिकार की व्यवस्था करता था।

मीर-सामान—पुं० [अ० मीर+फा० सामाँ] खानसामाँ।

मीरास—स्त्री० [अ०] १ बाप-दादा से मिली हुई सपत्ति। बपौती। २ वश-परम्परा के गुजारे के लिए किसी को दी जानेवाली जमीन।

मीरासी—पुं०[अ० मीरास] [स्त्री० मीरासिन] एक प्रकार के मुसलमान भाँड जो प्राय पंजाब मे रहते हैं। इनकी स्त्रियाँ गाने-नाचने का पेशा करती हैं।

मीरी—स्त्री० [अ०] १ अमीर होने की अवस्था या भाव। २ मीर अर्थात् प्रतियोगिता मे विजेता होने की अवस्था या भाव।

पु० खेल या प्रतियोगिता मे मीर होनेवाला व्यक्ति। मीर।

मील—पु०[अ०] १७६० गज या आठ फरलाँग की दूरी।

मीलन—पु० [स०√मील् (बद करना)+ल्युट्—अन] [वि० मीलनीय, भू० कृ० मीलित] १ बद करना। मूँदना। जैसे—नेत्रमीलन। २ सकुचित करना। सिकोडना।

मील-पत्थर—पु०[हि०]१ सडको के किनारे पर लगे हुए वे पत्थर जो किसी विशिष्ट स्थान से उस स्थान तक की दूरी मीलो मे बतलाते है। २ किसी घटना, जाति, राष्ट्र आदि के इतिहास मे वह बिंदु या स्थिति जहाँ कोई नई और विशिष्ट बात हुई हो। (माइल स्टोन)

मीलित—भू० कृ०[स०√मील्+क्त] १ बद किया हुआ। २ सिकोडा हुआ।

पु० साहित्य मे एक अलकार जो उस समय माना जाता है जब सादृश्य मे भेद नहीं गोचर होता।

मीवर—वि०[स०√मी+ष्वरच्]१ पूज्य या मान्य। २ हिंसक। ३ हानिकारक।

पु० सेनापति।

मीवा—पु०[स० मी+वन्, मीवान्] १ पेट मे होनेवाला एक प्रकार का कीडा। २ वायु। हवा। ३ तत्व या सार-भाग।

मीसना—स०[स० मिश्रण] १ मिश्रण करना। मिलाना। २ धीरे-धीरे दबाना और मसलना। जैसे—हाथ से फूल मीसना। ३. बहुत धीरे-धीरे या सुस्ती से काम करना। ४ क्रोध, दुःख आदि की कोई बात मन ही मन दबाकर रखना और प्रकट न होने देना।

वि०, पु०[स्त्री० मीसनी]१ जो क्रोध, दुःख आदि की बात मन ही मन दबाकर रखे, जल्दी प्रकट न होने दे। २ बहुत धीरे धीरे या मन्द गति से काम करनेवाला। मट्ठर। सुस्त।

मुँगना—पु०=मुनगा (सहिजन)।

मुँगरा—पु०[स० मुद्गर] [स्त्री० अल्पा० मुँगरी] लकड़ी की बनी बडी हथौडी। जैसे—घटा बजाने का मुँगरा।

†पुं०[?]नमकीन बुँदिया।

मुँगरी—स्त्री० मुँगरा का स्त्री० अल्पा०।

मुँगवना†—पु०[सं० मुद्ग] मोठ (कदन्न)।

मुँगा—स्त्री०[सं०] एक देवी। (पुराण)

मुँगिया—वि०, पु०=मूँगिया।

मुँगौछी†—स्त्री० [हिं० मूँग+औछी (प्रत्य०)] मूँग की बरी।

मुँगौरी—स्त्री० [हिं० मूँग+बरी] मूँग की दाल की बनी हुई बरी।

मुँचना†—स०[सं० मुक्त] मुक्त करना। छोड़ना।
अ० मुक्त होना। छूटना।

मुंज—पु०[सं०√ मुज् (साफ करना)+अच्] मुंजातक। मूँज।

मुंजकेश—पु०[सं० ब० स०]१. शिव। २ विष्णु।

मुंजपृष्ठ—पु० [सं० ब० स०] महाभारत के अनुसार एक प्राचीन प्रदेश।

मुंज-मणि—स्त्री०[सं० उपमि० स०] पुखराज।

मुंज-मेखला—स्त्री०[सं० मध्य० स०] यज्ञोपवीत के समय पहनी जानेवाली मूँज की मेखला।

मुंजर—पु०[सं० √मुज्√अरत्] कमल की जड़। कमल की नाल। मृणाल।

मुंजवान्(वत्)—पु०[सं० मुंज+मतुप्] १ एक तरह की सोमलता। (सुश्रुत) २. कैलास के पास का एक पर्वत।

मुंजातक—पु०[सं० मुंज√अत् (जाना)+अच्+कन्] १ मूँज। २. मुजरा नामक कन्द।

मुंजाद्रि—पु०[सं० मुंज-अद्रि, मध्य० स०] पुराणानुसार एक पर्वत।

मुंजित—भू० कृ०[सं० मुंज+इतच्] मूँज से बना, ढका या लपेटा हुआ।

मुंड—पु०[सं० √मुड (काटना)+घञ्+अच्] १ सिर। २ कटा हुआ सिर।
पद—मुंड-माला।
३ एक दैत्य जो राजा बलि का सेनापति था। (पुराण) ४ राहु ग्रह। ५ नाई। हज्जाम। ६ वृक्ष का ठूँठ। ७ बोल नामक गन्धद्रव्य। ८ मंडूर। ९ एक उपनिषद् का नाम। १०. गौओं का झुंड।
वि० १ मूँड़ा या मुंडा हुआ। २ जिस पर बाल न हो। ३. अधम। नीच।

मुंडक—पु० [सं० मुंड+कन्] १ सिर। २. नाई। हज्जाम। ३ एक उपनिषद्।
वि० मुंडन करने या मूँड़नेवाला।

मुँडकरी—स्त्री० [हिं० मूँड+करी (प्रत्य०)] वह स्थिति जिसमें कोई घुटनों में सिर रखकर बैठता है।
क्रि० प्र०—मारना।

मुँडकारी—स्त्री०=मुँडकरी।

मुंड-चिरा—वि०[हिं० मूँड+चिरना] जिसका सिर या ऊपरी भाग चिरा हुआ हो।
पुं०=मुंड-चीरा।

मुंडचिरापन—पु० [हिं० मुडचिरा+पन (प्रत्य०)] मुडचिरा या मुंड-चीरा होने की अवस्था या भाव।

मुंड-चीरा—पुं०[हिं० मूँड+चीरना]१ एक प्रकार के मुसलमान फकीर जो भीख न मिलने पर धारदार या नुकीले हथियार से अपनी आँख, सिर या और कोई अंग चीरकर उसमें से खून निकालने लगते हैं। २ ऐसा व्यक्ति जो बहुत ही घृणित तथा वीभत्स रूप से लड़-झगड़कर अपना काम निकालता हो। उदा०—लड़-भिड़कर जो काम चलावे, मुड़चीरा है।—मैथिलीशरण। ३ वह जो लेन-देन में बहुत अधिक हुज्जत करता हो।

मुंडन—पु०[सं०√ मुंड् (खंडन करना)+ल्युट्—अन]१ सिर के बाल उस्तरे से मूँड़ने की क्रिया। २ एक संस्कार जिसमें बालक के बाल पहली बार उस्तरे से मूँड़े जाते हैं। ३ उक्त समय पर होनेवाला उत्सव या समारोह।

मुंडनक—पुं०[सं० मुंडन+कन्] १. बोरो धान। २ बड़ का पेड़।
वि० मुंडन करनेवाला।

मुँड़ना—अ०[सं० मुंडन]१ सिर या किसी अंग का मूँड़ा जाना। मुंडन होना। २ बुरी तरह से ठगा या लूटा जाना। विशेषतः आर्थिक हानि सहना।
संयो० क्रि०—जाना।

मुंड-फल—पु०[सं० ब० स०] नारियल।

मुंड-मंडली—स्त्री० [सं० ष० त०] १ अशिक्षित सेना। २ अशिक्षितों का दल।

मुंड-माल—पु०=मुंडमाला।

मुंड-माला—स्त्री० [सं० ष० त०] १ कटे हुए सिरों की माला जो शिव या काली देवी के गले में होती है। २ बंगाल की एक नदी।

मुंडमालिनी—स्त्री० [सं० मुंडमालिन्+ङीष्] काली देवी।

मुंडमाली (लिन्)—पु० [सं० मुंडमाला+इनि] शिव।

मुंडा—वि० [सं० मुंडित] [स्त्री० मुंडी] १ जिसके सिर पर बाल न हों। २ जिसका सिर मुँड़ा हुआ हो।
पु० १. वह जो सिर मुँड़ाकर किसी साधु या संन्यासी का शिष्य हो गया हो। २ ऐसा पशु जिसके सींग होने चाहिएँ, पर न हों। जैसे—मुंडा बैल। ३ वह जिसके ऊपर या इधर-उधर फैलनेवाले अंग न हों। जैसे—मुंडा पेड़। ४ बालक। लड़का। (पश्चिम) ५ कोठीवाली महाजनी लिपि जिसके अक्षरों पर शीर्ष-रेखा तथा आगे-पीछे मात्राएँ नहीं होतीं। ६ एक प्रकार का देशी जूता जिसमें आगे की ओर नोक नहीं होती। ७ करॉकुल से कुछ बड़ा एक प्रकार का पक्षी जिसका सिर और गरदन काली तथा बिना बालों की होती है। यह धान के खेतों में मेढकों की तलाश में किसानों के हल के इतने पास पास चलता है कि वे परिहास में इसे 'हर जोता' भी कहते हैं।
पुं०[?] एक प्राचीन अनार्य जन-जाति जिसके वंशज अब तक पलामू, राँची, हजारीबाग आदि स्थानों में पाये जाते हैं।
स्त्री० भाषा-विज्ञान के अनुसार कुछ विशिष्ट अनार्य बोलियों का एक वर्ग जिसके अंतर्गत पंजाब के उत्तरी भाग से न्यूजीलैंड और मैडागास्कर द्वीप तक बोली जानेवाली कई बोलियाँ आती हैं। इनमें भारतीय क्षेत्र की उराँव, निषाद, शबर आदि बोलियाँ मुख्य हैं।
स्त्री० [सं० मुंड+टाप्] गोरखमुंडी।

मुँड़ाई—स्त्री० [हिं० मूँडना+आई (प्रत्य०)] १ मूँडने या मुँड़ाने की क्रिया या भाव। २ मूँडने का पारिश्रमिक या मजदूरी।

मुँड़ाना—स० [हिं० मूँडना का प्रे०] मूँडने का काम दूसरे से कराना। मुंडन कराना।

मुँड़ासा—पु० [हिं० मुड=सिर+आसा (प्रत्य०)] सिर पर बाँधने का साफा।

क्रि० प्र०—कसना।—बाँधना।

†स्त्री०=मुड़ा (महाजनी लिपि)।

मुँड़ासाबंद—पु० [हिं० मुँड़ासा+बद (प्रत्य०)] दस्तारबंद।

मुँड़ा-हिरन—पु० [हिं० मुडा+हिरन] पाठी मृग।

मुँड़िआ†—वि० [हिं० मूँडना] जिसका सिर मूँड़ा हुआ हो।

पु० १ वह जो सिर मुँड़ाकर विरक्त, संन्यासी या साधु हो गया हो। २. करघे मे का एक हत्था जिससे राछ चलाते हैं।

मुँडिका—स्त्री० [स० मुडा+कन्, टाप्, ह्रस्व, इत्व] १. छोटा मुड। २. मुडी। सिर। ३ सख्या के विचार से व्यक्ति वाचक शब्द। जैसे—वहाँ चार मुडिकाएँ बैठी थी, अर्थात् चार आदमी बैठे थे।

मुँडित—पु० [स०√मुड्+क्त] लोहा।

भू० कृ० १ जिसका मुडन हुआ हो। २ जो मूँड़ा गया हो। जैसे—मुडित मस्तक।

मुंडितिका—स्त्री० [स० मुडित+कन्+टाप्, इत्व] गोरखमुडी।

मुँड़िया†—स्त्री०=मूँड (सिर)।

पु०=मुँडिआ।

मुंडी (डिन्)—पुं० [स० मुड+इनि] १. वह जिसका मुडन हुआ हो। २ सन्यासी या साधु। ३ [√मुड्+णिच्+णिनि] नाई। नापित। हज्जाम।

स्त्री० [हिं० मुडा का स्त्री०] १ वह स्त्री जिसका सिर मुँडा हो। २ विधवा (गाली के रूप मे)। ३ एक प्रकार की बिना नोकवाली जूती।

†स्त्री०=मूँडी (सिर)।

मुंडीरिका—स्त्री० [स०√मुड्+ईर्+कन्+टाप्, इत्व] गोरखमुडी।

मुँडेर—स्त्री० [हिं० मुडेरा] १. मुँडेरा। २ खेत की मेड।

क्रि० प्र०—बँधना।—बाँधना।

मुंडेरा—पु० [हिं० मूँड़=सिर+एरा (प्रत्य०)] १. दीवार का वह ऊपरी भाग जो ऊपर की छत के चारो ओर कुछ उठा हुआ होता है। २. किसी प्रकार का बाँधा हुआ पुश्ता।

मुँडेरी—स्त्री०=मुँडेर।

मुंडो—स्त्री० [हिं० मुँडना=ओ (प्रत्य०)] १ वह स्त्री जिसका सिर मूँडा गया हो। २ विधवा। राँड। ३ स्त्रियो के लिए उपेक्षासूचक सम्बोधन जिसका प्रयोग प्राय गाली के रूप मे होता है। जैसे—घर मे दिया न बाती, मुडो फिरे इतराती। (कहावत)

मुँढ़िया—स्त्री० [हिं० मोढा+इया (प्रत्य०)] बैठने का छोटा मोढा।

मुंतकिल—वि० [अ०] १ जो एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाया या हटाया गया हो। २ जो एक के अधिकार या स्वामित्व से निकलकर दूसरे के अधिकार या स्वामित्व मे चला गया हो। हस्तान्तरित। जैसे—जायदाद मुतकिल करना।

मुंतखिब—वि० [अ०] १ इतखाब किया हुआ। चुना या छाँटा हुआ। २ बढिया।

मुंतजिम—पु० [अ०] इन्तजाम या व्यवस्था करनेवाला। प्रबंधक। व्यवस्थापक।

मुंतजिर—वि० [अ०] इतजार या प्रतीक्षा करनेवाला।

मुंतशिर—वि० [अ०] १ बिखरा हुआ। २ चिंतित। उद्विग्न। परेशान।

मुंतही—पु० [अ०] १ इतिहा या हद तक पहुँचनेवाला। २ पारगामी। पारगत। विद्वान्।

मुंथा—पु० [स०] ज्योतिष मे नक्षत्रो का एक समूह जिसके प्रभाव मे कोई जन्म लेता है।

मुँदना—अ० [सं० मुद्रण] १ बद होना। जैसे—आँख मुँदना। २. अन्त तक पहुँचना। समाप्त होना। जैसे—दिन मुँदना। ३ छेद आदि का बन्द होना।

सयो० क्रि०—जाना।

मुंदरज—वि० [अ०] १ दर्ज किया या लिखा हुआ। २ अन्तर्गत। सम्मिलित।

मुँदरा—पु० [हिं० मुँदरी] १ वह कुडल जो जोगी लोग कान मे पहनते है। २ कान मे पहनने का एक प्रकार का गहना।

मुँदरी—स्त्री० [सं० मुद्रा] १ उँगली मे पहनने का सादा छल्ला। २ अँगूठी।

मुँदा†—पु०=मुँदरा।

मुंशियाना—वि० [अ० मुशी+हिं० इयाना (प्रत्य०)] मुशियो की तरह का।

मुंशी—पुं० [अ०] १. लेख या निबध आदि लिखनेवाला लेखक। २ किसी कार्यालय मे लिखने का काम करनेवाला लिपिक। ३ वह जो बहुत सुंदर अक्षर विशेषत फारसी आदि के अक्षर लिखता हो।

मुंशीखाना—पु० [अ० मुशी+फा० खाना] वह स्थान जहाँ मुशी लोग बैठकर काम करते हो। दफ्तर।

मुंशीगिरी—स्त्री० [अ० मुशी+फा० गिरी (प्रत्य०)] मुशी का काम या पद।

मुंसरिम—पु० [अ०] १ इतजाम अर्थात् व्यवस्था या प्रबध करनेवाला। प्रबधक। २ कचहरी का वह कर्मचारी जो किसी दफ्तर का प्रधान होता है।

मुंसरिमी—स्त्री० [अ०] मुसरिम का काम या पद।

मुंसलिक—वि० [अ०] साथ मे बाँधा या नत्थी किया हुआ।

मुंसिफ—वि० [अ०] इन्साफ अर्थात् न्याय करनेवाला।

पु० दीवानी विभाग का एक न्यायाधिकारी जो सब जज से छोटा होता है।

मुंसिफाना—वि० [अ० मुन्सिफाना] न्यायोचित। न्यायसंगत।

मुंसिफी—स्त्री० [अ० मुसिफ+ई (प्रत्य०)] १ इन्साफ या न्याय करने का काम। २ मुसिफ का काम या पद। ३. मुसिफ की कचहरी।

मुँह—पु० [स० मुख] १. (क) प्राणियो मे आँखों और नाक के नीचे का वह अंग जो विवर के रूप मे होता है और जिसके अन्दर जीभ, तालू, दाँत, स्वर-यंत्र आदि तथा बाहर होंठ होते हैं। काटने-चबाने, खाने-पीने और बोलने या चिल्लाने-चीखनेवाला अंग। (ख) मनुष्यों का

यही अंग जो उनके बोलने-चालने या बातचीत करने और मन के भाव व्यक्त करने में भी सहायक होता है। मुख।

विशेष—'मुँह' से संबंध रखनेवाले अधिकतर पद और मुहावरे प्रायः उक्त कार्यों के आधार पर ही बने हैं और उनमें औपचारिक या लाक्षणिक रूप से ही अर्थापदेश हुआ है।

(क) खान-पान आदि से संबद्ध

मुहा०—**मुँह खराब होना**=जबान या मुँह का स्वाद बिगड़ना। **मुँह चलना (या चलाना)**=खाने-पीने आदि की क्रिया संपन्न करना (या कराना)। जैसे—तुम्हारा मुँह तो हर समय चलता ही रहता है। **मुँह जहर होना**=बहुत कड़ई चीज खाने के कारण बहुत अधिक कड़आपन मालूम होना। जैसे—मिरचो वाली तरकारी खाने से मुँह जहर हो गया। **मुँह जूठा करना**=बहुत ही अल्प मात्रा मे कुछ खा लेना। **(किसी चीज में) मुँह डालना या देना**=पशुओं आदि का कुछ खाने के लिए उसमे मुँह लगाना। जैसे—इस दूध में बिल्ली ने मुँह डाला था। **मुँह-पेट चलना**=कै और दस्त की बीमारी होना। जैसे—इतना मत खाओ कि मुँह-पेट चलने लगे। **(किसी चीज पर) मुँह मारना**=पशुओं आदि का किसी चीज पर मुँह लगाना। **(किसी का) मुँह मीठा करना (या कराना)**=शुभ या प्रसन्नता की बात होने पर मिठाई खिलाना अथवा इसी उपलक्ष में प्रसन्न करने के लिए कुछ धन देना। **मुँह में पड़ना**=खाया जाना। जैसे—सबेरे से एक दाना मुँह मे नही पडा। **(किसी चीज का) मुँह लगना**=(क) रुचिकर या स्वादिष्ट होने के कारण किसी खाद्य पदार्थ का अधिक उपयोग मे आना। जैसे—चीकू या सपाटू (महोगनी का फल) है तो जंगली फल, पर अब वह बडे आदमियो के मुँह लग गया है। (ख) रुचिकर होने के कारण प्रिय जान पड़ना। जैसे—अब तो इस कुएँ का पानी तुम्हारे मुँह लग गया है। **(किसी चीज में) मुँह लगना**=खाद्य पदार्थ के खाये जाने की क्रिया आरभ होना। जैसे—अब इन आमो में तुम्हारा मुँह लग गया है, तब वह भला क्यो बचने लगे। **(कोई चीज) मुँह लगाना**=नाम मात्र के लिए या बहुत थोडा खाना। **(किसी का) मुँह लाल करना**=सत्कार के लिए पान आदि खिलाना। **मुँह सूखना**=गरमी की अधिकता के कारण मुँह मे जलन-सी होना। **(किसी के) मुँह से दूध की गंध (या बू) आना**=बहुत ही छोटी अवस्था का (किशोर या बालक) जान पडना या सिद्ध होना।

पद—**मुँह का कौर या निवाला**=किसी को आधिकारिक रूप से या और किसी प्रकार आगे चलकर मिल सकनेवाली चीज। जैसे—तुमने तो उसके मुँह का कौर छीन लिया। **आपके मुँह में घी शक्कर**=(किसी के मुँह से आशाजनक शुभ बात निकलने पर) ईश्वर करे आपकी बात ठीक निकले या पूरी उतरे।

(ख) बोल-चाल आदि से संबद्ध

मुहा०—**(किसी के) मुँह आना**=किसी के सामने होकर उद्दंडतापूर्वक बातें करना। **(किसी के) मुँह की बात छीनना**=जो बात कोई कहना चाहता हो, वही बात उससे पहले आप ही कह देना। जैसे—तुमने हमारे मुँह की बात छीन ली। **(किसी का) मुँह कीलना**=दे० नीचे ('अपना या किसी का) मुँह बंद करना'। **(अपना) मुँह खराब करना**=मुँह से गंदी बात निकालना। **मुँह खुलना (या खोलना)**=बोलने का कार्य आरंभ होना (या करना)। **मुँह खोलकर कहना**=दे० नीचे 'मुँह फाड़कर कहना'। **मुँह चलना या चलाना**=मुँह से अविनयपूर्ण या बढ़-बढ़ कर बातें निकलना (या निकालना)। जैसे—अब तो बड़े-बूढ़ों के सामने भी तुम्हारा मुँह चलने लगा। **(किसी के) मुँह चढ़ना या मुँह पर आना**=किसी बड़े के सामने होकर उद्दंडतापूर्वक बोलना या उसकी बात का उत्तर देना। **(कोई बात) मुँह तक (या मुँह पर) आना**=कोई बात कहने को जी चाहना। **मुँह थुथाना**=अप्रसन्न होने के कारण थूथन की तरह मुँह बनाना। मुँह फुलाना। जैसे—वह भी मुँह थुथाये बैठे रहे। **(किसी का) मुँह पकड़ना**=किसी को बोलने से रोकना। **(किसी के) मुँह पर मोहर लगाना**=किसी को बोलने से पूरी तरह रोकना। **(कोई बात) मुँह पर लाना**=कुछ कहना या बोलना। **(किसी के) मुँह पर हाथ रखना**=बोलने से रोकना। **मुँह फाड़कर कुछ कहना**=बहुत विवशता की दशा में लज्जा, संकोच आदि छोडकर आग्रहपूर्वक प्रार्थना या याचना करना। जैसे—जब तुमने वह पुस्तक मुझे नहीं दी तब मुझे मुँह फाड़कर उसके लिए कहना पडा। **(अपना या किसी का) मुँह बन्द करना**=(क) स्वयं बिलकुल न बोलना। मौन धारण करना। (ख) दूसरे को बोलने से रोकना। **(किसी का) मुँह बंद कर देना या बाँधना**=तर्क आदि में परास्त करके निरुत्तर कर देना। जैसे—आपने एक ही बात कहकर उनका मुँह बन्द कर दिया। **मुँह बाँधकर बैठना**=बिलकुल चुप हो जाना। कुछ भी न बोलना। **मुँह बिगड़ना**=बोल-चाल मे गंदी बातें कहने या गाली-गलौज बकने की आदत पड़ना। **(किसी का) मुँह भर या भरकर**=जितना अभीष्ट हो या मन में आवे उतना। पूरापूरा। यथेष्ट। जैसे—किसी को मुँहभर गालियाँ या जवाब देना, किसी से मुँहभर बातें करना, बोलना या कुछ माँगना। **(किसी का) मुँह भरना**=अभियोग, कलंक आदि की चर्चा या किसी तरह की कार्रवाई करने से रोकने के लिए घूस आदि के रूप में कुछ धन देना। **(कोई बात) मुँह में आना**=कुछ कहने की इच्छा होना। जैसे—जो मुँह मे आया वह कह दिया। **मुँह में जबान होना**=कुछ कहने या बोलने की योग्यता या सामर्थ्य होना। **मुँह में घुँघनियाँ भर बैठे रहना**=बोलने की आवश्यकता होने पर भी बिलकुल चुप रहना। **(कोई बात किसी के) मुँह में पड़ना**=मुँह से कहा या बोला जाना। जैसे—जो बात तुम्हारे मुँह में पडेगी, वह चार आदमियो को जरूर मालूम हो जायगी। **मुँह में लगाम न होना**=बोलने के समय उचित-अनुचित का ध्यान न रहना जो अविनय, अशिष्टता, उद्दडता आदि का सूचक है। **(किसी के) मुँह लगना**=(क) किसी को अनुकूल या सहनशील देखकर उसके प्रति या सामने उद्दंडतापूर्ण तथा बहुत बढ़-चढकर बातें करना। (ख) कहा-सुनी या मुकाबला करने के लिए सामने आना। **(किसी को) मुँह लगाना**=किसी की उद्दंडता, धृष्टता आदि की बातों की उपेक्षा करके उसे बातचीत में और अधिक उद्दंड या धृष्ट बनाना। उदा०—जैसे ही उन मुँह लगाई, तैसे ही ये ढरी।—सूर। **मुँह संभालकर बात करना**=इस प्रकार संयत भाव से बात करना कि कोई अनुचित या अपमानकारक बात मुँह से न निकलने पाये। **मुँह सीना**=दे० ऊपर 'मुँह बंद करना'। **मुँह से फूटना**=कुछ कहना। बोलना। (उपेक्षासूचक) **मुँह से फूल झड़ना**=मुँह से बहुत ही कोमल, प्रिय और सुंदर बातें निकलना। **(किसी के) मुँह से बात छीनना**=जिस समय कोई महत्त्व की बात कहने को हो, उस समय

स्वयं पहले ही वह बात कह डालना। **मुँह से लाल उगलना**=बहुत ही बहुमूल्य या मधुर तथा सुंदर बातें कहना।

पद—मुँह का कच्चा=(क) व्यक्ति जिसकी बातों का कोई ठिकाना न हो, जिसकी बात का विश्वास न हो। (ख) जो भेद या रहस्य की बात छिपा न सके और बिना समझे-बूझे दूसरों से कह दे। (ग) (घोड़ा) जो लगाम का झटका न सह सके, या अधिक समय तक मुँह में लगाम न रख सके, या लगाम का संकेत न मानकर मनमाने ढंग से चले। **मुँह का कड़ा**=(क) व्यक्ति जो प्रायः अप्रिय और कठोर बातें कहता हो। (ख) घोड़ा, जो लगाम का संकेत न माने और प्रायः मनमाने ढंग से चलना चाहे। **मुँह-फट** (देखें स्वतंत्र पद)।

(ग) मनोभावों से संबद्ध

मुहा०—मुँह कड़आना=(अप्रिय बात होने पर) ऐसी आकृति बनाना मानों मुँह में कोई बहुत कड़वी चीज चली गई हो। उदा०—विस्वभर जगदीस जगत-गुरु, परसत मुख करुनावत।—सूर। **मुँह चिढ़ाना**=(उपहास या विडम्बना करने के लिए) किसी के कथन, प्रकार आदि की भद्दे और विकृत रूप में नकल करना। **(बटेर, मुरगे आदि के संबंध में) मुँह डालना**=(दूसरे बटेर, मुरगे आदि से) लड़ने को प्रवृत्त होना। **(किसी के सामने) मुँह पड़ना**=कुछ कहने का साहस या हिम्मत होना। **(किसी के सामने) मुँह पसारना, फैलाना या बाना**=(क) अपनी दीनता या हीनता प्रकट करना। (ख) दीनभाव से कुछ माँगना। हीनतापूर्वक याचना करना। (ग) अधिक पाने या लेने की इच्छा प्रकट करना। **मुँह बनाना**=(अप्रिय बात होने पर) अप्रसन्नता, अरुचि आदि प्रकट करनेवाली आकृति या मुख-भंगी बनाना। **मुँह में कीड़े पड़ना**=बहुत ही घृणित काम करने या बात कहने पर, अभिशाप के रूप में बहुत दुर्दशा होना। **मुँह में खून (या लहू) लगना**=(चीते, भेड़िये आदि हिंसक जंतुओं के अनुकरण पर लाक्षणिक रूप में) अनुचित लाभ या प्राप्ति होने पर उसका चसका लगना। **मुँह में तिनका लेना**=इस प्रकार दीनता प्रकट करना कि हम अपने सामने गौ के समान कृपापात्र या दयनीय है। **मुँह में धूल (छार, राख आदि) पड़ना**=परम दुर्दशा या दुर्गति होना। उदा०—राम नाम तन समुझत नाहीं, अंत परै मुख छारा।—कबीर। **मुँह में पानी भर आना या मुँह भर आना**=(शारीरिक प्रक्रिया के अनुकरण पर औपचारिक रूप से) कोई अच्छी चीज देखने पर उसे पाने के लिए मन ललचना। जैसे—किताब देखकर तो इनके मुँह में पानी भर आया। **मुँह से पानी छूटना या लार टपकना**=दे० ऊपर 'मुँह में पानी भर आना'।

२. सिर का वह अगला सारा भाग जिसमें उक्त अंग के अतिरिक्त आँखें, गाल, नाक और माथा भी सम्मिलित हैं। आकृति। चेहरा। (फेस)

मुहा०—(किसी का) मुँह आना=आतशक या गरमी (रोग) में मुँह के अन्दर छाले पड़ना और बाहर सूजन होना। **मुँह उजला होना**=अच्छा काम करने पर प्रतिष्ठा होना, अथवा कीर्ति या यश मिलना। **(किसी ओर) मुँह उठना**=किसी ओर चलने के लिए प्रवृत्त होना। जैसे—जिधर मुँह उठा, उधर ही चल पड़े। **मुँह उतरना**=रोग, लज्जा आदि के कारण चेहरे का रंग फीका पड़ना। उदासी आना। **(अपना) मुँह काला करना**=(क) अपने ऊपर बहुत बड़ा कलंक लेना। (ख) बहुत ही अपमानित या अप्रतिभ होकर खिसक या हट जाना। **(किसी का) मुँह काला करना**=बहुत ही अपमानित तथा कलंकित करके तथा उपेक्षापूर्वक दूर हटाना। **(किसी के साथ) मुँह काला करना**=(पुरुष या स्त्री के साथ) अवैध प्रसंग या संभोग करना। **मुँह की खाना**=(क) अपमानजनक उत्तर या प्रतिफल पाना। (ख) प्रतिद्वंद्वी या प्रतिपक्षी के सामने बुरी तरह से हारना। (ग) साहसपूर्वक आगे बढ़ने पर धोखा खाना। **मुँह की मक्खियाँ तक न उड़ा सकना**=बहुत ही अशक्त अथवा आलसी होना। **मुँह की लाली रहना**=प्रतियोगिता, प्रयत्न आदि में बहुत ही थोड़ी आशा या संभावना होने पर भी अंत में यशस्वी या सफल होना। जैसे—दूसरे महायुद्ध में अमेरिका की सहायता से इंगलैंड के मुँह की लाली रह गई। **मुँह के बल गिरना**=(क) ठोकर खाकर औंधे गिरना। (ख) उपहासास्पद रूप में, ठोकर या धोखा खाकर विफल होना। (ग) बिना सोचे-समझे किसी ओर अनुरक्त या प्रवृत्त होना। **(किसी का) मुँह चाटना**=बहुत अधिक खुशामद, दुलार या प्यार करना। **मुँह चुराना या छिपाना**=दबैल या लज्जित होने के कारण सामने न आना। **(किसी का) मुँह चूमना**=बहुत उत्कृष्ट या प्रशंसनीय समझकर यथेष्ट आदर करना। **मुँह चूमकर छोड़ देना**=अपने वश या सामर्थ्य के बाहर समझकर आदरपूर्वक उससे अलग या दूर हो जाना। **(किसी से) मुँह जोड़कर बातें करना**=किसी के मुँह के बहुत पास अथवा मुँह ले जाकर बातें करना। **(किसी का) मुँह झुलसना या फूँकना**=मृतक के दाह-कर्म के अनुकरण पर, गाली के रूप में बहुत ही अपमानित करके या परम उपेक्ष्य, तुच्छ और त्याज्य समझकर दूर करना। जैसे—अब आप भी उनका मुँह झुलसें। **(किसी का) मुँह तक न देखना**=परम घृणित या तुच्छ समझकर बिलकुल अलग या बहुत दूर रहना। **(किसी का) मुँह ताकना या देखना**=अकर्मण्य, असमर्थ, चकित या विवश होकर अथवा आशा, प्रतीक्षा आदि में चुपचाप किसी ओर देखते रहना। **(अपना) मुँह तो देखो**=पहले यह तो देख लो कि जो कुछ तुम पाना या लेना चहते हो, उसके योग्य तुम हो भी या नहीं। **(किसी को) मुँह दिखाना**=साहसपूर्वक किसी के सामने आना या होना। **(किसी का) मुँह देखकर उठना**=शुभाशुभ फल के विचार से, सोकर उठते ही किसी का सामना होना। जैसे—न जाने आज किसका मुँह देखकर उठे थे कि दिन भर खाने तक को न मिला। **(किसी का) मुँह देखकर जीना**=परम प्रिय होने के कारण किसी की आशा से या भरोसे पर जीना। जैसे—मैं तो इन बच्चों का मुँह देखकर जीती हूँ। **(किसी का) मुँह देखते रह जाना**=आश्चर्य भाव से या चकित होकर किसी की ओर देखते रहना। **मुँह धो रखो (रखिये या रखें)**=(किसी के प्रति व्यंग्यपूर्वक, केवल विधि के रूप में) प्राप्ति की कुछ भी आशा न रखो (रखिये या रखें)। जैसे—आप भी पुरस्कार लेने चले हैं, मुँह धो रखिये। **मुँह पर थूकना**=बहुत ही घृणित तथा निंदनीय समझकर तिरस्कार करना। **मुँह पर नाक न होना**=कुछ भी लज्जा या शरम न होना। **(कोई भाव) मुँह पर (या से) बरसना**=अधिकता से और प्रत्यक्ष दिखाई देना। जैसे—लुच्चापन ही उसके मुँह पर (या से) बरसता है। **मुँह पर मक्खियाँ भिनकना**=बहुत ही घिनौनी और दीन दशा में होना। **(किसी का) मुँह पाना**=किसी को अपने अनुकूल अथवा अपनी ओर अनुरक्त या प्रवृत्त रहने की दशा में देखना।—जैसे जब मालिक का मुँह पाओ तब उनके सामने अपना दुखड़ा रोओ। **(अपना)**

मुँह पीटना या पीट लेना=किसी के आचरण, व्यवहार आदि पर बहुत ही खिन्न, दुखी और लज्जित होना। **(किसी का) मुँह पीटना**=अपमानित करते हुए बुरी तरह से परास्त करना। **मुँह फुलाना**=अप्रसन्न या असंतुष्ट होकर रोष की मुद्रा धारण करना। **मुँह फिरना या फिर जाना**=(क) मुँह का टेढा या खराब हो जाना। जैसे—एक थप्पड़ दूँगा, मुँह फिर जायगा। (ख) सामना करने से हट जाना। सामने न ठहर पाना। **(किसी का) मुँह फेरना**=परास्त करके भगाना। बुरी तरह से हराना। जैसे—बहस मे तो ये बडे-बडो का मुँह फेर देते है। **(किसी से) मुँह फेरना या मोड़ना**=उदास और खिन्न होकर अलग या दूर हो जाना। जैसे—उनकी कृतघ्नता देखकर लोगो ने उनसे मुँह फेर लिया। **(किसी बात पर) मुँह बनना या बन जाना**=चेहरे से अप्रसन्नता असतोष आदि के लक्षण प्रकट होना। जैसे—रुपए माँगते हुए उनका मुँह बन जाता है। **मुँह बनवा रखो**=तुम इस योग्य कदापि नही हो, अत सारी आशा छोड दो। जैसे—चले हो अपना हिस्सा लेने, मुँह बनवा रखो। **(अपना) मुँह बनाना**=अरुचि, विरक्ति आदि का सूचक भाव या मुद्रा धारण करना। **(किसी का) मुँह बिगाड़ना**=मार-मार कर आकृति विकृत करना या कुरूप बनाना। **(किसी बात पर) मुँह बिगाड़ना**=अरुचि या असतोष प्रकट करना। **मुँह बुरा बनाना**=अप्रसन्नता या असंतोष प्रकट करना। **मुँह लटकाना**=खिन्नता या दु ख प्रकट करने के लिए बहुत ही उदास और चुप हो जाना। **मुँह (या मुँह-सिर) लपेटकर पड़ रहना**=बहुत ही उदास या दु खी होकर पडे रहना। **(किसी का) मुँह लाल करना**=अच्छी तरह या जोर से थप्पड लगाना। **मुँह लाल होना**=आवेश, क्रोध आदि के कारण चेहरे पर खून की रगत अधिकता से झलकना। मारे क्रोध के चेहरा तमतमाना। **मुँह सुजाना**=दे० 'ऊपर 'मुँह फुलाना'। **मुँह सूखना**=निराशा, भय, लज्जा आदि के कारण चेहरे पर कांति या तेज न रह जाना। जैसे—आपकी फटकार सुनते ही उनका मुँह सूख गया। **अपना-सा मुँह लेकर रह जाना (या लौट आना)**=निराश, विफल या हतोत्साहित होने के कारण दीन और लज्जित भाव से चुप रह जाना (या लौट आना)। **इतना सा (या जरा-सा) मुँह निकल आना**=(क) चिंता, रोग आदि के कारण बहुत दुर्बल हो जाना। (ख) लज्जित होने के कारण श्रीहीन हो जाना।

पद—(किसी का) मुँह देखकर=(क) किसी के प्रेम मे लगकर। जैसे—पति मर गया है, पर बच्चो का मुँह देखकर धीरज धरो। (ख) किसी का ध्यान रखते हुए। (ग) किसी को प्रसन्न या सतुष्ट करने के लिए। **मुँह पर**=उपस्थिति में सामने। जैसे—मैं तो उनके मुँह पर कहनेवाला हूँ।

३ मनुष्य के शरीर का उक्त अग के विचार से उसकी मनोवृत्ति, शील आदि।

पद—मुँह देखे का=केवल सामना होने पर, सकोचवश किया जानेवाला (आचरण या व्यवहार)। जैसे—मुँह देखे की प्रीति या मुहब्बत। **मुँह मुलाहजे का**=पारस्परिक परिचय और उसके कारण होनेवाला (नियम या व्यवहार)। जैसे—जहाँ मुँह-मुलाहजे की बात हो, वहाँ ऐसा रूखा व्यवहार नहीं करना चाहिए। **मुँह मुलाहजे का आदमी**=जिसके साथ घनिष्ठ परिचय होने के कारण शीलपूर्ण व्यवहार करना पड़ता हो।

मुहा०—(किसी का) मुँह करना=शील या सकोचवश किसी का ध्यान रखना। जैसे—सच सच कह दो, किसी का मुँह मत करो। **मुँह-देखी कहना**=किसी के सामने रहने पर उसे प्रसन्न करने के लिए उसके अनुकूल बातें कहना। जैसे—न्याय की बात कहना, मुँह-देखी मत कहना। **(किसी का) मुँह छूना या परसना**=केवल ऊपरी मन से या दिखाने भर को किसी के साथ कोई अच्छा व्यवहार करना। जैसे—मुँह छूने के लिए वे मुझे भी निमत्रण देने आये थे। उदा०—ह्याँ आये मुख (मुँह) परसन मेरो हृदय टरति नहिं प्यारी।—सूर। **(किसी के) मुँह पर जाना**=किसी की प्रतिष्ठा व्यवहार, शील, सकोच आदि का ध्यान रखना या विचार करना। जैसे—तुम उनके मुँह पर मत जाओ, अपना काम करो। **(किसी का) मुँह पाना**=किसी को अपनी ओर अनुरक्त या प्रवृत्त देखना। जैसे—जब उनका मुँह पाया, तब मैंने भी सब बातें कह सुनाई। उदा०—मुँह पावति, तब ही लौं आवति, औरै, लावति मोर।—सूर। **(किसी का) मुँह रखना**=शील, सकोच आदि के कारण किसी के महत्त्व, व्यवहार आदि का ध्यान रखना। जैसे—हमे तो चार आदमियो का मुँह रखना ही पडता है।

४ उक्त के आधार पर किसी प्रकार का पक्षपात या तरफदारी। जैसे—सच सच कह दो, किसी का मुँह मत रखो। ५ मनुष्य के शरीर का उक्त अग के विचार से उसकी योग्यता, सामर्थ्य, साहस आदि। जैसे—(क) अपना मुँह तो देखो (अर्थात् अपनी योग्यता या शक्ति तो देखो)। (ख) यहाँ भला किसका मुँह है जो तुम्हारे सामने आवे।

मुहा०—(किसी काम या बात के लिए) मुँह पड़ना=कुछ करने, कहने आदि का साहस या हिम्मत होना। जैसे—उनके सामने बोलने का किसी का मुँह ही नही पडता। **(किसी का) मुँह मारना**=(क) किसी को दबाने, नीचा दिखाने या वशवर्ती करने के लिए कोई उत्कृष्ट कार्य कर दिखाना। (ख) ऐसी उत्कृष्ट स्थिति मे होना कि सहज मे किसी को परास्त या लज्जित करके हीन सिद्ध किया जा सके। जैसे—यह कपडा सूती होने पर भी रेशमी का मुँह मारता है।

६ पारिश्रमिक, प्रतिफल आदि के रूप मे होनेवाली माँग। जैसे—बडे वकीलो का मुँह भी बड़ा होता है। (अर्थात् वे अधिक पारिश्रमिक या मेहनताना माँगते हैं।)

मुहा०—(किसी का) मुँह भरना=घूस, पारिश्रमिक आदि के रूप मे धन देना।

७. किसी प्राकृतिक या कृत्रिम रचना मे उक्त अग से मिलता-जुलता कोई ऐसा छेद या विवर जिसमे होकर चीजें उसमे जाती या उसमे से निकलती हों। जैसे—गुफा, घडे, थैली, या लोटे का मुँह।

पद—मुँह भर के=(क) जितना अन्दर समा सके, उतना डाल या रखकर। (ख) भर-पूर। यथेष्ट। (ग) अच्छी या पूरी तरह से।

८. उक्त प्रकार के मार्ग का बिलकुल ऊपरी किनारा या सिरा। जैसे—तालाब मुँह तक भर गया है। ९ किसी चीज के ऊपर का ऐसा छोटा छेद जिसमें से कुछ निकलता हो। जैसे—फुसी, फोडे या नली का मुँह।

मुहा०—(किसी चीज का) मुँह खोलना=ऊपरी मार्ग या विवर इस प्रकार चौडा करना कि अन्दर की चीज बाहर निकल सके। जैसे—थैली का मुँह खोलना, फोडे का मुँह खोलना।

१०. किसी चीज का आगेवाला पार्श्व, ऊपर या सामने का भाग अथवा रुख। जैसे—मकान का मुँह उत्तर की ओर है। ११ किसी बद चीज का वह अंग या पार्श्व जिधर से वह खुलती हो या खोली जा सकती हो।

१२ किसी चीज का वह अगला और मुख्य भाग जिससे उसका प्रधान कार्य होता हो। जैसे—तीन मुँह वाला तीर या भाला, चार मुँहवाला दीया आदि।

मुँह-अँधेरे—क्रि० वि० [हि० मुँह+अँधेरा] इतने तड़के या सवेरे जब अँधेरे के कारण किसी का मुँह भी न दिखाई पड़ता हो। जैसे—वह मुँह-अँधेरे ही उठकर घर से निकल पड़ा।

मुँह-अखरी—वि० [हि० मुँह+अक्षर] जबानी। शाब्दिक।

मुँह-उजाले—क्रि० वि०=मुँह-उट्ठे।

मुँह-उट्ठे—क्रि० वि० [हि० मुँह+उठना] ठीक उस समय जब कोई आदमी सवेरे के समय सोकर उठा ही हो।

मुँह-काला—पु० [हि० मुँह+काला] १ कोई परम निन्दनीय काम करने पर होनेवाली बहुत अधिक अप्रतिष्ठा और बदनामी। २ पर-पुरुष या पर-स्त्री के साथ किया जानेवाला सभोग। ३ एक प्रकार की गाली। जैसे—जा, तेरा मुँह-काला।

मुँहचंग—पुं०=मुरचग।

मुँह-चटौअल—स्त्री० [हि० मुँह+चाटना+औवल (प्रत्य०)] १ चुबन। चूमाचाटी। २ बक-बक। बकवाद।

मुँह-चुथौवल—स्त्री० [हि० मुह+चोथना] १ व्यर्थ की बकवाद। २. लड़ाई-झगड़े मे एक दूसरे को (विशेषत मुँह पर) मारने, काटने, नोचने आदि की क्रिया।

मुँह-चोर—पु० [हि० मुँह+चोर] लोगों के सामने जाने मे मुँह चुराने अर्थात् सकोच करनेवाला।

मुँह-छुआई—स्त्री० [हि० मुँह+छूना+आई (प्रत्य०)] मुँह छूने अर्थात् ऊपरी मन से किसी से कुछ कहने की क्रिया या भाव।

मुँह-छुट—वि० [हि० मुँह+छूटना] जो कुछ मुँह मे आवे, वह सब बक जानेवाला। सबके सामने उद्दडतापूर्वक बाते करनेवाला।

मुँह-जबानी—अव्य० [हि०] मुँह और जबान के द्वारा। मौखिक रूप से। वि० जो जबानी याद हो। कठस्थ।

मुँह-जला—वि० [हि० मुँह+जलना] [हि० स्त्री० मुँहजली] १ जिसका मुँह जले हुए के समान हो, अथवा जला दिये जाने के योग्य हो। (गाली) २ अशुभ तथा बुरी बाते कहनेवाला।

मुँह-जोर—वि० [हि० मुँह+फा० जोर] [भाव० मुँहजोरी] १ धृष्टतापूर्वक तथा बिना समझे-बूझे जो मुँह मे आवे, वह कह देनेवाला। किसी के मुँह पर बिना उसका लिहाज किये उलटी-सीधी बाते कहनेवाला। २ बकवादी। ३ मनमानी करनेवाला। उद्दण्ड। जैसे—मुँह जोर घोड़ा।

मुँह-जोरी—स्त्री० [हि० मुँहजोर+ई (प्रत्य०)] १ मुँहजोर होने की अवस्था या भाव। २ धृष्टता।

मुँह-झौंसा†—वि० [स्त्री० मुँह-झौंसी]=मुँह-जला।

मुँह-तोड़—वि० [हि०] (उत्तर या प्रत्याघात) जो विरोधी को पूरी तरह से परास्त करते हुए नीचा दिखानेवाला हो। जैसे—किसी को मुँह-तोड़ जबाब देना।

मुँह-दिखरावनी*—स्त्री०=मुँह-दिखाई।

मुँह-दिखलाई—स्त्री०=मुँह-देखनी।

मुँह-दिखाई—स्त्री०=मुँह-देखनी।

मुँह-देखनी—स्त्री० [हि० मुँह+दिखाना] १. मुँह दिखाने की क्रिया या भाव। २. विवाह के उपरांत की एक प्रथा जिसमे वर-पक्ष की स्त्रियाँ नव-वधू का घूँघट हटाकर उसका मुँह देखती और उसे कुछ धन देती हैं। मुँह-दिखाई नामक रसम। ३ वह धन या पदार्थ जो नव-वधू को उक्त अवसर पर मुँह दिखाने के बदले मे मिलता है।

मुँह-देखा—वि० [हि० मुँह+देखना] [स्त्री० मुँह-देखी] १ प्रत्यक्ष रूप से या स्वय देखा हुआ। २ (ऐसा काम) जो किसी का सामना होने पर केवल औपचारिक रूप से उसका लिहाज करते हुए या सकोच वश तथा ऊपरी मन से किया जाता हो। जैसे—मुँह देखा प्यार, मुँह देखी बातें। ३. आशा की प्रतीक्षा मे किसी का मुँह देखता रहनेवाला।

मुँहनाल—स्त्री० [हि० मुँह+नाल=नली] १ वह नली जिसे मुँह में लगाकर हुक्के का धूआँ खीचते है। २ धातु का वह टुकड़ा जो म्यान के सिरे पर लगा होता है।

मुँह-पड़ा—पुं० [हि० मुँह+पड़ना] प्रसिद्ध। मशहूर। (क्व०)

मुँह-पातर*—वि०=मुँह-फट।

मुँह-फट—वि० [हि० मुँह+फटना] जो उचित-अनुचित का ध्यान रखे बिना भद्दी बातें कहने मे भी सकोच न करता हो। बद-जबान।

मुँह-बंद—वि० [हि०] १ (पदार्थ) जिसका मुँह बद हो और अभी तक खोला न गया हो। जैसे—मुँह-बद बोतल। २ (फल) जो अभी खिला न हो। जैसे—मुँह-बद कली। ३ (युवती या स्त्री) जिसका पुरुष से समागमन न हुआ हो। अक्षत-योनि। कुमारी। (बाजारू)

मुँहबंदी—स्त्री० [हि० मुँह बद+ई० (प्रत्य०)] मुँह बद करने या होने की अवस्था, क्रिया या भाव।

मुँह-बँधा—पु० [हि० मुँह+बँधना] जैन साधु जो प्राय मुँह पर कपड़ा बाँधे रहते है।

वि० जिसका मुँह बँधा हो।

मुँह-बोला—वि० [हि० मुँह+बोलना] [स्त्री० मुँह-बोली] जिसके साथ केवल कहकर या वचन देकर कोई सम्बन्ध स्थापित किया गया हो। जो जन्मत या वस्तुत न होने पर भी मुँह से कहकर मान लिया या बना लिया गया हो। जैसे—मुँह बोला भाई, मुँह-बोली बहन।

मुँह-भराई—स्त्री० [हि० मुँह+भरना] १ मुँह भरने की क्रिया या भाव। २ वह धन जो किसी को कोई आपत्ति-जनक बात कहने अथवा बाधक होने से रोकने के लिए रिश्वत आदि के रूप मे दिया जाय।

मुँह-माँगा—वि० [हि०] [स्त्री० मुँह-माँगी] जो मुँह से कहकर माँगा गया हो। जैसे—मुँह-माँगा दाम लेना, मुँह-माँगी मुराद पाना।

मुँह-माँगे—अव्य० [हि० मुँह-माँगा] मुँह से माँगने पर। कहकर माँगने पर।

मुँह-मुलाहजा—पु० [हि० मुँह+अ० मुलाहिज] ऐसी स्थिति जिसमे किसी आत्मीय या परिचित व्यक्ति के साथ होनेवाले पारस्परिक सम्बन्ध का शील-सकोचपूर्वक ध्यान रखा जाता हो।

मुँह-लगा—वि० [हि० मुँह+लगना] [स्त्री० मुँह-लगी] जो अनधिकारी या अपात्र हो पर प्राय किसी बड़े के पास या साथ रहने के कारण बढ़-चढ कर बोलने का अभ्यस्त हो गया हो। सिर-चढा।

मुँह-सुँघाई—स्त्री० [हि० मुँह+सूँघना] १ किसी से मिल कर इतनी थोड़ी बात-चीत करना कि मानो उसका मुँह सूँघकर छोड़ दिया हो। २. उक्त

प्रकार की क्षणिक बात-चीत के बदले में दिया या लिया जानेवाला धन। उदा०—फिर जमींदार की हुर-हुकूमत, जरिबाना-तलबाना, पटवारी-मुन्शी को घूस-रिसवत थानेदार को मांस-मलीदा, कचहरी के वकील-मुख्तार को मुँह-सुँघाई सैकड़ों तरह के दूसरे खर्चे किये बिना तुम्हारी जान नहीं बचेगी।—राहुल सांकृत्यायन।

मुंहा—वि० [हिं० मुंह] किसी प्रकार के मुँह से युक्त। मुँहवाला। जैसे—दो-मुँहा, शेर-मुँहा आदि।

मुंहाचाही—स्त्री० =मुँह-चीही।

मुंहा-चीही—स्त्री० [हिं० मुँह+चाहना] १. आपस मे एक दूसरे को देखना। देखा-देखी। २. आपस में होनेवाली कहा-सुनी या तकरार।

मुंहा-मुंह—अव्य० [हिं० मुँह+मुँह] मुँह या ऊपरी भाग तक। जैसे—तालाब मुँहामुँह भरा है।

मुंहासा—पुं० [हिं० मुंह+आसा (प्रत्य०)] मुँह पर के वे दाने जो प्राय. युवावस्था मे निकलते हैं।

मुअज्जन—पुं० [अ०] वह जो लोगों को नमाज का समय सूचित करने के लिए मसजिद में अजान देता है।

मुअज्जम—वि० [अ०] परम माननीय या प्रतिष्ठित बहुत बड़ा (व्यक्ति)।

मुअज्जिज—वि० [अ० मुअज्जज] इज्जतदार। प्रतिष्ठित।

मुअत्तल—वि० [अ०] [भाव० मुअत्तली] १. खाली। २. जो किसी प्रकार का दोष करने पर विचारार्थ अपने काम या पद से कुछ समय के लिए अलग कर दिया गया हो।

मुअत्तली—स्त्री० [अ०]=निलबन। (देखें)

मुअन्नस—पु० [अ०] स्त्रीलिंग। मादा।

मुअम्मा—पु० [अ० मुअम्म'] १. भेद या रहस्य की बात।

क्रि० प्र०—खुलना।

२ पहेली। बुझौअल। ३ घुमाव-फिराव या हेर-फेर की बात।

मुअल्लक—वि० [अ० मुअल्लक] १ अधर मे लटकता हुआ। २ बीच मे रुका हुआ (काम)।

मुअल्लिम—पु० [अ०] १ इल्म सिखानेवाला। शिक्षक। २ अध्यापक।

मुआफ़—वि०=माफ।

मुआफ़क़त—स्त्री० [अ०] १ मुआफिक या अनुकूल होने की अवस्था या भाव। अनुकूलता। २. अनुकूलता के कारण होनेवाला सग या साथ। जैसे—मेल-मुआफकत। ३ अनुरूपता।

मुआफिक—वि० [अ० मुआफ़िक़] १ अनुकूल। २. तुल्य। समान। ३ जितना या जैसा होना चाहिए, उतना या वैसा। ठीक। ४. इच्छानुसार। मनोनुकूल।

मुआफ़िक़त—स्त्री०=मुआफकत।

मुआफ़ी—स्त्री०=माफ़ी।

मुआमला—पुं०=मामला।

मुआयना—पुं० [अ० मुआयनः] निरीक्षण।

मुआलिज—पु० [अ०] इलाज करनेवाला। चिकित्सक।

मुआवजा—पुं० [अ० मुआवजः] १. बदला। २ किसी प्रकार की क्षति की पूर्ति करने के लिए उसके बदले मे दिया जानेवाला धन। ३ वह रकम जो जमीन के मालिक को उस जमीन के बदले मे मिलती है, जो कानून की सहायता से सार्वजनिक काम के लिए ले ली जाती है।

मुआहिदा—पु० [अ० मुआहिद'] आपस मे होनेवाला दृढ निश्चय। पक्का करार।

मुकट†—पुं०=मुकुट।

मुकटा†—पुं० [देश०] प्राय पूजन आदि के समय पहनी जानेवाली एक प्रकार की रेशमी धोती। (पूरब)

मुकताई*—स्त्री०=मुक्ति।

मुकता—वि० [हिं० मुकना] [स्त्री० मुकती] जो जल्दी समाप्त न हो। बहुत अधिक। यथेष्ट।

†पुं०=मुक्ता।

मुकतालि—स्त्री० [स० मुक्तावली] मोतियों की लड़ी। मुक्तावली।

मुकत्तर—वि० [अ०] भभके से खीचा या चुआया हुआ।

मुकत्ता—वि० [अ० मुकत्ता] १ कतरा या काटा हुआ। २ ठीक तरह से काट-छाँटकर बनाया हुआ। जैसे—मुकत्ता दाढी। ३ जिसमे किसी प्रकार की कुरूपता या भद्दापन न हो। जैसे—मुकत्ता सूरत।

मुकति*—स्त्री०=मुक्ति।

मुकदमा—पु० [अ० मुक़द्दम] १. कोई बात या विषय अथवा विवरण विस्तारपूर्वक किसी के सामने उपस्थित करना। २ ग्रंथ आदि का प्राक्कथन या भूमिका। ३. वह विवादास्पद विषय जो न्यायलाय के सामने विचार और निर्णय के लिए उपस्थित किया जाय। अभियोग। दावा। नालिश।

विशेष—मुकदमे दीवानी, अर्थात् लेन-देन या व्यवहार के सबध मे भी होते हैं, और फौजदारी अर्थात् दड-विधान के अनुसार किसी को दंडित करने के लिए भी। वादी और प्रतिवादी को आरभ से अत तक जितनी अदालती कार्रवाइयाँ करनी पड़ती है, उन सबका अंतर्भाव मुकदमे में ही होता है।

पद—**मुकदमेबाज, मुकदमेबाजी।**

क्रि० प्र०—खड़ा करना।—चलना।—दायर करना।

मुहा०—**मुकदमा लड़ना**=मुकदमा होने की दशा मे अपने पक्ष के समर्थन के लिए आवश्यक और उचित कार्रवाइयाँ करना।

मुकदमेबाज—पु० [अ० मुक़दमा+फा० बाज (प्रत्य०)] [भाव० मुकदमेबाजी] १ वह जिसने बहुत से मुकदमे लड़े हों। २ जो मुकदमे लड़ता रहता हो। जिसे मुकदमे लड़ने का शौक हो।

मुकदमेबाजी—स्त्री० [अ० मुक़दमा+फा० बाजी] मुकदमे लड़ने की क्रिया या भाव।

मुकद्दम—वि० [अ०] १ प्राचीन। पुराना। २ सबसे अच्छा या बढ़कर। ३. प्रधान। मुख्य। ४ आवश्यक। जरूरी।

पु० १. गाँव का मुखिया। २. पशु की रान का ऊपरी भाग जो कूल्हे से जुड़ा होता है। (कसाई)

मुकद्दमा—पुं०=मुकदमा।

मुकद्दर—वि० [अ०] १. गँदला। मैला। २ चिन्तित और दुखी। परेशान। ३. अप्रसन्न। नाराज। रुष्ट।

पुं० [अ० मुक़द्दर] भाग्य। प्रारब्ध।

मुकद्दस—वि० [अ०] परम पवित्र और पूज्य।

पद—**मुकद्दस किताब**=धर्म-ग्रन्थ।

मुकना—अ० [स० मुक्त] १ मुक्त होना। २ खतम या समाप्त होना।
†पु०=मकुना।

मुकफल—वि० [अ० मुकफल] जिसमें कुफ्ल या ताला लगा हुआ हो। ताले में बंद किया हुआ।

मुकम्मल—वि० [अ०] १ पूरा किया हुआ (काम)। २ संपूर्ण। ३. सर्वांगपूर्ण।

मुकर†—पु० =मकुर।

मुकरना—अ० [स० मा =नहीं +करना] कोई काम कर चुकने या बात कह चुकने पर बाद में यह कहना कि हमने ऐसा नहीं किया अथवा नहीं किया था। कहे या किए हुए से इनकार करना। जैसे—कहकर मुकर जाना तो उसके लिए मामूली बात है। उदा० —नियत पर्व तब भेट मनाई। मुकर गये जब देनी आई। (कहा०)
सयो० क्रि०—जाना।—पड़ना।
†वि० कुछ करके अथवा कहकर मुकर जानेवाला। मुकरा। जैसे—ऐसे मुकरने आदमी से हम बात नहीं करते।
अ० [स० मुक्त] मुक्त होना। छूटना।

मुकरानी—स्त्री० [हिं० मुकरना] मुकरी या कह-मुकरी नामक कविता। दे० 'मुकरी'।

मुकरवा†—वि० दे० 'मुकरा'।

मुकरा—वि० [हिं० मुकरना] वह जो कोई बात कहकर उससे मुकर जाता हो। अपनी बात पर दृढ़ न रहनेवाला। उदा०—लोभी, लौद, मुकरवा (मुकरा) अगरू बड़ी पर्दैली लूटा।—सूर।

मकराना—स० [हिं० मुकरना का स० रूप] १ किसी को मुकरने में प्रवृत्त करना। २ किसी को झूठा बनाना या झूठा सिद्ध करना। (क्व०)
स० [?] मुक्त कराना। छुड़ाना।

मुकरावन—वि० [हिं० मुकराना=मुक्त कराना] १ मुक्त कराने या छुड़ानेवाला। २ मुक्ति या मोक्ष दिलानेवाला।

मुकरी—स्त्री० [हिं० मुकरना] १ मुकरने की क्रिया या भाव। २ एक प्रकार की लोक-प्रचलित कविता जिसका रूप बहुत कुछ पहेली का-सा होता है, और जिसमें पहले तो कोई वास्तविक बात श्लिष्ट रूप से कही जाती है, पर बाद में उस कही हुई बात से मुकरकर उसकी जगह कोई दूसरी उपयुक्त बात बनाकर कह दी जाती है जिससे सुननेवाला कुछ का कुछ समझने लगता है। हिंदी में अमीर खुसरो की मुकरियाँ प्रसिद्ध है। इसी को 'कह-मुकरी' भी कहते है। साहित्यिक दृष्टि से मुकरियों का विषय छेकापह्नुति अलकार के अतर्गत आता है। उदा०—सगरि रैन वह मो सग जागा। भोर भई तब बिछुरन लागा। वाके बिछुरत फाटे हिया। क्यों सखि साजन? ना सखि दिया।—खुसरो।

मुकर्रम—वि० [अ०] १ प्रतिष्ठित। २ पूज्य।

मुकर्रर—अव्य० [अ०] दोबारा। फिर से।
वि० [अ० मुकर्रर] [भाव० मुकर्ररी] १ जिसके सबध में इकरार हो चुका हो। निश्चित। २ किसी पद या स्थान पर जिसे नियुक्त किया गया हो।

मुकर्ररी—स्त्री० [अ०] १. मुकर्रर होने की अवस्था, क्रिया या भाव। नियुक्ति। २ मालगुजारी या लगान। ३ नियत रूप से या नियत समय पर मिलता रहनेवाला धन। जैसे—वेतन, वृत्ति आदि।

मुकल—पु० [स०] १ अमलतास। २. गुगुल।

मुकलाऊ†—वि० [हिं० मुकलाना] १ मुकलाने या मुक्त करानेवाला। २ मुकलावा या द्विरागमन करा ले जानेवाला।
पु०=मुकलावा।

मुकलाना—स० [स० मुकुल से अर्थ-विपर्यय] १ बन्धन से मुक्त करना। छोड़ना। उदा०—खोंपा छोरि केस मुकुलाई।—जायसी। २ बन्धन से मुक्त कराना। छुड़ाना। ३ वर का वधू को उसके मायके से पहले-पहल अपने घर लाना। मुकलावा या द्विरागमन कराना। उदा०—सुत मुकलाई अपनी माउ।—कबीर।

मुकलावा†—पु० [हिं० मुकलाना] पति का पहले-पहल अपनी पत्नी को उसके मायके से अपने घर ले जाने की रस्म। गौना। द्विरागमन। (पजाब)

मुक़व्वी—वि० [अ०] [बहु० मुकव्वियात] १ बलवर्द्धक। २ काम-वर्द्धक।

मुकाना*—स० [स० मुक्त] १ मुक्त कराना। छुड़ाना। २. खतम या समाप्त करना। उदा०—तुलि नहि चढै जाइ न मुकानी, हलकी लगै न भारी।—कबीर।
†अ० =मुकना।

मुकाबला—पु० [अ० मुकाबला] १ आमना-सामना। २ बराबरी। समानता। तुल्यता।
मुहा०—मुकाबले मे होना=तुल्य या बराबर होना।
३ प्रतियोगिता, बलपरीक्षा या लड़ाई में होनेवाली जाँच या होड़। जैसे—(क) बच्चों के स्वास्थ्य का मुकाबला। (ख) दौड़ में होनेवाला मुकाबला। ४ तुलनात्मक निरीक्षण या परीक्षा। ५ मिलान। ६ विरोध।

मुकाबा—पु० [देश०] पुरानी चाल का एक तरह का सिगारदान जिसमें कघी, मिस्सी, शीशा, सुरमा आदि रखा जाता है।

मुकाबिल—वि० [अ०] १ सामनेवाला। २ तुल्य। समान।
पु० १ प्रतिद्वंदी। २ विरोधी। ३ दुश्मन। शत्रु।
क्रि० वि० सम्मुख। सामने।

मुकाबिला—पु०=मुकाबला।

मुकाम—पु० [अ० मुकाम] [वि० मुकामी] १ ठहरने का स्थान। पड़ाव।
मुहा०—मुकाम डालना=यात्रा के समय बीच में विश्राम करने के लिए ठहरना। **मुकाम बोलना**=अधीनस्थ लोगों को पड़ाव डालने की आज्ञा देना।
२ जगह। स्थान। ३ ठहराव। विराम। ४ रहने की जगह। घर। ५ किसी के यहाँ मृत्यु होने पर उसके यहाँ महानुभूति प्रकट करने और सान्त्वना देने के लिए जाने और उसके पास कुछ देर तक बैठने की क्रिया या भाव।
मुहा०—मुकाम देना=किसी के मर जाने पर उसके घर मातमपुरसी करने जाना।
६ उपयुक्त अवसर। ठीक मौका। ७ सगीत में बीन, सरोद, सितार आदि बाजों का कोई परदा। ८ फारसी सगीत में, एक प्रकार का राग।

मुकामी—वि० [अ०] १ मुकाम-सबधी। ठौर-सबधी। २. स्थानीय।

मुकियाना—स० [हिं० मुक्की+इयाना] १ मुक्कों से मारना। २. मुक्कियों से आटा सँवारना। ३ मुक्कियों से हलका आघात करते हुए मालिश करना या कोई अंग दबाना।

मुकिर—वि० [अ०] १. इकरार या प्रतिज्ञा करनेवाला। २. अपनी ओर से कोई दस्तावेज या लेख प्रस्तुत करके उस पर हस्ताक्षर करनेवाला। लेख्य का लेखक।

मुकीम—वि० [अ०] १. मुकाम-संबंधी। २. किसी स्थान पर मुकाम करनेवाला। ३. जिसने कहीं कयाम किया हो। चलते-चलते किसी स्थान पर ठहरने या रुकनेवाला। ४. यात्रा आदि के समय बीच में कहीं ठहरने या पड़ाव डालनेवाला।

पु० तरकारियों आदि का थोक व्यापारी।

मुकुंद—पुं० [सं० मुकु√दा (देना)+क, पृषो० मुम्] १ विष्णु। २ पुराणानुसार एक प्रकार की निधि। ३. एक प्रकार का रत्न। ४ कुंदरू। ५ सफेद कनेर। ६ गभारी वृक्ष। ७ पोई का साग। ८ पारद। पारा।

मुकुंदक—पु० [सं० मुकुंद+कन्] १. प्याज। २. साठी धान।

मुकुंदा—पु०[सं० बाल मुकुन्द] ऐसा व्यक्ति जिसके दाढ़ी-मूँछ के बाल न हों या बहुत कम हों। गुप्तरोमा।

मुकु—पु० [सं०√मुच् (छोड़ना)+कु, पृषो० सिद्धि] १ मुक्ति। मोक्ष। २ छुटकारा।

मुकुट—पु० [सं० √मुक् (सजाना)+उटन्, पृषो० सिद्धि] १ श्रेष्ठता का सूचक एक प्रकार का प्रसिद्ध अर्ध गोलाकार शिरोभूषण जो पहले राजा लोग पहनते थे, और जो प्राय देवी-देवताओं की मूर्तियों के सिर पर बाँधा जाता है। अवतंस। मौलि।

स्त्री० एक मातृ-गण।

मुकुटी (टिन्)—वि०[सं० मुकुट+इनि, दीर्घ, नलोप] जिसने मुकुट पहना हुआ हो।

मुकुटेकार्षापण—पु० [सं० अलुक्, स०] प्राचीन भारत में एक प्रकार का राज-कर जो राजा का मुकुट बनवाने के लिए लिया जाता था।

मुकुट्ट—पु० [सं०] एक प्राचीन जाति का नाम।

मुकुत*—पु०=मुक्ता (मोती)।

वि०=मुक्त।

मुकुताफल*—पु०=मुक्ताफल (मोती)।

मुकुर—पु० [सं०√मुक्+उरच्, उरत्व] १ दर्पण। आईना। शीशा। २ मौलसिरी। ३ मोतिया। ४ बेर। ५. कली। ६. वह डंडा जिससे कुम्हार चाक चलाता है।

मुकुल—पु० [सं० मुञ्च्+उलक्] १. कली। २. देह। शरीर। ३ आत्मा। ४. प्राचीन भारत में एक प्रकार का राज-कर्मचारी। ५. जमाल गोटा। ६. गुग्गुल। ७ पृथ्वी।

मुकुलक—पु० [सं० मुकुल+कन्] दंती (वृक्ष)।

मुकुलाग्र—पुं०[सं० मुकुल-अग्र, ब० स०] कली की आकृति का एक प्राचीन अस्त्र।

मुकुलित—भू० कृ० [सं० मुकुल+इतच्] १. (पेड़ या पौधा) जिसमें कलियाँ आई हों। कलियों से युक्त। २. (फूल) खिला हुआ। ३ जो पूरी तरह से खुला न हो। कुछ कुछ मुँदा हुआ। अध-खुला। ४. (नेत्र) जो झपक या मुँद रहा हो।

मुकुली (लिन्)—वि० [सं० मुकुल+इनि, दीर्घ, नलोप] कलियों से लदा हुआ (पौधा या वृक्ष)।

मुकुष्ठ—पुं०[सं० मुकु√स्था (ठहरना)+क] मोठ।

मुकेस*—पु०=मुक्कैश।

मुकैयद—वि० [अ० मुक़ैयद] कैदी। बंदी।

मुक्क†—वि०=मुक्त।

पु०=मुक्का।

मुक्का—पुं० [सं० मुष्टिका] [स्त्री० अल्पा० मुक्की] १ आघात करने के उद्देश्य से बाँधी हुई मुट्ठी। घूँसा।

क्रि० प्र०—चलाना।—मारना।

२ उक्त प्रकार से बँधी हुई मुट्ठी का आघात।

क्रि० प्र०—खाना।

†पु०=मोखा (विवर)।

मुक्की—पुं० [हिं० मुक्का+ई (प्रत्य०)] १. मुक्का। २ एक प्रकार की लड़ाई जिसमें प्रतिद्वंद्वी एक दूसरे पर मुक्कों का आघात करते हैं। वि० दे० 'मुक्केबाजी'। ३ गूँधे हुए आटे को सँवारने तथा नरम करने के लिए उसे मुक्कियों से दबाने की क्रिया या भाव। ४ टाँगें आदि दबाते समय मुक्कियों से हलका आघात करने की क्रिया या भाव।

मुक्केबाज—पु० [हिं० मुक्का+फा० बाज] वह जो मुक्कों का प्रहार करके लड़ता हो।

मुक्केबाजी—स्त्री० [हिं० मुक्का+बाजी (प्रत्य०)] १. बार बार एक दूसरे को मुक्कों से मारने की क्रिया या भाव। घूँसेबाजी। २ एक प्रकार की प्रतियोगिता जिसमें प्रतियोगी एक दूसरे पर मुक्कों से आघात करते हैं। (बाक्सिंग)

मुक्कैश—पु० [अ० मुक़ैश] १. बादला। २ तमामी या ताश नामक कपड़ा।

मुक्कैशी—वि० [अ० मुक्कैश+ई (प्रत्य०)] १ बादले का बना हुआ। जैसे—मुक्कैशी गोखरू। २ जिसमें जरदोजी या जरी का काम बना हो। जैसे—मुक्कैशी रूमाल।

मुक्ख†—वि०=मुख्य।

मुक्खी—पु० [हिं० मुख+ई (प्रत्य०)] ऐसा कबूतर जिसका सारा शरीर काले, हरे, या लाल रंग का हो, पर सिर और डैनों पर एक या दो सफेद पर हों।

मुक्त—भू० कृ० [सं०√मुच्+क्त] १ जो किसी प्रकार के बंधन से छूट गया हो। छूटा हुआ। २ धार्मिक क्षेत्र में, जो सांसारिक बंधनों और आवागमन आदि से छूट गया हो। जिसे मुक्ति मिली हो। ३. जो किसी प्रकार के नियम, विधान आदि के पालन से अलग कर दिया गया हो। ४ जिसने किसी प्रकार की मर्यादा आदि का परित्याग कर दिया हो। जैसे—मुक्त लज्ज, मुक्त वमन। ५ खुला या छूटा हुआ। जैसे—मुक्त-वेणी। ६ जो किसी प्रकार के बंधन की चिंता या परवाह न करता हो। खुला हुआ। जैसे—मुक्त-कंठ, मुक्त-हस्त। ७ चलने के लिए छूटा हुआ। जैसे—बाण का मुक्त होना।

पु० पुराणानुसार एक ऋषि का नाम।
*पुं० मुक्ता (मोती)। उदा०—हेम हीर हार मुक्त चीर चारु साजि कै।—केशव।

मुक्त-कंठ—वि० [स० ब० स०] १. जोर से बोलनेवाला। २ बेधड़क बोलनेवाला। ३. जो बोलने मे बन्धन या सीमा न मानता हो। जैसे—मुक्त-कंठ होकर प्रशंसा करना।

मुक्तक—पु० [स० मुक्त+कन्] १. प्राचीन काल का एक अस्त्र जो फेंककर मारा जाता था। २ शस्त्र। हथियार। ३. ऐसा सरल और सीधा गद्य जिसमे छोटे-छोटे वाक्य हों। ४. काव्य का वह प्रकार या भेद (प्रबंध-काव्य से भिन्न) जिसमे वर्णित बातों का कोई पूर्वापर संबंध न हो, अर्थात एक ही छंद में कोई पूरी बात या विषय आ गया हो, आगे या पीछे के दूसरे छंदों से उसका कोई संबंध न हो। जैसे—बिहारी सतसई मुक्तक काव्य है। ५. छंद शास्त्र में कवित्त का वह प्रकार या भेद जिसमे गणों का कोई बंधन नहीं होता, केवल अक्षरों की संख्या और कहीं-कहीं गुरु-लघु का कुछ ध्यान रखा जाता है।

मुक्तक-ऋण—पु० [स० कर्म० स०] वह ऋण जिसके संबंध मे कुछ लिखा-पढ़ी न हो। जबानी बातचीत पर दिया या लिया हुआ ऋण।

मुक्त-कच्छ—पु० [स० ब० स०] एक बौद्ध का नाम।
वि० जिसका कच्छ खुला हो।

मुक्त-चंदन—पु० [स० मध्य० स०] लाल चंदन।

मुक्त-चक्षु(स्)—पु० [स० ब० स०] शेर। सिंह।

मुक्त-चेता (तस्)—वि० [स० ब० स०] जिसमे मोक्ष प्राप्त करने की बुद्धि आ गई हो।

मुक्त-छंद (स्)—पु० [स० ब० स०] आज-कल की ऐसी कविता जिसमे चरणों, मात्राओं, अनुप्रास आदि का बन्धन न माना जाता हो, केवल लय का ध्यान रखा जाता हो। (ब्लैंक वर्स)

मुक्तता—स्त्री० [स० मुक्त+तल्-टाप्] मुक्त होने की अवस्था या भाव। मुक्ति।

मुक्त-निर्मोक—वि० [स० ब० स०] (साँप) जिसने अभी हाल मे केंचुली छोडी हो।

मुक्त पद-ग्राह्य—पु० [स०] साहित्य मे, यमक अलकार का सिंहावलोकन नामक प्रकार या भेद। (दे० 'सिंहावलोकन')

मुक्त-पुरुष—पु० [स० कर्म० स०] वह जिसने मोक्ष प्राप्त कर लिया हो।

मुक्त-बंधना—स्त्री० [स० ब० स०, टाप्] १. एक प्रकार का मोतिया। २. बेला।

मुक्त-वसन—वि० [स० ब० स०] जिसके शरीर पर कोई वस्त्र न हो। नंगा।
पु० एक प्रकार के जैन साधु जो सदा नंगे रहते हैं।

मुक्त-वाणिज्य—पु०=मुक्त-व्यापार।

मुक्त-वेणी—स्त्री० [स० ब० स०] १ द्रौपदी का एक नाम। २ प्रयाग का त्रिवेणी संगम।

मुक्त-व्यापार—वि० [स० ब० स०] जो सांसारिक कार्यों से रहित हो गया हो। संसार-त्यागी।
पु० [स० कर्म० स०] आधुनिक राजनीति मे, व्यापार की वह व्यवस्था जिसमे विदेशों से होनेवाले आयात-निर्यात आदि पर कोई विशेष बन्धन न लगाया जाता हो। (फ्री ट्रेड)

मुक्त-शृंग—पु० [स० ब० स०] रोह मछली।

मुक्त-संग—वि० [स० ब० स०] जो विषय-वासना से रहित हो गया हो।
पु० परिव्राजक।

मुक्त-सार—पु० [स० ब० स०] केले का पेड।

मुक्त-हस्त—वि० [स० ब० स०] १ जो उदारतापूर्वक तथा अधिक मात्रा मे दान, व्यय आदि करता हो। २ खुले हाथों देनेवाला।

मुक्तांशक—पु० [स० मुक्ता-अंशक, मध्य० स०] प्राचीन भारत में एक प्रकार का कपडा जिसकी बनावट मे या तो मोतियों का काम होता था या जिसमे मोतियों की झालर अथवा झुब्बे टँके होते थे।

मुक्ता—स्त्री० [स० मुक्त+टाप्] [वि० मौक्तिक] १ मोती। २. रासना।

मुक्तागार—पु० [स० मुक्ता-आगार, ष० त०] सीप।

मुक्तात्मा (त्मन्)—वि० [स० मुक्त-आत्मन्, ब० स०] १. जो सासारिक आसक्तियों या बन्धनों से रहित हो गया हो। २ जिसने मोक्ष प्राप्त कर लिया हो।

मुक्तादाम (न्)—पु० [स० ष० त०] मोतियों की लडी।

मुक्ता-पुष्प—पु० [सं० ब० स०] कुंद (पौधा और फूल)।

मुक्ता-प्रसू—पु० [स० ष० त०] सीप।

मुक्ता-फल—पु० [स० उपमि० स०] १ मोती। २. कपूर। ३ लवनी फल। ४ एक प्रकार का छोटा लिसोढ़ा।

मुक्ता-मणि—पु० [स० मयू० स०] मोती।

मुक्ता-मोदक—पु० [स०] मोतीचूर का लड्डू।

मुक्ता-लता—स्त्री० [स० तृ० त०] मोतियों की लडी या माला।

मुक्तावली—स्त्री० [स० मुक्ता-आवली, ष० त०] मोतियों की लडी।

मुक्ता-स्फोट—पु० [स० च० त०] सीप।

मुक्ताहल*—पु०=मुक्ताफल (मोती)।

मुक्ति—स्त्री० [स० √मुच्+क्तिन्] १ मुक्त करने या होने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ किसी प्रकार के जंजाल, झंझट, पाश, बंधन आदि से छुटकारा मिलना। ३ धार्मिक क्षेत्र मे, वह स्थिति जिसमे यह समझा जाता है कि परमात्मा मे मिल जाने के कारण जीव आवागमन या जन्म-मरण के बंधन से छूट जाता है। मोक्ष। (इमैन्सिपेशन) ४. मृत्यु के फलस्वरूप सासारिक कष्ट-भोगों की होनेवाली समाप्ति अथवा उनसे मिलनेवाला छुटकारा। ५. दायित्व, देन आदि से छूटने की अवस्था या भाव।
†स्त्री०=मोती।

मुक्तिका—स्त्री० [स० मुक्ता+कन्+टाप्, ह्रस्व, इत्व] मोती।

मुक्तिक्षेत्र—पु० [स० ष० त०] १. काशी या वाराणसी जो प्राणियों को मुक्ति देनेवाली कही गई है। २ कावेरी नदी के तट पर का वकुलारण्य नामक तीर्थ।

मुक्ति-तीर्थ—पु० [स० ष० त०] १. वह तीर्थ जहाँ प्राणी को मुक्ति मिलती हो। २ काशी। ३ विष्णु।

मुक्तिधाम (न्)—पु० [सं० ष० त०] १. तीर्थ-स्थान। २. स्वर्ग। ३. परलोक।

मुक्ति-प्रद—पुं०[सं० ष० त०] हरा मूँग।
वि० मुक्ति देनेवाला।

मुक्ति-फौज—स्त्री०=मुक्ति-सेना।

मुक्ति-मंडप—पुं० [सं० ष० त०] काशी क्षेत्र मे विश्वनाथ का मंदिर।

मुक्ति-मुक्त—पुं०[सं० तृ० त०] शिलारस।

मुक्ति-सेना—स्त्री०[सं० ष०त०] ईसाई त्यागियों या विरक्तों का एक सघटन जिसका उद्देश्य लोगो मे ईसाई धर्म और नीति का प्रचार करना तथा लोक-सेवा के दूसरे अनेक काम करना है। (सैल्वेशन आर्मी)

मुक्ति-स्नान—पुं० [सं० स० त०] ग्रहण आदि का मोक्ष हो जाने पर किया जानेवाला स्नान।

मुखंडा—पुं०[हिं मुख+अंडा (प्रत्य०)] १ कुछ विशिष्ट बरतनो मे किया जानेवला वह छेद जिसमे टोंटी लगाई जाती है। २. टोंटी का छेद।

मुख—पुं०[सं०√खन् (खोदना) +अच्, डित, मुट् आगम] १. जीव या प्राणी का मुँह। (देखें) २. चेहरा। ३ दरवाजा। ४ किसी पदार्थ का अगला या ऊपरी खुला भाग। ५ आदि। आरंभ। शुरू। ६ आगे, पहले या सामने आनेवाला अंश या भाग। जैसे—रजनी-मुख= सन्ध्या का समय। ७ साहित्य मे, रूपक की पाँच सन्धियो में से पहली सधि जिसका आविर्भाव बीज, नाम, अर्थ, कृति और आरम्भ नामक अवस्थाओ का योग होने पर माना जाता है। ८ नाटक का पहला शब्द। ९ शब्द। १०. नाटक। ११. वेद। १२. जीरा। १३ बड़हर। १४. मुरगाबी।
वि० मुख्य। प्रधान।

मुख-क्षुर—पुं०[सं० ष० त०] दाँत।

मुख-खुर—पुं०=मुखक्षुर।

मुख-गंधक—पुं०[म० ब० सं०, कप्] मुँह मे दुर्गंध उपजानेवाला अर्थात् प्याज।

मुख-चपल—वि० [सं० सुप्सुपा स०] १. जो बहुत अधिक या बढ़-बढ़कर बोलता हो। वाचाल। मुँहजोर। २ कटुभाषी।

मुख-चपलता—स्त्री० [सं० मुखचपल +तल्-टाप्] मुख-चपल होने की अवस्था या भाव।

मुखचपला—स्त्री०[सं० मुखचपल +टाप्] आर्याछंद का एक भेद।

मुख-चूर्ण—पुं०[सं० ष० त०] मुँह पर मलने का चूर्ण। (पाउडर)

मुखज—वि०[सं० मुख√जन् (उत्पन्न करना)+ड] मुख या मुँह से उत्पन्न।
पुं० ब्राह्मण जिसकी उत्पत्ति ब्रह्मा के मुख से कही गई है।

मुखड़ा—पुं०[सं० मुख+हिं० डा (प्रत्य०)] १. मनुष्य का वह अंग जिसमें दोनों आँखें, नाक, गाल, माथा, मुँह, ठुड्डी आदि अवयव होते हैं। चेहरा। २. बहुत ही सुन्दर मुख के लिए प्रशंसा और प्रेम का सूचक शब्द।

मुखतार—पुं०[अ० मुख्तार] [भाव० मुखतारी] १ वह व्यक्ति जिसे किसी से विशिष्ट अवसरों पर कुछ विशेष प्रकार के काम प्रतिनिधि के रूप मे करने का वैध अधिकार मिला होता है। २. एक प्रकार के कानूनी सलाहकार जो पद में वकील से छोटे होते हैं।

मुखतार आम—पुं० [अ० मुख्तारेआम] वह प्रतिनिधि जिसे किसी तरफ से सब प्रकार के कार्य विशेषत· आर्थिक या कानूनी कार्य करने का अधिकार प्राप्त हो।

मुखतारकार—पुं० [अ० मुख्तारे+फा० कार] [भाव० मुखतारकारी] कर्मचारी। कारिदा।

मुखतारकारी—स्त्री०[हिं० मुखतारकार+ई (प्रत्य०)] १. मुखतारकार का काम, पद या भाव। २. दे० 'मुखतारी'।

मुखतार-खास—पुं० [अ० मुख्तारे+फा० खास] वह जिसे किसी विशिष्ट कार्य या मुकदमे के लिए मुखतार या प्रतिनिधि बनाया गया हो।

मुखतारनामा—पुं०[अ० मुख्तार+फा० नाम.] १. वह पत्र जिसमें कोई आधिकारिक या वैध रूप से किसी को अपना मुखतार नियुक्त करता हो। २ वह अधिकार-पत्र जिसके अनुसार कोई पेशेवर मुखतार कोई मुकदमा लड़ने के लिए मुखतार के रूप में नियुक्त किया जाता है।

मुखतारी—स्त्री०[अ० मुख्तारी] १. मुख्तार अर्थात् प्रतिनिधि होने की अवस्था या भाव। २. मुखतार का पद या पेशा। ३. प्रतिनिधित्व। ४ एक तरह की कानूनी परीक्षा जिसे पारित करने पर मुखतार के रूप में छोटी अदालतों में मुकदमे लड़ने का अधिकार प्राप्त होता है।

मुखताल—पुं०[हिं० मुख+ताल] गीत का पहला पद। टेक।

मुखदूषण—पुं० [सं० मुख√दूष (दूषित करना)+णिच् +ल्यु—अन] प्याज।

मुखदूषिका—स्त्री०[सं० ष० त०] मुँहासा।

मुखदूषी(षिन्)—पुं० [सं० मुख√दूष् (दूषित करना)+णिच् , णिनि दीर्घ न लोप]लहसुन।

मुख-देखा†—वि०=मुँह-देखा।

मुख-धावक—पुं० [सं०] कोई ऐसी चीज जो मुँह के भीतरी भाग (जीभ, तालू, दाँत आदि) साफ करने के काम आती हो। (माउथ वाश)

मुख-धौता—स्त्री०[सं० ब० स०]१. भारगी। २ ब्राह्मण-यष्टिका।

मुख-पट—पुं०[सं० मध्य० स०]१. घूँघट। २. नकाब।

मुख-पत्र—पुं०[सं०उपमि०स०] किसी सस्था या दल का वह पत्र जिसमें उसके सिद्धान्तो तथा मतो का प्रकाशन मुख्य रूप से होता है। (आर्गन)

मुख-पान—पुं०[हिं० मुख+पान] ताले के ऊपरी आवरण का पान के अकार का धातु का वह टुकड़ा जिसमे प्राय· ताली लगाने के लिए छेद बना होता है।

मुख-पिंड—पुं०[सं० ष० त०]१. कौर। ग्रास। २. मृत व्यक्ति की अत्येष्टि क्रिया से पहले दिया जानेवाला एक तरह का पिंड।

मुख-पूरण—पुं०[सं० मुख√पूर् (पूर्ण करना)+णिच् ल्यु—अन] १ मुँह साफ करने के लिए किया जानेवाला कुल्ला। २. उतना पानी जितना एक बार कुल्ला करने के लिए मुँह से लिया जाय।

मुख-पृष्ठ—पुं०[सं० उपमि०स०] किसी ग्रंथ या पुस्तक का सबसे ऊपर वाला पृष्ठ जिसमें उस पुस्तक तथा उसके लेखक का नाम छपा होता है। (टाइटिल पेज)

मुख-प्रक्षालन—पुं०[सं० ष० त०] मुँह धोना या साफ करना।

मुखप्रिय—वि०[सं० मुख√प्री (तृप्त करना) +क, उप० स०] स्वादिष्ट।
पुं०१. नारंगी। २. ककड़ी।

मुखफ्फफ—पुं०[अ० मुखफ्फ़फ़] किसी चीज का लघु, संक्षिप्त या ह्रस्व रूप। जैसे—हाथ का मखफ्फ़फ हथ (हथकरघा)।
वि० लघु, संक्षिप्त स्वरूप मे होनेवाला।

मुख-बंद—पुं० [स० मुख+हिं० बद]१ घोडो का एक रोग जिसमे उनका मुँह बन्द हो जाता है।

मुख-बंध (न्)—पुं० [स० ष० त०] किसी ग्रथ की प्रस्तावना या भूमिका।

मुखबिर—पुं०[अ० मुख्बिर] [भाव० मुखबिरी] गुप्त रूप मे समाचार लाने या खबर देनेवाला व्यक्ति। जासूस।

मुखबिरी—स्त्री०[अ० मुख्बिरी] मुखबिर का काम, पद या भाव।

मुख-भूषण—पुं०[स० ष० त०] पान।

मुखभेड़†—स्त्री०=मुठभेड।

मुखमसा†—पुं० [अ० मख्मसः=विकलता या कठिनता] झगड़ा। बखेड़ा।

मुख-मैथुन—पुं०[स०] मैथुन या संभोग का एक अप्राकृतिक और अस्वाभाविक प्रकार जिसमे उपभोग्य बालक अथवा स्त्री के मुख मे लिंगेद्रिय रखी जाती है।

मुख-मोद—पुं०[स०मुख√मुद् (हर्ष)+णिच्+अण् उप० स०]१ सलई का पेड। शल्लकी। २ काला सहिजन।

मुखम्मस—वि०[अ० मुखम्मस] जिसमे पाँच कोने या अग हो। पँचकोना।
पुं० वह पद्य जिसके पाँच चरण हो। (उर्दू)

मुख-यंत्रण—पुं०[स० ष० त०] घोडे, बैल आदि की लगाम।

मुखर—वि०[स० मुख+रा (देना)√क] १ बहुत बोलनेवाला। बकवादी। वाचाल। २ बहुत बढ़कर या उद्दडतापूर्वक बातें करनेवाला। ३ व्यर्थ बहुत सी बातें कहनेवाला। बकवादी। ४ कटु-भाषी। ५ प्रधान। मुख्य। ६ बोलता हुआ। मुखरित।
पुं०१ कौआ। २ शख।

मुखरित—भू० कृ०[स०मुखर+क्विप्+क्त] अच्छी तरह बोलता या ध्वनि करता हुआ। ध्वनियो या शब्दो से युक्त।

मुख-रोग—पुं०[स० ष० त०] दाँतों, मसूडो, होंठो आदि मे होनेवाले रोगो की संज्ञा।

मुख-लांगल—पुं०[स० ब० स०] सूअर।

मुखलिस—वि०[अ० मुख्लिस] [भाव० मुखलिसी]१ जो खलास हो चुका हो। मुक्त। २ निश्छल। ३ निष्ठ। सच्चा। ४ अकेला। ५. अविवाहित।

मुख-लेप—पुं० [सं० ष० त०] १ शोभा के लिए मुख पर किया जानेवाला लेप। २ एक प्रकार का मुख-रोग।

मुख-लेपन—पुं० [स० ष० त०] मुख पर लेप करना या लगाना।

मुख-वल्लभ—वि०[स० ष० त०] स्वादिष्ट।
पुं० अनार का पेड।

मुख-वाद्य—पुं०[स० ष०त०] वह बाजा जो मुँह से फूँककर बजाया जाता हो।

मुख-वास—पुं०[स०मुख√वास(सुगंधित करना)+अण्+णिच्+उप०स०] १. गंधतृण। २. तरबूज की लता।

मुख-वासन—पुं०[स० मुख√ वास्+णिच्+ल्यु—अन, उप० स०]मुँह की दुर्गंध दूर करके उसे सुगन्धित करने के उद्देश्य से मुँह मे रखा जानेवाला चूर्ण या औषध।

मुख-विष्ठा—स्त्री०[स० ब० स०] तिल-चट्टा (कीडा)।

मुख-शुद्धि—पुं०[स० ष० त०]१ मुख को शुद्ध करने की क्रिया या भाव। २ बोलचाल मे, भोजन आदि के उपरात इलायची, पान, सुपारी आदि खाना।
विशेष—हमारे यहाँ इलायची, पान, सुपारी आदि का सेवन मुख को शुद्ध करने के लिए किया जाता है।

मुख-शोधन—पुं०[स० ष० त०]१ मुख को शुद्ध करना। मुखशुद्धि। २ [मुख√शुध्+णिच्+ल्यु—अन, उप० स०] मुख शुद्ध करने के निमित्त खाया जानेवाला पदार्थ। जैसे—पान, सुपारी आदि। ३ दारचीनी।
वि० चरपरा।

मुखशोधी (धिन्)—वि० [स० मुखशुध् (शुद्ध करना)+णिच्+णिनि दीर्घ, नलोप, गुण] मुख को शुद्धि करने अथवा उसे शुद्ध बनानेवाला।
पुं० जबीरी नीबू।

मुख-शोष—पुं०[स० ष० त०] १ मुख के सूखे हुए होने की अवस्था या भाव। २ [ब० स०] वह कारण या तत्त्व जिसके फलस्वरूप मुख सूखा रहता हो। ३ प्यास।

मुख-श्री—स्त्री० [स० ष० त०] चेहरे की रौनक, शोभा या सौंदर्य।

मुख-संधि—स्त्री० दे० 'मुख' के अतर्गत साहित्यिक सधि।

मुख-संभव—पुं०[स० ब० स०]१ ब्राह्मण। २ पुष्करमूल।
वि० मुँह से निकला हुआ।

मुख-सुख—पुं०[स० ष०त०] वह स्थिति जिसमे व्यक्ति किसी शब्द का उच्चारण अपने मुख की गठन तथा सुविधा के अनुसार ऐसे रूप मे करता है जो वर्णोच्चारण से कुछ न कुछ भिन्न होता है।

मुखस्थ—वि०[स० मुख√स्था (ठहरना)+क] १ जो मुँह-जबानी याद हो। कठस्थ। २ मुख मे आया या रखा हुआ।

मुख-स्राव—पुं०[स० ष० त०] १. थूक। लार। २ मुँह से निरन्तर लार गिरने का रोग।

मुखांग—पुं० [स० मुख-अग, कर्म० स०] वह जो किसी व्यक्ति की ओर से बोल रहा हो जो स्वय किसी कारण से चुप रहना चाहता हो। (माउथपीस) जैसे—आज तो आप उनके मुखाग होकर बाते कर रहे है।

मुखाग्नि—स्त्री० [स० मुख-अग्नि, मध्य० स०] १. चिता पर रखे हुए शव के मुख मे रखी जानेवाली अग्नि। २. इस प्रकार मुँह मे अग्नि रखने की प्रथा। ३ [ब० स०] दावानल। ४. ब्राह्मण।

मुखाग्र—पुं०[स० मुख-अग्र, ष० त०]१ किसी पदार्थ का अगला भाग। २ होठ।
वि० जो जबानी याद हो। कठस्थ।

मुखातिब—वि०[अ० मुख़ातिब] १ जिससे कुछ कहा जाय। सबोध्य। २ किसी की ओर (बात कहने या सुनने, देखने आदि को) प्रवृत्त।
वि० [अ० मुखातिब] सबोधन कर्ता।

मुखापेक्षक—वि०=मुखापेक्षी।

मुखापेक्षा—स्त्री० [सं० मुख-अपेक्षा, ष० त०] विवश होकर दूसरों का मुँह ताकना। (सहायता आदि के लिए)

मुखापेक्षी (क्षिन्)—पुं० [सं० मुखापेक्ष+इनि] किसी के मुँह की ओर ताकने अर्थात् उसकी कृपा की अपेक्षा रखनेवाला। दूसरों की कृपा पर अवलम्बित रहनेवाला।

मुखामय—पु० [सं० मुख-आमय, ष० त०] मुख मे होनेवाले रोग। मुखरोग।

मुखारविंद—पु० [सं० मुख-अरविन्द, उपमित स०] ऐसा सुन्दर मुख जो देखने में कमल के समान हो। मुख-कमल। (प्राय बड़ो के सबध मे, आदरसूचक)

मुखारी—स्त्री० [सं० मुख] १ मुख की गठन या बनावट। २ आकार-प्रकार, रूप आदि का सूचक किसी वस्तु का ऊपरी या सामनेवाला भाग। ३ मुख-शुद्धि के लिए कुल्ला-दतुअन आदि करने की क्रिया या भाव। उदा०—दतवनि लै दुहूँ करी मुखारी।—सूर।

मुखालिफ—वि० [अ० मुखालिफ़] १ विरोधी। २ प्रतिद्वंद्वी।
पु० दुश्मन। शत्रु।

मुखालिफत—स्त्री० [अ० मुखालिफ़त] १. मुखालिफ होने की अवस्था या भाव। २. डटकर किया जानेवाला विरोध। ३. शत्रुता।

मुखासमत—स्त्री० [अ०] १. कलह। २ विवाद। ३ शत्रुता।

मुखासव—पु० [सं० मुख-आसव, ष० त०] १. थूक। २. लार।

मुखास्त्र—पु० [सं० मुख-अस्त्र, ब० स०] केकड़ा।

मुखिया—पु० [सं० मुख्य+हिं० इया (प्रत्य०)] १ वह जो अपने वर्ग या समाज मे मुख्य या प्रधान हो। २ ब्रिटिश शासन मे किसी गाँव में प्रधान बनाया हुआ वह व्यक्ति जिसे कुछ अधिकार प्राप्त होते थे। ३. वल्लभ सप्रदाय का वह कर्मचारी जो मूर्ति का पूजन आदि करता है। ४. स्वतत्र भारत मे किसी गाँव या मडल के चुने हुए प्रतिनिधियो का प्रधान या सभापति।

मुखी (खिन्)—वि० [सं० मुख+इनि] १ मुख से युक्त। मुखवाला। (यौ० के अन्त मे) जैसे—नाहरमुखी, सूर्यमुखी आदि। उदा०—जो देखिअ सो हँसता मुखी।—जायसी। २ किसी विशिष्ट ओर या दिशा मे मुख रखनेवाला। जैसे—अन्तर्मुखी, सूर्यमुखी, सर्वतो-मुखी।

मुखुली—स्त्री० [सं० मुख्+उलच्+ङीप्] एक बौद्ध देवी।

मुखौटा—पु० [हिं० मुख+औटा (प्रत्य०)] १. मुख का अल्पार्थक रूप। छोट मुँह। २. धातु आदि का मुख के आकार का बना हुआ वह खड जो देवी-देवताओ की मूर्तियो मे उनके मुख पर लगाया जाता है। ३ रूप धारण करने के लिए मुँह की बनाई जानेवाली आकृति। उदा०—अत मनुष्य चाहे जो मुखौटा पहने उसके नीचे सब मनुष्य नगे है।

मुख्तलिफ—वि० [अ० मुख्तलिफ़] १ पृथक। भिन्न। २ अनेक प्रकार का।

मुख्तसर—वि० [अ० मुख्तसर] १ सक्षिप्त। घटाया या छोटा किया हुआ। २ सक्षेप में लाया हुआ। ३. अल्प। थोडा।
पद—मुख्तसर में—सक्षेप मे।

मुख्तार†—पु० 'मुखतार'। ('मुख्तार' के अन्य यौ० के लिए देखें 'मुखतार' के यौ०)

मुख्य—वि० [सं० मुख+यत्] [भाव० मुख्यता] १. जो सब से आगे बढ़ा हुआ या ऊपर और मुख के रूप में हो। प्रधान। खास। २. (अन्यों की अपेक्षा) अधिक आवश्यक महत्त्वपूर्ण या सारमत। जैसे—अपने भाषण मे उन्होने मुख्य बात यही कही कि.. । ३ अपने वर्ग का सबसे बड़ा। जैसे—मुख्य मंत्री, मुख्य न्यायाधीश।
पुं० १. यज्ञ का पहला कल्प। २ वेदों का अध्ययन और अध्यापन। ३ अमांत मास।

मुख्य-चांद्रमास—पु० [सं० कर्म० स०] चाद्र मास के दो भेदो में से एक जो शुक्ल प्रतिपदा से आरभ होकर अमावस्या को समाप्त होता है। इसी को 'अमात' भी कहते हैं। (दूसरा) भेद 'गौण चांद्र मास' या 'पूर्णिमांत' कहलाता है।

मुख्यतः (तस्)—अव्य० [सं० मुख्य√तस्] मुख्य रूप से।

मुख्यता—स्त्री० [सं० मुख्य+तल्+टाप्] मुख्य होने की अवस्था, गुण या भाव।

मुख्य-मंत्री (त्रिन्)—पु० [सं० कर्म० स०] भारतीय गणतंत्र के किसी राज्य (प्रात) का सबसे बडा मत्री। राज्य के मत्रियो मे सबसे बडा मत्री। (चीफ मिनिस्टर)

मुख्य-सर्ग—पु० [सं० कर्म० स०] स्थावर सृष्टि।

मुख्याधिष्ठाता (तृ)—पु० [सं० मुख्य-अधिष्ठातृ, कर्म० स०] किसी स्थान विशेषत शिक्षा-सस्था का प्रधान अधिकारी और व्यवस्थापक। जैसे—गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता।

मुख्यालय—पु० [सं० मुख्य-आलय, कर्म० स०] १ किसी सस्था का केन्द्रीय और प्रधान स्थान। प्रधान कार्यालय। २ किसी बड़े अधिकारी या व्यक्ति का मुख्य निवास स्थान। (हेड क्वार्टर)

मुगट†—पु०=मुकुट।

मुगतना†—अ० [सं० मुक्त] मुक्त होना।
स० मुक्त करना।

मुगता†—पु०=मुक्ता।

मुगदर—पु० [सं० मुद्गर] जोडी। कसरत करने के लिए काठ के बड़े टुकड़ो की वह जोडी जो दोनो हाथो मे लेकर इधर-उधर और ऊपर-नीचे घुमाई जाती है।
क्रि० प्र०—फेरना।—हिलाना।

मुगधारी—वि० [सं० मुग्ध] मूढ। मूर्ख।

मुगना†—पु०=मुनगा (सहिजन)।

मुगरा†—पु०=मोगरा।

मुगरेला†—पु० मुगरैला।

मुगल—पु० [तु० मुग़ुल] [स्त्री० मुगलानी] १ मंगोल देश का निवासी। २ उक्त के वे वशज जो तातार देश मे बसकर मुसलमान हो गए थे, और जिनके एक राज-वश ने अगरेजो के भारत आने से पहले ढाई-तीन सौ वर्षों तक भारत मे राज्य किया था। ३. मुसलमानों के चार वर्गों मे से एक वर्ग। ४ उक्त जाति का कोई व्यक्ति। ५ आज-कल भ्रमवश काबुल और उसके आस-पास के पठान।

मुगलई—वि० [तु० मुग़ुल+हिं० ई (प्रत्य०)] १ मुगल-सबधी। २. मुगलो मे होनेवाला। ३ मुगलो का-सा। मुगलो की तरह का। जैसे—मुगलई पाजामा।

स्त्री० मुगलों की सी अकड़, ऐंठ या घमंड।

मुगलक—वि० [अ०] १ बहुत कठिन या मुश्किल। २ छिपा हुआ। अव्यक्त।

मुगल-पठान—पु० [हिं०] १. एक प्रकार का खेल जो १६ गोटियों से चौकोर खींची हुई रेखाओं पर खेला जाता है। २. एक प्रकार की आतिशबाजी जिसमे दो पुतले आपस मे लड़ते हुए दिखाये जाते हैं।

मुगलाई—स्त्री० [हिं० मुगल+हिं० आई (प्रत्य०)] १ वह कपड़ा जिसमें सुनहला या रुपहला गोटा और पट्ठा टँका हो। २ दे० 'मुगलई'।

वि०=मुगलई।

मुगलानी—स्त्री० [हिं० मुगल+आनी (प्रत्य०)] १ मुगल जाति की स्त्री। २ मुसलमान रईसों के यहाँ कपड़े सीनेवाली स्त्री। ३. दासी। मजदूरनी।

मुगलिया—वि० [फ़ा० मुग़ुलीय] १ मुगलों का। जैसे—मुगलिया खानदान। २ मुगलों की तरह का। मुगलों का-सा। मुगलई।

मुगली—स्त्री० [हिं० मुगल+ई (प्रत्य०)] पसली का रोग।

वि०=मुगलिया (मुगलई)।

मुगवन—पु० [स० वन-मुद्ग] मोठ।

मुगवा—स्त्री० [स०] अतिबला। मयूरवल्ली।

मुगालता—पु० [अ० मुग़ालत] धोखा।

क्रि० प्र०—खाना।—देना।—मे डालना।

मुग्ध—वि० [स०√मुह् (मूर्च्छित होना)+क्त] [भाव० मुग्धता] १ जो मूर्च्छित या स्तब्ध हो गया हो। २. मूढ़। मूर्ख। ३ जो किसी पर इतना आसक्त या लुब्ध हो गया हो कि सुध-बुध खो बैठा हो। ४ सीधा-सादा। सरल। ५ निरीह। ६ नया। नवीन। ७ मनोहर। सुन्दर।

मुग्धता—स्त्री० [स० मुग्ध+तल्+टाप्] १ मुग्ध होने की अवस्था या भाव। २. सुन्दरता।

मुग्ध-बुद्धि—वि० [स० ब० स०] मूर्ख।

मुग्धम—वि० [स० मुग्ध] १ सकेत रूप मे कहा हुआ। २ जिसका भेद या रहस्य और लोग न जानते हों। छिपा हुआ। गुप्त। ३ चुप। मौन।

पु० जूए में किसी बाजी की वह स्थिति, जिसमे किसी पक्ष की न जीत होती है न हार।

मुग्धा—स्त्री० [स० मुग्ध+टाप्] साहित्य मे वह नायिका जिसके नवयौवनाकुर निकल रहे हों परन्तु जिसमें अभी काम चेष्टा का भाव उत्पन्न न हुआ हो। इसके ज्ञात यौवना और अज्ञात यौवना दो उपभेद हैं।

मुचंगड़—वि० [हिं० मुच्चा+अगड़ (प्रत्य०)] मोटा और भद्दा। जैसे—मुचगड़ रोटी।

मुचक—पु० [स०√मुच् (छोड़ना)+ण्वुल्, वु—अक] लाख। लाह। स्त्री०=मोच।

मुचकुंद—पु० [स०] १. माधाता का पुत्र जिसने असुरो से युद्ध करके देवताओं से बहुत दिनों तक सोने का वर प्राप्त किया था। २ सुगंधित फूलोंवाला एक प्रकार का बड़ा वृक्ष जिसके पत्ते कालम के पत्तो की तरह बड़े-बड़े होते है।

मुचलका—पु० [तु० मुचल्का] आज-कल विधिक क्षेत्र मे वह प्रतिज्ञा-पत्र जो किसी अभियुक्त या अपराधी से इसलिए लिखाया जाता है कि भविष्य मे वह विधि-विरुद्ध काम करने पर कुछ विशिष्ट अर्थदंड से दंडित होगा, और उस पर फिर मुकदमा भी चल सकेगा।

क्रि० प्र०—देना।—लिखना।—लिखाना।—लेना।

मुचिर—पु० [स०√मुच् (त्याग करना)+इरन्] १ धर्म। २ वायु। ३ देवता।

वि० उदार।

मुचुकुंद—पु० [स०] १ सूर्यवशी राजा माधाता का पुत्र। २. एक प्रकार का वृक्ष जिसकी छाल और फूल दवा के काम आते हैं। मुचकुद।

मुच्चा†—पु० [देश०] मास विशेषत कच्चे मास का टुकड़ा।

मुच्छल—वि० [हिं० मूँछ] १ मूँछोवाला। २ बड़ी बड़ी मूँछोवाला।

मुछंदर†—वि०[हिं० मूँछ] १ जिसको मूँछें बड़ी-बड़ी हों। २ फलतः देखने में भद्दा और भोंडा।३. मूर्ख। (व्यंग्य)

*पु०=मत्स्येंद्रनाथ।

मुछा†—स्त्री०=मूँछ।

उप० मूँछ का वह रूप जो उपसर्ग की भाँति समस्त पदों के आरंभ में लगता है। जैसे—मुछकटा, मुछमुड़ा।

मुछ-कटा—वि०[हिं० मूँछ+काटना] जिसकी मूँछें कटी या काट दी गई हों।

मुछमुंडा—वि० [हिं० मूँछ+मूँड़ना] जिसकी मूँछें मूँडी हुई हों। सफाचट।

मुछाकड़ा- वि० =मुच्छल।

मुछाना†—अ० [स० मूर्च्छा+हिं० ना (प्रत्य०)] मूर्च्छित होना।

स०=मूर्च्छित करना।

मुछियल—वि०=मुच्छल।

मुजक्कर—वि० [अ०मुजक्कर] जिसमे पुरुष या नर के गुण, विशेषताएँ आदि हों। पुरुष-सबधी। पुंल्लिग।

मुजतर—वि० [अ० मज्तर] बेचैन। विकल।

मुजतहिद—वि० [अ० मुज्तहिद] परिश्रमी।

पु० शिया सम्प्रदाय का वह व्यक्ति जो धार्मिक विषयो पर अपना निर्णय देता है।

मुजदा—पु० [फ़ा० मुज्द] शुभ सवाद। अच्छी खबर।

मुजफ्फर—वि० [अ० मुज़फ़्फ़र] विजयी। विजेता।

मुजमिल†—अव्य० [अ०मिन् जुम्ल] १ सब मिलाकर। कुल मिलाकर। २ सबमें से।

पु० सख्याओं का जोड़। योग।

मुजम्मा—पु० [अ० मुजम्म] चमड़े या रस्सी का वह फेरा जो घोड़े को आगे बढ़ने से रोकने के लिए उसकी गामची या दुमची मे पिछाड़ी की रस्सी के साथ लगा रहता है।

क्रि० प्र०—बाँधना।—लगाना।

मुजराई†—पु०=मुजराई।

मुजरा—वि० [अ० मुज्रा] १. जो जारी किया गया हो। २ (धन) जो प्राप्य होने के कारण किसी देय मे से काट लिया जाय। जैसे—हमारे दस रुपए इसमे से मुजरा कर दो।

पु० [अ०] १ किसी बड़े के सामने झुककर किया जानेवाला

अभिवादन। २. वह गाना जो महफिल आदि में वेश्या बैठकर गाती हो।

मुजराई—पुं० [फा० मुजरा] १. वह जो राजा, रईसों आदि के सामने झुककर मुजरा अर्थात् अभिवादन करता हो। जैसे—दरबार में बहुत से मुजराई उपस्थित थे। २. वह जो बड़े आदमियों को नित्य आकर सलाम कर जाने के बदले में ही वेतन पाता हो।

स्त्री० [हिं० मुजरा+ई (प्रत्य०)] १. रकम मुजरा करने अर्थात् काटने की क्रिया या भाव। २. मुजरा की हुई अर्थात् काटकर घटाई हुई रकम।

मुजराकंद—पुं० [सं० मुजर] एक प्रकार का कंद। मुंजात।

मुजरिम—वि० [अ० मुज्रिम] १. जिसने कोई जुर्म या अपराध किया हो। २. जिस पर जुर्म या अपराध का आरोप हुआ या लगाया गया हो। अभियुक्त।

मुजर्रद—वि० [अ०] १. अकेला। एकाकी। २ बिन-ब्याहा। कुँआरा। ३. संसार-त्यागी। विरक्त।

मुजर्रब—वि० [अ०] १. जो तजरुबा करने पर ठीक जान पड़ा हो। २. आजमाया हुआ। परीक्षित। जैसे—मुजर्रब दवा।

मुजल्लद—वि० [अ०] (पुस्तक) जिस पर जिल्द बँधी या मढ़ी हो। जिल्ददार। जिल्द से युक्त।

मुजव्वज (ज़)—वि० [अ० मुजव्वज़] १. तजवीज किया हुआ। प्रस्तावित। २. निर्णीत।

मुजव्विज—पुं० [अ०] तजवीज करनेवाला। प्रस्तावक।

मुजस्सिम—वि० [अ०] १. जो जिस्म या शरीर के रूप में हो। २. शरीरधारी। साकार।

अव्य० १ प्रत्यक्ष रूप से। स्पष्टतः। २ शरीर सहित। स-शरीर। ३ शरीर धारी के रूप में।

मुजस्सिमा—पुं० [अ०] मूर्ति। प्रतिमा।

मुजहिर—वि० [अ० मुज्हिर] जाहिर अर्थात् प्रकट या स्पष्ट करनेवाला। पुं० १ गवाह। साक्षी। २. गुप्तचर।

मुजाफर—वि० [अ० जाफ़रान से] जिसमें जाफरान या केसर मिला हुआ हो। केसरिया।

पुं० एक प्रकार का मीठा पुलाव जिसमे केसर यथेष्ट मात्रा मे पडा होता है। केसरिया भात। (मुसल०)

मुजायका—पुं० [अ० मुज़ायक] हानि। नुकसान।

मुजारा—वि० [अ० मुज़ारअ] समान। तुल्य।

पुं० कृषक। खेतिहर।

मुजारिया—वि० [अ०] जो जारी किया या कराया गया हो। जैसे—मुजारिया डिगरी।

मुजावर—पुं० [अ० मुजाविर] [भाव० मुजावरी] १. पड़ोसी। प्रतिवेशी। २. वह फकीर जो दरगाह की चढ़त लेता हो।

मुजावरी—स्त्री० [अ० मुजाविरी] मुजावर का कार्य, पद या पेशा।

मुजाहिद—वि० [अ०] १. पराक्रमी। २. विधर्मियों से युद्ध करनेवाला।

मुजाहिम—वि० [अ०] आपत्ति, रोक-टोक या हस्तक्षेप करनेवाला।

मुजाहिमत—स्त्री० [अ०] १. रोकने या बाधा देने की क्रिया या भाव। रोक-टोक। बाधा। २. आपत्ति।

मुज़िर—वि० [अ०] हानिकारक।

मुझ—सर्व० [हिं० मुझे] सर्व० 'मैं' का वह रूप जो उसे कर्ता और संबंध कारक की विभक्तियों के अतिरिक्त अन्य कारकों की विभक्तियाँ लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—मुझको, मुझसे, मुझपर आदि।

विशेष—जब इस शब्द का प्रयोग सार्वनामिक विशेषण के रूप में होता है तब इसके साथ लगनेवाली विभक्ति से पहले वक्ता से संबद्ध कोई विशेषण भी आ जाता है। जैसे—(क) मुझ गरीब पर यह बोझ मत रखो। (ख) मुझ दुखिया को इतना मत सताओ। (ग) मुझ रोगी से यह आशा मत रखो। ऐसी अवस्था में इसका प्रयोग संबंधकारक में भी होता है। जैसे—मुझ अभागे का यहाँ तुम्हारे सिवा और कौन है।

मुझे—सर्व० [सं० मध्यम्; प्रा० मज्झम] सर्व० 'मैं' का कर्म और संप्रदान में होनेवाला रूप जो उक्त कारको की विभक्तियो से युक्त समझा जाता है।

मुटकना—वि० [हिं० मोटा+कना (प्रत्य०)] आकार मे छोटा या साधारण और सुंदर। जैसे—मुटकना बाग।

मुटका—पुं० [हिं० मोटा ?] एक प्रकार का रेशमी वस्त्र।

वि० [स्त्री० मुटकी] मोटा। (व्यंग्य)

मुटकी—स्त्री० [देश०] कुलथी नामक अन्न। खुरथी।

वि० स्त्री० हिं० 'मुटका' का स्त्री०।

मुट-मरदी—स्त्री० [हिं० मोटा+मरद] वह स्थिति जिसमे मनुष्य अच्छी दशा मे पहुँचकर अभिमानी हो जाता और दूसरों को उपेक्षा की दृष्टि से देखने लगता है।

मुटमुरी—पुं० [देश०] भादों मे होनेवाला एक प्रकार का धान।

मुटरी—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की चिड़िया जिसका सिर, गरदन और छाती काली तथा बाकी शरीर कत्थई होता है। यह कौए से कहीं बढ़कर चालाक और चोर होती है।

†स्त्री०=मोटरी (छोटी गठरी)।

मुटाई—स्त्री०=मोटाई।

मुटाना—अ० [हिं० मोटा] १. शारीरिक स्थूलता मे वृद्धि होना। मोटा हो जाना। २ किसी प्रकार की विशेषता के कारण अभिमानी होना।

स० किसी को मोटा करना।

मुटापा—पुं० [हिं० मुटाना+आपा (प्रत्य०)] १ शरीर के मोटे और भारी होने की अवस्था या भाव। २. किसी प्रकार की समृद्धि के कारण मन मे होनेवाला अभिमान या शेखी।

क्रि० प्र०—चढ़ना।

मुटार—स्त्री० [?] १ डुबकी। गोता। २ शरीर को गठरी की तरह बनाने की एक मुद्रा जो जल में कूदने के लिए बनाई जाती है। (बुन्देल०) उदा०—तैरने के लिए मुटार लगायगा।—वृंदावनलाल वर्मा।

मुटासा—वि० [हिं० मोटा+आसा (प्रत्य०)] [स्त्री० मुटासी] (व्यक्ति) जो कुछ या थोड़ा धनवान् होते ही अभिमानपूर्वक आचरण करने लगा हो।

मुटिया—पुं० [हिं० मोटा=गठरी+इया (प्रत्य०)] बोझ या गट्ठर ढोनेवाला मजदूर।

मुट्ठा—पुं०[हिं० मूठ] [स्त्री० अल्पा० मुट्ठी] १ किसी चीज का उतना बाँधा या लपेटा हुआ अंश जो हाथ की मुट्ठी मे पकड़कर ले जाया जा सकता हो। जैसे—घास-फूस का मुट्ठा, कागजों या सूत का मुट्ठा। २ किसी चीज की पूरी और भरपूर भरी मुट्ठी। जैसे—मुट्ठा भर चावल। ३ किसी चीज का बँधा हुआ पुलिंदा। जैसे—धूप-बत्ती का मुट्ठा। ४ औजार आदि पकड़ने का दस्ता। बेंट। मूठ। ५ धुनियों का वह औजार जिससे रूई धुनते समय ताँत पर आघात किया जाता है। ६ कपड़े की गद्दी जो प्रायः पहलवान आदि बाँहों पर मोटाई दिखलाने या सुंदरता बढ़ाने के लिए बाँधते है।

मुट्ठा-मुहेरा—स्त्री० [देश०] युवा स्त्री। (कहार)

मुट्ठी—स्त्री० [सं० मुष्टिका, प्रा० मुट्ठिआ] १ हथेली की वह मुद्रा या स्थिति जिसमे उँगलियाँ अन्दर की ओर मोड़कर जोर से बंद कर ली जाती हैं।

पद—बँधी मुट्ठी=ऐसी स्थिति जिसमे भीतरी रहस्य और लोगों पर प्रकट न हो सकता हो। जैसे—अभी तो घर की बँधी मुट्ठी है, पर जब चारों भाई अलग हो जायँगे, तब सबका परदा खुल जायगा अर्थात् सबकी भीतरी स्थिति का पता लग जायगा।

मुहा०—(किसी की) मुट्ठी गरम करना=किसी को संतुष्ट या प्रसन्न करने के लिए चुपचाप उसके हाथ मे कुछ रुपये रखना। **(किसी की) मुट्ठी में होना**=पूरी तरह से अधिकार या कब्जे मे होना। जैसे—उसकी चोटी हमारी मुट्ठी मे है, वह कहाँ जा सकता है।

२ उतनी वस्तु जितनी उपरोक्त मुद्रा के समय हाथ मे आ सके। जैसे—एक मुट्ठी आटा साधू को दे दो। ३ उक्त स्थिति मे लाई हुई हथेली के बराबर का विस्तार जिसका प्रयोग ऊँचाई, लंबाई आदि नापने के लिए होता है। जैसे—इसका किनारा मुट्ठी भर और ऊँचा होना चाहिए। ४. किसी के शरीर की थकावट, दर्द आदि दूर करने के लिए उसके अंगों को बार-बार मुट्ठी मे पकड़कर दबाने की क्रिया। चंपी। ५ बच्चों की चुसनी जिसे वे मुट्ठी मे पकड़कर प्रायः चूसते रहते है। ६ घोड़े का दुम और टखने के बीच का भाग।

मुठ-भेड़—स्त्री०[हिं० मुट्ठी+भिड़ना] १ ऐसी लड़ाई जिसमे दो व्यक्ति या दल परस्पर एक दूसरे पर मुट्ठियों से प्रहार करते है। २ दो पक्षों विशेषतः शत्रु पक्षों मे थोड़ी देर के लिए परन्तु जमकर होनेवाली लड़ाई। ३ सामना। भेंट।

मुठिका—स्त्री०[सं० मुष्टिका] १ मुट्ठी। २ घूँसा। मुक्का।

मुठिया—स्त्री० [सं० मुष्टिका] १ उपकरण या औजार का दस्ता। बेंट। २ छड़ी, छाते आदि का वह सिरा जो हाथ मे पकड़ा जाता है। मूठ। ३ रूई धुनते समय धुनकी को ताँत पर आघात करने का लकड़ी का उपकरण।

मुठियाना—स०[हिं० मुट्ठा+आना (प्रत्य०)] १ मुट्ठी मे भरना या लेना। २ बटेरा को लड़ने के लिए उत्तेजित करने के उद्देश्य से बारबार मुट्ठी में भरना। ३ दबाने के उद्देश्य से शरीर के किसी अंग को बार-बार मुट्ठी मे भरना और फिर ढीला छोड़ देना। ४ मुट्ठियों से हलका आघात करना।

मुठी†—स्त्री० =मुट्ठी।

मुठुकी†—स्त्री० =मुट्ठी।

मुड़†—हिं० मूँड का सक्षिप्त रूप जो उसे यौगिक पदो के आरंभ मे लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—मुड़-चिरा।

मुड़क—स्त्री०[हिं० मुड़कना] मुड़कने की क्रिया या भाव।

मुड़कना—अ०[हिं० मुड़ना] १ लचक कर किसी ओर झुकना या घूमना। २ किसी अंग का झटके आदि के कारण किसी ओर तन जाना। जैसे—कलाई या पहुँचा मुड़कना। ३ वापस आना। लौटना। ४ हिचकना। रुकना। ५ चौपट या नष्ट होना। ६ दे० 'मुड़ना'।

मुड़काना—स०[हिं० मुरकना का स० रूप] १ ऐसा काम करना जिसमे कुछ मुड़के। मुड़कने मे प्रवृत्त करना। जैसे—किसी का हाथ मुड़कना। २ वापस लाना। लौटाना। ३ चौपट या नष्ट करना। ४. दे० 'मोड़ना'।

मुड़चिरा—वि०=मूँड-चिरा।

मुड़ना—अ०[सं०मुरण=लिपटना, फेरा खाना, हिं० 'मोड़ना' का अ० रूप] १ किसी सीधी, कड़ी या ठोस चीज का किसी ओर झुक जाना। २ गतिशील अथवा स्थित व्यक्ति या पदार्थ का किसी दूसरी दिशा की ओर उन्मुख या प्रवृत्त होना। ३ किसी धारदार किनारे या नोक का इस प्रकार झुक जाना कि वह आगे की ओर न रह जाय। जैसे—छुरी की धार मुड़ना। ४ वापस आना। लौटना। ५ किसी काम या बात से विरत होना। ६ जमीन पर गिरना। उदा०—बिबेक सहाई सहित सो सुभग संजुग महि मुरे।—तुलसी। ७ जमीन पर इधर-उधर लोटना। ८ संकोच करना। हिचकना। उदा०—गयो सभामन नेकु न मुरा (मुड़ा)।—तुलसी।

मुड़-परना†—पुं० [हिं० मूँड=सिर+पारना=रखना] फेरी करके सौदा बेचनेवालो का बुकचा जिसमे वे बिक्री की चीजे रखते है।

मुड़ला†—वि०=मुड़ा (बिना बालोंवाला)।

मुड़वाना—स०=मुड़वाना (मुँडन कराना)।

मुड़वारी—स्त्री० [हिं० मूँड+वारी (प्रत्य०)] १ मुँडेरा। २ सिरहाना। ३ सिर की ओर का अंश या भाग।

मुड़हा—वि०=मूढ़ (मूर्ख)।

मुड़हर—पुं०[हिं० मूँड+हर (प्रत्य०)] १ साड़ी का वह अंश जो सिर पर पड़ता है। २ सिर का अगला भाग।

मुड़ाहा—वि० =मूढ़।

मुड़ाना—स०१ =मुँडाना। २ =मुँडवाना।

मुड़िया—पुं०[हिं० मूँड़ना+इया (प्रत्य०)] १ वह जिसका सिर मुँडा हुआ हो। २ वह जो सिर मुंडाकर ससार-त्यागी या विरक्त हो गया हो।

स्त्री०[देश०] एक प्रकार की मछली।

मुडेरा†—पुं० =मुँडेरा।

मुड्ढ—पुं०[सं० मूर्द्धा] १ प्रधान या मुख्य व्यक्ति। २ बहुत बड़ा धूर्त। उदा०—घड़ी मिलने की उतनी खुशी न थी जितनी एक मुड्ढ पर विजय पाने की थी।—प्रेमचंद।

मुणणना†—अ०=मुनमुनाना।

मुतंजन—पुं०[फा०] एक प्रकार का खट-मीठा पुलाव।

मुतअइयन—वि०[अ०] तैनात या नियुक्त किया हुआ। (व्यक्ति)

मुतअद्दी—वि०[अ०] १ मर्यादा का उल्लघन या सीमा का अतिक्रमण

करनेवाला। २ सुतहा। सकामक। ३. व्याकरण मे सकर्मक (क्रिया)।

मुतअर्रिज--वि० [अ०] १. अर्ज करनेवाला। २. याचक।

मुतअल्लिक--वि० [अ०] संबद्ध। संबंधित।

अव्य० किसी के विषय या सम्बन्ध में।

मुतअल्लिका--वि० [अ० मतअल्लिक:] संबद्ध।

मुतअल्लिकीन--पुं० [अ०] घर के लोग, बाल-बच्चे और निकटस्थ संबंधी।

मुतअल्लिम--पु० [अ०] १. तालीम पाने अर्थात् इल्म सीखने-वाला। शिक्षार्थी। २ छात्र। ३ पाठक।

मुतअस्सिफ़--वि० [अ०] तास्सुफ अर्थात् पश्चात्ताप करनेवाला। पछतानेवाला।

मुतअस्सिर--वि० [अ०] १ प्रभावित। २ कठिन। दुष्कर।

मुतकल्लिम--वि० [अ०] कलाम अर्थात् भाषण या बात-चीत करने-वाला।

मुतक्का--पु० [हिं० मूँड़+टेक] १ छोटा मुँडेरा। २. खंभा। ३. मीनार। लाट।

मुतदायरा--वि० [अ० मुतदायर] (मुकदमा) जो दायर किया गया हो।

मुतनाजा--वि० [अ० मुतनाज़:] जिसके विषय मे कोई झगडा हो। विवादास्पद।

पु० =तनाजा (झगडा)।

मुतफ़न्नी--वि० [अ०] बहुत तरह के फन या चालाकियाँ जाननेवाला; अर्थात् बहुत बडा धूर्त। चालाक।

मुतफरकात--स्त्री० [अ० मुतफ़र्रिकात] भिन्न-भिन्न पदार्थ।

मुतफ़र्रिक़--वि०[अ०]१ भिन्न-भिन्न। विभिन्न। २. अनेक या कई प्रकार के। विविध।

मुतफ़र्रिकात--स्त्री० दे० 'मुतफरकात'।

मुतबन्ना--वि० [अ० मुतबन्न] (सन्तान) जो औरस न हो, पर गोद लिया गया हो। दत्तक।

पुं० दत्तक पुत्र।

मुतबर्रिक--वि० [अ०] १. बरकत देनेवाला। २. पवित्र।

मुतमौवल--वि० [अ० मुतमव्विल] धनवान्। धनी। सम्पन्न।

मुतर्जिम--पुं० [अ० मुतर्जिम] तरजुमा करनेवाला। अनुवादक।

मुतरद्दिद--वि० [अ०] जिसके मन में बहुत तरद्दुद हो। चिंतित। फिक्रमंद।

मुतरादिफ़--वि० [अ०] १. समानार्थक। २. पर्यायवाची।

अव्य० निरंतर। लगातार।

मुतरिब--पुं० [अ०] गायक। गवैया।

मुतलक़--अव्य० [अ०] कुछ भी। जरा भी। तनिक भी। (केवल नहिक पदों मे) जैसे--इनमे मुतलक नमक नहीं है।

वि० निपट। निरा। बिलकुल।

मुतवक्किल--वि० [अ०] ईश्वर मे विश्वास तथा उस पर भरोसा रखनेवाला।

मुतवज्जेह--वि० [अ०] जिसने किसी ओर तवज्जोह की हो। जिसने ध्यान दिया हो। प्रवृत्त।

मुतवफ़्फ़ी--वि० [अ०] मृत। स्वर्गीय।

मुतवल्ली--वि० [अ०] जो किसी नाबालिग और उसकी संपत्ति का वली अर्थात् रक्षक बनाया गया हो।

मुतवस्सित--वि० [अ०] औसत दरजे का। मध्यम।

मुतवातिर--अव्य० [अ०] निरंतर। लगातार। सतत।

मुतसद्दी--पु० [अ०] १ लिपिक। मुंशी। २. पेशकार। ३. किसी काम के लिए नियुक्त किया हुआ उत्तरदायी कर्मचारी। ४ प्रबन्ध-कर्ता। व्यवस्थापक। ५. मुनीम।

मुतसिरी--स्त्री० [हिं० मोती+स० श्री] गले में पहनने की मोतियों की कंठी।

मुतसौवर--वि० [अ० मुतसव्विर] जिसका तसव्वर या कल्पना की गई हो। खयाल मे लाया या कल्पित किया हुआ।

मुतहम्मिल--वि० [अ०] तहम्मुल अर्थात् बरदाश्त करनेवाला। सहन-शील। सहिष्णु।

मुतहर्रिक--वि० [अ०] १. हरकत करनेवाला। गतिशील। २. स्वरयुक्त (वर्ण)।

मुतान--स्त्री० [हिं० मूतना] १. मूतने की क्रिया या भाव। जैसे--बरध-मुतान। २. पशुओं की मूत्रेंद्रिय।

मुताबकत--स्त्री० [अ०] १. मुताबिक होने की अवस्था या भाव। २ अनुरूपता। सादृश्य।

मुताबिक--अव्य० [अ०] अनुसार। बमूजिब।

वि० १. अनुकूल। २. अनुरूप। ३ समान।

मुतालबा--वि० [अ० मुतालिब] जो तलब किया जाने को हो।

पु० १ प्राप्य धन। बाकी रुपया। २ तलब कराने की क्रिया या भाव।

मुताला--पु० [अ० मुतालअ] १ पढ़ना। अध्ययन। २ याद करने के लिए पढ़ा हुआ पाठ दोहराना।

मुतास--स्त्री० [हिं० मूतना+आस (प्रत्य०)] मूतने की इच्छा या प्रवृत्ति। पेशाब करने की ख्वाहिश।

मुताह--पु० [अ० मुतअ] मुसलमानो मे एक प्रकार का अस्थायी विवाह जो 'निकाह' से नीचे दरजे का समझा जाता है।

मुताहल†--पु० =मुक्ताफल (मोती)। उदा०--नासा अग्नि मुताहल निहमति।--प्रिथीराज।

मुताही--वि० [हिं० मुताह+ई (प्रत्य०)] जिसके साथ मुताह किया गया हो या हुआ हो।

स्त्री० रखेली स्त्री। उपपत्नी। रखेली।

मुतिलाड़ू--पु० [हिं० मोती+लड्डू] मोतीचूर का लड्डू।

मुतेहरा--पुं० [हिं० मोती+हार] कलाई पर पहनने का एक तरह का आभूषण।

मुत्तफ़िक--वि० [अ० मुत्तफ़िक़] जिनमे किसी विषय मे इत्तफाक या मतैक्य हो। एक-मत। सह-मत।

मुत्तला--वि० [अ०] जिसे इत्तिला दी गई हो। सूचित या आगाह किया हुआ।

मुत्तसिल--वि० [अ०] जो किसी के पास या साथ लगा या सटा हुआ हो। संलग्न।

क्रि० वि० निरन्तर। लगातार।

मुत्तहिद—वि० [अ० मुत्तहद] १. इत्तिहाद रखनेवाला। २. किसी के साथ मिला, लगा या सटा हुआ। ३. मेल-मिलाप करानेवाला।

मुत्ती†—स्त्री० [स० मूत्र] मूत्र। पेशाब। (बालक)
†पु०=मोती।

मुद—पुं० [सं०] मोद। प्रसन्नता।

मुदगर—पु० दे० 'मुगदर'।

मुदब्बिर—वि० [अ०] १. बुद्धिमान्। २. प्रबंध-कुशल। ३. राज-नीतिज्ञ।

मुदम्मिग—वि० [अ०] अभिमानी।

मुदरा—पु० [देश०] अफीम, भाँग, शराब और धतूरे के योग से बनाया जानेवाला एक तरह का मादक पेय।

मुदर्रिस—पु० [अ०] [भाव० मुदर्रिसी] लड़को को पढ़ानेवाला व्यक्ति। अध्यापक।

मुदर्रिसी—स्त्री० [अ०] १. मुदर्रिस का काम, पद या भाव। अध्यापन।

मुदवंत*—वि० [स० मोद+हिं० वंत (प्रत्य०)] हर्षयुक्त। मुदित।

मुदा—स्त्री० [स०√मुद् (प्रसन्न होना)+क+टाप्] मोद। आनंद।
पुं० [अ० मद्आ] १. अभिप्राय। तात्पर्य। २. अर्थ। आशय।

मुदाखलत—स्त्री० [अ०] १. दखल देना। हस्तक्षेप। २. रोक-टोक।
पद—मुदाखलत बेजा=दूसरे के घर या जमीन मे उसकी इजाजत के बिना चला जाना। अनधिकार प्रवेश।

मुदाम—वि० [फा०] नित्य। शाश्वत।
अव्य० निरंतर। लगातार।
पु० शराब।

मुदामी—वि० [फा०] सदा बना रहनेवाला। सार्वकालिक।
स्त्री० [फा०] नित्यता।
वि०=मुदाम।

मुदित—भू० कृ० [स०√मुद्+क्त] मोद से युक्त। हर्षित। प्रसन्न।
पु० आलिंगन का एक प्रकार।

मुदिता—स्त्री० [स० मुदित+टाप्] १. मोद। हर्ष। २. साहित्य मे परकीया नायिकाओं मे से एक जो मनोवांछित प्रकार की स्थिति तथा प्रिय की प्राप्ति से अत्यधिक प्रसन्न हो। ३. योगशास्त्र में समाधि के योग्य संस्कार उत्पन्न करनेवाला एक परिकर्म जिससे पुण्यात्माओं को देखकर हर्ष उत्पन्न होता है।

मुदिर—पु० [स०√मुद्+किरच्] १. बादल। मेघ। २. कामुक व्यक्ति। ३. मेढक।

मुदौवर—वि० [अ०] गोल। मंडलाकार।

मुद्ग—पु० [स०√मुद्+गक्] मूँग नामक अन्न।

मुद्ग-बला—स्त्री० [स० ब० स०+टाप्] बनमूँग।

मुद्ग-पर्णी—स्त्री० [स० ब० स०,+ङीष्] बनमूँग।

मुद्ग-भोजी (जिन्)—पुं० [स० मुद्ग√भुज् (खाना)+णिनि, उप० स०] घोड़ा।

मुद्ग-मोदक—पु० [सं० ष० त०] मूँग का लड्डू।

मुद्गर—पु० [स० मुद्√गृ (लीलना)+अच्] १. पुरानी चाल का एक तरह का दंड जिसके सिरे पर गोल पत्थर का भारी टुकड़ा लगा होता था। २. कसरत करने का मुगदर नामक उपकरण। ३. एक प्रकार की मछली। ४. मोगरा नामक पौधा और उसका फूल।

मुद्गरांक—पु० [स० मुद्गर-अंक, ष० त०] प्राचीन भारत में मुद्गर का वह चिह्न जो धोबियो के यहाँ वस्त्रो पर पहचान के लिए लगाया जाता था।

मुद्गल—पु० [स० मुद्ग√ला (लेना)+क] १. एक उपनिषद् का नाम। २. एक गोत्रकार मुनि। ३ रोहित नामक तृण। रूसा घास।

मुद्दआ—पु० [अ० मुद्आ] १. उद्देश्य। तात्पर्य। २. अर्थ। मतलब।

मुद्दइया—स्त्री० [अ० मुद्दईय, मुद्दई का स्त्री० रूप] दावा करनेवाली स्त्री।

मुद्दई—पु० [अ०] [स्त्री० मुद्दइया] १. वह जो किसी चीज पर अपना दावा या अधिकार प्रकट करता हो। दावेदार। २. वह जिसने अदालत मे किसी पर दावा किया हो। ३. दुश्मन। शत्रु।

मुद्दत—स्त्री० [अ०] १ किसी काम या बात के लिए नियत किया हुआ समय। अवधि। जैसे—इस हुडी की मुद्दत पूरी हो गई है।
मुहा०—मुद्दत काटना=थोक माल का मूल्य अवधि से पहले देने पर अवधि के बाकी दिनो तक का सूद काटना। (कोठीवाल)
२. बहुत दिनो का समय। दीर्घ काल। जैसे—यह एक मुद्दत की बात है। ३. देर। विलंब।

मुद्दती—वि० [अ० मुद्दत+हिं० ई (प्रत्य०)] १. जिसमे कोई अवधि हो। जैसे—मुद्दती हुडी। २. बहुत दिनो का। पुराना।

मुद्दा—पु० [अ० मुद्आ] अभिप्राय। आशय।
अव्य० अभिप्राय या आशय यह कि। तात्पर्य यह कि।

मुद्दाअलेह—पु०=मुद्दालेह।

मुद्दालेह—पु० [अ० मुद्आ अलेह] वह व्यक्ति जिस पर दावा हुआ या किया गया हो। प्रतिवादी।

मुद्ध†—वि० =मुग्ध।

मुद्धी—स्त्री० [देश०] रस्सी आदि की एक प्रकार की गाँठ जिसके अन्दर से दूसरी रस्सी इधर-उधर खिसक सकती है।

मुद्र—पु० [स०√मुद्+रक्] छपाई के काम मे आनेवाला सीसे का अक्षर। (टाइप)
वि० [स्त्री० मुद्रा] मोद देनेवाला। हर्षकारक।

मुद्रक—वि० [स०√मुद्+णिच्+ण्वुल्-अक] मुद्रण करनेवाला।
पुं० १. मुद्रण-कला का ज्ञाता। २. छापेखाने का वह अधिकारी जिसकी देख-रेख मे छपाई संबंधी सब कार्य होते हो।

मुद्रण—पु० [स०√मुद्+णिच्+ल्युट्-अन] १. मुद्रा से अंकित करने की क्रिया या भाव। छाप लगाना। २. ठीक तरह से काम चलाने के लिए नियम आदि बनाना और लगाना। ३. आज-कल ठप्पे, सीसे के अक्षरो आदि से कागज, पुस्तके, पत्र आदि छापने की क्रिया या भाव।

मुद्रणा—स्त्री० [सं०√मुद्+णिच्+युच्-अन+टाप्] अँगूठी।

मुद्रणालय—पु० [स० मुद्रण-आलय, ष० त०] १. वह स्थान जहाँ किसी प्रकार का मुद्रण होता हो। २. आज-कल पुस्तकें आदि छापने का कारखाना। छापाखाना। प्रेस।

मुद्र-धातु—स्त्री० [सं० ष० त०] सीसे के योग या मिश्रण से बनी हुई वह धातु जिससे मुद्रण या छापे के अक्षर ढाले जाते हैं। (टाइप-मेटल)

मुद्र-लिख—पुं० [सं०] टाइप करने की मशीन। (टाइपराइटर)

मुद्र-लेखक—पुं० [ष० त०] टाइप करनेवाला। (टाइपिस्ट)

मुद्रांक—पुं० [सं० मुद्रा-अंक, मध्य० स०] १. सरकारी कागज जिस पर अर्जी-दावा लिखकर अदालत में दाखिल किया जाता है या जिस पर पक्की लिखा-पढ़ी की जाती है। २. डाक का टिकट। ३. छाप। मोहर।

मुद्रांकन—पुं० [सं० मुद्रा-अंकन, तृ० त०] [भू०कृ० मुद्रांकित] १. किसी प्रकार की मुद्रा की सहायता से चिह्न आदि अंकित करने का काम। २. छापने का काम या भाव। छपाई।

मुद्रांकित—भू० कृ० [सं० मुद्रा-अंकित, तृ० त०] १. (पदार्थ) जिस पर मुद्रांकन हुआ हो। २. मोहर किया या लगाया हुआ। ३. (व्यक्ति) जिसके शरीर पर विष्णु के आयुध के चिह्न गरम लोहे से दागकर बनाए गए हो। (वैष्णव)

मुद्रा—स्त्री० [सं० मुद्र+टाप्] १. किसी चीज पर चिह्न, नाम आदि अंकित करने की मोहर। (सील) २. ऐसी अँगूठी जिस पर किसी का नाम या और कोई वैयक्तिक चिह्न अंकित हो।

विशेष—प्राचीन भारत मे प्रायः राजा, व्यापारी आदि ऐसी ही अँगूठी से लेख्यों आदि को प्रमाणिक सिद्ध करने के लिए उन पर अपनी मोहर करने या छाप लगाने का काम लेते थे।

३. उक्त के आधार पर प्राचीन भारत मे किसी मार्ग से आने-जाने का राजकीय अधिकार-पत्र जिस पर उक्त प्रकार की छाप अंकित रहती थी। राहदारी का परवाना। ४. विष्णु के शंख, चक्र आदि आयुधों के वे चिह्न जो वैष्णव भक्त तथा साधु अपनी छाती, बाँह आदि अंगों पर अंकित कराते या तपे हुए लोहे से दगवाते हैं। ५. राज्य द्वारा प्रचलित भिन्न-भिन्न मूल्योंवाले वे सभी धातु-खंड जिन पर राज्य की छाप होती है और जो किसी देश मे क्रय-विक्रय के माध्यम या साधन के रूप में प्रचलित होते हैं। सिक्का। (क्वायन) जैसे—प्राचीन काल की अनाहत मुद्रा, आधुनिक काल की आहत मुद्रा। ६. आज-कल ऐसी सभी चीजें जो क्रय-विक्रय के सुभीते या देना-पावना चुकाने के लिए उक्त साधन के रूप मे राज्य या राष्ट्र के द्वारा मान्य कर ली गई हों और जो जनता में निःसंकोच भाव से देन-लेन के काम में आती हो। द्रव्य। धन। (मनी) जैसे—सरकारी नोट, सिक्के आदि। ७. किसी विशिष्ट देश या राष्ट्र में प्रचलित उक्त प्रकार के सभी उपकरण या साधन। चलार्थ। (करेन्सी) जैसे—भारतीय मुद्रा, रूसी मुद्रा, सुलभ मुद्रा आदि। ८. गोरखपंथी साधुओं का कान में पहनने का काठ, स्फटिक आदि का कुंडल या वलय। ९. खड़े रहने, बैठने आदि के समय शरीर के अंगों की कोई विशिष्ट स्थिति। ठवन। (पोस्चर) १०. आँख, नाक, मुँह, हाथ आदि की कोई ऐसी क्रिया जिससे मन की कोई विशिष्ट प्रवृत्ति या भाव प्रकट होता हो। इंगित। (जेस्चर) जैसे—उनके मुख की मुद्रा से ही उनका आशय प्रकट हो गया था। ११. धार्मिक क्षेत्र में, आराधन, ध्यान, पूजन आदि के समय कुछ विशिष्ट प्रकार के बैठने के अनेक ढंगों में से कोई ऐसा ढंग जो किसी प्रकार की फल-सिद्धि कराने में सहायक माना जाता हो। जैसे—(क) तांत्रिकों की धेनु मुद्रा, पद्म मुद्रा। (ख) हठयोग की खेचरी, गोचरी, भूचरी आदि मुद्राएँ। १३. आधुनिक मुद्रण कला में, ग्रंथों, सामयिक पत्रों आदि की छपाई के लिए सीसे के ढले हुए उलटे अक्षर जो छापने पर सीधे आते हैं। (टाइप) १४. साहित्य में एक प्रकार का शब्दालंकार जो श्लेष अलंकार का एक भेद है और जिसमें किसी साधारण वर्णन के आधार पर प्रवृत्त या प्रस्तुत अर्थ तो निकलता ही हो, इसके सिवा शब्दों के कुछ अक्षर अपने आगे-पीछेवाले दूसरे अक्षरों के साथ मिलाने पर कुछ और अर्थ भी निकलता हो। जैसे—की करपा करतार (ईश्वर ने कृपा की) में कीकर, पाकर और तार या ताड़ वृक्ष भी आ जाते हैं। और जा मन फल सा आ मिला (यह मन को वांछित फल के रूप में प्राप्त हुआ) में जा मन या जामुन, फल सा या फालसा आ मिला या आँवला फलों के नाम भी आ जाते हैं। इसी प्रकार 'कच्चोरी पिय हे सखी, पक्कोरी प्रिय नाहिं। बराबरी कैसे करूँ, पूरी परती नाहिं।' में कचौरी, पकौड़ी, बड़ा, बड़ी और पूरी नामक पकवानों के नाम भी आ जाते हैं। १५. तांत्रिकों की बोल-चाल में भूना हुआ अन्न या उसके दाने। १६. अगस्त्य ऋषि की पत्नी लोपामुद्रा का संक्षिप्त नाम।

मुद्रा-कर—पुं० [सं० ष० त०] १. वह जो किसी प्रकार की मुद्रा तैयार करता हो। २. प्राचीन भारत में राज्य का वह प्रधान अधिकारी जिसके हाथ में राजा की मोहर रहती थी। ३. वह जो किसी प्रकार का मुद्रण करता हो।

मुद्रा कान्हड़ा—पुं० [सं० मुद्रा+हिं० कान्हड़ा] एक प्रकार का राग जिसमें सब कोमल स्वर लगते हैं।

मुद्राक्षर—पुं० [सं० मुद्र-अक्षर, मयू० स०] १. वह अक्षर जिसका उपयोग किसी प्रकार के मुद्रण के लिए होता हो। २. आज-कल सीसे के वे अक्षर जिनमें छापेखाने में पुस्तकें आदि छपती है। टाइप।

मुद्रा-टोड़ी—स्त्री० [सं० मुद्रा+हिं० टोड़ी] एक प्रकार की रागिनी जिसमें मात्र कोमल स्वर लगते हैं।

मुद्रा-तत्त्व—पुं० [सं० ब० स०] वह शास्त्र जिसके अनुसार किसी देश के पुराने सिक्कों आदि की सहायता से उस देश की ऐतिहासिक बातें जानी जाती हैं।

मुद्रा-बाहुल्य, मुद्रा-विस्तार—पु० दे० 'मुद्रा-स्फीति'।

मुद्रा-यंत्र—पुं० [सं० ष० त०] छापने या मुद्रण करने का यंत्र।

मुद्रा-विज्ञान—पु० दे० 'मुद्रा-तत्त्व'।

मुद्रा-शास्त्र—पुं० दे० 'मुद्रा-तत्त्व'।

मुद्रा-संकोच—पु० [सं० ष० त०] दे० 'अवस्फीति'।

मुद्रा-स्फीति—स्त्री० [सं० ष० त०] आधुनिक अर्थशास्त्र मे, वह स्थिति जिसमे कागजी मुद्रा या नोट देश की व्यापारिक आवश्यकताओं से कहीं अधिक प्रचलित कर दिए जाते हैं; और इसी लिए जिसके फलस्वरूप देश में सब चीजें बहुत मँहगी बिकने लगती हैं। (इन्फ्लेशन)

मुद्रिका—स्त्री०=मुद्रिका।

मुद्रिका—स्त्री० [सं० मुद्रा+कन्+टाप्] १ अँगूठी। २ कुश की वह अँगूठी जो तर्पण आदि करते समय पहनी जाती है। ३. सिक्का।

मुद्रित—भू० कृ० [सं० मुद्रा+इतच्] १ मुद्रण किया हुआ। २ छपा या छापा हुआ। ३. मुँदा हुआ। बंद। ४. त्यागा या छोड़ा हुआ।

परित्यक्त। ५ काम अर्थात् मैथुन या रति की मुद्रा मे स्थित। ६ ब्याहा हुआ। विवाहित।

मुधा—अव्य० [सं०√मुह् (मुग्ध होना)+का, पृषो० ह्-ध्] व्यर्थ।
वि० १ असत्य। मिथ्या। २. व्यर्थ।
पु० १ असत्यता। २ व्यर्थता।

मुनक्का--पु० [अ०] एक प्रकार की बडी किशमिश या सूखा हुआ अगूर।

मुनगा—पु० [सं० मधुगुंजन या देश०] सहिजन।

मुनफसला—वि० [अ० मुन्फसिल]१. (विवाद या विषय) जिसका फैसला अर्थात् निर्णय हो चुका हो। निर्णीत। २ अलग। पृथक्।

मुनमुना—पु० [देश०] १. मैदे का बना हुआ एक प्रकार का पकवान जो रस्सी की तरह बटकर छाना जाता है। २ गेहूँ के खेत मे पैदा होनेवाली मोथा नाम की घास जिसमें काले दाने या बीज भी होते हैं।
वि० बहुत थोडा। अल्प।

मुनरा†—पु० [सं० मुद्रा] एक तरह का लोहे का बना हुआ कान का आभूषण।

मुनरी†—स्त्री०=मुँदरी।

मुनव्वर--वि० [अ०] १ प्रकाशमान। चमकीला। २ प्रज्वलित।

मुनहसिर—वि० [अ० मुन्हसिर] अवलबित। आश्रित।

मुनाजरा--पु० [अ० मुनाज़र] १ शास्त्रार्थ। २. तर्कशास्त्र।

मुनादा—वि० [अ०] १ आहूत। २ सबोधित।

मुनादी—स्त्री० [अ०] १ ढिंढोरा। डुग्गी।
क्रि० प्र०—पिटना।—पीटना।
२. डुग्गी बजाकर की जानेवाली सार्वजनिक घोषणा।
क्रि० प्र०—फिरना।—फेरना।

मुनाफ़ा—पु०[अ०]क्रय-विक्रय मे आर्थिक दृष्टि से होनेवाला लाभ। नफ़ा।

मुनाफाखोर—पुं० [अ०+फा०] वह रोजगारी जो बहुत अधिक मुनाफा लेकर माल बेचता हो।

मुनाफाखोरी—स्त्री० [अ०+फा०] मुनाफाखोर होने की प्रवृत्ति या स्थिति।

मुनार—पु०=मीनार।

मुनारा--पु०=मीनार।

मुनाल—पु० [देश०] एक प्रकार का बहुत सुदर पहाडी पक्षी जिसकी हरी गरदन पर सुदर कठा सा होता है और जिसके सिर पर कलँगी होती है।

मुनासिब—वि० [अ०] उचित। वाजिब।

मुनासिबत—स्त्री० [अ०] १. मुनासिब होने की अवस्था या भाव। उपयुक्तता। औचित्य। २ पारस्परिक संबध।

मुनि—पु० [सं०√मन् (जानना)+इन्] १ वह जो मनन करे। मननशील महात्मा। २. प्राचीन भारत मे बहुत मननशील तपस्वी या त्यागी महापुरुष। जैसे—अगिरा, पुलस्त्य, भृगु, कर्दम, पचशिख आदि। ३. विशिष्ट सात मुनियों के आधार पर सात की सख्या का वाचक पद। ४. जैनो के जिन देव। ५. पियाल या पयार का वृक्ष। ६ पलाश। ७. दमनक। दौना। ८. पुराणानुसार क्रौंच द्वीप का एक देश।
स्त्री० दक्ष की एक कन्या जो कश्यप की सब से बड़ी स्त्री थी।

मुनि-कुमार—पु० [ष० त०] १ मुनि का बालक या लड़का। २. अल्प-वयस्क मुनि।

मुनिच्छद—पु० [स० ब० स०] मेथी।

मुनि-तरु—पु० [स० मध्य० स०] पतग। बकवृक्ष।

मुनि-त्रय—पु० [ष० त०] पाणिनि, पतजलि और कात्यायन ये तीनों मुनि।

मुनि-द्रुम--पु० [मध्य० स०] १ श्योनाक (वृक्ष)। २. पतग या बक नामक वृक्ष।

मुनि-धान्य—पु० [ष० त०] तिन्नी का चावल। तिनी।

मुनि-पादप—पु० [मध्य० स०] दे० 'मुनि-द्रुम'।

मुनि-पित्तल—पु० [ष० त०] ताँबा।

मुनि-पुत्र—पु० [ष० त०] दौना। दमनक।

मुनि-पुत्रक—पु० [स० मुनि-पुत्र+कन्] खजन पक्षी।

मुनि-प्रिय--पु० [ष० त०] १ एक प्रकार का धान्य जिसे पक्षिराज भी कहते हैं। २ पिंड-खजूर। ३ बिरोजे का पेड। पियार।

मुनि-भक्त—पु० [ष० त०] तिन्नी का चावल। तिनी।

मुनि-भेषज—०पु [ष० त०] १. अगस्त का फूल। २ हड। हर्रे। ३ उपवास। लघन।

मुनि-भोजन—पु० [ष० त०] तिन्नी का चावल। तिनी।

मुनियाँ– पु० [देश०] अगहन मे तैयार होनेवाला एक तरह का धान।
स्त्री० लाल नामक पक्षी की मादा।

मुनि-वर--पु० [ष० त०] १ श्रेष्ठ मुनि। २ पुडरीक वृक्ष। पुडरिया। ३ दमनक। दौना।

मुनि-वल्लभ--पु० [ष० त०] विजयसार। पियासाल।

मुनि-वृक्ष--पु० [मध्य० स०] १ श्योनक। २ पतग। बकवृक्ष।

मुनि-व्रत—पु० [ष० त०] तपस्या।

मुनि-शस्त्र—पु० [ष० त०] सफेद कुश।

मुनि-सुत--पु० [ष० त०] दौना (पौधा)।

मुनींद्र—पुं० [मुनि-इन्द्र, ष० त०] १ बहुत बडा मुनि। मुनियों मे श्रेष्ठ। २ गौतम बुद्ध। ३ शिव। ४. एक दानव।

मुनी—पु०=मुनि।

मुनीब—पु० [अ०] मुनीम। (दे०)

मुनीम—पु० [अ० मुनीब] [भाव० मुनीमी] १ प्रतिनिधि। २ अभिकर्ता। ३ आज-कल, वह व्यक्ति जो किसी आढ़त, कोठी, दुकान आदि के बही-खाते लिखता हो।† ४ खजांची।

मुनीमी—स्त्री० [हिं० मुनीम] मुनीम का काम, पद या भाव।
वि० मुनीम-सबधी।

मुनीश—पु० [स० मुनि-ईश, ष० त०] १ मुनियो मे श्रेष्ठ। २ विशद। ३ गौतम बुद्ध का एक नाम।

मुनीश्वर—पु० [स० मुनि-ईश्वर, ष० त०] मुनीश।

मुनेस*—पु०=मुनीश।

मुनैया† —स्त्री०=मुनिया (मादा लाल)।

मुन्ना—पु० [स० मानव] [स्त्री० मुन्नी] छोटे बच्चों आदि के लिए प्यार का सम्बोधन। जैसे—देखो मुन्ना, ऐसा काम नही करते।

वि० प्यारा। प्रिय।

पु० [देश०] तारकशी के कारखाने के वे दोनो खूंटे जिनमें जंता लगा रहता है।

मुर्भू—पु०=मुन्ना (प्रेम-पूर्ण सम्बोधन)।

मुन्यन्न—पु० [सं० मुनि-अन्न, ष० त०] तिन्नी का चावल।

मुफरद—वि० [अ० मुफ़्रद] १. एक। २. अकेला।

मुफ़र्रस—पु० [अ०] फारसी भाषा द्वारा अपनाया हुआ किसी अन्य भाषा का तत्सम या तद्भव शब्द।

वि० फारसवालो का फारसी के रूप में लाया हुआ।

मुफर्रह—वि० [अ० मुफर्रह] फरहत देनेवाला। उल्लसित करनेवाला।

मुफलिस—वि० [अ० मुफ़्लिस] [भाव० मुफलिसी] निर्धन। धन-हीन। गरीब।

मुफ़लिसी—स्त्री० [अ० मुफ़्लिसी] मुफलिस होने की अवस्था या भाव। गरीबी। निर्धनता।

मुफसिद—वि० [अ० मुफ़्सिद] १ फसादी। २. उपद्रवी।

मुफस्सिर—पु० [अ०] टीकाकार। भाष्यकार।

मुफ़स्सिल—वि० [अ०] १. तफसील अर्थात् ब्योरे के रूप मे लाया हुआ। २ स्पष्ट।

पु० किसी बडे नगर के आस-पास के प्रदेश या स्थान। किसी बड़े शहर के आस-पास की छोटी बस्तियाँ।

मुफ़ीद—वि० [अ०] १ लाभकारी। फायदा देनेवाला। २ उपयोगी।

मुफ़्त—वि० [अ०] १ जिसकी प्राप्ति बिना कुछ दिये अथवा बिना मूल्य चुकाये हुए हो। २. जो यो ही आपसे आप अथवा बिना प्रयास के मिला हो।

मुहा०—**मुफ्त में**=(क) योंही। बिना किसी कारण के। जैसे—मुफ्त मे हमारी भी जान हलाल की गई। (ख) निष्प्रयोजन। व्यर्थ।

मुफ़्तखोर—वि० [फा०] [भाव० मुफ्तखोरी] (व्यक्ति) जो दूसरो का धन लेना तथा खाना जानता हो पर स्वय कमाकर न खाता हो। मुफ्त मे दूसरो का माल हड़पनेवाला।

मुफ़्तखोरी—स्त्री० [फ़ा०] १. मुफ्तखोर होने की अवस्था या भाव। २ मुफ्त में दूसरों का माल खाते रहने की आदत या लत।

मुफ़्तरी—वि० [अ०] १ झूठा इलजाम लगानेवाला। २ झूठी बातें बनानेवाला। ३ फसादी।

मुफ़्ती—पुं० [अ०] फतवा देनेवाला मौलवी।

वि० [अ० मुफ़्त] जो बिना दाम दिये मिला हो। मुफ्त का।

स्त्री० वर्दी पहनने वाले अधिकारियों, सैनिको, सिपाहियो आदि के सादे और साधारण कपड़े।

मुफिलस—वि०=मुफलिस।

मुबतिला—वि० [अ० मुब्तला] १. कष्ट या विपत्ति मे पड़ा हुआ। दु.ख, सकट आदि से ग्रस्त। २ आसक्त। मुग्ध।

मुबर्रा—वि० [अ०] १ बरी या मुक्त किया हुआ। २. पवित्र। ३. निर्दोष। ४ अलग। पृथक्। ५. विरक्त।

मुबलिग—वि० [अ० मुब्लग] १. जो खरा हो, खोटा न हो। २. रुपए आदि की संख्या का वाचक विशेषण। जैसे—मुबलिग सौ रुपए वसूल पाये।

वि० [अ० मुब्लिग़] भेजनेवाला।

मुबस्सिर—वि० [अ०] १. अच्छे-बुरे तथा गुण-अवगुण की परख करने-वाला। पारखी। २. मर्मज्ञ। ३. समीक्षक।

मुबहिम—वि० [अ० मुब्ह्म] १ अस्पष्ट। २ द्व्यर्थक (बात)।

मुबावला—पुं० [अ० मुबादिल:] अदला-बदला। आदान-प्रदान।

मुबारक—वि० [अ०] १. जिसके कारण बरकत हुई हो। २ कल्याण या मगल करनेवाला। शुभ।

अव्य० एक पद जिसका प्रयोग किसी को शुभ अवसर पर बधाई देने के लिए होता है।

मुबारकबाद—अव्य० [अ० मुबारक+फा० बाद] मुबारक हो।

पु०=मुबारक।

मुबारकबादी—स्त्री० [अ० मुबारक+फा० बादी] १. यह कहना कि जो अमुक अच्छा कार्य हुआ है, वह आपके लिए मुबारक या शुभ हो। मगल-कामना प्रकट करने की क्रिया। २ शुभ अवसरो पर गाये जानेवाले गीत।

मुबारक सलामत—स्त्री० [अ०] मुबारक देना और सलामती अर्थात् सकुशल चिरजीव होने की कामना करना।

मुबारकी†—स्त्री०=मुबारकबादी।

मुबालगा—पु० [अ० मुबालग:] बहुत बढ़ाकर कही हुई बात। अतिश-योक्ति। अत्युक्ति।

मुबाशरत—स्त्री० [अ०] मैथुन। सभोग।

मुबाह—वि० [अ०] १ शरीअत अर्थात् इस्लामी धर्मशास्त्र के अनु-कूल होनेवाला। २ जायज। विहित।

मुबाहिसा—पु० [अ० मुबाहस] १. तर्क-वितर्क। बहस। २. वाद-विवाद।

मुब्तदा—पु० [अ०] १. आरभ। २ व्याकरण के वाक्य-विन्यास मे 'उद्देश्य' नामक तत्त्व।

वि० आरभ किया हुआ।

मुब्तदी—वि० [अ०] १ आरंभिक। २ नौसिखिया।

मुब्तला—वि० [अ०]=मुबतला।

मुमकिन—वि० [अ०] जो कार्य-रूप में परिणत हो सकता हो। सभव।

मुमतहिन—वि० [अ० मुम्तहिन] इम्तहान या परीक्षा लेनेवाला। परीक्षक।

मुमताज़—वि० [अ० मुम्ताज़] १. बहुतो मे से चुनकर अलग किया हुआ। २ विशिष्ट। ३ प्रतिष्ठित।

मुमानियत—स्त्री० [अ० मुमानअत] मना करने या होने की अवस्था या भाव। मनाही।

मुमानी—स्त्री० [हिं० मामा का उर्दू स्त्री०] मामा की स्त्री। मामी। जैसे—मुँह पर मुमानी, पीठ पीछे गैबानी। (कहा०)

मुमुक्षा—स्त्री० [स०√मुच् (छोड़ना)+सन्+अ,+टाप्] मोक्ष की कामना।

मुमुक्षु—वि० [सं०√मुच् (छोड़ना)+सन्+उ] [भाव० मुमुक्षता] जिसे मोक्ष की कामना हो।

मुमुक्षुता—स्त्री० [स० मुमुक्षु+तल्+टाप्] मुमुक्षु का धर्म या भाव। मुमुक्षु होने की अवस्था या भाव।

मुमुचान—पु० [सं०√मुच् (छोड़ना)+आनच्] १. वह जो मुक्त हो गया हो। २ बादल। मेघ।

मुमूर्षा—स्त्री० [सं०√मृ (मरना)+सन्, द्वित्व,+अ,+टाप्] मरने की इच्छा। मृत्यु की कामना।

मुमूर्षु—वि० [सं०√मृ+सन्, द्वित्व,+उ] जिसकी मृत्यु बहुत पास आ गई हो। जो अभी मर जाने को हो।

मुयस्सर—वि०=मयस्सर।

मुरंडा—पु० [प० मुरंडा] भूने हुए गेहूँ में गुड़ मिलाकर बनाया हुआ लड्डू।

मुहा०—मुरंडा करना या बनाना=(क) भूनना। (ख) गठरी-सा बना देना। (ग) बहुत मारना-पीटना।

वि० १ बहुत सूखा हुआ। २ बहुत दुबला-पतला।

मुरंदा—पु०=मुरंडा।

मुर—पु० [सं०√मुर् (लपेटना)+क] १. वेष्टन। बेठन। २ एक दैत्य जिसका वध श्रीकृष्ण ने किया था।

† अव्य० [हिं० मुड़ना=लौटना] दोबारा। फिर।

† पु०=मुड़।

मुरई†—स्त्री०=मूली।

मुरक—स्त्री०=मुड़क।

मुरकना—अ०, स०=मुड़कना।

मुरका†—पु० [देश०] १. बड़े डील-डौलवाला वह हाथी जिसके बड़े-बड़े तथा सुन्दर दाँत हों। २ गड़ेरियों की बिरादरी का भोज।

मुरकाना—स०=मुड़काना।

मुरकी—स्त्री० [हिं० मुरकना=घूमना] १ कान में पहनने की छोटी बाली। २ संगीत में, एक विशेष प्रकार से एक स्वर से घूमकर दूसरे स्वर पर आने की क्रिया।

मुरकुल—स्त्री० [देश०] एक तरह की लता।

मुरखाई†—स्त्री०=मूर्खता।

मुरगा—पु० [फा० मुर्ग] [स्त्री० मुरगी] १ एक प्रसिद्ध नर पक्षी जिसके सिर पर कलंगी होती है और जो प्राय: प्रभात के समय कुकड़ूँ-कूँ बोलता है। २ चिड़िया। पक्षी।

†स्त्री०=मूर्वा।

मुरगाबी—स्त्री० [फा० मुर्गाबी] मुरगे की जाति का एक पक्षी जो जल में तैरता और मछलियाँ पकड़ कर खाता है। जल-कुक्कुट। जल-मुरगा।

मुरगी—स्त्री० [हिं० मुरगा का स्त्री०] मादा मुर्ग। मुरगे की मादा।

पद—मुरगी का=एक प्रकार की गाली। जिसका अर्थ होता है—मुरगी की सन्तान। जैसे—आप खाता है गोश्त मुरगी का, मुझको देता है दाल अरहर की।

मुरचंग—पु० [हिं० मुँहचंग] मुँह से फूँककर बजाया जानेवाला एक तरह का पुरानी चाल का लोहे का बाजा। मुँहचंग।

मुहा०—मुरचंग झाड़ना=निश्चित भाव से बैठकर व्यर्थ इधर-उधर की बातें करना।

मुरचा—पु०=मोरचा।

मुरची—पु० [सं०] पश्चिम दिशा का एक प्राचीन देश।

मुरछना—अ० [सं० मूर्च्छन] १ मूर्च्छित अर्थात् अचेत या बेसुध होना। २ शिथिल होना।

मुरछल†—पु०=मोरछल।

मुरछा†—स्त्री०=मूर्च्छा।

मुरछाना—अ० [सं० मूर्च्छा] मूर्च्छित या अचेत होना। बेहोश होना। स० मूर्च्छित या अचेत करना।

मुरछावंत—वि०=मूर्च्छित।

मुरछित†—वि०=मूर्च्छित।

मुरज—पु० [सं० मुर√जन् (उत्पत्ति)+ड] मृदंग। पखावज।

मुरज-फल—पु० [ब०स०] कटहल।

मुरजित्—पु० [सं० मुर√जि (जीतना)+क्विप्, तुक्] मुरारि।

मुरझाना—अ० [सं० मूर्च्छन] १ हरे डंठलों, पत्तों, फूलों, वृक्षों आदि का जल न मिलने अथवा और किसी कारण से सूखने लगना। कुम्हलाना। २ (चेहरा या मन) उदास या सुस्त होना। कांति, श्री आदि से रहित या हीन होना। ३ शिथिल तथा शक्तिहीन होना।

संयो० क्रि०—जाना।

मुरड़—पु० [हिं०] गर्व। अभिमान। अहंकार।

मुरड़की†—स्त्री०=मरोड़।

मुरतंगा—पु० [देश०] एक प्रकार का ऊँचा पेड़ जिसके हीर की लकड़ी बहुत सख्त होती है।

मुरतकिब—पु० [अ० मुर्तकिब] अपराध या दोष करनेवाला। अपराधी। दोषी।

मुरतहिन—पु० [अ० मुर्तहिन] जिसके पास कोई वस्तु रेहन या गिरो रखी गई हो। रेहनदार।

मुरता—पु० [देश०] एक तरह का झाड़।

मुरतिद—पु० [अ०] (मुसलमान) जो इस्लामी धर्म छोड़कर काफिर हो गया हो।

मुरत्तब—वि० [अ०] १ तरतीब अर्थात् क्रम से लगाया हुआ। क्रम-बद्ध। २ तैयार किया या बनाया हुआ। प्रस्तुत किया हुआ। संपादित। ३ तर किया हुआ।

मुरदनी—स्त्री० [फा० मुर्दनी] १ किसी के मुख पर दिखाई देनेवाले वे चिह्न या विकार जो मृत्यु के सूचक माने जाते हों।

मुहा०—चेहरे पर मुरदनी छाना या फिरना—(क) मुख पर मृत्यु के चिह्न प्रकट होना। (ख) चेहरे का उदास या श्री-हीन हो जाना।

२ शव के साथ उसकी अंत्येष्टि-क्रिया के लिए जाना। मुरदे के साथ उसके गाड़ने या जलाने के स्थान तक जाना। ३ मृतक की अन्त्येष्टि-क्रिया के लिए जानेवालों का समूह।

क्रि० प्र०—में जाना।

मुरदा—पु० [फा० मुर्द:] मृत प्राणी। शव।

पद—मुरदे का माल=ऐसा माल जिसका कोई वारिस न हो।

वि० १ मरा हुआ। मृत। २ इतना अधिक दुर्बल या शक्ति-हीन कि मरे हुए के समान जान पड़े। ३ बहुत ही कुम्हलाया, मुरझाया या सूखा हुआ। जैसे—मुरदा पान, मुरदा फल।

मुहा०—(किसी का) मुरदा उठना=मर जाना। (गाली)

जैसे—उसका मुरदा उठे। **मुरदा उठाना**=शव को अन्त्येष्टि-क्रिया के लिए ले जाना। **मुरदों से शर्त बाँधकर सोना**=बहुत अधिक और गहरी नींद में सोना।

मुरदा-घर—पुं० [हिं०] वह स्थान जहाँ मृतक व्यक्तियों के शव तब तक रखे जाते हैं, जब तक उन्हें गाड़ने या जलाने की व्यवस्था न हो। (मॉर्चुअरी)

विशेष—ऐसे स्थान प्राय. युद्ध-क्षेत्रों में अस्थायी रूप से नियत किये जाते हैं।

मुरदा-दिल—वि० [हिं० +फा०] [भाव० मुरदादिली] जिसमें कुछ भी उत्साह या उमंग न रह गई हो। बहुत ही खिन्न तथा हतोत्साह।

मुरदार—वि० [फा० मुर्दार] [भाव० मुरदारी] १. जो अपनी मौत से मरा हो। २. मृत। ३. अपवित्र। ४ दुर्बल।

पुं० वह पशु जो अपनी मौत से मरा हो। (ऐसे पशु का मांस खाना धार्मिक दृष्टि से वर्जित है।)

मुरदारी—स्त्री० [फा०] मुरदार होने की अवस्था या भाव।

मुरदावली—वि० [हिं० मुर्दा] १. मृतक के संबंध का। मुरदे का। २. बहुत ही तुच्छ या निम्न कोटि का। रद्दी।

स्त्री०=मुर्दनी।

मुरदासंख—पुं० [फा० मुर्दः संग] फूँके हुए सीसे और सिंदूर का मिश्रण जो औषध के रूप में व्यवहृत होता है।

मुरदासन† —पुं०=मुरदासंख।

मुरदासिंघी† —स्त्री०=मुरदासंख।

मुरधर—पुं० [सं० मरुधरा] मारवाड़ देश का प्राचीन नाम।

मुरना† —अ०=मुड़ना।

मुरबैस† —पुं० [सं० मुद-वयस्] युवाकाल। जवानी।

मुरब्बा—पुं० [अ०] कच्चे फल (जैसे—आँवले, आम, बेल, सेब आदि) को चीनी की चाशनी में पकाने पर तैयार होनेवाला पाक।

क्रि० प्र०—डालना। —पड़ना। —बनना। —बनाना।

पुं० [अ० मुरब्बअ] १ समकोणीय समचतुर्भुज। वर्गाकार। २ किसी अंक को उसी अंक से गुणन करने पर प्राप्त होनेवाला फल।

वि० १ चौकोर। २. चारों अथवा सब ओर से एक ही नाप का। जैसे—दस मुरब्बा फुट।

मुरब्बी—पुं० [अ०] १. पालन और रक्षण करनेवाला। पालक और रक्षक। अभिभावक। २. मददगार। सहायक। ३. मित्र और स्नेही।

मुरमर्दन—पुं० [सं० मुर√मृद् (मर्दन करना)+ल्यु—अन] मुर को मारनेवाले विष्णु या श्रीकृष्ण।

मुरमुरा—पुं० [अनु०] १. एक प्रकार का भुना हुआ चावल जो अन्दर से पोला होता है। फरवी। लाई। २. मकई के भुने हुए दाने।

वि० मुरमुर शब्द करनेवाला।

मुरमुराना—अ० [मुरमुर से अनु०] १. ऐंठन खाकर टूट जाना। चुरमुर हो जाना। २. मुरमुर शब्द करते हुए टूटना।

स० १. चुरमुर करना। २. मुरमुर शब्द करते हुए तोड़ना।

मुर-रिपु—पुं० [सं० ष० त०] मुरारि।

मुररिया† —स्त्री०=मुर्री।

मुरल—पुं० [सं० मुर√ला (लेना)+क] १. चमड़े का एक पुरानी चाल का बाजा। २. एक प्रकार की मछली।

मुरला—स्त्री० [सं० मुरल+टाप्] १. नर्मदा नदी। २. केरल देश की काली नाम की नदी।

मुरलिका—स्त्री० [सं० मुरली+कन्+टाप्, ह्रस्व] मुरली। वंशी।

मुरलिया*—स्त्री०=मुरली (वंशी)।

मुरली—स्त्री० [सं० मुरल+ङीप्] मुँह से फूँककर बजाया जानेवाला बाँस आदि की पोर का बना हुआ बाजा। बाँसुरी।

पुं० आसाम में होनेवाला एक प्रकार का चावल।

मुरली-धर—पुं० [सं० ष० त०] श्रीकृष्ण जो बाल्यावस्था में प्राय: मुरली बजाते थे।

मुरली-मनोहर—पुं० [सं० सुप्सुपा स०] श्रीकृष्ण।

मुरलीवाला—पुं० [सं० मुरली+हिं० वाला (प्रत्य०)] श्रीकृष्ण।

मुरवा†—पुं० [देश०] १. एड़ी के ऊपर की हड्डी जो कुछ उभरी हुई होती है। २. उक्त हड्डी के चारों ओर का स्थान जो कुछ उभरा हुआ तथा गोलाकार होता है।

*पुं०=मोर।

मुरवी*—स्त्री० [सं० मौर्वी] १. मूर्वा घास की बनी हुई मेखला जिसे क्षत्री धारण करते थे। २. धनुष की डोरी। चिल्ला।

मुर-वैरी (रिन्)—पुं०=मुरारि।

मुरव्वत—स्त्री०=मुरौवत।

मुरशिद—पुं० [अ० मुर्शिद] १. गुरु। पथप्रदर्शक। पीर। २. धूर्त आदमी। (व्यंग्य)

मुरसिल—पुं० [अ० मुर्सिल] भेजनेवाला। प्रेषक।

मुर-सुत—पुं० [सं० ष० त०] मुर राक्षस का पुत्र, वत्सासुर।

मुरस्सा—वि० [अ० मुरस्सअ] रत्न-जटित। जड़ाऊ।

मुरस्साकार—पुं० [अ० मुरस्सअ+फा० कार] [भाव० मुरस्साकारी] रत्न-जटित आभूषण बनानेवाला। जड़िया।

वि० रत्नों से जड़ा हुआ। जड़ाऊ।

मुरस्साकारी—स्त्री० [अ० मुरस्सअ+फा० कारी] १. गहनों में नग आदि जड़ने का काम। २ उक्त प्रकार के काम का पारिश्रमिक।

मुरहन† —स्त्री० [?] १. एक प्रकार की सुरती (पौधा) जिसकी पत्तियाँ अच्छी समझी जाती हैं। २ सुरती की पिसी हुई पत्तियाँ।

मुरहा—पुं० [सं० मुर√हन् (मारना)+क्विप्] वह जिसने मुर का वध किया हो। मुरारि।

वि० [सं० मूल+हिं० हा (प्रत्य०)] १ जिसका जन्म मूल नक्षत्र में हुआ हो।

विशेष—ज्योतिष के अनुसार ऐसा बालक माता-पिता के लिए घातक होता है।

२ अनाथ। ३. उपद्रवी। नटखट।

पुं० [हिं० मुराना] वह जो चलते हुए कोल्हू में गँड़ेरियाँ डालता है।

मुरहारी (रिन्)—पुं० [सं० मुर√हृ (हरण करना)+णिनि] मुरहा। मुरारि।

मुरा—स्त्री० [सं०√मुर्+क+टाप्] १. एक गंध द्रव्य। मुरामांसी।

२. वह नाइन जिसके गर्भ से महानद के पुत्र चद्रगुप्त का जन्म हुआ था। (कथासरित सागर)

मुराड़ा—पु० [देश०] ऐसी लकडी जिसका एक सिरा जल रहा हो। लुआठा।

मुराद—स्त्री० [अ०] १ बहुत दिनो से मन मे बनी रहनेवाली अभिलाषा।

पद—मुराद के दिन=यौवन काल, जिसमे मन मे अनेक प्रकार की इच्छाएँ, उमगे और कामनाएँ रहती है।

क्रि० प्र०—पूरी होना।—बर आना।

मुहा०—मुराद पाना=(क) मन की चाही हुई चीज पाना। (ख) मन की चाही हुई बात पूरी होना। **(ईश्वर या देवता से) मुराद माँगना**=मन की अभिलाषा पूरी होने की प्रार्थना करना। **मुराद मिलना**=मन की अभिलाषा पूरी होना।

२ मन्नत। मनौती।

मुहा०—मुराद मानना—मनौती या मन्नत मानना।

३ अभिप्राय। आशय। मतलब।

मुरादी—वि० [अ०] मन मे मुराद रखनेवाला। अभिलाषी।

मुराना*—स० [अनु० मुरमुर=चबाने का शब्द] मुँह मे कोई चीज डालकर उसे मुलायम करना। चुभलाना।

†स० १ =मुडाना। २ =मोडना।

मुराफा—पु० [अ० मुराफअ] छोटी अदालत मे मुकदमा हार जाने पर बडी अदालत मे पुनर्विचार के लिए दिया जानेवाला प्रार्थना-पत्र।

मुरार—पु० [स० मृणाल] कमल की जड़। कमलनाल।

†पुं०=मुरारी।

मुरारि—पु० [सं० मुर-अरि, ष० त०] १ मुर राक्षस के शत्रु (क) विष्णु, (ख) श्रीकृष्ण। २. डगण के तीसर भेद (।ऽ।) की सज्ञा। (पिंगल)

मुरारी—पु०=मुरारि।

मुरासा—पु० [अ० मुरस्सा] कान मे पहनने का एक तरह का रत्न-जटित फूल। तरकी।

† पु०=मुंडासा।

मुरी†—स्त्री०=मुरि।

मुरीद—पु० [अ०] [भाव० मुरीदी] १ शिष्य। चेला। २ किसी विशेषत. धर्मगुरु के प्रति बहुत अधिक विश्वास और श्रद्धा रखनेवाला तथा उसका अनुयायी।

मुरीदी—स्त्री० [अ०] मुरीद होने की अवस्था या भाव।

मुरुड—पु० [स०] एक प्राचीन जाति जो अफगानिस्तान मे बसती थी।

मुरुडा†—पु० [?] १ किसी चीज का ऐसा बडा गोल पिंड जो देखने मे लड्डू की तरह हो। २ अच्छी तरह तोड-मरोडकर दिया जानेवाला गोलाकार रूप।

मुरुवा†—पु०=मुर।

मुरुआ†—पु०=मुरवा।

मुरकुटिया†—वि०=मरकट।

मुरुख*—वि०=मूर्ख।

मुरुखाई*—स्त्री०=मूर्खता।

मुरुछना†—अ०=मुरछना (मूर्च्छित होना)।

†स्त्री०=मूर्छना।

मुरुझना†—अ०=मुरझाना।

मुरेठा—पु० [हिं० मूँड=सिर+एठा (प्रत्य०)] १ पगड़ी। साफा। २. दे० 'मुरैठा'।

मुरेर†—स्त्री० १. =मरोड। २. =मूँडेर।

मुरेरना†—स०=मरोडना।

मुरेरा†—पु० १. =मुँडेरा। २. =मरोड।

मुरैठा†—पु० [हिं० मुरेठा] १ नाव की लबाई मे चारो ओर घूमी हुई गोट जो तीन चार इच मोटे तख्तो से बनाई जाती है और 'गुढा' के ऊपर रहती है। २. दे० 'मुरेठा'।

मुरौअत—स्त्री० [अ० मुरव्वत] १ ऐसा स्वाभाविक शील जिसके फल-स्वरूप किसी के साथ कोई कठोर अथवा रूखेपन का व्यवहार न किया जा सकता हो। लिहाज।

क्रि० प्र०—तोडना।—बरतना।

२ भलमनसत। सज्जनता।

मुरौअती—वि० [हिं० मुरौअत] जिसके स्वभाव मे मुरौअत हो।

स्त्री०=मुरौअत।

मुरौवज—वि० [अ० मुरव्वज] प्रचलित। लागू।

मुरौवत—स्त्री० =मुरौअत।

मुर्ग—पु० [स० मृग से फा० मुर्ग] मुरगा।

मुर्गकेश—पु० [फा० मुर्ग+स० केश (चोटी)] १. मरसे की जाति का एक पौधा जिसमे मुरगे की चोटी के-से गहरे उन्नाबी रग के चौडे और बड़े फूल लगते हैं। जटाधारी। २. करांकुल नामक पक्षी।

मुर्गखाना—पु० [फा०] मुरगो के रहने के लिए बनाया हुआ स्थान।

मुर्गबाज—पु० [फा० मुर्गबाज] [भाव० मुर्गबाजी] वह जो मुरगे लडाता हो। वह जिसे मुरगे पालने तथा लडाने मे आनन्द आता हो।

मुर्गबाजी—स्त्री० [फा० मुर्गबाजी] मुरगे लडाने का व्यसन या भाव।

मुर्ग मुसल्लम—पु० [अ०] खाने के लिए समूचा भूना हुआ मुर्गा।

मुर्गाबी†—स्त्री०=मुरगाबी।

मुर्चा†—पु०=मोरचा।

मुर्तकिब—वि० =मुरतकिब।

मुर्तजा—वि०[अ० मुर्तजा] १. मनोवाछित। २. रोचक।

पु० हजरत अली की एक उपाधि।

मुर्तहिन—वि०=मुरतहिन।

मुर्दनी—स्त्री०=मुरदनी।

मुर्दा—वि०, पु०=मुरदा।

मुर्दार—वि०=मुरदार।

मुर्दावली—स्त्री०=मुरदावली।

मुर्दासिंगी—पु०=मुरदासख।

मुर्मुर—पु० [स०√मुर्+क, पृषो० सिद्धि] १ कामदेव। २. सूर्य के रथ के घोडे। ३. भूसी की आग। तुषाग्नि।

मुर्री—पु० [हिं० मरोड या मुडना] १. मरोड-फली (ओषधि)।

पेट में होनेवाली ऐंठन या मरोड़। ३. सिंघाड़े के आकार की एक प्रकार की आतिशबाजी।

स्त्री० कुंडलाकार सींगोंवाली भैंस।

मुर्री—स्त्री० [हिं० मुड़ना या मरोड़ना] १ धागे, सूत आदि के दो सिरों को जोड़ने का एक प्रकार जिसमे उनमें गाँठ नहीं लगाई जाती बल्कि उन्हे मिलाकर मरोड़ भर दिया जाता है। २. कपड़ों आदि को मरोड़कर उनमें डाला जानेवाला बल। जैसे—धोती कमर पर मुर्री देकर पहनी जाती है।

क्रि० प्र०—देना।

मुहा०—मुर्री देना=(क) कपड़ा फाड़ते समय उसके फटे हुए अंशों को दोनो ओर बराबर घुमाते या मोड़ते जाना जिसमें कपड़ा बिलकुल सीधा फटे। (बजाज)

३. कपड़े आदि को मरोड़कर बटी हुई बत्ती। जैसे—मुर्री का नैचा। ४. चिकन या कशीदे की एक प्रकार की उभारदार कढ़ाई जिसमें बटे हुए सूत का व्यवहार होता है।

स्त्री० [?] एक प्रकार की जगली लकडी।

मुर्रीदार—वि० [हिं० मुर्री+फा० दार (प्रत्य०)] जिसमें मुर्री पड़ी हो। ऐंठनदार।

मुर्शिद—वि०, पु०=मुरशिद।

मुल† —अव्य० [सं० मूल] १. मूलत. बात यह है कि। मतलब यह कि। २. किन्तु। अगर। लेकिन। ३. अन्ततः। अन्त मे। आखिरकार।

मुलक† —स्त्री० [हिं० मुलकना] मुलकने की क्रिया या भाव। पुलक। † पु०=मुल्क (देश)।

मुलकना* —अ० [हिं० मुलकित] १. पुलकित होना। उदा०—चंद मुलक्कयउ, जल हँस्यउ, जलहर कंपी पाल।—ढोला मारू। २ मुस्कराना। उदा०—सकुचि, सरकि पिय निकट तें, मुलकि कछुक तन तोरि।—बिहारी।

मुलकित*—वि० [सं० पुलकित] मन्द मन्द हँसता हुआ। मुस्कराता हुआ।

मुलकी—स्त्री०=मुलक।

वि०=मुल्की।

मुलजिम—वि० [अ० मुल्जम] १. जिस पर किसी प्रकार का इलजाम लगाया गया हो। २. अपराधी।

मुलतवी—वि० [अ० मुल्तवी] (कार्य आदि) जिसके सपादन को टाल दिया गया हो। स्थगित। जैसे—आज मुकदमा मुलतवी हो जायगा।

मुलतानी--वि० [हिं० मुलतान (नगर)] १. मुलतान-संबंधी। २ मुलतान प्रदेश में होनेवाला। जैसे—मुलतानी मिट्टी।

पु० मुलतान का निवासी।

स्त्री० १ मुलतान और उसके आस-पास की बोली जो पश्चिमी पंजाबी की एक शाखा है। २ दोपहर के समय गाई जानेवाली एक रागिनी जिसमे गांधार और धैवत कोमल, शुद्ध निषाद और तीव्र मध्यम लगता है। ३. एक प्रकार की बहुत कोमल और चिकनी मिट्टी जो प्राय: सिर मलने मे साबुन की तरह काम में आती है। साधु आदि इससे कपड़ा भी रँगते हैं। मुलतानी मिट्टी।

मुहा०—मुलतानी करना=छींट छापने के पहले कपड़े को मुलतानी मिट्टी में रँगना।

वि० उक्त प्रकार की मिट्टी के रग का। केवड़ई। (क्रीम)

पुं० उक्त प्रकार की मिट्टी के रंग से मिलता-जुलता एक प्रकार का रग। केवड़ई। केवड़ी। (क्रीम)

मुलतानी-धनाश्री—स्त्री० ओड़व सपूर्ण जाति की एक सकर रागिनी जो दिन के तीसरे पहर में गाई जाती है।

मुलतानी मिट्टी—स्त्री० दे० 'मुलतानी' के अन्तर्गत।

मुलना†—पु०=मुल्ला (मुस्लिम धर्माचार्य)।

मुलमची—पु० [अ० मुलम्म:+ची, फा० च. (प्रत्य०)] किसी चीज पर सोने, चाँदी आदि का मुलम्मा करनेवाला। गिलट करनेवाला। मुलम्मासाज।

मुलमुलाना—अ० [अनु०] आँखों की पलकों का बार बार झपकना या उठते और गिरते रहना जो एक प्रकार का रोग माना गया है। (ब्लिंकिंग)

मुलम्मा—वि० [अ० मुलम्म:] चमकता हुआ।

पुं० १ सस्ती धातुओ पर रासायनिक प्रक्रियाओ से किया हुआ बहु-मूल्य धातु का ऐसा लेप जिसमे वह देखने मे सुन्दर और बहुमूल्य जान पड़ती हो। जैसे—गिलट पर चाँदी का मुलम्मा, चाँदी पर सोने का मुलम्मा।

क्रि० प्र०—करना।—चढ़ना।—चढ़ाना।—होना।

२ कलई। ३ किसी साधारण या तुच्छ चीज को आकर्षक रूप देने की क्रिया या भाव। ४. ऊपर या बाहर से बनाया हुआ कोई ऐसा रूप जिसमे अन्दर की त्रुटि या दोष दब जाय, और देखने पर चीज आकर्षक और बहुमूल्य जान पड़े। ५ ऊपरी तड़क-भड़क।

मुलम्माकार, मुलम्मागर—पु० दे० 'मुलम्मासाज'।

मुलम्मासाज—पु० [अ० मुलम्म +फा० साज] [भाव० मुलम्मा-साजी] १ मुलम्मा करनेवाला कारीगर। मुलमची। २. वह व्यक्ति जो साधारण-सी बात को चिकनाकर बहुत ही आकर्षक रूप मे प्रस्तुत करता हो।

मुलहठी—स्त्री०=मुलेठी।

मुलहा—वि० [सं० मूल=नक्षत्र +हा (प्रत्य०)] १. जिसका जन्म मूल नक्षत्र मे हुआ हो। २. दे० 'मुरहा'।

मुलहिक—वि० [अ० मुल्हिक़] किसी के साथ मिला या लगा हुआ। सलग्न।

मुला†—पु०=मुल्ला।

मुला†—अव्य०=मुल।

मुलाकात—स्त्री० [अ० मुलाक़ात] १ दो व्यक्तियो में होनेवाला साक्षात्कार। भेंट। २. जान-पहचान की अवस्था। ३. मैथुन। सभोग। रति-क्रीडा।

मुलाकाती—वि० [अ० मुलाक़ाती] १. (व्यक्ति) जिससे मुलाकात अर्थात् भेंट प्राय या नित्य होती रहती हो। २ जान-पहचानी। परि-चित।

मुलाजमत—स्त्री० [अ० मुलाज़मत] १. मुलाजिम होने अर्थात् किसी की सेवा में रहने या होने का भाव। २ नौकरी।

मुलाज़िम—वि० [अ० मुलाज़िम] १ सेवा मे रहनेवाला। २ प्रस्तुत या उपस्थित रहनेवाला।
पुं० नौकर। सेवक।

मुलाज़िमत—स्त्री०=मुलाज़मत।

मुलाम†—वि०=मुलायम।

मुलायम—वि० [अ० मुलाइम] १ (पदार्थ) जिसका तल इतना कोमल और चिकना हो कि दबाने से सहज मे दब जाय। जो कड़ा और खुरदरा या रूखा न हो। कोमल। 'कड़ा' और 'सख्त' का विपर्याय। २ नाजुक। सुकुमार। ३. जिसमे किसी प्रकार की कठोरता, कर्कशता या तीव्रता न हो। जैसे—मुलायम स्वभाव।

मुलायम रोआँ—पु० [हिं० मुलायम+रोआँ] भेड़, बकरी आदि का सफेद और लाल रोआँ जो मुलायम होता है।

मुलायमियत—स्त्री०[हिं० मुलायम] मुलायम होने का भाव।

मुलाहज़ा—पु० [अ० मुलाहज़:] १ देख-भाल। निरीक्षण। जैसे—जरा मुलाहज़ा कीजिए, इसमे कितनी चमक है। २. ऐसा शील या सकोच जो किसी के सामने कोई अनुचित या अप्रिय बात न होने दे। जैसे—मै तो उन्ही के मुलाहजे मे, तुम्हे छोड़े चलता हूँ।

मुलाहिज़ा—पु०=मुलाहज़ा।

मुलुक—पु०=मुल्क।

मुलेठी—स्त्री० [सं० मधुयष्टि, मूलयष्टी; प्रा० मूलयट्ठी] १ उष्ण प्रदेशो की काली मिट्टी मे होनेवाली एक लता। २ उक्त लता की जड़ जो वैद्यक के मत मे बलवर्धक होती है तथा तृष्णा, ग्लानि और क्षय नाशक होती है।

मलैयन—वि० [अ० मुलय्यिन] १ मुलायम करने या बनानेवाला। २ रेचक।
पु० १ रेचक औषधि। २ पेट से निकलनेवाली वह हवा जिसके फल स्वरूप मल पेट मे निकलता है।

मुल्क—पु० [अ०] १ बड़ा देश। २ देश का छोटा विभाग। प्रदेश। प्रान्त। ३ जगत। ससार।

मुल्कगीरी—स्त्री० [अ० मुल्क+फा० गीरी] देशो को जीतना। देश-विजय।

मुल्की—वि० [अ० मुल्क] १. मुल्क या देश-सम्बन्धी। २ मुल्क की शासन-व्यवस्था से सम्बन्ध रखनेवाला। राजनीतिक। ३ देशी। ('विदशी' या 'विलायती' का विपर्याय)
पु० एक प्रकार का सवत् जो सौर श्रावण की पहली तिथि से प्रारम्भ होता है।

मुल्तजी—वि० [अ०] इल्तिजा अर्थात् प्रार्थना या मिन्नत करनेवाला।

मुल्तवी—वि०=मुलतवी।

मुल्लह—पु० [देश०] वह पक्षी जो पैर बाँधकर जाल में इसलिए छोड़ दिया जाता है कि उसे देखकर और पक्षी आकर जाल मे फँसे। कुट्टा। वि० बहुत अधिक सीधा-सादा या मूर्ख।

मुल्ला—पु० [अ०] १ मुसलमानी धर्म-शास्त्र का आचार्य या विद्वान्। २ मकतब मे छोटे बच्चो को पढ़ानेवाला मुसलमान शिक्षक।

मुल्लाना—पु० [हिं०] मुल्ला के लिए उपेक्षासूचक शब्द।

मुवक्किल—पु० [अ०] १. मुसलिम धर्मशास्त्र के अनुसार किसी काम के लिए नियुक्त फरिश्ता। २ आमिल या ओझा के द्वारा वश मे की हुई कोई आत्मा। ३ वह जो किसी को मुकदमा आदि लड़ने के लिए अपना वकील नियुक्त करता हो। अपना वकील करने या रखनेवाला।

मुवज़्ज़िन—पु० [अ०] नमाज पढ़ने के लिए अजान देकर लोगों को बुलानेवाला।

मुवना†—अ०=मरना।

मुवर्रिख़—पु० [अ०] इतिहास लेखक। इतिहासज्ञ।

मुवर्रिख़ा—वि० [अ० मर्वारिख] १ लिखा हुआ। लिखित। २ अमुक तिथि का लिखा हुआ।

मुवल्लिद—पु० [अ०] पैदा करनेवाला। जनक।

मुवल्लिफ़—पु० [अ०] सग्राहक। सकलनकर्ता।

मुवल्लिफ़ा—वि० [अ० मुवल्लिफ] सगृहीत। सकलित।

मुवस्सा—पु० [अ०] वह व्यक्ति जिसके नाम वसीयत की गई हो।

मुवस्सिर—वि० [अ०] असर करनेवाला। प्रभावकारक।

मुवाना*—स० [हिं० मुवना का स० रूप] हत्या करना। मार डालना।

मुवाज़ी—वि० [अ०] १ बराबर। २ सह-मूल्य।
अव्य० लगभग। प्राय (सख्यासूचक विशेषणो के पहले प्रयुक्त)।

मुवाफ़िक़—वि०=मुआफ़िक।

मुशज्जर—पु० [अ०] वह कपड़ा, पत्थर आदि जिस पर फूल-पत्तियाँ, बेल-बूटे छपे या बने होते है।

मुशफ़िक़—वि० [अ०] १ शफकत अर्थात् कृपा करनेवाला। कृपालु। मेहरबान। २ तरस खाने या दया दिखानेवाला। दयालु।
पु० दोस्त। मित्र।

मुशरब—पु० [अ०] १ पानी पीने की जगह। २ हौज। ३ झरना। ४ झील। ५ मजहब। ६ तौर-तरीका।

मुशरिक—पु० [अ०] खुदा की जात मे दूसरे को शरीक करनेवाला, ईश्वर के अतिरिक्त किसी और को भी पूज्य या उपास्य माननेवाला अर्थात् काफिर।

मुशर्रफ़—वि० [अ०] जिसे शरफ या बड़ाई दी गई हो। प्रतिष्ठित और सम्मानित।

मुशर्रह—वि० [अ०] १ जिसकी शरह या व्याख्या की गई हो। २ विस्तारपूर्वक कहा हुआ।

मुशल—पु० [सं०√मुश्+कलच्] मूसल।

मुशली—पु० [सं० मुशल+इनि] मूसल धारण करनेवाले; श्री बलदेव।

मुशाबह—वि० [अ० मुशब्बह] सदृश। मानिंद।

मुशाबहत—स्त्री० [अ०] देखने मे, एक जैसा होना। सादृश्य। एक-रूपता।

मुशायरा—पु० [अ० मुशाअर] उर्दू-फारसी आदि के शायरों का वह सम्मेलन जिसमे वे अपनी गजले आदि पढ़कर सुनाते हैं।

मुशाहरा—पु० [अ० मशाहर] १ मासिक वेतन। २. वजीफा। वृत्ति।

मुशीर—वि० [अ०] परामर्शदाता।

मुश्क—पु० [फा०] १ कस्तूरी। मृगमद। मृगनाभि। २ गन्ध। बू। ३ दे० 'कस्तूरी मृग'।
स्त्री० [देश०] कधे और कोहनी के बीच का भाग। भुजा। बाँह।

मुहा०—(किसी की) मुश्कें कसना या बाँधना=(अपराधी आदि की) दोनों भुजाओं को पीठ की ओर करके बाँध देना। (इससे आदमी बेबस हो जाता है।)

मुश्क-दाना—पुं० [फा०] एक प्रकार की लता का बीज जो इलायची के दाने के समान होता है और जिसके अन्दर से कस्तूरी की-सी सुगंध निकलती है।

मुश्क-नाफा—पुं० [फा० मुश्के-नाफ़ः] कस्तूरी मृग का नाफा या थैली जिसके अन्दर कस्तूरी रहती है।

मुश्कनाभ—पुं० [फा० मुश्क+सं० नाभ]=मुश्कनाफा।

मुश्क-बिलाई—स्त्री० [फा० मुश्क+हिं० बिलाई=बिल्ली] एक प्रकार का जंगली बिलाव जिसके अंडकोशों का पसीना बहुत सुगंधित होता है। गंधबिलाव।

मुश्कबू—वि० [फा०] जिसकी बू कस्तूरी जैसी हो।

मुश्क-मेंहदी—स्त्री० [फा० मुश्क+महदी] एक प्रकार का छोटा पौधा जो उपवन में शोभा के लिए लगाया जाता है।

मुश्किल—वि० [अ०] (काम) जो करने में बहुत कठिन हो। दुष्कर। दुस्साध्य।

स्त्री० १. कठिनता। दिक्कत। २. विपत्ति। संकट। ३ पेचीदगी।

मुश्की—वि० [फा० मुश्की] १. मुश्क अर्थात् कस्तूरी के रंग का। काला। श्याम। २. जिसमें कस्तूरी पड़ी या मिली हो। जैसे—मुश्की तमाकू। ३ मुश्क जैसा सुगंधित।

पुं० ऐसा घोड़ा जिसके सारे शरीर का रंग काला हो।

मुश्त—स्त्री० [फा०] १ मुट्ठी। २. मुट्ठी में भरी हुई वस्तु। ३ घूँसा।

मुश्तइल—वि० [अ०] १ इश्तेआल दिलाने अर्थात् उत्तेजित करने या भड़कानेवाला। २ जोरों से जलता हुआ। लपटें फेंकनेवाला।

मुश्तबहा—वि० [अ० मुश्तब्ह] संदिग्ध।

मुश्तम्मिल—वि० [अ०] १. शामिल किया हुआ। सम्मिलित। २ व्यापक।

मुश्ताक़—वि० [अ०] १. जिसके मन में इश्तियाक हो। प्रबल इच्छा रखनेवाला। बहुत चाहनेवाला। २. आशिक। प्रेमी।

मुश्तरक—वि० [अ०] =मुश्तरका।

पुं० ऐसा शब्द जिसके कई अर्थ हों।

मुश्तरका—वि० [अ० मुश्तरकः] साझे का।

मुश्तरी—पुं० [अ०] १ खरीददार। क्रेता। २. बृहस्पति ग्रह।

मुश्तहिर—वि० [अ०] १ जिसका या जिसके सम्बन्ध में इश्तहार दिया गया हो। २. प्रसिद्ध। विख्यात। २ इश्तिहार देनेवाला। विज्ञापक।

मुषल—पुं० [सं०√मुष्+कलच्] १. मूसल। २. विश्वामित्र के पुत्र का नाम।

मुषली—स्त्री० [सं० मुषल+ङीप्] १. तालमूलिका। २. छिपकली। पुं० बलराम।

मुषित—भू० कृ० [सं०√मुष्+क्त] १. चुराया हुआ। मूसा हुआ। २. (व्यक्ति) जिसकी चीज चुराई गई हो। ३ जो ठगा गया हो।

मुषुर*—स्त्री० [सं० मुखर] गूँजने का शब्द। गुंजार।

वि०=मुखर।

मुष्क—पुं० [सं०√मुष्+कक्] १. अंडकोश। २. चोर। ३. ढेर। राशि। ४. मोखा नामक गंध द्रव्य।

वि० मांसल।

स्त्री०=मुश्क।

मुष्कक—पुं० [सं० मुष्क+कन्] मोखा नाम का वृक्ष।

मुष्कर—पुं० [सं० मुष्क+र] १. अंडकोष। २. पुरुष की मूत्रेंद्रिय। लिंग।

वि० जिसके अंडकोष बड़े हों।

मुष्क-शून्य—वि० [सं० तृ० त०] जिसके अंडकोश निकाल लिए गए हों। बधिया किया हुआ।

पुं० वह व्यक्ति जो उक्त क्रिया के उपरांत अन्तःपुर में काम करने के लिए नियुक्त होता था। खोजा।

मुष्ट—भू० कृ० [सं०√मुष् (चोरी करना)+क्त] चुराया हुआ।

पुं०=मुष्टिका।

मुष्टक—पुं० [सं० मुष्ट+कन्] सरसों।

मुष्टामुष्टि—स्त्री० [सं० ब० स०] घूँसेबाजी।

मुष्टि—स्त्री० [सं०√मुष्+क्तिच्] १ मुट्ठी। २ घूँसा। मुक्का। ३ चोरी। ४ अकाल। दुर्भिक्ष। ५. राज्य। ६ हथियार की बेंट या मूठ। ७. ऋषि नामक ओषधि। ८ मोखा वृक्ष। ९. एक प्राचीन परिमाण जो किसी के मत से ३ तोले का और किसी के मत से ८ तोले का होता था।

पुं०=मुष्टिक।

मुष्टिक—पुं० [सं० मुष्टि+कन्] १. राजा कंस के पहलवानों में से एक जिसे बलदेव जी ने मारा था। २ घूँसा। मुक्का। ३. मुट्ठी। ४. मुट्ठी के बराबर की नाप। ५. स्वर्णकार। सुनार। ६ तान्त्रिकों के अनुसार एक उपकरण जो बलिदान के योग्य होता है।

मुष्टिकांतक—पुं० [सं० मुष्टिक-अंतक, ष० त०] मुष्टिक नामक मल्ल को मारनेवाले, बलदेव।

मुष्टिका—स्त्री० [सं० मुष्टिक+टाप्] १ मुक्का। घूँसा। २ मुट्ठी।

मुष्टि-देश—पुं० [सं० ष० त०] धनुष का मध्य भाग जो मुट्ठी में पकड़ा जाता है।

मुष्टि-युद्ध—पुं० [सं० तृ० त०] घूँसेबाजी।

मुष्टि-योग—पुं० [सं० मध्य० स०] १ हठयोग की कुछ क्रियाएँ जो शरीर की रक्षा करने, बल बढ़ाने और रोग दूर करनेवाली मानी जाती हैं। २ किसी बड़े काम या बात का छोटा और सहज उपाय।

मुसका—पुं०=मुश्क।

मुसकनि*—स्त्री०=मुसकान।

मुसकराना—अ०=मुस्कराना।

मुसका—पुं० [देश०] पशुओं के मुँह पर बाँधी जानेवाली जाली। जाला।

मुसकाना—स्त्री०=मुस्कान।

मुसकाना—अ०=मुस्कराना।

मुसकानि†—स्त्री०=मुस्कान (मुस्कराहट)।
मुसकिराना—अ०=मुस्कराना।
मुसकुराना†—अ०=मुस्कराना।
मुसक्यान—स्त्री०=मुस्कान (मुस्कराहट)।
मुसक्याना†—अ०=मुस्काना।
मुसखोरी—स्त्री० [हिं० मूस=चूहा+खोरी (प्रत्य०)] खेत मे चूहों की होनेवाली अधिकता और उसके कारण फसलो की हानि। मुसहरी।
मुसजर—वि०=मुशज्जर।
मुसटंडा—वि० [?] हट्टा-कट्टा और बदमाश या लुच्चा। (उपेक्षा-सूचक)
मुसटी—स्त्री० [हिं० मूस=चूहा+टी (अल्पा० प्रत्य०)] छोटा चूहा। चुहिया।
* स्त्री०=मुष्टि।
मुसद्दी—स्त्री० [देश०] मिठाई बनाने का साँचा।
मुसद्दस—वि० [अ०] छ भुजाओंवाला।
पु० १ उर्दू में छ: चरणो की एक प्रकार की कविता। २ वह काव्य ग्रंथ जिसमे छ चरणोवाले पद हों। जैसे—मुसद्दसे हाली।
मुसद्दिक—वि० [अ० मुसद्दक़] जिसकी तसदीक की जा सकी हो। जिसका ठीक होना प्रमाणित या सिद्ध हो चुका हो।
मुसद्दी—पु० [अ०] मुहर्रिर। लिपिक।
मुसना—अ० [स० मूषण=चुराना] १. मूसा या लूटा जाना। अपहृत होना। उदा०—एक कबीरा ना मुसैं जिनि कीन्ही बारह बाट।—कबीर। २ छिपना। लुकना।
मुसन्ना—पु० [अ०] १ किसी असल कागज की दूसरी नकल जो मिलान आदि के लिए अपने पास रखी जाती है। २. रसीद आदि का वह आधा और दूसरा भाग जो रसीद देनेवाले के पास रहता है।
मुसन्निफ—पु० [अ० मुसन्निफ़] [स्त्री० मुसन्निफा] पुस्तक लिखनेवाला लेखक। ग्रन्थकर्ता।
मुसफ़्फ़ी—वि०[अ०] १. साफ करनेवाला। २. शोधक।
मुसब्बर—पु० [अ०] कुछ विशिष्ट क्रियाओ से सुखाया और जमाया हुआ घीकुआँर का गूदा या रस।
मुसमर—पुं० [हिं० मूस=चूहा+मारना] खेत के चूहे खानेवाली एक चिड़िया।
मुसमरवा—पु० [हिं० मूस+मारना] १. मुसमर (चिड़िया)। २. मुसहर।
मुसमुंद—वि० [देश०] ध्वस्त। नष्ट। बरबाद।
पु० ध्वंस। नाश। बरबादी।
मुसमुंध—वि०, पुं०=मुसमुंद।
मुसम्मा—वि० [अ०] [स्त्री० मुसम्मात] नामवाला। नामधारी।
मुसम्मात—वि०, स्त्री० [अ० मुसम्मा का स्त्री० रूप] नामधारिणी। नामवाली।
स्त्री० १. औरत। स्त्री। २. श्रीमती।
मुसम्माती—वि० [अ० मुसम्मात] मुसम्मात या स्त्री से सम्बन्ध रखने-वाला। औरत या औरतो का। जैसे—मुसम्माती मामला।
मुसम्मी—वि०=मुसम्मा।
स्त्री० [मोजैम्बिक, अफ्रीका का एक प्रदेश] एक प्रकार का बढ़िया मीठा नीबू।
मुसरहा†—पु० [हिं० मूसल]ऐसा बैल जिसके शरीर का रंग उसकी पूँछ के रग से भिन्न हो।
मुसरा—पु०=मूसला (जड)।
मुसरिया—स्त्री० [देश०] काँच की चूड़ियाँ ढालने का साँचा।
†स्त्री० १.=मुसरी २.=मुसली।
मुसरी—स्त्री० [हिं० मूसा=चूहा] चूहे का बच्चा।
स्त्री०=मुसली।
मुसर्रत—स्त्री० [अ०] प्रसन्नता। खुशी।
मुसर्रह—वि० [अ०] १. तशरीह से युक्त। व्योरेवार। २. स्पष्ट रूप से कहा हुआ।
मुसल—पु० [स०√मुस्+कलच्]=मूसल।
मुसलधार—क्रि० वि०=मूसलधार।
मुसलमान—पु० [अ० मुसल्मान] [स्त्री० मुसलमानी] वह जो मुहम्मद साहब के चलाए हुए सप्रदाय का अनुयायी हो। इस्लाम धर्म को मानने-वाला। मुहम्मदी।
मुसलमानी—वि० [अ० मुसल्मानी] मुसलमान-सबधी। मुसलमान का। जैसे—मुसलमानी मजहब।
स्त्री० १. मुसलमान होने की अवस्था, गुण या भाव। उदा०—तीस रोजो मे तीन रखे हैं। आप देखे मेरी मुसलमानी।—कोई शायर। २. मुसलमान का कर्तव्य या धर्म। ३. मुसलमानों मे होने-वाली खतने की रसम या रीति। खतना। सुन्नत। उदा०—(क) ख्वाजा साहब यह तो सोचें सुन कर लोग कहेगे क्या। हमने निजामी गाधी जी की करने चले मुसलमानी।—मैथिलीशरण गुप्त। (ख) जाहिदो तौबा तो कर ली और क्या फिर करोगे और मुसलमानी मेरी। —कोई शायर।
क्रि० प्र०—करना।
मुसलाधार—वि०=मूसलाधार।
मुसलायुध—पुं० [स० मुसल-आयुध, ब० स०] बलराम।
मुसलिम—पु० [अ०] मुसलमान।
वि० मुसलमान-सम्बन्धी। मुसलमानो का। जैसे—मुसलिम राज्य।
मुसली—स्त्री० [सं० मुषली] एक पौधा जिसकी जड़ें औषध के काम मे आती हैं।
†पु०=मुशली।
†स्त्री०=हिं० 'मूसल' का स्त्री०।
मुसल्य—वि० [स० मुसल+यत्] मूसल से मारे जाने के योग्य।
मुसल्लम—वि० [फा० मुर्ग मुसल्लम] पूरा। अखड। जैसे—मुर्ग मुसल्लम।
†पु०=मुस्लिम (मुसलमान)।
मुसल्लस—वि० [अ०] तिकोना।
पुं० त्रिकोण (आकृति या क्षेत्र)।
मुसल्लह—वि० [अ०] सशस्त्र।
मुसल्ला—पु० [अ०] [स्त्री० अल्पा० मुसल्ली] १ वह दरी या चटाई जिस पर बैठकर मुसलमान नमाज पढ़ते है। २. बड़े दीये के आकार

का एक प्रकार का बरतन जो बीच में उभरा हुआ होता है। इसमें मुहर्रम मे चढ़ावा चढ़ाया जाता है।

†पुं०=मुसलमान। (उपेक्षासूचक)

मुसल्सल—वि० [अ०] १. एक सिलसिले से लगा हुआ। क्रमबद्ध। शृंखलित। २. कैद।

अव्य० निरंतर। लगातार।

मुसवाना—स०[हिं० मूसना का प्रे० रूप] १. किसी को मूसने में प्रवृत्त करना २ किसी को ऐसी स्थिति में लाना कि वह मूसा जाय।

मुसव्विर—पुं० [अ०] १. तसवीर खीचने या बनानेवाला। चित्रकार। २. किसी चीज पर बेल-बूटे बनानेवाला कारीगर।

वि० सचित्र।

मुसहर—पुं० [हिं० मूस=चूहा+हर (प्रत्य०)] [स्त्री० मुसहरिन] एक जंगली जाति जिसका व्यवसाय जड़ी-बूटी आदि बेचना है। इस जाति के लोग प्राय चूहे तक मार कर खाते हैं, इसी से मुसहर कहलाते हैं।

मुसहिल—वि० [अ० मुस्हिल] दस्तावर। रेचक।

पु० १. ऐसा हलका जुलाब जिसमे थोड़े-से दस्त आते हो। २. हकीमी चिकित्सा मे किसी को जुलाब देने से पहले पिलाई जानेवाली वह दवा जो पेट के अन्दर का मल मुलायम करती है।

मुसाना—स० [हिं० मुसना का स०] १. किसी को मूसने मे प्रवृत्त करना। २. किसी के द्वारा अपनी कोई चीज गँवाना। मूसा जाना। उदा०—मदन चोर सौं जानि मुसायौ।—सूर।

मुसाफ—पु० [अ० मुसाफ़] १. युद्ध। समर। २.युद्धस्थल। लड़ाई का मैदान। ३. शत्रु के चारों ओर डाला जानेवाला घेरा।

पु० [अ० मुसहफ़] १. लेखो आदि का सकलन या सग्रह। २. कुरान।

मुसाफिर—पु० [अ० मुसाफ़िर] बटोही। पथिक।

मुसाफिरखाना—पु० [अ० मुसाफ़िर+फा० खानः] १. यात्रियो के विशेषत रेल के यात्रियो के ठहरने के लिए बना हुआ विशिष्ट स्थान। २. धर्मशाला या सराय जिसमें मुसाफिर ठहरते हैं।

मुसाफिरी—स्त्री० [अ०] १. मुसाफिर होने की अवस्था या भाव। २ प्रवास। यात्रा।

मुसाहब—पु० [अ० मुसाहिब] किसी बड़े आदमी के पास उठने-बैठने-वाला व्यक्ति। पारिषद्।

मुसाहबत—स्त्री० [अ०] मुसाहब होने की अवस्था, काम या भाव।

मुसाहबी—स्त्री० [अ० मुसाहब+ई (प्रत्य०)] मुसाहब का काम या पद।

मसाहिब—पु० [अ०]=मुसाहब।

मुसीबत—स्त्री० [अ०] १. तकलीफ। कष्ट। २. विपत्ति। संकट।

क्रि० प्र०—आना। —उठाना। —झेलना। —पड़ना। —भोगना। —सहना।

मुसुकाना†—अ०=मुस्कराना।

मुसुकाहट*—स्त्री०=मुस्कराहट।

मुसौवर—पु० [अ० मुसव्विर] चित्रकार।

मुसौवरी—स्त्री० [अ० मुसव्विरी] चित्रकारी।

मुस्कराना—अ० [?] इस प्रकार धीरे से हँसना कि होंठ फैल जायँ परन्तु दशन-पंक्ति दिखाई न दे।

मुस्कराहट—स्त्री० [हिं० मुस्कराना] मुस्कराने की अवस्था या भाव।

मुस्कान—स्त्री०=मुस्कराहट।

मुश्किल—वि०, स्त्री०=मुश्किल।

मुस्की†—स्त्री०=मुसकराहट।

वि०=मुश्की।

मुस्क्यान*—स्त्री०=मुस्कान।

मुस्टंडा—वि०=मुसटंडा।

मुस्त—पुं० [सं०√मुस्त् (इकट्ठा होना)+क, अच् वा] नागरमोथा।

मुस्तअफी—पु० [अ०] १. इस्तीफा देनेवाला। २. माफी माँगने-वाला।

मुस्तअमल—वि० [अ०] १ जो अमल में लाया गया हो। कार्यरूप में परिणत किया हुआ। २. उपयोग में लाया हुआ।

मुस्तक—पुं० [स० मुस्त+कन्] नागरमोथा। मोथा।

मुस्तकबिल—वि० [अ० मुस्तक़्बिल] आगे आनेवाला। भावी।

पुं० भविष्यत्काल।

मुस्तकिल—वि० [अ०]१. अटल। स्थिर। २. दृढ़। मजबूत। पक्का। जैसे—मुस्तकिल इरादा। ३. किसी पद पर स्थायी रूप से नियुक्त। (व्यक्ति)

मुस्तकीम—वि० [अ०] १. जो टेढ़ा न हो। सीधा। ऋजु। २. ठीक। वाजिब।

मुस्तगीस—पु० [अ०] १. वह जो किसी पर या किसी प्रकार का इस्त-गासा या अभियोग उपस्थित करे। फरियादी। २. दावेदार। मुद्दई।

मुस्तदई—पुं० [अ०] इस्तदुआ या प्रार्थना करनेवाला। प्रार्थी।

मुस्तनद—वि० [अ०] १. जो सनद के अर्थात् प्रमाण के रूप मे माना जाय। २. विश्वस्त।

मुस्तफ़ा—वि० [अ०] १. स्वच्छ। साफ। २. पवित्र। पुनीत।

पु० मुहम्मद साहब की एक उपाधि।

मुस्तफ़ीद—वि० [अ०] फायदा उठानेवाला। लाभ प्राप्त करनेवाला।

मुस्तसना—वि० [अ० मुस्तस्ना] १ अलग किया हुआ। छाँटा हुआ। भिन्न। २. नियम, विधि आदि के प्रयोग में जो अपवाद के रूप में हो। ३. जिस पर से किसी प्रकार की पाबदी उठा या हटा ली गई हो। ४. जो किसी प्रकार की आज्ञा, नियम आदि के दायरे मे न आता हो।

मुस्तहक़—वि० [अ०] १. अधिकारी। हकदार। २. किसी काम या बात के लिए उपयुक्त या योग्य। पात्र। ३. जरूरतमद।

मुस्ता—स्त्री० [स० मुस्त-टाप्] मोथा नामक घास।

मुस्ताद—पु० [स०] जगली सूअर।

मुस्तैद—वि० [अ० मुस्तइद] [भाव० मुस्तैदी] १. जो किसी कार्य के लिए पूर्ण रूप से उद्यत या तत्पर हो। कटिबद्ध। सन्नद्ध। २. हर काम में चालाक, तेज या फुरतीला।

मुस्तैदी—स्त्री० [अ० मुस्तइदी] मुस्तैद होने की अवस्था या भाव। सन्नद्धता।

मुस्तौजिर—पु० [अ०] ठेकेदार। इजारेदार।

मुस्तौजिरी—स्त्री० [अ०] ठेकेदारी।

मुस्तौफ़ी—पुं० [अ०] पदाधिकारी जो अपने अधीनस्थ कर्मचारियो के हिसाब की जाँच-पड़ताल करे। पड़तालक।

मुहकम—वि० [अ० मुह्‌कम] १. दृढ़। पक्का। मजबूत। २. टिकाऊ। पायदार। ३. अटल।

मुहकमा—पु० [अ० मुहाकम] बड़े कार्य अथवा कार्यालय का विभाग। सीगा।

मुहक्किक़—पु० [अ०] १ तहकीक अर्थात् अन्वेषण करनेवाला। अन्वेषक। अनुसंधाता। २. वैज्ञानिक। ३. दार्शनिक।

मुहतमिम—वि० [अ० मुह्‌तमिम] एहतमाम अर्थात् बंदोबस्त करनेवाला।
पु० प्रबंधक (व्यवस्थापक)।

मुहतरका—पु० [फा० मुहतरक] वह कर जो व्यापार, वाणिज्य आदि पर लगाया जाय।

मुहतरम—वि० [अ० मुह्‌तरम] १. सम्मानित। २ आदरणीय। ३. महोदय। महानुभाव।

मुहतशिम—वि० [अ० मुह्‌तशिम] १. एहतशम अर्थात् वैभव से युक्त। २. धनाढ्य। सम्पन्न।

मुहतसिब—पुं० [अ० मुह्‌तसिब] वह जो लोगों के सदाचार आदि पर विशेष ध्यान रखता हो; और उन्हें सदाचारी बनाने के प्रयत्न में रहता हो।

मुहताज—वि० =मोहताज।

मुहताजी—स्त्री० =मोहताजी।

मुहद्दिस—पु० [अ०] हदीस अर्थात् इस्लामी धर्म-शास्त्र का ज्ञाता।

मुहनाल—स्त्री० =मुँह-नाल।

मुहबनी—स्त्री० [देश०] एक प्रकार का फल जो नारंगी की तरह का होता है।

मुहब्बत—स्त्री० [अ०] १. प्रीति। प्रेम। प्यार।
मुहा०—**मुहब्बत उछलना**=प्रेम का आवेश होना। (व्यंग्य)
२. शृंगारिक क्षेत्र में, स्त्री और पुरुष में होनेवाला प्रेम। इश्क।

मुहब्बती—वि० [अ० मुहब्बत] १. जो सहज में सब से प्रेम या स्नेह का व्यवहार स्थापित कर लेता हो। २. मुहब्बत से भरा हुआ। प्रेमपूर्ण।

मुहम्मद—वि० [अ०] सराहा हुआ। प्रशंसित।
पु० इस्लाम के प्रवर्तक (सन् ५७०-६२२ ई०)। अरब के प्रसिद्ध पैगम्बर या धर्माचार्य।

मुहम्मदी—पु० [अ०] हजरत मुहम्मद साहब का अनुयायी। मुसलमान।
वि० मुहम्मद सम्बन्धी। मुहम्मद का।

मुहय्या—वि० =मुहैया।

मुहर†—स्त्री० =मोहर।

मुहरमुह—अव्य० [सं० मुहुर्मुहु] १. बार बार। २. प्रति क्षण।

मुहरा†—पु० =मोहरा।

मुहरिया†—स्त्री० १. =मोहर २. ='मोहरा' का स्त्री० अल्पा०। ३. =मोरी।

मुहरी—स्त्री० १. 'मोहरा' का स्त्री० अल्पा०। २. मोहरी। ३. मोरी।

मुहर्रम—वि० [अ०] जो हराम अर्थात् निषिद्ध हो।
पु० १. इस्लामी वर्ष का पहला महीना, जिसमें इमाम हुसेन शहीद हुए थे। २. इस महीने में इमाम हुसेन का शोक मनाने के दस दिन।
मुहा०—**(किसी की) मुहर्रम की पैदाइश होना**=सदा दुःखी और चिंतित रहनेवाला होना।

मुहर्रमी—वि० [अ० मुहर्रम + ई (प्रत्य०)] १. मुहर्रम-संबंधी। मुहर्रम का। २. शोक-सूचक। ३. बहुत ही दुःखी और मनहूस।

मुहर्रिक—पु० [अ०] १. हरकत देनेवाला। चालक। २. प्रेरक। ३. प्रस्तावक। ४. गतिशील।
वि० [अ०] १ हरकत अर्थात गति प्रदान करनेवाला। २. गतिशील। ३. भड़कानेवाला। प्रेरक। ४. प्रस्ताव उपस्थित करनेवाला।

मुहर्रिर—पु० [अ०] [भाव० मुहर्रिरी] १. किसी कार्यालय में कागज आदि लिखने का काम करनेवाला। लिपिक। २ वकीलों आदि के साथ रहनेवाला उनका मुंशी।

मुहर्रिरी—स्त्री० [अ०] मुहर्रिर का काम, पद या पेशा।

मुहलत—स्त्री० =मोहलत।

मुहला†—पु० [स्त्री० अल्पा० मुहली] =मूसल।
†पु० =महल्ला।

मुहलेठी†—स्त्री० =मुलेठी।

मुहल्ला—पु० =महल्ला।

मुहसिन—वि० [अ० मुह्‌सिन] एहसान अर्थात् उपकार करनेवाला।

मुहसिल—वि० [अ० मुह्‌स्सिल] १. महसूल वसूल करनेवाला। २. तहसील वसूल करनेवाला। उगाहनेवाला।
पु० वह नौकर या फेरीदार जो घूम-घूम कर रुपए वसूल करता हो।

मुहाफिज—वि० [अ०] हिफाजत करनेवाला। रक्षक।
पु० अभिभावक। संरक्षक। सरपरस्त।

मुहाफिजत—स्त्री० [अ०] १ देख-रेख। रखवाली। रक्षा। २. पालन-पोषण।

मुहार—स्त्री० [अ० मिहर] पशुओं के नथने में बाँधी जानेवाली रस्सी। नकेल।

मुहारनी†—स्त्री० [हिं० मुँह + अरनी (प्रत्य०)] भारतीय शिक्षा-प्रणाली में आरंभिक तथा छोटे विद्यार्थियों से कराई जानेवाली वह क्रिया जिसमें गिनती, पहाड़े आदि याद कराने के लिए सामूहिक रूप से उन्हें खड़ा करके रटाया जाता है।

मुहारा†—पु० [हिं०] १. मुँह अर्थात आगे की ओर का भाग। २. प्रवेश करने का द्वार या मार्ग। जैसे—कागड़ का मुहारा।

मुहाल—पु० [हिं० मुँह + आला (प्रत्य०)] हाथी के दाँतों पर शोभा के लिए चढ़ाई जानेवाली चूड़ी।
वि० [अ०] १ जिसे करना कठिन हो। दुष्कर। २ जिसका होना नामुमकिन हो। असंभव।
पु० १ महाल। २ मुहल्ला।

मुहावरत—स्त्री० [अ०] परस्पर की बातचीत।

मुहावरा—पु० [अ० मुहावर] १ वह शब्द, वाक्य या वाक्यांश जो अपने अभिधार्थ से भिन्न किसी और अर्थ में रूढ़ हो गया हो। २. अभ्यास।

मुहावरेदार—वि० [अ० मुहावर + फा० दार] १. मुहावरे से युक्त (कथन या भाषा)। २ जिसमें मुहावरों का प्रयोग ठीक तरह से या भली-भाँति से हुआ हो।

मुहावरेदारी—स्त्री० [हिं० मुहावरेदार+ई (प्रत्य०)] १. मुहावरों के ठीक प्रयोग का ज्ञान। २. मुहावरों से अभिज्ञ होने की अवस्था या भाव।

मुहासबा—पुं०=मुहासिबा।

मुहासरा—पुं०=मुहासिरा।

मुहासा—पुं०=मुँहासा।

मुहासिब—वि०[अ०] हिसाब करनेवाला।

पुं०१ गिनतरा। २ अकेक्षक।

मुहासिबा—पुं०[अ०]१. हिसाब। लेखा। २. लेखे या हिसाब की जाँच-पड़ताल। ३ किसी घटना के विषय में की जानेवाली पूछ-ताछ।

मुहासिरा—पुं०[अ० मुहासर]१. चारो ओर से घेरने की क्रिया या भाव। २ हद-बंदी।

मुहासिल—पुं०[अ०]१ आय। आमदनी। २ नफा। मुनाफा।

मुहिं†—सर्व०=मोहिं (मुझे)।

मुहिब्ब—पुं०[अ०]१ दोस्त। मित्र। २ प्रियतम।

मुहिम—स्त्री०[अ०]१. कोई कठिन या बडा काम। भारी, महत्त्वपूर्ण अथवा जानजोखिम का काम। २ सैनिक आक्रमण। चढ़ाई। ३ युद्ध। समर।

मुहिर—पुं० [स०√मुह् (मुग्ध होना)+किरच्] कामदेव।

वि० बेवकूफ। मूर्ख।

मुहीम†—स्त्री०=मुहिम।

मुहुः(स्)—अव्य०[सं० √ मुँह्+उसिक्] फिर-फिर। बार-बार।

मुहुपुची—स्त्री०[देश०] प्राय रात के समय उडनेवाला काले रंग का एक प्रकार का छोटा पतिंगा जो मूँगफली की फसल को हानि पहुँचाता है। ये पत्तियों पर अंडे देते हैं जिससे पत्तियाँ सूख जाती है। खुरल।

मुहुर्मुहुः (स्)—अव्य०[सं० वीप्सा में द्वित्व] थोड़ी-थोड़ी देर पर, बार-बार या रह-रह कर।

मुहूर्त्त—पुं०[स० √हुर्च्छ् (टेढ़ा होना)+क्त, मुडागम]१ काल का एक मान जो दिन-रात के तीसवें भाग के बराबर होता है। २ किसी काम के लिए निश्चित या स्थिर किया हुआ विशिष्ट समय। ३ फलित ज्योतिष मे, कोई शुभ काम करने अथवा यात्रा, विवाह आदि के उद्देश्य से काल-गणना के द्वारा स्थिर किया जानेवाला समय।† ४ श्रीगणेश। आरंभ।

मुहैया—वि०[अ०] आवश्यकता की पूर्ति के लिए लाकर इकट्ठा किया या रखा हुआ। प्रस्तुत। जैसे—शादी का सामान मुहैया करना।

मुह्यमान—वि०, [सं०√मुह्+शानच्, यक्, मुक्-आगम]१. मूर्च्छित। २ मोहयुक्त।

मूँ—सर्व०१ =मेरा। २ =मुझे। (डिं०)

मूँकना—स०[म० मुक्त]१. मुक्त करना। छोडना। २. त्यागना।

मूँग—पुं०[सं० मुद्ग] एक प्रसिद्ध अन्न जिसकी दाल बनती है।

पद—मूँग की दाल खानेवाला=डरपोक, निकम्मा या पुरुषार्थहीन।

मुहा०—(किसी पर) मूँग पढ़कर मारना=किसी प्रकार का तांत्रिक उपचार विशेषतः वशीकरण करने के लिए मंत्र पढ़ते हुए किसी पर मूँग के दाने फेंकना। **(किसी की) छाती पर मूँग दलना**=किसी को दिखलाते हुए ऐसा काम करना जिससे उसे ईर्ष्या या जलन हो, अथवा हार्दिक कष्ट हो।

मूँगफली—स्त्री० [हिं० भूम (भूमि)+फली]१. जमीन पर चारो ओर फैलनेवाला एक प्रकार का क्षुप जिसकी खेती उसके फलो के लिए प्रायः सारे भारत में की जाती है। इसकी जड़ में मिट्टी के अन्दर फल लगते हैं, जिसके दाने या बीज रूप-रंग और स्वाद मे बादाम से बहुत-कुछ मिलते-जुलते होते हैं। २. इस क्षुप का फल। चिनिया बादाम। विलायती मूँग। (संस्कृत में इसे भू-चणक और भू-शिंबिका कहते हैं।)

मूँगर(१)—पुं०[स्त्री० अल्पा० मूँगरी] =मोंगरा।

मूँगरी—स्त्री० [?] एक प्रकार की तोप।

मूँगा—पुं०[हिं० मूँग] १. समुद्र में रहनेवाले एक प्रकार के कीड़ो के समूह-पिंड की लाल ठठरी जिसकी गुरिया बनाकर पहनते हैं। इसकी गिनती रत्नों मे की जाती है। (कोरल) २. एक प्रकार का गन्ना।

पुं०=मोगा (रेशम)।

मूँगिया—वि०[हिं० मूँग+इया (प्रत्य०)] मूँग के दानों के रंग का।

पुं०१. उक्त प्रकार का अमौआ या हरा रंग जिसमे कुछ नीली आभा भी होती है। मुंगी। २. उक्त रंग का पुरानी चाल का एक प्रकार का धारीदार कपडा।

मूँगी—वि०[हिं० मूँगा] मूँगे के रंग की तरह का लाल।

पुं० उक्त प्रकार का लाल रंग। (कोरल)

मूँछ—स्त्री०[सं० श्मश्रु; प्रा० मस्सु मे मच्छु] १. पुरुषों तथा कुछ अन्य जीव-जंतुओ के ऊपर वाले होठ और नासिका के बीचवाले अंश मे होनेवाले बाल। लोक-व्यवहार मे यह पौरुष के लक्षण के रूप मे माने जाते हैं।

मुहा०—मूँछें उखाड़ना=(क) कठिन दंड देना। (ख) घमंड चूर करना। **मूँछों पर ताव देना या हाथ फेरना**=विजय या वीरता की अकड़ दिखाना। अभिमान या बड़प्पन प्रकट करना। **मूँछें नीची होना**=(क) अभिमान नष्ट होने के कारण लज्जित होना। (ख) अपमान या अप्रतिष्ठा होना।

२. कुछ विशिष्ट जीव-जंतुओ के होंठो पर होनेवाले उक्त प्रकार के बाल जिनके द्वारा वे चीजों का स्पर्श करके उनका ज्ञान प्राप्त करते है।

मूँछी—स्त्री०[देश०] एक प्रकार की कढ़ी।

मूँज—स्त्री०[स० मुञ्ज] सरकंडो के ऊपरी भाग का छिलका जिसे भिगो और कूटकर चारपाइयाँ बुनने के लिए बाध या बान (एक प्रकार की रस्सी) बनाया जाता है।

मूँड़—पुं०[स० मुंड] सिर। कपाल।

मुहा०—मूँड़ मुँड़ाना=त्यागी या विरक्त होकर किसी साधु-सन्यासी का चेला बनना। उदा०—मूँड मुँडाये, जटा बढ़ाये, मगन फिरै ज्यो भैसा।—कबीर।

विशेष—'मूँड' के शेष मुहा० के लिए देखें 'सिर' के मुहा०।

मूँड़-कटा—वि०[हिं० मूँड+काटना] सिर-कटा।

मूँड़न—पुं०=मुंडन।

मूँड़ना—स०[स० मुंडन]१. उस्तरे से रगडकर शरीर के किसी अंग पर निकले हुए बाल निकालना, विशेषत. सिर के बाल निकालना। २. चालाकी से किसी से धन-दौलत ले लेना। ३. किसी को चेला बनाना।

मूँड़ी—स्त्री०[हिं० मूँड (सिर) का स्त्री० अल्पा०] १. सिर। मस्तक। मूँड।

पद—मूँड़ी-काटा=स्त्रियों की एक गाली जिसका आशय होता है-- तेरा सिर काटा जाय अर्थात् तू मर जाय।

मुहा०—(किसी की) मूँड़ी मरोड़ना=किसी को धोखा देकर उसका माल छीन लेना या दबा बैठना।

२. किसी चीज का अगला और ऊपरी भाग।

मूँड़ीबंध—पुं०[हिं० मूँड़+बंध] कुश्ती का एक पेच।

मूँदना—स०[सं० मुद्रण] १. ऊपर से कोई वस्तु डाल या फैलाकर किसी वस्तु को छिपाना। आच्छादित करना। २. छेद या सूराख बन्द करना। ३. आँखों के सम्बन्ध में दोनों पलकें इस प्रकार मिलाना कि देखने का काम बन्द हो जाय।

संयो० क्रि०—देना।—लेना।

४. किसी चीज को उलट या ढककर रखना।

मूँदर†—स्त्री०=मुंदरी (अँगूठी)।

मूँध†—स्त्री०=मुग्धा। (राज०) उदा०—मूँध मेरसी खीज।—ढो० मा०।

मू—पुं०[फा०] १. बाल। २. रोआँ। ३. केश।

मूआ—वि०[मृत] [स्त्री० मूई] १. मरा हुआ। मृत। २. उपेक्षा-सूचक गाली के रूप में प्रयुक्त होनेवाला विशेषण। जैसे—मूआ नौकर अभी तक नहीं आया। (स्त्रियाँ)

मूक—वि० [सं०√मव् (बाँधना)+कक्, वकार को ऊठ्] [भाव० मूकता] १ जो कुछ भी बोल न रहा हो। २ गूँगा। ३ दीन-हीन। लाचार। पुं० १ दानव। राक्षस। २. तक्षक का एक पुत्र।

मूकता—स्त्री०[सं० मूक+तल्+टाप] मूक होने की अवस्था या भाव।

मूकना—स०[सं० मुक्त]१ मुक्त करना। २ अलग या पृथक् करना। ३ त्यागना।

मूका†—पुं०१ =मुक्का। २=मोखा।

मूकिमा (मन्)—स्त्री० [सं० मूक+इमनिच्] मूक होने की अवस्था या भाव। मूकता।

मूखना†—स०=मूसना।

मूखना*—स०=मोचना।

पुं० =मोचना।

मूछ—स्त्री०=मूँछ।

मूजिद—पुं०[अ०] आविष्कारक।

मूजिब—पुं०[अ०] कारण। सबब।

मूजी—वि०[अ०]१ ईजा देने अर्थात् कष्ट पहुँचानेवाला। सतानेवाला। अत्याचारी। २ खल। दुर्जन। ३ बहुत बड़ा कंजूस। परम कृपण।

मूझ†—सर्व०=मुझ।

मूझना—अ०[सं० मूर्च्छन]१. मूर्च्छित होना। २ मुरझाना।

मूठ—स्त्री०[सं० मुष्टि]१ मुट्ठी।

मुहा०—मूठ करना=तीतर, बटेर आदि को गरमाने तथा उत्तेजित करने के लिए मुट्ठी में रखकर हलके हाथ से बार बार दबाना। मूठ मारना=(क) कबूतर को मुट्ठी में पकड़ना। (ख) हस्त-क्रिया करना।

२ किसी उपकरण, यंत्र, शस्त्र आदि का वह भाग जहाँ से उसे पकड़ा या उठाया जाता है। जैसे—छाता, चक्की या तलवार की मूठ। ३. किसी औजार, हथियार आदि का वह भाग जो व्यवहार करते समय हाथ में रहता है। मुठिया। दस्ता। कब्जा। जैसे—छाते या तलवार की मूठ। ४ उतनी वस्तु जितनी मुट्ठी में आ सके। ५. एक प्रकार का जुआ जिसमें मुट्ठी में कौड़ियाँ बन्द करके उनकी संख्या बुझाते हैं। ६ मंत्र-तंत्र का प्रयोग। जादू। टोना।

मुहा०—मूठ मारना=किसी पर जादू-टोना करने के लिए मुट्ठी में कोई चीज पकड़कर और मंत्र पढ़कर किसी पर फेंकना।

मूठना*—अ०[सं० मृष्ट; प्रा० मुट्ठ] नष्ट होना। मर मिटना। न रह जाना।

मूठा—पुं०=मुट्ठा।

मूठाली—स्त्री०[हिं० मूठ+आली (प्रत्य०)] तलवार। (डिं०)

मूठि†—स्त्री०१.=मूठ। २.=मुट्ठी।

मूठी*—स्त्री०=मुट्ठी।

मूड़—पुं०=मूँड़।

वि०=मूढ़।

मूड़ी†—स्त्री०[?]ऐसे भुने हुए चावल जो फूलकर अन्दर से पोले हो जाते हैं। फरवी।

†स्त्री०=मूँड़ी (मुंड या मस्तक)।

मूड़ी-काटा—वि० [हिं० मूँड़+काटना] जिसका सिर काटे जाने के योग्य हो, अर्थात् परम दुष्ट। (स्त्रियों की गाली)

मूढ़—वि०[सं० √ मुह् (अविवेक)+क्त] [भाव० मूढ़ता] १ जिसे कुछ भी बुद्धि न हो। परम मूर्ख। बिलकुल नासमझ। २ निश्चेष्ट। स्तब्ध। ३. हक्का-बक्का।

पुं० तमोगुण की प्रधानता के कारण चित्त के निन्द्रायुक्त या स्तब्ध होने की अवस्था या भाव।

मूढ़-गर्भ—पुं०[सं० कर्म० स०] ऐसा गर्भ जिसमें से सन्तान न हो सके। विकृत होकर गिर जानेवाला गर्भ।

मूढ़ता—स्त्री० [सं० मूढ़+तल्+टाप्] १ मूढ़ होने की अवस्था या भाव। २ मूर्खता। ३ अज्ञान।

मूढ़-वात—पुं०[सं० कर्म० स०]१ किसी कोश में रुकी या बँधी हुई वायु। २. बहुत जोरों का अन्धड़। तूफान। जैसे—मूढ़-वाताहत जहाज=तूफान का मारा हुआ जहाज।

मूढ़ात्मा (त्मन्)—वि० [सं० मूढ़-आत्मन्, ब० स०] बहुत बड़ा मूर्ख।

मूढ़ी†—स्त्री०=मूड़ी (फरवी)।

मूत—पुं०[सं० मूत्र] १ पेशाब। मूत्र।

मुहा०—(किसी के आगे) मूत निकल पड़ना=भय से त्रस्त होना। मूत से निकल कर गू में पड़ना=पहले की अपेक्षा और भी अधिक बुरी दशा में जाना या पड़ना।

२. औलाद। संतान। (बाजारू)

मूतना—अ०[हिं० मूत+ना (प्रत्य०)] पेशाब करना।

मुहा०—(किसी चीज पर) मूतना=बहुत ही तुच्छ या हेय और फलत अग्राह्य या अस्पृश्य समझना।

मूतरी†—पुं०[देश०] एक प्रकार का जंगली कौआ। महताब। महालत।

मूत्र—पुं० [सं०√ मूत्र् (मूतना)+घञ्] प्राणियों के उपस्थ मार्ग या

जननेंद्रिय से निकलनेवाला वह दुर्गन्धमय तरल पदार्थ जिसमें शरीर के अनेक निकृष्ट विषाक्त अंश मिले रहते हैं। पेशाब। मूत।

मूत्र-कृच्छ्--पुं०[सं० मध्य० स०] एक प्रकार का रोग जिसमें मूत्र थोड़ा-थोड़ा, कुछ रुक-रुककर और प्राय: कुछ कष्ट से होता है। (स्ट्रैंगुरी)

मूत्र-क्षय—पुं०[सं० ष० त०] मूत्राघात रोग का एक भेद।

मूत्र-ग्रंथि—पुं०[सं० ष० त०] मूत्राघात रोग का एक भेद।

मूत्र-गणक—पुं०[सं० ष० त०] हाथी, भेड़े, ऊँट, गाय, बकरे, घोड़े, भैंसे, गधे, पुरुष और स्त्री के मूत्रों का समूह।

मूत्र-दोष—पुं०[सं० ब० स०] मूत्र-संबंधी कोई कष्ट या विकार।

मूत्र-नाली--स्त्री०[सं० ष० त०] उपस्थ के ऊपर या अन्दर की वह नाली जिसके द्वारा शरीर से मूत्र निकलता है।

मूत्र-पतन—पुं०[सं० ब० स०]१. मूत्र गिरने की अवस्था या भाव। २ गन्ध-बिलाव, जिसका मूत्र प्राय गिरता रहता है।

मूत्र-पथ- पुं०[सं० ष० त०] मूत्र-नाली।

मूत्र-परीक्षा—स्त्री० [सं० ष० त०] चिकित्साशास्त्र में, रोगी के मूत्र की वह वैज्ञानिक जाँच जिससे यह पता चलता है कि शरीर में किस प्रकार के कीटाणु या विकार हैं। (यूरिन एग्जामिनेशन)

मूत्र-प्रसेक--पुं०[सं० ष० त०] मूत्र-नाली।

मूत्र-फला—स्त्री०[सं० ब० स०, +टाप्] ककड़ी।

मूत्र-मार्ग—पुं०[सं०] मूत्राशय के साथ लगी हुई वह नली या सुरंगिका जिससे होकर मूत्र आगे बढ़कर निकलने के लिए जननेंद्रिय के ऊपरी भाग तक पहुँचता है। (यूरेथ्रा)

मूत्र-रोध—पुं०[सं०ष० त०] वह अवस्था जिसमे किसी प्रकार के शारीरिक विकार के फलस्वरूप पेशाब होना बंद हो जाता है। पेशाब बन्द होने का रोग।

मूत्रल—वि०[सं० मूत्र√ ला (लेना) +क] [स्त्री० मूत्रला]अधिक और अनेक बार मूत्र लानेवाला (औषध या पदार्थ)।

मूत्रला—स्त्री०[सं० मूत्रल+टाप्] ककड़ी।
वि० स० 'मूत्रल' का स्त्री०।

मूत्र-वृद्धि—स्त्री०[सं० ष० त०] अधिक बार तथा अपेक्षाकृत अधिक परिमाण मे पेशाब होना।

मूत्र-स्रोत—पुं०[सं० ष० त०] दे० 'मूत्र-मार्ग'।

मूत्राघात—पुं०[सं० मूत्र-आघात, ब० स०] एक प्रकार का रोग जिसमे शरीर के अन्दर कुछ समय के लिए मूत्र का बनना बन्द हो जाता है।

मूत्राशय—पुं०[सं०] नाभि के नीचे की वह थैली जिसमे मूत्र संचित होता है। मसाना। (यूरिनरी ब्लेडर)

मूत्रित—भू० कृ० [सं० मूत्र+इतच्] १. मूत्र के रूप मे निकला हुआ। २. जो पेशाब के स्पर्श के कारण गंदा हो गया हो।

मूना—पुं०[देश०]१. पीतल या लोहे की अँकुसी जो टकुए के सिरे पर जड़ी रहती है और जिसमें रस्सी या डोरा फँसा रहता है। २. एक तरह का झाड़ या उसका फल।
†अ०=मुअना (मरना)।

मूर*—पुं० [सं० मूल]१. मूल। जड़। २. जड़ी। बूटी। ३. मूल धन। असल पूँजी। ४. मूल नक्षत्र।

पुं० अफ्रीका की एक मुसलमान जाति।

मूरख†—वि०=मूर्ख।

मूरखताई*—स्त्री० =मूर्खता।

मूरचा—पुं०=मोरचा (जंग)।

मूरछना†—अ०[सं० मूर्च्छा] मूर्च्छित होना। बेहोश होना।
स्त्री०१.=मूर्च्छा। २ मूर्च्छना।

मूरछा—स्त्री०=मूर्च्छा।

मूरत†—स्त्री०=मूर्ति।

मूरति†—स्त्री०=मूर्ति।

मूरतिवंत*—वि०[सं० मूर्ति+वत् (प्रत्य०)] १. मूर्तिमान्। २. देहधारी। सशरीर।

मूरध*—पुं०=मूर्द्धा (सिर)।

मूरा†—पुं०[सं० मूल] बड़ी तथा मोटी मूली।

मूरि*- -स्त्री० [सं० मूल]१ मूल। जड़। २. जड़ी। बूटी।

मूरिस--वि०[अ०] वह जिसका कोई वारिस हुआ हो।
पुं० पूर्वज।

मूरी†—स्त्री०१.=मूली। २. मूरि।

मूरुख*--वि० =मूर्ख।

मूर्ख—वि०[सं० √ मुह्+ख, मूर् आदेश] [भाव० मूर्खता] १. प्राचीन भारतीय आर्यों मे गायत्री न जानने अथवा अर्थ-सहित गायत्री न जाननेवाला। २ जिसमें ठीक ढंग से तथा विचारपूर्वक कोई काम करने अथवा कोई बात समझने-सोचने की योग्यता या शक्ति न हो। बुद्धि के अभाव मे जो ऊट-पटांग काम करता या बातें सोचता हो। ३ लाख समझाने पर भी जिसकी समझ में कोई बात न आती हो।

मूर्खता—स्त्री०[सं० मूर्ख+तल्+टाप्] १. मूर्ख होने की अवस्था या भाव। २ कोई मूर्खतापूर्ण आचरण, कार्य या बात।

मूर्खत्व--पुं०[सं० मूर्ख+त्व]=मूर्खता।

मूर्खिनी*—स्त्री०[सं० मूर्ख] मूर्ख स्त्री।

मूर्खिमा—स्त्री०[सं० मूर्ख+इमनिच्] मूर्खता। बेवकूफी।

मूर्च्छन--पुं० [सं०√मुर्च्छ् (मोह)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० मूर्च्छित] १ किसी की चेतना या संज्ञा का, कुछ विशिष्ट अवस्थाओ मे अस्थायी रूप से लोप करने की क्रिया या भाव। बेहोश करना या बेहोशी लाना। २ प्राचीन काल का एक विशिष्ट तांत्रिक प्रयोग जिससे किसी व्यक्ति की चेतना या संज्ञा नष्ट कर दी जाती थी। ३. आज-कल प्राय. इच्छाशक्ति के प्रयोग से किसी को इस प्रकार चेतनाहीन करना कि उसे शारीरिक कष्टों का अनुभव न हो और उसका स्नायविक तंत्र प्राय बेकाम हो जाय। (मेस्मेरिज्म)

विशेष—इस प्रक्रिया का आविष्कार आस्ट्रिया के मेस्मर नामक चिकित्सक ने रोगियों की चिकित्सा के लिए किया था।

४. उक्त के आधार पर वह प्रक्रिया जिसमे आत्मिक बल के द्वारा किसी को कुछ समय के लिए संज्ञाशून्य करके उससे कुछ असाधारण और विलक्षण कार्य कराये जाते है और जिसकी गणना इंद्रजाल मे होती है। (मेस्मेरिज्म) ५ वैद्यक मे वह प्रक्रिया जिसके द्वारा पारा शुद्ध करने या उसका भस्म तैयार करने के लिए उसकी चंचलता नष्ट करके उसे स्थिर कर देते है। ६. कामदेव के पाँच बाणो में से एक, जिसके प्रभाव

या प्रहार से प्रेमासक्त व्यक्ति कभी-कभी अपनी चेतना या सज्ञा खो देता है।

मूर्च्छना—स्त्री० [स०√मूर्च्छ्+णिच्-युच्-अन, टाप्] १ सगीत मे किसी स्वर से आरभ करके सातवें स्वर तक आरोह कर चुकने के उपरात उन्ही स्वरो से होनेवाला अवरोह। २ उक्त प्रक्रिया के फलस्वरूप होनेवाला शब्द या निकलनेवाला स्वर।

मूर्च्छा—स्त्री० [स०√मूर्च्छ्+अ+टाप्] वह अवस्था जिसमे अस्थायी रूप से किसी की सज्ञा लुप्त हो चुकी होती है। बेहोशी।

विशेष—मूर्च्छा और सन्यास का अतर जानने के लिए दे० 'सन्यास' का विशेष।

मूर्च्छाल—वि० [स० मूर्च्छा+लच्] मूर्च्छित। सज्ञाहीन।

मूर्च्छित—भू० कृ० [स० मूर्च्छा+इतच्] १ जो अचेत या बेहोश पडा हुआ हो। २. (धातु) जिसकी क्रियाशीलता नष्ट कर दी गई हो। जैसे—मूर्च्छित पारा। ३ (व्यक्ति) जो वय अधिक होने के कारण अयोग्य तथा अशक्त हो गया हो।

मूर्छा—स्त्री०=मूर्च्छा।

मूर्छित—भू० कृ० =मूर्च्छित।

मूर्त—वि० [स०√मूर्च्छ् (मूर्च्छित होना)+क्त] १ जिसकी कोई मूर्ति अर्थात् आकार या रूप हो। २ जो किसी प्रकार के ठोस पिंड के आकार या रूप मे हो। जिसका कोई भौतिक अर्थात् कडा या ठोस रूप हो, और इसी लिए जो देखा या पकडा जा सके। साकार। (कान्क्रीट) ३ जिसका महत्त्व या स्वरूप समझ मे आ सके। बुद्धि-ग्राह्य। (टैन्जिबल) ४ मूर्च्छित। बेहोश।

मूर्तता—स्त्री० [स० मूर्त+तल्+टाप्] मूर्त होने की अवस्था या भाव।

मूर्तत्व—पु० [स० मूर्त+त्व] मूर्त होने की अवस्था या भाव। मूर्तता।

मूर्त-विधान—पु० [स० ष० त०] केवल कल्पना के आधार पर घटनाओ, कार्यों आदि के स्वरूप, चित्र आदि बनाने की क्रिया या भाव। प्रतिभावली। (इमेजरी)

मूर्ति—स्त्री० [स०√मूर्च्छ्+क्तिन्, छ-लोप] १ मूर्त होने की अवस्था या भाव। मूर्तता। ठोसपन। २ आकृति। शकल। सूरत। ३ देह। शरीर। ४. किसी की आकृति के अनुरूप गढी हुई विशेषता उपासना, पूजन आदि के लिए बनाई हुई देवी-देवता की आकृति। प्रतिमा। जैसे—सरस्वती की पत्थर या मिट्टी की मूर्ति। †५ चित्र। तसवीर।

वि० जो किसी विषय का बहुत बडा ज्ञाता या पडित हो। (यौ० के अत मे) जैसे—वेद-मूर्ति।

मूर्ति-कला—स्त्री० [स० ष० त०] मूर्तियाँ बनाने की विद्या या हुनर।

मूर्तिकार—पु० [स० मूर्ति√कृ+अण्] १ मूर्ति बनानेवाला कारीगर। २ चित्रकार।

मूर्तिप—पु० [स० मूर्ति√पा] १ पुजारी। २ मूर्तिपूजक।

मूर्ति-पूजक—वि० [स० ष० त०] जो मूर्ति या प्रतिमा की पूजा करता हो। मूर्ति पूजनेवाला। बुतपरस्त।

मूर्ति-पूजन—पु० [स० ष० त०] मूर्तियो की पूजा करने की क्रिया या भाव।

मूर्ति-पूजा—स्त्री० [स० ष० त०] १ सगुण भक्ति के अन्तर्गत, मूर्ति की की जानेवाली पूजा। २ मूर्तियो की पूजा करने की पद्धति, प्रथा या विधान।

मूर्तिभंजक—वि० [स० ष० त०] १ मूर्तियाँ तोडनेवाला। बुतशिकन। २ फलत जिसका मूर्तियो मे विश्वास न हो।

मूर्तिमान् (मत्)—वि० [स० मूर्ति+मतुप्] [स्त्री० मूर्तिमती, भाव० मूर्तिमत्ता] १ जो मूर्त रूप मे हो। २. फलत सगुण तथा साकार। ३ प्रत्यक्ष। साक्षात।

मूर्ति-लेख—पु० [स० मध्य० स०] वह लेख जो किसी मूर्ति के नीचे उसके परिचय आदि के रूप मे अकित किया जाता है।

मूर्ति-विद्या—स्त्री० [स० ष० त०] १ मूर्ति या प्रतिमा गढने की कला। २ चित्रकारी।

मूर्तीकरण—पु० [स० मूर्त+च्वि, इत्व, दीर्घ√कृ+ल्युट्—अन] [भू० कृ० मूर्तीकृत] किसी अमूर्त तत्त्व को मूर्त रूप देने की क्रिया या भाव।

मूर्द्ध—पु० [स० मूर्द्धन्] सिर।

मूर्द्धक—पु० [स० मूर्द्धन्+कन्] क्षत्रिय।

वि० मर्द्ध या सिर से सम्बन्ध रखनेवाला।

मूर्द्ध-कर्णी—स्त्री० [स०] छाता या ऐसी ही और कोई वस्तु जो धूप, पानी आदि से बचने के लिए सिर के ऊपर रखी या लगाई जाती हो।

मूर्द्धकपारी—स्त्री० =मूर्द्धकर्णी।

मूर्द्धखोल—पु० =मूर्द्धकर्णी।

मूर्द्धज—वि० [स० मूर्द्धन्√जन् (उत्पन्न-होना)] मूर्द्धा या सिर से उत्पन्न होनेवाला, अथवा उससे सम्बन्ध रखनेवाला।

पु० केश। बाल।

मूर्द्ध-ज्योति (स्)—स्त्री० [स० ष० त०] ब्रह्मरध्र। (योग)

मूर्द्धन्य—वि० [स० मूर्द्धन्+यत्] १ मूर्द्धा से संबंध रखनेवाला। मूर्द्धा-सबधी। २ मस्तक या सिर मे रहने या होनेवाला। ३ (वर्ण) जिसका उच्चारण मूर्द्धा से होता हो। (दे० 'मूर्द्धन्य-वर्ण')

मूर्द्धन्य-वर्ण—पु० [स० कर्म० स०] देव-नागरी वर्ण-माला मे वे वर्ण जिनका उच्चारण मूर्द्धा से होता है। यथा—ऋ, ट, ठ, ड, ढ, ण, र और ष।

मूर्द्ध-पिंड—पु० [स० उपमि० स०] हाथी का मस्तक।

मूर्द्ध-पुष्प—पु० [स० ब० स०] शिरीष पुष्प।

मूर्द्ध-रस—पु० [स० मध्य० स०] भात का फेन।

मूर्द्धा (र्द्धन्)—पु० [स०√मूर्व् (बाँधना)+कनिन्, व-ध] १. मस्तक। सिर। २ व्याकरण मे, मुँह के अन्दर का तालू और अलिजिह्वा के बीच का अश जिसे जीभ का अग्र भाग ट, ठ, ड, ढ, ण आदि का उच्चारण करते समय उलटकर छूता है।

मूर्द्धाभिषिक्त—भू० कृ० [स० मूर्द्धन्-अभिषिक्त, सुप्सुपा स०] १ जिसके सिर पर अभिषेक किया गया हो। २ (राजा) जिसके राज्यारोहण के समय मूर्द्धाभिषेक नामक धार्मिक कृत्य हुआ हो।

पु० १ राजा। २ क्षत्रिय। ३ एक वर्ण-संकर जाति जिसकी उत्पत्ति ब्राह्मण मे ब्याही क्षत्रिय स्त्री के गर्भ से कही गई है।

मूर्द्धाभिषेक—पु० [स० मूर्द्धन्-अभिषेक, ब० स०] प्राचीन भारत में, एक प्रकार का धार्मिक और राजकीय कृत्य जिसमे किसी नये राजा के गद्दी

पर बैठने से पहले उसके सिर पर मंत्र पढ़कर पवित्र जल छिड़का जाता था।

मूर्वा—स्त्री० [सं०√मूर्व् (बाँधना)+अच्+टाप्] मरोड़फली लता। मधुरसा।

मूर्विका—स्त्री०[सं० मूर्वा+कन्+टाप् ह्रस्व, इत्व] मूर्वा।

मूर्वी—स्त्री०=मूर्वा।

मूल—पुं०[सं०√मू+क्ल, ऊठ्-आदेश] [वि० मूलक] १. पेड़-पौधों का वह भाग जो पृथ्वी के नीचे रहता है, और जिसके द्वारा वे जलीय अंश आदि खींचकर अपना पोषण करते और बढ़ते हैं। जड़। सोर। २. कुछ विशिष्ट प्रकार के पौधों की जड़ें जो प्राय खाने के काम आती हैं। उदा०—सहि दुख कन्द, मूल, फल खाई।—तुलसी।

पद—कंद-मूल।

३. आदि। आरंभ। शुरू। ४ नींव। बुनियाद। ५ कोई ऐसा तत्त्व जिसमें कोई दूसरी चीज या बात निकली, बढ़ी या बनी हो। उत्पादक तत्त्व या बात। जैसे—इस झगड़े का मूल कारण तो बताओ।६. वह धन जो किसी प्रकार के लाभ की आशा मे किसी व्यापार मे लगाया जाय अथवा सूद पर किसी को उधार दिया जाय। असल पूँजी।

मुहा०—मूल पूजना=व्यापार में लगी हुई पूँजी या मूल धन निकल आना।

७ किसी पदार्थ का वह अंग या अंश जहाँ से उस पदार्थ का आरम्भ होता है। जैसे—भुज-मूल। ८. कोई ऐसी चीज जिसकी अनुकृति पर वैसी ही और चीज या चीजें बनाई जाती हों। ९ साहित्य मे वह लेख या लेख्य जो पहले-पहल किसी ने अपनी बुद्धि या मन से तैयार किया या बनाया हो, और आगे चलकर जिसकी प्रति लिपि, व्याख्या आदि प्रस्तुत होती हो। जैसे—(क) मूल की चार प्रतिलिपियाँ हुई थीं। (ख) गीता के इस सस्करण मे मूल और टीका दोनो हैं। १०. सत्ताईस नक्षत्रो मे से उन्नीसवाँ नक्षत्र, जिसमे बालक का जन्म होना दूषित या निषिद्ध माना जाता है। ११. जमीकंद। सूरन। १२ पिप्पली मूल। १३ तत्र मे किसी देवता का आदि मत्र या बीज।

वि० १ असल और पहला। २. प्रधान। मुख्य। ३ जिसके आधार पर आगे चलकर किसी प्रकार का विकास होने को हो।

अव्य० निकट। पास। समीप।

मूलक—वि०[स० मूल+कन्] १. जो किसी के मूल मे हो। २ जिसके मूल में कुछ हो। ३. उत्पन्न करनेवाला। जैसे—अनर्थ मूलक।

पु० १. मूल स्वरूप। २. मूली नामक कंद। ३ वैद्यक मे ३४ प्रकार के स्थावर विषों में से एक प्रकार का विष। ऐसा विष जो वृक्षो के मूल या जड़ के रूप में होता हो।

मूलक-पर्णी—स्त्री० [सं० ब० स०,+ङीष्] सहिंजन (पेड़)।

मूल-कमल—पुं० [सं० कर्म० स०] हठयोग के अनुसार नाभि के आस-पास का अवयव जो कमल के रूप में माना गया है। नाभि-कमल।

मूल-कर्म (न्)—पु०[सं० कर्म० स०] मारन, उच्चाटन, स्तंभन, वशीकरण आदि का वह तात्रिक प्रयोग जो औषधियो के मूल द्वारा किया जाता है। जड़ी-बूटियों के मूल से होनेवाला टोना-टोटका।

मूलकार—पु०[सं० मूल√कृ (करना)+अण्] मूलग्रंथ का कर्ता।

मूलकारिका—स्त्री०[सं० मूलकारक+टाप्, इत्व] १. मूल गद्य या पद्य जिसकी टीका की गई हो। २. उधार दिए हुए मूलधन की एक विशेष प्रकार की वृद्धि या सूद। ३. चंडीदेवी का एक नाम।

मूल-कृच्छ्र—पुं० [स० सुप्सुपा स०] स्मृतियो मे वर्णित ग्यारह प्रकार के पर्णकृच्छ्रव्रतो मे से एक जिसमे मूली आदि कुछ विशेष जड़ो का क्वाथ या रस पीकर एक मास तक रहना पड़ता है। (मिताक्षरा)

मूल-खानक—पु०[सं० ष० त०] एक प्राचीन वर्णसंकर जाति जो पेड़ों की जड़ो से जीविका निर्वाह करती थी।

मूलगैन†—पुं०[?] नाचने-गानेवाली मंडली का वह व्यक्ति जो दूसरे साथियो को गाना और नाचना सिखाता हो। (पूरब)

मूलच्छेद—पु०[स० ष०त०] १ किसी चीज की जड़ काटना जिसमें फिर वह पनप या बढ़ न सके। २ पूरी तरह से किया जानेवाला नाश।

मूलज—वि०[सं० मूल√जन् (उत्पत्ति)+ड] १. मूल से उत्पन्न। २. जड़ से उत्पन्न होनेवाला।

पु० अदरक। आदी।

मूलतः (तस्)—अव्य० [सं० मूल+तस्] मूल रूप मे। आदि में। प्रथमत।

मूल-त्रिकोण—पु०[कर्म० स०] फलित ज्योतिष मे, सूर्य आदि ग्रहों की कुछ विशेष राशियों में स्थिति।

मूल-द्रव्य—पु०[कर्म० स०] १. मूलधन। पूँजी। २. वह भूत या द्रव्य जिससे अन्य भूतो या द्रव्यो की उत्पत्ति हुई है।

मूल-द्वार—पुं०[कर्म० स०] सिंह-द्वार। सदर दरवाजा।

मूल-द्वारावती—स्त्री०[कर्म० स०] द्वारावती नगरी का वह प्राचीन अंश जो आजकल की द्वारका से कुछ दूर प्राय समुद्र के अन्दर पड़ता है।

मूल-धन—पुं०[कर्म० स०] वह धन जो और धन कमाने के उद्देश्य से लगाया जाय। पूँजी।

मूलधनी—पुं०[स० मूलधन से] १. वह जो किसी काम मे मूलधन लगाता हो। २. दे० 'पूँजीपति'।

मूल-धातु—स्त्री०[कर्म० स०] शरीर के अन्दर की मज्जा।

मूलन†—वि०[स० मूल] पूरा। समूचा।

अव्य० १ मूल में ही। मूलत। २. निश्चित रूप में। अवश्य।

मूल-पर्णी—स्त्री०[ब० स०,+ङीष्] मडूकपर्णी नामक की ओषधि।

मूल-पाठ—पुं०[कर्म० स०] किसी लेखक के वाक्यों की वह मूल शब्दावली जिसका प्रयोग उसने स्वय ही अपने लेख्य में किया हो। (टेक्स्ट)

मूल-पुरुष—पु० [कर्म० स०] किसी वश को चलानेवाला व्यक्ति। किसी वश का आदि पुरुष।

मूल-पोती—स्त्री०[मध्य० स०] छोटी पोई नाम का शाक।

मूल-प्रकृति—स्त्री०[कर्म० स०] ससार की बीज-शक्ति या वह आदिम सत्ता, जिसका परिणाम तथा विकास यह सारी सृष्टि है। आद्या शक्ति। प्रकृति।

मूल-बंध—पुं०[सं०] १. हठयोग की एक क्रिया जिसमे सिद्धासन या वज्रासन द्वारा शिश्न और गुदा के मध्यवाले भाग को दबाकर अपान वायु को ऊपर चढ़ाते हैं, जिससे कुंडलिनी जागकर मेरु-दंड के सहारे ऊपर की ओर चढ़ने लगती है। २. तात्रिक पूजन मे एक प्रकार का अंगुलि-न्यास।

मूलबर्हण—पुं०[स० ष० त०] १. कोई चीज जड से काटना। मूलच्छेद। २ मूल नक्षत्र।

मूल-भूत—पुं०[सं०] वह भूत जिससे अन्य भूतो की सृष्टि मानी जाती है। वि० १ किसी वस्तु के मूल से संबंध रखनेवाला। २ जो किसी दूसरे के आधार पर या किसी की नकल न हो। (ओरिजिनल) ३ असल। मौलिक। (फडामेटल)

मूल-भृत्य—पु० [कर्म० स०] पुश्तैनी नौकर।

मूल-मंत्र—पु०[कर्म० स०] वह उपाय जिससे कोई कार्य या सब कार्य जल्दी और सहज मे सिद्ध हो जाते हो।

मूल-रक्षण—पु० [ष० त०] राजधानी या शासन के केंद्र-स्थान की रक्षा। (कौ०)

मूल-रस—पुं०[ब० स०] मूर्वा (लता)।

मूल-वित्त—पुं०[कर्म० स०] मूल-धन। पूँजी।

मूल-विष—वि०[ब० स०] जिसकी जड विषैली हो। (कनेर)।

मूल-व्यसन—पु०[कर्म० स०] ऐसा व्यसन जो किसी परिवार या वश मे पुरुषानुक्रम या कई पीढियो से चला आ रहा हो।

मूल-शाकट—पु०[स० मूल+शाकट] वह खेत जिसमे मूली, गाजर आदि मोटी जडवाले पौधे बोये जाते है।

मूल-स्थली—पु०[कर्म०स०] पेड का थाला। आलबाल।

मूल-स्थान—स्त्री०[कर्म० स०] १ रहने का आरभिक स्थान। २ बाप-दादा की जगह। पूर्वजो का निवास-स्थान। ३ प्रधान स्थान। राजधानी। ४ दीवार। भीत। ५ ईश्वर। ६ आधुनिक मुलतान नगर का पुराना और मूल नाम। (प्राचीन काल मे यह तीर्थ था।)

मूल-हर—वि० [ष० त०] जिसने अपना सपूर्ण धन नष्ट कर दिया हो। (कौ०)

मूला—स्त्री० [स० मूल+टाप्] १ सतावर। २ मूल नामक नक्षत्र। ३ पृथ्वी। (डिं०)
स्त्री० [हिं० मूली] बहुत बडी और मोटी मूली।
† स्त्री०=मूली।

मूलांश—पु०[स० मूल+अश] १ किसी वस्तु का मूल अश या तत्त्व। २ वह मूल अश जो आधार के रूप मे हो और जिसके ऊपर किसी प्रकार की विस्तृत रचना या विकास हुआ हो। (बेस)

मूलाधार—पु० [मूल-आधार, ष० त०] हठयोग मे माने हुए मानव-शरीर के अन्दर के छ चक्रो मे से एक चक्र जिसका स्थान अग्नि-चक्र के ऊपर गुदा और शिश्न के मध्य मे है।
विशेष—यह चार दलोवाला और लाल रग का कहा गया है, और इसके देवता गणेश माने गये है। कहते हैं कि इसे सिद्ध कर लेने पर मनुष्य सब विद्याओ का ज्ञाता हो जाता है और सदा प्रसन्न तथा स्वस्थ रहता है।

मूलार्थ—पु०[सं० मूल+अर्थ, एक प्रकार का क्वाथ] होमियोपैथी चिकित्सा में किसी औषधि का वह मूल रस या सार जिससे आगे चलकर चिकित्सा के लिए अधिक शक्तिवाले रूप प्रस्तुत किये जाते हैं। (मदर टिंचर)

मूलिक—वि०[सं० मूल+ठन्—इक] १ मूल-संबंधी। मूल का। २ जो मूल मे हो। जैसे—मूलिक न्यायालय=वह न्यायालय जिसमे पहले-पहल कोई मुकदमा या वाद उपस्थित किया गया हो। ३ कद-मूल खाकर जीवन निर्वाह करनेवाला।

मूलिन—वि०[स० मूल+इनि] मूल से उत्पन्न।
पु० पेड। वृक्ष।

मूलिनी—स्त्री०[सं० मूलिन्+ङीप्] जड के रूप मे होनेवाली ओषधि। जडी।

मूलिनी-वर्ग—पु०[स० ष० त०] नागदती, श्वेतवचा, श्यामा, त्रिवृत्, वृद्धदारका, सप्तला, श्वेताऽपराजिता, मूषकपर्णी, गोडुबा, ज्योतिष्मती, बिंबी, क्षणपुष्पी, विषाणिका, अश्वगधा, द्रवती, और क्षीरिणी जडो का समाहार। (सुश्रुत)

मूली—स्त्री० [स० मूलक] १. एक पौधा जो अपनी लबी मुलायम जड के लिए बोया जाता है और जिसकी तरकारी बनती है। यह जड खाने मे मीठी, चरपरी और तीक्ष्ण होती है।
मुहा०—(किसी को) मूली गाजर समझना=बहुत ही तुच्छ समझना। किसी गिनती मे न समझना।
२ एक प्रकार का बाँस।
स्त्री० [स०] १ ज्येष्ठी। २ एक पौराणिक नदी।
†स्त्री०=मूलिका (जडी)।

मूलीय—वि०[स० मूल+छ—ईय] मूल का या मूल से होनेवाला। मूल-सम्बन्धी। जैसे—जिह्वा-मूलीय।

मूलोच्छेद—पु०[स० मूल-उच्छेद, ष० त०] =मूलच्छेद।

मूलोदय—पु०[स० मूल-उदय, ष० त०] ब्याज का बढ़ते-बढ़ते मूल धन के बराबर हो जाना।

मूल्य—पु०[स० मूल+यत्] १ मुद्रा के रूप मे उतना धन जो कोई चीज क्रय करने के लिए उसके बदले मे किसी को देना पडता है। २ वह दर या भाव जिस पर कोई चीज बिकती हो। अर्थशास्त्र के अनुसार यह किसी वस्तु की माँग और होनेवाली पूर्ति की मात्रा के आधार पर स्थिर होता है। ३ वह गुण या तत्त्व जिसके आधार पर किसी का महत्त्व या मान होता है। ४. वह जो कुछ किसी को किसी कारणवशात् झेलना, भुगतना या बलिदान करना पडता है। जैसे—अत्यधिक परिश्रम का मूल्य स्वास्थ्य-हानि के रूप मे चुकाना पडता है।
क्रि० प्र०—चुकाना।
वि० १ प्रतिष्ठा के योग्य। कदर के लायक। २ (पौधा) जो रोपा जा सकता हो। ३ (फसल) जो जड से उखाड़ी जाने के योग्य हो। जैसे—उड़द, मूँग आदि।

मूल्यन—पु० [स०√मूल्य्+णिच्+ल्युट्-अन] किसी वस्तु का मूल्य निश्चित या स्थिर करना। दाम आँकना। मूल्याकन। (वैल्युएशन)

मूल्यवान् (वत्)—वि० [स० मूल्य+मतुप्] १ जिसका मूल्य अत्यधिक हो। बहुमूल्य। २ जिसका महत्त्व या मान किसी की दृष्टि मे बहुत अधिक हो।

मूल्य-विज्ञान—पु०[ष० त०] वह विज्ञान या शास्त्र जिसमे इस बात का विवेचन होता है कि बाजारो में वस्तुओ के मूल्य किन आधारों पर या किन कारणो से घटते-बढ़ते रहते हैं।

मूल्य-सूचनांक—पु०[ष० त०] दे० 'सूचकाक'।

मूल्य-ह्रास-निधि—पु० [ष० त०] वह कोश या निधि जिसका मुख्य

उद्देश्य दैनिक उपयोग में आनेवाले उपकरणों आदि के घिस जाने, पुराने तथा बेकाम हो जाने के कारण उनके मूल्य में क्रमशः होनेवाली घटी पूरी करना होता है। (डिप्रिसियेशन फ़ंड)

मूल्यांकन--पुं०[सं० मूल्य-अंकन, ष० त०] १. किसी बात या वस्तु का मूल्य निर्धारित या निश्चित करने की क्रिया या भाव। (वैल्युएशन) २. किसी वस्तु की उपयोगिता, गुण, महत्त्व आदि का होनेवाला अंकन। कूत।

मूल्यानुसार--अव्य० [सं० मूल्य-अनुसार, ष० त०] दे० 'यथा-मूल्य'।

मूवना—अ० [सं० मरण] मरना।

मूष—पुं०[सं० मूष से] चूहा।

मूष—पुं०[सं०√मूष्(चुराना)+क]=मूषक (चूहा)।

मूषक—पुं०[सं० मूष+कन्] [स्त्री० मूषिका] १ चूहा। २ लाक्षणिक अर्थ में, वह जो चुरा-छिपा कर या जबरदस्ती दूसरों का धन ले लेता हो। ३. रहस्य सम्प्रदायों में, मन जो अज्ञान के अन्धकार में चूहे की तरह विचरता है और जिसे अन्त में काल-रूपी सर्प खा जाता है।

मूषक-कर्णी—स्त्री० [ब० स०,+ ङीष्] मूसाकानी (लता)।

मूषक-वाहन--पुं० [ब० स०] गणेश।

मूषण—पुं०[सं०√मूष्+ल्यु—अन] चुरा या छीन लेना। मूसना। चुराना।

मूषा—स्त्री०[सं० मूष+टाप्] १ सोना आदि गलाने की घरिया। तैज-सावर्तिनी। २ देव-ताड नामक वृक्ष। ३ गोखरू का पौधा। ४. गवाक्ष। झरोखा।

मूषा-तुल्य--पुं०[सं० मध्य० स०] नीला थोथा। तूतिया।

मूषिक—पुं०[सं०√मूष्+इकन्] १ चूहा। मूसा। २. दक्षिण भारत का एक प्राचीन जनपद।

मूषिक-पर्णी—स्त्री० [ब० स०+ङीष्] जल में होनेवाला एक प्रकार का तृण।

मूषिक-साधन—पुं० [ष० त०] तंत्र मे एक प्रकार का प्रयोग या साधन जिसके सिद्ध हो जाने से मनुष्य चूहे की बोली समझकर उससे शुभ-अशुभ फल कह सकता है।

मूषिकांक—पुं०[सं० मूषिक-अंक, ब० स०] गणेश।

मूषिकांचन—पुं०[सं० मूषिक√अञ्च्(प्राप्त करना)+ल्यु-अन] गणेश।

मूषिका--स्त्री०[सं० मूषिक+टाप्] १ छोटा चूहा। चुहिया। २ मूसाकानी लता।

मूषिकाद—पुं० [सं० मूषिक√अद् (खाना)+अण्] बिडाल। बिल्ला।

मूषिकाराति—पुं०[मूषिक-अराति, ष० त०] बिल्ली। बिडाल।

मूषीक—पुं०[सं०√मूष्+ईकन्] बड़ा चूहा।

मूषीकरण—पुं०[सं०√मूष्+च्वि, इत्व+दीर्घ√कृ (करना)+ ल्युट्] घरिया में धातु गलाने की क्रिया या भाव।

मूस—पुं०[सं० मूष] चूहा।

मूसदानी—स्त्री०[हिं० मूस+दानी (सं० आधान)] चूहा फँसाने का पिंजरा। चूहेदानी।

मूसना—स०[सं० मूषण] १ किसी की चीज चुराकर उठा ले जाना। २. ठगना। ३ लूटना।

मूसर—पुं०[हिं० मूसल]=मूसल।

मूसल—पुं०[सं० मुशल] १ धान कूटने का एक प्रसिद्ध उपकरण जो लंबे मोटे डंडे के रूप मे होता है और जिसके मध्य भाग में पकड़ने के लिए खड्डा सा होता है और छोर पर लोहे की साम जड़ी रहती है। २ उक्त आकार का प्राचीन काल का एक प्रकार का अस्त्र। ३ राम, कृष्ण आदि के चरणों में माना जानेवाला एक प्रकार का चिह्न। ४ मानी बेल नाम की लता।

मूसलचंद—पुं०[हिं० मूसल+चंद] १. गँवार। असभ्य। २. अपढ़। ३ मूर्ख। ४ हट्टा-कट्टा परन्तु अकर्मण्य या निकम्मा आदमी।

पद—दाल-भात में मूसलचंद=ऐसा बहुत ही अनपेक्षित या अनभीष्ट व्यक्ति जो व्यर्थ हस्तक्षेप करना चाहता हो।

मूसलधार—अव्य०[हिं० मूसल+धार] मूसल के समान मोटी धार मे।

मूसला जड़—पुं०[हिं० मूसल] वृक्षों की दो प्रकार की जड़ों में से वह जड़ जो मोटी और सीधी कुछ दूर तक जमीन में चली गई हो, तथा जिसमें इधर-उधर सूत या शाखाएँ न फूटी हो। 'झखरा' से भिन्न। (टैप रूट)

मूसली—पुं० [सं० मुशाली] हल्दी की जाति का एक पौधा।

मूसा—पुं०[सं० मूषक] चूहा।

मूसा—पुं०[इब० मौशा से अ०] यहूदियों के एक प्रसिद्ध धार्मिक और सामाजिक नेता जिन्होंने मिस्र के इसराइलियों को दासता से मुक्त किया था। ये पैगम्बर या ईश्वरी देवदूत माने गये थे, और इन्हीं के समय से पैगम्बरी मतों का आरभ हुआ था। इनके उपदेशों का सग्रह 'तौरेत' के नाम से प्रसिद्ध है।

मूसाई—पुं०[अ० मूसा+हिं० आई (प्रत्य०)] मूसा के धर्म का अनुयायी, यहूदी।

वि० मूसा सम्बन्धी।

मूसाकानी--स्त्री० [सं० मूषाकर्णी] गीली जमीन में होनेवाली एक प्रकार की लता जिसके प्राय सभी अंग ओषधि के रूप में काम आते हैं। विशेषतः चूहे के काटने से उत्पन्न होनेवाला विष दूर करने के लिए इसे पीसकर लगाया और इसका काढ़ा पिया जाता है।

मूसा-हिरन--पुं० [हिं०] एक प्रकार का बहुत छोटा हिरन जो प्रायः एक बित्ता लंबा और प्राय इतना ही ऊँचा होता है (माउस डीयर)

मूसीकार—पुं०[अ०] १ एक प्रकार का कल्पित पक्षी जिसके सम्बन्ध मे कहा जाता है कि इसकी चोंच मे बहुत से छेद होते है जिनमे से अनेक प्रकार के राग निकलते हैं। सामी जातियों का मत है कि मनुष्यों मे सगीत का प्रचार इसी का गाना सुनने से हुआ है। २ सगीतज्ञ। ३ अरब देश का एक प्रकार का बाजा।

मूसीक़ी—स्त्री०[अ०] संगीत-कला। गान विद्या।

मृकंडु—पुं० [सं० मृग-कण्डु, ष० त०, पृषो० ग—लोप] मार्कंडेय ऋषि के पिता एक मुनि।

मृग—पुं०[सं०√मृग् (अन्वेषण)+क] [स्त्री० मृगी] १. जगली जानवर। २ हिरन। ३. कस्तूरी मृग का नाफा। ४ वैष्णवों का एक प्रकार का तिलक। ५ कामशास्त्र में चार प्रकार के पुरुषों मे से एक जो चित्रिणी स्त्री के लिए उपयुक्त कहा गया है। ६. ज्योतिष में शुक्र की नौ वीथियों मे से आठवी वीथी जो अनुराधा, ज्येष्ठा और मूल मे पड़ती है। ७ हाथियों की एक जाति जिसकी आँखें कुछ बड़ी होती हैं और गंडस्थल पर सफेद चिह्न होता है। ८ अगहन का महीना। मार्ग-शीर्ष।

९. मृग-शिरा नक्षत्र। १०. मकर राशि। ११. एक प्रकार का यज्ञ। १२. अन्वेषण। खोज। तलाश।

मृग-कानन—पु०[ष० त०] १ वह जगल जिसमे शिकार के लिए बहुत से जानवर हो। २ उद्यान। बाग।

मृग-चर्म (चर्मन्)—पु०[ष० त०] १. हिरन की खाल। २ ओढी अथवा आसन के रूप मे बिछाई जानेवाली हिरन की खाल।

मृग-चेटक—पु०[स०√चिट् (प्रेरणा)—णिच्+ण्वुल्—अक—चेटक, मृग-चेटक, ष० त०] गध बिलाव। मुश्क बिलाव।

मृग-छाला—स्त्री०[स० मृग+हिं० छाला] हिरन की छाल। मृगचर्म।

मृग-छौना—पु० [स० मृग+हिं० छौना] हिरन का बच्चा। मृग-शावक।

मृग-जल—पु०[मध्य० स०] =मृग-तृष्णा।

पद—मृगजल स्नान=अनहोनी बात।

मृगजा—स्त्री०[स० मृगज+टाप] कस्तूरी।

मृग-जालिक—स्त्री०[ष० त०] वह जाल जिसमे हिरन फँसाये जाते है।

मृगजीवन—पु० [स० मृग√जीव् (जीना)+ल्यु—अन, उप० स०] शिकारी

मृग-तृषा—स्त्री० =मृग-तृष्णा।

मृग-तृष्णा—स्त्री०[स० ब० स०] १ ऐसी तृष्णा जिसकी पूर्ति प्राय असभव हो। २ दे० 'मृग-मरीचिका'।

मृग-तृष्णिका—स्त्री० =मृग-तृष्णा।

मृग-दशक—पु० [ष० त०] कुत्ता।

मृग-दाव—पु० [स० मध्य० स०] १ वह वन जिसमे बहुत से मृग हो। २ काशी के सारनाथ नामक तीर्थ के पासवाले जगल का पुराना नाम।

मृग-धर—पु० [ष० त०] चद्रमा।

मृग-धूर्त—पु० [स० त०] शृगाल।

मृग-नयन—वि० [ब० स०] [स्त्री० मृग-नयनी] हिरन की आँखो की तरह जिसकी आँखे सुन्दर हो।

मृग-नाथ—पु० [ष० त०] सिह। शेर।

मृग-नाभि—पु० [ष० त०] कस्तूरी।

मृग-नाभिजा—स्त्री० [स० मृगनाभि√जन् (उत्पन्न होना)+ड,+टाप्] कस्तूरी।

मृग-नेत्रा—स्त्री० [स० ब० स०] मृगशिरा नक्षत्र से युक्त रात्रि।

मृग-नैन—वि० [स्त्री० मृगनैनी] =मृग-नयन।

मृग-पति—पु० [ष० त०] सिह। शेर।

मृगप्रिय—पु० [ष० त०] १ भूतृण। २ जल-कदली।

मृग-मद—पु० [स० मृग√मद् (हृष्ट होना)+अप्] कस्तूरी।

मृग-मदा—स्त्री० [स० मृगमद+टाप्] कस्तूरी।

मृग-मरीचिका—स्त्री० [ब० स०] १ मृग को होनेवाली जल की वह भ्रांति जो कडी धूप मे चमकते हुए बालू के कणो के फलस्वरूप होती है। दे० 'मरीचिका'। (मिरेज) २ लाक्षणिक अर्थ मे अवास्तविक पदार्थ।

मृग-मित्र—पु० [ब० स०] चद्रमा।

मृग-मुख—पु० [ब० स०] मकर राशि।

मृगमेद†—पु० =मृगमद (कस्तूरी)।

मृगम्मद†—पु०=मृगमद (कस्तूरी)। उदा०—देव मे सीस बसायौ सनेह कै, भाव मृगम्मद बिंद कै राख्यौ।—देव।

मृगया—स्त्री० [स०√मृग्+णिच+श, यक्, णि-लोप,+टाप्] १ वन्य पशुओ के शिकार के लिए किया जानेवाला वन-गमन। २ आखेट। शिकार।

मृगयु—पु० [स० मृग√या(गति)+कु] १. ब्रह्मा। २. गीदड़। ३. व्याध।

मृग-यूथ—पु० [ष० त०] हिरणो का दल।

मृग-रसा—स्त्री० [ब० स०,+टाप्] सहदेई नाम का पौधा। सहदेवी। महाबला।

मृग-राज—पु० [स० ष० त०] सिह। शेर।

मृग-रोग—पु० [ष० त०] पशुओ विशेषत घोडो के नथने सूजने का एक रोग।

मृग-रोम (न्)—पु० [ष० त०] ऊन।

मृगरोमज—पु० [स० मृगरोमन√जन् (उत्पत्ति)+ड] ऊनी कपड़ा।

मृग-लाछन—पु० [ब० स०] चद्रमा।

मृग-लेखा—स्त्री० [मध्य० स०] चद्रमा पर का मृगाक।

मृग-लोचन—वि० [स० ब० स०] [स्त्री० मृग-लोचना, मृगलोचनी] हिरन के समान सुन्दर आँखोवाला।

मृग-लोचनी—वि० स्त्री०, हिं० मृगलोचन का स्त्री रूप।

मृग-वल्लभ—पु० [ष० त०] एक तरह की घास।

मृग-वारि—पु० [मध्य० स०] १ वह जल जिसकी भ्रांति मृग को कड़ी धूप मे चमकते हुए बालू के फलस्वरूप होती है। २. लाक्षणिक अर्थ मे, कोई भ्रममूलक पदार्थ या बात।

मृग-वाहन—पु० [ब० स०] वायु। हवा।

मृगव्य—पु० [स० मृग√व्यध् (बेधना)+ड] १. वह जन्तु जिसका शिकार मृग या शेर करता हो। २. वह जिसे मार डालने अथवा हानि पहुँचाने मे अपना कोई उद्देश्य सिद्ध होता या काम निकलता हो। ३ शिकार।

मृग-व्याध—पु० [मध्य० स०] १. शिकारी। २. नक्षत्र।

मृग-शिरा—पु० [स० मृगशिर+टाप्] २७ नक्षत्रो मे से पाँचवाँ नक्षत्र जो तीन तारो का है।

मृग-शीर्ष—पु० [ब० स०] १. मृगशिरा नक्षत्र। २. माघ महीना।

मृग-श्रेष्ठ—पु० [स० त०] व्याघ्र।

मृगहा (हन्)—पु० [स० मृग√हन् (हिंसा)+क्विप्] शिकारी।

मृगांक—पु० [मृग-अक, ब० स०] १.चद्रमा। २. दे० 'मृगाक रस'।

मृगांक-रस—पु० [मध्य० स०] वैद्यक मे एक प्रकार का रस जो सुवर्ण और रत्नादि से बनता है और क्षयरोग मे अत्यधिक गुणकारक माना जाता है।

मृगांतक—वि० [मृग-अतक, ष० त०] मृगो या जगली जानवरो का अन्त या नाश करनेवाला।

पु० चीता नामक हिंसक पशु।

मृगा—स्त्री० [स० मृग+अच्+टाप्] सहदेई नाम का पौधा।

मृगाक्ष—वि० [मृग-अक्षि, ब० स०,+षच्] [स्त्री० मृगाक्षी] मृग की आँखो के समान सुन्दर आँखोवाला।

मृगाक्षी—वि० स्त्री० [सं० मृगाक्ष+ङीष्] मृगनयनी। मृगलोचनी।

मृगाजिन—पु० [मृग-अजिन, ष० त०] मृग-छाला। मृग-चर्म।

मृगाजीव—स्त्री० [स० मृग+आ√जीव् (जीना)+अच्] १. कस्तूरी। २ वारुणी लता।

मृगाद्—पु० [स० मृग√अद् (खाना)+क्विप्] सिंह, चीता, बाघ इत्यादि वन्य जन्तु जो मृगो को खाते हैं।

वि० मृगो को खानेवाला।

मृगादन—वि०, पु० [सं०√अद्+ल्यु—अन=अदन, मृग-अदन, ष० त०] मृगाद्।

मृगादनी—स्त्री० [सं० मृगादन+ङीष्] १. इद्रवारुणी। इद्रायन। २. सहदेई। ३. ककडी।

मृगाराति—पु० [स० मृग-अरति, ष० त०] कुत्ता।

मृगाशन—पुं० [स० मृग-अशन, ब० स०] सिंह। शेर।

मृगित—भू० कृ० [स०√मृग (खोजना)+क्त] जिसके विषय मे छान-बीन की गई हो। अन्वेषित।

मृगिनी*—स्त्री० [स० मृग] मृग की मादा। मादा हिरन। हिरनी।

मृगी—स्त्री० [स० मृग+ङीष्] १. मादा हिरन। २. पीले रंग की एक प्रकार की कौडी। ३ मिरगी नामक रोग। अपस्मार। ४. कस्तूरी। ५. कश्यप ऋषि की क्रोधवशा नाम्नी पत्नी से उत्पन्न दस कन्याओ मे से एक, जिससे मृगो की उत्पत्ति हुई और जो पुलह ऋषि की पत्नी थी। ६. एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे एक रगण (SIS) होता है। प्रियावृत्त।

मृगीवत—पु० दे० 'मृग-तृष्णा'। उदा०—मृगीवंत जल दरसै जैसे। —नददास।

मृगेंद्र—पुं० [स० मृग-इन्द्र, ष० त०] सिंह। शेर।

मृगेंद्र-चटक—पु० [सं० उपमि० स०] बाज (पक्षी)।

मृगेल—स्त्री० [स० मृग+हिं० एल (प्रत्य०)] सुनहली आँखोवाली एक प्रकार की मछली।

मृगेश—पु० [स० मृग-ईश, ष० त०] सिंह। शेर।

मृगोत्तम—पु० [स० मृग-उत्तम] मृगशिरा नक्षत्र।

वि० मृगो मे उत्तम या श्रेष्ठ।

मृग्य—वि० [स०√मृग् (खोजना)+यत्] १. जिसका पीछा किया जाय। २. अन्वेषण किये जाने के योग्य।

मृच्छकटिक—पु० [स० मृद्-शकटि, ब० स०,+कप्] संस्कृत का एक प्रसिद्ध नाटक।

मृज—पु० [स०√मृज् (शुद्ध करना)+क] पखावज या मृदग नाम का बाजा।

मृजा—स्त्री० [सं०√मृज्+अङ+टाप्] मार्जन। (दे०)

मृजाद*—स्त्री०=मर्यादा। उदा०—तजि ऐश्वर्य, मृजाद बेद की तिनके हाथ बिकानो।—भगवत रसिक।

मृज्य—वि० [सं०√मृज्+क्यप्] जिसका मार्जन किया जा सके या किया जाने को हो। मार्जनीय।

मृड—पुं० [सं०√मृड् (सतुष्ट करना)+क] [स्त्री० मृडा, मृडानी] शिव। महादेव।

मृडन—पु० [सं०√मृड्+ल्यु—अन] अनुग्रह। कृपा।

मृडा—स्त्री० [स० मृड+टाप्] १. पार्वती। २. दुर्गा।

मृडानी—स्त्री० [स० मृड+ङीप्, आनुक्] पार्वती। मृडा। (दे०)

मृडीक—पु० [सं०√मृड्+कीकन्] १. हिरन। २. शिव। ३. मछली।

मृणाल—स्त्री० [स०√मृण्+कालन्] १ कमल के पौधे का डठल। कमलनाल। २. कमल की जड। ३. उसीर। खस।

मृणालिका—स्त्री० [स० मृणाली+कन्+टाप्, ह्रस्व] कमल की डंठी। कमल-नाल।

मृणालिनी—स्त्री० [सं० मृणाल+इनि+ङीप्] १ कमलिनी। २. कमलों का समूह। ३ वह ताल जहाँ कमल अधिकता से होते है।

मृणाली—स्त्री० [स० मृणाल+ङीष्] कमल का डठल। कमल-नाल।

मृत्पात्र—पुं० [स० मृत्पात्र] १ मिट्टी, चीनी मिट्टी आदि के बने हुए बरतन। २ विवर्धित तथा व्यापक अर्थ मे, मिट्टी, चीनी मिट्टी के बने हुए खिलौने, मूर्तियाँ आदि सभी चीजे। (पाटरी)

मृण्मय—वि० [स० मृद्+मयट्] [स्त्री० मृण्मयी] मिट्टी का बना हुआ।

मृण्मूर्ति—स्त्री० [स० मृद्-मूर्त्ति, ष० त०] १ मिट्टी की बनाई हुई मूर्ति। २ मध्य तथा प्राचीन युग मे मिट्टी की बनी हुई मूर्ति का मुँह और सिर। (टेर्रा कोटा)

मृत—वि० [स०√मृ (मरना)+क्त] १. मरा हुआ। मुर्दा। २ माँगा हुआ। याचित। ३ जिसका पूर्ण रूप से अन्त या नाश हो चुका है।

मृतक—वि० [सं० मृत+कन्] १ मरा हुआ। मुरदा। मृत। २ साहित्य मे, (पद या वाक्य) जिसका कुछ भी वास्तविक अर्थ न हो। जैसे—(क) बादाम मे सोया हुआ आदमी। (ख) च्यूँटो पर हाथी की सवारी।

पु० १ मरा हुआ प्राणी या उसका मृत शरीर। २ घर के किसी प्राणी या सम्बन्धी के मर जाने पर होनेवाला अशौच।

मृतक-कर्म—पु० [स० ष० त०] मृतक की शुद्ध गति के निमित्त किया जानेवाला कृत्य। प्रेत कर्म। जैसे—दाह, षोडशी, दशगात्र इत्यादि।

मृतक-धूम—पु० [सं० ष० त०] राख। भस्म।

मृतकल्प—वि० [स० मृत+कल्पप्] दे० 'मृत-प्राय'।

मृतकांतक—पु० [स० मृतक-अतक, ष० त०] शृगाल। गीदड।

वि० मृत शरीर का अन्त या नाश करनेवाला।

मृत-जीव—पु० [स० कर्म० स०] १ मरा हुआ। प्राणी। २ तिलक (वृक्ष)।

मृत-जीवनी—स्त्री० [सं० मृत√जीव् (जीना)+णिच्+ल्यु—अन, +ङीप्] १ मृत शरीर को फिर से जीवित करने की कला या विद्या। २ दूधिया घास।

मृत-धर्मा (र्मन्)—वि० [ब० स०, अनिच्] जो अन्त मे मर जाता या नष्ट हो जाता हो। नश्वर।

मृत-मत्त—पु० [तृ० त०] शृगाल। गीदड।

मृत-मातृक—वि० [ब० स०,+कप्] जिसकी माँ मर चुकी हो।

मृत-वत्स—वि० [ब० स०] [स्त्री० मृत-वत्सा] १. (जीव या प्राणी) जिसके बच्चे हो होकर मर जाते हो। २. (जीव या प्राणी) जिसका बच्चा होकर मर गया हो।

मृत-संजीवन—वि० [सं० सम्√जीव्+णिच्+ल्यु—अन, मृत-संजीवन, ष० त०] [स्त्री० मृत-संजीवनी] मृत को जीवित करनेवाला (पदार्थ)।

मृत-संजीवनी—स्त्री० [सं० संजीवन+ङीप्, मृत-संजीवनी, ष० त०] १ एक प्रकार की कल्पित बूटी जिसके विषय मे यह प्रसिद्ध है कि इसके खिलाने से मुरदा भी जी उठता है। २ वैद्यक मे एक प्रकार का आसव या सुरा जो बहुत पौष्टिक कही गई है।

मृत-संजीवनी-रस—पु० [मध्य० स०] वैद्यक मे एक प्रकार का रसौषध जिसका व्यवहार ज्वर मे होता है।

मृत-संजीवनी सुरा—स्त्री० [सं० मध्य० स०] वैद्यक मे एक प्रकार का पौष्टिक आसव।

मृत-स्नात—भू० कृ० [सुप्सुपा स०] १ (मृतक) जिसे दाह-कर्म से पहले स्नान कराया गया हो। २ (व्यक्ति) जिसने किसी सजाति या बंधु के मरने पर उसके उद्देश्य से स्नान किया हो।

मृत-स्नान—पु० [मध्य० स०] १ मृतक को कराया जानेवाला स्नान। २. किसी भाई-बन्धु के मरने पर किया जानेवाला स्नान।

मृतामद—पु० [मृत-आमद, ब० स०] तुत्थ। तूतिया।

मृतालक—पु० [सं० मृत√अल् (भूषित करना आदि)+ण्वुल्—अक] १ अरहर। २ गोपी-चन्दन।

मृताशौच—पु० [मृत-अशौच, मध्य० स०] सूतक। (दे०)

मृति—स्त्री० [सं०√मृ (मरण)+क्तिन्] मृत्यु। मौत।

मृति-रेखा—स्त्री० [ष० त०] सामुद्रिक शास्त्र के अनुसार हथेली पर की एक रेखा जिससे व्यक्ति की आयु का अनुमान लगाया जाता है।

मृतोत्थित—वि० [मृत-उत्थित, कर्म० स०] जो मरकर फिर जी उठा हो।

मृत्कर—पु० [ष० त०] कुम्हार।

मृत्कांस्य—पु० [ष० त०] मिट्टी का बरतन।

मृत्तालक—पु० [मृद्√तल् (प्रतिष्ठा)+णिच्+अण्+कन्] १ अरहर। २ गोपी चन्दन।

मृत्तिका—स्त्री० [सं० मृद्+तिकन्+टाप्] १ मिट्टी। खाक। २ अरहर।

मृत्तिका-लवण—पु० [ष० त०] पुराने घरों की मिट्टी की दीवारों पर सीड होने से निकलनेवाली एक प्रकार की नमकीन मिट्टी। नोना। लोना।

मृत्तिकावती—स्त्री० [सं० मृत्तिका+मतुप् म—व,+ङीप्] नर्मदा के किनारे की एक प्राचीन नगरी। (महाभारत)

मृत्पात्र—पु० [ष० त०] मिट्टी का बरतन।

मृत्पिंड—पु० [ष० त०] मिट्टी का ढेला या लोंदा।

मृत्युंजय—वि० [सं० मृत्यु√जि (जीतना)+खच्, मुम्] जिसने मृत्यु को जीत लिया हो। अमर।

पु० १ शिव का एक नाम और रूप। २ शिव का एक मंत्र जो अकाल-मृत्यु का निवारक माना जाता है।

मृत्युंजय-रस—पु० [सं० मध्य० स०] ज्वर के लिए उपयोगी एक रसौषध। (वैद्यक)

मृत्यु—स्त्री० [सं०√मृ (मरना)+त्युक्] १. जीव-जंतुओं, पेड़-पौधो की आयु की वह अंतिम अवस्था जिसमे उनके जीवन का स्थायी रूप से और सदा के लिए अंत हो जाता है। मरण। मौत। २ किसी चीज या बात की उक्त प्रकार की अंतिम अवस्था। जैसे—किसी की राजनीतिक मृत्यु, स्वेच्छाचार की मृत्यु। ३. माया।

पु० [सं०] १ यम। २ ब्रह्मा। ३ विष्णु। ४. कामदेव। ५ कलियुग। ६ एक साम मंत्र। ७ फलित ज्योतिष मे जन्म-कुंडली का आठवाँ घर जिससे मरण-संबंधी फलाफल का विचार होता है। ८ बौद्ध देवता पद्मपाणि का एक अनुचर।

मृत्यु-कर—पु० [ष० त०] मृत व्यक्ति की संपत्ति पर लगनेवाला कर। (डेथ ड्यूटी)

मृत्युदंड—पु० [सं०] अपराधी को जान से मार डालने का दंड या सजा। प्राणदंड। (कैपिटल पनिशमेंट)

मृत्यु-दर—स्त्री० [सं०+हिं०] =मरणगति।

मृत्यु-नाशक—पु०[ष० त०] पारा।

मृत्यु-पाश—पु० [ष० त०] यम का पाश।

मृत्यु-पुष्प—पु० [ब० स०] १ ईख। गन्ना। २ केला।

मृत्यु-फल—पु० [ब० स०] १ केला। २ महाकाल नामक लता।

मृत्यु-बीज—पु० [ब० स०] बाँस।

मृत्यु-लोक—पु० [ष० त०] १ यम-लोक। २ मर्त्य-लोक।

मृत्यु-शय्या—स्त्री० [ष० त०] वह शय्या या बिस्तर जिस पर रोगी-मरणासन्न रूप मे पड़ा हुआ हो। (डेथ बेड)

मृत्यु-संख्या—स्त्री० [ष० त०] किसी दुर्घटना, महामारी आदि मे मरनेवालों की संख्या। (डेथ-रोल)

मृत्यु-सूति—स्त्री० [ब० स०] केकड़े की मादा। (कहते हैं कि यह अंडे देने के बाद मर जाती है।)

मृत्स—वि० [सं०] चिपचिपा।

मृत्सा—स्त्री० [सं० मृद्+स+टाप्] =मृत्स्ना।

मृत्स्ना—स्त्री० [सं० मृद्+स्न—टाप्] १ बढ़िया चिकनी मिट्टी। २ मिट्टी।

मृथा—अव्य०=मृषा (वृथा)।

मृद्—स्त्री० [सं०√मृद् (चूर्ण होना)+क्विप्] मृत्तिका। मिट्टी।

मृदंग—पु० [सं०√मृद्+अङ्गच या मृद्—अंग, ब० स०] १. ढोलक की तरह का एक प्रसिद्ध बाजा। २ बाँस। ३ मृदंग (बाजे) के आकार का शीशे का एक प्रकार का उपकरण जिसमे मोमबत्तियाँ जलाई जाती थी।

मृदंगिया—पु० [सं० मृदंग+हिं० इया (प्रत्य०)] वह जो मृदंग बजाता हो।

मृदंगी (गिन्)—पु० [सं० मृदंग+इनि] मृदंग बजाने-वाला। मृदंगिया। स्त्री० मृदंग के आकार की आतिशबाजी।

मृदा—स्त्री० [सं० मृद्+टाप्] मृत्तिका। मिट्टी।

मृदित—भू० कृ० [√मृद् (चूर्ण होना)+क्त] कुचला, मसला या चूर किया हुआ।

मृदिनी—स्त्री० [सं०√मृद् (चूर्ण करना) +क+ इनि+ङीप्] अच्छी मिट्टी। २. गोपीचन्दन।

मृदु—वि० [सं०√मृद् (चूर्ण करना)+क, सम्प्रसारण] [स्त्री० मृद्वी,

भाव० मृदुता] १. कोमल। नरम। मुलायम। २ प्रिय और सुहावना। मधुर। ३. धीमा। मंद। हलका। ४. उग्रता, प्रचंडता, तीव्रता आदि से रहित। जैसे—मृदु स्वभाव।

स्त्री० १ घृतकुमारी। घीकुआँर। २ जूही का पौधा और फूल।

मृदु-कंटक—पु०[ब० स०] कटसरैया।

मृदु गण—पु०[ष० त०] चित्रा, अनुराधा, मृगशिरा और रेवती इन चारो नक्षत्रों का एक गण।

मृदुच्छद—पु० [ब० स०]१. भोजपत्र का पेड। २. पीलू वृक्ष। ३ लाल लजालू।

मृदुता—स्त्री०[स० मृदु+तल्+टाप्]१. मृदु होने की अवस्था या भाव। कोमलता। मुलायमियत। मार्दव। २. धीमापन। मन्दता।

मृदु-दर्भ—पु०[कर्म० स०] सफेद कुश।

मृदुपक्षा—स्त्री० [स०] एक प्रकार की समुद्री मछली। सामन। (सैल्मन)

मृदु-पुष्प—पु०[ब० स०] शिरीष (वृक्ष)।

मृदु-फल—पु०[ब० स०]१. नारियल। २ विककत वृक्ष।

मृदुल—वि०[सं० मृदु+लच्][भाव० मृदुलता] १ कोमल। मुलायम। २ दयालु। दयामय। ३ सुकुमार।

पु०१ जल। पानी। २ अजीर।

मृद्य—वि०[स० मृद्+यत्](पदार्थ) जो गीला होने पर मनमाने ढग से और मनमाने रूप से लाया जा सके। जिसे अपने इच्छानुसार सभी प्रकार के स्थायी रूप दिये जा सकें। (प्लास्टिक) जैसे—गीली मिट्टी जिसे सैकडो प्रकार के रूप दिये जा सकते हैं।

मृद्वी—स्त्री०[स० मृदु+ङीष्]१ कोमल अंगोंवाली स्त्री। कोमलागी। २ सफेद अगूर।

मृद्वीका—स्त्री०[स० मृदु+ईकन+टाप्]१ कपिल द्राक्षा। सफेद अंगूर। २ अगूरी शराब। द्राक्षासव।

मृद्वीकासव—पु० [स० मृद्वीका-आसव, ष० त०] अंगूर की शराब। द्राक्षासव।

मृध—पु०[स० √ मृध् (गीला होना)+क] युद्ध। लड़ाई।

मृनाल*—पु०=मृणाल।

मृन्मय—वि०[स० मृद्+मयट्] [स्त्री० मृन्मयी]=मृण्मय।

मृषा—अव्य० [स० √ मृष्+का] झूठ-मूठ। व्यर्थ।

वि० असत्य। झूठा।

मृषात्व—पु०[स० मृषा+त्व] असत्यता। झूठपन। मिथ्यात्व।

मृषाभाषी (षिन्)—वि०[सं० मृषा√भाष् (बोलना)+णिनि] झूठ बोलनेवाला।

मृषावाद—पु०[स० ष० त०]१. झूठ बोलना। २ झूठ बात।

मृषावादी (दिन्)—वि०[स० मृषा√वद् (बोलना)+णिनि] झूठ बोलनेवाला। मिथ्यावादी।

मृष्ट—भू० कृ०[स० √मृज् (शुद्ध करना)+क्त] शुद्ध किया हुआ। शोधित।

पु० मिर्च।

मृष्टि—स्त्री०[स०√मृज्+क्तिन्] परिशुद्धि। शोधन।

में—विभ०[स० मध्य०, प्रा० मज्झ; पु० हि० मँह] अधिकरण कारक का चिन्ह जो किसी शब्द के आगे लगकर नीचे लिखे अर्थ देता है—(क) भीतरी भाग में या अन्दर। जैसे—(क) गले मे छाले पड़ना, कमरे में व्यक्ति होना। (ख) चारो ओर; जैसे—गले में हार पड़ना। (ग) किसी अवस्थान या आधार पर। जैसे—पेड़ मे फल लगना। (घ) नियत अवधि या काल पूरा होने से पहले। जैसे—एक घंटे में यह काम हो जायगा। (च) किसी वर्ग या समूह के क्षेत्र या परिधि के अन्तर्गत। जैसे—कवियों मे कालिदास सर्वश्रेष्ठ थे। (छ) कार्य, व्यापार आदि सलग्नता। जैसे—वह दिन भर काम मे लगा रहता है।

स्त्री०[अनु०] बकरी के बोलने का शब्द।

मेंगनी—स्त्री० [हिं० मीगी] पशुओ की ऐसी विष्ठा जो छोटी-छोटी गोलियो के आकार मे होती है। लेंड़ी। जैसे—ऊँट, चूहे या बकरी की मेंगनी।

मेंजा†—पु० मेंढक। उदा०—समुँद न जान कुँआ कर मेंजा।—जायसी।

मेंड़—स्त्री०[हि० डाँड का अनु० या स० मडल]१ ऊँची उठी हुई तग जमीन जो दूर तक लकीर के रूप मे चली गई हो। २ दो खेतो के बीच की कुछ ऊँची उठी हुई सँकरी जमीन जो उनकी सीमा की सूचक होती है और जिस पर से लोग आते-जाते हैं। डाँड। पगडडी। ३ आड। रोक। उदा०—तुम्ह नल नील मेंडदेनिहारा।—जायसी। ४. मर्यादा। उदा०—अस सम मेंडनि कौं मति खोवहु।—सूर।

मेंडक—पु०=मेंढक।

मेंड़-बन्दी—स्त्री०[हि० मेड+ बाधना] मेंड बनाने का काम।

मेंडरा†—पु०[स० मडल] १ घेरने के लिए बनाया हुआ कोई गोल चक्कर। जैसे—ढोलक या तबले का मेंडरा जो चमड़े के चारों ओर लगाया जाता है। २ मेंडुरी। ३ किसी गोल वस्तु का उभरा हुआ किनारा। ४ किसी वस्तु का मडलाकार ढाँचा। जैसे—चलनी का मेंडरा।

मेंडराना†—स०[हिं० मेडरा] किसी चीज के चारो ओर मेंडरा या घेरा बनाना या लगाना।

अ०१ चारों ओर घेरे या चक्कर के रूप मे स्थित होना। उदा०—राजपरिख तेहि पर मेंडराहिं।—जायसी। २ दे० 'मडलाना।'

मेंढ़क—पु०[स० मंडूक]१ एक प्रसिद्ध जलस्थलचारी छोटा जतु। २ रहस्य सप्रदाय मे, मन जिसे अन्त मे कालरूपी साँप निगल जाता है।

मेंढकी—स्त्री०=मेंढक की मादा।

मेंधी—स्त्री०[स० मा=शोभा√इन्ध (दीप्ति)+णिच्+अच्+ङीष्] मेंहदी।

मेंबर—पु०[अ०] [भाव० मेंबरी] सदस्य। (दे०)

मेंबरी—स्त्री०[अ० मेंबर से] मेंबर होने की अवस्था या भाव। सदस्यता। (मेंबरशिप)

मेंह—पु०[स० मेघ]१ आकाश से वर्षा के रूप में गिरनेवाला जल। २ पानी बरसना। वर्षा।

क्रि० प्र०—पडना।

मेंहदिया—वि०[हिं० मेंहदी] मेंहदी की तरह का हरापन लिए लाल रंगवाला।

पु० उक्त प्रकार का रंग। (मद्रिल)

मेंहदी—स्त्री० [सं० मेंधी] १ एक प्रसिद्ध कँटीली झाड़ी या पौधा जिसकी पत्तियों से गहरा लाल रंग निकलता है और इसी लिए जिन्हे पीसकर स्त्रियाँ अपनी हथेलियों और तलुओं में, उन्हे रंगने के लिए लगाती हैं। (मद्रिल) २. उक्त पौधे की पत्तियों का पीसा हुआ चूर्ण।

मुहा०—**मेंहदी रचना**=मेहदी का अच्छा और गहरा रंग आना। **मेंहदी रचाना या लगाना**=मेहदी की पत्तियाँ पीसकर हथेली या तलुए मे लगाना।

मेअराज—पु० [अ०] १ ऊपर चढ़ने की सीढ़ी। श्रेणी। २ मुहम्मद साहब के जीवन की वह घटना जिसमे उनके आकाश पर चढ़कर ईश्वर से भेंट करना माना जाता है।

मेक—पु० [सं० मे√कै (शब्द करना)+क] बकरा।

मेक-अप—पु० [अं०] १. सौन्दर्य-वृद्धि के लिए शरीर के अंगो मे प्रसाधन या सजावट की सामग्री लगाने की क्रिया या भाव। रूप-सज्जा। २ छापे-खाने मे, सीसे के बैठाये या कपोज किए हुए अक्षरों को पृष्ठों के रूप मे लाना। पेज बाँधना।

मेकदार—स्त्री०=मिकदार (मात्रा)।

मेकल—पु० [सं०] विंध्य पर्वत का एक भाग जो रीवाँ के आस-पास है और जिसमे अमरकटक है। नर्मदा नदी यही से निकली है। यह मेखला के आकार का है, इसी से इसे मेखल भी कहते हैं।

मेकल-कन्यका—स्त्री० [सं० ष० त०] नर्मदा (नदी)।

मेकल-सुता—स्त्री० [सं०] नर्मदा (नदी)।

मेख—स्त्री० [फा० मेख] १ लोहे का वह लम्बा उपकरण जो एक ओर नुकीला और दूसरी ओर चिपटा होता है, और जो किसी तल मे गाड़ने, ठोकने आदि या चीजें कहीं जड़ने के काम मे आता है। काँटा। कील। २ लकड़ी आदि का खूँटा।

क्रि० प्र०—उखाड़ना।—गाड़ना।—ठोंकना।—मारना।

मुहा०—**(किसी के) मेख ठोंकना**=पूरी तरह से दबाना या हराना। **(किसी को) मेख ठोंकना**=किसी के हाथों-पैरों मे कील ठोककर उसे कहीं स्थिर कर देना। (प्राचीन काल का एक प्रकार का बहुत कठोर दंड)। **मेख मारना**=(क) कील ठोककर किसी आदमी, काम या चीज का चलना या हिलना बन्द कर देना। (ख) ऐसी बात कहना जिससे चलते हुए काम मे बाधा पड़े। भाँजी मारना।

३. लकड़ी की फट्टी जो किसी छेद में बैठाई हुई वस्तु को ढीली होने से रोकने के लिए ठोकी जाय। पच्चड़। ४. घोड़े का वह लँगड़ापन जो नाल जड़ते समय किसी कील के ऊपर ठुक जाने से होता है।

†पु०=मेष।

मेखड़ा—स्त्री० [सं० मेखला] बाँस की वह फट्टी जिसे डले या झाबे के मुँह पर गोल घेरा बनाकर बाँध देते हैं।

मेखल—स्त्री० [सं० मेखला] १. करधनी। किंकिणी। २. वह चीज जो किसी दूसरी को कसने, बाँधने आदि के लिए उसके मध्य भाग मे चारों ओर लगाई या लपेटी जाय। ३. दे० 'मेखला'।

मेखला—स्त्री० [सं०√मि (प्रक्षेप)+खल्+टाप्] १. लंबी पट्टी की तरह की वह वस्तु जो किसी दूसरी वस्तु के कटि-प्रदेश या मध्य भाग के चारों ओर फैली हुई या स्थित हो। २. कमर मे लपेटकर पहनने का सूत या डोरी। करधनी। जैसे—मूंज-मेखला। ३. करधनी या तागड़ी नाम का गहना जो कमर में पहना जाता है। ४. मंडलाकार घेरा। ५. कमरबन्द। पेटी। ६ छड़ी, डंडे आदि की सामी। साम। ७. पर्वत का मध्य भाग। ८ नर्मदा नदी। ९. होम-कुंड के ऊपर चारों ओर बना हुआ मिट्टी का घेरा। १० कपड़े का टुकड़ा जो साधु लोग गले मे डाले रहते है। ११ पृश्निपर्णी।

मेखली—स्त्री० [सं० मेखला] १. गले मे डालकर पहना जानेवाला एक प्रकार का पहनावा जिससे पेट और पीठ ढकी रहती है और दोनों हाथ खुले रहते हैं। २ करधनी। तागड़ी।

मेखी—वि० [फा०] जिसमे मेख से छेद किया गया हो।

पद—**मेखी रुपया**=ऐसा रुपया जिसमे छेद करके चाँदी निकाल ली गयी और सीसा भर दिया गया हो।

मेगज†—पु० [सं० मत्त+गज] हाथी। (गज०)।

मेगजीन—पु० [अं०] १ वह स्थान जहाँ सेना के लिए गोले, बारूद रखते है। बारूदखाना। २ बंदूक तथा राइफल मे वह स्थान जिसमें चलाने के लिए गोली रखी जाती है। ३ सामयिक-पत्र, विशेषतः पाक्षिक या मासिक पत्र।

मेगनी—स्त्री०=मेंगनी।

मेगल†—पु०=मेगज (हाथी)।

मेघ—पु० [सं०√मिह्+अच्, कुत्व] १ आकाश मे होनेवाला जल-कणों का वह दृश्य रूप जो हवा मे वाष्प के जमने के फलस्वरूप बनता है। (क्लाउड) २ संगीत मे छ रागों मे से एक जो वर्षा ऋतु मे गाया जाता है। ३ मुस्तक। मोथी। ४ तंडुलीय शाक। ५ राक्षस।

मेघ-काल—पु० [ष० त०] वर्षा ऋतु। बरसात।

मेघ-गर्जन—पु० [ष० त०] बादलों की गड़गड़ाहट।

मेघ-गर्जना—स्त्री०=मेघ-गर्जन।

मेघ-चिंतक—पु० [ष० त०] चातक।

मेघ-जाल—पु० [ष० त०] बादलों का समूह।

मेघ-जीवन—पु० [ब० स०] चातक।

मेघ-ज्योति (स्)—स्त्री० [ष० त०] बिजली।

मेघ-डंबर—पु० [ष० त०] १ बादलों की गरज। २ बहुत बड़ा शामियाना जिसे दल-बादल भी कहते है। ३ राजाओं का एक प्रकार का छत्र।

मेघडंबर रस—पु० [मध्य० स०] वैद्यक मे एक प्रकार का रसौषध जो श्वास और हिचकी बन्द करनेवाला कहा गया है।

मेघ-दीप—पु० [ष० त०] बिजली।

मेघ-द्वार—पु० [ष० त०] आकाश।

मेघ-धनु (स्)—पु० [ष० त०] इन्द्र-धनुष।

मेघनाथ—पु० [ष० त०] इंद्र।

मेघ-नाद—पु० [ष० त०] १. मेघ का गर्जन। २. [मेघ√नद् (शब्द) +णिच्+अण्] वरुण। ३ मोर। मयूर। ४. बिल्ली। ५. पलास। ६ चौलाई। ७ रावण का एक पुत्र; इंद्रजित्।

मेघनादजित्—पु० [सं० मेघनाद√जि (जीतना)+क्विप्, तुक्-आगम] लक्ष्मण।

मेघनाद-रस—पुं० [सं० मध्य० स०] वैद्यक में एक प्रकार का ज्वर नाशक रसौषध।

मेघ-निर्घोष—पुं० [ष० त०] बादलों की गरज।

मेघ-पटल—पुं० [ष० त०] बादलों की घटा।

मेघ-पति—पुं० [ष० त०] बादलों का राजा या स्वामी, इंद्र।

मेघ-पुष्प—पुं० [ष० त०] १. जल। २ ओला। ३. बकरे का सींग। ४. मोथा। ५ [मेघ√पुष् (खिलना)+अच्] इन्द्र का घोड़ा। ६ श्रीकृष्ण के रथ का एक घोड़ा।

मेघ-पुष्पा—स्त्री० [सं० मेघ-पुष्प+टाप्] १. जल। २. बेल। ३. ओला।

मेघपुहप—पुं०=मेघ-पुष्प।

मेघ-फल—पुं० [सं०] मेघो के रंगों के आधार पर बतलाया जानेवाला शुभाशुभ फल।

मेघ-भूति—स्त्री० [ष० त०] बिजली।

मेघ-मंडल—पुं० [ष० त०] आकाश।

मेघ-मल्लार—पुं० [सं०] ओडव जाति का एक सकर राग जो मेघ, मल्लार और सारग रागो के मेल से बनता और प्राय वर्षा ऋतु में गाया जाता है।

मेघमाल—पुं० [सं० मेघमाला+अच्] १. रंभा के गर्भ से उत्पन्न कल्कि के एक पुत्र का नाम। (कल्कि पुराण) २ प्लक्ष-द्वीप का एक पर्वत। ३ मेघ-माला।

मेघ-माला—स्त्री० [ष० त०] १ बादलों की पंक्ति या श्रेणी। २. स्कद की अनुचरी एक मातृका।

मेघ-माली (लिन्)—पुं० [सं० मेघमाला+इनि] स्कंद का एक अनुचर।

वि० बादलो से घिरा हुआ।

मेघ-मूर्ति—स्त्री० [ष० त०] बिजली।

मेघ-योनि—पु० [ष० त०] १. धूआँ। २ कोहरा।

मेघ-रंजनी—स्त्री० [सं०] सगीत मे भैरव ठाठ की एक रागिनी।

मेघ-रव—पु० [ष० त०] मेघ-गर्जन।

मेघ-राज—पुं० [ष० त०] मेघो के राजा, इंद्र।

मेघ-वर्णी—स्त्री० [ब० स०,+ङीष्] नील का पौधा।

मेघ-वर्त—पु० [सं०] प्रलय काल का एक प्रकार का मेघ।

मेघवाई*—स्त्री० [हिं० मेघ+वाई (प्रत्य०)] १. बादल की घटा। २. दे० 'मेघ-माला'।

मेघवान् (वत्)—पु० [सं० मेघ+मतुप्, वत्व] पश्चिम दिशा का एक पर्वत। (बृहत् सहिता)

मेघ-वाहन—पु० [ब० स०] १. इन्द्र। २. एक बौद्ध राजा।

मेघ-विस्फूर्जिता—स्त्री० [सुप्सुपा स०] एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में यगण, मगण, नगण, सगण, टगण, रगण और अन्त में एक गुरु होता है।

मेघ-विस्फोट—पुं० [ष० त०] बहुत थोड़े समय में होनेवाली घोर वर्षा।

मेघ-श्याम—वि० [उपमि० स०] मेघ या बादलों के रग की तरह का। नीला। आसमानी। (क्लाउडी)

पुं० उक्त प्रकार का रंग।

मेघ-श्यामल—पु० [उपमित स०] संगीत मे, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

मेघ-सार—पुं० [ष० त०] चीनिया कपूर।

मेघ-सुहृत्—पुं० [ब० स०] मोर।

मेघ-स्फोट—पुं० [सं०] अचानक होनेवाली ऐसी घोर या भीषण वर्षा जो प्रलय का-सा दृश्य उपस्थित कर देती हो। बादलो का फट पड़ना। (क्लाउड बर्स्ट)

मेघ-स्वन—पु० [ष० त०] बादलो का शब्द। मेघों का गर्जन।

वि० [ब० स०] बादलों की तरह गरजनेवाला।

मेघस्वनांकुर—पुं० मेघस्वन-अकुर [स० ब० स०] वैदूर्य मणि। बिल्लौर। (कहते) हैं कि बादल के गरजने पर इसकी उत्पत्ति होती है।

मेघांत—पुं० [मेघ-अन्त, ष० त०] १. वर्षा का अन्त। २. शरत्‌ऋतु का आरभ-काल।

मेघागम—पु० [मेघ-आगम, ष० त०] वर्षा का आरभ।

मेघाच्छन्न—वि० [मेघ-आच्छन्न, तृ० त०] [भाव० मेघाच्छन्नता] बादलों से ढका हुआ। बादलों से छाया हुआ (आकाश)। (क्लाउडी)

मेघाडंबर—पु० [मेघ-आडंबर, ष० त०] १ मेघ-गर्जन। बादल की गरज। २ बादलो का विस्तार।

मेघारि—पुं० [मेघ-अरि, ष० त०] वायु जो बादलो को उडा ले जाती है।

मेघावरि*—स्त्री० [सं० मेघावलि] बादलो की पंक्ति। मेघमाला।

मेघास्थि—पु० [मेघ-अस्थि, ष० त०] ओला।

मेघोदय—पु० [मेघ-उदय, ष० त०] आकाश मे बादल छाना।

मेघौना†—पु० [सं० मेघ] नीले रंग का एक प्रकार का कपड़ा।

मेच—पुं० [देश०] आसाम की एक पहाड़ी जाति।

†पुं०=मंच।

†स्त्री०=मेज।

मेचक—पु० [सं०√मेच् (मिलना)+वुन्—अक] १ अंधकार। अँधेरा। २. सुरमा। ३ मोर की चंद्रिका। ४ धूआँ। ५ बादल। ६ सहिजन। ७. पियासाल। ८ काला नमक। ९ एक प्रकार का छोटा बिच्छू।

वि० [भाव० मेचकता] काले रंग का। काला।

मेचकता—स्त्री० [स० मेचक+तल्+टाप्], १ मेचक होने की अवस्था या भाव। २. कालापन। श्यामता। ३ अधकार। अँधेरा। ४. स्याही।

मेचकताई*—स्त्री०=मेचकता।

मेच्छ*—पु०=म्लेच्छ।

मेछ*—पु०=म्लेच्छ।

मेज—स्त्री० [फा० मेज़] १. भोजन की सामग्री। २ वह चौकी जिस पर रखकर भोजन किया जाता है। ३ आज-कल लिखने-पढ़ने के लिए बनी हुई एक प्रकार की ऊँची चौकी। (टेबुल)

स्त्री० [?] एक प्रकार की पहाड़ी घास।

मेजपोश—पु० [फा०] चौकी या मेज के ऊपर शोभा के लिए बिछाने का कपड़ा।

मेजबान—पु० [फा०] १. अतिथि की दृष्टि मे वह व्यक्ति जिसके यहाँ वह परदेश मे जाकर ठहरता हो। २. वह जो अतिथि को अपने यहाँ आदरपूर्वक ठहराता हो।

मेजबानी—स्त्री० [फा०] १ मेजबान होने की अवस्था, धर्म या भाव। आतिथ्य। २ अतिथि की की जानेवाली खातिरदारी। अतिथि-सत्कार। ३. वे खाद्य पदार्थ जो बाहर से बरात आने पर पहले-पहल कन्यापक्ष से बरातियो के लिए भेजे जाते हैं।

मेजर—पु० [अं०] १. सेना मे कुछ विशिष्ट अधिकारियो का पद। २ उक्त पद पर होनेवाला अधिकारी।

मेजर-जनरल—पु० [अ०] फौज का एक बडा अफसर जिसका दरजा लेफ्टेनेंट जनरल के नीचे या बाद होता है।

मेजा—पु० [सं० मडूक; हिं० मेढ़क; पूरबी हिं० मेझुका] मेढक। मेढक।

मेट—पु० [अ०] १ मजदूरो का प्रधान या सरदार। टंडैल। जमादार। २ एक प्रकार का जहाजी कर्मचारी।

मेटक*—वि० [हिं० मेटना+क (प्रत्य०)] मिटानेवाला। नाशक। २. नष्ट करनेवाला।

मेटनहार (ा)—वि० [हिं० मेटना+हारा (प्रत्य०)] १ मिटानेवाला। २. नष्ट करनेवाला।

मेटना†—स०=मिटाना।

मेट-माट—स्त्री० [हिं० मेटना=मिटाना] झगडे, विवाद आदि के निपटने या निपटाये जाने की क्रिया या भाव। जैसे—अब उन लोगो मे मेट-माट हो गई है।

मेटा†—पु० [स्त्री० अल्पा० मेटिया, मेटी] मिट्टी का घडा। मटका।

मेटिया—स्त्री० हिं० 'मेटा' का स्त्री० अल्पा०।

मेटी—स्त्री०=मेटिया (मटकी)।

मेटुआ—वि० [हिं० मेटना] १ मिटानेवाला। २ कृतघ्न।

मेट्रन—स्त्री० [अ०] वह स्त्री जो लडकियो, दाइयो आदि के कामो की देख-रेख करती हो। मातृका। (मेट्रन)

मेठ—पु० [स०] १ हाथीवान। फीलवान। २ मेढ़ा।

मेड†—स्त्री०=मेड।

मेडक—पु०=मेंढक।

मेड़रा—पु० [स० मडल; हि० मडरा] [स्त्री० अल्पा० मेड़री] १. मिट्टी डालकर बनाया हुआ घेरा। मेड। २. उभरा हुआ गोलाकार किनारा। ३ किसी वस्तु का मडलाकार ढाँचा।

मेड़राना*—अ०=मेंडराना।

मेड़री—स्त्री० हिं० 'मेडरा' का स्त्री० अल्पा०।

स्त्री० [?] चक्की के चारो ओर का वह स्थान जहाँ आटा पिसकर गिरता है।

मेडल—पु० [अं०] पदक। (दे०)

मेडिकल—वि० [अ०] १. ओषधि-सबधी। भैषजिक। २ चिकित्सा-सबधी।

मेड़िया—स्त्री० [स० मडप; हिं० मढ़ी] १. मढ़ी। २. मंडप। ३ छोटा घर। स्त्री०=मेंड़।

मेढक†—पु०=मेढक।

मेढ़ासिंगी—स्त्री० [स० मेढ़शृंगी] एक झाड़ीदार लता जिसकी जड़ ओषधि के काम मे आती है और सर्प का विष दूर करनेवाली मानी जाती है।

मेढ़ि—स्त्री०=मेड।

मेढ़ी—स्त्री० [स० वेणी] १ स्त्रियो के सिर के बालो की तीन लड़ियो मे गुथी हुई चोटी। मेढ़ी। २ घोडो के माथे पर एक प्रकार की भँवरी।

मेढ़—पु० [स०] १ शिश्न। लिग। २ मेढा।

मेथिका—स्त्री० [स०√मेथ् (मिलना)+ण्वुल्—अक,+टाप्, ह्रस्व] मेथी।

मेथी—स्त्री० [स०√मेथ्+इन्+ङीष्] १ एक प्रसिद्ध पौधा जिसकी खेती होती है। २ उक्त पौधे के बीज।

मेथौरी—स्त्री० [हिं० मेथी+बरी] उर्द की पीठी मे मेथी का साग मिलाकर बनाई जानेवाली बरी। उदा०—भई मेथौरी, सिरिका परा।—जायसी।

मेद (स्)—पु० [सं०√मिद् (चिकना होना)+अच्,√मिद्+असुन्] १ शरीर के अन्दर की चरबी। वसा। २ शरीर म चरबी बढ़ने और बहुत मोटे होने का रोग। ३ नीलम की एक प्रकार की छाया। ४ कस्तूरी। ५ कस्तूरी, केसर आदि के योग से बनाया जानेवाला एक प्रकार का सुगधित द्रव्य। ६ एक अत्यज जाति जिसकी उत्पत्ति मनुस्मृति मे वैदेहिक पुरुष और निषाद स्त्री से कही गई है। स्त्री०=मेदा।

मेदनी—स्त्री० [सं० मेदिनी] १ यात्रियो का गोल जो झडा लेकर किसी तीर्थ-स्थान या देव-स्थान को जाता हो। २ मेदिनी।

मेदपाट—पु० [सं०] मेवाड देश।

मेदपुच्छ—पु० [सं०] दुबा नामक जन्तु।

मेदस्वी (स्विन्)—वि० [सं० मेदस्+विन्] जिसके बदन मे अधिक मेद या चरबी हो, अर्थात् मोटा।

मेदा—स्त्री० [स० मेद+अच्+टाप्] अष्टवर्ग मे की एक प्रसिद्ध ओषधि जो ज्वर और राजयक्ष्मा मे अत्यन्त उपकारी कही गई है।
पु० [अ० मेद] पाकाशय। पेट। कोठा। जैसे—मेदे की बीमारी।

मुहा०—**मेदा कड़ा होना**=आँतो की क्रिया इस प्रकार की होना कि जल्दी दस्त न हो। **मेदा साफ होना**=मलशुद्धि होना। दस्त होने से कोठा साफ होना।

मेदिनी—स्त्री० [स० मेद+इनि+ङीप्] १ मेदा। २ पृथ्वी।

मेदुर—वि० [स०√मिद् (भीगना)+घुरच्] चिकना। स्निग्ध।

मेदू†—पु०=मेद।

मेदोज—पु० [स० मेदस्√जन् (उत्पन्न होना)+ड] हड्डी। अस्थि।

मेदोर्बुद—पु० [स० मेदस्+अर्बुद, मध्य० स०] १ मेदयुक्त गाँठ या गिल्टी जिसमे पीडा हो। २ होठ का एक प्रकार का रोग।

मेदोवृद्धि—स्त्री० [सं० मेदस्-वृद्धि, ष० त०] १ चरबी का बढ़ना जिसमे शरीर मोटा होता है। २ अड-कोश बढ़ने का रोग।

मेध—पु० [सं०√मेध् (मारना)+घञ्] [वि० मेधक, मेधी, मेध्य] १ यज्ञ। २ हवि। ३ यज्ञ-बलि का पशु।

मेधज—पु० [सं० मेध√जन् (उत्पन्न करना)+ड] विष्णु।

मेधा—स्त्री० [स०] १ बाते समझने और स्मरण रखने की शक्ति

२ दक्ष प्रजापति की एक कन्या। ३. षोडश मातृकाओं मे से एक मातृका। ४. छप्पय छन्द का एक भेद।

मेधाजित्—पु० [सं०] कात्यायन मुनि।

मेधातिथि—पु० [सं०] १ काण्ववंश में उत्पन्न एक ऋषि जो ऋग्वेद के प्रथम मंडल के १२-२३ सूक्तो के द्रष्टा थे। २ पुराणानुसार शाकद्वीप के अधिपति जो प्रियव्रत के पुत्र कहे गये हैं। ३. कर्दम प्रजापति का एक पुत्र।

मेधावती—स्त्री० [सं० मेधा+मतुप्, वत्व,+ङीप्] महाज्योतिष्मती लता।

मेधावान् (वत्)—वि० [सं० मेधा+मतुप्] =मेधावी।
वि० [स्त्री० मेधावती]=मेधावी।

मेधावी (विन्)—वि० [सं० मेधा+विनि] [स्त्री० मेधाविनी] १ असाधारण मेधा शक्तिवाला। जिसकी धारणाशक्ति तीव्र हो। २ बुद्धिमान्। ३. पंडित। विद्वान्।
पु० १. मदिरा। शराब। २ तोता।

मेधिर—वि० [सं० मेधा+इरन्] मेधावी।

मेधिष्ठ—वि० [सं० मेधा+इष्ठन्] मेधावी।

मेध्य—वि० [सं० मेधा+यत्] १. बुद्धि बढानेवाला। मेधाजनक। २ पवित्र।
पु० १ जौ। २ बकरा। ३ कत्था। खैर।

मेध्या—स्त्री० [सं० मेध्य+टाप्] १ केतकी, शखपुष्पी, ब्राह्मी, मडूकी आदि बुद्धिवर्द्धक बूटियो का वर्ग।

मेन—पु०=मदन (कामदेव)।

मेनका—स्त्री० [सं०√मन् (मानना)+वुन्—अक, एत्व,+टाप्] १. पुराणानुसार एक अप्सरा जिसने विश्वामित्र की समाधि भंग की थी। शकुतला इसी के गर्भ से उत्पन्न हुई थी। २ हिमवान् की पत्नी और पार्वती की माता।

मेनकात्मजा—स्त्री० [सं० मेनका-आत्मजा, ष० त०] १ शकुतला। २ दुर्गा। पार्वती।

मेना—स्त्री० [सं० √मान् (पूजा करना)+इनच्, निपा० सिद्धि] १. पितरो की मानसी कन्या मेनका। २ हिमवान् की पत्नी और पार्वती की माता। ३ वृषणश्व की मानसी कन्या। (ऋग्वेद) ४ स्त्री। औरत। ५ वाक्‌शक्ति।
पु०=मोयन (पकवानो का)।

मेनाद—पु० [सं० मे-नाद, ब० स०] १. बिल्ली। २ बकरी। ३. मोर।

मेना धव—पु० [सं० ष० त०] हिमालय।

मेम—स्त्री० [अं० मैडम का सक्षिप्त रूप] १ युरोप या अमेरिका आदि की स्त्री। २ ताश की बीबी या बेगम नाम का पत्ता।

मेमन—पु० [फा० मोमिन?] गुजरात और महाराष्ट्र राज्यो मे रहनेवाले एक प्रकार के मुसलमान जो बहुधा व्यापार करते हैं।

मेमना—पु० [अनु० मेंमें] १ भेंड का बच्चा। २. एक प्रकार का घोड़ा।

मेमार—पुं० [अ०] इमारत बनाने अर्थात् भवन-निर्माण का काम करनेवाला शिल्पी। इमारत बनानेवाला। थवई। राजगीर।

मेमारी—स्त्री० [हिं० मेमार] मेमार का काम, पद या भाव।

मेमो—पु० [अं०] मेमोरडम का सक्षिप्त रूप।

मेमोरियल—पु० [अं०] स्मारक।

मेय—वि० [सं० मा (मापना)+यत्] १ जिसकी नाप-जोख हो सके। जिसका परिमाण या विस्तार जाना जा सके। २. जो नापा-जोखा जाने को हो।

मेयना†—स० [हिं० मेयन] गूँधे हुए आटे, मैदे आदि मे मोयन डालना या देना।

मेयर—पु० [अं०] म्युनिस्पिल कारपोरेशन या महापालिका का निर्वाचित अध्यक्ष जो सर्वश्रेष्ठ नागरिक भी माना जाता है।

मेर*—पु० १ =मेरु। २ =मेल।

मेरवन†—स्त्री० [हिं० मेरवना] १. मिलाने की क्रिया या भाव। २. किसी मे मिलाई हुई दूसरी चीज। मेल।

मेरवना†—स०=मिलाना।

मेरा—वि० [हिं० मैं+एरा (प्रत्य०)] 'मैं' का सबध-सूचक विभक्ति से युक्त सार्वनामिक विशेषण रूप।
मुहा०—मेरा-तेरा करना=किसी को अपना और किसी को पराया समझना। आत्म और पर का भेद-भाव रखना।
†पु०=मेला।

मेराउ—पु०=मेराव।

मेराज—स्त्री० [अ० मिअराज] १ ऊपर चढने का साधन। २. सीढ़ी। ३ मुसलमानो के विश्वासानुसार मुहम्मद साहब का आसमान पर जाकर ईश्वर-साक्षात्कार करना।

मेराना†—स० =मिलाना।

मेराव—पु० [हिं० मेर=मेल] १. मिलने या मिलाने की क्रिया या भाव। २. मिलन। मिलाप।

मेरी—स्त्री० [हिं० मेरा] अहभाव। अहकार।
सर्व० हिं० 'मेरा' का स्त्री०।

मेरु—पुं० [सं०√मि (प्रक्षेप)+रु] १ एक पुराणोक्त पर्वत जो सोने का कहा गया है। सुमेरु। २ एक विशिष्ट आकार-प्रकार का देव-मंदिर। ३ हिंडाले मे ऊपरवाली वह लकडी जिससे झूलनेवाली रस्सियाँ बँधी रहती है। ४ पृथ्वी के उत्तरी और दक्षिणी ध्रुवो मे से प्रत्येक ध्रुव। (पोल)
विशेष—उत्तरी ध्रुव सुमेरु और दक्षिणी ध्रुव सुमेरु कहलाता है।
५ जपमाला के बीच का बड़ा दाना जो और सब दानो के ऊपर होता है। इसी से जप का आरभ और इसी पर उसकी समाप्ति होती है। ६. वीणा का ऊपरी और उठा हुआ भाग। ७ छदशास्त्र मे प्रत्यय के अतर्गत वह प्रक्रिया जिससे यह जाना जाता है कि कितनी मात्राओ या वर्णों के (प्रस्तार के अनुसार निकाले हुए) किसी भेद या छद मे गुरु और लघु के कितने रूप होते है। ८ हठयोग में सुषुम्ना नाड़ी का एक नाम।

मेरुआ†—पु० [सं० मेरु+हिं० आ (प्रत्य०)] छोर का वह अंश जिसमे रस्सियाँ बधी होती है।
वि० [हिं० मेरवना=मिलाना] मिला हुआ। मिश्रित।

मेरुक—पुं० [सं० मेरु+कन्] १ ईरान मे स्थित एक देश। २. यज्ञ का धूआँ। ३ धूप।

मेरु-ज्योति—स्त्री० [म० ष० स०] उत्तरी और दक्षिणी ध्रुवो मे रात के समय बीच बीच मे दिखाई पड़ती रहनेवाली एक प्रकार की ज्योति जिससे बहुत कुछ दिन का सा प्रकाश होता है। (आरोरा बोरिएलिस)

विशेष—दक्षिण-ध्रुव में दिखाई पड़नेवाली उक्त ज्योति को 'कुमेरु ज्योति' कहते हैं।

मेरु-दंड—पु०[सं० उपमित स०] १. मनुष्यो और बहुत से जीव-जंतुओ मे पीठ के बीचोबीच गरदन से लेकर कमर पर की त्रिकास्थि तक का पृष्ठ-वश जिसमे कसेरुकाएँ (हड्डी की गुरियाँ) माला की तरह गुथी रहती है और जिनके दाहिने बाएँ शाखाओ के रूप में लबी-लबी हड्डियाँ निकली होती है। रीढ़। (बैकबोन)

विशेष—हठयोग के अनुसार इसके मध्य सुषुम्ना, बाईं ओर इड़ा (चंद्रमा) और दाहिनी ओर पिंगला (सूर्य) नाम की नाड़ियाँ होती हैं।

२ लाक्षणिक रूप मे, कोई ऐसी चीज या बात जिसके आधार पर कोई दूसरी चीज या बात ठीक तरह से आश्रित रहकर पूरी तरह से अपना काम करती है। जैसे—तुलसी-कृत रामायण हिंदू संस्कृति का मेरु-दंड है। ३ भूगोल मे पृथ्वी के दोनो ध्रुवो को मिलानेवाली एक कल्पित सीधी रेखा।

मेरुदंडी (डिन्)—वि० [सं० मेरुदंड+इनि] रीढवाला (प्राणी)।

मेरुदेवी—स्त्री० [सं०] ऋषभदेव की माता।

मेरु-पृष्ठ—वि० [सं० ब० स०] जिसकी पीठ या नीचेवाला भाग समतल भूमि पर नही, बल्कि अंडाकार उभरे हुए तल पर हो। जैसे—मेरुपृष्ठ यंत्र। (तान्त्रिकों का)। 'भू-पृष्ठ' का विपर्याय।

पु० १ आकाश। २ स्वर्ग। ३ एक प्राचीन जाति।

मेरु-यंत्र—पु०[सं० उपमित स०] १. चरखा। २ बीजगणित मे एक प्रकार का चक्र।

मेरुरज्जु—स्त्री० [सं०] एक मोटी नस जो शरीर के तंत्रिकातत्र के केंद्र के रूप मे है और जो गरदन के पिछले भाग से कमर तक रीढ की हड्डी के साथ फैली हुई है। (स्पाइनल कार्ड) विशेष दे० १ 'तंत्रिका', २ 'तंत्रिका तंत्र'।

मेरु-शिखर—पु० [सं० ष० त०] १. मेरु पर्वत की चोटी। २ हठयोग मे, सहस्रार चक्र का एक नाम। (दे० 'सहस्रार')

मेल—पु० [सं०√मिल् (मिलना)+घञ्] १ मिलने या मिले हुए होने की अवस्था या भाव। जैसे—यह रंग तीन रंगो के मेल से बनता है। २ दो या अधिक वस्तुओ, व्यक्तियो आदि का एक साथ या एक स्थान पर इकट्ठा होना। मिलाप। संयोग। समागम। जैसे—इसी स्टेशन पर दोनो गाड़ियो का मेल होता है। ३ सामाजिक व्यवहार मे, वह स्थिति जिसमे लोग प्रीतिपूर्वक साथ रहते अथवा आपस मे मिलते-जुलते है। जैसे—दोनो भाइयो मे बहुत मेल है।

पद—मेल-जोल, मेल-मिलाप, मेल-मुहब्बत।

४ वह स्थिति जिसमे वैर-विरोध या शत्रुता छोड़कर लोग फिर एक साथ होते या रहते हैं। प्रेम और मित्रता का संबंध। जैसे—अब तो दोनो राष्ट्रो मे मेल हो गया है। ५ पारस्परिक अनुकूलता, उपयुक्तता या सामजस्य। जैसे—दूध और नमक (या टोप और धोती) का कोई मेल नहीं है।

क्रि० प्र०—बैठना।—मिलना।

मुहा०—मेल खाना=किसी के साथ अनुकूल या उपयुक्त जान पड़ना या सिद्ध होना। उपयुक्त या ठीक साथ होना। जैसे—(क) इस माला के मोतियो से तुम्हारा मोती मेल नही खाता। (ख) इस कोट के रंग के साथ टोपी का रंग मेल नही खाता।

६. जोड़। बराबरी। समता। जैसे—इसी मेल का कोई और कपड़ा लाओ।

पद—मेल का=जोड़ या बराबरी का।

७ पदार्थों का वर्ग। जैसे—उनके यहाँ सब मेल की किताबें (या दवाइयाँ) मिलती हैं। ८ किसी अच्छी या बढ़िया चीज मे खराब या घटिया चीज के मिले हुए होने की अवस्था या भाव। मिलावट। जैसे—आज-कल खाने-पीने की चीजो मे कुछ न कुछ मेल रहता ही है।

स्त्री० [अं०] १ रेलवे की डाकगाड़ी। २ डाकखाने के द्वारा आने-जानेवाली चिट्ठियाँ, पारसल आदि जो प्राय डाकगाड़ी से आते-जाते हैं। डाक।

मेलक—वि० [सं०√मिल् (मिलना)+णिच्+ण्वुल्—अक] मिलाने या मेल करानेवाला।

पु० [मेल+कन्] १ सग। साथ। २. सहवास। ३ मेला। ४. आदमियो का जमावड़ा। समूह। ५ मिलन। समागम। ६ वर तथा कन्या के ग्रहों, नक्षत्रो, राशियो आदि का होनेवाला मिलान।

मेलगर—पु० [सं० मेलक] १ भीड़। जमावड़ा। २ मेला।

मेल-जोल—पु० [हिं० मिलना+जुलना] [वि० मेली-जोली] १. व्यक्तियो के परस्पर प्रायः मिलते-जुलते रहने का भाव। २ प्रायः मिलते-जुलते रहने के फलस्वरूप दो पक्षो मे होनेवाला आत्मीयतापूर्ण संबंध।

मेलन—पु० [सं०√मिल् (मिलना)+ल्युट्—अन] १ एक साथ होना। इकट्ठा होना। मिलन। २ [√मिल्+णिच्+ल्युट्—अन] मिलाने की क्रिया या भाव। ३ मिलावट। ४ आदमियो का जमावड़ा। समूह। ५ मुठभेड़।

मेलना—स० [हिं० मेल+ना (प्रत्य०)] १ मिलान करना। २ मिलाना या मिश्रित करना। ३ किसी चीज के अन्दर, ऊपर या चारो ओर पहनाना या रखना। उदा०—सिय जय-माल राम उर मेली।—तुलसी। ४ कोई चीज कही पहुँचाना या भेजना। उदा०—काजी होके बाँग मेले जो क्या साहब बहरा है।—कबीर। ५ फेंकना। ६ फैलाना।

अ० किसी चीज या व्यक्ति का कही पहुँचना। उदा०—जस-सागर रघुनाथ जू मेले सागर तीर।

मेल-मल्लार—पु० [सं०] एक प्रकार की संकर रागिनी।

मेल-मिलाप—पु० [हिं०] १ मेल-जोल। २ रुष्ट या वियुक्त पक्षों मे होनेवाला मिलन या मेल।

पद—मेल-मिलाप से=मैत्रीपूर्ण ढग से।

मेला—पु० [सं० मेलक] १ उत्सव, देव-दर्शन आदि के अवसरो पर बहुत से लोगो का किसी स्थान पर एक साथ होनेवाला जमाव। २. वस्तुओ, विशेषत चौपायो के क्रय-विक्रय के निमित्त किसी विशिष्ट स्थान पर तथा किसी विशिष्ट ऋतु मे होनेवाला व्यापारियो का जमावड़ा। जैसे—ददरी या हरिद्वार का मेला।

पद—मेला-ठेला।

३ किसी तीर्थ-स्थान या पर्व पर होनेवाला लोगो का जमाव। जैसे—माघ मेला। ४ किसी स्थान पर किसी चीज को देखने अथवा किसी बात को सुनने के लिए लगनेवाली लोगो की भीड़। जैसे—बात की बात मे वहाँ मेला लग गया।

क्रि० प्र०—लगना।

५. दे० 'प्रदर्शिनी'। जैसे—औद्योगिक मेला।

स्त्री० [सं०√मिल्+णिच्+अक+टाप्] १. बहुत से लोगों का जमावड़ा। २. मिलन। ३. रोशनाई। स्याही। ४. आँखों में लगाने का अंजन। ५. महानीली।

मेला-ठेला—पुं० [हिं० मेला+हिं० ठेलना] मेला अथवा कोई ऐसा सार्वजनिक स्थान जहाँ भीड़-भाड़ और धक्कम-धक्का हो।

मेलान†—पुं० [हिं० मिलना] पड़ाव। मंजिल। उदा०—ओहि मेलान जब पहुँचिहि कोई।—जायसी।

†पुं०=मिलान।

मेलाना—स० [हिं० मेल] १. मेलना का प्रेरणार्थक रूप। मेलने का काम दूसरे से कराना। २. रेहन रखी हुई वस्तु को छुड़ाना।

†स०=मिलाना।

मेलापक—वि० [सं० मेलक] १. मिलानेवाला। २ इकट्ठा करनेवाला।

पुं० १. भीड़-भाड़। जमावड़ा। २ ग्रहों का योग।

मेलायन—पु० [सं० मिलन] १ मिलन। २ संयोग। समागम।

मेली—वि० [हिं० मेल] १. जिससे मेल या मेल-जोल हो। २. (वह) जो जल्दी दूसरों में हिल-मिल जाता हो। यार-बाश।

मेल्हना—अ० [?] १ कष्ट या पीडा से बार-बार इस करवट से उस करवट होना। छटपटाना। २. कोई काम करने मे आनाकानी करके समय बिताना।

†पुं० एक प्रकार की नाव।

†स०=मेलना।

मेव—पु० [देश०] १. राजपूताने की एक जाति। २ उक्त जाति का व्यक्ति।

मेवड़ी—स्त्री० [देश०] निर्गुंडी। सँभालू।

मेवा—पु० [फा० मेव] १. खाने का फल, विशेषत सूखा फल। २ आज-कल विशिष्ट रूप से किशमिश, बादाम, अखरोट आदि सुखाए हुए बढ़िया फल। ३ उत्तम और बहुमूल्य पदार्थ। ४ गुजरात मे होनेवाला एक प्रकार का गन्ना। खजूरिया।

मेवाटी—स्त्री० [फा० मेवा+हिं० बाटी] एक प्रकार का पकवान जिसमे किशमिश, बादाम आदि भी भरे हुए होते हैं।

मेवाड़—पु० [देश०] १ आधुनिक राजस्थान का एक प्रसिद्ध भूभाग जो मध्य काल में एक स्वतंत्र राज्य था। महाराणा प्रताप यहीं का राजा था। २ एक राग जो मालकोस राग का पुत्र माना गया है।

मेवाड़-केसरी—पुं० [हिं०] महाराणा प्रताप।

मेवाड़ी—वि० [हिं० मेवाड़] १. मेवाड़-प्रदेश से संबंध रखनेवाला। मेवाड़ का। २ मेवाड़ में रहने या होनेवाला।

पु० मेवाड़ का निवासी।

स्त्री० मेवाड़ की बोली।

मेवात—पुं० [सं०] राजस्थान और सिंध के बीच के प्रदेश का पुराना नाम।

मेवाती—पुं० [हिं० मेवात+ई (प्रत्य०)] मेवात का रहनेवाला।

वि० मेवात का।

स्त्री० मेवात प्रदेश की बोली।

मेवा-फ़रोश—पुं० [फा० मेव: फ़रोश] फल और मेवे बेचनेवाला दूकानदार।

मेवासा*—पुं०=मवास (दुर्ग)।

मेवासी—वि० [हिं० मवासा] १. दुर्ग में होनेवाला या रहनेवाला। २. फलत सुरक्षित।

पुं० दुर्ग का अधिकारी या स्वामी।

मेष—पुं० [सं०√मिष् (स्पर्धा)+अच्] १ भेड़। २. ज्योतिष में बारह राशियों में से पहली राशि जिसमें २१ मार्च के लगभग सूर्य प्रविष्ट होता है। ३. जीवशाक। सुसना।

मेषपाल—पु० [सं० मेष√पाल् (पालना)+णिच्+अण्] गड़रिया।

मेष-लोचन—पु० [सं० ब० स०] चकवँड़।

मेष-वल्ली—स्त्री० [सं० मध्य० स०] मेढ़ासिंगी।

मेष-विषाणिका—स्त्री० [सं० ब० स०,+कप्,+टाप्, ह्रस्व] मेढ़ासिंगी।

मेष-शृंग—पुं० [सं० ष० त०] सिंगिया (विष)।

मेष-शृंगी—स्त्री० [सं० मेषशृंग+ङीष्] मेढ़ासिंगी।

मेष-संक्रांति—स्त्री० [सं० ष० त०] सूर्य के मेष राशि में प्रविष्ट होने का समय जो पुण्यकाल माना गया है। सौर वर्ष का आरभ इसी अथवा इसके दूसरे दिन से होता है।

मेषांड—पु० [सं० मेष-अंड, ब० स०] इंद्र।

मेषा—स्त्री० [सं० मेष+टाप्] १ छोटी इलायची। २ लाल भेड़ की खाल से बनाया जानेवाला चमड़ा।

मेषिका—स्त्री० [सं० मेषी+कन्+टाप्, ह्रस्व] मेषी।

मेषी—स्त्री० [सं० मेष+ङीष्] १ मादा भेड़। २ जटामासी।

मेस—पु० [अं०] वह भोजनालय जहाँ संयुक्त रूप से किसी वर्ग के बहुत से लोगों का भोजन बनता हो। जैसे—फौजियों या विद्यार्थियों का मेस।

मेसू—पु० [?] बेसन की बनी हुई एक प्रकार की बरफी।

मेसूरण—पु० [सं०] फलित ज्योतिष में दशम लग्न जो कर्म-स्थान कहा गया है।

मिस्मेरिज़्म—पुं० [अं० मेज़्मरिज़्म] मेज़्मर नामक जर्मन डाक्टर का आविष्कृत यह सिद्धान्त कि मनुष्य किसी गुप्त शक्ति या केवल इच्छा-शक्ति से दूसरे की इच्छाशक्ति को प्रभावान्वित या वशीभूत कर के अचेत कर सकता है। सम्मोहिनी विद्या। सम्मोहन।

मेहँदिया—वि० [हिं० मेहदी] मेहदी के रंग का। हरापन लिये लाल रंग का।

पुं० उक्त प्रकार का रंग।

मेहँदी—स्त्री०=मेहदी।

मेह—पु० [सं०√मिह् (क्षरण)+घञ्] १. पेशाब। मूत्र। २. प्रमेह नामक रोग। ३. कोई ऐसा रोग जिसमें मूत्र के साथ कोई और विकृत या दूषित तत्त्व भी निकलता हो। जैसे—मधु-मेह आदि।

पु० [सं० मेघ] १ मेघ। भेड़। २ बादल। मेघ। ३ वर्षा। मेह।

मेहतर—पु० [फा० मिहतर] १ बहुत बड़ा और प्रतिष्ठित या मान्य व्यक्ति। बुजुर्ग। २. भंगी विशेषत मुसलमान भंगी।

मेहतरानी—स्त्री० हिं० 'मेहतर' (भंगी) का स्त्री।

मेहन—पुं० [सं०√मिह्+ल्युट्—अन] १ पेशाब करना। मूत्र-त्याग। २. पेशाब। मूत्र। ३. [√मिह्+ल्यु—अन] जननेंद्रिय। लिंग।

मेहनत—स्त्री० [अ०] परिश्रम, विशेषतः शारीरिक परिश्रम।

मेहनताना—पु० [अ०+फा०] १. मेहनत करने के बदले में मिलनेवाला धन। पारिश्रमिक। २ विशेष रूप से वह धन जो वकील को मुकदमा लड़ने के बदले मे दिया जाता है।

मेहनती—वि० [अ० मेहनत+हिं० ई० (प्रत्य०)] १. अधिक या पूरी मेहनत करनेवाला। परिश्रमी। २ व्यायाम करनेवाला। ३ पुष्ट।

मेहना—स्त्री० [सं०√मिह्+णिच्+युच्+अन,+टाप्] महिला। स्त्री।
पु० [अ० मिहन=परीक्षण या हिं० ताना का अनु० ?] किसी के साथ किये हुए उपकार की ऐसी चर्चा जो उपकृत व्यक्ति की कृतघ्नता दिखलाने पर लज्जित करने के लिए की जाय। जैसे—वह दिन-रात ननद को ताने-मेहने देती रहती है। (स्त्रियाँ)
क्रि० प्र०—देना।—मारना।

मेहमान—पु० [फा० मेह्मान] १ अतिथि। अभ्यागत। २ दामाद।

मेहमानदारी—स्त्री० [फा०] अतिथि या मेहमान की की जानेवाली आव-भगत या आदर-सत्कार। आतिथ्य।

मेहमानी—स्त्री० [फा० मेहमान+ई (प्रत्य०)] १. मेहमान होने की अवस्था या भाव। २ मेहमान का किया जानेवाला आतिथ्य-सत्कार। ३ अपने घर मेहमानों की तरह किया जानेवाला सकोच।

मेहर—स्त्री० [फा० मेह्र] मेहरबानी। अनुग्रह। दया।
†स्त्री०=मेहरी।

मेहरना—अ० [हिं० मेहर+ना (प्रत्य०)] मेहर अर्थात् अनुग्रह करना।

मेहरबान—वि० [फा० मेह्रबान] कृपालु। दयालु। अनुग्रह करनेवाला।

मेहरबानगी—स्त्री०=मेहरबानी।

मेहरबानी—स्त्री० [फा० मेह्रबानी] १ मेहरबान होने की अवस्था या भाव। कृपा। अनुग्रह। २ मेहरबान द्वारा किया हुआ कोई उपकार या अनुग्रह।

मेहरा—पु० [हिं० मेहरी] १ स्त्रियो की-सी चेष्टावाला। स्त्री-प्रकृतिवाला। जनखा।
†पु० [?] जुलाहों की चरखी का घेरा।
पु० [सं० मिहिर] खत्रियों की एक जाति या वर्ग।

मेहराना†—अ० [?] नमी आदि के कारण कुरकुरे या मुरमुरे पदार्थ का कुछ आर्द्र होना। जैसे—बरसात के कारण भुने हुए दाने या सेव मेहराना।

मेहराब—स्त्री० [अ० मिहराब] द्वार के ऊपर का अर्द्धमंडलाकार बनाया हुआ भाग। दरवाजे के ऊपर का गोले, आधे गोले या मंडल की तरह का बनाया हुआ हिस्सा।

मेहराबदार—वि० [अ०+फा०] जिसमे मेहराब लगी हो। मेहराब-वाला।

मेहराबी—वि० [अ० मिहराबी] मेहराबदार।
स्त्री० एक प्रकार की तलवार जो मेहराब की तरह बीच मे कुछ झुकी हुई या टेढ़ी होती है।

मेहरारू—स्त्री० [सं० मेहना] १ महिला। स्त्री। २. जोरू। पत्नी।

मेहरिया—स्त्री०=मेहरी।

मेहरी—स्त्री० [सं० मेहना] १ स्त्री। औरत। २ जोरू। पत्नी।

मेहल—पु० [देश०] मँझोले आकार का एक तरह का वृक्ष जिसके फल खाये जाते हैं। इसकी लकडी की छड़ियाँ और हुक्के की निगालियाँ बनती हैं।

मेह्र—स्त्री०=मेहर (कृपा)।

मेह्रबान—वि०=मेहरबान।

मैं—सर्व० [सं० अहं] सर्वनाम उत्तम पुरुष मे कर्ता का रूप। स्वयं। खुद।
विशेष—गद्य मे तो यह विभक्ति-रहित रूप है, परन्तु पद्य मे यह सार्व-विभक्तिक रूप मे भी प्रयुक्त होता है। जैसे—यह अपराध बड़ौ उन कीन्हौ। तच्छक डसन साप मैं (=मुझे) दीन्हौ।—सूर।
स्त्री० अहंभाव। अहंमन्यता।
†विभ० हिन्दी की 'मे' विभक्ति का व्रज रूप।

मैंगनीज़—पु० [अं०] मंगल नामक सफेद धातु।

मैंडल†—पु०=मैनफल।

मैंन†—पु०=मोम।

मै—स्त्री० [सं० मद्य से फा०] शराब। मद्य। मदिरा।
अव्य० [अ०] साथ। सहित। जैसे—मै नौकर-चाकर मे वे यहाँ आनेवाले है।
†पु०=मय।
पु०=मैखाना।

मैकदा—पु० [फा० मैकद] मधुशाला।

मैकश—पु० [फा०] [भाव० मैकशी] बहुत शराब पीनेवाला। मद्यप।

मैकशी—स्त्री० [फा०] शराब पीना। मद्य-पान।

मैका—पु०=मायका।

मै-खाना—पु० [फा० मैखान] मधुशाला। मदिरालय।

मैगना कार्टा—पु० [अ०] वह राजकीय आज्ञापत्र जिसमे राजा की ओर से प्रजाजनों को कोई स्वत्व या अधिकार देने की घोषणा की जाती है। शाही फरमान।

मैगनेट—पु० [अ०] चुंबक।

मैगल—पु० [सं० मदकल] मत्त हाथी। मस्त हाथी।
वि० मत्त। मस्त।

मैच—पु० [अ०] वह खेल जिसमें दो दल एक दूसरे को पराजित करने और स्वयं विजयी होने के लिए सम्मिलित होते है। प्रतियोगिता का खेल।

मैजल*—स्त्री० [अ० मंजिल] १ उतनी दूरी जितना कोई पुरुष एक दिन मे तै करता हो या कर सकता हो। मंजिल। २ यात्रा। सफर।

मैजिक—पु० [अ०] इंद्रजाल। जादू।

मैजिक लालटैन—स्त्री० [अं० मैजिक लैन्टर्न] एक प्रकार का यंत्र जिसमे विद्युत् के प्रकाश की सहायता से परदे पर परछाँई डालकर तसवीरें आदि दिखाई जाती है।

मैटर—पु० [अ०] १ पदार्थ। भूत। २ कागज पर लिखा हुआ कोई विषय जो कंपोज करने के लिए दिया जाय। ३ कंपोज किये हुए टाइप या अक्षर जो छपने के लिए तैयार हों।

मैत्र—पु० [सं० मित्र+अण्] १ मित्र होने की अवस्था या भाव। मित्रता। २ अनुराधा नक्षत्र। ३ मर्त्य लोक। ४. ब्राह्मण। ५ मल-द्वार। गुदा। ६ वेद की एक शाखा। ७ एक प्राचीन वर्ण-संकर जाति। ८ एक मुहूर्त। (ज्योतिष)
वि० १ मित्र-संबंधी। २. मित्रों मे होनेवाला।

मैत्रक—पुं० [सं० मैत्र+कन्] १ मित्रता। दोस्ती। २ बौद्ध मंदिर का पुजारी।

मैत्रीभ—पु० [सं० मध्य० स०] अनुराधा नक्षत्र।

मैत्रायण—पु० [सं० मित्र+फक्–आयन] १ गृह्यसूत्र के प्रणेता एक प्राचीन ऋषि। २ मैत्र नाम की वैदिक शाखा।

मैत्रावरुण, मैत्रावरुणि—पुं० [सं० मित्र-वरुण, द्व० स०, वृद्धि+अण्, मैत्रावरुण+इञ्] १ अगस्त्य और वसिष्ठ (इन दोनों की उत्पत्ति मित्र और वरुण दोनों के सयुक्त वीर्य से मानी गई है)। २ यज्ञ के १६ ऋत्विजो मे से एक।

मैत्री—स्त्री० [सं० मित्र+ष्यञ्+ङीष्, य-लोप] १ दो व्यक्तियो के बीच का मित्र-भाव। मित्रता। दोस्ती। २ अपना कोई उद्देश्य सिद्ध करने के लिए किसी के साथ बढ़ाया या स्थापित किया जानेवाला घनिष्ठ मेल-जोल। संश्रय। (एलायन्स) ३ दो या अधिक चीजो के एक ही तरह के होने की अवस्था या भाव। समानता। जैसे—**वर्ण-मैत्री**। ४ अनुराधा नक्षत्र।

मैत्रेय—पु० [स० मैत्र+ढञ्–एय] १. एक बुद्ध। २ [मित्रयु+ढञ्–एय, यु-लोप] सूर्य। ३ एक ऋषि। ४ एक वर्ण संकर जाति।

मैत्रेयिका—स्त्री० [स० मैत्रेय+कन्+टाप्, इत्व] मित्रों या सहयोगियों में होनेवाला सघर्ष।

मैत्रेयी—स्त्री० [स० मैत्रेय+ङीप्] १ याज्ञवल्क्य की स्त्री का नाम जो ब्रह्मवादिनी और बडी पंडिता थी। २ अहल्या का एक नाम।

मैत्र्य—पु० [म० मित्र+ष्यञ्] मित्रता। दोस्ती।

मैथिल—पु० [सं० मिथिला+अण्] १ मिथिला का निवासी। २ राजा जनक।

वि० मिथला-सम्बन्धी।

मैथिली—स्त्री० [स० मैथिल+ङीष्] १ मिथिला देश के राजा की कन्या, जानकी। सीता। २ मिथिला देश की बोली।

वि० मिथिला देश अथवा मैथिलों का।

मैथुन—पु० [सं० मिथुन+अण्] १ स्त्री के साथ पुरुष का समागम। सभोग। रति-क्रीडा। २ मन मे काम-वासना या संभोग का विचार रखकर स्त्री या स्त्रियो के साथ किया जानेवाला कोई व्यवहार। जैसे—केलि-मैथुन। (दे०)

मैथुनिक—वि० [स० मैथुन+ठक्–इक] १ मैथुन-सम्बन्धी। मैथुन का। २ स्त्रीलिंग या पुलिंग अथवा दोनो से संबध रखनेवाला। यौन। लैंगिक। (सेक्सुअल)

मैथुनिकी—स्त्री० [स० मैथुनिक+ङीप्] आधुनिक चिकित्सा-प्रणाली की वह शाखा जिसमे दुष्ट मैथुन के कारण उत्पन्न होनेवाले रोगो का निदान और विवेचन होता है। (वेनीरियोलोजी)

मैथुनी (निन्)—वि० [स० मैथुन+इनि] मैथुन करनेवाला।

मैथुन्य—पुं० [सं० मिथुन+ष्यञ्] १ मिथुन की अवस्था या भाव। २ [मैथुन+यत्] गांधर्व विवाह।

मैदा—पुं० [फा० मैद·] बहुत महीन छाना या पीसा हुआ आटा जिससे बढ़िया पकवान और मिठाइयाँ बनती हैं।

मैदान—पुं० [फा०] १. ऐसा विस्तृत क्षेत्र या भूखंड जो प्राय. समतल हो और जिस पर किसी प्रकार की वास्तु-रचना आदि न हो। दूर तक फैली हुई सपाट जमीन।

मुहा०—मैदान करना या छोड़ना=किसी काम के लिए बीच में कुछ जगह खाली छोडना। **मैदान जाना**=शौच आदि के लिए, विशेषत: बस्ती के बाहर उक्त प्रकार के स्थान में जाना।

पद—खुले मैदान=सब के सामने।

२ पर्वतीय प्रदेश से भिन्न भूभाग जो प्राय. समतल होता है। ३. खेल, तमाशे, प्रतियोगिता आदि के लिए बनाया हुआ उक्त प्रकार का क्षेत्र या भूमि।

मुहा०—मैदान बदना=लडने-भिड़ने के लिए स्थान नियत करना। **मैदान मारना**=प्रतियोगिता आदि मे विजय प्राप्त करना। **मैदान में आना**=प्रतियोगिता या प्रतिद्वंद्विता के लिए सामने आना। मुकाबले पर आना। **मैदान साफ होना** =आगे बढ़ने के लिए मार्ग मे कोई बाधा या रुकावट न होना।

४ युद्ध-क्षेत्र। रण-भूमि।

मुहा०—मैदान करना=युद्ध-क्षेत्र मे पहुँचकर युद्ध करना। **मैदान मारना**=युद्ध मे विजय प्राप्त करना। **(किसी के हाथ) मैदान रहना**=किसी पक्ष को पूरी विजय प्राप्त होना।

५ किसी प्रकार की लबाई, चौड़ाई या विस्तार। ऊपरी तल का फैलाव। जैसे—(क) इस तख्ते मे इतना मैदान ही नही है कि इस पर इतने बेल-बूटे बन सके। (ख) इस हीरे का ऊपरी मैदान कुछ कम है।

मैदानी—वि० [फा०] १ (प्रदेश) जो समतल हो विशेषत: जिसमें पहाड आदि न हो। २. मैदान या मैदानो मे काम आने या होनेवाला अथवा उनसे सबध रखनेवाला। जैसे—मैदानी तोप।

स्त्री० आँगन या मैदान मे टाँगी अथवा लटकाई जानेवाली लालटेन।

स्त्री० [हिं० मैदा] मैदे का उठाया हुआ खमीर।

मैदा-लकड़ी—स्त्री० [स० मेदा+हिं० लकड़ी] एक प्रकार की मुलायम सफेद जड़ी जो औषध के काम आती है।

मैन—पु० [स० मदन] १ कामदेव। मदन। २ मोम। ३ राल में मिलाया हुआ मोम जिससे धातुओ की मूर्तियाँ बनाने के पहले उनका नमूना बनाया जाता है, और जिसके आधार पर मूर्तियाँ ढालने का साँचा बनाया जाता है।

पु० [अ०] आदमी। मनुष्य।

मैन-कामिनी—स्त्री० [हिं० मैन=मदन+सं० कामिनी] कामदेव की स्त्री। रति।

मैनकर†—पु०=मैनफल।

मैनफल—पु० [स० मदनफल] १ मझोले आकार का एक प्रकार का झाडदार और कँटीला वृक्ष जिसकी छाल खाकी रग की, लकडी हलके भूरे रग की होती है, और फूल पीलापन लिये सफेद रग के होते हैं। २ इस वृक्ष का फल जिसमे दो दल होते हैं और जिसमें बिहीदाने की तरह चिपटे बीज होते है। इसका गूदा पीलापन लिए लाल रग का और स्वाद कड़ुआ होता है।

मैनमय—वि० [हिं० मैन+स० मय] जिसे बहुत प्रबल काम-वासना हो रही हो।

मैनरा†—पुं०=मैनफल।

मैनशिला†—स्त्री०=मैनसिल।

मैनसिल—स्त्री० [सं० मनःशिला] मटमैले रंग का एक प्रकार का खनिज पदार्थ जिसे शोधकर दवा के काम में लाया जाता है।

मैना—स्त्री० [सं० मदना, मदन-शलाका] १ काले रंग की तथा पीली चोंचवाली एक प्रसिद्ध बड़ी चिड़िया जो सिखाने से मनुष्य की-सी बोली बोलने लगती है। सारिका। सारो। २. सतभइया नामक पक्षी। ३. हिमालय की स्त्री।

†स्त्री०=मेनका।

†पु०=मीना (जंगली जाति)।

मैनाक—पु० [सं० मेनका+अण्, पृषो० सिद्धि] एक पर्वत जो मैना तथा हिमालय का पुत्र माना जाता है। (पुराण०) इसे सुनाभ और हिरण्य-नाभ भी कहते है। २ हिमालय की एक चोटी।

मैनी—स्त्री० [देश०] एक प्रकार का कँटीला पेड़। मरुबक।

मै-परस्त—पु० [फा०] [भाव० मै-परस्ती] १. मदिरा का प्रेमी और भक्त, अर्थात् मद्यप। २ बहुत अधिक शराब पीनेवाला। मदिरासक्त।

मै-परस्ती—स्त्री० [फा०] बहुत अधिक शराब पीना।

मै-फरोश—पु० [फा०] [भाव० मै-फरोशी] शराब बेचनेवाला। मद्य-व्यवसायी। कलवार।

मै-फरोशी—स्त्री० [फा०] शराब बेचने का धंधा।

मैमंत†—वि० [सं० मदमत्त] १ मदोन्मत्त। मतवाला। २. अभिमानी। घमंडी।

स्त्री०=ममता।

मैमनत—स्त्री० [अ० मैमत] १ सम्पन्नता। २ सुख। ३. कल्याण।

मैमाता*—वि० [स्त्री० मैमाती]=मैमंत।

मैयत—स्त्री० [सं० मृत्यु] १ मौत। मृत्यु। २ मृत शरीर। लाश। शव। ३ मृतक का अंतिम संस्कार। अन्त्येष्टि। जैसे—उनकी मैयत में शहर भर के लोग शामिल हुए थे।

मैया—स्त्री० [सं० मातृका, प्रा० मातुआ, माइया] माता। माँ।

मैयार—पु० [हिं० मटियार] एक तरह की बंजर भूमि।

पु० [अ०] १ मापने-तौलने आदि का कोई उपकरण। २ कसौटी।

मैर—स्त्री० [सं० मृदर, प्रा० मिअर=क्षणिक] रह-रहकर होनेवाली वह कसक जो शरीर में साँप का जहर प्रविष्ट होने पर होती है।

मैरा—पु० [सं० मयर, प्रा० मयड़] खेत में स्थित मचान।

मैरीन—पु० [अ०] १ नौ-सेना। २ नौ-सैनिक।

वि० समुद्र-सम्बन्धी। समुद्री।

मैरेय—स्त्री० [सं० मार+ढक्—एय, नि० सिद्धि] १. गुड़ और धौ के फूल की बनी हुई एक प्रकार की प्राचीन काल की मदिरा। २. एक में मिला हुआ आसव और मद्य जिसमें ऊपर से शहद भी मिला दिया गया हो। ३ मदिरा। शराब।

मैलद—पु० [सं० मिलिंद] भौंरा।

मैल—स्त्री० [सं० मल] १ कोई ऐसी चीज जिसके पड़ने या लगने से दूसरी चीजें खराब, गंदी या मैली होती हो अथवा उनकी चमक-दमक, सफाई आदि कम होती या बिगड़ जाती हो। मलिन या मैला करने-वाला तत्त्व या वस्तु। जैसे—किट्ट, गर्दा, धूल आदि।

पद—हाथ-पैर की मैल=बहुत ही उपेक्ष्य और तुच्छ वस्तु। जैसे—वह रुपए-पैसे को तो हाथ-पैर की मैल समझता था।

२ मन में रहने या होनेवाला किसी प्रकार का दोष या विकार।

मुहा०—मन में मैल रखना=मन में किसी प्रकार का दुर्भाव या वैमनस्य रखना।

†वि०=मैला (मलिन)।

पु० [देश०] फीलवानों का एक संकेत जिसका व्यवहार हाथी को चलाने के लिए होता है।

मैल-खोरा—वि० [हिं० मैल+फा० खोर] धूल, गर्दा आदि पड़ने पर भी (क) जो मैला न दिखाई पड़ता हो अथवा (ख) जिसकी रंगत खराब न होती हो जैसे—(क) मैल-खोरा कपड़ा। (ख) मैल-खोरा रंग।

पु० १ काठी या जीन के नीचे रखा जानेवाला नमदा। २ साबुन।

मैला—वि० [सं० मलिन; प्रा० मइल] १ जिस पर मैल जमी हो। जिस पर गर्द, धूल या कीट आदि हो। जिसकी चमक-दमक मारी गई हो। मलिन। अस्वच्छ। 'साफ' का उलटा।

पद—मैला-कुचैला।

२ दोष, विकार आदि से युक्त। दूषित और विकृत। गंदा।

पु० १ गलीज। गू। विष्ठा। २ कूड़ा-करकट। ३ मैल।

पु० [अ० मैल] १ आकर्षण। २. प्रवृत्ति या रुचि।

मैला-कुचैला—वि० [हिं० मैला+सं० कुचैल=गंदा वस्त्र] [स्त्री० मैली-कुचैली] १ बहुत अधिक मैला या गंदा। २ जो बहुत मैले कपड़े आदि पहने हुए हो।

मैला-घर—पु० [हिं०] वह सार्वजनिक स्थान जहाँ गाँव या शहर का कूड़ा-कर्कट, गू आदि फेंका जाता हो।

मैलान—पु० [अ०] १ आकर्षण। २ प्रवृत्ति या रुचि।

मैलापन—पु० [हिं० मैला+पन (प्रत्य०)] मैले होने की अवस्था या भाव। मलिनता। गंदापन।

मैशिनरी—स्त्री०=मशीनरी।

मैहर—पु० [हिं० मही=मट्ठा] १ मक्खन को तपाने पर उसमें से निकलने-वाला मट्ठा। २ घी की तलछट।

†पु०=नैहर (मायका)।

मों—सर्व० [सं० मम] १ ब्रजभाषा में 'मैं' का कर्ता से भिन्न अन्य कारकों में विभक्ति लगने से पहले बना हुआ रूप। जैसे—मोंको, मोंपै इत्यादि। २ मुझे। मुझको।

अव्य० में। उदा०—खोलि कपाट महल मों जाही।—कबीर।

मोंगरा—पु० १ =मोगरा। २ =मुँगरा।

मोंगला—पु० [देश०] मध्यम श्रेणी का केसर।

†पु०=मुँगरा।

†पु०=मोगरा।

मोंछ†—स्त्री०=मूँछ।

मोंड़ा—पु० [पं० मुंडा] १ बालक। २ पुत्र।

मोढ़ा—पु० [सं० मूर्द्धा; प्रा० मुड्ढा=आधार] १. बाँस, सरकंडे या बेंत का बना हुआ एक प्रकार का ऊँचा गोलाकार आसन जो प्रायः तिरपाई से मिलता-जुलता होता है। मोंचा। २ बाहु के जोड़ के पास कंधे का घेरा। कंधा।

पद—सीना-मोढ़ा। (देखें)

मो*—सर्व० [सं० मम] १ मेरा। २. अवधी और ब्रजभाषा में 'मैं'

का वह रूप जो उसे कर्त्ताकारक से भिन्न अन्य कारकों में विभक्ति लगने से पहले प्राप्त होता है। जैसे—मौकों, मौसों इत्यादि।

मोई—स्त्री० [हिं० मोना] घी में सना हुआ आटा।

मोकदमा†—पुं०=मुकदमा।

मोकना—स० [सं० मुक्त; हिं० मुकना] १ परित्याग करना। छोड़ना। २ मुक्त करना। छुड़ाना। ३ फेंकना।

मोकराना†—स०=मोकना (मुक्त करना)। उदा०—हौ होइ बंदि पियहि मोकरावौं।—जायसी।

मोकल*—वि० [सं० मुक्त; हिं० मुकना] १ जो बँधा न हो। छूटा हुआ। आजाद। स्वच्छंद। २. दे० 'मोकला'।

मोकलना—स० [सं० मुक्ति] भेजना। उदा०—चिहुँ दिसि नौ तौं मोकल्या।—नरपति नाल्ह।

मोकला—वि० [हिं० मोकल] १. अधिक चौड़ा। कुशादा। २. खुला या छूटा हुआ। मुक्त। ३. बहुत। यथेष्ट।

मोका—पु० [देश०] पुं० १ =मौका। २ =मोखा।

मोक्ष—पु० [सं०√मोक्ष् (छोड़ना)+घञ्] १ बंधन से छूटना। मुक्त होना। छुटकारा। २. धार्मिक क्षेत्र मे वह अवस्था या स्थिति जिसमें मनुष्य दुष्कर्मों, पापो आदि से रहित होने के कारण बार-बार ससार मे आकर जन्म लेने और मरने के कष्टो से छूट जाता है। आवागमन से मिलनेवाली मुक्ति। ३ मृत्यु। मौत। ४ गिरना। पतन। ५. पाडर का वृक्ष।

मोक्षक—वि० [सं०√मोक्ष्+ण्वुल्—अक] मोक्ष-दायक।
पुं० मोखा नामक वृक्ष।

मोक्षण—पु० [सं०√मोक्ष्+ल्युट्—अन] [वि० मोक्षणीय, मोक्षित, मोक्ष्य] मोक्ष देने की क्रिया या भाव।

मोक्षद—वि० [सं० मोक्ष√दा (देना)+क] मोक्ष-दायक।

मोक्षदा—स्त्री० [सं० मोक्षद+टाप्] अगहन सुदी एकादशी की संज्ञा।

मोक्ष-देव—पु० [सं०] चीनी यात्री ह्वेनसांग का एक भारतीय नाम।

मोक्ष-द्वार—पु० [सं० ष० त०] १ सूर्य। २ काशी तीर्थ।

मोक्ष-पति—पु० [सं० ष० त०] ताल के साठ मुख्य भेदो में से एक भेद। इसमे १६ गुरु, ३२ लघु और ६४ द्रुत मात्राएँ होती हैं।

मोक्ष-विद्या—स्त्री० [सं० ष० त०] अध्यात्म-विद्या।

मोक्ष-शिला—स्त्री० [सं० ष० त०] वह लोक जिसमे जैन धर्मावलंबी साधु पुरुष मोक्ष का सुख भोगते हैं। (जैन)

मोक्ष्य—वि० [सं० मोक्ष+यत्] १. जिसका मोक्षण हो सकता हो। जो छूट सकता हो, छुड़ाया जा सकता हो या छुड़ाया जाने को हो। २. जो धार्मिक दृष्टि से मोक्ष या मुक्ति पाने का अधिकारी हो चुका हो।

मोख†—पु०=मोक्ष।

मोखा—पु० [सं० मुख] १. दीवार, छत आदि में बना हुआ रोशनदान। २. ताखा। ३. एक तरह का वृक्ष।

मोगरा—पुं० [सं० मुद्गर] १. बढ़िया जाति का बेले का पौधा। २. उक्त पौधे का फूल जो साधारण बेले के फूल से अधिक बड़ा तथा गठा हुआ होता है।

मोगल†—पुं०=मुगल।

मोगली—स्त्री० [देश०] एक प्रकार का जंगली वृक्ष।

मोघ—वि० [सं०√मुह् (मुग्ध होना)+घञ्, कुत्व] १. (पदार्थ) जो ठीक या पूरा काम न दे सकता हो। २. निष्फल। व्यर्थ।

मोघ-पुष्पा—स्त्री० [ब० स०,+टाप्] वंध्या स्त्री। बाँझ।

मोघिया—स्त्री० [देश०] वह मोटी, मजबूत और अधिक चौड़ी नरिया जो खपरैली छाजन में बँडेरे पर मँगरा बाँधने मे काम आती है।

मोघ्य—पु० [सं० मोघ+ष्यञ्] विफलता। अकृतकार्यता। नाकामयाबी।

मोच—पु० [सं०√मुच् (छोड़ना)+अच्] १. सेमल का पेड़। २. केला। ३ पाडर वृक्ष।
स्त्री० [सं० मुच्] १. झटका या धक्का लगने से शरीर के किसी अंग के जोड़ की नस का अपने स्थान से इधर-उधर खिसक जाना। (इसमे वह स्थान सूज आता है और उसमें बहुत पीड़ा होती है)। जैसे—पाँव मे मोच आ गई है। २ कोई ऐसा दोष जिसमें कोई चीज भद्दी और लँगड़ी सी जान पड़ती हो। जैसे—पहले आप अपनी भाषा की मोच तो निकालें।
क्रि० प्र०—आना।—पड़ना।

मोचक—वि० [सं०√मुच् (छोड़ना)+णिच्+ण्वुल्—अक] १. मोचन करनेवाला। छुड़ानेवाला। २ ले लेने या हरण करनेवाला।
पु० १ सेमल का पेड़। २. केला। ३. ऐसा संन्यासी जो सब प्रकार की विषय-वासनाओ से मुक्त हो चुका हो।

मोचन—पु० [सं०√मुच्+ल्युट्—अन] १. बंधन आदि से छुड़ाना। छुटकारा देना। मुक्त करना। २ दूर करना। हटाना। जैसे—दु:ख-मोचन। ३ ले लेना या हरण करना। छीनना। जैसे—वस्त्र मोचन।

मोचना—स० [सं० मोचन] १. मोचन करना। २. छुड़ाना या छोड़ना। ३ गिराना। ४. बाहर निकालना।
पु० १ लोहारों का वह औजार जिससे वे लोहे के छोटे-छोटे टुकड़े उठाते हैं। २. हज्जामो की वह चिमटी जिससे वे बाल उखाड़ते या नोचते हैं।

मोचनी—स्त्री० [सं०√ मुच्+णिच्+ल्यु—अन,+ङीप्] भटकटैया।
स्त्री० हिं० 'मोचना' का स्त्री० अल्पा०।

मोचयिता (तृ)—वि० [सं० √ मुच् +णिच्+तृच्] छुटकारा देने या दिलवानेवाला।

मोच-रस—पु० [सं० ष० त०] सेमल वृक्ष का गोंद।

मोचा—स्त्री० [सं०√ मुच् +अच्+टाप्] १. केला। २ नील का पौधा। ३. रूई का पौधा।
पुं० सहिजन (वृक्ष)।

मोचाट—पु० [सं० मोच√अट् (प्राप्त होना)+अच्] १ केला। २. केले की पेड़ी के बीच का कोमल भाग। केले का गाभ।

मोची (चिन्)—वि० [सं० √मुच्+णिच्+णिनि] [स्त्री० मोचिनी] १. दूर करनेवाला। २ छुड़ानेवाला।
पु० [सं० मोचन=(चमड़ा) छुड़ाना] [स्त्री० मोचिन] वह जो चमड़े के जूते आदि बनाने का व्यवसाय करता हो। जूते गाँठने या सीनेवाला।

मोच्छ*—पु०=मोक्ष।

मोछ—स्त्री०=मूँछ।
†पुं०=मोक्ष।

मोजड़ा—पुं०[हिं० मोची ?] [स्त्री० अल्पा० मोजड़ी] जूता। (राज०) उदा०—पग मचकती मोजड़ी।—नरपति नाल्ह।

मोजरा†—पुं०=मुजरा।

मोजा—पुं०[फा० मोज] कोशिये, सिलाई अथवा मशीन द्वारा बुना जानेवाला तथा पाँव ढकने का धागे, सूत आदि का आवरण। जुर्राब। २ पैर में पिंडली के नीचे का वह भाग जो गिट्टे के आस-पास और उससे कुछ ऊपर होता है और जिसपर उक्त आवरण पहना जाता है। ३ कुश्ती का एक पेंच जिसमें विपक्षी को जमीन पर गिराकर और उसके पैर का उक्त अंग पकड़कर उसे चित्त किया जाता है।

मोजिज़ा—पुं०[अ० मुआजिज़] कोई अलौकिक या देव-कृत चमत्कार।

मोट—स्त्री०[हिं० मोटरी] गठरी। मोटरी।

पुं०[देश०] चमड़े का एक प्रकार का बड़ा थैला जिससे सिंचाई के लिए कुएँ से पानी निकाला जाता है। चरसा।

मोटक—पुं० [सं०√ मुट् (टेढ़ा करना)+घञ्+कन्] दुहरे किये हुए कुश के टुकड़ों का समूह जो पितृश्राद्ध करते समय व्यवहृत होते हैं।

मोटकी—स्त्री० [सं० मोचक+ङीष्] संगीत में एक प्रकार की रागिनी।

मोटन—पुं०[सं०√मुट् (मोड़ना)+ल्युट्—अन]१ वायु। हवा। २ पीसना, मलना या रगड़ना। ३ वायु। हवा।

मोटनक—पुं०[सं० मोटन+कन्] एक प्रकार का सम-वृत्त वर्णिक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से तगण, दो जगण और अन्त में लघु-गुरु होते हैं। यथा—सौहैं घन श्यामल घोर घने। मोहे तिनमैं बक-पाँति मने।—केशव।

मोटर—स्त्री०[अं०]१ कोयले, पेट्रोल आदि द्वारा उत्पादित शक्ति से सड़कों पर चलनेवाली एक प्रकार की सवारी गाड़ी। २ एक प्रकार का वैद्युतिक यंत्र जिसकी शक्ति से अन्य मशीनें चलाई जाती हैं।

मोटरी—स्त्री०[तैलंग० मूटा=गठरी] गठरी।

मोटा—वि०[सं० मुष्ट]१ अपेक्षाकृत अधिक स्थूल-काय फलतः जिसमें अधिक मांस तथा चरबी हो। 'दुबला' का विरुद्धार्थक।

पद—मोटा-झोटा या मोटा-ताजा=हृष्ट-पुष्ट।

२ जिसमें घनता अधिक हो। 'पतला' का विरुद्धार्थक। ३ जिसकी गोलाई का घेरा प्रसम या साधारण से अधिक हो।

मुहा०—मोटा दिखाई देना=आँखों की ज्योति में ऐसी कमी होना जिसमें छोटी या बारीक चीजें न दिखाई दें। बहुत कम और केवल मोटी चीजें दिखाई देना।

४ जिसके कण बहुत अधिक छोटे या बारीक न हों। जो बहुत महीन चूर्ण के रूप में न हो। जैसे—मोटा आटा, मोटा बालू, मोटा बेसन। ५ जो परिमाण, मान आदि में, साधारण से अधिक, उत्तम या यथेष्ट हो। जैसे—मोटा असामी=धनवान या सम्पन्न व्यक्ति। मोटा भाग्य=अच्छा भाग्य या सौभाग्य। मोटा भार=बहुत अधिक भार। मोटी हानि=बहुत अधिक हानि। ६ जिसमें विशेष उत्तमता, कोमलता, प्रशंसनीयता, सूक्ष्मता, आदि गुणों का अभाव हो, और इसी लिए जो घटिया, बुरा या महत्त्वहीन माना जाता हो। जैसे—मोटा अनाज, मोटी उपमा, मोटी बुद्धि, मोटे वस्त्र।

पद—मोटा-झोटा=बहुत ही घटिया या साधारण।

७ (बात या विषय) जो साधारण बुद्धि का आदमी भी सहज में समझ सके। जिसे जानने या समझने में विशेष बुद्धि की आवश्यकता न हो। जैसे—मोटी बात, मोटी भूल।

मुहा०—मोटे तौर पर या मोटे हिसाब से=बिना ब्योरे की बातों का अथवा सूक्ष्म विचार किये हुए। जैसे—मोटे हिसाब से इस काम में सौ रुपए खर्च होंगे।

पद—मोटी चुनाई=बिना गढ़े हुए और बेडौल पत्थरों की (दीवार के रूप में होनेवाली) चुनाई या जोड़ाई।

८ लाक्षणिक रूप में धन, बल आदि की अधिकता के कारण अपने आपको बड़ा समझनेवाला फलतः अभिमानी या घमंडी(व्यक्ति)। जैसे—अब तो वह मोटा हो चला है, जल्दी किसी से बात नहीं करता।

†पुं०[?] करैली या काली मिट्टीवाली जमीन।

†पुं०=मोट (बड़ी गठरी)।

मोटाई—स्त्री०[हिं० मोटा+आई (प्रत्य०)]१ मोटे होने की अवस्था या भाव। २ किसी वर्गाकार वस्तु की लंबाई और चौड़ाई से भिन्न भाग का माप। जैसे—इस लकड़ी की मोटाई तीन इंच है। ३ धन आदि की अधिकता के फलस्वरूप किसी के व्यवहार में प्रकट होनेवाली अहं-भावना, आलस्य या ओछापन।

मुहा०—मोटाई चढ़ना=धनवान आदि बनने पर घमंडी, ओछा तथा आलसी बनना। **मोटाई झड़ना या निकलना**=अहंभाव का जाते रहना।

मोटाना—अ०[हिं० मोटा+आना (प्रत्य०)]१ मोटा होना। स्थूलकाय होना। २ धनवान् या संपन्न होना। ३ फलतः अभिमानी या घमंडी और आलसी होना।

स० ऐसा काम करना जिसमें कुछ या कोई मोटा हो।

मोटापन—पुं० [हिं० मोटा+पन (प्रत्य०)] मोटे होने की अवस्था या भाव। दे० 'मोटाई'।

मोटापा—पुं०[हिं० मोटा+पा (प्रत्य०)]मोटे अर्थात् स्थूलकाय होने की अवस्था या भाव। मोटापन। मोटाई।

मोटा-मोटी—क्रि० वि०[हिं० मोटा] स्थूल गणना के विचार से। मोटे हिसाब से।

मोटिया—पुं०[हिं० मोटा+इया (प्रत्य०)] मोटा और खुरदरा देशी कपड़ा। गाढ़ा। गजी। खद्दड़। सल्लम।

पुं०[हिं० मोट] बोझ ढोनेवाला मजदूर।

मोट्टायित—पुं०[सं०√मुट्(मोड़ना)+घञ्, तुट् बा०क्यङ्+क्त]नायिका के वे हाव या व्यापार जो उस समय उसके अंतर्मन का अनुराग व्यक्त करते हैं जब वह अपना अनुराग छिपाने के लिए सचेष्ट होती है।

मोठ—स्त्री०[सं० मकुष्ठ; प्रा० मउठ] मूँग की तरह का एक प्रसिद्ध मोटा अन्न। बनमूँग। मुगानी। मोथी।

मोठस†—वि०[?] मौन। चुप।

मोड़—पुं०[हिं० मुड़ना या मोड़ना]१ मुड़ने या मोड़ने की अवस्था, क्रिया या भाव। घुमाव। २ किसी चीज में होनेवाला घुमाव। वलन। (कर्व) ३ रास्ते आदि का वह अंश या स्थान जहाँ से वह किसी ओर मुड़ता है। जैसे—इस गली के मोड़ पर हलवाई की दूकान है। ४. वह स्थिति जिसमें किसी काम या बात की दिशा या प्रवृत्ति कुछ बदलकर

किसी ओर या नई तरफ हुई हो। जैसे—यहाँ से आलोचना (या काव्य-रचना) का नया मोड़ आरंभ होता है।

†पुं०=मौर (सिर पर बाँधने का)। उदा०—(क) पाई कंकण सिर बंधीयो मोड़।—नरपति नाल्ह। (ख) पठा लीधौ जैमल, पठे मरसों बाँध मोड़।—बाँकीदास।

मोड़-तोड़—पुं० [हिं० मोड़+अनु० तोड़] १ मोड़ने-तोड़ने, मरोड़ने आदि की क्रिया या भाव। मरोड़। २. मार्गों मे पड़नेवाला घुमाव-फिराव। चक्कर। ३. घुमाव फिराव की अथवा चालाकी से भरी बातें।

मोड़ना—स० [हिं० मुड़ना का स०]१ ऐसा काम करना जिससे कुछ या कोई मुड़े। सामनेवाले या सीधे मार्ग से न ले जाकर किसी दिशा में प्रवृत्त करना। जैसे—गाड़ी या घोड़ा दाहिने या बाएँ मोड़ना।

मुहा०—(किसी से) मुँह मोड़ना=विमुख होना।

२ आघात करके या दबाव डालकर सीधी चीज किसी तरफ घुमाना या टेढ़ी करना। जैसे—छड़ मोड़ना, छुरी की धार मोड़ना। ३ ऐसी क्रिया करना जिससे किसी सपाट तलवाली वस्तु की परतें लग जायँ। जैसे—कपड़ा या कागज मोड़ना। ४. किसी को कोई काम करने मे रोकना या विरत करना।

मयो० क्रि०—डालना।—देना।

५ कुछ या कोई जिस ओर उन्मुख या प्रवृत्त हो, उधर से हटाकर इधर-उधर करना। जैसे—पीठ मोड़ना, मुँह मोड़ना (देखें 'पीठ' और 'मुँह' के मुहा०)।

मोड़-मुड़क—स्त्री० [हिं०] चित्रकला मे, अगों आदि की वह स्थिति जिससे चित्र सजीव-सा जान पड़ने लगता है।

मोड़ा—पु० [स० मुड; मि० पं० मुंडा=लडका] [स्त्री० मोडी] लड़का। बालक।

मोड़ी—स्त्री० [देश०]१ बहुत जल्दी मे लिखी हुई ऐसी अस्पष्ट लिपि जो कठिनता से पढ़ी जाय। घसीट लिखाई। २. दक्षिण भारत की एक लिपि।

मोढ़ा—पुं० =मोढा। (देखें)

मोण—पु० [स०√मुण् (प्रतिज्ञाम) +अच्]१. सूखा फल। २. कुंभीर या मगर नामक जल-जन्तु। ३ मक्खी। ४ झाबा। टोकरा। मोना।

मोतदिल—वि०=मातदिल।

मोतबर—वि०=मातबर।

मोतमिद—वि० [अ०] विश्वसनीय।

मोतियदाम—पु० [स० मौक्तिकदाम; प्रा० मोत्तिअदाम] एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे चार जगण होते हैं।

मोतिया—वि० [हिं० मोती] १. मोती संबंधी। २. मोती के रग का। ३. ऐसा सफेद जिसमे नाम-मात्र की पीली झलक हो। खसखसी। (पर्ल) ४ जो आकार मे मोती की तरह छोटे गोल दानों के रूप मे हो।

पु०१. मोती की तरह का ऐसा सफेद रग जिसमे नाम-मात्र की पीली झलक हो। (पर्ल) २. सफेद तथा सुगंधित फूलोंवाला एक प्रसिद्ध पौधा। ३. उक्त पौधे का फूल। ४. एक प्रकार का सलमा जो छोटे गोल दानो के रूप में होता है। ५. सफेद रग की एक चिड़िया।

मोतियाबिंद—पुं० [हिं० मोतिया+सं० बिंदु] आँख का एक रोग जिसमें उसके ऊपरी परदे मे अन्दर की ओर मैल जमने के कारण गोल झिल्ली सी पड जाती है और जिससे देखने की शक्ति दिन पर दिन कम होती जाती है। तिमिर। (कैटरैक्ट)

मोती—पु० [सं० मौक्तिक, प्रा० मोत्तिअ] १. समुद्री सीपी मे से निकलने-वाला एक बहुमूल्य रत्न। मुक्ता।

मुहा०—मोती गरजना=आघात लगने से मोती का चटकना या उसके तल का कुछ फट जाना। **मोती ढलकाना**=आँसू गिराना। रोना। **मोती पिरोना**=(क) बहुत ही सुन्दर और प्रिय भाषण करना। (ख) बहुत ही सुन्दर और स्पष्ट अक्षर लिखना। (ग) बहुत ही बारीक और सुन्दर काम करना। (घ) आँसू ढलकाना। रोना। (व्यग्य और हास्य)। **मोती बींधना**= (क) मोती को पिरोए जाने के योग्य बनाने के लिए उसके बीच मे छेद करना। (ख) अक्षत-योनि या कुमारी के साथ सभोग करना। (बाजारू) **मोती रोलना**=थोड़े परिश्रम मे या यों ही बहुत अधिक धन कमा या जमा कर लेना। **(किसी का) मोतियों से मुँह भरना**=किसी पर प्रसन्न होने पर उसे माला-माल कर देना।

२ कसेरों का एक तरह का उपकरण। ३ रहस्य सम्प्रदाय मे, मन। स्त्री० कान मे पहनने की ऐसी बाली जिसमे मोती पिरोये हुए हों।

मोती-चूर—पु० [हिं० मोती +चूर]१ बेसन की बनी हुई बहुत छोटी-मीठी बुँदिया (पकवान) जो शीरे में पागकर लड्डू बनाने के काम आती है। जैसे—मोतीचूर का लड्डू। २ अगहन मे होनेवाला एक तरह का धान। ३ कुश्ती का एक दाँव।

मोती-ज्वर—पु० [हिं० मोती +स० ज्वर] १. चेचक निकलने के पहले आनेवाला ज्वर। २. वह ज्वर जिसमे शरीर मे छोटे-छोटे दाने भी निकल आते हैं।

मोती-झरा†—पु० =मोती-झिरा।

मोती-झिरा—पु० [हिं० मोती +झिरा?] छोटी शीतला या मोतिया। माता का रोग। मथर ज्वर। मोती माता।

मोती-बेल—स्त्री० [हिं० मोतिया +बेल] मोतिया पौधे का एक भेद जो लता के रूप मे होता है।

मोती-भात—पु० [हिं० मोती +भात] एक विशेष प्रकार का मीठा भात।

मोती-महावर—पु० [हिं०] चित्र कला मे, किसी सुदरी का चित्र अकित कर लेने पर उसके हाथ-पैरो मे महावर का-सा लाल रग लगाने और उसके अगो मे अलकार अकित करने की क्रिया।

मोती-माता—स्त्री०=मोती-झिरा (रोग)।

मोती-लड्डू—पु० [हिं० मोती+लड्डू] मीठी बुँदिया का बँधा हुआ लड्डू। दे० 'मोती-चूर'।

मोती-सिरी—स्त्री० [हिं० मोती +स० श्री] मोतियों की कंठी या माला।

मोतीहर—पु०=मुक्ताफल (मोती)।

मोथरा—वि०=मोथरा (भुथरा)।

मोथा—पु० [सं० मुस्तक; प्रा० मुत्थ] १ जलीय भूमि मे होनेवाला एक क्षुप जिसकी जड़ कसेरन की तरह होती है। २ उक्त की जड़ जो औषध के काम आती है।

मोद—पु० [सं०√मुद् (हर्ष)+घञ्] १. बात-चीत, हँसी-मजाक, खेल-

तमाशे आदि मे मन के बहलने तथा चित्त-वृत्तियों के प्रफुल्लित होने की अवस्था या भाव। २ महक। सुगध। ३ पाँच भगण, एक मगण, एक सगण और एक गुरु वर्ण का एक वर्णवृत्त।

मोदक—पु० [स०√मुद्+णिच्+ण्वुल्—अक] १ भूने या तले हुए किसी खाद्य-पदार्थ के कणो, दानो आदि का बँधा हुआ गोलाकार रूप जिसमे चीनी या शक्कर भी मिलाई गई होती है। जैसे—मोतीचूर या बेसन का लड्डू। २ औषध आदि का बना हुआ लड्डू। जैसे—मदनानद मोदक। ३ गुड। ४ एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे चार भगण होते है। इसे भामिनी और सुदरी भी कहते हैं। ५ मोहिनी नामक छंद। ६ एक वर्णसकर जाति जिसकी उत्पत्ति क्षत्रिय पिता और शूद्रा माता से मानी जाती है।

वि० मोद या आनन्द देनेवाला।

मोदकर—पु०[स० मोद√कृ (करना)+ट] एक प्राचीन मुनि।

वि० मोद उत्पन्न करने या आनन्द देनेवाला।

मोदकिका—स्त्री०[स० मोदकी+कन्+टाप्, ह्रस्व] मिठाई।

मोदकी—स्त्री०[स० मोदक+ङीष्] १ एक प्रकार की गदा। २ मूर्वा लता।

मोदन—पु०[स०√मुद् (प्रसन्न होना)+णिच्+ल्युट्—अन] [वि० मोदनीय, भू० कृ० मोदित] १ बात-चीत, हँसी-मजाक, खेल-तमाशे आदि के द्वारा मन का बहलना तथा चित्त-वृत्तियो का प्रफुल्लित होना। २ सुगध फैलाना।

वि०[√मुद्+णिच्+ल्यु—अन] मोद उत्पन्न करनेवाला।

मोदना*—अ०[स० मोदन] १ मुदित होना। २. सुगंध फैलाना।

स० १ किसी के मन मे मोद उत्पन्न करना। २ सुगध फैलाना।

मोदयती—स्त्री०[स०√मुद्+णिच्+शतृ+ङीप्] बन-मल्लिका।

मोदवंती—स्त्री०[स० मोदवती] वन-मल्लिका। जगली चमेली।

मोदा—स्त्री०[स० √मुद्+णिच्+अच्+टाप्] १ अजमोदा। बन-अजवाइन २ सेमल का पेड़।

मोदाख्य—पु०[स० मोद-आ√ख्या (विस्तार-करना)+क)]आम (पेड)।

मोदाद्रि—पु०[स० मोद-अद्रि, मध्य० स०] मुँगेर के पास के एक पर्वत का पौराणिक नाम।

मोदित†—भू० कृ०=मुदित।

मोदिनी—स्त्री० [स०√मुद्+णिच्+णिनि+ङीष्] १ अजमोदा। २ जूही। ३ चमेली। ४ कस्तूरी ५ मधु। ६ शराब।

वि० स्त्री० मोद उत्पन्न करनेवाली।

मोदी—पु०[स० मोदक=लड्डू (बनाने वाला); अथवा अ० मद्दअ=जिस, रसद] १ आटा, दाल, चावल, आदि बेचनेवाला बनिया। भोजन-सामग्री देनेवाला बनिया। परचूनिया। २ वह जिसका काम बडे आदमियो के यहाँ नौकरो को भरती करना हो।

मोदीखाना—पु०[हिं० मोदी+फा० खान:]अन्न आदि रखने का घर। भडार।

मोधुक—पु० [स० मोदक=एक वर्णसकर जाति] मछुआ।

मोधू†—वि०[स० मुग्ध] मूर्ख।

मोन†—पु०=मोयन।

मोनस—पु०[स०] एक गोत्र-प्रवर्तक ऋषि।

मोना—स०[हिं० मोयन] १ गूँधे हुए आटे आदि मे घी का मोयन देना। २. तर करना। भिगोना।

स०[स० मोहन] १ मोहित करना। २ मोह अर्थात् भ्रम में डालना। उदा०—कछुक देवमायाँ मति मोई।—तुलसी।

पु०[स० मुंडन] १. वह जो मुडन कराता हो अथवा जिसके केश काटे जाते हो। २ हिन्दू। सिक्ख से भिन्न। (पजाब)

पु०[स० मोण] [स्त्री० अल्पा० मोनिया] ढक्कनदार पिटारा।

मोनाल—पु०[देश०] महोखे की जाति का एक पक्षी। नील-मोर।

मोनिया—स्त्री०[हिं० मोना का स्त्री० अल्पा०] छोटी ढक्कनदार पिटारी।

मोनोग्राम—पु०[अ०] किसी नाम के आरम्भिक दो-तीन अक्षरो के संयोग से बना हुआ सक्षिप्त साकेतिक रूप जो प्राय अलकृत अक्षरो में लिखा रहता है।

मोनो-टाइप-मशीन—स्त्री०[अ०] छापे के अक्षर कपोज करनेवाली वह मशीन जिसमें एक-एक अक्षर नया ढलता और कपोज होता चलता है।

मोपला—पु० [?] मालाबार प्रदेश (केरल) मे रहनेवाली एक मुसलमान जाति।

मोम—पु०[फा०] १ वह चिकना मुलायम द्रव्य जिससे शहद की मक्खियाँ अपना छत्ता बनाती हैं। मधुमक्खी के छत्ते का उपकरण।

पद—मोम की नाक=ऐसी प्रकृति या स्वभाव जिसे दूसरे लोग जब जिधर चाहे तब उधर प्रवृत्त कर सकें।

मुहा०—(किसी को) मोम करना या मोम बनाना=द्रवीभूत कर लेना। दयार्द्र कर लेना।

२ रूप, रग आदि मे उक्त से मिलता-जुलता वह पदार्थ जो मधु-मक्खी की जाति के तथा कुछ और प्रकार के कीडे पराग आदि से एकत्र करते हैं अथवा जो वृक्षो पर लाख आदि के रूप मे पाया जाता है। ३ मिट्टी के तेल मे से, एक विशेष रासायनिक क्रिया द्वारा निकाला हुआ इसी प्रकार का एक पदार्थ। जमा हुआ मिट्टी का तेल। (मोम-बत्ती प्राय इसी से बनती है।)

मोमजामा—पु०[फा०] ऐसा कपडा जिस पर मोम का रोगन चढाया गया हो।

विशेष—ऐसे कपडे पर पानी का असर नही होता।

मोमती†—स्त्री०=ममत्व।

स्त्री० [मो+मति] मेरी मति।

मोम-दिल—वि० [फा०] मोम की तरह कोमल हृदयवाला। दूसरो के दुःख से शीघ्र द्रवित होनेवाला।

मोमना—वि०[हिं० मोम+ना (प्रत्य०)] मोम का-सा, अर्थात् बहुत ही कोमल।

मोम-बत्ती—स्त्री०[फा० मोम+हिं० बत्ती] मोम, जमाये हुए मिट्टी के तेल या ऐसे ही किसी और जलनेवाले पदार्थ की बनी हुई बत्ती।

मोमिन—पु०[अ०] १ मुसलमान पुरुष। २. एक प्रकार के मुसलमान जुलाहे।

मोमिया—स्त्री०[फा०] १ एक विशेष प्रकार की ओषधि जिसके लेप से शव सडने-गलने नही पाता। २ वह शव जिस पर उक्त ओषधि का लेप हुआ हो।

मोमियाई—स्त्री० [फा० मोमियायी] १ काले रग की एक चिकनी दवा जो मोम की तरह मुलायम होती है। यह दवा घाव भरने के लिए प्रसिद्ध है। २ नकली शिलाजीत।

मुहा०—(किसी की) मोमियाई निकालना=(क) किसी से बहुत कठिन परिश्रम कराना। (ख) बहुत मारना-पीटना।

मोमी—वि०[फा०] १. मोम का बना हुआ। जैसे—मोमी मोती, मोमी पुतला। २. मोम की तरह मुलायम। ३. बहुत जल्दी द्रवीभूत होनेवाला।

मोयन—पु० [हिं० मैन=मोम] गूँधे हुए आटे, बेसन, मैदे आदि मे डाला जानेवाला घी या तेल जिसके कारण उनसे बनाये जानेवाले पकवान कुर-कुरे, खस्ता और मुलायम हो जाते हैं।

क्रि० प्र०—डालना।—देना।

मोयुम—पु० [देश०] एक प्रकार की लता जो आसाम, सिक्किम और भूटान मे बहुतायत से होती है। इससे कपड़े रँगने के लिए एक प्रकार का बहुत चमकीला रग तैयार किया जाता है।

मोरंग—पु०[देश०] नैपाल देश का पूर्वी भाग जो कौशिकी नदी के पूर्व पड़ता है। संस्कृत ग्रंथों में इसी भाग को 'किरात देश' कहा गया है।

मोरंड†—पु०=मुरडा।

मोर—पु०[स० मयूर, प्रा० मोर] [स्त्री० मोरनी] १. एक बहुत सुंदर, प्रसिद्ध, बड़ा पक्षी जो प्राय: चार फुट तक लबा होता है और जिसकी लबी गरदन और छाती का रग बहुत ही गहरा और चमकीला नीला होता है। यह बादलो को देखकर प्रसन्नता से पर फैलाकर नाचने लगता है। उस समय इसके परो की शोभा परम दर्शनीय होती है। केकी। बरही। २ नीलम नामक रत्न की एक प्रकार की बढ़िया रगत जो मोर के पर के समान होती है।

स्त्री०[डिं०] सेना की अगली पक्ति।

†वि०=मेरा (अवधी)।

*सर्व० [स० मम] मेरा। (अवधी)

मुहा०—मोर-तोर करना=दे० 'मेरा' के अतर्गत।

मोरचंग—पु०[हिं० मुरचग] मुँह-चग नामक बाजा।

मोरचंदा—पु० =मोर-चद्रिका।

मोर-चद्रिका—स्त्री०[हिं० मोर+स० चंद्रिका] मोर-पख के छोर की वह बूटी जो चद्राकार होती है।

मोरचा—पु०[फा० मोर्च] १. लोहे की ऊपरी सतह पर जमनेवाली वह लाल या पीले रग की मैल की-सी तह जो वायु और नमी के योग के कारण उसके अन्दर होनेवाले रासायनिक विकार से उत्पन्न होती है और जिसके कारण लोहा कमजोर और खराब हो जाता है। जग।

क्रि० प्र०—जमना।—लगना।

मुहा०—मोरचा खाना=मोरचा लगने से खराब होना।

२ दर्पण या शीशे के ऊपर जमनेवाली मैल।

पु० [फा० मोरचाल] १. वह गड्ढा जो गढ़ के चारो ओर रक्षा के लिए खोदा जाता है। २. गढ़ के अन्दर रहकर शत्रु से लड़नेवाली सेना। ३. वह स्थान जहाँ से सेना, गढ़, नगर आदि की रक्षा की जाती है।

मुहा०—मोरचा जीतना=शत्रु को परास्त करके उसके मोरचे पर अधिकार कर लेना। मोरचा बाँधना=शत्रु से लड़ने के लिए उपयुक्त स्थान पर सेनाएँ नियुक्त करना। मोरचा मारना=मोरचा जीतना। (देखें ऊपर) मोरचा लेना=सामने आकर शत्रु से बराबरी का युद्ध करना।

४. लाक्षणिक रूप में, ऐसी स्थिति जिसमें प्रतिद्वंद्वी या विरोधी का अच्छी तरह जमकर सामना किया जाता है और उस पर वार किये जाते तथा उसके वारों के उत्तर दिये जाते हैं।

मोरचाबंदी—स्त्री० [फा० मोर्च बदी] गढ़ के चारो ओर गड्ढा खोदकर सेना नियुक्त करना। मोरचा बनाना।

मोरचाल—पु० [स०] वह गड्ढा या खाई जिसमें छिपकर शत्रु पर (युद्ध के समय) गोली चलाई जाती है।

स्त्री० [?] एक प्रकार की कसरत।

मोरछड़†—पु०=मोरछल।

मोरछल—पु० [हिं० मोर+छड़] [स्त्री० अल्पा० मोरछली] मोरपंखों का बना हुआ चँवर।

मोरछली—पु० [हिं० मोरछल+ई (प्रत्य०)] वह जो (क) मोरछल बनाता अथवा (ख) देवताओ, राजाओ आदि पर डुलाता हो।

स्त्री० मोरछल का स्त्री० अल्पा०।

†स्त्री०=मौलसिरी।

मोरछाँह†—पु०=मोरछल।

मोर-जुटना—पु० [हिं० मोर+जुटना] एक प्रकार का जडाऊ आभूषण जिसके बीच का भाग गोल बेंदे के समान होता है और दोनो ओर मोर बने रहते है।

मोरट—पु० [स०√मुर् (लपेटना)+अटन्] १ ऊख की जड। २. अंकोल का फूल। ३. कर्णपुष्प नामक लता। ३. ब्याई हुई गाय के सातवे दिन के बाद का दूध।

मोरटक—पु० [स० मोरट+कन्] १. सफेद खैर। २ दे० 'मोरट'।

मोरटा—स्त्री०[स० मोरट+टाप्] मूर्वा।

मोरध्वज—पु०[स० मयूरध्वज] एक प्रसिद्ध पौराणिक राजा।

मोरन*—स्त्री०[सं० मोरठ] बिलोया। शिखरन। (दे०)

स्त्री०[हिं० मोड़ना] मोड़ने की क्रिया या भाव।

मोरना*—स० [हिं० मोरन] मथे हुए दही मे से मक्खन निकालना।

†स०=मोड़ना।

मोर-नाच—पु०[हिं०] एक प्रकार का नाच जिसमे पेशवाज के अगल-बगल वाले दोनो सिरे दोनों हाथों से पकडकर कमर तक उठा लिये जाते है। और तब खडे-खडे या घुटनो के बल कुछ बैठकर इस प्रकार नाचा जाता है कि नाचनेवाले की आकृति मोर की-सी हो जाती है। रक्से-ताऊस।

मोरनी—स्त्री०[हिं० मोर का स्त्री० रूप] १ मादा मोर। २ मोर के आकार का लटकन जो प्राय: गहनों मे लगाया जाता है। जैसे—नथ की मोरनी। ३. मोरनी की-सी चाल चलनेवाली बनी-ठनी और सुन्दरी युवती। ठुमुक-ठुमुक कर चलनेवाली सुन्दरी।

मोर-पंख—पु०[हिं० मोर+पंख=पर] १. मोर का पर या पंख। २. मोर के पर की बनाई हुई कलगी।

मोर-पंखी—वि०[हिं० मोरपंख] मोर के पख के रग का। गहरा चमकीला नीला।

पु० मोर के पख की तरह का गहरा, चमकीला नीला रग।

स्त्री०१. एक तरह की नाव जिसके अगले भाग मे मोर की सी आकृति बनी रहती है। २. एक तरह का छोटा पखा जो खोलने पर मंडलाकार हो जाता है। ३. एक तरह की कसरत।

मोरपंखा*—पु०[हिं० मोरपंखा] मोर का पर या पख जो प्राय सिर पर कलगी की तरह खोसा जाता था।

मोर-पाँव—पुं०[हिं० मोर+पाँव] बावर्चीखाने की मेज पर खड़ा जडा हुआ लोहे का छड जिस पर खाने के लिए मास के बड़े बड़े टुकड़े लटकाए जाते हैं। (लश०)

मोरम—पु०[ते० मोरमु; पा० मरुम्ब] गेरुए या लाल रग की एक तरह की पहाडी ककडी जो सडको पर बिछाई जाती है और जिससे अब सीमेंट भी बनने लगा है।

मोर-मुकुट—पु०[हिं० मोर+स० मुकुट] मोरपखो से युक्त मुकुट।

मोरवा†—पु० [देश०] वह रस्सी जो नाव की किलवारी मे बाँधी जाती है और जिससे पतवार का काम लेते है।
†पु०=मोर (पक्षी)।

मोर-शिखा—स्त्री०[स० मयूर-शिखा] एक प्रकार की जडी जिसकी पत्तियाँ मोर की कलगी के आकार की होती है। यह बहुधा पुरानी दीवारो पर उगती है।

मोरा—पु० [देश०] अकीक नामक रत्न का एक भेद। बावाँ घोडी।
† वि०=मेरा।

मोरना†—स०[हिं० मोरना का प्रे०] १ रस पेरने के समय ऊख को कोल्हू मे दबाना या लगाना। २ दे० 'मोडना'।
अ० मोड़ा जाना।

मोरिया—स्त्री०[हिं० मोरना?] कोल्हू मे कातर की दूसरी शाखा जो बाँस की होती है।

मोरी—स्त्री०[हिं० मोर का स्त्री०] १ किसी वस्तु के निकलने का तग द्वार। २ वह छोटी नाली जिसमे से गन्दा या फालतू पानी बहकर निकलता है। पनाली।
मुहा०—**मोरी छूटना**=दस्त आना। **मोरी पर जाना**=पेशाब करना। **मोरी में डालना**=नष्ट करना।
†स्त्री०=मोहरी (पाजामे आदि की)।

मोर्वा†—पु०=मोरवा।

मोल—पु० [स० मूल्य; प्रा० मुल्ल] कीमत। दाम। मूल्य। (दे०)
पद—**अन-मोल, मोल-चाल**।
मुहा०—**मोल करना**=(क) ग्राहक को किसी चीज का उचित से अधिक दाम बताना। (ख) किसी चीज का दाम अधिक जान पड़ने या बताये जाने पर उसे घटाने की बात-चीत करना। **मोल लेना**=झूठ-मूठ या जान-बूझकर कोई झझट, काम या भार अपने ऊपर लेना। जैसे—झगडा या लडाई मोल लेना।

मोलना†—स० कुछ खरीदने के लिए उसका मोल या दाम पूछना या बताना।
†पु०=मौलाना (मौलवी)।

मोलवी†—पु०=मौलवी।

मोलाई—स्त्री० [हिं० मोल+आई (प्रत्य०)] १ मूल्य पूछने-ताछने की क्रिया या भाव। २ घटा-बढ़ाकर मूल्य ठीक करने की क्रिया या भाव। ३ उचित से अधिक मूल्य कहना। मोल-चाल करना।

मोवना†—स०=मोना।
अ०, स०=मोहना।
†अ०=मूना (मरना)।

मोशिये—पु०[फ्रा०] [सक्षिप्त रूप मोन्स० या एम०] [हिंदी सक्षिप्त रूप मो०] फ्रास मे नाम के पहले लगाया जानेवाला आदरसूचक शब्द। महोदय।

मोष—पु०[स०√मुष् (चोरी करना)+घञ्] १ चोरी। २ लूट-खसोट। ३ वध। हत्या। ४ दड। सजा।
†पु०=मोक्ष।

मोषक—पु०[स०√मुष्+ण्वुल्—अक] चोर।

मोषण—पु० [स०√मुष्+ल्युट्-अन] १ लूटना। चुराना। २. मार डालना। ३. छोडना। ४ दे० 'मूसना'।
वि० चोरी करने या डाका डालनेवाला।

मोषयित(तृ)—पु० [स०√मुष्+णिच्+तृच्] १ चोरी करानेवाला। २ लूट-पाट करानेवाला।

मोसन—पु०[फा० मुसीन] १ वयोवृद्ध। २ अनुभवी व्यक्ति।

मोसना—स०[स० मुष] १ मरोडना। २ सब कुछ चुरा या छीन लेना। मूसना।

मोसर†—अव्य०[स० अवसर] दफा। बार। उदा०—अबके मोसर ज्ञान विचारो।—मीराँ।

मोह—पु०[स०√मुह् (मुग्ध होना)+घञ्] १ बेहोशी। मूर्च्छा। २ अज्ञान। नासमझी। ३ बेवकूफी। मूर्खता। ४ अज्ञान या भ्रम के कारण होनेवाला दोष या भूल। ५. दार्शनिक क्षेत्रों मे, मन की वह भूल या भ्रम जो उसे आध्यात्मिक या पारमार्थिक सत्य का ठीक-ठीक ज्ञान नही होने देता, और जिसके फल-स्वरूप मनुष्य लौकिक पदार्थों को ही वास्तविक तथा सत्य समझकर इन्द्रियजन्य सुख-भोगो को ही प्रधान या मुख्य मानकर सासारिक जजालो मे फँसा रहता है। ६ उक्त के आधार पर साहित्य मे, तेतीस संचारी भावो मे से एक जिसमे आघात, आपत्ति, चिंता, दु ख, भय आदि के कारण चित्त बहुत ही विफल हो जाता है। सिर मे चक्कर आना, उचित-अनुचित का ज्ञान न रह जाना, साफ दिखाई न देना और मूर्छित हो जाना इसके अनुभाव बतलाये गये है। यथा—अद्भुत दरसन, वेग, भय, अतिचिंता, अति कोह। जहाँ मूर्च्छा, बिसमरन, लम्भत्तादि कहु मोह।—देव। उदा०—राम को रूप निहारत जानकी ककन के नग की परछाँही। याते सबै सुधि भूलि गई कर टेक रही, पल टारत नाही।—तुलसी। ७ प्राचीन भारत मे एक प्रकार की तात्रिक क्रिया जिसके द्वारा शत्रु का ज्ञान नष्ट करके उसे या तो भ्रम मे डाल देते थे या मूर्च्छित कर देते थे। ८ लोक मे ऐसा प्रेम या मुहब्बत जिसके फल-स्वरूप विवेक ठीक तरह से काम करने के योग्य न रह जाय। ९ कष्ट। दु ख।

मोहक—वि०[स०√मुह्+णिच्+ण्वुल्—अक] १. मोह उत्पन्न करनेवाला। जिसके कारण मोह हो। २. मन को आकृष्ट या मोहित करनेवाला। लुभावना। मोहनेवाला।

मोहकार—पु० [हिं० मुँह+कडा या कार (प्रत्य०)] धातु के घडे का गला समेत मुहँडा। (ठठेरा)

मोहठा—पु०[स०] दस अक्षरो का एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे तीन रगण और एक गुरु होता है। बाला।

मोहड़ा—पु०[हिं० मुँह+डा (प्रत्य०)] १ किसी पात्र का मुँह या ऊपरी खुला हुआ भाग।

मुहा०—मोहड़ा लगाना=फुटकर बिक्री के उद्देश्य से अन्न के बोरे खोलना और उनकी दुकानें या ढेरियाँ लगाना।
२. अगला या ऊपरी भाग। ३. मुख। ४ दे० 'मोहरा'।

मोहतमिम—पु० [अ० मुहतमिम] एहतमाम अर्थात् प्रबन्ध करनेवाला। प्रबन्धक। व्यवस्थापक।

मोहतमिल—वि० [अ० मुहतमिल] संदिग्ध।

मोहतरम—वि० [अ० मुह्तरम] श्रीमान्। महोदय।

मोहताज—वि० [अ०] [भाव० मोहताजी] १. धनहीन। निर्धन। गरीब। २ जिसे किसी चीज या बात की विशेष अपेक्षा हो, और इसीलिए जो औरों पर निर्भर रहता अथवा उनका मुँह ताकता हो। ३ (अपाहिज) जिसे दूसरे की सहायता की आवश्यकता हो।

मोहताजी—स्त्री० [हिं० मोहताज+ई (प्रत्य०)] मोहताज होने की अवस्था या भाव।

मोहदी—पु० [अ० महदी] सैयद मुहीउद्दीन नामक महात्मा जो जायसी के गुरु थे। उदा०—गुरु मोहदी खेवक मैं सेवा।—जायसी।

मोहन—वि० [सं०√मुह्+णिच्+ल्यु—अन] १. मोह लेनेवाला। २ मोहित करनेवाला।
पु० १ शिव। २ श्रीकृष्ण। ३. कामदेव के पाँच बाणो मे से एक बाण का नाम जिसका काम मोहित करना है। ४. धतूरा। ५. एक तांत्रिक प्रयोग जिससे किसी को मूर्च्छित किया जाता है। ६. प्राचीन काल का एक प्रकार का अस्त्र जिससे शत्रु मोह से युक्त या मूर्च्छित किया जाता था। ७. एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक सगण और एक जगण होता है। ८ सगीत में बारह तालो का एक प्रकार का ताल जिसमे सात आघात और पाँच खाली होते हैं। ९. संगीत मे कर्णाटकी पद्धति का एक राग। १० कोल्हू की कोठी अर्थात् वह स्थान जहाँ दबने के लिए ऊख के गाँडे डाले जाते हैं। इसे कुंडी और गगरा भी कहते हैं।

मोहनक—पु० [सं० मोहन+कन्] १ एक प्रकार का सम-वृत्त वर्णिक छन्द जिसके प्रत्येक चरण मे गुरु और तीन सगण होते हैं। यथा—आये दसरत्थ बरात सजे। दिग्पाल गयद्दनि देखि लजे।—केशव। २ चैत्र मास।

मोहन-भोग—पु० [हिं० मोहन+भोग] १. एक प्रकार का हलुआ। २. एक तरह की बगाली मिठाई। ३. एक प्रकार का केला। ४ एक प्रकार का आम। ५ एक प्रकार का चावल।

मोहन-माला—स्त्री० [हिं०] सोने की गुरियों या दानों की पिरोई हुई माला।

मोहना—अ० [सं० मोहन] १. मोहित होना। २. बेहोश या मूर्च्छित होना। ३ मोह के वश मे होना। ४. भ्रम मे पड़ना।
स० १. मोहित करना। २. मोह या भ्रम में डालना।
स्त्री० [सं० मोहन+टाप्] १ तृण। २ एक प्रकार की चमेली।

मोहनास्त्र—पु० [सं० मोहन-अस्त्र, मध्य० स०] एक प्रकार का प्राचीन काल का अस्त्र जिसके प्रभाव से शत्रु मोह के वश मे या मूर्च्छित हो जाता था।

मोह-निद्रा—स्त्री० [सं० मध्य० स०] १. मोह के कारण आनेवाली निद्रा या बेहोशी। २. वह अवस्था जिसमें मनुष्य अज्ञान, अहंकार या भ्रमवश वास्तविक स्थिति की अपेक्षा करता है।

मोहनी—स्त्री० [सं० मोहन+ङीष्] १. ऐसी क्रिया, रूप या शक्ति जिससे किसी को पूरी तरह से मोहित किया जा सके। जैसे—उसकी आँखों में कुछ विलक्षण मोहनी थी। २ कोई ऐसा तांत्रिक प्रयोग अथवा कोई ऐसी क्रिया जिससे किसी को अपने वश मे किया जा सके।
मुहा०—मोहनी डालना=ऐसा प्रभाव डालना कि कोई पूरी तरह से मोहित हो जाय। मोहनी लगना=उक्त प्रकार की शक्ति के प्रभाव से किसी पर मोहित होना। मोहनी लाना*=मोहनी डालना। (देखें ऊपर)
३ लुभावनी और सुंदरी स्त्री। ४ ज्ञान-क्षेत्र मे, माया जो लोगों को मोहित करके अपनी ओर आकृष्ट करती है। ५. एक अप्सरा का नाम। ६ दे० 'मोहिनी' (भगवान् का स्त्री रूप)।
स्त्री० [सं० मोहन] १. एक प्रकार का लबा सूत-सा कीड़ा जो हल्दी के खेतों में पाया जाता है। इससे तांत्रिक लोग वशीकरण यंत्र बनाते हैं। २. एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में सगण, भगण, तगण, यगण और सगण होते हैं। ३ एक प्रकार की मिठाई। ४. पोई का साग।
वि० स्त्री० मोहित करनेवाली।

मोहनीय—वि० [सं०√मुह्+णिच्+अनीयर्] मोहित किये जाने के योग्य। जिसे मोहित किया जा सके या किया जाने को हो।

मोहफिल†—स्त्री०=महफिल।

मोहब्बत†—स्त्री०—मुहब्बत।

मोहमिल—वि० [अ० मोह्मिल] १ जिसका कोई अर्थ न हो। निरर्थक। २. जिसका अर्थ स्पष्ट न हो। ३ छोडा हुआ। त्यक्त।

मोहर—स्त्री० [फा० मुह्र] १ कोई ऐसी चीज जिस पर किसी का नाम या और कोई चिह्न अंकित हो और जिसका ठप्पा कागजों आदि पर मालिक की ओर से यह सूचित करने के लिए लगाया जाता है कि यह प्रामाणिक या असली है। मुद्रा। (सील)
क्रि० प्र०—करना।—देना।—लगना।
२. उपयुक्त वस्तु की छाप जो कागज या कपडे आदि पर ली गई हो। स्याही लगे हुए ठप्पे को दबाने से बने हुए चिह्न या अक्षर। ३ लाक्षणिक रूप में कोई ऐसी चीज या बात जो किसी प्रकार का मुख या विवर ऊपर से पूरी तरह से बंद कर देती हो। जैसे—सरकार ने हम लोगो के मुँह पर मोहर लगा रखी है। ४ मुगल शासन में सोने का वह सिक्का जिसकी तौल, धातु आदि की प्रामाणिकता सिद्ध करने के लिए टकसाल या शासन का ठप्पा लगा रहता था।

मोहरा—पु० [हिं० मुँह+रा (प्रत्य०)] [स्त्री० मोहरी] १. किसी बरतन का मुँह या ऊपरी खुला भाग। २ किसी पदार्थ का ऐसा अगला या ऊपरी भाग जो प्राय मुँह के आकार या रूप का हो। ३ सेना की अगली पंक्ति जिसे सब से पहले शत्रु का सामना करना पड़ता है।
मुहा०—मोहरा लेना=सामने से जमकर मुकाबला करना और लडना।
४. किसी चीज के ऊपर का छेद या मुँह। ५ वह जाली जो पशुओ के मुँह पर इसलिए बाँधी जाती है कि वे आस-पास की चीजों पर मुँह न डाल सकें। ६. घोडे के मुँह पर पहनाया जानेवाला एक प्रकार का साज। ७. अँगिया या चोली की तनी या बंद जो स्तनो को अन्दर बन्द रखने के लिए ऊपर से गाँठ दे कर बाँध दिये जाते हैं। ८. शतरंज की गोटी। ९ मिट्टी का वह साँचा जिसमें कड़ा, पिछेली आदि गहने ढाल

कर बनाये जाते थे। १० लकड़ी, शीशे या बिल्लौर का वह बड़ा टुकड़ा जिसमें रगड़कर कई तरह की चीजों में चमक लाई जाती है। ११. सोने चाँदी पर नक्काशी करनेवाला का वह औजार जिससे रगड़ कर नक्काशी को चमकाते हैं। दुआली। १२ मिगिया विष।
पुं० [फा० मुह्र] १ कपर्दिका। कौड़ी। २ माला आदि की गुरिया या मनका।
†पुं० दे० 'जहर मोहरा'।

मोह-रात्रि—स्त्री० [सं० ष० त०] १. पुराणानुसार वह प्रलय काल जो ब्रह्मा के पचास वर्ष बीतने पर होता है। दैनंदिनी प्रलय।
पुं० जन्माष्टमी की रात्रि। भाद्रपद कृष्णा अष्टमी।

मोहराना—पुं० [फा० मुह्र+आना (प्रत्य०)] वह धन जो किसी कर्मचारी को मोहर करने के बदले में दिया जाय। मोहर करने का पारिश्रमिक।

मोहरी—स्त्री० [हिं० मोहरा का स्त्री० अल्पा०] १ किसी चीज का अगला या वह भाग जो मुँह की तरह हो। जैसे—पाजामे या बरतन की मोहरी। २ ऊपरी खुला हुआ कुछ अंश या भाग। ३ ऊँट की नकेल।
स्त्री० [देश०] एक प्रकार की मधुमक्खी जो खास देश में होती है।

मोहवश*—वि० [सं० मुमूर्षु] १ जिसका मरण काल आसन्न हो। २ मूच्छित।

मोहर्रिर—पुं०=मुहर्रिर।

मोहलत—स्त्री० [अ०] १ फुरसत। अवकाश। २ काम से मिलनेवाली छुट्टी। ३ किसी काम के लिए नियत की हुई अवधि।
क्रि० प्र०—देना।—माँगना।—मिलना।—लेना।

मोहल्ला†—पुं०=मुहल्ला।

मोहसिन—वि० [अ० मुहसिन] एहसान या उपकार करनेवाला। उपकारक।

मोहाड़ा†—पुं० [हिं० मुँह] १ तालाब का बाँध। २ दे० 'मोहड़ा'।

मोहार—पुं० [सं० मधुकर, प्रा० महुअर] १ मधुमक्खी की एक जाति जो सबसे बड़ी होती है। सारंग। २ मधुमक्खी का छत्ता। ३ भौंरा।
†पुं० [हिं० मुंह+आर (प्रत्य०)] १ मुंह। २. द्वार।
†पुं०=मोहरा।
स्त्री०=मुहार।

मोहारनी—स्त्री०=मुहारनी।

मोहाल—पुं० १ =महाल। २ =मोहार।
वि०=मुहाल।

मोहिं*—सर्व० [सं० मह्य, पा० मय्ह] मुझे। (अवधी, व्रज)

मोहित—भू० कृ० [सं०√मोह+इतच्] १ जिसके मन में मोह उत्पन्न हुआ हो या किया गया हो। २ पूर्ण रूप से आसक्त या मुग्ध। ३ मोह या भ्रम में पड़ा हुआ।

मोहिनी—वि० स्त्री० [सं०√मुह्+णिच्+णिनि+ङीप्] मोहित करने या मोहनेवाली।
स्त्री० १ माया। मोह। २ भगवान् का वह सुंदरी स्त्रीवाला रूप जो उन्होंने समुद्र मथन के उपरांत अमृत बाँटने के समय असुरों को मोहित करके उन्हें धोखे में डालने के लिए धारण किया था। इसी रूप में उन्होंने देवताओं को अमृत तथा असुरों को विष दिलाया था। ३ पंद्रह अक्षरों के एक वर्णिक छंद का नाम जिसके प्रत्येक चरण में सगण, भगण, तगण, यगण और सगण होते हैं। ४ एक प्रकार की अर्धसम वृत्ति जिसके पहले और तीसरे चरणों में सात मात्राएँ होती हैं; और प्रत्येक चरण के अंत में एक सगण अवश्य होता है। ५ वैशाख शुक्ला एकादशी। ६ त्रिपुर नामक पौधा और उसका फल।

मोहिल—वि० [हिं० मोह] १ मोह से युक्त। २ मोहित करनेवाला।
उदा०—नवल मोहिलो मोहि तजो जिन, तोहि सौंह प्रिय पावन।—महत्वरिशरण।

मोही (हिन्)—वि० [सं० मोह+इनि] [स्त्री० मोहिनी] १ मोह या भ्रम में पड़ा हुआ। अज्ञानी। २ मोह करनेवाला। ३ जिसके मन में सभी के प्रति मोह या प्रेम हो। ४ लालची। ५ [√मुह्+णिच्+णिनि] मोहित करनेवाला।

मोहेला—पुं० [?] एक प्रकार का लकड़ा गाना।

मोहेली—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की मछली।

मोहोपमा—स्त्री० [सं० मोह-उपमा, मध्य० स०] अलंकार-साहित्य में उपमा अलंकार का एक भेद जिसे कुछ लोग 'भ्रांति' अलंकार कहते हैं।

मौंगा—वि० =मौगा।

मौंगी†—वि० [सं० मौन] मौन। चुप।
स्त्री० =मौन (चुप्पी)।

मौंज—वि० [सं० मुंज+अण्] [स्त्री० मौंजी] १ मूँज सम्बन्धी। २ मूँज का बना हुआ।

मौंजकायन—पुं० [सं० मुंजक+फक्-आयन] मुंजक ऋषि का वंशज।

मौंजिबंधन—पुं० [सं० कर्म० स०] यज्ञोपवीत संस्कार। व्रतबंध। जनेऊ।

मौंजी—स्त्री० [सं० मुंज, अण्+ङीप्] मूँज की बनी हुई मेखला।

मौंडा†—पुं० =मुंडा (बालक)।
पुं० =मोहड़ा।

मौ—स्त्री० [हिं० मौज] १ मन की मौज। तरंग। २ युवावस्था। ३ पूर्णता। ४ परिपक्वता।
क्रि० प्र०—पर आना।

मौअत†—स्त्री०=मौत (मृत्यु)।

मौका—पुं० [अ० मौका] १ ऐसा समय जब कोई काम ठीक तरह से होने को हो या हो सकता हो। अवसर। सुयोग।
मुहा०—**मौका देखना**=उपयुक्त अवसर की ताक में रहना।
२ अवधि। मोहलत। ३ अवकाश। फुरसत। ४ वह स्थल जहाँ कोई घटना हुई हो अथवा जिसके सम्बन्ध में कोई विचार या विवाद उपस्थित हो। जैसे—आज अधिकारी लोग मौका देखने गये।

मौकुल—पुं० [सं०] कौआ।

मौकूफ—वि० [अ० मौकूफ] [भाव० मौकूफी] १. मुल्तवी। स्थगित। २ पदच्युत। बरखास्त। ३ रद्द। ४ अवलंबित। आश्रित।

मौकूफी—स्त्री० [अ० मौकूफी] १ मौकूफ किये जाने अथवा होने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ प्रतिबंध। रुकावट।

मौके-बे-मौके—अव्य० [अ० मौका+फा० बे] समय-कुसमय।

मौक्तिक—पुं० [सं० मुक्ता+ठक्—इक] मोती।
वि० मुक्ता-सम्बन्धी। मुक्ता का।

मौक्तिक-तंडुल—पुं० [सं० ष० त०] बारह अक्षरों का एक प्रकार का वर्णिक छंद जिसके प्रत्येक चरण मे दूसरा, पाँचवाँ, आठवाँ और ग्यारहवाँ वर्ण गुरु और शेष लघु होते है।

मौक्तिक-माला—स्त्री० [सं० ष० त०] १ मोतियों की माला। २ ग्यारह अक्षरों की एक वर्णिक वृत्ति जिसके चरण का पहला, चौथा, पाँचवाँ, दसवाँ और ग्यारहवाँ अक्षर गुरु और शेष लघु होते हैं तथा पाँचवे और छठे वर्ण पर यति होती है।

मौक्तिकावलि—स्त्री० [सं० ष० त०] मोतियों की माला।

मौक्य—पुं० [सं० मूक+ष्यञ्] मूक होने की अवस्था या भाव। मूकता।

मौक्ष—पुं० [सं० मोक्ष+अण्] एक प्रकार का साम गान।

मौख—वि० [सं० मुख+अण्] १ मुख-सम्बन्धी। मुख का। २ मुख से निकलने या होनेवाला। जैसे—अभक्ष्य पदार्थ खाना, गालियाँ बकना आदि मौख पाप है।
पुं० [?] मसाले के काम आनेवाला एक पदार्थ।

मौखर—पुं० [सं० मुखर+अण्] मुखर होने की अवस्था या भाव। मुखरता।

मौखरी—पुं० एक प्राचीन भारतीय राजवंश।

मौखर्य—पुं० [सं० मुखर+ष्यञ्] मुखरता। वाचालता।

मौखिक—वि० [सं० मुख+ठक्—इक] १ मुख-संबंधी। मुख का। २ मुँह से कहा या बोला जानेवाला। जबानी (लिखित से भिन्न)। ३ संगीत मे वाद्य से भिन्न कंठ से निकलनेवाला (स्वर आदि)। जैसे—मौखिक संगीत।

मौखिक परीक्षा—स्त्री० [सं०] विद्यार्थियों या शिक्षार्थियों के ज्ञान और योग्यता की वह परीक्षा जो उनसे मौखिक प्रश्न कर के की जाती है। (वाइवा वोसी)

मौग्ध—वि० [सं० मुग्ध] [स्त्री० मौगी] १ मूर्ख। निर्बुद्धि। २ नपुंसक। हिजड़ा।
पुं० [स्त्री० मौगी] पुरुष।

मौग्ध्य—पुं० [सं० मुग्ध+ष्यञ्] मुग्ध होने की अवस्था या भाव। मुग्धता।

मौघ्य—पुं० [सं० मोघ+ष्यञ्] मोघ अर्थात निरर्थक होने की अवस्था या भाव।

मौज—स्त्री० [अ०] १ पानी की लहर। तरंग। हिलोर।
क्रि० प्र०—आना।—उठना।
मुहा०—मौज खाना=लहर मारना। हिलोरा लेना। (लश०) **मौज मारना**=जलाशय या नदी आदि मे जोरों की लहरे उठना।
२ मन मे उठनेवाली कोई उमंग। लहर।
क्रि० प्र०—आना।—उठना।
मुहा०—किसी की मौज पाना=किसी को अपने अनुकूल या प्रवृत्त देखना। **किसी की मौज आना या किसी को मौज में आना**=अचानक किसी काम की उमंग होना। धुन होना।
३ मन की उमंग मे आकर दिया जानेवाला पुरस्कार या विभूति। उदा०—जाँचि निरादर हूँ भले, लै लाखन की मौज।—बिहारी। ४ मन का आनन्द। मजा। सुख।
क्रि० प्र०—करना।—उड़ाना।—मारना।—मिलना।—लेना।

मौज-पानी—पुं० [हिं०] १ बहुत सुखपूर्वक और निश्चित होकर किया जानेवाला खान-पान। २. मजा।

मौजा—पुं० [अ० मौजअ] १. गाँव। ग्राम। २. स्थान।
पुं० दे० 'मोजा'।

मौजी†—वि० [फा० मौज+हिं० ई (प्रत्य०)] १. अपने मन की मौज के अनुसार मनमाना काम करनेवाला। जब जो जी मे आवे तब वही करनेवाला। २. अच्छी तरह आनन्द या सुख भोगनेवाला। मौज लेनेवाला।

मौजूँ—वि० [अ०] [भाव० मौजूँ नियत] १. वजन किया हुआ। तुला या तौला हुआ। २ जो किसी स्थान पर ठीक बैठता या मालूम होता हो। उपयुक्त। ३ (छन्द या पद) जो काव्य के नियमों, विषय आदि की दृष्टि से उपयुक्त या ठीक हो।
अव्य० ठीक-ठीक।
पु० वर्णन, विचार आदि का विषय।

मौजूद—वि० [अ०] [भाव० मौजूदगी] १ उपस्थित। हाजिर। २. प्रस्तुत। ३ जीवित। विद्यमान।

मौजूदगी—स्त्री० [फा०] मौजूद होने की अवस्था या भाव।

मौजूदा—वि० [अ० मौजूद] १ वर्तमान काल का। जो इस समय मौजूद हो। २ आधुनिक। 'प्राचीन' का विरुद्धार्थक। ३ जो सामने उपस्थित या प्रस्तुत हो। विद्यमान।

मौजूदात—स्त्री० [अ०] चराचर जगत्। सृष्टि।

मौजूनियत—स्त्री० [अ०] मौजूँ होने की अवस्था या भाव। उपयुक्तता।

मौड़†—पु०=मौर (सेहरा)।

मौड़ा†—पु०=मौडा।
†पु० =मड़ा (बालक)।
पु०=मोहड़ा।

मौढ्य—पु० [सं० मूढ+ष्यञ्] मूढ होने की अवस्था या भाव। मूढता।

मौत—स्त्री० [अ० मि० स० मीति] १ मरने की अवस्था या भाव। मरण। मृत्यु। २ मृत्यु का देवता। यम। ३ मृत्यु का समय।
क्रि० प्र०—आना।—बुलाना।—होना।
पद—मौत का तमाशा=ऐसी बहुत ही घातक या भीषण घटना या बात जो किसी का अन्त कर सकती हो। **मौत का पसीना**=वह पसीना जो साधारणत लोगो को मरने से कुछ ही पहले आता है। **मौत के मुँह में**=घोर संकट मे।
मुहा०—बे-मौत मरना=ऐसे घोर संकट मे पड़ना जिसमें पूर्ण विनाश दिखाई देता हो। **मौत के दिन पूरे करना**=ऐसे दुःख मे दिन बिताना, जिसमें बहुत दिन जीना असंभव हो। **मौत (सिर पर) खेलना**=(क) मरने को होना। मरने का समय बहुत पास आना। (ख) बहुत बुरे या दुर्भाग्य के दिन पास आना। (ग) जान-जोखिम का समय पास आना। **अपनी मौत मरना**=स्वाभाविक ढंग से मरना। प्राकृतिक नियम के अनुसार मरना।

४. ऐसा कठिन या विकट काम या बात जिससे बहुत अधिक कष्ट हो। जैसे—तुम्हें तो वहाँ जाते मौत आती है।

मौताद—स्त्री० [अ०] औषध आदि की मात्रा।

मौदक—वि० [सं० मोदक+अण्] मोदक-सम्बन्धी। मोदक का।

मौदकिक—पुं० [सं० मोदक+ठक्—इक] मोदक अर्थात् मिठाइयाँ बनानेवाला। हलवाई।

मौद्गल—पुं० [स० मुद्गल+अण्] मुद्गल ऋषि के गोत्र में उत्पन्न व्यक्ति। मौद्गल्य।

मौद्गलायन—पु०=मौद्गल्यायन।

मौद्गल्य—पुं० [सं० मुद्गल+ष्यञ्] १ मुद्गल ऋषि के पुत्र का नाम जो एक गोत्रकार ऋषि थे। २. मुद्गल ऋषि के गोत्र का व्यक्ति।

मौद्गल्यायन—पुं० [सं० मौद्गल्य+फक्—आयन] गौतम बुद्ध का शिष्य।

मौद्गीन—पु० [स० मुद्ग+खञ्—ईन] मूँग का खेत।

मौन—पु० [स० मुनि+अण्] १ मुनि का भाव। २. न बोलने की क्रिया या भाव। चुप रहना। चुप्पी।

क्रि० प्र०—गहना।—धारना।—रहना।

मुहा०—**मौन खोलना**=देर तक चुप रहने के उपरान्त बोलना। **मौन तोड़ना**=मौन व्रत तोड देना। **मौन बाँधना**=मौन धारण करना। न बोलने का प्रण करना। **मौन लेना या साधना**=चुप रहने का व्रत करना।

२ मुनियो का व्रत। मुनिव्रत। ३ फाल्गुन मास का पहला पक्ष।

वि० [स० मौनी] जो न बोले। चुप। मौनी।

पु० [स० मौण] १ बरतन। पात्र। २. डब्बा। ३ पिटारा। ४ टोकरा।

मौन-व्रत—पु० [सं० ष० त०] मौन धारण करने का व्रत। चुप रहने का व्रत।

मौना—पु० [स० मोण] [स्त्री० अल्पा० मौनी] १. घी या तेल आदि रखने का एक प्रकार का बरतन। २ टोकरा। पिटारा।

मौनी (निन्)—वि० [स० मौन+इनि] १ मौन अर्थात् चुप रहनेवाला। न बोलनेवाला। २. जिसने मौनव्रत धारण किया हो।

पुं०=मुनि।

स्त्री० हिं० 'मौना' का स्त्री० अल्पा०।

मौनी अमावस—स्त्री० [हिं०] माघ मास मे पड़नेवाली अमावस। इस दिन मौन रहने का माहात्म्य है।

मौनेय—पु० [स० मुनि+ढक्—एय] गधर्वों, अप्सराओ आदि का एक मातृक गोत्र।

मौर—पु० [स० मुकुट; पा० मउड़] [स्त्री० अल्पा० मौरी] १. विवाह के समय वर को पहनाया जानेवाला ताड-पत्र या खुखडी का बना हुआ एक प्रकार का शिरोभूषण।

मुहा०—**मौर बाँधना**=विवाह के समय सिर पर मौर पहनना।

वि० सब मे मुख्य या श्रेष्ठ। शिरोमणि।

पु० [स० मुकुल; प्रा० मउल] मजरी। बौर। जैसे—आम का मौर।

पु० [सं० मौलि=सिर] १. सिर। २. गरदन का पिछला भाग जो सिर के नीचे पड़ता है।

मौर-छोराई†—स्त्री० [हिं० मउर-छुडाई] १. विवाह के उपरांत मौर खोलने की रस्म। २ उक्त रसम के समय मिलनेवाला धन या नेग।

मौरजिक—पु० [स० मुरज+ठक्—इक] मुरज नामक बाजा बनानेवाला। मुरज बजानेवाला।

मौरना—स० [हिं० मौर+ना (प्रत्य०)] वृक्षो पर मजरी लगना। आम आदि के पेडो पर बौर लगना। बौरना।

मौरसिरी—स्त्री०=मौलसिरी।

मौरिक—वि० [स० मुकुलित] मौर अर्थात् मजरी से युक्त।

मौरी—स्त्री० [मौर का स्त्री० अल्पा०] कागज आदि का बना हुआ वह छोटा मौर जो विवाह मे वधू के सिर पर बाँधा जाता है।

मौरूसी—वि० [अ०] पैतृक। जैसे—मौरूसी घर या जायदाद।

मौर्ख्य—पु० [स० मूर्ख+ष्यञ्] मूर्खता। बेवकूफी।

मौर्य—पु० [सं० मुरा+ण्य] मगध का एक प्रसिद्ध भारतीय राजवश।

मौर्वी—स्त्री० [सं० मूर्वा+अण्+ङीप्] धनुष की प्रत्यचा। कमान की डोरी। ज्या।

मौल—वि० [सं० मूल+अण्] १. मूल से सबध रखनेवाला। २. मूल पुरुषो से मिला हुआ। पैतृक। मौरूसी।

पु० १. प्राचीन भारत मे एक प्रकार के राज-मत्री। २ जमीदार। भू-स्वामी।

मौल-बल—पुं० [सं० कर्म० स०] बडे जमीदारो की अथवा उनके द्वारा एकत्र की हुई सेना। (कौ०)

मौलवी—पुं० [अ०] १ अरबी भाषा का पडित। २. इस्लाम धर्म का आचार्य। ३ छोटे बच्चो को पढानेवाला मुसलमान गुरु।

मौलसिरी—स्त्री० [स० मौलि-श्री] १ एक प्रकार का बडा सदा बहार पेड जिसकी लकड़ी अदर से लाल और चिकनी होती है और जिससे मेज, कुर्सी आदि बनाई जाती हैं। इसके बीजो से तेल निकलता है, छाल ओषधियो के काम आती है। २. उक्त वृक्ष के छोटे सफेद सुगधित फूल।

मौला—पु० [देश०] उत्तरी भारत मे होनेवाली एक प्रकार की बेल जिसकी पत्तियाँ एक बालिश्त तक लबी होती हैं। जाडे के दिनो मे इसमे आध इच लबे फूल लगते हैं। मूला। मल्हा बेल।

पु० [अ०] १. स्वामी। २ ईश्वर। परमात्मा। ३. वह गुलाम जिसे मुक्ति मिली हो।

मौलाई—स्त्री० [अ०] १ मौला होने की अवस्था या भाव। २ स्वामित्व। ३. सरदारी। ४ प्रतिष्ठा।

मौलाना—पु० [अ०] १. बहुत बडा विद्वान्, विशेषत इस्लाम के सिद्धान्तो का पडित। २ अरबी भाषा का पडित।

मौलि—पुं० [स० मूल+इञ्] १. किसी पदार्थ का सब से ऊँचा भाग। चोटी। सिरा। चूडा। २. मस्तक। सिर। ३ किरीट। ४ नेता। सरदार। ५ अशोक वृक्ष। ६ पृथ्वी। ७ जमीन। भूमि।

मौलिक—वि० [स० मूल+ठञ्—इक] [भाव० मौलिकता] १ मूल या जड से सबध रखनेवाला। २. मूल तत्त्व या सिद्धान्त से सबध रखने वाला। (फन्डामेन्टल) ३ असली। वास्तविक। ४. (कृति, ग्रंथ या विचार) जो बिलकुल नया हो तथा किसी की उद्भावना से उद्भूत हो। जो किसी की नकल न हो और न ही किसी के आधार पर बना हो। मूलभूत। (ओरिजिनल)

मौलिकता—स्त्री० [सं० मौलिक+तल्+टाप्] मौलिक होने की अवस्था या भाव। २. स्वयं अपनी उद्‌भावना से कुछ कहने, बोलने या लिखने की शक्ति अथवा गुण। (ओरिजिनेलिटी)

मौलि-बद्ध—पुं० [सं० मध्य० स०] पगड़ी। साफा।

मौलि-मणि—पुं० [सं० मध्य० स०] शिरोमणि।

मौली (लिन्)—वि० [सं० मौलि+इनि] जिसके सिर पर मौलि या मुकुट हो। मुकुटधारी।

†स्त्री० [हिं० मौर] लाल रँगा हुआ मांगलिक डोरा या सूत। नारा। (पश्चिम)

मौलूद—वि० [अ०] जन्मप्राप्त (शिशु)।

पुं० १ जन्मतिथि। २ बेटा। ३. दे० 'मौलूद-शरीफ'।

मौलूद-शरीफ़—पुं० [अ०] १. मुहम्मद साहब के जन्म से संबंध रखनेवाली धार्मिक कथा। २ वह अवसर या समाज जिसमें सब लोगों के सामने वह कथा कही या पढ़ी जाती है।

मौल्य—पुं० [सं० मूल+ष्यञ्] मूल्य।

मौषल—वि० [सं० मूषल+अण्] १ मूषल-संबंधी। २. मूसल के आकार का।

पुं० महाभारत का एक पर्व।

मौष्टा—स्त्री० [सं० मुष्टि+ण्ण+टाप्] घूँसों की मार या लड़ाई। मुक्कामुक्की।

मौसम—पुं०=मौसिम।

मौसर*—वि०=मयस्सर (उपलब्ध)।

मौसल—वि० [सं० मुसल+अण्] मूसल-संबंधी। मूसल का।

मौसा—पुं० [हिं० मौसी का पुं०] [स्त्री० मौसी, वि० मौसेरा] संबंध के विचार से माता की बहन का पति। मौसी का पति।

मौसिम—पुं० [अ०] [वि० मौसिमी] १. किसी काम या बात के लिए उपयुक्त समय। अनुकूल काल। २ गरमी, बरसात, सरदी आदि के विचार से समय का विभाग। ऋतु।

मौसिमी—वि० [फा०] १ समयोपयोगी। काल के अनुकूल। २. किसी विशिष्ट मौसिम या ऋतु में होनेवाला।

†स्त्री०=मुसम्मी (मीठा नींबू)।

मौसिया—वि०=मौसेरा।

†पुं०=मौसा।

मौसियाउत†—वि०=मौसेरा।

मौसिला†—स्त्री०=मौलसिरी।

मौसी—स्त्री० [सं० मातृष्वसा; प्रा० माउस्सिआ] [वि० मौसेरा, मौसियाउत] माता की बहन। मासी।

मौसूफ़—वि० [अ०] [स्त्री० मौसूफा] १. वर्णित। २. प्रशंसित।

पुं० विशेष्य।

मौसूम—वि० [अ०] [स्त्री० मौसूमा] जिसका कोई नाम हो। नामधारी।

मौसूल—वि० [अ०] १. मिलाया हुआ। २. मिला हुआ। प्राप्त।

मौसेरा—वि० [हिं० मौसा+एरा (प्रत्य०)] मौसी के द्वारा संबद्ध। मौसी के संबंध का। जैसे—मौसेरा भाई, मौसेरी बहन।

मौहूर्त—पुं० [सं० मुहूर्त+अण्] मुहूर्त बतलानेवाला, ज्योतिषी।

मौहूर्तिक—वि० [सं० मुहूर्त+ठक्—इक] १. मुहूर्त-सम्बन्धी। २. मुहूर्त से उत्पन्न।

पुं० १. दक्ष की मुहूर्ता नाम की कन्या से उत्पन्न एक देवगण। २. मुहूर्त बतलानेवाला; अर्थात् ज्योतिषी।

म्यंत्र—पुं०=मित्र।

म्याँऊँ—स्त्री० [अनु०] बिल्ली की बोली।

मुहा०—**म्याँऊँ का मुँह पकड़ना**=किसी कार्य का कठिनतम अंश पूरा करना। **म्याँऊँ-म्याँऊँ करना**=भयभीत होकर धीमी आवाज से बोलना। डर के मारे बहुत धीरे-धीरे बोलना।

म्यान—पुं० [फा० मियान] १. कोष जिसमें तलवार, कटार आदि के फल रखे जाते हैं। तलवार, कटार आदि का फल रखने का खाना। २. अन्नमय कोश। शरीर।

म्याना*—स० [हिं० म्यान] (तलवार) म्यान में डालना या रखना। उदा०—लखु तुरत म्यान महँ म्याना।—रघुराज।

†पुं० मियाना (सवारी)।

म्यानी—स्त्री० [फा० मियानी] १ पाजामे की काट में एक टुकड़े का नाम जो दोनों पल्लों को जोड़ते समय रानों के बीच में जोड़ा जाता है। २. दीवार के ऊपरी भाग में छत के नीचे बनी हुई छोटी कोठरी या बड़ी भंडरिया।

म्युज़ियम—पुं० [अं०] दे० 'संग्रहालय'।

म्युनिसिपल—वि० [अं०] म्युनिसिपैलिटी अर्थात् नगरपालिका से संबंध रखनेवाला। नगरपालिका का।

म्युनिसिपैल्टी—स्त्री० दे० 'नगरपालिका'।

म्योंड़ी—स्त्री० [सं० निर्गुंडी] एक प्रकार का सदाबहार झाड़ जिसमें केसरिया रंग के छोटे-छोटे फूलों की मंजरियाँ लगती हैं।

म्रक्षण—पुं० [सं०√म्रक्ष् (छिपाना)+ल्युट्—अन] १. अपने दोष को छिपाना। मक्कारी। २ तेल मलना। मालिश करना। ३ मसलना। मीजना।

म्रज्जाद †—स्त्री० [सं० मर्यादा] मर्यादा। उदा०—हुसन हयग्गय दस अति, पति सायर म्रज्जाद।—चंदबरदाई।

म्रदिमा (मिन्)—स्त्री० [सं० मृदु+इमनिच्] १. मृदुता। कोमलता। २. दीनता। ३ नम्रता।

म्रदिष्ठ—वि० [सं० मृदु+इष्ठन्] अत्यंत कोमल। बहुत मृदु।

म्रात—वि० [सं०√म्रा (अभ्यास करना)+क्त] १. पढ़ा या सीखा हुआ। २ अभ्यस्त (विषय)।

म्रियमाण—वि० [सं०√मृ (मरण)+शानच्, मुम्] मरा हुआ-सा। मृतप्राय।

म्लान—वि० [सं०√म्लै (हर्षक्षय)+क्त, त—न] [भाव० म्लानता] १ कुम्हलाया या मुरझाया हुआ। २ कमजोर। दुर्बल। ३. मलिन। मैला।

स्त्री०=म्लानि।

म्लानता—स्त्री० [सं० म्लान+तल्+टाप्] १ म्लान होने का भाव। मलिनता। २ ग्लानि।

म्लानि—स्त्री० [सं०√म्ला+नि] १. मलिनता। कांतिक्षय। २. ग्लानि।

म्लायी (यिन्)—वि० [सं०√म्ला (हर्ष नाश)+णिनि, न-लोप] १. म्लान। ग्लानियुक्त। २ खिन्न। दुःखी।

म्लिष्ट—वि० [स०√म्लेच्छ (अस्पष्ट)+क्त, निपा० सिद्धि] १ अस्पष्ट। जैसे—म्लिष्ट वाणी। २ अस्पष्ट रूप में बोलनेवाला।

म्लेच्छ—पु० [स०√म्लेच्छ+अच्] १ प्राचीन आर्यों की दृष्टि में, ऐसे लोग जो स्पष्ट उच्चारण करना नहीं जानते थे। २ परवर्ती हिन्दुओं की दृष्टि में, मनुष्यों की वे जातियाँ जिनमें वर्णाश्रम धर्म न हो। ३ हिंगु। हींग।
वि० १ नीच। २ पापी।

म्लेच्छ-कंद—पु० [स० मध्य० स०] लहसुन।

म्लेच्छ-भोजन—पु० [स० ष० त०] १ बोरो नामक धान। यावक। २ गेहूँ।

म्लेच्छित—पु० [स०√म्लेच्छ्+क्त] १ म्लेच्छों की भाषा। २ अपभाषा। ३ परभाषा।

म्हा*—सर्व०=मुझ।

†म्हारा—सर्व० =हमारा।

म्हों*—पु० =मुँह।

य

य—हि० वर्णमाला का २६वाँ व्यंजन जो भाषा विज्ञान में स्थिति भेद के अनुसार अंतस्थ, स्थान भेद के अनुसार तालव्य, यत्न भेद के अनुसार घोष, प्राणभेद के अनुसार अल्पप्राण तथा प्रयत्न भेद के अनुसार ईषत्स्पृष्ट है।
पु० [स०√या (गति)+ड] १ यश। २ योग। ३ यान। सवारी। ४ संयम। ५ यव। जौ। ६ यम। ७ त्याग। ८ प्रकाश। रोशनी। ९ छन्द शास्त्र में, यगण का संक्षिप्त रूप।

यंत (1)—पु० [स० ??] १ सारथी। (डिं०) २ चालक।
वि० =नियंता।

यंति—स्त्री० [स०√यम् (निवृत्ति)+क्तिच्] दमन।

यंत्र—पु० [स०√यन्त्र (संकोच)+अच्] १ वह चीज, बात या शक्ति जो किसी दूसरी चीज या बात को अच्छी तरह बाँध या रोककर नियंत्रित, संघटित तथा संबद्ध रखती हो। जैसे—डोरी, ताला, फीता, बेड़ी, हथकड़ी आदि। २ प्राचीन भारत में शल्य-चिकित्सा में काम आनेवाला ऐसा उपकरण जिसमें धार न हो अथवा नाम मात्र की भुथरी धार हो। जैसे—नस पकड़ने की सँड़सी, हड्डी तोड़ने की हथौड़ी आदि। (शस्त्र से भिन्न) ३ विशेष प्रकार से बना हुआ कोई ऐसा उपकरण जो किसी विशेष कार्य की सिद्धि के लिए अथवा कोई चीज बनाने के लिए काम आता हो। औजार। ४ आज-कल लोहे आदि का बना हुआ वह उपकरण जिसमें अनेक प्रकार के कल-पुरजे हों और जो बहुत-सी चीजें एक साथ बनाने के लिए विशेष शक्ति से काम में लाया जाता हो। कल। (मशीन) जैसे—कपड़े बुनने या कुएँ से पानी निकालने का यंत्र, छापे का यंत्र आदि। ५ किसी प्रकार का बाजा। वाद्य। ६ बाजों के द्वारा होनेवाला संगीत। ७ बीन या वीणा नाम का बाजा। ८ तांत्रिक क्षेत्रों में, रेखाओं आदि के द्वारा कोष्ठकों आदि के रूप में बनी हुई वे विशिष्ट आकृतियाँ जिनमें कुछ विशिष्ट शक्तियों का निवास माना जाता है और जिनका उपयोग जादू-टोने के लिए, कुछ विशिष्ट प्रभाव या फल उत्पन्न करने के लिए होता है। ९ उक्त प्रकार के कोष्ठकों का वह रूप जो नाश, अनिष्ट आदि से रक्षा के लिए धारण किया जाता है। जंतर। जैसे—(क) तिजारी या चौथिया ज्वर दूर करने का यंत्र, किसी को वश में करने का यंत्र।
पद—यंत्र-मंत्र। (देखें)

यंत्रक—पु० [स०√यन्त्र+कन्] १ घाव पर बाँधी जानेवाली पट्टी। (सुश्रुत) २ दे० 'यंत्रकार'।
वि० १ यंत्रण करनेवाला। २ वश में करनेवाला। ३ वशीकरण करनेवाला।

यंत्र-करंडिका—स्त्री० [सं० ष० त०] बाजीगरों का पिटारा जिसकी सहायता से वे अनेक प्रकार के खेल करते है।

यंत्रकार—पु० [सं० यंत्र√कृ (करना)+अण्] वह जो यंत्रों का परिचालन करता हो तथा यंत्र विद्या में दक्ष हो। (मैकेनिक)

यंत्रकारी—पु० [हि०] १ यंत्रकार का काम या पद। २ वह प्रक्रिया जिसके अनुसार किसी यंत्र या कल के पुरजे अपना काम करते और एक दूसरे को चलाते है। (मैकेनिज्म)

यंत्र-गृह—पु० [स० ष० त०] १ प्राचीन भारत में वह स्थान जहाँ अपराधियों को बाँधकर रखा जाता था तथा उन्हें यातनाएँ दी जाती थीं। २ वेधशाला। ३ यंत्रशाला।

यंत्रण—पु० [स०√यंत्र्+ल्युट्—अन] १ बाँधकर तथा रोक में रखने की क्रिया। २ नियम, विधान आदि के द्वारा नियंत्रित रखना। ३ यंत्र आदि की सहायता से दबाने, पेरने आदि की क्रिया। ४ दे० 'यंत्रणा'।

यंत्रणा—स्त्री० [स०√यंत्र्+णिच्+युच्—अन्, टाप्] १ दे० 'यंत्रण'। २ बहुत अधिक तीव्र कष्ट या पीड़ा।

यंत्र-नाल—पु० [स० कर्म० स०] वह नल जिसकी सहायता से कूएँ से जल निकाला जाता है।

यंत्र-पेषणी—स्त्री० [स० कर्म० स०] चक्की।

यंत्र-मंत्र—पु० [स० द्व० स०] ऐसी क्रिया जिसमें तंत्र-शास्त्र और तत्-सम्बन्धी मंत्रों आदि का प्रयोग होता है। जादू-टोना।

यंत्र-मातृका—स्त्री० [स० ष० त०] चौसठ कलाओं में से एक जिसके अन्तर्गत अनेक प्रकार के यंत्र या कलें आदि बनाने और उनसे काम लेने की क्रियाएँ आती है।

यंत्र-मानव—पु० [स०] प्राय: मनुष्य के आकार का वह यंत्र जो कई तरह के काम बहुत कुछ आदमियों की तरह करता है।

यंत्र-राज—पु० [स० ष० त०] ज्योतिष में एक प्रकार का यंत्र जिससे ग्रहों और तारों की गति जानी जाती है।

यंत्र-विज्ञान—पु० [स० ष० त०]=यंत्रशास्त्र।

यंत्रविद्—पु० [स० यंत्र√विद् (जानना)+क्विप्] अभियंता। (दे०)

यंत्र-विद्या—स्त्री० [स० ष० त०]=यंत्र-विज्ञान।

यंत्र-शाला—स्त्री० [स० ष० त०] १. वह स्थान जहाँ चीजें बनाने के यंत्र

आदि हों। यंत्रों की सहायता से जहाँ उत्पादन होता हो। यंत्रगृह। २. वेधशाला।

यंत्र-शास्त्र—पुं० [सं० ष० त०] वह कला या विज्ञान जिसमें अनेक प्रकार के यंत्र आदि बनाने और चलाने तथा अनेक प्रकार की संरचनाएँ प्रस्तुत करने का विवेचन होता है। (इंजीनियरिंग)

विशेष—इसकी बहुत-सी शाखाएँ हैं। जैसे—वस्तु-निर्माण, यंत्र-निर्माण, सिंचाई, नदी-नियंत्रण, धात्विक संरचना आदि।

यंत्र-समुच्चय—पुं० [ष० त०] सयंत्र। (दे०)

यंत्र-सूत्र—पुं० [सं०ष० त०] वह सूत्र या तागा जिसकी सहायता से कठ-पुतली नचाई जाती है।

यंत्रापीड़—पुं० [यंत्र-आपीड़ा, ब० स०] वैद्यक में एक प्रकार का सन्नि-पात ज्वर जिससे शरीर में बहुत अधिक पीड़ा होती है और रोगी का लहू पीले रंग का हो जाता है।

यंत्रालय—पुं० [यंत्र-आलय, ष० त०] १. वह स्थान जहाँ यंत्रों अर्थात् उपकरणों, औजारों आदि का निर्माण होता है। २ वह स्थान जहाँ कलें या यंत्रादि हों। ३ छापाखाना। मुद्रणालय। प्रेस।

यंत्रिका—स्त्री० [सं०√यंत्र+ण्वुल्—अक्, टाप्, इत्व] १ छोटा यंत्र। २ ताला। ३ पत्नी की छोटी बहन। छोटी साली। ४ छोटा ताला।

यंत्रित—भू० कृ० [सं०√यंत्र्+णिच्+क्त] १ बाँध तथा रोककर रखा हुआ। २. नियमों आदि से जकड़ा हुआ। ३. जिस पर ताला लगाया गया हो। ४ जिसे यंत्रणा मिली हो।

यंत्री (त्रिन्)—पुं० [सं० यंत्र+इनि] १ यंत्र-मंत्र करनेवाला। तांत्रिक। २ बाजा बजानेवाला। ३ नियंत्रण करनेवाला।

यंद†—पुं० [सं० इंद्र] १ इन्द्र। २ स्वामी। मालिक। (डिं०) पुं० [सं० इंदु] चंद्रमा।

यक—वि० [सं० एक से फा०] एक।

विशेष—'यक' के यौ० के लिए दे० 'एक' के यौ०।

यकअंगी—वि०=एकांगी।

यकक़लम—अव्य० [फा०] १ एक ही बार कलम चलाकर। एक ही बार लिखकर। २. पूरी तरह से। बिलकुल। ३ अचानक।

यक-जा—अव्य० [फा०] [भाव० यक-जाई] एक ही स्थान में एकत्र। इकट्ठा।

यक-जाई—वि० [फा०] १. एक में मिला हुआ। २. सदा एक ही पक्ष में या एक के साथ रहनेवाला।

यकता—वि० [फा०] [भाव० यकताई] अद्वितीय। अनुपम।

यकताई—स्त्री० [फा०] १ अद्वितीयता। २ अद्वैत।

यक-बयक—अव्य० [फा०]=एकाएक।

यकबारगी—अव्य०=एक-बारगी।

यक-सर—वि०=एक-सर।

यकसाँ—वि० [फा०] १. समान। २ समतल। २ एक ही तरह का। एक-रस।

यकायक—अव्य०=एकाएक।

यकार—पुं० [सं० य+कार] 'य' नामक वर्ण।

यक़ीन—पुं० [अ० यक़ीन] प्रतीति। विश्वास। एतबार।

यक़ीनन—अव्य० [अ०] १ निश्चित रूप से। निःसंदेह। २. अवश्य। ज़रूर।

यक़ीनी—वि० [अ० यक़ीनी] असंदिग्ध।
अव्य०=यक़ीनन।

यकृत—पुं० [सं०√यज्+ऋतिन्, कुत्व] १ पेट में दाहिनी ओर की एक थैली जिसमें पाचन रस रहता है और जिसकी क्रिया से भोजन पचता है। जिगर। तिल्ली। (लीवर) २ एक प्रकार का रोग जिसमें उक्त अंग दूषित होकर बढ़ जाता है। बर्म जिगर। ३ पक्वाशय।

यकृल्लोम—पुं० [सं०] आधुनिक कालपी, कौंच, जालौन आदि के आस-पास के प्रदेश का प्राचीन नाम।

यक्ष—पुं० [सं० यक्ष् (पूजा)+घञ्] १ एक प्रकार की देवयोनि जो कुबेर के गणों में और उनकी निधियों की रक्षक कही गयी है। २. कुबेर।

यक्ष-कर्दम—पुं० [सं० मध्य० स०] कपूर, अगर, कस्तूरी, कंकोल आदि के योग से बननेवाला एक प्राचीन अंगराग।

यक्ष-ग्रह—पुं० [सं० कर्म० स०] पुराणानुसार एक प्रकार का कल्पित ग्रह। २ प्रेत-बाधा।

यक्षण—पुं० [सं० यक्ष्+ल्युट्—अन्] १ पूजन करना। २ भक्षण करना। खाना।

यक्ष-तरु—पुं० [मध्य० स०] वट वृक्ष। बड़ का पेड़।

यक्ष-धूप—पुं० [मध्य० स०] १ एक प्रकार का धूप। २ देवदारु वृक्ष का गोंद।

यक्ष-नायक—पुं० [ष० त०] १ यक्षों के स्वामी, कुबेर। २ जैनों के अनुसार वर्तमान अवसर्पिणी के अर्हत् के चौथे अनुचर का नाम।

यक्ष-पति—पुं० [ष० त०] यक्षों के स्वामी, कुबेर।

यक्ष-पुर—पुं० [ष० त०] कुबेर की राजधानी, अलकापुरी।

यक्ष-राज—पुं० [ष० त०] यक्षों के राजा, कुबेर।

यक्ष-रात्रि—स्त्री० [ष० त०] दीवाली (उत्सव)।

यक्ष-लोक—पुं० [ष० त०] वह लोक जिसमें यक्षों का निवास माना जाता है।

यक्ष-वित्त—वि० [ब० स०] जो धनवान् तो हो पर कुछ भी व्यय न करता हो। कंजूस।

यक्ष-स्थल—पुं० [ष० त०] पुराणानुसार एक तीर्थ का नाम।

यक्षाधिप, यक्षाधिपति—पुं० [यक्ष-अधिप; यक्ष-अधिपति]=यक्षपति।

यक्षावास—पुं० [सं० यक्ष-आवास] वट-वृक्ष।

यक्षिणी—स्त्री० [सं० यक्ष+इनि—ङीप्] १ यक्ष जाति की पत्नी। २ कुबेर की पत्नी। ३ दुर्गा की एक अनुचरी।

यक्षी (क्षिन्)—वि० [सं० यक्ष+इनि] यक्षों की आराधना करनेवाला।
स्त्री०=यक्षिणी।

यक्षु—पुं० [सं०] १ वह जो यज्ञ करता हो। २ प्राचीन वक्षु (आधु-निक बदख्शा) का पुराना नाम। ३ उक्त जनपद का निवासी।

यक्षेंद्र—पुं० [यक्ष-इंद्र, ष० त०] यक्षों के स्वामी, कुबेर।

यक्षेश्वर—पुं० [यक्ष-ईश्वर, ष० त०] यक्षों के स्वामी, कुबेर।

यक्ष्मग्रह—पु० [स० उपमित स०] यक्ष्मा (रोग)।

यक्ष्मघ्नी—स्त्री० [स० यक्ष्मन्√हन् (हिंसा)+टक्—ङीप्] अँगूर। दाख।

यक्ष्मा (क्ष्मन्)—स्त्री० [स०√यक्ष्+मनिन्] क्षयी नामक रोग। दे० 'क्षयी'।

यक्ष्मी (क्ष्मिन्)—वि० [स० यक्ष्मन्+इनि] यक्ष्मा से ग्रस्त।

यख—वि० [फा० यख़] बहुत अधिक ठंढा।
पु० बरफ। हिम।

यख़नी—स्त्री० [फा० यख़्नी] १ आवश्यकता के लिए एकत्र किया हुआ अन्न। २. उबले हुए मांस का रसा जो बहुत अधिक पौष्टिक होता है। ३ तरकारी आदि का रसा। शोरबा।

यगण—पु० [स० ष० त०] छद शास्त्र मे आठ गणो मे से एक। यह एक लघु और दो गुरु (ISS) मात्राओ का होता है। इसका सक्षिप्त रूप 'य' है।

यगानगी—स्त्री० [फा०] १ यगाना होने की अवस्था या भाव। आत्मीयता। २ समीपता। ३. अपने वर्ग मे अकेले और अनुपम होने की अवस्था या भाव।

यगानत—स्त्री०=यगानगी।

यगाना—वि० [फा० यगान] १ जो बेगाना न हो। आत्मीय। २ अपने ही कुल या वश का दूसरा। ३ अकेला। एकाकी। ४ अनुपम। बेजोड।
पु० १. नातेदार। भाई-बद। २ परम आत्मीय या घनिष्ठ-मित्र।

यगूर—पु० [देश०] १ एक प्रकार का बहुत ऊँचा वृक्ष जिसकी लकडी का रग अन्दर से काला निकलता है। सेसी। २ उक्त वृक्ष की लकड़ी।

यग्य†—पु०=यज्ञ।

यच्छ†—पु०=यक्ष।

यच्छिनी*—स्त्री०=यक्षिणी।

यजत—पु० [स० यजत्] १ ऋत्विक। २ ऋग्वेद के एक मत्र के द्रष्टा एक ऋषि।

यजति—पु० [स०√यज् (पूजा)+अति]=यज्ञ।

यजत्र—पु० [स०√यज्+अत्रन्] १ अग्निहोत्री। २. याज्ञिक।

यजन—पु० [स० यज्+ल्युट्—अन] १ वेद-विधि के अनुसार होता और ऋत्विक् आदि के द्वारा काम्य और नैमित्तिक कर्मों का विधिपूर्वक अनुष्ठान करना। यज्ञ करना। २ यज्ञ-भूमि। यज्ञ-स्थल।

यजन-कर्ता (र्तृ)—वि० [स० ष० त०] यज्ञ या हवन करनेवाला।

यजमान—पु० [स०√यज्+शानच्, मुक् आगम] १ यज्ञ करनेवाला व्यक्ति। २ वह व्यक्ति जो किसी ब्राह्मण से यज्ञ-कर्म करवाता हो और उसे दक्षिणा या पुरस्कार देता हो। ३ ब्राह्मण की दृष्टि से वह व्यक्ति जिसके धार्मिक कृत्य वह स्वय करता हो। ४ वह जो किसी ब्राह्मण को भरण-पोषण के लिए अन्न-धन देता हो। ५. शिव की एक मूर्ति।

यजमानता—स्त्री० [स० यजमान+तल्—टाप्] यजमान होने की अवस्था, धर्म या भाव।

यजमान-लोक—पु० [स० ष० त०] वह लोक जिसमें यज्ञ करके मरनेवालो का निवास माना जाता है।

यजमानी—स्त्री० [स० यजमान हिं०+ई (प्रत्य०)] १. यजमान होने की अवस्था, धर्म या भाव। २. यजमानों के यहाँ कर्मकाड आदि कराने तथा उनसे दान-दक्षिणा आदि लेने की ब्राह्मणो की वृत्ति। ३. वह स्थान जहाँ किसी विशेष पुरोहित के यजमान रहते हों।

यजि—पु० [स० यज्+इनि)] वह जो यज्ञ करता हो। यज्ञ करनेवाला।

यजीद—पु० [अ०] उम्मिया खानदान का दूसरा खलीफा जिसने करबला का वह युद्ध कराया था जिसमे इमाम हुसेन शहीद हुए थे।

यजु (स्)—पु० [स०√यज्+उसि] १ बलिदान आदि के समय की जानेवाली प्रार्थना और तत्सम्बन्धी विशिष्ट कृत्य। २ बलिदान और यज्ञ करने के समय कहे जानेवाले गद्य मत्र जिनका पाठ अध्वर्यु करता था और जिनका सग्रह यजुर्वेद मे है। ३ दे० 'यजुर्वेद'।

यजुर्विद—पु० [स० यजुस्√विद् (जानना)+क्विप्, उप० स०] यजुर्वेद का ज्ञाता और पडित।

यजुर्वेद—पु० [स० ष० त० या कर्म० स०] भारतीय आर्यों के चार प्रसिद्ध वेदो मे से दूसरा वेद जिसमे यज्ञ-कर्मों का विस्तृत विवेचन और यज्ञ सबधी गद्य मत्रो का सग्रह है, और इसी लिए जो वेदत्रयी का आधार माना जाता है।

विशेष—यह वेद दो शाखाओ मे विभक्त है—(क) तैत्तिरीय या कृष्ण यजुर्वेद और (ख) वाजसनेयि या शुक्ल यजुर्वेद। पुराणो मे वेद के अधिपति शुक्र और वक्ता वैशम्पायन कहे गये हैं।

यजुर्वेदी (दिन्)—पु० [स० यजुर्वेद+इनि] १ वह जो यजुर्वेद का ज्ञाता हो। २ यजुर्वेद के विधानो का अनुयायी।
वि० यजुर्वेद-सबधी।

यजुष्पति—पु० [स० ष० त०] विष्णु।

यजुष्य—वि० [सं० यजुस्+यत्] यज्ञ-सबधी। यज्ञ का।

यज्ञ—पु० [सं० यज्+नङ्] १ बलिदान और उससे सबध रखनेवाले धार्मिक कृत्य। २ उपासना, पूजा आदि से सबध रखनेवाला कोई धार्मिक कृत्य। जैसे—पच-महायज्ञ। ३ वैदिक काल मे, प्राचीन भारतीय आर्यों का एक प्रसिद्ध धार्मिक कृत्य जो कुछ विशिष्ट उद्देश्यो की सिद्धि के लिए अथवा कुछ विशिष्ट अवसरो पर होता था, और जिसमे मुख्य रूप से हवन होता था, और मागलिक प्रार्थनाएँ करके आचार्य से (जो उन दिनो ब्राह्मण कहलाता था) आशीर्वाद प्राप्त किये जाते थे। क्रतु। मख। याग।

विशेष—आगे चलकर इन यज्ञो के सैकडो भेद और रूप हो गये थे, जिनके साथ अनेक प्रकार के विस्तृत कर्मकाडीय कृत्य भी सबद्ध हो गये थे। इनके लिए बहुत बडे बडे हवनकुड बनने लगे थे, और, कई कई दिनों, बल्कि महीनों तक होने लगे थे। धनवान् या राजा-महाराजा जो बडे-बडे यज्ञ कराते थे, उनमे चार प्रधान ऋत्विज् होते थे। यथा—(क) होता जो प्रार्थनाएँ करके यज्ञ मे भाग लेने के लिए देवताओ को आहूत करता था। (ख) उद्गाता जो यज्ञ-कुड मे सोम की आहुति देने के समय साम-गान करता था। (ग) अध्वर्यु जो वैदिक मत्रो का पाठ करता हुआ यज्ञ सबधी अन्यान्य मुख्य कृत्य करता था और (घ) ब्रह्मा जो सबसे बडा पुरोहित होता था और जो सब प्रकार के विघ्नो से यज्ञ की रक्षा करता था। यज्ञो मे अनेक प्रकार के पशुओ की बलि भी होती थी।

पर आगे चलकर जब लोग बलिदानों की अधिकता से घबरा गये, तब इनका प्रचार धीरे धीरे कम होता गया। आर्यों की ईरानी शाखा में इसी यज्ञ का कुछ परिवर्तित रूप 'यश्न' के नाम से प्रचलित था जिससे आज-कल का जश्न (या जशन) शब्द बना है।
३. आधुनिक धाम्य समाज मे, कोई बड़ा धार्मिक कृत्य। जैसे—ब्राह्मण भोजन, यज्ञोपवीत, विवाह आदि। ४. किसी प्रकार का शुभ अनुष्ठान या काम (यौ० के अन्त मे)। जैसे—वेदयज्ञ=वेदपाठ। ५ विष्णु का एक नाम।

यज्ञ-कर्त्ता—पुं० [सं० ष० त०] यज्ञ करनेवाला। याजक। यजमान।

यज्ञकर्म (न्)—पु० [सं० ष० त०] यज्ञ-सम्बन्धी सब प्रकार के काम या कृत्य।

यज्ञकारी (रिन्)—पुं० [सं० यज्ञ√कृ (करना)+णिनि, उप० स०] यज्ञ करनेवाला।

यज्ञ-काल—पुं० [सं० ष० त०] १. यज्ञ करने का समय। २. यज्ञ करने के लिए उपयुक्त या निर्दिष्ट समय। ३. पूर्णमासी।

यज्ञ-कीलक—पुं० [सं० ष० त०] वह खूँटा जिससे बलि-पशु बाँधा जाता था।

यज्ञ-कुंड—पु० [सं० ष० त०] हवन करने की वेदी या कुंड।

यज्ञ-कोप—पु० [सं० ब० स०] १. वह जो यज्ञ से द्वेष करता हो। २. रावण की सेना का एक राक्षस।

यज्ञ-क्रिया—स्त्री० [सं० ष० त०] १ यज्ञ के काम। २. कर्मकांड।

यज्ञ-त्राता (तृ)—वि० [सं० ष० त०] यज्ञ की रक्षा करनेवाला।
पु० विष्णु।

यज्ञ-दत्तक—पुं० [सं० तृ० त० +कन्] यज्ञ के फल के रूप मे प्राप्त होनेवाला पुत्र।

यज्ञद्रुह्—पु० [सं० यज्ञ√द्रुह +क्विप, उप० स०] राक्षस।

यज्ञ-धर—पु० [सं० ष० त०] विष्णु।

यज्ञ-नेमि—पु० [सं० ष० त०] श्रीकृष्ण।

यज्ञ-पति—पु० [ष० त०] १. विष्णु। २. यज्ञ करानेवाला। यजमान।

यज्ञ-पत्नी—स्त्री० [ष० त०] यज्ञ की स्त्री; दक्षिणा।

यज्ञ-पशु—पुं० [ष० त०] १. वह पशु जो यज्ञ मे बलि दिया जाने को हो। २. घोड़ा। ३ बकरा।

यज्ञ-पात्र—पुं० [ष० त०] काठ आदि के वे पात्र जिनसे हवन आदि किया जाता है।

यज्ञ-पुरुष—पुं० [ष० त०] विष्णु।

यज्ञ-फलद—पुं० [यज्ञ-फल,ष० त०,√दा (देना)+क] यज्ञ का फल देनेवाला, विष्णु।

यज्ञ-भाग—पुं० [ष० त०] १. यज्ञ का अंश, जो देवताओं को दिया जाता है। २. इन्द्र आदि वे देवता जिन्हें उक्त अंश या भाग मिलता है।

यज्ञ-भाजन—पुं० [ष० त०] यज्ञपात्र। (दे०)

यज्ञ-भूमि—स्त्री० [ष० त०] यज्ञ करने के लिए उद्दिष्ट या नियत स्थान।

यज्ञ-भूषण—पुं० [ष० त०] कुश।

यज्ञ-भोक्ता (क्तृ)—पुं० [ष० त०] विष्णु।

यज्ञ-मंडप—पुं० [ष० त०] यज्ञ करने के लिए बनाया हुआ मंडप।

यज्ञ-मंडल—पुं० [ष० त०] वह स्थान जो यज्ञ करने के लिए घेरा गया हो।

यज्ञ-मंदिर—पुं० [ष० त०] यज्ञशाला।

यज्ञमय—पु० [सं० यज्ञ+मयट्] विष्णु।

यज्ञ-यूप—पुं० [ष० त०] दे० 'यज्ञ-कीलक'।

यज्ञ-योग्य—पुं० [स० त०] गूलर का पेड़।

यज्ञ-रस—पुं० [ष० त०] सोम।

यज्ञ-राज—पु० [ष० त०] चंद्रमा।

यज्ञ-वराह—पुं० [मध्य० स०] विष्णु।

यज्ञ-वल्क—पुं० [स०] एक प्राचीन ऋषि जो प्रसिद्ध याज्ञवल्क्य ऋषि के पिता थे।

यज्ञ-वल्ली—स्त्री० ष० त०] सोमलता।

यज्ञ-वाह—पु० [सं० यज्ञ√वह् +अण् , उप० स०] १. यज्ञ करनेवाला। याज्ञिक। २ कार्तिकेय का एक अनुचर।

यज्ञ-वाहन—पुं० [ष० त०] १ ब्राह्मण। २. विष्णु। ३. शिव। ४. यज्ञवाही। याज्ञिक।

यज्ञवाही (हिन्)—वि० [स० यज्ञ√वह् +णिनि, उप० स०] यज्ञ का सब काम करनेवाला।
पुं० याज्ञिक।

यज्ञ-वीर्य—पुं० [ष० त०] विष्णु।

यज्ञ-वृक्ष—पु० [ष० त०] १. वट-वृक्ष। २. विकंकत।

यज्ञ-शत्रु—पुं० [ष० त०] राक्षस।

यज्ञ-शाला—स्त्री० [ष० त०] यज्ञ करने का स्थान। यज्ञमंडप।

यज्ञ-शास्त्र—पु० [मध्य० स०] वह शास्त्र जिसमें यज्ञों और उनके कृत्यों आदि का विवेचन हो। मीमांसा।

यज्ञ-शील—पु० [ब० स०] १. वह जो यज्ञ करता हो। २. ब्राह्मण।

यज्ञ-शूकर—पु०=यज्ञ-वराह (विष्णु)।

यज्ञ-संस्तर—पु० [सं० ष० त०] वह स्थान जहाँ यज्ञ-मंडप बनाया जाय। यज्ञभूमि। यज्ञस्थान।

यज्ञ-सदन—पुं० [ष० त०]=यज्ञशाला।

यज्ञ-साधन—पु० [यज्ञ√साध्+णिच्+ल्यु—अन, उप० स०] १. वह जो यज्ञ की रक्षा करता हो। २. विष्णु।

यज्ञ-सार—पु० [स० त०] गूलर का वृक्ष।

यज्ञ-सूत्र—पु० [मध्य० स०] जनेऊ। यज्ञोपवीत।

यज्ञसेन—पु० [ब० स०] १ विष्णु। २. द्रुपद देश के राजा और द्रौपदी के पिता।

यज्ञ-स्तंभ—पु० [ष० त०] वह खभा जिसमे यज्ञ के समय बलि देने के लिए पशु बाँधा जाता था।

यज्ञ-स्थल—पु० [ष० त०] वह स्थान जहाँ यज्ञ होता हो या हो रहा हो।

यज्ञ-स्थाणु—पु०=यज्ञ-स्तंभ।

यज्ञ-होता (तृ)—पु० [ष० त०] १. यज्ञ मे देवताओ का आवाहन करनेवाला, ऋत्विज्। होता। २. मनु के एक पुत्र का नाम।

यज्ञ-हृदय—पुं० [ष० त०] विष्णु।

यज्ञांग—पु० [यज्ञ-अग, ष० त०] १ यज्ञ की सामग्री। २ विष्णु। ३ गूलर। ४. खदिर। खैर।

यज्ञांगा—स्त्री० [यज्ञ√अग्+अण्—टाप्] सोमलता।

यज्ञागार—पु० [यज्ञ-आगार, ष० त०] यज्ञ-स्थान। यज्ञशाला।

यज्ञाग्नि—स्त्री० [यज्ञ-अग्नि, ष० त०] यज्ञ की अग्नि जो परम पवित्र मानी जाती है।

यज्ञात्मा (त्मन्)—पु० [यज्ञ-आत्मन्, ष० त०] विष्णु।

यज्ञाधिपति—पु० [यज्ञ-अधिपति, ष० त०] यज्ञ के स्वामी, विष्णु।

यज्ञारि—पु० [यज्ञ-अरि, ष० त०] १. शिव। २ राक्षस।

यज्ञिक—पु० [स० यज्ञदत्त+ठन्—इक, दत्त शब्द का लोप] १ यज्ञ के प्रसाद स्वरूप प्राप्त पुत्र। २ पलास का पेड।

यज्ञीय—वि० [स० यज्ञ+छ—ईय] १ यज्ञ-सबधी। यज्ञ का। २ यज्ञ मे होनेवाला।

पु० गूलर का पेड।

यज्ञेश्वर—पु० [यज्ञ-ईश्वर, ष० त०] विष्णु।

यज्ञोपवीत—पु० [यज्ञ-उपवीत, मध्य० स०] १ हिन्दुओ विशेषत ब्राह्मणो, क्षत्रियो और वैश्यो का एक सस्कार जिसमे बालक को पहले-पहल तीन तारोवाला मण्डलाकार सूत पहनाया जाता है। उपनयन। जनेऊ। व्रत-बन्ध। २ तीन तागो या तारोवाला वह सूत्र जो उक्त अवसर पर बालक को पहले-पहल पहनाया जाता है। जनेऊ। यज्ञ-सूत्र। ३ बालक को उक्त सूत्र पहनाने के समय होनेवाला उत्सव तथा कृत्य।

यज्यु—पु० [स०√यज् (पूजा आदि)+युच्] १ यजुर्वेदी ब्राह्मण। २ यजमान।

वि० १ यज्ञ करनेवाला। २ पवित्र। पुनीत।

यज्वा (ज्वन्)—पु० [स० यज्+ड्वनिप्] वैदिक ऋचाओ के अनुसार यज्ञ करनेवाला।

यडर—पु० [देश०] एक प्रकार का पक्षी।

यत्—सर्व० [स०√यज्+अदि, डित्, डित्वाट्टिलोप] जो।

यत—वि० [स० यम् (नियमन्)+क्त] १ नियन्त्रित। २ नियमित। ३ जिसका दमन हुआ हो। ४ रोका हुआ।

यतन—पु० [सं० यत् (प्रयत्न)+ल्युट्—अन] [वि० यतनीय] यत्न करने की क्रिया या भाव।

प०=यत्न।

यतनीय—वि० [स०√यत्+अनीयर] जिसके सम्बन्ध मे यत्न करना आवश्यक हो अथवा यत्न किया जाने को हो।

यतमान—वि० [स०√यत्+शानच्] १ यत्न करता हुआ। कोशिश मे लगा हुआ। २ जो अनुचित विषयो का त्याग करके शुभ कामों की ओर प्रवृत्त होने का प्रयत्न करता हो।

यत-व्रत—वि० [स० ब० स०] सयम से रहनेवाला। सयमी।

यतात्मा (त्मन्)—वि० [स० यत-आत्मन्, ब० स०] यत-व्रत। सयमी।

यति—पु० [स०√यत्+इन्] १ वह व्यक्ति जिसने अपनी इन्द्रियो तथा मनोविकारो को वश मे कर लिया हो। फलतः जो संन्यास धारण-कर सासारिक प्रपचो से दूर रहता हो तथा ईश्वर का भजन करता हो। २ ब्रह्मचारी। ३. विष्णु। ४ भागवत के अनुसार ब्रह्मा के एक पुत्र का नाम। ५ नहुष का एक पुत्र। ६ छप्पय छन्द के ६६वें भेद का नाम।

स्त्री० [स० यम्+क्तिन्+ङीप्] १. रोक। रुकावट। २. मनो-विकार। ३. सन्धि। ४. विधवा। स्त्री। ५ शालक राग का एक भेद। ६ मृदग का एक प्रकार का प्रबन्ध या बोल। ७ छन्दःशास्त्र के अनुसार कविता या पद्य के चरणो में वह स्थान जहाँ पढते समय, उनकी लय ठीक रखने के लिए, थोडा सा विश्राम होता है। विश्राम। विराम।

यति-चांद्रायण—पु० [स० ष० त०] यतियो के लिए विहित एक प्रकार का चाद्रायण व्रत।

यतित्व—पु० [स० यति+त्व] यति होने की अवस्था, धर्म या भाव।

यति-धर्म—पु० [स० ष० त०] सन्यास।

यतिनी—स्त्री० [स० यत+इनि+ङीप्] १ सन्यासिनी। २ विधवा।

यति-भंग—पु० [स० ष० त०] [वि० यति-भ्रष्ट] काव्य का लय सम्बन्धी एक दोष जो उस समय माना जाता है जब पढते समय किसी उद्दिष्ट या नियत स्थान पर विश्राम नही होता, बल्कि उसके कुछ पहले या पीछे होता है।

यति-भ्रष्ट—वि० [स० ब० स०] ऐसा (चरण या छन्द) जिसमे यति अपने उपयुक्त स्थान पर न पडकर कुछ आगे या पीछे पडी हो। यति-भग दोष से युक्त (छद)।

यती (तिन्)—पु० [स० यत+इनि] [स्त्री० यतिनी] १. यति। सन्यासी। २ जितेन्द्रिय। ३ श्वेताम्बर जैन साधु।

यतीम—पु० [अ०] १. ऐसा बालक जिसके माता पिता मर गये हो। अनाथ। २ ऐसा बडा मोती जो सीप मे एक ही होता हो। ३ अनु-पम और बहुमूल्य रत्न।

यतीम-खाना—पु० [अ० यतीम+फा० खान] वह स्थान जहाँ यतीम अर्थात् अनाथ बालको का लालन-पालन होता है। अनाथालय।

यतीमी—स्त्री० [अ०] यतीम होने की अवस्था या भाव। अनाथता।

यतुका—पु० [स० यत्+उक+टाप्] चकवँड का पौधा। चक्रमर्द।

यतेंद्रिय—वि० [स० यत-इद्रिय, ब० स०] जितेद्रिय।

यत्किंचित्—अव्य० [स० द्वन्द्व स०] थोडा सा। जरा सा। कुछ।

यत्न—पु० [स० यत्+नङ] १. किसी काम या बात के लिए किया जानेवाला उद्योग। कोशिश। प्रयत्न। २ किसी चीज को अच्छी तरह और सुरक्षित रखने की क्रिया या भाव। ३. उपाय। युक्ति। तदबीर। ४ रोग आदि दूर करने के लिए किया जानवाला इलाज या उपचार। चिकित्सा। ५ कठिनता। दिक्कत। ६ न्यायशास्त्र मे रूप आदि २४ गुणो के अन्तर्गत एक गुण जो तीन प्रकार का कहा गया है। यथा—प्रवृत्ति, निवृत्ति और जीवन योनि। ७ साहित्य मे रूपक की पाँच अवस्थाओ मे से दूसरी अवस्था, जिसमे फल-प्राप्ति के लिए अच्छी तरह और जल्दी कुछ काम किये जाते हैं, और विघ्न-बाधाओं की चिंता छोड़ दी जाती है। ८ व्याकरण मे स्वरो तथा व्यजनो का उच्चारण करते समय किया जानेवाला प्रयत्न जो अघोष और घोष दो प्रकार का होता है।

यत्नवान् (वत्)—वि० [स० यत्न+मतुप्] [स्त्री० यत्नवती] यत्न मे लगा हुआ। यत्न करनेवाला।

यत्र—अव्य० [सं० यद्+त्रल्] १. जिस जगह। जहाँ। २. जिस समय। जब। ३. जब यह बात है तो। इस कारण से। यतः।
पुं०=सत्र (यज्ञ)।

यत्र-तत्र—अव्य० [सं० द्वन्द्व० स०] १. जहाँ-तहाँ। इधर-उधर। २. कुछ यहाँ, कुछ वहाँ। ३. यहाँ-वहाँ सभी जगह। अनेक स्थानो पर। जगह-जगह।

यत्रु—स्त्री० [सं० जत्रु] छाती के ऊपर और गले के नीचे की मंडलाकार हड्डी। हँसली।

यथांश—अव्य० [सं० यथा-अंश, अव्य० स०] प्रत्येक के अंश या भाग के अनुसार। जिसका जितना अंश हो, उसे उतना।
पुं० किसी के लिए निश्चित किया हुआ अंश या हिस्सा जो उसे दिया जाय या उससे लिया जाय। (कोटा)

यथा—अव्य० [सं० यद् (प्रकार)+थाल्] एक अव्यय जिसका प्रयोग नीचे लिखे आशय या भाव प्रकट करने के लिए होता है—(क) जिस प्रकार या जैसे कहा या बतलाया गया हो, उस प्रकार या वैसे। जैसे—यथा-विधि। (ख) जिसका उल्लेख हुआ हो, उसके अनुसार। जैसे—यथा-मति। (ग) उदाहरण के रूप मे। जैसे—यथा विश्वामित्र। (घ) नीचे लिखे अनुसार या निम्न क्रम से। जैसे—यजुर्वेद की दो शाखाएँ हैं, यथा—कृष्ण यजुर्वेद और शुक्ल यजुर्वेद।
विशेष—कुछ अवस्थाओ मे इसके साथ इसका नित्य संबंधी 'तथा' आता है। जैसे—यथा नाम तथा गुण।

यथाकाम—पुं० [सं० अव्य० स०] १. मनमाना आचरण। २ यथाकामी।

यथाकामी (मिन्)—पुं० [सं० यथा√कम् (चाहना)+णिनि] मनमाना आचरण करनेवाला। स्वेच्छाचारी।

यथाकारी (रिन्)—पुं० [सं० यथा√कृ (करना)+णिनि] मनमाना काम करनेवाला। स्वेच्छाचारी।

यथा-कृत—वि० [सं० सुप्सुपा स०] जैसा आरंभ मे बना हो, वैसा ही। जैसे—यथाकृत वस्त्र=अर्थात् बिना सीया हुआ कपड़ा।

यथा-क्रम—अव्य० [सं० अव्य० स०] ठीक और निश्चित क्रम से। क्रमानुसार।

यथाख्यात चरित्र—पुं० [सं० यथा-ख्यात अव्य० स०, यथाख्यात-चरित्र कर्म० स०] ऐसे साधुओ का चरित्र जिन्होंने सब कषायों (काम, क्रोधादि पातकों) का क्षय कर दिया हो। (जैन)

यथाजात—पुं० [सं० सुप्सुपा स०] जो अब भी वैसा ही (अज्ञानी) हो, जैसा जन्म के समय था; अर्थात् बहुत बड़ा ना-समझ, मूर्ख या नीच।

यथा-तथ—वि० [सं० अव्य० स०] १. जैसा ही, वैसा। २ ऐसा वैसा, निकम्मा, रद्दी या वाहियात।

यथा-तथ शैली—स्त्री० [सं० कर्म० स०] काव्य, चित्रकला, मूर्तिकला आदि में वह शैली जिसमे हर एक चीज ज्यों की त्यों और अपने मूल रूप मे अंकित या चित्रित की अथवा गढ़ी जाती है।

यथा-तथा—अव्य० [सं० द्व० स०] जैसे का तैसे।

यथातथ्य—वि० [सं० अव्य० स०] जैसे का तैसा। ज्यों का त्यों। हू-बहू।

यथा-नियम—अव्य० [सं० अव्य० स०] नियमानुसार।

यथानुक्रम—अव्य० [सं० यथा-अनुक्रम, अव्य० स०] यथा-क्रम।

यथापूर्व—अव्य० [सं० अव्य० स०] १. जैसा पहले था, वैसा ही। पहले की तरह। पूर्ववत्। २. ज्यों का त्यों।

यथापूर्व स्थिति—स्त्री० [सं०] किसी बात या विषय की वह स्थिति जो किसी विशिष्ट समय में वर्तमान रही हो अथवा प्रस्तुत समय मे वर्तमान हो। (स्टेटस को)

यथाभाग—अव्य० [सं० अव्य० स०] १ अपने अपने अंश या भाग के अनुसार जितना चाहिए, उतना। हिस्से के मुताबिक। २. यथोचित।

यथा-मति—अव्य० [सं० अव्य० स०] मति अर्थात् बुद्धि के अनुसार।

यथा-मूल्य—अव्य० [सं०] एक पद जिसका प्रयोग आयात और निर्यात पर लगानेवाले करो के संबंध मे उस दशा मे होता है जब कर-निर्धारण उन वस्तुओं के मूल्य के आधार पर होता है। (एड-वैलोरम)

यथा-योग्य—अव्य० [सं० अव्य० स०] जैसा चाहिए, ठीक वैसा। उपयुक्त। यथोचित। मुनासिब।
पुं० पत्र-व्यवहार मे इस आशय का सूचक पद कि बड़ो को हमारा नमस्कार, बराबर वालो को प्रेमपूर्ण अभिवादन और छोटों को आशीर्वाद।

यथारथ† —अव्य०=यथार्थ।

यथारुचि—अव्य० [सं० अव्य० स०] रुचि के अनुसार।

यथार्थ—अव्य० [सं० यथा-अर्थ, अव्य० स०] १. जो अपने अर्थ (आशय, उद्देश्य, भाव आदि) आदि के ठीक अनुरूप हो। ठीक। वाजिब। उचित। २ जैसा होना चाहिए, ठीक वैसा।
विशेष—यथार्थ और वास्तविक का अन्तर जानने के लिए दे० 'वास्तविक' का विशेष।
३ सत्यपूर्वक।

यथार्थतः (तस्)—अव्य० [सं० यथार्थ+तस्] १ अपने यथार्थ रूप में। वास्तव मे। वस्तुतः। सचमुच। २ दे० 'वस्तुतः'।

यथार्थता—स्त्री० [सं० यथार्थ+तल्—टाप्] १ यथार्थ होने की अवस्था या भाव। २ सचाई। सत्यता। २ दे० 'वास्तविकता'।

यथार्थवाद—पुं० [सं० ष० त०] १. दार्शनिक क्षेत्र मे, प्लेटो द्वारा प्रवर्तित यह मत कि किसी पद से जिस अमूर्त या मूर्त बात या वस्तु का बोध होता है, वह स्वतंत्र सत्तावाली इकाई होती है। २. आज-कल साहित्यिक क्षेत्र में (आदर्शवाद से भिन्न) यह मत या सिद्धान्त कि प्रत्येक घटना या बात अपने यथार्थ रूप मे अंकित या चित्रित की जानी चाहिए। (रियालिज्म)
विशेष—इसमे आदर्शों का ध्यान छोड़कर उसी रूप मे कोई चीज या बात लोगों के सामने रखी जाती है, जिस रूप मे वह नित्य या प्रायः सबके सामने आती रहती है। इसमे कर्ता न तो अपनी ओर से टीका-टिप्पणी करता है, न अपना दृष्टिकोण बतलाता है और निष्कर्ष निकालने का काम दर्शकों या पाठको पर छोड़ देता है।

यथार्थवादी (दिन्)—वि० [सं० यथार्थवाद+इनि] १ यथार्थवाद से संबंध रखनेवाला। २. यथार्थवाद के अनुरूप होनेवाला। ३. सत्यवादी।

पुं० यथार्थवाद के सिद्धान्तो का समर्थक।

यथालब्ध—अ० य०[सं० अव्य० स०] जितना प्राप्त हो, उसी के अनुसार।

पुं० जैनियो के अनुसार, जो कुछ मिल जाय उसी से सतुष्ट रहने की वृत्ति।

यथालाभ—अव्य० [सं० अव्य० स०] जो कुछ मिले, उसी के अनुसार।

यथावत्—अव्य० [सं० यथा+वति] १ ज्यो का त्यो। जैसे का तैसा। २ जैसा होना चाहिए, वैसा। अच्छी या पूरी तरह से।

यथावसर—अव्य० [सं० यथा-अवसर] अवसर के अनुसार।

यथावस्थित—अव्य० [सं० यथा-अवस्थित, अव्य० स०] १ जैसा था, वैसा ही। २ सत्य। ३ अचल। स्थिर।

यथाविधि—अव्य० [सं० अव्य० स०] निश्चित की अथवा बतलाई हुई विधि के अनुसार। विधिपूर्वक।

यथाविहित—अव्य० [सं० अव्य० स०] विधान या विधि के अनुसार।

यथा-शक्ति—अव्य० [सं० अव्य० स०] शक्ति के अनुसार। भरकस।

यथा-शक्य—अव्य० [सं० अव्य० स०] शक्ति के अनुसार। भरसक।

यथा-शास्त्र—अव्य० [सं० अव्य० स०] जो कुछ शास्त्रो मे बतलाया गया हो, उसी के अनुसार। शास्त्रो के अनुकूल या मुताबिक।

यथासंख्य—पुं० [सं० अव्य० स०] क्रम नामक अलकार का दूसरा नाम।

यथा-संभव—अव्य० [सं० अव्य० स०] जहाँ तक या जितना संभव हो।

यथा-समय—अव्य० [सं० अव्य० स०] १. ठीक या नियत समय आने पर। २ जब जैसा समय हो, तब उसके अनुसार।

यथा-साध्य—अव्य० [सं० अव्य० स०] यथाशक्ति। भरसक।

यथा-सूत्र—अव्य० [सं० अव्य० स०] जहाँ से सूत्र चलता हो, वहाँ से। प्रारभ से। शुरू से।

यथा-स्थान—अव्य० [सं० अव्य० स०] ठीक जगह पर। अपने उचित या उपयुक्त स्थान पर। ठीक जगह पर।

यथा-स्थित—वि० [सं०] [भाव० यथास्थिति] जिस रूप या स्थिति मे अब तक चला आ रहा हो, और अब तक चल रहा हो।

यथा-स्थिति—स्त्री० दे० 'यथापूर्व स्थिति'।

अव्य० [सं० अव्य० स०] जब जैसी स्थिति हो तब उसी के अनुसार।

यथेच्छ—अव्य० [सं० यथा-इच्छा, अव्य० स०] १. जितना या जैसा इच्छित या अभीष्ट हो, उतना या वैसा। २ इच्छा के अनुसार। मनमाने ढंग से।

यथेच्छाचार—पुं० [सं० यथेच्छ-आचार, कर्म० स०] जो जी मे आवे, वही करना। मनमाना काम करना। स्वेच्छाचार।

यथेच्छाचारी (रिन्)—वि० [सं० यथेच्छाचार+इनि] १. मनमाना आचार करनेवाला। यथेच्छाचार करनेवाला। २. मनमौजी।

यथेप्सित—वि० [सं० यथेष्ट] जितना या जैसा चाहा गया हो। मन-चाहा।

यथेष्ट—वि० [सं० यथा-इष्ट, अव्य० स०] [भाव० यथेष्टता] १. जितना इष्ट या अभीष्ट हो। २. उतना, जितने से काम अच्छी तरह चल सकता हो।

विशेष—पर्याप्त की तरह इसका प्रयोग भी केवल ऐसी चीजों के संबंध मे होना चाहिए जो अभीष्ट या प्रिय हों। जैसे—यथेष्ट भोजन। अन-भीष्ट या अप्रिय बातो के संबंध मे इसका प्रयोग ठीक नहीं जान पड़ता। यह कहना ठीक नही होगा—मुझे यथेष्ट कष्ट (या चिंता) है।

यथेष्टाचरण—पुं० [सं० यथेष्ट-आचरण, कर्म० स०] मनमाना आचरण। स्वेच्छाचार।

यथेष्टाचार—पुं० =यथेष्टाचरण।

यथेष्टाचारी (रिन्)—पुं० [सं० यथेष्ट-आ√चर (गति)+णिनि] मनमाना आचरण या व्यवहार करनेवाला।

यथोक्त—अव्य० [सं० यथा-उक्त, अव्य० स०] कहे हुए के अनुसार। जैसा कहा जा चुका हो, वैसे।

यथोक्तकारी (रिन्)—वि० [सं० यथोक्त√कृ (करना)+णिनि] १ शास्त्रो मे जो कुछ कहा गया हो, वही करनेवाला। २ आज्ञाकारी।

यथोचित—वि० [सं० यथा-उचित, अव्य० स०] जैसा चाहिए, वैसा। जैसा उचित या मुनासिब हो, वैसा।

यथोपयुक्त—वि० [सं० यथा-उपयुक्त, अव्य० स०] =यथायोग्य।

यदपि†—अव्य० =यद्यपि।

यदा—अव्य० [सं० यद्+दा] १ जिस समय। जिस वक्त। जब। २ जहाँ।

यदा-कदा—अव्य० [सं०] जब-तब। कभी-कभी।

यदि—अव्य० [सं० यद्+णिच्+इन्—णिलोप] अमुक अवस्था हो तो। अगर। जो।

यदिच, यदिचेत्—अव्य० [सं० द्व० स०] यद्यपि। अगरचे।

यदीय—वि० [सं० यद्+छ—ईय] जिसका।

यदु—पुं० [सं०√यज्+उ, पृषो० जस्य द.] १ देवयानी के गर्भ से उत्पन्न राजा ययाति का सबसे बडा पुत्र। २ एक प्राचीन राज्य जो मथुरा के समीप था। ३ यदुवंश।

यदु-नंदन—पुं० [सं० ष० त०] श्रीकृष्णचन्द्र।

यदु-नाथ—पुं० [सं० ष० त०] श्रीकृष्ण।

यदु-पति—पुं० [सं० ष० त०] श्रीकृष्ण।

यदु-भूप—पुं०[सं० ष० त०] श्रीकृष्ण।

यदुराई—पुं० [सं० यदु+हिं० राइ=राजा] श्रीकृष्ण।

यदुराज, यदुराट्—पुं० [सं० ष० त०] यदुकुल के राजा श्रीकृष्ण।

यदु-वंश—पुं० [सं० ष० त०] यदु का वंश।

यदुवंशज—पुं० [सं० यदुवंश√जन् (उत्पत्ति)+ड] श्रीकृष्ण।

यदुवंश मणि—पुं० [सं० ष० त०] श्रीकृष्णचन्द्र।

यदुवंशी (शिन्)—वि० [सं० यदुवंश+इनि] जिसने यदुवंश मे जन्म लिया हो।

पुं० श्रीकृष्ण।

यदु-वर—पुं० [सं० स० त०] श्रीकृष्ण।

यदु-वीर—पुं० [सं० ष० त०] श्रीकृष्ण।

यदूत्तम—पुं० [सं० यदु-उत्तम, स० त०] श्रीकृष्ण।

यदृच्छया—अव्य० [सं० यदृच्छा का तृतीयान्त रूप] १ अकस्मात्। अचानक। २ इत्तफाक से। दैवयोग से। ३ मनमाने ढंग से।

यदृच्छयाभिज्ञ—पुं० [सं० यदृच्छया-अभिज्ञ, व्यस्त पद या अलुक् स०

स्मृतियों के अनुसार कृतसाक्षी के पाँच भेदों में से एक। वह साक्षी जो घटना के समय आप से आप या अकस्मात् आ गया हो।

यदृच्छा—स्त्री० [सं० यद्√ऋच्छ+अ—टाप्] १. केवल अपनी इच्छा के अनुसार किया जानेवाला व्यवहार। स्वेच्छाचरण। मनमानापन। २. आकस्मिक संयोग। इत्तफाक।

यद्यपि—अव्य० [सं० यदि-अपि, द्वन्द्व स०] यदि ऐसा है भी। अगर ऐसा है भी।

विशेष—इसके साथ प्राय: इसका नित्य-संबंधी 'तथापि' भी प्रयुक्त होता है।

यद्वातद्वा—अव्य० [सं० व्यस्त पद] १. जब-तब। २. कभी-कभी। ३. जैसे-तैसे। किसी प्रकार।

यम—वि० [सं०√यम् (नियंत्रण करना)+अच्] जुड़वाँ।

पु० १. जुड़वाँ बच्चे। यमल। २. उक्त के आधार पर दो की संख्या। ३. रोक। नियंत्रण। ४. अपने ऊपर किया जानेवाला नियंत्रण। ५ कोई बहुत बड़ा धार्मिक या नैतिक कर्तव्य। ६. भारतीय आर्यों के एक प्रसिद्ध देवता जो सूर्य के पुत्र तथा दक्षिण दिशा के दिक्पाल कहे गये हैं और आज-कल मृत्यु के देवता माने जाते हैं। काल। कृतान्त। ७. चित्त को धर्म मे स्थिर रखनेवाले कर्मों का साधन। ८ कौआ। ९ शनि। १०. विष्णु। ११ वायु।

यमक—पुं० [सं० यम√कै (प्राप्ति)+क] साहित्य मे एक शब्दालंकार जो उस समय माना जाता है जब किसी चरण में एक ही शब्द दो या अधिक बार आता है और हर बार अलग-अलग अर्थ मे आता है। जैसे—कनक कनक ते सौ गुनी मादकता अधिकाय।—बिहारी।

यमकात, यमकातर—पु० [सं० यम+हिं कातर] १. यम का छुरा या खाँड़ा। २. एक प्रकार की तलवार।

यम-कीट—पु० [सं० मध्य० स०] केंचुआ।

यम-घंट—पुं० [सं० यम√घट् (शब्द करना)+णिच् (स्वार्थ)+अण्] १ फलित ज्योतिष मे, एक प्रकार का दुष्ट योग जो रविवार को मघा या पूर्वा फाल्गुनी, सोमवार को पुष्य या श्लेषा, मंगलवार को ज्येष्ठा, अनुराधा, भरणी या अश्विनी, बुधवार को हस्त या आर्द्रा, बृहस्पति को पूर्वाषाढ़ा, रेवती या उत्तराभाद्रपद, शुक्र को स्वाती या रोहिणी और शनिवार को शतभिषा या श्रवण नक्षत्र के पड़ने पर माना जाता है। २ कार्तिक शुक्ला प्रतिपदा।

यम-चक्र—पुं० [सं० ष० त०] यमराज का शस्त्र।

यमज—वि० [सं० यम√जन् (उत्पत्ति)+ड] जुड़वाँ। यमल।

पुं० १. जुड़वाँ बच्चे। २ ऐसा घोड़ा जिसका एक ओर का अंग हीन और दुर्बल हो और दूसरी ओर का वही अंग ठीक हो। ३. अश्विनीकुमार।

यमजित्—वि० [सं० यम√जि (जय)+क्विप्, तुक् आगम] मृत्यु को जीतनेवाला। मृत्युंजय।

पु० शिव।

यमत्व—पु० [सं० यम+त्व] यम का धर्म, पद या भाव।

यमदंड—पु० [सं० ष० त०] १. यम के हाथ मे रहनेवाला डंडा। २. वह दंड जो यम से प्राप्त होता है।

यम-दंष्ट्रा—स्त्री० [सं० ष० त०] १. यम की दाढ़। २. वैद्यक के अनुसार आश्विन, कार्तिक और अगहन के लगभग का कुछ विशिष्ट काल, जिसमे रोग और मृत्यु आदि का विशेष भय रहता है।

यमदग्नि—पु० [सं० जमदग्नि]=जमदग्नि (परशुराम के पिता)।

यमदुतिया†—स्त्री०=यम-द्वितीया (भैया-दूज)।

यम-दूत—पुं० [सं० ष० त०] १. यमराज का दूत। २. कौआ। ३. नौ समिधों मे से एक।

यमदूतक—पु० [सं० यमदूत+कन्] १ यम का दूत। २. कौआ।

यम-दूतिका—स्त्री० [सं० ष० त०] इमली।

यम-देवता—स्त्री० [सं० ब० स०] भरणी नक्षत्र, जिसके देवता यम माने जाते है।

यम-द्रुम—पु० [सं० उपमित स०] सेमर का पेड़। (वृक्ष)।

यम-द्वितीया—स्त्री० [सं० मध्य० स०] कार्तिक शुक्ला द्वितीया। भाई-दूज।

यम-धार—पु० [सं० ब० स०] एक तरह की दुधारी तलवार।

यम-नक्षत्र—पु० [सं० मध्य० स०] भरणी नक्षत्र, जिसके देवता यम माने जाते हैं।

यमनाह*—पुं० [सं० यमनाथ, प्रा० जमनाह] यमों के स्वामी, धर्मराज।

यमनिका—स्त्री०=यवनिका (रंगमंच का परदा)।

यमनी—वि० [अ० यमन] यमन देश-संबंधी।

पु० १ यमन देश का निवासी। २. यमन देश की कृति या वस्तु।

यम-पुर—पुं० [सं० ष० त०] यम के रहने का स्थान। यमलोक।

मुहा०—(किसी को) यमपुर पहुँचाना=मार डालना। प्राण ले लेना।

यम-पुरी—स्त्री० [सं० ष० त०] यमलोक। यमपुर।

यम-पुरुष—पु० [सं० कर्म० स०] १. यमराज। २ यम के दूत।

यम-प्रिय—पु० [सं० ष० त०] वट (वृक्ष)।

यम-भगिनी—स्त्री० [सं० ष० त०] यमुना नदी।

यम-यातना—स्त्री० [सं० मध्य० स०] पुराणानुसार मरने के समय यम के दूतों की दी हुई पीड़ा।

यम-रथ—पुं० [सं० ष० त०] यम की सवारी, भैंसा।

यम-राज—पु० [सं० कर्म० स०, टच् प्रत्यय] यमों के राजा धर्मराज, जो प्राणी के मरने के उपरान्त उसके कर्मों का विचार कर उसे दंड अथवा शुभ फल देते है। (पुराणों में इनकी संख्या १४ मानी गई है।)

यम-राज्य, यम-राष्ट्र—पु० [सं० ष० त०] यमलोक।

यमल—वि० [सं० यम√ला (आदान)+क] जुड़वाँ। युग्म।

पुं० ऐसी दो सन्तानें जो एक साथ उत्पन्न हुई हों।

यमलार्जुन—पु० [सं० यमल-अर्जुन, कर्म० स०] कुबेर के नलकूबर और मणिग्रीव नामक दोनो पुत्र जो शाप वश अर्जुन वृक्ष हो गए थे और जिन्हें श्रीकृष्ण ने शाप से मुक्त किया था।

यमली—स्त्री० [सं० यमल+ङीप्] १ एक मे मिली हुई दो चीजें। जोड़। जोड़ी। २. स्त्रियो के घाघरे और चोली की जोड़ी।

यम-लोक—पु० [सं० ष० त०] १. वह लोक जहाँ मरने के उपरांत मनुष्य जाते हैं। यमपुरी। २ नरक।

यम-वाहन—पु० [सं० ष० त०] यम की सवारी, भैंसा।

यम-व्रत—पु० [सं० ष० त०] राजा का धर्म जिसके अनुसार उसे यमराज

की भाँति निष्पक्ष होकर सब को दड देना चाहिए। राजा का दड-नियम।

यम-सदन—पु० [स० ष० त०] यमपुर।

यमसू—पु० [स० यम√सू (प्रसूति)+क्विप्] सूर्य।
वि० स्त्री० जिसे एक साथ दो सन्ताने हुई हों।

यमहंता (तृ)—पु० [स० ष० त०] काल का नाश करनेवाले, शिव।

यमांतक—पु० [स० यम-अतक, ष० त०] शिव।

यमानिका—स्त्री० [स० यमानी+क+टाप्] अजवायन।

यमानी—स्त्री० [स० यम्+ल्युट्—अन, पृषा० सिद्धि] अजवायन।

यमानुजा—स्त्री० [स० यम-अनुजा, ष० त०] यमराज की छोटी बहन, यमुना।

यमारि—पु० [स० यम-अरि, ष० त०] विष्णु।

यमालय—पु० [स० यम-आलय, ष० त०]=यमपुर।

यमित—भू० कृ० [स० यम] १ सयत। २ दबाया हुआ। ३ बँधा हुआ।

यमी—स्त्री० [स० यम+ङीष्] यम की बहन, यमुना (नदी)। (पुराण)
पु० यम, नियम आदि का पालन करनेवाला व्यक्ति। सयमी।

यमुना—स्त्री० [स० यम्+उनन्+टाप्] १ दुर्गा। २ यम की बहन यमी जो बाद मे नदी के रूप मे अवतरित हुई थी। (पुराण) ३ उत्तर भारत की एक प्रसिद्ध बडी नदी जो हिमालय के यमुनोत्तरी नामक स्थान से निकलकर प्रयाग के पास गगा मे मिलती है।

यमुना-कल्याणी—स्त्री० [स० उपमित स०] सगीत मे कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

यमुनाभिद्—पु० [स० यमुना√भिद् (विदारण)√क्विप्] कृष्ण के भाई बलराम जिन्होंने अपने हल से यमुना के दो भाग किये थे।

यमुनोत्तरी—स्त्री० [स० यमुनोत्तर] हिमालय मे गढवाल के पास का एक पर्वत जिससे यमुना नदी निकली है।

यमेश—पु० [स० यम-ईश, ब० स०] भरणी नक्षत्र।

यमेश्वर—पु० [स० यम-ईश्वर, ष० त०] शिव।

ययाति—पु० [स०] १. राजा नहुष के पुत्र तथा राजा पुरु के पिता जिनका विवाह शुक्राचार्य की कन्या देवयानी के साथ हुआ था। शुक्राचार्य द्वारा अभिशप्त होने पर इन्हे अकालिक वृद्धावस्था प्राप्त हुई थी। बाद मे इन्होने अपनी वृद्धावस्था अपने पुत्र पुरु को देकर उससे उसका यौवन लिया था और इस प्रकार १००० वर्षों तक सुख-भोग किया था। २ लाक्षणिक अर्थ मे, ऐसा व्यक्ति जो शरीर से वृद्ध परन्तु मन से युवा हो।

ययावर—पु०=यायावर।

ययी (यिन्)—पु० [स०√या+ई, द्वित्व] १ शिव। २ किसी यज्ञ विशेषत अश्वमेध यज्ञ मे बलि चढाया जानेवाला घोडा। ३ घोडा। ४ मार्ग। पथ। रास्ता। ५ बादल।

ययु—पु० [स० या+उ, द्वित्व] ययी (घोडा)।

यरकान—पु० [अ० यरकान] कमल (रोग)।

यरकानी—पु० [अ० यरकानी] कमल रोग से ग्रस्त व्यक्ति।

यलधीस*—पु० [स० इलाधीश] राजा। (डिं०)

यलनाथ*—पु०=यलधीस (राजा)।

यला—स्त्री० [स० इला] पृथ्वी। (डिं०)
स्त्री० =एला (इलायची)।

यलाइंद—पु० [स० इला-इद्र] राजा। (डिं०)

यलापत—पु० [स० इला+पति] राजा। (डिं०)

यव—पु० [स०√यु (मिश्रण)+अप्] १ जौ नामक एक प्रसिद्ध अन्न जिसका पिसान, सत्तू आदि मनुष्य खाते हैं। २ उक्त अन्न का पौधा। ३ प्राचीन काल की एक तौल जो जौ के एक दाने अथवा सरसों के बारह दानो के बराबर होती थी। ४ लबाई की एक नाप जो एक इच की एक तिहाई होती है। ५ सामुद्रिक मे हथेली आदि मे होनेवाला एक शुभ लक्षण जो जौ के दाने की आकृति का होता है। ६ कोई ऐसी वस्तु जो दोनों ओर उन्नतोदर हो।

यवक—पु० [स० यव+कन्] जौ।

यवक्य—वि० [स० यवक+यत्] (खेत) जो जौ की बोआई के लिए उपयुक्त हो।

यव-क्रीत—पु० [स० तृ० त०] भरद्वाज के पुत्र एक ऋषि।

यव-क्षार—पु० [मध्य० स०] जवाखार। (दे०)

यव-चतुर्थी—स्त्री० [मध्य० स०] वैशाख शुक्ला-चतुर्थी।

यवज—पु० [स० यव√जन् (उत्पत्ति)+ड] १ जवाखार। २. गेहूँ का पौधा। ३. अजवायन।
वि० यव से उत्पन्न या प्राप्त होनेवाला।

यव-तिक्ता—स्त्री० [उपमित स०] शखिनी (लता)।

यव-दोष—पु० [स० ष० त०] कुछ रत्नो मे होनेवाला जौ के आकार का चिह्न जिसकी गिनती दोषों मे होती है।

यव-द्वीप—पु० [मध्य० स०] जावा (द्वीप)।

यवन—पु० [स०√यु+युच्] [स्त्री० यवनी] १ वेग। तेजी। २. तेज चलनेवाला घोडा। ३ प्राचीन भारत मे यूनान से आये हुए लोगो की सज्ञा। ४ परवर्ती भारत मे मुसलमानों की सज्ञा। ५ काल-यवन नामक म्लेच्छ राजा जो कृष्ण से कई बार लडा था।

यवन-प्रिय—पु० [ष० त०] मिर्च।

यवनाचार्य—पु० [यवन-आचार्य, ष० त०] एक प्रसिद्ध यवन ज्योतिषाचार्य। ताजिकशास्त्र, रमलामृत आदि ग्रन्थो के रचयिता।

यवनानी—स्त्री० [स० यवन+ङीप्, आनुक्] १ यूनान की भाषा। २ प्राचीन भारत मे, यवनो की लिपि।

यवनारि—पु० [यवन-अरि, ष० त०] श्रीकृष्ण, जो कालयवन के शत्रु थे।

यवनाल—स्त्री० [ब० स०] १ ज्वार का पौधा। २ ज्वार के दाने। ज्वार। ३ जौ के सूखे डठल जो पशुओं को चारे के रूप मे खिलाये जाते है।

यवनालज—पु० [स० यव-नाल, ष० त०,√जन्+ड] जवाखार। यवक्षार।

यव-नाश्व—पु० [स०] मिथिला के एक प्राचीन राजा जो बहुलाश्व का पिता था।

यवनिका—पु० [स०√यु+ल्युट्—अन, ङीप्+कन्+टाप्, ह्रस्व] १. कनात। २ परदा। ३ रगमच का परदा।

यवनी—स्त्री० [स०√यु+ल्युट्+अन+ङीप्] १ यूनान देश की स्त्री। २ यवन जाति की स्त्री। ३ विशेषत मुसलमान स्त्री।

यवनेष्ट—पु० [स० यवन-इष्ट, ष० त०] १ सीसा। २. मिर्च। ३ गाजर। ४ शलजम। ५ प्याज। ६ लहसुन। ७. नीम।

यव-फल—पु०[सं० ब० स०] १. इद्र जौ। २ कुटज। ३. प्याज। ४. बाँस। ५ जटामासी। ६ पाकर नामक वृक्ष।

यव-बिंदु—पु०[सं० ब० स०] वह हीरा जिसमे बिन्दु सहित यवरेखा हो।

यव-मंड—पु०[स० मध्य० स०] जौ का माँड जो पथ्य रूप मे कुछ विशिष्ट प्रकार के रोगियो को दिया जाता है।

यव-मय—पु०[स० ष० त०] जौ का सत्तू।

यवमती—स्त्री० [सं० यव+मतुप+ङीप्] एक प्रकार का वर्ण वृत्त जिसके विषम चरणो मे क्रमश. रगण, जगण और जगण तथा सम चरणो मे क्रमश. जगण, रगण और गुरु होता है।

यव-मद्य—पु०[स० मध्य०स०] सड़ाये हुए जौ के खमीर से बनी हुई शराब।

यव-मध्य—पु० [सं० ब० स०]१ एक प्रकार का चांद्रायण व्रत। २ पाँच दिनो मे समाप्त होनेवाला एक प्रकार का यज्ञ। ३ एक प्राचीन नाप।

यव-रस—पु०[स०] जौ आदि अनाजो के दानो को पानी मे फुलाकर उनसे निकाला जानेवाला सार भाग जिसका प्रयोग मादक द्रव्य प्रस्तुत करने में होता है और औषधो मे जिसका प्रयोग पौष्टिक तत्त्व के रूप मे होता है। (माल्ट)

यव-लास—पु०[स० ब० स०] जवाखार।

यव-वर्णाभ—पु०[सं० यव-वर्ण, ष० त०, यववर्ण-आभा, ब० स०] सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का जहरीला कीडा।

यव-शर्करा—स्त्री०[स०] रासायनिक प्रक्रिया से जौ से बनाई जानेवाली चीनी। (माल्टोज)

यव-शूक—पु०[सं० ष० त० +अच्] जवाखार।

यव-श्राद्ध—पु०[स० मध्य० स०] एक प्रकार का श्राद्ध जो वैशाख के शुक्ल पक्ष मे कुछ विशिष्ट दिनो और योगो मे तथा विषुव सक्राति अथवा अक्षय तृतीया के दिन होता है। इसमे जौ के आटे का व्यवहार होता है।

यवस—पु०[सं०√यु +असच्]१ घास। २ भूसा।

यवागू—पु०[स० यु+आगच्]१ जौ अथवा किसी अन्य उबाले हुए अन्न का माँड। २ उक्त माँड की काँजी।

यवाग्र—पुं०[स० यव-अग्र, ष० त०] जौ का भूसा।

यवाग्रज—पु०[स० यवाग्र√ जन्(उत्पत्ति)+ड] १. यवक्षार। २ अजवायन।

यवास (क)—पु०[स० √यु+आस]जवासा (क्षुप)।

यविष्ठ—पु०[स० युवन्+इष्ठन्, यवादेश]१. छोटा भाई। २. अग्नि। आग। ३ ऋग्वेद के एक मत्रद्रष्टा ऋषि। अग्नियविष्ठ।
वि०१. सबसे छोटा। कनिष्ठ। २ नौजवान। युवा।

यवीनर—पुं०[स०]१. पुराणानुसार (क) अजमीढ़ का एक पुत्र। (ख) द्विमीढ़ का एक पुत्र।

यवीयान्(यस्)—पु०, वि०[स० युवन्+ईयसुन्, यवादेश]=यविष्ठ।
वि०[स०] १. यव, सबधी। यवका। २. यव या जौ से बना हुआ।

यव्य—पुं०[स० यव+यत्]=यव-रस।

यश (स्)—पु०[सं०√अश् (व्याप्ति)+असुन, युट् आगम] १. किसी सप्रदाय या समाज मे होनेवाली किसी गुणी, भले व्यक्ति आदि की नेकनामी तथा ख्याति।
मुहा०—यश कमाना या लूटना=बहुत अधिक ख्यात तथा नेकनाम होना।
२. कोई काम विशेषत. किसी अच्छे काम के करने का श्रेय। बड़ाई। महिमा।
क्रि० प्र०—पाना।—मिलना।—लेना।
मुहा०—(किसी का) यश गाना=हर जगह किसी की बड़ाई करते फिरना। **(किसी का) यश मानना**=कृतज्ञतापूर्वक किसी का उपकार करना।

यशद लौह—पु०[स०] ऐसा लोहा जिस पर विद्युत् की धारा की सहायता मे जस्ते का पानी या ऐसा ही और कोई रासायनिक द्रव्य लगा हो, और इसी लिए जिसपर जल्दी मोरचा न लगता हो।

यशदी-करण—पु०[स० यशद] लोहे आदि धातुओ पर विद्युत्-धारा की सहायता से जस्ते का पानी या ऐसा ही और कोई रासायनिक द्रव्य लगाना जिससे उसपर मोरचा न लग सके। । (गैल्वनाइजेशन)

यशब—पु०[अ० यश्ब] एक प्रकार का हरा पत्थर जो चीन और लंका में बहुत होता है। सगे-यशब।

यशम—पु०=यशब।

यशस्कर—वि०[स० यशस्√कृ+ट] जिससे यश बढ़ता हो या मिलता हो। यश-दायक।

यशस्काम—वि०[स० ब० स०](वह) जो यशस्वी होना चाहता हो। यश की कामना करनेवाला।

यशस्य—वि०[स० यशस्+यत्]=यशस्कर।

यशस्वान्—वि०[स० यशस्+मतुप] [स्त्री० यशस्वती] यशस्वी।

यशस्विनी—स्त्री०[स० यशस्+विनि+ङीप्] १ गगा। २ बन-कपास। ३ महा-ज्योतिष्मती।
वि० यशस्वी का स्त्री०।

यशस्वी (स्विन्)—वि०[स० यशस्+विनि] [स्त्री० यशस्विनी] जिसका यश चारो ओर फैला हो। कीर्तिमान्।

यशी†—वि० =यशस्वी।

यशील*—वि०[स० यश+हिं० ईल (प्रत्य०)] यशस्वी।

यशुमति*—स्त्री० दे० 'यशोदा'।

यशोद—पु०[स० यशस्√दा (दान)+क] पारा।

यशोदा—स्त्री०[स० यशोद+टाप्]१. नद की स्त्री जिन्होने श्रीकृष्ण का लालन-पालन किया था। २ एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे एक जगण और दो गुरु वर्ण होते हैं।

यशोदा-नंदन—पु०[स० ष० त०] श्रीकृष्ण।

यशोधर—पु०[स० यशस्+धर, ष० त०]१. कृष्ण का एक पुत्र जो रुक्मिणी के गर्भ से उत्पन्न हुआ था। २ उत्सर्पिणी के एक अर्हत् का नाम। (जैन)। ३. श्रावण मास का पाँचवाँ दिन।

यशोधरा—स्त्री०[सं० यशोधर√टाप्]१. गौतम बुद्ध की पत्नी और राहुल की माता का नाम। २ सावन मास की चौथी रात।

यशोधरेय—पु०[स०] यशोधरा का पुत्र, राहुल।

यशोमति, यशोमती—स्त्री०=यशोदा।

यशोमलय—पु०[स०] एक जाति। (मार्कंडेय पुराण)

यशोमाधव—पुं०[स० यशस्-माधव, मध्य० स०] विष्णु।

यष्टव्य—वि०[स०√ यज् (देवपूजा)+तव्यत्] यज्ञ मे बलि चढ़ाये जाने के योग्य।

यष्टि—स्त्री०[सं० यज्+ति]१ किसी प्रकार की छड़ी, डडा या लाठी। २ पताका का डंडा। ध्वज। ३ पेड़ की टहनी। डाल। शाखा। ४. मुलेठी। ५ तांत। ६ बेल। लता। ६. बाँह। भुजा। ७. गले में पहनने का एक प्रकार का मोतियो का हार।

यष्टिक—पु०[स० यष्टि+कन्] १ तीतर पक्षी। २ छडी, डडा या लाठी। ३ मजीठ।

यष्टिका—स्त्री०[स० यष्टिक +टाप्]१ हाथ मे रखने की बडी या छोटी लाठी। २ मुलेठी। ३. बावली। बापी। ४ एक प्रकार की मोतियो की माला।

यष्टिका-भरण—पु० [स० ष० त०] सुश्रुत के अनुसार जल को ठडा करने का उपाय।

यष्टि-मधु—पु०[स० ब० स०] जेठी मधु। मुलेठी।

यष्टि-यंत्र—पु०[स०] जमीन मे गाडी हुई वह खूँटी या छड़ी जिसकी छाया से समय का अनुमान किया जाता है।

यष्टी—स्त्री०[स० यष्टि +ङीष्]१. गले मे पहनने का एक प्रकार का हार। २. मुलेठी।

यस्क—पु०[स०√यस् (प्रयत्न) +क्विप् +कन्] एक गोत्र प्रवर्तक ऋषि जो यास्क के पिता थे।

यह—सर्व०[स० इद] [बहु० रूप ये] किसी ऐसी वस्तु, विचार या व्यक्ति (सज्ञा) के लिए प्रयुक्त होनेवाला शब्द जो समीप हो, वर्तमान काल का हो, अभी सोचा गया हो अथवा जिसका अभी अभी उल्लेख हुआ हो। 'वह' का विरुद्धार्थक। जैसे—यह तो सबेरे से यहाँ बैठा है।

वि० जो वर्तमान या समीप हो अथवा जिसका अभी अभी उल्लेख किया गया हो।

यह-वह—पु०[हिं०] इधर-उधर की या टाल-मटोल की बात-चीत। जैसे—मुझसे यह-वह मत करो, अपना काम देखो।

यहाँ—अव्य० [स० इह] १. (वक्ता की दृष्टि से) इस स्थान पर। २. किसी विशिष्ट स्थान या क्षेत्र के आस-पास या चारो ओर।

पद—हमारे यहाँ=जहाँ हम रहते है वहाँ। हमारे देश मे। हमारे पास। जैसे—हमारे यहाँ नौकर नही है।

यहि—सर्व० वि०[हिं० यह] १. 'यह' का वह रूप जो पुरानी हिन्दी मे उसे कोई विभक्ति लगने के पहले प्राप्त होता है। २. 'ए' का विभक्ति युक्त रूप, जिसका व्यवहार आगे चलकर कर्म और सम्प्रदान मे ही प्राय होने लगा था। इसको। इसे।

यहिउ—सर्व० [हिं०] १ यही। २. उसी।

यहिया—पु०[इब० यहया] एक यहूदी पैगम्बर जिसने ईसा के आविर्भाव की पूर्व-सूचना दी थी और जो अन्त मे मार डाला गया था।

यही—अव्य०[हिं० यह+ही (प्रत्य०)] निश्चित रूप से यह। यह ही। जैसे—यही तो मैं भी कहता हूँ।

यहूद—पु०[इब०] यहूदी लोग।

यहूदी—पुं०[इब० यहूद] [स्त्री० यहूदिन]१. यहूद देश का निवासी। २. उक्त देश की एक जाति जो अब सारे ससार मे फैल गई है। ३ अर्ध-पिशाच व्यक्ति।

वि० यहूद देश का। यहूद देश-सबधी।

स्त्री०=यहूद देश की भाषा।

यहूयहू—पु०[अनु०] कबूतर की एक जाति।

याँ—अव्य० =यहाँ।

याँचना—स्त्री०=याचना।

याँचा—स्त्री०[स० याचना] माँगने की क्रिया। प्रार्थनापूर्वक माँगना। याचना।

यांत्रिक—पु०[स० यन्त्र+ठक्—इक]मशीनो का रहस्य जाननेवाला। उनके कल-पुरजो को यथा-स्थान बैठानेवाला और उनकी मरम्मत आदि करनेवाला कारीगर। (मेकैनिक)

वि० १. यत्र-सबधी। २. यत्र के रूप मे होनेवाला अथवा उसके कल-पुरजो से सबध रखनेवाला। ३ यत्र की भाँति एक चाल से चलने या होनेवाला। यत्रवत् चलनेवाला। (मेकैनिकल)

यांत्रिकी—स्त्री०[स० यांत्रिक से] वह विज्ञान या शास्त्र जिसमे अनेक प्रकार के यत्र बनाने चलाने, सुधारने आदि के उपायो तथा रीतियो का विवेचन होता है। (मेकैनिज्म)

या—स्त्री०[स०√ या (गति)+क्विप्]१ योनि। २. गति। चाल। ३ गाडी। रथ। ४. अवरोध। रुकावट। ५ मनाही। वारण। ६. ध्यान। ७ प्राप्ति। लाभ।

अव्य०[स० वा से फा०]१ विकल्प-सूचक शब्द। अथवा। वा। २ सबोधन का शब्द।

सर्व० १ यह। (ब्रज०) उदा०—दै गति बिना विवेक एक या और कुचाली।—दीनदयाल गिरि। २ यह का वह रूप जो उसे ब्रजभाषा मे कारक चिह्न लगाने के पहले प्राप्त होता है। ३. इस। उदा०—या मोहन के मैं रूप लुभानी।—मीराँ।

याक—पु०[तिब्बती ग्याक. स० गावक] तिब्बत तथा मध्य एशिया मे होनेवाला जगली भैंसा जिसकी पूँछ का चँवर बनता है। कुछ लोग इसको पालकर इस पर बोझ भी ढोते है।

वि०=एक (सख्या सूचक)।

याकूत—पु०[अ० याक़ूत] एक प्रकार का लाल रग का बहुमूल्य रत्न। लाल।

याकूती—वि०[अ० याक़ूती] याकूत सम्बन्धी। याकूत का।

स्त्री० यूनानी चिकित्सा प्रणाली मे एक प्रकार का पौष्टिक अवलेह या ओषधि जिसमे याकूत की भस्म मिलाई गई होती है।

याक्ष्मिक—वि०[सं० यक्ष्मा+ठक्—इक] यक्ष्मा नामक रोग से संबंध रखनेवाला। यक्ष्मा का।

याक्ष्मिकी—स्त्री०[स० याक्ष्मिक+ङीप्] आधुनिक चिकित्सा की वह शाखा जिसमे विशिष्ट रूप से यक्ष्मा रोग के कीटाणुओं आदि का नाश करने के उपायो और सिद्धान्तो का विवेचन होता है। (थाइसियॉलोजी)

याग—पु०[स०√ यज्+घञ्] यज्ञ।

याचक—वि०[स०√याच् (याचना)+ण्वुल्—अक] [स्त्री० याचिका, भाव० याचकता]१ जो माँगता हो। माँगनेवाला। २. प्रार्थी।

पु० भिक्षुक। भिखमंगा।

याचकता—स्त्री०[सं० याचक+तल्—टाप्] १. याचक होने की अवस्था या भाव। २. भिक्षावृत्ति। भिखमगी।

याचन—पुं०[सं०√याच्+ल्युट्—अन]१. भीख माँगने की क्रिया या भाव। २. नम्रतापूर्वक कुछ माँगने की क्रिया या भाव।

याचना—स्त्री०[सं०√ याच्+णिच्(स्वार्थे)+युच्—अन, टाप्] कुछ माँगने के लिए किसी से नम्रतापूर्वक की जानेवाली प्रार्थना। स० याचना करना। माँगना।

याचमान—वि०[सं० √याच्+शानच्, मुक् आगम] याचक।

याचिका—स्त्री०[सं० याचक+ टाप्, इत्व] १. आवेदन-पत्र। प्रार्थना-पत्र। अर्जी। २ आज-कल विशिष्ट रूप से वह प्रार्थना-पत्र जो न्यायालय के सामने उपस्थित किया जाता है। (पिटिशन)

याचित—भू० कृ० [सं०√याच्+क्त] (बात) जिसके सबध मे याचना की गई हो। जो कुछ माँगा गया हो।

याचितक—पु०[स० याचित+कन्] वह चीज या बात जिसके सबध मे याचना की गई हो।

याचिष्णु—वि०[स०√याच्+इष्णुच्] जो प्राय याचनाएँ करता रहता हो।

याच्य—वि०[स०√याच्+ण्यत्] (बात) जिसके संबध मे याचना की गई हो या की जा सकती हो।

याजक—पु०[स०√ यज्+णिच्+ण्वुल्—अक] १ यज्ञ-विधियो का वह ज्ञाता जो यज्ञ कराता हो। २ यज्ञ करानेवाला। ३ राजा का हाथी। ४ मस्त हाथी।

याजन—पु०[स० √यज्+णिच्+ल्युट्—अन] यज्ञ करने या कराने-वाला।

याजि—पु०[स०√ यज्+इञ्] यज्ञ करनेवाला।

याजी (जिन्)—पु०[स०√यज्+णिनि] यज्ञ करनेवाला

याजुष—वि०[स० यजुष्+अण्] [स्त्री० याजुषी] यजुर्वेद-सम्बन्धी। पु० यजुर्वेद का ज्ञाता अथवा उसका अनुयायी।

याजूज—पु०[अ०] कुरान मे वर्णित एक प्राचीन जाति।

याजूज माजूज—पु०[अ० याजूजो माजूज] १ याजूज और माजूज नाम के दो भाई जो हजनूह के वशज कहे जाते हैं, और जिनकी सतान आगे चलकर इसी नाम की एक जाति के रूप मे प्रसिद्ध हुई थी। कहते हैं कि ये लोग बहुत ही विकट शक्तिशाली होते थे और आस-पास की जातियों पर भीषण अत्याचार करते थे। चीन की दीवार इन्ही लोगों के आक्रमण से बचने के लिए बनाई गई थी। २ दो बहुत ही उपद्रवी और परम दुष्ट व्यक्तियो का जोड़ा।

याज्य—वि०[स०√ यज्+ण्यत्]१ यज्ञ कराने योग्य। २. जो यज्ञ मे किसी रूप मे दिया जाने को हो अथवा यज्ञ के काम मे आने को हो। पु० वह दक्षिणा जो यज्ञ मे मिली हो।

याज्ञ—वि०[स० यज्ञ+अण्] यज्ञ-सबधी। यज्ञ का।

याज्ञदत्ति—पु०[स० यज्ञदत्त+इञ्]कुबेर।

याज्ञवल्क्य—पुं०[सं०√वल्क् (बोलना)+अच्, यज्ञ-वल्क, ष० त०, +यञ्]१ एक प्रसिद्ध ऋषि जो वैशम्पायन के शिष्य थे। २. एक ऋषि जो राजा जनक के दरबार मे रहते थे और जो योगीश्वर याज्ञवल्क्य के नाम से प्रसिद्ध है। मैत्रैयी और गार्गी इन्ही की पत्नियाँ थी। ३. योगीश्वर याज्ञवल्क्य के वंशज एक स्मृतिकार।

याज्ञसेनी—स्त्री० [सं० यज्ञसेन+अण्—ङीप्] यज्ञसेन की पुत्री। द्रौपदी।

याज्ञिक—पु० [स० यज्ञ+ठक्—इक] १ यज्ञ करने या करानेवाला व्यक्ति। २ गुजराती ब्राह्मणो की एक जाति।

यातन—पु० [सं०√ यत् (प्रयत्न)+णिच्+ल्युट्—अन] १. परिशोध। बदला। २. इनाम। पारितोषिक।

यातना—स्त्री०[स०√ यत्+णिच्+युच्—अन, टाप्]१ घोर शारी-रिक कष्ट। २. वह कष्ट जो नरक मे भुगतना पडता है। ३ हिंसा।

यात-याम—वि०[स० ब० स०]१ जिसके महत्त्वपूर्ण दिन बीत चुके हो। २ जो पुराना पड़ने के कारण इतना निरर्थक और महत्त्वहीन हो चुका हो कि प्रस्तुत काल मे उसका कोई उपयोग न हो सकता हो। गतावधि। 'अद्यतन' का विपर्याय। (आउट आफ डेट) उदा०—'भारतेन्दु' मे कुछ लेख ऐसे भी निकले थे, जो आज भी यात-याम नही हुए हैं। —रायकृष्ण दास।

यातव्य—वि०[सं०√ या (जाना)+तव्य](पडोसी शत्रु)जिसपर सहज में आक्रमण किया जा सकता हो। (कौ०)

याता (तृ)—स्त्री०[सं०√यत्+तृन्] पति के भाई की स्त्री। जेठानी या देवरानी।

वि०[√ या +तृच्]१ जानेवाला। २ रथ चलानेवाला। ३. मार डालने या हत्या करनेवाला।

यातायात—पु०[सं०√ या+क्त (भावे)=यात-आयात, द्व० स०] [वि० यातायातिक]१. एक स्थान से दूसरे स्थान पर आते-जाते रहने की क्रिया या भाव। आना-जाना। गमनागमन। २ वह साधन जिससे एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाया जाता है। (कम्यूनिकेशन)

यातु—वि०[सं०√ या+तु]१ आनेवाला। २ रास्ता चलनेवाला। पथिक।

पु०१. काल। २ राक्षस। ३ वायु। हवा। ४ अस्त्र। ५. यातना।

यातुघ्न—पु०[स०यातु√ हन् (हिंसा)+टक्]गुग्गुल।

यातुधान—पु०[स० यातु√ धा (पोषण)+युच्—अन] राक्षस।

यात्निक—पु०[स० यत्न+ठक्—इक] एक बौद्ध सम्प्रदाय।

यात्रा—स्त्री०[स० √या+ ष्ट्रन्—टाप्]१. एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने की क्रिया। सफर। २. कही जाने के लिए चलना या निकलना। प्रयाण। प्रस्थान। ३. धार्मिक भाव से किसी तीर्थ या देव-मदिर की ओर दर्शन, पूजन आदि के उद्देश्य से जाने की क्रिया। ४ उत्सव। ५. व्यवहार। ६ आज-कल बग देश मे प्रचलित एक प्रकार का धार्मिक अभिनय, जिसमे नाचना और गाना भी रहता है।

यात्राधिदेय—पु०[स० यात्रा-अधिदेय, सुप्सुपा स०] दे० 'यात्रा-भत्ता'।

यात्रा-भत्ता—पु०[स०+हि०] यात्रा करनेवाले व्यय के बदले अर्थात् कही आने-जाने के समय किये जानेवाले व्यय के बदले मे अधिकारियो, कर्मचारियो आदि को मिलनेवाला भत्ता। (ट्रेवेलिंग एलाउन्स)

यात्रावाल—पुं०[स० यात्रा+हिं० वाला(प्रत्य०)]तीर्थयात्रियो को अपने यहाँ टिकाने तथा देवदर्शन करानेवाला पडा।

यात्रिक—पु०[स० यात्रा+ठक्—इक]१ यात्रा का प्रयोजन। कही जाने का अभिप्राय या उद्देश्य। २ यात्रा करनेवाला व्यक्ति। यात्री। ३. यात्रा के समय साथ ले जाने की सामग्री। सफर का सामान।

वि० १ यात्रा-संबंधी। यात्रा का। २ जो बहुत दिनों से चलता चला आ रहा हो। परम्परा-गत।

यात्री (त्रिन्)—पु०[स० यात्रा+इनि]१ वह जो यात्रा कर रहा हो। २. देवदर्शन अथवा तीर्थाटन के उद्देश्य से घर से निकला हुआ व्यक्ति।

याथातथ्य—पु०[स० यथातथ्य+ष्यञ्] यथातथ होने की अवस्था या भाव। यथार्थता।

यादःपति—पु०[स० ष० त०]१. समुद्र। २. वरुण।

याद—स्त्री०[फा०]१ स्मरण करने की क्रिया या भाव। २. स्मरण-शक्ति। स्मृति।

क्रि० प्र०—करना।—दिलाना।—पड़ना।—रखना।—रहना।—होना।

पु०[स० यादस्] मछली, मगर आदि जल-जंतु।

यादगार—स्त्री० [फा०] १. चिन्हानी। २ स्मारक।

याददाश्त—स्त्री०[फा०]१. स्मरण-शक्ति। स्मृति। २ संस्मरण।

यादव--पु०[सं० यदु+अण्] [स्त्री० यादवी] १. यदु के वंशज। २ श्रीकृष्ण।

वि० यदु-सम्बन्धी। यदु का।

यादवी—स्त्री०[स० यादव+ङीप्]१. यदु-कुल की स्त्री। २ दुर्गा।

यादवीय—वि०[सं० यादव+छ—ईय] यादव-सम्बन्धी।

पुं० किसी जाति या देश के लोगों में आपस में होनेवाला लड़ाई-झगड़ा।

यावृच्छिक-आधि—स्त्री०[स०] गिरवी या रेहन रखी हुई वह चीज जो बिना ऋण चुकाये लौटाई न जा सके।

यादृश—वि०[स० यद्√दृश+कञ्, आकार आदेश] जिस प्रकार का। जैसा।

यान—पु०[स०√या +ल्युट्—अन]१. वह उपकरण या साधन जिसपर सवार होकर यात्रा की जाती अथवा माल ढोया जाता है। जैसे—गाड़ी, छकड़ा, रथ साइकिल आदि। २. आकाश-यान। विमान। ३ शत्रु देश पर की जानेवाली सैनिक चढ़ाई। ४. गति। चाल।

यान-मार्ग—पुं०[सं० ष० त०] ऐसा मार्ग जिससे आदमी और सवारियाँ आती-जाती हों। जैसे—सड़क।

यानी—अव्य०[अ०] अर्थ या आशय यह है कि। अर्थात्।

याने—अव्य०=यानी।

यापन—पु०[स०√ या+णिच् पुक्+युच्—अन] [भू० कृ० यापित, वि० याप्य]१ चलाना। २ समय आदि के संबंध में, व्यतीत करना। गुजारना। बिताना। जैसे—काल-यापन। ३. काम-काज के सम्बन्ध में, पूरा करना। निपटाना। ४. परित्याग करना। छोड़ना।

यापना—स्त्री०[स०√या+णिच्, पुक्+युच्—अन, टाप्] १. वाहन या सवारी चलाना। हाँकना। २. वह धन जो किसी को जीविका-निर्वाह के लिए दिया जाय। ३. बरताव। व्यवहार। ४. दे० 'यापन'।

यापनीय—वि०[सं०√या+णिच्, पुक्+अनीयर्]१. यापन किये जाने के योग्य। याप्य। २. महत्त्वहीन। तुच्छ।

याप्य—वि०[स० √या+णिच् पुक्+यत्] १ जिसका यापन हो सके या होने को हो। यापनीय। २ छिपाये जाने के योग्य। गोपनीय। ३ तुच्छ और निंदनीय। ४. रक्षित रखने के योग्य। रक्षणीय।

पु० कोई ऐसा असाध्य रोग जिसमे दीर्घकाल तक रोगी को कष्ट भोगना पड़ता है।

याफ्त—स्त्री०[फा० याफ़्त] १ प्राप्ति। २. आय। ३. लाभ। ४. किसी प्रकार से अथवा किसी रूप मे होनेवाली ऊपरी आमदनी। ५. रिश्वत।

याफ्तनी—वि०[फा० याफ़्तनी] १. मिलनेवाला। प्राप्य। २. प्राप्त करने के योग्य। किये जाने के योग्य।

याफ्ता—वि०[फा० याफ़्तः]१ पाया हुआ। जैसे—सजा याफ्ता। २. जिसने कोई विशेष अनुभव या ज्ञान प्राप्त किया हो। जैसे—तालीम याफ्ता, सोहबत याफ्ता।

याब—प्रत्य०[फा०]१ प्राप्त होनेवाला या मिलनेवाला। जैसे—दस्त-याब=हस्तगत। २. प्राप्त करनेवाला। पानेवाला। जैसे—फतह-याब=फतह पानेवाला।

याबी—स्त्री०[फा०] प्राप्त करने या होने की अवस्था, क्रिया या भाव।

याबू—पु०[तु०]१. छोटे डील-डौल का घोड़ा जो प्रायः बोझ ढोने के काम आता है। २ टट्टू।

याभ—पु०[सं०√यभ् (मैथुन)+घञ्]मैथुन।

याम—पु०[सं०√ यम् (नियंत्रण,+घञ्] १. दिन मान का आठवाँ अंश। तीन घंटे का समय। पहर। २. काल। समय। ३. एक प्रकार के देवगण जो संख्या में बारह कहे गये हैं।

वि० यम-संबंधी। यम का।

स्त्री० यामि (रात)।

यामकिनी—स्त्री०=यामि।

याम-घोष—पु० [स० ब० स०] १. मुर्गा। २. शृगाल। ३. पहरों की सूचना देनेवाला घंटा। घड़ियाल।

याम-घोषा—स्त्री०[स० ब० स० +टाप्] वह घंटा जो समय की सूचना देने के लिए बजता हो। घड़ियाल।

याम-नाली—स्त्री०[स० ष० त०]समय बतानेवाली पुरानी चाल की घड़ी।

यामल—पु०[सं० यमल+अण्]१. जुड़वाँ बच्चे। यमल। २ तन्त्र शास्त्र का एक ग्रन्थ।

यामवती—स्त्री०[स० याम+मतुप्+ङीप्] रात। निशा।

याम-वृत्ति—स्त्री० [स० ष० त०] १. रात के समय चौकसी करने या पहरा देने का काम। २ उक्त काम का पारिश्रमिक।

यामाता—पु०=जामाता (दामाद)।

यामायन—पु०[स० यम+फक्—आयन] वह जो यम के गोत्र मे उत्पन्न हो।

यामार्द्ध—पु०[स० याम-अर्द्ध, ष० त०]याम अर्थात् पहर का आधा भाग। डेढ़ घंटे का समय।

यामि—स्त्री० [स०√या+मि]१. कुल-वधू। कुल-स्त्री। २. बहन। भगिनी। ३ रात्रि। रात। ४ पुत्री। बेटी। ५ पुत्र-वधू। ६. दक्षिण दिशा। ७ धर्म की एक पत्नी।

यामिक—पु०[स० याम+ठक्—इक] रात के समय चौकसी करने या पहरा देनेवाला व्यक्ति।

यामिका—स्त्री०[स० यामिक+टाप्] रात।

यामिका-पति—पुं०[सं०]१. चंद्रमा। २. कर्पूर।

यामित्र—पुं०[सं० आमित्र] जन्म-कुण्डली में लग्न से सातवाँ स्थान।

यामित्र-वेध—पुं०[सं० आमित्र वेध] वेधशाला।

यामिन(नि)—स्त्री० =यामिनी।

यामिनी—स्त्री०[सं० याम+इनि+ङीप्]१. रात्रि। रात। २. हलदी।

यामिनी-चर—पुं०[सं० यामिनी√चर्+ट]१. राक्षस। निशाचर। २. उल्लू। ३. गुग्गुल।

यामुन—वि०[सं० यमुना+अण्]१. यमुना-संबंधी। २. यमुना में रहने या होनेवाला।

पुं०१ यमुना के किनारे बसनेवाले लोग। २. एक प्राचीन तीर्थ। ३. एक प्राचीन पर्वत। ४ एक प्राचीन जनपद। ५ एक प्राचीन वैष्णव आचार्य। ६ आँख में लगाने का अंजन या सुरमा।

यामुनेष्टक—पुं०[सं० यामुन-इष्टक, उपमित स०] सीसा।

यामेय—पुं०[सं० यामि+ढक्—एय] १ यामिका पुत्र। २ बहन का लड़का। भाँजा।

याम्य—वि०[सं० यम+ण्यत्] १. यम-संबंधी। यम का। २. दक्षिण दिशा का। दक्षिणी।

पुं०[यामी+यत्]१. विष्णु। २ शिव। ३. यमदूत। ४ अगस्त्य ऋषि का एक नाम। ५. चन्दन। ६. भरणी (नक्षत्र)।

याम्य-द्रुम—पुं०[सं० कर्म० स०] सेमल का पेड़।

याम्या—स्त्री० [सं० याम्य+टाप्]१ दक्षिण दिशा। २ भरणी नक्षत्र।

याम्यायन—पुं०[सं० याम्य-अयन, कर्म० स०] दक्षिणायन।

याम्योत्तर—वि०[सं० याम्य-उत्तर, सुप्सुपा स०] जो दक्षिण से उत्तर की ओर या उक्त लब में हो।

याम्योत्तर-दिगंश—पुं० [सं० कर्म० स०] लंबांश। दिगंश। (भूगोल, खगोल)

याम्योत्तर-रेखा—स्त्री०[सं० कर्म० स०] खगोल और भूगोल में वह कल्पित रेखा जो किसी विशिष्ट स्थान (जैसे—प्राचीन भारत में उज्जयिनी और आज-कल इगलैण्ड के ग्रीनविच नगर) के ख-स्वस्तिक से चलकर सुमेरु और कुमेरु को पार करती हुई पृथ्वी का पूरा वृत्त बनाती है। (मेरीडियन)

याम्योत्तर-वृत्त—पुं०[सं० मध्य० स०] याम्योत्तर रेखा से बननेवाला वृत्त। (मेरीडियन)

यायावर—पुं० [सं० √या (गति)+यङ्+वरच्] १. अश्वमेध का घोड़ा। २ वह साधु या संन्यासी जो किसी एक स्थान पर टिककर न रहता हो, बराबर घूमता-फिरता हो। ३ उक्त प्रकार के मुनियों का एक गण या वर्ग। ४. वह जिसके रहने का कोई निश्चित स्थान न हो और जो खान-पान आदि के सुभीते के विचार से अपना डेरा कभी कहीं और कभी कहीं लगाता हो। खाना-बदोश। (नोमड) ५ जरत्कारु मुनि का एक नाम। ६. याचना। ७. वह ब्राह्मण जिसके यहाँ गार्हपत्य अग्नि बराबर रहती हो। साग्नि ब्राह्मण।

यायी(यिन्)—वि०[सं०√ या+णिनि, युक् आगम] [स्त्री० यायिनी] जानेवाला। जो जा रहा हो। गमनशील।

यार—पुं०[फा०] [भाव० यारी] १. मित्र। दोस्त। २. किसी स्त्री के विचार से उसका प्रेमी या उपपति।

यारकंद—पुं०[तु० यारकंद]१. चीनी तुर्किस्तान का एक प्राचीन नगर। २. एक प्रकार का बेल-बूटा जो कालीन में बनाया जाता है।

यार-बाज—वि०[फा०] [भाव० यार-बाजी] यार-बाश। (दे०)

यार-बाश—वि०[फा०] [भाव० यारबाशी]१. जिसके बहुत से मित्र हों तथा जो मित्रों में ही अधिक समय बिताता हो। २. मित्रों में रहकर अपना जीवन हँसी-खुशी से बितानेवाला। ३. जो सब के साथ मित्रता स्थापित कर लेता हो।

यार-बाशी—स्त्री०[फा०] यार-बाश होने की अवस्था या भाव।

यारमंद—पुं०[फा०] [भाव० यारमंदी] निष्ठापूर्वक मित्रता का निर्वाह करनेवाला व्यक्ति। सच्चा मित्र।

यारमंदी—स्त्री०[फा०] सच्ची मित्रता।

यार-मार—पुं०[फा०+हिं०] [भाव० यार-मारी] मित्र को समय पर धोखा देने अथवा उससे अनुचित लाभ उठानेवाला व्यक्ति।

याराना—पुं०[फा० याराना:]१. यार होने की अवस्था, धर्म या भाव। मित्रता। मैत्री। दोस्ती। २. पर-स्त्री और पर-पुरुष का अनुचित सम्बन्ध या प्रेम।

क्रि० प्र०—गाँठना।—लगाना।

वि० मित्रों-का सा। मित्रता का।

यारि—स्त्री०[फा० यार] प्रियतमा। प्रेयसी। उदा०—हरति ताप सब द्यौस को उर लगि यारि बयारि।—बिहारी।

यारी—स्त्री०[फा०]१ यार होने की अवस्था या भाव। मैत्री। मित्रता। २. पर-स्त्री और पर-पुरुष का अनुचित प्रेम या संबंध।

क्रि० प्र०—गाँठना।—जोड़ना।

याल—स्त्री०[तु०]१. गरदन। २. घोड़े की गरदन के ऊपर के लंबे बाल। अयाल।

याव—वि०[सं०√यु (मिश्रण)+अप्+अण्] १. यव-सम्बन्धी। यव का। २ यव या जौ से बना या बनाया हुआ।

पुं०१. जौ का सत्तू। २. लाक्षा। लाख। ३ महावर।

वि०[सं०√यु+अप्+अव]१. जितना। २. पूरा। सब।

अव्य०१. जब तक। २ जहाँ-तक।

यावक—पुं०[सं० याव+कन्]१. जौ। २ जौ का सत्तू। ३. जौ की बनाई हुई कोई चीज। ४. बोरो धान। ५ साठी धान। ६. उड़द। ७. लाक्षा। लाख। ८ महावर।

यावज्जीवन—अव्य० [सं० यावत्-जीवन, अव्य० स०] जब तक जीवन रहे या हो तब तक। जन्म-भर। आजीवन।

यावत्—वि०[सं० यद्-वतुप, आत्व]१. जितना। २. सब।

अव्य० [यद्+डावतु] जहाँ तक। (इसका नित्य संबंधी तावत् है।)

यावन—वि०[सं० यवन+अण्] [स्त्री० यावनी] १ यवन-संबंधी। यवनों का। २. मुसलमानों का।

पुं० लोबान।

यावनक—पुं०[सं० यावन+कन्] लाल रेंड़। रक्त एरंड।

यावनाल—पुं०[सं० यवनाल +अण्] ज्वार या मक्का नामक अन्न।

यावनाली—स्त्री०[सं० यावनाल+ङीप्] मक्के से बनाई हुई चीनी। ज्वार की शक्कर।

यावनी—स्त्री०[सं० यावन+ङीप्] करकशालि नामक ईख। रसाल। वि० 'यावन' का स्त्री०।

यावर—वि० [फा०] [भाव० यावरी] १ सहायक। मददगार। २ पोषक।

यावरी—स्त्री०[फा०]१ यावर अर्थात् सहायक होने की अवस्था या भाव। २. पोषण।

यावशूक—पु०[सं० यवशूक +अण्] जवा-खार।

यावस—पुं०[सं० यवस् +अण्] घास, डंठलो आदि का ढेर या पूला।

यावा—वि०[तु० यावः] अनर्गल। बेहूदा।

यावास—पु०[सं० यवास +अण्]यवास से बनाया हुआ मद्य। जवासे की शराब।

वि० यवास-संबधी। जवासे का।

यावी—स्त्री०[सं० याव+ङीष्]१ शखिनी। २ यवतिक्ता नाम की लता।

याष्टीक—पु०[सं० यष्टि+ईकक्] लाठी बाँधनेवाला योद्धा। लठैत।

यास—पु०[सं० √यम् (प्रयास) +घञ्]लाल धमासा।

स्त्री०[अव्य०]१ निराशा। २. निराश होने पर मन मे उत्पन्न होने वाला खेद।

स्त्री०[फा०] चमेली।

यासमन—स्त्री०[फा० यासमीन] चमेली का फूल।

यासमीन—स्त्री०[फा०] चमेली का फूल।

यासु—सर्व०=जासु।

यास्क—पु०[सं० यस्क +अण्]१ यास्क ऋषि के गोत्र मे उत्पन्न व्यक्ति। २. वैदिक निरुक्त के रचयिता एक प्रसिद्ध ऋषि।

यास्कायनि—पु०[सं० यास्क+फिञ्—आयन] यास्क के गोत्र मे उत्पन्न पुरुष।

याहि*—सर्व०[हिं० या+हि] इसको। इसे।

याहू—पद [फा०] ऐ खुदा। हे ईश्वर।

पु० एक प्रकार का कबूतर जो प्राय 'याहू याहू' शब्द करता है।

यियक्षु—वि०[सं० √यज् (देवपूजा) +सन्+उ] पूजा या यज्ञ की इच्छा करनेवाला।

यियप्सु—वि०[सं०√यभ् (मैथुन) +सन्+उ] मैथुन या सभोग की इच्छा रखनेवाला। सभोगेच्छुक।

यियासा—स्त्री०[सं० या (जाना) +सन्+अ,+टाप्] जाने की इच्छा।

यीशु—पुं०=ईसू (ईसा मसीह)।

युंजान—पु० [सं०√युंज् (योग)+शानच्] १ सारथी। २ ब्राह्मण। विप्र। ३ दो प्रकार के योगियो मे से वह योगी जो अभ्यास कर रहा हो, पर मुक्त न हुआ हो।

युंजानक—पु०[सं० युंजान +क]युजान नामक योगी। दे० 'युजान'।

युक्त—वि०[सं०√युज+क्त] [भाव० युक्ति]१. किसी के साथ जुडा, मिला या लगा हुआ। २. मिश्रित। सम्मिलित। ३ नियुक्त। मुकर्रर। ४. पूरा किया हुआ। सम्पन्न। ५ उचित। ठीक। वाजिब।

पु० १. वह योगी जिसने योग का अभ्यास कर लिया हो। २ रैवत मनु का एक पुत्र ३. चार हाथ लबी एक पुरानी नाप।

युक्त-रसा—स्त्री०[सं० ब० स०, +टाप्] १. गधनाकुली। नाकुल कंद। २ रासना।

युक्त-विकर्ष—पु०[सं० ष० त०] भाषा-विज्ञान में शब्दो के उच्चारण मे होनेवाली वह प्रक्रिया जिससे शब्दो मे रहनेवाली कोई श्रुति(दे०) किसी नए कर्म का रूप धारण करती है।

युक्ता—स्त्री०[सं० युक्त+टाप्]१ एलापर्णी २. एक प्रकार का वृत्त जिसमे दो नगण और एक मगण होता है।

युक्ताक्षर—वि०[सं० युक्त-अक्षर, कर्म० स०] संयुक्त वर्ण। मिश्रित वर्ण।

युक्तार्थ—वि०[सं० युक्त-अर्थ ब० स०] ज्ञानी।

युक्ति—स्त्री० [सं०√युज्+क्तिन्] १ युक्त अर्थात् मिले हुए होने की अवस्था या भाव। मिलन। योग। २ कोई कठिन काम सरलतापूर्वक करने का उपाय या ढग। तरकीब ३ किसी तत्त्व का खडन या मडन करने के लिए कही जानेवाली कोई बुद्धिमगत बात। दलील। (रीजन) ४ प्रथा। रीति। ५ कारण। ६ कौशल। चातुरी। ७. साहित्य मे एक प्रकार का अर्थालकार जिसमे किसी उपाय या कौशल से अपनी कोई चेष्टा या रहस्य दूसरे से छिपाने का उल्लेख या वर्णन होता है।

युक्तिकर—वि०[सं० युक्ति√कृ (करना) +ट]=युक्ति-युक्त।

युक्ति-युक्त—वि०[सं० तृ० त०] जो युक्ति की दृष्टि से ठीक हो। युक्ति-सगत। ठीक। वाजिब।

युक्तिवाद—पु०[सं० ष० त०]=बुद्धिवाद।

युक्ति-शास्त्र—पु० [सं० मध्य० स०] तर्क-शास्त्र।

युगंकर—वि०[सं०] नया युग उपस्थित करनेवाला। युगप्रवर्त्तक। जैसे—युगकर रवीन्द्रनाथ टैगोर।

युगंधर—पु०[सं० युग√धृ (धारण) +णिच्, खच्, मुम्]१ पजाब का एक प्राचीन नगर जिसका वर्णन महाभारत मे आया है। २ एक प्राचीन पर्वत। ३ गाडी का बम। ४ बैलगाडी का वह लबा बाँस जिसमे जूआ लगाया जाता है।

युग—पु०[सं०√ युज् (जोडना) +घञ्, नि० सिद्धि] [वि० युगीन]१. एकत्र दो वस्तुएँ। जोडा। युग्म। २ ऋद्धि और सिद्धि नाम की दो ओषधियाँ। ३ चौसर या पासे के खेल मे एक साथ एक घर मे बैठी हुई दो गोटियाँ। ४ वश के अनुक्रम मे कोई स्थान। पीढी। पुश्त। ५ बैलो के कधो पर रखा जानेवाला जुआ। ६ काल। समय। जैसे—पूर्व युग।

मुहा०—युग-युग—बहुत दिनो तक। अनत काल तक।

७ काल-गणना के विचार से कल्प के चार उप-विभागो मे से प्रत्येक —सत्य, त्रेता, द्वापर और कलि। (पुराण) ८ वह समय विभाग जिसमे कुछ विशिष्ट प्रकार की घटनाओ, प्रवृत्तियो आदि की बहुलता रहती है। जैसे—भारतेन्दु युग, गान्धी युग, लौह युग आदि। ९ पाँच वर्ष का वह काल जिसमे बृहस्पति एक राशि मे स्थित रहता है।

वि० जो गिनती मे दो हो।

युग-कीलक—पु०[सं० ष० त०] वह लकड़ी या खूँटा जो बम और जुए के मिले हुए छेदो मे डाला जाता है। सैल। सैला।

युगति—स्त्री०=युक्ति।

युग-धर्म—पुं०[सं० ष० त०] कोई ऐसा काम जो किसी विशिष्ट युग में प्रायः सभी लोग साधारण रूप से करते हों। जैसे—चोरी, झूठ, बेईमानी तो आज-कल के युग-धर्म से जान पड़ने लगे हैं।

युगपत्(द्)—अव्य०[सं० युग√पद् (गति)+क्विप्] एक ही समय में। एक ही क्षण में। साथ-साथ।

वि० एक ही समय मे और एक साथ होनेवाला। (साइमल्टेनिअस)

युग-पत्र—पुं०[सं० ब० स०]१. कोविदार। कचनार। २ युग्मपत्र नामक वृक्ष। ३ पहाड़ी आबनूस।

युग-पत्रिका—स्त्री०[सं० ब० स०,+कप्+टाप्, इत्व] शीशम का पेड़।

युग-पुरुष—पुं०[सं० ष० त०] अपने युग या समय का बहुत बड़ा महापुरुष।

युग-बाहु—वि०[सं० ब० स०] जिसके हाथ बहुत लंबे हों। दीर्घबाहु।

युगम*—वि०, पुं०=युग्म।

युगल—पुं०[सं०√युज्+कलच्, कुत्व] एक साथ और एक ही गर्भ से उत्पन्न होनेवाले दो जीव। युग्म।

युगलक—पुं०[सं० युगल√कै (प्रतीत होना)+क] साहित्य मे वह कुलक (गद्य) जिसमें दो श्लोकों या पद्यों का एक साथ मिलकर अन्वय करना पड़ता हो।

युगलाख्य—पुं०[सं० युगल-आ√ख्या (प्रकथन)+क] बबूल का पेड़।

युगांत—पुं०[सं० युग-अंत, ष० त०]१. प्रलय। युग का अंत। २. युग का अन्तिम काल या समय। ३. प्रलय।

युगांतक—पुं०[सं० युगांत+कन्]१. प्रलय-काल। २. प्रलय।

युगांतर—पुं०[सं० युग-अंतर, मयू० स०]१. प्रस्तुत युग के उपरान्त आनेवाला दूसरा युग। २. कुछ और ही प्रकार का जमाना, युग या समय।

मुहा०—युगांतर उपस्थित करना=समय का प्रवाह पूरी तरह से बदल देना। पुरानी प्रथा की जगह नई प्रथा या रीति चलाना।

युगांशक—पुं०[सं० युग-अंशक, ष० त०] वत्सर। वर्ष।

वि० युग का विभाजक।

युगादि—पुं०[सं० युग-आदि, ष० त०]१. सृष्टि का प्रारंभ। २. युग का आरम्भ।

स्त्री०[ब० स०] दे० 'युगाद्या'।

वि० १ युग के आरम्भिक काल का। २. बहुत पुराना।

युगादिकृत्—पुं०[सं० युगादि√कृ(करना)+क्विप्, तुक्-आगम] शिव।

युगाद्या—स्त्री०[सं० युग-आद्या, ष० त०] वह तिथि जिससे युग का आरम्भ होना माना जाता है। जैसे—वैशाख शुक्ल तृतीया, कार्तिक शुक्ल नवमी, भाद्र कृष्ण त्रयोदशी और पूस की अमावस्या जो क्रमात सत्ययुग, त्रेतायुग, द्वापर युग और कलियुग की आरम्भ की तिथियाँ हैं।

युगावतार—पुं०[सं० युग-अवतार, ष० त०] युग का अवतारी महान पुरुष। युग-स्वरूप पुरुष।

युगेश—पुं०[सं० युग-ईश, ष० त०] फलित ज्योतिष मे, बृहस्पति के वर्ष के राशि चक्र मे गति के अनुसार पाँच पाँच वर्ष के युगों के अधिपति।

युगोपरि—वि०[सं० युग-उपरि, ष० त०] अपने युग या समय के विचार से जो सबसे बढ़कर हो।

युग्म—पुं०[सं०√युज् (योग)+मक्, कुत्व]१. एक ही तरह की ऐसी दो चीजें जो प्रायः या सदा साथ आती या रहती हों। जोड़ा। युग। २. ऐसी दो बातें या वस्तुएँ जो मुख्यतः एक दूसरी पर अवलम्बित या आश्रित हों। ३. ज्योतिष मे, मिथुन राशि। ४. दे० 'युगलक'।

युग्मक—पुं०[सं० युग्म+क]१. युग्म। जोड़ा। २, युगलक।

युग्मज—पुं०[सं० युग्म√जन् (उत्पत्ति)+ड] एक साथ एक ही गर्भ से उत्पन्न होनेवाले दो जीव।

वि० (ऐसे दो) जो एक साथ उत्पन्न हुए हों।

युग्म-धर्मा (र्मन्)—वि०[सं० ब० स०,+अनिच्] १. जो स्वभावतः मिलता हो। मिलनशील। २ मैथुन करना जिसका धर्म हो।

युग्मन—पुं० [सं० युग्म+णिच्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० युग्मित] १. १ दो चीजो को आपस मे जोड़, बाँध या मिलाकर एक साथ करने की क्रिया या भाव। (कपलिंग) २ युग्म बनाने की क्रिया या भाव। (कॉनजुगेशन)

युग्म-पत्र—पुं०[सं० ब० स०]१ कचनार का पेड़। २ भोजपत्र का पेड़। ३ छितवन। ४. ऐसा पेड़ जिसकी शाखा मे आमने-सामने दो-दो पत्ते एक साथ होते हों। युग्मपर्ण।

युग्म-पर्ण—पुं० [सं० ब० स०] १. लाल कचनार। २ छतिवन। ३. दे० 'युग्मपत्र'।

युग्म-पर्णा—स्त्री०[सं० ब० स०, टाप्]वृश्चिकाली।

युग्म-फला—स्त्री०[सं० ब० स०, टाप्] वृश्चिकाली।

युग्मांजन—पुं०[सं० युग्म-अंजन, कर्म० स०] स्रोतांजन और सौवीरांजन इन दोनो का समूह।

युग्मेच्छा—स्त्री० [सं० युग्म-इच्छा, ष० त०] मैथुन या संभोग की इच्छा।

युग्य—पुं०[सं० युग+यत् वा√युज+क्यप् नि०]१. वह गाड़ी जिसमें दो घोड़े या बैल जोते जाते है। जोड़ी। २ वे दो पशु जो एक साथ गाड़ी मे जोते जाते हों। जोड़ी।

वि० जो (गाड़ी आदि मे) जोते जाने के योग्य हो या जोता जाने को हो।

युग्यवाह—पुं० [सं० युग्य√वह् (ढोना)+णिच्+अण्, उप० स०] १. युग्य (दो बैलो या दो घोड़ोंवाली गाड़ी) हाँकनेवाला। २ किसी प्रकार की गाड़ी हाँकनेवाला व्यक्ति। गाड़ीवान।

युत—भू० कृ०[सं०√यु (मिश्रण)+क्त]१ किसी से मिला या मिलाया हुआ। युक्त। सहित। जैसे—श्रीयुत। २ जुड़ा या सटा हुआ।

पुं०१. प्राचीन काल की चार हाथ की एक नाप। २ एक योग जो चन्द्रमा के पाप-ग्रह के साथ होने पर होता है। (फलित ज्योतिष)

युतक—पुं०[सं० युत+क]१. जोड़ा। युग्म। २ कपड़े आदि का आँचल। ३ सन्देह। शक। ४ किसी को अपना मित्र बनाना। मैत्रीकरण। ५ प्राचीन भारत मे एक प्रकार का पहनावा। ६. सूप के दोनो ओर के किनारे जो ऊपर उठे हुए होते है और पीछे के उठे हुए भाग से जोड़कर बाँधे रहते हैं।

युति—स्त्री०[सं० यु+क्तिन्]१ एक चीज का दूसरी चीज के साथ मिलना, लगना या सटना। २ गणित मे, दो या अधिक संख्याओ का जोड़। ३ वह स्थिति जिसमे दो ग्रह या दो नक्षत्र इतने आस-पास या आमने-सामने होते हैं कि दोनो एक जान पड़ने लगते हैं। 'योग' से भिन्न। जैसे—चंद्रमा और रोहिणी की युति।

विशेष—ग्रहों की 'युति' और 'योग' का अन्तर जानने के लिए देखें 'योग' का विशेष।

युद्ध—पुं० [सं०√युध् (प्रहार)+क्त] १. अस्त्र-शस्त्रों की सहायता से शत्रु सैनिकों में होनेवाली लड़ाई। रण। संग्राम। २. किसी प्रकार के साधन से आपस में होनेवाली लड़ाई। जैसे—गदा-युद्ध, मुष्टि-युद्ध, वाक्-युद्ध।

मुहा०—युद्ध मांड़ना=लड़ाई छेड़ना।

युद्धक—पुं०[सं० युद्ध+क]युद्ध। लड़ाई। जैसे—युद्धक विराम।

युद्धकारी (रिन्)—वि०[सं०] [स्त्री० युद्धकारिणी] जो किसी से युद्ध कर रहा हो अथवा किसी युद्ध में किसी पक्ष से सम्मिलित हो। युद्ध-रत। (बेलिजरेन्ट)

युद्ध-गांधर्व—पुं०[सं० मध्य० स०] युद्ध के समय सैनिकों को उत्साहित करने के लिए गाये जानेवाले गीत।

युद्ध-पोत—पुं०[सं० ष० त०] वह बहुत बड़ा समुद्री जहाज जिसपर से सैनिक युद्ध करते हैं। (वारशिप)

युद्ध-प्राप्त—वि०[सं० स० त०] युद्ध या लड़ाई में पकड़ा या पाया हुआ। जैसे—युद्ध-प्राप्त सामग्री।

पुं० युद्धबंदी।

युद्ध-बंदी—पुं०=युद्धबंदी।

स्त्री०[सं०+फा०] युद्ध का बंद होना। लड़ाई बंदी।

युद्ध-भूमि—स्त्री०[सं० ष० त०] लड़ाई का मैदान। रणक्षेत्र।

युद्धमय—वि०[सं० युद्ध+मयट्]१ युद्ध-संबंधी। २ युद्ध-प्रिय।

युद्धमान—वि० [सं० युध्यमान]=युद्धकारी जो किसी न किसी से प्रायः युद्ध करता रहता हो। युद्ध में रत रहनेवाला।

युद्ध-रंग—पुं० [सं० ब० स०] १ कार्तिकेय। स्कंद। २ युद्धस्थल। रण-क्षेत्र।

युद्ध-लिप्त—वि० [सं० स० त०] [भाव० युद्धलिप्तता] (दल या राष्ट्र) जो सदा किसी न किसी दल या राष्ट्र के विरुद्ध युद्ध ठाने रहता हो। (बेलीजरेंट)

युद्ध-बंदी—पुं० [सं०] वह सैनिक जो युद्ध में जीतकर बंदी बना लिया गया हो। लड़ाई का कैदी। (प्रिजनर आफ वार)

युद्ध-विराम—पुं० [सं०] चलता हुआ युद्ध इस उद्देश्य से रोकना कि दोनों पक्ष आपस में संधि की बात-चीत या शर्तें तै कर सकें। (सीज-फ़ायर)

युद्ध-सन्नाह—पुं० [सं०]

युद्ध-सार—पुं० [सं० ष० त०] घोड़ा।

युद्धस्थगन—पुं० [सं० ष० त०] विभिन्न पक्षों का अनिश्चित काल के लिए युद्ध बंद करना जिसके फलस्वरूप उनमें समझौते की बात-चीत हो सके। (सीज-फ़ायर)

युद्धाचार्य—पुं० [सं० युद्ध-आचार्य, ष० त०] वह जो सैनिकों को युद्ध-विद्या की शिक्षा देता हो।

युद्धोपकरण—पुं० [सं० युद्ध-उपकरण, ष० त०] लड़ाई का सामान। जैसे—गोला, बारूद, तोप-बंदूक, तीर-कमान, ढाल-तलवार, आदि।

युद्धोन्मत्त—वि० [सं० युद्ध-उन्मत्त, ष० त०] १. जो युद्ध करने के लिए उतावला हो रहा हो। जिसके सिर पर युद्ध करने का भूत सवार हो। २ जो युद्ध कर रहा हो।

युधाजित्—पुं० [सं०] १ केकय राजा के पुत्र का नाम। २. श्रीकृष्ण का एक पुत्र।

युधान—पुं० [सं०√युध्+आनच्] १ योद्धा-जाति का व्यक्ति। योद्धा। २ दुश्मन। शत्रु।

युधामन्यु—पुं० [सं०] एक राजा। (महा०)

युधिष्ठिर—पुं० [सं० युधि-स्थिर अलुक्, स० त०] हस्तिनापुर के राजा पांडु के सबसे बड़े पुत्र जो परम धर्म-परायण और सत्य तथा न्यायवादी थे। महाभारत के युद्ध के बाद ये हस्तिनापुर के राजा बने थे। भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव इनके छोटे भाई थे।

युध्म—पुं० [सं०√युध्+मक्] १. संग्राम। युद्ध। २. धनुष। ३. बाण। ४ अस्त्र-शस्त्र। ५. योद्धा। ६ शरभ।

युध्य—वि० [सं० योध्य] जिससे युद्ध किया जा सके। युद्ध के योग्य।

युनिवर्सिटी—स्त्री० [अ०] =विश्वविद्यालय।

युयु- पुं० [सं०√या+यङ+डु] घोड़ा।

युयुक्षमान—वि० [सं०√युज्+सन् (द्वित्वादि+शानच्] १. मिलन या संयोग चाहनेवाला। २ परमात्माओं में लीन होने की कामना रखने वाला। मोक्ष का अभिलाषी।

युयुत्सा—स्त्री० [सं०√युध्+सन्,द्वित्वादि+टाप्] १. युद्ध करने की प्रबल इच्छा। लड़ने की अभिलाषा। २ दुश्मनी। शत्रुता। ३. वैर-विरोध।

युयुत्सु—वि० [सं० √युध्+सन्, द्वित्वादि] जिसके मन में युद्ध करने की इच्छा हो।

पुं० धृतराष्ट्र का एक पुत्र।

युयुधान—पुं० [सं०√युध्+कानच्, द्वित्वादि] १ इंद्र। २ योद्धा। ३ क्षत्रिय। ४ सात्यकि का एक नाम।

युरोप—पुं० [अ०] पूर्वी गोलार्द्ध के तीन महाद्वीपों में से एक जो एशिया के पश्चिम में काकेशस और यूराल पर्वतों के उस पार से आरम्भ होकर इँगलैंड और पुर्तगाल तक विस्तृत है।

युरोपियन—वि० [अ०] युरोप का। युरोप संबंधी।

पुं० युरोप का निवासी।

युवक—पुं० [सं० युवन्+कन्] नौजवान व्यक्ति विशेषतः १६ से ३५ वर्षों के बीच की अवस्था का व्यक्ति। जवान आदमी।

युव-गंड—पुं० [सं० ष० त०+अच्] मुहाँसा।

युव-जन—पुं० [सं०] युवकों और युवतियों का वर्ग, समाज या समूह। जैसे—देश का सारा भविष्य हमारे युवजनों पर ही अवलम्बित है।

युवति—स्त्री० [सं० युवन्+ति]=युवती।

युवती—वि० स्त्री० [सं०√यु+शतृ+ङीष्] प्राप्त-यौवना। जवान (स्त्री)।

स्त्री० १ जवान स्त्री। २ प्रियंगुलता। ३ सोनजुही। ४ हलदी।

युवतीष्टा—स्त्री० [सं० युवती-इष्टा, ष० त०] स्वर्ण-यूथिका। सोनजुही।

युवनाश्व—पुं० [सं०] १ एक सूर्यवंशी राजा जो प्रसेनजित् का पुत्र था तथा मांधाता का पिता था। २. रामायण के अनुसार धुंधुमार के पुत्र का नाम।

युवराई*—स्त्री० [हिं० युवराज] युवराज का पद या भाव।
पुं०=युवराज।

युवराज—पुं० [सं० कर्म० स०, समासान्त टच्] [स्त्री० युवराजी] वह सबसे बड़ा राजकुमार जो अपने पिता के राज्य का वास्तविक अधिकारी होता है।

युवराजत्व—पुं० [सं० युवराज+त्व] युवराज का भाव या धर्म। युवराज्य।

युवराजी—स्त्री० [सं० युवराज+हिं० ई (प्रत्य०)] युवराज का पद। युवराज्य।

युवा (वन्)—वि० [सं०√यु (मिश्रण)+कनिन्] [स्त्री० युवती] जिसकी अवस्था सोलह से लेकर पैंतीस वर्ष के अंदर तक हो। जवान।

युष्मदीय—वि० [सं० युष्मद्+छ—ईय] तुम लोगो का।

यूँ—अव्य=यों।

यूक—पुं० [सं०√यु+कन्, दीर्घ] ढील। चीलर।

यूका—स्त्री० [सं० यूक+टाप्] १ एक प्रकार का पुराना परिमाण जो एक यव का आठवाँ भाग और एक लिक्षा का अठगुना होता था। २. जूँ नाम का कीड़ा। ३. खटमल। ४ अजवायन। ५. गूलर।

यूति—स्त्री० [सं०√यु+क्तिन्, नि० दीर्घ] मिलाने की क्रिया। मिश्रण। मेल।

यूथ—पुं० [सं०√यु+थक् नि० दीर्घ] १. एक स्थान पर इकट्ठे होकर या मिलकर चरने, घूमने-फिरने वाले आदि पशुओ का समूह। २. मनुष्यो का जत्था। ३. सैनिको का दल। ४ फौज। सेना।

यूथक—पुं० [सं० यूथ+कन्] दल। समूह।

यूथग—पु० [सं० यूथ√गम् (गति) ड] चाक्षुष मन्वतर के एक प्रकार के देवता।
वि० यूथ या झुड मे चलने या रहनेवाला।

यूथ-नाथ—पु० [सं० ष० त०] १. यूथ का स्वामी। सरदार। २ सेनापति।

यूथप—पु० [सं० यूथ√पा (रक्षण)+क] १. यूथ का प्रधान सरदार। २. सेनापति।

यूथ-पति—पु० [सं० ष० त०] १ झुड या दल का नेता २ सेना नायक। सेनापति।

यूथपाल—पु० [सं० यूथ√पाल् (रक्षा)+णिच्+अण्] =यूथपति।

यूथिका—स्त्री० [सं० यूथ+ठन्—इक, टाप्] १. एक प्रसिद्ध पौधा जो लता के रूप मे भी होता है और जिसके सफेद रग के छोटे छोटे फूल बहुत ही सुगधित होते है। जूही। २. उक्त पौधे या लता का फूल।

यूथी—स्त्री० [सं० यूथ+अच् ङीष्] यूथिका।

यूनका—पु० [?] गरी की खली।

यूनान—पु० [अ० ग्रीक आयोनिया] युरोप का एक दक्षिणी राज्य जो प्राचीन काल मे अपनी सभ्यता, शिल्प, कला, साहित्य, दर्शन आदि के लिए प्रसिद्ध था।

यूनानी—वि० [अ०] १ यूनान देश से सबंध रखनेवाला। २ यूनान देश मे होनेवाला। यूनान के लोगो का।
पुं० यूनान का निवासी।
स्त्री० १. यूनान की भाषा। २. यूनान की एक प्रसिद्ध चिकित्सा-प्रणाली। हकीमी।

यूनियन—स्त्री० [अं०] दे० 'संघ'।

यूनिवर्सिटी—स्त्री० [अं०]=विश्वविद्यालय।

यूनीफार्म—पु० [अ०] वरदी।

यूप—पु० [सं०√यु+प, दीर्घ] १. यज्ञ का वह खभा जिसमे बलि-पशु बाँधा जाता है। २. वह स्तम्भ जो किसी विजय अथवा कीर्ति आदि की स्मृति मे बनाया गया हो।

यूपक—पु० [सं० यूप+क] १. यूप। २. लकड़ियों के भेद या प्रकार।

यूप-कटक—पु० [सं० ष० त०] यूप में लगा रहनेवाला लोहे का कड़ा या छल्ला।

यूप-कर्ण—पु० [सं० ष० त०] यज्ञ के यूप का वह भाग जो घी से अभिषिक्त किया जाता था।

यूपद्रु—पुं० [सं० ष० त०] खर (वृक्ष)।

यूप-ध्वज—पु० [सं० ष० त०] यज्ञ।

यूपांग—पु० [सं० यूप-अग] यूप-सबंधी कोई वस्तु।

यूपा†—पुं० [सं० द्यूत] जुआ। द्यूत कर्म।

यूपाहुति—स्त्री० [सं० यूप-आहुति ष० त०] यज्ञ के यूप की स्थापना के समय का एक कृत्य जिसमे यूप के उद्देश्य से आहुति दी जाती थी।

यूप्य—पुं० [सं० यूप+यत्] पलास।

यूरप†—पु०=युरोप।

यूराल—पु० १ एक बहुत बड़ा पहाड जो एशिया और युरोप के बीच में है। २ उक्त पर्वत के आस-पास का प्रदेश।
स्त्री० उक्त पर्वत से निकलनेवाली एक नदी।

यूरेनस—पु० [ग्री०] १ एक ग्रीक देवता। २ हमारे सौर जगत का एक ग्रह।

यूरेनियम—पु० [अ०] शुभ्र धातु-तत्त्व जो पानी से १८.७ गुना भारी होता है तथा जो आण्विक शक्ति के उत्पादन मे काम आता है।

यूरेशियन—पु० [अ० युरोप+एशिया] वह जिसके माता पिता में से कोई एक युरोप का और दूसरा एशिया का हो।

यूरोप—पु०=युरोप।

यूरोपीय—वि० [अ० यूरोप+हिं० ईय (प्रत्य०)] युरोप संबधी। युरोप का।

यूष—पु० [सं०√यूष् (हत्या)+क] १. पकाई हुई दाल का जूस या रस। २ शहतूत का पेड़।

यूसुफ—पुं० [अ० युसुफ] याकूब के एक पुत्र जिनकी गिनती पैगम्बरों मे होती है। ये बहुत ही सुन्दर थे अत ईर्ष्यावश इन्हे भाइयो ने दास बनाकर बेच दिया था।

यूह*—पु०=यूथ।

ये—सर्व० ['यह' का बहु०] निर्दिष्ट समीपस्थ वस्तुएँ या व्यक्ति।
वि० दो या अधिक समीपस्थ वस्तुओ, व्यक्तियों आदि का बोध कराने के लिए प्रयुक्त होनेवाला विशेषण। जैसे—ये लोग।

येई*—वि० सर्व०=यही।

येऊ—अव्य० [हिं० ये+ऊ (प्रत्य०)] यह भी।

येती—पु० [ने०] एक प्रकार का कल्पित जन्तु जिसके अस्तित्व का अभी तक पता नही चला है। यह बहुत ही भीषण और विशाल माना जाता है, और आजकल हिम मानव के नाम से प्रसिद्ध है।

यैती*—वि०=एतो (इतना)।

येन—सर्व० [सं०] जिससे।

पद—येन-केन-प्रकारेण=किसी न किसी प्रकार। जैसे हो सके, वैसे।

पुं० [जा०] एक प्रकार का जापानी सिक्का।

येमन—पुं० [सं०] जीमना। खाना।

येहु†—सर्व०=यह।

येहु*—अव्य० [हिं० यह+हु] यह भी।

यों—अव्य० [सं० एवमेव, प्रा० एमेअ, अप० एनि] १ इस तरह से। इस प्रकार से। इस भाँति। ऐसे। जैसे—यों काम न चलेगा। २ साधारण अवस्था या रूप में। जैसे—यों देखने में यह सफेद ही मालूम होता है।

यों-ही—अव्य० [हिं० यों+ही] १. इसी ढंग, तरह या प्रकार से। इसी भाँति। २ बिना किसी आवश्यक या प्रयोजन के। निरर्थक। व्यर्थ। जैसे—यह कोठरी यों-ही बंद कर दी गई है।

यो†—सर्व०=यह।

योक्तव्य—वि० [सं० √युज् (जोडना)+तव्यत्] १ युक्त किये जाने अथवा जोड़े जाने के योग्य। २ नियुक्त किये जाने के योग्य।

योक्ता (क्तृ)—वि० [सं०√युज्+तृच्] १ जोडने, मिलाने या बाँधने वाला। २ उभाड़नेवाला। उत्तेजक।

पुं० गाड़ीवान।

योक्त्र—पुं० [सं०√युज्+ष्ट्रन्] १ रस्सी। २. वह रस्सी जिससे गाड़ी का बैल जूए में बँधा हो। ३ रस्सी बाँधने का पेच या औजार।

योगंधर—पुं० [सं० योग√धृ (धारण)+खच्, मुम् आगम] १ अस्त्र शोधन का एक प्राचीन यंत्र। २ पीतल।

योग—पुं० [सं०√युज्+घञ्] १ दो अथवा अधिक पदार्थों का एक में मिलना अथवा उन्हें एक में मिलाना। मिलाप। मेल। २ एक में मिले हुए होने की अवस्था या भाव। मिलन। संयोग। ३ दो या अधिक चीजों या बातों का आपस में होनेवाला सम्पर्क या संबंध। लगाव। ४ आत्म-तत्त्व का चिंतन करते हुए ईश्वर या परमात्मा के साथ मिलकर एक होना। ५ उक्त प्रकार की साधना के उपाय, प्रणाली, स्वरूप आदि बतलानेवाला शास्त्र। विशेष दे० 'योग शास्त्र'। ६ तपस्या। ७. ध्यान। ८ आपस में होनेवाला प्रेम और सद्भाव। ९ किसी चीज या बात का किया जानेवाला उपयोग प्रयोग, या व्यवहार। १०. उपयुक्त होने की अवस्था या भाव। उपयुक्तता। ११ नतीजा। परिणाम। १२ धन और सम्पत्ति प्राप्त करना तथा बढ़ाना १३. धन-सम्पत्ति। दौलत। १४ आमदनी। आय। १५ नफा। लाभ। १६. उपाय। तरकीब। युक्ति। १७ किसी काम या बात के लिए मिलनेवाला उपयुक्त समय या सुभीता। १८ दर्शनकार पतंजलि के अनुसार चित्त की वृत्तियों को चंचल होने से रोकना। मन को इधर-उधर भटकने न देना और आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए उसे एकाग्र करना।

विशेष—महर्षि पतंजलि का मत है कि अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष और अभिनिवेश ये पाँच प्रकार के क्लेश, मनुष्य को जीवन-मरण के चक्र में फँसाए रखते हैं और वह योग की साधना करके ही इन क्लेशों से बचकर ईश्वर में मिल अथवा मोक्ष प्राप्त कर सकता है। उसे संसार से विरक्त होकर प्राणायामपूर्वक ईश्वर का ध्यान करना चाहिए और समाधि लगानी चाहिए। यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि ये योग के आठ अंग कहे गये हैं। यह भी कहा गया है कि योग के द्वारा साधक अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा आदि आठ प्रकार की विभूतियाँ या सिद्धियाँ (दे० 'सिद्धि') भी प्राप्त कर सकता है, और अंत में मुक्ति या कैवल्य प्राप्त कर लेता है।

१९ गणित में, दो या अधिक राशियों अथवा संख्याओं का जोड़। २० किसी काम या बात के लिए आया हुआ अच्छा अवसर या शुभ काल। २१. फलित ज्योतिष में 'कुछ' विशिष्ट काल या अवसर जो सूर्य और चंद्रमा के कुछ विशिष्ट स्थानों में आने के कारण होते हैं और जिनकी संख्या २७ है। २२ फलित ज्योतिष के अनुसार, कुछ विशिष्ट तिथियों, वारों और नक्षत्रों आदि का एक साथ या किसी निश्चित नियम के अनुसार पड़ना। २३ फलित ज्योतिष में, किसी एक राशि में कई ग्रहों या आकाशस्थ पिंडों का एक साथ बहुत पास-पास आकर स्थित होना। (कंजन्कशन आफ स्टार्स) जैसे—अष्टग्रही योग।

विशेष—ग्रहों की युति और योग में यह अंतर है कि युति तो उस दशा में मानी जाती है जब एक से अधिक ग्रह एक ही राशि में एक ही क्रांति में एकत्र होते हैं, अर्थात् पृथ्वी पर से एक ही धरातल या सीध में दिखाई देते हैं, पर ग्रहों का योग उस दशा में माना जाता है जब वे एकत्र तो एक ही राशि में होते हैं पर उनकी क्रांतियाँ अलग अलग होती है, अर्थात् वे भिन्न भिन्न धरातलों पर होते है। २४ छंदःशास्त्र में एक प्रकार का छंद जिसके प्रत्येक चरण में १२, ८ के विश्राम से २० मात्राएँ और अन्त में यगण होता है। २५. वैद्यक में कुछ विशिष्ट क्रियाओं अथवा प्रकारों से एक में मिलाई हुई अनेक ओषधियाँ। औषध। २६ वह उपाय जिसके द्वारा किसी को अपने वश में किया जाय। वशीकरण। २७ साम, दाम, दण्ड और भेद ये चारों उपाय। २८. कायदा। नियम। २९ काम करने का कौशल या चातुरी। होशियारी। ३० छल। धोखा। ३१ दगा-बाज। धोखेबाज। धूर्त। ३२ चर। दूत। ३३ गाड़ी, नाव आदि सवारियाँ। यान। ३४. नाम। संज्ञा। ३५ न्यायशास्त्र का ज्ञाता। नैयायिक। ३६ अस्त्र, शस्त्र आदि धारण करके युद्ध के लिए सुसज्जित होना। ३७ पेशा। वृत्ति। ३८ शब्द की निरुक्ति या व्युत्पत्ति। शब्दार्थ (रूढ़ि से भिन्न)। ३९ किसी सौर जगत् का प्रधान या मुख्य ग्रह। ४० ईश्वर। परमात्मा।

योग-अग्नि—स्त्री० [सं० योग-अग्नि=योगाग्नि, मध्य० स०] योग और साधना मार्ग में, वह अग्नि या ज्वाला जो साधक अपने शरीर को जलाकर मरने के लिए अपने अन्दर से उत्पन्न करता है। उदा०—अस कहि जोग अगिनि तन जारा भयउ सकल मख हाहाकारा।—तुलसी।

योग-क्षेम—पुं० [सं० द्व० स०] १. जो वस्तु अपने पास न हो उसे प्राप्त करना और जो मिल चुकी हो, उसकी रक्षा करना। २ जीवन बिताना। गुजारा करना। ३ कुशल-मंगल। खैरियत। ४ दूसरे की सम्पत्ति आदि की रक्षा। ५. मुनाफा। लाभ। ६. राष्ट्र की शान्ति और सुव्यवस्था। ७ ऐसी वस्तु जो उत्तराधिकारियों में न बाँटी गई हो अथवा न बाँटी जाती हो।

योग-चक्षु(स्)—पुं० [सं० ब० स०] ब्राह्मण।

योगचर—पुं० [सं० योग√चर् (गति)+ट, उप० स०] हनुमान्।

योगज—पुं० [सं० योग√जन् (उत्पत्ति)+ड, उप० स०] १ योग साधन की वह अवस्था जिसमे योगी में अलौकिक वस्तुओं को प्रत्यक्ष कर दिखलाने की शक्ति आ जाती है।
वि० योग से उत्पन्न या प्राप्त होनेवाला।

योगज-फल—पुं० [सं० कर्म० स०] वह अंक या फल जो दो अंकों को जोडने से प्राप्त हो। जोड। योग।

योग-तारा—पुं० [सं० उपमित स० ?] किसी नक्षत्र का प्रधान तारा।

योग-तत्त्व—पुं० [सं० ष० त०] योग का धर्म या प्रभाव।

योग दर्शन—पुं० [सं० मयू० स०] महर्षि पतंजलि कृत 'योग-सूत्र' नामक प्रसिद्ध दर्शन-ग्रन्थ जो हमारे यहाँ के छ दर्शनों मे से एक है।
विशेष—यह समाधि, साधन, विभूति और कैवल्य नामक चार पदों या भागो मे विभक्त है। इसमे योग अर्थात् ईश्वर-प्राप्ति के उद्देश्य, लक्षण तथा साधन के उपाय या प्रकार बतलाये गये हैं, और उसके भिन्न-भिन्न अंगों का विवेचन किया गया है। इसमे चित्त की भूमियों या वृत्तियों का भी विवेचन है। इस योग-सूत्र का प्राचीनतम भाष्य वेद-व्यास का है जिस पर वाचस्पति का वार्तिक भी है।

योग-दान—पुं० [सं० तृ० त०] १. किसी को सहायता देना। (किसी का) हाथ बँटाना। २ योग की दीक्षा। ३ कपट-भाव से किया हुआ दान।

योग-धारा—स्त्री० [सं० ष० त०] ब्रह्मपुत्र की एक सहायक नदी।

योग-नाथ—पुं० [सं० ष० त०] शिव।

योग-निद्रा—स्त्री० [सं० मध्य० स०] १. पुराणानुसार प्रत्येक युग के अंत में होनेवाली विष्णु की निद्रा। २ योग-साधन से लगनेवाली समाधि। ३ रणक्षेत्र मे वीरो की होनेवाली मृत्यु।

योग-पट्ट—पुं० [सं० ष० त०] १ प्राचीन काल का एक प्रकार का पहनावा जो पीठ पर से लेकर, कमर मे बाँधा जाता था और जिसमें घुटनो तक के अंग ढके रहते थे। २ साधुओं का अँचला।

योग-पति—पुं० [सं० ष० त०] १ विष्णु। २ शिव।

योग-पदक—पुं० [सं० ष० त०] पूजन आदि के समय ओढा जानेवाला एक तरह का चार अंगुल चौडा उत्तरीय।

योग-पाद—पुं० [सं० ष० त०] ऐसा कृत्य जिससे अभीष्ट की प्राप्ति होती हो। (जैन)

योग-पारंग—पुं० [सं० स० त०] शिव।
वि० जो योग-साधन मे प्रवीण हो।

योग-पीठ—पुं० [सं० ष० त०] देवताओ का योगासन।

योग-फल—पुं० [सं० ष० त०] दो या अधिक संख्याओ का जोड।

योग-बल—पुं०[सं० मध्य० स०] योग से प्राप्त होनेवाला तेज या शक्ति।

योग-भ्रष्ट—वि०[सं० पं० त०] जिसकी योग की साधना चित्त-विक्षेप आदि के कारण पूरी न हो सकी हो या बीच मे ही खंडित हो गई हो। योग-मार्ग से च्युत।

योगमय—पुं०[सं० योग+मयट्] विष्णु।

योग-माता(तृ)—स्त्री०[सं० ष० त०]१ दुर्गा। २ पीवरी।

योग-माया—स्त्री०[सं० मयू० स०]१. दार्शनिक और धार्मिक क्षेत्रो में ईश्वर या ब्रह्म की वह माया जिससे नाम, गुण और रूप से युक्त यह सारी सृष्टि बनी है और जिसके अन्दर ईश्वर या ब्रह्म का तत्त्व छिपा हुआ व्याप्त है। २ पुराणानुसार यशोदा के गर्भ से उत्पन्न वह कन्या जिसे वसुदेव ले जाकर देवकी के पास रख आये थे और जिसके बदले मे श्रीकृष्ण को उठा लाये थे। कंस ने इसी को देवकी की संतान समझकर जमीन पर पटककर मार डालना चाहा था, और यही अष्टभुजा देवी का रूप धारण करके कंस को चेतावनी देती हुई ऊपर उठकर आकाश में विलीन हो गई थी।

योग-मूर्तिधर—पुं०[सं०ष०त०]१ शिव। २ पितरो का एक गण या वर्ग।

योग-यात्रा—स्त्री०[सं० मध्य०स०] फलित ज्योतिष के अनुसार वह योग जो यात्रा के लिए उपयुक्त हो।

योग-योगी(गिन्)—पुं०[सं० मध्य० स०] वह योगी जो योगासन लगाकर बैठा हो।

योग-रंग—पुं०[सं० ब० स०] नारंगी।

योग-रथ—पुं०[सं० ष० त०] योग साधन का उपाय या मार्ग।

योग-राज-गुग्गुल—पुं० [सं० मध्य० स०] औषधियों के योग से बना हुआ एक प्रसिद्ध औषध जिसमे गुग्गुल प्रधान है। (वैद्यक)

योग-रूढ़ि—स्त्री०[सं० मध्य०स०] दो शब्दो के योग से बना हुआ वह शब्द जो अपना सामान्य अर्थ छोडकर कोई विशेष अर्थ बतावे।

योग-रोचना—स्त्री०[सं० मध्य० स०] इंद्रजाल करनेवालों का एक प्रकार का लेप।

योगवान्(वत्)—पुं० [सं० योग+मतुप्] [स्त्री० योगवती] योगी।

योग-वासिष्ठ—पुं०[सं० मध्य०स०] वेदांतशास्त्र का एक प्रसिद्ध ग्रंथ जो वसिष्ठ जी का बनाया कहा जाता है।

योगवाह—पुं० [सं० योग√वह् (ले जाना)+णिच्+अण्, उप० स०] अनुस्वार और विसर्ग।

योगवाही(हिन्)—पुं० [सं० योग√वह्+णिनि] वह माध्यम जिसमे औषध आदि मिलाकर खाई जाती हो। जैसे—तुलसी या पान की पत्ती का रस, शहद आदि।

योग-विक्रय—पुं०[सं० तृ० त०] धोखे या बेईमानी के द्वारा होनेवाली बिक्री।

योगविद्—पुं०[सं० योग√ विद् (ज्ञान)+क्विप्] १ योग शास्त्र का ज्ञाता। २ वह जो औषधियों के योग से द्रव्य प्रस्तुत करना जानता हो। दवाएँ बनानेवाला। ३ जादूगर। ४. शिव।

योग-विद्या—स्त्री०[सं० ष० त०] १ वह विद्या या शास्त्र जिसमे योग सम्बन्धी क्रियाओ का विवेचन होता है। २. दे० 'योगदर्शन'।

योग-वृत्ति—स्त्री० [सं० मध्य० स०] चित्त की वह शुद्ध और शुभ वृत्ति जो योग के द्वारा प्राप्त होती है।

योग-शक्ति—स्त्री०[सं० मध्य० स०] १ योग के द्वारा प्राप्त होनेवाली शक्ति। २ साहित्य मे योग शब्द(देखें) का अर्थ प्रकट करनेवाली शक्ति।

योग-शब्द—पुं०[सं० मध्य० स०] ऐसा शब्द जिसका प्रचलित या मान्य अर्थ व्युत्पत्ति से प्रकट तथा स्पष्ट होता है।

योग-शरीरी(रिन्)—पुं०[सं० ब० त०] योगी।

योग-शास्त्र—पुं०[सं० ष० त० या मध्य० स०] १. दे० 'योग-विद्या'। २ दे० 'योग-दर्शन'।

योग-शास्त्री (स्त्रिन्)--पुं० [सं० योगशास्त्र+इनि] योगशास्त्र का ज्ञाता।

योग-शिक्षा--स्त्री० [सं० ष० त०] एक उपनिषद्।

योग-संसिद्धि--स्त्री० [सं० ष० त०] योग-सिद्धि।

योग-सत्य--पुं० [सं० तृ० त०] किसी प्रकार के योग के फलस्वरूप प्राप्त होनेवाला नाम। जैसे--दंड का योग होने पर 'दंडी' योग-सत्य होता है।

योग-सार--पुं० [सं० ष० त०] १. रोगमुक्त तथा स्वस्थ करनेवाला उपचार या उपाय। २. तपस्या।

योग-सिद्ध--पुं० [सं० तृ० त०] वह जिसने योग की सिद्धि प्राप्त कर ली हो। सिद्ध योगी।

योग-सिद्धि--स्त्री० [सं० ष० त०] १. योग का साधन। २ वह अवस्था जिसमें योग साधन करनेवाला अपने किसी व्यापार द्वारा अभीष्ट सिद्ध करता है।

योग-सूत्र--पुं० [सं० मध्य० स०] =योग-दर्शन।

योगांग--पुं० [सं० योग-अंग, ष० त०] योग के निम्न आठ अंगों में से हर एक--यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि।

योगांजन--पुं० [सं० योग-अंजन, मध्य० स०] १. आँखों का एक प्रकार का अंजन या प्रक्षेप जिसको आँखों में लगाने से अनेक रोग दूर होते हैं। २ दे० 'सिद्धांजन'।

योगांतराय--पुं० [सं० योग-अन्तराय, ष० त०] योग में विघ्न डालनेवाली आलस्य आदि दस बातें।

योगांता--स्त्री० [सं० योग-अंत, ब० स०-टाप्] बुध की एक गति जिसका भोगकाल आठ दिनों का होता है तथा जो मूल, पूर्वाषाढ़ा और उत्तराषाढ़ा नक्षत्रों को क्रांत करती है।

योगाकर्षण--पुं० [सं० योग-आकर्षण, ष० त० ?] वह शक्ति जिससे परमाणु परस्पर जुड़े हुए तथा अविभाज्य माने जाते हैं।

योगागम--पुं० [सं० योग-आगम, मध्य० स०] योग-दर्शन।

योगाचार--पुं० [सं० योग-आचार, ष० त०] १. योग का आचरण। योग-साधन। २ बौद्धों का एक संप्रदाय जो महायान की दो शाखाओं में से एक है तथा जिसका मत है कि पदार्थ जो दिखाई पड़ते हैं, वे शून्य है।

योगात्मा (त्मन्)--पुं० [सं० योग-आत्मन्, ब० स०] योगी।

योगानुशासन--पुं० [सं० योग-अनुशासन, मध्य० स०] योग-दर्शन।

योगाभ्यास--पुं० [सं० योग-अभ्यास, ष० त०] योगशास्त्र के अनुसार योग के आठ अंगों का अनुष्ठान या साधन।

योगाभ्यासी (सिन्)--पुं० [सं० योगाभ्यास+इनि] योग की साधना करनेवाला योगी।

योगारंग--पुं० [सं० योग-आरंग, तृ० त०] नारंगी।

योगाराधन--पुं० [सं० योग-आराधना, ष० त०] योग की क्रियाओं का अभ्यास करना। योगसाधन।

योगारूढ़--पुं० [सं० द्वि० त०] वह योगी जिसने इंद्रिय-सुख आदि की ओर से अपना चित्त हटाकर योगाभ्यास आरंभ कर दिया हो।

योगासन--पुं० [सं० योग-आसन, ष० त०] योग-साधन के लिए विहित आसन अर्थात् बैठने के ढंग या मुद्राएँ।

योगित--भू० कृ० [सं० योग+इतच्] १. जिसपर योग का अभिचार हुआ हो या किया गया हो। २. मंत्र-मुग्ध किया हुआ। ३ सम्मोहित किया हुआ। ४ पागल।

योगिता--स्त्री० [सं० योगिन्+तल्--टाप्] योगी होने की अवस्था, धर्म या भाव।

योगित्व--पुं० [सं० योगिन्+त्व] =योगिता।

योगि-दंड--पुं० [सं० ष० त०] बेंत।

योगि-निद्रा--स्त्री० [सं० ष० त०] थोड़ी सी नींद। झपकी।

योगिनी--स्त्री० [सं० √युज् (योग)+घिनुण्+ङीप्] १ योग की साधना करनेवाली स्त्री। योगाभ्यासिनी। २ एक प्रकार की देवियाँ जिनमें से चौसठ मुख्य मानी गई हैं। ३ एक विशिष्ट प्रकार की देवियाँ जिनकी संख्या आठ कही गई है। ४ एक प्रकार की पिशाचिनी। ५ जादूगरनी। ६ आषाढ़। कृष्ण एकादशी। ७ पुराणानुसार एक लोक। ८ दे० 'योग-माया'।

योगिनी-चक्र--पुं० [सं० मध्य० स०] तंत्र-शास्त्र में, योगिनियों की स्थिति सूचित करनेवाला एक तरह का चक्र। उक्त चक्र से यह जाना जाता है कि योगिनियाँ किधर या किस दिशा में हैं।

योगिया--पुं० १ दे० 'योगी'। २ =जोगिया (राग)।

योगिराज--पुं० [सं० ष० त०] योगियों में श्रेष्ठ बहुत बड़ा योगी।

योगींद्र--पुं० [सं० योगिन्-इंद्र, स० त०] बहुत बड़ा योगी।

योगी (गिन्)--पुं० [सं० √युज्+घिनुण्] १. दुःख, सुख आदि को समान भाव से ग्रहण करनेवाला व्यक्ति। आत्मज्ञानी। २ वह जो योग की साधना करता हो। ३ महादेव। शिव।
वि० जुड़ा हुआ। संबंधित।

योगीनाथ--पुं० [सं० योगिनाथ] महादेव। शंकर।

योगीश--पुं० [सं० योगिन्-ईश, ष० त०] १ योगियों के स्वामी। २ बहुत बड़ा योगी। ३ याज्ञवल्क्य का एक नाम।

योगीश्वर--पुं० [सं० योगिन्-ईश्वर, ष० त०] १ योगियों में श्रेष्ठ। २ महादेव। ३ याज्ञवल्क्य का एक नाम।

योगीश्वरी--स्त्री० [सं० योगिन्-ईश्वरी, ष० त०] दुर्गा।

योगेंद्र--पुं० [सं० योग-इंद्र, ष० त०] १ बहुत बड़ा योगी। २ वैद्यक में एक प्रकार का रसौषध।

योगेश--पुं० [सं० योग-ईश, ष० त०] =योगीश।

योगेश्वर--पुं० [सं० योग-ईश्वर, ष० त०] १ परमेश्वर। २. महादेव। शिव। ३ श्रीकृष्ण। ४ एक प्राचीन तीर्थ। ५ बहुत बड़ा योगी।

योगेश्वरत्व--पुं० [सं० योगेश्वर+त्व] योगेश्वर का भाव या धर्म।

योगेश्वरी--स्त्री० [सं० योग-ईश्वरी, ष० त०] १ दुर्गा। २ शाक्तों की एक देवी जो दुर्गा का एक विशिष्ट रूप है। ३. कर्कोटकी।

योगेष्ट--पुं० [सं० योग-इष्ट, स० त०] सीसा नामक धातु।

योग्य--वि० [सं० √युज्+णिच्, यत् ये योग+यत्] [भाव० योग्यता] १. जिसमें सोचने-विचारने तथा कुछ विशिष्ट प्रकार के कामों को सुचारु रूप से करने-धरने की सहज क्षमता या क्रियाशीलता हो। काबिल। लायक। (एबुल) २ विद्या संपन्न तथा धीमान्। ३ अनेक प्रकार की युक्तियाँ जानने और उनका उपयोग करनेवाला। ४ उचित। ठीक। मुनासिब। ५ जो किसी कार्य, पद आदि के लिए

उपयुक्त हो। पात्र। ६. (भूमि) जो जोतने के लिए उपयुक्त हो। ७. योग करने अर्थात् जोड़नेवाला। ८. दर्शनीय। सुन्दर। ९. आदरणीय। मान्य।

पुं० १. पुष्य नक्षत्र। २ ऋद्धि नामक ओषधि। ३ गाड़ी, छकड़ा, रथ, आदि सवारियाँ। ४. चन्दन।

योग्यता—स्त्री०[सं० योग्य+तल्+टाप्]१ योग्य होने की अवस्था, धर्म या भाव। २. बुद्धिमत्ता, विद्वत्ता या और कोई ऐसा गुण या सामर्थ्य जिससे कोई व्यक्ति किसी काम, पद या बात के लिए उपयुक्त सिद्ध हो सके। काबिलीयत। ३. बड़प्पन। महत्ता। ४. औकात। शक्ति। सामर्थ्य। ५. अनुकूल या उपयुक्त होने की अवस्था या भाव। ६. गुण। सिफत। ७. इज्जत। प्रतिष्ठा। ८. साहित्य में, अर्थ-बोध के विचार से वाक्य के तीन गुणो मे से एक गुण जिसका अस्तित्व उस दशा मे माना जाता है, जिसमे वाक्य के अर्थ या आशय की ठीक संगति बैठती है अथवा उसका आशय उपयुक्त अथवा संभव जान पड़ता है।

योग्यत्व—पुं०[सं० योग्य+त्व]=योग्यता।

योग्या—स्त्री०[सं० योग्य+टाप्]१ कोई काम करने का अभ्यास। मश्क। २ सूर्य की स्त्री। ३. स्त्री।

योजक—वि०[सं०√युज्+णिच्+ण्वुल्—अक]जोड़ने या मिलानेवाला।
पुं० मूडमकमध्य।

योजन—पुं०[सं०√ युज्+णिच्+ल्युट्—अन] १ जोडने, मिलाने आदि की क्रिया या भाव। योग। २ ईश्वर। परमात्मा। ३ दूरी नापने की एक पुरानी नाप जो किसी के मत से दो कोस की, किसी के मत से चार कोस की और किसी के मत से आठ कोस की होती थी।

योजन-गंधा—स्त्री०[सं० ब० स०, टाप्] १ व्यास की माता और शांतनु की भार्या सत्यवती का एक नाम। २ सीता। ३ कस्तूरी।

योजन-गंधिका—स्त्री० [सं० योजनगंधा+क+टाप्—ह्रस्व] योजनगंधा।

योजन-पर्णी—स्त्री०[सं० ब० स०, ङीष्] मजीठ।

योजन-वल्ली—स्त्री०[सं० ब० स०] मजीठ।

योजना—स्त्री०[सं०√युज्+णिच्+युच्—अन, टाप्] १. योग होना। मिलना। २ प्रयोग। व्यवहार। ३ किसी भावी कार्य के निष्पन्न करने का प्रस्तावित कार्य-क्रम। ऐसी रूप-रेखा जिसके अनुसार कार्य किया जाने को हो। (प्लैनिंग) ४. बनावट। रचना। ५ स्थिरता। ६. प्रबंध।

योजना-आयोग—पुं०[सं० ष० त०] वह प्रशासकीय संस्था जो राजकीय योजनाओं का संचालन करती है। (प्लैनिंग कमीशन)

योजनालय—पुं०[सं० योजना-आलय, ष०त०] वह भवन जिसमे योजनाएँ बनाई जाती हैं।

योजनीय—वि०[सं०√युज्+अनीयर्]१. जो मिलाने के योग्य हो। २ जो जोड़ा या मिलाया जाने को हो। ३. जो किसी काम या बात में लगाये जाने के योग्य हो।

योजिका—स्त्री० [सं० योजक+टाप्, इत्व] लेखन शैली में विशिष्ट समस्त पदों के बीच में लगाया जानेवाला चिह्न। (हाइफ़न) जैसे—जीवन-ज्योति, पति-पत्नी आदि में का चिह्न।

योजित—भू० कृ०[सं०√युज्+णिच्+क्त]१. जिसकी योजना की गई हो। २. योजना के रूप में लाया हुआ। ३. जोड़ा या मिलाया हुआ। ४. किसी काम या बात मे लगाया हुआ। ५ बनाया या रचा हुआ। रचित। ६. नियमों आदि से बँधा हुआ। नियमबद्ध।

योजी (जिन्)—पुं०[सं०√युज्+णिनि]वह तत्व या पदार्थ जो दो या अधिक अन्य तत्त्वों या पदार्थों को मिलाता हो।
वि० मिलानेवाला। (कनेक्टिव)

योज्य—वि०[सं०√युज्+णिच्+यत्]१. जोड़े या मिलाये जाने के योग्य। २ व्यवहार में लाये जाने के योग्य।
पुं० गणित में जोड़ी जानेवाली संख्याएँ।

योत्र—पुं० [सं० यु (मिश्रण) +ष्ट्रन्] वह रस्सी जिससे बैल की गरदन में जुआ बाँधा जाता है। जोत।

योद्धव्य—वि० [सं०√ युध् (प्रहार)+तव्य] जिसमे युद्ध करना हो या युद्ध किया जाने को हो।

योद्धा(द्धृ)—पुं०[सं० युध+तृच्] वह जो युद्ध करता हो। युद्ध करने-वाला सिपाही या सैनिक। (वारियर)

योध—पुं०[सं०√युध्+अच्] योद्धा। सिपाही।

योधक—पुं०[सं०√ युध्+ण्वुल्—अक] योद्धा। सिपाही।

योधन—पुं०[सं०√ युध्+ल्युट्—अन]१ युद्ध की सामग्री। लड़ाई का सामान। २. युद्ध। लड़ाई।

योधा†—पुं०=योद्धा।

योधि-वन—पुं०[सं० ष० त० स०] एक प्राचीन जंगल या वन।

योधी (धिन्)—पुं०[सं०√ युध+णिनि]योद्धा। वीर।

योध्य—वि०[सं०√युध्+ण्यत्]१, जिसके साथ युद्ध किया जा सके। २ (कार्य या बात) जिसे आधार या कारण मानकर युद्ध करना हो।

योनल—पुं०[सं० यव-नाल, ब० स०, पृषो० सिद्धि] ज्वार या मक्का नामक अन्न। यवनाल।

योनि—स्त्री०[सं०√ यु (मिश्रण)+नि]१. स्त्री की जननेंद्रिय। गर्भा-शय और भग। २. स्त्री जाति के जीवों, पदार्थों आदि का वह अंग जिससे वे अपना वंश बढ़ाने के लिए अपने ही वर्ग के अन्य जीव, पदार्थ आदि उत्पन्न करते हैं। ३ देह। शरीर। ४. उक्त के आधार पर जीवों, पदार्थों आदि के अलग अलग वर्ग या विभाग। जैसे—पक्षियों, पशुओ, मनुष्यो या वृक्षो की योनि में जन्म लेना।

विशेष—हमारे यहाँ के पुराणो में कुल चौरासी लाख योनियाँ कही गई हैं। जैसे मनुष्यों की चार लाख, पशुओ की तीन लाख, पक्षियो की दस लाख, कीड़े मकोड़ो की ग्यारह लाख आदि आदि।

५ वह जिससे कोई वस्तु उत्पन्न हो। उत्पादक-कारण। ६ जन्म। ७. उत्पत्ति या उद्गम का स्थान। ८ आकर। खान। खानि। ९ जल। पानी। १० अंतःकरण। ११. पुराणानुसार कुश द्वीप की एक नदी।

योनि-कंद—पुं० [सं० स० त०] योनि में होनेवाली एक तरह की गाँठ जिसमें से मवाद या रक्त बहता रहता है।

योनिक—वि०[सं० योनि+हिं० क (प्रत्य०)] १ योनि-संबंधी। यौन। २. जिसमे योनि अर्थात् स्त्री-पुरुष या पति-पत्नीवाले सम्बन्ध की कोई बात हो (सेक्सी)

योनिज—वि० [सं० योनि√जन् (उत्पत्ति)+ड] जिसने योनि से जन्म लिया हुआ हो। अंडज से भिन्न।
पु० योनि से उत्पन्न जीव या प्राणी।

योनि-देवता—पु० [सं० ब० स०] पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र।

योनि-दोष—पु० [सं० ष० त०] उपदश रोग। गरमी। आतशक।

योनि-फूल—पु० [सं० योनि+हि० फूल] योनि के अदर की वह गाँठ जिसके ऊपर एक छेद होता है।

योनि-भ्रंश—पु० [सं० ष० त०] योनि का एक रोग जिसमे गर्भाशय अपने स्थान से कुछ हट जाता है।

योनि-मुक्त—वि० [सं० प०त०] जो किसी योनि मे न हो अर्थात् जो जन्म-मरण के बंधनों से मुक्ति पा चुका हो।

योनि-मुद्रा—स्त्री० [सं० मध्य० स०] तान्त्रिक पूजन आदि के समय उँगलियों से बनाई जानेवाली योनि की आकृति।

योनि-यंत्र—पु० [सं० मध्य० स०] कामाक्षा, गया आदि कुछ विशिष्ट तीर्थ स्थानो मे बना हुआ एक प्रकार का बहुत ही सकीर्ण मार्ग, जिससे होकर निकलने पर मोक्ष की प्राप्ति मानी जाती है।

योनि-वाद—पु० [सं० ष० त०] प्राचीन भारत मे एक नास्तिक दार्शनिक सप्रदाय।

योनिवादी (दिन्)—वि० [सं० योनिवाद√इनि] योनिवाद-सबधी। योनिवाद का।
पु० योनिवाद का अनुयायी व्यक्ति।

योनि-शूल—पु० [सं० ष० त०] योनि मे होनेवाली पीडा।

योनिशूलघ्नी—स्त्री० [सं० योनिशूल√ हन् (हिसा)+टक्+ङीप्] शतपुष्पा।

योनि-संकर—पु० [सं० तृ० त०] वर्ण-सकर।

योनि-सकोचन—पु० [सं० ष० त०] १ योनि को सिकोडने की क्रिया। २ ऐसी दवा जिसके प्रयोग से योनि का मुख छोटा हो जाता या सिकुड जाता हो।

योनि-सभव—वि० [सं० योनि-सम√भू (होना)+अप्, उप० स०] जो योनि से उत्पन्न हुआ हो। योनिज।

योनि-सवरण—पु० [सं० ष० त०] स्त्रियों का एक प्रकार का रोग जिसमे गर्भाशय का द्वार रुक जाता या बद हो जाता है और जिससे दम घुटने के कारण अन्दर का बच्चा मर जाता है।

योन्यर्श—पु० [सं० योनि-अर्श, मध्य० स०] योनिकद। (दे०)

योम—पु० [अ० यौम] १ दिन। रोज। २ तारीख। तिथि।

योरोप—पु०=युरोप।

योरोपियन—पु० =युरौपियन।

योषा—स्त्री० [सं०√ यु+स+टाप्] नारी। स्त्री। औरत।

योषित—स्त्री० [सं०√युष्+इति]=योषा।

योषिता—स्त्री० [सं० योषित+टाप्] स्त्री। नारी।

योषित्प्रिया—स्त्री० [सं० ष० त०] हलदी।

यौं—अव्य० दे० 'यों'।

यौ—सर्व०=यह।

यौक्तिक—वि० [सं० युक्ति+ठक्—इक] १ युक्ति के रूप मे होनेवाला। युक्तिसगत। युक्तियुक्त। ठीक। २ जो क्रीडा, विनोद आदि मे साथ रहता हो। नर्मसखा। ३ क्रीडा। विनोद।

यौगंधर—पु० [सं० युगन्धर+घञ्] अस्त्रों को विफल करने का एक प्रकार का अस्त्र।

यौगंधरायण—पु० [सं० युगन्धर+फक्—आयन] १ वह जो युगंधर के गोत्र मे उत्पन्न हुआ हो। २ उदयन का एक मन्त्री।

यौग—पु० [सं० योग+अण्] योग-दर्शन का अनुयायी।
वि० योग-सम्बन्धी। योग का।

यौगक—वि० [सं० यौग+कन्] योग-सबधी। योग का।

यौगिक—वि० [सं० योग+ठञ्—इक] १ योग अर्थात् जोड से सबध रखनेवाला। २ योग अथवा जोड के रूप मे अथवा योग के फलस्वरूप होनेवाला। जैसे—यौगिक पद।
पु० १ व्याकरण मे प्रकृति और प्रत्यय से बना हुआ शब्द। २ दो शब्दो के योग या मेल से बना हुआ पद। ३ छन्दशास्त्र मे, अट्ठाइस मात्राओं वाले छदों की सज्ञा।

यौजनिक—वि० [सं० योजन+ठञ्—इक] १ योजन-सम्बन्धी। योजन का। २ एक योजन तक जानेवाला।

यौतक—पु० [सं० युतक+अण्] यौतुक। दहेज।

यौतुक—पु० [सं० योतु+कण्] १ विवाह के समय का मिला हुआ धन। दहेज। २ चढावा। ३ उपहार।

यौथिक—वि० [सं० यूथ+ठक्—इक] १ यूथ-सबधी। समूह का। २ यूथ या झुड मे रहनेवाला (जीव या प्राणी)।

यौथिकी—स्त्री० [सं०यूथ से] वैष्णव भक्तों के अनुसार ऐसी गोपियों का वर्ग जो किसी समय ऋषि-मुनियो के रूप मे रहकर तपस्या कर चुकी थी, और उसके फलस्वरूप अब श्रीकृष्ण के नित्य साथ रहकर लीला करती है।

यौद्धिक—वि० [सं० युद्ध+ठक्—इक] युद्ध-सबधी।

यौधेय—पु० [सं० योध+ढञ्—एय] १ योद्धा। २ युधिष्ठिर के एक पुत्र का नाम। ३ प्राचीन भारत की एक योद्धा जाति जो आधुनिक हरियाने के आस-पास रहती थी और जिसका उल्लेख पाणिनि तक ने किया है। ४ उक्त जाति के रहने का प्रदेश जो आज-कल के हरियाने के आस-पास था।

यौन—वि० [सं० योनि+अण्] [भाव० यौनता] १ योनि-सबधी। २ पुरुष और स्त्रियो की जननेद्रियो से सबध रखनेवाला। जैसे—यौन विज्ञान, यौन ससर्ग आदि। ३ जिसमे योनि या स्त्रीलिंग और पुलिंग का भेद हो। जैसे—यौन वनस्पतियाँ या पेड़-पौधे।
पु० उत्तरापथ की एक प्राचीन जाति जिसका उल्लेख महाभारत मे है।

यौनकी—स्त्री० [सं० यौन से] आधुनिक विज्ञान की वह शाखा या शास्त्र जिसमे इस बात का विवेचन होता है कि स्त्रियों और पुरुषो की जननेद्रियो की कैसी बनावट होती है, उनमे किस प्रकार यौन सम्बन्ध तथा गर्भाधान होता है आदि आदि। (सेक्सालाजी)

यौनता—स्त्री० [सं० यौन+तल्—टाप्] १ यौन होने की अवस्था या भाव। यौनभाव। २ स्त्री और पुरुष या नर और मादा के स्वतन्त्र अस्तित्व की धारणा या भाव। लिंगिता। (सेक्सुएलिटी)

यौन-विकृति—स्त्री० [सं० कर्म० स०] आधुनिक मनोविज्ञान मे काम-

वासना की तृप्ति के लिए उत्पन्न होनेवाली वह विकृत स्थिति जो स्वाभाविक संभोग से भिन्न और उसके विपरीत हो। जैसे—आत्मरति, समलिंगी रति, अन्य जातियों या वर्गों के जीव-जंतुओं के साथ की जानेवाली रति।

यौन-विज्ञान—पुं०[स० कर्म० स०]=यौनिकी।

यौवत—पुं०[स० युवती+अण्, पुंवद्भाव]१ युवती स्त्रियों का समूह। २ लास्य नृत्य का एक भेद जिसमे स्त्रियाँ सामूहिक रूप से नाचती हैं।

यौवतेय—पुं०[स० युवती+ढक्—एय] युवती स्त्री का पुत्र या सतान।

यौवन—पुं०[स० युवन+अण्]१ युवा या युवती होने की अवस्था या भाव। २ अवस्था का वह मध्य भाग जो बाल्यावस्था के उपरान्त आरम्भ होता है, और जिसकी समाप्ति पर वृद्धावस्था आती है। जवानी। ३ किसी तत्त्व या वस्तु की वह अवस्था जिसमे वह अपने पूरे ओज, जोर या बाढ़ पर हो। बीच का सर्वोत्तम समय। ४ युवतियों का दल या समूह। ५ दे० 'जोबन'।

यौवन-कंटक—पुं०[स० स० त०]मुँहासा जो पुरुषों और स्त्रियों के चेहरे पर युवावस्था मे होता है।

यौवन-पिड़का—पुं०[स० स० त०] मुँहासा।

यौवन-लक्षण—पुं०[सं० ष०त०]१ स्त्रियों का स्तन जो उनके यौवन का लक्षण है। २ चेहरे पर की चमक। लावण्य।

यौवनाधिरूढ़ा—वि० [सं० यौवन-अधिरूढ़ा, स० त०] युवती। जवान (स्त्री)।

यौवनाश्व—पुं०[स० युवनाश्व+अण्]राजा मांधाता का एक नाम।

यौवनिक—वि० [स० यौवन+ठक्—इक] यौवन-सबधी। यौवन का।

यौवराजिक—वि०[स० युवराज+ठञ्—इक]युवराज-सम्बन्धी। युवराज का।

यौवराज्य—पुं०[स० युवराज+ष्यञ्]१ युवराज होने की अवस्था या भाव। २. युवराज का पद।

यौवराज्याभिषेक—पुं० [स० यौवराज्य-अभिषेक, स०त०] प्राचीन भारत मे वह अभिषेक और उसके सबध का कृत्य तथा उत्सव जो किसीको युवराज के पद पर प्रतिष्ठित करनेके समय होता था। युवराज के अभिषेक-कृत्य।

र

र—हिंदी वर्णमाला का सत्ताईसवाँ व्यंजन जो व्याकरण और भाषाविज्ञान की दृष्टि से अतस्थ, मूर्धन्य, घोष, अल्पप्राण तथा ईषत्स्पृष्ट है।
पुं० [सं० रा+ड] १. अग्नि। आग। २ काम-वासना का ताप। कामाग्नि। ३ जलना, झुलसना या तपना। ४ आँच। गरमी। ताप। ५ सोना। स्वर्ण। ६ पिंगल मे रगण का सक्षिप्त रूप। ७. सितार का एक बोल।
वि० तीव्र। प्रखर।

रंक—वि० [स०√रम् (तुष्ट होना)+क] १ गरीब। दरिद्र। कंगाल। २ कंजूस। कृपण। ३ आलसी। ४ मट्ठर। सुस्त।

रंकु—पुं० [सं०√रम्+कु] १. हिरनों की एक जाति। २. उक्त जाति का हिरन जिसके पृष्ठभाग पर सफेद चित्तियाँ होती हैं।

रंग—पुं० [सं०√रग् (गति)+अच् वा√रञ्ज् (राग)+घञ्] १. किसी दृश्य पदार्थ का वह गुण जो उसके आकार या रूप से भिन्न होता है और जिसका अनुभव केवल आँखों से होता है। वर्ण। जैसे—नीला, पीला, लाल, सफेद या हरा रंग।

विशेष—वैज्ञानिक दृष्टि से, प्रकाश की भिन्न भिन्न प्रकार की और अलग अलग लंबाइयोंवाली किरणों के कारण हमे रग की अनुभूति या ज्ञान होता है। जिन पदार्थों पर ऐसी किरणें पड़ती हैं, उनके रासायनिक गुण या तत्त्व भी हमे रगो का बोध कराने मे सहायक होते है। जब किसी वस्तु पर प्रकाश की किरणें पड़ती हैं, तब तीन प्रकार की क्रियाएँ होती हैं। एक तो उनका परावर्तन या पीछे की ओर लौटना, दूसरे उनका वर्तन या किसी ओर मुड़ना और तीसरे उस पदार्थ के द्वारा होनेवाला शोषण जिस पर प्रकाश की किरणें पड़ती हैं। जिन पदार्थों पर से प्रकाश किरणो का पूरा परावर्तन होता है,वे सफेद दिखाई देती हैं। जिन पदार्थों पर से प्रकाश परावर्तित नहीं होता, केवल वर्तित तथा शोषित होता है, वे बिना रंग के दिखाई देते हैं। जैसे—शुद्ध जल। और जो पदार्थ सारा प्रकाश सोख लेते है, वे काले दिखाई देते हैं। प्रकाश की किरणें मुख्यत सात रगो की होती है। यथा-बैंगनी, नीली, काली या आसमानी, हरी, पीली, नारगी के रग की और लाल। इन सातों रंगो का मिश्रित रूप सफेद होता है; और रग मात्र का अभाव काला दिखाई देता है। अलग अलग प्रकार के पदार्थ अलग अलग प्रकार के रंग सोखते और इसी लिए अलग अलग रगों के दिखाई देते हैं।

२. कुछ विशिष्ट रासायनिक क्रियाओं से बनाया हुआ वह पदार्थ जिसका व्यवहार किसी चीज को रँगने या रगीन बनाने के लिए होता है। जैसे—जल-रग, तैल-रग।

क्रि० प्र०—आना।—उड़ना।—उतरना।—करना।—चढ़ाना।—पोतना। —लगाना।

पद—रंग-बिरंग।

मुहा०—**रंग खेलना**=होली के दिन मे पानी मे रग घोलकर एक दूसरे पर डालना। **(किसी पर) रंग डालना**=(होली मे) पानी मे रग घोलकर किसी पर डालना। **रंग निखरना**=रग का चमकीला या तेज होना और फलत सुदर जान पड़ना। ३ किसी पदार्थ के ऊपरी तल या शरीर का ऊपरी वर्ण। वक्ष और चेहरे की रगत। वर्ण।

क्रि० प्र०—उड़ना।—उतरना।

मुहा०—**रंग निकलना या निखरना**—चेहरे के रग का साफ होना। चेहरे पर रौनक आना।

४. चौपड की गोटियो के खेल के काम के लिए किये हुए दो काल्पनिक विभागो मे से हर एक।

मुहा०—**रंग जमना**=चौपड मे रग की गोटी का किसी अच्छे और उपयुक्त घर मे जा बैठना, जिसके कारण खेलाडी की जीत अधिक निश्चित होती है। **रंग मारना**=(क) चौपड़ के खेल मे किसी रंग की गोटी मारना।

(ख) लाक्षणिक रूप में, बाजी जीतना। प्रतियोगिता आदि में विजय प्राप्त करना।
५. रूप, रंग आदि की सुंदरता के कारण दिखाई देनेवाली शोभा। छवि। रौनक। जैसे—आज तो इस पर रंग है।
क्रि० प्र०—आना।—उतरना।—चढ़ना।—पकड़ना।—होना।
पद—रंग है=वाह, क्या बात है। बहुत अच्छे।
मुहा०—रंग पर आना=ऐसी स्थिति में आना कि यथेष्ट शोभा या सौंदर्य दिखाई पड़े। **रंग बरसना**=शोभा या सौंदर्य का इतना आधिक्य होना कि चारों ओर यथेष्ट प्रभाव पड़ रहा हो।
६ शृंगारिक क्षेत्र में होनेवाला अनुराग या प्रेम। मुहब्बत।
मुहा०—(किसी पर) रंग देना=किसी को अपने प्रेम पाश मे फँसाने के उद्देश्य से उसके प्रति उत्कट प्रेम प्रकट करना। (बाजारू) (किसी पर) **रंग डालना**=अपनी ओर अनुरक्त करना। उदा०—सतगुरु हो महाराज मोपै साईं रंग डारा—कबीर। **(किसी के) रंग में बींधना**=किसी पर पूर्णरूपेण अनुरक्त होना।
७. किसी पर अनुरक्त होने के कारण उसके प्रति की जानेवाली कृपा या प्रकट की जानेवाली प्रसन्नता। ८ मनोविनोद के लिए की जानेवाली क्रीड़ा, और उससे प्राप्त होनेवाला आनंद या मजा। उदा०—मोकौ व्याकुल छांडि कै आपुन करै जु रंग।—सूर।
क्रि० प्र०—आना।—उखड़ना।—जमना। मचाना।—रचाना
पद—रंगरली या रंगरलियाँ।
मुहा०—रंग में भंग करना=आनद में बाधा डालना। होते हुए आमोद-प्रमोद को ठप करना। **रंग में होना**=मन की यथेष्ट उमग या प्रसन्नता की दशा में होना। जैसे—आज तो यह रंग मे है। **रंग में भंग पड़ना या होना**=आनद और हर्ष के समय कोई दुखद घटना घटित होना या कोई बाधक बात होना। **रंग रलना**=आमोद-प्रमोद करना। क्रीडा या भोग-विलास करना।
९ यौवन। जवानी। युवावस्था।
क्रि० प्र०—आना।—उतरना।—चढ़ना।
मुहा०—रंग चूना या टपकना=पूर्ण यौवन की अवस्था मे रूप या सौंदर्य का इतना आधिक्य होना कि औरो पर उसका पूरा पूरा प्रभाव पड़ता हो।
१० गुण, महत्त्व, योग्यता, शक्ति आदि का दूसरो के हृदय पर पड़ने-वाला आतक या प्रभाव। धाक। रोब।
क्रि० प्र०—उखड़ना।—जमना।
मुहा०—रंग बाँधना=(क) धाक या रोब जमाने के उद्देश्य से लंबी-चौड़ी हाँकना। (ख) प्रभावित करने के लिए व्यर्थ का आडम्बर खड़ा करना या ढोंग रचना। **(किसी का) रंग बिगाड़ना**=(क) प्रभाव या महत्त्व कम होना या न रह जाना। (ख) अभिमान चूर्ण करना। शेखी किरकिरी करना। **रंग लाना**=अपना गुण या प्रभाव दिखाना। उदा०—रंग लाएगी हमारी फाका मस्ती एक दिन॥—गालिब।
११ किसी प्रकार का अद्भुत दृश्य। विलक्षण कार्य या व्यापार। जैसे—आज तो तुमने वहाँ एक रंग खड़ा कर दिया। १२. नृत्य, गीत आदि का उत्सव।
पद—नाच-रंग।
१३. वह स्थान जहाँ नृत्य या अभिनय होता हो। नाचने, गाने आदि के लिए बना हुआ स्थान।
पद—रंग-देवता, रगभूमि, रंगमच, रगशाला।
१४. अवस्था। दशा। हालत। जैसे—कहो, आज-कल उनका क्या रग है। १५ ढंग। ढब।
पद—रग-ढंग।
मुहा०—रंग काछना=कोई नई चाल या नया ढग अख्तियार करना। **(किसी को अपने) रंग में ढालना या रँगना**=किसी को अपने ही विचारों का अनुयायी बना लेना। प्रभाव डालकर अपना सा कर लेना।
१६. भाँति। प्रकार। तरह।
पद—रंग-बिरंगा।
१७. युद्ध। लड़ाई। समर।
क्रि० प्र०—ठानना।—मचाना।
१८. लड़ाई का मैदान। युद्धक्षेत्र। रणभूमि।
पुं० [सं०+अच्] १. राँगा नामक धातु। २. खदिर सार।
रंगई†—पु० [हिं० रग+ई (प्रत्य०)] १. धोबियो की एक जाति जो विशेष रूप से रगीन या छापे के कपड़े धोती है। २ उक्त जाति का व्यक्ति।
रंग-काष्ठ—पु० [सं० ब० स०] पतंग नामक वृक्ष की लकड़ी। बक्कम।
रंग-क्षेत्र—पु० [सं० ष० त०] १. अभिनय करने का स्थान। रगस्थल। २ उत्सव आदि के लिए सजाया हुआ स्थान। रगभूमि।
रंग-गृह—पु० [सं० ष० त०] रगशाला। (दे०)
रंग-चर—पु० [सं० रग√चर (गति)+ट, उप० स०] अभिनेता। नट।
रंग-चित्र—पु० [सं० मध्य० स०] विशेष प्रकार के रगो के घोल से कूँची या तूलिका की सहायता से बनाया हुआ चित्र। (पेन्टिंग)
रंग-चित्रक—पुं० [सं० रगचित्र+णिच्+ण्वुल्—अक] रगचित्र बनानेवाला चित्रकार। (पेन्टर)
रंग-चित्रण—पु० [सं० रगचित्र+णिच्+ल्युट्—अन] रग-चित्र बनाने की कला, क्रिया या भाव। (पेन्टिंग)
रंगज—पु० [सं० रग√जन् (उत्पत्ति)+ड] सिंदूर।
वि० रग से उत्पन्न, निकला या बना हुआ।
रंग-जननी—स्त्री० [सं० ष० त०] लाख। लाक्षा।
रंग-जीवक—पु० [सं० रग√जीव (जीना)+ण्वुल्—अक, उप० स०] १. चित्रकार। २ अभिनेता। नट।
रंग-ढंग—पु० [सं०+हिं०] १. गति-विधि आदि की प्रवृत्ति या स्वरूप। जैसे—इसका रग-ढग ठीक नही दिखाई देता। २. आचरण, व्यवहार आदि का प्रकार या रूप। तौर-तरीका। जैसे—अब वह धीरे-धीरे अपना रग-ढग बदल रहा है। ३ ऐसी दशा, बात या लक्षण जो किसी भावी व्यापार या स्थिति का सूचक हो। आसार। जैसे—आज तो आकाश मे वर्षा का रग-ढग है।
रंगत—स्त्री० [सं० रग+हिं० त (प्रत्य०)] १. रंग से युक्त होने की अवस्था या भाव। २ किसी रगीन पदार्थ की दिखाई पड़नेवाली रंग की झलक। ३ किसी विलक्षण काम या बात मे आनेवाला आनंद या मजा। ४. अवस्था। दशा। हालत। ५ वे कपड़े जो रँगने के लिए

आये हों या रँगे जाने को हों। (रँगरेज) ६. छाप। प्रभाव।

मुहा०---(किसी की किसी पर) **रंगत चढ़ना**=किसी के विचारों या रहन-सहन आदि का प्रभाव किसी दूसरे पर लक्षित होना।

रँगतरा—पुं० [हिं० रंग] एक प्रकार की बड़ी और मीठी नारंगी। संगरा।

रंगद—पुं० [सं० रंग+√दा (काटना)+क] १. सोहागा। २. खदिर सार।

रंगदा—स्त्री० [सं० रंगद+टाप्] फिटकरी, जिससे रंग पक्का होता है।

रंगदानी—स्त्री० [हिं० रंग+फा०दानी] वह प्याली जिसमे चित्रकार आदि किसी चीज पर लगाने के लिए अपने सामने रंग रखते हैं।

रंगदुनी—पुं० [?] खरगोश की तरह का एक प्रकार का पहाड़ी जन्तु जो हिमालय के ऊँचे पर्वतों पर रहता है। रंगरूढ।

रंगदृढ़ा—स्त्री० [सं० उपमि० स०] फिटकरी, जिससे रंग पक्का होता है। रंगदा।

रंग-देवता—पुं० [सं० ष० त०] रंग-भूमि के अधिष्ठाता।

रंग-द्वार—पुं० [स० ष० त०] १. रंगमंच का प्रवेश-द्वार। २. नाटक की प्रस्तावना।

रंगन—पु० [देश०] एक प्रकार का मझोले आकार का वृक्ष जिसके हीर की लकड़ी कड़ी, चिकनी और मजबूत होती है। कोटा गंधल।

रँगना—स० [सं० रंग+हिं० ना (प्रत्य०)] १. ऐसी क्रिया करना जिससे कोई चीज किसी एक या अनेक रंगो से युक्त हो जाय। जैसे—(क) धोती या साड़ी रँगना। (ख) दीवार या छत रँगना। (ग) चित्र रँगना।

मुहा०—रँगे हाथ या रँगे हाथों पकड़ा जाना=अपराधी या दोषी का ठीक अपराध करते समय पकड़ा जाना।

२. लेखन में, बहुत अधिक लिखना विशेषतः लीपा-पोती करना। जसे—कापी या किताब रँगना। ३. किसी को अपने प्रेम में फँसाना। अनुरक्त करना। ४. किसी को अपने अनुकूल बनाने के लिए अपने मतलब की बातें बतलाना या समझाना अथवा और किसी प्रकार अपने अनुकूल बनाना। ५. किसी के शरीर, विशेषतः सिर पर ऐसा भीषण आघात करना कि उसमें से रक्त की धार बहने लगे। (गुण्डे) ६. किसी को अपने प्रभाव से युक्त करना।

अ० १. रग से युक्त होना। २. किसी के प्रेम में लिप्त होना। किसी पर आसक्त होना।

संयो० क्रि०—जाना।

रंगपत्री—स्त्री० [स० ब० स० ङीष्] नीली (वृक्ष)।

रंग-पीठ—पुं० [स० ष० त०] रगशाला।

रंगपुरी—स्त्री० [रंगपुर=बंगाल का एक नगर] एक तरह की छोटी नाव, जिसके दोनो ओर की गलही एक सी होती है।

रंग-पुष्पी—स्त्री० [स० ब० स० ङीष्] रंगपत्री। (दे०)

रंग-प्रवेश—पु० [स० स० त०] अभिनय के निमित्त रंगमंच पर अभिनेता या नट का आना।

रंग-बदल—पु० [हिं० रंग+बदलना] हल्दी। (साधू)

रंगबाज—वि० [सं०+फा०] १. दूसरो पर अपना आतंक जमानेवाला। रंग बाँधनेवाला। २. मौज-मस्ती करनेवाला। आनंद मनानेवाला।

रंगबाजी—स्त्री० [हिं०+फा०] १. रगबाज होने की अवस्था या भाव। २. चौसर का एक विशेष प्रकार का खेल जो स्त्री और पुरुष मिलकर खेलते हैं, और जो विशेष नियमों या प्रतिबंधों के कारण अपेक्षाकृत अधिक कठिन होता है। ३. ताश का एक प्रकार का खेल।

रंग-बत्ती—स्त्री० [हिं०रंग+बत्ती] शरीर में लगाई जानेवाली सुगंधित वस्तुओं की बत्ती।

रंग-बिरंग(ा)—वि० [हिं० रंग+बिरगा (अनु०)] १. कई रंगों का। २. कई तरह या प्रकार का। भाँति-भाँति का। जैसे—रग-बिरंगे कपड़े।

रंग-भरिया—पु० [हिं०] दीवारो, छतो आदि पर रंग पोतने का काम करनेवाला कारीगर।

रंगभवन—पु० [सं० ष० त०] रंगमहल।

रंग-भूति—स्त्री० [सं० ब० स०] आश्विन की पूर्णिमा।

रंग-भूमि—स्त्री० [सं० ष० त०] १. वह स्थान जहाँ पर आमोद-प्रमोद के उद्देश्य से उत्सव, समारोह आदि किये जाते हैं। २. खेल-कूद, तमाशे आदि का स्थान। क्रीड़ास्थल। ३. नाटक खेलने का स्थान। रंगमंच। ४. कुश्ती लड़ने का अखाड़ा। ५. युद्ध-क्षेत्र। लड़ाई का मैदान।

रंग-भौन—पुं०=रग-भवन (रंगमहल)।

रंग-मंच—पुं० [सं० ष० त०] १. वह ऊँचा उठा हुआ स्थान जहाँ पर पात्र अभिनय करते हैं। २. लाक्षणिक अर्थ मे कोई ऐसा स्थान जिसे आधार बनाकर कोई काम किया जाय।

रंग-मंडप—पु० [स० ष० त०] नृत्यशाला।

रंग-मल्ली—स्त्री० [सं० च० त०] वीणा। बीन।

रंग-महल—पु० [हिं०+अ०] १. भोग-विलास करने का महल। २. अंत.पुर।

रंगमाता (तृ)—स्त्री० [सं० ष० त०] १. कुटनी। २. लाखा। लाख।

रंग-मातृका—स्त्री० [सं० रगमातृ+कन्—टाप्] =रंगमाता।

रंग-मार—पु० [हिं० रग+मारना] ताश का एक प्रकार का खेल।

रंग-रली—स्त्री० [हिं० रग+रलना] आमोद-प्रमोद। आनंद। क्रीड़ा। चैन। मौज। (प्रायः बहुवचन रूप मे प्रयुक्त)

क्रि० प्र०—मचना।—मनाना।

रंग-रस—पुं० [हिं० रग+रस] आमोद-प्रमोद। आनंद-मगल।

रंग-रसिया—पु० [हिं०] १. वह व्यक्ति जिसकी प्रवृत्ति सदा आमोद-प्रमोद के कार्यों मे रमती हो। २. विलासी पुरुष।

रंग-राज—पु० [सं० ष० त०] ताल के साठ मुख्य भेदो मे से एक। (सगीत)

रंगरूट—पु० [अं० रिक्रूट] १. पुलिस, सेना आदि मे भर्ती हुआ नया व्यक्ति। २. नौसिखुआ।

रंगरूड़ा वि० [स० रंग+हिं० रुढ (प्रत्य०) सुंदर। उदा०—नहिं भावै थाँरो देस लड़ो रगरुड़ो।—मीराँ।

रंगरेज—पुं० [फा० रँगरेज] [स्त्री० रँगरेजिन] वह जो कपड़े रँगने का व्यवसाय करता हो।

रंगरेली—स्त्री०=रंगरली।

रंगरैनी—स्त्री० [हिं० रग+रैनी=जुगनू] रगी हुई लाल चुनरी।

रंग-लासिनी—स्त्री० [स० रंग√लस् (शोभित होना)+णिच्+णिनि+ङीष्] शेफालिका।

रंगवा†—पु० [देश०] चौपायो का एक रोग।

रंगवाई—स्त्री० [हिं० रँगवाना] रँगवाने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक। स्त्री०=रँगाई।

रँगवाना—स० [हिं० रँगना का प्रे०] रँगने का काम किसी दूसरे से कराना। किसी को रँगने मे प्रवृत्त करना।

रंग-विद्याधर—पु० [स० ष० त०] १ अभिनेता। नट। २ नृत्य-कला में, कुशल नर्तक। ३ ताल के साठ मुख्य भेदो मे से एक। (सगीत)

रंगबीज—पु० [स० ब० स०] चाँदी।

रंग-शाला—स्त्री० [स० ष० त०] १ भोग-विलास का स्थान। २ वह स्थान जहाँ दर्शको को अभिनेतागण या नट लोग अपना अभिनय या करतब दिखाते हो। ३ नाट्यशाला।

रंगसाज—पु० [फा० हिं० रग+फा० साज] [भाव० रगसाजी] १ उपकरणो के योग से तरह-तरह के रग तैयार करनेवाला कारीगर। २ मेज, कुरसी, किवाड़, आदि पर रंग चढानेवाला कारीगर। (पेंटर)

रंगसाजी—स्त्री० [हिं० रग+फा० साजी] १ रगने की कला या विद्या। २ रगसाज का काम, पेशा या भाव।

रंग-स्थल—पु० [स० ष० त०] १ आमोद-प्रमोद के लिए नियत स्थान। २ रगशाला।

रंग-स्थापक—पु० [स० ष० त०] कोई ऐसी चीज जिसकी सहायता से रग, पतले पत्तर आदि दूसरी चीजो पर चिपक या जम जाते हो। (मारडेंट)

रंगांगण—पु० [स० रग-अगण, ष० त०] नाट्यशाला। २ रगभूमि।

रंगांगा—स्त्री० [स० रग-अग, ब०, स०-टाप्] फिटकरी।

रँगाई—स्त्री० [हिं० रग+आई (प्रत्य०)] रँगने का काम, पेशा, भाव या मजदूरी।

रंगाजीव—पु० [स० रग-आ√जीव् (जीना)+अण्] वह जिसकी जीविका का आधार रग सम्बन्धी काम हो। जैसे—रगसाज, रँगरेज आदि।

रँगाना—स० [हिं० रँगना का प्रे०] रँगवाना। दे०।

रँगामेजी—स्त्री० [फा०] १. किसी चीज मे यथास्थान तरह-तरह के रग भरने का काम। २. तरह-तरह की चीजे एक साथ बनाने या रखने की क्रिया या भाव। उदा०—रगामेजी का खेल जब हो तो क्यो न सब सृष्टि बने अनुरागी।—बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'। ३. किसी बात को रोचक बनाने के लिए उसमें अपनी तरफ से भी कुछ बातें बढाना।

रंगारंग—वि० [हिं०] १ बहुत से रगोवाला। ३. अनेक प्रकार का। तरह-तरह का। जैसे—रगारग कपडे या खिलौने।

पु० आकाश-वाणी का एक प्रकार का कार्यक्रम जिसमे अनेक प्रकार के गीत सुनाये जाते है।

रंगार—पु० [देश०] १ वैश्यो की एक जाति या वर्ग। २. राजपूतो की एक जाति या वर्ग।

रंगारि—पु० [स० रग-अरि, ष० त०] कनेर।

रंगालय—पु० [स० रग-आलय, ष० त०] रगभूमि। रंगशाला।

रंगावट—स्त्री० [हिं० रग+आवट (प्रत्य०)] १ रँगे हुए होने का भाव। २ वह झलक या आभा जो किसी रँगे हुए वस्त्र आदि मे से प्रकट होती है।

रंगावतारक—पु० [स० रग-अवतारक, ष० त०] १ रँगरेज। २ अभिनेता। नट।

रंगावतारी (रिन्)—पु० [सं० रंग-अव√तृ (पार करना)+णिनि] अभिनेता। नट।

रंगासियार—पु० [हिं०] ऐसा व्यक्ति जो ऊपर से तो भला लगता हो परन्तु हो बहुत बडा चालाक और धूर्त।

रंगिया†—पु० [हिं० रग+इया (प्रत्य०)] १ कपडे रँगनेवाला। रगरेज। २ रंगसाज।

रंगी—स्त्री० [स० रग+अच्+ङीष्] १ शतमूली। २ कैवर्त्तिकी लता।

वि० [हिं० रग] १ विनोदशील प्रकृति का। २ मनमौजी।

रंगीन—वि० [फा०] १ जिस पर कोई रग चढा हो। रँगा हुआ। रगदार। जैसे—रगीन साडी, रगीन चित्र। २ जिसकी प्रकृति या स्वभाव मे विनोद, विलास आदि तत्वो की प्रधानता हो। आमोदप्रिय और विलासी। ३ चमत्कारपूर्ण तथा विलासमय। जैसे—रगीन तबीयत, रगीन महफिल।

रंगीनबाजी—स्त्री०=रँगबाजी (चौसर का खेल)।

रंगीनी—स्त्री० [फा०] १ रगीन होने की अवस्था या भाव। २ बनाव-सिंगार। सजावट। ३ प्रकृति या स्वभाव स रसिक और विनोदप्रिय होने की अवस्था या भाव।

रगीरेटा—पु० [देश०] एक प्रकार का जगली वृक्ष जो दारजिलिंग में अधिकता से होता है।

रंगीला—वि० [हिं० रग+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० रँगीली] १. जिसकी प्रकृति या स्वभाव मे रसिकता, विनोदशीलता आदि बातें मुख्य रूप से हो। रसिक-प्रकृति। रसिया। २ कई रगो से युक्त होने के कारण आकर्षक और मनोहर लगनेवाला। जैसे—रगीले छैल खेलैं होरी।

रंगीली टोड़ी—स्त्री० [हिं० रगीला+टोडी (रागिनी)] सपूर्ण जाति की एक रागिनी जिसमे सब शुद्ध स्वर लगते हैं।

रँगैया—पुं० [हिं० रग+ऐया (प्रत्य०)] रँगनेवाला।

रंगोपजीवी (विन्)—पु० [स० रग-उप√जीव् (जीना)+णिनि] अभिनय आदि के द्वारा अपनी जीविका चलानेवाला।

रंगोली†—स्त्री० [स० रगवल्ली] माँझी का वह रूप जो महाराष्ट्र मे प्रचलित है। (देखें 'माँझी')

रंगौंधी—स्त्री० [हिं० रग+औंधी (अधा से) प्रत्य०] आँखो का वह रोग जिसमे रोगी रग या वर्ण नही पहचान सकता। वर्णान्धता। (कलर ब्लाइन्डनेस)

रंगौली*—स्त्री० [हिं० रग] लाल रंग की एक प्रकार की चुनरी।

रंच-रंचक—वि० [स० न्यच, प्रा० णच] थोडा। अल्प। तनिक।

रंज—पु० [फा०] [वि० रजीदा] १ मन में होनेवाला दुख। मानसिक दुख। २ मृतक का शोक। ३ अप्रसन्नता। नाराजगी।

रंजक—वि० [सं०√रज्+णिच्+ण्वुल्—अक] १ रगनेवाला। २ प्राय आनद-मगल करने और प्रसन्न रहनेवाला।

पुं० [सं०] १. रंगसाज। २. रँगरेज। ३. ईंगुर। ४. भिलावाँ। ५. मेंहदी। ६. सुश्रुत के अनुसार पेट की एक अग्नि जो पित्त के अंतर्गत मानी जाती है।

स्त्री० [हिं० रची=अल्प] १. वह थोड़ी सी बारूद जो बत्ती लगाने के वास्ते बंदूक की प्याली पर रखी जाती है।

क्रि० प्र०—देना।—भरना।

मुहा०—रंजक उड़ाना=बंदूक या तोप की प्याली मे बत्ती लगाने के लिए बारूद रखकर जलाना। (प्याली का) रंजक चाट जाना=तोप या बंदूक की प्याली में रखी हुई बारूद का यों ही जलकर रह जाना और उससे गोला या गोली न छूटना। रंजक पिलाना=तोप या बदूक की प्याली में रंजक रखना।

२. गाँजे, तमाखू या सुलफे का दम। (बाजारू)

मुहा०—रंजक देना=गाँजे आदि का दम लगाना।

३. वह बात जो किसी को भड़काने या उत्तेजित करने के लिए कही जाय। ४. किसी प्रकार का ऐसा चटपटापूर्ण या और कोई पदार्थ जिसके सेवन से शरीर मे तत्काल स्फूर्ति आती हो।

रंजन—पुं०[सं०√रज्+ल्युट्—अन] १. रंगने की क्रिया या भाव। २ वे पदार्थ जिनसे रग निकलते या बनते हो। ३. चित्त प्रसन्न करने की क्रिया या भाव। ४. शरीर में का पित्त नामक तत्त्व। ५. लाल चन्दन। ६. मूज। ७ सोना। स्वर्ण। ८. जायफल। ९. कमीला नामक वृक्ष। १०. छप्पय छद के पचासवें भेद का नाम।

वि० [स्त्री० रंजना] चित्त प्रसन्न करनेवाला। जैसे—चित्त-रजन।

रंजनक—पुं०[सं० रंजन+कन्] कटहल।

रँजना*—स०[सं० रजन]१. रजन करना। २. मन प्रसन्न करना। आनंदित करना। ३. मन लगाकर किसी को भजना या बार बार स्मरण करना। ४ दे० 'रँगना'।

वि० स्त्री० रजन करनेवाली।

रंजनी—स्त्री०[स० रजन+ङीप्] १ ऋषभ स्वर की तीन श्रुतियो मे से दूसरी श्रुति (संगीत)। २ संगीत मे कर्णाटकी पद्धति की एक रागिनी। ३. नीली नामक पौधा। ४. मजीठ। ५ हलदी। ६ पर्पटी। ७. नागवल्ली। ८. जतुका लता। पहाड़ी।

रंजनीय—वि० [सं०√रज्+अनीयर]१. जो रँगे जाने के योग्य हो। २. जिसका चित्त प्रसन्न किया जा सकता हो या किया जाने को हो।

रंजा—स्त्री०[देश०] एक प्रकार की मछली जिसे उलबी भी कहते हैं।

रंजित—भू० कृ० [सं० √रंज्+क्त]१. जिस पर रंग चढ़ा या चढ़ाया गया हो। रंगा हुआ। २. जिसका चित्त प्रसन्न किया गया हो या हुआ हो। ३. किसी के अनुराग या प्रेम में पगा हुआ। अनुरक्त।

रंजिश—स्त्री०[फा०]१. किसी की ओर से मन मे बैठा हुआ रंज। २. किसी के प्रति होनेवाली अप्रसन्नता या नाराजगी। ३. आपस मे होनेवाला मन-मुटाव या वैमनस्य।

रंजीदगी—स्त्री०[फा०] रंजीदा होने की अवस्था या भाव।

रंजीदा—वि०[फा०]रजीद १. जिसे रंज हो। दु:खित २. अप्रसन्न। नाराज।

रंजना—अ०[सं० रजन]१. रंग से युक्त होना। रंजित होना। २. फलना-फूलना। जैसे—वृक्षों का रजना। ३. संपन्न, समृद्ध या सुखी होना। ४. स्थायी या स्थिर होना।

रंड—वि०[सं०√रम् (क्रीड़ा)+ड]१. धूर्त। चालाक। २. विकल। बेचैन।

रंडक—पुं०[स० रंड+कन्]ऐसा पेड़ जो फूलता-फलता न हो।

रँडवा†—पुं०=रँडुआ।

रंडा—वि० स्त्री०[स० रंड+टाप्] राँड़। विधवा। बेवा।

पुं०=रँडुआ। (पश्चिम)

रँडापा—पु०[हिं० राँड़+आपा (प्रत्य०)]१. राँड़ अर्थात् विधवा होने की दशा या भाव। २. राँड़ के रूप में बिताया जानेवाला समय।

रंडाश्रमी (मिन्)—पुं० [स० रंड+आश्रम ष० त०, रंडाश्रम+इनि] ४८ वर्ष से अधिक की अवस्था मे होनेवाला रँडुआ।

रंडिया†—स्त्री० =राँड। २= रंडी।

रंडी—स्त्री०[सं० रंडा]१ वह स्त्री जिसका पति मर चुका हो। राँड़। विधवा(पश्चिम) २ ऐसी स्त्री जो विधवा होने पर व्यभिचार से अपनी जीविका चलाती हो। ३ धन लेकर सभोग करानेवाली स्त्री। वेश्या। ४. युवती और सुन्दर स्त्री। (राज०)

रंडीबाज—पु०[हिं० रंडी+फा० बाज] [भाव० रंडीबाजी] वह जो प्राय: रंडियों के यहाँ जाकर उनसे सभोग करता हो। वेश्यागामी।

रंडीबाजी—स्त्री० [हिं० रडी +फा० बाजी] १. रंडीबाज होने की अवस्था, क्रिया या भाव। २. रंडी के साथ की जानेवाली मित्रता या सभोग।

क्रि० प्र०—करना।

रँडुआ—पु०[हि० राँड़+उआ (प्रत्य०)] ऐसा व्यक्ति जिसकी पत्नी मर चुकी हो और अन्य पत्नी अभी न आई हो। विधुर।

रँडुवा†—पु०=रँडुआ।

रँडोरा†—पु०=रँडुआ

रँडोरी—स्त्री०=राँड।

रंता (तृ)—वि०[सं० √रम् (क्रीड़ा)+तृच्] रमण करनेवाला।

रंति—स्त्री०[स० √ रम्+क्तिन्]१. केलि। क्रीडा। २ विराम।

रंतिदेव—पु०[स०√रम्+तिक्, रन्तिदेव कर्म० स०] १. पुराणानुसार एक बहुत बडे दानी राजा जिन्होंने बहुत से यज्ञ किये थे। २. विष्णु का एक नाम। ३. कुत्ता।

रंतिनदी—स्त्री०[सं०] चबल (नदी)।

रंतु—स्त्री०[सं०√रम +तुन्]१. सड़क। २ नदी।

रंतूला—पु०=रणतूर्य।

रंध—पुं०[स० रंध्र] १. झरोखा। रोशनदान। २ किले की दीवार में का वह मोखा या झरोखा जिसमे से बाहर गोले फेंके जाते थे।

स्त्री०[हिं० रँदना या फा०]वह छीलन जो लकड़ी को रँदने पर निकलती है।

रँदना—स०[हिं० रंदा+ना (प्रत्य०)]१ रदे से छीलकर लकड़ी की सतह चिकनी और समतल करना। २. छीलना। तराशना।

रंदा—पुं०[सं० रंदन=काटना, चीरना मि० फा० रद] बढ़इयो का एक औजार जिससे वे लकड़ी की सतह छील कर चिकनी और समतल करते हैं।

रंधक—पुं०[स० √ रंध् (पाक-क्रिया)+ण्वुल्—अक]रसोई बनानेवाला। रसोइया।

वि० नष्ट करनेवाला। नाशक।

रंधन—पु०[सं०√रध्+ल्युट्—अन]१. रसोई बनाने की क्रिया। पाक करना। राँधना। २. नष्ट या बरबाद करना।

रंधना—अ०[सं० रंधन] भोजन पकना। राँधा जाना।
†स० =राँधना।
पु० पकाकर तैयार किया हुआ भोजन।

रंधित—भू० कृ० [सं०√रध्+क्त]१. पकाया हुआ। २. राँधा हुआ। २. नष्ट किया हुआ।

रंध्र—पु०[सं० रध+रक्]१. छेद। सूराख।
पद—ब्रह्म-रध्र।
२ स्त्री का भग। योनि। ३. छिद्र। दोष। ४ लाक्षणिक अर्थ मे कोई ऐसा छिद्र, तत्व या दुर्बल स्थान जिस पर सफलतापूर्वक या सहज मे आक्रमण, आक्षेप या आघात किया जा सके।

रंबा—पु०[हिं० रभा] १. जुलाहो का लोहे का एक औजार जो लगभग एक गज लंबा होता है। २. दे० 'रभा'।

रंभ—पु०[सं०√रभ (शब्द) +घञ्]१ बहुत जोर का शब्द। जैसे—गौ या भैस का रभ। २ [√रंभ+अच्] बाँस। ३ एक प्रकार का तीर या बाण। ४. महिषासुर के पिता का नाम।
†पुं०=रंभा।
*पु०=आरभ।

रंभा—स्त्री०[सं०√रभ्+अच्—टाप्] १ केला। कदली। २ गौरी। पार्वती। ३. स्वर्ग की एक प्रसिद्ध अप्सरा। ४ वेश्या। रडी। ५. उत्तर दिशा।
पु०[सं० रभ] लोहे का वह मोटा भारी डंडा जिसका अगला सिरा धारदार होता है और जिससे आघात करके मजदूर जमीन या दीवार मे छेद करते है।

रंभा तृतीया—स्त्री०[सं० मध्य० स०] ज्येष्ठ शुक्ला तृतीया।

रँभाना—अ०[सं० रमणा] गाय का बोलना। गाय का शब्द करना।
स० गौ से रभण कराना। गौ को शब्द करने मे प्रवृत्त करना।

रंभापति—पु०[सं० ष० त०] इद्र।

रंभाफल—पु०[सं० ष० त०] केला।

रंभित—भू० कृ०[सं०√ रभ्+क्त]१. जिसमे या जिससे शब्द उत्पन्न किया गया हो। २ बजाया हुआ।

रंभी (भिन्)—पु०[सं० √रभ्+णिनि] १ व्यक्ति जो हाथ मे बेंत या दड लिए हुए हो। २ द्वारपाल जो हाथ मे डंड लिये रहता था। ३ वृद्ध आदमी जो प्राय छडी या लकडी लेकर चलता है।

रंभोरु—वि० [सं० रभा-उरु ब० स०] १. (स्त्री) जिसकी केले के वृक्ष के समान उतार-चढ़ाववाली जाँघें हों। २. मनोहर। सुन्दर।

रंह (स्)—पु०[सं०√रह (गति) +असुन्] वेग। गति। तेजी।

रंह चट (१)—पु०[हिं० रस+चाट] ऐसी लालच या लोभ जो किसी प्रकार की तृप्ति पाने के उपरान्त और बढ़ गया हो। चस्का।

रंहट†—पु०=रहट।

रअय्यत—स्त्री० [अ०] १ प्रजा। रिआया। २. मध्य-युग और ब्रिटिश शासन मे जमींदार के अधीन रहनेवाला काश्तकार।

रइअत—स्त्री०=रअय्यत।

रइको*—अव्य०[सं० रच]जरा भी। तनिक भी। कुछ भी।

रइनि*—रैन (रात)।

रइबारी—पु० [हिं० राह+वारी) वह जो ऊँट चराता या पालता हो।

रई—स्त्री०[सं० रय=हिलाना] दही मथने की लकड़ी। मथानी। खैलर।
क्रि० प्र०—चलाना-फेरना।
स्त्री० [हिं० रवा] १ गेहूँ का मोटा आटा। दरदरा आटा। २. सूजी। ३ कोई महीन चूर्ण।
वि० स्त्री० [हिं० रँगना=सं० रजन] १. डूबी हुई। पगी हुई। २. अनुरक्त। २ मिली हुई।

रईस—पु०[अ०]१. रियासत का स्वामी। इलाकेदार। ताल्लुकेदार। २ बहुत बडा धनी या सम्पन्न और प्रतिष्ठित व्यक्ति। ३ किसी स्थान का राजा या प्रधान अधिकारी।

रईसजादा—पु०[फा० रईसजाद] [स्त्री० रईसजादी] रईस या बहुत बडे आदमी का लडका।

रईसी—स्त्री०[हिं० रईस] १ रईस होने की अवस्था या भाव। २. कोई ऐसा काम या बात जिसमें केवल शौक से और रईसो की तरह बहुत अधिक व्यय किया गया हो।

रउताई*—स्त्री० [हिं० रावत+आई (प्रत्य०)] राउत (रावत) या मालिक होने की अवस्था या भाव। प्रभुत्व।

रउरे†—सर्व०[पश्चिमी रावरे का पूर्वी रूप] मध्यम पुरुष के लिए आदर-सूचक शब्द। आप। जनाब।

रऐयत—स्त्री०[अ०] प्रजा। रिआया।

रकछ—पु०[हिं० रिकवच] कुछ विशिष्ट प्रकार के पत्तो की बनाई हुई पकोडी। पतौड़ी।

रकत*—पु० [सं० रक्त] लहू। खून। रुधिर।
वि० रक्त वर्ण का। लाल। सुर्ख।

रकतकंद—पु०[सं० रक्त-कद] १ मूँगा। प्रवाल। विद्रुम। (डिं०) २. रताल।

रकतांक*—पु०[सं० रक्तांक]१ विद्रुम। प्रवाल। मूँगा। (डिं०) २ केसर। ३. लाल चदन।

रक़बा—पु०[अ० रकब.] क्षेत्रफल (दे०)

रकबाहा—पु०[अ०] घोडो का एक भेद।

रक़म—स्त्री०[अ० रकम]१. लिखने की क्रिया या भाव। २ छाप। मोहर। ३. रुपया-पैसा या बीघा-बिसवा आदि लिखने के फारसी के वे विशिष्ट अक जो साधारण सख्यासूचक अको से भिन्न होते हैं। ४. रुपया-पैसा जिसकी सख्या नियत या सूचित की गई हो। ५ बही-खाते में लिखी जानेवाली उक्त प्रकार की सख्या या कोई ऐसा पद जो उस सख्या से सबद्ध हो। जैसे—(क) यह रकम बही मे लिख लो। (ख) तुम्हारे नाम अभी दो रकमे बाकी पड़ी है। ६ गहना या जेवर जो मूल्यवान होता है और जिससे धन मिल सकता है। जैसे—घर की एक रकम रखकर दो सौ रुपए लाया हूं। ७ कोई ऐसी चीज जिसका कुछ विशेष महत्व या मूल्य हो। ८ बहुत ही चलता-पुरजा या चालाक आदमी। ९ सुन्दरी स्त्री। (बाजारू) १० ब्रिटिश भारत मे, लगान की दर। ११. तरह। प्रकार। भाँति। जैसे—रकम-रकम की चीजे वहाँ रखी थीं।

रक़मी—वि०[अ० रकमी] १ रकम सबधी। रकम का। २. लिखा हुआ। लिखित। ३ निशान किया हुआ।

पुं० मध्य युग और ब्रिटिश भारत मे वह काश्तकार जिससे रकम या धन लेने में कोई खास रिआयत की जाती थी।

रकाम—स्त्री०[?]१. तरीका। २. लगाम।

रकाब—स्त्री० [फा० रकाब]१. घोड़े की काठी का झूलता हुआ पावदान जिस पर पैर रखकर घोड़े पर सवार होते हैं और बैठने मे जिससे सहारा लेते हैं।

मुहा०—**रकाब पर पैर रखना**=कहीं जाने या चलने के लिए बिल्कुल तैयार होना।

२. दे० 'रकाबी'।

रकाबत—स्त्री०[अ०]१. रकीब होने की अवस्था, धर्म या भाव। २ किसी प्रेमिका के सम्बन्ध मे उसके प्रेमियो में होनेवाली प्रतिद्वंद्विता।

रकाबदार—पु०[फा०]१. मुरब्बा, मिठाई आदि बनानेवाला कारीगर या हलवाई। २ रकाबियों मे खाना चुनने और परोसनेवाला। खानसामा। ३. नवाबों, बादशाहों आदि के साथ उनका भोज लेकर चलनेवाला सेवक। खासाबरदार। ४. रकाब पकड़कर घोड़े पर सवार-करानेवाला नौकर। साईस।

रकाबा—पु०[फा० रकाब]१. बड़ी रकाबी। २ परात।

रकाबी—स्त्री०[फा०] छिछली गोल छोटी थाली।

वि० १. रकाब सम्बन्धी। २ रकाबी की तरह का। जैसे—रकाबी चेहरा।

रकाबी चेहरा—पु०[फा० हिं०] गोल या चौड़ा मुँह।

रकाबी मजहब—वि ०[फा०+अ०] खुशामदी। चाटुकार।

रकार—पुं०[सं० र+कार] र वर्ण का बोधक अक्षर। र।

रक़ीक़—वि०[अ०] १. पानी की तरह पतला। तरल द्रव। २ कोमल। नरम। मुलायम।

पुं० गुलाम। दास।

रक़ीब—पु०[अ०]१ वह जो किसी प्रेमिका के प्रेम के सबंध मे उसके दूसरे प्रेमी से प्रतियोग करता हो। प्रेमिका का दूसरा प्रेमी। २ प्रतिद्वंद्वी। प्रतिस्पर्धी।

रकेबी —स्त्री०=रकाबी।

रक्कास—पु०[अ०] [स्त्री० रक्कासी] नाचनेवाला। नर्त्तक।

रक्खना—स०=रखना।

रक्त—वि०[स०√रज् (रँगना)+क्त] १ जिसका रंजन हुआ हो। २. रँगा हुआ। ३. किसी के अनुराग या प्रेम से युक्त। अनुरक्त। ४ लाल रग का। सुर्ख। ५. आमोद-प्रमोद या विहार मे लगा हुआ। ६ शुद्ध और साफ किया हुआ।

पु० १. लाल रग का वह प्रसिद्ध तरल पदार्थ जो नसो आदि मे से होकर सारे शरीर में चक्कर लगाता रहता है। लहू। खून। रुधिर। शोणित। (मुहा० के लिए दे० 'खून' के मुहा०)२. उत्साहपूर्वक अग्रसर होने या आगे बढ़ने वालो का दल या वर्ग। जैसे—कांग्रेस को अब नये रक्त की आवश्यकता है। ३. केसर। ४. ताँबा। ५. कमल। ६. सिंदूर। ईंगुर। ७. लाल चन्दन। ८. लाल रंग। ९. कुसुभ। १०. गुल दुपहरिया। बन्धूक। ११. पतंग नामक वृक्ष की लकड़ी। १२. एक प्रकार का बेंत। हिज्जल। १३. एक प्रकार की मछली। १४. एक प्रकार का जहरीला मेढक। १५, एक प्रकार का बिच्छू। १६. अच्छी तरह पका हुआ आँवले का फल।

रक्तकंठ—पुं०[सं० ब० स०]१. कोयल २. बैंगन। भंटा।

वि० जिसका कंठ या गला रक्त अर्थात् लाल हो।

रक्तकंद—पुं०[सं० ब० स०]१. विद्रुम। मूँगा। २ प्याज। ३. रतालू।

रक्त-कंवल—पु०[सं० ब० स०] मूँगा। विद्रुम।

रक्तक—पु० [सं० रक्त√कै (शब्द)+क]१. गुल दुपहरिया का पौधा और उसका फूल। बधुक। २. लाल सहिजन का पेड़। ३ लाल रेंड। ४ लाल कपड़ा। ५ लाल रंग का घोड़ा। ६. केसर।

वि० १. रक्त वर्ण का। लाल। २. अनुरक्त। ३. विनोदप्रिय।

रक्त-कदंब—पुं०[सं० कर्म० स०]१ एक प्रकार का कदंब जिसके फूल गहरे लाल रग के होते हैं। २ उक्त वृक्ष का फूल।

रक्त कदली—स्त्री०[सं० कर्म० स०] चंपा केला।

रक्त-कमल—पु०[सं० कर्म० स०] लाल रग का कमल।

रक्त-करवीर—पु०[सं० कर्म० स०] लाल रग का कनेर।

रक्त-कांचन—पुं०[सं० कर्म० स०] कचनार का वृक्ष। कचनाल।

रक्तकांता—स्त्री० [सं०ब० स०, टाप्] लाल पुनर्नवा। लाल गदहपूरना।

रक्त-कास—पु०[सं० मध्य० स०] एक प्रकार का कास-रोग जिसमें फेफड़े से मुँह के रास्ते खून निकलता है।

रक्त-काष्ठ—पु०[स० ब० स०] पतंग की लकड़ी।

रक्त-कुमुद—पु०[स० कर्म० स०] कूँई। नीलोफर।

रक्त-कुरंटक—पु०[स० कर्म० स०] लाल कटसरैया।

रक्तकुष्ठ—पुं०[कर्म० स०] विसर्प नामक रोग, जिसमें सारा शरीर लाल हो जाता है और इसमें बहुत जलन होती है और कुष्ठ की तरह अग गलने लगते हैं।

रक्त-कुसुम—पुं०[स० ब० स०]१. कचनार। २. आक। मदार। ३. धामिन नामक वृक्ष। ४ फरहद। पारिभद्र।

रक्त-कुसुमा—स्त्री०[ब० स० टाप्] अनार का पेड़।

रक्त-कृमिजा—स्त्री०[स० कर्म० स०√जन् (उत्पत्ति) +ड, टाप्] लाख। लाह।

रक्त-केशर—पु०[ब० स०] पारिभद्रक वृक्ष। फरहद का पेड़।

रक्त कैरव—पुं०[कर्म० स०] लाल कुमुद।

रक्तक्षय—पु०[स० ष० त०]१. रक्त का क्षय होना। २. दे० 'रक्त क्षीणता'।

रक्त-क्षीणता—स्त्री०[सं०] शरीर की वह स्थिति जिसमे रक्त या खून की बहुत कमी हो जाती है। (एनीमिया)

रक्त-खदिर—पु०[कर्म० स०] एक प्रकार का खैर का वृक्ष जिसके फूल लाल रग के होते हैं। रक्तसार।

रक्त-गंधक—पु०[कर्म० स०] बोल नामक गंध-द्रव्य।

रक्त-गत ज्वर—पु०[रक्त गत द्वि० त०, रक्त गत-ज्वर कर्म० स०] वह ज्वर जिसके कीटाणु रोगी के रक्त मे समा गये हो।

रक्त-गर्भा—स्त्री०[ब० स०, टाप्] मेंहदी का पेड़।

रक्त-गुल्म—पु०[मध्य० स०] स्त्रियों का एक रोग जिसमें उनके गर्भाशय मे रक्त की गाठ सी बँध जाती है।

रक्त-गैरिक—पुं०[कर्म० स०] स्वर्ण गैरिक। लाल गेरू।

रक्त-ग्रीव—पुं०[सं० ब० स०]१. कबूतर। २. राक्षस।

रक्तघ्न—पुं०[सं० रक्त √हन् (हिंसा)+टक्] रोहितक वृक्ष।
वि० रक्त का नाश करनेवाला।

रक्तघ्नी—स्त्री०[सं० रक्तघ्न+ङीप्] एक प्रकार की दूब। गंडदूर्वा।

रक्त-चंचु—पुं०[ब० स०] शुक। तोता।

रक्त-चंदन—पुं०[कर्म० स०] लाल रंग का चंदन। (दे० चंदन)

रक्त-चाप—पुं०[सं० रक्त और हिं० चाप]१. खून का जोर या दबाव। २. चिकित्सा-शास्त्र में एक रोग जो उस समय माना जाता है जब अवस्था के प्रसम अनुपात से रक्त का दबाव या वेग घट या बढ़ गया होता है। (ब्लड प्रेशर)

रक्त चित्रक—पुं०[कर्म० स०] लाल रंग का चित्रक या चीता वृक्ष।

रक्तचूर्ण—पुं० [कर्म० स०] १ सिंदूर। २. कमीला।

रक्तच्छर्दि—स्त्री०[ष० त०] खून की कै होना। रक्त-वमन।

रक्तज—वि०[सं० रक्त√जन् (उत्पत्ति)+ड]१ जो रक्त से उत्पन्न हो। २ (रोग) जो रक्त विकार के कारण उत्पन्न हो।

रक्तजकृमि—पुं० [कर्म० स०] वह कृमि जो रक्त-विकार के कारण उत्पन्न होता है।

रक्तजपा—स्त्री०[कर्म० स०] अड़हुल। जवा। देवीफूल।

रक्तजिह्व—पुं० [ब० स०] सिंह। शेर।
वि० लाल जीभवाला।

रक्तजूर्ण—पुं०[कर्म० स०] ज्वार। जोन्हरी।

रक्ततप्त—वि० [कर्म० स०] इतना अधिक तपा या तपाया हुआ कि देखने में लाल हो गया हो। बहुत अधिक तपा हुआ। (रेड हॉट)।

रक्ततर—पुं०[सं० रक्त+तरप्] गेरू।

रक्तता—स्त्री० [सं० रक्त+तल्+टाप्] रक्त होने की अवस्था या भाव। लाली। सुर्खी।

रक्तताप—पुं०[कर्म० स०] उस अवस्था की ताप या गरमी जब कोई चीज तपाने से लाल हो गई हो। (रेड-हीट)

रक्ततुंड—पुं०[सं० ब० स०] तोता।

रक्ततुंडक—पुं०[सं० रक्ततुंड+कन्] सीसा।

रक्ततृण—पुं०[कर्म० स०] एक प्रकार का लाल रंग का तृण।

रक्तदंतिका—स्त्री०[ब० स०, कप्+टाप्, इत्व] दुर्गा का वह रूप जो उन्होंने शुभ-निशुंभ को मारने के समय धारण किया था। चंडिका।

रक्तदंती—स्त्री०[सं० ब० स०, ङीष्]=रक्तदंतिका।

रक्तदला—स्त्री०[ब० स०, टाप्] नालिका नामक गंध-द्रव्य।

रक्तदान बंक—पुं०[सं० रक्तदान+अं० बैंक] वह स्थान जहाँ स्वस्थ व्यक्तियों के शरीर से निकाला हुआ रक्त इसलिए सुरक्षित रखा जाता है कि आवश्यकता पड़ने पर ऐसे रोगियों के शरीर में प्रविष्ट किया जा सके जो रक्त की कमी के कारण मरणासन्न हो रहे हों। (ब्लड बैंक)

रक्तदूषण—वि०[ष० त०] जिससे रक्त दूषित हो। खून-खराब करनेवाला।

रक्त-दृग्(श्)—पुं०[ब० स०] १ कोयल। कोकिल। २. कबूतर। ३. चकोर।
वि० लाल आँखोंवाला।

रक्त-द्रुम—पुं०[कर्म० स०] लाल बीजासन वृक्ष।

रक्त-धरा—स्त्री०[ष० त०] वैद्यक के अनुसार मांस के अन्दर की दूसरी कला या झिल्ली जो रक्त को धारण किये रहती है।

रक्त-धातु—पुं०[कर्म० स०]१. गेरू। २ ताँबा।

रक्त-नयन—पुं०[ब० स०]१ कबूतर। २ चकोर।

रक्त-नाल—पुं०[ब० स०] सुसना नामक साग।

रक्त-नालिक—पुं०[ब० स०] उल्लू।

रक्त-नील—पुं०[कर्म० स०] सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का बहुत जहरीला बिच्छू।

रक्त-नेत्र—पुं०[ब० स०]१ कोयल। २ सारस पक्षी। ३. कबूतर। ४. चकोर।
वि० लाल आँखोंवाला। जिसके नेत्र लाल हों।

रक्तप—वि०[सं० रक्त√पा (पान)+क] रक्त पान करने अर्थात् लहू पीनेवाला।
पुं०१ राक्षस। २. खटमल।

रक्त-पक्ष—पुं०[ब० स०] गरुड़।

रक्तपट—वि०[ब० स०] लाल रंग के कपड़े पहननेवाला।
पुं० बौद्ध श्रमण।

रक्तपत्र—पुं०[ब० स०] पिंडालू।

रक्तपत्रा—स्त्री०[ब० स०, टाप्]१ लाल गदहपूरना। २ नाकुली।

रक्तपर्ण—पुं०[ब० स०] लाल गदहपूरना।

रक्त-पल्लव—पुं०[(सं०) ब० स०] अशोक का वृक्ष।

रक्तपा—स्त्री [सं० रक्तप+टाप्]१ जोंक। २ डाकिनी।

रक्त-पात—पुं० [ष० त०] १ लहू का गिरना या बहना। रक्तस्राव। २. ऐसी मारपीट या लड़ाई झगड़ा जिसमें अधिक मारकाट के कारण अनेक शरीरों से खून बहता है। खून-खराबी।

रक्त-पाता—स्त्री०[सं०रक्त√पत(गिरना)+णिच्+अच्+टाप्] जोंक।

रक्त-पाद—पुं०[ब० स०]१. बरगद। २. तोता।

रक्त-पायी (यिन्)—वि०[सं० रक्त√पा+णिनि, युगागम] [स्त्री० रक्तपायिनी] रक्तपान करनेवाला। खून पीनेवाला।
पुं०१. राक्षस। २. खटमल।

रक्तपारद—पुं०[कर्म० स०] हिंगुल। ईंगुर।

रक्त-पाषाण—पुं०[कर्म० स०] १. लाल पत्थर। २. गेरू।

रक्त-पिंड—पुं०[उपमित स०] जवाफूल।

रक्त-पिंडक—पुं०[सं० रक्तपिंड+कन्]१. रतालू। २. अड़हुल। जवा।

रक्त-पिंडालु—पुं०[कर्म० स०] रतालू।

रक्त-पित्त—पुं०[मध्य० स०] १. एक प्रकार का रोग जिसमें मुँह, नाक, कान, गुदा, योनि आदि इंद्रियों से रक्त गिरता है। २. नाक से लहू बहने का रोग। नकसीर।

रक्तपित्तहा—स्त्री०[सं०√रक्तपित्त√हन् (हिंसा)+ड+टाप्] रक्तघ्नी नामक दूब।

रक्तपित्ती (त्तिन्)—पुं०[सं० रक्तपित्त+इनि] वह जो रक्तपित्त रोग से ग्रस्त हो।

रक्त-पुनर्नवा—स्त्री० [कर्म० स०] लाल गदहपूरना। २. वैशाखी।

रक्त-पुष्प—पुं० [ब० स०] १. करवीर। कनेर। २. अनार का पेड़। ३. गुलदुपहरिया। बन्धूक। ४. पुन्नाग।

रक्त-पुष्पक—पुं० [सं० रक्तपुष्प+कन्] सेमल (पेड़)।

रक्तपुष्पा—स्त्री० [सं० रक्तपुष्प+टाप्] १. शाल्मली वृक्ष। सेमल। २. पुनर्नवा। ३. सिंदूरी। ४. चंपा केला। ५. नागदौन।

रक्त-पुष्पिका—स्त्री० [सं० रक्तपुष्प+कन्-टाप्, ह्रस्व] १. लाल पुनर्नवा। २. लजालू। लाजवंती।

रक्तपुष्पी—स्त्री० [सं० रक्तपुष्प+ङीष्] १. जवा। अड़हुल। २. नागदौन। ३. धौ। धव। ४. आवर्तकी लता। ५. पाडर।

रक्तपूतिका—स्त्री० [कर्म० स०] लाल रंग की पूतिका। लाल पोई।

रक्तपूरक—पुं० [ब० त०] इमली।

रक्त-पूर्ण—वि० [तृ० त०] खून से लथपथ।

रक्त-प्रतिश्याय—पुं० [मध्य० स०] प्रतिश्याय या जुकाम का एक भेद जिसमें नाक से खून भी जाने लगता है।

रक्त-प्रदर—पुं० [मध्य० स०] स्त्रियों के प्रदर रोग का वह भेद जिसमें उनकी योनि से रक्त बहता है।

रक्त-प्रमेह—पुं० [कर्म० स०] दुर्गन्धियुक्त गरम, खारा और खून के रंग का पेशाब होने का एक पुरुष रोग।

रक्त-प्रवृत्ति—पुं० [सं० ब० स०] पित्त के प्रकोप के फलस्वरूप होनेवाला रोग।

रक्त-प्रसव—पुं० [ब० स०] १. लाल कनेर। २. मुचकुंद वृक्ष।

रक्तफल—पुं० [ब० स०] १. शाल्मलि। सेमल। २. बड़ का पेड़। वटवृक्ष।

रक्तफला—स्त्री० [ब० स०, +टाप्] १. कुंदरू। तुण्डी। बिंबी। २. स्वर्णवल्ली।

रक्त-फूल—पुं० [सं० रक्त+हिं० फूल] १. जवा फूल। अड़हुल का फूल। २ ढाक। पलास।

रक्त-फेनज—पुं० [सं० रक्तफेन ष० त०, रक्तफेन√जन् (उत्पन्न होना)+ड] फुप्फुस। फेफड़ा।

रक्त-बीज—पुं०=रक्त-वीज।

रक्त-भव—पुं० [ब० स०] गोश्त। मांस।
वि० रक्त से उत्पन्न।

रक्त-मंजरी—स्त्री० [ब० स०] लाल कनेर।

रक्त-मंडल—पुं० [ब० स०] १. लाल कमल। २. सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का साँप। ३. एक जहरीला पशु।

रक्त-मत्त—वि० [तृ० त०] जो रक्त पीकर तृप्त हो। रक्त पीकर मतवाला होनेवाला।
पुं० १ राक्षस। २. खटमल। ३ जोंक।

रक्तमत्स्य—पुं० [सं० कर्म० स०] एक प्रकार की लाल रंग की मछली जो बहुत बड़ी नहीं होती।

रक्त-मस्तक—पुं० [ब० स०] लाल रंग के सिरवाला सारस पक्षी।

रक्तमातृका—स्त्री० [सं० रक्त-मातृ ष० त०, कन्+टाप्] १. वैद्यक के अनुसार शरीर का वह रस (धातु) जिसकी उत्पत्ति पेट में पचे हुए भोजन से होती है और जिससे रक्त बनता है। २. तंत्र के अनुसार एक प्रकार का रोग।

रक्त-मुख—पुं० [ब० स०] १ रोहू (मछली)। २. षष्टिक धान्य।
वि० लाल मुँहवाला।

रक्तमूर्द्धा (र्द्धन्)—पुं० [ब० स०] सारस।

रक्तमूलक—पुं० [ब० स०, कप्] देवसर्षप नामक सरसों का पौधा।

रक्तमेह—पुं०=रक्त-प्रमेह।

रक्तमोक्षण—पुं० [ष० त०] वैद्यक में एक प्रकार का उपचार या क्रिया जिससे शरीर का अथवा उसके किसी अंग का खराब खून बाहर निकाला जाता है। फसद खोलना।

रक्त-मोचन—पुं० [ष० त०]=रक्त-मोक्षण।

रक्त-यष्ठि—स्त्री० [ब० स०] मंजीठ।

रक्तरंगा—स्त्री० [ब० स०] मेंहदी।

रक्त-रज (स्)—पुं० [कर्म० स०] सिंदूर।

रक्त-रसा—स्त्री० [ब० स०, टाप्] रास्ना (कंद)।

रक्त-रेणु—पुं० [ब० स०] १. सिंदूर। २. पुन्नाग।

रक्त-रोग—पुं० [मध्य० स०] १. ऐसा रोग जिसके फलस्वरूप शरीर का रक्त दूषित हो जाता है। २. रक्त के दूषित होने के कारण उत्पन्न होनेवाला रोग।

रक्तला—स्त्री० [सं० रक्त+√ला (आदान)+क+टाप्] १. काकतुंडी। कौआ-ठोठी २. गुंजा। घुंघची।

रक्तलोचन—पुं० [ब० स०] १. कबूतर। २ कोयल। ३. सारस। ४ चकोर।
वि० लाल आँखोंवाला।

रक्त-षष्ठी—स्त्री० [कर्म० स०] शीतला रोग। चेचक। माता।

रक्त-वर्ग—पुं० [ब० स०] वैद्यक में, अनार, ढाक, लाख, हलदी, दारुहलदी, कुसुम के फूल, मंजीठ और दुपहरिया के फूल, इन सबका समूह।

रक्त-वर्ण—पुं० [ब० स०] १. बीरबहूटी नामक कीड़ा। २. गोमेद या लहसुनिया नामक रत्न। ३. मूँगा। ४ कमीला।
वि० लाल रंग का।

रक्त-वर्तक—पुं० [कर्म० स०] लाल बटेर।

रक्त-वर्द्धन—वि० [सं० रक्त√वृध् (वृद्धि)+णिच्+ल्यु-अन] रक्त बढ़ानेवाला। रक्त वर्धक।
पुं० बैंगन। भंटा।

रक्त-वल्ली—स्त्री० [कर्म० स०] १ मंजीठ। २. नलिका या पवारी नामक गन्ध द्रव्य। ३ वड़ोत्पल। ४ पित्ती नाम की लता।

रक्त-वसन—पुं० [ब० स०] संन्यासी।

रक्त-वह-तंत्र—पुं० [सं० रक्त√वह् (ले जाना)+अच् रक्तवह-तन्त्र ष० त०] शरीर की वे सब शिराएँ और अंग, जो सारे शरीर में रक्त पहुँचाने में सहायक होते हैं। (सर्क्यूलेटरी सिस्टम)

रक्त-वात—पुं० [मध्य० स०] वात-रक्त (दे०)।

रक्त-वालुक—पुं० [ब० स०] सिंदूर।

रक्त-बिंदु—पुं० [ष० त०] १. रुधिर या लहू की बूंद। २. [ब० स०] लाल चिचड़ा। ३ [कर्म० स०] रत्न आदि में दिखाई पड़नेवाला धब्बा जिसकी गिनती दोषों में होती है।

रक्त-विद्रधि—पुं० [मध्य० स०] रक्त-विकार के फलस्वरूप होनेवाला एक प्रकार का फोड़ा। इसमें किसी अंग में सूजन होती है और उसके चारों ओर काले रंग की फुंसियाँ हो जाती हैं।

रक्त-विस्फोटक—पुं० [ब० स०] एक प्रकार का रोग जिसमें शरीर मे गुंजा के समान लाल लाल फफोले पड जाते हैं।

रक्त-बीज—पु० [ब० स०] १ लाल बीजोंवाला दाडिम। अनार। २ रीठा। ३. शुंभ और निशुंभ का सेनापति एक राक्षस जिसके सम्बन्ध मे प्रसिद्ध है कि धरती पर गिरनेवाली उसके रक्त की हर एक बूंद से एक एक राक्षस उत्पन्न होते थे।

रक्त-बीजा—स्त्री० [ब० स० टाप्] सिंदूरपुष्पी। सिंदूरिया।

रक्त-वृंतक—पु० [म० कर्म० स०] पुनर्नवा। गदहपूरना।

रक्तवृंता—स्त्री० [स० ब० स०, टाप्] शेफालिका। निर्गुंडी।

रक्त-वृष्टि—स्त्री० [ष० त०] आकाश से रक्त या लाल रंग के पानी की वृष्टि होना। दे० 'रुधिर-वर्षण'।

रक्त-व्रण—पु० [मध्य० स०] वह फोडा जिसमे मवाद के स्थान पर रक्त निकलता हो।

रक्त-शर्करा—स्त्री० [मध्य० स०] शर्करा का वह तत्त्व जो शरीर के रक्त मे रहता है। (ब्लड शुगर)

रक्त-शालि—पु० [कर्म० म०] एक प्रकार का लाल रग का चावल। दाऊदखानी।

रक्त-शासन—पु० [स० रक्त√शास् (वश मे करना)+ल्यु—अन] सिंदूर।

रक्त-शिग्रु—पु० [कर्म० स०] लाल सहिजन।

रक्तशीर्षक—पु० [स० ब० स०, कप्] १ गंधा बिरोजा। २ सारस पक्षी।

रक्त-शृंग—पु० [कर्म० स०] हिमालय की एक चोटी।

रक्त-श्वेत—पु० [कर्म० स०] एक तरह का अत्यधिक जहरीला बिच्छू। (सुश्रुत)।

रक्तष्ठीवि—पु० [स० रक्त√ष्ठीव् (थूकना)+णिनि, उप० स०] एक प्रकार का घातक और असाध्य सन्निपात जिसमे मुंह से लहू जाता है।

रक्त-संज्ञक—पु० [ब०, स०, कप्] कुंकुम। केसर।

रक्त-संबंध—पु० [ष० त०] कुलगत संबंध। एक ही कुल, परिवार या वंश की दृष्टि से होनेवाला सम्बन्ध।

रक्त-संवरण—पु० [ष० त०] सुरमा।

रक्त-सर्षप—पु० [कर्म० स०] लाल सरसो।

रक्त-सार—पु० [ब० स०] १ लाल चदन। २ पतग। बक्कम। ३. अमलबेत। ४ खदिर। खैर। ४ वाराही कद। गेठी। ६ रक्त-बीजासन।

रक्त-स्तंभन—पु० [ष० त०] शरीर के किसी अग से बहते हुए रक्त को बद करना या रोकना।

रक्त-स्राव—पु० [ष० त०] १ शरीर के किसी अग से रक्त निकलना या बहना। २ घोडो का एक रोग जिसमे उनकी आँखो से रक्त या लाल रग का पानी बहता है।

रक्त-हर—पु० [ष० त०] भिलावाँ।
वि० रक्त सुखाने या सोखनेवाला।

रक्तांग—पु० [रक्त-अंग ब० स०] १ मगल ग्रह। २. कमीला। ३ मूँगा। ४ खटमल। ५ केसर। ६ लाल चन्दन।
वि० लाल अंगोंवाला।

रक्तांगी—स्त्री० [स० रक्तांग+ङीष्] १ मजीठ। २ जीवंती। ३. कुटकी।

रक्तांबर—पु० [रक्त-अंबर कर्म० स०] १. लाल वस्त्र। गेरुआ वस्त्र। २ [ब० स०] संन्यासी, जो गेरुआ वस्त्र पहनता है।

रक्ता—स्त्री० [स० रक्त+अच्+टाप्] १ संगीत मे, पंचम स्वर की चार श्रुतियो मे से दूसरी श्रुति। २. गुंजा। घुंघची। ३ लाक्षा। लाख। ४ मजीठ। ५ ऊँटकटारा। ६ एक प्रकार का सेम। ७ लक्ष्मण नामक कन्द। ८ वच। वचा। ९ एक प्रकार की मकडी। १० कान के पास की एक नस।

रक्ताकार—पु० [रक्त-आकार ब० स०] मूंगा।

रक्ताक्त—वि० [रक्त-अक्त तृ० त०] १ लाल रग मे रँगा हुआ। २ जिसमे रक्त या खून लगा हो।
पु० लाल चन्दन।

रक्ताक्ष—पु० [रक्त-अक्षि ब० स०, षच् प्रत्य०] १. कोयल। २. चकोर। ३. सारस। ४ कबूतर। ५ भैंसा। ६ साठ संवत्सरो मे से अट्ठावनवे संवत्सर का नाम।
वि० लाल आँखोवाला।

रक्तातिसार—पु० [स० रक्त-अतिसार मध्य० स०] एक प्रकार का अतिसार रोग जिसमे लहू के दस्त आते हैं।

रक्ताधर—वि० [रक्त-अधर ब० स०] [स्त्री० रक्ताधारा] लाल होठोंवाला।

रक्ताधरा—स्त्री० [रक्त-अधर ब० स०, टाप्] किन्नरी।

रक्ताधार—पु० [रक्त-आधार ष० त०] चमडा।

रक्तापह—पु० [स० रक्त-अप√हन् (हिंसा)+ड] बोल (गंधद्रव्य)।

रक्ताभ—पु० [रक्त-आभा ब० स०] बीरबहूटी।
वि० रक्त की तरह की लाल आभावाला। जो कुछ कुछ लाली लिये हो।

रक्ताभा—स्त्री० [स० रक्ताभ+टाप्] लाल जवा।

रक्ताभ्र—पु० [रक्त-अभ्र कर्म० स०] लाल अभ्रक।

रक्तारि—पु० [रक्त-अरि ष० त०] महाराष्ट्री नामक क्षुप (पौधा)।

रक्तार्बुद—पु० [रक्त-अर्बुद ब० स०] १. एक प्रकार का रोग जिसमे शरीर मे पकने और बहनेवाली गाँठें निकल आती है। २ शुक्रदोष के कारण उत्पन्न होनेवाला एक रोग जिसमे लिंग पर, काले फोडे और उनके साथ लाल फुन्सियाँ निकल आती हैं।

रक्तार्श (र्शस्)—पु० [रक्त-अर्शस् मध्य० स०] खूनी बवासीर।

रक्तालु—पु० [रक्त-आलु कर्म० स०] रतालू। (कद)

रक्तावरोधक—वि० [रक्त-अवरोधक ष० त०] बहते हुए खून को रोकनेवाला।

रक्तावसेचन—पु० [रक्त-अवसेचन ष० त०] १ शरीर के सात आशयो मे से चौथा जिसमे रक्त का रहना माना जाता है। २. रक्त-मोक्षण।

रक्ताशोक—पु० [रक्त-अशोक कर्म० स०] लाल अशोक का वृक्ष।

रक्ति—स्त्री० [सं०√रज् (राग)+क्तिन्] १. अनुराग। प्रेम। २ रत्ती नामक तौल या परिमाण।

रक्तिका—स्त्री० [सं० रक्त+ठन्—इक, टाप्] १ घुंघची। २. रत्ती नामक तौल या परिमाण।

रक्तिमा (मन्)—स्त्री० [सं० रक्त+इमनिच्] रक्तिम होने की अवस्था या भाव।

रक्तेक्षु—पुं० [रक्त-इक्षु कर्म० स०] लाल रंग का ऊख।

रक्तोत्पल—पुं० [रक्त-उत्पल, कर्म० स०] १. लाल कमल। २. शाल्मलि। सेमल।

रक्तोदर—पुं० [रक्त-उदर ब० स०] १. रोहू मछली। २. एक प्रकार का जहरीला बिच्छू।

रक्तोपदंश—पुं० [रक्त-उपदंश, मध्य० स०] आतशक (रोग)।

रक्तोपल—पुं० [रक्त-उपल, कर्म० स०] गेरू।

रक्ष—पुं० [सं०√रक्ष् (पालन)+अच्] १ रक्षक। रखवाला। २. रक्षा। रखवाली। हिफाजत। ३. लाक्षा। लाख। ४. छप्पय के साठवें भेद का नाम जिसमें ११ गुरु और १३० लघु मात्राएँ अथवा ११ गुरु और १२६ लघु मात्राएँ होती है।

पुं०=राक्षस।

रक्षक—पुं० [सं०√रक्ष्+ण्वुल्—अक] १. रक्षा करनेवाला। बचानेवाला। हिफाजत करनेवाला। २. पहरेदार। ३. पालन-पोषण करनेवाला।

रक्षण—पुं० [सं०√रक्ष्+ल्युट्—अन] १. रक्षा करना। हिफाजत करना। रखवाली। २. पालन-पोषण करना। ३. रक्षक।

रक्षणकर्ता (र्तृ)—पुं० [ष० त०] रक्षा करनेवाला। रक्षक।

रक्षणीय—वि० [सं०√रक्ष्+अनीयर][स्त्री० रक्षणीया] रक्षा किये जाने के योग्य। जिसे रक्षित रखना हो।

रक्षन*—पुं०=रक्षण।

रक्षना*—स० [सं० रक्षण] रक्षा करना। हिफाजत करना। सँभालना। बचाना।

रक्षपाल—पुं० [सं० रक्ष√पाल् (रक्षा)+णिच्+अण्, उप० स०] वह जिसका काम रक्षा करना हो।

रक्षमाण—वि०=रक्ष्यमाण।

रक्षस*—पुं०=राक्षस।

रक्षा—स्त्री० [सं०√रक्ष्+अ-टाप्] १. ऐसा काम जो आक्रमण, आघात, आपद, नाश आदि से बचने या बचाने के लिए किया जाता हो। हिफाजत। जैसे—अपनी रक्षा, घर की रक्षा, संकट में पड़े हुए मित्र की रक्षा। २ बालकों को भूत-प्रेत, नजर आदि से बचने के उद्देश्य से बाँधा जानेवाला यंत्र या सूत्र। कवच। ३ गोद। ४ भस्म।

रक्षाइव*—स्त्री० [हिं० रक्ष+आइद (प्रत्य०)] राक्षसपन।

रक्षा-कवच—पुं० [मध्य० स०] १. तंत्र-मंत्र की विधि से बनाया हुआ वह कवच या यंत्र जो किसी को आपत्तियों आदि से रक्षित रखने के लिए पहनाया जाता है। २ कोई ऐसी चीज या बात जो सब प्रकार से किसी की रक्षा करने के लिए यथेष्ट मानी जाती हो। (सेफ-गार्ड)।

रक्षा-गृह—पुं० [ष० त०] १ चौकी। २ सूतिका-गृह। जच्चा-खाना।

रक्षा-पति—पुं० [ष० त०] नगर का शासन तथा रक्षा का प्रबंध करनेवाला एक प्राचीन भारतीय अधिकारी।

रक्षा-पत्र—पुं० [ब० स०] १. भोजपत्र। २ सफेद सरसों।

रक्षापाल—पुं० [सं० रक्षा√पाल् (बचाना)+णिच्+अण्] पहरेदार। प्रहरी।

रक्षा-पुरुष—पुं० [च० त०] पहरेदार। प्रहरी।

रक्षापेक्षक—पुं० [रक्षा-अपेक्षक ष० त०] १ पहरेदार। प्रहरी। २. अंतःपुर का पहरेदार। ३. अभिनेता। नट।

रक्षा-प्रदीप—पुं० [च० त०] भूत-प्रेत आदि की बाधा से बचे रहने के उद्देश्य से जलाया जानेवाला दीपक। (तंत्र)

रक्षा-बंधन—पुं० [ष० त०] १. किसी के हाथ में रक्षासूत्र बाँधने की क्रिया या भाव। २. हिंदुओं का एक त्यौहार जो श्रावण शुक्ला पूर्णिमा को होता है; और जिसमें बहन अपने भाई तथा पुरोहित अपने यजमान की कलाई पर रक्षा-सूत्र बाँधता है।

रक्षा-भूषण—पुं० [च० त०] वह भूषण या जंतर जिसमें किसी प्रकार का कवच आदि हो और जो भूत-प्रेत या रोग आदि की बाधाओं से रक्षित रहने के लिए पहना जाय।

रक्षा-मंगल—पुं० [च० त०] भूत-प्रेत आदि की बाधा से रक्षित रहने के उद्देश्य से किया जानेवाला अनुष्ठान।

रक्षामणि—पुं० [च० त०] वह मणि या रत्न जो किसी ग्रह के प्रकोप से रक्षित रहने के लिए धारण किया जाय।

रक्षा-रत्न—पुं०=रक्षामणि।

रक्षासूत्र—पुं० [च० त०] वह मंत्रपूत सूत या डोरा जो हाथ की कलाई में रक्षा-कारक मानकर बाँधा जाता है। राखी।

रक्षिक—वि० [सं०√रक्ष्+णिनि+कन्] रक्षक।

पुं० पहरेदार। संतरी

रक्षिका—स्त्री० [सं० रक्षा कन्-टाप्, ह्रस्व, इत्व] रक्षा। हिफाजत।

रक्षित—भू० कृ० [सं०√रक्ष्+क्त] [स्त्री० रक्षिता] १ जिसकी रक्षा की गई हो। हिफाजत किया हुआ। २. पाला-पोसा हुआ। ३ सँभाल कर रखा हुआ। जैसे—रक्षित वन। ४ किसी विशिष्ट कार्य, व्यक्ति आदि के उपयोग के लिए निश्चित किया या ठहराया हुआ।

रक्षित-राज्य—पुं० [सं० कर्म० स०]=संरक्षित-राज।

रक्षिता—स्त्री० [सं० रक्षिन्+तल्+टाप्] १. रक्षा। हिफाजत। २. [रक्षित+टाप्] बिना विवाह किये रखी हुई स्त्री। रखेली स्त्री।

रक्षिता (तृ)—पुं० [सं०√रक्ष्+तृच]=रक्षक

रक्षी (क्षिन्)—पुं० [सं०√रक्ष्+णिनि] १. रक्षक। २ पहरेदार। प्रहरी।

पुं० [हिं० रक्षस् से] वह जो राक्षसों की उपासना करता हो।

रक्षी-दल—पुं० [सं० रक्षि-दल] आरक्षी (पुलिस) विभाग के साधारण सिपाहियों के वर्ग का सामूहिक नाम। (कान्स्टेबुलेरी)

रक्षोघ्न—पुं० [सं० रक्षस्हन् (हिंसा)+टक्] १ हींग। २ भिलावाँ। ३ सफेद सरसों। ४ चावल का वह पानी या माँड जो कुछ समय तक रखने से खट्टा हो गया हो।

रक्षोघ्नी—स्त्री० [सं० रक्षोघ्न+ङीप्] वचा। बच।

रक्ष्य—वि० [सं०√रक्ष्+ण्यत्] जिसकी रक्षा करना उचित या कर्त्तव्य हो। रक्षणीय।

रक्ष्यमाण—वि० [सं०√रक्ष्+लट् (कर्मणि)-शानच्, यक् मुगागम] जिसकी रक्षा की जा सके या की जाने को हो।

रक्स—पुं० [अ०] १. नाच। नृत्य। २. किसी चीज का इस प्रकार बार

बार इधर-उधर हिलना-डोलना या झूमना कि वह नाचती हुई जान पड़े। जैसे—शमा का रक्स=मोमबत्ती की लौ का हवा मे हिलना-डोलना।

रक्से-ताऊस—पुं० [अ०+फा०] =मोर-नाच (देखें)।

रखा—स्त्री० रखा (चरी)।

रखटी—स्त्री० [देश०] ईख की एक जाति।

रखड़ा—पुं० =रखटी।

रखना—स० [सं० रक्षण, प्रा० रक्खणा] १. किसी आधार, तल, वस्तु, व्यक्ति, स्थान, आदि पर कोई चीज टिकाना, धरना, लादना या स्थापित करना। जैसे—(क) मेज पर गिलास रखना। (ख) मुँह पर हाथ रखना। (ग) घोडे पर असबाब रखना। २ किसी वस्तु को दूसरे को देने, सौंपने या समर्पित करने के उद्देश्य से उपस्थित करना या छोड़ देना। जैसे—किसी पर निर्णय का भार रखना। ३. किसी व्यक्ति को किसी विशिष्ट पद पर या स्थिति में नियुक्त या स्थापित करना। तैनात या मुकर्रर करना। जैसे—घर के काम के लिए नौकर या कोठी के काम के लिए मुनीम रखना। ४ कोई बात या विषय किसी के सामने समझाने आदि के लिए उपस्थित या प्रस्तुत करना। जैसे—(क) पसंद करने के लिए गाहक के सामने चीजे रखना। (ख) अदालत के सामने मामला या सबूत रखना। (ग) श्रोताओ के सामने उदाहरण अथवा प्रसग रखना। ५. कोई चीज या बात इस प्रकार अपने अधिकार या वश मे करना कि उसका दुरुपयोग न हो सके, अथवा वह दूसरे के अधिकार मे न जा सके। जैसे—(क) सौ रुपए हमने अपने पास रखे हैं। (ख) यह बात अपने मन मे रखना; अर्थात् किसी से कहना मत।

मुहा०—(किसी का) कुछ रख लेना=इस प्रकार अपने अधिकार मे कर लेना कि उसका वास्तविक स्वामी उसे पा या ले न सके। दबा लेना। जैसे—उन्होने हमारा सारा काम भी रख लिया; और हमे रुपए भी नही दिये।

६ किसी प्रकार के उपयोग के लिये चीजे एकत्र करना। सग्रह या संचय करना। जैसे—(क) यह दूकानदार सब तरह की चीजें रखता है। (ख) हम हस्तलिखित ग्रन्थ और पुराने सिक्के रखते हैं। ७ पालन-पोषण, मनोविनोद, व्यवहार आदि के लिए अपने अधिकार में करना। अपनी अधीनता मे लेना। जैसे—(क) कबूतर, कुत्ता या गौ रखना। (ख) गाड़ी, घोड़ा या मोटर रखना। (ग) रडी, रखेली रखना। ८. किसी के टिकने, ठहरने या रहने के लिए स्थान की व्यवस्था करना। टिकाना। ठहराना। जैसे—बरातियो को तो उन्होने अपने बगीचे मे रखा; और नौकर-चाकरो को धर्मशाला में। ९. किसी प्रकार का आरोप करना। जिम्मे लगाना। सिर मढ़ना। जैसे—तुम तो सदा सारा दोष मुझ पर ही रखते हो। १०. कोई चीज गिरवी या बधक मे देना। रेहन करना। जैसे—घर के गहने रख कर ये ५००) लाया हूँ। ११ किसी का ऋणी या कर्जदार होना। जैसे—हम उनका कुछ रखते नही हैं, जो उनसे दबें। १२. किसी पुरुष का किसी स्त्री को (या किसी स्त्री का पर-पुरुष को) उपपत्नी (या उपपति) के रूप मे ग्रहण करके उसे अपने यहाँ स्थान देना। जैसे—विधवा होने पर उसने अपने देवर (या नौकर) को रख लिया था। १३ प्रसंग-संभोग या सहवास करना। (बाजारू) जैसे—एक दिन तो तुमने भी उसे रखा था। १४ सामाजिक व्यवहार आदि में परंपरा, संबंध आदि का निर्वाह या पालन करना। बिगड़ने न देना। जैसे—(क) तुम भले ही सबसे लड़ते फिरो, पर हमें तो सबसे रखना ही पडता है। (ख) वह ऐसी कर्कशा और कलहनी थी, कि उसने अपने किसी रिश्तेदार से नही रखी। १५. किसी चीज की देख-भाल या रखवाली करना। विपत्ति, हानि आदि से रक्षा करना। १६. उक्त सुरक्षा की दृष्टि से कोई चीज किसी के पास छोड़ना। सुपुर्द करना। जैसे—अभी यह घड़ी भइया के पास रख दो, जरूरत पड़ने पर ले लेना।

संयो० क्रि०—देना।

१७. ऐसी स्थिति मे रखना या लाना कि जाने, निकलने या भागने न पावे। (प्राय: संयो० क्रि० के रूप मे प्रयुक्त) जैसे—दबा रखना, भार रखना, रोक रखना। १८. कुछ विशिष्ट मनोवेगो के सबध मे, मन मे दृढ़तापूर्वक धारण करना या स्थान देना। जैसे—आशा या भरोसा रखना। १९. आघात, प्रहार आदि के रूप मे जमाना या लगाना। (क्व०) जैसे—उसने लाठी का एक ऐसा हाथ रखा कि लडके का सिर फूट गया। २० कोई काम या बात किसी और समय के लिए स्थगित करना। जैसे—अब इसका निश्चय कल पर रखो। २१ किसी रूप मे किसी पर अवलंबित या आश्रित करना। जैसे—(क) किसी के कधे पर हाथ रखना। (ख) खभो या दीवारो पर छत रखना।

मुहा०—(कोई बात किसी पर) रखकर कहना=इस प्रकार कोई बात कहना कि उसका कुछ अश किसी पर ठीक घटता या सार्थक होता हो। किसी को आरोप का लक्ष्य बनाकर कोई बात कहना। जैसे—मैंने तो वह बात उन पर रख कर कही थी; तुम उसे व्यर्थ अपने ऊपर ले गये। २२ पक्षियो आदि के सबध मे, अडे देना। जैसे—यह मुरगी साल मे पचास अडे रखती है।

विशेष—(क) कुछ अवस्थाओ मे यह क्रिया दूसरी क्रियाओ के साथ सयो० क्रि० के रूप में लगकर किसी कार्य की पूर्णता, समाप्ति आदि भी सूचित करती है। जैसे—कह रखना, बचा रखना, माँग रखना, ले रखना आदि। (ख) कुछ अवस्थाओ मे सज्ञाओ के साथ लगकर यह क्रिया कुछ मुहावरे भी बनाती है। जैसे—हाथ रखना। ऐसे अर्थों के लिए वे सज्ञाएँ देखे। (ग) कुछ अवस्थाओ मे इस क्रिया के साथ कुछ और क्रियाएँ भी सयो० क्रि० के रूप मे लगती है। जैसे—रख छोडना, रख देना, रख लेना। ऐसे अवसरो पर भी प्राय क्रिया की पूर्णता या समाप्ति ही सूचित होती है।

पु० [अ० रखन] १ छेद। सुराख। २ ऐब। दोष। ३ बाधा। रुकावट।

रखनी—स्त्री० [हि० रखना+ई (प्रत्य०)] वह स्त्री जिससे विवाह सबध न हुआ हो और जो यो ही घर मे पत्नी के रूप मे रख ली गई हो। रखेली। सुरैतिन।

क्रि० प्र०—बनाना। —रखना।

रख-रखाव—पु० [हि० रखना+रखाना] १ रक्षा। हिफाजत। २. मर्यादा, परपरा, व्यवहार, सम्बन्ध आदि का उचित रूप मे होनेवाला निर्वाह। उदा०—दुनिया है रख-रखाव की, इससे सँभल के चल।—कोई शायर। ३. दोनो पक्षो की बात रखने तथा उन्हें संतुष्ट करने की क्रिया या भाव। ४. पालन-पोषण।

रखल—पुं० [फा०] १ सूराख। छेद। २ नकब। सेंध। ३. हड्डी का टूटना ४ उपद्रव। फसाद।

रखकला†—पुं०=रहकला।

पुं० [हिं० रहँकला] मध्य युग में, तोप आदि लाद कर ले चलने की छोटी गाडी।

रखवाई—स्त्री०[हिं० रखना, या रखाना] १. खेतों की रखवाली। चौकीदारी। २ रखवाली करने का काम, भाव या मजदूरी। ३. ब्रिटिश शासन में वह कर जो गाँवों से, उनमें चौकीदार रखने के बदले में लिया जाता था।

रखवाना—स०[हिं० रखना का प्रेर०] १. रखने की क्रिया दूसरे से कराना। २ किसी को कुछ रखने अर्थात् निकालकर दे देने या सौंपने में प्रवृत्त या विवश करना। ३. दे० 'रखाना'।

रखवार*†—पुं०=रखवाला।

रखवारी†—स्त्री०=रखवाली।

रखवाला—पु०[हिं० रखना+वाला (प्रत्य०)] [भाव० रखवाली] १. वह जो किसी की या दूसरों की रक्षा करता हो। २. पहरा देनेवाला। चौकीदार।

रखवाली—स्त्री०[हिं० रखना+वाली (प्रत्य०)] १. रखनेवाले का काम। रक्षा करने की क्रिया या भाव। हिफाजत। २. चौकीदारी। पहरेदारी।

रखशी†—स्त्री०[देश०] एक प्रकार की नेपाली शराब।

रखा—स्त्री०[हिं० रखना] गोचर भूमि। चरी।

रखाई—स्त्री०[हिं० रखना+आई (प्रत्य०)] १. रक्षा करने की क्रिया या भाव। रखवाली। २. रखवाली करने के बदले में मिलनेवाला पारिश्रमिक।

रखान†—स्त्री०[हिं० रखना] चराई की भूमि। चरी।

रखाना—स०[हिं० रखना का प्रेर०] रखने की क्रिया दूसरे से कराना। दूसरे को कुछ रखने मे प्रवृत्त या विवश करना।

†अ० रखवाली या हिफाजत करना।

रखिया*†—वि०[हिं० रखना+इया (प्रत्य०)] रखनेवाला।

पु० १ गाँव के समीप का वह पेड़ जो पूजनार्थ रक्षित रहता है। २. रक्षक।

रखियाना—स०[हिं० राखी+इयाना (प्रत्य०)] १. राखी लगाना। २. बरतन आदि, राखी से रगड़ कर माँजना और साफ करना।

रखी†—पु०=ऋषि।

रखीराज†—पु०=ऋषिराज।

रखेड़िया†—पु० [हिं० राख+एड़िया (प्रत्य०)] एक प्रकार के साधु जो शरीर पर भस्म लगाये रहते हैं।

रखेली—स्त्री०[हिं० रखना+एली (प्रत्य०)] बिना विवाह किए ही घर में पत्नी के रूप में रखी हुई स्त्री। रखनी। सुरैतिन।

रखैया†—वि०[हिं० रखना+ऐया (प्रत्य०)] १. रखनेवाला। २. रक्षा करनेवाला। रक्षक।

रखैल†—स्त्री०=रखेली।

रखौंड़ी†—स्त्री०[हिं० राखी=रक्षा] रक्षासूत्र। राखी।

रखौत—गोचर भूमि। चरी।

रखौता—पुं०=रखौत।

रखौनी†—स्त्री=राखी।

रग—स्त्री०[फा०] १. शरीर की नस या नाड़ी।

पद—रग-पट्ठा, रग-रेशा।

मुहा०—रग उतरना=(क) क्रोध, हठ आदि दूर होना। (ख) आँत उतरना (रोग)। रग चढ़ना=मन में क्रोध, हठ आदि का आवेश होना। (किसी से) रग दबना=ऐसी स्थिति मे होना कि विवश होकर किसी के दबाव या प्रभाव में रहना पड़े। जैसे—तुम्ही से उसकी रग दबती है, तुम्हें तो वह कुछ समझता ही नहीं। रग फड़कना=किसी आनेवाली आपत्ति की पहले से ही आशंका होना। माथा ठनकना। रग रग फड़कना=शरीर मे बहुत अधिक आवेश, उत्साह, चंचलता आदि के लक्षण प्रकट होना। रग रग में=सारे शरीर के सभी भागों मे। सर्वांग मे।

२. जिद या हठ से जो शरीर की किसी रग के विकार का परिणाम माना जाता है। ३. पत्तों आदि में दिखाई पड़नेवाली नसें।

रगंड—पुं०[सं० गंड] हाथी का कपोल। (डिंगल)

रगड़—स्त्री०[हिं० रगड़ना] १. रगड़ने की क्रिया या भाव। २. रगड़े जाने की अवस्था या भाव। ३ वह चिन्ह जो किसी चीज से रगड़े जाने पर लक्षित होता है। ४. किसी काम के लिए की जानेवाली कड़ी मेहनत और दौड़-धूप। ५. झगड़ा। तकरार। ६. धक्का। (कहार)

रगड़ना—स०[सं० घर्षण] १. किसी चीज के तल पर किसी दूसरी चीज का तल बार बार दबाते हुए चलाना। जैसे—जमीन पर एड़ी रगड़ना। २. दो तलों के बीच में रखी हुई वस्तु टुकड़े-टुकड़े या चूरचूर करना अथवा पीसना। जैसे—सिल-बट्टे से मसाला या भाँग रगड़ना। ३. निरंतर परिश्रमपूर्वक कोई काम करते रहना। जैसे—सारा दिन कलम रगड़ते बीतता है। ४. किसी काम या बात का निरंतर परिश्रमपूर्वक अभ्यास करना। जैसे—अब इसी तरह कुछ दिनों तक रगड़ते रहोगे तो इस काम में चल निकलोगे। ५. किसी को कष्ट देते हुए या दबाते हुए बहुत तंग या परेशान करना। जैसे—इस मुकदमे मे तुमने उन्हें खूब रगड़ा। ६ दंड आदि के संबंध मे कठोरतापूर्वक आदेश देना। जैसे—अदालत ने उन्हे दो बरस के लिए रगड़ दिया। ७. किसी के साथ काम-वासना की तृप्ति मात्र के लिए (प्रेमपूर्वक नहीं) प्रसंग या संभोग करना। (बाजारू)

संयो० क्रि०—डालना-देना।

अ० बहुत मेहनत करना। अत्यंत श्रम करना।

रगड़वाना—स०[हिं० रगड़ना का प्रेर० रूप] रगड़ने का काम दूसरे से कराना। दूसरे को रगड़ने में प्रवृत्त करना।

रगड़ा—पु०[हिं० रगड़ना] १. रगड़ने की क्रिया या भाव। घर्षण। रगड़। २. वह आघात जो किसी चीज पर उसे रगड़ने के उद्देश्य से किया जाता है। ३. किसी चीज की रगड़ लगने पर होनेवाला आघात। ४. एक बार मे होनेवाली रगड़ाई। ५. निरन्तर किया जानेवाला बहुत अधिक परिश्रम। काफी और पूरी मेहनत। ६. बराबर कुछ दिनों तक चलता रहनेवाला झगड़ा या वैर-विरोध।

पद—रगड़ा-झगड़ा=बहुत समय तक चलता रहनेवाला झगड़ा या लड़ाई।

रगड़ान—स्त्री०[हिं० रगड़ना+आन (प्रत्य०)] रगड़ने या रगड़े जाने की क्रिया या भाव। रगड़ा।

क्रि० प्र०—खाना।—देना।—लगाना।

रगड़ी—वि०[हिं० रगड़ा+ई (प्रत्य०)] रगड़ा अर्थात् लड़ाई-झगड़ा या हुज्जत करनेवाला। झगड़ालू। हुज्जती।

रगण—पु०[स०ष० त०] छद-शास्त्र मे ऐसे तीन वर्णों का गण या समूह जिसका पहला वर्ण गुरु, दूसरा लघु और तीसरा फिर गुरु होता है (ऽ।ऽ)।

रगत*—पु०=रक्त।

रगदना†—स०- रगेदना(दे०)।

रगदल*— वि०[हिं०] कुबड़ा।

रग-पट्ठा—पु० [फा० रग+हिं०पटठा] १. शरीर के भीतरी भिन्न-भिन्न अग, मुख्यत रगे और मास-पेशियाँ। २ किसी विषय की भीतरी और सूक्ष्म बातें।

मुहा०—(किसी के) रग पट्ठे से परिचित या वाकिफ होना। किसी के रग-ढंग, शक्ति, स्वभाव आदि से परिचित होना। खूब पहचानना।

रगपत†--पु०=रघुपति।

रगबत—स्त्री० [अ० रग्बत] १ इच्छा। कामना। चाह। २ किसी काम या बात की ओर होनेवाली प्रवृत्ति या रुचि।

क्रि० प्र०—आना।—रखना।—होना।

रगर†— स्त्री०=रगड़।

रगरा†—पु०=रगड़ा।

रग-रेशा—पु० [फा० रग+रेशा] १ शरीर के अन्दर के अग। २ पत्तियों की नसें।

पद—रग-रेशे में=सारे शरीर में। अग-अंग में। जैसे—शरारत तो उसके रग-रेशे मे भरी है।

३ किसी काम, बात या वस्तु के अन्दर की गुप्त और सूक्ष्म बातें। जैसे—वह इस काम के रग-रेशे से वाकिफ है।

रगवाना*—स०[हिं० रगाना का प्रेर० रूप] १ चुप कराना। २. शात कराना।

रगा†—पु० [देश०] मोर।

रगाना†—अ० [देश०] १ चुप होना। २. शात होना।

स० १ चुप कराना। २ शान्त करना।

रगी—स्त्री०[देश०] १ एक प्रकार का मोटा अन्न।

†स्त्री =रग्गी।

वि०=रगीला।

रगीला—पु०[हिं० रग=जिद+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० रगीली] १ हठी। जिद्दी। दुराग्रही। २ दुष्ट। पाजी।

वि०[हिं० रग] जिसमे रगे या नसें हो। रगो से युक्त। रगोवाला।

रगेद—स्त्री०[हिं० रगेदना] दौडने या भागने की क्रिया।

रगेदना—स०[स० खेट, हिं० खेदना] किसी को ढकेलते, धक्का देते या दौड़ते हुए दूर करना या हटाना। बल-प्रयोग करते हुए भगाना। खदेड़ना।

सयो० क्रि०—देना।

रग्गा—पु०[देश०] एक प्रकार का मोटा अन्न। रगी।

†पु० =रग्गी।

रग्गी—स्त्री०[?]वह धूप विशेषत. वर्षा ऋतु की कडी धूप जो पानी बरस जाने और बादल छंट जाने पर निकलती है।

†स्त्री०=रगी।

रघु—पु० [स०√लंघ्(गति)+कु, नलोप, रत्व] १ सूर्यवशी राजा दिलीप के पुत्र जो रामचन्द्र के परदादा और प्रसिद्ध रघुवश के मूल पुरुष तथा सस्थापक थे। २ रघु के वश मे उत्पन्न कोई व्यक्ति।

रघु-कुल—पु०[ष० त०] राजा रघु का वश।

रघुनद—पु०[स० रघु√नन्द (हर्ष)+णिच्+अच्] श्रीरामचन्द्र।

रघुनदन—पु०[स० रघु√नन्द्+णिच्+ल्यु—अन] श्रीरामचद्र।

रघु-नाथ—पु० [ष० त०] श्रीरामचद्र।

रघु-नायक—पुं०[ष० त०] श्रीरामचद्र।

रघु-पति—पु०[ष० त०] श्रीरामचद्र।

रघुराइ* पु०=रघुराज (श्रीरामचद्र)।

रघुराज—पु०[ष० त०] श्रीरामचद्र।

रघुराय—पु०=रघुराज।

रघुरैया*—पु०=रघुराय।

रघु-वश—पु०[ष० त०] १ महाराज रघु का वश या खानदान जिसमे दशरथ और रामचन्द्र जी उत्पन्न हुए थे। २ महाकवि कालिदास का रचा हुआ एक प्रसिद्ध महाकाव्य जिसमे राजा दिलीप की कथा और उनके वशजो का वर्णन है।

रघुवंश-कुमार—पु०[ष० त०] श्रीरामचद्र।

रघुवशी (शिन्)—पु० [स० रघुवश+इनि] १ वह जो रघु के वश में उत्पन्न हुआ हो। २ क्षत्रियों की एक जाति या शाखा।

रघु-वर—पु०[स० त०] श्रीरामचद्र।

रघु-बीर—पु०[स० त०] श्रीरामचद्र।

रघूत्तम—पु०[रघु-उत्तम स० त०] श्रीरामचद्र।

रघूद्वह—पु०[रघु-उद्वह ष० त०] श्रीरामचद्र।

रघौती—स्त्री०[देश०] बडे व्यापारियो या आढतियो की ओर से छोटे दूकानदारो या व्यापारियो को भेजा जानेवाला वह पत्र जिसमे चीजों के भाव लिखे होते हैं। दर या भाव का परिपत्र। (रेट सर्क्यूलर)

रघ्रती—पु०[डि०] सतोष। सब्र।

रचक—पु०[स०√रच्(रचना)+णिच्+ण्वुल्-अक] रचयिता।

†वि० =रचक।

रचना—स्त्री०[स०√रच्+णिच्+युच्—अन+टाप्] १ कोई चीज रचने अर्थात् बनाने की क्रिया या भाव। जैसे—फूलो से होनेवाली मालाओं की रचना। निर्माण। २ किसी चीज के बनाये जाने का ढग या प्रकार जो उसका स्वरूप निश्चित करता है। बनावट। ३. बनाकर तैयार की हुई चीज। कृति। जैसे—किसी कवि या लेखक की नई रचना। ४. कोई चीज कौशलपूर्वक और सुदर रूप मे बनने की क्रिया या भाव। जैसे—अनेक प्रकार की केश-रचनाएँ। ५. स्थापित करने की क्रिया। स्थापना। ६ उद्यमपूर्वक किया हुआ काम। ७. ऐसा गद्य या पद्य जिसमे कोई विशेष कौशल या चमत्कार हो। ८. पुराणानुसार विश्वकर्मा की पत्नी का नाम।

सं० [स० रचन] १. कोई चीज हाथसे बनाकर तैयार करना। बनाना। सिरजना। २. किसी बात का विधान या स्वरूप स्थिर करना। ३. किसी प्रकार की कृति प्रस्तुत करना।

जैसे—कविता या पुस्तक रचना। ४. उत्पन्न करना। पैदा करना। ५ किसी काम या बात का अनुष्ठान करना। ठानना। ६. अच्छी तरह ध्यान देते हुए कोई काम या उपाय करना या युक्ति लगाना। पद—रचि रचि*=बहुत ही अच्छी तरह और ध्यान तथा युक्तिपूर्वक। ७. किसी प्रकार की काल्पनिक कृति, रूप या सृष्टि खड़ी करना। ८. अच्छी तरह सँवारना-सजाना। शृंगार करना। ९. उचित क्रम से चीजें रखना या लगाना।

अ०[सं० रजन]१. किसी के प्रेम मे फँसना। किसी पर अनुरक्त होना। २. रंगो से युक्त होना। रँगा जाना।३. किसी चीज का अच्छी तरह और सुन्दर रूप में बनाकर प्रस्तुत होना। ४. आकर्षक और सुन्दर जान पड़ना। फबना। जैसे—उसके मुँह में पान और हाथ-पैरो मे मेंहदी अच्छी रचती है।

स० १. रँगो से युक्त करना। रँगना। २. किसी के साथ अनुराग या प्रेम का सबध स्थापित करना। जैसे—बैरी से बच सज्जन से रच।—कहा०।

वि०[स्त्री० रचनी]जो सहज में रच सके; अर्थात् अच्छा रंग या रूप ला सके। जैसे—वाह! यह कैसी अच्छी रचनी मेंहदी है।

रचना-तंत्र—पु०[ष० त०] १ किसी कलात्मक कृति का वह अंग या ढंग जो उसके रचना-कौशल से सबध रखता हो और जो सूत्रों के रूप में बद्ध हो सकता हो। रचना का कलात्मक और कौशलपूर्ण प्रकार। तकनीक। (टेक्निक) २. उक्त की अवस्था या भाव। प्राविधिकता। (टैक्निकैलटी)

रचना-तंत्री—वि०[स० रचनातन्त्रीय] रचना-तत्र से सबध रखनेवाला। (टेक्निकल) जैसे—किसी कृति का रचनातत्री ज्ञान।

रचयिता (तृ)—वि०[स०√रच्+णिच्+तृच्]रचना करने या रचने वाला। बनानेवाला।

रचवाना—स०[हिं० रचना का प्रेर० रूप] १ दूसरे को रचना करने मे प्रवृत्त करना। २. हाथ-पैर में मेंहदी या महावर लगवाना। ३. अनुरक्त कराना ४. सुन्दर रूपरग दिलवाना।

रचाना*—स०[स० रचना]१. अनुष्ठान या आयोजन करना। जैसे—ब्याह रचाना, यज्ञ रचाना। २. दे० 'रचवाना'।

†अ०, स०=रचना।

रचिक†—अव्य०[हिं० रंच] थोड़ा। अल्प।

रचित—भू० कृ०[स० रच्+णिच्+क्त] १. रचा अर्थात् बनाया हुआ। २. कृति आदि के रूप मे प्रस्तुत किया हुआ।

रची†—अव्य०=रचिक।

रच्छ†—पु०=रक्ष।

रच्छक†—पु०=रक्षक।

रच्छन†पुं—रक्षण।

रच्छस†—पु०=राक्षस।

रच्छा†—स्त्री०=रक्षा।

रच्छया*—स्त्री०=रक्षा। उदा०—दान करे रच्छया मँझ नीरॉं।—जायसी।

रज(स्)—पु० [स०√रंज् (राग्)+असुन्, नलोप] १. गर्द। धूल। २. गर्द या धूल के वे छोटे-छोटे कण जो धूप मे इधर-उधर चलते हुए दिखाई देते हैं। ३. आठ परमाणुओं की एक पुरानी तौल या मान। ४. फूलों का पराग। ५. जोता हुआ खेत। ६. आकाश। ७. जल। पानी। ८. भाप। वाष्प। ९. बादल। मेघ। १०. भुवन। लोक। ११. श्वेतपापड़ा। १२. पाप। १३. अधकार। अँधेरा। १४. मन मे रहनेवाला अज्ञान; और उसके फल-स्वरूप उत्पन्न होनेवाले दूषित भाव। १५ एक प्रकार का पुराना बाजा जिसपर चमड़ा मढ़ा होता था। १६. पुराणानुसार एक ऋषि जो वशिष्ठ के पुत्र कहे गये हैं। १७ धार्मिक क्षेत्रों में, प्रकृति के तीन गुणों में से दूसरा जिसके कारण जीवों मे भोग-विलास करने तथा बल-वैभव के प्रदर्शन की प्रवृत्ति उत्पन्न होती है। रजोगुण। (अन्य दो गुण सत्त्व और तम हैं। १८ वह दूषित रक्त जो युवती तथा प्रौढा स्त्रियों और स्तनपायी मादा जंतुओं की योनि से प्रति मास तीन चार दिनों तक बराबर निकलता रहता है। आर्तव। ऋतु। कुसुम। १९. स्कंद की एक सेना का नाम। २०. केसर।

वि०[हिं० राजा] हिं० 'राजा' का वह सक्षिप्त रूप जो उसे यौगिक पदों के आरभ मे लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—रजवाड़ा।

†स्त्री०=रजनी (रात)।

†पुं०१ =रजत (चाँदी)। २. रजक (धोबी)।

रजअत—स्त्री०[अ० रजअत] १ वापस जाना। लौटना। प्रत्यागमन। २ जिस स्त्री को तलाक दिया गया हो, उसे फिर से अपनी पत्नी बनाना। (मुसल०)

रजक—पु० [सं०√रंज्+ण्वुल्—अक, न-लोप] [स्त्री० रजकी] धोबी।

रजगज—पुं०[हिं० रज=राजा+गज अनु०] राजसी ठाठ-बाट।

रजगीर—पु०[देश०] कूटू (अन्न)। फफरा।

†पु०=राजगीर।

रजगुण—पु० दे० "रजोगुण"।

रज-तंत—पु०[स० राजतत्त्व] शूरता। वीरता।

रजत—पु०[स०√रंज्+अतच्, न-लोप] १. चाँदी। रूपा। २ सोना। स्वर्ण। ३. हाथी-दाँत। ४. गले में पहनने का हार। ५ रक्त। लहू। ६ पुराणानुसार शाकद्वीप के अस्ताचल का नाम।

वि० १ चाँदी के रग का। उज्ज्वल। शुभ्र। २. चाँदी का बना हुआ।

रजत-जयंती—स्त्री०[मध्य० स०] किसी व्यक्ति अथवा संस्था की २५वीं वर्ष-गाँठ पर मनाई जानेवाली जयती। (सिलवर जुबिली)

रजत-द्युति—पु०[ब० स०] हनुमान।

रजत-पट—पु० [उपमित स०] वह परदा जिस पर सिनेमा-घर मे चित्र दिखलाये जाते हैं। (सिलवर स्क्रीन)

रजत-प्रस्थ—पु०[ब० स०] कैलास पर्वत।

रजतमान—पु० [ष० त०] अर्थशास्त्र मे वह स्थिति जिसमे कोई देश अपनी मुद्रा की इकाई या मानक का अर्घ चाँदी की एक निश्चित तौल के अर्घ के बराबर रखता है। (सिलवर स्टैन्डर्ड)

रजत-मानक पु०=रजत-मान।

रजताई*—स्त्री०[हिं० रजत+आई (प्रत्य०)] शुभ्रता। सफेदी।

रजताकर—पु०[रजत-आकर, ष० त०] चाँदी की खान।

रजताचल—पु० [रजत-अचल, मध्य० स०] १ चाँदी का पहाड़। २. चाँदी के टुकड़ों या आभूषणों का वह ढेर या ढेरी जो दान की जाती है। महादान का भेद। ३. कैलास पर्वत।

रजताद्रि—पु० [रजत्-अद्रि मध्य० स०] रजताचल। (दे०)

रजतोपम—पुं०[रजत-उपमा ब० स०] रूपामाखी। रूपा-मक्खी।

रजधानी—स्त्री० =राजधानी।

रजन—स्त्री० [अं० रेज़िन] राल नामक गोंद। दे० (राल)।
स्त्री०[हिं० रजना] रजने की अवस्था, क्रिया या भाव।

रजना—अ० [सं० रजन] १. रंग से युक्त होना। रँगा जाना। २. अच्छी तरह तृप्त होना। जैसे—खा-पीकर रजना।
स० रग से युक्त करना। रँगना।
स्त्री०[स०रजन] सगीत मे एक प्रकार की मूर्छना जिसका स्वर ग्राम इस प्रकार है—नि, स, रे, ग, म, प, ध। नि, स, रे, ग, म, प, ध, नि। स, रे, ग, म, प, ध, नि।

रजनी—स्त्री०[स०√रञ्ज्+कनि+ङीष्] १ रात। रात्रि। निशा। २. हलदी। ३ जतुका लता। ४.नीली नामक पौधा। ५ दारु-हलदी। ६ लाक्षा। लाख। ७ एक नदी। (पुराण०)

रजनीकर—पु०[स० रजनी√कृ० (करना)+ट] चंद्रमा।

रजनी-गंधा—स्त्री० [ब० स०, टाप्] १. एक प्रसिद्ध पौधा जिसके फूल रात के समय फूलते हैं। २ उक्त पौधे का फूल।

रजनीचर—पु०[स० रजनी√चर्(गति)+ट] १. राक्षस। २ चंद्रमा।
वि० रात के समय निकल कर घूमने-फिरने या विचरण करने वाला।

रजनी-जल—पु०[सुप्सुपा स०] १ ओस। २. कोहरा।

रजनी-पति—पु० [ष० त०] चद्रमा।

रजनीमुख—पु०[ष० त०] सध्या। रात होने से कुछ पहले का समय। सूर्यास्त के चार दड बाद का समय। शाम।

रजनीश—पु०[रजनी-ईश, ष० त०] चंद्रमा।

रजपूत*—पु०=राजपूत।

रजपूती†—स्त्री० [हिं० राजपूत+ई (प्रत्य०)] १. राजपूत होने की अवस्था, धर्म या भाव। २. राजपूत का कोई कार्य अथवा उसके जैसा कार्य। ३ बहादुरी। वीरता।

रजब—पु० [अ०] अरबी साल का सातवाँ महीना।

रजबली—पु० [स० राजा+बली] राजा। (डिं०)।

रजबहा—पु० [सं० राज, राजा=बड़ा+हिं० बहना] किसी बड़ी नदी या नहर से निकाला हुआ बड़ा नाला या छोटी नहर, जिससे और भी अनेक छोटे-छोटे नाले और नालियाँ निकलती हैं।

रजबार†—पु० राजद्वार।

रजल-बाह—पु० [स० जलवाह] मेघ। बादल (डिं०)।

रजवंती—वि० [सं० रजोवती] रजस्वला।

रजवट—स्त्री० [हिं० राज+वट (प्रत्य०)] १. क्षत्रियत्व। २. बहादुरी। वीरता।

रजवती†—स्त्री० =रजवती (रजस्वला)।

रजवाड़ा—पु० [हिं० राज्य-बाड़ा] १ मध्य-युग तथा ब्रिटिश भारत में, देशी रियासत। २. रियासत का मालिक, राजा।

रजवार*†—पु०=राजद्वार।

रजवी—वि० [अ० रिजवी] इमाम मूसा अली रजा से सबध रखनेवाला।
पु० वह जो इमाम का वशज हो।

रजस—स्त्री० ='रज'।

रजस्वला—वि० स्त्री० [स० रजस्+वलच्-टाप्] १. (स्त्री०) जिसका रज प्रवाहित हो रहा हो। रजवती। ऋतुमती। २. (बरसाती नदी) जिसका पानी बहुत गँदला और मट-मैला हो गया हो।

रजा—स्त्री० [अ० रिजा] १ इच्छा। मरजी। २ अनुमति। आज्ञा। ३. किसी की अनुमति से मिलनेवाली छुट्टी। रुखसत। ४. मंजूरी। स्वीकृति। ५. प्रसन्नता।
क्रि० प्र०—देना। —पाना।—मिलना।—लेना।
स्त्री० [अ०] आशा।

रजाइ*—स्त्री०=रजा।

रजाइस†—स्त्री० [अ० रजा+आइस (हिं० प्रत्य०)] १. आज्ञा। हुकम। २. दे० 'रजा'।

रजाई—स्त्री० [सं० रजक=कपड़ा] एक प्रकार का रुईदार ओढ़ना। हलका लिहाफ।
स्त्री० [हिं० राजा+आई (प्रत्य०)] राजा होने की अवस्था या भाव। राजापन।
†स्त्री०=रजा (अनुमति या आज्ञा)। उदा०—चले सीस धरि राम रजाई।—तुलसी।

रजाकार—पु० [अ० रिजाकार] स्वय-सेवक।

रजाना—स० [हिं० रजना का स०] १. राज-सुख का भोग करना। २ बहुत अधिक सुख देना। ३ अच्छी तरह तृप्त या सन्तुष्ट करना। ४ पेट भरकर खिलाना।

रजामंद—वि० [अ० रिजा+फा० मद] [भाव० रजामदी] जो किसी बात पर राजी या सहमत हो।

रजामंदी—स्त्री० [अ० रिजा+फा० मंदी] रजामद अर्थात् राजी या सहमत होने की अवस्था या भाव। सहमति।

रजाय*—स्त्री० [प्रा० रजाएस] राजा की आज्ञा।
स्त्री०=रजा।

रजायस (सु)—स्त्री० [फा० रजाएस] १. राजा की आज्ञा। २ आज्ञा। हुकम। ३. अनुमति।

रजिया—स्त्री० [देश०] १ अनाज नापने का एक मान जो प्रायः डेढ़ सेर का होता है। २ उक्त मान से नापने का काठ का बरतन।

रजिस्टर—पु० [अ०] अंगरेजी ढग की बही या वह किताब जिसमे किसी मद का आय-व्यय अथवा किसी विषय का विस्तृत विवरण, सिलसिलेवार या खानेवार लिखा जाता है। पजी।

रजिस्टरी—स्त्री० [अं०] १. किसी लिखित प्रतिज्ञापत्र को कानून के अनुसार सरकारी रजिस्टरो मे दर्ज कराने का काम। पजीयन। २. डाक से पत्र भेजने का एक प्रकार जिसमे कुछ अधिक महसूल देकर भेजे जानेवाला पत्र का तौल, पता आदि डाकखाने के रजिस्टर मे चढ़वाया जाता है।

रजिस्टर्ड—वि० [अ०] रजिस्टरी किया हुआ। पजीकृत।

रजिस्ट्रार—पु० [अ०] १. विधिक लेख्यों को राजकीय पजियो में निबधित करनेवाला अधिकारी। २. विश्वविद्यालय का वह अधिकारी जिसकी देखरेख मे कार्यालय सबधी सब कार्य होते हैं।

रजिस्ट्री—स्त्री०=रजिस्टरी।

रजिस्ट्रेशन—पु० [अं०] रजिस्टर मे दर्ज करना, कराना या होना। पंजीयन।

रज़ील—वि० [अ०] अधम। कमीना। नीच।

रजु†—स्त्री०=रज्जु।

रजोकुल*—पुं० [सं० राजकुल] राजवंश।

रजोगुण—पुं० [सं० रजस्-गुण मयू० स०] प्रकृति के तीन गुणों में से दूसरा गुण (सत्त्व और तम से भिन्न) जिससे जीवधारियों में भोग-विलास तथा बल-वैभव के प्रदर्शन की प्रवृत्ति उत्पन्न होती है। राजस। (दे० 'गुण')

रजोदर्शन—पुं० [सं० रजस्-दर्शन ष० त०] स्त्रियों का रजस्वला होना।

रजोधर्म—पुं० [सं० रजस्-धर्म ष० त०] स्त्रियों का मासिक धर्म।

रजोनिवृत्ति—स्त्री० [सं० रजस्-निवृत्ति] स्त्रियों की वह अवस्था या दशा जिसमें उनका मासिक रज निकलना सदा के लिए बंद हो जाता है। (मेनोपाज)

रज्जाक—वि० [अ०] १. रिजक अर्थात् रोजी देनेवाला। अन्नदाता। २. खाना खिलानेवाला। पेट भरनेवाला।

पुं० ईश्वर।

रज्जु—स्त्री० [सं०√सृज् (रचना)+उ, नि० सिद्धि] १. डोरी। रस्सी। २. घोड़े की लगाम। बागडोर। ३ स्त्रियों की चोटी बाँधने की डोरी।

रज्जुमार्ग—पुं० [सं०] ऊँची-नीची पंकिल या पहाड़ी जगहों, बड़े-बड़े कल-कारखानों आदि में एक स्थान से दूसरे स्थान तक चीजें पहुँचाने के लिए बड़े बड़े खंभों में रस्से विशेषतः लोहे के छोटे रस्से बाँधकर बनाया जानेवाला मार्ग। (रोप-वे)

रज्जु-सर्प-न्याय—पुं० [म०रज्जु-सर्प, सुप्सुपा स०, रज्जुसर्प-न्याय, ष० त०] रस्सी को अच्छी तरह न देख सकने के कारण भूल से साँप समझ लेने अथवा इसी प्रकार और किसी भ्रम में पड़ने की स्थिति या न्याय।

रज्म—स्त्री० [अ० रज्म] युद्ध। संग्राम। लड़ाई।

रझना*—पुं० [सं० रंधन या रंजन] रँगरेजों का वह पात्र, जिसमें वे रँगे हुए कपड़े का रंग निचोड़ते हैं।

रटंत—स्त्री० [हिं० रटना+अंत (प्रत्य०)] रटने की क्रिया या भाव। रटाई।

रटंती—स्त्री० [सं०√रट् (रटना)] +झच्-अन्त+ङीप् माघ कृष्ण चतुर्दशी।

रट—स्त्री० [हिं० रटना] रटने की अवस्था, क्रिया या भाव।

क्रि० प्र०—मचाना।—लगाना।

रटन—स्त्री० [सं०√रट् (रटना)+ल्युट्—अन] बार-बार किसी नाम, शब्द आदि का उच्चारण करने अर्थात् रटने की क्रिया या भाव। रट। रटाई।

पुं० कहना। बोलना।

रटना—[सं० रटन] कंठस्थ करने तथा स्मृति-पथ में लाने के लिए किसी पद, वाक्य आदि का बार-बार जोर-जोर से तथा जल्दी-जल्दी उच्चारण करना।

रटित—वि० [सं०√रट्+क्त] १ रटा हुआ। २. जो रटा जा रहा हो। उदा०—अगणित कंठ रटित वन्दे मातरम् मंत्र से।—पंत।

रठ—वि० [?] रूखा। शुष्क।

रड़क—स्त्री० [हिं० रड़कना] १. किसी चीज के चुभने तथा पीड़ा देने की अवस्था या भाव। जैसे—आँख में होनेवाली रड़क। २. हलका दर्द या पीड़ा। कसक। जैसे—घाव में कुछ रड़क हो रही है।

रड़कन†—स्त्री०=रड़क।

रड़कना—अ० [अ०] १. हलका दरद होना। २. शरीर में किसी गड़ी या चुभी हुई चीज की कष्टदायक अनुभूति होना। जैसे—आँख में पड़ी हुई धूल या उसके कण का रड़कना।

† स० धक्का देना।

रड़का—पुं० [?] झाड़ू।

† स्त्री०=रड़क।

रड़काना—स० [?] धक्का देकर निकालना या हटाना।

रड़ार—पुं०=रैडर।

रढ़ना*—स० रटना।

रढ़िया†—स्त्री० [देश० या राढ़ देश] एक प्रकार की निम्न कोटि की देशी कपास।

वि० [हिं० रार] जिद्दी। हठी।

रण—पुं० [सं०√रण् (शब्द)+अप्] १. लड़ाई। युद्ध। जंग।

पद—**रण-क्षेत्र, रण-भूमि, रण-स्थल**।

२ रमण। ३. आवाज। शब्द। ४. गति। चाल। ५. दुंबा नामक भेड़ा।

† पुं० [सं० अरण्य] जंगल। वन।

रण-क्षेत्र—पुं० [सं० ष० त०] युद्धभूमि। लड़ाई का मैदान।

रण-चंडी—स्त्री० [सं० मध्य० स०] रण-क्षेत्र में मार-काट करानेवाली देवी।

रण-छोड़—पुं० [सं० रण+हिं० छोड़ना] श्रीकृष्ण का एक नाम जो इस कारण पड़ा था कि वे जरासन्ध के आक्रमण के समय व्रज छोड़कर द्वारका चले गये थे।

रणखेत* पुं०=रणक्षेत्र।

रणत्कार—पुं० [सं०√रण्+शतृ=रणत्-कार ष० त०] १. झन-झनाहट। २ गुंजन (मधु-मक्खी का)।

रणधीर—पुं० [सं० स०त०] युद्ध में धैर्यपूर्वक लड़नेवाला अर्थात् बहुत बड़ा योद्धा।

रणन—पुं० [सं०√रण्+ल्युट्—अन] शब्द करना। बजना।

रण-नाद—पुं० [ष० त०] युद्ध के समय होनेवाली योद्धाओं की गरज।

रण-प्रिय—पुं० [ब० स०] १. विष्णु। २ बाज पक्षी। ३. उशीर। खस।

रण-भूमि—स्त्री० [ष० त०] लड़ाई का मैदान।

रणमंडा—स्त्री० [सं० रण-मंडन] पृथ्वी। (डिं०)

रण-मत्त—पुं० [सं० त०] हाथी।

वि० जो युद्ध करने के लिए उतावला हो रहा हो।

रण-रंग—पुं० [ष० त०] १ लड़ाई या युद्ध का उत्साह। २. युद्ध। लड़ाई। ३. लड़ाई का मैदान। युद्ध-क्षेत्र।

रण-रण—पुं० [सं० रणरण+अच्] १. व्यग्रता। घबराहट। व्याकुलता। २. पछतावा। पश्चात्ताप।

रणरणक—पुं० [सं० रणरण+कन्] १. कामदेव का एक नाम। २. प्रबल कामना। ३. घबराहट। विकलता।

रणरोज (ज)—पुं० [स०-अरण्य-रोदन] वन में (जहाँ कोई सुननेवाला न हो) बैठकर व्यर्थ रोना जिसका कोई फल नहीं होता। अरण्य-रोदन।
रण-लक्ष्मी—स्त्री० [मध्य० स०] युद्ध मे विजय दिलानेवाली एक देवी। विजय-लक्ष्मी।
रण-वाद्य—पुं० [ष० त०] युद्ध का बाजा।
रण-वीर—पु० [स० त०] बहुत बड़ा योद्धा।
रण-वृत्ति—पु० [ब० स०] योद्धा। वह जिसकी वृत्ति युद्ध लडते रहने की हो। सैनिक। योद्धा।
रणसिंघा—पु० [स० रण+हिं० सिंघा] मध्ययुग मे, युद्ध के समय बजाया जानेवाला नरसिंघा या तुरही नाम का बाजा।
रणसिंहा—पु०=रणसिंघा।
रण-स्तंभ—पु० [ष० त०] वह स्तभ जो किसी रण मे विजय प्राप्त करने के स्मारक मे बना हो। विजय का स्मारक।
रण-स्थल—पु० [ष० त०] लडाई का मैदान।
रण-स्वामी (मिन्)—पु० [ष० त०] १ युद्ध का प्रधान सचालक या सेनापति। २ शिव। महादेव।
रण-हंस—पु० [मध्य० स०] एक प्रकार के वर्णवृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण मे सगण, जगण, भगण, और रगण होते हैं।
रणांगण—पु० [रण-अगण ष० त०] लडाई का मैदान।
रणाजिर—पु० [रण-अजिर ष० त०] लडाई का मैदान।
रणि*—स्त्री० [स० रजनी] रात्रि। रात। (डिं०)।
रणेचर—पु० [सं० रणे√चर् (गति)+अच्, अलुक स०] विष्णु।
रणेश—पु० [रण-ईश ष० त०] १ शिव। २ विष्णु।
रणोत्कट—पु० [रण-उत्कट स० त०] कार्तिकेय का एक अनुचर। वि०=रणोन्मत्त।
रत—पु० [स०√रम् (क्रीडा)+क्त] १ मैथुन। प्रसग। २ भग। योनि। ३ लिंग। ४ प्रीति। प्रेम।
वि० १ जो किसी काम मे पूरे मनोयोग से लगा हुआ हो। २ प्रेम मे पडा हुआ। आसक्त।
* वि०, पु०=रक्त।
रत-कील—पु० [स० रत√कील् (बाँधना)+क, उप० स०] कुत्ता।
रत-गुरु—पु० [स० त०] स्त्री का पति। खसम। शौहर।
रत-जगा—पु० [हिं० रात+जागना] १. रात मे होनेवाला जागरण। २ ऐसा आनन्दोत्सव जिसमे लोग रात भर जागते रहे। ३. एक त्योहार जो पूर्वी सयुक्त प्रात तथा बिहार आदि मे भाद्रपद कृष्ण की रात को होता है और जिसमे स्त्रियाँ रात भर जागकर कजली गाती और नाचती हैं।
रतन†—पु०=रत्न।
रतन-जोत—स्त्री० [स० रत्न-ज्योति] १ एक प्रकार की मणि। २ एक प्रकार की सुगधित लकडी जिसकी छाल से लाल रग तैयार किया जाता या तेल आदि रँगा जाता है। ३ बडी दती।
रतनाकर—पु० १ दे० 'रत्नाकर'। २ दे० 'रतन-जोत'।
रतनागर*—पु०=रत्नाकर।
रतनागरभ—स्त्री० [स० रत्नगर्भा] पृथ्वी। भूमि। (डिं०)
रतनार†—वि०=रतनारा।

रतनारा—वि० [स० रक्त, प्रा० रत्त अथवा रत्न=मानिक+आर (प्रत्य०)] लाल रग का। सुर्ख।
रतनारी—पु० [हिं० रतनार+ई (प्रत्य०)] एक प्रकार का धान।
स्त्री० लाली। सुर्खी।
वि०=रतनार।
रतनारीच—पु० [स० स० त०] १. कामदेव। २ कामुक और लपट व्यक्ति।
रतनालिया* †—वि०=रतनारा।
रतनावली—स्त्री०=रत्नावली।
रत-निधि—पु० [ब० स०] खंजन पक्षी। ममोला।
रतबंध—पु०=रतिबंध।
रत-मुहाँ†—वि० [हिं० रत=राजा+मुँह+आँ (प्रत्य०)] [स्त्री० रतमुही] लाल मुँहवाला।
पु० बदर।
रतल—स्त्री० [अ० रत्ल] १ शराब का प्याला। चषक। २. एक पौंड का बटखरा। ३. तौल मे पौंड या कोई चीज।
रतवाँस†—पु० [हिं० रात+वास (प्रत्य०)] हाथियो, घोड़ो आदि का वह चारा जो उन्हे रात के समय दिया जाता है।
रतवाई†—स्त्री० [देश०] १ नई ईख का रस पहले-पहल पेरना। २. उक्त रस को लोगो मे बाँटने की क्रिया या भाव।
स्त्री० [हिं० रात] १ मजदूरो का रात-भर काम करना। २ मजदूरो को रात के समय काम करने पर मिलनेवाला पारिश्रमिक। ३ मेवाड़ का एक प्रकार का ग्राम गीत।
रतवाही—स्त्री०=रतवाई।
रतव्रण—पु० [स० ब० स०] कुत्ता।
रतशायी (यिन्)—पु० [स० रत√शो (क्षीण करना)+णिनि] कुत्ता।
रतहिंडक—पु० [स० च० त०] १ वह जो स्त्रियाँ चुराता हो। २. कामुक और लपट व्यक्ति।
रता†—स्त्री० [देश०] भुकडी।
रताना—अ० [स० रत+हिं० आना (प्रत्य०)] रत होना।
स० रत करना।
अ० [हिं० रत+आना (प्रत्य०)] लाल होना।
स० लाल करना।
रतायनी—स्त्री० [स० रत-अयन ब० स०, ङीष्] वेश्या।
रतालू—पु० [स० रक्तालु] १. पिडालू नामक कद जिसकी तरकारी बनाते हैं। २ बराही कन्द। गेंठी।
रति—स्त्री० [स०√रम्+क्तिन्] १ किसी काम, चीज, बात या व्यक्ति मे रत होने की अवस्था या भाव। २ उक्त अवस्था मे मिलनेवाला आनद या होनेवाली तृप्ति। ३. विशेषत मैथुन आदि से होनेवाली तृप्ति या मिलने वाला आनद। साहित्य मे इसे शृगार-रस का स्थायी भाव माना गया है। ४. मैथुन। सभोग। ५ प्रीति। प्रेम। ६ छवि। शोभा। ७ सौभाग्य। ८ गुप्त-भेद। रहस्य। ९ कामदेव की पत्नी का नाम।
† स्त्री०=रत्ती।
अव्य०=रती।

स्त्री०=रात।

रतिकर—अव्य० [हिं० रत्ती] रत्तीभर; अर्थात् बहुत थोड़ा। जरा-सा।
वि० [सं० रति√कृ (करना)+ट] १. रति करनेवाला। २. आनन्द और सुख की वृद्धि करनेवाला। ३. अनुराग या प्रेम बढ़ानेवाला।
पुं० कामुक और लंपट व्यक्ति।

रति-करण—पु० [ष० त०] रति या संभोग करने का कौशल या ढंग।

रति-कलह—पु० [ष० त०] मैथुन। संभोग।

रति-कांत—पु० [ष० त०] रति का पति, कामदेव।

रति-कुहर—पु० [ष० त०] योनि। भग।

रति-केलि—स्त्री० [ष० त०] मैथुन। संभोग।

रति-क्रिया—स्त्री० [ष० त०] मैथुन। संभोग।

रतिगर†—अव्य० [हिं० रात+गर ?] प्रातःकाल। तड़के। सवेरे।

रति-गृह—पु० [ष० त०] योनि। भग।

रतिज्ञ—पु० [सं० रति√ज्ञा (जानना)+क] १ वह जो रति-क्रिया मे चतुर हो। २. वह जो स्त्रियों को अपने प्रेम मे फँसाने की कला मे निपुण हो।

रति-तस्कर—पु० [ष० त०] वह जो स्त्रियों को अपने साथ व्यभिचार करने मे प्रवृत्त करता हो।

रति-दान—पु० [ष० त०] संभोग। मैथुन।

रति-देव—पु० [ष० त०] १ विष्णु। २ [ब० स०] कुत्ता। ३ चंद्रवंशी साकृति के पुत्र एक राजा।

रति-नाथ—पु० [ष० त०] कामदेव।

रति-नायक—पु० [ष० त०] कामदेव।

रतिनाह—पु०=रतिनाथ (कामदेव)।

रति-पति—पु० [ष० त०] कामदेव।

रति-पाश—पु० [ष० त०] सोलह प्रकार के रति-बंधों में से एक भेद। (काम-शास्त्र)

रति-प्रिय—पु० [ष० त०] १ कामदेव। २. [ब० स०] मैथुन से आनंदित होनेवाला व्यक्ति।
वि० [स्त्री० रति-प्रिया] रति (मैथुन) का शौकीन। कामुक।

रति-प्रिया—स्त्री० [ब० स०] १. तांत्रिकों के अनुसार शक्ति की एक मूर्ति का नाम। २. दाक्षायणी देवी का एक नाम। ३ मैथुन से आनंदित होनेवाली स्त्री।

रति-प्रीता—स्त्री० [तृ० त०] १. वह नायिका जिसकी रति मे विशेष अनुराग हो। कामिनी। २. रति से आनंदित होनेवाली स्त्री।

रति-बंध—पुं० [स०त०] काम-शास्त्र मे बतलाये हुए संभोग करने के ८४ आसनों मे से हर एक।

रति-भवन—पु० [ष० त०] १. रति-क्रीड़ा या मैथुन करने का कमरा या भवन। २ योनि। भग।

रति-भाव—पुं० [ष० त०] १. पति और पत्नी, प्रेमी और प्रेमिका या नायक और नायिका का पारस्परिक अनुराग। २. प्रीति। प्रेम। मुहब्बत।

रतिभौन—पुं०=रतिभवन।

रति-मंदिर—पुं० [ष० त०] रति-भवन (दे०)।

रतिमदा—स्त्री० [सं० ब० स०] अप्सरा।

रति-मित्र—पुं० [स० त०] एक रतिबंध। (कामशास्त्र)

रतियाना*†—अ० [हिं० रति=प्रीति+आना (प्रत्य०)] किसी पर रत या अनुरक्त होना।

रति-रमण—पुं० [ष० त०] १. रति-क्रीड़ा। मैथुन। २. कामदेव।

रतिराइ पुं०=रतिराज। (कामदेव)।

रति-राज—पु० [ष० त०] कामदेव।

रतिवंत—वि० [स० रति+हिं० वंत (प्रत्य०)] सुंदर। खूबसूरत।

रति-वर—पु० [स० त०] १. रति में प्रवीण कामदेव। २. वह धन या भेंट जो नायक नायिका को रति मे प्रवृत्त करने के उद्देश्य से देता है।

रति-वर्द्धन—वि० [म० ष० त०] काम-शक्ति बढ़ानेवाला।

रति-वल्ली—स्त्री० [ष० त०] प्रेम। प्रीति। मुहब्बत।

रतिवाही (हिव्)—पु० [स० रति√वह् (ढोना)+णिनि] संगीत में एक प्रकार का राग, जिसका गान-समय रात को १६ दंड से २० दंड तक है।

रति-शास्त्र—पुं० [मध्य० स०] वह शास्त्र जिसमे रति के ढंगों, आकारों, आसनों आदि का विवेचन होता है। कामशास्त्र।

रति सत्वरा—स्त्री० [ब० स०,+टाप्] असबरग। पृक्का।

रति-समर—पुं० [ष० त०] संभोग। मैथुन।

रति-साधन—पुं० [ष० त०] पुरुष का लिंग। शिश्न।

रति-सुन्दर—पु० [स० त०] एक रति-बंध। (कामशास्त्र)

रती*†—स्त्री० [स० रति] १ कामदेव की पत्नी। रति। २ सौंदर्य। ३. शोभा। ४. मैथुन। संभोग। ५ आनन्द। मौज।
† स्त्री०=रत्ती।
अव्य० बहुत थोड़ा। जरा-सा।

रतीक—अव्य०=रतिक (थोडा सा)।

रतीश—पु० [रति-ईश, ष० त०] कामदेव।

रतुआ†—पु० [देश०] एक तरह की बरसाती घास।

रतुन—पु० [देश०] वह ईख या गन्ना, जो एक बार काट लेने पर फिर उसी पहली जड या पेड़ी से निकलता है। पेड़ी का गन्ना।

रतोपल*†—पु० [सं० रक्तोत्पल] १ लाल कमल। २ लाल सुरमा। ३ लाल खड़िया। ४ गेरू।

रतौंधी—स्त्री० [हिं० रात+अंधा] आँख का एक प्रसिद्ध रोग जिसके कारण रोगी को रात के समय कुछ भी दिखाई नही पडता।

रतौन्हीं†—स्त्री०=रतौंधी।

रत्त*—पु०=रक्त।
वि०=रत।

रत्तक—पुं० [स० रत्तक, प्रा० रत्त] एक तरह का लाल रंग का पत्थर।

रत्तरी†—स्त्री०=रात्रि।

रत्ती—स्त्री० [सं० रक्ति, का प्रा० रत्तीआ] १. माशे के आठवें अंश के बराबर की एक तौल या मान। २ उक्त परिमाण का बटखरा। ३ घुंघची का दाना जो साधारणतया तौल मे माशे के आठवें अंश के बराबर होता है।
पद—रत्ती भर=बहुत थोड़ा। जरा-सा
वि० बहुत ही थोड़ा। किंचित् मात्र।
स्त्री० [सं० रति] १. छवि। शोभा। २. सौंदर्य।

रत्थी—स्त्री०=अरथी।

रत्न—पुं० [सं०√रम् (क्रीड़ा)+णिच्+न, तकार—अन्तादेश] १. कुछ विशिष्ट छोटे, चमकीले खनिज पदार्थ या बहुमूल्य पत्थर, जो आभूषणों आदि में जड़े जाते हैं। २. माणिक्य। मानिक। लाल। ३. वह जो अपनी जाति या वर्ग मे औरो से बहुत अच्छा या बढ़-चढ़कर हो। ४. जैनों के अनुसार सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान और सम्यक् चारित्र।

रत्न-कंदल—पुं० [ष० त०] प्रवाल। मूँगा।

रत्नकर—पुं० [सं० रत्न√कृ (करना)+ट] कुबेर का एक नाम।

रत्न-कर्णिका—स्त्री० [मध्य० स०] कान में पहनने का एक तरह का जड़ाऊ गहना।

रत्न-कांति—स्त्री० [ब० स०] संगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

रत्न-कूट—पुं० [ब० स०] १. एक पौराणिक पर्वत का नाम। २ एक बोधिसत्व का नाम।

रत्न-गर्भा—पुं० [ब० स०] १. कुबेर का एक नाम। २. रत्नाकर। समुद्र। ३ एक बुद्ध का नाम।

रत्न गर्भा—स्त्री० [सं० ब० स०,+टाप्] वह जिसके गर्भ मे रत्न हो। पृथ्वी।

रत्नगिरि—पुं० [मध्य० स०] बिहार के एक पहाड़ का प्राचीन नाम।

रत्न-चूड़—पुं० [ब० स०] एक बोधिसत्व।

रत्नछाया—स्त्री० [सं० रत्नच्छाया] रत्न की आभा, छाया या पानी।

रत्न-त्रय—पुं० [ष० त०] सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान और सम्यक् चरित्र। (जैन)

रत्न-दामा—स्त्री० [ष० त०] १ रत्नो की माला। २. सीता की माता। (गर्ग संहिता)

रत्न-दीप—पुं० [मध्य० स०] १. रत्नो से जड़ा हुआ दीपक। रत्न-जटित दीपक। २. एक कल्पित रत्न का नाम जो बहुत उज्ज्वल माना गया है।

रत्न-द्रुम—पुं० [ष० त०] मूँगा।

रत्न-द्वीप—पुं० [मध्य० स०] पुराणानुसार एक द्वीप का नाम।

रत्न-धर—पुं० [ष० त०] धनवान्।
वि० रत्नधारण करनेवाला।

रत्न-धेनु—स्त्री० [मध्य० स०] दान के उद्देश्य से रत्नो की बनाई हुई गौ की मूर्ति।

रत्न-ध्वज—पुं० [ब० स] एक बोधिसत्त्व।

रत्न-नाभ—पुं० [ब० स०] विष्णु।

रत्न-निधि—पुं० [ष० त०] १ खंजन पक्षी। ममोला। २. समुद्र। ३ मेरु पर्वत। ४. विष्णु।

रत्न-परीक्षक—पुं० [ष० त०] जौहरी।

रत्न-पर्वत—पुं० [ष० त०] सुमेरु पर्वत।

रत्न-पाणि—पुं० [ब० स०] एक बोधिसत्व।

रत्न-पारखी—पुं०=रत्न-परीक्षक (जौहरी)।

रत्न-प्रदीप—पुं० [मध्य०स०] ऐसा एक कल्पित रत्न जो दीपक के समान प्रकाशमान माना गया है।

रत्न-प्रभ—पुं० [ब० स०] देवताओं का एक वर्ग।

रत्न-प्रभा—स्त्री० [ब० स०,+टाप्] १. पृथ्वी। २. जैनों के अनुसार एक नरक।

रत्न-बाहु—पुं० [ब० स०] विष्णु।

रत्न-भूषण—पुं० [मध्य० स०] रत्न जटित आभूषण। जड़ाऊ गहना।

रत्न-माला—स्त्री० [मध्य० स०] १. रत्नों की माला। २. राजा बलि की कन्या का नाम।

रत्न-माली (लिन्)—पुं०[सं० रत्नमाला+इनि] देवताओ का एक वर्ग।

रत्न-राज्—पुं० [सं० रत्न√राज् (चमकना)+क्विप्, उप० स०] माणिक्य। लाल।

रत्न-वती—स्त्री० [सं० रत्न+मतुप्+ङीप्] पृथ्वी।

रत्न-शाला—स्त्री० [ष० त०] १ रत्नों के रखने का स्थान। २. ऐसा भवन या महल जिसकी दीवारो पर रत्न जड़े हो।

रत्न-सागर—पुं० [मध्य० स०] समुद्र का वह भाग जहाँ से प्रायः रत्न निकलते हों।

रत्न-सानु—पुं० [ब० स०] सुमेरु पर्वत।

रत्न-सू—स्त्री० [सं० रत्न√सू (प्रसव)+क्विप्] पृथ्वी।

रत्नाकर—पुं० [रत्न-आकर ष० त०] १ समुद्र। २ ऐसी खान जिसमे से रत्न निकलते हों। ३. वाल्मीकि का पुराना नाम। ४. गौतम बुद्ध का एक नाम।

रत्नागिरि—पुं०=रत्नगिरि (बिहार मे स्थित एक पर्वत)।

रत्नाचल—पुं० [रत्न-अचल, मध्य० स०] दान के उद्देश्य से लगाया हुआ रत्नो का ढेर।

रत्नाद्रि—पुं० [रत्न-अद्रि, मध्य० स०] एक पर्वत। (पुराण०)

रत्नाधिपति—पुं० [रत्न-अधिपति, ष० त०] कुबेर।

रत्नावली—स्त्री० [रत्न-आवली, ष० त०] १. मणियो या रत्नो की अवली या श्रेणी। २. रत्नो की माला। ३ साहित्य में एक अर्थालंकार जिसमे कोई बात ऐसे श्लिष्ट शब्दो मे कही जाती है कि उनसे प्रस्तुत अर्थों के सिवा कुछ और अर्थ भी निकलते हैं। जैसे—'आप चतुरास्य, लक्ष्मीपति और सर्वज्ञ हैं' का साधारण अर्थ के सिवा यह भी अर्थ निकलता है कि आप ब्रह्मा, विष्णु और महेश हैं।

रत्यर्थी (र्थिन्)—वि० [सं० रति√अर्थ+णिच् (स्वार्थ मे)+णिनि' उप० स०] [स्त्री० रत्यर्थिनी] रति की इच्छा या कामना रखनेवाला। जो रति करना चाहता हो।

रत्युत्सव—पुं० [सं० रति-उत्सव, ष० त०] रति या संभोग का उत्सव।

रथंकर—पुं० [सं० रथ√कृ (करना)+खच्, मुमागम] १. एक कल्प का नाम। २ एक प्रकार का साम। ३. एक प्रकार की अग्नि।

रथ—पुं० [सं०√रम् (क्रीडा)+कथन्] १. प्राचीन काल की एक प्रकार की सवारी जिसमे चार या दो पहिये हुआ करते थे। गाड़ी। बहल। शतांग। स्यंदन। २ शरीर जो आत्मा का यान या सवारी है। उदा०—तीरथ चलत मन तीरथ चलत है।—सेनापति। ३. पग या पैर जिससे प्राणी चलते हैं। ४. क्रीड़ा या विहार का स्थान। ५. तिनिश का पेड़। ६. वह शिला-मंदिर जो किसी चट्टान को काटकर बनाया गया हो। (दक्षिण)

रथ-कल्पक—पुं० [सं० ष० त०] १. प्राचीन भारत में वह अधिकारी जो किसी राजा के रथो, यानों आदि की देख-रेख रखता था। २. वाहन।

३ घर। ४. प्राचीन भारत में, धनवानों का वह प्रधान अधिकारी जो उनके घर आदि सजाता और उनके पहनने के वस्त्र आदि रखता था।

रथकार—पुं० [सं० रथ√कृ (करना)+अण्] १. रथ बनानेवाला कारीगर। २. बढ़ई। ३. माहिष्य पिता से उत्पन्न एक वर्णसंकर जाति।

रथ-कूबर—पुं० [ष० त०] रथ का वह भाग जिस पर जूआ बाँधा जाता है।

रथ-कांत—पु० [ब० स०] संगीत में एक प्रकार का ताल।

रथ-क्रांता—स्त्री० [सं० रथक्रांत+टाप्] एक प्राचीन जनपद का नाम।

रथ-गर्भक—पु० [ब० स०,+कप्] कंधों पर उठाई जानेवाली सवारी। जैसे—डोला, पालकी आदि।

रथ-गुप्ति—स्त्री० [ब० स०] रथ-नीड (दे०) के चारों ओर सुरक्षा की दृष्टि से लकड़ी, लोहे आदि का लगाया जानेवाला घेरा।

रथ-चरण—पु० [ष० त०] १. रथ का पहिया। [रथचरण+अच्] २ चकवा। चक्रवाक।

रथ-चर्या—स्त्री० [ष० त०] रथ पर चढ़कर भ्रमण करना।

रथ-द्रु—पु० [मध्य० स०] १. तिनिश का पेड़। २ बेंत।

रथ-नीड—पु० [ष० त०] रथ मे वह स्थान जहाँ लोग बैठते है। गद्दी।

रथ-पति—पु० [ष० त०] रथ का नायक। रथी।

रथ-पर्याय—पु० [ब०स०] १. तिनिश का पेड़। २. बेंत।

रथ-पाद—पु० =रथचरण।

रथ-महोत्सव—पु० [ष० त०] रथ यात्रा। (दे०)

रथ-यात्रा—स्त्री० [तृ० त०] हिन्दुओं का एक पर्व या उत्सव जो आषाढ़ शुक्ल द्वितीया को होता है और जिसमे जगन्नाथ, बलराम और सुभद्रा की मूर्तियाँ रखकर उनकी सवारी निकालते है।

रथ-योजक—पु० [ष० त०] सारथि।

रथ-वर्त्म (न्)—पु० [ष० त०] राजमार्ग।

रथवान् (वत्)—पु० [सं० रथ+मतुप्] रथ हाँकनेवाला। सारथि।

रथवाह—पु० [सं० रथ√वह (ढोना)+अण्] १ रथ चलानेवाला। सारथि। २. रथ खींचनेवाला घोड़ा।

रथ-वाहक—पु० [सं० रथवाह+कन्] सारथि।

रथ-शाला—स्त्री० [ष० त०] वह स्थान जहाँ रथ रखे जाते हो। गाड़ी-खाना।

रथ-शास्त्र—पु० [मध्य० स०] रथ चलाने की क्रिया।

रथ-सप्तमी—स्त्री० [मध्य० स०] माघ शुक्ला सप्तमी।

रथस्था (स्था)—स्त्री० [सं०] पंचाल देश की राम-गंगा नामक नदी का पुराना नाम।

रथांग—पु० [रथ-अंग, ष० त०] १ रथ का पहिया। २. [रथांग+अच्] चक्र नामक अस्त्र। ३ चकवा पक्षी।

रथांग-धर—पु० [ष० त०] १ श्रीकृष्ण। २. विष्णु।

रथांग-पाणि—पुं० [ब० स०] विष्णु।

रथांगी—स्त्री० [सं० रथांग+ङीष्] ऋद्धि नामक ओषधि।

रथाक्ष—पुं० [रथ-अक्षि, ष० त०] १. रथ का पहिया। २. रथ का धुरा। ३. कार्तिकेय का एक अनुचर। ४. चार अंगुल का एक परिमाण।

रथाग्र—पुं० [रथ-अग्र, ब० स०] वह जिसका रथ सबसे आगे हो, अर्थात् श्रेष्ठतम योद्धा।

रथिक—पुं० [सं० रथ+ठन्—इक] १. वह जो रथ पर सवार हो। रथी। २. तिनिश का पेड़।

रथी (थिन्)—पुं० [सं० रथ+इनि] १. वह जो रथ पर चढ़कर चलता हो। रथी। २. रथ पर चढ़कर युद्ध करनेवाला। रथवाला योद्धा। पद—महारथी।

३ एक हजार योद्धाओं से अकेला युद्ध करनेवाला योद्धा। उदा०—पूरण प्रकृति सात धीर बीर हैं विख्यात रथी महारथी अतिरथी रण साजिके।—रघुराज।

वि० जो रथ पर सवार हो।

स्त्री०=अरथी (मृतक की)।

रथोत्सव—पु० [रथ-उत्सव, ष० त०] रथ-यात्रा। (दे०)

रथोद्धता—स्त्री० [रथ-उद्धता, उपमित स०] ग्यारह अक्षरों का एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसका पहला, तीसरा, सातवाँ, नवाँ और ग्यारहवाँ वर्ण गुरु तथा अन्य वर्ण लघु होते है।

रथ्य—पुं०[सं० रथ+यत्]१. वह घोड़ा जो रथ मे जोता जाता हो। २ रथ चलानेवाला। सारथि। ३ पहिया।

रथ्या—स्त्री०[सं० रथ्य+टाप्]१ रथो का समूह। २. वह मार्ग जो वनों मे रथ के चलने से बन जाता था। ३ बड़े नगरो मे वह चौड़ा मार्ग या सड़क जिसपर रथ चलते थे। ४ घर का आँगन या चौक। ५. नाबदान। पनाला।

रद—पु०[सं०√रद् (विलेखन)+अच्] दंत। दाँत।

वि०=रद्द।

रद-क्षत—पु०[तृ०त० या ष० त०] रति आदि के समय दाँतो के गड़ने या लगने का चिह्न।

रदच्छद—पु०[सं० रद√छद् (आच्छादन)+णिच्+घ, ह्रस्व] होंठ। ओष्ठ।

रद-छत—पुं०=रद-क्षत।

रद-दान—पु०[सं० ष० त०](रति के समय) दाँतो से ऐसा दबाना कि चिह्न पड़ जाय। रद-क्षत करना।

रदन—पु०[सं०√रद्+ल्युट्—अन] दशन। दांत। दंत।

रदनच्छद—पु०[सं० रदन√छद्+णिच्+घ, ह्रस्व] ओष्ठ। अधर। होंठ।

रदनी (निन्)—वि०[सं०रदन+इनि] दाँतवाला।

पु० हाथी।

रद-पट—पु०[सं० ष० त०] अधर। होंठ।

रद-बदल—स्त्री०[अ० रद्दोबदल] परिवर्तन

रदवास—पु०[सं० रद+वास=आवरण] होंठ। उदा०—अन्तरपट रदवास सरीरु।—नूर मोहम्मद।

रदी (दिन्)—पु०[सं०√ रद्+इनि] हाथी। गज।

रदीफ—स्त्री० [अ० रदीफ]१ वह व्यक्ति जो घोड़े पर मुख्य सवार के पीछे बैठता है। २. वह शब्द जो गजलो आदि मे प्रत्येक काफिए या अन्त्यानुप्रास के बाद आनेवाला शब्द या शब्द-समूह। जैसे—चला है ओ दिले राहत-तलब क्या शादियाँ होकर। जमीने कूए जानाँ

रंज देनी आस्मां होकर। में 'शादमां' और 'आस्मां' काफिया है, तथा 'होकर' रदीफ है। ३. पीछे की ओर रहनेवाली सेना। पृष्ठ-भाग के सैनिक।

रदीफवार—अव्य० [अ०+फा०] १. रदीफ के अनुसार। २. वर्णमाला के क्रम से। अक्षर-क्रम से।

रद्द—वि० [अ०] १. बदला हुआ। परिवर्तित। २. (लिखित सामग्री) जो नापसंद अथवा दूषित होने पर काट या छाँट दी गई हो। जो अनुपयुक्त समझकर निरर्थक या व्यर्थ कर दिया गया हो।

स्त्री० [देश०] कै। वमन।

रद्दा—पुं० [फा० रद] १ दीवार में जुड़ाई की एक पंक्ति। २. मिट्टी की दीवार उठाने मे उतना अंश, जितना चारो ओर एक बार मे उठाया जाता है।

क्रि० प्र०—उठाना।—रखना।

३. थाली में एक प्रकार की मिठाइयों का चुनाव जो स्तरो के रूप मे नीचे-ऊपर होता है।

क्रि० प्र०—रखना।—लगाना।

४. नीचे ऊपर रखी हुई वस्तुओं का थाक या ढेर।

क्रि० प्र०—चुनना।

५. कुश्ती मे अपने प्रतिपक्षी को नीचे लाकर उसकी गरदन पर कुहनी और कलाई के नीचे की हड्डी से रगड़ते हुए आघात करना।

क्रि० प्र०—देना।—लगाना।

६ चमड़े की वह मोहरी जो भालुओं के मुँह पर बाँधी जाती है।

रद्दी—वि० [फा० रद] १. जो व्यर्थ हो तथा किसी उपयोग मे न लाया जा सकता हो। जैसे—रद्दी कागज। २. जिसमे कुछ भी बढ़ियापन या अच्छाई न हो। बहुत ही निम्न कोटि या प्रकार का। जैसे—रद्दी कपड़ा। स्त्री० लिखे अथवा छपे हुए ऐसे कागज जिनका कोई उपयोग अब न होने को हो। पुराने और व्यर्थ के कागज।

रद्दीखाना—पुं० [हिं० रद्दी+फा० खाना] वह स्थान जहाँ खराब और निकम्मी चीजें रखी या फेंकी जायँ।

रधार†—स्त्री० [देश०] ओढ़ने का दोहरा वस्त्र। दोहर।

रधेरा जाल—पुं० [सं० रध=छेद+ऐरा (प्रत्य०)+जाल] मछली फँसाने का छोटे छेदोंवाला जाल।

रन*—पुं० [सं० रण] युद्ध। लड़ाई। संग्राम।

पु० [सं० अरण्य] जंगल। वन।

पु० [?] १. झील। ताल। २. समुद्र का वह छोटा खंड जो तीन ओर से स्थल से घिरा हो। छोटी खाड़ी।

पु० [अं०] क्रिकेट के खेल में बल्लेबाज द्वारा एक सिरे से दूसरे सिरे तक लगाई जानेवाली दौड़।

रनकना†—अ० [देश०, सं० रणन=शब्द करना] घुँघरू आदि का मंद-मंद शब्द होना।

रनछोर—पु०=रणछोड़ (श्रीकृष्ण)।

रनना*—अ० [सं० रणन=शब्द करना] घुँघरुओ आदि का मन्द और मधुर शब्द में बजना या बोलना।

रनबंका†—पु० [सं० रण+हिं० बाँका] युद्ध-क्षेत्र मे वीरता दिखानेवाला योद्धा।

रन-बरिया†—स्त्री० [देश०] एक तरह की जंगली भेड़।

रन-बाँकुरा—पु०=रन-बंका।

रन-लंपिका—स्त्री० [डिं०] गौ। गाय।

रनवादी*—पुं० [सं० रण+वादी] योद्धा।

रन-वास—पु० [हिं० रानी+वास] १. महल का वह अंश जिसमें रानियाँ रहती थी। अंतःपुर। २. घर मे स्त्रियो के रहने का स्थान। जनानखाना।

रन-वासन—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की फली।

रन-साजी—स्त्री० [सं० रण+फा० साजी] युद्ध छिड़ने या छेड़ने की अवस्था, क्रिया या भाव। उदा०—सरजा शिवाजी की सबेग तेज बाजी चाहि गाजी गजनी के रनसाजी जु बहुत हैं।—रत्ना०।

रनित*—भू० कृ०=रणित (बजता हुआ)।

रनिवास†—पु०=रनवास।

रनी—पु० [सं० रण+हिं० ई (प्रत्य०)] रण करनेवाला व्यक्ति। योद्धा।

रनेत†—पुं० [सं० रण+एत (प्रत्य०)] भाला। (डिं०)

रपट†—स्त्री० [हिं० रपटना] १. रपटने की क्रिया या भाव। २. ऐसा स्थान जहाँ पैर रपटता या फिसलता हो। ३ जल्दी-जल्दी रपटने अर्थात् तेजी से चलने की क्रिया या भावी। दौड़। ४ ढालुआँ स्थान। उतार। ढाल।

स्त्री० [अ० रब्त] आदत। टेव।

क्रि० प्र०—डालना।—पड़ना।—होना।

स्त्री० [अं० रिपोर्ट] चौकी, थाने आदि में जाकर दी जानेवाली मार-पीट, चोरी-डाके आदि दुर्घटनाओ की सूचना।

रपटना†—अ० [सं० रफन=सरकना, मि० फा० रफतन्] १. चिकनी या ढालवी जमीन पर पाँव और फलत व्यक्ति आदि का फिसलकर आगे बढ़ना। २. तेजी से चलना।

स० मैथुन या संभोग करना। (बाजारू)

रपटा—पु० [हिं० रपटना] १. रपटने की क्रिया या भाव। २ ऐसा स्थान या स्थिति जिसमे पैर रपटता या फिसलता हो। फिसलन। ३. ढालुई भूमि। ढाल। ढलान। (रैम्प)

रपटाना—स० [हिं० रपटना] १. किसी को रपटने में प्रवृत्त करना। २ (काम) जल्दी से पूरा करना।

रपटीला—वि० [हिं० रपटर (ना)+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० रपटीली] इतना या ऐसा चिकना जिसपर पैर फिसलता या फिसल सकता हो। पिच्छिल।

रपट्टा—पु० [हिं० रपटना] १ फिसलने की क्रिया या भाव। रपट। २. बहुत जल्दी जल्दी चलना। तेज चलना।

मुहा०—**रपट्टा मारना**=बहुत जल्दी जल्दी या तेजी से चलना।

३. दौड़-धूप। ४ दे० 'झपट्टा'।

रपाती—स्त्री० [?] तलवार। (डिं०)

रपुर—पुं० [सं० हरिपुर] स्वर्ग। (डिं०)

रफ—पुं० [अ० रफ] मचान।

वि० [अं०] १. (कागज, कपड़ा आदि) जिसमे चिकनापन न हो। खुरदरा। २. (विवरण, लेख आदि) जो अभी ऐसे रूप मे हो कि ठीक तथा

साफ किया जाने अर्थात् पुनः लिखा जाने को हो। नमूने के रूप में तैयार किया हुआ।

रफ़्ता—वि०[अ० रफ़्तः]१. गया या बीता हुआ। गत। २. मृत।

रफ़्ता-रफ़्ता—अव्य०[अ० रफ़्तः रफ़्तः] शनैः-शनैः। धीरे-धीरे।

रफ़्ते-रफ़्ते—अव्य०=रफ्ता-रफ्ता।

रफ़ल—स्त्री०[अं० राइफ़ल] विलायती ढंग की एक प्रकार की बंदूक। राइफल।
पुं०[अं० रैपर] एक तरह की ऊनी मोटी चादर।

रफ़ा—वि०[अ० रफ़्अ]१. दूर किया या हटाया हुआ। २. मिटाया हुआ। ३. समाप्त या पूरा किया हुआ। ४. निवारित या शांत किया हुआ।
पद—रफ़ा-दफ़ा।

रफ़ाह—स्त्री०[अ० रिफ़ह]१. आराम। सुख। २ भलाई। हित।

रफ़ीअ—वि० [अ० रफ़ीअ] १. ऊँचा। बुलंद। २. उत्तम। श्रेष्ठ।

रफ़ीक़—पुं०[अ० रफ़ीक़]१. साथी। संगी। २. सहायक। मददगार। ३ मित्र।
वि० प्राय या सदा साथ रहनेवाला।

रफ़ीदा—पु०[अ० रफ़ाद]१ वह गद्दी जिसके ऊपर जीन कसी जाती है। २ कपडे की वह गद्दी जिसे हाथ मे लगाकर नानबाई तदूर में रोटी चिपकाते हैं। कावुक। ३. एक प्रकार की गोलाकार पगडी।

रफ़ू—पुं०[फा०रफ़ू] १. एक प्रकार की सिलाई जिसमें बीच से कुछ कटा या फटा हुआ कपड़ा इस प्रकार बीच में सूत भरकर मिलाया जाता है कि साधारणत जोड नही दिखाई पडता। २ असंगत या असबद्ध बातों की संगति बैठाने की क्रिया।
मुहा०—(बात) रफ़ू करना= कही हुई दो असंबद्ध या असंगत बातों मे सामजस्य स्थापित करना। बात बनाना।

रफ़ूगर—पु०[फा० रफ़ूगर] [भाव० रफूगरी] वह कारीगर जो कपडो मे रफू करने या बनाने का काम करता हो।

रफ़ूगरी—स्त्री०[फा०] रफूगर का काम, पेशा या भाव।

रफ़ू-चक्कर—वि०[अ० रफ़ू+हिं० चक्कर] जो धीरे से तथा बिना आहट दिये कही चला गया हो। चंपत। गायब। (व्यक्तियों के लिए प्रयुक्त)
क्रि० प्र०—बनना।—होना।

रफ़्त—स्त्री०[फा०] चलना या जाना। जैसे—आमद रफ्त=आना-जाना।

रफ़्तनी—वि०[फा०] जो जानेवाला हो।
स्त्री०१. जाने की क्रिया या भाव। २ माल का कही बाहर भेजा जाना। निकासी। निर्यात।

रफ़्तार—स्त्री०[फा०] १. गति। चाल। २. चलने-दौड़ने के समय और पार की जानेवाली दूरी के हिसाब से आनुपातिक गति। जैसे—मोटर ५० मील घटे की रफ्तार से चलती है। ३. प्रगति। ४. दशा। हालत।

रफ़्तार-गुफ़्तार—स्त्री० [फा०] उठने-बैठने, चलने-फिरने और बात-चीत करने का ढंग या भाव। चाल-चलन। तौर-तरीका।

रफ़्ता-रफ़्ता—अव्य०=रफ्ता रफ्ता।

रब—पुं०[अ०]१. मालिक। २. ईश्वर।

रबकना—अ०[?] [भाव० रबकी] डर से छिपना। दुबकना।

रबड़—पुं०[अं० रबर] १. एक प्रकार का वृक्ष जो वट वर्ग के अन्तर्गत है, और जिसका सुखाया हुआ दूध इसी नाम से प्रसिद्ध है। २. उक्त दूध से बना हुआ एक प्रसिद्ध लचीला पदार्थ जिससे गेंद, फीते आदि बहुत सी चीजें बनती हैं।
स्त्री०[हिं० रगड़ा] १. बहुत अधिक परिश्रम। रगड़ा। २. व्यर्थ का श्रम। फजूल की हैरानी।
क्रि० प्र०—खाना।—पड़ना।
३. रास्ते की ऐसी चक्करदार दूरी जिसमें परिश्रमपूर्वक बहुत चलना पड़ता हो।

रबड़ छंद—पुं०[हिं०+सं०] कविता का ऐसा छंद जिसमें मात्राओं आदि की गिनती का कुछ विचार न हो। (व्यंग्य)

रबड़ना—स०[हिं० रपटना या सं० वर्तन, प्रा० बट्टन]१. घुमाना-फिराना। चलाना। २. किसी तरल पदार्थ में कोई वस्तु (करछी आदि) डालकर चारों ओर चलाना या फेरना। फेंटना। ३. किसी से बहुत अधिक परिश्रम कराना।
अ० घूमना-फिरना।
स०=रगड़ना।

रबड़ी—स्त्री०[प्रा० रब्बा=अवलेह]गाढा किया हुआ दूध का लच्छेदार रूप। बसौंधी।

रबदा—पुं०[हिं० रबड़ना]१. वह श्रम जो कही बार बार आने जाने या दौड़-धूप करने से होता है। २. कीचड़।
मुहा०—रबदा पड़ना=ऐसा पानी बरसना कि रास्ते में कीचड़ हो जाय।

रबद्—स्त्री०[?] आवाज। शब्द।

रबर—पुं०=रबड़।

रबाना—पुं० [देश०] एक प्रकार का छोटा डफ जिसके मेंडरे में मंजीरे भी लगे होते हैं।

रबाब—पु० [अ०] सितार, सारंगी आदि की तरह का एक बाजा।

रबाबिया—पु०=रबाबी।

रबाबी—पुं० [अ०] रबाब बजानेवाला।

रबी—स्त्री० [अ० रबीअ] १ वसंत ऋतु। बहार का मौसिम। २. उक्त ऋतु मे तैयार होनेवाली तथा काटी जानेवाली फसल। 'खरीफ' से भिन्न।

रबीब—पुं० [अ०] स्त्री या पुरुष की दृष्टि से उसके पहले ब्याह से उत्पन्न पुत्र।

रबील—स्त्री० [देश०] मँझोले आकार का एक प्रकार का पक्षी।

रब्त—पुं० [अ०] १ अभ्यास। मश्क। मुहावरा। रपट।
क्रि० प्र०—पड़ना।—होना।
२. आपस में होनेवाला मेल-जोल और आत्मीयता का सम्बन्ध।

रब्त-ज़ब्त—स्त्री० [अ०] आपस में होनेवाला मेल-जोल और संग-साथ।

रब्ध—भू० कृ० [सं०√रभ् (आरंभ करना)+क्त] [स्त्री० रब्धा] आरंभ किया हुआ। शुरू किया हुआ।

रब्ब—पुं०=रब।

रब्बा—पुं० [फा० अराबा] १. वह गाड़ी जिस पर तोप लादी जाती है। तोपखाने की गाड़ी। २. ऐसी गाड़ी या रथ जिसे बैल खींचते हों।

रब्बाब—पु०=रबाब।

रभस—पु० [सं० √रभ्+असच्] १ वेग। तेजी। २ प्रसन्नता। हर्ष। ३ प्रेमपूर्वक अथवा प्रेम के कारण मन में होनेवाला उत्साह। ४. उत्सुकता। ५ मान। प्रतिष्ठा। सभ्रम। ६ पश्चात्ताप। पछतावा। ७ कार्य-कारण सम्बन्धी अथवा पूर्वापर का विचार। ८ अस्त्र निष्फल करने की विधि।

रम—पु०[सं० रम(क्रीडा) +अच्]१ कामदेव। २ स्त्री का पति। ३ प्रेमी। प्रेमपात्र। ४ दिव्य व्यक्ति। ५ लाल अशोक।
वि०१ प्रिय। मनोरम। सुन्दर। ३. आनन्ददायक। ४ मनोरजक।
वि०[हिं० राम] हिं० 'राम' का वह सक्षिप्त रूप जो उसे यौ० शब्दो के आरम्भ मे रखने पर प्राप्त होता है। जैसे—रमक जरा, रमचेरा।
पु०[अं०] एक प्रकार की बिलायती शराब।

रमइया†—पु०=राम।

रमक—पु० [सं०√रम्+वुन्—अक] १. प्रेमपात्र। २ प्रेमी। ३ उपपति। जार।
स्त्री०[हिं० रमकना] १ झूलने की क्रिया या भाव। २ पेंगा। ३. तरग। लहर।
स्त्री०[अ० रमक]१ अतिम श्वास। २ अतिम जीवन। ३ किसी चीज मे किसी दूसरी चीज का दिया जानेवाला हल्का पुट।

रमकजरा—पु० [हिं० राम+काजल] एक प्रकार का धान जो भादो मे पकता है।

रमकना—अ०[हिं० रमना]१ हिंडोले पर झूलना। हिंडोले पर पेंग मारना। २ झूमते हुए चलना।
अ०[हिं० रमक] किसी चीज मे किसी दूसरी चीज की हलकी गन्ध, छाया या प्रभाव दिखाई देना।

रमचकरा —पु० [हिं० राम+चक्र] बेसन की मोटी रोटी।

रमचा—पु०[हिं० चमचा] छोटी कलछी। चमचा।

रम-चेरा—पु०[हिं० राम+चेरा=चेला] छोटी-मोटी सेवाएँ करनेवाला व्यक्ति। टहलुआ। (परिहास)

रमजान—पु०[अ० रमजान]अरबी वर्ष का नवाँ महीना जिसमे मुसलमान रोजा रखते हैं।

रम-झल्ला†—पु०=झमेला।

रम-झिगनी†—स्त्री० दे० 'भिंडी'।

रमझोला—पु०[हिं० राम+झूलना]पैर मे पहनने के घूँघरू। नूपुर।(डिं०)

रमझोल—पु०[?] व्रज मे, एक प्रकार का लोकगीत।

रमठ—पु०[सं०√ रम्=अठन्] १ हीग। २ एक प्राचीन देश। ३. उक्त देश का निवासी।

रमड़ना—अ०[सं० रमण]१. रमण करना। रमना। २ किसी बात मे मन लगाना। ३. युक्त होना।

रमण—पु०[सं०√रम्+—ल्युट् अन]१. मन प्रसन्न करनेवाली क्रिया। क्रीडा। विलास। २. स्त्री-प्रसग। मैथुन। सभोग। ३. घूमना-फिरना या टहलना। विहार। ४. [√रम्+णिच्+ल्यु—अन] स्त्री का पति जो उसके साथ भोग-विलास करता है। ५ कामदेव। ६ गधा। ७. अडकोश। ८. सूर्य का अरुण नामक सारथि। ९ ९ एक प्राचीन वन। १०. एक प्रकार का वर्णिक छंद।
वि० १. रमने या विहार करनेवाला। २ रमण के योग्य। ३. आनन्द या सुख देनेवाला। ४ प्रिय।

रमणक—पु०[सं०√रमण+कन्] पुराणानुसार जबूद्वीप के अतर्गत एक वर्ष या खड। इसे रम्यक भी कहते है।

रमण गमना—स्त्री०[सं० ब० स० टाप्] साहित्य मे एक प्रकार की नायिका जो यह समझकर दु खी होती है कि सकेत-स्थान पर नायक आया होगा और मैं वहाँ उपस्थित न थी।

रमणी—स्त्री०[सं० रमण+ङीप्]१ रमण करने योग्य युवती और सुन्दर स्त्री। २ औरत। नारी। स्त्री। ३ सगीत मे कर्णाटकी पद्धति की एक रागिनी। ४ सुगन्धबाला।

रमणीक—वि०[सं० रमणीय] जिसमे मन रमण करता हो या कर सके, अर्थात् सुन्दर। मनोहर।

रमणीय—वि०[सं०√रम्+अनीयर्] जिसमे मन रमण करे या कर सके। अर्थात् सुन्दर। मनोहर।

रमणीयता—स्त्री०[सं० रमणीय+तल्+टाप्]१ रमणीय होने की अवस्था, धर्म या भाव। २ सुदरता। ३ साहित्य-दर्पण के अनुसार साहित्यिक कृति या रचना का वह माधुर्य जो सब अवस्थाओ मे बना रहे या क्षण-क्षण मे नवीन रूप धारण किया करे।

रमता—वि०[हिं० रमना=घूमना फिरना] जो एक जगह जमकर न रहे बल्कि बराबर इधर-उधर रमण करता हो। घूमता-फिरता। जैसे—रमता जोगी।

रमति—पु०[सं०√रम्+अतिच्] १ नायक। २ स्वर्ग। ३ कामदेव। ४ काल। ५ कौआ।

रमदी†—पु०[हिं० राम+सं० आद्य] एक प्रकार का जडहन जो अगहन के महीने मे पकता है। इसका चावल कई बरस तक रह सकता है।

रमन*—पु०, वि०=रमण।

रमनक—वि०=रमणक।

रमनकसोरा—पु०[देश०] एक प्रकार की मछली। कँवल-सोरा।

रमना—अ०[सं० रमण] १ रमण करना। २ भोग-विलास या सुख प्राप्ति के लिए कही रहना या ठहरना। मन लगने के कारण कही ठहरना या रहना। ३ रति-क्रीडा या सभोग करना। ४ आनद या मौज करना। मजा लेना। ५ किसी चीज के अन्दर अच्छी तरह भरा हुआ या व्याप्त होना। ६ किसी काम, बात या व्यक्ति मे अनुरक्त या लीन होना। ७ किसी के आस-पास घूमना या चक्कर लगाना। ८ चुपके मे चल देना। गायब या चपत होना।
सयो० क्रि०—जाना।—देना।
९ आनदपूर्वक घूमना-फिरना। विहार करना।
पुं० [सं० रमण] १ चरागाह। चरी। २ वह घेरा जिसमे घूमने-फिरने के लिए पशुओ को खुला छोडा जाता है। ३ उपवन। ४ कोई सुन्दर या रमणीक स्थान।

रमनी*—स्त्री०=रमणी।

रमनीक*—वि० =रमणीक।

रमनीय*—वि०=रमणीय।

रमल—पु०[अ०] १ भविष्यत् घटनाओ के सबध मे पासे की बिंदियों की गणना आदि के आधार पर किया जानेवाला कथन। २ वह विद्या जिसके

द्वारा उक्त कथन किया जाता है। (यह फलित ज्योतिष का एक प्रकार है।)

रमा—स्त्री०[सं०√रम्+णिच्+अच्+टाप] लक्ष्मी।

रमा-कांत—पुं०[ष० त०] विष्णु।

रमाधव—पुं०[ष० त०] विष्णु।

रमा-नरेश* —पुं०[हिं० रमा+नरेश=पति] विष्णु।

रमाना—स०[हिं० रमना का स० रूप] १ रमण कराना। २. अनुरंजित करना। अनुरक्त बनाना। मोहित करना। लुभाना। ३ अनुरक्त करके अपने अनुकूल बनाना। ४ अनुरक्त करके अपने पास रोक रखना। ५. किसी के साथ जोड़ना या लगाना। संयुक्त करना। जैसे—किसी काम मे मन रमाना। ६ किसी काम या बात का अनुष्ठान आरंभ करना। जैसे—रास रमाना=रास की व्यवस्था करना। ७. अपने अंग या शरीर मे पोतना या लगाना। जैसे—शरीर मे भभूत रमाना।

रमा-निवास—पु०[हिं० रमा+निवास] लक्ष्मीपति विष्णु।

रमा-रमण—पुं०[ष० त०] विष्णु।

रमाली—पु०[फा० रूमाली] एक तरह का बढ़िया पतला चावल।

रमा-बीज—पु०[ष० त०] एक प्रकार का तांत्रिक मत्र जिसे लक्ष्मीबीज भी कहते हैं।

रमा-बेष्ट—पु०[ष० त०]श्रीवास चदन जिससे तारपीन नामक तेल निकलता है।

रमास—पु०=रवाँस (फली और दाने)।

रमित*—भू० कृ० [हिं० रमना] लुभाया हुआ। मुग्ध।

रमी—स्त्री०[मलाय०] एक प्रकार की घास।

स्त्री०[अं०] एक प्रकार का ताश का खेल।

रमूज—स्त्री०[अ० रम्ज का बहु०] १ कटाक्ष। २. इशारा। सकेत ३ कोई ऐसी गूढ़ बात जो सहज मे न समझी जा सकती हो। गंभीर विषय। ४ पहेली। ५. श्लिष्ट कथन या बात। श्लेष। ६ भेद या रहस्य की बात।

रमेश—पु०[रमा-ईश, ष० त०] रमा के पति, विष्णु।

रमेश्वर—पु०[रमा-ईश्वर, ष० त०] विष्णु।

रमेसर†—पु०=रामेश्वर।

रमेसरी—स्त्री०[हिं० रामेसर] लक्ष्मी। उदा०—पाँचई तेरासि दखिन रमेसरी।—जायसी।

रमैती—स्त्री०[देश०] १ किसानो की एक रीति जिसमे एक कृषक आवश्यकता पडने पर दूसरे के खेत मे काम करता है और उसके बदले में वह भी उसके खेत में काम कर देता है। इसे पूर्व में गैठ और अवध के उत्तरीय भागों मे हँड़ कहते हैं।

क्रि० प्र०—देना।—लगाना।

२ वह नफरी या काम का दिन जो इस प्रकार कार्य करने में लगे।

रमैनी—स्त्री०[हिं० रामायण] कबीरदास के बीजक का एक भाग जिसमे दोहे और चौपाइयाँ हैं।

रमैया—पुं०[हिं० राम+ऐया (प्रत्य०)] १. राम। २. ईश्वर।

रम्ज—स्त्री०[अ०] [बहु० रमूज] १. आँख भौंह आदि से किया जानेवाला इशारा। सकेत। २. भेद। रहस्य।

रम्माल—पुं०[अ०] रमल विद्या का ज्ञाता।

रम्य—वि०[सं०√रम्+यत्] [स्त्री० रम्या] १ जिसमे मन रमण करता या कर सकता हो। रमणीय। २. मनोहर। सुंदर। रमणीक।

पुं०१. चंपा का पेड़। २. अगस्त का पेड़। ३. परवल की जड़। ४. पुरुष का वीर्य। शुक्र। ५ वायु के सात भेदो मे से एक।

रम्यक—पु०[सं० रम्य+कन्] १. जंबूद्वीप का एक खंड। (पुराण) २. महानिंब। बकायन।

रम्य-पुष्प—पु०[ब० स०] सेमल का पेड़।

रम्य-फल—पु०[ब० स०] कुचला।

रम्य-श्री—पु०[ब० स०] विष्णु।

रम्य-सानु—पु०[कर्म० स०] पहाड़ के शिखर पर की समस्त भूमि। प्रस्थ।

रम्या—स्त्री०[स० रम्य+टाप्] १ रात। २ गगा नदी। स्थल-पद्मिनी। ४. महेन्द्र-वारुणी। इद्रायन। ५ लक्षणा नामक कंद। ६ मेरु की एक कन्या जो रम्य को ब्याही थी। ७ सगीत मे एक प्रकार की रागिनी। ७ संगीत मे, धैवत स्वर की तीन श्रुतियों में से अतिम श्रुति का नाम।

रम्यामली—स्त्री०[स० रम्या-आमली, कर्म० स०] भुँई आँवला।

रम्हाना—अ०=रँभाना।

रय—पु०[स०√रय्(गतौ)+घ] १ वेग। तेजी। २ प्रवाह। बहाव। ३ ऐल के ६ पुत्रो मे से एक।

† पुं०=रज(धूल)।

रयणपत†—पु० [सं० रजनीपति] चद्रमा। (डिं०)

रयणि†—स्त्री० [स० रजनी] रात। (डिं०)

रयन—स्त्री०=रयनि।

रयना—स० [स० रंजन] १ रग से भिगोना। सराबोर करना। २ अनुरक्त करना।

अ० १ रँगा जाना। रजित होना।२. किसी के प्रेम मे अनुरक्त होना। ३ किसी से सयुक्त होना। मिलना।

रयनि*—स्त्री०[सं० रजनी, प्रा० रयणी] रात्रि।

रया—स्त्री०[अ०] १ लोगो को धोखे मे रखने के लिए बनाया हुआ बाहरी रूप। दिखावा। बनावट। २ धूर्तता। मक्कारी।

रयाकार—वि०[अ०+फा०] [भाव० रयाकारी] १. झूठा या दिखौआ बाहरी रूप बनानेवाला। आडंबरी। २. धूर्त। मक्कार।

रयासत†—स्त्री०=रियासत।

रय्यत†—स्त्री०[अ० रइयत] प्रजा। रिआया।

ररंकार—पु०[स० रकार] रकार की ध्वनि।

रर*†—स्त्री०[हिं० ररना] ररने की क्रिया या भाव। रट। रटन।

ररक†—स्त्री०=रड़क।

ररकना†—अ०=रड़कना।

ररना†—अ०[प्रा० रड=खिसकना] १ अपनी जगह से खिसक कर नीचे आना। २. दीन भाव से प्रार्थना या याचना करते हुए रोना। ३ विलाप करना। रोना। उदा०—ररि दूबरि भइ टेक बिहूनी।—जायसी।

† स०=रटना।

ररिहा†—वि०[हिं० ररना+हा (प्रत्य०)] ररने या गिड़गिड़ानेवाला। पु० बहुत ही गिड़गिड़ाते हुए पीछे पड़ जानेवाला। भिखमंगा या याचक। पु०=ररुआ (उल्लू की जाति का पक्षी)।

ररीं—वि०[हि० रार=झगड़ा] १ रार अर्थात् झगड़ा करनेवाला। झगड़ालू। २ अधम। नीच।
पु०=ररिहा।

रलना†—अ०[सं० ललन=लुब्ध होना] १. किसी चीज का दूसरी चीज मे अच्छी तरह से घुल-मिल जाना। जैसे—दूध मे चीनी रलना। २. व्यक्तियो आदि का किसी भीड़, दल आदि मे पहुँचना तथा मिलना। सम्मिलित होना। जैसे—दो दलो का रलना।
पद—**रलना-मिलना**।

रल-मिल—स्त्री० [हि० रलना+मिलना] १ रलने-मिलने की क्रिया या भाव। २ सम्मिश्रण। मिलावट।

रलाना*†—स० [हि० रलना का सक० रूप] १. एक चीज को दूसरी चीज मे मिलाना। २ युक्त करना।

रलिका†—स्त्री०=रली।

रला-मिला—वि०[हि० रलना-मिलना] [स्त्री० रली-मिली] १ जिसमे कई चीजो का मेल या मिश्रण हो। २ जिसका किसी से घनिष्ठ सम्बन्ध हो। ३. मिला-जुला मिश्रित।

रली—स्त्री० [स०ललन=केलि, क्रीडा] १ रलने अर्थात् मिलने की क्रिया दशा या भाव। २ विहार। क्रीडा। ३ आनन्द। प्रसन्नता। हर्ष।
पद—**रंग-रली**। (दे०)
स्त्री०[?] चेना नामक कदन्न।

रल्ल*—पु०=रेला।

रल्लक—पु०[स०√रम्+क्विप्, म-लोप, तुक्, रत्√ला+ क; रल्ल+कन्] १. एक प्रकार का मृग। २. कबल।

रव—पुं० [सं०√रु(ध्वनि)+अप्] १ आवाज। शब्द। २ कुछ देर तक निरन्तर होता रहनेवाला जोर का शब्द। २. गुल। शोर। हल्ला।
† पु०=रवि(सूर्य)।
† स्त्री०=रौ (गति)।

रवक†—पु०[?] एरड या रेंड का वृक्ष।

रवकना—अ०[हि० रमना=चलना] १ तेजी से आगे बढ़ना। २ कोई चीज लेने के लिए उस पर झपटना। ३ उछलना।

रवण—पुं०[स०√रु(ध्वनि)+युच्] १ कांसा नामक धातु। २ कोयल। ३ ऊँट। ४ विदूषक। ५ [√रु+ल्युट्—अन]
वि०१. रव अर्थात्-शब्द करता हुआ। २ तपा हुआ। गरम। ३ अस्थिर। चंचल।

रवण-रेती—स्त्री० =रमण-रेती।

रवताई—स्त्री०[हि०रावत+आई (प्रत्य०)]१ रावत होने की अवस्था या भाव। २ रावत का कर्तव्य, गुण या पद। ३ प्रभुत्व। स्वामित्व।

रवथ—पु०[स०√रु+अथ] कोयल।

रवन*—पु०[सं० रमण] पति। स्वामी।
वि० रमण करनेवाला।

रवना*—अ०[स० रव+हि० ना (प्रत्य०)] १ शब्द होना। किसी शब्द या नाम से प्रसिद्ध होना। ३ बोला या पुकारा जाना।
अ०[स० रमण] १ रमण करना। २ कौतुक या क्रीड़ा करना। ३ किसी के साथ अच्छी तरह मिलना-जुलना। उदा०—राम-नाम रवि रहिऔ।—कबीर

रवनि, रवनी*—स्त्री०=रमणी।

रवन्ना—पुं०[फा० रवाना] घरेलू काम-काज करनेवाला तथा बाजार से सौदा-सुल्फ लाने वाला नौकर। जैसे—एक मेरे घर अन्ना; दूसरे रवन्ना। २. वह कागज जिस-पर रवाना किये हुए माल का ब्योरा होता है। ३. कोई चीज कही ने ले जाने का अनुमति पत्र। जैसे—चुंगी चुका देने पर मिलनेवाला रवन्ना।
वि०=रवाना।

रवाँ—वि०[फा०] १ बहता हुआ। प्रवाहित। २. जो चल रहा हो। जारी। प्रचलित। ३. (कार्य) जिसका अच्छी तरह अभ्यास हो गया हो, और जिसके निर्वाह या सम्पादन मे कोई कठिनता न होती हो। ४. अभ्यस्त। जैसे—रवाँ हाथ। ५. (शस्त्र) जिस की धार चोखी या तेज हो और इसी लिए जो ठीक और पूरा काम देता हो। ५. दे० 'रवाना'।
स्त्री० जान। रूह।

रवाँस—पु०[देश०] बोडे की जाति का एक पौधा और उसकी फली जिसके बीजो की तरकारी बनती है।

रवा—पु०[स० रज, प्रा० रअ=धूल] [स्त्री० अल्पा० रई] १. किसी चीज का बहुत छोटा टुकडा। कण। दाना। रेजा। जैसे—चाँदी का रवा, मिस्री का रवा। २. किसी चीज के वे कोणाकार या लबोतरे टुकडे जो नमी निकल जाने पर प्राय आपसे आप बन जाते हैं। केलास। (क्रिस्टल)
पद—**रवा भर**=बहुत थोड़ा। जरा-सा।
३. सूजी जिसके कण उक्त प्रकार के होते हैं। ४. बारूद का कण या दाना। ५. घुंघरू मे बजनेवाला कण या दाना।
वि०[फा०] १ उचित। वाजिब। २. प्रचलित।

रवाज—स्त्री०[फा०] १. तरीका। दस्तूर। २. समाज मे प्रचलित या मान्य कोई परपरा या रूढ़ि। प्रथा। रीति।
क्रि० प्र०—चलना।—देना।—निकलना।—पाना।—होना।

रवादार—वि०[फा०] [भाव० रवादारी] १ उचित प्रकार का व्यवहार करने तथा सबध या लगाव रखनेवाला। उदारचेता। २. शुभ-चिंतक। हितैषी। ३. सहनशील।
† वि०=रवेदार।

रवादारी—स्त्री०[फा०] १. रवादार होने की अवस्था या भाव। २. इस बात का ख्याल कि किसी को कष्ट या दुःख न दिया जाय। ३ उदारता। ४ सहृदयता।

रवानगी—स्त्री०[फा०] रवाना होने की क्रिया या भाव। प्रस्थान। चालान।

रवाना—वि०[फा० रवान.] १. जिसने कही से प्रस्थान किया हो। जो कही से चल पड़ा हो। प्रस्थित। २. कहीं से किसी के पास भेजा हुआ।

रवानी—स्त्री० [फा०] १. रवाँ होने की अवस्था या भाव। २. बहाव। ३. ऐसी गति जिसमे अटक आदि न होती हो। जैसे—पढ़ने या बोलने मे रवानी होना। ४. प्रस्थान। रवानगी। (क्व०)

रवाब—पुं०=रबाब।

रवाबिया—पुं०[देश०] लाल बलुआ पत्थर।
पुं०=रबाबिया।

रवायत—स्त्री०[अ०] १. कहानी। किस्सा। २. कहावत।
स्त्री०[अ० रिवायत] १. किसी के मुख से विशेषतः पैगम्बर के मुख से सुनी हुई बात दूसरों से कहना। २ इस प्रकार कही जानेवाली बात। ३. किवदंती। अफवाह। ४. कहावत। ५. किस्सा। कहानी।

रवा-रवी—स्त्री०[फा०] १. जल्दी। शीघ्रता। २. चल-चलाव। ३. भाग-दौड़।

रवासन—पुं०[देश०] एक प्रकार का वृक्ष जिसके बीज और पत्ते ओषधि के काम आते हैं।

रवि—पुं०[सं०√रु+इ] १. सूर्य। २. आक। मदार। ३. अग्नि। ४. नायक। नेता। सरदार। ५. लाल अशोक का पेड़। ६. पुराणानुसार एक आदित्य का नाम। ७ एक प्राचीन पर्वत। ८. धृतराष्ट्र का एक पुत्र।

रवि-उच्च—पु०[स०] किसी ग्रह की कक्षा या भ्रमण-पथ का वह विंदु जो सूर्य से दूरतम पड़ता है। 'रवि-नीच' का विपर्याय। (एफेलियन)

रवि-कर—पुं०[सं० ष० त०] सूर्य की किरण।

रवि-कांत-मणि—पु०[सं० रवि-कान्त, तृ० त०; रविकान्त-मणि, कर्म० स०] सूर्यकांत मणि।

रवि-कुल—पु०[ष० त०] क्षत्रियो का सूर्यवश।

रवि-चक्र—पु०[ष० त०] १. सूर्य का मंडल। २. सूर्य के रथ का चक्र या पहिया। ३. फलित ज्योतिष मे, एक प्रकार का चक्र जो मनुष्य के शरीर के आकार का होता है और जिसमें यथा-स्थान नक्षत्र आदि रख कर बालक के जीवन की शुभ और अशुभ बातो के सम्बन्ध में फल कहा जाता है।

रविज—पु०[स० रवि√जन्(उत्पत्ति)+ड] शनैश्चर, जिसकी उत्पत्ति रवि या सूर्य से मानी जाती है।

रविज-केतु—पु०[सं० कर्म० स०] एक प्रकार के केतु या पुच्छल तारे जिनकी उत्पत्ति सूर्य से मानी गई है।

रविजा—स्त्री०[स० रविज+टाप्] यमुना। कालिंदी।

रवि-जात—पु०[स० प० त०] सूर्य की किरण।
वि० रवि से उत्पन्न।

रवि-तनय—पुं०[ष० त०] १. यमराज। २. शनैश्चर। ३. सुग्रीव। ४. कर्ण। ५. अश्विनी कुमार। ६. सावर्णि मनु। ७. वैवस्वत मनु।

रवि-तनया—स्त्री०[ष० त०] सूर्य की कन्या, यमुना।

रवि-तनुजा—स्त्री०=रवि-तनया (यमुना)।

रवि-दिन—पु०[ष० त०] रविवार।

रवि-नंद, रवि-नंदन—पुं०=रवि-तनय।

रवि-नंदिनी—स्त्री०[ष० त०] यमुना।

रवि-नाथ—पुं०[ब० स०] पद्म। कमल।

रवि-नीच—पु०[सं०] किसी तरह ग्रह की कक्षा या भ्रमण-पथ का वह विंदु जो सूर्य के निकटतम पड़ता है। 'रवि-उच्च' का विपर्याय। (पेरिहीलियन)

रवि-पुत्र—पुं०=रवि-तनय।

रविपूत *—पुं०=रविपुत्र (रवि-तनय)।

रवि-प्रिय—पुं०[ब० स०] १. लाल कमल। २. लाल कनेर। ३. ताँबा। ४. आक। मदार। ५. लकुच या लकुट नामक वृक्ष और उसका फल।

रवि-प्रिया—स्त्री०[ब० स०+टाप्] एक देवी। (पुराण)

रवि-बिंब—पुं०[ष० त०] १. सूर्य का मंडल। २. माणिक्य या मानिक नामक रत्न।

रवि-मंडल—पुं०[ष० त०] वह लाल मंडलाकार बिंब जो सूर्य के चारों ओर दिखाई देता है। रविबिंब।

रवि-मणि—पुं०[मध्य० स०] सूर्यकांत मणि।

रवि-मार्ग—पुं० [सं०] सूर्य के भ्रमण का मार्ग। क्रांतिवृत्त। (ईक्लिप्टिक)

रवि-रत्न—पुं०[मध्य० स०] सूर्यकांत मणि।

रवि-लोचन—पुं०[ब० स०] विष्णु।

रवि-लौह—पु०[मध्य० स०] ताँबा।

रवि-वंश—पुं०[ष० त०] क्षत्रियों का सूर्यकुल।

रवि-वंशी (शिन्)—वि०[स० रविवंश+इनि] सूर्यवंशी।

रवि-बाण—पुं०[सं० उपमित स०] पौराणिक कथाओं में वर्णित वह बाण जिसके चलाने से सूर्य का सा प्रकाश उत्पन्न होता था।

रवि-वार—पुं०[ष० त०] शनिवार और सोमवार के बीच का वार। एतवार।

रवि-वासर—पु० [ष० त०] रविवार।

रविश—स्त्री०[फा०] १. चलने की क्रिया, ढग या भाव। गति। चाल। २ आचार-व्यवहार। ३ तौर-तरीका। रग-ढग। ४. शैली। ५. बगीचों की क्यारियो के बीच मे चलने के लिए बना हुआ छोटा मार्ग। क्रि० प्र०—काटना।—बनाना।

रवि-संक्रांति—स्त्री०[ष० त०] सूर्य का एक राशि में से दूसरी राशि में जाना। सूर्य-संक्रमण। दे० 'संक्रांति'।

रवि-संज्ञक—पुं०[ब० स०, कप्] ताँबा।

रवि-सारथि—पु०[ष०त०] रवि अर्थात्, सूर्य का रथ हाँकनेवाला, अरुण।

रवि-सुंदर—पुं० [सं० उपमित स०] वैद्यक मे एक प्रकार का रस जिसके सेवन से भगदर रोग नष्ट हो जाता है।

रवि-सुअन—पुं०=रविनंदन (रवि-तनय)।

रवि-सुत—पु०=रविनंदन (रवि-तनय)।

रवि-सूनु—पुं०=रविनदन (रवि-तनय)।

रवे-दार—वि०[हिं० रवा+फा० दार] जो रवो के रूप मे हो। जिसमें रवे हों।

रवैया—पु०[फा० रवीयः] १. आचार-व्यवहार। २. चाल-चलन। ३. तौर-तरीका। रंग-ढंग।

रशना—स्त्री० [सं०√अश् (भोजन)+युच्—अन,+टाप्, रशादेश] १. जीभ। रसना। २. रस्सी। ३. करधनी। मेखला।

रशना-कलाप—पुं०[ष० त०] धागे आदि की बनी हुई एक प्रकार की करधनी जो प्राचीन काल में स्त्रियाँ कमर में पहनती थीं।

रशना-गुण—पुं०=रशनाकलाप।

रशनोपमा—स्त्री०=रसनोपमा (अलकार)।

रशाद—पु०[अ०] १. सदाचार। २. सन्मार्ग।

रशीद—वि०[अ०] १. रशाद अर्थात् सन्मार्ग पर चलनेवाला तथा दूसरो को सन्मार्ग पर चलाने वाला। २. गुरु-कृपा से जिसने किसी कला या विद्या मे निपुणता प्राप्त की हो।

रश्क—पुं० [फा०] ईर्ष्याजन्य यह विचार कि जैसा वह है वैसा मुझे भी होना चाहिए, अथवा मैं किसी प्रकार उसके स्थान पर हो जाता।

रश्मि—स्त्री० [स०√अश्+मि, रशादेश] १ किरण। २ पलको परके बाल। बरौनी। ३ घोडे की लगाम। बाग।

रश्मि-कलाप—पु० [ष० त०] मोतियो का वह हार जिसमे ६४ या ५४ लडियाँ हो।

रश्मि-केतु—पु० [मध्य० स०] १ वह केतु या पुच्छल तारा जो कृत्तिका नक्षत्र मे स्थित होकर उदित हो।

रश्मि-चित्रण—पु० [स०] रेडियो-चित्रण।

रश्मि-मापक—पु० [ष० त०] विकिरणमापी।

रश्मि-मुक्—पु० [स० रश्मि√मुच् (छोडना)+क्विप्, उपपद स०] सूर्य।

रष्वन†—पु०=रक्षण।

रस—पु० [स०√रस् (आस्वादन)+अच्] [वि० रसाल, रसिक] १ वनस्पतियो अथवा उनके फूल-पत्तो आदि मे रहनेवाला वह जलीय अश या तरल पदार्थ जो उन्हे कूटने, दबाने, निचोडने आदि पर निकलता या निकल सकता है। (जूस) जैसे—अगूर, ऊख, जामुन आदि का रस। २ वृक्षो के शरीर से निकलने या पोछकर निकाला जानेवाला तरल पदार्थ। निर्यास। मद। (सैप) जैसे—ताड,शाल आदि वृक्षो मे से निकला या निकाला हुआ रस। ३ किसी चीज को उबालने पर निकलनेवाला अथवा तरल सार भाग। जूस। रस। शोरबा। ४ प्राणियो के शरीर मे से निकलनेवाला कोई तरल पदार्थ। जैसे—पसीना, दूध, रक्त आदि।

पद—गो-रस—दूध या उससे बने हुए दही, मक्खन आदि पदार्थ।

५ प्राणियो, विशेषत मनुष्यो के शरीर मे खाद्य पदार्थों के पचहुँने पर उनका पहले-पहल बननेवाला वह तरल रूप, जिसमे आगे चलकर रक्त बनता है। चर्मसार। रक्तसार। रसिका। (वैद्यक मे इसे शरीरस्थ सात धातुओ मे से पहली धातु माना जाता है।) ६ जल। पानी। उदा०—महाराजा किवडिया खोलो,रस की बूदे पडी।—गीत। ७ पानी मे घोला हुआ गुड, चीनी, मिसरी या ऐसी ही और कोई चीज। जैसे—देहात मे किसी के घर जाने पर वह प्राय रस पिलाता है। ८ कोई तरल या द्रव पदार्थ। ९ घोडो, हाथियो आदि का एक रोग जिसमे उनके पैरो मे से जहरीला या दूषित पानी बहता या रसता है। १० किसी पदार्थ का सार भाग। तत्त्व। सत्त। ११ पारा। उदा०—रस मारे रसायन होय। (कहा०) १२ धातुओ आदि को (प्राय पारे की सहायता से) फूँककर तैयार किया हुआ भस्म या रसौषध। जैसे—रस-पर्पटी, रस-माणिक्य, रस-सिंदूर आदि। १३ लासा। लुआब। १४ वीर्य। १५ शिंगरफ। हिंगुल। १६ गध-रस। शिलारस। १७ बोल नामक गध द्रव्य। १८ जहर। विष। १९ पहले खिचाव का शोरा जो बहुत तेज होता और बढिया माना जाता है। २० खाने-पीने की चीज मुँह मे पडने पर उसमे जीभ को होनेवाला अनुभव या मिलनेवाला स्वाद। रसनेद्रिय मे होनेवाली अनुभूति या सवेदन। (फ्लेवर)

विशेष—हमारे यहाँ वैद्यक मे ये छ रस माने गये है,—अम्ल, कटु कषाय, तिक्त, मधुर और लवण।

२१. कविता आदि मे उक्त रसो के आधार पर माना हुआ छ की सख्या का वाचक शब्द। २२. कार्य, विषय, व्यक्ति, आदि के प्रति होनेवाला अनुराग। प्रीति। प्रेम। मुहब्बत।

पद—रस-रंग=रस-रीति।

मुहा०—रस खोटा होना=आपस के प्रेम-पूर्ण व्यवहार मे अन्तर पडना।

२३. यौवन काल मे मनुष्य के मन में अनुराग या प्रेम का होनेवाला सचार।

मुहा०—रस भीजना या भीनना=(क) मनुष्य मे यौवन का आरभ होना (ख) मन मे किसी के प्रति अनुराग या प्रेम का सचार होना। (ग) किसी पदार्थ का ऐसा समय आना कि उससे पूरा आनंद या सुख मिल सके।

२४. दार्शनिक क्षेत्र मे, इद्रियार्थो के साथ इद्रियो का सयोग होने पर मन या आत्मा को प्राप्त होनेवाला आनद या सुख। २५.लोक-व्यवहार मे,किसी काम या बात से किसी प्रकार का सबध होने पर उससे मिलनेवाला आनद या उसके फल-स्वरूप उत्पन्न होनेवाली रुचि। मजा जैसे—कोई किसी रस मे मगन है तो कोई किसी रस मे। उदा०—राम पुनीत विषय रस रुखे। लोलुप भूप भोग के भूखे।—तुलसी २६ उपनिषदो के अनुसार आनद-स्वरूप ब्रह्म। २७ मन की उमग या तरग। मौज। २८ मन का कोई आवेग। जोश। मनोवेग। २९ किसी काम या बात मे रहने या होनेवाला कोई प्रिय अथवा सुखद तत्त्व। जैसे—उसके गले (या गाने) मे बहुत रस है। ३० किसी कार्य या व्यापार के प्रति होनेवाली कुतूहलमूलक प्रवृत्ति या उसस होनेवाली सुखद अनुभूति। दिलचस्पी। (इन्टरेस्ट) जैसे—(क) इस पुस्तक मे हमे कोई रस नही मिला। (ख) वे अब सार्वजनिक कार्यों मे विशेष रस लेने लगे है। ३१ साहित्यिक क्षेत्र मे (क) तात्त्विक दृष्टि से कथानको, काव्यो, नाटको आदि मे रहनेवाला वह तत्त्व जो अनुराग, करुणा,क्रोध, प्रीति, रति आदि मनोभाव को जाग्रत, प्रबल तथा सक्रिय करता है। यह तत्त्व कवियो, लेखको आदि की प्रतिभा, रचना-कौशल और उपयुक्त शब्द-योजना तथा वाक्य-विन्यास से उत्पन्न होता है। (ख) भारत के प्राचीन साहित्यकारो के मत से उक्त तत्त्व का वह विशिष्ट स्वरूप जिसकी निष्पत्ति, अनुभाव, विभाव और सचारी के योग से होती है और जो सहृदय पाठको या दर्शको के मन मे रहनेवाले स्थायी भावो को परिपक्व, पुष्ट और जाग्रत या व्यक्त करके उत्कृष्ट या परम सीमा तक पहुँचाता और पाठको या दर्शको को प्रसन्न तथा सतुष्ट करके उनके साथ एकात्मता स्थापित करता है। (सेन्टिमेन्ट) इसके ये नौ प्रकार या भेद कहे गये है—अद्भुत, करुण, भयानक, रौद्र, वीभत्स, वीर, शात, शृंगार और हास्य।

विशेष—प्रत्येक रस के ये चार अग कहे गये है—स्थायी भाव, विभाव (आलबन और उद्दीपन), अनुभाव और सचारी भाव।

३२ कविता मे उक्त नौ रसो के आधार पर नौ की सख्या का सूचक शब्द। ३३ अनुराग, दया आदि कोमल वृत्तियो के वश मे रहने की अवस्था या भाव। उदा०—राजत अग रस विरस अति, सरस-सरस रस भेद।—केशव। ३४ काम-क्रीडा। केलि। रति। विहार। ३५. काम-वासना। ३६ गुण, तत्त्व, रूप, विशेषता आदि के विचार से होने वाला वर्ग या विभाग। तरह। प्रकार। जैसे—एक रस, सम-रस। उदा०—(क) एक ही रस दुनी न हरब मोक सोसति सहति।—तुलसी। (ख) सम-रस

समर-सकोच-बस, विबस न ठिक ठहराइ।—बिहारी। ३७ ढग। तर्ज। उदा०—तिनका बयार के बस ज्यों भावै त्यों उड़ाइ लै जाइ अपने रस।—स्वामी हरिदास। ३८. गुण। सिफत। ३९. केशव के अनुसार रगण और सगण की सज्ञा।

†स्त्री०[?]एक प्रकार की भेड़ जो गिलगित्त के पामीर आदि उत्तरी प्रदेशो मे पाई जाती है।

रसक—पुं०[स० रस+कन्] १. फिटकरी। २. संगेबसरी। खपरिया।

†पुं०=रशक।

रसक-कारवेल्लक—पु०[सं० कर्म० स०] पतला खपरिया। सगेबसरी।

रसक-दर्दुर—पुं [सं० कर्म० स०] दलदार मोटा खपरिया या संगेबसरी।

रस-कपूर—पु०[स० रसकर्पूर] एक प्रसिद्ध उपधातु जिसमे पारे का भी कुछ अंश होता है और जो दवा के काम मे आता है। यह प्रायः ईंगुर के समान होता है; इसीलिए कही कही सफेद शिगरफ भी कहलाता है। (कैलोमेल)

रस-कर्म—पु० [ष० त०] पारे की सहायता से रस आदि तैयार करने की क्रिया। (वैद्यक)

रस-कलानिधि—पु० [स० त०] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

रस-कुल्या—स्त्री०[ष० त०] कुशद्वीप की एक नदी। (पुराण)

रस-केलि—स्त्री०[मध्य० स०] १ प्रेमी और प्रेमिका की क्रीडा या विहार। २ हँसी-दिल्लगी। मजाक।

रसकोरा—पु०[हिं० रस+कौर] रसगुल्ला नाम की मिठाई।

रसखीर—स्त्री०[हिं० रस+खीर] गुड या चीनी के शरबत अथवा ऊख के रस मे पकाए हुए चावल। मीठा भात।

रसगंध—पु०=रसगधक।

रसगंधक—पु०[स० रस-गध, ब० स०+कन्] १. गधक। २ रसाजन। रसौत ३ बोल नामक गन्ध द्रव्य। ४ ईंगुर। शिगरफ।

रसगत-ज्वर—पु०[स० रस-गत, द्वि० त०, रसगत-ज्वर, कर्म० स०]वैद्यक के अनुसार ऐसा ज्वर जिसके कीटाणु या विष शरीर की रस नामक धातु तक मे पहुँचकर समा गया हो।

रस-गर्भ—पु०[ब० स०] १. रसौत। रसाजन २. ईंगुर। शिगरफ।

रस-गुनी†—पु० [स० रस+गुणी] काव्य, सगीत आदि का अच्छा ज्ञाता। रसज्ञ।

रस-गुल्ला—पु०[हिं० रस+गोला] छेने की एक प्रकार की बँगला मिठाई जो गुलाब जामुन के समान गोल और शीरे मे पगी हुई होती है।

रस-ग्रह—पु०[सं० रस√ग्रह (ग्रहण)+अच्] जीभ। रसना।

रस-घन—पु०[स० ब० स०] आनंदघन, श्रीकृष्णचंद्र।

वि० १. बहुत अधिक रसवाला। २. स्वादिष्ट।

रसघ्न—पुं०[सं० रस√हन् (हिंसा)+टक्] सुहागा।

रसचंद्र—पु०[स०] सगीत मे बिलावल ठाठ का एक राग।

रसछन्ना—पु० [हिं० रस+छन्ना=छानने की चीज] [स्त्री० अल्पा० रसछन्नी] ऊख का रस छानने की एक प्रकार की चलनी।

रसज—पुं०[सं० रस√जन् (उत्पत्ति)+ड] १. गुड। २. रसौत। ३. शराब की तलछट।

रस-जात—पुं०[सं० पं० त०] रसौत।

रसज्ञ—वि०[सं० रस√ज्ञा (जानना)+क] [भाव० रसज्ञता] १. वह जो रस का ज्ञाता हो। रस जाननेवाला। २. काव्य के रस का ज्ञाता। काव्य-मर्मज्ञ। ३. रासायनिक क्रियाएँ या प्रयोग करनेवाला। रसायनी। ४ किसी विषय का अच्छा जानकार। निपुण।

रसज्ञता—स्त्री०[स० रसज्ञ+तल+टाप्] रसज्ञ होने की अवस्था, धर्म या भाव।

रसज्ञा—स्त्री०[सं० रसज्ञ+टाप्] १. जीभ। २. गगा।

रस-ज्येष्ठ—पुं० [स० स० त०] १. मधुर या मीठा रस। २. साहित्य मे शृंगार रस।

रसडली—स्त्री० [हिं० रस+डली] दक्षिण भारत मे होनेवाला एक प्रकार का गन्ना जिसका रंग पीलापन लिए हुए हरा होता है। रसवली।

रसत†—स्त्री०=रसद।

रस-तन्मात्रा—स्त्री०[ष० त०] जल की तन्मात्रा।

वि० दे० 'तन्मात्र'।

रसता—स्त्री०[स० रस+तल+टाप्] रस का धर्म या भाव। रसत्व।

रस-तेज(स्)—पु०[ब० स०] खून। रक्त। लहू।

रस-त्याग—पु०[ष०त०] मीठी अथवा रसपूर्ण वस्तुओ का किया जानेवाला त्याग। (जैन)

रसत्व—पु०[सं० रस+त्व] रस का धर्म या भाव। रसता।

रसद—वि०[सं० रस√दा (देना)+क]१. रस देनेवाला। २. स्वादिष्ट। ३. आनन्द तथा सुख देनेवाला।

पु०१ चिकित्सक। २ मध्ययुग मे वह भेदिया जो किसी को विष आदि खिलाता था।

स्त्री०[अ०] १. अश। हिस्सा। २. बाँट। ३. खाद्य सामग्री। विशेषत: कच्चा अनाज जो अभी पकाया जाने को हो। ४ वे खाद्य पदार्थ जो यात्री, सैनिक, आदि प्रवास-काल मे अपने साथ ले जाते है।

रसदा—स्त्री०[सं० रसद+टाप्] सफेद निर्गुंडी।

रसदार—वि०[स० रस+फा० दार (प्रत्य०)]१. जिसमे रस अर्थात् जूस हो। जैसे—रसदार आम। २. जिसमे मिठास हो। जैसे—रसदार बात। ३ स्वादिष्ट। ४ रसेदार।

रस-दारु—पु०[मध्य० स०] वृक्षो में वह ताजी बनी हुई लकडी जो उसकी हीर की लकडी और छाल के बीच मे रहती है। (सैप-उड)

रस-दालिका—स्त्री०[ष० त०] ऊख। गन्ना।

रस-द्रव्य—पु०[मध्य० स०] वह द्रव्य या पदार्थ जो रासायनिक प्रक्रियाओ से बनता या उनमे काम आता हो। (केमिकल)

रसद्रावी (विन्)—पु०[स० रस√द्रु (गति)+णिच्+णिनि, उप०स०] मीठा जबीरी नीबू।

रस-धातु—पु०[स० मध्य० स०]१ पारा। २. शरीर मे बननेवाली रस नामक धातु। (दे० 'रस')

रस-धेनु—स्त्री०[मध्य० स०] दान के उद्देश्य से गुड की भेलियो आदि से बनाई जानेवाली गाय की मूर्ति।

रसन—पु०[स०√रस् (आस्वादन)+ल्युट्—अन] १ खाने-पीने की चीज का स्वाद लेना। चखना। २. ध्वनि। ३. जबान। जीभ। ४. शरीर के अन्दर का कफ। बलगम।

वि० पसीना लानेवाला (उपचार या औषध)।
†पु०=रशना (रस्सा)।

रसना—स्त्री०[स०√रस +णिच्+युच्—अन,+टाप्]१.जीभ। जबान। उदा०—सोइ रसना जो हरिगुन गावे।
मुहा०—रसना खोलना=कुछ समय तक चुप रहने के बाद बातें करना आरंभ करना। बोलने लगना। **रसना तालू से लगाना**=कुछ भी उत्तर न देना अथवा न बोलना।
२ न्याय के अनुसार ऐसा रस जिसका अनुभव रसना या जीभ से किया जाता है। स्वाद। ३ नागदौनी। रासना। ४. गध-भद्रा नाम की लता। ५ रस्सी। रज्जु। ६. करधनी। मेखला। ७ लगाम। ८ चन्द्रहार। ९ बौद्ध हठयोग मे पिंगला नाड़ी की सज्ञा।
अ०[हिं० रस+ना (प्रत्य०)]१. किसी चीज मे से कोई तरल या द्रव अश धीरे-धीरे बहना या टपकना। जैसे—छत मे से पानी रसना।
पद—रस रस या रसे रसे=धीरे धीरे।
२ गीले होने की दशा मे, अन्दर का द्रव पदार्थ धीरे-धीरे निकलकर ऊपरी तल पर आना। जैसे—चन्द्रमा के सामने चन्द्रकांत मणि रसने लगती है। ३ रसमग्न होना। प्रफुल्ल होना। ४. अनुराग या प्रेम से युक्त होना। ५ किसी प्रकार के रस मे मग्न होना। आनन्द या सुख मे लीन होना। ६ किसी चीज या बात से अच्छी तरह युक्त होना।

रस-नाथ—पु०[ष० त०] पारा।

रसना-पद—पु०[ष० त०] नितब। चूतड़।

रस-नायक—पु०[ष० त०] १ शिव। २. पारा।

रसना-रव—पु०[ब० स०] पक्षी, जो अपनी रसना से शब्द करते है।

रसनीय—वि०[स०√रस्+अनीयर]१ जिसका रस या स्वाद लिया जा सके। चखे जाने या स्वाद लेने के योग्य। २ स्वादिष्ट।

रसनेंद्रिय—स्त्री०[स० रसना-इंद्रिय, कर्म०स०]रस ग्रहण करने की इद्रिय, जीभ। रसना

रसनेत्रिका—स्त्री० [स० रस-नेत्र, उपमित स०, +ठन्—इक, टाप्] मैनसिल (खनिज द्रव्य)।

रसनेष्ट—पु० [स० रसना-इष्ट, ष० त०] ऊख। गन्ना।

रसनोपमा— स्त्री०[स० रसना-उपमा, उपमित स०] उपमा अलकार का एक भेद जिसमें पहले उपमेय को किसी दूसरे उपमेय का उपमान, दूसरे उपमेय को तीसरे उपमेय का उपमान और इसी प्रकार उत्तरोत्तर उपमेय को उपमान बनाया जाता है।

रसपति—पु०[स० ष० त०]१ चन्द्रमा। २ पृथ्वी का स्वामी अर्थात् राजा। ३. पारा। ४ साहित्य का श्रृंगार रस।

रस-पर्पटी—स्त्री०[सं० मध्य० स०] पारे को शोधकर बनाया जानेवाला एक प्रकार का रस। (वैद्यक)

रस-पाकज—पु०[स० रस-पाक, ष० त०,√जन् (उत्पत्ति)+ड]१ गुड। २ चीनी।

रस-पाचक—पु०[स० ष० त०] मधुर भोजन बनानेवाला। रसोइया।

रस-पूतिका—स्त्री०[स० ब० स०, कप्,+टाप्]मालकगनी। २ शतावर।

रस-प्रबंध—पु०[स० मध्य० स०]१ ऐसी कविता जिसमे एक ही विषय बहुत से परस्पर असबद्ध पद्यो मे कहा गया हो। २ नाटक। ३. प्रबध काव्य।

रस-फल—पु०[स० ब० स०]१ नारियल का वृक्ष। २. आँवला।

रस-बंधन—पु०[स०ष० त०]शरीर के अंतर्गत नाड़ी के एक अंश का नाम। (वैद्यक)

रस-बत्ती—स्त्री०[हिं० रस? +बत्ती] एक प्रकार का पलीता जिसके व्यवहार से पुराने ढग की तोपे और बदूकें दागी जाती थीं।

रसबरी—स्त्री०=रसभरी।

रसभरी—स्त्री०[अ० रैस्पबेरी] १ एक प्रकार का पौधा जिसमें खट-मीठे छोटे गोल फल लगते है। २. उक्त पौधे का फल। मकोय।

रसभव—पु०[स० रस√भू (होना)+अच्]रक्त। खून। लहू।

रस-भस्म—पु०[स० ष० त०] पारे का भस्म।

रस भीना—वि०[हिं० रस+भीनना] [स्त्री० रसभीनी]१. आनन्द में मग्न। २ (व्यजन) आदि जो न तो अधिक रसेदार ही हो और न बिल्कुल सूखा ही। थोड़े रसावाला।

रस-भेद—पु०[स० ष० त०] वैद्यक मे एक प्रकार का औषध जो पारे से बनता है।

रसभेदी (दिन्)—वि० [स० रसभेद+इनि](फल) जो अधिक पक और फलत जूस या रस के अधिक बढ जाने के कारण फट गया हो।

रस-मंजरी—स्त्री० [स० मध्य० स०] सगीत मे कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

रसमंडूर—पु०[स० मध्य० स०] वैद्यक मे एक प्रकार का रसौषध जो हर्रे, गधक और मडूर से बनता है और जिसका व्यवहार शूल रोग मे होता है।

रसम—स्त्री०=रस्म।

रस-मर्द्दन—पु०[स० ष० त०] पारे को भस्म करने या मारने की प्रक्रिया या भाव। (वैद्यक)

रस-मल—पु०[स०ष० त०]शरीर से निकलनेवाला किसी प्रकार का मल। जैसे—विष्ठा, मूत्र, पसीना, थूक आदि।

रस-मसा—वि०[हिं० रस+मसा (अनु०)]१. आर्द्र। गीला। २ पसीने से तर और थका हुआ। ३ आनन्दमग्न। ४ किसी के प्रेम में पूरी तरह से मग्न। ५. आनन्द देनेवाला। सुखद। जैसे—रस-मसे दिन।

रस-माणिक्य—पु०[स०स०त०]वैद्यक मे एक प्रकार का औषध जो हरताल से बनता है और जो कुष्ठ आदि रोगो मे उपकारी माना जाता है।

रस-माता*—स्त्री०[स० रस-मातृका] जीभ। रसना। जबान। (डिं०) वि० रस मे मत्त या मस्त।

रस-मातृका—स्त्री०[स० ष० त०] जीभ। जबान।

रस-मारण—पु०[स० ष० त०] पारा मारने अर्थात् शुद्ध करके उसका भस्म बनाने की क्रिया या भाव।

रसमाला—स्त्री०[स० ष० त०] शिलारस नामक सुगधित द्रव्य।

रसमि*—स्त्री०[स० रश्मि]१ किरण। २. चमक। दीप्ति। ३ प्रकाश।

रसमुंडी—स्त्री०[हिं० रस +मुंडी ?]एक प्रकार की बँगला मिठाई।

रसमैत्री—स्त्री०[ष० त०] १ दो या अधिक रसों का मिश्रण। २. साहित्य में रसो मे होनेवाला पारस्परिक मेल और सामजस्य। इसका विपर्याय 'रस-विरोध' है। ३. खाद्य पदार्थोंकेसबध मेदो ऐसे रसों का मेल जिनसे स्वाद मे वृद्धि हो। जैसे—तीता-नमकीन, खट-मीठा आदि।

रस-योग—पु०[स० ष० त०] वैद्यक मे एक प्रकार का औषध।

रस-रंग—पुं०[हिं०]१. प्रेम के द्वारा, उत्पन्न या प्राप्त होनेवाला आनन्द या सुख। मुहब्बत का मजा। २. प्रेम के प्रसंग मे की जानेवाली क्रीडा। केलि।

रस-रंजनी—स्त्री०[ष० त०] संगीत में बिलावल ठाठ की एक रागिनी।

रसरा†—पुं०[स्त्री० रसरी]=रस्सा।

रस-राज—पुं०[सं० ष० त०]१. पारद। पारा। २. साहित्य का शृंगार रस। ३. रसांजन। रसौत। ४ वैद्यक में एक प्रकार का औषध जो तांबे के भस्म, गंधक और पारे के योग से बनता है और जिसका व्यवहार तिल्ली, बरवट आदि में होता है।

रसराय*—पुं० =रसराज।

रसरी†—स्त्री० रसरा का स्त्री० अल्पा०।

रस-रीति—स्त्री० [सं० ष० त०] प्रेमी या प्रेमिका से बरताव करने का अच्छा ढग।

रसरैना—वि० [सं०रस+रमणी] [स्त्री० रस-रैनी] रसिक। उदा०—अति प्रगलभ बैनी रस-रैनी।—नंददास।

रसल—वि०[सं० रस√ला (लेना)+क] रस से भरा हुआ। रसपूर्ण। रसवाला।

रसलेह—पु०[स० रस√लिह (आस्वादन)+अच्]१ पारा। २. रसांजन। रसौत।

रसवंत—पु०[सं० रसवत्] रसिक। रसिया।
वि० रस से भरा हुआ। रसदार।

रसवंती—स्त्री०=रसौत (रसांजन)।

रसवट†—पु०=रसवर (नाव की संधियों में भरने का मसाला)।

रसवत्—वि०[सं० रस+मतुप्] [स्त्री० रसवती] जिसमें रस हो। रसवाला।
पुं० साहित्य मे एक प्रकार का अलकार जो उस समय माना जाता है, जब एक रस किसी दूसरे रस अथवा उसके भाव, रसाभास, भावाभास आदि का अंग बनकर आता है। जैसे—युद्ध में निहत वीरपति का हाथ पकड़कर पत्नी का यह कहते हुए विलाप करना —यह वही हाथ है जो प्रेमपूर्वक मुझे आलिंगन करता था। यहाँ शृंगार रस केवल करुण रस का अग बनकर आया है।

रसवत—स्त्री० १. दे० 'रसौत'। २. दे० 'दारुहल्दी'।

रसवती—स्त्री०[स० रसवत्+ङीष्]१. संपूर्ण जाति की एक रागिनी जिसमें सब शुद्ध स्वर लगते हैं। २ रसोई-घर।
वि० स्त्री० रसवाली।

रसवत्ता—स्त्री० [रसवत्+तल्+टाप्]१ रसयुक्त होने की अवस्था, धर्म या भाव। रसीलापन। २. माधुर्य। मिठास। ३. सुन्दरता।

रसवर—पुं० [हिं०रसना] नाव की संधि को बद करने के लिए उसमें लगाया जानेवाला मसाला।

रस-वर्णक—पुं०[सं० ष० त०] वैद्यक की कुछ विशिष्ट वनस्पतियाँ जिनसे रंग तैयार किये जाते हैं। जैसे—अनार का फूल, लाख, हल्दी, मंजीठ आदि।

रसवल्ली—स्त्री०=रस-डली (गन्ना)।

रसवाई—स्त्री०[हिं० रस+वाई (प्रत्य०)]किसानों के यहाँ किसी फसल का ऊख पहली बार पेरने के समय होनेवाला एक कृत्य।

रसवाद—पुं०[सं० ष० त०]१. रस अर्थात् प्रेम या आनंद की बातचीत। रसिकता की बातचीत। २. मन बहलाव के लिए होनेवाला परिहास। हँसी-ठट्ठा। ३. प्रेमी और प्रेमिका में होनेवाली व्यर्थ की कहा-सुनी या बकवास। ४. साहित्यिक क्षेत्र में यह मत या सिद्धान्त कि रस के सम्बन्ध में विचार करते हुए और उसके महत्त्व का ध्यान रखते हुए ही साहित्यिक रचना की जानी चाहिए।

रसवादी (दिन्)—वि०[सं० रसवाद+इनि] रसवाद-संबंधी।
पुं०रसवाद के सिद्धान्तों का प्रतिपादक या अनुयायी।

रसवान् (वत्)—पुं०[सं० रस+मतुप्] वह पदार्थ जिसमे ऐसा गुण या शक्ति हो जिसमें उसके कण रसना से संयुक्त होने पर विशेष प्रकार की अनुभूति या सवेदन हो।

रसवास—पु०[सं० ब० स०] डगण के पहले भेद (ıS) की सज्ञा।

रस-वाहिनी—स्त्री०[सं० रस√वह् (प्रापण)+णिनि+ङीप्, उप० स०] वैद्यक के अनुसार खाए हुए पदार्थ से बने सार-भाग को फैलानेवाली नाडी।

रसविक्रयी (यिन्)—पुं०[सं०रस-वि√क्री (बेचना)+णिनि, उप० स०] वह जो मदिरा बेचता हो, अर्थात् कलवार।

रसविरोध—पुं०[सं० ष० त०] ऐसे रसों का मिश्रण या मेल जिससे स्वाद बिगड जाता है। (सुश्रुत) जैसे—तीते और मीठे मे, नमकीन और मीठे मे कडुए और मीठे मे रसविरोध है। २. साहित्य में एक ही पद्य में होनेवाली दो परस्पर प्रतिकूल रसों की स्थिति।

रस-वेधक—पुं०[सं० ष० त०] सोना।

रस-शार्दूल—पु०[सं० स० त०] वैद्यक में एक प्रकार का रस जो अभ्रक, तांबे, लोहे, मैनसिल, पारे, गंधक, सोहागे, जवाखार, हड़ और बहेड़े आदि के योग से बनता है और जो सूतिका रोग के लिए विशेष उपकारी कहा गया है।

रस-शास्त्र—पुं०[सं० ष० त०] रसायन-शास्त्र।

रस-शेखर—पुं०[स० स० त०] वैद्यक के अनुसार एक प्रकार का रस जो पारे और अफीम के योग से बनता है और जो उपदश आदि रोगो मे गुणकारी कहा गया है।

रस-शोधन—पुं०[सं०ष०त०]१ पारे को शुद्ध करने की क्रिया या भाव। २. सुहागा।

रस-संप्रदाय—पुं०[सं०] साहित्यिक क्षेत्र मे ऐसे लोगो का वर्ग या समूह जो रसवाद के अनुयायी हों अथवा उसके सिद्धान्तो का पालन करते हों।

रस-संभव—पु०[सं० ष० त०] रक्त। लहू। खून।

रस-संरक्षण—पुं० [स० ष० त०] पारे को शुद्ध और मूर्च्छित करने, बाँधने और भस्म करने की ये चारों क्रियाएँ। (वैद्यक)

रस-संस्कार—पुं०[सं० ष० त०] पारे के मूर्च्छन, बंधन, मारण आदि अठारह प्रकार के संस्कार। (वैद्यक)

रस-सागर—पु०[सं० ष० त०] प्लक्ष द्वीप मे स्थित ऊख के रस का एक सागर। (पुराण)

रस-साम्य—पुं० [सं० ष० त०] रोगी की चिकित्सा करने के पहले यह देखना कि शरीर में कौन सा रस अधिक और कौन सा कम है। (वैद्यक)

रस-सार—पुं० [सं० ष० त०] १. मधु। शहद। २ जहर। विष। (डि०)

रस-सिंदूर—पुं०[मध्य०स०] पारे और गंधक के योग से बनाया जानेवाला एक प्रकार का रस। (वैद्यक)

रस-स्थान—पुं०[सं० ष० त०] ईंगुर।

रसाँ (सा)—वि० [फा०] पहुँचाने या ले जानेवाला। जैसे—चिट्ठीरसाँ।

रसांगक—पुं०[सं० रस-अंग, ब० स०+कन्] धूप सरल का वृक्ष। श्रीवेष्ठ।

रसांजन—पुं०[सं० रस-अंजन, मध्य० स०] रसौत। रसवत।

रसांतर—पुं०[सं० रस-अंतर, मयू० स०] एक रस की अवस्थिति में दूसरे रस का होनेवाला आविर्भाव या संचार।

रसांतरण—पुं०[सं० रस-अंतरण, ष० त०] एक रस की अवस्थिति हटा कर दूसरे रस का संचार करना। जैसे—प्रेम-चर्चा के समय बिगड़कर प्रिय की उपेक्षा करना या उसे भय दिखाना या क्रोध के समय हँसाकर प्रसन्न करना।

रसा—स्त्री०[सं० रस+अच्+टाप्]१ पृथ्वी। जमीन। २ रासना। ३. पाढ़ा नामक लता। ४ शल्लकी। सलई। ५ कगनी नामक अन्न। ६ द्राक्षा। दाख। ७ मेदा। ८ शिलारस। लोबान। ९ आम। १० काकोली। ११ नदी। १२ रसातल। १३ रसना। जीभ।

पुं०[हिं० रस]१ तरकारी आदि का झोल। शोरबा।

पद—रसेदार=(तरकारी) जिसमें रसा भी हो। शोरवेदार। २ जूस। रस। जैसे—फलों का रसा।

वि०=रसाँ।

रसाइन†—पुं०=रसायन।

रसाइनी*—स्त्री०- रसायनी।

पुं०=रसायनज्ञ।

रसाई—स्त्री०[फा०]१. पहुँचने की क्रिया या भाव। पहुँच। २. बुद्धि आदि के कहीं तक पहुँच सकने की शक्ति।

रसाकर्षण—पुं०[सं० रस-आकर्षण, ष० त०] वह प्रक्रिया जिससे शरीर का कोई अंग रध्रों के द्वारा बाहर का रस खींचकर अपने अन्दर करता है। (ओस्मोसिस)

रसाग्रज—पुं०[सं० रस-अग्रज, ष० त०] रसौत।

रसाग्र्य—पुं०[सं० रस-अग्र्य, ष० त०]१ पारा। २ रसांजन। रसौत।

रसाज्ञान—पुं०[सं० रस-अज्ञान, ष० त०]१ इस बात की जानकारी न हो कि अमुक रस कौन है। २ वह स्थिति या दशा जिसमें रस अर्थात् स्वाद का ज्ञान न होता हो।

रसाढ्य—पुं०[सं० रस-आढ्य, तृ० त०] अमड़ा। आम्रातक।

रसाढ्या—स्त्री०[रसाढ्य+टाप्] रासना।

रसातल—पुं० [सं० ष० त०] पुराणानुसार पृथ्वी के नीचेवाले सात लोकों में से छठा लोक।

मुहा०—रसातल पहुँचाना या रसातल में पहुँचाना=पूरी तरह से नष्ट या मटियामेट कर देना। मिट्टी में मिला देना। बरबाद कर देना।

रसादार—वि०=रसेदार।

रसाधार—पुं०[सं० रस-आधार, ष० त०] सूर्य।

रसाधिक—पुं०[सं० रस-अधिक, च० त०] सुहागा।

रसाधिका—स्त्री०[सं० रस-अधिका, तृ० त०] किशमिश।

रसाध्यक्ष—पुं०[सं० रस-अध्यक्ष, ष० त०] प्राचीन भारत में वह राजकर्मचारी, जो मादक द्रव्यों की जाँच-पड़ताल और उनकी बिक्री आदि की व्यवस्था करता था।

रसापकर्षण—पुं०[सं० रस-अपकर्षण, ष० त०] वह प्रक्रिया जिसके द्वारा शरीर का कोई अंग अथवा अपने अंदर का ऐसा ही और कोई पदार्थ रस रध्रों द्वारा बाहर निकालता है। (एन्डोमोसिस)

रसा-पति—पुं०[सं० ष० त०] पृथ्वी-पति। राजा।

रसापायी (यिन्)—वि०[सं० रसा√पा (पीना)+णिनि] जो जीभ से पानी पीता हो। जैसे—कुत्ता, साँप आदि।

पुं० कुत्ता।

रसाभास—पुं०[सं०रस-आ√भास्(चमकना)+अच्]१ भारतीय साहित्य शास्त्र के अनुसार किसी साहित्यिक रचना में कहीं-कहीं दिखाई देनेवाली वह स्थिति जिसमें रस का पूरी तरह से परिपाक नहीं होने पाता, और इसलिए जिसके फलस्वरूप सहृदयों को ऐसा जान पड़ता है कि रस की पूर्ण निष्पत्ति नहीं हुई है उसका आभास मात्र दिखाई देता है। जैसे—यदि शृंगार रस में हास्य रस का, हास्य रस में वीभत्स रस का अथवा वीर रस में भयानक रस का मिश्रण कर दिया जाय तो प्राथमिक या मूल रस का परिपाक नहीं होने पाता और रस के परिपाक के स्थान पर रसाभास मात्र होकर रह जाता है। कुछ आचार्यों का मत है कि रसाभास वस्तुत रस का बाधक और विरोधी तत्त्व है, पर कुछ आचार्य कहते हैं कि रसाभास होने पर भी रस-दशा ज्यों-की-त्यों आस्वाद्य बनी रहती है।

रसामृत—पुं०[सं० रस-अमृत, कर्म० स०] पारे, गंधक, शिलाजीत, चंदन, गुडुच, धनियाँ, इंद्रजौ, मुलेठी आदि के योग से बनाया जानेवाला एक प्रकार का रस।

रसाम्ल—पुं०[सं० रस-अम्ल, ब० स०]१ अम्लवेतस्। अमलबेद। २. चुक नाम की खटाई। ३ वृक्षाम्ल। विषाविल।

रसाम्लक—पुं०[सं० रसाम्ल+कन्] एक प्रकार की घास।

रसाम्ला—स्त्री०[सं० रसाम्ल+टाप्] पलाशी नाम की लता।

रसायन—पुं०[सं० रस-अयन ब० स०]१ आरंभिक भारतीय वैद्यक में औषध, चिकित्सा आदि के क्षेत्रों में रस अर्थात् पारे का प्रयोग करने की कला या विद्या। २ परवर्ती काल में उक्त कला के आधार पर पारे के प्रयोगों से धातुओं आदि में अद्भुत और असाधारण तात्त्विक परिवर्तन कर दिखाने अथवा उन्हें भस्म करने की कला या विद्या जिसके फलस्वरूप आगे चलकर भारत, पश्चिमी एशिया तथा यूरोप के कुछ देशों में बहुत से लोग इस बात की छानबीन और प्रयोग करने लगे थे कि पीतल, लोहे आदि को किस प्रकार सोने के रूप में परिवर्तित किया जा सकता है। कीमियागरी।

विशेष—पाश्चात्य देशों में इसी प्रकार के प्रयोग करते करते कुछ लोगों ने वे तत्त्व और सिद्धान्त ढूंढ़ निकाले थे, जिनके आधार पर आधुनिक रसायन-शास्त्र (देखें) का विकास हुआ है।

३. परवर्ती भारतीय वैद्यक में कुछ विशिष्ट प्रकार के ऐसे औषध या दवाएँ जिनके संबंध में यह माना जाता था कि इनके सेवन से मनुष्य कभी बीमार या बुड्ढा नहीं हो सकता और उसमें फिर से नया जीवन और युवावस्था आ जाती है। ४. आधुनिक भारतीय वैद्यक में कुछ विशिष्ट प्रकार की ओषधियों से बनी हुई कुछ ऐसी दवाएँ जो मनुष्यों का बल-वीर्य आदि बढ़ानेवाली मानी जाती हैं। जैसे—आमलक रसा-

यन, ब्राह्मी, रसायन, हरीतकी रसायन आदि। ५. तक्र। मठा। ६. बायबिडंग। विडंग। ७. जहर। विष। ८. कटि। कमर। ९. गरुड़ पक्षी।

रसायनज्ञ—पुं०[सं० रसायन√ज्ञा (जानना)+क] रसायन क्रिया का जाननेवाला। वह जो रसायन विद्या जानता हो।

रसायनफला—स्त्री०[ब० स०,+टाप्] हर्रे। हड़। हरीतकी।

रसायनवर—पुं०[सं० स० त०] लहसुन।

रसायनवरा—स्त्री०[सं० स० त०]१. कँगनी। २. काकजंघा।

रसायन-विज्ञान—पु०=रसायन-शास्त्र।

रसायन-शास्त्र—पुं०[स० ष० त०] आधुनिक काल मे विज्ञान की वह शाखा जिसमे इस बात का विवेचन होता है कि पदार्थों मे क्या क्या गुण और तत्त्व होते हैं, दूसरे पदार्थों के योग से उनमे क्या क्या प्रतिक्रियाएँ होती हैं, और उन्हे किस प्रकार रूपातरित किया जा सकता है। (कैमिस्ट्री)

विशेष—इस शास्त्र का मुख्य सिद्धान्त यह है कि सभी पदार्थ कुछ मूल तत्त्वो या द्रव्यो के अलग अलग प्रकार के परमाणुओ से बने हुए होते हैं। वैज्ञानिकों ने अब तक ऐसे १०० से अधिक मूल तत्त्व या द्रव्य ढूँढ़ निकाले है। उनका कहना है कि जब एक प्रकार के परमाणु किसी दूसरे प्रकार के परमाणुओ से मिलते है, तब उनसे कुछ नये द्रव्य या पदार्थ बनते हैं, इस शास्त्र मे इसी बात का विचार होता है कि उन तत्त्वो मे किस किस प्रकार के परिवर्तन या विकार होते हैं, और उन परिवर्तनो का क्या परिणाम होता है।

रसायन-श्रेष्ठ—पु० [स० स० त०] पारा।

रसायनिक—वि०=रासायनिक।

रसायनी—स्त्री० [स०रस√अय् (प्राप्ति)+ल्यु—अन+ङीप्] १ वह औषध जो बुढ़ापे को रोकती या दूर करती हो। २ गुडुच। ३. काकमाची। मकोय। ४ महाकरज। ५ गोरख मुण्डी। अमृत सजीवनी। ६. मासरोहिणी। ७. मजीठ। ८. कन-फोड़ा नाम की लता। ९ कौंछ। केवाँच। १०. सफेद निसोथ। ११. शखपुष्पी। शंखाहुली। १२. कदगिलोय। १३. नाड़ी नामक साग।

†पु०=रसायन।

रसाल—वि०[स० रस-आ√ला (आदान)+क]१ रस से पूर्ण। रस से भरा हुआ। रसपूर्ण। २. मीठा। मधुर। ३. रसिक। रसीला। सहृदय। ४ साफ किया हुआ। परिमार्जित और शुद्ध।

पुं०१. ऊख। गन्ना। २ आम। ३. गेहूँ। ४. बोल नामक गंध-द्रव्य। ५ कटहल। ६ कदुर तृण। ७ अमलबेत। ८ शिलारस। लोबान।

पु० [अ० इरसाल] कर। राजस्व। खिराज।

वि०=रिसाल।

रसालक—वि०[स० रसाल+कन्] [स्त्री० रसालिका] १ मधुर। मृदु। २. सरस। ३. मनोहर। सुन्दर।

रसालय—पु०[स० रस-आलय, ष० त०]१ आम का पेड़। २ आमोद-प्रमोद का स्थान। क्रीड़ा-स्थल। ३. दे० 'रसशाला'।

रसाल-शर्करा—स्त्री०[सं० मध्य० स०] गन्ने या ऊख के रस से बनाई हुई चीनी।

रसालस—पुं०[हिं० रसाल] अद्भुत या विलक्षण बात। कौतुक।

रसालसा—स्त्री०[स० रस-अलसा, तृ० त०]१. गन्ना। २ गेहूँ। ३. कुंदुर नामक तृण।

रसाला—स्त्री० [सं० रसाल+टाप्] १ सिखरन। श्रीखंड। २. दही में मिलाया हुआ सत्तू। ३ दूब। ४ विदारीकन्द। ५ दाख। ६ गन्ना। ७ जीभ। जबान। ८. एक तरह की चटनी।

†पु०=रिसाला।

रसालाम्र—पु०[सं० रसाल-आम्र, कर्म० स०] बढ़िया कलमी आम।

रसालिका—स्त्री०[सं० रसाल√कन्+टाप्, इत्व]१ छोटा आम। अबिया। २ सप्तला। सातला।

रसाली—स्त्री०[स० रसाल+ङीष्] गन्ना।

पु०[स० रस] भोग-विलास में रस या आनन्द प्राप्त करनेवाला व्यक्ति।

रसाव—पु०[हिं० रसना]१. वह अवस्था जिसमे कोई तरल पदार्थ किसी चीज मे से रस या टपक रहा हो। २ किसी चीज मे से रसकर निकलनेवाला पदार्थ। ३ खेती जोतकर और पाटे से बराबर करके उसे कई दिनो तक यो ही छोड़ देने की क्रिया जिससे उसमे रस या उत्पादन शक्ति का आविर्भाव होता है।

रसावट†—पु०=रसावल।

रसावल—पु०[स० रस] एक प्रकार का छंद जिसके प्रत्येक चरण मे दो यगण होते हैं। कुछ लोग दूसरे यगण की जगह मगण भी रखते हैं। पर कुछ लोगो के मत से 'रोला' ही रसावल है। अर्ध-भुजगी।

पु०[हिं० रस+चावल]१. ऊख के रस मे पकाये हुए चावल। २ देहातो मे विवाह के उपरांत नववधू द्वारा प्रस्तुत रसावल जीमते समय गाये जानेवाले गीत।

रसावा†—पु० [हिं० रस+आवा (प्रत्य०)] वह मटका जिसमे ऊख का रस रखा हुआ है।

रसाश—पु०[स० रस-आश, ष० त०] मदिरा पान करना। शराब पीना।

रसाशी (शिन्)—पु० [सं० रस√अश् (भोजन)+णिनि] मदिरा पान करनेवाला। शराबी।

रसाष्टक—पु०[स० रस-अष्टक, ष० त०] पारा, इंगुर, कांतिसार, लोहा, सोनामक्खी, रूपामक्खी, वैक्रांतमणि, और शख इन आठ महारसो का समाहार। (वैद्यक)

रसास्वादन—पु०[स० रस-आस्वादन, ष० त०]१ किसी प्रकार के रस का स्वाद लेना। रस चखना। २ किसी प्रकार के रस या आनन्द का भोग करना। सुख लेना। ३. किसी बात या विषय का रस चखना या लेना।

रसास्वादी (दिन्)—वि०[स० रस-आ√स्वद् (स्वाद लेना)+णिच्+णिनि] [स्त्री० रसास्वादिनी]१. रस चखनेवाला। स्वाद लेनेवाला। २. आनन्द या मजा लेनेवाला। ३ किसी बात या विषय मे रस लेनेवाला।

पु० भ्रमर। भौंरा।

रसाह्व—पु०[स० रस-आह्वा, ब० स०] गंधा-बिरोजा।

रसाह्वा—स्त्री०[स० रसाह्व+टाप्]१ सतावर। २ रासना।

रसिआउर†—पुं०=रसावल (रस मे पका हुआ चावल)।

रसिक—वि०[स० रस+ठन्—इक] [भाव० रसिकता, स्त्री० रसिका]

१ रसपान करनेवाला। २. किसी काव्य, कहानी, बातचीत आदि के रस से आनन्दित होनेवाला। ३. काव्य-मर्मज्ञ। ४. जिसके हृदय मे सौंदर्य, मधुर बातो आदि के प्रति अनुराग हो। सहृदय।
पु०१. प्रेमी। २ सारस। ३ घोड़ा। ४. हाथी। ५ एक प्रकार का छंद।

रसिकता—स्त्री० [स०रसिक+तल्+टाप्] १. रसिक होने की अवस्था, भाव या धर्म्म। २ हँसी-ठट्ठा या परिहास करने की वृत्ति।

रसिक-बिहारी—पुं० [स० कर्म० स०] श्रीकृष्ण।

रसिका—स्त्री० [स० रसिक+टाप्] १ दही का शरबत। सिखरन। २ ईख का रस। ३ शरीर मे होनेवाला रस या धातु। ४. जीभ। जबान। ५ मैना पक्षी।
वि०=रसिक का स्त्री०।

रसिकाई†—स्त्री०=रसिकता।

रसिकेश्वर—पु० [स० रसिक-ईश्वर, ष० त०] श्रीकृष्ण।

रसित—वि० [स०√रस् (शब्द)+क्त] १. रस से बना हुआ। रस से युक्त किया हुआ। २ ध्वनि या शब्द करता हुआ। बजता या बोलता हुआ। ३ जिस पर रग या रोगन किया गया हो। ४ चमकीला।
पु० १ ध्वनि। शब्द। २ अगूर की शराब।

रसिया—पु० [सं० रस+हिं० इया (प्रत्य०)] १ रस अर्थात् आनन्द लेने का शौकीन। जैसे—गाने-बजाने का रसिया। २ कामुक और व्यसनी व्यक्ति। ३ बुदेलखण्ड और ब्रज मे होली के अवसर पर गाये जानेवाले हास-परिहास-मूलक एक तरह के गीत। ४. प्रेमी।

रसियाव—पु० [हिं० रस+इयाव (प्रत्य०)] रसावल। (दे०)

रसी—स्त्री० [देश०] उत्तर प्रदेश तथा बिहार के कुछ क्षेत्रो मे पाई जानेवाली एक तरह की क्षारयुक्त मिट्टी।
वि०-रसिक (या रसिया)।

रसीद—स्त्री० [फा०] १ कोई चीज कही पहुँचने या प्राप्त होने की क्रिया या भाव। प्राप्ति। पहुंच। जैसे—पारसल भेजा है, उसकी रसीद की इत्तला दीजियेगा।
मुहा०—रसीद करना=(थप्पड, मुक्का आदि) लगाना। जड़ना। मारना। जैसे—थप्पड रसीद करूँगा, सीधा हो जायगा।
२ वह पत्र जिस पर ब्योरेवार यह लिखा हो कि अमुक वस्तु या द्रव्य अमुक व्यक्ति से अमुक कार्य के लिए अमुक समय पर प्राप्त हुआ।

रसीदी—वि० [हिं० रसीद] १ रसीद के रूप मे होनेवाला। २ रसीद के सबध मे या उसके लिए काम मे आनेवाला। जैसे—रसीदी टिकट=वह विशेष प्रकार का टिकट जो रुपये पाने की रसीद पर लगता है।

रसील†—वि० =रसीला।

रसीला—वि० [हिं० रस+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० रसीली, भाव० रसीलापन] १. रस से भरा हुआ। रसयुक्त। २. खाने मे मजेदार। स्वादिष्ट। ३ (व्यक्ति) जिसके मन मे रस अर्थात् आनन्द लेने की प्रवृत्ति या भोग विलास के प्रति अनुराग हो। रसिक। रसिया। ४ देखने मे बाँका निराला या सुन्दर हो। जैसे—रसीली आँख।

रसीलापन—पु० [हिं०रसीला+पन (प्रत्य०)] रसीले होने की अवस्था, धर्म या भाव।

रसुन—पु० [स०रस+उनन्]=लहसुन।

रसूम—पु० [अ० रस्म (परिपाटी या प्रथा) का बहु०] १. नियमों, रीतियो, विधानो आदि का वर्ग या समूह। २. कर। शुल्क। ३. वह धन जो कोई काम करने के बदले मे राजकीय नियमों के अनुसार राज्य को दिया जाता है। राज्य के प्रति होनेवाला देय। जैसे—दरख्वास्त देने या दावा दायर करनेके समय अदालत का रसूम दाखिल करना पड़ता है। ४. वह धन जो जमीदार को किसानों की ओर से नजराने या भेट आदि के रूप मे मिलता था।

रसूम अदालत—पु० [अ०] वह धन जो अदालत मे कोई मुकदमा आदि दायर करने अथवा कोई दरख्वास्त देने के समय कानून के अनुसार सरकारी खजाने मे दाखिल किया जाता और जिसकी प्राप्ति के प्रमाण-स्वरूप टिकट आदि मिलते है। कोर्टफीस। स्टाप।

रसूल—पु० [अ०] लोककल्याण के उद्देश्य से ईश्वर द्वारा पृथ्वी पर भेजा जानेवाला दूत। ईश्वरदूत।

रसूली—स्त्री० [अ० रसूल+ई (प्रत्य०)] १ एक प्रकार का गेहूँ। २. एक प्रकार का जौ। ३ एक प्रकार की काली मिट्टी।
वि० रसूल सबधी। रसूल का।

रसेंद्र—पु० [स० रस-इद्र, ष० त०] १ पारद। पारा। २ राजमाष। लोबिया। ३ वैद्यक मे एक प्रकार की रसौषध जो जीरा, धनियाँ, पीपल, शहद, त्रिकुट और रस-सिंदूर के योग से बनती है।

रसेंद्र-वेधक—पु० [स० ष० त०] सोना।

रसे रसे—अव्य० [हिं० रसना] धीरे-धीरे। शनै-शनै।

रसेश—पु० [स० रस-ईश, ष० त०] १ श्रीकृष्ण जो रस और रसिकों के शिरोमणि माने गये है। २ दे० 'रसेश्वर'।

रसेश्वर—पु० [स० रस-ईश्वर, ष० त०] १ पारा। २ वैद्यक मे एक प्रकार का रसौषध जो पारे, गधक, हरताल और सोने आदि के योग से बनता है। ३ दे० 'रसेश्वर दर्शन'।

रसेश्वरदर्शन—पु० [स०मध्य० स०] एक शैव दर्शन जो मुख्यत पारद या पारे के साधनों से सबध रखनेवाली बातो पर आश्रित है।
विशेष—शैव आगमों मे रसेश्वर अर्थात् पारद या पारे को शिव का वीर्य तथा गधक को पार्वती का रज माना गया है और इसी आधार पर उनके सबध मे इस दर्शन की रचना हुई है। यह प्रसिद्ध ६ दर्शनो से पृथक् या भिन्न है।

रसेस*—पु० [स० रसेश] रसिक शिरोमणि, श्रीकृष्ण।
पु०=रसेश्वर। (पारा)

रसोइन†—स्त्री० हिं० रसोइया (रसोइदार) का स्त्री०।

रसोइया—पु० [हिं० रसोई+इया (प्रत्य०)] रसोइ बनानेवाला। भोजन बनानेवाला। रसोइदार। सूपकार।
स्त्री०=रसोई।

रसोई—स्त्री० [हिं० रस+ओई (प्रत्य०)] १. पका हुआ खाद्यपदार्थ। बना हुआ भोजन।
विशेष—सनातनी हिंदुओ मे रसोई दो प्रकार की मानी जाती है—कच्ची और पक्की। कच्ची रसोई वह कहलाती है जो जल और आग के योग से बनी हो, और जिसमे घी की प्रधानता न हो। जैसे—चावल, दाल, रोटी आदि। ऐसी रसोई चौके मे बैठकर खाई जाती है। पक्की रसोई वह कहलाती है जिसके पकने मे घी की प्रधानता रही हो। जैसे—

परांठा, पूरी, बड़े, समोसे आदि। ऐसी चीजें चौके से बाहर भी खाई जा सकती हैं और इनमें छुआछूत का विशेष विचार नहीं होता।

मुहा०—रसोई चढ़ना= रसोई का बनना आरम्भ होना। रसोई तपना=रसोई या भोजन बनाना।

२. दे० 'रसोई-घर'।

रसोई-खाना—पुं०=रसोई-घर।

रसोई-घर—पुं०[हिं० रसोई+घर] वह कमरा या स्थान जहाँ पर घर के लोगों के लिए भोजन पकाया जाता है। चौका।

रसोइदार—पुं० रसोइया।

रसोईदारी—स्त्री०[हिं० रसोईदार+ई (प्रत्य०)]१. रसोई बनाने का काम। भोजन बनाने का काम। २ रसोईदार का पद या भाव।

रसोईबरदार—पुं० [हिं० रसोई+फा० बरदार] वह जो बड़े आदमियों के साथ उनकी रसोई या भोजन ले जाकर पहुँचाता हो।

रसोत—स्त्री०=रसौत।

रसोदर—पुं०[सं० ब० स०] हिंगुल। शिगरफ।

रसोद्‌भव—पुं०[सं० रस-उद्‌भव, ब० स०]१ शिगरफ। इंगुर। २. रसांजन। रसौत।

रसोद्‌भूत—वि०[सं० रस-उद्‌भूत, पं०त०] रस से उत्पन्न।

पुं० रसौत।

रसोन—पुं०[सं० रस-ऊन तृ० त०] लहसुन।

रसोपल—पुं०[सं० रस-उपल, उपमि० स०] मोती।

रसोय*—स्त्री०[रसोई।

रसौत—स्त्री०[सं० रसोद्‌भूत] एक प्रकार की प्रसिद्ध औषधि जो दारुहल्दी की जड़ और लकड़ी को पानी में उबालकर और उसमें से निकले हुए रस को गाढ़ा करके तैयार की जाती है।

रसौता—पुं०=रसौती।

रसौती—स्त्री०[देश०] धान की वह बोआई जिसमे वर्षा होने से पहले ही खेत जोतकर बीज डाल दिये जाते है।

रसौर—पुं०=रसावल।

रसौल—स्त्री०[?] एक प्रकार की कँटीली लता जो दवा के काम आती और जिसकी पत्तियो की चटनी बनाई जाती है।

पुं०=रसावल।

रसौली—स्त्री०[देश०] एक प्रकार का रोग जिसमे आँख के ऊपर भौंहो के पास अथवा शरीर के और किसी अग मे बड़ी गिलटी निकल आती है।

रस्ता—पुं०=रास्ता।

रस्तोगी—पुं०[देश०] वैश्यो की एक जाति।

रस्म—स्त्री०[अ०]१. चाल। परिपाटी। प्रथा।

पद—राह-रस्म।

२. कर। महसूल। ३. वेतन। तनख्वाह। ४. मेल-जोल।

मुहा०—(किसी से) रस्म होना=लैंगिक सम्बन्ध या आशनाई होना।

रस्मि*—स्त्री०=रश्मि।

रस्मी—वि०[अ०]१. रस्म सबधी। २. रस्म के रूप में होनेवाला। औपचारिक। ३. मामूली। साधारण।

रस्मोरिवाज—पुं०[अ०] रूढ़ि और परम्परा।

रस्य—पुं०[सं० रस+यत्]१. रक्त। खून। लहू। २. शरीर में का मांस।

रस्या—स्त्री०[सं० रस्य+टाप्]१. रासना। २. पाठा।

रस्सा—पुं०[सं० रसना; प्रा० रसणा; हिं० रसना] [स्त्री० अल्पा० रस्सी]१. मूँज, सन आदि का बटा हुआ तथा मोटा रूप।

पद—रस्सा-कशी।

२ जमीन की एक नाप जो ७५ हाथ लबी और ७५ हाथ चौड़ी होती है। इसी को बीघा कहते हैं।

पुं०[हिं० रसना=बहना] घोड़े के पैरो मे होनेवाला एक प्रकार का रोग।

रस्सा-कशी—स्त्री०[हिं०+फा०]१. एक प्रकार का व्यायाममूलक खेल जिसमें दो प्रतियोगी दल पक्ति बाँधकर एक दूसरे के पीछे खड़े हो जाते हैं, और एक रस्सा पकड़कर अपनी अपनी ओर खीचने का प्रयत्न करते हैं। २. लाक्षणिक रूप मे, आपस मे होनेवाली खीचातानी या प्रतियोगिता।

रस्सी—स्त्री० [हिं० रस्सा] रूई, सन या इसी प्रकार की और चीजो के रेशो को एक मे बटकर बनाया हुआ लबा खड जिसका व्यवहार चीजो को बाँधने, कूएँ से पानी खीचने आदि में होता है। डोरी। गुण। रज्जु।

स्त्री०[?] एक प्रकार की सब्जी।

रस्सीबाट—पुं०[हिं० रस्सी+बटना] रस्सी बटनेवाला। डोरी बनानेवाला।

रहँकला—पुं०=रहकला।

रहँचटा—पुं०=रहचटा।

रहँट—पुं०=रहट।

रहँटा—पुं०=रहटा।

रहँटी—पुं०=रहटी।

रह—पुं०[सं० रथ] रथ।

स्त्री०=राह (रास्ता)।

प्रत्य० राह का वह रूप जो कुछ समस्त पदो मे प्रत्येक रूप मे लगता है। जैसे—रहनुमा, रहबर।

रहकला—पुं०[हिं० रथ+कल]१. तोप आदि ढोनेवाली एक तरह की पुरानी चाल की गाड़ी। २. उक्त गाड़ी पर रखी जानेवाली तोप।

रहचटा—पुं०[सं०रस+हिं०चाट]१. वह जिसे किसी प्रकार के रस (सुख) की चाट या चस्का लगा हो। २. उक्त प्रकार का चस्का या चाट।

रहचह—स्त्री० [अनु०]१ चिड़ियों का बोलना। चहचहाहट। २ आदमियों की चहलपहल।

स्त्री० [हिं० रहचटा] रहचटे होने की अवस्था, गुण या भाव।

रह-चहना—अ०=चहचहाना (पक्षियों का)।

रहट—पुं०[सं० अरघट्ट; प्रा० अरहट्ठ] खेतो की सिंचाई के लिए कूएँ से पानी निकालने का एक प्रकार का यत्र, जो गोलाकार पहिए के रूप में होता है और जिसपर हाँड़ियों की माला पड़ी रहती है। इसी पहिये के घूमने से हाँड़ियो आदि मे भरकर पानी ऊपर आता है।

रहटा—पुं०[हिं० रहट] चरखा।

रहटी—स्त्री० [हिं० रँहटा]१. कपास ओटने की चरखी। २. ऋण देने का एक प्रकार जिसमे ऋणी से प्रति मास कुछ धन वसूल किया जाता है। हुंडी।

रहठा—पुं० [?] अरहर के पौधे का सूखा हुआ डंठल। कड़िया।

रहठान—पुं० [हिं० रहना] १ रहने का स्थान। २. जगह। स्थान।

रहड़—पुं० [सं० रथरूप, प्रा० रहरूप] १ ठेला-गाड़ी। २ बैलगाड़ी।

रहतिया—वि० [हिं० रहना+तिया (प्रत्य०)] (दुकान का माल) जो बहुत दिनों तक पड़ा रहने के कारण कुछ खराब हो गया हो।

रहन—स्त्री० [हिं० रहना] १ रहने की अवस्था, ढंग या भाव।
पद—रहन-सहन।
२ लोगों के साथ रहने और जीवन-निर्वाह तथा व्यवहार करने का ढंग या प्रकार। ३ किसी के साथ प्रेमपूर्वक रहने और निभाने की क्रिया या भाव। उदा०—जौ पै रहनि राम सो नाही।—तुलसी।

रहन-सहन—स्त्री० [हिं० रहना+सहना] घर-गृहस्थी या लोक में रहने और लोगों के साथ व्यवहार करने की क्रिया या ढंग।

रहनहार†—वि० [हिं० रहना+हार (प्रत्य०)] १ रहने अर्थात् निवास करने-वाला। निवासी। २ टिक कर या स्थायी रूप मे बना रहने या रहने-वाला।

रहना—अ० [प्रा० रहण] १ किसी आधार या स्थान पर अवस्थित या स्थित होना। टिका या ठहरा हुआ होना। जैसे—इन्ही खंभो (या दीवारो) पर छत रहेगी। २ किसी विशिष्ट दशा या स्थिति मे स्थिर होना। एक रूप मे अवस्थान करना। जैसे—गर्भ (या पेट) रहना। जीवन या जिंदगी रहना। उदा०—नीके है छीकें छुए, ऐसे ही रह नारि।—बिहारी।
मुहा०—रह चलना या* रह जाना=प्रस्थान करने का विचार छोड़ देना। रुक जाना। ठहर जाना। **रहा जाना**=शाति या **स्थिरता-**पूर्वक अवस्थान करने मे समर्थ होना। जैसे—(क) अब तो बिना बोले मुझसे रहा नही जाता। (ख) उसके बिना तुमसे रहा नही जाता।
३ किसी स्थान को अस्थायी अथवा स्थायी रूप से अपने निवास का मुख्य केंद्र बनाकर वहाँ बसना। निवास करना। जैसे—आज-कल वह कलकत्ते मे रहते है। ४. किसी स्थान पर कुछ समय के लिए विद्यमान होकर वहाँ समय बिताना। जैसे—दो-चार दिन यहाँ रहकर वे घर चले गये। उदा०—जैसे कंता घर रहे, तैसे रहे बिदेस।
मुहा०—(स्त्री का पुरुष) से रहना=पर-पुरुष से संभोग करना। उदा०—मीरगुल से अब के रहने मे हुई वह बेकली। टल गई क्या नाफदानी, पेड़ू पत्थर हो गया।—जानसाहब।
रहना-सहना=किसी स्थान पर निवास करते हुए कुछ समय बिताना। जैसे—जो आदमी जहाँ रहता-सहता है, वही उसका मन लगता है।
५. उपस्थित या विद्यमान रहना। जैसे—हमारे रहते तुम्हारा कोई बिगाड़ नहीं सकता।
मुहा०—(किसी वस्तु या व्यक्ति का) बना रहना=ठीक और अच्छी दशा मे वर्तमान रहना। जैसे—तुम्हारा राज-पाट बना रहे। **(किसी की) बनी रहना**=किसी की प्रतिष्ठा, मर्यादा आदि ज्यो की त्यो रहना। उदा०—किस की बनी रही है, किसकी बनी रहेगी।—कोई शायर।
६ जीविका चलाने के लिए नौकर आदि के रूप मे कही या किसी पद पर स्थित रहकर निर्वाह करना या समय बिताना। जैसे—इधर साल भर मे वह तीन चार जगह रह चुका; पर कही टिका नही। ७. किसी के साथ मैथुन या संभोग करना। (बाजारू) जैसे—यह भी तो कई बार उसके साथ रह चुका है। उदा०—मीरगुल से अबके रहने मे हुई वह बेकली। टल गई क्या नाफदानी, पेड़ू पत्थर हो गया।—जान साहब।
८ व्यवहार आदि मे नियम या मर्यादा का पालन करना। अच्छा और ठीक आचरण करना। उदा०—(क) धरमु बिचारि समुझि कुल रहई। (ख) हम जानति तुम यो नहिं रैहौ, रहियौ गारी खाय।—सूर।
९ बाधा, रुकावट आदि मानकर किसी बात से विरत होना।—उदा०—चितवन रोके हू न रही।—सूर।
मुहा०—(व्यक्ति का) रह जाना=(क) थककर या हिम्मत हार-कर आगे काम या गति से विमुख होना। (ख) प्रतियोगिता आदि मे विफल होना। (ग) परीक्षा आदि मे अनुत्तीर्ण होना। जैसे—इस वर्ष प्रवेशिका परीक्षा मे बहुत-से लड़के रह गये। **(शरीर के अंग का) रह जाना**=(क) अधिक परिश्रम के कारण इतना थक जाना कि आगे काम न हो सके। बहुत ही शिथिल तथा स्तब्ध हो जाना। जैसे—लिखते लिखते हाथ रह गया। (ख) रोग आदि के कारण निकम्मा या बे-काम हो जाना। जैसे—लकवे मे उनका हाथ रह गया।
१० अवशिष्ट रहना। बाकी बचना। जैसे—(क) अब तो सौ ही रुपए हाथ मे रह गये है। (ख) और मकान तो बिक गये, यही एक रह गया है।
पद—रहा-सहा।
११ पीछे छूट जाना। पिछड़ना। १२ क्रिया, गति, भोग आदि से रहित होना। जैसे—अब तो आप वहाँ जाने से भी रहे। १३ चुपचाप बैठे रहकर या बिना कुछ किये हुए समय बिताना। उदा०—समुझि चतुर चित बात यह रहत बिसूर बिसूर।—रसनिधि।
मुहा०—रह जाना=बिना कुछ किये हुए चुपचाप या शात भाव से समय बिताना। जैसे—हम तुम्हारे कहने पर रह गये, नहीं तो उसे मजा चखा देते। **रहने देना**—(क) जिस अवस्था मे हो, उसी मे छोड़ देना। हस्तक्षेप न करना। जैसे—तुम रहने दो, मै सबकर लूंगा। (ख) ध्यान न देना। उपेक्षापूर्वक छोड़ देना या जाने देना। जैसे—रहने दो, इन बातो मे क्या रखा है। **रह-रहकर**=बीच बीच मे कुछ ठहर या रुककर। थोड़े थोड़े अन्तर पर या थोड़ी थोड़ी देर बाद। जैसे—रह-रहकर पेट (या सिर) मे दरद होना।
१४. लेन-देन आदि मे किसी के जिम्मे कोई रकम बाकी निकलना। बाकी पड़ना। जैसे—कभी का तुम्हारा कुछ रहता हो (या रह गया हो) तो बताओ।

रहनि†—स्त्री०=रहन।

रहनी†—स्त्री०=रहन।

रह-नुमा—वि० [फा० राहनुमा का संक्षिप्त रूप] [भाव० रह-नुमाई] ठीक रास्ता बतलानेवाला। मार्ग-दर्शक।

रह-नुमाई—स्त्री० [फा०] ठीक रास्ता बतलाना। मार्ग दर्शन।

रह-बर—वि० [फा०] [भाव० रह-बरी] रास्ता दिखलानेवाला।

रहम—पुं० [अ० रह्म] १ करुणा। दया। २. अनुकंपा। अनुग्रह।
पद—रहमदिल।

रहमत—स्त्री० [अ० रहमत] १. ईश्वरीय कृपा। २. कृपा। दया।

रहमदिल—वि० [अ० रह्म+फा० दिल] करुणापूर्ण (व्यक्ति)। सहृदय।

रहमान—वि० [अ० रह्मान] बहुत बड़ा दयालु। कृपालु।

पुं० ईश्वर का एक नाम ।

रहर, रहरी†--स्त्री०=अरहर।

रहक--स्त्री० [पं० रिढ़ना=घसिटना] छोटी देहाती गाड़ी, जिसमें किसान लोग घास या खाद ढोते हैं।

पुं० [फा०] रास्ता चलनेवाला। पथिक। बटोही।

रहरेठा† —पुं० [हिं० अरहर] अरहर के पौधे का सूखा डंठल। कड़िया। रहठा।

रहल--स्त्री० [अ०] एक विशेष प्रकार की छोटी चौकी जो आवश्यकतानुसार खोली और बन्द की जा सकती है और जिस पर पढ़ने के समय पुस्तक रखी जाती है।

रहली—स्त्री०=रहल ।

रहवाल—पुं० [फा०] घोड़ा।

स्त्री० घोड़े की चाल ।

रहस्—पुं० [स०√रम् (क्रीडा)+असुन्, ह-आदेश] १. गुप्त भेद। छिपी बात। २. गूढ़ तत्व या रहस्य। ३. क्रीड़ा। खेल। ४. आनन्द। सुख। ५. एकांत स्थान।

रहस†—पु०=रहस् ।

† स्त्री०=रास (लीला) ।

रहसना—अ०[हिं० रहस+ना (प्रत्य०)] आनंदित होना। प्रसन्न होना।

रहस-बधावा—पु० [हिं० रहस+बधाई] विवाह की एक रीति जिसमें नव-विवाहिता वधू को वर अपने साथ जनवासे मे लाता है। वहा गुरुजन उसे देखते तथा उपहार देते हैं।

रहसाना†—स० [स० रहस्] प्रसन्न करना। प्रसन्न होना। उदा०—किछू डेराई किछू रहसाई।—नूरमोहम्मद ।

रहसि*—स्त्री० [स० रहस्] १. गुप्त स्थान। २. एकांत स्थान।

रहस्य—पु० [स० रहस्+यत्] १. वह बात जो सबको बतलाई न जा सकती हो, कुछ विशिष्ट लोग ही जिसे जानने के अधिकारी माने या समझे जाते हों। गुप्त या भेद की बात। २ किसी चीज या बात के अन्दर छिपा हुआ वह तत्व या बात जिसका पता ऊपर से यों ही देखने पर न चलता हो, और फलतः जिसे जानने या समझने के लिए कुछ विशिष्ट पात्रता, बुद्धि-योग्यता आदि की आवश्यकता होती हो। भेद। मर्म।राज। ३. किसी प्रकार या किसी रूप में अन्दर छिपी हुई बात। भेद। (सीक्रेट)

क्रि० प्र०—खुलना।—खोलना।

४. आध्यात्मिक क्षेत्र मे ईश्वर और उसकी सृष्टि के सबध के वे गुप्त तत्त्व या भेद जो सब लोग नही जानते या नही जान सकते; और जिनकी अनुभूति केवल सात्विक वृत्तिवाले लोगो के अंतःकरण मे ही होती है।

पद—रहस्यवाद। (देखें)

५. ऐसा तत्त्व जो केवल दीक्षा के द्वारा अधिकारियों या पात्रों को ही बतलाया जाता हो। ६. एक उपनिषद् का नाम। ७ हँसी-ठट्ठा। परिहास। मजाक।

वि० १. (तत्त्व या विषय) जो सबको ज्ञात न हो अथवा बतलाया न जा सके। २. (कार्य) जो औरों से छिपाकर किया जाय।

रहस्य-क्रीड़--पुं०=रहस्य-क्रीड़ा।

रहस्य-क्रीड़ा—स्त्री० [सं० कर्म० स०] एकांत में दूसरों की दृष्टि से दूर रहकर की जानेवाली क्रीड़ा। जैसे—नायक और नायिका की।

रहस्यवाद—पुं० [सं० ष० त०] [वि० रहस्यवादी] रहस्य (देखें) अर्थात् ईश्वर तथा सृष्टि के परम तत्त्व या सत्य पर आश्रित और सात्त्विक आत्मानुभूति से संबंध रखनेवाला एक वाद या सिद्धान्त (छायावाद से भिन्न) जो आध्यात्मिक तथा साहित्यिक क्षेत्रों में, परमात्मा के प्रति होनेवाले जीवात्मा के अनुराग या प्रेम के द्योतन का सूचक है। (मिस्टिसिज्म)

विशेष—प्रायः सभी कालों, जातियों, और देशों में सात्त्विक वृत्तियोंवाले कुछ ऐसे लोग होते आये हैं, जो अपने समाज में प्रचलित धार्मिक सिद्धान्त नहीं मानते; और उनसे ऊपर उठकर उसी को आध्यात्मिक सत्य मानकर ईश्वर की उपासना करते हैं जो उनके अंतःकरण से स्फुरित होता है। ऐसे लोग प्रायः संसार से विमुख तथा विरक्त होकर जिस प्रकार अथवा जिस सिद्धान्त के आश्रित होकर परम सत्य का प्रत्यक्ष साक्षात्कार करते और लोक में उसका अभिव्यंजन करते हैं, वही साहित्य में रहस्यवाद कहलाता है। इसके मूल में मनुष्य की वह जिज्ञासा है जो उसके मन में सृष्टि उत्पन्न करनेवाली अलौकिक या लोकोत्तर शक्ति के प्रति उत्पन्न होती है और जिसके साथ वह तादात्म्य स्थापित करना चाहता है।

रहस्यवादी (दिन्)—वि० [स० रहस्यवाद+इनि] रहस्यवाद-संबंधी। रहस्यवाद का।

पुं० वह जो रहस्यवाद के तत्त्व समझता अथवा उसके सिद्धान्तो का अनुकरण करता हो। रहस्यवाद का अनुयायी।

रहस्य-सचिव—पु०=मर्म-सचिव। (देखें)

रहस्या—स्त्री० [स० रहस्य+टाप्] १. एक प्राचीन नदी। (महा०) २. रासना। ३. पाठा।

रहाइश—स्त्री०=रिहाइश।

रहाई—स्त्री० [हिं० रहना] १. रहने की क्रिया, ढंग या भाव। २. सुखपूर्वक रहने की अवस्था या भाव। ३ आराम। चैन। सुख।

स्त्री० [फा०]=रिहाई।

रहाऊ†—पु० [हिं० रहना] गीत मे का पहला पद। टेक। स्थायी। (पश्चिम)

वि० =रहतिया (माला)।

रहाना†—अ० [हिं० रहना] १. रहना। उदा०—उण बिन पल न रहाऊँ।—मीराँ। २. दोना।

रहावना—स्त्री० [हिं० रहना+आवन (प्रत्य०)] वह स्थान जहाँ गाँव-भर के सब पशु एकत्र होकर रहते हों। रहुनिया।

रहा-सहा—वि० [हिं० रहना+सहना (अनु०)] [स्त्री० रही-सही] बहुत थोड़ा बाकी बचा हुआ। बचा-बचाया थोड़ा-सा। जैसे—अब तो उनकी रही-सही प्रतिष्ठा भी नष्ट हो गई।

रहि—स्त्री०=राह (रास्ता)।

रहित—वि० [स०√रह (त्याग)+क्त] [भाव० रहितत्व] १. समस्त पदो के अन्त में,... के बिना,...के विहीन। जैसे—धन-रहित। २ अभावपूर्ण। ३ अलग तथा मुक्त।

रहितत्व—पु० [स० रहित+त्व] १. रहित होने की अवस्था या स्थिति। २. नियम, बधन, भार आदि से मुक्त या रहित किये जाने का भाव। (एग्जेम्पशन)

रहिम—पुं० [अ०] रहम (गर्भाशय)।

रहिला†—पुं० [?] चना।

रहीम—वि० [अ०] जो रहम करता या तरस खाता हो। करुणावान् तथा दयालु।
पुं० १. ईश्वर का एक नाम। २. अब्दुल रहीम खान खानाँ का साहित्यिक उपनाम।
रहुआ†—पुं० [हिं० रहना] किसी के यहाँ पड़ा रहने तथा उसकी रोटियों पर पलनेवाला व्यक्ति।
रहूगण—पु० [सं०] १ अगिरस् गोत्र के अंतर्गत एक शाखा या गण। (गौतम ऋषि इसी वश के थे)। २ उक्त वश का व्यक्ति।
राँक†—वि०=रक (दरिद्र)।
राँकड़†—स्त्री० [देश०] कम उपजाऊ भूमि।
राँकव—पु० [सं० रकु+अण्] रक नामक भेड़ या मृग के रोओं का बना हुआ वस्त्र।
राँग†—पु०=राँगा।
राँग—वि० [सं० रग+अण्] १ रंग-संबंधी। रग या रगों का। जैसे—राग-विन्यास। २. रगो से युक्त। रगीन।
राँगड़—पु० [?] मुसलमान राजपूतो की एक जाति।
राँगड़ी—स्त्री० [हिं० राँगड] १ दक्षिणी-पश्चिमी मालव तथा मेवाड के आस-पास की प्रातीय बोली या विभाषा। २ पजाब में होनेवाला एक प्रकार का चावल।
राँगा—पु० [सं० रग] सफेद रग की एक प्रसिद्ध धातु जो अपेक्षया नरम या मुलायम होती है।
राँच†—वि०=रच (तनिक)।
राँचना—अ० [सं० रजन] १. रग से युक्त होना। रग पकडना। २ किसी के प्रेम मे अनुरक्त होना।
स० १ किसी को अपने प्रेम मे अनुरक्त करना। २ रग से युक्त करना रगना।
†स०=रचना।
राँजना—स० [सं० रजन] १ रजित करना। रँगना।
स० [हिं० राँगा] राँगे के योगे से कोई चीज जोडना। राँगा का टाँका लगाना।
स०=आँजना (आँखो मे अजन लगाना)।
राँटा†—पु० [देश०] १ टिटिहरी चिड़िया। टिट्टिभ। २. चरखा। ३ चोरो की साकेतिक बोली।
†पु०=रहट।
राँटी—स्त्री० [हिं० राँटा] टिटिहरी।
राँड़—वि० स्त्री० [सं० रडा] (स्त्री) जिसका पति मर चुका हो तथा जिसने दूसरा विवाह आदि न किया हो।
स्त्री० १ विधवा स्त्री। २. वेश्या। ३ स्त्रियो की एक गाली।
राँढ़—वि० स्त्री०=राढ।
पु० [हिं० राढ़ देश] बगाल मे होनेवाला एक प्रकार का चावल।
राँदना†—स० [सं० रुदन] विलाप करना। रोना।
राँध—पु० [सं० परान्त=दूसरी ओर] पडोस। पार्श्व। बगल।
पद—राँध-पड़ोस।
अव्य० निकट। पास। समीप।
स्त्री० [हिं० राँधना] राँधने की क्रिया, ढग या भाव।
राँधना—स० [सं० रंधन] (भोजन आदि) पकाना। पाक करना। जैसे—दाल या चावल राँधना।
राँधपड़ोस†—पु० [हिं० राँध=पास+पडोस] आसपास या पार्श्व का स्थान। प्रतिवेश। पड़ोस।
राँपी—स्त्री० [देश०] पतली खुरपी के आकार का मोचियो का एक औजार जिससे वे चमडा काटते, छीलते और साफ करते है।
राँभना—अ०=रँभाना।
राँवाँ—पु० [?] १.गाँव या कस्बे के पास की जगली या ऊसर भूमि। २ ऐसी भूमि पर पशु चराने का कर।
†सर्व० आप। श्रीमान्। (पूरब मे सम्बोधन)
रा†—विभ०=का। उदा०—कामाणि करग सुवाण कामरा।—प्रिथीराज।
राआ†—पु०=राजा।
राइ†—पु०=राय (राजा)।
†वि० सबसे बढकर। उत्तम।
†स्त्री०=राय (सम्मति)।
†स्त्री०=राजि (पक्ति)।
राइता†—पु०=रायता।
राइफ़ल—स्त्री० [अं०] वह विशिष्ट प्रकार की बढिया बन्दूक जिसकी नली या नाल के अन्दर चक्करदार गराडियाँ बनी होती हैं, और जिसकी गोली उन गराडियो मे से चक्कर काटती हुई निकलती है। ऐसी बन्दूक की गोली दूर तक जाती, प्राय निशाने पर ठीक लगती और घातक मार करती है।
राइरंगा†—पु०=रामदाना।
राई—स्त्री० [सं० राजिका प्रा० राइआ] १ एक प्रकार की बहुत छोटी सरसो जिसका स्वाद बहुत तीक्ष्ण होता है।
पद—राई रत्ती करके=(क) छोटी से छोटी रकम या तौल का ध्यान रखते हुए। जैसे—राई रत्ती करके सारा मकान छान डालना। **तुम्हारी आँखो में राई नोन**=ईश्वर करे तुम्हारी बुरी नजर न लगने पावे।
मुहा०—राई काई करना=(क) बहुत छोटे छोटे टुकडे कर डालना। (ख) पूरी तरह से कुचल या नष्ट कर देना। **राई नोन (या लोन) उतारना**=नजर लगे हुए बच्चे पर उतारा या टोटका करके राई और नमक आग मे डालना, जिससे नजर के प्रभाव का दूर होना माना जाता है। **(किसी पर) राई नोन फेरना**=किसी सुदर व्यक्ति को बुरी नजर से बचाने के लिए उसके सिर के चारो ओर से राई और नमक घुमाकर या उतारकर फेकना। (एक प्रकार का टोटका)। **राई से पर्वत करना**=(क) जरा सी बात को बहुत बढा देना। (ख) बहुत तुच्छ या हीन को बहुत बड़ा बनाना।
२ बहुत थोडी मात्रा या परिमाण। जैसे—राई भर नमक और दे दो।
†स्त्री० [हिं० राइ] राइ अर्थात् राजा होने की अवस्था या भाव। राजापन।
†स्त्री० [?] १ एक प्रकार का नृत्य। २ वह मडली जो उक्त नृत्य करती हो।
राउ*—पु०=राव (छोटा राजा)।
पु० [सं० रव] १ रव। शब्द। २ मधुर शब्द।
राउत—पु०=रावत।

राउर*†—पुं० [सं० राज+पुर, प्रा० राय+उर] राजाओं के महल का अंतःपुर। रनवास। जनानखाना।

वि० श्रीमान् का। आप का।

राउल*†—पुं०=रावल (छोटा राजा)।

राकस*†—पुं० [स्त्री० राकसिन, राकसी] =राक्षस।

राकसगद्दा—पुं० [हिं० राकस+गद्दा] कवच नामक बेल और उसकी जड़।

राकस ताल—पुं० =राक्षस ताल।

राकस-पत्ता—पुं० [हिं० राकस=राक्षस+हिं० पत्ता] जगली घीकुँआर जिसे कॉटल और बबूर भी कहते हैं।

राकसिन—स्त्री०=राक्षसी।

राकसी—वि०, स्त्री०=राक्षसी।

राका—स्त्री० [सं०√रा (दान)+क+टाप्] १ पूर्णिमा की रात। २ पूर्णिमा या पूर्णमासी का दिन अथवा पर्व। ३ खुजली नामक रोग। ४. युवती जिसे पहले-पहल रजोदर्शन हुआ हो।

राकापति—पुं० [सं० ष० त०] चंद्रमा।

राकिम—वि० [अ०] लिखनेवाला। लेखक।

राकेश—पुं० [सं० राका-ईश, ष० त०] चंद्रमा।

राक्षस—पुं० [सं० रक्षस्+अण्] [स्त्री० राक्षसी] १ असुरो आदि की तरह की एक बहुत ही भीषण तथा विकराल योनि। इस योनि के व्यक्ति बहुत ही अत्याचारी, क्रूर और नृशस कहे गये हैं; और कुबेर के धन-कोश के रक्षक कहे गये हैं। दैत्य। निशिचर। निश्चर। २ आठ प्रकार के विवाहो में से एक प्रकार का विवाह जो राक्षसो में प्रचलित था और जिसमे लोग कन्या को जबर्दस्ती उठा ले जाते और उससे विवाह कर लेते थे। ३ बहुत ही दुष्ट प्रकृति का और निर्दय व्यक्ति। ४. साठ सवत्सरो में से उनचासवाँ सवत्सर। ५ वैद्यक मे गधक और पारे के योग से बननेवाला एक प्रकार का रसौषध।

राक्षस-ताल—पुं० [हिं०] तिब्बत की एक झील। रावण-ह्रद। मान-तलाई।

राक्षसी—स्त्री० [सं० राक्षस+ङीप्] १ राक्षस की स्त्री। २ राक्षस स्त्री। दुष्ट, क्रूर स्वभाववाली स्त्री।

वि० १ राक्षस का। राक्षस संबधी। २ राक्षसो की तरह का। अमानुषिक तथा निर्दयतापूर्ण। जैसे—राक्षसी अत्याचार।

राख—स्त्री० [सं० रक्षा ?] किसी बिलकुल जले हुए पदार्थ का अवशेष। भस्म। खाक। जैसे—कोयले की राख।

राखना*†—स० [सं० रक्षण] १. किसी से कोई बात छिपाना। कपट करना। २. रोक रखना। जाने न देना। ३ किसी पर कोई अभियोग लगाना या आरोप करना। ४ दे० 'रखना' ५ दे० 'रखाना'।

राखी—स्त्री० [सं० रक्षा] रक्षा-बंधन के दिन बहन द्वारा भाई को और ब्राह्मण द्वारा यजमान को बाँधा जानेवाला सूत्र।

क्रि० प्र०—बाँधना।

† स्त्री० १. =राख (भस्म)। २.=रखवाली।

राखीबंद—वि० [हिं० राखी+सं० बंध] १. (पुरुष) जिसे किसी स्त्री ने राखी बाँधकर अपना भाई या भाई के समान बना लिया हो। २. (स्त्री) जो किसी पुरुष को राखी बाँधती हो; और इस प्रकार उसकी बहन बन गई हो।

राग—पुं० [सं०√रञ्ज् (रँगना)+घञ्] १. किसी चीज को रंग से युक्त करने की क्रिया या भाव। रंजित करना। रँगना। २ रँगने का पदार्थ या मसाला। रंग। ३. लाल रंग। ४ लाल होने की अवस्था या भाव। लाली। ५. प्राचीन भारत मे, शरीर में लगाने का वह सुगंधित लेप जो कपूर, कस्तूरी, चदन आदि से बनाया जाता था। अंगराग। ६. पैर मे लगाने का अलता। ७. किसी के प्रति होनेवाला अनुराग या प्रेम। ८. किसी अच्छी चीज या बात के प्रति होनेवाला अनुराग; और उसे प्राप्त करने की इच्छा या कामना। अभिमत या प्रिय वस्तु पाने की अभिलाषा। ९. मन मे रहनेवाली सुखद अनुभूति। १०. खूबसूरती। सुंदरता। ११. क्रोध। गुस्सा। १२. कष्ट। तकलीफ। पीड़ा। १३. ईर्ष्या। द्वेष। मत्सर। १४. मन प्रसन्न करने की क्रिया मनोरंजन। १५ राजा। १६ सूर्य। १७. चद्रमा। १८. भारत के शास्त्रीय सगीत में वह विशिष्ट गान-प्रकार, जिसका स्वरूप स्वरों के उतार-चढाव के विचार से निश्चित किया हुआ और ताल, लय आदि विशिष्ट अगो तथा उपागो से युक्त होता है।

विशेष—आरंभ में भरत और हनुमत् के मत से ये छ मुख्य राग निरूपित हुए थे।—भैरव, कौशिक (मालकौस) हिंडोल, दीपक, श्री और मेघ। कुछ परवर्ती आचार्यों के मत से श्री, वसंत, पंचम, भैरव, मेघ और नट नारायण, तथा कुछ आचार्यों के मत से मालव, मल्लार, श्री, वसत, हिंडोल और कर्णाट ये ६ राग हैं। परवर्ती आचार्यों ने प्रत्येक की ६-६ रागिनियाँ और ६–६ पुत्र भी माने थे; और वे सब पुत्र भी 'राग' कहलाने लगे थे। ये रागिनियाँ और राग अपने मूल या जनक राग की छाया से बहुत कुछ युक्त होते हैं। आगे चलकर सैकड़ो नई रागिनियाँ तथा राग बने थे, जिनकी स्वर-योजना आदि बहुत कुछ निरूपित तथा निश्चित है। इन सबकी गणना शास्त्रीय सगीत के अतर्गत होती है; और लोक मे इन्हे पक्का गाना कहते हैं।

मुहा०—अपना राग अलापना=अपनी ही बात कहना। अपने ही विचार प्रकट करना। दूसरों की बात न सुनना।

१९ एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में १३ अक्षर (र, ज, र, ज और ग) होते हैं।

रागचूर्ण—पुं० [सं० ब० स०] १ कामदेव। २ खैर का पेड़।

रागच्छन्न—पुं० [सं० तृ० त०] १. कामदेव। २ श्रीरामचन्द्र।

रागदारी—स्त्री० [हिं० राग+फा० दारी] गाने का वह प्रकार जिसमे भरत के शास्त्रीय संगीत-शास्त्र के नियमो का ठीक तरह से पालन होता हो। ठीक तरह से राग-रागिनियाँ गाने की क्रिया या प्रकार।

विशेष—इसमे गीत के बोलों के ताल-बद्ध उच्चारण भी होते हैं और शास्त्रीय दृष्टि से तीन पलटे भी होते हैं।

रागद्रव्य—पुं० [सं० ष० त०] राग।

रागधर*—पुं०=शारगधर (विष्णु)। उदा०—तुलसी तेरो रागधर तात, मात, गुरुदेव।—तुलसी।

रागना* †—अ० [सं० राग] १. रँगा जाना। रजित होना। २. किसी के प्रति अनुरक्त होना। ३ किसी काम या बात मे निमग्न या लीन होना।

स० १. रँगना। २. प्रयत्न करना। ३. अनुरक्त करना।

स० [हिं० राग] १ गीत आदि गाना। २ राग अलापना।

राग-पुष्प—पुं० [सं० ब० स०] गुल-दुपहरिया नामक पौधा और उसका फूल।

राग-पुष्पी—स्त्री० [स० ब० स०,+ङीप्] जवा या जपा नामक फूल और उसका पौधा।

राग-माला—स्त्री० [स० ष० त०] कोई ऐसा गीत या गेय पद जिसमे एक-साथ कई शास्त्रीय रागो का प्रयोग किया गया हो।

राग-रंग—पु० [सं० द्व० स०] १. आनद-मगल। २. कोई ऐसा उत्सव जिसमे आनद-मंगल मनाया जाता हो।

राग-रज्जु—पुं० [स० ब० स०] कामदेव।

राग-लता—स्त्री० [स० मध्य० स०] कामदेव की स्त्री, रति।

राग-षाडव—पु० [सं० मध्य० स०] १ अंगूर तथा अनार के योग से बनाया जानेवाला एक तरह का खाद्य। २. आम का मुरब्बा।

राग-सागर—पु० [स० ष० त०] कोई ऐसा गीत या गेय पद जिसमे एक साथ बहुत से शास्त्रीय रागो का प्रयोग किया जाता हो।

रागसारा—स्त्री० [स० ब० स०,+टाप्] मैनसिल (खनिज पदार्थ)।

रागांगी—स्त्री० [स० राग-अंग, ब० स०,+ङीष्] मजीठ (लता)।

रागान्वित—वि० [सं० राग-अन्वित, तृ० त०] १ जिसे राग या प्रेम हो। २. क्रोध से युक्त। क्रुद्ध। ३ अप्रसन्न। नाराज।

रागारुण—वि० [स० राग-अरुण, तृ० त०] जो किसी प्रकार के राग (रग, प्रेम आदि) के कारण अरुण या लाल हो रहा हो। उदा०—मधुर माधवी सध्या मे जब रागारुण रवि होता अस्त।—पत।

रागिनी—स्त्री० [स० रागिणी] १ संगीत मे किसी राग की पत्नी। २ भारतीय शास्त्रीय सगीत मे कोई ऐसा छोटा राग जिसके स्वरो के उतार-चढ़ाव आदि का स्वरूप निश्चित और स्थिर हो। ३ चतुर और विदग्धा स्त्री। ४. मेना की बड़ी कन्या का नाम। ५. जय श्री नामक लक्ष्मी।

रागिब—वि० [अ०] १. इच्छुक। २ प्रवृत्त।

रागी (गिन्)—वि० [स०√रज्+घिनुण्, वा राग+इनि] [स्त्री० रागिनी] १ राग से युक्त। २ रँगा हुआ। ३. रँगनेवाला। ४. किसी के प्रति अनुरक्त या आसक्त। ५. लाल सुर्ख। ६ विषय-वासना मे पड़ा या फँसा हुआ।

पु० [स० रागिन्] [स्त्री० रागिनी] १. अशोक वृक्ष। २ छ मात्रा-ओवाले छदो का नाम।

पुं० [हिं० राग+ई० (प्रत्य०)] वह गवैया जो राग-रागिनियाँ गाता हो। शास्त्रीय संगीत का ज्ञाता। (पंजाब)

† स्त्री० [?] मँडुआ या मकरा नामक कदन्न।

† स्त्री० =राज्ञी।

रागेश्वरी—स्त्री० [सं० राग-ईश्वरी, ष० त०] सगीत में खम्माच ठाठ की एक रागिनी।

राघव—पुं० [सं० रघु+अण्] १ रघु के वश मे उत्पन्न व्यक्ति। २ श्रीरामचन्द्र। ३ दशरथ। ४. अज। ५. एक प्रकार की बहुत बड़ी समुद्री मछली।

राचना —स० [हिं० रचना] रचना करना। बनाना।

अ० रचा या बनाया जाना। बनना।

स० [स० रंजन] रंग से युक्त करना। रंगना।

अ० १. रग से युक्त होना। रँगा जाना। २. किसी के प्रेम में पड़ना। अनुरक्त होना। ३ किसी काम या बात मे मग्न या लीन होना। ४. प्रसन्न होना। ५ भला लगना। फबना। ६. सोच में पड़ना।

राछ—स्त्री० [स० रक्ष] १. कारीगरो का औजार। उपकरण। २. लकड़ी के अन्दर का ठोस और पक्का अंश। हीर। ३. जुलाहों के करघे मे का कघी नामक उपकरण जिसकी सहायता से ताने के सूत ऊपर उठते और नीचे गिरते है। ४ बरात।

मुहा०—**राछ घुमाना**=विवाह के समय वर को पालकी पर चढ़ाकर किसी जलाशय या कूएँ की परिक्रमा कराना।

५ जलूस। ६ वह खूँटा जिसके चारो ओर चक्की या जाँते का ऊपरी पाट घुमता या घुमाया जाता है। ६ हथौड़ा। ७ बुंदेलखड में, श्रावण मास मे गाये जानेवाले एक प्रकार के गीत।

राछछ †—पु०=राक्षस।

राछ-बँधिया—पु० [हिं० राछ+बाँधना] वह जो जुलाहे के साथ रहकर राछ बाँधने का काम करता हो।

राछस *—पु०=राक्षस।

राज—पु० [स० राज्य] १ राजा के अधिकार मे रहनेवाले क्षेत्र या भूखड। राज्य। २ राजकीय शासन। हुकूमत। ३ राजाओ का सा वैभव और सुख तथा उसका भोग।

मुहा०—**राज रजना**=(क) राज्य का शासन करना। (ख) राजाओं की तरह रहकर सब प्रकार के सुख भोगना। **(किसी का) राज रजाना**=राजाओ की तरह बहुत अधिक सुखपूर्वक रखना या सुख-भोग कराना।

४ किसी क्षेत्र या विषय मे होनेवाले किसी का पूरा अधिकार। जैसे—आज-कल तो पेशेवर नेताओ का राज है। ५ किसी के पूर्ण अधिकार या स्वामित्व की पूरी अवधि या काल। जैसे—मैं तो पिता जी के राज में सब सुख भोग चुका।

वि० १ 'राजा' का वह सक्षिप्त रूप जो यौगिक के आरंभ मे लगाकर नीचे लिखे अर्थ देता है—(क) राज-सबधी या राजा का। जैसे—राज-गुरु, राज-महल। (ख) प्रधान या मुख्य। जैसे—राजवैद्य। (ग) बहुत बडा या बढ़िया। जैसे—राजहंस। २ राज या शासन सबंधी। जैसे—राजनीति।

सर्व० राजाओ या बडों के लिए एक प्रकार का सबोधन। उदा०—राज लगँ मेल्हियौ रुखमणि।—प्रिथीराज।

पु० [स० राजन्] १ राजा। २ वह मिस्त्री जो ईंटो की जुड़ाई तथा पलस्तर आदि करता हो। मकान बनानेवाला कारीगर।

पुं० [फा० राज] गुप्त या छिपी हुई बात। भेद। रहस्य।

राजक—वि० [स०√राज् (दीप्ति)+ण्वुल्—अक] प्रकाशमान्। चमकनेवाला।

पु० [राजन्+कन्] १. राजा। २. काला अगरु।

राज-कथा—स्त्री० [स० ष० त०] राजाओ का इतिहास या तवारीख।

राज-कदंब—पु० [सं० ष० त०, परनिपात] कदब की एक जाति।

राज-कन्या—स्त्री० [स० ष० त०] १ राजा की पुत्री। राजकुमारी। २. केवड़े का फूल।

राजकर—पुं० [सं० मध्य० स०] राजा या राज्य की ओर से लगाया हुआ कर।

राजकर्कटी—स्त्री० [सं० ष० त०] एक प्रकार की बड़ी ककड़ी।

राज-कर्ण—पुं० [सं० ष० त०] हाथी की सूँड़।

राजकर्ता—पुं० [सं० ष० त०] १. वह जो किसी को राजगद्दी पर बैठाता हो। २. फलत. ऐसा व्यक्ति जिसमे किसी को राजगद्दी पर बैठाने तथा उतारने की भी सामर्थ्य हो। ३ वह जो राजा या शासन-सम्बन्धी बड़े और महत्त्वपूर्ण कार्य करता हो।

राजकर्म (र्मन्)—पु० [सं० ष० त०] १. राजा के कृत्य। २. राजा के कर्तव्य।

राजकला—स्त्री० [स० ष० त०] चद्रमा की सोलह कलाओं में से एक।

राजकल्याण—पु० [सं०] सगीत मे कल्याण राग का एक प्रकार का भेद।

राजकशेरु—पुं० [स० ष० त०, परनिपात] नागरमोथा।

राजकाज—पु० [स० राजकार्य] राज्य या शासन के प्रतिदिन के या महत्त्व-पूर्ण काम।

राजकीय—वि० [सं० राजन्+छ—ईय, कुक्-आगम] राज्य संबंधी। राज्य का। जैसे—राजकीय अधिकारी।

राजकीय-समाजवाद—पु० [स०] आधुनिक समाजवाद की वह शाखा जिसका मुख्य सिद्धात यह है कि लोकोपयोगी कल-कारखाने और शिल्प राज्य के अधिकार और नियत्रण में रहने चाहिए। (स्टेट सोशलिज्म)

राजकुँअर†—पुं०=राजकुमार।

राजकुमार—पु० [सं० ष० त०] [स्त्री० राजकुमारी] राजा का पुत्र।

राजकुल—पु० [स० ष० त०] १ राजा का कुल या वंश। २ प्रासाद। ३. न्यायालय।

राजकोल—पु० [स० ष० त०, परनिपात] बडा बेर (फल) और उसका पेड़।

राजकोलाहल—पु० [स० ष० त० परनिपात] सगीत मे ताल के साठ मुख्य भेदो मे से एक।

राजकोष—पु० [स०] १. वह स्थान जहाँ राजकीय धनसंपत्ति सुरक्षित रूप से रखी जाती है। सरकारी खजाना। २. आज-कल प्रमुख नगरों मे वह विशिष्ट स्थान जहाँ से राज्य के आर्थिक लेन-देन के सब काम होते हैं। (ट्रेजरी)

राजकोषातक—पुं० [स० ष० त०, परनिपात] बडी तरोई। बड़ा घेनुआ।

राजखर्जूरी—स्त्री० [स० मध्य० स०] पिंडखजूर।

राजग—वि०, पुं०=राजगामी। (दे०)

राजगद्दी—स्त्री० [हिं० राजा+गद्दी] वह आसन या गद्दी जिस पर राजा बैठता है। राजसिंहासन। २. वह अधिकार जो उक्त आसन पर बैठने पर प्राप्त होता है। ३. नये राजा के पहले पहल गद्दी पर बैठने के समय का उत्सव तथा दूसरे कृत्य। राज्याभिषेक। राज्यारोहण। ४. लाक्षणिक अर्थ मे, बहुत बडा अधिकार। (व्यंग्य)

राजगामी—वि० [सं०] (संपत्ति) जो उत्तराधिकारी के अभाव में राज्य या शासन के अधिकार मे आ जाय।

पुं० ऐसी सपत्ति जो उत्तराधिकारी के अभाव मे राज्य के अधिकार में आ गई हो। नजूल। (एस्चीट)

राज-गिद्ध—पुं० [सं० राज-गृध्र] काले चमकीले रंग का एक प्रकार का गिद्ध जो प्रायः अकेला ही रहता है।

राजगिरि—पुं० [सं० मध्य० स०] १. मगध देश का पर्वत। २ बथुआ नामक साग। ३. दे० 'राजगृह'।

राजगी†—स्त्री० [हिं० राजा+गी (प्रत्य०)] राजा होने की अवस्था, पद या भाव। राजत्व।

राजगीर—पुं० [हिं० राज+फा० गीर] [भाव० राजगीरी] मकान बनानेवाला कारीगर। राज। थवई।

राजगीरी—स्त्री० [हिं० राजगीर+ई (प्रत्य०)] राजगीर का कार्य या पद।

राजगृह—पु० [सं० ष० त०] १. राजा के रहने का महल। राज-प्रासाद। २. बिहार में पटने के पास का एक प्रसिद्ध प्राचीन स्थान जिसे पहले गिरिव्रज कहते थे।

राजघ—वि० [सं० राजन्√हन् (हिंसा)+क] १. राजा को मार डालनेवाला। राजा की हत्या करनेवाला। २ बहुत तीव्र या तेज।

राज-घड़ियाल—पु० [हिं० राज+घड़ियाल] मध्य युग में एक प्रकार का समय-सूचक यंत्र जिसमे निश्चित समयो पर घडियाल या घंटा भी बजता था। उदा०—नव पौरी पर दसँव दुआरा। तेहि पर बाज राज-घरियारा।—जायसी।

राजचंपक—पु० [सं० ष० त०, परनिपात] पुन्नाग का फूल। सुलताना चंपा।

राजचार—पुं० [सं० राजाचार] राजाओं के यहाँ किये जाने या होनेवाले आचार-व्यवहार। उदा०—मैं भाँवरि नेवछावरि, राजचार सब कीन्ह।—जायसी।

राज-चिह्नक—पु० [स० ष० त०, परनिपात+कन्] शिश्न। उपस्थ।

राजचूड़ामणि—पु० [स० ष० त०] ताल के साठ भेदो मे से एक।

राजजंबू—पु० [स० ष० त०, परनिपात] १. बडा जामुन। फरेंदा। जामुन। २. पिंड खजूर।

राजजीरक—पुं० [सं० ष० त० परनिपात] एक प्रकार का जीरा।

राजतंत्र—पुं० [सं० ष० त०] १. ऐसा राज्य या शासन जिसमें सारी सत्ता एक राजा के हाथ में हो। (मॉनर्की) २ वह पद्धति या प्रणाली जिसके अनुसार उक्त प्रकार का शासन होता है। ३ राज्य के शासन करने के नियम, प्रकार और सिद्धांत। (पॉलिटी)

राजत—वि० [स० रजत+अण्] १. रजत सबधी। चाँदी का। ३. रजत या चाँदी का बना हुआ।

पु०† रजत (चाँदी)।

राजतरंगिणी—स्त्री० [सं० ष० त०] कल्हण कृत काश्मीर का एक प्रसिद्ध सस्कृत ऐतिहासिक ग्रथ जिसमे पीछे कई पडितो ने बहुत सी बातें बढाई थीं। इसकी रचना का क्रम अब तक चल रहा है।

राजतरु—पुं० [सं० ष० त०, परनिपात] १. कर्णिकार का वृक्ष। कनियारी। २ अमलतास।

राज-तरुणी—स्त्री० [सं० ष० त०] १. सफेद तथा बड़े फूलोवाली एक तरह की गुलाब की लता। २. बड़ी सेवती।

राजता—स्त्री० [स० राजन्+तल+टाप्] १. राजा होने की अवस्था, पद या भाव। राजत्व।

राज-तिलक—पुं० [सं० ष० त०] १. राजा को लगाया जानेवाला तिलक।

२. विशेषत. राज्यारोहण के समय राजा को लगाया जानेवाला तिलक। ३ वह उत्सव जो नये राजा को राजसिंहासन पर बैठाकर तिलक लगाने के अवसर पर होता है।

राजत्व—पु० [सं० राजन्+त्व] १ राजा होने की अवस्था, पद या भाव।

राज-दंड—पुं० [सं० ष० त०] १ राजा के हाथ मे रहनेवाला वह दंड या डंडा जो उसके शासक होने का प्रतीक होता है। २ राजा या राज्य के द्वारा अपराधियों, दोषियो आदि को मिलनेवाला दंड या सजा।

राज-दंत—पु० [सं० ष० त०, परनिपात] दांतों की पंक्ति के बीच का वह दांत जो और दांतो से कुछ बडा और चौडा होता है। चौका।

राज-दारिका—स्त्री० =राज-पुत्री।

राज-दूत—पु० [सं० ष० त०] किसी राजा या राज्य का वह दूत जो दूसरे राजा के यहाँ या राज्य में अपने राजा या राज्य का प्रतिनिधित्व करता है।

राजदृषद्—स्त्री० [सं० ष० त०, परनिपात] चक्की। जाँता।

राजदेशीय—वि० [सं० राजन्+देशीयर] जो राजा न होने पर भी राजा के बहुत कुछ समान हो। राजा के तुल्य। राज-कल्प।

राज-द्रुम—पु० [सं० ष० त०, परनिपात] अमलतास।

राजद्रोह—पु० [सं० ष० त०] राजा या राज्य के प्रति किया जानेवाला द्रोह। वह कृत्य जिससे राजा या राज्य के नाश या बहुत बडे अहित की संभावना हो। बगावत। जैसे—प्रजा या सेना को राजा या राज्य से लडने के लिए अथवा उसकी आज्ञाओ, नियमो, निश्चयो आदि के विरुद्ध काम करने के लिए उत्तेजित करना या भडकाना। (सेडिशन)

राजद्रोही (हिन्)—पु०[सं० राजद्रोह+इनि] वह जिसने राजद्रोह किया हो। बागी।

राज-द्वार—पु० [सं० ष० त०] १ राजा के महल का द्वार। राजा की ड्योढी। २ राजा का दरबार जहाँ अपराधियों का न्याय होता था। ३ कचहरी। न्यायालय।

राज-धर्म—पु० [सं० ष० त०] राजा का कर्तव्य या धर्म। जैसे—प्रजा का पालन, शत्रु से देश की रक्षा, देश मे शान्ति और व्यवस्था बनाये रखना आदि।

राजधानी—स्त्री० [सं० ष० त०] १ किसी राज्य का वह नगर जिसमे स्थायी रूप से उसका राजा निवास करता हो। २ किसी राज्य का वह नगर जो उसका शासन-केंद्र हो।

राज-धान्य—पु० [सं० मध्य० स०] एक प्रकार का धान। श्यामा।

राजधुस्तूरक—पु० [सं० ष० त०, परनिपात] १ एक प्रकार का धतूरा जिसके फूल बडे और कई आवरण के होते हैं। २ कनक-धतूरा।

राज-नय—पु० [सं० ष० त०] राजनीति।

राजनयिक—वि०=राजनीतिक।

पु० राजनीतिज्ञ।

राजना—अ० [सं० राजन=शोभित होना] १ किसी पदार्थ से किसी अन्य पदार्थ या स्थान की शोभा बढना। सुशोभित होना। उदा०—मोर-मुकुट की चन्द्रिकनि यो राजत नद-नद। —बिहारी। २ किसी व्यक्ति का किसी स्थान पर, विराजमान होकर उसकी शोभा बढाना। उदा०—मन्दिर मँह सब राजहिं रानी।—तुलसी।

राजनामा (मन्)—पु० [सं० ब० स०] पटोल। परवल।

राजनायक—पु० [सं०] राजमर्मज्ञ। (दे०)

राजनीति—स्त्री० [सं० ष० त०] [वि० राजनीतिक] १ वह नीति या पद्धति जिस के अनुसार किसी राज्य का प्रशासन किया जाता या होता है। २ गुटो, वर्गों आदि की पारस्परिक स्पर्धावाली तथा स्वार्थपूर्ण नीति। (पॉलिटिक्स) जैसे—विद्यालय की राजनीति से आचार्य महोदय दुःखी हैं।

राजनीतिक—वि० [सं० राजनीति+ठक्—इक] राजनीति-संबंधी। राजनीति का। जैसे—राजनीतिक आंदोलन, राजनीतिक सभा।

राजनीतिज्ञ—वि० [सं० राजनीति√ज्ञा (जानना)+क] राजनीति का ज्ञाता।

राजन्य—पु० [सं० राजन्+यत्] १ क्षत्रिय। २. राजा। ३ अग्नि। ४ खिरनी का पेड और उसका फल।

राजन्यबंधु—पु० [सं० ष० त०] क्षत्रिय।

राजपंखी—पु०=राजहंस।

राजपंथ*—पु०=राजपथ।

राजप—पु० [सं० राजन्√पा (रक्षा)+क, उप० स०] १ वह जिसे किसी राजा की अल्पवयस्कता, अनुपस्थिति, शारीरिक असमर्थता आदि के समय राजा या राज्य के शासन के सब काम सौंपे जायँ। शून्यपाल। २ कुछ संस्थाओ मे वह सर्व-प्रधान अधिकारी जो उसके शासन-संबंधी सब काम करता हो। (रीजेन्ट)

राज-पट्ट—पु० [सं० ष० त०] १ राजा का सिंहासन। २ चुंबक पत्थर।

राज-पति—पु० [सं० ष० त०] राजाओ का राजा। सम्राट्।

राज-पत्नी—स्त्री० [सं० ष० त०] १ राजा की स्त्री। रानी। २. पीतल नामक धातु।

राजपत्र—पु० [सं०] राज्य द्वारा आधिकारिक रूप से प्रकाशित होनेवाला वह सामयिक पत्र जिसमे राजकीय घोषणाएँ, उच्च-पदस्थ कर्मचारियो की नियुक्तियाँ, नये नियम और विधान तथा इसी प्रकार की और प्रमुख सूचनाएँ प्रकाशित होती हैं। (गजट)

राजपत्रित—भू० कृ० [सं०] जिसका उल्लेख या घोषणा राजपत्र मे हो चुका हो। (गजटेड) जैसे—राजपत्रित पदाधिकारी, राजपत्रित सेवा।

राज-पथ—पु० [सं० ष० त०] राजमार्ग। (दे०)

राज-पद्धति—स्त्री० [सं० ष० त०] १ राजपथ। २ राजनीति।

राज-पलांडु—पु० [सं० ष० त०, परनिपात] लाल छिलकेवाला प्याज।

राज-पाट—पु० [सं० राजपट्ट] १ राजा का सिंहासन और राज्य। २ राजा के अधिकार तथा कर्त्तव्य। ३ राज्य का शासन-प्रबंध।

राज-पाल—पु० [सं० राजन्√पाल्+अच्] वह जिससे राजा या राज्य की रक्षा हो। जैसे—सेना आदि।

†पु०=राज्यपाल।

राजपीलु—पु० [सं० मध्य० स०] महापीलु (वृक्ष)।

राज-पुत्र—पु० [सं० ष० त०] १ राजा का पुत्र या बेटा। राजकुमार। २ प्राचीन भारत की एक वर्णसंकर जाति जिसकी उत्पत्ति क्षत्रिय पिता और कर्ण जाति की माता से कही गई है। ३. एक प्रकार का बडा आम। ४ बुध ग्रह।

राजपुत्रक—पु०=राजपुत्र।

राज-पुत्रा—स्त्री० [सं० ब० स०,+टाप्] राजमाता।

राजपुत्रिका—स्त्री० [सं० राजपुत्री+कन्+टाप्, ह्रस्व] १ राजा की

बेटी। राजकन्या। २. सफेद जूही। ३. पीतल नामक धातु। ४. एक प्रकार का पक्षी जिसे धरारि भी कहते हैं।

राज-पुत्री—स्त्री० [सं० ष० त०] १. राजा की बेटी या लड़की। राजकुमारी। २. रेणुका का एक नाम। ३. कड़ुआ कद्दू। ४. जाती या जाही नामक पौधा और उसका फूल। ५. मालती। ६. छछूँदर।

राज-पुरुष—पुं० [सं० ष०त०] राज्य का कोई प्रधान अधिकारी या कार्य-कर्त्ता। राजकर्मकारी।

राज-पुष्प—पुं० [सं० ष० त०, परनिपात] १. नागकेसर। २ कनक चपा।

राज-पुष्पी—स्त्री० [सं० ब० स०,+ङीष्] १. वन मल्लिका। २ जाती या जाही। ३. कोकण प्रदेश में होनेवाला करुणी नामक पौधा और उसका फूल।

राज-पूजित—वि० [सं० तृ० त०] १ जिसकी जीविका का प्रबंध राजा या राज्य करता हो।

पुं० ब्राह्मण।

राज-पूज्य—पुं० [सं० ष० त०] सुवर्ण। सोना।

वि० राजा या राज्य जिसे आदरणीय और पूज्य समझता हो।

राजपूत—पुं० [सं० राजपुत्र] १ राजपूताने मे रहनेवाले क्षत्रियों के कुछ विशिष्ट वश जो एक बडी और स्वतंत्र जाति के रूप में माने जाते हैं। २ राजपूताने का क्षत्रिय वीर।

राजपूताना—पुं० [हिं० राजपूत+आना (प्रत्य०)] आधुनिक राजस्थान का पुराना नाम जो राजपूतो का गढ़ माना जाता है।

राज-प्रिय—पुं० [सं० ष० त०] १. राजपलांडु। २ कोकण का करुणी नामक पौधा और उसका फूल। ३ लाल धान। ४ लाल प्याज।

राजप्रिया—स्त्री० [सं० ष० त०] १. एक प्रकार का धान जो लाल रंग का होता है और जिसका चावल सफेद तथा स्वादिष्ट होता है। तिल-वासिनी। २. दे० 'राजप्रिय'।

राज-प्रेष्य—पुं० [सं० ष० त०] राजकर्मचारी।

राज-फल—पुं० [सं० मध्य० स०] १ पटोल। परवल। २ बडा और बढ़िया आम। ३ खिरनी।

राज-फला—स्त्री० [सं० ब० स०+टाप्] जामुन।

राजबंसी—पुं० [सं० राज-वश] साँप।

राजबदर—पुं० [सं० ष० त०, परनिपात] १. पैवंदी या पेउंदी बेर। २ [ष० त०] लाल आँवला, ३ नमक। लवण।

राज-बहा—पुं० [हिं० राज+बहना] वह प्रधान या बड़ी नहर जिससे अनेक छोटी छोटी नहरें खेतों को सींचने के लिए निकाली जाती हैं।

राज-बाड़ी—स्त्री० [सं० राजवाटिका] १. राजा की वाटिका। राजवाटिका। २. राजा के रहने का महल।

राज-बाहा—पुं०=राज-बहा।

राज-भंडार—पुं० [सं० राज-भाडार] राजा या राज्य का कोश या खजाना।

राज-भक्त—वि० [सं० ष० त०] [भाव० राजभक्ति] जो अपने राजा या राज्य के प्रति भक्ति तथा निष्ठा रखता हो।

राज-भक्ति—स्त्री० [सं० ष० त०] राजा या राज्य के प्रति भक्ति अर्थात् निष्ठा और श्रद्धा।

राज-भद्रिका—स्त्री० [सं० ष० त०] एक प्रकार का जलपक्षी। गोभांडीर। पकरीट।

राज-भवन—पुं० [सं० ष० त०] १. वह भवन जिसमें राजा अथवा राज्य का प्रधान अधिकारी निवास करता हो। २. राजमहल। प्रासाद। ३. वह सरकारी भवन जिसमे राजपाल रहते हों। ३. सरकारी अधि-कारियों के अतिथि के रूप मे ठहरने के लिए बना हुआ भवन।

राजभूय—पुं० [सं० राजन्√भू (सत्ता)+क्यप्] राजत्व। राज्य।

राज-भृत्य—पुं० [सं० ष० त०] राजा का वेतनभोगी भृत्य।

राज-भोग—पुं० [सं० राजभोग्य] १. एक प्रकार का बढ़िया महीन चावल। २. एक प्रकार का बढ़िया आम।

राज-भोग्य—पुं० [सं० तृ० त०] १ जावित्री। २. चिरौंजी। पयाल। ३. एक प्रकार का धान।

वि० जिसके भोग राजा लोग करते हो।

राज-मंडल—पुं० [सं० ष० त०] किसी राज्य के आसपास तथा चारों ओर के राजाओं का मडल या उनका समाहार।

राज-मंडूक—पुं० [सं० ष० त०, परनिपात] एक प्रकार का बड़ा मेढ़क। महामंडूक।

राज-मराल—पुं० [सं० ष० त०, परनिपात] राजहस।

राज-मर्मज्ञ—पुं० [सं०] वह जो राज्य के शासन की सभी सूक्ष्म बातें अच्छी तरह समझता हो और राज्य-सचालन के कार्यों मे दक्ष हो। (स्टेट्समैन)

राज-महल—पुं० [हिं० राज+महल] १. राजा के रहने का महल। राजप्रासाद। २. बगाल के सन्थाल परगने के पास का एक पर्वत।

राज-महिषी—स्त्री० [सं० ष० त०] पट्टरानी।

राजमात्र—पुं० [सं० राजन्+मात्रच्] नाम मात्र का राजा।

राज-मार्ग—पुं० [सं० ष० त०] १ राजधानी अथवा किसी प्रमुख नगर की सबसे बडी और चौड़ी सड़क। २. विशेषतः वह चौड़ी सड़क जो राजभवन को जाती हो।

राज-माष—पुं० [सं० ष० त०, परनिपात] काली उरद। कालामाष।

राज-माष्य—पुं० [सं० राजमाष+यत्] वह खेत जिसमे माष बोया जाता हो। मलार।

राज-मुद्ग—पुं० [सं० ष० त०, परनिपात] सुनहले रग का एक प्रकार का मूँग, जो बहुत स्वादिष्ट होता है।

राज-मुद्रा—स्त्री० [सं० ष० त०] १. सरकारी मोहर। २ उक्त मोहर की छाप।

राज-मुनि—पुं० [सं० उपमित० स०] राजर्षि।

राज-मृगांक—पुं० [सं० ष० त०, परनिपात] वैद्यक मे एक प्रकार का रस जो यक्ष्मा रोग मे उपकारी माना जता है।

राज-यक्ष्मा (क्ष्मन्)—पुं० [सं० ष० त०, परनिपात] क्षय या यक्ष्मा नामक रोग। तपेदिक।

राज-यक्ष्मी (क्ष्मिन्)—वि० [सं० राजयक्ष्मन्+इनि] जिसे राजयक्ष्मा रोग हुआ हो। क्षय रोग से पीड़ित (रोगी)।

राज-यान—पुं० [सं० ष० त०] १. प्राचीन काल मे वह रथ जिसपर राजा की सवारी निकलती थी। २. राज मार्ग पर निकलनेवाली राजा की सवारी। ३. पालकी, जिसपर पहले केवल राजा लोग चलते थे।

राज-योग—पु० [सं० ष० त०, परनिपात] १. वह मूल योग जिसका प्रतिपादन पतंजलि ने योगशास्त्र मे किया है। अष्टाग योग। २. फलित ज्योतिष के अनुसार कुछ विशिष्ट ग्रहों का योग जिसके जन्म-कुंडली मे पड़ने से मनुष्य राजा या राजा के तुल्य होता है।

राज-योग्य—पु० [सं० ष० त०] चदन।

राज-रंग—पु० [सं० मध्य० स०] चाँदी।

राज-रथ—पु० [सं० ष० त०] १. राजा की सवारी का रथ। २. बहुत बड़ा रथ।

राज-राज—पुं० [सं० ष० त०] १. राजाओ का राजा। अधिराज। महाराज। २. कुबेर। ३. सम्राट्।

राज-राजेश्वर—पु० [सं० राजराज-ईश्वर, ष० त०] [स्त्री० राजराजेश्वरी] १. राजाओ का राजा। अधिराज। महाराज। २. वैद्यक मे एक प्रकार का रसौषध जिसका प्रयोग दाद, कुष्ठ आदि रोगो मे होता है।

राज-राजेश्वरी—स्त्री० [सं०राजराज-ईश्वरी, ष० त०] १. राजराजेश्वर की पत्नी। महारानी। २. दस महाविद्याओ मे से एक का नाम। भुवनेश्वरी।

राज-रानी—स्त्री० [हिं०] १. राजा की रानी। २. बहुत ही सम्पन्न और सुखी स्त्री।

राज-रीति—पु० [सं० ष० त०, परनिपात] काँसा।

राज-रोग—पु० [ष० त०, परनिपात] ऐसा रोग जिससे पीछा छूटना असभव हो। असाध्य रोग। जैसे—यक्ष्मा, लकवा, श्वास आदि।

राजर्षि—पु० [सं० राजन्-ऋषि, उपमित स०] वह ऋषि जिसका जन्म किसी राजवश अर्थात् क्षत्रिय कुल मे हुआ हो।

राजल—पु० [हिं० राजा+ल (प्रत्य०)] अगहन मे तैयार होनेवाला एक प्रकार का धान।

राज-लक्षण—पु० [सं० ष० त०] सामुद्रिक के अनुसार शरीर के वे चिह्न या लक्षण जो इस बात के सूचक होते है कि उनका धारणकर्ता राजा बनेगा।

राजलक्ष्म (क्ष्मन्)—पु० [सं० ष० त०] १. राजाओं के साथ चलनेवाले प्रतीक। राजचिह्न।

राज-लक्ष्मा (क्ष्मन्)—पु० [सं० ब० स०] १ वह मनुष्य जिसमे सामुद्रिक के अनुसार राजाओ के लक्षण हो। राज-लक्षण से युक्त पुरुष। २. युधिष्ठिर का एक नाम।

राज-लक्ष्मी—स्त्री० [सं० ष० त०] १. राजाओ या राज्य का वैभव। राजश्री। २. राजा या राज्य की शोभा और सपदा।

राज-वंश—पु० [सं० ष० त०] राजा का कुल। राजकुल।

राजवंशी (शिन्)—वि० [सं० राजवंश+इनि] १. राज-वंश सबधी। राज-वंश का। २. जो राज-वंश मे उत्पन्न हुआ हो।
पु० साँप।

राज-वंश्य—वि०=राज-वंशी।

राज-वर्चा (चंस्)—पु० [सं० ष० त०] राजा का पद और शक्ति।

राज-वर्त्म (र्त्मन्)—पु० [सं० ष० त०] राजमार्ग। राजपथ।

राजवला—स्त्री० [सं०√राज् (दीप्ति)+अच्+टाप्, राजा-वला, कर्म० स०] प्रसारिणी लता।

राजवल्लभ—पु० [सं० ष० त०] १. खिरनी। २. बड़ा और बढ़िया आम। ३ पैबन्दी और बड़ा बेर। ४. वैद्यक में एक मिश्र औषध जो शूल, गुल्म, ग्रहणी, अतिसार आदि में दी जाती है।

राज-वल्ली—स्त्री० [सं० मध्य० स०] करेले की लता।

राज-वसति—स्त्री० [सं० ष० त०] राजा का महल। राजभवन।

राज-वाह—पु० [सं० राजन्√वह् (ढोना)+अण्, उप० स०] घोड़ा।

राज-वाह्य—पु० [सं० ष० त०] हाथी।

राज-वि—पु० [सं० ष० त०] नीलकंठ।

राज-विजय—पु० [सं० ष० त०] सपूर्ण जाति का एक राग। (सगीत)

राज-विद्या—स्त्री० [सं० ष० त०] १. राज्य के शासन संबंधी ज्ञातव्य बातें। २ राजनीति।

राज-विद्रोह—पु० [सं० ष० त०] राजा या राज्य के प्रति किया जानेवाला विद्रोह जो भीषण अपराध माना गया है। राजद्रोह। बगावत।

राजविद्रोही (हिन्)—पु० [सं० राजविद्रोह+इनि] राजा या राज्य के प्रति विद्रोह करनेवाला व्यक्ति। बागी।

राज-विनोद—पु० [सं० ष० त०] सगीत मे एक प्रकार का ताल।

राजवी—पु० [सं० राजबीजी] राजवंशी। उदा०—नम नम नीसरियाह राण बिना सहराजवी।—पृथ्वीराज।

राजवीजी (जिन्)—वि० [सं० राजन्-बीज, ष० त० +इनि] राजवंशी।

राज-वीथी—स्त्री० [सं० ष० त०] १ राजमार्ग। राजपथ। चौड़ी सड़क। २ प्राचीन भारत मे, वह गली या छोटी सड़क जो आकर राजमार्ग मे मिलती थी।

राज-वृक्ष—पु० [सं० ष० त०, परनिपात] १. आरग्वध या अमलतास का पेड़। २ चिरौंजी या पयाल का पेड़। ३. भद्रचूड़ नामक वृक्ष। ४ श्योनाक। सोनापाढा।

राजशण—पु० [सं० ष० त०] पटसन।

राजशफर—पु० [सं० मध्य० स०] हिलसा (मछली)।

राज-शाक—पु० [सं० ष० त०, परनिपात वा मध्य० स०] वास्तुक शाक। बथुआ।

राज-शालि—पु० [सं० मध्य० स०] एक प्रकार का जड़हन धान जिसे राजभोग्य या राजभोग भी कहते है। इसका चावल बहुत महीन और सुगंधित होता है।

राज-शिंबी—स्त्री० [सं० ष० त०, परनिपात] एक प्रकार की सेम जो चौड़ी और गूदेदार होती है।

राज-शुक—पु० [सं० ष० त०, परनिपात] एक प्रकार का लाल रंग का तोता। नूरी।

राज-श्री—स्त्री० [सं० ष० त०] राजा का ऐश्वर्य या वैभव। राज-लक्ष्मी।

राज-ससद—पु० [सं० ष० त०] १ राजसभा। २. वह दरबार जिसमें राजा स्वयं बैठकर अभियोगों का न्याय करता हो।

राजसंस्करण—पु० [सं०] किसी पुस्तक के साधारण संस्करण से भिन्न वह संस्करण जो बहुत बढ़िया कागज पर छपा हो और जिस पर बढ़िया जिल्द बंधी हो। (डीलक्स एडिसन)

राजस—वि० [सं० रजस्+अण्] [स्त्री० राजसी] रजोगुण से उत्पन्न अथवा युक्त। रजोगुणी। जैसे—राजस दान, राजस बुद्धि आदि।

राज-सत्ता—स्त्री० [सं० ष० त०] राजशक्ति। राजा या राज्य के हाथ मे होनेवाली सत्ता या शक्ति।

राज-सभा—स्त्री० [सं० ष० त०] १. राजा की सभा। दरबार। २. बहुत से राजाओं की सभा या मजलिस।

राज-समाज—पुं० [सं० ष० त०] १. राजा का दरबार। राज-दरबार। २. राजाओं की सभा, वर्ग या समूह।

राज-सर्प—पुं० [सं० ष० त०, परनिपात] एक प्रकार का बड़ा साँप। भुजंग-भोजी।

राज-सर्षप—पुं० [सं० ष० त०, परनिपात] राई।

राज-सायुज्य—पुं० [सं० ष० त०] राजत्व।

राज-सारस—पुं० [सं० ष० त०] मयूर। मोर।

राज-सिंहासन—पुं० [सं०ष०त०] वह सिंहासन जिस पर राजा दरबार में बैठता है। राजगद्दी।

राजसिक—वि० [सं० रजस्+ठञ्—इक] रजोगुण से उत्पन्न। राजस।

राजसिरी—स्त्री०=राजश्री।

राजसी—वि० [हिं० राजा] जो राजाओं के महत्त्व, वैभव आदि के लिए उपयुक्त हो। जिसका उपयोग राजा ही करते या कर सकते हों, अथवा जो राजाओं को ही शोभा देता हो। जैसे—राजसी ठाठबाट, राजसी महल।

वि०[सं०] जिसमें रजोगुण की प्रधानता हो। रजोगुण युक्त।

राजसूय—पुं० [सं० राजन्√सू(प्रसव)+क्यप्] एक प्रकार का यज्ञ जो बड़े बड़े राजा सम्राट्-पद के अधिकारी बनने के लिए करते थे। यह अनेक यज्ञो की समष्टि के रूप मे होता और बहुत दिनो तक चलता था। इस यज्ञ के उपरान्त राजा को दिग्विजय के लिए निकलना पड़ता था और दिग्विजय कर चुकने पर वह सम्राट् पद का अधिकारी होता था।

राजसूयिक—वि०[स० राजसूय+ठक्—इक] राजसूय यज्ञ के रूप में होनेवाला अथवा उससे सबध रखनेवाला।

राजसूयी (यिन्)—पुं०[स० राजसूय+इनि] राजसूय यज्ञ करनेवाला पुरोहित।

राज-स्कंध—पुं०[सं० ष० त०] घोड़ा।

राज-स्थान—पु०[स० ष०त०] गणतन्त्र भारत में, पश्चिमोत्तर का एक राज्य जिसकी राजधानी जयपुर मे है और जिसमें पुराना राजपूताना अन्तर्भुक्त है।

राजस्व—पु० [सं० मध्य० स०]१. राजा या राज्य की आय। २. वह धन जो राजा या राज्य को अधिकारिक रूप से मिलता हो। ३. वह शास्त्र जिसमें राज्य की आय के साधनो और उनकी व्यवस्था आदि का विवेचन होता है।

राज-स्वर्ण—पु० [सं० ष० त०, परनिपात] राजधत्तूरक। राजधतूरा।

राज-स्वामी (मिन्)—पुं०[सं० ष० त०] विष्णु।

राज-हंस—पुं०[स० ष० त०, परनिपात] [स्त्री० राजहंसी]१ एक प्रकार का हंस। २ संगीत मे एक प्रकार का सकर राग जो मालव, श्रीराग और मनोहर राग के मेल से बनता है।

राज-हर्म्य—पुं० [सं० ष० त०] राजप्रासाद। राजमहल।

राजा (जन्)—पु०[स०√राज्(दीप्ति)+कनिन्] [स्त्री० राज्ञी, रानी] १. वह जो किसी राज्य या भू-खंड का पूरा मालिक हो और उसमें बसनेवाले लोगों पर सब प्रकार के शासन करता हो, उन्हें अपने नियंत्रण में रखता हो और दूसरे राजाओं के आक्रमणों आदि से रक्षित रखता हो। नृपति। भूप। २. अधिपति। मालिक। स्वामी। ३. बहुत बड़ा धनवान् या संपन्न व्यक्ति। ४. परमप्रिय के लिए शृंगारिक संबोधन। (बाजारू)

राजाग्नि—स्त्री०[सं० राजन्-अग्नि, ष० त०] राजा का कोप।

राजाज्ञा—स्त्री०[सं० राजन्-आज्ञा, ष० त०] राजा या राज्य की आज्ञा।

राजातन—पु०[सं० राजन्-आ√तन्(विस्तार)+अच्] चिरौंजी का पेड़। पयार।

राजादन—पु०[सं० राजन्-अदन् ष० त०]१ क्षीरिका। खिरनी। २. चिरौंजी। पयार। ३. टेसू।

राजादनी—स्त्री०[सं० राजादन+ङीप्] खिरनी।

राजाद्रि—पु०[सं० राजन्-अद्रि, ष० त०, परनिपात]१. एक प्राचीन पर्वत। २. एक प्रकार का अदरक। बवादा।

राजाधिकारी (रिन्)—पुं० [सं० राजन्-अधिकारिन्, ष० त०] न्यायाधीश। विचारपति।

राजाधिराज—पु०[स० राजन्-अधिराज,ष० त०] राजाओं का भी राजा। सम्राट्।

राजाधिष्ठान—पु०[स० राजन्-अधिष्ठान, ष० त०] १. राजधानी। २. वह नगर जहाँ राजा, शासक या शासकवर्ग रहता हो।

राजान्न—पुं०[सं० राजन्-अन्न, ष० त०]१. राजा का अन्न। २ आन्ध्र प्रदेश मे होनेवाला एक प्रकार का शालिधान।

राजाभियोग—पु०[स० राजन्-अभियोग, ष० त०] राजा का बलपूर्वक या जबरदस्ती प्रजा से कोई काम कराना।

राजाम्र—पुं० [स०राजन्-आम्र,ष०त०, परनिपात]एक प्रकार का बढ़िया और बड़ा आम (फल)।

राजाम्ल—पु०[स० राजन-अम्ल, ष० त०] अम्लवेतस। अमलबेत।

राजार्क—पु०[सं० राजन-अर्क, ष० त०, परनिपात] सफेद फूलोंवाला आक या मदार।

राजार्ह—पु० [सं० राजन्√अर्ह् (पूजा)+अण्] १. अगरु। अगर। २. कपूर। ३. जामुन का पेड़।

वि० राजाओं के योग्य।

राजार्हण—पु०[सं० राजन्-अर्हण, ष० त०]१. राजा का दिया हुआ उपहार। २. राजा का दिया हुआ दान।

राजावर्त—पु०[स० राजन्-आ√वृत्(बरतना)+णिच्+अण्] लाजवर्द।

राजासन—पु०[स० राजन्-आसन ष० त०] राजसिंहासन।

राजासनी—स्त्री०[सं०राजन्-आसनी, ष०त०] यज्ञ मे सोम का रस रखने की चौकी या पीढ़ा।

राजाहि—पु०[स० राजन्-अहि, ष० त०, परनिपात] दोमुँहा साँप।

राजि—स्त्री० [स०√राज् (शोभा)+इन]१. पंक्ति। अवली। कतार। २. रेखा। लकीर। ३. राई।

पु० ऐल के पौत्र और आयु के एक पुत्र का नाम।

राजिक—वि० [अ०] रिज्क अर्थात् रोजी देनेवाला। पालनकर्ता। परवर्दिगार।

पुं० ईश्वर। परमात्मा।

राजिका—स्त्री०[सं०√राज्+ण्वुल्—अक,+टाप्, ह्रस्व] १. केदार। क्यारी। २ राई। ३. आवली। पंक्ति। ४. रेखा। लकीर।

५. लाल सरसो। ६ महुआ नमक कदन्न। ७. कठगूलर। कठूमर। ८. एक प्रकार का पुराना परिमाण या तौल। ९ एक क्षुद्र रोग जिसमे शरीर पर सरसो के दानो जैसी फुसियाँ निकल आती हैं।

राजिका-चित्र—पुं०[स० ष० त०] एक प्रकार का साँप जिसकी त्वचा पर सरसो की तरह छोटी छोटी बुंदकियाँ होती हैं।

राजित—वि०[सं०√राज्+क्त]१. जो शोभा दे रहा हो। फबता हुआ। शोभित। २ विराजमान।

राजि-फला—स्त्री०[स० ब० स०,+टाप्] चीना ककड़ी।

राजिमान्—पु०[स० राजि+मतुप] एक तरह का साँप।

राजिल—पु०[स० राजि+लच्] एक प्रकार का साँप जिसके शरीर पर सीधी रेखाएँ होती हैं।

राजिव—पु०=राजीव (कमल)।

राजी—स्त्री० [स० राजि+ङीष्] १. पंक्ति। श्रेणी। कतार। २ राई। ३ लाल सरसों।

वि०[अ० राजी]१ जो कोई कही हुई बात मानने को तैयार हो। अनुकूल। सहमत। २ प्रसन्न और सन्तुष्ट।

क्रि० प्र०—रखना।

३ नीरोग। चंगा। तन्दुरुस्त। ४. सुखी।

पद—राजी-खुशी=सही-सलामत। कुशल और आनन्दपूर्वक।

†स्त्री०=रजामंदी।

राजीनामा—पु० [फा० राजीनाम:] १. वह सुलहनामा जो वादी और प्रवादी न्यायालय मे मुकदमा उठा लेने के उद्देश्य से उपस्थित करते हैं। २ स्वीकृति-पत्र।

पु०[फा० रजानाम:] त्याग-पत्र। इस्तीफा। (महाराष्ट्र)

राजी-फल—पु०[स० मध्य० स०] पटोल। परवल।

राजीव—पुं०[स० राजी+व]१ हाथी। २. एक प्रकार का सारस। ३ नीला कमल। ४ कमल।

पद—राजीव-लोचन।

५ एक प्रकार का मृग जिसकी पीठ पर धारियाँ होती हैं। ६ रैंया नामकी मछली।

वि० १ जिसे राजवृत्ति मिलती हो। २. धारीदार।

राजीवगण—पु०[सं० उपमित० स०] एक प्रकार का मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण मे अठारह मात्राएँ होती हैं तथा जिसमे नौ नौ मात्राओ-पर यति होती है। माली।

राजीविनी—स्त्री० [स० राजीव+इनि+ङीप्]कमलिनी।

राजेंद्र—पु०[पु० राजन्-इंद्र, ष० त०]१. राजाओ का राजा। बादशाह। २ राजाद्रि या राजगिरि नामक पर्वत।

राजेंद्रप्रसाद—पु०[स० ष० त०] गणतन्त्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति।

राजेश्वर—पु०[स० राजन्-ईश्वर, ष०त०] [स्त्री० राजेश्वरी] राजाओ का राजा। राजेंद्र।

राजेश्वरी—स्त्री०[सं० राजन्-ईश्वरी, ष० त०] संगीत मे काफी ठाठ की एक रागिनी।

स्त्री० हि० राजेश्वर का स्त्री० रूप।

राजेष्ट—पु० [स० राजन्-इष्ट, ष० त०] १. राजान्न (धान)। २ लाल प्याज।

वि० जो राजाओ को इष्ट हो, अर्थात् बहुत अच्छा या बढ़िया।

राजेष्टा—स्त्री० [सं० राजेष्ट+टाप्]१ केला। २. पिंड खजूर।

राजो-नियाज—पु०[फा० राज़ व नियाज] किसी को अनुरक्त या प्रसन्न करने के लिए घुल-मिलकर की जानेवाली बातें।

राजोपकरण—पु०[स० राजन्-उपकरण, ष० त०] राजाओं के काम या उनके साथ रहनेवाला सामान। राजकीय वैभव की सूचक सामग्री। राजचिह्न। जैसे—झंडा, निशान, नौबत आदि।

राजोपजीवी (विन्)—पु०[स० राजन्-उप √जीव् (जीना)+णिनि] १. वह जिसे राज्य से जीविका मिलती हो। २. राजकर्मचारी। ३. राजा का सेवक।

राजोपस्थान—पु०[स० राजन्-उपस्थान, ष० त०] राजदरबार।

राज्ञी—स्त्री० [स० राजन्+ङीष्]१ राजा की पटरानी। राजमहिषी। २ रानी। ३. पुराणानुसार सूर्य की पत्नी का एक नाम। ४ काँसा। ५. नील का पौधा।

राज्य—पु० [स० राजन्+यक्] १ राजा का काम। शासन। २ वह क्षेत्र जिसपर किसी राजा का शासन हो। जैसे—नेपाल या भूटान राज्य। ३ आज-कल निश्चित सीमाओंवाला वह भूखंड जिसकी प्रभु-सत्ता उसके निवासियो मे ही निहित हो। ४ किसी सघ-राज्य की कोई इकाई। (भारत) (स्टेट अंतिम तीनो अर्थों मे)

राज्य-कर्ता (र्तृ)—पु०[सं० ष० त०]१ राजा। २ राज्य का सर्वोच्च शासक। ३ राज्य कर्मचारी।

राज्यक्ता —स्त्री० [स० राजि अक्ता, तृ० त०] रायता।

राज्य-क्षेत्र—पु०[स० ष० त०]१ वह सारा भू-खण्ड जिसमे कोई व्यवस्थित राज्य या शासन हो। २ किसी राज्य के अन्तर्गत कोई क्षेत्र। (टेरीटरी)

राज्य-च्युत—भू० कृ०[सं०प० त०] [भाव० राज्य-च्युति] राज-सिंहासन से उतारा या हटाया हुआ।

राज्य-च्युति—स्त्री०[स० प० त०] राजा को राजसिंहासन से उतारने या हटाने की क्रिया या भाव।

राज्य-तंत्र—पु०[स० ष० त०] १ राज्य की शासन-प्रणाली। २ शासन की वह प्रणाली जिसमे किसी राज्य का प्रधान शासक राजा होता है। ३. दे० 'राजतन्त्र'।

राज्य-द्रव्य—पु० [स० ष० त०] वे मगल वस्तुएँ जिनका उपयोग नये राजा को राजसिंहासन पर बैठाते समय होता है।

राज्य-धुरा—स्त्री०[स० ष० त०]१. राज्य-शासन। २ शासन का उत्तरदायित्व।

राज्य-निधि—स्त्री० [स० ष० त०] वह निधि जो राज्य अपने विशिष्ट कार्यों के लिए सुरक्षित रखता है। (स्टेट फण्ड्स)

राज्य-परिषद्—स्त्री० [स० ष० त०] गणतन्त्र भारत की दो सर्वोच्च विधि-निर्मात्री सस्थाओ मे से एक जिसके सदस्यो का निर्वाचन अप्रत्यक्ष रीति से होता है। दूसरी सस्था 'लोकसभा' है जिसके सदस्यों का निर्वाचन प्रत्यक्ष रीति से होता है।

राज्यपाल—पु०[स० राज्य√पाल्(रक्षा)+णिच्+अण्] भारत-संघ के अन्तर्गत किसी राज्य का प्रधान शासक जिसका मनोनयन राष्ट्रपति करते हैं। (गवर्नर)

राज्यप्रद—वि०[ष० त०] राज्य देनेवाला। जिससे राज्य मिलता हो।

राज्य-भंग—पुं०[ष० त०] वह अवस्था जिसमें किसी राज्य की प्रभुसत्ता नष्ट हो जाती है।

राज्य-लक्ष्मी—स्त्री०[ष० त०] १. राज्य का वैभव और सम्पत्ति। राज्यश्री। २. विजयलक्ष्मी।

राज्यसभा—स्त्री०[सं०] भारतीय शासन में वह विधि-निर्मात्री सभा जिसमें राज्यों के चुने हुए प्रतिनिधि होते हैं। 'लोक-सभा' से भिन्न।

राज्यांग—पुं०[सं० राज्य-अंग, ष० त०] राज्य के साधक अंग जिन्हें प्रकृति भी कहते हैं। जैसे—आमात्य, कोष, दुर्ग, बल आदि।

राज्याभिषिक्त—भू० कृ० [सं० राज्य-अभिषिक्त, स० त०] जिसका राज्याभिषेक हुआ हो।

राज्याभिषेक—पुं०[स० राज्य-अभिषेक, स० त०] १. प्राचीन भारत में राजसिंहासन पर बैठने के समय या राजसूय यज्ञ में होनेवाले राजा का अभिषेक जो वेद के मंत्रों द्वारा पवित्र तीर्थों के जल और ओषधियों से कराया जाता था। २. किसी नये राजा का राजसिंहासन पर बैठना या बैठाया जाना। राजगद्दी पर बैठने के कृत्य। राज्यारोहण। ३. उक्त अवसर पर होनेवाला उत्सव या समारोह।

राज्योपकरण—पु०[स० राज्य-उपकरण, ष० त०] राजोपकरण। (दे०)

राट्(ज्)—पुं० [सं०√राज् (दीप्ति)+क्विप्] १. राजा। २ प्रधान या श्रेष्ठ व्यक्ति।

वि० जो किसी काम या बात में औरों से बहुत बढ़ा-बढ़ा हो। (यौ० के अन्त में) जैसे—धूर्तराट्।

राटुल—वि० पु०=रातुल।

राठ†—पु०=राष्ट्र।

राठवर†—पु०=राठौर।

राठौर—पु० [सं० राष्ट्रकूट] १ राजस्थान का एक प्रसिद्ध राजवंश। जैसे—अमर सिंह राठौर। २. उक्त वंश का क्षत्रिय।

राड़—स्त्री०[सं० रारि] १. युद्ध। लड़ाई। २. दे० 'रार'।

वि० १. तुच्छ। नीच। २ निकम्मा। ३. कायर।

स्त्री०=राँड़।

राढ़ा—पुं०[देश०] १. सरसो। २. एक तरह की घास। राढ़ी।

राढ़—स्त्री०[सं० रारि=लड़ाई] १. लड़ाई-झगड़ा। २ तकरार। हुज्जत। ३ दे० 'राड़'।

पुं०=राढ़ा।

राढ़ा—स्त्री०[सं०] १ कान्ति। दीप्ति। २ छवि। शोभा।

पुं०[सं० राढ़ि] बंग देश के उत्तर भाग का पुराना नाम।

स्त्री०[?] एक प्रकार की कपास।

राढ़ी—स्त्री०[देश०] एक प्रकार की मोटी घास।

पुं० [राढ़ा (देश०)] एक प्रकार का आम।

राणा—पुं०[सं० राट्] [स्त्री० राणी] १ राजा। (नेपाल और राजस्थान) २. राजा के परिवार का कोई व्यक्ति।

राणापति—पुं० [हिं० राणा+सं० पति] सूर्य जिसे चित्तौर के राणा अपना मूल-पुरुष मानते हैं।

रातंग—पुं०[हिं०] गीध। गिद्ध।

रात—स्त्री०[सं० रात्रि] १. समय का वह भाग जिसमें सूर्य्य का प्रकाश हम तक नहीं पहुँचता। सन्ध्या से प्रातःकाल तक का समय, जिसमें आकाश में चन्द्रमा और तारे दिखाई देते हैं। 'दिन' का विपर्याय। निशा। रजनी। २. लाक्षणिक अर्थ में अंधकारपूर्ण तथा निराशामयी स्थिति।

रात की रानी—स्त्री०[हिं०] एक प्रकार का पुष्प, जिसमें रात के समय गुच्छों में लगे हुए सुगंधित फूल फूलते हैं। हुस्ने-हिना।

रातड़ी—स्त्री०=रात्रि (रात)।

रात-दिन—अव्य०[हिं०] १. हर समय। २. सदा। हमेशा।

रातना—अ०[सं० रक्त, प्रा० रत्त+ना(हिं० प्रत्य०)] १. लाल रंग से रँगा जाना। लाल हो जाना। २. रंजित होना। रँगा जाना। ३. किसी पर आसक्त होना। ४. किसी काम या बात में रत या लीन होना। ५. प्रसन्न होना।

स० १. रंजित करना। रँगना। २. अनुरक्त करना। ३. प्रसन्न करना।

रात-राजा—पुं०[हिं०] उल्लू नामक पक्षी।

रातरी—स्त्री०=रात्रि।

राता—वि०[सं० रक्त; प्रा० रत्त] [स्त्री० राती] १. रक्तवर्ण। लाल। २. रँगा हुआ। ३. अनुरक्त। ४. प्रसन्न तथा हर्षित।

राति†—स्त्री०=रात।

रातिचर—पुं०[हिं० राति+सं० चर] निशाचर। राक्षस।

रातिब—पु० [अ०] १. एक दिन की खुराक। २. किसी पशु का एक दिन की खुराक। ३. वेतन। (क्व०)

रातुल—वि०[सं० रक्तालु; प्रा० रत्तालु] सुर्ख रंग का। लाल।

पुं०[अ० रतल=एक तौल] वह बड़ा तराजू जो लट्ठा गाड़कर लटकाया जाता है और जिसपर लोहा, लकड़ी आदि भारी चीजें तौली जाती हैं।

रातैल—पुं० [हिं० राता+ऐल (प्रत्य०)] ज्वार की फसल को हानि पहुँचानेवाला एक तरह का कीड़ा।

रात्रिंचर—वि० [सं० रात्रि√चर्(गति)+खच्, मुमागम] रात में घूमनेवाला।

पुं० राक्षस। निशाचर।

रात्रिंदिव—अ०[सं० द्व० स०, नि० सिद्धि] रात-दिन।

रात्रि—स्त्री०[सं०√रा (देना)+क्विप्] १. निशि। रात।

पद—रात्रिंदिव।

२. हल्दी। २ पुराणानुसार क्रौंच द्वीप की एक नदी।

रात्रिक—पुं०[सं० रात्रि+क] एक प्रकार का बिच्छू।

रात्रिकार—पुं०[सं० रात्रि√कृ+ट] १ चंद्रमा। २. कपूर।

रात्रिचर—पुं०[सं० रात्रि√चर् (गति)+ट] राक्षस। निशाचर।

वि० रात के समय विचरने या घूमने-फिरनेवाला।

रात्रिचारी (रिन्)—पुं०[सं० रात्रि√चर्+णिनि]=रात्रिचर।

रात्रिज—पुं०[सं० रात्रि√जन् (उत्पत्ति)+ड] रात में उत्पन्न होनेवाला।

पुं० तारा, नक्षत्र आदि।

रात्रि-जागर—पु०[सं० रात्रि√जागृ (जागना)+अच्] १. रात में होनेवाला जागरण। रत-जगा। २. कुत्ता, जो रात को जागता है।

रात्रि-नाशन—पुं०[स० ष० त०] सूर्य।

रात्रि-पुष्प—पुं० [सं० ब० स०] रात में खिलनेवाला पुष्प, कुँई।

रात्रि-बल—पुं०[सं० ब० स०] राक्षस।
रात्रिमट—पुं०[सं० रात्रि√अट् (गति)+अच्, मुम्-आगम] राक्षस।
रात्रि-मणि—पुं०[सं० ष० त०] चंद्रमा।
रात्रि-राग—पुं०[सं० ष० त०] अंधकार। अँधेरा।
रात्रि-वास (सस्)—पुं०[सं० ष० त०] १ रात के समय पहनने के कपड़े। २. अंधकार। अँधेरा।
रात्रि-विराम—पुं०[सं० ब० स०] तड़का। प्रभात।
रात्रिवेद—पुं०[सं० रात्रि√विद् (ज्ञान) णिच्+अण्] मुरगा।
रात्रिसाम(मन्)—पुं०[सं० मध्य० स०] एक प्रकार का साम।
रात्रि-सूक्त—पुं०[सं० मध्य० स०] ऋग्वेद के एक सूक्त का नाम।
रात्रि-हास—पुं०[सं० ष० त०] कुमुद। कुईं।
रात्रिहिंडक—पुं०[सं० ष० त०] राजाओं के अन्तःपुर का पहरेदार।
रात्री—स्त्री०[सं० रात्रि+ङीष्] १. रात। २ हलदी।
रात्र्यंध—वि०[सं० रात्रि-अंध, स० त०] जिसे रात को न दिखाई दे। पुं० १. रतौंधी रोग। २. कौआ, बंदर आदि पशु पक्षी जिन्हे रात के समय दिखाई नही पडता।
राद—पुं० [अ०] बिजली की कड़क।
राद्ध—भू० कृ०[सं० √ राध (सिद्धि)+क्त] १. पका हुआ। राँधा हुआ। २ ठीक या तैयार किया हुआ। सिद्ध। ३. पूरा किया हुआ।
राद्धांत—पुं०[सं० राद्ध-अंत, ब० स०] सिद्धान्त। उसूल।
राद्धि—स्त्री० [सं०√राध् (सिद्धि)+क्तिन्] १ सिद्धि। २ सफलता या साफल्य।
राध—पुं० [सं० राधा=विशाखा+अण्+ङीप्,=राधी+अण्] १. वैसाख मास। २. धन-संपत्ति।
स्त्री०[?] पीब। मवाद।
राधन—पुं० [सं०√राध +ल्युट्—अन] १ साधने की क्रिया। साधन। २. प्राप्त या हस्तगत होना। मिलना। ३ तुष्ट करना। तोषण। ४. किसी प्रकार का उपकरण या औजार। ५. कोई ऐसी चीज या बात जिससे कोई काम पूरा हो। साधन।
राधना—स०[सं० आराधना] १. आराधना या पूजा करना। २ पूरा या सिद्ध करना। ३ युक्ति से काम निकालना।
राधा—स्त्री० [सं०√राध्+अच्+टाप्] १. प्रीति। प्रेम। २ वृषभानु गोप की कन्या जो पुराणानुसार श्रीकृष्ण की बाल्यावस्था की सबसे अधिक प्रिय सखी और प्रेयसी थी। ३ धृतराष्ट्र के सारथि अधिरथ की पत्नी जिसने कर्ण को पुत्रवत् पाला था। इसी से कर्ण का एक नाम 'राधेय' भी था। ४. एक प्रकार का वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे रगण, तगण, मगण, यगण और एक गुरु सब मिलाकर १३ अक्षर होते हैं। ५ विशाखा नक्षत्र। ६. वैसाख की पूर्णिमा। ७. बिजली। विद्युत्। ८ आँवला। ९ विष्णुकांता लता।
राधा-कांत—पुं०[सं० ष० त०] श्रीकृष्ण।
राधा-कुंड—पुं०[सं० ष० त०] गोवर्द्धन के निकट का एक प्रख्यात सरोवर जो तीर्थ माना जाता है।
राधा-तंत्र—पुं०[सं० मध्य० सं०] तंत्र जिसमें मंत्रों आदि के अतिरिक्त राधा की उत्पत्ति का भी रहस्यपूर्ण वर्णन है।
राधा-वल्लभ—पुं०[सं० ष० त०] श्रीकृष्ण।
राधावल्लभी (भिन्)—पुं०[सं० राधावल्लभ+इनि] १. वैष्णवों का एक प्रसिद्ध संप्रदाय। २ उक्त संप्रदाय का अनुयायी।
राधाष्टमी—स्त्री०[सं० राधा-अष्टमी, ष० त०] भादों सुदी अष्टमी।
राधास्वामी—पुं०[सं०] १ एक आधुनिक मत प्रवर्तक आचार्य जिनका आगरे मे प्रसिद्ध केन्द्र है। २. उक्त आचार्य का चलाया हुआ संप्रदाय।
राधिका—स्त्री० [सं० राधा+कन्,+टाप्, इत्व] १. वृषभानु गोप की कन्या, राधा। २. एक प्रकार का मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण मे १३ मात्राएँ और ९ के विश्राम से २२ मात्राएँ होती हैं। लावनी इसी छद मे होती है।
राधेय—पुं०[सं० राधा+ठक् —एय] (धृतराष्ट्र के सारथि अधिरथ की पत्नी राधा द्वारा पालित) कर्ण।
राध्य—वि०[सं०√राध् (सिद्धि)+यत्] आराधना करने के योग्य। आराध्य।
रान—स्त्री०[फा०] जघा। जाँघ।
रानतुरई—स्त्री०[हिं० रानी+तुरई] एक तरह की कड़वी तरोई।
राना—पुं०=राणा।
वि०[फा०] सुन्दर।
रानी—[सं० राज्ञी, प्रा० राणी] १ राजा की स्त्री। २. स्त्रियो के नाम के साथ प्रयुक्त होनेवाला आदरसूचक पद। जैसे—देविका रानी, राधिका रानी आदि। ३ प्रेयसी या पत्नी के लिए प्रेमपूर्ण संबोधन। ४ ताश का एक पत्ता जिसमें रानी का चित्र होता है। बेगम।
वि० [फा० राना] प्रिय तथा सुन्दर। जैसे—रानी बेटी।
स्त्री०[फा०] चलाने का काम। (यौ० के अन्त मे) जैसे—जहाज-रानी।
रानी-काजर—पुं०[हिं० रानी +काजल] एक प्रकार का धान।
रानी-मक्खी—स्त्री०[हिं०] मधुमक्खियो के छत्ते की वह मक्खी जिसका काम केवल अडे देना होता है। जननी मक्खी। (क्वीन बी)
रापड़—पुं०[?] बजर भूमि।
रापती—स्त्री०[देश०] एक छोटी नदी जो नैपाल के पहाड़ों से निकलकर गोरखपुर के निकट सरयू नदी मे गिरती है।
राप-रंगाल—पुं० [सं० रंग√अल् (भूषण)+अच्, राप ब० स०, राप-रगाल, कर्म० स०] एक प्रकार का नृत्य।
रापी—स्त्री०=राँपी। (मोचियो का उपकरण)
राब—स्त्री०[सं० द्रावक] १. आँच पर खूब औटाकर खूब गाढ़ा किया हुआ गन्ने का रस जो गुड से पतला और शीरे से गाढ़ा होता है। इसी को साफ करके खाँड बनाई जाती है। २. वह भूमि जो उस पर का घास-फूस जलाकर जोतने-बोने के लिए तैयार की गई हो। (पूरब)
स्त्री०[देश०] नाव में वह बडी लकड़ी जो उसकी पेंदी मे लबाई के बल एक सिरे से दूसरे सिरे तक होती है।
राबड़ी—स्त्री०=रबड़ी (बसौंधी)।
राबना—स०[?] खेत मे एक विशेष प्रकार से खाद डालना।
राबिस—स्त्री०[अं० रबिश=कूड़ा] ईंटो के भट्ठो आदि मे से निकले हुए कोयलो का चूरा और राख जो प्राय: इमारतो में ईंटो की जोड़ाई करने मे काम आती है।
राम—पुं०[सं०√रम् (क्रीड़ा)+घञ्] १. महाराज दशरथ के पुत्र

जिसका विवाह जनक की कन्या जानकी या सीता से हुआ था और जो विष्णु के दस अवतारों में से एक माने जाते हैं। रामायण की कथा इन्हीं के चरित्र पर आधारित है। रामचन्द्र।

पद—राम नाम सत्य है=एक वाक्य जिसका प्रयोग कुछ हिन्दू जातियों में मृतकों को श्मशान ले जाने के समय होता है और संसार की असारता और मिथ्यात्व तथा ईश्वर की सत्यता का बोध कराया जाता है।

मुहा०—राम जाने=(क) मुझे नहीं मालूम। ईश्वर जाने। (ख) यदि मैं झूठ बोलता होऊँ तो ईश्वर उसका साक्षी रहे और मुझे उसके लिए दंड दे। **राम राम करके**=बहुत कठिनता से। किसी प्रकार। जैसे-तैसे। **राम राम करना**=(क) राम अर्थात् ईश्वर या भगवान का नाम जपना। (ख) किसी से भेंट होने पर 'राम राम' कह करके अभिवादन करना। **(किसी का) राम राम हो जाना**=मर जाना। गत हो जाना। **(किसी से) राम राम होना**=भेंट होना। मुलाकात होना। **रामशरण होना**=(क) साधु होना। विरक्त होना। (ख) परलोकवासी होना। मरना। २. कृष्ण के बड़े भाई बलराम या बलदेव। ३. परशुराम। ४. उक्त तीनों के आधार पर तीन की संख्या का वाचक शब्द। ५. ईश्वर। परमात्मा। ६. वरुण। ७ एक प्रकार का मात्रिक छंद जिसमें ९ और ८ के विराम से प्रत्येक चरण में १७ मात्राएँ होती है और अंत में यगण होता है। ८ रति-क्रीडा। ९ घोड़ा। १०. अशोक वृक्ष। ११. बथुआ नाम का साग। १२. तेजपत्ता।

†वि०[सं० रम्य] अभिराम। सुन्दर। उदा०—देखत अनूप सेनापति राम रूप छवि।—सेनापति।

वि०[फा०]१ ठीक। दुरुस्त। २ अनुकूल। ३ राजी। सहमत। जैसे—उसने बातों ही बातों में उसे राम कर लिया। (पश्चिम)

राम-अंजीर—स्त्री० [हिं० राम+फा० अंजीर] पाकर (वृक्ष)। पकरिया।

राम-कजरा—पु०[देश०] अगहन में पककर तैयार होनेवाला एक प्रकार का धान।

राम-कपास—स्त्री०[हिं० राम+कपास] देवकपास। नरमा।

राम-कली—स्त्री०[सं०ब० स०] एक रागिनी जो भैरव राग की स्त्री मानी जाती है।

राम-कहानी—स्त्री०[हिं०]१ अपने जीवन तथा उसके किसी प्रसंग का दूसरो को सुनाया जानेवाला वृत्तांत। २ किसी पर बीती हुई घटनाओं का लंबा या विस्तृत वर्णन।

क्रि० प्र०—कहना।—सुनाना।

राम-काँटा—पुं० [हिं० राम+काँटा] एक प्रकार का बबूल।

राम-कपूर—पुं०[हिं०] गंधतृण।

राम-कुंतली—स्त्री०[सं०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

राम-कुसुमावलि—स्त्री० [सं०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

राम-केला—पुं० [हिं० राम+केला]१. एक प्रकार का बढ़िया केला। २. एक प्रकार का बढ़िया पूर्वी आम।

राम-क्रिय—पुं० संगीत में, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

राम-क्षेत्र—पुं०[सं० ष० त०] दक्षिण भारत का एक प्राचीन तीर्थ। (पुराण)

राम गंगरा—पुं०[हिं० राम+गांगरा]१. एक प्रकार की पहाड़ी चिड़िया जिसका सिर, गरदन और छाती चमकीले काले रंग की होती है। यह जाड़े में भी मैदानों में उतर आती है।

राम-गंगा—स्त्री०[सं० मध्य० स०] उत्तर प्रदेश की एक नदी जो फर्रुखाबाद के पास गंगा में मिलती है।

राम-गिरि—पुं०[सं० मध्य० स०]१ मेघदूत में वर्णित एक पर्वत-शिखर जो आधुनिक नागपुर में स्थित माना जाता है। राम-टेक। २. संगीत में कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

राम-गिरी—स्त्री०=रामकली (रागिनी)।

पुं०=रामगिरि।

राम-गीती—पुं०[सं०] एक प्रकार का मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में ३६ मात्राएँ होती हैं।

रामचंद्र—पुं०[सं० उपमित स०] अयोध्यापति राजा दशरथ के पुत्र जिन्होंने रावण का वध किया था।

विशेष—हिन्दुओं में ये विष्णु के अवतार माने जाते हैं।

राम-चकरा—पुं०[सं०राम+चक्र]१ उरद की पीठी को तलकर तैयार किया जानेवाला बड़ा। २ बड़ी और मोटी देहाती रोटी। ३ बाटी। लिट्टी।

राम-चिड़िया—स्त्री०[देश०] मछरंगा।

राम-जननी—स्त्री० [सं० ष० त०] १. कौशल्या। २ रेणुका। ३. रोहिणी।

राम-जना—पु०[हिं० राम+जना=उत्पन्न] [स्त्री० रामजनी] १. वह जिसका पिता ईश्वर हो, अर्थात् जिसके पिता का पता न हो। वर्णसंकर। दोगला। २. एक संकर जाति जिसकी कन्याएँ वेश्यावृत्ति करती हैं।

राम-जनी—स्त्री०[हिं० राम-जना]१ ऐसी स्त्री जिसके पिता का पता न हो। २. रामजना जाति की स्त्री। ३ रंडी। वेश्या।

राम-जमनी—पुं०=रामजमानी।

राम-जमानी—पु०[सं० राम+यवनी (अजवायन)] एक प्रकार का बहुत बारीक चावल।

राम-जामुन—पु०[हिं०राम+जामुन] मझोले आकार का एक प्रकार का जामुन (वृक्ष)।

राम-जुहारी—स्त्री०[हिं०]१. एक प्रकार का अभिवादन जिसका अर्थ है—राम राम या जयराम। २ दे० 'राम-दहारी'।

राम-जौ—पुं०[सं० राम+हिं० जौ] एक प्रकार की जई जिसके दाने जौ के दानों के आकार के होते हैं।

राम-झोल—स्त्री०[सं० राम+हिं० झूलना] पाजेब। पायल।

राम-टेक—पुं०[हिं० राम+टेक=टेकड़ी(पहाड़ी)] नागपुर जिले में स्थित एक पर्वत शिखर। रामगिरि।

रामटोड़ी—स्त्री०[सं० ष० त०] एक संकर रागिनी जिसमें गंधार, कोमल और शेष सब स्वर शुद्ध लगते हैं। (संगीत)

रामठ—पु०[सं० √रम्+अठ, वृद्धि] १ बृहत्संहिता के अनुसार एक देश जो पश्चिम में है। २ उक्त देश का निवासी। ३ हींग। ४. अखरोट का पेड़। ५ मैनफल। ६. चिचड़ा।

रामठी—स्त्री०[सं० रामठ+ङीप्] हींग।

रामणीयक—पु०[सं० रमणीय+वुञ्—अक] रमणीयत्व। मनोहरता। वि० रमणीय।

राम-ललनी—स्त्री०[सं० ष० त०]१. रामचन्द्र की पत्नी, सीता। २ सेवती (सफेद गुलाब)।

राम-तरोई—स्त्री०[हिं० राम+तरोई या तुरई] भिंडी का पौधा और उसकी फली।

रामता—स्त्री० [सं० राम+तल्+टाप्] राम होने की अवस्था, गुण या भाव। रामत्व। राम-पन।

राम-तापनीय—स्त्री०[सं० मध्य० स० वा ष०त०] एक आधुनिक साम्प्रदायिक उपनिषद्।

राम-तारक—पु०[सं० ष० त०] 'रा रामाय नम.' नामक मत्र जो रामोपासक जपते हैं।

रामति—स्त्री०[हिं० रमना=घूमना फिरना] भिक्षा के लिए लगाई जानेवाली फेरी।

राम-तिल—पुं०[सं० मध्य० स०] एक प्रकार का तिल।

राम-तीर्थ—पु०[सं० मध्य०स०] रामगिरि पर्वत-शिखर जो एक तीर्थ है।

राम-तुलसी—स्त्री० [सं० मध्य० स०]=रामा-तुलसी (सफेद डठलोंवाली तुलसी)।

राम-तेजपात—पु०[हिं० राम+तेजपात]तेजपात की जाति का एक प्रकार का वृक्ष और उसका पत्ता।

रामत्व—पु० [सं० राम+त्व] राम होने की अवस्था, धर्म या भाव। रामता। राम-पन।

राम-दल—पु०[सं० ष० त०]१. बदरों की वह सेना जिसकी सहायता से रामचन्द्र ने लका पर चढाई की थी। २ कोई बहुत बड़ा और प्रबल समूह या सेना। ३. दहशरे के अवसर पर रामचन्द्र की स्मृति मे निकलनेवाला जुलूस।

राम-दाना—पु०[सं० राम+हिं०दाना]१ मरसे या चौराई की जाति का एक पौधा जिसमे सफेद रग के बहुत छोटे छोटे दाने या बीज लगते हैं। २ उक्त पौधो के दाने जो कई रूपो मे खाने के काम आते हैं। ३ एक प्रकार का धान।

राम-दास—पु०[सं०ष०त०] १ हनुमान्। २ शिवाजी के गुरु समर्थ रामदास। ३ एक प्रकार का धान।

राम-दूत—पु०[सं० ष० त०] हनुमान्।

राम-दूती—स्त्री०[सं० ष० त०] १. एकप्रकार की तुलसी। २ नागदौन। ३ नागपुष्पी।

रामदेव—पु०[सं० कर्म० स०] १ रामचन्द्र। २. राजपूताने मे प्रचलित एक सम्प्रदाय।

राम-धाम(न्)—पु०[सं० ष० त०] साकेत लोक, जहाँ भगवान् नित्य राम रूप मे विद्यमान माने जाते हैं।

राम-ननुआ—पुं०[हिं० राम+ननुआ]१. घीया। २. कद्दू।

राम-नवमी—स्त्री०[सं० मध्य० स०] भगवान रामचन्द्र का जन्म-दिवस चैत्र शुक्ल नवमी।

रामना—अ० [सं० रमण] १ रमण करना। २ घूमना-फिरना।

रामनामी—स्त्री० [हिं० राम+नाम+ई (प्रत्य०)]१. गले मे पहनने का एक प्रकार का हार। २ वह वस्त्र जिसपर सब जगह रामनाम छपा हुआ हो।

रामनौमी—स्त्री०=रामनवमी।

राम-पात—पु०[हिं०राम+पत्र] नील की जाति की एक प्रकार की झाड़ी जिसकी पत्तियो से रग तैयार किया जाता है।

रामपुर—पु०[सं० ष० त०]१ स्वर्ग। बैकुठ। २ अयोध्या नगरी। साकेत।

राम-फल—पु०[हिं० राम+फल] शरीफा। सीताफल।

राम-बंटाई—स्त्री०[हिं० राम+बाँटना] ऐसा बंटवारा या विभाजन जिसमें आधा एक व्यक्ति और आधा दूसरे व्यक्त को मिले। आधे-आध की बँटाई।

राम-बबूल—पु०[हिं० राम+बबूल] एक प्रकार का बबूल।

राम-बाँस—पु०[हिं०]१. एक प्रकार का बाँस। २. केतकी की जाति का एक पौधा।

राम-बान—पु०[हिं० राम+सं० बाण]१. एक प्रकार का नरसल। रामशर। २ दे० 'रामबाण'।

राम-बिलास—पु० [हिं०राम+सं० विलास] एक प्रकार का धान और उसका चावल।

राम-भक्त—वि०[सं० ष० त०] रामचन्द्र का उपासक।
पु० हनुमान्।

राम-भद्र—पु०[सं० कर्म० स०] रामचन्द्र।

राम-भोग—पु०[हिं० राम+भोग]१ एक प्रकार का चावल। २. एक प्रकार का आम।

राम-मंत्र—पु० [सं० ष० त०] 'रा रामाय नम' मत्र जिसे रामभक्त भजते हैं।

राम-रक्षा—पु०[सं० मध्य० स०] राम जी का एक स्तोत्र जो सब प्रकार की आपत्तियो से रक्षा करनेवाला माना जाता है।

रामरज (स)—स्त्री०[सं० मध्य० स०] एक प्रकार की पीली मिट्टी जिसका वैष्णव लोग तिलक लगाते हैं, तथा जो चूने आदि मे मिलाकर दीवारे, छतें आदि पोतने के काम भी आती हैं।

राम-रतन—पु०[हिं० राम+सं० रत्न] चद्रमा। (डिं०)

राम-रस—पु०[हिं० राम+रस]१ नमक। २. पीने के लिए पीसी और घोली हुई भाँग। (दक्षिण भारत)

राम-रहारी—स्त्री०[हिं० राम राम]१ आपस मे मिलने पर होनेवाला अभिवादन। पारस्परिक व्यवहार की वह स्थिति जिसमे किसी से बातचीत होती हो। जैसे—अब तो उन लोगों मे राम-रहारी भी नही रह गई है।

राम-राज्य—पु०[सं० ष० त०]१ भगवान् राम का राज्य या शासन। २ उक्त के आधार पर ऐसा राज्य या शासन जिसमे प्रजा सब प्रकार से निश्चिंत, सपन्न तथा सुखी हो। ३ मध्य युग मे मैसूर राज्य का एक नाम।

राम-राम—अव्य० [हिं०राम] १. भेंट के समय अभिवादन के लिए प्रयुक्त पद। २. आश्चर्य, दु.ख आदि का सूचक अव्यय।
†स्त्री० भेंट। विशेषत' आकस्मिक तथा अल्पकालिक भेंट। जैसे—कई दिन हुए उनसे राम राम हुई थी।

रामल—वि०[सं० रमल+अण्] रमल सम्बन्धी। रमल का।

राम-लवण—पु०[सं० मध्य० स०] साँभर नमक।

राम-लीला—स्त्री०[सं० ष० त०]१. राम की क्रीड़ा। २. रामायण में

वर्णित घटनाओं के आधार पर होनेवाला अभिनय या नाटक। ३. एक प्रकार का मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में २४ मात्राएँ होती हैं और अंत में 'जगण' का होना आवश्यक होता है।

राम-बल्लभी(भिन्)—पुं० [सं० रामबल्लभ] एक वैष्णव सम्प्रदाय।

रामबाण—पु०[स०ष० त०] वैद्यक में एक प्रकार का रस जो पारे, गंधक, सींगिया आदि के योग से बनता है और जो अजीर्ण रोग का नाशक कहा जाता है।

वि०१ जो अत्यन्त गुणकारी हो। २. तुरन्त प्रभाव दिखानेवाला। ३. न चूकनेवाला।

रामवीणा—स्त्री०[सं० ष० त०] एक प्रकार की वीणा।

राम-शर—पुं०[स० ष० त०] ऊख के आकार-प्रकार का एक प्रकार का नरसल या सरकंडा जो ऊख के खेतो में आप से आप ही उगता है।

राम-शिला—स्त्री० [स० ष० त०] गया जिले में स्थित एक पर्वत-शिखर जो एक तीर्थ है।

राम-श्री—पुं०[सं० ष०त०] एक प्रकार का राग जो हिंडोल राग का पुत्र माना जाता है।

राम-संडा—पु०[सं०रामशर] एक प्रकार की घास जिससे रस्सी या बाध बनाते हैं। काँस।

राम-सखा—पु०[स० ष० त०] सुग्रीव।

राम-सनेही—पु० [हिं० राम+स्नेही] १. राजस्थान का एक वैष्णव सम्प्रदाय। २. उक्त सम्प्रदाय का अनुयायी।

वि० राम से स्नेह या प्रीति रखनेवाला।

रामसर(स्)—पु० [सं० मध्य० स०] पुराणानुसार एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

†पु०=रामशर।

राम-सिरी—स्त्री०[सं० राम-श्री]१ एक प्रकार की चिड़िया। २ एक प्रकार की रागिनी।

राम-सीता—पु०[हिं० राम+सीता]शरीफा। सीताफल।

राम-सुंदर—स्त्री०[हिं० राम+सुन्दर] एक प्रकार की नाव।

राम-सेतु—पु०[स० मध्य० स०] रामेश्वर तीर्थ के पास समुद्र मे पड़ी हुई चट्टानो का समूह जिसके विषय मे प्रसिद्ध है कि यह वही पुल है जिसे राम ने लंका पर चढ़ाई करते समय बंधवाया था।

रामा—स्त्री० [स०√रम् (क्रीडा)+णिच्+ण,+टाप्] १ सुन्दर स्त्री। २ गाने-नाचने मे प्रवीण स्त्री। ३. सीता। ४. लक्ष्मी। ५. रुक्मिणी। ६ राधा। ७ शीतला देवी। ८. नदी। ९ कार्तिक कृष्ण एकादशी की संज्ञा। १०. इंद्रवज्रा और उपेंद्रवज्रा के योग से बना हुआ एक प्रकार का उपजाति वृत्त जिसके प्रथम दो चरण इन्द्रवज्रा के होते हैं। ११. आर्या छन्द का १७ वाँ भेद जिसमे ११ गुरु और ३५ लघु वर्ण होते हैं। १२. आठ अक्षरो का एक प्रकार का वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे तगण, यगण और दो लघु वर्ण होते हैं। १३. हींग। १४. ईंगुर। शिगरफ। १५. घीकुंआर। १६. सफेद भटकटैया। १७. अशोक वृक्ष। १८ तमाल। १९. गोरोचन। २०. सुगंधबाला। २१. त्रायमाण लता। २२. गेरू।

राम-तुलसी—स्त्री० [सं०]सफेद डठलोंवाली एक प्रकार की तुलसी (पौधा)।

रामानंद—पु० [सं०] रामावत नामक वैष्णव संप्रदाय के प्रवर्त्तक एक प्रसिद्ध आचार्य। (१३५६-१४६७ वि०)

रामानंदी—वि०[हिं० रामानंद+ई (प्रत्य०)]१. रामानन्द-संबंधी। २. रामानन्द के सम्प्रदाय से सम्बन्ध रखनेवाला।

पु० रामानन्द द्वारा प्रवर्तित रामावत सम्प्रदाय का अनुयायी।

रामानुज—पु०[स० राम-अनुज, ष० त०]१. राम का छोटा भाई। २. लक्ष्मण। ३. एक प्रसिद्ध वैष्णव आचार्य जिन्होंने श्री वैष्णव सम्प्रदाय का प्रवर्त्तन किया था।

रामायण—पु०[स० राम-अयन, ष० त०]१. राम का जीवन-मार्ग अर्थात् चरित्र। २. वह ग्रन्थ जिसमें राम के चरित्र का वर्णन हो।

रामायणी—वि०[सं०] रामायण संबधी। रामायण का।

पुं०१ वह जो रामायण का अच्छा ज्ञाता या पंडित हो। २. वह जो लोगों को रामायण की कथा सुनाता हो।

रामायन†—पुं०=रामायण।

रामायुध—पुं०[सं० राम-आयुध, ष० त०] धनुष।

रामावत—पु० [सं० रामावित] रामानन्द द्वारा प्रवर्तित एक वैष्णव सम्प्रदाय।

रामिज—वि० [अ०] रम्ज अर्थात् इशारा करनेवाला।

रामिल—पुं०[सं०]१ रमण। २. कामदेव। ३. स्त्री का पति। स्वामी। ४. प्रेमपात्र। ५. एक कवि।

रामी—स्त्री०[स० रामा] काँस नामक घास।

रामेश्वर—पु०[सं० राम-ईश्वर, ष० त०]१. दक्षिण भारत में समुद्र के तट पर एक शिवलिंग जो भगवान रामचन्द्र द्वारा स्थापित किया हुआ माना जाता है। २. पुरी या बस्ती जिसमें उक्त शिवलिंग स्थापित है।

रामोपनिषद्—स्त्री० [स० राम-उपनिषत्, मध्य० स०] अथर्ववेद के अन्तर्गत एक उपनिषद् का नाम।

राय—पु०[स० राजा; प्रा० राया]१. राजा। २. छोटा राजा। सरदार या सामन्त। ३ मध्ययुग मे एक प्रकार की सम्मान-जनक उपाधि।

पद—रायबहादुर, रायसाहब।

४. बंदीजनों या भाटों की उपाधि। ५. गन्धर्व जाति के लोगों की उपाधि। ६ दे० 'रायबेल'।

स्त्री०[फा०] सम्मति। सलाह।

राय-करौंदा—पु०[हिं० राय=बड़ा+करौंदा] एक प्रकार का बड़ा करौंदा (फल और झाड़)।

रायगाँ—वि० [फा० राएगाँ] १. रास्ते मे पड़ा या फेंका हुआ, अर्थात् निष्फल या व्यर्थ। २. नष्ट। बरबाद।

रायज—वि०[फा० राइज] जो चल रहा हो, अर्थात जिसका प्रचल या प्रचार हो। प्रचलित।

रायता—पुं०[सं० राज्यक्ता]दही या मठे में बुंदिया, साग आदि डालकर तथा उसमे नमक, मिर्च, जीरा आदि मिलाकर बनाया जानेवाला व्यंजन।

रायनी—स्त्री०=राजकुमारी। (डिं०)

राय-बहादुर—पु० [हिं० राय+फा० बहादुर] एक प्रकार की उपाधि जो ब्रिटिश-शासन में भारतीय बड़े आदमियों को मिलती थी।

राय-बेल—स्त्री०[हिं० राय+बेल] एक प्रकार की लता जिसमें सुन्दर और सुगन्धित दोहरे फूल लगते हैं।

राय-भोग—पु०[सं०राजभोग] एक प्रकार का धान और उसका चावल। राज-भोग।

रायमुनी—स्त्री०[हिं० राय+मुनिया] लाल (पक्षी) की मादा। सदिया।

राय-रायान—पु० [हिं० राय+फा० आन (प्रत्य०)] राजाओं के राजा। राजाधिराज। (मुगलशासन-काल की एक उपाधि)

राय-रासि*—स्त्री०[सं० रायराशि] राजा का कोष। शाही खजाना।

रायल—वि० [अं०]१ राजन्य। २ राजकीय। ३ राजकीय ठाठ-बाटवाला।

पु० छापे की कलो तथा कागज की एक नाप जो २० इंच चौड़ी और २६ इंच लंबी होती है।

रायसा—पुं०[सं०रहस्य] वह काव्य जिसमे किसी राजा का जीवन-चरित्र वर्णित हो। रासा। रासो। जैसे—पृथ्वीराज रायसा।

रायसाहब—पु०[राय+फा० साहब] एक प्रकार की पदवी जो ब्रिटिश-शासन मे भारतीय बड़े आदमियो को मिलती और 'रायबहादुर' की उपाधि से निम्नकोटि की होती थी।

रायहंस†—पु०=राजहंस।

रायहर—पु०[सं० राज्यगृह, प्रा० राइहर] राजा का महल। राजगृह। उदा०—हरम करी अनि रायहर।—प्रिथीराज।

रार—स्त्री०[सं० रारि, प्रा० राडि=लड़ाई] १. ऐसा झगड़ा जिसमे बहुत कहा-सुनी हो और जो कुछ देर तक चलता रहे। तकरार। हुज्जत। क्रि० प्र०—करना।—ठानना।—मचाना।

२. ऐसी ध्वनि जिसमे रह-रहकर (रकार) र का सा शब्द होता है। जैसे—पेड़ो की मर्मर मे होनेवाली रार या पेड़ो के गिरने मे अरर या रार का स्वर निकले। उदा०—कलरव करते किलकार रार। ये मौन मूक तृण तरु दल पर।—पन्त।

†स्त्री०=राल।

राल—स्त्री०[सं०]१ एक प्रकार का बहुत बड़ा सदाबहार पेड़ जो दक्षिण भारत के जगलो मे होता है। २ उक्त वृक्ष का सुगंधित निर्यास जो प्राय सुगन्ध के लिए जलाया जाता और औषधों, मसालो आदि के काम आता है। चूना।

विशेष—धूप नामक सुगन्धित द्रव्य मे प्रायः इसी की प्रधानता रहती है।

स्त्री० [सं० लाला]१ मुंह मे निकलनेवाला पतला रस। लार। (देखें) २. चौपायों का एक रोग जिसमे उन्हे खाँसी आती है और उनके मुँह से पतला लसदार पानी गिरता है।

पु० [?] एक प्रकार का देशी कंबल।

राली—स्त्री० [देश०] एक प्रकार का बाजरा जिसके दाने बहुत छोटे होते हैं।

राव—पुं०[सं० राजा; प्रा० राय]१ राजा। २. राजा का दरबारी या सरदार। ३. बंदीजन। भाट। ४. अमीर। रईस। ५. कच्छ के राजाओं की पदवी। ६ धीमा कोलाहल। हलका शोर। (नौएज)

पु०=रव (शब्द)।

पु०[देश०] छोटे आकार का एक प्रकार का पेड़ जिसकी लकड़ी कुछ ललाई लिये चिकनी और मजबूत होती है। इसकी लकड़ी की प्रायः छड़ियाँ बनाई जाती हैं।

राव-चाव—पु०[हिं०राव=राजा+चाव] १ नृत्य, गीत आदि का उत्सव। राग-रग। २. दुलार। लाड़। ३. अनुराग। प्रेम। ४ प्रेमपूर्ण व्यवहार।

रावट—पु०[सं० राजावर्त्त] लाजवर्द नामक रत्न। उदा०—कनै पहार होत है रावट को राखै गहि पाई।—जायसी।

†पु०=रावल (राजमहल)।

रावटी—स्त्री०[हिं० रावट]१ कपड़े का बना हुआ एक प्रकार का छोटा डेरा। छोलदारी। २ कपड़े का बना हुआ कोई छोटा घर। ३. बारह-दरी।

रावण—वि०[सं०√रु (शब्द)+णिच्+ल्यु—अन] जो दूसरों को रुलाता हो। रुलानेवाला।

पुं० लका का एक राजा जिसका वध श्री राम ने किया था।

रावण-गंगा—स्त्री० [मं० मध्य० स०] सिंहल द्वीप की एक नदी। (पुराण)

रावणारि—पु०[सं० रावण-अरि, ष० त०] रावण को मारनेवाले, रामचन्द्र।

रावणि—पु०[सं० रावण+इञ्]१. रावण का पुत्र। २ मेघनाद।

रावत—पु०[सं० राजपुत्र, प्रा० राय+उत] १. छोटा राजा। २. राजवश का कोई व्यक्ति। ३ क्षत्रिय। ४ राजपूत। ५. सरदार। सामन्त। ५ शूरवीर। योद्धा। ७ सेनापति।

रावन—वि०[सं० रमणीय] रम्य। रमणीय। उदा०—देखा सब रावन अब राऊ।—जायसी।

†पु०=रावण।

रावनगढ़*—पु०[हिं० रावण+गढ़] लंका।

रावना*—स०[सं० रावण=रुलाना] दूसरे को रोने में प्रवृत्त करना। रुलाना।

†पु० रावण।

रावबहादुर—पु०[हिं० राव+फा० बहादुर] ब्रिटिश-शासन मे दक्षिण भारत के बड़े आदमियो को मिलनेवाली एक उपाधि।

रावर*—पु० [सं० राजपुर] रनिवास।

सर्व०, वि०[हिं० राउ+र (विभ०)] [स्त्री० रावरी] आपका। भवदीय।

राव रत्ता—पु०[देश०] हिमालय में होनेवाला एक तरह का पेड़। बुरुल।

रावरा—सर्व०, वि०=रावर।

रावल—पु० [सं० राजपुर, हिं० राउर] अन्तःपुर।

पु० [पा० राजुल] [स्त्री० रावली]१ राजा। २. राजपूताने के कुछ राजाओ की उपाधि। ३. कुछ विशिष्ट पदों, महन्तो तथा योगियों की उपाधि। ४. एक आदरपूर्ण सबोधन। ५. श्री बदरीनारायण के मुख्य पंडे की उपाधि।

रावलो—सर्व०=रावर।

राव-साहब—पु०[हिं० राव+फा०साहब] ब्रिटिश-शासन मे दक्षिण भारत के बड़े आदमियों को मिलने-वाली एक प्रकार की उपाधि।

रावी—स्त्री०[सं० ऐरावती] पश्चिमी पंजाब (पाकिस्तान) की एक प्रसिद्ध नदी जो मुलतान के पास चनाब नदी में जा मिलती है।

राश—पुं० [अ० मि० सं० राशि] राशि। ढेर।

राशन—पुं० [अं० रैशन] १. खाने-पीने की वे चीजें जो अभी पकाई न गई हों, परन्तु उपयोग या व्यवहार के लिए एकत्र करके रखी या लोगों को दी गई हों। रसद। २. आज-कल वह व्यवस्था जिसके अनुसार उपयोग या व्यवहार की कुछ विशिष्ट वस्तुएँ लोगों को उनकी आवश्यकता के अनुसार नियमित रूप से और नियत मात्रा में बाँटी या दी जाती हों। ३. उक्त का वह अंश जो किसी विशिष्ट व्यक्ति को मिला या मिलता हो।

राशि—स्त्री० [सं०√राश् (शब्द)+इन्] १. किसी चीज के कणों, खण्डों, बिंदुओं आदि का पुंज या समूह। जैसे—जलराशि, रत्नराशि। २. गणित में कोई ऐसी संख्या जिसके संबंध में जोड़, गुणा, भाग आदि क्रियाएँ की जाती हों। ३. क्रांति-वृत्त में पड़नेवाले विशिष्ट तारा समूह जिनकी संख्या बारह है और जिनके नाम इस प्रकार हैं—मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धन, मकर, कुंभ और मीन।

विशेष—क्रान्ति-वृत्त अर्थात् पृथ्वी के परिभ्रमण-मार्ग के दोनों ओर प्रायः ८० अंश की दूरी तक लगभग सवा दो सौ बहुत बड़े तारे हैं जो बहुत दूर होने के कारण हमें बहुत छोटे दिखाई देते हैं। हमें अपनी पृथ्वी तो चलती हुई दिखाई नहीं देती, और ऐसा जान पड़ता है कि चन्द्रमा और सूर्य ही इस क्रांति-वृत्त पर चल रहे हैं। चंद्रमा के परिभ्रमण के विचार से उक्त सब तारे २७ तारक-पुंजों में विभक्त किए गए हैं, जिन्हें नक्षत्र कहते हैं। परन्तु सूर्य के परिभ्रमण के विचार से इन्हीं तारों के १२ विभाग किए गए हैं, जिन्हें राशि कहते हैं। प्रत्येक राशि में प्रायः दो या इससे कुछ अधिक नक्षत्र पड़ते है, और उनके योग से कुछ विशिष्ट प्रकार की कल्पित आकृतियों वाली ये राशियाँ मानी गई हैं, और उन्हीं आकृतियों के विचार से उन राशियों का नामकरण हुआ है। जैसे—तुला राशि की आकृति तराजू की तरह, मकर राशि की आकृति मगर की तरह, वृश्चिक राशि की आकृति बिच्छू की तरह, सिंह राशि की आकृति शेर की तरह आदि आदि। जब सूर्य एक राशि को पार करके दूसरी राशि में प्रवेश करता है, तब उस संधि-काल को संक्रांति कहते हैं। विशेष दे० 'नक्षत्र'।

मुहा०—(किसी से किसी की) राशि बैठाना या मिलाना=(क) सामाजिक व्यवहार की दृष्टि से अनुकूलता होना। मेल बैठना। (ख) फलित ज्योतिष की दृष्टि से ऐसी स्थिति होना जिससे दोनों में वैवाहिक संबंध होने पर अच्छी तरह जीवन-यापन या निर्वाह हो सके।

४. वह स्थिति जिसमें कोई व्यक्ति किसी की धन-संपत्ति का उत्तराधिकारी होकर मालिक बनता है। रास।

विशेष—इस अर्थ से संबंध रखनेवाले मुहा० के लिए दे० 'रास' के अंतर्गत मुहा०।

राशि-चक्र—पुं० [सं० ष० त०] आकाशस्थ बारह राशियों का वह मंडल जो सूर्य के परिभ्रमण के विचार से क्रांतिवृत्त में पड़ता है। (जोडिएक)

राशि-नाम (न्)—पुं० [सं० मध्य० स०] व्यक्ति के पुकारने के नाम से भिन्न वह नाम जो उसके जन्म के समय होनेवाली राशि के विचार से रखा जाता है।

विशेष—ऐसे नामों का आरम्भ विभिन्न राशियों के विचार से विभिन्न वर्णों से होता है।

राशिप—पुं० [सं० राशि√पा (रक्षण)+क] किसी राशि का स्वामी या अधिपति देवता। (फलित ज्योतिष)

राशि-भाग—पुं० [सं० ष० त०] राशि-चक्र की किसी राशि का भाग या अंश। भग्नांश। (ज्योतिष)

राशि-भोग—पुं० [सं० स० त०] १. किसी ग्रह के किसी राशि में स्थित होने का भाव। २. उतना समय जितना किसी ग्रह को एक राशि में स्थित रहना पड़ता है।

राशी—वि० [अ०] रिश्वत खानेवाला। घूसखोर।
†स्त्री०=राशि।

राष्ट—पुं० [सं० राष्ट्र] फारसी संगीत में १२ मुकामों में से एक।

राष्ट्र—पुं० [सं० √राज् (दीप्ति)+ष्ट्रन्] १ राज्य। देश। २. किसी निश्चित और विशिष्ट क्षेत्र में रहनेवाले लोग जिनकी एक भाषा, एक से रीति-रिवाज तथा एक-सी विचार-धारा होती है। (नेशन) ३. किसी एक शासन में रहनेवाले सब लोगों का समूह। ४ सारे देश में एक साथ खड़ा होनेवाला कोई उपद्रव या बाधा। ईति। ५. पुराणानुसार पुरूरवा के वंशज काशी के पुत्र का नाम।
वि० जो सब लोगों के सामने या जानकारी में आ गया हो। सर्वविदित। जैसे—उनके कानों तक पहुँचते ही यह बात राष्ट्र हो जायगी। (सब को मालूम हो जायगा।)

राष्ट्रक—पुं० [सं० राष्ट्र+कन्] १. राज्य। २. देश।
वि० राष्ट्र सम्बन्धी। राष्ट्र का।

राष्ट्र-कर्षण—पुं० [सं० ष० त०] राजा या शासक का प्रजा पर अत्याचार करना। राष्ट्र या जनता को कष्ट देना।

राष्ट्र-कवि—पुं० [सं० ष० त०] वह कवि जिसकी कविताएँ राष्ट्र की आकांक्षाओं, आदर्शों, आदि की प्रतीक मानी जाती हों, और इसीलिए जो सारे राष्ट्र में बहुत ही आदर की तथा पूज्य दृष्टि से देखा जाता हो। जैसे—राष्ट्र-कवि श्री मैथिलीशरण गुप्त।

राष्ट्र-कुल—पुं०=राष्ट्र-मंडल।

राष्ट्र-कूट—पुं० [सं०] १. एक क्षत्रिय राजवंश जो आज-कल राठौर नाम से प्रसिद्ध है। २ दे० 'राठौर'।

राष्ट्र-गोप—पुं० [सं० राष्ट्र√गुप् (रक्षा)+अप्] १. राजा। २. राजाओं के प्रतिनिधि के रूप में काम करनेवाला कोई बहुत बड़ा शासक।
वि० राज्य की रक्षा करनेवाला।

राष्ट्र-तंत्र—पुं० [सं० ष० त०] राष्ट्र की शासन-पद्धति।

राष्ट्रपति—पुं० [सं० ष० त०] १ किसी राष्ट्र का सर्वप्रधान शासनिक अधिकारी। २ प्रजातन्त्र शासन-पद्धति में मतदाताओं द्वारा निर्वाचित वह व्यक्ति जिसके हाथ में कुछ नियत काल के लिए राष्ट्र की प्रभुसत्ता विधित. निहित होती है। (प्रेजीडेंट, उक्त दोनों अर्थों में)

राष्ट्रपाल—पुं० [सं० राष्ट्र√पाल् (रक्षा)+णिच्+अण्, उप० स०] १. राजा। २. मथुरा के राजा कंस का एक भाई।

राष्ट्र-भाषा—स्त्री० [सं० ष० त०] किसी राष्ट्र की वह भाषा जिसका प्रयोग उसके निवासी सार्वजनिक पारस्परिक कामों में करते हैं।

राष्ट्र-भृत—पुं० [सं० राष्ट्र√भृ (पोषण)+क्विप्, तुक्-आगम, उप० स०] १. राजा। २ शासक। ३. भरत का एक पुत्र। ४. प्रजा।

राष्ट्र-भृत्य—पु०[सं० ष० त०]१. वह जो राज्य की रक्षा या शासन करता हो। २. प्रजा।

राष्ट्र-भेद—पु०[स० ष० त०] प्राचीन भारतीय राजनीति मे ऐसा उपाय या कार्य जिसके द्वारा किसी शत्रु राजा के राज्य में उपद्रव, मत-भेद या विद्रोह खडा किया जाता था।

राष्ट्र-मंडल—पु०[स० ष० त०] समान हित और समान भाव से स्वेच्छा-पूर्वक आबद्ध होनेवाले स्वतन्त्र राष्ट्रो का मण्डल या समूह। (कामनवेल्थ) जैसे—ब्रिटिश राष्ट्र-मंडल जिसमे आस्ट्रेलिया, पाकिस्तान, भारत आदि अनेक स्वतन्त्र राष्ट्र सदस्य रूप से सम्मिलित हैं।

राष्ट्र-वाद—पु०[स० ष० त०] [वि० राष्ट्रवादी] यह मत या सिद्धात कि राष्ट्र के सभी निवासियो मे राष्ट्रीयता की भावना दृढ़तापूर्वक बनी रहनी चाहिए, राष्ट्रीय परम्पराओ के गौरव का ध्यान रखते हुए उनका पालन होना चाहिए। यह धारणा कि हमे मात्र अपने राष्ट्र की उन्नति, सम्पन्नता, विस्तार आदि का ध्यान रखना चाहिए। (नेशनलिज्म)

राष्ट्रवादी (दिन्)—वि० [स० राष्ट्रवाद+इनि] राष्ट्रवाद-सम्बन्धी। राष्ट्रवाद का।

पु० वह जो राष्ट्रवाद के सिद्धान्तो का अनुयायी, पोषक तथा समर्थक हो।

राष्ट्रवासी (सिन्)—पु० [स० राष्ट्र√वस् (निवास करना)+णिनि] [स्त्री० राष्ट्रवासिनी] १ राष्ट्र मे रहनेवाला। २ परदेसी। विदेसी।

राष्ट्र-विप्लव—पु०[स० ष० त०] राज्य मे होनेवाला विप्लव। विद्रोह। बलवा।

राष्ट्र-संघ—पु०[स० ष० त०] १ ससार के प्रमुख राष्ट्रो की वह सस्था जो पहले युरोपीय महायुद्ध की समाप्ति पर वार्सेई की सन्धि के अनुसार १० जनवरी १९२० को सब के सामूहिक कल्याण तथा सुरक्षा के उद्देश्य से बनी थी। (लीग आफ़ नेशन्स) २. दे० 'सयुक्त राष्ट्र-संघ'।

राष्ट्रांतपालक—पु० [स० राष्ट्र-अत-पालक ष० त०] प्राचीन भारत मे वह जो राष्ट्र की सीमाओ की देख-रेख तथा रक्षा करता था। सीमा-रक्षक अधिकारी।

राष्ट्रिक—पु०[सं० राष्ट्र+ठक्—इक]१. राजा। २ प्रजा।

वि० राष्ट्र-सम्बन्धी। राष्ट्र का।

राष्ट्रिय—पु० [स० राष्ट्र+घ—इय] [भाव० राष्ट्रियता] १ राष्ट्र का स्वामी, राजा। २ प्राचीन भारतीय नाटको मे, राजा के साले की सज्ञा।

वि० राष्ट्र सम्बन्धी। राष्ट्र का। राष्ट्रिक।

राष्ट्री (ष्ट्रिन्)—पु०[स० राष्ट्र+इनि] १. राज्य का अधिकारी, राजा। २ प्रधान शासक।

स्त्री० रानी।

राष्ट्रीय—वि० [स० राष्ट्रिय] [भाव० राष्ट्रीयता] राष्ट्र-सम्बन्धी। राष्ट्र का। राष्ट्रिय।

विशेष—राष्ट्रीय रूप स० व्याकरण से असिद्ध होने पर भी लोक मे चल गया है।

राष्ट्रीयता—स्त्री० [स० राष्ट्रीय+तल्+टाप्] १. राष्ट्रीय अर्थात् राष्ट्र के अग या सदस्य होने की अवस्था, धर्म या भाव। २ ऐसी धारणा या भावना कि हमे आपसी मत-भेद, वैर-विरोध आदि भूलकर सारे राष्ट्र की समान उन्नति, रक्षा, समृद्धि, सुरक्षा आदि का ध्यान रखना चाहिए। (नेशनलिज्म)

रास—स्त्री०[स० √ रास् (शब्द)+अञ्]१ कोलाहल। शोरगुल। हो-हल्ला। २ जोर की ध्वनि या शब्द। ३. वाणी। ४. प्राचीन भारत मे गोपो की एक क्रीडा जिसमे वे घेरा बाँधकर गाते और नाचते थे। ५ उक्त का वह विकसित रूप जो अब तक व्रज में प्रचलित है और जिसमे श्री कृष्ण की बाल-लीलाओ का अभिनय सम्मिलित हो गया है।

पद—रास-धारी। रास-मंडली

६ मध्ययुग मे एक प्रकार के गेय पद जो गुजरात और राजस्थान में प्रचलित थे और जो बाद मे 'रास' (देखे) के रूप मे विकसित हुए। ७ आनन्दमय क्रीडा। विलास। ८ एक प्रकार का चलता गाना। ९ लास्य नामक नृत्य। १० नाचने-गानेवालो की मडली या समाज। ११ जजीर। शृखला। १२ सगीत मे तेरह मात्राओं का एक ताल।

स्त्री० [स० राशि=ढेर] १ किसी चीज का ढेर या समूह। जैसे—खलिहान मे पडी हुई गेहूँ, चने या जौ की रास। २ उत्तराधिकार के विचार से धन, सपत्ति या प्राप्त होनेवाला उसका स्वामित्व। ३ गोद लिया हुआ लडका। दत्तक पुत्र।

मुहा०—(किसी का) किसी की रास बैठना=दत्तक बनकर या और किसी प्रकार उत्तराधिकारी होना। जैसे—अब तो आप उनकी रास बैठेंगे। (विशेषत परिहास मे)

४ एक प्रकार का छद जिसके प्रत्येक चरण मे ८+८+६ के विराम से २२ मात्राएँ और अन्त मे सगण होता है। ५. सख्याओं आदि का जोड। योग। ६ ब्याज। सूद। ७ एक प्रकार का धान जो अगहन मे तैयार होता है। इसका चावल सैकडो वर्षों तक रखा जा सकता है।

स्त्री०[स० राशि=राशि-चक्र मे का तारा-समूह,] प्रवृत्ति, रुचि, स्वभाव आदि की अनुकूलता। जैसे—उनसे किसी की रास नही बैठती।

क्रि० प्र०—बैठना।—बैठाना।

वि०१ उक्त अर्थ के विचार से, अनुकूल, लाभदायक, शुभ अथवा हितकर। जैसे—यह मकान उन्हे खूब रास आया है (अर्थात् इसे पाकर वे अच्छे सम्पन्न या सुखी हुए है)। २ उचित। ठीक। मुनासिब। वाजिब।

स्त्री०[फा०, मिलाओ स० रश्मि, प्रा० रस्सि]१ घोडे, बैल आदि पशुओं को चलाने की रस्सी। जैसे—घोडे की बागडोर या बैल की रास।

मुहा०—रास कडी करना=(क) घोडे की लगाम अपनी ओर खींचे रहना। (ख) लाक्षणिक रूप मे किसी पर कडा या पूरा नियत्रण रखना। **रास में लाना**=अपने अधिकार या वश मे करना।

२ रस्सा या रस्सी। उदा०—राणो थिमै न रास प्रचलो सांड प्रताप सी।—पृथीराज।

स्त्री०[इब० राश=सिर]१. चौपायो की गिनती के समय सख्या-सूचक इकाइयो के साथ लगनेवाली सज्ञा। (हेड ऑफ कैटल) जैसे—चार रास घोडे, पाँच रास बैल। २ चौपायो या पशुओं का झुड।

रासक—पु०[स० रास+कन्] एक तरह का हास्य-रस-प्रधान उपरूपक जिसमे पाँच अभिनता होते है। इसका नायक मूर्ख और नायिका चतुर होती है।

रास-चक्र—पु० राशि-चक्र।

रास-धारी (रिन्)—पु०[स० रास+धृ (धारण)+णिनि]१. वह जो

रासलीला का व्यवस्थापक हो। २. रासलीला की मण्डली का प्रधान। ३. वह जो रास-लीला में सम्मिलित होकर अभिनय, नृत्य आदि करता हो।

स्त्री० राजस्थानी नृत्य नाट्य की एक विशिष्ट शैली जो ब्रज की रास-लीला की तरह की होती और जिसमें धार्मिक लोक-नायकों के चरित्र का अभिनय होता है।

रासल—वि० [सं० रसना+अण्] स्वादिष्ठ। जायकेदार।

†पुं०=राशन।

रास-नशीन—वि० [सं० राशि+फा० नशीन] १ जो किसी का रास अर्थात् सम्पत्ति का उत्तराधिकारी हुआ हो। २ गोद बैठाया हुआ। दत्तक। मुतबन्ना (लडका)।

रासना—स्त्री०=रास्ना।

रास-नृत्य—पुं० [सं० मध्य० स०] गति के अनुसार नृत्य का एक भेद।

रास-पूर्णिमा—स्त्री० [सं० ष० त०] मार्गशीर्ष पूर्णिमा। श्री कृष्ण ने रास-क्रीड़ा इसी तिथि को आरम्भ की थी।

रास-मंडल—पुं० [सं० ष० त०] १ श्रीकृष्ण के रास-क्रीडा करने का स्थान। २ रास-क्रीडा या रास-लीला करनेवालो की मण्डली। ३ उक्त मण्डली का अभिनय।

रास-मंडली—स्त्री० [सं० ष० त०] रासधारियों का समाज या टोली।

रास-यात्रा—स्त्री० [सं० ष० त०] शरत् पूर्णिमा के दिन मनाया जानेवाला एक प्राचीन उत्सव। (पुराण) २. तांत्रिकों का एक उत्सव जिसे वे चैत्र पूर्णिमा को मनाते हैं।

रास-लीला—स्त्री० [सं० ष० त०] १ वे नृत्यात्मक क्रीडाएँ जो श्रीकृष्ण अपनी सखियो के साथ करते थे। २ वह नाटक या अभिनय जिसमें कृष्ण और गोपियो की प्रेम-सबधी क्रीडाएँ दिखाई जाती हैं।

रास-विलास—पुं० [सं० ष० त०] रास-क्रीडा।

रास-बिहारी (रिन्)—पुं० [सं० रास-वि√हृ+णिनि, उप० स०] श्रीकृष्णचद्र।

रासा—पुं० [हिं० रास=एक प्रकार के गेय पद] १ वह काव्य जिसमें किसी के वीरतापूर्ण कृत्यों या युद्धों का सविस्तर वर्णन हो। २ किसी प्रकार का कथा-काव्य। (राज०) ३. बाइस मात्राओ का एक छंद जिसके अंत मे सगण होता है। ४ गहरी तकरार या हुज्जत। लडाई-झगड़ा।

रासायन—वि० [सं० रसायन+अण्] १. रसायन-सबंधी। २ रसायन के रूप मे होनेवाला।

रासायनिक—वि० [सं० रसायन+ठक्—इक] रसायन-शास्त्र संबधी। रसायन का।

पुं० वह जो रसायन-शास्त्र का ज्ञाता हो।

रासि†—स्त्री०=राशि।

रासिख—वि० [अ० रासिख] १ पक्का। मजबूत। २. अटल। स्थिर।

रासी—स्त्री० [देश०] १. तीसरी बार खींची हुई शराब जो सबसे निकृष्ट समझी जाती है। २. सज्जी।

वि० १. खराब, झूठा या नकली। २. जिसमें खोट या मिलावट हो। जैसे—सोने का रासी तार।

†स्त्री०=राशि।

रासु*—वि० [फा० रास्त] १. सीधा। सरल। २. उचित। ठीक। वाजिब।

रासेरस—पुं० [सं० अलुक् स०] १. गोष्ठी। २. रास-बिहार। रास-क्रीड़ा। ३ शृंगार। सजावट। ४. उत्सव। ५ परिहास। हँसी-ठठ्ठा।

रासेश्वरी—स्त्री० [सं० रास-ईश्वरी, ष० त०] राधा।

रासो—पुं० [सं० रहस्य] किसी राजा का पद्यमय जीवन-चरित्र। जैसे—पृथ्वीराज रासो।

रास्त—वि० [फा०] १. दाहिनी ओर पड़ने या होनेवाला। दाहिना। २ सीधा। सरल। ३. ठीक। दुरुस्त। ४. उचित। वास्तविक। वाजिब। ५. अनुकूल। मुआफिक।

क्रि० प्र०—आना।—पड़ना।—होना।

रास्तगो—वि० [फा०] [भाव० रास्तगोई] सच बोलनेवाला। सत्यवक्ता।

रास्तगोई—स्त्री० [फा०] १. सत्य बोलना। २. सत्य-कथन।

रास्तबाज—वि० [फा० रास्तबाज] [भाव० रास्तबाजी] ईमानदार और सच्चा। विशेषत लेन-देन में साफ। २. नेकचलन। सदाचारी।

रास्तबाजी—स्त्री० [फा० रास्तबाजी] १ ईमानदारी। सच्चाई। २ सदाचार।

रास्ता—पुं० [फा० रास्तः] १. वह कच्ची या पक्की जमीन जिस पर लोग सामान्यतया चलते-फिरते या आते-जाते रहते हैं।

मुहा०—**रास्ता कटना**=चलने से रास्ता पार या पूरा होना। जैसे—बात-चीत में ही आधा रास्ता कट गया। **(किसी का) रास्ता काटना**=किसी के चलने के समय उसके सामने से होकर किसी का निकल जाना। जैसे—बिल्ली रास्ता काट गई। **रास्ता देखना या पकड़ना**=(क) मार्ग का अवलंबन करना। रास्ते पर चलना। (ख) कहीं से हटकर चले जाना। जैसे—अच्छा, अब तुम अपना रास्ता देखो (या पकड़ो)। **(किसी का) रास्ता देखना**=प्रतीक्षा करना। आसरा देखना। **(किसी को) रास्ता बताना**=(क) चलता करना। हटाना। (ख) इधर-उधर की बातें करके टालना। **रास्ते पर लाना**=सुमार्ग पर चलाना। अच्छे या ठीक रास्ते पर लगाना। **रास्ते लगना**=(क) चल पड़ना। (ख) ऐसे मार्ग पर लगना जिससे उद्देश्य सिद्ध हो।

२, प्रथा। रीति। चाल। जैसे—अब तो आपने यह नया रास्ता चला ही दिया है। ३. उपाय। तरकीब। युक्ति। जैसे—अभी तो इस संकट से निकलने का रास्ता सोचना है।

मुहा०—**(किसी को) रास्ता बताना**=(क) उपाय, तरकीब या युक्ति बताना। (ख) कोई काम करने का ढंग बताना या सिखाना।

रास्ना—स्त्री० [सं० √रस् (आस्वादन)+न, दीर्घ,+टाप्] १ गधना-कुली नामक कंद जो आसाम, लंका, जावा आदि मे अधिकता से होता है। २ गंधनाकुली। ३ रुद्र की प्रधान पत्नी।

रास्निका—स्त्री० [सं० रास्ना+कन्+टाप्, ह्रस्व, इत्व] रास्ना।

रास्य—पुं० [सं० रास+यत्] श्रीकृष्ण।

राह—स्त्री० [फा०] १. मार्ग। पथ। रास्ता।

मुहा०—**राह पड़ना**=(क) रास्ते पर चलना या जाना। (ख) रास्ते में चलनेवाले पर छापा डालना। लूटना। **राह मारना**=(क)

रास्ते में चलनेवाले को लूटना। (ख) दे० 'रास्ता' के अन्तर्गत (किसी का) रास्ता काटना।

विशेष—'राह' के सब मुहा० के लिए दे० 'रास्ता' के मुहा०।

२. कोई काम या बात करने का उचित और ठीक ढंग।

पद—**राह राह का**=ठीक ढंग या तरह का। उदा०—नखरो राह-राह को नीको।—भारतेन्दु। **राह राह से**=सीधी या ठीक तरह से। ३. प्रथा। रीति। ४. कायदा। नियम। ५ तरकीब। युक्ति।

†पु०=राहु (ग्रह)।

†स्त्री०=रोहू (मछली)।

राह-खरच—पुं०[फा० राह+खर्च] यात्रा करते समय होनेवाला व्यय। मार्ग-व्यय।

राह-खरची—स्त्री० राह-खरच (मार्ग-व्यय)।

राहगीर—पु०[फा०] वह जो रास्ता पकड़े हुए हो। बटोही।

राह-चलता—पु०[फा० राह+हिं० चलता] [स्त्री० राह-चलती] १. रास्ता चलनेवाला। पथिक। राहगीर। बटोही। २. व्यक्ति जिससे विशेष परिचय न हो। जैसे—यों ही राह-चलतों से मजाक नहीं करना चाहिए।

राहजन—पुं०[फा० राहज़न] [भाव० राहजनी] रास्ते में चलनेवालों को लूटनेवाला। बटमार।

राहजनी—स्त्री०[फा० राहज़नी] रास्ते में चलनेवाले लोगों को लूटना। बटमारी।

राहड़ी—पु०[देश०] एक प्रकार का घटिया कंबल।

राहत—स्त्री०[अ०] १ आराम। सुख। चैन। २ वह आराम जो कष्ट, रोग आदि में कमी होने पर मिलता है। ३. बोझ, भार, उत्तरदायित्व से छुट्टी मिलने पर होनेवाली आसानी या सुगमता।

राहत-तलब—वि०[अ०] [भाव० राहत-तलबी] १ आराम-तलब। २ कामचोर।

राहदार—पु०[फा०] वह जो किसी रास्ते की रक्षा करता या उस पर आने-जानेवालों से कर वसूल करता हो।

राहदारी—स्त्री०[फा०] १. किसी दूर देश में जाने के लिए रास्ते पर चलना। २ वह कर जो प्राचीन काल में यात्रियों को कुछ विशिष्ट स्थानों पर चुकाना पड़ता था। दे० 'राहदारी का परवाना'।

राहदारी का परवाना—पु०[हिं०] प्राचीन काल में वह परवाना या अधिकार-पत्र जो दूर देश के यात्रियों को कुछ विशिष्ट मार्गों से आने-जाने के लिए राज्य की ओर से मिलता था। २ दे० 'पारपत्र'।

राहना—स०[हिं० राह? (राह बनाना)] १ चक्की के पाटों को खुरदरा करके पीसने योग्य बनाना। जाँता कूटना। २. रेती आदि को खुरदुरा करके ऐसा रूप देना कि वह ठीक तरह से चीजें रेत सके।

†पुं०=रहना।

राहनुमा—वि० [फा०] [भाव० राहनुमाई] पथ-प्रदर्शक।

राहनुमाई—स्त्री०[फा०] पथ-प्रदर्शन।

राहबर—वि०[फा०]=रहबर (मार्ग-प्रदर्शक)।

राहर—पु०=अरहर (अन्न)।

राह-रस्म—स्त्री०[फा०] १. मेल-जोल। व्यवहार। घनिष्ठता। २. चाल। परिपाटी। प्रथा।

राह-रीति—स्त्री० [हिं० राह+सं० रीति] १. पारस्परिक राह-रस्म। व्यवहार। २. जान-पहचान। परिचय। ३. आचरण, व्यवहार आदि का उचित या ठीक तरह से किया जानेवाला पालन।

राहा—पु०[हिं० रहना] मिट्टी का वह चबूतरा जिस पर चक्की के नीचे का पाट जमाया रहता है।

राहिन—वि०[अ०] रेहन अर्थात् गिरों या बंधक रखनेवाला।

राही—पु० [फा०] राहगीर। मुसाफिर। रास्ता चलनेवाला व्यक्ति। पथिक।

मुहा०—**राही करना**=चलता बताना। (बाजारू) **राही होना**=चलता बनना। रास्ता पकड़ना। (बाजारू)

स्त्री०[सं० राधिका, प्रा० रहिया] राधा या राधिका। उदा०—राज मती राही जी सी। —नरपति नाल्ह।

राहु—पु०[सं०√रह् (त्याग)+उण्] १. पुराणानुसार नौ ग्रहों में से एक जो विप्रचित्ति के वीर्य से सिंहिका के गर्भ से उत्पन्न हुआ था।

विशेष—प्राचीन काल में चंद्रमा के आरोह-पात और अवरोह-पात वाले बिंदुओं को क्रमात् राहु और केतु कहते थे। (दे० 'पात') पर आगे चलकर पौराणिक काल में राहु की राक्षस रूप में कल्पना होने लगी, और समुद्र-मंथन वाली कथा के प्रसंग में उसका सिर काटने की बात भी सम्मिलित हुई, तब केतु उस राक्षस का कबंध तथा राहु उसका सिर माना जाने लगा। लोक में ऐसा माना जाता है कि उसी के ग्रसने से चन्द्रमा और सूर्य को ग्रहण लगता है।

२ लाक्षणिक अर्थ में, कोई ऐसा व्यक्ति या पदार्थ जो किसी की सत्ता के लिए विशेष रूप से कष्टदायक या घातक हो।

पु०[सं० राघव] रोहू मछली।

राहु-ग्रसन—पुं०[सं० ष० त०] ग्रहण। उपराग।

राहु-ग्रास—पु०[सं० ष० त०] ग्रहण। उपराग।

राहु-दर्शन—पु०[सं० ष० त०] ग्रहण। उपराग।

राहु-भेदी (दिन्)—पु० [सं० राहु√भिद् (विदारण)+णिनि] विष्णु।

राहु-माता (तृ)—स्त्री०[सं० ष० त०] राहु की माता सिंहिका।

राहु-रत्न—पु०[सं० मध्य० स०] गोमेद मणि जो राहु के दोषों का शमन करनेवाली मानी जाती है।

राहुल—पु०[सं०] यशोधरा के गर्भ से उत्पन्न गौतम बुद्ध के पुत्र का नाम।

राहु-सूतक—पुं०[सं० ष० त०] ग्रहण। उपराग।

राहु-स्पर्श—पु०[सं० ष० त०] ग्रहण। उपराग।

राहूत—पु० [?] सूफी मत के अनुसार ऊपर के नौ लोकों में से आठवाँ लोक।

रिंग—स्त्री०[अं०] १ अँगूठी। छल्ला। २ किसी प्रकार का गोलाकार घेरा। चूड़ी। वलय।

रिंगण—पु०[सं०√रिंग् (गति)+ल्युट्—अन] १. रेंगना। २ फिसलना। ३ खिसकना। सरकना। ४ विचलित होना। डिगना।

रिंगन—स्त्री०[सं० रिंगण] घुटनों के बल चलना। रेंगना।

रिंगना†—अ०=रेंगना।

रिंगनी—स्त्री०[देश०] एक प्रकार की ज्वार और उसका पौधा।

रिंगल—पु०[देश०] एक तरह का पहाड़ी बाँस।

रिंगाना—स०=रेंगाना।

रिंगिंग—स्त्री०[अं० रिंगिंग] वह रस्सी जिससे जहाज के मस्तूल आदि बाँधे जाते हैं। (लश०)

रिंद—पुं०[फा०] [भाव० रिंदी] १. ऐसा व्यक्ति जो धार्मिक बातों पर अंध-विश्वास न रखता हो,और तर्क तथा बुद्धि के विचार से केवल युक्ति-संगत बातें मानता हो। धार्मिक विषयों में उदार तथा स्वतन्त्र विचारोंवाला व्यक्ति। २. धार्मिक वृत्तिवाले मुसलमानों की दृष्टि से ऐसा व्यक्ति जो मद्यपान करता और श्रृंगारिक भोग-विलास में विशेष प्रवृत्ति रखता हो, फिर भी अपने आपको अच्छा मुसलमान समझता हो। ३. मनमौजी और स्वच्छन्द प्रकृतिवाला व्यक्ति। उदा०—एक तुम्हीं हो जो बहक जाते हो तौबा की तरफ। वर्ना रिंदों में बुरा और चलन किसका है।—कोई शायर।

वि० मतवाला। मस्त।

रिंदगी—स्त्री०[फा०] १ रिंद होने की अवस्था या भाव। रिंदापन।

रिंदा—वि० [फा० रिंद] उद्दंड, निरंकुश, निर्लज्ज और लुच्चा। तुच्छ और बेहूदा।

रिअना—पु० [देश०] एक प्रकार का कीकर। रीआँ।

रिआयत—स्त्री०[अ०]१. किसी चीज के सामान्य मूल्य मे किसी के लिहाज आदि के कारण की जानेवाली कमी। जैसे—उन्होने ५०) रुपए की रिआयत की। २. किसी नियम, बधन मे किसी कारणवश अथवा किसी के लिए की जानेवाली ढिलाई या दिया जानेवाला सुभीता। ३. किसी से सख्ती न करके किया जानेवाला दयापूर्ण व्यवहार। (कन्सेशन) ४. कमी। न्यूनता। ५. ख्याल। ध्यान। जैसे—इस दवा मे खाँसी की भी रिआयत रखी गई है, अर्थात् यह ध्यान भी रखा गया है कि खाँसी दूर हो।

रिआयती—वि०[अ०]१. जो रिआयत के रूप में हो। २ जिसमे किसी तरह की रिआयत की गई हो। जैसे—दुर्गा पूजा में रेल के रिआयती टिकट मिलते है।

रिआया—स्त्री०[अ० रआया] प्रजा।

रिकवँछ—स्त्री०[देश०] एक प्रकार के पकौड़े जो उर्द की पीठी और अरुई के पत्तों या इसी प्रकार के कुछ और पत्तो से बनता है। पतौड़। उदा०—पान लाइकै रिकवँछ छौंके, हीगु मिरिच औ नाद।—जायसी।

रिकशा—पुं०[जापानी जिन् रिक्शा=आदमी के द्वारा खींची जानेवाली गाडी] एक प्रकार की छोटी गाड़ी जिसे आदमी खीचते हैं और जिसमे एक या दो आदमी बैठते हैं।

विशेष—अब आदमी के बदले इसमे अधिकतर बाइसिकिल के पहिए और कल-पुरजे लगाये जाते हैं, जिसे साइकिल रिकशा कहते हैं।

रिकसा—स्त्री०[सं० रिक्षा] लीख।

पुं०=रिकशा।

रिकाब—स्त्री०=रकाब।

रिकाबी—स्त्री०=रकाबी।

रिकार्ड—पुं० दे० 'रेकार्ड'।

रिक्त—वि०[सं०√ रिच् (अलग करना)+क्त]१. खाली। शून्य। जैसे—रिक्त घट, रिक्त स्थान। २. गरीब। निर्धन।

पुं० जंगल। वन।

रिक्त-कुंभ—पुं०[सं० कर्म० स०]१. साहित्य में ऐसी भाषा जो समझ में न आवे अथवा जिसका कुछ भी अर्थ न निकलता हो। साधारण लोक-व्यवहार में ऐसी चीज जो देखने भर की हो, काम में आने योग्य न हो।

रिक्तता—स्त्री० [सं० रिक्त+तल्+टाप्]१. रिक्त या खाली होने की अवस्था या भाव। २. नौकरी के लिए पद या स्थान रिक्त होने की अवस्था या भाव। (वैकेन्सी)

रिक्ता—स्त्री०[सं० रिक्त+टाप्] फलित ज्योतिष में चतुर्थी, नवमी और चतुर्दशी तिथियाँ जो शुभ कामो के लिए वर्जित हैं।

रिक्तार्क—पु०[सं० रिक्ता-अर्क, मध्य० स०] रविवार को पड़नेवाली कोई रिक्ता तिथि।

रिक्थ—पुं०[सं० रिच्+थक्]१ वह सम्पत्ति जो उत्तराधिकारी को दी जाय। २ वह धन-सम्पत्ति या ऐसी ही कोई और चीज जो किसी को उत्तराधिकारी के रूप मे मिली हो या मिले। (लिगेसी)३. व्यापार मे लगी हुई सारी पूँजी और उससे संबंध रखनेवाली सारी सम्पत्ति।

रिक्थ-पत्र—पु०[सं० ष० त०]इच्छा-पत्र। वसीयतनामा।

रिक्थहारी (रिन्)—पु०[सं० रिक्थ√ हृ (हरण)+णिनि]१. रिक्थ प्राप्त करने का उचित या वास्तविक अधिकारी। २ मामा।

रिक्थी (थिन्)—पु० [सं० रिक्थ+इनि] [स्त्री० रिक्थिनी] वह जिसे उत्तराधिकार मे धन या सम्पत्ति मिले या मिलने को हो। रिक्थहारी।

रिक्ष†—पुं०=रीछ।

रिक्षपति†—पु० ऋक्षपति। जामवत।

रिक्षा—स्त्री० [सं० लिक्षा] १ जूँ का अडा। लीख। लिक्षा। २. त्रसरेणु।

पुं०=रिकशा।

रिख—पुं०[स० ऋक्ष] तारा। नक्षत्र। उदा०—राजति रद रिखपति रुख।—प्रिथीराज।

रिखभ—पु०= षभ।

रिखिय—पु०=ऋषि।

रिखू—स्त्री०[देश०] एक प्रकार की ऊख।

रिखेसर—पु०=ऋषीश्वर।

रिग—पु०=ऋक्।

रिगाना†—स०=रेंगाना।

रिचा—स्त्री० ऋचा।

रिचीक—पु० ऋचीक (जमदग्नि के पिता)।

रिच्छ—पु०=रीछ (भालू)।

रिच्छा—स्त्री०=रक्षा।

रिजक—पुं०[अ० रिज़क] रोजी। जीविका। जीवन-वृत्ति।

क्रि० प्र०—देना।—पाना।—मिलना।

मुहा०—(किसी का) रिजक मारना=किसी की जीविका या रोजी में बाधक होना। जीविका के साधन से वचित करना।

रिजर्व—वि०[अ०] जिसे किसी विशिष्ट काम या व्यक्ति के लिए रक्षित किया गया हो। जिसका उपयोग दूसरे कामो या व्यक्तियो के लिए न हो सकता हो।

रिझाला—पुं०[अ०]१ बदमाश। आवारा। बेशर्म आदमी। २ कमीना। नीच।

रिझाली—स्त्री०[फा० रजील=नीच] 'रिजाला' होने की अवस्था या भाव। कमीनापन। नीचता।

रिजु—वि०=ऋजु (सीधा)।

रिज्क—पु०=रिजक।

रिझकवार—वि०[हिं० रीझना+वार (प्रत्य०)] १. रीझनेवाला। २ जो प्राय अच्छी बातो पर रीझ जाता हो।
पु०=रिझवार (प्रेमी)।

रिझवाना—स०=रिझाना।

रिझवार—वि०[हिं० रीझाना+वार (प्रत्य०)] [स्त्री० रिझवारी] जिसका मन किसी के गुण, रूप, व्यापार आदि पर रीझता हो।
पुं०=प्रेमी।

रिझाना—स०[स० रजन] अपने गुण, चेष्टा, रूप आदि से किसी का ध्यान आकृष्ट करते हुए उसे अपनी ओर अनुरक्त बनाना।

रिझामल†—वि०=रिझावर।

रिझाव—पुं०[हिं० रीझना+आव (प्रत्य०)]१ रीझने की अवस्था या भाव। २ रिझाने की क्रिया या भाव।

रिझावना—स०=रिझाना।

रिटायर्ड—वि० [अ०] जो अपने काम से अवसर-ग्रहण कर चुका हो। अवकाश-प्राप्त।

रिड़कना—स० [?] दही आदि बिलोना। मथना।
अ० १ खटकना। २ गडना। चुभना।

रिण†—पु०=ऋण।
†पुं०=रण। (डिं०)

रिणाई—वि०[सं० ऋण+दायिन्] जिसने ऋण लिया हो। उदा०—छिन जेही रिणी रिणाई।—प्रिथीराज।

रित†—स्त्री०=ऋतु।

रितना—अ०[स० रिक्त, हिं० रीता] रिक्त या खाली होना। शून्य होना।

रितवना—स०[हिं० रीता+ना] रीता अर्थात् खाली करना। रिक्त करना।

रितु—स्त्री०=ऋतु।

रितुराज—पु० =ऋतुराज (वसत)।

रितुवंती —स्त्री०=ऋतुमती (रजस्वला)।

रितुसारी—पुं०[स० ऋतु+सारी] एक प्रकार का चावल।

रिद—पु०=हृदय।

रिद्ध—स्त्री०=ऋद्धि।

रिद्धि-सिद्धि—स्त्री०=ऋद्धि-सिद्धि।

रिध—स्त्री०=ऋद्धि।

रिन—पु०=ऋण।

रिनबंधी—पु०[स० ऋण+बध] ऋणी।

रिनियाँ—वि०[स० ऋण] जिसने ऋण लिया हो। ऋणी।

रिनी—वि०=ऋणी (कर्जदार)।

रिपटना—अ०=रपटना (फिसलना)।

रिपु—पु० [स० √ रप् (बोलना)+कु, इत्व] [भाव० रिपुता]१. उन दो व्यक्तियो, दलो आदि में से हर एक जिनमें एक दूसरे के प्रति शत्रुता का भाव हो। दुश्मन। शत्रु। २. लाक्षणिक अर्थ में वह गुण, तथ्य या वस्तु जो अत्यन्त हानिकर तथा नाशक प्रभाववाली हो। जैसे—षट्-रिपु। ३. जन्मकुण्डली मे लग्न से छठा स्थान जिसमे लोगों के शत्रुभाव का विचार होता है।

रिपुघ्न—वि० [स० रिपु√ हन् (हिंसा)+क] शत्रुओं का नाश करनेवाला।

रिपुता—स्त्री०[स० रिपु+तल्+टाप्] १ रिपु होने की अवस्था या भाव। दुश्मनी। शत्रुता।

रिपोर्ट—स्त्री०[अं०]१. किसी घटना आदि का वह विवरण जो किसी अधिकारी को उनकी जानकारी के लिए दिया जाता है। प्रतिवेदन। २. किसी सस्था आदि के कार्यों का विस्तृत विवरण। कार्य-विवरण। ३. किसी वस्तु या व्यक्ति के सम्बन्ध की जानने योग्य बातो का ब्योरा।

रिपोर्टर—पु०[अ०] सवाददाता (समाचार पत्रो का)।

रिफाकत —स्त्री० [अ० रिफाक, रफीक का बहुवचन] १ मित्रगण। साथी लोग। २ रफीक या साथी होने की अवस्था या भाव। मित्र। ३ सग-साथ।

रिफार्म—पु०[अं०] ऐब, खराबियाँ, दोष आदि दूर करने की क्रिया या भाव। सुधार।

रिफार्मर—पु०[अ०] १ सुधारक। २ समाज-सुधारक।

रिफार्मेटरी—स्त्री० [अ०] वह स्थान जहाँ छोटी अवस्था के विशेषत: अल्प-वयस्क अपराधी बालक चरित्र-सुधार की दृष्टि से कैद करके रखे जाते है।

रिबन—पु० [अ०]१. पतली पट्टी। २ फीते के तरह की वह चौडी पट्टी जिसमे स्त्रियाँ बाल आदि बाँधती हैं। ३ फीता। जैसे—टाइप राइटर का रिबन।

रिभु—पु०=ऋभु (देवता)।

रिम—पु०[स० अरिम् या ऋपु] शत्रु। (डिं०)
स्त्री०=रीम।

रिम-झिम—स्त्री०[अनु०]छोटी-छोटी बूँदो का लगातार गिरना। हलकी फुहार पडना।
मुहा०—रिमझिम बरसना—छोटी-छोटी बूंदो के रूप मे पानी बरसना। उदा०—भादों भय भारी लगे, रिम-झिम बरसे मेह।—गीत।

रिमहर—पु०[?] शत्रु। (डिं०)

रिमाइंडर—पु०[अ०] स्मृति-पत्र। स्मारक।

रिमिका—स्त्री० [?] काली मिर्च की लता। (अनेकार्थ)

रिया—स्त्री०[अ०]१ पाखड। २ प्रदर्शन। ३ दिखावा।

रियाकर—वि०[अ०+फा०] [भाव० रियाकरी]ढोंगी। मक्कार।

रियाकारी—स्त्री०[अ० +फा०] पाखड।

रियाज—पु० [अ० रियाज]१ तपस्या। २. किसी काम या बात में प्रवीणता प्राप्त करने के लिए परिश्रमपूर्वक और नियमित रूप से किया जानेवाला उसका अभ्यास। जैसे—गाने-बजाने का रियाज करना। ३ ऐसा बढिया और बारीक काम जो उक्त प्रकार से यथेष्ट अभ्यास कर चुकने पर बहुत परिश्रम पूर्वक किया गया हो। जैसे—ताजमहल में नक्काशी का सारा काम बहुत रियाज का है।

रियाजत—स्त्री०[अ० रियाजत]१. उद्यम। परिश्रम। २. अभ्यास। ३. जप-तप। तपस्या।

रियाजी—वि०[अ० रियाजी] जिसका ज्ञान रियाज करने पर प्राप्त होता हो।

पु० गणित की विद्या।

रियासत—स्त्री०[अ०] १. रईस होने की अवस्था या भाव। अमीरी। वैभव। ऐश्वर्य। २. राज्य विशेषतः ब्रिटिश भारत में देशी नरेशों का राज्य। ३. आधिपत्य। स्वामित्व।

रियासती—वि०[अ०] रियासत सम्बन्धी। रियासत का।

रियाह—पु०[अ० रेह का बहु०]शरीर के अन्दर की वायु जो विकृत होकर किसी रोग के रूप में प्रकट होती है।

रिर—स्त्री०[अनु०] बहुत गिड़गिडाकर और आग्रहपूर्वक किया जाने-वाला अनुरोध या प्रार्थना।

रिरना—अ०[अनु०] बहुत गिडगिडाते हुए अपनी दीनता प्रकट करना।

रिरंसा—स्त्री०[स०]१ चित्त प्रसन्न करने या किसी प्रकार के विनोद से सुख प्राप्त करने की इच्छा। २. काम-वासना तृप्त करने की इच्छा।

रिरियाना—अ०=रिरना।

रिरिहा—वि० [हि० रिरना] बहुत गिडगिडाकर या रट लगाकर प्रार्थना करनेवाला।

रिरी—स्त्री० [म०√रि (गति)।क्विप्, पृषो० द्वित्व] पीतल। (धातु)

†स्त्री०=रिर।

रिलना*—अ०[हि० रेलना मि० प० रलना=मिलना] प्रवेश करना। पैठना। घुसना।

†अ०=रलना (मिलना)

रिलीफ़—स्त्री०[अ०]१ कष्टपूर्ण या दुखद वातावरण या स्थिति के उपरान्त मिलनेवाला आराम या चैन। २ सहायता। ३. उक्त प्रकार के प्रसगो मे दी जानेवाली सहायता।

रिव—पु०=रवि। (डि०)

रिवाज—पु०=रवाज (प्रथा)।

रिवायत—स्त्री०[अ०]१ सुनी-सुनाई बात दूसरो से कहना। २ इस प्रकार कही जानेवाली बात। ३. कहावत। लोकोक्ति।

रिवाल्वर—पु०[अ०] गोली चलाने या छोड़ने का एक प्रकार का छोटा उपकरण। तमचा।

रिव्यू—स्त्री०[अं०]१ समीक्षा। आलोचना। २ नजरसानी।

रिशवत—स्त्री०[अ० रिश्वत] वह धन जो किसी अधिकारी को खुश करने तथा उससे कोई जायज या नाजायज काम कराने के उद्देश्य से दिया जाता है। उत्कोच। घूस। लाँच।

क्रि० प्र०—खाना।—देना।—मिलना।—लेना।

रिशवतखोर—पु०[अ० रिश्वत+फा० खोर] [भाव० रिश्वतखोरी] वह जो रिश्वत लेता हो। घूस खानेवाला।

रिशवतखोरी—स्त्री० [अ० रिश्वत+फा० खोरी] १. रिश्वत लेने की अवस्था या भाव। २ दूसरे से रिश्वत लेने की आदत या लत।

रिश्ता—पु० [फा० रिश्त:] व्यक्तियों मे होनेवाला पारिवारिक या वैवाहिक सम्बन्ध। नाता।

रिश्तेदार—पुं० [फा० रिश्त:दार] [भाव० रिश्तेदारी] वह जिससे कोई रिश्ता हो। संबंधी। नातेदार।

रिश्तेदारी—स्त्री०[फा० रिश्त दारी] रिश्ता होने की अवस्था या भाव। सबंध। नाता।

रिश्तेमंद—पु०[फा०]=रिश्तेदार।

रिश्तेमंदी—स्त्री०=रिश्तेदारी।

रिश्य—पु०[स०√रिश्(हिंसा+क्यप्]मृग।

रिश्वत—स्त्री०=रिशवत।

रिषभ—पुं०=ऋषभ (बैल)।

रिषि—पुं०=ऋषि।

रिष्ट—पु०[स०√रिष्(हिंसा)+क्त]१ कल्याण। मगल। २. अकल्याण। अमंगल। ३ अभाव। ४. नाश। ५ पाप। ६. खड्ग।

वि० नष्ट। बरबाद।

वि० [स० हृष्ट]१. मोटा-ताजा। २ प्रसन्न और संतुष्ट।

रिष्टि—स्त्री०[स०√रिष्(हिंसा)+क्तिन्]१. खड्ग। २ अमंगल।

रिष्यमूक—पु०[स० ऋष्यमूक] रामचरित मानस के अनुसार दक्षिण भारत का एक पर्वत जिस पर राम और सुग्रीव की भेंट हुई थी।

रिस—स्त्री०[स० रुष]१. किसी के प्रति मन में होनेवाला रोष। २. मन मे दबी हुई नाराजगी।

मुहा०—रिस मारना=गुस्सा काबू मे करना।

रिसना—अ०=रसना (तरल पदार्थ अन्दर से बाहर निकलना)।

रिसवाना—स० [हि०रिसाना का प्रे०] रिसाने(किसी से अप्रसन्न होने) मे प्रवृत्त करना।

रिसहा—वि०[हि० रिस+हा (प्रत्य०)] जो बात-बात पर क्रुद्ध हो उठता हो।

रिसहाया—वि०[हि० रिसाया] [स्त्री० रिसहाई] कुपित। जिसके मन मे रिस उत्पन्न हुई हो। रुष्ट। अप्रसन्न। नाराज।

रिसान—पु०[?] ताने के सूतो को फैलाकर उनको साफ करने का काम। (जुलाहे)

रिसाना—अ०[हि० रिस+आना (प्रत्य०)] क्रुद्ध होना। खफा होना। गुस्सा होना।

स० किसी पर क्रोध करना। नाराजी जाहिर करना।

रिसाल—पुं०[अ० इरसाल] वह धन जो कर के रूप मे वसूल करके सरकारी खजाने या राजधानी में भेजा जाता था।

रिसालत—स्त्री०[अ०]१. रसूल अर्थात् दूत का काम, पद या भाव। २. इस्लाम में मुहम्मद साहब को ईश्वर का दूत मानने की अवस्था या सिद्धान्त।

रिसालदार—पुं० [फा० रिसाल. दार] १ घुड़सवार। सैनिको का नायक। २ वह कर्मचारी जो कर वसूल करके खजाने में पहुँचाता था।

रिसाला—पु० [फा० रिसाल:]१ घोड़-सवारो की सेना। अश्वारोही सेना। २ सामयिक पत्र। पत्रिका। ३ पुस्तिका।

रिसि—स्त्री०=रिस।

रिसिआना—अ०=रिसाना।

रिसिक—स्त्री०[स० रिषीक] तलवार।

रिसौहाँ—वि०[हि० रिस+औहाँ (प्रत्य०)] [स्त्री० रिसौही]१.

क्रोध से युक्त या भरा हुआ। जैसे—रिसौहीं आँखें। २. रिस या क्रोध का सूचक।

रिहड़ी—स्त्री०[?] बलुई जमीन या रेतीली मिट्टी।

रिहन—पु०[अ०]=रेहन।

रिहननामा—पु०=रेहननामा।

रिहर्सल—पु० [अं०] १ (किसी नाटक आदि में) अभिनय करनेवाले पात्रों द्वारा किसी नाटक का किया जानेवाला अभ्यास के रूप में अभिनय। २ वह अभ्यास जो किसी कार्य को ठीक समय पर करने से पहले किया जाय।

रिहल—स्त्री०[अ०] काठ की बनी हुई कैंचीनुमा चौकी जिस पर धार्मिक ग्रन्थ आदि रखकर पढ़े जाते है।

रिहलत—स्त्री०[अ०]१ प्रस्थान। खानगी। २ इस लोक से सदा के लिए होनेवाला प्रस्थान, अर्थात् मृत्यु।

रिहा—वि०[फा० रहा][भाव० रिहाई]१. (बन्धन, बाधा, सकट आदि से) छूटा हुआ। मुक्त। २ (कैदी) जिसे कैद से छुट्टी मिल गई हो।

रिहाइश—स्त्री० [फा० रहाइश]१ रहने का स्थान। निवास-स्थान। २ रहने अर्थात् जीवन-निर्वाह करने का ढग। रहन-सहन।

रिहाई—स्त्री०[फा० रहाई] छुटकारा। मुक्ति। छुट्टी।

क्रि० प्र०—देना।—पाना।—मिलना।

रींधना—स०=राँधना।

री—स्त्री०[स०√ री (गति), धातु]१ गति। २ वध। हत्या। ३. ध्वनि। शब्द।

अव्य०[हिं० रे (सम्बोधन) का स्त्री०] सखियों के लिए सम्बोधन का शब्द। अरी। एरी।

रीगन—पु०[देश०] भादों तथा कुँआर के महीनों मे होनेवाला एक प्रकार का धान।

रीछ—पु०[स० ऋक्ष] [स्त्री० रीछनी] भालू नामक जगली जानवर। (दे० 'भालू')।

रीछराज—पु०[स० ऋक्षराज] जामवत।

रीझ—स्त्री०[हिं० रीझना]१ रीझने की क्रिया या भाव। २ एक बार कोई विशेष काम करने की मन मे होनेवाली बहुत दिनो की प्रबल भावना।

क्रि० प्र० —उतारना।

पद—रीझ-बूझ=प्रवृत्ति या रुचि और समझदारी। जैसे—पहले उन लोगों की रीझ-बूझ तो देख लो, तब उनके साथ सम्बन्ध की बातचीत करना।

रीझना—अ०[स० रजन]१ किसी की चेष्टा, गुण, रूप आदि से प्रभावित होकर उस पर अनुरक्त या मुग्ध होना। २ किसी पर प्रसन्न होना।

रीठ*—स्त्री०[स० रिष्ठ]१ तलवार। २ युद्ध। (डिं०)

वि० [स० अरिष्ट]१ खराब। बुरा। २ घातक। नाशक।

रीठा—पु० [स० रिष्ठ] १ एक प्रकार का जंगली वृक्ष। २ .उक्त का फल जिसकी झाग से कपड़े साफ किये जाते हैं।

पु० [?] वह भट्ठा जिसमें ककड़ फूके जाते हैं। चूना बनाने की भट्ठी।

रीठी—स्त्री० =रीठा।

रीढ़—स्त्री० [?] १ कुछ विशिष्ट प्रकार के जतुओं में पीठ के बीचो बीच की वह खड़ी हड्डी जो कमर तक जाती है और जिससे पसलियाँ मिली हुई रहती हैं। मेरु-दड। २ लाक्षणिक अर्थ मे ऐसी बात जो किसी चीज का मूल आधार हो।

रीढ़-रज्जु—स्त्री० दे० 'मेरु-रज्जु'।

रीण—वि०[स०√री (गति)+क्त] चूआ, टपका या रसा हुआ। स्रुत।

रीत—स्त्री०[स० रीति] प्रथा। रिवाज।

रीतना—अ०[स० रिक्त, प्रा० रिन्त+ना (प्रत्य०)] खाली होना। रिक्त होना।

स० रिक्त या खाली करना।

रीता—वि०[सं० रिक्त, प्रा० रित्त] [स्त्री० रीता]१. (पात्र) जिसमें कोई चीज भरी या रखी हुई न हो। २ (हाथ) जिसमे अस्त्र, धन आदि कुछ न हो। ३. जिसके पास कुछ न हो।

रीति—स्त्री०[स०√ री (गति)+क्तिन् वा क्तिच्] १ गति में आना, चलना या बहना। २ पानी का झरना या नदी। ३ सीमा सूचित करनेवाली रेखा। ४ मार्ग । रास्ता। ५ काम करने का विशिष्ट ढग या प्रकार। ६ पहले से चली आई हुई प्रणाली या प्रथा। रस्म-रवाज। ७. कायदा। नियम। ८ सस्कृत साहित्य में, विशिष्ट प्रकार की ऐसी पद-रचना या लेख-शैली जो ओज, प्रसाद, माधुर्य आदि गुण उत्पन्न करती हो या कृति मे जान लाती हो।

विशेष—हमारे यहाँ भिन्न-भिन्न देशों के सस्कृत कवि तथा साहित्यकार अपनी अपनी रचनाओं में कुछ अलग और विशिष्ट प्रकार या शैली मे ओज, प्रसाद आदि गुण लाते थे, इसी से उन देशो की शैलियो के आधार पर ये चार रीतियाँ मुख्य मानी गई थी—वैदर्भी, गौड़ी, पाचाली या पचालिका और लाटी। परवर्ती साहित्यकारों ने मागधी और मैथिली नाम की रीतियाँ भी मानी थी।

९ मध्ययुगीन हिंदी साहित्य मे, काव्य-रचना की वह प्रणाली या शैली जो आचार्यों द्वारा निरूपित शास्त्रीय नियमो, लक्षणों, सिद्धान्तो आदि पर आश्रित होती थी। और जिसमें अलकार , ध्वनि, पिंगल, रस आदि बातो का पूरा ध्यान रखा जाता था। इधर कुछ दिनो से इस प्रकार की काव्य-रचना क्रमश बहुत घटती जा रही है; और इसका प्रचलन उठता जा रहा है। १०. लोहे की मैल। मडूर। ११ जले हुए सोने की मैल। १२ पीतल। १३ सीसा। १४ प्रवृत्ति। स्वभाव। १५ प्रशसा। स्तुति।

रीतिक—वि०[स० रीति से]१. रीति-सबधी। २ रीति के रूप मे होनेवाली। ३ जो ठीक या निश्चित रीति (प्रणाली अथवा प्रथा।) के अनुरूप या अनुसार हो। औपचारिक। (फार्मल)

पु० पुष्पांजन।

रीतिका—स्त्री०] स० रीति+कन्+टाप्]१ जस्ते का भस्म। २. पीतल।

रीति-काल—पु०[स० ष० त०] हिंदी साहित्य के इतिहास में, उसका उत्तर-मध्य काल जो ई०१७ वीं शताब्दी के मध्य से ई० १९ वी शताब्दी के मध्य तक माना जाता है और जिसमें अलंकार, नायिकाभेद, रस आदि के नियमों और लक्षणो से युक्त काव्य की रचनाएँ होती थीं।

रीतिकाव्य—पु०[मध्य०स०] हिन्दी में, ऐसा काव्य जो अलंकार, ध्वनि

नायिका-भेद, रस आदि तत्त्वों का ध्यान रखते हुए लिखा गया हो। दे० 'रीति'।

रीतिवाद—पुं०[सं० ष० त०][वि० रीतिवादी]१. कला, साहित्य आदि के क्षेत्रों में यह मतवाद या सिद्धांत कि परंपरा से जो रीतियाँ चली आ रही हैं, उनका दृढ़तापूर्वक और पूरा-पूरा पालन होना चाहिए। (फार्मलिज्म) २. हिंदी साहित्य में यह मतवाद या सिद्धान्त कि काव्य के क्षेत्र में अलंकारों, नायिकाभेदों, रसो आदि के नियमों और लक्षणों का पूरी तरह से पालन करते हुए ही सब रचनाएँ होनी चाहिए।

रीतिवादी (दिन्)—वि० [स० रीतिवाद+इनि] रीतिवाद-सबधी। रीतिवाद का।

रींधना—स०=राँधना।

रीम—स्त्री० [अं०] कागज की वह गड्डी जिसमे किसी विशिष्ट आकार प्रकार के कागज के ५०० ताव होते हैं।

स्त्री०[फा०]१. पीब। मवाद। २. तलछट।

रीर—स्त्री०=रीढ़।

रीरि†—स्त्री०=रीढ। उदा०—परी रीरि जहँ ताकर पीठी।—जायसी।

रीषमूक*—पु०=ऋष्यमूक।

रीस—स्त्री०[सं० ईर्ष्या]१. किसी को कोई काम करते देखकर वही काम करने की मन मे जाग्रत होनेवाली भावना। २. प्रतिस्पर्धा। होड।

†स्त्री० =रिस (गुस्सा)।

रीसना—अ० =रिसाना (रुष्ट होना)।

रीसा—स्त्री०[देश०] एक प्रकार की झाडी, जिसकी छाल के रेशों से रस्सियाँ बनती हैं। इसे 'बनरीहा' भी कहते हैं।

रीसी—स्त्री० =रीस (स्पर्धा)।

रीह—स्त्री०[अ०] [वि० रीही]१ वायु। हवा। २ अपान वायु। पाद। ३ गध।

रुंज—पु०[देश०] एक प्रकार का बाजा।

रुंड—पुं०[स०√रुण्ड् (चौर्य)+अच्]१ ऐसा धड़ जिसका सिर कट गया हो। बिना सिर का धड। कबध। २ ऐसा शरीर जिसके हाथ पैर कट गये हों।

रुंडिका—स्त्री० [स० रुण्ड+ठन्—इक,+टाप्] १ युद्धभूमि। रणक्षेत्र। २. विभूति।

रुंद—पु०[हिं० रूँधना] शत्रु की गोलियो आदि से रक्षा के लिए खडी की हुई कच्ची मिट्टी की दीवार। उदा०—क्या रोती खदक रुद बडे। क्या बुर्ज, कगूर अनमोल।—नजीर।

रुँधवाना—स० =१ रौंदवाना। २. रुँधवाना।

रुँधती—स्त्री० =अरुंधती।

रुँधना—अ०[हिं० रुँधना का अ०]१ रक्षा, रोक आदि के विचार से मार्ग आदि का कँटीली झाड़ियाँ आदि लगाकर रुँधा या बद किया जाना। २. लाक्षणिक रूप में कटकों, बाधाओ आदि से मार्ग का इस प्रकार अवरुद्ध होना कि काम आगे बढ़ना बहुत अधिक कठिन हो। ३. काँटों, जालो आदि में उलझना या फँसना। ४. इस प्रकार दत्त-चित्त होकर किसी काम में लगना कि और बातों के लिए जल्दी अवकाश न मिले।

रु—पुं०[स०+रु धातु का अनुकरण]१. शब्द। २. वध। हत्या। ३. गति। चाल।

अव्य हिं० 'अरु' (और) का संक्षिप्त रूप। उदा०—सीतलता सुगंधि की महिमा घटी न मूर।—बिहारी।

रुआँ—पुं०=रोआँ (रोम)।

†पुं०=रुखा (घास)।

रुआँली†—स्त्री०=रुआली।

रुआना—स०=रुलाना।

रुआब—पु०=रोब।

रुआली—स्त्री०[हिं० रूई+आलि] रूई की बनी हुई पोली बत्ती या पूनी जो स्त्रियाँ चरखे पर सूत कातने के लिए सिरकी पर लपेट कर बनाती हैं। पूना। पौनी।

रुई—स्त्री०[देश०] छोटे आकार का एक प्रकार का पहाड़ी पेड़। इसकी छाल और पत्तियाँ रँगाई के काम में आती हैं।

स्त्री०=रूई।

रुई—स्त्री०=रूई।

रुकना—अ०[हिं० रोक] १. आगे बढ़ने या चलने के समय बीच में किसी कारण से कुछ समय के लिए ठहरना। आगे चलने या बढ़ने से विरत होना। जैसे—गाडी, घोड़े या यात्री का रुकना।

संयो० क्रि०—जाना।—पड़ना।

२. मार्ग में किसी प्रकार की बाधा या अंकावट होने के कारण काम का कुछ समय के लिए स्थगित होना। जैसे—(क) उस पुस्तक के बिना हमारा काम रुका पडा है। (ख) यह घड़ी चलते चलते बीच में रुक जाती है। ३ चलते हुए काम का बद हो जाना। ४ किसी प्रकार के क्रम या सिलसिले का बंद होना। ५ सभोग करते समय पुरुष का ऐसी स्थिति मे होना कि उसका जल्दी वीर्यपात न होने पावे। (बाजारू)

रुकमंगद—पु०=रुक्मांगद (एक राजा)।

रुकमंजनी—स्त्री०[स० रुक्मांजनी] १ एक प्रकार का पौधा जो बागों में सजावट के लिए लगाया जाता है। २ इस पौधे का फूल।

रुकमिनी—स्त्री०=रुक्मिणी।

रुकरा—पु०[देश०] एक प्रकार की ऊख या गन्ना।

रुकवाना—स०[हिं० रुकना का प्रे०]१ ऐसा काम करना जिससे कोई चलता हुआ काम या सिलसिला ठप हो जाय। २ दूसरे को कुछ रोकने में प्रवृत्त करना।

रुकाव—पु०[हिं० रुकना]१ रुकने की अवस्था, क्रिया या भाव। रुकावट। अटकाव। अवरोध। २ पेट मे माल रुकना। कब्जियत।

रुकावट—स्त्री० [हिं० रुकाव+वट (प्रत्य०)] वह चीज या बात जो रोक के रूप मे हो। बाधा या विघ्न के रूप मे होनेवाली बात।

रुकुम—पु०=रुक्म।

रुकुमी—पु०=रुक्मी।

रुक्का—पु०[अ० रुक्कअ]१ छोटा पत्र या चिट्ठी। पुरजा। परचा। २. वह लेख जो हुंडी या कर्जा लेनेवाले रुपये लेते समय लिखकर महाजन को देते हैं।

रुक्ख*—पु०=रुख (पेड)।

रुक्म—पु०[स०√रुच् (शोभित होना)+मक्, कुत्व]१. स्वर्ण। सोना। २. धतूरा। ३ लोहा। ४ नाग-केसर। ५. रुक्मिणी के एक भाई का नाम।

रुक्म-कारक—पुं०[सं० ष०त०] सोने के गहने बनानेवाला अर्थात् सुनार।

रुक्मपाश—पुं०[सं० मध्य० स०] सूत का बना हुआ वह फंदा या लड़, जिसमे गहनो की गुरियाँ मनके आदि पिरोये रहते हैं।

रुक्मपुर—पुं०[सं०] पुराणानुसार एक नगर जहाँ गरुड़ का निवास है।

रुक्मरथ—पुं०[सं० ब० स०] १. शल्य का एक पुत्र। २. भीष्मक का एक पुत्र। ३. द्रोणाचार्य का एक नाम।

रुक्मवती—स्त्री०[सं० रुक्म+मतुप्+ङीप्] १. एक प्रकार का वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे 'भ म स ग (SIISSS IIS S) होते है। इसे 'रम्य-वती' तथा 'चम्पकमाला' भी कहते हैं।

रुक्म-वाहन—पु०[सं० ब० स०] द्रोणाचार्य।

रुक्मसेन—पुं०[सं०] रुक्मिणी का छोटा भाई।

रुक्मि—पुं०[सं०] रम्यक और हिरण्यवर्ष के बीच स्थित पाँचवाँ वर्ष। (जैन)

रुक्मिण—स्त्री०=रुक्मिणी।

रुक्मिणी—स्त्री०[सं० रुक्म+इनि+ङीप्] श्रीकृष्ण की पटरानियो मे से बड़ी और पहली रानी जो विदर्भ राजा भीष्मक की कन्या थी।

रुक्मि-दर्प—पु०[सं० ब० स०] बलदेव।

रुक्मिदारी (रिन्)—पु०[सं० रुक्मिन्√दृ (विदारण)+णिनि] बलदेव।

रुक्मी (क्मिन्)—पु०[सं० रुक्म+इनि] रुक्मिणी के बड़े भाई का नाम।

रुक्ष—वि०[सं० रूक्ष] [भाव० रुक्षता] १ (वस्तु) जिसका तल चिकना तथा मुलायम न हो, बल्कि रूखा तथा ऊबड़-खाबड़ हो। २ अस्निग्ध। ३. असहृदय। नीरस। ४. कठोर।

पुं०=रुख (वृक्ष)।

रुक्षता—स्त्री०[सं० रूक्षता] १. रूक्ष होने की अवस्था, धर्म या भाव। २ रुखाई। ३ असहृदयता।

रुख—पु०[फा०] १. कपोल। गाल। २ चेहरा या मुँह जो प्रायः मनोभावो का सूचक होता है।

मुहा०—**रुख मिलाना**=बातचीत करने के लिए मुँह सामने करना।

३. आकृति या चेहरे से प्रकट होनेवाली प्रवृत्ति या मनोभाव। जैसे—(क) उनका रुख देखकर ही मैंने समझ लिया कि इस बात पर राजी नही होंगे। (ख) आदमी का रुख देखकर बातचीत छेड़नी चाहिए।

मुहा०—**(किसी ओर) रुख देना**= उन्मुख या प्रवृत्त होना। **रुख फेरना (बदलना)**=(क) किसी पर से ध्यान (विशेषत. कृपापूर्ण दृष्टि) फेर या हटा लेना। (ख) अप्रसन्न या नाराज होना।

४. सामने या आगे का भाग। जैसे—(क) वह मकान दक्खिन रुख का है। (ख) कुर्सी का रुख इधर कर दो। ५ किसी ओर का तल या पार्श्व। स्तर। जैसे—इस कागज का रुख सफेद और दूसरा हरा है। ६. शतरंज का किश्ती या हाथी नाम का मोहरा।

अव्य० १. तरफ। ओर। २. सामने।

पु०[सं० रुक्ष] १. एक प्रकार की घास जिसे वरक तृण कहते हैं। २ पेड़। वृक्ष।

†वि०=रूखा।

वि०[सं० रुक्] शोभायमान। उदा०—राजति रद रिखपति रुख।—प्रिथीराज।

रुख-चढ़ा—पु०[हि० रुख+चढ़ना] १. शाखा-मृग। बंदर। २. भूत या प्रेत जिसका निवास प्राय वृक्षो पर माना जाता है।

रुखदार—वि० [रुखदार] (बाजार भाव) जिसमे नित्य तेजी-मंदी आती रहती हो।

रुखसत—स्त्री०[अ० रुख्सत] १ कही से चलने के समय विदा होने की क्रिया या भाव। २ नौकरी, सेवा आदि से मिलनेवाली अल्पकालीन छुट्टी। अवकाश। ३ अनुज्ञा। अनुमति। परवानगी। (क्व०) ४ उर्दू काव्य मे दुल्हन का दूल्हे के घर जाना।

क्रि० प्र०—देना।—पाना।—मिलना।—लेना।

वि० जो कही से विदा होकर चल पड़ा हो। जिसने प्रस्थान किया हो।

रुखसताना—पु०[फा० रुख्स्तान] रुखसत अर्थात् विदाई के समय दिया अथवा बाँटा जानेवाला धन।

रुखसती—वि०[अ० रुखसत+ई (प्रत्य०)] १ रुखसत सम्बन्धी। रुख-सत का। २. जिसे रुखसत या छुट्टी मिली हो।

स्त्री० १ रुखसत। विदाई। २. मैके से विवाहित कन्या के घर जाने की क्रिया या भाव। ३. उक्त विदाई के समय कन्या या दामाद को मिलनेवाला धन।

रुखसार—पुं०[फा० रुख्सार] कपोल। गाल।

रुखा—वि०[फा० रुख] [स्त्री० रुखी] रुख या पार्श्व वाला। (यौ० के अंत मे) जैसे—दोरुखा, चौरुखा आदि।

रुखाई—स्त्री०[हि० रुखा+आई (प्रत्य०)] १ रूखे होने की अवस्था, धर्म या भाव। रूखापन। रुखावट। २ खुश्की। शुष्कता। ३ व्यवहार आदि की कठोरता और नीरसता। बेमुरौवती।

रुखानी—स्त्री०=रुखानी।

रुखानल—पु०[सं० रोषानल] क्रोधाग्नि। (डि०)

रुखाना—अ०[हि० रुखा+आना (प्रत्य०)] १. रूखा होना। चिकना न रह जाना। २ नीरस या फीका होना।

स० १. रूखा करना। २ नीरस या फीका करना।

अ०[फा० रुख] किसी ओर रुख होना।

स० किसी ओर रुख करना।

रुखानी—स्त्री०[सं० रोक=छेद। खनित्र खोदने की चीज] १. बढ़इयो का लकड़ी छीलने का एक छोटा धारदार उपकरण। २. संगतराशो की टाँकी।

रुखावट—स्त्री०=रुखाई।

रुखावट—स्त्री०=रुखावट (रुखाई)।

रुखिता—स्त्री०[सं० रुषिता] वह नायिका जो रोष या क्रोध कर रही हो। रूठी हुई मानवती नायिका।

रुखिया—स्त्री०[हि० रुख+इया (प्रत्य०)] पेड़ो की छाया से युक्त भूमि।

वि० छायादार।

रुखुरी—स्त्री०[हि० रूखा] भुना हुआ चना आदि। चबैना। (पूरब)

स्त्री०[हि० रुख] बहुत छोटा पौधा।

रुखौहाँ—वि०[हि० रुखा+औहाँ (प्रत्य०)] [स्त्री० रुखौही] जिसमें रूखापन हो। जैसे—रुखौहें नैन।

रुगना—पु०[हि० रोग] पशुओ का एक रोग। टपका।

रुगिया—वि०=रोगी।

रुऔला—पुं०[देश०] बलुआ। चाल।

रुग्ण—वि० [सं०√ रुज् (रोग)+क्त, त—न] १. जो किसी रोग से ग्रस्त हो। बीमार। २. जिसमें किसी प्रकार का दूषित विकार हुआ हो। ३. टेढ़ा। ४. टूटा हुआ।

रुग्णता—स्त्री० [सं० रुग्ण+तल्+टाप्] रुग्ण होने की अवस्था या भाव।

रुग्णालय—पुं०[सं०]१. रोगियों के रखे जाने का स्थान। २. आज-कल किसी बड़े भवन या सस्था में वह कमरा या स्थान, जहाँ घायल, रोगी आदि चिकित्सा के लिए रखे जाते हैं।

रुग्णावकाश—पु०[सं० रुग्ण-अवकाश, ष० त०] रुग्णावकाश के कारण ली जानेवाली छुट्टी। बीमारी की छुट्टी। (मेडिकल लीव)

रुग्वाह—पु०[सं० ब० स०] एक प्रकार का सन्निपात जो बीस दिनों तक रहता है, और प्रायः असाध्य माना जाता है।

रुच—स्त्री०=रुचि।

रुचक—वि०[√ रुच् (दीप्ति) +क्वुन्—अक]१ रुचनेवाला। रुचि के अनुकूल प्रतीत होनेवाला। रोचक। २. जायकेदार। स्वादिष्ट।
पुं०१. वास्तु विद्या के अनुसार ऐसा घर जिसके चारों ओर के अलिंद (चबूतरा या परिक्रमा) में से पूर्व और पश्चिम का सर्वथा नष्ट हो गया हो और उत्तर तथा दक्षिण का समूचा ज्यों का त्यों हो। इसका उत्तर का द्वार अशुभ और शेष द्वार शुभ माने गए हैं। २ चौकीदार खंभा। ३. पुराणानुसार सुमेरु पर्वत के पास का एक पर्वत। ४. जैन हरिवंश के अनुसार हरिवर्ष का एक पर्वत। ५ मांगल्य द्रव्य। ६. माला। ७. घोड़ो आदि को पहनाये जानेवाले गहने । ८ प्राचीन काल का निष्क नामक सिक्का। ९. दाँत। १०. कबूतर। ११. रोचना। १२. नमक। १३. काला नमक। १४. सज्जी खार। १५. बाय-बिडंग। १६. दिशा। बिजौरा नीबू। १७ दक्षिण दिशा।

रुचदान—वि०[सं० रुचि-दान=देनेवाला] भला लगने योग्य। जो अच्छा लग सके।

रुचना—अ०[सं० रुच+हिं० ना (प्रत्य०)] रुचि के अनुकूल प्रतीत होना। प्रिय तथा भला लगना।
पद—रुच रुच=रुचिपूर्वक।

रुचा—स्त्री०[सं०√ रुच्+क्विप्+टाप्]१. दीप्ति। प्रकाश। २ छवि। शोभा। ३ इच्छा। कामना। ४. चिड़ियों के बोलने का शब्द।

रुचि—स्त्री० [स० √रुच्+इन्] १. आभा। चमक। २ छवि। शोभा। ३. प्रकाश की किरण। ४. खाने पीने की चीजो में आने या होनेवाला स्वाद। ५. मन की वह प्रवृत्ति या स्थिति जिसके फलस्वरूप कुछ काम, चीजें या बातें अच्छी और प्रिय जान पड़ती हैं, अथवा उनकी ओर मनुष्य झुकता या बढ़ता है। जैसे—(क) वृद्धावस्था में प्राय. धर्म की ओर लोगों की रुचि होने लगती है। (ख) इस समय कुछ खाने की हमारी रुचि नहीं है। ६. मनुष्य की वह योग्यता या शक्ति जिसके आधार पर वह कला , संगीत, साहित्य आदि के गुण या विशेषताएँ परखता और उनका आदर करता है। जैसे—(क) इस विषय में उनकी रुचि असाधारण और विलक्षण है। (ख) यह तो अपनी अपनी रुचि की बात है। ७. इच्छा। कामना। ८. किसी पदार्थ या व्यक्ति के प्रति होनेवाला अनुराग या आसक्ति। ९. कामशास्त्र के अनुसार एक प्रकार का आलिंगन। १० गोरोचन।
वि० रुचिर।
पु० रौच्य मनु के पिता का नाम, जो एक प्रजापति माने गये हैं।

रुचिकर—वि०[सं० ष० त०]१. (विषय) जिसमें रुचि होती तथा मन रमता हो। २. भला लगनेवाला। ३. रुचि उत्पन्न करनेवाला। ४. भूख बढ़ानेवाला। (वैद्यक)

रुचिकारक—वि०[स० ष० त०] रुचिकर (दे०)।

रुचिकारी (रिन्)—वि०[सं० रुचि√कृ करना)+णिनि, उप० स०] १. रुचि उत्पन्न करनेवाला। रुचिकर। २. स्वादिष्ट । ३. मनोहर। सुन्दर।

रुचित—भू० कृ० [सं० रुच+कितच्] १. जो रुचि के अनुकूल प्रतीत हुआ हो। पचाया हुआ। (वैद्यक)। ३. [√रुच्+क्त] चाहा हुआ।
पु० १. इच्छा। २. मधुर और रुचनेवाला पदार्थ।

रुचि-धाम(मन्)—पुं०[सं० ष० त०] सूर्य।

रुचि-फल—पुं०[सं० मध्य० स०] नासपाती।

रुचिभर्ता (र्तृ०)—पुं०[सं० ष० त०]१. सूर्य्य। २. मालिक। स्वामी।
वि० आनन्ददायक। सुखद।

रुचिमती—स्त्री०[स० रुचि+मतुप्+ङीप्] उग्रसेन की पत्नी जो कृष्ण-चन्द्रजी की नानी तथा देवकी की माता थीं।

रुचिर—वि०[स०√रुच्+किरच्]१. जो रुचि के अनुकूल हो। अच्छा। भला। २. मनोहर। सुन्दर। ३. मधुर। मीठा।
पुं०१. केसर। २. लौंग। ३. मूली।

रुचिरता—स्त्री० [स० रुचिर+तल्+टाप्] रुचिर होने की अवस्था, धर्म या भाव।

रुचिरांजन—पु० [सं० रुचिर-अंजन, कर्म० स०] शोभांजन । सहिजन।

रुचिरा—स्त्री०[सं० रुचिर+टाप्]१. सुप्रिया नामक छंद का एक नाम। २. एक प्रकार का वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में ज, भ, स, ज, ग (।S। SII-IIS।S। S) होते हैं। ३. रामायण के अनुसार एक प्राचीन नदी। ४. केसर। ५. लौंग। ६. मूली।

रुचिराई—स्त्री०=रुचिरता।

रुचि-वर्द्धक—वि० [सं० ष० त०] १. रुचि उत्पन्न करने या बढ़ानेवाला। २. भोजन की रुचि या भूख बढ़ानेवाला। (वैद्यक)

रुचिष्य—पु०[सं०√रुच् (प्रीति)+किष्यन्] खाने का मधुर खाद्य पदार्थ।
वि० जिसके प्रति रुचि हो अथवा हो सकती हो। रुचनेवाला।

रुची—स्त्री०[सं० रुचि+ङीष्]=रुचि।

रुच्छ—वि०[स० रूक्ष]१. रूखा। रूक्ष। २. अप्रसन्न। नाराज।
†पुं०=रुख (वृक्ष)।

रुच्य—वि०[स०√रुच+क्यप्]१ रुचिकर। २. मनोहर। सुन्दर।
पुं०१. सेंधा नमक। २. जड़हन धान। ३. पति। स्वामी।

रुज—पुं० [सं०√रुज्+क घञर्थे] १. टूटने या अस्थिभंग होने का भाव। २. कष्ट। वेदना। ३. क्षत। घाव। ४. प्राचीन काल का एक प्रकार का बाजा जिस पर चमड़ा मढ़ा होता था।

रुजगार—पु०=रोजगार।

रुज-ग्रस्त—वि०[सं० तृ० त०]रुग्ण। रोगी।

रुजा—स्त्री० [सं०√रुज्+क्विप्,+टाप्]१. टूटने फूटने या भंग होने का

भाव। २. रोग। बीमारी। ३ कष्ट। पीडा। ४ कुष्ठ नामक रोग। कोढ़। ५ भेद।

रुजाकर—वि० [सं० ष० त०] रोग उत्पन्न करने या बढ़ानेवाला।
पु० १. रोग। बीमारी। २ कमरख (फल)।

रुजाली—स्त्री० [सं० रुजा-आली ष० त०] १ रोगों या कष्टों का समूह। २ ऐसी स्थिति जिसमे एक साथ कई रोग सता रहे हों। ३ एक पर एक अथवा एक न एक रोग लगा रहना।

रुजी—वि० [सं० रुज्=रोग] रुग्ण। रोगी।

रुजू—वि० [अ० रुजूअ=प्रवृत्त] १ जिसकी तबीयत किसी ओर झुकी या लगी हो। २ जो किसी ओर प्रवृत्त हो।

रुझना—अ० [सं० रुद्ध, प्रा० रुज्झ] घाव आदि का भरना या पूजना। †अ० १ =रुकना। २ =उलझना।
अ० [सं० रजन] १ मन बहलाने के लिए किसी काम म लगे रहना। २. मन का इस प्रकार किसी काम मे लगे रहना। ३ किसी कार्य के सम्पादन मे प्रवृत्त होना या लगना।

रुझनी—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की लबी चोंचवाली छोटी चिड़िया जिसकी पीठ काली और छाती सफेद होती है।

रुठ—स्त्री० [सं० रुष्ट, प्रा० रुट्ठ] १ रूठने की क्रिया या भाव। २ क्रोध। गुस्सा। रोष।

रुठना—अ० =रूठना।

रुणा—स्त्री० [सं०] सरस्वती नदी की एक शाखा।

रुणित—भू० कृ० [सं० रणित] मधुर ध्वनि या शब्द करता हुआ। बजता हुआ।

रुत—पु० [सं०√रु (शब्द)+क्त] १ पक्षियों का शब्द। कलरव। २ ध्वनि। शब्द।
†स्त्री० =ऋतु।

रुतबा—पु० [अ० रुत्ब] १ सामाजिक दृष्टि से होनेवाली वह अच्छी और ऊँची स्थिति जिसमे यथेष्ट आदर, प्रतिष्ठा या सत्कार हो। २ राज्य या शासन की सेवा मे मिलनेवाला कोई अच्छा और ऊँचा पद। ३. बडाई। महत्ता। श्रेष्ठता।

रुदंती—स्त्री० [सं०√रुद् (रोना)+शच्—अन्त, +ङीष्] एक प्रकार का छोटा क्षुप। सजीवनी। रुद्रवती।

रुदथ—पु० [सं०√रुद्+अथ] १ कुत्ता। २ छोटा बच्चा। ३ मुर्गा।

रुदन—पु० [सं० रोदन] १. रोने की क्रिया या भाव। २ रोने पर होने-वाला शब्द।

रुदराछ†—पु० =रुद्राक्ष।

रुदित—भू० कृ० [सं०√ रुद् (रोना) +क्त] रोता हुआ।

रुदुआ—पु० [देश०] अगहन मास मे होनेवाला एक प्रकार का धान।

रुद्ध—भू० कृ० [सं०√ रुध् (आवरण)+क्त] १ रुका या रोका हुआ। बाधित। २. घिरा या घेरा हुआ। ३ पकड़ा हुआ। ४ जिसकी चाल या गति बद हो गई हो। बद। ५ मुँदा हुआ।

रुद्ध-कंठ—वि० [सं० ब० स०] करुणा, दया, प्रेम आदि के कारण जिसका गला रुँध गया हो, और फलतः जिसके मुँह से ठीक तरह से और पूरी बात न निकलती हो।

रुद्धक—पु० [सं० रुद्ध+कन्] नमक।

रुद्ध-मूत्र—पु० [सं० ब० स०] मूत्रकृच्छ्र (रोग)।

रुद्धार्तव—पु० [सं०] स्त्रियों का एक रोग जिसमें उनका मासिक धर्म उचित समय से पहले ही बद हो जाता या रुक जाता है। (एमेनोरिया)

रुद्र—वि० [सं०√रुद्+णिच्+रक्, णि-लुक्] १. रुलानेवाला। २ रोने से छुड़ाने या रोना बन्द करनेवाला। ३ डरावना। भयंकर।
पु० १. एक प्रकार के गण देवता जिनकी उत्पत्ति सृष्टि के आरम्भ में ब्रह्मा की भौंहो से मानी गई है और जो संख्या मे ११ कहे गये हैं। २ उक्त के आधार पर ११ सूचक सख्या की सज्ञा। ३ शिव का एक रूप। ४ प्राचीन काल का एक प्रकार का बाजा। ५. आक या मदार का पौधा। ६ साहित्य मे रौद्र रस।

रुद्रक†—पु० =रुद्राक्ष।

रुद्र-कमल—पु० [मध्य० स०] रुद्राक्ष।

रुद्र-कलस—पु० [मध्य० स०] वह कलस जिसकी स्थापना ग्रहो आदि की शांति के उद्देश्य से की जाती है।

रुद्र-काली—स्त्री० [कर्म० स० वा ष० त०] शक्ति या दुर्गा की एक मूर्ति का नाम।

रुद्र-कोटि—पु० [सं०] एक प्राचीन तीर्थ जिसमे रुद्रों का निवास माना गया है।

रुद्र-गण—पु० [सं० ष० त०] पुराणानुसार शिव के पारषद् या अनुचर जिनकी सख्या तीस करोड मानी जाती है।

रुद्र-गर्भ—पु० [सं० ब० स०] अग्नि। आग।

रुद्रज—पु० [सं० रुद्र√जन् (उत्पत्ति)+ड] पारा।
वि० रुद्र से उत्पन्न।

रुद्र-जटा—स्त्री० [ष० त०] १ इसरौल। ईसरमूल। २. सौंफ। ३. एक प्रकार का क्षुप। जिसके पत्ते मयूर-शिखा के पत्तो की तरह के होते है।

रुद्रट—पु० [सं०] काव्यालकार नामक ग्रन्थ के रचयिता सस्कृत साहित्य के एक प्रसिद्ध आचार्य जो रुद्रभ और शतानद भी कहलाते थे।

रुद्र-तनय—पु० [सं०] जैन हरिवंश के अनुसार तीसरे श्रीकृष्ण का एक नाम।

रुद्र-ताल—पु० [सं० मध्य० स०] मृदग का एक ताल जो सोलह मात्राओ का होता है। इसमे ११आघात और ५ खाली होते हैं।

रुद्र-तेज (जस्)—पु० [सं० ष० त०] स्वामी कार्तिकेय।

रुद्रत्व—पु० [सं० रुद्र+त्व] रुद्र होने की अवस्था या भाव।

रुद्र-पति—पु० [ष० त०] शिव। महादेव।

रुद्र-पत्नी—स्त्री० [ष० त०] १ दुर्गा का एक नाम। २. अतसी। अलसी।

रुद्र-पीठ—पु० [ष० त०] तान्त्रिको के अनुसार एक पीठ या तीर्थ।

रुद्र-पुत्र—पु० [ष० त०] बारहवें मनु। रुद्रसावर्णि का एक नाम।

रुद्र-प्रयाग—पु० [ष० त०] उत्तर प्रदेश के गढ़वाल जिले के अन्तर्गत एक तीर्थ।

रुद्र-प्रिय—पु० [ष० त०] संगीत मे, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

रुद्र-प्रिया—स्त्री० [ष० त०] १ पार्वती। २ हरीतकी-हड। हर्रे।

रुद्र-बीसी—स्त्री० [सं० रुद्र+हिं० बीस] फलित ज्योतिष मे प्रभव आदि साठ सवत्सरो मे अंतिम बीस सवत्सर या पर्व जो संसार के लिए बहुत कष्टदायक कहे गये हैं। रुद्र-विंशति।

रुद्र-भू—पुं०[ष० त०] श्मशान। मरघट।

रुद्र-भूमि—स्त्री०[ष० त०]१. श्मशान। २. एक विशेष प्रकार की भूमि। (ज्यो०)

रुद्र-भैरवी—स्त्री०[ष० त०] दुर्गा की एक मूर्ति।

रुद्र-यज्ञ—पु०[मध्य० स०] एक प्रकार का यज्ञ जो रुद्र के उद्देश्य से किया जाता है।

रुद्रयामल—पु० [मध्य० स०] तांत्रिकों का एक प्रसिद्ध ग्रन्थ जिसमें भैरव और भैरवी का सवाद है।

रुद्र-रोदन—पु०[सं०] स्वर्ण। सोना।

रुद्र-रोमा—स्त्री० [सं०] कार्तिकेय की एक मातृका।

रुद्र-लता—स्त्री० [मध्य० स०] रुद्र जटा (क्षुप)।

रुद्र-लोक—पु० [ष० त०] वह लोक या स्थान जिसमे शिव और रुद्रो का निवास माना जाता है।

रुद्रवंती—स्त्री० [सं०] एक प्रसिद्ध वनौषधि जिसकी गणना दिव्यौषधि वर्ग मे होती है।

रुद्रवत—पु०=रुद्रवान्।

रुद्र-वदन—पु०[ष० त०]१ महादेव के पाँच मुख। २. पाँच की संख्या का सूचक शब्द।

रुद्रवान् (**वत्**)—वि०[सं० रुद्र+मतुप्] रुद्रगणो से युक्त।
पु० १. सोम। २ अग्नि। ३ इन्द्र।

रुद्र-विंशति—स्त्री० [सं० मध्य० स०] साठ संवत्सरो के अन्तिम २० संवत्सरो का समूह जो अमांगलिक और कष्ट-प्रद कहा गया है। रुद्रबीसी।

रुद्र-वीणा—स्त्री०[ष० त०] एक तरह की पुरानी चाल की वीणा।

रुद्र-सावर्णि—पु०[सं० मध्य० स०] बारहवें मनु। (पुराण)

रुद्र-सुंदरी—स्त्री०[ष० त०] देवी की एक मूर्ति।

रुद्र-सू—स्त्री०[सं० रुद्र√सू (प्रसव)+क्विप्] वह जननी या माता जिसकी ग्यारह सताने हो।

रुद्र-स्वर्ग—पु० =रुद्र-लोक। (दे०)

रुद्र-हिमालय—पु०[मध्य० स०] हिमालय पर्वत की एक चोटी।

रुद्र-हृदय—पुं०[ष० त०] एक उपनिषद् जो प्राचीन दस उपनिषदों से अलग है।

रुद्रा—स्त्री०[सं० रुद्र+टाप्]१. रुद्रजटा नामक क्षुप। २ नलिका नाम गन्ध द्रव्य। अविल-मजरी। मुक्तवर्चा।

रुद्र-क्रीड़—पु०[रुद्र-आक्रीड़, ब० स०] रुद्र या शिव का क्रीडा-स्थल; अर्थात् मरघट या श्मशान।

रुद्राक्ष—पु०[रुद्र-अक्षि, ष० त०,+अच्]१ एक प्रकार का वृक्ष जिसके बीजों को पिरोकर पहनने तथा जपने के लिए मालाएँ बनाई जाती हैं। २. उक्त पेड़ का बीज जो शिव का परम प्रिय कहा गया है।

रुद्राणी—स्त्री० [सं० रुद्र+ङीष् आनुक्] १. रुद्र अर्थात् शिव की पत्नी पार्वती। शिवा। २ ग्यारह वर्षों की कन्या की सज्ञा। ३. रुद्र-जटा नामक लता। ४. संगीत मे एक प्रकार की रागिनी, जो मेघ-राग की पुत्र-वधू कही गई है। (कुछ लोग इसे संकर रागिनी भी मानते हैं)

रुद्रारि—पु०[रुद्र-अरि, ब० स०] कामदेव।

रुद्रावास—पुं०[रुद्र-आवास, ष० त०] शिव का निवास स्थान। जैसे—काशी, कैलास, श्मशान आदि।

रुद्राख—पुं०=रुद्राक्ष।

रुद्रिय—पु०[सं० रुद्र+घ—इय] १. रुद्र संबंधी। रुद्र का। २. रुद्र से उत्पन्न। ३ रुद्र की तरह भयानक। डरावना। ४. आनन्द देने-वाला।

रुद्री—स्त्री०[सं० रुद्र+ङीष्] १ वेद के रुद्रानुवाक या अघमर्षण सूक्त की ग्यारह आवृत्तियाँ जिनका पाठ बहुत शुभ माना जाता है। २. एक प्रकार की वीणा। रुद्र वीणा।

रुद्रोपनिषद्—स्त्री०[सं० रुद्र उपनिषद्, मध्य० स०] एक उपनिषद् का नाम।

रुधिर—पु०[सं०√रुध् (आवरण)+किरच्]१. शरीर में का रक्त। शोणित। लहू। खून।
विशेष—मुहा० के लिए दे० 'खून' और 'लहू' के मुहा०।
२ कुंकुम। केसर। ३ मंगल ग्रह। ४ रुधिराख्य नामक रत्न।

रुधिर-गुल्म—पु०[मध्य० स०] स्त्रियो का एक प्रकार का रोग जिसमें उनके पेट मे एक तरह का गोला-सा घूमता रहता है। (जिससे गर्भ का भ्रम होता है। (वैद्यक)

रुधिरपायी (**यिन्**)—वि०[सं० रुधिर√पा (पीना)+णिनि, उप० स०] [स्त्री० रुधिरपायिनी] १ खून पीने वाला। २ रक्त पिपासक।
पुं० राक्षस।

रुधिर-प्लीहा—स्त्री० [मध्य० स०] प्लीहा नामक रोग का एक भेद। (वैद्यक)

रुधिर-विज्ञान—पु०[ष० त०] आधुनिक विज्ञान की वह शाखा जिसमें रुधिर मे रहनेवाले तत्वों और उनमे उत्पन्न होनेवाले कीटाणुओं या विकारो का विवेचन होता है। (हेमोटालोजी)

रुधिर-वृद्धि-दाह—पु० [सं० रुधिर-वृद्धि, ष० त०, रुधिरवृद्धि-दाह, ब० स०] वैद्यक के अनुसार एक प्रकार का रोग जिसमे मुँह में से एक प्रकार की बू निकलने लगती है।

रुधिराक्त—वि०[सं० रुधिर-अक्त, तृ० त०]१ जिसमे बहुत-सा रुधिर या लहू हो। खून से भरा। २. रुधिर या लहू की तरह लाल। ३. खून से तर या भीगा हुआ।

रुधिराख्य—पु०[रुधिर-आख्या, ब० स०] एक प्रकार का रत्न।

रुधिरानन—पु०[रुधिर-आनन, ब० स०] फलित ज्योतिष मे मंगल ग्रह की एक प्रकार की वक्र गति।

रुधिरामय—पु० [रुधिर-आमय, मध्य० स०] रक्तपित्त नामक रोग।

रुधिराशन—वि०[रुधिर-अशन, ब० स०] जिसका भोजन रुधिर हो। (खटमल, जोंक, मच्छर आदि)

रुधिराशी (**शिन्**)—वि० पु०[सं० रुधिर √अश् (खाना)+णिनि]=रुधिराशन।

रुधिरोद्गारी (**रिन्**)—पु० [सं० रुधिर-उद्√गृ (लीलना)+णिनि, उप० स०] बृहस्पति के साठ सवत्सरो में से सत्तावनवाँ संवत्सर।

रुनझुन—स्त्री०[अनु०]१ नूपुर के बजने से होनेवाला शब्द। २. झनकार विशेषत मधुर शब्द।

रुनझुना—अ०[हि० रुनझुना] रुनझुन शब्द होना।
स० नूपुर आदि बजाकर रुनझुन शब्द उत्पन्न करना।

रुनाई—स्त्री०[सं० अरुण+हि० आई (प्रत्य०)] लाल होने की अवस्था या भाव। लाली। सुर्खी।

रुनित—वि०=रुणित (बजता हुआ)।

रुनी—पुं०[देश०] घोड़ों की एक जाति।

रुनक-झुनुक—स्त्री०[अनु०] रुनझुन। (दे०)

रुनुल—पुं०[देश०] एक प्रकार का बेंत।

रुपना—अ०[हि० रोपना का अ०] १ रोपा जाना। जैसे—खेत मे धान रुपना। २ दृढ़तापूर्वक गाड़ा, जमाया या लगाया जाना। जैसे—पैर रुपना।

रुपमनि—वि०=रुपवती।

रुपया—पुं०[सं० रूप्य]१ चाँदी का सिक्का। २ पुराने ६४ पैसों या १०० नए पैसों के मूल्य का नोट या सिक्का।

मुहा०—रुपया उठाना=धन व्यय करना। रुपया खड़ा करना=नकद धन उगाहना या प्राप्त करना। रुपया ठीकरी करना=रुपए का बहुत बुरी तरह से अपव्यय करना।

३. धन-दौलत। सम्पत्ति।

मुहा०—रुपया पानी में फेंकना=धन बरबाद करना या लुटाना।

पद—रुपया पैसा=धन-दौलत। सम्पत्ति।

रुपल्ली—स्त्री०[हि० रुपया]=रुपया (उपेक्षा और तुच्छता का सूचक) उदा०—एम० ए० बी० ए० पास करके चालीस-चालीस रुपल्ली की नौकरी के लिए मारे-मारे फिरते हैं। —राहुल सांकृत्यायन।

रुपहरा†—वि०=रुपहला।

रुपहला—वि०[हि० रुपा=चाँदी+हला (प्रत्य०)] [स्त्री० रुपहली] रुपा अर्थात् चाँदी के रंग का। चाँदी का सा। उज्ज्वल तथा चमकीला। जैसे—रुपहला गोटा, रुपहला काम।

रुपा—पुं०=१ =रुपया। २ =रूपा (चाँदी)।

रुपैया†—पुं०=रुपया।

रुपौला—वि०[स्त्री० रुपौली]=रुपहला।

रुबा—वि०[फा०] [भाव० रुबाई]१ ले जानेवाला। २ मोहित करने या लुभानेवाला। जैसे—दिलरुबा।

रुबाई—स्त्री०[अ०] [बहु० रुबाईयात]१ उर्दू फारसी मे एक प्रकार की मुक्तक कविता जिसमे चार चरण या मिसरे होते हैं और जो प्राय हजाज नामक छंद मे होती है। इसमे तीसरे चरण या मिसरे को छोडकर शेष तीनों में काफिया और रदीफ दोनों होते हैं। फारसी मे इसे 'तराना' भी कहते हैं। २ एक प्रकार का चलता गाना।

स्त्री० [फा०] रुबा होने की अवस्था या भाव।

रुबाई एमन—पुं०[हि०रुबाई+एमन] एक प्रकार का राग। (संगीत)

रुमंच†—पुं०=रोमांच।

रुमण—पुं०[सं०]रामायण के अनुसार एक बानर जो सौ करोड़ बानरो का यूथपति कहा गया है।

रुमण्वान् (वत्)—पुं०[सं०]१ एक प्राचीन ऋषि। २ पुराणानुसार एक पर्वत।

रुमांचित†—वि०=रोमांचित।

रुमा—स्त्री०[सं०] सुग्रीव की पत्नी। (वाल्मीकि)

रुमाल—पुं०=रूमाल।

रुमालिया—स्त्री०१ =रूमाल। २.=रूमाली।

रुमाली—स्त्री०[फा० रुमाल]१. एक प्रकार का लंगोट जिसमें दोनों ओर कमर में बाँधने के लिए बंद लगे रहते हैं। २ मुगदर घुमाने का एक ढंग।

रुमावली—स्त्री०=रोमावली।

रुराई—स्त्री० [हि० रूरा+आई(प्रत्य०)] रूरा होने की अवस्था या भाव। सुन्दरता।

रुरु—पुं० [सं०√रु (शब्द)+क्रुन्]१ काला हिरन। कस्तूरी मृग। २. एक दैत्य जिसे दुर्गा ने मारा था। ३. एक भैरव का नाम। ४. एक प्रकार का फूलदार वृक्ष। ५. एक क्रूर तथा भयानक जंतु। ६. एक ऋषि। ७. देवताओं का एक गण। ८ सावर्णि मनु के सप्तर्षियों मे से एक।

रुरुआ—पुं०[हि० ररना, ररुआ] एक तरह का उल्लू।

रुलना—अ०[सं०लुलन]१. स्थायी वास स्थान का अभाव होने पर कभी कही तो कभी कहीं भटकते फिरना। २ दुर्दशाग्रस्त होकर इधर-उधर मारा फिरना। ३. (वस्तु का) इधर-उधर पड़ी होना अथवा उठाई-पटका या छोडी-फेंकी होना।

रुलाई—स्त्री०[हि० रोना+आई (प्रत्य०)] १. रोने की क्रिया या भाव। २ रोने की प्रवृत्ति।

क्रि० प्र०—आना।—छूटना।

रुलाना—स० [हि० रोना का प्रे०] दूसरे को रोने मे प्रवृत्त करना। ऐसा काम या बात करना जिससे कोई रोने लगे।

स० [हि०रुलना] ऐसा काम करना जिससे कोई चीज या व्यक्ति रुले।

रुलनी—स्त्री०[देश०] रोहिणी की तरह की पर उससे छोटी एक वनस्पति।

रुल्ल, रुल्ला—स्त्री० [देश०] वह भूमि जिसकी उपजाऊ शक्ति कम हो गई हो और जिसे परती छोडने की आवश्यकता हो।

रुवा†—पुं०=रुआ।

रुवाई=रुलाई।

रुवाब—पुं०=रोब।

रुशना—स्त्री०[सं०] रुद्र की एक पत्नी। (भागवत)

रुष्—पुं०[सं०√रुष्(क्रोध)+क्विप्]क्रोध। गुस्सा। रोष।

रुषा—स्त्री०[सं०√ रुष्+टाप्] क्रोध। गुस्सा।

रुषित—भू० कृ०[सं०√ रुष्+क्त]१ जिसे रोष हुआ हो। अप्रसन्न। क्रुद्ध। नाराज। २ जिसे दुःख पहुँचा हो। दुखित।

रुषेसर—पुं०=ऋषीश्वर।

रुष्ट—भू० कृ०[सं० रुष्+क्त]१. रोष से भरा हुआ। क्रुद्ध। २. रूठा हुआ। ३ अप्रसन्न। नाराज।

रुष्टता—स्त्री० [सं० रुष्ट+तल्+टाप्] रुष्ट होने की दशा या भाव। रुष्ट व्यक्ति के मन मे होनेवाला भाव। अप्रसन्नता। नाराजगी।

रुष्ट-पुष्ट—वि०=हृष्ट-पुष्ट।

रुष्टि—स्त्री०[सं०√रुष्+क्तिन्]१. रुष्टता। २. रोष।

रुसना—अ०=रूसना।

रुसवा—वि०[फा० रुस्वा] [भाव० रुसवाई] जिसकी बहुत बदनामी हो। निंदित। बदनाम।

रुसवाई—स्त्री० [फा० रुस्वाई] रुस्वा होनेकी अवस्था या भाव। बदनामी। निंदा।

रुसा—पुं०=रूसा (अडूसा)।

रुसित—वि०=रुषित (रुष्ट)।

रुसूख—पु०[अ०] १. पहुँच। रसाई। २. एतबार। विश्वास। ३. दृढ़ता। ४. मेल-जोल। प्रेम-व्यवहार। ५. कुशलता। दक्षता।

रुसूम—पुं० [अ० 'रस्म' का बहु० रूप] रस्में।

†पुं०=रसूम (कर)।

रुसुल—पु०[अ०]'रसूल' का बहु० रूप।

रुस्ट—वि०=रुष्ट।

रुस्तम—पुं०[अ०] १. फारस का एक प्रसिद्ध प्राचीन ईरानी पहलवान, जो अपने समय में सबसे अधिक बलवान माना जाता था।

विशेष—फिरदौसी शाहनामे में इसकी वीरता का वर्णन किया है।

२. बहुत बड़ा शूर-वीर।

पद—छिपा रुस्तम। (दे०)

रुस्तमखानी—स्त्री०[फा०] १. रुस्तम का सा पौरुष अथवा बल-वीर्य। २. अपने महत्त्व या शक्ति का बहुत बड़ा अभिमान या घमंड।

रुहठि—स्त्री० [हिं० रूठना] रूठे हुए होने की अवस्था या भाव।

रुहा—स्त्री०[सं०√रुह् (उगना)+क+टाप्] १. दूब। २. अतिबला। ३. मांस रोहिणी लता। ४. लजालू। लाजवती।

रुहिर—पु०=रुधिर (खून)।

रुहेलखंड—पु० [हिं० रुहेला] अवध के उत्तर-पश्चिम पड़नेवाला प्रदेश जहाँ रुहेले पठान बसे थे।

रुहेला—पु० [?] पठानो की एक जाति जो प्राय किसी समय अवध के उत्तर-पश्चिम मे आकर बसी थी।

रूँख—पु०=रूख (वृक्ष)।

रूँखड़—पु० [हिं०रूखा] 'अलख' कह कर भिक्षा माँगनेवाले एक प्रकार के साधु।

विशेष—ये साधु कमर मे एक बड़ा सा घुंघरू बाँधे रहते हैं।

†पु०=रोंगटा।

रूँगटा—पु०=रोंगटा।

रूँगटाली—स्त्री० [हिं० रूँगटा+वाली=आली] भेड़। गाडर।

रूँगा—पु० [सं० रुक=उदारता] खरीददार को संतुष्ट रखने के लिए उसे सौदे से अधिक या अतिरिक्त दी जानेवाली चीज। उदा०—जो आप अपने सौजन्य के साथ रूँगे में दे रहे हैं।—अज्ञेय।

रूँदना—स० १.=रौंदना। २.=रूँधना।

रूँध—स्त्री० [हिं० रूँधना] रूँधने या रूँधे हुए होने की अवस्था, क्रिया या भाव।

† वि०रुद्ध (रुका हुआ)।

रूँधना—स० [सं० रुधना] १ मार्ग आदि रोक या बंद कर देना। रास्ते में रुकावट खड़ी करना या विघ्न डालना। २ खेत आदि को कँटीली झाड़ों या तारों से घेरना। ३. घेरना।

रू—पुं० [फा०] १. चेहरा। मुँह।

पद—रू-रिआयत=(क) पक्षपात। (ख) शील-संकोच। मुरौवत।

मुहा०—रू से=अनुसार। जैसे—कानून या मजहब की रू से ऐसा नहीं होना चाहिए।

२. आगे ऊपर या सामने का भाग।

पद—रू-पुश्त=बाहर-भीतर, आगे-पीछे या दोनो ओर।

३. कारण। वजह। ४. आशा। उम्मीद।

रूआ—स्त्री० [हिं० रूसा] एक प्रकार की बहुत सुगंधित घास।

रूई—स्त्री० [सं० रोम, प्रा० रोवां=हिं० रोवां, रोईं] १. कपास के ढोंढ़ी या कोश के अन्दर का घूआ। तूल।

क्रि०प्र०—तूमना।—धुनकना।—धुनना।

पद—रूई का गाला=(क) रुई के गाले की तरह कोमल या सफेद। (ख) सुंदर तथा सुकुमार।

मुहा०—रूई की तरह तूम डालना=(क) अच्छी या पूरी तरह से छिन्न-भिन्न या दुर्दशाग्रस्त करना। (ख) बहुत अधिक मारना-पीटना। (ग) गहरी छान-बीन करना। रूई की तरह धुनना=अच्छी तरह मारना पीटना। (अपनी) रूई सूत में उलझना या लिपटना=अपने काम में लगाना। अपने काम-काज में फँसना।

२. बीजो आदि के ऊपर का रोआँ। जैसे—सेमल की रुई।

रूईदार—वि० [हिं० रूई+फा० दार (प्रत्य०)] (सिला हुआ वस्त्र) जिसमें रूई भरी गई हो। जैसे—रूईदार अंगा, रूईदार बंडी।

रूक—पु० [सं० वृक्ष; प्रा०रुक्ख] एक प्रकार का पेड़ जिसकी पत्तियाँ ओषधि के काम आती है।

† पुं० [सं० रुक] रूँगा हुआ। घलुआ।

स्त्री० [सं० रूक्षा] तलवार। (डिं०)

रूका—पु० [?] पुकारने की क्रिया या भाव। पुकार।

क्रि० प्र०—पड़ना।

रूक्ष—वि० [सं०√रूक्ष् (कठोर)+अच्] [स्त्री० रूक्षा] १. पदार्थ जो चिकना या कोमल न हो। रूखा। स्निग्ध का उलटा। २ कड़ा तथा खुरदुरा। ३. (व्यक्ति) जिसके स्वभाव मे, उदारता, कोमलता, सौजन्य, स्नेह आदि बातें न हों।

रूख—पु० [सं०वृक्ष, प्रा० रुक्खा] १. पेड़। वृक्ष। २. नरकट। नरसल।

† वि०=रूखा।

रूखड़ा—पु० [हिं० रूख] [स्त्री० अल्पा० रूखड़ी] पेड। वृक्ष।

वि०=रूखा।

रूखना—अ० -रूठना।

रूखरा—पुं०=रूखड़ा (वृक्ष)।

वि०=रूखा।

रूखा—वि० [सं० रूक्ष; प्रा० रुक्ख] १. जिसमे चिकनाहट या स्निग्धता का अभाव हो। अस्निग्ध। 'चिकना' का विपर्यय। २ जिसमें घी, तेल आदि चिकने पदार्थ न पड़े या न लगे हों। जैसे—रूखी रोटी। ३. (भोजन) जिसके साथ कोई स्वादिष्ट पदार्थ न हो अथवा जिसे स्वादिष्ट बनाने का प्रयत्न न किया गया हो। जैसे—रूखी-सूखी खाकर दिन बिताना।

पद—रूखा-सूखा, रूखी-सूखी। (दे०)

४. जिसमें आर्द्रता या रस न हो। रूखा। शुष्क। नीरस। ५ (व्यक्ति या स्वभाव) जिसमे कोमलता, दयालुता, स्नेह आदि मधुर वृत्तियों का अभाव हो। ६ (कथन या व्यवहार) जिसमें आत्मीयता, उदारता,

सौजन्य आदि का अभाव हो। जैसे—रूखी बातें या रूखा व्यवहार।
मुहा०—रूखा पड़ना या होना=(क) बेमुरौवती करना। (ख) क्रुद्ध या नाराज होना।
७ उदासीन। विरक्त। ८ जिसका तल सम न हो। खुरदुरा। जैसे—यह कागज कुछ रूखा दिखाई पड़ता है।
पद—रूखा माल=नक्काशी किया हुआ बरतन। (कसेरे)
पुं० एक प्रकार की छेनी।

रूखापन—पुं० [हिं० रूखा+पन (प्रत्य०)] १ रूखे होने की अवस्था, गुण या भाव। रुखाई। २ खुश्की। नीरसता। ३ व्यवहार आदि की कठोरता या हृदयहीनता।

रूखा-सूखा—वि० [हिं०] [स्त्री० रूखी-सूखी] (रोटी या भोजन) बिना घी तथा मसाले का बना हुआ।

रूचना—अ०, स०=रुचना।

रूछ—वि०=रूक्ष (रूखा)।

रूज—पुं० [अ०] एक प्रकार की बुकनी जिससे सोने-चाँदी पर कलई करते है।

रूझना†—अ०=अरूझना (उलझना)।

रूठ—स्त्री० [स० रुष्ठि, प्रा० रुट्ठि] १ रुठने की क्रिया या भाव। २. क्रोध। गुस्सा।

रूठन—स्त्री०=रुठ।

रूठना—अ० [स० रुष्ट प्रा० रुट्ठ+ना (प्रत्य०)] १. किसी के विरुद्ध आचरण करने के कारण किसी से अप्रसन्न होना। जैसे—पैसा न मिलने के कारण बच्चे का रूठना। २. किसी के अनुचित या अप्रत्याशित व्यवहार से इतना दुःखी होना कि उसके बुलाने तथा मनाने पर भी जल्दी न बोलना तथा न मानना।

रूठनि—स्त्री०=रूठन।

रूड़ा† —वि० रूरा।

रूढ़—वि० [स०√रुह् (उद्भव)+क्त] [स्त्री० रूढ़ा] १. किसी के ऊपर चढ़ा हुआ। आरूढ़। २ उत्पन्न। जात। ३ ख्यात। प्रसिद्ध। मशहूर। ४ लोक मे चलता हुआ। प्रचलित। जैसे—इस शब्द का रूढ़ अर्थ तो यही है। ५. उजड्ड। गँवार। ६. कठोर। कड़ा। ७. अविभाज्य (गणित की सख्या)। ८ व्याकरण तथा भाषा-विज्ञान मे वह शब्द जो यौगिक से भिन्न किसी और अर्थ मे प्रयुक्त होता हो।

रूढ़-यौवना—स्त्री०=आरूढ़ यौवना। (नायिका)

रूढ़ा—स्त्री० [स० रुढ+टाप्]=रुढि-लक्षण।

रूढ़ि—स्त्री० [स०√रुह्+क्तिन्] १ चढ़ाई। चढ़ाव। २ बढ़ती। वृद्धि। ३ उठान या उभार। ४ आविर्भाव या उत्पत्ति। ५ ख्याति। प्रसिद्धि। ६ परपरा से चली आई हुई कोई ऐसी चाल या प्रथा जिसे साधारणत सब लोग मानते हो अथवा जिसका पालन लोक मे होता हो। (कन्वेन्शन) ७. मन मे की हुई धारणा, निश्चय या विचार। ८. वह शब्दशक्ति जिससे शब्द अपने रूढ़ अर्थ का ज्ञान कराता है।

रूढ़ि-लक्षणा—स्त्री० [स० मध्य०स०] साहित्य मे, लक्षणा के दो प्रमुख भेदो मे से एक, जिसमे मुख्य अर्थ के बाधित होने पर अर्थ-सम्बन्धी कोई दूसरा लक्ष्यार्थ निकलता या लिया जाता है। (दूसरा प्रमुख भेद प्रयोजनवती लक्षणा है।)

रूतना—अ० [स० रत] किसी काम मे रत होना। लगना। उदा०—णाणा रण रूता नर नेही करै।—कबीर।

रूदाद—स्त्री० [फा० रूएदाद] १. समाचार। वृत्तांत। हाल। २. अवस्था। दशा। हालत। ३. कैफियत। विवरण। ४. प्रबंध। व्यवस्था। ५. अदालत मे किसी मुकदमे के संबध मे होनेवाली कार्रवाही। ६ किसी काम या बात का वह रग-ढंग जिससे उसके भविष्य का अनुमान हो सकता है।

रूनुमा—वि० [फा०] [भाव० रूनुमाई] मुँह दिखानेवाला।

रूनुमाई—स्त्री० [फा०] मुह-दिखाई।

रूप—पुं० [स०√रूप् (बनाना, देखना आदि)+अच्] १. किसी पदार्थ का वह बाह्य गुण या विशेषता (आयतन, वर्ण आदि से भिन्न) जिससे उसकी बनावट का पता चलता है। पिंड, शरीर आदि की बनावट का प्रकार और स्थिति सूचित करनेवाला तत्त्व। आकृति। शकल। सूरत।
पद—रूप-रेखा। (देखें)
२. देह। शरीर। किसी विशिष्ट प्रकार की आकृति, वेश-भूषा आदि से युक्त शरीर। जैसे—बहुरुपिया, नित्य नए-नए रूप धारण करता है।
मुहा०—रूप भरना=(क) भेस बनाना। वेश धारण करना। (ख) किसी तरह का तमाशा, मजाक या स्वाग खड़ा करना।
३. किसी तत्व, बात या वस्तु की वह स्थिति जिसके फलस्वरूप वह किसी पृथक् तथा स्वतन्त्र गुण या विशेषता से युक्त होकर कुछ अलग या नए प्रकार का काम करता या परिणाम दिखलाता है। प्रकार। भेद। जैसे—(क) प्राचीन भारत मे शासन के कई रूप प्रचलित थे। (ख) उपसर्ग, प्रत्यय आदि लगाकर किसी शब्द के अनेक रूप बनाये जा सकते है। (ग) इस योजना को अब एक नया रूप देने का प्रयत्न किया जा रहा है ४. कोई कार्य करने की नियत और व्यवस्थित पद्धति या प्रणाली। जैसे—(क) उनके कुल में विवाह सदा इसी रूप में होता चला आया है। (ख) यह मत्र सदा इसी रूप मे लिखा जाना चाहिए। ५ दृश्य पदार्थ या वस्तु। जैसे—प्रकृति कही पर्वत के रूप मे और कही समुद्र के रूप मे व्यक्त होती है। ६. खूबसूरती। सुदरता। (किसी का) रूप हरना=अपनी बढ़ी हुई सुन्दरता के फल-स्वरूप ऐसी स्थिति उत्पन्न करना कि सामनेवाली चीज या व्यक्ति कुछ भी सुन्दर न जान पड़े।
७ प्रकृति स्वभाव। ८ प्रकार। भेद। ९ नमूना। प्रतिमान। १०. बराबरी। समता। समानता। ११. गणित में एक की सूचक सज्ञा। १२. नाटक। रूपक।
वि० खूबसूरत। रूपवान्। सुन्दर।
अव्य० किसी के रूप के तुल्य या सदृश्य बराबर या समान। उदा०—बोलहु सुआ पियारे नाहीं। मोरे रूप कोऊ जग माहीं।—जायसी।
†पुं०=रूपा (चाँदी)।

रूपक—वि० [स०√रूप्+णिच्+ण्वुल्—अक] जिसका कोई रूप हो। रूप से युक्त। रूपी।
पुं० १. किसी रूप की बनाई हुई प्रतिकृति या मूर्ति। २. किसी प्रकार का चिह्न या लक्षण। ३. प्रकार। भेद। ४. प्राचीन काल का एक प्रकार का प्राचीन परिमाण। ५. चाँदी। ६. रुपया नाम का सिक्का

जो चाँदी का होता है। ७. चाँदी का बना हुआ गहना। ८. ऐसा काव्य या और कोई साहित्यिक रचना, जिसका अभिनय होता हो, या हो सकता हो। नाटक।

विशेष—पहले नाटक के लिए 'रूपक' शब्द ही प्रचलित था, और रूपक के दस भेदों मे नाटक भी एक भेद मात्र था। पर अब इसकी जगह नाटक ही विशेष प्रचलित हो गया है। रूपक के दस भेद ये हैं—नाटक, प्रकरण, भाण, व्यायोग, समवकार, डिम, ईहामृग, अंक, वीथी और प्रहसन।

९. साहित्य मे, एक प्रकार का अर्थालंकार जिसमें बहुत अधिक साम्य के आधार पर प्रस्तुत मे अप्रस्तुत का आरोप करके अर्थात् उपमेय में उपमान के साधर्म्य का आरोप करके और दोनों भेदों का अभाव दिखाते हुए उपमेय का उपमान के रूप मे ही वर्णन किया जाता है। इसके साग रूपक, अभेद रूपक, तद्रूप रूपक, न्यून रूपक, परम्परित रूपक आदि अनेक भेद हैं। १० बोल-चाल में कोई ऐसी बनावटी बात, जो किसी को डरा-धमकाकर अपने अनुकूल बनाने के लिए कही जाय। जैसे—तुम डरो मत, यह सब उनका रूपक भर है।

क्रि० प्र०—कसना। —बाँधना।

११. संगीत मे सात मात्राओं का एक दो-ताला ताल, जिसमें दो आघात और एक खाली होता है।

रूपक-कार्यक्रम—पुं० [सं० ष० त०] आकाश वाणी द्वारा प्रसारित होनेवाले नाटकों, प्रहसनों आदि से सम्बन्ध रखनेवाला कार्यक्रम। (फीचर प्रोग्राम)

रूप-कर्ता (र्तृ)—पुं० [सं० ष० त०] विश्वकर्मा।

रूपकातिशयोक्ति—स्त्री० [स० रूपक-अतिशयोक्ति, कर्म० स०] अतिशयोक्ति अलंकार का एक भेद जिसमे वर्णन तो रूपक की तरह का ही होता है, पर केवल उपमान का उल्लेख करके उपमेय का स्वरूप उपस्थित किया जाता है।

रूपकृत्—पुं० [स० रूप√कृ (करना)+क्विप्] विश्वकर्मा।

रूपकांता—स्त्री० [स०] सत्रह अक्षरों का एक वर्णवृत्त।

रूप-गर्विता—स्त्री० [स० तृ० स०] साहित्य मे, वह नायिका जिसे अपने रूप का गर्व या अभिमान हो।

रूप-घनाक्षरी—स्त्री० [स० मध्य० स०] ३२ वर्णोंवाला एक प्रकार का मुक्तक दडक छद जिसके प्रत्येक चरण मे आठ-आठ वर्णों पर यति होती है। इसके अंत मे लघु होना आवश्यक है।

रूप-चतुर्दशी—स्त्री० [सं० मध्य० स०] कार्तिक बदी चौदस। नरक चतुर्दशी।

रूप-जीविनी—स्त्री० [सं०रूप√जीव् (जीना)+णिनि+ङीप्] रूप जिसकी जीविका का आधार हो। रडी। वेश्या।

रूपण—पुं० [सं०√रूप्+णिच्+ल्युट्—अन] १. आरोप करना। आरोपण। २. प्रमाण। सबूत। ३. जाँच। परीक्षा।

रूपता—स्त्री० [सं० रूप+तल्+टाप्] रूप का गुण, धर्म या भाव। २. खूबसूरती। सौन्दर्य।

रूपधर—वि० [सं० ष० त०] [स्त्री० रूपधरा] सुंदर। खूबसूरत।

रूप-धेय—पुं० [स० रूप+धेय] किसी प्रकार के ठोस पदार्थ (पिंड, भूमि आदि) की समोच्च रूप रेखा। (कॉन्टूर)

रूप-नाशक—पुं० [स० ष० त०] उल्लू।

वि० रूप नष्ट करनेवाला।

रूप-पति—पुं० [सं० ष० त०] विश्वकर्मा।

रूप-भेद—पु० [स० ष० त०] किसी काम या बात के रूप मे किया हुआ आंशिक परिवर्तन।

रूप-मंजरी—स्त्री० [स० रूप+मंजरी] १. एक प्रकार का फूल। २. संगीत में एक प्रकार की रागिनी।

पु० एक प्रकार का धान और उसका चावल।

रूप-मनी—वि० [हि० रूपमान] रूपवती।

रूपमय—वि० [स० रूप+मयट्] [स्त्री० रूपमती] रूप अर्थात् सौन्दर्य से भरा हुआ या पूर्णत युक्त। परमसुन्दर।

रूप-मांजरी—स्त्री०, पु०=रूप-मंजरी।

रूपमान—वि० [स्त्री० रूपमनी]=रूपवान्।

रूप-माला—स्त्री० [स० ष० त०] १. एक प्रकार का सम-वृत्त मात्रिक छद जिसके प्रत्येक चरण मे १४ और १० के विश्राम से २४ मात्राएँ होती हैं। २. एक प्रकार का सम-वृत्त वर्णिक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में क्रमसे रगण, सगण, जगण, जगण, भगण और अत मे गुरु लघु होता है।

रूपमाली (लिन्)—स्त्री० [स० रूपमाला+इनि] एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे तीन मगण या नौ दीर्घ वर्ण होते हैं।

रूपया—पु०=रुपया।

रूप-रूपक—पु० [सं० मध्य० स०] केशव के अनुसार रूपक अलंकार के 'सावयव रूपक' भेद का एक नाम है।

रूप-रेखा—स्त्री० [सं० ष० त०] १. रेखाओं आदि के रूप में होनेवाला वह अकन जिससे किसी पदार्थ के आकार-प्रकार का स्थूल ज्ञान होता हो, फिर भी जिससे उस पदार्थ के उभार, गहराई, मोटाई आदि का ज्ञान हो। रेखाओं द्वारा अंकित चित्र। २ किसी कार्य के सबध की वह मुख्य बात जो उसके स्थूल रूप की सूचक तथा ब्योरे आदि की बातो से रहित होती और उसके सक्षिप्त विवरण या सारांश के रूप में होती है। ३. किसी चित्र की वह बाहरी रेखा जिससे वह चित्र घिरा रहता है। (आउट लाइन, सभी अर्थों मे)

रूपवंत—वि० [स० रूपवत्] [स्त्री० रूपवती] जिसमे सौन्दर्य हो। खूबसूरत। रूपवान्।

रूपव—वि०=रूपवान्।

रूपवती—स्त्री० [सं० रूप+मतुप्+ङीप्] १. केशव के अनुसार एक प्रकार का छद, जिसे छंदप्रभाकर मे 'गौरी' कहा गया है। २. चंपकमाला वृत्त का एक नाम।

वि० सुदरी (स्त्री)।

रूपवान् (वत्)—वि० [स० रूप+मतुप्] [स्त्री० रूपवती] सुदर रूपवाला। खूबसूरत।

रूप-विधान—पु० [स० ष० त०] १. भाषा विज्ञान और व्याकरण का वह अग या शाखा जिसमे शब्दों की बनावट या रूप और उसमे होनेवाले विकारों आदि का विवेचन होता है। (मॉरफॉलोजी) २. दे० 'आकृति विज्ञान'।

रूपशाली (लिन्)—वि० [स० रूप√शाल् (शोभित होना)+णिनि] [स्त्री० रूपशालिनी] रूपवान्। सुन्दर।

रूप-श्री—स्त्री० [स० ष० त०] सम्पूर्ण जाति की एक संकर रागिनी।

रूप-संपत्ति—स्त्री० [सं० ष० त०] सौन्दर्य। उत्तम रूप। सुन्दरता।

रूप-साधक—वि० [सं० ष० त०] शब्दों का रूप साधन करनेवाला। जैसे—फलतः, मुख्यतः आदि में 'तः' रूप साधक प्रत्यय है।

रूप-साधन—पु० [सं० ष० त०] [वि० कर्ता रूपसाधक] व्याकरण में भिन्न-भिन्न कारकों, लिंगों, वचनों आदि में किसी एक शब्द के होनेवाले अलग-अलग रूप या उनके वे रूप बनाने की प्रक्रिया। (डिक्लेन्शन)

रूप-साम्य—पु० [सं० स० त० या ष० त०] वस्तुओं के रूपों में होनेवाली पारस्परिक समानता।

रूपसी—स्त्री० [सं० रूप से] बहुत सुन्दर स्त्री।

रूपस्वी—वि० [सं० रूपवान्] [स्त्री० रूपस्विनी] रूपवान्। सुन्दर।

रूपांकक—पु० [सं० रूप-अंकक, ष० त०] किसी चीज का निर्माण करने से पहले उसकी आकृति, रचना, प्रकार आदि की रेखाओं, नक्शों आदि द्वारा दरशानेवाला व्यक्ति। अभिकल्पक। (डिजाइनर)

रूपांकन—पु० [सं० रूप-अंकन] रेखाओं, नक्शों आदि के द्वारा किसी चीज का रूप रंग तथा आकार-प्रकार दरशाने की क्रिया या भाव। अभिकल्पन। (डिजाइनिंग)

रूपांतर—पु० [सं० रूप-अंतर, ष० त०] १. रूप का बदलना। दूसरे रूप की प्राप्ति। रूपांतरण। २. प्राप्त होनेवाला दूसरा रूप।

रूपांतरण—पु० [सं० रूप-अंतरण] दूसरे रूप में आना या लाया जाना। रूप बदलना या बदला जाना। (ट्रान्सफारमेशन)

रूपा—पु० [सं० रूप] १. चाँदी। २ ऐसी घटिया चाँदी जिसमें कुछ खोट या मिलावट हो। ३. सफेद रंग का बैल जो परिश्रमी माना जाता है। ४. सफेद रंग का घोड़ा। नुकरा।
स्त्री० [सं०] रूपवती स्त्री। सुन्दरी।

रूपाजीवा—स्त्री० [सं० रूप-आ√जीव् (जीना)+अच्+टाप्] वेश्या। रंडी।

रूपाधिबोध—पुं० [सं० रूप-अधिबोध, ष० त०] १. जिसके रूप का ज्ञान इंद्रियों से प्राप्त होता है। दृश्य या अदृश्य पदार्थ। २ उक्त पदार्थ का इंद्रियों से होनेवाला ज्ञान।

रूपाध्यक्ष—पुं० [सं० रूप-अध्ययन, ष० त०] १ टकसाल का प्रधान अफसर। २. कोषाध्यक्ष।

रूपामक्खी—स्त्री० [हिं० रूपा=चाँदी+मक्खी] एक प्रकार का खनिज पदार्थ जिसकी गणना हमारे यहाँ उप-धातुओं में की गई है, वैद्यक में इसका व्यवहार प्रायः चाँदी के अभाव में किया जाता है क्योंकि इसमें चाँदी का कुछ अंश और गुण पाया जाता है।

रूपायन—पु० [सं०] [भू० कृ०, रूपायित] १ किसी वस्तु का रूप या ढाँचा प्रस्तुत करना। २ किसी बात या विचार को कार्यरूप में परिणत करना।

रूपायित—भू० कृ० [सं०] जिसने कोई रूप प्राप्त किया हो, या जिसे कोई रूप दिया गया हो।

रूपावचर—पुं० [सं०] १. एक प्रकार के देवता। (बौद्ध) २ चित्त की वह अवस्था जिसमें उसे रूप-जगत् अर्थात् दृश्य पदार्थों का ज्ञान होता है। ३. इस प्रकार प्राप्त होनेवाला ज्ञान। ४. योग में ध्यान की एक भूमि जिसके प्रथम आदि चार भेद कहे गए हैं।

रूपाश्रय—वि० [सं० रूप-आश्रय, ष० त०] रूपवान्। सुन्दर।

रूपास्त्र—पुं० [सं० रूप-अस्त्र, ब० स०] कामदेव।

रूपिका—स्त्री० [सं०√रूप+ठन्—इक,+टाप्] सफेद फूलोंवाला मदार का पौधा।

रूपित—पु० [सं० रूप+इतच्] एक प्रकार का उपन्यास, जिसमें ज्ञान, वैराग्यादि पात्र बनाए जाते हैं।
भू० कृ० जिसे कोई रूप दिया गया या मिला हो।

रूपी (पिन्)—वि० [सं०√रूप+इनि] [स्त्री० रूपिणी] १. रूप या आकार-प्रकारवाला। २ रूपधारी। रूपवान्। सुन्दर। ३. तुल्य। सदृश्य। समान।

रूपेंद्रिय—स्त्री० [सं० रूप+इंद्रिय, मध्य० स०] जिससे रूप का ज्ञान होता है, चक्षु।

रूपेश्वर—पु० [सं० रूप-ईश्वर, ष० त०] [स्त्री० रूपेश्वरी] एक शिवलिंग।

रूपेश्वरी—स्त्री० [सं० रूप-ईश्वरी, ष० त०] एक देवी का नाम।

रूपोपजीविनी—स्त्री० [सं० रूप+उप√जीव् (जीना)+णिनि+ङीप्] वेश्या। रंडी।

रूपोपजीवी (विन्)—पु० [सं० रूप-उप√जीव्+णिनि] [स्त्री० रूपोपजीविनी] बहुरूपिया।

रूपोश—वि० [फा०] १ जो मुँह छिपाए हुए हो। २ जो दंड आदि से बचने के लिए छिपा या भाग गया हो।

रूपोशी—स्त्री० [फा०] १. रूपोश होने की अवस्था या भाव।

रूप्य—वि० [सं० रूप+यत्] १ सुन्दर। खूबसूरत। २ उपमेय।
पुं० रूपा। चाँदी।

रूप्यक—पु० [सं० रूप्य+कन्] रुपया।

रूप्याध्यक्ष—पु० [सं० रूप्य-अध्यक्ष, ष० त०] टकसाल का प्रधान अधिकारी। नैष्ठिक।

रूबंद—पु० [फा०] १ घूँघट। २ बुरका।

रूबकार—पु० [फा०] १ सामने उपस्थित करने की क्रिया या भाव। पेशी। २ वह पत्र जिसके द्वारा किसी को कहीं उपस्थित होने की आज्ञा दी जाय। ३ आज्ञापत्र। हुक्मनामा।
वि० दत्त चित्त।

रूबकारी—स्त्री० [फा०] १. किसी के सामने उपस्थित होने की क्रिया या भाव। २ अदालत में मुकदमे की पेशी। ३ मुकदमे से सम्बन्ध रखने वाली कार्यवाही। ४ दत्त चित्त होने की अवस्था या भाव।

रू-बरू—अव्य० [फा०] १ आमने-सामने। मुकाबले। सम्मुखता में। समक्ष।

रूम—पु० [फा०] टर्की या तुर्की देश का पुराना नाम।
पु० [अं०] कमरा।

रूमना—अ० हिं० झूमना का अनु०।

रूमानिया—पु० [अं०] पूर्वी युरोप का एक देश।

रूमानी—पुं० [अं०] रूमानिया का निवासी।
वि० रूमानिया देश का।
स्त्री० रूमानिया देश की भाषा।

रूमाल—पुं० [फा०] १ जेब में रखने का कपड़े का छोटा चौकोर टुकड़ा जिसके किनारे सिले होते हैं, तथा जिससे मुँह-नाक पोंछा जाता है। करपट। २ चौकोना शाल या चिकन का टुकड़ा जिसके चारों ओर

बेल और बीच में काम बना रहता है और जो तिकोना दोहर कर ओढ़ने के काम में लाया जाता है। मुसलमानी शासन-काल में यह कमर में भी लपेटा जाता था। ३ पायजामे की काट में वह चौकोर कपड़ा जो दोनों मोहरियों की सन्धि में लगाया जाता है। मियानी। ४. ठगों का वह रूमाल जिसके एक कोने में चाँदी का एक टुकड़ा बँधा रहता था। क्रि० प्र०—लगाना।

रूमाली—स्त्री०[फा० रूमाल]१. छोटा रूमाल। २. एक प्रकार का लँगोट। ३ दे० 'रुमाली'।

रूमी—वि०[फा०]१. रूम देश सबंधी। रूम का। २. जो रूम देश में उत्पन्न हो या वहाँ से आता हो। जैसे—रूमी मस्तगी।
पुं० रूम देश का निवासी।
स्त्री० रूम देश की भाषा।

रूरना—अ०[सं० रोरवण]१ ऊँचे स्वर मे बोलना। चिल्लाना। २. दहाड़ना। गरजना।

रूरा—वि०[स० रूढ़=प्रशस्त] [स्त्री० रूरी]१.श्रेष्ठ। उत्तम। अच्छा। २. खूबसूरत। सुन्दर।

रू-रिआयत—स्त्री० [फा०+अ०] किसी का ध्यान रखते हुए उसे दिया जानेवाला सुभीता या उसके साथ की जानेवाली रिआयत।

रूल—पुं०[अ०] १ नियम। कायदा। २. शासन। ३ वह डंडा या पट्टी जिसकी सहायता से सीधी रेखाएँ या लकीरें खींची जाती हैं। रूलर। ४. सीधी खीची हुई रेखा या लकीर।
क्रि० प्र०—खीचना।

रूलदार—वि०[अ० रूल+फा० दार] जिस पर समानान्तर तथा सीधी रेखाएँ खिंची या बनी हों।

रूलर—पु०[अ०]१ लकीर खींचने का डडा या पट्टी। सलाका। २. शासक।

रूष—पुं०=रूख। (वृक्ष)।

रूषक—पुं०[सं०√रूष् (सजाना, ढकना)+ण्वुल्—अक]अडूसा। वासक।

रूषण—पु०[स०√रूष्+ल्युट्—अन] १. अलकृत या भूषित करना। २. लेप लगाना। अनुलेपन। ३ ढकना। आच्छादन।

रूषा—वि०=रूखा।

रूस—पुं०[फा०]एक प्रसिद्ध देश जिसका आधा भाग युरोप मे और आधा एशिया में पड़ता है।
स्त्री०[फा० रविश]चाल। (लश०)
स्त्री०[हिं० रूसना] रूसने की क्रिया या भाव।

रूसना—अ०[हिं० रोष]१ रुष्ट होना। रूठना।
संयो० क्रि०—जाना।—बैठना।
२. क्रुद्ध होना।

रूसा—पु०[सं० रोहिष] एक प्रकार की सुगंधित घास। भूतृण।
†पुं०=अडूसा।

रूसी—वि०[फा०] १ रूस देश का। रूस देश संबधी।
२. रूस देश में उत्पन्न या प्रचलित।
पुं० रूस देश का निवासी।
स्त्री० रूस देश की भाषा।
स्त्री०[देश०]सिर मे पड़ी हुई भूसी की तरह दिखाई पड़नेवाली मैल।

रूह—स्त्री०[अ०]१. आत्मा। २. प्राण वायु। ३. अंतःकरण। जैसे—वहाँ जाने को मेरी रूह नहीं कर रही है। ४. कई बार का खींचा हुआ अरक या इत्र।

रूह-अफ़ज़ा—वि०[अ०+फा०] जीवन बढ़ानेवाला। प्राणवर्धक।

रूहड़—पुं०[हिं० रूई]१. पुराने गद्दों, तकियों, लिहाफों आदि में की वह पुरानी रूई जो जमकर गुठलों या गूदड़ के रूप में हो गई हो। २. रूई का गुठला।

रूहना—अ०[सं० रोहण] १. ऊपर चढ़ना। २. वेगपूर्वक आगे बढ़ना। उमड़ना।
स०=रूँधना।

रूहानियत—स्त्री०[अ०]१. आत्मवाद। २. अध्यात्मवाद।

रूहानी—वि०[अ०]१. रूह या आत्मा संबंधी। आत्मिक। जैसे—रूहानी ताकत। २. अंतःकरण संबंधी। हार्दिक। दिली।

रूही—वि०[देश०] एक वृक्ष।

रूहीमूल—पुं०[हिं० रूही+मूल] रूही नामक वृक्ष की छाल और जड़। ईसरमूल।

रेंक—स्त्री०[हिं० रेंकना]रेंकने की क्रिया, भाव या शब्द।

रेंकना—अ०[अनु०]१ गधे का बोलना। २ बहुत बुरी तरह से चिल्लाते हुए गाना या बोलना।

रेंग—स्त्री०[हिं० रेंगना] रेंगने की क्रिया या भाव।

रेंगटा†—पुं० [हिं० रेंग+टा] गधे का बच्चा।

रेंगना—अ०[सं० रिंगण] १. जमीन के साथ पेट सटाकर हाथों-पैरों के बल खिसकते हुए आगे बढ़ना या चलना। जैसे—च्यूँटी या साँप का रेंगना। २.बच्चों का या बच्चों की तरह धीरे-धीरे और लड़खड़ाते हुए चलना। (बुन्देल०)
†अ०=रेंकना।

रेंगनी—स्त्री०[हिं० रेंगना] भट-कटैया।

रेंगाना—स०[हिं० रेंगना]१. किसी से रेंगने की क्रिया कराना। किसी को रेंगने में प्रवृत्त करना। २. बच्चों आदि को धीरे-धीरे चलाना। ३. व्यक्ति को चलाना या दौड़ाना।

रेंट—पुं० [देश०] श्लेष्मा मिश्रित मल जो नाक से (विशेषतः जुकाम होने पर) निकलता है। नाक का मल।
क्रि० प्र०—निकलना।—बहना।

रेंटा—पुं०[देश०] लिसोड़ा (फल)।
†पुं०=रेंट।

रेंटिया—पुं०[?]१. सूत कातने का चरखा। (गुज०)

रेंड़—पुं०[सं० एरण्ड]१. एक प्रकार का पौधा जो ६-७ हाथ ऊँचा होता है। २. इस पौधे के बीज जिनसे तेल निकलता है और जो दवा के काम आते हैं। ३. एक प्रकार की ईख। रेंडा।

रेंड़-खरबूजा—पुं०[हिं० रेंड़+खरबूजा] पपीता।

रेंड़ना—अ०[हिं० रेंड़] फसली पौधों का विकसित होना।

रेंड़-मेवा—पु०[हिं० रेंड+मेवा] पपीता।

रेंड़ा—पुं०[हिं० रेंड़]कुआर-कातिक में तैयार होनेवाला एक प्रकार का पेड़।
स्त्री० एक प्रकार की ईख।

रेंड़ी—स्त्री०[हिं० रेंड] रेंड का बीज।

रेंढ़ी—स्त्री०[देश०] ककड़ी या खरबूजे की बतिया।

रेंरें—अव्य०[अनु०] लड़कों के रोने का शब्द।

स्त्री० जिद या हठ का सूचक शब्द।

रे—पुं०[सं०ऋषभ का आदि र]ऋषभ स्वर का संक्षिप्त रूप। (संगीत)

अव्य० हिं० अरे (सम्बोधन) का संक्षिप्त रूप। रे। जैसे—रे मन, अब ध्यान मे लग।

रेउँछा—पुं०=रेवंछा।

रेउड़ा—पुं०=रेवड़ा (बड़ी रेवड़ी)।

रेउड़ी—स्त्री०=रेवड़ी।

रेक—पुं०[सं०√रिच् (विरेचन)+घञ्] १ दस्त लाना। विरेचन। २. शंका। ३. मेढ़क।

वि० नीच।

रेकान—पुं०[देश०]ऐसी जमीन जिसके पास तक नदी की बाढ़ का पानी न पहुँचता हो।

रेकार्ड—पुं०[अं०] १ अभिलेख। प्रालेख। २ कार्यालय के कागज-पत्र। ३ तवे के आकार की एक प्रकार की रासायनिक रचना, जिसमें विद्युत् की सहायता से आवाज भरी होती है और जो ग्रामोफोन मे लगाकर बजाया जाता है।

रेख—स्त्री०[सं० रेखा]१ रेखा। लकीर।

क्रि० प्र०—खींचना।—बनाना।

मुहा०—**रेख काढ़ना, खाँचना या खींचना**=कोई बात कहने के समय दृढ़ता, प्रतिज्ञा संकल्प आदि सूचित करने के लिए रेखा अंकित करना। दे० 'रेखा'।

पद—**रूप-रेखा**=रूप-रेखा।

२. चिह्न। निशान। ३ गिनती। गणना। शुमार। हिसाब। ४ लिखावट।

पद—**कर्म-रेख**।

५ वह जो भाग्य मे लिखा हो। भाग्य-लेख। ६ युवावस्था मे पहले-पहल रेखा के रूप मे निकलनेवाली मूँछ।

क्रि० प्र०—आना।—भीजना।—भीनना।

७. वह दूषित हीरा जिसमे रेखा हो। ८ हीरे मे रेखा होने का दोष।

रेखता—वि०[फा० रेख्त] १ ऊपर से गिरा या टपका हुआ। २ (कथन-प्रकार) बिना किसी प्रकार की बनावट के आप से आप या स्वाभाविक रूप से मुँह से निकला हुआ। ३ (वास्तु-कार्य) चूने आदि से बना हुआ फलतः पक्का या मजबूत। जैसे—रेखता छत, दीवार या मकान।

पुं०१ खुसरो द्वारा प्रचलित एक प्रकार की कविता या छंद रचना जिसमे फारसी और भारतीय छंदशास्त्रों की अनेक बातो (ताल, लय आदि) का सम्मिश्रण होता था। यथा—ज-हाले मिस्कीं मकुन तगाफुल, दुराय नैंनाँ बनाय बतियाँ। २ परवर्ती काल मे ऐसी कविता जिसमें कई भाषाओं के पद, वाक्य या शब्द सम्मिलित हों। ३ गद्य की वह भाषा, जिसमे हिन्दी के साथ-साथ अरबी-फारसी के भी कुछ विशेषण, संज्ञाएं आदि सम्मिलित हो। (आधुनिक उर्दू का प्रारम्भिक रूप इसी नाम से प्रसिद्ध था, और यह हमारी खड़ीबोली का एक विकसित रूप माना गया है। ४. चूने आदि की बनी हुई पक्की इमारत।

रेखती—स्त्री०[फा० रेख्ती] १. मुसलमान स्त्रियों मे प्रचलित उर्दू का वह रूप जिसमे हिन्दी के बोल-चाल के शब्दों और हिन्दी प्रयोगों तथा मुहावरों की अधिकता रहती है।

विशेष—जान-साहब, रंगीन आदि उर्दू कवियों ने जो जनानी रहन-सहन और चाल-ढाल की कविताएँ की हैं,उनकी बोली या भाषा 'रेखती' कहलाती है।

२ उक्त बोली या भाषा मे होनेवाली वह कविता, जिसमे विशेष रूप से स्त्रियों के भाव, मनोविकार आदि प्रकट किये गये हों।

रेखन—पुं० [सं० लेखन] १ रेखा या रेखाएँ अंकित करना या बनाना। २ रेखाओं आदि की सहायता से चित्र या रूप अंकित करना। आलेखन। ३ इस प्रकार अंकित किया हुआ चित्र या रूप। (ड्राइंग) रेखाचित्र।

रेखना—स०[सं० रेखन] १ रेखा या लकीर खीचना। २ रेखाओं की सहायता मे चित्र आदि अंकित करना। उदा०—कहा करौं नीके करि हरि कौ रूप रेखि नहिं पावति।—सूर। ३ बनाना या रचकर तैयार करना। उदा०—(क) सत्य कहौं कहा झूठ मे पावत देखो बेई जिन रेखी कथा।—केशव। (ख) पूरन प्रेम सुधा बसुधा बसुधा रमई बसुधर सु रेखी।—देव।

रेखांकन—पुं०[सं० रेखा-अंकन, ष० त०] [भू० कृ०रेखांकित] १. चित्र की रूप-रेखा बनाने के लिए रेखाएँ अंकित करना। २ दे० 'अधोरेखन' (अंडर लाइनिंग)

रेखांकित—भू०कृ०[सं० रेखा-अंकित, तृ० त०]१ रेखाओं से बना हुआ। २ जिसके नीचे रेखा खींची गई हो। जिसका रेखांकन हुआ हो।

रेखांश—पुं०[सं० रेखा-अंश, ष० त०]१ =देशांतर (भूगोल का)। २ याम्योत्तर वृत्त का कोई अंश। द्राघिमांश।

रेखा—स्त्री०[सं०√लिख् (लिखना)+अङ्+टाप् लस्य र]१ सूत की तरह बहुत ही पतला और लंबा अंकित किया हुआ अथवा आप से आप बना हुआ चिह्न। दण्डाकार पतला चिह्न। डाँडी। लकीर। जैसे—कलम या खड़िया से खींची हुई रेखा।

विशेष—प्राचीन काल मे हमारे यहाँ कोई बात कहते समय अपनी दृढ़ प्रतिज्ञा सूचित करने के लिए प्रायः हाथ से जमीन पर रेखा खीचने की प्रथा थी।

क्रि० प्र०—खींचना।—बनाना।

मुहा०—**रेखा रेखना**=अपने कथन आदि की दृढ़ता या निश्चय सूचित करने के लिए रेखा खीचते हुए कोई बात कहना अथवा कुछ कहते समय रेखा खीचना।

२ गणना करने की क्रिया या भाव। गिनती। शुमार।

विशेष—आरम्भ मे गिनती गिनने या सूचित करने केलिए पहले रेखाएँ ही खींची जाती थी। उदा०—राम भगति मे जासु न रेखा।—तुलसी।

मुहा०—**रेखा रेखना**=दृढ़तापूर्वक गिनती कहते हुए तत्सम्बन्धी रेखा खींचना या बनाना। उदा०—शोभित स्वकीय गण-गुण गनती मे तहाँ तेरे नाम ही की रेखा रेखियत है। —पद्माकर।

३ किसी ठोस तल पर बना या बनाया हुआ उक्त प्रकार का कोई चिह्न। जैसे—चेहरे या ललाट पर की रेखा। ४ मनुष्य के तलवे और हथेली पर टेढ़े-मेढ़े अथवा सीधे बने हुए वे प्राकृतिक चिह्न जिनके आधार पर

सामुद्रिक शास्त्र के अनुसार शुभाशुभ फल कहे जाते हैं। जैसे—अंकुश-रेखा, ऊर्ध्व रेखा, कमल-रेखा आदि। ५. वह कल्पित लकीर जो आरंभिक भारतीय ज्योतिषी अक्षांश सूचित करने के लिए सुमेरु से उज्जयिनी होती हुई लका तक खिंची या बनी हुई मानते थे। (दे० 'रेखा भूमि') ६. हीरे आदि रत्नों के बीच में दिखाई पडने वाली लकीर जो एक दोष मानी जाती है। ७. आकार। आकृति। रूप। सूरत। ८. कतार। पंक्ति।

रेखा-गणित—पु०[स० ब० स०] ज्यामिति। (दे०)।

रेखाचित्र—पु०[स० मध्य० स०] १ किसी वस्तु या व्यक्ति के रूप का वह चित्र जो केवल रेखाओं से अंकित किया गया हो। (ड्राइग) २.ऐसा चित्र जो केवल रेखाओं से बनाया गया हो, अर्थात् जिसमे बीच के उतार-चढाव, उभार-धँसाव आदि न हों। (डेलोनिएशन)

रेखा-भूमि—स्त्री०[स०मध्य० स०] वह भूमि या प्रदेश जो उस कल्पित रेखा के आस-पास पडते थे, जो प्राचीन काल मे अक्षांश स्थिर करने के लिए सुमेरु से उज्जयिनी होती हुई लका तक गई हुई मानी जाती थी।

रेखा-लेख—पु०[स० सुप्सुपा स०]१ प्राय चित्र के रूप मे होनेवाला कोई ऐसा अकन जो परिकल्पनाओं, विचारों, स्थितियों आदि का परिचायक हो। आरेख। (डायाग्राम) २ दे० 'रेखा-चित्र'।

रेखावती—स्त्री० [स० रेखा+मतुप्+ङीप्, वत्व] सगीत मे कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

रेखित—भू० कृ०[स० रेखा+इतच्]१ रेखा के रूप मे खिचा हुआ। अकित। लिखित। २ जिस पर रेखा अकित की गई हो। ३ दरकने, फटने आदि के कारण जिस पर रेखा पड गई हो।

रेख्ता—वि० पुं०=रेख्ता।

रेख्ती—स्त्री०=रेख्ती।

रेग—स्त्री०[फा०] रेत।

रेगमाही—पु०[फा०] प्राय रेतीले मैदानो मे रहनेवाला एक प्रकार का जानवर जिसका मास बहुत पौष्टिक माना जाता है। सक्कूर।

रेगिस्तान—पु०[फा०][वि० रेगिस्तानी] भूमि का वह प्राकृतिक विस्तृत भाग जिसके ऊपर रेत या बालू ही भरा हो। मरुदेश।

रेघाना—म०[रे ग, आदि स्वर]१ सस्वर या स्वर लय से पाठ करना या गाना। २ रेकना। (दे०)

रेचक—वि०[स०+रिच् (विरेचन)+णिच्+ण्वुल्—अक] जिसके खाने से दस्त आवे। कोष्ठशुद्धि करनेवाला। दस्तावर।

पु०१ जमालगोटा। २ जवाखार। ३. पिचकारी। ४ प्राणायाम की तीसरी क्रिया जिसमे खींचे हुए साँस को विधिपूर्वक बाहर निकालना होता है।

रेचन—पु०[म०√ रिच्+णिच्+ल्युट्—अन]१ दस्त लाकर पेट से मल निकालना। २ वह ओषधि जो पेट का मल निकालकर उसे साफ करे। जुलाब।

रेचनक—पुं०[स०√रिच्+णिच्+ल्यु—अन+कन्] कमीला (वृक्ष)।

रेचनी—स्त्री० [स० रेचन+ङीप्] १ कमीला। २. दंती। ३ वट-पत्री। ४ कालांजनी।

रेचित—पु० [सं०√ रिच्+णिच्+क्त]१. घोड़ो की एक चाल। २. नृत्य मे हाथ से भाव बताने का एक प्रकार।

भू० कृ० रेचन क्रिया के द्वारा बाहर निकाला हुआ।

रेच्य—पु०[सं०√रिच् +णिच्+यत]१. प्राणायाम करते समय छोड़ी जानेवाली वायु। २ पेट से मल निकालने के लिए की जानेवाली दवा या क्रिया जानेवाला उपचार। जुलाब।

वि० जो रेचन क्रिया के द्वारा बाहर निकाला जाने को हो या निकाला जा सके।

रेज—स्त्री०[फा०] १. पक्षियो का चहचहाना। कल-रव। २. गिराना। बहाना।

वि० गिराने या बहानेवाला। जैसे—अश्करेज।

रेजगारी—स्त्री०[फा० रेजगारी]१. एक रुपए के मूल्य के छोटे सिक्के। २. छोटे सिक्के।

रेजगी—स्त्री० [फा०] १. छोटे सिक्के। रेजगारी। २. सोना-चाँदी के तार के छोटे टुकडे।

रेजस—पुं०[फा०] घोड़े का जुकाम।

रेजस छीभा—पु० =रेजस।

रेजा—पु०[फा० रेज:]१. किसी वस्तु का बहुत छोटा टुकडा। सूक्ष्म खड। कण। जर्रा। २. बहुमूल्य कपडों के खड या स्थान। ३ रत्नों आदि के खड या टुकडे। नग। ४. मजदूर लडका जो बड़े राजगीरो के साथ काम करता है। ५. वेश्या वृत्ति कराने के उद्देश्य से कुटनियों द्वारा पाली हुई लडकी। (बाजारू) ६ स्त्रियो के पहनने की अंगिया। (बुदेल०) ७. सुनारो का एक औजार जिसमे गला हुआ सोना या चाँदी डालकर पासे के आकार का बना लेते हैं।

रेजिडेंट—पु०[अ०] वासामात्य। (दे०)

रेजिमेंट—स्त्री०[अ०] सेना का एक भाग। रिजमिट।

रेजिश—स्त्री०[फा०] जुकाम। प्रतिश्याय।

रेजु—पुं०[हिं०रेजा] एक प्रकार का रेशा जो पहले बुरुश या कूँची बनाने के लिए विदेशों से आता था।

रेट—पु०[अ०] भाव। निर्ख।

†पु०—रेट।

रेडक्रास—पु० [अ०] एक बहुत प्रसिद्ध अतर्राष्ट्रीय संस्था, जिसकी शाखाएँ प्रायः सभी सभ्य देशों और राष्ट्रों मे हैं, और जो राजनीतिक प्रपचो से बिलकुल अलग रहकर युद्ध और प्राकृतिक सकटों आदि के समय जनसेवा का काम करती है।

रेडियो—पु० =रेडियो।

रेडियम—पु०[अ०] एक प्रसिद्ध बहुमूल्य प्रकार का खनिज पदार्थ जो कुछ विशिष्ट प्रकार के खनिज द्रव्यो से बहुत ही अल्पमात्रा मे पाया जाता है और अनेक वैज्ञानिक कार्यों के लिए बहुत अधिक उपयोगी होता है।

रेडियो—पु०[अ०] १ आधुनिक विज्ञान की वह क्रिया या प्रणाली जिसके अनुसार ध्वनियाँ, शब्द और सकेत बीच के तार द्वारा सबध स्थापित किये बिना ही केवल विद्युत् की सहायता से आकाश मार्ग से दूर दूर तक पहुँचाये जाते हैं। २ वे यन्त्र जो उक्त प्रकार से ध्वनियाँ, शब्द आदि चारो ओर प्रसारित करते है। ३. विशिष्ट रूप से वह छोटा यत्र जिसकी सहायता से लोग घर बैठे उक्त प्रकार से प्रसारित की हुई ध्वनियाँ आदि सुनते है।

रेडियो चिकित्सा—स्त्री०[अ०+स०] चिकित्सा की वह प्रणाली, जिसमे

रेडियो की रश्मियों के प्रभाव और प्रयोग से रोग अच्छे किये जाते हैं। (रेडियो थेरैपी)

रेडियो-चित्रण—पुं०[अं०+सं०] वह वैज्ञानिक क्रिया जिसमे घन पदार्थों के भीतरी अगों, विकारो आदि के चित्र एक्सरे या रेडियो की रश्मियो की सहायता से लिये जाते अथवा किसी तल या परदे पर लिये जाते हैं। एक्स-रे चित्रण। (रेडियोग्राफी)

रेडियो नाटक—पुं०[अं०+सं०] रेडियो द्वारा प्रसारित किया जानेवाला कोई छोटा नाटक या रूपक जो श्रव्य ही होता है, दृश्य नही होता।

रेणु—स्त्री०[सं०√री (गति)+नु] १ धूल। बालू। ३ किसी चीज का बहुत छोटा कण। ४ बाय विडंग। ५ सँभालू के बीज। ६ पृथ्वी। (डिं०)

रेणुका—स्त्री०[सं० रेणु+कन्+टाप्] १ बालू। रेत। ३ धूल। रज। ३. सह्याद्रि पर्वत का एक तीर्थ। ४ परशुराम की माता का नाम। ५. पृथ्वी। (डिं०)

रेणु-वास—पुं०[सं० ब० स०] भौंरा। भ्रमर।

रेणु-सार—पुं०[सं० ब० स०] कपूर।

रेतः कुल्या—स्त्री० [सं० ष० त०] एक नरक का नाम।

रेत (तस्)—पुं०[सं०√री (क्षरण)+असुन्, तुट्—आगम] १ वीर्य। शुक्र। २. पारा। ३ जल। पानी।

स्त्री० १ बालू। २. बालू से भरी भूमि। रेता।

†पुं०[हिं० रेती] बडी रेती (औजार)।

रेत-कुंड—पुं०[सं० रेतकुंड] १ एक नरक। रेत कुल्या। २ कुमायूँ के पास का एक तीर्थ।

रेतन—पुं०[सं० रेतन] १ वीर्य। २. बीज।

रेतना—स०[हिं० रेती] १ रेती (औजार) से किसी बडे पदार्थ का खुरदुरा तल इस प्रकार रगडना कि उस पर के महीन कण गिर जायँ और वह तल चिकना या सुडौल हो जाय। २. किसी वस्तु को काटने के लिए औजार की धार रगडना। जैसे—आरी से रेतना। ३ किसी तेज धारवाली चीज से धीरे-धीरे रगडते हुए कोई चीज काटना। जैसे—बकरी या मुरगी का गला रेतना। ४.लाक्षणिक अर्थ में किसी को निरतर कष्ट या हानि पहुँचाना।

मुहा०—(किसी का) गला रेतना। (दे०)

रेतल—पुं० [देश०] भूरे रग का एक प्रकार का छोटा पक्षी।

रेतला—वि०=रेतीला।

रेता—पुं०[हिं० रेत] १ बालू। २. गर्द। धूल। ३. मिट्टी। ४. बलुआ मैदान।

रेतिया—पुं० [हिं० रेतना+इया (प्रत्य०)] वह जो रेतने का काम करता हो। चीजें रेतनेवाला कारीगर।

वि०=रेतीला।

रेती—स्त्री० [हिं०रेतना] एक प्रकार का दानेदार औजार जिससे रगड या रेत कर पदार्थों का तल चिकना किया या छीला जाता है। (फाइल)

स्त्री०[हिं० रेत+ई (प्रत्य०)] १.वह स्थान जहाँ रेत प्रचुर मात्रा मे हो।२ रेतीला मैदान। ३ नदी की धारा के बीचो बीच टापू की तरह बलुई जमीन जो पानी घटने पर निकल आती है। नदी का टापू। जैसे—गगाजी मे इस साल रेती पड़ जाने से दो धाराएँ हो गई हैं।

क्रि० प्र०—पडना।

रेतीला—वि०[हिं०रेत+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० रेतीली] १. (स्थान) जहाँ पर बालू पडा या बिछा रहता हो। जैसे—रेतीला प्रदेश। २. (मिट्टी) जिसमे बालू मिला हुआ हो। बालुकामय।

रेत्र—पुं०[सं०√री (क्षरण)+त्र] १. वीर्य। शुक्र। २ अमृत। पीयूष। ३. खेमे, डेरे आदि जो रहने के लिए कपडे से बनाये जाते हैं।

रेना—पुं० [देश०] किसी वस्तु को दूसरी वस्तु मे डाल या टिकाकर लटकाना।

रेनी—स्त्री०[सं० रजनी] १. वस्तु जिससे रग निकलता हो। रंग देने-वाली वस्तु।

स्त्री०[हिं० रेना=लटकाना] (रंगरेजो की) अलगनी।

रेनु—पुं०=रेणु।

रेनुका—स्त्री०=रेणुका।

रेप—वि०[सं०√रप् (गति)+अच्] १ निंदित। बुरा। २ क्रूर। निर्दय। ३ कंजूस। कृपण।

रेफ—पुं०[सं०√रिफ्+घञ् वा र+इफन्] १ शब्द के बीच में पडनेवाले र का वह रूप जो ठीक बादवाले स्वरांत व्यजन के ऊपर लगाया जाता है। जैसे—कर्म, धर्म, विकर्ण। २ र अक्षर। रकार। ३ राग। ४. रव। शब्द।

वि०१. अधम। नीच। २. कुत्सित। निन्दनीय।

रेरना†—स०=टेरना।

रेरुआ—पुं०- रुरुआ (बडा उल्लू)।

रेल—स्त्री०[अं०] १ जमीन पर बिछी हुई लोहे की वह पटरी जिस पर रेलगाडी के पहिए चलते हैं। २. रेलगाडी।

स्त्री०[हिं० रेलना] १. रेलने की क्रिया या भाव। २. पानी का बहाव। ३. तीव्र प्रवाह। ४. अधिकता। ५. धक्कम-धक्का।

पद—रेल-पेल।

रेल-गाड़ी—स्त्री०[अं०रेल+हिं० गाडी] भाप, बिजली आदि की सहायता से लोहे की पटरियो पर चलनेवाली गाडी।

रेलना—स० [हिं० रेला+ना (प्रत्य०)] १ रेले का औरों को ढकेलते हुए आगे बढना। रेला या धक्का देना। २. प्रबल प्रवाह का किसी को अपने साथ बहा ले जाना। ३. ठूस कर भरना। ४ बहुत अधिक भोजन करना।

रेल-पेल—स्त्री० [हिं० रेलना+पेलना] १. ऐसी भीड़ जिसमे लोग एक दूसरे को धक्के दे रहे हो या धकेल रहे हो। २ बहुत अधिकता। बाहुल्य। भर-मार। जैसे—बाजार मे आमो की रेल-पेल है।

रेलवे—स्त्री० [अं०] १ रेल की बिछी हुई पटरियाँ जिन पर रेल-गाडी चलती है। २ रेल का महकमा या विभाग।

रेल-बेल—स्त्री०=रेल-पेल।

रेला—पुं० [देश०] १. किसी चीज या बात का प्रबल प्रवाह। जैसे—पानी का रेला, भीड का रेला। ३. भीड मे होनेवाला धक्कम-धक्का। ३. आक्रमण। चढ़ाई। धावा। ४. किसी चीज या बात की अधिकता। बहुतायत। ५. तबला बजाने की एक रीति, जिसमें कुछ विशिष्ट प्रकार से हलके तथा मधुर बोल बजाये जाते हैं।

रेलिंग—स्त्री० [अं०] मुंडेर की तरह ऊँची वह रचना जो छत के सिरों पर शोभा और सुरक्षा के लिए बनाई या लगाई जाती है।

रेवँझा—पुं० [देश०] एक द्विदल अन्न जिसकी वर्तुलाकार पतली लंबोतरी फलियाँ बालिश्त भर लंबी होती हैं।

रेवंद—पु० [फा०] हिमालय पर ग्यारह-बारह हजार फुट की ऊँचाई पर होनेवाला एक तरह का पेड़।

रेवंद-चीनी—स्त्री० [फा० रेवंद+चीन (देश०)] चीन देशमे होने वाला उक्त प्रकार का पेड़, जिसकी छाल और बीज दवा के काम आते हैं।

रेवट—पु० [स०√रेव् (गति)+अटन्] १. शूकर। सूअर। २. बाँस। ३. विषो की चिकित्सा करनेवाला वैद्य। विषवैद्य। ४. दक्षिणावर्त्त शंख।

रेवड़—पुं० [देश०] १. भेड़-बकरियों का झुंड। २. झुंड। समूह।

रेवड़ा—पु० [हिं० रेवड़ी] बड़ी और मोटी रेवड़ी।

रेवड़ी—स्त्री०[देश०] पगी हुई चीनी या गुड़ की वह छोटी टिकिया जिस पर सफेद तिल चिपकाए रहते हैं।

मुहा०—रेवड़ी के फेर में आना या पड़ना=लालच में पड़ना।

रेवड़ी के लिए मसजिद ढाना=अपने बहुत थोडे लाभ के लिए दूसरो की बहुत बड़ी हानि करना।

२.लाक्षणिक अर्थ मे कोई ऐसी चीज, जिसे सरलता से नष्ट किया जा सके।

रेवत—पु० [स०√रेव् (गति)+अतच्] १. जबीरी नीबू। २ अमलतास। ३. बलराम की पत्नी रेवती के पिता जो एक राजा थे।

रेवतक—पु० [सं० रेवत+कन्] १. पारावत। परेवा। २. एक प्रकार की खजूर।

रेवती—स्त्री०[सं०रेवत+ङीष्]१.ज्योतिष में सत्ताइसवाँ नक्षत्र, जिसमे ३२ तारे स्थित माने गए हैं। २ एक मातृका का नाम। ३. दुर्गा। ४ गौ। ५ रेवत मनु की माता का नाम। ६. राजा रेवत की कन्या जो बलराम को ब्याही थी। ७ एक बालग्रह जो बच्चो को कष्ट देता है।

रेवती-भव—पु० [स० ब० स०] शनि (ग्रह)।

रेवती-रमण—पु० [ष० त०] १. बलराम। २. विष्णु।

रेवती-रंग—पुं०=रेवती-रमण।

रेवना—स०=रेना। (दे०)

रेवरा—पु०=रेवड़ा।

रेवा—स्त्री० [स०√रेव् (गति)+अच्+टाप्] १. नर्मदा नदी। २. नर्मदा नदी के आस-पास का प्रदेश। आधुनिक रीवाँ और बघेलखंड। ३. कामदेव की पत्नी। रति। ४. दुर्गा। ५. एक प्रकार का साम। ६. संगीत में पूर्वी अंग की एक रागिनी जिसे कुछ लोग दीपक राग की पत्नी मानते हैं। ८ नदियों मे होनेवाली एक प्रकार की मछली।

रेवाउतन—पु० [सं० रेवा-उत्पन्न] हाथी। (डिं०)

रेश—स्त्री० [फा०] लंबी दाढ़ी।

रेशम—पु० [फा०] [वि० रेशमी] एक विशिष्ट प्रकार के कीड़ो के कोश पर के रोओं से तैयार किये जानेवाले बहुत चमकीले, चिकने और मुलायम तंतु या रेशे जो प्राय कपड़े बनाने के काम आते हैं। कोशा। कौशेय।

विशेष—इस कीड़े की अनेक जातियाँ होती हैं, जिनसे अलग-अलग प्रकार के रेशम के तागे बनते हैं।

रेशमी—वि० [फा०] १. रेशम का बना हुआ। जैसे—रेशमी रूमाल या साड़ी। २. रेशम की तरह चमकीला और मुलायम। जैसे—रेशमी बाल।

रेशा—पुं० [फा० रेशः] १. वह तंतु या महीन सूत, जो पौधों की छालों आदि से निकलता है या कुछ फलों के अन्दर भी पाया जाता है। २. वे तंतु जिनसे शरीर का मांस तथा कुछ और अंग बने होते हैं। ३ कोई ऐसा तत्व जो बुनावट के रूप मे हो और जिसके तंतु या सूत अलग किये जाते हो। (फाइबर) ४. शरीर के अन्दर की नस। रग।

रेशा खत्मी—पु० [फा०] एक प्रकार की वनस्पति, जिसका प्रयोग हकीमी दवाओ में होता है।

मुहा०—रेशा खतमी हो जाना=बहुत गद्‌गद् या पुलकित होना। (परिहास)

रेष—पुं० [सं०√रिष् (हिंसा)+घञ्] १ क्षति। हानि। २. हिंसा।

† स्त्री०=रेख।

रेषण—पु० [स०√रेष् (हिनहिनाना)+ल्युट्—अन] १. घोड़े का हिनहिनाना २. चीते, बाघ आदि का गरजना।

रेषा—स्त्री० [सं०√रेष्+अ+टाप] १. घोडे की हिनहिनाहट। २. सिंह की गरजन या दहाड़।

† स्त्री०=रेखा।

रेसमान—पु० [फा० रीस मान=रस्सी] डोरी। रस्सी। (लश्करी)

रेस्तराँ—पु० [फ्रें०] भोजनालय। आहारगृह।

रेह—स्त्री० [?] खार मिली हुई वह मिट्टी, जो ऊसर मैदानो में पाई जाती है।

† स्त्री०=रेख (रेखा)। उदा०—कुसुमवान विलास कानन केस सुन्दर रेह।—विद्यापति।

रेहण—पु०=रेहन (सोने की मैल)। उदा०—कायर रेहण कर गया, दीपै कनक दुरंग।—बाँकीदास।

रेहन—पु० [फा० रिहन] रुपया उधार लेने की वह रीति, जिसमे महाजन के पास कुछ माल या जायदाद इस शर्त पर रखी रहती है कि जब ऋण चुका दिया जायगा, तब माल या जायदाद वापस मिलेगी। बंधक। गिरवी। (प्लेज, मार्टगेज)

क्रि० प्र०—करना।—रखना।

पुं०=अरहन।

पुं० [?] मिलावटी सोने मे से निकली हुई तलछट या मैल।

स्त्री० [हिं० रहना] रहने की क्रिया या भाव।

रेहनदार—पु० [फा०] वह जिसके पास कोई जायदाद रेहन रखी गई हो।

रेहननामा—पु० [फा०]वह कागज जिस पर चीज रेहन आदि रखने की शर्तें लिखी गई हों।

रेहला—स्त्री०=रिहल।

रेहुआ—वि० [हिं० रेह] (जमीन या मिट्टी) जिसमें रेह बहुत हो।

रेहू—पु०=रोहू (मछली)।

रै—अव्य० [?] के पास। के यहाँ। उदा०—राम रिसन आया राजा रै।—प्रिथीराज।

रैअति—स्त्री०=रैयत। (रिआया)

रैकेट—पु० [अं०] १ टेनिस खेलने का बल्ला। २ आकाश बाण। ३. आकाश बाण के आकार का वह बहुत बड़ा यंत्र जो आकाश में वैज्ञानिक परीक्षणों आदि के लिए बहुत ऊपर तक जा सकता है।

रैडर—पु० [अं०] रेडियो शक्ति की सहायता से काम करनेवाला एक प्रकार का प्रसिद्ध आधुनिक यंत्र जिससे यह पता चलता है कि किस दिशा में और कितनी दूरी पर कोई चीज आकाश या समुद्र मे विचर रही है और किधर से किधर आ या जा रही है।

रैण†—स्त्री० =रैन। (रात)
स्त्री० [सं० रेणु] धूल। उदा०—बाहुत जा पद-रैन।—सूरदास।

रैणज—अव्य० [हिं० रैण=रात] रात भर। सारी रात। उदा०—लोक सोवै सुख नींदड़ी, थे क्यूं रैणज भूली।—मीरां।

रैता—पु० =रायता।

रैतिक—वि० [सं० रीति+ठक—इक] रीति अर्थात् पीतल संबंधी।

रैतुवा—पु० =रायता।

रैत्य—पु० [सं० रीति+ष्यत्] रीति अर्थात् पीतल का बना हुआ बरतन।
वि० रैतिक (पीतल का)।

रैदास—पु० [सं० रविदास] १ एक भक्त जो जाति के चमार थे तथा रामदास के शिष्यों मे से थे। २. चमार।

रैदासी—पु० [हिं० रैदास+ई] १ महात्मा रैदास के सम्प्रदाय का अनुयायी। २ एक प्रकार का मोटा जड़हन धान।

रैन, रैनि—स्त्री० [सं० रजनी] रात्रि।

रैनी—स्त्री० [हिं० रेना] तार खींचने की चाँदी-सोने की गुल्ली।

रैमुनिया—स्त्री० [हिं० रायमुनी] १ एक प्रकार की अरहर। २ लाल पक्षी की मादा।

रैयत—स्त्री० [अ०] प्रजा। रिआया।

रैया-राव—पु० [हिं० राजा+राव] १ छोटा राजा। २ मध्ययुग में, राजाओं द्वारा अपने सरदारों को दी जानेवाली पदवी।

रैल—स्त्री० [?] १ राशि। २ समूह। झुंड।

रैवंता—पु० [हिं० रजवत] घोड़ा। (डिं०)

रैवत—पु० [सं० रेवती+अञ्] १ एक साममंत्र। २ महादेव। शिव। ३ मेघ। बादल। ४ रैवत नामका पर्वत। ५ रेवती के पुत्र मनु। ६ एक दैत्य जिसकी गिनती बालग्रहों मे होती है।

रैवतक—पु० [सं० रैवत+कन्] द्वारका के पास का एक पर्वत। (पुराण)

रैशन—पु० =राशन।

रैशनिंग—स्त्री० =राशनिंग।

रैसा—पु० =रैहर।

रैहर—पु० [सं० रेष=हिंसा] झगड़ा। लड़ाई।

रैहाँ—पु० [अ०] १ एक प्रकार की सुगन्धित वनस्पति, जिसके फूल और बीज दवा के काम आते है। बालगूं। २ कोई सुगंधित घास या वनस्पति। ३ उक्त प्रकार की घास या वनस्पति के फूल। ४. अरबी फारसी आदि लिपियों की एक प्रकार की सुन्दर लेख-प्रणाली।

रोंआँ—पु० =रोआँ।

रोंग—पु० =रोम (रोआँ)।

रोंगटा—पु० [हिं० रोंग+टा] रोम। रोआँ।

मुहा०—**रोंगटे खड़े होना**=किसी भयानक या क्रूर कांड को देखकर शरीर में क्षोभ उत्पन्न होना। जी दहलना। रोमांच होना।

रोंगटी—स्त्री० [हिं० रोना] १. वह अवस्था जिसमें खिलाड़ी एक दूसरे से रंज होने लगते हैं। २ खेल मे की जानेवाली चालाकी या बेईमानी।

रोंघट—स्त्री० [?] १ मैल। २ मिट्टी। ३. धूल।

रोंठा—पु० [देश०] कच्चे आम की सुखाई हुई फाँक। अमहर। आमकली।

रोंव—पु० =रोआँ (शरीर पर के रोम)।

रोंसा—पु० [देश०] लोबिया या बोड़े की फली।

रोआँ—पु० [सं० रोमन्] शरीर पर का कोई पतला छोटा तथा नरम बाल। रोम।
क्रि० प्र०—उखड़ना।—जमना।—निकलना।
मुहा०—(किसी का) रोआँ तक न उखड़ना=कुछ भी हानि न होना। **रोआँ पसीजना**=मन मे करुणा या दया उत्पन्न होना। **रोएँ खड़े होना**=रोमांच होना।

रोआई—स्त्री० =रुलाई।

रोआब—पु० =रोब।

रोआस—स्त्री० [हिं० रोना+आस] रोने की प्रवृत्ति।

रोआसा—वि० [हिं० रोवना] [स्त्री० रोआसी] जो रोने को उद्यत हो। जिसे रुलाई आना चाहती हो।

रोईसा—पु० =रूसा (घास)।

रोइया—पु० [देश०] जमीन मे गाड़ा हुआ काठ का वह कुंदा जिस पर रखकर गन्ने के टुकड़े काटते है।

रोऊँ—पु० =रोआँ।

रोक—स्त्री० [सं०√रुच् (दीप्ति)+घञ्] १ नकद धन। नकदी। २. नकद दाम देकर कुछ खरीदना। ३ चमकीलापन।
वि० गतिमान।
स्त्री० [हिं० रोकना] १ रोकने की क्रिया या भाव। २ वह चीज, तत्त्व या बात जिसके कारण कोई काम नहीं किया जा सकता। रोकनेवाली चीज।
पद—रोक-टोक।
३ निषेध। मनाही।
पद—रोक-टोक।

रोक-झोंक—स्त्री० =रोक टोक।

रोक-टीप—स्त्री० [सं० रोक+अनु० टीप] वह पुरजा जो विक्रेता क्रेता को कुछ खरीद करने पर देता है। नकदी पुर्जा। (कैश मेमो)

रोक-टोक—स्त्री० [हिं० रोकना+टोकना] १ किसी को रोकने और टोकने की क्रिया या भाव। २ किसी के रोकने या रोकने के कारण मार्ग मे आनेवाली अड़चन। बाधा। रुकावट। ३. वह पूछ-ताछ जो किसी के कहीं जाने या कुछ करने के समय की जाय। (अशुभ)

रोकड़—स्त्री० [सं० रोक=नकद] १ नकद रुपया-पैसा आदि, विशेषतः वह रकम जिसमें से आय-व्यय होता हो। नकद रुपया।
मुहा०—**रोकड़ मिलाना**=आय-व्यय का जोड़ लगाकर यह देखना कि रकम घटती या बढ़ती तो नहीं है।

२. धन-सम्पत्ति। ३ मूल-धन। पूँजी। ४. वह बही जिसमे प्रतिदिन के आय-व्यय का हिसाब लिखा जाता है। रोकड़-बही।

रोकड़-बही—स्त्री० [हिं० रोकड+बही] दे० 'रोकड' ४.।

रोकड़-बाकी—स्त्री० [हिं०] किसी नियत समय पर आय, व्यय आदि को जोड़ने और घटाने के उपरांत हाथ मे बची रहनेवाली रोकड या नकद धन। (कैश-बैलैन्स)

रोकड़-बिक्री—स्त्री० [हिं० रोकड+बिक्री] नकद दाम पर की हुई बिक्री।

रोकड़िया— पु० [हिं० रोकड+इया (प्रत्य०)] वह कर्मचारी जिसके पास रोकड और आय-व्यय का हिसाब रहता हो। खजानची।

रोक-थाम—स्त्री० [हिं० रोकना+थामना] ऐसा काम करना जिससे प्रक्रिया, प्रवृत्ति आदि का पुर्नभव, प्रसार, वृद्धि आदि न होने पाये तथा वह छूट या रह न जाय। जैसे—चोरियों, डकैतियो या रोगो की रोक-थाम।

रोकना—स० [स० रोधन] १ अधिकारत अथवा बलात् किसी को आगे न बढ़ने देना अथवा कही जाने न देना। जैसे—(क) सिपाही का हाथ के इशारे से मोटर रोकना। (ख) मित्र का अपने अतिथि को रोकना। २. किसी को कोई क्रिया न करने देना। जैसे—(क) ड्राइवर का मोटर रोकना। (ख) चालक का इजन रोकना। ३. आदेश, प्रार्थना, बल-प्रयोग आदि के द्वारा किसी के मार्ग मे कोई ऐसी बाधा या रुकावट खड़ी करना कि वह आगे न जा सके। जैसे—(क) सरकार ने अनाज का बाहर जाना रोक दिया। (ख) पुलिस ने जुलूस रोक दिया। ४. किसी प्रकार के चलते हुए क्रम को आगे न बढ़ने देना। जैसे—(क) बाल-विवाह अब रोक दिया गया है। (ख) इस तेल ने बालों का गिरना रोक दिया है। ५ आते हुए आघात या प्रहार के बीच मे ऐसी अडचन या बाधा खड़ी करना कि वह अपना काम पूरा न कर सके। जैसे—लाठी पर तलवार का वार रोकना। ६. किसी प्रकार के नियन्त्रण या वश मे रखना। जैसे—(क) इच्छा या मन को रोकना। (ख) बीमारी को फैलने से रोकना।

रोग—पु० [स०√रुज् (हिंसा)+घञ्] [वि० रोगी, रुग्ण] १ वह अवस्था जिससे शरीर का स्वास्थ्य बिगड जाय और जिसके बढ़ने पर शरीर के समाप्त हो जाने की आशका हो। बीमारी। मर्ज। व्याधि। जैसे—(क) जीव-जन्तुओं, वनस्पतियो आदि मे सैकड़ो प्रकार के रोग होते हैं। (ख) जान पड़ता है कि इस पेड को कोई रोग हो गया है। २. शरीर मे उत्पन्न होनेवाला कोई ऐसा घातक या नाशक विकार जो कुछ विशिष्ट कारणों से उत्पन्न होता है, और जिसके कुछ विशिष्ट लक्षण होते हैं। बीमारी। मर्ज (डिजीज) जैसे—दमा (या लकवा) बहुत बुरा रोग है। ३. कोई ऐसी बुरी आदत, चीज या बात जो आगे चलकर कष्टप्रद या हानिकारक सिद्ध हो। जैसे—तमाकू, बीड़ी या सिगरेट की आदत लगना भी एक रोग ही है।

क्रि० प्र०—लगना।—लगाना।—होना।

मुहा०—रोग पालना=जान-बूझकर कोई मुसीबत मोल लेना या आदत डालना।

रोग-काष्ठ—पु० [सं० मध्य० स०] बक्कम की लकड़ी।

रोग-ग्रस्त—वि० [सं० तृ० त०] जिसे कोई रोग लगा हो। रोग से पीड़ित। बीमारी में पड़ा हुआ।

रोगन—पु० [फा० रौगन] १. कोई गाढ़ा और चिकना तरल पदार्थ। जैसे—घी, चरबी, तेल आदि। २. तेल, लाख आदि का बना हुआ पक्का रंग जो चीजो पर चमक आदि लाने के लिए चढ़ाया जाता है। जैसे—मिट्टी के बरतनो पर लगाया जानेवाला रोगन। ३. आज-कल कोई ऐसा रासायनिक लेप जिसे लगाने से चीजें धूप, वर्षा आदि के प्रभाव से रक्षित रहती और चिकनी होकर चमकने लगती हैं। वारनिश। ४. ४. चमडे को मुलायम करने के लिए कुसुम या बर्रे के तेल से बनाया हुआ एक प्रकार का मसाला।

रोगनदार—वि० [फा०] जिस पर रोगन किया गया हो। चमकीला।

रोग-नाशक—वि० [स० ष० त०] बीमारी दूर करनेवाला।

रोग-निदान—पु० [स० ष० त०] रोग के लक्षण, उत्पत्ति के कारण आदि की पहचान। तशखीस। (डायगनोसिस)

रोगनी—वि० [फा०] १. रोगन किया हुआ। २. जिस पर रोगन पोता या लगाया गया हो। रोगनदार। जैसे—रोगनी बरतन। ३. जिसमे रोगन चुपड़ा, मिलाया या लगाया गया हो। जैसे—रोगनी रोटी।

रोग-परोसह—पु० [स० ष० त०] उग्र रोग होने पर कुछ ध्यान न करके चुप-चाप कष्ट सहने की वृत्ति या व्रत।

रोग-विज्ञान—पु० [सं०] आधुनिक चिकित्सा-शास्त्र की वह शाखा, जिसमें रोग की प्रकृति या स्वरूप और उसके कारण होनेवाले शारीरिक विकारों आदि का विवेचन होता है। (पैथॉलोजी)

रोग-शिला—स्त्री० [स० ष० त०] मनःशिला। मैनसिल।

रोगाक्रांत—वि० [स० रोग-आक्रांत, तृ० त०] रोग से ग्रस्त। व्याधि से पीड़ित।

रोगाणु—पु० [स० रोग-अणु, ष०त०] वे दूषित या विषाक्त अणु जो शरीर मे पहुँचकर अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न करते है, अथवा कुछ अवस्थाओं मे पदार्थों मे खमीर उठाते हैं। जीवाणु। (बैक्टीरिया)

रोगातुर—वि० [स० रोग-आतुर, तृ० त०] रोग से घबराया हुआ। व्याधि से पीड़ित।

रोगार्त्त—वि० [सं० रोग-आर्त्त, तृ० त०] रोग से दु.खी।

रोगिणी—वि० 'रोगी' का स्त्री०।

रोगिल—वि० [स० रोग+इलच्] जिसे रोग हुआ हो। रोग-युक्त। रोगी।

पु० कुत्ते को होनेवाला पागलपन।

रोगिया—पु० [हिं० रोग+इया (प्रत्य०)] रोगी। बीमार।

रोगी (गिन्)—वि० [स०√रुज् (हिंसा)+घिनुण्] [स्त्री० रोगिणी] जिसे कोई रोग हुआ हो। रोगयुक्त। अस्वस्थ। बीमार।

रोचक—वि० [स०√रुच् (प्रीति)+णिच्+ण्वुल्—अक] [भाव० रोचकता] १ रुचने या अच्छा लगनेवाला। प्रिय। २ मनोरजक। पु० १ क्षुधा। भूख। २. केला। ३ प्याज। ४ एक प्रकार की ग्रंथिपर्णी जिसे नेपाल मे 'भँडेउर' कहते है। ५ काँच की कुप्पियाँ, प्यालियाँ आदि बनानेवाला कारीगर।

रोचकता—स्त्री० [स० रोचक+तल्+टाप्] १ रोचक होने की अवस्था या भाव। २. किसी चीज का वह गुण जिसके फलस्वरूप वह रोचक प्रतीत होती है।

रोचक-द्वय—पु० [स० ष० त०] विट् लवण और सेंधव लवण। (वैद्यक)

रोचन—वि० [सं०√रुच् (प्रीति)+णिच्+ल्यु—अन] १ अच्छा या प्रिय लगनेवाला। रुचनेवाला। रोचक। २. दीप्तिमान। चमकीला। ३. शोभा देने या फबनेवाला।
पुं० १. कूट शाल्मलि। काला सेमल। २. कमीला। ३. सफेद सहिजन। ४. प्याज। ५. अमलतास। ६. करंज। कंजा। ७. अकोट। अकोल। ८. अनार। ९. रोचना। रोली। १०. गोरोचन। ११. कामदेव के पाँच बाणो मे से एक। १२. पुराणानुसार एक पर्वत। १३. रोगो के अधिष्ठाता एक प्रकार के देवता। (हरिवंश) १४ स्वारोचिष् मन्वतर के इन्द्र का नाम।
रोचनक—पुं० [सं० रोचन+कन्] १. जँबीरी नीबू। २. वंश-लोचन।
रोचन-फल—पुं० [सं० ब० स०] बिजौरा नीबू।
रोचना—स्त्री० [सं०√रुच्+णिच्+युच्-अन,+टाप्] १ उज्ज्वल आकाश। २. रक्त कमल। ३. वंशलोचन। ४. काला सेमल। ५. गोरोचन। ६. सुंदर स्त्री। ७. वासुदेव की पत्नी।
रोचनी—स्त्री० [सं० रोचन+ङीप्] १ आमलकी। आँवला। २. गोरोचन। ३. मैनसिल। ४ सफेद सेमल। ५. कमीला। ६ वती। ७ तारागण।
रोचमान—वि० [सं०√रुच् (दीप्ति)+शानच्, मुक्-आगम] १ चमकता हुआ। २. सुशोभित होता हुआ।
पुं० १ घोड़े की गरदन पर की एक भँवरी। २. कार्तिकेय का एक अनुचर।
रोचि (चिस्)—स्त्री० [सं०√रुच्+इसुन्] १. प्रभा। दीप्ति। २. किरण। रश्मि। ३. चारो ओर फैली हुई शोभा।
रोचिष्णु—वि० [सं०√रुच्+इष्णुच्] १. चमकदार। चमकीला। २ जगमगाता हुआ।
रोची—स्त्री० [सं०√रुच्+इन+ङीष्] एक प्रकार का शाक। हिलमोचिका।
रोज—पुं० [फा० रोज] १. दिन। दिवस। जैसे—उसे गए चार रोज हो गए। २ प्रतिदिन के हिसाब से मिलनेवाला पारिश्रमिक या मजदूरी। जैसे—आज-कल वह ३) रोज पर काम करता है।
अव्य० प्रतिदिन। जैसे—उसे रोज आना-जाना पड़ता है।
पुं० [सं० रोदन] १. रोना। रुदन। उदा०—रोज सराजनि के परै, हँसी ससी की होय।—बिहारी। २. रोना-पीटना। विलाप।
रोजगार—पुं० [फा० रोजगार] १. वह काम जो किसी को जीविका निर्वाह के लिए रोज या प्रतिदिन करना पड़ता हो। पेशा। जैसे—उनका भीख माँगना रोजगार बन गया है। २. व्यवसाय। व्यापार। जैसे—उनका लकड़ी का रोजगार है।
रोजगारी—पुं० [फा० रोजगारी] वह जो कोई रोजगार करता हो। व्यापारी। सौदागर।
रोजनामचा—पुं० [फा० रोजनामच] १ वह छोटी किताब या बही जिस पर रोज का किया हुआ काम लिखा जाता है। दिनचर्या की पुस्तक। दैनंदिनी। जैसे—पटवारियो या पुलिस का रोजनामचा। २. वह बही जिस पर नित्य प्रति की आय और व्यय लिखा जाता है।
रोज-ब-रोज—अव्य० [फा० रोज ब रोज] प्रतिदिन। नित्य।
रोजमर्रा—अव्य० [फा० रोजमर्रः] प्रतिदिन। हर रोज। नित्य।
पुं० १. नित्य प्रति होता रहनेवाला काम। २. नित्य के बोल-चाल की भाषा। दे० 'बोल चाल' के अन्तर्गत साहित्यिक अर्थ।
रोजा—पुं० [फा० रोजा] १. व्रत। उपवास। २. विशेषतः रमजान के महीने मे हर दिन रखा जानेवाला उपवास या व्रत।
क्रि० प्र०—खोलना।—टूटना।—रखना।
३ रमजान का प्रत्येक दिन, जिसमे व्रत रखने का विधान है। जैसे—आज पाँचवाँ रोजा है।
† पुं०=रौजा (समाधि)।
रोजाखोर—पुं० [फा० रोजाखोर] रोजा न रखनेवाला व्यक्ति। (मुसलमान)
रोजादार—पुं० [फा० रोजादार] वह मुसलमान जो रमजान मे नियमित रूप से महीने भर रोजो रखता हो।
रोजाना—अव्य० [फा० रोजान] प्रतिदिन। हर रोज। नित्य।
पुं० प्रतिदिन के हिसाब से नित्य मिलनेवाला पारिश्रमिक या वेतन।
रोजी—स्त्री० [फा० रोजी] १ रोज का खाना। नित्य का भोजन।
पद—रोजी, रोजगार।
क्रि० प्र०—देना।—पाना।—मिलना।
मुहा०—रोजी चलना=भोजन-वस्त्र मिलता जाना। जीविका का निर्वाह होता रहना। रोजी से लगना=जीविका-निर्वाह का साधन प्राप्त करना।
२. काम-धन्धा। रोजगार। व्यापार। ३. मध्य युग मे एक प्रकार का पुराना कर या महसूल जिसके अनुसार व्यापारियो को एक-एक दिन राज्य का काम करना पड़ता था।
स्त्री० [देश०] गुजरात मे होनेवाली एक प्रकार की कपास जिसके फूल पीले होते है।
रोजीदार—वि० [फा०] १ जिसको रोजाना खर्च के लिए कुछ मिलता हो। २. जो किसी रोजी मे लगा हो। जिसकी जीविका का साधन वर्तमान हो।
रोजीना—वि० [फा० रोजीन] रोज का। नित्य। दैनिक।
पुं० प्रतिदिन के हिसाब से नित्य मिलनेवाली मजदूरी, वेतन, वृत्ति आदि। जैसे—उसका २) रोजीना मिलता है।
रोजी-बिगाड़—वि० [फा० रोजी+हिं० बिगाड़] १ अपनी या दूसरों की लगी हुई रोजी जानबूझकर बिगाड़ देनेवाला। २ निखट्टू।
रोजी-रोजगार—पुं० [फा०] जीविका के निर्वाह का साधन। जैसे—उनके चारो लड़के रोजी-रोजगार मे लगे हैं।
क्रि० प्र०—से लगना।
रोझ—स्त्री० [देश०] नील गाय। गवय। उदा०—हरिन रोझ लगुला बन बसे।—जायसी।
रोट—पुं० [हिं० रोटी] १ गेहूँ के आटे की बहुत मोटी रोटी। लिट्ट। २ देवताओ आदि पर चढ़ाने के लिए एक प्रकार की मीठी मोटी रोटी।
मुहा०—रोट होना या हो जाना = दब या पिसकर सपाट (अर्थात् निकम्मा और नष्ट) होना। उदा०—बिसरै भुगुति होइ सुभ रोटा।—जायसी।
३. हाथी का रातिब।
रोटका—पुं० [देश०] बाजरा।

रोटिका—स्त्री०[सं० √रुट्+ण्वुल्—अक,+टाप्, इत्व] छोटी रोटी। चपाती।

रोटिहा—पुं०[हिं० रोटी+हा (प्रत्य०)] केवल रोटी अर्थात् साधारण भोजन के बदले में काम करनेवाला नौकर। (तुच्छता-सूचक) जैसे—रोटिहा चाकर मुसहा घोड़। (कहा०)

रोटिहान—पुं०[हिं० रोटी] चूल्हे के पास का मिट्टी का वह छोटा चबूतरा जिसपर पकाई हुई रोटियाँ रखी जाती हैं।

रोटी—स्त्री०[?] १. गेहूँ, जौ, बाजरे मक्का आदि अन्नों के गुँधे हुए आटे से आँच पर सेंककर पकाई हुई वह चिपटी, पतली और वर्तुल चीजें जो अधिकतर देशों में लोग नित्य पेट भरने के लिए खाते हैं। (इसके चपाती, परांठा, फुलका आदि अनेक रूप होते हैं।)

पद—रोटी का पेट=रोटी का वह तल जो पहले गरम तवे पर डाला जाता है। **रोटी की पीठ**—रोटी का वह तल या पार्श्व जो उसका विपरीत तल या पार्श्व पक जाने पर उलटकर तवे पर डाला जाता है।

क्रि० प्र०—खाना।—पकाना।—बनाना।—सेंकना।

२. एक समय प्राय एक साथ बनाई जानेवाली कुछ विशिष्ट चीजें जिनमें उक्त खाद्य पदार्थ के सिवा चावल, दाल, तरकारी आदि भी सम्मिलित रहती हैं। रसोई। जैसे—(क) उनके यहाँ दोनो समय रोटी बनाने के लिए ब्राह्मणी आती है। (ख) हम चार दिन दिल्ली रहे, पर उन्होंने किसी दिन रोटी तक के लिए न कहा।

पद—रोटी-कपड़ा, रोटी-दाल।

मुहा०—(किसी की या किसी के यहाँ) **रोटियाँ तोड़ना**=किसी के घर पड़े रहकर उसकी कृपा से अपना पेट पालना। बैठे-बैठे किसी का दिया खाना। जैसे—साल भर में तो वह अपने ससुर की (या ससुर के यहाँ) रोटियाँ तोड़ रहा है। (किसी **को**) **रोटियाँ लगना**=किसी को पूरा और मुफ्त का भोजन मिलने से मोटाई सूझना। भर-पेट भोजन पाकर इतराते फिरते रहना।

३. उक्त प्रकार की चीजें खाने के लिए किसी के यहाँ मिलनेवाला निमन्त्रण। जैसे—आज भाई साहब के यहाँ उनकी रोटी है (अर्थात् उन्हें रोटी आदि खाने का निमन्त्रण मिला है)। ४. जीविका-निर्वाह का ऐसा साधन जिससे अपना और अपने परिवार का पेट पाला जाता हो।

मुहा०—**रोटी कमाना**=जीविका उपार्जन करना। (किसी काम या बात की) **रोटी खाना**=किसी काम या बात के द्वारा ही अपनी जीविका चलाना या निर्वाह करना। जैसे—वह तो दूसरों में लड़ाई-झगड़ा कराने की ही रोटी खाता है। **रोटियाँ लगना**=ऐसी स्थिति में आना या होना कि अपना और बाल-बच्चों का पेट भरने का कष्ट न रह जाय। जीविका निर्वाह का साधन प्राप्त होना। जैसे—उन्हें नौकरी मिल गई, चलो रोटियों से लग गए।

रोटी-कपड़ा—पुं०[हिं०] १. भोज्य पदार्थ और पहनने के वस्त्र। रोटी-कपड़े के लिए अर्थात् भरण-पोषण के लिए दिया जानेवाला धन। जैसे—उसने अपने पति पर रोटी-कपड़े का दावा किया है।

रोटी-दाल—स्त्री० [हिं०] १. चावल, दाल, रोटी आदि कच्ची रसोई। २. साधारण रूप से चलनेवाली जीविका। जैसे—आज-कल तो रोटी-दाल चली चले यही बहुत है।

क्रि० प्र०—चलना।

रोटी-फल—पुं०[हिं० रोटी+फल] १. एक प्रकार के वृक्ष का फल जो खाने में बहुत अच्छा होता है। २. उक्त का पेड़ जो अनन्नास और कटहल के पेड़ों की तरह होता है।

रोठा—पुं०[देश०] १. एक प्रकार का बाजरा। २. गुठली की तरह की कोई गोलाकार कड़ी और ठोस चीज। उदा०—कँवल सो कँवल सुपारी रोठा।—जायसी।

†पुं०=रोड़ा।

रोडवेज—पुं०[अं०] आधुनिक भारत में किराये पर चलनेवाली बड़ी मोटर गाड़ियों (बसों) के द्वारा जनसाधारण के परिवहन का राजकीय विभाग।

रोड़ा—पुं०[सं० लोष्ठ, प्रा० लोट्ठ,] १. ईंट, पत्थर आदि का टुकड़ा। २ लाक्षणिक अर्थ में, कोई ऐसी चीज जो किसी काम में बाधक होती है। जैसे—रोड़े, चलनेवाले के मार्ग में बाधक होते हैं।

मुहा०—(किसी काम में) **रोड़ा अटकाना या डालना**=विघ्न या बाधा डालना।

३. घर या मकान जो ईंटों, पत्थरों, रोड़ों (अर्थात् मकान बनाने की सामग्री) से बनता है। उदा०—'या खाय घोड़ा या खाय रोड़ा।' (कहा०) ४. [स्त्री० अल्पा० रोड़ी] किसी चीज का टुकड़ा। भेली। जैसे—गुड़ की रोड़ी।

पुं०[सं० आरट्ट] पंजाब की अरोड़ा नामक जाति।

पुं०[?] पंजाब में होनेवाला एक प्रकार का धान जिसके लिए सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती।

रोड़ी—स्त्री०[हिं० रोड़ा] वह छोटे छोटे पत्थर के टुकड़े जो सड़क आदि बनाने के काम आते हैं।

रोद (स्)—पुं०[सं० √रुद् (रोना)+असुन्] १. स्वर्ग। २. भूमि।

पुं०[?] मुसलमान। (डिं०)

रोदन—पुं०[सं० √रुद् (रोना)+ल्युट्—अन] १. अश्रुपात करना। रोना। २. क्रंदन। विलाप करना।

रोदना—अ०=रोना।

रोदसी—स्त्री०[सं० रोदस्+ङीष्] १. स्वर्ग। २. जमीन। भूमि। ३ पृथ्वी।

रोदा—पुं०[सं० रोध=किनारा] १. धनुष की डोरी। चिल्ला। २. वह बारीक तांत जिससे सितार के परदे बाँधे जाते हैं।

रोध—पुं०[सं०√ रुध् (रोकना)+अच्] १. आगे बढ़ने से रोकनेवाली चीज, तत्त्व या बात। २. चारों ओर से रोकने के लिए बनाया हुआ घेरा। (ब्लाकेड, सीज) ३. [√रुध्+घञ्] जलाशयों आदि का बाँध। (डैम) ४ [√रुध्+अच्] तट। किनारा। ५. छोटा बगीचा। बारी।

रोध-अधिकार—पुं० [सं०]=निषेधाधिकार। (दे०)

रोधक—वि०[सं० √ रुध्+ण्वुल्—अक] रोकनेवाला।

रोधकृत्—पुं० [सं० रोध√ कृ (करना)+क्विप्, तुक्—आगम] साठ संवत्सरो मे से पैंतालीसवाँ संवत्सर। (फलित ज्योतिष)

रोधन—पुं०[सं०√रुध्+ल्युट्—अन] १. रोकने की क्रिया या भाव। २. बाधा। रुकावट। ३. दमन। ४. बुध ग्रह।

†पुं०=रुदन (रोना)।

रोधना—स०[सं० रोधन] १. रोकना। २. बँधना।

रोध-प्रतिकूला—स्त्री० =रोध-वक्रा।

रोध-वक्रा—स्त्री०[सं० सुप्पुपा स०] टेढ़े-मेढ़े किनारोंवाली नदी।

रोध्र—पुं०[सं०√ रुध्+रन्] १ अपराध। २ पाप। ३ लोध।

रोना—अ०[सं० रोदन, प्रा० रोअन] १. दु खी व्यक्ति का ऐसी स्थिति मे होना कि उसकी आँखों से आँसू बह रहे हो। रुदन करना।

संयो० क्रि०—देना।—पडना।—लेना।

मुहा०—**रोना-कलपना या रोना-धोना** = बहुत दु खी होकर विलाप करना और अपने कष्टो की चर्चा करना। जैसे—जो चला गया, उसके लिए अब रोना कलपना (या रोना-धोना) व्यर्थ है। **रोना-पीटना** = छाती या सिर पर हाथ मार-मार कर विलाप करना (प्राय. किसी की मृत्यु होने अथवा बहुत बडी हानि होने पर)। जैसे—लडके के मरने (अथवा घर के लुटने) से लोगों मे रोना-पीटना मच गया। (**किसी चीज या बात पर**) **रो बैठना** = अच्छी तरह रो चुकने पर निराश होकर रह जाना। जैसे—हमारा हजारो रुपये का जो माल वे उठा ले गए, उसके लिए तो हम पहले ही रो बैठे। **रो-रोकर**=बहुत कठिनता से। दु ख और कष्ट महते हुए (प्रसन्नतापूर्वक नही)। जैसे—उसने रो-रोकर काम किया है। **रो-रोकर घर भरना**=बहुत विलाप करना।

२ किसी प्रकार का कष्ट या हानि के लिए बहुत अधिक दु खी होना। जैसे—(क) वे तो अपने रुपयो के लिए रोते है। (ख) वह बैठी अपनी किस्मत को रो रही है।

मुहा०—(किसी के आगे) **रोना-गाना** = सहायता आदि पाने के उद्देश्य से विनीत भाव से अपना कष्ट या दुःख किसी से कहना। **अपना रोना रोना** रोते हुए अपने दुःखो की कहानी कहना।

३ किसी बात पर कुढ़ या चिढकर ऐसी आकृति बनाना या व्यवहार करना कि मानो लडको की तरह बैठकर रो रहे हो। जैसे—वह तो जरा सी बात मे रोने लगता है।

मुहा०—**खून के आँसू रोना** इतना अधिक दुःखी होकर रोना कि मानो आँखो से आँसुओ की जगह खून की बूँदें निकल रही हो।

पुं० अभाव, कष्ट, हानि आदि की ऐसी स्थिति जो मनुष्य को बहुत अधिक दु खी करती या रखती हो। जैसे—यहाँ इसी बात का रोना है कि तुम किसी का कहना नही मानते।

वि०[स्त्री० रोनी] १. जो बात-बात पर रोने लगता हो। २ बहुत जल्दी चिढने या बुरा माननेवाला, प्राय बहुत अधिक दु खी रहनेवाला। जैसे—ऐसे रोने आदमी से तो सदा दूर ही रहना चाहिए।

रोनी-धोनी—स्त्री० [हिं० रोना+धोना] १ रोने-धोने की वृत्ति। २. कष्ट या दु ख की ऐसी स्थिति जिसमे आदमी को रोना पडता हो। ३ मनहूसी।

रोप—पुं० [सं० √ रुह (उद्भव)+णिच्+घञ्, ह—प, वा √रूप् (विमोहन)+घञ्] १ ठहरने की क्रिया या भाव। ठहराव। २.किसी को मुग्ध करके उसमे बुद्धि-भ्रम उत्पन्न करना। ३. मोहित करना। मोहना। ४ तीर। बाण। ५ छेद। सूराख।

पुं०[देश०] हल की एक लकडी जो हरिस के छोर पर जघे के पार लगी रहती है।

रोपक—वि० [सं०√रुह+णिच् ह—प,+ण्वुल्—अक] १ रोपण या स्थापन करनेवाला। २. रोपनेवाला। ३. जमाने या लगानेवाला।

पुं०[स०] सोने-चाँदी की एक पुरानी तौल या मान जो सुवर्ण का ७०वाँ भाग होता था।

रोपण—पुं०[स०√रुह्+णिच् ह्—प+ल्युट्—अन] [भू० कृ० रोपित, वि०रोप्य] १ ऊपर रखना या स्थापित करना। २ (पौधे, बीज आदि) जमाना। बैठाना। लगाना। ३ बनाकर खड़ा या तैयार करना। ४. अपने प्रति अनुरक्त या मोहित करना। ५. घाव भरनेवाली क्रिया या चिकित्सा करना। मरहम या लेप लगाना। ६. विचारों में गड़बड़ी डालना। बुद्धि फेरना।

रोपना—स०[स० रोपण] १ पौधा या बीज जमाना। लगाना। बैठाना। बोना। ३ कुछ विशिष्ट प्रकार के पौधो को एक स्थान से उखाड़कर दूसरे स्थान पर लगाना। दृढतापूर्वक कोई चीज स्थापित या स्थित करना। ४. कोई वस्तु लेने के लिए हथेली या कोई चीज सामने करना। पसारना। फैलाना। जैसे—किसी के आगे हाथ रोपना। पाने, माँगने या लेने के लिए हाथ फैलाना या बढाना। ५. (आघात या वार) किसी अग या अस्त्र पर लेना या सहना। ओडना।

रोपनी—स्त्री०[हिं० रोपना] १ रोपने की क्रिया या भाव। २ वह समय जिन दिनो धान रोपा जाता है।

रोपित—भू० कृ०[स०√रुह्+णिच्—ह्स्य प,+क्त] १ जिसका रोपण किया गया हो। जमाया या लगाया हुआ। २ रखा या स्थापित किया हुआ। ३ मुग्ध या भ्रांत किया हुआ। ४ उठाया या खडा किया हुआ।

रोब—पु०[अ० रुअब] [वि० रोबीला] १ किसी के बडप्पन, महत्त्व, शक्तिशालिता आदि की वह स्थिति जिसका दूसरो पर आतककारक प्रभाव पडता हो। धाक। दबदबा। जैसे—सारे दफ्तर पर उसका रोब छाया रहता था।

क्रि० प्र०—छाना।—जमना।

२ महत्त्व, शक्तिशालिता आदि का ऐसा प्रदर्शन जो औरो के मन मे आतक उत्पन्न करने के लिए हो। जैसे—यह रोब किसी और को दिखाना।

क्रि० प्र०—गाँठना।—जमाना।—दिखाना।

पद—**रोब-दाब**।

मुहा०—**किसी के रोब में आना** किसी के उक्त प्रकार के बल-प्रदर्शन से प्रभावित होकर उसके सामने झुक या दब जाना। भय मानकर दब जाना।

३ किसी की आकृति, रूप आदि मे दिखाई देनेवाला ऐसा बड़प्पन जिससे लोग प्रभावित होकर दबते हो। जैसे—उसके चेहरे पर रोब है।

रोब-दाब—पु०[हिं०] आतक और उसके कारण पडनेवाला दबाव या प्रभाव।

रोबदार—वि०[हिं० रोब+फा० दार] जिसका दूसरो पर जल्दी प्रभाव पडता हो। दूसरो पर अपना आतक जमाने मे समर्थ।

रोबीला—वि०[हिं० रोब+इला (प्रत्य०)] (व्यक्ति या आकृति) जो रोब से युक्त हो। रोबदार।

रोमथ—पु० [स० रोग√ मन्थ् (विलोड़न)+अण्, पृषो० ग-लोप] जुगाली। पागुर।

रोम (मन्)—पुं०[स०√ रु (गति)+मनिन्] १. देह के बाल। रोम। २ शरीर पर का छोटा पतला तथा नरम बाल। रोआँ।

मुहा०—रोम-रोम में=शरीर के सभी छोटे-बड़े अंगों में अर्थात् सारे शरीर में। मुहा०—रोम रोम से=तन-मन से। पूर्ण तथा शुद्ध हृदय से। जैसे—रोम-रोम से आशीर्वाद देना।

पद—रोमराजी, रोमलता, रोमावली।

३. छेद। सूराख। ४. जल। पानी।

पुं०१. रूम देश। २. इटली देश की राजधानी।

रोमक—पुं०[सं० रोमन्√कै (प्रतीत होना)+क] १. साँभर झील का नमक। साकम्भरी लवण। पांशु लवण। २ रोम नामक देश या नगर का निवासी। ३. रोम नामक देश और नगर। ५ ज्योतिष सिद्धान्त का एक भेद या शाखा।

वि० रोम देश या नगर का।

रोम-कूप—पुं० [सं० ष० त०] शरीर के वे छिद्र जिनमे से रोएँ निकले हुए होते हैं। लोम-छिद्र।

रोम-केसर—पुं०[सं० ष० त०] चँवर। चामर।

रोम-गुच्छ—पुं०[सं० ष० त०] चँवर। चामर।

रोम-द्वार—पुं०[सं० ष० त०] रोम-कूप। (दे०)

रोमन—वि०[रोम नगर से] रोम देश सम्बन्धी। रोम का।

पुं० रोम देश का निवासी।

स्त्री० रोम देश की लिपि का वह परिष्कृत रूप जिसमें आज-कल अँगरेजी आदि भाषाएँ लिखी जाती हैं।

रोमन-कैथलिक—पुं०[अं०] ईसाइयो का एक सम्प्रदाय जिसमे प्रायः ईसा की मूर्ति रखकर पूजी जाती है, और उसकी उपासना की जाती है।

रोम-पट—पुं०[सं० ष० त०] ऊनी कपड़ा।

रोम-बद्ध—वि०[सं० तृ० त०] जो रोओं से बँधा, बना या बुना हो।

पुं०१ ऊनी कपड़ा। २. ऊन की बनी हुई कोई चीज।

रोम-भूमि—स्त्री० [सं० ष० त०] चमड़ा। त्वक्।

रोम-राजी—स्त्री०[सं० ष० त०] १. रोमावलि। रोओं की पंक्ति। रोओं की वह रेखा जो नाभि से ठीक ऊपर की ओर जाती है।

रोम-लता—स्त्री०[सं० ष० त०] रोमावलि। रोमराजी।

रोम-हर्ष—पुं०[सं० ष० त०] आतंक, भय, बीभत्सता आदि के कारण रोंगटे खड़े होना। रोमांच। पुलक।

रोम-हर्षक—वि० [सं० ष० त०] रोम-हर्ष उत्पन्न करनेवाला। रोंगटे खड़े करनेवाला अर्थात् दारुण या भीषण।

रोम-हर्षण—पुं०[सं० ष० त०] १. रोमांच। सिहरन। रोओं का खड़ा होना, जो अत्यन्त आनन्द के सहसा अनुभव अथवा भय से होता है। २. सूत पौराणिक।

वि० रोंगटे खड़े करनेवाला। भीषण।

रोमांच—पुं०[सं० रोमन्-अंच, ष० त०] १. आश्चर्य, भय, हर्ष आदि के कारण शरीर के रोओं का खड़ा होना। पुलक। २ भय आदि से अथवा बीभत्स दृश्यों आदि के कारण रोएँ खड़े होना।

रोमांचित—भू० कृ० [सं० रोमांच+इतच्] जिसे रोमांच हुआ हो। पुलकित।

रोमांतिका मसूरिका—स्त्री०[सं० रोमन्-अंतिका, ष०त०, रोमांतिका और मसूरिका, व्यस्त पद] चेचक की तरह का एक रोग।

रोमाग्र—पुं० [सं० रोमन्-अग्र, ष० त०] रोएँ की नोक या सिरा।

रोमाली—स्त्री०[सं० रोमन्-आली, ष० त०] रोओं की पंक्ति। रोमावली। रोमराजी।

रोमावलि, रोमावली—स्त्री० [सं० रोमन्-अवलि (ली), ष० त०] रोओं की पंक्ति जो पेट के बीचो-बीच नाभि से ऊपर की ओर गई होती है। रोमावली। रोमराजी।

रोमिका—स्त्री०[सं०] १ छोटा रोआँ। २ जैव और वानस्पतिक कोषाणुओं पर उगनेवाले बहुत छोटे-छोटे रोएँ। (सिलिया)

विशेष—पुलक और रोमांच मे मुख्य अंतर यह है कि पुलक तो केवल आनन्द या हर्ष से होता है, परन्तु रोमांच का कारण हर्ष के सिवा आश्चर्य, भय आदि अन्य मनोविकार भी हो सकते हैं।

रोमिल—वि०[सं० रोमवत्] जिस पर रोम हों। रोएँदार। बालोंवाला।

रोमोद्गम—पुं०[सं० रोमन् उद्गम, ष० त०] रोमांच।

रोयाँ—पुं०=रोआँ।

रोर—स्त्री०[अनु०]१ बहुत से लोगों के एक साथ चिल्लाने का शब्द। शोर-गुल। हल्ला। २. उपद्रव। उत्पात। ३ आंदोलन। ४. शब्द। उदा०—मेरे उर मे भी भर मधु रोर।—पन्त।

वि० १. प्रचंड। २. उपद्रवी।

रोरा—वि०[हिं० रूरा] [स्त्री० रोरी] सुन्दर। रुचिर।

†पुं० १.=रोर। २ =रोड़ा।

रोरी—स्त्री०[हिं० रोर]१ =चहल-पहल। धूम। २. दे० 'रोर'।

†स्त्री०[?] लहसुनिया नामक रत्न।

स्त्री०=रोली।

रोलंब—पुं०[सं०√रु (शब्द)+विच्, रो√लम्ब्+अच्] १. भ्रमर। भौंरा। भँवर। २ सूखी जमीन।

वि० सहसा किसी का विश्वास न करनेवाला।

रोल—पुं०[हिं० रोलना] रोलने की क्रिया या भाव।

पुं०[देश०] कसेरों का एक उपकरण।

†पुं० =रोर।

†पुं०=रेला।

रोलना—स०[?]१ किसी चीज मे उँगलियाँ डालकर उसे हिलाना-डुलाना। जैसे—मोती रोलना। २. किसी चीज को छेड़ना, हिलाना-डुलाना या घुमाना-फिराना। उदा०—घोड़ा और फोड़ा जितना ही रोलो उतना ही बढ़े। (कहा०) ३. बहुत अधिक मात्रा मे कोई चीज पाकर मनमाने ढंग से उसे इधर-उधर करना या छितराना। ४ उबटन, लेप आदि अंगो मे लगाना।

रोलर—पुं०[अं०]१ ढुलकनेवाली वस्तु। २ बेलन। बेलना। ३. छापे की कल मे वह बेलन जिससे अक्षरो पर स्याही लगती है। ४. कंकड़ आदि दबाकर सड़क चौरस करनेवाला बेलन जो यों ही खींचा या इंजन के आगे लगाकर चलाया जाता है।

रोला—पुं०[सं०]१. एक प्रकार का छंद जिसके चारो चरणो मे ११+१३ के विश्राम से २४-२४ मात्राएँ होती हैं।

†पुं० =रोर। (पश्चिम)

पुं०[हिं० रोलना] जूठे बरतन माँजने का काम और मजदूरी।

रोली—स्त्री०[सं० रोचनी] एक प्रकार का चूर्ण जो हल्दी और चूने के योग से बनता है, और पवित्र माना जाता है।

रोवनहार—वि०[हि० रोवना+हार (प्रत्य०)] रोनेवाला।
पुं० किसी के मर जाने पर उसके लिए रोकर शोक मनानेवाला उत्तराधिकारी।

रोवना—अ०, वि०=रोना।

रोवनिहारा—वि० रोवनहार।

रोवनी-धोवनी—स्त्री० =रोनी-धोनी।

रोवाँ—पुं०=रोआँ।

रोवाँसा—वि०[स्त्री० रोवाँसी] रोआँसा।

रोशन—वि०[फा०] १ रोशनी या प्रकाश से युक्त। प्रकाशमान्। २ जलता हुआ। प्रदीप्त। जैसे—चिराग रोशन होना। ३ जिसमे खूब चहल-पहल और आनन्द-मगल हो। जैसे—महफिल रोशन होना। ४ किसी प्रकार की कीर्ति या यश से युक्त, और फलत प्रसिद्ध या विख्यात। ५ जाहिर। प्रकट। विदित। जैसे—यह बात सब पर रोशन हो जायगी।

रोशन-चौकी—स्त्री०[फा०] १ नफीरी नामक बाजा। २ शहनाई नामक वाद्य-समूह।

रोशन-दान—पु०[फा०] १ कमरे की दीवार के ऊपरी भाग मे बना हुआ वह थोडा खुला स्थान, जिसमे से प्रकाश आता है। २ उक्त स्थान मे लगी हुई कोई जाली अथवा लकडी आदि का ढाँचा।

रोशनाई—स्त्री०[फा०] १ अक्षर आदि लिखने की स्याही। मसि।
†स्त्री० =रोशनी।

रोशनी—स्त्री०[फा०] १. उजाला। प्रकाश। २. चिराग। दीपक। ३ आनन्दोत्सव के समय बहुत-से दीपक जलाकर किया जानेवाला प्रकाश। दीपोत्सव। ४ ज्ञान आदि का प्रकाश।

मुहा०—रोशनी डालना=किसी विषय को अधिक सुबोध तथा स्पष्ट करना।

रोष—पु०[स०√ रुष्(क्रोध)+घञ्] [वि० रुष्ट] १ क्रोध। कोप। गुस्सा। २ ऐसा क्रोध जो मन मे ही दबा या छिपा रहे। कुढन। ३ वैर। विरोध।

रोषण—पुं०[स० √ रुष्+युच्—अन] १ पारा। २ कसौटी। ३ ऊसर जमीन।
वि० रोष उत्पन्न करनेवाला। २ मन मे रोष करनेवाला। ३ क्रोध प्रकट करनेवाला। क्रुद्ध।

रोषानल—पु०[सं० रोष-अनल,कर्म० स०] क्रोध रूपी अग्नि। ऐसा विकट क्रोध जो जलाकर भस्म या नष्ट कर डालना चाहता हो।

रोषान्वित—भू० कृ०[सं० रोष-अन्वित, तृ० त०] रोष से युक्त। क्रुद्ध। नाराज।

रोषित—भू० कृ०[स० रोष+इतच्] जो क्रोध से युक्त हुआ हो। क्रुद्ध। नाराज।

रोषी(षिन्)—वि० [सं० रोष+इनि] रोष अर्थात् क्रोध करनेवाला। क्रोधी।

रोस—पु०=रोष।
स्त्री० =रौंस।

रोसनाई†—स्त्री०=रोशनाई।

रोसनी†—स्त्री० रोशनी।

रोसा†—पुं०=रूसा (घास)।

रोह—पु०[स०√ रुह् (उद्भव)+अच्] १. ऊपर चढना। चढाई। २. कली। ३ अकुर। अँखुआ।
†पुं०[?] नील गाय।
पुं०[सं० रोहित] अफगानिस्तान का मध्ययुगीन नाम।

रोहक—वि०[स०√ रुह +ण्वुल्—अक] चढनेवाला।
पुं० वह जो किसी सवारी पर चढकर चलता हो। सवार।

रोहग—पुं०[स०] सिहल द्वीप का एक पहाड। आदम चोटी। विदूराद्रि।

रोहज—पु०[?] नेत्र। (डिं०)

रोहण—पु०[स०√ रुह् (उद्भव)+ल्युट्—अन] १. ऊपर की ओर बढना। २ किसी पर चढना। ३ सवार होना। ४. बीज या पौधे का उगना या जमना। अकुरित होना। ५. वीर्य। शुक्र। ६. रोहग पर्वत।

रोहन—पु०[देश०] एक तरह का वृक्ष।
†पु०=रोहण।

रोहना—अ०[स० रोहण] १. ऊपर की ओर जाना या बढना। ऊपर चढना। २ किसी के ऊपर चढना। ३ सवार होना।
स०१. ऊपर की ओर बढाना। २ चढाना। ३ सवार कराना। ४. अपने शरीर पर धारण करना या लेना।

रोहा—पुं०[हिं० रोहना] ऐसी नाली या और कोई चीज जिसका प्रवाह ऊपर की ओर होता हो।
पु०[सं० रोह=अकुर] पलक के भीतरी भाग मे होनेवाले एक प्रकार के दाने।

रोहि—पु०[स०√ रुह+इन्] १ वृक्ष। पेड। २ बीज। ३ तपस्वी।

रोहिण—पु०[स०√ रुह+इनन्] १ पीपल। २. गूलर। ३ रूसा घास। ४ दिन का दूसरा पहर।

रोहिणिका—वि०[स० रोहिणी+कन्+टाप्, ह्रस्व] (स्त्री) जिसका मुँह क्रोध, रोग आदि के कारण लाल हो।

रोहिणी—स्त्री०[स० रोहिण+ङीष्] १ गाय। गौ। २. बिजली। विद्युत्। ३ सत्ताइस नक्षत्रो मे से चौथा नक्षत्र जिसमे पाँच तारे हैं। ४ वसुदेव की स्त्री जो बलराम की माता थी। ५ जैनो की एक देवी। ६ स्मृतियो के अनुसार ऐसी कन्या, जो अभी हाल मे रजस्वला होने लगी हो। ७ धैवत स्वर की तीन श्रुतियों मे से दूसरी श्रुति। ८. रोहू की तरह की एक प्रकार की मछली। ९ करंज। १०. रीठा। ११. मजीठ। १२ ब्राह्मी। १३ काश्मरी। १४ गभारी। १५ कुटकी। १६ सफेद कौआठोंठी। १७ लाल गदहपूरना। १८ छोटी, लंबी, पीली हड जो गोल न हो। इसे 'वण रोहिणी' भी कहते हैं। १९. एक प्रकार का विकट सक्रामक रोग, जिसमे ज्वर के साथ गले में पीडा और सूजन होती है। (डिफ्थीरिया) २०. त्वचा की छठी परत। (वैद्यक)

रोहिणी-अष्टमी—स्त्री०[सं० मध्य० स०] भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष की अष्टमी, जिसमे चंद्रमा रोहिणी नक्षत्र में रहता है।

रोहिणी-पति—पु०[स० ष० त०] चन्द्रमा।

रोहिणी-योग—पुं०[सं० ष० त०] आषाढ के कृष्णपक्ष में रोहिणी का चन्द्रमा के साथ होनेवाला योग।

रोहिणी-वल्लभ—पुं०[सं० ष० त०] १. चन्द्रमा। २. वसुदेव।

रोहिणीश—पुं०[सं० रोहिणी-ईश, ष० त०] १. चन्द्रमा। २ वसुदेव

रोहित—वि०[सं० √रुह (उद्भव)+इतन्] लाल रंग का। रक्तवर्ण। लोहित।

पुं०१. लाल रंग का। २. रोहू मछली। ३. एक प्रकार का हिरन। ४. रोहितक वृक्ष। ५. इन्द्रधनुष। ६. कुसुम या बर्रे का फूल। ७. केसर। ८. रक्त। लहू। ९. वाल्मीकि के अनुसार एक प्रकार के गन्धर्व।

रोहितक—पुं०[सं० रोहित+कन्] रोहित (पेड़)।

रोहिताश्व—पुं०[सं० रोहित-अश्व, ब० स०] १. अग्नि। २. महाराज हरिश्चन्द्र के पुत्र का नाम। ३. आधुनिक रोहतास (गढ़ और बस्ती) का पुराना नाम।

रोहित्र—पुं०[सं०] दे० 'परिणामित्र'।

रोहिनी—स्त्री० =रोहिणी।

रोहिष—पुं०[सं०√ रुह+इषन्]१. रूसा नामक घास जिसकी जड़ें सुगंधित होती हैं। २. एक तरह का हिरन। ३. एक तरह की मछली। रोहू।

रोही (हिन्)—वि०[√रुह् +णिनि] [स्त्री० रोहिणी] १. ऊपर की ओर जानेवाला। २. चढ़नेवाला।

पुं० १. गूलर का पेड़। २. पीपल। ३. रोहिष घास। ४. एक प्रकार का हिरन। ५. रोहित या रुहेड़ा नामक वृक्ष। ६. रोहू मछली।

†पुं०[?]१ जगल। बन। २. एक प्रकार का हथियार (सिरोही)।

पुं०[सं० रोहित]खून। रक्त।

वि० लाल। सुर्ख।

रोहू—स्त्री०[सं० रोहिष]१. एक प्रकार की बड़ी मछली। २. एक प्रकार का पहाड़ी वृक्ष।

रौंटि†—स्त्री०[हिं० रोना] खेलते हुए बच्चो मे से किसी का चिढ़ या रूठ कर रोने का-सा मुंह बना लेना, और कुढ या चिढ़ जाना। उदा०—रौंटि करत तुम खेलत ही मैं।—सूर।

रौंद—स्त्री०[हिं० रौंदना] रौंदने की क्रिया या भाव।

स्त्री०[अ० राउंड] पहरेदार या सिपाहियों का गश्त लगाना।

रौंदन†—स्त्री० =रौंद।

रौंदना—स०[सं० मर्दन]१.किसी चीज को पैरो से इस प्रकार दबाना अथवा उस पर इस प्रकार चलना कि वह टुकड़े-टुकडे हो जाय अथवा बहुत ही विकृत हो जाय। २. पैरो से बहुत अधिक मार-मार कर अजर-पजर ढीले करना।

संयो० क्रि०—डालना।

रौंदी—स्त्री०[हिं० रौंदना] चौपायो के रहने का घेरा या बाड़ा।

रौंस—स्त्री०[फा० रविश] १. गति। चाल। २. चाल-ढाल। तौर-तरीका। रंग-ढंग। ३ मकान का ऐसा छज्जा, जिस पर लोग आ-जा सकें। ४. बगीचे की क्यारियों के बीच बना हुआ आने-जाने का मार्ग।

रौंसा—पुं०[सं० लोमश, रोमश=रोएँवाला] १. केवाँच। कौंछ। २. बोड़ा। लोबिया।

रौ—स्त्री०[फा०] १. गति। चाल। २. पानी का बहाव। ३. किसी प्रकार के मनोवेग की गति अथवा प्रवृत्ति। किसी काम या बात की धुन। जैसे—उस समय तुम रौ मे आगे बढ़ते चले गए, मेरी बात तुमने नहीं मानी।

वि० [फा०] १. चलनेवाला। जैसे—पेश-रौ=आगे चलनेवाला, अर्थात् नेता। २. आगे बढ़नेवाला। ३. उगने या उत्पन्न होनेवाला। जैसे—खुद-रौ=आप से आप उगने और बढ़नेवाला।

पुं०[देश०] एक प्रकार का पेड़।

†पुं० =रव (शब्द)।

रौक्म—वि० [सं० रुक्म+अण्] १. रुक्म-संबंधी। २. सोने का बना हुआ।

रौक्ष्य—पुं०[सं०√रूक्ष्+ष्यञ्] रूखापन। रुखाई। रूक्षता।

रौखुर—स्त्री०[देश०] वह भूमि जिसकी मिट्टी बाढ़ के कारण बलुई हो गई हो।

रौगन—पुं० =रोगन।

रौगनी—वि० =रोगनी।

रौचनिक—वि०[सं० रोचना+ठक्—इक] १. गोरोचन या रोली संबंधी। २ गोरोचन या रोली से बना या रंगा हुआ।

रौच्य—पुं० [सं० रुचि+ष्यण्] बेल की शाखा का दंड धारण करनेवाला संन्यासी।

रौजन—पुं० [फा० रोजन] १. छिद्र। बिल। सूराख। २. दरज। दरार। ३. गवाक्ष। झरोखा। वातायन।

रौजा—पुं०[अ० रौजा] १ बाग। बगीचा। २. किसी बड़े आदमी की कब्र के ऊपर बनी हुई बड़ी इमारत। समाधि। जैसे—ताजबीबी का रौजा।

†पुं० दे० 'रोजा'।

रौत—पुं०[हिं० रावत] ससुर।

रौताइन—स्त्री०[हिं० राव, रावत]१ राव या रावत की पत्नी। ठकुराइन। २ स्त्रियो के लिए आदरसूचक संबोधन।

रौताई—स्त्री०[हिं० रावत+आई (प्रत्य०)] १ राव या रावत होने की अवस्था, पद या भाव। २. रावतो या बड़े आदमियो की-सी अकड़ या ऐंठ। उदा०—रौताई और कूसल खेमा।—जायसी।

रौदा—पुं०[?] एक प्रकार का चावल। उदा०—झिनवा, रौदा, दाउद खानी।—जायसी।

†पुं०=रोदा (धनुष की डोरी)।

रौद्र—वि०[सं० रुद्र+अण्] [भाव० रुद्रता] १ रुद्र-संबंधी। रुद्र का। २. बहुत ही उग्र, प्रचंड, भीषण या विकट। ३. बहुत अधिक क्रोध या कोप का परिचायक अथवा सूचक।

पुं० १. क्रोध। गुस्सा। रोष। २. आतप। घाम। धूप। ३ यमराज। ४. प्राचीन काल का एक प्रकार का अस्त्र। ५. साहित्य मे नौ रसों मे से एक जो किसी प्रकार का अत्याचार, अन्याय, अपमान, अशिष्टता आदि का व्यवहार देखकर उसे रोकने या उसका प्रतिकार करने के विचार से मन मे होनेवाले क्रोध से उत्पन्न होता है। ६. गरमी। ताप। ७. ग्यारह मात्राओवाले छंदो की संज्ञा। ८. साठ संवत्सरो में से ५४वाँ संवत्सर। ९. दे० 'रौद्र-केतु'।

रौद्र-केतु—पुं०[सं० कर्म० स०] आकाश के पूर्व दक्षिण मे शूल के अगले भाग

के समान कपिश (कपासी) रूक्ष (रूखा) ताम्रवर्ण किरणा से युक्त एक केतु। (बृहत्संहिता)

रौद्रता—स्त्री०[सं० रौद्र+तल्+टाप्] १ रुद्र होने की अवस्था, भाव या गुण। २ भयकरता। भीषणता। ३ प्रखरता। प्रचडता।

रौद्र-दर्शन—वि०[सं० ब० स०] देखने म डरावना। भीषण आकृति या रूपवाला। जिसे देखने से डर लगे।

रौद्रार्क—पु०[सं०रौद्र-अर्क, उपमित० स०]१३ मात्राओ के छदो की सज्ञा।

रौद्री—स्त्री०[सं० रौद्र+ङाप्]१ रुद्र की पत्नी, गौरी। २ गाधार स्वर की दो श्रुतियो मे से पहली श्रुति।

रौन†—पु० = रमण।

रौनक—स्त्री०[अ० रौनक]१ सुन्दर वर्ण और आकृति या रूप। २ चमक-दमक और उसके कारण होनेवाली शोभा। जैसे—यह सुनते ही उनके चेहरे पर रौनक आ गई। ३. प्रसन्न वदन लोगो की चहल-पहल या जमघट। बहार। जैसे—सन्ध्या को इस बाजार में बहुत रौनक रहती है।

रौनकी—वि०[हिं० रौनक]१ रौनक लानेवाला। २ (स्थान) जहाँ रौनक हो।

रौना—पु० [फा० रवाना] द्विरागमन। गौना। मुकलावा।

†अ० = रोना।

†पुं० = रावण। (उपेक्षासूचक)

रौनी†—स्त्री० = रमणी।

रौप्य—पु०[सं० रूप्य+अण्] चाँदी। रूपा।

वि० चाँदी का बना हुआ।

रौमक—पु०[सं० रूमा+वुञ्—अक] साँभर नमक।

रौम-लवण—पु०[सं० कर्म० स०] साँभर नमक।

रौर*—स्त्री० = रार।

रौरव—वि० [सं० रुरु+अण्] १ रुरु मृग-सम्बन्धी। रुरु मृग का। २ भयकर। ३ घोर। भीषण। ४ धूर्त और बेईमान। ५ अपनी बात पर दृढ़ रहनेवाला।

पु० पुराणानुसार पाँचवाँ नरक जो बहुत भीषण कहा गया है।

रौरा†—पु० = रौला।

वि० रावरा (आपका)।

रौराना—स० [हिं० रोर, रौरा] व्यर्थ बोलना या हल्ला करना। प्रलाप करना। बकना।

रौरि*—स्त्री० = रोर।

रौरे—सर्व०[हिं० राव, रावल] आप। (आदरसूचक संबोधन)

रौलाग—पु०[?] [स्त्री० रौलागी] जोगी।

रौला—पु०[सं० रवण] १ शोर। हल्ला। २ झझट। बखेड़ा। ३. ऐसा उपद्रव जिसमे खूब हुल्लड़ हो, और यह पता न लगे कि क्या हुआ।

क्रि० प्र०—मचना।—मचाना।

रौलि—स्त्री० [देश०] १. तमाचा। थप्पड़। २ धौल (सिर पर मारी जानेवाली)।

रौशन—वि० = रोशन।

रौशनदान—पु० = रोशनदान।

रौशनाई—स्त्री० = रोशनाई।

रौशनी—स्त्री० = रोशनी।

रौस†—स्त्री० = रौंस।

रौसली—स्त्री०[देश०] एक प्रकार की चिकनी उपजाऊ मिट्टी जिसे बरसाती नदी अपने किनारो पर छोड़ जाती है।

रौसा—पु० = रौस।

पु० = रौंसा (केवाँच)।

रौहाल—पु०[देश०]१ घोड़ा। २ घोड़ो की जाति। ३. घोड़ो की एक प्रकार की गति या चाल।

रौहिण—पु०[सं० रोहिण+अण्] चदन।

रौहिणेय—पु०[सं० रोहिणी+ढक्—एय] रोहिणी के पुत्र, बलराम। २ बुध ग्रह। ३. पन्ना या मरकत नामक रत्न। ४ गौ का बच्चा। बछड़ा।

वि० रोहिणी-सम्बन्धी।

र्यासत†—स्त्री० = रियासत।

र्योरी†—स्त्री० = रेवड़ी।

र्वाब†—पु० = रोब।

ल

ल—व्याकरण तथा भाषा-विज्ञान के विचार से तालव्य, घोष, अल्पप्राण, ईषत्स्पृष्ट तथा अन्तःस्थ व्यजन।

पु० [सं०√ली+ड] १ इन्द्र। २ पृथ्वी।

प्रत्य० कुछ स्थानो के नाम के साथ 'कूल' के सक्षिप्तक के रूप मे प्रयुक्त। जैसे—काबुल (कुभा+कूल), गोमल (गोमत+कूल)।

लंक—स्त्री० [सं०] कमर। कटि।

†पु० [?] ढेर। राशि। जैसे—देखते-देखते उसने किताबों का लंक लगा दिया।

क्रि० प्र०—लगाना।

† स्त्री० = लका (द्वीप)।

लंक-टकटा—स्त्री० [सं०] १. सुकेश राक्षस की माता और विद्युत्केश की कन्या का नाम। २ पुराणानुसार सन्ध्या की कन्या का नाम।

लंक-दीप— पु० = लका (द्वीप)।

लंक-नाथ—पु० [सं० लकानाथ] १. रावण। २. विभीषण।

लंकनायक—पु० = लकनाथ।

लंक-लाट—पु० [अ० लांग क्लाथ] एक प्रकार का चिकना मोटा कपड़ा।

लंका—स्त्री०[सं०√रम् (रमण)+क बा०, रस्यल+टाप्] १. भारत के दक्षिण का एक प्रसिद्ध द्वीप जहाँ पहले रावण का राज्य था। लोगों का विश्वास है कि रावण के समय यह टापू सोने का था। २. मध्य-कालीन साहित्य मे आधुनिक सिंहल से भिन्न एक और द्वीप, जिसे

लंगबालूस भी कहा जाता था। २. शिवी वान्य। ४ असबरग। ५. काला चना। ६. वृक्ष की शाखा। डाली।

लंकाधिपति—पुं० [सं० लंका-अधिपति, ष० त०] रावण।

लंका-पति—पुं० [सं० ष० त०] १. रावण। २. विभीषण।

लंकारि—पुं० [सं० लंका-अरि, ष० त०] रामचन्द्र।

लंकारिका—स्त्री० [सं०] असबरग।

लंकाल—पुं० [?] शेर। सिंह। (डिं०) उदा०—बारह बरसा बापरी, लहै बैर लकाल।—कविराजा सूर्यमल।

लंकिनी—स्त्री० [सं०] रामचरित मानस में वर्णित एक राक्षसी जिसे हनुमान् जी ने लंका में प्रवेश करते समय घूँसों से मार डाला था।

लंकूर*—पुं०=लंगूर।

लंकेश—पुं० [सं० लंका-ईश, ष०त०] १. लका के अधिपति, रावण। २. विभीषण।

लंकेश्वर—पुं० [सं० लंका-ईश्वर, ष० त०] लंकेश।

लंकोई—स्त्री०=असबरग।

लंकोदय—पुं० [सं०] ज्योतिष मे भारत के उत्तर में रोहीतक (आधुनिक रोहतक) मध्य मे उज्जयिनी और दक्षिण में लंका से होकर जानेवाली देशांतर रेखा पर का सूर्योदय काल जो पंचांगो मे प्रामाणिक माना जाता है।

लंग—पुं० [फ०] लँगडापन।

मुहा०—लंग खाना=चलने मे कुछ लँगड़ाना।

पुं० [स०√लग् (गति)+अच्] १. मेल। योग। २. उपपति या प्रेमी।

स्त्री०=लौंग।

लंगक—पुं० [स० लग+क] उपपति। यार।

लँगटा—वि० [स्त्री० लँगटी]=नगटा (नंगा)। (उपेक्षासूचक)

लंगड़ा—वि०=लँगड़ा।

पुं०=लगर।

लँगडा—वि० [फा० लंग] [स्त्री० लँगडी, भाव० लँगडापन] १. जिसका एक पैर बेकार हो गया हो या टूटा हो। २. पैर मे किसी प्रकार का कष्ट, दोष या विकार होने के कारण जो लचककर चलता हो। ३. जिसका कोई एक आधार नष्ट या विकृत हो गया हो, और इसीलिए जो ठीक तरह से या सीधा खडा न रह सकता हो। ३. (पैर) जो टूटने के कारण या और किसी प्रकार टेढा हो गया हो।

पुं० पूर्वी उत्तर प्रदेश तथा बिहार मे होनेवाला एक प्रकार का बढ़िया मीठा आम और उसका पेड़।

लँगड़ाना—अ० [हिं० लँगड़ा] चोट आदि के फलस्वरूप चलने में दोनो या चारों पैरों का ठीक-ठीक और बराबर न बैठना, बल्कि किसी एक पैर का कुछ रुक या दबकर पड़ना। लँगड़े होने के कारण कुछ दबते और कुछ उचकते हुए चलना।

लँगड़ापन—पुं० [हिं० लँगड़ा+पन (प्रत्य०)] लँगड़े होने की अवस्था या भाव।

लँगड़ी—स्त्री० [हिं० लँगडा] एक प्रकार का छंद।

वि० [हिं० लँगर] बलवान्। शक्तिशाली। (डिं०)

लंगन†—पुं०=लंघन।

लंगनी†—स्त्री०=अलगनी।

लंग-बालूस—पुं० [?] १. मध्यकालीन साहित्य मे, लंका द्वीप। २. दे० 'लंका' २.।

लँगर—वि० [?] १. नटखट। २. दुष्ट। पाजी।

लंगर—पुं० [फा० मि० अं० एन्कर] १. लोहे का बना हुआ एक प्रकार का बहुत बड़ा काँटा जिसे नदी, समुद्र आदि में गिराकर नाव, जहाज आदि रोके जाते हैं।

पद—लंगरगाह।

मुहा०—लंगर उठाना=जहाज या नाव का लंगर उठाकर चलने को तैयार होना। लंगर छोड़ना, डालना या फेंकना=जहाज या नाव ठहराने अथवा रोकने के लिए लंगर गिराना।

२. लकड़ी का वह कुंदा जो किसी हरहाये पशु विशेषतः गौ के गले में रस्सी से इसलिए बाँध दिया जाता है कि वह भागकर दूर न जा सके। ठेंगुर। ३. लोहे की भारी और मोटी जंजीर, जो प्रायः अपराधियों के पैरो में इसलिए बाँधी जाती थी कि वे भाग न सकें।

क्रि० प्र०—डालना।—पड़ना।

४. रस्सी, तार आदि से बाँधी और लटकती हुई कोई भारी चीज, जिसका व्यवहार कई प्रकार की कलों मे उनकी गति ठीक रखने के लिए होता है।

क्रि० प्र०—चलना।—चलाना।

५. जहाजों पर काम आनेवाला बडा और मोटा रस्सा। ६. बागडोर। लगाम। ७ चाँदी का बना हुआ तोडा जो पैर मे पहना जाता है। ८. किसी चीज के नीचे का भारी और मोटा अंग या अंश। ९ कमर के नीचे का भाग। १० पहलवानों के पहनने का लँगोटा।

मुहा०—लंगर बाँधना=पहलवान बनने के उद्देश्य से कसरत करना और कुश्ती लडना।

११. वह उभरी हुई रेखा, जो अडकोष के नीचे के भाग से आरम्भ होकर गुदा तक जाती है। सीयन। सीवन। १२. अडकोष। (बाजारू)

१३. कपड़े की सिलाई में वे टाँके, जो दूर दूर इसलिए डाले जाते है जिसमे मोडा हुआ कपड़ा अथवा एक साथ सिये जानेवाले पल्ले अपने स्थान से हट न जायँ। इस प्रकार के टाँके पक्की सिलाई के पूर्व डाले जाते हैं; इसलिए इसे कच्ची सिलाई भी कहते हैं।

क्रि० प्र०—डालना।—भरना।

१४. वह स्थान जहाँ बहुत से लोगो का भोजन एक साथ पकता है। १५ वह पका हुआ भोजन जो प्राय. नित्य किसी निश्चित समय पर आगतुकों, दरिद्रो आदि को बाँटा जाता है।

पद—लंगर-खाना।

क्रि० प्र०—देना।—बाँटना।—लगाना।

१६ ऐसा व्यक्ति या स्थान जिसके द्वारा किसी को सकट के समय आश्रय मिलता हो।

वि० जिसमे अधिक बोझ हो। भारी। वजनी।

†वि० लंगर (दुष्ट और पाजी)।

लँगरई*—स्त्री० [हिं० लँगर] लँगर (अर्थात् दुष्ट या पाजी) होने की अवस्था या भाव। नटखटी। पाजीपन। शरारत।

लंगरखाना—पुं० [फा०] वह स्थान जहाँ आगन्तुकों या दरिद्रों को बना-बनाया भोजन बाँटा जाता हो।

लंगर-गाह—पु० [फा०] किनारे पर का वह स्थान जहाँ लंगर डालकर जहाज ठहराये जाते हैं। बन्दरगाह।
विशेष—यद्यपि फा० में गाह (जगह) स्त्री० ही है, फिर भी हिन्दी में उससे बने हुए बन्दरगाह, लंगरगाह आदि शब्द प्रायः पु० रूप में ही प्रचलित हैं।
लँगराई—स्त्री० [हिं० लंगर+आई (प्रत्य०)] लंगर अर्थात् दुष्ट या पाजी होने की अवस्था, क्रिया या भाव। नटखटी। शरारत।
लँगराना†—अ०=लँगड़ाना।
लँगरैया—स्त्री०=लँगराई।
लंगल—पु० [सं०√लग्+कलच्] हल।
लंगी—स्त्री० [फा० लंग=लँगड़ा] कुश्ती का एक दाँव, जिसमें अपनी एक टाँग लँगड़ी करके, विपक्षी की टाँग में अड़ाकर उसे गिराया जाता है।
लंगुरा—पु० [?] एक तरह का धान्य।
लंगूर—पु० [सं० लांगूलिन्] १ एक प्रकार का बन्दर जिसका मुँह और हाथ-पैर काले, सारा शरीर भूरा या सफेद और दुम बहुत लंबी होती है, जिससे वह प्रायः कोड़े की तरह आघात करता है। २ दुम। पूँछ।
लंगूर-फल—पु० [हिं० लंगूर+सं० फल] नारियल।
लंगूरी—स्त्री० [हिं० लंगूर+ई (प्रत्य०)] १. घोड़े की एक प्रकार की चाल जिसमें वह लंगूरों की तरह उछल-उछल कर चलता है। २ वह इनाम जो चोरों को चोरी गए हुए मवेशियों का पता लगाने पर दिया जाता है।
लंगूल—पु० [सं० लांगूल] पूँछ। दुम।
लंगोचा—पु० [?] कीमे से भरकर तली हुई जानवर की आँत। कुलमा। गुलमा।
लंगोट—पु० [सं० लिंग+पट] [स्त्री० लँगोटी] कमर में बाँधने का एक प्रकार का वस्त्र, जिससे केवल उपस्थ ढका जाता है। रूमाली।
पद—**लँगोट-बंद**।
मुहा०—**लंगोट का ढीला**=जो सुयोग मिलने पर पर-स्त्री से निस्संकोच संभोग कर सकता हो। **लँगोट का सच्चा**=जो कभी पर-स्त्री से संभोग न करता हो।
लँगोट-बंद—वि० [हिं०] [भाव० लँगोटबंदी] जिसने स्त्री-संभोग या पर-स्त्री संभोग न करने की प्रतिज्ञा कर रखी हो।
लँगोटा—पुं०=लंगोट।
लँगोटी—स्त्री० [हिं० लंगोट] १. छोटा लंगोट। २ वह छोटा-सा कपड़ा, जो बच्चों की कमर में उपस्थ आदि ढकने के लिए बाँधा जाता है।
पद—**लँगोटिया यार**=उस समय का मित्र जब कि दोनों लँगोटी बाँधकर फिरते थे। बचपन का मित्र।
३. गरीबों, साधुओं आदि के पहनने का बहुत छोटा पतला वस्त्र। कौपीन।
पद—**लँगोटी में मस्त**=पास में कुछ न रहने पर भी प्रसन्न रहनेवाला।
मुहा०—**लँगोटी पर फाग खेलना**=पास में कुछ भी न होने पर या बहुत ही कम धन होने पर भी आनंद-मंगल और भोग-विलास करना। **(किसी को) लँगोटी बँधवाना**=बहुत दरिद्र कर देना। इतना धनहीन कर देना कि पास में पहनने को लँगोटी के सिवा और कुछ न रह जाय। **(किसी की) लँगोटी बिकवाना**=इतना दरिद्र कर देना कि पहनने को लँगोटी तक न रह जाय।
लंघक—वि० [सं०√लघ् (गति)+ण्वुल्—अक] १ लाँघनेवाला। अतिक्रमण करनेवाला। २ नियम भंग करनेवाला।
लंघन—पु० [√लघ्+ल्युट्—अन] १ लाँघने की क्रिया या भाव। उल्लंघन करना। २ बिना कुछ खाये पिये दिन-रात बिताना। उपवास या फाका करना। ३ घोड़े की एक प्रकार की चाल। ४. ऐसा उपाय, जिससे मार्ग में पड़नेवाली बाधाएँ व्यर्थ सिद्ध होती हों और काम जल्दी तथा सुभीते से होता हो।
लंघनट—पु० [सं०] कलाबाजी के खेल दिखानेवाला नट।
लंघना—स०=लाँघना। (पश्चिम)
वि० जिसने उपवास किया हो। भूखा।
लंघनीय—वि० [सं०√लघ्+अनीयर] १ जिसे लाँघा जा सके। जो लाँघे जाने के योग्य हो, अथवा लाँघा जाने को हो। २. जिसका उल्लंघन या अवज्ञा हो सके। ३ उपेक्षा या तिरस्कार के योग्य।
लँघाना—स० [हिं० लाँघना का प्रे०] १ किसी को लाँघने में प्रवृत्त करना। २ रास्ते की कठिनाइयों आदि से बचाते हुए पार कराना या पहुँचाना।
लंघित—भू० कृ० [सं०√लघ्+क्त] १. जिसे लाँघा गया हो। २ अतिक्रमित। ३ उपेक्षित तथा तिरस्कृत।
लंघ्य—वि० [सं०√लघ्+ण्यत्] १. जिसे लाँघ सकें। २. जिसे लंघन या उपवास करा सकें।
लंच—पु० [अं०] दोपहर के समय किया जानेवाला भोजन।
लंज—पु० [सं०√लज्+अच्)] १ पैर। पाँव। २ काछ। लाँग। ३ दुम। पूँछ। ४ लपटता। ५ सोता। स्रोत।
लंजा—स्त्री० [सं० लंज+टाप्] १ लक्ष्मी। २ निद्रा। नींद। ३. सोता। ४ कुलटा। पुंश्चली।
लंजिका—स्त्री० [सं०√लज्+ण्वुल्—अक+टाप्, इत्व] वेश्या। रंडी।
लंठ—वि० [देश०] [भाव० लंठई] १ जिसमें कुछ भी बुद्धि न हो। परम मूर्ख। २ उजड्ड।
लंठई—स्त्री० [हिं० लंठ] लंठ होने की अवस्था या भाव। लंठपन।
लंड—पु० [सं०√लड् (ऊपर फेंकना)+घञ्] गू। विष्ठा।
पु० [सं० लिंग] पुरुष की जननेंद्रिय। लिंग।
लंडी—स्त्री० [हिं० लंड] दुश्चरित्रा स्त्री। कुलटा।
लँडूरा—वि० [देश०] [स्त्री० लँडूरी] १ (पक्षी) जिसकी पूँछ न हो अथवा काट दी गई हो। २. जिसका कोई शोभाजनक अंग नष्ट हो गया हो या रह गया हो।
लंडो—स्त्री०=लंडी (कुलटा)।
लंतरानी—स्त्री० [अ०] शेखी में आकर कही जानेवाली लंबी-चौड़ी तथा आत्म-प्रशंसा सूचक बात।
लंदराज—पु० [?] एक तरह की मोटी चादर।
लंप—पु० [अं० लैम्प] पाश्चात्य ढंग का विशेष प्रकार का दीपक जिसमें प्रकाश बढ़ाने और फैलाने के लिए प्रायः शीशे की चिमनी लगी रहती है।

लंपट—वि० [सं०√रम् (क्रीडा)+अटन्=पुक्, रस्य ल:] जो कामुक होने के कारण जगह जगह व्यभिचार करता फिरता हो।
पु० स्त्री का उपपति। यार।

लंपटता—स्त्री० [सं० लंपट+तल्+टाप्] लपट होने की अवस्था या भाव। दुराचार। कुकर्म।

लंपाक—पु० [सं०] १. लंपट। दुराचारी। २ पुराणानुसार उत्तर पश्चिमी भारत के मुरंड देश का एक नाम।

लंब—वि० [सं०√लंब् (लटकना आदि)+अच्] १ जो किसी तल से किसी ओर इस प्रकार सीधा गया हो कि उसके दो समकोण बनते हों। (पर्पेन्डिकुलर) २ नीचे की ओर झूलता या लटकता हुआ।
पुं० १. किसी रेखा पर खडी और सीधी गिरनेवाली रेखा। २ कोई लंबी और बिलकुल सीधी रेखा। ३ ज्योतिष मे, ग्रहो की एक गति। ४ एक राक्षस जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था। इसी को 'प्रलंबासुर' भी कहते है। ५. नाचनेवाला। नर्तक। ६. एक प्राचीन मुनि। ७. स्त्री का पति। स्वामी। ८ शुद्ध राग का एक भेद। ९ अग। अवयव। १० विलब। देर।
वि०=लबा।

लंबक—पु० [सं०√लंब+कन्] १. किसी पुस्तक का अध्याय या परिच्छेद। २. मुँह मे होनेवाला एक प्रकार का रोग। ३ फलित ज्योतिष मे, एक प्रकार के योग जिनकी सख्या १५ कही गई है।

लंब-कर्ण—वि० [सं० ब० स०] लंबे कानोंवाला। जिसके कान लंबे हो।
पु० १. बकरा। २. हाथी। ३. राक्षस। ४ बाज नामक पक्षी। ५. गधा। ६ खरगोश। ७ अंकोल वृक्ष।

लंब-ग्रीव—वि० [सं० ब० स०] लंबी गरदनवाला।
पु० ऊँट।

लंब-तड़ंग—वि० [सं० लब-ताड-अग] १ ताड के समान लबा। बहुत लंबा। २ विशालकाय और हृष्ट-पुष्ट।

लंबन—पुं० [स०√लब्+ल्युट्—अन] १ लंबा करने की क्रिया या भाव। २ लटकने या झूलने की क्रिया या भाव। ३ किसी काम या बात को टालते हुए दूर करना या हटाना। ४. गले मे पहनने का ऐसा हार जो नाभि तक लटकता हो। ५ अवलब। आश्रय। सहारा। ६. कफ। बलगम।

लंब-पयोधरा—स्त्री० [स० ब० स०,+टाप्] कार्तिकेय की एक मातृका।

लंबमान—वि० [स०√लब्+शानच्] दूर तक गया या फैला हुआ। लंबाई में या सीधे बल।

लंबर†—पुं०=नबर।

लंबरदार=पु०=नबरदार।

लंबा—वि० [स० लब] [स्त्री० लबी, भाव० लबाई] १. (पदार्थ) जिसका एक सिरा उसके दूसरे सिरे से अधिक दूरी पर हो। जिसके दोनों सिरों के बीच का बिस्तार बहुत हो। 'चौडा' का विपर्यय। जैसे—लबा कपडा, लबे बाल, लबी लाठी।
पद—लंबा-चौड़ा=(क) जिसका आयतन और विस्तार दोनो बहुत अधिक हों। जैसे—लंबा-चौड़ा मैदान। (ख) अनावश्यक और असाधारण रूप से व्यर्थ बढ़ाया हुआ। जैसे—लंबी-चौडी बातें करना।
२. जो ऊपर की ओर दूर तक उठा हो। अपेक्षया अधिक ऊँचाईवाला। जैसे—लबा आदमी, लंबा पेड, लबा बाँस आदि। ३. बीचवाले अवकाश, काल आदि के विचार से जो नाप या मान में अधिक हो। जो कम या थोड़ा न हो। जैसे—लबी अवधि, लंबा सफर, लंबा स्वर।
मुहा०—(किसी को) लंबा करना=(क) पीछा छुड़ाने के लिए किसी को चलता करना या दूर हटाना। चता बताना। जैसे—जब वह बहुत गिडगिडाने लगा, तब मैंने उसे एक रुपया देकर लंबा किया। (ख) इतना मारना-पीटना कि आदमी जमीन पर बेसुध होकर गिर पडे। **लंबा साँस लेना**=बहुत अधिक दु:खी या निराश होने पर दीर्घ नि:श्वास लेना। ठंढी साँस लेना। **लंबा या लंबे होना**=पीछा छुड़ाने या जान बचाने के लिए कही से चल देना। खिसक या हट जाना। जैसे—आप तो एक बात कहकर लंबे हुए, और वह मेरी जान खाने लगा।
४. आयतन या विस्तार के विचार से किसी निश्चित मान का। जैसे—गज भर लबा साँप, दस हाथ लंबी रस्सी। ५. जिसका विस्तार किसी नियत या साधारण मान से अधिक हो। जैसे—लबी कहानी, लबा खर्च, लबा वादा। ६ जो किसी बात मे अपने पूरे बिस्तार तक आगे बढ़ा या खिचा हुआ हो। जैसे—हाथ लबा करो तो देखें कि कहाँ चोट लगी है।
मुहा०—लबी तानना=लंबाई के बल सीधे लेटकर, खूब पैर फैलाकर और चादर आदि ओढकर या ऊपर तानकर निश्चिंत भाव से सोना।

लंबाई—स्त्री० [हि० लंबा] १ लबा होने की अवस्था या भाव। लबा-पन। २ किसी वस्तु का सबसे बडा आयाम या पक्ष। (चौड़ाई और मोटाई से भिन्न।)

लंबान—स्त्री०=लबाई।

लबाना—स०, अ० [हि० लंबा]लंबा करना। लंबा होना।

लंबायमान—वि० [स० लबमान] १ लंबा किया हुआ। २. लंबाई के बल लेटा हुआ।

लंबा हाथ—पु० [हि०] १. ऐसा हाथ (या उसका अगी व्यक्ति) जिसकी पहुँच या प्रभाव बहुत दूर तक हो। २. ऐसी चाल या दाँव, जिसमे बहुत अधिक प्राप्ति या स्वार्थ-सिद्धि हुई या होती हो। जैसे—इस बार तो तुमने लबा हाथ मारा।
क्रि० प्र०—मारना।

लंबिका—स्त्री० [सं०√लब्+ण्वुल्—अक,+टाप्, इत्व] गले के अन्दर की घंटी। कौआ।

लंबित—भू० कृ० [स०√लब+क्त] १ लंबा किया हुआ। २. निश्चय, विचार आदि के लिए कुछ समय तक रोका या टाला हुआ। स्थगित किया हुआ। (पेन्डिग) ३ लटकता हुआ। ४. लब के रूप मे आया हुआ। ५ आधारित।
पु० गोश्त। मांस।

लंबी—वि० हि० लबा का स्त्री० रूप।
मुहा० दे० 'लंबा' के अन्तर्गत।

लंबूक—पुं० [स०] लंबक (योग)।

लंबू—वि० [हिं० लंबा] जो आकार मे अपेक्षया अधिक ऊँचा हो। (परिहास और व्यंग)

पुं० [?] चिता पर रखे हुए मृत शरीर को जलाने के लिए उसमे आग लगाना। मृत का दाह-कर्म।

क्रि० प्र०—देना।

लंबूषा—स्त्री० [सं०] सात लड़ियोवाला हार।

लंबोतरा—वि० [हिं० लंबा] जो प्रायः गोलाकार होने पर कुछ-कुछ लंबा हो। जिसमे गोलाई के साथ लबाई भी हो। जैसे—लंबोतरा मोती।

लंबोदर—वि० [सं० लंब-उदर, ब० स०] १ लंबे या मोटे पेटवाला। २ बहुत अधिक खानेवाला। पेटू।

पुं० गणेश।

लंबोष्ठ—वि० [सं० लंब-ओष्ठ, ब० स०] लंबे होंठोवाला।

पुं० १. ऊँट। २. एक देवता।

लंभ—पुं० [सं०√लभ् (प्राप्ति)+घञ्, नुम्] प्राप्ति।

लंभन—पुं० [सं०√लभ्+ल्युट्—अन, नुम्] १. ध्वनि। शब्द। २ कलंक। लांछन।

लंभनीय—वि० [सं०√लभ्+अनीयर, नुम्] प्राप्त किये जाने के योग्य।

लंभित—भू० कृ० [सं०√लभ्+क्त, नुम्] १. प्राप्त किया हुआ। २ दिया हुआ। ३. कहा हुआ।

लँहगा—पुं० =लहँगा।

लँहदा—स्त्री० =लहँदा।

लउआ†—पुं० =लौआ (कद्दू या घीया)।

लउटी†—स्त्री० =लकुटी (छडी)।

लऊक—पुं० [अ० लऊक] चाटकर खाने की औषधि। अवलेह।

लक—पुं० [सं०√लक् (आस्वाद)+अच्] १ ललाट। २ जगली धान की बाल।

लकड़—पुं० [हिं० लकडी] १ हिं० लकड़ी का वह सक्षिप्त रूप जो उसे यौ० शब्दो के आरम्भ मे लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—लकडहारा। २. पूर्वजो के कुछ सबधसूचक नामों के साथ लगनेवाला एक शब्द जो 'पर' से भी ऊपर की स्थिति का वाचक होता है। जैसे—लकड-दादा, लकड-नाना।

लकड़-दादा—पुं० [हिं० लकड़+दादा] [स्त्री० लकड़-दादी] पर-दादा से बड़ा दादा।

लकड़बग्घा—पुं० [हिं० लकड़+बाघ] भेडिये की जाति का एक पशु।

लकड़हारा—पुं० [हिं० लकड़+हारा (प्रत्य०)] वह व्यक्ति जो जगल से लकडियाँ काटकर अपनी जीविका चलाता हो।

लक्कड़—पुं० [हिं० लकड़ी] लकडी का मोटा कुदा। लक्कड़।

लकड़ाना†—अ० [हिं० लकड़ी] १ सूखकर लकडी की तरह सख्त हो जाना। २. लकड़ी की तरह बिलकुल दुबला हो जाना। ३. (अग, रोगी आदि का) ऐंठकर लकड़ी की तरह कड़ा होना।

लकड़ी—स्त्री० [सं० लगुड] १. वृक्षों, झाडियो आदि के तनो और डालियो का वह कड़ा और ठोस अंश जो छाल के नीचे रहता है, और काट लिये जाने पर प्राय. जलाने तथा इमारतें बनाने के काम आता है। काठ। काष्ठ। २. उक्त का वह काटा और सुखाया हुआ रूप जो प्राय. चूल्हे आदि मे जलाने के काम आता है। ईंधन। ३. कुछ विशिष्ट प्रकार के वृक्षो आदि की वह पतली और लंबी शाखा जो काटकर छड़ी, डडे आदि के रूप मे लाई जाती है, और जिससे चलने में सहारा लिया जाता तथा आवश्यकता होने पर किसी पर आघात या प्रहार भी किया जाता है।

वि० सूखा हुआ।

पद—**लकड़ी-सा**—बहुत दुबला-पतला।

मुहा०—**(किसी को) लकड़ी देना**—किसी मृत शरीर या शव को चिता पर रखकर जलाना। **(पदार्थ का) सूखकर लकड़ी होना**=अपेक्षित कोमलता से रहित होकर कठोर या कडा होना। जैसे—सबेरे की रखी हुई रोटी सूखकर लकडी हो गई है। **(व्यक्ति का) सूखकर लकड़ी होना**=चिंता, धनाभाव, रोग आदि के कारण शरीर का बहुत ही क्षीण या दुर्बल होना। **लकड़ी चलाना**=लाठी से मार-पीट करना।

लक-दक—पुं० [फा०] ऐसा मैदान जहाँ पेड, पौधे और घास न हो। चटियल मैदान। बजर।

वि० बहुत अधिक अलकरणो से लदा हुआ।

लकब—पुं० [अ० लक़ब] १. उपाधि। खिताब। पदवी। २ उपनाम।

लकरी†—स्त्री० =लकड़ी।

लकलक—पुं० [अ०] लंबी गर्दनवाला एक जलपक्षी। ढेंक।

वि० बहुत दुबला-पतला।

लकलका—पुं० [अ० लक़लक़ा] १ साँप की बोली। २ साँपों आदि के बार-बार जीभ हिलाने की क्रिया। ३ उच्चाकांक्षा। ४ दबदबा। रोब।

लकवा—पुं० [अ० लकवा] १. एक प्रकार का प्रसिद्ध वात रोग जिसमे रोगी का मुँह टेढ़ा हो जाता है। २ पक्षाघात।

क्रि० प्र०—मारना।

लकसी—स्त्री० [हिं० लकडी+अँकुसी] फल आदि तोडने की ऐसी लग्गी जिसके सिरे पर अँकुसी लगी रहती है।

लका—पुं० [अ० लक़ा] १ चेहरा। आकृति। २ लक्का कबूतर।

लकाटी—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की नर बिल्ली जिसके अडकोषो में से एक प्रकार का मुश्क निकलता है।

लकीर—स्त्री० [सं० रेखा] १ वह चिह्न जो लबाई के बल मे कुछ दूर तक बना या बनाया गया हो। जैसे—कलम से कागज पर या बाण से जमीन पर लकीर खीचना।

क्रि० प्र०—खीचना।—बनाना।

२. कोई ऐसा चिह्न जो दूर तक रेखा के समान बना हो। ३ अक्षरो आदि की पक्ति। सतर।

४. बहुत दिनो से रेखा आदि के रूप मे चली आई हुई प्रणाली, प्रथा या रीति।

पद—**लकीर का फकीर**—वह जो बिना समझे-बूझे किसी प्राचीन प्रथा पर चलता हो। आँखें बन्द करके पुराने ढंग पर चलनेवाला।

मुहा०—लकीर पीटना=बिना समझे-बूझे पुरानी प्रथा पर चलना।

लकुच—पुं० [सं०√लक् (आस्वाद)+उचन्]=लकुट।

लकुट—पुं० [सं०√लक्+उटन्] लाठी। छड़ी।

पुं० [सं० लकुच] १. मध्यम आकार का एक प्रकार का वृक्ष जिसका फल गुलाब-जामुन के समान होता है। २. उक्त वृक्ष का फल जो खाया जाता है। लुकाठ। लखोट।

लकुटिया†—स्त्री०=लकुटी।

लकुटी—स्त्री० [सं० लकुट+ङीष्] छोटी लाठी। छड़ी।

लकुरी†—स्त्री०=लकुटी।

लकोटा—पुं० [देश०] एक प्रकार का पहाड़ी बकरा जिसके बालो से शाल, दुशाले आदि बनाये जाते हैं।

लक्कड़—पुं० [हिं० लकड़ी] बड़ी और मोटी लकड़ी। काठ का बड़ा कुंदा।

लक्का—पुं० [फा० लक़ा] एक प्रकार का कबूतर जो छाती उभार कर चलता है, और जिसकी पूँछ पखे सी होती है।

लक्खना—वि० [सं० लक्षण] [स्त्री० लक्खनी] लक्षणोंवाला। उदा०—कुआँरि बतीसौं लक्खनी अस सब माँह अनूप।—जायसी।

लक्खा—वि० [हिं० लाख] [वि० स्त्री० लक्खी] १ जिसमे एक ही तरह की लाखो चीजें हो। जैसे—आमो का लक्खा बगीचा। २ जो लाखो में एक हो। बहुत बड़ा-बड़ा। जैसे—लक्खा योद्धा, लक्खी बेसवा (बहुत ही चतुर और धूर्त दुश्चरित्र स्त्री या वेश्या)। ३. दे० 'लक्खी'।

लक्खी—वि० [हिं० लाख (संख्या)] १. लाख (सख्या) से सम्बन्ध रखनेवाला। लाख या लाखों का। २ जिसके पास लाख या लाखों रुपये हो। लखपती।

वि० [हिं० लाख=लाक्षा] लाख के रग का। लाखी।

पुं० उक्त प्रकार के रग का घोड़ा।

लक्त—वि० [स०√रक्त] लाल। सुर्ख।

लक्तक—पु० [सं० लक्त+कन्] १. अलता, जो स्त्रियाँ पैरों में लगाती हैं। अलक्तक। २ कपड़े का बहुत फटा हुआ छोटा टुकड़ा। चिथड़ा। लत्ता।

लक्ष—वि० [सं०√लक्ष् (दर्शन)+अच्] सौ हजार। एक लाख।

पुं० १ वह जिस पर दृष्टि रखकर काम किया जाय। २. पैर। ३. चिह्न। निशान। ४. अस्त्रो का एक प्रकार का संहार।

लक्षक—वि० [स०√लक्ष्+ण्वुल्—अक] लक्षित करनेवाला।

पुं० [सं०√लक्ष् (दर्शन)+ण्वुल्] वह शब्द जो संबंध या प्रयोजन से अपना अर्थ सूचित करे।

लक्षण—पुं० [सं०√लक्ष्+ल्युट्—अन] १. किसी पदार्थ की आकृति आदि से दिखाई देनेवाली वह विशेषता जिसके द्वारा वह पहचाना जाय। चिह्न। निशान। असार। जैसे—आकृति से बुद्धिमत्ता के या आकाश में वर्षा के लक्षण दिखाई देना।

विशेष—चिह्न और लक्षण मे मुख्य अतर यह है कि चिह्न तो सदा मूर्त और स्पष्ट होता है, पर लक्षण प्रायः अमूर्त और अस्पष्ट होता है। इसके सिवा चिह्न का प्रयोग तो भूत, प्रस्तुत या वर्तमान के संबंध मे होता है; परंतु लक्षण का प्रयोग भावी घटनाओं आदि के प्रसंग मे ही होता है।

२. किसी वस्तु या व्यक्ति में होनेवाला कोई ऐसा गुण या विशेषता जो सहसा औरों में न दिखाई देती हो। (ट्रेट) जैसे—यही सब तो प्रतिभा के लक्षण हैं। ३. शब्दों में पदो, वाक्यों आदि की ऐसी परिभाषा या व्याख्या, जिससे उसकी ठीक ठीक स्थिति या स्वरूप प्रकट होता हो। जैसे—साहित्य में किसी अलंकार के लक्षण बतलाना। ४ शरीर में दिखाई पड़नेवाले वे चिह्न आदि जो किसी रोग के सूचक हो। जैसे—इस रोगी मे क्षय के सभी लक्षण दिखाई देते हैं। ५. सामुद्रिक के अनुसार शरीर के वे चिह्न जो शुभाशुभ फलों के सूचक माने जाते हैं। जैसे—यदि हाथ में अमुक लक्षण हो तो आदमी बहुत धनी होता है। ६. शरीर में होनेवाला एक विशेष प्रकार का काला दाग जो बालक के गर्भ मे रहने के समय सूर्य या चन्द्रग्रहण लगने के कारण बन जाता है। लच्छन। ७. आचार, व्यवहार आदि के ऐसे ढग या प्रकार जो भले या बुरे होने के सूचक हों। जैसे—इस लड़के के लक्षण अच्छे नही दिखाई देते। ८ नाम। संज्ञा। ९. दर्शन। १०. सारस पक्षी।

पु० लक्ष्मण।

लक्षणक—पु० [सं० लक्षण+कन्] चिह्न। निशान।

लक्षण-कार्य—पु० [स० ष० त०] १. किसी चीज या बात की पहचान बतलाने के लिए उसके गुणों, विशेषताओ आदि का वर्णन करना। २. परिभाषा।

लक्षणा—स्त्री० [सं०√लक्ष्+न, अडागम,+अच्+टाप्] शब्द की तीन शक्तियों मे से दूसरी शक्ति जो अभिधेय से भिन्न परन्तु उसी से सबंधित दूसरा अर्थ प्रकट करती है। जैसे—मोहन गधा है। यहाँ गधा अपने अभिधेय अर्थ में विशिष्ट पशु का वाचक नहीं बल्कि उसी विशिष्ट पशु की ज्ञान-हीनता का सूचक है।

लक्षणी (णिन्)—वि० [स० लक्षण+इनि] १. जिसमें कोई लक्षण या चिह्न हो। लक्षणोवाला। २. लक्षण जाननेवाला।

लक्षण्य—वि० [सं० लक्षण+यत्] १. लक्षण या चिह्न बतलानेवाला। २ लक्षण या चिह्न का काम देनेवाला।

लक्षना*—स्त्री०=लक्षणा।

स०=लखना।

लक्षा—स्त्री० [सं० लक्ष+टाप्] एक लाख की सूचक संख्या।

लक्षि—स्त्री०=लक्ष्मी।

पु०=लक्ष्य।

लक्षित—भू० कृ० [सं०√लक्ष्+क्त] १. लक्ष्य या ध्यान में आया या लाया हुआ। जिसकी ओर लक्ष गया हो। २ जिसकी ओर दूसरों का ध्यान लगाया गया हो। निर्दिष्ट। ३. अनुभव से जाना या समझा हुआ। ४ किसी प्रकार के लक्षण या चिह्न से युक्त। ५. जिस पर चिह्न लगाया गया हो।

पुं० वह अर्थ जो शब्द की लक्षणा शक्ति द्वारा ज्ञात होता है।

लक्षित-लक्षणा—स्त्री० [सं० स० त०] शब्द की वह शक्ति जो मुख्यार्थ को छोड़कर लक्ष्यार्थ का ग्रहण कराती है।

लक्षितव्य—वि० [सं०√लक्ष्+तव्य] १ जिसकी ओर लक्ष्य होना उचित हो। २ जिस पर चिह्न किया जाने को हो। ३. जिसकी परिभाषा की जाने को हो।

लक्षिता—स्त्री० [स० लक्षित+टाप्] साहित्य मे, वह नायिका जिसके लक्षणो से उसका पर-पुरुष प्रेम जानकर किसी सखी ने उस पर प्रकट किया हो।

लक्षितार्थ—पु० [स० लक्षित-अर्थ, कर्म० स०] शब्द की लक्षणा-शक्ति से निकलनेवाला अर्थ।

लक्षी—स्त्री० [स० लक्ष+ङीष्०] गगोदक नामक 'सवैया' का दूसरा नाम।

वि० अच्छे चिह्नो या लक्षणोवाला।

लक्ष्म (क्ष्मन्)—पु० [सं०√लक्ष+मनिन्] १ चिह्न। २ दाग। ३ विशेषता। ४ परिभाषा। ५ सारस पक्षी। ६ लक्ष्मण।

वि० प्रधान। मुख्य।

लक्ष्मण—पु० [स० लक्ष्मन्+अच्] १ लक्षमण। चिह्न। २ सुमित्रा के गर्भ से उत्पन्न राजा दशरथ के एक पुत्र जो शेषनाग के अवतार माने जाते है। ३ दुर्योधन का एक पुत्र। ४ सारस। ५ नाग।

वि० १ लक्षण या चिह्न से युक्त। २ भाग्यवान्। ३. उन्नतिशील।

लक्ष्मण-रेखा—स्त्री० [स० मध्य० स०] ऐसी रेखाकार सीमा जो किसी प्रकार लाँघकर पार न की जा सकती हो। (लक्ष्मण जी की खीची हुई उस रेखा के आधार पर जो उन्होने सोने के हिरन का पीछा करने से पहले सीता के चारो ओर खीची थी।)

लक्ष्मण-लीक—स्त्री० =लक्ष्मण-रेखा।

लक्ष्मणा—स्त्री० [स० लक्ष्मण+टाप्] १ श्री कृष्ण की एक पत्नी जो मद्रदेश के राजा बृहत्सेन की पुत्री थी। २ दुर्योधन की एक कन्या। ३ श्रीकृष्ण के पुत्र साब की पत्नी। ४ एक प्रकार की जडी जो पुत्रदा मानी जाती है। यह जडी चौडे पत्ते तथा श्वेत कदवाली होती है तथा पर्वतो पर पाई जाती है। इसका कद औषध के लिए प्रयोग मे आता है। नागपत्री। पुत्रदा।

लक्ष्मी—स्त्री० [स०√लक्ष्+ई, मुट्-आगम] १ भगवान् विष्णु की पत्नी जो धन की अधिष्ठात्री देवी मानी गई है। कमला। पद्मा। २ धन-सम्पत्ति। दौलत। ३ शोभा। श्री। ४ दुर्गा। ५ सीता का एक नाम। ६ धन-धान्य बढानेवाली भाग्यवती स्त्री। ७ घर की मालकिन या स्वामिनी के लिए आदरसूचक सबोधन या सज्ञा। ८ कमल। पद्म। ९ हल्दी। १० शमी वृक्ष। ११ मोती। १२ सफेद तुलसी। १३ मेढासिगी। १४ ऋद्धि नामक ओषधि। १५ वृद्धि नामक ओषधि। १६ मोक्ष की प्राप्ति। १७ फलने-फूलनेवाला अथवा फला-फूला हुआ वृक्ष। फलदार वृक्ष। १८ एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे दो रगण,एक गुरु और एक लघु अक्षर होता है। १९ आर्याछद के २६ भेदो मे से पहला भेद जिसके प्रत्येक चरण मे २७ गुरु और तीन (३) लघु वर्ण होते है।

लक्ष्मीक—वि० [स० लक्ष्मी√कै (शोभित होना)+क] १ धनवान्। अमीर। २ भाग्यवान्।

लक्ष्मी-कांत—पु० [स० ष० त०] विष्णु।

लक्ष्मी-गृह—पु० [स० ष० त०] लाल कमल जिसमे लक्ष्मी का निवास माना जाता है।

लक्ष्मी-जनार्दन—पु० [स० मध्य० स०] काले रग के एक प्रकार के शाल-ग्राम जिन पर चार चक्र बने होते है।

लक्ष्मी-टोडी—स्त्री० [स० लक्ष्मी+हि० टोडी] एक एक प्रकार की सकर रागिनी जिसमे सब कोमल स्वर लगते है।

लक्ष्मी-ताल—पु० [स० मध्य० स०] १ सगीत मे १८ मात्राओ का एक ताल जिसमे १५ आघात और तीन खाली होते है। २. श्रीताल नामक वृक्ष।

लक्ष्मी-धर—पु० [स० ष० त०] १ विष्णु। २ स्रग्विणी छंद का दूसरा नाम।

लक्ष्मी-नारायण—पु० [स० मध्य० स०] १ लक्ष्मी और नारायण की युगल-मूर्ति। २ लक्ष्मी जनार्दन नामक चक्र-चिह्न युक्त तथा कृष्ण वर्ण शालग्राम।

लक्ष्मी-नृसिंह—पु० [मध्य० स०] दो चक्र और वनमाला धारण किए हुए विष्णु की एक मूर्ति।

लक्ष्मी-पति—पु० [ष० त०] १ विष्णु। नारायण। २ श्रीकृष्ण। ३ राजा। ४ लौंग का पेड। ५ सुपारी का पेड।

लक्ष्मी-पुत्र—पु० [ष० त०] धनवान् व्यक्ति। अमीर। २ सीता के पुत्र लव और कुश। ३ कामदेव। ४ माणिक्य या लाल नामक रत्न। ५ घोडा।

लक्ष्मी-पुष्प—पु० [ब० स०] १ पद्म। कमल। २. लौंग। ३. माणिक। लाल।

लक्ष्मी-पूजा—स्त्री० [ष० त०] दीपावली के रोज रात में लक्ष्मी की की जानेवाली पूजा।

लक्ष्मी-फल—पु० [ब० स०] बेल। श्रीफल।

लक्ष्मी-रमण—पु० [ष० त०] विष्णु।

लक्ष्मीवत्—पु० [स० लक्ष्मी+मतुप् म-व] १ नारायण। विष्णु। २ धनवान् व्यक्ति। ३ कटहल का पेड। ४ अश्वत्थ। पीपल।

लक्ष्मी-वल्लभ—पु० [ष० त०] विष्णु।

लक्ष्मीवान् (वत्)—वि० [स० लक्ष्मी+मतुप्] १ धनवान्। २ सुन्दर। पु० १ विष्णु। २ कटहल। ३ रोहित वृक्ष।

लक्ष्मी-वार—पु० [ष० त०] गुरुवार।

लक्ष्मी-बीज—पु० [ष० त०] बीज (मत्र)।

लक्ष्मीश—पु० [लक्ष्मी-ईश, ष० त०] १ विष्णु। २ धनवान्। अमीर। ३ आम का पेड।

लक्ष्मी-सहज—पु० [ष० त०] १ चन्द्रमा। २ कपूर। ३ इन्द्र का घोडा। ४ शख।

लक्ष्मी-सहोदर—पु० [ष० त०] =लक्ष्मी-सहज।

लक्ष्य—पुं० [स०√लक्ष् (दर्शन)+ण्यत्] १ वह वस्तु जिस पर किसी उद्देश्य की सिद्धि के विचार से दृष्टि रखी जाय। निशान। जैसे—(क) चिडिया को लक्ष्य करके उस पर ढेला फेकना या तीर चलाना। (ख) किसी को लक्ष्य करके उपहास या व्यग्य की बात करना। २ वह काम या बात जिसकी सिद्धि अभीष्ट हो और इसी लिए जिस पर दृष्टि या ध्यान रखा जाय। उद्देश्य। जैसे—जीवन-भर धन सग्रह ही एक मात्र लक्ष्य रहा। ३ प्राचीन भारत मे, अस्त्रो आदि का एक प्रकार का सहार। ४ वह जिसका अनुमान किया गया हो या किया जाय। अनुमेय। ५. शब्द की लक्षणा शक्ति से निकलनेवाला अर्थ। ६. बहाना। हीला।

वि० १. देखने योग्य। दर्शनीय। २. लाख।

लक्ष्यज्ञ—पुं० [सं० लक्ष्य√ज्ञा (जानना)+क] १. वह जो किसी लक्ष्य की पूर्ति या सिद्धि के लिए अग्रसर तथा प्रयत्नशील हो। २ वह जो यह जानता हो कि मेरा लक्ष्य क्या है।

लक्ष्यज्ञत्व—पुं० [सं० लक्ष्यज्ञ+त्व] १. वह ज्ञान जो चिह्नों को देखने से उत्पन्न हो। २ वह ज्ञान जो दृष्टांत के आधार पर प्राप्त हो।

लक्ष्यता—स्त्री० [सं० लक्ष्य+तल्+टाप्] लक्ष्य होने की अवस्था, धर्म या भाव। लक्ष्यत्व।

लक्ष्यत्व—पुं० [सं० लक्ष्य+त्व]=लक्ष्यता।

लक्ष्य-भेद—पु० [ष० त०] =लक्ष्य-वेध।

लक्ष्य-वीथी—स्त्री० [ष० त०] १. वह उपाय या कर्म जिससे जीवन का उद्देश्य सिद्ध होता हो। २ ब्रह्मलोक जाने का मार्ग। ३. देव-यान।

लक्ष्य-वेध—पु० [ष० त०] चलते या उड़ते हुए जीव या पदार्थ पर निशाना लगाना।

लक्ष्य-वेधी (धिन्)—पु० [सं०लक्ष्य√विध् (बेधना)+णिनि] जो लक्ष्य-वेध करता हो। उडते या चलते हुए पदार्थ या जीवो पर निशाना लगानेवाला।

लक्ष्य-साधन—पु० [ष० त०] १. कोई काम करने से पहले उसके सब अंग या ऊँच-नीच अच्छी तरह देखना। २ अस्त्र चलाने से पहले अच्छी तरह देख लेना जिससे वह निशाने या लक्ष्य पर ठीक जाकर लगे। (साइटिंग)

लक्ष्यार्थ—पु० [सं० लक्ष्य-अर्थ, मध्य० स०] शब्द की लक्षणा शक्ति से निकलनेवाला अर्थ। किसी शब्द का वाच्य अर्थ से भिन्न किन्तु उससे संबद्ध अर्थ।

लक्ष्योपमा—स्त्री० [सं० लक्ष्य-उपमा, मध्य० स०] साहित्य मे उपमा अलंकार का एक भेद जिसमे सम, समान आदि शब्दो या इनके वाचक अन्य शब्दो का प्रयोग न करके यह कहा जाता है कि यह वस्तु अमुक कोटि या वर्ग की है, उसे लज्जित करती है, उससे होड करती है अथवा इसने उससे अमुक गुण या बात चुरा या छीन ली है।

लखघर†—पुं०=लाक्षागृह।

लखड़ा†—पु०=रखटी (एक प्रकार का ऊख)।

लखण†—पु० १. =लक्षण। २ लक्ष्मण।

लखन—स्त्री० [हिं० लखना] लखने की क्रिया या भाव।

†पु० =लक्ष्मण।

लखना—स० [सं० लक्ष] १ लक्षण देखकर अनुमान कर लेना। २ जरा सा या एक झलक देखकर ही जान या समझ लेना। ३. देखना। ४. इस प्रकार का ध्यान देते हुए देखना कि औरो को पता न चलने पावे। उदा०—आज लखना कि देखता है या नहीं तुम्हारी ओर। —वृन्दावनलाल वर्मा।

लखपती—पु० [सं० लक्ष+पति] वह जिसके पास लाखों रुपयो की संपत्ति हो। बड़ा अमीर या धनवान्।

लख-पेड़ा—वि० [हिं० लाख+पेड] (बाग) जिसमे लाख के लगभग अर्थात् बहुत अधिक पेड हों।

लखमी-सात—पु० [सं० लक्ष्मी-सात] समुद्र। (डिं०)

लखमी-वर—पु० [सं० लक्ष्मी+वर] विष्णु। (डिं०)

लखर—पु० [देश०] काकडा-सिंगी (वृक्ष)।

लखराऊँ (वँ)—पु० [हिं० लाख]=लख-पेडा (बाग)।

लखलख—वि० फा० लक़लक़] क्षीण-काय। दुबला-पतला।

लखलखा—पुं० [फा० लखलख:] १. अंबर, अगर तथा कस्तूरी का वह मिश्रण जिसके संबध मे प्रसिद्ध है कि इसके सुँघाये जाने पर बेहोशी दूर होती है। २ उक्त के आधार पर बेहोशी दूर करनेवाला कोई सुगंधित पदार्थ। जैसे—गुलाबजल छिड़की हुई चिकनी मिट्टी आदि।

लखलखाना—अ० [अनु०] अधिक भूख से विकल होना। भूख-प्यास से बिलखना।

लखलुट—वि० [हिं लाख+लुटाना] लाखों रुपए लुटा देनेवाला, अर्थात् बहुत बडा अपव्ययी।

लखवट*—पु०=लुकाठ।

लखाई†—स्त्री०=लखाव।

लखाउ†—पु०=लखाव।

लखाघर†—पु०=लाक्षा-गृह।

लखाना—स० [हिं० लखना का प्रे०] १ किसी को कुछ लखने में प्रवृत्त करना। २. दिखलाना।

†अ० १ लखने मे आना। लखा जाना। २ दिखाई देना।

लखाव—पु० [हिं० लखना] १ लखने या लखे जाने की अवस्था या भाव। २ पहचान। लक्षण। ३ चिह्न। निशान। ४. दृश्य। नजारा।

लखित†—वि० =लक्षित।

लखिमी*—स्त्री० १ =लक्ष्मी। २. =धन-सपत्ति।

लखिया—वि० [हिं० लखना+इया (प्रत्य०)] लखने अर्थात् देखने या ताडनेवाला।

लखी—पु०=लाखी (घोडा)।

लखुआ—पु० [हिं० लाखा+उआ (प्रत्य०)] १ गेहूँ की फसल को हानि पहुँचानेवाला लाल रग का एक कीडा। २ लाल मुँहवाला बंदर।

† वि० =लखिया।

लखेदना†—स० १. =खदेडना। २ =लथेडना।

लखेरा—पु० [हिं० लाख+एरा (प्रत्य०)] १. लाख की चूडियाँ बनानेवाला कारीगर। २ हिंदुओ मे उक्त प्रकार का काम करनेवाली एक जाति।

लखोखा—पु० [वि० लाखों+लाख] कई लाख। जैसे—उनके पास लखोखा रुपए है।

लखोखापति—पु० [हिं० लखोखा+सं० पति] वह जिसके पास कई लाख रुपए हो।

विशेष—साधारणत. लखपती से लखोखापति बहुत अधिक धनवान् होता है।

लखोट, लखोठ—पुं० =लुकाठ।

लखौट—स्त्री० [हिं० लाख+औट (प्रत्य०)] लाख की चूडी आदि जो स्त्रियाँ हाथो मे पहनती हैं।

लखौटा—पु० [हिं० लाख+औटा (प्रत्य०)] १. एक प्रकार का बढ़िया

उबटन जिसमे केसर, चंदन आदि मिला रहता है। २. वह छोटा डब्बा जिसमे स्त्रियाँ टिकली, सिन्दूर, आदि प्रसाधन और सौभाग्य की छोटी-मोटी चीजें रखती हैं।

†पुं०=लिखावट।

लखौरी—स्त्री० [स० लक्ष, हिं० लाख (सख्या)] १. किसी देवता को उसके प्रिय वृक्ष की एक लाख पत्तियाँ या फल आदि चढ़ाने की क्रिया या भाव। जैसे—शिव जी को बेलपत्र की या लक्ष्मी नारायण को तुलसी की लखौरी चढ़ाना।

क्रि० प्र०—चढ़ाना।

स्त्री० [हिं० लाख (सख्या)+औरी (प्रत्य०)] २ एक प्रकार की छोटी पतली ईंट जो प्राय: पुराने मकानो मे पाई जाती है। नौ-तेरही ईंट। ककैया ईंट।

विशेष—यह पहले प्रति लाख ईंटो के भाव से बिकती थी, इसी लिए 'लखौरी' कहलाती थी।

स्त्री० [सं० लाक्षा; हिं० लाख+औरी (प्रत्य०)] भँवरी द्वारा अपने रहने के लिए बनाया हुआ मिट्टी का घरौंदा।

लख्त—पु० [फा० लख्त] टुकड़ा। खण्ड। जैसे—लख्ते जिगर=कलजे का टुकड़ा; अर्थात परम प्रिय (प्राय सन्तान के लिए प्रयुक्त)।

लगंत—स्त्री० [हिं० लगना+अत (प्रत्य०)] १. लगने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ किसी काम या बात के लिए लगनेवाली धुन। लगन। ३ स्त्री-प्रसग। सभोग। (बाजारू)

लग—स्त्री० [हिं० लगना] १ लगे हुए होने की अवस्था या भाव। २. किसी काम या बात की गहरी धुन। लगन। ३ अनुराग। प्रेम।

†अव्य० १ निकट। पास। २ तक। पर्यन्त। ३ लिए। वास्ते। ४ साथ। सह।

लगजिश—स्त्री० [फा० लग़जिश] १ फिसलन। २ लड़खड़ाहट। ३. भूल-चूक।

लगड़-पेंचा—पु०=दाँव-पेच।

लगडग—अव्य०=लगभग।

लगण—पु० [स०] पलक पर होनेवाली एक तरह की गाँठ।

†पु०=लग्न।

लगवी—स्त्री० [देश०] छोटे बच्चो के गू, मूत्र आदि से सुरक्षित रखने के लिए बिस्तर पर बिछाया जानेवाला कपड़ा।

लगन—स्त्री० [हिं० लगना] १. लगने की क्रिया या भाव। २ एकाग्र भाव से किसी काम या बात की ओर ध्यान या मन लगाने की अवस्था या भाव। एकात ध्यान और प्रवृत्ति की लौ। जैसे—आज-कल तो उन्हे कविताएँ लिखने की लगन लगी है, अर्थात् उनका सारा ध्यान कविताएँ लिखने की ओर है। उदा०—भूखे गरीब दिल की खुदा से लगन न हो।—नजीर। ३ शृंगारिक क्षेत्र मे, प्रगाढ़ प्रेम। बहुत अधिक मुहब्बत।

क्रि० प्र०—लगना।—लगाना।

पु० [स० लग्न] १. विवाह के लिए स्थिर किया हुआ कोई शुभ मुहूर्त या साइत।

मुहा०—लगन धरना या रखना=विवाह का मुहूर्त या समय निश्चित करना।

२. वे विशिष्ट दिन और महीने जिनमें हिंदुओं के यहाँ विवाह होना विहित है। सहालग। जैसे—आज-कल लगन-बरात के दिन हैं, इसलिए मजदूर कम मिलते हैं। ३. दे० 'लग्न'।

पुं० [फा०] १ ताँबे या पीतल की एक प्रकार की थाली जिसमें रखकर मोमबत्ती जलाई जाती है। २. किसी प्रकार की बड़ी थाली या परात। ३ मुसलमानो मे ब्याह की एक रीति जिसमें विवाह से पहले थालियो मे मिठाइयाँ आदि भरकर वर के यहाँ भेजी जाती हैं।

लगन-पत्री—स्त्री० [स० लग्न-पत्रिका] कन्या-पक्ष द्वारा वर-पक्ष-वालो के यहाँ भेजा जानेवाला वह पत्र या लेख जिसमे विवाह-सबधी विभिन्न कृत्यो का समय लिखा होता है।

लगनवट—स्त्री० [हिं० लगन] शृंगारिक क्षेत्र मे किसी के साथ होनेवाला प्रेम-सम्बन्ध।

लगना—अ० [स० लग्न] १ एक पदार्थ के तल या पार्श्व का दूसरे पदार्थ के तल या पार्श्व के साथ आंशिक अथवा पूर्ण रूप से मिलना या सटना। सलग्न होना। सटना। जैसे—(क) किताब की जिल्द पर कपड़ा या कागज लगना। (ख) दीवार पर तसवीरे लगना। (ग) किसी के गले (या पैरो) लगना। २. एक चीज का दूसरी चीज पर (या मे) जड़ा, जोड़ा, टाँका, बैठाया, रखा या सटाया जाना। जैसे—(क) लिफाफे पर टिकट, तसवीर मे चौखटा या साड़ी मे गोटा लगना। (ख) दीवार मे खिड़की या दरवाजा लगना। (ग) मकान मे नल या बिजली लगना। (घ) दरवाजे मे कुंडी लगना। ३ किसी चीज का उपभोग मे आने के लिए यथा-स्थान आकर जमना, बैठना या स्थित होना। जैसे—नाव मे पाल लगना, बाँस मे झंडी लगना। ४. किसी तल पर किसी गाढ़े तरल पदार्थ का लेप आदि के रूप मे अथवा यो ही जमाया या पोता जाना। जैसे—पैरो मे महावर लगना, दीवारो पर पलस्तर या रग लगना, चीजो पर निशान लगना, माथे पर तिलक लगना, कपड़ो मे कीचड़ लगना। ५ किसी प्रकार की गति की दशा में एक चीज का पास-वाली दूसरी चीज से रगड़ खाना या सपृक्त होना। जैसे—(क) यत्र के पहिए का किसी डंडे या दूसरे पहिये से लगना। (ख) चलते समय घोड़े का पैर लगना, अर्थात् एक पैर का दूसरे से टकराना या रगड़ खाना। ६. किसी रूप मे शामिल या सम्मिलित होना। जैसे—(क) पुस्तक में परिशिष्ट लगना। (ख) कुत्ते का बिल्ली के पीछे लगना।

मुहा०—(किसी के पीछे या साथ) लग चलना—अनुगामी या सगी साथी बनना। जैसे—तुम्हे तो जिससे कुछ प्राप्ति होगी, उसी के पीछे लग चलोगे। **(किसी के पीछे) लगना**=किसी का भेद लेने या रहस्य जानने अथवा उसे किसी प्रकार की हानि पहुँचाने के लिए छिपकर उसके पीछे चलना। पीछा करना। जैसे—आजकल पुलिस उनके पीछे लगी है।

७. किसी अनिष्ट या कष्टदायक तत्त्व या बात का किसी के साथ संबद्ध या संलग्न होना। जैसे—(क) किसी के पीछे कोई आफत या जहमत लगना। (ख) किसी को राग या लू लगना। (ग) भूत या प्रेत लगना।

मुहा०—लगी-लिपटी बात कहना=ऐसी बात कहना जो अप्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से किसी दूसरी बात के साथ सबद्ध हो। अस्पष्ट और भ्रामक या द्वयर्थक बात कहना।

८. आवरण, निरोध आदि के रूप में रहनेवाली चीज या उसके विभागों का इस प्रकार आकर कहीं गिरना, बैठना या सटना कि उसके नीचे या पीछे की चीज छिप या ढक जाय अथवा बंद हो जाय। आवरण का आकर यथास्थान बैठना। जैसे—दरवाजे के किवाड़ या कुंडी लगना, आँख की पलकें या संदूक का ढक्कन लगना (बंद होना)। ९. किसी काम, चीज, बात या व्यक्ति का ऐसे स्थान पर पहुँचना या ऐसी स्थिति में आना कि उसका उपयोग, परिणाम, सार्थकता या सिद्धि हो सके। जैसे—(क) काम ठिकाने या पार लगना। (ख) डाकखाने में पारसल या रजिस्ट्री लगना। (ग) खाने-पीने की चीजों का अंग लगना (अर्थात् शरीर को पुष्ट करना)। १०. किसी चीज का ऐसे क्रम या रूप में आना या प्रस्तुत होना कि उसका नियमित और यथोचित उपयोग हो सके। जैसे—(क) दूकान या बाजार लगना। (ख) कमरे में मेज-कुर्सी या गद्दी, तकिया, बिछौना आदि लगना। (घ) पान या उसके बीड़े लगना। ११. किसी चीज का अनिवार्य और आवश्यक रूप से उपयोग में आते हुए व्यय होना। काम में आकर समाप्त होना। जैसे—(क) इस काम मे १०० (या दो महीने) लगेंगे। (ख) इस पुस्तक की ५०० प्रतियाँ तो सरकार मे ही लग जायँगी। (ख) दोनों मकान कर्ज चुकाने मे लग गये। १२. व्यक्ति का कार्य में लगकर उसका संपादन करना। जैसे—सवेरा होते ही वह अपने काम में लग जाता है।

पद—लगकर = अच्छी और पूरी तरह से। खूब मन लगाकर। जैसे—लगकर इलाज करोगे तभी तुम अच्छे होगे।

१३. किसी का किसी काम या पद पर नियुक्त या नियोजित होना। कर्त्तव्य से संबद्ध होना। जैसे—(क) किसी का काम या नौकरी लगना। (ग) किसी जगह चौकी या पहरा लगना। १४. किसी प्रकार के आघात या प्रहार का आकार प्राप्त होना या अपना परिणाम उत्पन्न करना। किसी तरह की चोट या वार का किसी अंग, शरीर या स्थान पर पड़ना। जैसे—(क) गोली, थप्पड़, मुक्का या लाठी लगना। (ख) मन मे किसी की बात लगना।

मुहा०—लगती हुई बात कहना=ऐसी बात कहना जिससे किसी के मन पर आघात हो या चोट लगे। मर्म-भेदी बात कहना। जैसे—चार आदमियों के सामने इस तरह की लगती हुई बात नहीं कहनी चाहिए।

१५. धारदार या नुकीली चीज की धार या नोक शरीर में गड़ना, चुभना, या धँसना। जैसे—(क) हजामत बनाते समय गाल पर उस्तरा लगना। (ख) पैर में काँटा लगना। (ग) जानवर का दाँत या नाखून लगना। १६. किसी चीज या बात का प्रयुक्त होने पर अपना ठीक और पूरा काम करना अथवा प्रभाव या फल दिखलाना। जैसे—(क) इस बीमारी मे कोई दवा लगती ही नहीं। (ख) यह ताली इस ताले मे लग जायगी। १७. किसी के साथ इस प्रकार की बातचीत या व्यवहार करना कि वह कुढ़े या चिढ़े अथवा लड़ने पर उतारू हो। छेड़खानी या छेड़छाड़ करना। जैसे—ऐसे लुच्चों से लगना ठीक नहीं।

मुहा०—(किसी के) मुँह लगना=किसी बड़े के साथ उद्दंडता या धृष्टता की बातें करना। अश्लीलता की ओर बढ़-बढ़कर बातें करना। जैसे—यह नौकर घर-भर के मुँह लगा है; अर्थात् सबसे बढ़-बढ़कर बातें करता है।

१८. किसी ऐसे काम, चीज, बात या संबंध का आरम्भ होना जो कुछ अधिक समय तक निरंतर चलता या बना रहे। जैसे—(क) कचहरी, दरबार या मेला लगना। (ख) नया महीना या साल लगना। (ग) किसी काम या बात की आदत या चसका लगना। (घ) किसी से प्रेम, लड़ाई-झगड़ा या होड़ लगना।

मुहा०—(किसी से) लगी होना=पहले से चले आनेवाले उक्त प्रकार के कार्य या संबंध का बराबर पूर्ववत् चलता रहना। जैसे—उन दोनों मे बहुत दिनों से लगी है (अर्थात् उसमें प्रेम, लड़ाई, होड़ आदि का भाव बराबर चला आ रहा है)।

१९. किसी विषय में या किसी व्यक्ति पर किसी चीज या बात का आरोप या प्रयोग होना। जैसे—(क) किसी पर कोई अभियोग या कलंक लगना। (ख) किसी अपराध में कोई धारा या किसी विषय में कोई नियम लगना। (ग) एक के दोष के लिए दूसरे का नाम लगना। २०. लाक्षणिक रूप में और मुख्यतः धार्मिक क्षेत्र मे कोई अनिष्ट बात या स्थिति अनिवार्य रूप से किसी के जिम्मे पड़ना या होना। निश्चित रूप से किसी अनिष्ट या असद् बात का भागी बनना या होना। जैसे—दोष, पाप, सूतक या हत्या लगना। २१. किसी काम, चीज या बात की किसी रूप में मानसिक या शारीरिक अनुभूति या प्रतीति होना। जान पड़ना। जैसे—(क) गरमी, जाड़ा या डर लगना। (ख) खाने-पीने की चीज का खट्टा या मीठा लगना। (ग) किसी आदमी, काम, चीज या बात का अच्छा या बुरा लगना। २२. किसी प्रकार की मानसिक वृत्ति का दृढ़ता या स्थिरतापूर्वक किसी ओर प्रवृत्त होना। जैसे—(क) काम मे जी या मन लगना। (ख) ईश्वर का ध्यान लगना। (ग) घर पहुँचने की चिंता लगना। २३. किसी काम या बात का क्रियात्मक रूप धारण करना या घटित होना। जैसे—ग्रहण लगना, ढेर लगना, देर लगना, नैवेद्य लगना, समाधि लगना, सेंध लगना। २४. किसी प्रकार की क्रिया की पूर्णता, सिद्धि या स्थापना होना। जैसे—बाजी या शर्त लगना, क्रम या सिलसिला लगना। २५. किसी प्रकार के उपयोग या व्यवहार के लिए अपेक्षित या आवश्यक होना। जैसे—(क) इस महीने घर में दो मन अनाज लगेगा। (ख) यह पुस्तक शास्त्री परीक्षा के पाठ्य-क्रम मे लगी है। (ग) जब काम लगे तब आकर यह सामान ले जाना। २६. पारिवारिक संबंध या रिश्ते के विचार से किसी रूप मे किसी के साथ संबद्ध होना। जैसे—वह भी रिश्ते मे हमारे भाई ही लगते हैं। २७ लिखने-पढ़ने के क्षेत्र मे, किसी पद, वाक्य या शब्द का ठीक-ठीक अर्थ या आशय समझ में आना। जैसे—किसी चौपाई या श्लोक का अर्थ लगना। २८. गणित के क्षेत्र मे कोई क्रिया ठीक और पूरी उतरना। ठीक तरह से हिसाब होना। जैसे—जोड़ या बाकी लगना। २९. आर्थिक क्षेत्र मे अनिवार्य रूप से किसी प्रकार का दातव्य या देन निश्चित होना अथवा हिस्से लगना। जैसे—(क) कर, जुरमाना, या महसूल लगना। (ख) उधार लिए हुए रुपयों पर सूद लगना। (ग) रोजगार मे दाँव पर रुपए लगना। ३०. यानों, सवारियों आदि के संबंध मे किसी स्थान पर आकर, टिकना, ठहरना या रुकना। जैसे—(क) किनारे पर नाव या जहाज लगना। (ख) दरवाजे पर गाड़ी या पालकी लगना। (ग) प्लेट-फार्म पर इंजन या रेलगाड़ी के डिब्बे लगना। ३१. जहाजों, नावों

आदि के सबंध मे चलते समय छिछले पानी म नीचे की जमीन या तल के साथ इस प्रकार उनका पेंदा टिकना या सटना कि उनकी गति रुक जाय। टिकना। जैसे—रास्ते मे पानी छिछला होने के कारण नाव कई जगह लग गई। ३२ वनस्पतियों आदि के सबध मे उनके आवश्यक अग अकुरित या प्रस्फुटित होना। जैसे—फल, फूल या मजरी लगना। ३३ पेड-पौधो आदि के सबध मे किसी स्थान पर जमकर जीवित रहना और फलना-फूलना। जैसे—(क) कही से आया हुआ पेड बगीचे मे लगना। (ख) क्यारी मे गुलाब की कलमे लगना। ३४ सेंद्रिय पदार्थों के सबध मे किसी प्रकार के दबाव, रोग, विकार, सघर्ष आदि के कारण सडायँध उत्पन्न होना। गलने या सडने की क्रिया का आरभ होना। जैसे—(क) घोडे की पीठ या बैल का कधा लगना, अर्थात् उसमे घाव होना। (ख) बरसात मे पडे पडे फलो का लगना, अर्थात् उनका सडना आरभ होना। ३५. किसी पदार्थ मे ऐसा रासायनिक विकार उत्पन्न होना जिससे उसकी आयु तथा शक्ति दिन पर दिन क्षीण होने लगती है। जैसे—(क) दीवार मे नोना लगना। (ख) लोहे मे जग या मोरचा लगना। ३६. किसी पदार्थ मे ऐसे कीडे आदि उत्पन्न होना या बाहर से आकर सम्मिलित होना जो उस चीज को खाकर या और किसी प्रकार नष्ट करते हो। जैसे—(क) लकडी मे घुन या दीमक लगना। (ख) ऊनी या रेशमी कपडो मे कीड़े लगना। (ग) गुड मे च्यूंटे या मिठाई म च्यूँटियाँ लगना। ३७ खाद्य पदार्थों के सबध मे, कडी आँच पाने या जल आदि कम होने के कारण उबाले या पकाये जाने वाले पदार्थ का कुछ अश बरतन के पेंदे मे जम, चिपक या सट जाना। जैसे—हलुआ चलाते रहो, नही तो लग जायगा। ३८. गौ, भैंस बकरी आदि दूध देनेवाले पशुओ का दुहा जाना। जैसे—यह भैंस दिन म तीन बार लगती है। ३९ आक्रामक या घातक जीवो, व्यक्तियों आदि का प्राय स्थान विशेष पर आते रहना और चोट करना, अथवा कष्ट या हानि पहुँचना। जैसे—(क) इस रास्ते मे डाकू लगते है। (ख) इस जगल मे भालू (या शेर) लगते है। (ग) छत पर (या बगीचे मे) मच्छर लगते हैं। ४० किसी चीज या दाम का भाव आँका जाना। मूल्याकन होना। जैसे—इस अँगूठी का बाजार मे जो दाम लगे, वह मुझे दे देना। ४१ स्त्री के साथ प्रसग, मैथुन या सभोग करना। (बाजारू)

विशेष—(क) इस क्रिया का प्रयोग बहुत सी सज्ञाओं और क्रियाओं के साथ अलग अलग प्रकार के अर्थों मे होता है। और इसीलिए तात्विक दृष्टि से ऐसे प्रयोगो की गणना मुहा० म होती है। जैसे—किसी चीज पर दाँत या निगाह लगना, किसी काम या चीज मे हाथ लगना, कोई चीज हाथ लगना आदि। (ख) अनेक अवसरों पर यह क्रिया दूसरी क्रियाओं के साथ सयो० क्रि० के रूप मे भी लगकर अनेक प्रकार के अर्थ देती है। अधिकतर ऐसे अवसरो पर इसका प्रयोग यह सूचित करता है कि किसी ऐसी क्रिया का आरंभ हुआ है, जो अभी कुछ समय तक चलती या होती रहेगी। जैसे—(क) कुछ कहने, पढ़ने बोलने या लिखने लगना। (ख) चलने, दौडने या भागने लगना। (घ) झगडने या लडने लगना आदि।

लगनि†—स्त्री०=लगन।

लगनी—स्त्री० [फा० लगन] १. छोटी थाली। तश्तरी। रिकाबी। २ पानदान के अन्दर की पान रखने की छोटी तश्तरी।

लगनीय—वि० [सं०√लग् (मिलना)+अनीयर] जो सबद्ध या संयुक्त किया जा सके। लगाये जाने के योग्य।

लग-भग—अव्य० [हिं० लग+अनु० भग] मान, संख्या, समय आदि की अनुमानित अवधि या मात्रा बहुत-कुछ निश्चित भाव से द्योतित करनेवाला अव्यय। जैसे—(क) इस काम मे लगभग सौ रुपये लगेंगे। (ख) वे वहाँ लगभग चार महीने रहे।

लगमात—स्त्री०=लगमात्रा।

लगमात्रा—स्त्री० [हिं० लगना+स०मात्रा] स्वरो के वे चिह्न जो उच्चारण के लिए व्यजनो में जोडे जाते हैं। जैसे—ए का े ओ का ो। पु० १. वह जो किसी के साथ उक्त प्रकार से प्राय या सदा लगा रहता हो। २ स्त्री का उपपति। यार। (परिहास और व्यग)। उदा०—अच्छे ही किये ढूँढ़े के पैदा ये दुगाना। लगमात्रे दोनो हैं तरहदार हमारे।—जान साहब।

लगर†—पु०=लग्घड। (शिकारी पक्षी)।

लग-लग—स्त्री० [हिं० लगना] १. किसी प्रकार की लगावट या आरंम्भिक या हलका रूप। २ किसी प्रकार के सबंध की ऐसी बात-चीत जो अभी चल रही हो। जैसे—उनके लडके का अभी ब्याह तो नही हुआ है पर लग-लग लगी है, अर्थात् बात-चीत चल रही है। वि० [अव्य० लक़लक़] १. बहुत दुबला-पतला २. कोमल। सुकुमार।

लगव—वि०=लगो (झूठ)।

लगवाना—स० [हिं० लगाना का प्रे०] १. किसी को कुछ लगाने में प्रवृत्त करना। २. संभोग कराना (बाजारू)।

लगवार—पु० [हिं० लगना=प्रसंग करना+वार (प्रत्य०)] स्त्री का उपपति। यार। आशना।

लगवीयत—स्त्री० [अ० लग्वियत] बेहूदगी।

लगहर—पु० [हिं० लाग+हर (प्रत्य०)] ऐसा काँटा या तराजू जिसमे पासंग हो और इसीलिए जिससे तौलने पर चीज अपेक्षया कम तुलती हो।

लगा—पु० [हिं० लगना] किसी के साथ लगा रहनेवाला, और फलतः तुच्छ या हीन व्यक्ति। (बाजारू) जैसे—लगे की मूँछें उखड़वाऊँगी। (स्त्रियाँ)

लगाई—स्त्री० [हिं० लगना] १ लगने या लगे रहने की अवस्था, भाव या मजदूरी। २ इधर की बात उधर लगाने की क्रिया या भाव।

लगाई-बुझाई—स्त्री० [हिं० लगाना+बुझाना] कहीं झगडा खड़ा करना और फिर इधर-उधर की बातें करके उसे शान्त करने का प्रयत्न करना।

लगाई-लुतरी—स्त्री० [हिं० लगाना+लुतरा] आपस मे झगडा कराने के लिए झूठी-सच्ची बातें इधर-उधर करते फिरना।

लगाऊ—वि० [हिं० लगाना] लगानेवाला।

लगातार—अव्य० [हिं० लगना+तार=सिलसिला] बराबर एक के बाद एक। सिलसिलेवार। निरतर। सतत। जैसे—वह दिन भर लगातार काम करता रहा।

लगान—स्त्री० [हिं० लगना या लगाना] १. लगने या लगाने की क्रिया या भाव। २. किसी के साथ लगे या सटे हुए होने की अवस्था या भाव। लाग। जैसे—इस मकान में बगल वाले मकान से लगान पड़ती है। ३. वह स्थान जहाँ मजदूर आदि सुस्ताने के लिए अपने सिर पर का बोझ उतार कर रखते हैं। टिकान। ४. वह स्थान जहाँ नावें आकर ठहरती हैं और मल्लाह विश्राम करते हैं। ५. किसी की टोह मे उसके पीछे लगने की क्रिया या भाव। जैसे—उसके पीछे तो पुलिस की लगान लगी है। ६. भूमि पर लगनेवाला वह कर जो खेतिहरों की ओर से जमींदार या सरकार को मिलता है। राजस्व। भू-कर। जमाबंदी। पोत।

विशेष—इस अन्तिम अर्थ में यह शब्द अधिकतर पु० रूप में ही प्रयुक्त होता दिखाई देता है।

लगाना—स० [हिं० लगना का स०] १ एक पदार्थ के तल या पार्श्व को दूसरे पदार्थ के तल या पार्श्व के पास इस प्रकार पहुँचाना कि वह आंशिक या पूर्ण रूप से उसके साथ मिल या सट जाय। सलग्न करना। सटाना। जैसे—पुस्तक पर जिल्द या दीवार पर कागज लगाना। २ एक चीज को दूसरी चीज पर जोडना, टाँकना, बैठाना या रखना। जैसे—(क) तसवीर पर या दरवाजे में शीशा लगाना। (ख) टोपी या पगडी पर कँलगी लगाना। (ग) घडी में नया पुरजा या नई सूई लगाना। ३. कोई चीज ठीक तरह से काम मे लाने के लिए उसे यथास्थान खडा या स्थित करना। जैसे—(क) जहाज या नाव मे पाल लगाना। (ख) दरवाजे के आगे परदा लगाना। ४. किसी तल पर कोई गाढ़ा तरल पदार्थ पोतना, फेरना या मलना। लेप करना। जैसे—(क) खिड़कियों या दरवाजो में रग लगाना। (ख) पैरो या हाथो में मेहदी लगाना। (ग) शरीर के किसी अग मे तेल या दवा लगाना। (घ) जूते पर पालिश लगाना। ५. किसी रूप मे कोई चीज किसी के पीछे या साथ सम्मिलित करना। जैसे—पुस्तक मे अनुक्रमणिका या परिशिष्ट लगाना। ६ किसी व्यक्ति का भेद लेने या उससे कोई उद्देश्य सिद्ध कराने के लिए किसी को उसके पीछे या साथ नियुक्त करना। जैसे—(क) किसी के पीछे जासूस लगाना। (ख) किसी से कोई काम कराने के लिए उसके पीछे आदमी लगाना। ७. कोई अनिष्ट या कष्टदायक तत्त्व या बात किसी के साथ संबद्ध या सलग्न करना। जैसे—(क) किसी के पीछे कोई आफत या मुकदमा लगाना। (ख) किसी को कोई बुरी आदत या व्यसन लगाना। ८. आवरण, निरोधन आदि के रूप मे काम आनेवाली चीज इस प्रकार यथास्थान बैठाना कि उससे रुकावट हो सके। जैसे—(क) कमरे के किवाड़ या दरवाजे लगाना अर्थात् कमरा बन्द करना। (ख) डिबिया या संदूक का ढक्कन लगाना ; अर्थात् डिबिया या संदूक बन्द करना। ९ किसी काम, चीज, या बात या व्यक्ति को ऐसे स्थान या स्थिति में पहुँचाना या लाना कि उसका ठीक उपयोग, सार्थकता या सिद्धि हो सके। जैसे—(क) नाव किनारे पर या पार लगाना। (ख)। मनीआर्डर या रजिस्ट्री लगाना। (ग) किसी आदमी को काम या नौकरी पर लगाना। १०. चीज (या चीजें) ऐसे क्रम से या रूप मे रखना कि नियमित रूप से उसका यथोचित उपयोग हो सके। जैसे—(क) आलमारी में किताबें या फर्श पर गद्दी-तकिया लगाना। (ख) पगत के आगे पत्तलें लगाना। (ग) दूकान या बिस्तर लगाना। ११. किसी पदार्थ का उपभोग करने के लिए उसे ठीक स्थान पर रखना। जैसे—(क) सिर पर टोपी या पगड़ी लगाना। (ख) सहारे के लिए पीठ के पीछे या हाथ के नीचे तकिया लगाना। १२ कोई चीज या उसके उपकरण किसी विशिष्ट क्रम या विधान से यथास्थान स्थित करना। जैसे—(क) पुस्तकों का क्रम लगाना। (ख) बीड़ा बनाने के लिए पान लगाना, अर्थात् पान पर कत्था, चूना आदि रखकर उसे मोड़ना। १३. किसी चीज का उपयोग करते हुए उसका व्यय करना। जैसे—(क) ब्याह शादी में रुपए लगाना। (ख) काम में समय लगाना। (ग) काम करने मे देर लगाना, अर्थात् अधिक समय व्यय करना। १४. किसी को किसी कर्तव्य, कार्य, पद आदि पर नियुक्त या नियोजित करना। मुकर्रर करना। जैसे—(क) किसी जगह पर पहरा लगाना। (ख) किसी को काम या नौकरी पर लगाना। १५ आघात या प्रहार करने के लिए अस्त्र, शस्त्र आदि उद्दिष्ट स्थान पर पहुँचाना। जैसे—(क) किसी को थप्पड़ या मुक्का लगाना। (ख) किसी पर गोली का निशाना लगाना। (ग) किसी चीज पर दाँत या नाखून लगाना। १६ कोई कार्य पूरा करने के लिए किसी प्रकार के उपकरण या साधन का उपयोग या प्रयोग करना। जैसे—(क) कमरा बन्द करने के लिए किवाड, कुडी या सिटकिनी लगाना। (ख) दरवाजे में ताला या ताले मे ताली लगाना। १७ किसी की कोई झूठी-सच्ची निन्दा की बात किसी दूसरे से आकर कहना। कान भरना। जैसे—इधर की बात उधर लगाना।

पद—लगाना-बुझाना=आपस में लोगों को लडाना और फिर समझा-बुझा कर शांत करना।

१८. किसी प्रकार का कार्य या व्यवहार आरंभ करना। जैसे—(क) किसी को किसी बात की आदत या चसका लगाना। (ग) भाई-भाई मे झगड़ा लगाना।

मुहा०—(किसी को) मुँह लगाना=किसी के साथ इतनी नरमी या रियायत का व्यवहार करना कि वह अशालीनता की, उद्दंडतापूर्ण या धृष्टता की बाते और व्यवहार करने लगे। जैसे—नौकरों को बहुत मुँह लगाना ठीक नही है।

१९ किसी विषय मे या व्यक्ति पर किसी चीज या बात का आरोप करना। जैसे—(क) किसी पर अभियोग या दोष लगाना। (ख) किसी विषय मे कोई धारा या नियम लगाना। (ग) स्वयं काम बिगाड़कर दूसरे का नाम लगाना। २०. किसी प्रकार की शारीरिक अनुभूति कराना या अपेक्षा उत्पन्न करना। जैसे—किसी दवा का प्यास या भूख लगाना। २१. मानसिक वृत्ति को किसी ओर ठीक तरह से प्रवृत्त करना। जैसे—(क) किसी काम या बात मे मन लगाना। (ख) पूजन या भजन मे ध्यान लगाना। (ग) आसन या समाधि लगाना। २२ किसी काम या बात को क्रियात्मक रूप देना। घटित करना। जैसे—(क) कपड़ो या किताबों का ढेर लगाना। (ख) किसी का दाह-कर्म करने के लिए चिता लगाना अथवा चिता मे आग लगाना। (ग) देर, बाजी या शर्त लगाना। (घ) नैवेद्य या भोग लगाना। २३ किसी पद, वाक्य या शब्द का अर्थ या आशय समझकर स्थिर करना। जैसे—(क) चौपाई या श्लोक का अर्थ लगाना। (ख) किसी की बातो का कुछ का कुछ

अर्थ लगाना। २४. गणित की कोई क्रिया ठीक तरह से पूरी या सम्पन्न करना। जैसे—जोड़, बाकी या हिसाब लगाना। २५. किसी पर कोई दायित्व या देन नियत या स्थिर करना। जैसे—(क) कर या जुरमाना लगाना। (ख) किसी के जिम्मे कर्ज या देन लगाना। २६ यान या सवारी किसी स्थान पर टिकाना, ठहराना या रोकना। जैसे—बंदरगाह में जहाज लगाना। २७ पेड़, पौधे, बीज आदि भूमि मे इस प्रकार स्थापित करना कि वे जम या लगकर बढ़ें और फूलें-फलें। जैसे—बगीचे मे आम या गुलाब लगाना। २८ गौएँ, भैसें आदि दुहना। जैसे—यही ग्वाला महल्ले भर की गौएँ लगाता है। २९. कोई चीज देखकर लेने के लिए उसका दाम या भाव कहना या निश्चित करना। मूल्यांकन करना। जैसे—मैंने तो उस मकान का दाम दस हजार लगाया है। ३० यन्त्रों आदि के संबंध मे कल-पुरजे ठीक तरह से बैठाकर उन्हें काम करने के योग्य बनाना। जैसे—आटा पीसने, चारा काटने या रूई धुनने की मशीन लगाना। ३१. किसी प्रकार के काम मे प्रवृत्त या रत करना। जैसे—सामान ढोने के लिए मजदूर लगाना। ३२ ऐसा कार्य करना जिसमे बहुत से लोग एकत्र या सम्मिलित हों। जैसे—तुम तो जहाँ जाते हो वहाँ भीड़ (या मेला) लगा देते हो। ३३ किसी के साथ किसी प्रकार का संबंध स्थापित करना। जैसे—(क) किसी से दोस्ती लगाना। (ख) किसी के साथ कोई रिश्ता लगाना।

मुहा०—किसी को लगा कर कुछ कहना या गाली देना=बीच मे किसी का संबंध स्थापित करके किसी प्रकार का आरोप करना। जैसे—किसी की माँ-बहन को लगाकर कुछ कहना बहुत बड़ी नीचता है।

३४ शरीर का कोई अंग ऐसी स्थिति मे लाना कि वह अपना काम ठीक तरह से कर सके। जैसे—काम मे हाथ लगाना।

लगाम—स्त्री० [फा०] १. जोते जानेवाले घोड़े के मुँह मे लगाया जानेवाला एक प्रकार का अर्ध चन्द्राकार ढाँचा जिससे रासें बँधी होती हैं।

क्रि० प्र०—चढ़ाना—लगाना।

मुहा०—जबान या मुँह में लगाम न होना=बिना सोचे-समझे बकने की आदत होना।

२ बाग। रास।

मुहा०—(किसी के पीछे) लगाम लिये फिरना=धरने-पकड़ने के उद्देश्य से किसी का पीछा करना।

३ कोई ऐसी चीज या बात जो किसी को नियत्रण मे रखती हो। जैसे—उनकी जबान (या मुँह) मे लगाम तो है ही नहीं, अर्थात् वे अपनी बोलचाल पर नियत्रण नहीं रख सकते।

क्रि० प्र०—चढ़ाना।—लगाना।

लगामी—स्त्री० [फा० लगाम+हिं० ई (प्रत्य०)] गाय-भैंस, घोड़े, बकरी आदि पशुओ के मुँह पर बाँधी जाने वाली वह जाली जिसके फल-स्वरूप वे कुछ काटने या खाने से वंचित हो जाते हैं।

लगाय—स्त्री० [हिं० लगना+आय (प्रत्य०)] १. लगावट। २. प्रेम। संबध। उदा०—तिन सौ क्यो कीजिए लगाय।—सूर।

अव्य० तक। पर्यंत।

लगायत—अव्य०=लगाय।

लगार*—स्त्री० [हिं० लगना+आर (प्रत्य०)] १. काम करने-कराने का बँधा हुआ ढंग या प्रकार। बंधी। बंधेज। २. क्रम। सिलसिला। ३. लगाव। संबध। ४. प्रीति। प्रेम। लगाव। ५. वह जिससे किसी प्रकार का घनिष्ठ संबध हो। ६. किसी दूसरे के लिए रहस्यमय बातों का पता लगानेवाला दूत। ७ वह स्थान जहाँ से जुआरियों को जुए के अड्डे पर पहुँचाया जाता हो। ठिकाना।

वि० १. किसी के पीछे या साथ लगा रहनेवाला। २. किसी के साथ प्रेम आदि का संबंध रखनेवाला।

लगा-लगी—स्त्री० [हिं० लगना] १ लगने अर्थात् प्रेम-संबंध चलता होने की अवस्था या भाव। २ मेल-जोल। हेल-मेल। ३. लाग-डाँट।

लगाव—पु० [हिं० लगना+आव (प्रत्य०)] १. किसी के साथ लगे हुए होने की अवस्था, गुण या भाव। २ सम्बन्ध। वास्ता। ३. प्रेम-सम्बन्ध।

लगावट—स्त्री० [हिं० लगना+आवट (प्रत्य०)] १. लगने या लगे हुए होने का भाव या स्थिति। २. लगाव। संबध। ३. शृंगारिक क्षेत्र का अनुराग, प्रेम या संबध।

लगावन†—स्त्री०=लगाव।

लगावना—स०=लगाना।

लगा-सगा—पु० [हिं० लगना+सगा अनु०] १ संपर्क। संबध। २. अनुचित या गुप्त संबध।

लगि*—अव्य० [हिं० लग] १. तक। पर्यंत। २. निकट। पास। उदा०—सौंठ नाहिं लगि बात को पूछा।—जायसी। ३. के लिए। वास्ते। उदा०—कौड़ी लगि नग की रज छानत।—सूर।

* स्त्री०=लग्गी।

लगित—भू० कृ० [सं०√लग् (सग)+क्त] १. लगा या लगाया हुआ। २. संयुक्त। संबद्ध। ३ प्राप्त। ४ प्रविष्ट।

लगी†—स्त्री० [हिं० लगना] १ वह अवस्था जिसमे पर-स्त्री-पुरुष मे संबंध स्थापित हो। २ लाग-डाँट। (दे०)

† स्त्री०=लग्गी।

लगी-बदी—स्त्री० [हिं० लगना+बदना] १ वह प्रेमपूर्ण या मित्रतापूर्ण अवस्था जिसमे दोनों पक्ष एक दूसरे के कहे अनुसार दूसरो से बातचीत या व्यवहार करते हैं। २ लाग-डाँट। (दे०)

लगु*†—अव्य०=लगि।

लगुआ—वि०=लग्गू।

लगुड़—पु० [सं०√लग्+उलच्, ल—ड] १ डंडा। २. लाठी। ३ लोहे का एक प्रकार का डंडा जिसे प्राचीन काल मे पैदल सिपाही हाथ मे रखते थे। ३. लाल कनेर।

लगुडी (डिन्)—वि० [सं० लगुड+इनि] दंडधारी।

† स्त्री० 'लगुड' का स्त्री० अल्पा०।

लगुल—पु० [सं० लांगूल] १. लाठी। लगुड। २. शिश्न। (डिं०)

लगुवा†—वि०=लग्गू।

लगूर (गूल)—स्त्री०=लाँगूल (पूंछ)।

† पु०=लंगूर।

लगे—अव्य० [हिं० लगना] १ निकट। पास। २. तक। पर्यन्त। (पूरब)

लगे-लगे—पु० [हिं० लगाना] बंदर।

विशेष—प्राय: बन्दरों के आने पर लोग 'लगी लगी' कह कर उन्हें भगाने के लिए चिल्लाते हैं। इसी से इसका यह अर्थ हुआ है।

लगी—अव्य० [हिं० लगना] १. के लिए। वास्ते। उदा०—लगी मेल्हियी रुपमणी।—प्रिथिराज। २. तक। पर्यन्त।

लग्व—वि० [अ०] १. जो किसी काम का न हो। २. असंगत और बेतुका।

स्त्री० बिलकुल झूठी और व्यर्थ की बात।

लगौहाँ—वि० [हिं० लगना+औहाँ (प्रत्य०)] १ जिसमे लगन या लगने की कामना या प्रवृत्ति हो। लगने का आकांक्षी। २. रिझवार।

लग्गत—स्त्री० [हिं० लगना] १. व्यापार मे लगाया हुआ धन। पूंजी। (इन्वेस्टमेन्ट) २ दे० 'लागत'।

लग्गा—पु० [स० लगुड] [स्त्री० अल्पा० लग्गी] १. कई प्रकार के कार्यों में काम आनेवाला लबा बाँस। जैसे—नाव चलाने का लग्गा। २. पेड से फल तोड़ने का लग्गा।

मुहा०—**लग्गे से पानी पिलाना**=बिलकुल अलग या बहुत दूर रहकर नाम मात्र के लिए थोडी-सी या नही के बराबर सहायता करना।

३. फरसे के आकार का काठ का एक उपकरण जिससे कीचड़, घास आदि समेटते या हटाते हैं।

पुं० [हिं० लगना] १ कार्य आरम्भ करने के लिए उसमे हाथ लगाने की क्रिया या भाव। जैसे—मकान बनाने में लग्गा लग गया है। २. किसी दाँव पर जुआरी से भिन्न किसी और व्यक्ति द्वारा लगाया जानेवाला धन। ३. बराबरी की टक्कर या मुकाबला। (लखनऊ)

मुहा०—**लग्गा खाना**=किसी की टक्कर या बराबरी का होना। जैसे—इन बातो मे वह तुमसे लग्गा नहीं खा सकता।

क्रि० प्र०—लगना।—लगाना।

लग्गू—वि० [हिं० लगना] १. लगनेवाला। २ किसी के साथ रहने या आने-जानेवाला। जैसे—पिछलग्गू।

†पु० स्त्री का उपपति या यार। (बाजारू)

लग्गू-बझ्झू—पु० [हिं० लगना+बझना] वे लोग जो किसी बडे आदमी के साथ लगे रहते हो और उसकी हाँ मे हाँ मिलाते रहते हो।

लग्घड़—पुं० [देश०] १. एक प्रकार का छोटा चीता जो पशुओं का शिकार करने के लिए पाला और सधाया जाता है। २ बाज की जाति का भूरे रग का एक प्रकार का शिकारी पक्षी जो प्राय: तीतर, बटेर आदि पकड़कर खाता है।

लग्घा—पु० [स्त्री० अल्पा० लग्घी] =लग्गा।

लग्घी—स्त्री० १. =लग्गी। २. वह बाँस जिससे नदी के तल पर टेक लगाकर नाव किसी ओर बढ़ाई जाती है।

लग्न—वि० [सं० √लग् (लगना)+क्त, नि० त—न] १. किसी के साथ लगा या सटा हुआ। २. लज्जित। शरमिंदा। ३. आसक्त।

पुं० १. फलित ज्योतिष में, किसी राशि के पूर्वी या उदय क्षितिज पर लगे हुए या वर्तमान होने की स्थिति जो सभी कामो और बातों में शुभाशुभ फल देनेवाली मानी जाती है।

विशेष—सूर्य प्रत्येक राशि में एक-एक महीने रहता है। अत: जिस राशि का सूर्य जिन दिनों होता है वही राशि उन दिनों उसके उदय क्षितिज अर्थात् पूर्वी क्षितिज पर रहती है, परन्तु पृथ्वी अपने अक्ष पर बराबर घूमती रहती है इस लिए दिन-रात मे बारहों राशियाँ दो-दो घंटों के लिए पूर्वी क्षितिज पर आती रहती है। यही दो घंटे का समय हर राशि का लग्न-काल माना जाता है। उदाहरणार्थ—यदि सूर्योदय के समय मेष लग्न हो तो उसके दो-दो घन्टे बाद वृष, मिथुन, कर्क आदि राशियों का लग्न-काल होता जाता है। परन्तु सूर्य और पृथ्वी दोनो अपनी कक्षा पर आगे भी बढते रहते हैं और दिनमान भी घटता-बढ़ता रहता है। इसके फलस्वरूप प्रत्येक राशि का लग्न-काल भी प्रतिदिन प्राय ४ मिनट आगे बढ़ता रहता है। जितने समय तक कोई राशि पूर्वी अथवा उदय क्षितिज पर स्थित रहती है, उतना समय उसी राशि के नाम से अभिहित होता है। जैसे—यदि कहा जाय कि कन्या लग्न में विवाह होगा तो इसका आशय यह होगा कि जिस समय कन्या राशि पूर्वी या उदय क्षितिज पर स्थित होगी, उस समय विवाह होगा।

२. कोई शुभ काम करने के लिए फलित ज्योतिष के अनुसार निश्चित किया हुआ मुहूर्त। जैसे—यज्ञोपवीत या विवाह का लग्न। ३. विवाह। ब्याह। ४ वे दिन जिसमें फलित ज्योतिष के अनुसार विवाह आदि कृत्य विहित होते हैं। ५ बंदीजन सूत। ६. दे० 'लमन'।

लग्न-कंकण—पुं० [सं० मध्य० स०] वह कंकण या मगल-सूत्र जो विवाह के पूर्व वर और कन्या के हाथ मे बाँधा जाता है।

लग्नक—पु० [सं० लग्न+कन्] १ वह जो किसी की जमानत करे। प्रतिभू। जामिन। २ सगीत मे एक प्रकार का राग जो हनुमान् के मत से मेघ राग का पुत्र है।

लग्न-कुंडली—स्त्री० [स० ष० त०] फलित ज्योतिष मे वह चक्र या कुडली जिससे यह जाना जाता है कि किसी के जन्म के समय कौन-कौन से ग्रह किस किस राशि मे स्थित थे। जन्म-कुंडली।

लग्न-बन्ध—पु० [स०] गाने या बजाने के समय स्वर के मुख्य अंश या श्रुतियो को आपस मे एक दूसरे से अलग न होने देना और सुंदरता से उनका संयोग करना। लाग-डाँट। (संगीत)

लग्न-दिन—पुं० [स० ष० त०] वह दिन जिसमे विवाह का मुहूर्त निकला हो।

लग्न-पत्र—पु० [स० ष० त०] वह पत्र जिसमे विवाह सबधी कृत्यों तथा उनके समय का विवरण रहता है।

लग्न-पत्रिका—स्त्री० [सं० ष० त०]=लग्नपत्र।

लग्न-पत्री—स्त्री०=लग्न-पत्र।

लग्नायु (स्)—स्त्री० [सं० लग्न-आयुस्, मध्य० स०] फलित ज्योतिष में लग्न-कुडली के अनुसार स्थिर होनेवाली आयु।

लग्नेश—पु० [स० लग्न-ईश, ष० त०] किसी लग्न का स्वामी ग्रह। (ज्यो०)

लग्नोदय—पु० [स० लग्न-उदय, ष० त०] १ किसी लग्न का उदय अर्थात् आरभ होना। २ किसी लग्न के उदय होने का समय।

लघमी पुष्प—पुं० [स० लक्ष्मी पुष्प] पद्मराग मणि। लाल। माणिक्य। (डिं०)

लघिमा (मन्)—स्त्री० [सं० लघु+इमनिच्] १ लघु अर्थात् छोटे होने की अवस्था या भाव। २ आठ सिद्धियों में से एक, जिसकी प्राप्ति हो जाने पर मनुष्य लघुतम रूप धारण कर सकता है।

लघु—वि० [सं०√लंघ् (गति)+कु, न-लोप] [भाव० लघिमा, लघुता, लाघव] १. जो बड़ा न हो। छोटा। २. किसी की तुलना में छोटा। कनिष्ठ। जैसे—लघु मात्रा। ३. जिसमें उग्रता या तीव्रता न हो। कोमल। हलका। जैसे—लघु स्वर। ४. तीव्र गति वाला। तेज चाल वाला। ५. अच्छा। बढ़िया। ६ सुन्दर। ७. जिसमें किसी प्रकार का सार या तत्त्व न हो। निःसार। ८. थोड़ा। कम। ९. तुच्छ। नीच। १०. दुबला-पतला और कमजोर। दुर्बल।

पुं० १ काला अगर। २ उशीर। खस। ३ पन्द्रह क्षणों का समय। ४. पिंगल में ऐसा वर्ण जो एक ही मात्रा का हो। इसका चिह्न (।) है। ५ ह्रस्व स्वर। (व्याकरण) ६ बारह मात्राओं का प्राणायाम। ७. ज्योतिष में, हस्त, आश्विनी और पुष्य नक्षत्र।

लघु-कटाई—स्त्री० [सं० लघु-कटकी] भटकटैया।

लघु-करण—पुं० [सं० ष० त०] किसी काम चीज या बात को छोटा या हलका करना। छोटे आकार-प्रकार में लाना। संक्षिप्त करना। (कम्यूटेशन)

लघु-कर्णी—स्त्री० [सं० ब० स०,+ङीष्] मूर्व्वा। मरोड़-फली।

लघु-काय—पुं० [सं० ब० स०] बकरा।

वि० छोटे शरीर वाला।

लघु-काष्ठ—पुं० [कर्म० स०] वह छोटा डंडा जिससे बड़े डंडे का वार रोका जाता है।

लघु-क्रम—पुं० [कर्म० स०] जल्दी जल्दी चलने की क्रिया। तेज चाल।

लघु-गण—पुं० [कर्म० स०] अश्विनी, पुष्य और हस्त इन तीनों नक्षत्रों का समूह।

लघु-गति—वि० [ब० स०] तेज चलनेवाला।

लघु-चंदन—पुं० [कर्म० स०] अगर नाम की सुगंधित लकड़ी।

लघु-चित्त—वि० [ब० स०] चंचल चित्तवाला।

लघु-चेता (तस्)—वि० [ब० स०] तुच्छ या छोटे विचारोंवाला। नीच। हय।

लघुच्छदा—स्त्री० [ब० स०] बड़ी शतावर।

लघु-जांगल—पुं० [सं०] लवा (पक्षी)।

लघुतम—वि० [सं० लघु+तमप्] सबसे छोटा।

लघुतम-समापवर्त्य—पुं० [कर्म० स०] वह सबसे छोटी संख्या जो दो या अधिक संख्याओं से पूरी-पूरी बँट जाय।

लघुता—स्त्री० [सं० लघु+तल्+टाप्] लघु होने की अवस्था या भाव। लघुत्व। छोटाई।

लघु-तुपक—स्त्री० [सं०] एक तरह की छोटी बंदूक। तमंचा।

लघुतमापवर्त्य—पुं० [सं० कर्म० स०]=लघुतम समापवर्त्य।

लघुत्व—पुं० [सं० लघु+त्व] लघु होने की अवस्था या भाव। लघुता।

लघु-द्राक्षा—स्त्री० [कर्म० स०] किशमिश।

लघुद्रावी (विन्)—पुं० [सं० लघु√द्रु (गति)+णिनि] पारा।

लघु-नामा (मन्)—पुं० [सं० ब० स०] अगर नामक सुगन्धित लकड़ी।

लघु-पंचक—पुं० [सं० कर्म० स०] शालिपर्णी, पिठवन, कटाई (छोटी), कटेहरी (बड़ी) और गोखरू इन पाँचों की जड़ों का समाहार।

लघु-पत्र—पुं० [ब० स०] कमीला।

लघु-पत्री—स्त्री० [ब० स०,+ङीष्] अश्वत्थ वृक्ष।

लघु-पर्णी—स्त्री० [ब० स०,+ङीष्] १ मूर्व्वा। मरोडफली। २ शत-मूली। शतावर।

लघु-पाक—वि० [कर्म० स०] (खाद्य पदार्थ) जो सहज या जल्दी में पच जाय।

लघुपाकी (किन्)—पुं० [सं० लघुपाक+इनि ?] चेना नामक कदन्न। वि०=लघुपाक।

लघु-पुष्प—पुं० [ब० स०] भुइँ कदंब।

लघु-पुष्पा—स्त्री० [ब० स०,+टाप्] पीला केवड़ा। स्वर्ण केतकी।

लघु-प्रयत्न—वि० [ब० स०] बहुत थोड़ा प्रयत्न करनेवाला। फलतः अकर्मण्य और आलसी।

लघु-फल—पुं० [ब० स०] गूलर (वृक्ष)।

लघुभुक् (भुज्)—वि० [सं० लघु√भुज् (खाना)+क्विप्] कम खाने-वाला। अल्पाहारी।

लघु-मति—वि० [ब० स०] १ जिसे बहुत थोड़ी बुद्धि हो। २ छोटे या तुच्छ विचारोंवाला।

लघुमना (नस्)—वि० [ब० स०] छोटे या तुच्छ मन (अर्थात् विचारों) वाला।

लघु-मांस—पुं० [ब० स०] तीतर (पक्षी)।

लघु-मान—पुं० [कर्म० स०] नायक के किसी दूसरी स्त्री से बात-चीत करने मात्र से नायिका द्वारा उस पर प्रकट किया जानेवाला रोष।

लघु-मेरु—पुं० [कर्म० स०] संगीत में एक प्रकार का ताला।

लघु-लता—स्त्री० [कर्म० स०] १. करेले की बेल। २ अनन्त मूल।

लघु-वृत्ति—वि० [कर्म० स०] छोटे या हलके विचारोंवाला।

लघु-शंका—स्त्री० [कर्म स०] मूत्रोत्सर्ग। पेशाब करना।

लघु-शंख—पुं० [कर्म० स०] घोंघा।

लघु हस्त—वि० [ब० स०] १. जो बहुत जल्दी जल्दी बाण चला सकता हो। अच्छा धनुर्धर। २. फुर्ती से और अच्छा काम करनेवाला।

लघ्वाशी (शिन्)—वि० [सं० लघु√अश् (खाना)+णिनि, उप० स०] कम खानेवाला। अल्पाहारी।

लघ्वी—स्त्री० [सं० लघु+ङीष्] १. बेर नामक फल। २ असबरग। स्पृक्का।

†स्त्री०=लघु-शंका। (महाराष्ट्र)

लचा—स्त्री०=लचक।

लचक—स्त्री० [हिं० लचकना] १. लचकने की क्रिया या भाव। लचन। झुकाव। जैसे—कमर की लचक।

क्रि० प्र०—खाना।

२ वह गुण जिसके कारण कोई चीज लचकती या झुकती है। ३ कमर आदि में लचकने के कारण होनेवाली पीड़ा।

क्रि० प्र०—पड़ना।

स्त्री० [देश०] एक प्रकार की बड़ी नाव।

लचकना—अ० [?] १. किसी लम्बी चीज का दबाव आदि के फल-

स्वरूप मध्य भाग पर से कुछ झुकना या मुड़ना। २. चलते समय कमर का थोड़ा झुकना या मुड़ना जो सौंदर्यसूचक माना जाता है।

लचकनि†—स्त्री०=लचक।

लचका—पुं० [हिं० लचकना] १. लचकने के कारण लगनेवाला आघात।

क्रि० प्र०—आना। —लगना।

२. लचक। ३. जल-विहार के काम आनेवाली एक प्रकार की नाव। ४. कपड़े पर टाँका जानेवाला एक प्रकार का साज जो सुनहला और रुपहला दोनों प्रकार का होता है।

लचकाना—स० [हिं० लचकना] किसी पदार्थ को लचकने मे प्रवृत्त करना। झुकाना। लचाना।

लचकीला—वि०=लचीला।

लचकौहाँ—वि० [हिं० लचकना+औहाँ (प्रत्य०)] १ जो रह-रह-कर लचकता हो। २. लचकने की प्रवृत्ति रखनेवाला। ३. लचीला।

लचन—स्त्री०=लचक।

लचना—अ०=लचकना।

लचलचा—वि०=लचीला।

लचाका†—पुं० १.=लचक। २=लचका।

लचाकेदार—वि० [हिं० लचाका+फा० दार (प्रत्य०)] मजेदार। बढ़िया। (बाजारू)

लचाना†—स० [हिं० लचना का स० रूप] लचने या लचकने मे प्रवृत्त करना। लचकाना।

लचार—वि०=लाचार।

लचारी—स्त्री० [हिं० अचार] आम का एक प्रकार का खट्टा अचार जिसमे तेल नही छोड़ा जाता है।

स्त्री० [?] १ भेंट। २. एक तरह का गीत।

स्त्री०=लाचारी।

लचीला—वि० [हिं० लचना+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० लचीली] जो दबाये जाने पर कुछ या अधिक झुक या मुड जाता हो परन्तु दबाव छूटने पर फिर अपनी सामान्य स्थिति प्राप्त कर लेता हो।

लचुई—स्त्री०=लुच्ची (मैदे की पूरी)।

लच्छ—पुं०=लक्ष।

वि०=लक्ष (लाख)।

†स्त्री०=लक्ष्मी।

लच्छण—पुं० [सं० लक्षण] १. स्वभाव। (डिं०) २. लक्षण। (डिं०)

† पुं०=लक्ष्मण।

लच्छन*—पुं० १.=लक्षण। २. =लक्ष्मण।

लच्छना—स्त्री०=लक्षणा।

लच्छमण—वि० [सं० लक्ष्मीवान्] धनवान्। अमीर। (डिं०)

पुं०=लक्ष्मण।

लच्छमी—स्त्री०=लक्ष्मी।

लच्छा—पुं० [अनु०] [स्त्री० अल्पा० लच्छी] १. कुछ विशेष प्रकार से लगाये गये बहुत से तारों या डोरों का समूह। गुच्छे या झब्बे के रूप मे लगाए हुए तार। जैसे—रेशम का लच्छा, सूत का लच्छा। २. किसी चीज के सूत की तरह ऐसे लंबे और पतले कटे हुए टुकड़े जो आपस में उलझकर मिल जाते हों। जैसे—अदरक, गरी, पेठे या प्याज का लच्छा। ३. किसी उबाली या पकायी हुई गाढ़ी चीज के रूप के लंबोतरे अंश जो प्रायः आपस में मिले रहते हैं। जैसे—मलाई या रबड़ी के लच्छे। ४. मैदे की एक प्रकार की मिठाई जो प्रायः पतले लंबे सूत की तरह और देखने में उलझी हुई डोर के समान होती है। ५. पतली और हलकी जंजीरो से बना हुआ एक प्रकार का गहना जो हाथ या पैर मे पहना जाता है। ६. एक प्रकार का घटिया और मिलावटी केसर।

लच्छा साख—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की संकर रागिनी।

लच्छि*—स्त्री०=लक्ष्मी।

लच्छित†—वि०=लक्षित।

लच्छिनाथ*—पुं० [सं० लक्ष्मीनाथ] लक्ष्मीपति। विष्णु। (डिं०)

लच्छि निवास*—पुं० [सं० लक्ष्मी निवास] विष्णु। नारायण।

लच्छिमी*—स्त्री०=लक्ष्मी।

लच्छी—स्त्री० [हिं० लच्छा का स्त्री० अल्पा०] सूत, रेशम, ऊन, कलाबत्तू इत्यादि की लपेटी हुई गुच्छी। अट्टी। छोटा लच्छा।

पुं० [?] एक प्रकार का घोड़ा।

स्त्री०=लक्ष्मी।

लच्छेदार—वि० [हिं० लच्छा+फा० दार (प्रत्य०)] १ (खाद्य पदार्थ) जिसमे लच्छे पडे या बने हों। लच्छोंवाला। जैसे—लच्छेदार रबड़ी। २. (बात) जो चिकनी-चुपड़ी तथा मजेदार हो।

लछन†—पुं०=लक्षण।

लछना†—अ०=लखना।

लछमन†—पुं०=लक्ष्मण।

लछमन झूला—पुं० [हिं० लछमन+झूला] १ बदरीनारायण के मार्ग मे एक स्थान जहाँ पहले पुरानी चाल का रस्सो का एक लटकौवाँ पुल था, जिसे झूला कहते थे। २. रस्सो या तारो आदि का वह पुल जो बीच मे झूले की तरह नीचे लटकता हो। झूला पुल। ३. एक प्रकार की बेल या लता।

लछमना—स्त्री० लक्ष्मणा।

लछमी—स्त्री०=लक्ष्मी।

लछारा—वि० [?] १. लम्बा। २. बड़ा।

लछिआना—स० [हिं० लच्छा] डोरे, सूत आदि का लच्छा या लच्छी बनाना।

†अ० डोरे, सूत की तरह के पदार्थों के लच्छे या लच्छी के रूप में आना या बनाना।

† अ० [सं० लक्ष] दिखाई देना। प्रकट या लक्षित होना। उदा०—लच्छन चिन्हन जो लछिआई।—नंददास।

लज†—स्त्री०=लाज।

लजना†—अ० =लजाना

लजनी—स्त्री० [हिं० लजाना] लजालू का पौधा।

लजवंत—वि०=लाजवत।

लजवंती—स्त्री०=लाजवंती।

लजवाना—स० [हिं० लजाना] दूसरे को लज्जित करना। शरमिन्दा करना।

लजाधुर—वि० [सं० लज्जाधर] जो बहुत अधिक लज्जा करे। लज्जा-वान्। शर्मीला।
†पुं०=लजालू। (पौधा)।

लजाना—अ० [हिं० लाज] लाज या शर्म से सिर नीचा करना। लज्जित होना।
स० किसी को लज्जित करना।

लजाधू—वि०, पुं०=लजालू।

लजालू—पुं० [सं० लज्जालु] हाथ डेढ़ हाथ ऊंचा एक कांटेदार छोटा पौधा जिसकी पत्तियाँ छूने से सिकुड़कर बंद हो जाती है, और फिर थोड़ी देर मे धीरे धीरे फैलती हैं। छुई-मुई।
वि० प्रायः बहुत लज्जा करनेवाला। लज्जाशील।

लजावन—वि० [हिं० लजाना=लज्जित करना] लज्जित करनेवाला।

लजावनहार—पुं० [हिं० लजावन] लज्जित करनेवाला।

लजावना—वि० [हिं० लजाना] १. लजाने या लज्जित करनेवाला। लजानेवाला। लजीला।
स०=लजाना (लज्जित करना)।

लजियाना—अ०, स०=लजाना।

लजीज—वि० [अ०, लजीज] (पदार्थ) जो स्वाद मे बहुत अच्छा हो। स्वादिष्ट।

लजीला—वि० [हिं० लाज+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० लजीली] शरमानेवाला। लज्जाशील।

लजुरी—स्त्री० [सं० रज्जु, माग० लज्जु] १ कूएँ से पानी खीचने की डोरी। २. रस्सी।

लजोर†—वि०=लजीला।

लजौना*—वि० [हिं० लज्जा] १ लज्जित करनेवाला। २ दे० 'लजौहाँ'।

लजौहाँ—वि० [सं० लज्जावह] [स्त्री० लजौंही] लाज से युक्त।

लज्ज—स्त्री० [सं० रज्जु] १ कुएँ से पानी निकालने की रस्सी। २. नकेल। ३. लगाम।
† स्त्री०=लज्जा।

लज्जत—स्त्री० [अ० लज्जत] १ लजीज होने की अवस्था या भाव। २ खाने-पीने की वस्तुओं का स्वाद। जायका।

लज्जतदार—वि० [अ० लज्जत+फा० दार] स्वादिष्ट। जायकेदार।

लज्जरी—स्त्री० [सं० लजिरि] लजालू लता। लज्जावंती।

लज्जा—स्त्री० [सं०√लज्ज् (लजाना)+अ+टाप्] [वि० लज्जित] १. अन्तःकरण की वह वृत्ति जिससे स्वभावत. या किसी निन्दनीय आचरण की भावना के कारण दूसरो के सामने वृत्तियाँ संकुचित हो जाती हैं, चेष्टा मंद पड जाती है, मुँह से बात नही निकलती, सिर तथा दृष्टि नीची हो जाती है। लाज। शर्म। हया।
मुहा०—(किसी की बात की) लज्जा करना=किसी बात की बड़ाई की रक्षा का ध्यान करना। मर्यादा का विचार करना। जैसे—अपने कुल की लज्जा करो।
२. मान। मर्यादा। प्रतिष्ठा। जैसे—ईश्वर ने लज्जा रख ली।
क्रि० प्र०—बचाना।—रखना।

लज्जा-पट—पुं० [मध्य० स०] घूंघट।

लज्जा-प्रद—वि० [ष० त०] (कृत्य या बात) जिसके कारण उसके कर्त्ता को लज्जित होना पड़े।

लज्जा-प्रिया—स्त्री० [तृ० त०] केशव के अनुसार मुग्धा नायिका के चार भेदों मे से एक।

लज्जालु—पुं० [सं० लज्जा+आलु] लजालू नाम का पौधा। लाज-वंती।
वि० जो बहुत अधिक शरमाता हो। लज्जाशील। जैसे—लज्जालु स्त्री।

लज्जावंत—वि० [सं० लज्जावत्] जिसे या जिसमें लज्जा का भाव हो। लजीला।

लज्जावती—स्त्री० [सं० लज्जा+मतुप्, म-व,+ङीष्] लजालू नाम का पौधा।
वि० लज्जावान् का स्त्री०।

लज्जावान् (वत्)—वि० [सं० लज्जा+मतुप्, म-व] [स्त्री० लज्जा-वती] जिसे अधिक व प्राय लज्जा होती हो। शर्मदार। हयादार।

लज्जा-शील—वि० [ब० स०] (व्यक्ति) जिसे स्वभावत. लज्जा आती हो।

लज्जा-शून्य—वि० [तृ० त०] लज्जा से रहित। निर्लज्ज।

लज्जा-हीन—वि० [तृ० त०] लज्जाशून्य।

लज्जित—भू० कृ० [सं० लज्जा+इतच्] १ किसी प्रकार के अपराध, दोष या हीन-भावना के फलस्वरूप जो दूसरो के सम्मुख घबराये हुए चुप-चाप खड़ा हो। जिसे लज्जा हुई हो। ३. जो अपने दूषित कृत्य के लिए अपने को अपमानित तथा लज्जा का पात्र समझता हो।

लज्या†—स्त्री०=लज्जा।

लटंका—पुं० [देश०] एक प्रकार का बाँस जो बरमा से आता है।

लट—स्त्री० [सं० लट्ट या लट्वा] १. मुँह या गालो पर लटकता हुआ चिकने तथा परस्पर चिपके हुए सिर के बालो का गुच्छा। अलका। जुल्फ।
मुहा०—लट छटकाना=स्त्रियों के सिर के बाल खोलकर इधर-उधर गिरा या फैला देना। **(किसी के नीचे) लट दबना**=किसी की अधीनता या दबाव मे होना।
२. सिर के उलझे और एक मे गुथे हुए बाल।
स्त्री० [हिं० लटना] लटने की क्रिया या भाव।
स्त्री०=लपट (लौ)।

लटक—स्त्री० [हिं० लटकना] १ लटकने की क्रिया या भाव। नीचे की ओर गिरता सा रहने का भाव। झुकाव। २. चलने, फिरने आदि मे शरीर के अगो मे पडनेवाली लचक जो स्त्रियों मे प्रायः सुन्दर जान पड़ती है। ३ अगो की मनोहर चेष्टा। ४ बात-चीत करने या गाने आदि में दिखाई देनेवाली कोमल भाव-भगी। ५ मन का आकस्मिक उद्वेग। जैसे—बैठे-बैठे तुम्हे यह क्या लटक सूझी। ६ ढालू जमीन। ढाल। (पालकी के कहार)
वि० (गति) जिसमें लटक हो। उदा०—साँवलिया की लटक चाल मोरे मन मे बस गई रे।—गीत।

लटकन—पुं० [हिं० लटकना] १. लटकने की क्रिया या भाव। नीचे की ओर झूलते रहने का भाव। २. लटकती हुई कोई वस्तु।

३. नाक में पहनने का एक प्रकार का गहना जो झूलता रहता है। ४. रत्नों का वह गुच्छा जो कलँगी में लगाते थे। ५. मालखंभ की एक कसरत जिसमें दोनों पैरों के अँगूठे में बेंत फँसाकर पिंडली को लपेटते हुए नीचे की ओर लटकते हैं। ६. कोई ऐसा फालतू पदार्थ या व्यक्ति जो किसी महत्त्वपूर्ण पदार्थ या व्यक्ति के साथ यों ही लगा रहता है या लगा फिरता हो। २. अंडकोश (बाजारू)।

पुं० १. एक प्रकार का पेड़ जिसमे लाल रंग के फूल लगते हैं। २. उक्त रग के फूलों से सुगंधित बीज जिन्हें पानी में पीसने से गेरुआ रंग निकलता है। इस रंग से प्राय कपड़े रँगते हैं।

लटकना—अ० [सं० लडन] १. किसी पदार्थ या व्यक्ति का ऐसी स्थिति में आना या होना कि उसका एक सिरा या अंग किसी ऊँचे आधार में अटका या फँसा हुआ हो और शेष भाग अधर मे नीचे की ओर हो। २ किसी सीधी, खड़ी, टिकी या बनी हुई वस्तु का कोई भाग किसी ओर थोड़ा झुकना। जैसे—(क) बरामदा आगे की ओर कुछ लटक गया है। (ख) बेहोशी में उसका सिर पीछे की ओर लटक गया था।
पद—लटक या लटकती चाल=ऐसी चाल जिसमें मस्ती, हर्ष आदि के कारण आदमी झूमता हुआ चलता हो।
३. किसी काम, बात या व्यक्ति का ऐसी स्थिति मे आना, रहना या होना कि उसके संबंध मे आवश्यक और उचित निर्णय न हो अथवा अभीष्ट सिद्ध न हो। असमंजस या दुविधा की स्थिति में अपेक्षया अधिक समय तक पड़ा या बना रहना। जैसे—(क) अदालतों में मुकदमे बरसों लटके रहते हैं। (ख) नौकरी की दरख्वास्त देने पर उसे महीनों लटके रहना पड़ा।
संयो० क्रि०—रहना।
४ परीक्षा मे अनुत्तीर्ण होना और इस प्रकार पहलेवाली कक्षा मे ही रुका रहना।
सयो० क्रि०—जाना।
वि० [स्त्री० लटकनी] लटकवाली मनोहर अंग-भंगी से युक्त। उदा०—बंझ जाइ लग ज्यो प्रिय छबि लटकनी लस।—सूर।

लटकवाना—स० [हिं० लटकाना का प्रे०] लटकाने का काम दूसरे से कराना।

लटका—पुं० [हिं० लटक] १ ऐसी चाल जिसमें मनोहर लटक हो। २. बात-चीत आदि मे दिखाई देनेवाली जनानी चेष्टा या हाव-भाव और स्वरो का उतार-चढ़ाव। जैसे—उन्होने बड़े लटके से कहा कि हम नही जायँगे। ३. उपचार, चिकित्सा, तंत्र-मंत्र आदि के क्षेत्र में कोई ऐसी छोटी प्रक्रिया या विधि जिसमे जल्दी और सहज मे उद्देश्य सिद्ध होता हो। जैसे—उन्हे वैद्यक के ऐसे सैकड़ो लटके मालूम हैं। ४. एक प्रकार का चलता गाना। ५. अंडकोश। (बाजारू)

लटकाना—स० [हिं० लटकना का स०] १. किसी को लटकाने में प्रवृत्त करना। ऐसा काम करना कि कोई या कुछ लटके। जैसे—कपड़ा या हाथ लटकाना।
संयो० क्रि०—देना।—रखना।—लेना।
२. किसी खड़ी वस्तु को किसी ओर झुकाना। नत करना। ३. कोई काम पूरा न करके अनिश्चित दशा में अधिक समय तक पड़ा रहने देना। ४. किसी व्यक्ति को कोई आशा में रखकर उसका उद्देश्य या कार्य पूरा न करना। असमंजस या दुविधा की स्थिति में रखना।
संयो० क्रि०—रखना।

लटकीला—वि० [हिं० लटक+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० लटकीली] लटकता और लहराता हुआ। जैसे—लटकीली चाल।

लटकू—पु० [देश०] एक प्रकार का पेड़ जिसकी छाल से रंग निकलता है।

लटकौआ—वि० [हिं० लटकाना] जो लटकाया जाता हो। जैसे—लटकौआ फानूस।

लट-जीरा—पुं० [हिं० लट+जीरा] १. अगहन मे होनेवाला एक प्रकार का धान और उसका चावल। २. अपामार्ग। चिचड़ा।

लटना—अ० [सं० लड=हिलना, डोलना] १. परिश्रम, रोग आदि के कारण बहुत ही शिथिल, दुर्बल और प्राय: असमर्थ-सा होना। अशक्त और असमर्थ होना।
संयो० क्रि०—जाना।
२. बेचैन या विकल होना।
अ० [सं० लल, लड=ललचाना] १. लेने के लिए लपकना। लालायित होना। २. अनुरागपूर्वक प्रवृत्त होना। ३. किसी काम या बात में लिप्त या लीन होना।

लट-पट—स्त्री० [हिं० लटपटाना] १. लटपटाने की अवस्था या भाव। २. अनुचित या दूषित उद्देश्य की सिद्धि के लिए होनेवाला नया-नया मेल-जोल या संबंध।
वि०=लटपटा।

लट-पटा—वि० [हिं० लटपटाना] [स्त्री० लट-पटी] १. जोश, मस्ती, यौवन, लापरवाही आदि के कारण इधर-उधर गिरता-पड़ता या लड़खड़ाता हुआ। ठीक और सीधे तरह से न चलता हुआ। जैसे—लटपटी चाल। २ जो ठीक बँधा न रहने के कारण ढीला होकर नीचे की ओर खिसक आया हो। जो चुस्त और दुरुस्त न हो। ढीला-ढाला। ३. जो ठीक तरह से सँवार या सजाकर नही, बल्कि अल्हड़पन से बनाया लगाया गया हो। जैसे—लटपटी पाग (पगड़ी)। ४. (कथन, बात या शब्द) जिसका ठीक, पूरा और स्पष्ट उच्चारण न हुआ हो। ५. अस्तव्यस्त। अव्यवस्थित। अंड-बंड। ६. थकावट, दुर्बलता आदि के कारण बहुत ही शिथिल और हारा हुआ। ७. (रसेदार खाद्य पदार्थ) जो न बहुत गाढ़ा हो और न बहुत पतला। जैसे—लटपटी तरकारी, लटपटा हलुआ। ८. मीजा और मसला हुआ। मला-दला।

लटपटान—स्त्री० [हिं० लटपटाना] १ लटपटाने की क्रिया या भाव। लड़खड़ाहट। २. आकर्षक और मनोहर गति या चाल।

लटपटाना—अ० [स० लड=हिलना-डोलना+पत्=गिरना] १. दुर्बलता, मन्दता, लापरवाही आदि के कारण ठीक और सीधे ढग से न चलकर इधर-उधर झुके पड़ना। लड़खड़ाना। उदा०—उठे पग, पैर उनके लटपटाये।—मैथिलीशरण।
संयो० क्रि०—जाना।
२. अपने स्थान पर दृढ़तापूर्वक जमे, टिके या ठहरे न रहकर इधर-उधर होते रहना। विचलित होना। डिगना। ३. सहसा चूक या भूल जाने के कारण इधर-उधर हो जाना। लड़खड़ाना। जैसे—

बोलने मे जीभ या चलने मे पैर लटपटाना। ४ अपने आप को सँभाल न सकने के कारण किसी पर विवश भाव से आसक्त या मोहित होना। ५ किसी काम या बात मे लिप्त या लीन होना।

लटा—वि० [सं० लट्ट] [स्त्री० लटी] १. लोलुप। लपट। २. गिरा हुआ। पतित। ३. लपट और व्यभिचारी। ४. बदमाश। लुच्चा। ५. तुच्छ। हीन। ६ नीच। हेय। ७ खराब। बुरा। ८ बहुत दुबला-पतला या कमजोर।

लट-पटा—पु० [हिं० लट-पट] १ व्यर्थ की चीज। २ व्यर्थ की बातें। ३. आडबर। ढोग। उदा०—बाहर का अनावश्यक लट-पटा मुझसे सहा नही जाता।—अज्ञेय।

वि० बहुत ही क्षीण, दुर्बल या हीन।

पद—लटे पटे दिन=कठिनाई या कष्ट के दिन।

लटा-पटी—स्त्री० [हिं० लटपटाना] १ लटपटाने की क्रिया या भाव। २. लड़ाई-झगडा। ३. गुत्थम-गुत्था। भिड़त।

लटा-पोट—वि०=लोट-पोट।

लटिया—स्त्री० [हिं० लट] सूत आदि का छोटा लच्छा। लच्छी।

मुहा०—लटिया करना=सूत की आँटी बनाना।

लटियासन—पु० [हिं० लट+सन] पटसन।

लटी—स्त्री० [हिं० लटा=बुरा] १ बुरी बात। २. झूठी या व्यर्थ की बात। गप।

मुहा०—लटी मारना=गप्प हाँकना।

३. भक्तिन। ४ वेश्या।

लटुआ—पु०=लट्टू।

लटुक—पु०=लकुट (वृक्ष और फल)।

लटुरी—स्त्री० दे० 'लटूरी'।

लटू—पु०=लट्टू।

लटूरा—पु० [हिं० लट्टू] कुप्पा।

†पु० [हिं० लट] [स्त्री० लटूरी] बडे-बडे बालो की उलझी हुई लट। जटा।

वि० जिसके सिर पर बड़े-बडे बालो की लट हो। जटावाला। जैसा—लटूरा जोगी।

लटूरिया—वि० [हिं० लट] लटा अर्थात् लम्बे बालोवाला।

पु० भूत-प्रेत या हौआ। (बच्चो का डराने के लिए)

वि०=लटूरा।

लटूरी—स्त्री० [हिं० लट] विशेषत छोटे बच्चो के बालो की लट।

लटोरा—पु० [देश०] एक प्रकार का पक्षी जिसकी गर्दन और मुंह काला, डैने नीलापन लिये हुए भूरे और दुम काली होती है। इसके कई भेद होते हैं। जैसे—मटिया, कजला, खाखला।

पु०=लसोडा।

लट्ट-पट्ट—वि०=लट-पट।

वि० =लथ-पथ।

लट्टू—पु० [देश०] १. लकडी का एक गोल खिलौना जिसके मध्य भाग मे कील जड़ी रहती है तथा जो चलाये जाने पर उक्त कील पर घूमने या चक्कर लगाने लगता है। २. कोई ऐसा खिलौना जो इस प्रकार घूमता रहता हो। ३. लाक्षणिक अर्थ मे, व्यक्ति जिसमे किसी के प्रति उत्कट प्रेम हो तथा जो उसके कारण बावला हो रहा हो।

मुहा०—(किसी पर) लट्टू होना=किसी पर पूरी तरह से मोहित होना।

४. शीशे का वह गोलाकार उपकरण जिसके अन्दर बिजली के द्वारा प्रकाश उत्पन्न होता है। बल्ब।

लट्टूदार—वि० [हिं० लट्टू+फा० दार] जिस पर या जिसमें लट्टू के आकार की गोल रचना बनी या लगी हो। जैसे—लट्टूदार छड़ी, लट्टूदार पगडी (एक विशेष प्रकार की पगडी जिसके अगले ऊपरी भाग का कपडा लट्टू की तरह लपेटा हुआ रहता है।)

लट्ठ—पु० [सं०यष्टि, प्रा० लट्ठि] बडी लाठी। मोटा लम्बा डंडा।

पद—लट्ठबाज, लट्ठमार।

मुहा०—(किसी के पीछे) लट्ठ लिये फिरना=(क) किसी के साथ इतना वैर या शत्रुता होना कि मिलते ही उसे घायल करके मार डालने को जी चाहता हो। (ख) लाक्षणिक रूप मे पूरी तरह से किसी के विपक्ष मे या विरुद्ध रहना। जैसे-अक्ल के पीछे लट्ठ लिये फिरना, अर्थात् इतना निर्बुद्धि होना कि मानो बुद्धिमत्ता से वैर ठान रखा हो।

वि० बहुत बडा निर्बुद्धि या मूर्ख। जैसे—यह नौकर तो निरा लट्ठ है।

लट्ठबाज—वि० [हिं० लट्ठ+फा० बाज] [भाव० लट्ठबाजी] लाठी से लडनेवाला। लठैत।

लट्ठबाजी—स्त्री० [हिं० लट्ठ+फा० बाजी] लाठियो से होनेवाली मार-पीट।

लट्ठमार—वि० [हिं० लट्ठ+मारना] १. (व्यक्ति) जो बहुत बडा उजड्ड और उद्दड हो। २ (कथन या बात) जिसमे नम्रता, शालीनता, सौजन्य आदि का पूर्ण अभाव हो।

लट्ठर—वि० [हिं० लट्ठ] १. कठोर। कडा। २ कर्कश।

लट्ठा—पु० [हिं० लट्ठ] १. लकडी का बहुत बड़ा मोटा और लबा टुकडा। बल्ला। शहतीर। जैसे—तालाब के बीच मे लगा हुआ लट्ठा, सीमा का सूचक लट्ठा। २ धरन। ३. वह ५॥ फुट लंबा बाँस जिससे जमीन नापी जाती है।

पद—लट्ठाबंदी। (दे०)

४ लकलाट (कपडा)। (पश्चिम)

लट्ठा-बंदी—स्त्री० [हिं० लट्ठा+फा० बदी] लट्ठे अर्थात् ५॥ फुट लबे बाँस के द्वारा जमीन की की जानेवाली नाप-जोख।

लट्व—पु० [स०√लट् (बालभाव)+क्वन्] १. घोड़ा। २. एक प्रकार का राग। (सगीत)

लट्वा—पु० [स० लट्व+टाप्] १. बालो की लट। २. एक प्रकार का करज। ३ कुसुभ। ४ गौरा पक्षी। ५. एक प्रकार का बाजा। ६. चित्र बनाने की कूँची। तूलिका। ७ पुश्चली। व्यभिचारिणी।

लठ—पु०=लट्ठ।

लठियल—वि० [हिं० लाठी+इयल (प्रत्य०)] (व्यक्ति) जो लाठी धारण किये रहता हो। लठैत।

लठिया—स्त्री० [हिं० लाठी का अल्पा०] छोटी लाठी, छड़ी या डडा।

लठैत—पुं० [हिं० लठ+ऐत (प्रत्य०)] वह जो लाठी चलाकर लड़ने का अभ्यस्त हो। लाठी की लड़ाई लड़नेवाला। लट्ठबाज।

लठैती—स्त्री० [हिं० लठैत] लाठियों से लड़ने और मार-पीट करने की क्रिया या भाव। लट्ठबाजी।

लड़ंग—स्त्री० [हिं० लड़] १. लड़ी। लड़। २. पंक्ति। कतार। पुं० [?] झुंड। समूह। जैसे—भौंरों या चोरों का लड़ंग।

लड़ंत—स्त्री० [हिं० लड़ना] १. लड़ने की क्रिया या भाव। जैसे—पतंगों की लड़ंत, पहलवानों की लड़ंत। २. लड़ाई-झगड़ा। ३. विरोधी दलों से होनेवाला मुकाबला या सामना।

लड़ंता—वि० [हिं० लड़ंत] [स्त्री० लड़ंती] १. कुश्ती आदि लड़नेवाला। जैसे—लड़ंता पहलवान। २. लड़ाई-झगड़ा करनेवाला।

लड़—पुं० [सं० यष्टि; प्रा० लट्ठि] [स्त्री० अल्पा० लड़ी] १. सीध में गुथी हुई या एक दूसरे से लगी हुई एक ही प्रकार की वस्तुओं की पंक्ति। माला। जैसे—मोतियों का लड़। सिकड़ी का लड़। २. रस्सी आदि के रूप में बटा हुआ लंबा खंड। जैसे—तीन लड़ का रस्सा। ३ कतार। पंक्ति। श्रेणी। ४. किसी के साथ घनिष्ठता या दृढ़तापूर्वक गुथे या मिले हुए होने की अवस्था या भाव।

मुहा०—(किसी के साथ) लड़ मिलाना=मेल मिलाप करना। मित्रता स्थापित करना। (किसी के) लड़ में रहना=गुट या दल में रहना।

५. दे० 'लड़ी'।

लड़इता†—वि०=लड़ैता।

लड़क—पुं० हिं० लड़का का वह संक्षिप्त रूप जो उसे समस्त पदों के आरम्भ में लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—लड़क-बुद्धि।

लड़कई†—स्त्री०=लड़कपन।

लड़क-खेल—पु० [हिं० लड़का+खेल] १. बालकों का खेल। २. लड़कों के खेल की तरह का बहुत ही सहज या साधारण काम।

लड़कपन—पु० [हिं० लड़का+पन] १. 'लड़का' होने की अवस्था या भाव। बाल्यावस्था। जैसे—वह लड़कपन से ही बहुत ही चतुर था। २. लड़कों का-सा आचरण या व्यवहार, जिसमें बुद्धि का परिपाक न दिखाई देता हो। जैसे—तुम इतने बड़े हुए पर अभी तक तुम्हारा लड़कपन नहीं गया।

लड़क-बुद्धि—स्त्री० [हिं० लड़का+सं० बुद्धि] बालकों की-सी समझ। अपरिपक्व बुद्धि। अज्ञता। नासमझी।

लड़क-बुध-स्त्री०=लड़क बुद्धि।

लड़का—पुं० [सं० लाडिक] [स्त्री० लड़की] १. थोड़ी अवस्था का मनुष्य। वह जिसकी उमर कम हो। वह जो अभी तक युवक न हुआ हो। बालक। २. औरस नर संतान। पुत्र। बेटा।

पद—लड़का-बाला=संतान। बाल-बच्चा। लड़कों का खेल=बहुत ही छोटा सहज और साधारण काम।

मुहा०—लड़का जनना=नर संतान प्रसव करना।

लड़काई†—स्त्री०=लड़कई (लड़कपन)।

लड़कानि†—स्त्री०=लड़कपन।

लड़का-बाला [हिं० लड़का+सं० बाला] १. लड़का और लड़की। पुत्र और पुत्री दोनों अथवा इनमें से कोई एक औलाद। संतान। २. कुटुंब। परिवार।

लड़किनी†—स्त्री०=लड़की।

लड़की—स्त्री० [हिं० लड़का] १. पुरुष जाति का मादा बच्चा। बच्ची।

विशेष—वृद्ध तथा प्रौढ़ स्त्रियों को छोड़कर शेष अवस्थावाली स्त्रियों के लिए भी इसका प्रयोग होता है। जैसे—(क) इस लड़की ने एम० ए० पास किया है। (ख) इस लड़की के दो बच्चे हैं।

२. पुत्री। बेटी। जैसे—वह अपनी लड़की को साथ लेते गए हैं। ३. अल्पवयस्क या युवा नौकरानी।

लड़कीवाला—पु० [हिं० लड़की+वाला (प्रत्य०)] १. वह जिसके यहाँ लड़की या लड़कियाँ हों। २. कन्या-पक्ष। 'वर-पक्ष' का विपर्यायार्थक। जैसे—लड़कीवालों से जो सरते बनता है वह लड़की को देते हैं।

लड़केवाला—पुं० [हिं०] विवाह-संबंध में वर का पिता या उसका अभिभावक अथवा संरक्षक। वर-पक्ष।

लड़कोरी (कौरी)—वि० [हिं० लड़का+औरी (प्रत्य०)] (स्त्री) जिसकी गोद मे बच्चा हो। पुत्रवती।

लड़खड़ाना—अ० [सं० लड=डोलना+खडा] [भाव० लड़खड़ाहट] चलते समय सीधे स्थित न रह सकने के कारण इधर-उधर झुक पड़ना। चलने मे झोंका खाना। डगमगाना। डिगना। जैसे—तेज चलने में वह (या उसका पैर) लड़खड़ाया और वह गिरते गिरते बचा।

संयो० क्रि०—जाना।

२. चलते समय डगमगा कर गिरना। झोंका खाकर नीचे आ जाना। ३. कोई काम करते समय किसी अंग का बीच में ठीक तरह से काम न कर सकने के कारण इधर-उधर होना। विचलित होना। जैसे—(क) बोलने मे जबान लड़खड़ाना। (ख) कुछ उठाते समय हाथ लड़खड़ाना।

लड़खड़ाहट—स्त्री० [हिं० लड़खड़ाना+आहट (प्रत्य०)] लड़खड़ाने की क्रिया या भाव। डगमगाहट।

लड़खड़ी†—स्त्री०=लड़खड़ाहट।

लड़ना—अ० [सं० रणन] [भाव० लड़ाई] १. आपस में शारीरिक बल का प्रयोग करते हुए एक दूसरे को घायल करने, चोट पहुँचाने या मार डालने के उद्देश्य से घात-प्रतिघात करना। लड़ाई करना। भिड़ना। जैसे—पशुओं या सैनिकों का आपस मे लड़ना। २ आपस में एक दूसरे को गिराने, दबाने, नीचा दिखाने आदि के लिए ऐसी क्रिया, आचरण या व्यवहार करना जिसमें शक्ति का प्रयोग होता हो। जैसे—कचहरी मे मुकदमा लड़ना। ३. आर्थिक, बौद्धिक, शारीरिक आदि बलों का प्रयोग करते हुए विपक्षी या विरोधी को परास्त करने या हराने के लिए उपाय या क्रिया करना। जैसे—(क) शास्त्रार्थ के समय पंडितों का आपस मे लड़ना। (ख) अखाड़े मे पहलवानों का लड़ना। ४. अपने पक्ष का स्थापन करने के लिए अशिष्टतापूर्वक बात-चीत या वाद-विवाद करना। झगड़ना। जैसे—ये लोग जरा-जरा सी बात पर रोज यों ही घंटों लड़ते रहते हैं।

पद—लड़ना-भिड़ना।

संयो० क्रि०—जाना।—पड़ना।—बैठना।

५. दो वस्तुओं का वेग के साथ एक दूसरे से जा लगना। टक्कर खाना। टकराना। भिड़ना। जैसे—रेलगाड़ियों का लड़ना, मोटर से बैल-

गाड़ी का लड़ना। ६ दो ऐसे अंगों का परस्पर रगड़ खाना जिनमें वस्तुतः कुछ दूरी होनी चाहिए। जैसे—(क) टायर का रिम से लड़ना। (ख) जाँघों का लड़ना। ७ ऐसी स्थिति में आना, पहुँचना या होना जिसमें हार-जीत का प्रश्न हो अथवा निकट विरोधी परिस्थितियों का सामना करना पड़ता हो। जैसे—(क) किसी काम में जान लड़ना। (ख) किसी बात में बुद्धि लड़ना। (ग) रोजगार में रुपए या जूए में माल लड़ना। ८ ऐसी स्थिति में आना या पहुँचना कि ठीक तरह से बराबरी या सामना हो अथवा किसी प्रकार की अनुकूलता या समानता सिद्ध होती हो। जैसे—(क) किसी से आँखें लड़ना। (ख) एक की बात से दूसरे की बात लड़ना।

मुहा०—हिसाब लड़ना=(क) जोड़, बाकी आदि का लेखा या हिसाब ठीक और पूरा उतरना। (ख) किसी काम या बात के लिए अनुकूल या उपयुक्त अवसर मिलना या सुभीता निकलना।

९ किसी जानवर का आकर काटना या डंक मारना। जैसे—उसे कुत्ता (या बिच्छू) लड़ गया है। (पश्चिम)

लड़बड़ा—वि० [अनु०] १. लटपटा। २ नपुंसक। ३. ढीला-ढाला।

लड़बड़ाना†—अ०=लड़खड़ाना।

लड़-बावरा†—वि० [स्त्री० लड़-बावरी] लाड़-बावला।

लड़-बावला—वि० [स० लड़=लड़को का-सा+बावला] [स्त्री० लड़बावली] जिसमे अभी लड़कपन और नासमझी की बहुत सी बातें या लक्षण हों। निरा अल्हड़ और मूर्ख।

लड़बौरा—वि० [स्त्री० लड़-बौरी]=लड़बावला।

लड़ाई—स्त्री० [हिं० लड़ना+आई (प्रत्य०)] १. आपस में लड़ने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ वह क्रिया या स्थिति जिसमें लोग आपस मे मार-पीट करके दूसरो को घायल करने या मार डालने का प्रयत्न करते हैं। भिड़ंत। ३. वह स्थिति जिसमें विरोधी दलो या पक्षों के लोग विशेषत सशस्त्र सैनिक एक दूसरे को मार डालने या घायल करने का प्रयत्न करते हैं। जैसे—राज्यों के सीमा क्षेत्रो मे प्राय लड़ाइयाँ होती रहती हैं।

पद—लड़ाई का मैदान=वह स्थान जहाँ एकत्र होकर सैनिक युद्ध करते हों। युद्ध-क्षेत्र। समर-भूमि।

मुहा०—लड़ाई पर जाना=योद्धा या सैनिक के रूप मे रणक्षेत्र मे युद्ध करने के लिए जाना।

४. ऐसी स्थिति जिसमे आपस मे एक दूसरे को दबाने या हटाने का प्रयत्न करते हों। जैसे—आज-कल दोनो भाई कचहरी की लड़ाई लड़ रहे हैं। ५ ऐसी स्थिति जिसमे आपस में अशिष्टतापूर्ण वाद-विवाद और कटु शब्दो का प्रयोग होता हो। तकरार। हुज्जत। जैसे—पचायत (या सभा) मे लोग बातें क्या करते थे, लड़ाई लड़ते थे। ६ ऐसी स्थिति जिसमें आपस मे बहुत अधिक वैमनस्य और वैर-विरोध हो, तथा पारस्परिक सामाजिक व्यवहार आदि बन्द हों। जैसे—इधर महीनों से दोनो भाइयों मे गहरी लड़ाई चल रही है। ७. किसी वस्तु पर अधिकार प्राप्त करने या अपना पक्ष ठीक सिद्ध करने के लिए होनेवाली वाद-विवादात्मक बल-परीक्षा या बल-प्रयोग। जैसे—हमे तो यही पता नहीं चलता कि आप लोगों में लड़ाई किस बात की है।

पद—लड़ाई-झगड़ा, लड़ाई-भिड़ाई।

८ दो वस्तुओं का वेग के साथ एक दूसरी से जा लगना। टक्कर। (क्व०)

लड़ाका—वि० [हिं० लड़ना+आका (प्रत्य०)] [स्त्री० लड़ाकी] १. युद्ध में लड़नेवाला योद्धा। सिपाही। २. बात-बात मे या प्राय. सबसे लड़ाई-झगड़ा करनेवाला।

लड़ाकू—वि० [हिं० लड़ना] १. युद्ध में व्यवहृत होनेवाला। लड़ाई में काम आनेवाला। जैसे—लड़ाकू जहाज। २ दे० 'लड़ाका'।

लड़ाना—स० [हिं० लड़ना का प्रे०] १ किसी को या औरो को मारने-काटने या युद्ध करने मे प्रवृत्त करना। २ कलह, लड़ाई-झगड़ा या वैर-विरोध मे प्रवृत्त करना। जैसे—दोनो भाइयो को तुम्ही लड़ा रहे हो। ३ पहलवानों का अपने शिष्यो को अभ्यास कराने के लिए अपने साथ कुश्ती लड़ाने मे प्रवृत्त करना। जैसे—वह पहलवान रोज अखाड़े मे बीसियो लड़को को लड़ाता था। ४ कौशल, बल, बुद्धि आदि की परीक्षा करने के लिए दो चीजो या जीवो को किसी प्रकार की प्रतिस्पर्धा या होड़ मे प्रवृत्त करना। जैसे—पतग, बटेर, मुरगा या मेढ़ा लड़ाना। ५. अपना कोई अग दूसरे के उसी अग के सामने लाकर बराबरी करना या उससे सबध रखनेवाली किसी प्रकार की परीक्षा करना। जैसे—आँखें लड़ाना, पजा लड़ाना। ६ विकट परिस्थितियाँ पार करने के लिए कौशल, चातुरी, बुद्धि आदि का प्रयोग करना। जैसे—(क) तरकीब या युक्ति लड़ाना। (ख) दिमाग या बुद्धि लड़ाना। ७ एक वस्तु को दूसरी से वेग या झटके के साथ मिलाना। टक्कर खिलाना। भिड़ाना। ८ दो रेखाओ को एक दूसरी से छुआना या टकराना।

स० [हिं० लाड़=प्यार] लाड़-प्यार करना। दुलार करना। प्रेम से चुमकारना।

लड़ायता†—वि० [स्त्री० लड़ायती]=लड़ैता।

लड़ी—स्त्री० [हिं० लड़ का स्त्री० अल्पा०] १ सीध मे गुथी हुई या एक दूसरे से लगी हुई एक ही प्रकार की वस्तुओ की पक्ति। माला। जैसे—मोतियों की लड़ी। २ डोरी, रस्सी आदि की रचना मे उन कई विभागीय तारो आदि मे से प्रत्येक जिन्हे बटकर डोरी या रस्सी बनाई जाती है। ३ किसी काम, चीज या बात का ऐसा क्रम, शृंखला या सिलसिला जो लगातार कुछ दूर तक चला चले। जैसे—(क) टीलो या पहाड़ियो की लड़ी। (ख) बातो की लड़ी। ४ फूलो की पतली गुथी हुई माला। दे० 'लड़'।

लड़ीला†—वि०=लाडला।

लड़ुआ†—पु०=लड्डू।

लड़ैता—वि० [हिं० लाड=प्यार+ऐता (प्रत्य०)] [स्त्री० लड़ैती] १. जिसे बहुत लाड-प्यार से पाला-पोसा गया हो। लाडला। २. प्यारा। प्रिय। ३ बहुत लाड-प्यार के कारण जिसका आचरण और व्यवहार कुछ बिगड़ गया हो।

पु० [हिं० लड़ना] योद्धा।

लड्डुक—पु० [स०] लड्डू।

लड्डू—पु० [स० लड्डुक] १ छोटे गेंद के आकार की कोई गोलाकार बँधी हुई मिठाई। जैसे—खोए, बूँदी या बेसन का लड्डू।

पद—ठग के लड्डू=किसी को धोखे मे लाकर अपना लाभ करने के लिए

की जानेवाली युक्ति या साधन। (मध्य युग में ठग लोग यात्रियों को जहरीले या नशीले लड्डू खिलाकर उन्हें बेहोश कर देते थे और तब उनका माल लूट लेते थे। इसी आधार पर यह पद बना है।)

मुहा०—मन के लड्डू खाना=मन ही मन यह समझकर झूठी आशा में प्रसन्न होना कि हमें अमुक शुभ फल की प्राप्ति होगी या हमारा अमुक अभीष्ट सिद्ध हो जायगा।

२. शून्य संख्या का सूचक शब्द। (परिहास) जैसे—उन्हें अँगरेजी में लड्डू मिला है। ३ किसी प्रकार की अच्छी और लाभदायक बात। जैसे—वहाँ जाने से तुम्हें कौन-सा लड्डू मिल जायगा।

लड़ियाना*—स० [हिं० लाड़=प्यार] लाड़-प्यार या दुलार करना।

लढ़ा—पुं० [हिं० लुढ़कना] [स्त्री० अल्पा० लढ़िया] बैलगाड़ी।

लढ़िया—स्त्री० [हिं० लुढ़ना, लुढ़काना] बैलगाड़ी।

लत—स्त्री० [अ० इल्लत] बुरी टेक।

क्रि० प्र०—पड़ना।—लगना।

स्त्री० [हिं० लात] 'लात' का वह संक्षिप्त रूप जो उसे यौ० के आरम्भ मे लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—लतखोर, लत-मर्दन।

† स्त्री०=लता।

लत-खोर—वि० [हिं० लात+फा० खोर खानेवाला] (व्यक्ति) जो प्रायः लात खाता अर्थात् घुड़की-झिड़की आदि सुनते रहने का अभ्यस्त हो गया हो। जो निर्लज्ज बना रहकर बुरी आदतें न छोड़ता हो या ठीक तरह से काम न करता हो।

† पुं०=लत-खोरा।

लत-खोरा—पुं० [हिं० लत+फा० खोर=खानेवाला] [स्त्री० लत-खोरिन] दरवाजे पर पड़ा हुआ पैर पोंछने का कपड़ा या पायंदाज। पावदान।

वि०=लतखोर।

लतड़ी†—स्त्री०=लतरी।

लतपत—वि०=लथपथ।

लत-मर्दन—स्त्री० [हिं० लात+सं० मर्दन] १. पैरों से कुचलने या रौंदने की क्रिया या भाव। २. लातों से किसी को मारने की क्रिया या भाव।

लतर—स्त्री० [सं० लता]। १. लता। बेल। २ चित्रकला मे, लता की आकृति या अंकन।

लतरा—पुं० [देश०] एक प्रकार का मोटा अन्न। वरवरा। रेवँछ।

लतरी—स्त्री० [हिं० लतर] एक प्रकार की घास या पौधा जो खेतों में मटर के साथ बोया जाता है। इसी के बीज खेसारी कहलाते हैं, जो गरीब लोग खाते हैं।

† स्त्री० [हिं० लात] १. पुरानी चाल की एक तरह की हलकी जूती। २ फटा-पुराना जूता।

लतहा—वि० [हिं० लात+हा (प्रत्य०)] [स्त्री० लतही] (पशु) जो लात मारता हो। जैसे—लतहा घोड़ा।

लतांगी—स्त्री० [सं० ब० स०] १. कर्कटशृंगी। काकड़ासींगी। २. संगीत में कर्णाटकी पद्धति की एक रागिनी।

लता—स्त्री० [सं०√लत् (लपेटना)+अच्+टाप्] १. ऐसे विशिष्ट प्रकार के पौधों की संज्ञा जिनके कांड और शाखाएँ पतली नरम तथा लचीली होती हैं तथा जो किसी आधार के सहारे खड़ी होती हैं और आधार के अभाव में जमीन पर फैल जाती हैं। जैसे—अंगूर की लता। २. कोमल कांड या शाखा। जैसे—पद्मलता। ३. सुन्दरी स्त्री।

लता-करंज—पुं० [मध्य० स०] एक प्रकार का करंज या कंजा। कंट-करंज।

लता-कर—पुं० [मध्य० स०] नाचने में हाथ हिलाने का एक प्रकार।

लता-कस्तूरी—स्त्री० [मध्य० स०] दक्षिण भारत में होनेवाला एक प्रकार का पौधा जिसके अंगो का उपयोग वैद्यक मे होता है।

लता-कुंज—पुं० [ष० त०] लताओं से छाया हुआ स्थान।

लता-गृह—पुं० [मध्य० स०] लता-कुंज। (दे०)

लता-जाल—पुं० [ष० त०] बहुत-सी लताओं के योग से बना हुआ जाल; या उसके नीचे का छायादार स्थान।

लता-जिह्व—पुं० [ब० स०] सर्प। साँप।

लताड़—स्त्री० [हिं० लताड़ना] १. लताड़ने की क्रिया या भाव। २. कठिनता। दिक्कत। ३. परेशानी। हैरानी। ४. दे० 'लथाड़'।

लताड़ना—स० [हिं० लात] १. लातो या पैरो से कुचलना। रौंदना। २. लातो से मारना। ३. किसी लेटे हुए व्यक्ति के विशिष्ट अंगों पर खड़े होकर धीरे धीरे इस प्रकार चलना कि उसकी पीड़ा या थकावट दूर हो जाय और उसे आराम मिले। ४. तंग या परेशान करना।

लता-तरु—पुं० [उपमित स०] १ नारंगी का पेड़। २ ताड़ का पेड़। ३ शाल वृक्ष। साखू।

लता-पत्ता—पुं० [सं० लतापत्र] १. लता और पत्ते। पेड़-पत्ते। पेड़ों और पौधों का समूह। २ पौधो, वनस्पतियो आदि की हरियाली। ३. जड़ी-बूटी। ४. निकम्मी और रद्दी चीजें।

लता-पनस—पुं० [ब०स०] तरबूज।

लतापर्णी—स्त्री० [ब० स०,+ङीष्] १. तालमूल। २ मधूरिका। मेवड़ी।

लता-पाश—पुं०=लता-जाल।

लताफ़त—स्त्री० [अ०] १. लतीफ होने की अवस्था या भाव। सूक्ष्मता। २. कोमलता। ३. उत्तमता। ४. स्वादिष्टता।

लता-फल—पुं० [सं० ब० स०] पटोल। परवल।

लता-बंध—पुं० [ब० स०] कामशास्त्र में संयोग का एक आसन। बंध या मुद्रा।

लता-भवन—पुं०=लता-कुंज।

लता-मंडप—पुं० [मध्य० स०] छाई हुई लताओ से बना हुआ मंडप या छायादार स्थान।

लता-मणि—पुं० [उपमित स०] प्रवाल। मूँगा।

लता-यष्टि—स्त्री० [उपमित स०] मंजिष्ठा। मजीठ।

लतार्क—पुं० [लता-अर्क, ब० स०] प्याज का पौधा।

लता-वृक्ष—पुं० [उपमित स०] सलई का पेड़। शल्लकी।

लता-वेष्ट—पुं० [लता-आवेष्ट, ब० स०] १. काम शास्त्र में एक प्रकार का रति-बंध या आसन। २. पुराणानुसार द्वारकापुरी के पास का एक पर्वत।

वि० लताओं से घिरा हुआ।

लता-साधन—पुं० [ष० त०] तंत्र या वाम मार्ग में एक प्रकार की साधना जिसमें प्रधान अधिकरण लता अर्थात् स्त्री होती है।

लतिका—स्त्री० [स० लता+कन्+टाप्, ह्रस्व] छोटी लता। बेल।

लतियर—वि०=लतियल (लतखोर)।

लतियल—वि० [हिं० लात+इयल (प्रत्य०)] १ जो लतियाया जाता हो अथवा जो बिना लतियाये जाने से सीधे रास्ते पर न चलता हो। २ जिसे लात खाने अर्थात् घुड़की-झिड़की सुनने और मार खाने की आदत पड़ गई हो।

लतियाना—स० [हिं० लात+आना (प्रत्य०)] १ पैरों से दबाना या रौंदना। २ लातों से मारना।
स० [हिं० लत्ती] लत्ती या डोरी से लट्टू को लपेटना। उदा०—लतियावहु जे नौ लट्टून लौ तेतहिं गाजे।—रत्न०

लतिहर (हल)—वि०=लतियल।

लतीफ़—वि० [अ०] १. जायकेदार। स्वादिष्ट। २. मजेदार। रस-मय। ३. कोमल। मुलायम। ५ सुपाच्य (भोजन)। ६ उत्तम। बढ़िया।

लतीफ़ा—पुं० [अ० लतीफ] १ हास्यपूर्ण छोटी कहानी। चुटकुला। २ हँसी की अनोखी या विलक्षण बात।

लत्त—स्त्री०=लता।

लत्ता—पुं० [स० लत्तक] १ फटा-पुराना कपड़ा। चीथड़ा। २ कपड़े का टुकड़ा।
पद—कपड़ा-लत्ता।
मुहा०—**लत्ता (या लत्ते) लेना**=किसी की हँसी उड़ाते हुए उसे बहुत ही उपेक्ष्य सिद्ध करना।
† स्त्री०=लता।

लत्तिका—स्त्री० [स०√लत् (आघात्) क्विन्+कन्+टाप्] गोधा। गोह (जन्तु)।

लत्ती—स्त्री० [हिं० लात] पशुओं द्वारा लात से किया जानेवाला आघात।
स्त्री० [हिं० लत्ता] १ कपड़े की लम्बी धज्जी। २ गुड्डी या पतंग के नीचेवाले कोने मे बाँधी जानेवाली कपड़े की धज्जी। ३. सूत की वह डोरी जो लट्टू नचाने के लिए उस पर लपेटी जाती है। ४ बाँस में बँधी हुई कपड़े की धज्जी जिसे ऊँचा करके कबूतर उड़ाते है।

लथ-पथ—वि० [अनु०] १ जो किसी तरल पदार्थ से बहुत अधिक भीग या तर हो गया हो। जैसे—खून से लथपथ, पसीने से लथपथ। २ कीचड़, धूल, मिट्टी आदि से सना हुआ।

लथाड़—स्त्री० [हिं० लथाड़ना] १. लथाड़ना की क्रिया या भाव। २ जमीन पर घसीटने की क्रिया। ३ गहरी डाँट-फटकार।
क्रि० प्र०—खाना।—देना।—पड़ना।
४ बुरी तरह से होनेवाली हार।
क्रि० प्र०—पड़ना।
५. बहुत बड़ी हानि।

लथाड़ना†—स०=लथेड़ना।
† स०=लताड़ना।

लथेड़ना—स० [देश०] १ अच्छे तथा साफ-सुथरे कपड़ों को धूल-मिट्टी में लेट अथवा खेल-कूद कर बहुत अधिक गंदा करना। २. किसी को इस प्रकार घसीटना कि उस पर धूल-मिट्टी लिपट जाय। ३. कुश्ती, लड़ाई आदि मे जमीन पर गिरा या पटककर दुर्दशा करना। ४. बहुत बुरी तरह से दिक, तंग या परेशान करना। ५. घुड़की, झिड़की आदि देकर अपमानित करना। भर्त्सना करना।
संयो० क्रि०—डालना।

लदन—स्त्री० [हिं० लदना] लदने की क्रिया या भाव। लदान।

लदना—अ० [हिं० लादना का अ०] [भाव० लदान] १. लादा या भार से युक्त किया जाना। बोझ से युक्त होना। २ भारी चीजो का यान या सवारी पर रखा जाना। जैसे—गाड़ी, नाव या बैल पर सामान लादना। ३. किसी चीज या कई तरह की चीजों के भार से युक्त होना। जैसे—ऋण से लदना, गहनो से लदना, बैलगाडी का लदना, फलों से लदना। ४ किसी भारी या वजनी चीज का दूसरी चीज के ऊपर होना या रखा जाना। किसी वस्तु के ऊपर बोझ के रूप मे पड़ना या रखा जाना। जैसे—उसकी पीठ पर दो बच्चे भी लदे हुए थे। ५. सजा पाकर कैद भोगने के लिए जेल-खाने जाना। जैसे—दोनों चोर साल-साल भर के लिए लद गए। ६ गत या मृत होना। पर-लोक सिधारना। (उपेक्षा सूचक और बाजारू) जैसे—चलो आज वह भी लद गये।
संयो० क्रि०—जाना।

लदनी|—स्त्री०=लदान।

लद-लद—अव्य० [अनु०] किसी भारी चीज के गिरने के सबंध मे, लद लद शब्द करते हुए। जैसे—आँधी म बहुत से पेडो के फल लद-लद गिर गये।

लदवाना—स० [हिं० लादना का प्रे०] किसी को लादने मे प्रवृत्त करना। लादने का काम दूसरे से कराना।

लदाई—स्त्री० [हिं० लादना] लादने की क्रिया, भाव या मज-दूरी।

लदाऊ—वि० [हिं० लदाना] लदानेवाला।
वि०=लद्दू।
पु०=लदाव।

लदान—स्त्री० [हिं० लादना] १ लादे जाने की क्रिया या भाव। (लोडिंग) २ एक बार मे लादा या लाद कर ले जाया जानेवाला सामान।

लदाना—स० [हिं० लादना का प्रे०] लादने का काम दूसरे से कराना।
† पु० एक पर एक चीजे लादकर लगाया हुआ ढेर।
क्रि० प्र०—लादना।

लदा-फँदा—वि० [हिं० लदना+फँदना] बोझ से भरा या लदा और जगह जगह मे फँसा या बँधा हुआ।

लदाव—पुं० [हिं० लादना] १. लादने की क्रिया या भाव। २. लादा हुआ बोझ या भार। ३ छत पाटने का वह प्रकार जिसमे कड़ियाँ या धरनें नही लगती, केवल ईंट या पत्थर एक दूसरे पर टेढ़े तिरछे लादकर मेहराब के आकार की पाटन की जाती है। कड़े की पाटन। जैसे—इस मकबरे की छत लदाव की है।

लदुआ—वि०=लद्दू।

लद्दू—वि० [हिं० लादना] १. जिस पर केवल बोझ लादा जाता हो। लदा हुआ। भार ढोनेवाला। २. जो सवारी नहीं, बल्कि बोझ ढोता हो। जैसे—लद्दू घोड़ा, लद्दू नाव, लद्दू बैल।

लद्धड़—वि० [हिं० लदना=भारी होना] [भाव० लद्धड़पन] १. भारी भरकम होने के कारण जिसमें तेजी या फुरती न हो। जैसे—लद्धड़ आदमी, लद्धड़ घोड़ा। २. आलसी, निकम्मा और सुस्त। जैसे—लद्धड़ नौकर।

लद्धड़पन—पु० [हिं० लद्धड़+पन (प्रत्य०)] लद्धड़ होने की अवस्था या भाव।

लद्धना—स० [सं० लब्ध; प्रा० लद्ध=प्राप्त] प्राप्त होना। मिलना।

लनतरानी—स्त्री०=लंतरानी (डींग)।

लना—पु० [देश०] १. एक प्रकार का पेड़ जिससे पंजाब में सज्जी निकाली जाती है। इसका एक भेद 'गोरालना' है। २. झीरा।

लनी—स्त्री० [देश०] १. पान की बारी मे की क्यारी। २. दे० 'लना'।

लप—स्त्री० [अनु०] १. लपने अर्थात् लचकने की क्रिया या भाव। २. पदार्थों का वह गुण या स्थिति जिसमें वे बीच से लपते या लचककर झुकते है।

क्रि० प्र०—खाना।

३. किसी चमकीली चीज के लपने के कारण रह-रह कर उत्पन्न होनेवाली चमक।

मुहा०—लप मारना=उक्त प्रकार की स्थिति मे आने के कारण चमकना। लप लप करना=(क) रह-रहकर बीच मे लपना या लचकना। (ख) रह-रहकर चमक उत्पन्न करना। जैसे—कटार, तलवार या हीरे का लप लप करना।

पु० [देश०] १ दोनों हथेलियों को मिलाकर बनाया हुआ संपुट जिसमें कोई वस्तु रखी जा सके। अंजुलि। २. उतनी वस्तु जितनी उक्त संपुट मे आती हो। जैसे—एक लप आटा।

पु० [देश०] एक प्रकार की घास जिसे सुरारी भी कहते हैं।

लपक—स्त्री० [हिं० लपकना] लपकने या लचककर चलने की क्रिया या भाव।

स्त्री० [अनु० लप से] चमक। दीप्ति। जैसे—गहनों या रत्नों की लपक, बिजली की लपक।

†स्त्री०=लपट (आग की)।

लपकना—अ० [हिं० लपक] १. सहसा बहुत जल्दी, तेजी या फुरती से आगे बढ़ना। जैसे—(क) चोर को पकड़ने के लिए लोगो का लपकना। (ख) कोई चीज पाने या लेने के लिए किसी का हाथ लपकना। २. जल्दी जल्दी पैर उठाते हुए तेजी से आगे बढ़ना या चलना। जैसे—सब लोग लपके हुए मेले की तरफ जा रहे थे।

पद—लपककर=(क) बहुत तेजी या फुरती से। (ख) जल्दी जल्दी आगे बढ़कर। जैसे—बाज ने लपक कर चिड़िया को पकड़ लिया।

स० फुरती से आगे बढ़कर कोई चीज उठा या ले लेना। जैसे—उसने ऊपर ही ऊपर अँगूठी लपक ली।

लपकपन—पुं० [हिं० लपकना+पन (प्रत्य०)] लपककर कुछ उठा लेने या किसी प्रकार का स्वार्थ सिद्ध करने की मनोवृत्ति।

लपका—पुं० [हिं० लपकना] १ लपकने की क्रिया या भाव। २ वह जिसे लपककर चीजें उठा लेने का अभ्यास और आदत हो। उचक्का। ३. आवारा और लुच्चा आदमी। ४. किसी तरह की बुरी आदत, टेव या बान। चस्का। लत।

क्रि० प्र०—पड़ना।—लगना।

लपकाना—स० [हिं० लपकना का स०] किसी को लपकने अर्थात् फुरती से आगे बढ़ने मे प्रवृत्त करना। जैसे—(क) किसी को पकड़ने के लिए आदमी लपकाना। (ख) कोई चीज उठाने के लिए हाथ लपकाना।

लपकी—स्त्री० [हिं० लपकना] १. लपकाने की क्रिया या भाव। २. एक प्रकार की सीधी सिलाई।

लपकेबाजी—स्त्री०=लपकपन।

लपझप—वि० [अनु० लप+हिं० झपट] १. स्थिर न रहनेवाला। चंचल। चपल। २. अधीर और उतावला। ३ तेज। फुरतीला। ४. बेढंगा और भद्दा। जैसे—लप-झप चाल।

अव्य० १. बहुत जल्दी या तेजी से। २ बेढंगी और भद्दी तरह से।

स्त्री० ऐसी चंचलतापूर्ण या चपल स्थिति या स्वभाव जिसमे आवश्यक या उचित से अधिक चालाकी या तेजी हो। लपकपन।

लपट—स्त्री० [स० लोक, हिं० लौ+पट=विस्तार] तेज आग जलने पर उसमें से निकलकर ऊपर उठनेवाली जलती हुई वायु की लहर। आग की लौ। अग्नि शिखा।

क्रि० प्र०—उठना।—निकलना।

२. तपी हुई वायु या लू का रह-रहकर आनेवाला झोका। जैसे—जेठ मे दोपहर को आग की लपटें लगती हैं।

क्रि० प्र०—आना।—लगना।

३. किसी प्रकार की गंध से भरा हुआ वायु का झोका। जैसे—क्या अच्छी गुलाब की लपट आ रही है।

† स्त्री०=लिपट।

लपटना—अ०=लिपटना।

लपटा—पुं० [हिं० लपसी] १. गाढ़ी गीली वस्तु। २. कढ़ी। ३. लपसी। ४. लेई। ५ थोड़ा-बहुत लगाव या संबंध।

लपटाना†—स०=लिपटाना।

† अ०=लिपटना।

† स०=लपेटना।

लपटीला—वि० [हिं० लपटना] [स्त्री० लपटीली] रह-रहकर लपटनेवाला।

† वि०=रपटीला।

लपटौआँ—पु० [हिं० लपटना] एक प्रकार की घास जिसके बाल कपड़ों मे लिपटकर फँस जाते हैं।

लपन—पुं० [स०√लप् (कहना)+ल्युट्—अन] १. मुख। मुँह। २. कहना या बोलना। भाषण।

स्त्री० [हिं० लपना] लपने की क्रिया या भाव। लप।

लपना—अ० [अनु० लप-लप] १ बेंत या लचीली छड़ी का एक छोर

पकड़कर जोर से हिलाये जाने से इधर-उधर झुकना। झोंक के साथ इधर-उधर लचना। २. झुकना या लचना।
संयो० क्रि०—जाना।
३ हैरान होना।
मुहा०—लपना-झपना=परेशान होना।
† अ०=लपकना।

लपलपाना—अ० [अनु० लप लप] लप लप शब्द करना।
अ० [हि० लपना] १ किसी लचीली चीज के हिलने या हिलाये जाने पर उसके किसी अंग या अंश का बीच से थोड़ा झुकना। बार-बार या रह-रहकर लचकना या लचना। जैसे—छड़ी तलवार या बेंत का लपलपाना। २ किसी लंबी कोमल वस्तु का इधर-उधर हिलना-डुलना या किसी वस्तु के अन्दर से बार-बार निकलना। जैसे—साँप की जीभ का लपलपाना।
मुहा०—(किसी की) जीभ लपलपाना=कुछ कहने, खाने आदि की प्रबल उत्सुकता या प्रवृत्ति होना। बहुत अधिक लिप्सा या लोभ होना।
स० किसी लचीली चीज को पकड़कर इस प्रकार हिलाना कि उसका कुछ अंश रह-रहकर झुके या लचे, और फलतः उसमें से कुछ चमक निकले। जैसे—(क) भाँजने के समय तलवार लपलपाना। (ख) किसी को मारने से पहले बेंत लपलपाना। (ग) साँप का अपनी जीभ लपलपाना।

लपलपाहट—स्त्री० [हि० लपलपाना+आहट (प्रत्य०)] १. लपलपाने की क्रिया या भाव। लचीली छड़ी या टहनी आदि का झोंक के साथ इधर-उधर लचकना। २ उक्त प्रकार की क्रिया के कारण उत्पन्न होनेवाली चमक। जैसे—तलवार की लपलपाहट से आँखें चौंधियाना।

लपसी—स्त्री० [स० लप्सिका] १. एक प्रकार का पतला हलुआ। २. उक्त प्रकार का वह रूप जिसमें चीनी के घोल के स्थान पर नमक का घोल मिलाया गया हो। ३ कोई गाढ़ा तरल पदार्थ।

लपहा—पु० [देश०] पान की बेल में लगनेवाली गेरुई (रोग)।

लपाना—स० [अनु० लपलप] १. किसी चीज को लपने में प्रवृत्त करना। २. लचीली छड़ी आदि को झोंक के साथ इधर-उधर लचाना। ३. आगे की ओर बढ़ाना या सरकाना।

लपित—भू० कृ० [स०√लप् (कहना)+क्त] कहा या बोला हुआ। उक्त। कथित।

लपेट—स्त्री० [हि० लपेटना] १ लपेटने की क्रिया या भाव। २. लपेटे हुए होने की अवस्था या भाव। ३ लपेटनेवाली चीज का हर बार का फेरा या बन्धन। ४. वह चिह्न या निशान जो लपेटी हुई चीज के उस अंश पर पड़ता है, जहाँ से वह किसी ओर मुड़ती है। तह या परत में सिरे पर पड़नेवाला मोड़ या उसका निशान। ५. ऐंठन। बल। मरोड़। ५. किसी मोटी लंबी वस्तु की मोटाई के चारों ओर का विस्तार। घेरा। परिधि। जैसे—इस खम्भे की लपेट ३ फुट है। ६. किसी प्रकार की उलझन, घुमाव-फिराव या चक्कर की ऐसी स्थिति जिसमें कुछ या कोई आकर उलझता या फँसता हो। जैसे—(क) वह भी इस मुकदमे की लपेट में आ गए है (ख) उनकी बातों की लपेट में मत आना।
पद—लपेट-झपेट।
७. कुश्ती का एक पेंच।

लपेट-झपेट—स्त्री० [हि० लपेटना-झपेटना] ऐसी स्थिति जिसके फलस्वरूप कोई आकर उलझता या फँसता हो और उस पर किसी प्रकार का आघात होता हो। जैसे—उत्पात (या उपद्रव) की लपेट-झपेट में बहुत से लोग आ गए थे।

लपेटन—स्त्री० [हि० लपेटना] १. लपेटने की क्रिया या भाव। लपेट। २ लपेटने के फलस्वरूप पड़नेवाला फेरा या बल। ३. उलझन। ४. ऐंठन।
पु० १ वह वस्तु जिसे किसी वस्तु के चारों ओर घुमा या लपेटकर बाँधते हैं। २ बेठन। ३ पैरों में उलझनेवाली चीज। (पालकी के कहार) ४. जुलाहों का तूर या बेलन नामक उपकरण।

लपेटना—स० [स० लिप्त] १. कोई पतली और लंबी चीज किसी दूसरी चीज के चारों ओर घुमाकर इस प्रकार बाँधना कि उस दूसरी चीज का कुछ या सारा तल ढक जाय। वेष्टित करना। जैसे—(क) खंभे पर कपड़ा लपेटना। (ख) बाँस पर डोरी या रस्सी लपेटना। २. मोड़े हुए कपड़े, कागज आदि के अन्दर करके बंद करना। कपड़े आदि के अन्दर बाँधना। जैसे—पुस्तक लपेटकर रख दो। ३ डोरी, सूत या कपड़े की सी फैली हुई वस्तु को तह पर तह मोड़ते या घुमाते हुए संकुचित करना। समेटना। जैसे—तागा लपेटकर उसकी गोली या लच्छी बनाना। ४ किसी को चारों ओर से घेरकर इस प्रकार कसना या जकड़ना कि वह कुछ कर न सके या बेदम हो जाय। जैसे—उसे ऐसा लपेटो कि वह भी याद करे। ५ अच्छी तरह पकड़ या बाँधकर अपने वश में करना। ६ उलझन, झंझट या बखेड़े में डालना या फँसाना। जैसे—उसने इस मामले में कई आदमियों को लपेटा है। ७ किसी तल पर कोई चीज पोतना या लगाना। जैसे—सारे शरीर में कीचड़ या भभूत लपेटना।
संयो० क्रि०—डालना।—देना।—लेना।

लपेटनी—स्त्री० [हि० लपेटना] जुलाहों की लपेटन नाम की लकड़ी। लपेटना। तूर।

लपेटवाँ—वि० [हि० लपेटना] १. जो लपेटा गया हो या लपेटकर बनाया गया हो। २. जो लपेटा जा सकता हो। ३. जिसके ऊपर कुछ लपेटा गया हो। ४. जिसमें बहुत कुछ घुमाव-फिराव या लपेट हो। चक्करदार। जैसे—लपेटवीं बात-चीत।

लपेटा—पु०=लपेट।

लपेटुआँ—वि०=लपेटवाँ।

लपेत—पु० [स०] बाल रोगों के अधिष्ठाता एक देवता। (पारस्कर गृह्य सूत्र)

लप्पड़—पु०=थप्पड़।

लप्पा—पु० [देश०] १. छत में लटकती हुई वह लकड़ी जिसमें करघे की बहुत सी रस्सियाँ बाँधी जाती हैं। २. एक प्रकार का गोटा। (जरी का)।
पु०=लप।

लपिसका—स्त्री० [सं०] लपसी।

लफंगा—वि० [फा० लफ़ंग] १. लंपट। व्यभिचारी। २. बहुत बड़ा चरित्रहीन या दुश्चरित्र। परम कुमार्गी और तुच्छ या हीन। ३. बहुत बड़ा बदमाश या लुच्चा। शोहदा।

लफटेंट—पुं० [अं० लेफ्टिनेंट] १. सेना का एक छोटा अफसर। २. किसी का अधीनस्थ कर्मचारी या कार्यकर्ता।

लफना†—अ०=लपना।

लफ्ज—पुं० [अ० लफ़्ज़] भाषा में प्रयुक्त होनेवाला सार्थक शब्द।

लफ्जी—वि० [अ० लफ़्ज़ी] लफ्ज या शब्द से संबंध रखनेवाला। शाब्दिक। जैसे—लफ्जी माने=शब्दार्थ।

लफ्फाज—वि० [अ० लफ़्फ़ाज़] १. खूब लच्छेदार बातें करनेवाला। बातूनी। २. बहुत बढ़-बढ़कर बातें बनाने या डींग हाँकनेवाला।

लफ्फाजी—स्त्री० [अ०] १. लफ्फाज होने की अवस्था या भाव। वाचालता। २. बात-चीत में होनेवाला आडंबरपूर्ण शब्दावली का प्रयोग।

लब—पुं० [फा०] १. ओष्ठ। ओंठ। होंठ। २. होठ पर की थूक। जैसे—लब लगाकर लिफाफा बन्द करना अच्छा नहीं। ३. जलाशय आदि का किनारा या तट। ४. बरतन आदि मे ऊपरवाले सिरे का घेरा।

पद—लबालब।

४. किसी चीज का किनारा या सिरा। जैसे—लबे सड़क=सड़क के ठीक किनारे पर।

लबझना—अ०=उलझना।

लबड़-धोंधों—स्त्री० [हिं० लबाड+धूम] १. झूठ-मूठ का हल्ला। व्यर्थ का गुल-गपाड़ा। २. वास्तविक बात को दबाकर झूठ-मूठ इधर-उधर की की जानेवाली बातें। बड़ी-बड़ी बातें बनाकर असल काम या बात टालना।

क्रि० प्र०—मचाना।

३. उक्त प्रकार की बातें करनेवाला व्यक्ति। (पश्चिम) ४. कुव्यवस्था। ५. अन्याय। अंधेर।

लबड़ना—अ० [हिं० लबाड] १ झूठ बोलना। लबाड़ी करना। २. गप हाँकना।

† अ०, स०=लिबड़ना।

लबदा†—पुं०=लबेदा।

लबनी—स्त्री० [देश०] १. वह हाँडी जिसमे ताड़ के पेड़ का रस चुआया जाता है। ताडी चुआने की हाँड़ी। २. बड़ी डोई।

लबरा—वि० [स्त्री० लबरी] झूठ बोलनेवाला।

लबलबी—स्त्री०=लिबलिबी।

लब-लहका—वि० [हिं० लपना+लहकना] [स्त्री० लबलहकी] १ किसी वस्तु को देखते ही उसकी ओर लपकनेवाला। अधीर और लालची। २. अकारण और व्यर्थ हर चीज इधर से उधर करनेवाला।

लब-लहजा—पुं० [फा० लब+लहजः] उच्चारण करने या बोलने का ढंग।

लबाड़—वि० [सं० लपन=बकना] १. झूठा। मिथ्यावादी। २. गप्पी।

लबाड़िया—वि०=लबाड़।

लबाड़ी—स्त्री० [हिं० लबाड़] १. व्यर्थ की कही जानेवाली झूठी बातें। २. गप।

वि०=लबाड।

लबादा—पुं० [फा० लबाद] १. रूईदार चोगा। दगला। २ अंगरखे की तरह का एक प्रकार का भारी और लंबा पहनावा। अबा। चोगा।

लबाब—वि० [अ०] खालिस। बेमेल। शुद्ध।

पु० १. सारभाग। सारांश। २. गूदा। मगज।

लबार†—वि०=लबाड़।

लबारी†—स्त्री०=लबाडी।

लबालब—वि० [फा०] लब अर्थात् किनारे या किनारों तक भरा हुआ। जैसे—लबालब भरा हुआ तालाब।

लबासी† —वि०=लबाड़।

स्त्री०=लबाड़ी।

लबी—स्त्री०=राब (गुड़ का शीरा)।

लबेद—पुं० [सं० वेद का अनु०] १. ऐसी बात जो वेद शास्त्रों से सम्मत न हो, बल्कि उनके विरुद्ध भले ही हो। २. फालतू और व्यर्थ की बात।

वि० वेद विरुद्ध बातें कहनेवाला।

लबेदा—पुं० [स० लगुड़] [स्त्री० अल्पा० लबेदी] मोटा तथा बड़ा डंडा।

लबेदी—स्त्री० [हिं० लबेद] लबेद के रूप मे होनेवाला आचरण, कृत्य या व्यवहार।

लबेरा—पुं०=लसोड़ा।

लब्ध—भू० कृ० [सं०√लभ् (पाना)+क्त] १. मिला या प्राप्त किया हुआ। २. उपार्जित किया या कमाया हुआ। ३. भाग करने से निकला हुआ। शेषफल। भाग फल। ४. जिसने पाया या प्राप्त किया हो। यौ० के आरम्भ मे। जैसे—लब्ध-काम, लब्ध कीर्ति आदि।

पुं० दस प्रकार के दासो मे से एक प्रकार का दास। (स्मृति)

लब्ध-प्रतिष्ठ—वि० [ब० स०] जिसने किसी कार्य या क्षेत्र मे अच्छी प्रतिष्ठा प्राप्त की हो। प्रतिष्ठित। सम्मानित।

लब्ध-प्रशमन—पुं० [ष० त०] मिले हुए धन का सत्पात्र को दिया जानेवाला दान। (मनु०)

लब्ध-लक्ष—पुं० [ब० स०] १. जिसने ठीक निशाने पर वार किया हो। २. जिसे अभिप्रेत वस्तु प्राप्त हो गई हो।

लब्ध-वर्ण—पुं० [सं०] वह जिसने वर्णों (अक्षरों और शब्दों) का ज्ञान प्राप्त किया हो, अर्थात् पंडित।

लब्धव्य—वि० [सं०√लभ् (प्राप्ति)+तव्य] प्राप्त किये जाने के योग्य।

लब्धांक—पुं० [लब्ध-अंक, कर्म० स०] भागफल। (दे०)

लब्धा (ब्धृ)—वि० [स०√लभ् (पाना)+तृच्] प्राप्त करनेवाला।

स्त्री०=विप्रलब्धा (नायिका)।

लब्धि—स्त्री० [सं०√लभ् (पाना)+क्तिन्] १. लब्ध होने की अवस्था या भाव। प्राप्ति। २. भागफल। लब्धांक।

लभन—पुं० [सं०√लभ् (प्राप्ति)+ल्युट्—अन] [वि० लभ्य, लब्ध] प्राप्त करना। हासिल करना। पाना।

लभस—पुं० [सं०√लभ् (प्राप्ति)+असच्] १ घोड़े के पिछले पैर बाँधने की रस्सी। पिछाड़ी। २. धन। ३ मगन। याचक।

लभ्य—वि० [सं०√लभ् (प्राप्ति)+यत्] १ जो पाया जा सके या मिल सके। २. उचित। न्याय-सगत।

लभ्यांश—पुं० [सं० लभ्य-अंश, कर्म० स०] आर्थिक लाभ या उसका अंश। मुनाफा। लाभ। (प्रॉफिट)

लम—वि० [हिं० लबा] लबा का उपसर्ग की तरह प्रयुक्त वह सक्षिप्त रूप जो उसे यौ० शब्दो के आरम्भ मे लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—लम-छड़, लम-ढेंक, लम-तडग।

लमई—स्त्री० [देश०] एक तरह की मधुमक्खी।

लमक—पुं० [सं०√रम् (क्रीडा)+क्वुन्—अक, र-ल] १ जार। उपपति। २ लपट। व्यभिचारी।

स्त्री० [हिं० लमकना] लमकने की क्रिया या भाव।

लमकना—अ० [हिं० लबा] लबाई के बल नीचे की ओर लटकना। (पश्चिम)

† अ०=लपकना।

लम-गजा—पुं० [हिं० लम+गज] इकतारा नाम का बाजा।

लम-गिरदा—पुं० [हिं० लम+फा० गिर्द] एक तरह की मोटी रेती जो नारियल की जटा रेतने के काम आती है।

लम-गोड़ा—वि० [हिं० लम+गोड=पाँव] जिसकी टाँगे लम्बी हों।

लम-घिचा—वि० [हिं० लम+घीच=गर्दन] [स्त्री० लामघिची] लबी गर्दनवाला।

लमचा—पुं० [देश०] एक प्रकार की बरसाती घास।

लम-चिता—पुं० [हिं० लम (लबा)+चित्ती] तेदुए की तरह का एक प्रकार का पहाड़ी हिंसक पशु जिसके शरीर पर बड़ी बड़ी काली चित्तियाँ के धब्बे होते हैं।

लम-छड़—पुं० [हिं० लम+छड़] १. बरछा। भाला। २ कबूतर उड़ाने की लग्गी। ३ पुरानी चाल की लबी बदूक।

वि० पतला और लंबा।

लमछुआ—वि० [हिं० लम] [स्त्री० लमछुई] साधारण से कुछ अधिक लम्बा। जैसे—गोरी रंगत, बडी बडी आँखे, लमछुई नाक। (लखनऊ)

लमजक—पुं० [सं० लमज्जक] कुश की तरह की एक सुगधित घास जो औषध के रूप मे काम आती है। लामज।

लमज्जक—पुं०=लमजक।

लम-टंगा—वि० [हिं० लम+टाँग] [स्त्री० लमटंगी] लबी टाँगोवाला। जैसे—लमटगी धोबिन।

पुं० सारस पक्षी।

लमटींग—वि० [हिं० लम+ढेंक] बहुत अधिक लबा।

पुं०=लम ढेंग।

लम-ढेंक—पुं० [हिं० लम+ढेंक (पक्षी)] सारस की तरह का पर उससे भी बड़ा एक प्रकार का पक्षी। हर-गीला।

लम-तडंग—वि० [हिं० लबा+ताड+अंग] [स्त्री० [लमतडगी] बहुत लबा या ऊँचा और हृष्ट-पुष्ट। जैसे—लमतडंग आदमी।

लमती—स्त्री० [हिं० लम] कुछ दूर का स्थान। (पूरब)

लमधर—पुं० [हिं० लम+धार] कुदाल के मुँह पर का टेढ़ा भाग।

लमधी—पुं० [हिं० समधी का अनु०] १. संबंध के विचार से समधी का पिता। २ समधी के विचार से समधी का दूसरा समधी।

लमहा—पुं० [अ० लमह] निमेष। पल। क्षण।

लमाना—स० [हिं० लम+आना (प्रत्य०)] १ लबा करना। २ दूर तक आगे बढ़ाना।

अ० बहुत आगे या दूर निकल जाना।

लय—पुं० [सं०√ली (मिलना)+अच्] १ एक पदार्थ का दूसरे में मिलकर उसमे पूरी तरह से समा जाना। अपनी सत्ता गवाँकर दूसरे मे विलीन होना। विलय। २ एक पदार्थ का दूसरे पदार्थ के साथ मिलना या सश्लिष्ट होना। ३. कार्य का आगे कारण मे समाविष्ट होना या फिर कारण के रूप मे परिणत होना। ४ दार्शनिक क्षेत्र में, वह स्थिति जिसमे सृष्टि की सभी चीजो का समाप्त होकर अव्यक्त प्रकृति के रूप मे परिणत या विलीन होना। प्रलय। ५ किसी पदार्थ का होनेवाला लोप या विनाश। ६ नियत समय तक किसी अधिकार या सुभीते का उपयोग न करने के कारण उस अधिकार या सुभीते के फल-भोग से वंचित होने का भाव या स्थिति। (लैप्स) ७. चित्त की वृत्तियों को सब ओर से हटाकर एक ओर प्रवृत्त होना। एकाग्र भाव से किसी ध्यान मे डूबना। ८ ठहराव। स्थिरता। ९ मूर्च्छा। बेहोशी। १० छिपना। लुकना। ११ पाटा जिससे खेत के ढेले तोड़कर मिट्टी बराबर करते है। (वैदिक)

स्त्री० [सं० लय से लिंग-विपर्यय] १ कविता और सगीत में गति या प्रवाह और यति या विराम पर आश्रित वह तत्त्व जो नियमित रूप से होनेवाले उतार-चढ़ाव तथा आपेक्षिक पुनरावृत्तियो से उत्पन्न होता और कृतियो (कविता, पाठ, गायन, नृत्य आदि) मे विशेष प्रकार की कोमलता, माधुर्य और लावण्य का आविर्भाव करता है। गति सामाजस्य। (रिदिम)

विशेष—तात्त्विक दृष्टि मे इसका मुख्य सबध उस काल से है जो कविताओ, गीतो, मत्रो आदि के स-स्वर उच्चारण मे लगता है, और इसी को नियन्त्रित या सयत रखने के लिए सगीत मे ताल से सहायता ली जाती है।

२ शास्त्रीय सगीत मे लगनेवाले समय के विचार से जल्दी, धीरे या सहज मे गाने का ढग या प्रकार जिसके ये तीन भेद कहे गये हैं—विलंबित, मध्य और द्रुत। (दे० ये शब्द) ३. सगीत में स्वरो के उच्चारण की दृष्टि मे गाने का प्रकार। जैसे—वह बहुत मधुर लय में गाता (या बजाता) है।

मुहा०—**लय देखना**=गाने-बजाने, नाचने आदि में लय का ठीक और पूरा ध्यान रखना।

स्त्री०=लौ (लगन)। उदा०—मन ते सकल वासना भागी। केवल रामचरण लय लागी।—तुलसी।

क्रि० प्र०—लगना।

लयक—वि० [सं० लय] १ लय से संबंध रखनेवाला। २. संगीत

की लय के रूप में अथवा उसके ढंग पर होनेवाला। (रिदिमकल) जैसे—नाड़ी या हृदय का लयक स्पंदन।

लयन—पु० [सं०√ली+ल्युट्—अन] १. लय होने की अवस्था, क्रिया या भाव। २. विश्राम। ३. शांति। ४. आड़ या आश्रय में होने की क्रिया या भाव। ५. आश्रय या विश्राम का स्थान।

लय-लीन†—वि०=लव-लीन।

लयार्क—पु० [सं० लय-अर्क, मध्य० स०] प्रलय काल का सूर्य।

लयिक—वि०=लयक।

लर—स्त्री०=लड़ (लड़ी)। उदा०—टेढ़ी पाग, लर लटके।—मीराँ।

लरकई—स्त्री० [हिं० लरका=लड़का] १. लड़काई। लड़कपन। ३ लड़कों का-सा आचरण, व्यवहार या स्वभाव।

लरकना—अ० [स० लड़न=झूलना] १. लटकना। २. झुकना। ३. खिसक कर नीचे आना।

संयो० क्रि०—आना।—जाना।—पड़ना।

लरका† —पु०=लड़का।

लरकाना†—स० [हिं० लरकना] किसी को लरकने में प्रवृत्त करना।

लरकिनी†—स्त्री०=लड़की।

लरखरनि—स्त्री०=लड़खड़ाहट।

लरखराना†—अ०=लड़खड़ाना।

लरज—पुं० [हिं० लरजना] सितार के छः तारों में से पाँचवाँ तार जो पीतल का होता है।

लरजना—अ० [फा० लर्ज=कप] १. काँपना। थरथराना। २. इधर-उधर हिलना।

संयो० क्रि०—उठना।—जाना।—पड़ना।

३. डर जाना। दहल जाना।

लरजाँ—वि० [फा०] काँपता हुआ। कंपित।

पु० [फा० लर्ज] १ कंपकँपी। थरथराहट। २. भूकंप। भूचाल। ३ जूड़ी बुखार जिसके आने पर रोगी थर-थर काँपने लगता है।

लरजिश—स्त्री०[फा० लरजिश] कँपकँपी। थरथराहट।

लरझर—वि० [हिं० लड़+झड़ना] १. बरसता हुआ। २ बहुत अधिक। प्रचुर।

लरना†—अ०=लड़ना।

लरनि—स्त्री० [हिं० लड़ना] लड़ने की क्रिया, ढंग या भाव। लड़ाई।

लराई†—स्त्री०=लड़ाई।

लराका†—वि०=लड़ाका।

लरिकई†—स्त्री०=लरकई।

लरिक-लोरी—स्त्री० [हिं० लरिका+लोल=चंचल] १. लड़कों का-सा खेल। २. खेलवाड़।

लरिका†—पु० [स्त्री० लरकिनी, लरिकी]=लड़का।

लरिकाई†—स्त्री०=लरकई।

लरिकिनी—स्त्री०=लड़की।

लरी—स्त्री०=लड़ी।

ललंतिका—स्त्री० [सं०√लल्+शतृ+ङीष्+कन्,+टाप्, ह्रस्व] १. नाभि तक लटकती हुई माला या हार। २. गोह नामक जंतु।

लल—स्त्री०=ललसा।

स्त्री० [देश०] १. झूठी बात। २. धोखा देने के लिए कही जाने-वाली बात। जैसे—तुम उनकी लल में आकर दस रुपये गँवा बैठे।

ललक—स्त्री० [हिं० ललकना] ललकने की अवस्था, गुण या भाव।

ललकना—अ० [देश०] १. किसी वस्तु को पाने की गहरी इच्छा या लालसा करना। २. अभिलाषा। चाह से भरा हुआ होना।

ललकार—स्त्री० [हिं० ललकारना] १. ललकारने की क्रिया या भाव। २. प्रतियोगिता, लड़ाई आदि के लिए किसी का किया जानेवाला आह्वान या किया जानेवाला आमंत्रण। यह कहना कि आओ सामना करके देख लो। ३ किसी को किसी पर आक्रमण करने के लिए दिया जानेवाला प्रोत्साहन या बढ़ावा।

ललकारना—स० [देश०] १. प्रतियोगिता, लड़ाई आदि के लिए किसी को आमन्त्रित या आहूत करना। २. किसी को किसी से लड़ने के लिए बढ़ावा देना।

ललकित—वि० [हिं० ललक] गहरी चाह से भरा हुआ। (असिद्ध रूप)

ललचना—अ० [हिं० लालच+ना (प्रत्य०)] १ लालच या लोभ से ग्रस्त होना। २. किसी दूसरे की अच्छी चीज देखकर उसे प्राप्त करने के मोह से अधीर होना। ३. किसी पर आसक्त, मोहित या लुब्ध होना।

ललचाना—स० [हिं० ललचना] १ ऐसा काम करना जिससे किसी के मन में किसी काम, चीज या बात की प्राप्ति या सिद्धि का लालच उत्पन्न हो। २. कोई चीज दिखाकर किसी के मन मे लोभ का भाव जाग्रत करना तथा उसे वह चीज न देकर अधीर या उत्सुक करना। ३. अपने रूप-रंग, हाव-भाव से किसी के मन मे अनुराग या मोह उत्पन्न करना। † अ०=ललचना।

ललचौहाँ—वि० [हिं० लालच+औहाँ (प्रत्य०)] [स्त्री० ललचौही] लालच से भरा हुआ। ललचाया हुआ। जिससे प्रबल लालसा प्रकट हो।

ललछौहाँ—वि० [हिं० लाल+छौंह=छाया] जिसमे हलके लाल रंग की झलक हो। उदा०—ललछौहें सूखे पत्ते की समानता पर लेता है।—महादेवी।

लल-जिह्व—वि० [स० ललज्जिह्व] १ जीभ लपलपाता हुआ। २. भयंकर। भीषण।

पुं० १. कुत्ता। २ ऊँट।

ललबेया—पु० [देश०] अगहन मे तैयार होनेवाला एक प्रकार का धान।

ललन—पुं० [सं०√लल् (चाहना)+ल्युट्—अन] १. प्यारा बालक। दुलारा लडका। २ बालक। लड़का। ३. प्रेमी का प्रेम सूचक सम्बोधन। ४. केलि। क्रीड़ा। ५. साखू का पेड़। साल वृक्ष। ६. चिरौंजी का पेड़। पयार।

ललना—स्त्री० [सं०√लल्+णिच्+ल्यु—अन,+टाप्] १. सुन्दर स्त्री। कामिनी। २ जिह्वा। जीभ। ३. बौद्ध हठ-योग में इड़ा

नाड़ी का एक नाम। ४. एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे मगण, भगण और दो सगण होते हैं।

† पु० 'ललन' का सबोधन कारकवाला रूप। हे ललन।

ललना-चक्र—पु०[स० उपमित स०] परवर्ती हठ-योगियो के अनुसार शरीर के अन्दर का एक कमल या चक्र। (अष्ट कमल और षट् चक्र से भिन्न)

ललना-प्रिय—पुं० [स० कर्म० स०] कदंब (पेड)।

ललनिका—स्त्री० [स० ललना+कन्+टाप्, इत्व] ललना। स्त्री।

ललनी—स्त्री० [स० नलिनी] १ बाँस की नली या पोर। २. पतली नली।

लल-मुँहाँ—वि० [हिं० ललन+मुँहाँ] लाल मुँहवाला।

पु० बन्दर।

लला—पु० [हिं० लाल] [स्त्री० लली] हिं० लाल का सम्बोधन कारकवाला रूप। उदा०—लला, फिर आइहौ खेलन होरी।—पद्माकर। २ प्यारी का दुलारा लड़का। ३ बालक। लड़का। ४. प्रिय अथवा प्रेमी के लिए प्रेम-सूचक सम्बोधन।

ललाई—स्त्री० [हिं० लाल (प्रत्य०)] लाली। लालिमा।

ललाट—पु० [स० लल√अट् (गति)+अण्] १ भाल। माथा। २ किस्मत। तकदीर। भाग्य। ३ किस्मत मे लिखी हुई बात। भाग्य का लेख।

ललाट-रेखा—स्त्री० [स० ष० त०] कपाल या भाग्य का लेख जो मस्तक पर ब्रह्मा का किया हुआ चिह्न माना जाता है। भाग्य-लेख।

ललाटाक्ष—पु० [स० ललाट-अक्षि, ब० स०,+षच्] शिव, जिनका एक तीसरा नेत्र ललाट पर माना जाता है।

ललाटाक्षी—स्त्री० [स० ललाटाक्ष+ङीष्] दुर्गा।

ललाटिका—स्त्री० [सं० ललाट+कन्+टाप्, इत्व] १. माथे पर बाँधने का टीका नामक गहना। २. टीका। तिलक।

ललाट्य—वि० [स० ललाट+यत्] १ ललाट का। २. ललाट के लिए प्रयुक्त।

ललाना†—अ० [हिं० लाल] लाली पकड़ना। लाल रग से युक्त होना। उदा०—ललाती साँझ के नाम की अकेली तारिका अब नही कहता। —अज्ञेय।

स० लाल रग मे रँगना।

† अ०=ललचना।

† स०=ललचाना।

ललाम—वि० [स०√लड़ (विलास)+क्विप्,√अम् (प्राप्ति)+अण्, ड—ल] [स्त्री० ललामा] १. मनोहर। सुन्दर। २. अच्छा। उत्तम। बढ़िया। ३. प्रधान। मुख्य। ४. लाल रग का। सुर्ख।

पु० १. अलकार। गहना। २. रत्न। ३. चिह्न। निशान। ४. झडे का डंडा। ध्वज। ५. सीग। ६ घोडा। ७ घोडे को पहनाया जानेवाला गहना। ८. घोड़े या गाय के माथे पर किसी रग का चिह्न। टीका। ९. घोड़े, शेर आदि की गरदन पर के बाल। अयाल। १०. प्रभाव।

† पु०=नीलाम।

ललामक—पुं० [स० ललाम+कन्] माथे पर लपेटने की माला।

ललामी—स्त्री० [सं० ललाम+ङीष्] कान मे पहनने का एक गहना।

स्त्री० [हिं० ललाम+ई (प्रत्य०)] १. ललाम होने की अवस्था या भाव। सुन्दरता। २. लाली। सुर्खी।

ललित—वि० [स०√लल् (इच्छा)+क्त] [स्त्री० ललिता] १. मनोहर। सुन्दर। २. कोमल। ३. अभिलषित। ४. प्रिय। प्यारा। ५. चलता या हिलता हुआ।

पु० १. शृंगार रस का एक कायिक हाव। २. साहित्य में एक प्रकार का अलकार जिसमे किसी प्रस्तुत कार्य का प्रत्यक्ष रूप से वर्णन न करके उसके समान या प्रतिबिंब रूप से किसी दूसरे कार्य का इस प्रकार उल्लेख होता है कि प्रस्तुत कार्य पर ठीक बैठ जाय। ३ एक प्रकार का विषम वर्णवृत्त जिसके पहले चरण मे सगण, जगण, सगण, लघु दूसरे चरण मे नगण, सगण, जगण, गुरु, तीसरे मे नगण, नगण, सगण, सगण, और चौथे मे सगण, जगण, सगण, जगण होता है। ४. षाडव जाति का एक राग जो भैरव राग का पुत्र कहा गया है, और जिसमे निषाद स्वर नही लगता तथा धैवत और गांधार के अतिरिक्त और सब स्वर कोमल लगते हैं।

ललिताई*—स्त्री०=ललिताई।

ललित-कला—स्त्री० [स० कर्म० स०] वह कला जिसके अभिव्यजन मे सुकुमारता और सौन्दर्य की अपेक्षा हो और जिसकी सृष्टि मुख्यत मनो-विनोद के लिए हो। (फाइन आर्ट्स) जैसे—चित्र कला, सगीत आदि।

ललित-कांता—स्त्री० [सं० कर्म० स०] दुर्गा।

ललित-गौरी—स्त्री० [स० कर्म० स०] सगीत मे एक प्रकार की रागिनी।

ललित-पद—वि० [स० ब० स०] (कथन या रचना) जिसमे सुन्दर पद या शब्द हो।

पु० 'सार' नामक छद का दूसरा नाम।

ललित पुराण—पु० [स० मध्य० स०]=ललित विस्तर (बौद्ध ग्रन्थ)।

ललित विस्तर—पु० [स० ब० स०] एक प्रसिद्ध बौद्ध ग्रन्थ जिसमे गौतम बुद्ध का चरित्र वर्णित है।

ललित-व्यूह—पु० [स० ब० स०] १ बौद्ध शास्त्र के अनुसार एक प्रकार की समाधि। २. एक बोधिसत्व का नाम।

ललित-साहित्य—पु० [सं० कर्म० स०] ऐसा साहित्य जो उपयोगी या ज्ञानवर्द्धक होने की अपेक्षा भाव-प्रवण अधिक होता है। मनोरजक साहित्य।

ललिता—स्त्री० [स० ललित+टाप्] १. पार्वती का एक नाम। २. एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे तगण, जगण, और रगण होते हैं। ३ सगीत में एक प्रकार की रागिनी जो दामोदर और हनुमत के मत से मेघराग की और सोमेश्वर के मत से बसंत राग की पत्नी है। ४. राधिका की मुख्य सखियो मे से एक। ५ कस्तूरी।

ललिताई†—स्त्री०=लालित्य।

ललिता पंचमी—स्त्री० [सं० मध्य० स०] आश्विन महीने की शुक्ला पंचमी जिसमे ललिता देवी (पार्वती) की पूजा होती है।

ललितार्थ—वि० [स० ललित-अर्थ, ब०स०] शृंगार-रस-प्रधान (रचना)।

ललिता-षष्ठी—स्त्री० [सं० मध्य० स०] भाद्र कृष्ण षष्ठी। जिस दिन स्त्रियाँ पुत्र की कामना से या पुत्र के हितार्थ ललिता देवी (पार्वती) का पूजन और व्रत करती हैं।

ललिता-सप्तमी—स्त्री० [सं० मध्य० स०] भादों सुदी सप्तमी। भाद्र शुक्ल सप्तमी।

ललितोपमा—स्त्री० [सं० ललिता-उपमा, कर्म० स०] साहित्य मे एक प्रकार का अर्थालंकार जिसमें उपमेय और उपमान की समता दिखलाने के लिए सम, समान, तुल्य, लौं, इव आदि के वाचक पद न रखकर ऐसे पद लाये जाते हैं, जिनसे बराबरी, मुकाबला, मित्रता, निरादर, ईर्ष्या इत्यादि के भाव प्रकट होते हैं।

ललिया—पुं० [हिं० लाल+इया (प्रत्य०)] लाल रंग का बैल।
† स्त्री०=लली।

लली—स्त्री० [हिं० लाल का स्त्री०] १. लड़की के लिए प्यार का शब्द। २. दुलारी पुत्री या बेटी। ३. नायिका या प्रेमिका के लिए प्रेमसूचक संबोधन।

ललौहाँ—वि० [हिं० लाल+औहाँ (प्रत्य०)] [स्त्री० ललौही] कुछ कुछ लाली लिये हुए। प्रायः लाल। लल-छौहाँ।

लल्लर—वि० [सं०] तुतलानेवाला।

लल्ला—पुं० [हिं० लाल, लला] [स्त्री० लल्ली] १. लड़के या बेटे के लिए प्यार का शब्द। २. दुलारा लड़का।

लल्लो—स्त्री० [सं० ललना] जीभ। जिह्वा। जबान। (स्त्रियों मे प्रयुक्त, उपेक्षासूचक) जैसे—इसकी लल्लो बहुत चलती है।

लल्लो-चप्पो—स्त्री० [हिं० लल्लो+अनु० चप्पो] किसी को प्रसन्न रखने के लिए उसके अनुकूल कही जानेवाली चिकनी-चुपड़ी बात। ठकुरसुहाती।

लल्लो-पत्तो—स्त्री०=लल्लो-चप्पो।

लल्हरा—पु० [देश०] एक प्रकार का पौधा जिसकी पत्तियों का साग खाया जाता है।

ललही-छठ—स्त्री० [सं० हल षष्ठी] भाद्र कृष्ण पक्ष की छठ या षष्ठी तिथि।

लवंग—पुं० [सं०√लू (छेदन)+अगच्] लौंग नामक वृक्ष और उसकी कलियाँ या फूल।

लवंग-लता—स्त्री० [सं० ष० त०] १. लौंग का पेड़ या उसकी शाखा। २. एक प्रकार की बँगला मिठाई।

लव—वि० [सं०√लू+अप्] बहुत ही अल्प या थोड़ा। उदा०—मोह-निशा लव नही वहाँ पर।—निराला।
पु० १. काटने या छेदने की किया। २. विनाश। ३. रामचन्द्र के दो यमज पुत्रों में से एक पुत्र का नाम। ४. काल का एक बहुत छोटा मान जो दो काष्ठा अर्थात् छत्तीस निमेष का होता है। (कुछ लोग एक निमेष के साठवें भाग को लव मानते हैं।)५ किसी चीज की बहुत ही छोटी या थोडी मात्रा। बहुत ही थोड़ा परिमाण।
पद—लव भर=बहुत ही थोड़ा।
६. लवा नाम की चिड़िया। ७ लवंग। लौंग। ८. जातीफल। ९. ज्वरांकुश या लामज्जक नामक तृण। १०. पक्षियो के शरीर से कतरकर निकाला जानेवाला ऊन, पर या बाल। ११. सुरा गाय की पूँछ के बाल जिनकी चँवर बनती है।

लवक—वि० [सं०√लू+ण्वुल्—अक] काटनेवाला।

लवकना†—अ०=लौकना।

लवका—स्त्री० [हिं० लौकना] १. लौका। बिजली। २. चमक।

लवण—पुं० [सं०√लू+ल्यु—अन, पृषो० णत्व] १. नमक। लोन। २. दे० 'लवणासुर'। ३. दे० 'लवण समुद्र'।
वि० १. नमकीन। २. लावण्ययुक्त। सुन्दर। सलोना। ३. खारा।

लवण-त्रय—पुं० [सं० ष० त०] इन तीन प्रकार के नमकों का समूह, सेंधव, बिट् और साँचर।

लवण-भास्कर—पुं० [सं० उपमित स०] वैद्यक मे एक प्रकार का पाचक चूर्ण।

लवण-मेह—पुं० [सं० मध्य० स०] सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का प्रमेह जिसमे पेशाब के साथ लवण के समान स्राव होता है।

लवण-यंत्र—पु०[सं० मध्य० स०] एक प्रकार का यंत्र जिसमें ओष-धियो का पाक बनाया जाता है। (वैद्यक)

लवण-वर्ष—पुं० [सं० मध्य० स०] कुश द्वीप का एक खण्ड। (पुराण)

लवण-समुद्र—पुं० [सं० ष० त०] सात समुद्रो मे से खारे पानी का एक समुद्र। (पुराण)

लवणा—स्त्री० [स्त्री० लवण+टाप्] १. दीप्ति। आभा। २. महा-ज्योतिष्मती नाम की लता। ३. चुक। ४. चँगेरी। ५. अमलोनी नामक शाक। ६ लूनी नदी का पुराना नाम।

लवणाकर—पु० [सं० लवण-आकर, ष० त०] १. नमक की खान। २ सौंदर्य का आगार।

लवणाचल—पु० [सं० लवण-अचल, मध्य० स०] पहाड़ के रूप में लगाया हुआ नमक का ढेर जो दान किया जाता है।

लवणाब्धि—पुं० [सं० लवण-अब्धि, ष० त०]=लवण-समुद्र।

लवणार्ब—पु० [सं०] १ =लवण-समुद्र। २. समुद्र। सागर।

लवणालय—पु० [सं० लवण-आलय, ष० त०] आधुनिक मथुरा नगरी का प्राचीन नाम। मधुपुरी।

लवणासुर—पुं० [सं० लवण-असुर, कर्म० स०] एक राक्षस जो मधु का पुत्र था तथा जिसने मधुपुरी नगरी (आधुनिक मथुरा) को बसाया था। इसका बध शत्रुघ्न ने किया था।

लवणित—भू० कृ० [सं० लवण+इतच्] १. नमक से युक्त किया हुआ। जिसमे नमक डाला गया हो। २. सुन्दर।

लवणिम (मन्)—स्त्री० [सं० लवण+इमनिच्] १. नमकीनी। सलोनापन। २ सौंदर्य।

लवणोत्तम- पु० [सं० लवण-उत्तम, स० त०] सेंधा नमक।

लवणोदक—पु० [सं० लवण-उदक, मध्य० स०] १ नमक मिला हुआ पानी। २. खारे पानीवाला समुद्र। क्षार समुद्र।

लवणोदधि—पुं० [सं० लवण-उदधि, ष० त०] लवण समुद्र।

लवन—पुं० [सं०√लू (छेदन)+ल्युट्—अन] [वि० लवनीय, लव्य] १. काटना। छेदना। २ खेत की फसल की कटाई। लवनी। लुनाई। लौनी। ३. खेत की फसल काटने के बदले में मिलनेवाला अन्न या धन।

लवना—स० [हिं० लुनना] [भाव० लवनाई] १. पकी हुई फसल काटना। लुनना। २. खेत में काटकर रखे हुए डंठलो को बटोरना।

लवनाई—स्त्री०=लोनाई (लावण्य)।

लवनी—स्त्री० [सं० लवन+ङीप्] शरीफे का पेड और फल।
स्त्री० [हिं० लवना] पकी हुई फसल काटने की क्रिया, भाव और मजदूरी। लुनाई।
*स्त्री०=नवनीत (मक्खन)।

लवनीय--वि० [सं०√लू+अनीयर्] (फसल) जो लवने अर्थात् काटे जाने के योग्य हो।

लवर—स्त्री०=लौर (आग की लपट)।

लव-लासी—स्त्री० [हिं० लव=प्रेम+ लासी=लसी, लगाव] १. लौ अर्थात् प्रेम संबंध स्थापित करनकी प्रबल इच्छा या आकाक्षा। २. किसी प्रकार का थोडा बहुत या नाममात्र का सबध।

लवली—स्त्री० [सं० लव√ला (आदान)+क+ङीष्] १ हरफारेवरी नाम का पेड और उसका फल। २. एक विषम वर्णवृत्त जिसके पहले, दूसरे, तीसरे और चौथे चरणो मे क्रमश. १६, १२, ८और २० वर्ण होते है।

लव-लीन—वि० [हिं० लय+लीन] किसी के प्रेम मे लीन। प्रेम मे मग्न।

लव-लेश—पु० [सं० ष० त०] १ अत्यन्त अल्प-मात्रा। बहुत थोडा परिमाण। २ बहुत थोडा या नाममात्र का सबध। जैसे—इसमे प्रेम का लवलेश भी नही है।

लवा—पु० [सं० लव] तीतर की जाति का एक पक्षी जो तीतर से बहुत छोटा होता है।
पु०=लावा (लाजा)।

लवाई—स्त्री० [देश०] नई ब्याई हुई गाय।
† स्त्री०=लुनाई।

लवाजमा—पु० [अ० लवाजिम] १ किसी के साथ रहनेवाला दल और साज-सामान। साथ मे रहनेवाली भीड-भाड या बहुत सा सामान। जैसे—इतना लवाजमा साथ लेकर क्यों चलते हो। २ विशेष रूप से वे व्यक्ति और साज समान जो सेना के साथ रहते या चलते हैं। सेनापरिधान। (एकाउट्रिमेंट) ३ आवश्यक और उपयोगी सामान।

लवाना†—स० [हिं० लेना+जाना] अपने साथ ले जाना। उदा०—जा दिन ते मुनि गए लवाई।—तुलसी।

लवारा—पु० [हिं० लवारी] गाय का बच्चा।

लवासी—वि० [?] १ बकवादी। २ बद-चलन। लपट।

लवेंडर—पु० [अं०] कपडों और बालो मे लगाने के लिए एक प्रकार का सुगंधित तरल पदार्थ जो एक पौधे के फूलो से तैयार किया जाता है।

लवेरी†—स्त्री० [?] १ दुधार गाय। २ विशेषतः ऐसी गाय जिसके आगे बच्चा हो तथा जो दूध भी देती हो। (पश्चिम)

लव्य—वि० [सं०√लू+यत्]=लवनीय।

लशकर—पु० [फा० लश्कर] १ सेना। फौज। २ प्राणियो या मनुष्यों का बहुत बड़ा दल या समूह।
पद—**लाव-लश्कर।**
३ सैनिक पडाव। छावनी। ४. जहाजो पर काम करनेवाले लोगो का वर्ग।

लशकरी—वि० [फा० लश्कर] १. लश्कर-संबंधी। लश्कर या सेना का। फौजी। २ लश्कर मे काम करनेवाला या लश्कर का सदस्य।
पु० १ सैनिक। सिपाही। २. जहाज पर काम करनेवाला आदमी। जहाजी।
स्त्री० जहाज पर काम करनेवाले लोगो की बोली।

लशकारना—स० [अनु० लश् लश्] मुँह से लशलश शब्द करते हुए शिकारी कुत्ते को शिकार पर झपटने के लिए उत्तेजित करना।

लशटम-पशटम—क्रि० वि०=लस्टम पस्टम।

लशुन (शून)—पु० [सं०√अश् (भोजन)+उनन्=अ—ल] लहसुन।

लश्कर—पु०=लशकर।

लश्करी—वि०, पु०, स्त्री०=लशकरी।

लषण--वि० [सं०√लष् (चाहना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० लषित] इच्छा करनेवाला।

लषन—पु०=लखन (लक्ष्मण)।

लषना—स०=लखना।

लषन—पु०=लक्खन।

लष्मी—वि०, पु०=लक्खी।
स्त्री०=लक्ष्मी।

लस—पु० [सं०√लस् (सटना)+क (घञर्थे)] १ चिपकने या चिपकाने का गुण। श्लेषण। चिपचिपाहट। २ लासा। ३. आधुनिक चिकित्सा विज्ञान मे रक्त का वह अश या तत्त्व जिसके फलस्वरूप कुछ जीव-जतु कई विशिष्ट रोगो से बचे रहते है। सौम्य। (सीरम) वि० दे० 'सौम्य विज्ञान'। ४ दे० 'लसी'।

लसक—पु० [सं० लासक] नाचनेवाला। नर्तक।

लसकर—पु०=लशकर।

लसदार—वि० [हिं० लस+फा० दार (प्रत्य०)] जिसमे लस हो। लसनेवाला। लसीला।

लसन (नि)—स्त्री० [हिं० लसना] १ लसने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ छटा। शोभा। ३ चमक। दीप्ति।

लसना—स० [सं० लसन] कोई वस्तु किसी दूसरी वस्तु के साथ इस प्रकार सटाना कि वह अलग न हो। चिपकाना। लेसना। जैसे—लिफाफे पर टिकट लसना।
संयो० क्रि०—देना।
अ० १ चिपकना। २ शोभित होना। फबना। ३ विराजमान होना। ४. प्रकाशमान होना। चमकना।

लसम—वि० [देश०] जिसमे खोट या मेल हो। खोटा या दूषित।

लसरका—पु० [हिं० लस] बहुत ही साधारण या जैसे-तैसे चलता रहनेवाला सपर्क या सबध।
क्रि० प्र०—लगाना।—लगा रहना।

लसलसा—वि० [हिं० लस] [स्त्री० लसलसी] गोंद की तरह चिपकनेवाला। चिपचिपा। लसीला।

लसलसाना—अ० [हिं० लस] लस से युक्त होने के कारण चिपकना।

लसलसाहट—स्त्री० [हिं० लसलसा] लसदार होने की अवस्था या भाव। चिपचिपाहट।

लसिका—स्त्री० [सं० लस+कन्+टाप्, इत्व] १. लाला। थूक। २. पेशी।

लसित—भू० कृ० [सं०√लस् (चमकना, क्रीड़ा)+क्त] १ शोभित। २. प्रकट। ३ क्रीड़ाशील।

लसी—स्त्री० [हिं० लस] १. चिपचिपाहट। चेप। लस। २. ऐसी अवस्था जिसमें किसी प्रकार के आकर्षण, लाभ आदि के कारण साथ लगे रहने की इच्छा या प्रवृत्ति हो। जैसे—कुछ न कुछ लसी है, तभी तो तुम उसके साथ लगे रहते हो। ३. साधारण मेल-जोल या संपर्क।

क्रि० प्र०—लगना।—लगाना।

† स्त्री०=लस्सी।

लसीका—स्त्री०=लसिका।

लसीला—वि० [हिं० लस+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० लसीली] लसदार। जिसमे लस हो। चिपचिपा।

वि० [हिं० लसना] जो लस रहा हो, अर्थात् शोभायुक्त। सुन्दर।

लसुन†—पु०=लहसुन।

लसुनिया—पु०=लहसुनियाँ।

लसोड़ा—पु० [हिं० लस=चिपचिपाहट] १ एक प्रकार का छोटा पेड़। २ उक्त पेड़ के फल जो बेर के-से होते है। इनमे लसदार गूदा होता है, और ओषधि में इनका प्रयोग होता है। ३. लाक्षणिक अर्थ मे, किसी के साथ लगा रहनेवाला व्यक्ति।

लसौटा—पु० [हिं० लासा+औटा (प्रत्य०)] चिड़ियाँ फँसाने की वह लग्गी जिस पर लासा लगा होता है।

लस्टम-पस्टम—अव्य० [अनु०] १ बहुत ही मंद गति तथा साधारण रूप से। जैसे-तैसे। जैसे—अब तक लस्टम पस्टम थोड़ा बहुत काम हो ही रहा है।

लस्त—वि० [स०√लस् (क्रीडा)+क्त] १ क्रीडित। २. शोभायुक्त। सुन्दर। ३. फबता या भला लगता हुआ।

वि० [स० श्लथ] १. थका हुआ। शिथिल। श्रम या थकावट से ढीला। जैसे—चलते-चलते शरीर लस्त हो गया। २. जिसमें कुछ करने की शक्ति न रह गई हो। अशक्त।

लस्तक—पु० [सं० लस्त+कन्] धनुष का मध्य भाग।

लस्तकी (किन्)—पु० [सं० लस्तक+इनि] धनुष।

लस्तगा†—पु० [हिं० लस+लगाव] १. बहुत थोड़ा सम्पर्क या सबध। २. क्रम। सिलसिला।

लस्सान—वि० [अ०] [भाव० लस्सानी] १. अधिक बोलनेवाला। वाचाल। २ लच्छेदार बातें कहनेवाला।

लस्सी—स्त्री० [स० लप्सिका] दही का घोल विशेषत वह घोल जिसे मथकर मक्खन निकाल लिया गया हो।

वि० लाक्षणिक अर्थ मे, तरल। पतला।

† स्त्री०=लसी।

लहँगा—पुं० [हिं० लक=कमर+अंगा] १. कमर के नीचे का सारा अंग ढकने के लिए स्त्रियो का एक घेरदार पहनावा। घाघरा। २. उक्त प्रकार का वह आधुनिक पहनावा जिसे स्त्रियाँ धोती या साड़ी के नीचे पहनती हैं। साया।

लहँड़ा—पुं० [?] जन्तुओं का झुंड। गल्ला। जैसे—भेड़-बकरियों का लहँड़ा। उदा०—सिहन के लहँड़े नहीं, हसन की नहिं पाँत।—कबीर।

लहँदा—पु०=लहँदी।

लहँदी—स्त्री० [प० लहँदा=पश्चिम दिशा] पश्चिमी पजाब की बोली जो लंडा लिपि मे लिखी जाती है। हिंदकी।

लहक—स्त्री० [हिं० लहकना] १. लहकने की क्रिया या भाव। २. आग की लपट। ३ चमक। ४. छवि। शोभा।

लहकना—अ० [स० लता=हिलना-डोलना या अनु०] १. हवा में इधर-उधर हिलना। झोंके खाना। लहराना। २ हवा का झोका आना। हवा कुछ जोर से चलना। उदा०—तीर ऐसे त्रिविध समीर लागे लहकन।—देव। ३ आग का प्रज्वलित होना। दहकना।

संयो० क्रि०—उठना।

४. दे० 'ललकना'।

लहका—पु०=लचका (पतला गोटा)।

लहकाना—स० [हिं० लहकना] १ हवा में इधर-उधर हिलना-डुलना। झोका खिलाना। २ उत्तेजित करना। उकसाना। भड़काना। ३ प्रज्वलित करना। दहकाना। ४ लालसा से युक्त या उत्कंठित करना।

संयो० क्रि०—देना।

लहकारना—स०=लहकाना।

लहकौर—स्त्री० [हिं० लहना+कौर (ग्रास)] १ विवाह की एक रस्म जिसमे वर कन्या के मुख मे और कन्या वर के मुख मे ग्रास डालती है। २ उक्त अवसर पर गाये जानेवाले गीत। ३ वर-वधू को कोहबर मे खेलाये जानेवाले खेल।

लहजा—पु० [अ० लह्‌ज] १ स्वरो के उतार-चढाव की दृष्टि से, बोलने का ढग। २ कोई बात कहने का ऐसा ढग जो शब्दो या स्वर के ढंग से अच्छा या बुरा लगे। ३ बहुत थोड़ा समय। क्षण या पल। लमहा।

लहटोरा—पु० [?] एक प्रकार की खाकी या सफेद रग की चिड़िया। जिसकी दुम लम्बी और बीच मे काली होती है। यह कीड़े-मकोड़े, टिड्डे तथा छोटी मोटी चिड़ियाँ खाती है।

लहठी—स्त्री० [हिं० लाह=लाक्षा] लाख की चूड़ी।

लहन—पु० १=लहना (प्राप्तव्य) २ =कजा (वनस्पति)।

लहनदार—पु० [हिं० लहना+फा० दार] वह मनुष्य जिसका कुछ लहना किसी पर बाकी हो। अपना प्राप्य धन पाने या लेने का अधिकारी व्यक्ति।

लहना—स० [सं० लमन्, प्रा०लहन] १ प्राप्त करना। लाभ करना। पाना। २ आधिकारिक रूप से वह धन जो किसी से प्राप्य हो या किसी की ओर बाकी निकलता हो। पावना।

पद—लहना-पावना=औरो को दिया हुआ ऐसा धन जो आधिकारिक रूप से प्राप्य हो।

३. भाग्य।

स० [सं० लवन] १ काटना। छेदना। २. खेत की फसल काटना।

३. कतरना, छीलना या तराशना।
स०=लहाना।
अ० [स० लसन] कही हुई बात या सोची हुई युक्ति का ठीक मौके पर बैठकर अभिप्राय की सिद्धि मे सहायक होना। जैसे—यहाँ तो तुम्हारी बात (या तरकीब) लह गई अर्थात् ठीक सिद्ध हुई।
लहनी—स्त्री० [हिं० लहना] १. प्राप्य धन। लहना। २ भाग्य का फल-भोग। ३ कसेरो का बरतन छीलने का एक औजार।
लहबर—पु० [?] १. लबी और ढीली पोशाक। जैसे—चोगा, लबादा आदि। २ एक तरह का तोता। ३ छडी। ४ झडा। निशान।
लहबरी—पु० [हिं० लहबर] एक तरह का तोता।
लहम—पु० [अ०] मांस। गोश्त।
लहमा—पु० [अ० लह्‌म] समय का बहुत छोटा विभाग। निमेष। पल।
लहर—स्त्री० [स० लहरी] १ तरल पदार्थों मे हवा लगने पर उनके तल के कुछ अश मे उत्पन्न होनेवाली वह गति जो कुछ घुमावदार या टेढ़ी रेखाओ के रूप मे किसी ओर चलती, फैलती या बढ़ती है। तरग। मौज। हिलोर। जैसे—तालाब, नदी या समुद्र मे उठनेवाली लहरें।
क्रि० प्र०—आना।—उठना।—मारना।—लेना।
मुहा०—लहर लेना=समुद्र के किनारे लहर मे स्नान करना।
२. किसी पदार्थ के ऊपरी तल मे होनेवाली उक्त प्रकार की गति या कंप। जैसे—धान के पौधो मे लहरे उठ रही थी। ३ मन मे उत्पन्न होनेवाली कोई आवेगपूर्ण प्रवृत्ति। उमग। जैसे—जनता में आनन्द की लहर उठ रही थी। ४ सहसा मन में उत्पन्न होनेवाली इच्छा या प्रवृत्ति। मन की मौज। जैसे—मन मे जब जो लहर उठी, तब वह काम कर डाला। ५ यथेष्ट मात्रा मे मन को प्राप्त होनेवाला आनन्द, प्रसन्नता या हर्ष। जैसे—दो-तीन दिन वहाँ अच्छी लहर ली।
पद—लहर-बहर।
क्रि० प्र०—आना।—लेना।
६ किसी पदार्थ मे उत्पन्न होनेवाला वह सूक्ष्म कप जो किसी दिशा मे कुछ दूर तक बढ़ता चला जाता हो। जैसे—ध्वनि या प्रकाश की लहर। ७. कोई ऐसी गति जिसमे क्रमश रह-रहकर कुछ उतार-चढाव या घुमाव-फिराव होता रहता हो। जैसे—(क) साँप लहर मारता हुआ चलता है। (ख) हवा मे सुगध की लहरे आ रही थीं।
क्रि० प्र०—देना।—मारना।
८. उक्त प्रकार या रूप की रेखा या रेखाएं। जैसे—धूप-छाँह के कपडे मे कई रगों की लहरे उठती हैं। ९. शरीर में होनेवाली कोई ऐसी पीड़ा जो कभी कुछ हलकी हो जाती और कभी बहुत तेज हो जाती हो। जैसे—साँप के काटने पर शरीर मे लहर आती है, जिससे वह विष के प्रकोप से विकल होकर उठ-उठकर भागने लगता है।
विशेष—दे० 'तरग' और 'मौज' भी।
लहरदार—वि० [हिं० लहर+फा० दार (प्रत्य०)] १ जिसकी आकृति लहर या लहरो जैसी हो। २. जिस पर उक्त आकृति या आकृतियाँ बनी हुई हो।
लहरना†—अ०=लहराना।
लहर-पटोर—पु० [हिं० लहर+पट] १. एक तरह का धारीदार रेशमी कपड़ा। २. स्त्रियों के पहनने का लहँगा और चोली।
लहर-बहर—स्त्री० [हिं० लहर+अनु० बहर] १. आनन्द। मौज। २ वैभव और परम सुख की स्थिति।
लहरा—पु० [हिं० लहर] १ लहर। तरग। २. आनन्द। मौज।
क्रि० प्र०—लेना।
३. गाना-नाचना आरम्भ होने से पहले बजाई जानेवाली बाजों की वह गत जो वातावरण को सगीतमय करने या समाँ बाँधने के लिए बजाई जाती है।
† पुं० [?] एक प्रकार की घास।
† पु०=लहँगा।
लहराना—अ० [हिं० लहर+आना (प्रत्य०)] १. तरल पदार्थों का लहरो से युक्त होना। लहरे उठना। तरगित होना। जैसे—तालाब या नदी का (अथवा उसके पानी का) लहराना। २ किसी तल पर या विस्तार मे रह-रहकर ऐसी कपयुक्त गति होना जो कभी कुछ ऊपर-नीचे या इधर-उधर भी होती है या चलती हो। जैसे—(क) खेतों मे फसल या हरियाली का लहराना। (ख) हवा में झडा या सिर के बाल लहराना। ३ लहरों की तरह कभी कुछ इधर और कभी कुछ उधर होते हुए उठना, चलना या बढना। जैसे—(क) साँप लहराता हुआ चलता है। (ख) पहाडी झरने (या रास्ते) लहराते हुए चलते हैं। (ग) हवा चलने पर आग की लपटे लहराती हैं। ४ मन की लहर अर्थात् उमग या उल्लास मे आना। जैसे—वसत ऋतु की हवा लगने पर मन लहराने लगता है। ५ कोई चीज पाने या लेने के लिए उत्कठित या लालायित होना। जैसे—कुछ खाने या पीने के लिए मन लहराना। ६ किसी प्रकार की छबि या शोभा से युक्त होना। फबना। लसना। जैसे—पर्वतो पर (या वन मे) प्रकृति की शोभा लहरा रही थी।
स० [हिं० लहर+आना (प्रत्य०)] १. हवा के झोंके मे लहरो की तरह इधर-उधर हिलाना-डुलाना या हिलने-डुलने के लिए छोड देना। जैसे—सिर के बाल लहराना। २. सीधे न चलकर लहरो की तरह इधर-उधर होते हुए झोंके खाते हुए चलना या बढना। ३ किसी चीज को हाथ मे लेकर इधर-उधर गति देना। जैसे—बच्चो को गोद मे लहराना।
लहरि—स्त्री० [स० ल√ह्‌+इन्]=लहर।
लहरिया—पु० [हिं० लहर+इया (प्रत्य०)] १. लहर की आकृति की रेखाओ का समूह। २ वह कपडा जिस पर लहरो के आकार की आकृतियाँ हो।
† स्त्री०=लहर।
लहरियादार—वि० [हिं० लहरिया+दार (प्रत्य०)] (वस्त्र आदि) जिस पर लहरिया बना हो।
लहरिल—वि० [स० लहर]=लहरदार।
लहरी—स्त्री० [सं० लहरि+ङीष्] १. लहर। तरग। हिलोर। मौज।
वि० [हिं० लहर+ई (प्रत्य०)] १. मन की तरंग के अनुसार काम करनेवाला। २ सदा प्रसन्न रहनेवाला। खुश-मिजाज।
लहरी-रव—[सं० ब० स०] समुद्र। उदा०—लहरिऊँ लियै जणि लह-रीरव।—प्रिथीराज।

लहरीला†—वि०=लहरदार।

लहूल—पुं० [?] एक प्रकार का राग जो दीपक राग का पुत्र कहा गया है।

लहलहा—वि० [हिं० लहलहाना] [स्त्री० लहलही] १ फूल-पत्तों से भरा और सरस लहलहाता हुआ। हरा-भरा। २ परम प्रसन्न और प्रफुल्ल।

लहलहाट—स्त्री० [हिं० लहलहाना] १. लहलहाते हुए होने की अवस्था या भाव। २. हरियाली। जैसे—हैं इस हवा में क्या क्या बरसात की बहारें। सब्जों की लहलहाहट बागात की बहारें।—नजीर।

लहलहाना—अ० [हिं० लहरना (पत्तियों का)] १. लहरानेवाली हरी पत्तियों से भरना। फूल-पत्तियों से सरस और सजीव दिखाई देना। हरा-भरा होना। २ सूखे पेड़ पौधों का फिर से हरा-भरा होना। पनपना।

संयो० क्रि०—उठना।—जाना।

३. आनन्द या हर्ष से पूर्ण होना। प्रफुल्ल होना। ४. दुबले शरीर का फिर से सबल या हृष्ट-पुष्ट होना।

सयो० क्रि०—उठना।

लहली—स्त्री० [देश०] वह दल-दल जो किसी जलाशय के सूखने पर रह जाती है।

लहसुआ—पु० [देश०] एक प्रकार की बरसाती घास जिसका साग या रोटी बनाकर गरीब लोग खाते हैं। कन-कौआ।

† पु०लिसोड़ा।

लहसुन—पुं० [सं० लशुन] १. मसाले के काम आनेवाली प्याज की तरह की एक गांठ और उसका पौधा। २. शरीर पर होनेवाला उक्त के आकार का एक प्रकार का चिह्न या लक्षण। ३. मानिक का एक दोष जिसे सस्कृत मे 'अशोभक' कहते हैं।

लहसुनिया—पुं० [हिं० लहसुन] धूमिल रंग का एक प्रकार का रत्न या बहुमूल्य पत्थर। सूत्राक्षक।

लहा—पुं०=लाह।

लहा-छेह—पुं० [?] नृत्य की क्रियाओ मे से चौथी क्रिया। नाच की एक गति। इसमें मुख्यतः बहुत तेजी या फुरती दिखाई जाती है। उदा०—लहा-छेह अति गतिन की सबनि लखे सब पाय।—बिहारी।

वि० १. तीव्र गतिवाला। २. चंचल।

लहाना—स० [स० लभन] प्राप्त कराना। मिलाना।

स० [हिं० लहना] १. ऐसे ढंग से बात कहना या उक्ति करना कि अभिप्राय सिद्ध हो जाय। २. कोई चीज ठीक जगह पर बैठाना या लगाना।

† स०[?] गँवाना।

लहालह—वि०=लहलहा।

लहालोट—वि० [हिं० लाभ, लाह+लोटना] १. हँसी से लोटता हुआ। २. आनन्द या प्रसन्नता से भरा हुआ। ३. प्रेम में विभोर।

लहास—स्त्री०=लाश।

लहासन—स्त्री० [देश०] वह काली भेड़ जिसकी कनपटी से माथे तक का भाग लाल होता है। (गड़रिये)

लहासी—स्त्री० [सं० लभस, प्र० लहस=रस्सी] १. वह मोटी रस्सी जिससे नाव या जहाज बाँधे जाते हैं। २. डोरी। रस्सी। ३ रास्ते में निकली हुई पेड़-पौधों की खूटियाँ। (पालकी के कहार)

लहि—अव्य० [हिं० लहना+प्राप्त होना, पहुँचना] पर्यंत। तक।

लहीम—वि० [अ०] १. लहम अर्थात् मांस से युक्त। मांसल। २ हृष्ट-पुष्ट। मोटा-ताजा।

लहु—वि० [सं० लघु] १. छोटा। २. अल्प। कम। थोड़ा। उदा०—माघ लहुलहु सीत लागे।—ग्राम्य गीत।

लहुरा—वि० [सं० लघु, प्रा० लहु+रा (प्रत्य०)] [स्त्री० लहुरी] वय में छोटा। कनिष्ठ। जैसे—लहुरा भाई।

लहू—पुं० [सं० लोह, हिं० लोहू] शरीर मे का रक्त। रुधिर। खून।

पद—लहू-लुहान।

मुहा०—(खाना-पीना) लहू करना=किसी का मन इतना अधिक दुःखी कर देना कि उसे खाना-पीना तक बहुत बुरा लगने लगे। लहू का घूँट पीना=बहुत अधिक मानसिक कष्ट चुपचाप मन में ही दबा रखना या सह लेना। (किसी के) लहू का प्यासा होना=किसी से इतना अधिक बैर या शत्रुता होना कि उसके प्राण तक ले लेने की जी चाहे। (आँखों से) लहू टपकना=बहुत अधिक क्रोध के कारण आँखें लाल होना। (शरीर से) लहू टपकना=शरीर में यथेष्ट बल-वीर्य होने के कारण उसका रग लाल होना। (किसी का) लहू पीना=किसी को बहुत अधिक तग या दुखी करना। लहू लगाकर शहीदों में मिलना=बिना कुछ भी त्याग या परिश्रम किये अपने आप को बड़े लोगों मे गिनना या समझना।

लहू-लुहान—वि० [हिं० लहू+अनु० लुहान] आघात, क्षत आदि के कारण जिसका सारा शरीर लहू से भर गया हो। रक्ताक्त।

लहेरा—पुं० [हिं० लाह=लाख+एरा (प्रत्य०)] १. वह जो लाख की चूड़ियाँ आदि बनाने या चीजों पर लाह का रंग चढ़ाने का काम करता हो। २. वह रगरेज जो रेशमी कपड़े रँगने का काम करता हो।

पुं० [?] एक प्रकार का सदा-बहार पेड़ जिसकी लकड़ी बढ़िया और मजबूत होने के कारण मेज-कुर्सियाँ आदि बनाने के काम आती है।

लहेसना†—स०=लेसना (चिपकाना या सटाना)

लाँक—स्त्री० [सं० लक=डंठल या बाल] १. ताजी कटी हुई फसल। २ भूसा।

स्त्री० लक (कमर)। उदा०—फटै घर प्रेत बटै सिर फाँक, लटैं मन केक उहैं उर लाँका।—कविराजा सूर्यमाल।

लाँग—स्त्री० [सं० लांगूल] पहनी हुई धोती या लँगोट का वह छोर जिसे जाँघो के नीचे से निकाल कर पीछे कमर मे खोंसा जाता है। काछ।

लांगल—पुं० [सं०√लग् (गति)+कलच्, पृषो० वृद्धि] १. खेत जोतने का हल। २. शुक्ल पक्ष की द्वितीया और उसके कुछ दिन बाद दिखाई देनेवाले चन्द्रमा के दोनो शृंग या नुकीले सिरे। ३. पुरुष का लिंग। शिश्न। ४. ताड़ का पेड़। ५ जहाज या नाव का लगर। ६. एक प्रकार का पौधा और उसके फूल।

लांगलक—पुं० [सं० लांगल+कन्] हल की आकृति का वह चीरा जो भगदर रोग मे लगाया जाता है। (सुश्रुत)

लांगल-चक्र—पु० [सं० मध्य० स०] फलित ज्योतिष में, हल के आकार

का एक प्रकार का चक्र जिसकी सहायता से भावी फसल के संबंध में शुभाशुभ फल जाना जाता है।

लांगल-दंड—पुं० [सं० ष० त०] हरिस।

लांगल-ध्वज—पुं० [स० ब० स०] बलराम।

लांगलि—पु० [स० लागली] १. कलियारी नाम का जहरीला पौधा। २. मजीठ। ३. जल पीपल। ४ पिठवन। ५ केवाँच। ६ गजपीपल। ७ चव्य। ८ महाराष्ट्री लता। ९. ऋषभक नामक अष्ट वर्ग की ओषधि।

लांगलिक—पु० [स० लागल+ठन्—इक] एक प्रकार का स्थावर विष।

वि० लागल अर्थात् हल-सबधी।

लांगलिका—स्त्री०=लांगली (कलियारी)।

लांगली (लिन्)—पु० [स० लागल+इनि] १. श्री बलराम जी। २ नारियल। ३ साँप।

स्त्री० [लागल+अच्+ङीष्] १ एक नदी का नाम। (पुराण) २ कलियारी। ३ मजीठ। ४ पिठवन। ५ केवाँच। कौंछ। ६ जलपीपल। ७ गजपीपल। ८ चाव। चव्य। ९. महाराष्ट्री लता। १० ऋषभक नामक अष्ट वर्ग की ओषधि।

लाँगा—पु०=लहँगा।

लांगूल—पु० [स०√लग्+ऊलच्,] १ पूँछ। दुम। २. लिंग। शिश्न।

लांगूली (लिन्)—पु० [स० लागूल+इनि] १ बदर। २ ऋषभ नामक ओषधि।

लाँघन†—स्त्री० [हिं० लाँघना] १. लाँघने या लाँघे जाने की अवस्था, क्रिया या भाव। जैसे—बच्चे पर लाँघन पड़ना। २. वह स्थिति जिसमे कोई चीज या जगह किसी ने लाँघी हो। जैसे—ऐसी औरतों की तो लाँघन भी बचानी चाहिए, अर्थात् उनकी लाँघी हुई चीज या जगह भी नही लाँघनी चाहिए।

क्रि० प्र०—पडना।

लाँघना—स० [स० लघन] १. डग भरकर या छलाँग लगाकर अवकाश या स्थान पार करना। जैसे—घोडे का नाला लाँघना। २ डग भर कर या छलाँग लगाकर किसी खाद्य वस्तु के ऊपर से होकर जाना जो अनुचित माना जाता है। जैसे—किसी की थाली लाँघना। ३ अवकाश, स्थान आदि को पीछे छोडते हुए आगे निकलना। जैसे—गाडी पहाड़ो को लाँघती हुई जा रही थी। ४ नर पशु का मादा के साथ सभोग करना। जैसे—यह घोडी अभी लाँघी नही गई है।

लाँघनी उड़ी—स्त्री० [हिं० लाँघना+उडी=कुदान] मालखम की एक प्रकार की कसरत।

लाँच—स्त्री० [देश०] रिश्वत। घूस। उत्कोच। (महाराष्ट्र)

लांछन—पु० [स०√लाछ् (चिह्नित करना)+ल्युट्—अन] १ चिह्न। निशान। २. दाग। धब्बा। ३ कोई निन्दनीय या बुरा काम करने पर चरित्र पर लगनेवाला धब्बा। कलक।

क्रि० प्र०—लगना।—लगाना।

४. ऐब। दोष।

लाँछना—स्त्री०=लांछन।

लांछित—भू० कृ० [सं०√लाछ्+क्त] १. जिस पर लांछन लगा हो। कलंकित। २. चिह्नो से युक्त। ३. अलकृत।

लाँची—पु० [सं० लाज] एक प्रकार का धान।

लाँझ—स्त्री० [देश०] बाधा। विघ्न।

लाँड़—पु०=लड (शिश्न)।

लांपट्य—पु० [स० लपट+ष्यञ्] लपटता।

लाँबा—वि० [स्त्री० लाँबी]=लबा।

ला—प्रत्य० [अ०] एक प्रत्यय जो कुछ शब्दो के आरम्भ मे लगकर अभाव या राहित्य सूचित करता है। जैसे—ला-जवाब, ला-परवाह, ला-वारिस आदि।

लाइ—पु० [स० अलात=लुक; प्रा० अलाप] अग्नि। आग।

स्त्री० [हिं० लाना] लगन। लगावट।

लाइक—वि०=लायक।

लाइची—स्त्री०=इलायची।

लाइट—स्त्री० [अ०] रोशनी। प्रकाश। उजाला।

लाइट हाउस—पु० [अं०] प्रकाश-गृह। प्रकाश-स्तम्भ।

लाइन—स्त्री० [अ०] १ अवली। पक्ति। कतार। २ रेखा। लकीर। ३. रेल की पटरी। ४ घरो की वह पंक्ति जिनमे सिपाही रहते हैं। बैरिक।

मुहा०—लाइन सपुर्द करना=किसी सिपाही पर कोई आरोप होने पर उसका विचारार्थ लाइन या बैरक मे भेजा जाना।

लाइब्रेरियन—पु० [अ०] पुस्तकाध्यक्ष।

लाइब्रेरी—स्त्री० [अ०] पुस्तकालय।

लाइसेंस—पु० [अ०] १. कोई विशेष कार्य करने के लिए दिया जानेवाला अनुज्ञापत्र। २ अनुज्ञा।

लाई—स्त्री० [म० लाजा] धान, बाजरे आदि को सुखाकर और गरम बालू मे भूनकर बनाई हुई खीलें। लावा।

पद—लाई का सत्तू=उक्त प्रकार की खीलो को पीसकर बनाया हुआ सत्तू जो बहुत जल्दी हजम होता और इसीलिए दुर्बल रोगियों को खिलाया जाता है।

स्त्री० [हिं० लाना=लगाना] १ आपस मे विरोध उत्पन्न कराने या एक की दृष्टि मे दूसरे को तुच्छ या बुरा सिद्ध करने के लिए एक की बात दूसरे से जाकर कहना। इधर की बात उधर लगाना। चुगली।

पद—लाई-लुतरी।

क्रि० प्र०—लगाना।

लाई-लुतरी—स्त्री० [हिं०] १ चुगली। २ शिकायत।

वि० स्त्री० एक की बात दूसरे से कह करके आपस मे विरोध कराने अथवा एक की दृष्टि मे दूसरे को तुच्छ या हीन सिद्ध करनेवाली (स्त्री)।

लाउड स्पीकर—पु० [अ०] बिजली की सहायता से चलनेवाला एक प्रकार का प्रसिद्ध यत्र जिसके द्वारा सब तरह की आवाजें इच्छानुसार तेज अथवा धीमी की जा सकती है।

लाऊ†—पु०=लौआ (घिया)।

लाकड़ा†—पु० [स्त्री० लाकड़ी]=लकड़ा।

लाकुटिक—वि० [स० लकुट+ठञ्—इक] लकुट या डंडा धारण करनेवाला।

पुं० १. पहरेदार। २. चाकर। सेवक।

लांछित—पुं० [अं०] १. जंजीर आदि में शोभा के लिए लगाया जानेवाला लटकन। २. गले में पहनी जानेवाली वह स्वर्णमाला जिसमें लटकन भी हो।

लाक्षण—वि० [सं० लक्षण+अण्] लक्षण-संबंधी। लक्षण का।

लाक्षणिक—वि० [सं० लक्षण+ठक्—इक] १. लक्षण-संबंधी। २. जिससे लक्षण प्रकट हों। ३ लक्षणो से युक्त। ४ (अर्थ या प्रयोग) जो शब्द की लक्षणा शक्ति पर आश्रित या उससे संबद्ध हो। ५. लक्षण के रूप में होनेवाला।

पुं० १. वह जो लक्षणों का ज्ञाता हो। लक्षण जाननेवाला। २ ऐसा छंद जिसके प्रत्येक चरण में ३२ मात्राएँ होती हैं।

लाक्षण्य—वि० [सं० लक्षण+ष्यञ्] १. लक्षण-संबंधी। २ लक्षण बतलानेवाला। ३ लक्षणों का ज्ञान रखनेवाला।

लाक्षा—स्त्री० [सं०√लक्ष्य+अ+टाप्] लाख नामक लाल पदार्थ जो कुछ वृक्षों पर कीडे बनाते हैं। दे० 'लाख'।

लाक्षा-गृह—पु० [सं० ष० त०] लाख का वह गृह जिसे दुर्योधन ने पाडवो को जला देने की इच्छा से बनवाया था पर इसमें आग लगने से पहले ही सूचना पाकर पाडव लोग इसमे से निकल गये थे।

लाक्षा-रस—पुं० [स० ष० त०] महावर जो पहले पानी मे लाख उबाल कर बनाते थे।

लाक्षा-वृक्ष—पु० [स० मध्य० स०] १. ढाक। पलास। २ कौशाम्र। कोसम।

लाक्षिक—वि० [स० लाक्षा+ठक्—इक] १. लाक्षा संबंधी। लाख का। २. लाख का बना हुआ।

लाख—वि० [स० लक्ष, प्रा० लाख] जो सख्या मे सौ हजार हो।

पद—लाख टके की बात=अत्यन्त उपयोगी तथा मूल्यवान् बात।

पु० सौ हजार की सूचक संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—१,०००,००

मुहा०—लाख से लीख होना=धन कुबेर का निर्धन होना।

क्रि० वि० बहुत अधिक। बहुतेरा। जैसे—मैंने उन्हें लाख समझाया पर उन्होने कुछ सुनी नही।

स्त्री० [स० लाक्षा] लाल रग का एक प्रसिद्ध पदार्थ जो पलास, पीपल आदि के वृक्षो की टहनियों पर कई प्रकार के लाख कीड़ो की कुछ प्राकृतिक क्रियाओं से बनता है, और जिसका उपयोग चूड़ियों आदि बनाने, पत्थर और लोहे को जोड़कर एक करने तथा रंग आदि बनाने के कामों में होता है। लाह।

लाखना—अ० [हिं० लाख] १. बरतनो के छेदो पर लाख लगाकर उन्हें बन्द करना। २. लाख के घोल से मिट्टी के बरतनों पर लेप करना।

† स० =लखना।

लाखपती†—पु० =लखपती।

लाखा—पुं० [हिं० लाख] १ लाख का बना हुआ एक प्रकार का रंग जिसे स्त्रियाँ सुन्दरता के लिए होठों पर लगाती हैं।

क्रि० प्र०—जमाना।—लगाना।

२. गेहूँ के पौधो मे लगनेवाला एक रोग जिससे पौधे की नाल लाल रग की होकर सड़ जाती है। इसे गेरुआ या कुकुहा भी कहते हैं।

क्रि० प्र० —लगना।

३. मारवाड़ के एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त।

वि० [स्त्री० लाखी] लाख के रग का। जैसे—लाखी गाय।

लाखागृह—पुं०=लाक्षागृह। (दे०)

ला-खिराज—वि० [फा०] (भूमि) जिसका खिराज अर्थात् लगान न देना पड़े। कर या लगान से मुक्त।

ला-खिराजी—स्त्री० [फा० लाखिराज+ई (प्रत्य०)] १. वह भूमि जिस पर खिराज या लगान न देना पड़े।

२. कर या लगान से होनेवाली छूट।

वि०=ला-खिराज।

लाखी—वि० [हिं० लाख+ई (प्रत्य०)] लाख के रंग का। मटमैला। लाखा।

पु० उक्त प्रकार का मटमैला लाल रंग।

लाखों—वि० [हिं० लाख] १. कई लाख। २. अत्यधिक, विशेषतः असख्य।

लाग—स्त्री० [हिं० लगना] १ लगे हुए होने की अवस्था या भाव। लगाव। सपर्क। सबध। जैसे—इस मकान में बगल वाले मकान से लाग है, अर्थात् उसमें से इसमें सहज मे कोई आ सकता है। २. मानसिक दृष्टि से होनेवाली किसी प्रकार की लगावट। जैसे—अनुराग, प्रेम, लगन आदि। ३. प्रतिस्पर्धा। होड़।

पद—लाग-डाँट।

४. दुश्मनी। बैर। शत्रुता। ५ कोई ऐसा उपाय, तरकीब या उक्ति जो अन्दर-अन्दर या गुप्त रूप से काम करती हो, और ऊपर सहसा न दिखाई देती हो। जैसे—(क) लाग का खेल। (ख) जादू टोना या मत्र-तन्त्र। ६. उक्त के आधार पर एक प्रकार का ऐसा स्वाँग, जिसमें विशेष कौशल हो और जो जल्दी समझ में न आवे। जैसे—किसी के पेट या गरदन के आर पार (वास्तव में नहीं, बल्कि कौशल से दिखलाने भर के लिए) तलवार या कटार गई हुई दिखलाना। ७ वह नियत धन जो विवाह आदि शुभ अवसरो पर ब्राह्मणों, भाटों, नाइयों आदि को अलग अलग रस्मो के सबध मे दिया जाता है। ८. खाने-पीने का कच्चा सामान। रसद। (बुन्देल) ९. भूमि-कर। लगान। १०. धातुओं को फूँक कर तैयार किया हुआ रस। भस्म। ११. एक प्रकार का नृत्य। १२ वह लेप जिससे चेचक का अथवा इसी प्रकार का और कोई टीका लगाया जाता है।

वि० काम मे आने या लग सकने के योग्य। उदा०—छुरी लाग ले ताकि तिम।—प्रिथीराज।

* अव्य० [सं० लग्न] १. तक। पर्यंत। २. निकट। पास। ३. लिए। वास्ते।

लाग-डाँट—स्त्री० [सं० लग्न-दंड या हिं० लाग-बैर+डाँट] १. आपस में होनेवाली ऐसी प्रतिस्पर्धा पूर्ण स्थिति जिसमे कुछ वैर-विरोध का भाव भी सम्मिलित हो। २. दे० 'लग्न-दंड' (नृत्य)।

लागत—स्त्री० [हिं० लगना] १. किसी पदार्थ के निर्माण में होनेवाला व्यय। जैसे—इस कारखाने पर ५० हजार लागत बैठी है।

क्रि० प्र०—आना।—बैठना।—लगना।

२. वह पूँजीगत व्यय जो विक्रयार्थ बनाई हुई किसी वस्तु पर पड़ता है

और जिसमे श्रम, पूँजी, व्यवस्था आदि का पुरस्कार भी सम्मिलित होता है।

लाग-डाँट*—स्त्री०=लाग-डाँट।

लागना—वि० [हिं० लगना] किसी के पीछे लगा रहनेवाला।

पुं० १. वह व्यक्ति जो टोह लेने के लिए किसी के पीछे लगा हुआ हो। २. व्याध। शिकारी।

† अ०=लगना।

लागर—वि० [फा० लागर] [भाव० लागरी] दुबला-पतला और कमजोर। अशक्त और कृश।

लाग-लपेट—स्त्री० [हिं०] १. सपर्क। सबध। २. वह तत्त्व या भाव जो किसी बात मे अप्रत्यक्ष रूप से जुडा या लगा हुआ हो। ३. विशेषत. ऐसी बात जिसमे धोखे-धडी की कोई और बात भी छिपी हो।

लागि—अव्य० [हिं० लगना] १. कारण। हेतु। २. निमित्त। लिए। वास्ते। ३. तक। पर्यन्त।

† स्त्री०=लग्गी।

* स्त्री०=लगन।

लागुडिक—वि० [स० लगुड+ठक्—इक] जो हाथ मे डडा लिये हो।

पु० पहरेदार। प्रहरी।

लागू—वि० [हिं० लगना] १. जो लग सकता हो या लगाया जा सकता हो। प्रयुक्त होने के योग्य। चरितार्थ होनेवाला। जैसे—वही नियम यहाँ भी लागू होता है। (मराठी से गृहीत) २. जो किसी प्रकार किसी के साथ लगा रहता हो। सम्बद्ध। जैसे—(क) बुरे दिनो मे कोई लागू नही होता। (ख) सब जीते जी के लागू है। ३. वैरी। शत्रु। जैसे—क्यो उसकी जान के लागू हो रहे हो। ४ (पशु) जो किसी से बदला लेने का अवसर ढूँढ़ता रहता हो। ५. किसी जगह बराबर शिकार मिलते रहने से परच जाना।

मुहा०—**(जानवर) लागू बनना या होना**—जानवर विशेषत. हिंसक जानवर का शिकार पाने के लिए परच जाना। जैसे—चीता उस गाँव मे लागू हो गया है।

लागे—अव्य०=लागि।

लाघव—पु० [स० लघु+अण्] १. लघु होने की अवस्था या भाव। २ छोटा या सक्षिप्त करने की क्रिया या भाव। थोड़े शब्दो मे अधिक भाव प्रकट करना। (ब्रेविटी) ४. हाथ की चालाकी या सफाई।

पद—**हस्त लाघव**।

५. नीरोगता। ६ हलकापन। ७ नपुसक। ८. फुर्ती।

अव्य० जल्दी या फुरती से और सहज मे।

लाघविक वि० [सं० लाघव+ठक्—इक] १. लघु रूप मे लाया हुआ। २ लघु रूप मे होनेवाला। ३. सक्षिप्त।

लाघवी—स्त्री० [स० लाघव+हिं० ई (प्रत्य०)] १. फुरती। शीघ्रता। २ हाथ की चालाकी या सफाई।

लाचार—वि० [फा०] [भाव० लाचारी] १. जिसके पास कोई चारा या उपाय न हो। निरुपाय। मजबूर। जैसे—पास मे पैसा न होने से वह लाचार है। २ जो असमर्थता के फलस्वरूप कुछ कर-धर या कही आ-जा न सकता हो। असमर्थ।

अव्य० निरुपाय या विवश होकर। जैसे—लाचार वह वहाँ से चल पड़ा।

लाचारी—स्त्री० [फा०] १. लाचार होने की अवस्था या भाव। विवशता। २. असमर्थतापूर्ण स्थिति।

लाची—स्त्री० [हिं० इलायची] १. एक प्रकार का सुगन्धित धान और उसका चावल। २. इलायची।

लाचीदाना—पुं०=इलायचीदाना।

लाछन—पुं० १ =लाछन। २ =लक्षण।

लाछी—स्त्री०=लक्ष्मी।

लाज—पु० [स०√लाज् (भर्त्सना)+अच्] १. खस। उशीर। २. पानी मे भिगोया हुआ चावल। ३. धान का लावा। खील।

† स्त्री० [स० लज्जा] १. लाज। शरम। हया।

पद—**लाज के जहाज**=अत्यन्त लज्जाशील। उदा०—बिना ही अनीति रीति लाज के जहाज के। —भूषण।

मुहा०—**लाजो मरना**=लज्जा के मारे सिर न उठा सकना।

२ प्रतिष्ठा। मान-सम्मान।

मुहा०—**लाज रखना**=प्रतिष्ठा बचाना। अप्रतिष्ठित न होने देना। **लाज बचाना, रखना या सम्हालना**=लज्जित या तिरस्कृत होने से बचाना। **(किसी की) लाज होना**=किसी की प्रतिष्ठा, रक्षा आदि का भार अपने ऊपर लेना।

स्त्री० [स० रज्जु] १. रस्सी। २ कूएँ से पानी खीचने का रस्सा।

लाजक—पु० [स० लाज+कन्] धान का लावा।

लाजना—अ० [हिं० लाज+ना (प्रत्य०)] लज्जित होना। शरमाना।

† स० किसी को लज्जित या शरमिन्दा करना। लजाना।

लाज पेया—स्त्री० [स०] खोई या लावे की माँड। खील का माँड़।

ला-जबान—स्त्री० [अ०+फा०] गाली।

लाज-भक्त—पु० [स० ष० त०] लाज पेया जो पथ्य रूप मे रोगी को दिया जाय।

लाजवंत—वि० [हिं० लाज+वत (प्रत्य०)] [स्त्री० लाजवन्ती] लज्जाशील। हयादार।

लाजवती—स्त्री० [हिं० लजालू] १. लज्जाशील। स्त्री २. लजालू नाम का पौधा। छुई-मुई।

लाजवर्द—पु० [स० राजवर्त्तक से फा०] [वि० लाजवर्दी] १. प्राय: जगाली या हलके नीले रग का एक प्रसिद्ध बहुमूल्य पत्थर या रत्न जिसके तल पर सुनहली चित्तियाँ होती हैं। रावटी। २. विलायती नील जो गधक के मेल से बनता और बहुत बढिया तथा गहरा होता है।

लाजवर्दी—वि० [फा०] लाजवर्द के रग का। गहरा नीला।

ला-जवाब—वि० [फा०] १. जिसके जवाब अर्थात् जोड़ या बराबरी का और कोई न हो। अनुपम। बेजोड़। २. (व्यक्ति) जो जवाब या उत्तर न दे सकता हो। निरुत्तर। ३. (बात) जिसका जवाब या उत्तर न दिया जा सकता हो।

लाज-शक्तु—पु० [स० ष० त०] खोई या लावे का सत्तू।

लाज-होम—पु० [स० तृ० त०] प्राचीन काल का एक प्रकार का होम, जिसमे, खोई या धान का लावा आहुति मे दिया जाता था।

लाजा—स्त्री० [सं० लाज+टाप्] १. चावल। २. भूने हुए धान की खील। लावा।

लाजिम—वि० [अ० लाज़िम] आवश्यक और उचित। कर्तव्य के विचार से अपरिहार्य।

लाजिमी—वि०=लाजिम।

लाट—पुं० [सं०] १. एक प्राचीन देश जहाँ अब भड़ौंच, अहमदाबाद आदि नगर हैं। गुजरात का एक भाग। २. उक्त देश का निवासी। ३. कपड़ा, विशेषतः फटा-पुराना कपड़ा। ४. 'लाटानुप्रास'।

स्त्री० [हिं० लट्ठ?] १. ऊंचा, बड़ा और मोटा खंभा। जैसे—तालाब के बीच मे गाड़ी हुई लाट। २. उक्त प्रकार की कोई वास्तु-रचना। मीनार। जैसे—कुतुबमीनार की लाट। ३. वह लंबा बाँध जो किसी मैदान के पानी के बहाव को रोकने के लिए बनाया जाता है।

पुं० [अ० लार्ड] ब्रिटिश शासन में भारत के किसी प्रान्त या देश का सबसे बड़ा शासक। गवर्नर।

पु० [अ० लॉट] व्यापारिक क्षेत्र में कटी-फटी, टूटी-फूटी या पुरानी रखी हुई बहुत सी चीजो का वह विभाग या समूह जो एक ही साथ रखा, बेचा या नीलाम किया जाय।

पद—**लाट-घाट, लाट-बंदी।**

†पुं०=लाठ।

लाट-घाट—पु० [अ० लाट=ढेर+हिं० घाट=स्थान] व्यापारिक क्षेत्र मे वह स्थिति जिसमे कटा-फटा या रद्दतिया माल एक साथ सस्ते दामो पर थोक बेच दिया गया हो। जैसे—इस दूकान मे तो अधिकतर लाट-घाट का ही माल रहता है।

लाट-बंदी—स्त्री० [अं० लॉट+फा० बंदी] चीजो के अलग-अलग विभाग करके उनकी राशि या वर्ग बनाने की क्रिया या भाव।

लॉटरी—स्त्री० [अं०] रुपये या सामान के रूप में पुरस्कार देने की व्यवस्था जिसमें बिके हुए टिकटों या दिये हुए कूपनो के संख्याओं की चिट्ठी डालकर विजेता का नाम निश्चित किया जाता है।

लाटा†—पु० [देश०] भुने हुए महुए और तिलो को कूटकर बनाए हुए लड्डू।

लाटानुप्रास—पु० [स० लाट-अनुप्रास, मध्य० स०] एक प्रकार का शब्दालकार जिसमे शब्दो की पुनरुक्ति तो होती है परन्तु अन्वय मे हेर-फेर करने से तात्पर्य भिन्न हो जाता है। जैसे—पूत सपूत तो क्यों धन संचय। पूत कपूत तो क्यो धन सचय। (कहा०)

लाटिक—स्त्री०=लाटी (साहित्यिक शैली)।

लाटी—स्त्री० [सं० लाट+अच्+ङीष्] संस्कृत साहित्य मे रचना की वह विशिष्ट प्रणाली या शैली जो लाट तथा उसके आस-पास के देशों में प्रचलित थी और जो वैदर्भी तथा पांचाली के मध्य की रीति थी, और गौड़ी की ही तरह भयानक, रौद्र, वीर, आदि उग्र रसों के लिए उपयुक्त मानी जाती थी। लाटिका।

स्त्री० [अनु० लट लट=गाढ़ा या चिपचिपा होना] वह अवस्था जिसमें मुँह का थूक और होंठ सूख जाते हैं।

क्रि० प्र०—लगना।

लाटीय—वि० [स० लाट+छ—ईय] लाट नामक देश का। लाटक।

लाठ—स्त्री० [सं० यष्टि पुं० हिं० लट्ठ] १. कोल्हू मे लगी हुई वह बल्ली जो बराबर घूमती रहती है। २. दे० 'लाट'।

लाठा-लाठी—स्त्री० [हिं० लाठी] आपस मे लाठियो से होनेवाली मार-पीट या लड़ाई।

लाठी—स्त्री० [सं० यष्ठी; प्रा० लट्ठी] ठस या ठोस बाँस का ६-७ फुट लंबा टुकड़ा।

क्रि० प्र०—चलना।—चलाना।—बाँधना।—मारना।

२. लाक्षणिक रूप में, सहारा। जैसे—यही लड़का तो बुढ़ापे की लाठी है।

लाठी-चार्ज—पुं० [हिं०+अ०] लोगों को तितर-बितर करने के लिए पुलिस का भीड़ आदि पर लाठियाँ चलाना।

लाड (ड़)—पु० [सं० ललन] बच्चो को प्रसन्न करने या रखने के लिए प्रेमपूर्ण व्यवहार। दुलार।

क्रि० प्र०—करना।—लड़ाना।

लाड़-लड़ा—पु० [देश०] एक प्रकार का साँप जो प्रायः वृक्षों पर रहता है।

लाड़-लड़ैता—वि० [हिं० लाड+लड़ाना] १ जिसका बहुत अधिक लाड़ किया गया हो। २. प्यारा। दुलारा।

लाड़ला—वि० [हिं० लाड़+ला (प्रत्य०)] [स्त्री० लाडली] जिसका या जिसके साथ बहुत लाड़ किया जाय। प्यारा। दुलारा।

लाड़ा—स्त्री० [हिं० लाड़] [स्त्री० लाडी] वर। दूल्हा। (पश्चिम)

लाडी—स्त्री० [सं० लाड़ा का स्त्री०] नव-विवाहिता वधू। दुलहन। उदा०—लिखमी सकी रुकमणी लाडी।—प्रिथीराज।

लाडू—पुं० [हिं० लड्डू] १. लड्डू। मोदक। २ दक्षिणी नारंगी।

लाडो—स्त्री० [हिं० लाड] ऐसी लड़की या युवती जिसका बहुत लाड हुआ हो या होता हो।

लड़िया—पु० [देश०] वह दलाल जो दुकानदार से मिला रहता है और ग्राहको को धोखा देकर उसका माल बिकवाता हो।

लड़ियापन—पु० [हिं० लड़िया+पन (प्रत्य०)] १. लड़िया होने की अवस्था या भाव। २ चालाकी। धूर्तता।

लात—स्त्री० [?] १. पैर के नीचे का भाग। पाँव। २. उक्त अंग से किया जानेवाला आघात या प्रहार। पदाघात। उदा०—काहू लात, चपेटन केहू।—तुलसी।

क्रि० प्र०—जड़ना।—देना।—मारना।—लगाना।

मुहा०—**लात खाना**=(क) पैरो की ठोकर या मार सहना। (ख) मार खाना। **लात चलाना**=पैर से आघात या प्रहार करना। **लात जाना**=गौ भैंस आदि का दूध देते समय दुहनेवाले का लात मार कर दूर हट जाना। **(किसी चीज को या पर) लात मारना**=बहुत ही तुच्छ समझकर दूर करना या हटाना। जैसे—वह नौकरी को लात मार कर घर चला गया। **(खाट या रोग को) लात मार कर खड़ा होना**=बहुत अधिक रुग्णावस्था में से विशेषतः स्त्रियो का प्रसव के उपरांत, नीरोग होकर चलने-फिरने के योग्य होना।

लातर—स्त्री० [हिं० लतरी] पुराना जूता।

लातरना†—अ० [हिं० लात] १. चलते-चलते थक जाना। २. पथ-भ्रष्ट होना। उदा०—थिर नृप हिन्दुसथान, लातरना मग लोभ

लग।—दुरसाजी।

लातीनी—वि० [अ०] लैटिन देश का।

पु० लैटिन देश का निवासी।

स्त्री० लैटिन देश की भाषा।

लाथ—पु० [?] बहाना। हीला।

लाद—स्त्री० [हिं० लादना] १. लादने की क्रिया या भाव। लदाई।

पद—लाद-फांद।

२. मिट्टी का वह ढाका जो पानी निकालने की ढेंकी के दूसरे सिरे पर लगा रहता है।

स्त्री० [?] १ उदर। पेट।

मुहा०—लाद निकलना–पेट का फूल कर आगे निकलना। तोंद निकलना।

२. अँतड़ी। आँत।

लादना—स० [स० लब्ध, प्रा० लाद्ध=प्राप्त+ना (प्रत्य०)] १ किसी आदमी, जानवर या चीज पर बहुत सी वस्तुएँ ढेर या भार के रूप में रखना। जैसे—गाड़ी या बैल पर माल लादना। २ किसी पर उसकी इच्छा के विरुद्ध अथवा बलपूर्वक किसी प्रकार का दायित्व या भार रखना। ३ किसी पर आवश्यक या उचित से अधिक दायित्व या भार रखना। जैसे—उसने सारा काम मुझ पर लाद दिया है।

संयो० क्रि०—देना।

४ कुश्ती लड़ते समय विपक्षी को अपनी पीठ पर उठा लेना। (पहल०)

संयो० क्रि०—लेना।

लाद-फांद—स्त्री० [हिं० लादना+फाँदना] चीजें लादने और बाँधने की क्रिया या भाव।

लादिया—पु० [हिं० लादना+इया (प्रत्य०)] वह जो गाड़ी, पशु आदि पर बोझ लादकर एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाता हो।

लादी—स्त्री० [हिं० लादना] १ पशु पर लादा जानेवाला बोझ। २ कपड़ों की वह गठरी जो धोबी गधे पर लादता है।

क्रि० प्र०—लादना।

३ बहुत बड़ी गठरी।

लाधना—स० [स० लब्ध प्रा० लाद्ध] प्राप्त करना या पाना। उदा०—देवाधि देव चँ लाधँ दूबे।—प्रिथीराज।

लाधा†—वि० [हिं० लाधना] १ कठिनता से प्राप्त किया हुआ। २ अच्छा। बढ़िया।

लानंग—पु० [देश०] एक प्रकार का अंगूर जो कमाऊँ और देहरादून मे होता है। इससे अर्क निकाला और शराब बनाई जाती है।

लान—पु० [अं० लॉन] वह समतल मैदान जिसमे घास उगी हुई हो।

लान टेनिस—पु० [अं०] गेंद का एक प्रकार का खेल जो लॉन अर्थात् छोटे मैदान मे खेला जाता है।

लानत—स्त्री० [अ० लअनत] दूषित या निन्दनीय आचरण या व्यवहार करने पर किसी को कही जानेवाली तिरस्कारपूर्ण बातें।

क्रि० प्र०—देना।—पड़ना।—भेजना।

लानती—वि० [हिं० लानत+ई (प्रत्य०)] १. जो सदा लानत मलामत सुनने का अभ्यस्त हो। सदा फटकार सुननेवाला। २ परम निन्दनीय और घृणित या दुराचारी।

लाना—स० [हिं० लेना+आना, ले आना] १. कोई वस्तु उठाकर या व्यक्ति को अपने साथ चलाकर कहीं से ले आना या पहुँचाना।

संयो० क्रि०—देना।

२. समक्ष या सामने लाकर उपस्थित करना। जैसे—किसी के सामने कोई मामला या विषय लाना। ३ उत्पन्न या पैदा करना।

स० [हिं० लाय=आग+ना (प्रत्य०)] आग लगाना। जलाना।

† स० [हिं० लगाना] १. सलग्न करना। लगाना। उदा०—मन सुख पैहा हरि चित लाए। २ समय व्यतीत करना। दिन लगाना। उदा०—हरि गए परदेश बहुत दिन लाए री।

पु० किसी पर लगाया हुआ अपना दोष या लांछन। जैसे—किसी पर लाने लगाना।

क्रि० प्र० लगाना।

लाना-बंदी—स्त्री० [हिं० लाना=लगाना+फा० बंदी] खेत की वह पैमाइश जो जोते जानेवाले हलों की सख्या के विचार से की जाती है।

लाने—अव्य० [हिं० लाना=लगाना] वास्ते। लिए। (बुंदेल०)

लाप—पु० [स०√लप् (कथन)+घञ्] बोलना। कथन। जैसे—वार्तालाप।

ला-पता—वि० [अ० ला+हिं० पता] १ जिसका पता न लगे। खोया हुआ। २ जो इस प्रकार कहीं चला गया या छिप गया हो कि किसी तरह उसका पता न लगा सके। ३ (पत्र आदि) जिस पर पता न लिखा गया हो और यों ही डाक मे छोड़ दिया गया हो।

क्रि० प्र०—रहना।—होना।

ला-परवाह—वि० [अ०+फा०] [भाव० लापरवाही] १. जिसे किसी बात की परवाह या चिंता न हो। निश्चिन्त। बे-फिक्र। २ जो अपने काम पर ठीक तरह से ध्यान न देता हो। असावधान।

ला-परवाही—स्त्री० [अ० ला+फा० परवाह] १ लापरवाह होने की अवस्था या भाव। बे-फिक्री। २ असावधानी। प्रमाद।

लापसी—स्त्री०=लपसी।

लापिका—स्त्री० [स०√लप्+ण्वुल—अक,+टाप्, इत्व] १. एक तरह की पहेली जिसके ये दो भेद होते है—अतर्लापिका और बहिर्लापिका।

लापी (पिन्)—वि० [स०√लप्+णिनि] १. बोलनेवाला। २. पश्चात्ताप करनेवाला।

लाप्य—वि० [स०√लप्+ण्यत्] १. बोलने या कहने योग्य। २. जिससे बात-चीत की जा सके। सभाष्य।

लाफ़—स्त्री० [फा०] १. लबी-चौड़ी बातें हाँकने की क्रिया या भाव। २ इस प्रकार कही जानेवाली बात। डींग।

लाबर—वि० =लबार।

ला-बुद—वि० [अ०] जरूरी। आवश्यक।

ला-बुदी—वि०=लाबुद।

लाभ—पु० [स०√लभ् (प्राप्ति)+घञ्] १ कोई चीज हाथ में आना। प्राप्त होना। मिलना। प्राप्ति। लब्धि। जैसे—पुण्य का लाभ होना। (गेन) २ किसी प्रकार का होनेवाला हित। उपकार। फायदा। (बेनिफिट) जैसे—दवा से होनेवाला लाभ। ३. रोजगार आदि मे होनेवाला मुनाफा (प्रॉफिट)

लाभ-कारक—वि० [सं० ष० त०] जिससे लाभ होता हो। फल करानेवाला। फायदेमंद।

लाभकारी (रिन्)—वि० [सं० लाभ√कृ+णिनि] लाभकारक।

लाभ-दायक—वि० [सं० ष० त०] जो लाभ कराता हो। लाभ देनेवाला।

लाभ-मद—पुं० [सं० मध्य० स०] वह मद या अहंकार जिसके कारण मनुष्य अपने आपको लाभवाला और दूसरे को हीन-पुण्य समझे। (जैन)

लाभ-स्थान—पुं० [सं० ष० त०] जन्म-कुंडली में लग्न से ग्यारहवाँ स्थान जो धन-धान्य, संतान, विद्या, आयु आदि का सूचक होता है। (फलित-ज्योतिष)

लाभांतराय—पुं० [सं० लाभ-अंतराय, स० त०] वह अंतराय कर्म जिसके उदय होने से मनुष्य के लाभ में विघ्न पड़ता है। (जैन)

लाभांश—पुं० [सं० लाभ-अंश, ष० त०] लाभ का वह अंश जो किसी कारखाने के हिस्सेदारों को उनके द्वारा लगाई हुई पूंजी के अनुपात में मिलता है। (डिविडेन्ड)

लाभार्थी (थिन्)—पुं० [सं० लाभ√अर्थ (चाहना)+णिनि] १. वह जो किसी प्रकार के लाभ की कामना करता हो। २. दे० 'हिताधिकारी'।

लाभालाभ—पुं० [सं० लाभ-अलाभ, द्व० स०] लाभ और अलाभ। हानि-लाभ। (प्राफिट ऐंड लॉस)

लाम—पुं० [फा०] १. सेना। फौज।

मुहा०—**लाम बाँधना**=किसी पर चढ़ाई करने के लिए सेना इकट्ठी करना।

पुं० [अ०] अरबी वर्ण-माला में ल् (लघुतम) ध्वनि की इकाई के सूचक अक्षर की संज्ञा।

पद—**लाम-काफ**—गन्दी, बेहूदी और वाहियात बात। अप-शब्द।

क्रि० प्र०—कहना।—बकना।

मुहा०—**लाम बाँधना**=चढ़ाई के लिए सेना तैयार करना।

२. जन-समूह। भीड़-भाड़।

मुहा०—**लाम बाँधना**=बहुत से लोगों को इकट्ठा करना।

क्रि० वि० दूरी पर। दूर।

लामज—पुं० [सं० लामज्जक] खस की तरह का पीले रंग का एक प्रकार का तृण जो ओषधि के रूप में काम आता है।

लामज्जक—पुं० [सं०√ला+क्विप्, ला-मज्जा, ब० स०,+कप्] १. लामज नामक तृण। २. उशीर। खस।

लामन—पुं० [?] १. झूलना या लटकना। २. लहँगा। उदा०—लामन लिखियो सोतली चलत फिरत रँग जाय।—गीत।

लाम-बंदी—स्त्री० [हिं० लाम+फा० बंदी] सेनाओं को शस्त्रास्त्रों से सुसज्जित कर युद्धार्थ प्रयाण के लिए तैयार रखना। युद्ध-सन्नाह। (मोबिलाइजेशन)

लामा—पुं० [ति० ब्लामा=मठाधीश] तिब्बत में बौद्ध धर्मावलंबियों के गुरु जो वहाँ के सर्वोच्च शासक भी है। जैसे—दलाई लामा, पचनलामा।

पुं० [पेरू देश की भाषा] घास खाने और पागुर करनेवाला एक प्रकार का जंतु जो ऊँट की तरह होता है। यह दक्षिणी अमेरिका में पाया जाता है। इसका थूक विषैला होता है, इसे पानी की आवश्यकता नहीं होती।

†वि० [स्त्री० लामी] =लंबा।

लामी—स्त्री० [देश०] राजपूताने का एक प्रकार का फल जो तरकारी बनाने के काम आता है।

लामे—अव्य० [हिं० लाम=दूर] १ कुछ दूरी पर। २ एक ओर। हटकर। जैसे—लामे रखना। (पूरब)

लाय—स्त्री० [सं० अलात; प्रा० अलाप] १. आग की लपट। ज्वाला। लौ। २. अग्नि। आग।

लायक—वि० [अ०] [भाव० लायकी] १. उचित। ठीक। वाजिब। २. उपयुक्त। मुनासिब। ३. गुणवान्। गुणी। ४. कुछ कर सकने के योग्य। समर्थ।

लायकियत—स्त्री० [अ०] लायक होने की अवस्था या भाव। लायकी। योग्यता।

लायकी—स्त्री० [अ० लायक+ई (प्रत्य०)] १. लायक होने की अवस्था, धर्म या भाव। २ योग्यता।

लायची—स्त्री०=इलायची।

लायन—पुं० [हिं० लगाना=बदले में देना] १ नकद दाम देकर बेची जानेवाली वस्तु। २ वह वस्तु जिसे रेहन रखकर ऋण लिया गया हो।

लार—स्त्री० [सं० लाला] १ मुँह में से तार के रूप में निकलनेवाली थूक।

मुहा०—**लार टपकना**=कोई चीज देखकर या सुनकर उसे पाने के लिए लालायित होना।

२ लसीला पदार्थ। लासा। लुआब। ३. किसी को जाल या धोखे में फँसानेवाली चीज या बात।

मुहा०—**लार लगाना**=किसी को जाल या धोखे में फँसाने का उपाय या काम करना।

स्त्री० [?] अवली। कतार। पंक्ति।

अव्य० [राज० लैर=पीछे] किसी के पीछे या साथ लगकर।

उदा०—दिया लिया तेरे संग चलेगा, और नही तेरे लार।

लारी—स्त्री० [अं०] बड़ी मोटर गाड़ी, जिसमें विशेष रूप से सवारियाँ और उनका सामान ढोया जाता है।

† अव्य०=लार (पीछे या संग)।

लारू—पुं०=लाड़ू (लड्डू)।

लारे—अव्य० [?] १. वास्ते। लिए। २ आधार पर। उदा०—राग को आदि जिती चतुराई सुजान कहै सब याही के लारे।—सुजान।

लार्ड—पुं० [अं०] १ परमेश्वर। ईश्वर। २ मालिक। ३. जमींदार। ४ इंगलैंड के राजा द्वारा उच्च कोटि के कार्यकर्ताओं को प्रदान की जानेवाली एक उपाधि।

लाल—पुं० [सं० लालक से] १. छोटा और प्रिय बालक। प्यारा बच्चा। २. पुत्र। बेटा। उदा०—तेरे लाल मेरो माखन खायो।—सूर। ३. बालक। लड़का। ४. प्रिय व्यक्ति। ५. श्री कृष्ण का एक नाम।

पुं० [सं० लालन] दुलार। लाड़।

स्त्री० १.=लालसा। २=लार।

पुं० [अ० लअल] १. माणिक या मानिक नामक रत्न। २. मानिक का रंग।

मुहा०—लाल उगलना=बोलने के समय बहुत अच्छी और प्यारी बातें कहना।

वि० १. उक्त रत्न के रंग का। रक्त वर्ण का। सुर्ख। जैसे—लाल कपड़ा, लाल कागज। २. आवेश, क्रोध तथा लज्जा आदि के कारण जिसका वर्ण रक्त हो गया हो। जैसे—आँखें या चेहरा लाल होना। तप कर लाल अंगारा होना।

मुहा०—लाल पड़ना या होना=क्रुद्ध होना। नाराज होना।

३. (चौसर के खेल की गोटी) जो चारों ओर से घूमकर बिलकुल बीचवाले खाने में पहुँच गई हो, और जिसके लिए कोई चाल बाकी न रह गई हो।

मुहा०—(किसी की) गोटी लाल होना=यथेष्ट प्राप्ति या फल-सिद्धि होना।

४. (चौसर के खेल का खिलाड़ी) जिसकी सब गोटियाँ बीच के घर में पहुँच चुकी हों और जिसे कोई चाल चलना बाकी न रह गया हो। ऐसा खिलाड़ी जीता हुआ समझा जाता है। ५ (खिलाड़ी) जो खेल में औरों से पहले जीत गया हो। ६ धन-सम्पत्ति, सन्तान आदि से परम सुखी।

मुहा०—लाल होना या लालो लाल होना=यथेष्ट सम्पन्न और सुखी होना।

पुं० १ एक प्रसिद्ध छोटी चिड़िया जिसका शरीर कुछ भूरापन लिये लाल रंग का होता है। इसकी मादा को 'मुनियाँ' कहते हैं। २. चौपायों के मुँह में होनेवाला एक प्रकार का रोग।

लाल अंबारी—स्त्री० [हिं० लाल+अम्बारी] एक प्रकार का पटुआ जिसके बीज दवा में काम आते हैं।

लाल अगिन—पुं० [हिं० लाल+अगिन] भूरे लाल रंग का एक पक्षी, जिसका [illegible]ला नीचे की ओर सफेद होता है।

लाल आलू—पुं० [हिं० लाल+आलू] १. रतालू। २. अरुई। घुइयाँ।

लाल इलायची—स्त्री० [हिं० लाल+इलायची] बड़ी इलायची।

लालक—वि० [सं०√लल् (इच्छा)+ण्वुल्—अक] (लालन अर्थात्) दुलार-प्यार करनेवाला।

पुं० विदूषक।

लाल कच्चू—पुं० [हिं० लाल+कच्चू] गजकर्ण आलू। बड़ा।

लाल कलमी—पुं० [हिं० लाल+कलमी] चाँदनी या गुल चाँदनी नाम का पौधा और उसका फूल।

लाल कीन—पुं०=नानकीन।

लाल कोठी—स्त्री० [हिं०] व्यभिचारिणी स्त्रियों का अड्डा जहाँ वे कसब कमाती हैं।

लाल घास—स्त्री० [हिं० लाल+घास] गोमूत्र नामक तृण।

लाल चंदन—पुं० [हिं०+सं०] रक्त चंदन।

लालच—पुं० [सं० लालसा] [वि० लालची] कोई चीज पाने या लेने के लिए मन में होनेवाली ऐसी अत्यधिक चाह या लालसा जो अनुचित या अशोभन होने के कारण सहसा औरों पर प्रकट न की जा सकती हो। लोलुपतापूर्ण लोभ। जैसे—बहुत लालच करना अच्छा नहीं होता।

लालचहा—वि०=लालची।

लालची—वि० [हिं० लालच+ई (प्रत्य०)] बहुत लालच करनेवाला। लोभी।

लाल चीता—पुं० [हिं० लाल+चीता] लाल फूलों वाला चित्रक या चीता।

लाल चीनी—पुं० [हिं० लाल+चीनी] एक प्रकार का कबूतर, जिसका सारा शरीर सफेद और सिर पर बहुत सी लाल बिंदियाँ होती हैं।

लालटेन—स्त्री० [अं० लैंटर्न] किसी प्रकार का ऐसा आधान या उपकरण जिसमें तेल भरने का खजाना और जलाने के लिए बत्ती लगी रहती है और जलती हुई बत्ती को बुझाने से बचाने के लिए चारों ओर शीशे का अथवा और किसी प्रकार का आवरण भी लगा रहता है। कंडील।

लालड़ी—स्त्री० [हिं० लाल (रत्न)+ड़ी (प्रत्य०)] नथ, बाली आदि में लगाया जानेवाला एक तरह का नग।

लालदाना—पुं० [हिं० लाल+दाना] लाल रंग की खसखस। (पूरब)

लालन—पुं० [सं०√लाल् (इच्छा)+णिच्+ल्युट्—अन] यथेष्ट प्रेमपूर्वक बालकों का आदर करना। लाड़-प्यार।

पद—लालन-पालन।

†पुं० [हिं० लाल] १. प्रिय पुत्र। प्यारा बेटा। २. बालक। लड़का।

†स्त्री० [?] चिरौंजी। पयाल।

लालना—स० [सं० लालन] १. लाड़ या दुलार करना। उदा०—लालन जोग लखन लघु लोने।—तुलसी। २ पालन-पोषण करना। पालना। उदा०—कलप बेलि जिमि बहु बिधि लाली।—तुलसी।

लालनीय—वि० [सं०√लल्+णिच्+अनीयर्] जिसका लालन करना उचित हो या किया जाने को हो।

लाल-पगड़ी—स्त्री० [हिं०] पुलिस का सिपाही या अधिकारी। (उत्तर-प्रदेश)

लाल-पतंग—पुं० [हिं०] कपास के पौधों में लगनेवाला एक प्रकार का लाल कीड़ा।

लाल पानी—पुं० [हिं० लाल+पानी] शराब। मद्य।

लाल पिलका—पुं० [हिं० लाल+पिलका] सफेद डैनों तथा दुमवाला लाल रंग का एक प्रकार का कबूतर।

लाल पेठा—पुं० [हिं० लाल+पेठा] कुम्हड़ा।

लाल-फीता—पुं० [हिं०] १. लाल रंग की पट्टी या फीता जिससे सरकारी कार्यालयों में कागज-पत्र, नत्थियाँ आदि बाँधी जाती है। २. लाक्षणिक और व्यंग्यात्मक रूप से सरकारी कार्यों के संपादन निर्णय आदि में लगनेवाली अनावश्यक देर। दीर्घ-सूत्रता। (रेडटेप)

लाल-बुझक्कड़—पुं० [हिं० लाल+बूझना] ऐसा मूर्ख व्यक्ति जो वास्तव में जानता तो कुछ भी न हो, फिर भी अटकल-पच्चू और ऊटपटांग अनुमान लगाकर दुरूह बातों का कारण तथा समस्याओं का समाधान करने में न चूकता हो।

लाल-बीबी—स्त्री० [हिं०] सैनिकों की परिभाषा में निम्न कोटि की और कसब कमानेवाली वेश्या।

लाल-बेग—पुं० [हिं० लाल+तु० बेग] १. एक कल्पित पीर। २. लाल रंग का एक प्रकार का कीड़ा।

लाल-बेगी—पुं० [हिं०] लाल बेग नामक पीर का अनुयायी अर्थात् मुसलमान भंगी।

लाल-भक्त—पुं० [हिं० लाल+सं० भक्त] लोई या लावा का पकाया हुआ भात, जो रोगियों को पथ्य मे दिया जाता है।

लाल-भरेंड़ा—पुं० [हिं०] एक तरह का छोटा झाड़।

लाल-मन—पुं० [हिं० लाल+मणि] १. श्री कृष्ण। २. लाल रंग का एक प्रकार का तोता जिसकी चोंच गुलाबी, दुम काली और डैने हरे होते है।

लाल-मिर्च—पुं० [हिं०] १. एक तरह का छोटा पौधा जिसमे फली के आकार के फल होते हैं। जो आरम्भ मे हरे तथा पकने पर लाल हो जाते हैं। २. उक्त पौधे की फली अथवा उसकी बुकनी जो कटु, तीक्ष्ण स्वाद वाली होती है और नमकीन व्यजनों मे डाली जाती है।

लाल-मुँहाँ—पुं० [हिं०] मुँह मे निकलने वाले रग के छाले जिसकी गिनती रोग मे होती है। निनावाँ का एक प्रकार।

वि०—लाल मुँहवाला।

लाल-मुनियाँ—स्त्री० [हिं०] एक प्रकार की छोटी चिड़िया।

लाल-मुरगा—पुं० [हिं०] १. एक प्रकार का पहाडी शिकारी पक्षी जिसका शिकार किया जाता है। २. गुल-मखमली नाम का पौधा और उसका फूल। मयूर-शिखा।

लाल-मूली—स्त्री० [हिं० लाल+मूली] शलजम। शलगम।

लालरी—स्त्री०=लालड़ी।

लाल-लाडू—पुं० [हिं० लाल+लाडू=लड्डू] एक प्रकार की नारंगी।

लाल शक्कर—स्त्री० [हिं० लाल+शक्कर] बिना साफ की हुई चीनी। खाँड।

लाल-सकरी—स्त्री० [हिं०] अमरूद।

लाल-समुद्र—पुं०=लाल सागर।

लाल-सर—पुं० [हिं० लाल+सर] एक प्रकार का पक्षी जिसकी गरदन और सिर लाल रग का होता है।

लालसा—स्त्री० [सं०√लस् (दीप्ति)+यङ्, द्वित्व,+अ+टाप्] १. बहुत दिनो से मन मे बनी रहनेवाली इच्छा। साध। जैसे—माँ के दर्शनो की लालसा पूरी न हो सकी। २. गर्भिणी की इच्छा। दोहद। ३ अनुनय। ४ खेद। ५. एक प्रकार का वृत्त।

लाल-साग—पुं० [हिं० लाल+साग] मरसा नाम का साग।

लाल सागर—पुं० [हिं० लाल+सं० सागर] भारतीय महासागर का वह अश जो अरब और अफ्रीका के बीच में पड़ता है और जिसके पानी में कुछ ललाई झलकती है।

लाल-सिखी—पुं० [हिं० लाल+शिखा] मुर्गा।

लाल-सिरा—पुं० [हिं० लाल+सिरा=सिर] एक प्रकार की बत्तख जिसका सिर लाल होता है।

लालसी—वि० [सं० लालसा+ई (प्रत्य०)] लालसा या अभिलाषा करनेवाला।

लाला—स्त्री० [सं०√लल् (इच्छा)+णिच्+अच्+टाप्] मुँह से निकलनेवाली लार। थूक।

पुं० [सं० लालक] १. प्राय: कायस्थो, बनियो, पजाबियो आदि के नाम के पहले लगनेवाला आदरसूचक शब्द। जैसे—लाला लाजपत राय। २. बातचीत मे प्रयुक्त होनेवाला एक प्रकार का आदरसूचक संबोधन।

मुहा०—(किसी से) लाला भइया करना=किसी को आदरपूर्वक सबोधन करते हुए उससे बातचीत करना या उसे समझाना-बुझाना। बीच बीच में लाला, भइया आदि मर्यादासूचक सबोधन करते हुए बातें करना। जैसे—तुम्हे लाला भइया करके उनसे अपना काम निकालना चाहिए।

३. कायस्थ जाति या कायस्थो का सूचक शब्द। जैसे—ये लाला लोग बहुत चतुर होते हैं। ४. छोटे बच्चो के लिए प्रेमसूचक संबोधन।

पुं० [फा०] पोस्ते का लाल रंग का फूल जिसमे प्राय. काली खस-खस पैदा होती है। गुले लाला।

†वि०=लाल।

लाला-ग्रंथि—स्त्री० [सं० मध्य० स०] मुँह के अन्दर की वे ग्रन्थियाँ जो लाला या लार उत्पन्न करती है। (सैलिवरी ग्लैण्ड)

लालाटिक—वि० [सं० ललाट+ठक्—इक] १. ललाट अर्थात् मस्तक सबंधी। २. लाक्षणिक अर्थ मे, नियति या भाग्य से सबधित अथवा उस पर आधारित। ३ सतर्क। ४. निकम्मा। व्यर्थ।

पुं० १. कामशास्त्र मे एक प्रकार का आलिंगन। २. सेवक।

लाला-प्रमेह—पुं० [सं० ष० त०] प्रमेह का वह प्रकार जिसमे पेशाब लाला (लार) की तरह तार बाँधकर होता है।

लाला-मेह—पुं०=लाला प्रमेह।

लालायित—भू० कृ० [सं० लाला+क्यच्+क्त] १. जिसके मुँह मे बहुत अधिक लालच के कारण लाला अर्थात् लार या पानी भर आया हो। २. जिसका अच्छी तरह लालन अर्थात् दुलार या लाड किया गया हो।

लाला-विष—पुं० [सं० ब० स०] ऐसा जतु जिसके मुँह की लार में विष रहता हो। जैसे—मकडी, छिपकली आदि।

लाला-स्रव—पुं० [सं० ष० त०] १ मुँह से लार बहना। २ वह जिसके मुँह से लार बहती हो। जैसे—छिपकली, मकडी।

लाला-स्राव—पुं० [सं० ष० त०] १. मुँह से थूक या लार गिरना। २. मकड़ी का जाला।

लालि—स्त्री०=लालसा। उदा०—ये सोरहौ सिंगार बरनि के करहिं देवता लालि।—जायसी।

लालित—भू० कृ० [सं०√लल् (इच्छा)+णिच्+क्त] १. जिसका लालन किया गया हो। दुलारा हुआ। २. जो पाला-पोसा गया हो।

लालितक—पुं० [सं० लालित+कन्] वह प्रिय जीव या प्राणी जिसका लालन-पालन किया गया हो।

लालित्य—पुं० [सं० ललित+ष्यञ्] १ ललित होने की अवस्था, गुण या भाव। २. रमणीयता। ३. हाव-भाव।

लालिनी—स्त्री० [सं०√लल्+णिनि+ङीप्] कामुक स्त्री।

लालिमा—स्त्री० [हिं० लाल] लाल होने की अवस्था या भाव। लाली।

लाली—स्त्री० [हिं० लाल+ई (प्रत्य०)] १. लाल होने की अवस्था

या भाव। अरुणता। ललाई। लालपन। सुर्खी। २. इज्जत, प्रतिष्ठा या सम्मान जिसके बने रहने पर चेहरा लाल रहता है। रौनक। शोभा। (प्रायः चेहरे या मुँह के साथ प्रयुक्त) जैसे—चलो, तुम्हारे चेहरे (या मुँह) की लाली रह गई; अर्थात् प्रतिष्ठा बनी रह गई। नष्ट नहीं होने पाई। ४. यश। कीर्ति। ५. पकी ईंटों का चूर्ण। सुर्खी।
पुं० [सं० लालिन्] १. लालन-पालन करनेवाला व्यक्ति।
२. व्यक्तियों को कुमार्ग पर ले जानेवाला पुरुष।

लाले—पुं० बहु० [हिं० लाला] अभिलाषाएँ।
मुहा०—**(किसी चीज के) लाले पड़ना**=अप्राप्य या दुष्प्राप्य वस्तु के लिए बहुत अधिक तरसना। **जान के लाले पड़ना**=विकट या संकट-पूर्ण स्थिति मे पहुँचना।

लालो—पुं०=लाले।

लाल्य—वि० [सं०√लल् (इच्छा)+णिच्+यत्] लालनीय।

लाल्हा—पु० दे० 'मरसा' (साग)।

लाव—पुं० [सं०√लू (छेदना)+ण] १. लवा नामक पक्षी। २. लौंग। ३. काटने की क्रिया या भाव।
स्त्री० [देश० या सं० रज्जु] मोटा रस्सा।
मुहा०—**लाव चलाना**=चरसे के द्वारा कूएँ से पानी निकालकर खेत सींचना।
२. उतनी भूमि जितनी एक दिन मे एक चरसे से सींची जा सके। ३. लंगर मे बाँधने का रस्सा ४. डोरी। रस्सी।
पु० [हिं० लाना] ऋण के रूप मे किसी को दिया जानेवाला धन।
मुहा०—**लाव उठाना**=(क) चीज बधक रखकर रुपया उधार देना। (ख) कष्ट के समय खेतिहरो की सहायता करने के लिए उन्हे धन देना। **लाव लगाना**=उधार लिया हुआ रुपया, अन्नादि देकर चुकाना।
स्त्री० [हिं० लाव=आग] अग्नि। आग।

लावक—पु० [सं० लाव+कन्] लवा (पक्षी)।
पु० [देश०] १. चावल की जाड़े की फसल। २ चरसा। ३. उतना समय जितना एक बार मोट खींचने मे लगता है।

लावण—पु० [सं० लवण+अण्] सुँघनी। नस्य।
वि० १. लवण सबधी। नमक का। २ जिसमे नमक मिला हो। नमकीन। ३. (ओषधि आदि) जिसका लवण या नमक के द्वारा संस्कार हुआ हो।

लावणिक—पु० [सं० लवण+ठञ्—इक] १. वह जो नमक बनाता या बेचता हो। नमक का व्यापारी। २. नमक रखने का बर्तन। नमकदान।
वि०=लावण।

लावण्य—पु० [सं० लवण+ष्यञ्] १ लवण का धर्म या भाव। नमक-पन। २. शील या स्वभाव की उत्तमता। ३. आकृति आदि मे होनेवाली नमकीनी। चेहरे या शरीर का नमक अर्थात् सलोनापन।

लावण्या—स्त्री० [सं० लावण्य+अच्+टाप्] ब्राह्मी (बूटी)।

लावदार—वि० [हिं० लाव=आग+फा०+दार (प्रत्य०)] भरी हुई तोप।
पुं० वह जो पुरानी चाल की तोपो मे बत्ती लगाकर उन्हे चलाता या छोड़ता था।

लावनता†—स्त्री०=लावण्य।

लावना—स० [हिं० लगना] १. लगना। स्पर्श करना। उदा०—अंतर पट दे खोल सबद उर लावरी।—कबीर। २. पूरा करना। उदा०—नाचहि गावहि लावहि सेवा।—तुलसी।

लावनि—स्त्री० [सं० लावण्य] लावण्य। सुन्दरता।
स्त्री०=लावनी।

लावनी—स्त्री० [सं० लावणी] १. संगीत मे देशी रागों के अंतर्गत एक उपराग जिसका विकास मगध के पास लावाणक नामक प्रदेश के लोक-गीतो मे हुआ था। उसके कई भेद हैं। यथा—लावनी कलिंगड़ा, लावनी जगला, लावनी भूपाली, लावनी रेखता आदि। २. लोक में प्रचलित उपराग के वे विशिष्ट प्रकार जो प्रायः चंग या डफ़ बजाकर उसके साथ गाये जाते हैं। ३. उक्त प्रकार की वह कविता या गीत जो चंग या डफ़ बजाकर गाया जाता हो।

लावनीबाज—पुं० [हिं०+फा०] [भाव० लावनी-बाजी] वह जो चंग या डफ पर लावनियाँ गाता हो।

ला-वबाल—वि० [अ० ला+फा० वबाल] १. ला-परवाह। २. आवारा। ३ अविचारी।

ला-वबाली—स्त्री० [अ०+फा०] १ ला-वबाल होने की अवस्था या भाव। २. आवारागर्दी। ३. अविचार।

ला-वल्द—वि० [फा०] [भाव०-लावल्दी] जो पिता न हो अर्थात् जिसके आगे सन्तान न हो। निःसंतान।

लावा—पुं० [सं० लाजा] ज्वार, धान, रामदाने आदि को बालू में भूनने पर तैयार होनेवाला वह रूप जिसमे दाने फूटकर फैल जाते हैं।
मुहा०—**(किसी पर) लावा मेलना**†=(क) किसी को अधिकार या वश मे करने के लिए मंत्र पढ़ते हुए उस पर लावा फेंकना। (ख) अधिकार या वश मे करना।
वि० [हिं० लावना] लगाई-बुझाई करनेवाला। दो पक्षी मे झगड़ा खड़ा करनेवाला।
पु० [हिं० लवना] फसल काटनेवाला मजदूर।
† पु०=लवा।
पु० [अ० लावत] राख, पत्थर और धातु आदि मिला हुआ वह द्रव पदार्थ जो प्रायः ज्वालामुखी पर्वतो के मुख से विस्फोट होने पर निकलता है।

लावाणक—पु० [सं०] मगध का निकटवर्ती एक देश।

लावा-परछन*—पु० [हिं०] एक वैवाहिक रीति जिसमे कन्या की झोली अथवा उसके हाथ में पकड़ी हुई डलिया मे उसके भाई लावा डालते या छोड़ते हैं।

ला-वारिस—वि० [अ०] [भाव० ला-वारिसी] १. (व्यक्ति) जिसका कोई वारिस अर्थात् उत्तराधिकारी न हो। २. (वस्तु) जिसे संभाल-कर न रखा गया हो और यों ही इधर-उधर पड़ी रहती हो। ३. (माल) जिसकी देख-रेख करनेवाला या मालिक न हो।

ला-वारिसी—स्त्री० [अ० ला-वारिस] ला-वारिस होने की अवस्था या भाव।
वि०=ला-वारिस।

लाबा-लुतरा—वि० [हिं०] इधर की बातें उधर लगाकर लोगों को आपस में लड़ानेवाला।

लाबु—पुं० [हिं० अलाबू] कद्दू। घीया। लौका।

लाभ्य—वि० [सं०√लू (छेदन)+ण्यत्] लवने अर्थात् काटने के योग्य।

लाश—स्त्री० [फा०] १. किसी प्राणी का मृत शरीर। शव। जैसे—हाथी की लाश। २. क्षत-विक्षत तथा मृतप्राय शरीर। जैसे—लाशें तड़प रही थीं। ३. लाक्षणिक अर्थ में, बहुत भारी व्यक्ति।

लाशा—वि० [फा०] अति दुर्बल, क्षीणकाय।

पुं० मृत शरीर। लाश। शव।

लाष—स्त्री०=लाख (लाक्षा)।

लाषना—स०=लाखना।

लास—पुं० [सं०√लस् (शोभित होना)+घञ्] १. एक प्रकार का नाच। २. थिरकने या मटकने की क्रिया या भाव। ३. जूस। रस। शोरबा।

पुं० [हिं० लसना] १. लसने अर्थात् सुन्दर जान पड़ने की अवस्था या भाव। २. छबि। शोभा। ३. चमक। दीप्ति।

पु० [?] उस छड के दोनों कोने जो पाल बाँधने के लिए मस्तूल में लटकाया जाता है। (लश०)

मुहा०—लास करना=चलती हुई नाव को रोकने के लिए डाँड़ों को बहते पानी में बेड़े बल में ठहराना। (लश०)

†स्त्री०=लाश (शव)।

लासक—पुं० [सं०√लस् (क्रीड़ा)+ण्वुल्—अक] १. लास्य अर्थात् कोमल अंग-भंगी से युक्त नृत्य करनेवाला नर्तक। २. मयूर। मोर। ३. शिव। ४. घड़ा। मटका। ५. एक रोग जिसमें शरीर का कोई अंग बराबर हिलता-डुलता रहता है।

वि० १. नाचनेवाला। २ हिलता-डुलता रहनेवाला। ३. खेलवाड़ी। ४. क्रीडा रस।

लासकी—स्त्री० [सं० लासक+ङीष्] नर्तकी।

लासकीय—वि० [सं० लासक+छ—ईय] १. लासक संबंधी। २. लासक रोग से ग्रस्त या पीडित।

लासन—पुं० [अं० लौशिंग] जहाज बाँधने का मोटा रस्सा। लहासी।

पुं० [सं०] नाचने की क्रिया या भाव।

लासा—पुं० [हिं० लस] १. कोई लसवाला या लसीला पदार्थ। विशेषतः ऐसा पदार्थ जिसके द्वारा दो चीजें परस्पर चिपकाई जाती हैं। २. वह लसीला पदार्थ जिससे बहेलिये चिड़ियाँ फँसाते हैं। चेंप। लोपन।

मुहा०—लासा लगाना=किसी को फँसाने की युक्ति रचना। लासा होना=सदा साथ लगे रहना।

३. वह साधन जिससे किसी को फँसाया जाय।

ला-सानी—वि० [अ०] जिसका सानी या जोड़ का कोई न हो। अद्वितीय। बेजोड़।

लासि—पुं०=लास्य।

लासिक—वि० [सं० लास+ठन्—इक] [स्त्री० लासिका] नाचनेवाला।

लासिका—स्त्री० [सं० लासिक+टाप्] १. नर्तकी। २. वेश्या। ३. उपरूपक का एक भेद।

लासी—स्त्री० [देश०] गेहूँ, सरसों आदि की फसल में लगनेवाला एक तरह का काला छोटा कीड़ा।

लासु—स्त्री०=लाश।

लास्य—पुं० [सं०√लस् (क्रीड़ा)+ण्यत्] १. नृत्य। नाच। २. दो प्रकार के नृत्यों में से एक। (दूसरा प्रकार तांडव कहलाता है।)

विशेष—लास्य वह नृत्य कहलाता है, जिसमें कोमल अंग-भंगियों के द्वारा मधुर भावों का प्रदर्शन होता है, और जो शृंगार आदि कोमल रसों को उद्दीप्त करने वाला होता है। इसमें गायन तथा वादन दोनों का योग रहता है।

वि० कोमल तथा मधुर। जैसे—स्वरों में र की ध्वनि लास्य है।

लाह—स्त्री० [सं० लाक्षा] लाख। चपड़ा।

स्त्री० [?] चमक। दीप्ति।

†पुं०=लाभ।

लाहक—वि० [हिं० लाह] १. इच्छा करने या चाहनेवाला। २. लाभ के रूप में प्राप्त होनेवाला। ३. आदर या कदर करनेवाला।

लाहन—पु० [देश०] १. पशुओं को खिलाया जानेवाला महुए का फल जिसमें से मद्य खींच लिया गया हो। २. जूसी और महुए को मिलाकर उठाया हुआ खमीर। ३ किसी चीज का और किसी तरह उठाया हुआ खमीर। ४. गौओ आदि के ब्याने पर उन्हें पिलाई जानेवाली दवाएँ। ५. खलिहान से अनाज ढोकर लाने की मजदूरी।

लाहल—अव्य० =ला हौल।

लाहा—पुं०=लाह (लाभ)।

लाही—वि० [हिं० लाहा] लाल या लाखी रंग का।

स्त्री० १. लाल रंग के वे छोटे कीड़े जो लाख बनाते हैं। २. ऊख की फसल में लगनेवाला लाल रंग का एक तरह का छोटा कीड़ा।

स्त्री० [देश०] १. सरसों। २. काली सरसो। ३ तीसरी बार साफ किया हुआ शोरा।

स्त्री०=लाई (धान, बाजरे आदि का लावा)।

लाहु—पुं०=लाह (लाभ)।

लाहौरी नमक—पुं० [हिं०] सेंधा नमक।

लाहौल—अव्य० [अ०] अरबी के एक प्रसिद्ध वाक्य का पहला शब्द जिसका व्यवहार प्राय भूत-प्रेत आदि को भगाने या किसी बात के संबंध में परम उपेक्षा अथवा घृणा प्रकट करने के लिए किया जाता है। पूरा वाक्य इस प्रकार है—'लाहौल व ला कूव्वत इल्ला बिल्लाह', जिसका अर्थ है, ईश्वर के सिवा और किसी मे कुछ सामर्थ्य नहीं है।

मुहा०—लाहौल पढ़ना= (क) उक्त वाक्य का उच्चारण करना। (ख) परम उपेक्षा, घृणा या तिरस्कार सूचित करना।

लिंग—पुं० [सं०√लिंग् (गति)+घञ् वा अच्] [वि० लैंगिक] १. कोई ऐसा चिह्न या निशान जिससे किसी काम, चीज या बात की पहचान होती है। लक्षण। २. किसी वर्ग या समूह का प्रतिनिधित्व करनेवाला तत्त्व, पदार्थ या बात। प्रतीक। ३. न्याय शास्त्र में कोई ऐसी चीज या बात जिससे किसी प्रकार की घटना या तथ्य का ठीक अनुमान या कल्पना होती हो अथवा प्रमाण मिलता हो। साधक हेतु। जैसे—

धूम भी अग्नि का एक लिंग है। अर्थात् धूआँ दिखाई पड़ने पर आग का अनुमान होता या प्रमाण मिलता है।

विशेष—हमारे यहाँ न्याय शास्त्र मे यह चार प्रकार का कहा गया है—(क) सबद्ध, जैसे—आग के साथ रहनेवाला धूआँ उसका सबद्ध लिंग है। (ख) गौ, बैल आदि के सिर में लगे रहनेवाले सीग उनके न्यस्त लिंग हैं। (ग) मनुष्य के साथ लगी रहनेवाली भाषा उसका सहवर्ती लिंग है, और (घ) किसी अच्छी या बुरी बात के साथ विपरीत रूप में लगी रहनेवाली बुरी या अच्छी बात उसका विपरीत लिंग है। जैसे—गुण और अवगुण, पाप और पुण्य आदि।

४. मीमासा मे वे छ लक्षण जिनके आधार पर लिंग का निर्णय होता है। यथा—उपक्रम, उपसंहार, अभ्यास, अपूर्वता, अर्थवाद और उपपत्ति। ५ सांख्य मे मूल प्रकृति जिसमे सारी विकृतियाँ फिर से लीन होती हैं। ६ लोक-व्यवहारो मे अर्थ की दृष्टि से जीव-जन्तुओ, पेड़-पौधो अथवा पुरुष और स्त्री वाले दो प्रसिद्ध विभागो मे से प्रत्येक विभाग। वह स्थिति जिसके कारण या द्वारा हम किसी को नर या मादा अथवा पुरुष या स्त्री कहते और मानते हैं। (सेक्स) ७ उक्त के आधार पर वह तत्व जो पुरुषों और स्त्रियो को अपनी काम वासना पूरी करने अथवा संतान उत्पन्न करने मे प्रवृत्त करता है। (सेक्स) ८. व्याकरण के क्षेत्र में शब्द-गत दृष्टि से संज्ञाओ और सर्वनामो (तथा उनसे सम्बद्ध क्रियाओ और विशेषणो) का वह वर्गीकरण जिनसे यह सूचित होता है कि कोई सज्ञा या सर्वनाम पुरुष जाति का वाचक है या स्त्री जाति का।

विशेष—संस्कृत, मराठी, फारसी, अँगरेजी आदि अनेक भाषाओ मे पुलिंग, स्त्रीलिंग और नपुसक लिंग ये तीन लिंग होते हैं। परन्तु हिन्दी उर्दू, पजाबी आदि अनेक भाषाओ मे स्त्रीलिंग और पुलिंग ये दो ही लिंग होते हैं। बँगला आदि कुछ भाषाओ मे यह लिंग तत्व सज्ञाओ तक ही परिमित रहता है, सर्वनामो, विशेषणो, क्रियाओ आदि के रूपो पर लिंग-भेद का कोई प्रभाव नही पड़ता, सभी लिंगो मे उनके रूप एक से रहते हैं। ९. साहित्य मे पदो, वाक्यो आदि मे शब्दो की वह स्थिति जिसमे यह सूचित होता है कि पद या वाक्य मे आये हुए दूसरे शब्दों के साथ किसी विशिष्ट शब्द का कैसा अथवा क्या सबध है।

विशेष—इसका विशेष विवेचन काव्य-प्रकाश मे देखा जा सकता है।

१०. पुरुष की जननेन्द्रिय या गुह्य इंद्रिय। उपस्थ। शिश्न। ११. शिव का एक विशिष्ट प्रकार का प्रतीक या मूर्ति जो पुरुष की जननेन्द्रिय के रूप मे होती है।

विशेष—हमारे यहाँ शिव के दो रूप माने गये हैं। पहला निष्क्रिय और निर्गुण शिव जो अलिंग कहा गया है और दूसरा जगत् की उत्पत्ति करनेवाला शिव जो लिंग रूप है। इसी दूसरे और लिंग या प्रकृति के मूल कारण वाले रूप मे शिव को 'लिंगी' भी कहते हैं। और इसी रूप मे भारत में उनकी पूजा होती है। (विशेष दे० 'लिंग-पूजा'।)

१२. वह छोटी डिबिया या पिटारी जिसमे लिंगायत लोग शिव-लिंग की मूर्ति बंद करके गले मे पहने या लटकाये रहते हैं। १३ देवता की प्रतिमा या मूर्ति। विग्रह। १४. वेदान्त मे आत्मा का वह बहुत छोटा और सूक्ष्म रूप जो शरीर के ढाँचे के आकार का होता और मृत्यु के उपरात शरीर से बाहर निकलता है। दे० 'लिंग-शरीर' १५. दे० 'लिंग-पुराण'।

लिंगता—स्त्री० [स० लिंग+तल्—टाप्] लिंग से युक्त होने की अवस्था या भाव।

लिंग-देह—पु०=[स० मध्य० स०] =लिंग-शरीर।

लिंग-देही (हिन्)—पु० [स० लिंगदेह+इनि] वह जिसका मन, कर्म और वचन सब एक-रूप हो।

लिंगधर—पु० [स० ष० त०] १. लिंगी अर्थात् चिह्न धारण करनेवाला व्यक्ति। २. ढोंगी व्यक्ति।

लिंगन—पु०=आलिंगन।

लिंग-नाश—पु० [स० ष० त०] १ ऐसी अवस्था जिसमे किसी लिंग अर्थात् चिह्न या लक्षण की पहचान न हो सकती हो। २. अधकार। ३ अधता। अन्धापन।

लिंग-पुराण—पु० [स० मध्य० स०] अठारह पुराणो मे से एक प्रसिद्ध पुराण जिसमे शिव और उनके लिंग की पूजा का माहात्म्य वर्णित है।

लिंग-पूजक—पु० [स० ष० त०] वह जो लिंग-पूजा (देखें) करता हो। (फेलिलिसिस्ट)

लिंग-पूजा—स्त्री० [स० ष० त०] पुरुष की जनन-शक्ति के प्रतीक के रूप मे लिंग की पूजा करने की प्रथा जो अनेक प्राचीन जातियो मे प्रचलित थी और अब भी हिन्दुओ मे जो शिव-लिंग की पूजा के रूप मे प्रचलित है। (फेलिलसिज्म)

विशेष—प्राचीन काल मे अरब, जापान, मिस्र, रोम, यूनान आदि अनेक देशो मे पुरुष की जननेन्द्रिय या लिंग ही सारे जगत् का मूल कारण माना जाता था और इसी लिए वहाँ भी ईश्वर या स्रष्टा देवता के रूप मे लिंग की ही पूजा होती थी। यहाँ तक कि काबुल के पुराने मंदिरो मे बहुत से ऐसे लिंग निकले हैं, जो भारतीय शिव-लिंग से बहुत कुछ मिलते हैं। वैदिक काल मे अनेक अनार्य भारतीय जातियो मे भी यह लिंग-पूजा प्रचलित थी।

लिंगवर्द्धिनी—स्त्री० [सं० लिंग√वृध् (बढ़ना)+णिच्+णिनि+ङीप्] अपामार्ग। चिचड़ा।

लिंगवस्ति—पु० [स० मध्य० स०]=लिंगार्श (रोग)।

लिंगवान् (वत्)—[स० लिंग+मतुप्] जो लिंग अर्थात् चिह्न या लक्षण से युक्त हो। लक्षण युक्त।

पुं० शैवो का लिंगायत सम्प्रदाय।

लिंग-वृत्ति—पु० [स० ब० स०] जो केवल लिंग अर्थात् चिन्ह या वेश बनाकर जीविका चलाता हो। आडम्बरी।

वि० झूठे चिह्न धारण करके जीविका चलानेवाला। ढोंगी।

स्त्री० १ लिंग अर्थात् चिह्न धारण करके जीविका उपार्जित करना। २ ढोंग रचना।

लिंग-शरीर—पु० [मध्य० स०] हिंदू शास्त्रो के अनुसार मृत्यु के उपरान्त प्राणी की आत्मा को आवृत्त रखनेवाला वह सूक्ष्म शरीर जो पाँचो प्राणो, पाँचो ज्ञानेन्द्रियो, पाँचो सूक्ष्मभूतों, मन, बुद्धि और अहंकार से युक्त होता है परन्तु स्थूल अन्नमय कोश से रहित होता है। लोक-व्यवहार मे इसी को सूक्ष्म-शरीर कहते है।

विशेष—कहते हैं कि जब तक पुनर्जन्म न हो या मोक्ष की प्राप्ति न हो, तब तक यह शरीर बना रहता है।

लिंगशरीरी (रिन्)—वि० [सं० लिंगशरीर+इनि] लिंग-शरीरधारी।

लिंगस्थ—पु० [सं० लिंग√स्था (ठहरना)+क] ब्रह्मचारी। (मनु-स्मृति)।

लिंगांकित—पु० [सं० लिंग-अंकित, तृ० त०]=लिंगायत शैव सम्प्रदाय।

लिंगानुशासन—पु० [सं० लिंग-अनुशासन, ष० त०] वह शास्त्र जिसमें इस बात का विवेचन होता है कि वाक्य-रचना में कौन सा शब्द किस अवस्था में किस लिंग में प्रयुक्त होता है।

विशेष—हमारे यहाँ की संस्कृत, पालि, प्राकृत, आदि पुरानी भाषाओं में एक ही शब्द भिन्न भिन्न प्रसंगों में भिन्न भिन्न लिंगों में प्रयुक्त होता था। यथा—पाले या हिम के अर्थ में 'शिशिर' शब्द पु०, शीत काल के अर्थ में 'पुन्नपुंसक (देखें) और शीतलता से युक्त पदार्थ के अर्थ में विशेष्य-लिंग (देखें) होता है। यही बात कुछ शब्दों में पर्यायों के संबंध में भी होती है। यथा—स्त्री शब्द स्त्री-लिंग है और 'कलत्र' नपुंसक लिंग है। इन सब विभेदों के कारण और नियम बतलाना ही 'लिंगानुशासन' कहलाता है।

लिंगायत—पु० [हिं०] १. एक प्रसिद्ध शैव सम्प्रदाय। २. उक्त सम्प्रदाय का अनुयायी।

लिंगार्चन—पु० [सं० लिंग-अर्चना ष० त०]=लिंग-पूजा।

लिंगार्श(स्)—पु० [सं० लिंग-अर्शस्, ष० त०] पुरुष की जननेन्द्रिय का एक रोग।

लिंगित—भू० कृ० [सं० √लिंग+क्त] लिंग् अर्थात् चिह्न या लक्षण से युक्त किया हुआ।

लिंगिनी—स्त्री० [सं० लिंग+इनि+ङीप्] एक प्रकार की लता जिसे पच गुरिया कहते हैं।

लिंगी (गिन्)—वि० [सं० लिंग+इनि] [स्त्री० लिंगिनी] लिंग अर्थात् चिह्न या चिह्नों से युक्त। लिंग-धारी।

पु० १. शिव। महादेव। २. शिव लिंग का उपासक या पूजक। शैव। ३. ब्रह्मचारी। ४ परमात्मा। ५. ढोंगी। ६ हाथी। ७. दे० 'लिंग-देही'।

†स्त्री० [सं० लिंग] छोटा शिव लिंग।

लिंगेंद्रिय—पु० [सं० लिंग-इंद्रिय मध्य० स०] पुरुषों की मूत्रेन्द्रिय। लिंग।

लिंट—पु० [अं०] एक तरह का मुलायम जालीदार कपड़ा जो घाव पर दवा आदि लगाकर रखा जाता है।

लिए—अव्य० [?] 'के' संबंध सूचक से युक्त होकर 'के लिए' रूप में प्रयुक्त होनेवाला सम्प्रदान कारक का विभक्ति चिह्न। जैसे—राम के लिए फल मैं लाया हूँ।

विशेष—'इसलिए' आदि में 'इस' के बाद वाले 'के' का लोप हो गया है।

लिकटी—स्त्री० [?] चिह्न अंकित करने का आब-रंग नामक रंग।

लिकिम—पुं० [देश०] लंबी टाँगों वाला मटमैले रंग का एक पक्षी।

लिकुच—पु०=लकुच।

लिक्खाड़—पुं० [हिं० लिखना] खूब मँजा हुआ और बहुत लिखनेवाला लेखक।

लिक्षा—स्त्री० [सं०√लिश् (गति)+श, कित्व, +टाप्] १. जूँ का अंडा। २ प्राचीन काल का एक बहुत छोटा परिमाण, जो किसी के मत से चार अणुओं के बराबर, किसी के मत से आठ बाल के बराबर और किसी के मत से राई या सरसों के छठे भाग के बराबर होता है।

लिखत—स्त्री० [हिं० लिखना] १. लिखने की क्रिया या भाव। २. लिखे हुए होने की अवस्था या भाव।

मुहा०—**लिखत पढ़त होना**=लिखा-पढ़ी में होना।

३. वह दस्तावेज जो विधिक दृष्टि से प्रामाणिक माना जा सकता हो। आपस में की हुई लिखा-पढ़ी। (इंस्ट्रूमेंट)। ५. भाग्य का लेख।

अव्य०=लिखित।

लिखतम—स्त्री० [हिं० लिखना] १. लिखावट। २. लिखा-पढ़ी। उदा०—इनकी लिखतम का, इनकी बात का कोई भरोसा नहीं। वृन्दावनलाल वर्मा।

लिखधार—वि० [हिं० लिखना+धार (प्रत्य०)] लिखनेवाला। पुं० मुहर्रिर। लेखक।

लिखन—स्त्री० [हिं० लिखना] १ लिखने की क्रिया या भाव। २. लेख। ३. लिखावट। ४. भाग्य का लेख। ५. दे० 'लिखत'।

लिखना—स० [सं० लिखन] १ किसी तल पर वर्ण, रेखाएँ, फूल, पत्तियाँ आदि अंकित करना। २. कलम, पेंसिल आदि की सहायता से कागज, दफ्ती आदि पर कोई बात, लेख या विचार अक्षरों या वर्णों के द्वारा अंकित करना। लिपिबद्ध करना।

मुहा०—**(किसी के) नाम लिखना**=यह लिखना कि अमुक वस्तु या रकम अमुक व्यक्ति के जिम्मे है।

पद—**लिखा-पढ़ी**=शिक्षित व्यक्ति।

३. किसी साहित्यिक-कृति की रचना करना।

४ कूँची आदि की सहायता से चित्र विशेषतः रंग-चित्र बनाना। उदा०—लिखित सुधाकर लिखि गा राहू।—तुलसी।

लिखनी—स्त्री०=लेखनी (कलम)।

लिखवाई—स्त्री० [हिं० लिखवाना] लिखने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

लिखवाना—स० [हिं० लिखना] किसी दूसरे को लिखने में प्रवृत्त करना। लिखने का काम किसी से कराना।

लिखवार—वि० [हिं० लिखना] लिखनेवाला।

पु० लेखक।

लिखहार—वि० [हिं० लिखना+हार (प्रत्य०)] १ लिखनेवाला। लेखक। २. हिसाब-किताब या लेखा रखनेवाला।

लिखा—पुं० [हिं० लिखना] वह जो कुछ लिखित रूप में हो। जैसे—भाग्य में लिखा।

वि० जिसे लिखना आता हो। जैसे—पढ़ा-लिखा।

लिखाई—स्त्री० [हिं० लिखना] १. लिखने की क्रिया, ढंग या भाव।

पद—**लिखाई-पढ़ाई**—लिखने-पढ़ने आदि की शिक्षा।

२. लिखी हुई लिपि और उसकी बनावट। ३. चित्र अंकित करने की क्रिया या भाव। ४ चित्र-कला में कोई विशिष्ट परिरूप या तरह अंकित करने की क्रिया या भाव। जैसे—कमखाब की लिखाई=भूमिका आदि का ऐसा अंकन जो देखने में कमखाब की तरह जान पड़े।

लिखाना—स० [हिं० लिखना] १. किसी को कुछ लिखने में प्रवृत्त

करना। लिखने का काम कराना। २. किसी को लिखना सिखलाना। अथवा लिखने का अभ्यास कराना।

लिखा-पढ़ी—स्त्री० [हिं० लिखना+पढ़ना] १. लिखने और पढ़ने की क्रिया या भाव। २. पत्रों का आना और उनके उत्तर जाना। पत्र-व्यवहार। ३. अनुबन्ध, सधि, समझौते आदि की शर्तों का लिखा हुआ होना।

लिखावट—स्त्री० [हिं० लिखना+आवट (प्रत्य०)] १ लिखने का प्रकार या ढंग। २. किसी के हाथ के लिखे हुए अक्षर। हस्ताक्ष। (हैंड-राइटिंग)

लिखित—अव्य० [सं०] एक पद जिसका प्रयोग हस्तलिखित ग्रन्थों के अत मे या चित्रो के नीचे उनके लेखक या चित्रकार के नाम के पहले उनका कर्तृत्व सूचित करने के लिए होता था।

लिखित—भू० कृ० [सं० लिख् (लिखना)+क्त] १ लिखा हुआ। लिपिबद्ध किया हुआ। अंकित। २. जो लेख या लेख्य के रूप मे हो। लेख्य। (डाक्यूमेंट स)

पुं० १. लिखी हुई बात। लेख। २. लिखा हुआ प्रमाण पत्र। सनद।

लिखितक—पु० [स० लिखित] एक प्रकार की प्राचीन लिपि जिसके अक्षर चौकोर होते थे। इसके लेख खुतन (मध्य एशिया) मे पाये गये शिला लेखो में मिलते है।

लिखिमी†—स्त्री०=लक्ष्मी।

लिखेरा—वि०=लिखनेवाला।

लिगदी—स्त्री० [देश०] कमजोर छोटी घोड़ी।

लिचेन—पु० [देश०] एक प्रकार की घास जो पानी मे होती है।

लिच्चड—वि०=लीचड।

लिच्छिवि—पु० [स०] २००० वर्ष पूर्व का एक प्राचीन भारतीय राजवंश जिसका मगध, नैपाल, कोशल आदि पर शासन था।

लिटाना—स०=लेटना।

लिटोरा—पु०=लसोड़ा।

लिट्ट—पु० [हिं० लिट्टी का पु० रूप] बडी लिट्टी। (पकवान)

लिट्टी—स्त्री० [देश०] टिकिया के आकार की वह गोल छोटी रोटी जो आग पर आटे के पेडे को सेंकने से तैयार होती है।

लिठोर—पुं० [देश०] एक प्रकार का नमकीन पकवान।

लिड़बिड़ा—वि० [देश०] १ कमजोर। २ नपुसक।

लिडार—पु० [देश०] शृगाल। गीदड़।

वि० कायर। डरपोक।

लिढ़ौरी—स्त्री० [देश०] वे दाने हो दँवरी के बाद की बालों मे लगे रह जाते हैं।

लिपटना—अ० [सं० लिप्त] १. किसी चीज का दूसरी चीज के चारो ओर घूमते हुए उसके साथ इस प्रकार लगना कि सहसा दोनो अलग न हो सकें। जैसे—लता का वृक्ष में लिपटना। २. एक चीज का दूसरी चीज पर इस प्रकार लगना, सटना या सलग्न होना कि जल्दी दोनो अलग न हो सके। जैसे—(क) पुत्र का पिता के गले से लिपटना। (ख) पैरो मे कीचड लिपटना। ३. अपनी सारी शक्ति लगाते हुए किसी काम मे प्रवृत्त होना। जैसे—चारो आदमी लिपट जाओ तो सन्ध्या तक यह काम पूरा हो जाय। ४. किसी काम, चीज या बात मे इस प्रकार उलझना या फँसना कि जल्दी छुटकारा न हो सके। जैसे—अभी तो वे अपने मुकदमे मे ही लिपटे हुए हैं। ५. किसी रूप में लपेटा हुआ होना। जैसे—कागज मे लिपटे हुए रुपए रखे हैं। ६. किसी के साथ झगड़ा या तकरार करने मे प्रवृत्त होना। उलझना। जैसे—झगड़ा तो तुम्हारा उनसे है, मुझसे क्यों व्यर्थ लिपटते हो।

संयो० क्रि०—जाना।

लिपटाना—स० [हिं० लिपटाना का स०] १. एक वस्तु को दूसरी के चारो ओर लपेटना। २. संलग्न करना। सटाना। परिवृत्त करना। ३. आलिंगन करना। गले लगाना।

अ०=लिपटना। उदा०—जिमि जीवहिं माया लिपटानी।—तुलसी।

लिपड़ा—वि० [हिं० लेप] लेई की तरह गीला और चिपचिपा।

पु०=लूगडा (फटा पुराना कपड़ा।)

लिपड़ी†—स्त्री०=लिबड़ी।

लिपना—अ० [हिं० लीपना का अ०] १. लेप से युक्त होना। २. लेपा जाना। ३. किसी गाढी चीज का किसी तल पर अव्यवस्थित रूप मे लगकर फैलना।

संयो० क्रि०—जाना।

लिपवाना—स० [हिं० लीपना] लीपने का काम दूसरे से कराना। दूसरे को लीपने मे प्रवृत्त करना।

लिपाई—स्त्री० [हिं० लिपना] लिपाने या लीपने की क्रिया, भाव या मजदूरी। पोताई।

लिपाना—स०=लिपवाना।

लिपि—स्त्री० [स० लिप् (लीपना)+इन्, किरच] १. लेप करने की क्रिया या भाव। लीपना। २. लिखने की क्रिया या भाव। ३ किसी लघुतम ध्वनि का सूचक अक्षर। जैसे—क्, ख्, ग् आदि। ४. किसी भाषा के लघुतम ध्वनि-अक्षरो का समूह जो लिखने मे प्रयुक्त होते हो।

लिपिक—पुं० [स० लिपिकर] वह जो किसी कार्यालय मे पत्रों की प्रतिलिपियाँ या साधारण पत्र आदि लिखता हो। मुहर्रिर। लेखक। (क्लर्क)

लिपिकर—पु० [स० लिपि√कृ+ट] १. प्राचीन भारत मे, वह शिल्पी जो शिलाओ आदि पर लेख अंकित करता या उकेरता था। २ दे० 'लिपिक'।

लिपिका—स्त्री० [स० लिपि+कन्+टाप्] लिपि। लिखावट।

लिपिकार—पु० [स० लिपि√कृ+ अण्] लिखनेवाला। लेखक। लिपिक।

लिपि-काल—पु० [सं० ष० त०] किसी ग्रंथ या लेख का वह समय (सन् या सवत्) जब कि वह लिखा गया हो।

लिपि-फलक—पु० [स० ष० त०] काठ, धातु, पत्थर आदि का वह टुकडा या फलक जिस पर कोई लिपि या लेख अंकित किया गया हो।

लिपि-बद्ध—भू० कृ० [स० तृ० त०] [भाव० लिपिबद्धता] १. लिपि या लेख के रूप मे लाया हुआ। लिखित। २. (कथन या बात) जिसकी लिखा-पढी हो चुकी हो।

लिपी—स्त्री० [स० लिपि+ङीष्]=लिपि।

लिप्त—वि० [सं०√लिप्+क्त] १. (पदार्थ) जिस पर लेप हुआ हो। २. (पदार्थ) जिससे लेप किया गया हो। पोता हुआ। ३. जो किसी के साथ इस प्रकार लगा हो कि जल्दी उससे अलग न हो सके। जैसे—भोग में लिप्त होना।

लिप्तक—वि० [सं० लिप्त+कन्] विष में बुझाया हुआ। पुं० विष में बुझाया हुआ। बाण।

लिप्ता—स्त्री० [सं० लिप्त+टाप्] १. ज्योतिष के अनुसार काल का एक मान जो प्रायः एक मिनट के बराबर होता है। २. अंश का साठवाँ भाग।

लिप्तिका—स्त्री०=लिप्ता।

लिप्सा—स्त्री० [सं०√लभ् (प्राप्ति)+सन्, द्वित्व,+अ+टाप्] प्राप्ति की इच्छा। पाने की चाह।

लिप्सित—भू० कृ० [सं०√लभ्+सन्, द्वित्वादि+क्त] चाहा हुआ।

लिप्सु—वि० [सं०√लभ्+सन्, द्वित्व+उ] लिप्सा करने या चाहनेवाला। इच्छुक।

लिफ़ाफ़ा—पुं० [अ०] १. कागज की बनी हुई वह प्रसिद्ध चौकोर थैली जिसके अन्दर चिट्ठी या कागज-पत्र रखकर कहीं भेजे जाते हैं। जैसे—लिफाफे मे बंद करके पत्र डाकखाने मे छोड़ देना। २. किसी प्रकार का ऊपरी आवरण, विशेषतः ऐसा आवरण जो दोष या वास्तविक स्थिति छिपाने के लिए प्रयुक्त होता हो।

मुहा०—लिफाफा खुल जाना=भेद या रहस्य खुल जाना। छिपी हुई बात प्रकट हो जाना।

३. शरीर पर धारण किये जानेवाले अच्छे कपड़े। (बाजारू) ४. झूठी तड़क-भड़क। आडम्बर।

मुहा०—लिफाफा बनाना=झूठा आडम्बर खड़ा करना।

५. जल्दी नष्ट हो जानेवाली और दिखावटी चीज। काजू-भोजू चीज। जैसे—यह खाली लिफाफा ही है। (अर्थात् इसमे तत्त्व या वास्तविकता बहुत कम है।)

लिफ़ाफ़िया—वि० [हिं० लिफाफा] जो ऊपर से देखने भर को अच्छा या भव्य हो, पर अन्दर से थोथा या सारहीन हो।

लिबड़ना—अ० [अनु०] कपड़े, हाथ आदि से किसी गीली चीज का चिपकना या लगना। जैसे—उँगलियो मे आटा या पैरो मे कीचड़ लिबड़ना।

स० लथ-पथ करना। अव्यवस्थित रूप से पोतना या लगाना।

लिबड़ी—स्त्री० [अं० लिवरी] १. कपड़ा-लत्ता। २. छोटा-मोटा सामान।

लिबड़ी-बतान—पुं० [अं० लिवरी+वर्दी+,बटन=सिपाहियों का डबा] घर-गृहस्थी का सामान। (उपेक्षा और तुच्छता का सूचक)

लिबरल—वि० [अं०] उदार नीतिवाला।

पुं०कोई ऐसा राजनीतिक दल जिसके विचार अपेक्षया अधिक उदार हों।

लिबलिबी—स्त्री० [अनु०] १. यंत्रों आदि मे कोई ऐसा खटका जिसे खींचने या दबाने से कोई कमानी निकलती हो या कोई पुरजा चलता हो। २. तमंचे, पिस्तौल, बंदूक आदि में नीचे की तरफ का वह खटका या सिटकिनी जिसे खींचने से घोड़ा गिरता और उसके आगे की गोली निकलकर निशाने की तरफ बढ़ती हो। (ट्रिगर)

लिबास—पुं० [अ०] शरीर पर पहनने के कपड़े। पोशाक।

लियाक़त—स्त्री० [अ०] १. लायक होने की अवस्था या भाव। योग्यता। २. व्यक्तियों में होनेवाला किसी तरह का गुण या योग्यता। ३. शक्ति या सामर्थ्य। ४. व्यवहार आदि की भद्रता। शालीनता।

लिलकना—अ०=ललकना।

लिलाट—पुं०=ललाट।

लिलार—पुं० [सं० ललाट] १. कूएँ का वह सिरा जहाँ मोट का पानी उलटते हैं। २. दे० 'ललाट'।

लिलारी—पुं० [हिं० नील, लील+कार] रँगरेज।

लिलाही—पुं० [देश०] हाथ का बटा हुआ देशी सूत।

लिलोही—वि० [म० लाल=चहकना।] लालची। लोभी।

लिव—स्त्री०=लौ (लगन)।

लिवाना—स० [हिं० लाना का प्रे०] १. आते समय किसी को अपने साथ लेते आना। २ उठा कर कोई चीज किसी के यहाँ ले जाना।

स० [हिं० लेना का प्रे०] १. लेने का काम दूसरे से कराना। ग्रहण कराना। २. थमाना। पकड़ना।

संयो० क्रि०—देना।

लिवाल—पुं०=लेवाल।

लिवैया—पुं० [हिं० लेना] कोई चीज लेने विशेषतः खरीद कर लेनेवाला व्यक्ति।

वि० [हिं० लिवाना] लिवानेवाला।

लिशकना—अ० [अनु०] बहुत तेजी से चमकना। (पश्चिम) जैसे—तलवार लिशकना, बिजली लिशकना। उदा०—वह खंजर इस तरह लिशक रहा था कि मैं आपसे क्या कहूँ।—सआदत हसन मन्टो।

लिशकाना—स० [अनु०] तेज चमक निकालना। खूब चमकाना। (पश्चिम)

लिसना—अ०=लसना। उदा०—ता मधि माथे मे हीरा गुह्यो। सु गई गड़ि केसन की छबि सो लिसि।—देव।

लिसान—स्त्री० [अ०] जीभ। जबान। बोली।

लिसोड़ा—पुं० [हिं० लस=चिपचिपा गूदा] १. मंझोले आकार का एक प्रकार का पेड़ जिसके पत्ते बीड़ियाँ बनाने के काम आते हैं। २. उक्त वृक्ष का फल जो प्रायः छोटे बेर के बराबर होता और खाँसी, दमे आदि रोगों में गुणकारी माना जाता है। लभरा। लिटोरा। लसोड़ा

लिस्ट—स्त्री० [अं०] सूची।

लिह—वि० [स०√लिह् (आस्वादन)+क] चाटनेवाला। (बहुधा समस्त पदो के अन्त मे प्रयुक्त)

लिहना—स०=लिखना।

†स०=लेना।

लिहाज—पुं० [अ० लिहाज] १. व्यवहार या बरताव में किसी बात या व्यक्ति का आदरपूर्वक रखा जानेवाला ध्यान। जैसे—बड़ों का लिहाज करना सीखो। २. किसी बात का किसी रूप में रखा जानेवाला ध्यान। जैसे—(क) इस नुस्खे में खाँसी का भी लिहाज रखा गया है। (ख) मैंने उसकी गरीबी का लिहाज करके उसे छोड़ दिया। ३. शील, संकोच आदि के विचार से रखा जानेवाला ध्यान ? जैसे—

काम-बिगड जाने पर वह किसी का लिहाज न करेगा, सबको निकाल देगा। ३. तरफदारी। पक्षपात। ५ लज्जा। शर्म। हया।

क्रि० प्र०—करना।—रखना।

लिहाजा—अव्य० [अ०] अत। इसलिए।—

लिहाड़ा—वि० [देश०] १. बेहूदा और वाहियात। (व्यक्ति) २ निकम्मा या निरर्थक (पदार्थ)।

लिहाड़ी—स्त्री० [देश०] किसी को बहुतो मे उपहासास्पद सिद्ध करने के लिए किया जानेवाला मजाक।

मुहा०—(किसी की) लिहाड़ी लेना=किसी को तुच्छ या निन्दनीय ठहराते हुए उसका उपहास करना।

लिहाफ—पु० [अ० लिहाफ] जाडे के दिनो मे सोते समय ओढने की रूईदार भारी या मोटी रजाई।

लिहित—वि० [स० लीढ] चाटा हुआ।

लीक—स्त्री० [स० लिख्] १. लबी, पतली रेखा के रूप मे बना हुआ अथवा बनाया हुआ चिह्न। लकीर। जैसे—(क) गिनती या सख्या सूचित करने के लिए खीची जानेवाली लीक। उदा०—भट मंह प्रथम लीक जग जासू।—तुलसी। (ख) कच्ची जमीन पर आने-जानेवाली बैलगाडियो के पहियो के कारण बनी हुई लीक। (ग) खेतो, जगलो आदि मे आदमियो के आने-जाने के कारण पग-डडियो के रूप मे बनी हुई लीक। उदा०—लीक लीक गाड़ी चलै लीकै चलै कपूत।

मुहा०—लीक करना या खींचना=प्राचीन परम्परा के अनुसार किसी प्रकार की प्रतिज्ञा करने अथवा अपने कथन की दृढता या पुष्टि सूचित करने के लिए जमीन पर तर्जनी उँगली आदि से छोटी सीधी रेखा खीचना या बनाना। **लीक पकडना**=आदमियो, गाडियो आदि के आने-जाने से बनी हुई लीक पर चलते हुए कही जाना। जैसे—यही लीक पकडकर सीधे चले जाओ।

२ आचरण या लोक-व्यवहार के क्षेत्र मे, बहुत दिनो से चली आई हुई कोई परम्परा, रीति या विधि जो कुछ प्रसगो मे तो प्रतिष्ठा या मर्यादा की सूचक होती है और कुछ प्रसगो मे त्याज्य तथा निंदनीय भी मानी जाती है। उदा०—(क) नन्द-नदन के नेह-मेह जिन लोक-लीक लोपी।—सूर। (ख) अजहुँ गाव स्रुति चिन्ह कै लीका।—तुलसी।

मुहा०—लीक पीटना=(क) किसी पुरानी चली आई हुई निकम्मी प्रथा या रीति का बिना सोचे-समझे अनुकरण करते चलना। जैसे—अशिक्षित, गँवार आदि अब भी ब्याह-शादी मे वही पुरानी लीक पीटते चलते हैं। (ख) कोई दुर्घटना या हानि हो चुकने के उपरान्त उसके अवशिष्ट चिह्नो आदि पर अपना रोष प्रकट करना। जैसे—साँप तो चला गया, अब लीक पीटने से क्या होगा। **लीक लीक चलना**=पुरानी परिपाटी या प्रथा का पालन करना। उदा०—लीक लीक गाडी चलै लीकै चलै कपूत।

३ किसी काम या बात के सबध मे नियत की हुई मर्यादा। सीमा। हद। ४ दुष्कर्म, दुर्नाम आदि का सूचक चिह्न। कलक की रेखा। लाछन। उदा०—तिहि देखत मेरो पट काढत, लीक लगी तुम काज।—सूर।

क्रि प्र०—लगना।

स्त्री० [देश०] मटियाले रंग की एक चिडिया जो बत्तख से कुछ छोटी होती है।

लीकति—स्त्री० =लीक।

लीख—स्त्री० [स० लिक्षा] जूँ का अंडा।

लीग—स्त्री० [अ०] १ जातियो, देशो राष्ट्रो आदि के योग से बनी हुई ऐसी सभा या सस्था जो सबके सामूहिक कल्याण का ध्यान रखती हो। जैसे—लीग ऑफ नेशन, मुस्लिम लीग आदि। २. भारतीय राजनीति मे, मुस्लिम लीग जिसके आंदोलन से भारत का बँटवारा और पाकिस्तान की स्थापना हुई थी। ३ दूरी की एक नाप जो स्थल मे प्राय. तीन मील और समुद्र मे प्राय साढे तीन मील लबी होती है।

लीग ऑफ नेशन्स—स्त्री० दे० 'राष्ट्र-सघ'।

लीगी—वि० [अ० लीग] १. किसी लीग का सदस्य। २. भारतीय राजनीति मे मुसलिम लीग का अनुयायी या सदस्य।

लीचड़—वि० [देश०] १ जो कोई काम जल्दी-जल्दी तथा ठीक समय पर न कर सकता हो। सुस्त। काहिल। २. निकम्मा। फालतू। ३ जल्दी पीछा न छोडनेवाला। ४. लेन-देन के व्यवहार के विचार से बहुत ही तुच्छ प्रकृति का।

लीची—स्त्री० [चीनी ली-चू] १ एक सदा बहार बडा पेड। २. इस पेड का फल जो खाने मे बहुत मीठा होता है। फल के छिलके के ऊपर कटावदार-दाने और अन्दर गूदे के सिवा मोटी गुठली होती है।

लीझा—वि० [देश०] [स्त्री० लीझी] १ नीरस। निस्सार। २ व्यर्थ का। निकम्मा। फालतू।

लीझी—स्त्री० [देश०] १ शरीर पर लगाये हुए उबटन को हथेली से रगडने पर छूटनेवाली मैल की बत्ती। २ सीठी। फोक।

लीडर—पु० [अ०]=नेता।

लीडरी—स्त्री० [अ० लीडर से] नेतृत्व। (परिहास और व्यग्य।)

लीढ—भू० कृ० [स०√लिह् (आस्वादन)+क्त] चाटा या खाया हुआ। चखा हुआ। आस्वादित।

लीतड़ा—पु० [हिं० चिथडा] फटा हुआ पुराना जूता।

लीथो—पु० [अ०] चित्रो, पुस्तको आदि की छपाई का वह प्रकार जिसमे छापी जानेवाली चीज, चित्र या लेख पहले हाथ से कागज पर अकित करते या लिखते हैं और तब उसकी प्रतिकृति एक विशेष प्रकार के पत्थर पर उतार कर छापते हैं। पत्थर का छापा।

लीथोग्राफ—पु० [अं०] लीथो की छपाई।

लीद—स्त्री० [कश्मीरी लेद] ऊँट, गधे, घोडे, हाथी आदि पशुओं का मल।

लीन—वि० [स०√ली (लय)+क्त, त—न.] [भाव० लीनता] १. जिसका लय हो चुका हो। जो किसी मे समा गया हो। २. जो किसी काम मे इस प्रकार लगा हुआ हो कि उसे और कामों या बातों का ध्यान या चिन्ता न रहे। ३ अधिकार या सुभीता जो नियत अवधि तक उपयोग मे न आने के कारण हाथ से निकल गया हो। (लैप्स्ड)

लीनता—स्त्री० [स० लीन+तल्+टाप्] १. लीन होने की अवस्था या भाव। २ जैनो में, वह अवस्था जब वे उदासीनतापूर्वक रहते हैं।

लीनो टाइप मशीन—स्त्री० [अं०] छापे के अक्षर बैठाने का एक प्रकार का यन्त्र।

लीन्हें—अव्य० [हिं० लीन्ह=लिया] १. लिए। वास्ते। २. चक्कर या फेर में पड़कर। उदा०—कंचन मनि तजि काँचहिं सैंतत या माया के लीन्हें।—सूर।

लीपना—स० [सं० लेपन] १. किसी चीज पर गाढ़े या पतले तरल पदार्थ का लेप करना। जैसे—जमीन पर गोबर लीपना। २. लिखे हुए गीले अक्षरों की स्याही को कागज, पट्टी आदि पर इस प्रकार फैलाना कि वह गंदी हो जाय। ३. चौपट या बरबाद करना।

मुहा०—लीप-पोत कर बराबर करना=पूरी तरह से चौपट या नष्ट करना।

लीपा-पोती—स्त्री० [हिं०] १. गोबर आदि से जमीन, दीवार आदि लीपने या पोतने की क्रिया या भाव। २. किसी के कुकर्म या दुष्कर्म के लिए उसे दण्ड न देकर ऐसी कार्रवाई करना कि वह दण्ड का भागी ही न रह जाय। ३. करा-धरा काम चौपट या नष्ट करना।

लीबर—वि० [?] १. मैल, कीचड़ आदि से भरा हुआ।

पुं० १. गंदगी। मैलापन। २. कीचड़। ३ आँखों का कीचड़।

लीम—पु० [देश०] १. एक प्रकार का पेड़ जिसमें से तारपीन या अलकतरा निकलता हो। २. एक प्रकार का पक्षी।

लीर—स्त्री० [?] १. किसी कपड़े में से निकाली हुई पट्टी या धज्जी। २ फटे हुए या रद्दी कपड़े का छोटा टुकड़ा। ३. चिथड़ा

लील—पु० [सं० नील] १ नील। २. नीले रंग का घोड़ा।

वि० नीला।

विशेष—'लील' के यौ० के लिए दे० 'नील' के यौ०।

पुं० [हिं० लीलना] लीलने की क्रिया या भाव।

लीलक—पु० [हिं० लील] वह हरा चमड़ा जो देशी जूतों की नोक पर लगाया जाता है।

वि० नीला।

लीलना—स० [सं० गिलन या लीन] १. निगलना। २. किसी की सम्पत्ति आदि पूरी तरह से हड़प कर जाना।

संयो० क्रि०—जाना।—लेना।

लीलमा—पु०=नीलम।

लीलया—क्रि० वि० [सं० लील शब्द का तृतीयान्त रूप] १. लीला के रूप मे। २. खेल या खेलवाड के रूप में। ३. बिना किसी परिश्रम के। बहुत ही सहज में। अनायास।

लीलहिं—क्रि० वि०=लीलया। उदा०—लीलहिं नाघउँ जलनिधि खारा।—तुलसी।

लीला—स्त्री० [सं०√ली (लय)+क्विप्, ली√ला (आदान)+क+टाप्] १. कोई ऐसा काम या व्यवहार जो चित्त की उमंग से केवल मनोरंजन के लिए किया जाय। केलि। क्रीड़ा। खेल। जैसे—बाल-लीला। २. लड़कों का खेलवाड़। ३. लड़कों के खेलवाड़ की तरह का बहुत ही साधारण या सुगम काम। ४. किसी प्रकार के विलास की इच्छा और उसके फल-स्वरूप किये जानेवाला अनेक प्रकार के आचरण, कार्य या व्यवहार। जैसे—यह सब ईश्वर की लीला है।

विशेष—दार्शनिक क्षेत्रों में माना जाता है कि लीला ऐसी वृत्ति या व्यापार है जिसका आनन्द-प्राप्ति के सिवा और कोई अभिप्राय या उद्देश्य नहीं होता। इसीलिए कहते हैं—सृष्टि और प्रलय सब ईश्वर की लीला ही है। अवतार धारण करने पर इस लोक मे आकर भगवान जो कृत्य करते हैं, उन सब की गिनती भी भक्ति-मार्ग में लीलाओं में ही होती है।

५. लोक-व्यवहार में वे सब कृत्य जो भगवान के किसी अवतार के कार्यों के अनुकरण पर अभिनय या नाटक के रूप में लोगों को दिखाये जाते हैं। जैसे—कृष्ण-लीला, राम-लीला आदि। ६. उक्त प्रकार के अभिनय का कोई ऐसा अंग या अंश जो इकाई के रूप में अभिनीत होता है। जैसे—गो-चरण लीला, चीर हरण लीला, धनुष-यज्ञ लीला आदि। ७. शृंगारिक क्षेत्र मे नायिकाओं का एक हाव जिसमे वे मधुर आंगिक चेष्टाओं के द्वारा नायक की बात-चीत, वेष-भूषा आदि का अनुकरण या नकल करती हैं। जैसे—(क) गोपी का कृष्ण-वेष धारण करके वंशी बजाना। (ख) पत्नी का अपने पति के वेष में कुरसी पर बैठना आदि।

विशेष—साहित्य शास्त्र मे इसकी गिनती नायिका के दस स्वभावज अलंकारो में की गई है।

८. कोई अद्भुत या रहस्यपूर्ण काम या व्यापार। उदा०—छाया-पथ में तारक द्युति सी मिल मिल की मृदु लीला।—प्रसाद। ९ कोई ऐसा काम, चीज या बात जो वास्तविक के अनुकरण पर केवल मनोविनोद के लिए बना हो या होता है। (यौ० के आरम्भ मे) जैसे—लीलाकलह, लीलाभरण लीलालघु। (दे०) १०. बारह मात्राओं का एक प्रकार का छंद जिसके अंत मे एक जगण होता है। ११. एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे भगण, नगण और एक गुरु होता है। १२. चौबीस मात्राओं का एक प्रकार का छंद जिसमे ७+७+७+३ के विराम से २४ मात्राएँ और अंत मे सगण होता है। १३. विशेषक नामक छंद का दूसरा नाम।

†वि० [स्त्री० लीली]=नीला।

†पुं० नीले या काले रंग का घोड़ा।

लीला-कलह—पु० [स० ष० त०] वह कलह या लड़ाई-झगड़ा जो वास्तविक न हो बल्कि केवल दूसरो को दिखाने के लिए या बनावटी हो। जैसे—चाणक्य ने एक बार चन्द्रगुप्त के साथ लीला-कलह का आयोजन किया था।

लीला-पुरुषोत्तम—पु० [स० मध्य० स०] श्रीकृष्ण।

लीला-भरण—पु० [सं० लीला-आभरण, ष० स०] केवल क्रीडा या मनो-विनोद के लिए बनाया हुआ किसी चीज का आभूषण। जैसे—फूलों का कंगन, फूलों की टोपी या मुकुट।

लीलामय—वि० [सं० लीला+मयट्] क्रीडा से भरा हुआ। क्रीड़ा-युक्त। जैसे—लीला-मय भगवान।

लीलायुध—पु० [सं० लीला+आयुध, ष० त०] ऐसा आयुध जो वास्त-विक न हो, बल्कि खेल या खिलवाड़ के लिए हो।

लीलावतार—पु० सं० लीला-अवतार, ष० त०] भगवान के वे सब अवतार जो इस पृथ्वी पर अब तक हुए हैं, और जिनमे उन्होने अनेक प्रकार की लीलाएँ की हैं। इनकी संख्या २४ मानी जाती है।

लीलावती—स्त्री० [सं० लीला+मतुप्+ङीप्] १. लीला या क्रीडा करनेवाली। विलासवती। २ प्रसिद्ध ज्योतिर्विद् भास्कराचार्य की पत्नी का नाम जिसने लीलावती नाम की गणित की एक पुस्तक बनाई थी। पीछे भास्कराचार्य ने भी इस नाम की एक पुस्तक बनाई थी। ३. संपूर्ण जाति की एक रागिनी। (संगीत) ४. ३२ मात्राओं का एक प्रकार का छंद, जिसमें लघु-गुरु का विचार नहीं होता।

लीलावान् (वत्)—वि० [सं० लीला+मतुप्] १ क्रीडाशील। २. बहुत ही रमणीय तथा सुन्दर।

लीला-स्थल—पु०[सं० ष० त०] लीला या क्रीड़ा करने का स्थान।

लीलैव—क्रि० वि० [सं० लीला-एव] लीला करते हुए अर्थात् खेलवाड़ में ही। बहुत सहज रूप में। उदा०—लीलैव हर को धनु साँध्यो। —केशव।

लीलोद्यान—पु० [सं० लीला-उद्यान, च० त०] १. वह उद्यान या स्थान जहाँ रासलीला होती हो। २. क्रीडा-क्षेत्र।

लीवर—पु० [अं०] १ यन्त्रों मे लगा हुआ कोई ऐसा खटका जिसके आघात से कोई पुरजा चलता हो अथवा किसी प्रकार की कोई और क्रिया होती हो। २ पेट के अन्दर का तिल्ली या यकृत् नामक अंग। **मुहा०—लीवर होना या बढ़ना**=यकृत मे सूजन आना जो रोग माना जाता है।

लीह—स्त्री० [हिं० लीक] १. रेखा। लकीर। २ चिह्न, निशान। ३. लकीर की तरह का बना हुआ छोटा पतला और लम्बा रास्ता लीक।

लुंगा—पु० [देश०] पंजाब में धान रोपने की एक रीति। माय। †पु०=लुँगाड़ा (लुच्चा)।

लुंगाड़ा—पुं० [देश०] १. लुच्चा। २. आवारा और बदचलन।

लुंगी—स्त्री० [हिं० लँगोट या लाँग] १. टखनों तक लटकती हुई कमर मे बाँधी जानेवाली डाई गज लंबी छोटी धोती या बड़ा अँगोछा। तहमत। २ कपड़े का टुकड़ा जो हजामत बनाते समय नाई इसलिए पैर पर आगे डाल देता है जिसमे बाल उसी पर गिरे। ३. खारुआ नामक लाल कपड़ा।

स्त्री० [?] मोर की तरह का एक पहाड़ी पक्षी।

लुंचन—पुं० [सं०√लुंच् (उखाड़ना)+ल्युट्—अन] १ चुटकी से पकड़ कर झटके के साथ उखाड़ना। नोचना। उत्पटान। जैसे—केश-लुचन। २ जैन यतियों की एक क्रिया जिसमे उनके सिर के बाल चुटकी से पकड़कर नोचे जाते है। ३ काटना। तराशना।

लुंचित—भू० कृ०[सं०√लुच+क्त] नोचा, उखाड़ा, काटा या छीला हुआ

लुंचित-केश—पु० [सं० ब० स०] जैन यति या साधु जिसके सिर के बाल नोच लिये गये होते हैं।

वि० जिसके सिर के बाल नोचे हुए हो।

लुंज—वि० [सं० लुचन=काटना, उखाड़ना] १. बिना हाथ पैर का। लँगड़ा। लूला। २. लाक्षणिक अर्थ मे ऐसा व्यक्ति जो कोई काम-धाम न करता हो बल्कि यों ही बैठा रहता हो। ३ (वृक्ष) जिसके पत्ते, डालियाँ आदि काट ली गई हो।

लुंजा—वि०=लुंज।

लुंठक—पु० [सं०√लुट् (स्तेय)+ण्वुल्—अक] लुटेरा।

लुंठन—पु० [सं०√लुठ्+ल्युट—अन] १ लूटना। २ लुढ़कना। वि०=लुठित।

लुंठा—स्त्री० [सं०√लुठ्+अ+टाप्]=लुठन (लूट)।

लुंठित—वि० [सं०√लुठ्+क्त] १. लूटा या चुराया हुआ (माल)। २. लूटा हुआ (व्यक्ति)। ३. लुढ़का हुआ।

लुंठी—स्त्री० [सं०√लुठ्+इन्+ङीप्] गधे या घोड़े का जमीन पर लेटना।

लुंड—पुं० [सं०√लुड् (स्तेय)+अच्] चोर। †पुं०=रुंड।

लुंड-मुंड—वि० [सं० रुंड+मुंड] १ जिसका सिर, हाथ, पैर आदि कटे हों, केवल धड़ का लोथड़ा रह गया हो। २. जिसके हाथ-पैर कटे हों। लँगड़ा या लूला। ३. जिसके आवश्यक या उपयोगी अंग कट गये हो। ४ गठरी आदि की तरह गोल-मोल किया हुआ।

लुंडा—वि० [सं० रुंड] [स्त्री० अल्पा० लुंडी] १ जिसकी पूँछ पर बाल न हो (बैल)। २ जिसके पर और पूँछ के बाल कट कर या झड़ गये हों। (पक्षी)

पु० [हिं० लुंडी] बड़ा लुंडा या गोला।

लुंडिका—स्त्री० [सं०√लुड+इन्+कन्+टाप्] गोल पिंड। लुंडी।

लुंडियाना—स० [हिं० लुंडी] सूत, रस्सी आदि को लुंडी या गोले के रूप मे लपेटना। लुंडी के रूप मे लाना।

लुंडी—स्त्री० [सं० लुडिका] लपेटे हुए सूत की गोलाकार पिंडी।

लुंबिनी—स्त्री० [सं०] कपिलवस्तु के पास का एक वन या उपवन जहाँ गौतम बुद्ध का जन्म हुआ था।

लुआठा—पु० [सं० लोक=चमकना, प्रज्वलित होना+काष्ठ] [स्त्री० अल्पा० लुआठी] वह लंबी पतली लकड़ी जिसका एक सिरा जल रहा हो।

लुआब—पु० [अ०] चिपचिपा अंश। लासायुक्त अंश।

लुआर—स्त्री०=लू।

लुकंजन†—पु०=लोपांजन

लुकवर—वि० [हिं० लुकना] १ (वह) जो लुक छिप जाता हो। २ फलत सामना या मुकाबला न करने वाला। भग्गू।

लुक—पु० [सं० लोक=चमकना] १. वह लेप जिसे फेरने से वस्तुओं पर चमक आ जाती है। चमकदार रोगन। वार्निश।

क्रि० प्र०—फेरना।

२. आग की लपक। ज्वाला। लौ।

लुकना—अ० [सं० लुक=लोप] ऐसी जगह जाकर रहना, जहाँ कोई देख न सके। आड़ में होना। छिपना।

सयो० क्रि०—जाना।—रहना।

पद—लुक-छिपकर=ऐसे प्रकार से या रूप में जिसमे लोग देख न सकें। चोरी से।

लुकमा—पु० [अ० लुक्मा] भोजन का उतना अंश जितना एक बार मुँह मे डाला या लिया जाय। कौर। ग्रास। निवाला।

लुकमान—पुं० [अ०] कुरान में वर्णित एक हकीम जो अपनी बुद्धिमत्ता के लिए प्रसिद्ध हैं।

लुकरी—स्त्री०=लुकारी।

लुकसाज—पुं० [हिं० लुक=चमकीला+फा० साज] १. वह जो लुक अर्थात् चमकदार लेप बनाता या लगाता हो। २. एक प्रकार का चमड़ा जो सिझाया और चमकीला किया हुआ होता है।

लुका-छिपी—स्त्री० [हिं० लुकना+छिपना] १. लुकने-छिपने की क्रिया या भाव। २. लुकने-छिपने का बच्चों का एक खेल।

लुकाठ—पु० [चीनी लु:+क्यू से स० लकुट] १. एक प्रकार का पेड़ जिसके फल आमड़े के बराबर और खाने में खट्टे-मीठे होते हैं। २. उक्त फल।

लुकाना—स० [हिं० लुकना] [भाव० लुकाव] लुकने में प्रवृत्त करना। छिपाना।

†अ०=लुकना।

लुकारी—स्त्री० [हिं० लुक] १. फूस का पूला या लकड़ी जिसका एक छोर जलता हो। मशाल की तरह जलती हुई लकड़ी। २. अग्नि। आग।

लुकाव—पु० [हिं० लुकाना] लुकाने की क्रिया या भाव।

लुकेठा—पु०=लुआठा।

लुकोना—स०=लुकाना।

लुक्का—पु०=लुक।

लुक्का—पु० [हिं० लुकना] लुक छिपकर दुष्कर्म करनेवाला या दुष्ट व्यक्ति। उदा०—हमने न मालूम तुम सरीखे कितने लुक्कों को तो चुटकी से ही मसल दिया है।—वृन्दावनलाल वर्मा।

लुखिया—स्त्री० [?] १. धूर्त औरत। २. पुंश्चली। ३ वेश्या। ४. कुलटा।

लुगड़ा—पु० [स्त्री० अल्पा० लुगडी]=लूगा (कपडा)।

लुगड़ी—स्त्री० [देश०] पीठ पीछे की जानेवाली निंदा। चुगली।

स्त्री० हिं० 'लुगाड़ा' का स्त्री०।

लुगत—स्त्री० [अ०] १. भाषा। जबान। २. ऐसा शब्द जिसका अर्थ स्पष्ट या प्रसिद्ध न हो। ३. शब्द कोश। अभिधान।

लुगदा—पुं० [देश०] [स्त्री० अल्पा० लुगदी] गीले चूर्ण का पिंड या लौंद।

लुगरा—पु०=लुग्गा (कपड़ा)।

लुगवी—वि० [अ०] १. लुगत-सम्बन्धी। शब्दकोश का। २. शब्द कोशों मे आया हुआ। कोश-गत। ३ (शब्द का अर्थ) जो मूल वास्तविक या व्युत्पत्तिक हो।

लुगाई—स्त्री० [हिं० लोग का स्त्री०]=औरत।

लुगात—स्त्री० [अ० लुगत का बहु०] शब्दों और उनके अर्थों का संग्रह। शब्द-कोश।

लुगी—स्त्री० [हिं० लूगा] १. छोटा कपड़ा। २. फटा पुराना कपड़ा। ३. लहँगे आदि का चौड़ा किनारा।

लुग्गा—पुं० दे० 'लूगा'।

लुचकना—अ०=लुड़कना।

लुचकना—स० [सं० लुंचन] झटके के साथ छीनना। सं० क्रि०—लेना।

लुचरी—स्त्री०=लुच्ची (मैदे की पूरी)।

लुचवाना—स०=नोचवाना।

लुचुई—स्त्री०=लुच्ची (मैदे की पूरी)।

लुच्चा—वि० [स० लुंचा, हिं० लुचकना] [स्त्री० लुच्ची] १. दूसरे के हाथ से वस्तु लुचककर भागनेवाला। चाई। २. कमीना, दुष्ट और पाजी। ३. दुराचारी। लफंगा। शोहदा।

लुच्ची—स्त्री० [?] मैदे की बनी हुई एक प्रकार की बहुत बड़ी तथा पतली पूरी।

वि० हिं० 'लुच्चा' का स्त्री० रूप।

लुज्जा—पुं० [देश०] समुद्र में का गहरा स्थल। (लश०)

लुटत—स्त्री०=लूट।

लुटकना—अ० [हिं० लुड़कना] १. लुढ़कना। २. मारा मारा फिरना। ३. इधर-उधर फेंका-पटका रहना।

लुटना—अ० [सं० लुट्=लुटना] १. (व्यक्ति या वस्तु का) लूट लिया जाना।

मुहा०—घर लुटना=घर की सब सामग्री का लूटा जाना या औरो के द्वारा अपहृत होना।

२. कोई अत्यन्त प्रिय और बहुमूल्य वस्तु छिन या हाथ से निकल जाना।

लुटपुटना—अ०=लटपटाना।

लुटरना—अ० [हिं० लोटना] १. लोटना। २. लुढ़कना। ३. बिखर कर इधर-उधर गिरना। छिटकना। छितराना।

लुटरा—वि० [स्त्री० लुटरी] घुंघराला। उदा०—लुटरी, खुली अलक, रज धूसर बाँहे आकर लिपट गईं।—प्रसाद।

लुटाना—स० [हिं० लूटना का प्रे०] १. किसी को ऐसी स्थिति मे लाना कि वह लूटा जाय। २. अपनी चीज या माल इस प्रकार दूसरो के सामने करना या रखना कि वे मनमाने रूप से उस पर अधिकार कर सकें। जैसे—उन्होंने लाखों रुपए यो ही लुटा दिए। ३. बरबाद करना। व्यर्थ में फेंकना या व्यय करना। ४. बहुत ही थोड़े या नाम मात्र के मूल्य पर औरो को अपनी चीजें देना। सस्ते भाव से बेचना। ५. खुलकर बाँटना या दान करना।

लुटावना—स०=लुटाना।

लुटिया—स्त्री० [हिं० लोटा का स्त्री० अल्पा०] छोटा लोटा।

मुहा०—लुटिया डूबना=सारा काम नष्ट होना या बुरी तरह से बिगड़ जाना।

लुटेरा—पुं० [हिं० लूटना+एरा (प्रत्य०)] १. वह जो दूसरों की धन-संपत्ति लूटकर अपनी जीविका चलाता हो। डाकू। २. वह दूकानदार जो बहुत महँगा सौदा देता हो या डंडी मारता हो।

लुट्टस—स्त्री०=लूट।

लुठन—पु० [स०]=लुंठन।

लुठना—अ० १. =लुढ़ना। २. =लोटना।

लुठाना—स० १. =लुढकाना। २. =लोटना।

लुड़कना—अ०=लुढ़कना।

लुड़काना—स०=लुढ़कना।

लुड़की—स्त्री०=लुटकी।

लुड़खुड़ाना—अ०=लड़खड़ाना।

लुढ़कना—अ० [सं० लुंठन, हिं० लुढ़ना+क] १. सीधे खड़े न रहकर जमीन पर गिरते हुए इस प्रकार किसी ओर इधर-उधर होते हुए बढ़ना कि कभी कोई अंग नीचे हो और कभी कोई अंग ऊपर। ढुलकना। जैसे—(क) जमीन पर रखा हुआ लोटा लुढ़कना। (ख) पहाड़ी पर से आदमी या पत्थर का लुढ़ककर नीचे आना।
संयो० क्रि०—जाना।—पड़ना।
२. किसी ओर या पर झुकना। आकृष्ट होना। ३. मर जाना। जैसे—इस बार हैजे मे सैकड़ो आदमी लुढ़क गये। ३. धन का व्यर्थ व्यय होना। जैसे—जरा सी बीमारी मे सैकड़ो रुपये लुढ़क गये।
संयो० क्रि०—जाना।

लुढ़काना—स० [हिं० लुढ़कना का स०] किसी को लुढ़कने मे प्रवृत्त करना। ऐसा काम करना जिससे कुछ या कोई लुढ़के।
संयो० क्रि०—देना।

लुढ़की—स्त्री० [हिं० लुढ़कना] बहुत गाढ़े दही मे घोरी हुई भाँग।
†स्त्री०=लुरकी।

लुढ़ना—अ०=लुढ़कना।

लुढ़ाना—स०=लुढ़काना।

लुढ़ियाना—स० १.=लुडियाना। २. =लुढ़काना।

लुतरा—वि० [देश०] [स्त्री० लुतरी] १ इधर की बात उधर लगानेवाला। २. चुगलखोर। ३. दुष्ट। पाजी।

लुत्ती—स्त्री०=लूती (लुआठी)।

लुत्थ—स्त्री०=लोथ।

लुत्फ़—पुं० [अ०] १. अनुग्रह। कृपा। दया। २. किसी काम या बात से मिलनेवाला आनन्द या सुख। मजा।
क्रि० प्र०—आना।—मिलना।
मुहा०—लुत्फ़ उठाना=आनन्द या मजा लेना।
२. किसी चीज या बात मे होनेवाला कोई विशिष्ट और सुखद गुण। खास खूबी।

लुनना—स० [स० लवन=काटना, लून=कटा हुआ,+ना] १. पकी खड़ी फसल की कटाई करना। लुनाई करना। २. चुनना। ३. काटकर या और किसी प्रकार अलग या दूर करना। हटाना। ४. नष्ट या बरबाद करना। उदा०—दीपक हजारन अँध्यार लुनियतु है।—देव।

लुनाई—स्त्री० [हिं० लुनना] लुनने की क्रिया, भाव या मजदूरी।
[हिं० लोन=नोन] नमकीन। लावण्य।

लुनेरा—पुं० [हिं० लुनना] खेत की फसल काटने या लुननेवाला मजदूर।
†पुं०=नोनिया (जाति)।

लुपड़ी—स्त्री०=लुगाड़ी।

लुपना—अ० [सं० लुप] १. लुप्त या गायब होना। छिपना। लुकना।

लुप्त—भू० कृ० [सं०√लुप् (छेदन)+क्त] १. जो अन्तर्हित हो गया हो या छिप गया हो। गायब। २. जो न रह गया हो। जिसका लोप हो गया हो।
पुं० चोरी का धन या माल।

लुप्त मास—पु० [सं०] हिंदू पंचांग की चांद्र गणना में वह मास जिसका सर्वथा लोप होता है और जिसका नाम ही पंचांग में नहीं आने पाता। क्षय मास से भिन्न।
विशेष—ऐसा मास बहुत कम और बहुत दिनों पर होता है।

लुप्ताकार—पु० [स० लुप्त-आकार, कर्म० स०] संस्कृत वर्णमाला का एक चिह्न जो आधे अ का सूचक होता है। इसका रूप यह है—ऽ।

लुप्तोपमा—स्त्री० [स० लुप्ता-उपमा कर्म० स०] उपमा अलंकार का वह प्रकार या भेद जिसमे उपमेय, उपमान, धर्म और उपमावाचक शब्द मे से कोई एक नहीं होता।

लुबधना—अ० [स० लुब्ध] लुब्ध होना।

लुबुध—वि०=लुब्ध।
पु०=लुब्धक (बहेलिया या शिकारी)।

लुबुधना—अ० [हिं० लुबुध+ना (प्रत्य०)] लुब्ध होना।

लुब्ध—वि० [सं०√लुभ् (लोभ करना)+क्त] १. किसी प्रकार के लोभ मे आया या पड़ा हुआ। २ जो किसी पर विशेष रूप से आसक्त हुआ हो। ३. मन मे किसी चीज या बात का बहुत लोभ या वासना रखनेवाला। जैसे—धन-लुब्ध। रूप-लुब्ध।

लुब्धक—पु० [स० लुब्ध+कन्] १. व्याध। बहेलिया। २. शिकारी। २. उत्तरी गोलार्द्ध का एक बहुत चमकीला तारा। (आधुनिक)

लुब्धना—अ०=लुबुधना। (लुब्ध होना)।

लुब्धापति—स्त्री० [सं० ष० त०] केशव के अनुसार प्रौढ़ा नायिका का भेद। ऐसी प्रौढ़ा नायिका जो पति और कुल के सब लोगों से लज्जा करे।

लुब्ब—पु० [अ०] १ सारभाग। २ गूदा।

लुब्ब-लुबाब—पु० [अ०] १ गूदा। सार। २ सारभाग। सारांश।

लुभाना—अ० [हिं० लोभ+आना (प्रत्य०)] १. कुछ या किसी को पाने के लिए लोभ से युक्त होना। लालच या लालसा मे पड़ना। २. उक्त अवस्था के कारण तन-मन की सुध भूलना। मोह मे पड़ना। ३. किसी पर आसक्त या मोहित होना।
सयो० क्रि०—जाना।
स० १. अपने गुण, रूप आदि के कारण किसी के मन में लोभ या लालसा उत्पन्न करना। २. किसी के मन मे लोभ या लालसा उत्पन्न कराना। २ किसी के मन मे अपने प्रति अनुराग, आसक्ति या प्राप्ति की कामना उत्पन्न करना और फलत: ऐसी दशा मे लाना कि वह सुध-बुध भूल जाय। मोह से युक्त करना।
सयो० क्रि०—लेना।

लुभावना—वि० [हिं० लुभाना] [स्त्री० लुभावनी] मन को मोहित या लुब्ध करनेवाला। मनोहर। सुन्दर।
अ०, स०=लुभाना।

लुभित—भू० कृ० [सं०√लुभ्+क्त] १. लोभ में आया या पड़ा हुआ। २ मुग्ध। ३. घबराया हुआ।

लुभौहाँ—वि० [हिं० लुभाना+औहाँ (प्रत्य०)] १ प्राय: लुब्ध होनेवाला। २ दे० 'लुभावना'।

लुर—पु० [?] १. ईरानी नसल की एक पहाड़ी जाति जो अपने

उजड्डपन के लिए प्रसिद्ध है। २. भुअर।
वि० बहुत बड़ा उजड्ड या मूर्ख।

लुरकना†—अ० १.=लुड़कना। २.=लटकना।

लुरका—पुं० [हिं० लुरकना=लरकना] झुमका (कान का गहना)।

लुरकी—स्त्री०—लुढ़की।
स्त्री० [हिं० लुरकना] कान में पहनने की बाली। मुरकी।

लुरना—अ० [सं० लुलनी=झूलना] १. ऊपर से तनी चली आई हुई वस्तु का इधर-उधर हिलना-डुलना। लरकना। झूलना। लहरना। २. झुका या ढलक पड़ना। ३. अचानक आ पड़ना या आ पहुँचना। ४. प्रवृत्त होना। ५. मुग्ध या मोहित होना।
संयो० क्रि०—पड़ना।

लुरियाना—अ० [हिं० लुरना] १. प्रेम-पूर्वक स्पर्श करना। २. थपथपाना।

लुरी—स्त्री० [हिं० लेरुआ=बछड़ा] ऐसी गाय जिसे ब्याये कुछ ही दिन हुए हो।

लुलन—पुं० [सं०√लुल् (विमर्दन)+ल्युट्] [वि० लुलित] हिलना-डोलना। झूलना।

लुलना—अ० [सं० लुलन] १. हिलना-डुलना। २. झूलना। ३. लहराना।

लुलित—भू० कृ० [सं०√लुल् (हिलना)+क्त] १. लटकता या झूलता हुआ। आंदोलित। २. अशांत। ३. बिखरा हुआ। ४. दबाया हुआ। ५. ध्वस्त। ६. सुन्दर।

लुलुआना—अ० [अनु० लूल्लू से] लूलू कह करके किसी का उपहास करना।

लुवार—स्त्री०=लुआर (लू)।

लुहंगी—स्त्री०=लोहाँगी।

लुहना—अ० [सं० लुभन] लुब्ध या मोहित होना।

लुहनी—पुं० [देश०] अगहन में होनेवाला एक प्रकार का धान।

लुहाँगी—स्त्री०=लोहाँगी।

लुहार—पुं०=लोहार।

लुहारा—पुं० [हिं० लोहार] १. वह स्थान जहाँ बैठकर लोहार काम करते हो। २. लोहारों की बस्ती या महल्ला।

लुहारिन—स्त्री० [हिं० लुहार] लुहार या लोहार जाति की स्त्री।

लुहारी—स्त्री० [हिं० लुहार+ई (प्रत्य०)] १. लुहार का काम या पेशा। लोहे की चीज बनाने का काम। २. लोहार जाति की स्त्री। लोहारिन।

लुहुर—स्त्री० [सं० लघु, हिं० लहुरा] छोटे कानोंवाली भेड़।

लूँबरी—स्त्री०=लोमड़ी।

लू—स्त्री० [सं० लूक, हिं० लौ] ग्रीष्म ऋतु में चलनेवाली बहुत गरम हवा।
क्रि० प्र०—मारना।—लगना।
२. उक्त का वह कुप्रभाव जिसमें व्यक्ति ज्वर से पीड़ित होता तथा जलन से छटपटाने या तड़पने लगता है।

लूक—स्त्री० [सं० लुक=जलन] १. अग्नि की ज्वाला। आग की लपट। २. जलती हुई लकड़ी। लुत्ती। ३. दे० 'लू'।
स्त्री० [सं० उल्का] आकाश से छूटकर गिरनेवाला तारा।

लूकना—स० [हिं० लूक+ना (प्रत्य०)] आग लगाना। जलाना।
†अ०=लुकना (छिपना)।

लूका—पुं० [सं० लुक=जलना] [स्त्री० अल्पा० लूकी] १. आग की लौ या लपट। २. लुआठी। लुत्ती।
मुहा०—(किसी के मुँह में) लूका लगाना=तुच्छ समझकर दूर हटाना। मुँह फूँकना। (स्त्रियों की गाली)

लूकी—स्त्री० [हिं० लूका] १. आग की चिनगारी। स्फुलिंग। २. दे० 'लूका'।

लूख—वि०=रूक्ष (रूखा)।

लूखा†—वि० [स्त्री० लूखी]=रूखा।

लूगड़—पुं० [हिं० लूगा] १. वस्त्र। कपड़ा। २. चादर।

लूगा—पुं० [सं० लत्तक] १. कपड़ा। वस्त्र। २. विशेषतः फटा-पुराना कपड़ा। ३. धोती।

लूघा—पुं० [देश०] वह व्यक्ति जो ठगों के साथ रहकर उन लोगो की लाशें गाड़ने के लिए गड्ढे खोदता था, जिन्हें ठग लोग मार डालते थे।

लूट—स्त्री० [हिं० लूटना] १. लूटने की क्रिया या भाव। २. किसी को डरा-धमका कर या मार-पीटकर जबरदस्ती उसकी चीजें छीन लेना।
पद—लूट-खसोट, लूट-पाट, लूट-मार। (दे०)
३. आज-कल किसी की विवशता से लाभ उठाकर अनुचित रूप से अपना आर्थिक लाभ करना। जैसे—यहाँ के दुकानदारो ने तो लूट मचा रखी है।
क्रि० प्र०—पड़ना।—मचना।—मचाना।
४. किसी को लूटने से मिलनेवाला धन या सम्पत्ति।

लूटक†—पुं०=लुटेरा।

लूट-खसोट,—स्त्री० [हिं०] बहुत से लोगो का किसी की चीजें लूट या छीन लेना।
क्रि० प्र०—मचना।

लूटना—स० [सं० लुट्=लूटना] १. बलात् अथवा डरा-धमका कर किसी की धन-सम्पत्ति उससे ले लेना या छीन लेना। जैसे—लुटेरो ने राह चलते मुसाफिरो को लूट लिया। २. किसी के घर, मकान, दूकान आदि मे अनधिकार प्रवेश कर उसमे रखा हुआ सामान उठा ले जाना। जैसे—उपद्रवियों का सारा बाजार लूटना। ३. फेंकी, लुटाई अथवा किसी के अधिकार या बधन से निकली हुई वस्तु को हस्तगत करना। जैसे—(क) गुड्डी या पतंग लूटना। (ख) पैसे लूटना। ४. अन्याय या धोखे से किसी का धन अपहरण करना। जैसे—नौकर-चाकरों का नवाब साहब को लूटना। ५ उचित से बहुत अधिक मूल्य लेना। अधिक दाम लेकर बेचना। जैसे—आज कल के दुकानदार ग्राहकों को खूब लूटते हैं। ६. किसी रूप में किसी का सब कुछ या बहुत कुछ मनमाने ढंग से ले लेना। जैसे—मजा लूटना। ७. किसी को अपने प्रति मोहित या लुब्ध करना, अथवा इस प्रकार अपना बनाना कि वह वशीभूत हो जाय।

लूटा—पुं०=लुटेरा। उदा०—लोभी लौंद मुकरवा झगरू बड़ा पबैली लूटा।—सूर।

लूटि†—स्त्री०=लूट।

लूण—पु० [सं० लवण] नमक।

लूत—पु० [इबरानी] यहूदियों के एक पैगम्बर।

लूता—स्त्री० [स०√लू (छेदन)+तन्+टाप्] १ मकडी। २ मकडी के स्पर्श के विष के कारण शरीर मे पड़नेवाले फफोले। मकडी का रोग। वृक्का। ३ च्यूंटी।
†पु०=लूका।

लूतामय—पु० [स०√लूता।मयट्] मकडी नामक रोग।

लूती—पु० [अ०] वह जो अस्वाभाविक रूप से मैथुन करे। बालको के साथ सभोग करनेवाला। लौंडेबाज।
पुं०=लूता।

लून—वि० [सं०√लू (छेदन)+क्त, त—न] कटा हुआ। छिन्न। जैसे—लून-पक्ष=जिसके पर कटे हो।
†पुं०=नोन (नमक)।

लूनक—पु० [हिं० लोन] १. सज्जी खार। २ अमलोनी का साग।

लूनना—स०=लुनना (लुनाई करना)।

लूबरा†—स्त्री०=लोमडी।
†वि०=लूमर।

लूम—पु० [स०√लू (छेदन)।मक्] १ लागूल। पूंछ। दुम। २. चक्कर। फेरा। उदा०—आता लूम लेता हुआ पूर्ण घट नीचे से।—मैथिलीशरण गुप्त। २ सम्पूर्ण जाति का एक राग जिसमे सब शुद्ध स्वर लगते हैं।
पु० [?] कला-बत्तू की लच्छी।
पु० [अ०] कपडा बुनने का करघा।

लूमड़ी—स्त्री०=लोमडी।

लूमना†—अ० [स० लूम] १ लरकना। झूलना। २ लहरना। ३. (बादलो का) घिरना। ४ चक्कर खाना।

लूमर—वि० [देश०] अवस्था में बडा। वयस्क। जैसे—इतने बडे लूमर हुए, पर बात करने का शऊर न आया।

लूम-विष—पु० [स० ब० स०] ऐसे जन्तु जिनकी दुम या पूंछ में विष हो। जैसे—बिच्छू।

लूर—पु०[?] कोई काम ठीक तरह से करने का ढग। शऊर। जैसे—तुम्हे तो किसी बात का लूर नही है।

लूरना†—अ०=लुरना।

लूला—वि० [स० लून=कटा हुआ] [स्त्री० लूली] १ जिसका हाथ कट गया हो या बेकाम हो गया हो। बिना हाथ का। लुजा। टुंडा। २. जो कुछ भी करने मे असमर्थ हो।

लूलू—वि० [देश०] परम मूर्ख। निरा बेवकूफ।
मुहा०—(किसी को) लूलू बनाना=किसी को बेवकूफ बनाकर उसका उपहास करना।
पुं० बच्चो को डराने के लिए 'जूजू' 'हौआ' आदि की तरह के एक कल्पित विकट जीव की संज्ञा।

लूसना—स० [?] मटिया-मेट करना। चौका लगाना। उदा०—सब ग्रथनि वे पढ़ें जो सो सब लूस।—रत्ना०।
स०=लूटना।

अ० दे० 'ललचाना'। (पश्चिम)

लूह—स्त्री०=लू।

लूहर—स्त्री०=लू।

लेंड—पु० [स० लेण्ड] मल की बँधी हुई कडी बत्ती। बँधा हुआ और सूखा मल (शौच के समय का)।

लेंड़ी—स्त्री० [हिं० लेंड़] १ मल की बँधी हुई कड़ी छोटी बत्ती। २ दे० 'मेंगनी'।

लेंडुआ—पु० [देश०] बच्चो का मतवाला (देखे) नाम का खिलौना।

लेंस—पुं० [अ०] शीशे का ऐसा ताल जो प्रकाश की किरणो को एकत्र या केन्द्रीभूत करता हो। जैसे—चश्मे का लेंस, फोटोग्राफी का लेंस।

लेंहड़ा†—स्त्री०=लेहड़ा।

लेंहड़ा—पु० [देश०] जगली जानवरो का झुड। विशेषत शेरो का झुंड।

ले—अव्य० [सं० लग्न, हिं० लग० लगि] तक। पर्य्यंत
अव्य० [हिं० लेना] सबोधन के रूप में प्रयुक्त होनेवाला शब्द, जिसका अर्थ होता है—(क) अच्छा ऐसा ही सही। जैसे—ले मैं ही यहाँ से चला जाता हूँ। (ख) अब समझ में आया न। जैसे—ले, कैसा फल मिला।

लेइ—अव्य० [स० लग्न; हिं० लगि] तक। पर्य्यंत।

लेई—स्त्री० [स० लेहिन, लेही या लेह्य] १ पानी मे घुले हुए किसी चूर्ण को गाढा करके बनाया हुआ लसीला पदार्थ। जैसे—अवलेह, लपसी आदि। २ घुला हुआ आटा या मैदा जो आग पर पकाकर गाढ़ा और लसदार बना लिया जाता है और कागज आदि चिपकाने के काम मे आता है। ३ गाढ़ा घोला हुआ चूना और बरी या बालू और सीमेंट जो इमारत बनाते समय ईंटों आदि की जोड़ाई के काम आता है। गारा।

लेई-पूंजी—स्त्री० [हिं० स०] सारी धन-सम्पत्ति।

लेओ—स० हिं० लेना क्रिया का विधि-वाला रूप। लो। उदा०—चूर्ण करो गत सस्कारो को लेओ प्राण उबार।—पन्त।

लेक्चर—पु० [अ०] व्याख्यान। वक्तृता।
क्रि० प्र०—देना।
मुहा०—लेक्चर झाड़ना=लगातार कुछ समय तक बढ़-बढ़कर उपदेशात्मक बातें कहते चलना।

लेक्चरबाज—पु० [अ०+फा०][भाव० लेक्चरबाजी] १. उपदेशात्मक बातें दूसरो से कहते रहनेवाला व्यक्ति। २. प्रायः व्याख्यान देते रहनेवाला।

लेक्चरबाजी—स्त्री० [अ० लेक्चर+फा० बाजी] खूब या प्रायः लेक्चर देने की क्रिया। (व्यग्य)

लेक्चरर—पु० [अ०] १ लेक्चर या व्याख्यान देनेवाला। २. विश्वविद्यालय का उप-प्राध्यापक।

लेख—पुं० [स०√लिख् (लिखना)+घञ्] १ लिखे हुए अक्षर। २. लिखावट। ३ लिखी हुई बात, विचार या विषय। ४ दैनिक, मासिक आदि पत्रो मे छपनेवाला सामयिक निबंध। जैसे—आज के अखबार मे राजा जी का भी लेख है। ५. कोई ऐसी लिखी हुई आज्ञा या आदेश जो नियम या विधान के अनुसार किसी बड़े अधिकारी ने

प्रचलित किया हो। (रिट्) ६. ताम्र-पत्रों शिला-लेखों, सिक्कों आदि में लिखी हुई बातें या विवरण। (इन्सक्रिप्सन) ७. लेखा। हिसाब।
†वि०=लेख्य।
†पुं० [सं० लेखर्षभ] देवता।

लेखक—पुं० [सं०√लिख्+ण्वुल्—अक] [स्त्री० लेखिका] १. वह जो लिखता हो। लेखन कार्य करनेवाला। जैसे—कहानी लेखक, समाचार लेखक। २. वह जो मनोरंजन या जीविका के लिए कहानियाँ, उपन्यास, लेख, साहित्यिक ग्रन्थ आदि लिखता हो। साहित्य-जीवी। ३. किसी गद्य या कृति का रचयिता।

लेखन—पुं० [सं०√लिख्+ल्युट्—अन] [वि० लेखनीय, लेख्य] १. अक्षर आदि लिखने का कार्य। अक्षर-विन्यास। अक्षर बनाना। २. अक्षर आदि लिखने की कला या विद्या। ३. तूलिका से चित्र आदि अंकित करने की क्रिया या विद्या। चित्रांकन। ४. किसी रूप में किसी प्रकार के चिह्न आदि अंकित करना। जैसे—नख-लेखन=नाखूनो से खरोचकर किसी प्रकार की आकृति या चिह्न बनाना। ५. हिसाब करना। लेखा लगाना। कूतना। ६ कै या वमन करना। छर्दन। ७. ताड़पत्र और भोजपत्र जिन पर प्राचीनकाल मे लेख आदि लिखे जाते थे। ८ वैद्यक में वह क्रिया जिससे शरीर के अन्दर की धातुएँ तथा मल या विकार या तो पतले करके शरीर के बाहर निकाले जाते या अन्दर ही अन्दर सुखाये जाते हैं। ९ उक्त प्रकार की क्रियाएँ करनेवाली दवा या ओषधि। १०. वैद्यक मे शस्त्र द्वारा कोई दूषित अग काटना या छेदना। चीर-फाड़। १०. खाँसी नामक रोग।

लेखन-बस्ति—स्त्री० [सं० मध्य० स०] वैद्यक में पिचकारी की सहायता से शरीर के अन्दर की धातुओं और वातादि दोषों को पतला करने की क्रिया।

लेखन-सामग्री—स्त्री० [स० ष० त०] लिखने के काम आनेवाली चीजें या सामग्री। जैसे—कागज, कलम, स्याही आदि। (स्टेशनरी)

लेखनहार—वि० [सं० लेखन+हिं० हार (प्रत्य०)] लिखनेवाला। उदा०—आपुहि कागद आपु मसि आपुहि लेखनहार।—कबीर।

लेखना—स० [सं० लेखन] १. अक्षर, चित्र या चिह्न बनाना। लिखना। २. लेखा या हिसाब करना। गणित की क्रिया करना। ३. किसी को गिनती के योग्य या महत्त्वपूर्ण समझना। ४. मन ही मन कोई बात सोचना-समझना या निश्चित करना। ५. प्राप्त या भोग करना। उदा०—स्वर्ग का लाभ यहीं मैं लेखूँ। —मैथिलीशरण गुप्त।

लेखनिक—पुं० [स० लेखन+ठन्—इक] १. लेखक। २. पत्रवाहक। ३. वह निरक्षर या असमर्थ जो लेख आदि पर स्वयं हस्ताक्षर न करके दूसरों से उन पर अपना नाम लिखवाता हो।

लेखनिका—स्त्री० [सं० लेखनिक+टाप्]=लेखनी।

लेखनी—स्त्री० [सं० लेखन+ङीप्] वह वस्तु जिससे लिखें या अक्षर बनावें। वर्ण तूलिका। कलम।
मुहा०—लेखनी उठाना=कुछ लिखना आरम्भ करना। **लेखनी चलाना**=लिखना।

लेखनीय—वि० [सं०√लिख्(लिखना)+अनीयर्] लिखे जाने के योग्य।

लेख-पत्र—पुं० [सं० ष० त०] १. लिखित पत्र। लिखा हुआ कागज। २. दस्तावेज। लेख्य।

लेखपाल—पुं० [सं० लेख√पाल् (रक्षा)+णिच्+अण्] वह सरकारी कर्मचारी जो गाँवो के खेतों और उनकी उपज, लगान आदि का लेखा रखता है। (पुराने पटवारियों की नई संज्ञा)

लेख-प्रणाली—स्त्री० [सं० ष० त०] लिखने की शैली या ढंग।

लेखर्षभ—पुं० [सं० लेख-ऋषभ, स० त०] देवताओं में श्रेष्ठ, इन्द्र।

लेख-शैली—स्त्री० [सं० ष० त०] लिखने की वह विशिष्ट शैली (देखें) जो लेखक की विशेषताओं से युक्त होती है।

लेखहार—पुं० [सं० लेख√हृ (हरण)+अण्] चिट्ठी ले जानेवाला। पत्रवाहक।

लेखा—पुं० [सं० लेख, हिं० लिखना] १. वह लेख जो आय-व्यय की धन-राशि आदि से सबंध रखनेवाले अंको या संख्याओ से युक्त होता है। हिसाब। (एकाउन्ट) २. इस बात का विचार कि कुल चीजे कितनी और किस अनुपात मे हैं। जैसे—कितनी चीजे आई हैं, उन सब का लेखा तैयार करो।
क्रि० प्र०—लगाना। —लिखना।
मुहा०—(किसी का) लेखा चुकाना=हिसाब करने पर जो बाकी निकलता हो, वह देकर चुकता करना। **लेखा डालना**=बही आदि में कोई नया खाता खोलना या बढ़ाना। नया खाता डालना। **लेखा डेवढ़ करना**=(क) हिसाब चुकता करना। देन चुकाना। (ख) जमा और खर्च की मदें बराबर करके हिसाब पूरा करना। (ग) चौपट या नष्ट करना। (व्यंग्य)
३. राशियो, संख्याओं आदि के संबंध मे किया जानेवाला अनुमान। कूत। ४ किसी के महत्त्व, मान, योग्यता आदि के संबध मे मन में किया जानेवाला विचार।
मुहा०—(किसी के) लेखे=किसी के ध्यान, विचार या समझ के अनुसार। जैसे—हमारे लेखे उसका आना और न आना दोनो बराबर है। **किसी लेखे**=किसी ढंग, प्रकार या साधन से। किसी तरह। उदा०—सब कर मरनु बना एहि लेखे।—तुलसी।
५. जीवन-निर्वाह, व्यवहार आदि के संबंध रखनेवाली दशा या स्थिति। जैसे—ऊँचे पर चढ़ देखा। घर घर एकहि लेखा। (कहा०)
स्त्री० [सं०√लिख् (लिखना)+अ+टाप्] १ लिपि। लिखावट। २ रेखा। जैसे—चन्द्र-लेखा।

लेखा-कर्म—पुं० [सं० ष० त०] आय, व्यय आदि का हिसाब लिखने या रखने का काम। (एकाउन्टेन्सी)

लेखाकार—पुं० [सं०] वह जो किसी महाजनी कोठी, सस्था आदि के आय-व्यय या लेन-देन का लेखा लिखता हो। (एकाउन्टेन्ट)

लेखागार—पुं० [स० लेखा-आगार] वह स्थान, विशेषतः किसी राज्य या सरकार का वह स्थान जहाँ शासन तथा सार्वजनिक हित से संबंध रखनेवाले सब प्रकार के लेख्य इसलिए सुरक्षित रखे जाते हैं कि आवश्यकता पड़ने पर प्रमाण या साक्ष्य के रूप में उपस्थित किये जा सकें। (आर्काइव्ज)

लेखा-चित्र—पुं० [सं० मध्य० स०] अनेक रेखाओंवाला वह बड़ा चौकोर अकन जो किसी घटना या व्यापार में होते रहनेवाले उतार-चढ़ाव या परिवर्तन अथवा कुछ तथ्यों के पारस्परिक संबंध का सूचक

होता है। (ग्राफ़) जैसे—जन्म-मरण, तेजी-मंदी, आयात-निर्यात आदि का लेखा-चित्र।

लेखाध्यक्ष—पु० [स० लेखा-अध्यक्ष, ष० त०] लेखाकार।

लेखा-परीक्षक—पु० [सं० ष० त०] वह जो किसी विषय, व्यक्ति, संस्था आदि के लेख या हिसाब-किताब को जाँचता हो। (आडीटर)

लेखा-परीक्षण—पुं० [स०] किसी प्रकार के कार-बार, लेन-देन या आय-व्यय आदि की जाँच करने की क्रिया या भाव। (आडिटिंग)

लेखापाल—पु० [स० लेखा√पाल् (रखना)+णिच्+अण्] वह जो आय-व्यय आदि लिखने का काम करता हो। बही-खाते आदि लिखने-वाला कर्मचारी। (एकाउन्टेन्ट)

लेखा-पुस्तिका—स्त्री० [सं०] वह पुस्तिका जो बैंक की ओर से उन लोगो को मिलती है जिनके रुपए बैंक मे जमा होते हैं और जिसमे उनके खाते के लेन-देन की सब रकमे लिखी रहती हैं। (पासबुक) २ दे० 'लेखा-बही'।

लेखा-बही—स्त्री० [हिं० लेखा+बही] वह बही जिसमे रोकड के लेन-देन का ब्योरा लिखा रहता है। (एकाउन्ट बुक)

लेखा-शास्त्र—पु० [स० ष० त०] वह विद्या या शास्त्र जिसमें, इस बात का विवेचन होता है कि सब तरह के लेखे या हिसाब किस तरह से रखे या लिखे जाते हैं। (एकाउन्टेन्सी)

लेखिका—स्त्री० [सं० लेखक+टाप्, इत्व] स्त्री लेखक।

लेखित—भू० कृ० [सं०√लिख् (लिखना)+णिच्+क्त] लिखवाया हुआ।

लेखी (खिन्)—वि० [स० लेख+इनि] लिखने की क्रिया करनेवाला। जैसे—चित्रकार, लेखक आदि।

स्त्री० [सं० लेख] १ खाते मे लिखे जाने की क्रिया या भाव। इंदराज। २. खाते मे लिखी जानेवाली रकम या मद। (एन्ट्री)

लेखे—अव्य० दे० 'लेखा' के अन्तर्गत मुहा०।

लेख्य—वि० [स०√लिख् (लिखना)+ण्यत्)] १. लिखे जाने के योग्य। जो लिखा जा सके। २. जो लिखा जाने को हो। ३. जो लेख के रूप मे और फलत प्रामाणिक हो। दस्तावेजी। (डाक्यूमेन्टरी)

पु० १. लिखी हुई कोई बात या विषय। लेख। २ विविध क्षेत्रों में, कोई ऐसा लेख जो प्रमाण या साध्य के रूप मे काम आता या आ सकता हो। दस्तावेज। (डाक्यूमेन्ट) ३. चित्रकला मे, वह रेखा-चित्र जो कोयले, खडिया, रग आदि की सहायता से अंकित होता है और जिसमें किसी घटना, दृश्य आदि के सबध मे चित्रकार के आन्तरिक भाव व्यक्त होते हैं। (ड्राइग)

लेज†—स्त्री०=लेजुरी (रस्सी)।

लेजम—स्त्री० [फा०] १. कमान जिससे धनुष चलाने का अभ्यास किया जाता है। २ वह कमान जिसमे लोहे की जंजीर और कटोरियाँ रहती हैं और जिससे पहलवान लोग कसरत करते हैं।

क्रि० प्र०—भाँजना।—हिलाना।

लेजरंग—पुं० [लेज ? +हिं० रग] मरकट या पन्ने की एक रंगत जो उसका गुण मानी जाती है।

लेजुर—स्त्री० [स० रज्जु, मागधी प्रा० लेज्जु] १. रस्सी। डोरी। २. कूएँ से पानी खीचने की डोरी या रस्सी।

लेजुरा—पु० [देश०] एक प्रकार का अगहनी धान जिसका चावल बहुत दिनो तक रहता है।

†पु०=बडी लेजुरी (रस्सी)।

लेजुरी—स्त्री०=लेजुर।

लेट—पु० [देश०] १. सुरखी, कंकड, और चने अथवा कंकड़ तथा सीमेंट का वह सम्मिश्रण, जो फर्श बनाने के लिए जमीन पर बिछाया जाता है।

क्रि० प्र०—डालना।—पडना।

वि० [अं०] जो देर से आया हो अथवा जिसने आने मे देर लगाई हो। जैसे—आज गाडी लेट है।

लेटना—अ० [स० लुठन, हिं० लोटना] १. विश्राम करने के लिए हाथ-पैर और सारा शरीर लबाई के बल पसार जमीन या किसी सतह पर टिका कर पड रहना। जमीन या बिस्तरे से पीठ लगाकर बदन की सारी लबाई उस पर ठहराना। पौढ़ना। जैसे—जाकर चारपाई पर लेट रहो, तबीयत ठीक हो जायगी।

संयो० क्रि०—जाना।—रहना।

२ खडे बल मे रहनेवाली चीज या बगल की ओर झुककर जमीन पर गिरना या जमीन से सटना। जैसे—आँधी मे पेडो या फसल का लेटना।

संयो० क्रि०—जाना।

३. किसी पदार्थ का ठीक दशा मे न रहकर बिगड जाना या खराब होना। ४. मर जाना। (बाजारू)

लेट-पेट—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की चाय।

लेटर—पु० [अं०] १ अक्षर। २ चिट्ठी।

लेटर-बक्स—पु० [अं० लेटर-बाक्स] १. डाकखाने का वह सदूक जिसमे कहीं भेजने के लिए लोग चिट्ठियाँ डालते है। २ प्राय घरो के दर-वाजो पर लगी हुई वह पेटी या सदूक जिसमे डाकिये या और लोग आकर मालिक मकान की चिट्ठियाँ छोड या डाल जाते हैं। पत्र-पेटी।

लेटाना—स० [हिं० लेटना का प्रे०] १ ऐसी क्रिया करना जिससे कोई लेट जाय। २ खडी चीज को जमीन पर बेडे बल मे रखना या फैलाना।

लेड—पु० [अं०] सीसा नामक धातु।

पु० [अं०] प्रायः दो अगुल चौडी सीसे की ढली हुई पतली पटरी या पट्टी जो छापाखाने मे अक्षरो की पक्तियो के बीच में (अक्षरों को ऊपर नीचे होने से रोकने के लिए) लगाई जाती है।

लेडी—स्त्री० [अं०] १ भले घर की स्त्री। महिला। २ इंगलैंड में किसी लार्ड या सरकार की पत्नी के नाम के पहले लगनेवाली उपाधि। जैसे—लेडी मिन्टो।

लेथो—पु०=लीथो।

लेद—पु० [देश०] एक प्रकार के गीत जो बुन्देलखण्ड में माघ फागुन मे गाये जाते हैं।

लेवार—पु० [देश०] एक प्रकार की चिडिया।

लेवी—स्त्री० [देश०] १. जलाशयो के किनारे रहनेवाली एक प्रकार की छोटी चिडिया। २. घास का वह पूला जो हल के नीचे के भाग में इसलिए बाँध देते हैं कि कूँड अधिक चौडी न होने पावे।

ले-दे—स्त्री० [हिं० लेना+देना] १. लेने और देने की क्रिया या भाव। लेन-देन। २. सांसारिक काम-धन्धे और झगड़े-बखेड़े। उदा०—हर एक पड़ा है अपनी ले-दे में।—बच्चन।

लेन—पुं० [हिं० लेना] १. लेने की क्रिया या भाव।

पद—लेन-देन।

२. वह धन जो किसी से लिया जाने को हो। पावना। लहना।

लेनदार—पुं० [हिं० लेना+फा० दार (प्रत्य०)] १. वह जो अधिकारतः या न्यायतः किसी से अपना हक अथवा उसे दी हुई चीज ले सकता हो। २. वह जो किसी से उधार दिया हुआ धन पाने का अधिकारी हो। महाजन।

लेन-देन—पु० [हिं० लेना+देना] १. लेन और देन का व्यवहार। आदान-प्रदान। २. व्यापारिक और सामाजिक क्षेत्रो में किसी को कुछ देने और उससे कुछ लेने का व्यवहार। जैसे—हमारा उनका लेन-देन बहुत दिनो से बन्द है। ३. लोगों को रुपए उधार देने और फिर उससे सूद सहित मूल धन लेने का व्यवसाय। महाजनी। जैसे—उनके यहाँ पुश्तों से लेन-देन चलता है।

लेना—स० [सं० लभन; पु० हिं० लहना] १. जो वस्तु कोई दे रहा हो, उसे ग्रहण या प्राप्त करना। किसी की दी हुई चीज अपने अधिकार या हाथ मे करना। जैसे—किसी से दान या धन लेना।

पद—लेना एक न देना दो=कोई प्रयोजन, संबंध या सरोकार नही है। कुछ गरज या वास्ता नही है। जैसे—लेना एक न देना दो, हम क्यों व्यर्थ इस प्रपंच मे पडने जायँ।

मुहा०—लेने के देने पड़ना=प्राप्ति, लाभ आदि की आशा से कोई काम करने पर उलटे पास का कुछ खोना या गँवाना अथवा कष्ट या संकट मे पडना। जैसे—वह चले तो थे चोरी पकडने पर उन्हें उलटे लेने के देने पड गये।

२. कोई चीज किसी प्रकार या किसी रूप में अपने अधिकार या हाथ में करना। हस्तगत करना। जैसे—(क) बाजार से कपड़े (या किताबे) मोल लेना। (ख) किराये पर मकान लेना। ३ कोई चीज अपने अग पर धारण करना या किसी रूप में रखना। जैसे—(क) हाथ में घडी या छाता लेना। (ख) कन्धे पर या गोद में बच्चा लेना।

मुहा०—ले लना=अधिकृत कर लेना। बल प्रयोग से प्राप्त कर लेना। जैसे—(क) थोड़े ही दिनो में अंगरेजों ने सारा पजाब ले लिया। (ख) डाकुओं ने उसका सारा धन ले लिया।

३. कोई चीज अपने अग पर धारण करना या किसी रूप में रखना। ४. उधार के रूप में या माँगकर प्राप्त करना। जैसे—महाजनों से रुपए ले लेकर काम चलाना। ५. खाने-पीने की चीज मुँह में रखकर गले के नीचे या पेट में उतारना। सेवन करना। जैसे—रोगी का दवा या दूध लेना। ६. किसी प्रकार का उत्तरदायित्व, प्रतिज्ञा या भार अंगीकृत करना। निर्वाह, वहन आदि के लिए उत्तरदायी बनना या कृतसकल्प होना। जैसे—(क) किसी काम का उत्तरदायित्व या पद का भार लेना। (ख) व्रत, शपथ या संन्यास लेना।

मुहा०—(अपने आपको) लिये दिये रहना=अपने आपको इस प्रकार सँभालकर रखना कि कोई अनुचित या अशिष्टतापूर्ण आचरण या व्यवहार न होने पावे। **(अपने) ऊपर लेना**=निर्वाह वहन आदि का भार ग्रहण करना। जैसे—उसका सारा ऋण (या भार) मैंने अपने ऊपर ले लिया है। ७. अमूर्त बातों, विचारों, विषयो आदि के संबध मे किसी रूप में गृहीत या प्राप्त करना। जैसे—(क) किसी से परामर्श या सलाह लेना। (ख) किसी के मन की थाह लेना। (ग) किसी का आशीर्वाद या गालियाँ लेना।

मुहा०—ले-देकर=(क) सब कुछ हो जाने पर अंत में। जैसे—ले-देकर यह बदनामी ही हाथ आई। **ले-दे करना**=(क) कहा-सुनी, तकरार या हुज्जत करना। जैसे—भठियारो की तरह यह ले-दे करना ठीक नही है। (ख) किसी कार्य की पूर्ति या सिद्धि के लिए बहुत परिश्रम या प्रयत्न करना। जैसे—इतनी ले-दे करने पर तब कही दिन भर में यह काम पूरा हुआ है।

८. भागनेवाले का पीछा करते हुए उसके पास पहुँचकर उसे पकड़ना। जैसे—(क) इतने में सिपाहियों ने वहाँ पहुँचकर उसे पकड़ लिया। (ख) लेना, जाने न पावे। ९. किसी काम या बात की सिद्धि करते हुए उसके सबंध में कोई क्रिया करना। (कुछ विशिष्ट सयो० क्रि० के साथ प्रयुक्त) जैसे—ले चलना, ले जाना, ले भागना, ले रखना, ले लेना आदि।

मुहा०—ले उड़ना=(क) कहीं से कुछ लेकर इस प्रकार अलग या दूर होना कि कोई समझ न पावे। जैसे—कहीं से कोई बात सुन पाई, और ले उडे। (ख) कही से कुछ लेकर उसे अपना बताते या बनाते हुए आडंबरपूर्वक अपना पौरुष या योग्यता प्रकट करना। **ले डालना**=खराब, चौपट या नष्ट करना। जैसे—(क) तुमने यह किताब भी ले डाली अर्थात् नष्ट कर दी। (ख) इस गोटे ने तो साड़ी की सारी शोभा ही ले डाली अर्थात् बिगाड दी। **ले डूबना या ले बीतना**=स्वयं नष्ट या समाप्त होने के साथ ही साथ दूसरे को भी बुरी तरह से नष्ट या समाप्त करना। जैसे—उनकी यह चालाकी ही उन्हें ले डूबेगी या ले बीतेगी। **(कोई काम या बात) ले बैठना**=अच्छा काम या बात छोड़कर किसी तुच्छ अथवा साधारण काम या बात में लग जाना। जैसे—तुम भी यह कहाँ का झगडा (या पचडा) ले बैठे। **(किसी को या कोई चीज अपने साथ) ले बैठना**=किसी काम, चीज या बात का अपने बोझ, भार आदि के कारण स्वयं नष्ट होते हुए दूसरे को भी अपने साथ नष्ट करना। जैसे—(क) यह छज्जा सारा मकान ले बैठेगा। (ख) यह दुर्व्यसन उनका सारा कार-बार ले बैठेगा। **ले लेना**=उद्देश्य की सिद्धि अथवा कार्य की समाप्ति के बहुत निकट तक पहुँच जाना। जैसे—बहुत-सा काम हो चुका है, अब ले ही लिया है, अर्थात् समाप्ति मे अधिक बिलंब नही है।

१०. किसी प्रकार या किसी रूप में एकत्र या प्राप्त करना। जैसे—(क) बगीचे से फूल लेना। (ख) लोगो से चन्दा लेना। (ग) कहीं से लड़का गोद लेना।

मुहा०—ले पालना=कन्या या पुत्र के रूप में अपने पास रखकर पालन-पोषण करना।

११. किसी वस्तु या व्यक्ति का ठीक और पूरा उपभोग करना अथवा

उसे काम में प्रवृत्त करना। जैसे—(क) यह काम बहुत परिश्रम लेता है। (ख) उसे नौकरों से काम लेना नहीं आता। १२ प्रतियोगिता, होड आदि में विजयी या सफल होना। जैसे—किसी से बाजी लेना या ले जाना। १३. कुछ विशिष्ट इंद्रियों के सबध में किसी बात या विषय का ग्रहण करना। जैसे—अपने मन में किसी देवता या फूल का नाम लो।

मुहा०—(कोई बात) कान में लेना=सुनना। (क्व०)

१४ अतिथि का सत्कार या स्वागत करने के लिए आगे बढकर उससे मिलना। अगवानी या अभ्यर्थना करना। जैसे—उन्हे लेने के लिए बहुत से लोग स्टेशन पहुँचे थे। १५ किसी का उपहास करते हुए उसे लज्जित करना और तुच्छ या हीन सिद्ध करना।

मुहा०—(किसी को) आड़े हाथों लेना=बहुत अधिक उपहास तथा भर्त्सना करते हुए निरुत्तर करना। (किसी का) लिया जाना=उपहासास्पद और लज्जाजनक स्थिति में लाया जाना। जैसे—आज वह वहाँ अच्छी तरह लिया गया।

१६ स्त्री के साथ मैथुन या सभोग करना। (बाजारू)

मुहा०—(किसी का) लिया जाना=मैथुन या सभोग की स्थिति में लाया जाना। (किसी को) ले पड़ना=किसी को अपने साथ लेटाकर उससे सभोग करना।

विशेष—रखना, लगाना आदि की तरह लेना का भी बहुत सी क्रियाओं के साथ सयो० क्रि० के रूप में प्रयोग होता है; और ऐसे अवसरों पर यह प्राय उस क्रिया की पूर्ति या समाप्ति का सूचक होता है। जैसे—उठा लेना, कह लेना, खा लेना, सुन लेना आदि। कुछ अवस्थाओं में यह इस बात का भी सूचक होता है कि कर्ता कोई क्रिया बहुत ही कठिनता से, जैसे-तैसे अथवा भद्दे या बहुत ही साधारण रूप में कोई क्रिया पूरी करने में समर्थ होता है। जैसे—(क) वह भी टूटी-फूटी हिन्दी पढ या बोल लेता है। (ख) मैं भी कुछ कुछ सस्कृत समझ लेता हूँ। (ग) रोगी अब सौ दो सौ कदम चल लेता है।

लेना-देना—पु० [हिं०] १ लेने और देने की क्रिया या भाव। लेन-देन।

मुहा०—लिये-दिये=साथ में लिये हुए। साथ लेकर। उदा०—विचरूँगी व्योम में भी उनको लिये-दिये। —मैथिली शरण गुप्त। ले-देकर=सब बातों के हो चुकने पर। अत में। जैसे—सब ले-देकर यही कलक हाथ आया। (किसी से कुछ) लेना-देना होना=कोई सबध या सरोकार होना। जैसे—वह जहन्नुम में जाय, हमें उससे क्या-लेना-देना है।

२. वास्ता। सबध। सरोकार।

पद—ले-दे=आपस में होनेवाली कहा-सुनी या हुज्जत। जैसे—इतनी ले-दे के बाद भी नतीजा कुछ न निकला।

लेनिहार—वि०=लेनदार।

लेप—पु० [स० लिप् (लीपना)+घञ्] १ गाली या घोली हुई वस्तु जो किसी दूसरी चीज पर पोती जाने को हो। २ इस प्रकार पोती हुई वस्तु की परत।

क्रि० प्र०—चढाना।—लगाना।

३. शरीर पर लगाया जानेवाला उबटन। बटना। ४. लगाव। सपर्क।

लेपक—वि० [स०√लिप्+ण्वुल्—अक] लेप करने अर्थात् पोतने या लगानेवाला कारीगर।

पु० १ चूना छूनेवाला मिस्तरी। ३. साँचा बनानेवाला कारीगर।

लेप-कामिनी—स्त्री० [सं० मध्य० सं०] साँचे में ढली हुई स्त्री की मूर्ति।

लेपकार—वि०, पु० [स० लेप√कृ (करना)+अण्]=लेपक।

लेपन—पु० [स०√लिप्+ल्युट्—अन] [वि० लेपित, लेप्य, लिप्त] १. लेप लगाना। २. चूना छूना।

लेपना—स० [स० लेपन] पतले या गाढे घोल में उँगलियाँ, कूची या पुचारा भिगोकर किसी अग, दीवार, छत, चूल्हे-चौके या और किसी पदार्थ पर इस प्रकार फेरना या लगाना कि उस पर उक्त घोल की एक परत चढ़ या जम जाय। लीपना।

लेपनीय—वि० [स०√लिप्+अनीयर्] जो लेप के रूप में लगाया जा सके या लगाया जाने को हो।

ले-पालक—पु० [हिं० लेना+पालना] १. किसी दूसरे का ऐसा लड़का जो अपने आप लडके की तरह रखकर पाला-पोसा गया हो। २ गोद लिया हुआ लडका। दत्तक पुत्र।

लेपी (पिन्)—वि० [स०√लिप्+णिनि] लेप करनेवाला।

पु०=लिपिक।

लेप्य—वि० [स०√लिप्+ण्यत्] १ जो लेप के रूप में लगाया जा सकता हो। २ जिस पर लेप लगाया जा सकता हो। ३ साँचे में ढाले जाने के योग्य।

लेप्य-नारी—स्त्री० [सं० कर्म० स०] १. वह स्त्री जिसने चदन आदि का लेप लगाया हो। २. पत्थर या मिट्टी की बनी हुई स्त्री की प्रतिकृति या मूर्ति।

लेफ्टिनेंट—वि० [अ०] (अधिकारी) जो किसी दूसरे अधिकारी से पद में कुछ घटकर हो तथा विशिष्ट अवसरों पर उसका प्रतिनिधित्व करता हो और उसकी अनुपस्थिति में उसके सब अधिकार ग्रहण करता हो। जैसे—लेफ्टिनेन्ट-गवर्नर, लेफ्टिनेन्ट-कर्नल।

पु० १ एक सैनिक पद जो कप्तान के पद से घटकर होता है। २. उक्त पद पर काम करनेवाला अधिकारी।

लेबर—पु० [अ०] १ श्रम (बौद्धिक और शारीरिक) २ श्रमिक-वर्ग। ४. श्रमिकों का सघटन या समुदाय।

लेबर यूनियन—स्त्री० [अं०] मजदूरों या श्रमिकों का सघ या सस्था। श्रमिक।

लेबरर—पु० [अ०] मजदूर। श्रमिक।

लेबुल—पु० [अ०] किसी चीज पर लगी हुई वह परची जिस पर उस चीज का विवरण लिखा होता है।

लेबोरेटरी—स्त्री० [अ०] दे० 'प्रयोगशाला'।

लेमन-जूस—पु० [अ० लेमन-जूस] १ बच्चों के खाने के लिए चीनी की वह छोटी टिकियाँ जिनमें नीबू का सत्त आदि पड़ा रहता है। २. चूसी जानेवाली चीनी की गोली या टिकिया।

लेमनेड—पु० [अ०] पाश्चात्य ढग से बनाया हुआ नीबू का वह शरबत जो बोतलों में बन्द करके बाजारों में बेचा जाता है। मीठा पानी।

लैमर—पुं० [अं०] बन्दरों से मिलता-जुलता अफ्रीका का एक प्रकार का जन्तु जो पेड़ों पर रहता है।

लैमू—पुं० [फा०] नींबू।

लेरू, लेरुआ—पुं० [?] गौ, बकरी, भेड़, भैंस आदि का बच्चा।

लेला†—पुं० [?] [स्त्री० लेली] १. बच्चा। २. शिशु। (पश्चिम)

लेलिह—पुं० [सं०√लिह् (आस्वादन)+यङ्, लुक्, द्वित्व, लेलिह्+अच्] १. जूँ। लीख। २. साँप।

लेलिहान—वि० [स०√ लिह्+यङ्, लुक्, द्वित्व, लेलिह्+शानच्] १. चखने या चाटनेवाला। २ ललचाया हुआ।
पु० १. बार-बार चाटना। २. लप लप करना। लपलपाना। ३. शिव का एक नाम या रूप। ४. सर्प। साँप।

लेलिह्य—वि० [सं०√लिह्+यङ्, लुक्, द्वित्व, लेलिह्+ण्यत्] १. बार-बार चाटे जाने के योग्य। २. जो लप लप करता या कर सकता हो।

लेव—पु० [सं० लेप] १. दाल-भात आदि पकाने की डेगची या हाँडी के निचले बाहरी अंश पर किया जानेवाला मिट्टी का लेप। २. लेप।
मुहा०—लेव चढ़ना=आदमी का मोटा होना। (व्यंग्य)

लेवक—पु० [देश०] एक प्रकार का वृक्ष जिसकी लकड़ी इमारत के काम आती है।

लेवरना†—वि०=लेवारना।

लेवा—वि० [हिं० लेना] लेनेवाला। जैसे—नाम-लेवा, जान-लेवा।
पु० [स० लेप्य हिं० लेप] १. किसी चीज पर चढ़ाया जानेवाला मिट्टी आदि का लेप। लेव। २. गीली मिट्टी जो लेपने या लेवा लगाने के काम आती हो। गिलावा।
क्रि० प्र०—लगाना।
३ अधिक पानी विशेषत वर्षा के कारण खेत का गिलाव। ४. थन। ५. नाव की पेंदी पर का वह तख्ता जो सिरे से पतवार तक लगाया जाता है।
†पुं०=लेव।

लेवा-देई†—स्त्री०=लेन-देन।

लेवार—पु० [स०] अग्रहार।
पुं२=लेव या लेवा (गिलाव)।

लेवारना—स० [हिं० लेवार] १. लेप लगाना। लेपना। २. आग पर चढ़ाने से पहले बरतन के पेंदे मे लेवा लगाना।

लेवाल—वि० [हिं० लेना+वाला] १. लेनेवाला। जैसे—नाम लेवाल =नाम लेनेवाला। २. खरीदनेवाला। खरीदार। 'बेचवाल' का विपर्याय।

लेश—पुं० [स०√लिश् (कम होना)+घञ्] १. अणु। २. किसी चीज का बहुत थोड़ा अंश। ३. सूक्ष्मता। ४. चिह्न। निशान। ४. लगाव। संबंध। ६. साहित्य में एक अलंकार जिसमे किसी दोष के साथ अच्छाई का या अच्छाई के साथ दोष का भी उल्लेख होता है। ७. एक प्रकार का गाना।
वि० थोड़ा।

लेशी (शिन्)—वि० [सं० लिश्+णिनि] जिसमें किसी दूसरी चीज का लेश या सूक्ष्म अंश हो।

लेशोक्त—वि०[सं० लेश-उक्त, तृ० त०] संक्षेप में या संकेत रूप में कहा हुआ।

लेश्या—स्त्री०[स० लिश्+ण्यत्+टाप्] जैनियो के अनुसार जीव की वह अवस्था जिसमें वह कर्मों से बँधता है।

लेष—पु० १=लेस। २=लेश।

लेषना—स०=लेखना।

लेषनी—स्त्री०=लेखनी।

लेस—स्त्री०[स० श्लेष]१. लसीला पदार्थ। २. लासा। ३. लेसने की क्रिया या भाव। ४ लगाव। सबध। उदा०—निरखि नवोढा नारितन छुटत लरिकई लेस।—बिहारी।

लेसना—स० [स० लेश्या (दीप्ति), प्रा० लेस्या या स० लसा]जलाना। जैसे—दीया लेसना।
स०[हिं० लेस या लस] १ कोई चिपचिपी चीज लगाकर चिपकाना या सटाना। जैसे—दीवार पर कागज लेसना। २ लेप लगाना। पोतना। ३ दीवार पर मिट्टी का गिलावा पोतना। ४. किसी की निन्दासूचक या लड़ाई-झगड़ा करनेवाली बात दूसरे से जाकर कहना। जैसे—हमने तुमको यों ही एक बात कही थी, तुमने वहाँ जाकर उनसे लेस दी।

लेहँड़ा†—पु० लहँडा (जन्तुओं का)।

लेह—पु० स०√लिह्+घञ्]१ चाटकर खाई जानेवाली चीज। २. अवलेह। २ ग्रहण का एक भेद जिसमे पृथ्वी की छाया (या राहु) सूर्य या चंद्र बिम्ब को जीभ के समान चाटती हुई जान पड़ती है।

लेहन—पुं०[स०√लिह् (आस्वादन) +ल्युट्—अन] जीभ से चाटना।

लेहना—पु०[हिं० लहना]१. खेत मे कटे हुए शस्य या फसल का वह अंश जो काटने वाले मजदूरो को मजदूरी के रूप मे दिया जाता है। २ कटी हुई फसल की वह डंठल जो नाई, धोबी आदि को दिया जाता है। ३. डंठल या पयाल आदि की वह मात्रा जो उठाने वाले के दोनों हाथो मे आ सके। ४ दे० 'लहुवा'।
†स० [स० लेहन]चाटना।
†स०=लेसना।

लेहसित*—वि०[हिं० लसना]१. शोभा देने या सुन्दर लगनेवाला। २. किसी से मिश्रित या युक्त। उदा०—लखती लाल की ओर लाज लेहसित नैननि सो—रत्नाकर।

लेहसुआ—†पु०=लहसुआ (घास)।

लेहाजा—अव्य०[अ०] इसलिए। इस वास्ते। इस कारण।

लेहाड़ा†—वि०=लिहाड़ा।

लेहाड़ी—स्त्री०=लिहाड़ी।

लेहाफ़—पुं०=लिहाफ।

लेही (हिन्)—वि० [स०√लिह (आस्वादन)+णिनि] चाटनेवाला।

लेह्य—पु०[स०√लिह् (आस्वादन)+ण्यत्] १. वह पदार्थ जो चाटकर खाया जाता है। जैसे—अचार, चटनी आदि, (यह भोजन के छ प्रकारो में से एक है।) २ अवलेह।
वि०(पदार्थ) जो चाटकर खाया जाता हो।

लैंग—वि० [स० लिंग+अण्] लिंग-सम्बन्धी। लिंग का।

लैंगिक—पु०[सं० लिंग+ठक्—इक]वैशेषिक दर्शन के अनुसार अनुमान।

प्रमाण। वह ज्ञान जो लिंग द्वारा प्राप्त हो। इसी को न्याय में अनुमान कहते हैं।

वि० १. लिंग-सम्बन्धी। लिंग का। लैंग। २. स्त्री या पुरुष के लिंग या जननेंद्रिय से संबंध रखनेवाला। योनि-संबंधी। (सेक्सुअल)

लैंडो—स्त्री०[अं०] एक प्रकार की छायादार घोड़ा-गाड़ी।

लैंप—पु०[अं०] दीपक। चिराग। लंप।

लै—स्त्री० = लय (संगीत की)।

पु० = लय (लीनता)।

†अव्य० = लौं (तक)।

लैटिन—स्त्री० इटली देश की प्राचीन भाषा जो किसी समय सारे यूरोप मे विद्वानो तथा पादरियों की भाषा थी। इसका साहित्य बहुत उन्नत था इसी लिए अब भी इसका अध्ययन किया जाता है।

वि० प्राचीन रोम नगर से संबंध रखनेवाला।

लैन—स्त्री० = लाइन।

लैया—पु० [हिं० लपना] वह धान जो अगहन में काटा जाता है। जड़हन। शाली। लवक।

†स्त्री० = लाई।

लैर—पु०[?] किसी आदमी या चीज का पिछला भाग। पीछा। (राज०)

अव्य० १. साथ साथ। २ पीछे पीछे।

लैरू—पु०[?] बछड़ा।

लैल—स्त्री० [फा०] रात।

पद—**लैलोनिहार**—रात और दिन।

लैला—स्त्री०[फा०] १. लैला-मजनूँ की प्रेम कहानी की प्रसिद्ध नायिका और मजनू की प्रेमिका। २. प्रेयसी। ३. सुन्दरी।

लैसंस†—पु०[अ० लाइसेंस] अनुज्ञा। (दे०)

लैस—पु० [हिं० लेस] एक प्रकार का सिरका २ लंबी नोकवाला एक प्रकार का तीर। ३. कमानी।

वि०[अ० लेस] १. वर्दी और हथियारों से सजा हुआ। कटिबद्ध। तैयार। २. सब प्रकार के आयोजन, सामग्री आदि से युक्त और काम में लाये जाने के योग्य।

स्त्री० कपड़ो पर टाँकने का किसी प्रकार का कामदार बेल-बूटों वाला फीता या बेल।

लों—अव्य० = लौं।

लोंदा—पुं०[स्त्री० अल्पा०, लोंदी] १. गीले पदार्थ का वह अंश जो ढेले की तरह बँधा हो। जैसे—घी का लोंदा, दही का लोंदा, मिट्टी का लोंदा। २ गली या घुली हुई वस्तु की वह अवस्था या आकृति जो उसे गलने के बाद ठण्डा होने के लिए छोड़ने पर प्राप्त होती है।

लो—अव्य०[हिं० लेना] लीजिए की तरह प्रयुक्त एक निरर्थक अव्यय जिसका प्रयोग सहसा सुनी हुई कोई आश्चर्यजनक बात किसी दूसरे को सुनाते समय किया जाता है। जैसे—लो और सुनो।

लोइ—स्त्री० [सं० रोचि, प्रा० लोई] १. प्रभा। दीप्ति। २. आग की लौ।

†पुं० १. = लोक। २. = लोग।

लोइन—पु० १. = लोचन (आँख)। २. लावण्य।

लोई—स्त्री०[सं० लोप्ती; प्रा० लोवी] गुँधे हुए आटे का उतना अंश जो एक रोटी बनाने के लिए निकालकर गोली के आकार का बनाया जाता है और जिसे बेलकर रोटी बनाते हैं।

स्त्री०[सं० लोमीय = लोई] १. एक प्रकार का कंबल जो पतले ऊन से बुना जाता है, और साधारण कंबल से कुछ अधिक लंबा और चौड़ा होता है। २. कबीर की तथा-कथित पत्नी का नाम। प्रवाद है कि यह नव-जात शिशु के रूप में किसी को लोई में लपेटी हुई मिली थी, इसी से इसका यह नाम पड़ा था।

लोकंजन†—पुं० = लोपांजन।

लोकंदा—पुं०[हिं० लोकना] [स्त्री० लोकंदी] १. विवाह मे कन्या के डोले के साथ दास या दासी भेजने की क्रिया। २. वह दास जो कन्या के डोले के साथ उसकी सेवा के लिए भेजा जाता है। ३. चंचल, चरित्रहीन और दुष्ट व्यक्ति। उदा०—नंद को पूत वह धूत लोकंदा।

लोक—पुं०[सं० √ लोक् (दर्शन)+घञ्] १. कोई ऐसा स्थान जिसका बोध देखने से होता हो। जगह। २. जगत् या संसार। ३. विश्व का कोई विशिष्ट भाग या स्थान जिसमे कुछ अलग प्रकार के जीव या प्राणी रहते हैं। जैसे—जीवलोक, देवलोक। ब्रह्मलोक, मनुष्यलोक आदि। ४ पुराणानुसार किसी विशिष्ट देवता के रहने का वह स्थान जहाँ मरने पर उसके भक्त जाकर रहते हैं। जैसे—विष्णुलोक।

विशेष—हमारे यहाँ अनेक दृष्टियों से कई प्रकार के लोक माने गये हैं, और उनकी अलग अलग संख्याएँ कही गई हैं। मूलत तीन ही लोक माने जाते थे, स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल। पर आगे चलकर चौदह लोक माने जाने लगे जिसमें से सात हमारे ऊपर और सात हमारे नीचे कहे गये हैं। ऊपर के सात लोक ये हैं भूलोक, भुवर्लोक, स्वर्लोक, महर्लोक, जनर्लोक तपर्लोक और सत्यलोक या ब्रह्मलोक। नीचे के सात लोकों के नाम क्रमात् ये हैं—अतल, वितल, सुतल, रसातल, तलातल, महातल, और पाताल। ४. उक्त के आधार पर सात अथवा चौदह की सूचक संख्या। ५. पृथ्वी की कोई विशिष्ट दिशा या प्रांत।

पद—लोक-पाल।

६. सारी मानवजाति। ७ किसी राजा या राज्य के अधीन रहनेवाले लोग। प्रजा। ८. किसी देश या स्थान मे रहनेवाले सब मनुष्यों का वर्ग, समाज या समूह। लोग। ९ देश का कोई प्रान्त या विभाग। प्रदेश। १० लोगों में प्रचलित प्रणाली, प्रथा, या रीति। ११. जीव। प्राणी। १२. देखने की इन्द्रिय या शक्ति। दृष्टि। १३ कीर्ति। यश।

पुं०[?] बसख की तरह का एक प्रकार का बड़ा पक्षी।

लोक-कंटक—पु०[सं० ष० त०] १. वह जो समाज का कलंक, विरोधी या हानिकारक हो। दुष्ट प्राणी। २. कोई ऐसा काम या बात जिसमें लोगों को कष्ट होता हो। (नुएजेन्स)

वि० जन-साधारण को कष्ट देने या पीडित करनेवाला।

लोक-कथा—स्त्री०[सं० ष० त०] लोक विशेषत ग्राम्य लोगो मे प्रचलित कोई प्राचीन गाथा।

लोक-कर्ता (र्तृ)—पुं०[सं० ष० त०] १. ब्रह्मा। २. विष्णु। ३. महेश।

लोक-काम—वि०[सं० लोक√कम् (चाहना)+णिङ्+अण्, उप० स०] किसी विशेष लोक में जाने की कामना करनेवाला।

लोककार—पुं०[सं० लोक√ कृ+अण्, उप० स०] ब्रह्मा, विष्णु और महेश।

लोक-गत—वि०[सं० द्वि० त०] जिसे जन-साधारण ने अपनाकर स्वीकृत कर लिया हो। लोक में प्रचलित तथा प्रिय।

लोक-गति—स्त्री०[सं० ष० त०] लोकाचार।

लोक-गाथा—स्त्री०[सं० मध्य० स०] परंपरा से चले आये हुए वे गीत आदि जो लोक में प्रचलित हों।

लोक-गीत—पुं०[सं० मध्य० स० या ष० त०] गाँव-देहातों में गाये जानेवाले जन-साधारण के वे गीत जो परम्परा से किसी जन-समाज में प्रचलित तथा लय-प्रधान हों। (फोक साँग) जैसे—भिन्न भिन्न ऋतुओं में त्यौहारों पर अथवा धार्मिक उत्सवों, संस्कारों आदि के समय गाये जानेवाले गीत।

लोक-घोषणा—स्त्री० [सं० स० त०] सब लोगों की जानकारी के लिए की जानेवाली घोषणा। (मैनिफ़ेस्टो)

लोक-चक्षु (स्)—पुं०[सं० ष० त०] सूर्य।

लोकचार—पुं०=लोकाचार।

लोकजित्—पुं० [सं०लोक√जि (जय) + क्विप्, तुगागम] गौतम बुद्ध।

लोक-जीवन—पुं०[सं० मध्य० स०] १. घरेलू जीवन से भिन्न वह चर्या जिसमें व्यक्ति सार्वजनिक महत्त्व के कार्यों में संलग्न रहता है। २. वह अवधि या भोग-काल जिसमें कोई व्यक्ति सार्वजनिक कार्य करता है। (पब्लिक लाइफ़)

लोकज्ञ—वि० [सं० लोक √ज्ञा(जानना)+क] १. लोगों की प्रवृत्तियों, मनोभाव आदि जाननेवाला। २ लौकिक या सांसारिक व्यवहारों में कुशल। दुनियादार।

लोकटी—स्त्री०=लोमड़ी।

लोक-तंत्र—पुं० [स० ष० त०] [वि० लोकतांत्रिक] वह शासन-प्रणाली जिसमें जन-साधारण प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में अपने राष्ट्र या राज्य पर शासन करता हो। जनता का शासन। (डिमोक्रेसी)

लोक-तांत्रिक—वि०[सं०लोकतांत्रिक]लोकतन्त्र-सम्बन्धी। (डिमोक्रेटिक)

लोक-तंत्री (त्रिन्)—वि०[सं० लोकतंत्र+इनि]लोक तंत्र के सिद्धान्तों का प्रतिपादक या समर्थक। (डैमोक्रैट)

लोकतांत्रिक—वि०[सं० लोकतंत्र+ठक्—इक]=लोक-तांत्रिक।

लोक-दूषण—वि०[सं०ष० त०]१.लोगों को हानि पहुँचानेवाला। २. लोगों में दोष निकालनेवाला।

लोक-धर्म—पुं०[स० ष० त०] वास्तविक धर्म से भिन्न वे बातें या कृत्य जो जन-साधारण में प्रायः धर्म के रूप में ही प्रचलित हो। जैसे—तन्त्र-मंत्र भूत-प्रेत की पूजा-वीर पूजा आदि।

लोक-धारिणी—स्त्री०[सं० ष० त०] पृथ्वी।

लोक धुनि—स्त्री०[सं० लोक-ध्वनि] अफवाह। किंवदंती।

लोकन—पुं०[सं०√लोक्(देखना)+ल्युट्—अन्] अवलोकन।

लोकना—स०[?] १. उछलती गिरती या फेंकी हुई वस्तु को जमीन छूने से पहले ही हवा में पकड़ लेना। जैसे—उछाला हुआ गेंद या कटी हुई पतंग लोकना। बीच में उड़ा या हड़प लेना।

पुं० [स्त्री० लोकनी] दे० 'लोकंदा'।

लोक-नाट्य—पुं०[सं० मध्य० स०] शास्त्रीय नियमों से बननेवाले नाटकों से भिन्न वे नाटक या अभिनय जो जन-साधारण बिना नाट्य-कला सीखे अपनी उद्भावना से बनाते और जन-साधारण को दिखलाते हैं। जैसे—कठपुतली का नाच, नौटंकी, रासलीला आदि।

लोक-नाथ—पुं०[सं० ष० त०]१. ब्रह्मा। २. लोकपाल। ३. गौतम बुद्ध।

लोक-निर्माण—पुं०[सं० ष० त०] लोक-वस्तु।

लोकनी—स्त्री०=लोकंदी।

लोकनीय—वि० [सं० √ लोक् (दर्शन)+अनीयर्] अवलोकन करने योग्य। दर्शनीय।

लोक-नृत्य—पुं०[सं० मध्य० स०] शास्त्रीय नृत्य-कला से रहित ऐसे नाच जो गाँव-देहात के लोग उमंग में आकर नाचते हैं। (फोक डान्स) जैसे—अहीरों, धोबियों आदि के नृत्य, मणिपुरी, सन्थाली आदि नृत्य।

लोक-पद—पुं०[सं०] लोक या जनता की सेवा से सम्बन्ध रखनेवाला राजकीय पद या ओहदा। (पब्लिक आफिस)

लोक-पाल—पुं०[स० लोक√पाल् (रक्षा)+णिच्+अण्]१. दिक्पाल। २. नरेश।

लोक-पितामह—पुं०[सं० ष० त०] ब्रह्मा।

लोक-प्रत्यय—पुं०[सं० ब० स०] वह जो संसार में सर्वत्र दिखाई देता या मिलता हो।

लोक-प्रवाद—पुं०[सं० स० त०] १. ऐसी साधारण बात जो संसार के सभी लोग कहते और समझते हों। २ लोक में प्रचलित प्रवाद या किंवदंती।

लोक-प्रवाही (हिन्)—वि० [सं० लोक-प्रवाह,ष० त०,+इनि] लोगों की प्रवृत्ति या रुख देखकर उसी के अनुसार चलनेवाला।

लोक-प्रिय—वि०[सं० ष० त०] [भाव० लोक प्रियता]१ जो जन-साधारण को प्रिय तथा रुचिकर प्रतीत होता हो। २. समाज के बहुमत की पसंद या रुचि के अनुकूल होनेवाला। जैसे—लोकप्रिय-साहित्य।

लोकप्रियता—स्त्री०[स० लोकप्रिय+तल्+टाप्] लोकप्रिय होने की अवस्था या भाव। (पॉपुलेरिटी)

लोक-बंधु—पुं०[स० ष० त०]१. शिव। २ सूर्य।

लोक-बाह्य—वि०[सं०प०त०] १. जो इस लोक या संसार में न होता या न दिखाई देता हो। २. जो साधारण जन-समाज में न होता हो। ३. बिरादरी या समाज से निकाला हुआ। ४ झक्की। सनकी।

लोक-भावन—पुं० [सं० ष० त०] १. लोक की रचना करनेवाला। २. लोक की भलाई करनेवाला।

लोक-भावना—स्त्री०[सं०ष० त०] लोक अर्थात् जनता का उपकार, सेवा आदि करने की भावना या वृत्ति। (पब्लिक स्पिरिट)

लोक-मत—पुं०[स० ष० त०] किसी बात या विषय में देश या समाज में रहनेवाले सब अथवा अधिकतर लोगों का मत, राय या विचार। समाज के बहुत से लोगों का ऐसा मत जो किसी एक दल या वर्ग का नहीं बल्कि समष्टि के विचार या हित का सूचक हो। (पब्लिक ओपीनियन)

लोक-माता (तृ)—स्त्री० [सं० ष० त०]१. लक्ष्मी। २. गौरी।

लोक-यात्रा—स्त्री०[सं० ष०त०] संसार में रहकर लोगों के साथ व्यवहार करना।

लोक-रंजन—पुं०[सं० ष० त०] सब को प्रसन्न तथा सुखी रखना। वि० सबको प्रसन्न तथा सुखी रखनेवाला।

लोक-रंजनी—स्त्री० [सं० ष० त०] संगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

लोक-रक्षक—वि० [सं० ष० त०] सब लोगों की रक्षा करनेवाला। पु० १ राजा। २ शासक।

लोकल—वि० [अं०] १ (निवासियों की दृष्टि से उनके) नगर या गाँव की सीमा के अन्दर-अन्दर होनेवाला। जैसे—लोकल पालिटिक्स। २ जिसका संबध किसी विशिष्ट गाँव, नगर आदि मे ही सीमित हो। जैसे—लोकल पोस्टकार्ड।

लोक-लीक—स्त्री० [सं० लोक+हिं० लीक] लोक मे प्रचलित प्रथाएँ और मर्यादा।

लोक-लोचन—पु० [सं० ष० त०] सूर्य।

लोक-प्रवंती—स्त्री० [सं० मध्य० स०] लोक मे प्रचलित चर्चा। अफवाह। किंवदती।

लोक-वाद—पु० [सं० ष० त०] १ कहावत। २ किंवदती। अफवाह।

लोक-वार्ता—स्त्री० [सं० ष० त०] इतिहास, पुरातत्त्व आदि के अध्ययन का वह अंग जिसमे लोक मे प्रचलित पुरानी धारणाओं, प्रथाओं, विश्वासो आदि से संबध रखनेवाली बातों का विचार या विवेचन होता है। (फोक-लोर)

लोक-वास्तु—पु० [सं० ष० त०] १ राज्य या शासन का वह विभाग जो लोक के उपयोग तथा कल्याण के लिए इमारतें, नहरें, सडकें आदि बनाता है। (पब्लिक वर्क्स) २. जन-साधारण तथा राजकीय विभागों के काम मे आनेवाली इमारतें, सड़कें आदि।

लोक-वाहक—पु० [सं० ष० त०] जनता का सामान ढोने लिए प्रयुक्त मोटर गाड़ियाँ आदि। (पब्लिक कैरियर)

लोक-विरुद्ध—वि० [सं० तृ० त०] (आचरण, कथन या कार्य) जो लोक मे प्रचलित न हो और इसी लिए ठीक न माना जाता हो।

लोक-विश्रुत—वि० [सं० स० त०] संसार भर मे अर्थात् सब जगह प्रसिद्ध। जगद्विख्यात।

लोक-वेद—पु० [सं०, लोक और वेद से] हिन्दुओं मे प्रचलित वे पौराणिक और सामाजिक आचार-विचार जिन्हे लोग वेदों के विधान के समान ही आवश्यक और मान्य समझते है।

लोक-व्यवहार—पु० [सं० ष० त०] १ वह व्यवहार जो लोक मे सब लोगो से मेल-जोल बनाए रखने के लिए करना पड़ता है। लोकाचार। २ समाज की मर्यादा के विचार से किया जानेवाला शिष्ट व्यवहार।

लोक-शांति—स्त्री० [सं० मं० त०] लोक अर्थात् जन-साधारण या समाज में बनी रहनेवाली ऐसी शांति जिसमे किसी प्रकार का उत्पात, उपद्रव या लड़ाई-झगडा न हो। (पब्लिक पीस)

लोक-शासन—पु० [सं० ष० त०] देश या राज्य का ऐसा शासन या सरकार जो लोक-मत के आधार पर चलती हो। जन-तन्त्र। (पापुलर गवर्नमेंट)

लोक-श्रुति—स्त्री० [सं० स० त०] जनश्रुति। अफवाह।

लोक-संग्रह—पु० [सं० ष० त०] १ सब लोगों को प्रसन्न रखकर उन्हे अपने साथ मिलाये रखना। २ संसार के सभी लोगो के कल्याण या मंगल का ध्यान रखना। ३ लोगो को अपनी ओर मिलाना या अपने पक्ष मे करना।

लोक-संग्रही (हिन्)—वि० [सं० लोक-संग्रह+इनि] जो सब लोगों को प्रसन्न रखकर अपने पक्ष मे करता हो।

लोक-संस्कृति—स्त्री० [सं० ष० त०] साधारण जन-समाज में प्रचलित वे सब बातें जो सिद्धान्तत संस्कृति के क्षेत्र से संबद्ध हों।

लोक-सत्ता—स्त्री० [सं० ष० त०] लोक-तांत्रिक शासन प्रणाली के द्वारा लोक या सारी जनता को प्राप्त होनेवाली सत्ता।

लोक-सत्ताक—वि० =लोक-सत्तात्मक।

लोक-सत्तात्मक—वि० [सं० लोकसत्ता-आत्मन्, ब० स०+कप्] १. लोक-सत्ता संबधी। लोक-सत्ता का। २ (देश या राज्य) जिसमे लोक-तांत्रिक शासन-प्रणाली प्रचलित हो।

लोक-सदन—पु० [सं० ष० त०] लोक-सभा। (दे०)

लोक-सभा—स्त्री० [सं० ष० त०] १. प्रतिनिधि सत्तात्मक या प्रजातन्त्र शासन मे साधारण जनता के चुने हुए प्रतिनिधियों की वह सभा जो देश के लिए विधान आदि बनाती है। २ भारतीय संविधान मे उक्त प्रकार की केन्द्रीय सभा। (हाउस आफ पीपुल्स) ३ इंगलैण्ड मे उक्त प्रकार की सभा। (हाउस आफ कामन्स)

लोक-सिद्ध—वि० [सं० स० त०] इतिहास या शास्त्र-सम्मत न होने पर भी जिसे जन-साधारण ठीक मानता हो। जन-सामान्य मे मान्य और प्रचलित।

लोक-सुंदर—वि० [सं० स० त०] जो सब की दृष्टि मे अच्छा हो। पु० गौतम बुद्ध।

लोक-सेवक—पु० [सं० ष० त०] १ वह जो लोक अर्थात् जनता की सेवा या हित के कामों मे लगा रहता हो। २ वह अधिकारी या कर्मचारी जो राज्य या शासन की ओर से जनता की सेवा और हित के लिए नियुक्त हो। (पब्लिक सर्वेन्ट)।

लोक-सेवा—स्त्री० [सं० ष० त०] १ जन-साधारण की सेवा अर्थात् उपकार या हित के लिए नि स्वार्थ भाव से किये जानेवाले काम। २. राज्य या शासन की नौकरी जो वस्तुत जन-साधारण की सेवा या हित के लिए होती है। (पब्लिक सर्विस)

लोक-सेवा-आयोग—पु० [सं० ष० त०] राज्य द्वारा नियुक्त कुछ व्यक्तियों का वह आयोग या समिति जिसके जिम्मे राजकीय सेवाओं से सम्बन्ध रखनेवाले पदों पर नियुक्त करने के लिए प्रार्थियों मे से उपयुक्त तथा योग्य व्यक्ति चुनने का काम होता है। (पब्लिक सर्विस कमीशन)

लोक-स्वास्थ्य—पु० [सं०] सार्वजनिक रूप से जनता या लोगो का स्वास्थ्य। (पब्लिक हेल्थ)

लोक-हार—पु० [सं० लोक√हृ (हरण)+अण्, उप० स०] संसार का नाश करनेवाले शिव।

लोक-हित—पु० [सं० ष० त०] लोक-सेवा। (दे०)

लोकांतर—पु० [सं० अन्य-लोक, मयू० स०] वह लोक जहाँ मरने पर जीव जाता है। पर-लोक।

लोकांतरण—पु० [सं० लोकांतर+णिच्+ल्युट्—अन] इस लोक से हटाकर दूसरे लोक मे कर देना।

लोकांतरित—भू० कृ० [सं० लोकांतर+णिच्+क्त] १. जो इस लोक से दूसरे लोक मे चला गया हो। २. जो मर चुका हो।

लोकाचार—पुं०[सं० लोक-आचार, ष० त०] १. वह व्यवहार जो दूसरों से सामाजिक संबंध बनाए या स्थिर रखने के लिए आवश्यक समझा जाता हो। २ दे० 'लोक व्यवहार'।

लोकाचारी (रिन्)—वि० [सं० लोकाचर+इनि] १. लोकाचार का आचरण या पालन करनेवाला। २. दिखावटी आचरण या व्यवहार करनेवाला। ढोंगी। ३. लोक को प्रसन्न रखनेवाला आचरण अथवा व्यवहार करनेवाला। दुनियादार।

स्त्री०=लोकाचार।

लोकाट—पुं०=लुकाट।

लोकाधिक—वि०[सं० लोक-अधिक, पं० त०] लोक अर्थात् संसार से परे या बाहर; अर्थात् असाधारण।

लोकाधिप—पु० [सं० लोक-अधिप, ष० त०] १. लोकपाल। २. बुद्ध।

लोकाना—स०[हिं० लोकने का प्रे०] ऊपर से फेंकना। उछालना।

लोकानुग्रह—पु० [सं० लोक अनुग्रह, स० त०] लोगों का कल्याण। लोक-हित।

लोकापवाद—पु०[सं० लोक-अपवाद, स० त०] लोक-निंदा। बदनामी।

लोकायत—पु०[सं० लोक-आयत=विस्तीर्ण] १. वह जो इस लोक के अतिरिक्त दूसरे लोक को न मानता हो। २ भारतीय दर्शन में एक प्राचीन भूतवादी नास्तिक सम्प्रदाय जिसके प्रवर्तक देव-गुरु बृहस्पति कहे जाते हैं। इसलिए इसे बार्हस्पत्य भी कहते हैं। प्रवाद है कि बृहस्पति ने असुरो का नाश कराने के लिए ही उनमे इस मत का प्रचार किया था।

विशेष—कुछ लोगो का मत है कि किसी समय लोक में इसी नास्तिक मत का सबसे अधिक प्रचार था। इसी लिए इसका नाम लोकायत पड़ा। इस मत का मुख्य सिद्धान्त यह है कि आत्मा, परलोक, नरक और स्वर्ग की कल्पनाएँ मिथ्या हैं, और वर्णाश्रम आदि का विधान व्यर्थ है।

३. चार्वाक दर्शन, जिसमे परलोक या परोक्षवाद का खडन है। ४ दुर्मिल छद का एक नाम।

लोकायतिक—वि०[स० लोकायत+ठन्—इक] लोकायत-सम्बन्धी। लोकायत का।

पु० १. लोकायत सम्प्रदाय का अनुयायी। २. नास्तिक।

लोकालोक—पुं०[सं० लोक-आलोक, कर्म० स०] पुराणानुसार एक पर्वत जो सातों समुद्रों और द्वीपो को चारों ओर से घेरे हुए है, और जिसके उस पार घोर अंधकार है। बौद्ध ग्रन्थो मे इसी को चक्रवाल कहा गया है।

लोकित—वि०[सं० √लोक् (दर्शन)=क्त] देखा हुआ।

लोकेश्वर—पु०[सं० लोक-ईश्वर, ष० त०] १. लोक का स्वामी। परमात्मा। २. गौतम बुद्ध।

लोकैषणा—स्त्री०[स० लोक-एषणा, ष० त०] १. सासारिक अभ्युदय की कामना। समाज मे प्रतिष्ठा और यश की कामना। २. स्वर्ग-सुख की कामना।

लोकोक्ति—स्त्री०[सं० लोक-उक्ति, मध्य० स०] १. लोक में समान रूप से प्रचलित बात। कहावत। मसला। २. साहित्य में एक अलंकार जो उस समय माना जाता है जब लोकोक्ति के प्रयोग से काव्य मे अधिक रोचकता आ जाती है।

लोकोत्तर—वि०[सं० लोक-उत्तर, पं० त०] लोक मे होनेवाले पदार्थों या बातों से अधिक बढ़कर या श्रेष्ठ। जो इस लोक मे न होता हो (पदार्थ या बात)।

लोकोपकार—पुं०[सं० लोक-उपकार, ष० त०] लोक या जन-साधारण के उपकार, लाभ या हित के काम।

लोकोपकारी (रिन्)—वि०[सं० लोकोपकार+इनि] १. लोगो का उपकार करनेवाला। २ लोकोपकार-संबंधी। २ जिनसे लोगो का उपकार होता हो।

लोकोपयोगि-सेवा—स्त्री०[स० उपयोगिनी-सेवा कर्म० स०, लोक-उपयोगि-सेवा, ष० त०] वह सेवा या कार्य जो जनता के लिए विशेष उपयोगी या काम का हो। जैसे—नगर की जल-कल व्यवस्था, बिजली, सफाई आदि के काम। (पब्लिक यूटिलिटी सर्विस)

लोखड़ी—स्त्री०=लोमड़ी।

लोखर—पु०[हिं० लोहा+खण्ड] १. नाई के औजार। जैसे—छुरा, कैंची, नहरनी आदि। २ बढ़इयों, लोहारो आदि के लोहे के औजार। ३ दुकानदारो के लोहे के बटखरे।

लोग—पुं०[स० लोक] [स्त्री० लुगाई] १ बहुत से मनुष्यो का दल, वर्ग समूह या समाज। २ दे० 'लोक'।

लोग-बाग—पु०[हिं० लोग+बाग (अनु०)] साधारण लोग। जन-साधारण। (बहु० मे प्रयुक्त)

लोगाई—स्त्री०=लुगाई (स्त्री)।

लोच—स्त्री०[हिं० लचक] १ वह गुण जिसके कारण कोई चीज दबाने पर दब जाती हो और दबाव न रहने पर फिर अपना सामान्य रूप प्राप्त कर लेती हो। २ कोमलता। मृदुता। ३ कोमलता पूर्ण सौन्दर्य।

पु०[सं० लुंचन] जैन साधुओ का अपने सिर के बालो को उखाड़ना। लुंचन।

†स्त्री०=रुचि।

लोचक—वि०[स० √ लोच् (दर्शन)+ण्वुल्—अक] १. जिसका आहार दूध हो। २ मूर्ख। बेवकूफ।

पुं० १. आँख का तारा या पुतली। २. काजल। ३. मांस-पिंड। ४. माथे पर पहनने का एक गहना। ५ केला। ६. साँप की केंचुली। ७. धनुष की पतंचिका।

लोचन—पु०[सं०√लोच्+ल्युट्—अन] आँख। नेत्र। नयन।

वि० चमकानेवाला।

लोचना†—स०[सं० लोचन] १ प्रकाशित करना। चमकाना। २ इच्छा या कामना करना। ३ किसी मे किसी बात का अनुराग या रुचि उत्पन्न करना। ४. विचार करना। सोचना। ५ देखना।

अ० १ इच्छा, कामना या रुचि होना। २. तरसना या ललचाना। ३ शोभा देना। फबना। ४. तृप्त होना। उदा०—लोचन उतावरे है, लोचें हाय कैसे हो।—घनानंद।

पु० दर्पण। शीशा। विशेषतः हज्जामो के पास रहनेवाला शीशा।

मुहा०—(कहीं) लोचना भेजना=नाई या हज्जाम के द्वारा संबंधियों

आदि के यहाँ शुभ समाचार अथवा धार्मिक संस्कार का निमंत्रण भेजना।

लोखून—पुं०=लोह-खून।

लोजंग—स्त्री०[देश०] एक प्रकार की नाव।

लोट—स्त्री०[हिं० लोटना]१. लोटने की क्रिया या भाव।

मुहा०—**लोट मारना या लगाना**=लेटना। **(किसी पर) लोट होना**=(क) आसक्त या मोहित होना। (ख) विकल होना।

२. जलाशय के किनारे पर का घाट। ३. त्रिवली।

†पुं०=नोट।

लोटन—वि० [हिं० लोटना]१. लोटने अर्थात् जमीन पर उलटबाजी लगानेवाला। जैसे—लोटन कबूतर। २. लुढ़कनेवाला।

स्त्री० १. लोटने की क्रिया या भाव। २ छोटी कंकड़ियाँ जो तेज हवा चलने पर इधर-उधर लुढ़कने लगती हैं। ३. कटीली झाड़ी। ४ एक प्रकार की सब्जी।

पुं० एक तरह का कबूतर जो चोंच से पकड़कर जमीन पर लुढ़काये जाने पर लोटने लगता है। २ एक प्रकार का छोटा हल।

लोटना—अ०[हिं० लोट] १ थकावट आदि मिटाने के उद्देश्य से लेटे लेटे पेट और पीठ के बल लुढ़कना या उलटे-पुलटे होते रहना। २ क्रोध, जिद, दु:ख, शोक आदि के कारण उक्त प्रकार से पड़कर इधर-उधर होना।

मुहा०—**लोट जाना**=(क) मर जाना या मृतप्राय हो जाना। (ख) दिवालिया हो जाना। **(किसी बात) पर लोटना**=जिद करना। हठ करना।

३. अधिक प्रसन्नता के फलस्वरूप इधर-उधर गिरना पड़ना। जैसे—हँसते हँसते लोट जाना। ४ किसी पर पूरी तरह से आसक्त होना।

संयो० क्रि०—जाना।

अ०[हिं० लोटना] मुकर जाना।

लोट-पटा—पुं०[हिं० लोटना+पाटा]१. विवाह के समय पीढ़ा या स्थान बदलने की रीति। इसमें वर के स्थान पर वधू को और वधू के स्थान पर वर को बैठाया जाता है। २. किसी को धोखा देने के लिए किया जानेवाला उलट-फेर या दाँव-पेंच।

लोट-पोट—स्त्री०[हिं० लोटना] लेटे-लेटे करवटें बदलने या लोटने की क्रिया या भाव।

वि० १. हँसते हँसते अपने को संभाल न सकने के कारण लोट जानेवाला। २ बहुत अधिक प्रसन्न। ३. उलटा-पुलटा हुआ। विपर्यस्त। ४ छिन्न-भिन्न किया हुआ।

लोटा—पुं०[हिं० लोटना] [स्त्री० अल्पा० लुटिया] धातु का एक प्रकार का प्रसिद्ध गोलाकार बरतन जो पानी रखने के काम आता है।

पद—**बे पेंदी का लोटा**=ऐसा व्यक्ति जिसका अपना कोई मत या सिद्धान्त नहीं होता, वरन् जो दूसरों की बातों पर इधर उधर ढुलकता फिरता हो।

लोटिया—स्त्री०=लुटिया।

लोटी—स्त्री०[हिं० लोटा+ई(प्रत्य०)]१ लोटे के आकार का वह बरतन जिससे तमोली पान सींचते हैं। २. छोटा लोटा। लुटिया।

स्त्री०[हिं० लूटना]१. लूटने की क्रिया या भाव। लूट। २. वह अवस्था जिसमें हर कोई किसी चीज पर लूटने के लिए झपटता है। (पश्चिम)

क्रि० प्र०—मचना।

लोडन—पुं०[सं० √लोड् (मंथन) +ल्युट्—अन] [भू० कृ० लोड़ित] १. हिलाने डुलाने या क्षुब्ध करने की क्रिया। २. मंथन।

लोड़ना—स०[पं० लोड़=आवश्यकता] आवश्यकता होना। दरकार होना।

लोढ़ना—स०[सं० लुंचन]१. (पौधों से फूल) तोड़ना। २. (कपास) ओटना।

लोढ़ा—पुं०[सं०लोष्ट] [स्त्री० अल्पा० लोढ़िया] पत्थर का वह लंबोतरा टुकड़ा जिससे सिल पर रखकर चीजें पीसी जाती हैं। बट्टा।

पद—**लोढ़ा ढाल**=पूरी तरह से चौपट या नष्ट किया हुआ।

मुहा०—**लोढ़ा डालना या ढालना**=कुचल या पीसकर नष्ट या बरबाद करना।

लोढ़िया—स्त्री०[हिं० लोढ़ा का स्त्री० अल्पा०] छोटा लोढ़ा।

लोढ़ी—स्त्री०[पं०]१. मकर संक्रान्ति से पहले वाले दिन का एक त्यौहार जिसमें रात के समय अग्नि की पूजा होती है। (पश्चिम) २. उक्त त्यौहार के उपलक्ष में गाये जानेवाले गीत।

लोण—पुं०[सं०] लोनी साग।

पुं० लोन (नमक)।

लोथ—स्त्री०[स० लोष्ट या लोठ] किसी प्राणी का मृत शरीर। लाश। शव।

मुहा०—**(किसी का) लोथ डालना**= किसी को मारकर उसका शव जमीन पर गिराना।

लोथड़ा—पुं०[हिं० लोथ+ड़ा] शरीर से कटकर अलग गिरा हुआ माँस का ऐसा बड़ा टुकड़ा जिसमें हड्डी न हो। माँस पिंड।

लोथ-पोत—वि० =लथ-पथ।

लोथारी—स्त्री०[स० लुठन]१ कम पानी में से नाव को खींचते या धीरे-धीरे खेते हुए किनारे लगाना। (लश०)

लोथारी लंगर—पुं०[हिं० लोथारी+हिं० लंगर] जहाज का सबसे छोटा लंगर जो उस जगह डाला जाता है, जहाँ यह जानना अभिप्रेत होता है कि यह किनारे पर जाने का मार्ग है या नहीं।

लोद—स्त्री०=लोध (वृक्ष)।

लोदी—पुं०[?] पठानों की एक जाति।

लोध—स्त्री०[स० लोध्र]१. पर्वतीय प्रदेश में होनेवाला एक प्रकार का बड़ा पेड़ जिसकी छाल रंगने के काम आती है।

लोधरा—पुं०[सं० लोध्र] एक प्रकार का तांबा।

लोधी—पुं०=लोदी।

लोध्र—पुं० [स०√ रुध् (रोकना)+रन्, लत्व]१. लोध नामक वृक्ष। २. एक प्राचीन जाति। ३. लोधरा नाम का तांबा।

लोध्र-तिलक—पुं० [स० ष० त० ?] साहित्य में एक प्रकार का अलंकार जो उपमा का एक भेद कहा गया है।

लोन—पुं०[सं० लवण]१. लवण। नमक।

मुहा०—**(किसी चीज को) लोन चराना**= नमकीन बनाना। जैसे—आम को लोन चराना। **(किसी का) लोन न मानना**—किसी का उप-

कार न मानना। कृतघ्न होना। (किसी का) लोन निकलना—कृतघ्नता या नमक-हरामी का फल भोगना।

पुं०[अं०] ऋण।

लोन-हरामी—वि०=नमक हराम।

लोना—वि०[हिं० लोन] [भाव० लोनाई]१. नमकीन। सलोना। २. लावण्ययुक्त। सुन्दर।

पुं०१. नमक की तरह का वह सफेद पदार्थ जो सीड़ के कारण ईंट, पत्थर, मिट्टी आदि की दीवारों मे लगता है। इससे दीवार कमजोर होकर झड़ने लगती है। यह रोग प्रायः नींव की ओर से आरंभ होता है और क्रमशः ऊपर बढ़ता है। नोना।

क्रि० प्र०—लगना।

२. वह धूल या मिट्टी जो लोना लगने पर दीवार से झड़कर गिरती है। यह खाद के रूप में खेत में डाली जाती है।

क्रि० प्र०—झड़ना।

३. क्षार मिली हुई वह मिट्टी जिससे शोरा बनता है। ४. वह क्षार जो चने की पत्तियों पर इकट्ठा होता है, और जिसके कारण उसकी पत्तियाँ चाटने में खट्टी जान पड़ती हैं। ५. घोंघे की जाति का एक प्रकार का कीड़ा जो प्रायः नाव के पेंदे मे चिपका हुआ मिलता है। ६. अमलोनी नामक घास जिसका प्रयोग धातु सिद्ध करने में करते हैं। उदा०—कहाँ सो खोए बीरो लोना।—जायसी।

स० खेत में की तैयार फसल काटना। लवना।

स्त्री०एक कल्पित चमारी जिसके नाम से ओझा लोग मंत्र आदि पढ़ते हैं।

लोनाई—स्त्री० १.=लुनाई। २.=लवनी।

लोनारा—पुं०[हिं० लोन] वह स्थान जहाँ नमक निकलता, बनता या बनाया जाता या मिलता हो।

लोनिका—स्त्री०=अमलोनी (साग)।

लोनिया—स्त्री०=अमलोनी (साग)।

†पुं०=नोनियाँ (जाति)।

लोनी—स्त्री०=अमलोनी।

लोप—पुं०[सं० √लुप् (काटना)+घञ्]१. किसी चीज के न रह जाने की अवस्था या भाव। जैसे—कार्यों का लोप होना। २. न मिलने की अवस्था या भाव। अभाव। ३. अदृश्य होने की अवस्था या भाव। अदर्शन। ४. व्याकरण के चार प्रधान नियमो में से एक जिसके अनुसार शब्द के साधन मे कोई वर्ण उड़ा या हटा दिया जाता है।

लोपक—वि०[सं०√ लुप्+णिच्+ण्वुल्—अक]१. लोप करनेवाला। २. बाधक।

पुं० भाँग। विजया।

लोपन—पुं०[सं०√ लुप्+णिच्+ल्युट्—अन]१. लोपन करने की क्रिया या भाव। २. छिपाना। ३. नष्ट करना। न रहने देना।

लोपना—स०[सं० लोपन]१. लुप्त करना। छिपाना। २. न रहने देना। नष्ट करना। ३. उपेक्षा करना।

अ० लुप्त होना।

लोप-विभ्रम—पुं०[सं० षु० त०] दे० 'भूल-चूक' (हिसाब की)।

लोपांजन—पुं० [सं० लोप-अंजन, मध्य० स०] एक प्रकार का कल्पित अंजन जिसके विषय में यह प्रसिद्ध है कि इसे लगाने से लगानेवाला अदृश्य हो जाता है, उसे कोई देख नहीं सकता।

लोपा—स्त्री० [सं० √लुप्(काटना)+णिच्+अच्+टाप्] १. विदर्भ नरेश की पालिता कन्या और अगस्त्य की पत्नी। २. अगस्त्य मण्डल के पास उदित होनेवाला एक प्रकार का तारा।

लोपापक—पुं०[सं० लोप-आपक, ष० त०] [स्त्री० लोपापिका] गीदड़। सियार।

लोपामुद्रा—स्त्री० [सं० न√मुद्+ रा+क+टाप्=अमुद्रा, लोप-अमुद्रा, स० त०] १. अगस्त्य ऋषि की स्त्री जो उन्होंने स्वयं सब प्राणियों के उत्तम उत्तम अंगों को लेकर बनाई थी और तब विदर्भ राज को सौंप दी थी। युवती होने पर अगस्त्य जी ने इसी से विवाह किया। २. एक तारा जो दक्षिण में अगस्त्य मंडल के पास उदय होता है।

लोपी (पिन्)—वि०[सं० √ लुप्+णिनि] १. लोप करनेवाला। २. छिपानेवाला। नष्ट करनेवाला। ४. जिसका लोप हो सके। जैसे—मध्यम पद लोपी समास।

लोप्ता (प्तृ)—वि०[सं० √लुप्+तृच्] लोप करनेवाला।

लोफर—पुं०[अं०]१. आवारा। २. लफंगा। ३. टुकड़-गदाई।

लोबान—पुं०[अ०] एक प्रकार के वृक्ष का सुगन्धित गोंद। इसका वृक्ष अफ्रीका के पूर्वी किनारों पर, और अरब के दक्षिणी समुद्र तट पर होता है। यह जलाने के काम के सिवा दवाओं में भी काम आता है। धूना।

लोबानी—वि० [अ०] १. लोबान संबंधी। लोबान का। २. जिससे लोबान निकलता हो। ३. लोबान के रंग का, सफेद।

पुं० लोबान की तरह का सफेद रंग।

लोबिया—पुं० [अ०] एक प्रकार का बड़ा सफेद बोड़ा जिसके बीजों से दाल और दालमोठ बनाते हैं।

लोबिया-कंजई—पुं० [हिं० लोबिया+कजई] गहरा हरा रंग।

वि० उक्त प्रकार के रंग का।

लोभ—पुं० [सं०√ लुभ् (लोभ करना)+घञ्] [वि० लुब्ध, लोभी] १. दूसरे की चीज पाने या लेने की प्रबल कामना या लालसा। २. कुछ प्राप्त करने की ऐसी प्रबल लालसा जिसकी पूर्ति हो जाने पर भी तृप्ति या संतोष न हो। पूरी हो जाने पर भी बनी रहनेवाली कामना या लालसा (ग्रीड)। ३. जैन धर्म मे वह कर्म जिसके फलस्वरूप मनुष्य किसी प्रकार का त्याग नहीं कर सकता। ४. कजूसी। ५. कृपणता।

लोभन—पुं० [सं० √लुभ्+ल्युट्—अन] १ लालच। लोभ। २. सोना। स्वर्ण।

लोभना—अ०[हिं० लोभ] लुब्ध होना। मुग्ध होना। लुभाना। उदा०—भौंर चारो ओर रहे गंध लोभि के बार के। —भारतेन्दु।

स० लुब्ध या मुग्ध करना। लुभाना.

लोभनीय—वि०[सं०√ लुभ्+अनीयर्]१ जिसके प्रति लोभ हो सके। २. लुभानेवाला। मनोहर। आकर्षक।

लोभाना—अ०, स०=लुभाना।

*वि०=लुभावनी।

लोभार*—वि०=लुभावना।

लोभित—भू० कृ०[सं० √लुभ्+णिच्+क्त] लुभाया हुआ। जो लुब्ध किया गया हो।

लोभी (भिन्)—वि०[सं० लोभ+इनि]१ जिसे किसी बात का लोभ

हो। २. जो प्रायः अधिक लोभ करता हो। लालची। ३. लुभाया हुआ। लुब्ध। (क्रीड़ी)

लोभ्य—वि०[सं० √लुभ्+ण्यत्]=लोभनीय।

लोम—पु०[सं० √लू (छेदन)+मनिन्] १. शरीर पर के छोटे-छोटे बाल। रोईं। रोम। २. केश। बाल।

पु० [सं० लोमश] लोमड़ी।

लोम-कर्ण—पु०[सं० ब० स०] शशक। खरगोश।

लोम-कूप—पुं०=रोमकूप।

लोमघ्न—पु०[सं० लोमन√हन् (मारना) क] सिर का गज नामक रोग।

वि०=लोम नाशक।

लोमड़ी—स्त्री०[सं० लोमटक] १. कुत्ते की तरह का एक जंगली हिंसक पशु, जिसकी चालाकी बहुत प्रसिद्ध है। २. लाक्षणिक अर्थ में, चालाक स्त्री।

लोम-नाशक—वि०[सं० ष० त०] (औषध या पदार्थ) जिसे लगाने से शरीर के रोएँ या बाल झड़ जाते हों।

लोमपाद—पु०[सं० ब० स०] अंग देश के एक राजा जो दशरथ के मित्र थे। रोमपाद।

लोमपादपुर—पुं०[सं० ष० त०] चंपा नगरी (आधुनिक भागलपुर) का एक पुराना नाम।

लोम-विलोम—पुं०[सं०] साहित्य में एक प्रकार का शब्दालंकार जिसमें किसी पद या वाक्य की रचना इस प्रकार की जाती है कि सीधी तरह से पढ़ने से तो उसका अर्थ निकलता ही है, उलटी तरह से अर्थात् अन्त से आरम्भ करके पढ़ने पर भी उसका कुछ भिन्न अर्थ निकलता है। जैसे—'बीर सबे निमि काल फलै' को उलटी तरह से पढ़ें तो रूप होगा।—लै फल कामिनि बेस रची।

लोमश—पु०[सं० लोमन्+श] १ एक ऋषि जिन्हें पुराणों में अमर माना गया है। महाभारत के अनुसार ये युधिष्ठिर के साथ तीर्थयात्रा को गये थे और उन्हें सब तीर्थों का वृत्तान्त इन्होंने बतलाया था। २ भेड़ा। मेष। वि० बड़े बड़े रोमों या रोओंवाला।

लोमश-मार्जार—पुं०[सं० कर्म स०] गंध-बिलाव।

लोमशा—स्त्री०[सं०] १. वैदिक काल की एक स्त्री जो कई मंत्रों की रचयिता मानी जाती है। २.काक-जंघा। ३. बच। ४. अति-बला। ५. केवाँच।

लोमस—पु०=लोमश।

लोमहर्षक—वि०=रोमहर्षक।

लोम-हर्षण—पुं०[सं० ष० त०] १. पुराणों के अनुसार व्यास के एक शिष्य का नाम जो उग्रश्रवा के पुत्र थे। इन्हीं को सूत भी कहते हैं। २. रोमांच।

वि०=रोम-हर्षक।

लोमांच—पुं०=रोमांच।

लोमावली—स्त्री०[सं० लोमन्-आवली, ष० त०]=छाती से नाभि तक उगे हुए बालों की पंक्ति।

लोमाश—पुं०[सं० लोमन्√अश् (भोजन)+अण्] [स्त्री० लोमाशिका] गीदड़। शृंगाल।

लोय—पुं०[सं० लोक] लोग।

पुं०=लोयन(लोचन)।

†स्त्री०=लौ (लपट)।

†अव्य०=लौ (तक)।

लोयल—पुं०[?] लासा, जिससे चिड़िया फँसाई जाती है।

लोर—वि० [सं० लोल] १. लोल। चंचल। २. अभिलाषी। इच्छुक।

पुं०[सं० लोल] १. कान का कुंडल। २. लटकन।

पु०=लोर। (शब्द)।

लोरना—अ०[सं० लोल] १. चंचल होना। २. इधर-उधर झूलना, लहराना या हिलाना। ३. पाने के लिए उत्सुक होना। ललकना। ४. पाने के लिए तेजी से आगे बढ़ना। लपकना। ५. लिपटना। ६. झुकना। ७. लोटना।

स० १. चलायमान या चंचल करना। २. हिलाना-डुलाना। ३. नत करना। झुकाना। ४. किसी को नम्र अथवा विनीत करना अथवा बनाना।

स०[?] निर्मल या स्वच्छ करना। उदा०—हमरा जीवन निदकु लोरै। —कबीर।

लोरिक—पु०[?] १. उत्तर प्रदेश में प्रचलित एक गीत-कथा का नायक जो आभीर जाति का था, और जिसका प्रेम किसी दूसरे आभीर की चन्दा नामक पत्नी से हो गया था। २. प्रेमी।

लोरी—स्त्री०[सं० लोल] वे गीत जो स्त्रियाँ छोटे बच्चों को सुलाने के लिए गाती हैं। ललबी।

पुं०[?] एक प्रकार का तोता।

लोल—वि० [सं०√लोड् (विक्षिप्त होना)+अच्, ड—ल] १. हिलता हुआ। कंपायमान। २. चंचल। ३. परिवर्तनशील। ४. क्षणिक। ५. उत्सुक।

पु०१. समुद्र में उठनेवाली बहुत बड़ी तथा ऊँची लहर। २. लिंगेन्द्रिय।

स्त्री०[?] चोच।

लोलक—पुं०[सं० लोल से] १. नथ, बाली आदि में पिरोया जाने वाला लटकन। लरकन। २. कान की लौ। लोलकी। ३. घंटी या घंटे के बीच लगा हुआ वह लरकन जो हिलाने से इधर-उधर टकराकर शब्द उत्पन्न करता है।

लोल-कर्ण—वि०[सं० ब० स०] जो हर किसी की बात सुनकर सहज में ही उस पर विश्वास कर लेता हो। कान का कच्चा।

लोलकी—स्त्री०[हिं० लोलकी] कान के नीचे का वह कोमल भाग जिसमें छेद करके कुण्डल, बाली आदि पहनते हैं।

लोल-जिह्व—वि०[सं० ब० स०] लालची। लोभी।

पुं० साँप।

लोल-दिनेश—पुं०[सं० कर्म० स०] लोलार्क।

लोलना—अ०[सं० लोल] इधर-उधर लहराना या हिलना-डुलना।

लोला—स्त्री०[सं० लोल+टाप्] १. जिह्वा। जीभ। २. लक्ष्मी। ३. मधु नामक दैत्य की माता। ४. एक योगिनी। ५. एक प्रकार का वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में मगण, सगण, मगण, भगण और अंत में दो गुरु होते हैं। ६. एक प्रकार का छोटा डंडा जिसके दोनों सिरों पर लट्टू लगे रहते हैं।

लोलार्क—पुं०[सं० लोल-अर्क, कर्म० स०] बारह आदित्यों में से एक आदित्य।

लोलित—भू० कृ० [सं०√लुल् (विमर्दन)+णच्=लोल+क्त] १. हिला या हिलाया हुआ। २. क्षुब्ध।

लोलिनी—स्त्री०[सं० लोल+इनि-ङीप्] चंचल या चपल स्त्री।

लोलुप—वि० [सं०√लुप्+यङ, लुक्, द्वित्वादि+अच्] [भाव० लोलुपता] १. लोभी। लालची। २. चटोरा। ३. परम उत्सुक। जैसे—युद्ध-लोलुप।

लोलुपता—स्त्री०[सं० लोलुप+तल्+टाप्] लोलुप होने की अवस्था या भाव।

लोलुपत्व—पुं० [सं० लोलुप+त्व]=लोलुपता।

लोवा—स्त्री०=लोमड़ी।

स्त्री०[सं० लोपाक] लोमड़ी।

पुं०=लवा (पक्षी)।

लोशन—पुं०[अं०] घोल।

लोष्ट—पुं०[सं०√लोष्ट् (ढेर करना)+घञ्] १. पत्थर। २. मिट्टी आदि का ढेला। ३. चित्र का काम देनेवाली कोई वस्तु। ४. लोहे में लगनेवाला जंग। मोरचा।

लोष्टघ्न—पुं०[सं० लोष्ट√हन्+क] खेतो में मिट्टी के ढेले तोड़ने का पटेला। पाटा।

लोष्ट-लोह—पुं०[सं० उपमित स०] दे० 'कच्चा लोहा'।

लोहंडा—पु०[सं० लौह-भांड] [स्त्री० लोहँडी] लोहे का एक प्रकार का बड़ा तसला।

लोह—पुं०[सं०√लू (छेदन)+ह (करण)] १. लोहा नामक धातु। २. रक्त। लहू। ३ लाल बकरा। ४. मछली फँसाने का काँटा। ५. हथियार। ६. अगर।

वि० ताँबे के रंग का, लाल। २. लोहे का बना हुआ।

लोहकार—पु०[सं० लोह√कृ (करना)+अण्, उप० स०] लोहार।

लोह-किट्ट—पु० [सं० ष० त०] लोह चून। (दे०)

लोह-चून—पुं०[सं० लोह+चूर्ण] १. लोहे की मैल जो गलाने पर निकलती है। लोह किट्ट।२. लोहे को काटने, रेतने आदि पर निकलनेवाले उनके छोटे छोटे कण।

लोह-जाल—पुं०[सं० मध्य० स०] १. लोहे की बनी हुई जाली या जाल। २. योद्धाओं के पहनने का झिलम। ३. आज-कल बीच में खड़ा किया हुआ ऐसा आवरण या व्यवस्था जिसके कारण अन्दर की स्थिति आदि का बाहर वालों को पता न चल सके। (आयरन कर्टेन)

लोहड़ा—पुं०=लोढ़ा।

पुं०=लोहँडा।

लोहड़ी—स्त्री०=लोढ़ी (त्यौहार)।

लोहद्रावी (विन्)—पुं०[सं० लोह√द्रु (गति)+णिच्+णिनि] १. सुहागा। २. अम्लबेंत।

लोह-नाल—पुं० [सं० ब० स०] नाराच (अस्त्र)।

लोह-पाश—पुं०[सं० मध्य० स०] लोहे की जंजीर या सिक्कड़।

लोह बंधा—पुं० दे० 'लोहाँगी'।

लोहबान—पुं०=लोहबान।

पुं०[हिं० लोहा] युद्ध।

लोह-लंगर—पुं०[हिं० लोहा+लंगर] १. जहाज का लंगर। २. बहुत भारी वस्तु।

लोह-शंकु—पुं०[सं० ष० त०] १. लोहे का काँटा। २. एक नरक।

लोहस—वि० [सं० लोह से] (द्रव्य) जिसमें लोहे का भी कुछ अंश या मेल हो। (फेरस)

लोहसार—पुं०[सं० ष० त०] १. पक्का लोहा। फौलाद। २. फौलाद की जंजीर।

लोहाँगी—स्त्री०[हिं० लोहा+अंग+ई] ऐसी लाठी जिसके ऊपरी या निचले अथवा दोनों सिरों पर लोहा लगा हो। (इसका प्रयोग प्रायः मार-पीट के लिए होता है।

लोहा—पुं०[सं० लोह] १. प्रायः काले रंग की एक प्रसिद्ध धातु जिससे अनेक प्रकार के अस्त्र, उपकरण बरतन, यंत्र आदि बनाये जाते हैं। (आयरन)

पद—लोहे की स्याही, लोहे के चने। (दे० स्वतंत्र पद)

२. उक्त धातु से बने हुए अस्त्र जो युद्ध में शत्रुओं को काटने-मारने के काम आते हैं। जैसे—कटार, तलवार, भाला, आदि।

मुहा०—लोहा गहना=किसी से लड़ने के लिए हथियार उठाना। लोहा बजना—तलवारों, भालों आदि से युद्ध या लड़ाई होना। मार-काट होना। लोहा बरसना=युद्ध-क्षेत्र में अस्त्रों आदि का बहुत अधिकता से उपयोग होना। घमासान युद्ध होना। (किसी का) लोहा मानना=किसी काम या बात में किसी की योग्यता, शक्ति आदि की श्रेष्ठता स्वीकृत करते हुए उसके सामने झुकना या दबना, और उसे अपने से अधिक योग्य या शक्तिशाली समझना। (किसी से) लोहा लेना=(क) किसी से डटकर मार-पीट युद्ध या लड़ाई करना। (ख) किसी के सामने आकर उसके बल, योग्यता आदि का मुकाबला करना। टक्कर लेना। भिड़ना। लोहा सहना=लोहा लेना। (राज०)

३. लोहे का बना हुआ कोई उपकरण। लोहे की चीज या सामान। जैसे—लोहे का रोजगार लोहे की दूकान। ४. लाल रंग का बैल।

वि०[स्त्री० लोही] १. लाल। २. बहुत अधिक कठोर या कड़ा।

लोहाना—अ० [हिं० लोहा+आना (प्रत्य०)] किसी चीज का अधिक समय तक लोहे के बरतन में रखे रहने के कारण लोहे के गुण, रंग, स्वाद आदि से युक्त होना।

पुं० वैश्यों की एक जाति।

लोहार—पुं०[सं० लौहकार] [स्त्री० लोहारिन या लोहाइन] एक जाति जो लोहे की चीजें बनाने का काम करती है।

लोहारखाना—पु०[हिं० लोहार+फा० खानः] वह स्थान जहाँ बैठकर लोहार लोग लोहे की चीजें बनाते हैं।

लोहारी—स्त्री०[हिं० लोहार+ई (प्रत्य०)] लोहार अथवा लोहे की चीजें बनाने का काम या पेशा।

लोहा सारंग—पुं० [हिं०] लगलग की जाति का एक प्रकार का पक्षी।

लोहित—वि० [सं०√रुह् (उगना)+इतन्, र—लकम्] १. लाल रंग का। लाल। २. ताँबे का बना हुआ।

पुं० १. लाल रंग। २. लाल चन्दन। ३. मंगल ग्रह। ४. साँप। ५.

एक तरह का हिरन। ६ ब्रह्मपुत्र नद। ७. पलक-संबंधी एक रोग। ८. गौतम बुद्ध का एक नाम।

लोहितक—पुं०[सं० लोहित+कन्] १ पद्मराग या लाल की तरह का एक प्रकार का घटिया रत्न। २. फूल नामक धातु। ३ आधुनिक रोहतक नगर का पुराना नाम। ४. दे० 'लोहित'।

लोहित-चंदन—पुं०[सं० उपमित स०] केसर।

लोहित-मृत्तिका—स्त्री०[सं० कर्म० स०] गेरू।

लोहित सागर—पुं० [सं०] अफरीका और अरब के बीच का वह समुद्र जो पहले भू-मध्य सागर से पृथक् था, पर अब बीच में स्वेज की नहर बन जाने से उक्त सागर के साथ संबद्ध हो गया। (रेड सी)

लोहितांग—पुं०[सं० लोहित-अंग, ब० स०] १ मंगल ग्रह। २ कापिल्ल वृक्ष।

लोहिताक्ष—पुं० [सं० लोहित-अक्षि, ब० स०,+षच्] १. एक तरह का साँप। २ कोयल। ३. विष्णु। ४. काँख। कोख। ५. चूतड़। नितंब।

लोहिताक्षक—पुं० [सं०] एक तरह का साँप।

लोहिताश्व—पुं० [सं० लोहित-अश्व, ब० स०] १ अग्नि। २. शिव।

लोहितिमा (मन्)—स्त्री० [सं० लोहित+इमनिच्] रंग के विचार से लोहित होने की अवस्था या भाव। लालिमा। लाली।

लोहितोद—पुं० [सं० लोहित-उदक, ब० स०, उदादेश] एक नरक। (पुरा०)

लोहित्य—पुं०[सं०] १. ब्रह्मपुत्र नद। २. पुराणानुसार एक समुद्र जो कुश द्वीप के पास है। ३ एक प्राचीन जनपद या बस्ती।

लोहिनी—स्त्री०[सं० लोहित+ङीप्, न—आदेश] लाल वर्णवाली स्त्री।

लोहिया—वि०[हिं० लोहा+इया (प्रत्य०)] १ लोहे का बना हुआ। २ लाल रंग का। जैसे—लोहिया घोड़ा।

पुं० १. लोहे की चीजों का व्यापार करनेवाला व्यक्ति। लोहे का रोजगारी। २ राजस्थानी वैश्यों की एक जाति। ४. लाल रंग का बैल।

लोही—वि०[सं० लोहिन्] [स्त्री० लोहिनी] लाल रंग का। सुर्ख।

†स्त्री०[सं० लोह] प्रभात के समय की लाली।

मुहा०—लोही फटना=प्रभात के समय सूर्य की किरणों की लाली दिखाई देना। पौ फटना।

†स्त्री० १ =लोई (चुगली) २. =लोई (ऊनी चादर)।

लोहू—पुं०=लहू (रक्त)।

लोहे की स्याही—स्त्री० [हिं०] एक प्रकार का काला रंग जो शीरे में लोह-चून का खमीर उठाकर बनाई जाती और कपड़ों की छपाई, रँगाई आदि में काम आती है।

लोहे के चने—पुं० [हिं०] बहुत ही कठिन, दुष्कर तथा श्रम-साध्य काम। **मुहा०—लोहे के चने चबाना**=उतना ही दुस्साध्य तथा लगभग असंभव कार्य करना जितना लोहे के चने चबाना होता है।

लोहोत्तम—पुं०[सं० लोह-उत्तम, स० त०] सोना।

लोह्य—पुं०[सं०] पीतल।

लौं—अव्य०[हिं० लग का स्थानिक रूप] १. तक। पर्यंत। २. तुल्य। बराबर। समान। ३. किसी की तरह या भाँति। (ब्रज०)

लौंकड़ा—पुं०[?] अविवाहित नव-युवक। कुँआरा जवान।

पद—लौंकड़ा वीर=हनुमान।

लौंकना—अ०=लौकना (दिखाई पड़ना)।

लौंग—पुं० [सं० लवंग] १ एक प्रकार का वृक्ष जो दक्षिणी भारत, जावा, मलाया आदि में अधिकता से होता है। २. उक्त वृक्ष की कली जो खिलने से पहले ही तोड़कर सुखा ली जाती है और मसालों तथा दवाओं में सुगन्धि तथा गुण के लिए मिलाकर काम में लाई जाती है। ३. उक्त कली के आकार-प्रकार का आभूषण जो नाक तथा कान में पहना जाता है।

लौंग-चिड़ा—पुं०[हिं० लौंग+चिड़ा=चिड़िया] एक प्रकार का कबाब जो बेसन मिलाकर बनाया जाता है। २ आग पर सेंककर फुलाई हुई रोटी। फुलका।

लौंग-मुश्क—पुं०[हिं० लौंग+मुश्क] एक प्रकार का पौधा और उसका फूल।

लौंगरा—पुं०[हिं० लौंग] एक तरह का साग जिसमें लौंग की तरह की कलियाँ लगती हैं।

लौंग-लता—स्त्री०[सं० लवंग-लता] समोसे के आकार की मैदे की एक तरह की मिठाई जिसमें खोआ भरा रहता तथा ऊपर से लौंग भी खोंसा जाता है।

लौंगिया—वि०[हिं० लौंग] १. लौंग की तरह का छोटा पतला और लंबा। जैसे—लौंगिया फूल, लौंगिया मिर्च। २ लौंग (कली) के रंग का। पुं० कुछ मटमैलापन लिये एक प्रकार का काला रंग। (क्लोव)

लौंगिया मिर्च—स्त्री०[हिं०लौंग+मिर्च] एक प्रकार की बहुत कड़वी मिर्च जिसका पौधा बहुत बड़ा और फल लौंग के आकार के छोटे छोटे होते हैं। मिरची।

लौंजी—स्त्री० [सं० लून=काटा हुआ] आम की फाँक जो अचार चटनी आदि के काम आती है।

†स्त्री०—न्योजी।

लौंठा—पुं०[हिं० लुआठा] ऐसा हृष्ट-पुष्ट नवयुवक जिसे कुछ भी बुद्धि या समझ न हो।

लौंडा—पुं०[?] [स्त्री० लौंडी, लौंडिया] १ छोकरा। बालक। लड़का २ अबोध और नासमझ अथवा छिछोरा नव-युवक। ३ ऐसा लड़का जिसके साथ लोग अस्वाभाविक मैथुन करते हों।

लौंडापन—पुं०[हिं० लौंडा+पन (प्रत्य०)] १. लौंडा होने की अवस्था या भाव। २. ऐसी नासमझी जिसमें छिछोरापन या लड़कपन भी मिला हो।

लौंडी—स्त्री०[हिं० लौंडा+ई (प्रत्य०)] १. वह बालिका या स्त्री जो दूसरों के यहाँ छोटे छोटे काम करने के लिए नौकर हो। दासी।

लौंडेबाज—वि०[हिं० लौंडा+फा० बाज] [भाव लौंडेबाजी] १ (पुरुष) जो बालकों के साथ प्रकृति विरुद्ध संभोग करता हो। २ (स्त्री) जो नव-युवकों से प्रेम रखती हो। (बाजारू)

लौंडेबाजी—स्त्री०[हिं० लौंडा+ फा० बाजी] १. लौंडेबाज होने की अवस्था या भाव। २. लौंडेबाज का अप्राकृतिक कार्य।

लौंडो-घेरी†—स्त्री०[हिं० लौंडा+घेरना] ऐसी दुश्चरित्रा स्त्री जिसके पास प्रायः नवयुवक आते-जाते रहते हों।

लौंद—पुं०[?] अधिमास। मलमास।

लौंदरा—पुं०[हिं० लव=बालू] वह पानी जो ग्रीष्म ऋतु में वर्षा आरम्भ होने के पूर्व बरसता है। लवंद। दौगरा।

लौंद—पुं०=लौंदा।

लौंदी—स्त्री०[देश०] वह करछी जिससे खाँडसार के शीरे का पाग चलाया जाता है। (बुंदेल०)

लौन—पुं०१. =लवन। २. =लौंद। ३. =लोन (नमक)।

लौ—स्त्री०[सं० लयी] १. आग की लपट। ज्वाला। २. दीपों की टेम। दीप-शिखा।

स्त्री० दे० 'लगन'।

क्रि० प्र०—लगना।

लौआ—पुं०[सं० लाबुक] कद्दू। घीआ।

लौकना—अ० [स० लोकन] १. चमकना। उदा०—होइ अँधियार बीजु खग लौ कै जबहि चीरगहि झांपु।—जायसी। २. आँखों में चकाचौंध होना। ३. दिखाई पड़ना। ४. लपलपाना (जीभ का)।

लौकांतिक—पुं०[सं०] पाँचवे स्वर्ग में वास करनेवाला जीव। (जैन)

लौका—पु०[सं० लाबुक] [स्त्री० लौकी] कद्दू।

†स्त्री०[हिं० लौकना] १. चमक। दीप्ति। २. कांति। शोभा।

लौकायतिक—पु०[स० लोकायत+ठक्—इक] १. लोकायत (दर्शन) का अनुयायी। २. नास्तिक।

लौकिक–वि०[सं० लोक+ठक्—इक] १. लोक-संबंधी। २. इस लोक अर्थात् पृथ्वी से सम्बन्ध रखनेवाला। ऐहिक। सांसारिक। ३. लोक-व्यवहार से संबंध रखने वाला। व्यावहारिक।

पुं० सात मात्राओं के छंदों की संज्ञा।

लौकिक-विवाह—पु०[सं० कर्म० स०] धर्म, सम्प्रदाय आदि का विचार छोड़कर केवल कानून या विधि द्वारा निश्चित नियमों के अनुसार होने-वाला विवाह। (सिविल मैरेज)

लौकी—स्त्री०[सं० लाबुक] १. कद्दू। घीआ। २. भभके में लगाई जाने वाली वह नली जिससे शराब चुआई जाती है।

लौक्य—वि० [सं० लोक+ष्यञ्] १. लोक-संबंधी। लौकिक। २. सब जगह समान रूप से पाया जानेवाला या होनेवाला। सामान्य।

लौछार—स्त्री०[हिं० बौछार] १. कटाक्ष, व्यंग आदि की हलकी रंगत या पुट। जैसे—इसमे हास्य रस की अच्छी लौछार है। २. किसी पर किया जानेवाला कटाक्ष या व्यंग्य। जैसे—उनकी बातों में कई आद-मियों पर लौछार था।

लौज—पुं०[अ० लौज] १. बादाम। २. पिसे हुए बादाम की एक प्रकार की बरफी।

लौ-जोरा—पुं०[हिं० लौ+जोड़ना] आग की लौ या लपट की सहायता से धातुओं के टुकड़े जोड़नेवाला कारीगर।

लौट—स्त्री०[हिं० लौटना] १. लौटने की क्रिया या भाव। २. लौटे अर्थात् उलटे किये अथवा घुमाए हुए होने की अवस्था या भाव। घुमाव।

लौटना—अ० [हिं० उलटना] १. एक स्थान से किसी दिशा में जाकर फिर उसी स्थान पर वापस आना। जैसे—शहर या विदेश से घर लौटना। २. पीछे की ओर घूमना। मुड़ना। ३. किसी को काम चलाने के लिए दी हुई चीज का वापस मिलना।

स०=उलटना (पलटना)।

लौट-पौट—स्त्री०[हिं०लौट+(अनु०)पौट] १. कपड़े आदि की ऐसी छपाई जिसमे दोनों ओर एक से बेल-बूटे दिखाई पड़े। वह छपाई जिसमे उलटा सीधा न हो। दो-रुखी छपाई। २. उलटने-पलटने की क्रिया या भाव।

†स्त्री०=लोट-पोट।

लौट-फेर—पुं०[हिं० लौट+फेर] १ इधर का उधर हो जाना। २ बहुत बड़ा परिवर्तन। उलट-फेर।

लौटान—स्त्री०[हिं० लौटना] लौटने की अवस्था, क्रिया या भाव।

लौटाना—स०[हिं० लौटना का स०] १. जो कहीं से आया हो, उसे लौटने अर्थात् वहीं जाने में प्रवृत्त करना। जो जहाँ से आया हो, उसे वहीं वापस भेजना। जैसे—किसी के नौकर को जवाब देकर लौटाना। २. किसी से ली हुई चीज उसे वापस करना या देना। जैसे—दुकानदार के यहाँ से आई हुई चीज लौटाना।

संयो० क्रि०—देना।

†स०=उलटना।

लौटानी—स्त्री०[हिं० लौटना] लौटने की क्रिया या भाव।

पद-लौटानी मे=लौटते समय। लौटती बार।

लौड़ा—पु०[सं० लोल या हिं० लड] पुरुष की मूत्रेन्द्रिय। लिंग।

लौद, लौदरा—पु०[स०नव=डाली] [स्त्री०लौदड़ी, लौदरी] अरहर आदि की नरम डाली जिससे छानी छाने का काम लेते हैं। (दुआब व अतर्वेद)

लौन*—पुं०[स० लवण] नमक।

मुहा०—(किसी का) **लौन मानना**=जिसने पालन-पोषण किया हो, उसके प्रति कृतज्ञ या निष्ठ रहना। उदा०—बडे भए तब लौन मानि यह जहँ तहँ चलत भगाई।—सूर। (उक्त पद मे यह मुहा० व्यग्यात्मक रूप से आया है।)

लौनहार—पुं०[हिं० लौन+हार (प्रत्य०)] [स्त्री० लौनहारिन] खेत काटनेवाला। लवनी या लौनी करनेवाला।

लौना—स० [सं० लवन] खेत की फसल काटना। लवना।

स्त्री०=लवनी।

पुं०[?] जलाने की लकडी । ईंधन।

पुं०[सं० लूम या रोम]वह रस्सी जिसमे किसी पशु को भागने से रोकने के लिए उसका एक अगला और एक पिछला पैर बाँधा जाता है।

लौनी—स्त्री०[हिं० लौना] १ फसल की कटनी। कटाई। लवनी। २ फसल के कटे हुए डठलो का मुट्ठा।

†स्त्री०[स० नवनीत] मक्खन।

लौवना—पु०=लौना।

लौवनी—स्त्री० १ =लौना। २.=लौनी।

लौरी—स्त्री०[?] बछिया।

लौल्य—पु०[सं० लोल+ष्यञ्] १. लाल होने की अवस्था या भाव। लोलता। चंचलता। २. लालच। लोभ।

लौस—पुं०[फा०] १ किसी काम या बात में लिप्त होना। लीनता। २. मिलावट। २ धब्बा। ४ लगाव। सम्पर्क।

लौह—पु०[सं० लोह+अण्] १. लोहा। २. शस्त्रास्त्र।

वि० लोहे का। लोह-संबधी।

स्त्री०[अ०] १ तख्ती। २ पुस्तक का पृष्ठ।

लौहकार—पुं०[सं० लौह√कृ+अण्] लोहार।

लौहज—वि०[सं० लौह√जन्(उत्पत्ति)+ड] लोहे से निकला या बना हुआ।

लौह-पट—पुं०[सं० मध्य स०] १ लोहे का परदा। २ ऐसी व्यवस्था जिसकी आड मे होनेवाली बातें किसी प्रकार दूसरो पर प्रकट न हो सकती हों। (आयरन कर्टेन)

लौह-युग—पुं०[सं० मध्य० स०] संस्कृति के इतिहास मे वह युग जब उपकरण तथा अस्त्र-शस्त्र लोहे के ही बनने थे। अन्य धातुओं का आविष्कार नही हुआ था। (आयरन एज)

लौह-सार—पुं०[सं० ष० त०] रासायनिक प्रक्रिया से बनाया हुआ एक प्रकार का लवण जो लोहे से बनाया जाता है और ओषधियो मे काम आता है।

लौहाचार्य—पुं०[सं० लौह-आचार्य ष० त०] धातुओ के तत्त्व जानने वाला। वह जो धातु-विद्या का अच्छा ज्ञाता हो।

लौहासव—पुं० [सं० लौह-आसव मध्य० स०] लोहे के योग से बनाया जानेवाला आसव।

लौहिक—वि० [सं० लौह+ठक्—इक] १ लोहे का बना हुआ। लोहे का। २ लोहे से संबंध रखनेवाला। ३. दे० 'लोहल'।

लौहित—पुं०[सं० लोहित+अण्] शिव का त्रिशूल।

लौहिताश्व—पुं०[सं० लोहिताश्व+अण्] १. अग्नि। २ शिव।

लौहित्य—पुं०[सं० लोहित+ष्यञ्] १. एक प्रकार का धान जिसके चावल प्रदेश लाल रंग के होते हैं। २ ब्रह्मपुत्र नद। ३. बरमा की सीमा पर स्थित प्रदेश का प्राचीन नाम। ५ लाल समुद्र या लाल सागर का पुराना नाम।

ल्याना—स०=लाना। (पश्चिम)

ल्यारी—पुं०[देश०] भेड़िया।

ल्यौ—स्त्री०=लौ।

ल्वारि—स्त्री०=लुआर (लू)।

ल्हासा—पुं०=लासा।

ल्हीक—स्त्री० १. =लीख। २. =लीक

ल्हेसना—अ०, स०=लसना (चिपकाना)।

ल्हेसित—वि०=लेहसित (फबनेवाला)।